

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
الرَّحِيمِ ۝ مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ۝
إِيَّاكَ نَعْبُدُ
وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ۝
اهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيمَ ۝
صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۝
غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ۝

الْحَمْدُ لِلَّهِ

आयतें-7

सूरह-1. अल-फातिह

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहमवाला है। सब तारीफ अल्लाह के लिए है जो सारे जहान का मालिक है। बहुत महरबान निहायत रहम वाला है। इंसाफ के दिन का मालिक है। हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद चाहते हैं। हमें सीधा रास्ता दिखा। उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने फजल किया। उनका रास्ता नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब हुआ और न उन लोगों का रास्ता जो रास्ते से भटक गए।

बंदे के लिए किसी काम की सबसे बेहतर शुरूआत यह है कि वह अपने काम को अपने रब के नाम से शुरू करे। वह हस्ती जो तमाम रहमतों का ख़ज़ाना है और जिसकी रहमतें हर वक्त उबलती रहती हैं। उसके नाम से किसी काम को प्रारम्भ करना गोया उससे यह दुआ करना है कि तू अपनी अपार रहमतों के साथ मेरी मदद पर आ जा और मेरे काम को ख़ैर व ख़ूबी के साथ मुकम्मल कर दे। यह बंदे की तरफ से अपनी बंदगी (दासता) का एतराफ है और इसी के साथ उसकी कामयाबी की इलाही (ईश्वरीय) ज़मानत भी।

कुरआन की यह विशेषता है कि वह मोमिन के दिली एहसासात के लिए सबसे सही अल्फाज़ प्रयुक्त करता है। 'बिस्मिल्लाह' और सूरह फातिहा इस प्रकार के दुआ के कलाम हैं। सच्चाई को पा लेने के बाद फितरी तौर पर आदमी के अंदर जो जज्बा उभरता है उसी जज्बे को इन लफ्ज़ों में मुजस्सम (साक्षात्) कर दिया गया है।

आदमी का वजूद उसके लिए अल्लाह की एक बहुत बड़ी देन है। इसकी अज्मत (महानता) का अंदाज़ा इससे किया जा सकता है कि अगर किसी आदमी से कहा जाए कि तुम अपनी दोनों आँखों को निकलवा दो या दोनों पैरों को कटवा दो, इसके बाद तुम्हें मुल्क की बादशाही दे दी जाएगी। तो कोई भी व्यक्ति इसके लिए तैयार न होगा। गोया कि ये प्रारंभिक कुदरती देन भी बादशाह की बादशाही से ज्यादा कीमती हैं। इसी तरह जब आदमी अपने आसपास की दुनिया को देखता है तो यहाँ हर तरफ खुदा की मालिकियत (स्वामित्व) और रहीमियत (दयालुता) उबलती हुई दिखाई देती है। उसे हर तरफ असाधारण व्यवस्था और एहतमाम नज़र आता है। उसे दिखाई देता है कि दुनिया की तमाम चीज़ें हैरतअंगेज़ तौर पर इंसानी जिंदगी के अनुकूल बना दी गई हैं। यह अवलोकन उसे बताता है कि कायनात की यह विशाल कारख़ाना बेमक्सद नहीं हो सकती। लाज़िमी तौर पर ऐसा दिन आना चाहिए जब नाशुक्रों से उनकी नाशुक्रगुज़ार जिंदगी की बाज़पुर्स (पूछगछ) की जाए और शुक्रगुज़ारों को उनकी शुक्रगुज़ार जिंदगी का इनाम दिया जाए। वह बेइस्तिथार कह उठता है कि खुदाया तू फ़ैसले के दिन का मालिक है। मैं अपने आपको तेरे आगे डालता हूँ और तुझसे मदद चाहता हूँ। तू मुझे अपने साए में ले ले। खुदाया हमें वह रास्ता दिखा जो तेरे नज़दीक सच्चा रास्ता है। हमें उस रास्ते पर चलने की तौफ़ीक दे, जो तेरे मकबूल (प्रिय) बंदों का रास्ता है। हमें उस रास्ते से बचा जो भटके हुए लोगों का रास्ता है या उन लोगों का जो अपने ढिठाई की वजह से तेरे ग़ज़ब (प्रकोप) का शिकार हो जाते हैं।

अल्लाह का मलूब (अपेक्षित) बंदा वह है जो इन एहसासात और कैफ़ियतों के साथ दुनिया में जी रहा हो। सूरह फातिहा इस मोमिन बंदे की छोटी तस्वीर है और बाकी कुरआन इस मोमिन बंदे की बड़ी तस्वीर।

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० मीम०। यह अल्लाह की किताब है। इसमें कोई शक नहीं। राह दिखाती है डर रखने वालों को। जो यकीन करते हैं बिन देखे और नमाज़ कायम करते हैं। और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं। और जो ईमान लाते हैं उस पर जो तुम्हारे ऊपर उतरा और जो तुमसे पहले उतारा गया। और वे आखिरत (परलोक) पर यकीन रखते हैं। इन्हीं लोगों ने अपने ख की राह पाई है और वही कामयाबी को पहुँचने वाले हैं। (1-5)

इसमें शक नहीं कि कुरआन हिदायत (मार्गदर्शन) की किताब है। मगर वह हिदायत की किताब उसके लिए है जो वाकई हिदायत को जानने के मामले में संजीदा हो, जो इसकी परवाह और खटक रखता हो। सच्ची तलब (चाहत) जो फितरत (सहज प्रकृति) की ज़मीन पर उगती है वह खुद पाने ही की एक शुरूआत होती है। सच्ची चाहत और सच्ची प्राप्ति दोनों एक ही सफर के पिछले और अगले मरहले हैं। यह गोया खुद अपनी फितरत के बंद पन्नों को खोलना है। जब आदमी इसका सच्चा इरादा करता है तो फौरन फितरत की अनुकूलता और अल्लाह की मदद उसका साथ देने लगती है। उसे अपनी फितरत की अस्पष्ट पुकार का स्पष्ट जवाब मिलना शुरू हो जाता है।

एक आदमी के अंदर सच्ची तलब का जागना आलमे ज़ाहिर के पीछे आलमे बातिन (छुपे) को देखने की कोशिश करना है। यह तलाश जब प्राप्ति के मरहले में पहुँचती है तो वह ईमान विलंब (अप्रकट, अदृश्य पर ईमान) बन जाती है। वही चीज़ जो इब्तिदाई मरहले में एक बरतार हकीकत के आगे अपने को डाल देने की बेकसारी का नाम होता है वह बाद के मरहले में अल्लाह का नमाज़ी बनने के रूप में ढल जाता है। वही जज्बा जो शुरू में अपने को ख़ैरे आला (परम कल्याण) के लिए वक़फ कर देने के समानार्थी होता है वह बाद के मरहले में अल्लाह की राह में अपनी सम्पत्ति खर्च करने का रूप धार लेता है। वही खोज जो ज़िंदगी के हंगामों के आगे उसका आखिरी अंजाम मालूम करने की सूरत में किसी के अंदर उभरती है, वह आखिरत पर यकीन की सूरत में अपने सवाल का जवाब पा लेती है।

सच्चाई को पाना गोया अपने शुऊर (चेतना) को हकीकते आला (परम सत्य) के समस्तर कर लेना है। जो लोग इस तरह हक (सत्य) को पा लें वे हर प्रकार की मनोवैज्ञानिक गुथियों से आज़ाद हो जाते हैं। वे सच्चाई को उसके विशुद्ध रूप में देखने लगते हैं। इसलिए सच्चाई जहाँ भी हो और जिस खुदा के बंदे की ज़बान से भी उसका एलान किया जा रहा हो, वे फौरन उसे पहचान लेते हैं और उस पर लब्बैक (स्वीकारोक्ति) कहते हैं। कोई जुमूद (जड़ता) कोई तकलीद (अनुसरण), कोई तअसुबाती (विद्वेषवादी) दीवार उनके लिए हक के एतराफ (स्वीकार) में रुकावट नहीं बनती। जिन लोगों के अंदर यह विशेषताएँ हों, वे अल्लाह के साए में आ जाते हैं। अल्लाह का बनाया हुआ निज़ाम (विधान) उन्हें कुबूल कर लेता है। उन्हें दुनिया में उस सच्चे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक मिल जाती है जिसकी आखिरी मज़िल यह है कि आदमी आखिरत की अबदी (चिरस्थायी) नेमतों में दाखिल हो जाए।

हक को वही पा सकता है जो इसे ढूँढने वाला है। और जो ढूँढने वाला है वह ज़रूर इसे पाता है। यहाँ ढूँढने और पाने के दर्मियान कोई फ़ासला नहीं।



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْمَ ذَٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى
لِّلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَ
يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝
وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا
أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝
أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِنْ رَبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

النَّوْءُ الْاَوَّلُ ۱ -
عبد الغفور

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أُنذِرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ خَتَمَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَعَلَى سَمْعِهِمْ وَعَلَى أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

जिन लोगों ने इंकार किया, उनके लिए समान है डराओ, या न डराओ, वे मानने वाले नहीं हैं। अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मुहर लगा दी है। और उनकी आँखों पर पर्दा है। और उनके लिए बड़ा अज़ाब है। (6-7)

एक व्यक्ति अपनी आँख को बंद कर ले तो आँख रखते हुए भी वह सूरज को नहीं देखेगा। कोई व्यक्ति अपने कान में रूई डाल ले तो कान रखते हुए भी वह बाहर की आवाज़ को नहीं सुनेगा। ऐसा ही कुछ मामला हक (सत्य) का भी है। हक का एलान चाहे कितनी ही वाज़ेह सूरत में हो रहा हो मगर किसी के लिए वह कबिले फ़हम या कबिले बुकूल उस वक्त बनता है जबकि वह इसके लिए अपने दिल के दरवाज़े खुले रखे। जो शख्स अपने दिल के दरवाज़े बंद कर ले उसके लिए कायनात में खुदा की ख़ामोश पुकार और दाओ (आह्वानकर्ता) की ज़बान से उसका लफ़्ज़ी एलान दोनों निरर्थक साबित होंगे।

हक की दावत (आह्वान) जब अपने विशुद्ध रूप में उठती है तो वह इतनी ज़्यादा हकीकत पर आधारित और इतनी स्वाभाविक होती है कि कोई व्यक्ति उसकी नौइयत को समझने में असमर्थ नहीं रह सकता। जो शख्स भी खुले ज़ेहन से उसे देखेगा उसका दिल गवाही देगा कि यह ऐन हक है। मगर उस वक्त अमली सूतेहाल यह होती है कि एक तरफ वक्त का ढँचा होता है जो सदियों के अमल से एक ख़ास शकल में कायम हो जाता है। इस ढँचे के तहत कुछ मज़हबी या ग़ैर मज़हबी आसन बन जाते हैं जिन पर कुछ लोग बैठे हुए होते हैं। कुछ इज़ज़त और शोहरत की सूरतें राइज हो जाती हैं जिनके झंडे उठा कर कुछ लोग वक्त के बड़े लोगों का मक़ाम हासिल किए हुए होते हैं। कुछ कारोबार और मफ़दात (हित) कायम हो जाते हैं, जिनके साथ अपने को जोड़ कर बहुत-से लोग इत्मीनान की ज़िंदगी गुज़ार रहे होते हैं।

इन हालात में जब एक अपरिचित कोने से अल्लाह अपने एक बंदे को खड़ा करता है और उसकी ज़बान से अपनी मर्ज़ी का एलान कराता है तो अक्सर ऐसा होता है कि इस किस्म के लोगों को अपनी बनी बनाई दुनिया भंग होती नज़र आती है। हक के पैग़ाम की तमामतर सदाकत (सच्चाई) के बावजूद वो चीज़ें उनके लिए इसे सही तौर पर समझने के लिए रुकावट बन जाती हैं। एक किब्र (अहं, बड़ाई) दूसरे दुनियापरस्ती। जो लोग प्रचलित ढँचे में उच्च स्थान पर बैठे हुए हों उन्हें एक 'छोटे आदमी' की बात मानने में अपनी इज़ज़त ख़तरे में पड़ती हुई नज़र आती है। यह एहसास उनके अंदर घमंड की नफ़िसयात जगा देता है। दाओ (आह्वानकर्ता) को वह अपने मुकाबले में हकीर (तुच्छ) समझ कर उसके आह्वान को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। इसी तरह दुनियावी हितों का सवाल भी हक को कुबूल करने में रुकावट बन जाता है। क्योंकि हक का दाओ राइज ढँचे का नुमाइंदा नहीं होता। वह एक नई और अपरिचित आवाज़ को लेकर उठता है। इसलिए उसे मानने की स्थिति में लोगों को अपने हितों का ढाँचा टूटता हुआ नज़र आता है।

यही वह बाधक कैफ़ियत है जिसे कुरआन में मुहर लगाने से परिभाषित किया गया है। जो लोग दावते हक के मामले को संजीदा मामला न समझें जो घमंड और दुनियापरस्ती की नफ़िसयात में मुत्तला हों उनके ज़ेहन के ऊपर ऐसे ग़ैर महसूस पर्दे पड़ जाते हैं जो हक बात को उनके ज़ेहन में दाख़िल नहीं होने देते। किसी चीज़ के बारे में आदमी के अंदर मुख़ालिफ़ाना (विरोधपरक) नफ़िसयात जाग उठे तो इसके बाद वह इसकी माकूलियत को समझ नहीं पाता। चाहे इसके पक्ष में कितनी ही स्पष्ट दलीलें पेश की जा रही हों।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَهُمْ يَكْفُرُونَ ۚ يُخَدِّعُونَ اللَّهَ وَالدِّينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۚ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ ذَٰلِكَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۚ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ۚ أَلَا لَهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِن لَّا يَشْعُرُونَ ۚ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ ۚ أَلَا أَنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِن لَّا يَعْلَمُونَ ۚ وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَىٰ شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزَؤُونَ ۚ اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَت تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝

और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर, हालाँकि वे ईमान वाले नहीं हैं। वे अल्लाह को और मोमिनों को धोखा देना चाहते हैं। मगर वे सिर्फ अपने आपको धोखा दे रहे हैं और वे इसका शुऊर नहीं रखते। उनके दिलों में रोग है तो अल्लाह ने उनके रोग को बढ़ा दिया और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है। इस वज़ह से कि वे झूठ कहते थे। और जब उनसे कहा जाता है कि धरती पर फ़साद (उपद्रव, बिगाड़) न करो तो वे जवाब देते हैं हम तो सुधार करने वाले हैं। जान लो, यही लोग फ़साद करने वाले हैं, मगर वे नहीं समझते। और जब उनसे कहा जाता है तुम भी उसी तरह ईमान ले आओ जिस तरह अन्य लोग ईमान लाए हैं तो कहते हैं कि क्या हम उस तरह ईमान लाएँ जिस तरह मूर्ख लोग ईमान लाए हैं। जान लो, कि मूर्ख यही लोग हैं, मगर वे नहीं जानते। और जब वे ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं, और जब अपने शैतानों की बैठक में पहुँचते हैं तो कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो उनसे महज़ हंसी करते हैं। अल्लाह उनसे हंसी कर रहा है और उन्हें उनकी सरकशी में ढील दे रहा है। वे भटकते फिर रहे हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत (मार्गदर्शन) के बदले गुमराही ख़रीदी तो उनकी

तिजारत फायदेमंद नहीं हुई, और वे न हुए राह (सन्मार्ग) पाने वाले। (8-16)

जो लोग फायदों और मस्तेहतों को अव्वलीन अहमियत दिए हुए होते हैं उनके नज़दीक यह नादानी की बात होती है कि कोई शख्स निःसंकोच अपने आपको पूरे तौर पर हक के हवाले कर दे। ऐसे लोगों की हकीकी वफ़ादारियाँ अपने दुनियावी मफ़दात (हितों) के साथ होती हैं। अलबत्ता इसी के साथ वे हक से भी अपना एक ज़ाहिरी रिश्ता कायम कर लेते हैं। इसे वे अक्लमंदी समझते हैं। वे समझते हैं कि इस तरह उनकी दुनिया भी महफूज़ है और इसी के साथ उन्हें हक़परस्ती का तमगा भी हासिल है। मगर यह एक ऐसी खुशफ़हमी है जो सिर्फ़ आदमी के अपने दिमाग में होती है। उसके दिमाग के बाहर कहीं इसका वजूद नहीं होता। आज़माइश का प्रत्येक अवसर उन्हें सच्चे दीन (धर्म) से कुछ और दूर और अपने स्वार्थपरक दीन से कुछ और करीब कर देता है। इस तरह गोया उनके निफ़ाक (पाखंड) का रोग बढ़ता रहता है। ऐसे लोग जब सच्चे मुसलमानों को देखते हैं तो उन्हें एहसास यह होता है कि वे व्यर्थ में सच्चाई की ख़ातिर अपने को बर्बाद कर रहे हैं। इसके मुकाबले अपने तरीके को वह इस्लाह (सुधार) का तरीका कहते हैं। क्योंकि उन्हें नज़र आता है कि इस तरह किसी से झगड़ा मोल लिए बग़ैर अपने सफ़र को कामयाबी के साथ तै किया जा सकता है। मगर यह सिर्फ़ बेशुक्की की बात है। यदि वे गहराई के साथ सोचें तो उन पर यह प्रकट होगा कि इस्लाह (सुधार) यह है कि बंदे सिर्फ़ अपने रब के हो जाएँ। इसके विपरीत फ़साद (उपद्रव, बिगाड़) यह है कि खुदा और बंदे के संबंध को दुरुस्त करने के लिए जो तहरीक चले उसमें रोड़े अटकाए जाएँ। उनका यह बज़ाहिर फ़ायदे का सौदा हकीकत में घाटे का सौदा है। क्योंकि वे विशुद्ध सत्य को छोड़ कर मिलावटी सत्य को अपने लिए पसंद कर रहे हैं जो किसी के कुछ काम आने वाला नहीं है। अपने दुनियावी मामलों में होशियार होना और आख़िरत के मामले में सरसरी उम्मीदों को काफ़ी समझना गोया खुदा के सामने झूठ बोलना है। जो लोग ऐसा करें उन्हें बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि इस किस्म की झूठी ज़िंदगी आदमी को अल्लाह के यहाँ अज़ाब के सिवा किसी और चीज़ का हक़दार नहीं बनाती।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ
وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ لَا يُبْصِرُونَ صُمُّ بَكْمٌ عُصِي فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۖ أَوْ كَصَيِّبٍ
مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِّنَ
الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۗ وَاللَّهُ مُخِيطٌ بِالْكَافِرِينَ ۝ يَكَادُ الْبَرَقُ يُخْطِفُ
أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ مَشَوْا فِيهِ ۖ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ
شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक शख्स ने आग जलाई। जब आग ने उसके इर्द-गिर्द

को रोशन कर दिया तो अल्लाह ने उनकी आँख की रोशनी छीन ली और उन्हें अंधेरे में छोड़ दिया कि उन्हें कुछ दिखाई नहीं पड़ता। वे बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं। अब ये लौटने वाले नहीं हैं। या उनकी मिसाल ऐसी है जैसे आसमान से बारिश हो रही हो, उसमें अंधकार भी हो और गरज-चमक भी। वे कड़क से डर कर मौत से बचने के लिए अपनी उंगलियाँ अपने कानों में दूंस रहे हों। हालाँकि अल्लाह इंकार करने वालों को अपने घेरे में लिए हुए है। करीब है कि बिजली उनकी निगाहों को उचक ले। जब भी उन पर बिजली चमकती है उसमें वे चल पड़ते हैं और जब उन पर अंधेरा छा जाता है तो वे रुक जाते हैं। और अगर अल्लाह चाहे तो उनके कान और उनकी आँखों को छीन ले। अल्लाह यकीनन हर चीज़ पर कादिर है। (17-20)

किसी कमरे में काली और सफेद चीज़ें हों तो जब तक अंधेरा है वे अंधेरे में गुम रहेंगी। मगर रोशनी जलाते ही काली चीज़ काली और सफेद चीज़ सफेद दिखाई देने लगेगी। यही हाल अल्लाह की तरफ से उठने वाली नुबुव्वत की दावत (आह्वान) का है। यह खुदाई रोशनी जब ज़ाहिर होती है तो उसके उजाले में हिदायत और ज़लालत (पथभ्रष्टता) साफ-साफ दिखाई देने लगती हैं। नेक अमल क्या है और उसके समरात (प्रतिफल) क्या हैं, बुरा अमल क्या है और उसके समरात क्या हैं, सब खुल कर ठीक-ठीक सामने आ जाता है। मगर जो लोग अपने आपको हक (सत्य) के ताबेअ (अधीन) करने के बजाए हक को अपना ताबेअ बनाए हुए थे वे इस सूरतेहाल को देखकर घबरा उठते हैं। उनका छुपा हुआ हसद (ईर्ष्या) और घमंड जीवंत होकर उन्हें अपनी लपेट में ले लेता है। खुदाई आइने में अपना चेहरा देखते ही उनकी नकारात्मक मानसिकता उभर आती है। उनके भीतरी तअस्सुबात (विद्वेष) उनके हवास पर इस तरह छा जाते हैं कि आंख, कान, ज़बान रखते हुए भी वे ऐसे हो जाते हैं गोया कि वे अंधे, बहरे और गूंगे हैं। अब वे न तो किसी पुकारने वाले की पुकार को सुन सकते हैं, न उसकी पुकार का जवाब दे सकते हैं। न किसी किस्म की निशानी से रहनुमाई हासिल कर सकते हैं। उनके लिए सही रवैया यह था कि वे पुकारने वाले की पुकार पर गौर करते। मगर इसके बजाए उन्होंने इससे बचने का सादा इलाज यह खोजा है कि उसकी बात को सिरे से सुना ही न जाए, उसे कोई अहमियत ही नहीं दी जाए।

इसी तरह एक और नपिसयात (मानसिकता) है जो हक को कुबूल करने में रुकावट बनती है। यह डर की नपिसयात है। बारिश अल्लाह तआला की एक बहुत बड़ी नेमत है। मगर बारिश जब आती है तो अपने साथ कड़क और गरज भी ले आती है जिससे कमज़ोर लोग भयभीत हो जाते हैं। इसी तरह जब अल्लाह की तरफ से हक की दावत उठती है तो एक तरफ अगर वह इंसानों के लिए अज़ीम कामरानियों (कामयाबियों) के इमकानात खोलती है तो दूसरी तरफ इसमें कुछ वक़्ती अंदेश भी दिखाई देते हैं। इसे मान लेने की स्थिति में अपनी बड़ाई का ख़ात्मा, ज़िंदगी के बने बनाए नक्शे को बदलने की ज़रूरत, परम्परागत ढाँचे से टकराव की समस्याएं, आख़िरत (परलोक) के बारे में खुशख़बालियों के बजाए हकीकतों पर भरोसा करना। इस किस्म के अंदेशों को देख कर वे भी रुक जाते हैं और कभी दुविधा के साथ कुछ कदम आगे बढ़ते

हैं मगर ये एहतियातें उनके कुछ काम आने वाली नहीं हैं क्योंकि खुदाई पुकार के लिए अपने को खुले दिल से पेश न करके वे ज्यादा शदीद तौर पर अपने को खुदा की नज़र में काबिले सज़ा बना रहे हैं।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُونَ ۚ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَأَنْزَلَ مِنَ
السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا
وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۚ وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدٍ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ
وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ وَإِنْ كُمْ تَفْعَلُوا
وَلَنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۖ أُعِدَّتْ
لِلْكَافِرِينَ ۚ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِنْ ثَمَرٍ قَرِيبٍ قَالُوا هَذَا الَّذِي رُزِقْنَا
مِنْ قَبْلُ وَأَتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ
وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ

ऐ लोगो! अपने रब की इबादत करो जिसने तुम्हें पैदा किया और उन लोगों को भी जो तुम से पहले गुज़र चुके हैं ताकि तुम दोज़ख़ (नर्क) से बच जाओ। वह जात जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए बिछौना बनाया और आसमान को छत बनाया, और उतारा आसमान से पानी और उससे पैदा किए फल तुम्हारी गिज़ा के लिए। पस तुम किसी को अल्लाह के बराबर न ठहराओ, हालांकि तुम जानते हो। अगर तुम इस कलाम के संबंध में शक में हो जो हमने अपने बंदे के ऊपर उतारा है तो लाओ इस जैसी एक सूरह और बुला लो अपने हिमायतियों को भी अल्लाह के सिवा, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर तुम यह न कर सको और हरगिज़ न कर सकोगे तो डरो उस आग से जिसका ईंधन बर्तेंगे आदमी और पत्थर। वह तैयार की गई है हक़ (सत्य) का इंकार करने वालों के लिए। और खुशख़बरी दे दो उन लोगों को जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए, इस बात की कि उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। जब भी उन्हें इन बाग़ों में से कोई फल खाने को मिलेगा, तो वे कहेंगे : यह वही है जो इससे पहले हमें दिया गया था। और मिलेगा उन्हें एक-दूसरे से मिलता-जुलता। और उनके लिए वहां साफ-सुथरी औरतें होंगी। और वे इसमें हमेशा रहेंगे। (21-25)

इंसान और उसके अलावा जो कुछ ज़मीन व आसमान में है सबका पैदा करने वाला सिर्फ अल्लाह है। उसने पूरी कायनात को निहायत हिकमत (तत्त्वदर्शिता, सूझबूझ) के साथ कायम किया है। वह हर क्षण उनकी परवरिश कर रहा है। इसलिए इंसान के लिए सही रवैया सिर्फ यह है कि वह अल्लाह को बग़ैर किसी शिकंसे (साझेदारी) के ख़ालिक (रचयिता), मालिक और राज़िक (अन्नदाता) तस्लीम करे। वह उसे अपना सब कुछ बना ले। मगर चूंकि खुदा नज़र नहीं आता, इसलिए अक्सर ऐसा होता है कि आदमी किसी नज़र आने वाली चीज़ को अहम समझ कर उसे खुदाई के मक़ाम पर बिठा लेता है। वह एक मख़बूक (ईश्वरीय रचना) को आशिक या पूर्ण रूप से ख़ालिक (रचयिता) के बराबर ठहरा लेता है। कभी उसे खुदा का नाम देकर और कभी खुदा का नाम दिए बग़ैर।

यही इंसान की अस्तु गुमराही है। पैग़म्बर की दावत (आह्वान) यह होती है कि आदमी सिर्फ एक खुदा को बड़ाई का मक़म दे। इसके अलावा जिस-जिस को उसने खुदाई अज्मत (महानता) के मक़म पर बैठा रखा है उसे अज्मत के मक़म से उतार दे। जब ख़ालिस खुदापरस्ती की दावत उठती है तो वे तमाम लोग अपने ऊपर इसकी ज़द (प्रहार) पड़ती हुई महसूस करने लगते हैं जिनका दिल खुदा के सिवा कहीं और अटका हुआ हो। जिन्होंने खुदा के सिवा किसी और के लिए भी अज्मत को ख़ास कर रखा हो। ऐसे लोगों को अपने फज़ी माबूदों (पूज्यों) से जो शदीद ताल्लुक हो चुका होता है इसकी वजह से उनके लिए यह यकीन करना मुश्किल होता है कि वे बेहकीकत हैं और हकीकत सिर्फ उस पैग़म की है जो आदमियों में से एक आदमी की ज़बान से सुनाया जा रहा है।

जो दावत (आह्वान) खुदा की तरफ से उठे उसके अंदर लाज़िमी तौर पर खुदाई शान शामिल हो जाती है। इसकी अद्वितीय शैली और इसकी विलक्षण तार्किकता इस बात की खुली अलामत होती है कि वह खुदा की तरफ से है। इसके बावजूद जो लोग इंकार करें उन्हें खुदा के विधान में जहन्नम के सिवा कहीं और पनाह नहीं मिल सकती। अलबत्ता जो लोग खुदा के कलाम में खुदा को पा लें उन्होंने गोया आज की दुनिया में कल की दुनिया को देख लिया। यही लोग हैं जो आखिरत (परलोक) के बाग़ों में दाखिल किए जाएंगे।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيَىٰ أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ
آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا
أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۖ يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا ۖ وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا ۚ وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا
الْفَاسِقِينَ ۚ الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا
أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۖ

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أََمْْوَناً فَالْحَيَاكُمُ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۚ هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَى إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

अल्लाह इससे नहीं शर्माता कि बयान करे मिसाल मच्छर की या इससे भी किसी छोटी चीज़ की। फिर जो ईमान वाले हैं वे जानते हैं कि वह हक (सत्य) है उनके रब की जानिव से। और जो इंकार करने वाले हैं वे कहते हैं कि इस मिसाल को बयान करके अल्लाह ने क्या चाहा है। अल्लाह इसके ज़रिए बहुतों को गुमराह करता है और बहुतों को इससे राह (सम्माग) दिखाता है। और वह गुमराह करता है उन लोगों को जो नाफरमानी (अवज्ञा) करने वाले हैं। जो अल्लाह के अहद (वचन) को उसके बांधने के बाद तोड़ते हैं और उस चीज़ को तोड़ते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं। यही लोग हैं नुक्सान उठाने वाले। तुम किस तरह अल्लाह का इंकार करते हो, हालांकि तुम बेजान थे तो उसने तुम्हें ज़िंदगी अता की। फिर वह तुम्हें मौत देगा। फिर ज़िंदा करेगा। फिर उसी की तरफ लौटाए जाओगे। वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो ज़मीन में है। फिर आसमान की तरफ तवज्जोह की और सात आसमान दुरुस्त किए। और वह हर चीज़ को जानने वाला है। (26-29)

किसी बंदे के ऊपर अल्लाह का सबसे पहला हक यह है कि वह अब्दियत (दासता, बंदा होने) के उस अहद (वचन) को निभाए जो पैदा करने वाले और पैदा किए जाने वाले के दर्मियान अव्वल रोज़ से कायम हो चुका है। फिर इंसानों के दर्मियान वह इस तरह रहे कि उन तमाम रिश्तों और ताल्लुकात को पूरी तरह निभाए हुए हो जिन्हें निभाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है। तीसरी चीज़ यह कि जब खुदा अपने एक बंदे की ज़बान से अपने पैग़ाम का एलान कराए तो उसके खिलाफ बेबुनियाद बातें निकाल कर खुदा के बंदों को उससे बिदकाया न जाए। हक की दावत देना दरअस्त लोगों को हालते फितरी (सहज स्वाभाविक स्थिति) पर लाने की कोशिश करना है। इसलिए जो व्यक्ति लोगों को इससे रोकता है, वह ज़मीन पर फसाद (उपद्रव, बिगाड़) फैलाने का मुजरिम बनता है।

अल्लाह का यह एहसान कि वह आदमी को अदम से वजूद में ले आया। यह अल्लाह का इतना बड़ा एहसान है कि आदमी को पूर्णरूपेण उसके सामने समर्पण कर देना चाहिए। फिर अल्लाह ने इंसान को पैदा करके यू ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि उसे रहने के लिए ऐसी ज़मीन दी जो उसके लिए अत्यंत अनुकूल बनाई गई थी। फिर बात सिर्फ इतनी ही नहीं है बल्कि इससे बहुत आगे की है। इंसान हर वक्त इस नाज़ुक संभावना के किनारे खड़ा हुआ है कि उसकी मौत आ जाए और अचानक वह कायनात के मालिक के सामने हिसाब-किताब के लिए पेश कर दिया जाए। इन बातों का तकाज़ा है कि आदमी पूर्ण रूप से अल्लाह का हो जाए। उसकी

याद और उसकी इताअत (आज्ञापालन) में ज़िंदगी गुज़ारे। सारी उम्र वह उसका बंदा बना रहे। पैग़म्बराना दावत (आह्वान) के सुस्पष्ट और तार्किक होने के बावजूद क्यों बहुत-से लोग इसे कुबूल नहीं कर पाते। इसकी सबसे बड़ी वजह शोशे निकालने (आलोचना) का फितना है। आदमी के भीतर नसीहत स्वीकारने का ज़ेहन न हो तो वह किसी बात को गंभीरता से नहीं लेता। ऐसे आदमी के सामने जब भी कोई दलील आती है तो उसे सतही तौर देखकर एक शोशा निकाल लेता है। इस तरह वह यह ज़ाहिर करता है कि यह दावत कोई माकूल दावत नहीं है। अगर वह कोई माकूल दावत होती तो कैसे मुमकिन था कि उसमें इस किस्म की बेवज़न बातें शामिल हों। मगर जो नसीहत पकड़ने वाले ज़ेहन हैं, जो बातों पर गंभीरता से ग़ौर करते हैं उन्हें हक को पहचानने में देर नहीं लगती, चाहे हक को 'मच्छर' जैसे मिसालों में ही बयान किया गया हो।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا مَنْ يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۖ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۚ وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَكِكَةِ فَقَالَ أَنْبِئُونِي بِأَسْمَاءِ هَؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ قَالُوا لَا سَمِيْعَكَ لَأَعْلَمُنَا أِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۚ قَالَ يَادُمْرُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۚ

और जब तेरे रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन में एक खलीफा बनाने वाला हूँ। फरिश्तों ने कहा : क्या तू ज़मीन में ऐसे लोगों को बसाएगा जो इसमें फसाद करें और खून बहाएँ। और हम तेरी हम्द (स्तुति, गुणगान) करते हैं और तेरी पाकी बयान करते हैं। अल्लाह ने कहा मैं जानता हूँ जो तुम नहीं जानते, और अल्लाह ने सिखा दिए आदम को सारे नाम, फिर उन्हें फरिश्तों के सामने पेश किया और कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो मुझे इन लोगों के नाम बताओ। फरिश्तों ने कहा कि तू पाक है। हम तो वही जानते हैं जो तूने हमें बताया। वेशक तू ही इल्म वाला और हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला है। अल्लाह ने कहा ऐ आदम उन्हें बताओ उन लोगों के नाम। तो जब आदम ने बताए उन्हें उन लोगों के नाम तो अल्लाह ने कहा : क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि आसमानों और ज़मीन के भेद को मैं ही जानता हूँ। और मुझे मालूम है जो तुम ज़ाहिर करते हो और जो तुम छुपाते हो। (30-33)

खीमेतफा .ी मअना हैं किसी के बाद उसकी जगह लेने वाला जानशीन (उत्तराधिकारी)। विरासती इक्तेदार (सत्ता) के ज़माने में यह लफ़्ज़ बहुलता से शासकों के लिए इस्तेमाल हुआ जो एक के बाद दूसरे की जगह सत्तासीन होते थे। इस तरह इस्तेमाली मफहूम में 'खलीफा' लफ़्ज़ 'सत्ताधारी' के समानार्थी हो गया।

अल्लाह तआला ने जब इंसान को पैदा किया तो यह भी फैसला फरमाया कि वह एक बाइस्त्रियार (साधिकार) मख्लूक की हैसियत से ज़मीन पर आबाद होगा। फरिश्तों को अदेशा हुआ कि इस्त्रियार और इक्तेदार पाकर इंसान बिगड़ न जाए और ज़मीन में खुरेज़ी करने लगे। फरिश्तों का यह अदेशा ग़लत नहीं था। अल्लाह को भी इस संभावना का पूरा इल्म था। मगर अल्लाह की नज़र इस बात पर थी कि इंसानों में अगर बहुत-से लोग आज़ादी पाकर बिगड़ेंगे तो एक काबिले लिहाज़ तादाद उन लोगों की भी होगी जो आज़ादी और इस्त्रियार के बावजूद अपनी हैसियत को और अपने रब के मक़ाम को पहचानेंगे और किसी दबाव के बग़ैर खुद अपने इरादे से तस्लीम व इताअत का तरीका अपनाएँगे। ये दूसरी किस्म के लोग अगरचे अपेक्षाकृत कम तादाद में होंगे मगर वे फ़रस्ल के दानों की तरह कीमती होंगे। फ़रस्ल में लकड़ी और भुस की मात्रा हमेशा बहुत ज्यादा होती है। मगर दाने कम होने के बावजूद इतने कीमती होते हैं कि उनकी खातिर लकड़ी और भुस के ढेर को भी उगने और फैलने का मौका दे दिया जाता है।

अल्लाह ने अपनी कुदरत से आदम की सारी संतति को एक ही वक़्त में उनके सामने कर दिया। फिर फरिश्तों से कहा कि देखो यह है औलादे आदम। अब बताओ कि इनमें कौन-कौन और कैसे-कैसे लोग हैं। फरिश्ते अज्ञानतावश बता न सके। अल्लाह तआला ने आदम को उनके नामों, दूसरे शब्दों में शख़्सियतों से आगाह किया और फिर कहा कि फरिश्तों के सामने उनका परिचय कराओ। जब आदम ने परिचय कराया तो फरिश्तों को मालूम हुआ कि आदम की औलाद में फसादियों और बुरे लोगों के अलावा कैसे-कैसे सुल्हा (सज्जन) और मुत्कीन (ईश परायण) होंगे। इंसान का सबसे बड़ा जुर्म, रब के इंकार के बाद, ज़मीन में फसाद (उपद्रव, बिगाड़) करना और रक्तपात है। किसी व्यक्ति या समूह के लिए जाइज़ नहीं कि वह ऐसी कार्रवाइयां करे जिसके नतीजे में ज़मीन पर खुदा का कायम किया हुआ फ़ितरी निज़ाम बिगड़ जाए। इंसान, इंसान की जान मारने लगे। ऐसा हर कार्य आदमी को खुदा की रहमतों से महरूम कर देता है। ज़मीन पर खुदा के बनाए हुए फ़ितरी निज़ाम का कायम रहना उसका सुधार है, और ज़मीन के फ़ितरी निज़ाम को बिगाड़ना इसका फ़साद।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَكِ السَّجْدَ وَالْإِدْمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ أَبَىٰ وَاسْتَكْبَرَ ۖ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۖ وَقُلْنَا يَا أِدْمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ ۖ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ۖ فَكَانَ لُهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ ۖ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۖ فَتَلَقَّىٰ أِدْمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَةً فَتَبَّا عَلَيْهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ

التَّوَابُ الرَّحِيمُ ۖ قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ

और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया, मगर इब्लीस ने नहीं किया। उसने इंकार किया और घमंड किया और मुंकिरों में से हो गया। और हमने कहा ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीबी दोनों जन्नत में रहो और उसमें से खाओ खुले रूप में जहां से चाहो। और उस दरख्त (वृक्ष) के नज़दीक मत जाना वरना तुम ज़ालिमों में से हो जाओगे। फिर शैतान ने उस दरख्त के ज़रिए दोनों को लगज़िश (ग़लती) में मुब्तला कर दिया और उन्हें उस ऐश से निकलवा दिया जिसमें वे थे। और हमने कहा तुम सब उतरो यहां से। तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे। और तुम्हारे लिए ज़मीन में ठहरना और काम चलाना है एक मुद्दत तक। फिर आदम ने सीख लिए अपने रब से कुछ बोल तो अल्लाह उस पर मुत्वज्जह हुआ। बेशक वह तौबा कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। हमने कहा तुम सब यहां से उतरो। फिर जब आए तुम्हारे पास मेरी तरफ से कोई हिदायत तो जो मेरी हिदायत की पैरवी करेंगे उनके लिए न कोई डर होगा और न वे ग़मगीन होंगे। और जो लोग इंकार करेंगे और हमारी निशानियों को झुठलाएँगे तो वही लोग दोज़ख़ (नर्क) वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। (34-39)

आदम को अल्लाह तआला ने फरिश्तों और इब्लीस के दर्मियान खड़ा किया और सज्दे की परीक्षा के ज़रिए आदम को व्यावहारिक रूप से बताया कि उनके लिए ज़मीन पर दो मुमकिन राहें होंगी। एक, फरिश्तों की तरह हुक्मे इलाही के सामने झुक जाना, चाहे इसका मतलब अपने से कमतर एक बंदे के आगे झुकना क्यों न हो। दूसरा, इब्लीस की तरह अपने को बड़ा समझना और दूसरे के आगे झुकने से इंकार कर देना। इंसान की पूरी ज़िंदगी इसी परीक्षा का स्थल है। यहां हर वक़्त आदमी को दो रवैयों में से किसी एक रवैये का चुनाव करना होता है। एक मलकूती रवैया यानी दुनिया की ज़िंदगी में जो मामला भी पेश आए, अल्लाह के हुक्म की तामील में आदमी हक और इंसाफ के आगे झुक जाए। दूसरा शैतानी रवैया, यानी जब कोई मामला पेश आए तो आदमी के अंदर हसद और घमंड की नफ़िसयात जाग उठे और वह उसके प्रभाव में आकर साहिबे मामला के आगे झुकने से इंकार कर दे।

निषिद्ध वृक्ष का मामला भी इसी किस्म का व्यावहारिक सबक है। इससे मालूम होता है कि इंसान के भटकने का प्रारंभ यहां से होता है कि वह शैतान के वरगलाने में आ जाए। और उस हद में कदम रख दे जिसमें जाने से अल्लाह ने मना किया है। 'मना किए हुए फल' को खाते ही आदमी अल्लाह की मदद, दूसरे शब्दों में जन्नत के अधिकार से महरूम हो जाता है।

ताहम यह महरूमी ऐसी नहीं है जिसकी तलाफी (क्षतिपूर्ति) न हो सकती हो। यह संभावना आदमी के लिए फिर भी खुली रहती है कि वह दुबारा अपने रब की ओर लौटे और अपने रवैये को दुरुस्त करते हुए अल्लाह से माफी का तलबगार हो। जब बंदा इस तरह पलटता है तो अल्लाह भी उसकी तरफ पलट आता है और उसे इस तरह पाक कर देता है गोया उसने गुनाह ही नहीं किया था।

किसी ईसानी आबादी में अल्लाह की दावत का उठना भी इसी किस्म की एक सख्त परीक्षा है। हक का दाओ (आह्वानकर्ता) भी गोया एक 'आदम' होता है जिसके सामने लोगों को झुक जाना है। अगर वह अपने घमंड और अपने तअस्सुब (विद्वेष) की वजह से उसका एतराफ न करें तो गोया कि उन्होंने शैतान की पैरवी की। खुदा इस दुनिया में खुले रूप में सामने नहीं आता वह अपने निशानियों के ज़रिए लोगों को जांचता है। जिसने खुदा की निशानी में खुदा को पाया, उसी ने खुदा को पाया और जिसने खुदा की निशानी में खुदा को नहीं पाया वह खुदा से महरूम रहा।

يٰۤاَيُّهَا اِسْرَآءِیْلُ اذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْ اَنْعَمْتُ عَلَیْكُمْ وَاَوْفُوا بِعَهْدِیْ اَوْفٍ
بِعَهْدِكُمْ وَاِلَآیَّآیْ فَآهْبُوْٓنَ ۝ وَاٰمِنُوْا بِمَا اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكْفُرُوْا
اَوَّلَ كَافِرٍ ۝ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰیٰتِیْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۝ وَاِلَآیَّآیْ فَاتَّقُوْٓنَ ۝ وَلَا تَسْـَٔوْا الْحَقَّ
بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْا الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ وَاَقِیْمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا
مَعَ الرَّاكِعِیْنَ ۝ اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَاسْتَعِیْزُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ وَاِذَا لَکِیْرَةٌ اِلَّا عَلٰی الْخٰشِعِیْنَ ۝
الَّذِیْنَ یُظٰٓئُوْنَ اَنْهُمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ۝ اِنَّهُمْ لَبِیْرٌ رَّجْعُوْنَ ۝

ऐ बनी इस्राईल! याद करो मेरे उस एहसान को जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया। और मेरे अहद (वचन) को पूरा करो, मैं तुम्हारे अहद को पूरा करूंगा। और मेरा ही डर रखो। और ईमान लाओ उस चीज़ पर जो मैंने उतारी है। तस्दीक (पुष्टि) करती हुई उस चीज़ की जो तुम्हारे पास है। और तुम सबसे पहले इसका इंकार करने वाले न बनो। और न लो मेरी आयतों पर मोल थोड़ा। और मुझ से डरो। और सही में ग़लत को न मिलाओ और सच को न छुपाओ हालांकि तुम जानते हो। और नमाज़ कायम करो और ज़कात अदा करो और झुकने वालों के साथ झुक जाओ। तुम लोगों से नेक काम करने को कहते हो और अपने आपको भूल जाते हो। हालांकि तुम किताब की तिलावत करते हो, क्या तुम समझते नहीं। और मदद चाहो सब्र और नमाज़ से, और बेशक वह भारी है मगर उन लोगों पर नहीं जो डरने वाले हैं। जो गुमान रखते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है और वे उसी की तरफ लौटने वाले हैं। (40-46)

किसी समुदाय पर अल्लाह का सबसे बड़ा इनाम यह है कि वह उसके पास अपना पैगम्बर भेजे और उसके ज़रिए उस समुदाय के लिए अबदी फलाह (चिरस्थायी सफलता एवं उद्धार) का रास्ता खोल दे। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की बेअसत (अल्लाह के दूत के रूप में प्रकटन) से पहले यह नेमत बनी इस्राईल (यहूदी समुदाय) को दी गई थी। मगर मुद्दत गुज़रने के बाद उनका दीन (धर्म) उनके लिए एक किस्म की तकलीदी रस्म (परम्परागत अनुकरण) बन गया था न कि शुज़री फैसले के तहत अपनाई गई एक चीज़। मुहम्मद (सल्ल०) की बेअसत ने हकीकत खोल दी। इनमें से जिन लोगों का शुऊर ज़िंदा था वे फ़ैरन आपकी सदाकत (सत्यवादिता) को पहचान गए और आपके साथी बन गए। और जिन लोगों के लिए उनका धर्म परम्परागत रीति-रिवाज बन चुका था उन्हें आपकी आवाज़ अपरिचित आवाज़ महसूस हुई। वे बिदक गए और आपके विरोधी बन कर खड़े हो गए।

अगरचे मुहम्मद (सल्ल०) की नुबुव्वत (ईशदूतत्व) के बारे में तौरात में इतनी वाज़ेह अलामतें थीं कि यहूद के लिए आपकी सदाकत को समझना मुश्किल न था। मगर दुनियावी मफाद और मस्तेहतों की ख़ातिर उन्होंने आपको मानने से इंकार कर दिया। सदियों के अमल से उनके यहां जो मज़हबी ढांचा बन गया था उसमें उन्हें सरदारी हासिल हो गई थी। वे अपने पूर्वजों के आसनों पर बैठ कर जनसाधारण के नायक बने हुए थे। मज़हब के नाम पर तरह-तरह के नज़राने (चढ़ावे आदि) साल भर उन्हें मिलते रहते थे। उन्हें नज़र आया कि अगर उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) को सच्चा मान लिया तो उनकी मज़हबी बड़ाई खत्म हो जाएगी। मफादात (स्वार्थी) का सारा ढांचा टूट जाएगा। यहूद को चूँकि उस वक्त अरब में मज़हब की नुमाईंदगी का मकाम हासिल था, लोग उनसे मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में पूछते। वे मासूमाना अंदाज़ में कोई ऐसी शोशे की बात (आलोचनात्मक बात) कह देते जिससे पैगम्बर का व्यक्तित्व और मिशन लोगों की निगाह में मुशतबह (संदिग्ध) हो जाएं। अपने वअजों (प्रवचनों) में वे लोगों से कहते कि हक़रस्त बनो और हक (सत्य) का साथ दो। मगर अमलन जब खुद उनके लिए हक का साथ देने का वक्त आया तो वे हक का साथ न दे सके।

खुदा की पुकार पर लबबैक (स्वीकारोक्ति) कहना जब इस कीमत पर हो कि आदमी को अपनी ज़िंदगी का ढांचा बदलना पड़े, मान-सम्मान के आसनों से अपने को उतारना हो तो यह वक्त उन लोगों के लिए बड़ा सख्त होता है जो इन्हीं सांसारिक वैभवों में अपना धार्मिक स्थान बनाए हुए हों। मगर वे लोग जो खुशूअ (निष्ठा) की सतह पर जी रहे हों उनके लिए ये चीज़ें रुकावट नहीं बनती। वे अल्लाह की याद में, अल्लाह के लिए खर्च करने में, अल्लाह के हुक्म के आगे झुक जाने में और अल्लाह के लिए सब्र करने में वे चीज़ें पा लेते हैं जो दूसरे लोग दुनिया के तमाशों में पाते हैं। वे खूब जानते हैं कि डरने की चीज़ अल्लाह का ग़ज़ब (प्रकोप) है न कि दुनियावी अंदेश।

يٰۤاَيُّهَا اِسْرَآءِیْلُ اذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْ اَنْعَمْتُ عَلَیْكُمْ وَاِنِّیْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَی الْعٰلَمِیْنَ ۝
وَاتَّقُوا یَوْمًا لَا تَجْرِیْ نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْءًا وَلَا یُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا
یُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ یُنصَرُوْنَ ۝ وَاِذْ یُنَبِّئُكُمْ مِّنْ اِلٍ فِرْعَوْنَ
یَسْـَٔوْكُمْ سَوَاءَ الْعَذَابِ یُذَبِّحُوْنَ اِبْنَاءَکُمْ وَیَسْتَحْیِیوْنَ نِسَاءَکُمْ وَفِیْ ذٰلِکُمْ

بَلَاءٍ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٍ ۖ وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَأَنجَيْنَاكُمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَانَ
وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۚ وَإِذْ وَعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ
مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ۚ ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۚ
وَإِذِ اتَّيْنَا مُوسَىٰ بِالْكِتَابِ وَالْفُرْقَانِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۚ وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ
لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ إِنَّمَا ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوبُوا إِلَىٰ بَارِيكُمْ
فَاتَّقُوا أَنْفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِيكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ ۚ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ
الرَّحِيمُ ۚ وَإِذْ قُلْتُمْ يٰمُوسَىٰ لَنْ نُّؤْمِنَ بِكَ حَتَّىٰ نَرَىٰ اللَّهَ جَهْرَةً ۚ فَآخَذْنَا
كَأْسَ الْصُعْقَةِ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۚ ثُمَّ بَعَثْنَاكَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِكَ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ۚ وَظَلَمْنَا عَلَيْكُمْ الْغَمَامَ وَانْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّاءَ وَالسَّلَوىٰ كُلُوا
مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۚ

ऐ बनी इस्राईल मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और इस बात को कि मैंने तुम्हें दुनिया वालों पर फज़ील दी। और डरो उस दिन से कि कोई जान किसी दूसरी जान के कुछ काम न आएगी। न उसकी तरफ से कोई सिफारिश कुबूल होगी। और न उससे बदले में कुछ लिया जाएगा और न उनकी कोई मदद की जाएगी। और जब हमने तुम्हें फिरऔन के लोगों से छुड़या। वे तुम्हें बड़ी तकलीफ देते थे। तुम्हारे बेटों को मार डालते और तुम्हारी औरतों को जीवित रखते। और इसमें तुम्हारे रब की तरफ से भारी आजमाइश थी। और जब हमने दरिया को फाड़कर तुम्हें पार कराया। फिर बचाया तुम्हें और डुबा दिया फिरऔन के लोगों को और तुम देखते रहे। और जब हमने मूसा से वादा किया चालीस रात का। फिर तुमने इसके बाद बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया और तुम ज़ालिम थे। फिर हमने इसके बाद तुम्हें माफ कर दिया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। और जब हमने मूसा को किताब दी और फ़ैसला करने वाली चीज़ ताकि तुम राह पाओ। और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम! तुमने बछड़े को माबूद बनाकर अपनी जानों पर जुल्म किया है। अब अपने पैदा करने वाले की तरफ मुतवज्जह हो और अपने मुजरिम्ओं को अपने हाथों से कत्ल करो। यह तुम्हारे लिए तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक बेहतर है। तो अल्लाह ने तुम्हारी तौबा कुबूल फरमाई। बेशक वही तौबा कुबूल करने वाला, रहम करने वाला

है। और जब तुमने कहा कि ऐ मूसा हम तुम्हारा यकीन नहीं करेंगे जब तक हम अल्लाह को सामने न देख लें तो तुम्हें बिजली ने पकड़ लिया और तुम देख रहे थे। फिर हमने तुम्हारी मौत के बाद तुम्हें उठाया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। और हमने तुम्हारे ऊपर बदलियों का साया किया और तुम पर मन्न व सलवा उतारा। खाओ सुथरी चीज़ों में से जो हमने तुम्हें दी हैं और उन्होंने हमारा कुछ नुक्सान नहीं किया, वे अपना ही नुक्सान करते रहे। (47-57)

यहूद को अल्लाह तआला ने तमाम दुनिया पर फज़ीलत (श्रेष्ठता) दी थी। यानी उन्हें अपने उस ख़ास काम के लिए चुना था कि उनके पास अपनी 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजे, और उनके ज़रिए दूसरी कौमों को अपनी मर्ज़ी से बाख़बर करे। फिर इस मंसब (पद) के अनुरूप उन्हें बहुत-सी नेमतें और सहूलतें दी गईं अपने दुश्मनों पर ग़लबा, वक्ती लगज़िशों (ग़लतियों) से दरगुज़र, असाधारण हालात में असाधारण मदद और 'खुदावंद की तरफ से उनके लिए जीविका का इंतज़ाम' आदि। इससे यहूद की अगली नस्लें इस ग़लतफहमी में पड़ गईं कि हम अल्लाह की ख़ास उम्मत (समुदाय) हैं। हम हर हाल में आख़िरत (परलोक) की कामयाबी हासिल करेंगे। मगर खुदा के इस तरह के मामलात किसी के लिए पुश्तैनी (पैतृक) नहीं होते। किसी समुदाय के अगले लोगों का फ़ैसला उनके पिछले लोगों की बुनियाद पर नहीं किया जाता, बल्कि हर फ़र्द का अलग-अलग फ़ैसला होता है। खुदा के इंसफ़ का दिन इतना सख़्त होगा कि वहां अपने अमल के सिवा कोई भी दूसरी चीज़ किसी के काम आने वाली नहीं।

सच्ची दीनदारी यह है कि आदमी अल्लाह के सिवा किसी को माबूद (पूज्य) न बनाए। अल्लाह को देखे बग़ैर अल्लाह पर यकीन करे। आख़िरत के हिसाब से डर कर ज़िंदगी गुज़ारे। पाक रोज़ी से अपनी ज़रूरतें पूरी करे। जिन लोगों पर उसे अधिक इख़्तियार हासिल है उन्हें ज़ुर्म करने से रोक दे।

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ
سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ وَسَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ۚ فَبَدَّلَ الَّذِينَ
ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا جَزَاءً مِّنَ
السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۚ وَإِذْ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِبْ
بِعَصَاكَ الْجَبْرَ فَإِنْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ
كُلُوا وَاشْرَبُوا مِنْ رِّزْقِ اللَّهِ وَلَا تَقْتُلُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۚ وَإِذْ قُلْتُمْ
يٰمُوسَىٰ لَنْ نُّصَدِّقَكَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُثْبِتُ

الْأَرْضُ مِنْ بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصِلِهَا قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ
الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ إِنْ هِيَ غَلِيظَةٌ أَوْ مَصْرَفَةٌ إِنْ لَكُمْ تَأْسَلْتُمْ وَصُرِيتُ
عَلَيْهِمُ الدِّيلَةُ وَالسَّكَنَةُ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا
يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيَّاتِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا
يَعْتَدُونَ ۝

और जब हमने कहा कि दाखिल हो जाओ इस शहर में और खाओ उसमें से जहां से
चाहो खुले रूप में और दाखिल हो दरवाजे में सिर झुकाए हुए और कहो कि ऐ रब!
हमारी ख़ताओं को बर्खा दे। हम तुम्हारी ख़ताओं को बर्खा देंगे और नेकी करने वालों
को ज्यादा भी देंगे। तो उन्होंने बदल दिया उस बात को जो उनसे कही गई थी दूसरी
बात से। इस पर हमने उन लोगों के ऊपर जिन्होंने जुल्म किया है उनकी नाफरमानी
के सबब से आसमान से अज़ाब (प्रकोप) उतारा। और जब मूसा ने अपनी कौम के लिए
पानी मांगा तो हमने कहा अपना असा (डंडा) पत्थर पर मारो तो उससे फूट निकले बारह
चश्मे (जलस्रोत)। हर गिरोह ने अपना-अपना घाट पहचान लिया। खाओ और पियो
अल्लाह के रिक़्क से और न फिरो ज़मीन में फसाद मचाने वाले बन कर। और जब तुमने
कहा ऐ मूसा हम एक ही किस्म के खाने पर हरगिज़ सब्र नहीं कर सकते। अपने रब
को हमारे लिए पुकारो कि वह निकाले हमारे लिए जो उगता है ज़मीन से साग, ककड़ी,
गेहूं, मसूर, प्याज़। मूसा ने कहा कि क्या तुम एक बेहतर चीज़ के बदले एक अदना
(तुच्छ) चीज़ लेना चाहते हो। किसी शहर में उतरो तो तुम्हें मिलेगी वह चीज़ जो तुम
मांगते हो। और डाल दी गई उन पर ज़िल्लत और मोहताज़ी और वे अल्लाह के ग़ज़ब
के मुस्तहिक हो गए। यह इस वजह से हुआ कि वे अल्लाह की निशानियों का इंकार
करते थे और नबियों को नाहक क़त्ल करते थे। यह इस वजह से कि उन्होंने नाफरमानी
की और वे हद पर न रहते थे। (58-61)

यहूद पर अल्लाह तआला ने खुसूसी इनामात किए। इसका नतीजा यह होना चाहिए था
कि वे खुदा के शुक्रगुज़ार बंदे बनते। मगर उन्होंने इसके विपरीत अमल किया। एक बड़ा शहर
उन्हें दे दिया गया और कहा गया कि इसमें दाखिल हो तो फातेहाना तमकनत (विजयी अहंकार)
से नहीं बल्कि इज़ज़ (विनम्रता) के साथ और अल्लाह से माफी मांगते हुए। मगर वे इसके बजाए
तफरीही बातें कहने लगे। उन्हें 'मन' और 'सलवा' की कुदरती ग़िज़ाएं दी गईं ताकि वे जीविका
की ज़दूदेजेहद से मुक्त होकर अल्लाह के हुक्मों के पालन में ज्यादा से ज्यादा मशगूल हों। मगर
उन्होंने चटपटे और मसालेदार खानों की मांग शुरू कर दी। उन्होंने दुनिया में ज़रूरत पर
कनाअत (संतोष) न करके लज़ज़त (भोग-विलास) की तलाश की। उनकी बेहिंसी इतनी बढ़ी

कि अल्लाह की खुली-खुली निशानियां भी उनके दिलों को पिघलाने के लिए काफी साबित न
हुई। उनकी तंबीह (सचेत करने) के लिए जो अल्लाह के बंदे उठे उनको उन्होंने ठुकराया यहां
तक कि मार डाला। यहूद में यह डिटाई इसलिए पैदा हुई कि उन्होंने समझ लिया कि वे
नजातयाप्ता (मोक्ष-प्राप्त) समुदाय हैं। मगर खुदा के यहां नस्ल और वर्ण के आधार पर कोई
फैसला होने वाला नहीं है। एक यहूदी को भी उसी खुदाई क़ानून से जांचा जाएगा, जिससे एक
ग़ैर-यहूदी को जांचा जाएगा। जन्नत उसी के लिए है जो जन्नत वाले अमल करे, न कि किसी
विशेष नस्ल या समुदाय के लिए।

ज़मीन के ऊपर शुक्र, सब्र, तवाज़ोअ (विनम्रता) और कनाअत (संतोष) के साथ रहना
ज़मीन की इस्लाह (सुधार) है। इसके विपरीत नाशुकी, बेसब्री, घमंड और हिर्स के साथ रहना
ज़मीन में फसाद बरपा करना है। क्योंकि इससे खुदा का कायम किया हुआ फ़ित्री निज़ाम
(सहज-स्वाभाविक व्यवस्था) टूटता है। यह हद से निकल जाना है, जबकि खुदा यह चाहता है
कि हर एक अपनी हद के अंदर अमल करे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَى وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝

यूं है कि जो लोग मुसलमान हुए और जो लोग यहूदी हुए और नसारा (ईसाई) और
सावी, इनमें से जो शरूस् ईमान लाया अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर और उसने
नेक काम किया तो उसके लिए उसके रब के पास अज़्र (प्रतिफल) है। और उनके लिए
न कोई डर है और न वे ग़मगीन होंगे। (62)

आयत में चार समूहों का ज़िक्र है। एक मुसलमान जो मुहम्मद (सल्ल०) की उम्मत
(अनुयायी समुदाय) हैं। दूसरे, यहूद जो अपने को मूसा (अलैहिस्सलाम) की उम्मत कहते हैं।
तीसरे, नसारा (ईसाई) जो मसीह (अलैहिस्सलाम) की उम्मत होने के दावेदार हैं। चौथे, सावी
जो अपने को याहिया (अलैहिस्सलाम) की उम्मत बताते थे और क़दीम ज़माने में इराक के इलाके
में आबाद थे। वे अहले किताब थे (यानी जिनके पास पहले खुदाई कलाम आ चुका था) और
कावे की तरफ रुख करके नमाज़ पढ़ते थे। मगर अब सावी समुदाय ख़त्म हो चुका है। दुनिया
में अब इसका कहीं वजूद नहीं।

यहां मुसलमानों को अलग नहीं किया है। बल्कि उनका और दूसरे पैगम्बरों से निस्वत रखने
वाली उम्मतों का ज़िक्र एक साथ किया गया है। इसका मतलब यह है कि समूह होने के एतबार
से अल्लाह के नज़दीक सब समान दर्जा रखते हैं। समूह के एतबार से एक समूह और दूसरे
समूह में कोई फर्क नहीं। सबकी नजात (मुक्ति, मोक्ष) का एक ही अटल उसूल है और वह
है ईमान और अमले सालेह (सत्कर्म)। कोई समूह अपने को चाहे मुसलमान कहता हो या वह

अपने को यहूदी या मसीही या साबी कहे, इनमें से कोई भी महज़ एक विशेष समूह होने के आधार पर खुदा के यहां कोई विशेष दर्जा नहीं रखता। दर्जे का एतबार इस पर है कि किसने खुदा की मंशा के मुताबिक अपनी अमली (व्यावहारिक) ज़िंदगी को ढाला।

नबी (ईशदूत) के ज़माने में जब उसके मानने वालों का समूह बनता है तो उसकी बुनियाद हमेशा ईमान और अमले सालेह (सल्कर्म) पर होती है। उस वक़्त ऐसा होता है कि नबी की पुकार को सुनकर कुछ लोगों के अंदर ज़ेहनी और फ़िक्री (वैचारिक) इंकिलाब आता है। उनके भीतर एक नया अज्म (संकल्प) जागता है। उनकी ज़िंदगी का नक्शा जो अब तक ज़ाती ख़ाहिशों की बुनियाद पर चल रहा था, वह खुदाई तालीमात की बुनियाद पर कायम होता है। यही लोग हकीकी मअनों में नबी की उम्मत होते हैं। उनके लिए नबी की ज़बान से आख़िरत की नेमतों की बशारत (शुभ सूचना) दी जाती है।

मगर बाद की नस्लों में सूरतेहाल बदल जाती है। अब खुदा का दीन (धर्म) उनके लिए एक किस्म की कौमी रिवायत (जातीय परम्परा) बन जाता है। जो बशारतें ईमान और अमल की बुनियाद पर दी गई थीं उन्हें महज़ गिरोही (समूहगत) ताल्लुक का नतीजा समझ लिया जाता है। वे गुमान कर लेते हैं कि उनके गिरोह का अल्लाह से कोई ख़ास रिश्ता है जो दूसरे गिरोहों से नहीं है। जो व्यक्ति इस विशेष गिरोह से संबंध रखे चाहे अकीदा (आस्था, विश्वास) और अमल के एतबार से वह कैसा ही हो बहरहाल उसकी नजात (मुक्ति) होकर रहेगी। जन्नत उसके अपने गिरोह के लिए और जहन्नम दूसरे गिरोहों के लिए है।

मगर अल्लाह का किसी गिरोह से विशेष रिश्ता नहीं। अल्लाह के यहां जो कुछ एतबार है वह सिर्फ़ इस बात का है कि आदमी अपनी सोच और अमल में कैसा है। आख़िरत में आदमी के अंजाम का फैसला उसके हकीकी किरदार (चरित्र-आचरण) की बुनियाद पर होगा। न कि गिरोही संबंधों के आधार पर।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا تَأْتِيكُمْ بِقُوَّةٍ وَادْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ۝ فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِّبَايِنٍ يَدِّيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝

और जब हमने तुमसे तुम्हारा अहद (वचन) लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर उठाया। पकड़ो उस चीज़ को जो हमने तुम्हें दी है मज़बूती के साथ, और जो कुछ इसमें है उसे याद रखो ताकि तुम बचो। इसके बाद तुम इससे फिर गए। अगर अल्लाह का

फ़ल और उसकी रहमत न होती तो ज़रूर तुम हलाक हो जाते। और उन लोगों का हाल तुम जानते हो जो सब्त (सनीचर) के मामले में अल्लाह के हुक्म से निकल गए तो हमने उनको कहा कि तुम लोग ज़लील बंदर बन जाओ। फिर हमने इसे इबरात बना दिया उन लोगों के लिए जो उसके रूबरू थे और उन लोगों के लिए जो इसके बाद आए। और इसमें हमने नसीहत रख दी डर वालों के लिए। (63-66)

बाइबल की रिवायतें बताती हैं कि मूसा (अलैहिस्सलाम) के ज़माने में जब यहूद से यह अहद (वचन) लिया गया कि वे खुदाई तालीमात (शिक्षाओं) पर ठीक-ठीक अमल करेंगे तो खुदा ने पहाड़ को उनके ऊपर उलट कर औंधा कर दिया और उनसे कहा कि तौरात को या तो कुबूल करो वरना यहीं तुम सब को हलाक कर दिया जाएगा। (तालमूद) यही मामला हर उस शख्स का है जो अल्लाह पर ईमान लाता है। ईमान लाना गोया अल्लाह से यह अहद करना है कि आदमी का जीना और मरना खुदा की मर्ज़ी के मुताबिक होगा। यह एक बेहद गंभीर इकरार है। इसमें एक तरफ आज़िज़ बंदा होता है और दूसरी तरफ वह खुदा होता है जिसके हाथ में ज़मीन व आसमान की ताकतें हैं। अगर बंदा अपने अहद पर पूरा उतरे तो उसके लिए खुदा की लाज़वाल नेमतें हैं। और अगर वह अहद करके उससे फिर जाए तो उसके लिए यह शदीद ख़तरा है कि उसका खुदा उसे जहन्नम में डाल दे जहां वह इस तरह जलता रहे कि इससे निकलने का कोई रास्ता उसके लिए बाकी न हो।

ईमानी अहद (वचन) के वक़्त मूसा (अलैहि०) की कौम पर जो कैफ़ियत गुज़री थी वही हर मोमिन बंदे से मल्लूब (अपेक्षित) है। हर शख्स जो अपने आप को अल्लाह के साथ ईमान की रस्सी में बांधता है, उसे इसकी संगीनी से इस तरह कांपना चाहिए गोया कि उसने अगर इस अहद के ख़िलाफ़ किया तो ज़मीन और आसमान उसके ऊपर गिर पड़ेंगे।

एक गिरोह जिसे अल्लाह की तरफ से शरीअत दी जाए उसकी गुमराही की एक सूरत यह होती है कि वह अमलन उसके ख़िलाफ़ चले और तावीलों (हीलों-बहानों) के ज़रिए यह ज़ाहिर करे कि वह ऐन खुदा के हुक्म पर कायम है। यहूद को यह हुक्म था कि वे सनीचर के दिन को रोज़ा और इबादत के लिए मख़सूस रखें। इस दिन किसी किस्म का कोई दुनियावी काम न करें। मगर उन्होंने इस हुक्म (मनाही) को बाकी नहीं रखा। वे दूसरे दिनों की तरह सनीचर के दिन भी अपने दुनियावी कारोबार करने लगे। अलबत्ता वे तरह-तरह की लफ़्ज़ी तावीलों से ज़ाहिर करते कि वे जो कुछ कर रहे हैं वह ऐन खुदा के हुक्म के मुताबिक है। उनकी यह ढिठाई अल्लाह को इतनी नापसंद हुई कि वे बंदर बना दिए गए। जब भी आदमी शरीअत से हटता है तो वह अपने आपको जानवरों की सतह पर ले जाता है जो किसी अज़्ज़ाकी ज़ाव्ते (नैतिक विधान) के पाबंद नहीं हैं। इसलिए जो लोग शरीअत के साथ इस किस्म का खेल करें उन्हें डरना चाहिए कि खुदा का कानून उन्हें उसी हैवानी ज़िल्लत में मुक्ताला न कर दे जिसमें यहूद अपने इसी किस्म के फ़ेअल (कृत्य) की वजह से मुक्ताला हुए।

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً ۖ قَالُوا أَنْتَسْخِذُنَا
 هَٰذَا ۖ قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ
 لَنَا مَا هِيَ ۖ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ ۖ عَوَانٌ بَيْنَ
 ذَٰلِكَ ۖ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ ۝ قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَهَا ۖ قَالَ
 إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفَرَاءُ فَاقِعٌ لَوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ ۝ قَالُوا ادْعُ لَنَا
 رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ ۖ إِنَّ الْبَقَرَ تَشْبَهُ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ
 لَمُهْتَدُونَ ۝ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذُلُولٌ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي
 الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لَا شَيْءَ فِيهَا قَالُوا لَئِنْ جِئْتَ بِالسَّحَابِ فَذَّبْهَا وَمَا كَادُوا
 يَفْعَلُونَ ۝ وَإِذْ قَاتَلْتُمُ نَفْسًا فَادْرَأْتُمْ فِيهَا وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ
 تَكْتُمُونَ ۝ فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا ۖ كَذَٰلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ وَيُرِيكُمْ
 آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि तुम एक गाय ज़बह करो। उन्होंने कहा : क्या तुम हमसे हंसी कर रहे हो। मूसा ने कहा कि मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूँ कि मैं ऐसा नादान बनूँ। उन्होंने कहा, अपने रब से दरखास्त करो कि वह हमसे बयान करे कि वह गाय कैसी हो। मूसा ने कहा, अल्लाह फरमाता है कि वह गाय न बूढ़ी हो न बच्चा, उनके बीच की हो। अब कर डालो जो हुक्म तुमको मिला है। उन्होंने कहा, अपने रब से दरखास्त करो, वह बयान करे कि उसका रंग कैसा हो। मूसा ने कहा, अल्लाह फरमाता है वह सुनहरे रंग की हो, देखने वालों को अच्छी मालूम होती हो। उन्होंने कहा, अपने रब से दरखास्त करो कि वह हमसे बयान कर दे कि वह कैसी हो। क्योंकि गाय में हमें शुबह पड़ गया है और अल्लाह ने चाहा तो हम राह पा लेंगे। मूसा ने कहा अल्लाह फरमाता है कि वह ऐसी गाय हो कि महनत करने वाली न हो, ज़मीन को जोतने वाली और खेतों को पानी देने वाली न हो। वह सालिम हो, उसमें कोई दाग न हो। उन्होंने कहा : अब तुम स्पष्ट बात लाए। फिर उन्होंने उसे ज़बह किया। और वे ज़बह करते नज़र न आते थे। और जब तुमने एक शख्स को मार डाला फिर एक-दूसरे पर इसका इज़ाम डालने लगे। हालांकि अल्लाह को ज़ाहिर करना मंज़ूर था जो कुछ तुम

छुपाना चाहते थे। पस हमने हुक्म दिया कि मारो उस मुर्दे को इस गाय का एक टुकड़ा। इस तरह ज़िंदा करता है अल्लाह मुर्दों को। और वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता है ताकि तुम समझो। (67-73)

मूसा (अलैहि०) के ज़माने में बनी इस्राईल में कल्ल की एक घटना घटी। कातिल का पता लगाने के लिए अल्लाह तआला ने नबी के वास्ते से उन्हें यह हुक्म दिया कि एक गाय ज़बह करो। और उसका गोश्त मृतक पर मारो। मृतक अल्लाह के हुक्म से कातिल का नाम बता देगा। यह एक मौजज़ाती (चमत्कारपूर्ण) तदबीर थी जो निम्न उद्देश्यों के लिए अपनाई गई

1. मिश्र में लंबी मुद्दत तक कयाम करने की वजह से बनी इस्राईल मिस्री तहज़ीब (सभ्यता) और रीति-रिवाजों से प्रभावित हो गए। मिस्री कौम गाय को पूजती थी। अतः मिस्रियों के असर से बनी इस्राईल में भी गाय के मुकद्दस (पवित्र) होने का ज़ेहन पैदा हो गया। जब उक्त घटना घटी तो अल्लाह ने चाहा कि इस घटना के माध्यम से उनके ज़ेहन से गाय की पवित्रता की धारणा को तोड़ा जाए। अतः कातिल का पता लगाने के लिए गाय के ज़िह की तदबीर अपनाई गई।

2. इसी तरह बनी इस्राईल ने यह ग़लती की थी कि फ़िक्ह (आचार-शास्त्र) की बारीकियों और बहस के नतीजों में खुदा के सादा दीन को एक बोझाल दीन बना डाला था। अतः उक्त घटना के माध्यम से उन्हें यह सबक दिया गया कि अल्लाह की तरफ से जो हुक्म आए उसे सादा अर्थों में लेकर फौरन उसकी तामील में लग जाओ। खोद-कुदेद का तरीका न अपनाओ। अगर तुमने ऐसा किया कि हुक्म की तफ़्सील जानने और उसकी हदों को सुनिश्चित करने के लिए मुशिगाफियां (कुतक) करने लगे तो सख़्त आज़माइश में पड़ जाओगे। इस तरह एक सादा हुक्म शर्तों का इज़ाफा होते-होते एक सख़्त हुक्म बन जाएगा जिसकी तामील (पालन) तुम्हारे लिए बेहद मुश्किल हो।

3. इस वाक्य के ज़रिए बनी इस्राईल को बताया गया है कि दूसरी ज़िंदगी उसी तरह एक मुमकिन ज़िंदगी है जैसे पहली ज़िंदगी। अल्लाह हर आदमी को मरने के बाद ज़िंदा कर देगा और उसे दुबारा एक नई दुनिया में उठाएगा।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارِ ۖ ذَٰلِكَ فَسُوءٌ وَلَٰئِنْ مِنَ
 الْحِجَارِ لَمَّا يَتَكَبَّرُ مِنْهُ الْأَكْهَرُ ۚ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَّا يَشَقُّ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ ۚ وَإِنَّ
 مِنْهَا لَمَّا يَحْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۖ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

फिर इसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए। पस वे पत्थर की तरह हो गए या इससे भी ज्यादा सख़्त। पत्थरों में कुछ ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं। कुछ

पत्थर फट जाते हैं और उनसे पानी निकल आता है। और कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह इससे बेखबर नहीं जो तुम करते हो। (74)

खुदा के हुक्म के बारे में जो लोग बहसों और तावीलें करें उनके अंदर धीरे-धीरे बेहिंसी (संवेदनहीनता) का मर्ज पैदा हो जाता है। उनके दिल सख्त हो जाते हैं। खुदा का नाम सबसे बड़ी हस्ती का नाम है। आदमी के अंदर ईमान ज़िंदा हो तो खुदा का नाम उसे हिला देता है। बोलने से ज्यादा उसे चुप लग जाती है। मगर जब दिलों में जुमूद (जड़ता) और बेहिंसी आती है तो खुदा की बातों में भी उसी किस्म की बहसों और तावीलें शुरू कर दी जाती हैं जो आम इंसानी कलाम में की जाती हैं। इस किस्म का अमल उनकी बेहिंसी में और इज़ाफा करता चला जाता है। यहां तक कि उनके दिल पत्थर की तरह सख्त हो जाते हैं। अब खुदा का तसव्वुर (अवधारण) उनके दिलों को नहीं पिघलाता, वह उनके अंदर तड़प नहीं पैदा करता। वह उनकी रूह के भीतर कंपन पैदा करने का सबब नहीं बनता।

पत्थरों का ज़िक्र यहां तमसील (उदाहरण) के रूप में किया गया है। खुदा ने अपनी कायनात को इस तरह बनाया है कि वह आदमी के लिए इबरत और नसीहत का सामान बन गई है। यहां की हर चीज़ ख़ामोश मिसाल की ज़बान में उसी रब की मर्जी का अमली निशान है जो रब की मर्जी कुरआन में अल्फ़ाज़ (शब्दों) के ज़रिए बयान की गई है।

पत्थरों के ज़रिए खुदा ने अपनी दुनिया में जो तमसीलात कायम की हैं उनमें से तीन चीज़ों की तरफ इस आयत में इशारा किया गया है।

पहाड़ों पर एक चीज़ यह देखने को मिलती है कि पत्थरों के अंदर से पानी के स्रोत बहते रहते हैं जो अंततः मिलकर नदी का रूप अपना लेते हैं। यह उस इंसान की तमसील है जिसके दिल में अल्लाह का डर बसा हुआ हो और वह आंसुओं के रूप में उसकी आंखों से बह पड़ता हो।

दूसरी मिसाल उस पत्थर की है जो बज़ाहिर सूखी चट्टान मालूम होता है। मगर जब तोड़ने वाले उसे तोड़ते हैं तो मालूम होता है कि उसके नीचे पानी का बड़ा ज़खीरा (भंडार) मौजूद था। ऐसी चट्टानों को तोड़कर कुवें बनाए जाते हैं। यह उस इंसान की तमसील है जो बज़ाहिर खुदा से दूर मालूम होता था। इसके बाद उस पर एक हादसा गुज़रा। इस हादसे ने उसकी रूह को हिला दिया। वह आंसुओं के सैलाब के साथ खुदा की तरफ दौड़ पड़ा।

पत्थरों की दुनिया में तीसरी मिसाल भू-स्खलन (Landslide) की है। यानी पहाड़ों के ऊपर से पत्थर के टुकड़ों का लुढ़क कर नीचे आ जाना। यह उस इंसान की तमसील है जिसने किसी इंसान के मुकाबले में ग़लत रवैया अपनाया। इसके बाद उसके सामने खुदा का हुक्म पेश किया गया। खुदा का हुक्म सामने आते ही वह ढह पड़ा। इंसान के सामने वह झुकने के लिए तैयार न था। मगर जब इंसान का मामला खुदा का मामला बन गया तो वह आजिज़ाना तौर पर (समर्पण भाव से) उसके आगे गिर पड़ा।

اَفَتَطْمَعُونَ اَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ يَحَرُّونَ عَنْهُ مِنْ بَعْدِ مَا عَقِلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ وَاِذَا الْقَوَالِيْنُ اُنْمُوْا اَلْوَاۡمِثًا ۖ وَاِذَا اَخْلَا بَعْضُهُمْ اِلَىٰ بَعْضٍ قَالُوْا اَلَا اُنْحَدُّوْا عَنْكُمْ بِمَا فَعَلَ اللّٰهُ عَلَیْكُمْ لِيَاْجُزَّوْكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ ۖ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَاَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝

क्या तुम यह उम्मीद रखते हो कि ये यहूद तुम्हारे कहने से ईमान ले आएंगे। हालांकि इनमें से कुछ लोग ऐसे हैं कि वे अल्लाह का कलाम सुनते थे और फिर उसे बदल डालते थे समझने के बाद, और वे जानते हैं। जब वे ईमानवालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हुए हैं। और जब आपस में एक-दूसरे से मिलते हैं तो कहते हैं : क्या तुम उन्हें वे बातें बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली हैं कि वे तुम्हारे रब के पास तुमसे हुज्जत करें। क्या तुम समझते नहीं। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह को मालूम है जो वे छुपाते हैं और जो वे ज़ाहिर करते हैं। (75-77)

मदीने के लोग जो मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान लाए थे, उनके इतने जल्दी आप को पहचान लेने और आपको मान लेने का एक सबब यह था कि वह अपने यहूदी पड़ोसियों से अक्सर सुनते रहते थे कि एक आखिरी नबी आने वाले हैं। इस कारण मुहम्मद (सल्ल०) के आने की खबर उनके लिए एक मानूस (परिचित) खबर थी। ये मुसलमान स्वाभाविक रूप से इस उम्मीद में थे कि जिन यहूदियों की बातें सुनकर उनके दिल के अंदर इस्लाम कुबूल करने का इब्तिदाई जज्बा उभरा था, वे यकीनन खुद भी आगे बढ़कर इस पैगम्बर का साथ देंगे। अतः वे पुरजोश तौर पर इन यहूदियों के पास इस्लाम का पैग़ाम लेकर जाते और उनका आह्वान करते कि वे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान लाकर आप (सल्ल०) का साथ देने वाले बनें।

मगर मुसलमानों को उस वक्त सख्त धक्का लगता जब वे देखते कि उनकी उम्मीदों के विपरीत यहूद उनके आह्वान को स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। इसके नतीजे में एक और नज़ाकत पैदा हो रही थी। जो लोग मुहम्मद (सल्ल०) से दुश्मनी और द्वेष रखते थे वे मुसलमानों से कहते कि पैग़म्बर इस्लाम का मामला इतना यकीनी नहीं जितना तुम लोगों ने समझ लिया है। यदि वह इतना यकीनी होता तो ये यहूदी उलेमा (विद्वान) ज़रूर उनकी ओर दौड़ पड़ते। क्योंकि वे आसमान की किताबों (दिव्य ग्रंथों) के बारे में तुमसे ज्यादा जानते हैं।

मगर किसी बात को कुबूल करने के लिए उस बात का जानना काफ़ी नहीं है। बल्कि उस बात के बारे में गंभीर होना ज़रूरी है। यहूद का हाल यह था कि उन्होंने खुद अपने पास की उन किताबों में तब्दीलियां कर डालीं जिन्हें वे आसमानी किताबें मानते थे। अपनी

मुकद्दस किताबों (धर्म ग्रंथों) में वे जिस बात को अपनी ख्वाहिश के खिलाफ देखते उसमें संशोधन या परिवर्तन करके उसे अपनी ख्वाहिश के मुताबिक बना लेते। वे अपने दीन (धर्म) को अपने सांसारिक हितों के अधीन बनाए हुए थे। जो लोग अपने अमल से इस किस्म की गैर-संजीदगी का सबूत दे रहे हों, वे अपने से बाहर किसी हक को मानने पर कैसे राज़ी हो जाएंगे।

कोई बात चाहे कितनी ही बरहक (सत्यवादी) हो अगर आदमी उसका इंकार करना चाहे तो वह इसके लिए कोई न कोई तावील (हीला-बहाना) ढूँढ लेगा। इस तावील के आखिरी रूप का नाम तहरीफ (संशोधन परिवर्तन) है। इस तर्जोअमल का नतीजा यह होता है कि अल्लाह के मामले की संगीनी आदमी के दिल से निकल जाती है। वह खुदा के हुक्म को सुनता है मगर लफ्जी तावील करके मुतमइन (संतुष्ट) हो जाता है कि उसका अपना मामला इस हुक्म की ज़द में नहीं आता। वह खुदा को मानता है मगर उसकी बेहिसी (संवेदनहीनता) उसे ऐसे कामों के लिए ढीठ बना देती है जो कोई ऐसा आदमी ही कर सकता है जो न खुदा को मानता हो और न यह जानता हो कि उसका खुदा उसे देख रहा है और उसकी बातों को सुन रहा है।

وَمِنْهُمْ أُمِّيُونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَاقٍ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿١﴾
 قَوْلِ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ
 اللَّهِ لِيُشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا قَوْلِ لَهُمْ مِمَّا كَتَبْتُ بَيْنَ يَدَيْهِمْ وَوَيْلٌ لَهُمْ
 مِمَّا يَكْسِبُونَ ﴿٢﴾ وَقَالُوا لَنْ تَسْتَأْذِنَنَا إِلَّا بِكَمَالٍ مُتَعَدِّدَةٍ قُلْ أَسْأَلُكُمْ
 عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَكُمْ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا
 تَعْلَمُونَ ﴿٣﴾ بَلَى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ فَلَوْلِكَ آصْحَابُ
 النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٤﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ
 آصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥﴾

और उनमें अनपढ़ हैं जो नहीं जानते किताब को मगर आरज़ुएं। इनके पास गुमान के सिवा और कुछ नहीं। पस खराबी है उन लोगों के लिए जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिव से है। ताकि इसके ज़रिए थोड़ी-सी पूंजी हासिल कर लें। पस खराबी है उस चीज़ की बदौलत जो उनके हाथों ने लिखी। और उनके लिए खराबी है अपनी इस कमाई से। और वे कहते हैं हमें दोज़ख़ की आग नहीं छुएगी मगर गिनती के कुछ दिन। कहो क्या तुमने अल्लाह के

पास से कोई अहद (वचन) ले लिया है कि अल्लाह अपने अहद के खिलाफ नहीं करेगा। या अल्लाह के ऊपर ऐसी बात कहते हो जो तुम नहीं जानते। हां जिसने कोई बुराई की और उसके गुनाह ने उसे अपने घेरे में ले लिया। तो वही लोग दोज़ख़ वाले हैं वे इसमें हमेशा रहेंगे। और जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए, वे जन्नत वाले लोग हैं, वे इसमें हमेशा रहेंगे। (78-82)

आरज़ुओं (अमानी) से आशय वे झूठे किस्से-कहानियां हैं जो यहूद ने अपने धर्म के बारे में गढ़ रखी थीं और जो अपनी ज़ाहिर फरेबी की वजह से अवाम में खूब फैल गई थीं। इन किस्से कहानियों का खुलासा यह था कि जहन्नम की आग यहूद के लिए नहीं है। उनमें अपने पूर्वजों से जोड़कर ऐसी बातें मिलाई गई थीं जिससे यह साबित हो कि बनी इस्राईल अल्लाह के खास बंदे हैं। वे जिस धर्म को मानते हैं उसमें ऐसे जादुई गुण छुपे हुए हैं कि उसकी मामूली-मामूली चीज़ें भी आदमी को जहन्नम की आग से बचाने और जन्नत के बाग़ों में पहुंचा देने के लिए काफी हैं।

सस्ती नजात (मुक्ति) के ये पवित्र नुस्खे अवाम के लिए बहुत कशिश रखते थे। क्योंकि इसमें उन्हें अपनी इस खुशख़्याली की तस्दीक मिल रही थी कि उन्हें अपनी गैर-ज़िम्मेदाराना ज़िंदगी पर रोक लगाने की ज़रूरत नहीं। वे किसी जद्दोज़ेहद के बग़ैर मात्र टोने-टोटके की बरकत से जन्नत में पहुंच जाएंगे। अतः जो यहूदी विद्वान पूर्वजों के हवाले से यह खुशकुन कहानियां सुनाते थे उन्हें लोगों के बीच ज़बरदस्त मकबूलियत हासिल हुई। आख़िरत (परलोक) के मामले को आसान बनाना उनके लिए शानदार दुनियावी तिजारत का ज़रिया बन गया। उनके पास अवाम की भीड़ जमा हो गई। उनके ऊपर नज़रानों (चढ़ावों) की बारिश होने लगी। वे लोगों को मुफ्त जन्नत हासिल करने का रास्ता बताते थे। लोगों ने इसके बदले में उनके लिए अपनी तरफ से मुफ्त दुनिया फ़ाहम कर दी।

यही हर दौर में धर्म-ग्रंथों की धारक कौमों का रोग रहा है। जो लोग इस किस्म के लज़ीज़ ख़्वाबों में जी रहे हों, जो यह समझ बैठे हों कि कुछ रस्मी आमांल (कर्मकांडों) के सिवा उन पर किसी ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं है, जो इस खुशगुमानी में मुब्तला हों कि उनके सारे हुक्क खुदा के यहां हमेशा के लिए महफूज़ हो चुके हैं, ऐसे लोग सच्चे दीन के आव्हान को कभी गवारा नहीं करते। क्योंकि ऐसी बातें उन्हें अपनी मीठी नौद को ख़राब करती हुई नज़र आती हैं। वे उन्हें ज़िंदगी की खुली हकीकतों के सामने खड़ा कर देती हैं।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنْ بُنَيِّ إِسْرَءِيلَ أَلَّا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا
 وَذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
 وَآتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنتُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿١﴾

और जब हमने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत नहीं करोगे और नेक सुलूक करोगे मां-बाप के साथ, रिश्तेदारों के साथ,

यतीमों और मस्कीनों के साथ। और यह कि लोगों से अच्छी बात कहो। और नमाज़ कायम करो और ज़कात अदा करो। फिर तुम इससे फिर गए सिवा थोड़े लोगों के। और तुम इकार करके इससे हट जाने वाले लोग हो। (83)

इंसान के ऊपर अल्लाह का पहला हक यह है कि वह अल्लाह का इबादतगुज़ार बने और उसके साथ किसी को शरीक न करे। दूसरा हक बंदों के साथ हुस्ने सुलूक (सद्ब्यवहार) है। इस हुस्ने सुलूक का आगाज़ अपने माँ-बाप से होता है और फिर रिश्तेदारों और पड़ोसियों से गुज़रकर उन तमाम इंसानों तक पहुँच जाता है जिनसे अमली ज़िंदगी में संबंध बनते हैं। एक इंसान और दूसरे इंसान के दर्मियान जब भी कोई मामला पड़े तो वहाँ एक ही बर्ताव अपने भाई के साथ दुरुस्त है। और वह वही है जो ईसाफ और खैरखाही (परहित) के मुताबिक हो।

इस मामले में आदमी का अस्ल इम्तहान 'यतीमों और मस्कीनों' या दूसरे शब्दों में कमज़ोर लोगों के साथ होता है। क्योंकि जो ताकतवर है उसका ताकतवर होना खुद इस बात की ज़मानत है कि लोग उसके साथ हुस्ने सुलूक करें। मगर कमज़ोर आदमी के साथ हुस्ने सुलूक के लिए इस किस्म का कोई अतिरिक्त प्रेरक नहीं है। इसलिए सबसे ज्यादा हुस्ने सुलूक जहाँ अपेक्षित है वे कमज़ोर लोग हैं। हकीकत यह है कि जहाँ हर चीज़ की नफ़ी (अभाव) हो जाती है वहाँ खुदा होता है। ऐसे आदमी के साथ वही शख्स हुस्ने सुलूक करेगा जो वाकई अल्लाह की खुशनूदी के लिए ऐसा कर रहा हो। क्योंकि वहाँ कोई दूसरा मुहरिक (प्रेरक) मौजूद ही नहीं।

जब मामला कमज़ोर आदमी से हो तो विभिन्न कारणों से हुस्ने सुलूक का शुऊर दब जाता है। कमज़ोर आदमी को मदद दी जाती है। इसका नतीजा यह होता है कि पाने वाले के मुकाबले में देने वाला अपने को कुछ ऊँचा समझने लगता है। यह नपिसयात कमज़ोर आदमी की इज़्ज़ते नफ्स (स्वाभिमान) को मलहूज़ रखने में रुकावट बन जाती है। कमज़ोर की तरफ से अपेक्षित विनम्रता प्रकट न हो तो फौरन उसे अयोग्य समझ लिया जाता है और इसका प्रदर्शन विभिन्न तकलीफदेह सूरतों में होता रहता है। एक-दो बार मदद करने के बाद यह ख़्याल होता है कि यह शख्स मुस्तकिल तौर पर मेरे सर न हो जाए। इसलिए उससे छुट्टी पाने के लिए उसके साथ ग़ैर-शरीफाना अंदाज़ अपनाया जाता है। वग़ैरह

भली बात बोलना तमाम आमाल का खुलासा (सार) है। एक हकीकती खैरखाही का कलामा (बोल) कहना आदमी के लिए हमेशा सबसे ज्यादा दुश्वार होता है। आदमी अच्छी-अच्छी तकरीरें करता है। मगर जब एक अच्छी बात किसी दूसरे के एतराफ (स्वीकार) के समानार्थी हो तो आदमी ऐसी अच्छी बात मुँह से निकालने के लिए सबसे ज्यादा कंजूस होता है। सामने का आदमी यदि कमज़ोर है तो उसके लिए शराफ़त के अल्फ़ाज़ बोलना भी वह ज़रूरी नहीं समझता। अगर किसी से शिकायत या नाराज़गी पैदा हो जाए तो आदमी समझ लेता है कि वह ईसाफ के हर खुदाई हुक्म से उसे मुस्तसना (अपवाद) करने में हक बजानिब है।

وَاِذَا اخَذْنَا مِنْكُمْ اِمِيْثًا قُلْنَا لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تَخْرُجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۚ ثُمَّ اَنْتُمْ هٰؤُلَاءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَتَخْرُجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ تَظْهَرُوْنَ عَلَيْهِم بِاِلٰهِيْهِمُ الْعَدُوْنَ وَاِنْ يَّاتُوْكُمْ اُسْرٰى تَفْدُوْهُمْ وَهُوَ حَرْمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ اَفْتَوْمُوْنَ بِبَعْضِ الْكُذْبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ فَاِجْزَاءُ مِّنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ اَلَا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلَى اَشَدِّ الْعَذَابِ ۚ وَمَا لِلّٰهِ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوْا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ فَلَا يَخَفَتْ عَنْهُمْ الْعَذَابُ ۚ وَلَا هُمْ يُنصَرُوْنَ ۝

ع

और जब हमने तुमसे यह अहद (वचन) लिया कि तुम अपनों का खून न बहाओगे। और अपने लोगों को अपनी बस्तियों से नहीं निकालोगे। फिर तुमने इकार किया और तुम इसके गवाह हो। फिर तुम ही वे हो कि अपनों को कत्ल करते हो और अपने ही एक गिरोह को उनकी बस्तियों से निकालते हो। इनके मुकाबले में इनके दुश्मनों की मदद करते हो गुनाह और जुल्म के साथ। फिर अगर वे तुम्हारे पास कैद होकर आते हैं तो तुम फिदया (अर्थदण्ड) देकर उन्हें छुड़ाते हो। हालांकि खुद इनका निकालना तुम्हारे ऊपर हराम था। क्या तुम किताबे इलाही के एक हिस्से को मानते हो और एक हिस्से का इंकार करते हो। पस तुममें से जो लोग ऐसा करें उनकी सज़ा इसके सिवा क्या है कि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में रुस्वाई हो और कियामत के दिन इन्हें सख्त अज़ाब में डाल दिया जाए। और अल्लाह उस चीज़ से बेख़बर नहीं जो तुम कर रहे हो। यही लोग हैं जिन्होंने आख़िरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी ख़रीदी। पस न इनका अज़ाब हल्का किया जाएगा और न इन्हें मदद पहुंचेगी। (84-86)

प्राचीन मदीने के चारों तरफ यहूद के तीन कबीले आबाद थे बनू नज़ीर, बनू कुरैज़ा और बनू कैनुकाअ। ये सब मूसवी शरीअत को मानते थे। मगर उनके जाहिली तअस्सुबात (विद्वेष) ने उन्हें अलग-अलग गिरोहों में बांट रखा था। अपनी दुनियावी सियासत के तहत वे मदीने के मुशरिक (बहुदेववादी) कबीलों औस और खज़रज के साथ मिल गए थे। बनू नज़ीर और बनू कुरैज़ा ने कबीला औस का साथ पकड़ लिया था। बनू कैनुकाअ कबीला खज़रज का सहयोगी बना हुआ था। इस तरह दो गिरोह बन कर वे आपस में लड़ते रहते थे। जंग बिआस इसी किस्म की एक जंग थी जो हिज़रते नबवी (हज़रत मुहम्मद सल्ल० के मदीना प्रस्थान) से पांच साल पहले हुई थी। इन लड़ाइयों में यहूद मुशरिक कबीलों के साथ मिल कर दो मोर्चे बना लेते। एक

मोर्चे में शामिल होने वाले यहूदी दूसरे मोर्चे में शामिल होने वाले यहूदियों को कत्ल करते और उन्हें उनके घरों से बेघर कर देते। फिर जब जंग खत्म हो जाती तो वे तौरात का हवाला देकर अपने सहधर्मियों से चंद की अपीलें करते ताकि अपने गिरफ्तार भाइयों को, फिदया (हर्जाना) देकर मुशरिक कबीलों के हाथ से छुड़ाया जा सके। इंसान के जान व माल के एहताराम के बारे में वे खुदा के हुक्म को तोड़ते और फिर अपनी ज़ालिमाना सियासत का शिकार होने वालों के साथ दिखावटी हमदर्दी करके ज़ाहिर करते कि वे बहुत धार्मिक हैं।

यह ऐसा ही है जैसे एक शख्स को नाहक कत्ल कर दिया जाए और उसके बाद शरजी तरीके पर उसकी नमाज जनाजा पढ़ी जाए। शरीअत के अस्ली और असासी (आधारभूत) अहकाम आदमी से जाहिली ज़िंदगी छोड़ने के लिए कहते हैं। वह उसकी ख्वाहिशें नफ्स (मनोइच्छाओं) से टकराते हैं। वह उसकी दुनियादाराना सियासत पर रोक लगाते हैं। इसलिए आदमी इन अहकाम को नजरअंदाज करता है। वह हकीकी दीनदारी के जुग़ में अपने को डालने को तैयार नहीं होता। अलबत्ता कुछ मामूली और नुमाइशी चीजों की धूम मचाकर यह जाहिर करता है कि वह खुदा के दीन पर पूरी तरह कायम है। मगर वह खुदा के दीन का खुदसाखा (स्वनिर्मित) एडीशन तैयार करना है। यह दीन के उखरवी (परलोकवादी) पहलू को नजरअंदाज करना है और दीन के कुछ वे पहलू जो अपने अंदर दुनियावी रौनक और शोहरत रखते हैं उनमें दीनदारी का कमाल दिखाना है। दीन में इस किस्म की जसासत (दुस्साहस) आदमी को अल्लाह के ग़जब का मुस्तहिक बनाती है न कि अल्लाह के इनाम का।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَفَقَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَى أَنْفُسُكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ ۝ وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ بَلْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلًا مَّا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذْرٌ أَعْرَفُوا ۝ بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ أَن يَكْفُرُوا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ بَغْيًا أَنْ يَنْزِلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ بَاءً وَغَضَبٍ عَلَى غَضَبٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝

और हमने मूसा को किताब दी और इसके बाद पे दरपे रसूल भेजे। और ईसा बिन मरयम को खुली-खुली निशानियां दीं और रूहे पाक से उसकी ताईद की। तो जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास वह चीज लेकर आया जिसे तुम्हारा दिल नहीं चाहता था तो तुमने धमंड किया। फिर एक जमाअत को झुठलाया और एक जमाअत को मार डाला।

और यहूद कहते हैं कि हमारे दिल महफूज (सुरक्षित) हैं। नहीं, बल्कि अल्लाह ने उनके इंकार की वजह से उन पर लानत कर दी है। इसलिए वे बहुत कम ईमान लाते हैं। और जब आई अल्लाह की तरफ से उनके पास एक किताब जो सच्चा करने वाली है उसे जो उनके पास है और वे पहले से मुंकिरों पर फतह मांगा करते थे। फिर जब आई उनके पास वह चीज जिसे उन्होंने पहचान रखा था तो उन्होंने इसका इंकार कर दिया। पस अल्लाह की लानत है इंकार करने वालों पर। कैसी बुरी है वह चीज जिसमें उन्होंने अपनी जानों का मोल किया कि वे इंकार कर रहे हैं अल्लाह के उतारे हुए कलाम का इस ज़िद की बुनियाद पर कि अल्लाह अपने फल से अपने बंदों में से जिस पर चाहे उतारे। पस वे गुस्से पर गुस्सा कमा कर लाए और इंकार करने वालों के लिए जिल्लत का अज़ाब है। (87-90)

तौरात अल्लाह की किताब थी जो यहूद (यहूदी जाति) पर उतरी थी। मगर धीरे-धीरे तौरात की हैसियत उनके यहाँ कौमी तबर्क (जातीय शुभ वस्तु) की हो गई। कौमी अज़मत और नजात की अलामत के तौर पर यहूद अब भी उसे सीने से लगाए हुए थे। मगर रहनुमा किताब के मकाम से उसे उन्होंने हटा दिया था। मूसा (अलैहि०) के बाद बार-बार इनके दर्मियान अबिया (ईशदूत) उठते, मसूलन यूशअ नबी, दाऊद नबी, जकरिया नबी, याहिया नबी वगैरह। उनके आखिरी नबी ईसा (अलैहि०) थे। वे तमाम अबिया यहूद को यह नसीहत देने के लिए आए कि तौरात को अपनी अमली ज़िंदगियों में शामिल करो। मगर तौरात की पवित्रता पर ईमान रखने के बावजूद यह आवाज उनके लिए तमाम आवाजों से ज्यादा असहनीय साबित हुई। वे खुदा के नबियों को नबी मानने से इंकार करते, यहां तक कि उन्हें कत्ल कर डालते। इसकी वजह यह थी कि तौरात के नाम पर वे जिस ज़िंदगी को अपनाए हुए थे वह हकीकत में नफसानियत (मनोइच्छाओं) और दुनियापरस्ती की एक ज़िंदगी थी जिसके ऊपर उन्होंने खुदा की किताब का लेबल लगा लिया था। खुदा के नबी जब बेआमेज़ हक (विशुद्ध सत्य) की दावत पेश करते तो उन्हें नजर आता कि यह दावत उनकी मजहबी हैसियत को नकार रही है। अब उनके अंदर घमंड की नफिसयात जाग उठतीं। वे नबियों के एतराफ के बजाए उन्हें खत्म करने के दरपे हो जाते।

यही मामला अरब के यहूद ने मुहम्मद (सल्ल०) के साथ किया। वे अपनी धार्मिक पुस्तकों में आखिरी रसूल की भविष्यवाणी को देखकर कहते कि जब वह नबी आएगा तो हम उसके साथ मिलकर मुंकिरों और मुशरिकों को परास्त करेंगे। मगर उनकी यह बात महज एक झूठी तकरीर थी जो अपने को धर्म का संरक्षक जाहिर करने के लिए वे करते थे। अतः 'वह नबी' आया तो उनकी हकीकत खुल गई। उनके जाहिली तअस्सुवात (विद्वेष) अपने गिरोह से बाहर के एक नबी का एतराफ करने में रुकावट बन गए। कुरआन में आपकी सदाकत (सच्चाई) के बारे में जो वाज़ेह दलीलें दी जा रही थीं उनके जवाब से वे आजिज थे। इसलिए वे कहने लगे कि तुम्हारी जाहिर-फरेब बातों से प्रभावित होकर हम अपने पूर्वजों का दीन नहीं छोड़ सकते।

وَإِذْ أَقْبَلُ لَهُمْ إِمْنًا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا تَوْفُّوا مِنْ بِنَا أَنْزَلَ عَلَيْكَ وَكَفَرُوا
بِمَا وَرَاءَهُ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِمَا مَعَهُمْ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنْبِيَاءَ اللَّهِ مِنْ
قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَى بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ
مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ۖ وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ
خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأَشْرَبُوا فِي قُلُوبِهِمُ
الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ قُلْ بِسْمَايَا مَرْكُمُ بِهِ إِيَّاكُمْ أَنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ قُلْ إِنْ
كَانَتْ لَكُمْ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ خَالِصَةً مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ وَلَنْ يَتَمَنَّوَهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِالظَّالِمِينَ ۖ وَتَجَدَّيْتُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَى حَيَاتِهِ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا
يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرَ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُرَزَّازٍ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعْتَرَوْا
اللَّهُ بِصِيرٍ بِمَا يَعْمَلُونَ ۖ

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ

और जब उनसे कहा जाता है उस कलाम पर ईमान लाओ जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उस पर ईमान रखते हैं जो हमारे ऊपर उतरा है। और वे इसका इंकार करते हैं जो इसके पीछे आया है। हालांकि वह हक है और सच्चा करने वाला है उसे जो इनके पास है। कहो, अगर तुम ईमान वाले हो तो तुम अल्लाह के पैगम्बरों को इससे पहले क्यों कत्ल करते रहे हो। और मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियां लेकर आया। फिर तुमने उसके पीछे बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया और तुम जुल्म करने वाले हो। और जब हमने तुमसे अहद (वचन) लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर खड़ा किया जो हुक्म हमने तुम्हें दिया है उसे मजबूती के साथ पकड़ो और सुनो। उन्होंने कहा : हमने सुना और हमने नहीं माना। और उनके कुफ्र के सबब से बछड़ा उनके दिलों में रच-बस गया। कहो, अगर तुम ईमान वाले हो तो कैसी बुरी है वह चीज जो तुम्हारा ईमान तुम्हें सिखाता है। कहो, अगर अल्लाह के यहां आखिरत का घर ख़ास तुम्हारे लिए है, तो दूसरों को छोड़कर तुम मरने की आरजू करो अगर तुम सच्चे हो। मगर वे कभी इसकी आरजू नहीं करेंगे, इस सबब से वे जो अपने आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह ख़ुब जानता है जालिमों को। और तुम उन्हें जिद्दी का सबसे ज्यादा हरीस (लालसा रखने वाला) पाओगे, उन लोगों से भी ज्यादा जो मुशरिक हैं। इनमें से हर एक यह चाहता है कि हजार वर्ष की उम्र पाए। हालांकि इतना जीना भी उसे अजाब से बचा नहीं सकता। और अल्लाह देखता है जो कुछ वे कर रहे हैं। (91-96)

यहूद जो कुरआन की दावत (आह्वान) को मानने के लिए तैयार न हुए, इसकी वजह उनका यह एहसास था कि वे पहले से हक पर हैं और हकपरस्तों की सबसे बड़ी जमाअत (बनी इस्राईल) से संबंध रखते हैं। मगर यह दरअस्तल गिरोहपरस्ती थी जिसे उन्होंने हकपरस्ती के हम-मजना समझ रखा था। वे गिरोही हक को ख़ालिस हक का मक़म दिए हुए थे। यही वजह है कि हक (सत्य) जब अपने विशुद्ध रूप में जाहिर हुआ तो वे उसे लेने के लिए आगे न बढ़ सके। अगर ख़ालिस हक उनका मकसूद होता तो उनके लिए यह जानना मुश्किल न होता कि कुरआन का आना ख़ुद उनकी मुक़द्दस किताब तौरात की भविष्यवाणियों के मुताबिक है। और यह कि कुरआन के नज़ूल (अवतरण) के बाद अब कुरआन ही किताबे हक (दिव्य ग्रंथ) है न कि उनका अपना गिरोही धर्म।

उनका मामला दरहकीकत हकपरस्ती का मामला नहीं। इसका सबूत उनके अपने इतिहास में यह है कि उन्होंने ख़ुद अपने गिरोह के नबियों (मसलन हज़रत ज़करिया, हज़रत याहिया) को कत्ल किया जिन्होंने उनकी जिद्दियों पर तंकीद (आलोचना) की, जो उनके ख़िलाफ गवाही देते थे ताकि उन्हें ख़ुदा की तरफ बुलाएं। (तहमियाह 26 : 9)। हज़रत मूसा ने जो मौजजे (चमत्कार) पेश किए इसके बाद उनकी नुबुव्वत में कोई शुबह नहीं रह गया था। मगर कोहेतूर के चालीस दिनों के कयाम (वास) के जमाने में जब हज़रत मूसा का शख़्सी दबाव उनके सामने न रहा तो उन्होंने बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया। उनके सर पर पहाड़ खड़ा कर दिया गया, तब भी सिर्फ वकती तौर पर जान बचाने के लिए उन्होंने कह दिया कि हां हमने सुना। मगर इसके बाद उनकी अक्सरियत (बहुलसंख्या) बदस्तूर नाफरमानी की जिद्दी पर क़यम रही। अगर वे सचमुच ख़ुदापरस्त होते तो उनकी सारी तवज्जोह ख़ुदा की उस दुनिया की तरफ लग जाती जो मौत के बाद आने वाली है। मगर उनका हाल यह है कि वे सबसे ज्यादा मौजूदा दुनिया की मुहब्बत में डूबे हुए हैं।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلْجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ۖ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَ
رُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَلَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ۖ وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ
بَيِّنَاتٍ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ ۖ أَوَكُلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا تَبَدَّلَ فِيهِمْ
مِّنْهُمْ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ
مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ الْكِتَابَ أَنْ يَكْتُبَ اللَّهُ
وَرَاءَهُمْ

कहो कि जो कोई जिब्रील का मुखालिफ है तो उसने इस कलाम को तुम्हारे दिल पर अल्लाह के हुक्म से उतारा है, वह सच्चा करने वाला है उसे जो उसके आगे है और वह हिदायत और खुशखबरी है ईमान वालों के लिए। जो कोई दुश्मन हो अल्लाह का और उसके फरिश्तों का और उसके रसूलों का और जिब्रील व मीकाईल का तो अल्लाह ऐसे मुंकिरों का दुश्मन है। और हमने तुम्हारे ऊपर वाजेह निशानियां उतारीं और कोई इनका इंकार नहीं करता मगर वही लोग जो फासिक (अवज्ञाकारी) हैं। क्या जब भी वे कोई अहद (वचन) बाधेंगे तो उनका एक गिरोह उसे तोड़ फेंकेगा। बल्कि उनमें से अक्सर ईमान नहीं रखते। और जब उनके पास अल्लाह की तरफ से एक रसूल आया जो सच्चा करने वाला था उस चीज का जो उनके पास है तो उन लोगों ने जिन्हें किताब दी गई थी, अल्लाह की किताब को इस तरह पीठ पीछे फेंक दिया गया वे इसे जानते ही नहीं। (97-101)

प्राचीन काल में यहूद की सरकशी के नतीजे में बार-बार उन्हें सख्त सजाएं दी गईं। अल्लाह के तरीके के मुताबिक हर सजा से पहले पैगम्बरों की जवान से उसकी पेशगी खबर दी जाती। यह खबर अल्लाह की तरफ से जिब्रील फरिश्ते के जरिए पैगम्बर के पास आती और वह इससे अपनी कैम को आगाह करते। इस किस्म के वाक्यात में अस्ली सबक यह था कि आदमी को चाहिए कि वह अल्लाह की नाफरमानी से बचे ताकि वह अजाबे इलाही की जद में न आ जाए। मगर यहूद इन वाक्यात से इस किस्म का सबक न ले सके। इसके बजाए वे कहने लगे, जिब्रील फरिश्ता हमारा दुश्मन है वह हमेशा आसमान से हमारे खिलाफ अहकाम लेकर आता है। जब मुहम्मद (सल्ल०) ने एलान किया कि अल्लाह ने जिब्रील के जरिए मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी का उतरना) की है तो यहूद ने कहना शुरू किया जिब्रील तो हमारा पुराना दुश्मन है। यही वजह है कि नुबुव्वत जो सिर्फ इब्राहीमी गिरोह का हक था, इसे उसने एक अन्य कबीले के व्यक्ति तक पहुंचा दिया।

इस किस्म की निरर्थक बातें सिर्फ वही लोग करते हैं जो फिस्क (उद्धृष्टता) और क्वेद्री (उन्मुक्ता) की जिंदगी गुजार रहे हों। यहूद का हाल यह था कि वे नफसपरस्ती, आबाई तकलीद (पूर्वजों का अंधानुकरण), नस्ली और कौमी विद्वेष की सतह पर जी रहे थे और कुछ नुमाइशी किस्म के मजहबी काम करके जाहिर करते थे कि वे ऐन दीने खुदाय्दी पर कायम हैं। जो लोग इस किस्म की झूठी दीनदारी में मुक्ता हों, वे सच्चे और विशुद्ध धर्म का आह्वान सुन कर हमेशा बिगाड़ जाते हैं। क्योंकि ऐसा आह्वान उन्हें उनके गर्व और अहंकार के स्थान से उतारने के समानार्थी नजर आता है। वे उत्तेजनापूर्ण मानसिकता के तहत ऐसी बातें बोलने लगते हैं जो अभिव्यक्ति के एतबार से दुरुस्त होने के बावजूद हकीकत के एतबार से बिल्कुल अर्थहीन होती हैं। जाहिर है कि फरिश्तों का आना और रसूलों का मबऊस होना सब मुकम्मल तौर पर खुदाई मंसूबे के तहत होता है। ऐसी हालत में जब दलीलें यह जाहिर कर रही हों कि पैगम्बर अरबी (सल्ल०) के पास वही चीज आई है जो इब्राहीम, मूसा और ईसा पर आई थी और वह पिछले आसमानी सहीफों (दिव्य ग्रंथों) की भविष्यवाणियों के ऐन मुताबिक है तो यह स्पष्ट रूप से इस

बात का सुबूत है कि वह अल्लाह की तरफ से है। आदमी बहुत-सी बातें यह जाहिर करने के लिए बोलता है कि वह ईमान पर कायम है। हालांकि वे बातें सिर्फ इस बात का सुबूत होती हैं कि आदमी का ईमान और खुदापरस्ती से कोई तालुक नहीं है।

وَاتَّبِعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيْطَانُ عَلَىٰ مُلْكٍ سُلَيْمٍ ۖ وَكَفَرُوا سُلَيْمٍ وَلَكِنَّ
الشَّيْطَانُ كَفَرُوا يَعْلَمُونَ النَّاسَ السَّحَرَةُ وَمَا أُنْزِلَ عَلَى الْمَلَائِكِينَ بِبَابِلَ
هَارُوتَ وَهَارُوتَ ۖ وَمَا يَعْلَمِينَ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا
تَكْفُرْ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ وَمَا هُمْ بِضَارِينَ
بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا يَأْذِنُ اللَّهُ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوا
لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنْفُسَهُمْ
لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَآتَقَوْا لَشَوْبَةَ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ
لَّوْكَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

और वे उस चीज के पीछे पड़ गए जिसे शैतान सुलेमान की सल्तनत पर लगा कर पढ़ते थे। हालांकि सुलेमान ने कुफ्र नहीं किया बल्कि ये शैतान थे जिन्होंने कुफ्र किया वे लोगों को जादू सिखाते थे। और वे उस चीज में पड़ गए जो बाबिल में दो फरिश्तों हारुत और मारुत पर उतारी गई, जबकि उनका हाल यह था कि जब भी किसी को अपना यह फन (कला) सिखाते तो उससे कह देते कि हम तो आजमाइश के लिए हैं। पस तुम मुंकिर न बनो। मगर वे उनसे वह चीज सीखते जिससे मर्द और उसकी औरत के दर्मियान जुदाई डाल दें। हालांकि वे अल्लाह के इज़्न (आज्ञा) के बगैर इससे किसी का कुछ बिगाड़ नहीं सकते थे। और वे ऐसी चीज सीखते जो उन्हें नुस्सान पहुंचाए और नफा न दे। और वे जानते थे कि जो कोई इस चीज का खरीदार हो, आखिरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। कैसी बुरी चीज है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों को बेच डाला। काश वे इसे समझते। और अगर वे मोमिन बनते और तकवा (ईशभय) इस्तियार करते तो अल्लाह का बदला उनके लिए बेहतर था, काश वे इसे समझते। (102-103)

आसमानी किताब के धारक किसी गिरोह का बिगाड़ हमेशा सिर्फ एक होता है। आखिरत की नजात जो कि पूरी तरह नेक आमाल पर निर्भर है उसका राज बेअमली में तलाश कर लेना। अल्लाह का कलाम हकीकत में अमल की पुकार है। मगर जब कैम पर जवाल आता है तो उसके लोग मुकद्दस (पवित्र) कलाम को लिख लेने या जवान से बोल देने को हर किस्म की

बरकतों का रहस्यमयी नुस्खा समझ लेते हैं। यही वह मनोवैज्ञानिक धरातल है जिसके ऊपर जादू, तंत्र-मंत्र और अमलियात वजूद में आते हैं। फिर तंत्र-मंत्र जैसी चीजों से जन्मत हासिल करने वाले दुनिया को भी छू-मंत्र के जरिए हासिल करने की कोशिश में लग जाते हैं। बुजुर्गों से अमीदत (श्रद्धा) को नजात का जरिया समझने वाले रूहों से तअल्लुक कायम करके अपने दुनियावी मसाइल हल करने लगते हैं। विर्द और वजाइफ (तप-जप आदि) के तिलिस्माती असरात पर यकीन करने वाले सियासी चमत्कार दिखा कर मिल्लत की तामीर और दीन के अह्या (पुनरुत्थान) का मंसूबा बनाते हैं।

यहूद अपने जवाल (पतन) के बाद जब बेअमली और तोहमपरस्ती (अंधविश्वास) की इस कैफियत में मुत्तला हुए तो उनके दर्मियान ऐसे लोग पैदा हुए जो सहर और कहानत (जादू और तंत्र-मंत्र) की दुकान लगा कर बैठ गए। इन जालिमों ने अपने कारोबार को चमकाने के लिए अपने इस फन (कला) को सुलैमान (अलैहि०) की तरफ मंसूब कर दिया। उन्होंने कहना शुरू किया कि सुलैमान को जिन्यों और हवाओं पर जो असाधारण वर्चस्व प्राप्त था वह सब इल्मे सहर की बुनियाद पर था और यह सुलैमानी इल्म कुछ जिन्यों के जरिए हमें हासिल हो गया है। इस तरह सुलैमान की तरफ मंसूब होकर अमलियात का फन यहूद के अंदर बड़े पैमाने पर फैल गया।

लूत (अलैहि०) की कौम समलैंगिकता की बुराई में मुत्तला थी। इसलिए उनके यहां खूबसूरत लड़कों के रूप में फरिश्ते आए। इसी तरह यहूद की आजमाइश के लिए बाबिल में दो फरिश्ते भेजे गए जो दुरवेशों के भेष में अमलियात सिखाते थे। ताहम वे कहते रहते थे कि यह तुम्हारा इम्तहान है। मगर इस तंबीह के बावजूद वे इस फन पर टूट पड़े। यहां तक कि उन्होंने इसे नाजाइज उद्देश्यों में इस्तेमाल करना शुरू कर दिया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوا وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ
 أَلِيمٌ ۝ مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْكُمْ
 مِنْ خَيْرٍ مِنْ رَبِّكُمْ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ
 الْعَظِيمِ ۝ مَا نَسْخُ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِنْهَا أَوْ مِثْلَهَا ۚ أَلَمْ تَعْلَمِ
 أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ أَلَمْ تَعْلَمِ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
 وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۚ أَمْ تَرِيدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا
 رَسُولَكُمْ كَمَا سَأَلَ مُوسَى مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ يَتَّبِعْ لَ الْكَفْرِ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ
 ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝

ऐ ईमान वाले तुम 'राइना' न कहो, बल्कि 'उंजुरना' कहो और सुनो। और कुफ्र करने वालों के लिए दर्दनाक सजा है। जिन लोगों ने इंकार किया, चाहे अहले किताब हों या मुशरिकीन, वे नहीं चाहते कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे ख की तरफ से कोई भलाई उतरे। और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी रहमत के लिए चुन लेता है। अल्लाह बड़े फल वाला है। हम जिस आयत को मौफूक (निरस्त) करते हैं या भुला देते हैं तो इससे बेहतर या इस जैसी दूसरी लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखता है। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही के लिए आसमानों और जमीन की बादशाही है और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई दोस्त है और न कोई मददगार। क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से सवालात करो जिस तरह इससे पहले मूसा से सवालात किए गए। और जिस शख्स ने ईमान को कुफ्र से बदल दिया वह यकीनन सीधी राह से भटक गया। (104-108)

किसी को खुदा की तरफ से सच्चाई मिले और वह उसका दाजी (आह्वानकर्ता) बन कर खड़ा हो जाए तो लोग उसके मुखालिफ बन जाते हैं। क्योंकि उसके आह्वान में लोगों को अपनी हैसियत का नकार दिखाई देने लगता है। यहूद के लिए विरोध का यह सबब और भी शिद्दत के साथ मौजूद था। क्योंकि वे पैगम्बरी को अपना कौमी हक समझते थे। उनके लिए यह बात असहनीय थी कि उनके गिरोह के सिवा किसी और गिरोह में खुदा का पैगम्बर आए। यहूद मुहम्मद (सल्ल०) की दावत (आह्वान) के बारे में तरह-तरह की मजहबी बहसों छेड़ते ताकि लोगों को इस शुबह में डाल दें कि आप जो कुछ पेश कर रहे हैं वह महज एक शख्स की अपनी उपज है। वह खुदा की तरफ से आई हुई चीज नहीं है। इनमें से एक यह था कि कुरआन में कुछ कानूनी अहकाम तौरात से भिन्न थे। इन्हें देखकर वे कहते कि क्या खुदा भी हुक्म देने में गलती करता है कि एक बार एक हुक्म दे और इसके बाद उसी मामले में दूसरा हुक्म भेजे। इसी तरह के शुब्हात यहूद ने इतनी अधिकता से फैलाए कि खुद मुसलमानों में कुछ सादा-मिजाज लोग उनके बारे में अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) से सवालात करने लगे। इसके अलावा यह कि, जब यहूद आपकी मजलिस में बैठते तो ऐसे अल्फाज बोलते जिससे आपका बेहकीकत होना जाहिर होता। मसलन 'हमारी तरफ तवज्जोह कीजिए' के लिए अरबी भाषा में एक खास शब्द 'उंजुरना' था, मगर वे इसे छोड़कर 'राइना' कहते। क्योंकि थोड़ा-सा खीचकर इसे 'राईना' कह दिया जाए तो इसका अर्थ 'हमारे चरवाहे' हो जाता है। इसी तरह कभी अलिफ को दबाकर वे इसे 'राइन' कहते जिसका अर्थ 'अहमक' (मूर्ख) होता है।

हिदायत की गई कि (1) गुप्तगू में साफ अल्फाज इस्तेमाल करो। मुसतबह (संदिग्ध) अल्फाज मत बोलो जिसमें कोई बुरा पहलू निकल सकता हो। (2) जो बात कही जाए उसे गौर से सुनो और उसे समझने की कोशिश करो। (3) सवाल की कसरत (बहुलता) आदमी को सीधे रास्ते से भटका देती है। इसलिए सवाल-जवाब के बजाए इबरात और नसीहत का जेहन पैदा करो। (4) अपने ईमान की हिफाजत करो, ऐसा न हो कि किसी गलती की बुनियाद पर तुम अपने ईमान ही से महरूम (वंचित) हो जाओ। (5) दुनिया में किसी के पास कोई खैर देखो

तो हसद (ईर्ष्या) में मुक्तला न हो। क्योंकि यह अल्लाह की एक देन है, जो उसके फैसले के तहत उसके एक बंदे को पहुंचा है।

وَذَكِّرْهُمْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۖ وَمِنْ بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كُفْرًا ۖ أَحْسَدًا ۖ مَنْ عِنْدِ
أَنْفُسِهِمْ ۖ مَنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ فَأَعْفُوا وَاصْفَحُوا ۚ حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ
بِأَمْرِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَوَمَا
تُقَدِّرُوا لِأَنْفُسِكُمْ ۖ مَنْ خَيْرٌ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۖ
وَقَالُوا لَنْ يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا أَوْ نَصْرِيًّا ۚ تِلْكَ أَلَانِيَّتُهُمْ قُلْ هَاتُوا
بُرْهَانَكُمْ ۚ إِنَّ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ
فَلَكَ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۖ

बहुत से अहले किताब दिल से चाहते हैं कि तुम्हारे मोमिन हो जाने के बाद वे किसी तरह फिर तुम्हें मुंकिर बना दें, अपने हसद (ईर्ष्या) की वजह से, बावजूद यह कि हक उनके सामने वाजह हो चुका है। पस माफ करो और दरगुजर करो यहां तक कि अल्लाह का फैसला आ जाए। केसक अल्लाह हर चीज पर कुदस्त रखता है। और नमाज कयम करो और जकात अदा करो। और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे तुम अल्लाह के पास पाओगे। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह यकीनन उसे देख रहा है। और वे कहते हैं कि जन्नत में सिर्फ वही लोग जाएंगे जो यहूदी हों या ईसाई हों, यह महज उनकी आरजुए हैं। कहो कि लाओ अपनी दलील अगर तुम सच्चे हो। बल्कि जिसने अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया और वह मुख्तस भी है तो ऐसे शख्स के लिए अज्र है उसके रब के पास, इनके लिए न कोई डर है और न कोई ग़म। (109-112)

कुरआन की आवाज़ बहुत-से लोगों के लिए नामानूस (अपरिचित) आवाज थी ताहम इन्हीं में ऐसे लोग भी थे जो इसे अपने दिल की आवाज पाकर इसके दायरे में दाखिल होते जा रहे थे। यह सूरतेहाल यहूद के लिए असहनीय बन गई, क्योंकि यह एक ऐसी चीज की तरक्की के समान थी जिसे वे बेहकीकत समझ कर नजरअंदाज किए हुए थे। उन्होंने यह किया कि एक तरफ मुशरिकों को उभार कर उन्हें इस्लाम के खिलाफ जंग पर आमादा कर दिया, दूसरी तरफ वे नए इस्लाम कुबूल करने वालों को तरह-तरह के शुब्हात और मुगालतों (भ्रमों) में डालते, ताकि वे कुरआन और कुरआन पेश करने वाले से बदजन हो जाएं और दुबारा अपने आबाई (पितृक) मजहब की तरफ वापस चले जाएं। इसके नतीजे में मुसलमानों के अंदर यहूद के खिलाफ

इश्तेआल (आक्रोश) पैदा होना फितरी था। मगर अल्लाह ने इससे उन्हें मना फरमा दिया। हुक्म हुआ कि यहूद से बहस या उनके खिलाफ कोई आक्रामक कार्रवाई मौजूदा मरहले में हरगिज न की जाए। इस मामले में तमामतर अल्लाह पर भरोसा किया जाए और उस वक़्त का इंतजार किया जाए जब अल्लाह तआला हालात में ऐसी तब्दीली कर दे कि उनके खिलाफ कोई फैसलाकुन कार्रवाई करना मुमकिन हो जाए। बरवक़्त मुसलमानों को चाहिए कि वे सब करें और नमाज और जकात पर मजबूती से कयम हो जाएं। सब आदमी को इससे बचाता है कि वह रद्देअमल (प्रतिक्रिया) की नफिसयात के तहत मनफी (नकारात्मक) कार्रवाइयां करने लगे। नमाज आदमी को अल्लाह से जोड़ती है और अपने माल में से दूसरे भाइयों को हकदार बनाना वह चीज है जिससे आपसी ख़ैरखाही और इत्तेहाद की फज़ा पैदा होती है।

नए इस्लाम लाने वालों से वे कहते कि तुम्हें अपना पैतृक धर्म छोड़ना है तो यहूदियत अपना लो या फिर ईसाई बन जाओ। क्योंकि जन्नत तो यहूदियों और ईसाइयों के लिए है जो हमेशा से नबियों और बुजुर्गों की जमाअत रही है। फरमाया कि किसी गिरोह से वाबस्तगी किसी को जन्नत का हकदार नहीं बनाती। जन्नत का फैसला आदमी के अपने अमल की बुनियाद पर किया जाता है न कि गिरोही फज़ीलत की बुनियाद पर। एहसान के मअना हैं किसी काम को अच्छी तरह करना। इस्लाम में अच्छा होना यह है कि अल्लाह के लिए आदमी की हवालगी इतनी कामिल हो कि हर दूसरी चीज की अहमियत उसके ज़हन से मिट जाए। गिरोही तअस्सुबात शख़्सी वफादारियां और बुनियावी हित-स्वार्थ कोई भी चीज उसके लिए अल्लाह की आवाज की तरफ दौड़ पड़ने में रुकावट न बने।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصْرِيَّةُ عَلَى شَيْءٍ ۖ وَقَالَتِ النَّصْرِيَّةُ لَيْسَتِ
الْيَهُودُ عَلَى شَيْءٍ ۖ وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَابَ ۚ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ
مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۖ
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسَاجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي
خَرَابِهَا ۚ أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا
خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۖ وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۚ فَأَيْنَمَا
تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۖ وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ سُبْحَنَهُ
بَلَىٰ لَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَّهُ قَائِمٌ ۚ بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَإِذَا اقْتَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۖ

और यहूद ने कहा कि नसारा (ईसाई) किसी चीज पर नहीं और नसारा ने कहा कि यहूद किसी चीज पर नहीं। और वे सब आसमानी किताब पढ़ते हैं। इसी तरह उन लोगों ने कहा जिनके पास इल्म नहीं, उन्हीं का सा कौल। पस अल्लाह कियामत के दिन इस बात का फैसला करेगा जिसमें ये झगड़ रहे थे। और उससे बढ़कर जालिम और कौन होगा जो अल्लाह की मस्जिदों को इससे रोके कि वहां अल्लाह के नाम की याद की जाए और उन्हें उजाड़ने की कोशिश करे। उनका हाल तो यह होना चाहिए था कि मस्जिदों में अल्लाह से डरते हुए दाखिल हों। उनके लिए दुनिया में रुस्वाई है और आखिरत में उनके लिए भारी सजा है। और पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के लिए है। तुम जिधर रुख करो उसी तरफ अल्लाह है। यकीनन अल्लाह कुरुअत (ब्यापकता) वाला है, इल्म वाला है। और कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। वह इससे पाक है। बल्कि आसमानों और जमीन में जो कुछ है सब उसी का है। उसी का हुक्म मानने वाले हैं सारे। वह आसमानों और जमीन को वजुद में लाने वाला है। वह जब किसी काम को करना तै कर लेता है तो बस उसके लिए फरमा देता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (113-117)

यहूद ने नबियों और बुजुर्गों से वाबस्तगी (संबंध स्थापना) को हक का मेयार (मापदंड) बनाया। इस वजह से उन्हें अपनी कैम हक (सत्य) पर और दूसरी कैम बातिल (असत्य) पर नजर आई। ईसाइयों ने अपने अंदर यह विशिष्टता देखी कि अल्लाह ने अपना 'इकलौता बेटा' उनके पास भेजा। मक्का के मुशरिकीन अपनी यह विशिष्टता समझते थे कि वे अल्लाह के मुकद्दस (पवित्र) घर के पासवान हैं। इस तरह हर गिरोह ने अपने हस्वेहाल हक व सदाकत का एक स्वनिर्मित मेयार बना रखा था और जब इस मेयार की रोशनी में देखता तो लामुहाला उसे अपनी जात बरसरेहक और दूसरों की बरसरे बातिल नजर आती। मगर उनकी अमली हालत जिस चीज का सुबूत दे रही थी वह इसके बिल्कुल बरअक्स (विपरीत) थी। वे गिरोह-गिरोह बने हुए थे। उनमें से किसी को जब भी मौका मिलता, वह इबादत के लिए बने हुए खुदा के घर को अपने गिरोह के अलावा दूसरे गिरोह के लिए बंद कर देता। और इस तरह खुदा के घर की वीरानी का सबब बनता। इबादतखाना तो वह मकाम है जहां इंसान अल्लाह से डरते हुए और कांपते हुए दाखिल हो। अगर ये लोग वाकई खुदा वाले होते तो कैसे मुमकिन था कि वे इबादत के लिए आने वाले किसी बंदे को रोके या उसे सताएं। वे तो अल्लाह की अज्मत के एहसास से दबे हुए होते। फिर उनमें इस किस्म की सरकशी कैसे हो सकती थी।

उन्होंने अल्लाह को इंसान के ऊपर कयास किया। एक इंसान अगर मशरिक में हो तो उसी वक्त वह मगरिब में नहीं होगा। वे समझते हैं कि खुदा भी इसी तरह किसी खास दिशा में मौजूद है। यकीनन अल्लाह ने अपनी इबादत के लिए रुख का निर्धारण किया है मगर वह इबादत की तंजीमी जरूरत की बुनियाद पर है, न इसलिए कि खुदा इसी खास रुख में मिलता है। इसी तरह इंसानों पर कयास करते हुए उन्होंने खुदा का बेटा मान्य कर लिया। हालांकि खुदा इस किस्म की चीजों से बुलंद और बरतर है। जो लोग इस तरह खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) दीन को खुदा का दीन बताएं, उनके लिए खुदा के यहां रुस्वाई और अजाब के सिवा और कुछ नहीं।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَنْزِيلًا أَيْهَ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِثْلَ قَوْلِهِمْ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝
إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَا تُسْئَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ۝ وَلَنْ تَرْضَى عَنْكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَى حَتَّى تَتَّبِعَهُمْ وَتَتَّبِعَهُمْ قُلُوبُ إِنْ هُدَى اللَّهُ هُوَ الْهُدَىٰ وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ الَّذِينَ اتَّبِعْتُمُ الْكُتُبَ يَتْلُونَهَا حَتَّى تَكُونَ لَهَا
أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝

और जो लोग इल्म नहीं रखते, उन्होंने कहा : अल्लाह क्यों नहीं कलाम करता हमसे या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती। इसी तरह उनके अगले भी उन्हीं की-सी बात कह चुके हैं, इन सबके दिल एक जैसे हैं, हमने पेश कर दी हैं निशानियां उन लोगों के लिए जो यकीन करने वाले हैं। हमने तुम्हें ठीक बात लेकर भेजा है, खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला बना कर। और तुम से दोख में जाने वालों की वाबत कोई पूछ नहीं होगी। और यहूद और नसारा हरगिज तुमसे राजी नहीं होंगे जब तक कि तुम उनके पंथ पर न चलने लगे। तुम कहो कि जो राह अल्लाह दिखाता है वही अस्त राह है। और अगर बाद उस इल्म के जो तुम तक पहुंच चुका है तुमने उनकी ख्वाहिशों की पैरवी की तो अल्लाह के मुकाबले में न तुम्हारा कोई दोस्त होगा और न कोई मददगार। जिन लोगों को हमने किताब दी है वे इसे पढ़ते हैं जैसा कि हक है पढ़ने का। यही लोग ईमान लाते हैं इस पर। और जो इसका इंकार करते हैं वही घाटे में रहने वाले हैं। (118-121)

अल्लाह के वे बंदे जो अल्लाह की तरफ से उसके दीन (धर्म) का एलान करने के लिए आए, उन्हें हर जमाने में एक ही किस्म की प्रतिक्रिया का सामना हुआ। 'अगर तुम खुदा के नुमाइंदे हो तो तुम्हारे साथ दुनिया के खजाने क्यों नहीं।' यह शुबह उन लोगों को होता है जो अपने दुनियापरस्ताना मिजाज की वजह से माददी (भौतिक) बड़ाई को बड़ाई समझते थे। इसलिए वे खुदा की नुमाइंदगी करने वाले में भी यही बड़ाई देखना चाहते थे। जब हक के दाओ (आवाहक) की जिंगी में उन्हें इस किस्म की बड़ाई दिखाई न देती तो वे इसका इंकार कर देते। उनकी समझ में न आता कि एक 'मामूली आदमी' क्यों कर वह शख्स हो सकता है जिसे जमीन व आसमान के मालिक ने अपने पैगाम की पैगामरसानी के लिए चुना हो। अल्लाह के इन बंदों की जिंगी

और उनके कलाम में अल्लाह अपनी निशानियों की सूरत में शामिल होता। दूसरे शब्दों में सार्थक बड़ाईयां पूरी तरह उनके साथ होती। मगर इस किस्म की चीजें लोगों को नजर न आती। इसलिए वे उन्हें 'बड़ा' मानने के लिए भी तैयार न होते। दलील अपनी कामिल सूरत में मौजूद होकर भी उनके जेहन का जुज न बनती, क्योंकि वह उनके मिजाजी ढाँचे के मुताबिक न होती।

यहूद और नसारा (ईसाई) कदीम जमाने में आसमानी मजहब के नुमाइंदा थे। मगर ज्वाल का शिकार होने के बाद दीन उनके लिए एक गिरोही तरीका होकर रह गया था। वे अपने गिरोह से जुड़े रहने को दीन समझते और गिरोह से अलग हो जाने को बेदीनी। उनके गिरोह में शामिल होना या न होना ही उनके नजदीक हक और नाहक का मयार बन गया था। जब दीन अपनी बेआमेज सूरत (विशुद्ध रूप) में उनके सामने आया तो उनका गिरोही दीनदारी का मिजाज इसे कुबूल न कर सका। हकीकत यह है कि बेआमेज दीन को वही अपनाएगा जिसने अपनी फितरत को जिंदा रखा है। जिनकी फितरत की रोशनी बुझ चुकी है उनसे किसी किस्म की कोई उम्मीद नहीं। दीन को ऐसे लोगों के लिए काबिले कुबूल बनाने के लिए दीन को बदला नहीं जा सकता।

يٰۤاَيُّهَا اِسْرَآءِیْل اذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْ اَنْعَمْتُ عَلَیْكُمْ وَاِنِّیْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَی الْعٰلَمِیْنَ ۝ وَاَتَقُوْا یَوْمًا لَا تَجْزِیْ نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا وَاَلْقِیْلٌ مِنْہَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُہُمْ شَفَاعَةُ ۝ وَلَا هُمْ یُنصَرُوْنَ ۝ وَاِذْ اَبْتَکٰی اِبْرٰہِمَ رَبُّہٗ بِکَلِمٰتٍ فَاَتٰہُمُنَّ ۝ قَالَ اِنِّیْ جَاعِلُکَ لِلنَّاسِ اِمَامًا ۝ قَالَ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ ۝ قَالَ لَا یُنَالُ عَهْدِیَ الظَّٰلِمِیْنَ ۝

ऐ बनी इस्राईल मेरे उस एहसान को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और उस बात को कि मैंने तुम्हें दुनिया की तमाम कौमों पर फजिलत दी। और उस दिन से डरो जिसमें कोई शख्स किसी शख्स के कुछ काम न आयेगा और न किसी की तरफ से कोई मुआवजा कुबूल किया जायेगा और न किसी को कोई सिफारिश फायदा देगी और न कहीं से उन्हें कोई मदद पहुंचेगी। और जब इब्राहीम को उसके रब ने कई बातों में आजमाया तो उसने पूरा कर दिखाया। अल्लाह ने कहा मैं तुम्हें सब लोगों का इमाम बनाऊंगा। इब्राहीम ने कहा : और मेरी औलाद में से भी। अल्लाह ने कहा : मेरा अहद (वचन) जालिमों तक नहीं पहुंचता। (122-124)

बनी इस्राईल को इस खास काम के लिए चुना गया था कि वह दुनिया की तमाम कौमों को अल्लाह की तरफ बुलायें और उन्हें इस हकीकत से आगाह करें कि उनके आमाल के बारे में उनका मालिक उनसे सवाल करने वाला है। इस काम की रहनुमाई के लिए उनके दर्मियान मुसलसल पैगम्बर आते रहे। इब्राहीम, याकूब, यूसुफ, मूसा, दाऊद, सुलैमान, जकारिया, याहिया, ईसा,

अलैहिमुस्सलाम वगैरह। मगर बाद के जमाने में जब बनी इस्राईल पर जवाल आया तो उन्होंने इस मंसबी फजिलत को नस्ली और गिरोही फजिलत के मअना में ले लिया और इस तरह इस की बाबत अपने इस्तहकाक (पात्रता) को खो दिया। इसमाईली खानदान में नबीए अरबी का आना दरअस्त बनी इस्राईल की फजिलत के मकम से माजूनी और इसकी जगह बनी इसमाईल की नियुक्ति का एलान था। बनी इस्राईल में जो लोग वाकई खुदापरस्त थे उन्हें यह समझने में देर नहीं लगी कि हजरत मुहम्मद (सल्ल०) जो कलाम पेश कर रहे हैं वह खुदा की तरफ से आया हुआ कलाम है। मगर जो लोग गिरोही तअस्सुबात (विद्वेष) को दीन बनाए हुए थे उनके लिए अपने से बाहर किसी फजिलत का एतराफ करना मुमकिन न हो सका।

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के जरिए उन्हें सचेत किया गया कि याद रखो आखिरत में हकीकी ईमान और सच्चे अमल के सिवा किसी भी चीज की कोई कीमत न होगी। दुनिया में एक शख्स दूसरे शख्स का भार अपने सिर ले लेता है। किसी मामले में किसी की सिफारिश काम आ जाती है। कभी मुआवजा देकर आदमी छूट जाता है। कभी कोई मददगार मिल जाता है जो पुश्तपनाही करके बचा लेता है। मगर आखिरत में इस किस्म की कोई चीज किसी के काम आने वाली नहीं। आखिरत किसी गिरोह की नस्ली विरासत नहीं, वह अल्लाह के बेलाग इंसाफ का दिन है। इब्राहीम (अलैहि०) को जो फजिलत का दर्जा मिला इसका पैसला उस वक्त किया गया जब वह कड़ी जांच में खुदा के सच्चे फरमांबरदार साबित हुए। अल्लाह की यही सुन्नत उनकी नस्ल के बारे में भी है कि जो अमल में पूरा उतरेगा वह इस इलाही वादे में शरीक होगा। और जो अमल की तराजू पर अपने को सच्चा साबित न कर सके उसका वही अंजाम होगा जो इस किस्म के दूसरे मुजरिमों के लिए अल्लाह के यहां मुकर्र है। हजरत इब्राहीम (अलैहि०) को निहायत कड़ी आजमाइशों के बाद पेशवाई का मकाम दिया गया। इससे मालूम हुआ कि इमामत और कय़ादत के मंसब का इस्तहकाक (पात्रता) कुनियों के जरिए हासिल होता है। कुनियों की वीमत पर किसी मकसद को अपनाने वाला उस मकसद की राह में सबसे आगे होता है। इसलिए कुदरती तौर पर वही उसका कय़ाद (प्रमुख, नायक) बनता है।

وَ اِذْ جَعَلْنَا الْبَیْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا وَاَتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰہِمَ مُصَلًّی وَّعٰہِدًا ۤ اِلَیْ اِبْرٰہِمَ وَاِسْمٰعِیْلَ اَنْ طَهِّرَا بَیْتِیَ لِلطَّٰہِرِیْنَ ۝ وَالْعٰقِبِیْنَ ۝ وَالزَّکٰوِیْنَ ۝ السَّجُوْدِ ۝ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰہِمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَاَرْزُقْ اَهْلَکَ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْہُمْ بِاللّٰهِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ ۝ قَالَ وَمَنْ کَفَرَ فَاَمَّتَعُوْهُ فَاَیْلًا ثُمَّ اُخْطَرُوْهُ اِلَیْ عَذَابِ النَّارِ ۝ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ۝

और जब हमने काबे को लोगों के इत्तिमाज की जगह और अमन का मकाम ठहराया और हुक्म दिया कि मकामे इब्राहीम को नमाज पढ़ने की जगह बना लो। और इब्राहीम

और इस्माईल को ताकीद की कि मेरे घर को तवाफ (परिक्रमा) करने वालों, एतकाफ करने वालों और रुकूअ व सज्दे करने वालों के लिए पाक रखो। और जब इब्राहीम ने कहा के ऐ मेरे रब इस शहर को अमन का शहर बना दे। और इसके वाशियों को, जो इनमें से अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखें, फलों की रोजी अता फरमा। अल्लाह ने कहा जो इंकार करेगा मैं उसे भी थोड़े दिनों फायदा दूंगा। फिर उसे आग के अजाब की तरफ धकेल दूंगा, और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (125-126)

सारी दुनिया के अहले ईमान हर साल अपने वतन को छोड़कर बैतुल्लाह (काबा) आते हैं। यहां किसी के लिए किसी जीहयात (जीव) पर ज्यादाती करना जाइज नहीं। हरमे काबा को दाइमी (स्थायी) तौर पर इबादत की जगह बना दिया गया है। इस मकाम को हर किस्म की आलूदगियों (गंदगियों) से पाक रखा जाता है। काबे का तवाफ (परिक्रमा) किया जाता है। दुनिया से अलग होकर अल्लाह की याद की जाती है। और अल्लाह के लिए रुकूअ और सज्दे किए जाते हैं। कद्रीम जमाने में यह दुनिया का सबसे ज्यादा खुशक इलाका था, जहां स्त्रीली जमीनों और पथरीली चट्टानों की वजह से कोई फसल पैदा नहीं होती थी। इसके अलावा यह कि वह इतिहाई तौर पर असुरक्षित था। चार हजार वर्ष पहले हजरत इब्राहीम (अलैहि०) को हुक्म हुआ कि अपने खानदान को इस इलाके में ले जाओ और उसे वहां बसा दो। हजरत इब्राहीम (अलैहि०) ने बिना किसी संकोच के इस हुक्म का पालन किया। और जब खानदान को इस निर्जन स्थान पर पहुंचा चुके तो दुआ की कि खुदाया मैंने तेरे हुक्म की तामील कर दी। अब तू अपने बंदे की पुकार सुन ले और इस बस्ती को अमन व अमान की बस्ती बना दे। और इस खुशक जमीन पर इनके लिए खुशी रिज्क का इंतजाम फरमा। दुआ कुबूल हुई और इसी का यह नतीजा है कि यह इलाका आज तक अमन और रिज्क की कसरत (बहुलता) का नमूना बना हुआ है।

मोमिन को दुनिया में इस तरह रहना है कि वह बार-बार याद करता रहे कि वह चाहे दुनिया के किसी गोशे में हो उसे बहरहाल लौट कर एक दिन खुदा के पास जाना है। वह जिन इंसानों के दर्मियान रहे बेजरर (अहानिकारक) बन कर रहे। वह जमीन को खुदा की इबादत की जगह समझे और इसे अपनी गन्दगियों से पाक रखे। उसकी पूरी जिंदगी खुदा के गिर्द घूमती हो। वह बजाहिर दुनिया में रहे मगर उसका दिल अपने रब में अटका हुआ हो। वह हमहतन (पूर्णरूपेण) अल्लाह के आगे झुक जाये। फिर यह कि दीन जिस चीज का तकाजा करे चाहे वो एक चटयल मैदान में बीवी बच्चों को ले जाकर डाल देना हो, बंदा पूरी वफादारी के साथ इसके लिए राजी हो जाये। और जब हुक्म की तामील कर चुके तो खुदा से मदद की दरख्वास्त करे। अजब नहीं कि खुदा अपने बंदे की खातिर चटयल बयाबान में रिज्क के चश्मे जारी कर दे।

दुनिया की रौनक चाहे किसी को दीन के नाम पर मिले, इस बात का सुबूत नहीं है कि अल्लाह ने उसको इमामत और पेशवाई के मंसब के लिए कुबूल कर लिया है। दुनिया की चीजें सिर्फ आजमाइश के लिए हैं जो सबको मिलती हैं। जबकि इमामत यह है कि किसी बंदे को कौमों के दर्मियान खुदा की नुमाईदगी के लिए चुन लिया जाये।

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُسْلِمَةً لَكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

और जब इब्राहीम और इस्माईल बैतुल्लाह की दीवारें उठा रहे थे और यह कहते जाते थे : ऐ हमारे रब, कुबूल कर हमसे, यकीनन तू ही सुनने वाला जानने वाला है। ऐ हमारे रब हमें अपना फरमांबरदार बना और हमारी नस्ल में से अपनी एक फरमांबरदार उम्मत उठा और हमें हमारे इबादत के तरीके बता और हमको माफ फरमा, तू माफ करने वाला रहम करने वाला है। ऐ हमारे रब और इनमें इन्हीं में का एक रसूल उठा जो इन्हें तेरी आयतें सुनाये और इन्हें किताब और हिकमत की तालीम दे और इनका तज्किया (पवित्रीकरण, शुद्धीकरण) करे। बेशक तू जबरदस्त है हिकमत वाला है। (127-129)

अल्लाह का यह फैसला था कि वह हिजाज (अरब) को इस्लाम की दावत का आलमी मर्कज बनाये। इस मर्कज के कयाम और इंतजाम के लिए हजरत इब्राहीम और उनकी औलाद को चुना गया। बैतुल्लाह की तामीर के वक्त इब्राहीम (अलैहि०) और इस्माईल (अलैहि०) की जवान से जो कलिमात निकल रहे थे वह एक एतबार से दुआ थे और दूसरे एतबार से वह दो रूहों का अपने आप को अल्लाह के मंसूबे में दे देने का एलान था। ऐसी दुआ खुद मतलूबे इलाही होती है। चुनांचे वह पूरी तरह कुबूल हुई। अरब के खुशक बियाबान से इस्लाम का अबदी चश्मा फूट निकला। बनी इस्माईल के दिल अल्लाह तआला ने ख़ास तौर पर अपने दीन की खिदमत के लिए नर्म कर दिये। उनके अंदर से एक ताकतवर इस्लामी दावत बरपा हुई। इनके जरिये से अल्लाह ने अपने बंदों को वह तरीके बताये जिनसे वह खुश होता है और अपनी रहमत के साथ उनकी तरफ मुतवज्जह होता है। फिर उन्हीं के अंदर से उस आखिरी रसूल की बैअसत हुई जिसने तारीख में पहली बार यह किया कि कारे नुबुव्वत को एक मुकम्मल तारीखी नमूने की सूत में कायम कर दिया।

नबी का पहला काम आयतों की तिलावत है। आयत के मअना निशानी के हैं। यानी वह चीज जो किसी चीज के ऊपर दलील बने। इंसान की फितरत में और बाहर की दुनिया में अल्लाह तआला ने अपनी मअरफत (अन्तर्ज्ञान) की बेशुमार निशानियां रख दी हैं। ये इशारों की सूत में हैं। पैगम्बर इन इशारों को खोलता है। वह आदमी को वह निगाह देता है जिससे वह हर चीज में अपने रब का जलवा देखने लगे। किताब से मुराद कुरआन है। नबी का दूसरा काम यह है कि वह अल्लाह की 'वही' (ईश्वरीयवाणी) का वाहक बनता है और उसे खुदा से लेकर इंसानों तक

पहुंचाता है। 'हिक्मत' का मतलब है तत्वदर्शिता, सूझबूझ। जब आदमी खुदा की निशानियों को देखने की नजर पैदा कर लेता है, जब वह अपने जेहन को कुरआन की तालीमात (शिक्षाओं) में ढाल लेता है तो उसके अंदर एक फिक्री (वैचारिक) रोशनी जल उठती है। वह अपने आपको हकीकते आला (परम सत्य) के हमशुऊर (समचेतन) बना लेता है। वह हर मामले में उस सही फैसले तक पहुंच जाता है जो अल्लाह तआला को मलूब (अपेक्षित) है। 'तज्किया' का मतलब है किसी चीज को प्रतिकूल तत्वों से शुद्ध कर देना ताकि वह अनुकूल वातावरण में अपनी स्वाभाविक उत्कृष्टता तक पहुंच सके। नबी की आखिरी कोशिश यह होती है कि ऐसे इंसान तैयार हों जिनके सीने अल्लाह की अकीदत (श्रद्धा) के सिवा हर अकीदत से खाली हों। ऐसी रूहें वजूद में आएँ जो नफिसयाती पेचीदगियों से आजाद हों। ऐसे अफराद पैदा हों जो कायनात से वह रब्बानी रिज्क पा सकें जो अल्लाह ने अपने मोमिन बंदों के लिए रख दिया है।

وَمَنْ يَرْغُبْ عَنْ بَلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهُ وَلَقَدْ اصْطَفَيْنَاهُ فِي
الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلَمْ ۖ قَالَ
أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ وَوَضَىٰ بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ يُبْنِي ۖ إِنَّ
اللَّهَ اصْطَفَىٰ لَكُمُ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُمْ مُسْلِمُونَ ۗ أَمْ كُنْتُمْ
شُهَدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ بَعْدِي ۖ
قَالُوا نَعْبُدُ إِلَهَكَ وَإِلَهَ آبَائِكَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِلَٰهًا وَاحِدًا ۗ
وَنَحْنُ لَكَ مُسْلِمُونَ ۚ تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ
وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

और कौन है जो इब्राहीम के दीन को पसंद न करे मगर वह जिसने अपने आपको अहमक (मूर्ख) बना लिया हो। हालांकि हमने उसे दुनिया में चुन लिया था और आखिरत में वह स्वालेहीन (सत्यवादी लोगों) में से होगा। जब उसके रब ने कहा कि अपने आपको हवाले कर दो तो उसने कहा : मैंने अपने आपको सारे जहान के रब के हवाले किया। और इसी की नसीहत की इब्राहीम ने अपनी औलाद को और इसी की नसीहम की याकूब ने अपनी औलाद को। ऐ मेरे बेटे! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इसी दीन को चुन लिया है। पस इस्लाम के सिवा किसी और हालत पर तुम्हें मौत न आए। क्या तुम मौजूद थे जब याकूब की मौत का वक्त आया। जब उसने अपने बेटों से कहा कि मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे। उन्होंने कहा : हम उसी खुदा की इबादत करेंगे जिसकी इबादत आप और आपके बुजुर्ग इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक करते आए

हैं। वही एक माबूद है और हम उसके फरमांवरदार हैं। यह एक जमाअत थी जो गुजर गई। उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके किए हुए की पूछ न होगी। (130-134)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) की दावत ऐन वही थी जो हजरत इब्राहीम (अलैहि०) की दावत थी। मगर यहूद जो इब्राहीम (अलैहि०) का पैरो होने पर फख्र करते थे, आपकी दावत के सबसे बड़े मुखालिफ बन गए। इसकी वजह यह थी कि पैगम्बरे अरबी (सल्ल०) जिस इब्राहीमी दीन की तरफ लोगों को बुलाते थे वह 'इस्लाम' था। यानी अल्लाह के लिए कामिल हवालगी और सुपुर्दगी (पूर्ण समर्पण)। कुरआन के मुताबिक यही इब्राहीम (अलैहि०) का दीन था और अपनी औलाद को उन्होंने इसी की वसीयत की। इसके विपरीत यहूद ने इब्राहीम (अलैहि०) की तरफ जो दीन मंसूब कर रखा था उसमें हवालगी और सुपुर्दगी (पूर्ण समर्पण) का कोई सवाल नहीं था। इसमें आज्ञादाना जिंदागी गुजरते हुए महज घटिया परिकल्पनाओं के तहत जन्नत की जमानत हासिल हो जाती थी। मुहम्मद (सल्ल०) के लिए हुए दीन में निजात का दारोमदार तमामतर अमल पर था। जबकि यहूद ने 'अल्लाह के प्रिय बंदों' की जमाअत से वाबस्तगी और अकीदत को नजात के लिए काफी समझ लिया था। मुहम्मद (सल्ल०) के नजदीक दीन आसमानी हिदायत का नाम था और यहूद के नजदीक महज एक गिरोही मज्मूअे का नाम था जो नस्ती रिवायतों और कौमी परिकल्पनाओं के तहत एक ख़ास सूत्र में बन गया था।

माजी (अतीत) या हाल के बुजुर्गों से अपने को मंसूब करके यह इस्मीनान हासिल होता है कि हमारा अंजाम भी इन्हीं के साथ होगा। हमारे अमल की कमी इनके अमल की ज्यादाती से पूरी हो जाएगी। यहूद इस खुशफहमी को यहां तक ले गए कि उन्होंने 'नजाते मुतावारिस' (पैतृक मुक्ति) का अकीदा गढ़ लिया। इन्होंने अपनी तमाम उम्मीदें बुजुर्गों की पवित्रता पर कायम कर लीं। मगर यह नफिसयाती फरेब के सिवा कुछ नहीं। हर एक के आगे वही आएगा जो उसने किया। एक से न दूसरे के जुर्मों की पूछ होगी और न एक को दूसरे की नेकियों में से कुछ हिस्सा मिलेगा। हर एक अपने किए के मुताबिक अल्लाह के यहां बदला पाएगा। 'तुम न मरना मगर इस्लाम पर' यानी अपने आपको अल्लाह के हवाले करने में रुकावटें आएंगी। तुम्हारी तमन्नाओं की इमारत गिरेगी, फिर भी तुम आखिरी वक्त तक इस पर कायम रहना।

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ تَهْتَدُوا قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا
كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۖ قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ إِلَى
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ
وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ

مُسْلِمُونَ ۝ فَإِنْ أَنْوَا بِمِثْلِ مَا أَمَنْتُمْ بِهِ فَقَدِ اهْتَدَوْا وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ ۖ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ صِبْغَةَ اللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً وَنَحْنُ لَهُ عَابِدُونَ ۝ قُلْ أَتُحِبُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ۝ أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْكَاسِبَاتِ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَى قُلْ إِنَّا نَعْلَمُ أَمْرَ اللَّهِ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ تِلْكَ أَمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

135-141

और कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ तो हिदायत पाओगे। कहो कि नहीं, बल्कि हम तो पैरवी करते हैं इब्राहीम के दीन की जो अल्लाह की तरफ़ यकसू (एकाग्रचित्त) था और वह शरीक करने वालों में न था। कहो हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस चीज पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ उतारी गई है। और उस पर भी जो इब्राहीम, इस्माइल, इस्हाक, याकूब और उसकी औलाद पर उतारी गई और जो मिला मूसा और ईसा को और जो मिला सब नबियों को उनके रब की तरफ़ से। हम इनमें से किसी के दर्मियान फर्क नहीं करते और हम अल्लाह ही के फरमांबरदार हैं। फिर अगर वे ईमान लाएं जिस तरह तुम ईमान लाए हो तो बेशक वे राह पा गए और अगर वे फिर जाएं तो अब वे ज़िद पर हैं। पस तुम्हारी तरफ़ से अल्लाह इनके लिए काफी है और वह सुनने वाला जानने वाला है। कहो हमने लिया अल्लाह का रंग और अल्लाह के रंग से किसका रंग अच्छा है और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। कहो क्या तुम अल्लाह के बारे में हमसे झगड़ते हो। हालांकि वह हमारा रब भी है और तुम्हारा रब भी। हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। और हम खालिस उसके लिए हैं। क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम और इस्माइल और इस्हाक और याकूब और उसकी औलाद सब यहूदी या ईसाई थे। कहो कि तुम ज्यादा जानते हो या अल्लाह। और उससे बड़ा जालिम और कौन होगा जो उस गवाही को छुपाए जो अल्लाह की तरफ़ से उसके पास आई हुई है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं। यह एक जमाअत थी जो गुजर गई। उसे मिलेगा जो उसने कमाया और तुम्हें मिलेगा जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके किए हुए की पूछ न होगी। (135-141)

मुहम्मद (सल्ल०) जिस दीन की तरफ़ बुलाते थे वह वही इब्राहीमी दीन था जिससे यहूद और ईसाई अपने को मंसूब किए हुए थे। फिर वे आपके विरोधी क्यों हो गए। वजह यह थी कि मुहम्मद (सल्ल०) की दावत के मुताबिक दीन यह था कि आदमी अपनी ज़िंदगी को अल्लाह के रंग में रंग ले, वह हर तरफ़ से यकसू होकर अल्लाह वाला बन जाए। इसके विपरीत यहूद के यहां दीन बस एक कौमी फ़ख़ के निशान के तौर पर बाकी रह गया था। मुहम्मद (सल्ल०) की दावत उनकी फ़ख़ की नफ़िसयात पर ज़द पड़ती थी, इसलिए वे आपके दुश्मन बन गए।

जो लोग गिरोही फ़जिलत की नफ़िसयात में मुक्ताला हैं, वे अपने से बाहर किसी सदाकत (सच्चाई) को मानने को तैयार नहीं होते। वे अपने गिरोह के खुदा के पैग़म्बरों को तो मानेंगे मगर उसी खुदा का एक पैग़म्बर उनके गिरोह से बाहर आए तो वे इसका इंकार कर देंगे। दीन के नाम पर वे जिस चीज से वाकिफ़ हैं वह सिर्फ़ गिरोहपरस्ती है। इसलिए वही शरियतें उन्हें शरियतें नजर आती हैं जो उनके अपने गिरोह से तअल्लुक रखती हैं। मगर जिस शरू के लिए दीन खुदापरस्ती का नाम हो वह खुदा की तरफ़ से आने वाली हर आवाज को पहचान लेगा और उस पर लबूक कहेगा। यहूद के उलमा (विद्वानों) के लिए यह समझना मुश्किल न था कि मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के आखिरी रसूल हैं। और उनकी दावत (आह्वान) सच्ची खुदापरस्ती की दावत है। मगर अपनी बड़ाई को कायम रखने की खातिर इन्होंने लोगों के सामने एक ऐसी हकीकत का एलान नहीं किया जिसका एलान करना उनके ऊपर खुदा की तरफ़ से फ़र्ज़िया ग़या था।

‘पिछले लोगों को उनकी कमाई का बदला मिलेगा और अगले लोगों को उनकी कमाई का।’ इसका मतलब यह है कि हक (सत्य) के मामले में विरासत नहीं। यहूद इस ग़लतफ़हमी में मुक्ताला थे कि उनके पिछले बुजुर्गों की नेकियों का सवाब उनके बाद के लोगों को भी पहुंचता है। इसी तरह ईसाइयों ने यह समझ लिया कि गुनाह पिछली नस्ल से अगली नस्ल को विरासतन मुतकिल होता है। मगर इस तरह के अकीदे बिल्कुल निराधार हैं। खुदा के यहां हर आदमी को जो कुछ मिलेगा, अपने जाती अमल की बुनियाद पर मिलेगा न कि किसी दूसरे के अमल की बुनियाद पर।

‘अगर वे इस तरह ईमान लाएं जिस तरह तुम ईमान लाए हो तो वे राहयाब हो गए।’ गोया सहाबा किराम (मुहम्मद सल्ल० के साथी) अपने जमाने में जिस ढंग पर ईमान लाए थे वही वह ईमान है जो अल्लाह के यहां असलन मोतबर है। सहाबा किराम के जमाने में सूरतेहाल यह थी कि एक तरफ़ पहले के नबी थे जिनकी हैसियत ऐतिहासिक तौर पर प्रमाणित हो चुकी थी, दूसरी तरफ़ मुहम्मद (सल्ल०) थे जो अभी अपने इतिहास के प्रारंभ में थे। आपकी जात के गिर्द अभी तक तारीख़ी अज्मतें जमा नहीं हुई थीं। इसके बावजूद उन्होंने आपको पहचाना और आप पर ईमान लाए। गोया अल्लाह के नज़दीक हक का वह एतराफ़ (स्वीकार) मोतबर है जबकि आदमी ने हक को मुज़र्द (प्रत्यक्षशः) सतह पर देख कर उसे माना हो। हक जब कौमी विरासत बन जाए या तारीख़ी अमल के नतीजे में इसके गिर्द अज्मत के मीनार खड़े हो चुके हों तो हक को मानना, हक को मानना नहीं होता बल्कि ऐसी चीज को मानना होता है जो कौमी फ़ख़ और तारीख़ी तक्ज़ बन चुकी हो।

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَهُمْ عَن قِبَلِهِمُ الَّذِي كَانُوا عَلَيْهِمْ قُلْ
لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ وَكَذَلِكَ
جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ
شَهِيدًا ۗ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعِ الرَّسُولَ
مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَى عَقْبَيْهِ ۚ وَإِنَّكَ لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى
اللَّهُ ۚ وَمَا كَانَ لِلَّهِ لِيُضَيِّعَ إِيمَانَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝

अब बेवकूफ लोग कहेंगे कि मुसलमानों को किस चीज ने उनके क़िबले से फेर दिया।
कहो कि पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं। वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता
दिखाता है। और इस तरह हमने तुम्हें बीच की उम्मत बना दिया ताकि तुम हो
बताने वाले लोगों पर और रसूल हो तुम पर बताने वाला। और जिस क़िबले पर तुम
थे, हमने उसे सिर्फ इसलिए ठहराया था कि हम जान लें कि कौन रसूल की पैरवी
करता है और कौन उससे उल्टे पांव फिर जाता है। और बेशक यह बात भारी है
मगर उन लोगों पर जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी है। और अल्लाह ऐसा नहीं कि
तुम्हारे इमान को जाये (विनष्ट) कर दे। बेशक अल्लाह लोगों के साथ शफ़क़त
(स्नेह) करने वाला महरबान है। (142-43)

क़िबले का तअल्लुक मजहिर इबादत (इबादत के प्रतीकों) से है न कि हकीकत इबादत

से। क़िबले का अस्ल मक़सद इबादत की तंजीम के लिए एक सामान्य रुख़ का निर्धारण करना
है। हर सम्त (दिशा) अल्लाह की सम्त है। वह अपने बंदों के लिए जो सम्त भी मुकर्रर कर
दे वही उसकी पसंदीदा इबादती सम्त होगी, चाहे वह मशरिक की तरफ़ हो या मगरिब की
तरफ़। मगर लंबी मुद्दत तक बैतुल मक़दिस की तरफ़ रुख़ करके इबादत करने की वजह से
क़िबल-ए-अव्वल को तक़दुस (पवित्रता) हासिल हो गया था। अतः सन् 2 हिजरी में जब
क़िबले की तब्दीली का एलान हुआ तो बहुत से लोगों के लिए अपने ज़ेहन को उसके मुताबिक
बनाना मुश्किल हो गया। यहूद ने इसे बहाना बनाकर आपके (सल्ल०) ख़िलाफ़ तरह-तरह की
बातें फैलाना शुरू कर दीं। बैतुल मक़दिस हमेशा से नबियों का क़िबला रहा है। फिर इसका
विरोध क्यों, इससे जाहिर होता है कि यह सारी तहरीक यहूद की ज़िद में चलाई जा रही है।
कोई कहता कि यह रिसालत के दावेदार खुद अपने मिशन के बारे में संशय और असमंजस
में हैं। कभी काबे की तरफ़ रुख़ करके इबादत करने को कहते हैं और कभी बैतुल मक़दिस
की तरफ़। किसी ने कहा : अगर काबा ही अस्ल क़िबला है तो इसका मतलब यह है कि इससे
पहले जो मुसलमान बैतुल मक़दिस की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ते रहे उनकी नमाज़ें बेकार

गई, वगैरह। मगर जो सच्चे खुदापरस्त थे जो मजाहिर (प्रतीकों) में अटक हुए नहीं थे, उन्हें
यह समझने में देर नहीं लगी कि अस्ल चीज क़िबले की सम्त नहीं अस्ल चीज खुदा का हुक्म
है। अल्लाह की तरफ़ से जिस वक़्त जो हुक्म आ जाए वही उस वक़्त का क़िबला होगा।
रिवायतों में आता है कि हिजरत के तकरीबन 17 महीने बाद जब क़िबले की तब्दीली का हुक्म
आया तो अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अपने साथियों की एक जमाअत के साथ
मदीना में नमाज़ अदा कर रहे थे। हुक्म मालूम होते ही आपने और मुसलमानों ने ऐन हालते
नमाज़ में अपना रुख़ बैतुल मक़दिस से काबा की तरफ़ कर लिया। यानी शुमाल (उत्तर) से
जुनूब (दक्षिण) की तरफ़।

क़िबले की तब्दीली एक अलामत थी जिसका मतलब यह था कि अल्लाह तआला ने बनी
इस्राईल को इमामत (नेतृत्व) से माज़ूल करके उम्मत मुहम्मदी को उसकी जगह मुकर्रर कर
दिया है। अब क़ियामत तक बैतुल मक़दिस के बजाए काबा खुदा के दीन की दावत और
खुदापरस्तों की आपसी एकता का मर्कज़ होगा। 'वस्त' का अर्थ 'मध्य' (बीच) है। इसका
मतलब यह है कि मुसलमान अल्लाह के पैग़ाम को उसके बंदों तक पहुंचाने के लिए दर्मियानी
वसीला हैं। अल्लाह का पैग़ाम रसूल के जरिए उन्हें पहुंचा है। अब इस पैग़ाम को इन्हें
क़ियामत तक तमाम क़ौमों तक पहुंचाते रहना है। इसी पर दुनिया में भी उनका मुस्तक़बिल
(भविष्य) निर्भर है और इसी पर अख़िरत भी निर्भर है।

قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ
أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۚ وَاللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝ وَلِلَّهِ
أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ تَاتِعُوا قِبْلَتَكَ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتِهِمْ وَمَا
بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ۚ وَلَكِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ
الْعِلْمِ إِنَّكَ إِذًا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ اتَّيَّعَهُمُ الْكِتَابُ يَعْرِفُونَ كَمَا
يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ الْحَقُّ
مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُبْتَرِّينَ ۝

हम तुम्हारे मुंह का बार-बार आसमान की तरफ़ उठना देख रहे हैं। पस हम तुम्हें उसी
क़िबले की तरफ़ फेर देंगे जिसे तुम पसंद करते हो। अब अपना रुख़ मस्जिदे हराम
(काबा) की तरफ़ फेर दो। और तुम जहां कहीं भी हो अपने रुख़ को उसी की तरफ़
करो। और अहले किताब खूब जानते हैं कि यह हक़ है और उनके ख़ब की जानिब से

है। और अल्लाह बेखबर नहीं उससे जो वे कर रहे हैं। और अगर तुम इन अहले किताब के सामने तमाम दलीलें पेश कर दो तब भी वे तुम्हारे किबले को नहीं मानेंगे। और न तुम उनके किबले की पैरवी कर सकते हो। और न वे खुद एक-दूसरे के किबले को मानते हैं। और इस इल्म के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है, अगर तुम उनकी ख्वाहिशों की पैरवी करोगे तो यकीनन तुम जालिमों में हो जाओगे। जिन्हें हमने किताब दी है वे उसे इस तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं। और उनमें से एक गिरोह हक को छुपा रहा है हालांकि वह उसे जानता है। हक वह है जो तेरा रब कहे। पस तुम हरगिज शक करने वालों में से न बनो। (144-147)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) की सुन्नत यह थी कि जिन मामलों में अभी 'वही' (ईशवाणी) न आई हो उनमें आप पिछले नबियों के तरीके की पैरवी करते थे। इसी बुनियाद पर आपने शुरू में बैतुल मक़िदस को क़िबला बना लिया था जो सुलैमान (अलैहि०) के जमाने से बनी इस्त्राईल के पैगम्बरों का क़िबला रहा है। यहूद को जब अल्लाह ने दीन की इमामत और पेशवाई से माज़ूल किया तो इसके बाद यह भी ज़रूरी हो गया कि दीन को यहूद की रिवायतों से जुदा कर दिया जाए। ताकि खुदा का दीन हर एतबार से अपनी ख़ालिस शक़ल में नुमायां हो सके। इसी मस्तेहत की बुनियाद पर मुहम्मद (सल्ल०) को क़िबले की तब्दीली के हुक्म का इंतज़ार रहता था। अतः हिज़रत के दूसरे साल यह हुक्म आ गया। यहूद के अंबिया जो यहूद को ख़बरदार करने आए, वे पहले ही इस इलाही फैसले के बारे में यहूद को बता चुके थे और उनके उलमा इस मामले को अच्छी तरह जानते थे। ताहम इनमें सिर्फ़ कुछ लोग (जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम और मिख़ीरीक रजि०) ऐसे निकले जिन्होंने आपकी तस्दीक की। और इस बात का इक्कार किया कि आपके ज़रिए अल्लाह ने अपने सच्चे दीन को ज़ाहिर किया है। यहूद के न मानने की वजह महज उनकी ख़्वाहिशपरस्ती थी। वे जिन गिरोही ख़ुशख़्वालिओं में जी रहे थे, उनसे वे निकलना नहीं चाहते थे। जो इन्कार महज ख़्वाहिशपरस्ती की बुनियाद पर पैदा हो उसे तोड़ने में कभी कोई दलील कामयाब नहीं होती। ऐसा आदमी दलीलों के इन्कार से अपने लिए वह रिज्क हासिल करने की कोशिश करता है जो उसके ख़ालिक ने सिर्फ़ दलीलों के एतराफ़ (स्वीकार) में रखा है।

अल्लाह की तरफ़ से जब किसी हक़ के हुक्म का एलान होता है तो वह ऐसी क़र्टई दलीलों के साथ होता है कि कोई अल्लाह का बंदा इसकी सदाक़त (सच्चाई) को पहचानने से आजिज न रहे। ऐसी हालत में जो लोग शुबह में पड़े वे सिर्फ़ यह साबित कर रहे हैं कि वे खुदा से आशना न थे। इसलिए वे खुदा की बोली को पहचान न सके। इसी तरह वे लोग जो हक़ के ख़िलाफ़ कुछ अल्फ़ाज़ बोल कर समझते हैं कि उन्हीं हक़ का एतराफ़ न करने के लिए मजबूत तार्किक सहारे खोज लिए हैं बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा कि वे महज फर्ज़ी सहारे थे जो उनके नफ़्स ने अपनी झूठी तस्कीन के लिए गढ़ लिए थे।

وَلِكُلِّ وُجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيُّهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ ۚ إِنَّا مَّا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَإِنَّ لِلْحَقِّ مِنْ رَبِّكَ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۖ وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۚ إِنَّكَ يَكُونُ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ ۖ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي ۚ وَلَا تَمْنَعِي عَابَتُهُمْ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۖ كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رُسُلًا مِّنكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّامَةَ ۖ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۖ فَادْكُرُونِي أذكُرْكُمْ ۖ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُون ۚ

हर एक के लिए एक रुख़ है जिधर वह मुंह करता है। पस तुम भलाइयों की तरफ़ दौड़ो। तुम जहां कहीं होंगे अल्लाह तुम सबको ले आएगा। बेशक अल्लाह सब कुछ कर सकता है। और तुम जहां से भी निकलो अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ़ करो। बेशक यह हक़ है, तुम्हारे रब की तरफ़ से है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बेख़बर नहीं। और तुम जहां से भी निकलो अपना रुख़ मस्जिदे हराम की तरफ़ करो और तुम जहां भी हो अपना रुख़ को उसी की तरफ़ रखो ताकि लोगों को तुम्हारे ऊपर कोई हुज़त बाकी न रहे, सिवाए उन लोगों के जो इनमें बेइंसाफ़ हैं। पस तुम उनसे न डरो और मुझसे डरो। और ताकि मैं अपनी नेमत तुम्हारे ऊपर पूरी कर दूं। और ताकि तुम राह पा जाओ। जिस तरह हमने तुम्हारे दर्मियान एक रसूल तुम्हीं में से भेजा जो तुम्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाता है और तुम्हें पाक करता है और तुम्हें किताब की और हिकमत (तत्वदर्शिता, सूझबूझ) की तालीम देता है और तुम्हें वे चीज़ें सिखा रहा है जिन्हें तुम नहीं जानते थे। पस तुम मुझे याद रखो मैं तुम्हें याद रखूंगा। और मेरा एहसान मानो, मेरी नाशुक्री मत करो। (148-152)

कावे को क़िबला मुक़र्रर किया गया तो यहूदियों और ईसाइयों ने इस किस्म की बहसें छेड़ दीं कि मगरिब (पश्चिम) की दिशा खुदा की दिशा है या मशरिक (पूर्व) की दिशा। वे इस मसले को बस रुख़बंदी के मसले की हैसियत से देख रहे थे। मगर यह उनकी नासमझी थी। कावे को क़िबला मुक़र्रर करने का मामला सादा तौर पर एक इबादती रुख़ मुक़र्रर करने का मामला नहीं था, बल्कि यह एक अलामत थी कि अल्लाह के बंदों के लिए उस सबसे बड़े ख़ैर

(कल्याण) के उतरने का वक्त आ गया है जिसका फैसला बहुत पहले किया जा चुका था। यह इब्राहीम व इस्माईल (अलैहि०) की दुआ के मुताबिक मुहम्मद (सल्ल०) का जुहूर (प्रकटन) है। अब वह आने वाला आ गया है जो इंसान के ऊपर अल्लाह की अवदी (चिरस्थायी, जीवन्त) हिदायत का रास्ता खोले और उसकी हिदायत की नेमत को आखिरी हद तक कामिल (पूर्ण) कर दे। जो दीन अल्लाह की तरफ से बार-बार भेजा जाता रहा मगर इंसानों की गफ़लत और सरकशी से जाये (विनष्ट) होता रहा, उसे उसकी पूरी सूरत में हमेशा के लिए महफूज (सुरक्षित) कर दे। खुदा का दीन जो अब तक महज रियायती अपसाना बना हुआ था, उसे एक हकीकी वाक्या की हैसियत से इंसानी इतिहास में शामिल कर दे। वह दीन जिसका कोई मुस्तकिल नमूना कायम नहीं हो सका था, उसे एक जिंदा अमली नमूने की हैसियत से लोगों के सामने रख दे। यह इलाही हिदायत की तकमील (पूर्णता) का मामला है न कि विभिन्न दिशाओं में से कोई 'पवित्र दिशा' निर्धारित करने का।

कावे की तामीर के वक्त ही यह सुनिश्चित हो चुका था कि आखिरी रसूल के जरिए जिस दीन का जुहूर (प्रकटन) होगा उसका मर्कज काबा होगा। पिछले अबिया मुसलसल लोगों को इसकी खबर देते रहे। इस तरह अल्लाह की तरफ से कावे को तमाम कौमों के लिए किबला मुकर्र करना गोया मुहम्मद (सल्ल०) की हैसियत को साबितशुदा बनाना था। अब जो संजीदा लोग हैं उनके लिए अल्लाह का यह एलान आखिरी हुज्जत है। और जो आखिरत से बेखौफ हैं उनकी जवान को कोई भी चीज रोकने वाली साबित नहीं हो सकती। जो लोग अल्लाह से डरने वाले हैं वही हिदायत का रास्ता पाते हैं। अल्लाह को याद रखना ही किसी को इसका हकदार बनाता है कि अल्लाह उसे याद रखे। अल्लाह से खौफ रखना ही इस बात की ज़मानत है कि अल्लाह उसे दूसरी तमाम चीजों से बेखौफ कर दे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَمْوَاتٌ وَلَكِنْ لَا تَشْعُرُونَ ۚ وَكَتَبَلُوا كُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالشَّمْرِ تَوْبَتِ الصَّابِرِينَ ۚ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ۚ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْتَتُونَ

ऐ ईमान वाले, सन्न और नमाज से मदद हासिल करो। यकीनन अल्लाह सन्न करने वालों के साथ है। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा मत कहो बल्कि वे जिंदा हैं मगर तुम्हें खबर नहीं। और हम जरूर तुम्हें आजमाएंगे कुछ डर और भूख से और मालों और जानों और फलों की कमी से। और साबित कदम रहने वालों

को खुशखबरी दे दो जिनका हाल यह है कि जब उन्हें कोई मुसीबत पहुंचती है तो वे कहते हैं : हम अल्लाह के हैं और हम उसी की तरफ लौटने वाले हैं। यही लोग हैं जिनके ऊपर उनके रब की शाबाशियां हैं और रहमत है। और यही लोग हैं जो राह पर हैं। (153-157)

दीन यह है कि आदमी अपने खालिक (रचयिता) को इस तरह पा ले कि उसकी याद में और उसकी शुक्रगुजारी में उसके सुबह व शाम बसर होने लगे। इस किस्म की जिंदगी ही तमाम खुशियों और लज्जों का खजना है। मगर ये खुशियां और लज्जें अपनी हकीकी सूरत में सिर्फ आखिरत में मिलेंगी। मौजूदा दुनिया को अल्लाह तआला ने इनाम के लिए नहीं बनाया बल्कि इम्तेहान के लिए बनाया है, यहां ऐसे हालात रखे गए हैं कि खुदापरस्ती की राह में आदमी के लिए रुकावटें पड़ें ताकि मालूम हो कि कौन अपने ईमान के इज्हार में संजीदा है और कौन संजीदा नहीं। नपस के प्रेक तत्व, बीबी-बच्चों के तक़जे, दुनिया की मस्लेहें, शैतान के वसवसे, समाजी हालात का दबाव, ये चीजें फितने की सूरत में आदमी को घेरे रहती हैं। आदमी के लिए जरूरी हो जाता है कि वह इन फितनों को पहचाने और इनसे अपने आपको बचाते हुए ज़िफ़ व शुक्र के तक़जे पूरा करे।

इन इम्तेहानी मुश्किलों के मुक़ाबले में कामयाबी का वाहिद (एक मात्र) जरिया नमाज और सन्न है। यानी अल्लाह से लिपटना और हर किस्म की नाखुशगवारियों को बर्दाश्त करते हुए पक्के इरादे से हक के रास्ते पर जमे रहना। जो लोग प्रतिकूल हालात सामने आने के बावजूद न बिदकें और बजाहिर ग़ैर-अल्लाह में नफ़ा देखते हुए अल्लाह के साथ अपने को बांधे रहें वही वे लोग हैं जो सुन्नते इलाही के मुताबिक कामयाबी की मंजिल तक पहुंचेंगे।

हक की राह में मुश्किलों और मुसीबतों का दूसरा सबब मोमिन का दावती किरदार (आह्वानपरक भूमिका) है। तबलीग़ व दावत (आह्वान) का काम नसीहत और तंकीद (आलोचना) का काम है। और नसीहत व तंकीद हमेशा आदमी के लिए भड़काऊ चीज रही है, इनमें भी नसीहत सुनने के लिए सबसे ज्यादा हस्सास (संवेदनशील) वे लोग होते हैं जो अपने दुनिया के कारोबार को दीन के नाम पर कर रहे हैं। दाआ (आह्वानकर्ता) की जात और उसके पैग़ाम में ऐसे तमाम लोगों को अपनी हैसियत की नफ़ी (नकार) नजर आने लगती है। दाआ का वजूद एक ऐसी तराजू बन जाता है जिस पर हर आदमी तुल रहा हो। इसका नतीजा यह होता है कि दाआ बनना भिड़ के छत्ते में हाथ डालने के समान बन जाता है। ऐसा आदमी अपने माहौल के अंदर बेजगह कर दिया जाता है। उसकी आर्थिक हैसियत तबाह हो जाती है, उसकी तरक्कियों के दरवाजे बंद हो जाते हैं। यहां तक कि उसकी जान तक ख़तरे में पड़ जाती है। मगर वही आदमी राह पर है जिसे बेराह बता कर सताया जाए। वही पाता है जो अल्लाह की राह में खोए। वही जी रहा है जो अल्लाह की राह में अपनी जान दे दे। आखिरत की जन्नत उसी के लिए है जो अल्लाह की खातिर दुनिया की जन्नत से महरूम (वंचित) हो गया हो।

إِنَّ الصَّفَا وَالرِّوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَبَّ الْبَيْتَ أَوَاعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرٌ إِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ أُولَٰئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّعْنُونَ ۖ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُّوا فَإُولَٰئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَٰئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۖ خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝

सफा और मरवह बेशक अल्लाह की यादगारों में से हैं। पस जो शख्स बैतुल्लाह का हज करे या उमरा करे तो उस पर कोई हरज नहीं कि वह इनका तवाफ (परिक्रमा) करे और जो कोई शौक से कुछ नेकी करे तो अल्लाह कद्र करने वाला है, जानने वाला है। जो लोग छुपाते हैं हमारी उतारी हुई खुली निशानियों को और हमारी हिदायत को, बाद इसके कि हम इसे लोगों के लिए किताब में खोल चुके हैं तो वही लोग हैं जिन पर अल्लाह लानत करता है और उन पर लानत करने वाले लानत करते हैं। अलबत्ता जिन्होंने तौबा की और इस्लाह कर ली और बयान किया तो उन्हें मैं माफ कर दूंगा और मैं हूं माफ करने वाला, महरबान। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और उसी हाल में मर गए तो वही लोग हैं कि उन पर अल्लाह की, फरिश्तों की और आदमियों की सबकी लानत है। उसी हाल में वे हमेशा रहेंगे। उन पर से अजाब हल्का नहीं किया जाएगा और न उन्हें ढील दी जाएगी। (158-162)

हजरत इब्राहीम (अलै०) का वतन इराक था। अल्लाह के हुक्म से वह अपनी बीवी हाजरा और छोटे बच्चे इस्माईल को लाकर उस मकाम पर छोड़ गए जहां आज मक्का है। उस वक्त यहां न कोई आबादी थी और न पानी। प्यास का तक्राजा हुआ तो हाजरा पानी की तलाश में निकलीं। परेशानी के आलम में वह सफा और मरवह नाम की पहाड़ियों के दरमियान दौड़ती रहीं। सात चक्कर लगाने के बाद नाकाम लौटें तो देखा कि उनके निवास-स्थल के पास एक चश्मा फूट निकला है। यह चश्मा बाद को जमजम के नाम से मशहूर हुआ। यह एक अलामती वाक्या है जो बताता है कि अल्लाह का मामला अपने बंदों से क्या है। अल्लाह का कोई बंदा अगर अल्लाह की राह में बढ़ते हुए उस हद तक चला जाए कि उसके कदमों के नीचे रेगिस्तान और बियाबान के सिवा कुछ न रहे तो अल्लाह अपनी कुदरत से रेगिस्तान

में उसके लिए रिज्क के चश्मे जारी कर देगा। हज और उमरा में सफा और मरवह के दरमियान 'सअी' का मक्सद उसी तारीख की याद को ताजा करना है।

हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की जिंदगी और तालीमात में अल्लाह की निशानियां इतनी स्पष्ट थीं कि यह समझना मुश्किल न था कि आपकी जवान पर अल्लाह का कलाम जारी हुआ है। मगर यहूदी उलमा (विद्वानों) ने आपका इकरार नहीं किया। उन्हें अदेशा था कि अगर वे मुहम्मद (सल्ल०) को मान लें तो उनकी मजहबी बड़ाई खत्म हो जाएगी। उनकी जमी हुई तिजारतें उजड़ जाएंगी। अपनी कामयाबी का राज उन्होंने हक को छुपाने में समझा। हालांकि उनकी कामयाबी का राज हक के एलान में था। हक की तरफ बढ़ने में वे अपने आपको बेजमीन होता हुआ देख रहे थे। मगर वे भूल गए कि यही वह चीज है जो अल्लाह तआला को सबसे ज्यादा मलूब है। जो बंदा हक की खातिर बेजमीन हो जाए वह सबसे बड़ी जमीन को पा लेता है। यानी अल्लाह रब्बुल आलमीन की नुसरत (मदद) को।

ताहम अल्लाह की रहमत का दरवाजा आदमी के लिए हर वक्त खुला रहता है। इब्तिदाई तौर पर गलती करने के बाद अगर आदमी को होश आ जाए और वह पलट कर सही रवैया अपना ले, वह उस हक का एलान करे जिसे अल्लाह चाहता है कि उसका एलान किया जाए तो अल्लाह उसे माफ कर देगा। मगर जो लोग एतराफ न करने पर अड़े रहें और इसी हाल में मर जाएं तो वे अल्लाह की रहमतों से दूर कर दिए जाएंगे।

إِنَّ إِلَٰهَكُمْ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۚ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَخِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيْحِ وَالسَّحَابِ الْمُسْتَظْهِرِ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

और तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह बड़ा महरबान है, निहायत रहम वाला है। बेशक आसमानों और जमीन की बनावट में और रात और दिन के आने जाने में और उन कश्तियों में जो इंसानों के काम आने वाली चीजें लेकर समुद्र में चलती हैं और उस पानी में जिसको अल्लाह ने आसमान से उतारा, फिर उससे मुर्दा जमीन को जिंदगी बख्शी, और उसने जमीन में सब क्रिस्म के जानवर पैदा दिए। और हवाओं की गर्दिश में और बादलों में जो आसमान और जमीन के दरमियान हुक्म के ताबेअ हैं, उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक्ल से काम लेते हैं। (163-164)

इंसान का खुदा एक ही खुदा है और वही इस काबिल है कि वह इंसान की तवज्जोहात का मर्कज बने। हमारा वजूद और वह सब कुछ जो हमें जमीन पर हासिल है वह इसीलिए है कि हमारा यह खुदा रहमतों और महरबानियों का खजाना है। आदमी को चाहिए कि उसे

मअनों में अपना माबूद बनाये। वह उसी के लिए जिये और उसी के लिए मरे और अपनी तमाम उम्मीदों और तमन्नाओं को हमेशा के लिए उसी के साथ वाबस्ता कर दे। जिस तरह एक छोटा बच्चा अपना सब कुछ सिर्फ अपनी मां को समझता है, इसी तरह खुदा इंसान के लिए उसका सब कुछ बन जाये।

हमारे सामने फैली हुई कायनात अल्लाह का एक अजीमुशान तआरुफ है। जमीन और आसमान की सूरत में एक अथाह कारखाने का मौजूद होना जाहिर करता है कि जरूर इसका कोई बनाने वाला है। तरह-तरह की जाहिरी भिन्नताओं और अन्तर्विरोधों के बावजूद तमाम चीजों का हर दर्जा सामंजस्य के साथ काम करना साबित करता है कि इसका खालिक और मालिक सिर्फ एक है। कायनात की चीजों में नफाबुखी की सलाहियत (क्षमता) होना गोया इस बात का एलान है कि उसकी मंसूबाबंदी कामिल शुऊर के तहत बिलइरादा की गई है। बजाहिर बेजान चीजों में कुदरती अमल से जान और ताजगी का आ जाना बताता है कि कायनात में मौत महज आरजी है, यहां हर मौत के बाद लाजिमन दूसरी जिंदगी आती है। एक ही पानी और एक ही खुराक से किस्म-किस्म के जीवों का अनगिनत तादाद में पाया जाना अल्लाह की बेहिसाब कुदरत का पता देता है। हवा का मुकम्मल तौर पर इंसान को अपने घरे में लिए रहना बताता है कि इंसान पूरी तरह अपने खालिक (रचयिता) के कब्जे में है। कायनात की तमाम चीजों का इंसानी जरूरत के मुताबिक सधा हुआ होना साबित करता है कि इंसान का खालिक एक बेहद महरबान हस्ती है। वह उसकी जरूरतों का एहतेमाम उस वक्त से कर रहा होता है जबकि उसका वजूद भी नहीं होता।

कायनात में इस किस्म की निशानियां गोया मख़्बूक़त (सृष्टि) के अंदर खालिक की झलकियां हैं। वह अल्लाह की हस्ती का, उसके एक होने का, उसके तमाम सिफाते कमाल का जामेअ (परिपूर्ण) होने का इतने बड़े पैमाने पर इज्हार कर रही हैं कि कोई आंख वाला इसे देखने से महरूम न रहे और कोई अकल वाला इसे पाने से आजिज न हो। दलीलों को वही शख्स पाता है जो दलीलों पर गौर करता हो। वह सच्चाई को जानने के मामले में संजीदा हो। वह मस्तेहतों से ऊपर उठ कर राय कायम करता हो। वह जाहिरी चीजों में उलझ कर न रह गया हो बल्कि जाहिरी चीजों के पीछे छुपी हुई भीतरी हकीकत को जानने का इच्छुक हो।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ
أَمْنُوا اشْتَدُّ حُبًّا لِلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرُونَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ
لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ۝ إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ
الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ
اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّا كُنَّا نَدْرِكُهُمْ لَسَخَّطْنَا عَلَيْهِمُ الْعَذَابَ ۚ فَمَنْ أَغْلَىٰ الْأَبْصَارَ ۚ
وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَاهِدُ فِتْنَتَ اللَّهِ فَلْيُجَاهِدْ ۖ إِنَّهُ لَمَحْكُومٌ مِّن لَّدُنَّا ۚ

और कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसके बराबर ठहराते हैं। उनसे ऐसी मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से रखना चाहिए। और जो ईमान वाले हैं वे सबसे ज्यादा अल्लाह से मुहब्बत रखने वाले हैं। और अगर ये जालिम उस वक्त को देख लें जबकि वे अजाब को देखेंगे कि जोर सारा का सारा अल्लाह का है और अल्लाह बड़ा सख्त अजाब देने वाला है। जबकि वे लोग जिनके कहने पर दूसरे चलते थे उन लोगों से अलग हो जाएंगे जो इनके कहने पर चलते थे। अजाब उनके सामने होगा और उनके सब तरफ के रिश्ते टूट चुके होंगे। वे लोग जो पीछे चले थे कहेंगे काश हमें दुनिया की तरफ लौटना मिल जाता तो हम भी उनसे अलग हो जाते जैसे ये हमसे अलग हो गए। इस तरह अल्लाह इनके आमाल को उन्हें हसरत बना कर दिखाएगा और वे आग से निकल नहीं सकेंगे। (165-167)

आदमी अपनी फितरत और अपने हालात के लिहाज से एक ऐसी मख़्बूक है जो हमेशा एक वास्तविक सहरा चाहता है, एक ऐसी हस्ती जो उसकी कमियों की तलाफी (क्षतिपूर्ति) करे और उसके लिए एतमाद और यकीन की बुनियाद हो। किसी को इस हैसियत से अपनी जिंदगी में शामिल करना उसे अपना माबूद बनाना है। जब आदमी किसी हस्ती को अपना माबूद बनाता है उसके बाद लाजिमी तौर पर ऐसा होता है कि आदमी के मुहब्बत और अकीदत (श्रद्धा) के जच्चात उसके लिए खास हो जाते हैं। आदमी ऐन अपनी फितरत के लिहाज से मजबूर है कि किसी से हुब्वे शदीद (अति प्रेम) करे और जिससे कोई हुब्वे शदीद करे वही उसका माबूद (पूज्य) है। मौजूदा दुनिया में चूंकि खुदा नजर नहीं आता इसलिए जाहिरपरस्त इंसान आमतौर पर नजर आने वाली हस्तियों में से किसी हस्ती को वह मक़म दे देता है जो दरअसल खुदा को देना चाहिए। ये हस्तियां अक्सर वे सरदार और पेशवा होते हैं जो किसी जाहिरी विशेषता के आधार पर लोगों के आकर्षण का केन्द्र बन जाते हैं। आदमी की फितरत की रिक्तता जो हकीकत में इसलिए थी कि उसे ख़ुल आलमीन से भरा जाए वहां वह किसी सरदार या पेशवा को बिठा लेता है।

ऐसा इसलिए होता है कि किसी इंसान के गिर्द कुछ जाहिरी रैनक देख कर लोग उसे 'बड़ा' समझ लेते हैं। कोई अपने ग़ैर मामूली शख्सी औसाफ (गुणों) से लोगों को मुतास्सिर कर लेता है। कोई किसी गद्दी पर बैठ कर सैकड़ों साल की रिवायतों (परम्पराओं) का वारिस बन जाता है। किसी के यहां इंसानों की भीड़ देख कर लोगों को गलतफहमी हो जाती है कि वह आम इंसानों से बुलंदतर कोई इंसान है। किसी के गिर्द रहस्यमयी कहानियों का हाला तैयार हो जाता है और समझ लिया जाता है कि वह ग़ैर-मामूली कुव्वतों का हामिल (धारक) है। मगर हकीकत यह है कि खुदा की इस कायनात में खुदा के सिवा किसी को कोई ज़ेर या बड़ाई हासिल नहीं। इंसान को खुदा का दर्जा देने का कारोबार उसी वक्त तक है, जब तक खुदा जाहिर नहीं होता। खुदा के जाहिर होते ही सूरतेहाल इतनी बदल जाएगी कि बड़े अपने छोटों से भागना चाहेंगे और छोटे अपने बड़ों से। वह वाबस्तगी (संबंध) जिस पर आदमी दुनिया में फख्र करता था, जिससे वफादारी और शेफ़तगी (स्नेह) दिखा कर आदमी समझता था

कि उसने सबसे बड़ी चट्टान को पकड़ रखा है वह आखिरत के दिन इस तरह बेमअना साबित होगी जैसे उसकी कोई हकीकत ही न हो। आदमी अपनी गुजरी हुई जिंदगी को हसरत के साथ देखेगा और कुछ न कर सकेगा।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۚ إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۚ وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوْ لَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَحْتَدُونَ ۚ وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً ۚ صُمُّوا بِكُمْ عُمَىٰ ۖ لَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۚ

लोगो! जमीन की चीजों में से हलाल और सुथरी चीजें खाओ और शैतान के कदमों पर मत चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। वह तुमको सिर्फ बुरे काम और बेहयाई की तलकीन करता है और इस बात की कि तुम अल्लाह की तरफ वे बातें मंसूब करो जिनके बारे में तुम्हें कोई इल्म नहीं। और जब उनसे कहा जाता है कि उस पर चलो जो अल्लाह ने उतारा है तो वे कहते हैं कि हम उस पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है। क्या उस सूत्र में भी कि उनके बाप दादा न अक्ल रखते हों और न सीधी राह जानते हों। और इन मुंकिरों की मिसाल ऐसी है जैसे कोई शख्स ऐसे जानवर के पीछे चिल्ला रहा हो जो बुलाने और पुकारने के सिवा और कुछ नहीं सुनता। ये बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं। वे कुछ नहीं समझते। (168-171)

शिरक क्या है, उबूदियत (दासता, भक्ति) के जज्बात की तस्कीन के लिए खुदा के सिवा कोई दूसरा मर्कज बना लेना। खुदा इंसान की सबसे बड़ी और लाजिमी जरूरत है। खुदा की तलब इंसानी फितरत में इस तरह बसी हुई है कि कोई शख्स खुदा के बगैर रह नहीं सकता। इंसान की गुमराही खुदा को छोड़ना नहीं है बल्कि असली खुदा की जगह किसी फर्जी खुदा को अपना खुदा बना लेना है। इसलिए शरीअत में हर उस चीज को हराम करार दिया गया है जो किसी भी दर्जे में आदमी की फितरी तलब को अल्लाह के सिवा किसी और तरफ मोड़ देने वाली हो।

बुतपरस्त कौमों के नाम पर जानवर छोड़ती हैं और इन जानवरों को खाना या इनसे नफा उठाना हराम समझती हैं। जदीद तहजीब (आधुनिक सभ्यता) में भी यह रस्म 'राष्ट्रीय पक्षी' और 'राष्ट्रीय पशु' जैसी सूत्रों में राज है। इस तरह किसी चीज को अपने लिए हराम कर लेना महज एक सादा कानूनी मामला नहीं है बल्कि यह अल्लाह के साथ शिरक करना है।

क्योंकि जब एक चीज को इस तरह हराम ठहराया जाता है तो इसकी वजह यह होती है कि किसी स्वनिर्मित आस्था की वजह से इसे पवित्र समझ लिया जाता है। यह खुदा के अधिकारों में गैर खुदा को साझी बनाना है, यह सम्मान और पवित्रता के उन फितरी जज्बात को बांटना है जो सिर्फ खुदा के लिए हैं और जिन्हें सिर्फ खुदा ही के लिए होना चाहिए। शैतान इस किसम के रीति-रिवाज इसलिए डालता है ताकि आदमी के अंदर छुपे हुए सम्मान और पवित्रता के जज्बात को विभिन्न दिशाओं में बांट कर अल्लाह के साथ उसके तअल्लुक को कमजोर कर दे।

एक बार जब किसी गैर अल्लाह को मुकद्दस (पवित्र) मान लिया जाए तो इंसान की तवहमपरस्ती (अंधविश्वास) उसमें नयी-नयी बुराइयां पैदा करती रहती है। एक 'जानवर' को उन रहस्यमयी गुणों का धारक मान लिया जाता है जो सिर्फ खुदा के लिए ख़ास हैं। इसे खुदा की कुरबत (समीपता) हासिल करने का जरिया समझ लिया जाता है। उससे बरकत और काम बनने की उम्मीद की जाती है। यह चीज जब अगली नस्तों तक पहुंचती है तो वह इसे पूर्वजों की मुकद्दस सुन्नत (पवित्र तरीका) समझ कर इस तरह पकड़ लेती है कि अब इस पर किसी क्रिम का गौर व फिक्र मुमकिन नहीं होता। यहां तक कि वह वक्त आता है जबकि लोग दलील की जवान समझने में इतने असमर्थ हो जाते हैं गोया कि उनके पास न आंख और न कान हैं जिनसे वे देखें और सुनें और न उनके पास दिमाग है जिससे वे किसी बात को समझें।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۚ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَوَحْمَ وَالْخِنْزِيرَ وَمَا أَهَلَ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ وَيَشْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابِ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ نَزَلِ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۚ

ऐ ईमान वाले हमारी दी हुई पाक चीजों को खाओ और अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम उसकी इबादत करने वाले हो। अल्लाह ने तुम पर हराम किया है सिर्फ मुर्दार को और खून को और सुअर के गोشت को। और जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो। फिर जो शख्स मजबूर हो जाए, वह न ख्वाहिशमंद हो और

न हद से आगे बढ़ने वाला हो तो उस पर कोई गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। जो लोग उस चीज को छुपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में उतारी है और इसके बदले में थोड़ा मोल लेते हैं, वे अपने पेट में सिर्फ आग भर रहे हैं। कियामत के दिन अल्लाह न उनसे बात करेगा और न उन्हें पाक करेगा और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। ये वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही का सौदा किया और बख्शिश के बदले अजाब का, तो कैसी सहार है उन्हें आग की। यह इसलिए कि अल्लाह ने अपनी किताब को ठीक-ठीक उतारा मगर जिन लोगों ने किताब में कई राहें निकाल लीं वे ज़िद में दूर जा पड़े। (172-176)

खाने-पीने की चीजों को इस्तेमाल करते हुए जो एहसासात आदमी के अंदर उभरने चाहिए वे शुक्र और इताअते इलाही (ईश आज्ञापालन) के एहसासात हैं। यानी यह कि 'हम अल्लाह की दी हुई चीज को अल्लाह के हुक्म के मुताबिक खा रहे हैं।' यह एहसास आदमी के अंदर खुदापरस्ती का जज्बा उभारता है। मगर खुदासाज़्जा (स्वनिर्मित) तौर पर जो अक्रीदे (आस्था, विश्वास) बनाए जाते हैं उसमें यह नफिसयात बदल जाती है। अब इंसान की तबज्जोह चीजों की काल्पनिक विशेषताओं की तरफ लग जाती है। जिन चीजों को पाकर अल्लाह के शुक्र का जज्बा उभरता उनसे खुद इन चीजों के एहताराम और तकद्दुस (पवित्रता) का जज्बा उभरता है। आदमी मक्बूक को ख़ालिक (रचयिता) का दर्जा दे देता है। किसी चीज के हराम होने की बुनियाद उसकी काल्पनिक पवित्रता या उसके बारे में तोहमाती अकाइद (अंधविश्वास) नहीं हैं। बल्कि इसके कारण बिल्कुल दूसरे हैं। यह कि वे चीजें नापाक हों और शरीअत ने उनकी नापाकी की तस्दीक (पुष्टि) की हो। जैसे मुर्दार, खून, सुअर। या खुदा के पैदा किए हुए जानवर को खुदा के सिवा किसी और नाम पर जबह करना आदि। मजबूरी की हालत में आदमी हराम को खा सकता है, जबकि भूख या बीमारी या हालात का कोई दबाव आदमी को इसके इस्तेमाल पर मजबूर कर दे। ताहम यह जरूरी है कि आदमी हराम चीज को राखत (पसंदीदगी) से न खाए और न उसे वाकई जरूरत से ज्यादा ले।

इस किस्म के अंधविश्वास जब अवामी मजहब बन जाएं तो उलमा (विद्वानों) का हाल यह हो जाता है कि इसके बारे में अल्लाह का हुक्म जानते हुए भी वे इसके एलान से डरने लगते हैं। क्योंकि उन्हें अंदेशा होता है कि इस तरह वे अवाम से कट जाएंगे जिनके दर्मियान मकबूलियत हासिल करके वे 'बड़े' बने हुए हैं। गुमराह अवाम से मुसालेहत (समझौता) अगरचे दुनिया में उन्हें इज्जत और दौलत देती है मगर अल्लाह की नजर में ऐसे लोग बदतरीन मुजरिम हैं। हक को मस्लेहत (स्वार्थ) की खातिर छुपाना उन ग़लतियों में से नहीं है जिनसे आखिरत में अल्लाह दरगुजर फरमाए। ये वे जराइम हैं जो आदमी को अल्लाह की इनायत की नजर से महरूम कर देते हैं। इनमें भी ज्यादा बुरे वे लोग हैं जिनके सामने हक पेश किया जाए और वे एतराफ करने के बजाए उसमें बेमअना बहसें निकालने लगे। ऐसे लोगों के अंदर ज़िद की नफिसयात पैदा हो जाती है और अंततः वे हक से इतना दूर हो जाते हैं कि कभी उसकी तरफ नहीं लौटते।

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ
أَمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ وَآتَى الْمَالَ عَلَى
حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسْكِينِ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ
وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّادِقِينَ فِي
الْبَأْسَاءِ وَالْكُرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ أُولَئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿١٧٧﴾

नेकी यह नहीं कि तुम अपने मुंह पूर्व और पश्चिम की तरफ कर लो। बल्कि नेकी यह है कि आदमी ईमान लाए अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर और फरिश्तों पर और किताब पर और पैगम्बरों पर। और माल दे अल्लाह की मुहब्बत में रिश्तेदारों को और यतीमों को और मोहताजों को और मुसाफिरों को और मांगने वालों को और गर्दन छुड़ाने में। और नमाज क़ायम करे और ज़कात अदा करे और जब अहद कर लें तो उसे पूरा करें। और सब्र करने वाले सख़ी और तकलीफ में और लड़ाई के वक़्त। यही लोग हैं जो सच्चे निकले और यही हैं डर रखने वाले। (177)

यहूद ने पश्चिम को अपना इबादत का किबला बनाया था और ईसाइयों ने पूर्व को। दोनों अपनी-अपनी दिशाओं को पवित्र समझते थे। दोनों को भरोसा था कि उन्होंने खुदा की पवित्र दिशा को अपना किबला बनाकर खुदा के यहां अपना दर्जा महफूज कर लिया है। मगर खुदापरस्ती यह नहीं है कि आदमी किसी 'मुकद्दस सुतून' (पवित्र स्तंभ) को धाम ले। खुदापरस्ती यह है कि आदमी खुद अल्लाह के दामन को पकड़ ले। दीनी अमल की अगरचे एक जाहिरी सूरत होती है। मगर हकीकत के एतबार से वह उस अल्लाह को पा लेता है जो जमीन और आसमान का नूर है, जो आदमी की शहरा से ज्यादा करीब है। अल्लाह के यहां जो चीज किसी को मकबूल बनाती है वह किसी किस्म की जहिरी चीजें नहीं बल्कि वह अमल है जो आदमी अपने पूरे वुजूद के साथ ख़ालिस अल्लाह के लिए करता है। अल्लाह का मकबूल बंदा वह है जो अल्लाह को इस तरह पा ले कि अल्लाह उसकी पूरी हस्ती में उतर जाए। वह आदमी के शुऊर में शामिल हो जाए। वह उसकी कमाइयों का मालिक बन जाए। वह उसकी यादों में समा जाए। वह उसके किरदार पर छा जाए। आदमी अपने रब को इस तरह पकड़ ले कि सख़्ततरीन वक़्तों में भी उसकी रस्सी उसके हाथ से छूटने न पाए। अल्लाह का हक उसकी सच्ची वफ़ादारी से अदा होता है न कि महज इधर या उधर रुख़ कर लेने से।

अल्लाह पर ईमान लाना यह है कि आदमी अल्लाह को अपना सब कुछ बना ले। आखिरत के दिन पर ईमान यह है कि आदमी दुनिया के बजाए आखिरत को ज़िंदगी का अस्ल मसला समझने लगे। फरिश्तों पर ईमान यह है कि वह खुदा के उन कारिंदों को माने जो

खुदा के हुक्म के तहत दुनिया का इतिजाम चला रहे हैं। किताब पर ईमान यह है कि आदमी यह यकीन करे कि अल्लाह ने इंसान के लिए अपना हिदायतनामा भेजा है जिसकी उसे लाजिमन पाबंदी करनी है। पैगम्बरों पर ईमान यह है कि अल्लाह के उन बंदों को अल्लाह का नुमाइंदा तस्लीम किया जाए जिन्हें अल्लाह ने अपना पैगाम पहुंचाने के लिए चुना। फिर ये ईमानियात आदमी के अंदर इतनी गहरी उतर जाएं कि वह अल्लाह की मुहब्बत और शौक में अपना माल जरूरतमंदों को दे और इंसानों को मुसीबत से छुड़ाए। नमाज कायम करना अल्लाह के आगे हमहतन (पूर्णरूपेण) झुक जाना है। जकात अदा करना अपने माल में खुदा के मुस्तकिल (स्थाई) हिस्से का इकरार करना है। ऐसा बंदा जब कोई अहद करता है तो इसके बाद वह इससे फिरना नहीं जानता। क्योंकि वह हर अहद को खुदा से किया हुआ अहद समझता है। उसे अल्लाह के ऊपर इतना भरोसा हो जाता है कि तंगी और मुसीबत हो या जंग की नौबत आ जाए, हर हाल में वह खुदापरस्ती के रास्ते पर जमा रहता है। ये औसाफ (गुण) जिसके अंदर पैदा हो जाएं वही सच्चा मोमिन है। और सच्चा मोमिन अल्लाह से अंदेशा रखने वाला होता है, न कि किसी झूठे सहारे पर एतमाद करके उससे निडर हो जाने वाला।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلِ الْحَرْبِ وَالْعَبْدِ
بِالْعَبْدِ وَالْأَنْثَى بِالْأُنْثَى فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ
وَأَدَاءٌ لِلْيَدِ بِإِحْسَانٍ ذَلِكَ تَخْفِيفٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدَى
بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ٥ كُتِبَ عَلَيْكُمُ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِن تَرَكَ خَيْرًا
الْوَصِيَّةَ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ٦ فَمَنْ
بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ٧ فَمَنْ خَافَ مِن مُّوَصٍّ جَنْفًا أَوْ رِشَابًا فَصَلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ
عَلَيْهِ ٨ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ٩

٩

ऐ ईमान वाले तुम पर मक्तूलों (मारे जाने वालों) का किासास (समान बदला) लेना फर्ज किया जाता है। आजाद के बदले आजाद, गुलाम के बदले गुलाम, औरत के बदले औरत। फिर जिसे उसके भाई की तरफ से कुछ माफ़ी हो जाए तो उसे चाहिए कि मारुफ (सामान्य तरीका) की पैरवी करे और खूबी के साथ उसे अदा करे। यह तुम्हारे रब की तरफ से एक आसानी और महरबानी है। अब इसके बाद भी जो शख्स ज्यादाती करे

उसके लिए दर्दनाक अजब है। और ऐ अक्ल वाले, किासास में तुम्हारे लिए जिंगी है ताकि तुम बचो। तुम पर फर्ज किया जाता है कि जब तुम में से किसी की मौत का वक्त आ जाए और वह अपने पीछे, माल छोड़ रहा हो तो वह मारुफ के मुताबिक वसीयत कर दे अपने मां-बाप के लिए और अपने रिश्तेदारों के लिए। यह जरूरी है खुदा से डरने वालों के लिए। फिर जो कोई वसीयत को सुनने के बाद उसे बदल डाले तो इसका गुनाह उसी पर होगा जिसने इसे बदला, यकीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अलबत्ता जिसे वसीयत करने वाले के बारे में यह अंदेशा हो कि उसने जानिबदारी या हकतलफी की है और वह आपस में सुलह करा दे तो उस पर कोई गुनाह नहीं। अल्लाह माफ करने वाला, रहम करने वाला है। (178-182)

कल्ल के मामले में इस्लाम में 'किासास' का उसूल मुकर्रर किया गया है। यानी कतिल के साथ वही किया जाए जो उसने मक्तूल (कल्ल होने वाले) के साथ किया है। इस तरह एक तरफ आइंदा के लिए कल्ल की हैसलाशिकनी (हतोत्साहन) होती है। क्योंकि अपनी जान का खौफ आदमी को दूसरे की जान लेने से रोकता है और इसके नतीजे में सबकी जानें महफूज हो जाती हैं। कतिल के कल्ल से पूरे समाज के लिए जिंगी की जमानत पैदा हो जाती है। दूसरी तरफ मक्तूल के वारिसों का इंतकामी जब्बा ठंडा हो कर समाज में किसी नई तख़रीबी (हिंसक) कार्रवाई के इम्कान को ख़त्म कर देता है। ताहम किासास का मामला इस्लाम में काबिले रजनीनामा है। मक्तूल के वारिस चाहें तो कतिल को कल्ल कर सकते हैं चाहें तो दियत (माली मुआवजा) ले सकते हैं और चाहें तो माफ कर सकते हैं। इस गुंजाइश का ख़ास मकसद यह है कि इस्लामी समाज में एक-दूसरे को भाई समझने की फजा बाकी रहे, एक-दूसरे को हरीफ (प्रतिरोधी) समझने की फजा किसी हाल में पैदा न हो। साथ ही खूनबहा (आर्थिक हर्जाना) के उसूल का एक ख़ास फायदा यह है कि इसके जरिये से मक्तूल के वारिसों को अपने चले जाने वाले ख़ानदान के फर्द का एक माली बदल मिल जाता है।

जब कोई मर जाता है तो यह मसला भी पैदा होता है कि उसकी विरासत का क्या किया जाए। इस सिलसिले में इस्लाम का उसूल यह है कि उसकी विरासत को उसके रिश्तेदारों में मारुफ तरीके से तक्सीम कर दिया जाए। यह गोया माल का तक्का है। जब मरने वालों के रिश्तेदारों तक हिस्सा ब हिस्सा उसका छोड़ा हुआ माल पहुंच जाए तो इससे समाज में यह फजा बनती है कि हक के मुताबिक जिसको जो दिया जाना चाहिए वह दिया जा चुका है। इस तरह ख़ानदान के अंदर छोड़े गये माल और जायदाद को हासिल करने के लिए आपसी विवाद पैदा नहीं होता। ख़ानदान का जो शख्स कानूनी एतबार से वारिस न करार पाता हो, मगर अख़्लाकी एतबार से वह मुस्तहिक हो तो मरने वाले को चाहिए कि वसीयत के जरिए इस ख़ला (रिक्तता) को पुर कर दे। (यहां विरासत के बारे में मारुफ के मुताबिक [समुचित रूप से] वसीयत करने का हुक्म है। आगे सूरह निसा में हर एक के हिस्से को कानूनी तौर पर सुनिश्चित कर दिया गया है।)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَ فِدْيَةَ طَعَامٍ مِّن سَكِينٍ ۖ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَهُ ۖ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَن شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۖ وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

ऐ ईमान वाले तुम पर रोजे फर्ज किया गया जिस तरह तुम से अंगलों पर फर्ज किया गया था ताकि तुम परहेजगार बनो। गिनती के कुछ दिन। फिर जो कोई तुममें बीमार हो या सफर में हो तो दूसरे दिनों में तादाद पूरी कर ले। और जिनको ताकत है तो एक रोजे का बदला एक मस्कीन का खाना है। जो कोई मजिद (अतिरिक्त) नेकी करे तो वह उसके लिए बेहतर है। और तुम रोजा रखो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है, अगर तुम जानो। रमजान का महीना जिसमें कुरआन उतारा गया, हिदायत है लोगों के लिए और खुली निशानियां रास्ते की और हक व बातिल के दरमियान फैसला करने वाला। पस तुम में से जो कोई इस महीने को पाए वह इसके रोजे रखे। और जो बीमार हो या सफर पर हो तो दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख्ती करना नहीं चाहता। और इसलिए कि तुम गिनती पूरी कर तो और अल्लाह की बढ़ाई करो इस पर कि उसने तुम्हें राह बताई और ताकि तुम उसके शुक्रगुजार बनो। (183-185)

रोजा एक ही वक्त में दो चीजों की तर्बियत है। एक शुक़, दूसरे तक़वा। खाना और पीना अल्लाह की बहुत बड़ी नेमतें हैं। मगर आम हालात में आदमी को इसका अंदाजा नहीं होता। रोजे में जब वह दिन भर इन चीजों से रुका रहता है और सूरज डूबने के बाद शदीद भूख प्यास की हालत में खाना खाता है और पानी पीता है तो उस वक्त उसे मालूम होता है कि यह खाना और पानी अल्लाह की कितनी बड़ी नेमतें हैं। इस तजर्व से उसके अंदर अपने रब के शुक़ का बेपनाह जज्बा पैदा होता है। दूसरी तरफ यही रोजा आदमी के लिए तक़वा की तर्बियत भी है। तक़वा यह है कि आदमी दुनिया की ज़िंदगी में खुदा की मना की हुई चीजों से बचे। वह उन चीजों से रुका रहे जिनसे खुदा ने रोका है। और वही करे

जिसके करने की खुदा ने इजाजत दी है। रोजे में सिर्फ रात को खाना और दिन में खाना-पीना छोड़ देना गोया खुदा को अपने ऊपर निगरां बनाने की मशक है। मोमिन की पूरी ज़िंदगी एक किस्म की रोजेज़ार ज़िंदगी है। रमजान के महीने में वक़्ती तौर पर कुछ चीजों को छुड़कर आदमी को तर्बियत दी जाती है कि वह सारी उम्र उन चीजों को छोड़ दे जो उसके रब को नापसंद हैं। कुरआन बंदे के ऊपर अल्लाह का इनाम है और रोजा बंदे की तरफ से इस इनाम का अमली एतराफ। रोजे के जरिए बंदा अपने आपको अल्लाह की शुक्रगुजारी के काबिल बनाता है। और यह सलाहियत पैदा करता है कि वह कुरआन के बताए हुए तरीके के मुताबिक दुनिया में तक्वे की ज़िंदगी गुज़ार सके।

रोजे से दिलों के अंदर नमी और शिकस्तगी (कोमलता) आती है। इस तरह रोजा आदमी के अंदर यह सलाहियत पैदा करता है कि वह उन कैफियतों को महसूस कर सके जो अल्लाह को अपने बंदों से मलूब हैं। रोजे की मशक़त (श्रम) वाली तर्बियत आदमी को इस काबिल बनाती है कि अल्लाह की शुक्रगुजारी में उसका सीना तड़पे और अल्लाह के ख़ौफ से उसके अंदर कपकपी पैदा हो। जब आदमी इस नपिसयाती हालत को पहुंचता है, उसी वक्त वह इस काबिल बनता है कि वह अल्लाह की नेमतों पर ऐसा शुक्र अदा करे जिसमें उसके दिल की धड़कनें शामिल हों। वह ऐसे तक़वे का तजुर्बा करे जो उसके बदन के रोंगटे खड़े कर दे। वह अल्लाह को ऐसे बड़े की हैसियत से पाए जिसमें उसका अपना वुजूद बिल्कुल छोटा हो गया हो।

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِلَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ ۝ أَحَلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَىٰ نِسَائِكُمْ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ۚ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنتُمْ تَخْتَلَوْنَ أَنفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنكُمْ ۖ فَالَّذِينَ لَا يَشْرُوْهُنَّ وَأَبْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۖ ثُمَّ أَتَمُوا الصِّيَامَ إِلَىٰ اللَّيْلِ ۚ وَلَا تَبَاشِرُوهُنَّ وَأَنتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ ۚ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۖ فَلَا تَقْرُبُوهَا ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ

اللَّهُ آيَاتِهِ لِّلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ وَ تَذَلُّوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

और जब मेरे बंदे तुम से मेरे बारे में पूछें तो मैं नजदीक हूँ, पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ जबकि वह मुझे पुकारता है। तो चाहिए कि वे मेरा हुक्म मानें और मुझ पर यकीन रखें ताकि वे हिदायत पाएं। तुम्हारे लिए रोजे की रात में अपनी बीवियों के पास जाना जाइज किया गया। वे तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए लिबास हो। अल्लाह ने जाना कि तुम अपने आप से खियानत कर रहे थे तो उसने तुम पर इनायत की और तुम्हें माफ कर दिया। तो अब तुम उनसे मिलो और चाहो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। और खाओ और पियो यहां तक कि सुबह की सफेद धारी काली धारी से अलग जाहिर हो जाए। फिर पूरा करो रोजा रात तक। और जब तुम मस्जिद में एतकाफ में हो तो बीवियों से खलवत (संभोग) न करो। ये अल्लाह की हदें हैं तो इनके नजदीक न जाओ। इस तरह अल्लाह अपनी आयतें लोगों के लिए बयान करता है ताकि वे बचें। और तुम आपस में एक-दूसरे के माल को नाहक तौर पर न खाओ और उन्हें हाकिमों तक न पहुंचाओ ताकि दूसरों के माल का कोई हिस्सा गुनाह के तौर पर खा जाओ। हालांकि तुम इसे जानते हो। (186-188)

रोजा अपनी नौइयत के एतबार से सब्र का अमल है। और सब्र, यानी हुक्मे इलाही की तामील में मुश्किलों को बर्दाश्त करना ही वह चीज है जिससे आदमी उस कल्बी (हार्दिक) हालत को पहुंचता है जो उसे खुदा के करीब करे और उसकी जवान से ऐसे कलिमात निकलवाए जो कुबूलियत को पहुंचने वाले हों। अल्लाह को वही पाता है जो अपने आपको अल्लाह के हवाले करे, अल्लाह तक उसी शख्स के अल्फाज पहुंचते हैं जिसने अपनी रूह के तारों को अल्लाह से मिला रखा हो।

शरीअत आदमी के ऊपर कोई गैर फितरी पाबंदी आयद नहीं करती। रोजे में दिन के वक्त में इज्जवाजी (विवाहिक) तअल्लुक मन्मूअ (निषिद्ध) होने के बावजूद रात के वक्त में इसकी इजाजत, इफ्तार और सहर के वक्त जानने के लिए जंतरी का पाबंद करने के बजाए आम मुशाहिदा (अवलोकन) को बुनियाद करार देना इसी किस्म की चीजें हैं। अंशों की तपसीलात में बंदों को गुंजाइश देते हुए अल्लाह ने सामान्य हदें स्पष्ट कर दी हैं। आदमी को चाहिए कि वह निर्धारित हदों का पूरी तरह पाबंद रहे और तपसीली अंशों में उस रविश को अपनाए जो तक्वा की रूह के मुताबिक है।

रोजे के हुक्म के फौरन बाद यह हुक्म कि 'नाजाइज माल न खाओ' यह बताता है कि रोजा की हकीकत क्या है। रोजा का असली मकसद आदमी के अंदर यह सलाहियत (क्षमता) पैदा करना है कि जहां खुदा की तरफ से रुकने का हुक्म हो वहां आदमी रुक जाए, यहां तक कि हुक्म हो तो जाइज चीज से भी, जैसा कि रोजा में होता है। अब जो शख्स खुदा के हुक्म की बुनियाद पर हलाल कमाई तक से रुक जाए वह उसी खुदा के हुक्म की बुनियाद पर हराम कमाई से क्यों न अपने आपको रोके रखेगा।

मेमिन की जिंगी एक किस्म की रोजदार जिंगी है। उसे सारी उम्र कुछ चीजें से 'इफ्तार' करना है और कुछ चीजों से मुस्तकिल (स्थाई) तौर पर 'रोज' रख लेना है। रमजान

का महीना इसी की तर्बियत है। फिर रोजा की मोहताता (एहतियात भरी) जिंदगी और उसका पुरमशक्कत अमल यह सबक देता है कि अल्लाह का इबादतगुजर बंधा वह है जो तक्वा की सतह पर अल्लाह की इबादत कर रहा हो। अल्लाह को पुकारने वाला सिर्फ वह है जो कुर्बानियों की सतह पर अल्लाह की नजदीकी हासिल करे।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْإِهْلَةِ قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَى وَأَتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ١٨٦ وَاقْتُلُواهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجْتُمُوهُمْ وَالثَّقِفَةُ إِذَا تَقَاتَلْتُمُ الْكُفْرِينَ ١٨٧ فَإِنْ أَنْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ١٨٨ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ فَإِنْ أَنْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ

वे तुम से चांदों के बारे में पूछते हैं। कह दो कि वे औकात (समय) हैं लोगों के लिए और हज के लिए। और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ छत पर से। बल्कि नेकी यह है कि आदमी परहेजगारी करे। और घरों में उनके दरवाजों से आओ और अल्लाह से डरो ताकि तुम कामयाब हो। और अल्लाह की राह में उन लोगों से लड़ो जो लड़ते हैं तुमसे। और ज्यादाती न करो। अल्लाह ज्यादाती करने वालों को पसंद नहीं करता। और कत्ल करो उन्हें जिस जगह पाओ, और निकाल दो उन्हें जहां से उन्होंने तुम्हें निकाला है। और फितना सख़्तर है कत्ल से। और उनसे मस्जिदे हराम के पास न लड़ो जब तक कि वे तुमसे इसमें जंग न छेड़ें। पस अगर वे तुमसे जंग छेड़ें तो उन्हें कत्ल करो। यही सजा है इंकार करने वालों की। फिर अगर वे बाज आ जाएं तो अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। और उनसे जंग करो यहां तक कि फितना बाकी न रहे और दीन अल्लाह का हो जाए। फिर अगर वे बाज आ जाएं तो इसके बाद सख़्ती नहीं है मगर जालिमों पर। (189-193)

चांद का घटना बढ़ना तारीख जानने के लिए है न कि तवहमपरस्तों के ख़याल के मुताबिक इसलिए कि बढ़ते चांद के दिन मुबारक (शुभ) हैं और घटते चांद के दिन मंहूस। यह

आसमान पर जाहिर होने वाली कुदरती जंतरी है ताकि इसे देखकर लोग अपने मामलात और अपनी इबादतों का निज़ाम मुक़रर करें। इसी तरह बहुत से लोग जाहिरी रस्मों को दीनदारी समझ लेते हैं। प्राचीनकालीन अरबों ने यह मान लिया था कि हज का एहराम बांधने के बाद अपने और आसमान के दरमियान किसी चीज का हायल (बाधा) होना एहराम के आदाब के खिलाफ है। इस मान्यता के सबब वे ऐसा करते कि जब एहराम बांधकर घर से बाहर आ जाते तो दुबारा दरवाजे के रास्ते से घर में न जाते बल्कि दीवार के ऊपर से चढ़कर सेहन में दाखिल होते। मगर इस किस्म के जाहिरी आदाब का नाम दीनदारी नहीं। दीनदारी यह है कि आदमी अल्लाह से डरे और जिंदगी में उसकी मुक़रर की हुई हदों की पाबंदी करे।

मोमिन को दीन का आमिल (अमल करने वाला) बनने के साथ दीन का मुजाहिद भी बनना है। यहां जिस जिहाद का जिक्र है यह वह जिहाद है जो मुहम्मद (सल्ल०) के जमाने में पेश आया। अरब के मुशरिकीन हुज्जत पूरी होने के बावजूद रिसालत की दावत (आह्वान) से इंकार करके अपने लिए जिंदगी का हक खो चुके थे। साथ ही उन्होंने जाहिहियत (आक्रमकता) का आगाज करके अपने खिलाफ फौजी कार्रवाई को दुरुस्त साबित कर दिया था। इस वजह से उसके खिलाफ तलवार उठाने का हुक्म हुआ। 'और उनसे लड़ो यहां तक कि फितना बाकी न रहे और दीन अल्लाह का हो जाए' का मतलब यह है कि अरब की सरजमीन से शिर्क (बहुदेववाद) का ख़ात्मा हो जाए और तौहीद के दीन (एकेश्वरवादी धर्म) के सिवा कोई दीन वहां बाकी न रहे। इस हुक्म के जरिए अल्लाह तआला ने अरब को तौहीद का दाइमी (स्थायी) मर्कज बना दिया।

अहले ईमान को जंग की इजाजत सिर्फ उस वक्त है जबकि प्रतिपक्ष की तरफ से हमला शुरू हो चुका हो। दूसरे यह कि जब अहले ईमान ग़लबा (वर्चस्व) पा लें तो इसके बाद माजी (अतीत) पर किसी के लिए कोई सजा नहीं। हथियार डालते ही माजी के जराइम माफ कर दिए जाएंगे। इसके बाद सजा का पात्र सिर्फ वह व्यक्ति होगा जो आइया कोई क़बिले सजा जुर्म करे। आम हालत में क़त्ल का हुक्म और है और जंगी हालात में क़त्ल का हुक्म और।

الشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَتِ قِصَاصٌ فَمَنْ اعْتَدَى عَلَيْكُمْ
فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَى عَلَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ
الْمُتَّقِينَ ④ وَاتَّقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ ⑤
وَاحْسِنُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ⑥

हुरमत (प्रतिष्ठा) वाला महीना हुरमत वाले महीने का बदला है और हुरमतों का भी कि़सास (समान बदला) है। पस जिसने तुम पर ज्यादती की तुम भी उस पर ज्यादती करो जैसी उसने तुम पर ज्यादती की है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह परहेजगारों के साथ है। और अल्लाह की राह में ख़र्च करो और

अपने आपको हलाकत में न डालो। और काम अच्छी तरह करो। बेशक अल्लाह पसंद करता है अच्छी तरह काम करने वालों को। (194-195)

हराम महीनों (मुह्रम, रजब, जीकअदह, ज़िलहिज्जह) में या हरमे मक्का की हदों में लड़ाई गुनाह है। मगर जब इस्लाम विरोधी तुम्हारे खिलाफ कार्रवाई करने के लिए उसकी हुरमत को तोड़ दें तो तुम को भी हक है कि कि़सास (समान बदला) के तौर पर उनकी हुरमत का लिहाज न करो। मगर दुश्मन के साथ दुश्मनी में तुम्हें अल्लाह से बेख़ौफ न हो जाना चाहिए। किसी हद को तोड़ने में तुम अपनी तरफ से इत्दा न करो और न कोई ऐसा इक़दाम करो जो जरूरी हद से ज्यादा हो। अल्लाह की मदद किसी को उसी वक्त मिलती है जबकि वह इश्तेआल (उत्तेजना) के वक्त में भी अल्लाह की निर्धारित की हुई हदों का पाबंद बना रहे।

कि़सास और जुम में यह फ़र्क है कि कि़सास दूसरे पक्ष की तरफ से की हुई ज्यादती के बराबर होता है। जबकि जुम इन हदबंदियों से बाहर निकल जाने का नाम है। एक शख्स को किसी से तकलीफ पहुंचे तो वह दूसरे शख्स को उतनी ही तकलीफ पहुंचा सकता है जितनी उसे पहुंची है। इससे ज्यादा की इजाजत नहीं। नसीहत बुरी लगे तो गाली और मजाक से उसका जवाब देना या जबान व कलम की शिकायत के बदले में आक्रमकता दिखाना तक़्वा के सरासर खिलाफ है। इसी तरह माली नुक़सान के बदले जानी नुक़सान, मामूली चोट के बदले ज्यादा बड़ी चोट, एक क़त्ल के बदले बहुत से आदमियों का क़त्ल, इस कि़स्म की तमाम चीजें जुम की परिभाषा में आती हैं। मुसलमान के लिए बराबर का बदला (कि़सास) जाइज है। मगर जुम किसी हाल में जाइज नहीं।

अल्लाह की राह में ज़द्दोज़ेहद सबसे ज्यादा जिस चीज का तक़्वा करती है वह माल है। और माल की कुर्बानी बिला शुबह आदमी के लिए सबसे ज्यादा मुश्किल चीज है। इसलिए हुक्म दिया कि अल्लाह के काम को अपना काम समझ कर उसकी राह में ख़ूब माल ख़र्च करो और इस काम को उसकी बेहतर से बेहतर सूरत में पूरा करो। 'अपने आपको हलाकत में न डालो' से मुराद बुख़ल (कंजूसी) है यानी ऐसा न हो कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च न करो, क्योंकि ख़र्च में दिल तंग होना दुनिया व आखिरत की बर्बादी है। आदमी माल ख़र्च कर देने को हलाकत समझता है मगर हकीकत यह है कि माल को अल्लाह की राह में ख़र्च न करना हलाकत है। आदमी के पास जो कुछ है अगर वह उसे अल्लाह के हवाले न करे तो अल्लाह के पास जो कुछ है वह क्यों उसे आदमी के हवाले करेगा।

आदमी अपनी दौलत का इस्तेमाल सिर्फ यह समझता है कि इसको अपने आप पर या अपने बीवी बच्चों पर ख़र्च करे। मगर इस ज़ेहन को क़ुरआन हलाकत बताता है। इसके बजाए दौलत का सही इस्तेमाल यह है कि इसको ज्यादा से ज्यादा दीन की ज़रूरतों में ख़र्च किया जाए। माल को सिर्फ अपने जाती हैसलों की पूर्ति में ख़र्च करना फ़र्द और मुआशिरा (व्यक्ति और समाज) को खुदा के राजब का मुस्तहिक बनाता है इसके बरअक्स जब माल को दीन की राह में ख़र्च किया जाए तो फ़र्द और जमाअत दोनों अल्लाह की रहमतों और नुसरतों के मुस्तहिक बनते हैं। ख़र्च करने वाले को इसका फ़ायदा बेशुमार सूरतों में दुनिया में भी हासिल होता है और आखिरत में भी।

وَاتَّبِعُوا الْحَبْرَ وَالْعُرَّةَ لِلَّهِ فَإِنْ أُخْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ وَلَا تَخْلَقُوا دُورَكُمْ حَتَّى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحَلَّهُ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أُمِنْتُمْ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَبْرِ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَبْرِ ۚ وَسَبْعَةٌ إِذَا رَجَعْتُمْ تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ ۚ ذَلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلُهُ حَاضِرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ الْحَبْرُ أَشْهُرٌ مَعْلُومَةٌ ۚ فَمَنْ قَرَضَ فِيهِ الْحَبْرَ فَلَا رَفْثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَبْرِ ۚ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمُهُ اللَّهُ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَىٰ وَاتَّقُونِ يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ ۝

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

और पूरा करो हज और उमरा अल्लाह के लिए। फिर अगर तुम घिर जाओ तो जो कुर्बानी का जानवर मयस्सर हो वह पेश कर दो और अपने सरों को न मुंडवाओ जब तक कि कुर्बानी अपने ठिकाने पर न पहुंच जाए। तुममें से जो बीमार हो या उसके सर में कोई तकलीफ हो तो वह अर्धघण्टा फिदया दे रोजा या सदन या कुर्बानी का। जब अन्न की हालत हो और कोई हज तक उमरा का फायदा हासिल करना चाहे तो वह कुर्बानी पेश करे जो उसे मयस्सर आए। फिर जिसे मयस्सर न आए तो वह हज के दिनों में तीन दिन के रोजे रखे और सात दिन के रोजे जबकि तुम घरों को लौटो। ये पूरे दस हुए। यह उस शख्स के लिए है जिसका खानदान मस्जिद हराम के पास आबाद न हो। अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह सख्त अजाब देने वाला है। हज के निर्धारित महीने हैं। पस जिसने हज का अज्र कर लिया तो फिर उसे हज के दौरान न कोई फहेश (अश्लील) बात करनी चाहिए और न गुनाह की और न लड़ाई झगड़े की। और जो नेक काम तुम करोगे अल्लाह उसे जान लेगा। और तुम जदेह (यात्रा-सामग्री) लो। बेहरीन जदेह तक्वा का जदेह है। और ऐ अक्ल वालो मुझ से डरो। (196-197)

जाहिलियत के जमाने के अरबों में भी हज का रिवाज था। मगर वह उनके लिए गोया एक कौमी रस्म या तिजारीती मेला था न कि एक अल्लाह की इबादत। मगर हज व उमरा हो या कोई और इबादत, उनकी अस्ल कीमत उसी वक्त है जबकि वह खालिसतन अल्लाह के लिए अदा की जाएं। जो शख्स अपनी रोजाना जिंदगी में अल्लाह का परस्तर बना हुआ हो जब वह अल्लाह की इबादत के लिए उठता है तो उसकी सारी नपिसयात सिमट कर उसी के ऊपर

लग जाती है। वह एक ऐसी इबादत का तजर्बा करता है जो जाहिरी तौर पर देखने में तो आदाब व मनासिक (रस्मों) का एक मज्बूआ होती है, मगर अपनी अंदरूनी रूह के एतबार से वह एक ऐसी हस्ती का अपने आपको अल्लाह के आगे डाल देना होता है जो अल्लाह से डरता हो और आखिरत की पकड़ का अंदेशा जिसकी जिंदगी का सबसे बड़ा मसला बना हुआ हो।

मोमिन वह है जो शहवत (वासना) के लिए जीने के बजाए मकसद के लिए जीने लगे। वह अपने मामलात में खुदा की नाफरमानी से बचने वाला हो और इज्तिमाई (सामूहिक) जिंदगी में आपस के लड़ाई-झगड़े से बचा रहे। हज का सफर इन अख्वाकी औसाफ की तर्बियत के लिए बहुत मौजू (उपयुक्त) है। इसलिए इसमें खासतौर पर इनकी ताकीद की गई है। इसी तरह हज में सफर का पहलू लोगों को सफर के सामान के एहतेमाम में लगा देता है। मगर अल्लाह के मुसाफिर की सबसे बड़ी जदेह (यात्रा सामग्री) तक्वा है। एक शख्स सफर के सामान के पूरे एहतेमाम के साथ निकले, दूसरा शख्स अल्लाह पर एतमाद (भरोसा) का सरमाया (पूँजी) लेकर निकले तो सफर के दौरान दोनों की नपिसयात एक जैसी नहीं हो सकती।

ऐ अक्ल वालो मेरा तक्वा इस्त्रियार करो।' से मालूम हुआ कि तक्वा एक ऐसी चीज है जिसका तअल्लुक अक्ल से है। तक्वा किसी जाहिरी स्वरूप का नाम नहीं है, यह अक्ल या शुऊर की एक हालत है। इंसान जब शुऊर की सतह पर अपने रब को पा लेता है तो उसका जेहन इसके बाद खुदा के जलाल व जमाल (प्रताप एवं सौंदर्य) से भर जाता है। उस वक्त रूह की लतीफ सतह पर जो कैफियतें पैदा होती हैं इन्हें का नाम तक्वा है।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَإِذَا أَقَضْتُمْ مِّنْ عَرَفَاتٍ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَكُمُ وَإِنْ كُنْتُمْ مِّن قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ ۝ ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ فَإِذَا أَقَضَيْتُمْ مِّنْ سَاكِمِكُمْ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشْدَّ ذِكْرًا ۚ فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِن خَلْقٍ ۚ وَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ رَبَّنَا إِنَّا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةٌ وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ ۚ فَمَن تَجَلَّيَ فِي يَوْمٍ مِّمَّنْ فَلَا اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَن تَأَخَّرَ فَلَا اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ لِمَنِ اتَّقَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْنَ تُحْشَرُونَ ۝

इसमें कोई गुनाह नहीं कि तुम अपने रब का फजल भी तलाश करो। फिर जब तुम लोग अरफात से वापस हो तो अल्लाह को याद करो मशअरे हराम के नजदीक। और उसे याद करो जिस तरह अल्लाह ने बताया है। इससे पहले यकीनन तुम राह भटके हुए लोगों में थे। फिर तवाफ को चलो जहां से सब लोग चलें और अल्लाह से माफ़ी मांगें। यकीनन अल्लाह बख्शने वाला, रहम करने वाला है। फिर जब तुम अपने हज के आमाल पूरे कर लो तो अल्लाह को याद करो जिस तरह तुम पहले अपने पूर्वजों को याद करते थे, बल्कि इससे भी ज्यादा। पस कोई आदमी कहता है : ऐ हमारे रब हमें इसी दुनिया में दे दे और आखिरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। और कोई आदमी है जो कहता है कि हमारे रब हमें दुनिया में भलाई दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमें आग के अजाब से बचा। इन्हीं लोगों के लिए हिस्सा है उनके किए का और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। और अल्लाह को याद करो मुकर्रर दिनों में। फिर जो शख्स जल्दी करके दो दिन में मक्का वापस आ जाए उस पर कोई गुनाह नहीं और जो शख्स ठहर जाए उस पर भी कोई गुनाह नहीं। यह उसके लिए है जो अल्लाह से डरे। और तुम अल्लाह से डरते रहो और खूब जान लो कि तुम उसी के पास इकट्ठा किए जाओगे। (198-203)

अस्त चीज अल्लाह का तकवा है। किसी के अंदर यह मल्लूब (अपेक्षित) हालत मौजूद हो तो इसके बाद हज के दौरान आर्थिक जरूरत के तहत उसका कुछ कारोबार कर लेना या कुछ हज की रस्मों की अदायगी में किसी का आगे या किसी का पीछे हो जाना कोई हर्ज नहीं पैदा करता। हज के दौरान जो फिजा जारी रहनी चाहिए वह है अल्लाह का ख़ौफ़, अल्लाह की याद, अल्लाह की नेमतों का शुक्र, अल्लाह के लिए हवालगी (समर्पण) का जज्बा। हज के दौरान कोई ऐसा फेअल (कृत्य) नहीं होना चाहिए जो इन कैफियतों के खिलाफ हो। मसलन किसी शख्स या गिरोह के लिए इबादत की अदायगी में इम्तियाज (विशिष्टता), पूर्वजों के कारनामे बयान करना जो गोया परोक्ष रूप से अपने को नुमायां करने की एक सूरत है। ये चीजें एक ऐसी इबादत के साथ बेजोड़ हैं जो यह बताती हो कि तमाम इंसान समान हैं, जिसमें इस बात का एलान किया जाता हो कि तमाम बड़ाई सिर्फ अल्लाह के लिए है। हज के जमाने में भी अगर आदमी इन चीजों की तर्बियत हासिल न करे तो ज़िंदगी के बाकी लम्हात में वह किस तरह इन पर कायम हो सकेगा।

दुआएं, ख़ास तौर पर हज की दुआएं, आदमी की अंदरूनी हालत का इन्ज़ार हैं। कोई शख्स आखिरत की अज्मतों को अपने दिल में लिए हुए जी रहा हो तो हज के मकामात पर उसके दिल से आखिरत वाली दुआएं उबलेंगी। इसके बरअक्स जो शख्स दुनिया की चीजों में अपना दिल लगाए हुए हो, वह हज के मौके पर अपने खुदा से सबसे ज्यादा जो चीज मांगेगा वह वही होगी जिसकी तइप लिए हुए वह वहां पहुंचा था। और सबसे बेहतर दुआ तो यह है कि आदमी अपने रब से कहे कि खुदाया दुनिया में तेरे नजदीक जो चीज बेहतर हो वह मुझे दुनिया में दे दे और आखिरत में तेरे नजदीक जो चीज बेहतर हो वह मुझे आखिरत में दे दे और अपने एताब (प्रकोप) से मुझको बचा ले।

‘तुम उसी के पास इकट्ठा किए जाओगे’ यह हज का सबसे बड़ा सबक है जो अरफात के मैदान में दुनिया भर के लाखों इंसानों को एक ही वक़्त जमा करके दिया जाता है। अरफात का इज्तिमा कयामत के इज्तिमा की एक तम्सील है।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ عَلَى مَا فِي قَلْبِهِ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ۖ وَإِذَا تَوَلَّى سَعَى فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفُسَادَ ۖ وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ وَلَيْسَ إِلَهَ الْبَادِ ۖ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ۝

और लोगों में से कोई है कि उसकी बात दुनिया की ज़िंदगी में तुम्हें खुश लगती है और वह अपने दिल की बात पर अल्लाह को गवाह बनाता है। हालांकि वह सज़त झगड़ालू है। और जब वह पीठ फेरता है तो वह इस कोशिश में रहता है कि जमीन में फसाद फैलाए और खेतियों और जानवरों को हलाक करे। हालांकि अल्लाह फसाद को पसंद नहीं करता। और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर तो वकार (प्रतिष्ठा) उसे गुनाह पर जमा देता है। पस ऐसे शख्स के लिए जहन्नम काफी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। और लोगों में कोई है कि अल्लाह की खुशी की तलाश में अपनी जान को बेच देता है और अल्लाह अपने बंदों पर निहायत महरबान है। (204-207)

जो शख्स मस्लेहत को अपना दीन बनाए उसकी बातें हमेशा लोगों को बहुत भली मालूम होती हैं। क्योंकि वह लोगों की पसंद को देखकर उसके मुताबिक बोलता है न कि यह देखकर कि हक क्या है और नाहक क्या। उसके सामने कोई मुक्तकिल मेयार नहीं होता। इसलिए वह मुखातब (संबोधित वर्ग) की रियायत से हर वह अंदाज अपना लेता है जो मुखातब पर असर डालने वाला हो। हक का वफ़ादार न होने की वजह से उसके लिए यह मुश्किल नहीं रहता कि दिल में कोई हक्की जज्बा न होते हुए भी वह ज़बान से खूबसूरत बातें करे।

ऐसा क्यों होता है कि बात के स्टेज पर वह मुस्लेह (सुधारक) के रूप में नजर आता है और अमल के मैदान में उसकी सरगर्मियां फसाद का सबब बन जाती हैं। इसकी वजह उसका तजाद (अन्तर्विरोध) है। अमली नताइज हमेशा अमल से पैदा होते हैं न कि अल्फ़ाज से। वह अगरचे ज़बान से हक़मस्ती के अल्फ़ाज बोलता है, मगर अमल के एतबार से वह जिस सतह पर होता है वह सिर्फ़ ज़ती मफ़द है। यह चीज उसमें कैल व अमल में फ़र्क़ पैदा कर देती है। बात के मक़ाम से हटकर जब वह अमल के मक़ाम पर आता है तो उसके मफ़द (हित) का तक्ज़ा खींचकर उसे ऐसी सरगर्मियों की तरफ ले जाता है जो सिर्फ़ तख़रीब (विध्वंस) पैदा

करने वाली हैं। यहां वह अपने जाती फायदे की खातिर दूसरों का इस्तहसाल (शोषण) करता है। वह अवामी मकबूलियत हासिल करने के लिए लोगों को जज्बाती बातों की शराब पिलाता है। वह अपनी कयादत कायम करने की खातिर पूरी कौम को दांव पर लगा देता है। वह तामीर (रचनात्मक कार्यों) की सियासत करने के बजाए तख्सीब (विध्वंस) की सियासत चलाता है। क्योंकि इस तरह ज्यादा आसानी से अवाम की भीड़ अपने गिर्द इकट्ठा की जा सकती है। ये वे लोग हैं जिन्होंने दुनिया के मफाद और मस्लेहत के साथ अपनी जिंदगी का सौदा किया। हक वाजेह हो जाने के बाद भी वे इसे कुबूल करने के लिए तैयार नहीं होते क्योंकि इसमें उन्हें वकार (प्रतिष्ठा) का बुत टूटता हुआ नजर आता है। जाहिरी तौर पर नर्म बातों के पीछे उनकी घमंड भरी नपिसयात उन्हें एक ऐसे हक के दाओ के सामने झुकने से रोक देती है जिसे वे अपने से छोटा समझते हैं।

दूसरे लोग वे हैं जो अल्लाह की रिजा (खुशी) के साथ अपनी जिंदगी का सौदा करते हैं। ऐसा शख्स अपनी आदतों (व्यवहार) और ख्यालात को छोड़कर खुदा की बातों को कुबूल करता है। वह अपने माल को खुदा के हवाले करके इसके बदल बे-माल बन जाने को गवार कर लेता है। वह रिवाजी दीन को रद्द करके खुदा के बेआमेज (विशुद्ध) दीन को लेता है चाहे इसकी वजह से उसे गैर-मकबूलियत पर राजी होना पड़े। वह मस्लेहतपरस्ती के बजाए हक के एलांन को अपना शेवा (कार्य नियम) बनाता है। अगरचे इसके नतीजे में वह लोगों के एताब (प्रकोप) का शिकार होता रहे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَآفَّةً ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۚ فَإِنْ زَلَلْتُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْكُمُ الْبَيِّنَاتُ فَاعْلَمُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلُلٍ مِّنَ الْغَمَامِ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ وَفُضِي الْأَمْرُ إِلَى اللَّهِ تَرْجَعُ الْأُمُورُ ۚ سَلَّ بَنِي إِسْرَءِيلَ كَمَا آتَيْنَهُمْ مِنْ آيَةٍ بَيِّنَةٍ ۖ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۚ زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۚ

ऐ ईमान वालो इस्लाम में पूरे-पूरे दाखिल हो जाओ और शैतान के कदमों पर मत चलो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। अगर तुम फिसल जाओ बाद इसके कि तुम्हारे पास वाजेह दलीलें आ चुकी हैं तो जान लो कि अल्लाह जबरदस्त है और हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। क्या लोग इस इंतजार में हैं कि अल्लाह बादल के सायबानों

में आए और फरिश्ते भी आ जाएं और मामले का फैसला कर दिया जाए और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ फेंरे जाते हैं। बनी इस्राईल से पूछो, हमने उन्हें कितनी खुली-खुली निशानियां दीं। और जो शख्स अल्लाह की नेमत को बदल डाले जबकि वह उसके पास आ चुकी हो तो अल्लाह यकीनन सज़ा सजा देने वाला है। खुशनुमा कर दी गई है दुनिया की जिंदगी उन लोगों की नजर में जो मुंकिर हैं और वे ईमान वालों पर हंसे हैं, हालांकि जो परहेजगार हैं वे कियामत के दिन उनके मुक़ाबले में ऊंचे होंगे। और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब रोजी देता है। (208-212)

इस्लाम को अपनाने की एक सूत यह है कि तहफुज्जात और मस्लेहतों का लिहाज किए बगैर इसे अपनाया जाए। इस्लाम जिस चीज को करने को कहे उसे किया जाए। और जिस चीज को छोड़ने को कहे उसे छोड़ दिया जाए। यह किसी आदमी का पूरे का पूरा इस्लाम में दाखिल होना है। दूसरी सूत यह है कि आदमी इस्लाम को उसी हद तक अपनाए जिस हद तक इस्लाम उसकी जिंदगी से टकराता न हो। वह उस इस्लाम को ले ले जो उसके लिए मुफीद और या कम से कम नुकसानदेह न हो। और उस इस्लाम को छोड़े रहे जो उसके महबूब अकाइद, उसकी पसंदीदा आदतों, उसके दुनियावी फायदे, उसके शख्सी वकार, उसकी कायदाना मस्लेहतों को मजरूह करता हो। आदमी शुरू में पूरी तरह इरादा करके इस्लाम को अपनाता है। मगर जब वह वक्त आता है कि वह अपने फिक्री (वैचारिक) दांचे को तोड़े या अपने मफाद को नजरअंदाज करके इस्लाम का साथ दे तो वह फिसल जाता है। वह ऐसे इस्लाम पर ठहर जाता है जिसमें उसके मफादात (हित) भी मजरूह न हों और इस्लाम का तमगा भी हाथ से जाने न पाए।

इस्लाम के पैगाम की सदाकत पर यकीन करने के लिए अगर वे दलीलें चाहते हैं तो दलीलें पूरी तरह दी जा चुकी हैं। अगर वे चाहते कि उन्हें मोजिजात (चमत्कार) दिखाए जाएं तो जो शख्स खुली-खुली दलीलों को न माने उसे चुप करने के लिए मोजिजात भी नाकाफी साबित होंगे। इसके बाद आखिरी चीज जो बाकी रहती है वह यह कि खुदा अपने फरिश्तों के साथ सामने आ जाए। मगर जब ऐसा होगा तो वह किसी के कुछ काम न आएगा। क्योंकि वह फैसले का वक्त होगा न कि अमल करने का। इंसान का इम्तेहान यही है कि वह देखे बगैर महज दलीलों की बुनियाद पर मान ले। अगर उसने देखकर माना तो इस मानने की कोई किमत नहीं।

वे लोग जो मस्लेहतों को नजरअंदाज करके इस्लाम को अपनाएं और वे लोग जो मस्लेहतों की रियायत करते हुए मुसलमान बनें, दोनों के हालात एकसां (समान) नहीं होते। पहला गिरोह अक्सर दुनियावी अहमियत की चीजों से खाली हो जाता है जबकि दूसरे गिरोह के पास हर किस्म की दुनियावी रैनकें जमा हो जाती हैं। यह चीज दूसरे गिरोह को ग़लतफहमी में डाल देती है। वह अपने को बरतर ख्याल करता है और पहले गिरोह को हकीर (तुच्छ) समझने लगता है। मगर यह सूरतेहाल इतिहाई आरजी है। मौजूदा दुनिया को तोड़कर जब नया बेहतर निजाम बनेगा तो वहां आज के बड़े पस्त कर दिए जाएंगे और वही लोग बड़ाई के मकाम पर नजर आएंगे जिन्हें आज छोटा समझ लिया गया था।

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيِّنَ مُبَشِّرِينَ وَمُنْذِرِينَ وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِي مَا اخْتَلَفُوا فِيهِ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ أُوتُوهُ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَ تَهُمُ الْبَيِّنَاتُ بَغْيَابَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهِ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ٢٠ أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخَلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسْتَهْزِمُ الْبِائِسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَرُزِلُوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَى نَصْرُ اللَّهِ ۚ الْآلَ إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ ٢١

लोग एक उम्मत थे। उन्होंने इस्तेलाफ (मतभेद) किया तो अल्लाह ने पैगम्बरों को भेजा खुशखबरी देने वाले और डराने वाले। और उनके साथ उतारी किताब हक के साथ ताकि वह फैसला कर दे उन बातों का जिनमें लोग इस्तेलाफ कर रहे हैं। और ये इस्तेलाफ उन्हीं लोगों ने किए जिन्हें हक दिया गया था, बाद इसके कि उनके पास खुली-खुली हिदायतें आ चुकी थीं, आपस की जिद की वजह से। पर अल्लाह ने अपनी तौफिक से हक के मामले में ईमान वालों को राह दिखाई जिसमें वे झगड़ रहे थे और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह दिखा देता है। क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम जन्नत में दाखिल हो जाओगे हालांकि अभी तुम पर वे हालात गुजरे ही नहीं जो तुम्हारे अगलों पर गुजरे थे। उन्हें सख्ती और तकलीफ पहुंची और वे हिला मारे गए। यहां तक कि रसूल और उनके साथ ईमान लाने वाले पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी। याद रखो, अल्लाह की मदद करीब है। (213-214)

दीन में इस्तेलाफ (मतभेद) ताबीर और तशरीह (भाष्य एवं व्याख्या) के इस्तेलाफ से शुरू होता है। हर एक अपने जेहनी सांचे के मुताबिक खुदा के दीन का एक तसव्वुर (अवधारणा) कायम कर लेता है। एक ही हिदायत की किताब को मानते हुए भी लोगों की राय अलग-अलग हो जाती हैं। उस वक्त अल्लाह अपने चुने हुए बंदे के जरिए हक का एलान कराता है। यह आवाज अगरचे इंसान की जवान में होती है और बजाहिर आम आदमियों जैसे एक आदमी के जरिए बुलंद की जाती है। ताहम जो सच्चे हक को तलाश करने वाले हैं, वे उसके अंदर शामिल खुदाई गुंज को पहचान लेते हैं और अपने इस्तेलाफ को भूल कर फौरन उसकी आवाज पर लबूक कहते हैं। दूसरी तरफ वह तबका है जो अपने खुदसाहजा (स्वनिर्मित) दीन के साथ अपने को इतना ज्यादा वाबस्ता कर चुका होता है कि उसके अंदर यह जज्बा उभर आता है कि मैं दूसरे की बात क्यों मानूं। उसके अंदर जिद की नपिसयात पैदा हो जाती है। यहां तक कि वह उसी चीज का इंकार कर देता है जिसका वह अपने ख्याल के मुताबिक अलमबरदार बना हुआ था।

हक जब रोशन दलीलों के साथ आ जाए और इसके वावजूद आदमी इसका साथ न दे तो इसकी वजह हमेशा यह होती है कि आदमी को नजर आता है कि इसका साथ देने में उसकी खुशगुमानियों का महल ढह जाएगा। उसके मफादात का निजाम टूट जाएगा। उसकी आसूदा (तुप्त, संतुष्ट) जिंदगी खतरे में पड़ जाएगी। उसका वकार बाकी नहीं रहेगा। मगर यही वह चीज है जो अल्लाह को अपने वफादार बंदों से मल्लूब है। जिस रास्ते की दुश्वारियों से घबरा कर आदमी उस पर आना नहीं चाहता यही वह रास्ता है जो जन्नत की तरफ ले जाने वाला है। जन्नत की वाहिद (एकमात्र) कीमत आदमी का अपना वजूद है। आदमी अपने वजूद को फिक्र व अमल के जिन नक्शों के हवाले किए हुए है वहां से उखाड़कर जब वह उसे खुदा के नक्शे में लाना चाहता है तो उसकी पूरी शख्सियत हिल जाती है। इसमें उस वक्त और ज्यादा इजाफा हो जाता है जबकि इसके साथ वह खुदा के दीन का दाजी बनकर खड़ा हो जाए। दाजी (आह्वानकर्ता) बनना दूसरे शब्दों में दूसरों के ऊपर नासेह (नसीहत करने वाला) और नाकिद (आलोचक) बनना है और अपने खिलाफ नसीहत और तंकीद (आलोचना) को सुनना हर जमाने में इंसान के लिए सबसे असहनीय बात रही है। इसके नतीजे में संवोधित वर्ग की तरफ से इतनी शदीद प्रतिक्रिया सामने आती है जो दाजी के लिए एक भूचाल से कम नहीं होती।

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ مَا أَنْفَقْتُ مِنْ خَيْرٍ فَلِلَّهِ الدِّينُ وَالْآقِرِبِينَ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْبَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ٢٢
كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهُ لَكُمْ وَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ
لَّكُمْ وَعَسَىٰ أَنْ تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ٢٣

लोग तुमसे पूछते हैं कि क्या खर्च करें। कह दो कि जो माल तुम खर्च करो तो उसमें हक है तुम्हारे मां-बाप का और रिश्तेदारों का और यतीमों का और मोहताजों का और मुसाफिरों का। और जो भलाई तुम करोगे वह अल्लाह को मालूम है। तुम पर लड़ाई का हुक्म हुआ है और वह तुम्हें भार महसूस होती है। हो सकता है कि तुम एक चीज को नागवार समझो और वह तुम्हारे लिए भली हो। और हो सकता है कि तुम एक चीज को पसंद करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। (215-216)

इंसान यह समझता है कि उसके जान और माल के इस्तेमाल का बेहतरीन मसरफ उसके बीबी-बच्चे हैं। वह अपनी पूंजी को अपने जाती हौसलों और तमन्नाओं में लुटाकर खुश होता है। इसके विपरीत शरीअत यह कहती है कि अपने जान और माल को अल्लाह की राह में खर्च करो। ये दोनों मर्दे एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं। एक खुद अपने ऊपर खर्च करना है और दूसरा शैरों के ऊपर। एक अपनी ताकत को दुनिया की जहिरी चीजों की प्राप्ति पर लगाना है और दूसरा आखिरत की नजर न आने वाली चीजों पर। मगर इंसान को जो चीज नापसंद है वही

अल्लाह की नजर में भलाई है। क्योंकि वह उसकी अगली व्यापक जिंदगी में उसे नफा देने वाली है। और इंसान को जो चीज पसंद है वह अल्लाह की नजर में बुराई है। क्योंकि इसका जो कुछ फायदा है इसी आरजी दुनिया में है, आखिरत में इससे किसी को कुछ मिलने वाला नहीं।

यही उसूल जिंदगी के तमाम मामलों के लिए सही है। आदमी आजाद और बेकैद (उन्मुक्त) जिंदगी को पसंद करता है, हालांकि उसकी भलाई इस में है कि वह अपने आपको अल्लाह की रस्सी में बांध कर रखे। आदमी अपनी तारीफ करने वालों को दोस्त बनाता है, हालांकि उसके लिए ज्यादा बेहतर यह है कि वह उस शख्स को अपना दोस्त बनाए, जो उसकी गलतियों को उसे बताता हो। आदमी एक हक को मानने से इंकार करता है और खुश होता है कि इस तरह उसने लोगों की नजर में अपने वकार (प्रतिष्ठा) को बचा लिया। हालांकि उसके लिए ज्यादा बेहतर यह था कि वह अपनी इज्जत को खतरे में डालकर खुले दिल से हक का पत्राफ कर ले। आदमी महनत और कुर्बानी वाले दिन से बेरगबत (उदासीन) रहता है और उस दिन को ले लेता है जिसमें मामूली बातों पर जन्नत की खुशखबरी मिल रही हो। हालांकि उसके लिए ज्यादा बेहतर था कि वह महनत और कुर्बानी वाले दिन को अपनाता। आदमी 'जिंदगी' के मसाइल को अहमियत देता है, हालांकि ज्यादा बड़ी अकलमंदी यह है कि आदमी 'मौत' के मसाइल को अहमियत दे।

'अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।' का मतलब यह है कि अल्लाह उन सतही जब्जात और प्रेरकों से बुलंद है जिनसे बुलंद न होने की वजह से इंसान की राय प्रभावित राय बन जाती है और वह सही रुख को छोड़कर गलत रुख की तरफ मुड़ जाता है। अल्लाह का फैसला हर क्रिम की असंबंधित चीजों की मिलावट से پاک है। वह विशुद्ध फैसला है। इसलिए इसके बरहक होने में शुबह नहीं। इंसान के फैसले तरह-तरह की नपिसयाति पेचीदगियों से प्रभावित रहते हैं। वह घटिया प्रेरकों के जेरे असर राय कायम करता है। इसलिए इंसान की राय प्रायः हक पर आधारित नहीं होती है और न हालात के अनुकूल होती है। खुदा जो कहे उसी को तुम हक समझो और उसके मुकाबले में अपने ख्याल को छोड़ दो।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ وَصَدٌّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرٌ بِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا يَزَالُونَ يُبْعَثُونَ حَتَّى يَرْضَوْكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنَّ اسْتِطَاعُوا مَنْ يَرْتَدُّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيَكُونُوا كَافِرًا وَأُولَئِكَ هُمُ فِيهَا خَالِدُونَ ٢٠ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ

أُولَئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

लोग तुमसे हुरमत (प्रतिष्ठा) वाले महीने की बाबत पूछते हैं कि इसमें लड़ना कैसा है। कह दो कि इसमें लड़ना बहुत बुरा है। मगर अल्लाह के रास्ते से रोकना और इसका इंकार करना और मस्जिद हराम से रोकना और उसके लोगों को इससे निकालना, अल्लाह के नजदीक इससे भी ज्यादा बुरा है। और फितना कत्ल से भी ज्यादा बड़े बुराई है। और ये लोग तुमसे निरंतर लड़ते रहेंगे यहां तक कि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें अगर काबू पाएं। और तुममें से जो कोई अपने दीन से फिरेगा और कुफ्र की हालत में मर जाए तो ऐसे लोगों के अमल जाए (विनष्ट) हो गए दुनिया में और आखिरत में। और वे आग में पड़ने वाले हैं, वे इसमें हमेशा रहेंगे। वे लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया, वे अल्लाह की रहमत के उम्मीदवार हैं। और अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। (217-218)

रजब 2 हिजरी में यह वाक्या पेश आया कि मुसलमानों के एक दस्ता और कुरैश के मुशरिकीन की एक जमाअत के दर्मियान टकराव हो गया। यह वाक्या मक्का और तायफ के दर्मियान नखला में पेश आया। कुरैश का एक आदमी मुसलमानों के हाथ से मारा गया। मुसलमानों का ख्याल था कि यह जमाअत उस सानी की 30 तारीख है। मगर चांद 29 का हो गया था और वह रजब की पहली तारीख थी। रजब का महीना माह हराम में शुमार होता है और सदियों के रवाज से इस मामले में अरबों के जब्जात बहुत शदीद थे। इस तरह विरोधियों को मौका मिल गया कि वे मुसलमानों को और मुहम्मद (सल्ल०) को बदनाम करें कि ये लोग हकपरस्ती से इतना दूर हैं कि हराम महीनों की हुरमत का भी ख्याल नहीं करते। जवाब में कहा गया कि माह हराम में लड़ना यकीनन गुनाह है। मगर मुसलमानों से यह कृत्य तो भूल से और संयोगवश हो गया और तुम लोगों का हाल यह है कि जानबूझ कर और मुस्तकिल तौर पर तुम इससे कहीं ज्यादा बड़े जुर्म कर रहे हो। तुम्हारे दर्मियान अल्लाह की पुकार बुलंद हुई है मगर तुम इसे मानने से इंकार कर रहे हो और दूसरों को भी इसे अपनाने से रोकते हो। तुम्हारी जिद और एनाद (ईप्स्यी) का यह हाल है कि अल्लाह के बंदों के ऊपर अल्लाह के घर का दरवाजा बंद करते हो, उन्हें उनके अपने घरों से निकलने पर मजबूर करते हो। यहां तक कि जो लोग अल्लाह के दीन की तरफ बढ़ते हैं उन्हें तरह-तरह से सताते हो ताकि वे इसे छोड़ दें। हालांकि किसी को अल्लाह के रास्ते से हटाना उसे कत्ल कर देने से भी ज्यादा बुरा है। अल्लाह के नजदीक यह बहुत बड़ा जुर्म है कि आदमी खुद बड़ी-बड़ी बुराइयों में मुब्तला हो और दूसरे की एक मामूली खता को पा जाए तो इसे प्रचारित करके उसे बदनाम करे। विरोधों का यह नतीजा होता है कि अहले ईमान को अपने घरों को छोड़ना पड़ता है। दीन पर कायम रहने के लिए उन्हें जिहाद की हद तक जाना पड़ता है। मगर मौजूदा दुनिया में ऐसा होना जरूरी है। यह एक दोतरफा अमल है जो खुदापरस्तों और खुदा दुश्मनों को एक-दूसरे से अलग करता है। इस तरह एक तरफ यह साबित होता है कि वे कौन लोग हैं जो अल्लाह के नहीं बल्कि अपनी जात के पुजारी हैं। जो अपने जाति मफाद के लिए अल्लाह से बेखौफ होकर अल्लाह के बंदों को सताते हैं। दूसरी तरफ इसी वाक्या के दर्मियान ईमान और हिजरत और जिहाद की नेकियां प्रकट होती हैं। इससे मालूम होता है कि वे कौन लोग

हैं जिन्होंने हालात की शिद्दत के बावजूद अल्लाह पर अपने भरोसे को बाकी रखा और किसने इसे खो दिया।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِ
ثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلِ الْعَفْوَ كَذَلِكَ
يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ۚ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ
عَنِ الْيَتَامَى قُلْ إِصْلَاحُهُمْ خَيْرٌ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ٢٠

लोग तुमसे शराब और जुवे के बारे में पूछते हैं। कह दो कि इन दोनों चीजों में बड़ा गुनाह है और लोगों के लिए कुछ फायदे भी हैं। और इनका गुनाह बहुत ज्यादा है इनके फायदे से। और वे तुमसे पूछते हैं कि क्या खर्च करें। कह दो कि जो हाजत (जरूरत) से ज्यादा हो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अहकाम को बयान करता है ताकि तुम ध्यान करो दुनिया और आखिरत के मामलों में। और वे तुमसे यतीमों के बारे में पूछते हैं। कह दो कि जिसमें उनकी बहबूद (बेहतरी) हो वह बेहतर है। और अगर तुम उन्हें अपने साथ शामिल कर लो तो वे तुम्हारे भाई हैं। और अल्लाह को मालूम है कि कौन खराबी पैदा करने वाला है और कौन दुरुस्तगी पैदा करने वाला। और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें मुश्किल में डाल देता। अल्लाह जबरदस्त है तदवीर वाला है। (219-120)

कुछ सवालों का जवाब देते हुए यहां कुछ बुनियादी उसूल बता दिए गए हैं। (1) किसी चीज का नुस्सान अगर उसके फायदे से ज्यादा हो तो छोड़ देने योग्य है। (2) अपनी वाकई जरूरत से ज्यादा जो माल हो उसे अल्लाह की राह में दे देना चाहिए। (3) आपसी मामलों में उन तरीकों से बचना जो किसी बिगाड़ का सबब बन सकते हों और उन तरीकों को अपनाना जो सुधार पैदा करने वाले हों।

शराब पीकर आदमी को सुरूर हासिल होता है। जुवा खेलने वाले को कभी महनत के बौर काफी दौलत हाथ आ जाती है। इस एतबार से इन दोनों चीजों में नफे का पहलू है। मगर दूसरे एतबार से इनके अंदर दीनी और अख्लाकी नुक्सानात हैं और ये नुक्सानात इनके नफा से बहुत ज्यादा हैं। इसलिए इनसे मना कर दिया गया। किसी चीज को लेने या न लेने का यही मेयार जिंदगी के दूसरे मामलों के लिए भी है। मसलन वे तमाम सियासी और गैर सियासी सरगर्मियों, वे तमाम समारोह और जलसे त्याग देने योग्य हैं जिनके बारे में दीनी और आर्थिक जायज बताए कि इनमें फायदा कम है और नुस्सान ज्यादा है।

मुसलमान वह है जो आखिरत को अपनी मंजिल बनाए, जो इस तड़प के साथ अपनी सुबह व शाम कर रहा हो कि उसका खुदा उससे राजी हो जाए। ऐसे शख्स के लिए दुनिया का साज व सामान जिंगी की जरूरत है न कि जिंगी का मक्सद। वह माल हासिल करता है वह दुनिया के कामों में मशगूल रहता है। मगर यह सब कुछ उसके लिए हाजत और जरूरत के दर्जे में होता है न कि मक्सद के दर्जे में। उसके असासे (सम्पत्ति) की जो चीज उसकी हकीकी जरूरत से ज्यादा हो, उसका बेहतरीन मसरफ उसके नजदीक यह होता है कि वह उसे अपने रब की राह में दे दे, ताकि वह उससे राजी हो और उसे अपनी रहमतों के साए में जगह दे। उसकी हर चीज हाजत के बराबर अपने लिए होती है और हाजत से जो ज्यादा हो वह दीन के लिए।

आपसी मामलात और कारोबार के अक्सर मसाइल इतने पेचीदा होते हैं कि इनके बारे में सिर्फ बुनियादी हिदायतें दी जा सकती हैं, इनकी तमाम अमली तपसीलात को कानून के अल्फाज में निधारित नहीं किया जा सकता। इस सिलसिले में यह उसूल निधारित कर दिया गया कि अपनी नियत को दुरुस्त रखो और जो कार्रवाई करो यह सोच कर करो कि वह किसी बिगाड़ का सबब न बने। बल्कि साहिबे मामला के हक में बेहतरी पैदा करने वाली हो। अगर तुम दूसरे को अपना भाई समझते हुए उसके हित की पूरी रियायत रखोगे और तुम्हारा मक्सद सिर्फ सुधार और दुरुस्तगी होगा तो अल्लाह के यहां तुम्हारी पकड़ नहीं।

وَلَا تَنكِحُوا الْمُشْرِكَةَ حَتَّىٰ يُوْمِنَ ۖ وَلَٰكُم مِّنْهُ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَلَا
أُحِبَّ إِلَيْكُمْ وَلَا تَنكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ
مُّشْرِكٍ ۚ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۚ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ ۚ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْبَيْتَةِ
وَالْمَغْفِرَةِ ۖ بِإِذْنِهِ ۚ وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۚ وَيَسْأَلُونَكَ
عَنِ الْمَحْيِضِ قُلْ هُوَ أَذًى ۖ فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحْيِضِ وَلَا
تَقْرُبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ ۖ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ
اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ ۚ نَسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ
فَأَنؤَا حَرْثَكُمْ أَلَىٰ شَيْئِكُمْ وَقَدْ مَوَّلَٰ أَنفُسَكُمْ ۚ وَأَتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ
مُّلَاقُونَ ۖ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ٢١

और मुशरिक औरतों से निकाह न करो जब तक वे ईमान न लाएं और मोमिन कनीज (दासी) बेहतर है एक मुशरिक औरत से, अगरचे वह तुम्हें अच्छी मालूम हो। और अपनी

औरतों को मुशरिक मर्दों के निकाह में न दो जब तक वे ईमान न लाएं, मोमिन गुलाम बेहतर है एक आजाद मुशरिक से, अगरचे वह तुम्हें अच्छा मालूम हो। ये लोग आग की तरफ बुलाते हैं और अल्लाह जन्नत की तरफ और अपनी बख्शिश की तरफ बुलाता है। वह अपने अहकाम लोगों के लिए खोलकर बयान करता है ताकि वे नसीहत पकड़ें। और वे तुमसे हैज (मासिक धर्म) का हुक्म पूछते हैं। कह दो कि वह एक गंदगी है, इसमें औरतों से अलग रहो। और जब तक वे पाक न हो जाएं उनके करीब न जाओ। फिर जब वे अच्छी तरह पाक हो जाएं तो उस तरीके से उनके पास जाओ जिसका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है। अल्लाह दोस्त रखता है तौबा करने वालों को और वह दोस्त रखता है पाक रहने वालों को। तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियां हैं। पस अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिए आगे भेजो और अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम्हें जरूर उससे मिलना है। और ईमान वालो को खुशखबरी दे दो। (221-223)

मर्द और औरत जब निकाह के जरिए एक-दूसरे के साथी बनते हैं तो इसका अस्ल मकसद शहवतरानी (यौन तृप्ति) नहीं होता बल्कि यह उसी किस्म का एक बामकसद तअल्लुक है जो किसान और खेत के दर्मियान होता है। इसमें आदमी को इतना ही संजीदा होना चाहिए जितना खेती का मंसूबा बनाने वाला संजीदा होता है। इस सिलसिले में कुछ बातों का लिहाज जरूरी है।

एक यह कि जोड़े के चुनाव में सबसे ज्यादा जिस चीज को देखा जाए वह ईमान है। मियाँ-बीवी का तअल्लुक बेहद नाजुक तअल्लुक है। इसके बहुत से नपिषयाती, खानदानी और समाजी पहलू हैं। इस किस्म का तअल्लुक दो शख्सों के दर्मियान अगर एतकादी (आस्थागत) समानता के बगैर हो तो अंततः वह दो में से किसी एक की बर्बादी का सबब होगा। एक मोमिन अपने गैर-मोमिन जोड़े से एतकादी समझौता कर ले तो इसका मतलब यह है कि उसने अपने दीन को बर्बाद कर लिया। और अगर वह समझौता न करे तो इसके बाद दोनों में जो कशमकश होगी इसके नतीजे में उसका घर बर्बाद हो जाएगा। दूसरी चीज यह कि दो सिनफों का यह तअल्लुक खुदा की बनावट के मुताबिक अपने फितरी ढंग पर क़यम हो। फितरत भी खुदा का हुक्म है। कुरआन के शाब्दिक आदेशों की पाबंदी जिस तरह जरूरी है उसी तरह उस फितरी निजाम की पाबंदी भी जरूरी है जो खुदा ने तख्खीकी (रचनात्मक) तौर पर हमारे लिए बना दिया है। तीसरी चीज यह कि हर मरहले में आदमी के ऊपर अल्लाह का ख़ौफ़ ग़ालिब रहे। वह जो भी रवैया अपनाए यह सोच कर अपनाए कि अंततः उसे रब्बुल आलमीन के पास जाना है जो खुले और छुपे हर चीज से बाख़बर है। 'और अपने लिए आगे भेजो।' का मतलब यह है कि अपनी आखिरत के लिए नेक आमाल भेजो। यानी जो कुछ करो यह समझ कर करो कि तुम्हारा कोई काम सिर्फ दुनियावी काम नहीं है बल्कि हर काम का एक उखरवी (आखिरत संबंधी) पहलू है। मरने के बाद तुम अपने इस उखरवी पहलू से दो-चार होने वाले हो। तुम्हें इस मामले में हद दर्जा होशियार रहना चाहिए कि तुम्हारा अमल आखिरत के पैमाने में सालेह (नेक) अमल करार पाए न कि ग़ैर-सालेह।

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِالْغَوِّ فِيْ أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ يُؤْذُونَ مِنْ سَائِرِهِمْ تَرْبُصُ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ فَإِنْ قَاءُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِيْ أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَبَعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذَٰلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا ۚ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

और अल्लाह को अपनी कसमों का निशाना न बनाओ कि तुम भलाई न करो और परहेजगारी न करो और लोगों के दर्मियान सुलह न करो। अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अल्लाह तुम्हारी बेइरादा कसमों पर तुम को नहीं पकड़ता, मगर वह उस काम पर पकड़ता है जो तुम्हारे दिल करते हैं। और अल्लाह बख्शने वाला, तहम्मूल (धैर्य) वाला है। जो लोग अपनी बीवियों से न मिलने की कसम खा लें उनके लिए चार महीने तक की मोहलत है। फिर अगर वे रुजूअ कर लें तो अल्लाह माफ करने वाला, महरबान है। और अगर वे तलाक का फैसला करें तो यकीनन अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। और तलाक दी हुई औरतें अपने आपको तीन हैज तक रोके रखें। और अगर वे अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखती हैं तो उनके लिए जाइज नहीं कि वे उस चीज को छुपाएं जो अल्लाह ने पैदा किया है उनके पेट में। और इस दौरान में उनके शौहर उन्हें फिर लौटा लेने का हक रखते हैं अगर वे सुलह करना चाहें। और इन औरतों के लिए दस्तूर के मुताबिक उसी तरह हुक्म हैं जिस तरह दस्तूर के मुताबिक उन पर जिम्मेदारियां हैं। और मर्दों का उनके मुकाबले में कुछ दर्जा बढ़ा हुआ है। और अल्लाह जबरदस्त है, तदबीर वाला है। (224-228)

जिद और गुस्से में कभी एक आदमी कसम खा लेता है कि मैं फलों आदमी के साथ कोई नेक सलूक नहीं करूंगा। कदीम जमाने में अरबों में इस तरह की कसमों का बहुत रवाज था। वे एक भलाई का काम या एक इस्लाह (सुधार) का काम न करने की कसम खा लेते और जब उन्हें इस नौइयत के काम के लिए पुकारा जाता तो कह देते कि हम तो इसे न करने की

कसम खा चुके हैं। यह कहना कि मैं भलाई का काम न करूंगा, यूँ भी एक ग़लत बात है और इसे खुदा के नाम की कसम खाकर कहना और भी ज्यादा बुरा है। क्योंकि खुदा तो वह हस्ती है जो सरापा रहमत और ख़ैर है। फिर ऐसे खुदा का नाम लेकर अपने को रहमत और ख़ैर के कामों से अलग करना क्यूँ कर दुरुस्त हो सकता है। बिगाड़ हर हाल में बुरा है। लेकिन अगर बिगाड़ को खुदा या उसके दीन का नाम लेकर किया जाए तो इसकी बुराई बहुत ज्यादा बढ़ जाती है।

कुछ लोग कसम को तकिया कलाम बना लेते हैं और ग़ैर इरादी तौर पर कसम के अल्फ़ाज़ बोलते रहते हैं। यह घटिया बात है और हर आदमी को इससे बचना चाहिए, ताहम मियां-बीबी के तअल्लुक की नज़ाकत की वजह से इस तरह के मामलात में ऐसी कसम को कानूनी तौर पर अप्रभावी करार दिया गया। अलबत्ता वह कलाम जो आदमी सोच समझ कर मुंह से निकाले और जिसके साथ कलबी इरादा शामिल हो जाए उसकी नौइयत बिल्कुल दूसरी होती है। इसलिए अगर कोई शख्स इरादतन यह कसम खाले कि मैं अपनी औरत के पास न जाऊंगा तो इसे कबिले लिहाज़ करार देकर इसे एक कानूनी मसला बना दिया गया और इसके अहक़ाम मुक़र्र किए गए।

खानदानी निज़ाम में, चाहे मर्द हो या औरत, हर एक के हुक्म भी हैं और हर एक की जिम्मेदारियां भी। हर फर्द को चाहिए कि दूसरे से अपना हक लेने के साथ दूसरे को उसका हक भी पूरी तरह अदा करे। कोई शख्स इत्तेमज़की हालात या अपनी फ़ितरी बालादस्ती (प्राकृतिक शक्ति) से फायदा उठा कर अगर दूसरे के साथ नाइंसाफी करेगा तो वह खुदा की पकड़ से अपने आपको बचा नहीं सकता।

الطَّلَاقُ مَرَّتَيْنِ ۖ وَفَإِمْسَاكِ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِينَ ۖ بِإِحْسَانٍ ۚ وَلَا يَحِلُّ لَكُمَ أَنْ تَأْخُذُوا بِمَا آتَيْنَاهُمُوهُنَّ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۚ فَإِنْ خِفْتُمَا أَلَّا

يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ ۚ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ فَلَا تَعْتَدُوهَا ۚ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۚ فَإِنْ طَلَقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدِ حَتَّىٰ تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ ۚ فَإِنْ طَلَقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۚ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۚ وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمَّا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِجُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَلَا تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا لِّبَعْتِكُمْ ۚ وَأَمِنْ يَفْعَلُ

ذَٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۚ وَلَا تَتَّخِذُوا الْبَيْتَ اللَّهِ هُزُوًا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۖ وَمَا أَنْزَلَ عَلَيْكُم مِّنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

तलाक दो बार है। फिर या तो क़यदे के मुताबिक रख लेना है या खुशअलूबी के साथ रुख़सत कर देना। और तुम्हारे लिए यह बात जाइज़ नहीं कि तुमने जो कुछ इन औरतों को दिया है उसमें से कुछ ले लो मगर यह कि दोनों को डर हो कि वे अल्लाह की हदों पर कायम न रह सकेंगे। फिर अगर तुम्हें यह डर हो कि दोनों अल्लाह की हदों पर कायम न रह सकेंगे तो दोनों पर गुनाह नहीं उस माल में जिसे औरत फ़िदये में दे। ये अल्लाह की हदें हैं तो इनसे बाहर न निकलो। और जो शख्स अल्लाह की हदों से निकल जाए तो वही लोग जालिम हैं। फिर अगर वह उसे तलाक दे दे तो इसके बाद वह औरत उसके लिए हलाल नहीं जब तक कि वह किसी दूसरे मर्द से निकाह न करे। फिर अगर वह मर्द उसे तलाक दे दे तब गुनाह नहीं उन दोनों पर कि फिर मिल जाएं बशर्ते कि उन्हें अल्लाह की हदों पर कायम रहने की उम्मीद हो। ये खुदावंदी हदें (सीमाएं) हैं जिन्हें वह बयान कर रहा है उन लोगों के लिए जो दानिशमंद हैं। और जब तुम औरतों को तलाक दे दो और वे अपनी इद्दत तक पहुंच जाएं तो उन्हें या तो क़यदे के मुताबिक रख लो या क़यदे के मुताबिक रुख़सत कर दो। और तकलीफ पहुंचाने की ग़र्ज़ से न रोको ताकि उन पर ज्यादाती करो। और जो ऐसा करेगा उसने अपना ही बुरा किया। और अल्लाह की आयतों को खेल न बनाओ। और याद करो अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को और उस किताब व हिक़मत (तत्वदर्शिता) को जो उसने तुम्हारी नसीहत के लिए उतारी है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (229-231)

तलाक एक ग़ैर-मामूली वाकया है जो ग़ैर-मामूली हालात में पेश आता है मगर इस इतिहाई जज्बाती मामले में भी तक़्वा और एहसान (शालीनता, सद्ब्यवहार) पर कायम रहने का हुक्म दिया गया है। इससे अंदाज़ा किया जा सकता है कि दुनिया की ज़िंदगी में मोमिन से किस किस का सुलूक अल्लाह तआला को मल्बूब है।

निकाह के रिश्ते को एक ही वक़्त में तोड़ने के बजाए इसे तीन मरहलों में अंजाम देने का हुक्म हुआ है जो कुछ महीनों में पूरा होता है। एक इतिहाई हैजानी मामले में इस किसम का संजीदा तरीक़ा मुक़र्र करके बताया गया कि इख़्तेलाफ़ (मतभेद) के वक़्त मोमिन का रवैया कैसा होना चाहिए। अपने मुख़ालिफ़ फ़रीक (पक्ष) के साथ उसका सुलूक ग़ैर-जज्बाती अंदाज़ में सोचा हुआ साविराना फैसला हो न कि इश्तेआल (उत्तेजना) के तहत जाहिर होने वाला अचानक फैसला। इसी तरह तलाक के जितने आदाब मुक़र्र किए गए हैं सबमें ज़िंदगी का बहुत गहरा सबक मौजूद है। अलाहिदगी (अलग होने) का इरादा करने के बाद भी आदमी

एक मुद्दत तक दुबारा इत्तेहाद के इम्कान पर गौर करता है। तअल्लुकात के खाल्मे की नौबत आ जाए तब भी वह उसे इंसानियत के हुक्म के खाल्मे के हममअना न बनाए। आपसी सुलूक के लिए अल्लाह का जो कानून है उसकी मुकम्मल पाबंदी की जाए। शरीअत के किसी हुक्म को कनूनी बहानों के जरिए रद्द न किया जाए। कानून की तामील में सिर्फ कानून के अस्पष्ट को न देखा जाए बल्कि उसकी हिक्मत (कानून की मूल भावना) को भी सामने रखा जाए। अलाहिदगी से पहले अपने साबका (पूर्व) साथी को जो कुछ दिया था उसे अलाहिदगी के बाद वापस लेने की कोशिश न की जाए। जिस तरह तअल्लुक के जमाने को खुशउस्लूबी के साथ गुजारा था उसी तरह अलाहिदगी के जमाने को भी खुशउस्लूबी के साथ गुजारा जाए।

وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَنْ يَنْكِحْنَ
أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضُوا بَيْنَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ذَلِكَ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ أَرْكَى لَكُمْ وَأَطْهَرُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا
تَعْلَمُونَ ① وَالْوَالِدَتُ يُرْضَعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ
يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ لَا تُكَلَّفُ
نَفْسٌ الْإِسْعَاءَ لَا تَصَّارُ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَهُ بِوَلَدِهَا وَعَلَى
الْوَارِثِ مِثْلُ ذَلِكَ فَإِنْ أَرَادَ فِصَالٌ عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَا وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا
سَأَلْتُمْ كَمَا آتَيْتُمُ بِالْمَعْرُوفِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ②

और जब तुम अपनी औरतों को तलाक दे दो और वे अपनी इद्दत पूरी कर लें तो उन्हें न रोको कि वे अपने शोहरों से निकाह कर लें। जबकि वे दस्तूर (सामान्य नियम) के अनुसार आपस में राजी हो जाएं। यह नसीहत की जाती है उस शख्स को जो तुममें से अल्लाह और आखिरत के दिन पर यकीन रखता हो। यह तुम्हारे लिए ज्यादा पाकीजा और सुयरा तरीका है। और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। और माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल तक दूध पिलाएं उन लोगों के लिए जो पूरी मुद्दत तक दूध पिलाना चाहते हों। और जिसका बच्चा है उसके जिम्मे है इन मांओं का खाना और कपड़ा दस्तूर के मुताबिक। किसी को हुक्म नहीं दिया जाता मगर उसकी बर्दास्त के मुताबिक। न किसी मां को उसके बच्चे के सबब से तकलीफ दी जाए। और न किसी बाप को उसके बच्चे के सबब से। और यही जिम्मेदारी वारिस पर भी है। फिर अगर दोनों आपसी

रजामंदी और मशवरे से दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं। और अगर तुम चाहो कि अपने बच्चे को किसी और से दूध पिलवाओ तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं। बशर्ते कि तुम कायदे के मुताबिक वह अदा कर दो जो तुमने उन्हें देना ठहराया था। और अल्लाह से डरो और जान लो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (232-233)

एक औरत को उसके ख़ाविंद ने तलाक दे दी और इद्दत के जमाने में रजअत (मिलन) न की। जब इद्दत खत्म हो चुकी तो दूसरे लोगों के साथ पहले शौहर ने भी निकाह का पैगाम दिया। औरत ने अपने पहले शौहर से दुबारा निकाह करना मंजूर कर लिया मगर औरत का भाई गुस्से में आ गया और निकाह को रोक दिया। इस पर यह हुक्म उतरा की जब दोनों दुबारा वैवाहिक संबंध कायम करने पर राजी हैं तो रुकावट न डालो।

तलाक के बाद भी अक्सर बहुत से मसाइल बाकी रहते हैं। कभी पहले शौहर से दुबारा निकाह का मामला होता है। कभी तलाकशुदा औरत किसी दूसरे मर्द से शादी करना चाहती है। ऐसे मौकों पर मुश्किलें पैदा करना दुरुस्त नहीं। कभी तलाकशुदा औरत बच्चे वाली होती है और साबका (पूर्व) शौहर के बच्चे के दूध पिलाने का मसला होता है। ऐसी हालत में एक-दूसरे को तकलीफ देने से मना किया गया और हुक्म दिया गया कि इस मामले को जज्वात का सवाल न बनाओ। इसे आपसी मशवरे और रजामंदी से तै कर लो। इससे अंदाजा होता है कि इज़्जेलफ और अलाहिदगी के वक्त मामले को निपटाने का मोमिनाना तरीका क्या है। वह यह कि दोनों पक्षों की जानिब जो मसाइल बाकी रह गए हों उन्हें एक-दूसरे को परेशान करने का जरिया न बनाया जाए बल्कि उन्हें ऐसे ढंग से तै किया जाए जो दोनों जानिब के लिए बेहतर और काबिले कबूल हो। ईमान रूह की पाकीजी है फिर जिसकी रूह पाक हो चुकी हो वह अपने मामलात में नापाकी का तरीका कैसे अपना सकता है।

नसीहत किसी के लिए सिर्फ इस बुनियाद पर काबिले कबूल नहीं हो जाती कि वह बरहक है। जरूरी है कि सुनने वाला अल्लाह पर यकीन रखता हो और उसकी पकड़ से डरने वाला हो। वह समझे कि नसीहत करने वाले की नसीहत को रद्द करने के लिए आज अगर मैंने कुछ अल्फाज पा लिए तो इससे अस्ल मसला खत्म नहीं हो जाता। क्योंकि मामला बिलआखिर अल्लाह की अदालत में पेश होना है। और वहां किसी किस्म का जोर और कोई लफ्ज़ी हुज्जत काम आने वाली नहीं।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ
وَعَشْرًا ③ وَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ
بِالْمَعْرُوفِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ④ وَالْجُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمُ بِهِ
مِنْ خُطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ عِلْمَ اللَّهِ أَنْتُمْ سَتَدْرُوهُنَّ

وَلَكِنْ لَا تَوَاعِدُ وَهُنَّ بَيِّنَاتٌ إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَعْرُوفًا وَلَا تَعْرِمُوا عَقْدَةَ
النِّكَاحِ حَتَّى يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَفُوٌّ رَحِيمٌ ۖ لَّجُنَاكِ عَلَيْكُمْ أَنْ طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ مَا لَمْ
تَكْسُوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۚ وَمَتَّعُوهُنَّ عَلَى الْمَوْسِرِ قَدَرُهُ
وَعَلَى الْمُقْتَرِ قَدَرُهُ ۚ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ ॥ وَإِنْ
طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَكْسُوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَرْصَتْ
مَا فَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوا الَّذِي بِيَدِهِ عَقْدَةُ الزَّكَاحِ ۚ وَأَنْ
تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَى وَلَا تَنْسُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ إِنَّ اللَّهَ بِمَا

تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

और तुममें से जो लोग मर जाएं और बीवियां छोड़ जाएं वे बीवियां अपने आप को चार महीने दस दिन तक इंतजार में रखें। फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुंचें तो जो कुछ वे अपने बारे में कायदे के मुताबिक करें उसका तुम पर कोई गुनाह नहीं। और अल्लाह तुम्हारे कामों से पूरी तरह बाख़बर है। और तुम्हारे लिए इस बात में कोई गुनाह नहीं कि इन औरतों को पैग़ाम देने में कोई बात इशारे में कहो या अपने दिल में छुपाए रखो। अल्लाह को मालूम है कि तुम जरूर इनका ध्यान करोगे। मगर छुपकर इनसे वादा न करो, तुम इनसे सिर्फ़ दस्तूर के मुताबिक कोई बात कह सकते हो। और निकाह का इरादा उस वक्त तक न करो जब तक निर्धारित मुद्दत पूरी न हो जाए। और जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। पस उससे डरो और जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला, तहम्मूल (संयम) वाला है। अगर तुम औरतों को ऐसी हालत में तलाक़ दो कि न इन्हें तुमने हाथ लगाया है और इनके लिए कुछ महर मुकर्रर किया है तो इनके महर का तुम पर कुछ मुवाख़िजा (देय) नहीं। अलबत्ता उन्हें दस्तूर के मुताबिक कुछ सामान दे दो, वरुअत वाले पर अपनी हैसियत के मुताबिक है और तंगी वाले पर अपनी हैसियत के मुताबिक, यह नेकी करने वालों पर लाज़िम है। और अगर तुम उन्हें तलाक़ दो इससे पहले कि उन्हें हाथ लगाओ और तुम उनके लिए कुछ महर भी मुकर्रर कर चुके थे तो जितना महर तुमने मुकर्रर किया हो उसका आधा अदा करो। यह और बात है कि वे माफ़ कर दें या वह मर्द माफ़ कर दे जिसके हाथ में निकाह की गिरह है। और तुम्हारा माफ़ कर देना ज्यादा करीब है तक्ज़ा से। और आपस में एहसान करने से ग़म्लत मत करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। (234-237)

निकाह और तलाक़ के कानून बयान करते हुए बार-बार तक्ज़ा और एहसान की नसीहत की जा रही है। इससे मालूम हुआ कि किसी हुक्म को उसकी अस्ल रूह के साथ ज़ेरेअमल लाने के लिए जरूरी है कि मआशरे (समाज) के अफ़राद ख़ालिस कानूनी मामला करने वाले न हों बल्कि एक-दूसरे के साथ हुस्ने सुलूक का जज्बा रखते हों। इसी के साथ उन्हें यह खटका लगा हुआ हो कि दूसरे के साथ बेहतर सुलूक न करना खुद अपने बारे में बेहतर सुलूक न किए जाने का ख़तरा मोल लेना है क्योंकि बिलआख़िर सारा मामला खुदा के यहां पेश होना है और वहां न लफ्ज़ी तावीलें किसी के काम आएंगी और न किसी के लिए यह मुमकिन होगा कि वह मामले से मुतअल्लिक किसी बात को छुपा सके।

अगर निकाह के वक्त औरत का महर मुकर्रर हुआ और तअल्लुक कायम होने से पहले तलाक़ हो गई तो कानून के एतबार से आधा महर देना लाज़िम किया गया है। मगर ख़ैरख़ाही का तक्ज़ा है कि दोनों इस मामले में कानूनी बर्ताव के बजाए फ़याजना (उदारता, सहृदयतापूर्ण) बर्ताव करना चाहें। औरत के अंदर यह मिजाज हो कि जब तअल्लुक कायम नहीं हुआ तो मैं आधा महर छोड़ दूँ। मर्द के अंदर यह जज्बा उभरे कि अगरचे कानूनन मेरे ऊपर सिर्फ़ आधे की जिम्मेदारी है मगर फ़याजी का तक्ज़ा है कि मैं पूरा का पूरा अदा कर दूँ। फ़याजी और वरुअते जर्फ़ (सहृदयता) का यही मिजाज तमाम मामलों में मल्लूख है। वही मआशरा मुस्लिम मआशरा है जिसके अफ़राद का यह हाल हो कि हर एक-दूसरे को देना चाहे न यह कि हर एक-दूसरे से लेने का हरीस बना हुआ हो। साथ ही यह भी कि वरुअते जर्फ़ का यह मामला दुमनी के वक्त भी हो न कि सिर्फ़ देस्ती के वक्त।

حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ ۚ فَإِنْ خِفْتُمْ
فَرِجًا لَا أَرُكِبَانَا فَإِذَا آمَنْتُمْ فَادْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ۝
وَالَّذِينَ يَتُوقُونَ مِنْكُمْ يَدْرُونَ أَنَّ جَاءَهُمْ وَصِيَّةٌ لَّازِلَةٌ وَاجِبَةٌ ۚ وَإِنْ خَرَجْنَا
عَنْكُمْ فَانْزِلُوا عَلَيْنَا فِي مَا فَعَلْنَا فِي أَنْفُسِهِمْ مِنْ
مَّعْرُوفٍ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ وَلَمَّا طَلَقْتَ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ۝
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

पाबंदी करो नमाजों की और पाबंदी करो बीच की नमाज की। और खड़े हो अल्लाह के सामने आजिज बने हुए। अगर तुम्हें अदेशा हो तो पैदल या सवारी पर पड़ लो। फिर जब अमन की हालत आ जाए तो अल्लाह को उस तरीके से याद करो जो उसने तुम्हें सिखाया है, जिसे तुम नहीं जानते थे। और तुममें से जो लोग वफ़ात पा जाएं और बीवियां छोड़ रहे हों वे अपनी बीवियों के बारे में वसीयत कर दें कि एक साल तक उन्हें

घर में रखकर खर्च दिया जाए। फिर अगर वे खुद से घर छोड़ दें तो जो कुछ वे अपने मामले में दस्तूर के मुताबिक करें उसका तुम पर कोई इल्जाम नहीं। अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। और तलाक दी हुई औरतों को भी दस्तूर के मुताबिक खर्च देना है, यह लाजिम है परहेजगारों के लिए। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहकाम खोलकर बयान करता है ताकि तुम समझो। (238-242)

नमाज गोया दीन का खुलासा है। नमाज मोमिनाना जिंदगी की वह मुख्तसर तस्वीर है जो फैलती है तो मुकम्मल इस्लामी जिन्दगी बन जाती है। यहां एक छोटे से जुमले में नमाज के तीन अहमतरिनी अजजा (टुकड़ों) को बयान कर दिया गया है (1) नमाज का पांच वक्त के लिए फर्ज होना। (2) नमाज का एक कबिले एहतेमाम चीज होना। (3) यह बात कि नमाज की अस्ल हक़ीक़त इज्ज (किनय) है।

‘पाबंदी करो नमाजों की और पाबंदी करो बीच की नमाज की।’ इससे मालूम हुआ कि नमाजों में एक बीच की नमाज है और फिर इसके दोनों तरफ नमाजें हैं। इस जुमले में अतराफ की ‘नमाजों’ से कम से कम चार की तादाद मान लेना जरूरी है। क्योंकि अरबी ज़बान में ‘सलवात’ (नमाजों) का इतलाक तीन या इससे ज्यादा के अदद के लिए होता है। पहला मुमकिन अदद जिसमें ‘नमाजों’ के दर्मियान एक ‘बीच की’ नमाज बन सके, चार ही है। इस तरह एक नमाज बीच की नमाज होकर इसके दोनों तरफ दो-दो नमाजें हो जाती हैं। ‘बीच की नमाज’ से मुराद अम्र की नमाज है। जैसा कि रियायत से साबित है। नमाज के दूसरे पहलू को बताने के लिए ‘मुहाफिजत’ (संरक्षा) का लफ्ज इस्तेमाल हुआ है। गोया नमाज उसी तरह हिमजत की एक चीज है जिस तरह माल आदमी के लिए हिमजत की चीज होता है। नमाज के वक्तों का पूरा लिहाज, उसके बताए हुए तरीके पर अदा करने का एहतेमाम, ऐसी चीजों से पक्के इरादे से बचना जो आदमी की नमाज में कोई खराबी पैदा करने वाली हों, वैगह, मुहाफिजे नमाज में शामिल हैं। नमाज का तीसरा पहलू इज्ज है। यह नमाज की अस्ल रूह है, नमाज बंदे का अल्लाह के सामने खड़ा होना है। इसलिए जरूरी है कि नमाज के वक्त आदमी के ऊपर वह कैफियत तारी हो जो सबसे बड़े के आगे खड़े होने की सूरत में सबसे छोटे के ऊपर तारी होती है।

मआशरत (सामाजिकता) के अहकाम बताते हुए यह कहना कि ‘यह हक है मुत्तकियों के ऊपर’ श्रीअत के एक अहम पहलू को जहिर करता है। आपसी मामलों में कुछ हुक्म वे हैं जिन्हें कानून ने सुनिश्चित कर दिया है। मगर एक आदमी पर दूसरे के हुक्म की हदें यहीं खत्म नहीं हो जातीं। सुनिश्चित हुक्म के अलावा भी कुछ हुक्म हैं। ये हुक्म वे हैं जिन्हें आदमी का तकवा उसे महसूस कराता है। और आदमी का मुत्तकयाना एहसास जितना शदीद हो उतना ही ज्यादा वह इसे अपने ऊपर लाजिम समझता है। अंदर का यह जोर अगर मौजूद न हो तो आदमी कभी सही तौर पर दूसरों के हुक्म अदा नहीं कर सकता।

الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ وَاتَّبِعُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضْعِفَ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٤٣﴾

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से भाग खड़े हुए मौत के डर से, और वे हजारों की तादाद में थे। तो अल्लाह ने उनसे कहा कि मर जाओ। फिर अल्लाह ने इन्हें जिंदा किया। बेशक अल्लाह लोगों पर फ़ल करने वाला है। मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। और अल्लाह की राह में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। कौन है जो अल्लाह को कर्जे हसन दे कि अल्लाह इसे बढ़ाकर उसके लिए कई गुना कर दे। और अल्लाह ही तंगी भी पैदा करता है और कुशादगी भी। और तुम सब उसी की तरफ लौटाए जाओगे। (243-245)

मक्का से तंग आकर मुसलमान मदीना चले आए। मदीना में अपने दीन के मुताबिक रहने के लिए निस्वतन (अपेक्षाकृत) आजादाना माहौल था। मगर इस्लाम के विरोधियों ने अब भी उन्हें न छोड़ा। उन्होंने फौजी हमले शुरू कर दिए ताकि मदीना से मुसलमानों का ख़ात्मा कर दें। उस वक्त हुक्म हुआ कि उनसे मुक़ाबला करो। विरोधियों की अपेक्षा इस वक्त मुसलमानों की ताकत बहुत कम थी। इसलिए कुछ लोगों के अंदर बेहिम्मती पैदा हुई। यहां बनी इस्राईल के इतिहास का एक वाकया याद दिला कर बताया गया कि जिंदगी के मोर्चे में शिकस्त से डरने ही का नाम शिकस्त है।

बनी इस्राईल की एक पड़ोसी कौम फिलिस्ती ने उन पर हमला कर दिया। बनी इस्राईल हार गए। फिलिस्तिनियों ने दो हमलों में इनके चौतीस हजार आदमी मार डाले। बनी इस्राईल इतना डरे कि अपने घरों को छोड़कर भाग गए। बाइबल के अल्फ़ाज में ‘हशमत (प्रताप) बनी इस्राईल के हाथों से जाती रही।’ बनी इस्राईल का सारा घराना ख़ौफ में मुब्तला होकर विलाप करने लगा। इसी हाल में इन्हें बीस साल गुजर गए। फिर इन्होंने सोचा कि फिलिस्तिनियों के सामने उन्हें शिकस्त क्यों हुई। उनके नबी समूईल ने कहा कि शिकस्त की वजह खुदा में तुम्हारे यकीन का कमजोर हो जाना है। उन्होंने इस्राईल के सारे घराने से कहा कि अगर तुम अपने सारे दिल से खुदावंद की तरफ रुजूआ लाते हो तो अजनबी देवताओं को अपने बीच से दूर कर दो। और खुदावंद के लिए अपने दिलों को मुस्तइद (एकाग्र) करके सिर्फ उसी की इबादत करो। खुदा फिलिस्तिनियों के हाथ से तुम्हें रिहाई देगा। तब इस्राईल ने अजनबी देवताओं को अपने से दूर किया और फ़क़त खुदावंद की इबादत करने लगे। अब जब दुबारा फिलिस्तिनियों

और इस्राईलियों में जंग हुई तो बाइबल के अल्फाज में 'खुदावंद फिलिस्तिनों के ऊपर उस दिन बड़ी कड़क के साथ गरजा और उन्हें घबरा दिया और उन्होंने इस्राईलियों के आगे शिकस्त खाई।' (1 समुईल, आ० 7)। अल्लाह पर एतमाद के रास्ते को छोड़कर उन पर मिल्ली (समुदायगत) मौत हुई थी। अल्लाह पर एतमाद के रास्ते को अपनाने के बाद उन्हें मिल्ली जिंदगी हासिल हो गई।

कंजेहसन के मअना है अच्छा कर्ज। यहां इससे मवाद वह ईमक (खर्च करना) है जो खुदा के दीन की राह में किया जाए। यह ईफाक खालिस अल्लाह के लिए होता है जिसमें कोई दूसरा मफद शामिल नहीं होता। इसलिए खुदा ने इसे अपने जिम्मे कर्ज करार दिया। और चूंकि वह बहुत ज्यादा इजाम के साथ इसे लौटाएगा इसलिए इसे कंजेहसन फरमाया।

मोमिन की राह में मुश्किलात का पेश आना कोई महरूमी की बात नहीं। यह अल्लाह के फजल का नया दरवाजा खुलना है। इसके बाद वह अपने जान व माल को अल्लाह के लिए खर्च करके अल्लाह की उन इनायतों का मुस्तहिक बनता है जो आम हालात में किसी को नहीं मिलतीं।

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَا مِنْ بَنِي إِسْرَءِيْلَ مِنْ بَعْدَ مُوسَى اِذْ قَالُوا لِنَبِيِّنَا ائْتِنَا مِنْ مَلَكٍ مُنْقَاتِلٍ فِي سَبِيلِ اللّٰهِ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَا تُقَاتِلُوْا قَالُوْا وَمَا لَنَا اَلَا نُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَابْنَانَا فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ۗ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝ۙ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ بَلَكًا قَالُوا لَوْ اِئْتٰنَا بِالْبَلَاءِ لَوَلَّيْنَاكَ عَلَيْنَا وَنَحْنُ اٰخِئْنَ بِالْبَلَاءِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِنَ الْمَالِ ۚ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ سَطَۡةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ وَاللّٰهُ يُؤْتِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝ۚ وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ نَّلِكَةِ اَنْ يَّاتِيَكُمْ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسٰى وَآلُ هَارُوْنَ تَحِيْلُهُ الْمَلِكَةُ ۚ اِنْ فِيْ ذٰلِكَ لَآيَةٌ لِّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ۚ

क्या तुमने बनी इस्राईल के सरदारों को नहीं देखा मूसा के बाद, जबकि उन्होंने अपने नबी से कहा कि हमारे लिए एक बादशाह मुकर्र कर दीजिए ताकि हम अल्लाह की राह में लड़ें। नबी ने जवाब दिया : ऐसा न हो कि तुम्हें लड़ाई का हुक्म दिया जाए तब तुम न लड़ो। उन्होंने कहा यह कैसे हो सकता है कि हम न लड़ें अल्लाह की राह में। हालांकि

हमें अपने घरों से निकाला गया है और अपने बच्चों से जुदा किया गया है। फिर जब उन्हें लड़ाई का हुक्म हुआ तो थोड़े लोगों के सिवा सब फिर गए। और अल्लाह जालिमों को खूब जानता है। और उनके नबी ने उनसे कहा : अल्लाह ने तालूत को तुम्हारे लिए बादशाह मुकर्र किया है। उन्होंने कहा कि उसे हमारे ऊपर बादशाही कैसे मिल सकती है। हालांकि उसके मुक़बले में हम बादशाही के ज्यादा हक़दार हैं। और उसे ज्यादा दौलत भी हासिल नहीं। नबी ने कहा अल्लाह ने तुम्हारे मुक़बले में उसे चुना है और इल्म और ज़िस्म में उसे ज्यादा दी है। और अल्लाह अपनी सल्तनत जिसे चाहता है देता है। अल्लाह बड़ी वुस्अत (व्यापकता) वाला, जानने वाला है। और उनके नबी ने उनसे कहा कि तालूत के बादशाह होने की निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह संदूक आ जाएगा जिसमें तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे लिए तस्कीन है। और मूसा के समुदाय और हारून के समुदाय की छोड़ी हुई यादगारें हैं। इस संदूक को फरिश्ते ले आएँगे इसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है, अगर तुम यकीन रखने वाले हो। (246-248)

मूसा (अलै०) के तकरीबन तीन सौ साल बाद बनी इस्राईल अपने पड़ोस की मुशिरक कौमों से मगलूब (परास्त) हो गए। इसी हालत में तकरीबन चौथाई सदी गुजारने के बाद उन्हें एहसास हुआ कि वे अपने पिछले दौर को वापस लाएं। अब अपने दुश्मनों से लड़ने के लिए उन्हें एक अमीरे लश्कर (सेनापति) की जरूरत थी। उनके नबी समुईल (1100-1020 ई० पू०) ने इनके लिए एक शख्स की नियुक्ति की जिसका नाम कुरआन में तालूत और बाइबल में साऊल आया है। जाती औसाफ (निजी गुणों) के एतबार से वह एक उपयुक्त शख्स था। मगर बनी इस्राईल उसकी सरदारी कुबूल करने के बजाए इस किस्म के एतराज निकालने लगे कि वह तो छोटे खानदान का आदमी है। उसके पास माल व दौलत नहीं। मगर इस तरह की मतभेदपूर्ण बहसों किसी कौम के ज्वालायाफ़ता (पतित) होने की अलामतें हैं। अल्लाह के फैसले व्यापकता और इल्म की बुनियाद पर होते हैं। इसलिए वही बंदा अल्लाह का महबूब बंदा है जो खुद भी व्यापक दृष्टिकोण का तरीका अपनाए और जो भी फैसला करे तथ्यों के आधार पर करे न कि तअस्सुबात और मस्लेहतों की बुनियाद पर। ताहम संदूक को वापस लाकर अल्लाह ने तालूत की नियुक्ति की एक असाधारण पुष्टि भी कर दी।

बनी इस्राईल के यहां एक मुक़द्दस (पवित्र) संदूक था जो मिन्न से विस्थापन के जमाने से इनके यहां चला आ रहा था। इसमें तौरात की तख्तियां और दूसरी शुभ वस्तुएं थीं। बनी इस्राईल इसे अपने लिए फतह और कामयाबी का निशान समझते थे। फिलिस्ती इस संदूक को उनसे छीन कर उठा ले गए थे। मगर इसे उन्होंने जिस-जिस बस्ती में रखा वहां-वहां वबाएं (महामारी) फूट पड़ीं। इससे उन्होंने बुरा शगुन लिया और संदूक को एक बैलगाड़ी में रख कर हांक दिया। वे इसे लेकर चलते रहे यहां तक कि यहूदियों की आबादी में पहुंच गए। अल्लाह अपने किसी बंदे की सदाकत (सच्चाई) को जाहिर करने के लिए कभी उसके गिर्द ऐसी असाधारण चीजें जमा कर देता है जो आम इंसानों के साथ जमा नहीं होतीं।

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُمْ بِنَهَرٍ فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَنْ لَمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَشَرَبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِطَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلْقَوُا اللَّهَ كَمْ مَرْنٍ فَنَبَّ وَقِيلَ لَهُ غَابَتْ مِرَّةٌ كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝ وَلَمَّا بَرَرُوا الْوَيْحَ أَوْجَتْ عَلَيْهِمُ الْيَاكُوتُ فَجَاءُوا طَالُوتَ أَنقَرُوا عَلَى أَصْوَادِهِمْ أَنَا وَالصُّبْرَةُ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ فَخَرَّوهُمْ بِإِذْنِ اللَّهِ وَكُتِلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَاتَّهَى اللَّهُ الْمَلِكَ وَالْحَمِيَّةَ وَعَلِمَهُ مِنَّا بِشَاءٍ ۖ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لَّفُسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝

फिर जब तालूत फौजों को लेकर चला तो उसने कहा : अल्लाह तुम्हें एक नदी के जरिए आजमाने वाला है। पस जिसने उसका पानी पिया वह मेरा साथी नहीं और जिसने उसे न चखा वह मेरा साथी है। मगर यह कि कोई अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले। तो उन्होंने इसमें से खूब पिया सिवाए थोड़े आदमियों के। फिर जब तालूत और जो उसके साथ ईमान पर कायम रहे थे दरिया पार कर चुके तो वे लोग बोले कि आज हमें जालूत और उसकी फौजों से लड़ने की ताकत नहीं। जो लोग यह जानते थे कि वे अल्लाह से मिलने वाले हैं उन्होंने कहा कि कितनी ही छोटी जमाअतें अल्लाह के हुक्म से बड़ी जमाअतों पर गालिब आई हैं। और अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है। और जब जालूत और उसकी फौजों से उनका सामना हुआ तो उन्होंने कहा : कि ऐ हमारे ख हमारे ऊपर सब्र डाल दे और हमारे कदमों को जमा दे और इन मुंकिरों के मुकाबले में हमारी मदद कर। फिर उन्होंने अल्लाह के हुक्म से उन्हें शिकस्त दी। और दाऊद ने जालूत को कल्ल कर दिया। और अल्लाह ने दाऊद को बादशाहत और दानाई (सुझबूझ) अता की और जिन चीजों का चाहा इल्म वज़्हा। और अगर अल्लाह कुछ लोगों को कुछ लोगों के जरिए हटाता न रहे तो जमीन फसाद से भर जाए। मगर अल्लाह दुनिया वालों पर बड़ा फल फरमाने वाला है। (249-251)

मूसा के तकरीबन तीन सौ साल बाद और हजरत मसीह से तकरीबन एक हजार साल पहले

ऐसा हुआ कि फिलिस्तिनियों ने बनी इस्राईल पर हमला किया और फिलिस्तीन के अक्सर इलाके उनसे छीन लिए। एक अर्से के बाद बनी इस्राईल ने चाहा कि वे फिलिस्तिनियों के खिलाफ इकदाम करें और अपने इलाके उनसे वापिस लें, उस वक्त उनके दर्मियान एक नबी थे जिनका नाम समूईल था वह शाम के एक कदीम शहर रामह में रहते थे और बनी इस्राईल के सामूहिक मामलों के जिम्मेदार थे। बनी इस्राईल का एक वपद (प्रतिनिधिमण्डल) उनसे मिला। और कहा कि आप अब बूढ़े हो चुके हैं, इसलिए आप हममें से किसी को हमारे ऊपर बादशाह मुकर्र कर दें, ताकि हम उसकी रहनुमाई में जंग कर सकें। तौरात के अल्फाज में 'और हमारा बादशाह हमारी अदालत करे और हमारे आगे-आगे चले और हमारी लड़ाई करे।'

हजरत समूईल अगरचे यहूद के किरदार के बारे में अच्छी राय न रखते थे ताहम उनकी मांग की बुनियाद पर उन्होंने कहा कि अच्छा मैं तुम्हारे लिए एक बादशाह मुकर्र कर दूंगा। अतः उन्होंने कबीला बिन यमीन के एक बहादुर नौजवान साऊल (तालूत) को उनका बादशाह (सरदार) मुकर्र कर दिया।

साऊल (तालूत) बनी इस्राईल का लश्कर लेकर दुश्मन की तरफ बढ़े, रास्ते में यरदन नदी पड़ती थी इसे पार करके दुश्मन के इलाके में पहुंचना था। क्योंकि तालूत को बनी इस्राईल की कमजोरियों का इल्म था उन्होंने उनकी जांच के लिए एक सादा तरीका इस्तेमाल किया। नदी को पार करते हुए उन्होंने एलान किया कि कोई शख्स पानी न पिए। अलबत्ता एक आध चुल्लू ले ले तो कोई हर्ज नहीं। बनी इस्राईल की बड़ी तादाद इस इस्तेहान में पूरी न उतरी। ताहम इस मुक़ाबले में अल्लाह तआला ने उन्हें कामयाबी दी। हजरत दाऊद उस वक्त सिर्फ एक नौजवान थे, उन्होंने इस जंग में फैसलाकुन किरदार अदा किया। फिलिस्तिनियों की फौज का जबरदस्त पहलवान जालूत उनके हाथ से कल्ल हुआ। इसके बाद फिलिस्तिनियों ने इस्राईल के मुकाबले में हथियार डाल दिए।

मुक़ाबले में कामयाबी हासिल करने के लिए जरूरी है कि अपराध के अंदर मुश्किलात पर जमने और सरदार की इताअत (आज्ञापालन) करने का मादूदा हो। तालूत का अपने साथियों को पानी पीने से मना करना इसी क्षमता की जांच की एक सादा सी तदबीर थी। बाइबल के बयान के मुताबिक इनमें से सिर्फ छः सौ आदमी ऐसे निकले जिन्होंने रास्ते में आने वाली नदी का पानी नहीं पिया। जिन लोगों ने पानी पिया उन्होंने गोया अपनी अख्ताकी कमजोरियों को और पुख्ता कर लिया। इसलिए दुश्मन का बजाहिर ताक़तवर होना अब उन्हें और ज्यादा महसूस होने लगा। दूसरी तरफ जिन लोगों ने पानी नहीं पिया था उनके इस 'क़स' (कार्य) से उनका सब्र और इताअत का मिजाज और ज्यादा मजबूत हो गया। उन्हें वह हकीकत और ज्यादा वाजह सूत में दिखाई देने लगी जिसे बाइबल के बयान के मुताबिक तालूत के एक साथी ने इन लफ्जों में बयान किया था : 'और यह सारी जमाअत जान ले कि खुदावंद तलवार और भाले के जरिए से नहीं बचाता। इस लिए कि जंग तो खुदावंद की है और वही तुम्हें हमारे हाथ में कर देगा।' (1-समूईल, 48 : 17)

सत्ता जिसके पास हो वह कुछ दिनों बाद घमंड में पड़ कर जुल्म करने लगता है। इसलिए सत्ता किसी के पास स्थाई रूप से जमा हो जाए तो उसके जुल्म व फसाद से जमीन भर जाए। इसकी तलाफी का इस्तेजाम अल्लाह ने इस तरह किया है कि वह सत्ताधारियों को बदलता रहता है। वह सत्ताहीन लोगों में से एक गिरोह को उठाता है और उसके जरिए से सत्ताधारी को हटा कर उसके मंसब पर दूसरे को बैठा देता है। इसका मतलब यह है कि जब किसी सत्ताधारी वर्ग का जुल्म बढ़ जाए तो यह उसके खिलाफ उठने वाले गिरोह के लिए खुदाई मदद का वक्त होता है। अगर वह सब्र और इताअत की शर्त को पूरा करते हुए अपने आप को खुदाई मंसूबे में शामिल कर दे तो बजाहिर कम होने के बावजूद वह खुदा की मदद से ज्यादा के ऊपर ग़ालिब आ जाएगा। खुदा का ख़ैफ़ महज एक मंफ़ी (नकारात्मक) चीज नहीं वह एक इल्म है जो आदमी के जेहन को इस तरह रोशन कर देता है कि वह हर चीज को उसके असली और हकीकी रूप में देख सके।

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٢﴾
تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ مِّنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَ
بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ ۚ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبِكْنَتَ وَوَعَدْنَاهُ لِقَاءَ الْغُدُورِ
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَفْتَكَلْنَا الَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنْ
اخْتَلَفُوا فَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَفْتَكَلُوا ۚ وَلَكِنْ
اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٣﴾

ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें सुनाते हैं ठीक-ठीक। और बेशक तू पैग़म्बरों में से है इन पैग़म्बरों में से कुछ को हमने कुछ पर फज़ीलत दी। इनमें से कुछ से अल्लाह ने कलाम किया। और कुछ के दर्जे बुलंद किए। और हमने ईसा बिन मरयम को खुली निशानियां दीं और हमने उसकी मदद की रूहुल कुद्स से। अल्लाह अगर चाहता तो इनके बाद वाले साफ़ हुक्म आ जाने के बाद न लड़ते मगर उन्होंने मतभेद किया। फिर इनमें से कोई ईमान लाया और किसी ने इंकार किया। और अगर अल्लाह चाहता तो वे न लड़ते। मगर अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (252-253)

अल्लाह की तरफ से कोई पुकारने वाला जब लोगों को पुकारता है तो उसकी पुकार में ऐसी निशानियां शामिल होती हैं कि लोगों को यह समझने में देर न लगे कि वह खुदा की तरफ से है। इसके बावजूद लोग इसका इंकार कर देते हैं और ये इंकार करने वाले सबसे पहले वे लोग होते हैं जो रिसालत को मानते चले आ रहे थे। इसकी वजह यह होती है कि वे जिस रसूल को मान रहे होते हैं उसकी कुछ खुसूसियात की बुनियाद पर वह उसकी अफज़लियत का तसबुर कायम कर लेते हैं। वे समझते हैं कि जब हमारा रसूल इतना अफज़ल है और उसे

हम मान रहे हैं तो अब किसी और को मानने की क्या जरूरत।

हर पैग़म्बर मुख़लिफ़ हालात में आता है और अपने मिशन की तक़मील के लिए हर एक को अलग-अलग चीजों की जरूरत होती है। इस एतबार से किसी पैग़म्बर को एक फज़ीलत (खास चीज) दी जाती है और किसी को दूसरी फज़ीलत। बाद के दौर में पैग़म्बर की यही फज़ीलत उसके उम्मतियों के लिए फ़ितना बन जाती है। वे अपने नबी को दी जाने वाली फज़ीलत को ताईदी फज़ीलत के बजाए मुतलक फज़ीलत के मअनन में लेते हैं। वे समझते हैं कि हम सबसे अफज़ल पैग़म्बर को मानते हैं। इसलिए अब हमें किसी और को मानने की जरूरत नहीं। मूसा (अलै०) को मानने वालों ने मसीह (अलै०) का इंकार किया क्योंकि वे समझते थे उनका नबी इतना अफज़ल है कि खुदा बराहिरास्त उससे हमकलाम हुआ। हज़रत मसीह के मानने वालों ने मुहम्मद (सल्ल०) का इंकार किया। क्योंकि उन्होंने समझा कि वह ऐसी हस्ती को मान रहे हैं जिसकी फज़ीलत इतनी ज्यादा है कि खुदा ने उसे बाप के बौर पैदा किया। इसी तरह अल्लाह के वे बंदे जो उम्मत में मुहम्मदी की इस्लाह व तजदीद के लिए उठे उनका भी लोगों ने इंकार किया। क्योंकि उनके मुख़ातिबीन की नफ़िसयात यह थी कि हम बुजुर्गों के वारिस हैं, हम बड़ों का दामन थामे हुए हैं फिर हमें किसी और की क्या जरूरत। उम्मतों के जवाल (पतन) के जमाने में ऐसा होता है कि लोग दुनिया के रास्ते पर चल पड़ते हैं। इसी के साथ वे चाहते हैं कि उनकी जन्नत भी महफूज़ रहे। उस वक्त यह अक़ीदा उनके लिए एक नफ़िसयाती सहारा बन जाता है। वे अपनी मुक़द्दस शख़्सियतों की अफज़लियत के तसबुर में यह तस्कीन पा लेते हैं कि दुनिया में चाहे वे कुछ भी करें उनकी आख़िरत कभी ख़तरे में नहीं पड़ेगी।

यही ग़लत एतमाद है जो लोगों को अल्लाह की तरफ बुलाने वाले की मुख़ालिफ़त पर अड़ा देता है। अल्लाह के लिए यह मुमकिन था कि वह लोगों की हदायत और रहनुमाई के लिए कोई दूसरा निजाम कायम करता जिसमें किसी के लिए इख़्तेलाफ़ (मतभेद) की गुंजाइश न हो। मगर यह दुनिया इम्तेहान की जगह है। यहां तो इसी बात की आजमाइश हो रही है कि आदमी ग़ैब (अदृश्य) की हालत में खुदा को पाए। इंसान की जवान से बुलंद होने वाली खुदाई आवाज को पहचाने। जाहिरी पदों से गुजर कर सच्चाई को उसके बातिनी (भीतरी) रूप में देख ले।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا مَآرَاضَ قُلُوبِكُمْ ۖ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَئِئَ فِيهِ
وَلَا خَلْدٌ وَلَا شِفَاعَةٌ ۚ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ
الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ مَنْ
ذَ الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا
يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ
وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۚ لَا اكْرَاهُ فِي الدِّينِ قَد تَّبَيَّنَ

الرُّشْدُ مِنَ الْعَيْ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ٥ وَالَّذِينَ آمَنُوا
يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الطَّاغُوتُ
يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ ۗ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ٦

ऐ ईमान वाले खर्च करो उन चीजों से जो हमने तुम्हें दिया है उस दिन के आने से पहले जिसमें न खरीद-फरोख्त है और न दोस्ती है और न सिफारिश। और जो इंकार करने वाले हैं वही हैं जुल्म करने वाले। अल्लाह, इसके सिवा कोई मावूद (पूज्य) नहीं। वह जिंदा है, सबको थामने वाला। उसे न ऊंच आती है और न नींद। उसी का है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। कौन है जो उसके पास उसकी इजाजत के बगैर सिफारिश करे। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और वे उसके इल्म में से किसी चीज का इहाता (ग्रहण) नहीं कर सकते, मगर जो वह चाहे। उसकी हुक्मत आसमानों और जमीन में छाई हुई है। वह थकता नहीं इनके थामने से। और वही है बुलंद मर्तबा, बड़ा। दीन के मामले में कोई जबरदस्ती नहीं। हिदायत गुमराही से अलग हो चुकी है। पस जो शख्स शैतान का इंकार करे और अल्लाह पर ईमान लाए उसने मजबूत हल्का पकड़ लिया जो टूटने वाला नहीं। और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। अल्लाह काम बनाने वाला है ईमान वालों का, वह उन्हें अंधेरों से निकाल कर उजाले की तरफ लाता है, और जिन लोगों ने इंकार किया उनके दोस्त शैतान हैं, वे उन्हें उजाले से निकाल कर अंधेरों की तरफ ले जाते हैं। ये आग में जाने वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (254-257)

खुदा को वही पाता है जो इंफ़ाक (खुदा की राह में खर्च करना) की कीमत देकर खुदा को इख्तियार करे। और कोई आदमी जब खुदा को पा लेता है तो वह एक ऐसी रोशनी को पा लेता है जिसमें वह भटके बगैर चलता रहे। यहां तक कि जन्नत में पहुंच जाए। इसके बरअक्स जो शख्स इंफ़ाक की कीमत दिए बगैर खुदा को इख्तियार करे वह हमेशा अंधेरे में रहता है, जहां शैतान उसे बहका कर ऐसे रास्तों पर चलाता है जिसकी आखिरी मंजिल जहन्नम के सिवा और कुछ नहीं।

इंफ़ाक से मुराद अपने आपको और अपने असासे (धन-सम्पत्ति) को दीन की राह में खर्च करना है। अपनी मस्लेहत्तों को कुर्बान करके दीन की तरफ आगे बढ़ना है। आदमी जब किसी अक्वीदे (आस्था, विश्वास) को इंफ़ाक की कीमत पर अपनाए तो इसका मतलब यह होता है कि वह इसे अपना ने में संजीदा (Sincere) है। यह संजीदा होना बेहद अहम है। किसी मामले में संजीदा होना ही वह चीज है जो आदमी पर इस मामले के भेदों को खोलता है। संजीदा होने के बाद ही यह इन्फ़ाक पैदा होता है कि आदमी और उसके मकसद के दर्मियान हकीकी ताल्लुक कयम हो और मकसद के तमाम पहलू उस पर बाज हो। इसके बरअक्स

मामला उस शख्स का है जो अपनी हस्ती की हवालगी की कीमत पर दीन को न अपनाए। ऐसा शख्स कभी दीन के मामले में संजीदा नहीं होगा और इस बिना पर वह आखिरत के मामले को एक आसान मामला मान लेगा। वह समझेगा कि बुजुर्गों की सिफारिश या दीन के नाम पर कुछ रस्मी और जाहिरी कार्रवाइयां आखिरत की नजात के लिए काफी हैं। आखिरत के मामले में संजीदा न होने की वजह से वह इस राज को न समझेगा कि आखिरत तो मालिके कायनात की अजमत व जलाल (प्रताप) के जुहूर का दिन है। एक ऐसे दिन के बारे में महज सरसरी चीजों पर कामयाबी की उम्मीद कर लेना खुदा की खुदाई का कमतर अंदाजा करना है जो खुदा के यहां आदमी के जुर्म को बढ़ाने वाला है न कि वह उसकी मकबूलियत का सबब बने। खुदा की बात आदमी के सामने दलील की जवान में आती है और वह कुछ अल्फ़ाज बोलकर उसे रद्द कर देता है। यही शैतानी वसवसा है। हिदायत उसे मिलती है जो शैतान के वसवसे से अपने को बचाए और खुदाई दलील को पहचान कर उसके आगे झुक जाए।

الْمُتَرَىٰ إِلَىٰ الذِّى حَاجَّهٖ فِي رِبِّهِ أَنْ اِنَّهُ اللّٰهُ الْمَلِكُ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ
رَبِّىَ الذِّى يُحْيِ وَيُمِيتُ قَالَ اَنَا اُحْيِ وَيُمِيتُ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يٰٓاَتِى
بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاتِّبِعْهَا مِنْ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِى كَفَرَ وَاللّٰهُ
لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ٧

क्या तुमने उसे नहीं देखा जिसने इब्राहीम से उसके रब के बारे में हुज्जत की। क्योंकि अल्लाह ने उसे सल्लतन दी थी। जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वह है जो जिलाता और मारता है। वह बोला कि मैं भी जिलाता हूं और मारता हूं। इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह सूरज को पूर्व से निकालता है तुम उसे पश्चिम से निकाल दो। तब वह मुंकिर हैरान रह गया। और अल्लाह जालिमों को राह नहीं दिखाता। (258)

मौजूदा जमाने में अवामी ताईद से हुक्मत की पात्रता हासिल होती है। मगर जम्हूरियत के दौर से पहले अक्सर बादशाह लोगों को यह यकीन दिलाकर उनके ऊपर हुक्मत करते थे कि वे खुदा के इंसानी पैकर हैं। प्राचीन इराक के बादशाह नमरूद का मामला यही था जो हजरत इब्राहीम का समकालीन था। उसकी कौम सूरज को देवताओं का सरदार मानती थी। और उसकी पूजा करती थी। नमरूद ने कहा कि वह सूर्य-देवता का प्रकट रूप है, इसलिए वह लोगों के ऊपर हुक्मत करने का खुदाई हक रखता है। हजरत इब्राहीम ने उस वक्त के इराक में जब तौहीद (एकेश्वरवाद) की आवाज बुलंद की तो इसका सियासत और हुक्मत से बराहैरास्त कोई ताल्लुक न था। आप लोगों से सिर्फ यह कह रहे थे कि तुम्हारा ख़ालिक और मालिक सिर्फ एक अल्लाह है। कोई नहीं जो खुदाई में उसका शरीक हो। इसलिए तुम उसी की इबादत करो। उसी से डरो और उसी से उम्मीदें कायम करो। ताहम इस ग़ैर-सियासी दावत में नमरूद को अपनी सियासत पर जद पड़ती हुई नजर आई। ऐसा अक्वीदा जिसमें सूरज को एक शक्तिहीन रचना बताया गया हो वह गोया उस आस्थागत आधार ही को ढा रहा था जिसके ऊपर नमरूद ने

अपना सियासी तख्त बिछा रखा था। इस वजह से आपका दुश्मन हो गया।

इब्राहीम (अलै०) ने नमरूद से जो गुफ्तगू की उससे नबियों की दावत (आह्वान) का तरीका मालूम होता है। नमरूद के सवाल के जवाब में आपने फरमाया कि मेरा खब वह है जिसके इख्तियार में ज़िन्दगी और मौत है। नमरूद ने मुनाजिराना (शास्त्रार्थ) अंदाज अपनाते हुए कहा कि मौत और ज़िन्दगी पर तो मैं भी इख्तियार रखता हूँ। जिसे चाहूँ मरवा डालूँ और जिसे चाहूँ ज़िंदा रहने दूँ। आप नमरूद का जवाब दे सकते थे। मगर आपने गुफ्तगू को मुनाजिराना बनाना पसंद नहीं किया। इसलिए आपने फौरन दूसरी मिसाल पेश कर दी जिसके जवाब में नमरूद उस किस्म की बात न कह सकता था जो उसने पहली मिसाल के जवाब में कही। हजरत इब्राहीम के लिए नमरूद हरीफ (प्रतिपक्षी) न था बल्कि मदभू (संवेधित व्यक्ति) की हैसियत रखता था। इसलिए उन्हें यह समझने में देर न लगी कि इस्तदलाल (तर्क) का कौन-सा हकीमाना अंदाज उन्हें अपनाना चाहिए।

मौजूदा दुनिया इन्तेहान की दुनिया है। इसलिए इसे इस तरह बनाया गया है कि एक ही चीज को आदमी दो भिन्न अर्थों में ले सके। मसलन एक शख्स के पास दौलत और सत्ता आ जाए तो वह इसे ऐसे देख सकता है कि उसकी कामयाबी उसे अपनी क्षमताओं का नतीजा नजर आए। इसी तरह यह भी मुमकिन है कि वह इसे ऐसे देखे कि उसे महसूस हो कि जो कुछ उसे मिला है वह सरासर खुदा का इनाम है। पहली सूरत जुल्म की सूरत है और दूसरी शुक्र की सूरत। जिस शख्स के अंदर जालिमाना मिजाज हो उसके लिए मौजूदा दुनिया सिर्फ गुमराही की खुराक होगी। उसे हर वाक्य में घमंड और खुदपसंदी की गिजा मिलेगी। इसके विपरीत जिसके अंदर शुक्र का मिजाज होगा उसके लिए हर वाक्य में हिदायत का सामान होगा। खुदा की दुनिया अपनी तमाम वस्तुओं (व्यापकताओं) के साथ उसके लिए ईमानी खिज्क का दस्तरख़ान बन जाएगी।

أَوَكَا لَئِنْ مَرَّ عَلَى قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّى يُحْيِي هَذِهِ اللَّهُ
بَعْدَ مَوْتِهَا فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ قَالَ لَبِثْتُ
يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالَ بَلْ لَبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ إِلَى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ
لَمْ يَتَسَنَّهْ وَانْظُرْ إِلَى جَمْرِكَ ۖ وَاجْعَلْكَ آيَةً لِلنَّاسِ وَانْظُرْ إِلَى الْعِظَامِ
كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهُمَا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ ارْنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِنْ ۚ
قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِنْ لِّيَطْبَعَنِيَ فَلْيُبَيِّنْ لِي قَالَ فَاخُذْ أَرْبَعَةً مِنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ
ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ أَنَّ
اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

या जैसे वह शख्स जिसका गुजर एक बस्ती पर से हुआ। और वह अपनी छतों पर गिरी हुई थी। उसने कहा : हलाक हो जाने के बाद अल्लाह इस बस्ती को दुबारा कैसे ज़िंदा करेगा। फिर अल्लाह ने उस पर सौ वर्षों तक के लिए मौत तारी कर दी। फिर उसे उठाया। अल्लाह ने पूछा तुम कितनी देर इस हालत में रहे। उसने कहा एक दिन या एक दिन से कुछ कम। अल्लाह ने कहा नहीं बल्कि तुम सौ वर्ष रहे हो। अब तुम अपने खाने पीने की चीजों को देखो कि वे सड़ी नहीं हैं और अपने गधे को देखो। और ताकि हम तुम्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दें। और हड्डियों की तरफ देखो, किस तरह हम उनका ढांचा खड़ा करते हैं। फिर उन पर गोश्त चढ़ाते हैं। पस जब उस पर वाजेह हो गया तो कहा मैं जानता हूँ कि बेशक अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखता है। और जब इब्राहीम ने कहा कि ऐ मेरे खब, मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस तरह ज़िंदा करेगा। अल्लाह ने कहा, क्या तुमने यकीन नहीं किया। इब्राहीम ने कहा क्यों नहीं, मगर इसलिए कि मेरे दिल को तस्कीन हो जाए। फरमाया तुम चार पंदि लो और उन्हें अपने से हिला लो। फिर उनमें से हर एक को अलग-अलग पहाड़ी पर रख दो, फिर उन्हें बुलाओ। वे तुम्हारे पास दौड़ते हुए चले आएंगे। और जान लो कि अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। (259-260)

यहां मौत के बाद दुबारा ज़िंदा किए जाने के जिन दो तजुर्बा का जिक्र है इनका तअल्लुक नबियों से है। पहला तजुर्बा संभवतः उजैर (अलै०) के साथ गुजरा जिनका जमाना पांचवीं सदी ईसा पूर्व का है। और दूसरा तजुर्बा इब्राहीम (अलै०) से तअल्लुक रखता है। जिनका जमाना 2160-1985 ई० पू० के दर्मियान है। अबिया खुदा की तरफ से इसलिए मुकर्रर होते हैं कि लोगों को ग़ैबी हकीकतों से बाख़बर करें। इसलिए उन्हें वे ग़ैबी चीजें खोल करके दिखा दी जाती हैं जिन पर दूसरों के लिए असबाब का पर्दा डाल दिया गया है। नबियों के साथ यह ख़ास मामला इसलिए होता है ताकि वे इन चीजों के जाती मुशाहिद (प्रत्यक्षदर्शी) बनकर इनके बारे में लोगों को बाख़बर कर सकें। वे लोगों को जिन ग़ैबी हकीकतों की ख़बर दें उनके बारे में कह सकें कि हम एक देखी हुई चीज से तुम्हें बाख़बर कर रहे हैं न कि महज सुनी हुई चीज से।

नबियों को चालीस साल की उम्र में नुबुव्वत दी जाती है। नुबुव्वत से पहले उनकी पूरी ज़िंदगी लोगों के सामने इस तरह गुजरती है कि इनमें से किसी शख्स को झूठ का तजुर्बा नहीं होता। तकरीबन आधी सदी तक माहौल के अंदर अपने सच्चे होने का सुबूत देने के बाद वह वक़्त आता है कि अल्लाह तआला उन्हें लोगों के सामने उन ग़ैबी हकीकतों के एलान के लिए खड़ा करे जिन्हें आजमाइश की मस्तेहत के सबब लोगों से छुपा दिया गया है। माहौल के ये सबसे ज्यादा सच्चे लोग एक तरफ अपने मुशाहिदे (प्रत्यक्ष अवलोकन) से लोगों को बाख़बर करते हैं। और दूसरी तरफ अक्ल और फितरत के शवाहिद (प्रमाणों) से इसे मुदलल (तर्क पूर्ण) करते हैं। साथ ही यह कि नबियों को हमेशा शदीदतरीन हालात से साबका पेश आता है। इसके बावजूद वे अपने कौल से फिरते नहीं, वे इतिहाई साबितकदमी के साथ अपनी बात पर जमे रहते हैं। इस तरह यह साबित हो जाता है कि वे जो कुछ कहते हैं उसमें वे पूरी तरह

संजीदा हैं। फर्जी तौर पर उन्होंने कोई बात नहीं गढ़ ली है। क्योंकि गढ़ी हुई बात को पेश करने वाला कभी इतने सख्त हालात में अपनी बात पर कायम नहीं रह सकता। और न उसकी बात खारजी (वाय्य) कायनात से इतनी ज्यादा मुताबिक हो सकती है कि वह सरापा उसकी तस्दीक (पुष्टि) बन जाए।

مَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنْبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلٍ فِي كُلِّ سَنَابِلَةٍ مِائَةٌ حَبَّةٌ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا مَنًّا وَلَا أَذًى لَهُمْ جُزْءُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ قَوْلٌ مَعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا أَذًى وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَبْطُلُوا صَدَقَتَكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ ثَرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَ صَدَأً لَا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ۝

जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते हैं उनकी मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना हो जिससे सात बालें पैदा हों, हर बाली में सौ दानें हों। और अल्लाह बढ़ाता है जिसके लिए चाहता है। और अल्लाह बुरात (व्यापकता) वाला, जानने वाला है। जो लोग अपने माल को अल्लाह की राह में खर्च करते हैं फिर खर्च करने के बाद न एहसान रखते हैं और न तकलीफ पहुंचाते हैं उनके लिए उनके खर्च के पास उनका अज्र (प्रतिफल) है। और उनके लिए न कोई डर है और न वे गमगीन होंगे। मुनासिब बात कह देना और दरगुजर (क्षमा) करना उस सदके से बेहतर है जिसके पीछे सताना हो। और अल्लाह बेनियाज (निरुह) है, तहम्मूल (संयम) वाला है। ऐ ईमान वालो एहसान रख कर और सता कर अपने सदके को जाया न करो, जिस तरह वह शख्स जो अपना माल दिखावे के लिए खर्च करता है और वह अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखता। पस उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक चट्टान हो जिस पर कुछ मिट्टी हो, फिर उस पर जोर की बारिश हो जो उसे बिल्कुल साफ कर दे। ऐसे लोगों को अपनी कमाई कुछ भी हाथ नहीं लगेगी। और अल्लाह इंकार करने वालों को राह नहीं दिखाता। (261-264)

हर अमल जो आदमी करता है वह गोया एक बीज है जो आदमी 'जमीन' में डालता है। अगर उसका अमल इसलिए था कि लोग उसे देखें तो उसने अपना बीज दुनिया की जमीन

में डाला ताकि यहां की ज़िंदगी में अपने किए का फल पा सके। और अगर उसका अमल इसलिए था कि अल्लाह उसे 'देखे' तो उसने आखिरत की जमीन में अपना बीज डाला जो अगली दुनिया में अपने फूल और फल की बहरें दिखाए। दुनिया में एक दाने से हजार दाने पैदा होते हैं। यही हाल आखिरत के खेत में दाना डालने का भी है। दुनिया के फायदे या दुनिया की शोहरत व इज्जत के लिए खर्च करने वाला इसी दुनिया में अपना मुआवजा लेना चाहता है ऐसे आदमी के लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं। मगर जो शख्स अल्लाह के लिए खर्च करे उसका हाल यह होता है कि वह किसी पर एहसान नहीं जताता, उसने जब अल्लाह के लिए खर्च किया है तो इंसान पर उसका क्या एहसान। उसकी रकम खर्च होकर जिन लोगों तक पहुंचती है उनकी तरफ से उसे अच्छा जवाब न मिले तो वह नराजगी का इश्हार नहीं करता। उसे तो अच्छा जवाब अल्लाह से लेना है, फिर इंसानों से मिलने या न मिलने का उसे क्या गम। अगर किसी साइल (सवाल करने वाला) को वह नहीं दे सकता तो वह उससे बुरी बात नहीं कहता बल्कि नमी के साथ माअजरत कर देता है। क्योंकि वह जानता है कि वह जो कुछ बोल रहा है खुदा के सामने बोल रहा है। खुदा का खौफ उसे इंसान के सामने जबान रोकने पर मजबूर कर देता है।

पत्थर की चट्टान के ऊपर कुछ मिट्टी जम जाए तो बजाहिर वह मिट्टी दिखाई देगी। मगर बारिश का झोंका आते ही मिट्टी की ऊपरी तह बह जाएगी और अंदर से खाली पत्थर निकल आएगा। ऐसा ही हाल उस इंसान का होता है जो बस ऊपरी दीनदारी लिए हुए हो। दीन उसके अंदर तक दाखिल न हुआ हो। ऐसे आदमी से अगर कोई साइल बेढंगे अंदाज से सवाल कर दे या किसी की तरफ से कोई बात सामने आ जाए जो उसकी अना (अहंकार) पर चोट लगाने वाली हो तो वह बिफर कर इंसान की हदों को तोड़ देता है। ऐसा एक वाक्या एक ऐसा तूफान बन जाता है जो उसकी ऊपरी मिट्टी को बहा ले जाता है और फिर उसका अंदर का इंसान सामने आ जाता है जिसे वह दीन के जाहिरी लबादे के पीछे छुपाए हुए था। अल्लाह के लिए अमल करना गोया देखे पर अनदेखे को तरजीह देना। जो इस बुलंद नजरी का सुबूत दे वही वह शख्स है जिस पर खुदा की छुपी हुई मअरफत के दरवाजे खुलते हैं।

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِبُغَاةٍ مُّضَاتٍ لِلَّهِ وَتَفْهِتًا مِّنْ أَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَاتَتْ أَكْطُهَا ضَعْفَيْنِ فَإِن لَّمْ يُصِيبْهَا وَابِلٌ فَطَلَّ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ خَنْبِيلٍ وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَاءٌ فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ۚ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ۝

और उन लोगों की मिसाल जो अपने माल को अल्लाह की रिज़ा चाहने के लिए और अपने नफ्स में पुज़्जती के लिए खर्च करते हैं एक बाग़ की तरह है जो बुलंदी पर हो। उस पर जोर की बारिश पड़ी तो वह दुगुना फल लाया। और अगर जोर की बारिश न पड़े तो हल्की फुवार भी काफी है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। क्या तुममें से कोई यह पसंद करता है कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, उसके नीचे नहरें बह रही हों। उसमें उसके लिए हर किस्म के फल हों। और वह बूढ़ा हो जाए और उसके बच्चे अभी कमजोर हों। तब उस बाग़ पर एक बगूला आए जिसमें आग हो। फिर वह बाग़ जल जाए। अल्लाह इस तरह तुम्हारे लिए खोल कर निशानियां बयान करता है ताकि तुम ग़ौर करो। (265-266)

आदमी जब किसी चीज़ के लिए अमल करता है तो इसी के साथ वह उसके हक में अपनी कुव्वत इरादी (इच्छाशक्ति) को मजबूत करता है। अगर वह अपनी ख़्वाहिश के तहत अमल करे तो उसने अपने दिल को अपनी ख़्वाहिश पर जमाया। इसके बरअक्स आदमी अगर वहां अमल करे जहां ख़ुदा चाहता है कि अमल किया जाए तो उसने अपने दिल को ख़ुदा पर जमाया। दोनों राहों में ऐसा होता है कि कभी आसान हालात में अमल करना होता है और कभी मुश्किल हालात में। ताहम हालात जितने शदीद हों, आदमी को जितना ज्यादा मुश्किलों का मुकाबला करते हुए अपना अमल करना पड़े उतना ही ज्यादा वह अपने फ़ैज़नज़र मक़सद के हक में अपने इरादे को मुस्तहक़म (दृढ़) करेगा। आम हालात में अल्लाह की राह में अपने असासे को खर्च करना भी बाइसे सवाब है। मगर जब मुख़ालिफ़ असबाब की वजह से ख़ुसूसी कुव्वत इरादी को इस्तेमाल करके आदमी अल्लाह की राह में अपना असासा दे तो इसका सवाब अल्लाह के यहां बहुत ज्यादा है। जिस मद में खर्च करना दुनियावी एतबार से बेफ़ायदा हो उसमें अल्लाह की रिज़ा के लिए खर्च करना, जिसको देने का दिल न चाहे उसे अल्लाह के लिए देना, जिससे अच्छे व्यवहार पर तबीयत अमादा न हो उससे अल्लाह की ख़ातिर अच्छा व्यवहार करना, वे चीज़ें हैं जो आदमी को सबसे ज्यादा ख़ुदापरस्ती पर जमाती हैं और उसे ख़ुदा की ख़ुसूसी रहमत व नुसरत का मुस्तहक़ बनाती हैं।

आदमी जवान की उम्र में बाग़ लगाता है ताकि बुढ़ापे की उम्र में उसका फल खाए। फिर वह शख्स कैसा बदनसीब है जिसका हरा भरा बाग़ उसकी आखिर उम्र में ऐन उस वक़्त बर्बाद हो जाए जबकि वह सबसे ज्यादा उसका मोहताज हो और उसके लिए वह वक़्त भी ख़त्म हो चुका हो जबकि वह दोबारा नया बाग़ लगाए और उसे नए सिरे से तैयार करे। ऐसा ही हाल उन लोगों का है जिन्होंने दीन का काम दुनियावी इज्ज़त और फ़ायदे के लिए किया, वे बज़ाहिर नेकी और भलाई का काम करते रहे। मगर उनका काम सिर्फ़ देखने में ही दुनियादारों से अगल था हकीकत के एतबार से दोनों में कोई फ़र्क़ न था। आम दुनियादार जिस दुनियावी तरक्की और नामवरी के लिए दुनियावी नक्शों में दौड़ धूप कर रहे थे उसी दुनियावी तरक्की और नामवरी के लिए उन्होंने दीनी नक्शों में दौड़ धूप जारी कर दी। जो शौहरत व इज्ज़त दूसरे लोग दुनिया की इमारत में अपना असासा खर्च करके हासिल कर रहे थे, उसी शौहरत व इज्ज़त को उन्होंने दीन की इमारत में अपना असासा खर्च करके हासिल करना चाहा। ऐसे लोग जब मरने के बाद आख़िरत के आलम में पहुंचेंगे तो वहां उनके लिए कुछ न होगा। उन्होंने जो कुछ किया इसी

दुनिया के लिए किया। फिर वे अपने किए का फल अगली दुनिया में किस तरह पा सकते हैं। ख़ुदा की निशानियां हमेशा जाहिर होती हैं मगर वे खामोश ज़बान में होती हैं। इनसे वही सबक ले सकता है जो अपने अंदर सोचने की सलाहियत पैदा कर चुका हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا انْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ
مِّنَ الْأَرْضِ وَلَا يَكْتُمُوا الْحَيِّثُ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِأَخَذِيهِ إِلَّا أَنْ
تُعْزِزُوا فِيهِ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ عَنِ حِمِيدٍ الشَّيْطَانُ يُعَدِّكُمْ الْفَقْرَ
وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ وَاللَّهُ يُعَدِّكُمْ مَغْفِرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا وَاللَّهُ وَاسِعٌ
عَلِيمٌ يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا
كَثِيرًا وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ

ऐ ईमान वाले खर्च करो उम्दा चीज़ को अपनी कमाई में से और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिए जमीन में से पैदा किया है। और घटिया चीज़ का इरादा न करो कि उसमें से खर्च करो। हालांकि तुम कभी इसे लेने वाले नहीं, यह और बात है कि चश्मपोशी कर जाओ। और जान लो कि अल्लाह बेनियाज (निरस्यूह) है, खूबियों वाला है। शैतान तुम्हें मोहताजी से डराता है और बुरी बात पर उभारता है और अल्लाह वादा देता है अपनी बख़्शिश का और फ़ज्र का और अल्लाह वरुअत (ब्यापकता) वाला है, जानने वाला है। वह जिसे चाहता है हिक्मत दे देता है और जिसे हिक्मत मिली उसे बड़ी दौलत मिल गई। और नसीहत वही हासिल करते हैं जो अक्ल वाले हैं। (267-269)

आदमी दुनिया में जो कुछ कमाता है उसे खर्च करने की दो सूरतें हैं। एक यह कि उसे शैतान के बताए हुए रास्ते में खर्च किया जाए। दूसरे यह कि उसे अल्लाह के बताए हुए रास्ते में खर्च किया जाए। शैतान यह करता है कि आदमी के जाती तकाज़ों की अहमियत उसके दिल में बिठाता है। वह उसे सिखाता है कि तुमने जो कुछ कमाया है उसका बेहतरीन मसरफ़ यह है कि इसे अपनी जाती जरूरतों को पूरा करने में लगाओ। फिर जब शैतान देखता है कि आदमी के पास उसकी हकीकी जरूरत से ज्यादा है तो वह उसके अंदर एक और जच्चा भड़का देता है। यह नुमूद व नुमाइश (दिखावे) का जच्चा है। अब वह अपनी दौलत को नुमाइशी कामों में खूब बहाने लगता है और ख़ुश होता है कि उसने अपनी दौलत को बेहतरीन मसरफ़ में लगाया।

आदमी को चाहिए कि अपने माल को अपनी जाती चीज़ न समझे बल्कि अल्लाह की चीज़ समझे। वह अपनी कमाई में से अपनी हकीकी जरूरत के बराबर ले ले और उसके बाद जो कुछ है उसे बुलंदतर मक़सिद में लगाए। वह ख़ुदा के कमजोर बंदों को दे और ख़ुदा के दीन की जरूरतों में खर्च करे। आदमी जब अल्लाह के कमजोर बंदों पर अपना माल खर्च करता है तो गोया वह अपने रब से इस बात का उम्मीदवार बन रहा होता है कि आख़िरत में जब वह ख़ाली हाथ ख़ुदा के सामने हाज़िर हो तो उसका ख़ुदा उसे अपनी रहमतों से भररूम न करे। इसी तरह

जब वह दीन की जरूरतों में अपना माल देता है तो वह अपने आपको खुदा के मिशन में शरीक करता है। वह अपने माल को खुदा के माल में शामिल करता है। ताकि उसकी हकीर (तुच्छ) पूंजी खुदा के बड़े खजाने में मिलकर ज्यादा हो जाए।

जो शख्स अपने माल को अल्लाह के बताए हुए तरीके के मुताबिक खर्च करता है वह इस बात का सुबूत देता है कि उसे हिक्मत (तत्वदर्शिता, सूझबूझ, विवेकशीलता) और दानाई (प्रबुद्धता) में से हिस्सा मिला है। सबसे बड़ी नादानी यह है कि आदमी माल की मुहब्बत में मुक्ताला हो और उसे अल्लाह के रास्ते में खर्च करने से रुक जाए और सबसे बड़ी दानाई यह है कि आर्थिक मफादात आदमी के लिए अल्लाह की राह में बढ़ने में रुकावट न बनें। वह अपने आपको खुदा में इतना मिला दे कि खुदा को अपना और अपने को खुदा का समझने लगे। जो शख्स जाती मस्तेहतों के खोल में जीता है उसके अंदर वह निगाह पैदा नहीं हो सकती जो बुलंदतर हकीकतों को देखे और आला कैफियतों का तजुर्बा करे। इसके विपरीत जो शख्स जाती मस्तेहतों को नजरअंदाज करके खुदा की तरफ बढ़ता है वह अपने आपको सीमित दायरे से ऊपर उठाता है। वह अपने शुऊर को उस खुदा के सम-स्तर कर लेता है जो ग़नी (सर्वसम्पन्न), हमीद (प्रशंसित), वसीअ (सर्वांगीण) और अलीम (सर्वज्ञ) है। वह चीजों को उनके अस्ली रूप में देखने लगता है। क्योंकि वह उन हदबदियों के पार हो जाता है जो आदमी के लिए किसी चीज को उसके अस्ली रूप में देखने में रुकावट बनती हैं। कोई बात चाहे कितनी ही सच्ची हो मगर उसकी सच्चाई किसी आदमी पर उसी वक्त खुलती है जबकि वह उसे खुले जेहन से देख सके।

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِّنْ أَنْصَارٍ ۖ إِنْ تَبَدُّوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۖ وَإِنْ تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهُمَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّئَاتِكُمْ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَا يُنْفِقْهُ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ ۗ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُّؤْتِ الْيَتِيمَ وَأَنْتُمْ لَا تَرْجِعُونَ ۚ لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أَحْصَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ بِسَيِّئِهِمْ لَا يَسْكُنُونَ الْبُيُوتَ الْحَقَائِقَ ۚ وَمَا تَنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۚ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُم بِالْإِيلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً ۖ فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۚ

और तुम जो खर्च करते हो या जो नज़्र (मन्नत) मानते हो उसे अल्लाह जानता है। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। अगर तुम अपने सदकत जाहिर करके दो तब भी अच्छा है और अगर तुम उन्हें छुपाकर मोहताजों को दो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है। और अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा और अल्लाह तुम्हारे कामों से वाकिफ है। उन्हें हिदायत पर लाना तुम्हारा जिम्मा नहीं। बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। और जो माल तुम खर्च करोगे अपने ही लिए करोगे। और तुम न खर्च करो मगर अल्लाह की रिजा चाहने के लिए। और तुम जो माल खर्च करोगे वह तुम्हें पूरा कर दिया जाएगा और तुम्हारे लिए इसमें कमी नहीं की जाएगी। ये उन हाजतमंदों के लिए हैं जो अल्लाह की राह में घिर गए हों, जमीन में दौड़ धूप नहीं कर सकते। नावाकिफ आदमी उन्हें ग़नी ख्याल करता है उनके न मांगने की वजह से। तुम उन्हें उनकी सूरत में पहचान सकते हो। वे लोगों से लिपट कर नहीं मांगते। और जो माल तुम खर्च करोगे वह अल्लाह को मालूम है। जो लोग अपने मालों को रात और दिन, छुपे और खुले खर्च करते हैं, उनके लिए उनके खर्च के पास अज़्र है। और उनके लिए न खौफ है और न वे ग़मगीन होंगे। (270-274)

अल्लाह की राह में खर्च करने की सबसे बड़ी मदद यह है कि उन दीनी खादियों की माली मदद की जाए जो दीन की जद्दोजहद में अपने को पूरी तरह लगा देने की वजह से बेरोजगार हो गए हों। एक कामयाब व्यापारी के पास किसी दूसरे काम के लिए वक्त नहीं रहता। ठीक यही मामला खिदमत दीन का है। जो शख्स यकसूई के साथ अपने आपको दीन की खिदमत में लगाए उसके पास मआशी (आर्थिक) जद्दोजहद के लिए वक्त नहीं रहेगा। साथ ही यह कि हर काम की अपनी एक फितरत है और अपनी फितरत के लिहाज से वह आदमी का जेहन एक खास ढंग पर बनाता है। जो शख्स तिजारत में लगता है उसके अंदर धीरे-धीरे तिजारती मिजाज पैदा हो जाता है। तिजारत की राह की बारीकियां फौरन उसकी समझ में आ जाती हैं। जबकि वही आदमी दीन के रास्ते की बातों को गहराई के साथ पकड़ नहीं पाता। यही मामला इसके विपरीत खादिमे दीन का होता है। अब इसका हल क्या हो। क्योंकि किसी समाज में दोनों क्रिस के कामों का होना जरूरी है। इस मसले का हल यह है कि जिन लोगों के पास आर्थिक साधन जमा हो गए हैं उसमें वे उन लोगों का हिस्सा लगाएं जो दीनी मसरूफियत (व्यस्तता) की वजह से अपना रोजगार हासिल न कर सके। यह गोया एक तरह का खामोश विभाजन है जो पक्षों के दर्मियान खालिस अल्लाह की रिजा के लिए होता है। खादिमे दीन ने अपने आपको अल्लाह के लिए यकसू किया था, इसलिए वह इंसान से नहीं मांगता और न पाने का उम्मीदवार रहता है। दूसरी तरफ साहिबे मआश यह सोचता है कि मेरे पास मआशी वसाइल (आर्थिक साधन) इस कीमत पर आए हैं कि मैं खिदमते दीन की राह में वह न कर सका जो मुझे करना चाहिए। इसलिए इसकी तलाफी (क्षतिपूर्ति) यह है कि मैं अपने माल में अपने उन भाइयों का हिस्सा लगाऊं जो गोया मेरी कमी की तलाफी खुदा के यहां कर रहे हैं।

जब दीन की जद्दोजहद उस मरहले में हो कि दीन के नाम पर रोजगार के अवसर न मिलते हों, जब दीन की राह में लगने वाला आदमी बेरोजगार हो जाए, उस वक्त दीन के खादियों को अपना माल देना बजाहिर माहौल के एक ग़ैर-अहम तबके से अपना रिश्ता जोड़ना है। ऐसे लोगों पर खर्च करना मज्बिसों में काबिले जिक्र नहीं होता। वह आदमी की हैसियत और नामवरी में इजाफा नहीं करता। मगर यही वह खर्च है जो आदमी को सबसे ज्यादा अल्लाह की रहमतों का मुस्तहिक बनाता है।

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقْوَمُونَ إِلَّا كَمَا يَقْوَمُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ
مِنَ النَّاسِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ
وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَاتَّبَعَهَا فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ
إِلَى اللَّهِ وَمَنْ عَادَ فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ يَمَعُقُ
اللَّهُ الرِّبَا وَيُزِيلُ الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ۖ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ
رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۖ

تفسير

जो लोग सूद खाते हैं वे क्रियामत में न उठेंगे मगर उस शख्स की तरह जिसे शैतान ने छूकर खबती बना दिया हो। यह इसलिए कि उन्होंने कहा कि तिजारत करना भी वैसा ही है जैसा सूद लेना। हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल ठहराया है और सूद को हारम किया है। फिर जिस शख्स के पास उसके रब की तरफ से नसीहत पहुंची और वह इससे रुक गया तो जो कुछ वह ले चुका वह उसके लिए है। और उसका मामला अल्लाह के हवाले है। और जो शख्स फिर वही करे तो वही लोग दोखी हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह सूद को घटाता है और सदकात को बढ़ाता है। और अल्लाह पसंद नहीं करता नाशुक्रों को, गुनाहगारों को। बेशक जो लोग ईमान लाए और लेक अमल किए और नमाज की पाबंदी की और जकात अदा की, उनके लिए उनका अज़्र है उनके रब के पास। उनके लिए न कोई अदेशा है और न वे गमगीन होंगे। (275-277)

बंदों के दर्मियान आपस में जो मआशी (आर्थिक) तअल्लुकात मल्लूब हैं उनकी अलामत जकात है। जकात में एक मुसलमान दूसरे मुसलमान के हुक्क का एतराफ यहां तक करता है कि वह खुद अपनी कमाई का एक हिस्सा निकाल कर अपने भाई को देता है। जो दीन हुक्क शनासी का ऐसा माहिल बनाना चाहता हो वह सूद के जरपरस्ताना (धन लेलोपुतापूर्ण) तरीके को किसी तरह कुबूल नहीं कर सकता। ऐसे समाज में आपसी लेन देन तिजारत के उसूल पर होता है न कि सूद के उसूल पर। तिजारत में भी आदमी नफा लेता है। मगर तिजारत का जो नफा है वह आदमी की महनत और उसके जोखिम उठाने की कीमत होता है। जबकि सूद का नफा महज खुर्ग और ज़अमिज़ि का नतीजा है।

सूद का कारोबार करने वाला अपनी दौलत दूसरे को इसलिए देता है कि वह इसके जरिए अपनी दौलत को और बढ़ाए। वह यह देखकर खुश होता है कि उसका सरमाया यकीनी शरह (दर) से बढ़ रहा है। मगर इस अमल के दौरान वह खुद अपने अंदर जो ईंसान तैयार करता है वह एक खुदगर्जी और दुनियापरस्त ईंसान है। इसके बरअक्स जो आदमी अपनी कमाई में से सदका करता है, जो दूसरों की जरूरतमंदी को अपने लिए तिजारत का सौदा नहीं बनाता

बल्कि उसके साथ अपने को शरीक करता है, ऐसा शख्स अपने अमल के दौरान अपने अंदर जो ईंसान तैयार कर रहा है वह पहले से बिल्कुल मुखलिफ (भिन्न) ईंसान है। यह वह ईंसान है जिसके दिल में दूसरों की खैरखाही है। जो जाती दायरे से ऊपर उठकर सोचता है।

दुनिया में आदमी इसलिए नहीं भेजा गया है कि वह यहां अपनी कमाई के ढेर लगाए। आदमी के लिए ढेर लगाने की जगह आखिरत है। दुनिया में आदमी को इसलिए भेजा गया है कि यह देखा जाए कि इनमें कौन है जो अपनी खुसूसियतों के एतबार से इस काबिल है कि उसे आखिरत की जन्नती दुनिया में बसाया जाए। जो लोग इस सलाहियत का सुबूत देंगे उन्हें खुदा जन्नत का बाशिंदा बनने के लिए चुन लेगा। और बाकी तमाम लोग कूड़ा करकट की तरह जहन्नम में फेंक दिए जाएंगे। सदका की रूह (मूल भावना) हाजतमंद को अपना माल खुदा के लिए देना है और सूद की रूह इस्तहसाल (शोषण) के लिए देना है। सदका इस बात की अलामत है कि आदमी आखिरत में अपने लिए नेमतों का ढेर देखना चाहता है। इसके मुकाबले में सूद इस बात की अलामत है कि वह इसी दुनिया के लिए ढेर लगाने का ख्वाहिशमंद है। ये दो अलग-अलग ईंसान हैं और यह मुमकिन नहीं कि खुदा के यहां दोनों का अंजाम एक जैसा करार पाए। दुनिया उसी को मिलती है जिसने दुनिया के लिए महनत की हो। इसी तरह आखिरत उसी को मिलेगी जिसने आखिरत के लिए अपना असासा (धन-सम्पत्ति) कुर्बान किया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ
فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا فَاذْنُوا بِحَرْبٍ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِن تُبْتُمْ فَلَكُمْ
رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ ۖ وَإِن كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ
إِلَى مِيسْرَةٍ ۖ وَإِن تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ وَاتَّقُوا يَوْمًا
تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۖ

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और जो सूद बाकी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर तुम मोमिन हो। अगर तुम ऐसा नहीं करते तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से लड़ाई के लिए खबरदार हो जाओ। और अगर तुम तौबा कर लो तो अस्ल रकम के तुम हकदार हो, न तुम किसी पर जुल्म करो और न तुम पर जुल्म किया जाए। और अगर एक शख्स तंगी वाला है तो उसकी फराखी तक मोहलत दो। और अगर माफ कर दो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है, अगर तुम समझो। और उस दिन से डरो जिस दिन तुम अल्लाह की तरफ लौटाए जाओगे। फिर हर शख्स को उसका किया हुआ पूरा-पूरा मिल जाएगा। और उन पर जुल्म न होगा। (278-281)

मुआशिरे की इस्लाह का बुनियादी उसूल यह है कि मुआशिरे का कोई फर्द न किसी दूसरे के ऊपर ज्यादाती करे और न दूसरा कोई उसके ऊपर ज्यादाती करे। न कोई किसी के ऊपर जालिम बने और न कोई किसी को मज्जूम बनाए। सूदखोरी एक खुला हुआ मआशी

(आर्थिक) जुल्म है, इसलिए इस्लाम ने इसे हराम ठहराया। यहां तक कि इस्लामी शासन के तहत सूदी कारोबार को फौजदारी जुर्म करार दिया। ताहम एक सूदखोर को जिस तरह दूसरे के साथ जालिमाना कारोबार करने की इजाजत नहीं है उसी तरह किसी दूसरे को भी यह हक नहीं है कि वह सूदखोर को अपने जुल्म का निशाना बनाए। किसी का मुजरिम होना उसे उसके दीगर हुक्म से महरूम नहीं करता। सूदखोर के खिलाफ जब कार्रवाई की जाएगी तो सिर्फ उसके सूदी इजाफे को साबित किया जाएगा। अपनी अस्ल रकम को वापस लेने का वह फिर भी हकदार होगा। ताहम सामान्य कानून के साथ इस्लाम इंसानी कमजोरियों की भी आखिरी हद तक रियायत करता है। इसलिए हुक्म दिया गया कि कोई कर्जदार अगर वक्त पर तंगदस्त है तो उसे उस वक्त तक मोहलत दी जाए जब तक वह अपने जिम्मे की रकम अदा करने के कविल हो जाए। इसी के साथ यह तलकीन भी की गई कि कोई शख्स कर्ज की रकम अदा करने के कविल न रहे तो उसके जिम्मे की रकम को सिरे से माफ कर देने का हौसला पैदा करो। माफ करने वाला खुदा के यहां अज़्र का मुस्तहिक बनता है और दुनिया में इसका यह फायदा है कि मुआशिरा के अंदर आपसी रियायत और हमदर्दी की फिजा पैदा हो जाती है जो बिलआखिर सबके लिए मुफीद है।

ताहम सिर्फ कानून का निफाज (लागू करना) मुआशिरा की इस्लाह और फलाह का जमिन नहीं। हकीमी इस्लाह के लिए जरूरी है कि मुआशिरा में तक्वा की फिज मौजूद हो। इसलिए कानूनी हुक्म बताते हुए ईमान, तक्वा और आखिरत का एहतेमाम के साथ जिक्र किया गया है। जिस तरह एक सेक्युलर निजाम उसी वक्त कामयाबी के साथ चलता है जबकि नागरिकों के अंदर उसके मुताबिक कौमी किरदार (राष्ट्रीय चरित्र) मौजूद हो। इसी तरह इस्लामी निजाम उसी वक्त सही तौर पर वजूद में आता है जबकि अफराद के कविले लिखज हिस्से में तक्वा की रूह पाई जाती हो। कौमी किरदार या तक्वा दरअसल मल्लूख निजाम के हक में अफराद की आमादगी का नाम है। और अफराद के अंदर जब तक एक दर्जे की आमादगी न हो, महज कानून के जोर पर उसे लागू नहीं किया जा सकता।

साथ ही यह कि इस्लाम के अनुसार मुआशिरा की इस्लाह (समाज-सुधार) खुद में मल्लूख चीज नहीं है। इस्लाम में अस्ल मल्लूख फर्द की इस्लाह है। मुआशिरा की इस्लाह सिर्फ उसका एक सानवी (अतिरिक्त) नतीजा है। कुरआन जिस ईमान, तक्वा और फिक्रे आखिरत की तरफ बुलाता है उसका केन्द्र व्यक्ति है न कि कोई सामूहिक ढांचा। इसलिए कुरआनी दावत का अस्ल मुखातब फर्द है और मुआशिरा की इस्लाह अफराद की इस्लाह का इज्तिमाई जूहर (सामूहिक प्रदर्शन) है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَعْتُمْ بَدِينِ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَالْكُفُّورَةُ وَلِيَكْتَبَ
بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ
وَلْيُمْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخُسْ مِنْهُ شَيْئًا فَإِنْ كَانَ

الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَحِيهُ أَنْ يُمْلِلَ هُوَ فَلْيُمْلِلْ
وَلْيَبِئْ بِالْعَدْلِ وَاسْتَشْهِدْ وَاشْهَدْ وَيَنْبَغِي أَنْ يَكُونَ
رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَآمَرَ اشْنِ مَعْنَى تَرْضَوْنَ مِنَ الشَّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ أَحَدُهُمَا
فَتُذَكَّرَ أَحَدُهُمَا الْآخَرَىٰ وَلَا يَأْبَ الشَّهَدَاءُ إِذَا مَادُّوهُ وَلَا تَسْمُوا أَنْ
تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ذَلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ

لِلشَّهَادَةِ وَأَذْنَىٰ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا
بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا وَأَشْهَدُوا لِذَاتِ بَالِعَتُمْ وَلَا يَضَارُّ
كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ وَإِنْ تَفَعَّلُوا فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَيَعْلَمَكُمُ
اللَّهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا
فَرِهْنِ مَقْبُوضَةً فَإِنْ مِنْ بَعْضِكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي أُؤْتِمِنَ أَمَانَتَهُ
وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ إِثْمٌ قَلْبُهُ وَاللَّهُ
بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝

अथ

ऐ ईमान वालो, जब तुम किसी निर्धारित मुद्दत के लिए उधार का लेनेदेन करो तो उसे लिख लिया करो। और इसे लिखे तुम्हारे दर्मियान कोई लिखने वाला इंसाफ के साथ। और लिखने वाला लिखने से इंकार न करे, जैसा अल्लाह ने उसे सिखाया उसी तरह उसे चाहिए कि लिख दे। और वह शख्स शिऊराए जिस पर अदायगी का हक आता है। और वह डरे अल्लाह से जो उसका ख है और इसमें कोई कमी न करे। और अगर वह शख्स जिस पर अदायगी का हक आता है बेसमझ हो, या कमजोर हो या खुद लिखवाने की कुदरत न रखता हो तो चाहिए कि उसका वली (संरक्षक) इंसाफ के साथ लिखवा दे। और अपने मर्दों में सेमअना आदमियों को गवाह कर लो। और अगर दो मर्द न हों तो फिर एक मर्द और दो औरतें, उन लोगों में से जिन्शुऊरतुम पसंद करते हो। ताकि अगर एक औरत भूल जाए तो दूसरी औरत उसे याद दिला दे। और गवाह इंकार न करें जब वे बुलाए जाएं। और मामला छोटा हो या बड़ा, मीआद (अवधि) के निर्धारण के साथ इसे लिखने में काहिली न करो। यह लिख लेना अल्लाह के नजदीक ज्यादा इंसाफ का तरीका है और गवाही को ज्यादा दुरुस्त रखने वाला है और ज्यादा संभावना है कि तुम शुबह में न पड़ो। लेकिन अगर कोई सौदा नकद हो जिसका तुम आपस में लेनदेन किया करते हो तुम पर कोई इल्जाम नहीं कि तुम उसे न लिखो। मगर जब यह सौदा करो तो गवाह बना

लिया करो। और किसी लिखने वाले को या गवाह को तकलीफ न पहुंचाई जाए। और अगर ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए गुनाह की बात होगी। और अल्लाह से डरो अल्लाह तुम्हें सिखाता है और अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। और अगर तुम सफर में हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो रहन (गिरवी) रखने की चीजें कब्जे में दे दी जाएं। और अगर एक दूसरे का एतबार करता हो तो चाहिए कि जिस पर एतबार किया गया वह एतबार को पूरा करे। और अल्लाह से डरो जो उसका खब है। और गवाही को न छुपाओ और जो शख्स छुपाएगा उसका दिल गुनाहगार होगा। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसे जानने वाला है। (282-283)

दो आदमियों के दर्मियान नकद मामला हो तो लेनदेन होकर उसी वक्त मामला खत्म हो जाता है। मगर उधार मामले की नौइयत अलग है। उधार मामले में अगर सारी बात जबानी हो तो लिखित सबूत न होने की वजह से बाद में विवाद पैदा होने की संभावना रहती है। दोनों पक्ष अपने-अपने मुताबिक मामले की तस्वीर पेश करते हैं और कोई ऐसी यकीनी बुनियाद नहीं होती जिसकी रोशनी में सही फैसला किया जा सके। नतीजा यह होता है कि अदायगी के वक्त अक्सर दोनों को एक-दूसरे से शिकायतें पैदा हो जाती हैं। इसका हल तहरीर है। नकद मामले को लिख लिया जाए तो वह भी बेहतर है। मगर उधार मामला के लिए तो जरूरी है कि उन्हें बाकायदा तहरीर (लिखित) में लाया जाए और इस पर गवाह बना लिए जाएं। विवाद के वक्त यही तहरीर फैसले की बुनियाद होगी। यह मुसलमान के लिए तकवा और इस्पाफ की एक हिफ्जती तदबीर है। लिखित शर्तों के मुताबिक वह अपने हक्क को अदा करके खुदा और खल्क के सामने जिम्मेदारी से बरी हो जाता है।

मुसलमान खुदा के दीन के गवाह हैं। जिस तरह अल्लाह की बात को जानते हुए छुपाना जाइज नहीं, उसी तरह इंसानी मामला में किसी के पास कोई गवाही हो तो उसे चाहिए कि उसे जाहिर कर दे। गवाही को छुपाना अपने अंदर मुजरिमाना जेहन की परवरिश करना है और मामले के मुसिफाना फैसले में वह हिस्सा अदा न करना है जो वह कर सकता है। इंसान का जमीर चाहता है कि जब एक चीज हक नज़ आये तो उसने हक होने का एतराफ किया जाए। और जब एक चीज नाहक दिखाई दे तो उसके नाहक होने का एलान किया जाए। ऐसी हालत में जो शख्स अपने वकार और मस्लेहत की खातिर अपनी जवान को बंद रखता है वह गोया ऐसा मुजरिम है जो अपने जुर्म पर खुद ही गवाह बन गया हो।

لِلّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَاِنْ تُبَدَّوْا مَا فِىْ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفَوْهُ يُحْسِبْكُمُ اللّٰهُ ۚ فَيُغْفِرُ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ۙ اَمِنَ الرَّسُوْلُۙ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْهِۙ مِنْ رَّبِّهِۙ ۚ وَالْمُؤْمِنُوْنَ كُلُّۙ اَمِنَ بِاللّٰهِ وَمَلَائِكَتِهٖۙ وَكُتُبِهٖۙ وَرُسُلِهٖۙ لَا تَفْرُقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖۙ ۚ وَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرٰنَكَ رَبَّنَا ۚ وَالْيٰنِكَ الْمَصِيْرُ ۚ لَا يُكَرِّفُ اللّٰهُ

نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ سَيِّئًا اَوْ اَخْطَاْنَا ۗ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اَصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُۥ عَلٰى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۗ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِۦ ۚ وَخَفْ عَنَّا ۙ وَاعْفُ رَنَّا ۙ وَارْحَمْنَا ۙ اَنْتَ مَوْلٰنَا فَاَنْصُرْنَا عَلٰى الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ ۝ۙ

अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो जमीन में है। तुम अपने दिल की बातों को जाहिर करो या छुपाओ, अल्लाह तुमसे इसका हिसाब लेगा। फिर जिसे चाहेगा बख्शेगा और जिसे चाहेगा सजा देगा। और अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है। रसूल ईमान लाया है उस पर जो उसके खब की तरफ से उस पर उतरा है। और मुसलमान भी उस पर ईमान लाए हैं। सब ईमान लाए हैं अल्लाह पर और उसके फरिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों पर। हम उसके रसूलों में से किसी के दर्मियान फर्क नहीं करते। और वे कहते हैं कि हमने सुना और माना। हम तेरी बख्शिश चाहते हैं ऐ हमारे खब। और तेरी ही तरफ लौटना है। अल्लाह किसी पर जिम्मेदारी नहीं डालता मगर उसकी ताकत के मुताबिक। उसे मिलेगा वही जो उसने कमाया और उस पर पड़ेगा वही जो उसने किया। ऐ हमारे खब हमें न पकड़ अगर हम भूलें या हम गलती कर जाएं। ऐ हमारे खब हम पर बोझ न डाल जैसा तूने डाला था हम से अगलों पर। ऐ हमारे खब हमसे वह न उठवा जिसकी ताकत हम में नहीं। और दरगुजर कर हम से। और हमें बख्श दे और हम पर रहम कर। तू हमारा कारसाज है। पस इंकार करने वालों के मुकाबले में हमारी मदद कर। (284-286)

कायनात की हर चीज अल्लाह के जेहेकूम है। ज्यों से लेकर सितारों तक सब खुदा के निर्धारित नक्शे में बंधे हुए हैं। वे उसी रास्ते पर चल रहे हैं जिस पर चलने के लिए खुदा ने इन्हें पाबंद कर दिया है। मगर इंसान एक ऐसी मख्लूक है जो अपने को खुदमुख्तार हालत में पाता है। बजाहिर वह आजाद है कि अपनी मर्जी से जो रास्ता चाहे अपनाए। मगर इंसान की आजादी मुतलक नहीं है बल्कि इम्तेहान के लिए है। इंसान को भी कायनात की बाकी चीजों की तरह खुदा की पाबंदी करनी है। जिस पाबंद जिंदगी को बाकी कायनात ने बजोर अपनाया है वही पाबंद जिंदगी इंसान को अपने इरादे से अपनानी है। इंसान को जाहिरी सूतेहाल से धोखा खाकर यह न समझना चाहिए कि उसके आगे पीछे कोई नहीं। हकीकत यह है कि आदमी हर वक्त मालिक कायनात की नजर में है, वह उसकी हर छोटी-बड़ी बात की निगरानी कर रहा है। चाहे वह उसके अंदर हो या उसके बाहर।

वह कौन सा इंसान है जो अल्लाह को मल्लूब है। वह ईमान और इताअत (आज्ञापालन) वाला इंसान है। ईमान से मुराद आदमी की शुऊरी हवालागी है और इताअत से मुराद उसकी अमली हवालागी। शुऊर के एतबार से यह मल्लूब है कि आदमी अल्लाह को अपने खालिक और मालिक की हैसियत से अपने अंदर उतार ले। वह इस हकीकत को पा गया हो कि कायनात

का निजाम कोई बेरूह मशीनी निजाम नहीं है बल्कि एक जिंदा निजाम है जिसे खुदा अपने फरमांबरदार कारिंदों के जरिए चला रहा है। उसने खुदा के बंदों में से उन बंदों को पहचान लिया हो जिन्हें खुदा ने अपना पैगाम पहुंचाने के लिए चुना। खुदा ने इंसानों की हिदायत के लिए जो किताब उतारी है उसे वह हकीकी मअनों में अपनी सोच-विचार का हिस्सा बना चुका हो। रिसालत और पैगम्बरी उसे पूरी इंसानी तारीख में एक मुसलसल वाक्या की सूरत में नजर आने लगे। ईमानियात को इस तरह अपने दिल व दिमाग में बिठा लेने के बाद वह अपनी जिंदगी पूरी तरह उसके नक्शे पर ढाल दे।

फिर यह ईमान और इताअत उसके लिए कोई रस्मी और जाहिरी मामला न हो बल्कि वह उसकी रूह को इस तरह घुला दे कि वह अल्लाह को पुकारने लगे। उसका वजूद खुदा की याद में ढल जाए। उसकी जिंदगी तमामतर खुदा के ऊपर निर्भर हो जाए।

سُبْحَانَكَ يَا رَبِّ الْعَالَمِينَ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ
 اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۚ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۚ هُوَ الَّذِي يَصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ لََا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

आयतें-200

सूरह-3. आले-इमरान

रुकूअ-20

(मदीना में नजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० मीम०। अल्लाह उसके सिवा कोई माबूद नहीं, जिंदा और सबका थामने वाला। उसने तुम पर किताब उतारी हक के साथ, सच्चा करने वाली उस चीज को जो उसके आगे है और उसने तौरात और इंजील उतारी इससे पहले लोगों की हिदायत के लिए और अल्लाह ने फुरकान उतारा। बेशक जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया उनके लिए सख्त अजाब है और अल्लाह जबरदस्त है, बदला लेने वाला है। बेशक अल्लाह से कोई चीज छुपी हुई नहीं न जमीन में और न आसमान में। वही तुम्हारी सूरत बनाता है मां के पेट में जिस तरह चाहता है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। (1-6)

कायनात का खालिक व मालिक कोई मशीनी खुदा नहीं बल्कि एक जिंदा और बाशुऊर खुदा है। उसने हर जमाने में इंसान के लिए रहनुमाई भेजी। इन्हीं में से वे किताबें थीं जो तौरात व इंजील की सूरत में पिछले नबियों पर उतारी गईं। मगर इंसान हमेशा यह करता रहा

कि उसने अपनी तावील व तशरीह से खुदा की तालीमात को तरह-तरह के मअना पहनाए और खुदा के एक दीन को कई दीन बना डाला। आखिर अल्लाह ने अपने तैशुदा मसूबे के मुताबिक आखिरी किताब (कुरआन) उतारी जो इंसानों के लिए सही हिदायतनामा भी है और इसी के साथ वह कसौटी भी जिससे हक और बातिल के दर्मियान फैसला किया जा सके। कुरआन बताता है कि अल्लाह का सच्चा दीन क्या है। और वह दीन कौन-सा है जो लोगों ने अपनी खुद की गद्दी हुई तशरीहात (व्याख्याओं) के जरिए बना रखा है। अब जो लोग खुदा की किताब को न मानें या अपनी राय और तावीरों के तहत गढ़े हुए दीन को न छोड़ें वे सख्त सजा के मुस्तहिक हैं। ये वे लोग हैं जिन्हें खुदा ने आंख दी मगर रोशनी आ जाने के बावजूद उन्होंने नहीं देखा। जिन्हें खुदा ने अक्ल दी मगर दलील आ जाने के बाद भी उन्होंने न समझा। अपनी झूठी बड़ाई की खातिर वे हक के आगे झुकने पर तैयार न हुए।

अल्लाह अपनी जल्ल व सिफत के एतबार से कैसा है इसका हकीकी तआरुफ़ खुद वही करा सकता है। उसकी हस्ती का दूसरी मौजूदात से क्या तअल्लुक है, इसे भी वह खुद ही सही तौर पर बता सकता है। खुदा ने अपनी किताब में इसे इतनी वाजेह सूरत में बता दिया है कि जो शख्स जानना चाहे वह जरूर जान लेगा। यही मामला इंसान के लिए हिदायतनामा मुकरर करने का है। इंसान की हकीकत क्या है और वह कौन-सा रवैया है जो इंसान की कामयाबी का जामिन है, इसे बताने के लिए पूरी कायनात का इल्म दरकार है। इंसान के लिए सही रवैया वही हो सकता है जो बाकी कायनात से हमआहंग (अंतरंग) हो और दुनिया के वसीअतर (व्यापक) निजाम से पूरी तरह मुताबिकत रखता हो। इंसान के लिए सही राहेअमल का निर्धारण वही कर सकता है जो न सिर्फ इंसान को जन्म से मौत तक जानता हो बल्कि उसे यह भी मालूम हो कि जन्म से पहले क्या है और मौत के बाद क्या। ऐसी हस्ती खुदा के सिवा कोई दूसरी नहीं हो सकती। इंसान के लिए हकीकतपसंदी यह है कि इस मामले में वह खुदा पर भरोसा करे और उसकी तरफ से आई हुई हिदायत को पूरे यकीन के साथ पकड़ ले।

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَبِهَاتٌ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلَةٍ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ وَالرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَكُلَّ بَلْوٍ

वही है जिसने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी। इसमें कुछ आयतें मोहकम (सुदृढ़, सुस्पष्ट) हैं, वे किताब की अस्ल हैं। और दूसरी आयतें मुताशाबह (संदेहास्पद, अस्पष्ट) हैं। पस जिनके दिलों में टेढ़ है वे मुताशाबह आयतों के पीछे पड़ जाते हैं फितने की तलाश में

और इनके अर्थों की तलाश में। हालांकि इनका अर्थ अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। और जो लोग पुख्ता इल्म वाले हैं वे कहते हैं कि हम उन पर ईमान लाए। सब हमारे ख की तरफ से हैं। और नसीहत वही लोग कुबूल करते हैं जो अक्ल वाले हैं। ऐ हमारे ख, हमारे दिलों को न फेर जबकि तू हमें हिदायत दे चुका। और हमें अपने पास से रहमत दे। बेशक तू ही सब कुछ देने वाला है। ऐ हमारे ख, तू जमा करने वाला है लोगों को एक दिन जिसमें कोई शुबह नहीं। बेशक अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करता। (7-9)

कुरआन में दो तरह के मजामीन हैं। एक वे जो इंसान की मालूम दुनिया से संबंधित हैं। जैसे ऐतिहासिक घटनाएं, कायनाती निशानियां, दुनियावी जिंदगी के अहकाम आदि। दूसरे वे जिनका तअल्लुक उन गैबी (अदृश्य) मामलों से है जो आज के इंसान के लिए समझ से बाहर हैं। मसलन खुदा की सिफात, जन्त व दोजख के अहवाल वगैरह। पहली किस्म की बातों को कुरआन में मोहकम अंदाज, दूसरे शब्दों में प्रत्यक्ष शैली में बयान किया गया है। दूसरी किस्म की बातें इंसान की नामालूम दुनिया से संबंधित हैं, वे इंसानी भाषा की गिरफ्त में नहीं आतीं। इसलिए उन्हें मुताशाबह अंदाज यानी रूपकों और उपमा की शैली में बयान किया गया है। मसलन इंसान का हाथ कहा जाए तो यह प्रत्यक्षतः भाषा की मिसाल है और अल्लाह का हाथ रूपकों की भाषा की मिसाल। जो लोग इस फर्क को नहीं समझते वे मुताशाबह आयतों का भावार्थ भी उसी तरह सुनिश्चित करने लगते हैं जिस तरह मोहकम आयतों का भावार्थ सुनिश्चित किया जाता है। यह अपने फितरी दायरे से बाहर निकलने की कोशिश है। इस किस्म की कोशिश का अंजाम इसके सिवा और कुछ नहीं कि आदमी हमेशा भटकता रहे और कभी मंजिल पर न पहुंचे। क्योंकि 'इंसान के हाथ' को सुनिश्चित तौर पर समझा जा सकता है, मगर 'खुदा के हाथ' को मौजूदा अक्ल के साथ सुनिश्चित तौर पर समझना संभव नहीं।

मुताशाबिहात के सिलसिले में सही इल्मी और अक्ली मौकिफ यह है कि आदमी अपनी असमर्थता को स्वीकारे। जिन बातों को वह सुनिश्चित रूप से अपने हवास की गिरफ्त में नहीं ला सकता उनकी संक्षिप्त अवधारणा पर संतोष करे। जब हवास की असमर्थता की वजह से इंसान के लिए इन वास्तविकताओं का पूरी तरह ज्ञान मुमकिन नहीं है तो हकीकतपसंदी यह है कि इन मामलों में सुनिश्चितता की बहस न छेड़ी जाए। इसके बजाए अल्लाह से दुआ करना चाहिए कि वह आदमी को इस किस्म की बेनतीजा बहसों में उलझने से बचाए। वह आदमी को ऐसी अक्ले सलीम दे जो अपने मक़म को पहचाने और इन हकीकतों के मुजमल (संक्षिप्त) यक़ीन पर राजी हो जाए। एक दिन ऐसा आने वाला है जबकि ये हकीकतें अपनी तपसीली सूरत में खुलकर सामने आ जाएं। मगर आदमी जब तक इम्तेहान की दुनिया में है ऐसा होना मुमकिन नहीं।

जिस तरह रास्ते की फिसलन होती है, उसी तरह अक्ल के सफर की भी फिसलन होती है। और अक्ल की फिसलन यह है कि किसी मामले को आदमी उसके सही रुख से न देखे। किसी चीज की हकीकत आदमी उसी वक्त समझता है जबकि वह उसे उस रुख से देखे जिस रुख से उसे देखना चाहिए। अगर वह किसी और रुख से देखने लगे तो ऐन मुमकिन है कि वह सही राय

कायम न कर सके और ग़लतफहमियों में पड़ कर रह जाए। सबसे बड़ी समझदारी यह है कि आदमी इस राज को जान ले कि किसी चीज को देखने का सहीतरीन रुख क्या है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ ۚ كَذَّابِ ۖ أَلِ فِرْعَوْنَ ۖ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَآخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۚ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سِتْغَلِبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ ۖ وَبِئْسَ الْيَهَادُ ۚ قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِتْنَةِ الْمُصَلِّينَ ۚ فَتَنَّا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ وَآخَرَىٰ كَافِرَةٌ ۖ يَرَوْنَهُمْ مَشْيُوكُمْ رَأَىٰ الْعَيْنِ ۖ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصَرِهِ مَن يَشَاءُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۚ

बेशक जिन लोगों ने इंकार किया, उनके माल और उनकी औलाद अल्लाह के मुकाबले में उनके कुछ काम न आएंगे और यही लोग आग के ईंधन बनेंगे। इनका अंजाम वैसा ही होगा जैसा फिरऔन वालों का और इनसे पहले वालों का हुआ। उन्होंने हमारी निशानियों को झुटलाया। इस पर अल्लाह ने उनके गुनाहों के सबब उन्हें पकड़ लिया। और अल्लाह सख्त सजा देने वाला है। इंकार करने वालों से कह दो कि अब तुम मग़लूब किए जाओगे और जहन्नम की तरफ जमा करके ले जाए जाओगे और जहन्नम बहुत बुरा ठिकाना है। बेशक तुम्हारे लिए निशानी है उन दो गिरोहों में जिनमें (बद में) मुठभेड़ हुई। एक गिरोह अल्लाह की राह में लड़ रहा था और दूसरा मुंकिर था। ये मुंकिर खुली आंखों से उन्हें दुगना देखते थे। और अल्लाह जिसे चाहता है अपनी मदद का जोर दे देता है। इसमें आंख वालों के लिए बड़ा सबक है। (10-13)

हक की दावत (आह्वान) जब भी उठती है तो वह लोगों को एक ग़ैर-अहम आवाज मालूम होती है। एक तरफ वक्त का माहौल होता है जिसके कच्चे में हर किस्म के माद्दी वसाइल (भौतिक संसाधन) होते हैं। दूसरी तरफ हक का काफ़िला होता है जिसे अभी माहौल में कोई जमाव हासिल नहीं होता। इसके साथ माद्दी मफ़ादात (हित) जुड़े नहीं होते। इन हालात में हक की तरफ बढ़ना माहौल से कटने और मफ़ादात से मरहूम होने के हममअना बन जाता है। नतीजा यह होता है कि आदमी अपने मफ़ादात को बचाने की खातिर हक को नहीं मानता। अपने साथियों और रिश्तेदारों को छोड़कर एक तंहा दाओ (आह्वानकर्ता) की सफ में आने के लिए तैयार नहीं होता। मगर ये चीजें जो इंसान को आज अहम नजर आती हैं वे पैसले के दिन किसी के कुछ काम न आएंगी। इन चीजों की जो कुछ अहमियत है सिर्फ उस वक्त तक है जबकि मामला इंसान और इंसान के दर्मियान है। जब कियामत का पर्दा उठेगा और मामला इंसान और खुदा के दर्मियान हो जाएगा तो ये चीजें इतनी बेकीमत हा जाएंगी

जैसे कि इनका कोई वजूद ही नहीं था। दाजी इस दुनिया में बजाहिर बेजोर दिखाई देता है मगर हकीकत में वही जोर वाला है। क्योंकि उसके पीछे खुदा है। मुँकर बजाहिर इस दुनिया में ताकतवर दिखाई देता है। मगर वह बिल्कुल बेताकत है। क्योंकि उसकी ताकत एक वक्ती फ़ेख के सिवा और कुछ नहीं है।

नुबुव्वत के चौदहवें साल बद्र का मअरका (मोचा) आखिरत में होने वाले वाकये का एक दुनियावी नमूना था। हक का इन्कार करने वाले तादाद और ताकत में बहुत ज्यादा थे और हक को मानने वाले तादाद और ताकत में बहुत कम थे। इसके बावजूद मुँकरों को ग़ैर मामूली शिकस्त हुई और हक की पैरवी करने वालों को फ़ैसलाक़ून फ़तह हासिल हुई। यह एक वाजेह सुबूत है कि अल्लाह हमेशा हक के पैरोकारों की तरफ़ होता है। इतने ग़ैर-मामूली फ़र्क के बावजूद इतनी ग़ैर-मामूली फ़तह अल्लाह की मदद के बग़ैर नहीं हो सकती। यह खुदा की तरफ़ से इस बात का एक मुजाहिरा है कि हक इस आलम में तंहा नहीं है। इसी के साथ इन्कार करने वालों के लिए वह एक जाहिरी दलील भी है जिसमें वे देख सकते हैं कि खुदा की इस दुनिया में वे कितने बेजगह हैं। हक के दाजी के कलाम और उसकी ज़िंदगी में खुली हुई अलामतें होती हैं कि यह खुदा की तरफ़ से है। मगर जो सरकश लोग हैं वे इसे रद्द करने के लिए अल्फ़ाज की एक पनाहगाह बना लेते हैं। वे झूठी तौजीहात (कुतर्कों) में जीते रहते हैं, यहां तक कि वे आखिरत की दुनिया में पहुंच जाते हैं, सिर्फ़ यह जानने के लिए कि वे जिन अल्फ़ाज का सहारा लिए हुए थे वे हकीकत के एतबार से कितने बेमअना थे।

زَيْنَ لِّلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ
الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْخَرْبِ ذَلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَبَإِ ۖ قُلْ أَوْفُوا بِعَهْدِكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذَٰلِكُمْ لِّلَّذِينَ
اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ
مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۚ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا
إِنَّا أَمَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۚ الصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَ
الْقَنَاتِينَ وَالْمُنْفِقِينَ وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ ۝

लोगों के लिए खुशनुमा कर दी गई है मुहब्वत ख़्वाहिशों की औरतें, बेटे, सोने-चांदी के ढेर, निशान लगे हुए घोड़े, मवेशी और खेती। ये दुनियावी ज़िंदगी के सामान हैं। और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। कहो, क्या मैं तुम्हें बताऊँ इससे बेहतर चीज। उन लोगों के लिए जो डरते हैं, उनके रब के पास बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। वे इनमें हमेशा रहेंगे। और सुथरी वीवियां होंगी और अल्लाह की रिजामंदी होगी। और अल्लाह की निगाह में हैं उसके बंदे, जो कहते हैं ऐ हमारे रब, हम ईमान ले आए।

पस तू हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे और हमें आग के अजाब से बचा। वे सब करने वाले हैं और सच्चे हैं, फरमांबरदार हैं और ख़र्च करने वाले हैं और पिछली रात को मफ़िरत (क्षमा) मांगने वाले हैं। (14-17)

दुनिया इस्तेहान की जगह है। इसलिए यहां की चीजों में आदमी के लिए जाहिरी कशिश रखी गई है। अब खुदा यह देखना चाहता है कि कौन है जो जाहिरी कशिश से मुतअस्सिर होकर दुनिया की चीजों में खो जाता है। और कौन है जो इससे ऊपर उठकर आखिरत की अनदेखी चीजों को अपनी तवज्जोह का मर्कज़ बनाता है। आदमी को दुनिया की चीजों में तस्कीन मिलती है। वह देखता है कि माहौल के अंदर इनके ज़रिए से बकर कायम होता है। ये चीजें हों तो उसके सब काम बनते चले जाते हैं। वह समझने लगता है कि यही चीजें अस्त अहमियत की चीजें हैं। उसकी दिलचस्पियां और सरगर्मियां सिमट कर बीबी, बच्चों और माल व जायदाद के गिर्द जमा हो जाती हैं। यही चीज आखिरत के तकाज़ों की तरफ़ बढ़ने में सबसे बड़ी रुकावट है। दुनिया की चीजों की अहमियत का एहसास आदमी को आखिरत की चीजों की तरफ़ से ग़ाफ़िल कर देता है। दुनिया में अपने बच्चों के मुस्तक़बिल (भविष्य) की तामीर में वह इतना मशगूल होता है कि उसे याद नहीं रहता कि दुनिया से आगे भी कोई 'मुस्तक़बिल' है जिसकी तामीर की उसे फ़िक्र करनी चाहिए। दुनिया में अपने घर को आबाद करना उसके लिए इतना महबूब बन जाता है कि उसे कभी ख़्याल नहीं आता कि इसके सिवा भी कोई 'घर' है जिसे आबाद करने में उसे लगना चाहिए। दुनिया में दौलत समेटना और जायदाद बनाना उसे इतने ज्यादा कीमती मालूम होते हैं कि वह सोच नहीं पाता कि इसके सिवा भी कोई 'दौलत' है जिसे हासिल करने के लिए वह अपने को बर्क़ करे। मगर इस विस्म की तमाम चीजें सिर्फ़ मौजूदा आरजे ज़िंदगी की रैनक हैं। अगली तबीलतर (दीर्घ) ज़िंदगी में वे किसी के कुछ काम आने वाली नहीं।

जो शख्स आखिरत की मुस्तक़िल ज़िंदगी को अपनी तवज्जोहात का मर्कज़ बनाए उसकी ज़िंदगी कैसी ज़िंदगी होगी। दुनिया की रैनकें उसकी नजर में हकीर (तुच्छ) बन जाएंगी। वह इस यकीन से भर जाएगा कि आखिरत का मामला तमामतर अल्लाह के इख़्तियार में है। इसका नतीजा यह होगा कि वह सबसे ज्यादा अल्लाह से डरेगा और सबसे ज्यादा आखिरत का ख़्वाहिशमंद बन जाएगा। मामलात में वह अपनी ख़्वाहिशों के पीछे नहीं चलेगा बल्कि अल्लाह की अदालत को सामने रख कर अपना रवैया तै करेगा। उसके कौल व अमल में फ़र्क नहीं होगा। उसका माल अपना माल नहीं रहेगा बल्कि खुदा के लिए बर्क़ हो जाएगा। अल्लाह की राह में चलने में चाहे कितनी ही मुश्किलें पेश आएँ वह पूरी इस्तेक़ामत (दृढ़ता) के साथ उस पर कायम रहेगा। क्योंकि उसे यकीन होगा कि अल्लाह को छोड़ने के बाद कोई नहीं है जो उसका सहारा बने। उसका दिल अल्लाह की याद से इस तरह पिघल उठेगा कि वह बेताब होकर उसे पुकारने लगेगा। उसकी तंहाइयां अपने रब की सोहबत (सान्निध्य) में बसर होने लगेंगी। अल्लाह की अज़मत और कमाल के आगे उसे अपना वजूद सिर से पैर तक ग़लती नजर आएगा। उसके पास कहने के लिए इसके सिवा और कुछ न होगा कि ऐ मेरे रब, मुझे माफ़ कर दे।

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ وَمَا اخْتَلَفَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ وَمَنْ
يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ
وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعْتُ وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأَقْبَانِ ءَسَلِمْتُمْ
فَإِنْ أَسَلِمُوا فَتَدَاهَتْ وَأَوْ لَنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝
إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ
يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ أُولَئِكَ الَّذِينَ
حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

अल्लाह की गवाही है और फरिश्तों की और अहलेइल्म की कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह कायम रखने वाला है इंसान का। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। दीन अल्लाह के नजदीक सिर्फ इस्लाम है। और अहले किताब ने इसमें जो इस्तेलाफ (मतभेद) किया वह आपस की जिद की वजह से किया, वाद इसके कि उन्हें सही इल्म पहुंच चुका था। और जो अल्लाह की आयतों का इंकार करे तो अल्लाह यकीनन जल्द हिसाब लेने वाला है। फिर अगर वे तुम से इस बारे में झगड़ें तो उनसे कह दो कि मैं अपना रुख अल्लाह की तरफ कर चुका। और जो मेरे पैरोकार हैं वे भी। और अहले किताब से और अनपढ़ों से पूछो, क्या तुम भी इसी तरह इस्लाम लाते हो। अगर वे इस्लाम लाएं तो उन्होंने राह पा ली। और अगर वे फिर जाएं तो तुम्हारे ऊपर सिर्फ पहुंचा देना है। और अल्लाह की निगाह में हैं उसके बंदे। जो लोग अल्लाह की निशानियों का इंकार करते हैं और पैगम्बरों को नाहक कत्ल करते हैं और उन लोगों को मार डालते हैं जो लोगों में से इंसान की दावत लेकर उठते हैं, इन्हें एक दर्दनाक सजा की खुशखबरी दे दो। यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया और आखिरत में जाये (विनष्ट) हो गए और उनका मददगार कोई नहीं। (18-22)

कायनात का खुदा एक ही खुदा है और वह अद्ल व किस्तथ (न्याय) को पसंद करता है। तमाम आसमानी किताबें अपनी सही सूरत में इसी का एलान कर रही हैं। फैली हुई कायनात, जो इसका मालिक अपने गैर-मरई (अनदेखी) कारिदों (फरिश्तों) के जरिए चला रहा है वह कामिल तौर पर वैसी ही है जैसा कि उसे होना चाहिए। साबितशुदा इंसानी इल्म के मुताबिक कायनात एक हददर्जा वहदानी निजाम (एकीय व्यवस्था) है। इससे स्पष्ट होता है कि

कायनात का व्यवस्थापक सिर्फ एक है। इसी तरह कायनात की हर चीज का अपने उपयुक्त स्थल पर होना इस बात का सुबूत है कि उसका खुदा अद्ल (न्याय, सुव्यवस्था) को पसंद करने वाला है न कि बेइंसाफी को पसंद करने वाला। फिर जो खुदा वसीअतर कायनात में मुसलसल अद्ल को कायम किए हुए हो वह इंसान के मामले में अद्ल के खिलाफ बातों पर कैसे राजी हो जाएगा।

कायनात का हर जुज (अवयव) कामिल तौर पर 'मुस्लिम' है। यानी अपनी सरगर्मियों को अल्लाह के मुकर्र किए हुए नक्शे के मुताबिक अंजाम देता है। ठीक यही रवैया इंसान से भी मत्लूब है। इंसान को चाहिए कि वह अपने ख को पहचाने और उसके मत्लूब नक्शे के मुताबिक अपनी जिंदगी को ढाल ले। अल्लाह के सिवा किसी और को अपनी तवज्जोह का मर्कज बनाना या यह ख्याल करना कि अल्लाह का फैसला अद्ल के सिवा किसी और बुनियाद पर हो सकता है, ऐसी बेअसल बात है जिसके लिए मौजूदा कायनात में कोई गुंजाइश नहीं।

कुरआन की दावत (आह्वान) इसी सच्चे इस्लाम की दावत है। जो लोग इसमें इस्तेलाफ कर रहे हैं इसकी वजह यह नहीं है कि इसका हक होना उन पर वाजेह नहीं है। इसकी वजह ज़िद है। इसे मानना उन्हें कुरआन के दाजी (आह्वानकर्ता) की फित्री बरती (वैचारिक श्रेष्ठता) तस्लीम करना महसूस होता है, और उनकी हसद और किब्र (घमंड) की नफिसयात इस क्रिम का एतराफ करने पर राजी नहीं। सीधी तरह हक को मान लेने के बजाए वे चाहते हैं कि उस जवान ही को बंद कर दें जो हक का एलान कर रही है। ताहम खुदा की दुनिया में ऐसा होना मुमकिन नहीं। हक के दाजी की जवान को बंद करने के लिए उनका हर मंसूबा नाकाम होगा और जब खुदा के अद्ल का तराजू खड़ा होगा तो वे देख लेंगे कि उनके वे आमाल कितने बेकीमत थे जिनके बल पर वे अपनी नजात और कामयाबी का यकीन किए हुए थे। सच्ची दलील खुदा की निशानी है। जो शख्स दलील के सामने नहीं झुकता वह गोया खुदा के सामने नहीं झुकता। ऐसे लोग कियामत में इस तरह उठेंगे कि वे सबसे ज्यादा बेसहारा होंगे।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ
بَيْنَهُمْ ثُمَّ يُتَوَلَّى قَرِيبٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ۝ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَنْ
تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَةً وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِمْ مَا كَانُوا يَفْكُرُونَ ۝
فَكَيفَ إِذَا جُمِعَهُمْ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ۝ قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمَلِكِ تُؤْتِي الْمَلِكَ مَن تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمَلِكَ
مِّنْ تَشَاءُ وَتُعْزِزُ مَن تَشَاءُ وَتُزِيلُ مَن تَشَاءُ ۚ وَتُعْزِزُ الْحَيَّ وَتُنْزِعُ الْحَيَّ
مِنَ الْمَيِّتِ ۚ تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ
مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें अल्लाह की किताब का एक हिस्सा दिया गया था। उन्हें अल्लाह की किताब की तरफ बुलाया जा रहा है कि वह उनके दरमियान फैसला करे। फिर उनका एक गिरोह मुंह फेर लेता है बेरुखी करते हुए। यह इस सबब से कि वे लोग कहते हैं कि हमें हरगिज आग न छुएगी सिवाए गिने हुए कुछ दिनों के। और उनकी बनाई हुई बातों ने उन्हें उनके दीन के बारे में धोखे में डाल दिया है। फिर उस वक्त क्या होगा जब हम उन्हें जमा करेंगे एक दिन जिसके आने में कोई शक नहीं। और हर शख्स को जो कुछ उसने किया है, इसका पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा और उन पर जुल्म न किया जाएगा। तुम कहो, ऐ अल्लाह, सल्तनत के मालिक तू जिसे चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले। और तू जिसे चाहे इज्जत दे और जिसे चाहे जलील करे। तेरे हाथ में हैं सब खूबी। बेशक तू हर चीज पर कादिर है। तू रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है। और तू बेजान से जानदार को निकालता है और तू जानदार से बेजान को निकालता है। और तू जिसे चाहता है बेहिसाब रिक्त करता है। (23-27)

अल्लाह की हिदायत एक ही हिदायत है जो विभिन्न कौमों की भाषा में उनके पैगम्बरों पर उतारी जाती रही है। वही कुरआन के रूप में मुहम्मद (सल्ल०) पर उतारी गई है। इस एकरूपता की वजह से आसमानी किताबों को जानने और मानने वालों के लिए कुरआन की दावत को पहचानना मुश्किल नहीं। कुरआन की दावत और पिछली आसमानी तालीमात में अगर कुछ फर्क है तो सिर्फ यह कि कुरआन की दावत उनकी अपनी मिलावटों से खुदा के दीन को पाक कर रही है। इसके बावजूद क्यों ऐसा है कि बहुत से लोग कुरआन की दावत का इंकार कर रहे हैं। इसकी वजह यह है कि कुरआन की दावत को वे अपने लिए कोई संजीदा मामला नहीं समझते। अपने स्वनिर्मित अकीदों (आस्था, विश्वास) की बुनियाद पर उन्होंने अपने को जहन्नम की आग से महफूज मान लिया है। अपनी इस नपिस्सायत के तहत वे समझते हैं कि अगर वे इस हक को न स्वीकारें तो इससे उनकी नजात (मुक्ति) ख़तरे में पड़ने वाली नहीं। मगर जब खुदा के इंसाफ का तराजू खड़ा होगा उस वक्त उन्हें मालूम होगा कि वे महज खुशख़ालियों के अंधेरे में पड़े हुए थे।

हर किस्म की इज्जत व ताक़त अल्लाह के इच्छियार में है। वक्त के बड़े जिसे बेहक़ीक़त समझ लें, खुदा चाहे तो उसी के हक में इज्जत व सरकुन्दी का फैसला कर दे। इल्म की गद्दियों पर बैठने वाले जिसके बारे में जहल (अज्ञान) का फतवा दें, खुदा चाहे तो उसी के ज़रिए इल्म का चश्मा (झेल) जारी कर दे। खुदा की नज़र में अगर कोई इज्जत व ताक़त का मुस्तहक़ हो सकता है तो वह जो इसे ख़ालिस खुदा की चीज समझे और खुदा की नज़र में इसका सबसे ज्यादा ग़ैर-मुस्तहक़ अगर कोई है तो वह जो इसे अपनी जाती मिलिकियत समझता हो। खुदा वसीअतुर कायनात में रोजाना बहुत बड़े पैमाने पर यह करिश्मा दिखा रहा है कि वह तारीकी (अंधकार) को रोशनी के ऊपर ओढ़ा देता है और रोशनी को तारीकी के

ऊपर डाल देता है। वह मुर्दा अनासिर (तत्वों) से जिंदगी वजूद में लाता है और जिंदा चीजों को मुर्दा अनासिर में तब्दील करता है। खुदा की यही कुदरत अगर इतिहास में जाहिर हो तो इसमें ताज्जुब की क्या बात है। जो लोग हक के नाम पर नाहक का कारोबार कर रहे हों वे हमेशा सच्ची हक की दावत के मुख़ालिफ़ हो जाते हैं। ऐसे दाजी को बेधर किया जाता है। उसके आर्थिक साधन बर्बाद किए जाते हैं। मगर ऐसा शख्स प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह की सरपरस्ती में होता है। वह उसके लिए खुसूसी रिज्क का इंतज़ाम करता है। दूसरों को उनकी मआशी (आर्थिक) मेहनत के हिसाब से रिज्क दिया जाता है और ऐसे शख्स को बेहिसाब।

لَا يَخْذُ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاتُوا وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ وَالِلَّهِ الْمَصِيرُ ۝ قُلْ إِنْ تَخْشَوْنَ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَتُبْدُوهُ يَعْلَمُهُ اللَّهُ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُحْضَرَةً وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَكَ أَمَدًا أَبْعِيدَ ۝ أُوْحِذْكُمْ اللَّهُ نَفْسَهُ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ۝ قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝

मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़ कर हक का इंकार करने वालों को दोस्त न बनाएं। और जो शख्स ऐसा करेगा तो अल्लाह से उसका कोई ताल्लुक नहीं। मगर ऐसी हालत में कि तुम उनसे बचाव करना चाहो। और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी जात से। और अल्लाह ही की तरफ लौटना है। कह दो कि जो कुछ तुम्हारे सीनों में है उसे छुपाओ या जाहिर करो, अल्लाह उसे जानता है। और वह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो जमीन में है। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। जिस दिन हर शख्स अपनी की हुई नेकी को अपने सामने मौजूद पाएगा, और जो बुराई की होगी उसे भी। उस दिन हर आदमी यह चाहेगा कि काश अभी यह दिन उससे बहुत दूर होता। और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी जात से। और अल्लाह अपने बंदों पर बहुत महरबान है। कहो, अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा। और तुम्हारे गुनाहों को माफ कर देगा। अल्लाह बड़ा माफ करने वाला, बड़ा महरबान है। कहो, अल्लाह की इताअत करो और रसूल की। फिर अगर वे मुंह मोड़ें तो अल्लाह हक का इंकार करने वालों को दोस्त नहीं रखता। (28-32)

मोमिन तमाम इंसानों के साथ नेकी और इंसाफ का सुलूक करने वाला होता है। इसमें मुस्लिम और गैर-मुस्लिम का कोई विभेद नहीं। मगर जब गैर-मुस्लिमों के साथ दोस्ती मुसलमानों के मफ़द (हित) की कीमत पर हो तो ऐसी दोस्ती मुसलमानों के लिए जाइज नहीं। ताहम बचाव की तदबीर के तौर पर अगर किसी वक़्त एक मुसलमान या किसी मुस्लिम ग़िरोह को गैर-मुस्लिमों से वक़्ती तअल्लुक कायम करना पड़े तो इसमें कोई हर्ज नहीं। अल्लाह नीयत को देखता है और जब नीयत दुरुस्त हो तो वह किसी को उसके अमल पर नहीं पकड़ता। तमाम मामलात में अस्ल क़ाबिले लिहाज चीज अल्लाह का ख़ौफ़ है। आदमी किसी मामले में जो ख़ैया अपनाए, उसे अच्छी तरह सोच लेना चाहिए कि अल्लाह उसका हिसाब लेगा। और उसके इंसाफ के तराजू में जो ग़लत ठहरेगा वह उसकी सज़ा पाकर रहेगा। अल्लाह से किसी इंसान की कोई बात ओझल नहीं चाहे वह उसने छुपकर की हो या एलानिया की हो। जब इम्तेहान का पर्दा हटेगा और आख़िरत का आलम सामने आएगा तो आदमी के आमाल की पूरी खेती उसके सामने होगी। यह मंजर इतना हैलनाक होगा कि वे चीज़ें जो दुनिया में उसके नफ़्स की लज्जत बनी हुई थीं, वह चाहेगा कि वे उससे बहुत दूर चली जाएं।

अल्लाह किसी के इस्लाम को जहां देखता है वह उसका क़ल्ब (हृदय) है। मोमिन वही है जिसका अल्लाह से तअल्लुक क़ल्बी मुहब्बत की हद तक कायम हो जाए। ऐसे ही लोग हैं जो अल्लाह की मुहब्बत व तवज्जोह के मुस्तहिक बनते हैं। और जो शख्स अल्लाह से इस तरह तअल्लुक कायम कर ले उससे अगर कोताहियां भी होती हैं तो अल्लाह इससे दरगुजर फरमाता है। अल्लाह सरकशों के लिए बहुत सख़्त है। मगर जो लोग आजिजी का ख़ैया इख़्तियार करें वह उनके लिए नर्म पड़ जाता है।

यह एक नपिसयाती हकीकत है कि जिस सीने में किसी की मुहब्बत मौजूद हो उसी सीने में महबूब के दुश्मन की मुहब्बत जमा नहीं हो सकती। इसी के साथ यह भी एक हकीकत है कि महबूब अगर ऐसी हस्ती हो जो आदमी के लिए आका और मालिक का दर्जा रखती हो तो उसके साथ मुहब्बत सिर्फ़ मुहब्बत की हद तक न रहेगी बल्कि लाजिमन इताअत (आज्ञापालन) और फरमांबरदारी का ज़ब्बा पैदा करेगी। ख़ुदा की जिस मुहब्बत के बाद ख़ुदा के दुश्मनों से क़ल्बी तअल्लुक ख़त्म न हो या उसकी इताअत व फरमांबरदारी का ज़ब्बा पैदा न हो वह झूठी मुहब्बत है। ऐसे शख्स का शुमार अल्लाह के यहां इंकार करने वालों में होगा न कि मानने वालों में। रसूल वह शख्स है जिसके कामिल ख़ुदापरस्त होने की गवाही ख़ुदा ने दी है, इसलिए ख़ुदापरस्ताना जिंदगी के लिए रसूल का नमूना ही मौजूदा दुनिया में वाहिद मुस्तनद (एकमात्र प्रमाणित) नमूना है।

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَالْإِسْمَاعِيلَ عَلَى الْعَالَمِينَ ۚ ذُرِّيَّتُكَ
بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۖ إِذْ قَالَتْ أُمُّرَاتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۖ فَلَمَّا وَضَعَتْهَا
قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتَ وَلَكِنَّ الذَّكَرَ
كَأَلُّنْثَىٰ وَإِنِّي سَمِيتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتُهَا مِنَ الشَّيْطَانِ

الرَّحِيمِ ۖ فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَوَقَّلَهَا زَكَرِيَّا
كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا قَالَ يَمْرِئُ مَا آتَىٰ لَكَ
هَذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۖ
هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ
الدُّعَاءِ ۖ فَلَدَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ فِي الْمِحْرَابِ إِنَّ اللَّهَ يَبْشِيرُكَ
بِخَيْرٍ مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَأَحْصُوا رُؤُسَ الَّذِينَ أَنْزَلْنَا مِنَ الطَّاغُوتِ
قَالَ رَبِّ إِنِّي يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ قَالَ كَذَلِكَ
اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ۖ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً قَالَ آيَتُكَ الْأَنْتَ كَلِمَةُ النَّاسِ
ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْرَمًا وَاذْكُرْ رَبَّكَ كَثِيرًا وَسَبِّحْ بِالنَّعِشِ وَالْإِبْكَارِ ۖ وَلَدٌ
قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ يَمْرِئُ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ عَلَى
نِسَاءِ الْعَالَمِينَ ۖ يَمْرِئُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ وَاسْجُدِي وَارْكَعِي مَعَ الرَّاكِعِينَ ۖ
ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَقُولُونَ
أَقْلَامُهُمْ إِيَّاهُمْ يَكْتُمُونَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۖ

बेशक अल्लाह ने आदम को और नूह को और आले इब्राहीम को और आले इमरान को सारे आलम के ऊपर मुंतख़ब किया है। ये एक-दूसरे की औलाद हैं। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। जब इमरान की बीवी ने कहा ऐ मेरे रब मैंने नज़्द (अर्पित) कियमनारे लिए जो मेरे पेट में है वह आज़ाद रखा जाएगा। पस तू मुझे कुबूल कर बेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। फिर जब उसने बच्चा जन्मा तो उसने कहा ऐ मेरे रब मैंने तो लड़की को जन्मा है और अल्लाह ख़ूब जानता है कि उसने क्या जन्मा है और लड़का नहीं होता लड़की की मानिंद। और मैंने उसका नाम मरयम रखा है और मैं उसे और उसकी औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देती हूं। पस उसके रब ने उसे अच्छी तरह कुबूल किया और उसे उम्दा तरीके से परवान चढ़ाया और ज़क़रिया को उसका सरपरस्त बनाया। जब कभी ज़क़रिया उनके पास हुजरे में आता तो वहां रुक पाता। उसने पूछा ऐ मरयम ये चीज तुम्हें कहां से मिलती है मरयम ने कहा यह अल्लाह के पास से है बेशक अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रुक दे देता है। उस वक़्त ज़क़रिया ने अपने रब को पुकारा। उसने कहा ऐ मेरे रब मुझे अपना पास से पाकीजा औलाद अता कर बेशक तू दुआ का सुनने वाला है। फिर फरिश्तों ने उसे

आवाज दी जबकि वह हुजरे में खड़ा हुआ नमाज पढ़ रहा था कि अल्लाह तुझे याहिया की खुशखबरी देता है जो अल्लाह के कलिमे की तस्दीक करने वाला होगा और सरदार होगा और अपने नफ्स को रोकने वाला होगा और नबी होगा नेकों में से। जकरिया ने कहा ऐ मेरे रब मेरे लड़का किस तरह होगा हालांकि मैं बूढ़ा हो चुका और मेरी औरत बांझ है। फरमाया उसी तरह अल्लाह कर देता है जो वह चाहता है। जकरिया ने कहा कि ऐ मेरे रब मेरे लिए कोई निशानी मुकर्र कर दे। कहा तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से बात न कर सकोगे मगर इशारे से और अपने रब को कसरत से याद करते रहो और शाम व सुबह उसकी तस्बीह करो। और जब फरिश्तों ने कहा ऐ मरयम अल्लाह ने तुम्हें मुंतखब किया और तुम्हें पाक किया और तुम्हें दुनिया भर की औरतों के मुकाबले में मुंतखब किया है (चुना है)। ऐ मरयम अपने रब की फरमांवरदारी करो और सज्दा करो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ करो। यह शैब की खबरे हैं जो हम तुम्हें 'वही' (अवतरित) कर रहे हैं और तुम उनके पास मौजूद न थे जब वे अपने कुरअे डाल रहे थे कि कौन मरयम की सपरस्ती करे और न तुम उस वक्त उनके पास मौजूद थे जब वे आपस में झगड़ रहे थे। (33-44)

अल्लाह ने हजरत जकरिया को बुखे में औलाद दी, हजरत मरयम को हुजरे में रिज्क पहुंचाया, हजरत मसीह को बगैर बाप के पैदा किया, आले इब्राहीम ने ऐसे सुलहा (महापुरुष) पैदा किए जिन्हें खुदा की पैगम्बरी के लिए चुना जाए। अल्लाह ने अपने इन बंदों को ये इनामात यूँ ही नहीं दिए बल्कि उन्हें इसका मुस्तहिक पाकर ऐसा किया। ये वे लोग थे जिन्होंने अपनी औलाद से आर्थिक उम्मीदें कायम नहीं कीं इनकी खुशी इसमें थी कि इनकी औलाद अल्लाह की राह में सरगम हो। ये वे लोग थे जिन्होंने अपने अंदर इस तमन्ना की परवरिश की कि उनकी औलाद शैतान से बची रहे, वह नेक बंदों की जमाअत में शामिल हो जाए। किसी के अंदर भलाई देख कर वे हसद और जलन में मुस्तला नहीं हुए। उनके नेक जज्बात के असर से उनकी औलाद भी ऐसी हुई जो दुनिया की जिदगी में अपने नफ्स पर काबू रखने वाली हो, वह अल्लाह को याद करे। बदी और नेकी के दरमियान वह नेकी के रास्ते को अपनाए। यही वे लोग हैं जिनको अल्लाह अपने खास रिज्क से खिलाता पिलाता है और उन्हें अपनी खुसूरी रहमत के लिए कुबूल कर लेता है।

إِذْ قَالَتِ الْمَلِكَةُ يَٰرَبِّمُ ارْنَا إِلَٰهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖ إِنَّهُمُ السَّيِّئُونَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِبْرِيلَ ۖ وَالدُّنْيَا وَالْآخِرَةُ وَمِنَ الْمَقْرُونِينَ ۖ وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۖ وَمِنَ الصَّالِحِينَ ۖ قَالَتْ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمَسِّنِي بَشَرٌ ۖ قَالَ كَذَٰلِكَ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۖ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۖ وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۖ وَرَسُولًا إِلَىٰ بَنِي

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ۖ وَرَسُولًا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُمْ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ أَنِّي أَخْلُقُ لَكُمْ مِنَ الطَّيْرِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنْفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ ۖ وَأُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَكْفُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ ۖ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَلِإِجْلِ لَّكُمْ بَعْضَ الَّذِي حَرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَأَطِيعُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۗ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ۖ

जब फरिश्तों ने कहा ऐ मरयम, अल्लाह तुम्हें खुशखबरी देता है अपनी तरफ से एक कलिमे की। उसका नाम मसीह ईसा बिन मरयम होगा। वह दुनिया और आखिरत में मर्तबे वाला होगा और अल्लाह के मुकर्रब बंदों में होगा। वह लोगों से बातें करेगा जब मां की गोद में होगा और जब पूरी उम्र का होगा। और वह सालेहीन (सज्जनों) में से होगा। मरयम ने कहा ऐ मेरे रब, मेरे किस तरह लड़का होगा जबकि किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया। फरमाया उसी तरह अल्लाह पैदा करता है जो चाहता है। जब वह किसी काम का फैसला करता है तो उसे कहता है कि हो जा और वह हो जाता है। और अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और तौरात और इंजील सिखाएगा और वह रसूल होगा बनी इस्राईल की तरफ कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानी लेकर आया हूँ। मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिंदे की आकृति बनाता हूँ, फिर उसमें फूंक मारता हूँ तो वह अल्लाह के हुक्म से वाकई परिंदा बन जाती है। और मैं अल्लाह के हुक्म से जन्मजात अंधे और कोढ़ी को अच्छा करता हूँ। और मैं अल्लाह के हुक्म से मुर्दे को जिंदा करता हूँ। और मैं तुम्हें बताता हूँ कि तुम क्या खाते हो और अपने घरों में क्या जखीरा करते हो। बेशक इसमें तुम्हारे लिए निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो। और मैं तस्दीक करने वाला हूँ तौरात की जो मुझ से पहले की है और मैं इसलिए आया हूँ कि कुछ उन चीजों को तुम्हारे लिए हलाल ठहराऊँ जो तुम पर हाराम कर दी गई हैं। और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से निशानी लेकर आया हूँ। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो। बेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा भी। पस उसकी इबादत करो, यही सीधी राह है। (45-51)

यहूद की नस्त को अल्लाह ने इस खास मंसब के लिए चुन लिया था कि उन पर अपनी हिदायत उतारे ताकि वे खुद अल्लाह के रास्ते पर चलें और दूसरों को उससे आगाह करें। मगर बाद के जमाने में यहूद के अंदर बिगाड़ आ गया। यहां तक कि अल्लाह की नजर में वे इस

काबिल न रहे कि आसमानी हिदायत के अभीन (धारक) बन सकें। अब अल्लाह का फैसला यह हुआ कि यह अमानत उनसे छीन कर आले इब्राहीम की दूसरी शाख (बनी इस्राईल) को दे दी जाए। इस फैसले को लागू करने से पहले यहूद पर इत्मा मे हुज्जत (हुज्जत पूरी करना) जरूरी था। हजरत मसीह इसी इत्मा मे हुज्जत के लिए भेजे गए। आपका असामान्य जन्म और आपको गैर-मामूली मोजिजात (पैगम्बरों के चमत्कार) का दिया जाना इसीलिए था कि यहूद को इस बारे में कोई शक न रहे कि आप खुदा के भेजे हुए हैं और खुदा की तरफ से बोल रहे हैं। हजरत मसीह अपने साथ न सिर्फ फैसल फितरी (दिव्य असामान्य) निशानियां रखते थे बल्कि वह इतने मुअस्सर और मुदल्लल अंदाज में बोलते थे कि उनके जमाने में कोई इस तरह बोलने पर कादिर न था। पहली बार जब आपने यरोशलम के हैकल में तकरीर की तो यहूदी विद्वान आपकी बातों को सुनकर दंग रह गए। (लूका 47 : 2)। यह उनकी मोजिजनुमा शख्सियत और उनके मब्दूत कर देने वाले कलाम ही का असर था कि अगरचे आप वगैर बाप के पैदा हुए थे मगर आपके सामने किसी को जुरत न हो सकी कि इस पहलू से आपको मतऊन (लांछित) करे। ताहम यहूद इतने बेहिस और इतने सरकश हो चुके थे कि इतिहाई खुली-खुली दलीलें सामने आ जाने के बावजूद उन्होंने आपको मानने से इंकार कर दिया। 'इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए' यानी जो दलील पेश की जा रही है वह खुद में मुकम्मल है। मगर वह उसी शख्स के लिए दलील बनेगी जो मानने का मिजाज रखता हो। जिसके अंदर यह सलाहियत हो कि अपने ख्यालात के कोहरे से बाहर आकर दलील पर गौर करे। जिसकी फितरत इस हद तक जिद्द हो कि जाती क्वार का सवाल उसके लिए हक को कुबूल करने में रुकावट न बने।

فَلَمَّا أَحَسَّ عَيْنِي مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ
فَنَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ آمَنَّا بِاللَّهِ وَأَشْهَدُ بِأَنَّ مُسْلِمُونَ ۝ رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنْزَلْتَ وَالتَّبَعْنَا
الرَّسُولَ فَأَكْتَبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَكُفَرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ ۝ إِذْ قَالَ
اللَّهُ لِيَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ قُمْ فَرِافِعًا إِلَى مِصْرَ لِمَنْ يَكْفُرُ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
جَاعِلِينَ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُمَّ إِلَى مَرْجِعِكُمْ
فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ فَمَا الَّذِينَ كَفَرُوا فَعَدَبُكُمْ
عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ
أُتُوا بِالطَّبْلِ فَتَبَيَّنَتْ قِيَمَتُهُمْ أَجُورُهُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝ ذَلِكَ
نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ۝

फिर जब ईसा ने उनका इंकार देखा तो कहा कि कौन मेरा मददगार बनता है अल्लाह की राह में। हवारियों ने कहा कि हम हैं अल्लाह के मददगार। हम ईमान लाए हैं अल्लाह पर और आप गवाह रहिए कि हम फरमांवरदार हैं। ऐ हमारे रब हम ईमान लाए उस पर जो तूने उतारा, और हमने रसूल की पैरवी की। पस तू लिख ले हमें गवाही देने वालों में। और उन्होंने खुफिया तदबीर की और अल्लाह ने भी खुफिया तदबीर की। और अल्लाह सबसे बेहतर तदबीर करने वाला है। जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा मैं तुम्हें वापस लेने वाला हूँ और तुम्हें अपनी तरफ उठा लेने वाला हूँ और जिन लोगों ने इंकार किया है उनसे तुम्हें पाक करने वाला हूँ। और जो तुम्हारे पैरोकार हैं उन्हें कियामत तक उन लोगों पर गालिब करने वाला हूँ जिन्होंने तुम्हारा इंकार किया है। फिर मेरी तरफ होगी सबकी वापसी। पस मैं तुम्हारे दर्मियान उन चीजों के बारे में फैसला करूंगा जिनमें तुम झगड़ते थे। फिर जो लोग मुंकिर हुए उन्हें सख्त अजाब दूंगा दुनिया में और आखिरत में और उनका कोई मददगार न होगा। और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन्हें अल्लाह उनका पूरा अज्र देगा और अल्लाह जालिमों को दोस्त नहीं रखता। यह हम तुम्हें सुनाते हैं अपनी आयतें और हिकमत भरी बातें। (52-58)

बनी इस्राईल के बड़ों ने हजरत मसीह को मानने से इंकार कर दिया। बड़ों के हाथ में हर किस्म के वसाइल (संसाधन) होते हैं। साथ ही यह कि मजहब की गद्दियों पर काबिज होने की वजह से अवाम की नजर में वही मजहब के नुमाइदे होते हैं। इसलिए वे जिसे रद्द कर दें वह न सिर्फ जिंदगी के वसाइल से महरूम हो जाता है बल्कि हक की खातिर सब कुछ खोने के बाद भी लोगों की नजर में बददीन ही बना रहता है। ऐसे वक़्त में हक के दाओ का साथ देना इतिहाई मुश्किल काम है। यह शक़ात और मुखालिफतों की आम फिजा में उसकी सदाक़त पर गवाह बनना है। यह हक की जानिब उस वक़्त खड़ा होना है जबकि हक तंहा रह गया हो।

हक जब अपनी बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में उठता है तो वे तमाम लोग अपने ऊपर इसकी ज़द पड़ती हुई महसूस करते हैं जो अपनी हक के खिलाफ जिंदगी पर हक का लेबल लगाकर लोगों के दर्मियान इज्जत का मक़म हासिल किए हुए थे। वे दाओ को ज़े (परास्त) करने के लिए उठ खड़े होते हैं। वे तरह-तरह के शोशे निकाल कर अवाम को इसके खिलाफ भड़काते हैं। और बिलआखिर ताक़त के जरिए उसे मिटा देने का मंसूबा बनाते हैं। मगर अल्लाह की नुसरत (मदद) हमेशा दाओ के साथ होती है, इसलिए कोई मुखालिफत (विरोध) उसकी आवाज को दबाने में कामयाब नहीं होती। मुखालिफतों के बावजूद वह अपने मिशन को मुकम्मल करता है। जो लोग हक की दावत के मुखालिफ बनें वे अल्लाह की नजर में मुफ़सिद (उपद्रवी) हैं। क्योंकि वे लोगों को जन्नत की तरफ जाने से रोकते हैं। इससे बड़ा कोई फसाद नहीं हो सकता कि खुदा के बंदों को खुदा की जन्नत की तरफ जाने से रोका जाए।

हजरत मसीह यहूद को मं पैदा हुए मगर यहूद ने आपकी नुबुव्वत नहीं मानी। उन्होंने आपको ख़ुस्त करने के लिए आपके खिलाफ झूठा मुक़दमा बनाया और आपको फिलिस्तीन की

रुमी अदालत में ले गए। अदालत से आपको सूली पर चढ़ाने का फैसला हो गया। मगर अल्लाह तआला ने आपको उठा लिया और रुमी सिपाहियों ने एक अन्य आदमी को आपके हमशक्ल पाकर उसे सूली दे दी। यहूद के इस जुर्म पर खुदा ने यह फैसला कर दिया कि हजरत मसीह को मानने वाली कौम क्रियामत तक यहूदी कौम पर शालिब रहेगी। यह यहूद और मसीही दोनों के साथ खुदा का दुनियावी मामला है। आखिरत का मामला इसके अलावा है जो खुदा की आम सुन्नत के तहत होगा।

إِنْ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۚ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ الْمُنْتَرِينَ ۚ فَمَنْ حَاكَمَكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنفُسَنَا
وَأَنفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلُ لَكَ الْكَذِبَ بَيْنَ ۖ إِنَّ هَذَا هُوَ
الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۚ وَإِنْ
تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ۚ

वेशक ईसा की मिसाल अल्लाह के नजदीक आदम की-सी है। अल्लाह ने उसे मिट्टी से बनाया। फिर उसको कहा कि हो जा तो वह हो गया। हक बात है तैरे ख की तरफ से। पस तुम न हो शक करने वालों में। फिर जो तुमसे इस बारे में हुज्जत करे बाद इसके कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है तो उनसे कहो कि आओ, हम बुलाएँ अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को। और हम और तुम खुद भी जमा हों। फिर हम मिलकर दुआ करें कि जो झूठा हो उस पर अल्लाह की लानत हो। वेशक यह सच्चा बयान है। और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह ही जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। फिर अगर वे कुबूल न करें तो अल्लाह फसाद करने वालों को जानता है। (59-63)

मसीही लोगों का अकीदा है कि हजरत मसीह (अलै०) खुदा के बेटे हैं। इनका कहना है कि हजरत मसीह आम इंसानों से बिल्कुल भिन्न हैं। उनका जन्म प्रजनन के आम नियम के विपरीत बाप के बगैर हुआ, फिर आपको आम इंसानों की तरह एक इंसान कैसे कहा जा सकता है। आपके जन्म की प्रक्रिया खुद बताती है कि वह बशर (आम इंसान) से मावरा थे। वह इंसान के बेटे नहीं बल्कि खुदा के बेटे थे। कहा गया कि तुम्हारे सवाल का जवाब अव्वल इंसान (आदम) की तखलीक में मौजूद है। तुम खुद यह मानते हो कि आदम सबसे पहले बशर हैं। वह मारुफ तरीके के मुताबिक मर्द और औरत के तअल्लुक से वजूद में नहीं आए। बल्कि बराहेरास्त खुदा के हुक्म के तहत वजूद में आए। फिर बाप के बगैर पैदा होने की बुनियाद पर जब आदम खुदा के बेटे नहीं हैं तो इसी तरह बाप के बगैर पैदा होने की बुनियाद पर मसीह कैसे खुदा के बेटे हो जाएंगे।

नजरान (यमन) कुरआन के नाजिल होने के जमाने में मसीही मजहब का बहुत बड़ा

मर्कज था। उनके उलमा और पेशवाओं का एक वफद सन् 9 हिजरी में मदीना आया और अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) से मसीही अकाइद के बारे में बहस की। आपने मुख़ालिफ दलीलों उनके सामने पेश कीं। मसलन आपने फरमाया कि मसीह खुदा के बेटे कैसे हो सकते हैं जबकि खुदा एक जिंदा हस्ती है, उस पर कभी मौत आने वाली नहीं। मगर ईसा पर मौत और फना आने वाली है। आपकी दलीलों का उन के पास कोई जवाब नहीं था मगर वे बराबर कजबहसी करते रहे। जब आपने देखा कि वे दलील से मानने वाले नहीं हैं तो आपने उन्हें एक आखिरी चैलेंज दिया। आपने फरमाया कि अगर तुम अपने को बरहक समझते हो तो मुवाहिता (एक-दूसरे पर लानत की बददुआ) के लिए तैयार हो जाओ।

अगले दिन सुबह को आप बाहर निकले। आपके साथ आपके दोनों नवासे हसन और हुसैन थे। इनके पीछे हजरत फातिमा और इनके पीछे हजरत अली। नजरानी ईसाई यह देखकर मरऊब हो गए और आपस में मशिवरे की मोहलत मांगी। अकेले मशिवरे में उनके एक आलिम ने कहा : तुम जानते हो कि अल्लाह ने बनी इस्माईल में पैगम्बर भेजने का वादा किया है। हो सकता है कि यह वही पैगम्बर हों। फिर एक पैगम्बर से मुवाहिता और मुलाइना (मलऊन करना) करने का नतीजा यही निकल सकता है कि तुम्हारे छोटे और बड़े सब हलाक हो जाएँ और नस्लों तक इसका असर बाकी रहे। खुदा की कसम मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूँ कि अगर ये दुआ करें तो पहाड़ भी अपनी जगह से टल जाएंगे। इसलिए बेहतर यह है कि हम उनसे सुलह करके अपनी बस्तियों की तरफ रवाना हो जाएँ।

قُلْ يَٰأَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَىٰ كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَ
لَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا
فَقُولُوا الشَّهْدُ وَإِيَّاكُمْ مَسْلُومُونَ ۚ يَٰأَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا
أُنزِلَتِ التَّوْرَةُ إِلَّا نَجِيلٌ ۖ أَلَمْ يَكُنْ مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۚ هَٰأَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ
حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۚ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا
مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ إِنَّ أَوَّلِي النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَكَذِبِينَ أَتَّبِعُوهُ
وَهَٰذَا النَّبِيُّ ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَذُتْ ظُلُمَةٌ مِّنْ
أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَضُّوْكُمْ وَيَا ضِلُّونَ ۖ إِلَّا أَنْفُسُهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۚ
يَٰأَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ۚ يَٰأَهْلَ الْكِتَابِ
لِمَ تَلِيْسُونَهُ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۚ

कहो ऐ अहले किताब, आओ एक ऐसी बात की तरफ जो हमारे और तुम्हारे दर्मियान मुसल्लम (साझी) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराएं। और हममें से कोई किसी दूसरे को अल्लाह के सिवा रब न बनाए। फिर अगर वे इससे मुंह मोड़ें तो कह दो कि तुम गवाह रहो, हम फरमांवरदार हैं। ऐ अहले किताब, तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो। हालांकि तौरात और इंजील तो उसके बाद उतरी हैं। क्या तुम इसे नहीं समझते। तुम वे लोग हो कि तुम उस बात के बारे में झगड़ें जिसका तुम्हें कुछ इल्म था। अब तुम ऐसी बात में क्यों झगड़ते हो जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते। इब्राहीम न यहूदी था और न नसरानी। बल्कि सिर्फ अल्लाह का ही रहने वाला मुस्लिम था और वह शिर्क करने वालों में से न था। लोगों में ज्यादा मुनासिबत इब्राहीम से उन्हें है जिन्होंने उसकी पैरवी की और यह पैगम्बर और जो उस पर ईमान लाए। और अल्लाह ईमान वालों का साथी है। अहले किताब में से एक गिरोह चाहता है कि किसी तरह तुम्हें गुमराह कर दे। हालांकि वे नहीं गुमराह करते मगर खुद अपने आपको। मगर वे इसका एहसास नहीं करते। ऐ अहले किताब, अल्लाह की निशानियों का क्यों इंकार करते हो हालांकि तुम गवाह हो। ऐ अहले किताब, तुम क्यों सही में ग़लत को मिलाते हो और हक को छुपाते हो, हालांकि तुम जानते हो। (64-71)

तौहीद न सिर्फ पैगम्बरों की अस्ल तालीम है बल्कि तौरात और इंजील के मौजूदा ग़ैर-मुस्तनद (अप्रमाणिक) नुस्खों में भी वह एक मुसल्लम हकीकत के तौर पर मौजूद है। इस मुसल्लमा मेयार (मापदंड) पर जांचा जाए तो इस्लाम ही कामिल तौर पर सही दीन साबित होता है न कि यहूदियत और नसरानियत। तौहीद का मतलब यह है कि अल्लाह को एक माना जाए। सिर्फ उसी की इबादत की जाए। उसके साथ किसी को शरीक न ठहराया जाए। किसी इंसान को वह मकाम न दिया जाए जो कायनात के मालिक के लिए खास है। यह तौहीद अपनी ख़लिस सूत में सिर्फ क़ुरआन और इस्लाम में महफूज है। दूसरे मजहबों ने नजरी तौर पर तौहीद का इकारार करते हुए अमली तौर पर वह सब कुछ इख़्तियार कर लिया जो तौहीद के सरासर ख़िलाफ था। ज़बान से खुदा को रब कहते हुए उन्होंने अपने नबियों और बुजुर्गों को अमलन रब का दर्जा दे दिया।

मक्का के मुशरिकीन अपने मजहब को इब्राहीमी मजहब कहते थे। यहूद व नसारा भी अपने मजहबी इतिहास को हजरत इब्राहीम के साथ जोड़ते थे। हर ज़माने के लोग इसी तरह अपने नबियों और बुजुर्गों के नाम को अपनी बिदाआत (कुरीतियों) और तहरीफात (संशोधनों, परिवर्तनों) के लिए इस्तेमाल करते रहे हैं। ज़माना गुजरने के बाद इनका बनाया हुआ मजहब अवाम के जेहनों में इस तरह छि जाता है कि वे उसी को अस्ल मजहब समझने लगते हैं। इन हालात में जब सच्चे और बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत उठती है तो उसके विरोधी इसे बेएतबार साबित करने के लिए सबसे आसान तरीका यह समझते हैं कि अवाम में यह मशहूर कर दें कि यह अस्लाफ (पूर्वजों) के दीन के ख़िलाफ है। वह शख्स जो अस्लाफ के दीन का हकीकी नुमाइंदा होता है उसे खुद अस्लाफ ही के नाम पर रद्द कर दिया जाता है। यह गोया

हक के ऊपर बातिल (असत्य) का पर्दा डालना है। यानी ऐसी बातें कहना जो अपनी मूल प्रकृति में बेहकीकत हों मगर अवाम तज्जिया (विश्लेषण) न कर सकने की वजह से इसे दुरुस्त समझ लें और हक से दूर हो जाएं। 'मुस्लिम हनीफ' वह है जो तौहीद के रास्ते पर यकसू होकर चले और ग़ैर-हनीफ वह है जो दाएं या बाएं की पगडंडियों पर मुड़ जाए। कोई एक जेली पहलू (उप पहलू) को लेकर इतना बढ़ाए कि उसी को सब कुछ बना दे। कोई दूसरे जेली पहलू को लेकर उस पर इतने तशरीही (ब्याख्यागत) इजफे करे कि वही सारी हकीकत नजर आने लगे। लोग दीन के जेली पहलूओं को कुल दीन समझ लें और तौहीद की सीधी शाहराह को छोड़कर इधर-उधर के रास्तों में दौड़ने लगें।

وَقَالَتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ ائْمُنُوا بِالَّذِي أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجَهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوا آخِرًا لِّعَلَّاهُمْ يَرْجِعُونَ ٦٤ وَلَا تَوْمِنُوا إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ وَدِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَىٰ اللَّهِ أَن يُؤْتَىٰ أَحَدٌ مِّثْلَ مَا أُوتِيْتُمْ أَوْ يُحَاجُّوكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ٦٥ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ٦٦ وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَن إِنْ تَأْمَنَهُ بِقِطْعَةٍ يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّن إِنْ تَأْمَنَهُ بِدِينَارٍ لَا يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَائِمًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْكَ فِي الْأُمِّيِّينَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ٦٧ بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ٦٨

और अहले किताब के एक गिरोह ने कहा कि मुसलमानों पर जो चीज उतारी गई है उस पर सुबह को ईमान लाओ और शाम को उसका इंकार कर दो, शायद कि मुसलमान भी इससे फिर जाएं। और यकीन न करो मगर सिर्फ उसका जो चले तुम्हारे दीन पर। कहो हिदायत वही है जो अल्लाह हिदायत करे। और यह उसी की देन है कि किसी को वही कुछ दे दिया जाए जो तुम्हें दिया गया था। या वे तुमसे तुम्हारे रब के यहां हुज्जत करें। कहो बड़ाई अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है देता है और अल्लाह बड़ा वुस्तत वाला है, इल्म वाला है। वह जिसे चाहता है अपनी रहमत के लिए खास कर लेता है। और अल्लाह बड़ा फज़ल वाला है। और अहले किताब में कोई ऐसा भी है कि अगर तुम उसके पास अमानत का ढेर रखो तो वह उसे तुम्हें अदा कर दे। और इनमें कोई ऐसा है कि अगर तुम उसके पास एक दीनार अमानत रख दो तो वह तुम्हें अदा न करे इल्ला यह कि तुम उसके सिर पर खड़े हो जाओ, यह इस सबब से कि वे कहते हैं कि ग़ैर-अहले किताब के बारे में हम पर कोई इल्जाम नहीं। और वे अल्लाह के ऊपर झूठ लगाते हैं

हालांकि वे जानते हैं। बल्कि जो शख्स अपने अहद को पूरा करे और अल्लाह से डरे तो बेशक अल्लाह ऐसे मुक्तियों को दोस्त रखता है। (72-76)

एक गिरोह जिसमें अबिया और सुलहा (महापुरुष) पैदा हुए हों, जिसके दर्मियान अर्से तक दीन का चर्चा रहे, अक्सर वह इस गलतफहमी में पड़ जाता है कि वह और हक दोनों एक हैं। वह हिदायत को एक गिरोही चीज समझ लेता है न कि एक उसूली चीज। यहूद का मामला यही था। उनका जेहन, तारीखी रिवायतों के असर से यह बन गया था कि जो हमारे गिरोह में है वह हिदायत पर है और जो हमारे गिरोह से बाहर है वह हिदायत से खाली है। जो लोग हक को इस तरह गिरोही चीज समझ लें वे ऐसी सदाकत (सच्चाई) को मानने के लिए तैयार नहीं होते जो उनके गिरोह के बाहर जाहिर हुई हो। वे भूल जाते हैं कि हक वह है जो अल्लाह की तरफ से आए न कि वह जो किसी शख्स या गिरोह की तरफ से मिले। वे अगरचे खुदा के दीन का नाम लेते हैं मगर उनका दीन हकीकत में गिरोहपरस्ती होता है न कि खुदापरस्ती। उनका यह मिजाज उनकी आंख पर ऐसा पर्दा डाल देता है कि अपने गिरोह से बाहर किसी का फजल व कमाल उन्हें दिखाई नहीं देता। खुली-खुली दलीलें सामने आने के बाद भी वे इसे शुबह की नजर से देखते हैं। वे अपने हलके से बाहर उठने वाली हक की दावत के शदीद मुखालिफ बन जाते हैं। दोअमली का तरीका अपना कर वे इसे खत्म करने की कोशिश करते हैं। बेबुनियाद बातें मशहूर करके वे लोगों को इसकी सदाकत के बारे में मुशतबह (भ्रमित) करते हैं। शरीअते खुदावंदी के सरासर खिलाफ वे इसे अपने लिए जाइज कर लेते हैं कि वे अख्लाक के दो मेयार बनाएं, एक गैरों के लिए और दूसरा अपने गिरोह के लिए।

किसी को अपने दीन की नुमाइंदगी के लिए कुबूल करना अल्लाह की खुसूसी रहमत है। इसका फैसला गिरोही बुनियाद पर नहीं होता। यह सआदत उसे मिलती है जिसे अल्लाह अपने इल्म के मुताबिक पसंद करे। और अल्लाह उस शख्स को पसंद करता है जो अल्लाह के साथ अपने को इस तरह वाबस्ता कर ले कि वह उसका निगरा (संरक्षक) बन जाए, जिससे वह डरे, वह उसका आका बन जाए जिसके साथ किए हुए इताअत के अहद को वह कभी नजरअंदाज न कर सके। अल्लाह के मकबूल बंदे वे हैं जो अमानत को पूरा करने वाले हों और अहद (वचन) के पाबंद हों। ऐसे ही लोगों पर अल्लाह की रहमतें उतरती हैं। इसके बरअक्स जो लोग अमानत की अदायगी के मामले में बेपरवाह हों और अहद को पूरा करने में हस्सास न रहें वे अल्लाह के यहां बेकीमत हैं। ऐसे लोग अल्लाह की रहमतों और नुसरतों (मदद) से दूर कर दिए जाते हैं।

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَبْنَاهُمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَإِخْلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يَكْبِتُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُرَبِّبُهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوَنَ أَسْنَتَهُمْ بِالْكَتَبِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ الْكَتَبِ وَمَا هُمْ مِنَ الْكَتَبِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ

عِنْدَ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِي مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّانِيِّينَ بِمَا كُنْتُمْ تُعْلَمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ۝ وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝

जो लोग अल्लाह के अहद और अपनी कसमों को थोड़ी कीमत पर बेचते हैं उनके लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं। अल्लाह न उनसे बात करेगा न उनकी तरफ देखेगा कियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा। और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। और इनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी जबानों को किताब में मोड़ते हैं ताकि तुम उसे किताब में से समझो हालांकि वह किताब में से नहीं। और वे कहते हैं कि यह अल्लाह की जानिब से है हालांकि वह अल्लाह की जानिब से नहीं। और वे जान कर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। किसी इंसान का यह काम नहीं कि अल्लाह उसे किताब और हिक्मत और नुबुव्वत दे और वह लोगों से यह कहे कि तुम अल्लाह को छोड़कर मेरे बंदे बन जाओ। बल्कि वह तो कहेगा कि तुम अल्लाह वाले बनो, इस वास्ते कि तुम दूसरों को किताब की तालीम देते हो और खुद भी उसे पढ़ते हो। और न वह तुम्हें यह हुक्म देगा कि तुम फरिश्तों और पैगम्बरों को ख बनावो। क्या वह तुम्हें कुफ्र का हुक्म देगा, बाद इसके कि तुम इस्लाम ला चुके हो। (77-80)

एक शख्स जब ईमान लाता है तो वह अल्लाह से इस बात का अहद करता है कि वह उसकी फरमांबरदारी करेगा और बंदों के दर्मियान जिंदगी गुजारते हुए उन तमाम जिम्मेदारियों को पूरा करेगा जो खुदा की शरीअत की तरफ से उस पर आयद होती हैं। यह एक पाबंद जिंदगी है जिसे अहद (वचन, प्रतिज्ञा, प्रतिबद्धता) की जिंदगी से ताबीर किया जा सकता है। इस जिंदगी पर कयम होने के लिए नफस की आज्ञादियों को खत्म करना पड़ता है, बार-बार अपने फायदों और मस्लेहों की कुर्बानी देनी पड़ती है। इसलिए इस अहद की जिंदगी को वही शख्स निभा सकता है जो नफा नुक्सान से बेनियाज होकर इसे अपनाए। जिस शख्स का हाल यह हो कि नफस पर चोट पड़े या दुनिया का मफाद खतरे में नजर आए तो वह खुदा के अहद को नजरअंदाज कर दे और अपने फायदों और मस्लेहों की तरफ झुक जाए, उसने गोया आखिरत को देकर दुनिया खरीदी। जब आखिरत के पहलू और दुनिया के पहलू में से किसी एक को लेने का सवाल आया तो उसने दुनिया के पहलू को तरजीह दी। जो शख्स आखिरत को इतनी बेकीमत चीज समझ ले वह आखिरत में अल्लाह की इनायतों का हकदार किस तरह हो सकता है।

जो लोग आखिरत को अपनी दुनिया का सौदा बनाएं वे दीन या आखिरत के मुकिर नहीं हो जाते बल्कि दीन और आखिरत के पूरे इकरार के साथ ऐसा करते हैं। फिर इन दो मुतजाद (परस्पर विरोधी) रवैयों को वे किस तरह एक-दूसरे के मुताबिक बनाते हैं। इसका जरिया

तहरीफ (संशोधन, परिवर्तन) है। यानी आसमानी तालीमात को खुदसाख्ता मअना पहनाना। ऐसे लोग अपनी दुनियापरस्ताना रविश को आखिरतपसंदी और खुदापरस्ती साबित करने के लिए दीनी तालीमात को अपने मुताबिक ढाल लेते हैं। कभी खुदा के अल्फाज को बदल कर और कभी खुदा के अल्फाज की अपने मुफ़ीदे मतलब तशरीह करके। वे अपने आप को बदलने की बजाए किताबे इलाही को बदल देते हैं ताकि जो चीज किताबे इलाही में नहीं है उसे ऐन किताबे इलाही की चीज बना दें, अपनी बेखुदा जिंदगी को बाखुदा जिंदगी साबित कर दिखाएं। अल्लाह के नजदीक यह बदतरीन जुर्म है कि आदमी अल्लाह की तरफ ऐसी बात मंसूब करे जो अल्लाह ने न कही हो।

किसी तालीम की सदाकत की सादा और यकीनी पहचान यह है कि वह अल्लाह के बंदों को अल्लाह से मिलाए, लोगों के ख़ौफ व मुहब्बत के जज्बात को बेदार करके उन्हें अल्लाह की तरफ मोड़ दे। इसके बरअक्स जो तालीम शख़्सियतपरस्ती या और कोई परस्ती पैदा करे, जो इंसान के नाजुक जज्बात की तक्ज़ोह का मर्कज किसी ग़ैर-खुदा को बनाती हो, उसके बारे में समझना चाहिए की वह सरासर बातिल (असत्य) है चाहे बजाहिर अपने ऊपर उसने हक का लेबल क्यों न लगा रखा हो।

وَاذْخُلِ اللَّهُ مِيثَاقَ التَّيِّبِينَ لَمَّا آتَيْنَهُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحَكَمِهِ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَلِكُمْ إِصْرِي ۖ قَالُوا أَقْرَرْنَا ۖ قَالَ فَاشْهَدُوا ۚ وَأَنَا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝ فَمَنْ تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ أَفَغَيَّرُ دِينَ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ طُوعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۝ قُلْ أَمَّا إِلَهُ اللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالتَّيِّبُونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا تَفْرُقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝ وَمَنْ يَتَّبِعْ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ ۖ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالتَّاسِيسِ أَجْمَعِينَ ۝

خَلِدِينَ فِيهَا ۖ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۖ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۖ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ أَذَادُوا كُفْرًا لَنْ نَقْبَلَ تَوْبَهُمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَرَاءَ فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ مِلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا ۖ لَوْ افْتَدَىٰ بِهِ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

और जब अल्लाह ने पैगम्बरों का अहद लिया कि जो कुछ मैंने तुम्हें किताब और हिकमत दी, फिर तुम्हारे पास पैगम्बर आए जो सच्चा साबित करे उन पेशेनगोइयों (भविष्यवाणियों) को जो तुम्हारे पास हैं तो तुम उस पर ईमान लाओगे और उसकी मदद करोगे। अल्लाह ने कहा क्या तुमने इकार किया और उस पर मेरा अहद कुबूल किया। उन्होंने कहा हम इकार करते हैं। फरमाया अब गवाह रहे और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ। पस जो शख्स फिर जाए तो ऐसे ही लोग नाफरमान हैं। क्या ये लोग अल्लाह के दीन के सिवा कोई और दीन चाहते हैं। हालांकि उसी के हुक्म में है जो कोई आसमान और जमीन में है, खुशी से या नाखुशी से और सब उसी की तरफ लौटाए जाएंगे। कहे हम अल्लाह पर ईमान लाए और उस पर जो हमारे ऊपर उतारा गया है और जो उतारा गया इब्राहीम पर इस्माईल पर इस्हाक पर और याकूब पर और याकूब की औलाद पर। और जो दिया गया मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की तरफ से। हम इनके दर्मियान फर्क नहीं करते। और हम उसी के फरमावरदार हैं। और जो शख्स इस्लाम के सिवा किसी दूसरे दीन को चाहेगा तो वह उससे हरगिज कुबूल नहीं किया जाएगा और वह आखिरत में नामुरादों में से होगा। अल्लाह क्योंकि ऐसे लोगों को हिदायत देगा जो ईमान लाने के बाद मुंकिर हो गए। हालांकि वे गवाही दे चुके कि यह रसूल बरहक है और उनके पास रोशन निशानियां आ चुकी हैं। और अल्लाह जालिमों को हिदायत नहीं देता। ऐसे लोगों की सजा यह है कि उन पर अल्लाह की, उसके फरिश्तों की और सारे इंसानों की लानत होगी। वे इसमें हमेशा रहेंगे, न उनका अजाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। अलबत्ता जो लोग इसके बाद तौबा कर लें और अपनी इस्लाह कर लें तो वेशक अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। वेशक जो लोग ईमान लाने के बाद मुंकिर हो गए फिर कुफ्र में बढ़ते रहे, उनकी तौबा हरगिज कुबूल न की जाएगी और यही लोग गुमराह हैं। वेशक जिन लोगों ने इकार किया और इंकार की हालत में मर गए, अगर वे जमीन भर सोना भी फिदये में दें तो कुबूल नहीं किया जाएगा। उनके लिए दर्दनाक अजाब है और उनका कोई मददगार न होगा। (81-91)

अल्लाह को पाना एक अबदी (शाश्वत) हकीकत को पाना है, यह पूरी कायनात का हमसफर बनना है। जो लोग इस तरह अल्लाह को पा लें वे हर क्रिम के तअसुबात (विधेयों) से ऊपर उठ जाते हैं। वे हक को हर हाल में पहचान लेते हैं चाहे उसका पैगाम 'इस्राईली पैगम्बर' की जवान से बुलंद हो या 'ईस्माईली पैगम्बर' की जवान से। मगर जो लोग गिरोहपरस्ती की सतह पर जी रहे हों हक उन्हें हक की सूत में सिर्फ उस वक्त नजर आता है जबकि वह उनके अपने गिरोह के किसी फर्द की तरफ से आए। अल्लाह अगर इनके गिरोह से बाहर किसी शख्स को अपने पैगाम की पैगामरसानी के लिए उठाए तो ऐसा पैगाम उनके जेहन का जुज नहीं बनता। यहां तक कि उस वक्त भी नहीं जबकि उनका दिल उसके हक व सदाकत होने की गवाही दे रहा हो। ऐसे लोग चाहे अपने को मानने वालों में शुमार करें मगर अल्लाह के यहां इनका नाम न मानने वालों में लिखा जाता है। क्योंकि उन्होंने हक को अपने गिरोह की निस्वत से जाना न कि अल्लाह की निस्वत से। ऐसे हक का इकार न करना जिसके हक होने पर आदमी के दिल ने गवाही दी हो अल्लाह के नजदीक बदतरीन जुर्म है। ऐसे लोग आखिरत में इतने जलील होंगे कि अल्लाह और उसकी तमाम मख़्बूक़ात उन पर लानत करेगी। अपने से बाहर जाहिर होने वाले हक का एतराफ न करना बजहिर अपने ईमान को बचाना है। मगर हकीकत में यह अपने ईमान को बर्बाद करना है। अल्लाह का मोमिन बंदा अल्लाह के मुसलसल फैजान में जीता है। फिर जो शख्स अपने को खुदपरस्ती और गिरोहपरस्ती के खोल में बंद कर ले उसके अंदर अल्लाह का फैजान किस रास्ते से दाखिल होगा। और अल्लाह के फैजान से महरूमी के बाद वह क्या चीज होगी जो उसके ईमान की परवरिश करे।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنْفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ
اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ۝ كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلالًا لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ
إِسْرَءِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنْزَلَ التَّوْرَةُ ۖ قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَةِ
فَاتْلُوهَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَمَنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ مِنْ بَعْدِ
ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ قُلْ صَدَقَ اللَّهُ ۖ فَاتَّبِعُوا أَمْرًا
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْبُشْرِكِينَ ۚ إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي
بِبَكَّةَ مُبْرَكًا وَهُدًى لِّلْعَالَمِينَ ۚ فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مِّمَّا يُزَكِّيهِمْ ۚ وَ
مَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا ۚ وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حُجَّةُ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ
سَبِيلًا ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ۝ قُلْ يَٰ أَهْلَ الْكِتَابِ
لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ يَٰ أَهْلَ

الْكِتَابِ لِمَ تَصَدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ تَبَخُّؤُهَا عِوََجًا وَأَنْتُمْ
شُهَدَاءُ ۚ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

तुम हरगिज नेकी के मतिव को नहीं पहुंच सकते जब तक तुम उन चीजों में से खर्च न करो जिन्हें तुम महबूब रखते हो। और जो चीज भी तुम खर्च करोगे उससे अल्लाह बाख़बर है। सब खाने की चीजें बनी इस्राईल के लिए हलाल थीं सिवाए उसके जो इस्राईल ने अपने ऊपर हराम कर लिया था इससे पहले कि तौरात उतरे। कहो कि तौरात लाओ और उसे पढ़ो, अगर तुम सच्चे हो। इसके बाद भी जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधें वही जालिम हैं। कहो अल्लाह ने सच कहा। अब इब्राहीम के दीन की पैरवी करो जो हनीफ था और वह शिर्क करने वाला न था। बेशक पहला घर जो लोगों के लिए बनाया गया वह वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और सारे जहान के लिए हियायत का मर्कज। इसमें खुली हुई निशानियां हैं, मकामे इब्राहीम है, जो इसमें दाखिल हो जाए वह मामूनी (सुरक्षित) है। और लोगों पर अल्लाह का यह हक है कि जो इस पर तक पहुंचने की ताकत रखता हो वह इसका हज करे और जो कोई मुक़िर हुआ तो अल्लाह तमाम दुनिया वालों से बेनियाज है। कहो ऐ अहले किताब तुम क्यों अल्लाह की निशानियों का इकार करते हो। हालांकि अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। कहो ऐ अहले किताब तुम ईमान लाने वालों को अल्लाह की राह से क्यों रोकते हो। तुम उसमें ऐब दूढ़ते हो। हालांकि तुम गवाह बनाए गए हो। और अल्लाह तुम्हारे कामों से बेख़बर नहीं। (92-99)

यहूद के उलमा ने खुद से जो फिक्ह बना रखी थी उसमें ऊंट और खरगोश का गोशत खाना हराम था जबकि इस्लाम में वह जाइज था। अब यहूद यह कहते कि इस्लाम अगर खुदा का उतारा हुआ दीन है तो इसमें भी हराम व हलाल के मसाइल वही क्यों नहीं जो पिछले जमाने में उतारे हुए खुदा के दीन में थे। इसी तरह वे कहते कि बैतुल मक्दिस अब तक तमाम नबियों की इबादत का किवला रहा है। फिर यह कैसे हो सकता है कि खुदा ऐसा दीन उतारे जिसमें इसे छोड़कर काबा को किवला करार दिया गया हो।

हक की दावत जब अपनी ख़ालिस शकल में उठती है तो उन लोगों पर इसकी जद पड़ने लगती है जो खुदा के दीन के नाम पर अपना एक दीन अवाम में राइज किए हुए हों। ऐसे लोग इसके मुख़ालिफ हो जाते हैं और लोगों को हक की दावत से फेरने के लिए तरह-तरह के एतराज निकालते हैं। उनके खुदासाज़्जा (स्वनिर्मित) दीन में दीन के असासायात (मूल आधारों) पर जोर बाकी नहीं रहता। इसके बजाए दीन के जुज्यात (अमैलिक चीजों) में मूशियाफिज़ों से दीनदारी का एक ज़हरी ढंवा बन जाता है। आदमी की हकीकी जिंगी कैसी ही हो, नेकी और तकवा का कमाल यह समझा जाने लगता है कि वह इस जाहिरि ढांचे का खूब एहतेमाम करे। वह 'खरगोश' को यह कहकर न खाए कि हमारे अकाबिर (पूर्ववर्ती पूर्वज) इससे बचते थे। दूसरी तरफ वह कितनी ही हराम चीजों को अपने लिए जाइज किए हुए हो। वह बैतुल मक्दिस की तरफ रुख करने में कुतुबनुमा की सूई की तरह सीधा हो जाना ज़रूरी समझता हो।

मगर सुबह व शाम की सरगर्मियों को खुदा रुखी बनाने में उसे दिलचस्पी न हो। मगर नेकी का दर्जा किसी को कुर्बानी से मिलता है न कि सस्ती जाहिरदारियों से। खुदा का नेक बंदा वह है जो अपनी मुहब्बत का हदिया अपने रब को पेश करे, जिसके लिए अल्लाह के मुन्नबले में दुनिया की कोई चीज अजीजतर न रहे। हक को मानने के लिए जब कब्र (प्रतिष्ठा) की कीमत देनी हो, अल्लाह के रास्ते में बढ़ने के लिए जब माल खर्च करना हो और बच्चों के मुस्तकबिल को खतरे में डालना पड़े, उस वक्त वह अल्लाह की खातिर सब कुछ गवारा कर ले। ऐसे नाजुक मौकों पर जो शख्स अपनी महबूब चीजों को देकर अल्लाह को ले ले वही नेक और खुदापरस्त बना।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَطِيعُوا فَرِيقًا مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُمُ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كُفْرِينَ ۖ وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنْتُمْ تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ آيَاتُ اللَّهِ وَفِيكُمْ رَسُولُهُ ۚ وَمَنْ يَعْتَصِمْ بِاللَّهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۚ وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا ۚ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا ۚ وَكُنْتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُم مِّنْهَا ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝

ऐ ईमान वालो अगर तुम अहले किताब में से एक गिरोह की बात मान लोगे तो वे तुम्हें ईमान के बाद फिर मुंकिर बना देंगे। और तुम किस तरह इंकार करोगे हालांकि तुम्हें अल्लाह की आयतें सुनाई जा रही हैं और तुम्हारे दर्मियान उसका रसूल मौजूद है। और जो शख्स अल्लाह को मजबूती से पकड़ेगा तो वह पहुंच गया सीधी राह पर। ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरना चाहिए। और तुम्हें मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुस्लिम हो। और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मजबूत पकड़ लो और फूट न डालो। और अल्लाह का यह इनाम अपने ऊपर याद रखो कि तुम एक-दूसरे के दुश्मन थे। फिर उसने तुम्हारे दिलों में उल्फत डाल दी। पस तुम उसके फल से भाई-भाई बन गए। और तुम आग के गढ़े के किनारे खड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें उससे बचा लिया। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी निशानियां बयान करता है ताकि तुम राह पाओ। (100-103)

दुनिया आजमाइश की जगह है। यहां हर वक्त यह खतरा है कि शैतान आदमी के ईमान को उचक ले जाए और फरिश्ते उसकी रूह इस हाल में कब्ज करें कि वह ईमान से खाली हो।

इसलिए जरूरी है कि आदमी हर वक्त बाहोश रहे, वह अपने आप पर निगरान बन जाए। ईमान से दूर होने की एक सूरत वह है जबकि दीन के अजजा (अंगों) में तब्दीली करके अहम को गैर-अहम और गैर-अहम को अहम बना दिया जाए। दीन की अस्ल रस्सी तकवा है। यानी अल्लाह से डरना और मरते दम तक अपने हर मामले में वही रवैया अपनाना जो अल्लाह के सामने जवाबदही के तसव्वुर (धारणा) से बनता हो, यही सिराते मुस्तकीम (सीधा-सच्चा रास्ता, सन्मार्ग) है। इससे हटना यह है कि 'तकवा' के बजाए, किसी और चीज को दीन का मदर समझ लिया जाए और उस पर इस तरह जोर दिया जाए जिस तरह खुदा के ख़ौफ और आखिरत की फिक्र पर दिया जाता है। जब भी दीन में इस किस्म की तब्दीली की जाती है तो इसका लाजिमी नतीजा यह होता है कि मिल्लत के दर्मियान इख्तेलाफ (मतभेद) पड़ जाता है। कोई एक जिम्नी (उप, पूक) चीज पर जोर देता है कोई दूसरी जिम्नी चीज पर, और इस तरह मिल्लत फिस्केफिस्केमें बंट कर रह जाती है। ऊपर वर्णित पहले से एक अल्लाह तवज्जोह का मर्कज बनता है और दूसरे से विविध मसाइल तवज्जोह के मर्कज बन जाते हैं। जब दीन में सारा जोर और ताकीद तकवा (अल्लाह से डरना) पर दिया जाए तो इससे आपस में इत्तेहाद वजूद में आता है और जब इसके सिवा दूसरी चीजों पर जोर दिया जाने लगे तो इससे आपसी इख्तेलाफ (मतभेद) की वह बुराई पैदा होती है जो लोगों को जहन्नम के किनारे पहुंचा देती है। किसी गिरोह के अंदर इख्तेलाफ दुनिया में भी अजब है और आखिरत में भी अजब।

इस्लाम से पहले मदीने में दो कबीले थे। औस और खजरज। ये दोनों अरब कबीले थे मगर वे आपस में लड़ते रहते थे। इन आपसी लड़ाइयों ने उन्हें कमजोर कर दिया था। जब वे इस्लाम के दायरे में दाखिल हुए तो उनकी लड़ाइयां खत्म हो गईं, वे भाई-भाई की तरह मिलकर रहने लगे।

इसकी वजह यह है कि गैर-इस्लाम में हर आदमी अपना वफादार रहता है और इस्लाम में सिर्फ एक अल्लाह का। जिस समाज में लोग अपने या अपने गिरोह के वफादार हों वहां कुदरती तौर पर कई वफादारियां वजूद में आती हैं। और कई वफादारियों के अमली नतीजे ही का नाम इख्तेलाफ और टकराव है। इसके बरअक्स जिस समाज में तमाम लोग एक खुदा के वफादार बन जाएं वहां सबका रुख एक मर्कज की तरफ हो जाता है, सब एक रस्सी से बंध जाते हैं। इस तरह आपसी इख्तेलाफ और टकराव के असबाब अपने आप ही खत्म हो जाते हैं।

وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۚ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاتَّخَذُوا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۚ يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ فَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۚ وَأَمَّا

الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وَجُوهُهُمْ فَبِئْسَ خَلِيلٌ وَنَّكَ
اللَّهِ نَتْلُوهُمَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِلْعَالَمِينَ ۝ وَلِلَّهِ مَا
فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝

और जरूर है कि तुममें एक गिरोह हो जो नेकी की तरफ बुलाए, भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके और ऐसे ही लोग कामयाब होंगे। और उन लोगों की तरह न हो जाना जो फिरकों में बंट गए और आपस में इस्तेलाफ (मतभेद) कर लिया बाद इसके कि उनके पास वाजेह हुक्म आ चुके थे। और उनके लिए बड़ा अजाब है। जिस दिन कुछ चेहरे रोशन होंगे और कुछ चेहरे काले होंगे, तो जिनके चेहरे काले होंगे उनसे कहा जाएगा क्या तुम अपने ईमान के बाद मुंकिर हो गए, तो अब चखो अजाब अपने कुफ्र के सबब से। और जिनके चेहरे रोशन होंगे वे अल्लाह की रहमत में होंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुम्हें हक के साथ सुना रहे हैं और अल्लाह जहान वालों पर जुल्म नहीं चाहता। और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है सब अल्लाह के लिए है और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ लौटाए जाएंगे। (104-109)

‘तुममें एक गिरोह हो जो नेकी की तरफ बुलाए, भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके’ यह इशार्द एक साथ दो बातों को बता रहा है। एक का तअल्लुक खवास (विशिष्टजनों) से है और दूसरी का तअल्लुक अवाम (जनसाधारण) से। उम्मत के खवास के अंदर यह रूह होनी चाहिए कि वे उम्मत के अंदर बुराई को बर्दाश्त न करें, वे नेकी और भलाई के लिए तड़पने वाले हों उनका यह इस्लाह का जज्बा उन्हें मजबूर करेगा कि वे लोगों के अहवाल से गैर-मुतअल्लिक न रहें वे अपने भाइयों को नेकी की राह पर चलने के लिए उकसाएँ और उन्हें बुराई से बचने की तलकीन करें।

ताहम इस अमल की कामयाबी के लिए उम्मत के अवाम के अंदर इताअत (आज्ञापालन) का जज्बा होना भी लाजिम जरूरी है। अवाम को चाहिए कि वे अपने खवास का एहतेराम करें। वे उनके कहने से चलें और जहां वे रोके वहां वे रुक जाएँ। वे अपने आपको अपनी दीनी जिम्मेदारियों के हवाले कर दें। जिस मुस्लिम गिरोह में खवास और अवाम का यह हाल हो वही फलाह पाने वाला गिरोह है। समअ और ताअत (आज्ञापालन और अनुशासन) की इस फिजा ही में किसी समाज के अंदर वे जैसाफ (गुण) जन्म लेते हैं जो उसे दुनिया में ताकतवर और आखिरत में नजातयाफता बनाते हैं।

खवास के अंदर इस रूह के जिंदा होने का यह फायदा है कि उनकी सारी तवज्जोह खैर, दूसरे अल्फाज में दीन की बुनियादों पर केंद्रित रहती है। अमौलिक मसाइल में मूशिगाफियां करने का उनके पास वक्त ही नहीं होता। जो लोग खुदा की अज्मतों के नकीब बनें और आखिरत की कामयाबी की बशारत (शुभ सूचना) देने वाले बन कर उठें उनके पास इतना वक्त ही नहीं होता कि जाहिरी मसाइल के जुज्यात (अमौलिक अंशों) में अपनी महारत दिखाएं। इसके साथ ‘अग्र बिल मारुफ व नही अनिल मुंकर’ (नेकियों का हुक्म देना, बुराइयों

से रोकना) का काम उन्हें हकीकी मसाइल के हल में लगा देता है। फर्ज और कयासी (काल्पनिक) मसाइल में जेहनी वरजिश करना उन्हें उसी तरह बेमअना और बेफायदा मालूम होने लगता है जिस तरह एक किसान को शतरंज का खेल।

अवाम को इस निजामे इताअत पर अपने को राजी करने का यह फायदा मिलता है कि वे टुकड़ों में बंटने से बच जाते हैं। एक हुक्म के तहत चलने के नतीजे में सब मिलकर एक हो जाते हैं। इतेहाद व इतेफाक (एकता-एकजुटता) उनकी आम सिफत बन जाती है और विला शुबह इत्तेहाद व इतेफाक से ज्यादा बड़ी ताकत इस दुनिया में कोई नहीं।

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ
الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَوْ آمَنَ أَهْلُ الْكِتَابِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ مِنْهُمْ
الْمُؤْمِنُونَ وَكَثَرَتِ الْفُسُقُونَ ۝ لَنْ يَضُرُّكُمْ إِلَّا أَدْنَىٰ وَّانْ يُقَاتِلُوكُمْ يَوَلُّوكُمُ
الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُونَ ۝ خَرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذَّلِيلَةُ إِنَّ مَا تَقِفُوا إِلَّا مَا حَبَلَ مِنْ
اللَّهِ وَحَبْلٍ مِنَ النَّاسِ وَبَاءُؤُا بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقِّ ذَٰلِكَ بِمَا
عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۝

अब तुम बेहतरीन गिरोह हो जिसे लोगों के लिए निकाला गया है। तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर अहले किताब भी ईमान लाते तो उनके लिए बेहतर होता। इनमें से कुछ ईमान वाले हैं और इनमें अक्सर नाफरमान हैं। वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते मगर कुछ सताना। और अगर वे तुमसे मुकाबला करेंगे तो तुम्हें पीट दिखाएँगे। फिर उन्हें मदद भी न पहुंचेगी और उन पर मुसल्लत कर दी गई जिल्लत चाहे वे कहीं भी पाए जाएँ, सिवा इसके कि अल्लाह की तरफ से कोई अहद (वचन) हो या लोगों की तरफ से कोई अहद हो और वे अल्लाह के ग़जब के मुस्तहिक हो गए और उन पर मुसल्लत कर दी गई पस्ती, यह इसलिए कि वे अल्लाह की निशानियों का इंकार करते रहे और उन्होंने पैगम्बरों को नाहक कत्ल किया। यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने नाफरमानी की और वे हद से निकल जाते थे। (110-112)

यहूद खुदाई दीन के हामिल (धारक) बनाए गए थे। मगर वे इसे लेकर खड़े न हो सके और इसे महफूज रखने में भी नाकाम रहे। इसके बाद अल्लाह ने मुहम्मद (सल्ल०) के जरिए अपना दीन उसकी सही सूरत में भेजा। अब मुस्लिम उम्मत लोगों के दर्मियान खुदाई रहनुमाई के लिए खड़ी हुई है। इस मंसब का तकाजा है कि यह उम्मत अल्लाह की सच्ची मोमिन बने। वह दुनिया को भलाई की तलकीन करे और उन चीजों से बाख़बर करे जो अल्लाह बेनज्मीक

बुराई की हैसियत रखती हैं। यह काम चूंकि खुदाई काम है इसलिए खुदा ने इसके साथ अपना तहफ्फुजाती निजाम (सुरक्षा तंत्र) भी शामिल कर दिया है। जो लोग इस कोरेखुदावंदी के लिए उठेंगे उनके लिए खुदा की जमानत है कि उनके विरोधी उन्हें मामूली अजियतों (यातनाओं) के सिवा कोई हकीकी नुस्नान न पहुंचा सकेगा। ताहम यहूद के अंजाम की सूरत में इसकी भी दाइमी (चिरस्थायी) मिसाल कयम कर दी गई कि इस हक के मंसब पर सरफराज किए जाने के बाद जो लोग बदअहदी (वचन भंग) करें उनकी सजा इसी दुनिया में इस तरह शुरू हो जाती है कि उन्हें जाती इज्जत और सरफराजी से महरूम कर दिया जाता है। खुदा की रहमतों से महरूमी की वजह से उनकी बेहिंसी (संवेदनहीनता) इतनी बढ़ जाती है कि वे उन लोगों की जान के दरपे हो जाते हैं जो उनकी कोताहियों की तरफ तवज्जोह दिलाने के लिए उठें।

‘यहूद पर जिल्लत मुसल्लत कर दी गयी इल्ला यह कि उन्हें अल्लाह की या बंदों की अमान हासिल हो।’ यह अल्लाह की एक खास सुन्नत है जिसका तअल्लुक उस कौम से है जिसको खुदा ने अपने दीन का नुमाइंदा बनाया हो। दीन की सच्ची नुमाइंदगी ऐसी कौम के लिए ग़लबे (वर्चस्व) की जमानत होती है। और दीन की सच्ची नुमाइंदगी से हटना उसे मौजूदा दुनिया में मग़लूब (परास्त) करने का सबब बन जाता है। ऐसी कौम अगर खुदा के दीन की नुमाइंदगी से हट जाए तो मौजूदा दुनिया में कभी वह जाती ग़लबा हासिल नहीं कर सकती, किसी दर्जे में अगर कभी उसे इख़्तियार मिल जाए तो वह अपने अलावा किसी दूसरे के बल पर होगा या तो इसलिए कि उसे किसी खुदाई हुक्मत की तरफ से अमान दिया गया है या इसलिए कि किसी ग़ैर कौम की हुक्मत ने उसे अपनी हिमायत व सरपरस्ती में ले लिया है।

कई वैम जिल्लत की इस सज की मुत्तहिक उस वक्त बनती है जबकि उसका यह हाल हो जाए कि वह खुदाई निशानियों का इंकार करने लगे। निशानियों का इंकार सच्ची दलीलों का इंकार है। हक हमेशा दलीलों के रूप में जाहिर होता है। इसलिए जो शख्स सच्ची दलील का इंकार करता है वह खुद खुदा का इंकार कर रहा है।

لَيْسُوا سَوَاءً ۚ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَائِمَةٌ يَتَّبِعُونَ آيَاتِ اللَّهِ أَنْاءَ الْيَلِّ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ۖ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَهُمْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَكْفُرُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُكَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَأُولَئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ ۖ وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوهُ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَكِنْ تَغْنَى عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۖ مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْ ۖ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ

أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ

सब अहले किताब एक जैसे नहीं। इनमें एक गिरोह अहद पर कायम है। वे रातों को अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और वे सज्दा करते हैं। वे अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हैं, और भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नेक कामों में दौड़ते हैं। ये सालेह (नेक) लोग हैं जो नेकी भी वे करेंगे उसकी नाक़्दी न की जाएगी और अल्लाह परहेजगारों को खूब जानता है। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया तो अल्लाह के मुकाबले में उनके माल और औलाद उनके कुछ काम न आएंगे। और वे लोग दोख़्ख़ वाले हैं वे इसमें हमेशा रहेंगे। वे इस दुनिया की जिंदगी में जो कुछ खर्च करते हैं उसकी मिसाल उस हवा की सी है जिसमें पाला हो और वह उन लोगों की खेती पर चले जिन्होंने अपने ऊपर जुल्म किया है फिर वह उसको बर्बाद कर दे। अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे खुद अपनी जानों पर जुल्म करते हैं। (113-117)

नेकियों में सबकत (कल्याण कार्यों में स्पधी) से मुराद इस आयत में अहले किताब मोमिनों का यह अमल है कि मुहम्मद (सल्ल०) की जवान से जब खुदाई सच्चाई का एलान हुआ तो उन्होंने फ़ैरन उसे पहचान लिया और उसकी तरफ आजिजाना दौड़ पड़े। उस वक्त एक तरफ हजरत मूसा का दीन था जो तारीख़ी अम्मत और रियायती तक्द्दुस (पावनता) के जोर पर कायम था। दूसरी तरफ मुहम्मद (सल्ल०) का दीन था जिसकी पुस्त पर अभी तक सिर्फ दलील की तावत् थी, तारीख़ी अम्मत और रियायती तक्द्दुस का वजम अभी तक उसके साथ शामिल नहीं हुआ था। अपने दीन और वक्त के नबी के दीन में यह फर्क वक्त के नबी के दीन को मानने में जबरदस्त रुकावट था। मगर वे इस रुकावट को पार करने में कामयाब हो गए और बढ़कर वक्त के नबी के दीन को मान लिया।

माल व औलाद की मुहब्बत आदमी को कुर्बानी वाले दीन पर आने नहीं देती। अलबत्ता नुमाइशी किस्म के आमांल का मुजाहिदा करके वह समझता है कि वह खुदा के दीन पर कायम है। मगर जिस तरह सख्त ठंडी हवा अचानक पूरी खेती को बर्बाद कर देती है इसी तरह विग्रामत का तूफ़ान उनके नुमाइशी आमांल को बेकीमत करके रख देगा। यहूद में सिर्फ कुछ लोग थे जो मुहम्मद (सल्ल०) पर ईमान लाए थे। ‘उम्मत कायमा’ की हैसियत से इनका मुस्तक़िल जिक्र करना जाहिर करता है कि चंद आदमी अगर अल्लाह से डरने वाले हों तो वे भीड़ के मुन्नबले में अल्लाह की नज़र में ज्यादा कीमती होते हैं।

नजात के लिए सिर्फ यह काफी नहीं कि किसी पैगम्बर के नाम पर जो नस्ली उम्मत बन गयी है आदमी उस उम्मत में शामिल रहे। बल्कि अस्ल जरूरत यह है कि वह अहद का पाबंद बने। अहद से मुराद ईमान है। ईमान बंदे और खुदा के दर्मियान एक अहद है। ईमान लाकर बंदा अपने आपको इसका पाबंद करता है कि वह अपने आपको पूरी तरह अल्लाह का वफ़ादार और इताअतगुजर बनाएगा। दूसरे लफ्ज़ों में गिरोही निस्वत नहीं बल्कि जाती अमल वह चीज है जो किसी आदमी को खुदा की रहमत और बख़्शिाश का मुस्तहिक बनाती है।

इस अहद में तमाम ईमानी जिम्मेदारियां शामिल हैं। तंहाइयों में अल्लाह की याद, अल्लाह की इबादतगुजारी, आखिरत को सामने रख कर जिंदगी गुजारना, अपने आसपास जो

مِنْ قَوْمِهِمْ هَذَا يُجِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ۝
وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُمْ بِهِ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ
عِنْدَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ لِيَقْطَعَ طَرَقًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ
فَيَنْقَلِبُوا خَائِبِينَ ۝ لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ
أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ۝ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

जब तुम सुबह को अपने घर से निकले और मुसलमानों को जंग के मकामात पर तैनात किया और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। जब तुममें से दो जमाअतों ने इरादा किया कि हिम्मत हार दें और अल्लाह इन दोनों जमाअतों पर मददगार था। और मुसलमानों को चाहिए कि अल्लाह पर ही भरोसा करें। और अल्लाह तुम्हारी मदद कर चुका है बर में जबकि तुम कमजोर थे। पस अल्लाह से डरो ताकि तुम शुक्रगुजार रहो। जब तुम मुसलमानों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए काफी नहीं कि तुम्हारा रब तीन हजार फरिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद करे। अगर तुम सब करो और अल्लाह से डरो और दुश्मन तुम्हारे ऊपर अचानक आ पहुंचे तो तुम्हारा रब पांच हजार निशान किए हुए फरिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा। और यह अल्लाह ने इसलिए किया ताकि तुम्हारे लिए खुशखबरी हो और तुम्हारे दिल इससे मुतमइन हो जाएं और मदद सिर्फ अल्लाह ही की तरफ से है जो जबरदस्त है, हिक्मत वाला है, ताकि अल्लाह मुँकियों के एक हिस्से को काट दे या उन्हें जलील कर दे कि वे नाकाम लौट जाएं। तुम्हें इस मामले में कोई दखल नहीं। अल्लाह इनकी तौबा कुबूल करे या उन्हें अजाब दे, क्योंकि वे जालिम हैं। और अल्लाह ही के इस्तिथार में है जो कुछ आसमान में है और जो कुछ जमीन में है। वह जिसे चाहे बरखा दे और जिसे चाहे अजाब दे और अल्लाह गफूर व रहीम है। (121-129)

ये आयतें उहुद की जंग (3 हिजरी) के बाद नाजिल हुई। उहुद की जंग में दुश्मनों की तादात तीन हजार थी। मुसलमानों की तरफ से एक हजार आदमी मुकाबले के लिए निकले थे। मगर रास्ते में अब्दुल्लाह बिन उबइ अपने तीन सौ साथियों को लेकर अलग हो गया। इस वाक्ये से कुछ अंसारी (मूल मदीना वासी) मुसलमानों में परत हिम्मती पैदा हो गयी मगर अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) ने याद दिलाया कि हम अपने भरोसे पर नहीं बल्कि अल्लाह के भरोसे पर निकले हैं। तो अल्लाह ने इस हकीकत को समझने के लिए इन मुसलमानों के सीने खोल दिये। मोमिन के अंदर अगर हालात की शिद्दत से वक्ती कमजोरी पैदा हो जाए तो ऐसे वक्त में अल्लाह उसे तंहा छोड़ नहीं देता बल्कि उसका मददगार बनकर दुबारा उसे ईमान की हालत पर जमा देता है। अल्लाह की यही मदद इज्तिमाई (सामूहिक) सतह पर इस तरह हुई कि उहुद की

लड़ाई में मुसलमानों की एक कमजोरी से फायदा उठा कर दुश्मन उनके ऊपर गालिब आ गये। अब दुश्मन फौज के लिए पूरा मौका था कि वह शिकस्त के बाद मुसलमानों की ताकत को पूरी तरह कुचल डाले। मगर फौजी तारीख का यह हैतअोज वाक्या है कि दुश्मन फौज फतह के बावजूद जंग का मैदान छोड़कर वापस चली गई। यह अल्लाह की खुसूसी मदद थी कि उसने दुश्मन के रूख को 'मदीना' के बजाए 'मक्का' की तरफ मोड़ दिया। यहां तक कि जो मसालूब (परास्त) थे उन्होंने ने गालिब आने वालों का पीछा किया।

मोमिन का मिजाज यह होना चाहिए कि वह तादाद या असबाब (संसाधनों) की कमी से न घबराए। तादाद कम हो तो यकीन करे कि अल्लाह अपने फरिश्तों को भेजकर तादाद की कमी पूरी कर देगा। सामान कम हो तो वह भरोसा रखे कि अल्लाह अपनी तरफ से ऐसी सूरतें पैदा करेगा जो उसके लिए सामान की कमी की तलाफी बन जाए। कामयाबी का दारोमदार माददी असबाब पर नहीं बल्कि सब्र और तकवा पर है। जो लोग अल्लाह से डरें और अल्लाह पर भरोसा रखें उनके हक में अल्लाह की मदद की दो सूरतें हैं। एक, उनके विरोधियों के एक हिस्से को काट लेना। दूसरे, विरोधियों को शिकस्त दे कर उन्हें परास्त करना। पहली कामयाबी दावत की राह से आती है। प्रतिपक्ष के जिन लोगों में अल्लाह कुछ जिंदगी पाता है उनके ऊपर दीन की सच्चाई को रोशन कर देता है, वे बातिल (असत्य) की सफ को छोड़कर हक की सफ में शामिल हो जाते हैं और इस तरह प्रतिपक्ष की कमजोरी और अहले ईमान की कुव्वत का सबब बनते हैं। दूसरी सूरत में अल्लाह अहले ईमान को कुव्वत और होसला देता है और उनकी खुसूसी मदद करके उन्हें प्रतिपक्ष पर गालिब कर देता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُّضَاعَفَةً وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۖ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ ۖ وَمَن يَغْفِرُ اللَّهُ ذُنُوبٌ إِلَّا اللَّهَ ۖ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَىٰ مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ أُولَٰئِكَ جَزَاءُ هُم مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ۝ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۖ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ۝ هَذَا بَيِّنٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۝

हर हाल में उसे दूसरे की तरफ से मुश्किलात और रुकावटें पेश आती हैं। इन मुश्किलात और रुकावटों का मुकाबला करना जिहाद है और हर हाल में अपने इकरार पर जमे रहने का नाम सन्न। जो लोग इस जिहाद और सन्न का सुबूत दें वही वे लोग हैं जो जन्नत की आबादकारी के काबिल ठहरे। साथ ही, इसी से दुनिया की सरबुलंदी का रास्ता खुलता है। 'जिहाद' उनके मुसलसल और मुकम्मल अमल की जमानत और 'सन्न' इस बात की जमानत है कि वे कभी कोई जज्बाती इकदाम नहीं करेंगे। और ये दो बातें जिस गिरोह में पैदा हो जाएं उसके लिए खुदा की इस दुनिया में कामयाबी इतनी ही यकीनी हो जाती है जितनी मुवाफिक जमीन में एक बीज का बारआवर होना।

एक शख्स अल्लाह के रास्ते पर चलने का इरादा करता है तो दूसरों की तरफ से तरह-तरह के मसाइल पेश आते हैं। ये मसाइल कभी उसे बेयकीनी की कैफियत में मुत्तला करते हैं कभी मस्तेहतपरस्ती का सबक देते हैं। कभी उसके अंदर नकारात्मक मानसिकता उभारते हैं कभी खुदा के ख़ालिस दीन के मुकाबले में ऐसे अवामी दीन का नुस्खा बताते हैं जो लोगों के लिए काबिले कुबूल हो। यही मौजूदा दुनिया में आदमी का इस्तेहान है। इन अवसरों पर आदमी जो प्रतिक्रिया जाहिर करे उससे मालूम होता है कि वह अपने ईमान के इकरार में सच्चा था या झूठा। अगर उसका अमल उसके ईमान के दावे के मुताबिक हो तो वह सच्चा है और अगर इसके ख़िलाफ हो तो झूठा। शहीद (अल्लाह का गवाह) बनना इस सफर की आखिरी इंतहा है। अल्लाह का एक बंदा लोगों के दर्मियान हक का दाजी (आहवानकती) बन कर खड़ा हुआ। उसका हाल यह था कि वह जिस चीज की तरफ बुला रहा था, खुद उस पर पूरी तरह कायम था। लोगों ने उसे हकीर (तुच्छ) समझा मगर उसने किसी की परवाह नहीं की। उस पर मुश्किलात आई मगर वह उसे अपने मकाम से हटाने में कामयाब न हो सकी। वह न कमजोर पड़ा और न मनफ्री नफिसयात (नकारात्मक मानसिकता) का शिकार हुआ। यहां तक कि उसके जान व माल की बाजी लग गई फिर भी वह अपने दावती मौफिक से न हटा। यह इस्तेहान हद दर्जा तूफानी इस्तेहान है। मगर इससे गुजरने के बाद ही वह ईसान बनता है जिसे अल्लाह अपने बंदों के ऊपर अपना गवाह करार दे। आदमी जब हर किस्म के हालात के बावजूद अपने दावती अमल पर कायम रहता है तो वह अपने पैगाम के हक में अपने यकीन का सुबूत देता है। साथ ही यह कि वह जिस बात की ख़बर दे रहा है वह एक हद दर्जा संजीदा मामला है न कि कोई सरसरी मामला।

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِنْ نَكُنَّ نَتَقَلِّبُكُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَىٰ عَقْبَيْهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ۝ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كَتَبْنَا مُوَجَّلَاءُ وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَنْ يُرِدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا ۝ وَسَنَجْزِي الشَّاكِرِينَ ۝ وَكَأَيْنَ مِنْ شَيْءٍ قَتَلْنَا مَعَهُ رَيْثُونًا كَثِيرًا قَمَا وَهْنُوا

لِمَا أَصَابَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الصَّابِرِينَ ۝ وَمَا كَانَ قَوْلُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَسِرَافِنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝ قَالَتْ لَهُمْ أَلَا اللَّهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنُ ثَوَابِ الْآخِرَةِ ۝ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

मुहम्मद वस एक रसूल हैं। इनसे पहले भी रसूल गुजर चुके हैं। फिर क्या अगर वह मर जाएं या कत्ल कर दिए जाएं तो तुम उल्टे पैर फिर जाओगे। और जो शख्स फिर जाए वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा और अल्लाह शुक्रगुजारों को बदला देगा। और कोई जान मर नहीं सकती बग़ैर अल्लाह के हुक्म के। अल्लाह का लिखा हुआ वादा है। और जो शख्स दुनिया का फायदा चाहता है उसे हम दुनिया में से दे देते हैं और जो आखिरत का फायदा चाहता है उसे हम आखिरत में से दे देते हैं। और शुक्र करने वालों को हम उनका बदला जरूर अता करेंगे। और कितने नबी हैं जिनके साथ होकर बहुत से अल्लाह वालों ने जंग की। अल्लाह की राह में जो मुसीबतें उन पर पड़ीं उनसे न वे पस्तहिम्मत हुए न उन्होंने कमजोरी दिखाई। और न वे दबे। और अल्लाह सन्न करने वालों को दोस्त रखता है। उनकी जवान से इसके सिवा कुछ और न निकला कि ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारे काम में हमसे जो ज्यादाती हुई उसे माफ़ फरमा और हमें साबितकदम रख और मुँक़र कैम के मुक़बले में हमारी मदद फरमा। पस अल्लाह ने उन्हें दुनिया का बदला भी दिया और आखिरत का अच्छा बदला भी। और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है। (144-148)

उहद की जंग में यह ख़बर मशहूर हो गई कि मुहम्मद (सल्ल०) शहीद हो गए। उस वक्त कुछ मुसलमानों में पस्तहिम्मती पैदा हो गई। मगर अल्लाह के हकीरी बंदे वे हैं जिनकी दीनदारी किसी शख्स के ऊपर कायम न हो। अल्लाह को वह दीनदारी मल्लूब है जबकि बंदा अपनी सारी रूह और सारी जान के साथ सिर्फ एक अल्लाह के साथ जुड़ जाए। मोमिन वह है जो इस्लाम को उसकी उसूल सदाकत की बुनियाद पर पकड़े न कि किसी शख्सियत के सहारे की बिना पर। जो शख्स इस तरह इस्लाम को पाता है उसके लिए इस्लाम एक ऐसी नेमत बन जाता है जिसके लिए उसकी रूह के अंदर शुक्र का दरिया बहने लगे। वह दुनिया के बजाए आखिरत को सब कुछ समझने लगता है। ज़िंदगी उसके लिए एक ऐसी नापायदार चीज बन जाती है जो किसी भी लम्हे मौत से दोचार होने वाली हो। वह कायनात को एक ऐसे खुदाई कारख़ाने की हैसियत से देख लेता है जहां हर वाक्या खुदा के इज्ज के तहत हो रहा है। जहां देने वाला भी वही है और छीनने वाला भी वही है। ऐसे ही लोग अल्लाह की राह के सच्चे मुसाफिर हैं। अल्लाह अगर चाहता है तो दुनिया की इज्जत व इक्तेदार (सत्ता) भी उन्हें दे देता है और आखिरत के अजीम और अबदी (चिरस्थायी) इनामात तो सिर्फ इन्हीं के लिए हैं। ताहम यह दर्जा किसी को सिर्फ उस वक्त मिलता है जबकि वह हर किस्म के इस्तेहान में पूरा उतरे। उसके जाहिरी सहारे खो जाएं तब भी वह अल्लाह पर अपनी नजरें

जमाए रहे। जान का खतरा भी उसे पस्तहिम्मत न कर सके। दुनिया बर्बाद हो रही हो तब भी वह पीछे न हटे। उसके सामने कोई नुक्सान आए तो उसे वह अपनी कोताही का नतीजा समझ कर अल्लाह से माफी मांगे। कोई फायदा मिले तो उसे खुदा का इनाम समझ कर शुक्र अदा करे। मोमिन का यह इस्तेहान जो हर रोज लिया जा रहा है कभी उन हिला देने वाले मकामात तक भी पहुंच जाता है जहाँ जिंदगी की बाजी लगी हुई हो। ऐसे मौकों पर भी जब आदमी बुजदिली न दिखाए, न वह बेयकीनी में मुब्तिला हो और न किसी हाल में दीन के दुश्मनों के सामने हार मानने के लिए तैयार हो तो गोया वह इस्तेहान की आखिरी जांच में भी पूरा उतरा। ऐसे ही लोगों के लिए हर किस्म की सरफराजियाँ हैं। तारीख में वही लोग सबसे ज्यादा कीमती हैं जिन्होंने इस तरह अल्लाह को पाया हो और अपने आपको इस तरह अल्लाह के मंसूबे में शामिल कर दिया हो। नाजुक मौकों पर अहले ईमान का आपस में मुतहिद रहना और सब्र के साथ हक पर जमे रहना वे चीजें हैं जो अहले ईमान को अल्लाह की नुसरत का मुस्तहिक बनाती हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا يُرِيدُوا عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا
خُسْرَيْنِ ۚ بَلِ اللَّهُ مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ ۚ سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ
كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهِ سُلْطَانٌ ۚ وَمَا لَهُمْ الشَّارُ
وَبِئْسَ مَثْوَى الظَّالِمِينَ ۚ وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَعْدَهُ إِذْ تَحُسُّونَهُمْ
بِإِذْنِهِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فِشَلْتُمْ وَتَوَّعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ
مَا أَرَكُمُ أَن تَخْجُون مِّنْكُمْ مَّن يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّن يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۚ ثُمَّ
حَرَقَكُمُ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۚ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى
الْمُؤْمِنِينَ ۚ إِذْ تَصْعَدُونَ وَلَا تَلُونَ عَلَىٰ أَحَدٍ ۚ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي
أُخْرَاكُمْ ۚ فَأُثَابِكُمْ غَمًّا نَّعِيمٌ ۚ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا
أَصَابَكُمْ ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۚ

ऐ ईमान वालो अगर तुम मुंकिरों की बात मानोगे तो वे तुम्हें उल्टे पैरों फेर देंगे फिर तुम नाकाम होकर रह जाओगे। बल्कि अल्लाह तुम्हारा मददगार है और वह सबसे बेहतर मदद करने वाला है। हम मुंकिरों के दिलों में तुम्हारा रौब डाल देंगे क्योंकि उन्होंने ऐसी चीज को अल्लाह का शरीक ठहराया जिसके हक में अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी। उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरी जगह है जालिमों के लिए। और अल्लाह ने तुमसे अपने वादे को सच्चा कर दिखाया जबकि तुम उन्हें अल्लाह के हुक्म से कल्ल कर रहे थे। यहां तक कि जब तुम खुद कमजोर पड़ गए और तुमने काम में झगड़ा किया और

तुम कहने पर न चले जबकि अल्लाह ने तुम्हें वह चीज दिखा दी थी जो कि तुम चाहते थे। तुममें से कुछ दुनिया चाहते थे और तुममें से कुछ आखिरत चाहते थे। फिर अल्लाह ने तुम्हारा रुख उनसे फेर दिया ताकि तुम्हारी आजमाइश करे और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया और अल्लाह ईमान वालो के हक में बड़ा फल्ल वाला है। जब तुम चढ़े जा रहे थे और मुड़कर भी किसी को न देखते थे और रसूल तुम्हें तुम्हारे पीछे से पुकार रहा था। फिर अल्लाह ने तुम्हें ग़म पर ग़म दिया ताकि तुम रंजीदा न हो उस चीज पर जो तुम्हारे हाथ से चूक गई और न उस मुसीबत पर जो तुम पर पड़े। और अल्लाह ख़बरदार है जो कुछ तुम करते हो। (149-153)

उहुद की जंग में वक्ती शिकस्त से विरोधियों को मौका मिला। उन्होंने कहना शुरू किया कि पैगम्बर और उनके साथियों का मामला कोई खुदाई मामला नहीं है। कुछ लोग महज बचकाने जोश के तहत उठ खड़े हुए हैं और अपने जोश की सजा भुगत रहे हैं। अगर यह खुदाई मामला होता तो उन्हें अपने दुश्मनों के मुकाबले में शिकस्त क्यों होती। मगर इस तरह के वाक्यात चाहे बजाहिर मुसलमानों की गलती से पेश आए, वे हर हाल में खुदा का इस्तेहान होते हैं। दुनिया की जिंदगी में 'उहुद' का हादसा पेश आना जरूरी है ताकि यह खुल जाए कि कौन अल्लाह पर एतमाद करने वाला था और कौन फिसल जाने वाला। इस किस्म के वाक्यात मोमिन के लिए दोतरफ़ आजमाइश होते हैं एक यह कि वह लोगों की मुख़ालिफ़ना बातों से मुतअस्सिर न हो। दूसरे यह कि वह वक्ती तकलीफ से घबरा न जाए। और हर हाल में सावितकदम रहे।

मुश्किल अवसरों पर अहले ईमान अगर जमे रह जाएं तो बहुत जल्द ऐसा होता है कि खुदा की रोब की मदद नाजिल होती है। जो शख्स या गिरोह अल्लाह के सच्चे दीन के सिवा किसी और चीज के ऊपर खड़ा हुआ है वह हकीकत में बेबुनियाद जमीन पर खड़ा हुआ है। क्योंकि अल्लाह की उतारी हुई सच्चाई के सिवा इस दुनिया में कोई और हकीकी बुनियाद नहीं। इसलिए जब कोई अल्लाह के दीन के ऊपर खड़ा हो और दृढ़ता का सबूत दे तो जल्द ही ऐसा होता है कि अहले बातिल (असत्यवादियों) में बिखराव शुरू हो जाता है। दलीलों के एतबार से उनका बेबुनियाद होना उनके लोगों में बेयकीनी की कैफियत पैदा कर देता है। वे अपने को कम और अहले ईमान को ज्यादा देखने लगते हैं। उनकी जेहनी शिकस्त अंततः अमली शिकस्त तक पहुंचती है। वे अहले हक के मुकाबले में नाकाम व नामुराद होकर रह जाते हैं।

मुसलमानों के लिए शिकस्त और कमजोरी का सबब हमेशा एक होता है। और वह है तनाजो फ़िल अम्र। यानी राय के इख़्तेलाफ के सबब अलग-अलग हो जाना। इंसानों के दर्मियान इत्तेफाक कभी इस मअना में नहीं हो सकता कि सबकी राय बिल्कुल एक हो जाएं। इसलिए किसी गिरोह में इत्तेहाद की सूरत सिर्फ यह है कि राय में भिन्नता के बावजूद अमल में एकरूपता हो। जब तक किसी गिरोह में यह बुलंदनजरी पाई जाएगी तो वह मुतहिद और इसके नतीजे में ताकतवर रहेगा। और जब राय में विभेद करके लोग अलग-अलग होने लगे तो इसके बाद लाजिमन कमजोरी और इसके नतीजे में शिकस्त होगी।

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُم مِّن بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا يَغْشَى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ
وَطَآئِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ
يَقُولُونَ هَل لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِن شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلّهِ يُخْفُونَ
فِي أَنفُسِهِمْ مَا لَا يَبْدُونَ لَكَ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَّا
قَتَلْنَا هَهُنَا قُلْ لَوْ كُنْتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ
إِلَى مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيَسَوِّخَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِثْقَالَ حَبَّةٍ خَيْثُ
إِنَّمَا اسْتَكْرَمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضٍ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

154-155

फिर अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर गम के बाद इस्मीनान उतारा यानी जंघ कि इसका तुममें से एक जमाअत पर गलबा हो रहा था और एक जमाअत वह थी कि उसे अपनी जानों कि फिक्क पड़े हुई थी। वे अल्लाह के बारे में हकीकत के खिलाफ ख्यालात, जाहिलियत के ख्यालात कायम कर रहे थे। वे कहते थे कि क्या हमारा भी कुछ इस्तियार है। कहो सारा मामला अल्लाह के इस्तियार में है। वे अपने दिलों में ऐसी बात छुपाए हुए हैं जो तुम पर जाहिर नहीं करते। वे कहते हैं कि अगर इस मामले में कुछ हमारा भी दखल होता तो हम यहां न मारे जाते। कहो अगर तुम अपने घरों में होते तब भी जिनका कत्ल होना लिख गया था वे अपनी कत्लगाहों की तरफ निकल पड़ते। यह इसलिए हुआ कि अल्लाह को आजमाना था जो कुछ तुम्हारे सीनों में है और निखारना था जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह जानता है सीनों वाली बात को। तुममें से जो लोग फिर गए थे उस दिन कि दोनों गिरोहों में मुठभेड़ हुई इन्हें शैतान ने इनके कुछ आमाल के सबब से फिसला दिया था। अल्लाह ने इन्हें माफ कर दिया। बेशक अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। (154-155)

जिंदगी के मोर्चे में सबसे ज्यादा अहमियत इस बात की होती है कि आदमी का चैन उससे रुख़त न हो। वह पूरी यकसूई के साथ अपना मंसूबा बनाने के काबिल रहे। अल्लाह पर भरोसे की वजह से अहले ईमान को यह चीज कमाल दर्जे में हासिल होती है। यहां तक कि हिला देने वाले मोर्कों पर जबकि लोगों की नींद उड़ जाती है, उस वक्त भी वे इस काबिल रहते हैं कि एक नींद लेकर दुबारा ताजा दम हो सकें। उहुद के मौके पर इसका एक प्रदर्शन इस तरह हुआ कि शिकस्त के बाद सख़्ततरीन हालात के बावजूद वे सो सके और अगले दिन

हमरा-उल-असद तक दुश्मन का पीछा किया जो मदीना से आठ मील की दूरी पर है। इसके नतीजे में फातेह (विजयी) दुश्मन मरऊब होकर मक्का वापस चला गया। यह सच्चे अहले ईमान का हाल है। मगर जो लोग पूरे मअनों में अल्लाह को अपना वली (सहायक) और सरपरस्त बनाए हुए न हों, उन्हें हर तरफ बस अपनी जान का ख़तरा नजर आता है। दीन की फिक्क से ख़ाली लोग अपनी जात की फिक्क के पड़े रहते हैं वे अल्लाह की तरफ से इस्मीनान की मदद में से अपना हिस्सा नहीं पाते।

उहुद के मौके पर अबुल्लाह बिन उबी की राय थी कि मदीना में रहकर जंग की जाए। मगर अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) मुख़्लिस (निष्ठावान) मुसलमानों के मश्वरे पर बाहर निकले और उहुद पहाड़ के दामन में मुकाबला किया। दर्रे पर तैनात दस्ते की ग़लती से जब शिकस्त हुई तो उन लोगों को मौका मिला। उन्होंने कहना शुरू किया कि अगर हमारी बात मानी गई होती और मदीना में रहकर लड़ते तो इस बर्बादी की नौबत नहीं आती। मगर मौत ख़ुदा की तरफ से है और वहीं आकर रहती है जहां वह किसी के लिए लिखी हुई है। एहतियाती तदबीरों किसी को मौत से बचा नहीं सकतीं। इस तरह के वाक़ेआत, चाहे बजाहिर इनका जो सबब भी नजर आए, वे अल्लाह की तरफ से होते हैं। ताकि अल्लाह के सच्चे बंदे अल्लाह की तरफ रुजूअ करके और भी ज्यादा रहमतों के मुस्तहक़ बनें। और जो सच्चे नहीं हैं उनकी हकीकत भी खुलकर सामने आ जाए।

उहुद के दर्रे पर जो पचास तीरअंदाज तैनात थे जब उन्होंने देखा कि मुसलमानों को फतह हो गई है तो इनमें से कुछ लोगों ने इसरार किया कि चलकर माले गनीमत लूटें। मगर अबुल्लाह बिन जुवैर और उनके कुछ साथियों ने कहा नहीं। हमें हर हाल में यहीं रहना है क्योंकि यही अल्लाह के रसूल का हुक्म है। अंततः ग्यारह को छोड़कर बाकी लोग चले गए। आपसी मतभेद की इस कमजोरी से शैतान ने अंदर दाख़िल होने का रास्ता पा लिया। ताहम जब उन्होंने अपनी ग़लती का एतराफ किया तो अल्लाह ने उन्हें माफ कर दिया और इब्तिदाई नुक़सान के बाद उनकी मदद इस तरह की कि दुश्मनों के दिल में रौब डालकर इन्हें वापस कर दिया। हालांकि उस वक्त वे मदीना से सिर्फ कुछ मील की दूरी पर रह गए थे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا الْإِحْوَآنُهُمْ إِذْ ضَرْبُوا فِي
الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غُرَىٰ لِّوَكَاِلُوا عِنْدَنَا مَا تَأْتُوا وَمَا تَقُولُوا لِيَبْعَلَ اللَّهُ ذَلِكِ
حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ يُخَيِّ وَيُمَيِّتُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَلَكِنْ
قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا
يَجْمَعُونَ ۝ وَلَكِنْ مُّسْتُمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ۝ فِيمَا رَحْمَةٍ مِّنَ
اللَّهِ لِنْتَ لَهُمْ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ ۝
فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ

عَلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُؤْمِنِينَ ۖ إِن يَصْرُكُمْ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ
وَأَن يَخُذْ لَكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي يَصْرُكُمْ مِّن بَعْدِهِ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

ऐ ईमान वालो तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने इंकार किया। वे अपने भाइयों के बारे में कहते हैं, जबकि वे सफर या जिहाद में निकलते हैं और उन्हें मौत आ जाती है, कि अगर वे हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते। ताकि अल्लाह इसे उनके दिलों में हसरत का सबब बना दे। और अल्लाह ही जिलाता है और मारता है, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की मफिरत और रहमत उससे बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं। और तुम मर गए या मारे गए बहरहाल तुम अल्लाह ही के पास जमा किए जाओगे। यह अल्लाह की बड़ी रहमत है कि तुम उनके लिए नर्म हो। अगर तुम तुंदखू (कठोर) और सज़ा दिल होते तो ये लोग तुम्हारे पास से भाग जाते। पस इन्हें माफ कर दो और इनके लिए मफिरत मांगो और मामलात में इनसे मश्वरा लो। फिर जब फैसला कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। बेशक अल्लाह उनसे मुहब्बत करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं। अगर अल्लाह तुम्हारा साथ दे तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर वह तुम्हारा साथ छोड़ दे तो उसके बाद कौन है जो तुम्हारी मदद करे। और अल्लाह ही के ऊपर भरोसा करना चाहिए ईमान वालों को। (156-160)

इस दुनिया में जो कुछ होता है अल्लाह के हुक्म से होता है। ताहम यहां हर चीज पर असबाब का पर्दा डाल दिया गया है। वाक़ेआत बज़हिर असबाब के तहत हेंते हुए नज़र आते हैं मगर हकीकत में वे अल्लाह के हुक्म के तहत हो रहे हैं। आदमी का इम्तेहान यह है कि वह जाहिरी असबाब में न अटके बल्कि इनके पीछे काम करने वाली खुदाई कुदरत को देख ले। ग़ैर-मोमिन वह है जो असबाब में खो जाए और मोमिन वह है जो असबाब से गुजर कर अस्त हकीकत को पा ले। एक शख्स मोमिन होने का दावेदार हो मगर इसी के साथ उसका हाल यह हो कि जिंदगी व मौत और कामयाबी व नाकामी को वह तदवीरों का नतीजा समझता हो तो उसका ईमान का दावा मोअतबर नहीं। ग़ैर-मोमिन के साथ कोई हादसा पेश आए तो वह इस ग़म में मुब्तला हो जाता है कि मैंने फ़लां तदवीर की होती तो मैं इस हादसे से बच जाता। मगर मोमिन के साथ जब कोई हादसा गुजराता है तो वह यह सोचकर मुतमइन रहता है कि अल्लाह की मर्जी यही थी। जो लोग दुनियावी असबाब को अहमियत दें वे अपनी पूरी जिंदगी दुनिया की चीजों को फ़ाहम करने में लगा देते हैं। 'मरने' से ज्यादा 'जीना' उन्हें अजीज हो जाता है। मगर पाने की अस्त चीज वह है जो आख़िरत में है। यानी अल्लाह की जन्नत व मफिरत (क्षमा, मोक्ष, मुक्ति)। और जन्नत वह चीज है जिसे सिर्फ जिंदगी ही की कीमत पर हासिल किया जा सकता है। आदमी का वजूद ही जन्नत की वाहिद

(एकमात्र) कीमत है। आदमी अगर अपने वजूद को न दे तो वह किसी और चीज के जरिए जन्नत हासिल नहीं कर सकता।

अहले ईमान से साथ जिस इज्तिमाई सुलूक का हुक्म पैग़म्बर को दिया गया है वही आम मुस्लिम सरबराह (प्रमुख, शासक) के लिए भी है। मुस्लिम सरबराह के लिए जरूरी है कि वह नर्म दिल, नर्म गुप्तार (शालीन) हो। यह नर्मी सिर्फ रोज़मर्रा की आम जिंदगी ही में मल्लूब नहीं है बल्कि ऐसे ग़ैर-मामूली मौकों पर भी मल्लूब है जबकि इस्लाम और ग़ैर-इस्लाम के टकराव के वक्त लोगों से एक हुक्म की नाफरमानी हो और नतीजे में जीती हुई जंग हार में बदल जाए। सरबराह के अंदर जब तक यह वुस्अत और बुलंदी न हो ताक़त और इज्तिमाइयत कायम नहीं हो सकती। ग़लती चाहे कितनी ही बड़ी हो, अगर वह सिर्फ एक ग़लती है, शरपसंदी नहीं है तो वह काबिले माफी है। सरबराह को चाहिए कि ऐसी हर ग़लती को भुलाकर वह लोगों से मामला करे। यहां तक कि वह लोगों का इतना ख़ैरख़्वाह (हितैषी) हो कि उनके हक में उसके दिल से दुआएं निकलने लगे। उसकी नज़र में लोगों की इतनी कद्र हो कि मामलात में वह उनसे मश्वरा ले। जब आदमी को यह यकीन हो कि जो कुछ होता है खुदा के किए से होता है तो इसके बाद ईंसानी असबाब उसकी नज़र में नाक़बिले लिहाज हो जाएंगे।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ بِأَغْلٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفَّى
كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ أَفَمَن أَتْبَعُ رِضْوَانُ اللَّهِ لَمَن بَاءَ
بِسَخَطٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَا أَوْفَتْ جَهَنَّمَ وَيُسَّ الْمَصِيرُ ۝ هُمُ دَرَجَتٌ عِنْدَ اللَّهِ
وَاللَّهُ بَصِيرٌ لِّبَالْعَمَلُونَ ۝ لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا
مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِن
كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

और नबी का यह काम नहीं कि वह कुछ छुपाए रखे और जो कोई छुपाएगा वह अपनी छुपाई हुई चीज को कियामत के दिन हज़िर करेगा। फिर हर जान को उसके किए हुए का पूरा बदला मिलेगा और उन पर कुछ जुल्म न होगा। क्या वह शख्स जो अल्लाह की मर्जी का ताबेअ (अधीन) है वह उस शख्स की तरह हो जाएगा जो अल्लाह का इज़ाब लेकर लौटा और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह कैसा बुरा ठिकाना है। अल्लाह के यहां उनके दर्जे अलग-अलग होंगे। और अल्लाह देख रहा है जो वे करते हैं। अल्लाह ने ईमान वालों पर एहसान किया कि उनमें उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन्हें अल्लाह की आयतें सुनाता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब व हिकमत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है। बेशक ये इससे पहले खुली हुई गुमराही में थे। (161-164)

उहुद की दर्रे पर तैनात जिन चालीस लोगों ने नाफरमानी की थी, अल्लाह के रसूल मुहम्मद

(सल्ल०) ने उन्हें माफ कर दिया था। ताहम इन लोगों को यह शुबह था कि आपने शायद सिर्फ ऊपरी तौर पर हमें माफ किया है। दिल में आप अब भी खफा हैं और किसी वक्त हमारे ऊपर खफगी निकालेंगे। फरमाया कि यह पैगम्बर का तरीका नहीं। पैगम्बर अंदर और बाहर एक होता है, इससे यह अंदाजा होता है कि मुसलमानों के सरबराह को कैसा होना चाहिए। मुस्लिम सरबराह का दिल ऐसा होना चाहिए कि उसके अंदर बुज, नफरत, कीना और हसद बिल्कुल जगह न पा सके। यहां तक कि उस वक्त भी नहीं जबकि उसके साथियों से एक भयानक गलती हो गई हो। मुस्लिम सरबराह को चाहिए कि बड़ी से बड़ी गलती करने वालों के खिलाफ भी वह दिल में कोई दुर्भावना छुपाकर न रखे। आज के दिन उनके साथ इस तरह रहे जैसे पिछले दिन उनसे कुछ नहीं हुआ था। इसी तरह यह भी जरूरी है कि मुसलमानों का कोई गिरोह जब एक सरबराह पर एतमाद करके अपने मामलात को उसके सुपुर्द कर दे तो सरबराह को ऐसा भी नहीं करना चाहिए कि उनके जान व माल को वह अपने जाती हौसलों और तमन्नाओं की तकमील पर कुर्बान कर दे। यह अल्लाह के ग़ज़ब से बेख़ौफ होना है। जो शख्स लोगों को यह बताने के लिए उठा हो कि लोग अल्लाह की मर्जी पर चलें वह खुद क्योंकि इस हाल में अल्लाह से मिलना पसंद करेगा कि वह अल्लाह की मर्जी के खिलाफ चला हो।

पैगम्बर ने अपनी ज़िंदगी से जो मिसाली नमूना कायम किया है, क़ियामत तक तमाम मुस्लिम (सुधारकों) को उसी के मुताबिक बनना है। इस्लाह के काम के लिए जरूरी है कि आदमी जिन लोगों के दर्मियान काम करने उठे उन्हें हर एतबार से वह 'अपना' नजर आए। उसकी जवान, तर्ज कलाम, रहन-सहन हर चीज अजनबियत से पाक हो। वह अपने और मुखातिबीन (संबोधित वर्ग) के दर्मियान ऐसी फजा न बनाए जो किसी पहलू से एक-दूसरे को दूर करने वाली हो या एक को दूसरे के मुकाबले में फरीक (पक्ष) बनाकर खड़ा कर दे। लोगों के दर्मियान जो काम करना है वह सबसे पहले यह है कि लोगों के अंदर यह सलाहियत पैदा की जाए कि वे उन निशानियों को पढ़ने लगे जो उनकी जात (निजी जीवन) में और बाहर की दुनिया में फैली हुई हैं। वे अल्लाह की दलीलों को जानकर उन्हें अपने जेहन का जुज बनाएं। दूसरा काम 'तक्किया' (आन्तरिक शुद्धिकरण) है। यह मक़सद ज़बानी गुफ्तगू और सोहबत (सान्निध्य) के जरिए हासिल होता है। आम तहरीर और तकरीर में बात ज्यादातर उसूली अंदाज में होती है जबकि इफ़रादी (व्यक्तिशः) गुफ्तगुओं में बात ज्यादा सुनिश्चित और विस्तृत होती है। साथ ही दाओ (आह्वानकर्ता) का अपना वजूद भी पूरी तरह उसके प्रोत्साहन पर मौजूद रहता है आम कलाम अगर दावत (आह्वान) होता है तो इफ़रादी मुलाक़ातें संबोधित व्यक्ति के लिए तक्किया का जरिया बन जाती हैं। तीसरी चीज किताब है। यानी ज़िंदगी गुजारने की बाबत आसमानी हिदायतों को बताना जिसका दूसरा नाम शरीअत है। और चौथी चीज हिक्मत है। यानी दीन के गहरे भेदों से पर्दा उठाना, पंक्तियों के मध्य छुपी हुई हकीकतों को स्पष्ट करना।

أَوَلَمْ أَصَابَكُم مَّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّى هَذَا قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ فِئَازِنَ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُدْفَعُوا قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَا اتَّبَعْنَاكُمْ هُمْ لِلْكَافِرِينَ يَوْمِ الْمَدِينَةِ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِمْ تَالَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ۝ الَّذِينَ قَالُوا الْإِنشَاءُ نَزَمُ وَقَعْدًا وَأَلَوَا آعْزُونَ مَا قَاتِلُوا قُلْ فَادْرَءُوا عَنِّي أَنْفُسِكُمْ الْيَوْمَ إِنَّ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

और जब तुम्हें ऐसी मुसीबत पहुंची जिसकी दुगनी मुसीबत तुम पहुंचा चुके थे तो तुमने कहा कि यह कहां से आ गई। कहो यह तुम्हारे अपने पास से है। बेशक अल्लाह हर चीज पर कादिर है। और दोनों जमाअतों के मुठभेड़ के दिन तुम्हें जो मुसीबत पहुंची वह अल्लाह के हुक्म से पहुंची और इस वास्ते कि अल्लाह मोमिनों को जान ले और उन्हें भी जान ले जो मुनाफ़िक (पाखंडी) थे जिनसे कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ो या दुश्मन को हटाओ। उन्होंने कहा अगर हम जानते कि जंग होना है तो हम जरूर तुम्हारे साथ चलते। ये लोग उस दिन ईमान से ज्यादा कुफ़्र के करीब थे। वे अपने मुँह से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है और अल्लाह उस चीज को खूब जानता है जिसे वे छुपाते हैं। ये लोग जो खुद बैठे रहे, अपने भाइयों के बारे में कहते हैं कि अगर वे हमारी बात मानते तो वे मारे न जाते। कहो तुम अपने ऊपर से मौत को हटा दो अगर तुम सच्चे हो। (165-168)

हक और बातिल के मुक़ाबले में आखिरी फ़तह हक की होती है। क्योंकि अल्लाह हमेशा हक के साथ होता है। ताहम यह दुनिया इस्तेहान की दुनिया है। यहां शरपसंदों को भी अमल की पूरी आजादी है। इसलिए कभी ऐसा होता है कि अहले हक की किसी कमजोरी (मसलन आपसी मतभेदों) से फायदा उठा कर शरपसंद उन्हें वक़्ती नुस्सान पहुंचाने में कामयाब हो जाते हैं। ताहम इस तरह के वाक़ेआत का एक मुफ़ीद पहलू भी है। इसके जरिए खुद मुसलमानों की जमाअत की जांच हो जाती है। प्रतिकूल हालत को देखकर ग़ैर-मुस्लिम लोग छंट जाते हैं और जो सच्चे मुसलमान हैं वे अल्लाह पर भरोसा करते हुए जमे रहते हैं। इस तरह मालूम हो जाता है कि कौन क़ाबिले एतमाद है और कौन नाक़ाबिले एतमाद। मजौद यह कि इत्तेफ़ाकी ग़लती से नुस्सान उठाने के बाद जब अहले ईमान दुबारा सब्र, इनाबत (कर्तव्यनिष्ठा) और अल्लाह पर भरोसे का सुबूत देते हैं तो अल्लाह की रहमत उनकी तरफ पहले से भी ज्यादा मुतवज्जह हो जाती है।

हक और बातिल के मोर्चे में जो लोग इस तरह शिर्कत करें कि उसी की राह में अपने को मिटा दें, उनके बारे में दुनिया वाले अक्सर अफसोस के साथ कहते हैं कि उन्होंने व्यर्थ में अपने को बर्बाद कर लिया। मगर यह सिर्फ नादानी की बात है। अल्लाह की राह में खोना ही तो सबसे बड़ा पाना है। क्योंकि जो लोग अल्लाह की राह में अपना सब कुछ कुर्बान कर दें वही वे लोग हैं जो सबसे ज्यादा अल्लाह के इनामात के मुस्तहिक करार दिए जाएंगे।

अल्लाह की राह में जान देने वालों का जिक्र नादान लोग इस तरह करते हैं जैसे दूसरी राहों में अपनी जिंदगियां लगाने वालों पर मौत नहीं आती, जैसे कि सिर्फ अल्लाह की राह के मुजाहिदीन मरते हैं दूसरे लोग मरते ही नहीं। जाहिर है कि यह बात सरासर बेमानी है। मौत खुदा का एक आम कानून है। वह बहरहाल हर एक के लिए अपने वक्त पर आने वाली है। आदमी चाहे एक रास्ते में चल रहा हो या दूसरे रास्ते में, वह किसी हाल में मौत के अंजाम से बच नहीं सकता।

जो लोग इस किस्म की बातें करते हैं वे कभी अपनी बात में सजीदा नहीं होते। उनका दिल तो एतराफ कर रहा होता है कि हक के लिए कुर्बानी न देकर उन्हें सिख कोताही की है। मगर जबान से कुर्बानी करने वालों को मतऊन (लाछित) करके अपना जाहिरी भ्रम कायम रखना चाहते हैं। वे अपनी जबान से ऐसे अल्फाज बोलते हैं जिनके बारे में खुद उनका दिल गवाही दे रहा होता है कि ये झूठे अल्फाज हैं इनकी कोई वाकई हकीकत नहीं।

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزُقُونَ ۖ فَرَحِمَ بَنَاتُ اللَّهِ مِنْ فَضْلِهِ ۖ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ ۖ أَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۚ ۝
يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ۝
الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَارِعُ ۚ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقُوا أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝
الَّذِينَ قَالُوا لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ۝
فَاتَقَبَّلُوا بِنِعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَمْ يَسْأَلْهُمْ سَوْءٌ ۚ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ ۝
إِنَّمَا ذَلِكَ الشَّيْطَانُ يَخْوَفُ أَوْلِيَآءَهُ ۚ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُوا ۚ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝

और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें मुर्दा न समझो। बल्कि वे जिंदा हैं अपने रब के पास, उन्हें रोज़ी मिल रही है। वे खुश हैं उस पर जो अल्लाह ने अपने फल में

से उन्हें दिया है और खुशखबरी ले रहे हैं कि जो लोग उनके पीछे हैं और अभी वहां नहीं पहुंचे हैं उनके लिए भी न कोई ख़ौफ है और न वे ग़मगीन होंगे। वे खुश हो रहे हैं अल्लाह के इनाम और फल पर और इस पर कि अल्लाह ईमान वालों का अज़्र जाये नहीं करता। जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल के हुक्म को माना बाद इसके कि उन्हें ज़ख्म लग चुका था, इनमें से जो नेक और मुत्तकी हैं उनके लिए बड़ा अज़्र है जिनसे लोगों ने कहा कि दुश्मन ने तुम्हारे खिलाफ बड़ी ताकत जमा कर ली है उससे डरो। लेकिन इस चीज ने उनके ईमान में और इज़ाफ़ा कर दिया और वे बोले कि अल्लाह हमारे लिए काफी है और वह बेहतरीन कारसाज है। पस वे अल्लाह की नेमत और उसके फल के साथ वापस आए। इन लोगों को कोई ख़ुर्द पेश न आयी। और वे अल्लाह की रिज़ामंदी पर चले और अल्लाह बड़ा फल वाला है। यह शैतान है जो तुम्हें अपने दोस्तों के जरिए डराता है। तुम उनसे न डरो बल्कि मुझसे डरो अगर तुम मोमिन हो। (169-175)

जो लोग इस्लाम के दुश्मनों से लड़े और शहीद हुए उन्हें मुनाफ़िक्कीन मौते जियाअ (व्यर्थ की मौत) कहते थे। उनका ख़्याल था कि ये मुसलमान एक शख्स (मुहम्मद सल्ल०) के बहकावे में आकर अपनी जानें जाया कर रहे हैं। फरमाया कि जिसे तुम मौत समझते हो वही हकीकत में जिंदा है। तुम सिर्फ दुनिया का नफ़ नुस्खान जानते हो। यही वजह है कि आखिरत की राह में जान देना तुम्हें अपने आपको बर्बाद करना मालूम होता है। मगर अल्लाह की राह में मरने वाले तुमसे ज्यादा बेहतर जिंदगी पाए हुए हैं। वे आखिरत में तुमसे ज्यादा ऐश की हालत में हैं।

शैतान का यह तरीका है कि वह जिन इंसानों को अपने करीब पाता है उन्हें उकसा कर खड़ा कर देता है कि वे दीन की तरफ बढ़ने के ख़ौफनाक नतीजों को दिखा कर लोगों को दीन के महाज से हटा दें। ये लोग विरोधियों की ताकत बढ़ा-चढ़ाकर बयान करते हैं ताकि अहले ईमान मरऊब हो जाएं। मगर इस किस्म की बातें अहले ईमान के हक में मुफीद साबित होती हैं। क्योंकि उनका यह यकीन नए सिरे से जिंदा हो जाता है के मुश्किल हालात में उनका खुदा उन्हें तंहा नहीं छोड़ेगा।

उहुद की जंग मदीना से तकरीबन दो मील की दूरी पर हुई। जंग के बाद मुंकिरों का लश्कर अबू सुफयान की कयादत में वापस रवाना हुआ। मदीना से आठ मील पर हमरा उल असद पहुंच कर उन्होंने पड़ाव डाला। यहां उनकी समझ में यह बात आयी कि उहुद से वापस होकर उन्होंने ग़लती की है। यह बेहतरीन मौका था कि मदीना तक मुसलमानों का पीछा किया जाता और उनकी ताकत का आखिरी तौर पर ख़ात्मा कर दिया जाता। इस दरमियान में उन्हें कबीला अब्दुल कैस का एक तिजारीत काफ़िला मिल गया जो मदीना जा रहा था। मुंकिरों ने इस काफ़िले को कुछ रकम देकर आमादा किया कि वह मदीना पहुंचकर ऐसी ख़बरें फैलाए जिससे मुसलमान डर जाएं। अतः काफ़िले वालों ने मदीना पहुंच कर कहना शुरू किया कि हम देख आए हैं कि मक्का वाले भारी लश्कर जमा कर रहे हैं और दुबारा मदीना पर हमला करने

वाले हैं। मगर मुसलमानों का अल्लाह पर भरोसा इस बात की जमानत बन गया कि मुक़िर्नो की तदबीर उल्टी पड़ जाए। इसका फायदा यह हुआ कि मुसलमान अपने दुश्मनों के इरादे से बाख़बर हो गए। इससे पहले कि मक्का वालों की फौज मदीना की तरफ चले वे खुद पैग़म्बर की रहनुमाई में अपनी टुकड़ी बना कर तेजी से हमरा अल असद की तरफ रवाना हो गए। मक्का वालों को जब यह ख़बर मिली कि मुसलमानों की फौज पहल करके उनकी तरफ आ रही है तो वे समझे कि मुसलमानों को नई कुमक मिल गई है। वे घबरा कर मक्का की तरफ वापस चले गए।

وَلَا يَحْزُنُكَ الَّذِينَ يَسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَنُضِرُّوا اللَّهَ شَيْئًا يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حِطًّا فِي الْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَنَ يُضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمَلِّئُهُمْ خَيْرًا لِّنَفْسِهِمْ إِنَّمَا نُمَلِّئُهُم لِيُزِيدُوا كُفْرًا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝ مَا كَانَ اللَّهُ بِدَارَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّى يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مِنْ رُسُلِهِ مَنْ يَشَاءُ فَأَمُّنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَإِنْ أَنْتُمْ تَوَمَّنُوا ۝ وَتَتَّقُوا فَلكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

और वे लोग तुम्हारे लिए ग़म का सबब न बनें जो इंकार में सबकत (तत्परता, जल्दी) कर रहे हैं। वे अल्लाह को हरगिज कोई नुक़सान नहीं पहुंचा सकेंगे। अल्लाह चाहता है कि उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा न रखे। उनके लिए बड़ा अजाब है। जिन लोगों ने ईमान के बदले कुफ़र को ख़रीदा है वे अल्लाह का कुछ बिगाड़ नहीं सकते और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। और जो लोग कुफ़र कर रहे हैं यह ख़्याल न करें कि हम जो उन्हें मोहलत दे रहे हैं यह उनके हक़ में बेहतर है। हम तो बस इसलिए मोहलत दे रहे हैं कि वे ज़ुर्म में और बढ़ जाएं और उनके लिए जलील करने वाला अजाब है। अल्लाह वह नहीं कि मुसलमानों को उस हालत पर छोड़ दे जिस तरह कि तुम अब हो जब तक कि वह नापाक को पाक से जुदा न कर ले। और अल्लाह यूँ नहीं कि तुम्हें ग़ैब से ख़बरदार कर दे। बल्कि अल्लाह छांट लेता है अपने रसूलों में जिसे चाहता है। पस तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूलों पर। और अगर तुम ईमान लाओ और परहेजगारी अपनाओ तो तुम्हारे लिए बड़ा अज़्र है। (176-179)

जिंदगी का अस्ल मसला वह नहीं जो दिखाई दे रहा है, अस्ल मसला वह है जो आंखों से ओझल है। लोग दुनिया की जहन्नम से बचने की फ़िक्र करते हैं और अपनी सारी तवज्जोह दुनिया

की जन्नत को हासिल करने में लगा देते हैं। मगर ज्यादा अक्लमंदी की बात यह है कि आदमी आख़िरत की जहन्नम से अपने को बचाए और वहां की जन्नत की तरफ दौड़े। दुनिया में पैसे वाला होना और बे पैसे वाला होना, जायदाद वाला होना और बेजायदाद वाला होना, इज्जत वाला होना और बेइज्जत वाला होना, ये सब वे चीज़ें हैं जो हर आदमी को आंखों से नज़र आती हैं। इसलिए वह इन पर टूट पड़ता है, वह अपनी सारी कोशिश इस मक़सद के लिए लगा देता है कि वह यहां महरूम न रहे। मगर इंसान का अस्ल मसला आख़िरत का मसला है जिसे अल्लाह ने इन्तेहान की मस्लेहत से छुपा दिया है और इससे लोगों को ख़बरदार करने के लिए यह तरीक़ा मुक़र्रर फरमाया है कि वह अपने कुछ बंदों को ग़ैब की पैग़ामबरी के लिए चुने। उन्हें मौत के उस पार की हकीकतों से ख़बरदार करे और फिर उन्हें मुक़र्रर करे कि वे दूसरों को इससे बाख़बर करें। इंसान की अस्ल जांच यह है कि वह खुदा के दाजी की आवाज में सच्चाई की झलकियों को पाले, वह एक लफ़्जी पुकार में हकीकत की अमली तस्वीर देख ले। वह अपने जैसे एक इंसान की बातों में खुदाई बात की गूँज सुन ले।

ईमान यह है कि आदमी खुदपसंदी न करे। क्योंकि खुदपसंदी खुदा के बजाए अपने आपको बड़ाई का मक़ाम देना है। वह दुनिया में ग़र्क़ न हो। क्योंकि दुनिया में ग़र्क़ होना जाहिर करता है कि आदमी आख़िरत को अस्ल अहमियत नहीं देता। वह किब्र (बड़ापन, घमंड), बुख़्ल (कंजूसी), नाइसाफी और ग़ैर अल्लाह की अकीदत व मुहब्बत से अपने को बचाए और इसकी बजाए खुदापरस्ती, तवाजोअ (विनम्रता, सदाशयता), फय्याजी (सहृदयता) और इंसाफपसंदी को अपना शेवा बनाए। ऐसा करना साबित करता है कि आदमी अपने ईमान में संजीदा है। उसने वाकई अपने आपको खुदा और आख़िरत की तरफ लगा दिया है। और ऐसा न करना जाहिर करता है कि वह अपने ईमान में संजीदा नहीं। ईमान के इकरार के बावजूद अमलन वह उसी दुनिया में जी रहा है जहां दूसरे लोग जी रहे हैं। आख़िरत में ख़बीस रूहों और तय्यब (पाक) रूहों की जो तक़सीम होगी वह हकीकत के एतबार से होगी न कि महज जाहिरी नुमाइश के एतबार से। दुनिया में बुरे लोगों को जो ढील दी गयी है वह सिर्फ इसलिए है कि वे अपने अंदर की बुराई को पूरी तरह जाहिर कर दें। मगर वे चाहे कितनी ही कोशिश करें वे अहले हक़ को ज़ेर करने में कामयाब नहीं हो सकते। वे अपनी आजादी को सिर्फ अपने ख़िलाफ इस्तेमाल कर सकते हैं न कि दूसरों के ख़िलाफ।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَتَكَلَّمُونَ بِأَتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ هُوَ خَيْرٌ لَّهُمْ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ سَيُطَوَّقُونَ مَا يَخْلَعُونَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَاللَّهُ وَبِئْسَ ذُو الْقُرْآنِ ۚ وَالْأَرْضُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۚ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۚ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيَكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَالَمِينَ ۚ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا أَلاَّ نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ

حَتَّىٰ يَأْتِيَٰنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ قَبْلِي
بِالْبَيِّنَاتِ وَالْبَازِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ فَإِنْ كَذَّبُوكَ
فَقَدْ كَذَّبَ رَسُولٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَاءُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۚ وَالْكِتَابُ الْمُنِيرُ
كُلُّ نَفْسٍ ذَٰلِقَةُ الْمَوْتِ ۚ وَإِنَّمَا تُوَفَّقُونَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ فَمَن زُجِرَ عَنِ
النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَمَنَآءُ الْعُرُورِ ۚ

और जो लोग बुद्ध (कंजूसी) करते हैं उस चीज में जो अल्लाह ने उन्हें अपने फल में से दिया है वे हरगिज यह न समझें कि यह उनके हक में अच्छा है। बल्कि यह उनके हक में बहुत बुरा है जिस चीज में वे बुद्ध कर रहे हैं उसका क्रियामत के दिन उन्हें तौक पहनाया जाएगा। और अल्लाह ही वारिस है जमीन और आसमान का और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। अल्लाह ने उन लोगों का कौल सुना जिन्होंने कहा कि अल्लाह ग़नी है और हम मोहताज हैं। हम लिख लेंगे उनके इस कौल को और उनके पैग़म्बरों को नाहक मार डालने को भी। और हम कहेंगे कि अब आग का अजाब चखो। यह तुम्हारे अपने हाथों की कमाई है और अल्लाह अपने बंदों के साथ नाइंसाफी करने वाला नहीं। जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ने हमें हुक्म दिया है कि हम किसी रसूल को तस्लीम न करें जब तक कि वह हमारे सामने ऐसी कुर्बानी पेश न करे जिसे आग खाले, उनसे कहो कि मुझसे पहले तुम्हारे पास रसूल आए खुली निशानियां लेकर और वह चीज लेकर जिसे तुम कह रहे हो फिर तुमने क्यों उन्हें मार डाला, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर ये तुम्हें झुठलाते हैं तो तुमसे पहले भी बहुत से रसूल झुठलाए जा चुके हैं जो खुली निशानियां और सहीफे और रोशन किताब लेकर आए थे। हर शख्स को मौत का मजा चखना है और तुम्हें पूरा अन्न तो बस क्रियामत के दिन मिलेगा। पस जो शख्स आग से बच जाए और जन्नत में दाखिल किया जाए वही कामयाब रहा और दुनिया की ज़िंदगी तो बस धोखे का सौदा है। (180-185)

जाहिर तौर पर आदमी एक कौल देकर मोमिन बन जाता है मगर अल्लाह की नजर में वह उस वक़्त मोमिन बनता है जबकि वह अपनी जान और माल को अल्लाह की राह में दे दे। जान व माल की कुर्बानी के बग़ैर किसी का ईमान अल्लाह के यहां मोतबर नहीं। आदमी अपने माल को इसलिए बचाता है कि वह समझता है कि इस तरह वह अपने दुनियावी मुस्तक़बिल (भविष्य) की सुरक्षा का रहा है। मगर आदमी का हकीकी मुस्तक़बिल वह है जो आखिरत में सामने आने वाला है और आखिरत की दुनिया में ऐसा बचाया हुआ माल आदमी के हक में सिर्फ़ बवाल साबित होगा। जो माल दुनिया में ज़िन्नत और फ़न्न का ज़रिया दिखई दे रहा है वह आखिरत में ख़ुदा के हुक्म से सांप का रूप धार लेगा और सदैव उसे डसता रहेगा।

जो लोग कुर्बानी वाले दीन को नहीं अपनाते वे अपने को सही साबित करने के लिए विभिन्न बातें करते हैं। मसलन यह कि यह माल ख़ुदा ने हमारी जरूरत के लिए पैदा किया है फिर क्यों न हम इसे अपनी जरूरतों पर खर्च करें और इससे अपने दुनियावी आराम का सामान करें। कभी उनकी बेहिंसी उन्हें यहां तक ले जाती है कि वे ख़ुद हक के दाजी (आह्वानकर्ता) को संदिग्ध करने के लिए तरह-तरह के शोशे निकालते हैं ताकि यह साबित कर सकें कि वह शख्स सच्चा दाजी ही नहीं जिसका जुहर (प्रकट होना) यह तक्का कर रहा है कि अपनी ज़िंदगी और अपने माल को कुर्बान करके उसका साथ दिया जाए। इस क्रिम के लोग जो बातें कहते हैं वे बजाहिर दलील के रूप में होती हैं मगर हकीकत में वे ईमानी तक्काजों से फरार के लिए हैं। इसलिए चाहे कैसी ही दलील पेश की जाए वे इसे रद्द करने के लिए कुछ न कुछ अल्फ़ाज तलाश कर लेंगे। ये वे लोग हैं जो इस बात को भूल गए हैं कि उनका आख़िरी अंजाम मौत है, और मौत का मरहला सामने आते ही सूरतेहाल बिल्कुल बदल जाएगी। मौत तमाम झूठे सहारों को बातिल कर देगी। इसके बाद आदमी अपने आपको ठीक उस मक़म पर खड़ा हुआ पाएगा जहां वह हकीकत में था न कि उस मक़म पर जहां वह अपने आपको जाहिर कर रहा था। मौजूदा दुनिया में किसी का तरक्की करना या मौजूदा दुनिया में किसी का नाकाम हो जाना, दोनों हकीकत के एतबार से एक ही सतह की चीज़ें हैं। न यहां की नेमतें किसी के बरहक होने का सबूत हैं और न किसी का यहां मुश्किलों और मुसीबतों में मुब्तला होना उसके बरसरे बातिल (असत्यवादी) होने का सबूत। क्योंकि दोनों ही इस्तेहान के नक्शे हैं न कि अंजाम की अलामतें।

لَتُبْلَوْنَ فِيْٓ أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى كَثِيْرًا وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۖ وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّ لِلنَّاسِ وَلا تَكْتُمُوْنَ ۖ فَتَنَبَذُوْهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۖ فَبَيَّسَ مَا يَشْتَرُونَ ۚ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أَتَوْا وَيُجِبُّونَ أَنْ يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ ۖ
وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ۙ

यकीनन तुम अपने जान व माल में आजमाए जाओगे। और तुम बहुत सी तकलीफ़देह बातें सुनोगे उनसे जिन्हें तुमसे पहले किताब मिली और उनसे भी जिन्होंने शिर्क किया। और अगर तुम सन्न करो और तकवा इस्तिआर करो तो यह बड़े हौसले का काम है। और जब अल्लाह ने अहले किताब से अहद लिया कि तुम ख़ुदा की किताब को पूरी तरह लोगों के लिए जाहिर करोगे और उसे नहीं छुपाओगे। मगर उन्होंने इसे पीठ पीछे

डाल दिया और इसे थोड़ी कीमत पर बेच डाला। कैसी बुरी चीज है जिसे वे खरीद रहे हैं। जो लोग अपने इन करतूतों पर खुश हैं और चाहते हैं कि जो काम उन्होंने नहीं किए उस पर उनकी तारीफ हो, उन्हें अजाब से बरी न समझो। उनके लिए दर्दनाक अजाब है। और अल्लाह ही के लिए है जमीन और आसमान की वादशाही, और अल्लाह हर चीज पर क़दिर है। (186-189)

ईमान का सफर आदमी को ऐसी दुनिया में तै करना होता है जहां अपनों और गैरों की तरफ से तरह-तरह के ज़ख़्म लगते हैं। मगर मोमिन के लिए जरूरी होता है कि वह रद्देअमल की नफ़िसयात में मुब्तला न हो, वह सूरतेहाल का मुस्बत (सकारात्मक) जवाब देते हुए आगे बढ़ता रहे। लोगों की तरफ से उत्तेजना दिलाने वाले अवसर आते हैं मगर वह पाबंद होता है कि हर किस्म के झटकों को अपने ऊपर सहे और जवाबी ज़ेहन के तहत कोई कार्रवाई न करे। बार-बार ऐसे मामलात सामने आते हैं जबकि दिल कहता है खुदा की हदों को तोड़ कर अपना उद्देश्य हासिल किया जाए, मगर अल्लाह का डर उसके कदमों को रोक देता है। इसी तरह दीन की विभिन्न ज़रूरतें सामने आती हैं और जान व माल की कुर्बानी का तक्का करती हैं ऐसे मौकों पर आसान दीन को छोड़कर मुश्किल दीन अपनाना पड़ता है। यह वाक्या ईमान के सफर को हिम्मत और आली हौसलगी का जबरदस्त इम्तेहान बना देता है। हकीकत यह है कि मोमिन बनना अपने आपको सन्न और तक्वा के इम्तेहान में खड़ा करना है। जो इस इम्तेहान में पूरा उतरा वह मोमिन बना जिसके लिए आखिरत में जन्नत के दरवाजे खोले जाएंगे।

आसमानी किताब के हामिल (धारक) जब किसी गिरोह पर जवाल (पतन) आता है तो ऐसा नहीं होता कि वह खुदा और रसूल का नाम लेना छोड़ दे या खुदा की किताब से अपनी बेतअल्लुकी का एलान कर दे। दीन ऐसे गिरोह की नस्ली रिवायत में शामिल हो जाता है। वह उसका पुफ़्फ़ू क़ैमी असासा (धरोहर) बन जाता है। और जिस चीज से इस तरह का नस्ली और क़ैमी तअल्लुक कायम हो जाए उससे अलग होना किसी गिरोह के लिए मुमकिन नहीं होता। ताहम इसका यह तअल्लुक महज रस्मी तअल्लुक होता है न कि वास्तव में कोई हकीकती तअल्लुक। वे अपनी दुनियावी सरगर्मियां भी दीन के नाम पर जारी करते हैं। वे बेदीन होकर भी अपने को दीनदार कहलाना चाहते हैं। वे चाहने लगते हैं कि उन्हें उस काम का क्रेडिट दिया जाए जिसे उन्होंने किया नहीं। वे आखिरत की नजात से बेफ़िक्र होकर ज़िंदगी गुजारते हैं और इसी के साथ ऐसे अक़ीदे बना लेते हैं जिनके मुताबिक उन्हें अपनी नजात बिल्कुल महफूज़ नजर आती है। वे अपने गढ़े हुए दीन पर चलते हैं मगर अपने को ख़ुदाई दीन का अलमबरदार बताते हैं। वे दुनियावी मक्सदों के लिए सरगर्म होते हैं और अपनी सरगर्मियों को आखिरत का उन्वान देते हैं। वे ख़ुदसाख़्ता सियासत चलाते हैं और उसे ख़ुदाई सियासत साबित करते हैं। वे क़ौमी मफ़ादात (हितों) के लिए उठते हैं और एलान करते हैं कि वे ख़ैरुल उमम का किरदार अदा करने के लिए खड़े हुए हैं। मगर कोई शख्स बेदीनी को दीन कहने लगे तो इस बुनियाद पर वह अल्लाह की पकड़ से बच नहीं सकता। आदमी दुनिया की तरफ दौड़े और आखिरत से बेपरवाह हो जाए तो यह सिर्फ़ गुमराही है और अगर वह अपने दुनियावी कारोबार को ख़ुदा और रसूल के नाम पर करने लगे तो यह गुमराही पर ढ़िठाई का इजाफ़ा है। क्योंकि यह ऐसे काम पर इनाम चाहना है जिसे आदमी ने किया ही नहीं।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلًا ۖ وَسُبْحَنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۚ رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تَدْخُلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۚ رَبَّنَا إِنَّنا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِنسَانِ أَنْ ائْمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَأَمَّا ۖ رَبَّنَا فَأَغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّنَا مَعَ الْأَكْبَارِ ۚ رَبَّنَا وَإِنَّا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا نَخْزِيكَ يَا يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۚ

आसमानों और जमीन की पैदाइश और रात दिन के बारी-बारी आने में अक्ल वालों के लिए बहुत निशानियां हैं। जो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर अल्लाह को याद करते हैं और आसमानों और जमीन की पैदाइश पर गौर करते रहते हैं। वे कह उठते हैं ऐ हमारे रब तूने यह सब बेमक्सद नहीं बनाया है। तू पाक है, पस हमें आग के अजाब से बचा। ऐ हमारे रब तूने जिसे आग में डाला उसे तूने वाकई रुसवा कर दिया। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। ऐ हमारे रब हमने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की तरफ पुकार रहा था कि अपने रब पर ईमान लाओ। पस हम ईमान लाए। ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर दे और हमारा ख़ात्मा नेक लोगों के साथ कर। ऐ हमारे रब तूने जो वादे अपने रसूलों के जरिए हमसे किए हैं उन्हें हमारे साथ पूरा कर और क़ियामत के दिन हमें रुसवाई में न डाल। बेशक तू अपने वादे के ख़िलाफ़ करने वाला नहीं है। (190-194)

कायनात अपने पूरे वजूद के साथ एक ख़ामोश एलान है। आदमी जब अपने कान और आंख से मसनूई (कृत्रिम) पर्दों को हटाता है तो वह इस ख़ामोश एलान को हर तरफ से सुनने और देखने लगता है। उसे नामुमकिन नजर आता है कि एक ऐसी कायनात जिसके सितारे और सय्यारे (ग्रह) खरबों साल तक भी ख़त्म नहीं होते वहां इंसान अपनी तमाम तमन्नाओं और ख़्वाहिशों को लिए हुए सिर्फ पचास-सौ वर्षों में ख़त्म हो जाए। एक ऐसी दुनिया जहां दरख़्तों का हुस्न और फूलों की लताफ़त है। जहां हवा और पानी और सूरज जैसी बेशुमार बामअना चीजों का एहतेमाम किया गया है वहां इंसान के लिए हुन्न (अति दुख) और ग़म के सिवा कोई अंजाम न हो। फिर यह भी उसे नामुमकिन नजर आता है कि एक ऐसी दुनिया जहां यह अथाह इम्कान रखा गया है कि यहां एक छोटा सा बीज जमीन में डाला जाए तो उसके अंदर से हरे-भरे दरख़्त की एक पूरी कायनात निकल आए, वहां आदमी नेकी की ज़िंदगी

इख्तियार करके भी उसका कोई फल न पाता हो। एक ऐसी दुनिया जहां हर रोज तारीक रात के बाद रोशन दिन आता है वहां सदियां गुजर जाएं और अदल व इंसाफ का उजाला अपनी चमक न दिखाए। एक ऐसी दुनिया जिसकी गोद में जलजले और तूफान सो रहे हैं वहां इंसान जुम पर जुम करता रहे मगर कोई उसका हाथ पकड़ने वाला सामने न आए। जो लोग हकीकतों में जीते हैं और गहराइयों में उतरकर सोचते हैं उनके लिए नाकाबिले यकीन हो जाता है कि एक बामअना (सार्थक) कायनात बेमअना (निरर्थक) अंजाम पर खत्म हो जाए। वे जान लेते हैं कि हक का दाजी जो पैगाम दे रहा है वह शब्दों की जवान में उसी बात का एलान है जो खामोश जवान में सारी कायनात में नश्र हो रहा है। उनके लिए सबसे बड़ा मसला यह बन जाता है कि जब सच्चाई खुले और जब इंसाफ का सूरज निकले तो उस दिन वे नाकाम व नामुराद न हो जाएं। वे अपने रब को पुकारते हुए उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं, वे मफ़ाद और मस्लेहतों की तमाम हदों को तोड़कर हक के दाजी के साथ हो जाते हैं ताकि कायनात का 'उजाला' और कायनात का 'अंधेरा' एक दूसरे से अलग हो जाएं तो कायनात का मालिक उन्हें उजाले में जगह दे। वह उन्हें अंधेरे में ठोकें खाने के लिए न छोड़े।

अक़ल और बेअक़ली का हकीकी पैमाना उससे बिल्कुल भिन्न है जो इंसानों ने खुद बना रखा है। यहां अक़ल वाला वह है जो अल्लाह की याद में जिए, जो कायनात के तख़्तीकी (रचनात्मक) मंसूबे में काम आने वाली खुदाई सार्थकता को पा ले। इसके विपरीत बेअक़ल वह है जो अपने दिल व दिमाग को अन्य चीजों में अटकाए, जो दुनिया में इस तरह ज़िंदगी गुजारे जैसे कि उसे कायनात के मालिक के तख़्तीकी मंसूबे (Creation Plan) की खबर ही नहीं।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّمَّنْ ذَكَرْتُ أَوْ اُنْتُحَىٰ
بَعْضُكُمْ مِّنْ بَعْضٍ ۖ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي
سَبِيلِي وَقَاتِلُوا الْأَكْفَرِينَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَدْخَلْتَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِّنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ
لَا يَغْرَتُكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ ۖ مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَا لَهُمْ
جَهَنَّمَ وِبَئْسَ الْمِهَادُ ۖ لَكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي
مِّنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ
لِّلْآبَرَارِ ۖ وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ
وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خُشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا
أُولَٰئِكَ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۖ يَٰ أَيُّهَا الَّذِينَ

۞ اٰمَنُوْا صٰبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝

उनके रब ने उनकी दुआ कुबूल फरमाई कि मैं तुमसे किसी का अमल जाये करने वाला नहीं, चाहे वह मर्द हो या औरत, तुम सब एक-दूसरे से हो। पस जिन लोगों ने हिजरत की और जो अपने घरों से निकाले गए और मेरी राह में सताए गए और वे लड़े और मारे गए उनकी ख़ताएं जरूर उनसे दूर कर दूंगा और उन्हें ऐसे बागों में दाखिल करूंगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। यह उनका बदला है अल्लाह के यहां और बेहतरीन बदला अल्लाह ही के पास है। और मुल्क के अंदर मुंकिरों की सरगर्मियां तुम्हें धोखे में न डालें यह थोड़ा सा फायदा है। फिर उनका ठिकाना जहन्नम है और वह कैसा बुरा ठिकाना है। अलबत्ता जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके लिए बाग होंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे उसमें हमेशा रहेंगे। यह अल्लाह की तरफ से उनकी मेजबानी होगी और जो कुछ अल्लाह के पास है नेक लोगों के लिए है वही सबसे बेहतर है। और बेशक अहले किताब में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस किताब को भी मानते हैं जो तुम्हारी तरफ भेजी गई है और उस किताब को भी मानते हैं जो इससे पहले खुद उनकी तरफ भेजी गई थी, वे अल्लाह के आगे झुके हुए हैं और अल्लाह की आयतों को थोड़ी कीमत पर बेच नहीं देते। उनका अज़ उनके रब के पास है और अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। ऐ ईमान वालो, सब्र करो और मुकाबले में मजबूत रहो और लगे रहो और अल्लाह से डरो, उम्मीद है कि तुम कामयाब होगे। (195-200)

अहले ईमान की जिम्मेदाराना ज़िंदगी उन्हें नफ़स की आजादियों से महसूस कर देती है। उनके हक के एलान में बहुत से लोगों को अपने वजूद की तरदीद (निरस्तीकरण) दिखाई देने लगती है और वे उनके दुश्मन बन जाते हैं। यह सूरतेहाल कभी इतनी शदीद हो जाती है कि वे अपने वतन में बेवतन कर दिए जाते हैं उन्हें विरोधियों की जालिमाना कार्रवाइयों के मुकाबले में खड़ा होना पड़ता है। अल्लाह के दीन को उन्हें जान व माल की कुर्बानी की कीमत पर अपनाना होता है। इन इम्तेहानों में पूरा उतरने के लिए अहले ईमान को जो कुछ करना है वह यह कि वे दुनिया की मस्लेहतों की खातिर आखिरत की मस्लेहतों को भूल न जाएं। वे मुश्किलों और नाखुशगवारियों पर सब्र करें, वे अपने अंदर उभरने वाले मंफ़ी (नकारात्मक) जन्मात को दबाएं और मुतअस्सिर (प्रभावित) जेहन के तहत कार्रवाई न करें। फिर उन्हें बाहर के हरीफ़ों (प्रतिपक्षियों) के मुकाबले में साबितकदम रहना है। यह साबितकदमी ही वह चीज है जो अल्लाह की नुसरत को अपनी तरफ खींचती है। इसी के साथ जरूरी है कि तमाम अहले ईमान आपस में एक दूसरे के साथ बंधे रहें, वे दीनी जद्दोजेहद के लिए आपस में जुड़ जाएं और एक जान होकर सामूहिक ताकत से मुख़लिफ़ ताकतों का मुकाबला करें। ईमान दरअस्त सब्र का इम्तेहान है और इस इम्तेहान में वही शख्स पूरा उतरता है जो अल्लाह से डरने वाला हो।

दुनिया में अक्सर ऐसा होता है कि खुदा से बेखौफ और आखिरत से बेपरवाह लोगों को जेर और ग़लबा हासिल हो जाता है। हर किस्म की इज्जत और रैमके उनके गिर्द जमा हो जाती हैं। दूसरी तरफ अहलेईमान अक्सर हालात में बेजोर बने रहते हैं। शान व शौकत का कोई हिस्सा उन्हें नहीं मिलता। मगर यह सूरतेहाल इतिहाई आरजी (अस्थाई) है। कियामत आते ही हालात बिल्कुल बदल जाएंगे। बेखौफी के रास्ते से दुनिया की इज्जतें समेटने वाले रुस्वाई के गढ़ में पड़े होंगे। और खुदा के खौफ की वजह से बेहैसियत हो जाने वाले हर किस्म की अबदी (चिरस्थाई) इज्जतों और कामयाबियों के मालिक होंगे। वे अल्लाह के मेहमान होंगे और अल्लाह की मेहमानी से ज्यादा बड़ी चीज इस जमीन और आसमान के अंदर नहीं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۚ وَاتُّوا إِلَىٰ يَتَمِّ أَمْوَالِهِمْ وَلَا تَبَدَّلُوا الْحَبِيبَ ۚ بِالْخَيْبِ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا ۚ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتَمِّ فَأَتُوا بِمَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النَّسَاءِ ۚ مَثْنَىٰ وَثُلَاثَ وَرُبْعًا ۚ وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُعَدِّلُوا فَوَاحِدَةً ۚ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ۚ ذَلِكَ أَذْنَىٰ ۖ أَلَّا تَعُولُوا ۚ وَاتُّوا النَّسَاءَ صَدَقْتِهِنَّ نِحْلَةً ۚ فَإِنْ طَبَنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَّرِيئًا ۚ

आयतें-177

सूरह-4. अन-निसा

रुकूअ-24

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।
ऐ लोगो अपने ख से डरो जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और इन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैला दीं। और अल्लाह से डरो जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से सवाल करते हो और ख़बरदार रहो संबंधियों से। बेशक अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है। और यतीमों का माल उनके हवाले करो। और बुरे माल को अच्छे माल से न बदलो और उनके माल अपने माल के साथ मिलाकर न खाओ। यह बहुत बड़ा गुनाह है। और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम यतीमों

के मामले में इंसाफ न कर सकोगे तो औरतों में से जो तुम्हें पसंद हों उन से दो-दो, तीन-तीन, चार-चार तक निकाह कर लो। और अगर तुम्हें अंदेशा हो कि तुम अदल (न्याय) न कर सकोगे तो एक ही निकाह करो या जो कनीज (दासी) तुम्हारे अधीन हो। इसमें उम्मीद है कि तुम इंसाफ से न हटोगे। और औरतों को उनके महर खुशदिली के साथ अदा करो। फिर अगर वे इसमें से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें अपनी खुशी से तो तुम उसे हंसी-खुशी से खाओ। (1-4)

तमाम इंसान पैदाइश के एतबार से एक हैं। एक ही औरत और एक ही मर्द सबके मां और बाप हैं। इस लिहाज से जरूरी है कि हर आदमी दूसरे आदमी को अपना समझे। सबके सब एक मुश्तरक (साझे) घराने के अफ़राद की तरह मिलजुल कर इंसाफ और ख़ैरखाही के साथ रहें। फिर इनमें से जो रहमी (खून के) रिश्ते हैं उनमें यह नस्ती इत्तेहाद और ज्यादा करीबी हो जाता है। इसलिए रहमी रिश्तों में हुस्ने सुलूक की अहमियत और ज्यादा बढ़ जाती है। इंसानों के दर्मियान इस आपसी हुस्ने सुलूक की अहमियत सिर्फ अख़्लाकी एतबार से नहीं है बल्कि यह खुद आदमी का अपना जाती मसला है। क्योंकि तमाम इंसानों के ऊपर अजीम व बरतर खुदा है। वह आखिर में सबसे हिसाब लेने वाला है और दुनिया में उनके अमल के मुताबिक आखिरत में उनके अबदी मुस्तक़बिल का फ़ैसला करने वाला है। इसलिए आदमी को चाहिए कि इंसान के मामले को सिर्फ इंसान का मामला न समझे बल्कि इसे अल्लाह का मामला समझे। वह अल्लाह की पकड़ से डरे और अपने आपको उस अमल का पाबंद बनाए जो उसे अल्लाह के ग़जब से बचाने वाला हो।

हदीसे कुदसी में है कि अल्लाह तआला ने फरमाया कि जो शख्स रहम को जोड़ेगा मैं उससे जुड़ूंगा और जो शख्स रहम को काटेगा मैं उससे कटूंगा। इससे मालूम हुआ कि अल्लाह से तअल्लुक का इस्तेहान बंदों से तअल्लुक के मामले में लिया जाता है। वही शख्स अल्लाह से डरने वाला है जो बंदों के हुक्म के मामले में अल्लाह से डरे, वही शख्स अल्लाह से मुहब्बत करने वाला है जो बंदों के साथ मुहब्बत में इसका सुबूत दे। यह बात आम इंसानी तअल्लुकात में भी मल्लूब है। मगर रहमी रिश्तों से हुस्ने सुलूक के मामले में इसकी अहमियत इतनी बढ़ जाती है कि वह सिर्फ खुदा के बाद दूसरे नम्बर पर है।

यतीम लड़के और लड़कियां किसी ख़ानदान या समाज का सबसे ज्यादा कमजोर हिस्सा होते हैं। इसलिए खुदा से डर का सबसे ज्यादा सख़्त इस्तेहान यतीम लड़कों और लड़कियों के बारे में होता है। आदमी को चाहिए कि यतीमों के बारे में वही करे जो इंसाफ और ख़ैरखाही का तमज़ज है और जिसमें यतीमों के हुक्म का सबसे ज्यादा महफूज़ रहने की ज़ामान्त हो।

यह बहुत गुनाह की बात है कि मुश्तरका असासा (साझी सम्पत्ति) की ऐसी तकसीम की जाए जिसमें अच्छी चीजें अपने हिस्से में रख ली जाएं और दूसरे के हिस्से में ख़राब चीजें डाल कर गिनती पूरी कर दी जाए।

وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُهَاءَ أََمْوَالَكُمْ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ قِيَمًا وَارْزُقُوهُمْ فِيهَا
وَأَكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۖ وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ
فَإِنْ ائْتَمْتُمْ مِنْهُمْ رِشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَكُلُوهَا إِسْرَافًا
وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ
بِالْمَعْرُوفِ ۚ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهَدُوا عَلَيْهِمْ وَكَفَىٰ
بِاللَّهِ حَسِيبًا ۚ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ
نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۚ وَلِلْيَتَامَىٰ
مَقْرُوضًا ۚ وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةُ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينُ فَارْزُقُوهُمْ
مِنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۚ وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكَوْا مِنْ خَلْفِهِمْ
ذُرِّيَّةً ضِعَفًا خَافُوا عَلَيْهِمْ ۚ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۚ إِنَّ
الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا
وَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۝

ج

और नानाओं को अपना वह माल न दो जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए कियाम का जरिया बनाया है और इस माल में से उन्हें खिलाओ और पहनाओ और उनसे भलाई की बात कहो। और यतीमों को जांचते रहो, यहां तक कि जब वे निकाह की उम्र को पहुंच जाएं तो अगर उनमें होशियारी देखो तो उनका माल उनके हवाले कर दो। और उनका माल अनुचित तरीके से और इस ख्याल से कि वे बड़े हो जाएंगे न खा जाओ। और जिसे हाजत न हो वह यतीम के माल से परहेज करे और जो शख्स मोहताज हो वह दस्तूर के मुताबिक खाए। फिर जब तुम उनका माल उनके हवाले करो तो उन पर गवाह ठहरा लो और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफी है। मां-बाप और रिश्तेदारों के तरेके (छोड़ी हुई सम्पत्ति) में से मदों का भी हिस्सा है। और मां-बाप और रिश्तेदारों के तरेके में से औरतों का भी हिस्सा है, थोड़ा हो या ज्यादा हो, एक मुकर्रर किया हुआ हिस्सा। और अगर तन्नसीम के वक्त रिश्तेदार और यतीम और मोहताज मौजूद हों तो इसमें से उन्हें भी कुछ दो और उनसे हमदर्दी की बात कहो। और ऐसे लोगों को डरना चाहिए कि अगर वे अपने पीछे कमजोर बच्चे छोड़ जाते तो उन्हें उनकी बहुत फिक्र रहती। पस उन्हें चाहिए कि अल्लाह से डरें और बात पक्की कहें। जो लोग यतीमों का माल नाहक खाते हैं वे लोग अपने पेटों में आग भर रहे हैं और वे जल्द ही भड़कती हुई आग में डाले जाएंगे। (5-10)

माल न ऐश के लिए है और न फरख जाहिर करने के लिए। वह आदमी के लिए जिंदगी का जरिया है। वह दुनिया में उसके कयाम और बक्का (अस्तित्व) का सामान है। माल का जीवन-साधन होना एक तरफ यह जाहिर करता है कि इसे ही स्वयं उद्देश्य बना लेना दुरुस्त नहीं। दूसरे यह कि यह इतिहाई जरूरी है कि माल को जाए होने से बचाया जाए और उसे उसके हकदार तक पहुंचाने का पूरा एहतमाम किया जाए। किसी के माल को ठीक-ठीक अदा न करना गोया खुदा के उस इंतजाम में फसाद डालना है जो खुदा ने अपने बंदों को रिस्क पहुंचाने के लिए किया है। यतीम किसी सामाज का सबसे कमजोर हिस्सा होता है इसलिए उसके माल की हिफाजत और उसके मामले में हर किस्म के जुल्म से अपने को बचाना और भी ज्यादा जरूरी है। यहां तक कि यह भी जरूरी है कि आदमी इन्साफ के मुताबिक उनके साथ जो मामला करे उसे लिख कर उस पर गवाही लेले ताकि सामाज के अंदर शिकायत और विवाद की फजा पैदा न हो और वह लोगों के सामने जिम्मेदारी से बरी हो सके। जब भी आदमी के हाथ में किसी का मामला हो तो उसे यह समझ कर मामला करना चाहिए कि उसकी हर कोताही अल्लाह के इल्म में है। साहिबे मामला अपनी कमजोरी की वजह से चाहे उसके खिलाफ कुछ न कर सके मगर खुदा उसे जरूर कियामत के दिन पकड़ें और अगर उसने हक के खिलाफ मामला किया है तो वह उसे सख्त सजा देगा और उसके लिए किसी तरह भी खुदा की सजा से बचना मुमकिन न होगा।

दुनिया में कमजोर का हक दबा कर आदमी खुश होता है। मगर हर नाजाइज माल जो आदमी अपने पेट में डालता है वह गोया अपने पेट में आग डाल रहा है। दुनिया में ऐसे माल का आग होना बजाहिर महसूस नहीं होता मगर आखिरत में यह हकीकत खुल जाएगी। यहां आदमी को अमल की आजादी जरूर दी गयी है मगर नतीजा आदमी के अपने इख्तियार में नहीं। जो शख्स अपने को बुरे अंजाम से बचाना चाहता है उसे दूसरों के साथ भी बुरा नहीं करना चाहिए। आदमी को चाहिए कि वह दूसरों के लिए नफाबख्श बने, वह अपनी क्षमता के मुताबिक दूसरों को दे। अगर कोई शख्स देने की हैसियत में नहीं है तो आखिरी इस्लामी दर्जा यह है कि वह दूसरों का दिल न दुखाए, वह अपनी जबान खोले तो सीधी और सच्ची बात कहने के लिए खोले वर्ना खामोश रहे।

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلَّذِ كَرِمِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۚ فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً
فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۚ
وَلِابْنِ ابْنِكُمُ الْكُلِّ وَاحِدٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَلِابْنِ
ابْنِكُمُ الْكُلِّ وَوَرِثَةُ أَبَوَيْهِ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ
السُّدُسُ ۚ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ ذَيْن ۚ لِأَبَائِكُمُ وَالْبَنَاتِ ۚ لَا
تَدْرُونَ أَيُّهُمُ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا فَرِيضَةٌ مِنَ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا

حَكِيمًا ۖ وَلَكُمْ نَصْفُ مَا تَرَكَ آزْوَاجُكُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُنَّ وَلَدٌ ۖ وَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمْ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَنَّ مِنْ بَعْدٍ وَصِيَّةً يُوَصِّينَ بِهَا أَوْ دِينَ ۖ وَلَهُنَّ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَتُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ ۖ وَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكَتُمْ مِنْ بَعْدٍ وَصِيَّةً يُوَصُّونَ بِهَا أَوْ دِينَ ۖ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورِثُ كَلَّةً أَوْ امْرَأَةً وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۖ فَإِنْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ ۖ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دِينَ ۖ غَيْرَ مُضَارٍّ وَصِيَّةً مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ۖ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۖ وَمَنْ يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۖ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۖ

अल्लाह तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है कि मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है। अगर औरतें दो से ज्यादा हैं तो उनके लिए दो तिहाई है उस माल से जो मूरिस (विरासत छोड़ने वाला) छोड़ गया है और अगर वह अकेली है तो उसके लिए आधा है। और मय्यत के मां-बाप को दोनों में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है उस माल का जो वह छोड़ गया है बशर्ते कि मूरिस के औलाद हो। और अगर मूरिस की औलाद न हो और उसके मां-बाप उसके वारिस हों तो उसकी मां का तिहाई है और अगर उसके भाई बहिन हों तो उसकी मां के लिए छठा हिस्सा है। ये हिस्से वसीयत निकालने के बाद या कर्ज की अदायगी के बाद हैं जो वह कर जाता है। तुम्हारे बाप हों या तुम्हारे बेटे हों, तुम नहीं जानते कि उनमें तुम्हारे लिए सबसे ज्यादा नफा देने वाला कौन है। यह अल्लाह का ठहराया हुआ फरीजा है। बेशक अल्लाह इल्म वाला, हिक्मत वाला है। और तुम्हारे लिए उस माल का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी बीवियां छोड़ें, बशर्ते कि उनके औलाद न हो। और अगर उनके औलाद हो तो तुम्हारे लिए बीवियों के तरके का चौथाई है वसीयत निकालने के बाद जिसकी वे वसीयत कर जाएं या कर्ज की अदायगी के बाद। और उन बीवियों के लिए चौथाई है तुम्हारे तरके का अगर तुम्हारे औलाद नहीं है, और अगर तुम्हारे औलाद है तो उनके लिए आठवां हिस्सा है तुम्हारे तरके का वसीयत निकालने के बाद जिसकी तुम वसीयत कर जाओ या कर्ज की अदायगी के बाद। और अगर कोई मूरिस मर्द या औरत ऐसा हो जिसके न औलाद हो और न मां-बाप जिंदा हों, और उसके एक भाई या एक बहिन हो तो दोनों में से हर एक के लिए छठा हिस्सा है। और अगर वे इससे ज्यादा हों तो वे एक तिहाई में

शरीक होंगे वसीयत निकालने के बाद जिसकी वसीयत की गयी हो या कर्ज की अदायगी के बाद, बौर किसी को नुकसान पहुंचाए। यह हुक्म अल्लाह की तरफ से है और अल्लाह अलीम व हलीम है। ये अल्लाह की ठहराई हुई हदें हैं। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा अल्लाह उसे ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे और यही बड़ी कामयाबी है। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा और उसके मुकर्र किए हुए जातों (नियमों) से बाहर निकल जाएगा उसे वह आग में दाखिल करेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा और उसके लिए जिल्लत वाला अज्राब है। (11-14)

आदमी जो कानून बनाता है उसमें किसी न किसी पहलू की तरफ झुकाव हो जाता है। पुराने कबाइली दौर में लड़का बहुत अहमियत रखता था। क्योंकि वह कबीले के लिए ताकत का जरिया था, इसलिए विरासत में लड़की को महरूम करके सारा हक लड़के को दे दिया गया। मौजूदा जमाने में इसका रद्देअमल हुआ तो लड़का और लड़की दोनों बराबर कर दिए गए। लेकिन पिछला उसूल अगर गैर-मुसिफाना था तो मौजूदा उसूल गैर हकीकतपसंदाना है। यह सिर्फ अल्लाह है जिसका इल्म व हिक्मत इस बात की जमानत है कि वह जो कानून दे वह हर किस्म की बेएतदाली से पाक हो। अल्लाह ने इस सिलसिले में जो जाबते मुकर्र किए हैं वे न सिर्फ यह कि समाजी इंसफ का हकीमी जरिया है बल्कि आखिरत की जिंगी से भी इनका गहरा तअल्लुक है। यतीमों के हुक्क अदा करना, वसीयत की तामील करना, विरासत को उसके वारिसों तक पहुंचाना उन मामलों में से हैं जिन पर आदमी की दोख व जन्नत निर्भर है। एक तिहाई हिस्से में वसीयत करना शरीअत की रु से जाइज है। लेकिन कोई शख्स ऐसी वसीयत करे जिसका मकसद हकदार को विरासत से महरूम करना हो तो यह ऐसा गुनाह है जो उसे जहन्म का मुस्तहिक बना सकता है। इस मामले में आदमी को खुदा के मुकर्र किए हुए जाबते पर चलना है न कि जाती ख्वाहिशों और खानदानी मस्लेहतों के ऊपर।

وَالَّذِي يَأْتِيَنَّ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِنْكُمْ فَإِنْ شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّى يَتَوَقَّعَنَّ الْمَوْتَ أَوْ يُجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ۖ وَالَّذِينَ يَأْتِيَنَّاهُمْ قَدْ وَهَمْنَا أَنْ تَأْبَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرَضُوا عَنْهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۖ إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۖ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۚ حَتَّى إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ النَّاسَ وَلَا الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ وَهُمْ كَفَّارٌ أُولَئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ

और तुम्हारी औरतों में से जो कोई बदकारी करे तो उन पर अपनों में से चार मर्द गवाह करो। फिर अगर वे गवाही दे दें तो इन औरतों को घरों के अंदर बंद रखो, यहां तक कि उन्हें मौत उठा ले या अल्लाह उनके लिए कोई राह निकाल दे। और तुममें से दो मर्द जो वही बदकारी करें तो उन्हें अज़ियत (यातना) पहुंचाओ। फिर अगर वे दोनों तौबा करें और अपनी इस्लाह कर लें तो उनका ख्याल छोड़ दो। वेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला महरबान है। तौबा जिसे कुबूल करना अल्लाह के जिम्मे है वह उन लोगों की है जो बुरी हरकत नादानी से कर बैठते हैं, फिर जल्द ही तौबा कर लेते हैं। वही हैं जिनकी तौबा अल्लाह कुबूल करता है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और ऐसे लोगों की तौबा नहीं है जो बराबर गुनाह करते रहें, यहां तक कि जब मौत उनमें से किसी के सामने आ जाए तब वह कहे कि अब मैं तौबा करता हूं, और न उन लोगों की तौबा है जो इस हाल में मरते हैं कि वे मुंकिर हैं, उनके लिए तो हमने दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (15-18)

कोई मर्द या औरत अगर ऐसा फेअल (कृत्य) कर बैठे जो शरीअत के नजदीक गुनाह हो तब भी उसके साथ जो मामला किया जाएगा वह कानून के मुताबिक किया जाएगा न कि कानून से आजाद हेकर। कानून के तमजे पूरे किए बिना किसी को मुजरिम कारा देना दुस्त नहीं, किसी का मुजरिम होना दूसरे को यह हक नहीं देता कि वह उसके खिलाफ जालिमाना कार्रवाई करने लगे। सजा का मकसद अदल (न्याय) का कयाम है और अदल का कयाम जुल्म और नाइसाफी के साथ नहीं हो सकता। और अगर गुनाह करने वाला तौबा करे और अपनी इस्लाह कर ले तो इसके बाद तो लाजिम हो जाता है कि उसके साथ शफकत (स्नेह) और दरगुजर (क्षमा) का मामला किया जाए। किसी के माजी (अतीत) की बुनियाद पर उसे मतऊन (लाछित) करना दुस्त नहीं। जब अल्लाह तौबा करने वालों की तौबा कुबूल करता है और अपनी इस्लाह कर लेने वालों की तरफ दुबारा महरबानी के साथ पलट आता है तो इंसानों को क्या हक है कि ऐसे किसी शख्स को तंज और मलामत का निशाना बनाएं। ऐसे किसी शख्स को तंज और मलामत का निशाना बनाकर आदमी खुद अपने आपको मुजरिम साबित कर रहा है, न कि किसी दूसरे आदमी को।

तौबा जवान से 'तौबा' का लफज बोलने का नाम नहीं। यह अपनी गुनाहगारी के शदीद एहसास का नाम है। और आदमी अगर अपनी तौबा में संजीदा हो और वाकई शिद्दत के साथ उसने अपनी गुनाहगारी को महसूस किया हो तो वह आदमी के लिए इतना सख्त मामला होता है कि तौबा आदमी के लिए अपनी सजा आप देने के हममअना बन जाती है। यह कैफियत आदमी के अंदर अगर अल्लाह के डर से पैदा हुई हो तो अल्लाह जरूर उसे माफ कर देता है। मगर उन लोगों की तौबा की अल्लाह के नजदीक कोई कीमत नहीं जो इतने जरी (हेकड़) हों कि जानबूझ कर अल्लाह की नाफरमानी करते रहें। और तंबीह (चेतावनी) के बावजूद उस पर कायम रहें, अलबत्ता जब दुनिया से जाने का वक्त आ जाए तो कहे कि 'मैंने तौबा की।' इसी तरह उन लोगों की तौबा भी बेफायदा है जो आखिरत में अजाब को समाने देखकर अपने जुर्म का इकारा करेंगे।

तौबा की हकीकत बंद का अपने ख की तरफ पलटना है ताकि उसका ख भी उसकी तरफ पलटे। तौबा उस शख्स के लिए है जो वक्ती जब्बे से मगलुब होकर बुरी हरकत कर बैठे, फिर उसके नफस का एहतेसाब (परख) जल्द ही उसे अपनी गलती का एहसास करा दे वह बुराई को छोड़कर दुबारा नेकी की रविश अपनाए और शरीअत के मुताबिक अपनी जिंदगी की इस्लाह कर ले। ऐसा ही आदमी तौबा करने वाला है और जो शख्स इस तरह तौबा करे उसकी मिसाल ऐसी ही है जैसा भटका हुआ आदमी दुबारा अपने घर वापस आ जाए।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرِهًا وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا تَرَثْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُبِينَةٍ وَعَاثِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَى أَنْ تَكُونُوا شِئَاءًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا ۖ وَإِنْ أَرَدْتُمْ سِتْبَدَالَ زَوْجٍ مَكَانَ زَوْجٍ وَآتَيْتُمْ أَحَدَهُنَّ قِنطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ شَيْئًا ۚ أَتَأْخُذُونَ مِنْهُ بُهْتَانًا وَإِنَّمَا مُبِينًا ۚ وَكَيْفَ تَأْخُذُونَ وَقَدْ أَفْضَى بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ وَاتَّخَذُوا مِنْكُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ۚ وَلَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۚ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا ۚ وَسَاءَ سَبِيلًا ۚ

ऐ ईमान वाले तुम्हारे लिए जाइज नहीं कि तुम औरतों को जबरदस्ती अपनी मीरास में ले लो और न उन्हें इस गरज से रोके रखो कि तुमने जो कुछ उन्हें दिया है उसका कुछ हिस्सा उनसे ले लो मगर इस सूरत में कि वे खुली हुई बेहयाई करें। और उनके साथ अच्छी तरह गुजर-बसर करो। अगर वे तुम्हें नापसंद हों तो हो सकता है कि एक चीज तुम्हें पसंद न हो मगर अल्लाह ने इसमें तुम्हारे लिए बहुत बड़ी भलाई रख दी हो। और अगर तुम एक बीबी की जगह दूसरी बीबी बदलना चाहो और तुम उसे बहुत सा माल दे चुके हो तो तुम उसमें से कुछ वापस न लो। क्या तुम इसे बोहतान (आक्षेप) लगाकर और सरीह जुल्म करके वापस लोगे। और तुम किस तरह उसे लोगे जबकि एक दूसरे से खलवत कर चुका है और वे तुमसे पुख्ता अहद ले चुकी हैं। और उन औरतों से निकाह मत करो जिनसे तुम्हारे बाप निकाह कर चुके हैं, मगर जो पहले हो चुका। वेशक यह बेहयाई है और नफरत की बात है और बहुत बुरा तरीका है। (19-22)

मरने वाले के माल में यकीनन बाद वालों को विरासत का हक है। मगर इसका मतलब यह नहीं कि मरने वाले की बीबी को भी बाद के लोग अपनी मीरास समझ लें और जिस तरह चाहें उसको इस्तेमाल करें। माल एक संवेदनहीन और अधीन चीज है और इसमें विरासत चलती है। मगर इंसान एक जिंदा और आजाद हस्ती है। उसे इख्तियार है कि वह अपनी मर्जी से अपने मुस्तकबिल (भविष्य) का फैसला करे। औरत में अगर कोई जिस्मानी या मिजाजी कमी हो तो उसे बर्दाश्त करते हुए औरत को मौका देना चाहिए कि वह अल्लाह की दी हुई

दूसरी खूबियों के जरिए घर की तामीर में अपना हिस्सा अदा करे। आदमी को चाहिए कि जाहिरी नापसंदीदगी को भूल कर आपसी तअल्लुकात को निभाए। किसी खानदान और इसी तरह किसी समाज की तरक्की और इस्तहकाम का राज यह है कि उसके अफ़राद एक-दूसरे की कमियों को नजरअंदाज करते हुए उनकी खूबियों को बरुएकार आने का मौका दें। जो लोग अल्लाह की खातिर मौजूदा दुनिया में सन्न और बर्दाश्त का तरीका अपनाएं वही वे लोग हैं जो आखिरत की जन्नतों में दाखिल किए जाएंगे।

जब आदमी को अपना जीवन साथी नापसंद हो और वह सन्न का तरीका न अपनाकर अलग होने का फैसला करे तो अक्सर ऐसा होता है कि इस अलेहिदगी को हक बजानिब साबित करने के लिए वह दूसरे फरीक की खामियों को बढ़ा-चढ़ा कर बयान करता है। वह उस पर झूठे इल्जाम लगाता है। वह उसके खिलाफ जालिमाना कार्यवाई करता है ताकि वह घबरा कर खुद ही भाग जाए। इसी तरह जब आदमी किसी से तअल्लुक तोड़ता है तो ज़िद में आकर दूसरे फरीक को दी हुई चीजें उससे वापस छीनने की कोशिश करता है। मगर यह सब अहद की खिलाफ़ज़ी है और अहद (वचनबद्धता) अल्लाह की नज़र में ऐसी मुक़द्दस चीज है कि अगर वह अलिखित रूप में हो तब भी उसकी पाबंदी उतनी ही ज़रूरी है जितना कि लिखित अहद की।

‘जो हो चुका सो हो चुका’ का उसूल सिर्फ़ निकाह से संबंधित नहीं है। बल्कि यह एक आम उसूल है। ज़िंदगी के निज़ाम में जब भी कोई तब्दीली आती है, चाहे वह घरेलू ज़िंदगी में हो या क़ैमी ज़िंदगी में, तो माजी (अतीत) के बहुत से मामले ऐसे होते हैं जो नए इक्लाब के मेयार पर ग़लत नज़र आते हैं। ऐसे मामलों पर माजी को क़ुदना और गुज़री हुई ग़लतियों पर अहकाम जारी करना बेशुमार नए मसाइल पैदा करने का सबब बन जाता है। इसलिए सही तरीका यही है कि माजी को भुला दिया जाए और सिर्फ़ हाल और मुस्तक़बिल की इस्लाह पर अपनी कोशिशें लगा दी जाएं। ‘और उनके साथ अच्छे तरीके से गुज़र-बसर करो। अगर वे तुम्हें नापसंद हों तो हो सकता है कि तुम्हें एक चीज पसंद न हो मगर अल्लाह ने उसके अंदर तुम्हारे लिए कोई बड़ी भलाई रख दी हो।’ यह जुमला यहां अगरचे मियां-बीवी के तअल्लुक के बारे में आया है, मगर इसके अंदर एक उमूमी तालीम भी है। क़ुरआन का यह आम उसूल (शैली) है कि एक सुनिश्चित मामले का हुक्म बताते हुए उसके दर्मियान एक ऐसी सामान्य हिदायत दे देता है जिसका तअल्लुक आदमी की पूरी ज़िंदगी से हो।

दुनिया की ज़िंदगी में इंसान के लिए मिलजुल कर रहना नागुज़ीर है। कोई शख्स बिल्कुल अलग-थलग ज़िंदगी गुज़ार नहीं सकता। अब चूंकि स्वभाव अलग-अलग हैं, इसलिए जब भी कुछ लोग मिलजुल कर रहेंगे उनके दर्मियान लाजिमन शिकायतें पैदा होंगी। ऐसी हालत में क़बिले अमल सूत सिर्फ़ यह है कि शिकायतों को नज़रअंदाज किया जाए और ख़ुशउल्लूबी के साथ तअल्लुक को निभाने का उसूल अपनाया जाए।

अक्सर ऐसा होता है कि अपने साथी की एक ख़राबी आदमी के सामने आती है और वह बस उसी को लेकर अपने साथी से रूठ जाता है। हालांकि अगर वह सोचे तो वह पाएगा कि हर नामुवाफ़िक़ (प्रतिकूल) सूतेहाल में कोई ख़ैर का पहलू मौजूद है। कभी किसी वाक्य में आदमी के लिए सन्न की तर्बियत का इम्तेहान होता है। कभी इसके अंदर अल्लाह की तरफ

रुज़ूअ और इनाबत की गिजा होती है। कभी एक छोटी-सी तकलीफ़ में कोई बड़ा सबक लुया हुआ होता है, आदि।

حَرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أَمْثَلَكُمْ وَبَنَاتَكُمْ وَأَخَوَاتَكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأَخْتِ وَأُمَّهَاتُكُمُ الَّتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتُكُمُ مِنَ الرِّضَاعَةِ وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَّابُكُمْ الَّتِي فِي جُحُورِكُمْ مِّنْ نِّسَائِكُمُ الَّتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَإِن لَّمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَن تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ٥

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَإِنْ أَحِلَّ لَكُمْ مَا وَرَاءَ ذَلِكَ أَنْ تَبْتَغُوا بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ فَرِيضَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا تَرَاضَيْتُمْ بِهِ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ٦ وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ فَمِنْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيَاتِكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَيْمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ فَانكِحُوهُنَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِنَّ وَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسْفَحَاتٍ وَلَا مُتَّخِذَاتِ أَخْدَانٍ فَإِذَا أُحْصِنَ فَإِنَّ أَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ الْعَذَابِ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ وَأَنْ تَصِدُّوا خَيْرٌ لَّكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ٧

तुम्हारे ऊपर हराम की गई तुम्हारी माएं, तुम्हारी बेटियां, तुम्हारी बहिनें, तुम्हारी फूफियां, तुम्हारी खालाएं, तुम्हारी भतीजियां और भांजियां और तुम्हारी वे माएं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया, तुम्हारी दूध शरीक बहिनें, तुम्हारी औरतों की माएं और उनकी बेटियां जो तुम्हारी परवरिश में हैं जो तुम्हारी उन वीवियों से हों जिनसे तुमने सोहबत की है, लेकिन अगर अभी तुमने उनसे सोहबत न की हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं। और तुम्हारे सुलबी (तुमसे पैदा) बेटों की वीवियां और यह कि तुम इकट्ठा करो दो बहिनों को मगर जो पहले हो चुका। बेशक अल्लाह व़श्शने वाला महरबान है। और वे औरतें भी हराम हैं जो किसी दूसरे के निकाह में हों मगर यह कि वे जंग में तुम्हारे

हाथ आए। यह अल्लाह का हुक्म है तुम्हारे ऊपर। इनके अलावा जो औरतें हैं वे सब तुम्हारे लिए हलाल हैं बशर्ते कि तुम अपने माल के जरिए से उनके तालिब बनो, उनसे निकाह करके न कि बदकारी के तौर पर। फिर उन औरतों में से जिन्हें तुम काम में लाए उन्हें उनको तैशुदा महर दे दो। और महर के ठहराने के बाद जो तुमने आपस में राजीनामा किया हो तो इसमें कोई गुनाह नहीं। बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और तुममें से जो शख्स सामर्थ्य न रखता हो कि आजाद मुसलमान औरतों से निकाह कर सके तो उसे चाहिए कि वह तुम्हारी उन कनीजों (दासियों) में से किसी के साथ निकाह कर ले जो तुम्हारे कब्जे में हों और मोमिना हों। अल्लाह तुम्हारे ईमान को खूब जानता है, तुम आपस में एक हो। पस उनके मालिकों की इजाजत से उनसे निकाह कर लो और मारुफ तरीके से उनके महर अदा कर दो, इस तरह कि उनसे निकाह किया जाए न कि आजाद शहवतरानी करें और चोरी छुपे आशनाइयां करें। फिर जब वे निकाह के बंधन में आ जाएं और इसके बाद वे बदकारी करें तो आजाद औरतों के लिए जो सजा है उसकी आधी सजा इन पर है। यह उसके लिए है जो तुममें से बदकारी का अदेशा रखता हो। और अगर तुम जब्त (संयम) से काम लो तो यह तुम्हारे लिए ज्यादा बेहतर है, और अल्लाह बख्शने वाला रहम करने वाला है। (23-25)

इंसान के अंदर बहुत सी फितरी ख्वाहिशें हैं। इन्हीं में से एक शहवानी ख्वाहिश (यौन-इच्छा) है जो औरत और मर्द के दर्मियान पाई जाती है। शरीअत तमाम इंसानी जज्बात की हदबंदी करती है। इसी तरह उसने शहवानी जज्बात के लिए भी हदें और जाबते (नियम) मुर्तर किए हैं। शरीअते इलाही के मुताबिक औरत और मर्द के दर्मियान सिर्फ वही तअल्लुक सही है जो निकाह की सूरत में एक संजीदा समाजी समझौते की हैसियत से कायम हो। फिर यह कि जिस तरह फितरी जज्बात की तस्कीन जरूरी है उसी तरह यह भी जरूरी है कि ख़नदानी जिंदगी में तक्द्दुस (पवित्रता) की फिज मौजूद रहे। इस मक़सद के लिए नसब (वंश) या रजाअत (दूध का रिश्ता) या मुसाहिरत (पारिवारिक संबंध) के तहत कायम होने वाले कुछ रिश्तों को हराम करार दे दिया गया ताकि बिल्कुल करीबी रिश्तों के दर्मियान का तअल्लुक शहवानी जज्बात से मुक्त रहे।

इंसान की इज्जत और बड़ाई का मेयार वह दिखाई देने वाली चीजें नहीं हैं जिन पर लोग एक-दूसरे की इज्जत व बड़ाई को नापते हैं। बल्कि बड़ाई का मेयार वह न दिखाई देने वाला ईमान है जो सिर्फ अल्लाह के इल्म में होता है। गोया किसी का इज्जत वाला होना या बेइज्जत वाला होना ऐसी चीज नहीं जो आदमी को मालूम हो। यह तमामतर नामालूम चीज है और इसका फैसला आखिरत में अल्लाह की अदालत में होने वाला है। यह एक ऐसा तसब्बुर है जो आदमी से बरतरी (उच्चता) का अहसास छीन लेता है। और बरतरी का एहसास ही वह चीज है जो अधिकतर समाजी खराबियों की अस्त जड़ है।

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ الَّذِي فِيكُمْ وَيُطَهِّرَ كُفْرَكُمْ وَيُؤْتِيَكُمْ مَالًا

وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَنْ تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا ۝ يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَوِّفَ عَنْكُمْ وَخُلُقَ الْإِنْسَانِ ضَعِيفًا ۝

अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे वास्ते बयान करे और तुम्हें उन लोगों के तरीकों की हिदायत दे जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं और तुम पर तवज्जोह करे, अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और अल्लाह चाहता है कि तुम्हारे ऊपर तवज्जोह करे और जो लोग अपनी ख्वाहिशों की पैरवी कर रहे हैं वे चाहते हैं कि तुम राहेरास्त से बहुत दूर निकल जाओ। अल्लाह चाहता है कि तुम से बोझ को हल्का करे और इंसान कमजोर बनाया गया है। (26-28)

जिंदगी के तरीके जो कुरआन में बताए गए हैं वे कोई नए नहीं हैं। हर दौर में अल्लाह अपने पैगम्बरों के जरिए इनका एलान कराता रहा है। हर जमाने के खुदापरस्त लोगों का इसी पर अमल था। मगर कदीम आसमानी किताबों के महफूज न रहने की वजह से ये तरीके गुम हो गए। अब अल्लाह ने अपने आखिरी रसूल के जरिए इन्हें अरबी भाषा में उतारा और इन्हें हमेशा के लिए महफूज कर दिया। आज जब कोई गिरोह इन तरीकों पर अपनी जिंदगी को ढालता है तो गोया वह सालेहीन (सच्चे लोगों) के उस अबदी काफिले में शामिल हो जाता है जिन्हें अल्लाह की रहमतों में हिस्सा मिला, जो हर जमाने में अल्लाह के उस रास्ते पर चले जिसे अल्लाह ने अपने वफादार बंदों के लिए खोला था।

हर इंसानी गिरोह में ऐसा होता है कि कुछ चीजें सदियों के रवाज से जड़ जमा लेती हैं। वे लोगों के जेहनों पर इस तरह छा जाती हैं कि उनके खिलाफ सोचना मुश्किल हो जाता है। जब अल्लाह का कोई बंदा समाज सुधार का काम शुरू करता है तो इस किस्म के लोग चीख उठते हैं। अपने मानूस(प्रचलित) तरीकों को छोड़कर नामानूस तरीकों को अपनाना उनके लिए सख्त दुश्वार हो जाता है। वे ऐसी इस्लाही तहरीक के दुश्मन बन जाते हैं जो उन्हें उनके बाप-दादा के तरीकों से हटाना चाहती हो। इस सिलसिले में मजहबी तबके का रद्देअमल और भी ज्यादा शदीद होता है। जब दीन का अंदरूनी पहलू कमजोर होता है तो खारजी (वाह्य) मूशिगाफियां (कुत्तक) जन्म लेती हैं। अब आदाब और कायदों का एक जाहिरी ढांचा बना लिया जाता है। लोग दीन की अस्ली कैफियतों से खाली होते हैं और जाहिरी आदाब और कायदों की पाबंदी करके समझते हैं कि वे खुदा के दीन पर कायम हैं। यह स्वनिर्मित दीन पूर्वजों से मंसूब होकर धीरे-धीरे पवित्र बन जाता है और नौबत यहां तक पहुंचती है कि खुदा का सादा और फितरी दीन इन्हें अजनबी मालूम होता है। और अपना जकड़बंदियों वाला दीन ऐन बरहक नजर आता है। ऐसी हालत में जो तहरीक अस्ली और इब्तिदाई दीन को जिंदा करने के लिए उठे वे इसके शदीद विरोधी हो जाते हैं क्योंकि इसमें उन्हें अपनी दीनदारी की नफी (नकार) होती हुई नजर आती है। मसलन खुदा की शरीअत में हैज़ के दौरान औरत के साथ मुबाशिरत नाजाइज है, इसके अलावा दूसरे तअल्लुकात उसी तरह रखे जा सकते हैं जिस तरह आम दिनों के होते हैं। यहूदियों ने इस सादा हुक्म पर इजाफा करके यह मसला बनाया

कि माहवारी के दिनों में औरत की पकाई हुई चीज को खाना, उसके हाथ का पानी पीना, उसके साथ एक जगह बैठना, उसे अपने हाथ से छूना सब नाजाइज या कम से कम तकवा के खिलाफ है। इस तरह हैज वाली औरत से मुकम्मल दूरी गोया पारसाई की अलामत बन गई। अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) ने मदीने में जब खुदा की अस्ती शरीअत को जिंदा किया तो यहूदी बिगड़ गए। वह चीज जिस पर उन्होंने अपनी पारसाई की इमारत खड़ी की थी अचानक गिरती हुई नजर आई। खुदा के सादा दीन को जब भी जिंदा किया जाए तो वे लोग इसके सख्त मुखालिफ हो जाते हैं जो बनावटी दीन के ऊपर अपनी दीनदारी की इमारत खड़ी किए हुए हों। यह उनसे सरदारी छीनने के समान होता है और सरदारी का छिनना कोई बर्दाश्त नहीं करता।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاحٍ مِّنْكُمْ ۖ وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا ۖ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًا وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۚ إِنَّ تَجَنُّبَكُمْ كَثِيرَ مَا تَنْهَوْنَ عَنْهُ تُكْفِرُ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلُكُمْ مُدْخَلًا كَرِيمًا ۖ وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ ۚ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ۚ وَسَأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۖ وَلِكُلِّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبُونَ ۚ وَلِلَّذِينَ عَقَدْتَ أَيْمَانُكُمْ فَأَوْهَهُمْ نَصِيبَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

ऐ ईमान वाले, आपस में एक-दूसरे का माल नाहक तौर पर न खाओ। मगर यह कि तिजारत हो आपस की खुशी से। और खून न करो आपस में। बेशक अल्लाह तुम्हारे ऊपर बड़ा महबान है। और जो शख्स सरकशी और जुल्म से ऐसा करेगा उसे हम जरूर आग में डालेंगे और यह अल्लाह के लिए आसान है। अगर तुम उन बड़े गुनाहों से बचते रहे जिनसे तुम्हें मना किया गया है तो हम तुम्हारी छोटी बुराइयों को माफ कर देंगे और तुम्हें इज्जत की जगह दखिल करेंगे। और तुम ऐसी चीज की तमन्ना न करो जिसमें अल्लाह ने तुममें से एक को दूसरे पर बढ़ाई दी है। मदों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का और औरतों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का। और अल्लाह से उसका फल मांगो। बेशक अल्लाह हर चीज का इल्म रखता है। और हमने वालिदेन और रिश्तेदारों के छोड़े हुए में से हर एक के लिए वारिस ठहरा दिए हैं और जिनसे तुमने अहद बांध रखा हो तो उन्हें उनका हिस्सा दे दो, बेशक अल्लाह के रूबरू है हर चीज। (29-33)

एक का माल दूसरे तक पहुंचने की एक सूरत यह है कि एक आदमी दूसरे की जरूरत फराहम करे और उससे अपनी महनत का मुआवजा ले। यह तिजारत है और शरीअत के मुताबिक यही कस्बेमाअश (जीविका) का सही तरीका है। इसके बजाए चोरी, धोखा, झूठ, रिश्तत, सूद, जुवा वीरह से जो माल कमाया जाता है वह खुदा की नजर में नजाइज तरीके से कमाया हुआ माल है। यह लूट की विभिन्न किस्में हैं और जो लोग तिजारत के बजाए लूट को अपना मआश का जरिया बनाएं वे दुनिया में चाहे कामयाब रहें मगर आखिरत में उनके लिए आग का अजाब है। आदमी की जान का मामला भी यही है। आदमी को मारने का हक सिर्फ एक कायमशुदा हुक्मत को है जो खुदा के कानून के तहत बाकयदा इल्जाम साबित होने के बाद उसके खिलाफ कार्रवाई करे। इसके सिवा जो शख्स किसी को उसकी जिंदगी से महरूम करने की कोशिश करता है वह हराम काम करता है जिसके लिए अल्लाह के यहां सख्त सजा है। अल्लाह के नजदीक सबसे बड़ा जुर्म उदवान और सरकशी है। यानी हद से निकलना और नाहक किसी को सताना। जो लोग उदवान (दुश्मनी) और जुल्म से अपने को बचाएं उनके साथ अल्लाह यह खुसूसी मामला फरमाएगा कि वे आखिरत की दुनिया में इस तरह दखिल होंगे कि उनकी मामूली कोताहियां और लाजिर्शें उनसे दूर की जा चुकी होंगी।

दुनिया में एक आदमी और दूसरे आदमी के दर्मियान फर्क रखा गया है। किसी को जिस्मानी और जेहनी कुव्वतों में कम हिस्सा मिला है और किसी को ज्यादा। कोई अच्छे हालात में पैदा होता है और कोई बुरे हालात में। किसी के पास बड़े-बड़े जराए (संसाधन) हैं और किसी के पास मामूली जराए। आदमी जब किसी दूसरे को अपने से बड़ा हुआ देखता है तो उसके अंदर फौरन उसके खिलाफ जलन पैदा हो जाती है। इससे इज्तिमाई जिंदगी में हसद, अदावत और आपसी कशमकश पैदा होती है। मगर इन चीजों के एतबार से अपने या दूसरे को तौलना नादानी है। ये सब दुनियावी अहमियत की चीजें हैं। ये दुनिया में मिली हैं और दुनिया ही में रह जाने वाली हैं। अस्ल अहमियत आखिरत की कामयाबी की है और आखिरत की कामयाबी में इन चीजों का कुछ भी दखल नहीं। आखिरत की कामयाबी उस अमल पर निर्भर है जो आदमी इरादे और इख्तियार से अल्लाह के लिए करता है। इसलिए बेहतरीन अक्लमंदी यह है कि आदमी हसद से अपने आपको बचाए और अल्लाह से तौफीक की दुआ करते हुए अपने आपको आखिरत के लिए अमल करने में लगा दे।

الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللَّهُ بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ وَهِيَ الْأُنْفُسُ مِنَ الْأَمْوَالِ ۚ فَالْصَّالِحَاتُ قَلِيلٌ ۖ خَافَتُ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللَّهُ ۚ وَالَّتِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا كَبِيرًا ۖ وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا ۚ إِنَّ يُرِيدَ إِصْلَاحًا يُّوفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا ۝

मर्द औरतों के ऊपर कवाम (प्रमुख) हैं। इस कारण कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर बढ़ाई दी है और इस कारण कि मर्द ने अपने माल खर्च किए। पस जो नेक औरतें हैं वे फरमांवरदारी करने वाली, पीठ पीछे निगहबानी करती हैं अल्लाह की हिफाजत से। और जिन औरतों से तुम्हें सरकशी का अंदेशा हो उन्हें समझाओ और उन्हें उनके बिस्तरों में तंहा छोड़ दो और उन्हें सजा दो। पस अगर वे तुम्हारी इताअत करें तो उनके खिलाफ इल्जाम की राह न तलाश करो। बेशक अल्लाह सबसे ऊपर है, बहुत बड़ा है। और अगर तुम्हें मियां-बीबी के दर्मियान तअल्लुकात बिगड़ने का अंदेशा हो तो एक मुंसिफ मर्द के रिश्तेदारों में से खड़ा करो और एक मुंसिफ औरत के रिश्तेदारों में से खड़ा करो। अगर दोनों इस्लाह चाहें तो अल्लाह उनके दर्मियान मुवाफिकत कर देगा। बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला खबरदार है। (34-35)

जहां भी आदमियों का कोई मज्बूआ हो, चाहे वह खानदान की सूरत में हो या राज्य की सूरत में, जरूरी है कि उसके ऊपर सरदार और सरबराह (प्रमुख) हो, और यह सरबराह लाजिमन एक ही हो सकता है। दुनिया के बारे में अल्लाह का बनाया हुआ जो मंसूबा है उसमें खानदान की सरबराही के लिए मर्द को मुतअव्यन किया गया है और इसी के लिहाज से उसकी तख्लीक (रचना) हुई है। मर्द की बनावट और औरत की बनावट में जो जैविक और मनोवैज्ञानिक फर्क है वह अल्लाह के इसी तख्लीकी मंसूबे के अनुरूप है। अब अगर कुछ लोग अल्लाह के मंसूबे के खिलाफ चलें तो वे सिर्फ बिगाड़ पैदा करने का सबब बनेंगे। क्योंकि खुदा का कारखाना तो मर्द और औरत को बदस्तूर अपने मंसूबे के मुताबिक बनाता रहेगा जिसमें 'कवामियत' की क्षमताएं मर्द को दी गई होंगी और 'इताअत' की क्षमताएं औरत को। जबकि इनके सामाजिक इस्तेमाल में खुदाई रचना-योजना का पालन नहीं किया जा रहा होगा। ऐसे हर अन्तर्विरोध का नतीजा इस दुनिया में सिर्फ बिगाड़ है।

बेहतरीन औरत वह है जो अल्लाह के तख्लीकी मंसूबे (रचना-योजना) में अपने को शामिल करते हुए मर्द की बरतरी तस्लीम कर ले। इसी तरह बेहतरीन मर्द वह है जो अपनी बरतरी तस्लीम के सबब इस हकीकत को भूल न जाए कि खुदा उससे भी ज्यादा बरतरी है। खुदा की अदालत में औरत मर्द का कोई फर्क नहीं, यह फर्क तमामतर सिर्फ दुनिया के इंतजाम के एतबार से है न कि आखिरत में इनामात की तस्लीम के एतबार से। मर्द को चाहिए कि वह औरत के हक में अपनी जिम्मेदारियों को अदा करने का पूरा एहतेमाम करे। कोई औरत अगर ऐसी हो जो मर्द की इंतजामी बढ़ाई को न माने तो ऐसा हरगिज न होना चाहिए कि मर्द के अंदर इंतिकाम का जच्चा उभर आए या वह इल्जामात लगा कर औरत को बदनाम करे। कोई भी बरतरी किसी को इंसाफ की पाबंदी से मुक्त नहीं करती। अलबत्ता खुसूसी हालात में मर्द को यह हक है कि किसी औरत के अंदर अगर वह सरताबी देखे तो वह उसकी इस्लाह की कोशिश करे। यह इस्लाह अव्वलन समझाने बुझाने से शुरू होगी। फिर दबाव डालने के लिए बातचीत न करना और तअल्लुक न रखना अपनाया जा सकता है। आखिरी दर्जे में मर्द उसे हल्की सजा दे सकता है, जैसे मिस्वाक से मारना।

दो आदमियों में जब आपसी मनमुटाव हो तो दोनों का जेहन एक-दूसरे के बारे में मुतअस्सिर जेहन बन जाता है। दोनों एक-दूसरे के बारे में खालिस वाक्याती अंदाज से सोच

नहीं पाते। ऐसी हालत में मामले को तै करने की बेहतरीन सूरत यह है कि दोनों अपने सिवा किसी दूसरे को हकम (बिचैलिया, मुंसिफ) बनाने पर राजी हो जाएं। दूसरा शख्स मामले से जाती तौर पर जुड़ा न होने की वजह से शैर-मुतअस्सिर जेहन के साथ सोचेगा और ऐसे फैसले तक पहुंचने में कामयाब हो जाएगा जो वाक्ये की हकीकत के मुताबिक हो।

وَأَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تَشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ
وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا ۝
الَّذِينَ يَخُلُون وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبَخْلِ وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ
فَضْلِهِ وَاعْتَدُوا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ۝ وَالَّذِينَ يُتَّفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ
رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَكُنِ
الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ۝ وَمَا ذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَانْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ
مِثْقَالَ ذَرَّةٍ وَإِنْ تَكَ حَسَنَةً يُّضْعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

और अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज को उसका शरीक न बनाओ। और अच्छा सुलूक करो मां-बाप के साथ और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों और मस्कीनों और रिश्तेदार पड़ोसी और अजनबी पड़ोसी और पास बैठने वाले और मुसाफिर के साथ और ममलूक (अधीन) के साथ। बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता इतराने वाले बढ़ाई करने वाले को जोकि कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी सिखाते हैं और जो कुछ उन्हें अल्लाह ने अपने फल से दे रखा है उसे छुपाते हैं। और हमने मुँक़रों के लिए जिल्लत का अजब तैयार कर रखा है। और जो लोग अपना माल लोगों को दिखाने के लिए खर्च करते हैं और अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिसका साथी शैतान बन जाए तो वह बहुत बुरा साथी है। उनका क्या नुकसान था अगर वे अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान लाते और अल्लाह ने जो कुछ उन्हें दे रखा है उसमें से खर्च करते। और अल्लाह उनसे अच्छी तरह वाख़बर है। बेशक अल्लाह ज़ा भी किसी की हक़तलाफ़ी नहीं करेगा। अगर नेकी हो तो वह उसे दुगना बढ़ा देता है और अपने पास से बहुत बड़ा सवाब देता है। (36-40)

इंसान के पास जो कुछ है सब अल्लाह का दिया हुआ है। इसका तकाज़ा है कि इंसान अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दे, वह उसका इबादतगुजार बन जाए। जब आदमी इस तरह अल्लाह वाला बनता है तो उसके अंदर फितरी तौर पर तवाज़ोअ (विनम्रता, सद्ब्यवहार)

का मिजाज पैदा हो जाता है। उसका यह मिजाज उन इंसानों से तअल्लुक़त में जाहिर होता है जिनके दर्मियान वह जिंदगी गुजार रहा हो। उसका यह मिजाज मां-बाप के मामले में हुने सुलूक की सूरत अपना लेता है। हर शख्स जिससे उसका वास्ता पड़ता है वह उसे ऐसा इंसान पाता है जैसे वह अल्लाह को अपने ऊपर खड़ा हुआ देख रहा हो। वह हर एक का हक उसके तअल्लुक़ के मुवाफ़िक़ और उसकी ज़रूरत के मुनासिब अदा करने वाला बन जाता है। जो शख्स भी किसी हैसियत से उसके संपर्क में आता है उसे नजरअंदाज करना उसे ऐसा लगता है जैसे वह खुद अपने को अल्लाह के यहां नजरअंदाज किए जाने का ख़तरा मोल ले रहा है।

जो शख्स अपने आपको अल्लाह के हवाले न करे उसके अंदर फ़ख़ की नफ़िसयात उभरती है। उसके पास जो कुछ है उसे वह अपनी महनत और काबलियत का करिश्मा समझता है। इसका नतीजा यह होता है कि वह अपनी कमाई को सिर्फ़ अपना हक़ समझता है। कमजोर रिश्तेदारों या मोहताजों से तअल्लुक़ जोड़ना उसे अपने मक़ाम से नीचे दर्जे की चीज़ मालूम होती है। वह अपनी मस्तेहतों या ख़्वाहिशों की तस्कीन में ख़ूब माल ख़र्च करता है मगर वे मदें जिनमें ख़र्च करना उसकी अना (अहंकार) को ग़िज़ा देने वाला न हो वहां ख़र्च करने में दिल तंग होता है। दिखावे के कामों में ख़र्च करने में वह फ़य्याज होता है और ख़ामोश दीनी कामों में ख़र्च करने में वह बख़ील (कंजूस) होता है। जो लोग खुदा की नेमत से तवाजोअ (विनम्रता) के बजाए फ़ख़ की ग़िज़ा लें, जो खुदा के दिए हुए माल को खुदा की बताई हुई मदों में न ख़र्च करें, अलबत्ता अपने नफ़स के तकाज़ों पर ख़र्च करने के लिए फ़य्याज हों, ऐसे लोग शैतान के साथी हैं। शैतान ने उन्हें कुछ सामने का नफ़ा दिखाया तो वे उसकी तरफ़ दौड़ पड़े और खुदा जिस अबदी नफ़े का वादा कर रहा था उससे उन्हें दिलचस्पी न हो सकी। उनके लिए खुदा के यहां सख़्त अजाब के सिवा और कुछ नहीं। आदमी खुद जो काम न करे उसे वह ग़ैर-अहम बताता है। यह अपने मामले को नजरियाती मामला बनाना है, यह अपने को हक़ बजानिव साबित करने की कोशिश है। मगर इस किस्म की कोई भी कोशिश अल्लाह के यहां किसी के काम आने वाली नहीं।

فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلَاءِ شَهِيدًا ۖ
يَوْمَئِذٍ يَكْفُرُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصُوا الرَّسُولَ كَوَسْوَىٰ بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ
عَلَى اللَّهِ حَدِيثًا ۖ أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَىٰ حَتَّى
تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنْبًا إِلَّا غَائِبَةً سَبِيلٍ حَتَّى تَغْتَسِلُوا وَإِنْ كُنْتُمْ
مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَسْتُمْ الْأُنثَىٰ فَلَمْ
تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوْهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا ۝

फिर उस वक़्त क्या हाल होगा जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएंगे और तुम्हें उन लोगों के ऊपर गवाह बनाकर खड़ा करेंगे। वे लोग जिन्होंने इंकार किया और पैग़म्बर

की नाफ़रमानी की उस दिन तमन्ना करेंगे कि काश ज़मीन उन पर बराबर कर दी जाए, और वे अल्लाह से कोई बात न छुपा सकेंगे। ऐ ईमान वाले, नजदीक न जाओ नमाज़ के जिस वक़्त कि तुम नशे में हो यहां तक कि समझने लगे जो तुम कहते हो, और न उस वक़्त कि गुस्ल की हाज़त हो मगर राह चलते हुए, यहां तक कि गुस्ल कर लो। और अगर तुम मरीज हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई शौच से आए या तुम औरतों के पास गए हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो तुम पाक मिट्टी से तयम्मूम कर लो और अपने चेहरे और हाथों का मसह कर लो, बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला बख़्शने वाला है। (41-43)

हक़ का दाबी (आह्वानकती) जब आता है तो वह एक मामूली इंसान की सूरत में होता है। उसके गिर्द जाहिरी बड़बड़ायाँ और रैनकें जमा नहीं होतीं। इसलिए वक़्त के बड़े उसे हकीर (तुच्छ) समझ कर नजरअंदाज कर देते हैं। उन्हें यकीन नहीं आता कि एक ऐसा शख्स भी उनसे ज्यादा हक़ व सदाक़त वाला हो सकता है जो दुनियावी शान व शौक़त में उनसे कम हो। मगर जब कियामत आएगी और खुदा की अदालत कायम होगी तो वे हैरत के साथ देखेंगे कि वही शख्स जिसे उन्होंने बेकीमत समझ कर ठुकरा दिया था वह आख़िरत की अदालत में खुदाई गवाह बना दिया गया है। वही वह शख्स है जिसके बयान पर लोगों के लिए जन्नत और जहन्नम के फैसले हों। ये वहां मुजरिम के मक़ाम पर खड़े होंगे और वह खुदा की तरफ़ से बोलने वाले के मक़ाम पर। यह ऐसा सख़्त और हौलनाक लम्हा होगा कि लोग चाहेंगे कि ज़मीन फट जाए और वे उनके अंदर समा जाएं। मगर उनकी यह शर्मिंदगी उनके काम न आएगी। खुदा के यहां उनके कौल व अमल से लेकर उनकी सोच तक का रिकार्ड मौजूद होगा। और खुदा उन्हें दिखा देगा कि हक़ के दाबी का इंकार जो उन्होंने किया वह नावाक़फ़ियत के सबब से न था बल्कि घमंड की वजह से था। उन्होंने अपने को बड़ा समझा और हक़ के दाबी को छोटा जाना। हकीक़त को सुस्पष्ट रूप में देखने और जानने के बावजूद वे महज इसलिए इसके मुक़ि़र हो गए कि इसे मानने में उन्हें अपनी बड़ाई ख़ुस्त होती हुई नजर आती थी।

शरीअत में ग़ैर-मामूली हालात में ग़ैर-मामूली रुख़सत दी गई है। मर्ज या सफ़र या पानी का न होना ये तीनों आदमी के लिए ग़ैर-मामूली हालतें हैं। इसलिए इन मौकों पर यह रुख़सत दी गई कि अगर नुस्सान का अंदेश हो तो जुज़ू या गुस्ल के बजाए तयम्मूम का तरीका अपनाया जाए। आम जुज़ू पानी से होता है। तयम्मूम गोया मिट्टी से जुज़ू करना है। जुज़ू का मक़सद आदमी के अंदर पाकी की नफ़िसयात पैदा करना है और तयम्मूम, जुज़ू न करने की सूरत में, इस पाकी की नफ़िसयात को बाकी रखने की एक मादूदी तदबीर है। 'नमाज़ उस वक़्त पढ़ो जबकि तुम जानो कि तुम क्या कह रहे हो।' यहां यह आयत शराब का इब्तिदाई हुक्म बताने के लिए आई है। मगर इसी के साथ वह नमाज़ के बारे में एक अहम हकीक़त को भी बता रही है। इससे मालूम होता है कि नमाज़ एक ऐसी इबादत है जो फहम व शुऊर के तहत अदा की जाती है। नमाज़ महज इसका नाम नहीं है कि कुछ अल्फ़ज़ और कुछ हरकतों को अच्छे ढंग से अदा कर दिया जाए। इसी के साथ नमाज़ में आदमी के जेहन का हाज़िर रहना भी ज़रूरी है। वह नमाज़ को जानकर नमाज़ पढ़े अपनी ज़बान और अपने ज़िस

से वह जिस खुदा के सामने झुकने का इज्हार कर रहा है, उसी खुदा के सामने उसकी सोच और उसका इरादा भी झुक गया हो। उसका जिस्म जिस खुदा की इबादत कर रहा है, उसका शुऊर भी उसी खुदा का इबादतगुजार बन जाए।

الْمُتَرَالِي الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يَشْتَرُونَ الصَّلَاةَ وَ
يُرِيدُونَ أَن تَضَلُّوا السَّبِيلَ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ وَكَفَى بِاللَّهِ
وَلِيًّا ۖ وَكَفَى بِاللَّهِ نَصِيرًا ۖ ۝۱۰۰ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ
مَوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمِعْ غَيْرَ مُسْمِعٍ وَارْعِنَا لَيًّا
بِالْحُسْنَىٰ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمِعْ
وَأَنْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ ۖ وَلَكِن لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا
يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝۱۰۱

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था। वे गुमराही को मोल ले रहे हैं और चाहते हैं कि तुम भी राह से भटक जाओ। अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है। और अल्लाह काफी है हिमायत के लिए और अल्लाह काफी है मदद के लिए। यहूद में से एक गिरोह बात को उसके ठिकाने से हटा देता है और कहता है कि हमने सुना और न माना। और कहते हैं कि सुनो और तुम्हें सुनवाया न जाए। वे अपनी जवान को मोड़ कर कहते हैं राइना, दीन में ऐब लगाने के लिए। और अगर वे कहते कि हमने सुना और माना, और सुनो और हम पर नजर करो तो यह उनके हक में ज्यादा बेहतर और दुरुस्त होता। मगर अल्लाह ने उनके इंकार के सबब से उन पर लानत कर दी है। पस वे ईमान न लाएंगे मगर बहुत कम। (44-46)

अल्लाह की किताब किसी गिरोह को इसलिए दी जाती है कि वह उससे अपनी सोच और अपने अमल को दुरुस्त करे। मगर जब आसमानी किताब की हामिल कोई कौम जवाल का शिकार होती है, जैसा कि यहूद हुए, तो खुदा की किताब से वह हिदायत की बजाए गुमराही की गिजा लेने लगती है। खुदा के अहकाम उसके लिए खुश्क निरर्थक बहसों का विषय बन जाते हैं। अब उसके यहां आस्थाओं के नाम पर दार्शनिक किस्म की मोशगाफियां जन्म लेती हैं। वह उसके लिए ऐसी सरगर्मियों की तालीम देने वाली किताब बन जाती है जिसका आखिरत के मसले से कोई तअल्लुक न हो। ऐसे लोग अपनी रिवायती नफिसयात की वजह से जरूरी समझते हैं कि वे अपनी हर बात को खुदा की बात साबित करें। वे अपने अमल को दीनी जवाज फराहम करने के लिए खुदा की किताब को बदल देते हैं। खुदा के कलिमात को उसके प्रसंग से हटा कर उसकी अपनी गद्दी हुई तशरीह करते हैं। वे अल्फाज

में उलट फेर करके उससे ऐसा मफहूम निकालते हैं जिसका अस्ल खुदाई तालीमात से कोई तअल्लुक नहीं होता।

‘यहूद को किताब का कुछ हिस्सा मिला था।’ का मतलब यह है कि उन्हें खुदा की किताब के अल्फाज तो पढ़ने को मिले मगर खुदा की किताब पर अमल करना जो अस्ल मक्सूद था उससे वे दूर रहे। लफज के मामले में वे हामिले किताब बने रहे मगर अमल के मामले में उन्होंने आम दुनियादार कौमों का रास्ता अपना लिया। साथ ही यह कि आम लोग दुनियादारी को दुनियादारी के नाम पर करते हैं और उन्होंने यह ठिठाई की कि अपनी दुनियादारी के लिए खुदा की किताब से सनद पेश करने लगे।

फिर उनकी गुमराही अपनी जात तक नहीं रुकी। वे अपने को खुदा के दीन का नुमाइंदा समझते थे। इसलिए जब गैर यहूदी अरबों ने पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) का साथ देना शुरू किया तो यहूद अपनी दीनदारी का भ्रम कायम रखने के लिए खुद पैगम्बर के विरोधी हो गए। उन्होंने आपकी जिंदगी और आपकी तालीमात में तरह-तरह के शोशे निकाल कर लोगों को इस शुबह में मुक्ता करना शुरू किया कि यह खुदा के भेजे हुए नहीं हैं बल्कि महज जाती हौसले के तहत खुदा के दीन के अमलबरदार बन कर खड़े हो गए हैं। मगर इस मअरके में अल्लाह गैर जानिबदार नहीं है। वह अपने दुश्मनों के मुकाबले में अपने वफादारों का साथ देगा और उन्हें कामयाब करके रहेगा।

‘लानत’ दरअस्ल बेहिसी की आखिरी सूरत है। आदमी की बेहिसी जब इस नौबत को पहुंच जाए कि उसे हक और नाहक की कोई तमीज न रहे तो इसी को लानत कहते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِنِّي بَأْتَاكُمْ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّن قَبْلِ أَن
تُطْمِسَ وُجُوهًا فَنَرُدُّهَا عَلَىٰ أَبْهَارِهَا ۖ أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ
وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۝۱۰۲ إِنَّا اللَّهُ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ
ذَلِكَ لِمَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ۝۱۰۳ أَلَمْ تَرَ إِلَى
الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنفُسَهُمْ بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ وَلَا يُلْظَمُونَ فِتْيَانًا ۖ
أَنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا ۝۱۰۴

ऐ वे लोगो जिन्हें किताब दी गई उस पर ईमान लाओ जो हमने उतारा है, तस्दीक करने वाली उस किताब की जो तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम चेहरों को मिटा दें और फिर उन्हें उलट दें पीठ की तरफ या उन पर लानत करें जैसे हमने लानत की सत्त वालों पर। और अल्लाह का हुक्म पूरा होकर रहता है। बेशक अल्लाह इसे नहीं बख्शेगा कि उसके साथ शिर्क किया जाए। लेकिन इसके अलावा जो कुछ है उसे जिसके लिए चाहेगा बख्श देगा। और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया उसने बड़ा तूफान बांधा। क्या तुमने देखा उन्हें जो अपने आपको पाकीजा कहते हैं। बल्कि अल्लाह ही पाक करता है जिसे चाहता है, और उन पर जरा भी जुल्म न होगा। देखो, ये अल्लाह पर कैसा झूठ

बांध रहे हैं और सरीह गुनाह होने के लिए यही काफी है। (47-50)

कभी ऐसा होता है कि आदमी एक बात को सुनता है मगर वह हकीकत में नहीं सुनता। यह उस वक़्त होता है जबकि आदमी उस बात को समझने के मामले में संजीदा न हो और उस पर अमल करने में उसे कोई दिलचस्पी न हो। यह मिजाज जब अपने आखिरी दर्जे में पहुंचता है तो आदमी की नासमझी का हाल ऐसा हो जाता है जैसे उसके चेहरे के निशानात मिटा दिए गए हों और अब वह चीजों को इस तरह देख और सुन रहा हो जैसे कोई शख्स सर के पिछले हिस्से की तरफ से चीजों को देखे और सुने, जहां न देखने के लिए आंख है और न सुनने के लिए कान। हक बात को समझने के लिए आदमी का इस तरह अंधा बहरा हो जाना इस बात की अलामत है कि हक से साथ मुसलसल बेपरवाही के सबब खुदा ने उसे अपनी तौफ़ीक से महरूम कर दिया है। खुदा ने उसे कान दिया मगर उसने नहीं सुना, खुदा ने उसे आंख दी मगर उसने नहीं देखा तो अब खुदा ने भी उसे वैसा ही बना दिया जैसा उसने खुद से अपने को बना रखा था। बेहिंसी जब अपने आखिरी दर्जे में पहुंचती है तो वह मस्ख (विनष्ट) की सूरत अपना लेती है।

यहूद का यह ख्याल था कि हम पैगम्बरों की नस्ल से हैं, इस सबब हमारा गिरोह मुकद्दस गिरोह है। उन्होंने बेशुमार रिवायतें और कहानियां गढ़ रखी थीं जो उनके नस्ली शरफ और गिरोही फज़ीलत की तस्दीक करती थीं। वे इन्हीं खुशख़ालियों में जी रहे थे। उन्होंने बतौर खुद यह अक़ीदा कायम कर लिया था कि हर वह शख्स जो यहूदी है उसकी नजात यकीनी है। कोई यहूदी कभी जहन्नम की आग में नहीं डाला जाएगा।

‘वे अपने को पाकीजा ठहराते हैं हालांकि अल्लाह जिसे चाहे पाकीजा ठहराए।’ वे जुमला इस ख्याल की तरदीद (खंडन) है। मतलब यह है कि किसी नस्ल या गिरोह से वाबस्तगी के सबब किसी को फज़ीलत या शरफ नहीं मिल जाता। बल्कि इसका तअल्लुक खुदा के इंसफ के क़ानून से है। जो शख्स खुदाई क़ानून के मुताबिक अपने को शरफ का मुस्तहिक साबित करे वह शरफ वाला है और जो शख्स अपने अमल से अपने को मुस्तहिक साबित न कर सके वह महज किसी गिरोह से वाबस्तगी की बुनियाद पर शरफ का मालिक नहीं बन जाएगा।

गिरोही नजात का अक़ीदा चाहे यहूदी कायम करें या कोई और ऐसा अक़ीदा बना ले वह सरासर बातिल है। जो लोग ऐसा अक़ीदा बनाते हैं वे उसे खुदा की तरफ मंसूब करते हैं। मगर यह खुदा पर झूठ लगाना है। क्योंकि खुदा ने कभी ऐसी तालीम नहीं दी। खुदा अगर एक इंसान और दूसरे इंसान में गिरोही तअल्लुक की बुनियाद पर फर्क करने लगे तो यह जुम्ह होगा और खुदा सरासर अद्ल (इंसफ) है, वह कभी किसी के साथ जुम्ह करने वाला नहीं।

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِشِرْكٍَ ۖ هَٰؤُلَاءِ سَابِقُونَ إِلَىٰ أُمَمٍ مَّا لَمْ يَسْعَوْا لِلْعَمَلِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۚ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِشِرْكٍَ ۖ هَٰؤُلَاءِ سَابِقُونَ إِلَىٰ أُمَمٍ مَّا لَمْ يَسْعَوْا لِلْعَمَلِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۚ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِشِرْكٍَ ۖ هَٰؤُلَاءِ سَابِقُونَ إِلَىٰ أُمَمٍ مَّا لَمْ يَسْعَوْا لِلْعَمَلِ ۖ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۚ

اللَّهُمَّ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُمْ
ثُلُكًا عَظِيمًا ۖ فَبَيْنَهُمْ مَنِ امْنٌ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ
سَعِيرًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا أَكْثَرًا نُضِجَتْ جُلُودُهُمْ
بَدَلًا لَّهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ۖ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَّهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا شَاظِرٌ مُّغْلَقٌ ۖ

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था, वे जिव्त (झूठी चीजों) और तागूत को मानते हैं और मुंकिरों के बारे में कहते हैं कि वे ईमानवालों से ज्यादा सही रास्ते पर हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की है और जिस पर अल्लाह लानत करे तुम उसका कोई मददगार न पाओगे। क्या खुदा के इक्तेदार (संप्रभुत्व) में कुछ इनका भी दखल है। फिर तो ये लोगों को एक तिल बराबर भी न दें। क्या ये लोगों पर हसद कर रहे हैं इस सबब कि अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ल से दिया है। पस हमने आले इब्राहीम को किताब और हिक्मत दी है और हमने उन्हें एक बड़ी सल्लतनत भी दे दी। उनमें से किसी ने इसे माना और कोई इससे रुका रहा और ऐसों के लिए जहन्नम की भड़कती हुई आग काफी है। बेशक जिन लोगों ने हमारी निशानियों का इंकार किया उन्हें हम सख्त आग में डालेंगे। जब उनके जिस्म की खाल जल जाएगी तो हम उनकी खाल को बदल कर दूसरी कर देंगे ताकि वे अजाब चखते रहें। बेशक अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत वाला है। और जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन्हें हम बाग़ों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उसमें वे हमेशा रहेंगे, वहां उनके लिए सुथरी वीवियां होंगी और उन्हें हम घनी छांव में रखेंगे। (51-57)

आसमानी किताब की हमिल किसी क़ौम पर जब जवाल आता है तो वह अमल के बजाए खुशअक़ीदगी (सुआस्था) की सतह पर जीने लगती है। इसका नतीजा यह होता है कि उसके दमियान तवह्हुमात (अंधविश्वास) खूब फैलते हैं। जो चीज हकीकी अमल के ज़रिए मिलती है उसे वह अमलियात और फर्जी अक़ीदों और सिफली आमाल के रास्ते से पाने की कोशिश शुरू कर देती है। ऐसे लोग दीन के मामले को ‘पाक कलिमात’ और ‘बाबरकत निस्वतों’ का मामला समझ लेते हैं जिसके महज जवानी अदायगी या रस्मी तअल्लुक से चमत्कार प्रकट होते हैं। इसी के साथ उनका यह हाल होता है कि वे जबान से दीन का नाम लेते हुए अपनी अमली जिंदगी को शैतान के हवाले कर देते हैं। वे हकीकी जिंदगी में नफ़स की ख़्वाहिशों और शैतान की तरसीबात पर चल पड़ते हैं। मगर इसी के साथ अपने ऊपर दीन का लेबल लगा कर समझते हैं कि जो कुछ वे करने लगे वही खुदा का दीन है। ऐसी हालत

में जब उनके दर्मियान बेआमेज (विशुद्ध) हक की दावत उठती है तो वे सबसे ज्यादा इसके मुखालिफ हो जाते हैं। क्योंकि उन्हें महसूस होता है कि वह उनकी दीनी हैसियत को नकार रही है। मुंकिरों का वुजुद उनके लिए इस किस्म का चैलेंज नहीं होता इसलिए मुंकिरों के मामले में वे नर्म होते हैं, मगर हक के दाओ के लिए उनके दिल में कोई नर्म गोशा नहीं होता। उनके अंदर यह हासिदाना (ईर्ष्यापूर्ण) आग भड़क उठती है कि जब दीन के इजारादार हम थे तो दूसरे किसी शख्स को दीन की नुमाइंदगी का दर्जा कैसे मिल गया। वे भूल जाते हैं कि खुदा आदमी की कल्बी इस्तेदाद (आन्तरिक क्षमता) की बुनियाद पर किसी को अपने दीन का नुमाइंदा चुनता है न कि नुमाइशी चीजों की बुनियाद पर।

लानत यह है कि आदमी अल्लाह की रहमतों और नुसरतों से बिल्कुल दूर कर दिया जाए। खाना और पानी बंद होने से जिस तरह आदमी की माददी जिंदगी खत्म हो जाती है उसी तरह खुदा की नुसरत से महरूमी के बाद आदमी की ईमानी जिंदगी का खाल्सा हो जाता है। लानतजदा आदमी लतीफ एहसासात के एतबार से इस तरह एक खत्मशुदा इंसान बन जाता है कि उसके अंदर हक और नाहक की तमीज बाकी नहीं रहती। खुली-खुली निशानियां सामने आने के बाद भी उसे एतराफ की तौफीक नहीं होती। वह निरर्थक शोशों और सुस्पष्ट दलीलों के दर्मियान फर्क नहीं करता।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٨﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِيَ الْأَمْرِ مِنْكُمْ فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ﴿٥٩﴾ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَحَكَّمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾ وَإِذْ قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتُ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ۖ فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ كُنُوا لَهَا جَاءُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمُتُونَ ۚ أَلَا تَحْسَبَانَا وَتَوْفِيقًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ﴿٦١﴾

अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें उनके हकदारों को पहुंचा दो। और जब लोगों के दर्मियान फैसला करो तो इंसाफ के साथ फैसला करो। अल्लाह अच्छी नसीहत करता है तुम्हें, बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। ऐ ईमान वाले, अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो और अपने में अहले इख्तियार की इताअत करो। फिर अगर तुम्हारे दर्मियान किसी चीज में इख्तेलाफ (मतभेद) हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ लौटाओ, अगर तुम अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हो। यह बात अच्छी है और इसका अंजाम बेहतर है। क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वे ईमान लाए हैं उस पर जो उतारा गया है तुम्हारी तरफ और जो उतारा गया है तुमसे पहले, वे चाहते हैं कि विवाद ले जाएं शैतान की तरफ, हालांकि उन्हें हुक्म हो चुका है कि उसे न मानें और शैतान चाहता है कि उन्हें बहका कर बहुत दूर डाल दे। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह की उतारी हुई किताब की तरफ और रसूल की तरफ तो तुम देखोगे कि मुनाफिकीन (पाखंडी) तुमसे कतरा जाते हैं। फिर उस वक्त क्या होगा जब उनके अपने हाथों की लाई हुई मुसीबत उन पर पहुंचेगी, उस वक्त ये तुम्हारे पास कसमें खाते हुए आएंगे कि खुदा की कसम हमें तो सिर्फ भलाई और मिलाप से एराज थी। उनके दिलों में जो कुछ है अल्लाह उससे खूब वाकिफ है। पस तुम उनसे एराज (उपेक्षा) करो और उन्हें नसीहत करो और उनसे ऐसी बात कहो जो उनके दिलों में उतर जाए। (58-63)

हर जिम्मेदारी एक अमानत है और उसे ठीक-ठीक अदा करना जरूरी है। इसी तरह जब किसी से मामला पड़े तो आदमी को चाहिए कि वह करे जो इंसाफ का तक्का हो, चाहे मामला दोस्त का हो या दुश्मन का। अगर अमानतदारी और इंसाफ का तरीका बजाहिर अपने फायदों और मस्तेहतों के खिलाफ नजर आए तब भी उसे इंसाफ और सच्चाई ही के तरीके पर कायम रहना है। क्योंकि बेहतरी उसमें है जो अल्लाह बताए न कि उसमें जो हमारे नफस को पसंद हो। अगर हुक्मती निजाम के मौके हों तो मुसलमानों को चाहिए कि बाकयदा इस्लामी हुक्मत का कयाम अमल में लाएं। और अगर हुक्मत के अवसर न हों तो अपने अंदर के काबिले एतमाद अफराद को अपना सरबराह (प्रमुख) बना लें और उनकी हिदायतों को लेते हुए दीनी जिंदगी गुजारें। जब किसी मामले में इख्तेलाफ (मतभेद, विवाद) हो तो हर फरीक (पक्ष) पर लाजिम है कि वह उस बात को मान ले जो अल्लाह और रसूल की तरफ से आ रही हो। हर आदमी को अपनी राय और मत रखने की आजादी है मगर इज्तिमाई (सामूहिक) फैसले को न मानने की आजादी किसी को भी हासिल नहीं। इज्तिमाई निजाम मुस्लिम समाज की इज्तिमाई जरूरत है।

मदीना के इब्तिदाई जमाने में इख्तिलाफी मामलों में फैसला लेने के लिए एक ही समय में दो अदालतें पाई जाती थीं। एक यहूदी सरदारों की जो पहले से चली आ रही थी। दूसरी अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) की जो हिजरत के बाद कायम हुई। मुसलमानों में जो लोग अपने मफ़द (हित) की कुर्बानी की कीमत पर दीनदार बनने के लिए तैयार न थे वे ऐसा करते

कि जब उन्हें अदेशा होता कि उनका मुकदमा कमजोर है और वे अल्लाह के रसूल की अदालत से अपने मुवाफिक फैसला न ले सकें तो वे कबब बिन अशरफ यहूदी की अदालत में चले जाते। यह बात सरासर ईमान के खिलाफ है। आदमी अगर अल्लाह के फैसले पर राजी न हो बल्कि अपनी पसंद का फैसला लेना चाहे तो उसका ईमान का दावा झूठा है, चाहे वह अपने रवैये को हक बजानिब साबित करने के लिए कितने ही खूबसूरत अल्फज अपने पास रखता हो। ताहम ऐसे लोगों से न उलझते हुए उन्हें मुअस्सिर अंदाज में नसीहत करने का काम फिर भी जारी रहना चाहिए।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا يَطَاعُ ۚ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝ فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُحَكِّمُوكَ فِي مَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝ وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنْ اقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ أَوْ اخْرَجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيثًا ۝ وَإِذْ آتَيْنَاهُمْ مِنْ لَدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ۖ وَلَهْدَيْنَاهُمْ صَرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۖ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالطَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا ۖ ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ ۖ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا ۝

और हमने जो रसूल भेजा इसीलिए भेजा कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअत (आज्ञापालन) की जाए। और अगर वे जबकि उन्होंने अपना बुरा किया था, तुम्हारे पास आते और अल्लाह से माफी चाहते और रसूल भी उनके लिए माफी चाहता तो यकीनन वे अल्लाह को बख्शने वाला रहम करने वाला पाते। पस तैरे रब की कसम वे कभी ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक वे अपने आपसी झगड़े में तुम्हें फैसला करने वाला न मान लें। फिर जो फैसला तुम करो उस पर अपने दिलों में कोई तंगी न पाएं और उसे खुशी से कुबूल कर लें। और अगर हम उन्हें हुक्म देते कि अपने आपको हलाक करो या अपने घरों से निकलो तो उनमें से थोड़े ही इस पर अमल करते। और अगर ये लोग वह करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो उनके लिए यह बात बेहतर और ईमान पर साबित रखने वाली होती। और उस वक्त हम उन्हें अपने पास से बड़ा अज़्र देते और उन्हें सीधा रास्ता दिखाते। और जो अल्लाह और रसूल की इताअत करेगा वह उन लोगों के साथ होगा जिन पर अल्लाह ने इनाम किया, यानी पैगम्बर और

सिद्दीक और शहीद और सल्लेह। कैसी अच्छी है उनकी रिफ्त। यह फल है अल्लाह की तरफ से और अल्लाह का इल्म काफी है। (64-70)

रसूल इसलिए नहीं आता कि लोग बस उसके अकीदतमंद हो जाएं और उसकी बारगाह में अल्फज के गुलदस्ते पेश करते रहें। रसूल इसलिए आता है कि आदमी उससे अपनी जिंदगी का तरीका मालूम करे और उस पर अमलन कारबंद हो। इस मामले में आदमी को इतना ज्यादा शदीद होना चाहिए कि नाजुक मौकों पर भी वह रसूल की इताअत से न हटे। जब दो आदमियों का मफाद एक-दूसरे से टकरा जाए और दो आदमियों के दर्मियान एक-दूसरे के खिलाफ तलखी उभर आए उस वक्त भी आदमी को अपने नपस को दबाना है और अपने इरादे से अपने को रसूल वाले तरीके का पाबंद बनाना है। विवाद के अवसर पर जो शख्स रसूल की रहनुमाई को कुबूल करे वही रसूल को मानने वाला है। यहां तक कि रसूल का तरीका अपने जैक और अपनी मस्लेहत के खिलाफ हो तब भी वह दिल की रिजम्दी के साथ उसे कुबूल कर ले। वह अपने एहसास को इतना जिंदा रखे कि अगर वक्ती तौर पर कभी उससे गलती हो जाए तो वह जल्द ही चौंक उठे। वह जान ले कि रसूल को छोड़कर वह शैतान के पीछे चल पड़ा था। वह फौरन पलटे और माफी का तालिब हो। जो शख्स नपसियाती झटकों के मौकों पर दीन पर कायम न रह सके उससे क्या उम्मीद की जा सकती है कि वह उन शदीदतर मौकों पर साबितकदम रहेगा जबकि वतन को छोड़कर और जान व माल की कुर्बानी देकर आदमी को अपने ईमान का सबूत देना पड़ता है।

नफ्पररस्ती और मस्लेहतपसंदी की जिंदगी इख्तियार करने के नतीजे में आदमी जो सबसे बड़ी चीज खो देता है वह सिराते मुस्तकीम (सीधी-सच्ची राह, सन्मार्ग) है। यानी वह रास्ता जिसे पकड़ कर आदमी चलता रहे यहां तक कि अपने रब तक पहुंच जाए। यह रास्ता खुदा की किताब और रसूल की सुन्नत में वाजेह तौर पर मौजूद है। मगर आदमी जब अपनी सोच को तहफुजात (संरक्षण) का पाबंद कर लेता है तो वजाहत के बावजूद वह सिराते मुस्तकीम को देख नहीं पाता। वह दीन का मुतालआ (मनन, अध्ययन) अपनी ख्वाहिशों और मस्लेहतों के जेअसर करता है न कि उसकी बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में। उसके जेहन में अपने अनुकूल दीन की एक स्वनिर्मित परिकल्पना कायम हो जाती है। वह ईमान का दावेदार होकर भी ईमान से महरूम रहता है। ऐसे लोग उस जन्नत के मुस्तहिक कैसे हो सकते हैं जहां वे लोग बसाए जाएंगे जिन्होंने हर किस्म की मस्लेहतों से ऊपर उठ कर दीन को अपनाया था। वे लोग जो खुदा के अहद को पूरा करने वाले हैं, जो हक की गवाही आखिरी हद तक देने वाले हैं और जिनकी जिंदगियां हद दर्जा पाकीजा हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوا ثُبَاتٍ أَوْ تَنْفِرُوا جَمِيعًا ۖ وَإِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لِيُحِجَّنَّ فَإِنْ أَصَابَكُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْنَا إِذْ لَمْ أَكُنْ مَعَهُمْ شَاهِدًا ۖ وَلَكِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَأَن لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ لِّيُتَنَبَّيَ كُنْتُمْ مَعَهُمْ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا ۖ

فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ وَمَنْ يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلَ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ
وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ
وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ
أَهْلُهَا وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ۖ وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا ۚ الَّذِينَ
آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ
فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا ۝

ऐ ईमान वालो अपनी एहतियात कर लो फिर निकलो जुदा-जुदा या इकट्ठे होकर। और तुममें कोई ऐसा भी है जो देर लगा देता है। फिर अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचे तो वह कहता है कि अल्लाह ने मुझ पर इनाम किया कि मैं उनके साथ न था। और अगर तुम्हें अल्लाह का कोई फल हासिल हो तो कहता है, गोया तुम्हारे और उसके दर्मियान कोई मुहब्बत का रिश्ता ही नहीं कि काश मैं भी उनके साथ होता तो बड़ी कामयाबी हासिल करता। पस चाहिए कि लड़ें अल्लाह की राह में वे लोग जो आखिरत के बदले दुनिया की ज़िंदगी को बेच देते हैं। और जो शर्रस अल्लाह की राह में लड़े, फिर मारा जाए या ग़ालिब हो तो हम उसे बड़ा अज़्र देंगे। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम नहीं लड़ते अल्लाह की राह में और उन कमजोर मर्दों और औरतों और बच्चों के लिए जो कहते हैं कि खुदाया हमें इस बस्ती से निकाल जिसके बाशिदे जालिम हैं और हमारे लिए अपने पास से कोई हिमायती पैदा कर दे और हमारे लिए अपने पास से कोई मददगार खड़ा कर दे। जो लोग ईमान वाले हैं वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं और जो मुंकिर हैं वे शैतान की राह में लड़ते हैं। पस तुम शैतान के साथियों से लड़ो। बेशक शैतान की चाल बहुत कमजोर है। (71-76)

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है, इसलिए यहां हर एक को अमल की आजादी है। यहां शरीर लोगों को भी मौका है कि वे खुदा के बंदों को अपने जुल्म का निशाना बनाएं और इसी के साथ खुदा के नेक बंदों को अपने ईमान के इकरार का सुबूत इस तरह देना है कि वे शरीर लोगों की तरफ से डाली जाने वाली मुसीबतों के बावजूद साबितकदम रहें। अहले ईमान को खुदा के दुश्मनों के मुकाबलें में हर वक्त चौकन्ना रहना है। पुरअमन तदबीरों और जंगी तैयारियों से उन्हें पूरी तरह अपने बचाव का इंतजाम करना है। उन्हें अलग-अलग तौर पर भी अपने दुश्मनों का मुकाबला करना है और मिल कर भी। इसी के साथ खुद मुसलमानों की सफ में भी ऐसे लोग होते हैं जैसा कि उहुद की जंग में जाहिर हुआ, जो दुनिया के नुस्सान का खतरा मोल लिए बग़ैर आखिरत का सौदा करना चाहते हों। ऐसे लोगों का हाल यह होता

है कि वे उन कामों में तो खूब हिस्सा लेते हैं जिनमें दुनियावी फायदे का कोई पहलू हो। मगर ऐसा दीनी काम जिसमें दुनियावी एतबार से नुस्सान का अंदेशा हो उससे अलग होने के लिए खूबसूरत उज़्र तलाश कर लेते हैं। उनकी यह ज़ेहनियत इसलिए है कि इस्लाम कुबूल करने के बावजूद अमलन वे इसी मौजूदा दुनिया की सतह पर जी रहे हैं। अगर उन्हें यकीन हो कि अस्त अहमियत की चीज आखिरत है तो दुनिया की कामयाबी व नाकामी उनके लिए नाकाबिले लिहाज बन जाए। अल्लाह की राह का मुजाहिद हकीकत में वह है जो सिर्फ आखिरत का तालिब हो, जो दुनिया के फायदों और मस्लेहों को कुर्बान करके अल्लाह की राह में बड़े। न कि वह जो ऐसे जिहाद का गाजी बनना पसंद करे जिसमें कोई जख्म लगे बग़ैर बड़े-बड़े क्रेडिट मिलते हों, जिसमें अत्यन्त बेल्फर श्रेष्ठ व इन्त का मक़म हासिल होता हो।

खुदा की राह की लड़ाई वह है जो उस खुदा के बंदे को पेश आए जो सिर्फ खुदा के लिए उठा हो। वह लोगों को जहन्नम से डराए और लोगों को जन्नत की तरफ बुलाए। किसी से वह माददी (भौतिक, सांसारिक) या सियासी झगड़ा न छेड़े। फिर भी शरीर लोग उससे लड़ने के लिए खड़े हो जाएं। और शैतान की राह में लड़ने वाले वे लोग हैं जो किसी खुदा के बंदे से इस सबब लड़ें कि उसकी बातों से उनके अहंकार पर चोट पड़ती है। उसके पैग़ाम के फैलाव में उन्हें अपना आर्थिक या सियासी खतरा दिखाई देता है। उसकी दलीलों को तोड़ने के लिए वे आक्रामकता के सिवा और कोई दलील अपने पास नहीं पाते।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ
أَوْ اشْتَدَّ خَشْيَةً وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كُتِبَتْ عَلَيْنَا الْقِتَالُ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَى
أَجَلٍ قَرِيبٍ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ اتَّقَى وَ
لَا تَظْلُمُونَ فَيَتِيَلَا ۝ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَدْرِكَكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُشِيدَةٍ
وَأِنْ تَصَبَّهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَإِنْ نَصَبَهُمْ سَيِّئَةٌ
يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِكَ قُلْ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ فَمَالِ هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا
يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا ۝ مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ وَمَا أَصَابَكَ
مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَفْسِكَ وَأَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था कि अपने हाथ रोके रखो और नमाज़ क़यम करो और ज़कात दो। फिर जब उन्हें लड़ाई का हुक्म दिया गया तो उनमें से एक गिरोह इंसानों से ऐसा डरने लगा जैसे अल्लाह से डरना चाहिए या इससे भी ज्यादा। वे कहते हैं ऐ हमारे रब, तूने हम पर लड़ाई क्यों फर्ज कर दी। क्यों न छोड़े

रखा हमें थोड़ी मुद्दत तक। कह दो कि दुनिया का फायदा थोड़ा है और आखिरत बेहतर है उसके लिए जो परहेजगारी करे, और तुम्हारे साथ जरा भी जुम्म न होगा। और तुम जहां भी होंगे मौत तुम्हें पा लेगी अगरचे तुम मजबूत कितों में हो। अगर उन्हें कोई भलाई पहुंचती है तो कहते हैं कि यह खुदा की तरफ से है और अगर उन्हें कोई बुराई पहुंचती है तो कहते हैं कि यह तुम्हारे सबब से है। कह दो कि सब कुछ अल्लाह की तरफ से है। इन लोगों का क्या हाल है कि लगता है कि कोई बात ही नहीं समझते। तुम्हें जो भलाई भी पहुंचती है खुदा की तरफ से पहुंचती है और तुम्हें जो बुराई पहुंचती है वह तुम्हारे अपने ही सबब से है। और हमने तुम्हें इंसानों की तरफ पैगम्बर बना कर भेजा है और अल्लाह की गवाही काफी है। (77-79)

हिजरात से पहले मक्का में इस्लाम के विरोधी मुसलमानों को बहुत सताते थे। मारना-पीटना, उनके आर्थिक साधन-स्रोतों को तबाह करना, उन्हें मस्जिद हराम में इबादत से रोकना, उन्हें तब्लीगी की इजाजत न देना, उन्हें घर बार छोड़ने पर मजबूर करना, सब कुछ उन्होंने मुसलमानों के लिए जाइज कर लिया था। जो शरूख इस्लाम कुबूल करता उस पर वे हर क्रिम का दबाव डालते ताकि वह इस्लाम को छोड़कर अपने आबाई मजहब की तरफ लौट जाए। इस्लाम विरोधियों की इस जारिहियत (आक्रमकता) ने मुसलमानों के लिए उसूलन जाइज कर दिया था कि वे उनके खिलाफ तलवार उठाएं। अतः वे मुहम्मद (सल्ल०) से बार-बार जंग की इजाजत मांगते। मगर आप हमेशा यह कहते कि मुझे जंग का हुक्म नहीं दिया गया है। तुम सन्न करो और नमाज और जकात की अदायगी करते रहो। इसकी वजह यह थी कि वक्त से पहले कोई इकदाम करना इस्लाम का तरीका नहीं। मक्का में मुसलमानों की इतनी ताकत नहीं थी कि वे अपने दुश्मनों के खिलाफ फैसलाकुन इकदाम कर सकते। उस वक्त मक्का वालों के मुकाबले में तलवार उठाना अपनी मुसीबतों को और बढ़ाने के समान था। इसका मतलब यह था कि वह ताकतवर दुश्मन जो अभी तक सिर्फ इफ़िादी जुम्म कर रहा है उसे अपनी तरफ से मुकम्मल जंगी कार्रवाई करने का जवाज (औचित्य) फराहम कर दिया जाए। अमली इकदाम हमेशा उस वक्त किया जाता है जबकि उसके लिए जरूरी तैयारी कर ली गई हो। इससे पहले अहले इमान से सिर्फ इफ़िादी अहकाम का तकाज किया जाता है जो हर हाल में आदमी के लिए जरूरी हैं। यानी अल्लाह से तअल्लुक जोड़ना, बंटों के हुक्क अदा करना और दीन की राह में जो मुश्किलें पेश आएँ उन्हें बर्दाश्त करना।

कुरआन में कुर्बानी के अहकाम आए तो मस्लेहतपरस्त लोगों को अपनी जिंदगी का नक्शा बिखरता हुआ नजर आया। वे अपनी कमजोरी को छुपाने के लिए तरह-तरह की बातें करने लगे। उहुद की जंग में शिकस्त हुई तो इसे वह रसूल की बेतदबीरी का नतीजा बता कर रसूल की रहनुमाई के बारे में लोगों को बदजन करने लगे। फायदे वाली बातों को अल्लाह का फजल बता कर वे अपनी इस्लामियत का प्रदर्शन करते और अमली इस्लाम से बचने के लिए रसूल को गलत साबित करते। खुदा को मान कर आदमी के लिए मुमकिन रहता है कि वह अपने नफ्स पर चलता रहे। मगर खुदा के दाअी (आह्वानकर्ता) को मानने के बाद उसका साथ देना भी जरूरी हो जाता है जो आदमी के लिए मुश्किलतरीन काम है।

مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ وَمَنْ تَوَلَّى فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِظًا ۖ وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَأُوا مِنَ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۚ أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا ۚ وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَالْأُولَى الْأَمْرُ مِنْهُمْ لَعَلِمَ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُ فَضَّلَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتَهُ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

जिसने रसूल की इताअत की उसने अल्लाह की इताअत की और जो उल्टा फिरा तो हमने उन पर तुम्हें निगरा बना कर नहीं भेजा है और ये लोग कहते हैं कि हमें कुबूल है। फिर जब तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उनमें से एक गिरोह उसके खिलाफ मश्विरा करता है जो वह कह चुका था। और अल्लाह उनकी सरगोशियों (कुकृत्यों) को लिख रहा है। पस तुम उनसे एराज (उपेक्षा) करो और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह भरोसे के लिए काफी है। क्या ये लोग कुरआन पर गौर नहीं करते, अगर यह अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ से होता तो वे इसके अंदर बड़ा इस्तेलाफ (अन्तर्विरोध) पाते। और जब उन्हें कोई बात अमन या खौफ की पहुंचती है तो वह उसे फैला देते हैं। और अगर वे उसे रसूल तक या अपने जिम्मेदार लोगों तक पहुंचाते तो उनमें से जो लोग तहकीक करने वाले हैं वे उसकी हकीकत जान लेते। और अगर तुम पर अल्लाह का फजल और उसकी रहमत न होती तो थोड़े लोगों के सिवा तुम सब शैतान के पीछे लग जाते। (80-83)

खुदा के दाअी को मानना 'अपने जैसे इंसान' को मानना है। यही वजह है कि आदमी खुदा को मान लेता है, मगर वह खुदा के दाअी (आह्वानकर्ता) को मानने पर राजी नहीं होता। मगर आदमी का अस्त इम्तेहान यही है कि वह खुदा के दाअी को पहचाने और उसकी जानिव अपने को खड़ा करे। दाअी के मामले को जब आदमी खुदा का मामला न समझे तो वह इसके बारे में सजीदा भी नहीं होता। सामने वह रस्मी तौर पर हां कर देता है मगर जब अलग होता है तो अपनी पहले की रविश पर चलने लगता है। वह इसके खिलाफ ऐसी बातें फैलाता है जिनका फैलाना सरासर गैर-जिम्मेदाराना फेअल हो। जो लोग खुदा के दाअी के साथ इस किस्म की बेपरवाई का सुलूक करें वे खुदा के यहां यह कह कर नहीं छूट सकते कि हम नहीं जानते थे। आदमी अगर ठहर कर सोचे तो दाअी की सदाकत को जानने के लिए वह कलाम ही काफी है जो खुदा ने उसकी जवान पर जारी किया है।

कुरआन के कलामे इलाही होने का एक वाजेह सबूत यह है कि इसका कोई बयान किसी

भी मुसल्लमा सदाकत के खिलाफ नहीं। इसमें कोई ऐसी चीज नहीं जो इंसानी फितरत के खिलाफ हो। इसमें कोई ऐसा बयान नहीं जो पहले की आसमानी किताबों के जरिए जानी हुई किसी हकीकत से टकराता हो। इसमें कोई ऐसा इशारा नहीं जो प्रयोगात्मक ज्ञानों से प्राप्त किसी घटना के विपरीत हो। यथार्थ से यह पूरी तरह अनुकूलता इस बात का यकीनी सुबूत है कि यह अल्लाह की तरफ से आया हुआ कलाम है। ताहम किसी भी सच्चाई का सच्चाई नजर आना इस पर निर्भर है कि आदमी गंभीरता के साथ उसे समझने की कोशिश करे। कुरआन का इख़लाफ़े कसीर (अन्तर्विरोधों) से मुक्त होना उस शख्स को दिखाई देगा जो कुरआन पर 'तदब्वुर' (चिंतन-मनन) करे। जो शख्स तदब्वुर करना न चाहे उसके लिए बेमअनी एतराजात निकालने का दरवाजा उस वक्त तक खुला हुआ है जब तक कियामत आकर मौजूदा इस्तेहानी हालत का ख़ात्मा न कर दे।

इस्लामी समाज वह है जिसके अफ़राद इतने खुदशनास (आत्मविश्लेषक) हों कि वे दूसरों के मुकाबले में अपनी नाअहली (अयोग्यता) को जान लें। वे किसी मामले को अहलतर शख्स के हवाले करके उसकी रहनुमाई पर राजी हो जाएं। यह खुदशनासी ही एक मात्र चीज है जो सामूहिक जीवन में किसी को शैतान के पीछे चल पड़ने से बचाती है। आदमी अगर अपने आपको न जाने तो वह योग्यता न रखते हुए भी नाजुक मामलों में कूद पड़ता है और फिर खुद भी हलाक होता है और दूसरों को भी हलाक कर देता है। इज्तिमाई (सामूहिक) मामलों में बोलने से ज्यादा चुप रहना जरूरी होता है। यह शैतान की मदद करना है कि आदमी जो बात सुने उसे दूसरों के सामने दोहराने लगे।

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضَ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيدًا مَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا وَمَنْ يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُقِيتًا وَإِذَا حُجِّبْتُمْ بَعْثَةً فَإِذَا حَسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّهَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُجِبُّ لَكُمْ أَلْوَابَكُمْ وَيُخْرِجُكُمْ مِنْ بُيُوتِكُمْ وَمِنْ أَسْوَاقِ الْمَدِينِ الْخَاسِرَةِ يَخْرِجُكُمْ مِنْهَا لِيُجْعَلَ لَكُمُ الْيَوْمَ الْقِيَمَةِ لَارِيبَ فِيهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا

पस लड़ो अल्लाह की राह में। तुम पर अपनी जान के सिवा किसी की जिम्मेदारी नहीं और मुसलमानों को उभारो। उम्मीद है कि अल्लाह मुँक़िरोँ का जोर तोड़ दे और अल्लाह बड़ा जोर वाला और बहुत सज़ा देने वाला है। जो शख्स किसी अच्छी बात के हक में कहेगा उसके लिए उसमें से हिस्सा है और जो इसके विरोध में कहेगा उसके लिए उसमें से हिस्सा है और अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है। और जब कोई तुम्हें दुआ दे तो तुम भी दुआ दो उससे बेहतर या उलट कर वही कह दो, वेशक अल्लाह हर चीज का हिसाब लेने वाला है। अल्लाह ही माबूद है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह तुम सब को कियामत के दिन जमा करेगा जिसके आने में कोई शुबह नहीं। और अल्लाह की बात

से बढ़कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है। (84-87)

दीनदारी की एक सूरत यह है कि आदमी अमली तौर पर जहाँ है वहीं रहे, वह अपनी हकीकती जिंदागी में कोई तब्दीली न करे। अलबत्ता कुछ ऊपरी मजहिर का एहतेमाा करके समझे कि मैं दीनदार बन गया हूँ। ऐसे दीन से किसी को ज़िद नहीं होती। लोग उसके विरोध की ज़रूरत नहीं समझते। मगर जब दीन के ऐसे तक्ज़े पेश किए जाएं जो कुर्बानी का मुतालबा करते हों, जिसमें आदमी को अपनी बनी बनाई जिंदगी उजाड़ना पड़े तो इसके सामने आने के बाद लोगों में दो पक्ष हो जाते हैं। एक तबका दावत (इस्लामी आह्वान) के विरोधियों का। ये वे लोग हैं जो सस्ते मजहिर (दिखावटी कर्मकांडों) के जरिए अपनी दीनदारी का सिक्का कायम किए हुए होते हैं। वे कुर्बानी वाले दीन के मुख़ालिफ बन जाते हैं। क्योंकि ऐसे दीन को अपनाना उन्हें बरतरी के मक़म से उतरने के समान नजर आता है। दूसरा तबका वह होता है जिसकी फितरत जिंदा होती है। वह चीज़ों को मफ़द और मस्तेहत से ऊपर उठ कर देखता है। एक बात का हक साबित हो जाना ही उसके लिए काफ़ी हो जाता है कि वह उसे कुबूल कर ले। यह सूरतेहाल कभी इतनी संगीन हो जाती है कि हक की ताईद और हिमायत में जवान खोलना जिहाद के समान बन जाता है। इसके विपरीत हक के बारे में ख़ामोशी या विरोध का रवैया अपनाना आदमी को इनाम का हकदार बना देता है। ताहम जहाँ तक सच्चे अहले ईमान का तअल्लुक है उन्हें हर हाल में यह हुक्म है कि आम समाजी तअल्लुकात को इस मतभेद से प्रभावित न होने दें। और उनके साथ ग़ैर-अब्बाकी रवैया न अपनाएं। मुसलमान का रवैया दूसरों की प्रतिक्रिया में नहीं बनना चाहिए बल्कि इस किस्म की चीज़ों को नजरअंदाज करके बनना चाहिए। यह मामला अल्लाह से संबंधित है कि वह किसे क्या बदला दे और किसी के लिए क्या फैसला करे।

नाजुक हालत में हक की दावत को जिंदा रखने की ज़मानत सिर्फ़ यह होती है कि कम से कम दाओ (आह्वानकर्ता) अपनी जात की सतह पर यह अज़म रखे कि वह हर हाल में अपने मैक़िफ़ पर कायम रहेगा चाहे कोई ताईद करने वाला हो या न हो। ऐसे हालात में दाओ की अज़म उसे अल्लाह की ख़ास मदद का हकदार बना देता है। इसकी एक मिसाल बदे सुगरा की लड़ाई है जो उहद के सिर्फ़ एक माह बाद पेश आई। उस वक्त मदीना में ऐसी कैफ़ियत छाई हुई थी कि सिर्फ़ सत्तर आदमी अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल०) के साथ निकले। मगर इस छोटे से काफ़िले को अल्लाह की यह खुसूसी मदद मिली कि मक्का वालों पर ऐसा रौब तारी हुआ कि वे मुकाबले में न आ सके। खुदा की सुन्नत है कि वह मुँक़िरोँ का जोर तोड़े। मगर खुदा की यह सुन्नत उस वक्त ज़ाहिर होती है जबकि दीन के अलमबदार अपनी बेसरोसामानी के बावजूद खुदा के दुश्मनों का जोर तोड़ने के लिए निकल पड़े हों।

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِتْنَةٍ وَاللَّهُ أَرَزَّهُمْ بِمَا كَسَبُوا الرَّيْبُ وَأَنْ تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ۝ وَذُؤُ الْوَكُفُّرُونَ

كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يُهَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَإِن تَوَلَّوْا فَخُذُوا مِنْهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۚ إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ أَوْ جَاءَوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَن يَقُولُوا أُولَٰئِكَ قَوْمُهُمْ فَلَئِن لَّمْ يَهِتُمْ إِلَٰهُهُمْ إِلَهُكُمْ فَاسْلُطْهُمْ عَلَيْهِمْ فَلَئِن لَّمْ تَفْعَلْ لَوْ كُنْتَ مُتَبَلِّغًا وَآلِقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَامَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ۚ سَتَجِدُونَ الْآخَرِينَ يُرِيدُونَ أَن يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلًّا رَدُّوهُ إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكَسُوا فِيهَا فَإِن لَّمْ يَعْتَزِّلُوكُمُ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَامَ وَيَكْفُوا إِلَيْدِيَهُمْ فَخُذُوا مِنْهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ تَقِفْتُمُوهُمْ وَأُولَٰئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ۚ

फिर तुम्हें क्या हुआ है कि तुम मुनाफिकों (पाखंडियों) के मामले में दो गिरोह हो रहे हो। हालांकि अल्लाह ने उनके आमाल के सबब से उन्हें उल्टा फेर दिया है। क्या तुम चाहते हो कि उन्हें राह पर लाओ जिन्हें अल्लाह ने गुमराह कर दिया है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तुम हरगिज उसके लिए कोई राह नहीं पा सकते। वे चाहते हैं कि जिस तरह उन्होंने इंकार किया है तुम भी इंकार करो ताकि तुम सब बराबर हो जाओ। पस तुम उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ जब तक वे अल्लाह की राह में हिजरत न करें। फिर अगर वे इसे कुबूल न करें तो उन्हें पकड़ो और जहां कहीं उन्हें पाओ उनको कत्ल करो और उनमें से किसी को साथी और मददगार न बनाओ। मगर वे लोग जिनका तअल्लुक किसी ऐसी कौम से हो जिनके साथ तुम्हारा समझौता है। या वे लोग जो तुम्हारे पास इस हाल में आए कि उनके सीने तंग हो रहे हैं तुम्हारी लड़ाई से और अपनी कौम की लड़ाई से। और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर जोर दे देता तो वे जरूर तुमसे लड़ते। पस अगर वे तुम्हें छोड़े रहें और तुमसे जंग न करें और तुम्हारे साथ सुलह का खैया रखें तो अल्लाह तुम्हें भी उनके खिलाफ किसी इकदाम की इजाजत नहीं देता। दूसरे कुछ ऐसे लोगों को भी तुम पाओगे जो चाहते हैं कि तुमसे भी अमन में रहें और अपनी कौम से भी अमन में रहें। जब कभी वे फितने का मौका पाएं वे उसमें कूट पड़ते हैं। ऐसे लोग अगर तुमसे एकसू न रहें और तुम्हारे साथ सुलह का खैया न रखें और अपने हाथ न रोकें तो तुम उन्हें पकड़ो और उन्हें कत्ल करो जहां कहीं पाओ। ये लोग हैं जिनके खिलाफ हमने तुम्हें खुली हुज्जत दी है। (88-91)

आदमी जब अल्लाह के दीन को अपनाता है तो इसके बाद उसकी जिंदगी में बार-बार ऐसे मरहले आते हैं जहां यह जांच होती है कि वह अपने फैसले में संजीदा है या नहीं। इसी सिलसिले का एक इस्तेहान 'हिजरत' है। यानी दीन की राह में जब दुनिया के फायदे और मस्लेहतें (हित) रुकावट बनें तो फायदों और मस्लेहतों को छोड़कर अल्लाह की तरफ बढ़ जाना। यहां तक कि अगर रिश्तेदार और घर-बार छोड़ने की जरूरत पेश आए तो उसे भी छोड़ देना। ऐसा नाजुक मौका पेश आने की सूरत में अगर ऐसा हो कि आदमी अपने फायदों और मस्लेहतों को नजरअंदाज करके हक की तरफ बढ़े तो उसने हक के साथ अपने कब्बी तअल्लुक को पुखा किया। इसके विपरीत अगर ऐसा हो कि ऐसे मौके पर आदमी अपने फायदों और मस्लेहतों से लिपट रहे तो उसने हक के साथ अपने कब्बी तअल्लुक को कमजोर किया। जो शख्स पहली राह पर चले उसके अंदर हक की और भी कुबूलियत का माददा पैदा होता है, वह बराबर हक की तरफ बढ़ता रहता है। और जो शख्स दूसरी राह पर चले उसके अंदर हक की कुबूलियत का माददा घटता रहता है यहां तक कि वह इतना बेहिस हो जाता है कि उसके अंदर हक को कुबूल करने की सलाहियत बाकी नहीं रहती।

जब दीन के सख्त तकाजे सामने आते हैं तो लोगों में विभिन्न गिरोह बन जाते हैं। कोई मुख्तस लोगो का होता है कोई विरोधियों का। और कुछ ऐसे लोगों का जो बजाहिर हक से करीब मगर अंदर से उससे दूर होते हैं। ऐसी हालत में जरूरी है कि अहलेइमान हर एक से उसके हस्बेहाल मामला करें। वे फितना को मिटाने में सख्त और अख्लाकी जिम्मेदारियों को निभाने में नर्म हों। वे कमजोरों के साथ रियायत का सुलूक करें। दूसरों से मुतअस्सिर होने के बजाए खुद उन्हें मुतअस्सिर करने की कोशिश करें। किसी को अगर अल्लाह खामोश करके बिठा दे तो उससे बिना जरूरत लड़ाई न छेड़ें।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَن يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَاً وَمَن قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَاً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَن يَصَدَّقُوا وَإِن كَانَ مِّن قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَإِن كَانَ مِّن قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُّتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝ وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَدِّيًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ۝

और मुसलमान का काम नहीं कि वह मुसलमान को कत्ल करे मगर यह कि गलती से ऐसा हो जाए। और जो शख्स किसी मुसलमान को गलती से कत्ल कर दे तो वह

एक मुसलमान गुलाम को आजाद करे और मक्तूल (मृतक) के वारिसों को खूबहा (कल का आर्थिक हर्जाना) दे, मगर यह कि वे माफ कर दें। फिर मक्तूल अगर ऐसी कौम में से था जो तुम्हारी दुश्मन है और वह खुद मुसलमान था तो वह एक मुसलमान गुलाम को आजाद करे। और अगर वह ऐसी कौम से था कि तुम्हारे और उसके दर्मियान समझौता है तो वह उसके वारिसों को खूबहा (कल का आर्थिक हर्जाना) दे और एक मुसलमान को आजाद करे। फिर जिसे मयस्सर न हो तो वह लगातार दो महीने के रोजे रखे। यह तौबा है अल्लाह की तरफ से। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। और जो शख्स किसी मुसलमान को जान कर कल्ल करे तो इसकी सजा जहन्म है जिसमें वह हमेशा रहेगा और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब और उसकी लानत है और अल्लाह ने उसके लिए बड़ा अजाब तैयार कर रखा है। (92-93)

एक मुसलमान पर दूसरे मुसलमान के जो हुक्म हैं उनमें सबसे बड़ा हक यह है कि वह उसकी जान का एहतराम करे। अगर एक मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान को कल्ल कर दे तो उसने सबसे बड़ा समाजी जुर्म किया। एक शख्स जब दूसरे शख्स को कल्ल करता है तो वह उसके ऊपर आखिरी मुमकिन वार करता है। और यह वह जुर्म है जिसके बाद मुजरिम के लिए अपने जुर्म की तलाफी की कोई सूरत बाकी नहीं रहती। यही वजह है कि जानबूझकर कल्ल करने की सजा सदा जहन्म में रहना है। जो शख्स किसी मुसलमान को जानबूझ कर मार डाले उससे अल्लाह इतना ग़ज़बनाक होता है कि उसे मलऊन करार देकर उसे हमेशा के लिए जहन्म में डाल देता है। अलबत्ता कल्ले ख़ता का जुर्म हल्का है। कोई शख्स किसी मुसलमान को ग़लती से मार डाले, इसके बाद उसे ग़लती का एहसास हो वह अल्लाह के सामने रोये गिड़गिड़ाए और निर्धारित कायदे के मुताबिक उसकी तलाफी करे तो उम्मीद है कि अल्लाह तआला उसे माफ कर देगा। ग़लती के बाद माल खर्च करना या मुसलसल रोजे रखना गोया खुद अपने हाथों अपने आपको सजा देना है। जब आदमी के ऊपर शिद्दत से यह एहसास तारी होता है कि उससे ग़लती हो गई तो वह चाहता है कि अपने ऊपर इस्लाही अमल करे। अल्लाह ने बताया कि ऐसी हालत में आदमी को अपनी इस्लाह के लिए क्या करना चाहिए।

यहां अस्लन कल्ल का हुक्म बताया गया है। ताहम इसी नौइयत को दूसरे समाजी जुर्म भी हैं और मच्चूरा हुक्म से अंदाजा होता है कि उन दूसरी चीजों के बारे में शरीअत का तक्का क्या है।

एक मुसलमान का फर्ज जिस तरह यह है कि वह अपने भाई को जिंदगी से महरूम करने की कोशिश न करे, इसी तरह एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर यह हक भी है कि वह उसे बेइज्जत न करे। उसका माल न छीने। उसे बेवर न करे। उसके रोजगार में खलल न डाले। उसके सुकून को ग़ारत करने का मंसूबा न बनाए। वे चीजें जो उसके लिए जिंदगी के

असासे की हैसियत रखती हैं, उनमें से किसी चीज को उससे छीनने की कोशिश न करे। एक आदमी अगर ग़लती से ऐसा कोई फ़ेअल कर बैठे जिससे उसके मुसलमान भाई को इस किस्म का कोई नुक़सान पहुंच जाए तो उसे फौरन अपनी ग़लती का एहसास होना चाहिए और ग़लती के एहसास का सुबूत यह है कि वह अल्लाह से माफी मांगे और अपने भाई के नुक़सान की तलाफी करे। इसके बरअक्स अगर ऐसा हो कि आदमी जानबूझ कर ऐसी कार्रवाई करे जिसका सोचा समझा मक़सद अपने भाई को नुक़सान पहुंचाना और उसे परेशान करना हो तो दर्जे के फ़र्क के साथ यह उसी नौइयत का जुर्म है जैसा जानबूझकर किया गया कल्ल।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْفَى إِلَيْكُمْ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لَعَنَ اللَّهُ مَعَانِمَ كَثِيرَةً كَذَلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحَسَنَىٰ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ دَرَجَتٍ مِنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۝ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

अल्लाह

ऐरे ईमान वाले जब तुम सफर करो अल्लाह की राह में तो खूब तहकीक कर लिया करो और जो शख्स तुम्हें सलाम करे उसे यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं। तुम दुनियावी जिंदगी का सामान चाहते हो तो अल्लाह के पास ग़नीमत के बहुत सामान हैं। तुम भी पहले ऐसे ही थे। फिर अल्लाह ने तुम पर फ़सल किया तो तहकीक कर लिया करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है। बराबर नहीं हो सकते बैठे रहने वाले मुसलमान जिनको कोई उज़्र (विवशता) नहीं और वे मुसलमान जो अल्लाह की राह में लड़ने वाले हैं अपने माल और अपनी जान से। माल व जान से जिहाद करने वालों का दर्जा अल्लाह ने बैठे रहने वालों की निस्वत बड़ा रखा है और हर एक से अल्लाह ने भलाई का वादा किया है। और अल्लाह ने जिहाद करने वालों को बैठे रहने वालों पर अज़े अजीम में बरती दी है। उनके लिए अल्लाह की तरफ से बड़े दर्जे हैं और मग्फ़िरत (क्षमा) और रहमत है। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (94-96)

अरब के मुख़ालिफ़ कबीलों में कुछ ऐसे अफ़राद थे जो अंदर से मुसलमान थे मगर हिजरत करके अभी अपने कबीले से कटे नहीं थे। एक लड़ाई में ऐसा एक शख्स मुसलमान की तलवार

की जद में आ गया। उसने 'अस्सलामु अलैकुम' कह कर जाहिर किया कि मैं तुम्हारा दीनी भाई हूँ। कुछ पुरजोश मुसलमानों ने फिर भी उसको कल्ल कर दिया। उन्होंने समझा कि यह मुसलमान नहीं है और महज अपने को बचाने के खातिर अस्सलामु अलैकुम कह रहा है। मगर अस्सलामु अलैकुम कहने की हद तक भी कोई शख्स मुसलमान हो तो उस पर हाथ उठाना जाइज नहीं। यहाँ तक कि जंग के मौके पर भी नहीं जबकि यह अदिशा हो कि दुश्मन इससे फायदा उठाएगा। किसी मुसलमान का मारा जाना अल्लाह के नजदीक इतना बड़ा हादसा है कि सारी दुनिया का फना हो जाना भी उसके मुक़बले में कम है।

जब भी कोई शख्स इस किस्म का इस्लामी जोश दिखाता है कि वह दूसरे आदमी की इस्लामियत को नाकाबिले तस्लीम करार देकर उसे सजा देने पर इसारर करता है तो इसके पीछे हमेशा दुनियावी प्रेरक होते हैं। कभी कोई मादूदी लालच, कभी इतिकाम (बदले) की आग, कभी अपने किसी हरीफ को मैदान से हटाने का शौक, बस इस किस्म के जबाबत हैं जो इसका सबब बनते हैं। अगर आदमी के सीने में अल्लाह से डरने वाला दिल हो तो वह इस्लाम का इन्हार करने वाले के अल्फ़ाज को कुबूल कर लेगा और उसके मामले को अल्लाह के हवाले करके खामोश हो जाएगा।

अमल के लिहाज से मुसलमानों के दो दर्जे हैं। एक वे लोग जो फ़राइज के दायरे में इस्लामी ज़िंदगी को इख़्तियार करें। वे अल्लाह की इबादत करें और हराम व हलाल के हुद्द का लिहाज करते हुए ज़िंदगी गुज़ारें। दूसरे लोग वे हैं जो कुर्बानी की सतह पर इस्लाम को इख़्तियार करें। वे खुद इस्लाम को अपनाते हुए दूसरों को भी इस्लाम पर लाने की कोशिश करें और इस राह की मुसीबतों को बर्दाश्त करें। वे इस्लाम के महाज पर अपनी जान व माल को लेकर हाज़िर हो जाएँ। वे फ़राइज की हद्द में न ठहरें बल्कि फ़राइज से आगे बढ़कर अपने आपको इस्लाम के लिए पेश कर दें। ये दोनों ही ग़िरोह मुख़्लिस हैं और दोनों अल्लाह की रहमतों में अपना हिस्सा पाएंगे। मगर दूसरे ग़िरोह का मामला बुनियादी तौर पर अलग है। उन्होंने नाप कर खुदा की राह में नहीं दिया इसलिए खुदा भी उनको नाप कर नहीं देगा। उन्होंने अपनी जाती मस्लेहतों को नज़रअंदाज़ करके खुदा के मिशन में अपने आपको शरीक किया इसलिए खुदा भी उनकी कमियों को नज़रअंदाज़ करके उन्हें अपनी रहमतों में ले लेगा।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّيْنَاهُمُ لَمَلَكَ ظَالِمٍ أَنفُسَهُمْ قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضَ اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا فَأُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝ إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ۝ فَأُولَٰئِكَ عَسَىٰ اللَّهُ أَن يَعْفُو عَنْهُمْ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا ۝ وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرْعَبًا كَثِيرًا وَسَعَةً وَمَنْ يُخْرِجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا

إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ يُعْزِدْكُمْ اللَّهُ الْبَوْتَ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

ع

जो लोग अपना बुरा कर रहे हैं जब उनकी जान फरिश्ते निकालेंगे तो वे उनसे पूछेंगे कि तुम किस हाल में थे। वे कहेंगे कि हम जमीन में बेबस थे। फरिश्ते कहेंगे क्या खुदा की जमीन कुशादा न थी कि तुम वतन छोड़कर वहां चले जाते। ये वे लोग हैं जिनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। मगर वे बेबस मर्द और औरतें और बच्चे जो कोई तदबीर नहीं कर सकते और न कोई राह पा रहे हैं, ये लोग उम्मीद है कि अल्लाह उन्हें माफ कर देगा और अल्लाह माफ करने वाला बख़्शने वाला है। और जो कोई अल्लाह की राह में वतन छोड़ेगा वह जमीन में बड़े ठिकाने और बड़ी वुस्हत पाएगा और जो शख्स अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की तरफ हिजरत करके निकले, फिर उसे मौत आ जाए तो उसका अज़्र अल्लाह के यहां मुकर्र हो चुका और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (97-100)

मोमिन की फितरत चाहती है कि उसे आजादाना माहौल मिले जहां उसकी ईमानी हस्ती के इन्हार के लिए खुले मौके हों। जब भी ऐसा न हो तो आदमी को चाहिए कि अपना माहौल बदल दे। इसी का नाम हिजरत है। हिजरत अपनी अस्ल हकीकत के एतबार से यह है कि आदमी अपने को ग़ैर मुआफ़िक (प्रतिकूल) फज से निकले और अपने को मुआफ़िक (अनुकूल) फज में ले जाए। एक इदारा (संस्था) है जिसमें कुछ शख्सियतों का जोर है। वहां रहने वाला एक आदमी महसूस करता है कि मैं यहां शख्सियतपरस्त बनकर तो रह सकता हूँ मगर खुदापरस्त बनकर नहीं रह सकता। अब अगर वह आदमी अपने मफाद की खातिर ऐसे माहौल से समझौता करके उसमें पड़ा रहे और जो चीज उसे हक नज़र आए उसके हक होने का एलान न करे, यहां तक कि इसी हाल में मर जाए तो उसने अपनी जान पर जुल्म किया। इसी तरह कोई कैम है जिसका एक कैमी मजहब है। वह उसी शख्स को एजज अता करती है जो उसके कैमपरस्ताना मजहब को अपनाए। जो शख्स ऐसा न करे वह उसे कुबूल करने से इंकार कर देती है। ऐसी हालत में अगर एक शख्स उस कैम का साथी बनता है और इसी हाल में उसको मौत आ जाती है तो उसने अपनी जान पर जुल्म किया। इसी तरह एक माहौल में हक की दावत उठती है। उस वक़्त ज़रूरत होती है कि बिखरे हुए अहले ईमान उसकी पुश्त पर जमा हों। वे अपनी सलाहियतों को उसकी ख़िदमत में लगाएं। वे अपने माल से उसकी मदद करें। मगर ईमान वाले अपने फायदों और मस्लेहतों के ख़ौल में पड़े रहते हैं। वे ऐसा नहीं करते कि अपने ख़ौल से बाहर आएँ और हक के क़फ़िले में शरीक होकर उसकी कुव्वत का बाइस बनें। अगर वे इसी हाल में अपनी ज़िंदगी के दिन पूरे कर देते हैं तो वे खुदा के यहां इस हाल में पहुंचेंगे कि उन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया था। ताहम वे लोग इससे अपवाद हैं जो इतने मजबूर हों कि उनसे कोई तदबीर न बन रही हो और न बाहर से उनके लिए कोई राह खुल रही हो।

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرَاكَ اللَّهُ وَلَا تَكُنَ
لِلْخَائِنِينَ خَصِيمًا ۖ وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۖ وَلَا
تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنْفُسَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ خَوَانًا
أَتِيمًا ۖ يَسْتَحْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَحْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ
يُبَيِّنُونَ مَا لَا يُرْضَىٰ مِنَ الْقَوْلِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝

वेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ हक के साथ उतारी है ताकि तुम लोगों के
दर्मियान उसके मुताबिक फैसला करो जो अल्लाह ने तुम्हें दिखाया है। और बददयानत
लोगों की तरफ से झगड़ने वाले न बनो। और अल्लाह से बख्शिश मांगो। वेशक
अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। और तुम उन लोगों की तरफ से न झगड़ो जो अपने
आप से खियानत कर रहे हैं। अल्लाह ऐसे शख्स को पसंद नहीं करता जो खियानत
वाला और गुनाहगार हो। वे आदमियों से शर्माते हैं और अल्लाह से नहीं शर्माते।
हालांकि वह उनके साथ होता है जबकि वे सरगोशियां (गुप्त वार्ता) करते हैं उस बात
की जिससे अल्लाह राजी नहीं। और जो कुछ वे करते हैं अल्लाह उसका इहाता
(आच्छादन) किए हुए है। (105-108)

इंसान की यह जरूरत है कि वह मिल जुलकर रहे। यही जरूरत कौम या गिरोह को वजूद
में लाती है। इज्तिमाइयत से वाबस्ता होकर एक आदमी अपनी ताकत को हजारों लाखों गुना
बड़ा कर लेता है। मगर धीरे-धीरे ऐसा होता है कि जो चीज इज्तिमाइयत के तौर पर बनी
थी वह इज्तिमाई मजहब का दर्जा हासिल कर लेती है। वह बजातेखुद लोगों का मक्सूद बन
जाती है। अब यह जेहन बन जाता है कि 'मेरा गिरोह चाहे वह सही हो या ग़लत। मेरी कौम
चाहे वह हक पर हो या बातिल पर' इसका नतीजा यह होता है कि लोगों को अपना हलका
अहम दिखाई देता है और दूसरा हलका ग़ैर अहम। अपने हलके का आदमी अगर बातिल
(असत्य) पर है तब भी उसकी हिमायत जरूरी समझी जाती है और दूसरे हलके का आदमी अगर
हक पर है तब भी उसका साथ नहीं दिया जाता।

किसी गिरोह में यह जेहन बन जाए तो इसका मतलब यह है कि उसने अपनी गिरोही
मस्लेहतों (हिदों) और जमाअती तअस्सुबात (विद्वेषों) को मेयार का दर्जा दे दिया। हालांकि
सही बात यह है कि आदमी अल्लाह की हिदायत को मेयार का दर्जा दे और उसकी रोशनी
में अपना रवैया तै करे न कि दुनियावी मस्लेहतों और जमाअती तअस्सुबात के तहत। एक
आदमी गलती करे तो उसका हाथ पकड़ा जाए चाहे वह अपना हो। एक आदमी सही बात कहे
तो उसका साथ दिया जाए चाहे वह कोई ग़ैर हो। यहां तक कि ऐसा मामला जिसमें एक फरीक
अपना हो और एक फरीक बाहर का, तब भी मामले को अपने और ग़ैर की नजर से न देखा
जाए बल्कि हक और नाहक की नजर से देखा जाए और हर दूसरी चीज की परवाह किए बग़ैर

अपने को हक की जानिब खड़ा किया जाए।

सच्चाई को छोड़ना, खुद अपने आपको छोड़ने के हममअना है। जब आदमी दूसरे के साथ
खियानत करता है तो सबसे पहले वह अपने साथ खियानत कर चुका होता है। क्योंकि हर सीने
के अंदर अल्लाह ने अपना एक नुमाईदा बिठा दिया है। यह इंसान का जमीर है। जब भी आदमी
हक के खिलाफ जाने का इरादा करता है तो यह अंदर का खुफा हुआ हक का नुमाईदा उसे टोकता
है। इस अंदरूनी आवाज को आदमी दबाता है और उसे नजरअंदाज करता है। इसके बाद ही
यह मुमकिन होता है कि वह इंसान के रास्ते को छोड़े और बेइंसाफी के रास्ते पर चल पड़े।
मजीद यह कि जब आदमी नाहक में किसी का साथ देता है तो वह इंसान का लिहाज करने
की वजह से होता है। दुनियावी तअल्लुकात और मस्लेहतों की वजह से वह एक शख्स को
नजरअंदाज नहीं कर पाता इसलिए वह उसे ग़लत जानते हुए उसका साथी बन जाता है। मगर
नाहक (असत्य) के बावजूद एक शख्स को न छोड़ना हमेशा इस कीमत पर होता है कि आदमी
खुदा को छोड़ दे। ऐन उस वक्त जब कि वह दुनिया में एक शख्स का साथ देता है, आखिरत
में वह खुदा के साथ से महरूम हो जाता है।

هَٰكَذَا هُوَ لَآءِ جَادَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَن يُجَادِلِ اللَّهَ عَنْهُمْ
يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَمْ مَن يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۚ وَمَن يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ
ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۚ وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُ عَلَى
نَفْسِهِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ۚ وَمَن يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا
فَقَدْ احْتَمَلَ بُحْتًا نَّآءً وَإِنَّمَا مُبِينًا ۚ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّتْ لَكُ
طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ أَن يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّونَكَ مِن
شَيْءٍ ۖ وَأَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَيْكَ مَا لَمْ تَكُن تَعْلَمُ ۖ وَكَانَ
فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ۝

तुम लोगों ने दुनिया की ज़िंदगी में तो उनकी तरफ से झगड़ा कर लिया। मगर
कियामत के दिन कौन उनके बदले अल्लाह से झगड़ा करेगा या कौन होगा उनका
काम बनाने वाला। और जो शख्स बुराई करे या अपने आप पर जुल्म करे फिर
अल्लाह से बख्शिश मांगे तो वह अल्लाह को बख्शने वाला रहम करने वाला पाएगा।
और जो शख्स कोई गुनाह करता है तो वह अपने ही हक में करता है और अल्लाह
जानने वाला हिक्मत (तत्व ज्ञान) वाला है। और जो शख्स कोई गलती या गुनाह
करे फिर उसकी तोहमत किसी बेगुनाह पर लगा दे तो उसने एक बड़ा बोहतान और
खुला हुआ गुनाह अपने सर ले लिया। और अगर तुम पर अल्लाह का फज़ल और

उसकी रहमत न होती तो उनमें से एक गिरोह ने तो यह ठान ही लिया था कि तुम्हें बहका कर रहेगा। हालांकि वे अपने आप को बहका रहे हैं। वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। और अल्लाह ने तुम पर किताब और हिक्मत (तत्व ज्ञान) उतारी है और तुम्हें वह चीज सिखाई है जिसे तुम नहीं जानते थे और अल्लाह का फल है तुम पर बहुत बड़ा। (109-113)

दुनिया आजमाइश की जगह है। यहां हर आदमी से गलती हो सकती है। खुदा के मामले में भी और बंदों के मामले में भी। जब किसी से कोई गलती हो जाए तो सही तरीका यह है कि आदमी अपनी गलती पर शर्मिन्दा हो। वह अल्लाह की तरफ और ज्यादा तवज्जोह के साथ दौड़े। वह अल्लाह से दरखास्त करे कि वह उसकी गलती को माफ कर दे और आइंदा के लिए उसे नेकी की तौफीक दे। जो शख्स इस तरह अल्लाह की पनाह चाहे तो अल्लाह भी उसे अपनी पनाह में ले लेता है। अल्लाह उसके दीनी एहसास को बेदार करके उसे इस काबिल बना देता है कि वह पहले से ज्यादा मोहताब होकर दुनिया में रहने लगे।

दूसरी सूरत यह है कि आदमी जब गलती करे तो वह गलती को मानने के लिए तैयार न हो। बल्कि अपनी गलती को सही साबित करने की कोशिश में लग जाए। वह अपने साथियों की हिमायत से खुद उन लोगों से लड़ने लगे जो उसकी गलती से उसे आगाह कर रहे हैं। जो लोग अपनी गलती पर इस तरह अकड़ते हैं और जो लोग उनका साथ देते हैं वे खुदा के नजदीक बदतरीन मुजरिम हैं। वे अपनी गलती पर पर्दा डालने के लिए जिन अल्फ़ज का सहारा लेते हैं वे आखिरत में बिल्कुल बेमअना साबित होंगे और जिन हिमायतियों के भरोसे पर वे घमंड कर रहे हैं वे बिलआखिर जान लेंगे कि वे कुछ भी उनके काम आने वाले न थे।

एक शख्स किसी का माल चुराए और जब पकड़े जाने का अंदेशा हो तो उसे दूसरे के घर में रख कर कहे कि फ़लाँ ने उसे चुराया था। एक शख्स किसी औरत को अपनी हवस का निशाना बनाना चाहे और जब वह पाक दामन औरत उसका साथ न दे तो वह झूठे अफसाने गढ़कर उस औरत को बदनाम करे। दो आदमी मिल कर एक काम शुरू करें। इसके बाद एक शख्स को महसूस हो कि उसकी जाती मस्तेहतें मजरूह हो रही हैं, वह तदबीर करके उस काम को बंद करा दे और उसके बाद मशहूर करे कि इसके बंद होने की जिम्मेदारी दूसरे पक्ष के ऊपर है। ये सब अपना जुर्म दूसरे के सर डालने की कोशिशें हैं। मगर ऐसी कोशिशें सिर्फ आदमी के जुर्म को बढ़ाती हैं, वे उसे जुर्म से मुक्त साबित नहीं करतीं। अल्लाह का सबसे बड़ा फ़ल यह है कि वह हिदायत के दरवाजे खोले। वह आदमी को समझाए कि गलती करने के बाद अपनी गलती को मान लो न कि बहस करके अपने को सही साबित करो। किसी से मामला पड़े तो साथियों के बल पर घमंड न करो बल्कि अल्लाह से डर कर तवाज़ोअ (विनम्रता) का अंदाज इज़्रियार करो। किसी के खिलाफ कार्रवाई करने का मौका मिल जाए तो अपने को कामयाब समझ कर खुश न हो बल्कि अल्लाह से दुआ करो कि वह तुम्हें जालिम बनने से बचाए।

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ مَّجْلُوهُمْ إِلَّا مَنَ امْرَأَتٌ أَوْ مَعْرُوفٌ أَوْ إِصْلَاحٌ يِّنَ النَّاسِ وَمَن يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ وَمَن يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝

उनकी अक्सर सरगोशियों (कानाफूसियों) में कोई भलाई नहीं। भलाई वाली सरगोशी सिर्फ उसकी है जो सद्का करने को कहे या किसी नेक काम के लिए या लोगों में सुलह कराने के लिए कहे। जो शख्स अल्लाह की खुशी के लिए ऐसा करे तो हम उसे बड़ा अज़्र अता करेंगे। मगर जो शख्स रसूल की मुखालिफत करेगा और मोमिनों के रास्ते के सिवा किसी और रास्ते पर चलेगा, हालांकि उस पर राह बाजेह हो चुकी, तो उसे हम उसी तरफ चलाएंगे जिधर वह खुद फिर गया और उसे जहन्नम में दाखिल करेंगे और वह बुरा ठिकाना है। (114-115)

हक की बेआमेज (विशुद्ध) दावत जब उठती है तो वह जमीन पर खुदा का तराजू खड़ा करना होता है। उसकी मीजान में हर आदमी अपने को तुलता हुआ महसूस करता है। हक की दावत हर एक के ऊपर से उसका जाहिरी पर्दा उतार देती है और हर शख्स को उसके उस मकाम पर खड़ा कर देती है जहां वह हकीकत के एतबार से था। यह सूरतेहाल इतनी सख्त होती है कि लोग चीख उठते हैं। सारा माहौल दाजी के लिए ऐसा बन जाता है जैसा वह अंगारों के दर्मियान खड़ा हुआ हो।

जो लोग दावते हक की तराजू में अपने आप को बेवजन होता हुआ महसूस करते हैं उनके अंदर ज़िद और घमंड के जज्बात जाग उठते हैं। वे तेजी से मुखालिफना रुख पर चल पड़ते हैं। वे चाहने लगते हैं कि ऐसी दावत (आह्वान) को मिटा दें जो उनकी हकपरस्ताना हैसियत को संदिग्ध साबित करती हो। उनके लिए अपनी जबान का इस्तेमाल यह हो जाता है कि वह दावत और दाजी के खिलाफ झूठी बातें फैलाएं। उन्हें परास्त करने के मंसूखे बनाएं। वह लोगों को मना करें कि उसकी माली मदद न करो। जो अल्लाह के बंदे अल्लाह की रस्सी के गिर्द मुत्तहिद हो रहे हों उन्हें बदगुमानियों में मुब्तला करके मुंतशिर करें।

इसके बरअक्स जो लोग अपनी फितरत को जिंदा रखे हुए थे उन्हें अल्लाह की मदद से यह तौफीक मिलती है कि वे उसके आगे झुक जाएं, वे उसका साथ दें, वे अपनी ज़िंदगी को उसके मुताबिक ढालना शुरू कर दें। ऐसे लोगों के लिए उनकी जबान का इस्तेमाल यह होता है कि वे खुले तौर पर सच्चाई का एतराफ कर लें। वे लोगों से कहें कि यह अल्लाह का काम है इसमें अपना माल और अपना वक्त खर्च करो। वे लोगों को प्रेरित करें कि वे अपनी कुव्वतों को नेकी और भलाई के कामों में लगाएं। वे आपस में रंजिशों और शिकायतों को दूर करने की कोशिश करें। हक का एतराफ उनके अंदर जो नफिसयात जगाता है उसका कुदरती नतीजा है कि वे इस किस्म के कामों में लग जाएं।

तरह कायम किया हो कि वे जुल्म और सरकशी से दूर रहने वाले और इंसाफ और तवाज्जुअ (विनम्रता) के साथ जिंदगी बसर करने वाले हों। चेहरा आदमी के पूरे वजूद का नुमाइंदा होता है। चेहरा खुदा की तरफ फेरने का मतलब यह है कि आदमी अपने पूरे वजूद को खुदा की तरफ फेर दे।

अल्लाह तमाम कायनात का मालिक है। उसके पास हर किस्म की ताकतें हैं। मगर मौजूदा दुनिया में अल्लाह ने अपने को ग़ैब (अदृश्य) के पर्दे में छुपा दिया है। दुनिया में जितनी भी खराबियां पैदा होती हैं इसीलिए पैदा होती हैं कि आदमी खुदा को नहीं देखता, वह समझ लेता है कि मैं आजाद हूं कि जो चाहूं करूं। अगर आदमी यह जान ले कि इंसान के इख्तियार में कुछ नहीं तो आदमी पर जो कुछ कियामत के दिन बीतने वाला है वह उस पर आज ही बीत जाए।

وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا يُثَلِّي عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي يَتِمَّى النِّسَاءِ الَّتِي لَا تُولَدْنَ لَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَرَغِبُونَ أَنْ تَكْرَهُنَّ هُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْوِلْدَانِ وَأَنْ تَقُومُوا لِلْيَتَامَى بِالْقِسْطِ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا ۖ وَإِنْ أُمْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُورًا أَوْ إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسُ الشُّحَّ وَإِنْ تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۖ وَلَنْ تَسْتَطِيعُوا أَنْ تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمِيلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ وَإِنْ تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۖ وَإِنْ يَتَفَرَّقَا فَعِنِ اللَّهُ كُلاًّ مِّنْ سَعْيِهِ وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا ۝

और लोग तुमसे औरतों के बारे में हुक्म पूछते हैं। कह दो अल्लाह तुम्हें उनके बारे में हुक्म देता है और वे आयतें भी जो तुम्हें किताब में उन यतीम औरतों के बारे में पढ़कर सुनाई जाती हैं जिन्हें तुम वह नहीं देते जो उनके लिए लिखा गया है और चाहते हो कि उन्हें निकाह में ले आओ। और जो आयतें कमजोर बच्चों के बारे में हैं और यतीमों के साथ इंसाफ करो और जो भलाई तुम करोगे वह अल्लाह को खूब मालूम है। और अगर किसी औरत को अपने शौहर की तरफ से बदसलूकी या बेरुखी का अंदेशा हो तो इसमें कोई हर्ज नहीं कि दोनों आपस में कोई सुलह कर लें और सुलह बेहतर है। और हिर्स (लोभ) इंसान की तबीअत में बसी हुई है। और अगर तुम अच्छा सुलूक करो और खुदातरसी (ईश परायणता) से काम लो तो जो कुछ तुम करोगे अल्लाह उससे बाख़बर है। और तुम हरगिज औरतों को बराबर नहीं रख सकते अगरचे तुम ऐसा करना

دِينًا قَرَمْتَنَ أَسْلَمَهُ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ فَحْسَنٌ وَأَتَّبَعَهُ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا ۖ وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَظِيمًا ۝

न तुम्हारी आरजुओं (कामनाओं) पर है और न अहले किताब की आरजुओं पर। जो कोई भी बुरा करेगा उसका बदला पाएगा। और वह न पाएगा अल्लाह के सिवा अपना कोई हिमायती और न मददगार। और जो शख्स कोई नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो ऐसे लोग जन्नत में दाखिल होंगे। और उन पर जरा भी जुल्म न होगा। और उससे बेहतर किस का दीन है जो अपना चेहरा अल्लाह की तरफ झुका दे और वह नेकी करने वाला हो। और वह चले इब्राहीम के दीन पर जो एक तरफ का था और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना दोस्त बना लिया था। और अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और अल्लाह हर चीज का इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (123-126)

खुदा और आखिरत को मानने वाले लोग जब दुनियापरस्ती में गर्क होते हैं तो वे खुदा और आखिरत का इंकार करके ऐसा नहीं करते। वे सिर्फ यह करते हैं कि आखिरत के मामले को रस्मी अक्रीदे के खाने में डाल देते हैं और अमलन अपनी तमाम महनतें और सरगमियां दुनिया को हासिल करने में लगा देते हैं। दुनिया की इज्जत और दुनिया के फायदे को समेटने के मामले में वे पूरी तरह संजीदा होते हैं। इन्हें पाने के लिए उनके नजदीक मुकम्मल जद्दोजहद जरूरी होती है। मगर आखिरत की कामयाबी को पाने के लिए सिर्फ खुशफहमियां उन्हें काफी नजर आने लगती हैं। किसी बुजुर्ग की सिफारिश, किसी बड़े गिरोह से वाबस्तगी, कुछ पाक कलिमात का विर्द (जाप), बस इस किस्म के सस्ते आमाल से यह उम्मीद कायम कर ली जाती है कि वह आदमी को जहन्नम की भड़कती हुई आग से बचाएंगे और उसे जन्नत के पुरबहार बागों में दाखिल करेंगे। मगर इस किस्म की खुशख्यालियां चाहे उन्हें कितने ही खूबसूरत अल्फाज में बयान किया गया हो, वे किसी के कुछ काम आने वाली नहीं। अल्लाह का निजाम हद दर्जा मोहकम निजाम है। उसके यहां तमाम फैसले हकीमतों की बुनियाद पर होते हैं न कि महज आरजुओं की बुनियाद पर। अल्लाह की अदालत में हर आदमी का अपना अमल देखा जाएगा और जैसा जिसका अमल होगा ठीक उसी के मुताबिक उसका फैसला होगा। अल्लाह के इंसाफ के कानून के सिवा कोई भी दूसरी चीज नहीं जो अल्लाह के यहां फैसले की बुनियाद बनने वाली हो।

अल्लाह का वह बंदा कौन है जिस पर अल्लाह अपनी रहमतों की बारिश करेगा। इसकी एक तारीखी मिसाल इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं। ये वे बंदे हैं जो दुनिया में अल्लाह के मोमिन बनकर रहें। जो अपने आप को हमहतन अपने रब की तरफ यकसू कर लें। जो अपनी वफादारियां पूरी तरह अल्लाह के लिए खास कर दें। उन्होंने दुनिया में अपने मामलात को इस

चाहो। पस बिल्कुल एक ही तरफ न झुक पड़ो कि दूसरी को लटकी हुई की तरह छोड़ दो। और अगर तुम इस्लाह (सुधार) कर लो और डरो तो अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। और अगर दोनों जुदा हो जाएं तो अल्लाह हर एक को अपनी वुस्तत (सामर्थ्य) से बेएहतियाज (निराश्रित) कर देगा और अल्लाह बड़ी वुस्तत वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (127-130)

पूछने वालों ने कुछ समाजी मामलों के बारे में शरीअत का आदेश पूछा था। इस सिलसिले में हुक्म बताते हुए खैर (कल्याण) व इन्साफ और परोपकार व तकवा पर जोर दिया गया। इसकी वजह यह है कि कोई भी कानून उसी वक़्त अपने मक़सद को पूरा करता है जब कि उसे अमल में लाने वाला आदमी अल्लाह से डरता हो और फ़िलवाक़ेअ इन्साफ का तालिब हो। अगर ऐसा न हो तो क़ानून की जाहिरी तामील के बावजूद हकीकी बेहतरी पैदा नहीं हो सकती। समाज की वाकई इस्लाह सिर्फ उस वक़्त होती है जब कि बुराई करने वाला बुराई से इसलिए डरे कि अस्ल मामला खुदा से है और बुराई करने के बाद में किसी तरह उसकी पकड़ से बच नहीं सकता। इसी तरह भलाई करने वाला यह सोचे कि लोगों की तरफ से चाहे मुझे इसका सिला (प्रतिफल) न मिले मगर अल्लाह सब कुछ देख रहा है और वह जरूर मुझे इसका इनाम देगा। जहन्नम का अंदेशा आदमी को जुल्म से रोकता है और जन्नत की उम्मीद उस नुस्खान को बर्दाश्त करने का हौसला पैदा कर देती है जो हक़परस्ताना ज़िंदगी के नतीजे में लाज़िमन सामने आता है।

मियां-बीबी या दो आदमियों के इस्तेलाफ की वजह हमेशा हिंस होती है। एक फरीक (पक्ष) दूसरे फरीक का लिहाज किए बग़ैर सिर्फ अपने मुतालबात को पूरा करना चाहता है। यह ज़ेहनीयत हर एक को दूसरे की तरफ से ग़ैर मुतमइन बना देती है। सही मिजाज यह है कि दोनों फरीक एक दूसरे की माज़री को समझें और एक-दूसरे की रियायत करते हुए किसी आपसी समाधान पर पहुंचने की कोशिश करें। अल्लाह का मुतालबा जिस तरह यह है कि एक इंसान दूसरे इंसान की रियायत करे, इसी तरह अल्लाह भी अपने बंदों के साथ आखिरी हद तक रियायत फरमाता है। अल्लाह के यहां आदमी की पकड़ उसकी फ़ितरी कमज़ोरियों पर नहीं है बल्कि उसकी उस सरकशी पर है जो वह जान बूझकर करता है। अगर आदमी अल्लाह से डरे और दिल में इस्लाह (सुधार) का जज्बा रखे तो वह नीयत की दुरुस्तगी के साथ जो कुछ करेगा उसके लिए वह अल्लाह के यहां क़बिले माफ़ी करार पाएगा। इसी के साथ आदमी को कभी इस ग़लतफहमी में न पड़ना चाहिए कि वह दूसरे का काम बनाने वाला है। हर एक का काम बनाने वाला सिर्फ अल्लाह है, चाहे वह बजाहिर एक तरह के हालात में हो या दूसरी तरह के हालात में।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنْ اتَّقُوا اللّٰهَ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي

الْاَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ غَفِيْرًا رَّحِيْمًا ۝ وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ كَفِيًّا ۝ وَلَقَدْ يَنْشِئُ ذٰهِبَكُمْ اِنَّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ بِآخَرِيْنَّ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ۝ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآٰخِرَةِ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ۝

और अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। और हमने हुक्म दिया है उन लोगों को जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और तुम्हें भी कि अल्लाह से डरो। और अगर तुमने न माना तो अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है सब ख़ुबियों वाला है। और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और भरोसे के लिए अल्लाह काफी है। अगर वह चाहे तो तुम सबको ले जाए ऐ लोगो, और दूसरों को ले आए। और अल्लाह इस पर कादिर है। जो शख्स दुनिया का सवाब चाहता हो तो अल्लाह के पास दुनिया का सवाब भी है और आख़िरत का सवाब भी। और अल्लाह सुनने वाला और देखने वाला है। (131-134)

दुनिया में आदमी को जो नेक ज़िंदगी इस्तिआर करना है वह उसे उसी वक़्त इस्तिआर कर सकता है जब कि वह अंदर से अल्लाह वाला बन गया हो। अल्लाह को मालिके कायनात की हैसियत से पा लेना, सिर्फ अल्लाह से डरना और सिर्फ अल्लाह पर भरोसा करना, आख़िरत को अस्ल समझकर उसकी तरफ मुतवज्जह हो जाना, यही वे चीज़ें हैं जो किसी आदमी को इस क़बिल बनाती हैं कि वह दुनिया में वह सालेह (नेक) ज़िंदगी गुज़ारे जो अल्लाह को मलूब है और जो उसे आख़िरत की दुनिया में कामयाब करने वाली है। इसीलिए नबियों की तालीमात में हमेशा इसी पर सबसे ज्यादा जोर दिया जाता रहा है।

मौजूदा दुनिया आजमाइश के लिए है। यहां हर आदमी को जांच कर देखा जा रहा है कि कौन अच्छा है और कौन बुरा। इस मक़सद के लिए मौजूदा दुनिया को इस ढंग पर बनाया गया है कि यहां आदमी को हर किस्म के अमल की आजदी हो। यहां तक कि उसे यह मौक़ा भी हासिल हो कि वह अपने स्याह को सफेद कह सके और अपनी बेअमली को अमल का नाम दे। यहां एक आदमी के लिए मुमकिन है कि वह बुराईयों में मुत्तला हो मगर उसे बयान करने के लिए वह बेहतरीन अल्फ़ज़ पा ले। यहां यह मुमकिन है कि आदमी एक खुली हुई सच्चाई का इंकार कर दे और अपने इंकार की एक ख़ूबसूरत तौजीह तलाश कर ले। यहां यह मुमकिन है कि आदमी ओहदों की चाहत, शोहरतपसंदी, नफ़्ताअंदोजी और मस्लेहत पर अपनी ज़िंदगी की तामीर करे और इसके बावजूद वह लोगों को यह यकीन दिलाने में कामयाब हो जाए कि वह ख़ालिस हक़ के लिए काम कर रहा है।

यहां यह मुमकिन है कि एक शख्स खुदा के दीन को अपने दुनियावी और माददी मकासिद के हुसूल का जरिया बनाए और फिर भी वह दुनिया में फलता और फूलता रहे। यहां यह मुमकिन है कि आदमी हलाल को छोड़कर हराम जरियों को इस्तिथार करे, इंसाफ के बजाए वह जुम के रास्ते पर चले और इसके बावजूद उसका हाथ पकड़ने वाला कोई न हो। इन मुख़लफ मौकों पर आदमी चाहे तो अपने को हक व सदाकत का पाबंद बना ले और चाहे तो सरकशी और बेइंसाफी की तरफ चल पड़े। हकीकत यह है कि दीन के तमाम अहक़ाम में अहमियत की चीज यह है कि आदमी अल्लाह से डरता है या नहीं। यह सिर्फ अल्लाह का डर है जो उसे जिम्मेदाराना जिंदगी गुजारने के काबिल बनाता है। अगर अल्लाह का डर न हो तो एक ऐसी दुनिया में किसी को बातिल (असत्य) से रोकने वाली क्या चीज हो सकती है जहां बातिल को भी हक के पैराए में बयान किया जा सकता हो और जहां बेइंसाफी की बुनियाद पर भी बड़ी-बड़ी तरकियां हासिल की जा सकती हों। जहां हर ज़ालिम को अपने जुम को छुपाने के लिए खूबसूरत अल्फ़ाज मिल जाते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَىٰ
 أَنفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبِينَ إِن يَكُنْ غَنِيًّا أَوْ فَقِيرًا فَاللَّهُ أَوْلَىٰ
 بِهِمَا فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَن تَعْدُوا وَإِن تَلَوْا أَوْ تَعْرِضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ
 بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا

ऐ ईमान वालो, इंसाफ पर खूब कायम रहने वाले और अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बनो, चाहे वह तुम्हारे या तुम्हारे मां-बाप या अजीजों के खिलाफ हो। अगर कोई मालदार है या मोहताज तो अल्लाह तुमसे ज्यादा दोनों का खैरख्वाह है। पस तुम ख़्वाहिश की पैरवी न करो कि हक से हट जाओ। और अगर तुम कज़ी (हेर-फेर) करोगे या पहलूतही (अवहेलना) करोगे तो जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (135)

इज्तिमाई जिंदगी में बार-बार ऐसा होता है कि आदमी के सामने ऐसा मामला आता है जिसमें एक रास्ता अपने मफ़ाद और ख़्वाहिश का होता है और दूसरा हक और इंसाफ का। जो लोग अल्लाह की तरफ से ग़ाफ़िल होते हैं जिन्हें यकीन नहीं होता कि अल्लाह हर वक़्त उन्हें देख रहा है वे ऐसे मौकों पर अपनी ख़्वाहिश के रुख़ पर चल पड़ते हैं। वे इसे कामयाबी समझते हैं कि हक की परवाह न करें और मामले को अपने मफ़ाद और अपनी मस्लेहत के मुताबिक़ तै करें। मगर जो लोग अल्लाह से डरते हैं, जो अल्लाह को अपना निगरा बनाए हुए हैं वे तमामतर इंसाफ के पहलू को देखते हैं और वही करते हैं जो हक व इंसाफ का तक्काज हो। उनकी कोशिश हमेशा यह होती है कि उन्हें मौत आए तो इस हाल में आए कि उन्होंने किसी के साथ बेइंसाफी न की हो, वे अपने आपको मुकम्मल तौर पर न्याय पर कायम किए

हुए हों।

उनकी इंसाफपसंदी का यह जज्बा इतना बढ़ा हुआ होता है कि उनके लिए नामुमकिन हो जाता है कि वे इंसाफ से हटा हुआ कोई रवैया देखें और उसे बर्दाश्त कर लें। जब भी ऐसा कोई मामला सामने आता है कि एक शख्स दूसरे के साथ नाइंसाफी कर रहा हो तो वे ऐसे मौके पर हक का एलान करने से बाज नहीं रहते। अगर इंसाफ का एलान करने में उनके करीबी तअल्लुक वालों पर ज़द पड़ती हो या उनकी अपनी मस्लेहतें प्रभावित होती हों तब भी वे वही कहते हैं जो इंसाफ की रू से उन्हें कहना चाहिए। उनकी जवान खुलती है तो अल्लाह के लिए खुलती है न कि किसी और चीज के लिए। इसी तरह यह बात भी ग़लत है कि साहिबे मामला ताक़तवर हो तो उसे उसका हक़ दिया जाए और अगर साहिबे मामला कमज़ोर हो तो उसका हक़ उसे न दिया जाए। मोमिन वह है जो हर आदमी के साथ इंसाफ करे चाहे वह ज़ेअवर हो या कमज़ोर।

जब कोई आदमी नाइंसाफी का साथ दे तो वह यह कहकर ऐसा नहीं करता कि मैं नाइंसाफी करने वाले का साथी हूं। बल्कि वह अपनी नाइंसाफी को इंसाफ का रंग देने की कोशिश करता है। ऐसे मौके पर हर आदमी दो में से कोई एक रवैया इस्तिथार करता है। या तो वह यह करता है कि बात को बदल देता है। वह मामले की नौइयत को ऐसे अल्फ़ाज में बयान करता है जिससे जाहिर हो कि यह नाइंसाफी का मामला नहीं बल्कि ऐन इंसाफ का मामला है, जिसके साथ ज्यादाती की जा रही है वह इसी का मुस्तहिक़ है कि उसके साथ ऐसा किया जाए। दूसरी सूरत यह है कि आदमी ख़ामोशी इस्तिथार कर ले। यह जानते हुए कि यहां नाइंसाफी की जा रही है वह कतरा कर निकल जाए और जो कहने की बात है उसे जवान पर न लाए। इस किस्म का तर्जे अमल साबित करता है कि आदमी अपने ऊपर अल्लाह को निगरा नहीं समझता।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ
 رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ
 وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ۝ إِنَّا الَّذِينَ آمَنُوا
 ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ أَذُوا كُفْرًا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ
 وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا ۝ بَشِيرِ الْمُنْفِقِينَ بِأَن لَّهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ الَّذِينَ
 يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۝ يَبْتَغُونَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ
 الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ۝

ऐ ईमान वालो, ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो उसने पहले नाजिल की। और जो शरूख इंकार करे अल्लाह का और उसके फरिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और आखिरत के दिन का तो वह बहक कर दूर जा पड़ा। बेशक जो लोग ईमान लाए फिर इंकार किया, फिर ईमान लाए फिर इंकार किया, फिर इंकार में बढ़ते गए तो अल्लाह उन्हें हरगिज नहीं बख्सेगा और न उन्हें राह दिखाएगा। मुनाफिकों (पाखंडियों) को खुशखबरी दे दो कि उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। वे लोग जो मोमिनों को छोड़कर मुंकिरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वे उनके पास इज्जत की तलाश कर रहे हैं, तो इज्जत सारी अल्लाह के लिए है। (136-139)

‘ईमान वालो ईमान लाओ’ ऐसा ही है जैसे कहा जाए कि मुसलमानो मुसलमान बनो। अपने को मुसलमान कहना या मुसलमान समझना इस बात के लिए काफी नहीं कि आदमी अल्लाह के यहां भी मुसलमान करार पाए। अल्लाह के यहां सिर्फ वह शरूख मुसलमान करार पाएगा जो अल्लाह को इस तरह पाए कि वही उसके यकीन व एतमाद का मर्कज बन जाए। जो रसूल को इस तरह माने कि हर दूसरी रहनुमाई उसके लिए बेहक्रीकत हो जाए। जो आसमानी किताब को इस तरह अपनाए कि उसकी सोच और जज्बात बिल्कुल उसके ताबेअ हो जाएं। जो फरिश्तों के अक्कीदे को इस तरह अपने दिल में बिठाए कि उसे महसूस होने लगे कि उसके दाएं-बाएं हर वक्त खुदा के चौकीदार खड़े हुए हैं। जो आखिरत का इस तरह इक्लार करे कि वह अपने हर कैल व फेअल (कथनी-करनी) को आखिरत की मीजान पर जांचने लगे। जो शरूख इस तरह मोमिन बने वही अल्लाह के नजदीक उस रास्ते पर है जो हिदायत और कामयाबी का रास्ता है। और जो शरूख इस तरह मोमिन न बने वह एक भटका हुआ ईसान है, चाहे वह अपने नजदीक खुद को कितना ही मोमिन और मुस्लिम समझता हो।

मानने और न मानने का यह मअरका आदमी की जिंदगी में हर वक्त जारी रहता है। जब भी कोई मामला पड़ता है तो आदमी का जेहन दो में से किसी एक रूख पर चल पड़ता है। या ख़ाहिशात की तरफ या हक के तक्जयेपूरे करने की तरफ। अगर ऐसा हो कि मामले के वक्त आदमी की सोच और जज्बात ख़ाहिश की दिशा में चल पड़ें तो गोया ईमान लाने वाले ने ईमान से इंकार किया। इसके बरअक्स अगर वह अपनी सोच और जज्बात को हक का पाबंद बना ले तो गोया ईमान लाने वाला ईमान ले आया। आदमी मुसलमान बन कर दुनिया की जिंदगी में दाखिल होता है। इसके बाद एक हक बात उसके सामने आती है। अब एक शरूख वह है जो ऐसे मौके पर तवाजोअ का रवैया इस्तिथार करे और हक का एतराफ कर ले। दूसरा शरूख वह है जिसके अंदर घमंड की नफिसयात जाग उठें और वह उसे ठुकरा दे। पहली सूरत ईमान की सूरत है और दूसरी सूरत ईमान का इंकार करने की। जो शरूख सच्चा मोमिन न हो वह दुनिया की इज्जत व शोहरत को पसंद करता है इसलिए वह उन लोगों की तरफ झुक पड़ता है जिनसे जुड़कर उसकी इज्जत व शोहरत में इजाफा हो, चाहे वे अहले बातिल हों। उसे उन

लोगों से दिलचस्पी नहीं हों। जिनसे जुड़ना उसकी इज्जत व शोहरत में इजाफा न करे, चाहे वे अहले हक हों।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتَ اللَّهِ يَكْفِرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ حَتَّى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ إِنَّكُمْ إِذًا مِثْلُهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُفْضِقِينَ ۚ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ۖ ۝ الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللَّهِ قَالُوا أَلَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ وَإِنْ كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوا أَلَمْ نَسْتَحِذْكُمْ عَلَيْكُمْ وَمِنَعَكُمْ ۖ مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَاللَّهُ يَخْلُكُم بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَلَنْ يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ۝

और अल्लाह किताब में तुम पर यह हुक्म उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की निशानियों का इंकार किया जा रहा है और उनका मजाक किया जा रहा है तो तुम उनके साथ न बैठो यहां तक कि वे दूसरी बात में मशगूल हो जाएं। वरना तुम भी उन्हीं जैसे हो गए। अल्लाह मुनाफिकों को और मुंकिरों को जहन्नम में एक जगह इकट्ठा करने वाला है। वे मुनाफिक तुम्हारे लिए इंतजार में रहते हैं। अगर तुम्हें अल्लाह की तरफ से कोई फतह हासिल होती है तो कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे। और अगर मुंकिरों को कोई हिस्सा मिल जाए तो उनसे कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे खिलाफ लड़ने पर कादिर (समर्थ) न थे और फिर भी हमने तुम्हें मुसलमानों से बचाया। तो अल्लाह ही तुम लोगों के दर्मियान कियामत के दिन फैसला करेगा और अल्लाह हरगिज मुंकिरों को मोमिनों पर कोई राह नहीं देगा। (140-141)

अल्लाह की पुकार जब भी किसी इंसानी गिरोह में उठती है तो इतनी मजबूत बुनियादों पर उठती है कि दलील के जरिए उसकी काट करना किसी के लिए मुमकिन नहीं रहता। इसलिए जो लोग उसे मानना नहीं चाहते वे उसका मजाक उड़ाकर उसे बेवजन करने की कोशिश करते हैं। जो लोग ऐसा करें वह अपने इस रविये से यह बता रहे हैं कि वे हक के मामले को कोई संजीदा मामला नहीं समझते और जब आदमी किसी मामले में संजीदा न हो तो उस वक्त उससे बहस करना बिल्कुल बेकार होता है। ऐसे मौके पर सही तरीका यह है कि आदमी चुप हो जाए और उस वक्त का इंतजार करे जब कि गुफ्तगू का विषय बदल जाए और मुखातब इस काबिल हो जाए कि वह बात को सुन सके। जिस मजलिस में खुदा की दावत का मजाक उड़ाया जाए वहां बैठना यह साबित करता है कि आदमी हक के मामले में ग़ैरतमंद नहीं।

मुनाफिक इसकी परवाह नहीं करता कि उसूलपरस्ती का तक्का क्या है बल्कि जिस चीज में फायदा नजर आए उस तरफ झुक जाता है। वह अपने आपको उस हलके के साथ जोड़ता है जिसका साथ देने में उसके दुनियावी हौसले पूरे होते हों, चाहे वह अहले ईमान का हलका हो या ग़ैर अहले ईमान का। वह जिस मजलिस में जाता है उसे खुश करने वाली बातें करता है। मस्तेहतों की बिना पर कभी उसे सच्चे अहले ईमान के साथ जुड़ना पड़े तब भी वह दिल से उनका ख़ैरख़्वाह नहीं होता। क्योंकि सच्चे अहले ईमान का वजूद किसी मुआशिर में हक का पैमाना बन जाता है। इसलिए जो लोग झूठी दीनदारी पर खड़े हुए हों वे चाहते हैं कि ऐसे पैमाने टूट जाएं जो उनकी दीनदारी को संदिग्ध साबित करने वाले हैं। मगर अहले ईमान के बदख़्वाह जो कुछ जोर दिखा सकते हैं इसी दुनिया में दिखा सकते हैं। आखिरत में वे इनके ख़िलाफ़ कुछ भी न कर सकेंगे।

मुनाफिक वह है जो बजाहिर दीनदार मगर अंदर से बेदीन हो। ऐसे शख्स का अंजाम मुंकिर के साथ होना बताता है कि अल्लाह के नजदीक जाहिरी दीनदारी और खुली हुई बेदीनी में कोई फर्क नहीं। क्योंकि जाहिर की सतह पर चाहे दोनों मुख़लिफ़ नजर आए मगर बातिन (भीतर) की सतह पर दोनों एक होते हैं। और अल्लाह के यहां एतबार बातिन का है न कि ज़हिर का।

إِنَّ السُّفْهَانَ يُخْذِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كُسَالً يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يُذَكِّرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ مَذْذَبَيْنَ بَيْنَ ذَلِكَ لَا إِلَى هَؤُلَاءِ وَلَا إِلَى هَؤُلَاءِ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ سَبِيلًا ۚ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخْذُوا الْكُفْرَيْنَ أُولَئِكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ أَرِيدُونَ أَنْ تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُبِينًا ۚ إِنَّ السُّفْهَانَ فِي الدَّرَكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَنْ تَجْعَلَ لَهُمْ نُصِيرًا ۚ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ وَسَوْفَ يُؤْتِي اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِن شَكَرْتُمْ وَآمَنْتُمْ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ۝

मुनाफिकीन (पाखंडी) अल्लाह के साथ धोखेबाजी कर रहे हैं। हालांकि अल्लाह ही ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और जब वे नमाज के लिए खड़े होते हैं तो काहिली के साथ खड़े होते हैं महज लोगों को दिखाने के लिए। और वे अल्लाह को कम ही याद करते

हैं। वे दोनों के बीच लटक रहे हैं, न इधर हैं और न उधर। और जिसे अल्लाह भटका दे तुम उसके लिए कोई राह नहीं पा सकते। ऐ ईमान वालो, मोमिनों को छोड़कर मुंकिरों को अपना दोस्त न बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह की खुली हुजत कायम कर लो। बेशक मुनाफिकीन दोख के सबसे नीचे के तबके में हों और तुम उनका कोई मददगार न पाओगे। अलबत्ता जो लोग तौबा करें और अपनी इस्लाह कर लें और अल्लाह को मजबूती से पकड़ लें और अपने दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लें तो ये लोग ईमान वालों के साथ होंगे और अल्लाह ईमान वालों को बड़ा सवाब देगा। अल्लाह तुम्हें अजाब देकर क्या करेगा अगर तुम शुक्रगुजारी करो और ईमान लाओ। अल्लाह बड़ा कद्र करने वाला है सब कुछ जानने वाला है। (142-147)

जो लोग अपने को अल्लाह के हवाले किए हुए न हों वे अपने को अपने दुनियावी मफ़ाद (हित) के हवाले किए हुए होते हैं। दुनियावी मफ़ाद जिससे वाबस्ता हो वे उसी के साथ हो जाते हैं चाहे वह दीनदार हो या बेदीन। ऐसे लोग जवान से इस्लाम के अल्फ़ज बोलते हैं और कुछ इस्लामी आमाल भी जाहिरी हद तक अदा करते रहते हैं। मगर उनका अमल अल्लाह के लिए नहीं होता। बल्कि लोगों की नजर में मुसलमान बने रहने के लिए होता है। उनका असली दीन मौकापरस्ती होता है मगर लोगों के सामने वे अपने को खुदापरस्त जाहिर करने की कोशिश करते हैं। ऐसे लोग गोया खुदा को धोखा दे रहे हैं। वे खुदा वाले न होकर अपने को खुदा वाला साबित करना चाहते हैं। वे इस्लाम को सच्चा दीन जानते हैं, इसके बावजूद अपने मफ़ादात (हितों) को छोड़ना नहीं चाहते। इसकी वजह से वे दोनों के दर्मियान लटके रहते हैं, न पूरी तरह अपने अकीदे के लिए एकसू होते और न पूरी तरह अपने मफ़ादात के। ऐसे लोग अल्लाह की मदद से महरूम रहते हैं। क्योंकि अल्लाह की मदद का मुस्तहिक (पात्र) बनने के लिए अल्लाह के रास्ते पर जमना जरूरी है। और यही चीज उनके यहां मौजूद नहीं होती। हक को मानने वाले और हक का इंकार करने वाले जब अलग-अलग हो चुके हों तो ऐसी हालत में हक का इंकार करने वालों का साथ देना अपने ख़िलाफ़ खुदा की खुली हुजत कायम करना है। यह किसी के कबिले सजा देने का ऐसा सुबूत है जिसके बाद किसी और सुबूत की जरूरत नहीं।

इस किस्म के लोग अपने दिखावे के आमाल की बिना पर खुदा की पकड़ से बच नहीं सकते। इस्लाम की जाहिरी नुमाइश के बावजूद हकीकत के एतबार से वे इस्लाम से दूर थे इसलिए उनका अंजाम भी उनकी हकीकत के एतबार से होगा न कि उनके जाहिर के एतबार से। ताहम किसी की गुमराही की वजह से खुदा उसका दुश्मन नहीं हो जाता। इस किस्म के लोग अगर अपनी ग़लती पर शर्मिन्दा हों, वे अपनी जिंदगी को बदलें, अपनी तवज्जोहात को हर तरफ से मोड़कर अल्लाह की तरफ लगाएं और एकसू होकर दीन के रास्ते पर चलने लें तो यकीनन अल्लाह उन्हें माफ़ कर देगा।

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظَلَمَ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا
عَلِيمًا ۖ إِنَّ تَبْدُوا خَيْرًا أَوْ تَخْفُوهُ أَوْ تَعْفُوا عَنْ سُوءٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ
عَفْوًا قَدِيرًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُفَرِّقُوا
بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنُكْفِرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ
يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا وَأَعْتَدْنَا
لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ
مِّنْهُمْ أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أَجْرُهُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

अल्लाह बदगोई (कुवाती) को पसंद नहीं करता मगर यह कि किसी पर जुल्म हुआ हो और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। अगर तुम भलाई को जाहिर करो या उसे छुपाओ या किसी बुराई से दसगुन करो तो अल्लाह माफ करने वाला कुदरत रखने वाला है। जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों का इंकार कर रहे हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों के दर्मियान तफरीक (विभेद) करें और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे। और वे चाहते हैं कि इसके बीच में एक राह निकालें। ऐसे लोग पक्के मुंकिर हैं और हमने मुंकिरों के लिए जिल्लत का अजाब तैयार कर रखा है। और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी को जुदा न किया उन्हें अल्लाह उनका अज्र देगा और अल्लाह गफूर (क्षमाशील) व रहीम (दयावान) है। (148-152)

किसी शख्स के अंदर कोई दीनी या दुनियावी ऐब मालूम हो तो उसे प्रसारित करना अल्लाह को सख्स नापसंद है। नसीहत का हक हर एक को है। मगर नसीहत या तो किसी का नाम लिए बगैर सामान्य रूप में की जानी चाहिए, या संबंधित शख्स से मिलकर तंहाई में। अल्लाह सुबह व शाम लोगों के जुर्मों को नजरअंदाज करता रहता है। बंदों को भी अपने अंदर यही अख्ताक पैदा करना है अलबत्ता अगर एक शख्स मज्नुम हो तो उसके लिए रुख्त है कि वह जालिम के जुर्म को लोगों से बयान करे। ताहम अगर मज्नुम सब्र कर ले और जुर्म करने वाले को माफ कर दे तो यह उसके हक में ज्यादा बेहतर है। क्योंकि इस तरह वह साबित करता है कि उसे दुनिया के नुक्सान से ज्यादा आखिरत के नुक्सान की फिक्र है। जो शख्स किसी बड़े गम में मुब्तिला हो उसके लिए छोटे गम बेहकीकत हो जाते हैं। यही हाल उस शख्स का होता है जिसके दिल में आने वाले हौलनाक दिन का गम समाया हुआ हो।

मक्का के लोग इब्राहीम अलैहिस्सलाम की नुबुव्वत को मानते थे। इसी तरह यहूदी

हजरत मूसा की नुबुव्वत को तस्लीम करते थे और मसीही हजरत ईसा की नुबुव्वत को। मगर इन सबने पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नुबुव्वत को मानने से इंकार कर दिया। उनमें से हर एक माजी (अतीत) के पैगम्बर को मानने के लिए तैयार था मगर उनमें से कोई वक्त के पैगम्बर को मानने के लिए तैयार न हुआ। हालांकि जिन नबियों को वे मान रहे थे वे भी अपने जमाने में उसी किस्म के मुखालिफाना रद्देअमल से दो-चार हुए थे जिससे पैगम्बर अरबी सल्ल० को दो-चार होना पड़ा। इस किस्म की हर कोशिश हकपरस्ती और नफसपरस्ती के दर्मियान रास्ता निकालने के लिए होती है ताकि ख्वाहिशात का ढांचा भी टूटने न पाए और आदमी खुदा की जन्नत तक पहुंच जाए।

अस्ल यह है कि माजी (अतीत) की नुबुव्वत एक मानी हुई नुबुव्वत होती है जबकि वक्त के पैगम्बर को मानने के लिए आदमी को नया जेहनी सफर तै करना पड़ता है। माजी (अतीत) की नुबुव्वत जमाना गुजरने के बाद एक तस्लीमशुदा नुबुव्वत बन जाती है। वह पैदाइशी तौर पर आदमी के जेहन का जुज बन चुकी होती है। मगर जमाने का पैगम्बर एक विवादित शख्सियत होता है, वह देखने वालों को महज 'एक इंसान' दिखाई देता है। इसलिए उसे मानने के लिए जरूरी होता है कि आदमी एक नया जेहनी सफर करे। वह खुदा को दुबारा शुऊर की सतह पर पाए। माजी के पैगम्बर को मानना तकलीदी (अनुकरणीय) ईमान के तहत होता है और वक्त के पैगम्बर को मानना इरादी ईमान के तहत। मगर अल्लाह के यहां कीमत इरादी ईमान की है न कि तकलीदी ईमान की।

يَسْأَلُكَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَنْ تُثَلِّلَ عَلَيْهِمْ كِتَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا
مُوسَىٰ أَكْبَرَ مِنْ ذَلِكَ فَقَالُوا أَرِنَا اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ثُمَّ
اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذَلِكَ وَأَتَيْنَا مُوسَىٰ
سُلْطَانًا مُّبِينًا ۖ وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ بِبَيِّنَاتِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمْ ادْخُلُوا الْبَابَ
سُجَّدًا وَقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيثَاقًا غَلِيظًا ۝

अहले किताब तुमसे यह मुतालबा (मांग) करते हैं कि तुम उन पर आसमान से एक किताब उतार लाओ। पस मूसा से वे इससे भी बड़ी चीज का मुतालबा कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि हमें अल्लाह को बिल्कुल सामने दिखा दो। पस उनकी इस ज्यादाती के सबब उन पर बिजली आ पड़ी। फिर खुली निशानी आ चुकने के बाद उन्होंने बछड़े को माबूद (पूज्य) बना लिया। फिर हमने उससे दसगुन किया। और मूसा को हमने खुली हुज्जत अता की। और हमने उनके ऊपर तूर पहाड़ को उठाया उनसे अहद (वचन) लेने के वास्ते। और हमने उनसे कहा कि दरवाजे में दाखिल हो सर झुकाए हुए और उनसे कहा कि सत्त (सनीचर) के मामले में ज्यादाती न करना। और हमने उनसे मजबूत अहद लिया। (153-154)

खुदा का पैगम्बर इंसानों में से एक इंसान होता है। वह आम आदमी की सूरत में लोगों के सामने आता है। इसलिए लोगों की समझ में नहीं आता कि वे एक आम आदमी को किस तरह खुदा का नुमाइंदा मान लें। वे कैसे यकीन कर लें कि सामने का आदमी एक ऐसा शख्स है जो खुदा की तरफ से बोलने के लिए मुक़र्रर हुआ है। चुनांचे वे कहते हैं कि जो कलाम तुम पेश कर रहे हो उसे आसमान से आता हुआ दिखाओ या खुदा खुद तुम्हारी तस्दीक (पुष्टि) के लिए आसमान से उतर पड़े तब हम तुम्हारी बात मानेंगे। मगर इस किस्म का मुतालबा हद दर्जे ग़ैर संजीदा मुतालबा है। क्योंकि इंसान का इम्तेहान तो यह है कि वह देखे बग़ैर माने, वह हकीकतों को उनके अर्थपूर्ण रूप में पा ले। ऐसी हालत में दिखा कर मनवाने का क्या फायदा। साथ ही यह कि अगर कुछ देर के लिए आलम के निजाम को बदल दिया जाए और आदमी को उसके मुतालबे के मुताबिक चीजों को दिखा दिया जाए तब भी वह बेफ़ायदा होगा। क्योंकि यह दिखाना बहरहाल वक़्ती होगा न कि मुस्तक़िल। और इंसान की आजादी जो उसे सरकशी की तरफ ले जाती है इसके बाद भी बाक़ी रहेगी। नतीजा यह होगा कि देखने के वक़्त तक वह सहम कर मान लेगा और इसके बाद दुबारा अपनी आजादी का ग़लत इस्तेमाल शुरू कर देगा जैसा कि देखने से पहले कर रहा था। यहूद की मिसाल इसकी ऐतिहासिक पुष्टि करती है।

तूर पहाड़ के दामन में ग़ैर मामूली हालात पैदा करके यहूद से यह अहद लिया गया था कि वे अपने इबादतख़ाने (खुर्ज 19 : 16-18) में तवाज़ोअ (विनम्रता, शालीनता) के साथ दाख़िल हों और खुशूअ के साथ अल्लाह की इबादत करें। और यह कि जीविका के लिए जो जद्दोज़हद करें वह अल्लाह के हदूद में रह कर करें न कि उससे आजाद होकर। मगर यहूद ने इस किस्म के तमाम अहदों को तोड़ दिया।

‘मूसा को हमने सुलताने मुबीन (खुली हुज्जत) दी’ अल्लाह का यह मामला हर पैगम्बर के साथ होता है। पैगम्बर अगरचे एक आम इंसान की तरह होता है मगर उसके कलाम और उसके अहवाल में ऐसी खुली हुई दलीलें मौजूद होती हैं जो उसकी खुदाई हैसियत को पूरी तरह साबित कर रही होती हैं। मगर जालिम इंसान हर खुदाई निशानी की एक ऐसी तौजीह ढूँढ लेता है जिसके बाद वह उसे रद्द करके अपनी सरकशी की जिंदगी को बदस्तूर जारी रखे।

فَمَا نَقِضَهُمْ بَيْثًا لَهُمْ وَلَقَرَهُمْ بِآيَاتِ اللَّهِ وَقَتْلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا غُلْفٌ بَلْ طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَكَفَرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَىٰ مَرْيَمَ بُعِثْنَا لَكُمْ عَلِيمًا ۖ وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ ۖ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظُّنِّ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۖ بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

उन्हें जो सज़ा मिली वह इस पर कि उन्होंने अपने अहद (वचन) को तोड़ा और इस पर कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया और इस पर कि उन्होंने पैगम्बरों को नाहक क़त्ल किया और इस कहने पर कि हमारे दिल तो बंद हैं बल्कि अल्लाह ने उनके इंकार के सबब से उनके दिलों पर मुहर कर दी है तो वे कम ही ईमान लाते हैं। और उनके इंकार पर और मरयम पर बड़ा तूफ़ान बांधने पर और उनके इस कहने पर कि हमने मसीह बिन मरयम, अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर दिया हालांकि उन्होंने न उसे क़त्ल किया और न सूली दी बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध कर दिया गया। और जो लोग इसमें मतभेद कर रहे हैं वे इसके बारे में शक में पड़े हुए हैं। उन्हें इसका कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ अटकल पर चल रहे हैं। और बेशक उन्होंने उसे क़त्ल नहीं किया। बल्कि अल्लाह ने उसे अपनी तरफ उठा लिया और अल्लाह जबरदस्त है हक्ममत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (155-158)

यहूद पर आसमानी हिदायत उतारी गई थी जिसमें यह बताया गया था कि वे दुनिया में अल्लाह की मर्जी पर चलें तो आख़िरत में अल्लाह उन्हें जन्नत देगा। उन्होंने पहले हिस्से को भुला दिया अलबत्ता दूसरे हिस्से को अपना पैदाइशी हक समझ लिया। यहूद हर किस्म के बिगाड़ में मुब्तिला (लिप्त) हुए। इसके बावजूद अपने नजातयाप्ता होने के बारे में उनका यकीन इतना बढ़ा हुआ था कि उन्होंने समझ लिया कि अब उन्हें नये नबी को मानने की ज़रूरत नहीं। वे बतौर तंज (कटाक्ष) कहते ‘हमारे दिल तो बंद हैं’ उनका यह जुमला रसूल को मानने के बारे में अपनी अक्षमता का इज़हार न था बल्कि इस इत्मीनान का इज़हार था कि वे रसूल के साथ चाहे जो भी सुलूक करें उनकी नजात किसी हाल में संदिग्ध होने वाली नहीं।

जो लोग इस किस्म के झूठे यकीन में मुब्तिला (लिप्त) हों वे हर किस्म के जुर्म पर ज़री हो जाते हैं। खुदा पर ईमान उन्हें जिस अहदे खुदावंदी में बांधता है उसे तोड़ना उनके लिए कुछ मुश्किल नहीं होता। अल्लाह की तरफ से जाहिर होने वाली खुली दलीलों के बावजूद वे उसे मानने के लिए तैयार नहीं होते। हक की तरफ बुलाने वाले जो उनकी ग़ैर खुदापरस्ताना रविश को बेनकाब करते हैं उनके खिलाफ आक्रामक कार्रवाई करने से वे नहीं झिझकते। यहां तक कि झूठे आरोप लगाकर दाओ (आहवानकती) को बेइज्जत करने से भी उन्हें कोई चीज नहीं रोकती। यहूद ने हज़रत मसीह के ख़िलाफ़ क़त्ल का इक्दाम किया और इसके बाद फ़स्र से कहा कि ‘मरयम का बेटा मसीह जो अपने को रसूल कहता था उसे हमने मार डाला।’ मगर इस किस्म के लोग अल्लाह के दाजियों के खिलाफ जो भी साजिश करें वे कभी कामयाब नहीं हो सकते। अल्लाह की ताक़त और उसका हकीमाना निजाम हमेशा हक के दाजियों की पुष्ट पर होता है। हर साजिश और हर मुखालिफ़त (विरोध) के बावजूद वे उस वक़्त तक अपना काम जारी रखने की तौफीक पाते हैं जब कि वे अपने हिस्से का काम मुकम्मल कर लें।

जो लोग हक के मुकाबले में सरकशी का रवैया इख़्तियार करें अल्लाह उनसे हक को क़बूल करने की सलाहियत छीन लेता है। वे अपनी मुखालिफ़ाना सरगर्मियों को जारी रखते हैं यहां तक कि खुदा के फरिश्ते उन्हें मुजरिम की हैसियत से पकड़ कर खुदा की अदालत में हाज़िर कर देते हैं।

وَأَنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا الْيُؤْمِنُ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۖ فِظْلِمٍ مِنَ الَّذِينَ هَادُوا حَرَمْنَا عَلَيْهِمْ
طَيْبَاتٍ أَجَلَتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا ۖ وَأَخَذَهُمُ الرِّبَا
وَقَدْ نُهِوا عَنْهُ ۖ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ
مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ لَكِنَّ الرَّاغِبِينَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ
يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ وَالْمُؤْتُونَ
الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ

और अहले किताब में से कोई ऐसा नहीं जो उसकी मौत से पहले उस पर ईमान न ले आए और कियामत के दिन वह उन पर गवाह होगा। पस यहूद के जुल्म की वजह से हमने वे पाक चीजें उन पर हारम कर दीं जो उनके लिए हलाल थीं। और इस वजह से कि वे अल्लाह की राह से बहुत रोकते थे। और इस वजह से कि वे सूद लेते थे हालांकि इससे उन्हें मना किया गया था और इस वजह से कि वे लोगों का माल बातिल तरीके से खाते थे। और हमने उनमें से मुंकिरों के लिए दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। मगर उनमें जो लोग इल्म में पुख्ता और ईमान वाले हैं वे ईमान लाए हैं उस पर जो तुम्हारे ऊपर उतारी गई और जो तुमसे पहले उतारी गई और वे नमाज के पाबंद हैं और जकात अदा करने वाले हैं और अल्लाह पर और कियामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं। ऐसे लोगों को हम जरूर बड़ा अज्र (प्रतिफल) देंगे। (159-162)

इकरिमा कहते हैं कि कोई यहूदी या ईसाई नहीं मरेगा यहां तक कि वह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए। यहूद व नसारा के पास आसमानी इल्म था ऐसे लोग यह समझने में गलती नहीं कर सकते थे कि पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) की दावत ख़ालिस खुदाई दावत है। मगर पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) को मानना और उनके मिशन में अपना माल और अपनी जिंदगी लगाना उन्हें दुनियावी मस्लेहतों के खिलाफ नजर आता था। इस वजह से उन्होंने आपका साथ देने से इंकार कर दिया। मगर जब मौत आदमी के सामने आती है तो इस किस्म की तमाम मस्लेहतें बातिल होती हुई नजर आने लगती हैं। उस वक्त आदमी के जेहन से तमाम मस्नूई (कृत्रिम) पर्दे हट जाते हैं और हक अपनी खुली सूरत में सामने आ जाता है। मौत के दरवाजे पर पहुंच कर आदमी उस चीज का इक्कार कर लेता है जिसे वह मौत से पहले मानने के लिए तैयार न था। मगर उस वक्त के इक्कार की अल्लाह की नजर में कोई कीमत नहीं।

जब कोई गिरोह खुदाई दीन के बजाए खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) दीन को इख्तियार करता है

तो वह अपनी दीनी हैसियत को जाहिर करने के लिए कुछ खुदसाख्ता निशानात भी कायम करता है। वह अपने मिजाज और अपने हालात के लिहाज से हारम व हलाल के नये कायदे बनाता है और उनका खुसूसी एहतमाम करके साबित करना चाहता है कि वह दूसरों से ज्यादा दीन पर कायम है। ऐसे लोगों का दीन कुछ जाहिरी चीजों के एहतमाम पर आधारित होता है न कि अल्लाह वाला बनने पर। चुनांचे वह इससे नहीं डरते कि अल्लाह के मना किए हुए तरीकों से दुनियावी फायदे हासिल करें और अल्लाह के लिए होने वाले काम का रास्ता रोकें। ऐसे लोगों का अंजाम अल्लाह के यहां बेदीनों के साथ होगा न कि दीनदारों के साथ।

यहूदियों में कुछ लोग, अब्दुल्लाह बिन सलाम वगैरह, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए और आपका साथ दिया। जो लोग इसानी इजाफ़ों से गुजर कर अस्त आसमानी दीन से आशना होते हैं, जो विद्वेष, अंधानुकरण और मफादपरस्ती की जेहनियत से आजाद होते हैं उन्हें सच्चाई को समझने और अपने आप को उसके हवाले करने में कोई चीज रुकावट नहीं बनती। वे हर किस्म के जेहनी खोल से बाहर आकर सच्चाई को देख लेते हैं। यही वे लोग हैं जो अल्लाह की जन्नतों में दाखिल किए जाएंगे।

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَوْحَيْنَا
إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَى وَأَيُّوبَ
وَيُوشَعَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ وَآدَمَ وَنُوحًا وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ
عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَى تَكْلِيمًا ۖ
رُسُلًا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ
بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۖ

हमने तुम्हारी तरफ 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी है जिस तरह हमने नूह और उसके बाद के नबियों की तरफ 'वही' भेजी थी। और हमने इब्राहीम और इसमाईल और इस्हाक और याकूब और औलादे याकूब और ईसा और अय्यूब और यूनस और हारून और सुलैमान की तरफ 'वही' भेजी थी। और हमने दाऊद को खबर दी। और हमने ऐसे रसूल भेजे जिनका हाल हम तुम्हें पहले सुना चुके हैं और ऐसे रसूल भी जिनका हाल हमने तुम्हें नहीं सुनाया। और मूसा से अल्लाह ने कलाम किया। अल्लाह ने रसूलों को खुशखबरी देने वाले और डराने वाले बनाकर भेजा ताकि रसूलों के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुकाबले में कोई हुज्जत बाकी न रहे और अल्लाह जबरदस्त है हक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (163-165)

अल्लाह ने इंसान को पैदा किया और फिर जन्नत और जहन्नम बनाई। इसके बाद इंसान को जमीन पर बसाया। यहां इंसान को आजादी है कि वह जो चाहे करे। मगर यह आजादी मुस्तकिल नहीं है बल्कि वकती है और इम्तेहान के लिए है। वह इसलिए है ताकि अच्छे और बुरे को छांट जाए। खुदा यह देख रहा है कि लोगों में कौन वह शख्स है जो अपनी आजादी

के बावजूद हकीकतपसंदी का रवैया इख्तियार करता है और अपने को अल्लाह का बंदा बनाकर रखता है। और कौन वह है जो अपनी आजादी का ग़लत इस्तेमाल करके बताता है कि वह एक सरकश इंसान है। दुनिया में दोनों किस्म के लोग मिले हुए हैं। दोनों को यहां समान रूप से ख़ुदा की नेमतों से फ़ायदा उठाने का मौक़ा हासिल है। मगर इस्तेहान की मुक़ररह मुद्दत पूरी होने के बाद दोनों ग़िरोह एक दूसरे से अलग कर दिए जाएंगे। पहले ग़िरोह को अबदी तौर पर जन्नत के बाग़ों में बसाया जाएगा और दूसरे ग़िरोह को अबदी तौर पर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।

जिंदगी के बारे में अल्लाह का यह मंसूबा इंसान को बड़ी नज़ाकत में डाल रहा है। क्योंकि इसका मतलब यह है कि दुनिया की छोटी-सी जिंदगी का अंजाम दो इंतहाई सूरतों में सामने आने वाला है, या अबदी (अनंत) राहत या अबदी अज़ाब। इसलिए अल्लाह ने रहनुमाई के दूसरे फ़ित्री इंतजामात के अलावा पैग़म्बरों और किताबों के भेजने का इंतजाम किया ताकि कोई शख्स जिंदगी की हकीकत से बेख़बर न रहे और पैसले के दिन यह न कह सके कि हमें इलाही मंसूबे का पता न था कि हम अपनी जिंदगी को उसके मुताबिक बनाते।

अल्लाह के इस मंसूबे के लाजिम मअना यह हैं कि शुरू से आख़िर तक आने वाले तमाम नबियों का पैग़ाम और मंसूबी फ़रीजा एक हो। जब तमाम इंसान एक ही इस्तेहान की तराजू में खड़े हुए हैं तो उनके इस्तेहान का पर्चा एक दूसरे से मुख़लिफ़ कैसे हो सकता है। हकीकत यह है कि तमाम नबियों का पैग़ाम एक था और इसी एक पैग़ाम से उन्होंने तमाम इंसानों को बाख़बर किया। और वह यह कि हर आदमी एक ऐसे नाजुक मक़ाम पर खड़ा हुआ है जिसके एक तरफ जन्नत है और दूसरी तरफ जहन्नम। वह एक तरफ चले तो जन्नत में पहुँचेगा और दूसरी तरफ चले तो जहन्नम में जा गिरेगा। तमाम नबियों की दावत एक थी। अलबत्ता देश-काल की ज़रूरत के एतबार से उन्हें ख़ुदा की ताईद मुख़लिफ़ सूरतों में मिली। अल्लाह की यह सुन्नत आज भी बाकी है। डराने और खुशख़बरी सुनाने का पैग़म्बराना काम करने के लिए आज जो लोग उठेंगे वे अपने हालात के लिहाज से यकीनन अल्लाह की ख़ुसूसी ताईद के मुस्तहिक होंगे। ताकि वे अपनी दावती जिम्मेदारी को प्रभावी रूप से जारी रख सकें।

لَكِنَّ اللَّهَ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ وَالْمَلَكُ يَشْهَدُونَ ۝
وَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا
ضَلَالًا بَعِيدًا ۖ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرْ لَهُمْ وَلَا
لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ۖ إِلَّا طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ وَكَانَ ذَلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۖ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِنْ رَبِّكُمْ فَآمِنُوا
خَيْرًا لَكُمْ وَإِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

मगर अल्लाह ग़वाह है उस पर जो उसने तुम्हारे ऊपर उतारा है कि उसने इसे अपने इल्म के साथ उतारा है और फ़रिश्ते भी ग़वाही देते हैं और अल्लाह ग़वाही के लिए काफी है। जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका वे बहक कर बहुत दूर निकल गए। जिन लोगों ने इंकार किया और जुल्म किया उन्हें अल्लाह हरगिज़ नहीं बख़्शेगा न ही उन्हें जहन्नम के सिवा कोई रास्ता दिखाएगा जिसमें वे हमेशा रहेंगे। और अल्लाह के लिए यह आसान है। ऐ लोगो, तुम्हारे पास रसूल आ चुका तुम्हारे रब की ठीक बात लेकर। पस मान लो ताकि तुम्हारा भला हो। और अगर न मानोगे तो अल्लाह का है जो कुछ आसमानों में और जमीन में है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (166-170)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेअसत के वक़्त यहूद को आसमानी मजहब के नुमाइंदे की हैसियत हासिल थी। वह मजहब के बड़े-बड़े मनासिब (पदों) पर बैठे हुए थे। उन्हें मंज़ूर न हुआ कि वे अपने सिवा किसी की बड़ाई तस्लीम करें। उन्होंने यह मानने से इंकार कर दिया कि आप अल्लाह की तरफ से उसके बंदों तक उसका पैग़ाम पहुंचाने के लिए भेजे गए हैं। वे समझते थे कि हम दीन के इजारादार हैं। हम जिस शख्स की दीनी सदाक़त को तस्लीम न करें वह बतौर वाकया भी ग़ैर तस्लीमशुदा बन जाता है। मगर वे भूल गए कि यह कायनात ख़ुदा की कायनात है और इसका निज़ाम ख़ुदा के फ़रमांबरदार फ़रिश्ते चला रहे हैं। इसलिए यहां किसी की अस्ल तस्दीक वह है जो ख़ुदा की तरफ से हो और कायनात का पूरा निज़ाम जिसकी ताईद करे। और यकीनन ख़ुदा और उसकी पूरी कायनात अपने पैग़म्बर के साथ है न कि किसी के स्वनिर्मित आडंबर के साथ।

ख़ुदा की पुकार के मुकाबले में जो लोग यह रद्देअमल दिखाएं कि वे उसकी उपेक्षा व इंकार करें, वे लोगों को उसका साथ देने से रोके वे सिर्फ़ यह साबित कर रहे हैं कि वे बंदगी के सही मक़ाम से भटक कर बहुत दूर निकल गए हैं। वे ऐसी बात कहते हैं जिसकी तरदीद (खंडन) सारी कायनात कर रही है। वे एक ऐसे मंसूबे के खिलाफ़ महाज बना रहे हैं जिसकी पुश्त पर जमीन व आसमान का मालिक खड़ा हुआ है। जाहिर है कि इससे बड़ी नादानी इस दुनिया में और कोई नहीं, ऐसे लोग दीन के नाम पर सबसे बड़ी बेदीनी कर रहे हैं। जो लोग अपने लिए इस किस्म का जालिमाना रवैया पसंद करें उनका ज़हन एतराफ के बजाए इंकार के रुख़ पर चलने लगता है। वे दिन-ब-दिन हक से दूर होते चले जाते हैं। यहां तक कि अबदी बर्बादी के गढ़ में जा गिरते हैं। ख़ुदा की दावत का इंकार ख़ुद ख़ुदा का इंकार है। ख़ुदा की दावत इतने खुले हुए दलाइल (तर्कों) के साथ होती है कि उसे समझना किसी के लिए मुश्किल न रहे। इसके बावजूद जो लोग ख़ुदा की दावत का इंकार करें वे गोया ख़ुदा के सामने ठिठाई कर रहे हैं। और ठिठाई अल्लाह के नजदीक सबसे बड़ा जुर्म है।

अगर आदमी ने अपने दिल की खिड़कियां खुली रखी हों तो अल्लाह की पुकार उसे ऐन अपनी तलाश का जवाब मालूम होगी। उसे महसूस होगा कि वह हक जो ईसानी बातों में ढक कर रह गया था, अल्लाह ने उसकी बेआमेज (विशुद्ध) शक्त में उसके एलान का इंतजाम

किया है, यह अल्लाह के इल्म और हिक्मत का जुहूर है न कि किसी शख्स के जाती जोश का कोई मामला।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِنْهُ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثٌ ۚ إِنَّهُمْ وَاحِدٌ ۚ لَكُمْ إِلَهُمَّا اللَّهُ إِلَهُ وَاحِدٌ ۚ سُبْحَنَهُ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ ۚ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۚ لَنْ يَسْتَنْفِكَ الْمَسِيحُ أَنْ يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ ۚ وَمَنْ يَسْتَنْفِكَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمُ إِلَٰهٌ جَمِيعًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۚ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۚ

ऐ अहले किताब अपने दीन में गुलू (अति) न करो और अल्लाह के बारे में कोई बात हक के सिवा न कहो। मसीह ईसा इब्ने मरयम तो बस अल्लाह के एक रसूल और उसका एक कलिमा हैं जिसे उसने मरयम की तरफ भेजा और उसकी जानिब से एक रूह हैं। पस अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और यह न कहो कि खुदा तीन हैं। बाज़ आ जाओ, यही तुम्हारे हक में बेहतर है। माबूद तो बस एक अल्लाह ही है। वह पाक है कि उसके औलाद हो। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और अल्लाह ही का कारसाज होना काफी है। मसीह को हरगिज़ अल्लाह का बंदा बनने से संकोच न होगा और न मुकर्रब (प्रतिष्ठित) फरिश्तों को होगा। और जो अल्लाह की बंदगी से संकोच करेगा और घमंड करेगा तो अल्लाह जरूर सबको अपने पास जमा करेगा। फिर जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए तो उन्हें वह पूरा-पूरा अज़्र देगा और अपने फज़ल से उन्हें और भी देगा। और जिन लोगों ने संकोच और घमंड किया होगा उन्हें दर्दनाक अज़ाब देगा और वे अल्लाह के मुकाबले में न किसी को अपना दोस्त पाएंगे और न मददगार। (171-174)

आदमी की यह कमजोरी है कि किसी चीज में कोई विशिष्ट पहलू देखता है तो उसके बारे में अतिरंजनापूर्ण परिकल्पना कायम कर लेता है। वह उसका मकाम सुनिश्चित करने में हद से आगे निकल जाता है। इसी का नाम 'गुलू' है। शिर्क और शख्सियतपरस्ती की तमाम किस्में अस्लन इसी गुलू की पैदावार हैं।

दीन में गुलू यह है कि दीन में किसी चीज का जो दर्जा हो उसे उसके वाकई दर्जे पर न रखा जाए बल्कि उसे बढ़ाकर ज्यादा बड़ा दर्जा देने की कोशिश की जाए। अल्लाह अपने एक बंदे को बाप के बग़ैर पैदा करे तो कह दिया जाए कि यह खुदा का बेटा है। अल्लाह किसी को कोई बड़ा मर्तबा दे दे तो समझ लिया जाए कि वह कोई माफ़ूक (अलौकिक) शख्सियत है और इंसानी ग़लतियों से पाक है। दुनिया की चमक दमक से बचने की ताक़ीद की जाए तो उसे बड़ा चढ़ाकर सन्यास तक पहुंचा दिया जाए। जिंदगी के किसी पहलू के बारे में कुछ अहकाम दिए जाएं तो उसमें मुबालागा (अतिरंजना) करके उसी की बुनियाद पर एक पूरा दीनी फलसफा बना दिया जाए। इस किस्म की तमाम सूत्रें जिनमें किसी दीनी चीज को उसके वाकई मकाम से बढ़कर मुबालागा आमज़ दर्जा दिया जाए वह गुलू की फेहरिस्त में शामिल होगा।

हर किस्म की ताक़तों सिर्फ अल्लाह को हासिल हैं। उसके सिवा जितनी चीजें हैं सब आजिज और महकूम हैं। इंसान अपने शुऊर के कमाल दर्जे पर पहुंच कर जो चीज दरयाफ्त करता है वह यह कि खुदा कादिर मुतलक (सर्वशक्तिमान) है और वह उसके मुकाबले में आजिजे मुतलक। पैम्बर और फरिश्ते इस शुऊर में सबसे आगे होते हैं इसलिए वे खुदा की क़ुदरत और अपने इज्ज के एतराफ में भी सबसे आगे होते हैं। यह एतराफ (स्वीकार) ही इंसान का अस्ल इम्तेहान है। जिसे अपने इज्ज का शुऊर हो जाए उसने खुदा के मुकाबले में अपनी निस्वत को पा लिया। और जिसे अपने इज्ज का शुऊर न हो वह खुदा के मुकाबले में अपनी निस्वत को पाने से महरूम रहा। पहला शख्स आंख वाला है जो कामयाबी के साथ अपनी मंजिल को पहुंचेगा। दूसरा शख्स अंधा है जिसके लिए इसके सिवा कोई अंजाम नहीं कि वह भटकता रहे यहां तक कि जिल्लत के गढ़े में जा गिरे।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُبِينًا ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةِ اللَّهِ وَفَضْلٍ ۚ وَيَهْدِيَهُمُ إِلَٰهٌ صَرِاطًا مُسْتَقِيمًا ۚ يَسْتَفْتُونَكَ ۚ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ ۚ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتُ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَا ۚ إِنِ امْرُؤٌ يَكُنْ لَهَا وَلَدٌ فَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الشُّلُثُ ۚ وَمِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِجَالًا وَنِسَاءً فَلِلَّذَكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ ۚ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَنْ تَضِلُّوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ

ऐ लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक दलील आ चुकी है और हमने तुम्हारे ऊपर एक वाजेह (सुस्पष्ट) रोशनी उतार दी। पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और

उसे उन्हें मजबूत पकड़ लिया उन्हें जरूर अल्लाह अपनी रहमत और फल में दखिल करेगा और उन्हें अपनी तरफ सीधा रास्ता दिखाएगा। लोग तुमसे हुक्म पूछते हैं। कह दो अल्लाह तुम्हें कलाला (जिसका कोई वारिस न हो न ही मां बाप) के बारे में हुक्म बताता है। अगर कोई शख्स मर जाए और उसके कोई औलाद न हो और उसके एक बहिन हो तो उसके लिए उसके तरके का आधा है। और वह मर्द उस बहिन का वारिस होगा अगर उस बहिन के कोई औलाद न हो। और अगर दो बहिन हों तो उनके लिए उसके तरके का दो तिहाई होगा। और अगर कई भाई-बहिन, मर्द-औरतें हों तो एक मर्द के लिए दो औरतों के बराबर हिस्सा है। अल्लाह तुम्हारे लिए बयान करता है ताकि तुम गुमराह न हो और अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। (175-177)

अल्लाह की तरफ से जब उसकी पुकार इंसानों के सामने बुलन्द होती है तो वह ऐसी खुली हुई सूरत में बुलन्द होती है जो तारीकियों को खत्म करके हकीमतों को आखिरी हद तक रोशन कर दे। इसी के साथ वह ऐसी तार्किक होती है जिसका रद्द करना किसी के लिए मुमकिन न हो। वे उसका मज़ाक तो उड़ा सकते हैं मगर दलील की जबान में उसे काट नहीं सकते। खुदा वह है जो सूरज को निकालता है तो रोशनी और तारीकी एक दूसरे से जुदा हो जाती हैं। खुदा की यही कदरत उसकी पुकार में भी जाहिर होती है। इसके बाद हक और बातिल एक दूसरे से इस तरह अलग हो जाते हैं कि किसी आंख वाले के लिए इसका जानना नामुमकिन न रहे। ताहम सूरज को देखने के लिए जरूरी है कि आदमी अपनी आंख खोले। इसी तरह खुदा की पुकार से हिदायत लेने के लिए जरूरी है कि आदमी उस पर ध्यान दे। जो शख्स ध्यान न दे वह खुदा की पुकार के दर्मियान रहकर भी उससे महरूम रहेगा।

इसी के साथ यह भी जरूरी है कि हक को मजबूती के साथ पकड़ जाए। क्योंकि मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। यहां शैतान हर आदमी के पीछे लगा हुआ है जो तरह-तरह के धोखे में डाल कर आदमी को हक से बिदकाता रहता है। अगर आदमी शैतान के वसवसों से लड़ कर हक का साथ देने का फैसला न करे तो यकीनन शैतान उसे दर्मियान में उचक लेगा। ताहम आजमाइश की इस दुनिया में इंसान अकेला नहीं है। जो लोग खुदा की तरफ चलना चाहेंगे उन्हें हर मोड़ पर खुदा की रहनुमाई हासिल होगी। वे खुदा की मदद से मंजिल पर पहुंचने में कामयाब होंगे। जब आदमी का यह हाल हो जाए कि वह सिर्फ हक को अहमियत दे तो अल्लाह की तौफ़ीक से उसके अंदर यह सलाहियत (क्षमता) उभर आती है कि वह खालिस हक पर मजबूती के साथ जमे और दूसरी राहों में भटकने से बचा रहे।

मीरास और तरके का हुक्म बताते हुए यह कहना कि 'अल्लाह अपना हुक्म बयान करता है ताकि तुम गुमराही में न पड़ो' जाहिर करता है कि मीरास और तरके का मसला कोई मामूली मसला नहीं है। यह उन मामलों में से है जिसमें अल्लाह के बताए हुए कायदे की पाबंदी न करना आदमी को गुमराही की ख़न्दक में डाल देता है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَنُذِرُكَ بِالْعُقُودِ أَجَلْتُ لَكُمْ بِهَيْمَةِ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحْلِي الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ ۝ يَأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْلُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَاكِدَ وَلَا آمِينَ الْبَيْتِ الْحَرَامِ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنْ رَبِّهِمْ وَبِضْوَانًا وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا وَلَا يَجْرِمُكُمْ شَتَانُ قَوْمٍ أَنْ صَدُّوا عَنْ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَنْ تَعْتَدُوا وَمَنْ عَادَ عَلَى الذِّبِّ وَالْتَفَوَى وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

आयात 120

सूरा-5 अल-माइदह

रुकूअ 16

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान निहायत रहम वाला है ऐ ईमान वालो, अहद व पैमान को पूरा करो। तुम्हारे लिए मवेशी की किस्म के सब जानवर हलाल किए गए सिवा उनके जिनका जिक्र आगे किया जा रहा है। मगर एहराम की हालत में शिकार को हलाल न जानो। अल्लाह हुक्म देता है जो चाहता है। ऐ ईमान वालो, बेहुरमती न करो अल्लाह की निशानियों की ओर न हुरमत वाले महीनों की ओर न हरम में कुर्बानी वाले जानवरों की ओर न पड़े बंधे हुए नियाज के जानवरों की ओर न हुरमत वाले घर की तरफ आने वालों की जो अपने ख का फल और उसकी खुशी ढूढ़ने निकले हैं। और जब तुम एहराम की हालत से बाहर आ जाओ तो शिकार करो। और किसी कौम की दुश्मनी कि उसने तुम्हें मस्जिद हराम से रोका है तुम्हें इस पर न उभारो कि तुम ज्यादाती करने लगे। तुम नेकी और तकवा में एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज्यादाती में एक दूसरे की मदद न करो। अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह सख्त अजाब देने वाला है। (1-2)

मोमिन की जिदगी एक पाबंद जिदगी है। वह दुनिया में आजाद है कि जो चाहे करे इसके बावजूद वह अल्लाह की आकाई का एतराफ करते हुए अपने आपको पाबंद बना लेता है, वह अपने आपको खुद अहद की रस्ती में बांध लेता है। अल्लाह का मामला हो या बंदों का मामला, दोनों किस्म के मामलात में उसने अपने को पाबंद कर लिया है कि वह आजादाना अमल न करे बल्कि खुदा के हुक्म में मुताबिक अमल करे। वह उन्हीं चीजों को अपनी ख़राक बनाए जो खुदा ने उसके लिए हलाल की हैं और जो चीजें खुदा ने हराम की हैं उन्हें खाना छोड़ दे। किसी मौके

पर अगर किसी जाइज चीज से भी रोक दिया जाए जैसा कि एहराम की हालत में या हराम महीनों के बारे में हुक्म से वाजेह होता है तो उसे भी निस्कोच मान ले। कोई चीज किसी दीनी हकीकत की अलामत बन जाए तो उसका एहतराम करे, क्योंकि ऐसी चीज का एहतराम खुद दीन का एहतराम है। और यह सब कुछ अल्लाह के खौफ से करे न कि किसी और जच्चे से।

आदमी आम हालात में अल्लाह के हुक्मों पर अमल करता है। मगर जब कोई गैर मामूली हालत पैदा होती है तो वह बदल कर दूसरा इंसान बन जाता है। अल्लाह से डरने वाला यकायक अल्लाह से बेखौफ इंसान बनकर खड़ा हो जाता है। यह मौका वह है जबकि किसी की कोई मुखालिफना हरकत उसे उत्तेजित कर देती है। ऐसे मौके पर आदमी ईसाफ की हदों को भूल जाता है और यह चाहने लगता है कि जिस तरह भी हो अपने हरीफ (प्रतिपक्ष) को जलील और नाकाम करे। मगर इस किस्म की दुश्मनी भरी कार्रवाई खुदा के नजदीक जाइज नहीं, यहां तक कि उस वक्त भी नहीं जबकि मस्जिदे हराम की जियारत जैसे पाक काम से किसी ने दूसरे को रोका हो। कोई शख्स इस किस्म की जालिमाना कार्रवाई करने के लिए उठे और कुछ लोग उसका साथ देने लगें तो यह गुनाह की राह में किसी की मदद करना होगा। जबकि अल्लाह से डरने वालों का शेवह यह होना चाहिए कि वे सिर्फ नेकी के कामों में दूसरे की मदद करें। जो शख्स हक पर हो उसका साथ देना और जो नाहक पर हो उसका साथ न देना मौजूदा दुनिया का सबसे मुश्किल काम है। मगर इसी मुश्किल काम पर आदमी के उखरवी अंजाम का फैसला होने वाला है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالْدَّمُ وَلَحْمُ الْخِزْيِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالطَّيْحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبْعُ إِلَّا مَا ذَكَيْتُمْ وَمَا ذَرَجَ عَلَى الثُّبَابِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْكَرِ ذِكْرُكُمْ فَبَقِيَ
الْيَوْمَ يَاسَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ
الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتِمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ
دِينًا فَمَنْ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِإِثْمِهِ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ⑤

तुम पर हराम किया गया मुर्दार और खून और सुअर का गोश्त और वह जानवर जो खुदा के सिवा किसी और नाम पर जबह किया गया हो और वह जो मर गया हो गला घोटने से या चोट से या ऊंचे से गिर कर या सींग मारने से और वह जिसे दरिंदे ने खाया हो मगर जिसे तुमने जबह कर लिया और वह जो किसी थान पर जबह किया गया हो और यह कि तक्सीम करो जुए के तीरों से। यह गुनाह का काम है। आज मुंकिर तुम्हारे दीन की तरफ से मायूस हो गए। पस तुम उनसे न डरो, सिर्फ मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन की हैसियत से पसंद कर लिया। पस जो भूख से मजबूर हो जाए लेकिन गुनाह पर मायल न हो तो अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। (3)

कुछ जानवर अपने मेडिकल और अस्त्राकी नुक्सानात की वजह से इस कबिल नहीं कि इंसान उन्हें अपनी खुराक बनाए। खिंजीर को अल्लाह तआला ने इसी सबब से हराम करार दिया। इसी तरह जानवर के जिस्म में गोश्त के अलावा कई दूसरी चीजें होती हैं जो इंसानी खुराक बनने के कबिल नहीं। इन्हीं में से खून भी है। चुनांचे इस्लाम में जानवर को जबह करने की एक खास सूरत मुकरर की गई है ताकि जानवर के जिस्म का खून पूरी तरह बहकर निकल जाए। जबह के सिवा जानवर को मारने के जो तरीके हैं उनमें खून जानवर के गोश्त में जच्च होकर रह जाता है, वह पूरी तरह उससे अलग नहीं होता। इसी सबब से शरीअत में मुर्दार की तमाम किस्मों को भी हराम कर दिया गया। क्योंकि मुर्दार जानवर का खून फौरन ही उसके गोश्त में जच्च हो जाता है। इसी तरह ऐसा गोश्त भी हराम कर दिया गया जिसमें किसी तरह मुशिरकाना अकीदे की आमेजिश हो जाए। मसलन गैर अल्लाह का नाम लेकर जिह्न करना या गैर अल्लाह के तकर्रब (आस्था) की खातिर जानवर को कुर्बान करना। ताहम अल्लाह ने अपनी खास रहमत से यह गुंजाइश दे दी कि किसी को भूख की ऐसी मजबूरी पेश आ जाए कि उसे मौत या हराम खुराक में से एक को लेना हो तो वह मौत के मुकाबले में हराम खुराक को इख्तियार करे।

‘आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए कामिल कर दिया।’ यानी तुम्हें जो अहकाम दिए जाने थे वे सब दे दिए गए। तुम्हारे लिए जो कुछ भेजना मुकद्दर किया गया वह सब भेजा जा चुका। यहां अललइतलाक (लागू किए जाने के तौर पर) दीन के कामिल किए जाने का जिक्र नहीं है बल्कि उम्मेत मुहम्मदी पर जो कुरआन नाजिल होना शुरू हुआ था उसके पूरे होने का एलान है। यह नुजूल की तकमील का जिक्र है न कि दीन की तकमील का। इसलिए अल्फाज ये नहीं हैं कि ‘आज मैंने दीन को कामिल कर दिया।’ बल्कि यह फरमाया कि ‘आज मैंने तुम्हारे दीन को तुम्हारे लिए कामिल कर दिया।’ हकीकत यह है कि खुदा का दीन हर जमाने में अपनी कामिल सूरत में इंसान को दिया गया है। खुदा ने कभी नाकिस दीन इंसान के पास नहीं भेजा।

कुरआन को मानने वाली उम्मत को खुदा ने इतनी मजबूत बुनियादों पर कायम कर दिया है कि वह अपनी इम्कानी कुव्वत के एतबार से हर बेरूनी (वाहय) खतरे की जद से बाहर जा चुकी है। अब अगर उसे कोई नुक्सान पहुंचेगा तो अंदरूनी कमजोरियों की वजह से न कि खारजी हमलों की वजह से। और अंदरूनी कमजोरियों से पाक रहने की सबसे बड़ी जमानत यह है कि उसके अफराद अल्लाह से डरने वाले हों।

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ قُلْ أُحِلَّ لَكُمْ الطَّيِّبَاتُ وَمَا عَلَّمْتُم مِّنَ الْجَوَارِحِ
مُكَلِّبِينَ تَعْلَمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ
وَأَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ④
الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمْ الطَّيِّبَاتُ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَلَلٌ لَّكُمْ وَطَعَامُكُمْ
حَلَلٌ لَهُمْ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا

الْكَتَبَ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ مُحْصَيْنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ وَمَنْ يَكْفُرْ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ ۝

वे पृष्ठते हैं कि उनके लिए क्या चीज हलाल की गई है। कहे कि तुम्हारे लिए सुथरी चीजें हलाल हैं। और शिकारी जानवरों में से जिन्हें तुमने सथाया है, तुम उन्हें सिखाते हो उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाया। पस तुम उनके शिकार में से खाओ जो वे तुम्हारे लिए पकड़ रखें। और उन पर अल्लाह का नाम लो और अल्लाह से डरो, अल्लाह बेशक जल्द हिसाब लेने वाला है। आज तुम्हारे लिए सब सुथरी चीजें हलाल कर दी गई। और अहले किताब का खाना तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है। और हलाल हैं तुम्हारे लिए पाक दामन औरतें मुसलमान औरतों में से और पाक दामन औरतें उनमें से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई जब तुम उन्हें उनके महर दे दो इस तरह कि तुम निकाह में लाने वाले हो, न एलानिया बदकारी करो और न खुफिया आशनाई करो। और जो शख्स ईमान के साथ कुफ्र करेगा तो उसका अमल जाया हो जाएगा और वह आखिरत में नुक्सान उठाने वालों में से होगा। (4-5)

वे तमाम चीजें जिन्हें फितरत की निगाह पाक और सुथरा महसूस करती है। और वे तमाम जानवर जो अपनी सरिशत (प्रकृति) के लिहाज से इंसान की सरिशत से मुनासिबत रखते हैं इंसान के लिए हलाल हैं। अलबत्ता यह शर्त है कि वाहय सबब से उनके अंदर कोई फसाद शरई या तिब्बी (मेडिकल) न पैदा हुआ हो। ताहम इस उसूल को इंसान महज अपनी अकल से पूरी तरह सुनिश्चित नहीं कर सकता इसलिए उसे सुनिश्चितता के साथ भी बयान कर दिया गया। सधाए हुए जानवर का शिकार भी इसीलिए हलाल है कि वह शिकार को अपने मालिक के लिए पकड़ कर रखता है। गोया उसने आदमी की प्रवृत्ति सीख ली। ऐसा जानवर गोया शिकार के मामले में खुद आदमी का कायम मकाम बन गया।

हलाल व हराम का कानून चाहे कितनी ही तपसील से बता दिया जाए बिलआखिर आदमी का अपना इरादा ही है जो उसे किसी चीज से रोकता है और किसी चीज की तरफ ले जाता है। आदमी के ऊपर अस्ल निगरां कानून की दफआत नहीं बल्कि वह खुद है। अगर आदमी खुद न चाहे तो कानून को मानते हुए वह उससे फरार की राहें तलाश कर लेगा। यह सिर्फ अल्लाह का खैफ है जो आदमी को पाबंद करता है कि वह कानून को उसकी हकीमी रूह के साथ मल्हूज रखे। इसलिए हराम व हलाल का कानून बनाते हुए कहा गया : अल्लाह से डरो, अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

मुसलमान औरत के लिए किसी हाल में जाइज नहीं कि वह गैर मुस्लिम मर्द से निकाह करे। मगर मुसलमान मर्दों को मखसूस शराइत के तहत इजाजत दी गई है कि वह अहले किताब औरतों के साथ निकाह कर सकते हैं। इस गुंजाइश की हिक्मत यह है कि औरत फितरतन तअस्सुपजीर (प्रभाव स्वीकार करने वाला) मिजाज रखती है। उससे यह उम्मीद की जा सकती है कि वह अमली ज़िंदगी में आने के बाद अपने मुस्लिम शौहर और मुस्लिम मुआशिर

का असर कुबूल कर ले और इस तरह निकाह उसके लिए इस्लाम में दाखिले का जरिया बन जाए।

‘जो शख्स ईमान से इंकार करे तो उसका अमल जाया हो गया’ यानी ईमान के बगैर अमल की कोई हकीकत नहीं। अमल वही है जो ख़ालिस अल्लाह के लिए किया जाए। जो अमल अल्लाह के लिए न हो वह खुद अपने लिए होता है। फिर अपनी खातिर किए हुए अमल की कीमत अल्लाह क्यों देगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ وَإِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطْهَرُوا وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَبَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ إِنَّهُ مَأْيُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

ऐ ईमान वाले, जब तुम नमाज के लिए उठो तो अपने चेहरों और अपने हाथों को कोहनियों तक धोओ और अपने सरों का मसह करो और अपने पैरों को टखनों तक धोओ और अगर तुम हालते जनाबत में हो तो गुस्ल कर लो। और अगर तुम मरीज हो या सफर में हो या तुममें से कोई इस्तंजा से आए या तुमने औरत से सोहबत की हो फिर तुम्हें पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मूम कर लो और अपने चेहरों और हाथों पर इससे मसह कर लो। अल्लाह नहीं चाहता कि तुम पर कोई तंगी डाले। बल्कि वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे और तुम पर अपनी नेमत तमाम करे ताकि तुम शुक्रगुजार बनो। (6)

नमाज का मकसद आदमी को बुराइयों से पाक करना है। वजु इसी की एक ख़ाजगी (वाहय) तैयारी है। आदमी जब नमाज का इरादा करता है तो पहले वह पानी के पास जाता है। पानी बहुत बड़ी नेमत है जो आदमी के लिए हर किस्म की गंदगी को धोने का बेहतरीन जरिया है। इसी तरह नमाज भी एक रब्वानी चशमा (स्रोत) है जिसमें नहाकर आदमी अपने आपको बुरे जब्जात और गंदे ख़्यालात से पाक करता है।

आदमी वजु को शुरू करते हुए अपने हाथों पर पानी डालता है तो गोया अमल की जबान में यह दुआ करता है कि खुदाया मेरे इन हाथों को बुराई से बचा और इनके जरिये जो बुराइयां मुझसे हुई हैं उन्हें धोकर साफ कर दे। फिर वह अपने मुंह में पानी डालता है और अपने चेहरे को धोता है तो उसकी रूह जबाने हाल से कह उठती है कि खुदाया मैंने अपने मुंह में जो ग़लत खुराक डाली हो, मैंने अपनी जबान से जो ग़लत कलिमा निकाला हो, मेरी आंखों ने जो बुरी चीज

देखी हो उन सबको तू मुझसे दूर कर दे। फिर वह पानी लेकर अपने हाथों को सर के ऊपर फेरता है तो उसका वुजूद सरापा इस दुआ में ढल जाता है कि खुदाया मेरे जेहन ने जो बुरी बातें सोची हों और जो गलत मंसूबे बनाए हों उनके असरात को मुझसे धो दे और मेरे जेहन को पाक साफ जेहन बना दे। फिर जब वह अपने पैरों को धोता है तो उसका अमल उसके लिए अपने रब के सामने यह दरख्वास्त बन जाता है कि वह उसके पैरों से बुराई की गर्द को धो दे और उसे ऐसा बना दे कि सच्चाई और इंसाफ के रास्ते के सिवा किसी और रास्ते पर वह कभी न चले। इस तरह पूरा वुजू आदमी के लिए गोया इस दुआ की अमली सूरत बन जाता है कि : खुदाया मुझे गलती से पलटने वाला बना और मुझे बुराइयों से पाक रहने वाला बना।

आम हालात में पाकी का एहसास पैदा करने के लिए वुजू काफी है। मगर जनाबत की हालत एक गैर मामूली हालत है इसलिए इसमें पूरे जिस्म का धोना (गुस्ल) जरूरी करार दिया गया। वुजू अगर छोटा गुस्ल है तो गुस्ल बड़ा वुजू है। ताहम अल्लाह तआला को यह पसंद नहीं कि वह बंदों को गैर जरूरी मशक्कत में डाले। इसलिए माजूरी की हालत में पाकी के एहसास को ताजा करने के लिए तयमम को काफी करार दिया गया। वुजू और गुस्ल के सादा तरीके अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत हैं। इस तरह तहारते शरई को तहारते तबई (भौतिक शुद्धता) के साथ जोड़ दिया गया है। माजूरी (विवशता) की हालत में तयमम की इजाजत मजीद नेमत है क्योंकि यह गुलू (अतिवाद) से बचाने वाली है जिसमें अधिकतर धर्म मुब्तिला हुए।

وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي وَاثَقَكُمْ بِهِ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلَىٰ ٱلْأَن تَعْدِلُوا ۖ ٱعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌۢ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرٌۭ عَظِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۖ أُولَٰٓئِكَ أَصْحَابُ ٱلْجَحِيمِ ۖ يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هُمْ قَوْمٌۭ ٱن يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ ٱلْمُؤْمِنُونَ ۝

और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो और उसके उस अहद को याद करो जो उसने तुमसे लिया है। जब तुमने कहा कि हमने सुना और हमने माना। और अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह दिलों की बात तक जानता है। ऐ ईमान वालो, अल्लाह के लिए कायम रहने वाले और इंसाफ के साथ गवाही देने वाले बनो। और किसी गिरोह की दुश्मनी तुम्हें इस पर न उभारे कि तुम इंसाफ न करो, इंसाफ करो। यही तकवा

से ज्यादा करीब है और अल्लाह से डरो बेशक अल्लाह को खबर है जो तुम करते हो। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनसे अल्लाह का वादा है कि उनके लिए बख्शिाश है और बड़ा अज्र है। और जिन्होंने इंकार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया ऐसे लोग दोख वाले हैं। ऐ ईमान वालो, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो जब एक कौम ने इरादा किया कि तुम पर दस्तदराजी करे तो अल्लाह ने तुमसे उनके हाथ को रोक दिया। और अल्लाह से डरो और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (7-11)

ईमान एक अहद है जो बंदे और खुदा के दरमियान करार पाता है। बंदा यह वादा करता है कि वह दुनिया में अल्लाह से डरकर रहेगा और अल्लाह इसका जामिन होता है कि वह दुनिया व आखिरत में बंदे का कफील हो जाएगा। बंदे को अपने अहद में पूरा उतरने के लिए दो बातों का सुवूत देना है। एक यह कि वह कव्वामुल्लाह बन जाए। यानी वह खुदा की बातों पर खूब कायम रहने वाला हो। उसका वुजूद हर मौके पर सहीतरीन जवाब पेश करे जो बंदे को अपने रब के लिए पेश करना चाहिए। वह जब कायनात को देखे तो उसका जेहन खुदा की कудरतों और अज्मतों के तसव्वुर से सरशार हो जाए। वह जब अपने आपको देखे तो उसे अपनी जिंगी सरापा फल और एहसान नजर आए। उसके जच्चात उमड़ें तो खुदा के लिए उमड़ें। उसकी तवज्जोहात किसी चीज को अपना मर्कज बनाएं तो खुदा को बनाएं। उसकी मुहब्बत खुदा के लिए हो। उसके अंदेशे खुदा से वाबस्ता हों। उसकी यादों में खुदा समाया हुआ हो। वह खुदा की इबादत व इताअत करे। वह खुदा के रास्ते में अपने असासे (पूँजी) को खर्च करे। वह अपने आपको खुदा के दीन के रास्ते में लगाकर खुश होता हो।

अहद पर कायम रहने की दूसरी शर्त बंदों के साथ इंसाफ है। इंसाफ का मतलब यह है कि किसी शख्स के साथ कमी बेशी किए बगैर वह सुलूक करना जिसका वह ब-एतबारे वाकया मुस्तहिक है। मामलात में हक को अपनाना न कि अपनी ख्वाहिशात को। इस मामले में बंदे को इतना ज्यादा पाबंद बनना है कि वह ऐसे मौकों पर भी अपने को इंसाफ से बांधे रहे जबकि वह दुश्मनों और बातिलपरस्तों से मामला कर रहा हो, जबकि शिकायतें और तल्लख यादें उसे इंसाफ के रास्ते से फेरने लगीं।

दुनिया में खुदा निशानियों की सूरत में जाहिर होता है। यानी ऐसे दलाइल (तर्कों) की सूरत में जिसकी काट आदमी के पास मौजूद न हो। जब आदमी के सामने खुदा की दलील आए और वह उसे मानने के बजाए लफ्जी तकरार करने लगे तो उसने खुदा की निशानी को झुठलाया। ऐसे लोग खुदा के यहां सख्त सजा पाएंगे। और जिन लोगों ने उसे मान लिया वे खुदा के इनाम के मुस्तहिक होंगे।

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَرْتُمْ أَوْقُسْتُمْ ۖ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّا أَفْكَرَنَّ عَنْكُمْ

سَيَاتِكُمْ وَلَا دُخْلَكُمْ جَدَّتْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ فَبِمَا نَقْضِهِمْ فِيمَا قَاهُمْ لَعَنَهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ وَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَى خَائِنَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۝ فَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا ۝ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

और अल्लाह ने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया और हमने उनमें बारह सरदार मुकर्र किए। और अल्लाह ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। अगर तुम नमाज कायम करोगे और जकात अदा करोगे और मेरे पैगम्बरों पर ईमान लाओगे और उनकी मदद करोगे और अल्लाह को कर्जे हसन देगे तो मैं तुमसे तुम्हारे गुनाह जरूर दूर करूँगा और तुम्हें जरूर ऐसे बागों में दाखिल करूँगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। पस तुममें से जो शरू इसके बाद इंकार करेगा तो वह सीधे रास्ते से भटक गया। पस उनकी अहदशिकनी की बिना पर हमने उन पर लानत कर दी और हमने उनके दिलों को सख्त कर दिया। वे कलाम को उसकी जगह से बदल देते हैं। और जो कुछ उन्हें नसीहत की गई थी उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे। और तुम बराबर उनकी किसी न किसी ख़ियानत से आगाह होते रहते हो सिवाए थोड़े लोगों के। उन्हें माफ करो और उनसे दसगुजर करो, अल्लाह नेकी करने वालों को पसंद करता है। (12-13)

बनी इस्राईल से उनके पैगम्बर के माध्यम से खुदापरस्ताना जिंदगी गुज़ारने का अहद लिया गया और उनके बारह कबाइल से बारह सरदार उनकी निगरानी के लिए मुकर्र किए गए। बनी इस्राईल से जो अहद लिया गया वह यह था कि वे नमाज के जरिये अपने को अल्लाह वाला बनाएं। वे जकात की सूरत में बंदों के हुक्क अदा करें। पैगम्बरों का साथ देकर वे अपने को अल्लाह की पुकार की जानिब खड़ा करें और अल्लाह के दीन की जद्दोजहद में अपना असासा (पूँजी) खर्च करें। इन कामों की अदायगी और अपने दर्मियान इनकी निगरानी का इज्तिमाई निजाम कायम करने के बाद ही वे खुदा की नजर में इसके मुस्तहिक थे कि खुदा उनका साथी हो। वह उन्हें पाक साफ करके इस क़बिल बनाए कि वे जन्नत की लतीफ फजाओं में दाखिल हो सकें। जन्नत किसी को अमल से मिलती है न कि किसी किस्म के नस्ली तअल्लुक से।

इस अहद में जिन आमाल का जिक्र है यही दीन के असासी (मूलभूत) आमाल हैं। यह वह शाहराह है जो तमाम इंसानों को खुदा और उसकी जन्नत की तरफ ले जाने वाली है। मगर जब आसमानी किताब की हामिल कौमों में बिगाड़ आता है तो वे इस शाहराह के दाएं बाएं मुड़ जाती हैं। अब यह होता है कि खुदसाख़्ता तशरीहात (ब्याख्याओं) के जरिये दीन का तसब्यूर

बदल दिया जाता है। इबादत के नाम पर ग़ैर मुतअल्लिक बहसें शुरू हो जाती हैं। नजात के ऐसे रास्ते तलाश कर लिए जाते हैं जो बंदों के हुक्क अदा किए बग़ैर आदमी को मजिल तक पहुंचा दें। दावते हक के नाम पर उनके यहां बेमअना किस्म के दुनियावी हंगामें जारी हो जाते हैं। वे दुनियावी इख़राजात की बहुत सी मदें बनाते हैं और उन्हीं को दीन के लिए खर्च का नाम दे देते हैं। दूसरे शब्दों में वे अपने दुनियावी हितों के मुताबिक एक दीन गढ़ते हैं और उसी को खुदा का दीन कहने लगते हैं। जब कोई गिरोह बिगाड़ की इस नौबत तक पहुंचता है तो खुदा अपनी तवज्जोह उससे हटा लेता है। खुदा की तौफीक से महरूम होकर ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि वे सिर्फ अपनी ख्वाहिशों की जवान समझते हैं और इसी में मसरूफ रहते हैं। यहां तक कि मौत का फरिश्ता आ जाता है ताकि उन्हें पकड़ कर खुदा की अदालत में पहुंचा दे।

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرَى أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِمَّا ذُكِّرُوا بِهِ ۖ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝

और जो लोग कहते हैं कि हम नसरानी (ईसाई) हैं, उनसे हमने अहद लिया था। पस जो कुछ उन्हें नसीहत की गई थी उसका बड़ा हिस्सा वे भुला बैठे। फिर हमने कियामत तक के लिए उनके दर्मियान दुश्मनी और बुग़्ज़ डाल दिया। और आखिर अल्लाह उन्हें आगाह कर देगा उससे जो कुछ वे कर रहे थे। (14)

आसमानी किताब की हामिल कौमों पर जब बिगाड़ आता है तो वे दीन के मोहकम हिस्से को छोड़ कर उसके ग़ैर मोहकम हिस्से पर दौड़ पड़ती हैं। इसका नतीजा दुनिया में इख़िलाफ की सूरत में जाहिर होता है और आखिरत में रुस्वाई की सूरत में।

मसीह अलैहिस्सलाम बाप के बग़ैर एक पाकबाज ख़ातून के बल से पैदा हुए। पैदाइश के बाद उन्होंने अपनी जवान से अपना जो तआरुफ कराया वह यह था 'मैं अल्लाह का बंदा और उसका रसूल हूँ अब हजरत मसीह के बारे में राय कायम करने की एक सूरत यह है कि आपने अपने बारे में जो वाज़ेह अल्फ़ाज़ फरमाए हैं उन्हीं की पाबंदी की जाए और आपको वही समझा जाए जो इन अल्फ़ाज़ से बराहिरास्त तौर पर मालूम होता है। दूसरी सूरत यह है कि इस मामले में अपने कयास को दखल दिया जाए और कहा जाए कि 'इंसान वह है जो किसी बाप का बेटा हो। मसीह किसी बाप के बेटे न थे। इसलिए वह खुदा के बेटे थे' पहली राय की बुनियाद खुद मसीह का मोहकम और मुस्तनद कौल है इसलिए अगर उसे इख़्तियार किया जाए तो उसमें इख़िलाफ पैदा न होगा। जबकि दूसरी राय की बुनियाद महज इंसानी कयास पर है। इसलिए जब दूसरी राय को इख़्तियार किया जाएगा तो राय का इख़िलाफ शुरू हो जाएगा, जैसा कि मसीह के मानने वालों के साथ बाद के जमाने में हुआ।

आसमानी किताब की हामिल किसी कौम में जब बिगाड़ आता है तो उसके अंदर इसी किस्म की ख़राबियां शुरू हो जाती हैं। वे मोहकम दीन को छोड़कर कयासी दीन पर चल

पड़ती हैं। यहीं से इस्त्रिलाफ और फिक्कबदियों का दरवाजा खुल जाता है। फिक्क और कलाम, रूहानियत और सियासत में खुदा व रसूल ने जो खुले हुए अहकाम दिए हैं लोग उनके सादा मफहूम पर कानेअ नहीं रहते बल्कि बतौर खुद नई-नई बहसों निकालते हैं। कभी जमाने के ख्यालात से मुतअस्सिर होकर, कभी अपनी दुनियावी ख्वाहिशों को दीनी जवाज अता करने के लिए। कभी खुद से खुदा के नाफिस दीन को कामिल बनाने के लिए, अपनी तरफ से ऐसी बातें दीन में दाखिल कर दी जाती हैं जो हकीकत दीन का हिस्सा नहीं होतीं। इस तरह नए-नए दीनी एडीशन तैयार हो जाते हैं। कोई रूहानी एडीशन, कोई सियासी एडीशन, कोई और एडीशन। हर एक के गिर्द उसके मुवाफिक जैक रखने वाले लोग जमा होते रहते हैं। बिलआखिर उनका एक फिक्क बन जाता है। उनकी बाद की नस्लें इसे असलाफ (पूर्वजों) का वरसा समझकर उसकी हिफजत शुरू कर देती हैं। यहां तक कि वह वक्त आ जाता है कि वह क्रियामत तक कभी खत्म न हो। क्योंकि इंसान माजी (अतीत) को हमेशा मुकद्दस (पवित्र) समझ लेता है और जो चीज मुकद्दस बन जाए वह कभी खत्म नहीं होती। मजहब के नाम पर फिक्कबंदी एक तरफ मुकद्दस होकर अबदी बन जाती है। दूसरी तरफ खुदा का हुक्म बनकर दूसरों के खिलाफ नफरत और जारिहियत (आक्रामकता) का इजाजतनामा भी।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَنْ كَثِيرٍ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ يَهْدِي بِهُ اللَّهُ مِنَ الْبَعْثِ رِضْوَانًا سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ١٥ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَفِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ١٦

ऐ अहले किताब, तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है। वह किताबे इलाही की बहुत सी उन बातों को तुम्हारे सामने खोल रहा है जिन्हें तुम छुपाते थे। और वह दगुजर करता है बहुत सी चीजों से। बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ से एक रोशनी और एक जाहिर करने वाली किताब आ चुकी है। इसके जरिए से अल्लाह उन लोगों को सलामती की राहें दिखाता है जो उसकी रिजा के तालिब हैं और अपनी तौफिक से उन्हें अंधेरों से निकाल कर रोशनी में ला रहा है और सीधी राह की तरफ उनकी रहनुमाई करता है। बेशक उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि खुदा ही तो

मसीह इन्हे मरयम है। कहो फिर कौन इस्त्रियार रखता है अल्लाह के आगे अगर वह चाहे कि हलाक कर दे मसीह इन्हे मरयम को और उसकी मां को और जितने लोग जमीन में हैं सब को। और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और जमीन की और जो कुछ इनके दर्मियान है। वह पैदा करता है जो कुछ चाहता है और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (15-17)

अहले किताब ने अपने दीन में दो किस्म की गलतियां कीं। एक यह कि कुछ तालीमात को तावील या तहरीफ (परिवर्तन) के जरिए दीन से खारिज कर दिया। मसलन उन्होंने अपनी किताब में ऐसी तब्दीलियां कीं कि अब उन्हें अपनी नजात के लिए किसी और पैगम्बर को मानने की जरूरत न थी। अपने आबाई (पितृक) मजहब से वाबस्ती उनकी नजात के लिए बिल्कुल काफी थी। दूसरे यह कि उन्होंने दीन के नाम पर ऐसी पाबंदियां अपने ऊपर डाल लीं जो खुदा ने उनके ऊपर न डाली थीं। मिसाल के तौर पर कुर्बानी की अदायगी के वे जुर्ज (अमौलिक) मसाइल जिनका हुक्म उनके नबियों ने उन्हें नहीं दिया था बल्कि उनके उलमा ने अपनी फिक्के मुस्लिमों (कुतकों) से बतौर खुद उन्हें गढ़ लिया।

कुरआन उनके लिए एक नेमत बनकर आया। इसने उनके लिए दीने खुदावंदी की 'तजदीद' (नवीनीकरण) की। कुरआन ने उन्हें उस अंधेरे से निकाला कि वे ऐसे रास्ते पर चलते रहें जिसके मुतअल्लिक वह इस खुशफहमी में हों कि वह जन्नत की तरफ जा रहा है, हालांकि वह उन्हें खुदा के गजब की तरफ ले जा रहा हो। कुरआन ने एक तरफ उनकी खोई हुई तालीमात को उनकी असली सूरत में पेश किया। दूसरी तरफ कुरआन ने यह किया कि उन्होंने अपने आपको जिन शैर जरूरी दीनी पाबंदियों में मुब्तला कर लिया था उससे उन्हें आजाद किया। अब जो लोग अपनी ख्वाहिशों की पैरवी करें वे बदस्तूर अंधेरों में भटकते रहेंगे। और जिन्हें अल्लाह की रिजा की तलाश हो वे हक की सीधी राह को पा लेंगे। वे अल्लाह की तौफिक से अपने आपको तारीकी से निकाल कर रोशनी में लाने में कामयाब हो जाएंगे। हक का हक होना और बातिल का बातिल होना अपनी कामिल सूरत में जाहिर किया जाता है। मगर वह हमेशा दलील की जवान में होता है। और दलील उन्हीं लोगों के जेहन का जुज बनती है जो उसके लिए अपने जेहन को खुला रखें।

खुदा को छोड़कर इंसानों ने जो खुदा बनाए हैं उनमें से हर एक का यह हाल है कि वे न कोई चीज बतौर खुद पैदा कर सकते हैं और न किसी चीज को बतौर खुद मिया सकते हैं। यही वाकया यह साबित करने के लिए काफी है कि एक खुदा के सिवा कोई खुदा नहीं। जो हस्तियां पैदाइश और मौत पर कादिर न हों वे खुदा किस तरह हो सकती हैं।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ وَأَحِبَّاؤُهُ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوبِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّثْلَ خَلْقٍ يُعَذِّبُ الَّذِينَ يُشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ١٧ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ١٨

الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَنْ تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

और यहूद व नसारा कहते हैं कि हम खुदा के बेटे और उसके महबूब हैं। तुम कहो कि फिर वह तुम्हारे गुनाहों पर तुम्हें सजा क्यों देता है। नहीं बल्कि तुम भी उसकी पैदा की हुई मख़्लूक में से एक आदमी हो। वह जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा अजाब देगा। और अल्लाह ही के लिए है बादशाही आसमानों और जमीन की और जो कुछ इनके दर्मियान है और उसी की तरफ लौट कर जाना है। ऐ अहले किताब, तुम्हारे पास हमारा रसूल आया है, वह तुम्हें साफ़-साफ़ बता रहा है रसूलों के एक क़स्म के बाद। ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई खुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला नहीं आया। पस अब तुम्हारे पास खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला आ गया है और अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (18-19)

जो कौम किताब और पैग़म्बर की हामिल (धारक) बनाई जाए और वह उसे मानने का सुबूत दे दे तो उस पर खुदा की बहुत सी नेमतें नाज़िल होती हैं। मुख़ालिफ़ीन के मुकाबले में खुसूसी नुसरत, जमीन पर इक्तेदार, मफ़्फ़रत और जन्नत का वादा, वग़ैरह। कौम के इन्बिदाई लोगों के लिए यह उनके अमल का बदला होता है। उन्होंने अपने आपको खुदा के हवाले किया इसलिए खुदा ने उन पर अपनी नेमतें बरसाईं। मगर बाद की नस्लों में सूरतेहाल बदल जाती है अब उनके लिए सारा मामला कौमी मामला बन जाता है। अव्वलीन लोगों को जो चीज़ अमल के सबब से मिली थी, बाद के लोग कौमी और नस्ली तअल्लुक की बिना पर अपने को उसका मुस्तहिक समझ लेते हैं। वे यकीन कर लेते हैं कि वे खुदा के ख़ास लोग हैं और वे चाहे कुछ भी करें खुदा की नेमतें उन्हें मिलकर रहेंगी। हामिले किताब कौमों को इस ग़लतफ़हमी से निकालने की खातिर खुदा ने उनके लिए यह खुसूसी कायदा मुकर्रर किया है कि उनकी जजा का आगाज़ इसी दुनिया से शुरू हो जाता है। ऐसे लोग इसी मौजूदा दुनिया में देख सकते हैं कि आने वाली दुनिया में उनका खुदा उनके साथ क्या मामला करने वाला है। अगर वे दुनिया में अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आ रहे हों तो वे खुदा के मकबूल गिरोह हैं और अगर उनके दुश्मन उन पर ग़ालिब पा लें तो वे खुदा के नामकबूल गिरोह हैं। कोई हामिले किताब गिरोह तादाद की अधिकता के बावजूद अगर दुनिया में मख़्लूब और जलील हो रहा हो तो उसे हरगिज यह उम्मीद न रखना चाहिए कि आख़िरत में वह सखुन्द और बाइज़त रहेगा।

किसी कौम को बहैसियत कौम के खुदा का महबूब समझना सरासर बातिल ख़्याल है। खुदा के यहां फ़र्द-फ़र्द का हिसाब होना है न कि कौम-कौम का। हर आदमी जो कुछ करेगा उसी के मुताबिक वह खुदा के यहां बदला पाएगा। हर आदमी अल्लाह की नज़र में बस एक इंसान

है, चाहे वह इस कौम से तअल्लुक रखता हो या उस कौम से। हर आदमी के मुस्तक़बिल का फैसला इस बुनियाद पर किया जाएगा कि इम्तेहान की दुनिया में उसने किस किस्म की कारकंदगी का सुबूत दिया है। जन्नत किसी का कौमी वतन नहीं और जहन्नम किसी का कौमी जेलख़ाना नहीं। अल्लाह के फैसले का तरीक़ा यह है कि वह अपनी तरफ से ऐसे अपराध उठाता है जो लोगों को ज़िंदगी की हकीकत से आगाह करते हैं। उन्हें जहन्नम से डरते हैं और जन्नत की खुशख़बरी देते हैं। खुदा के इसी बशीर व नजीर (खुशख़बरी देने और डराने वाला) का साथ देकर आदमी खुदा को पाता है न कि किसी और तरीके से।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يُقَوْمُ أَذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلْنَا لَكُمُ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلْنَا لَكُمُ مَّلُوكًا ۖ وَآتَاكُم مَّا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ ۚ يَقَوْمُ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَاسِرِينَ ۝ قَالُوا يَمُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ ۖ وَإِنَّا لَنُذْخِلُهَا حَتَّىٰ يُخْرِجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دَاخِلُونَ ۝ قَالَ رَجُلٌ مِّنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَعْمَلَ اللَّهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَآتِ كُلُّهُم مَّا دَامُوا فِيهَا فَادْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ ۝

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो कि उसने तुम्हारे अंदर नबी पैदा किए। और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वह दिया जो दुनिया में किसी को नहीं दिया था। ऐ मेरी कौम, इस पाक जमीन में दाख़िल हो जाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है। और अपनी पीठ की तरफ न लौटो वना नुक्सान में पड़ जाओगे। उन्होंने कहा कि वहां एक जबरदस्त कौम है। हम हरगिज वहां न जाएंगे जब तक वे वहां से निकल न जाएं। अगर वे वहां से निकल जाएं तो हम दाख़िल होंगे। दो आदमी जो अल्लाह से डरने वालों में से थे और उन दोनों पर अल्लाह ने इनाम किया था, उन्होंने कहा कि तुम उन पर हमला करके शहर के फाटक में दाख़िल हो जाओ। जब तुम उसमें दाख़िल हो जाओगे तो तुम ही ग़ालिब होगे और अल्लाह पर भरोसा करो अगर तुम मोमिन हो। उन्होंने कहा कि ऐ मूसा हम कभी वहां दाख़िल न होंगे जब तक वे लोग वहां हैं। पस तुम और तुम्हारा खुदावंद दोनों जाकर लड़ो, हम यहां बैठे हैं। (20-24)

अल्लाह का यह तरीका है कि वह अपने पैगाम को लोगों तक पहुंचाने के लिए किसी गिरोह को चुन लेता है। इस गिरोह के अंदर वह अपने पैगम्बर और अपनी किताब भेजता है और उसे नियुक्त करता है कि वह इस पैगाम को दूसरों तक पहुंचाए। जिस तरह 'वही' (ईश्वरीय वाणी) एक खास शख्स पर उतरती है उसी तरह 'वही' का हामिल भी एक खास गिरोह को बनाया जाता है। कदीम (प्राचीन) जमाने में यह खास हैसियत बनी इस्राईल को हासिल थी और आखिरी नबी मुहम्मद (सल्ल०) के बाद उम्मत मुहम्मदी इस खुसूसी मंसब पर मामूर (नियुक्त) है।

अल्लाह को जिस तरह यह मलूब है कि कोई कौम उसके दीन की नुमाइंदगी करे। इसी तरह उसे यह भी मलूब है कि जो कौम उसके दीन की नुमाइंद हो वह दुनिया में बाइज्जत और सरबुलन्द हो ताकि लोगों पर यह बात स्पष्ट हो सके कि कियामत के बाद जो नया और अबदी आलम बनेगा उसमें हर क्रिम की सरफराजियाँ सिर्फ अहले हक को हासिल होंगी। बाकी लोग मलूब करके खुदा की रहमतों से दूर फेंक दिए जाएंगे। ताहम इस गिरोह को यह दुनियावी इनाम एकतरफा तौर पर नहीं दिया जाता इसके लिए उसे इस्तहकाक (पात्रता) के इम्तेहान में खड़ा होना पड़ता है। उसे अमली तौर पर यह साबित करना पड़ता है कि वह हर हाल में अल्लाह पर एतमाद करने वाला और सब्र की हद तक उसकी मर्जी पर कायम रहने वाला है।

बनी इस्राईल जब तक इस मेयार पर कायम रहे उन्हें खुदा ने उनकी हरीफ कौमों पर गालिब किया। यहां तक कि एक जमाने तक वे अपने वक्त की मुहज्जब दुनिया में सबसे ज्यादा सरबुलन्द हैसियत रखते थे। मगर हजरत मूसा तशरीफ लाए तो बनी इस्राईल पर जवाल आ चुका था। इम्तेहान के वक्त उनकी अक्सरियत अल्लाह पर एतमाद और सब्र का सबूत देने के लिए तैयार न हुई। यहां तक कि उनका एक तबका अल्लाह और उसके रसूल के सामने गुस्ताखी करने लगा। उनके दिल में अल्लाह से भी ज्यादा दुनिया की ताकतवर कौमों का डर समाया हुआ था। जब खुदा का कोई नुमाइंद गिरोह खुदा के काम के लिए कुर्बानी न दे तो गोया वह चाहता है कि खुदा खुद जमीन पर उतरे और अपने दीन का काम खुद अंजाम दे, चाहे वह बनी इस्राईल के कूछ लोगों की तरह इस बात को जवान से कह दे या दूसरे लोगों की तरह जवान से न कहे बल्कि सिर्फ अपने अमल से उसे जाहिर करे।

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي فَافْرِقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ
الْفَاسِقِينَ ٥ قَالَ فَإِنَّهَا مُكْرَمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً يَتَيَقِنُونَ فِي
الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ٦

मूसा ने कहा कि ऐ मेरे रब, अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर मेरा इस्तियार नहीं। पर तू हमारे और इस नाफरमान कौम के दर्मियान जुदाई कर दे। अल्लाह ने कहा : वह मुल्क उन पर चालीस साल के लिए हराम कर दिया गया। ये लोग जमीन में भटकते फिरेंगे। पर तुम इस नाफरमान कौम पर अफसोस न करो। (25-26)

बनी इस्राईल जब हजरत मूसा की कयादत में मिस्र से निकल कर सीना रेगिस्तान में पहुँचे तो उस जमाने में शाम व फिलिस्तीन के इलाके में एक जल्लिम कैम (अमालिका) की हुकूमत थी। अल्लाह ने बनी इस्राईल से कहा कि ये जल्लिम लोग अपनी उम्र पूरी कर चुके हैं। तुम इनके मुल्क में दाखिल हो जाओ, तुम्हें खुदा की मदद हासिल होगी और तुम मामूली मुसबले के बाद उनके ऊपर कब्जा पा लोगे। मगर बनी इस्राईल पर उस कैम की ऐसी हैबत तारी थी कि वे उनके मुल्क में दाखिल होने के लिए तैयार न हुए। इसका मतलब यह था कि वे अल्लाह से ज्यादा इंसानों से डरते थे। इसके बाद अल्लाह की नजर में उनकी कोई कीमत न रही। अल्लाह ने उनके बारे में फैसला कर दिया कि वे चालीस साल (1440-1400 ई०पू०) तक फ़ारान और शर्क उर्देन के दर्मियान सहरा में भटकते रहेंगे। यहां तक कि 20 साल से लेकर ऊपर की उम्र तक के सारे लोग खत्म हो जाएंगे। इस दौरान उनकी नई नस्ल नए हालात में परवरिश पाकर उठेगी। चुनांचे ऐसा ही हुआ। 40 साल की सहराई जिंदगी में इनके तमाम बड़ी उम्र वाले मर कर खत्म हो गए। इसके बाद उनकी नई नस्ल ने योशअ बिन नून की कयादत में शाम व फिलिस्तीन को फतह किया। यह योशअ बिन नून उन दो सालेह इस्राईलियों में से एक हैं जिन्होंने अपनी कौम से कहा था कि तुम अल्लाह पर भरोसा करते हुए अमालिका के मुल्क में दाखिल हो जाओ।

बनी इस्राईल ने हजरत मूसा से कहा था कि अगर हम इस मुल्क पर हमला करें तो हमें शिकस्त होगी और इसके बाद 'हमारे बच्चे लूट का माल ठहरेंगे' मगर यही बच्चे बड़े होकर अमालिका के मुल्क में दाखिल हुए और उस पर कब्जा किया। बच्चों में यह ताकत इसलिए पैदा हुई कि उन्होंने लम्बी मुद्दत तक सहराई (रेगिस्तानी) जिंदगी की मशक्कतों को बर्दाश्त किया था। बच्चों के बाप जिन पुरखतर हालात को अपने बच्चों के हक में मौत समझते थे उन्हीं पुरखतर हालात के अंदर दाखिल होने में उनके बच्चों की जिंदगी का राज छुपा हुआ था।

मुवाफिक हालात में जीना बजाहिर बहुत अच्छा मालूम होता है। मगर हकीकत यह है कि आदमी के अंदर तमाम बेहतरीन औसाफ उस वक्त पैदा होते हैं जबकि उसे हालात का मुसबला करके जिंदा रहना पड़े। मिस्र में बनी इस्राईल सदियों तक सुखित जिंदगी गुजारते रहे। इसका नतीजा यह हुआ कि वे एक मुर्दा कौम बन गए। मगर विस्थापन के बाद उन्हें जो सहराई जिंदगी हासिल हुई उसमें जिंदगी उनके लिए सरापा चैलेन्ज थी। इन हालात में जो लोग बचपन से जवानी की उम्र को पहुँचे वे कूदरती तौर पर बिल्कुल दूसरी किस्म के लोग थे। सहराई हालात ने उनके अंदर सादगी, हिम्मत, जफ़कशी और हकीकतपसंदी पैदा कर दी थी। और यही वे औसाफ हैं जो किसी कैम को जिंदा कैम बनाते हैं। कोई कैम अगर हालात के नतीजे में मुर्दा कौम बन जाए तो उसे दुबारा जिंदा कौम बनाने के लिए ग़ैर मामूली हालात में डाल दिया जाता है।

وَأْتِلْ عَلَيْهِمُ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقْبِلَ مِنْ أَحَدِهِمَا
وَلَمْ يُتَقَبَلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ
الْمُتَّقِينَ ۖ لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسٍ بِكَ يَدِي إِلَيْكَ
لَأَقْتُلَنَّكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ۖ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبْثُغَ آبَائِي
وَأَشِيبُكَ فَتَكُونُ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۖ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ۝

और उन्हें आदम के दो बेटों का किस्सा हक के साथ सुनाओ। जबकि उन दोनों ने कुर्बानी पेश की तो जन्मे से एक की कुर्बानी कुबूल हुई और दूसरे की कुर्बानी कुबूल न हुई। उसने कहा मैं तुझे मार डालूंगा। उसने जवाब दिया कि अल्लाह तो सिर्फ मुक्तियों से कुबूल करता है। अगर तुम मुझे कत्ल करने के लिए हाथ उठाओगे तो मैं तुम्हें कत्ल करने के लिए तुम पर हाथ नहीं उठाऊंगा। मैं डरता हूँ अल्लाह से जो सारे जहान का रब है। मैं चाहता हूँ की मेरा और अपना गुनाह तू ही ले ले फिर तू आग वालों में शामिल हो जाए। और यही सजा है जुम् करने वालों की। (27-29)

अल्लाह के लिए जो अमल किया जाए उसका अस्ल बदला तो आखिरत में मिलता है, ताहम कभी-कभी दुनिया में भी ऐसे वाक़ेआत जाहिर होते हैं जो बताते हैं कि आदमी का अमल खुदा के यहां मकबूल हुआ या नहीं। आदम के बेटों में से काबील और हावील के साथ भी ऐसी ही सूरत पेश आई। काबील किसान था और हावील भेड़-बकरियों का काम करता था, हावील ने अपनी महनत की कमाई अल्लाह के लिए दी। वह अल्लाह के यहां मकबूल हुई और इसकी बरकत उसकी जिंदगी और उसके काम में जाहिर हुई। काबील ने भी अपनी जराअत (कृषि) में से कुछ अल्लाह के लिए पेश किया मगर वह कुबूल न हुआ और वह खुदा की बरकत पाने से महरूम रहा। यह देखकर काबील के दिल में अपने छोटे भाई हावील के लिए हसद पैदा हो गया। यह हसद इतना बढ़ा कि उसने हावील से कहा कि मैं तुम्हें जान से मार डालूंगा। हावील ने कहा कि तुम्हारी कुर्बानी कुबूल न होने का सबब यह है कि तुम्हारे दिल में खुदा का खौफ नहीं। तुम्हें मेरे पीछे पड़ने के बजाए अपनी इस्लाह की फ़िक्र करनी चाहिए। मगर हसद और बुज्ज की आग जब किसी के अंदर भड़कती है तो वह उसे इस काबिल नहीं रखती कि वह अपनी ग़लतियों का जायजा ले। वह बस एक ही बात जानता है : यह कि जिस तरह भी हो अपने काल्पनिक प्रतिपक्षी का ख़ात्मा कर दे।

हावील ने काबील से कहा कि तुम चाहे मेरे कत्ल के लिए हाथ बढ़ाओ, मैं तुम्हारे कत्ल के लिए हाथ नहीं बढ़ाऊंगा। इसकी वजह यह है कि मुसलमान और मुसलमान की बाहमी लड़ाई को अल्लाह ने सरासर हराम करार दिया है। यहां तक कि अगर एक मुसलमान अपने दूसरे भाई के कत्ल के दरपे हो जाए तो उस वक्त भी अजीमत (उच्चआचरण) यह है कि दूसरा भाई अपने

भाई के खून को अपने लिए हलाल न करे। वह अपनी तरफ से आक्रामक पहल न करके बाहमी टकराव को पहले ही मरहले में ख़त्म कर देगा। इसके बरअक्स अगर वह भी जवाब में जारिहियत करने लगे तो मुस्लिम मुआशिरा के अंदर अमल और रद्देअमल का अंतहीन सिलसिला शुरू हो जाएगा। लेकिन हमलाआवर अगर ग़ैर मुस्लिम हो तो उस वक्त ऐसा करना दुरुस्त नहीं। इसी तरह जब दीनी दुश्मनों की तरफ से जारिहियत (आक्रामकता) की जाए तो मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम का फ़र्क किए बग़ैर ऐसे लोगों से भरपूर मुक़ाबला किया जाएगा।

दो मुसलमान जब एक दूसरे की बर्बादी के दरपे हों तो गुनाह दोनों के दर्मियान तक्सीम हो जाता है। लेकिन अगर ऐसा हो कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान की बर्बादी की कार्रवाईयां करे और दूसरा मुसलमान सब्र और दुआ में मशगूल हो तो पहला शख्स न सिर्फ अपने गुनाह का बोझ उठाता है बल्कि दूसरे शख्स के उस मुमकिन गुनाह का बोझ भी उसके ऊपर डाल दिया जाता है जो सब्र और दुआ के तरीके पर न चलने की सूरत में वह करता।

فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۖ فَبَعَثَ اللَّهُ
غُرَابًا يَبْحِثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُوَارِثُ سَوْآتَةَ أَخِيهِ ۖ قَالَ يُوزِيلُنِي
أَجْبَرْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِثُ سَوْآتَةَ أَخِي فَأَصْبَحَ
مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

फिर उसके नफ्स ने उसे अपने भाई के कत्ल पर राजी कर लिया और उसने उसे कत्ल कर डाला। फिर वह नुक्सान उठाने वालों में शामिल हो गया। फिर खुदा ने एक कौवे को भेजा जो जमीन में कुरेदता था ताकि वह उसे दिखाए कि वह अपने भाई की लाश को किस तरह छुपाए। उसने कहा कि अफसोस मेरी हालत पर कि मैं इस कौवे जैसा भी न हो सका कि अपने भाई की लाश को छुपा देता। पस वह बहुत शर्मिन्दा हुआ। (30-31)

दुनिया में जो कुछ किसी को मिलता है खुदा की तरफ से मिलता है। इसलिए किसी को अच्छे हाल में देख कर जलना और उसके नुक्सान के दरपे होना गोया खुदा के मंसूबे को बातिल करने की कोशिश करना है। ऐसा आदमी अगरचे मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में एक हद तक अमल करने का मैका पाता है। मगर खुदा की नजर में वह बदतरीन मुजरिम है। हावील ने अपने बड़े भाई को इस हकीकत की तरफ तवज्जोह दिलाई। इसके बाद उसके दिल में झिझक पैदा हुई। उसे महसूस हुआ कि वह वाकई बिना सबब अपने भाई को मार डालना चाहता है। मगर उसके हसद का जब्बा ठंडा न हो सका। उसने अपने ज़ेहन में ऐसे उज्जात (तर्क) गढ़ लिए जो उसके लिए अपने भाई के कत्ल को जाइज साबित कर सकें। उसकी अंदरूनी कशमकश ने अंततः स्वनिर्मित तौजीहात में अपने लिए तस्कीन तलाश कर ली और उसने अपने भाई को मार डाला। जमीर की आवाज खुदा की आवाज है। जमीर (अन्तरात्मा) के अंदर किसी अमल के बारे में सवाल पैदा होना आदमी का इस्तेहान के मैदान में खड़ा होना है। अगर आदमी अपने जमीर की

आवाज पर लबैक कहे तो वह कामयाब हुआ। और अगर उसने झूठे अल्फ़ाज का सहारा लेकर जमीर की आवाज को दबा दिया तो वह नाकाम हो गया।

हदीस में है कि ज्यादाती और संबंध तोड़ना ऐसे गुनाह हैं कि उनकी सजा इसी मौजूदा दुनिया से शुरू हो जाती है। कबील ने अपने भाई के साथ जो नाहक जुम् किया था उसकी सजा उसे न सिर्फ आखिरत में मिली बल्कि इसी दुनिया से उसका अंजाम शुरू हो गया। मुजाहिद और जुबैर ताबई (सहाबा के अनुयायी) से मंज़ूर है कि क़त्ल के बाद कबील का यह हाल हुआ कि उसकी पिंडली उसकी रान से चिपक गई। वह असहाय जमीन पर पड़ा रहता, यहां तक कि इसी हाल में जिल्लत और तकलीफ के साथ मर गया। (इब्ने कसीर)

कबील को कौंधे के जरिए यह तालीम दी गई कि वह लाश को जमीन के नीचे दफन कर दे। यह इस बात की तरफ इशारा था कि इंसान फितरत के रास्ते को जानने के मामले में जानवर से भी ज्यादा कम अकल है। इसके बावजूद वह अपने जब्बात के पीछे चलता है तो उससे ज्यादा जलिम और कोई नहीं। साथ ही इसमें इस हकीकत की तरफ भी लतीफ इशारा है कि जुर्म से पहले अगर आदमी जुर्म के इरादे को अपने सीने के अंदर दफन कर दे तो उसे शर्मिन्दगी न उठाना पड़े। आदमी को चाहिए कि वह दिल के एहसास को दिल के अंदर दबाए, उसे दिल से बाहर आकर वाकया न बनने दे। बुरे एहसास को दिल के बाहर निकालने से पहले तो सिर्फ एहसास को दफन करना पड़ता है। लेकिन अगर उसने उसे बाहर निकाला तो फिर एक जिंदा इंसान की 'लाश' को दफन करने का मसला उसके लिए पैदा हो जाएगा। जो दफन होकर भी खुदा के यहां दफन नहीं होता।

مِنْ أَجْلِ ذَٰلِكَ ۖ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ أَنَّهُ مَن قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ
نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا
أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ بَعْدَ
ذَٰلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ ۝ إِنَّا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَن يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ
وَأَرْجُلُهُمْ مِّنْ خَلَاFٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ۚ ذَٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا
وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن تَقْدِرُوا
عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

इसी सबब से हमने बनी इस्राईल पर यह लिख दिया कि जो शख्स किसी को क़त्ल करे, बغير इससे कि उसने किसी को क़त्ल किया हो या जमीन में फ़साद बरपा किया हो तो गोया उसने सारे आदमियों को क़त्ल कर डाला और जिसने एक शख्स को बचाया

तो गोया उसने सारे आदमियों को बचा लिया। और हमारे पैग़म्बर उनके पास खुले अहक़ाम लेकर आए। इसके बावजूद उनमें से बहुत से लोग जमीन में फ़साद करने के लिए हैं। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं और जमीन में फ़साद करने के लिए दौड़ते हैं उनकी सजा यही है कि उन्हें क़त्ल किया जाए या वे सूली पर चढ़ाए जाएं या उनके हाथ और पैर विपरीत दिशा से काटे जाएं या उन्हें मुल्क से बाहर निकाल दिया जाए। यह उनकी रुस्वाई दुनिया में है और आखिरत में उनके लिए बड़ा अज़ाब है। मगर जो लोग तौबा कर लें तुम्हारे काबू पाने से पहले तो जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (32-34)

कोई शख्स जब किसी शख्स को क़त्ल करता है तो वह सिर्फ एक इंसान का क़तिल नहीं होता बल्कि तमाम इंसानों का क़तिल होता है। क्योंकि वह हुरमत (मनाही) के उस क़ानून को तोड़ता है जिसमें तमाम इंसानों की ज़िंदगियां बंधी हुई हैं। इसी तरह जब कोई शख्स किसी को ज़ालिम के जुम् से नज़ात देता है तो वह सिर्फ एक शख्स को नज़ात देने वाला नहीं होता बल्कि तमाम इंसानों को नज़ात देने वाला होता है। क्योंकि उसने इस उसूल की हिफ़ाज़त की कि तमाम इंसानों की जान मोहतरम (सम्माननीय) है। किसी को किसी के ऊपर हाथ उठाने का हक़ नहीं। जब कोई शख्स किसी की इज़्जत या उसके माल या उसकी जान पर हमला करे तो इसका मतलब यह है कि मुआशिरें के अंदर हंगामी हालत पैदा हो गई है। मुसलमानों को चाहिए कि ऐसे किसी एक वाक्ये को भी इस नज़र से देखें गोया सारे लोगों की जान और माल और आबरू ख़तरे में है। किसी मुआशिरें में एक दूसरे के एहताराम की रिवायात लम्बी तारीख़ के नतीजे में बनती हैं। और अगर एक बार ये रिवायतें टूट जाएं तो दुबारा लम्बी तारीख़ के बाद ही उन्हें मुआशिरें के अंदर कायम किया जा सकता है। जो लोग मुआशिरें के अंदर फ़साद की रिवायत कायम करें वे मुआशिरें के सबसे बड़े दुश्मन हैं।

ख़ुदा ने अपनी दुनिया का निज़ाम जिस उसूल पर कायम किया है वह यह है कि हर एक अपने हिस्सा का फ़र्ज़ अंजाम दे। कोई शख्स दूसरे के दायरे में बेजा मुदाख़लत (हस्तक्षेप) न करे। तमाम जमादात और हैवानात इसी फितरत पर अमल कर रहे हैं। इंसान को भी पैग़म्बरों के जरिये ये हिदायतें वाज़ेह तौर पर बता दी गई हैं। मगर इंसान जो कि दीगर मख़्लूक़ात के बरअक्स वक़्ती तौर पर आज़ाद रखा गया है, सरकशी करता है और इस तरह फितरत के निज़ाम में फ़साद पैदा करता है। ऐसे लोग ख़ुदा की नज़र में सज़ा मुजरिम हैं। और वे लोग और भी ज्यादा बड़े मुजरिम हैं जो ख़ुदा और रसूल से जंग करें। यानी ख़ुदा अपने बंदों के दर्मियान ऐसी दावत उठाए जो लोगों को मुफ़िददाना तरीक़ों से बचने और फितरत ख़ुदावंदी पर ज़िंदागी गुज़ारने की तरफ़ बुलाती हो तो वे उसका रास्ता रोकें और उसके ख़िलाफ़ तख़रीबी कार्रवाईयां करें। ऐसे लोगों के लिए दुनिया में इबरतनाक सजा है और आखिरत में भड़कती हुई आग।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَتَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَيَفْتَدُونَ بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقْبَلُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ يُرِيدُونَ أَنْ يُخْرِجُوكَ مِنَ الثَّارِ وَمَا لَهُمْ بِخَارِجِينَ مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝ وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا ۚ مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और उसका कुर्ब (समीपता) तलाश करो और उसकी राह में जद्दोजहद करो ताकि तुम फलाह पाओ। वेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया है अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है और इतना ही और हो ताकि वे उसे फिटये (अर्धदण्ड) में देकर क्रियामत के दिन के अजाब से छूट जाएं तब भी वह उनसे कुबूल न की जाएगी और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। वे चाहेंगे कि आग से निकल जाएं मगर वे उससे निकल न सकेंगे और उनके लिए एक मुस्तकिल अजाब है। और चोर मर्द और चोर औरत दोनों के हाथ काट दो। यह उनकी कमाई का बदला है और अल्लाह की तरफ से इबरतनाक सजा। और अल्लाह ग़ालिब और हकीम (तत्वदर्शी) है। फिर जिसने अपने जुल्म के बाद तौबा की और इस्लाह कर ली तो अल्लाह वेशक उस पर तवज्जोह करेगा। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह जमीन और आसमानों की सल्तनत का मालिक है। वह जिसे चाहे सजा दे और जिसे चाहे माफ कर दे। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (35-40)

बंदे के लिए सबसे बड़ी चीज अल्लाह की कुरबत (समीपता) है। यह कुरबत अपनी महसूस और कामिल सूरत में तो आखिरत में हासिल होगी। ताहम किसी बंदे का अमल जब उसे अल्लाह से करीब करता है तो एक लतीफ एहसास की सूरत में इसका तजर्बा उसे इसी दुनिया में होने लगता है। इस कुरबत तक पहुंचने का जरिए तक्वा और जिहाद है। यानी डरने और जद्दोजहद करने की सतह पर अल्लाह का परस्तार बनना। आदमी की जिंदगी में ऐसे लम्हात आते हैं जबकि वह अपने को हक और नाहक के दर्मियान खड़ा हुआ पाता है। हक की तरफ बढ़ने में उसकी अना (अंहकार) टूटती है। उसकी दुनियावी मस्लेहत्तों का ढांचा बिखरता हुआ नजर आता है। जबकि नाहक का तरीका इस्त्रियार करने में उसकी अना कायम रहती है। उसकी मस्लेहत्तें पूरी तरह महफूज दिखाई देती हैं। ऐसे वक़्त में जो शख्स

खुदा से डरे और तमाम दूसरी बातों को नजरअंदाज करके खुदा को पकड़ ले। और हर मुश्किल और हर नाखुशगवारी को झेल कर खुदा की तरफ बढ़े तो यही वह चीज है जो आदमी को खुदा से करीब करती है। और इस कुरबत का नकद तजर्बा आदमी को संवेदना की सतह पर एक लतीफ इदराक (अनुभूति) की सूरत में उसी वक़्त हो जाता है। इसके बरअक्स जो शख्स तक्वा और जिहाद के रास्ते पर चलने के लिए तैयार न हो उसने खुदा का इंकार किया। वह खुदा से दूर होकर ऐसे अजाब में पड़ जाता है जिससे वह किसी तरह छुटकारा न पा सकेगा।

जजा का मामला तमामतर खुदा के इस्त्रियार में है। न तो ऐसा है कि कोई बाद की जिंदगी में इस्लाह कर ले तब भी उसके पिछले आमाल उससे न धुलें और न यह बात है कि यहां कोई और ताकत है जो सिफारिश या मुदाख़लत (हस्तक्षेप) के जोर पर किसी के अंजाम को बदल सके। सारा मामला एक खुदा के हाथ में है और वही कमाल दर्जे हिक्मत और कुदरत के साथ सबका फैसला करेगा।

समाजी जुर्मों के लिए इस्लाम की सजाएं दो ख़ास पहलुओं को सामने रख कर मुकर्रर की गई हैं। एक, आदमी के जुर्म की सजा। दूसरे यह कि सजा ऐसी इबरतनाक हो कि उसे देख कर दूसरे मुजरिमों की हौसलाशिकनी हो। ताहम मुजरिम अगर जुर्म के बाद अपने किए पर शर्मिन्दा हो। वह अल्लाह से माफी मांगे और आइंदा इस किसम की चीजों को बिल्कुल छोड़ दे तो उम्मीद है कि आखिरत में अल्लाह उसे माफ कर देगा।

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ لَا يَحْزَنْكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِأَقْوَامِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنُ قُلُوبُهُمْ ۚ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۚ سَمَّعُونَ لِلْكَذِبِ سَمَّعُونَ لِقَوْمٍ آخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِنْ بَعْدِ مَوَاضِعِهِ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَذَا فَخُذُوا وَإِنْ لَمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ فِتْنَتَهُ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ ۚ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

ऐ पैग़म्बर, तुम्हें वे लोग रंज में न डालें जो कुफ्र की राह में बढ़ी तेजी दिखा रहे हैं। चाहे वे उनमें से हों जो अपने मुंह से कहते हैं कि हम ईमान लाए हालांकि उनके दिल ईमान नहीं लाए या उनमें से हों जो यहूदी हैं, झूठ के बड़े सुनने वाले, सुनने वाले दूसरे लोगों की ख़ातिर जो तुम्हारे पास नहीं आए। वे कलाम को उसके मकाम से हटा देते हैं। वे लोगों से कहते हैं कि अगर तुम्हें यह हुक्म मिले तो कुबूल कर लेना और अगर यह हुक्म न मिले तो उससे बचकर रहना। और जिसे अल्लाह फितने में डालना चाहे तो तुम अल्लाह के मुकाबिल उसके मामले में कुछ नहीं कर सकते। यही वे लोग हैं कि अल्लाह ने न चाहा कि उनके दिलों को पाक करे। उनके लिए दुनिया में रुस्वाई है और आखिरत में उनके लिए बड़ा अजाब है। (41)

मदीना में अंदरूनी तौर पर दो किस्म के लोग इस्लामी दावत की मुखालफत कर रहे थे। एक मुनाफिकीन, दूसरे यहूद। मुनाफिकीन वे लोग थे जो जाहिरी और नुमाइशी इस्लाम को लिए हुए थे। सच्चे इस्लाम की दावत में उन्हें अपने स्वार्थों व मफादात पर जद पड़ती हुई महसूस होती थी। यहूद वे लोग थे जो मजहब की नुमाइंदगी की गद्दियों पर बैठे हुए थे। उन्हें महसूस होता था कि इस्लामी दावत उन्हें उनके बरतरी के मकाम से नीचे उतार रही है। यह दोनों किस्म के लोग सच्चे इस्लाम की दावत को अपना मुश्तरक (साक्षी) दुश्मन समझते थे। इसलिए इस्लाम के खिलाफ मुहिम चलाने में दोनों एक हो गए। उनके 'बड़े' रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में आना अपनी शान के खिलाफ समझते थे। इसलिए वे खुद न आते। अलबत्ता उनके 'छोटे' इस पर लगे हुए थे कि वे आपको और आपकी तहरीक को बदनाम करते। उनकी सरकशी ने उन्हें ऐसा ठीठ बना दिया था कि वे अल्लाह के कलाम को उसके परिप्रेक्ष्य से हटा कर उससे अपना मुर्मिंदे मतलब मफहूम निकालने से भी न डरते।

ये वे लोग हैं जो अपने को खुदा व रसूल के ताबेअ नहीं करते। बल्कि उनका जेहन यह होता है कि जो बात अपने जैक के मुताबिक हो उसे ले लो और जो बात जैक के मुताबिक न हो उसे छोड़ दो। यह मिजाज किसी आदमी के लिए सख्त फितना है। जिन लोगों का यह हाल हो कि वे हक के मुकाबले में मफाद और मस्लेहत को तरजीह दें, जो हर हाल में अपने को बड़ाई के मकाम पर देखना चाहें, जो हक को जेर (परास्त) करने के लिए उसके खिलाफ तखरीबी साजिशें करें, यहां तक कि अपने अमल को जाइज साबित करने के लिए खुदा के कलाम को बदल डालें, ऐसे लोगों की नपिसयात बिलआखिर यह हो जाती है कि वे हक को कुबूल करने की सलाहित से महरूम हो जाते हैं। उन्होंने खुदा का साथ छोड़ा, इसलिए खुदा ने भी उनका साथ छोड़ दिया। ऐसे लोग खुदा की तौफीक से महरूम होकर बातिल मशगलों में लगे रहते हैं, यहां तक कि आग की दुनिया में पहुंच जाते हैं।

अल्लाह का जो बंदा अल्लाह के सच्चे दीन का पैगाम लेकर उठा हो उसे मुखालिफतों की वजह से बेहिम्मत नहीं होना चाहिए। ऐसे लोगों की सरगर्मियां हकीकतन दाओ (आह्वानकती) के खिलाफ नहीं बल्कि खुदा के खिलाफ हैं। इसलिए वह कभी कामयाब नहीं हो सकती। दावती अमल से अल्लाह को जो चीज मल्लुब है वह सिर्फ यह कि अस्ल बात से बखूबी तौर पर लोगों को आगाह कर दिया जाए। और यह काम अल्लाह की मदद से लाजिमन अपनी तक्मील तक पहुंच कर रहता है।

سَمْعُونَ لِلْكَذِبِ أَكْثَرُونَ لِلسَّخَةِ وَإِنْ جَاءُوكَ فَأَحْكُم بَيْنَهُمُ وَاعْرِضْ
عَنَّهُمْ وَإِنْ تَعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَضُرُّوكَ شَيْئًا وَإِنْ حَكَمْتَ فَأَحْكُم
بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ⑤ وَكَيفَ يُحْكَمُونَكَ
وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَمَا
أُولَئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ⑥

वे झूठ के बड़े सुनने वाले हैं, हराम के बड़े खाने वाले हैं। अगर वे तुम्हारे पास आए तो चाहे उनके दर्मियान फैसला करो या उन्हें टाल दो। अगर तुम उन्हें टाल दोगे तो वे तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। और अगर तुम फैसला करो तो उनके दर्मियान इंसाफ के मुताबिक फैसला करो। अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। और वे कैसे तुम्हें हकम (मध्यस्थ) बनाते हैं हालांकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है। और फिर वे उससे मुंह मोड़ रहे हैं। और ये लोग हरगिज ईमान वाले नहीं हैं। (42-43)

हराम (सुहत) से मुराद रिश्वत है। रिश्वत की एक आम शक्ल वह है जो बराहेरास्त इसी नाम पर ली जाती है। चुनांचे यहूदी उलमा (विद्वानों) में ऐसे लोग थे जो रिश्वत लेकर ग़लत मसाइल बताया करते थे। ताहम रिश्वत की एक और सूरत वह है जिसमें बराहेरास्त लेन देन नहीं होता मगर वह तमाम रिश्वतों में ज्यादा बड़ी और ज्यादा कबीह (निकृष्ट) रिश्वत होती है। यह है दीन को अवामी पसंद के मुताबिक बनाकर पेश करना ताकि अवाम के दर्मियान मकबूलियत हो, लोगों का एज़ाज व इकराम मिले, लोगों के चन्दे और नजराने वसूल होते रहें।

दीन को उसकी बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में पेश करना हमेशा इस कीमत पर होता है कि आदमी अवाम के अंदर नामकबूल हो जाए। इसके बरअक्स दीन को अगर ऐसी सूरत में पेश किया जाए कि जिंदगी में कोई हकीकी तब्दीली भी न करना पड़े और आदमी को दीन भी हासिल रहे तो ऐसे दीन के गिर्द बहुत जल्द भीड़ की भीड़ इकट्ठा हो जाती है। वह दीन जिसमें अपनी दुनियापरस्ताना जिंजीगी को बदले बगैर कुछ सस्ते आमाल के जरिए जन्मत मिल रही हो। वह दीन जो कौमी और मादूदी (भौतिक) हंगामाआराइयों को दीनी जवाज (औचित्य) अता करता हो। वह दीन जिसमें यह मौका हो कि आदमी अपनी जाहपसंदी (मायामोह) के लिए सरगर्म हो, फिर भी वह जो कुछ करे सब दीन के खाने में लिखा जाता रहे। जो लोग इस किस्म का दीन पेश करें वे बहुत जल्द अवाम के अंदर महबूबियत का मकाम हासिल कर लेते हैं।

यहूद के कायदीन (धार्मिक नायक) इसी किस्म का दीन चला कर अवाम के आकर्षण का केन्द्र बने हुए थे। वे अवाम को उनका पसंदीदा दीन पेश कर रहे थे और अवाम इसके मुआवजे में उन्हें माली सहयोग से लेकर एज़ाज व इकराम तक हर चीज निसार कर रहे थे। ऐसी हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सच्चे दीन की आवाज बुलन्द करना उन्हें नाकबिले बदशित मालूम हुआ। क्योंकि यह उनके मफादात (हितों) के ढांचे को तोड़ने के हममअना (समान) था, आपसे उन्हें इतनी ज़िद हो गई कि आपके मुतअल्लिक किसी अच्छी ख़बर से उन्हें कोई दिलचस्पी न रही। अलबत्ता अगर वे आपके बारे में कोई बुरी ख़बर सुनते तो उसमें ख़ूब दिलचस्पी लेते और उसमें इजाफा करके उसे फैलाते। जिन लोगों में इस किस्म का बिगाड़ आ जाए उनका हाल यह हो जाता है कि अगर वे दीनी फैसला लेने की तरफ रुजूअ भी होते हैं तो इस उम्मीद में कि फैसला अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक होगा। अगर ऐसा न हो तो यह जानते हुए कि यह खुदा और रसूल का फैसला है उसे मानने से इंकार कर देते हैं। वे भूल जाते हैं कि ऐसा करना महज एक फैसले को न मानना नहीं है बल्कि खुद ईमान व इस्लाम का इंकार करना है।

إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا
لِلَّذِينَ هَادُوا وَالرَّكَابِئُونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا
عَلَيْهِ شُهَدَاءَ ۖ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوُا اللَّهَ ۚ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا
قَلِيلًا ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ۝
وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ
بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُومَ قَصَاصٌ ۚ فَمَنْ
تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الظَّالِمُونَ ۝ وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَآتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا
لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝ وَلِيَحْكُمَ
أَهْلَ الْإِنْجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ
هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

वेशक हमने तौरात उतारी है जिसमें हिदायत और रोशनी है। उसी के मुताबिक खुदा के फरमांबरदार अबिया यहूदी लोगों का फैसला करते थे और उनके दुर्वेश और उलमा (विद्वान) भी। इसलिए कि वे खुदा की किताब पर निगहबान ठहराए गए थे। और वे उसके गवाह थे। पस तुम इसानों से न डरो मुझसे डरो और मेरी आयतों को तुच्छ मूल्यों के ऐक्ज न बेचो। और जो कोई उसके मुवाफिक हुक्म न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो वही लोग मुंकिर हैं। और हमने उस किताब में उन पर लिख दिया कि जान के बदले जान और आंख के बदले आंख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दांत के बदले दांत और ज़ख्मों का बदला उनके बराबर। फिर जिसने उससे माफ कर दिया तो वह उसके लिए कफ़र (प्रयश्चित) है। और जो शख्स उसके मुवाफिक फैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा तो वही लोग जालिम हैं। और हमने उनके पीछे ईसा इब्ने मरयम को भेजा तस्दीक (पुष्टि) करते हुए अपने से पहले की किताब तौरात की ओर हमने उसे इंजील दी जिसमें हिदायत और नूर है और वह तस्दीक करने वाली थी अपने से अगली किताब तौरात की ओर हिदायत और नसीहत डरने वालों के लिए। और चाहिए कि इंजील वाले उसके मुवाफिक फैसला करें जो अल्लाह ने उसमें उतारा है। और जो कोई उसके मुवाफिक फैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा तो वही लोग

नाफरमान हैं। (44-47)

खुदा की किताब इसलिए आती है कि वह लोगों को उनकी अबदी फलाह की राह दिखाए। ख्वाहिशपरस्ती के अंधेरे से निकाल कर उन्हें हकपरस्ती की रोशनी में लाए। जो खुदा से डरने वाले हैं वे खुदा की किताब को खुदा और बंदे के दर्मियान मुकददस अहद समझते हैं जिसमें अपनी तरफ से कमी या ज्यादाती जाइज न हो। वे उसकी तामील इस तरह करते हैं जिस तरह किसी के पास कोई अमानत हो और वह ठीक-ठीक उसकी अदायगी करे। अल्लाह की किताब बंदों के हक में अल्लाह का फैसला होता है। जरूरत होती है कि जिद्गी के मामलात में उसी की हिदायत पर चला जाए और आपसी विवादों में उसी के अहकाम के मुताबिक फैसला किया जाए। खुदा की किताब को अगर यह हाकिमाना हैसियत न दी जाए बल्कि अपने मामलात और विवादों को अपनी दुनियावी मसलेहों के ताबेअ रखा जाए जो यह खुदा की किताब से इंकार के हममअना होगा, चाहे तबर्क के तौर पर उसका कितना ही ज्यादा जाहिरी एहतराम किया जाता हो। जो लोग अपने को मुस्लिम कहें मगर उनका हाल यह हो कि वे इख्तियार और आजादी रखते हुए भी अपने मामलात का फैसला अल्लाह की किताब के मुताबिक न करें बल्कि ख्वाहिशों की शरीअत पर चले वे अल्लाह की नजर में मुंकिर और जालिम और फासिक (उद्दंड) हैं। वे खुदा की हाकिमाना हैसियत का इंकार करने वाले हैं, वे हक के तल्फ करने वाले हैं, वे इताअते खुदावंदी के अहद से निकल जाने वाले हैं। शरीअत के हुक्म को जान बूझकर नजरअंदाज करने के बाद आदमी की कोई हैसियत खुदा के यहां बाकी नहीं रहती।

फिर (समान दंड) के सिलसिले में शरीअत का तकाजा है कि किसी की हैसियत की परवाह किए बगैर उसका निफाज किया जाए। ताहम कभी-कभी आदमी की जारिहियत (आक्रामकता) उसकी शरपसंदी का नतीजा नहीं होती बल्कि वक्ती जब्बे के तहत हो जाती है। ऐसी हालत में अगर मजरूह (पीड़ित) जारह को माफ कर दे तो यह उसकी तरफ से जारह (अत्याचारी) के लिए एक सदक्क होगा और समाज में कुसुते जर्फ (उच्चादार्श) की प्रतीति करने का जरिया।

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ
وَمُهَيِّمًا عَلَيْهِ ۖ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ هُمْ عَمَّا
جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ ۚ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شُرْعَةً وَمِنْهَا جَاؤُوا ۚ وَكَوَّ شَاءَ اللَّهُ
لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ فَاسْتَقُوا الْحَكْمَ مِنَ اللَّهِ
مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَبِئْسَ تَكْلُفُونَ ۝

और हमने तुम्हारी तरफ किताब उतारी हक के साथ, तस्दीक (पुष्टि) करने वाली पिछली किताब की और उसके मजामीन पर निगहबान। पस तुम उनके दर्मियान फैसला करो उसके मुताबिक जो अल्लाह ने उतारा। और जो हक तुम्हारे पास आया है उसे छोड़कर

उनकी ख्वाहिशों की पैरवी न करो। हमने तुममें से हर एक लिए एक शरीअत और एक तरीका ठहराया। और अगर खुदा चाहता तो तुम्हें एक ही उम्मत बना देता। मगर अल्लाह ने चाहा कि वह अपने दिए हुए हुक्मों में तुम्हारी आजमाइश करे। पस तुम भलाइयों की तरफ दौड़ो। आखिरकार तुम सबको खुदा की तरफ पलटकर जाना है। फिर वह तुम्हें आगाह कर देगा उस चीज से जिसमें तुम इस्तिलाफ (मत-भिन्नता) कर रहे थे। (48)

यहां 'किताब' से मुराद दीन की असली और असासी (मौलिक) तालीमात हैं। अल्लाह की यह किताब एक ही किताब है और वही एक किताब, जवान और तर्तीब के फर्क के साथ, तमाम नबियों की तरफ उतारी गई है। ताहम दीन की हकीकत जिस जाहिरी ढांचे में निरूपित होती है उसमें विभिन्न अबिया के दर्मियान फर्क पाया जाता है। इस फर्क की वजह यह नहीं कि दीन के उतारने में कोई इस्तेफाई (चरणबद्ध) तर्तीब है। यानी पहले कम तरक्कीयाफता और फिर कामिल दीन उतारा गया और इसके बाद ज्यादा तरक्कीयाफता और ज्यादा कामिल दीन उतरा। इस फर्क की वजह खुदा की हिक्मते इब्तिला (आज़माइश) है न कि हिक्मते इस्तफा। कुरआन के मुताबिक ऐसा सिर्फ इसलिए हुआ कि लोगों को आजमाया जाए। जमाना गुजरने के बाद ऐसा होता है कि दीन की अंदरूनी हकीकत गुम हो जाती है और रीति-रिवाज मुकद्दस होकर अस्ल बन जाते हैं। लोग इबादत इसे समझ लेते हैं कि एक ख़ास ढांचे को जाहिरी शराइत के साथ दोहरा लिया जाए। इसलिए जाहिरी ढांचे में बार-बार तब्दीलियां की गईं ताकि ढांचे की मक्सूदियत का जेहन ख़त्म हो और खुदा के सिवा कोई और चीज तवज्जोह का मर्कज न बनने पाए। इसकी एक मिसाल किबले की तब्दीली है। बनी इस्राईल को हुक्म था कि वे बैतुलमक्दिस की तरफ रुख करके इबादत करें। यह हुक्म सिर्फ रुखबंदी के लिए था। मगर धीरे-धीरे उनका जेहन यह बन गया कि बैतुलमक्दिस की तरफ रुख करने का नाम ही इबादत है। उस वक्त पहले हुक्म को बदल कर काबे का किबला बना दिया गया। अब कुछ लोग पहले की रिवायत से लिपटे रहे और कुछ लोगों ने खुदा की हिदायत को पा लिया। इस तरह तब्दीली किबले से यह खुल गया कि कौन दरोदीवार को पूजने वाला था और कौन खुदा को पूजने वाला। (सूरा बकरह, 143)

अब इस किस्म की तब्दीली का कोई इम्कान नहीं। क्योंकि ढांचे को नबी बदलता है और नबी अब आने वाला नहीं। ताहम जहां तक अस्ल मक्सूद का तअल्लुक है वह बदस्तूर बाकी है। अब भी खुदा के यहां उसका सच्चा परस्तर वही शुमार होगा जो जाहिरी ढांचे की पाबंदी के बावजूद जाहिरी ढांचे को मक्सूदियत का दर्जा न दे, जो जवाहिर से जेहन को आजाद करके खुदा की इबादत करे। पहले यह मक्सद जाहिरी ढांचे को तोड़ कर हासिल होता था अब उसे जेहनी शिकस्त व पराभाव के जरिए हासिल करना होगा।

जवाहिर के नाम पर दीन में जो झगड़े हैं वह सिर्फ इसलिए हैं कि लोगों की गफ़लत ने उन्हें अस्ल हकीकत से बेख़बर कर दिया है। अगर हकीकत को वे इस तरह पा लें जिस तरह वह आखिरत में दिखाई देगी तो तमाम झगड़े अभी ख़त्म हो जाएं।

وَإِنْ أَحْكَمَ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَنْ يَفْتِنُوكَ عَنْ بَعْضِ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُصِيبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ وَإِنْ كَثِيرٌ مِنْ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ ۝ فَكَلِمَةً أَقْصَرَكُمْ الْجَاهِلِيَّةُ يَبْغُونَ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِقَوْمٍ يُوفُونَ ۝

और उनके दर्मियान उसके मुताबिक फैसला करो जो अल्लाह ने उतारा है और उनकी ख्वाहिशों की पैरवी न करो और उन लोगों से बचो कि कहीं वह तुम्हें फिसला दें तुम्हारे ऊपर अल्लाह के उतारे हुए किसी हुक्म से। पस अगर वे फिर जाएं तो जान लो कि अल्लाह उन्हें उनके कुछ गुनाहों की सजा देना चाहता है। और यकीनन लोगों में से ज्यादा आदमी नाफरमान हैं। क्या ये लोग जाहिलियत का फैसला चाहते हैं। और अल्लाह से बढ़कर किसका फैसला हो सकता है उन लोगों के लिए जो यकीन करना चाहें। (49-50)

कुरआन और दूसरे आसमानी सहीफे अलग-अलग किताबें नहीं हैं। ये सब एक ही किताबे इलाही के मुखलिफ एडीशन हैं जिसे यहां 'अलकिताब' कहा गया है। खुदा की तरफ से जितनी किताबें आईं, चाहे वे जिस दौर में और जिस जवान में आई हों, सबका मुश्तरक मजमून एक ही था। ताहम पिछली किताबों के हामिलीन बाद के जमाने में उन्हें उनकी असली सूरत में महफूज न रख सके। इसलिए खुदा ने एक किताबे मुहैमीन (कुरआन) उतारा। यह खुदा की तरफ से उसकी किताब का मुस्तनद एडीशन है और इस आधार पर वह एक कसौटी है जिस पर जांच कर मालूम किया जाए कि बाकी किताबों का कौन सा हिस्सा असली हालत में है और कौन सा वह है जो बदला जा चुका है।

यहूद खुदा के सच्चे दीन के साथ अपनी बातों को मिलाकर एक खुदसाख़्ता दीन बनाए हुए थे। इस खुदसाख़्ता दीन से उनकी अकीदतें भी वाबस्ता थीं और उनके मफ़ादात भी। इसलिए वह किसी तरह तैयार न थे कि उसे छोड़कर पैग़म्बर के लाए हुए बेआमेज (विशुद्ध) दीन को मान लें। उन्होंने हक के आगे झुकने के बजाए अपने लिए यह तरीका पसंद किया कि वे हक के अलमबरदार को इतना ज्यादा परेशान करें कि वह खुद उनके आगे झुक जाए, वह खुदा के सच्चे दीन को छोड़कर उनके अपने बनाए हुए दीन को इस्तिायार कर ले। खुदा अगर चाहता तो पहले ही मरहले में इन जालिमों का हाथ रोक देता और वे हक के दाओ को सताने में कामयाब न होते। मगर अल्लाह ने उन्हें छूट दी कि वे अपने नापाक मंसूबों को बरूएकार ला सकें। ऐसा इसलिए हुआ ताकि यह बात पूरी तरह खुल जाए कि दीनदारी के ये दावेदार सबसे ज्यादा बेदीन लोग हैं। वे खुदा के परस्तर नहीं हैं बल्कि खुद अपनी जात के परस्तर हैं। अल्लाह की यह सुन्नत अगरचे हक के दाओयों के लिए बड़ा सख़्त इन्तेहान है। मगर यही वह अमल है जिसके जरिए यह फैसला होता है कि कौन जन्नत का मुस्तहिफ

है और कौन जहन्नम का।

इंसान की यह कमजोरी है कि वह अपनी ख्वाहिशों के पीछे चलना चाहता है, अल्लाह के हुक्म का पाबंद बनकर रहना उसे गवारा नहीं होता। यहां तक कि दीने खुदावंदी की खुदसाख्ता तशरीह करके वह उसे भी अपनी ख्वाहिशों के सांचे में ढाल लेता है। ऐसी हालत में बेआमेज (विशुद्ध) दीन को वही लोग कुबूल करेंगे जो चीजों को ख्वाहिश की सतह पर न देखते हों बल्कि इससे ऊपर उठकर अपनी राय कायम करते हों। अल्लाह की बात बिलाशुबह सहीतरीन बात है। मगर मौजूदा आजमाइशी दुनिया में हर सच्चाई पर एक शुबह का पर्दा डाल दिया गया है। आदमी का इम्तेहान यह है कि वह इस पर्दे का फाड़कर उस पर यकीन करे, वह गैब (अप्रकट) को शुहद (प्रकट रूप) में देख ले। जो शख्स जाहिरी शुब्हात में अटक जाए वह नाकाम हो गया और जो शख्स जाहिरी शुब्हात के गुबार को पार करके सच्चाई को पा ले वह कामयाब रहा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ٥١
فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَى أَنْ تُصِيبَنَا دَائِرَةٌ فَعَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهِ فُضِّصَ حِجَابُ عَالِي مَا اسْتَرَوْا
فِي الْأَنْفُسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَوْلَىٰ بِالَّذِينَ آمَنُوا أَهْلُوا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْسُوا بِاللَّهِ
جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خَاسِرِينَ ٥٢

ऐ ईमान वालो, यहूद और नसारा को दोस्त न बनाओ। वे एक दूसरे के दोस्त हैं। और तुममें से जो शख्स उन्हें अपना दोस्त बनाएगा तो वह उन्हीं में से होगा। अल्लाह जालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। तुम देखते हो कि जिनके दिलों में रोग है वे उन्हीं की तरफ दौड़ रहे हैं। वे कहते हैं कि हमें यह अदेशा है कि हम किसी मुसीबत में न फंस जाएं। तो मुमकिन है कि अल्लाह फतह दे दे या अपनी तरफ से कोई ख़ास बात जाहिर करे तो ये लोग उस चीज पर जिसे ये अपने दिलों में छुपाए हुए हैं नादिम होंगे। और उस वक्त अहले ईमान कहेंगे क्या ये वही लोग हैं जो जोर शोर से अल्लाह की कसमें खाकर यकीन दिलाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं। उनके सारे आमाल जाए (नष्ट) हो गए और वे घाटे में रहे। (51-53)

अरब में मुसलमान अभी एक नई ताकत की हैसियत रखते थे। साथ ही यह कि उनके मुखालिफीन उन्हें उखाड़ने की कोशिश में रात दिन लगे हुए थे। दूसरी तरफ मुल्क के यहूदी और ईसाई कबीलों का यह हाल था कि मुल्क के अधिकतर आर्थिक साधनों पर उनका कब्जा था। सदियों की तारीख ने उनकी अज्मत लोगों के दिलों पर बिठा रखी थी। लोगों को यकीन नहीं था कि ऐसी ताकत को मुल्क से ख़त्म किया जा सकता है। चुनांचे मुसलमानों की जमाअत में जो

कमजोर लोग थे वे चाहते थे कि इस्लाम की जद्दोजहद में इस तरह शरीक न हों कि यहूद व नसारा को अपना दुश्मन बना लें। ताकि यह कशमकश अगर मुसलमानों की शिकस्त पर ख़त्म हो तो यहूद व नसारा की तरफ से उन्हें किसी इत्कामी कार्रवाई का सामना न करना पड़े। ये लोग मुस्तक़बिल के संभावी ख़तरे से बचने के लिए अपने को वक्त के यकीनी ख़तरे में मुब्तला कर रहे थे, और वह उनकी दोहरी वफ़ादारी थी। जो शख्स हानिरहित मामलात में हक़परस्त बने और हानि का अदेशा हो तो बतिलपरस्तों का साथ देने लगे, उसका अंजाम खुदा के यहां उन्हीं लोगों में होगा जिनका उसने ख़तरे के मौकों पर साथ दिया।

किसी की ज़िम्मी में वह वक्त बड़ा नाजुक होता है जबकि इस्लाम पर कायम रहने के लिए उसे किसी किस्म की कुर्बानी देनी पड़े। ऐसे मौके आदमी के इस्लाम की तस्दीक या तरदीद करने के लिए आते हैं। खुदा चाहता है कि आदमी जिस इस्लाम का सुबूत बेख़तर हालात में दे रहा था उसी इस्लाम का सुबूत वह उस वक्त भी दे जबकि जब्जात को दबा कर या जान व माल का ख़तरा मोल लेकर आदमी अपने इस्लाम का सुबूत पेश करता है। इस इम्तेहान में पूरा उतरने के बाद ही आदमी इस काबिल बनता है कि उसका खुदा उसे अपने वफ़ादार वंदों में लिख ले। इन मौकों पर इस्लामियत का सुबूत देना ही किसी आदमी के पिछले आमाल को बा-क़ीमत बनाता है। और अगर वह ऐसे मौकों पर इस्लामियत का सुबूत न दे सके तो इसका मतलब यह है कि उसने अपने पिछले तमाम आमाल को बे-क़ीमत कर लिया।

दुनिया का हर इम्तेहान इरादे का इम्तेहान है। आदमी को सिर्फ यह करना है कि वह ख़तरात को नजरअंदाज करके इरादे का सुबूत दे दे, वह अल्लाह की तरफ अपना पहला कदम उठा दे। उसके बाद फौरन खुदा की मदद उसका सहारा बन जाती है। मगर जो शख्स इरादे का सुबूत न दे, जो खुदा की तरफ अपना पहला कदम न उठाए वह अल्लाह की नजर में जालिम है। ऐसे लोगों को खुदा एकतरफा तौर पर अपनी मदद का सहारा नहीं भेजता।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ ٥٣ إِذْ كَفَرُوا عَلَى الْكُفْرَيْنِ يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ٥٤ إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ وَمَنْ يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ٥٥

ऐ ईमान वालो, तुममें से जो शख्स अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह जल्द ऐसे लोगों को उठाएगा जो अल्लाह को महबूब होंगे और अल्लाह उन्हें महबूब होगा। वे मुसलमानों के लिए नर्म और मुंकिरों के ऊपर सज़ा होंगे। वे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे और

किसी मलामत करने वाले की मलामत से न डरेंगे। यह अल्लाह का फज़ल है। वह जिसे चाहता है अता करता है। और अल्लाह नुस्खत वाला और इल्म वाला है। तुम्हारे दोस्त तो बस अल्लाह और उसका रसूल और वे ईमान वाले हैं जो नमाज़ कायम करते हैं और जकात अदा करते हैं और वे अल्लाह के आगे झुकने वाले हैं। और जो शरूख अल्लाह और उसके रसूल और ईमान वालों को दोस्त बनाए तो बेशक अल्लाह की जमाअत ही ग़ालिब रहने वाली है। (54-56)

ईमान लाने के बाद जो शरूख ईमान के तकाज़े पूरे न करे वह अल्लाह की नज़र में दीन को कुबूल करने के बाद दीन से फिर गया। अल्लाह की नज़र में सच्चे ईमान वाले लोग वे हैं जिनके अंदर ईमान इस तरह दाखिल हो कि उन्हें मुहब्बत की सतह पर अल्लाह से तअल्लुक पैदा हो जाए, उन्हें इस्लामी मकासिद की तकमील इतनी अजीज़ हो कि जो लोग इस्लाम की राह में उनके भाई बनें उनके लिए उनके दिल में नमी और हमदर्दी के सिवा कोई चीज़ बाक़ी न रहे। वे मुसलमानों के लिए इस दर्जे शफीक बन जाएं कि उनकी ताक़त और उनकी सलाहियत कभी मुसलमानों के मुकाबले में इस्तेमाल न हो। वे दीन के मामले में इतने पुख़्ता हों कि ग़ैर इस्लामी लोगों के अफ़कार (विचार) व आमाल से कोई असर कुबूल न करें। उनके ज़बात इस दर्जे उसूल के ताबेअ हो जाएं कि मुसलमानों के लिए वे फूल से ज्यादा नाजुक साबित हों मगर नामुसलमानों के लिए वे पत्थर से ज्यादा सख़्त बन जाएं। कोई नामुसलमान कभी उन्हें अपने मकासिद के लिए इस्तेमाल न कर सके।

इस्लामी ज़िंदगी एक वामक़सद ज़िंदगी है और इसी लिए वह ज़द्दोज़हद की ज़िंदगी है। मुसलमान का मिशन यह है कि वह अल्लाह के दीन को अल्लाह के तमाम बंदों तक पहुंचाए। जहन्नम की तरफ जाती हुई दुनिया को जन्नत के रास्ते पर लाने की कोशिश करे। इस काम के फ़ितरी तकाज़े के तौर पर आदमी के सामने तरह-तरह की मुश्किलें और तरह-तरह की मलामतें पेश आती हैं। यहां तक कि दो अलग-अलग ग़िरोह बन जाते हैं। एक दुनियापरस्तों का और दूसरा आख़िरत के मुसाफ़िरों का। उनके दर्मियान एक मुस्तक़िल कशमक़श शुरू हो जाती है। आदमी का इम्तेहान यह है कि इन सारे मौकों पर वह उस इंसान का सबूत दे जो अल्लाह के भरोसे पर चल रहा है और अल्लाह के सिवा किसी की परवाह किए बग़ैर अपना इस्लामी सफ़र जारी रखता है। यहां तक की मौत के दरवाज़े में दाख़िल होकर खुदा के पास पहुंच जाता है।

इस तरह के लोग किसी मक़ाम पर जब क़ाबिले लिहाज़ तादाद में पैदा हो जाएं तो ज़मीन का ग़लबा भी उन्हीं के लिए मुक़द्दर कर दिया जाता है। ये वे लोग हैं जो नमाज़ कायम करते हैं। यानी उनका मक़ज़े तवज़्जोह तमामतर अल्लाह बन जाता है। वे जकात अदा करते हैं। यानी उनके बाहमी तअल्लुकात एक दूसरे की ख़ैरखाही पर कायम होते हैं, वे अल्लाह के आगे झुकने वाले होते हैं। यानी दुनिया के मामलात में कोई भी चीज़ उन्हें अनानियत (अंहकार) पर आमादा नहीं करती बल्कि वे हर मौके पर वही करते हैं जो अल्लाह चाहे। वह तवाजोअ (विनम्रता) इख़्तियार करने वाले होते हैं न कि सरकशी करने वाले।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُؤًا وَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَالْكَفَّارُ أُولِيَاءُ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ كُنتُم مَّوْمِنِينَ ﴿٥٤﴾ وَإِذْ أُنذِرْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوا هُزُؤًا وَلَعِبًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٥٥﴾ قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنْقُصُونَ مِنَّا إِلَّا أَنْ أَمْكًا بِاللهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ مِن قَبْلُ وَإِنْ أَكْثَرْتُمْ فُسْقُونَ ﴿٥٦﴾ قُلْ هَلْ أَنْبِئُكُمْ بِشَيْءٍ مِّنْ ذَلِكَ مَثُوبَةً عِنْدَ اللَّهِ مَنْ لَعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمْ الْفِرْدَقَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ ۖ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٥٧﴾

ऐ ईमान वाले, उन लोगों को अपना दोस्त न बनाओ जिन्होंने तुम्हारे दीन को मज़ाक और खेल बना लिया है, उन लोगों में से जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और न मुकिरों को। और अल्लाह से डरते रहो अगर तुम ईमान वाले हो। और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो तो वे लोग उसे मज़ाक और खेल बना लेते हैं। इसकी वजह यह है कि वे अक़ल नहीं रखते। कहो कि ऐ अहले किताब, तुम हमसे सिर्फ इसलिए ज़िद रखते हो कि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हमारी तरफ उतारा गया और उस पर जो हमसे पहले उतरा। और तुम में से अक्सर लोग नाफरमान हैं। कहो क्या मैं तुम्हें बताऊं वह जो अल्लाह के यहां अंजाम के एतबार से इससे भी ज्यादा बुरा है। वह जिस पर खुदा ने लानत की और जिस पर उसका ग़ज़ब हुआ। और जिनमें से बन्दर और सुअर बना दिए और उन्होंने शैतान की परस्तिश की। ऐसे लोग मक़ाम के एतबार से बदतर और राहेरास्त से बहुत दूर हैं। (57-60)

वे लोग जो खुदसाख़्ता दीन की बुनियाद पर खुदापरस्ती के इजारेदार बने हुए हों उनके दर्मियान जब सच्चे और बेआमेज़ (विशुद्ध) दीन की दावत उठती है तो उसके ख़िलाफ वे इतनी शदीद नफरत में मुब्तिला होते हैं कि अपनी माकूलियत तक खो बैठते हैं। यहां तक कि ऐसी चीज़ें जो बिला इख़लाफ़ क़ाबिले एहतराम हैं उनका भी मज़क उड़ने लगते हैं। यही मदीना के यहूद का हाल था। चुनांचे वे मुलसमानों की अजान का मज़क उड़ाने से भी नहीं रुकते थे। जो लोग इतने बेहिस और इतने ग़ैर संजीदा हो जाएं उनसे एक मुसलमान का तअल्लुक दावत (आह्वान) का तो हो सकता है मगर दोस्ती का नहीं हो सकता।

उन लोगों की खुदा से बेख़ौफी का यह नतीजा होता है कि वे सच्चे मुसलमानों को मुजरिम समझते हैं और अपने तमाम जराइम के बावजूद अपने मुतअल्लिक यह यकीन रखते हैं कि उनका मामला खुदा के यहां बिल्कुल दुरुस्त है। जब वे अपनी इस कैफियत की इस्लाह नहीं करते तो बिलआख़िर उनकी बेहिंसी उन्हें इस नौबत तक पहुंचाती है कि उनकी अक़ल

हक व बातिल के मामले में कुंद हो जाती है। वे शक्ल के एतबार से इंसान मगर बातिल के एतबार से बदतरीन जानवर बन जाते हैं। वे लतीफ एहसासात जो आदमी के अंदर खुदा के चौकीदार की तरह काम करते हैं, जो उसे बुराइयों से रोकते हैं वे उनके अंदर ख़त्म हो जाते हैं। मसलन हया, शराफत, कुअतेरफ़, पाकीज तरीक़ों को पसंद करना, वैराह। इस ग़ियवत का आखिरी दर्जा यह है कि आदमी की पूरी जिंदगी शैतानी रास्तों पर चल पड़े। जब कोई गिरोह इस नौबत को पहुंचता है तो वह लानत का मुस्तहिक बन जाता है, वह खुदा की रहमत से आखिरी हद तक दूर हो जाता है। उसकी इंसानियत मिट जाती है वह फितरत के सीधे रास्ते से भटक कर जानवरों की तरह जीने लगता है।

इंसान को अपनी ख़्वाहिशों के पीछे चलने से जो चीज रोकती है वह अक्ल है। मगर जब आदमी पर ज़िद और अदावत का ग़लबा होता है तो उसकी अक्ल उसकी ख़्वाहिश के नीचे दबकर रह जाती है। अब वह जाहिर में इंसान मगर बातिल में हैवान होता है। यहां तक कि साहिबे बसीरत आदमी उसे देखकर जान लेता है कि उसके जाहिरी इंसानी ढांचे में अंदर कौन सा हैवान छुपा हुआ है।

وَاِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوْا امْكُثُوْا بِالْكَفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ
بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ۝ وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِي الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَآكِلِهٖمُ السَّحْتِ ۚ لَيْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ لَوْ لَا يَنْهٰهُمْ الرَّبَّائِيْنُ
وَالْاَحْبَابُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَآكِلِهِمُ السَّحْتِ لَيْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝

और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाए हालांकि वे मुंकिर आए थे और मुंकिर ही चले गए। और अल्लाह ख़ूब जानता है उस चीज को जिसे वे छुपा रहे हैं। और तुम उनमें से अक्सर को देखोगे कि वे गुनाह और जुल्म और हराम खाने पर दौड़ते हैं। कैसे बुरे काम हैं जो वे कर रहे हैं। उनके मशाइख़ (संत) और उलमा (विद्वान) उन्हें क्यों नहीं रोकते गुनाह की बात कहने से और हराम खाने से। कैसे बुरे काम हैं जो वे कर रहे हैं। (61-63)

मदीना के यहूदियों में कुछ लोग थे जो इस्लाम से जेहनी तौर पर मरज़ूब थे। साथ ही इस्लाम का बढ़ता हुआ ग़लबा देखकर खुल्लम खुल्ला उसका हरीफ़ (प्रतिपक्षी) बनना भी नहीं चाहते थे। ये लोग अगरचे अंदर से अपने आबाई दीन पर जमे हुए थे मगर अल्फ़ाज बोलकर जाहिर करते थे कि वे भी मोमिन हैं। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि अस्ल मामला किसी इंसान से नहीं बल्कि खुदा से है। और खुदा वह है जो दिलों तक का हाल जानता है। वह किसी से जो मामला करेगा हकीकत के एतबार से करेगा न कि उन अल्फ़ाज की बिना पर जो उसने मस्लेहत के तौर पर अपने मुंह से निकाला था।

यहूद के ख़्वास (विशिष्ट जनों) में दो किस्म के लोग थे। एक रिब्बी जिन्हें मशाइख़ (धर्म गुरु) कहा जा सकता है। दूसरे अहबार जो उनके उलमा (विद्वानों) और फ़ुह्रा (आचार

शास्त्री) के मानिन्द थे। दोनों किस्म के लोग अगरचे दीन ही को अपना सुबह व शाम का मशगला बनाए हुए थे। दीन के नाम पर उनकी कयादत (नेतृत्व) कायम थी और दीन ही के नाम पर उन्हें बड़े-बड़े रकमें मिलती थीं। मगर उनकी कयादत व मक्कूलियत का राज अवामपसंद दीन की नुमाइंदगी थी न कि खुदापसंद दीन की नुमाइंदगी। उनका बोलना और उनका चलना बजाहिर दीन के लिए था। मगर हकीकतन वह एक किस्म की दुनियादारी थी जो दीन के नाम पर जारी थी। वे दीन के नाम पर लोगों को वही चीज दे रहे थे जिसे वे दीन के बग़ैर अपने लिए पसंद किए हुए थे।

खुदा का पसंदीदा दीन तकवे का दीन है। यानी यह कि आदमी लोगों के दर्मियान इस तरह रहे कि उसकी जवान गुनाह के कलिमात न बोले, वह अपनी सरगर्मियों में हराम तरीकों से पूरी तरह बचता हो। जिन लोगों से उसका मामला पेश आए उनके साथ वह ईसाफ़ करने वाला हो न कि जुल्म करने वाला। मगर आदमी का नपस हमेशा उसे दुनियापरस्ती के रास्ते पर डाल देता है। वह ऐसी जिंदगी गुजारना चाहता है जिसमें उसे सही और ग़लत न देखना हो बल्कि सिर्फ़ अपने फायदों और मस्लेहतों को देखना हो। यहूद के अवाम इसी हालत पर थे। अब उनके ख़्वास का काम यह था कि वे उन्हें इससे रोकते। मगर उन्होंने अवाम से एक ख़ामोश मुफाहमत कर ली। वे अवाम के दर्मियान ऐसा दीन तक्सीम करने लगे जिसमें अपनी हकीकी जिंदगी को बदले बग़ैर नजात की ज़मानत हो और बड़े-बड़े दरजात तै हों। ये ख़्वास अपने अवाम की हकीकी जिंदगियों को न छेड़ते अलबत्ता उन्हें मिलते यहूद की फज़ीलत के झूठे किस्से सुनाते। उनके कैमी हंगामों को दीन के रंग में बयान करते। रस्सी किस्म के आमाल दोहरा देने पर यह बशारत देते कि इनके जरिए से उनके लिए जन्नत के महल तामीर हो रहे हैं। अल्लाह के नजदीक यह बहुत बुरा काम है कि लोगों के दर्मियान ऐसा दीन तक्सीम किया जाए जिसमें हकीकी अमली जिंदगी को बदलना न हो, अलबत्ता कुछ नुमाइशी चीजों का एहतिमाम करके जन्नत की ज़मानत मिल जाए।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَاِعْتَوٰا بِمَا قَالُوْا بَلْ يَدُ
مَبْسُوْطَتٍ ۙ يُّنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ وَلٰكِيْنِ يَدُكَ كَثِيْرًا ۖ مِنْهُمْ مَّا اَنْزَلَ اِلَيْكَ
مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَآئًا وَكُفْرًا ۚ وَالتَّقِيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاۗةَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيَمَةِ
كُلَّمَا اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۚ وَيَسْعَوْنَ فِي الْاَرْضِ فَسَادًا
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝

और यहूद कहते हैं कि खुदा के हाथ बंधे हुए हैं। उन्हीं के हाथ बंध जाएं और लानत हो उन्हें इस कहने पर। बल्कि खुदा के दोनों हाथ खुले हुए हैं। वह जिस तरह चाहता है खर्च करता है। और तुम्हारे ऊपर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से जो कुछ उतरा है वह उनमें से अक्सर लोगों की सरकशी और इंकार को बढ़ा रहा है। और हमने उनके दर्मियान

दुश्मनी और कीना कियामत तक के लिए डाल दिया है। जब कभी वे लड़ाई की आग भड़काते हैं तो अल्लाह उसे बुझा देता है। और वे जमीन में फसाद फैलाने में सरगर्म हैं। हालांकि अल्लाह फसाद बरपा करने वालों को पसंद नहीं करता। (64)

कुरआन में जब अल्लाह की राह में खर्च करने पर जोर दिया गया और कहा गया कि अल्लाह को कर्जें हसन दो तो यहूद ने इसे मजाक का विषय बना लिया। वे कहते कि अल्लाह फकीर है और उसके बंदे अमीर हैं। अल्लाह के हाथ आजकल तंग हो रहे हैं। उनकी इस किस्म की बातों का रुख खुदा की तरफ नहीं बल्कि रसूल और कुरआन की तरफ होता था। वे जानते थे कि खुदा इससे बरतर है कि उसके यहां किसी चीज की कमी हो। इस तरह की बातें वे दरअसल यह जाहिर करने के लिए कहते थे कि रसूल सच्चा रसूल नहीं। और कुरआन खुदा की किताब नहीं। अगर यह कुरआन खुदा की तरफ से होता तो (नऊजुबिल्लाह) ऐसी मजहकाउरेज बातें इसमें न होतीं। मगर जो लोग इस किस्म की बातें करें वे सिर्फ यह साबित करते हैं कि वे हकीमी वीनी जच्चे से खाली हैं, वे बेहिमी की सतह पर जी रहे हैं।

मौजूदा इस्तेहानी दुनिया में इंसान को अमल की आजादी है। यहां एक शख्स यह भी कह सकता है कि 'कुरआन खुदा की किताब है' और अगर कोई शख्स यह कहना चाहे कि 'कुरआन एक बनावटी किताब है' तो उसे भी अपनी बात कहने के लिए अल्फाज मिल जाएंगे। यही वजह है कि यहां आदमी एक वाक्ये से हिदायत पकड़ सकता है और उसी वाक्ये से दूसरा आदमी सरकशी की गिजा भी ले सकता है।

यहूद ने जब कुरआन की हिदायत को मानने से इंकार किया तो वह सादा मअनों में महज इंकार न था बल्कि इसके पीछे उनका यह जोम शामिल था कि हम तो नजातयाफता लोग हैं, हमें किसी और हिदायत को मानने की क्या जरूरत। जो लोग इस किस्म की पुरफख नपिसयात में मुक्ताला हों उनके अंदर शदीदतरीन किस्म की अनानियत जन्म लेती है। रोजमर्ह की जिंदगी में जब उनका मामला दूसरों से पड़ता है तो वहां भी वे अपनी 'मैं' को छोड़ने पर राजी नहीं होते। नतीजा यह होता है कि पूरा मुआशिरा आपस के इखेलाफ और एनाद (द्वेष) का शिकार होकर रह जाता है।

पैगम्बर की दावत यह होती है कि आदमी भी उसी इताअते खुदावंदी के दीन को अपना ले जिसे कायनात की तमाम चीजें अपनाए हुए हैं। यही जमीन की इस्लाह है। अब जो लोग पैगम्बराना दावत की राह में रुकावट डालें वे खुदा की जमीन में फसाद पैदा करने का काम कर रहे हैं। ताहम इंसान को सिर्फ इतनी ही आजादी हासिल है कि वह अपने अंदर के फसाद को बाहर लाए, दूसरों की किस्मत का मालिक बनने की आजादी किसी को नहीं।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكُنَّا عَنْهُمْ سَبِيلًا ۖ وَلَا تَدْخُلْنَهُمْ
جَنَّتِ النَّعِيمِ ۖ وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ
إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَكُلُّوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ ۖ مِنْهُمْ أُمَّةٌ

مُقْتَصِدَةً ۚ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۚ

और अगर अहले किताब ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो हम जरूर उनकी बुराइयां उनसे दूर कर देते और उन्हें नेमत के बागों में दाखिल करते। और अगर वे तौरात और इंजील की पाबंदी करते और उसकी जो उन पर उनके ख की तरफ से उतारा गया है तो वे खाते अपने ऊपर से और अपने कदमों के नीचे से। कुछ लोग उनमें सीधी राह पर हैं। लेकिन ज्यादा उनमें ऐसे हैं जो बहुत बुरा कर रहे हैं। (65-66)

तमाम गुमराहियों का अस्ल सबब आदमी का ढीठ हो जाना है। अगर आदमी अल्लाह से डरे तो उसे यह समझने में देर नहीं लग सकती कि कौन सी बात खुदा की तरफ से आई हुई बात है। डर की नपिसयात उसके अंदर से दूसरे तमाम मुहर्रिकात को ख़त कर देगी और आदमी खुदा की बात को फौरन पहचान कर उसे मान लेगा। जब आदमी इस हद तक अपने आपको खुदा की तरफ मुतवज्जह कर दे तो इसके बाद वह भी खुदा की तवज्जोह का मुस्तहिक हो जाता है। खुदा उसकी बशरी (इंसानी) कमजोरियों को उससे धो देता है और मरने के बाद उसे जन्नत के नेमत भरे बागों में जगह देता है। आदमी की बुराइयां, बअल्फाजे दीगर उसकी नपिसयाती कमजोरियां वे चीजें हैं जो उसे जन्नत के रास्ते पर बढ़ने नहीं देती। खुदा की तैमीक से जो शख्स अपनी नपिसयाती कमजोरियों पर कबू पा लेता है वही जन्नत की मजिल तक पहुंचता है।

जब भी हक की दावत उठती है तो वे लोग इससे भयभीत हो जाते हैं जो साबिक निजाम के तहत सरदारी का मकाम हासिल किए हुए हों। उन्हें अंदेशा होता है कि इसको कुबूल करते ही उनके मआशी (आर्थिक) मफादात और उनकी कायदाना अज्मतें ख़त्म हो जाएंगी। मगर यह सिर्फ तंगनजरी है। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि जिस चीज को वह वक्षत की नजर से देख रहे हैं वह सिर्फ उनकी अहलियत को जांचने के लिए जाहिर हुई है। आइंदा वे खुदा के इनामात के मुस्तहिक हों या न हों इसका फैसला उनकी अपनी तहफुजती (संरक्षण) तदबीरों पर नहीं होगा बल्कि इस पर होगा कि दावते हक के साथ वे क्या रवैया इख्तियार करते हैं। गोया दावते हक के इंकार के जरिए वे अपनी जिस बड़ाई को बचाना चाहते हैं वही इंकार वह चीज है जो खुदा के नजदीक उनके इस्तेख़क (पात्रता) को ख़त्म कर रहा है।

आसमानी किताब की हामिल कौमों में हमेशा ऐसा होता है कि अस्ल खुदाई तालीताम में इफरात या तफरीत (बढ़ाकर या घटाकर) वे एक खुदसाइता दीन बना लेती हैं और लम्बी मुदत गुजरने के बाद उसके अफराद उससे इस कदर मानूस हो जाते हैं कि उसी को अस्ल खुदाई मजहब समझने लगते हैं। ऐसी हालत में जब खुदा का सीधा और सच्चा दीन उनके सामने आता है तो वे उसे अपने लिए ग़ैर मानूस पाकर भयभीत होते हैं। यहूद व नसारा का यही हाल था। चुनावें उनकी बहुत बड़ी अक्सरियत इस्लाम की सदाकत को पाने से कासर रही। सिर्फ चन्द लोग (मसलन नजाशी शाहे हबश, अब्दुल्लाह बिन सलाम वगैरह) जो एतदाल की राह पर बाकी थे, उन्हें इस्लाम की सदाकत को समझने में देर नहीं लगी। उन्होंने बढ़कर इस्लाम को इस तरह

अपना लिया जैसे वह पहले से इसी रास्ते पर चल रहे हों और अपने सफर के तसलसुल को जारी रखने के लिए मुसलमानों की जमाअत में शामिल हो गए हों।

يَا أَيُّهَا الرُّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَغْتَ رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ٥٧

ऐ पैगम्बर, जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से उतरा है उसे पहुंचा दो। और अगर तुमने ऐसा न किया तो तुमने अल्लाह के पैगाम को नहीं पहुंचाया। और अल्लाह तुम्हें लोगों से बचाएगा। अल्लाह यकीनन मुंकिर लोगों को राह नहीं देता। (67)

पैगम्बर इस्लाम मुहम्मद (सल्ल०) जब अरब में आए तो ऐसा न था कि वहां दीन का नाम लेने वाला कोई न हो। बल्कि उनका सारा समाज दीन ही के नाम पर कायम था। दीन के नाम पर बहुत से लोग पेशवाई और कयादत का मकाम हासिल किए हुए थे। दीन के नाम पर लोगों को बड़ी-बड़ी रकमें मिलती थीं। दीनी मंसबों का हामिल होना समाज में इज्जत और फख्र की अलामत बना हुआ था। इसके बावजूद आपको अरब के लोगों की तरफ से सख्ततरीन मुखालिफत का सामना करना पड़ा। इसकी वजह यह थी कि दीने खुदावंदी के नाम पर उनके यहां एक खुदासख्ता (स्वनिर्मित) दीन राज़ हो गया था। सदियों की रिवायतों के नतीजे में इस दीन के नाम पर गद्दियां बन गई थीं और मफ़ादात की बहुत सी सूरतें कायम हो गई थीं। ऐसे माहौल में जब पैगम्बर इस्लाम ने बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत पेश की तो लोगों को नजर आया कि वह उनकी दीनी हैसियत को बेएतबार साबित कर रही है। उन्हें अंदेशा हुआ कि अगर यह दीन फैला तो उनका वह मजहबी ढांचा ढह जाएगा जिसमें उन्हें बड़ाई का मकाम मिला हुआ है।

यह सूरतेहाल दाजी के लिए बहुत सख्त होती है। अपने दावती काम को खुले तौर पर अंजाम देना वक्त की मजहबी ताकतों से लड़ने के समान बन जाता है। उसे दिखाई देता है कि अगर मैं किसी मुसालेहत के बग़ैर सच्चे दीन की तबलीग़ करूं तो मुझे सख्ततरीन रद्देअमल (प्रतिक्रिया) का सामना करना पड़ेगा। मेरा मजाक उड़या जाएगा। मुझे बेइज्जत किया जाएगा। मेरी मआशियात तबाह की जाएगी। मेरे ख़िलाफ़ ज़ारिहाना (आक्रामक) कार्रवाइयां होंगी। मैं साथियों सहयोगियों से महरूम हो जाऊंगा।

अब उसके सामने दो रास्ते होते हैं। दावती जिम्मेदारियों को अदा करने में दुनियावी मस्लेहतों (हितों) के सिरे हाथ से छूटते हैं। और अगर दुनियावी मस्लेहतों का लिहाज किया जाए तो दावती अमल की पूरी अंजामदेही नामुमकिन नजर आती है। यहां खुदा का वादा दाजी को एकसू करता है। खुदा का वादा है कि दाजी अगर अपने आपको खुदा के पैगाम की पैगामरसानी में लगा दे तो लोगों की तरफ से डाली जाने वाली मुश्किलात में खुदा उसके लिए काफी हो जाएगा। दाजी को चाहिए कि वह सिर्फ़ दावत के तक्ज़ों की तकमील में लग जाए और मदऊ (संबोधित) कौम की तरफ से डाले जाने वाले मसाइब में वह खुदा पर भरोसा करे।

मुखातबीन का रद्देअमल (प्रतिक्रिया) एक फितरी चीज़ है और दाजी को बहरहाल उससे साबिका पेश आता है। मगर उसका असर उसी दायरे तक महदूद रहता है जितना खुदा के कानूने आजमाइश का तक्ज़ है। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि मुखालिफ़ीन इस हद तक क़ायूपाता हो जाएं कि वह दावती मुहिम को रोक दें या उसे तकमील तक पहुंचने न दें। एक सच्ची दावत का अपने दावती निशाने तक पहुंचना एक खुदाई मंसूबा होता है इसलिए वह लाजिमन पूरा होकर रहता है। इसके बाद मदऊ (संबोधित) ग़िरोह का मानना उसकी अपनी जिम्मेदारी है जो उसी के बक़द नतीजाखेज़ होती है जितना मदऊ खुद चाहता है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ وَلَكِنَّ كَثِيرًا مِنْهُمْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ٥٨ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئُونَ وَالنَّصَارَى مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ٥٩

कह दो, ऐ अहले किताब तुम किसी चीज़ पर नहीं जब तक तुम कायम न करो तौरात और इंजील को और उसे जो तुम्हारे ऊपर उतरा है तुम्हारे रब की तरफ से। और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से उतारा गया है वह यकीनन उनमें से अक्सर की सरकशी और इंकार को बढ़ाएगा। पस तुम इंकार करने वालों के ऊपर अफसोस न करो। वेशक जो लोग इमान लाए और जो लोग यहूदी हुए और साबी और नसरानी, जो शख्स भी इमान लाए अल्लाह पर और आख़िरत (परलोक) के दिन पर और नेक अमल करे तो उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे। (68-69)

यहूद का यह हाल था कि उनके अफ़राद अमलन खुदा के दीन पर कायम न थे। उन्होंने अपने नफ्स को और अपनी ज़िंदगी के मामलात को खुदा के ताबेअ नहीं किया था। अलबत्ता खुशगुमानियों के तहत उन्होंने यह अकीदा बना लिया था कि खुदा के यहां उनकी नजात यकीनी है। वे अपनी कैमि फज़ीलत के अफ़सानों और अपने बुज़ूर्गों के तक्ज़ुस की दास्तानों में जी रहे थे। मगर अल्लाह के यहां इस किस्म की खुशख़्बालियों की कोई कीमत नहीं। अल्लाह के यहां जो कुछ कीमत है वह सिर्फ़ इस बात की है कि आदमी अल्लाह के अहकाम का पाबंद बने और अपनी हकीकी ज़िंदगी को खुदा के दीन पर कायम करे।

जो लोग झूठी आरजुओं में जी रहे हों उनके सामने जब यह दावत आती है कि अल्लाह के यहां अमल की कीमत है न कि आरजुओं और तमन्नओं की तो ऐसी दावत के ख़िलाफ़ वे शदीद रद्देअमल का इज़हार करते हैं। ऐसी दावत में उन्हें अपनी खुशख़्बालियों का महल गिरता हुआ नजर आता है। यह सूरतेहाल उनके लिए आजमाइश बन जाती है। वे ऐसी दावत के सख्त मुखालिफ़ हो जाते हैं। नुमाइशी खुदापरस्ती के अंदर छुपी हुई उनकी खुदपरस्ती

बेपर्दा होकर सामने आ जाती है। जिस दावत से उन्हें रब्बानी गिजा लेना चाहिए था उससे वे सिर्फ इंकार और सरकशी की गिजा लेने लगते हैं।

कदीम जमाने में जो पैगम्बर आए उनके मानने वालों की नस्लें धीरे-धीरे मुस्तकिल कौम की सूरत इख्तियार कर लेती हैं। अब पैगम्बरों के नमूने पर अमल तो बाकी नहीं रहता। अलबत्ता अपनी अज्मत और फजिलत के कसीदे किस्से कहानियों की सूरत में खूब फैल जाते हैं। हर गिरोह समझने लगता है कि हम सबसे अफजल हैं। हमारी नजात यकीनी है। अल्लाह के यहां हमारा दर्जा सबसे बढ़ा हुआ है। मगर इस किस्म के गिरोही मजाहिब (धर्मों) की खुदा की नजदीक कोई कीमत नहीं। अल्लाह के यहां हर शख्स का मुकद्दमा इफ़रादी हैसियत में पेश होगा और उसके मुस्तक़बिल की बाबत जो कुछ फैसला होगा वह तमामतर उसके अपने अमल की बुनियाद पर होगा न कि किसी और बुनियाद पर।

खुदा की किताब को कायम करना नाम है अल्लाह पर यकीन करने का, आखिरत की पकड़ के अंदेशे को अपने ऊपर तारी करने का और इंसानों के दर्मियान सालेह किरदार के साथ जिंदगी गुजारने का। यही अस्ल दीन है और हर फर्द को यही अपनी जिंदगी में इख्तियार करना है। आसमानी किताब की हामिल कौम की कीमत बुनिया में उसी वक्त है जबकि उसके अफ़राद उस दीने खुदावंदी पर कायम हों। इससे हटने के बाद वे खुदा की नजर में बिल्कुल बेकीमत हो जाते हैं, यहां तक कि खुले हुए मुक़िरो और मुश्क़ों से भी ज्यादा बेकीमत।

لَقَدْ أَخَذْنَا لِيَأْخُذَ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَآرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ رَسُولًا قَالُوا كَلِمًا جَاءَهُمْ
رَسُولٌ بِمَا لَمْ يَكُونُوا يَفْقَهُونَ قَوْلَهُ وَكَاسَبُوا
الْأَتَاكَونَ فِتْنَةً فَعَمُوا وَصَمُوا ثُمَّ تَابَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُوا كَثِيرٌ
مِّنْهُمْ وَاللَّهُ بِصِيرٍ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٧٠﴾

हमने बनी इस्राईल से अहद (वचन) लिया और उनकी तरफ बहुत से रसूल भेजे। जब कोई रसूल उनके पास ऐसी बात लेकर आया जिसे उनका जी न चाहता था तो कुछ को उन्होंने झुठलाया और कुछ को कत्ल कर दिया। और ख्याल किया कि कुछ ख़राबी न होगी। पस वे अंधे और बहरे बन गए। फिर अल्लाह ने उन पर तक्जोह की। फिर उनमें से बहुत से अंधे और बहरे बन गए। और अल्लाह देखता है जो कुछ वे कर रहे हैं। (70-71)

यहूद से अल्लाह ने हजरत मूसा के जरिए ईमान व इताअत का अहद लिया था। वे कुछ दिन उस पर कायम रहे। इसके बाद उनमें बिगाड़ शुरू हो गया। अब अल्लाह ने उनके दर्मियान अपने सुधारक उठाए जो उन्हें अपने अहद की याददिहानी कराएं। मगर यहूद की बेराही और सरकशी बढ़ती ही चली गई। उन्होंने खुद नसीहत करने वालों की जबान बन्द करने की कोशिश की। यहां तक कि कितने लोगों को कत्ल कर दिया। जब उनकी सरकशी हद को पहुंच गई तो अल्लाह ने बाबिल व नैनवा (इराक) के बादशाह बनू खज़ नस्र को उनके

ऊपर मुसल्लत कर दिया जिसने 586 ई०पू० में यरोशलम पर हमला करके यहूद के मुकद्दस शहर को ढा दिया और यहूदियों को गिरफ्तार करके अपने मुल्क ले गया ताकि उनसे बेगार ले। इस वाक्ये के बाद यहूद के दिल नर्म हो गए। उन्होंने अल्लाह से माफ़ी मांगी। अब अल्लाह ने साइरस (शाह ईरान) के जरिए उनकी मदद की। साइरस ने 539 ई०पू० में कल्दानियों के ऊपर हमला किया और उन्हें शिकस्त देकर उनके मुल्क पर कब्ज़ा कर लिया। इसके बाद उसने यहूद को जलावतनी (देश निकाला) से नजात दिलाकर उन्हें उनके वतन जाने और वहां दुबारा बसने की इजाजत दे दी।

अब यहूद को नई जिंदगी मिली और उन्हें काफी फ़रोग हासिल हुआ। मगर कुछ दिनों के बाद वे दुबारा ग़फलत और सरकशी में मुब्तला हुए। अब फिर नबियों और मुस्लिहीन के जरिए अल्लाह ने उन्हें सचेत किया। मगर वे होश में न आए, यहां तक कि उन्होंने हजरत यहया को कत्ल कर दिया और (अपनी हद तक) हजरत मसीह को भी। अब अल्लाह का ग़जब उन पर भड़का और 70 ई० में रूमी शहंशाह टाइटस को उन पर मुसल्लत कर दिया गया। जिसने उनके मुल्क पर हमला करके उन्हें वीरान कर दिया। इसके बाद यहूद कभी अपनी जाती बुनियादों पर खड़े न हो सके।

आसमानी किताब की हामिल कौमों की नफ़िसयात बाद के जमाने में यह बन जाती है कि वे खुदा के ख़ास लोग हैं। वे जो कुछ भी करें उस पर उनकी पकड़ नहीं होगी। खुदा की तालीमात में इस अक़ीदे के खिलाफ खुले खुले बयानात होते हैं। मगर वे उनके बारे में अंधे और बहरे बन जाते हैं। वे अपने गिर्द खुदाख़ा (स्वनिर्मित) अक़ीदों और फर्ज़ी किस्से कहानियां का ऐसा हाला बना लेते हैं कि खुदा की तंबीहात उन्हें दिखाई और सुनाई नहीं देती। यहूद की यह तारीख़ बताती है कि जब भी एक हामिले किताब कौम को उसके 'दुश्मनों' के कब्ज़े में दे दिया जाए तो यह उसके लिए खुदा की तरफ से आजमाइश का वक्त होता है। इसका मतलब यह होता है कि हल्की सजा देकर कौम को जगाया जाए। अगर इसके नतीजे में कौम के अफ़राद में खुदापरस्ताना जज्बात जाग उठें तो उसके ऊपर से सजा उठा ली जाती है। और अगर ऐसा न हो तो खुदा उसे रद्द करके फेंक देता है और फिर कभी उसकी तरफ मुतवज्जह नहीं होता।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ۚ وَقَالَ الْمَسِيحُ يَبْنِي
إِسْرَءِيلَ ۖ اْعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ ۚ إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ
عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِن أَنْصَارٍ ۚ لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ
قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَالِثُ ثَلَاثَةٍ وَمِمَّنْ إِلَٰهٌ إِلَّا إِلَٰهُ وَاحِدٌ وَإِن لَّمْ يَنْتَهُوا عَمَّا
يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ
وَيَسْتَغْفِرُونَ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧١﴾ مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ

مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ كَأَنَّا بِاَلْغُلَيْنِ السَّعَامُ أَنْظُرْ كَيْفَ بُيِّنَ
لَهُمُ الْآيَاتِ ثُمَّ أَنْظِرْ أَتَى يُؤْفَكُونَ ۝ قُلْ ااعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

यकीन उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि खुदा ही तो मसीह इब्ने मरयम है। हालांकि मसीह ने कहा था कि ऐ बनी इस्राईल अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। जो शख्स अल्लाह का शरीक ठहराएगा तो अल्लाह ने हराम की उस पर जन्नत और उसका ठिकाना आग है। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। यकीन उन लोगों ने कुफ्र किया जिन्होंने कहा कि खुदा तीन में का तीसरा है। हालांकि कोई माबूद (पूज्य) नहीं सिवाए एक माबूद के। और अगर वे बाज़ न आए उससे जो वे कहते हैं तो उनमें से कुफ्र पर कायम रहने वालों को एक दर्दनाक अजाब पकड़ लेगा। ये लोग अल्लाह के आगे तौबा क्यों नहीं करते और उससे माफी क्यों नहीं चाहते। और अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। मसीह इब्ने मरयम तो सिर्फ एक रसूल हैं। उनसे पहले भी बहुत रसूल गुजर चुके हैं। और उनकी मां एक रास्तबाज (नेक) ख़ातून थी। दोनों खाना खाते थे। देखो हम किस तरह उनके सामने दलीलें बयान कर रहे हैं। फिर देखो वे किधर उल्टे चले जा रहे हैं। कहे क्या तुम अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज की इबादत करते हो जो न तुम्हारे नुस्सान का इस्तिआर रखती है और न नफा का। और सुनने वाला और जानने वाला सिर्फ अल्लाह ही है। (72-76)

हजरत मसीह को अल्लाह तआला ने रैर मामूली मुअजिजे (चमत्कार) दिए। ये मुअजिजे इसलिए थे कि लोग आपके पैगम्बर होने को पहचानें और आप पर ईमान लाएं। मगर मामला बरअक्स हुआ। ईसाइयों ने आपके मुअजिजात को देखकर यह अक्रीदा कायम किया कि आप खुदा हैं। आपके अंदर खुदा हुलूल किए हुए है। यहूद ने यह कहकर आपको नजरअंदाज कर दिया कि यह एक शोअबदाबाज और जादूगर हैं। हजरत मसीह अल्लाह की तरफ से लोगों की हिदायत के लिए आए थे। मगर एक गिरोह ने आपसे शिर्क की गिजा ली और दूसरे गिरोह ने इंकार की।

माबूद (पूज्य) वही हो सकता है जो खुद बेएहतियाज (निरपेक्ष) हो और दूसरों को नफा नुस्सान पहुंचाने की कुदरत रखे। खाना आदमी के मोहताज होने की आखिरी अलामत है। जो खाने का मोहताज है वह हर चीज का मोहताज है। जो शख्स खाना खाता हो वह मुकम्मल तौर पर एक मोहताज हस्ती है। ऐसी हस्ती खुदा किस तरह हो सकती है। यही मामला नफा नुस्सान का है। किसी को नफा मिलना या किसी को नुस्सान पहुंचाना ऐसे वाक्यात हैं जिनके जहूर में आने के लिए पूरी कायनात की मदद दरकार होती है। कोई भी शख्स इस किस्म के कायनाती असबाब फराहम करने पर कादिर नहीं। इसलिए इंसानों में से किसी इंसान का यह दर्जा भी नहीं हो सकता कि उसे माबूद मान लिया जाए।

जब भी आदमी खुदा के सिवा किसी और को अपनी अक्रीदत (आस्था) व मुहब्बत का

मर्कज बनाता है तो उसके पीछे यह छुपा हुआ जज्बा होता है कि उसे खुदा की दुनिया में कोई बड़ा दर्जा हासिल है। वह खुदा के यहां उसका मददगार बन सकता है। मगर इस किस्म की तमाम उम्मीदें महज झूठी उम्मीदें हैं। मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में खुदा के सिवा दूसरी चीजों का बेबस होना खुला हुआ नहीं है। इसलिए यहां आदमी गलतफहमी में पड़ा हुआ है। मगर आखिरत में तमाम हकाइक खोल दिए जाएंगे तो आदमी देखेगा कि खुदा के सिवा जिन सहारों पर वह भरोसा किए हुए था वह किस कदम बेकीमत थे।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوا مِنْ قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ۝

कहो, ऐ अहले किताब अपने दीन में नाहक गुलू (अति) न करो और उन लोगों के ख्यालात की पैरवी न करो जो इससे पहले गुमराह हुए और जिन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह किया। और वे सीधी राह से भटक गए। (77)

हजरत मसीह के इब्तिदाई शागिर्दों के नजदीक मसीह 'एक इंसान था जो खुदा की तरफ से था।' वे आपको इंसान और अल्लाह का रसूल समझते थे। मगर आपका दीन जब शाम के इलाके से बाहर निकला तो उसे मिन्न व यूनान के फलसफे से साबिक पेश आया। मसीहियत कुकूल करके ऐसे लोग मसीहियत में दाखिल हुए जो वक्त के फलसफियाना अपकार से मुतासिर थे। इस तरह अंदरूनी असबाब और बाहरी प्रेरकों के तहत मसीहियत में एक नया दौर शुरू हुआ जबकि मसीहियत को वक्त के ग़ालिब फलसफियाना उस्तूब में बयान करने की कोशिश शुरू हुई।

उस ज़माने की सभ्य दुनिया में मिन्न व यूनान के फलसफियों का ज़ोर था। वक्त के ज़हीन लोग आम तौर पर उन्हीं के अपकार (विचारों) की रेषनी में सोचते थे। यूनानी फलसफियों ने अपने कयासात के ज़रिए आलम की एक ख़ाली तस्वीर बना रखी थी। वे हकीकत की ताबीर तीन अक्नूमों (Hypostases) की सूरत में करते थे। जुजुद, हयात और इल्म। मसीही उलमा जो खुद भी इन अपकार से मरऊब थे साथ ही वक्त के ज़हीन तबकेको मसीहियत की तरफ मायल करना चाहते थे, उन्होंने अपने मजहब को वक्त के ग़ालिब फिक्क पर ढालने की कोशिश की। उन्होंने मसीहियत की ऐसी ताबीर की जिसमें खुदा का दीन भी इसी 'तीन' के जामे में ढल जाए और लोग उसे अपने ज़हन के मुताबिक पाकर उसे कुकूल कर लें। उन्होंने कहा कि मजहबी हकीकत भी एक तस्लीस (तीन खुदा) की सूरतगरी है। अक्नूमे जुजुद बाप है। अक्नूमे हयात बेदा है और अक्नूमे इल्म रुहुल कुदूस है। इस कलामी मजहब को मुकम्मल करने के लिए और बहुत से ख्यालात उसमें दाखिल किए गए। मसलन यह कि हजरत मसीह 'कलाम' का जसदी जूहर (भौतिक रूप) हैं। आदम के ज़मीन पर उतरने के बाद हर इंसान गुनाहगार हो चुका है और इंसान की नजात (मुक्ति) के लिए खुदा के बेटे को सूली पर चढ़कर इसका कफ़फ़रा (प्रायश्चित्त) देना पड़ा, वगैरह। इस तरह चौथी सदी ईसवी में मिस्री, यूनानी और रूमी विचारों में ढलकर वह चीज तैयार हुई जिसे मौजूदा मसीहियत कहा जाता है।

खुदा के सीधे रास्ते से भटकने की वजह अक्सर यह होती है कि लोग गुमराह कौमों के ख्यालात से मरऊब होकर दीन को उनके ख्यालात के सांचे में ढालने लगते हैं। खुदा के दीन को मानते हुए उसकी ताबीर इस ढंग से करते हैं कि वह गालिब अफकार के मुताबिक नजर आने लगे। वे खुदा के दीन के नाम पर ग़ैर खुदा के दीन को अपना लेते हैं। नसारा ने अपने दीन को अपने जमाने की मुश्किल कौमों के अफकार में ढाल लिया और उसी को खुदा का मक्खूल दीन कहने लगे। यही चीज कभी इस तरह पेश आती है कि दीन को खुद अपने कौमी अजाइम (महत्वाकांक्षाओं) के सांचे में ढाल लिया जाता है। इस दूसरी तहरीफ (परिवर्तन) की मिसाल यहूद हैं। उन्होंने खुदा के दीन की ऐसी ताबीर की कि वह उनकी दुनियावी जिंदगी की तस्दीक करने वाला बन जाए। मुसलमानों के लिए किताबे इलाही के मल में इस किस्म की ताबीरात दाखिल करने का मौका नहीं है। ताहम मल (मूल पाठ) के बाहर उन्हें वह सब कुछ करने की आजदी है जो पिछली कौमों ने किया।

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ۖ كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۚ تَرَىٰ كَثِيرًا مِنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنفُسُهُمْ أَن سَخِطَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خَالِدُونَ ۝ وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ مَا اثْخَبُوا أَهْلَهُمْ وَلَكِن كَثِيرًا مِنْهُمْ فَسِقُونَ ۝

बनी इस्राईल में से जिन लोगों ने कुफ्र किया उन पर लानत की गई दाऊद और ईसा इब्ने मरयम की जवान से। इसलिए कि उन्होंने नाफरमानी की और वे हद से आगे बढ़ जाते थे। वे एक दूसरे को मना नहीं करते थे बुराई से जो वे करते थे। निहायत बुरा काम था जो वे कर रहे थे। तुम उनमें बहुत आदमी देखोगे कि कुफ्र करने वालों से दोस्ती रखते हैं। कैसी बुरी चीज है जो उन्होंने अपने लिए आगे भेजी है कि खुदा का राजब हुआ उन पर और वे हमेशा अजाब में पड़े रहेंगे। अगर वे ईमान रखने वाले होते अल्लाह पर और नबी पर और उस पर जो उसकी तरफ उतरा तो वे मुक़िरो को दोस्त न बनाते। मगर उनमें अक्सर नाफरमान हैं। (78-81)

ईमान आदमी को जुल्म और बुराई के बारे में हस्सास (संवेदनशील) बना देता है। वह किसी को जुल्म और बुराई करते देखता है तो तड़प उठता है और चाहता है कि फौरन उसे रोक दे। बुरे लोगों से उसका ताल्लुक जुदाई का होता है न कि दोस्ती का। मगर जब ईमानी जच्चा कमजोर पड़ जाए तो आदमी सिर्फ अपनी जात के बारे में हस्सास होकर रह जाता है। अब उसे सिर्फ वह बुराई बुराई मालूम होती है जिसकी जद उसके अपने ऊपर पड़े। जिस बुराई का रुख दूसरों की तरफ हो उसके बारे में वह ग़ैर जानिबदार हो जाता है।

बनी इस्राईल जो इस जवाल का शिकार हुए इसका मतलब यह न था कि उन्होंने अपनी जवान से अच्छी बात बोलना छोड़ दिया था। उनके ख्वास अब भी खूबसूरत तकरीरें करते थे मगर इस मामले में वे इतने संजीदा न थे कि जब किसी को जुल्म और बुराई करते देखें तो वहां कूद पड़ें और उसे रोकने की कोशिश करें। हजरत दाऊद अपने जमाने के यहूद के बारे में फरमाते हैं कि उनमें कोई नेकोकार नहीं, एक भी नहीं (14)। मगर इसी के साथ आपके कलाम से इसकी तस्दीक होती है कि यहूद अपने हमसायों से सुलह की बातें करते थे जबकि उनके दिलों में बदी होती थी (28)। वे खुदा के आईन (विधान) को बयान करते और खुदा के अहद को जवान पर लाते (50)। हजरत मसीह अपने जमाने के यहूदियों के बारे में फरमाते हैं : ऐ रियाकार फकीहो तुम पर अफसोस, तुम बेवाओं के घरों को दबा बैठे हो और दिखावे के लिए नमाज को लंबा करते हो। तुम पैदीना और सौँफ और जीरे पर तो ज़ोर देते हो पर तुमने शरीअत की ज्यादा भारी बातों यानी इंसाफ, रहम और ईमान को छोड़ दिया है। ऐ अंधे राह बताने वाले मच्छर को छानते हो और ऊंट को निगल जाते हो। ऐ रियाकार फकीहो तुम जाहिर में तो लोगों को रास्तबाज (नेक) दिखाई देते हो मगर अंदर से रियाकारी और बेदीनी से भरे हुए हो। (मत्ता 23)

यहूद खुदा का आईन (विधान) बयान करते थे। वे लम्बी नमाजें पढ़ते और फस्तों में दसवां हिस्सा निकालते। मगर उनकी बातें सिर्फ कहने के लिए होती थीं। वह हानि रहित अहकाम पर नुमाइशी एहतमाम के साथ अमल करते मगर जब साहिबे मामला से इंसाफ करने का सवाल होता, जब एक कमजोर पर रहम का तकाज़ा होता, जब अपने नफस को कुचल कर अल्लाह के हुक्म को मानने की जरूरत होती तो वे फिसल जाते। यहां तक कि अगर कोई खुदा का बंदा उनकी गलतियों को बताता तो वे उसके दुश्मन हो जाते। यही चीज थी जिसने उन्हें लानत और राजब का मुस्तहक बना दिया।

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَوَدَّةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرِي ۚ ذَلِكَ يَأْتِي مِنْهُمْ قِيْسِينَ ۚ وَرُهْبَانًا وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝

وَإِذْ أَسْمِعُوا مَا أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا فَكُنْ بِمَعَةِ الشَّاهِدِينَ ۖ وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنُظْمُهُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبَّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ۚ فَكَأَبَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَاءَتْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۚ

ईमान वालों के साथ दुश्मनी में तुम सबसे बढ़कर यहूद और मुश्किनी को पाओगे। और ईमान वालों के साथ दोस्ती में तुम सबसे ज्यादा उन लोगों को पाओगे जो अपने को नसारा कहते हैं। यह इसलिए कि उनमें आलम और राहब हैं। और इसलिए कि वे तकबुर (धमंड) नहीं करते। और जब वे उस कलाम को सुनते हैं जो रसूल पर उतारा गया है तो तुम देखोगे कि उनकी आंखों से आंसू जारी हैं इस सबब से कि उन्होंने हक को पहचान लिया। वे पुकार उठते हैं कि ऐ हमारे रब हम ईमान लाए। पस तू हमें गवाही देने वालों में लिख ले। और हम क्यों न ईमान लाएं अल्लाह पर और उस हक पर जो हमें पहुंचा है जबकि हम यह आरजू रखते हैं कि हमारा रब हमें सालेह (नेक) लोगों में शामिल करे। पस अल्लाह उन्हें इस कौल के बदले में ऐसे बाग देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे उनमें हमेशा रहेंगे। और यही बदला है नेक अमल करने वालों का। और जिन्होंने इंकार किया और हमारी निशानियों को झुठलाया तो वही लोग दोज़ख वाले हैं। (82-86)

इस आयत में जन्नत को 'कैल' (कथन) का बदला करार दिया गया है। मगर वह कैल क्या था जिसने उसके कहने वालों को अबदी (चिरस्थायी) जन्नत का मुस्तहिक बना दिया। वह कैल उनकी पूरी हस्ती का नुमाइंदा था। वह उनकी शख्सीयत की फटन की आवाज था। उन्होंने अल्लाह के कलाम को इस तरह सुना कि उसके अंदर जो हक था उसे वह पूरी तरह पा गए। वह उनके दिल व दिमाग में उतर गया। इसने उनके अंदर ऐसा ईकिलाब बरपा किया कि उनके हौसलों और तमन्नाओं का मर्कज बदल गया। तअस्सुब और मस्लेहत की तमाम दीवारें ढह पड़ीं। उन्होंने हक के साथ अपने आपको इस तरह शामिल किया कि उससे अलग उनकी कोई हस्ती बाकी न रही। वे इसके गवाह बन गए, और गवाह बनना एक हकीकत का इंसान की सूरत में मुजस्सम होना है। कुरआन अब उनके लिए महज एक किताब न रहा बल्कि मालिके कायनात की जिंदा निशानी बन गया। यह रब्बानी तजर्बा जो उन पर गुजरा बज़हिर इस्फ़र इस्फ़र अग़ायेल्फ़ेकी सूत में हुआ था मगर उन्हेयेअस्फ़जअस्फ़ज न थे बल्कि वह एक जलजला था जिसने उनके पूरे वजूद को हिला दिया। यहां तक कि उनकी आंखों से आंसू बह पड़े।

कैल अपनी हकीकत के एतबार से किसी किस्म के ज़बानी तलफ़ुज़ (ज्वाएफ़) का नाम नहीं। वह आदमी के अमल को मअनवियत (सार्थकता) का रूप देने की आलातरीन सूरत है जिसका इज़्तियार मालूम कायनात में सिर्फ़ इंसान को हासिल है। एक हकीमी कैल सबसे ज्यादा लतीफ़ और सबसे ज्यादा बामअना वाक़या है। कैल आदमी की हस्ती का सबसे बड़ा इस्फ़र है। कैल बोलने का अमल है। इसलिए जब कोई शख्स कैल की सतह पर अपनी अवदियत (बंदा होने) का सुबूत दे दे तो वह जन्नत का यकीनी इस्तहक़क (पात्रता) हासिल कर लेता है।

हक को न मानने की सबसे बड़ी वजह हमेशा किब्र होता है। जिनके दिलों में किब्र छुपा हुआ हो वे हक की दावत के मुक़ाबले में सबसे ज्यादा सख़्त रुद्धेअमल का इस्फ़र करते हैं। और जिन लोगों के अंदर किब्र न हो, चाहे वे दूसरी किसी गुमराही में मुब्तिला हों, वे हक की

मुख़ालिफ़त में कभी इतना आगे नहीं जा सकते कि उसके जानी दुश्मन बन जाएं। और किसी हाल में उसे कुबूल न करें।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَكُلُوا مِن مَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝ لَا يُؤْخَذُ كُمْ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤْخَذُ كُمْ بِمَا عَقَدْتُمُ الْإِيمَانَ ۚ فَلَمَّا رَأَيْتُمُ اعْطَاكُمْ عَشْرَةَ مَسْكِينَ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعَمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيْلُهُ ثَلَاثَةٌ أَيَّامٍ ذَلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ ۚ وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ ۚ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

ऐ ईमान वाले, उन सुथरी चीजों को हARAM न ठहराओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं और हद से न बढ़ो। अल्लाह हद से बढ़ने वालों को पसंद नहीं करता, और अल्लाह ने तुम्हें जो हलाल चीजें दी हैं उनमें से खाओ। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो। अल्लाह तुमसे तुम्हारी बेमअना कसमों पर गिरफ्त नहीं करता। मगर जिन कसमों को तुमने मजबूत बांधा उन पर वह जल्द तुम्हारी गिरफ्त करेगा। ऐसी कसम का कफ़रा है दस मिस्कीनों को औसत दर्जे का खाना खिलाना जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या कपड़ा पहना देना या एक गर्दन आजाद करना। और जिसे मयस्सर न हो वह तीन दिन के रोजे रखे। यह कफ़रा (प्रयश्चित) है तुम्हारी कसमों का जबकि तुम कसम खा बैठो। और अपनी कसमों की हिफ़ाज़त करो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने अहक़ाम बयान करता है ताकि तुम शुक्र अदा करो। (87-89)

बंद और खुदा का तअल्लुक एक जिंदा तअल्लुक है जो नफ़िसयात की सतह पर कायम होता है। यह तमामतर एक अंदरूनी मामला है। मगर मजहब के जवाल (पतन) के जमाने में जब यह अंदरूनी तअल्लुक कमजोर पड़ता है तो लोगों में यह ज़ेहन उभरता है कि इसे वाक़्य साधनों से हासिल करने की कोशिश की जाए। इन्हीं में से दुनियावी लज्जतों को छोड़ना भी है जिसे रहबानियत (सन्ध्यास) कहा जाता है। यह ख़्याल कर लिया जाता है कि मादूदी (सांसारिक) चीजों से दूरी आदमी को खुदा से करीब करने का ज़रिया बनेगी। सहाबा में से कुछ अफ़राद इस किस्म के रहबानी ख़्यालात से मुतअस्सिर हुए। उन्होंने इरादा किया कि वे गोश्त न खाएं। रातों को न सोएं। अपने आपको ख़सी करा लें। और घरों को छोड़कर दुर्वेशी की जिंदगी इज़्तियार कर लें। यहां तक कि कुछ ने इसकी कसमें भी खा लीं। इस पर उन्हें मना किया गया और कहा गया कि हलाल को हराम करने से कोई शख्स खुदा की कुरबत हासिल

नहीं कर सकता। आदमी जो कुछ हासिल करता है फितरत की हदों में रहकर हासिल करता है न कि उससे आजाद होकर।

इस्लाम के मुताबिक अस्ल 'रहबानियत' तकवा और शुक्र है। तकवा यह है कि आदमी खुदा की मना की हुई चीजों से बचे। उसके अंदर यह ख़ातिश उभरती है कि एक हारम चीज से लज्जत हासिल करे मगर वह खुदा के डर से रुक जाता है। किसी के ऊपर गुस्सा आ जाता है और वह चाहने लगता है कि उसे तहस नहस कर दे मगर खुदा का डर उसे अपने भाई के खिलाफ तख़ीबी कार्रवाई से रोक देता है। उसका दिल कहता है कि बेक़ैद जिंदगी गुजारे मगर खुदा की पकड़ का अंदेशा उसे मजबूर करता है कि वह अपने को खुदा की मुकर्रर की हुई हदों का पाबंद बना ले। यही मामला शुक्र का है। आदमी को कोई दुनियावी चीज हासिल होती है। सेहत, दौलत, ओहदा, साजोसामान, मकबूलियत का कोई हिस्सा उसको मिलता है। मगर वह खुदपसंदी और घमंड में मुक्बिला नहीं होता बल्कि हर चीज को खुदा की देन समझ कर उसके एहसान का एतराफ करता है। वह तवाजोअ (विनम्रता) और ममनूनियत (सुशीलता) के जज्बात में ढल जाता है। यही वे चीजें हैं जो आदमी को खुदा से जोड़ती हैं। खुदा से डरने और उसका शुक्र अदा करने से आदमी उसकी क़ुवत (समीपता) हासिल करता है। माददी (भौतिक) चीजों से दूरी यकीनन मल्लूब है। मगर वह जेहनी व कल्बी (दिली) दूरी है न कि जिस्मानी दूरी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَآتِ الْآخِرَةَ وَأَطِيعُوا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَهْتَكُونَ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْغَرِّ وَالْيَمِينِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ فَكُنْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ ۚ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّكُمْ عَلَى رَسُولِنَا الْبُلْغُ الْمُبِينُ ۚ كَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَأَحْسَنُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ۝

ऐ ईमान वाले, शराब और जुआ और देव-स्थान और पांसे सब गंदे काम हैं शैतान के। पस तुम इनसे बचो ताकि तुम फलाह (कल्याण) पाओ। शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुए के जरिए तुम्हारे दर्मियान दुश्मनी और बुज (द्वेष) डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज से रोक दे। तो क्या तुम इनसे बाज आओगे। और इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूल की और बचो। अगर तुम ऐराज (उपेक्षा) करोगे तो जान लो कि हमारे रसूल के जिम्मे सिर्फ खोल कर पहुंचा देना है। जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए उन पर उस चीज में कोई गुनाह नहीं जो वे खा चुके। जबकि वे डरे और ईमान लाए और नेक काम किया। फिर डरे और ईमान लाए

फिर डरे और नेक काम किया। और अल्लाह नेक काम करने वालों के साथ मुहब्बत रखता है। (90-93)

शराब और जुआ और वे आस्ताने जो खुदा के सिवा किसी दूसरे को पूजने या किसी और के नाम पर नज़ और कुर्बानी चढ़ाने के लिए हों और पांसा यानी फलंगीरी और कुरआअंजजी (अनुमान एवं संयोग) के वे तरीके जिनमें शैर-अल्लाह से इस्तआनत (मदद) का अकीदा शामिल हो, ये सब गंदे शैतानी काम हैं। इसकी वजह यह है कि ये चीजें इंसान को जेहनी व अमली परती की तरफ ले जाती हैं। शराब आदमी के अंदर लतीफ इंसानी एहसासात को ख़त्म कर देती है और जुआ बेराजी की नफिसयात के लिए कतिल है। इसी तरह थान व पंसे वे चीजें हैं जिनकी बुनियाद या तो सतही जज्बात पर कायम होती है या अंधविश्वास पर।

इस्लाम यह चाहता है कि इंसान अल्लाह की याद करने वाला और उसकी इबादत करने वाला बन जाए। वह खुदा की और उसके पैगम्बर की इताअत में अपने को डाल दे। इन कामों के लिए आदमी का संजीदा होना ज़रूरी है। मगर मज्बूरी चीजें आदमी के अंदर से सबसे ज्यादा जो चीज ख़त्म करती हैं वह संजीदगी ही है। इस्लाम वह इंसान बनाना चाहता है जो हकीकतों का इदराक (ज्ञान) करे, जबकि शराब आदमी को हकीकतों से ग़ाफ़िल कर देने वाली चीज है। इस्लाम का मल्लूब इंसान वह है जो मादिदयत (भौतिकवाद) से बुलन्द होकर जाए, जबकि जुआ आदमी को मुजरिमाना हद तक मादिदयत की तरफ मायल कर देता है। इस्लाम वह इंसान बनाना चाहता है जो वाक़ेआत की बुनियाद पर अपने को खड़ा करे, जबकि आस्ताने और पांसे इंसान को तवह्हुमात (अंधविश्वासों) की वादियों में गुम कर देते हैं।

शराब बढ़ी हुई बेहिसी पैदा करती है और जुआ बढ़ी हुई खुदगर्जी। और ये दोनों चीजें बाहमी फसाद की जड़ हैं। जो लोग बेहिस हो जाएं वे दूसरे की इज्जत को इज्जत और दूसरे की चीज को चीज नहीं समझते। ऐसे लोग जुम, बेइसाफी, दूसरे को नाहक सताने में आखिरी हद तक जरी हो जाते हैं। इसी तरह जुआ इस्तहसाल (शोषण) और खुदगर्जी की बदतरान सूरत है जबकि एक आदमी यह कोशिश करता है कि वह बहुत से लोगों को लूटकर अपने लिए एक बड़ी कामयाबी हासिल करे। शराबी आदमी दूसरों के दुख दर्द को महसूस करने में असमर्थ होता है और जुएबाज के लिए दूसरा आदमी सिर्फ शोषण की वस्तु होता है, इन खुसूसियात के लोग जिस समाज में जमा हो जाएं वहां आपस की बेएतमादी, एक दूसरे से शिकायतें, बाहमी टकराव और दुश्मनी के सिवा और क्या चीज परवरिश पाएगी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَعْلَمَ اللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالَهُ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَخَافُ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدَىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ وَمَنْ قَتَلَهُ مِنْكُمْ مُّتَعَفِّدًا ۖ فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ هَدْيًا بَلِغَ الْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسْكِينٍ أَوْ عَدْلٌ ذَلِكُمْ صِيَامًا لَّيْذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهِ

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لَأَكُنَّ مِنَ الْعَاذِينَ ۝ وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ۝

ऐ ईमान वालो, अल्लाह तुम्हें उस शिकार के जरिए से आजमाइश में डालेगा जो बिल्कुल तुम्हारे हाथों और तुम्हारे नेजों की जद में होगा ताकि अल्लाह जाने की कौन शख्स उससे बिना देखे डरता है। फिर जिसने इसके बाद ज्यादाती की तो उसके लिए दर्दनाक अजाब है। ऐ ईमान वालो, शिकार को न मारो जबकि तुम हालते एहराम में हो। और तुममें से जो शख्स उसे जान बूझकर मारे तो इसका बदला उसी तरह का जानवर है जैसा कि उसने मारा है जिसका फैसला तुममें से दो आदिल आदमी करेंगे और यह नजराना काबा पहुंचाया जाए। या इसके कफ़ारे (प्रायश्चित्त) में कुछ मोहताजों को खाना खिलाना होगा। या इसके बराबर रोजे रखने होंगे, ताकि वह अपने किए की सजा चखे। अल्लाह ने माफ किया जो कुछ हो चुका। और जो शख्स फिरेगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा। और अल्लाह जबरदस्त है बदला लेने वाला है। (94-95)

हज या उमरे के लिए यह कयदा है कि काबा पहुंचने से पहले मुकर्रह मक़मात से एहराम बांध लिया जाता है। इसके बाद काबा तक के सफर में जानवर या चिड़ियां सामने आती हैं जिन्हें बाआसानी शिकार किया जा सकता हो। मगर ऐसे शिकार को हराम करार दिया गया है। आदमी चाहे खुद शिकार करे या दूसरे को शिकार करने में मदद दे, दोनों चीजें एहराम की हालत में नाजाइज हैं। रिवायात के मुताबिक यह आयत हुईबिया के सफर में उतरी जबकि मुसलमानों ने उमरे के इरादे से एहराम बांध रखा था। उस वक्त चिड़ियां और जानवर कसीर तादाद में इतने करीब फिर रहे थे कि बाआसानी उन्हें तीर या नेजे से मारा जा सकता था। मुसलमान उस वक्त अपनी आदत और जरूरत के तहत चाहते भी थे कि उनका शिकार करें। मगर हुक्म उतरते ही हर एक ने अपना हाथ रोक लिया। यह हुक्म जो एहराम की हालत में जानवरों के बारे में दिया गया है वही रोज़मरह की जिंदगी में आम इंसानों के साथ मल्बूब है।

इस हुक्म का अस्त मक़सद यह है कि 'अल्लाह जान ले कि कौन है जो अल्लाह को देखे बग़ैर अल्लाह से डरता है।' दुनिया में इंसान को रख कर खुदा उसकी नजरों से ओझल हो गया है। अब वह देखना चाहता है कि लोगों में कौन इतना हकीकत शनास है कि बजाहिर खुदा को न देखते हुए भी इस तरह रहता है जैसे कि वह उसे उसकी तमाम ताकतों के साथ देख रहा है और कौन इतना शाफ़िल है कि खुदा को अपने सामने न पाकर बेखौफ हो जाता है और मनमानी कार्रवाइयां करने लगता है। इसका तजर्बा हज के सफर में चन्द दिन और इंसानी तअल्लुकात में रोजाना होता है। एक आदमी किसी की जद में इस तरह आता है कि उसके लिए बिल्कुल मुमकिन हो जाता है कि वह उसकी जान पर हमला करे। वह उसे माली नुस्तान पहुंचाए। वह उसके बारे में ऐसी बात कहे जिससे उसकी रुस्वाई होती हो। अब एक शख्स वह है जो इस तरह काबू पाने के बावजूद खुदा के डर से अपनी जवान और अपने हाथ को उसके मामले में रोक लेता है। दूसरा शख्स वह है जो किसी पर काबू पाते ही उसे जलील करता है और उसे अपनी

ताकत का निशाना बनाता है। इनमें से पहले शख्स ने यह साबित किया कि वह देखे बग़ैर अल्लाह से डरता है और दूसरे ने अपने बारे में इसके बरअक्स हालत का सबूत दिया। पहले के लिए खुदा के यहां बेहिसाब इनामात हैं और दूसरे के लिए दर्दनाक अजाब।

أَحْلَلْنَا لَكُمْ صَيْدَ الْبَحْرِ وَطَعَامَهُ مَتَاعًا لَكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۖ وَحَرَّمْنَا عَلَيْكُمْ صَيْدَ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ جَعَلَ اللَّهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَمًا لِلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَائِدَ ۚ ذَلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ اْعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَبْذُرُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ۝ قُلْ لَا يَسْتَوِي الْخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ كَثُورُ الْخَبِيثَاتِ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝

तुम्हारे लिए दरिया का शिकार और उसका खाना जाइज किया गया, तुम्हारे फ़ायदे के लिए और काफिलों के लिए। और जब तक तुम एहराम में हो ख़ुश्वी का शिकार तुम्हारे ऊपर हराम किया गया। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम हाज़िर किए जाओगे। अल्लाह ने काबा, हुसमत वाले घर, को लोगों के लिए कयाम का ज़रिया बनाया। और हुसमत वाले महीनों को और कुर्बानों के जानवरों को और गले में पट्टा पड़े हुए जानवरों को भी, यह इसलिए कि तुम जानो कि अल्लाह को मालूम है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। और अल्लाह हर चीज से वाकिफ़ है। जान लो कि अल्लाह का अजाब सख़्त है और बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। रसूल पर सिर्फ़ पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम जाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो। कहो कि नापाक और पाक बराबर नहीं हो सकते, अगरचे नापाक की अधिकता तुम्हें भली लगे। पस अल्लाह से डरो ऐ अक्ल वालो, ताकि तुम फलाह पाओ। (96-100)

हालते एहराम में शिकार हराम है। मगर जो लोग दरिया या समुद्र से बैतुल्लाह (काबा) का सफर कर रहे हों उनके लिए जाइज है कि वे पानी में शिकार करें और उसे खाएं। इसकी वजह यह है कि शिकार की यह मनाही इसके अंदर किसी जाती हुसमत (मनाही) की वजह से न थी बल्कि महज 'आजमाइश' के लिए थी। इंसान को आजमाने के लिए अल्लाह ने अलामती तौर पर कुछ चीजें मुकर्र कर दीं। इसलिए जहां शारअ (ईश्वरीय विधान) ने महसूस किया कि जो चीज आजमाइश के लिए थी वह बंदों के लिए शरअ ज़रूरी मशक्कत का सबब बन जाएगी वहां कानून में नर्मी कर दी गई। क्योंकि समुद्र के सफर में अगर जादेराह

(यात्रा सामग्री) न रहे तो आदमी के लिए अपनी जिंदगी को बाकी रखने की इसके सिवा और सूरत नहीं रहती कि वह आबी जानवरों को अपनी खुराक बनाए।

काबा इस्लाम और मिलते इस्लाम का दायमी मर्कज है। काबा की तरफ रुख करने को नमाज की शर्त ठहरा कर अल्लाह ने दुनिया के एक-एक मुसलमान को काबा की मर्कजियत के साथ जोड़ दिया। फिर हज की सूरत में इसे इस्लाम का अन्तर्राष्ट्रीय इज्तिमागाह बना दिया। जियारते काबा के अन्तर्गत में जो शआइर (प्रतीक) मुकर्र किए गए हैं उनके एहतराम की वजह उनका कोई जाती तकदुस (पवित्रता) नहीं है। इसकी वजह यह है कि वह आदमी के इम्तेहान की अलामत हैं। बंदा जब इन शआइर के बारे में अल्लाह के हुक्म को पूरा करता है तो वह अपने जेहन में इस हकीकत को ताज करता है कि अल्लाह अगरचे बजहिर दिखाई नहीं देता मगर वह जिंदा मौजूद है। वह हुक्म देता है, वह बंदों की निगरानी करता है। वह हमारी तमाम हरकतों से बाखबर है। ये एहसासात आदमी के अंदर अल्लाह का डर पैदा करते हैं और उसे इस कबिल बनाते हैं कि वह जिंदगी के मुक़्तलिफ मौक़ों पर अल्लाह का सच्चा बंदा बनकर रह सके।

इंसान की यह कमजोरी है कि जिस तरफ भीड़ हो, जिधर जाहरी साजेसामान की कसरत (बहुलता) हो उसी को अहम समझ लेता है। मगर खुदा के नजदीक सारी अहमियत सिर्फ कैफियत की है। मिक्दार (मात्रा) की उसके यहां कोई कीमत नहीं। जो लोग 'कसरत' की तरफ दौड़ें और 'किरलत' (कमी) को नजदअंदाज कर दें वे अपने ख्याल से बड़ी होशियारी कर रहे हैं। मगर हकीकत के एतबार से वे इतिहाई नादान हैं। कामयाब वह है जो खुदा के डर के तहत अपना खेया मुतअय्यन करे न कि भौतिक हितों या दुनियावी अदेशों के तहत।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَن أَشْيَاءٍ إِن بُدِّلَ لَكُمْ تَسْؤُكُمْ وَإِن تَسْأَلُوا عَنْهَا حِينَ يُنْزَلُ الْقُرْآنُ تَبُدِّلُكُمْ عَفَا اللَّهُ عَنْهَا وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٠١﴾
قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّن قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا كُفْرِينَ ﴿١٠٢﴾ مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَا حَامٍ وَلَكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَكَثُرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٣﴾ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَلَوْ كَانُوا إِهَابُهُمْ لَا يَعْبُورُونَ ﴿١٠٤﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا تَعْذِرْكُمْ مَن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَىٰ ثُمَّ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾

ऐ ईमान वालो, ऐसी बातों के मुतअल्लिक सवाल न करो कि अगर वे तुम पर जाहिर कर दी जाएं तो तुम्हें गिरां गुज्रें। और अगर तुम उनके मुतअल्लिक सवाल करोगे ऐसे वक्त

में जबकि कुरआन उतर रहा है तो वे तुम पर जाहिर कर दी जाएंगी। अल्लाह ने उनसे दरगुजर किया। और अल्लाह बख्शने वाला, तहम्मूल (उदारता) वाला है। ऐसी ही बातें तुमसे पहले एक जमाअत ने पूरी। फिर वे उनके मुंकिर होकर रह गए। अल्लाह ने बहीरा और साएबा और वसीला और हाम (बुत्तों के नाम पर छोड़े हुए जानवर) मुकर्र नहीं किए। मगर जिन लोगों ने कुफ्र किया वे अल्लाह पर झूठ बांधते हैं और उनमें से अक्सर अक्ल से काम नहीं लेते। और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसकी तरफ आओ और रसूल की तरफ आओ तो वे कहते हैं कि हमारे लिए वही काफी है जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया है। क्या अगरचे उनके बड़े न कुछ जानते हों और न हिदायत पर हों। ऐ ईमान वालो, तुम अपनी फिर रखो। कोई गुमराह हो तो इससे तुम्हारा कुछ नुकसान नहीं अगर तुम हिदायत पर हो। तुम सबको अल्लाह के पास लौटकर जाना है फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। (101-105)

रिवायतों में आता है कि जब हज का हुक्म आया तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुदा देते हुए फरमाया : ऐ लोगो तुम पर हज फर्ज किया गया है। यह सुनकर कबीला बनी असद का एक शख्स उठा और कहा : ऐ खुदा के रसूल क्या हर साल के लिए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह सुनकर सख्त गजबनाक हुए और फरमाया : उस जात की कसम जिसके कब्जे मेरी जान है अगर मैं कह देता हूं तो हर साल के लिए फर्ज हो जाता और जब फर्ज हो जाता तो तुम लोग हर साल इसे कर न पाते और फिर तुम कुफ्र करते। पस जो मैं छोड़ूं उसे तुम भी छोड़ दो। जब मैं किसी चीज का हुक्म दूं तो उसे करो और जब मैं किसी चीज से रोकूं तो उससे रुक जाओ। (तफसीर इब्ने कसीर)

ऐ जरूरी सवालात में पड़ने की मनाही जो नुसूले कुरआन के वक्त थी वही आज भी मल्लूब है। आज भी सही तरीका यह है कि जो हुक्म जिस तरह दिया गया है उसे उसी तरह रहने दिया जाए। ऐ जरूरी सवालात कायम करके उसकी हदों व नियमों को बढ़ाने की कोशिश न की जाए। जो हुक्म मुज्मल (संक्षिप्त) सूरत में है उसे मुफस्सल (विस्तृत) बनाना, जो मुतलक है उसे सशर्त करना और जो चीज अनिश्चित है उसे निश्चित करने के दरेप होना दीन में ऐसा इजाफ़ है जिससे अल्लाह और रसूल ने मना फरमाया है।

किसी कैम के जो गुजरे हुए बुर्ज़ा होते हैं ज़माना गुज़रने के बाद वे मुफ़द्दस हैसियत हासिल कर लेते हैं। अक्सर गुमराहियां इन्हीं गुजरे हुए लोगों के नाम पर होती हैं। यहां तक कि अगर वे बकरी और ऊंट की ताजीम का रिवाज कायम कर गए हों तो उसे भी बाद के लोग सोचे समझे बग़ैर दोहराते रहते हैं। जिस बिगाड़ की रिवायात माजी (अतीत) के तकदुस (पवित्रता) पर कायम हों उसकी जड़ें इतनी गहरी जमी हुई होती हैं कि उससे लोगों को हटाना सख्त दुश्वार होता है। इस क्रिम की नफिसयाती पेवीदगियों से ऊपर उठना उसी वक्त मुमकिन होता है जबकि आदमी के अंदर वाकई अर्थों में यह यकीन पैदा हो जाए कि बिलआखिर उसे खुदा के सामने हाजिर होना है। ऐसा शख्स आज ही उस हकीकत को मान लेता है जिसे मौत के बाद हर आदमी मानने पर मजबूर होगा मगर उस वक्त का मानना किसी के कुछ काम न आएगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنَكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدُكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ
ذُوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ أَوْ آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ
مُصِيبَةُ الْمَوْتِ تَحْسِبُوهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمُن بِاللَّهِ إِنَّ
لَا شَيْءَ بَيْنَهُمَا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ وَلَا تَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّهُ إِذَا لَيِّنَ
الْأَثِيمَ ۖ فَإِنْ عَثَرَ عَلَىٰ أَهْمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومُونَ مَقَامَهُمَا مِنَ
الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوَّلَيْنِ فَيُقْسِمُن بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا
وَمَا اعْتَدَيْنَا ۖ إِنَّا إِذَا لَيِّنَ الظَّالِمِينَ ۖ ذَلِكَ أَذَىٰ أَنْ يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ
وُجْهِهَا أَوْ يَخَافُونَ أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانُ بَعْدَ آيْمَانِهِمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ١٠٨

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे दर्मियान गवाही वसीयत के वक्त, जबकि तुममें से किसी की मौत का वक्त आ जाए, इस तरह है कि दो मोतबर (विश्वसनीय) आदमी तुममें से गवाह हों। या अगर तुम सफर की हालत में हो और वहां मौत की मुसीबत पेश आ जाए तो तुम्हारे गैरों में से दो गवाह ले लिए जाएं। फिर अगर तुम्हें शुबह हो जाए तो दोनों गवाहों को नमाज के बाद रोक लो और वे दोनों खुदा की कसम खाकर कहें कि हम किसी कीमत के ऐवज इसे न बेचेंगे चाहे कोई संबंधी ही क्यों न हो। और न हम अल्लाह की गवाही को छुपाएंगे। अगर हम ऐसा करें तो वेशक हम गुनाहगार होंगे। फिर अगर पता चले कि उन दोनों ने कोई हकतल्फी की है तो उनकी जगह दो और शख्स उन लोगों में से खड़े हों जिनका हक पिछले दो गवाहों ने मारना चाहा था। वे खुदा की कसम खाएं कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से ज्यादा बरहक है और हमने कोई ज्यादाती नहीं की है। अगर हम ऐसा करें तो हम जालिमों में से होंगे। यह करीबतरीन तरीका है कि लोग गवाही ठीक दें। या इससे उरे कि हमारी कसम उनकी कसम के बाद उल्टी पड़ेगी। और अल्लाह से डरो और सुनो। अल्लाह नाफरमानों को सीधी राह नहीं चलाता। (106-108)

एक आदमी सफर करता है और उसके साथ माल है। रास्ते में उसकी मौत का वक्त आ जाता है। अब अगर वह अपने करीब दो मुसलमान पाए तो उन्हें अपना माल दे दे और उसके बारे में उन्हें वसीयत कर दे। अगर दो मुसलमान बरवक्त न मिलें तो गैर मुस्लिमों में से दो आदमियों के साथ यही मामला करे। ये दो साहिबान माल लाकर उसे वारिसों के हवाले करें। इस वक्त वारिसों को अगर उनके बयान के बारे में शुबह हो जाए तो किसी

नमाज के बाद मस्जिद में इन गवाहों को रोक लिया जाए। यह दोनों शख्स आम मुसलमानों के सामने कसम खाएं कि उन्होंने मरने वाले की तरफ से जो कुछ कहा सही कहा। अगर वारिस उसके हल्फिया बयान पर मुतमइन न हों तो वारिसों में से दो आदमी अपनी बात के हक में कसम खाएं और फिर उनकी कसम के मुताबिक फैसला कर दिया जाए। वारिसों को यह हक देना गोया एक ऐसी रोक कायम करना है कि कोई खियानत करने वाला खियानत करने की जुरत न कर सके।

शरीअत में एक मस्लेहत यह मल्हूज रखी गई है कि रोज मरह के मामलात में ऐसे अहकाम दिए जाएं जो आदमी की वसीअतर जिंदगी के लिए सबक हों। किसी शख्स के मरने के बाद उसके माल का हकदारों तक पहुंचना एक खानदानी और मआशी (आर्थिक) मामला है। मगर इसे दो अहम बातों की तर्बियत का जरिया बना दिया गया। एक यह कि लोगों में यह मिजाज बने कि मामलात में ये तअल्लुक और रिश्तेदारी का लिहाज न करें बल्कि सिर्फ हक का लिहाज करें। वे यह देखें कि हक क्या है न यह कि बात किसके मुताफिक जा रही है और किसके खिलाफ। दूसरे यह कि हर बात को खुदा की गवाही समझना। कोई बात जो आदमी के पास है वह खुदा की एक अमानत है। क्योंकि आदमी ने उसे खुदा की दी हुई आंख से देखा और खुदा के दिए हुए हफिजे में उसे महफूज रखा। और अब खुदा की दी हुई जवान से वह उसके मुतअल्लिक एलान कर रहा है। ऐसी हालत में यह अमानत में खियानत होगी कि आदमी बात को उस तरह बयान न करे जैसा कि उसने देखा और जिस तरह उसके हफिजे ने उसे महफूज रखा।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّاكَ أَنْتَ عَلَّامُ
الْغُيُوبِ ۖ إِذْ قَالَ اللَّهُ يٰعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ادْكُرْ نِعْمَتِي عَلَيْكَ وَعَلَىٰ وَالِدَتِكَ
إِذْ آتَيْنَاكَ بُرُوجَ الْقُدُسِ تَدْكُرُ الْمَلَأْسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَإِذِ اعْتَمَسَتْكَ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالْقُرْآنَ وَالْإِنْجِيلَ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ
بِإِذْنِي فَتَنفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي وَتُتْرَىٰ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي ۖ
وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِي وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ١٠٩

जिस दिन अल्लाह पैगम्बरों को जमा करेगा फिर पूछेगा तुम्हें क्या जवाब मिला था। वह कहेंगे हमें कुछ इल्म नहीं, छुपी हुई बातों को जानने वाला तू ही है। जब अल्लाह कहेगा ऐ ईसा इन्ने मरयम, मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर और तुम्हारी मां पर किया जबकि मैंने रूहे पाक से तुम्हारी मदद की। तुम लोगों से कलाम करते थे गोद में भी और बड़ी उम्र में भी। और जब मैंने तुम्हें किताब और हिक्मत और तौरात और

इंजील की तालीम दी। और जब तुम मिट्टी से परिंदे जैसी सूरत मेरे हुक्म से बनाते थे फिर उसमें फूंक मारते थे तो वह मेरे हुक्म से परिंदा बन जाती थी। और तुम अंधे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से अच्छा कर देते थे। और जब तुम मुर्दों को मेरे हुक्म से निकाल खड़ा करते थे। और जब मैंने बनी इस्राईल को तुमसे रोका जबकि तुम उनके पास खुली निशानियां लेकर आए तो उनके मुंकिरों ने कहा यह तो बस एक खुला हुआ जादू है। (109-110)

पैगम्बरों पर जो लोग ईमान लाए, बाद के जमाने में सबके अंदर बिगाड़ पैदा हुआ। उन्होंने अपने तौर पर एक दीन बनाया और उसे अपने पैगम्बर की तरफ मंसूब कर दिया। इसके बावजूद हर गिरोह अपने आपको अपने पैगम्बर की उम्मत शुमार करता रहा। हालांकि पैगम्बर की अस्ल तालीमात से हटने के बाद उसका पैगम्बर से कोई तअल्लुक बाकी न रहा था। यहूदी अपने को हजरत मूसा की तरफ मंसूब करते हैं और ईसाई अपने को हजरत ईसा की तरफ। हालांकि उनके प्रचलित दीन का खुदा के इन पैगम्बरों से कोई तअल्लुक नहीं। यह हकीकत मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में छुपी हुई है। मगर कियामत के दिन वह खोल दी जाएगी। उस दिन खुदा तमाम पैगम्बरों को और इसी के साथ उनकी उम्मतों को जमा करेगा। उस वक्त उम्मतों के सामने उनके पैगम्बरों से पूछा जाएगा कि तुमने अपनी उम्मतों को क्या तालीम दी और उम्मतों ने तुम्हारी तालीमात को किस तरह अपनाया। इस तरह हर उम्मत पर उसके पैगम्बर की मौजूदगी में वाजेह किया जाएगा कि उसने खुदा के दीन के मामले में अपने पैगम्बर की क्या-क्या खिलाफत की है और किस तरह खुदसाखा (स्वनिर्मित) दीन को उनकी तरफ मंसूब किया है।

इन्हीं पैगम्बरों में से एक मिसाल हजरत ईसा की है जो ख़ातमुन्नबिख़ीन (अंतिम नबी) और आप से पहले के नबियों की दर्मियानी कड़ी हैं। हजरत ईसा को इतिहाई खुसूसी मौजिजे (चमत्कार) दिए गए। आप पर ईमान लाने वाले बहुत कम थे और आपके मुख़ालिफ़ीन (यहूद) को हर तरह का दुनियावी जोर हासिल था। इसके बावजूद वे हजरत ईसा का कुछ नुस्सान न कर सके और न आपके साथियों को ख़त्म करने में कामयाब हुए। इन मौजिजात का नतीजा यह होना चाहिए था कि लोग आपके लिए हुए दीन को मान लेते। मगर अमलन यह हुआ कि आपके मुख़ालिफ़ीन ने यह कह कर आपको नजरअंदाज कर दिया कि वह जो मौजिजे दिखा रहे हैं वह सब जादू का करिश्मा है। और जो लोग आप पर ईमान लाए उन्होंने बाद के जमाने में आपको खुदाई का दर्जा दे दिया। कियामत के दिन आपकी पैरवी का दावा करने वालों के सामने यह हकीकत खोल दी जाएगी कि हजरत ईसा ने जो कमालात दिखाए वे सब खुदा के हुक्म से थे। आपके दुश्मनों ने आपको जिन ख़तरात में डाला उनसे भी अल्लाह ही ने आपको बचाया। जब सूरतेहाल यह थी और हजरत ईसा खुद सामने खड़े होकर इसकी तस्दीक कर रहे हैं तो अब उनके उम्मती बताएं कि उन्होंने आपकी तरफ जो दीन मंसूब किया वह किसने उन्हें दिया था।

وَإِذْ أُوحِيَتْ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا إِنَّا كُنَّا نَسْتَشْفَعُ بِكَ يَا مَسْلُومٌ ۖ إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَعْيسَى ابْنُ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنْزِلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ قَالِ اتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۝ قَالُوا نُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتُنَا ۖ وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عَيْدًا لِأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِنْكَ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝ قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنْزِلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ فَإِنِّي آعِذُ بِهِ عَذَابًا لَّا أَعِدُّ لَهُ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ ۝

और जब मैंने हवारियों (साथियों) के दिल में डाल दिया कि मुझ पर ईमान लाओ और मेरे रसूल पर ईमान लाओ तो उन्होंने कहा कि हम ईमान लाए और तू गवाह रह कि हम फरमावरदार हैं। जब हवारियों ने कहा कि ऐ ईसा इब्ने मरयम, क्या तुम्हारा रब यह कर सकता है कि हम पर आसमान से एक ख़ान (भोजन भरा थाल) उतारे। ईसा ने कहा अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो। उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि हम उसमें से खाएं और हमारे दिल मुतमइन (संमुष्ट) हों और हम यह जान लें कि तूने हमसे सच कहा और हम उस पर गवाही देने वाले बन जाएं। ईसा इब्ने मरयम ने दुआ कि ऐ अल्लाह, हमारे रब, तू आसमान से हम पर एक ख़ान उतार जो हमारे लिए एक ईद बन जाए, हमारे अगलों के लिए और हमारे पिछलों के लिए और तेरी तरफ से एक निशानी हो। और हमें अता कर, तू ही बेहतरीन अता करने वाला है। अल्लाह ने कहा मैं यह ख़ान जरूर तुम पर उतारूंगा। फिर इसके बाद तुममें से जो शख्स मुंकिर होगा उसे मैं ऐसी सजा दूंगा जो दुनिया में किसी को न दी होगी। (111-115)

लोगों को हक की तरफ पुकारने का काम अगरचे दाजी (आह्वानकती) अंजाम देता है मगर पुकार पर लब्बैक कहना हमेशा खुदा की तौफ़ीक से होता है। दावत की सदाकत को दलीलों से जान लेने के बाद भी बहुत सी रुकावटें बाकी रहती हैं जो आदमी को उसकी तरफ बढ़ने नहीं देतीं। दाजी का एक आम इंसान की सूरत में दिखाई देना, यह अंदेशा कि दावत (आह्वान) कुबूल करने के बाद जिंदगी का बना बनाया ढांचा टूट जाएगा, यह सवाल कि अगर यह सच्चाई है तो फलां-फलां बड़े लोग क्या सच्चाई से महरूम थे, वगैरह। यह एक इतिहाई नाजुक मोड़ होता है जहां आदमी पैसले के किनारे पहुंच कर भी पैसला नहीं कर पाता। यही वह मकाम है जहां खुदा उसकी मदद करता है। जिस शख्स के अंदर वह कुछ खैर

(भलाई) देखता है उसका हाथ पकड़ कर उसे शुबह की सरहद पार करा देता है और उसे यकीन के दायरे में दाखिल कर देता है।

खुदा की तरफ से हर वक्त इंसान को रिज्क फ़राहम किया जा रहा है। यहां तक कि पूरी जमीन इंसान के लिए रिज्क का दस्तरख़ान बनी हुई है। मगर मोमिनीने मसीह ने आसमान से खाना उतारने का मुतालबा किया तो उन्हें सख़्त तबीह की गई। इसकी वजह यह है कि आम हालात में हमें जो रिज्क मिलता है वह असबाब के पर्दे में मिल रहा है। जबकि मोमिनीने मसीह का मुतालबा यह था कि असबाब का पर्दा हटा कर उनका रिज्क उन्हें दिया जाए। यह चीज अल्लाह की सुन्नत के खिलाफ है। क्योंकि अगर असबाब का जाहिरी पर्दा हटा दिया जाए तो इस्तेहान किस बात का होगा।

हकीकत यह है कि खेत से लहलहाती हुई फ़सल का पैदा होना या मिट्टी के अंदर से एक शादाब दरख़्त का निकल कर खड़ा हो जाना भी इसी तरह मोज़िजा (चमत्कार) है जिस तरह बादलों में होकर किसी ख़ान का हमारी तरफ आना। मगर इन वाक़ेयात का मोज़िजा होना हमें इसलिए नजर नहीं आता कि वे पर्दे में होकर जाहिर हो रहे हैं। आदमी का इस्तेहान यह है कि वह पर्दे को फ़ाड़कर हकीकत को देख सके। वह 'जमीन' से निकलने वाले रिज्क को 'आसमान' से उतरने वाले रिज्क के रूप में पा ले। अगर कोई शख्स यह मुतालबा करे कि मैं देख कर मानूंगा तो गोया वह कह रहा है कि इस्तेहान से गुज़रे बग़ैर मैं खुदा की रहमत में दाखिल हूंगा। हालांकि खुदा की सुन्नत के मुताबिक ऐसा होना मुमकिन नहीं।

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يُعِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ أَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأَهْلِي الْهَيْئَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ
فَقَدْ عَلِمْتَهُ تَعَلَّمَ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ إِنْ كُنْتُ أَعْلَمُ
الْغُيُوبِ ۖ مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنْ أَعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ وَكُنْتُ
عَلَيْهِمْ شَهِيدًا ۖ أَتَادُمُّ فِيهِمْ فَالْتَمِزْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبُ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۖ إِنْ تَعَذَّبْهُمْ فَاتَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ
أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۖ قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ
ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۖ لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ وَهُوَ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ

और जब अल्लाह पूछेगा कि ऐ ईसा इब्ने मरयम क्या तुमने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी मां को खुदा के सिवा माबूद (पूज्य) बनालो। वह जवाब देंगे कि तू पाक है, मेरा यह काम न था कि मैं वह बात कहूं जिसका मुझे कोई हक नहीं। अगर मैंने यह कहा होगा तो तुझे जरूर मालूम होगा। तू जानता है जो मेरे जी में है और मैं नहीं जानता जो तेरे जी में है। वेशक तू ही है छुपी बातों का जानने वाला। मैंने उनसे वही बात कही जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था। यह कि अल्लाह की इबादत करो जो मेरा رب है और तुम्हारा भी। और मैं उन पर गवाह था जब तक मैं उनमें रहा। फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो उन पर तू ही निगरां था और तू हर चीज पर गवाह है। अगर तू उन्हें सजा दे तो वे तेरे बंदे हैं और अगर तू उन्हें माफ कर दे तो तू ही जबरदस्त है हकिमत वाला है। अल्लाह कहेगा कि आज वह दिन है कि सच्चाओं को उनका सच काम आएगा। उनके लिए बाग हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राजी हुआ और वे अल्लाह से राजी हुए। यही है बड़ी कामयाबी। आसमानों और जमीन में और जो कुछ उनमें है सबकी बादशाही अल्लाह ही के लिए है और वह हर चीज पर क़ादिर है। (116-120)

क़ियामत जब आएगी तो हकीकतें इस तरह खुल जाएंगी कि आदमी बग़ैर बताए हुए यह जान लेगा कि सच क्या है और ग़लत क्या। लोग अपनी आंखों से देख रहे होंगे कि सारी ताकतें सिर्फ एक अल्लाह को हासिल हैं। ख़ालिक और मालिक, माबूद और मलूब होने में कोई भी उसका शरीक नहीं। उसके सिवा किसी को न कोई ताकत हासिल है और न उसके सिवा कोई इस काबिल है कि उसकी इबादत व इत्ताअत की जाए। ऐसी हालत में जब खुदा अपने पैग़म्बरों से पूछेगा कि मैंने तुम्हें क्या पैग़ाम देकर दुनिया में भेजा था तो यह एक ऐसी बात का पूछना होगा जो पहले ही लोगों के लिए मालूम बन चुकी होगी। इस सवाल का जवाब उस वक्त इतना खुला हुआ होगा कि किसी के बोले बग़ैर क़ियामत का पूरा माहौल इसका जवाब पुकार रहा होगा। यह सवाल व जवाब महज लोगों की रुस्वाई में इजाफ़ा करने के लिए होगा। वह इसलिए होगा कि पैग़म्बरों के सामने खड़ा करके लोगों पर वाजेह किया जाएगा कि पैग़म्बरों के नाम पर जो दीन तुमने बना रखा था वह उनकी हकीकी तालीमात से कोई तअल्लुक नहीं रखता था।

यह दुनिया इस्तेहान के लिए बनाई गई है। इसलिए यहां हर एक को आजादी है। यहां आदमी खुदा व रसूल की तरफ ऐसा दीन मंसूब करके भी फल फूल सकता है जिसका खुदा व रसूल से कोई तअल्लुक न हो। यहां फर्जी उम्मीदों और झूठी आरुखों पर भी जन्नत को अपना हक साबित किया जा सकता है। यहां यह मुमकिन है कि आदमी अपनी क़यादत (नेतृत्व) के हंगामें खड़े करे और यह साबित करे कि जो कुछ वह कर रहा है वही ऐन खुदा का दीन है। मगर क़ियामत में इस क़िस्म की कोई चीज काम आने वाली नहीं। क़ियामत में जो चीज काम आएगी वह सिर्फ यह कि आदमी खुदा की नजर में सच्चा साबित हो। आसमानों किताब की हामिल कौमों का इस्तेहान यह नहीं है कि वे ईमान की दावेदार बनती हैं या नहीं। उनका इस्तेहान यह है कि वे अपने ईमान के दावे को सच्चा साबित करती हैं या नहीं।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ وَالنُّورَ ثُمَّ الَّذِينَ
كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ثُمَّ قَضَىٰ أَجَلَآ
وَأَجَلَ مُّسَمًّى ۖ ثُمَّ أَنْتُمْ تَمْتَرُونَ ۝ وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ
وَفِي الْأَرْضِ يُعَلِّمُ بَيِّنَاتٍ لِّكُمْ وَيُعَلِّمُ مَا لَا تَكْسِبُونَ ۝

आयतें 165

सूरह-6. अल-अनआम

रुकूअ 20

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।
तारीफ अल्लाह के लिए है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया और तारीकियों
और रोशनी को बनाया। फिर भी मुंकिर लोग दूसरों को अपने रब का हमसर ठहराते
हैं। वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर एक मुद्दत मुकर्र की और मुकर्रह
मुद्दत उसी के इल्म में है। फिर भी तुम शक करते हो। और वही अल्लाह आसमानों
में है और वही जमीन में। वह तुम्हारे छुपे और खुले को जानता है और वह जानता है
जो कुछ तुम करते हो। (1-3)

आसमान और जमीन का निजाम अपनी सारी वुस्तों (व्यापकताओं) के बावजूद इतना
मरबूत (सुगठित) और इतना वहदानी (एकीय) है कि वह पुकार रहा है कि उसका खालिक
और मुंतजिम एक खुदा के सिवा कोई और नहीं हो सकता। फिर जमीन व आसमान की यह
कायनात अपने फैलाव और अपनी हिक्मत व सार्थकता के एतबार से नाकाविले कयास हद
तक अजीम है। सूरज के रोशन ग्रह के गिर्द ख़ला (अंतरिक्ष) में जमीन की हद दर्जा मुनज्जम
गर्दिश और उससे जमीन की सतह पर रोशनी और तारीकी और दिन और रात का पैदा होना
इंसान के तमाम कयास व गुमान से कहीं ज्यादा बड़ा वाक्या है। अब जो खुदा इतने बड़े
कायनाती कारखाने को इतने बाकमाल तरीके पर चला रहा है उसकी जात में वह कौन सी
कमी हो सकती है जिसकी तलाफी के लिए वह किसी को अपना शरीक ठहराए। हकीकत यह
है कि हमारी दुनिया और उसके अंदर कायमशुदा हैरतनाक निजाम खुद ही इस बात का सुबूत
है कि इसका खुदा सिर्फ एक है और यही निजाम इस बात का भी सुबूत है कि यह खुदा इतना
अजीमुश्शन है कि उसे अपनी तल्लीक और इंतजाम में किसी मददगार की जरूरत नहीं।

मौजूदा दुनिया की उम्र महदूद है। यहां दुख से ख़ाली ज़िंदगी मुमकिन नहीं। यहां हर
खुशगवारी के साथ नाखुशगवारी का पहलू लगा हुआ है। यहां शर को ख़ैर से और ख़ैर को
शर से जुदा नहीं किया जा सकता। ऐसी हालत में आदमी की समझ में नहीं आता कि आखिरत
की अबदी दुनिया जो हर किस्म के दुख-तकलीफ (फ़ातिर 34) से ख़ाली होगी कैसे बन जाएगी।

अगर किसी और माददे से आखिरत की दुनिया बनने वाली हो तो इंसान उससे वाकिफ नहीं
और अगर इसी दुनिया के माददे से वह दूसरी दुनिया बनने वाली है तो इस दुनिया के अंदर
उस किस्म की एक कामिल दुनिया को वजूद में लाने की सलाहियत नहीं।

मगर सवाल करने वाले का खुद अपना वजूद ही इस सवाल का जवाब देने के लिए
काफ़ी है इंसान का जिस पूरा का पूरा मिट्टी (जमीनी अज्जा) से बना है, मगर उसके अंदर
ऐसी मुंफरिद (विशिष्ट) सलाहियतें हैं जिनमें से कोई सलाहियत भी मिट्टी के अंदर नहीं।
आदमी सुनता है, वह बोलता है, वह सोचता है, वह तरह-तरह के हैरतनाक अमल अंजाम देता
है। हालांकि वह जिस मिट्टी से बना है वह इस किस्म का कोई भी अमल अंजाम नहीं दे
सकती। जमीनी अज्जा से हैरतअजीज तौर पर एक ग़ैर जमीनी मख़्ख़क बन कर खड़ी हो गई
है। यह एक ऐसा तजर्बा है जो हर रोज आदमी के सामने आ रहा है। ऐसी हालत में कैसी
अजीब बात है कि आदमी आखिरत के वाकेअ (घटित) होने पर शक करे। अगर मिट्टी से
जीता जागता इंसान निकल सकता है। अगर मिट्टी से खुशबूदार फूल और जायकेदार फल
बरांमद हो सकते हैं तो हमारी मौजूदा दुनिया से एक और ज्यादा कामिल और ज्यादा मेयारी
दुनिया क्यों जाहिर नहीं हो सकती।

وَمَا أَتَيْنَهُمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۖ فَقَدْ كَذَّبُوا
بِالْحَقِّ لَتَأْتِيَهِمْ قَسُوفٌ يَأْتِيهِمْ أَنْبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا كَمْ
أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ مَكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ يُمَكِّنْ لَكُمْ ۖ وَأَرْسَلْنَا
السَّمَاءَ عَلَيْهِمْ مِدْرَارًا ۖ وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ
بِذُنُوبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝

और उनके रब की निशानियों में से जो निशानी भी उनके पास आती है वे उससे
एराज(उपेक्षा) करते हैं। चुनांचे जो हक उनके पास आया है उसे भी उन्होंने झुठला दिया।
पस अनक़रीब उनके पास उस चीज की ख़बरे आएंगी जिसका वह मज़क उड़ते थे।
क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी कौमों को हलाक कर दिया। उन्हें
हमने जमीन में जमा दिया था जितना तुम्हें नहीं जमाया। और हमने उन पर आसमान
से ख़ूब बारिश बरसाई और हमने नहरें जारी कीं जो उनके नीचे बहती थीं फिर हमने
उन्हें उनके गुनाहों के सबब हलाक कर डाला। और उनके बाद हमने दूसरी कौमों को
उठाया। (4-6)

खुदा और आखिरत की दावत जो खुदा की बराहेरास्त ताईद से उठी हो उसके साथ
वाजेह अलामतें होती हैं जो इस बात का एलान कर रही होती हैं कि यह एक सच्ची दावत
है और खुदा की तरफ से है। उसका उस फितरत के अंदाज पर होना जिस पर खुदा की अबदी
दुनिया का निजाम कायम है। उसका ऐसी दलीलों की बुनियाद पर उठना जिसका तोड़ किसी

मक्का के लोग कहते थे कि पैगम्बर अगर खुदा की तरफ से उसकी पैगाम्बरी के लिए **युद्ध** किया गया है तो उसके साथ खुदा के फरिश्ते क्यों नहीं जो उसकी तस्दीक करें। इस किस्म की बातें आदमी इसलिए कहता है कि वह दावत (आह्वान) के मामले में संजीदा नहीं होता। अगर वह संजीदा हो तो उसे फौरन मालूम हो जाए कि यह दुनिया इस्तेहान की दुनिया है। इस्तेहान उसी वक्त हो सकता है जबकि शैबी हकीकतों पर पर्दा पड़ चुका हो। अगर शैबी हकीकतें खुल जाएं और खुदा और उसके फरिश्ते सामने आ जाएं तो फिर पैगम्बरी और दावतारसानी का कोई सवाल ही नहीं होगा। क्योंकि इसके बाद किसी को यह जुर्रत ही न होगी कि वह हकीकतों का इंकार कर सके। मौजूदा दुनिया में लोग अपनी जाहिरपरस्ती की वजह से खुदा के दाओं को उसकी बातों की अज्मत में नहीं देख पाते, वे उसका अंदाजा सिर्फ उसके जाहिरी पहलू के एतबार से करते हैं और जाहिरी एतबार से ग़ैर अहम पाकर उसका इंकार कर देते हैं। यहाँ तक कि वे उसका मज़ाक उड़ाने लगते हैं। खुदा के दाओं का मामला उन्हें ऐसा मालूम होता है जैसे एक मामूली आदमी अचानक उठकर बहुत बड़ी हैसियत का दावा करने लगे।

इस दुनिया में दावतारसानी का सारा मामला खुदा के समरूपता के नियम के तहत होता है। यहाँ हक के ऊपर शुबह का एक पहलू रखा गया है ताकि आदमी इस्तेहान के तर्कों के साथ कुछ इंकार के कारण भी पा सकता हो। आदमी का अस्ल इस्तेहान यह है कि वह इस शुबह के पर्दे को फाड़कर अपने को यकीन के मकाम पर पहुंचाए। वह शुबह के पहलुओं को मिटाकर यकीन के पहलुओं को ले ले। आदमी का अस्ल इस्तेहान यह है कि वह देखे बग़ैर माने। जब हकीकत को दिखा दिया जाए तो फिर मानने की कोई कीमत नहीं।

قُلْ لِمَنْ تَأْفِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ قُلْ لِلَّهِ كُتِبَ عَلَى نَفْسِهِ الرَّحْمَةُ لِيَجْمَعَ كُفْرَهُ
 إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ① وَلَهُ
 مَا سَكَنَ فِي الْبَيْتِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ② قُلْ أَعَزُّ لِلَّهِ الْخِزْيُ وَلِيًّا
 فَاطِرِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُهُ وَلَا يَطْعَمُهُ قُلْ إِنِّي أَمُوتُ وَأَكُونُ أَوَّلَ
 مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ③ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ
 رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ④ مَنْ يُضَرْفُ عَنْهُ يَوْمٌ فَقَدْ رَحِمَهُ ⑤
 وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ⑥

पूछो कि किसका है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। कहो सब कुछ अल्लाह का है। उसने अपने ऊपर रहमत लिख ली है। वह जरूर तुम्हें जमा करेगा कियामत के दिन, इसमें कोई शक नहीं। जिन लोगों ने अपने आपको घाटे में डाला वही हैं जो इस पर ईमान नहीं लाते। और अल्लाह ही का है जो कुछ ठहरता है रात में और जो कुछ दिन में। और वह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है। कहो, क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को मददगार बनाऊं जो बनाने वाला है आसमानों और जमीन का। और वह सबको खिलाता है और उसे कोई नहीं खिलाता। कहो मुझे हुक्म मिला है कि मैं सबसे पहले इस्लाम लाने वाला बनूँ और तुम हरगिज मुश्किलों में से न बनो। कहो अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूँ तो मैं एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूँ। जिस शख्स से वह उस रोज हटा लिया गया उस पर अल्लाह ने बड़ा रहम फरमाया और यही खुली कामयाबी है। (12-16)

इंसान खुले हुए हक का इंकार करता है। वह ताकत पाकर दूसरों को जलील करता है। एक इंसान दूसरे इंसान को अपने जुल्म का निशाना बनाता है। ऐसा क्यों है। क्या इंसान को इस दुनिया में मुक्तकदम्बर (निरंकुश सत्ता) हासिल है। क्या यहां उसका कोई हाथ पकड़ने वाला नहीं। क्या खुदा के यहां तजाद (अन्तर्विरोध) है कि उसने बाकी दुनिया को रहमत व मअनवियत (सार्थकता) से भर रखा है और इंसान की दुनिया को जुल्म और बेइसाफी से। ऐसा नहीं है। जो खुदा जमीन व आसमान का मालिक है वही खुदा उस मख़बूक का मालिक भी है जो दिन को मुतहरिक (गतिवान) होती है और रातों को करार पकड़ती है। खुदा जिस तरह बाकी कायनात के लिए सरापा रहमत है उसी तरह वह इंसानों के लिए भी सरापा रहमत है। फर्क यह है कि बाकी दुनिया में खुदा की रहमतों का जुहूर अव्वल दिन से है और इंसान की दुनिया में उसकी रहमतों का कामिल जुहूर कियामत के दिन होगा।

इंसान इरादी मख़बूक है और उससे इरादी इबादत मल्लूब है। इसी से यह बात निकलती है कि जो लोग अपने इरादे का सही इस्तेमाल न करें वे इस काबिल नहीं कि उन्हें खुदा की

रहमतों में हिस्सेदार बनाया जाए। क्योंकि उन्होंने अपने मक्सदे तख़लीक को पूरा न किया। आजमाइशी मुददत पूरी होने के बाद सारे लोग एक नई दुनिया में जमा किए जाएंगे। उस दिन खुदा उसी तरह दुनिया का निजाम अपने हाथ में लेगा जिस तरह आज वह बाकी कायनात का इतिजाम अपने हाथ में लिए हुए है। उस रोज खुदा के इंसाफ का तराजू खड़ा होगा। उस दिन वे लोग सरफ़ाज (लाभावित) हों जिन्होंने हकीकते वाक्या का एतराफ करके अपने को खुदाई इताअत में दे दिया। और वे लोग घाटे में रहेंगे जिन्होंने हकीकते वाक्या का एतराफ नहीं किया और खुदा की दुनिया में सरकशी और हठधर्मी के तरीके पर चलते रहे।

इंसान जब भी सरकशी करता है किसी बरते (आधार) पर करता है। मगर जिन चीजों के बरते पर इंसान सरकशी करता है उनकी इस कायनात में कोई हकीकत नहीं। यहां हर चीज बेजेर है जेर वाला सिर्फ एक खुदा है। सब उसके मोहताज हैं और वह किसी का मोहताज नहीं। इसलिए पैसले के दिन वही शख्स बामुराद होगा जिसने हकीकी सहारे को अपना सहारा बनाया होगा, जिसने हकीकी दीन को अपनी जिंदगी के दीन की हैसियत से इख्तियार किया होगा।

وَأِنْ يَّمْسَسْكَ اللَّهُ بِخَيْرٍ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ
 عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ① وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ② قُلْ أَمْرٌ
 شَيْءٌ أَكْبَرُ شَهَادَةً قُلْ اللَّهُ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَذَا الْقُرْآنُ
 لِأُنذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ بَلَغَ ③ إِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ قُلْ
 لَا أَشْهَدُ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ وَإِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ④

और अगर अल्लाह तुझे कोई दुख पहुंचाए तो उसके सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं। और अगर अल्लाह तुझे कोई भलाई पहुंचाए तो वह हर चीज पर कादिर है। और उसी का जोर है अपने बंदों पर। और वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला सबकी खबर रखने वाला है, तुम पूछो कि सबसे बड़ा गवाह कौन है। कहो अल्लाह, वह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाह है और मुझ पर यह कुरआन उतरा है ताकि मैं तुम्हें इससे खबरदार कर दूँ और उसे जिसे यह पहुंचे। क्या तुम इसकी गवाही देते हो कि खुदा के साथ कुछ और माबूद भी हैं। कहो, मैं इसकी गवाही नहीं देता। कहो, वह तो बस एक ही माबूद है और मैं बरी हूँ तुम्हारे शिर्क से। (17-19)

हमारे सामने जो अजीम कायनात फैली हुई है उसके मुख्तलिफ अज्जा आपस में इतने ज्यादा मरबूत (सुयवस्थित) हैं कि यहां किसी एक वाक्ये को जुहूर में लाने के लिए भी पूरी कायनात की कार्यप्रणाली जरूरी है। इस कारण कोई भी इंसान किसी वाक्ये को जुहूर में लाने पर कादिर नहीं। क्योंकि कोई भी इंसान कायनात के ऊपर काबूपाता नहीं। यहां एक छोटी सी चीज भी उस वक्त वजूद में आती है जबकि बेशुमार आलमी असबाब उसकी पुश्त

पर जमा हो गए हों। और खुदा के सिवा कोई नहीं जो इन असबाब पर हुक्मरां हो। कायनाती असबाब के दर्मियान आदमी सिर्फ एक हकीर इरादे का मालिक है। हकीकत यह है कि इस दुनिया में किसी को कोई सुख मिले या किसी को कोई दुख पहुंचे, दोनों ही बराबरास्त खुदा की इजाजत के तहत होते हैं। ऐसी हालत में किसी का यह सोचना भी हिमाकत है कि वह किसी को आबाद या बर्बाद कर सकता है। और यह बात भी हास्यास्पद हद तक निरर्थक है कि खुदा के सिवा भी कोई है जिससे आदमी डरे या खुदा के सिवा कोई है जिससे वह अपनी उम्मीदें वाबस्ता करे।

दुनिया में अहले हक और अहले बातिल के दर्मियान जो कशमकश जारी है इसमें पैसलाकुन चीज सिर्फ खुदा की किताब है। खुदा के सिवा किसी को हक़इक (यथार्थ) का इल्म नहीं, और खुदा के सिवा किसी को किसी किस्म का जोर हासिल नहीं। इसलिए खुदा ही वह हस्ती है जो इस झगड़े में वाहिद सालिस (मध्यस्थ) है। और खुदा ने कुरआन की सूत में यह सालिस लोगों के दर्मियान रख दिया है अब आदमी के सामने दो ही रास्ते हैं। अगर वह कुरआन की सदाकत से बेखबर है तो वह तहकीक करके जाने कि क्या वाकई वह खुदा की किताब है। और जब वह जान ले कि वह वास्तव में खुदा की किताब है तो उसे लाजिमन उसके पैसले पर राजी हो जाना चाहिए। जो आदमी कुरआन के पैसले पर राजी न हो वह यह खतरा मोल ले रहा है कि आखिरत में रुस्वाई और अजाब की कीमत पर उसे इसके पैसले पर राजी होना पड़े।

कुरआन इसलिए उतारा गया है कि पैसले का वक्त आने से पहले लोगों को आने वाले वक्त से होशियार कर दिया जाए। रसूल ने यही काम अपने जमाने में किया और आपकी उम्मत को यही काम आपके बाद कियामत तक अंजाम देना है। कुरआन इस बात की पेशगी इत्तला है कि आखिरत की अबदी दुनिया में लोगों का खुदा लोगों के साथ क्या मामला करने वाला है। पहुंचाने वाले उस वक्त अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हो जाते हैं जबकि वह उसे पूरी तरह लोगों तक पहुंचा दें मगर सुनने वाले खुदा के यहां उस वक्त मुक्त होंगे जबकि वे उसे मानें और उसे अपनी अमली जिंदगी में इख्तियार करें। दाओ की जिम्मेदारी 'तब्कीग' (प्रचार) पर ख़त्म होती है और मदऊ (संबोधित व्यक्ति) की जिम्मेदारी 'इताअत' (आज्ञापालन) पर।

الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْكَتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۚ الَّذِينَ خَيْرُوا
أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ
بِآيَاتِهِ ۖ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۚ وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ
أَسْرَكُوا آيَاتِنَا إِنَّكُمْ تَزْعُمُونَ ۚ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فَتَبْسُفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ ۚ فَتَنَبَّأُوا
وَاللَّهُ رَبُّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ۚ أَنْظَرِكُمْ كَذَبُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۚ

जिन लोगों को हमने किताब दी है वह उसे पहचानते हैं जैसा अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन लोगों ने अपने को घाटे में डाला वे उसे नहीं मानते। और उस शख्स से ज्यादा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बोहतान बांधे या अल्लाह की निशानियों को झुटलाए। यकीनन जालिमों को फलाह (कत्लाफ) नहीं मिलती। और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर हम कहेंगे उन शरीक ठहराने वालों से कि तुम्हारे वे शरीक कहां हैं जिनका तुम्हें दावा था। फिर उनके पास कोई फरेब न रहेगा मगर ये कि वे कहेंगे कि अल्लाह अपने रब की कसम, हम शिक करने वाले न थे। देखो यह किस तरह अपने आप पर झूठ बोले और खोई गई उनसे वे बातें जो वे बनाया करते थे। (20-24)

हकीकत आदमी के लिए जानी पहचानी चीज है। क्योंकि वह आदमी की फ़ितरत में पेवस्त है और कायनात में हर तरह ख़ामोश जवान में बोल रही है। यहूद व नसारा का मामला इस बाब में और भी ज्यादा आगे था। क्योंकि उनके अबिया और उनके सहीफे (दिव्यग्रंथ) उन्हें कुरआन और पैगम्बर आखिरुज्मां मुहम्मद (सल्ल०) के बारे में साफ लफ्जों में पेशगी ख़बर दे चुके थे, यहां तक कि उनके लिए इसे जानना ऐसा ही था जैसा अपने बेटों को जानना।

इस कद्र खुला हुआ होने के बावजूद इंसान क्यों हकीकत को तस्लीम नहीं करता। इसकी वजह वक्ती नुस्सान का अंश है। हकीकत को मानना हमेशा इस कीमत पर होता है कि आदमी अपने को बड़ाई के मकाम से उतारे, वह तक्लीदी (अनुसरणपरक) दांचे से बाहर आए, वह मिले हुए फ़ायदों को छोड़ दे। आदमी यह कुर्बानी देने के लिए तैयार नहीं होता इसलिए वह हक को भी कुकूल नहीं करता। वक्ती फ़ायदे की खातिर वह अपने को अबदी घाटे में डाल देता है।

अपने इस मौक़िफ पर मुतमइन रहने के लिए यह बात भी उसे धोखे में डालती है कि वह इस्तेहान की इस दुनिया में हमेशा अपने अनुकूल तौजीहात पाने में कामयाब हो जाता है। वह सच्चाई के हक में जाहिर होने वाले दलाइल को रद्द करने के लिए झूठे अल्फ़ज पा लेता है। यहां तक कि यहां उसे यह आजादी भी हासिल है कि हकीकत की खुदसाख़्ता ताबीर करके यह कह सके कि सच्चाई ऐन वही है जिस पर मैं कायम हूं।

जब भी आदमी खुदा को छोड़कर दूसरी चीजों को अपना मर्कजे तवज्जोह बनाता है तो धीरे-धीरे इन चीजों के गिर्द ताईदी बातों का तिलिस्म तैयार हो जाता है। वह ख़्याली आरजुओं और झूठी तमन्नाओं का एक खुदसाख़्ता हाला बना लेता है जो उसे इस फरेब में मुब्तिला रखते हैं कि उसने बड़े मजबूत सहारे को पकड़ रखा है। मगर कियामत में जब तमाम पर्दे फट जाएंगे और आदमी देखेगा कि खुदा के सिवा तमाम सहारे बिल्कुल झूठे थे तो उसके सामने इसके सिवा कोई राह न होगी कि वह खुद अपनी कही हुई बातों की तरदीद (खंडन) करने लगे। गोया इस किस्म के लोग उस वक्त खुद अपने खिलाफ झूठे गवाह बन जाएंगे। दुनिया में वे जिन चीजों के हामी बने रहे और जिनसे मंसूब होने को अपने लिए बाइसे फख़्र समझते रहे, आखिरत में खुद उनके मुक़िर हो जाएंगे। उन्होंने अकाइद और तौजीहात का जो झूठा किला खड़ा किया था वह इस तरह ढह जाएगा जैसे उसका कोई वजूद ही न था।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِرُّ إِلَيْكَ وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمُ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي
 آيَاتِهِمْ وَقْرًا وَإِنْ يَرَوْا كَلِمًا إِلَهِيًّا لَا يُوَاقِبُهَا فَيَوْنًا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ يُبَايِعُوكَ
 يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ
 وَيَنْهَوْنَ عَنْهُ وَإِنْ يُهْلِكُونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ۝ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وَقَفُوا
 عَلَى النَّارِ فَقَالُوا يَلَيْتُنَا نَرُدُّ وَلَا نُكَذِّبُ رِبًّا وَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝
 بَلْ بَدَأَ اللَّهُمَّ فَكَانُوا يُخْفُونَ مِنْ قَبْلِ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِنَاقِهِمْ
 عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं और हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वे उसे न समझें। और उनके कानों में बोझ है। अगर वे तमाम निशानियां देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएंगे। यहां तक कि जब वे तुम्हारे पास तुमसे झगड़ने आते हैं तो वे मुँक़िर कहते हैं कि यह तो बस पहले लोगों की कहानियां हैं। वे लोगों को रोकते हैं और खुद भी उससे अलग रहते हैं। वे खुद अपने को हलाक कर रहे हैं मगर वे नहीं समझते। और अगर तुम उन्हें उस वक़्त देखो जब वे आग पर खड़े किए जाएंगे और कहेंगे कि काश हम फिर भेज दिए जाएं तो हम अपने रब की निशानियों को न झुठलाएंगे और हम ईमान वालों में से हो जाएंगे। अब उन पर वह चीज खुल गई जिसे वे इससे पहले छुपाते थे। और अगर वे वापस भेज दिए जाएं तो वे फिर वही करेंगे जिससे वे रोके गए थे। और बेशक वे झूठे हैं। (25-28)

मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में आदमी को यह मौका हासिल है कि वह हर बात की मुफ़ीदे मतलब तौजीह कर सके। इसलिए जो लोग तअस्सुब का ज़ेहन लेकर बात को सुनते हैं उनका हाल ऐसा होता है जैसे उनके कान बंद हों और उनके दिलों पर पर्दे पड़े हुए हों। वे सुनकर भी नहीं सुनते और बताने के बाद भी नहीं समझते। दलाइल (तर्क) अपनी सारी वजाहत के बावजूद उन्हें मुतमइन करने में नाकाम रहते हैं। क्योंकि वे जो कुछ सुनते हैं झगड़े के ज़ेहन से सुनते हैं न कि नसीहत के ज़ेहन से। उनके अंदर बात को सुनने और समझने का कोई इरादा नहीं होता। इसका नतीजा यह होता है कि किसी बात का अस्त पहलू उनके ज़ेहन की गिरफ्त में नहीं आता। इसके बरअक्स हर बात को उल्टी शकल देने के लिए उन्हें कोई न कोई चीज मिल जाती है। दलाइल उनके ज़ेहन का जुज़ नहीं बनते। अपने मुख़ालिफ़ाना ज़ेहन की वजह से वे हर बात में कोई ऐसा पहलू निकाल लेते हैं जिसे ग़लत मअना देकर वे अपने आपको बदस्तूर मुतमइन रखें कि वे हक पर हैं।

जो लोग यह मिजाज रखते हों उनके लिए तमाम दलाइल बेकार हैं। क्योंकि इस्तेहान की इस दुनिया में कोई भी दलील ऐसी नहीं जो आदमी को इससे रोक दे कि वह इसके रद्द के

लिए कुछ खुदसाख़्ता अल्फ़ाज़ न पाए। अगर कोई दलील न मिल रही हो तब भी वह हक़ारत के साथ यह कह कर उसे नज़रअंदाज़ कर देगा 'यह कौन सी नई बात है। यह तो वही पुरानी बात है जो हम बहुत पहले से सुनते चले आ रहे हैं।' इस तरह आदमी उसकी सदाक़त को मान कर भी उसे रद्द करने का एक बहाना पा लेगा। ऐसे लोग खुदा के नजदीक दोहरे मुजरिम हैं। क्योंकि वे न सिर्फ़ खुद हक से रुकते हैं बल्कि एक खुदाई दलील को ग़लत मअना पहना कर आम लोगों की नज़र में भी उसे मशकूक (संदिग्ध) बनाते हैं जो इतनी समझ नहीं रखते कि बातों का गहराई के साथ तज्जिया (विश्लेषण) कर सकें।

दुनिया की ज़िंदगी में इस किस्म के लोग ख़ूब बढ़ बढ़कर बातें करते हैं। दुनिया में हक़ का इंकार करके आदमी का कुछ नहीं बिगड़ता। इसलिए वह ग़लतफहमी में पड़ा रहता है। मगर क़ियामत में जब उसे आग के ऊपर खड़ा करके पूछा जाएगा तो उन पर सारी हकीकतें खुल जाएंगी। अचानक वह उन तमाम बातों का इंकार करने लगेगा जिन्हें वह दुनिया में ठुकरा दिया करता था।

وَقَالُوا لَنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۝ وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ وَقَفُوا
 عَلَىٰ رَبِّهِمْ قَالَ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبَّنَا قَالَ فَذُقُوا الْعَذَابَ بِمَا
 كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً
 قَالُوا يَحْسَبُنَا عَلَىٰ مَا فَطَرْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْدَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ إِلَّا سَاءَ
 مَا يَزِيدُونَ ۝ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَعِبٌ وَلَهُمْ وَلَكِنَّ الْأَخْرَجَ خَيْرٌ لِلَّذِينَ
 يَتَّقُونَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

और कहते हैं कि ज़िंदगी तो बस यही हमारी दुनिया की ज़िंदगी है। और हम फिर उठाए जाने वाले नहीं। और अगर तुम उस वक़्त देखते जबकि वे अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। वह उनसे पूछेगा : क्या यह हकीकत नहीं है, वे जवाब देंगे हां, हमारे रब की क़स्म, यह हकीकत है। खुदा फ़र्माएगा। अच्छा तो अज़ब चखो उस इंज़ार के बदले जो तुम करते थे। यकीनन वे लोग घाटे में रहे जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया। यहां तक कि जब वह घड़ी उन पर अचानक आएगी तो वे कहेंगे हाय अफ़सोस, इस बाब में हमने कैसी कोताही की और वे अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए हुए होंगे। देखो, कैसा बुरा बोझ है जिसे वे उठाएंगे और दुनिया की ज़िंदगी तो बस खेल तमाशा है और आख़िरत का घर बेहतर है उन लोगों के लिए जो तक्वा (ईश-भय) रखते हैं, क्या तुम नहीं समझते। (29-32)

जब भी कोई आदमी हक़ का इंकार करता है या नपस की ख़्वाहिशत पर चलता है तो ऐसा इस वजह से होता है कि वह यह समझ कर दुनिया में नहीं रहता कि मरने के बाद वह दुबारा उठाया जाएगा और मालिके कायनात के सामने हिसाब किताब के लिए खड़ा किया

जाएगा। दुनिया में आदमी को इख्तियार मिला हुआ है जिसे वह बेरोक टोक इस्तेमाल करता है। उसे माल व दौलत और दोस्त और साथी हासिल हैं जिन पर वह भरोसा कर सकता है। उसे अक्ल मिली हुई है जिससे वह सरकशी की बातें सोचे और अपने जलिमाना अमल की खूबसूरत तौजीह कर सके। यह चीजें उसे धोखे में डालती हैं। वह खुदा के सिवा दूसरी चीजों पर झूठा भरोसा कर लेता है। वह समझने लगता है कि जैसा मैं आज हूँ वैसा ही मैं हमेशा रहूँगा। वह भूल जाता है कि दुनिया में उसे जो कुछ मिला हुआ है वह बतौर इस्तेहान है न कि बतौर इस्तहकक (पात्रता)।

इस किस्म की जिंदगी चाहे वह आखिरत का इंकार करके हो या इंकार के अल्फज बोले बगैर हो, आदमी का सबसे बड़ा जुर्म है। जिन दुनियावी चीजों को आदमी अपना सब कुछ समझ कर उन पर टूटता है। आखिर किस हक की बिना पर वह ऐसा कर रहा है। आदमी जिस रोशनी में चलता है और जिस हवा में सांस लेता है उसका कोई मुआवजा उसने अदा नहीं किया है। वह जिस जमीन से अपना रिक्क निकालता है उसका कोई भी जुज उसका बनाया हुआ नहीं है। वह तमाम पसंदीदा चीजें जिन्हें हासिल करने के लिए आदमी दौड़ता है उनमें से कोई चीज नहीं जो उसकी अपनी हो। जब ये चीजें इंसान की अपनी पैदा की हुई नहीं हैं तो जो इन तमाम चीजों का मालिक है क्या उसका आदमी के ऊपर कोई हक नहीं। हकीकत यह है कि आदमी का मौजूदा दुनिया को इस्तेमाल करना ही लाजिम कर देता है कि वह एक रोज उसके मालिक के सामने हिसाब के लिए खड़ा किया जाए।

जो लोग दुनिया को खुदा की दुनिया समझ कर जिंदगी गुजरें उनकी जिंदगी तक्वा की जिंदगी होती है। और जो लोग उसे खुदा की दुनिया न समझें उनकी जिंदगी उन्मुक्त जिंदगी होती है। उन्मुक्त जिंदगी चन्द रोज का तमाशा है जो मरने के साथ खत्म हो जाएगा। और तक्वा की जिंदगी खुदा के अबदी उसूलों पर कायम है इसलिए वह अबदी तौर पर आदमी का सहारा बनेगी। मौजूदा दुनिया में आदमी इन हकीकतों का इंकार करता है मगर इस्तेहान की आजादी खत्म होते ही वह उसका इकरार करने पर मजबूर होगा अगरचे उस वक्त का इकरार उसके कुछ काम न आएगा।

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّكَ لَازِيٌّ يَقُولُونَ فَاهُمْ لَا يَكِدُّ بُونَكَ وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ۖ وَلَقَدْ كَذَّبْتَ رَسُولٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبْرُوا عَلَىٰ مَا كُذِّبُوا وَأَوْدُوا حَتَّىٰ أَنهْمُ نَصْرُنَا وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ۚ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِنْ نَّبَائِ الْمُرْسَلِينَ ۖ وَإِنْ كَانَ كِبْرُكَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُمْ بِآيَةٍ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ فَلَا تَكُونُ مِنَ الْغَافِلِينَ ۖ إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ ۖ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ۚ

हमें मालूम है कि वे जो कुछ कहते हैं उससे तुम्हें रंज होता है। ये लोग तुम्हें नहीं झुठलाते बल्कि यह जालिम दरअस्त अल्लाह की निशानियों का इंकार कर रहे हैं। और तुमसे पहले भी रसूलों को झुठलाया गया तो उन्होंने झुठलाए जाने और तकलीफ पहुंचाने पर सब्र किया यहां तक कि उन्हें हमारी मदद पहुंच गई। और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और पैगम्बरों की कुछ खबरें तुम्हें पहुंच ही चुकी हैं। और अगर उनकी बेरुखी तुम पर गिरां गुजर रही है तो अगर तुममें कुछ जोर है तो जमीन में कोई सुरंग दूँदो या आसमान में सीढ़ी लगाओ और उनके लिए कोई निशानी ले आओ। और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको हिदायत पर जमा कर देता। पस तुम नादानों में से न बनो। कुबूल तो वही लोग करते हैं जो सुनते हैं और मुर्दों को अल्लाह उठाएगा फिर वे उसकी तरफ लौटाए जाएंगे। (33-36)

अबू जहल ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा : 'ऐ मुहम्मद, खुदा की कसम हम तुम्हें नहीं झुठलाते। यकीनन तुम हमारे दर्मियान एक सच्चे आदमी हो। मगर हम उस चीज को झुठलाते हैं जिसे तुम लाए हो।' मक्का के लोग जो ईमान नहीं लाए वे आपको एक अच्छा इंसान मानते थे। मगर किसी के मुतअल्लिक यह मानना कि उसकी जवान पर हक जारी हुआ है उसे बहुत बड़ा ऐज़ाज देना है और इतना बड़ा ऐज़ाज देने के लिए वे तैयार न थे। आपको जब वे 'सच्चा' या 'ईमानदार' कहते तो उन्हें यह नफिसयाती तस्कीन हासिल रहती कि आप हमारी ही सतह के एक इंसान हैं। मगर इस बात का इकरार कि आपकी जवान पर खुदा का कलाम जारी हुआ है आपको अपने से ऊंचा दर्जा देने के हममअना था। और इस किस्म का एतराफ आदमी के लिए मुश्किलतरीन काम है।

मौजूदा दुनिया में खुदा अपनी बराहेरास्त सूरत में सामने नहीं आता, वह दलाइल (तर्कों) और निशानियों की सूरत में इंसान के सामने जाहिर होता है। इसलिए हक के दलाइल को न मानना या उसके हक में जाहिर होने वाली निशानियों की तरफ से आंखें बन्द कर लेना गोया खुदा को न मानना और खुदा के चेहरे की तरफ से आंखें फेर लेना है। ताहम ऐसा नहीं हो सकता कि खुदा मजबूरकुन मोजिजात (चमत्कारों) के साथ सामने आए। मजबूरकुन मोजिजात के साथ खुदा की दावत पेश की जाए तो फिर इख्तियार की आजादी खत्म हो जाएगी और इस्तेहान के लिए आजादाना इख्तियार का माहौल होना जरूरी है। दाओ को इस बात का ाम न करना चाहिए कि उसके साथ सिर्फ दलाइल (तर्कों) का वजन है, गैर मामूली किस्म की तस्खीरी (वर्चस्वपरक) कुव्वतें उसके पास मौजूद नहीं। दाओ को इस फिक्क में पड़ने के बजाए सब्र करना चाहिए। हक की दावत की जद्दोजहद एक तरफ दाओ के सब्र का इस्तेहान होती है और दूसरी तरफ मुखातबीन के लिए इस बात का इस्तेहान कि वे अपने जैसे एक इंसान में खुदा का नुमाइंदा होने की झलक देखें। वे इंसान के मुंह से निकले हुए कलाम में खुदाई कलाम की अज्मतों को पा लें, वे मादूदी (भौतिक) जोर से खाली दलाइल (तर्कों) के आगे इस तरह झुक जाएं जिस तरह वे जोरआवर खुदा के आगे झुकेंगे। जिंदा लोगों के लिए सारी कायनात निशानियों से भरी हुई है। और जिन्होंने अपने एहसासात को मुर्दा कर लिया हो वे क्रियामत के जलजले के सिवा किसी और चीज से सबक नहीं ले सकते।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَى أَنْ يُنْزِلَ آيَةً
وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَنْ ذَاتُ فِي الْأَرْضِ وَلَا ظِلٌّ يَحْيِيهِمْ بِحَبَابِهِ
الْأُمَمُ أَمْثَلُكُمْ أَفَتُطِنَّا فِي الْكِبْتِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ۝
وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُغُرُوكُمْ فِي الظُّلُمَاتِ مَنْ يَشَاءُ اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَنْ
يَشَاءُ يُجْعَلْهُ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

और वे कहते हैं कि रसूल पर कोई निशानी उसके रब की तरफ से क्यों नहीं उतरी।
कहो अल्लाह बेशक कादिर है कि कोई निशानी उतारे मगर अक्सर लोग नहीं जानते।
और जो भी जानवर जमीन पर चलता है और जो भी परिदा अपने दोनों बाजूओं से उड़ता
है वे सब तुम्हारी ही तरह के समूह हैं। हमने लिखने में कोई चीज नहीं छोड़ी है। फिर
सब अपने रब के पास इकट्ठा किए जाएंगे। और जिन्होंने हमारी निशानियों को
झुटलाया वे बहरे और गूंगे हैं, तारीकियों में पड़े हुए हैं। अल्लाह जिसे चाहता है भटका
देता है और जिसे चाहता है सीधी राह पर लगा देता है। (37-39)

इन आयात के इख्तिसार (सार) को खोल दिया जाए तो पूरा मज्मून इस तरह होगा वे
कहते हैं कि पैगम्बर के साथ गैर मामूली निशानी क्यों नहीं जो उसके पैगाम के बरहक होने
का सुबूत हो। तो अल्लाह हर किस्म की निशानी उतारने पर कादिर है। मगर अस्त सवाल
निशानी का नहीं बल्कि लोगों की बेइल्मी का है। निशानियाँ तो बेशुमार तादाद में हर तरफ बिखरी
हुई हैं जब लोग इन मौजूद निशानियों से सबक नहीं ले रहे हैं तो कोई नई निशानी उतारने से
वे क्या फायदा उठा सकेंगे। तरह-तरह के चलने वाले जानवर और मुखलिफ किस्म की उड़ने
वाली चिड़ियाँ जो जमीन में और फजा में मौजूद हैं वे तुम्हारे लिए निशानियाँ ही तो हैं। इन तमाम
जिंदा मख़्लूक़ात से भी अल्लाह को वही कुछ मल्लूब है जो तुमसे मल्लूब है। और हर एक से
जो कुछ मल्लूब है वह खुदा ने उसके लिए लिख दिया है, इंसान को शरई तौर पर और दूसरी
मख़्लूक़ात को जिविल्ली (स्वभावगत) तौर पर। चिड़ियों और जानवरों जैसी मख़्लूक़ात खुदा के
लिखे पर पूरा-पूरा अमल कर रही हैं। मगर इंसान खुदा के लिखे को मानने के लिए तैयार नहीं।
इसलिए यह मामला निशानी का नहीं बल्कि अंधेपन का है, बाकी तमाम मख़्लूक़ात जो दीन
इख्तियार किए हुए हैं, इंसान के लिए उसके सिवा कोई दीन इख्तियार करने का जवाज
(औचित्य) क्या है। हकीकत यह है कि जिन्हें अमल करना है वे निशानी का मुतालबा किए बगैर
अमल कर रहे हैं और जिन्हें अमल करना नहीं है वे निशानियों के हुजूम में रहकर निशानियाँ
मांग रहे हैं। ऐसे लोगों का अंजाम यही है कि कियामत में सबको जमा करके दिखा दिया जाए
कि हर किस्म के हैवानात किस तरह हकीकतपसंदी का तरीक़ा इख्तियार करके खुदा के रास्ते
पर चल रहे थे। यह सिर्फ इंसान था जो इससे भटकता रहा।

जानवरों की दुनिया मुकम्मल तौर पर मुताबिके फितरत दुनिया है। उनके यहां रिज्क की
तलाश है मगर लूट और जुल्म नहीं। उनके यहां जरूरत है मगर हिंस और खुदागर्जी नहीं। उनके

यहां आपसी तअल्लुकात हैं मगर एक दूसरे की काट नहीं। उनके यहां ऊंच-नीच है मगर हसद
और गुरूर नहीं। उनके यहां एक को दूसरे से तकलीफ पहुंचती है मगर बुग़ज व अदावत नहीं।
उनके यहां काम हो रहे हैं मगर क्रेडिट लेने का शौक नहीं। मगर इंसान सरकशी करता है। वह
खुदाई नक्शे का पाबंद बनने के लिए तैयार नहीं होता। इंसान से जिस चीज का मुतालबा है
वह ठीक वही है जिस पर दूसरे हैवानात कायम हैं। फिर इसके लिए मोजिजे (चमकार) मांगने
की क्या जरूरत। हैवानात की सूरत में चलती फिरती निशानियाँ क्या आदमी के सबक के लिए
काफ़ी नहीं हैं जो खुदाई तरीके अमल का जिंदा नमूना पेश कर रही हैं और इस तरह पैगम्बर
की तालीमात के बरहक होने की अमली तस्दीक करती हैं।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغْبَرُ اللَّهُ تَذَعُونَ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْثِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ
وَتَتَّسُونَ مَأْشَرَ كُونٍ ۝

कहो, यह बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अजाब आए या कियामत आ जाए
तो क्या तुम अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे। बताओ अगर तुम सच्चे हो,
बल्कि तुम उसी को पुकारोगे। फिर वह दूर कर देता है उस मुसीबत को जिसके लिए
तुम उसे पुकारते हो। अगर वह चाहता है। और तुम भूल जाते हो उन्हें जिन्हें तुम शरीक
ठहराते हो। (40-41)

अबू जहल के लड़के इकरिमा इस्लाम के सख्त दुश्मन थे। वह फतहे मक्का तक इस्लाम
के मुखलिफ बने रहे। फतह मक्का के दिन भी उन्होंने एक मुसलमान को तीर मारकर हलाक
कर दिया था। इकरिमा उन लोगों में से थे जिनके मुतअल्लिक फतहे मक्का के दिन रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह हुक्म दिया था कि जहां मिलें कत्ल कर दिए जाएं।

मक्का जब फतह हो गया तो इकरिमा मक्का छोड़कर जद्दा की तरफ भागे। उन्होंने
चाहा कि कश्ती के जरिए बहरे कुलजुम (लाल सागर) पार करके हबश पहुंच जाएं। मगर वह
कश्ती में सवार होकर समुद्र में पहुंचे थे कि तुन्द हवाओं ने कश्ती को घेर लिया। कश्ती ख़तर
में पड़ गई। कश्ती के मुसाफिर सब मुश्किल लोग थे। उन्होने लात और उज्जा वगैरह अपने
बुतों को मदद के लिए पुकारना शुरू किया। मगर तूफान की शिद्दत बढ़ती रही। यहां तक
कि मुसाफिरों को यकीन हो गया कि अब कश्ती डूब जाएगी। अब कश्ती वालों ने कहा कि
इस वक़्त लात व उज्जा कुछ काम न दें। अब सिर्फ एक खुदा को पुकारो, वही तुम्हें बचा
सकता है। चुनांचे सब एक खुदा को पुकारने लगे। अब तूफान थम गया और कश्ती वापस
अपने साहिल पर आ गई। इकरिमा पर इस वाक्ये का बहुत असर हुआ। उन्होंने कहा : खुदा
की कसम, दरिया में अगर कोई चीज खुदा के सिवा काम नहीं आ सकती तो यकीनन खुशकी
में भी खुदा के सिवा कोई दूसरी चीज काम नहीं आ सकती। खुदाया मैं तुझसे वादा करता हूँ
कि अगर तूने मुझे इससे नजात दे दी जिसमें इस वक़्त मैं फंसा हुआ हूँ तो मैं जरूर मुहम्मद
के यहां जाऊंगा और अपना हाथ उनके हाथ में दे दूंगा और मुझे यकीन है कि मैं उन्हें माफ

करने वाला, दरगुजर करने वाला और और महरबान पाऊंगा। (अबूदाऊद, नसई)

सारी तारीख का यह मुशाहिदा है कि इंसान नाजुक लम्हात में खुदा को पुकारने लगता है। यहां तक कि वह शख्स भी जो आम जिंदगी में खुदा के सिवा दूसरों पर भरोसा किए हो या सिरे से खुदा को मानता न हो। यह खुदा के वजूद और उसके कादिर मुतलक होने की फिरी शहादत है। ग़ैर मामूली हालात में जब जाहिरी पर्दे हट जाते हैं और आदमी तमाम मस्नूई (कृत्रिम) ख़्यालात को भूल चुका होता है उस वक्त आदमी को खुदा के सिवा कोई चीज याद नहीं आती। बअल्फ़जे दीगर, मजबूरी के नुस्ते पर पहुंच कर हर आदमी खुदा का इक्कार कर लेता है, कुरआन का मुतालबा यह है कि यही इक्कार और इताअत (आज्ञापालन) आदमी उस वक्त करने लगे जबकि बजाहिर मजबूर करने वाली कोई चीज उसके सामने मौजूद न हो।

बाक़ी हैवानात अपनी जिविल्लत (प्राकृतिक स्वभाव) के तहत हकीकतपसंदाना जिंदगी गुजर रहे हैं। मगर इंसान को जो चीज हकीकतपसंदी और एतराफ की सतह पर लाती है वह ख़ौफ की नपिसयात है। हैवानात की दुनिया में जो काम जिविल्लत करती है, इंसान की दुनिया में वही काम तकवा अंजाम देता है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَآخَذْنَاهُم بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ ۖ
فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَكِنْ قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۖ فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمُ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتَّىٰ إِذَا
فَرِحُوا بِمَا أُوتُوا أَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً ۖ فَإِذَا هُمْ مُبْلِسُونَ ۖ فَتَقَطَّعَ دَائِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ
ظَلَمُوا ۖ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

और तुमसे पहले बहुत सी कौमों की तरफ हमने रसूल भेजे। फिर हमने उन्हें पकड़ सख्ती में और तकलीफ में ताकि वे गिड़गिड़ाएं। पस जब हमारी तरफ से उन पर सख्ती आई तो क्यों न वे गिड़गिड़ाएं। बल्कि उनके दिल सख्त हो गए। और शैतान उनके अमल को उनकी नजर में खुशनुमा करके दिखाता रहा। फिर जब उन्होंने उस नसीहत को भुला दिया जो उन्हें की गई थी तो हमने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये। यहां तक की जब वे उस चीज़ पर खुश हो गए जो उन्हें दी गई थी तो हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया। उस वक्त वे नाउम्मीद होकर रह गए। पस उन लोगों की जड़ काट दी गई जिन्होंने जुल्म किया था और सारी तारीफ अल्लाह के लिए है, तमाम जहानों का रब। (42-45)

आदमी के सामने एक हक आता है और वह उसे नहीं मानता तो अल्लाह उसे फौरन नहीं पकड़ता। बल्कि उसे माली नुकसान और जिस्मानी तकलीफ की सूरत में कुछ झटके देता है ताकि उसकी सोचने की सलाहियत बेदार हो और वह अपने रवैये के बारे में नजरेसानी करे, जिंदगी के हादसे महज हादसे नहीं हैं, वे खुदा के भेजे हुए महसूस पैगामात हैं जो इसलिए आते हैं ताकि

ग़फलत में सोए हुए इंसान को जगाएं। मगर आदमी अक्सर इन चीजों से नसीहत नहीं लेता। वह यह कहकर अपने को मुतमइन कर लेता है कि ये तो उतार चढ़ाव के वाक़ेयात हैं और इस किस्म के उतार चढ़ाव जिंदगी में आते ही रहते हैं। इस तरह हर मौके पर शैतान कोई खुशनुमा तौजीह पेश करके आदमी के ज़ेहन को नसीहत की बजाए ग़फलत की तरफ फेर देता है। आदमी जब बार-बार ऐसा करता है तो हक व बातिल और सही व ग़लत के बारे में उसके दिल की हस्सासियत ख़त्म हो जाती है। वह कसावत (बेहिसी) का शिकार होकर रह जाता है।

जब आदमी खुदा की तरफ से आई हुई तंबीहात को नजरअंदाज कर दे तो इसके बाद उसके बारे में खुदा का अंदाज बदल जाता है। अब उसके लिए खुदा का फैसला यह होता है कि उस पर आसानियों और कामयाबियों के दरवाज़े खोले जाएं। उस पर खुशहाली की बारिश की जाए। उसकी इज्जत व मयबूतियत में इज्जत मित्रा जाए। यह दख्खियनत एक सज़ा है जो इसलिए होती है ताकि उसका अंदरून और ज्यादा बाहर आ जाए। इसका मक़सद यह होता है कि आदमी मुतमइन होकर अपनी बेहिसी को और बढ़ ले, वह हक को नजरअंदाज करने में और ज्यादा ढीठ हो जाए और इस तरह खुदा की सज़ा का इस्तेमाल (पात्रता) उसके लिए पूरी तरह साबित हो जाए। जब यह मक़सद हासिल हो जाए तो उसके बाद अचानक उस पर खुदा का अज़ाब टूट पड़ता है। उसे दुनियावी जिंदगी से महरूम करके आखिरत की अदालत में हाज़िर कर दिया जाता है ताकि उसकी सरकशी की सज़ा में इसके लिए जहन्नम का फैसला हो।

यह दुनिया खुदा की दुनिया है। यहां हर किस्म की बड़ई और तारीफ का हक सिर्फ एक जात के लिए है। इसलिए जब कोई शख्स खुदा की तरफ से आए हुए हक को नजरअंदाज कर देता है तो वह दरअसल खुदा की नाक़्द्री करता है। वह खुदा की अज्मतों की दुनिया में अपनी अज्मत क़यम करना चाहता है। वह ऐसा जुल्म करता है जिससे बड़ कोई जुल्म नहीं। वह उस खुदा के सामने गुस्ताखी करता है जिसके सामने इज्ज (विनय) के सिवा कोई और रवैया किसी इंसान के लिए दुरुस्त नहीं।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَابْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ مِّنَ الْغَيْبِ يَأْتِيَكُم بِهِ أَنْظَرُ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ ۖ
قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۖ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۖ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا يَسْتَهْزِئُ
الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۖ قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ إِنِّي أَنَّبِيٌّ إِلَّا مَا يُلَاحِظُنِي إِلَىٰ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ۝

कहो, यह बताओ कि अल्लाह अगर छीन ले तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन मावूद (पूज्य) है जो उसे वापस लाए। देखो हम क्योंकि तरह-तरह से निशानियां बयान करते हैं फिर भी वे एराज (उपेक्षा) करते हैं। कहो, यह बताओ अगर अल्लाह का अजाब तुम्हारे ऊपर अचानक या एलानिया आ जाए तो जालिमों के सिवा और कौन हलाक होगा। और रसूलों को हम सिर्फ खुशखबरी देने वाले या डराने वाले की हैसियत से भेजते हैं। फिर जो ईमान लाया और अपनी इस्लाह की तो उनके लिए न कोई अंदेशा है और न वे ग़मगीन होंगे। और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुटलाया तो उन्हें अजाब पकड़ लेगा इसलिए कि वे नाफरमानी करते थे। कहो, मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़जाने हैं और न मैं ग़ैब को जानता हूँ और न मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ। मैं तो बस उस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) की पैरवी करता हूँ जो मेरे पास आती है। कहो, क्या अंधा और आंखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। (46-50)

आदमी को कान और आंख और दिल जैसी सलाहियतें देना जाहिर करता है कि उसका ख़ालिक उससे क्या चाहता है। ख़ालिक यह चाहता है कि आदमी बात को सुने और देखे, वह अक्ली दलील से उसे मान ले। अगर आदमी अपनी इन खुदादाद (ईश प्रदत्त) सलाहियतों से वह काम न ले जो उससे मक्सूद है तो गोया वह अपने को इस ख़तरे में डाल रहा है कि उसे नाअहल करार देकर ये नेमतें उससे छीन ली जाएं। किस कद्र महरूम है वह शख्स जिसे अंधा और बहरा और बेअकल बना दिया जाए। क्योंकि ऐसा आदमी दुनिया में बिल्कुल जलील और बेक्रीमत होकर रह जाता है। फिर इससे भी बड़ी महरूमी यह है कि आदमी के पास बजाहिर कान हों मगर वे हक को सुनने के लिए बहरे हो जाएं। बजाहिर आंख हो मगर वह हक को देखने के लिए अंधी हो। सीने में दिल मौजूद हो मगर वह हक को समझने की इस्तेदाद (सामर्थ्य) से खाली हो जाए। छीनने की यह क्रिम पहली क्रिम से कहीं ज्यादा संगीन है। क्योंकि वह आदमी को आख़िरत के एतबार से जलील और बेक्रीमत बना देती है जिससे बड़ी महरूमी कोई दूसरी नहीं।

आदमी को हक के इंकार के अंजाम से डराया जाए तो छोट आदमी बेख़ौफ़ी का जवाब देता है। दुनिया में अपने मामलात को दुरुस्त देख कर वह समझता है कि खुदा की पकड़ का अंदेशा उसके अपने लिए नहीं है। यहां तक कि जो ज्यादा छोट हैं वे हक के दाजी से कहते हैं कि तुम अगर सच्चे हो तो अजाब को लाकर दिखाओ। वे नहीं समझते कि खुदा का अजाब आया तो वह खुद उन्हीं के ऊपर पड़ेगा न कि किसी दूसरे के ऊपर।

अल्लाह का दाजी आगाह करने वाला और खुशख़बरी देने वाला बनकर आता है। दूसरे शब्दों में, आदमी का इस्तेहान खुदा के यहां जिस बुनियाद पर हो रहा है वह यह है कि आदमी आगाही (विवेक) की ज़बान में हक को पहचाने और अपनी इस्लाह (सुधार) कर ले। अगर उसने आगाही की ज़बान में हक को न पहचाना और उसे मानने के लिए रहस्यमयी चीज़ों का मुतालबा किया तो गोया वह अंधेपन का सुबूत दे रहा है और अंधों के लिए खुदा की इस दुनिया में भटकने और बर्बाद होने के सिवा कोई अंजाम नहीं।

وَإِنذِرْهُمْ الَّذِينَ يُخَافُونَ أَنْ يُخْشَرُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ إِلَهٌ وَلَا شَفِيعٌ عَلَيْهِمْ يُقْفُونَ ۖ وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ۖ وَكَذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوا أَهَؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنْ بَيْنِنَا أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ ۝

और तुम इस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए से डराओ उन लोगों को जो अंदेशा रखते हैं इस बात का कि वे अपने रब के पास जमा किए जाएंगे इस हाल में कि अल्लाह के सिवा न उनका कोई हिमायती होगा और न सिफ़ारिश करने वाला, शायद कि वे अल्लाह से डरें। और तुम उन लोगों को अपने से दूर न करो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं उसकी खुशनुदी चाहते हुए। उनके हिसाब में से किसी चीज का बोझ तुम पर नहीं और तुम्हारे हिसाब में से किसी चीज का बोझ उन पर नहीं कि तुम उन्हें अपने से दूर करके बेइसाफ़ों में से हो जाओ। और इस तरह हमने उनमें से एक को दूसरे से आजमाया है ताकि वे कहें कि क्या यही वे लोग हैं जिन पर हमारे दर्मियान अल्लाह का फल हुआ है। क्या अल्लाह शुक्रगुनगो से खूब वाकिफ़ नहीं। (51-53)

नसीहत हमेशा उन लोगों के लिए कारगर होती है जो अंदेशे की नफ़िसयात में जीते हैं। जिसे किसी चीज का खटका लगा हुआ हो उसी को उसके ख़तरे से आगाह किया जा सकता है। इसके बरअक्स जो लोग बेख़ौफ़ी की नफ़िसयात में जी रहे हों वे कभी नसीहत के बारे में संजीदा नहीं होते, इसलिए वे नसीहत को कुबूल करने के लिए भी तैयार नहीं होते।

बेख़ौफ़ी की नफ़िसयात पैदा होने का सबब आमतौर पर दो चीजें होती हैं। एक दुनियापरस्ती, दूसरे अकाबिरपरस्ती (व्यक्ति पूजा)। जो लोग दुनिया की चीजों में गुम हों या दुनिया की कोई कामयाबी पाकर उस पर मुतमइन हो गए हों, यहां तक कि उन्हें यह भी याद न रहता हो कि एक रोज उन्हें मर कर ख़ालिक व मालिक के सामने हाजिर होना है, ऐसे लोग आख़िरत को कोई काबिले लिहाज चीज नहीं समझते, इसलिए आख़िरत की याददिहानी उनके जेहन में अपनी जगह हासिल नहीं करती। उनका मिजाज ऐसी बातों को ग़ैर अहम समझ कर नज़अंदाज़ कर देता है।

दूसरी क्रिम के लोग वे हैं जो आख़िरत के मामले को सिफ़ारिश का मामला समझ लेते हैं। वे फर्ज कर लेते हैं कि जिन बड़ों के साथ उन्होंने अपने को वाबस्ता कर रखा है वे आख़िरत में उनके मददगार और सिफ़ारिशी बन जाएंगे और किसी भी नामुवाफ़िक़ (प्रतिकूल) सूरतेहाल में उनकी तरफ से काफी साबित होंगे। ऐसे लोग इस भरोसे पर जी रहे होते हैं कि उन्होंने मुक़द्दस

हस्तियों का दामन थाम रखा है, वे खुदा के महबूब व मकबूल गिरोह के साथ शामिल हैं इसलिए अब उनका कोई मामला बिगड़ने वाला नहीं है। यह नपिसयात उन्हें आखिरत के बारे में निडर बना देती है, वे किसी ऐसी बात पर संजीदगी के साथ गौर करने के लिए तैयार नहीं होते जो आखिरत में उनकी हैसियत को मुश्तबह (संदिग्ध) करने वाली हो।

जो लोग मस्तेहतों की रियायत करके दौलत व मकबूलियत हासिल किए हुए हों वे कभी हक की बेआमेज (विशुद्ध) दावत का साथ नहीं देते। क्योंकि हक का साथ देना उनके लिए यह मअना रखता है कि अपनी मस्तेहतों के बने बनाए ढांचे को तोड़ दिया जाए। फिर जब वे यह देखते हैं कि हक के गिर्द मामूली हैसियत के लोग जमा हैं तो यह सूरतेहाल उनके लिए और ज्यादा फितना बन जाती है। उन्हें महसूस होता है कि इसका साथ देकर वे अपनी हैसियत को गिरा लेंगे। वे हक को हक की कसौटी पर न देख कर अपनी कसौटी पर देखते हैं और जब हक उनकी अपनी कसौटी पर पूरा नहीं उतरता तो वे उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

وَإِذْ أَجَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلِّمُوا عَلَيْنَا كَمَا كُنْتُمْ عَلَىٰ نَفْسِكُمُ الرَّحْمَةِ إِنَّهُم مِّنْ عَمَلٍ مِّنْكُمْ سُوءُ الْجَهَالَةِ ثُمَّ تَابَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ ۚ فَإِنَّ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝ وَكَذَلِكَ نَقُصُّ الْأَيَّاتِ وَلِتَسْتَتِينَ ۝ سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ ۝

और जब तुम्हारे पास वे लोग आए जो हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं तो उनसे कहो कि तुम पर सलामती हो। तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत लिख ली है। बेशक तुममें से जो कोई नादानी से बुराई कर बैठे फिर इसके बाद वह तौबा करे और इस्लाह (सुधार) कर ले तो वह बख्शने वाला महरबान है। और इस तरह हम अपनी निशानियां खोल कर बयान करते हैं, और ताकि मुजरिमीन का तरीका जाहिर हो जाए। (54-55)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में एक किस्म के लोग वे थे जो आपकी सदाकत पर मोजिजे (चमत्कार) तलब कर रहे। दूसरे लोग वे थे जो कुरआनी आयतों को सुनकर आपके मोमिन बन गए। यही इम्तेहान हर जमाने में इंसान के साथ जारी है। मौजूदा दुनिया में खुदा खुद सामने नहीं आता, वह दाओ (आह्वानकर्ता) की जवान से अपने दलाइल (तर्कों) का एलान कराता है, वह अपनी सदाकत को लफ्जों के रूप में ढाल कर इंसान के सामने लाता है। अब जिसकी फितरत जिंदा है वह इन्हीं दलाइल में खुदा का जलवा देख लेता है और उसका इकरार करके उसके आगे झुक जाता है। इसके बरअक्स जिन्होंने अपनी फितरत पर मस्नूई पर्दे ढाल रखे हैं वे 'अल्फाज' के रूप में खुदा को पाने में नाकाम रहते हैं। वे खुदा को उसकी इस्तदलाली (तार्किक) सूरत में देख नहीं पाते इसलिए चाहते हैं कि खुदा अपनी मुशाहिदाती सूरत (प्रकट रूप) में उनके सामने आए। मगर मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में ऐसा होना मुमकिन नहीं। यहां वही शख्स खुदा को पाएगा जो खुदा को हालते गैब

(अप्रकट) में पा ले, जो शख्स खुदा को हालते शुहूद (साक्षात रूप) में देखने पर इसरार करे, उसका अंजाम खुदा की इस दुनिया में महरूमी के सिवा और कुछ नहीं।

जो लोग अपनी कजी की वजह से हक से दूर रहते हैं वे हक को कुबूल करने वालों पर तरह-तरह के इल्जाम लगाते हैं ताकि उनके मुकाबले में अपने को बेहतर साबित कर सकें। उन्हें अपने जराइम नजर नहीं आते, अलबत्ता हकपरस्तों से अगर कभी कोई गलती हो गई तो उसे खूब बढ़ाकर बयान करते हैं ताकि यह जाहिर हो कि जो लोग इस दावत के गिर्द जमा हैं वे काबिले एतबार लोग नहीं हैं। हालांकि अस्ल सूरतेहाल इसके बरअक्स है। जिन लोगों ने नाहक को छोड़कर हक को कुबूल किया है उन्होंने अपने इस अमल से ईमान व इस्लाह (सुधार) के रास्ते पर चलने का सुबूत दिया है। इस तरह वे खुदा के कानून के मुताबिक इसके मुस्तहिक हो गए कि उन्हें इस्लाहे हाल की तौफीक मिले और वे खुदा की रहमतों में अपना हिस्सा पाएं। इसके बरअक्स जो लोग हक से दूर पड़े हुए हैं वे अपने अमल से साबित कर रहे हैं कि वे ईमान व इस्लाह का तरीका इख्तियार करने से कोई दिलचस्पी नहीं रखते। ऐसे लोग खुदा की तौफीक से महरूम (वंचित) रहते हैं। उनकी ढिठाई कभी खत्म नहीं होती और ढिठाई ही खुदा की इस दुनिया में किसी का सबसे बड़ा जुर्म है।

खुदा 'निशानियों' की जवान में बोलता है। निशानियां उस शख्स के लिए कारआमद होती हैं जो उन्हें पढ़ना चाहे। इसी तरह हिदायत उसी को मिलेगी जो उसका तालिब हो। जो शख्स हिदायत की तलब न रखता हो उसके लिए खुदा की इस दुनिया में भटकने के सिवा कोई दूसरा अंजाम नहीं।

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قُلْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ أَعْلَمُ قَدْ ضَلَلْتُ إِذْ أَوْأَمَّا أَنَا مِنَ الْهَاطِدِينَ ۝ قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ مَا عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ ۚ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ يَقْضِي الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاضِلِينَ ۝ قُلْ لَوْ أَنَّ عِنْدِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ۝ وَعِنْدَهُ مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الدَّرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنَ وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلْمَتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝

कहो, मुझे इससे रोका गया है कि मैं उनकी इबादत करूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। कहो मैं तुम्हारी ख्वाहिशों की पैरवी नहीं कर सकता। अगर मैं ऐसा करूं तो मैं बेराह हो जाऊंगा और मैं राह पाने वालों में से न रहूंगा। कहो मैं अपने रब की तरफ से एक रोशन दलील पर हूं और तुमने उसे झुठला दिया है। वह चीज मेरे पास

नहीं है जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो। फैसले का इस्तिथार सिर्फ अल्लाह को है। वही हक को बयान करता है और वह बेहतरीन फैसला करने वाला है। कहे, अगर वह चीज मेरे पास होती जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो तो मेरे और तुम्हारे दरमियान मामले का फैसला हो चुका होता, और अल्लाह खूब जानता है जलियों को। और उसी के पास गैब (अप्रकट) की कुंजियां हैं, उसके सिवा उसे कोई नहीं जानता। अल्लाह जानता है जो कुछ खुशकी और समुद्र में है। और दरख्त से गिरने वाला कोई पत्ता नहीं जिसका उसे इल्म न हो और जमीन की तारीकियों में कोई दाना नहीं गिरता और न कोई तर और खुशक चीज मगर सब एक खुली किताब में दर्ज है। (56-59)

खुदा के सिवा जिस चीज को आदमी माबूद (पूज्य) का दर्जा देता है वह उसकी एक ख्वाहिश होती है जिसे वह वाकया (सच) मान लेता है। कभी अपनी बेअमली के अंजाम से बचने के लिए वह किसी को खुदा का मुकर्रब यकीन कर लेता है जो खुदा के यहां उसका मददगार और सिफरिशो बन जाए। कभी वह एक शख्सियत के हक में तिलिस्माती अजमत का तसव्वुर कायम कर लेता है ताकि अपने को उससे मंसूब करके अपने छोटपेन की तलाफी कर सके। कभी अपनी सहल (आसान) पसंदी की वजह से वह ऐसा खुदा गढ़ लेता है जो सस्ती कीमत पर मिल जाए और मामूली-मामूली चीजों से जिसे खुश किया जा सके।

मगर इस क्रिम की तमाम चीजें मफरूजात (कल्पनाएँ) हैं और मफरूजात फिरी

को हकीकत तक नहीं पहुँचा सकते। ताहम आदमी अपनी सस्ती तलब में कभी इतना अंधा हो जाता है कि वह खुद उन लोगों को चैलेंज करने लगता है जिन्होंने कायनात के हकीकी मालिक की तरफ अपने को खड़ा कर रखा है। वह कहता है कि सारी बड़ाई अगर उसी एक खुदा के लिए है जिसके तुम नुमाईद हो तो हम जैसे नाफरमानों पर उसका एताब नाजिल करके दिखाओ। यह जुरअत उन्हें इसलिए होती है कि वे देखते हैं कि तौहीद के दावियों के मुकाबले में उनके अपने गिर्द ज्यादा दुनियावी रैनकें जमा हैं। वे भूल जाते हैं कि ये मादूदी चीजें उन्हें दुनियादारी और मस्तेहतपरस्ती की बिना पर मिली हैं और तौहीद के दाओ जो इन चीजों से खाली हैं वे इसलिए खाली हैं कि उनकी आखिरतपसंदी ने उन्हें मस्तेहतपरस्ती की सतह पर आने से रोके रखा।

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। इसलिए यहां देखने की चीज यह नहीं है कि आदमी के मादूदी हालात क्या हैं। बल्कि यह कि वह हकीकी दलील पर खड़ा हुआ है या मफरूजात (कल्पनाओं) और खुशगुमानियों पर। बिलआखिर वही शख्स कामयाब होगा जो वाकई दलील पर खड़ा होगा। जो लोग मफरूजात पर खड़े हुए हैं उनका आखिरी अंजाम इसके सिवा और कुछ नहीं कि वे खुदा की इस दुनिया में बिल्कुल बेसहारा होकर रह जाएं। जिस दुनिया का सारा निजाम मोहकम (सुदृढ़) कानूनों पर चल रहा हो उसका आखिरी अंजाम खुशख्वालिओं के ताबेअ क्योंकर हो जाएगा।

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقَاضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ثُمَّ يُرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ ۚ وَيُرْسِلْ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمْ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفِرُّونَ ۚ ثُمَّ رُدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقُّ ۖ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ ۝

और वही है जो रात में तुम्हें वफात देता है और दिन को जो कुछ तुम करते हो उसे जानता है। फिर तुम्हें उठा देता है उसमें ताकि मुकर्रर मुद्दत पूरी हो जाए। फिर उसी की तरफ तुम्हारी वापसी है। फिर वह तुम्हें बाख़बर कर देगा उससे जो तुम करते रहे हो। और वह ग़ालिब (वर्चस्वमान) है अपने बंदों के ऊपर और वह तुम्हारे ऊपर निगरां (निरीक्षक) भेजता है। यहां तक कि जब तुममें से किसी की मौत का वक्त आ जाता है तो हमारे भेजे हुए फरिश्ते उसकी रूह कब्ज कर लेते हैं और वे कोताही नहीं करते। फिर सब अल्लाह, अपने मालिके हकीकी की तरफ वापस लाए जाएंगे। सुन लो, हुक्म उसी का है और वह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (60-62)

खुदा ने यह दुनिया इस तरह बनाई है कि वह उन हकीकतों की अमली तस्दीक बन गई है जिनकी तरफ इंसान को दावत दी जा रही है। अगर आदमी अपनी आंखों को बंद न करे और अपनी अक्ल पर मस्तुई (बनावटी) पर्दे न डाले तो पूरी कायनात उसे कुरआन की फित्री दावत (वैचारिक आह्वान) का अमली मुजाहिदा दिखाई देगी।

दरख्त के तने में शाख निकलती है और शाख में पत्ते। मगर दोनों के जोड़ों में फर्क होता है। गोया कि बनाने वाले को मालूम है कि शाख को अपने तने से जुड़ा रहना है और पत्ते को अलग होकर गिर जाना है। अगर शाख की जड़ के मुकाबले में पत्ते की जड़ में यह इफिरादी खुसूसियत न हो तो पत्ता शाख से जुदा न हो और दरख्त को हर साल नई जिंदगी देने का निजाम अबतर (बाधित) हो जाए। इसी तरह जब एक दाना जमीन में डाला जाता है तो जमीन में पहले से उसके लिए वह तमाम जरूरी शुक्राक मौजूद होती है जिससे रिज्क पाकर वह बढ़ता है और बिलआखिर पूरा दरख्त बनता है। अब कैसे मुमकिन है कि जो खुदा पत्ता और दाना तक के अहवाल से बाख़बर हो वह इंसानों के अहवाल से बेख़बर हो जाए।

हमारी जमीन सारी कायनात में एक अनोखा वाकया है। यहां का निजाम विलक्षण रूप से इंसान जैसी एक मख़बूक के अनूकूल बनाया गया है। जमीन के अंदर का एक बड़ा हिस्सा आग है मगर वह फट नहीं पड़ता। सूरज इतिहाई सही हिसाबी फासले पर है, वह उससे न दूर जाता है और न करीब होता। आदमी को हर वक्त हवा और पानी की जरूरत है। चुनांचे हवा को गैस की शक्त में हर जगह फैला दिया गया है और पानी को तरल रूप में जमीन ने नीचे रख

दिया गया है। इस किस्म के केशुमार इतिजामात हैं जिन्हें जमीन पर मुसलसल बरकरार रखा जाता है। अगर इनमें मामूली फर्क आ जाए तो इंसान के लिए जमीन पर जिंगी गुजरना नामुमकिन हो जाए।

नींद बड़ी अजीब चीज है। आदमी चलता फिरता है। वह देखता और बोलता है। मगर जब वह सोता है तो उसके तमाम हवास इस तरह मुअत्तल हो जाते हैं जैसे जिंदगी उससे निकल गई हो। इसके बाद जब वह नींद पूरी करके उठता है तो वह फिर वैसा ही इंसान होता है जैसा कि वह पहले था। यह गोया जिंदगी और मौत की तमसील है। यह मामला हमारे लिए इस बात को काबिले फहम बना देता है कि आदमी किस तरह मरेगा और किस तरह वह दुबारा जिंदा होकर खड़ा हो जाएगा। ये वाक़ेआत साबित करते हैं कि सारे इंसान खुदा के इख्तियार में हैं और जल्द वह वक्त आने वाला है जबकि खुदा अपने इख्तियार के मुताबिक उनका फैसला करे।

قُلْ مَنْ يُحْيِيكُمْ مِّنْ ظُلُمَاتِ اللَّيْلِ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لَّئِنْ أَجَبْنَاهُمْ مِنْ هَٰذَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ لَكَبٍ تَمْرٌ أَنتُمْ تَشْرَبُونَ ۝ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَكْسِلَكُمْ شَيْعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ أُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ ۝ وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ قُلْ لَسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۝ لِّكُلِّ نَبَأٍ مَّسْتَقَرٌّ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝

कहो, कौन तुम्हें नजात देता है खुश्की और समुद्र की तारीकियों से, तुम उसे पुकारते हो आजिजी से और चुपके-चुपके कि अगर खुदा ने हमें नजात दे दी इस मुसीबत से तो हम उसके शुक्रगुजार बंदों में से बन जाएंगे। कहो, खुदा ही तुम्हें नजात देता है उससे और हर तकलीफ से, फिर भी तुम शिर्क (साझीदार ठहराना) करने लगते हो। कहो, खुदा कादिर है इस पर कि तुम पर कोई अजाब भेज दे तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से या तुम्हें गिरोह-गिरोह करके एक को दूसरे की ताकत का मजा चखा दे। देखो, हम किस तरह दलाइल (तर्क) मुज्तलिफ पहलुओं से बयान करते हैं ताकि वे समझें। और तुम्हारी कौम ने उसे झुठला दिया है हालांकि वह हक है। कहो, मैं तुम्हारे ऊपर दारोणा नहीं हूँ। हर ख़बर के लिए एक वक्त मुकर्र है और तुम जल्द ही जान लोगे। (63-67)

इंसान को इस दुनिया में जितनी मुसीबतें पेश आती हैं उतनी किसी भी दूसरे जानदार को पेश नहीं आती। ऐसा इसलिए होता है ताकि आदमी पर ऐसे हालात तारी किए जाएं जबकि उसके अंदर से तमाम मस्नूई (कृत्रिम) ख्यालात ख़त्म हो जाएं और आदमी अपनी

असली फितरत को देख सके। चुनांचे जब भी आदमी पर कोई कड़ी मुसीबत पड़ती है तो वह यकसू होकर खुदा को पुकारने लगता है। उस वक्त उसके जेहन से तमाम बनावटी पर्दे हट जाते हैं। वह जान लेता है कि इस दुनिया में इंसान तमामतर आजिज (निर्बल) है और सारी कुदरत सिर्फ खुदा को हासिल है। मगर जैसे ही मुसीबत के हालात ख़त्म होते हैं वह बदस्तूर ग़फलत का शिकार होकर वैसा ही बन जाता है जैसा कि वह पहले था।

शिर्क की असली हकीकत अल्लाह के सिवा किसी दूसरी चीज पर एतमाद करना है और तौहीद यह है कि आदमी का सारा एतमाद अल्लाह पर हो जाए। शिर्क की एक सूरत यह है जो बुतों और दूसरे पूज्यों की पूजा के रूप में पेश आती है। मगर शुक्र के बजाए नाशुकी का रवैया इख्तियार करना भी शिर्क है। शिर्क की ज्यादा आम सूरत यह है कि आदमी खुद अपने को बुत बना ले, वह अपने आप पर एतमाद करने लगे। आदमी जब अकड़ कर चलता है तो गोया वह अपने जिस्म व जान पर एतमाद कर रहा है। आदमी जब अपनी कमाई को अपनी कमाई समझता है तो गोया वह अपनी काबलियत पर भरोसा कर रहा है। आदमी जब एक हक को नजरअंदाज करता है तो गोया वह समझता है कि मैं जो भी करूं, कोई मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकता। आदमी जब किसी के ऊपर जुल्म करने में जरी होता है तो उस वक्त उसकी नफिसयात यह होती है कि मैं इसके ऊपर इख्तियार रखता हूँ, उसके हक में अपनी मनमानी करने से मुझे कोई रोकने वाला नहीं। यह सारी सूरतें घमंड की सूरतें हैं और घमंड खुदा के नजदीक सबसे बड़ा शिर्क है। क्योंकि वह अपने आपको खुदा के मक़ाम पर रखना है।

आदमी अगर अपने हाल पर सोचे तो वह घमंड न करे। वह ऐसी हवाओं से घिरा हुआ है जो किसी भी वक्त तूफ़ान की सूरत इख्तियार करके उसकी जिंदगी को तहस नहस कर सकती हैं, वह ऐसी जमीन पर खड़ा हुआ है जो किसी भी लम्हे जलजले की सूरत में फट सकती है। वह जिस समाज में रहता है उसमें हर वक्त इतनी अदावतें मौजूद रहती हैं कि एक चिंगारी पूरे समाज को ख़ाक व खून के हवाले करने के लिए काफी है।

وَلَا ذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرَضَ عَنْهُمْ حَتَّىٰ يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۚ وَإِمَّا يُنسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرِىٰ مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِنْ شَيْءٍ وَلَكِنْ ذِكْرِىٰ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهِ أَن تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ ۖ وَإِنْ تَعْدِلْ كُلُّ عَدْلٍ لَا يُؤْخَذُ مِنْهَا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا ۖ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों में ऐब निकालते हैं तो उनसे अलग हो जाओ यहां तक कि वे किसी और बात में लग जाएं। और अगर कभी शैतान तुम्हें भुला दे तो याद आने के बाद ऐसे बेइसाफ लोगों के पास न बैठो। और जो लोग अल्लाह से डरते हैं उन पर उनके हिसाब में से किसी चीज की जिम्मेदारी नहीं। अलबत्ता याद दिलाना है शायद कि वे भी डरें। उन लोगों को छोड़ो जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना रखा है और जिन्हें दुनिया की ज़िंदगी ने धोखे में डाल रखा है। और कुरआन के जरिए नसीहत करते रहे ताकि कोई शख्स अपने किए में गिरफ्तार न हो जाए, इस हाल में कि अल्लाह से बचाने वाला कोई मददगार और सिफारिश उसके लिए न हो। अगर वह दुनिया भर का मुआवजा दे तब भी कुबूल न किया जाए। यही लोग हैं जो अपने किए में गिरफ्तार हो गए। उनके लिए खौलता पानी पीने के लिए होगा और दर्दनाक सजा होगी इसलिए कि वे कुफ्र करते थे। (68-70)

अबुल्लाह बिन अब्बास रजि० ने फरमाया कि अल्लाह ने हर उम्मत के लिए एक ईद का दिन मुकर्रर किया ताकि उस दिन वे अल्लाह की बड़ाई करें और उसकी इबादत करें और अल्लाह की याद से उसे मामूर करें। मगर बाद के लोगों ने अपनी ईद (मजहबी त्यौहार) को खेल तमाशा बना लिया। (तफसीर कबीर)

हर दीनी अमल का एक मकसद होता है और एक इसका जाहिरी पहलू होता है। ईद का मकसद अल्लाह की बड़ाई और उसकी याद का इज्तिमाई मुजाहिदा है। मगर ईद की अदायगी के कुछ जाहिरी पहलू भी हैं। मसलन कपड़ा पहनना या इज्तिमाई का सामान करना वगैरह। अब ईद को खेल तमाशा बनाना यह है कि उसके अस्त मकसद पर तवज्जोह न दी जाए अलबत्ता उसके जाहिरी और माददी पहलुओं की खूब धूम मचाई जाए। मसलन कपड़ों और सामानों की नुमाइश, खरीद व फरोख्त के हंगामे, तफरीहात का एहतिमाम, अपनी हैसियत और शान व शौकत के मुजाहिदे वगैरह।

उम्मतों के बिगाड़ के जमाने में यही मामला तमाम दीनी आमाल के साथ पेश आता है। लोग दीनी अमल की अस्त हकीकत को अलग करके उसके जाहिरी पहलू को ले लेते हैं। अब जो लोग इस नौबत को पहुंच जाएं कि वे दीन के मकसदी पहलू को भुला कर उसे अपने दुनियावी तमाशों का उन्वान (विषय) बना लें वे अपने इस अमल से साबित कर रहे हैं कि वे दीन के मामले में संजीदा नहीं हैं और जो लोग किसी मामले में संजीदा न हों उन्हें उस मामले की कोई ऐसी बात समझाई नहीं जा सकती जो उनके मिजाज के खिलाफ हो। मजीद यह कि माददी (भौतिक) चीजों का मालिक होना उन्हें इस गलतफहमी में मुब्तिला कर देता है कि सच्चाई के मालिक भी वही हैं। वे देखते हैं कि यहां उनकी जरूरतें बफराहत पूरी हो रही हैं। हर जगह वे रैनके महफिल बने हुए हैं। उनकी ज़िंदगी में कहीं कोई कमी नहीं। इसलिए वे समझ लेते हैं कि आखिरत में भी वही कामयाब रहेंगे। ऐसे लोग ऐन अपनी नफिसयात (मानसिकता) की बिना पर आखिरत की बातों के बारे में संजीदा नहीं होते। मगर वे जान लें कि वे जो कुछ कर रहे हैं वह यूं ही खत्म हो जाने वाला नहीं। उनका अमल उन्हें घेरे में ले रहा है। अनकरीब वे अपनी सरकशी में फंसकर रह जाएंगे और किसी हाल में उससे छुटकारा न पा सकेंगे।

قُلْ اَنْدَعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُنَاوْ لَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْهَبْنَا لِلَّهِ الَّذِي اَسْمَوْهُ الشَّيْطَانُ فِي الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۚ لَّكَ اَصْحَابُ يَدْعُوْنَكَ اِلَى الْهُدَىٰ اَتَيْتَنَا قُلْ اِنَّ هُدَىٰ اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ وَاَوْفَرْنَا لِسْلَامَ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۚ وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلَاةَ وَاتَّقُوْهُ وَهُوَ الَّذِي اِلَيْهِ تُخْشَرُوْنَ ۝۷۰ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝۷۱ قَوْلُ الْحَقِّ وَاِنَّ لِلْمَلٰٓئِكَةَ يُنْفِخُوْنَ فِي الصُّوْرِ عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةُ ۝۷۲ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝۷۳

कहो, क्या हम अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारें जो न हमें नफा दे सकते और न हमें नुकसान पहुंचा सकते। और क्या हम उल्टे पांव फिर जाएं, बाद इसके कि अल्लाह हमें सीधा रास्ता दिखा चुका है, उस शख्स की मानिंद जिसे शैतानों ने बयाबान में भटका दिया हो और वह हैरान फिर रहा हो, उसके साथी उसे सीधे रास्ते की तरफ बुला रहे हों कि हमारे पास आ जाओ। कहो कि रहनुमाई तो सिर्फ अल्लाह की रहनुमाई है और हमें हुक्म मिला है कि हम अपने आपको संसार के रब के हवाले कर दें। और यह कि नमाज कायम करो और अल्लाह से डरो वही है जिसकी तरफ तुम समेटे जाओगे। और वही है जिसने आसमानों और जमीन को हक के साथ पैदा किया है और जिस दिन वह कहेगा कि हो जा तो वह हो जाएगा। उसकी बात हक है और उसी की हुक्मत होगी उस रोज जब सूर फूटका जाएगा। वह ग़ायब और जाहिर का आलिम और हकीम (तत्त्वदर्शी) व ख़बीर (सर्वज्ञाता) है। (71-74)

जो लोग खुदा के सिवा दूसरे सहरों पर अपनी ज़िंदगी कायम करें उनकी मिसाल उस मुसाफिर की सी होती है जो बेनिशान सहरा में भटक रहा हो। सहरा में भटकने वाला मुसाफिर फौरन जान लेता है कि उसने अपना रास्ता खो दिया है। रास्ता दिखाई देते ही वह फौरन उसकी तरफ दौड़ पड़ता है। मगर जो लोग खुदा के बजाए दूसरे सहरों पर जीते हैं उन्हें अपने बेराह होने की ख़बर नहीं होती। उनके आस पास पुकारने वाले पुकारते हैं कि अस्त रास्ता यह है, इधर आ जाओ मगर वे इस किस्म की आवाजों पर ध्यान नहीं देते। इस फर्क की वजह यह है कि पहले मामले में आदमी की अकल खुली हुई होती है, सही रास्ते को देखने में उसके लिए कोई रुकावट नहीं होती। जबकि दूसरी सूरत में आदमी की अकल शैतान के ज़ेरेअसर आ जाती है। उसकी सोच अपने फितरी ढंग पर काम नहीं करती। इसका नतीजा यह होता है कि वह सुनकर भी नहीं सुनता और देखकर भी नहीं देखता।

खुदा के सिवा दूसरी चीजों का तालिब (इच्छुक) बनना ऐसी चीजों का तालिब बनना है

जो इस दुनिया में फयदा व नुकसान की ताकत नहीं रखती। जमीन व आसमान अपने पूरे निजाम के साथ इंकार कर रहे हैं कि यहां एक हस्ती के सिवा किसी और हस्ती को कोई ताकत हासिल हो। इसी तरह जिन दुनियावी रैनकों को आदमी अपना मक्सूद बनाता है और उन्हें पाने की कोशिश में सच्चाई व इंसाफ के तमाम तकाजों को रैंद डालता है, वह भी सारासर बातिल है। क्योंकि इंसानी जिंदगी अगर इसी जालिमाना हालत पर तमाम हो जाए तो यह दुनिया बिल्कुल बेमअना करार पाती है। इसका मतलब यह है कि यह दुनिया खुदार्ज और अनानियतपसंद (अहंकारी) लोगों की तमाशागाह है। हालांकि कायनात का निजाम जिस बाकमाल खुदा की तजल्लियां (आलोक) दिखा रहा है उससे इंतिहाई बईद (पर) है कि वह इस तरह की कोई बेमकसद तमाशागाह खड़ी करे।

दुनिया की मौजूदा सूरतेहाल बिल्कुल आरजी है। खुदा किसी भी दिन अपना नया हुक्म जारी करके इस निजाम को तोड़ देगा। इसके बाद इंसान की मौजूदा आजादी खत्म हो जाएगी और खुदा का इक्तेदार इंसानों पर भी उसी तरह कायम हो जाएगा जिस तरह आज वह बाकी कायनात पर कायम है। उस वक्त कामयाब वे होंगे जिन्होंने इस्तेहान के जमाने में अपने को खुदा के हवाले किया था, जो किसी दबाव के बगैर अल्लाह से डरने वाले और उसके आगे हमहतन झुक जाने वाले थे।

وَلِذُكَّالِ الْإِبْرَاهِيمَ لَا يَمُرُّ بَيْنَهُمَا لُغْوٌ وَلَا يَأْتِي الْإِلَهَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَوَّلُ مَا كُنَّا فِي زُلْفَىٰ
مُؤْمِنِينَ ۖ وَكَذَلِكَ نُرِي الْإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ التَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ
فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَى الْكُوكِبَ قَالَ هَذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْإِذْلِينَ ۖ
فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِعًا قَالَ هَذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَيْسَ لِي بِهِ يَهْدِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ
مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ۖ فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِعَةً قَالَ هَذَا رَبِّي هَذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا أَفَلَتْ
قَالَ يَقُومُ رَبِّي بَرَأً ۖ رَبِّمَا تَشْرِكُونَ ۖ إِنَّنِي وَجْهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ حَنِيفًا ۖ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۖ

और जब इब्राहीम ने अपने बाप आजर से कहा कि क्या तुम बुतों को खुदा मानते हो। मैं तुम्हें और तुम्हारी कौम को खुली हुई गुमराही में देखता हूं। और इसी तरह हमने इब्राहीम को दिखा दी आसमानों और जमीन की हुक्ममत, और ताकि उसे यकीन आ जाए। फिर जब रात ने उस पर अंधेरा कर लिया उसने एक तारे को देखा। कहा यह मेरा रब है। फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा मैं डूब जाने वालों को दोस्त नहीं रखता। फिर जब उसने चांद को चमकते हुए देखा तो कहा यह मेरा रब है। फिर जब वह डूब गया तो उसने कहा अगर मेरा रब मुझे हिदायत न करे तो मैं गुमराह लोगों में से हो जाऊं। फिर जब सूरज को चमकते हुए देखा तो कहा कि यह मेरा रब है, यह सबसे बड़ा है। फिर जब वह डूब गया तो उसने

अपनी कौम से कहा कि ऐ लोगो, मैं उस शिर्क (साझीदार ठहराना) से बरी हूं जो तुम करते हो। मैंने अपना रूख एकसु होकर उसकी तरफ कर लिया जिसने आसमानों और जमीन को पैदा कर लिया है और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं। (75-80)

इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कहानी जो जहां बयान हुई है वह हक की तलाश की कहानी नहीं है बल्कि हक के मुशाहिदे (अवलोकन) की कहानी है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम चार हजार साल पहले इराक में ऐसे माहौल में पैदा हुए जहां सूरज, चांद और तारों की परस्तिश होती थी। ताहम फितरत की रहनुमाई और अल्लाह की खुसूसी मदद ने आपको शिर्क से महफूज रखा। आप की बेदार निगाह कायनात के फैले हुए शवाहिद (साक्षातरूप) में तौहीद (एक खुदा) के खुले हुए दलाइल देखतीं। कायनात के आइने में हर तरफ आपको एक खुदा का चेहरा नजर आता था। आप कौम की हालत पर अफसोस करते और लोगों को बताते कि खुले हुए हकाइक के बावजूद क्यों तुम लोग अंधे बने हुए हो।

रात का वक्त है। इब्राहीम आसमान में खुदाए वाहिद की निशानियां देख रहे हैं। उसी आलम में सय्यारा जोहरा (शुक्र ग्रह) चमकता हुआ उनके सामने आता है जिसे उनकी कौम माबूद समझ कर पूजती थी। उनके दिल में बतौर सवाल नहीं बल्कि बतौर इस्तेजाब (आश्चर्य) यह ख्याल आता है कि क्या यही वह चीज है जो मेरा रब हो, यही वह माबूद (पूज्य) है जिसकी हमें परस्तिश करनी चाहिए। यहां तक कि जब वह उसे अपने सामने डूबता हुआ देखते हैं तो उसका डूबना उनके लिए अपने अकीदे के सही होने की एक मुशाहिदाती (अवलोकनीय) दलील बन जाती है। वह कह उठते हैं कि जो चीज एक लम्हे के लिए चमके और फिर गायब हो जाए वह कैसे इस काबिल हो सकती है कि उसे पूजा जाए। बिल्कुल यही तजर्बा उन्हें चांद और सूरज के साथ भी गुजरता है। हर एक चमक कर थोड़ी देर के लिए इस्तेजाब (आश्चर्य) पैदा करता है और फिर डूब जाता है। यह फत्कियाती मुशाहिदात (आकाशीय अवलोकन) जो उनके अपने लिए तौहीद की खुली हुई तस्दीक थे। इसी को वह कौम के सामने अपनी तब्लीग में बतौर इस्तदलाल (तर्क) पेश करते हैं और अंदाजे कलाम वह इख्तियार करते हैं जिसे इस्तलाह (शब्दावली) में हुज्जते इल्जामी कहा जाता है। यानी मुश्कतिब के अल्फज को देह्राकर फिर उसे कयल करना। हुज्जते इल्जामी का यह तरीका कुरआन में दूसरे मकमात पर भी मजकूर हुआ है। मसलन 'और तू अपने माबूद (पूज्य) को देख जिस पर तू बड़ा एकाग्र रहता है।' (ता० हा० 97)

कायनात में खुदा की जो तख्लीकी निशानियां फैली हुई हैं वे किसी बंदे के लिए ईमान के इज़ाफे का जरिया भी हैं और इन्हीं से दावते हक के लिए मजबूत दलाइल भी हासिल होते हैं।

وَحَاجَّةُ قَوْمِهِ قَالَ أَتُحَاجُّونِي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدِينَا وَلَا آخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ
إِلَّا أَنْ يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۖ وَكَيْفَ آخَافُ
مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنْتُمْ أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنْزَلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا
فَأَمَّا الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْسُوا

إِنِّي أَنزَلْنَاهُ بِنُوحٍ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْأَمَنُونَ ۚ وَهُمْ مُّهُتَدُونَ ۚ وَلَٰئِكَ جَنَّاتُ النَّارِ ۖ

إِزْبَاهِيْمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۚ كَرَفَعَهُ دَرَجَاتٍ ۖ مِّنْ شَأْنِ أَنَّ رَّبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝۸

और उसकी कौम उससे झगड़ने लगी। उसने कहा क्या तुम अल्लाह के मामले में मुझसे झगड़ते हो हालांकि उसने मुझे राह दिखा दी है। और मैं उनसे नहीं डरता जिन्हें तुम अल्लाह का शरीक ठहराते हो मगर यह कि कोई बात मेरा ख ही चाहे। मेरे ख का इल्म हर चीज पर छाया हुआ है, क्या तुम नहीं सोचते। और मैं क्योंकि डरूँ तुम्हारे शरीकों से जबकि तुम अल्लाह के साथ उन चीजों को खुदाई में शरीक ठहराते हुए नहीं डरते जिनके लिए उसने तुम पर कोई सनद नहीं उतारी। अब दोनों फरीकों (पक्षों) में से अमन का ज्यादा मुस्तहिक कौन है, अगर तुम जानते हो। जो लोग ईमान लाए और नहीं मिलाया उन्होंने अपने ईमान में कोई नुकसान, उन्हीं के लिए अमन है और वही सीधी राह पर हैं। यह है हमारी दलील जो हमने इब्राहीम को उसकी कौम के मुक़ाबले में दी। हम जिसके दर्जे चाहते हैं बुलन्द कर देते हैं। वेशक तुम्हारा ख हकीम (तत्वदर्शी) व अलीम (ज्ञानवान) है। (81-84)

जब किसी चीज या किसी शख्सियत को माबूद का दर्जा दे दिया जाए तो इसके बाद फितरी तौर पर यह होता है कि उसके साथ रहस्यमयी अज्मतों के तसव्वुरात वाबस्ता हो जाते हैं। लोग समझने लगते हैं कि इस जात को कायनाती नक़्शे में कोई ऐसा बरतर मक़ाम हासिल है जो दूसरे लोगों को हासिल नहीं। उसे खुश करने से किस्मतें बनती हैं। और उसे नाराज करने से किस्मतें बिगड़ जाती हैं। चुनांचे हजरत इब्राहीम ने जब अपनी कौम के बुतों के बारे में कहा कि ये बेहकीकत हैं, इन्हें खुदा की इस दुनिया में कोई जोर हासिल नहीं तो लोगों को अदिशा होने लगा कि इस गुस्ताखी के नतीजे में कहीं कोई ववाल न आ पड़े। वे हजरत इब्राहीम से बहसें करने लगे। उन्होंने आपको डराया कि तुम ऐसी बातें न करो वरना इन माबूदों का ग़जब तुम्हारे ऊपर नाजिल होगा। तुम अंधे हो जाओगे, तुम पागल हो जाओगे। तुम बर्बाद हो जाओगे, वगैरह।

इस दुनिया में सिर्फ़ खुदा की एक जात है जिसकी क़िबरीयाई (बड़ाई) दलील व बुरहान (सुस्पष्ट तर्क) के ऊपर कायम है। इसके सिवा बड़ाई और माबूदियत की जितनी किस्में हैं सब तबहहमाती अकाइद (अंधविश्वासों) की बुनियाद पर खड़ी होती हैं। खुदा की खुदाई अपने आप कायम है, जबकि दूसरी तमाम खुदाइयाँ सिर्फ़ उनके मानने वालों की बदीलत हैं। अगर मानने वाले न मानें तो ये खुदाइयाँ भी बेवजूद होकर रह जाएँ।

जाहिर हालात को देखकर इन माबूदों के परस्तार अक्सर इस धोखे में पड़ जाते हैं कि वे सच्चे खुदापरस्तों के मुक़ाबले में ज्यादा महफूज मक़ाम पर खड़े हुए हैं। मगर यह बदतरीन ग़लतफ़हमी है। महफूज हैसियत दरअसल उसकी है जो दलील और बुरहान पर खड़ा हुआ है। दुनियावी रवाज से मुसालेहत करके कोई शख्स अपने लिए महफूज दीवार हासिल कर ले तो आखिरी अंजाम के एतबार से उसकी कोई हकीकत नहीं।

झूठे माबूदों का ग़लबा (वर्चस्व) कभी इस नौबत को पहुंचता है कि सच्चे खुदापरस्त भी उससे मरऊब होकर उससे साजगारी कर लेते हैं। दुनियावी मस्तेहतें और मादूदी मफ़ादात (सांसारिक हित, स्वार्थ) उनसे इस दर्जे वाबस्ता हो जाते हैं कि बजाहिर ऐसा मालूम होने लगता है कि बाइज्जत जिंदगी हासिल करने की इसके सिवा कोई और सूरत नहीं कि इन माबूदों के तहत बने हुए ढांचे से मुसालेहत कर ली जाए। मगर इस किस्म का रवैया अपने ईमान में ऐसा नुक़सान शामिल कर लेना है जो खुद ईमान ही को खुदा की नजर में मुशतबह (संदिग्ध) बना दे।

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ ۚ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ ۚ وَأَيُّوبَ ۚ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝۹

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِيلَاسَ ۖ كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ ۝۱۰ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيُوسُفَ ۖ وَنُوحًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ۝۱۱ وَمِن آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۖ وَإِخْوَانِهِمْ ۖ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝۱۲ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَن يَشَاءُ ۚ مِّنْ عِبَادِهِ ۚ وَلَوْ أَشْكُرُوا لَحَطَطْنَا عَنْهُمْ ۖ مَا كَانُوا يَشْكُرُونَ ۝۱۳ وَلَٰئِكَ الَّذِينَ اتَّيْنَاهُمُ الْكِتَابَ ۖ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَإِنْ يَكْفُرْ بِهَا هَٰؤُلَاءِ فَقَدْ وَكَلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوا بِهَا بِكَافِرِينَ ۝۱۴ وَلَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهِدَّاهُمْ أَقْبَنَهُ ۖ قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِن هُوَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْعَالَمِينَ ۝۱۵

और हमने इब्राहीम को इस्हाक और याकूब अता किए, हर एक को हमने हिदायत दी और नूह को भी हमने हिदायत दी इससे पहले। और उसकी नस्ल में से दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ और मूसा और हारून को भी। और हम नेकों को इसी तरह बदला देते हैं। और जकरिया और यहया और ईसा और इलियास को भी, इनमें से हर एक सालेह (नेक) था। और इस्माईल और अलयासअ और यूनस और लूत को भी और इनमें से हर एक को हमने दुनिया वालों पर फज़ीलत (श्रेष्ठता) अता की। और उनके बाप दादों और उनकी औलाद और उनके भाइयों में से भी, और उन्हें हमने चुन लिया और हमने सीधे रास्ते की तरफ उनकी रहनुमाई की। यह अल्लाह की हिदायत है, वह इससे सरफ़ाज़ करता है अपने बंदों में से जिसे चाहता है। और अगर वे शिर्क करते तो जाया हो जाता जो कुछ उन्होंने किया था। ये लोग हैं जिन्हें हमने किताब और हिकमत और नुबुव्वत अता की। पस अगर ये मक्का वाले इसका इंकार कर दें तो हमने इसके लिए ऐसे लोग मुकर्र कर दिए हैं जो इसके मुंकिर नहीं हैं। यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत बख़्शी, पस तुम भी उनके तरीके पर चलो। कह दो, मैं इस पर तुमसे कोई मुआवज़ा नहीं मांगता। यह तो बस एक नसीहत है दुनिया वालों के लिए। (85-91)

‘फजीलत’ किसी का नस्ली या क़ैमी लक़ब नहीं, यह अल्लाह का एक अतिया (दिन) है जिसका तहक्कुक (अधिकार) सिर्फ़ उन अफ़राद के लिए होता है जो खुदा की ह्दियत के मुताबिक अपने को सालेह बनाएं, शिर्क की तमाम किस्मों से अपने आपको बचाएं। और ‘बिला मुआवजा नसीहत’ के दावती मंसूबे में अपने को हमहतन शामिल करें। ये वे लोग हैं जो खुदा की किताब को अपने हकीकी रहनुमा बनाते हैं। वे इसके साथ अपने वजूद को इतना ज्यादा शामिल कर देते हैं कि उन पर इस राह के वे भेद खुलने लगते हैं जिन्हें हिक्मत कहा जाता है। यही वे लोग हैं जिन्हें खुदा चुन लेता है और उनमें से जिन्हें चाहता है अपने दीन की पैगामरसानी की तौफ़ीक़ देता है, दौरे नुबुव्वत में अल्लाह के खुसूसी पैग़म्बर की हैसियत से और ख़ल्मे नुबुव्वत के बाद अल्लाह के आम दाओ की हैसियत से। अल्लाह का इनाम चाहे वह पैग़म्बरों के लिए हो या आम इंसानों के लिए, तमामतर नेक अमली की बुनियाद पर मिलता है न कि किसी और बुनियाद पर।

दावते हक़ का काम सिर्फ़ वे लोग करते हैं जो उसकी ख़ातिर इतना ज्यादा यक़सू और बेनफ़स हो चुके हों कि वे मदऊ (संबोधित व्यक्ति) से किसी किस्म की मादूदी उम्मीद न रखें। जिस शख़्स या ग़िरोह तक आप आख़िरत का पैग़ाम पहुंचा रहे हों उसी से आप अपने दुनियावी हुक्क के लिए एहतेजाज (प्रोटेस्ट) और मुतालबात की मुहिम नहीं चला सकते। दाओ का ऐसा करना सिर्फ़ इस कीमत पर होगा कि उसकी दावत मदऊ की नजर में हास्यास्पद बन कर रह जाए और माहौल के अंदर कभी उसे संजीदा मुहिम की हैसियत हासिल न हो।

मक्का में कुछ लोग आप पर ईमान लाए। मगर बहैसियत ‘कौम’ मक्का वालों ने आपका इंकार कर दिया। इसके बाद अल्लाह तआला ने मदीने वालों के दिल आपकी दावत के पक्ष में नर्म कर दिए और वे बहैसियत कौम आपके मोमिन बन गए। यहाँ तक कि आपके लिए यह मुमकिन हो गया कि आप मक्का से मदीना जाकर वहाँ इस्लाम का मर्कज़ कायम कर सकें। अल्लाह तआला की यह मदद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कामिल दर्जे में हासिल हुई। ताहम आपकी उम्मत में उठने वाले दाओियों को भी अल्लाह यह मदद दे सकता है और अपनी मस्लेहत के मुताबिक देता रहा है।

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ قُلْ مَن أَنْزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَى نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ قُرْآنًا تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا وَعُلِّمْتُم مَّا لَمْ تَعْلَمُوا أَنْتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ قُلِ اللَّهُ ۖ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ۖ وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ بِرُوحِ مُصَدِّقٍ أَلَدَى بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرَى وَمَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝

और उन्होंने अल्लाह का बहुत ग़लत अंदाज़ा लगाया जब उन्होंने कहा कि अल्लाह ने किसी इंसान पर कोई चीज नहीं उतारी। कहो कि वह किताब किसने उतारी थी जिसे लेकर मूसा आए थे, वह रोशनी थी और रहनुमाई थी लोगों के वास्ते, जिसे तुमने वरक-वरक कर रखा है। कुछ को जाहिर करते हो और बहुत कुछ छुपा जाते हो। और तुम्हें वे बातें सिखाईं जिन्हें न जानते थे तुम और न तुम्हारे बाप दादा। कहो कि अल्लाह ने उतारी। फिर उन्हें छोड़ दो कि अपनी कजबहसियों (कुसंवाद) में खेलते रहें। और यह एक किताब है जो हमने उतारी है, वरकत वाली है, तस्दीक करने वाली उनकी जो इससे पहले हैं। और ताकि तू डराए मक्का वालों को और उसके आस पास वालों को। और जो आख़िरत पर यकीन रखते हैं वही उस पर ईमान लाएंगे। और वे अपनी नमाज की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (92-93)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत मक्का वालों के सामने आई तो उनके कुछ लोगों ने कुछ यहूद से पूछा कि तुम्हारा इस बारे में क्या ख़्याल है। क्या मुहम्मद पर वाकई खुदा का कलाम नाज़िल हुआ है। यहूद ने जवाब दिया ‘खुदा ने किसी बशर पर कुछ नाज़िल नहीं किया है।’ बजाहिर यह बात बड़ी अजीब है। क्योंकि यहूद तो खुद नबियों को मानने वाले थे। और इस तरह गोया वे इकारार कर रहे थे कि बशर पर खुदा का कलाम उतरता है। मगर जब आदमी मुख़ालिफ़त में अंधा हो जाए तो वह मुख़ालिफ़ की तरदीद (रद्द) के जोश में कभी यहाँ तक पहुंच जाता है कि अपनी मानी हुई बातों की तरदीद करने लगे।

यहूद के अंदर यह डिठाई इसलिए पैदा हुई कि उन्होंने खुदा की किताब को वरक-वरक कर दिया था। वे खुदा की तालीमात के कुछ किस्से को सामने लाते और बाकी को किताब में बंद रखते। मसलन वे इनाम वाली आयतों को ख़ूब सुनते सुनाते और उन आयतों को छोड़ देते जिनमें वे आमाल बताए गए हैं जिनके करने से किसी को मज्कूरा इनाम मिलता है। वे ऐसी आयतों का खुसूसी तज्किरा करते जिनसे उनकी शोर व गुल की सियासत की ताईद निकलती हो और उन आयतों को नजरअंदाज कर देते जिनमें ख़ामोश इस्लाह के अहक़ाम दिए गए हों। वे ऐसी आयतों के दर्स में बड़ा एहतिमांम करते जिनमें उनके लिए लफ़्ज़ी फ़ायदे (कुतर्कों) का कमाल दिखाने का मौका हो मगर उन आयतों से सरसरी गुजर जाते जिनमें दीन के अबदी हक़इक़ बयान किए गए हैं। वे ऐसी आयतों का ख़ूब चर्चा करते जिनसे अपनी फ़जीलत निकलती हो और उन आयतों से बेतवज्जोही बरतते हैं जिनसे उनकी जिम्मेदारियां मालूम होती हैं। जो लोग खुदा की किताब को इस तरह ‘वरक-वरक’ करें उनके अंदर फ़ितरी तौर पर डिठाई आ जाती है। वे पैर संजीदा बहस करते हैं, परस्पर विरोधी बयानात देते हैं। उनसे किसी हकीकी तआवुन की उम्मीद नहीं

की जा सकती। जो लोग खुदा की किताब के साथ ईसाफ न करें वे ईसानों के साथ मामला करने में कैसे ईसाफ कर सकते हैं।

दीन की दावत अस्लन लोगों को होशियार करने की दावत है। इस किस्म की दावत चाहे कितने ही कामिल इंसान की तरफ से पेश की जाए वह सुनने वाले के दिल में उस वक्त जगह करेगी जबकि वह अपने सीने में एक अदेशानाक दिल रखता हो और आखिरत के मामले को एक संजीदा मामला समझता हो। सुनने वाले में अगर यह इब्तिदाई मादूदा मौजूद न हो तो सुनाने वाला उसे कोई फायदा नहीं पहुंचा सकता।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ
وَمَنْ قَالَ سَأُنْزِلُ مِثْلَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ
وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنْفُسَكُمُ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا
كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ ٩٤
وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَلَمْ يُؤْمَرْ أَنْ يَنْزِلَ إِلَيْكُمْ فَأَنْزَلْنَا لَهُ آيَاتِنَا فَتَلَاها
وَمَا يَكْفُرُ أَعْيُنُهُمْ فَطَنُوا آلِهَتَهُمْ فَأَوْتَتْهُمْ آلِهَتُهُمْ مَا يَنْزِلُونَ ٩٥
وَصَلَّىٰ عَنْكُمْ وَقَالَتْ لَهُمْ نُسُوحُنَا ٩٦

और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ तोहमत बांधे या कहे कि मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आई है हालांकि उस पर कोई 'वही' नाजिल नहीं की गई हो। और कहे कि जैसा कलाम खुदा ने उतारा है मैं भी उतारूंगा। और काश तुम उस वक्त देखो जबकि ये जालिम मौत की सख्तियों में होंगे और फरिश्ते हाथ बढ़ा रहे होंगे कि लाओ अपनी जानें निकालो। आज तुम्हें जिल्लत का अजाब दिया जाएगा इस सबब से कि तुम अल्लाह पर झूठी बातें कहते थे। और तुम अल्लाह की निशानियों से तकबुर (घमंड) करते थे। और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गए जैसा कि हमने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा किया था। और जो कुछ असबाब हमने तुम्हें दिया था सब तुम पीछे छोड़ आए। और हम तुम्हारे साथ उन सिफारिश वालों को भी नहीं देखते जिनके मुत्तअल्लिक तुम समझते थे कि तुम्हारा काम बनाने में उनका भी हिस्सा है। तुम्हारा रिश्ता टूट गया और तुमसे जाते रहे वे दावे जो तुम करते थे। (94-95)

अल्लाह जब अपने किसी बंदे को अपनी पुकार बुलन्द करने के लिए खड़ा करता है तो इसी के साथ उसे खुसूसी तौफ़ीक भी अता करता है। उसके किरदार में आखिरत के ख़ौफ की झलक होती है। उसकी बातों में खुदाई इस्तदलाल (तर्की) की ताकत नजर आती है।

बेपनाह मुखालिफतों के बावजूद वह अपने पैगामरसानी के अमल को आलातरीन शक्ल में जारी रखने में कामयाब होता है। वह अपने पूरे वजूद के साथ खुदा की जमीन पर खुदा की निशानी होता है। मगर जिनकी निगाहें दुनियावी अज्मत की चीजों में गुम हों वे आखिरत के दाजी की अज्मत को समझ नहीं पाते। यहां तक कि उनके मादूदी पैमाने में उनकी अपनी जात बरतर और अल्लाह के दाजी की जात कमतर दिखाई देती है। यह चीज उन्हें तकबुर (घमंड) में मुब्तिला कर देती है और जो लोग तकबुर की नफिसयात में मुब्तिला हो जाएं उनसे कोई भी नामाकूल रवैया दूर नहीं रहता। यहां तक कि वह इस ग़लतफहमी में मुब्तिला हो सकते हैं कि वे भी वैसा ही कलाम तख़्कीक कर सकते हैं जैसा कलाम खुदा की तरफ से किसी बंदे पर उतरता है। वे खुदा को तिलिस्माती निशानियों में देखना चाहते हैं इसलिए वे बशरी निशानियों में जाहिर होने वाले खुदा को पहचान नहीं पाते।

यह तकबुर जो किसी आदमी के अंदर पैदा होता है वह उस दुनियावी हैसियत और मादूदी सामान की बुनियाद पर होता है जो उसे दुनिया में मिला हुआ है। वह भूल जाता है कि दुनिया में जो कुछ उसे हासिल है वह महज आजमाइश के लिए और निर्धारित मुदत के लिए है। मौत का वक्त आते ही अचानक ये तमाम चीजें छिन जाएंगी। इसके बाद आदमी उसी तरह महज एक तंहा वजूद होगा जिस तरह वह इब्तिदाई पैदाइश के वक्त एक तंहा वजूद था। मौत के फ़ौरन बाद हर आदमी अपनी जिंदगी के इस मरहले में पहुंच जाता है जहां न उसकी दौलत होगी और न उसकी हैसियत, जहां न उसके साथी होंगे और न उसके सिफारिशी। वह होगा और उसका खुदा होगा। दुनिया में उसे जिन चीजों पर नाज था उनमें से कोई चीज भी उस दिन उसे खुदा की पकड़ से बचाने के लिए मौजूद न होगी।

दुनिया में हर आदमी अल्फ़ाज के तिलिस्म में जीता है। हर आदमी अपने हस्वेहाल ऐसे अल्फ़ाज तलाश कर लेता है जिसमें उसका वजूद बिल्कुल बरहक दिखाई दे, उसका रास्ता सीधा मजि़ल की तरफ जाता हुआ नजर आए। मगर आखिरत का इम्तलाब जब हकीकतों के पर्दे फाड़ देगा तो लोगों के ये अल्फ़ाज इस कदर बेमअना हो जाएंगे जैसा कि उनका कोई वजूद ही न था।

إِنَّ اللَّهَ فَلَقَ الْحَبَّ وَالنَّوَىٰ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَخُجِّرَ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ
ذِكْرُ اللَّهِ فَآلَىٰ تَوْفَاقُونَ ٩٧
فَالِقَ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ حُسْبَانًا ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ٩٨
وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ
لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ اللَّيْلِ وَالْبَحْرِ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ٩٩

वेशक अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ने वाला है। वह जानदार को बेजान से निकालता है और वही बेजान को जानदार से निकालने वाला है। वही तुम्हारा अल्लाह है, फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो। वही बरामद करने वाला है सुबह का और

उसने रात को सुकून का वक्त बनाया और सूरज और चांद को हिसाब से रखा है। यह ठहराया हुआ है बड़े ग़लबे (वर्चस्व) वाले का, बड़े इल्म वाले का। और वही है जिसने तुम्हारे लिए सितारे बनाए ताकि तुम उनके जरिए से खुशकी और तरी के अंधेरों में राह पाओ। बेशक हमने दलाइल (तर्क) खोल कर बयान कर दिए हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। (96-98)

इंसान को जब एक मोटरकार या और कोई चीज बनाना होता है तो वह उसके हर जुज को अलग-अलग बनाता है। और फिर उसके अज्जा को जोड़ कर मलूबा चीज तैयार करता है, मगर जब खुदा एक दरख्त उगाता है या एक इंसान पैदा करता है तो उसकी नौइयत बिल्कुल दूसरी होती है। वह किसी चीज को उसके पूरे मज्मूअे के साथ एक वक्त में बरामद कर देता है। खुदाई कारख़ाने में पूरा का पूरा दरख्त या पूरा का पूरा इंसान एक ही बीज या एक ही बूंद से क्रमशः निकल कर खड़ा हो जाता है। यह इतिहाई अनोखी तकनीक है जिस पर किसी भी इंसान को काबू नहीं। इससे साबित होता है कि यहां इंसान से बढ़कर एक हस्ती मौजूद है जिसका मंसूबा तमाम मंसूबों से बुलन्द है।

सूरज की जसामत जमीन से बारह लाख गुनाह ज्यादा है। और जमीन चांद से चौगुना ज्यादा बड़ी है। ये सब अज्राम (रचनाएं) मुसलसल हरकत में हैं। चांद जमीन से तकरीबन ढाई लाख मील दूर रह कर जमीन के गिर्द चक्कर लगा रहा है और जमीन सूरज से तकरीबन साढ़े नौ करोड़ मील के फासले पर रहते हुए सूरज के गिर्द दो तरीके से घूम रही है, एक अपने महवर (धुरी) पर और दूसरे सूरज के मदार (कक्ष) पर। इसी तरह सितारों की गर्दिश का मामला है जो दहशतनाक हद तक असीम फासलों पर हद दर्जा बाकायदगी के साथ मुतहरिक (गतिमान) हैं। इसी कायनाती तंजीम से दिन और रात पैदा होते हैं। इसी से औकात (समयों) का नक्शा मुर्क़र होता है। इसी से खुशकी और तरी में इंसान के लिए अपनी जिंदगी की तर्तीब कायम करना मुमकिन होता है। यह इतना बड़ा निजाम इतनी सेहत के साथ चल रहा है कि हजारों साल में भी इसके अंदर कोई फर्क नहीं आता। इससे साबित होता है कि यहां एक ऐसी हस्ती है कि जिसकी ताकतें लामहदूद (असीमित) हद तक ज्यादा हैं।

खुदा की ये निशानियां बहुत बड़े पैमाने पर बता रही हैं कि इस कारख़ाने का बनाने वाला बहुत बड़े इल्म वाला है। कोई बेइल्म हस्ती इतना बड़ा दांचा कायम नहीं कर सकती। वह बहुत ग़लबे वाला है, उसके बग़ैर इतने बड़े कारख़ाने का इस तरह चलना मुमकिन नहीं हो सकता। उसकी मंसूबाबंदी इतिहाई हद तक कामिल है। अगर ऐसा न हो तो इतनी बड़ी कायनात में इस कद्र मअनवियन (सार्थकता) और हमआहंगी (सामंजस्य) का वजूद नामुमकिन हो जाए।

खुदा की दुनिया खुदा के दलाइल से भरी हुई है। मगर दलील एक नजरी माकूलियत का नाम है न कि किसी हथोड़े का। इसलिए दलील को मानना किसी के लिए सिर्फ उस वक्त मुमकिन होता है जबकि वह वाकई संजीदा हो, वह शुऊरी तौर पर इसके लिए तैयार हो कि वह दलील को मान लेगा चाहे वह उसकी मुवाफ़िक्कत में जारी हो या उसके ख़िलाफ़।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ قَدْ فَضَّلْنَا الْآلِيَّاتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ ۖ وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِن طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنَّاتٍ مِّنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّومَانَ مُسْتَبْتِهًا وَعَذِيرٌ مُّتَسَابِهٌ يُنْظَرُ إِلَى ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ إِنَّ فِي ذَٰلِكُمْ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

और वही है जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से, फिर हर एक के लिए एक ठिकाना है और हर एक के लिए उसके सौंपे जाने की जगह। हमने दलाइल खोल कर बयान कर दिए हैं उन लोगों के लिए जो समझें। और वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने उससे निकाली उगने वाली हर चीज। फिर हमने उससे सरसब्ज शाख़ निकाली जिससे हम तह-ब-तह दाने पैदा कर देते हैं। और खजूर के गाभे में से फल के गुच्छे झुके हुए और बाग़ अंगूर के और जैतून के और अनार के, आपस में मिलते जुलते और जुदा जुदा भी। हर एक के फल को देखो जब वह फलता है। और उसके पकने को देखो जब वह पकता है। बेशक इनके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान की तलब रखते हैं। (99-100)

इंसानी कारख़ाने इस पर कादिर नहीं कि वे एक ऐसी मशीन बना दें कि उसके बल से उसी किस्म की बेशुमार मशीनें खुद बखुद निकलती चली जाएं। हमारे कारख़ानों को हर मशीन अलग-अलग बनानी पड़ती है। मगर खुदा के कारख़ाने में यह वाक्या हर रोज हो रहा है। दरख्त का एक बीज बो दिया जाता है। फिर इस बीज से बेशुमार दरख्त निकलते चले जाते हैं। यही मामला इंसान का है। एक मर्द और एक औरत से शुरू होकर खरब हा खरब इंसान पैदा होते जा रहे हैं और इनका सिलसिला ख़त्म नहीं होता। यह मुशाहिदा बताता है कि जिस खुदा ने कायनात को पैदा किया है उसकी कुदरत बेहद वसीअ है। वह इस नादिर (दुर्लभ) तख़्नीक पर कादिर है कि एक इब्तिदाई चीज वजूद में लाए और फिर उसके अंदर से बेहिसाब गुना ज्यादा बड़ी-बड़ी चीजें मुसलसल निकलती चली जाएं। इसी तरह खुदा मौजूदा दुनिया से एक ज्यादा शानदार और ज्यादा मेयारी दुनिया निकाल सकता है। आखिरत का अकीदा कोई दूर का अकीदा नहीं बल्कि जिस इम्कान को हम हर रोज देख रहे हैं उसी इम्कान को मुस्तक़बिल के एक वाक्ये की हैसियत से तस्लीम करना है।

मिट्टी बजाहिर एक मुर्दा और जामिद (जड़) चीज है। फिर उसके ऊपर बारिश होती है। पानी पाते ही मिट्टी के अंदर से एक नई सरसब्ज दुनिया निकल आती है। उसके अंदर से तरह-तरह की फरलें और किस्म किस्म के फलदार दरख़्त वजूद में आ जाते हैं। यह वाक्या भी मौजूदा दुनिया के बाद आने वाली दुनिया की एक तमसील है। मिट्टी पर पानी पड़ने से

जमीन के ऊपर रंग और खुशबू और जायके का एक सरसब्ज व शादाब चमन खिल उठना उस इम्कान को बताता है जो दुनिया के खालिक ने यहां रख दिया है। आज की दुनिया में इंसान जो नेक अमल करता है वह इसी किस्म का एक इम्कान है। जब खुदा की रहमतों की बारिश होगी तो यह इम्कान हरा भरा होकर आखिरत की लहलहाती हुई फसल की सूरत में तब्दील हो जाएगा।

इंसान अव्वलन मां के बल के सुपुर्द होता है फिर मौजूदा दुनिया में आता है। कब्र भी गोया इसी किस्म का एक 'बल' है। आदमी कब्र के सुपुर्द किया जाता है और इसके बाद वह अगली दुनिया में आख खोलता है ताकि अपने अमल के मुताबिक जन्नत या जहन्नम में दाखिल कर दिया जाए। इंसान से ग़ैब की जिस दुनिया को मानने का मुतालाबा किया जा रहा है उसकी झलकियां और उसके दलाइल मौजूदा महसूस कायनात में पूरी तरह मौजूद हैं। मगर मानता वही है जो पहले से मानने के लिए तैयार हो। 'ईमान' की राह में आदमी जब आधा सफर तै कर चुका होता है इसके बाद ही यह मुमकिन होता है कि ईमान की दावत उसके जेहन का जुज बने और वह उसे कुबूल कर ले। जो शख्स ईमान के उल्टे रुख पर सफर कर रहा हो उसे ईमान की दावत कभी नफा नहीं पहुंचा सकती।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ سُبْحَنَهُ
وَتَعَالَى عَمَّا يُصِفُونَ ۚ بَدِيعُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنِّي يُكُونُ لَهُ لَكُلُّ شَيْءٍ قَدْرًا
لَهُ صَاحِبَةٌ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَا إِلَهَ
إِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوهُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝ لَا تَدْرِكُهُ
الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۝ قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرُ
مِّن رَّبِّكُمْ فَمَن أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَن عَمِيَٰ فَعَلَيْهَا ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ۝

और उन्होंने जिन्नात को अल्लाह का शरीक करार दिया। हालांकि उसी ने उन्हें पैदा किया है। और वे जाने बूझे उसके लिए बेटियां और बेटे तराशीं। पाक और बरतर है वह उन बातों से जो ये बयान करते हैं। वह आसमानों और जमीन का मूजिद (उत्पत्तिकर्ता) है। उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है जबकि उसकी कोई बीवी नहीं। और उसने हर चीज को पैदा किया है और वह हर चीज से बाख़बर है। यह है अल्लाह तुम्हारा रब। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वही हर चीज का ख़ालिक है, पस तुम उसी की इबादत करो। और वह हर चीज का कारसाज है। उसे निगाहें नहीं पतीं। मगर वह निगाहों को पा लेता है। वह बड़ा बारीकबी और बड़ा बाख़बर है। अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से बसीरत की रोशनियां आ चुकी हैं। पस जो बीनाई से काम लेगा वह अपने ही लिए, और जो अंधा बनेगा वह खुद नुकसान उठाएगा। और मैं तुम्हारे ऊपर कोई निगरां नहीं हूं। (101-105)

कदीमतराने ज़माने से इंसान की यह कमजोरी रही है कि जिस चीज में भी कोई इम्तियाज या कोई पुरअसरारियत (रहस्य) देखता है उसे वह खुदा का शरीक समझ लेता है। और उससे मदद लेने और उसकी आपत्तों से बचने के लिए उसे पूजने लगता है। इसी जेहन के तहत बहुत से लोगों ने फरिश्तों और सितारों और जिन्नात को पूजना शुरू कर दिया। हालांकि इन चीजों के खुदा न होने का खुला हुआ सुबूत यह है कि उनके अंदर 'ख़ल्क' की सिपत नहीं। उन्होंने न अपने आपको पैदा किया और न वे दूसरी किसी चीज को पैदा करने पर कादिर हैं। उन्हें खुद किसी दूसरी हस्ती ने तख़लीक किया है। फिर जो ख़ालिक है वह खुदा होगा या जो मख़्लूक है वह खुदा बन जाएगा।

एक दरख़्त को समुचित रूप से वे तमाम चीजें पहुंचती हैं जो उसकी बका के लिए जरूरी हैं। इसी तरह कायनात की तमाम चीजों का हाल है। जब यह हकीकत है कि इन चीजों को जो कुछ मिलता है किसी देने वाले के दिए से मिलता है तो यकीनन देने वाला हर जुज व कुल से बाख़बर होगा। अगर वह इनसे बाख़बर न हो तो हर चीज की उसकी ऐन जरूरत के मुताबिक कारसाजी किस तरह करे। अब जो खुदा इतनी कामिल सिफ़त का मालिक हो वह आखिर किस जरूरत के लिए किसी को अपनी खुदाई में शरीक करेगा।

इंसान खुदा को महसूस सूरत में देखना चाहता है। और जब वह उसे महसूस सूरत में नजर नहीं आता तो वह दूसरी महसूस चीजों को खुदा फर्ज करके अपनी जहिरपरस्ती की तस्कीन कर लेता है। मगर यह खुदा की हस्ती का बहुत कमतर अंदाजा है। आखिर जो खुदा ऐसा अजीम हो कि इतनी बड़ी कायनात पैदा करे और इतिहाई नज्म के साथ उसे मुसलसल चलाता रहे, वह इतना मामूली कैसे हो सकता है कि एक कमजोर मख़्लूक उसे अपनी आंखों से देखे और अपने हाथों से छुए। अलबत्ता इंसान दिल की राह से खुदा को पाता है और यकीन की आंख से उसे देखता है। जो शख्स बसीरत (सूझबूझ) की आंख से देखकर मानने पर राजी हो वही खुदा को पाएगा। जो बसारत (निगाह) से देखने पर इसरार करे वह खुदा को पाने से उसी तरह महरूम रहेगा जिस तरह वह शख्स फूल की खुशबू को जानने से महरूम रहता है जो उसे कीमयाई (रासायनिक) मेयारों पर परख कर जानना चाहे।

وَكَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِيَعْلَمُوهُ ۚ إِنَّهُمْ يَخْتَصِمُونَ ۚ وَإِنَّهُمْ لَكَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَأَعْرَضَ عَنِ الشَّرِيعَةِ ۚ وَلَا تَشَاءُ
اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا ۚ وَمَا جَعَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۚ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۚ
وَلَا تَسْتَبُوءُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ
كَذَٰلِكَ زَيَّلْنَا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَنْ رَبِّهِمْ مَّرْجِعَهُمْ فَيَنتَسِبُونَ
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

और इस तरह हम अपनी दलीलें मुक़्तलिफ़ तरीकों से बयान करते हैं और ताकि वे कहें कि तुमने पढ़ दिया और ताकि हम अच्छी तरह खोल दें उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। तुम बस उस चीज की पैरवी करो जो तुम्हारे ख़ब की तरफ से तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मुश्रिकों से एराज (उपेक्षा) करो। और अगर अल्लाह चाहता तो ये लोग शिर्क न करते। और हमने तुम्हें उनके ऊपर निगरां (संरक्षक) नहीं बनाया है और न तुम उन पर मुख़्तार (साधिकार) हो। और अल्लाह के सिवा जिन्हें ये लोग पुकारते हैं उन्हें गाली न दो वरना ये लोग हद से गुजर कर जहालत की बुनियाद पर अल्लाह को गालियां देने लगेंगे। इसी तरह हमने हर गिरोह की नजर में उसके अमल को खुशनुमा बना दिया है। फिर उन सबको अपने ख़ब की तरफ पलटना है। उस वक़्त अल्लाह उन्हें बता देगा जो वे करते थे। (106-109)

एक शख्स वह है जिसके अंदर तलब की नपिसयात हो, जो सच्चाई की तलाश में रहता हो। दूसरे लोग वे हैं जो दौलत या इक्तेदार (सत्ता) का कोई हिस्सा पाकर यह समझने लगते हैं कि वे पाए हुए लोग हैं। उनके अंदर कोई कमी नहीं है जो कोई शख्स आकर पूरी करे। हक़ की दावत जब उठती है तो उसे कुबूल करने वाले ज्यादातर पहली किस्म के लोग होते हैं। इसके बरअक्स जो दूसरी किस्म के लोग हैं वे उसे कोई कबिले लिहाज चीज नहीं समझते। वे कभी संजीदगी के साथ उस पर ग़ौर नहीं करते। इसलिए उसकी अहमियत भी उन पर वाजेह नहीं होती। ऐसे हालात में हक़ की दावत के मक़सद दो होते हैं। जो सच्चे तालिब हैं उनकी तलब का जवाब फ़राहम करना। और जो लोग तालिब नहीं हैं उन पर हुज़्जत कायम करना। पहली किस्म के लोगों के लिए दावत का निशाना यह होता है कि वे उसके मानने वाले बन जाएं। और दूसरी किस्म के लोगों के लिए यह कि वे कह उठें कि 'तुमने बता दिया, तुमने बात हम तक पहुंचा दी।'।

जो लोग दावत का इंकार करते हैं वे अपने इंकार को बरहक़ साबित करने के लिए तरह-तरह की बातें निकालते हैं। ऐसे मौक़े पर दाओ के दिल में यह ख़याल आने लगता है कि वह दावत के अंदाज में ऐसी तब्दीली कर दे जिससे वह मदऊ के लिए कबिले कुबूल बन जाए। मगर इस किस्म का इंहिराफ़ (भटकाव) दुरुस्त नहीं। दाओ को हमेशा उसी उस्तूब पर कायम रहना चाहिए जो बराहेरास्त खुदा की तरफ से तक्कीन किया गया है। क्योंकि अस्ल मक़सद इंसान को खुदा से जोड़ना है न कि किसी न किसी तरह लोगों को अपने हलके में शामिल करना। दूसरी तरफ यह बात भी ग़लत है कि मदऊ के रवैये से उत्तेजित होकर ऐसी बातों की जाएं कि उसकी गुमराही जाहिलाना बदक़लामी तक जा पहुंचे।

आदमी जिन ख़ास रिवायात में पैदा होता है और जिन अपकार (विचारों) से वह मानूस (अंतरंग) हो जाता है, उनके हक़ में उसके अंदर एक तरह की अस्बियत पैदा हो जाती है। उसके मुताबिक़ उसका एक फ़ित्री ढांचा बन जाता है जिसके तहत वह सोचता है। यही फ़ित्री (वैचारिक) ढांचा हक़ को कुबूल करने की राह में सबसे बड़ी रुकावट है। जब तक आदमी इस फ़ित्री ढांचे को न तौड़े उसके ज़हन में वह दरवाज़ नहीं खुलता जिसके जरिये हक़ की आवाज़ उसके अंदर दाख़िल हो।

وَأَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لِّيُؤْمِنُوا بِهَا قُلْ إِنَّمَا الْآيَةُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَنَقْلَبُ أَمَدَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝

وَلَوْ أَنَّا زُلْنَا لِلْيَهُودِ الْمَلَكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْئِي وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قَبْلًا مَا كَانُوا لِلْيُؤْمِنُوا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللّٰهُ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ يَجْهَلُونَ ۝

और ये लोग अल्लाह की कसम बड़े जोर से खाकर कहते हैं कि अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वे जरूर उस पर ईमान ले आएंगे। कह दो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं। और तुम्हें क्या ख़बर कि अगर निशानियां आ जाएं तब भी ये ईमान नहीं लाएंगे। और हम उनके दिलों और उनकी निगाहों को फेर देंगे जैसा कि ये लोग उसके ऊपर पहली बार ईमान नहीं लाए। और हम उन्हें उनकी सरकशी में भटकता हुआ छोड़ देंगे। और अगर हम उन पर फ़रिश्ते उतार देते और मुर्दे उनसे बातें करते और हम सारी चीज़ें उनके सामने इकट्ठा कर देते तब भी ये लोग ईमान लाने वाले न थे इल्ला यह कि अल्लाह चाहे मगर उनमें से अक्सर लोग नादानी की बातें करते हैं। (110-112)

हक़ एक शख्स के सामने दलाइल (तर्कों) के साथ आता है और वह उसका इंकार कर देता है तो इसकी वजह हमेशा एक होती है। बात को उसके सही रुख़ से देखने के बजाए उल्टे रुख़ से देखना। कोई बात चाहे कितनी ही तार्किक हो, आदमी अगर उसे मानना न चाहे तो वह उसे रद्द करने के लिए कुछ न कुछ अल्फ़ाज़ पा लेगा। मसलन दाओ (आह्वानकर्ता) के दलाइल को दलाइल की हैसियत से देखने के बजाए वह यह बहस छेड़ देगा कि तुम्हारे सिवा जो दूसरे बुजुर्ग हैं क्या वे सब हक़ से महरूम थे। और इसी तरह दूसरी बातें।

जिस आदमी के अंदर इस किस्म का मिजाज हो उसका राहेरास्त (सन्मार्ग) पर आना इतिहाई मुश्किल है। वह हर बात को ग़लत रुख़ देकर उसके इंकार का एक बहाना तलाश कर सकता है। नजरी दलाइल को रद्द करने के लिए अगर उसे ये अल्फ़ाज़ मिल रहे थे कि यह अस्लाफ़ (पूर्वजों) के मस्लक के ख़िलाफ़ है तो महसूस मुशाहिदे को रद्द करने के लिए वह ये अल्फ़ाज़ पा लेगा कि यह नज़ का ख़ेख़ है इसकी हकीकत एक फ़र्ज़ तिलिस्म के सिवा और कुछ नहीं। जो मिजाज नजरी दलील को मानने में रुकावट बना था वही मिजाज महसूस दलील को मानने में भी रुकावट बन जाएगा। आदमी अब भी इसी तरह महरूम (वंचित) रहेगा जैसे वह पहले महरूम था।

इस किस्म के लोग अपनी नफिसयात के एतबार से सरकश होते हैं। वे हर हाल में अपने को ऊंचा देखना चाहते हैं। एक दाजी जब उनके सामने हक का पैगाम ले आता है तो अक्सर ऐसा होता है कि वह माहौल में अजनबी होता है, वह वक्त की अज्मतों से खाली होता है। उसके साथ अपने को मंसूब करना अपनी हैसियत को नीचा गिराने के समान होता है। इसलिए बरतरी की नफिसयात रखने वाले लोग उसे कुबूल नहीं कर पाते। वे तरह-तरह की तौजीहात पेश करके उसे मानने से इंकार कर देते हैं।

दानाई यह है कि आदमी खुदा के नक्शे को माने और उसके मुताबिक अपने जेहन को चलाने के लिए तैयार हो। इसके बरअक्स नादानी यह है कि आदमी खुदा के नक्शे के बजाए खुदसाखा मेयार कायम करे और कहे कि जो चीज मुझे इस मेयार पर मिलेगी मैं उसे मानूंगा और जो चीज इस मेयार पर नहीं मिलेगी उसे नहीं मानूंगा। ऐसे आदमी के लिए इस दुनिया में सिर्फ भटकना है। खुदा की इस दुनिया में आदमी खुदा के मुकर्रर किए हुए तरीकों की पैरवी करके मजिल तक पहुंच सकता है न कि उसके मुकर्ररह तरीके को छोड़कर।

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيَاطِينَ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا ۚ وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ ﴿١١٣﴾ وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُمْ مُقْتَرِفُونَ ﴿١١٤﴾

और इसी तरह हमने शरीर (दुष्ट) आदमियों और शरीर जिन्नों को हर नबी का दुश्मन बना दिया। वे एक दूसरे को पुरफरेब बातें सिखाते हैं धोखा देने के लिए। और अगर तेरा रब चाहता तो वे ऐसा न कर सकते। पस तुम उन्हें छोड़ दो कि वे झूठ बांधते रहें। और ऐसा इसलिए है कि उसकी तरफ उन लोगों के दिल मायल हों जो आखिरत (परलोक) पर यकीन नहीं रखते। और ताकि वे उसे पसंद करें और ताकि जो कमाई उन्हें करनी है वह कर लें। (113-114)

इब्ने जरीर ने हजरत अबूजर से नकल किया है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मजलिस में शरीक हुआ। यह एक लम्बी मजलिस थी। आपने फरमाया ऐ अबूजर, क्या तुमने नमाज पढ़ ली। मैंने कहा नहीं ऐ खुदा के रसूल। आपने फरमाया : उठो और दो रकअत नमाज पढ़ो। वह नमाज पढ़कर दुबारा मजलिस में आकर बैठे तो आपने फरमाया : ऐ अबूजर क्या तुमने जिन्न व इन्स के शैतानों के मुकाबले में अल्लाह से पनाह मांगी। मैंने कहा नहीं ऐ खुदा के रसूल, क्या इसानों में भी शैतान होते हैं। आपने फरमाया हां, वे शयातीने जिन्न से भी ज्यादा बुरे होते हैं। (तप्सीर इब्ने कसीर)

यहां शयातीने इन्स से मुराद वे लोग हैं जो दावते हक को बेएतबार साबित करने के लिए

कायदाना किरदार अदा करते हैं। ये वे लोग हैं जो खुदसाखा मजहब की बुनियाद पर इज्जत व मकबूलियत का मकम हासिल किए हुए होते हैं। जब हक की दावत अपनी बेअमेज शकल में उठती है तो उन्हें महसूस होता है कि वह उन्हें बरहना (नंगा) कर रही है। ऐसे लोगों के लिए सीधा रास्ता तो यह था कि वे हक की वजाहत के बाद उसे मान लें मगर हक के मामले में अपना मकम उन्हें ज्यादा अजीज होता है। अपनी हैसियत को बचाने के लिए वे खुद दाजी और उसकी दावत को मुश्तबह (संदिग्ध) साबित करने में लग जाते हैं। इस मकसद के लिए वे खुशनुमा अल्फाज का सहारा लेते हैं। वे दाजी और उसकी दावत में ऐसे शोशे निकालते हैं जो अगरचे बजातेखुद बेहकीकत होते हैं मगर बहुत से लोग उनसे मुतअस्सिर होकर उनके बारे में शुबह में पड़ जाते हैं।

मौजूदा दुनिया में जो इम्तेहानी हालात पैदा किए गए हैं उनमें से एक यह है कि यहां सही बात कहने वाले को भी अल्फाज मिल जाते हैं और गलत बात कहने वाले को भी। हक का दाजी अगर हक को दलाइल की जवान में बयान कर सकता है तो इसी के साथ बातिलपरस्तों को भी यह मैघ्र हासिल है कि वे हक के खिलाफ कुछ ऐसे खुशनुमा अल्फाज बोल सकें जो लोगों को दलील मालूम हों और वे उनसे मुतअस्सिर होकर हक का साथ देना छोड़ दें। यह सूरतेहाल इम्तेहान की गरज से है इसलिए वह लाजिमन कियामत तक बाकी रहेगी। इस दुनिया में बहरहाल आदमी को इस इम्तेहान में खड़ा होना है कि वह सच्चे दलाइल और बेबुनियाद बातों के दर्मियान फर्क करे और बेबुनियाद बातों को रद्द करके सच्चे दलाइल को कुबूल कर ले।

शयातीने इन्स (इंसानी शैतान) अपनी जहानत से हक के खिलाफ जो पुरफरेब शोशे निकालते हैं वे उन्हीं लोगों को मुतास्सिर करते हैं जो आखिरत (परलोक) की फिफ्र से खाली हों। आखिरत का अंदेशा आदमी को इतिहाई संजीदा बना देता है और जो शख्स संजीदा हो उससे बातों की हकीकत कभी छुपी नहीं रह सकती। मगर जो लोग आखिरत के अंदेशे से खाली हों वे हक के मामले में संजीदा नहीं होते, इसीलिए वे शोशे और दलील का फर्क भी समझ नहीं पाते।

أَفَعِيزَ اللَّهُ ابْتِغَىٰ حَكْمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا وَالَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابُ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنْزَلٌ مِن سَرِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١١٥﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدًا لَا مُبْدِلَ لِكَلِمَاتِهِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١١٦﴾ وَإِن تَطِعْ أَكْثَرُ مَنْ فِي الْأَرْضِ يَضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۖ وَإِنَّهُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿١١٧﴾ إِن رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِ ۚ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٨﴾

क्या मैं अल्लाह के सिवा किसी और को मुंसिफ बनाऊं। हालांकि उसने तुम्हारी तरफ वाजेह किताब उतारी है। और जिन लोगों को हमने पहले किताब दी थी वे जानते हैं कि यह तेरे ख की तरफ से उतारी गई है हक के साथ। पस तुम न हो शक करने वालों में। और तुम्हारे ख की बात पूरी सच्ची है और इंसाफ की, कोई बदलने वाला नहीं उसकी बात को और वह सुनने वाला, जानने वाला है। और अगर तुम लोगों की अक्सरियत के कहने पर चलो जो जमीन में हैं तो वे तुम्हें खुदा के रास्ते से भटका देंगे। वे महज गुमान की पैरवी करते हैं और कयास आराइयां (अटकल बातें) करते हैं। वेशक तुम्हारा ख खूब जानता है उन्हें जो उसके रास्ते से भटके हुए हैं और खूब जानता है उन्हें जो राह पाए हुए हैं। (115-118)

कुरआन में जबीहा के अहकाम उतरे और यह कहा गया कि मुर्दा जानवर न खाओ, जबह किया हुआ खाओ तो कुछ लोगों ने कहा : मुसलमानों का मजहब भी अजीब है। वे अपने हाथ का मारा हुआ जानवर हलाल समझते हैं और जिसे अल्लाह ने मारा हो उसे हराम बताते हैं। इस जुमले में लफ्जी तुकबंदी के सिवा और कोई दलील नहीं है। मगर बहुत से लोग उसे सुनकर धोखे में आ गए और इस्लाम को शुबह की नजर से देखने लगे। ऐसा ही हमेशा होता है। हर जमाने में ऐसे लोग कम होते हैं जो बातों को उनकी असली हकीकत के एतबार से समझते हों। वेशतर लोग अल्फाज के गोरखधंधे में गुम रहते हैं। वह ख्याली बातों को हकीकी समझ लेते हैं सिर्फ इसलिए कि उन्हें खूबसूरत अल्फाज में बयान कर दिया गया है।

मगर यह दुनिया ऐसी दुनिया है जहां तमाम बुनियादी हकीकतों के बारे में खुदा के वाजेह बयानात आ चुके हैं। इसलिए यहां किसी के लिए इस किसम की बेराही में पड़ना काबिले माफी नहीं हो सकता। खुदा का कलाम एक खुली हुई कसौटी है जिस पर जांच कर हर आदमी मालूम कर सकता है कि उसकी बात महज एक लफ्जी शोबदा (शब्द जाल) है या कोई वाकई हकीकत है। खुदा ने माजि, हल और मुत्कविल की तमाम ज़रूरी चीजों के बारे में सच्चा बयान दे दिया है। उसने इंसानी ताल्लुकात के तमाम पहलुओं के बारे में कामिल इंसाफ की राह बता दी है। आदमी अगर वाकई संजीदा हो तो उसके लिए यह जानना कुछ भी मुश्किल नहीं कि हक क्या और नाहक क्या। अब इसके बाद शुबह में वही पड़ेगा जिसका हाल यह हो कि उसकी सोच खुदा के कलाम के सिवा दूसरी चीजों के ज़ेरेअसर काम करती हो। जो शख्स अपनी सोच को खुदाई हकीकतों के मुताफिक बना ले उसके लिए यहां फिन्नी बेराहरवी (वैचारिक भटकाव) का कोई इम्कान नहीं।

इस खुदाई वजाहत के बाद भी अगर आदमी भटकता है तो खुदा को उसका हाल अच्छी तरह मालूम है। वह खूब जानता है कि वह कौन है जिसने अपनी बड़ाई कायम रखने की खातिर अपने से बाहर जाहिर होने वाली सच्चाई को कोई अहमियत न दी। कौन है जिसके तअस्सुब ने उसे इस काबिल न रखा कि वह बात को समझ सके। किस ने सस्ती नुमाइश में अपनी रगबत की वजह से सच्चाई की आवाज पर ध्यान नहीं दिया। कौन है जो हसद की नफिसयात में मुब्तिला होने की वजह से हक से नाआशना रहा।

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِّرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٥﴾ وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِّرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرُّرْتُمْ إِلَيْهِ وَإِنْ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَاءِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٦﴾ وَذَرُوا ظَاهِرَ الْأَشْهِمْ وَبَاطِنَهُ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْأَشْهِمْ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ ﴿١١٧﴾ وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يَذْكُرْ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ وَإِنَّ الشَّيْطَانَ لِيُؤْخَذَ إِلَى أُولِيهِمْ لِيُؤْخَذَ إِلَيْهِمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١١٨﴾

पस खाओ उस जानवर में से जिस पर अल्लाह का नाम लिया जाए, अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो। और क्या वजह है कि तुम उस जानवर में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है, हालांकि खुदा ने तफ्सीली से बयान कर दी हैं वे चीजें जिन्हें उसने तुम पर हराम किया है। सिवा इसके कि उसके लिए तुम मजबूर हो जाओ। और यकीनन बहुत से लोग अपनी ख्वाहिशात की बिना पर गुमराह करते हैं वगैर किसी इल्म के। वेशक तुम्हारा ख खूब जानता है हद से निकल जाने वालों को। और तुम गुनाह के जाहिर को भी छोड़ दो और उसके वातिन को भी। जो लोग गुनाह कमा रहे हैं उन्हें जल्द बदला मिल जाएगा उसका जो वे कर रहे थे। और तुम उस जानवर में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। यकीनन यह बेहुक्मी है और शयातीन इल्का (संप्रेषित) कर रहे हैं अपने साथियों को ताकि वे तुमसे झगड़ें। और अगर तुम उनका कहा मानोगे तो तुम भी मुशिरक (बहुदेववादी) हो जाओगे। (119-122)

दुनिया में जो कुछ है वह सब हमारे लिए 'माले गैर' है। क्योंकि सबका सब खुदा का है। उसे अपने लिए जाइज करने की वाहिद सूरत यह है कि उसे खुदा के बताए हुए तरीके से हासिल किया जाए और उसे खुदा के बताए हुए तरीके से इस्तेमाल किया जाए। यही मामला जानवरों का भी है।

जानवर हमारे लिए कीमती खुराक हैं। मगर सवाल यह है कि उन्हें खुराक बनाने का हक हमें कैसे मिला। जानवर को खुदा बनाता है और वही उसे परवरिश करके तैयार करता है। फिर हमारे लिए कैसे जाइज हुआ कि हम उसे अपनी खुराक बनाएं। जबह के वक्त अल्लाह का नाम लेना इसी सवाल का जवाब है। अल्लाह का नाम लेना कोई लफ्जी रस्म नहीं। यह दरअस्तल जानवर के ऊपर खुदा की मालिकाना हैसियत को तस्लीम करना और उसके अतिये (देन) पर खुदा का शुक्र अदा करना है। जबह के वक्त अल्लाह का नाम लेना इसी एतराफ

व शुक्र की एक अलामत है और यही एतराफ व शुक्र वह 'कीमत' है जिसे अदा करने से मालिक के नजदीक उसका एक जानवर हमारे लिए हलाल हो जाता है। ताहम जिसे इत्फाकी मजबूरी पेश आ जाए उसे इस पाबंदी से आजाद कर दिया गया है।

जब आदमी हराम व हलाल और जाइज व नाजाइज में खुदा का हुक्म छोड़ता है तो इसके बाद तवह्हुमात (अंधविश्वास) इसकी जगह ले लेते हैं। लोग तवह्हुमाती ख्यालात के आधार पर चीजों के बारे में तरह-तरह की राय कायम कर लेते हैं। इन तवह्हुमात के पीछे कुछ खुदासांखा फलसफे होते हैं और उनकी बुनियाद पर उनके कुछ जवाहिर (प्रकट दृश्य) कायम होते हैं। जो लोग अल्लाह के फरमावरदार बनना चाहें उनके लिए जरूरी होता है कि इन तवह्हुमात को फिक्री (वैचारिक) और अमली दोनों एतबार से मुकम्मल तौर पर छोड़ दें।

खाने पीने और दूसरे उमूर में हर कौम का एक रवाजी दीन बन जाता है। इस रवाजी दीन के बारे में लोगों के जम्बात बहुत शदीद होते हैं। क्योंकि इसके हक में अस्लाफ और बुजुर्गों की तस्दीकात शामिल रहती हैं। इससे हटना बुजुर्गों के दीन से हटने के समान बन जाता है। इसलिए जब हक की दावत इस रवाजी दीन से टकराती है तो हक की दावत के खिलाफ तरह-तरह के एतराजात किए जाते हैं। वक्त के बड़े ऐसी खुशकुन बातें निकालते हैं जिनसे वे अपने अवाम को मुतमइन कर सकें कि तुम्हारा रवाजी दीन सही है और यह 'नया दीन' बिल्कुल बातिल है। मगर अल्लाह हर चीज से बाख़बर है। कियामत में जब वह हकीकतों को खोलेगा तो हर आदमी देख लेगा कि वह हकीकत की जमीन पर खड़ा था या तवह्हुमात की जमीन पर।

وَمَنْ كَانَ مَيِّنًا فَاحْيَيْنَهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِمَخَارِجٍ مِنْهَا كَذَلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ٥٠ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرًا مَجْرُمِينَ ٥١ لِيَمْكُرُوا فِيهَا وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ٥٢ وَإِذَا جَاءَ تَهُمُ آيَةُ الْوَالِدِ تَوَمَّنْ ٥٣ حَتَّى تَأْتِي مِثْلَ مَا أُوتِيَ رَسُولُ اللَّهِ ٥٤ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رُسُلَهُ ٥٥ سَيَصِيبُ الَّذِينَ أَجْرُمُوا صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ لِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ٥٦

क्या वह शख्स जो मुर्दा था फिर हमने उसे ज़िंदगी दी और हमने उसे एक रोशनी दी कि उसके साथ वह लोगों में चलता है वह उस शख्स की तरह हो सकता है जो तारीकियों में पड़ा है, इससे निकलने वाला नहीं। इस तरह मुंकिरों की नजर में उनके आमात खुशनुमा बना दिए गए हैं। और इस तरह हर बस्ती में हमने गुनाहगारों के सरदार रख दिए हैं कि वे वहां हीले (चालें) करें। हालांकि वे जो हीला करते हैं अपने ही खिलाफ

करते हैं मगर वे उसे नहीं समझते। और जब उनके पास कोई निशान आता है तो वे कहते हैं कि हम हरगिज न मानेंगे जब तक हमें भी वही न दिया जाए जो खुदा के पैगम्बरों को दिया गया। अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वे अपनी पैगम्बरी किसे बख़्शे। जो लोग मुजरिम हैं जरूर उन्हें अल्लाह के यहां जिल्लत नसीब होगी और सज़ा अजाब भी, इस वजह से कि वे मक्र (चालबाजी) करते थे। (123-125)

अल्लाह की नजर में वह शख्स जिंदा है जिसके सामने हिदायत की रोशनी आई और उसने उसे अपने रास्ते की रोशनी बना लिया। इसके मुकाबले में मुर्दा वह है जो हिदायत की रोशनी से महरूम होकर बातिल के अंधेरों में भटक रहा हो।

मुर्दा आदमी ओहाम (भ्रमों) व तअसुबात (विद्वेषों) के जाल में इतना फंसा हुआ होता है कि सीधे और सच्चे हक़इक उसके जेहन की गिरफ्त में नहीं आते। वह चीजों की माहियत (स्वरूप) से इतना बेख़बर होता है कि लफ्ज़ी बहस और हकीकी कलाम में फर्क नहीं कर पाता। वह अपनी बड़ाई के तसव्वुर में इतना डूबा हुआ होता है कि किसी दूसरे की तरफ से आई हुई सच्चाई का एतराफ करना उसके लिए मुमकिन नहीं होता। उसके जेहन पर रवाजी ख्यालात का इतना ग़लबा होता है कि उनसे हट कर किसी और मेयार पर वह चीजों को जांच नहीं पाता। अपनी इन कमजोरियों की बिना पर वह अंधेरे में भटकता रहता है, बजाहिर जिंदा होते हुए भी वह एक मुर्दा इंसान बन जाता है।

इसके बरअक्स (विपरीत) जो शख्स हिदायत के लिए अपना सीना खोल देता है वह हर किर्रम की नपिसयाती गिरहों से आजाद हो जाता है। सच्चाई को पहचानने में उसे जरा भी देर नहीं लगती। अल्फ़ाज के पर्दे कभी उसके लिए हकीकत का चेहरा देखने में रुकावट नहीं बनते। जौक और आदत के मसाइल उसकी जिंदगी में कभी यह मक़म हासिल नहीं करते कि उसके और हक के दरमियान हायल हो जाएं। सच्चाई उसके लिए एक ऐसी रोशन हकीकत बन जाती है जिसे देखने में उसकी नजर कभी न चूके और जिसे पाने के लिए वह कभी सुस्त साबित न हो। वह खुद भी हक की रोशनी में चलता है और दूसरों को भी उसमें चलाने की कोशिश करता है।

वे लोग जो खुदासांखा (स्वनिर्मित) चीजों को खुदा का मजहब बताकर अवाम का आकर्षण केन्द्र बने हुए होते हैं वे हर ऐसी आवाज के दुश्मन बन जाते हैं जो लोगों को सच्चे दीन की तरफ फुकारे। ऐसी हर आवाज उन्हें अपने खिलाफ बेएतमादी की तहरीक दिखाई देती है। ये वक्त के बड़े लोग हक की दावत में ऐसे शोशे निकालते हैं जिससे वे अवाम को उससे मुतअस्तिर होने से रोक सकें। वे हक के दलाइल को ग़लत रूख़ देकर अवाम को शुबहात में मुत्तला करते हैं। यहां तक कि बेबुनियाद बातों के जरिये दाओ (आह्वानकता) की जात को बदनाम करने की कोशिश करते हैं। मगर इस किर्रम की कोशिशें सिर्फ उनके जुर्म को बढ़ाती हैं, वह दाओ और दावत को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकतीं। हक़परस्त वह है जो हक को उस वक्त देख ले जबकि उसके साथ दुनियावी अज्मतें शामिल न हुई हों। दुनियावी अज्मत वाले हक को मानना दरअसल दुनियावी अज्मतों को मानना है न कि खुदा की तरफ से आए हुए हक को।

فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَاءِ كَذَلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ وَهَذَا صِرَاطٌ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ۖ لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

अल्लाह जिसे चाहता है कि हिदायत दे तो उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिसे चाहता है कि गुमराह करे तो उसके सीने को बिल्कुल तंग कर देता है जैसे उसे आसमान में चढ़ना पड़ रहा हो। इस तरह अल्लाह गन्दगी डाल देता है उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते। और यही तुम्हारे रब का सीधा रास्ता है। हमने वाजेह कर दी हैं निशानियाँ और करने वालों के लिए। उन्हीं के लिए सलामती का घर है उनके रब के पास। और वह उनका मददगार है उस अमल के सबब से जो वे करते रहे। (126-128)

हक अपनी जात में इतना वाजेह है कि उसका समझना कभी किसी आदमी के लिए मुश्किल न हो। फिर भी हर जमाने में बेधुमार लोग हक की वजाहत के बावजूद हक को कुबूल नहीं करते। इसकी वजह उनके अंदर की वे रूकावटें हैं जो वे अपनी नफिसयात में पैदा कर लेते हैं। कोई अपने आपको मुकद्दस हस्तियों से इतना ज्यादा वाबस्ता कर लेता है कि उन्हें छोड़ते हुए उसे महसूस होता है कि वह बिल्कुल बर्बाद हो जाएगा। किसी का हाल यह होता है कि अपनी मस्तेहतों का निजाम टूटने का अंदेशा उसके ऊपर इतना ज्यादा छा जाता है कि उसके लिए हक की तरफ इक्दाम करना मुमकिन नहीं रहता। किसी को नजर आता है कि हक को मानना अपनी बड़ाई के मीनार को अपने हाथ से ढा देना है। किसी को महसूस होता है कि माहौल के रवाज के खिलाफ एक बात को अगर मैंने मान लिया तो मैं सारे माहौल में अजनबी बन कर रह जाऊंगा। इस तरह के ख्यालात आदमी के ऊपर इतने मुसल्लत हो जाते हैं कि हक को मानना उसे एक बेहद मुश्किल बुलन्दी पर चढ़ाई के समान नजर आने लगता है जिसे देखकर ही आदमी का दिल तंग होने लगता हो।

इसके बरअक्स मामला उन लोगों का है जो नफिसयाति पेचीदगियों में मुब्तला नहीं होते, जो हक को हर दूसरी चीज से आला समझते हैं। वे पहले से सच्चे मुतलाशी बने हुए होते हैं। इसलिए जब हक उनके सामने आता है तो बिला ताखीर (अविलंब) वे उसे पहचान लेते हैं और तमाम उजरात (विवशताओं) और अंशों को नजरअंदाज करके उसे कुबूल कर लेते हैं।

खुदा अपने हक को निशानियों (इशाराती हकीकतों) की सूरत में लोगों के सामने लाता है। अब जो लोग अपने दिलों में कमजोरियाँ लिए हुए हैं, वे इन इशारात की खुदसाख्ता तावील करके अपने लिए इसे न मानने का जवाब बना लेते हैं। और जिन लोगों के सीने खुले हुए हैं वे

इशारात को उनकी अस्ल गहराइयों के साथ पा लेते हैं और उन्हें अपने जेहन की गिजा बना लेते हैं। उनकी जिंदगी फौरन उस सीधे रास्ते पर चल पड़ती है जो खुदा की बराहारास्त रहनुमाई में तै होता है और बिलआखिर आदमी को अबदी कामयाबी के मकाम पर पहुंचा देता है।

खुदा के यहां जो कुछ कीमत है वह अमल की है न कि किसी और चीज की। जो शख्स अमली तौर पर खुदा की फरमांबरदारी इख्तियार करेगा वही इस काबिल ठहरेगा कि खुदा उसकी दस्तगीरी करे और उसे अपने सलामती के घर तक पहुंचा दे। यह सलामती का घर खुदा की जन्मत है जहां आदमी हर क्रिम के दुख और आफत से महफूज रहकर अबदी (चिरस्थायी) सुकून की जिंदगी गुजारेगा। खुदा की यह मदद अफ़्फ़ाद को उनके अमल के मुताबिक मौत के बाद आने वाली जिंदगी में मिलेगी। लेकिन अगर अफ़्फ़ाद की काबिले लिहाज तादाद दुनिया में खुदा की फरमांबरदार बन जाए तो ऐसी जमाअत को दुनिया में भी उसका एक हिस्सा दे दिया जाता है।

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ جَبِيْعًا يَمْعَشَرُ الْجَنِّ قَدْ اسْتَكْبَرْتُمْ مِنَ الْإِنْسِ وَقَالَ أَوْلِيَهُمْ مِنَ الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْمِمْتَ بَعْضَنَا بَعْضًا وَكَفُّنَا أَجَلَنَا الَّذِي أَجَلْتَ لَنَا قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَالِدِينَ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۖ وَكَذَلِكَ نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ يَمْعَشَرُ الْجَنِّ وَالْإِنْسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَيُزَكِّرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا قَالُوا شَهِدْنَا عَلَى أَنْفُسِنَا وَغَرَّبْنَاهُمْ نَحْيَوةَ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ۖ ذَٰلِكَ أَنْ لَمْ يَكُنْ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا غَافِلُونَ ۝

और जिस दिन अल्लाह उन सबको जमा करेगा, ऐ जिन्यों के गिरोह तुमने बहुत से ले लिए इंसानों में से। और इंसानों में से उनके साथी कहेंगे ऐ हमारे रब, हमने एक दूसरे को इस्तेमाल किया और हम पहुंच गए अपने उस वादे को जो तूने हमारे लिए मुकर्र किया था। खुदा कहेगा अब तुम्हारा ठिकाना आग है, हमेशा उसमें रहोगे मगर जो अल्लाह चाहे। बेशक तुम्हारा रब हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला इल्म वाला है। और इसी तरह हम साथ मिला देंगे गुनाहगारों को एक दूसरे से, उन आमांल के सबब जो वे करते थे। ऐ जिन्यों और इंसानों के गिरोह क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से पैगम्बर नहीं आए जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाते और तुम्हें इस दिन के पेश आने से डराते थे। वे कहेंगे हम खुद अपने खिलाफ गवाह हैं। और उन्हें दुनिया की जिंदगी ने धोखे में रखा। और वे अपने खिलाफ खुद गवाही देंगे कि बेशक हम मुंकिर थे। यह इस वजह से कि तुम्हारा

रब वस्तियों को उनके जुल्म पर इस हाल में हलाक करने वाला नहीं कि वहां के लोग बेखबर हों। (129-132)

किसी के गुमराह करने से जब कोई शख्स गुमराह होता है तो यह एकतरफा मामला नहीं होता। दोनों अपनी-अपनी जगह यही समझते हैं कि वे अपना मक्सद पूरा कर रहे हैं। शैतान जब आदमी को सब्ज बाग दिखा कर अपनी तरफ ले जाता है तो वह अपने उस चैलेंज को सही साबित करना चाहता है जो उसने आगजेतखीक (उत्पत्ति काल) में खुदा को दिया था कि मैं तेरी मख्बूक के बड़े हिस्से को अपना हमनवा बना लूंगा (बनी इस्राईल 61)। दूसरी तरफ जो लोग अपने आपको शैतान के हवाले करते हैं उनके सामने भी वाजेह मफ़दात (स्वार्थ) होते हैं। कुछ लोग जिन्नों के नाम पर अपने सहर (जादू) के कारोबार को फ़रोग देते हैं या अपनी शायरी और कहानत का रिश्ता किसी जिन्नी उस्ताद से जोड़ कर अवाम के ऊपर अपनी बरतरी कायम करते हैं। इसी तरह वे तमाम तहरीकें जो शैतानी तर्गीबात (प्रेरणा) के तहत उठती हैं, उनका साथ देने वाले भी इसीलिए उनका साथ देते हैं कि उन्हें उम्मीद होती है कि इस तरह अवाम के ऊपर आसानी के साथ वे अपनी कयादत (नेतृत्व) कायम कर सकते हैं। क्योंकि खुदाई पुकार के मुकाबले में शैतानी नारे हमेशा अवाम की भीड़ के लिए ज्यादा पुरकशिश साबित होते हैं।

क़ियामत में जब हकीकतों से पर्दा उठया जाएगा तो यह बात खुल जाएगी कि जो लोग बेराह हुए या जिन्होंने दूसरों को बेराह किया उन्होंने किसी ग़लतफहमी की बिना पर ऐसा नहीं किया। इसकी वजह हक़ को नज़अंदाज़ करना था न कि हक़ से बेखबर रहना। वे दुनियावी तमाशों से ऊपर न उठ सके, वे वक्ती फ़ायदों को कुर्बान न कर सके। वर्रा खुदा ने अपने ख़ास बंदों के जरिए जो हिदायत खोली थी वह इतनी वाजेह थी कि कोई शख्स हकीकते हाल से बेखबर नहीं रह सकता था। मगर उनकी दुनियापरस्ती उनकी आंखों का पर्दा बन गई। जानने के बावजूद उन्होंने न जाना। सुनने के बावजूद उन्होंने न सुना।

आख़िरत (परलोक) में वे बनावटी सहारे उनसे छिन जाएंगे जिनके बल पर वे हकीकत से बेपरवाह बने हुए थे। उस वक़्त उन्हें नज़र आएगा कि किस तरह ऐसा हुआ कि हक़ उनके सामने आया मगर उन्होंने झूठे अल्फ़ाज़ बोलकर उसे रद्द कर दिया। किस तरह उनकी ग़लती उन पर वाजेह की गई मगर ख़ूबसूरत तावील करके उन्होंने समझा कि अपने आपको हक़ पर साबित करने में वे कामयाब हो गए हैं।

وَلِكُلِّ دَرَجَتٍ مِّمَّا عَمِلُوا وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ۝ وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۚ إِنَّ يَشَاءُ ذِئْبَكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ مِنْ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَاءُ ۚ كَمَا أَنْشَأَكُمْ مِنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ آخَرِينَ ۚ إِنَّ مَآثُوعِدُونَ لَاتٍ ۚ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ۚ قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَى مَكَانَتِكُمْ ۚ إِنِّي عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ مَنْ يَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۚ إِنَّهُ لَا يُغْلِبُهُ الظَّالِمُونَ ۝

और हर शख्स का दर्जा है उसके अमल के लिहाज से और तुम्हारा रब लोगों के आमाल से बेखबर नहीं। और तुम्हारा रब बेनियाज़ (निस्पृह), रहमत वाला है। अगर वह चाहे तो तुम सबको उठा ले और तुम्हारे बाद जिसे चाहे तुम्हारी जगह ले आए, जिस तरह उसने तुम्हें पैदा किया दूसरों की नस्ल से। जिस चीज का तुमसे वादा किया जा रहा है वह आकर रहेगी और तुम खुदा को आजिज नहीं कर सकते। कहे, ऐ लोगो तुम अमल करते रहो अपनी जगह पर, मैं भी अमल कर रहा हूं। तुम जल्द ही जान लोगे कि अंजामकार किसके हक़ में बेहतर होता है। यकीनन ज़ालिम कभी फ़लाह (कल्याण) नहीं पा सकते। (133-136)

दुनिया की जिंदगी में हम देखते हैं कि एक शख्स और दूसरे शख्स के मर्तबे में फ़र्क़ होता है। यह फ़र्क़ ठीक उस तनासुब से होता है जो एक आदमी और दूसरे आदमी की ज़दोज़हद में पाया जाता है। किसी आदमी की दानिशमंदी, उसकी मेहनत, मस्तेहतों के साथ उसकी रियायत जिस दर्जे की होती है उसी दर्जे की कामयाबी उसे यहां हासिल होती है।

ऐसा ही मामला आख़िरत (परलोक) का भी है। आख़िरत में दर्जात और मक़ामात की तकसीम ठीक उसी तनासुब से होगी जिस तनासुब से किसी आदमी ने दुनिया में उसके लिए अमल किया है। आख़िरत के लिए भी आदमी को उसी तरह माल और वक़्त ख़र्च करना है जिस तरह वह दुनिया के लिए अपने वक़्त और माल को ख़र्च करता है। आख़िरत के मामले में भी उसे उसी तरह होशियारी दिखानी है जिस तरह वह दुनिया के मामले में होशियारी दिखाता है। आख़िरत की बातों में भी उसे मस्तेहतों और नज़ाकतों की उसी तरह रियायत करना है जिस तरह वह दुनिया की बातों में मस्तेहतों और नज़ाकतों की रियायत करता है। जिस खुदा के हाथ में आख़िरत का फैसला है वह एक-एक शख्स के अहवाल से पूरी तरह बाख़बर है। उसके लिए कुछ भी मुश्किल न होगा कि वह हर एक को वही दे जो उसके इस्तेमाल (पात्रता) के बक्दर उसे मिलना चाहिए।

खुदा ने इम्तेहान और अमल की यह जो दुनिया बनाई है इसके जरिए उसने इंसान के लिए एक कीमती इम्कान खोला है। वह चन्द दिन की जिंदगी में अच्छे अमल का सुबूत देकर अबदी जिंदगी में उसका अंजाम पा सकता है। इस निज़ाम को कायम करने से खुदा का अपना कोई फ़ायदा नहीं। मौजूदा लोग अगर उसके तख़्खीकी मंसूबे को कुकूल न करें तो खुदा को इसकी परवाह नहीं। वह उनकी जगह दूसरों को उठा सकता है जो उसके तख़्खीकी मंसूबे को मानें और अपने आपको उसके साथ शामिल करें। यहां तक कि वह रेगिस्तान के ज़रों और दरख़्तों के पत्तों को अपने वफ़ादार बंदों की हैसियत से खड़ा कर सकता है।

एक ऐसी दुनिया जो सरासर हक़ और इंसाफ़ पर कायम हो वहां ज़ालिमों और सरकशों को छूट मिलना खुद ही बता रहा है कि यह छूट कोई इनाम नहीं है बल्कि वह उन्हें उनके आखिरी अंजाम तक पहुंचाने के लिए है। जो शख्स हक़ को मानने से इंकार करता है और इसके बावजूद बजाहिर उसका कुछ नहीं बिगड़ता उसे इस सूतेहाल पर ख़ुश नहीं होना चाहिए। यह हालत सरासर वक्ती है। बहुत जल्द वह वक़्त आने वाला है जबकि आदमी से वह सब कुछ छिन लिया जाए जिसके बल पर वह सरकशी कर रहा है और उसे हमेशा के लिए

एक ऐसी बर्बादी में डाल दिया जाए जहां से कभी उसे निकलना न हो। जहां न दुबारा अमल का मौका हो और न अपने अमल के अंजाम से अपने को बचाने का।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَذَا لِلَّهِ بِزَعْمِهِمْ
وَهَذَا لِلشُّرَكَائِ فَمَا كَانَ لِلَّهِ وَالشُّرَكَائِ مِنْ شَرِكٍ فَلَا يُعْصِلُ إِلَى اللَّهِ وَمَا كَانَ لِلَّهِ
فَهُوَ يُعْصِلُ إِلَى شُرَكَائِهِمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝ وَكَذَلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيرٍ مِنَ
النَّاسِ أَلْوَادَهُمْ شُرَكَائِهِمْ لِيُرْدُوهُمْ وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوا هَذَا فَذَرَهُمْ وَمَا يَذُرُون ۝

और खुदा ने जो खेती और चौपाए पैदा किए उसमें से उन्होंने खुदा का कुछ हिस्सा मुकर्र किया है। पस वे कहते हैं कि यह हिस्सा अल्लाह का है, उनके गुमान के मुताबिक, और यह हिस्सा हमारे शरीकों का है। फिर जो हिस्सा उनके शरीकों का होता है वह तो अल्लाह को नहीं पहुंचता और जो हिस्सा अल्लाह के लिए है वह उनके शरीकों को पहुंच जाता है। कैसा बुरा फैसला है जो ये लोग करते हैं। और इस तरह बहुत से मुश्रिकों (बहुदेववादियों) की नजर में उनके शरीकों ने अपनी औलाद के कत्ल को खुशनुमा बना दिया है ताकि उन्हें बर्बाद करें और उन पर उनके दीन को मुशतबह (संदिग्ध) बना दें। और अगर अल्लाह चाहता तो वे ऐसा न करते। पस उन्हें छोड़ दो कि अपनी इफ्तारा (झूठ गढ़ने) में लगे रहें। (137-138)

मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) में यह रवाज था कि वे फसल और मवेशी में से अल्लाह का और बुतों का हिस्सा निकालते। अगर वे देखते कि खुदा के हिस्से का जानवर या गल्ला अच्छा है तो उसे बदल कर बुतों की तरफ दे देते। मगर बुतों का अच्छा होता तो उसे खुदा की तरफ न करते। पैदावार की तक्सीम के वक्त बुतों के नाम का कुछ हिस्सा इत्फाकन अल्लाह के हिस्से में मिल जाता तो उसे अलग करके बुतों की तरफ लौटा देते। और अल्लाह के नाम का कुछ हिस्सा बुतों की तरफ चला जाता तो उसे न लौटाते। इसी तरह अगर कभी नज्र व नियाज का गल्ला खुद इस्तेमाल करने की जरूरत पेश आ जाती तो खुदा का हिस्सा ले लेते मगर बुतों के हिस्से को न छूते। वे डरते थे कि कहीं कोई बला नाजिल हो जाए। कहने के लिए वे खुदा को मानते थे मगर उनका अस्ल यकीन अपने बुतों के ऊपर था। हकीकत यह है कि आदमी महसूस बुतों को इसीलिए गढ़ता है कि उसे गैर महसूस खुदा पर पूरा भरोसा नहीं होता।

यही हाल हर उस शख्स का होता है जो जबान से तो अल्लाह को मानता हो मगर उसका दिल अल्लाह के सिवा कहीं और अटका हुआ हो। जो लोग किसी जिंदा या मुर्दा हस्ती को अपनी अक़ीदों का मर्कज (आस्था केन्द्र) बना लें उनका हाल भी यही होता है कि जो वक्त उनके यहां खुदा की याद का है उसमें तो वे अपने 'शरीक' की याद को शामिल कर लेते हैं। मगर जो वक्त उनके नजदीक अपने शरीक की याद का है उसमें खुदा का तज्किरा उन्हें गवारा

नहीं होता। शेषतगी और वारुप्तगी (मुहब्त और शौक) का जो हिस्सा खुदा के लिए होना चाहिए उसका कोई जुज वे बाआसानी अपने शरीकों को दे देंगे। मगर अपने शरीक के लिए वे जिस शेषतगी और वारुप्तगी को जरूरी समझते हैं उसका कोई हिस्सा कभी खुदा को नहीं पहुंचेगा। जो मजलिस खुदा की अजमत व किब्रियाई बयान करने के लिए आयोजित की जाए उसमें उनके शरीकों की अजमत व किब्रियाई का बयान तो किसी न किसी तरह दाखिल हो जाएगा। मगर जो मजलिस अपने शरीकों की अजमत व किब्रियाई का चर्चा करने के लिए हो वहां खुदा की अजमत व किब्रियाई का कोई गुजर न होगा।

उन शरीकों की अहमियत कभी जेहन पर इतना ज्यादा गालिब आती है कि आदमी अपनी औलाद तक को उनके लिए निसार कर देता है। अपनी औलाद को खुदा के लिए पेश करना हो तो वह पेश नहीं करेगा मगर अपने शरीकों की खिदमत में उन्हें देना हो तो वह बखुशी इसके लिए आमादा हो जाता है।

इस किस्म की तमाम चीजें खुदा के दीन के नाम पर की जाती हैं मगर हकीकतन वे गढ़े हुए झूठ हैं। क्योंकि यह एक ऐसी चीज को खुदा की तरफ मंसूब करना है जिसे खुदा ने कभी तालीम नहीं किया।

وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَنْ نَشَاءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَا يَذْكُرُونَ أَسْمَاءَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءٌ عَلَيْهِمْ
سَجَزِيَّةٌ بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ
لِّذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَى أَزْوَاجِنَا وَإِنْ يَكُنْ مَيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ
سَجَزِيَّةٌ بِهِمْ وَصَفَهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ
سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا
وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝

और कहते हैं कि यह जानवर और यह खेती मना है, इन्हें कोई नहीं खा सकता सिवा उसके जिसे हम चाहें, अपने गुमान के मुताबिक। और फलां चौपाए हैं कि उनकी पीठ हARAM कर दी गई है और कुछ चौपाए हैं जिन पर वे अल्लाह का नाम नहीं लेते। यह सब उन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है। अल्लाह जल्द उन्हें इस झूठ गढ़ने का बदला देगा। और कहते हैं कि जो फलां किस्म के जानवरों के पेट में है वह हमारे मर्दों के लिए ख़ास है और वह हमारी औरतों के लिए हARAM है। अगर वह मुर्दा हो तो उसमें सब शरीक हैं। अल्लाह जल्द उन्हें इस कहने की सजा देगा। वेशक अल्लाह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला इल्म वाला है। वे लोग घाटे में पड़ गए जिन्होंने अपनी औलाद को कत्ल किया नादानी से वग़ैर किसी इल्म के। और उन्होंने उस रिस्क को हARAM कर लिया जो अल्लाह

ने उन्हें दिया था, अल्लाह पर बोहतान बांधते हुए। वे गुमराह हो गए और हिदायत पाने वाले न बने। (139-141)

कदीम अरब के लोग अपने मजहब को हज्जत इब्राहीम और हज्जत इस्माईल की तरफ मंसूब करते थे। मगर अमलन उनके यहां जो मजहब था वह एक खुदसाख्ता मजहब था जो उनके पेशवाओं ने गढ़कर उनके दर्मियान राइज कर दिया था। पैदावार और चौपायों की जो नज़ें (अर्पित वस्तुएं) खुदा या उसके शरीकों के नाम पर पेश होतीं उनके लिए उनके यहां बहुत सी कड़ी पाबंदियां थीं। मसलन बहीरा या सायबा (जानवरों) को अगर जबह किया और उसके पेट से जिंदा बच्चा निकला तो उसका गोश्त सिर्फ मर्द खाएं, औरतें न खाएं। और अगर बच्चा मुर्दा हालत में हो तो उसे मर्द और औरत दोनों खा सकते हैं। इसी तरह कुछ जानवरों की पीठ पर सवार होना या उनके ऊपर बोझ लादना उनके नजदीक हराम था। कुछ जानवरों के बारे में उनका अक़ीदा था कि उन पर सवार होते वक्त या उन्हें जबह करते वक्त या उनका दूध निकालते वक्त खुदा का नाम नहीं लेना चाहिए।

ऐसे लोग दीन के अस्त तक्कजे (अल्लाह से तअल्लुक और आख़िरत की फ़िक्र) से इतिहाई हद तक दूर होते हैं। वे रोजाना अल्लाह की हुदूद को तोड़ते रहते हैं। अलबत्ता कुछ ग़ैर मुत्तअल्लिक जाहिरी चीजें में तशद्दुद की हद तक क़ाइद व ज़ाबित (नियमों) का एहतेमाम करते हैं। यह शैतान की निहायत गहरी चाल है। वह लोगों को अस्त दीन से दूर करके कुछ दूसरी चीजों को दीन के नाम पर उनके दर्मियान जारी कर देता है और उनमें शिद्दत (अति) की नफ़िसयात पैदा करके आदमी को इस गलतफ़हमी में मुब्तिला कर देता है कि वे कमाले एहतियात की हद तक खुदा के दीन पर कायम हैं। इबादत की जवाहिर में तशद्दुद (अतिवाद) भी इसी ख़ास नफ़िसयात की पैदावार है। आदमी खुशूअ और खुलूस (निष्ठा भाव) से ख़ाली होता है और कुछ जाहिरी आदाब का शदीद इल्तज़ाम करके समझता है कि उसने कमाल अदायगी की हद तक इबादत का फ़ैअल (कृत्य) अंजाम दे दिया है।

इस किस्म के लोगों की गुमराही इससे वाजेह है कि उनमें से बहुत से लोगों ने औलाद के क़ल जैसे वहशियाना फ़ैअल को दुस्त समझ लिया। वे खुदा के पाकीज (पावन) रिस्क से लोगों को महरूम कर देते हैं। वे मामूली मसाइल पर लड़ते हैं और उन बड़ी चीजों को नज़रअंदाज कर देते हैं जिनकी अहमियत को अक्ले आम के ज़रिए समझा जा सकता है।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوسَاتٍ وَغَيْرَ مَعْرُوسَاتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ حَتَّاتٍ أَكْلُهُ
وَالرُّبُتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ كُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا
حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ۝ وَمِنَ الْأَنْعَامِ
حَمُولَةٌ وَفَرَسَاتٌ كُلُوا مِن مَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ
لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۝

और वह अल्लाह ही है जिसने बाग़ पैदा किए, कुछ टट्टियों पर चढ़ाए जाते हैं और कुछ नहीं चढ़ाए जाते। और खजूर के दरख्त और खेती कि उसके खाने की चीजें मुख्तलिफ होती हैं और जैतून और अनार आपस में मिलते जुलते भी और एक दूसरे से मुख्तलिफ भी। खाओ उनकी पैदावार जबकि वे फलें और अल्लाह का हक अदा करो उसके काटने के दिन। और इसराफ (हद से आगे बढ़ना) न करो, बेशक अल्लाह इसराफ करने वालों को पसंद नहीं करता। और उसने मवेशियों में बोझ उठाने वाले पैदा किए और जमीन से लगे हुए भी। खाओ उन चीजों में से जो अल्लाह ने तुम्हें दी हैं। और शैतान की पैरवी न करो, वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। (142-143)

खुदा ने इंसान के लिए तरह-तरह की गिजाएं पैदा की हैं। कुछ चीजें वे हैं जो जमीन में फैलती हैं। मसलन खरबूजे, सब्जियां वगैरह। कुछ चीजें वे हैं जो टट्टियों पर चढ़ाई जाती हैं मसलन अंगूर वगैरह। कुछ चीजें ऐसी हैं जो अपने तने पर खड़ी रहती हैं। मसलन खजूर, आम वगैरह। इसी तरह आदमी की जरूरत के लिए मुख्तलिफ किस्म के छोटे-बड़े जानवर पैदा किए। मसलन ऊंट, घोड़े और भेड़ बकरियां।

आदमी एक अलेहिदा मख़्बूख है और बाकी चीजें अलेहिदा मख़्बूक। दोनों एक दूसरे से अलग-अलग पैदा हुए हैं। मगर इंसान देखता है कि दोनों में जबरदस्त हमआहंगी (अंतरंगता) है। आदमी के जिस्म को अगर गिजाइयत दरकार है तो उसके बाहर हरे भरे दरख्तों में हैतअजीज किस्म के गिजाइफ़ैट लटक रहे हैं। अगर उसकी ज़बान में मंजेका एहसास पाया जाता है तो फलों के अंदर इसकी तस्कीन का आला सामान मौजूद है। अगर उसकी आंखों में हुस्ने नज़र का जैक है तो कुस्त का पूरा कारख़ाना हुस्न और दिलकशी का मुक़्कम (पुंज) बना हुआ है। अगर उसे सवारी और बारबरदारी (यातायात) के ज़राए दरकार हैं तो यहां ऐसे जानवर मौजूद हैं जो उसके लिए यातायात का जरिया भी बनें और इसी के साथ उसके लिए कीमती गिजा भी फ़राहम करें। इस तरह कायनात अपने पूरे वजूद के साथ तौहीद (एकेशवावाद) का एलान बन गई है। क्योंकि कायनात के मुख्तलिफ मजाहिर में यह वहदत (एकत्व) इसके बग़ैर मुमकिन नहीं कि उसका ख़ालिक व मालिक एक हो।

आदमी जब देखता है कि इतना अजीम कायनाती एहतिमाम उसके किसी जाती इस्फ़ाक (पात्रता) के बग़ैर हो रहा है तो इस एकतरफा इनाम पर उसका दिल शुक्र के जन्वे से भर जाता है। फिर इसी के साथ यह सारा मामला आदमी के लिए तकवा की गिजा बन जाता है। इंसानी फ़ितरत का यह तक्कज है कि हर इनायत (Privilege) के साथ जिम्मेदारी (Responsibility) हो। यह चीज आदमी को जज़ा व सज़ा की याद दिलाती है और उसे आमादा करती है कि वह दुनिया में इस एहसास के साथ रहे कि एक दिन उसे खुदा के सामने हिसाब के लिए खड़ा होना है। ये एहसासात अगर हकीकी तौर पर आदमी के अंदर जाग उठें तो लाजिमी तौर पर उसके अंदर दो बातें पैदा होंगी। एक यह कि उसे जो कुछ मिलेगा उसमें वह अपने मालिक का हक भी समझेगा। दूसरे यह कि वह सिर्फ़ वाकई ज़रूरत के बन्द खर्च करेगा न कि फुज़ूल और बेमौका खर्च करने लगे। मगर शैतान यह करता है कि अस्त रुख़ से आदमी का जेहन मोड़कर उसे दूसरी ग़ैर मुत्तअल्लिक बातों में उलझा देता है।

ثَلَاثِينَ أَزْوَاجًا مِنَ الصَّانِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْرِ اثْنَيْنِ قُلْ أَلَا تَذَكَّرِينَ حَرَّمَ
 أَمْرَ الْأَنْثَيْنِ أَمَّا شَتَمْتُكَ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأَنْثَيْنِ يُسَوِّفُنِي يَعْلَمُونَ كُنْتُمْ
 صَادِقِينَ ۝ وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ قُلْ أَلَا تَذَكَّرِينَ
 حَرَّمَ أَمْرَ الْأَنْثَيْنِ أَمَّا شَتَمْتُكَ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأَنْثَيْنِ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ
 إِذْ وَصَّيْكُمْ اللَّهُ بِهَذَا قُلْ هَذَا أَقْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ
 بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ
 مُحَرَّمًا عَلَى طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خَنْزِيرٍ
 فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ
 رَبَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

अल्लाह ने आठ जोड़े पैदा किए। दो भेड़ की किस्म से और दो बकरी की किस्म से।
 पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने हARAM किए हैं या दोनों मादा। या वे बच्चे जो भेड़ों और
 बकरियों के पेट में हों। मुझे दलील के साथ बताओ अगर तुम सच्चे हो। और इसी तरह
 दो ऊंट की किस्म से हैं और दो गाय की किस्म से। पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने हARAM
 किए हैं या दोनों मादा। या वे बच्चे जो ऊंटनी और गाय के पेट में हों। क्या तुम उस
 वस्तु हजिर थे जब अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया था। फिर उससे ज्यादा जालिम
 कौन है जो अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधे ताकि वह लोगों को बहका दे बग़ैर इल्म के।
 वेशक अल्लाह जालिमों को राह नहीं दिखाता। कहो, मुझ पर जो 'वही' (ईश्वरीय
 वाणी) आई है उसमें तो मैं कोई चीज नहीं पाता जो हARAM हो किसी खाने वाले पर सिवा
 इसके कि वह मुर्दा हो या बहाया हुआ खून हो या सुअर का गोश्त हो कि वह नापाक
 है। या नाजाइज जबीहा जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम फुकारा गया
 हो। लेकिन जो शख्स भूख से बेइख्तियार हो जाए, न नाफरमानी करे और न ज्यादाती
 करे, तो तेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (144-146)

अरबों में गोश्त और दूध वगैरह के लिए जो जानवर पाले जाते थे उनमें से चार ज्यादा
 मशहूर थे। भेड़ बकरी और ऊंट गाय। इनके बारे में उन्होंने तरह-तरह के तहरीमी (निषिद्धता के)
 कायदे बनाए थे। मगर इन तहरीमी कायदों के पीछे अपने मुश्किलाना रवाजों के सिवा कोई दलील
 उनके पास न थी। भेड़ और बकरी और ऊंट और गाय, चाहे नर हों या मादा, अक्ली तौर पर
 कोई हुरमत (मनाही) का सबब इनके अंदर मौजूद नहीं है, इनका तमाम का तमाम गोश्त इंसान
 की बेहतरीन गिजा है। इनमें कोई ऐसी नापाक आदत भी नहीं जो इनके बारे में इंसानी तबीअत
 में कराहियत पैदा करती हो। आसमान से उतरे हुए इल्म में भी इनकी हुरमत का जिक्र नहीं।

फिर क्यों ऐसा होता है कि इन हैवानात के बारे में लोगों के अंदर तरह-तरह के तहरीमी
 (निषिद्धता के) कायदे बन जाते हैं। इसकी वजह शैतानी तर्गीबात हैं। इंसान के अंदर फितरी
 तौर पर खुदा का शुऊर और हARAM व हलाल का एहसास मौजूद है। आदमी अपने अंदरूनी
 तक्रजे के तहत किसी हस्ती को अपना खुदा बनाना चाहता है और चीजों में जाइज नाजाइज
 का फर्क करना चाहता है। शैतान इस हकीकत को खूब जानता है। वह समझता है कि इंसान
 को अगर सादा हालात में अमल करने का मौका मिला तो वह फितरत के सही रास्ते को पकड़
 लेगा। इसलिए वह फितरत के इंसानी को कुंद करने के लिए तरह-तरह के ग़लत रवाज कायम
 करता है। वह खुदा के नाम पर कुछ फर्जी खुदा गढ़ता है। वह हARAM व हलाल के नाम पर
 कुछ बेबुनियाद मुहरमात (अवैध) वजअ करता है। इस तरह शैतान यह कोशिश करता है कि
 आदमी इन्हीं फर्जी चीजों में उलझ कर रह जाए और असली सच्चाई तक न पहुंचे। वह सीधे
 रास्ते से भटक चुका हो। मगर बजाहिर अपने को चलता हुआ देखकर यह समझे कि मैं
 'रास्ते' पर हूँ। हालांकि वह एक टेढ़ी लकीर हो न कि सीधा और सच्चा रास्ता।

जो लोग इस तरह शैतानी बहकावे का शिकार हों वे खुदा की नजर में जालिम हैं। उन्हें
 खुदा ने समझ दी थी जिससे वे हक व बातिल में तमीज कर सकते थे। मगर उनके तअस्सुबात
 उनके लिए पर्दा बन गए। समझने की सलाहियत रखने के बावजूद समझने से दूर रहे।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفْرٍ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا
 عَلَيْهِمْ شَحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ
 ذَلِكَ جَزَيْنَهُمْ بِبَغْيِهِمْ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۝ فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبِّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ
 وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ النَّجَرِمِينَ ۝

और यहूद पर हमने सारे नाखून वाले जानवर हARAM किए थे और गाय और बकरी की
 चरबी हARAM की सिवा उसके जो उनकी पीठ या अंतड़ियों से लगी हो या किसी हड्डी
 से मिली हुई हो। यह सजा दी थी हमने उन्हें उनकी सरकशी पर और यकीनन हम सच्चे
 हैं। पस अगर वे तुम्हें झुटलाएं तो कह दो कि तुम्हारा रब बड़ी वसीअ (व्यापक) रहमत
 वाला है। और उसका अजाब मुजरिम लोगों से टल नहीं सकता। (147-148)

शरीअते खुदावंदी में अस्ल मुहरमात (अवैध) हमेशा वही रहे हैं जो ऊपर की आयत में
 बयान हुए। यानी मुर्दा, बहाया हुआ खून, सुअर का गोश्त और वे जानवर जिसे ग़ैर अल्लाह
 के नाम पर जबह किया गया हो। इसके सिवा अगर कुछ चीजें हARAM हैं तो वे इन्हीं की तशरीह
 व तफ़सील हैं।

मगर इसी के साथ अल्लाह की एक सुन्नत तहरीम (निषिद्धता) और है। वह यह कि जब
 कोई किताब की हामिल कोम इताअत के बजाए सरकशी का तरीका इख्तियार करती है तो
 उसकी सरकशी की सजा के तौर पर उसे नई-नई मुश्किलत में डाल दिया जाता है। उस पर
 ऐसी चीजें हARAM कर दी जाती हैं जो असलन शरीअते खुदावंदी में हARAM न थीं।

ख्वाहिश से ऊपर उठ नहीं पाता। वह बातिल को हक कहने के लिए खड़ा हो जाता है ताकि अपने अमल को जाइज साबित कर सके। उसकी ढिठाई उसे यहां तक ले जाती है कि वह खुदा की निशानियों को नजरअंदाज कर दे। वह इस बात से बेपरवाह हो जाता है कि खुदा उसे बिलआखिर पकड़ने वाला है। वह दूसरी-दूसरी चीजों को वह अहमियत दे देता है जो अहमियत सिर्फ खुदा को देना चाहिए।

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبِّيَ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ إِمْلَاقٍ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطْنٌ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذَلِكُمْ وَصَّيْتُكُمْ بِهَا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٥٩﴾

कहो, आओ मैं सुनाऊं वे चीजें जो तुम्हारे रब ने तुम पर हराम की हैं। यह कि तुम उसके साथ किसी चीज को शरीक न करो और मां बाप के साथ नेक सुलूक करो और अपनी औलाद को मुफिलसी के डर से कत्ल न करो। हम तुम्हें भी रोजी देते हैं और उन्हें भी। और बेहयाई के काम के पास न जाओ चाहे वह जाहिर हो या पोशीदा। और जिस जान को अल्लाह ने हराम ठहराया उसे न मारो मगर हक पर। ये बातें हैं जिनकी खुदा ने तुम्हें हिदायत फरमाई है ताकि तुम अक्ल से काम लो। (152)

खुदाई पाबंदी के नाम पर लोग तरह-तरह की रस्मी और जाहिरी पाबंदियां बना लेते हैं और उनका खुसूसी एहतिमाम करके मुतमइन हो जाते हैं कि उन्होंने खुदाई पाबंदियों का हक अदा कर दिया। मगर खुदा इंसान से जिन पाबंदियों का एहतिमाम चाहता है वे हकीकी पाबंदियां हैं न कि किसी क्रिम के रस्मी मजाहिर।

सबसे पहली चीज यह है कि आदमी एक खुदा को अपना खुदा बनाए। उसके सिवा किसी की बड़ाई का गलबा उसके जेहन पर न हो। उसके सिवा किसी को वह काबिले भरोसा न समझता हो। उसके सिवा किसी से वह उम्मीदें कायम न करे। उसके सिवा किसी से वह न डरे और न उसके सिवा किसी की शदीद मुहब्बत में मुत्तला हो।

वालिदेन अक्सर हालात में कमजोर और मोहताज होते हैं और औलाद ताकतवर। उनसे हुस्ने सुलूक का प्रेक मफाद (स्वार्थ) नहीं होता बल्कि सिर्फ हकशनासी (दायित्व बोध) होता है। इस तरह वालिदेन के हुक्क अदा करने का मामला आदमी के लिए एक बात का सबसे पहला इम्तेहान बन जाता है कि उसने खुदा के दीन को कौल की सतह पर इख्तियार किया है या अमल की सतह पर। अगर वह वालिदेन की कमजोरी की बजाए उनके हक को अहमियत दे, अगर अपने दोस्तों और अपने वीवी बच्चों की मुहब्बत उसे वालिदेन से दूर न करे तो गोया उसने इस बात का पहला सुबूल दे दिया कि उसका अख्लाक उसूलपसंदी और हकशनासी के ताबेअ (अनुरूप) होगा न कि मफादात और मस्लेहत (हितों, स्वार्थों) के ताबेअ।

इंसान अपने हिर्स और जुम्म की वजह से खुदा के पैदा किए हुए रिज्क को तमाम बंदों तक मुसिफाना तौर पर पहुंचने नहीं देता। और जब इसकी वजह से किल्लत के मसनूई (कृत्रिम) मसाइल पैदा होते हैं तो वह कहता है कि खाने वालों को कत्ल कर दो या पैदा होने वालों को पैदा न होने दो। इस क्रिम की बातें खुदा के रिज्क के निजाम पर बोहतान के हममअना हैं।

बहुत सी बुराइयां ऐसी हैं जो अपनी हैयत में इतनी फोहश (अश्लील) होती हैं कि इनकी बुराई को जानने के लिए किसी बड़े इल्म की जरूरत नहीं होती। इंसानी फितरत और उसका जमीर ही यह बताने के लिए काफी है कि यह काम इंसान के करने के काबिल नहीं। ऐसी हालत में जो शख्स किसी फह्हाशी या बेहयाई के काम में मुब्तिला हो वह गोया साबित कर रहा है कि वह उस इब्तिदाई इंसानियत के दर्जे से भी महरूम है जहां से किसी इंसान के इंसान होने का आगाज होता है।

हर इंसान की जान मोहतरम (सम्माननीय) है। किसी इंसान को हलाक करना किसी के लिए जाइज नहीं जब तक खलिक के कानून के मुताबिक वह कोई ऐसा जुर्म न करे जिसमें उसकी जान लेना मख्सूस शर्तों के साथ मुवाह (वैध) हो गया हो। ये बातें इतनी वाजेह हैं कि अक्ल से काम लेने वाला इनकी सदाकत (सत्यता) जानने से महरूम नहीं रह सकता।

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا بِالْكَيْلِ وَالْيَمِينِ بِالْقِسْطِ لَا تُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ذَلِكُمْ وَصَّيْتُكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٦٠﴾ وَإِنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ذَلِكُمْ وَصَّيْتُكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦١﴾

और यतीम के माल के पास न जाओ मगर ऐसे तरीके से जो बेहतर हो यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंच जाए। और नाप तौल में पूरा इंसाफ करो। हम किसी के जिमे वही चीज लाजिम करते हैं जिसकी उसे ताकत हो। और जब बोलो तो इंसाफ की बात बोलो चाहे मामला अपने रिश्तेदार ही का हो। और अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करो। ये चीजें हैं जिनका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है ताकि तुम नसीहत पकड़ो। और अल्लाह ने हुक्म दिया कि यही मेरी सीधी शाहराह है। पस इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वे तुम्हें अल्लाह के रास्ते से जुदा कर देंगी। यह अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है ताकि तुम बचते रहो। (153-154)

यतीम किसी समाज का सबसे कमजोर फर्द होता है। वे तमाम इज्फ़ी असबाब (अतिरिक्त कारक) उसकी जात में नहीं होते जो आम तौर पर किसी के साथ अच्छे सुलूक का प्रेक बनते

हैं। 'यतीम' के साथ जिम्मेदारी का मामला वही शख्स कर सकता है जो ख़ालिस उसूलों बुनियाद पर बाकिरदार बना हो न कि फ़ायदा और मस्लेहत (स्वार्थ) की बुनियाद पर। यतीम किसी समाज में हुस्ने सुलूक की आखिरी अलामत होता है। जो शख्स यतीम के साथ ख़ैरख़ाहाना सुलूक करे वह दूसरे लोगों के साथ और ज्यादा ख़ैरख़ाहाना सुलूक करेगा।

कायनात की हर चीज दूसरी चीज से इस तरह वाबस्ता है कि हर चीज दूसरे को वही देती है जो उसे देना चाहिए और दूसरे से वही चीज लेती है जो उसे लेना चाहिए। यही उसूल इंसान को अपनी ज़िंदगी में इख़्तियार करना है। इंसान को चाहिए कि जब वह दूसरे इंसान के लिए नापे तो ठीक नापे और जब तोले तो ठीक तोले। ऐसा न करे कि अपने लिए एक पैमाना इस्तेमाल करे और ग़ैर के लिए दूसरा पैमाना।

जिंदगी में बास-बार ऐसे मौके आते हैं कि आदमी को किसी के ख़िलाफ़ इन्हारे राय करना होता है। ऐसे मौकों पर खुदा का पसंदीदा तरीका यह है कि आदमी वही बात कहे जो इंसाफ़ से मेयार पर पूरी उतरने वाली हो। कोई अपना हो या ग़ैर हो। उससे दोस्ती के तअल्लुकात हों या दुश्मनी के तअल्लुकात, ऐसा शख्स हो जिससे कोई फ़ायदा वाबस्ता है या ऐसा शख्स हो जिससे कोई फ़ायदा वाबस्ता नहीं, इन तमाम चीजों की परवाह किए बग़ैर आदमी वही कहे जो फ़िल्वाकअ दुस्त और हक़ है।

हर आदमी फ़ितरत के अहद में बंधा हुआ है। कोई अहद लिखा हुआ होता है और कोई अहद वह होता है जो लफ़्जों में लिखा हुआ नहीं होता मगर आदमी का ईमान, उसकी इंसानियत और उसकी शराफ़त का तकाज़ा होता है कि इस मौके पर ऐसा किया जाए। दोनों क्रिस्म के अहदों को पूरा करना हर मोमिन व मुस्लिम का फ़रीज़ा है। ये तमाम बातें इतिहाई वाजेह हैं। आसमानी 'वही' और आदमी की अक्ल उनके बरहक होने की गवाही देते हैं। मगर उनसे वही शख्स नसीहत पकड़ेगा जो खुद भी नसीहत पकड़ना चाहता हो।

ये अहकाम (151-153) शरीअते इलाही के बुनियादी अहकाम हैं। इन पर उनके सीधे मफ़हूम के एतबार से अमल करना खुदा की सीधी शाहराह पर चलना है। और अगर तावील और मूशिगाफ़ियों (कुतकों) के जरिए उनमें शाखें निकाली जाएं और सारा जोर इन शाखों पर दिया जाने लगे तो यह इधर-उधर के विभिन्न रास्तों में भटकना है जो कभी आदमी को खुदा तक नहीं पहुँचाते।

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّعَالَمٍ يُوقِنُونَ ۝ وَهَذَا كِتَابُنَا أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ ۖ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝ أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ الْكِتَابُ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ كِتَابِنَا غَافِلِينَ ۝ أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَزْلَحْنَا عَيْنَيْنَا ۖ الْكِتَابَ كُنَّا أَهْدَى مِنْهُمَا فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۖ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَقَ عَنْهَا ۖ سَاجِدِينَ الَّذِينَ

يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ۝ هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُهُمْ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَمْ يَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا ۚ قُلِ انْتَظِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ۝

फिर हमने मूसा को किताब दी नेक काम करने वालों पर अपनी नेमतें पूरी करने के लिए और हर बात की तपसील और हिदायत और रहमत ताकि वे अपने रब के मिलने का यकीन करें। और इसी तरह हमने यह किताब उतारी है, एक बरकत वाली किताब। पस इस पर चलो और अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहमत की जाए। इसलिए कि तुम यह न कहने लगे कि किताब तो हमसे पहले के दो गिरोहों को दी गई थी और हम उन्हें पढ़ने पढ़ाने से बेख़बर थे। या कहो कि अगर हम पर किताब उतारी जाती तो हम उनसे बेहतर राह पर चलने वाले होते। पस आ चुकी तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक रोशन दलील और हिदायत और रहमत। तो उससे ज्यादा जलिम कौन होगा जो अल्लाह की निशानियों को झुठलाए और उनसे मुंह मोड़े। जो लोग हमारी निशानियों से एराज (उपेक्षा) करते हैं हम उन्हें उनके एराज की पादाश में बहुत बुरा अज़ाब देंगे। ये लोग क्या इसके मुंजिर हैं कि उनके पास फरिश्ते आएँ या तुम्हारा रब आए या तुम्हारे रब की निशानियों में से कोई निशानी जाहिर हो। जिस दिन तुम्हारे रब की निशानियों में से कोई निशानी आ पहुँचेगी तो किसी शख्स को उसका ईमान नफा न देगा जो पहले ईमान न ला चुका हो या अपने ईमान में कुछ नेकी न की हो। कहो तुम राह देखो, हम भी राह देख रहे हैं। (155-159)

खुदा की तरफ से जो किताब आती है उसमें अगरचे बहुत सी तपसीलात होती हैं मगर विलआखिर उसका मक़सद सिर्फ एक होता है यह कि आदमी अपने रब की मुलाक़ात पर यकीन करे। यानी दुनिया में वह इस तरह जिंदगी गुजारे कि वह अपने हर अमल के लिए अपने आपको खुदा के यहां जवाबदेह समझता हो। उसकी जिंदगी एक जिम्मेदाराना जिंदगी हो न कि आजद और बेद्व जिंदगी। यही पिछली किताबों का मक़सद था और यही कुआन का उद्देश्य भी है।

खुदा ने बाकी दुनिया को बराहेरास्त अपने ज़ब्री हुक़म के तहत अपना पाबंद बना रखा है। मगर इंसान को उसने पूरा इख़्तियार दे दिया है। उसने इंसान की हिदायत का यह तरीका रखा है कि रसूल और किताब के जरिए दलाइल की जवान में वह लोगों को हक़ और बातिल से बाख़बर करता है। दुनिया में खुदा की मर्जी लोगों के सामने दलील की सूरत में जाहिर होती है। यहां दलील को मानना खुदा को मानना है और दलील को झुठलाना खुदा को झुठलाना। कियामत का धमाका होने के बाद तमाम छुपी हुई हकीकतें लोगों के सामने आ जाएंगी।

उस वक्त हर आदमी खुदा और उसकी बातों को मानने पर मजबूर होगा। मगर उस वक्त के मानने की कोई कीमत नहीं। मानना वही मानना है जो हालते गैब में मानना हो। ईमान दरअसल यह है कि देखने के बाद आदमी जो कुछ मानने पर मजबूर होगा उसे वह देखे बगैर मान ले। जो शख्स देखकर माने उसने गोया माना ही नहीं।

जो लोग आज इख्तियार की हालत में अपने को खुदा का पाबंद बना लें उनके लिए खुदा के यहां जन्नत है। इसके बरअक्स जो लोग कियामत के आने के बाद खुदा के आगे झुकेंगे उनका झुकना सिर्फ उनके जुर्म को और भी ज्यादा साबित करने के हममअना होगा। इसका मतलब यह होगा कि उन्होंने, खुद अपने एतराफ के मुताबिक, एक मानने वाली बात को न माना, उन्होंने एक किए जाने वाले काम को न किया।

إِنَّ الَّذِينَ فَتَرُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا أَتَىٰ اللَّهُ لِيَكْلَأَهُم مِّنْ جَاءٍ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عِشْرُ امِّثَالِهَا وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٠﴾

जिन्होंने अपने दीन में राहें निकालीं और गिरोह-गिरोह बन गए तुम्हें उनसे कुछ सरोकार नहीं। उनका मामला अल्लाह के हवाले है। फिर वही उन्हें बता देगा जो वे करते थे। जो शख्स नेकी लेकर आया तो उसके लिए उसका दस गुना है। और जो शख्स बुराई लेकर आया तो उसे बस उसके बराबर बदला मिलेगा और उन पर जुल्म नहीं किया जाएगा। (160-161)

दीन यह है कि आदमी एक खुदा के सिवा किसी को अपनी जिंदगी में बरतर मक़ाम न दे। वह हक्कनासी (दायित्व बोध) की बुनियाद पर तअल्लुम्मत कायम करे न कि मफ़द (स्वाथी) की बुनियाद पर, जिसकी पहली अलामत वालिदेन हैं। वह रिज्क को खुदा का अतिया समझे और खुदाई निज़ाम में मुदाख़लत (हस्तक्षेप) न करे, इस मामले में आदमी की गुमराही उसे औलाद के क़त्ल और तहदीदे नस्ल (परिवार नियोजन) की हिमाक़्त तक ले जाती है। वह फ़ोहश और बेहयाई के कामों से बचे ताकि बुराई के बारे में उसके दिल की हस्सासियत जिंदा रहे। वह कमज़ोर का इस्तहसाल (शोषण) न करे जिसका करीबी इस्तेहान आदमी के लिए यतीम की सूरत में होता है। वह हुक्क की अदायगी और लेन देन में तराजू की तरह बिल्कुल ठीक-ठीक रहे। वह अपनी ज़बान का इस्तेमाल हमेशा हक़ के मुताबिक करे। वह इस एहसास के साथ जिंदगी गुज़ारे कि हर हाल में वह अहदे खुदावंदी में बंधा हुआ है, वह किसी भी वक्त खुदाई अहद की जिम्मेदारियों से आजाद नहीं है। यही किसी आदमी के लिए खुदा की पसंद के मुताबिक जिंदगी गुज़ारने का सीधा रास्ता है। आदमी को चाहिए कि वह दाएं बाएं भटके बगैर इस सीधे रास्ते पर हमेशा कायम रहे।

ऊपर जो दस अहकाम (151-153) बयान हुए हैं वे सब सादा फितरी अहकाम हैं। हर

आदमी की अक्ल उनके सच्चे होने की गवाही देती है। अगर सिर्फ इन चीजों पर जोर दिया जाए तो कभी इस्लाम और फ़िस्सबंदी न हो। मगर जब कैमोंमेंजवाल (पतन) आता है तो उनमें ऐसे रहनुमा पैदा होते हैं जो इन सादा अहकाम में तरह-तरह की ग़ैर फितरी शिकें निकालते हैं। यही वह चीज है जो दीनी इस्तेहाद को टुकड़े-टुकड़े कर देती है।

तौहीद में अगर यह बहस छेड़ी जाए कि खुदा जिसम रखता है या वह बगैर जिसम है। यतीम के मामले में मूशिगाफियां (कुतर्क) की जाए कि यतीम होने की शराइत क्या हैं। या यह नुक़ता निकाला जाए कि इन खुदाई अहकाम पर उस वक्त तक अमल नहीं हो सकता जब तक हुक्मत पर कब्ज़ा न हो। इसलिए सबसे पहला काम 'ग़ैर इस्लामी' हुक्मत को बदलना है। इस किस्म की बहसें अगर शुरू कर दी जाएं तो इनकी कोई हद न होगी। और उन पर उम्मी इस्तेमक हासिल करना नामुमकिन हो जाएगा। इसके बाद मुज़ल्लिफ़ फ़िक्री (वैचारिक) हलकेबनौ। अलग-अलग फ़िक्के और जमाअतेंकायम होंगी। आपसी इस्तेमक आपस में बिखराव की सूरत इख्तियार कर लेगा।

इस सादा और फितरी दीन पर अपनी सारी तवज्जोह लगाना सबसे बड़ी नेकी है। मगर इसके लिए आदमी को नपस से लड़ना पड़ता है। माहौल की नासाजगारी के बावजूद सब्र और कुर्बानी का सुबूत देते हुए उस पर जमे रहना होता है। यह एक बड़ा पुरमशक्कत अमल है इसलिए इसका बदला भी खुदा के यहां कई गुना बढ़ा कर दिया जाता है। जो लोग बुराई करते हैं, जो खुदा की दुनिया में खुदा के मुकरर रास्ते के सिवा दूसरे रास्तों पर चलते हैं वे अगरचे बहुत बड़ा जुर्म करते हैं। ताहम खुदा उनके खिलाफ इंतकामी कार्रवाई नहीं करता। वह उन्हें उतनी ही सजा देता है जितना उन्होंने जुर्म किया है।

قُلْ إِنِّي هَدَيْتُ رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۖ دِينًا قِيَمًا مِّمَّا ءَبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ قُلْ إِن صَلَائِي وَسُكُوتِي وَمَهْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ لَا شَرِيكَ لَهُ ۚ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ ۚ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ ۚ قُلْ أَغْوَىٰ اللَّهُ أَبْعَىٰ رِبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۚ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ الْأَرْضِ ۚ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ ۚ لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُم ۚ إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ ۚ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠٤﴾

कहो मेरे रब ने मुझे सीधा रास्ता बता दिया है। सही दीने इब्राहीम की मिल्लत की तरफ जो यकसू थे और मुश्रिकीन (बहुदेववादियों) में से न थे। कहो मेरी नमाज और मेरी

बाकी लोगों के लिए वह सिर्फ उस बुरे अंजाम से डराने के हममअना होकर रह जाती है जिसकी तरफ वे अपनी सरकशी की वजह से बढ़ रहे हैं। दाजी यह देखकर तड़पता है कि जो चीज मुझे कामिल सदाकत के रूप में दिखाई दे रही है उसे बेशतर लोग बातिल समझ कर ठुकरा रहे हैं। जो चीज मेरी नजर में पहाड़ से भी ज्यादा अहम है उसके साथ लोग ऐसी बेपरवाही का सुलूक कर रहे हैं जैसे उसकी कुछ हकीकत ही न हो, जैसे वह बिल्कुल बेअसल हो।

यह दुनिया इस्तेहान की दुनिया है। यहां हर आदमी के लिए मौका है कि अगर वह किसी बात को न मानना चाहे तो वह उसे न माने, यहां तक कि वह उसे रद्द करने के लिए खूबसूरत अल्फाज भी पा ले। मगर यह सूरतेहाल बिल्कुल आरज़ी है। इस्तेहान की मुद्दत खत्म होते ही अचानक खुल जाएगा कि दाजी की बात लोहे और पत्थर से भी ज्यादा साबितशुदा थी। यह सिर्फ मुखालिफीन का तअस्सुब और उनकी अनानियत (अहंकार) थी जिसने उन्हें दलील को दलील की सूरत में देखने न दिया। उस वक्त खुल जाएगा कि हक के दाजी की बातों की रद्द में जो दलीलें वे पेश करते थे वे महज धांधली थी न कि हकीकी मअनों में कोई इस्तदलाल (तर्क)।

दुनिया में जो चीजें किसी को बावजन बनाती हैं वे ये कि उसके गिर्द मादूदी रौनके जमा हों। वह अल्फाज के दरिया बहाने का फन जानता हो। उसके साथ अवाम की भीड़ इकट्ठा हो गई हो। क्योंकि हक के दाजी के साथ आम तौर पर ये असबाब जमा नहीं होते इसलिए दुनिया के लोगों की नजर में उसकी बात बेवजन और उसके मुखालिफों की बात वजनदार बन जाती है। मगर कियामत जब बनावटी पर्दों को फाड़ेगी तो सूरतेहाल बिल्कुल बरअक्स हो जाएगी। अब सारा वजन हक की तरफ होगा और नाहक बिल्कुल बेदलील और बेममत होकर रह जाएगा।

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝
وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ لَمْ يَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ۝ قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ۝ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ۝ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ۝ قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝ قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۝ قَالَ فِيمَا أُغْوِيْتَنِي لِأَقْعُدَ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ ۝ ثُمَّ لَا تَرِيَهُم مِّنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ۝ قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْمُومًا مَّدْحُورًا لَّنْ تَبْعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

और हमने तुम्हें जमीन में जगह दी और हमने तुम्हारे लिए उसमें जिंदगी का सामान फराहम किया, मगर तुम बहुत कम शुक्र करते हो। और हमने तुम्हें पैदा किया, फिर हमने तुम्हारी सूरत बनाई। फिर फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो। पस उन्होंने सज्दा किया। मगर इब्लीस (शैतान) सज्दा करने वालों में शामिल नहीं हुआ। खुदा ने कहा कि तुझे किस चीज ने सज्दा करने से रोका जबकि मैंने तुझे हुक्म दिया था। इब्लीस ने कहा कि मैं इससे बेहतर हूं। तूने मुझे आग से बनाया है और आदम को मिट्टी से। खुदा ने कहा कि तू उतर यहां से। तुझे यह हक नहीं कि तू इसमें घमंड करे। पस निकल जा, यकीनन तू जलील है। इब्लीस ने कहा कि उस दिन तक के लिए तू मुझे मोहलत दे जबकि सब लोग उठाए जाएंगे। खुदा ने कहा कि तुझे मोहलत दी गई। इब्लीस ने कहा कि चूंकि तूने मुझे गुमराह किया है, मैं भी लोगों के लिए तेरी सीधी राह पर बैटूंगा। फिर उन पर आऊंगा उनके आगे से और उनके पीछे से और उनके दाएं से और उनके बाएं से, और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुजार न पाएगा। खुदा ने कहा कि निकल यहां से जलील और ठुकराया हुआ। जो कोई उनमें से तेरी राह पर चलेगा तो मैं तुम सबसे जहन्नम को भर दूंगा। (10-18)

खुदा ने इंसान को इस दुनिया में जो कुछ दिया है इसलिए दिया है कि उसका नफिसयाती जवाब वह शुक्र की सूरत में पेश करे। मगर यही वह चीज है जिसे आदमी अपने रब के सामने पेश नहीं करता। इसकी वजह यह है कि शैतान उसके अंदर दूसरे-दूसरे जज्बात उभार कर उसे शुक्र की नफिसयात से दूर कर देता है।

आदम और इब्लीस के किस्से से मालूम होता है कि दुनिया में हिदायत और गुमराही का मअरका कहां बरपा है। यह मअरका उन मौकों पर बरपा है जहां आदमी के अंदर हसद और घमंड की नफिसयात जागती है। इस्तेहान की इस दुनिया में बार-बार ऐसा होता है कि एक आदमी दूसरे आदमी से ऊपर उठ जाता है। कभी कोई शख्स दौलत व इज्जत में दूसरे से ज्यादा हिस्सा पा लेता है। कभी दो आदमियों के दर्मियान ऐसा मामला पड़ता है कि एक शख्स के लिए दूसरे को उसका जाइज हक देना अपने को नीचे गिराने के हममअना नजर आता है। कभी किसी शख्स की जबान से खुदा एक सच्चाई का एलान कराता है और वह उन लोगों को अपने से बरतर दिखाई देने लगता है जो उस सच्चाई तक पहुंचने में नाकाम रहे थे। ऐसे मौकों पर शैतान आदमी के अंदर हसद और घमंड की नफिसयात जगा देता है। मैं बेहतर हूं के जज्बे से मगलूब होकर वह दूसरे का एतराफ करने के लिए तैयार नहीं होता। यही खुदा की नजर में शैतान के रास्ते पर चलना है। जिस शख्स ने ऐसे मौकों पर हसद और घमंड का तरीका इस्त्रियार किया उसने अपने को जहन्नमी अंजाम का मुस्तहिक बना लिया जो शैतान के लिए मुकद्दर है और जिसने ऐसे मौकों पर शैतान के पैदा किए हुए जज्बात को अपने अंदर कुचल डाला उसने इस बात का सुबूत दिया कि वह इस काबिल है कि उसे जन्नत के बागों में बसाया जाए।

जो कुछ किसी को मिलता है खुदा की तरफ से मिलता है। इसलिए किसी की फजीलत

का एतराफ दरअस्त खुदा की तक्सीम के बरहक होने का एतराफ है और उसकी फज़ीलत को न मानना खुदा की तक्सीम को न मानना है। इसी तरह जब एक शख्स किसी हक की बिना पर दूसरे के आगे झुकता है तो वह किसी आदमी के आगे नहीं झुकता बल्कि खुदा के आगे झुकता है। क्योंकि ऐसा वह खुदा के हुक्म की बिना पर कर रहा है न कि उस आदमी के जाती फल की बिना पर।

وَيَا دُمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ③ فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْآتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُونَا مَلَكَتَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ ④ وَقَاسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لِنَاصِرٍ ⑤

और ऐ आदम, तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और खाओ जहां से चाहो। मगर उस दरख्त के पास न जाना वरना तुम नुक्सान उठाने वालों में से हो जाओगे। फिर शैतान ने दोनों को बहकाया ताकि वह खोल दे उनकी वह शर्म की जगहें जो उनसे छुपाई गई थीं। उसने उनसे कहा कि तुम्हारे रब ने तुम्हें इस दरख्त से सिर्फ इसलिए रोका है कि कहीं तुम दोनों फरिश्ते न बन जाओ या तुम्हें हमेशा की ज़िंदगी हासिल हो जाए। और उसने कसम खाकर कहा कि मैं तुम दोनों का खैरखाह (हितैषी) हूँ। (19-21)

जन्नत अपनी तमाम वस्तुओं के साथ आदम और उनकी बीवी के लिए खुली हुई थी। उसमें तरह-तरह की चीजें थीं और खुदा की तरफ से उन्हें आज्ञा दी कि उन्हें जिस तरह चाहें इस्तेमाल करें। बेशुमार जाइज चीजों के दर्मियान सिर्फ एक चीज के इस्तेमाल से रोक दिया था। शैतान ने उसी ममनूआ (निषिद्ध) मकाम से उन पर हमला किया। उसने वसवसाअंदजियों के जरिए सिखाया कि जिस चीज से तुम्हें रोका गया है वही जन्नत की अहमतरीन चीज है। उसी में तकद्दुस (पवित्रता) और अबदियत का सारा राज छुपा हुआ है। आदम और उनकी बीवी इब्लीस की मुसलसल तल्कीन से मुतास्सिर हो गए। और बिलआखिर ममनूआ दरख्त का फल खा लिया। मगर जब उन्होंने ऐसा किया तो नतीजा उनकी उम्मीदों के बिल्कुल बरअक्स निकला। उनकी इस ख़िलाफ़ज़ी ने खुदा का लिबासे हिफ़जत उनके जिस्म से उतार दिया। वह उस दुनिया में बिल्कुल बेयारोमददगार होकर रह गए जहां इससे पहले उन्हें तरह-तरह की सुहूलत और हिफ़जत हासिल थी।

इससे मालूम हुआ कि शैतान का वह खास हरबा क्या है जिससे वह इंसान को बहका कर खुदा की रहमत व नुसरत (मदद) से दूर कर देता है। वह है हलाल रिक्क के पैसो हुए मैदान को आदमी की नजर में कमतर करके दिखाना और जो चन्द चीजें हराम हैं उन्हें ख़ूबसूरत

तौर पर पेश करके यकीन दिलाना कि तमाम बड़े-बड़े फ़ायदों और मस्लेहों का राज बस इन्हीं चन्द चीजों में छुपा हुआ है।

शैतान अपना यह काम हर एक के साथ उसके अपने जौक और हालात के एतबार से करता है। किसी को तमाम कीमती गिजाओं से बेराबत करके यह सिखाता है कि शानदार तंदरुस्ती हासिल करना चाहते हो तो शराब पियो। कहीं लाखों बेरोजगार मर्द काम करने के लिए मौजूद होंगे मगर वह तर्ज़ीब देगा कि अगर तरक्की की मंजिल तक जल्द पहुंचना चाहते हो तो औरतों को घर से बाहर लाकर उन्हें मुख़लिफ़ तमद्दुनी (सांस्कृतिक) शोबों में सरगम कर दो। किसी के पास अपने मुख़लिफ़ को ज़े करने का यह कबिले अमल तरीका मौजूद होगा कि वह अपने आपको मुस्तहक़म (सुदृढ़) बनाए मगर शैतान उसके कान में डालेगा कि तुम्हारे लिए अपने मुख़लिफ़ को शिकस्त देने का सबसे ज्यादा कारगर तरीका यह है कि उसके ख़िलाफ़ तख़ीबी (विध्वंसक) कारवाइयां शुरू कर दो। किसी के लिए 'अपनी तामीर आप' के मैदान में काम करने के लिए बेशुमार मौके खुले हुए होंगे मगर वह सिखाएगा कि दूसरों के ख़िलाफ़ एहतेजाज (प्रोटेस्ट) और मुतालबे का तूफ़ान बरपा करना अपने को कामयाबी की तरफ़ ले जाने का सबसे ज्यादा करीबी रास्ता है। किसी के सामने हुक्मते वक्त से टकराव किए बग़ैर बेशुमार दीनी काम करने के लिए मौजूद होंगे मगर वह उसे इस ग़लतफ़हमी में डालेगा कि ग़ैर इस्लामी हुक्मरानों को अगर किसी न किसी तरह फांसी पर चढ़ा दिया जाए या उन्हें गोली मार कर ख़त्म कर दिया जाए तो इसके बाद आनन-फ़ानन इस्लाम का मुकम्मल निज़ाम सारे मुल्क में कायम हो जाएगा, वग़ैरह।

فَدَلَّهُمَا بِعُرْوَةٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْآتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهَا مِنْ وَرَقِ الْجَنَّةِ ⑥ وَنَادَاهُمَا رَبُّهُمَا أَلَمْ أَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكَ الشَّجَرَةِ وَأَقُلْتُ لَكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُبِينٌ ⑦ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا ⑧ وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ⑨ قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَى حِينٍ ⑩ قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ ⑪ وَفِيهَا تَمُوتُونَ ⑫ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ ⑬

पस मायल कर लिया उन्हें फरेब से। फिर जब दोनों ने दरख्त का फल चखा तो उनकी शर्मगाहें उन पर खुल गईं। और वे अपने को बाग़ के पत्तों से ढांकने लगे और उनके रब ने उन्हें पुकारा कि क्या मैंने तुम्हें उस दरख्त (वृक्ष) से मना नहीं किया था और यह नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। उन्होंने कहा, ऐ हमारे रब हमने अपनी जानों पर जुल्म किया और अगर तू हमें माफ़ न करे और हम पर रहम न करे तो हम घाटा उठाने वालों में से हो जाएंगे। खुदा ने कहा, उतरो, तुम एक दूसरे के दुश्मन

होगे, और तुम्हारे लिए जमीन में एक खास मुद्दत तक ठहरना और नफा उठाना है। खुदा ने कहा, उसी में तुम जियोगे और उसी में तुम मरोगे और उसी से तुम निकाले जाओगे। (22-25)

आदम और शैतान दोनों एक दूसरे के दुश्मन की हैसियत से जमीन पर भेजे गए हैं। अब कियामत तक दोनों के दुर्मियान यही जंग जारी है। शैतान की मुसलसल कोशिश यह है कि वह इंसान को अपने रास्ते पर लाए और जिस तरह वह खुदा की रहमत से महरूम हुआ है इंसान को भी खुदा की रहमत से महरूम कर दे। इसके मुकाबले में इंसान को यह करना है कि वह शैतान के मंसूवे को नाकाम बना दे। वह शैतान की पुकार को नजरअंदाज करके खुदा की पुकार की तरफ दौड़े।

आदम और शैतान की यह जंग अमलन इंसानों में दो गिरोह बन जाने की सूरत में जाहिर होती है। कुछ लोग शैतान की तर्गीबात (प्रेरण) का शिकार होकर उसकी सफ में शामिल हो जाते हैं। और कुछ लोग खुदा की आवाज पर लब्बैक (स्वीकारोक्ति) कह कर यह ख़तरा मोल लेते हैं कि शैतान के तमाम साथी उसे बेइज्जत करने और नाकाम बनाने के लिए हर क्रिम की तदबीरें करना शुरू कर दें। हर दौर में यह देखा गया है कि सच्चे हक़परस्त जो हमेशा कम तादाद में होते हैं, लोगों की सख़्ततरीन अदावतों का शिकार रहते हैं। इसकी वजह यही शैतान की दुश्मनाना कारवाइयां हैं। वह लोगों को सच्चे हक़परस्त आदमी के खिलाफ भड़का देता है। वह मुख़ल्लिफ तरीक़ों से लोगों के दिल में उसके ख़िलाफ नफ़रत की आग भरता है। चुनांचे वे शैतान का आलाकार बनकर ऐसे आदमी को सताना शुरू कर देते हैं।

शैतान का अस्ल जुर्म एतराफ न करना था। शैतान की यह कोशिश होती है कि हर आदमी के अंदर यही एतराफ न करने का मिजाज पैदा कर दे। वह छोटे को भड़काता है कि वह अपने बड़े का लिहाज न करे। मामलात के दौरान जब एक शख्स के जिम्मे दूसरे का कोई हक़ आता है तो वह उसे सिखाता है कि वह हक़दार का हक़ अदा न करे। कोई खुदा का बंदा सच्चाई का पैग़ाम लेकर उठता है तो लोगों के दिलों में तरह-तरह के शुबहात डाल कर उन्हें आमादा करता है कि वे उसकी बात न मानें। दो फ़रीक़ों (पक्षों) के दुर्मियान निजाअ (विवाद) हो और एक फ़रीक़ अपने हल्लात के एतबार से कुछ क्षेत्र पर राज़ हो जाए तो शैतान दूसरे फ़रीक़ के ज़हन में यह डालता है कि उसकी पेशकश को कुबूल न करो, और इतना ज्यादा का मुतालबा करो जो वह न दे सकता हो। ताकि जंग व फ़साद मुस्तक़िल तौर पर जारी रहे।

इस तरह शैतान के बहकावों से हर जगह लोगों के दुर्मियान दुश्मनियां जारी रहती हैं। इंसानों में दो गिरोह बन जाते हैं और उनमें ऐसा टकराव शुरू होता है जो कभी ख़त्म नहीं होता।

يَبْنِيْ اَدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ لِبَاسًا يُؤَارِي سَوَاتِكُمْ وَرِيْثًا وَ لِبَاسًا تَتَّقُوْنَ
 ذٰلِكَ خَيْرٌ ذٰلِكَ مِنْ اٰيَةِ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ يَذْكُرُوْنَ ۝ يَبْنِيْ اَدَمَ لَا يَفْتَنُكُمْ
 الشَّيْطٰنُ كَمَا اَخْرَجَ اَبُوْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسًا مِّنْ اَلْبُرِّ يُمْسَا سَوَاتِيْهُمَا

اٰذِنَ لَكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيَاطِيْنَ
 اَوْلِيَاءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝

ऐ बनी आदम, हमने तुम पर लिबास उतारा जो तुम्हारे बदन के कविले शर्म हिस्सों को ढके और ज़ैन्त (साज-सज्जा) भी। और तक़्वा (ईश-परायणता) का लिबास इससे भी बेहतर है। यह अल्लाह की निशानियों में से है ताकि लोग ग़ौर करें। ऐ आदमी की औलाद, शैतान तुम्हें बहका न दे जिस तरह उसने तुम्हारे मां बाप को जन्नत से निकलवा दिया, उसने उनके लिबास उतरवाए ताकि उन्हें उनके सामने बेपर्दा कर दे। वह और उसके साथी तुम्हें ऐसी जगह से देखते हैं जहां से तुम उन्हें नहीं देखते। हमने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया है जो ईमान नहीं लाते। (26-27)

दुनिया का निजाम खुदा ने इस तरह बनाया है कि इसकी जाहिरी चीज़ें इसकी बातिनी हकीकतों की अलामत हैं। जाहिरी चीज़ें पर ग़ौर करके आदमी छुपी हुई हकीकतों तक पहुंच सकता है। इसी किस्म की एक चीज़ लिबास है।

खुदा ने इंसान को लिबास दिया जो उसकी हिफाजत करता है और इसी के साथ उसके हुस्न व वक़ार को बढ़ाने का जरिया भी है। यह इस बात का इशारा है कि आदमी के रूहानी वजूद के लिए भी इसी तरह एक लिबास जरूरी है, यह लिबास तक़्वा है। तक़्वा आदमी का मअनवी (अर्थपूर्ण) लिबास है। जो एक तरफ उसे शैतान के हमलों से बचाता है और दूसरी तरफ उसके बातिन (भीतर) को संवार कर उसे जन्नत की लतीफ व नफ़ीस दुनिया में बसाने के कविल बनाता है। यह तक़्वा का लिबास क्या है। यह है अल्लाह का ख़ैफ़, हक़ का एतराफ, अपने लिए और दूसरों के लिए एक मेयार रखना, अपने को बंदा समझना, तवाजोअ (विनम्रता) को अपना शिआर बनाना, दुनिया में गुम होने के बजाए आख़िरत (परलोक) की तरफ मुतवज्जह रहना। आदमी जब इन चीज़ों को अपनाए तो वह अपने अंदरूनी वजूद को ढकता है और अगर वह इसके ख़िलाफ रवैया इख़्तियार करता है तो वह अपने अंदरूनी को नंगा कर लेता है। जाहिरी जिस्म को कपड़े का बना हुआ लिबास ढांकता है और बातिनी (भीतरी) जिस्म को तक़्वा (परहेजगारी, ईश-परायणता) का लिबास।

आदमी को गुमराह करने के लिए शैतान का तरीका यह है कि वह उसे बहकाता है। वह खुदा के ममनूआ दरख़्त को हर किस्म के ख़ैर का सरचश्मा (स्रोत) बताता है। वह ऐसे मासूम रास्तों से उसकी तरफ आता है कि आदमी का गुमान भी नहीं जाता कि उधर से उसकी तरफ गुमराही आ रही होगी। शैतान आदमी के तमाम नाजुक मक़ामात को जानता है और उन्हीं नाजुक मक़ामात से वह उस पर हमलाआवर होता है। कभी एक बेक़ीक़त नज़रिये को ख़ूबसूरत अल्मज़न में बयान करता है। कभी एक जुर्ई (आंशिक) हकीकत को कुली हकीकत के रूप में उसके सामने लाता है। कभी मामूली चीज़ों में फायदों का ख़ुज्जा बताकर सोरे लोगों को उसकी तरफ दौड़ा देता है। कभी एक बेमयदा हरकत में तर्कवी का राज

बताता है। कभी एक तख्तीबी (विध्वंसक) अमल को तामीर के रूप में पेश करता है।

शैतान किन लोगों को बहकाने में कामयाब होता है। वह उन लोगों पर कामयाब होता है जो इस्तेहान के मौकों पर ईमान का सुबूत नहीं दे पाते। जो खुदा की निशानियों पर गौर नहीं करते। जो दलाइल (तर्कों) की जवान में बात को समझने के लिए तैयार नहीं होते। जिन्हें अपने जाती रुहान के मुक़ाबले में हक के तफ़्ज़े को तरज़ीह देना ग़वार नहीं होता। जिन्हें ऐसी सच्चाई, सच्चाई नजर नहीं आती जिसमें उनके फ़ायदों और मस्लेहों की रियायत शामिल न हो। जिन्हें वह हक पसंद नहीं आता जो उनकी जात को नीचे करके खुद उनके मुक़ाबले में ऊंचा होना चाहता हो।

وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا وَجَدْنَا عَلَيْهَا آيَةً وَاللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا قُلْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ اتَّقُوا اللَّهَ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ۚ فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ إِنَّهُمْ اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّقْتَدُونَ ۝

और जब वे कोई फोहश (खुली बुराई) करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने बाप दादा को इसी तरह करते हुए पाया है और खुदा ने हमें इसी का हुक्म दिया है। कहे, अल्लाह कभी बुरे काम का हुक्म नहीं देता। क्या तुम अल्लाह के जिम्मे वह बात लगाते हो जिसका तुम्हें कोई इल्म नहीं। कहे कि भरे ख ने किस्त (न्याय) का हुक्म दिया है और यह कि हर नमाज के वक्त अपना रुख सीधा रखो। और उसी को पुकारो उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। जिस तरह उसने तुम्हें पहले पैदा किया उसी तरह तुम दूसरी बार भी पैदा होगे। एक गिरोह को उसने राह दिखा दी और एक गिरोह है कि उस पर गुमराही साबित हो चुकी। उन्होंने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना रफ़ीक बनाया और गुमान यह रखते हैं कि वे हिदायत पर हैं। (28-30)

❦ (प्राचीन) अरब में लोग नंगे होकर काबा का तवाफ करते और इसकी हिमायत में यह कहते कि खुदा की इबादत दुनिया की गंदगियों से پاک होकर फितरी हालत में करना चाहिए। हालांकि नंगापन ऐसी खुली हुई बुराई है जिसका बुरा होना अक्लेआम से मालूम हो सकता है। इसी तरह आदमी यह अकीदा कायम कर लेता है कि बेअमली और सरकशी के बावजूद सिफ़ारिशों की बुनियाद पर खुदा उसे इनामात से नवाजेगा हालांकि वह अपने सरकश गुलामों के मामले में महज किसी के कहने से ऐसा नहीं कर सकता। मामूली मामूली नाकाबिलेफहम आमांल जिनसे दुनिया में एक घर भी नहीं बन सकता उनसे यह उम्मीद कर

लेता है कि वे आखिरत में उसके लिए आलीशान महल तामीर कर देंगे। अल्फ़ाज का शोर व गुल जिससे दुनिया में एक दरख्त भी नहीं उगता उनके मुतअल्लिक यह खुशगुमानी कायम कर लेता है कि वे आखिरत में उसके लिए जन्नत के बाग़ उगा रहे हैं।

किस्त से मुराद वह मुसिफ़ाना रविश है जो हर नाप में पूरी उतरे, वह ऐन वही हो जो कि होना चाहिए। इबादत ईसान की एक फितरी ख्वाहिश है। वह किसी को सबसे ऊंचा मान कर उसके आगे अपने को डाल देना चाहता है। इस मामले में किस्त यह होगा कि आदमी सिर्फ़ खुदा का इबादतगुज़ार बने जो उसका ख़ालिक और ख़ है। ईसान किसी को यह मक़ाम देना चाहता है कि वह उसके लिए एतमाद की बुनियाद हो। इस मामले में किस्त यह होगा कि आदमी खुदा को अपनी ज़िंदगी में एतमाद की बुनियाद बनाए जो सारी ताकतों का मालिक है। इसी तरह मौत के बाद एक और ज़िंदगी को मानना ऐन किस्त है। क्योंकि आदमी जब पैदा होता है तो वह अदम (अस्तित्वहीनता) से वजूद की सूरत इस्तिन्यार करता है। इसलिए मौत के बाद दुबारा पैदा होने को मानना ऐन उसी हकीकत को मानना है जो अब्बल पैदाइश के वक्त हर आदमी के साथ पेश आ चुकी है।

हक के दाओ का इंकार करने के लिए आदमी कदीम बुजुर्गों का सहारा लेता है। कदीम बुजुर्ग वेलोग होते हैं जिनकी अज़मत तारीख़ी तौर पर कायम हो चुकी है। हर आदमी की नजर में उनका हक़ पर होना मुसल्लमा अम्र (वास्तविकता) बना हुआ होता है। दूसरी तरफ़ सामने का हक़ का दाओ एक नया आदमी होता है जिसके साथ अभी तारीख़ की तस्दीक जमा नहीं हुई है। कदीम बुजुर्ग को आदमी उसकी तारीख़ के साथ देख रहा होता है और नए दाओ को उसकी तारीख़ के बग़ैर। वह कदीम बुजुर्गों के नाम पर हक के दाओ का इंकार कर देता है और समझता है कि वह ऐन हिदायत पर है। मगर इस तरह की ग़लतफ़हमी किसी के लिए खुदा के यहां उज़ (विवशता) नहीं बन सकती। यह खुदा के नाम पर शैतान की पैरवी है न कि हकीकतन खुदा की पैरवी।

يٰۤاَيُّهَا اٰدَمُ خُذْ وَارِثَتَكَ مِنْ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللّٰهِ الَّتِي اُخْرِجَ لِبَعَادِهِ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيٰتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّي الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ۚ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ وَاَنْ تُشْرَبُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزَّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلٰى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝

ऐ औलादे आदम, हर नमाज के वक्त अपना लिबास पहनो और खाओ पियो। और हद से तज़ाज़ (सीमा उल्लंघन) न करो। वेशक अल्लाह हद से तज़ाज़ करने वालों को पसंद नहीं करता। कहे अल्लाह की जीनत (साज-सज्जा) को किसने हराम किया जो उसने अपने बंदों के लिए निकाला था और खाने की पाक चीजों को। कहे वे दुनिया

की ज़िंदगी में भी ईमान वालों के लिए हैं और आखिरत (परलोक) में तो वे खास उन्हीं के लिए होंगी। इसी तरह हम अपनी आयतें खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। कहो मेरे रब ने तो बस फोहश (अश्लील) बातों को हARAM ठहराया है वे खुली हों या छुपी। और गुनाह को और नाहक की ज्यादाती को और इस बात को कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक करो जिसकी उसने कोई दलील नहीं उतारी और यह कि तुम अल्लाह के जिम्मे ऐसी बात लगाओ जिसका तुम इल्म नहीं रखते। (31-33)

अरब के कुछ कबीले नीचे होकर काबे का तवाफ करते थे और उसे बड़ी कुबत का ज़रिया समझते थे। इसी तरह जाहिलियत के जमाने में कुछ लोग ऐसा करते कि जब वे हज के लिए निकलते तो कुछ मुतअय्यन चीजें मसलन बकरी का दूध या गोश्त इस्तेमाल करना छोड़ देते और यह ख्याल करते कि वे परहेजगारी का कोई बड़ा अमल कर रहे हैं। यह गुमराही की वह क्रिम है जिसमें हर जमाने के लोग मुक्तिला रहे हैं। ऐसे अफ़राद अपनी हकीमी और मुस्तक़िल ज़िंदगी में दीन के तकाज़ों को शामिल नहीं करते। अलबत्ता चन्द मौकों पर कुछ ग़ैर मुतअल्लिक क्रिम के बेमयदा आमाल का ख़ुसी एहतिमांम करके यह मुजाहिदा करते हैं कि वे ख़ुदा के दीन पर मामूली जुज़यात (अंशों) की हद तक अमल कर रहे हैं। वे ख़ुदा की मर्ज़्यात पर कामिल अदायगी की हद तक कायम हैं।

ईसान के बारे में अल्लाह की असल मर्जी तो यह है कि आदमी इसराफ़ (हद से बढ़ने) से बचे, वह ख़ुदा की मुकर्रर की हुई हदों से तजावुज न करे। वह हलाल को हराम न करे और ख़ुदा की हराम की हुई चीजों को अपने लिए हलाल न समझ ले। वह फोहश कामों से अपने को दूर रखे। वह उन बुराइयों से बचे जिनका बुरा होना अक्लेआम से साबित होता है। वह बगावत की रविश को छोड़ दे। जब भी उसके सामने कोई हक आए तो हर दूसरी चीज को नजरअंदाज करके वह हक को इख़्तियार कर ले। वह शिर्क से अपने आपको पूरी तरह पाक करे, अल्लाह के सिवा किसी से वह बरतर तअल्लुक कायम न करे जो सिर्फ़ एक ख़ुदा का हक है। वह ऐसा न करे कि अपनी पसंद का एक तरीका इख़्तियार करे और उसे बिना दलील ख़ुदा की तरफ़ मंसूब कर दे, अपने जाती दीन को ख़ुदा का दीन कहने लगे। वह पूरी तरह ख़ुदा का बंदा बनकर रहे, ऐसी कोई रविश इख़्तियार न करे जो बंदा होने के एतबार से उसके लिए दुरुस्त न हो।

आख़िरत में किसी को जो नेमतें मिलेंगी वे बतौर इनाम मिलेंगी। इसलिए वे सिर्फ़ उन ख़ुदा के बंदों के लिए होंगी जिनके लिए ख़ुदा जन्नत में दाख़िले का फैसला करेगा। मगर दुनिया में किसी को जो नेमतें मिलती हैं वह महदूद मुद्दत के लिए बतौर आजमाइश मिलती हैं। इसलिए यहां की नेमतों में हर एक को उसके इम्तेहान के पर्चे के बक़्द हिस्सा मिल जाता है। इस इम्तेहान में पूरा उतरने का तरीका यह नहीं है कि आदमी ख़ुद इम्तेहान के सामान से दूरी इख़्तियार कर ले। बल्कि सही तरीका यह है कि उन्हें मुकर्रर की हुई हदों के मुताबिक इस्तेमाल करे। वह उनके मिलने पर शुक्र का जवाब पेश करे न कि बेनियाजी और ढिठाई का।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَأْذِنُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِرُونَ ④
يَبْنِي أَدَمَ إِمَامًا يَأْتِيكُمْ رَسُولٌ مِّنْكُمْ يَصْطُونُ عَلَيْكُمْ آيَاتِي فَمَنْ أَتَىٰ وَاصِلَهُ
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ⑤ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ⑥ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ⑦ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُم مِّنَ الْكَتِبِ ⑧ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ نَهُم
رُسُلُنَا يَتَوَقَّوْنَهُمْ ⑨ قَالُوا إِنَّا مَأْنُومٌ تَدْعُونَنَا مِنْ دُونِ اللَّهِ ⑩ وَالْوَاضِعُونَ
وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ⑪

और हर कौम के लिए एक मुकर्रर मुद्दत है। फिर जब उनकी मुद्दत आ जाएगी तो वे न एक साअत (क्षण) पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। ऐ बनी आदम, अगर तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आए जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाएं तो जो शख्स डरा और जिसने इस्लाह कर ली उनके लिए न कोई ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। और जो लोग मेरी आयतों को झुटलाएं और उनसे तकबुर करें वही लोग दोख़ वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। फिर उससे ज्यादा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बोहतान बांधे या उसकी निशानियों को झुटलाए उनके नसीब का जो हिस्सा लिखा हुआ है वे उन्हें मिलकर रहेगा। यहां तक कि जब हमारे भेजे हुए उनकी जान लेने के लिए उनके पास पहुंचेंगे तो उनसे पूछेंगे कि अल्लाह के सिवा जिन्हें तुम पुकारते थे कहां हैं। वे कहेंगे कि वे सब हमसे खोए गए। और वे अपने ऊपर इकरार करेंगे कि बेशक वे इंकार करने वाले थे। (34-37)

मौजूदा दुनिया में किसी को काम का मौका उसी वक्त तक है जब तक उसकी इम्तेहान की मुकर्रर मुद्दत पूरी हो जाए। फर्द (व्यक्ति) की मुद्दत उसकी उम्र के साथ पूरी होती है। मगर कैम के बारे में ख़ुदा फैसले के निमज़ (लागू होने) की इस क्रिम की कोई हद नहीं। इसका फैसला इस बुनियाद पर किया जाता है कि हक के सामने आने के बाद वह उसके साथ क्या मामला करती है। जिस कौम की मुद्दत पूरी हो जाए उसको कभी ग़ैर मामूली अजाब भेज कर फना कर दिया जाता है और कभी उसकी सजा यह होती है कि उसे इज्जत व बड़ाई के मक़ाम से हटा दिया जाए।

किसी आदमी के लिए जन्नत या दोख़ का फैसला इस बुनियाद पर किया जाता है कि उसके सामने जब हक आया है तो उसने उसके साथ क्या मामला किया। जब भी कोई हक ऐसे दलाइल के साथ सामने आ जाए जिसकी सदाकत (सच्चाई) पर आदमी की अक्ल गवाही दे रही हो तो उस आदमी पर गोया ख़ुदा की हुज्जत पूरी हो गई। इसके बाद भी अगर आदमी

उस हक को मानने से इंकार करता है तो वह यकीनन किब्र (अहं, बड़ाई) की वजह से ऐसा कर रहा है। अपने आपको बड़ा रखने की नपिस्स्यात उसके लिए रुकावट बन गई कि वह हक को बड़ा बना कर उसके मुकाबले में अपने को छोटा बनाने पर राजी कर ले। ऐसे आदमी के लिए खुदा के यहां जहन्नम के सिवा कोई अंजाम नहीं।

आदमी जब भी हक का इंकार करता है तो वह किसी एतमाद के ऊपर करता है। किसी को दैलत व इक्तादार का एतमाद होता है। कोई अपनी इज्जत व मकबूलियत पर भरोसा किए हुए होता है। किसी को यह एतमाद होता है कि उसके मामलात इतने दुरुस्त हैं कि हक को न मानने से उसका कुछ बिगड़ने वाला नहीं। किसी को यह नाज होता है कि उसकी जिहानत ने अपनी बात को ऐन खुदा की बात साबित करने के लिए शानदार अल्फाज दरयाफ्त कर लिए हैं। मगर यह इंसान की बहुत बड़ी भूल है। वह आजमाइश की चीजों को एतमाद की चीज समझे हुए है। कियामत के दिन जब ये तमाम झूठे सहारे उसका साथ छोड़ देंगे तो उस वक़्त उसके लिए यह समझना मुश्किल न होगा कि वह महज सरकशी की बिना पर हक का इंकार करता रहा। अगरचे अपने इंकार को जाइज साबित करने के लिए वह बहुत से उसूली अल्फाज बोलता था।

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلُّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَعَنَتْ أُخْتَهَا حَتَّى إِذَا لُكُوْا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولِهِمْ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ ضَلُّوا فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ الْعَذَابَ فَمِنْ النَّارِ قَالِ كُلٌّ ضِعْفٌ وَلَكِنْ لَا تَعْمَلُونَ ۝ وَقَالَتْ أُولَهُمْ لِأَخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْكَ مِنْ فَضْلٍ فذُقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝

खुदा कहेगा, दाखिल हो जाओ आग में जिनों और इंसानों के उन गिरोहों के साथ जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं। जब भी कोई गिरोह जहन्नम में दाखिल होगा वह अपने साथी गिरोह पर लानत करेगा। यहां तक कि जब वे उसमें जमा हो जाएंगे तो उनके पिछले अपने अगले वालों के बारे में कहेंगे, ऐ हमारे रब, यही लोग हैं जिन्होंने हमें गुमराह किया पस तू उन्हें आग का दोहरा अजाब दे। खुदा कहेगा कि सबके लिए दोहरा है मगर तुम नहीं जानते। और उनके अगले अपने पिछलों से कहेंगे, तुम्हें हम पर कोई फज़ीलत (श्रेष्ठता) हासिल नहीं। पस अपनी कमाई के नतीजे में अजाब का मजा चखो। (38-39)

इस आयत में 'उम्मत' से मुराद गुमराह करने वाले लीडर और 'उख़्त्र' से मुराद गुमराह होने वाले अवाम हैं। आखिरत में जब हर दौर के बेराह कायदीन और उनका साथ देने वाले बेराह अवाम जहन्नम में डाले जाएंगे तो यह एक बड़ा इबरतनाक मंजर होगा। दुनिया में तो वे एक दूसरे के बड़े ख़ैरब्राह और पिदाकार बने हुए थे। कायदीन (लीडर) अपने अवाम की हर ख़्वाहिश का एहताराम

करते थे और अवाम अपने कायदीन को हीरो बनाए हुए थे। मगर जब जहन्नम की आग उन्हें पकड़ेगी तो उनकी आंखों से तमाम मस्नूई (बनावटी) पर्दे हट जाएंगे। अब हर एक दूसरे को उसके असली रूप में देखने लगेगा। पैरवी करने वाले अपने कायदीन से कहेंगे कि तुम पर लानत हो। तुम्हारी कयादत कैसी बुरी कयादत थी जिसने चन्द दिन के झूठे तमाशे दिखाए और इसके बाद हमें इतनी बड़ी तबाही में डाल दिया। इसके जवाब में कायदीन अपने पैरोकारों से कहेंगे कि तुम अपनी पसंद का एक दीन चाहते थे और ऐसा दीन हमारे पास देखकर हमारे पीछे दौड़ पड़े। वर्ना ऐन उसी जमाने में ऐसे भी खुदा के बंद थे जो तुम्हें कामयाबी के सच्चे रास्ते की तरफ बुलाते थे। तुमने उनकी पुकार सुनी मगर तुमने उनकी तरफ कोई तवज्जोह न दी।

रहनुमा अपने पैरोकारों से कहेंगे कि तुम किसी एतबार से हमसे बेहतर नहीं हो। हमने अपनी ख़्वाहिशों की ख़ातिर कयादतें खड़ी कीं और तुमने भी अपनी ख़्वाहिशों की ख़ातिर हमारा साथ दिया। हकीकत के एतबार से दोनों का दर्जा एक है। इसलिए यहां तुम्हें भी वही सजा भुगतनी है जो हमारे लिए हमारे आमाल के सबब से मुकद्दर की गई है।

पैरोकारों की जमाअत अपने रहनुमाओं के बारे में खुदा से कहेगी कि उन्होंने हमें गुमराह किया था इसलिए उन्हें हमारे मुकाबले में दुगना अजाब दिया जाए। जवाब मिलेगा कि तुम्हारे रहनुमाओं में से हर एक को दुगना अजाब मिल रहा है मगर तुम्हें इसका एहसास नहीं है। हकीकत यह है कि जहन्नम में जिसे जो अजाब मिलेगा वह उसे इतना ज्यादा सख्त मालूम होगा कि वह समझेगा कि मुझसे ज्यादा तकलीफ में कोई दूसरा नहीं है। हर शख्स जिस तकलीफ में होगा वही तकलीफ उसे सबसे ज्यादा मालूम होगी।

दुनिया में मफादपरस्त (स्वार्थी) रहनुमा और उनके मफादपरस्त पैरोकार ख़ूब एक दूसरे के दोस्त बने हुए हैं। हर एक के पास दूसरे के लिए उम्दा अल्फाज हैं। हर एक दूसरे की बेहतरी में लगा हुआ है। मगर आखिरत में हर एक दूसरे से नफरत करेगा, हर एक दूसरे को शदीदतर (सख्त) अजाब में धकेलना चाहेगा।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّرُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ ۖ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ۝ لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ۖ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَلٍّ تَجَرَّى مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا ۖ وَمَا كُنَّا لِلنَّهْتَدَىٰ لَوْلَا أَنَّ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رَبَّنَا بِالْحَقِّ ۖ وَنُودُوا أَنْ تَتَكَلَّمُوا بِجَنَّةٍ أَوْرِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

वेशक जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुटलाया और उनसे तकबुर (घमंड) किया उनके लिए आसमान के दरवाजे नहीं खोले जाएंगे और वे जन्नत में दाखिल न होंगे जब तक कि ऊंट सूई के नाके में न घुस जाए। और हम मुजरिमों को ऐसी ही सजा देते हैं। उनके लिए दोजख का बिछौना होगा और उनके ऊपर उसी का ओढ़ना होगा। और हम जालिमों को इसी तरह सजा देते हैं। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए हम किसी शख्स पर उसकी ताकत के मुताबिक ही बेझ डालते हैं यही लोग जन्नत वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। और उनके सीने की हर खलिश (दुराव) को हम निकाल देंगे। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वे कहेंगे कि सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जिसने हमें यहां तक पहुंचाया और हम राह पाने वाले न थे अगर अल्लाह हमें हिदायत न करता। हमारे रब के रसूल सच्ची बात लेकर आए थे। और आवाज आपणी कि यह जन्नत है जिसके तुम वारिस ठहराए गए हो अपने आमाल के बदले। (40-43)

खुदा के दाजियों के मुकाबले में क्यों ऐसा होता है कि उनके मदऊ के अंदर मुतकब्बिराना नपिसयात जाग उठती हैं और वे उन्हें मानने से इंकार कर देते हैं। इसकी वजह यह है कि दाजी की तरफ सिर्फ निशानी (दलील) का जोर होता है और मदऊ की तरफ मादूदी रैनकों का जोर। दाजी दलील की बुनियाद पर खड़ा होता है और उसके मदऊ मादूदियात (संसाधनों) की बुनियाद पर। दलील की ताकत दिखाई नहीं देती और मादूदी ताकत आंखों से दिखाई देती है। यही फर्क लोगों के अंदर किन्न (अह) मिजाज पैदा कर देता है। लोग दाजी को अपने मुकबले में हकीर (तुच्छ) समझ कर उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

ऐसे लोगों का खुदा की रहमत में दाखिल होना उतना ही नामुमकिन है जितना ऊंट का सूई के नाके में दाखिल होना। उन्होंने खुदा को नजरअंदाज किया इसलिए खुदा ने भी उन्हें नजरअंदाज कर दिया। खुदा ने अपने दाजी के जरिए उन्हें अपनी झलकियां दिखाई। खुदा उनके सामने दलाइल के रूप में जाहिर हुआ। मगर उन्होंने उसे बेवजन समझा। उन्होंने खुदाई निशानियों के सामने झुकने से इंकार कर दिया। ऐसा लोग क्योंकि खुदा की रहमतों में हिस्सा पा सकते हैं।

दोजखियों का यह हाल होगा कि जो लोग दुनिया में एक दूसरे के दोस्त बने हुए थे वे वहां एक दूसरे से नफरत करने लगेंगे। और एक दूसरे पर लानत कर रहे होंगे। मगर जन्नत का माहौल इससे बिल्कुल मुख्तलिफ होगा। यहां सबके दिल एक दूसरे के लिए खुले हुए होंगे। हर एक के दिल में दूसरे के लिए मुहब्बत और खैरख्वाही का चश्मा फूट रहा होगा। दोजखी इंसान के लिए उसका माजी (अतीत) एक दुख भरी दास्तान बना हुआ होगा और जन्नती इंसान के लिए उसका माजी एक खुशगवार याद।

बुरे लोगों के लिए उनकी अगली जिंदगी इस तरह शुरू होगी कि उनका सीना हसरत और यास (नाउम्मीदी) का कब्रस्तान बना हुआ होगा। उनका माजी (अतीत) उनके लिए तलख यादों के सिवा और कुछ न होगा। दूसरी तरफ अच्छे लोगों का यह हाल होगा कि उनकी जबानें उस खुदा की याद से तर होंगी जिसे उन्होंने बजा तौर पर अपना सहारा बनाया था। वे हक के

अलमबरदारों की दी हुई खबर को ऐन सच्चा पाकर खुश हो रहे होंगे कि खुदा का यह कितना बड़ा एहसान था कि उसने उन्हें उन हक के दाजियों का साथ देने की तौफिक अता फरमाई।

وَنَادَىٰ اصْحَابَ الْجَنَّةِ اصْحَابَ النَّارِ اانْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدْنَا رَبَّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ تَّاءِوَعَدَ رَبِّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ قَالَدْنِ مُؤَدِّرُنْ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظَّالِمِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنِ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَعْبُوْهُمُ اَعْوَجًا وَّهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ۝

और जन्नत वाले दोजख वालों को पुकारेंगे कि हमसे हमारे रब ने जो वादा किया था हमने उसे सच्चा पाया, क्या तुमने भी अपने रब के वादे को सच्चा पाया। वे कहेंगे हां। फिर एक पुकारने वाला दोनों के दरमियान पुकारेगा कि अल्लाह की लानत हो जालिमों पर। जो अल्लाह की राह से रोकते थे और उसमें कजी (टेढ़) ढूंढते थे और वे आखिरत (परलोक) के मुंकिर थे। (44-45)

इन आयतों में कदीम जमाने के कुछ लोगों ने यह सवाल उठाया था कि जन्नत और जहन्नम तो एक दूसरे से बहुत ज्यादा दूर वाकअ होंगी, जन्नत आसमानों के ऊपर होगी और दोजख सबसे नीचे तहतुस्सरा में। फिर जन्नत वालों की आवाज जहन्नम वालों तक किस तरह पहुंचेगी। मगर अब रेडियो और टेलिविजन के दौर में यह सवाल कोई सवाल नहीं। आज इंसान यह जान चुका है कि दूर के फासलों से किसी को देखना भी मुमकिन है और उसकी आवाज को सुनना भी। जो बात कदीम इंसान को नाकबिलेफहम नजर आती थी वह आज के इंसान के लिए खुद अपने तजर्बात व मुशाहिदात की रोशनी में पूरी तरह काबिलेफहम हो चुकी है। इससे मालूम हुआ कि कुरआन की कोई बात अगर आज की मालूमात की रोशनी में समझ में न आ रही हो तो इस बिना पर उसके बारे में कोई हुकम नहीं लगाना चाहिए। ऐन मुमकिन है कि इल्म के इजाफे के बाद कल वह चीज एक जानी पहचानी चीज बन जाए जो आज बजाहिर अनजान चीज की तरह दिखाई दे रही है।

इसका मतलब यह नहीं कि आखिरत (परलोक) में जन्नतियों और दोजखियों के दरमियान तअल्लुक मौजूदा किस्म के रेडियो और टेलिविजन के जरिए कयम होगा। इसका मतलब सिर्फ यह है कि जदीद दरयाफ्तों ने इस बात को काबिलेफहम बना दिया है कि खुदा की कायनात में ऐसे इंतजामात भी मुमकिन हैं कि एक दूसरे से बहुत दूर रहकर भी दो आदमी एक दूसरे को देखें और एक दूसरे से बखूबी तौर पर बात करें।

किसी दलील का वजन आदमी उसी वक्त समझ पाता है जबकि वह उसके बारे में संजीदा हो। जो लोग आखिरत को अहमियत न दें वे आखिरत के मुतअल्लिक दलाइल का वजन भी महसूस नहीं कर पाते। आखिरत की बात उनके सामने इतिहाई मजबूत दलाइल के साथ आती है। मगर इसके बारे में उनका ग़ैर संजीदा जेहन उसके अंदर कोई न कोई ऐब तलाश

कर लेता है। वे तरह-तरह के एतराजात निकाल कर खुद भी शक व शबह में मुब्तला होते हैं और दूसरों को भी शक व शबह में मुब्तला करते हैं। ऐसे लोग खुदा की नजर में सख्त मुजरिम हैं। वे आखिर में सिर्फ खुदा की लानत के मुस्तहिक होंगे चाहे दुनिया में वे अपने को खुदा की रहमतों का सबसे बड़ा हकदार समझते रहे हों।

कोई दलील चाहे कितनी ही वजनी और कर्तई हो, आदमी के लिए हमेशा यह मौक़ा रहता है कि वह कुछ खूबसूरत अल्फ़ाज़ बोल कर उसकी सदाक़त के बारे में लोगों को मुन्नतबह कर दे। अय्याम एक हकीमी दलील और एक लफ्ज़ी श्रेष्ठ में फर्क नहीं कर पाते इसलिए वे इस किस्म की बातें सुनकर हक से बिदक जाते हैं। मगर जो लोग समझने की सलाहियत रखने के बावजूद इस तरह के शोशे निकाल कर लोगों को हक से बिदकाते हैं वे आखिरत के दिन खुदा की रहमतों से आखिरी हद तक दूर होंगे।

وَيَبَيِّنُهُمَا حَبَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمَا وَنَادَاوُ
أَصْحَبَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلِّمُوا عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ۖ وَإِذَا
صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۖ
وَنَادَى أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُمْ بِسِيمَاهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنْكُمْ
جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ۖ أَهَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ
أَدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ ۝

और दोनों के दर्मियान एक आड़ होगी। और आराफ (जन्नत और जहन्नम के बीच की जगह) के ऊपर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उनकी अलामत से पहचानेंगे और वे जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो, वे अभी जन्नत में दाखिल नहीं हुए होंगे मगर वे उम्मीदवार होंगे। और जब दो ज़ख़ वालों की तरफ उनकी निगाह फेरी जाएगी तो वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब हमें शामिल न करना इन जालिम लोगों के साथ। और आराफ वाले उन लोगों को पुकारेंगे जिन्हें वे उनकी अलामत से पहचानते होंगे। वे कहेंगे कि तुम्हारे काम न आई तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा अपने को बड़ा समझना। क्या यही वे लोग हैं जिनके बारे में तुम कसम खाकर कहते थे कि उन्हें कभी अल्लाह की रहमत न पहुंचेगी। जन्नत में दाखिल हो जाओ, अब न तुम पर कोई डर है और न तुम ग़मगीन होगे। (46-49)

दुनिया में ऐसा होता है कि खुदा की नेमतों और उसकी जानिब आई हुई सख्तियों से मोमिन व मुस्लिम सब एकसां दो चार होते हैं। मगर आखिरत में ऐसा नहीं होगा। वहां दोनों के दर्मियान 'आड़' कायम हो जाएगी। वहां मोमिनीन को मिली हुई नेमतों की कोई खुशबू मुक़िरों को नहीं मिलेगी और इसी तरह मुक़िरों को मिली हुई तकलीफों का कोई असर जन्नत वालों तक नहीं पहुंचेगा।

अरफ के मअना अरबी जवान में बुलन्दी के होते हैं। आराफ वाले का मतलब है बुलन्दियों वाले। इससे मुराद पैग़म्बरों और दाजियों का गिरोह है जिन्होंने मुख़्तलिफ़ वक्तों में लोगों को हक का पैग़ाम दिया। क्रियामत में जब लोगों का हिसाब होगा और हर एक को मालूम हो चुका होगा कि उसका अंजाम क्या होने वाला है और हक के दाओ की बात जो वह दुनिया में कहता था आखिरी तौर पर सही साबित हो चुकी होगी उस वक्त हर दाओ अपनी कौम को ख़िताब करेगा। खुदा के हुक्म से आखिरत में उनके लिए ऊंचा स्टेज मुहय्या किया जाएगा जिस पर खड़े होकर वे पहले अपने मानने वालों को ख़िताब करेंगे। ये लोग अभी जन्नत में दाखिल नहीं हुए होंगे मगर वे इसके उम्मीदवार होंगे। इसके बाद उनका रुख उनके झुठलाने वालों की तरफ किया जाएगा। वे उनकी बुरी हालत देखकर कमाले अब्दियत (बंदगी व अज़िज़ी) की वजह से कह उठेंगे कि खुदाया हमें इन जालिमों में शामिल न कर। वे मुक़िरों के गिरोह के लीडरों को उनके चहरे की हैयत से पहचान लेंगे और उनसे कहेंगे कि तुम्हें अपने जिस जत्थे और अपने जिस साजोसामान पर घमंड था और जिसकी वजह से तुमने हमारे हक के पैग़ाम को झुठला दिया वह आज तुम्हारे कुछ काम न आ सका।

हक का इंकार करने वाले वक्त के कायमशुदा निजाम के साए में होंगे। इस दुनिया में उनकी हैसियत हमेशा मजबूत होती है। इसके बरअक्स (विपरीत) जो लोग हक के दाजियों का साथ देते हैं उनका साथ देना सिर्फ इस कीमत पर होता है कि वक्त के जमे हुए निजाम की सरपरस्ती उन्हें हासिल न रहे। इसके नतीजे में ऐसा होता है कि जो लोग हक को नहीं मानते वे मानने वालों की बेचारगी को देखकर उनका मजाक उड़ाते हैं। वे कहते हैं कि क्या यही वे लोग हैं जो खुदा की जन्नतों में जाएंगे। असहाबे आराफ क्रियामत में ऐसे लोगों से कहेंगे कि अब देख लो कि हकीकत क्या थी और तुम उसे क्या समझे हुए थे। बिलआखिर कौन कामयाब रहा और कौन नाकाम ठहरा।

وَنَادَى أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا
رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَزَمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ ۖ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ
لَهُوَ وَلَعِبًا وَغَرَبَتْهُمْ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا قَالُوا لِمَ نُسْأَلُهُمْ كَمَا نُسْأَلُ لِقَاءَ يَوْمِهِمْ
هَذَا وَمَا كُنَّا بِآيَاتِنَا يُحَدِّثُونَ ۝

और दो ज़ख़ के लोग जन्नत वालों को पुकारेंगे कि कुछ पानी हम पर डाल दो या उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें खाने को दे रखा है। वे कहेंगे कि अल्लाह ने इन दोनों चीजों को मुक़िरों के लिए हराम कर दिया है। वे जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया था और जिन्हें दुनिया की ज़िंदगी ने धोखे में डाल रखा था। पस आज हम उन्हें भुला देंगे जिस तरह उन्होंने अपने इस दिन की मुलाकात को भुला दिया था और जैसा कि वे हमारी निशानियों का इंकार करते रहे। (50-51)

दुनिया दो किस्म की गिजाओं का दस्तरखान है। एक दुनियावी और दूसरी उखिरवी। एक इंसान वह है जिसकी रूह की गिजा यह है कि वह अपनी जात को नुमायां होते हुए देखे। दुनिया की रैनकों अपने गिर्द पाकर उसे खुशी हासिल होती हो। मादूदी साजोसामान का मालिक होकर वह अपने को कामयाब समझता है। ऐसा आदमी खुदा और आखिरत को भूला हुआ है। उसके सामने खुदा की बात आणी तो वह उसे गैर अहम समझ कर नजरअंदाज कर देगा। वह उसके साथ ऐसा सरसरी सुलूक करेगा जैसे वह कोई संजीदा मामला न हो बल्कि महज खेल तमाशा हो।

ऐसे आदमी के लिए आखिरत के इनामात में कोई हिस्सा नहीं। उसने अपने अंदर एक ऐसी रूह की परवरिश की जिसकी गिजा सिर्फ दुनिया की चीजें बन सकती थीं। फिर आखिरत की चीजों से उसकी रूह क्योंकि अपनी खुराक पा सकती है, जो इंसान आज आखिरत में न जिया हो उसके लिए आखिरत, कल के दिन भी जिंदगी का जरिया नहीं बन सकती।

दूसरा इंसान वह है जो गैबी हकीकतों में गुम रहा हो। जिसकी रूह को आखिरत की याद में लज्जत मिली हो। जिसकी गिजा यह रही हो कि वह खुदा में जिए और खुदा की फजलों में सांस ले। यही वह इंसान है जिसके लिए आखिरत रिज्क का दस्तरखान बनेगी। वह जन्नत के बागों में अपने लिए जिंदगी का सामान हासिल कर लेगा। उसने गैब (अप्रकट) के आलम में खुदा को पाया था इसलिए शुहूद (प्रकट) आलम में भी वह खुदा को पा लेगा।

खुदा की दुनिया में आदमी खुदा को क्यों भुला देता है। इसकी वजह यह है कि खुदा ऐसी निशानियों के साथ सामने आता है जो सिर्फ सोचने से जेहन की पकड़ में आती हैं, जबकि दुनिया की चीजें आंखों के सामने अपनी तमाम रैनकों के साथ मौजूद होती हैं। आदमी जाहिर चीजों की तरफ झुक जाता है और खुदा की तरफ इशारा करने वाली निशानियों को नजरअंदाज कर देता है। मगर ऐसा हर अमल दुनिया की कीमत पर आखिरत को छोड़ना है। और जिसने मौत से पहले वाली जिंदगी में आखिरत को छोड़ा वह मौत के बाद वाली जिंदगी में भी आखिरत से महरूम रहेगा।

अल्लाह जब एक चीज को हक की हैसियत से लोगों के सामने लाए और वे उसे अहमियत न दें, वे उसके साथ गैर संजीदा मामला करें तो यह दरअसल खुद खुदा को गैर अहम समझना और उसके साथ गैर संजीदा मामला करना है। दुनिया में हक को नजरअंदाज करने से आदमी का कुछ बिगड़ता नहीं, हक की पुश्त पर जो खुदाई ताकतें हैं वे अभी गैब में होने की वजह से उसे नजर नहीं आतीं। यह सूरतेहाल उसे धोखे में डाल देती है। जो लोग इस तरह हक को नजरअंदाज करें वे यह खतरा मोल लेते हैं कि खुदा भी आखिरत के दिन उन्हें नजरअंदाज कर दे।

وَلَقَدْ جِئْتُهُمْ بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ٥٠
هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلَهُ يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِنْ قَبْلُ
قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَلْ لَنَا مِنْ شُفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا أَوْ نُرَدُّ

فَعَمَلْ غَيْرِ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ قَدْ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ
عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ٥١

और हम उन लोगों के पास एक ऐसी किताब ले आए हैं जिसे हमने इल्म की बुनियाद पर मुस्तसल (विस्तृत) किया है, हिदायत और रहमत बनाकर उन लोगों के लिए जो इमान लाएं। क्या अब वे इसी के मुंतजिर हैं कि उसका मजमून जाहिर हो जाए। जिस दिन उसका मजमून जाहिर हो जाएगा तो वे लोग जो उसे पहले भूले हुए थे बोल उठेंगे कि बेशक हमारे रब के पैगम्बर हक लेकर आए थे। पस अब क्या कोई हमारी सिफारिश करने वाले हैं कि हमारी सिफारिश करें या हमें दुबारा वापस ही भेज दिया जाए ताकि हम उससे मुत्तलिफ अमल करें जो हम पहले कर रहे थे। उन्होंने अपने आपको घाटे में डाला और उनसे गुम हो गया वह जो वे गढ़ते थे। (52-53)

कुरआन आदमी को मौत के बाद आने वाली जिंदगी से डराता है, वह आखिरत के हिसाब किताब से लोगों को आगाह करता है। मगर आदमी चौकन्ना नहीं होता। कुरआन की ये खबरें अगरचे महज खबरें नहीं हैं बल्कि वे कायनात की अटल हकीकतें हैं। ताहम अभी वे वाक्यात की सूरत में जाहिर नहीं हुईं, अभी वे मुस्तकबिल के पर्दे में छुपी हुई हैं। इस बिना पर ग़ाफिल इंसान यह समझता है कि ये सिर्फ कहने की बातें हैं। वे उन्हें गैर अहम समझ कर नजरअंदाज कर देता है।

मगर ये बातें खुदा की तरफ से हैं जो तमाम बातों का जानने वाला है। जिन लोगों ने अपनी फितरत को बिगाड़ा नहीं है। जिनकी आंखों पर मस्नूई (बनावटी) पर्दे पड़े हुए नहीं हैं वे कुरआन की इन बातों को अपने दिल की आवाज पाएंगे। वे उन्हें ऐन वही चीज मालूम होगी जिसकी तलाश उनकी फितरत पहले से कर रही थी। कुरआन उनके लिए जिंदगी और यकीन का खूजना बन जाएगा।

इसके बरअक्स हाल उन लोगों का है जो कुरआन की आगाही को कोई संजीदा चीज नहीं समझते। वे अपनी इसी ग़फलत की हालत में पड़े रहेंगे यहां तक कि वह वक्त उन पर फट पड़े जिसकी खबर उन्हें दी जा रही है। उस वक्त आदमी अचानक देखेगा कि वह बिल्कुल बेसहारा हो चुका है। वह जिन मसाइल को अहम समझ कर उनमें उलझा हुआ था उस दिन वे बिल्कुल बेहकीकत नजर आएंगे। वह जिन चीजों पर भरोसा किए हुए थे वे सब झूठी खुशख़बालियां साबित होंगी।

आखिरत का मसला आज महज एक नजरिया है, वह बजाहिर कोई संगीन मसला नहीं। इसलिए आदमी इसके बारे में संजीदा नहीं हो पाता। मगर मौत के बाद आने वाली जिंदगी में जब आखिरत अपनी तमाम हौलनाकियों के साथ फट पड़ेगी, उस वक्त हर आदमी उस बात को मानने पर मजबूर होगा जिसे वह इससे पहले मानने को तैयार नहीं होता था। उस वक्त आदमी जान लेगा कि इससे पहले जो बात दलील की जवान में कही जा रही थी वह ऐन

हकीकत थी मगर मैं उसके बारे में संजीदा न हो सका इसलिए मैं उसे समझ भी न पाया।

जब वे तमाम चीजें आदमी का साथ छोड़ देंगी जिन्हें वह दुनिया में अपना सहारा बनाए हुए था तो वह चाहेगा कि दुनिया में उसे दुबारा भेज दिया जाए ताकि वह सही जिंदगी गुजारे। मगर जिंदगी का यह मौका किसी को दुबारा मिलने वाला नहीं।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْثِي الْبَيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا ۖ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ مُسْتَخِرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۚ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ اذْعُرُّو رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

वेशक तुम्हारा रब वही अल्लाह है जिसने आसमानों और जमीन को छः दिनों में पैदा किया। फिर वह अर्श पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। वह उढ़ाता है रात को दिन पर, दिन उसके पीछे लगा आता है दौड़ता हुआ। और उसने पैदा किए सूरज और चांद और सितारे, सब ताबेदार हैं उसके हुक्म के। याद रखो, उसी का काम है पैदा करना और हुक्म करना। बड़ी बरकत वाला है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। अपने रब को पुकारो गड़गड़ते हुए और चुपके-चुपके। यकीनन वह हद से गुजरने वालों को पसंद नहीं करता। और जमीन में फसाद न करो उसकी इस्लाह के बाद। और उसी को पुकारो खौफ के साथ और तमअ (आशा) के साथ। यकीनन अल्लाह की रहमत नेक काम करने वालों से करीब है। (54-56)

जमीन व आसमान और उसकी तमाम चीजों का पैदा करने वाला खुदा है। इस पैदा करने की एक सूरत यह भी थी कि वह तमाम चीजों को बनाकर उन्हें इतिशार (बिखराव) की हालत में छोड़ देता। मगर उसने ऐसा नहीं किया। उसने तमाम चीजों को एक हद दर्जा कामिल और हकीमाना निजाम के तहत जोड़ा और उन्हें इस तरह चलाया कि हर चीज ठीक उसी तरह काम करती है जैसा कि मज्मूई मस्लेहत के एतबार से उसे करना चाहिए।

इंसान भी इसी दुनिया का एक छोटा सा हिस्सा है। फिर ऐसी इस्लाहयाफता दुनिया में उसका रवैया क्या होना चाहिए। उसका रवैया वही होना चाहिए जो बाकी तमाम चीजों का है। वह भी अपने आपको उसी खालिक के मंसूबे में दे दे जिसके मंसूबे में बाकी कायनात पूरी ताबेदारी के साथ अपने आपको दिए हुए है।

कायनात की तमाम चीजें एहसान (सर्वोत्तम कारकदगी) की हद तक अपने आपको खुदा के मंसूबे में शामिल किए हुए हैं। इसलिए इंसान को भी एहसान की हद तक अपने आपको

उसके हवाले कर देना चाहिए। यहां कोई चीज कभी ऐतिदा (अपनी मुकर्रह हद से तजावुज) नहीं करती। इसलिए इंसान के वास्ते भी लाजिम है कि वह अदूल और हक की खुदाई हदों से तजावुज न करे। मज्बूद यह कि इंसान नुक (बेलने) और शुऊर की इजामे खुसूसियात रखता है। इसलिए नुक और शुऊर की सतह पर भी उसका रब के हवाले होने का इजहार होना जरूरी है। इंसान के अंदर खुदा की मअरफत इतनी गहराई तक उतर जाना चाहिए कि उसकी जवान से बार-बार इसका इजहार होने लगे। वह खुदा को इस तरह पुकारे जिस तरह बंदा अपने खालिक व मालिक को पुकारता है। उसे खुदा की खुदाई का इतना इदराक (ज्ञान) होना चाहिए कि खुदा के सिवा उसकी उम्मीदों और उसके अंदेशों का कोई केन्द्र बाकी न रहे। वह खुदा ही से डरे और उसी से अपनी तमाम तमन्नाएं वाबस्ता करे। खुदा के साथ खौफ और उम्मीद को वाबस्ता करना खुदा की ताबेदारी की आखिरी और इंतहाई सूरत है।

बंदे की सबसे बड़ी कामयाबी यह है कि उसे खुदा की रहमत हासिल हो, मगर यह रहमत सिर्फ उन लोगों का हिस्सा है जो अल्लाह के साथ अपने आपको इतना ज्यादा मुतअल्लिक कर लें कि उनके तमाम जच्चात का रख अल्लाह की तरफ हो जाए। वे उसी को पुकारें और उसी के साथ आजिजी करें। उन्हें पाने की उम्मीद उसी से हो और छिन्ने का डर भी उसी से। यही लोग हैं जिन्होंने खुदा की कुरबत चाही इसलिए खुदा ने भी उन्हें अपने करीब जगह दे दी।

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا لِّبَنِينَ يَدْعِي رَحْمَتَهُ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقِّتُهُ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ فَانْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ ۚ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَاللَّهُ الطَّيِّبُ يُخْرِجُ نَبَاتَهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ وَالَّذِي خَبَتْ لَا يُخْرِجُهُ إِلَّا نَكِدًا ۚ كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْأَيَّاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ۝

और वह अल्लाह ही है जो हवाओं को अपनी रहमत के आगे खुशखबरी बनाकर भेजता है। फिर जब वे बोझिल बादलों को उठा लेती हैं तो हम उसे किसी शुष्क सरजमीन की तरफ हंक देते हैं। फिर हम उसके जरिए पानी उतारते हैं। फिर हम उसके जरिए से हर किस्म के फल निकालते हैं। इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे, ताकि तुम शौर करो। और जो जमीन अच्छी है उसकी पैदावार निकलती है उसके रब के हुक्म से और जो जमीन खराब है उसकी पैदावार कम ही होती है। इसी तरह हम अपनी निशानियां मुख्तलिफ पहलुओं से दिखाते हैं उनके लिए जो शुक्र करने वाले हैं। (57-58)

दुनिया को खुदा ने इस तरह बनाया है कि उसके माद्दी (भौतिक) वाकैअत उसके रूहानी पहलुओं की तमसील (उदाहरण) बन गए हैं।

जब कहीं बारिश होती है तो उस मकाम के हर हिस्से तक उसका पानी एकसां तौर पर पहुंचता है। मगर फैज उठने के एतबार से मुख्तलिफ जमीनों का हाल मुख्तलिफ हो ता है। कोई

हिस्सा वह है कि पानी उसे मिला तो उसके अंदर से एक लहलहाता हुआ चमनिस्तान निकल आया। दूसरी तरफ किसी हिस्से का हाल यह होता है कि वह बारिश पाकर भी बेफैज (अलाभावित) पड़ा रहता है। वहां झाड़ू झंकाड़ के सिवा कुछ नहीं उगता।

यही हाल उस रूहानी बारिश का है जो खुदा की तरफ से हिदायत की सूरत में उतरी है। इस हिदायत का पैगाम हर आदमी के कानों तक पहुंचता है। मगर फायदा हर एक को अपनी-अपनी इस्तेदाद (सामर्थ्य) की वक़्त मिलता है। जिसके अंदर हक को कुकूल करने की सलाहियत (क्षमता) जिंदा है वह उससे भरपूर फैज हासिल करता है। इससे उसे एक नई जिंदगी मिलती है। उसकी फितरत अचानक जाग उठती है। उसका रब अपने मालिकेआला से कायम हो जाता है। उसकी खुश नफिसयात में रबानी कैफियात का बाग खिल उठता है।

इसके बरअक्स हाल उस शख्स का होता है जिसने अपनी फितरी सलामती को खो दिया हो। हिदायत की बारिश अपने तमाम बेहतरीन इम्कानात के बावजूद उसे कोई फायदा नहीं पहुंचाती। इसके बाद भी वह वैसा ही खुशक पड़ा रहता है जैसा कि वह इससे पहले था। और अगर उसके अंदर कोई फल निकलती है तो वह भी झाड़ू झंकाड़ की फल होती है। हिदायत की बारिश पाकर उसके अंदर से हसद, किब्र (अहं), हुज्रतबाजी, हक की मुखलिफत जैसी चीजें जाग उठती हैं न कि हक का एतराफ करने और उसका साथ देने की।

बारिश के पानी को कुकूल करने के लिए जमीन का खुशक होना जरूरी है। जो जमीन खुशक न हो, पानी उसके ऊपर से गुजर जाएगा, वह उसके अंदर दाखिल नहीं होगा। इसी तरह खुदा की हिदायत सिर्फ उस आदमी के अंदर जड़ पकड़ती है जो उसका तालिब हो, जिसने अपनी रूह को ग़ैर खुदाई बातों से खाली कर रखा हो। इसके बरअक्स जो शख्स खुदा की हिदायत से बेपरवाह हो, जिसका दिल दूसरी दिलचस्पियों या दूसरी अज्मतों में अटका हुआ हो, उसके पास खुदा की हिदायत आएगी मगर वह उसके अंदरुन में दाखिल नहीं होगी, वह उसकी रूह की गिजा नहीं बनेगी, वह उसकी फितरत की जमीन को सैराब करके उसके अंदर खुदा का बाग नहीं उगाएगी।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنَ الدِّينِ غَيْرُهُ ۚ
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قَالَ الْهَلْكَاءُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي
ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ قَالَ يَقُولُونَ بِنِي ضَلَلَةٍ وَلَكِنِّي رَأَوْتُ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝
أُبَلِّغُكُمْ رَجَائِي وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَحُجِّبَتْكُمْ
أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا ۚ وَعَلَّمَكُمْ
تُرْحَمُونَ ۝ فَكَذَّبُوهُ فَأَخْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ۝

हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा। नूह ने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। मैं तुम पर एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूँ। उसकी कौम के बड़ों ने कहा कि हमें तो यह नजर आता है कि तुम एक खुली हुई गुमराही में मुक्तिला हो। नूह ने कहा कि ऐ मेरी कौम, मुझमें कोई गुमराही नहीं है। बल्कि मैं भेजा हुआ हूँ सारे आलम के परवरदिगार का। तुम्हें अपने रब के पैगामात पहुंचा रहा हूँ और तुम्हारी खैरखाही कर रहा हूँ। और मैं अल्लाह की तरफ से वह बात जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। क्या तुम्हें इस पर तज्जुब हुआ कि तुम्हारे रब की नसीहत तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक शख्स के जरिए आई ताकि वह तुम्हें डराए और ताकि तुम बचो और ताकि तुम पर रहम किया जाए। पस उन्होंने उसे झुठला दिया। फिर हमने नूह को बचा लिया और उन लोगों को भी जो उसके साथ कशती में थे और हमने उन लोगों को डुबो दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था। बेशक वे लोग अंधे थे। (59-64)

हजरत आदम के बाद तकरीबन एक हजार साल तक तमाम आदम की औलाद तौहीद पर कायम थी। हजरत अबुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि इसके बाद लोगों ने अपने अकाबिर असलाफ (पूर्वजों) की शक्लें बनाना शुरू कीं ताकि उनके अहवाल व इबादात की याद ताजा रहे। उन बुजुर्गों के नाम वुद, सुवाज, यगूस, यऊक और नम्र थे। धीरे-धीरे इन बुजुर्गों ने उनके दर्मियान माबूद का दर्जा हासिल कर लिया। ये लोग कदीम इराक में आबाद थे। जब बिगाड़ इस नौबत तक पहुंचा तो अल्लाह ने उनकी इस्लाह के लिए हजरत नूह को पैगम्बर बनाकर उनकी तरफ भेजा। मगर उन्होंने हजरत नूह को मानने से इंकार कर दिया। वे तक्वा की रविश इख्तियार करने पर आमादा न हुए।

इस इंकार की वजह कुरआन के बयान के मुताबिक यह थी कि उनके लिए यह समझना मुश्किल हो गया कि एक आदमी जो देखने में उन्हीं जैसा है वह खुदा की तरफ से खुदा का पैगाम पहुंचाने के लिए चुना गया है। वे अपने को जिन अकाबिर के दीन पर समझते थे उनके मुकाबले में हजरत नूह उन्हें बहुत मामूली आदमी दिखाई देते थे। इन कदीम अकाबिर की अज्मत सदियों की तारीख से मुसल्लम हो चुकी थी। इसके मुकाबले में हजरत नूह एक मुआसिर (समकालीन) शख्स थे। उनके नाम के साथ तारीखी अज्मतें जमा नहीं हुई थीं। चुनावी कौम ने आपका इंकार कर दिया। उन्होंने वक़्त के पैगम्बर को अहमक और गुमराह कहने से भी दरेग नहीं किया। क्योंकि उनके ख्याल के मुताबिक आप अकाबिर के दीन से मुहरिफ हो गए थे। हजरत नूह की खैरखाही, उनके साथ दलाइल का जोर, उनका हक की राह पर कायम होना, कोई भी चीज कौम को मुतअसिर न कर सकी।

हजरत नूह की तरफ से इतमामे हुज्रत (आह्वान की अति) के बाद कैम शर्क़र दी गई। इस गरकाबी की वजह यह थी कि उन्होंने खुदा की निशानियों को झुठलाया। उन्होंने चाहा कि 'मामूली शख्सियत' के बजाए किसी 'मुसल्लमा शख्सियत' के जरिए उन्हें खुदा का पैगाम पहुंचाया जाए। मगर खुदा की नजर में यह अंधापन था। खुदा ने आदमी को बसीरत

(विवेक) इसलिए दी है कि वह 'निशानी' के रूप में हक को पहचान ले न कि हिस्सी मुजाहिरा (प्रकट रूप) की सूरत में। जो लोग निशानी के रूप में हक को न पहचानें वे खुदा की नजर में आंख रखते हुए भी अंधे हैं। ऐसे लोगों के लिए खुदा की रहमत में कोई हिस्सा नहीं।

وَالِی عَادِ اٰخَاهُمْ هُوْدًا ۖ قَالَ یَقُوْمُ اَعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَکُمْ مِّنَ اللّٰهِ غَیْرَۃٍ ۚ
اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۚ قَالَ الْمَلٰٓئِکَةُ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ اِنَّا لَنَرٰکَ فِیْ سَفَاہَةٍ وَّاِنَّا
لَنَظُنُّکَ مِنَ الْکٰذِبِیْنَ ۝۱۰ قَالَ یَقُوْمُ لَیْسَ بِنِیْ سَفَاہَۃٍ ۚ وَلٰکِنِّیْ رَسُوْلٌ مِّنْ
رَّبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝۱۱ اُبَلِّغُکُمْ رِسٰلَتِ رَبِّیْ وَاَنَا لَکُمْ نٰصِرٌ وَّامِیْنٌ ۝۱۲ اَوْ عَجِبْتُمْ
اَنْ جَآءَکُمْ ذِکْرٌ مِّنْ رَّبِّکُمْ عَلٰی رَجُلٍ مِّنْکُمْ لَیُبْذِرْکُمْ وَاذْکُرُوْا
اِذْ جَعَلْکُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَّزَادْکُمْ فِی الْخَلْقِ بَصۜطَۃً ۚ
فَاذْکُرُوْا اللّٰهَ لَعَلَّکُمْ تَفْلِحُوْنَ ۝

और आद की तरफ हमने उनके भाई हूद को भेजा। उन्होंने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। सो क्या तुम डरते नहीं। उसकी कौम के बड़े जो इंकार कर रहे थे बोले, हम तो तुम्हें बेअक्ली में मुल्ला देखते हैं और हमें गुमान है कि तुम झूठे हो। हूद ने कहा कि ऐ मेरी कौम, मुझे कुछ बेअक्ली नहीं। बल्कि मैं खुदावदेआलम का रसूल हूं। तुम्हें अपने रब के पैगामात पहुंचा रहा हूं और तुम्हारा खैरख्वाह और अमीन हूं। क्या तुम्हें इस पर तअज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक शख्स के जरिए तुम्हारे रब की नसीहत आई ताकि वह तुम्हें डराए। और याद करो जबकि उसने कौमे नूह के बाद तुम्हें उसका जानशीन बनाया और डीलडोल में तुमको फैलाव भी ज्यादा दिया। पस अल्लाह की नेमतों को याद करो ताकि तुम फलाह पाओ। (65-69)

हजरत नूह की कश्ती में जो अहले ईमान बचे थे उनमें आपके पोते इरम की औलाद से एक नस्ल चली। वे कदीम यमन में आबाद थे और आद कहलाते थे। ये लोग इब्तिदा में हजरत नूह के दीन पर थे। बाद को जब उनमें बिगाड़ पैदा हुआ तो अल्लाह ने हजरत हूद को उनके ऊपर अपना पैगम्बर मुकर्रर किया। मगर कौम के सरदारों को आपके अंदर वह अज्मत नजर न आई जो उनके ख्वाल के मुताबिक खुदा के पैगम्बर के अंदर होना चाहिए थी। उन्होंने समझा कि यह शख्स या तो अहमक है या फिर वह झूठ दावा कर रहा है।

‘मैं तुम्हारा नासेह (नसीहत करने वाला) और अमीन हूं पैगम्बर की जबान से यह कि (वाक्य) बताता है कि दाजी और मदऊ का रिश्ता कौमी हरीफ (प्रतिपक्षी) या सियासी मद्देमुकाबिल जैसा रिश्ता नहीं है। यह खैरख्वाही और अमानतदारी का रिश्ता है। दाजी को ऐसा होना चाहिए कि उसके दिल में मदऊ के लिए खैरख्वाही के सिवा और कुछ न हो। मदऊ

की तरफ से चाहे कैसा ही नाखुशगवार रवैया सामने आए मगर दाजी आखिर वक्त तक मदऊ का खैरख्वाह बना रहे। फिर जो पैगाम वह दे रहा है उसे देते हुए उसके अंदर यह एहसास न हो कि यह मेरी कोई अपनी चीज है जो मैं दूसरों को अता कर रहा हूं। बल्कि यह जज्बा हो कि यह खुद दूसरों की चीज है। यह दूसरों के लिए खुदा की अमानत है जो मैं उन्हें पहुंचा कर बीअमि (दायित्व-मुक्त) हो रहा हूं।

पैगम्बरों की दावत की बुनियाद हमेशा यह रही है कि वे इंसान के ऊपर खुदा की नेमतें याद दिलाएं और उसे इस बात से डराएं कि अगर वह खुदा का शुक्रगुजार बनकर न रहा तो वह खुदा की पकड़ में आ जाएगा। कौमी झगड़ों और माद्दी मसाइल को पैगम्बर कभी अपनी दावत का उनवान नहीं बनाते। वे आखिरी हद तक इस बात की कोशिश करते हैं कि उनके और मदऊ के दरमियान अस्ल दावत के सिवा कोई चीज बहस की बुनियाद न बनने पाए, कौम उन्हें सिर्फ तौहीद और आखिरत के दाजी के रूप में देखे न कि किसी और रूप में।

‘खुदा की नेमतों को याद करो ताकि तुम कामयाब हो’ इससे मालूम होता है कि आखिरत की नेमतें इस्तहकक (अधिकार) उसके लिए है जिसने दुनिया में खुदा की नेमतों का एतराफ किया हो। जन्नत खुदा के मुन्द्म (दाता) व मोहसिन होने का सबसे बड़ा इश्हार है। इसलिए आखिरत की जन्नत को वही पाएगा जिसने दुनिया में खुदा के मुन्द्म व मोहसिन होने की हैसियत को पा लिया हो। यही मजरफत (अन्तर्ज्ञान) जन्नत की अस्ल कीमत है।

قَالُوا اٰجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحَدَّۃً وَنَذَرَۢ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاؤُنَا ۚ فَاٰتِنَا بَیِّنٰتٍ
تَعِدُنَا اِنْ کُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۝۱۰ قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَیْکُمْ مِّنْ رَّبِّکُمْ
رِجْسٌ وَّعَصَبٌ ۚ اُنْجَادِلُوْنِیْ فِیْ اَسْمَآءٍ سَمَّیْتُسُوْهَا اَنْتُمْ وَاٰبَاؤُکُمْ
مَا نَزَّلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ فَاَنْتَظِرُوْا ۚ اِنِّیْ مَعَکُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِیْنَ ۝۱۱
فَاَنْجِیْنٰهُ وَالَّذِیْنَ مَعَهُۥ بِرَحْمَتٍ مِّنَّا وَقَطَّعْنَا دَایِرَ الَّذِیْنَ کَذَّبُوْا بِآیٰتِنَا
وَمَا کَانُوْا مُؤْمِنِیْنَ ۝

हूद की कौम ने कहा, क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हम तनहा अल्लाह की इबादत करें और उन्हें छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते आए हैं। पस तुम जिस अजाब की धमकी हमें देते हो उसे ले आओ अगर तुम सच्चे हो। हूद ने कहा तुम पर तुम्हारे रब की तरफ से नापाकी और गुस्सा वाकेअ हो चुका है। क्या तुम मुझसे उन नामों पर झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं। जिनकी खुदा ने कोई सनद नहीं उतारी। पस इंतजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतजार करने वालों में हूं। फिर हमने बचा लिया उसे और जो उसके साथ थे अपनी रहमत से और उन लोगों की जड़ काट दी जो हमारी निशानियों को झुल्लाते थे और मानते न थे। (70-72)

इंसान नामों के जरिए किसी चीज का तसव्वुर कायम करता है। किसी शख्स के साथ अच्छा लफ्ज लग जाए तो वह अच्छा मालूम होता है और अगर बुरा लफ्ज लग जाए तो बुरा दिखाई देने लगता है। खुदा के सिवा दूसरी चीजें या हस्तियां जो आदमी की तवज्जोहात का मर्कज बनती हैं इसकी वजह भी यही नाम होते हैं। लोग किसी शख्सियत को ग़ौस पाक, गंजबख्श, गरीब नवाज, मुश्किलकुशा जैसे अल्फ़ज से फ़कारने लगते हैं। ये अल्फ़ज धीरे-धीरे इन शख्सियतों के साथ ऐसे वाबस्ता हो जाते हैं कि लोग यकीन कर लेते हैं कि जिसे ग़ौस (फरयाद सुनने वाला) कहा जाता है वह वाकई फरयाद को पहुंचने वाला है और जिसे मुश्किलकुशा के नाम से पुकारा जाता है सचमुच वह मुश्किलों को हल करने वाला है। मगर हकीकत यह है कि इस किस्म के तमाम नाम सिर्फ इंसानों के रखे हुए हैं। इन नामों का कोई अस्त कहीं मौजूद नहीं। इनके हक में न कोई शर्इ दलील है और न कोई अक्ली दलील।

नामों की शरीअत की एक किस्म वह है जो जाहिल इंसानों के दर्मियान राइज है। ताहम इसकी एक ज्यादा फ़ुज्जब (सभ्य) सूत भी है जो पढ़े लोगों के दर्मियान मक्बूल है। यहां भी कुछ शख्सियतों के साथ ग़ैर मामूली अल्फ़ज वाबस्ता कर दिए जाते हैं। मसलन कुदसी सिफ़त, महबूबेखुदा, सुतने इस्लाम, नजात दहिंदए मिल्लत (समुदाय का मुक्ति दाता) वगैरह। इस किस्म के अल्फ़ज धीरे-धीरे मक्बूरा शख्सियतों के नाम का जुज बन जाते हैं। लोग इन शख्सियतों को वैसा ही ग़ैर मामूली समझ लेते हैं जैसा कि इन्हें दिए हुए नाम से जाहिर होता है।

जो चीज 'बाप दादा' से चली आ रही हो, बअल्फ़ज दीगर जिसने तारीख़ी अहमियत हासिल कर ली हो और तवील (लंबी) रिवायात के नतीजे में जिसके साथ माजी का तक़दुस शामिल हो गया हो वह लोगों की नजर में हमेशा अजीम हो जाती है। इसके मुक़बले में 'आज' के दाओ की बात हल्की दिखाई देती है। वे हाल के दाओ को ग़ैर अहम समझ कर नजरअंदाज कर देते हैं। उन्हें एतमाद होता है कि वे असलाफ़ (पूर्वजों) की अज्मतों के वारिस हैं फिर कौन उनका कुछ बिगाड़ सकता है।

खुदा के मामले में ढिठाई आदमी को धीरे-धीरे बेहिस बना देती है। वह इस काबिल नहीं रहता कि वह नसीहत और याददिहानी की जवान में कोई इस्लाह कुबूल कर सके। ऐसे लोग गोया इस बात के मुंजिर हैं कि खुदा अजाब की जवान में उनके सामने जाहिर हो।

وَالِي تَنُودَ أَخَاهُمْ صَاحِبًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ
قَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ هُذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي
أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمْسُوهَا بِسَوْءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ الْيَمِّ ۖ وَادْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ
خُلَفَاءَ مِنْ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِنْ سُهُولِهَا قُصُورًا
وَتَتَحَنَّنُونَ فِيهَا ۚ فَلَا تَعْمَلُوا فِي الْأَرْضِ مَفْسِدِينَ ۖ

और समूद की तरफ हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उन्होंने कहा ऐ मेरी कौम,

अल्लाह की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे ख़ब की तरफ से एक खुला हुआ निशान आ गया है। यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी की तौर पर है। पस इसे छोड़ दो कि वह खाए अल्लाह की जमीन में। और इसे कोई तकलीफ न पहुंचाना वरना तुम्हें एक दर्दनाक अजाब पकड़ लेगा। और याद करो जबकि खुदा ने आद के बाद तुम्हें उनका जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया और तुम्हें जमीन में ठिकाना दिया, तुम उसके मैदानों में महल बनाते हो और पहाड़ों को तराश कर घर बनाते हो। पस अल्लाह की नेमतों को याद करो और जमीन में फसाद करते न फिरो। (73-74)

कौमे आद की तबाही के बाद उसके नेक अफ़राद अरब के शिमाल मरिब (उत्तर-पश्चिम) में हिज़्र के इलाके में आबाद हुए। उनकी नस्ल बढ़ी और उन्होंने जराअत (कृषि) और तामीरात में बड़ी तरकियां कीं। उन्होंने मैदानों में महल बनाए और पहाड़ों को तराश कर उन्हें बड़े-बड़े पर्वतीय मकानात की सूत दे दी। बाद में उनमें वे ख़राबियां पैदा हो गईं जो माददी तरक्की और दुनियावी खुशहाली के साथ कौमों में पैदा होती हैं। ऐशपरस्ती, आखिरत फ़रामोशी, अल्लाह की हदों से बेपरवाही, अल्लाह की बड़ाई को भूलकर अपनी बड़ाई कायम करना। उस वक़्त अल्लाह ने हज़रत सालेह को खड़ा किया ताकि वह उन्हें अल्लाह की पकड़ से डराए। मगर उन्होंने नसीहत कुबूल न की। वे अपने बिगाड़ को सुधार में बदलने पर राजी न हुए। जिस कायनात में तमाम चीजें खुदा की ताबेअ बनकर रह रही हैं वहां उन्होंने खुदा का सरकश बनकर रहना चाहा। जहां हर चीज अपनी हद के अंदर अपना अमल करती है वहां उन्होंने अपनी हद से तजावुज करके जिंदा रहना चाहा। यह एक इस्लाहयाफ़ता दुनिया में फसाद फैलाना था। चुनांचे उन्हें दुनिया में बसने के नाअहल करार दे दिया गया।

कौमे समूद को जांचने के लिए खुदा ने एक ऊंटनी मुकर्र की और कहा की इसे तकलीफ न पहुंचाना वरना हलाक कर दिए जाओगे। खुदा के लिए यह भी मुमकिन था कि वह उनके लिए एक ख़ौफनाक शेर मुकर्र कर दे। मगर खुदा ने शेर के बजाए ऊंटनी को मुकर्र फरमाया। इसका राज यह है कि आदमी की खुदातरसी (खुदा से डरने) का इम्तेहान हमेशा 'ऊंटनी' की सतह पर लिया जाता है न कि 'शेर' की सतह पर। समाज में हमेशा कुछ नाकतुल्लाह (खुदा की ऊंटनी) जैसे लोग होते हैं। ये वे कमजोर अफ़राद हैं जिनके साथ वह माददी जोर नहीं होता जो लोगों को उनके खिलाफ कार्रवाई करने से रोके। जिनके साथ हुस्ने सुलूक का मुहरिक (प्रेरक) सिर्फ अख़्लाकी एहसास होता है न कि कोई डर। मगर यही वे लोग हैं जिनकी सतह पर लोगों की खुदापरस्ती जांची जा रही है। यही वे अफ़राद हैं जिनके जरिए किसी को जन्नत का सर्टिफिकेट दिया जा रहा है और किसी को जहन्नम का।

समूद ने फने तामीर (निर्माण कला) में कमाल पैदा किया। संबंधित उलूम मसलन रियाजी (गणित), हिंदिसा (गणना), इंजीनियरिंग में भी यकीनन उन्होंने जरूरी योग्यता हासिल की होगी वरना ये तरकियात मुमकिन न होतीं। मगर उन्हें जिस बात का मुजरिम ठहराया गया वे उनकी माददी तरकियां नहीं थीं बल्कि जमीन में फसाद फैलाना था। इसका मतलब यह है कि जाइज हुदूद में तरक्की करने से खुदा नहीं रोकता। अलबत्ता जिंदगी के मामलात में आदमी को उस निजामे इस्लाह (सुधारतंत्र) का पाबंद रहना चाहिए जो खुदा ने पूरी कायनात में कायम कर रखा है।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِلَّذِينَ اسْتَضَعُّوا مِنْ أَمِنْ
 مِنْهُمْ تَعْلَمُونَ أَنَّ طَبِيعًا مَرْسَلًا مِنْ رَبِّهِ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٧٥﴾
 قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ﴿٧٦﴾ فَعَقَّبُوا النَّاقَةَ
 وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يُصَلِّ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ
 الْمُرْسَلِينَ ﴿٧٧﴾ فَآخَذَتْهُمْ رَجْفَةٌ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جُثِيمِينَ ﴿٧٨﴾ فَتَوَلَّى
 عَنْهُمْ وَقَالَ يَاقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رَسُولًا مِنْ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَكِنْ
 لَا تُحِبُّونَ التَّصْحِينَ ﴿٧٩﴾

उनकी कौम के बड़े जिन्होंने घमंड किया, उन मोमिनीन से बोले जो कमज़ोर समझे जाते थे, क्या तुम्हें यकीन है कि सालेह अपने रब के भेजे हुए हैं। उन्होंने जवाब दिया कि हम तो जो वे लेकर आए हैं उस पर ईमान रखते हैं। वे मुतकब्बिर (घमंडी) लोग कहने लगे कि हम तो उस चीज के मुँक़िर हैं जिस पर तुम ईमान लाए हो। फिर उन्होंने ऊंटनी को काट डाला और अपने रब के हुक्म से फिर गए। और उन्होंने कहा, ऐ सालेह अगर तुम पैग़म्बर हो तो वह अज़ाब हम पर ले आओ जिससे तुम हमें डरते थे। फिर उन्हें ज़तज़ले ने आ पकड़ा और वे अपने घर में आँधे मुंह पड़े रह गए। और सालेह यह कहता हुआ उन की बस्तियों से निकल गया कि ऐ मेरी कौम, मैंने तुम्हें अपने रब का पैग़ाम पहुँचा दिया और मैंने तुम्हारी ख़ैरख़्वाही की मगर तुम ख़ैरख़्वाहों को पसंद नहीं करते। (75-79)

पैग़म्बर जब आता है तो अपने ज़माने में वह एक विवादित शख्सियत होता है न कि साबितशुदा शख्सियत। मज़ीद यह कि उसके साथ दुनिया की रैनकें जमा नहीं होतीं, वह दुनिया की गद्दियों में से किसी गद्दी पर बैठा हुआ नहीं होता। यही वजह है कि जो लोग पैग़म्बर के मुआसिर (समकालीन) होते हैं वे पैग़म्बर के पैग़म्बर होने को समझ नहीं पाते और उसका इंकार कर देते हैं। उन्हें यकीन नहीं आता कि वह शख्स जिसे हम सिर्फ़ एक मामूली आदमी की हैसियत से जानते हैं वही वह शख्स है जिसे खुदा ने अपने पैग़ाम की पैग़ामरसानी के लिए चुना है।

‘हम सालेह के पैग़ाम पर ईमान लाए हैं’ हज़रत सालेह के साथियों का यह जवाब बताता है कि उनमें और दूसरों में क्या फ़र्क़ था। मुँक़िरीन ने हज़रत सालेह की शख्सियत को देखा और मोमिनीन ने उनके अस्ल पैग़ाम को। मुँक़िरों को हज़रत सालेह की शख्सियत में जाहिरी अज़मत दिखाई नहीं दी, उन्होंने आपको नज़रअंदाज़ कर दिया। इसके बरअक्स मोमिनीन ने हज़रत सालेह के पैग़ाम में हक़ के दलाइल और सच्चाई की झलकियाँ देख लीं, वे फ़ौरन उनके साथी बन गए। सच्चाई हमेशा दलाइल के जोर पर जाहिर होती है न कि दुनियावी अज़मतों के

जोर पर। जो लोग दलाइल के रूप में हक़ को देखने की सलाहियत रखते हैं वे फ़ौरन उसे पा लेते हैं। और जो लोग जाहिरी बड़ाइयों में अटके हुए हों वे मुशतबह (भ्रमित) होकर रह जाते हैं। उन्हें कभी हक़ का साथ देने की तैम्निक हसिल नहीं होती।

हज़रत सालेह की ऊंटनी को मारने वाला अगरचे कौम का एक सरकश आदमी था। मगर यहां उसे पूरी कौम की तरफ़ मंसूब करके फरमाया ‘उन लोगों ने ऊंटनी को हलाक कर दिया’ इससे मालूम हुआ कि किसी गिरोह का एक शख्स बुरा अमल करे और दूसरे लोग उसके बुरे फ़ैज़ल पर राज़ी रहें। तो सबके सब उस मुजरिमाना फ़ैज़ल में शरीक क़ार दे दिए जाते हैं।

जो कौम ख़्वाहिशपरस्ती का शिकार हो उसे हकीकतपसंदी की बातें अपील नहीं करती। वे ऐसे शख्स का साथ देने के लिए तैयार नहीं होती जो उसे संजीदा अमल की तरफ़ बुलाता हो। इसके बरअक्स जो लोग खुशनुमा अल्फ़ाज़ बोलें और झूठी उम्मीदों की तिज़ारत करें। उनके गिर्द भीड़ की भीड़ जमा हो जाती है। सच्चे ख़ैरख़्वाह के लिए उसके अंदर कोई कशिश नहीं होती। अलबत्ता उन लोगों की तरफ़ वह तेज़ी से दौड़ पड़ती है जो उसका इस्तहसाल (शोषण) करने के लिए उठे हों।

وَلَوْ طَآ إِذْ قَالَ يَقَوْمِ إِنَّا تَوْنُ الْفَاحِشَةِ مَا سَبَقْتُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾
 إِنَّا لَنَكْمُلُنَّ تَوْنُ الرِّجَالِ شَهْوَةً مِنْ دُونِ النِّسَاءِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿٨١﴾
 وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنْ آسُ
 يَتَطَهَّرُونَ ﴿٨٢﴾ فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٨٣﴾ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
 مَطَرًا نَظْرًا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾

और हमने लूत को भेजा। जब उसने अपनी कौम से कहा। क्या तुम खुली बेहयाई का काम करते हो जो तुमसे पहले दुनिया में किसी ने नहीं किया। तुम औरतों को छोड़कर मर्दों से अपनी ख़्वाहिश पूरी करते हो। बल्कि तुम हद से गुजर जाने वाले लोग हो। मगर उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दो। ये लोग बड़े पाकबाज़ बनते हैं। फिर हमने बचा लिया लूत को और उसके घर वालों को, उसकी बीबी के सिवा जो पीछे रह जाने वालों में से बनी। और हमने उन पर बारिश बरसाई पत्थरों की, फिर देखो कि कैसा अंजाम हुआ मुजरिमों का। (80-84)

हज़रत लूत हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे थे। वह जिस कौम की तरफ़ पैग़म्बर बनाकर भेजे गए वह दरियाएँ उर्दुन के किनारे जुनूबी शाम के इलाके में आबाद थी। इस कौम की खुशहाली उसे ऐशपरस्ती की तरफ़ ले गई। यहां तक कि उन लोगों की बेराहरी इतनी बढ़ गई कि उन्होंने अपनी शहवानी ख़्वाहिशात (काम वासना) की तस्कीन के लिए हमजिन्सी (समलैंगिक) के तरीके को इख़्तियार कर लिया। पैग़म्बर ने उन्हें इस खुली हुई बेहयाई से डराया।

पकड़ लिया उनके आमाल के बदले। फिर क्या बस्ती वाले इससे बेखौफ हो गए हैं कि उन पर हमारा अजाब रात के वक़्त आ पड़े जबकि वे सोते हैं। या क्या बस्ती वाले इससे बेखौफ हो गए हैं कि हमारा अजाब आ पहुंचे उन पर दिन चढ़े जब वे खेलते हैं। क्या ये लोग अल्लाह की तदबीरों (युक्तियों) से बेखौफ हो गए हैं। पस अल्लाह की तदबीरों से वही लोग बेखौफ होते हैं जो तबाह होने वाले हैं। (94-99)

हदीस में आया है कि मोमिन पर मुसीबतें आती रहती हैं। यहां तक कि वह गुनाहों से پاک हो जाता है। और मुनाफिक की मिसाल गधे की तरह है कि वह नहीं जानता कि उसके मालिक ने किस लिए उसे बांधा और क्यों छोड़ दिया।

खुदा इंसान के ऊपर मुक़्तलिफ़ किस्म की तकलीफें डालता है ताकि उसका दिल नर्म हो। खुदा के सिवा दूसरी चीजों पर से उसका एतमाद टूट जाए, उसका वह घमंड जाता रहे जो आदमी के लिए अपने से बाहर किसी सच्चाई को कुबूल करने में रुकावट बनता है। इस तरह खुदाई इतिजाम के तहत आदमी के अंदर कमी और बेचारगी की नफिसयात पैदा की जाती है ताकि वह हक की आवाज पर कान लगाए। खुदा का यह मामला आम लोगों के साथ भी होता है और पैगम्बर के मुखातब गिरोह के साथ भी। ताहम यह मामला अल्लाह की सुन्नत (तर्क) के तहत रूपों-प्रतीकों में होता है। मसलन कोई आफ़त आती है तो वह असबाब व इलल (कारकों) के रूप में आती है। यह सूरतेहाल बहुत से लोगों के लिए फितना बन जाती है। वे यह कहकर उसे नजरअंदाज कर देते हैं कि यह तो एक होने वाली बात थी जो हो हुई। फिर जब वे मुसीबतों से असर नहीं लेते तो खुदा उनके हालात बदल कर उन्हें खुशहाली में मुब्तिला कर देता है। अब इस किस्म के लोग और भी ज्यादा मुग़ालते में पड़ जाते हैं। उन्हें यकीन हो जाता है कि यह महज हवादिसे रोज़गार (काल-चक्र) की बात थी। यह वही आम उतार चढ़ाव था जो हमेशा लोगों के साथ पेश आता रहा है वर्ना क्या वजह है कि हमें बुरे दिनों के बाद अच्छे दिन देखने को मिले। वे पहली तंबीह से भी सबक लेने से महरूम रहते हैं और दूसरी तंबीह से भी।

सरकशी के बाद किसी को तरक्की मिलना सख़्त ख़तरनाक है। यह इस बात की अलामत है कि खुदा ने उसे ऐसी हालत में पकड़ने का फैसला कर लिया है जबकि वह अपने पकड़े जाने के बारे में ज्यादा से ज्यादा बेखौफ हो चुका हो।

इमान और तक़्वा की ज़िंदगी का फ़ायदा अगरचे अख़िरत में मिलने वाला है। ताहम अगर खुदा चाहता है तो दुनिया में भी वह ऐसे लोगों को फ़राख़ी और इज्जत की सूरत में उनके अमल का इब्तिदाई इनाम दे देता है।

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرِثُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصْبَحْنَا بِذُنُوبِهِمْ وَنُطْبِئُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۚ تِلْكَ الْقُرَىٰ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِهَا ۚ وَقَدْ جَاءَ تَهُمُّ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا

كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ۚ وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ ۚ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ۚ

क्या सबक नहीं मिला उन्हें जो जमीन के वारिस हुए हैं उसके अगले वाशियों के बाद कि अगर हम चाहें तो उन्हें पकड़ लें उनके गुनाहों पर। और हमने उनके दिलों पर मुहर कर दी है पस वे नहीं समझते। ये वे बस्तियां हैं जिनके कुछ हालात हम तुम्हें सुना रहे हैं। उनके पास हमारे रसूल निशानियां लेकर आए तो हरगिज न हुआ कि वे इमान लाएं उस बात पर जिसे वे पहले झुठला चुके थे। इस तरह अल्लाह मुंकिरों के दिलों पर मुहर कर देता है। और हमने उनके अक्सर लोगों में अहद (वचन) का निबाह न पाया और हमने उनमें से अक्सर को नाफरमान (अवज्ञाकारी) पाया। (100-102)

जमीन पर बार-बार यह वाक्या होता है कि एक कैम को यहां इज्जत और ख़ाहली नसीब होती है। इसके बाद उस पर ज्वाल (पतन) आता है। वे मैदान से हटा दी जाती है और उसकी जगह दूसरी कैम इज्जत और ख़ाहली के तमाम मक़मात पर कब्ज हो जाती है।

यह वाक्या खुदा की एक निशानी है। वह आदमी को खुदा की याद दिलाने वाला है। वह बताता है कि मिलने या न मिलने के सिरे किसी बालातर (उच्च) हस्ती के हाथ में हैं। वह जिसे चाहे दे और जिससे चाहे छीन ले। खुदा ने इंसान को देखने और समझने की जो ताकत दी है उसे काम में लाकर वह बाआसानी इस हकीकत को समझ सकता है। वह जान सकता है कि अस्ल सरचश्मा (स्रोत) अगर किसी और के हाथ में न होता तो जो गिरोह एक बार ग़ालिब आ जाता वह कभी दूसरे को ऊपर आने न देता। आदमी अगर इस किस्म का सबक ले तो कैमों के उरूज व ज्वाल (उत्थान-पतन) में उसे ख़्बानी ग़िज़ा मिलेगी। मगर जब भी एक कैम पीछे हटती है और उसकी जगह दूसरी कैम ऊपर आती है तो उसके अफ़राद इस ग़लतफ़हमी में पड़ जाते हैं कि पिछली कैम के साथ जो कुछ हुआ वह सिर्फ पिछली कैम के लिए था, हमारे साथ ऐसा कभी नहीं होगा।

खुदा ने आंख और कान और अक्ल की सलाहियत इंसान को इसलिए दी है कि वह इससे सबक ले, वह इनके जरिये खुदा के इशारात को समझे। मगर जब आदमी अपनी इन सलाहियतों से वह काम नहीं लेता जो उसे लेना चाहिए तो इसके बाद लाज़िमी तौर पर ऐसा होता है कि खुदा के कानून के तहत उसके दिल की हस्सासियत (संवेदनशीलता) मुर्दा होने लगती है। यहां तक कि इन मामलात में उसके जज्बात कुंद होकर रह जाते हैं। उसके दिल व दिमाग पर बेहिसी की मुहर लग जाती है। अब उसका हाल यह हो जाता है कि वह देखने के बावजूद न देखे और सुनने के बावजूद न सुने। वह अक्ल रखते हुए भी बातों को न समझे। वह इंसान होते हुए बेइंसान बन जाए।

इंसानियत का आगाज हज़रत आदम के मोमिनीन से हुआ। इसके बाद जब बिगाड़ हुआ तो याददिहानी के लिए खुदा के पैगम्बर आए। अब यह हुआ कि पैगम्बर के जरिए इस्लाह (सुधार) कुबूल करने वाले अफ़राद को बचाकर उन लोगों को हलाक कर दिया गया जिन्होंने

इस्लाह कुबूल करने से इंकार किया था। मगर बाद की नस्लें दुबारा अपने पैगम्बर के हाथ पर किए हुए इस्लाम के अहद को भुला बैठीं और दुबारा वही अंजाम पेश आया जो पहली बार मोमिनीने आदम को पेश आया था। यह सूरत बार-बार पेश आती रही यहां तक कि नस्ले इंसानी की अक्सरियत के लिए तारीख नाफरमानी और अहदशिकनी (वचन-भंग) की तारीख बन गई।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمُ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَكُلِّمَهُ بِهَا فَأَنظَرُ
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَىٰ لِفِرْعَوْنَ إِنِّي رَسُولٌ مِّنْ
رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝ حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ
مِّنْ رَبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۝ قَالَ إِن كُنْتَ جِدْتَ بِآيَةٍ فَأْتِ
بِهَا إِن كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۝ وَنَزَعْنَا
يَدَ إِدْرِيسَ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّظِيرِينَ ۝ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا
لَسِحْرٌ عَلِيمٌ ۝ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِّنْ أَرْضِكُمْ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ۝ قَالُوا
أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۝ يَا نُتُوكَ بِكُلِّ سَحَرٍ عَلِيمٍ ۝

फिर उनके बाद हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा फिरऔन और उसकी कौम के सरदारों के पास। मगर उन्होंने हमारी निशानियों के साथ जुल्म किया। पस देखो कि मुफ़्तिदों (फसाद करने वालों) का क्या अंजाम हुआ। और मूसा ने कहा ऐ फिरऔन, मैं परवरदिगारे आलम की तरफ से भेजा हुआ आया हूं। सजावार हूं कि अल्लाह के नाम पर कोई बात हक के सिवा न कहूं। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से खुली हुई निशानी लेकर आया हूं। पस तू मेरे साथ बनी इस्राईल को जाने दे। फिरऔन ने कहा, अगर तुम कोई निशानी लेकर आए हो तो उसे पेश करो अगर तुम सच्चे हो। तब मूसा ने अपना असा (डंडा) डाल दिया तो यकायक वह एक साफ अजदहा बन गया। और उसने अपना हाथ निकाला तो अचानक वह देखने वालों के सामने चमक रहा था। फिरऔन की कौम के सरदारों ने कहा यह शख्स बड़ा माहिर जादूगर है। चाहता है कि तुम्हें तुम्हारी जमीन से निकाल दे। अब तुम्हारी क्या सलाह है। उन्होंने कहा, मूसा को और उसके भाई को मोहलत दो और शहरों में हरकारे भेजो कि वे तुम्हारे पास सारे माहिर जादूगर ले आए। (103-112)

पैगम्बर का खिताब अब्दलन उन लोगों से होता है जो वक्त के सरदार हों, जिन्हें माहौल में क़िस्मत (वैचारिक नेतृत्व) हासिल हो। ये लोग अपनी बरतर जेहनी सलाहियत की वजह से सबसे ज्यादा इस पोजीशन में होते हैं कि सच्चाई के पैगाम को उसकी गहराई के साथ

समझ सकें। मगर तारीख बताती है कि इन लोगों ने पैगम्बराना दावत के साथ हमेशा 'जुल्म' का सुलुक किया। यानी अपनी जहानत को इसके लिए इस्तेमाल किया कि हक के पैगाम को टेढ़े मअना पहनाएं। मसलन एक निशानी जो यह साबित कर रही हो कि वह खुदा के जोर पर जाहिर हुई है उसके मुतअल्लिक यह कह देना कि यह जादू के जोर पर दिखाई गई है। या तहरीक को बदनाम करने के लिए उसे सियासी मअना पहनाना और यह कहना कि ये लोग महज अपने इक्तेदार के लिए उठे हैं। अवाम चूँकि बातों का तज्जिया (विश्लेषण) नहीं कर पाते इसलिए इस किस्म की बातें उन्हें हक से मुशतबह करने का सबब बन जाती हैं। मगर हक के दाओ के खिलाफ ऐसे शोषे निकालना बहुत बड़ा जुर्म है। इस तरह वक्त के बड़े अपनी क्यादत (नेतृत्व) क़दर (सुरक्षा) तो ज़रूर करते हैं मगर यह तहम्मुल उन्हें सिर्फ इस कीमत पर मिलता है कि उनकी आखिरत हमेशा के लिए रैर महफूज हो जाए।

खुदा का मिल हक पर है। इसलिए जो शख्स खुदा की तरफ से उठे उसके लिए जाइज नहीं कि वह हक व ईसाफ के सिवा कोई दूसरा कलिमा अपनी जवान से निकाले। अगर वह हक के सिवा कोई बात बोले तो वह खुदा की नुमाइंदगी के इस्तहकाक (अधिकार) को खो देगा और खुदा के यहां इनाम के बजाए सजा का मुस्तहक हो जाएगा।

हजरत मूसा एक ही वक्त में बनी इस्राईल की तरफ भी मवज़स थे और फिरऔन और उसकी कित्ती कैम की तरफ भी। बनी इस्राईल में उस वक्त अगरचे बहुत सी कमज़ोरियां आ चुकी थीं। ताहम बुनियादी तौर पर उन्होंने हजरत मूसा का साथ दिया। इसके बरअक्स फिरऔन और उसकी कौम ने (चन्द अफ़्साद को छोड़कर) आपका इंकार किया। बिलआखिर चालीस साला तब्दीग के बाद आपने बनी इस्राईल के साथ मिन्न से हिजरत करने का फैसला किया। आपने फिरऔन से मुतालबा किया कि बनी इस्राईल को मुल्क से बाहर जाने दे ताकि वे बयाबान की खुली फजा में जाकर एक खुदा की इबादत कर सकें। (खुरूज 16)। हजरत मूसा अगरचे सच्चाई के नुमाइदे थे। मगर फिरऔन ने उसे जादू का मामला समझा और जादूगरों के जरिये आपको ज़े (परास्त) करने का फैसला किया।

وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَكَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ۝ قَالَ نَعَمْ وَإِن كُنْتُمْ لَمِنَ الْمُتَقَرِّبِينَ ۝ قَالُوا يَمُوسَىٰ إِنَّمَا أَنْ تُلْقِيَ وَإِنَّمَا أَنْ تَكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ۝ قَالَ أَلْقُوا فَلَنَا الْقُوَا سَعَرُوا أَعْيَنَ النَّاسِ وَاسْتَزْبَهُوهُمْ وَجَاءُوا بِسِحْرِ عَزِيزٍ ۝ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ۝ فَوَقَّعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَغَلَبُوا هَٰذَاكَ وَانْقَلَبُوا صَغِيرِينَ ۝ وَأَلْقَى السَّحَرَةُ سِحْرَهُمْ ۝ قَالُوا أَمَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝

और जादूगर फिरऔन के पास आए। उन्होंने कहा, हमें इनाम तो जरूर मिलेगा अगर हम ग़ालिब (विजित) रहे। फिरऔन ने कहा, हां और यकीनन तुम हमारे मुक़रबीन (निकटवर्तियों) में दाखिल होंगे। जादूगरों ने कहा, या तो तुम डालो या हम डालने वाले बनते हैं। मूसा ने कहा, तुम ही डालो। फिर जब उन्होंने डाला तो लोगों की आंखों पर जादू कर दिया और उन पर दहशत तारी कर दी और बहुत बड़ा करतब दिखाया, और हमने मूसा को हुक्म भेजा कि अपना असा (डंडा) डाल दो। तो अचानक वह निगलने लगा उसे जो उन्होंने गढ़ा था। पस हक़ जाहिर हो गया और जो कुछ उन्होंने बनाया था बातिल होकर रह गया। पस वे लोग वहीं हार गए और जलील होकर रहे। और जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा, हम ईमान लाए रब्बुलआलमीन (सृष्टि-प्रभु) पर जो रब (प्रभु) है मूसा और हारून का। (113-122)

किसी माहौल में जिस चीज की अहमियत लोगों के जेहन्नों पर छाई हुई हो उसी निस्वत से उनके पैगम्बर को मोजिजा (चमत्कार) दिया जाता है। कदीम मिस्र में जादू का बहुत जोर था इसलिए हजरत मूसा को उसी नौइयत का मोजिजा दिया गया।

फिरऔन के तैकरदा प्रेष्ठाम के मुताबिक मिस्रियों के कैभी ल्यौहार (येमुलज्जीनह) के मौके पर उनके तमाम बड़े-बड़े जादूगर जमा हुए। जादूगरों ने कहा कि पहले हम अपना करतब सामने लाएं या तुम जो कुछ दिखाना चाहते हो दिखाओगे। हजरत मूसा ने कहा पहले तुम अपना करतब सामने लाओ। चुनांचे ऐसा ही हुआ। इससे मालूम होता है कि पैगम्बर अपने दुश्मन के खिलाफ इक्दाम करने में कभी पहल नहीं करता। वह आखिर वक्त तक दुश्मन को मौक़ देता है कि वह खुद पहल करे। मुख़ालिफ़ फ़रीक़ जब इस तरह पहल की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले चुका होता है उस वक्त पैगम्बर अपनी पूरी कुव्वत को इस्तेमाल करके उसे ज़े कर देता है। नजरियाली दावत के मामले में पैगम्बर का तरीक़ा इक्दाम का होता है और अमली टकराव के मामले में दिफ़ाअ (प्रतिरक्षा) का।

मिस्र में हजरत मूसा की दावत तकरीबन चालीस साल तक जारी रही है। जादूगरों से मुक़ाबले का वाक़्या उसके आख़िरी ज़माने का है। इससे क़यास किया जा सकता है कि जादूगर हजरत मूसा की दावत से आशना रहे होंगे। ताहम अभी तक उनकी आंख का पर्दा नहीं हटा था। जब उन्होंने अपन मख़सूस फ़न के मैदान में हजरत मूसा की बरतरी देखी तो हिजाबात उठ गए। उन्हें नजर आ गया कि यह जादूगरी का मामला नहीं बल्कि खुदाई पैगम्बरी का मामला है। वे बेइख़्तियार होकर खुदा के सामने गिर पड़े।

जादूगरों ने अपनी लाठियां और रस्सियां फेंकीं तो ख़्यालबंदी (ट्रुप्टि थ्रम) की वजह से वे लोगों को चलता फिरता सांप नजर आने लगीं। मगर जब हजरत मूसा का असा (डंडा) सांप बनकर मैदान में घूमा तो जादूगरों की हर लाठी और रस्सी सिर्फ़ लाठी और रस्सी होकर रह गई। जादूगर जादू के हुदू को जानते थे। इस वाक़ये में जादूगरों को नजर आ गया कि इंसानी तदबीरों अपने आख़िरी कमाल पर पहुंच कर भी कितनी हकीर हैं और खुदा कितना अज़ीम और कितना ज़्यादा ताक़तवर है। इसके बाद फिरऔन उन्हें अपने तमाम इत्तेदार के

बावजूद बेवक़अत नजर आने लगा। वही जादूगर जो खुदा की अज़मत को देखने से पहले फिरऔन से इनाम के तालिब थे। अब उन्होंने फिरऔन की तरफ़ से बदतरीन सजाओं की धमकी को भी इस तरह नज़अंज़ा कर दिया जैसे उसकी कोई हकीक़त ही नहीं।

قَالَ فِرْعَوْنُ امْنُتُمْ بِهِ قَبْلَ اَنْ اُذِنَ لَكُمْ اِنْ هَذَا لَكُذُّبٌ مَّكْرُتٌ مِّنْهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَا اَهْلَهَا فَاَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ لَا قُطْعَانَ اِيْدِيَكُمْ وَاَنْجِلْكُمْ مِنْ خِلَافِ ثَمَرِ لَّاصِلِبَيْكُمْ اَجْمَعِينَ ۝ قَالُوا اِنَّا اِلَى رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۝ وَمَا نَسْتَعْمِدُ مِثْلَ الْاَنْ مَكْرًا لَّيْتِ رَبَّنَا لَمَّا جِئْتُنَا رَبَّنَا اَفَرَّغْنَا عَلَيْكَ صَبْرًا وَتَوَقَّعْنَا مُسْلِمِينَ ۝

फिरऔन ने कहा, तुम लोग मूसा पर ईमान ले आए इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाजत दूं। यकीनन यह एक साजिश है जो तुम लोगों ने शहर में इस राज से की है कि तुम उसके बाशिन्यों को यहां से निकाल दो, तो तुम बहुत जल्द जान लोगे। मैं तुम्हारे हाथ और पाओं मुख़ालिफ़ समतों से काटूंगा फिर तुम सबको सूली पर चढ़ा दूंगा। उन्होंने कहा, हमें अपने रब ही की तरफ़ लौटना है। तू हमें सिर्फ़ इस बात की सज़ा देना चाहता है कि हमारे रब की निशानियां जब हमारे सामने आ गईं तो हम उन पर ईमान ले आए। ऐ रब, हम पर सज़ा उडेल दे और हमें वफ़ात दे इस्लाम पर। (123-126)

हक़ के लिए जान कुर्बान करना हक़ के हक़ होने की आख़िरी गवाही देना है। जादूगरों को खुदा की मदद से इसी की तौफ़ीक़ हासिल हुई। जादूगरों ने अपने आपको सख़्ततरीन सज़ा के लिए पेश करके यह साबित कर दिया कि उनका हजरत मूसा पर ईमान लाना कोई हीला और साजिश का मामला नहीं, यह सच्चे एतराफ़े हक़ का मामला है। मगर जादूगरों का सबसे बड़ा अमल फिरऔन की मुक़ाबिलाना नपसियात (अहं भाव) के लिए सबसे बड़ा ताजयाना प्रहार था। उन्होंने फिरऔन के मुक़ाबले में हजरत मूसा का साथ देकर फिरऔन को सारे कैम के सामने रुसवा कर दिया था। चुनांचे फिरऔन उनके खिलाफ़ गुस्से से भर गया। उसने जादूगरों के साथ उसी जालिमानी कारवाइ का फैसला किया जो हर वह मुक़ाबिले शख़्स करता है जिसे जमीन पर किसी किस्म का इख़्तियार हासिल हो जाए। जादूगर भी दलील के मैदान में हारे और फिरऔन भी। मगर जादूगर अपनी शिकस्त का एतराफ़ करके खुदा की अबदी नेमतों के मुतहिक़ बन गए और फिरऔन ने इसे अपनी इज्जत का मसला बना लिया। उसके हिस्से में सिर्फ़ यह आया कि अपनी झूठी अनानियत अहंकार की तस्कीन के लिए दुनिया में वह हक़मरस्तों पर जुम करे और आख़िरत में खुदा के अबदी अज़ाब में डाल दिया जाए।

फिरऔन ने मूसा की दावत को कुबूल करने या न करने को अपनी 'इजाजत' का मसला समझा। और जादूगरों ने 'निशानी' का। मुक़ाबिले (धमंडी) आदमी का मिजाज हमेशा यह होता है कि वह अपनी मर्जी को सबसे ज़्यादा अहम समझता है न कि दलील और सुबूत को। ऐसे

लोग कभी हक को कुबूल करने की तैयारी नहीं पाते।

इस नाजुकतरीन मौके पर जादूगरों ने जो कामिल इस्तिस्मात (वृद्धता) दिखाई वह सरासर खुदा की मदद से थी और उनकी जबान से जो दुआ निकली वह भी तमामतर इल्हामी दुआ थी। जब कोई बंदा अपने आपको हमह-तन (पूर्णतः) खुदा के हवाले कर देता है तो उस वक्त वह खुदा के इतना करीब हो जाता है कि उसे खुदा का खुसूसी फैजान पहुंचने लगता है। उस वक्त उसकी जबान से ऐसे कलिमात निकलते हैं जो खुदा के इल्का किए हुए होते हैं। उस वक्त वह वही दुआ करता है जिसके मुतअल्लिक उसका खुदा पहले ही फैसला कर चुका होता है कि वह उसके लिए कुबूल कर ली गई है।

जादूगरों का यह कहना कि खुदाया हमारे ऊपर सब्र उंडेल दे और हमारी मौत आए तो इस्लाम पर आए, दूसरे लफ्जों में यह कहना है कि हमने अपने बसभर अपने आपको तैरे हवाले कर दिया है। अब जो कुछ हमारे बस से बाहर है उसके वास्ते तू हमारे लिए काफी हो जा। जब भी कोई बंदा दीन की राह में दिल से यह दुआ करता है तो खुदा यकीनन उसकी मुश्किलात में उसके लिए काफी हो जाता है।

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَدْرِي مُوسَى وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَ
يَذَرُكَ وَالْهَتَكَ قَالَ سَنُقَرِّبُ أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَعْيِي نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ
قَاهِرُونَ ۝ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ
يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۝ قَالُوا أَوْذَيْنَا مِنْ قَبْلُ
أَن تَأْتِيَنَا وَ مِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا قَالَ عَسَى رَبُّكُمْ أَن يُهْلِكَ عَدُوَّكُمْ
وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝

फिरऔन की कौम के सरदारों ने कहा, क्या तू मूसा और उसकी कौम को छोड़ देगा कि वे मुल्क में फसाद फैलाएं और तुझे और तैरे माबूदों (पूज्यों) को छोड़ें। फिरऔन ने कहा हम उनके बेटों को कत्ल करेंगे और उनकी औरतों को जिंदा रखेंगे। और हम उन पर पूरी तरह कादिर हैं। मूसा ने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह से मदद चाहो और सब्र करो। जमीन अल्लाह की है, वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बना देता है। और आखिरी कामयाबी अल्लाह से डरने वालों ही के लिए है। मूसा की कौम ने कहा, हम तुम्हारे आने से पहले भी सत्ताए गए और तुम्हारे आने के बाद भी। मूसा ने कहा करीब है कि तुम्हारा सब्र तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे और बजाए उनके तुम्हें इस सरजमीन का मालिक बना दे, फिर देखे कि तुम कैसा अमल करते हो। (127-129)

बनी इस्राईल ने अपने पैगम्बर के सामने जो मसला पेश किया वह हुक्मत का पैदा किया हुआ था। मगर पैगम्बर ने इसका जो हल बताया वह यह था कि अल्लाह की तरफ रुजू करो।

इससे अंदाजा होता है कि कौमी मसाइल के बारे में दुनियादार लीडरों के सोचने के अंदाज और पैगम्बर के सोचने के अंदाज में क्या फर्क है। दुनियादार लीडर इस किस्म के मसले का हल हुक्मत की सतह पर तलाश करता है, चाहे वह हुक्मत से मुसालेहत की सूरत में हो या हुक्मत से तसादुम (टकराव) की सूरत में। मगर पैगम्बर ने जो हल बताया वह यह था कि जो कुछ हो रहा हो उसे बर्दाश्त करते हुए खुदा से मदद के तालिब बनो, हुक्मत की तरफ से बेनियाज होकर खुदा की तरफ रुजू करो।

फिर पैगम्बर ने यह भी बता दिया कि वह आम कौमी जैक के खिलाफ जो हल पेश कर रहा है वह क्यों पेश कर रहा है। इसकी वजह यह है कि ये मसाइल अगरचे बजाहिर इक्तेदार (सत्ता) की तरफ से पेश आ रहे हैं और बजाहिर इक्तेदार ही के जरिए उनका हल भी निकलेगा। मगर खुदा इक्तेदार कैसे किसी को मिलता है। वह महज अपनी तदबीरों से किसी को नहीं मिल जाता बल्कि बराहेरास्त खुदा की तरफ से किसी को दिए जाने का फैसला होता है और किसी से छिने जाने का। जब इक्तेदार का तअल्लुक खुदा से है तो मसले के हल की जड़ भी यकीनन खुदा ही के पास हो सकती है।

फिर यह कि यह इक्तेदार जिसे भी दिया जाए वह हकीकतन उसके हक में आजमाइश होता है। इस दुनिया में बेताकती भी आजमाइश है और ताकतवर होना भी आजमाइश। आज जिसके पास इक्तेदार है, उसके पास भी इसी लिए है कि उसे आजमाया जाए कि वह जालिम और मुत्कब्बिर बनता है या इंसाफ और तवाजोअ (विनम्रता) की रविश इख्तियार करता है। इसके बाद जब इक्तेदार (सत्ता) का फैसला तुम्हारे हक में किया जाएगा उस वक्त भी इसका मकसद तुम्हें जांचना ही होगा। जिस तरह एक गिरोह की नाअहली की बिना पर उससे इक्तेदार छीन कर किसी दूसरे गिरोह को दिया जाता है इसी तरह दूसरा गिरोह अगर नाअहल साबित हो तो उससे भी छीन कर दुबारा किसी और को दे दिया जाएगा।

खुशहाली और इक्तेदार (सत्ता) जिसे आदमी दुनिया में चाहता है वह हकीकत में आखिरत में मिलने वाली चीज है। क्योंकि दुनिया में ये चीजें बतौर आजमाइश मिलती हैं और आखिरत में वे बतौर इनाम खुदा के नेक बंदों को दी जाएंगी।

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَقْصٍ مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ
يَذْكُرُونَ ۝ وَإِذَا جَاءَهُمْ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَذِهِ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ
يَظْمَرُوهَا بِمُوسَى وَمَنْ مَعَهُ إِلَّا إِمَّا ظَنُّهُمْ عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا
فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۝

और हमने फिरऔन वालों को कहत (अकाल) और पैदावार की कमी में मुत्तिला किया ताकि उन्हें नसीहत हो। लेकिन जब उन पर खुशहाली आती तो कहते कि यह हमारे

लिए है और अगर उन पर कोई आफत आती तो उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत बताते। सुनो, उनकी बदबख्ती तो अल्लाह के पास है मगर उनमें से अक्सर नहीं जानते। और उन्होंने मूसा से कहा, हमें मस्हूर (जादू ग्रस्त) करने के लिए तुम चाहे कोई भी निशानी लाओ हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं। (130-132)

किसी बात को गलत कहना हो तो उसका गलत होना लफ्जों की सूरत में बताया जाता है और किसी बात को सही कहना हो तो उसे भी लफ्जों ही के जरिए सही कहा जाता है। इसी तरह किसी को मुजरिम करार देना हो तो उसे लफ्जों के जरिए मुजरिम करार दिया जाता है और अगर किसी को हक पर जहिर करना हो तो उसका हक पर होना भी लफ्जों में बताया जाता है। मगर अल्फाज का इस्तेमाल करने वाला इंसान है और मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में इंसान को यह इख्तियार हासिल है कि वह अल्फाज को जिस तरह चाहे अपनी मर्जी के मुताबिक इस्तेमाल करे।

इस्तेहान की इस दुनिया में आदमी को जो आजादी दी गई है उसमें सबसे ज्यादा नाजुक आजादी यह है कि वह हक को बातिल कहने के लिए भी अल्फाज पा लेता है और बातिल को हक कहने के लिए भी। वह एक खुले हुए पैगम्बराना मोजिजे को जादू कहकर नजरअंदाज कर सकता है। खुदा उसे कोई नेमत दे तो वह उसे ऐसे अल्फाज में बयान कर सकता है गोया कि उसे जो कुछ मिला है अपनी सलाहियतों (क्षमताओं) और कोशिशों की बदौलत मिला है। हक को नजरअंदाज करने की वजह से खुदा उसके ऊपर कोई तबीही (सचेतक) सज भेजे तो वह आजाद है कि उसे वह उन्हीं खुदापरस्त बंदों की नहूसत का नतीजा करार दे दे जिनके साथ बुरा रवैया इख्तियार करने ही की वजह से उस पर यह तबीही आई है। खुदा की तरफ से हर बात इसलिए आती है कि आदमी उससे नसीहत पकड़े। मगर अल्फाज के जरिए आदमी हर नसीहत को एक उल्टा रुख दे देता है और उसके अंदर जो सबक का पहलू है उसे पाने से महरूम रह जाता है।

‘तुम चाहे कोई भी निशानी दिखाओ हम ईमान नहीं लाएंगे’ फिरऔन का यह जुमला बताता है कि हक अपनी मुकम्मल सूरत में मौजूद होने के बावजूद सिर्फ उसी को मिलता है जो उसे पाना चाहे। बअल्फाज दीगर, जो शख्स हक के मामले में संजीदा हो, जिसके अंदर **स्मिन्न** (सचमुच) यह आमादगी हो कि हक चाहे जहां और जिस सूरत में भी मिले वह उसे ले लेगा, उस पर हक का हक होना खुलता है। इसके बरअक्स जो शख्स इस मामले में संजीदा न हो। जिसका हाल यह हो कि जो कुछ उसके पास है बस उसी पर वह मुतमइन (संतुष्ट) है वह हक (सत्य) को हक की सूरत में देखने से आजिज रहेगा और इसीलिए वह उसे इख्तियार भी न कर सकेगा। अपने हाल पर मगन रहना आदमी को अपने से बाहर की चीजों के लिए बेखबर बना देता है। वह जानकर भी नहीं जानता, वह सुनकर भी नहीं सुनता।

आदमी अगर गैर मुतअस्सिर (निष्पक्ष) ज़ेन के तहत सेवे तो वह ज़र हकीकत को पा लेगा। मगर अक्सर लोग अपनी नफिसयात (मानसिकता) के ज़ेअसर रय कयम करते हैं, यही वजह है कि वे हकीकत को पाने में नाकाम रहते हैं।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادَ وَالْذَّمَارِثِ
مُفَضَّلَاتٍ فَأَسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عَجْرَمِينَ ۖ وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا
يُمُوسَى اادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۖ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّْا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ
لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرِّجْزَ إِلَى
أَجَلٍ هُمْ بِالْعُودَةِ إِذْ هُمْ يَنْكُشُونَ ۚ

फिर हमने उनके ऊपर तूफान भेजा और टिड्डी और जुएं और मेंढक और खून। ये सब निशानियां अलग-अलग दिखाई। फिर भी उन्होंने तकबुर (घमंड) किया और वे मुजरिम लोग थे। और जब उन पर कोई अजाब पड़ता तो कहते ऐ मूसा, अपने रब से हमारे लिए दुआ करो जिसका उसने तुमसे वादा कर रखा है। अगर तुम हम पर से इस अजाब को हटा दो तो हम जरूर तुम पर ईमान लाएंगे और तुम्हारे साथ बनी इस्राईल को जाने देंगे। फिर जब हम उनसे दूर कर देते आफत को कुछ मुदत के लिए जहां बहरहाल उन्हें पहुंचना था तो उसी वक्त वे अहद (वचन) को तोड़ देते। (133-135)

हजरत मूसा ने मिश्र में तकरीबन 40 साल तक पैगम्बरी की। आपके मिशन के दो अज्जा थे। एक, फिरऔन को तौहीद का पैगाम देना। दूसरे, बनी इस्राईल को मिश्र से निकाल कर सहारा सीना में ले जाना और वहां आजादाना फजा में उनकी दीनी तर्बियत करना। बनी इस्राईल (हजरत याकूब की औलाद) उस वक्त शदीद तौर पर किस्ती बादशाह (फिरऔन) की गिरफ्त में थे। किस्ती कौम उन्हें अपने जराअती (कृषि) और तामीरी कामों में बतौर मजदूर इस्तेमाल करती थी। इसलिए किस्ती हुक्मरां नहीं चाहते थे कि बनी इस्राईल मिश्र से बाहर चले जाएं।

हजरत मूसा ने इब्दा में जब फिरऔन से मुतालबा किया कि बनी इस्राईल को मेरे साथ मिश्र से बाहर जाने दे तो फिरऔन और उसके दरबारियों ने उसे सियासी मअना पहना कर आप पर यह इल्जाम लगाया कि वह किस्ती कौम को मिश्र से निकाल देना चाहते हैं। (110) यह बात सरासर बेमअना (अर्थहीन) थी। क्योंकि हजरत मूसा का मंसूबा तो खुद अपने आपको मिश्र से बाहर ले जाने का था, और फिरऔन ने यह उल्टा इल्जाम लगाया कि वह किस्तियों को उनके मुल्क से बाहर निकाल देना चाहते हैं। उस वक्त फिरऔन और उसके साथी इक्तेदार (सत्ता) के घमंड में थे इसलिए सीधी बात भी उन्हें टेढ़ी नजर आई।

मगर बाद के मरहले में खुदा ने फिरऔन और उसकी कौम पर हर तरह की बलाएं नाजिल कीं। उन पर कई साल तक मुसलसल कहत (अकाल) पड़े। शदीद गरज चमक के साथ ओलों का तूफान आया। टिड्डियों के दल के दल आए जो फसल और बाग को खा गए और हर किस्म की सब्जी का खात्मा कर दिया। जुएं और मेंढक इस कसरत से हो गए कि कपड़ों और बिस्तरों पर जुएं ही जुएं थीं और घरों और रास्तों में हर तरफ मेंढक ही मेंढक

कूदने लगे। दरियाओं और तालाबों का पानी खून हो गया। फिरजौन और उसकी कौम जब इन अजीब व गरीब मुसीबतों में मुक्त्िला हुए तो वे कह उठे कि खुदा अगर इन मुसीबतों को हमसे टाल दे तो हम बनी इस्राईल को मूसा के साथ जाने देंगे। हजरत मूसा के जिस मुतालबे में पहले कित्तियों के इख़ाज (निष्कासन) की सियासी साजिश दिखाई दी थी वह अब खुद बनी इस्राईल की हिजरत के हममअना नजर आने लगी।

आदमी अपने को महफूज हालत में पा रहा हो तो वह तरह-तरह की बातें बनाता है। मगर जब उससे हिफ़जत छीन ली जाए और उसको इज्ज और बेबसी के मक़ाम पर खड़ा कर दिया जाए तो अचानक वह हकीकतपसंद बन जाता है। अब वह बात खुद ही उसकी समझ में आ जाती है जो पहले समझाने के बाद भी समझ में नहीं आती थी। मगर इंकार की ताकत रखते हुए इंकार करने का नाम इंकार है। अल्फ़ज छिन जाने के बाद कोई इंकार इंकार नहीं।

فَاتَّبَعْنَا مِنْهُمُ ۖ فَاعْرِفْنَهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ۝ وَأَوْزَيْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَعْظَمُونَ مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَعَارِبَهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَىٰ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ هَٰذَا صَبْرٌ ۖ وَدَمْرُنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ۝

६

फिर हमने उन्हें सजा दी और उन्हें समुद्र में गर्क कर दिया क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को झुटलाया और उनसे बेपरवाह हो गए। और जो लोग कमजोर समझे जाते थे उन्हें हमने उस सरज़मीन के पूरब व पश्चिम का वारिस बना दिया जिसमें हमने बरकत रखी थी। और बनी इस्राईल पर तेरे रब का नेक वादा पूरा हो गया इस सबब से कि उन्होंने सब्र किया और हमने फिरजौन और उसकी कौम का वह सब कुछ बर्बाद कर दिया जो वे बनाते थे और जो वे चढ़ाते थे। (136-137)

नबियों की मुखातब कौमों पर जो अजाब आता है वह आयतों की तक़ज़ीब की वजह से आता है। यानी निशानियों को झुटलाना। इसके मुकाबले में नबियों के साथियों पर जो खुसूसी नुसरत (मदद) उतरी है उसका इस्तह्क़ाफ़ (पात्रता) उन्हें सब्र की वजह से हासिल होता है। यानी अपने ज़बात को थाम कर अल्लाह के तरीके पर साबित कदम रहना।

निशानियों से मुराद वे दलाइल हैं जो हक को हक साबित करने वाले होते हैं मगर आदमी अपनी मुतकब्बिराना नफ़िसयात (अहं-भाव) की वजह से उन्हें मानने पर कादिर नहीं होता। वह दलील के मामले को दलील पेश करने वाले का मामला बना लेता है। वह समझता है कि अगर मैंने यह दलील मान ली तो फलां शख्स के मुकाबले में मेरा मर्तबा घट जाएगा। वह दलील पेश करने वाले के मुकाबले में अपने को बाला (उच्च) रखने की खातिर दलील की बालातरी (उच्चता) को तस्लीम नहीं करता। मगर यही इंसान की आजमाइश का अस्ल मक़ाम

है। मौजूदा दुनिया में खुदा निशानियों या दलाइल के पर्दे में जाहिर होता है, आखिरत में वह बेहिजाब होकर जाहिर हो जाएगा। मगर ईमान वही मौतवर है जबकि आदमी पर्दादारी के साथ जाहिर होने वाले हक को पा ले। बेहिजाबी के साथ जाहिर होने वाले हक को मानना सिर्फ आदमी के ज़ुर्म को साबित करेगा न कि वह उसे इनाम का मुस्तहक बनाए। ऐसा इंकार सिर्फ इस बात का सबूत होगा कि आदमी ने अपनी बेपरवाही की वजह से हक को ना जाना। अगर वह उसके बारे में संजीदा होता तो यकीनन वह उसे जान लेता।

इसके मुकाबले में खुदा के वफ़ादार बंदे हैं जिनकी सबसे नुमायां खुसूसियत सब्र है। हकीकत यह है कि ईमान की ज़िंगी सरासर सब्र की ज़िंगी है। अपने जैसे एक इंसान की जवान से हक का एलान सुनकर उसे मान लेना, आदतों और मस्तेहतों पर कायमशुदा ज़िंदगी को हक और उसूल की बुनियाद पर कायम करना, लोगों की तरफ से पेश आने वाली ईजाओं (यातनाओं) को खुदा के खातिर नजरअंदाज करना, हक के मुख़ालिफ़ीन की डाली हुई मुसीबतों से पस्तहिम्मत न होना, ये सब ईमान के लाज़िमी मराहिल (चरण) हैं और आदमी सब्र के बग़ैर इन मराहिल से कामयाबी के साथ गुजर नहीं सकता।

फिरजौन को अपने इक्तेदार पर और अपने बाग़ों और इमारतों पर घमंड था। हजरत मूसा की हिजरत के बाद फिरजौन और उसका लश्कर समुद्र में गर्क कर दिया गया। ओलों और टिड्डियों ने मिन्न के सरसब्ज व शादाब बागात को उजाड़ दिया और जलजलों ने उनकी शानदार इमारतें ढा दीं। दूसरी तरफ हजरत मूसा की चन्द नस्तलों के बाद हजरत दाऊद और हज़रत सुलेमान के ज़माने में बनी इस्राईल अतरफे मिन्न (शाम व फिलिस्तीन) पर कबिज हो गए। निशानियों को झुटलाने वाले हमेशा खुदा के ग़ज़ब के मुस्तहक होते हैं और सब्र करने वाले हमेशा खुदा की नुसरत के।

وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَىٰ قَوْمٍ يَمِيعُكُونُ عَلَىٰ أَصْنَامٍ لَهُمْ ۖ قَالُوا يَمْيُوسَىٰ اجْعَلْ لَنَا إِلَهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ ۚ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَبْهَكُونَ ۝ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ مُتَبَرِّكُونَ مَا لَهُمْ فِيهِ وَبِطْلٌ ۚ مَا كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ قَالَ أَخْبِرُوا اللَّهَِ أَبْغِيكُمْ إِلَهًا وَهُوَ فَضْلُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝ وَإِذْ أَخْبَيْنَاكُمْ مِّنَ الْفِرْعَوْنِ يَسْؤُمُوكُمْ سُوًّا الْعَذَابِ ۖ يَفْقَهُونَ ۖ إِنَّكُمْ لَكُمُوسُوعُونَ ۖ نَسَاءَكُمْ وَفِي ذَٰلِكُمْ بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ۝

७

और हमने बनी इस्राईल को समुद्र के पार उतार दिया। फिर उनका गुजर एक ऐसी कौम पर हुआ जो पूजने में लग रहे थे अपने बुतों के। उन्होंने कहा ऐ मूसा, हमारी इबादत के लिए भी एक बुत बना दे जैसे इनके बुत हैं। मूसा ने कहा, तुम बड़े जाहिल लोग हो। ये लोग जिस काम में लगे हुए हैं वह बर्बाद होने वाला है और ये जो कुछ कर रहे हैं वह बातिल है। उसने कहा, क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और माबूद तुम्हारे

लिए तलाश करूँ हालाँकि उसने तुम्हें तमाम अहले आलम पर फजीलत (श्रेष्ठता) दी है। और जब हमने फिरऔन वालों से तुम्हें नजात दी जो तुम्हें सन्न अजाब में डाले हुए थे। तुम्हारे बेटों को कल्ल करते और तुम्हारी औरतों को जिंदा रहने देते और इसमें तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी बड़ी आजमाइश थी। (138-141)

बनी इस्राईल बहरे अहमर (लाल सागर) के शिमाली (उत्तरी) सिरे को पार करके जजोरा नुमाए सीना में पहुँचे। फिर शिमाल से जुनूब (दक्षिण) की तरफ समुद्र के किनारे-किनारे अपना सफर शुरू किया। इस दर्मियान में किसी मक़म से गुज़रते हुए बनी इस्राईल ने एक कौम को देखा कि वह बुत की परस्तिश में मशगूल है। उस वक़्त बनी इस्राईल के कुछ लोगों ने (न कि सारे बनी इस्राईल ने) यह तकाज़ा किया कि उनके लिए एक बुत बना दिया जाए। आदमी की सबसे बड़ी कमजोरी जाहिरपरस्ती है। वह शैब में छुपे हुए खुदा पर अपना ज़ेहन पूरी तरह जमा नहीं पाता, इसलिए वह किसी न किसी जाहिरी चीज़ में अटक कर रह जाता है। कुछ बेशुऊर लोग पत्थर और धातु के बने हुए बुतों के आगे झुकते हैं। और जो लोग ज़्यादा मुहज्जब (सम्प) हैं वे किसी शख्सियत, किसी कौम या किसी तमद्दुनी (सांस्कृतिक) ढाँचे को अपनी तवज्जोह का मर्कज़ बना लेते हैं।

बनी इस्राईल के कुछ अफ़राद ने जब हज़रत मूसा से जाहिरी बुत गढ़ने की फ़रमाइश की तो आपने फ़रमाया ये लोग जिस काम में लगे हुए हैं वह सब बर्बाद किया जाने वाला है। यानी हमारा मिशन तो यह है कि हम इन जाहिरी खुदाओं को तोड़कर ख़त्म कर दें और आदमी को पूरी तरह सिर्फ़ एक खुदा का परस्तार बनाएं। फिर कैसे मुमकिन है कि हम खुद ही इस किस्म का एक जाहिरी खुदा अपने लिए गढ़ लें।

‘बनी इस्राईल को तमाम अहले आलम पर फजीलत दी’ से मुराद किसी किस्म की नस्ली (श्रेष्ठता) नहीं है बल्कि मंसबी (दायित्वपूर्ण) फजीलत है। यह उसी मअना में है जिसमें उम्मत मुहम्मदी के बारे में कहा गया है कि ‘तुम ख़ैरे उम्मत हो’। अल्लाह तआला की सुन्नत यह है कि वह किसी गिरोह को अपनी किताब का हामिल बनाता है और उसके जरिए दूसरी कौमों तक अपना पैग़ाम पहुँचाता है। क़दीम ज़माने में यह मंसब बनी इस्राईल (यहूद) को हासिल था, ख़ल्मे नुबुव्वत के बाद यह मंसब उम्मत मुहम्मदी को दिया गया।

फिरऔन को यह मौक़ा मिलना कि वह बनी इस्राईल पर ज़ुल्म करे। यह बनी इस्राईल के लिए बतौर आजमाइश था न कि बतौर अजाब। इस तरह की आजमाइश इस लिए होती है कि अहले ईमान को झिंझोड़ कर बेदार किया जाए। यह मालूम किया जाए कि कौन मुश्किल हालात में खुदा के दीन से फिर जाता है और कौन है जो सब्र की हद तक खुदा के दीन पर कायम रहने वाला है।

وَوَعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَاهَا بِعَشْرِ فِتْنَتٍ مِّمَّاتٍ رَبِّهِ أَزْعِجُنَّ
لَيْلَةً وَقَالَ مُوسَى لِأَخِيهِ هَارُونَ خُلْفَنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ

الْمُفْسِدِينَ ۖ وَلَبَّأَجَاء مُوسَى لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ ۚ قَالَ رَبِّ ارْنِي أَنْظُرَ إِلَيْكَ ۚ
قَالَ لَنْ تَرَ بَنِي وَلَكِنْ أَنْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَ بَنِي ۚ
فَلَمَّا تَجَلَّى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَى صَعِقًا ۖ فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ
سُبْحَنَكَ ثُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

और हमने मूसा से तीस रातों का वादा किया और उसे पूरा किया दस मजौद रातों से तो उसके रब की मुद्दत चालीस रातों में पूरी हुई। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे पीछे तुम मेरी कौम में मेरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) करना, इस्लाह (सुधार) करते रहना, और बिगाड़ पैदा करने वालों के तरीके पर न चलना। और जब मूसा हमारे वक़्त पर आ गया और उसके रब ने उससे कलाम किया तो उसने कहा, मुझे अपने को दिखा दे कि मैं तुझे देखूँ। फ़रमाया, तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकते। अलबत्ता पहाड़ की तरफ़ देखो, अगर वह अपनी जगह कायम रह जाए तो तुम भी मुझे देख सकोगे। फिर जब उसके रब ने पहाड़ पर अपनी तजल्ली (आलोक) डली तो उसे ख़त्म कर दिया। और मूसा बेहोश होकर गिर पड़ा। फिर जब होश आया तो बोला, तू पाक है, मैंने तेरी तरफ़ रज़ूअ किया और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूँ। (142-143)

हज़रत हारून हज़रत मूसा के बड़े भाई थे, हज़रत मूसा की उम्र उनसे तीन साल कम थी। मगर नुबुव्वत अस्लान हज़रत मूसा को मिली और हज़रत हारून उनके साथ सिर्फ़ मददगार की हैसियत से शरीक किए गए। इससे अंदाज़ा होता है कि दीनी ओहदों की तक्सीम में अस्ल अहमियत इस्तेव्दा (क्षमता) की है न कि उम्र या इसी किस्म की दूसरी इजाफ़ी चीज़ों की।

हज़रत मूसा को मिन्न में दावती अहकाम दिए गए थे और सहराए सीना में पहुँचने के बाद पहाड़ी पर बुलाकर कानूनी अहकाम दिए गए। इससे खुदाई अहकाम की तर्तीब मालूम होती है। आम हालात में खुदापरस्तों से जो चीज़ मलूब है वह यह कि वे जाती ज़िंदगी को दुरुस्त करें और खुदा के परस्तार बनकर रहें। इसी के साथ दूसरों को भी तौहीद व आख़िरत की तरफ़ बुलाएं। मगर जब अहले ईमान आज़ाद और बाइस्त्रियार गिरोह की हैसियत हासिल कर लें, जैसा कि सहराए सीना में बनी इस्राईल थे, तो उन पर यह फ़र्ज़ भी आयद हो जाता है कि अपनी इज्तिमाई ज़िंदगी को शरई कानूनों की बुनियाद पर कायम करें।

हज़रत मूसा ने अपनी शैर मौजूदगी के लिए जब हज़रत हारून को बनी इस्राईल का निगरा बनाया तो फ़रमाया : ‘इस्लाह (सुधार) करते रहना और बिगाड़ पैदा करने वालों के तरीके पर न चलना’ (142)। इससे मालूम होता है कि इज्तिमाई सरबराह (प्रमुख) के लिए अपनी जिम्मेदारियों को अदा करने का बुनियादी उसूल क्या है। वह हैइस्लाह और मुस्किन (उपद्रवियों) की पैरवी न करना। इस्लाह से मुराद यह है कि मुक़्तलिफ़ अफ़राद के

दर्मियान इंसानों का तवाजु (संतुलन) किसी हाल में टूटने न दिया जाए। हर एक को वही मिले जो उसे अजरू अदूल (न्यायानुसार) मिलना चाहिए और हर एक से वही छीना जाए जो अजरू अदूल उससे छीना जाना चाहिए। इस इस्लाही अमल में अक्सर उस वक्त खराबी पैदा होती है जबकि सरदार 'मुफिदीन' (उपद्रवियों) की पैरवी करने लगे। यह पैरवी कभी इस शक्त में होती है कि उसके मुकर्रबीन (समीपवर्ती) अपने जाती अग्राज की बिना पर जो कुछ कहें वह उन्हें मान ले। और कभी इस तरह होती है कि मुफिदीन की ताकत से खौफजादा होकर वह खामोशी इस्त्रियार कर ले।

हजरत मूसा ने खुदा को देखना चाहा और जब मालूम हुआ कि खुदा को देखना मुमकिन नहीं तो उन्होंने तौबा की और बगैर देखे ईमान का इकरार किया। इंसान का इस्तेहान यह है कि वह देखे बगैर खुदा को माने। खुदा को देखना आखिरत (परलोक) का एक इनाम है फिर वह मौजूदा दुनिया में क्योंकि मुमकिन हो सकता है।

قَالَ يٰمُوسَىٰ اِنِّى اصْطَفَيْتَكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَتِي وَبِكَلَامِى فَخُذْ مَا اَتَيْتَكَ وَكُنْ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝ وَكَتَبْنَا لَهُ فِى الْاَنْوَٰرِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۝ مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۝ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يٰاٰخِذُوْا بِاَحْسَنِهَا سٰوَرِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ۝

अल्लाह ने फरमाया, ऐ मूसा मैंने तुम्हें लोगों पर अपनी पैगम्बरी और अपने कलाम के जरिए से सरफराज किया। पस अब तो जो कुछ मैंने तुम्हें अता किया है। और शुकुगुजारों में से बने। और हमने उसके लिए तख्तियों पर हर किसम की नसीहत और हर चीज की तफसील लिख दी। पस इसे मजबूती से पकड़ो और अपनी कैम को हुम्म दो कि इनके बेहतर मफहूम (भावार्थ) की पैरवी करें। अनकरीब मैं तुम्हें नाफरमानों का घर दिखाऊंगा। (144-145)

हजरत मूसा को पहली बार नुबुव्वत पहाड़ के ऊपर मिली थी और दूसरी बार भी तौरात के अहकाम उन्हें पहाड़ पर बुलाकर दिए गए। यह इस बात का एक इशारा है कि खुदा का फैज़न हासिल करने की सब से ज्यादा मौजूजगह फितरत का माहौल है न कि इंसानी आबादियों का माहौल। इंसानों की पुरशोर दुनिया से निकल कर आदमी जब पथरों और दरख्तों की खामोश दुनिया में पहुंचता है तो वह अपने आपको खुदा के करीब महसूस करने लगता है। वह मस्तूई (कृत्रिम) एहसासात से खाली होकर अपनी फितरी (स्वाभाविक) हालत पर पहुंच जाता है। यह किसी आदमी के लिए बेहतरीन लम्हा होता है जबकि वह बेआमेज फितरी (सहज-स्वाभाविक) अंदाज में सोचे और एकसू (एकाग्र) होकर अपने रब से जुड़ सके।

पैगम्बर आम इंसानों में से एक इंसान होता है। वह किसी भी एतबार से कोई गैर इंसानी मख़ूक नहीं होता। उसकी खुसूसियत सिर्फ यह होती है कि वह अपनी पैदाइशी इस्तेदाद (क्षमता) को महफूज रखने में कामयाब हो जाता है इसलिए खुदा उसे चुनता है कि वह उसके

पैगाम का हामिल (धारक) बने और लोगों के दर्मियान उसकी काबिले एतमाद नुमाइंदगी करे। हजरत मूसा उस वक्त अपनी कैम के बेहतरीन शख्स थे इसलिए खुदा ने उन्हें अपना पैगम्बर चुना और उन पर अपना कलाम उतारा।

खुदा के कलाम में अगरचे हिदायत से मुतअल्लिक हर किसम की जरूरी तफसील मौजूद होती है मगर वह अल्फाज में होती है और मौजूदा इस्तेहानी दुनिया में बहरहाल इसका इस्फाज बाकी रहता है कि आदमी इन अल्फाज की गलत तशरीह करके उसे गैर मत्लूब मजना पहना दे। मगर जो शख्स हिदायत के मामले में संजीदा हो और खुदा की पकड़ से डरता हो वह इन अल्फाज से वही मजना लेगा जो कलामेइलाही की शायानेशान है न कि वह जो उसके नफस को मरगूब हो।

मैं अनकरीब तुम्हें नाफरमानों का घर दिखाऊंगा' यानी अपने इस सफर में आगे चलकर तुम उन कैमों के खंडहरों से गुजरोगे जिन्हें इससे पहले खुदा की हिदायत दी गई थी। मगर वे उसे मजबूती के साथ पकड़ने में नाकाम साबित हुए। हालात के दबाव या जज्बात के मैलान को नजरअंदाज करके वे उस पर ठीक तरह कायम न रह सके। चुनांचे उनका अंजाम यह हुआ कि वे हलाक कर दिए गए। अगर तुमने ऐसा किया तो तुम्हारा अंजाम भी दुनिया व आखिरत में वही होगा जो उन पिछली कैमों का हुआ। खुदा का मामला जैसा एक कैम के साथ है वैसा ही मामला दूसरी कैम के साथ है। अदले इलाही (ईश-न्याय) की मीजान (तुला) में एक कैम और दूसरी कैम के दर्मियान कोई फर्क नहीं।

इस दुनिया में यह मौका है कि आदमी अपनी खुदसाख्ता तशरीह से खुदा के अहसन (अच्छे) कलाम का कोई गैर अहसन मफहूम (भावार्थ) निकाल ले। मगर यह ऐसी जसारात है जो फरमांवरदारी के दावेदार को भी नाफरमानों की फेहरिस्त में शामिल कर देती है।

سَاحِرِفْ عَنْ اٰتِىَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَا يُؤْمِنُوْا بِهَا وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۝ وَاِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغٰى يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۝ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِآٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِآٰتِنَا وَّلِقَاءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَآ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

मैं अपनी निशानियों से उन लोगों को फेर दूंगा जो जमीन में नाहक घमंड करते हैं। और अगर वे हर किसम की निशानियां देख लें तब भी उन पर ईमान न लाएं। और अगर वे हिदायत का रास्ता देखें तो उसे न अपनाएं और अगर गुमराही का रास्ता देखें तो उसे अपना लेंगे। यह इस सबब से है कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनकी तरफ से अपने को ग्राफिल रखा। और जिन्होंने हमारी निशानियों को और आखिरत की मुलाकात को झुठलाया उनके आमाल अकारत हो गए और वे बदले में वही पाएंगे जो वे कहते थे। (146-147)

दुनिया में जिंदगी गुजारने की दो सूरते हैं। एक यह कि आदमी ने अपने आंख और कान खुले रखे हों। वह चीजों को उनके असली रंग में देखता और सुनता हो। ऐसे आदमी के सामने हक आएगा तो वह उसे पहचान लेगा। दुनिया में बिखरी हुई खुदाई निशानियां उसे जो सबक देंगी वह उन्हें पा लेगा। दूसरी सूरत यह है कि आदमी मुत्कबिराना नफिसयात (अहंभाव) के साथ जी रहा हो। वह जमीन में इस तरह रहता हो जैसे वह उसका मालिक हो, उसे अपने जाती दाअियात (निजी भावनाओं) के सिवा किसी और चीज की परवाह न हो। वह समझता हो कि यहां जो कुछ उसे मिल रहा है वह अपनी लियाकत की वजह से मिल रहा है। अपनी मिली हुई चीजों में उसे किसी और की मर्जी का लिहाज करने की जरूरत नहीं।

इस दूसरे आदमी का इस्तगना (उदासीनता) उसके लिए कुबुलेहक में रुकावट बन जाएगा।

पहले आदमी की नफिसयात लेने वाली नफिसयात होती है। वह अपने खुले जेहन की वजह से खुदा के हर इशारे को पढ़ लेता है। और फौरन अपने आपको उसके मुताबिक ढाल लेता है। इसके बरअक्स दूसरे आदमी की नफिसयात बेनियाजी (उदासीनता) की नफिसयात होती है। उसके सामने हक के दलाइल आते हैं मगर वह उन्हें गैर अहम समझ कर नजरअंदाज कर देता है। उसके सामने कुदरत खामोश जवान में अपना नगमा छेड़ती है मगर वह उस पर ध्यान देने की जरूरत नहीं समझता। उसके अपने से बाहर किसी सच्चाई की तरफ राबत नहीं होती। मौत के बाद आने वाली दुनिया सिर्फ पहले लोगों के लिए है। दूसरे लोग खुदा की अबदी (चिरस्थायी) दुनिया में उसी तरह नजरअंदाज कर दिए जाएंगे जिस तरह मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में वे खुदा की बात को नजरअंदाज किए हुए थे।

गुमराही का रास्ता नफस (अंतःकरण) के मुहरिकात (प्रेरकों) के तहत बनता है और हिदायत का रास्ता वह है जो नफस और माहौल के असरात से ऊपर उठकर खालिस खुदा के लिए वुजुद में आता है। अब जो लोग अपनी जात की सतह पर जी रहे हों, जो सिर्फ अपने नफस के अंदर उभरने वाले दाअियात (भावनाओं) को जानते हों वे गुमराही के रास्ते पर ऐन अपनी चीज समझ कर उसकी तरफ दौड़ पड़ें। हिदायत का रास्ता उनका अपने मिजाज के एतबार से अजनबी दिखाई देगा इसलिए वे उसकी तरफ बढ़ने में भी नाकाम साबित होंगे।

बड़ाई की नफिसयात उस चीज को आसानी से कुबूल कर लेती है जिसमें उसकी बड़ाई बाकी रहे। और जहां उसकी बड़ाई खत्म होती हो उससे उसे कोई दिलचस्पी नहीं होती।

وَ اتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ۝ وَلَبَّآ سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوا قَالُوا لَئِنْ لَمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝ وَلَبَّآ رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي مِنْ بَعْدِي أَعِمِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ وَأَلْقُوا

الْأَنوَاعَ وَاتَّخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضَعُّفُونِي وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِإِخْوِي وَأَدْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝

और मूसा की कौम ने उसके पीछे अपने जेवरों से एक बछड़ा बनाया, एक थड़ जिससे बैल की सी आवाज निकलती थी। क्या उन्होंने नहीं देखा कि वह न उनसे बोलता है और न कोई राह दिखाता है। उसे उन्होंने माबूद (पूज्य) बना लिया और वे बड़े जालिम थे। और जब वे पछताए और उन्होंने महसूस किया कि वे गुमराही में पड़ गए थे तो उन्होंने कहा, अगर हमारे रब ने हम पर रहम न किया और हमें न बख्शा तो यकीनन हम बर्बाद हो जाएंगे। और जब मूसा रंज और गुस्से में भरा हुआ अपनी कौम की तरफ लौटा तो उसने कहा, तुमने मेरे बाद मेरी बहुत बुरी जानशीनी (प्रतिनिधित्व) की। क्या तुमने अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर ली। और उसने तख्तियां ढाल दीं और अपने भाई का सिर पकड़ कर उसे अपनी तरफ खींचने लगे। हारून ने कहा, ऐ मेरी मां के बेटे, लोगों ने मुझे दबा लिया और करीब था कि मुझे मार डालें। पस तू दुश्मनों को मेरे ऊपर हंसने का मौका न दे और मुझे जालिमों के साथ शामिल न कर। मूसा ने कहा, ऐ मेरे रब माफ कर दे मुझे और मेरे भाई को और हमें अपनी रहमत में दाखिल फरमा और तू सबसे ज्यादा रहम करने वाला है। (148-151)

बनी इस्राईल के गिरोह में उस वक्त सामिरी नाम का एक बहुत शातिर आदमी था। हजरत मूसा जब बनी इस्राईल को हजरत हारून की निगरानी में छोड़कर पहाड़ पर चले गए तो उसने लोगों को बहकाया। उसने लोगों से जेवरात लेकर उन्हें बछड़े की सूरत में ढाल दिया। बुतगरी (मूर्ति शिल्प) के कदीम मिस्त्री फन के मुताबिक बछड़े की यह मूर्त इस तरह बनाई गई थी कि जब उसके अंदर से हवा गुजरे तो उसके मुंह से ख्वाार (बैल की डकार की सी आवाज) आए। लोग आम तौर पर अजूबापसंद होते हैं। चुनांचे इतनी सी बात पर बहुत से लोग शुबह में पड़ गए और उसके बारे में खुदाई तसव्वुर (धारण) कयम कर लिया। एक शातिर आदमी ने कुछ अवामी बातें करके भीड़ की भीड़ अपने गिर्द जमा कर ली। उसका जोर इतना बढ़ा कि हजरत हारून और संभवतः उनके चन्द साथियों के सिवा कोई खुल्लम खुल्ला एहतेजाज (प्रतिरोध) करने वाला भी न निकला। जाहिर है कि जिस अवामी तूफान में पैगम्बर के नायब की आवाज दब जाए वहां कैसे कोई बोलने की जुरत कर सकता है।

अवाम का जौक हर जमाने में यही रहा है और आज भी वह पूरी तरह मौजूद है। आज भी एक हौशियार आदमी अपनी तकरीरों और तहरीरों से किसी न किसी 'ख्वाार' पर लोगों की भीड़ जमा कर लेता है। लोग यह नहीं सोचते कि जिस चीज के गिर्द वे जमा हो रहे हैं वह महज एक तमाशा है न कि सचमुच कोई हकीकत। कोई संजीदा आदमी अगर इस तमाशे की हकीकत को खेलता है तो उसका वही अंजाम होता है जो बनी इस्राईल के दर्मियान हजरत हारून का हुआ।

हजरत मूसा ने जब देखा कि बनी इस्राईल मुशिरकाना फेअल में मशगूल हैं तो उन्हें गुमान हुआ कि हजरत हारून ने इस्लाह (सुधार) के सिलसिले में कोताही की है। चुनांचे गुस्से में उन्हें पकड़ लिया। मगर जैसे ही उन्होंने बताया कि उन्होंने अपनी इस्लाह की कोशिश में कोई कमी न की थी तो उनके बयान के बाद फौरन रुक गए और अपने लिए और हजरत हारून के लिए खुदा से दुआ करने लगे। एक मोमिन को दूसरे मोमिन के बारे में बड़ी से बड़ी गलतफहमी हो सकती है मगर मामले की वजाहत के बाद वह ऐसा हो जाता है जैसे उसे गलतफहमी पैदा ही नहीं हुई थी।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذَلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ۖ وَالَّذِينَ عَمِلُوا الشَّيْءَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا
وَأٰمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا غَفُورٌ رَّحِيمٌ

वेशक जिन लोगों ने बछड़े को मावूद (पूज्य) बनाया उन्हें उनके रब का ग़जब पहुंचेगा और जिल्लत दुनिया की जिंदगी में। और हम ऐसा ही बदला देते हैं झूठ बांधने वालों को। और जिन लोगों ने बुरे काम किए फिर इसके बाद तौबा की। और ईमान लाए तो वेशक इसके बाद तेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (152-153)

बनी इस्राईल के बछड़ा बनाने को यहां इफ्तिरा (झूठ बांधना) कहा गया है। ऐसा क्यों है। इसकी वजह यह है कि उन्होंने यह बातिल काम हक के नाम पर किया था। उन्होंने अपना यह काम खुदा के दीन का इंकार करके नहीं किया था बल्कि खुदा के दीन को मानते हुए किया था। अपनी इस बेदीनी को वे दीनी अल्फाज में बयान करते थे। मुशिरकीन के आम अकीदे की तरह, वे कहते थे कि खुदा उन की गढ़ी हुई मूरत में हुलूल कर आया है। इसलिए उसकी इबादत खुद खुदा की इबादत के हममअना है। यहां तक कि इस फेअल (कृत्य) के लीडर सामिरी ने उसके हक में कश्फ व करामत (दिव्य निर्देश) की दलील भी तलाश कर ली। उसने कहा कि मैंने ख़्वाब में देखा कि जिब्रील आए हैं और मैंने उनके घोड़े के नक्शे कदम से एक मुट्ठी मिट्टी उठाई है और एक बछड़ा बनाकर उसके अंदर वह मिट्टी डाल दी तो मुकद्दस (पवित्र) मिट्टी की बरकत से वह बछड़ा बोलने लगा। गोया सामिरी और उसके साथी खुदा की तरफ ऐसी बात मंसूब कर रहे थे जो खुदा ने खुद नहीं बताई थी। इस किस्म की निस्वत इफ्तिरा (खुदा पर झूठ बांधना) है चाहे वह एक सूत में हो या दूसरी सूत में।

कोई दीन का हामिल (धारक) गिरोह इस किस्म का इफ्तिरा करता है, वह बेदीनी के फेअल को दीन का नाम दे देता है, तो यह चीज खुदा के ग़जब को शदीद तौर पर भड़का देती है। उसके मुतअल्लिक यह फैसला किया जाता है कि उसे आखिरत से पहले दुनिया की जिंदगी ही में रुस्वाकून सजा दी जाए। बनी इस्राईल के लिए यह दुनियावी सजा इस सूत में आई कि हजरत मूसा के हुक्म पर हर कबीले के मुख़ि़स जिम्मेदारों ने अपने अपने कबीले के उन अफ़राद को पकड़ा जिन्होंने बछड़ा बनाने के इस काम में हिस्सा लिया था और इस फितने में बराहिरास्त शरीक रहे थे। इसके बाद हर कबीले के अफ़राद ने खुद अपने हाथ से अपने कबीले के मुजरिमीन

को क़त्ल कर दिया। इस दर्दनाक अंजाम से सिर्फ वे लोग बचे जो अपने इस फेअल पर सख़्त शर्मिन्दा हुए और उन्होंने अपने जुर्म का इकरार करते हुए तौबा की।

बनी इस्राईल के जुर्म पर खुदा ने जिस सजा का फैसला किया उसका निफ़ज ख़ुद उनकी अपनी तलवारों से किया गया। ताहम इस किस्म के फैसले का निफ़ज कभी अग़्यार (अन्यों) की तलवारों के जरिए किया जाता है। और अग़्यार की तलवारों से इसका निफ़ज उस वक़्त होता है जबकि सजा के साथ रुस्वाई को भी शामिल कर देने का फैसला किया गया हो।

गुनाह पर तौबा यह है कि गुनाह हो जाने के बाद आदमी अपने उस फेअल पर शदीद शर्मिन्दा हो। तौबा की अस्ल हकीकत शर्मिन्दगी है। यह शर्मिन्दगी इस बात की ज़मानत है कि आदमी अपने पूरे वजूद से फैसला करे कि आइंदा वह ऐसा फेअल (कृत्य) न करेगा। कोई गुनाहगार जब इस तरह शर्मिन्दगी का और आइंदा के लिए परहेज के अज्म (संकल्प) का सुबूत दे देता है तो गोया कि वह दुबारा ईमान लाता है, दीन के दायरे से निकल जाने के बाद वह दुबारा खुदा के दीन में दाख़िल होता है।

وَلَهَا سَكَتٌ عَن مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَكْوَابَ ۖ وَفِي سُخْرِيهَا هُدًى
وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ۖ وَاخْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا
رِّمْقَاتِنَا فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ
وَإِلَّاهِي أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ فِيمَنَا إِنَّ هِيَ إِلَّا فَتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَن
تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن تَشَاءُ إِنَّتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ
خَيْرُ الْغَافِرِينَ ۖ وَكُتِبَ لَنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُنَا
إِلَيْكَ ۖ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَن أَشَاءُ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ
فَسَاكِبْهَا لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ۝

और जब मूसा का गुस्सा थमा तो उसने तख़्तियां उठाई और जो उनमें लिखा हुआ था उसमें हिदायत और रहमत थी उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते हैं। और मूसा ने अपनी टीम में से सत्तर आदमी चुने हमारे फ़ुकर्र किए हुए वक़्त के लिए। फिर जब उन्हें जलजले ने पकड़ा तो मूसा ने कहा ऐ रब, अगर तू चाहता तो तू पहले ही इन्हें हलाक कर देता और मुझे भी। क्या तू हमें ऐसे काम पर हलाक करेगा जो हमारे अंदर के बेवकूफ़ों ने किया। ये सब तेरी आजमाइश है तू इससे जिसे चाहे गुमराह कर दे और जिसे चाहे हिदायत दे। तू ही हमारा थामने वाला है। पस हमें बख़्श दे और हम पर रहम फरमा, तू सबसे बेहतर बख़्शने वाला है। और तू हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे और आखिरत में भी। हमने तेरी तरफ़ रुजूअ किया। अल्लाह ने कहा, मैं अपना अज़ाब उसी पर डालता हूं जिसे चाहता हूं और मेरी रहमत शामिल है हर चीज

को। पस मैं उसे लिख दूंगा उनके लिए जो डर रखते हैं और जकात अदा करते हैं और हमारी निशानियों पर ईमान लाते हैं। (154-156)

बनी इस्राईल के बछड़ा बनाने से यह जाहिर हुआ था कि उनके अंदर खुदा पर वह यकीन नहीं है जो होना चाहिए। चुनांचे उन्हें पहाड़ पर बुलाया गया। हजरत मूसा मुकर्रह वक्त के मुताबिक बनी इस्राईल के सत्तर नुमाइंदा अफराद को लेकर दुबारा कोहेतूर पर गए। वहां खुदा ने गरज चमक और जलजले के जरिए ऐसे हालात पैदा किए जिससे बनी इस्राईल के लोगों के अंदर इनाबत व खशियत (ईशभय) पैदा हो। चुनांचे इसके बाद वे खुदा के सामने रोए गिड़गिड़ाए और इज्तिमाई (सामूहिक) तौबा की। उन्होंने अहद किया कि वे तौरात के अहकाम पर सच्चाई के साथ अमल करेंगे।

इस मौके पर हजरत मूसा ने दुआ कि 'ऐ हमारे रब, हमारे लिए दुनिया और आखिरत में भलाई लिख दे' अल्लाह तआला ने इसके जवाब में फरमाया 'मैं जिस पर चाहता हूँ अपना अजाब डालता हूँ और मेरी रहमत हर चीज को शामिल है' हजरत मूसा की दुआ बईसियत मज्मूई अपनी पूरी उम्मत के लिए थी। मगर अल्लाह तआला ने अपने जवाब में वाजेह कर दिया कि नजात और कामयाबी कोई गिरोही चीज नहीं है। इसका फैसला हर हर फर्द के लिए उसके जाती अमल की बुनियाद पर होता है। अगरचे मैं तमाम रहम करने वालों से ज्यादा रहीम हूँ। मगर जो शख्स अमले सालेह (सत्कर्मों) का सबूत न दे वह मेरी पकड़ से बच नहीं सकता, चाहे वह किसी भी गिरोह से तअल्लुक रखता हो।

खुदा की किताब हिदायत व रहमत होती है। वह दुनिया की ज़िंदगी में आदमी के लिए बेहतरीन रहनुमा है और आखिरत में खुदा की रहमत का यकीनी जरिया। मगर खुदा की किताब का यह फायदा सिर्फ उसे मिलता है जो 'डर' रखता हो, जिसे अंदिशा लगा हुआ हो कि मालूम नहीं खुदा मेरे साथ क्या मामला करेगा। ये वे लोग हैं जो सच्चे हक के तालिब होते हैं। उनके सामने जब हक आता है तो वे किसी किस्म की नपिसयाती पेचीदगी में मुब्तिला हुए बगैर उसे पा लेते हैं। इसके बाद खुदा उनके खौफ और उम्मीद का मर्कज बन जाता है। उनका सब कुछ खुदा के लिए वक्फ हो जाता है। उनका डर उनके शुऊर को बेदार कर देता है। उनकी निगाह से तमाम मन्सूई पर्दे हट जाते हैं। खुदा की तरफ से जाहिर होने वाली निशानियों को पहचानने में वे कभी नहीं चूकते। वे अहिंसे की नपिसयात में जीते हैं न कि कनाअत (संतोष) की नपिसयात में।

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ
فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ
لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ
الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَزَرُوا وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي
أُنْزِلَ مَعَهُ ۚ وَلَكُمْ هُمُ الْمُنْفَعُونَ ۝

जो लोग पैरवी करेंगे उस रसूल की जो नबी उम्मी (अनपढ़) है, जिसे वे अपने यहां तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं। वह उन्हें नेकी का हुक्म देता है और उन्हें बुराई से रोकता है और उनके लिए पाकीजा चीजें जाइज ठहराता है और नापाक चीजें हराम करता है और उन पर से वह बोझ और कैदें उतारता है जो उन पर थीं। पस जो लोग उस पर ईमान लाए और जिन्होंने उसकी इज्जत की और उसकी मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उसके साथ उतारा गया है तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं। (157)

बनी इस्राईल देखते चले आ रहे थे कि जितने नबी आते हैं वे सब उनकी अपनी कौम में आते हैं। आखिरी रसूल खुदा के मंसूवे के मुताबिक बनी इस्राईल में आने वाला था। इसलिए खुदा ने बनी इस्राईल के नबियों के जरिए उन्हें पहले से इनकी खबर कर दी। उनकी किताबों में कसरत से इसकी पेशीनगोइयां अभी तक मौजूद हैं। ऐसा इसलिए हुआ ताकि जब आखिरी रसूल आए तो वे किसी बड़े फितने में न पड़ें और आसानी से उसे पहचान कर उसके साथी बन जाएं।

पैगम्बरे इस्लाम पढ़े लिखे न थे। आप उम्मी रसूल थे। उम्मियत के साथ पैगम्बरी, जो पैगम्बरे इस्लाम हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में आखिरी और इतिहाई सूरत में जमा हुई यही हमेशा के लिए अल्लाह तआला की सुन्नत है। मअरफते खुदावंदी का इन्हार हमेशा 'उम्मियत' की सतह पर होता है। यानी वह किसी ऐसे शख्स के जरिए जाहिर किया जाता है जो दुनियावी मेयार के लिहाज से इस किस्म के अजैम काम का अहल न समझा जाता हो। तारीख (इतिहास) में कभी ऐसा नहीं हुआ कि खुदा ने बुकरात और अफलातून को अपना पैगम्बर बनाकर भेजा हो।

दीन की अस्त रूह अल्लाह का खौफ और आखिरत की फिक्र है। मगर बाद के जमाने में जब अंदरूनी रूह सर्द पड़ती है तो जवाहिर (वाह्यता) का जोर बहुत बढ़ जाता है। अब गैर जरूरी मूशिगाफियां (कुतर्क) करके नए-नए मसाइल बनाए जाते हैं। रूहानियत के नाम पर मशकों और रियाजतों (साधना) का एक पूरा ढांचा खड़ा कर लिया जाता है। अवामी तवह्हुमात (अंधविश्वास) मुकद्दस होकर नई शरीअत की सूरत इख्तियार कर लेते हैं। यहूद का यही हाल हो चुका था। उन्होंने खुदा के दीन के नाम पर तवह्हुमात और जकड़बंदियों का एक खुदसाख्ता ढांचा बना लिया था और उसे खुदा का दीन समझते थे। पैगम्बरे इस्लाम ने उनके सामने दीन को उसकी फितरी सूरत में पेश किया। गैर जरूरी पाबंदियों को खत्म करके सादा और सच्चे दीन की तरफ उनकी रहनुमाई फरमाई।

पैगम्बर जब आता है तो सबसे बड़ी नेकी यह होती है कि उस पर ईमान लाया जाए। मगर यह ईमान आम मअनों में महज एक कलिमा पढ़ाना नहीं है। यह बेरूह ढांचे वाले दीन से निकल कर जिंदा शुऊर वाले दीन में दाखिल होना है। साबिका (पूर्ववर्ती) मजहबी ढांचे से आदमी की वाबस्तगी महज तारीखी रिवायात या नस्ती रवाज के जोर पर होती है। मगर नए पैगम्बर के दीन को जब वह कुबूल करता है तो वह उसे शुऊरी फैसले के तहत कुबूल करता है, वह रस्म से निकल कर हकीकत के दायरे में दाखिल होता है। बजाहिर यह एक सादा सी

बात मालूम होती है। मगर यह सादा बात हर दौर में इंसान के लिए मुश्किलतरीन बात साबित हुई है।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ فَأَمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ
الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ١٥٠ وَمِنْ قَوْمِ
مُوسَى أَنَّهُ يُهَدُّونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ١٥١

कहो ऐ लोगो, बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम सबकी तरफ जिसकी हुक्मत है आसमानों और जमीन में। वही जिलाता है और वही मारता है। पस ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके उम्मी रसूल व नबी पर जो ईमान रखता है अल्लाह और उसके कलिमात (वाणी) पर और उसकी पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ। और मूसा की कौम में एक गिरोह ऐसा भी है जो हक के मुताबिक रहनुमाई करता है और उसी के मुताबिक इंसफ करता है। (158-159)

‘कहो मैं सब इंसानों की तरफ अल्लाह का रसूल हूँ’ का मतलब यह नहीं है कि दूसरे तमाम पैगम्बर कौमी पैगम्बर थे और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैनुलअक्वामी (अन्तर्राष्ट्रीय) पैगम्बर हैं। यह बात बतौर तकाबुल (तुलना) नहीं कही गई है बल्कि बतौर वाक्या कही गई है।

अस्त यह है कि पैगम्बरों इस्लाम की दो बेअसतें (आगमन) हैं। एक बराहेरास्त, दूसरी बिलवास्ता उम्मत। आपकी बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) बेअसत अरब के लिए थी (अनआम 92) और आपकी बिलवास्ता (परोक्ष) बेअसत सारे आलम के लिए है (हज्ज 78)। हुक्मन (सिद्धांततः) यही नौइयत खुदा के तमाम पैगम्बरों की थी। मगर दूसरे पैगम्बरों का दीन महफूज हालत में बाकी न रह सका इसलिए यह मुमकिन नहीं हुआ कि वे तमाम आलम के लिए नजीर व बशीर (डराने और खुशखबरी देने वाले) बनते। आज मसीहियत की तब्दील सारे आलम में बहुत बड़े पैमाने पर हो रही है। इसके बावजूद हजरत मसीह की नुबुव्वत सिर्फ फिलिस्तीन तक महदूद होकर रह गई। क्योंकि हजरत मसीह के बाद उनकी तालीमात अपनी अस्त हालत में बाकी नहीं रहीं। आज मसीहियत के नाम से जो दीन लोगों तक पहुंच रहा है वह हकीकतन सेंट पॉल का दीन है न कि मसीह का दीन। गोया नबियों के वुसुअतेकार (कार्यक्षेत्र) में जो फर्क है वह फर्कबफ्तबार वाक्या है न कि बफ्तबार तफ्तीज (फ़रक)।

पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) अरबी के मुतअल्लिक बाइबल में यह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) है कि जमीन के सब कबीले उसके वसीले से बरकत पाएंगे (पैदाइश बाब 12)। सब कौमों तक आपकी बरकत पहुंचना इसलिए मुमकिन हो सका कि आपका लाया हुआ दीन महफूज (सुरक्षित) है। हजरत मूसा और हजरत मसीह का दीन महफूज नहीं। इसलिए बजहिर इसकी आवाज सब तक पहुंच कर भी उसकी बरकत सब तक न पहुंच सकी।

अरब में यहूदी कबीले आबाद थे। ये वे लोग थे जिन्हें यह फख्र था कि उनके पास खुदा की मुकद्दस किताब (दिव्य ग्रंथ) है। ऐसे लोग हमेशा अपने से बाहर किसी सच्चाई को मानने के लिए सबसे ज्यादा सख्त होते हैं। उनका यह एहसास कि वे सबसे बड़ी सच्चाई को लिए हुए हैं उनके लिए किसी दूसरे की तरफ से आने वाली सच्चाई को कुबूल करने में रुकावट हो जाता है। यही हाल यहूद का हुआ है। उनकी बहुत बड़ी अक्सरियत जिद और तअस्सुब की नफिसयात में मुब्तिला हो गई। सिर्फ चन्द लोग (अबुल्लाह बिन सलाम बौरह) ऐसे निकले जिन्होंने खुले जेहन के साथ इस्लाम को देखा। उन्होंने अपनी दुनियावी इज्जत की परवाह किए बौर उसकी सदाकत (सच्चाई) का एलान किया और अपनी दुनियावी जिंदगी को उसके हवाले कर दिया।

‘रसूल ईमान रखता है अल्लाह पर और उसके कलिमात (वाणी) पर’ यह जुमला बताता है कि फलसफियों के खुदा और पैगम्बर के खुदा में क्या फर्क है। फलसफी का खुदा एक मुजर्द रूह (निर्जीव) है। उसे मानना ऐसा ही है जैसे कायनात में कुव्वते कशिश (गुरुत्वाकर्षण शक्ति) को मानना। कुव्वते कशिश न बोलती और न हुक्म देती। मगर पैगम्बर का खुदा एक जिंदा और बाशुऊर खुदा है। वह इंसानों से हमकलाम होता है। वह अपने बंदों को हुक्म देता है और उस हुक्म के मानने या न मानने पर हर एक के लिए इनाम या सजा का फैसला करता है।

وَقَطَعْنَاهُمْ اِثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ۚ وَاَوْحَيْنَا اِلَى مُوسٰى اِذَا اسْتَسْقٰى قَوْمَهٗ ۚ اَنْ اَضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْبَجَسَتْ مِنْهُ اِثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۚ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنْاْسٍ مَّشْرَبُهُمْ وَظَلَمْنَا عَلَيْهِمُ الْغَبَامَ ۚ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّٰنَ وَالسَّلٰوٰى كُلُّوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ۚ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْا اَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝ وَاِذْ قِيْلَ لَهُمْ اَسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَاَدْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْئَتَكُمْ ۚ سَنُرِيْذِ الْمُتَحَسِّنِيْنَ ۝ فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ ۚ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ ۚ وَمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝

और हमने उन्हें बारह घरानों में तक्सीम करके उन्हें अलग-अलग गिरोह बना दिया। और जब मूसा की कौम ने पानी मांगा तो हमने मूसा को हुक्म भेजा कि फलां चट्टान पर अपनी लाठी मारो तो उससे बारह चशमे (जलस्रोत) फूट निकले। हर गिरोह ने अपना पानी पीने का मकाम मालूम कर लिया। और हमने उन पर बदलियों का साया किया और उन पर मन्न व सलवा उतारा। खाओ पाकीजा चीजों में से जो हमने तुम्हें दी हैं। और उन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा बल्कि खुद अपना ही नुक्सान करते रहे। और जब उनसे कहा गया कि उस बस्ती में जाकर बस जाओ। उसमें जहां से चाहो खाओ और

कहो हमें बख्श दे और दरवाजे में झुके हुए दाखिल हो, हम तुम्हारी ख़ताएं माफ़ कर देंगे। हम नेकी करने वालों को और ज्यादा देते हैं। फिर उनमें से जालिमों ने बदल डाला दूसरा लफ़्ज़ उसके सिवा जो उनके कहा गया था। फिर हमने उन पर आसमान से अजाब भेजा इसलिए कि वे जुल्म करते थे। (160-162)

मिस्र की मुश्किलाना फ़जा से निकाल कर ख़ुदा ने बनी इस्राईल को सहाराए सीना में पहुंचाया। यहां उनकी तंजीम कायम की गई। उन्हें बारह जमाअतों में बांट दिया गया। हर जमाअत के ऊपर एक निगरां था और हजरत मूसा सबके ऊपर निगरां थे।

फिर बनी इस्राईल को खुसूसी तौर पर तमाम जरूरियातें ज़िंदगी अता की गईं। पहाड़ी चशमे निकाल कर उनके लिए पानी फ़राहम किया गया। खुले सहारा में साये के लिए उन पर मुसलसल बदलियां भेजी गईं। उनकी ख़ुराक के लिए मन्न व सलवा उतरा जो बाआसानी उन्हें अपने ख़ेमों के सामने मिल जाता था। उनकी बाकायदा सकूनत के लिए एक पूरा शहर अरीहा (वादी यरदुन में) उनके हवाले कर दिया गया।

अल्लाह तआला ने उनसे कहा कि तुम्हारी तमाम जरूरियात का हमने इंतजाम कर दिया है। अब हिंस और लज्जतपरस्ती में मुक्तिला होकर नापाक चीजों की तरफ न देखो। इसके बजाए कनाअत (संतोष) और अल्लाह के आगे शुक़्रगुजारी का तरीका इस्तिआर करो।

‘बाब (दरवाजा) में झुके हुए दाखिल हो’ यहां बाब से मुराद बस्ती का दरवाजा नहीं है बल्कि हैकल सुलेमानी का दरवाजा है। जमीन में इक्तेदार देने के बाद बनी इस्राईल से कहा गया कि अपनी इबादतगाह में ख़ाशेअ (शालीन) बनकर जाओ और गुनाहों से मफ़िफ़त मांगो। मुसलमानों के यहां जिस तरह काबा को बैतुल्लाह (ख़ुदा का घर) कहा जाता है इसी तरह यहूद के यहां हैकल को बाबुल्लाह (ख़ुदा का फाटक) कहा जाता है। यहूद को हुक्म दिया गया था कि अपने इबादतख़ाने में इज्ज व तवाजोअ के साथ दाखिल होकर अपने रब की इबादत करो और अल्लाह की अज़मत व जलाल को याद करके उसके आगे अपनी कोताहियों का एतराफ करते रहो। मगर यहूद ख़ुदा की नसीहतों को भूल गए। वे ख़ुदा की बताई हुई राह पर चलने के बजाए ख़ुदा के नाम पर खुदसाज़्ज़ा (स्वनिर्मित) राहों पर चलने लगे। उन्होंने इज्ज के बजाए सरकशी का तरीका अपनाया। शुक़ का कलिमा बोलने के बजाए वे बेसब्री के कलिमात बोलने लगे।

यहूद जब बिगाड़ की इस हद को पहुंच गए तो ख़ुदा ने अपनी इनायात उनसे वापस ले ली। रहमत के बजाए उन्हें मुक़ालिफ़ किस्म के अजाबों ने घेर लिया।

وَسَأَلُهُمُ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةً الْبَحْرِ إِذْ يَعْبُدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِثَابُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ لَا تَأْتِيهِمْ كَذَلِكَ نَبْلُوهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۖ وَإِذْ قَالَتْ أُمَةٌ مِّنْهُمْ لَمَنْ تَعْبُدُونَ قَوْمًا لِلَّهِ مُهِلِكُهُمْ أَوْ مُعِدِّ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعِذَةُ اللَّهِ إِلَيْنَا أَعْبُدُكُمْ وَلَكُمْ بَشَرٌ مِّنْ

और उनसे उस बस्ती का हाल पूछो जो दरिया के किनारे थी। जब वे सब (सनीचर) के बारे में तज़ाबुज़ (उल्लंघन) करते थे। जब उनके सब के दिन उनकी मछलियां पानी के ऊपर आतीं और जिस दिन सब न होता तो न आतीं। उनकी आजमाइश हमने इस तरह की, इसलिए कि वे नाफरमानी कर रहे थे। और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अजाब देने वाला है। उन्होंने कहा, तुम्हारे रब के सामने इल्जाम उतारने के लिए और इसलिए कि शायद वे डरें। (163-164)

यहूद को यह तल्कीन की गई थी कि वे हफ्ते का एक दिन (सनीचर) इबादत और ज़िक्र ख़ुदा के लिए ख़ास रखें। उस दिन कोई मआशी (आर्थिक) काम न करें। बाइबल के मुताबिक हुक्म यह था कि जो शख्स सब के क़ानून के ख़िलाफ़वर्जी करे वह मार डाला जाए (ख़ुरूज बाब 31)। मगर जब यहूद में बिगाड़ आया तो वे इसकी ख़िलाफ़वर्जी करने लगे। उनके मुस्लेहीन (सुधारकों) ने मुतवज्जह किया तो वे न माने। ताहम मुस्लेहीन ने अपनी कोशिश मुसलसल जारी रखी। हकीकत यह है कि दूसरों की इस्लाह का काम अगरचे बजाहिर दूसरों के लिए होता है मगर वह ख़ुद अपने लिए किया जाता है, इसका असली मुहर्रिक (प्रेरक) अपने आपको अल्लाह के यहां बरीउज्जिम्मा ठहराना है। अगर यह मुहर्रिक ज़िंदा न हो तो आदमी दर्मियान में ठहर जाएगा, वह अपने इस्लाह और तल्कीन के अमल को आख़िर वक्त तक जारी नहीं रख सकता।

यहूद की सरकशी का नतीजा यह हुआ कि मामले को उनके लिए और सख़्त कर दिया गया। बहरे कुलजुम (लाल सागर) की मश्की ख़लीज के किनारे ईला शहर में यहूद की आबादियां थीं। उनकी मईशत (जीविका) का इहिसार ज्यादातर मछलियों के शिकार पर था। ख़ुदा के हुक्म से यह हुआ कि सनीचर के दिन उनके साहिल पर मछलियों की आमद बहुत बढ़ गई। बाकी छः दिनों में मछलियां बहुत कम आतीं। मगर ममनूआ (निषिद्ध) दिन (सनीचर) को वे कसरत से पानी की सतह के ऊपर तैरती हुई दिखाई देतीं।

यह यहूद के लिए बड़ी सख़्त आजमाइश थी। गोया पहले अगर यह नौइयत थी कि सनीचर के अलावा छः जाइज दिनों में शिकार करने का पूरा मौक़ा था तो अब सिर्फ़ एक हराम दिन ही शिकार करने का मौक़ा उनके लिए बाकी रह गया। अब यहूद ने यह किया कि वे हीले के जरिए हराम को हलाल करने लगे। वे सनीचर के दिन शिकार न करते। अलबत्ता वे समुद्र का पानी काट कर बाहर बने हुए हौजों में लाते। सनीचर के दिन मछलियां चढ़तीं तो वे नाली के रास्ते से उनके बनाए हुए हौज में आ जातीं। इसके बाद वे हौज का मुंह बंद करके मछलियों के दरिया में लौटने का रास्ता रोक देते। फिर अगले दिन इतवार को जाकर उन्हें पकड़ लेते। इस तरह वे एक नाजाइज फ़ेअल को जवाज की सूत देने की कोशिश करते ताकि उन पर यह हुक्म सादिर न आए कि उन्होंने सनीचर के दिन शिकार किया है।

इससे मालूम हुआ कि जो शख्स जाइज जरियों से अपनी जरूरियात फ़राहम करने पर कनाअत न करे तो वह अपने आपको इस ख़तरे में डालता है कि उसके लिए जाइज जरियों का दरवाजा सिरे से बंद कर दिया जाए और नाजाइज जरिये के सिवा उसके लिए हसूले मआश की कोई सूत बाकी न रहे।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا
بِعَذَابٍ بَئِيسٍ يَمَّا كَانُوا يَقْسُقُونَ ﴿١٦٥﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ
كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿١٦٦﴾

फिर जब उन्होंने भुला दी वह चीज जो उन्हें याद दिलाई गई थी तो हमने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे और उन लोगों को जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया एक सज़ा अजाब में पकड़ लिया। इसलिए कि वे नाफरमानी (अवज्ञा) करते थे। फिर जब वे बढ़ने लगे उस काम में जिससे वे रोके गए थे तो हमने उनसे कहा कि जलील बंदर बन जाओ। (165-166)

एक काम जिससे खुदा ने मना किया हो उसे करना गुनाह है और हीले के जरिए नाजाइज को जाइज बनाकर करना गुनाह पर सखशी का इजाफ़ है। कसूने सब की खिलाफ़र्जी करके यहूद इसी किस्म के मुजरिम बन गए थे। ऐसे लोग खुदा की लानत के मुस्तहिक हो जाते हैं। यानी वे खुदा की उन इनायतों से महरूम हो जाते हैं जो उसने इस दुनिया में सिर्फ इंसान के लिए मख़सूस की हैं। ऐसे लोग इंसानियत की सतह से गिर कर हैवानियत की सतह पर आ जाते हैं।

कानूने सब की खिलाफ़र्जी करने वालों के साथ यही मामला किया गया। 'अल्लाह ने उन्हें बंदर बना दिया' का मतलब यह नहीं है कि उनकी सूरत बंदरों की सूरत हो गई। इसका मतलब यह है कि उनका अख़लाक बंदरों जैसा हो गया। उनका दिल और उनकी सोच इंसानों के बजाए बंदर जैसे हो गए। (तफ़सीर क़ुर्तुबी)

इंसान एक ऐसी मख़सूक है जिसके अंदर उसके ख़ालिक ने अक़ल और ज़मीर रख दिया है। उसके अंदर जब कोई ख़्वाहिश उठती है तो उसकी अक़ल व ज़मीर (अन्तरात्मा) मुतहर्कि होकर फौरन उसके सामने यह सवाल खड़ा कर देते हैं कि ऐसा करना तुम्हारे लिए दुरुस्त है या नहीं। इसके बरअक्स बंदर का हाल यह है कि उसकी ख़्वाहिश और उसके अमल के दरमियान कोई तीसरी चीज हायल नहीं। जो बात भी उसके जी में आ जाए वह फौरन उसे कर डालता है। उसे न अपनी ख़्वाहिश के बारे में सोचने की जरूरत होती है और न उस पर अमल करने के बाद उस पर शर्मिन्दा होने की।

अब इंसान का बंदर हो जाना यह है कि वह अपनी अक़ल और अपने ज़मीर के खिलाफ़ अमल करते करते इतना बेहिस हो जाए कि इस किस्म के नाजुक अहसासात उसके अंदर से जाते रहें। उसके दिल में जो भी ख़्वाहिश पैदा हो उसे वह कर गुजरे। जब भी कोई शख्स उसकी ज़द में आ जाए तो वह उसकी इज़्जत और उसके माल पर हमला कर दे। किसी से शिकायत पैदा हो तो फौरन उसे जलील करने के लिए खड़ा हो जाए। किसी से इख़्तेलाफ़ (मतभेद) हो जाए तो उस पर गुराने लगे। कोई उसे अपनी राह में रुकावट नजर आए तो फौरन उससे लड़ना शुरू कर दे। सच्चा इंसान वह है जो अपने आप पर खुदा की लगातार लगा

ले। और बंदर इंसान वह है जो बेक़ैद होकर वह सब कुछ करने लगे जो उसका नपस उससे करने के लिए कहे।

बुराई से रोकना एक किस्म का एलाने बरान्त (विरक्ति) है। इसलिए जब किसी गिरोह पर खुदा की यह सजा आती है तो उसकी ज़द में आने से वे लोग बचा लिए जाते हैं जो बुराई से इस हद तक बेजार (खिन्न) हों कि वे उसे रोकने वाले बन जाएं।

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَى يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَنْ يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ
إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ ﴿١٦٧﴾ وَإِنَّكَ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٦٨﴾ وَقَطَعْنَاهُمْ فِي الْأَرْضِ
أُمَمًا مِّنْهُمْ الصَّالِحُونَ وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ وَبَلَوْنَاهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٦٩﴾

और जब तुम्हारे रब ने एलान कर दिया कि वह यहूद पर क़ियामत के दिन तक जरूर ऐसे लोग भेजता रहेगा जो उन्हें निहायत बुरा अजाब दें। बेशक़ तेरा रब जल्द सजा देने वाला है और बेशक़ वह बख़्शने वाला महरबान है। और हमने उन्हें गिरोह-गिरोह करके ज़मीन में बिखेर दिया। उनमें कुछ नेक हैं और उनमें कुछ इससे मुत्तलिफ़ (भिन्न)। और हमने उनकी आजमाइश की अच्छे हालात से और बुरे हालात से ताकि वे बाज आएँ। (167-168)

इन आयत में यहूद के लिए जिस सजा का एलान है उसके साथ क़ियामत के दिन तक की शर्त लगी हुई है। इससे मालूम होता है कि यह सजा वह है जिसका तअल्लुक दुनिया से है। आख़िरत के अंजाम का मामला इससे अलग है जिसका ज़िक्र दूसरे मक़ामात पर आया है।

किसी काम के करने पर जब बड़ा इनाम रखा जाए तो इसका मतलब यह है कि उस काम को न करने पर उतनी ही बड़ी सजा भी होगी। यही मामला उस क़ौम का है जो आसमानी किताब की हामिल बनाई गई हो। यहूद को खुदा ने इसी मंसब पर फायज किया था। चुनांचे आख़िरत के वादे के अलावा दुनिया में भी उन्हें ग़ैर मामूली इनामात दिए गए। मगर यहूद ने मुसलसल नाफरमानी (अवज्ञा) की। वे दीन के नाम पर बेदीनी करते रहे। इसका नतीजा यह हुआ कि खुदा ने उन्हें फज़ीलत (श्रेष्ठता) के मंसब से हटा दिया। उनके लिए यह फैसला हुआ कि जब तक दुनिया क़यम है वे खुदा की सजा का मजा चखते रहें। और आख़िरत में जो कुछ होना है वह इसके अलावा है।

इसका मतलब यह नहीं है कि अब क़ियामत तक उन पर कभी अच्छे हालात नहीं आएंगे। जैसा कि खुद इन आयतों में सराहत है, उन पर 'हसनात' के वक़्फ़े (उत्तम काल) भी पड़ेंगे। मगर यह हसनह का वक़्फ़ भी उनके लिए एक किस्म का अताब होगा ताकि वे और सरकशी करके और ज्यादा सजा के मुस्तहिक बनें।

इन आयतों में यहूद के लिए दो सजाओं का ज़िक्र है। एक यह कि उन पर ऐसी क़ौमों मुसल्लत की जाएगी जो उन्हें अपने जुल्म का निशाना बनाएं। तारीख़ बताती है कि यहूद

कभी बुख्त नस्र और कभी टाइटस रूमी के शदाइद (उत्पीड़न) का निशाना बने। कभी वे मुसलमानों की मातहत में दिए गए। मौजूदा जमाने में उन्होंने पूर्वी यूरोप में अपना जबरदस्त आर्थिक जाल फैला लिया तो हिटलर ने उन्हें तबाह व बर्बाद कर डाला। अब अर्जे मक्दिस में उनका जमा होना बजाहिर इसकी अलामत है कि उनकी पूरी कुव्वत शायद इन्जिअई (सामूहिक) तौर पर हलाक की जाने वाली है।

दूसरी सजा जिसका यहां जिक्र है वह 'तकतीअ' है। यानी उनके गिरोह को मुखलिफ हिस्सों में बांट कर मुंतशिर (विघटित) कर देना। यह दूसरा वाकया भी तारीख में बार-बार उनके साथ होता रहा है।

अल्लाह का यह कानून सिर्फ यहूद के लिए नहीं था। वह बाद के उस गिरोह के लिए भी है जिसे यहूद की माजूली के बाद खुदा की गवाही के मंसब पर फायज किया गया है। मुसलमान अपने को अगर इस हाल में पाएं कि मुकिरीन व मुशिरकीन ने उन पर ग़लबा पा लिया हो और वे छोटे-छोटे जुगराफियों (भू-क्षेत्रों) में बंटकर बिखर गए हों तो उन्हें खुदा की तरफ लौटना चाहिए। क्योंकि इसका मतलब यह है कि वे एहतसाबे इलाही की जद में आ गए हैं।

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ عَرَضَ هَذَا الْأَدْنَى وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا وَإِنْ يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِثْلُ يَأْخُذُوا أَلَمْ يَأْخُذُوا عَلَيْهِمْ مِثْلًا أَنْ لَا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ وَالْذَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَالَّذِينَ يُبَسِّطُونَ بِالنِّكَتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ إِنَّا لَا نَضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَإِذْ نَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ خُذُوا مَا آتَيْنَكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝

फिर उनके पीछे नाखुल्फ (अयोग्य) लोग आए जो किताब के वारिस बने, वे इसी दुनिया की मताअ (सुख-सामग्री) लेते हैं और कहते हैं कि हम यकीनन बख्श दिए जाएंगे। और अगर ऐसी ही मताअ उनके सामने फिर आए तो उसे ले लेंगे। क्या उनसे किताब में इसका अहद (वचन) नहीं लिया गया है कि अल्लाह के नाम पर हक के सिवा कोई और बात न कहें। और उन्होंने पढ़ा है जो कुछ उसमें लिखा है। और आखिरत का घर बेहतर है डरने वालों के लिए, क्या तुम समझते नहीं। और जो लोग खुदा की किताब को मजबूती से पकड़ते हैं और नमाज कायम करते हैं, बेशक हम मुस्लिहीन (सुधारकों) का अज़्र जाया नहीं करेंगे। और जब हमने पहाड़ को उनके ऊपर उठाया गोया कि वह सायबान है। और उन्होंने गुमान किया कि वह उन पर आ पड़ेगा। पकड़ो उस चीज को जो हमने तुम्हें दी है मजबूती से, और याद रखो जो उसमें है ताकि तुम बचो। (169-171)

हजरत मूसा के जमाने में यहूद को जब खुदाई अहकाम दिए गए तो उसकी कार्रवाई पहाड़ के दामन में हुई थी। उस वक्त ऐसे हालात पैदा किए गए कि यहूद को महसूस हुआ कि पहाड़ उनके ऊपर गिरा चाहता है। यह इस बात का इन्हार था कि खुदा से अहद बांधने का मामला बेहद संगीन मामला है। अगर तुमने उसके तकाजों को पूरा न किया तो याद रखो कि इस अहद का दूसरा फरीक वह अजीम हस्ती है जो चाहे तो पहाड़ को तुम्हारे ऊपर गिराकर तुम्हें हलाक कर दे।

उस वक्त यहूद में बड़ी तादाद ऐसे लोगों की थी जो अल्लाह से डरने वाले और नेक अमल करने वाले थे। मगर बाद को धीरे-धीरे उन्होंने दुनिया को अपना मक्सूद बना लिया। वे जाइज नाजाइज का फर्क किए बगैर माल जमा करने में लग गए। आसमानी किताब को अब भी वे पढ़ते थे मगर उसकी तालीमात की खुदसाख्ना (स्वनिर्मित) तावीलें करके उसे उन्होंने ऐसा बना लिया कि खुदा भी उन्हें अपनी बागियाना जिंदगी का हामी नजर आने लगा। उनकी बेहिंसी यहां तक बढ़ी कि वे ये कहकर मुतमइन हो गए कि हम बरगुजिदा (प्रतिष्ठित) उम्मत हैं। हम नबियों की औलाद हैं। खुदा अपने महबूब बंदों के सदके में हमें जरूर बख्श देगा।

यही वाकया हर नबी की उम्मत के साथ पेश आता है। इब्तिदाई दौर में उसके अफराद खुदा से डरने वाले और नेक अमल करने वाले होते हैं। मगर अगली नस्लों में यह रुह निकल जाती है। वे दूसरे दुनियादार लोगों की तरह हो जाते हैं। उनके दर्मियान अब भी दीन मौजूद होता है। खुदा की किताब अब भी उनके यहां पढ़ी पढ़ाई जाती है। मगर यह सब कौमी विरासत के तौर पर होता है न कि हकीकतन अहदे खुदावंदी के तौर पर। वे अमलन आखिरत को भूल कर दुनियापरस्ती की राह पर चल पड़ते हैं। वे सही और ग़लत से बेनियाज होकर अपनी ख्वाहिशों को अपना मजहब बना लेते हैं। मगर इसी के साथ उन्हें यह भी फख्र होता है कि वे बेहतरीन उम्मत हैं। वे महबूबे खुदा के उम्मत हैं। वे आसमानी किताब के वारिस हैं। कलिमा तोहीद की बरकत से वे जरूर बख्श दिए जाएंगे।

मगर असल चीज यह है कि आदमी खुदा की किताब को मजबूती से पकड़े, वह नमाज को कायम करे। और किताबे इलाही को पकड़ने और नमाज को कायम करने का मेयार यह है कि आदमी 'मुखलेह' (सुधारक) बन गया हो। खुदा की किताब से तअल्लुक और खुदा की इबादत करना आदमी को मुखलेह बनाता है न कि मुप्सिद।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنْ بُنَيِّ أَدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَسْتَبْرِكُمْ قَالُوا بَلَىٰ ۖ شَهِدْنَا أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَافِلِينَ ۝ أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِنْ بَعْدِهِمْ أَفَتُهَمِّكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ۝ وَكَذَلِكَ نَقُصُّ الْأَيَاتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

और जब तेरे रब ने बनी आदम की पीठों से उनकी औलाद को निकाला और उन्हें गवाह ठहराया खुद उनके ऊपर। क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ। उन्होंने कहा हां, हम इकारा करते हैं। यह इसलिए हुआ कि कहीं तुम कियामत के दिन कहने लगे हमें तो इसकी खबर न थी। या कहो कि हमारे बाप दादा ने पहले से शिर्क (खुदा का साझीदार ठहराना) किया था और हम उनके बाद उनकी नस्ल में हुए। तो क्या तू हमें हलाक करेगा उस काम पर जो ग़लतकार लोगों ने किया। और इस तरह हम अपनी निशानियां खोलकर बयान करते हैं ताकि वे पलट आएँ। (172-174)

एक जानवर को उसके मां बाप से अलग कर दिया जाए और उसकी परवरिश बिल्कुल अलग माहौल में की जाए तब भी बड़ा होकर वह मुकम्मल तौर पर अपनी नस्ली खुसूसियात पर कायम रहता है। वह अपने तमाम मामलात में ऐन वही तरीका इख्तियार करता है जो उसकी जिबिल्लत (Instinct) में पेवस्त है। यही मामला इंसान का 'शुऊरे रब' के बारे में है। इंसान की रूह में एक खालिक व मालिक का शुऊर इतनी गहराई के साथ जमा दिया गया है कि वह किसी हाल में उससे जुदा नहीं होता। मौजूदा जमाने में एक एतबार से रूस और दूसरे एतबार से टर्की का तजर्बा बताता है कि मुकम्मल तौर पर मुखालिफे मजहब माहौल में तर्बियत पाने के बावजूद इंसान की फितरत ऐन वही बाकी रहती है जो इकारे मजहब के माहौल में हमेशा पाई जाती रही है।

ताहम जानवर और इंसान में एक फर्क है। जानवर अपनी फितरत की ख़िलाफ़तजी पर कादिर नहीं। वे मजबूर हैं कि अमलन भी वही करें जो उनके अंदर की फितरत उन्हें सबक दे रही है। इसके बरअक्स इंसान का हाल यह है कि शुऊरे फितरत की हद तक पाबंद होने के बावजूद अमल के मामले में वह पूरी तरह आजाद है। जब भी कोई बात सामने आती है तो उसकी अक्ल और उसका जमीर अंदर से इशारा करते हैं कि सही क्या है और ग़लत क्या। मगर इसके बावजूद इंसान को इख्तियार है कि वह चाहे अपनी अंदरूनी आवाज की पैरवी करे, चाहे उसे नजरअंदाज करके मनमानी कार्रवाई करने लगे।

यही वह मकाम है जहां इंसान का इम्तेहान हो रहा है और इसी पर जन्नत और जहन्नम का फैसला होना है। जो शख्स खुदाई आवाज पर कान लगाए और वही करे जो खुदा फितरत की खामोश जवान में उससे कह रहा है, वह इम्तेहान में पूरा उतरा। उसके मरने के बाद उसके लिए जन्नत के दरवाजे खोल दिए जाएंगे। और जो शख्स फितरत की सतह पर नश्र (प्रसारित) हेने वाली खुदाई आवाज को नजरअंदाज कर दे वह खुदा की नजर में मुजरिम है। उसे मरने के बाद जहन्नम में डाला जाएगा। खुदा भी उसे नजरअंदाज कर देगा जिस तरह उसने खुदा की आवाज को नजरअंदाज किया था।

फितरत की यह आवाज हर आदमी के ऊपर खुदा की दलील है। अब किसी के पास न तो बेखबरी का उज़्र है और न कोई यह कह सकता है कि माजी में जो होता चला आ रहा था वही हम भी करने लगे। जब इंसान पैदाइश ही से खुदा का शुऊर लेकर आता है और माहौल के विपरीत उसे हमेशा बाकी रखता है तो अब किसी शख्स के पास बेराह होने का क्या उज़्र है।

وَإِنَّا عَلَيْهِمْ نَبَأٌ الَّذِي آتَيْنَاهُ آيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرَ مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ الْغَوِينَ ﴿١٧٥﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ الْكَلْبِ إِنِ انْتَحَبَ عَلَيْكَ يَلْهَثُ أَوْ تَتْرُكُهُ يَلْهَثُ ﴿١٧٦﴾ ذَلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا فَاقْصُصْ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٧٧﴾ سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا وَأَنْفُسُهُمْ كَانُوا بِظُلُمٍ ﴿١٧٨﴾ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِىٌّ وَمَنْ يُضِلِّ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٧٩﴾

और उन्हें उस शख्स का हाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें दी थीं तो वह उनसे निकल भागा। पस शैतान उसके पीछे लग गया और वह गुमराहों में से हो गया। और अगर हम चाहते तो उसे उन आयतों के जरिए से बुलन्दी अता करते मगर वह तो जमीन का हो रहा और अपनी ख्वाहिशों की पैरवी करने लगा। पस उसकी मिसाल कुत्ते की सी है कि अगर तू उस पर बोझ लादे तब भी हाँपे और अगर छोड़ दे तब भी हाँपे। यह मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। पस तुम यह अहवाल उन्हें सुनाओ ताकि वे सोचें। कैसी बुरी मिसाल है उन लोगों की जो हमारी निशानियों को झुठलाते हैं और वे अपना ही नुक्सान करते रहे। अल्लाह जिसे राह दिखाए वही राह पाने वाला होता है और जिसे वह बेराह कर दे तो वही घाटा उठाने वाले हैं। (175-178)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में एक शख्स उमैया बिन अबी अस्सल्ल था। आला इंसानी औसाफ के साथ वह हकीमाना कलाम में भी मुमताज दर्जा रखता था। उसे जब मालूम हुआ कि ईसाइयों और यहूदियों की किताबों में एक पैगम्बर के आने की पेशीनगोइयां मौजूद हैं तो उसे गुमान हुआ कि शायद वह पैगम्बर मैं ही हूँ। बाद को उसे जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दावए नुबुव्वत की खबर मिली और उसने आपका आला कलाम सुना तो उसे सख्त मायूसी हुई। वह पैगम्बरे इस्लाम का मुखालिफ बन गया। उमैया बिन अबी अस्सल्ल को खुदा ने जो आला खुसूसियात दी थीं उनका सही इस्तेमाल यह था कि वह खुदा के पैगम्बर को पहचाने और उनका साथी बन जाए। मगर खुदा की नवाजिशों से उसने अपने अंदर यह जेहन बनाया कि अब खुदा को मेरे सिवा किसी और पर अपना फरल न करना चाहिए। पैगम्बरे खुदा को न मानने में उसे दुनियावी फायदा नजर आता था इसके बरअक्स आपको मानने में उखरीवी फायदा था। उसने आखिरत के मुक़बले में दुनिया को तरजीह दी। वह अगर एतराफ के रूख पर चलता तो वह फरिश्तों को अपना हमसफर बनाता। मगर जब वह हसद व धमंड के रास्ते पर चल पड़ता तो वहाँ शैतान के सिवा कोई और न था जो उसका साथ दे। यह मिसाल उन तमाम लोगों पर सादिक आती है जो हसद और किब्र (अहं, बड़ाई) की बिना पर सच्चाई को नजरअंदाज करें या उसे मानने से इंकार कर दें।

किसी आदमी का ऐसा बनना अपने आपको इंसानियत के मकाम से गिराकर कुत्ते के मकाम पर पहुंचा देना है। कुत्ता अच्छे सुलूक पर भी हांपता है और बुरे सुलूक पर भी। यही हाल ऐसे आदमी का है। खुदा ने जब उसे दिया तब भी उसने उससे सरकशी की गिजा ली और न दिया तब भी वह सरकश ही बना रहा। हालांकि चाहिए यह था कि जब खुदा ने उसे दिया था वह तो उसका एहसानमंद होता और जब खुदा ने नहीं दिया तो वह खुदा की तक्सीम पर राजी रहकर उसकी तरफ रुजू करता।

किसी को रास्ता दिखाने के लिए खुदा खुद सामने नहीं आता बल्कि वह निशानियों (दलीलों) की सूरत में अपना रास्ता लोगों के ऊपर खोलता है। जिन लोगों के अंदर यह सलाहियत हो कि वे दलीलों और निशानियों के रूप में जाहिर होने वाले हक को पहचान लें और अपने आपको उसके हवाले करने पर राजी हो जाएं वही इस दुनिया में हिदायतयाब होते हैं। और जो लोग दलीलों और निशानियों को अहमियत न दें उनके लिए अबदी (चिरस्थायी) बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं।

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا الْجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْإِنسَانِ لَهْمُ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بَهَا
وَلَهْمُ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ بَهَا وَلَهْمُ أَذَانٌ لَا يَسْمَعُونَ بَهَا أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ
بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ۝ وَ لِلَّهِ الْأَسْبَابُ الْحُسْنَىٰ فَاذْعُوهُ بِهَا
وَذُرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْبَابِهِ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَمِمَّنْ
خَلَقْنَا أُمَّةً يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ۝

और हमने जिन्नात और इंसानों में से बहुतों को दोजख के लिए पैदा किया है। उनके दिल हैं जिनसे वे समझते नहीं, उनकी आंखें हैं जिनसे वे देखते नहीं, उनके कान हैं जिनसे वे सुनते नहीं। वे ऐसे हैं जैसे चौपाए बल्कि उनसे भी ज्यादा बेराह। यही लोग हैं ग्राफिल। और अल्लाह के लिए हैं सब अच्छे नाम। पस इन्हीं से उसे पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो, जो उसके नामों में कजरवी (कुटिलता) करते हैं। वे बदला पाकर रहेंगे अपने कामों का। और हमने जिन्हें पैदा किया है उनमें से एक गिरोह ऐसा है जो हक के मुताबिक फैसला करता है। और जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुलताया हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता पकड़ेंगे ऐसी जगह से जहां से उन्हें खबर भी न होगी। और मैं उन्हें ढील देता हूं, बेशक मेरा दाव बड़ा मजबूत है। (179-183)

सच्चाई एक ऐसी चीज है जिसे हर आदमी को खुद पाना होता है। खुदा ने हर आदमी को दिल और आंख और कान दिए हैं। आदमी इन्हीं सलाहियतों को इस्तेमाल करके सच्चाई को पाता है। और जो शख्स इन सलाहियतों को इस्तेमाल न करे वह यकीनन सच्चाई को पाने से महरूम रहेगा, चाहे सच्चाई उससे कितना ही ज्यादा करीब मौजूद हो।

सच्चाई को पाना हर आदमी का एक शुऊरी और इरादी फेअल है। सच्चाई को वही शख्स समझ सकता है जिसने अपने दिल के दरवाजे उसके लिए खुले रखे हों। उसे वही देख सकता है जिसने अपनी आंखों पर मस्जूई (कृत्रिम) पर्दे न डाले हों। उसकी आवाज उसी को सुनाई दे सकती है जिसने अपने कान में किसी किस्म के डाट न लगा रखे हों। ऐसे लोग सच्चाई की आवाज को पहचान कर उसके आगे अपने को डाल देंगे। और जिस शख्स का मामला इसके बरअक्स हो वह चौपायों की तरह नासमझ बना रहेगा। पहाड़ जैसे दलाइल का वजन महसूस करना भी उसके लिए मुमकिन न होगा। उसके सामने खुदा की तजल्लियां (आलोक) जाहिर होंगी मगर वह उसे देखने से आजिज होगा। उसके पास खुदा का नामा छेड़ा जाएगा मगर वह उसे सुनने से महरूम रहेगा। सच्चाई हमेशा बेदार लोगों को मिलती है। ग्राफिलों के लिए कोई सच्चाई सच्चाई नहीं।

खुदा के बारे में इंसान के बेराह होने की वजह अक्सर यह होती है कि वह खुदा को मानते हुए अपने जेहन में खुदा की गलत तस्वीर बना लेता है। वह खुदा की तरफ ऐसी बातें मंसूब कर देता है जो उसके शायानेशान नहीं हैं। मसलन इंसानों के हालात पर कयास करके खुदा के मुकरबीन (निकटस्थ) का अक्कीदा बना लेना। बादशाहों को देखकर यह फर्ज कर लेना कि जिस तरह बादशाहों के नायब और मददगार होते हैं उसी तरह खुदा के भी नायब और मददगार हैं। खुदाई फैसले के बारे में ऐसा ख्याल कायम कर लेना जिसमें आदमी की अपनी ख्वाहिशें तो पूरी हो रही हों मगर वह खुदावंदी अदुल (न्याय) से मुताबिकत न रखता हो। यह खुदा के नामों में कजी (कुटिलता) करना है कि खुदा की तरफ ऐसी बातें मंसूब की जाएं जो उसकी अजमत के शायानेशान न हों।

खुदा किसी आदमी की कजरवी पर फौरन उसे नहीं पकड़ता। इस तरह उसे मौका दिया जाता है कि वह या तो खुदा की तंबीहात को देखकर संभल जाए या मजीद ढीठ होकर अपने जुर्म को पूरी तरह साबितशुदा बना दे।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ حِجَّةٍ إِن هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ أَوَلَمْ يَنْظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَأَن عَسَىٰ أَن يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ إِلَيْهِمْ فِي آيٍ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝ مَن يُضِلَّ اللَّهُ فَمَا لَهُادَىٰ لَهُ ۚ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا قُلْ إِنَّمَا عِنْدَ رَبِّي لَا يُجَلِّيهَا لِوَقَّتِهَا إِلَّا هُوَ تَنَزَّلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَا تَأْتِيكُمُ إِلَّا بَغْتَةً ۚ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِن أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبُ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۚ وَمَا مَسْنِيَ السُّوءُ ۚ إِن أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

क्या उन लोगों ने गौर नहीं किया कि उनके साथी को कोई जुनून नहीं है। वह तो एक साफ डराने वाला है। क्या उन्होंने आसमानों और जमीन के निजाम पर नजर नहीं की और जो कुछ अल्लाह ने पैदा किया है हर चीज से और इस बात पर की शायद उनकी मुददत करीब आ गई हो। पस इसके बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे। जिसे अल्लाह बेराह कर दे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं। और वह उन्हें सरकशी ही में भटकता हुआ छोड़ देता है। वह तुमसे कियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब वाके होगी। कहो इसका इल्म तो मेरे रब ही के पास है। वही उसके वक्त पर उसे जाहिर करेगा। वह भारी हो रही है आसमानों में और जमीन में। वह जब तुम पर आएगी तो अचानक आ जाएगी। वह तुमसे पूछते हैं गोया कि तुम उसकी तहकीक कर चुके हो। कहो इसका इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। कहो मैं मालिक नहीं अपनी जान के भले का और न बुरे का मगर जो अल्लाह चाहे। और अगर मैं ग़ैब को जानता तो मैं बहुत से फायदे अपने लिए हासिल कर लेता और मुझे कोई नुक्सान न पहुंचता। मैं तो महज एक डराने वाला और खुशखबरी सुनाने वाला हूं उन लोगों के लिए जो मेरी बात मानें। (184-188)

बामक्सद आदमी की सबसे बड़ी खुसूसियत यह है कि वह ग़ैर मस्तेहतपसंद (निस्वाधी) इंसान होता है। वह वक्त के रवाज से ऊपर उठकर सोचता है। वह माहौल में जमे हुए मसालेह (स्वाधी) से बेपरवाह होकर अपना काम करता है। वह एक ऐसे निशाने की खातिर अपना जान व माल सब कुछ कुर्बान कर देता है जिसका कोई नतीजा बजाहिर इस दुनिया में मिलने वाला नहीं। यही वजह है कि बामक्सद आदमी अक्सर अपने मुआसिरीन (समकालीन) की तरफ से जो सबसे बड़ा खिताब मिलता है वह 'मजनून' है। खुदा का पैगम्बर अपने वक्त का सबसे बड़ा बामक्सद इंसान होता है। इसलिए खुदा के पैगम्बरों को हर जमाने के लोगों ने यही कहा कि यह मजनून हो गए हैं।

खुदा के दीन के दाओ (आह्वानकता) को मजनून कहना तमाम जुल्मों में सबसे बड़ा जुल्म है। क्योंकि वह जिस पैगाम को लेकर उठता है वह एक ऐसा पैगाम है जिसकी तस्दीक तमाम जमीन व आसमान कर रहे हैं। वह ऐसे खुदा की तरफ बुलाता है जो अपनी कायनाती तख्तीकात में हर तरफ इतिहाई हद तक नुमायां है। वह ऐसी आखिरत की खबर देता है जो जमीन व आसमान में उसी तरह संगीन हकीकत बनी हुई है जिस तरह किसी मां के पेट में पूरा हमल। लोग हक के बारे में संजीदा नहीं, इसलिए हक की खातिर जान खपाने वाला उन्हें मजनून दिखाई देता है। अगर वे हक की कद्र व कीमत को जानते तो कभी ऐसा न कहते।

'कियामत किस तारीख को आएगी' इस किस्म के सवालालत ग़ैर संजीदा ज़ेहन से निकले हुए सवालालत हैं। कियामत को मानने का इहिसार (निर्भरता) कियामत के हक में उसूली दलील पर है न कि इस बात पर कि कियामत की तारीख तैशुदा सूरत में बता दी जाए। जब यह दुनिया दारुल इस्तेहान है तो यहां कियामत को तंबीह (चेतावनी) की जवान में बताया जाएगा न कि हिसाबी तअय्युनात (निर्धारण) की जवान में।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا فَلَمَّا تَغَشَّهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيًّا فَمَكَرَتْ بِهِ فَلَمَّا اتَّكَلَتْ دَعَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَنُكَفِّرَنَّ عَنْ الشَّكِرِينَ ۖ فَلَمَّا أَتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فَبَيَّاتَاهُمَا فَتَعَلَّى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۖ أَيشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلِقُونَ ۖ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ۖ وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُونَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَلُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

वही है जिसने तुम्हें पैदा किया एक जान से और उसी ने बनाया उसका जोड़ा ताकि उसके पास सुकून हासिल करे। फिर जब मर्द ने औरत को ढांक लिया तो उसे एक हल्का सा हमल रह गया। फिर वह उसे लिए फिरती रही। फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने मिलकर अल्लाह अपने रब से दुआ की, अगर तूने हमें तंदरुस्त औलाद दी तो हम तेरे शुक्रगुजार रहेंगे। मगर जब अल्लाह ने उन्हें तंदुरुस्त औलाद दे दी तो वे उसकी बख़शी हुई चीज में दूसरों को उसका शरीक ठहराने लगे। अल्लाह बरतर है उन मुश्रिकाना बातों से जो ये लोग करते हैं। क्या वे शरीक बनाते हैं ऐसों को जो किसी चीज को पैदा नहीं करते बल्कि वे खुद मख़्लूक (सृजित) हैं। और वे न उनकी किसी किस्म की मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। और अगर तुम उन्हें रहनुमाई के लिए पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार पर न चलेंगे। बराबर है चाहे तुम उन्हें पुकारो या तुम ख़ामोश रहो। जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो वे तुम्हारे ही जैसे बंदे हैं। पस तुम उन्हें पुकारो, वे तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो। (189-194)

कायनात अपने ख़ालिक का जो तआरुफ (परिचय) कराती है वह ऐसा तआरुफ है तो किसी हाल में शिर्क के तसव्युर को कुबूल नहीं करता। कायनात में बेशुमार अज्जा (अवयव) अलग-अलग पाए जाते हैं। मगर तमाम अज्जा मिलकर एक हमआहंग (अंतरंग) कुल बन जाते हैं। इनमें किसी किस्म का तजाद (अन्तर्विरोध) या टकराव नहीं। यह कामिल हमआहंगी इसके बग़ैर मुमकिन नहीं कि इस दुनिया का ख़ालिक व मालिक एक हो और वही तंहा इसको चला रहा हो।

मर्द और औरत के मामले को देखिए। एक मर्द और एक औरत में जो कामिल मुताबिकत (सामंजस्य) होती है वह शायद मौजूदा कायनात का सबसे ज्यादा अजीब वाक्या है जिसका तजर्बा एक शख्स करता है। मर्द एक मुंकरिद और मुस्तकिल (एकल) वजूद है। और औरत उससे अलग एक मुस्तकिल (एकल) वजूद। मगर ये मर्द और औरत जब मियां

और बीबी की हैसियत से एक दूसरे से मिलते हैं तो दोनों का वजूद इस तरह एक दूसरे में शामिल हो जाता है कि उनमें कोई दूरी बाकी नहीं रहती। हर एक को ऐसा महसूस होता है कि मैं उसके लिए पैदा किया गया हूँ और वह मेरे लिए। दोनों के दर्मियान यह गहरी साजगारी इस बात का खुला हुआ सुबूत है कि एक ही इरादे ने अपने पेशगी मंसूबे के तहत दोनों को एक खास ढंग पर बनाया है। कायनात में अगर एक से ज्यादा हस्तियों की कारफरमाई होती तो दो मुख़ल्लिफ और मुतजाद (अन्तर्विरोधी) चीजों के दर्मियान यह कामिल हमआहंगी (अंतरंगता) मुमकिन नहीं होती।

मगर कैसी अजीब बात है कि जिस कायनात में तौहीद के इतने ज्यादा दलाइल मौजूद हैं वहां आदमी शिर्क को अपना मजहब बनाता है। दो इंसानों में 'वहदत' (एकत्व) के करिश्मे से एक तीसरे बच्चे ने जन्म लिया मगर जब वह पैदा हो गया तो किसी ने यह अकीदा बना लिया कि यह औलाद फ़लां जिंदा या मर्दा बुर्जा की बरकत से हुई है। किसी ने उसे मफ़रूज़ा (काल्पनिक) देवताओं की तरफ मंसूब कर दिया। किसी ने कहा कि यह मादूदा (पदार्थ) की अंधी ताकतों के अमल और रद्देअमल (क्रिया-प्रतिक्रिया) का नतीजा है। किसी ने यह समझा कि यह खुद उसकी अपनी कमाई है जो एक खूबसूरत बच्चे की सूरत में उसे हासिल हुई है।

أَلْهَمُّ أَرْجُلٍ يَمْشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ ۚ بِهَا قُلْ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُوا ۚ فَلَا تُنْظَرُونَ ۝ إِنَّ وَلِيََّ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۖ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ۝ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْمَعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ۝ وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا ۚ وَتَرْهَقُهُمْ يُنْظَرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ۝

क्या उनके पाँव हैं कि उनसे चलें। क्या उनके हाथ हैं कि उनसे पकड़ें। क्या उनकी आंखें हैं कि उनसे देखें। क्या उनके कान हैं कि उनसे सुनें। कहो, तुम अपने शरीकों को बुलाओ। फिर तुम लोग मेरे खिलाफ तदवीर करो और मुझे मोहलत न दो। यकीनन मेरा क़स्साज़ (कार्य साधक) अल्लाह है जिसने किताब उतारी है और वह कारसाजी करता है नेक बंदों की। और जिन्हें तुम पुकारते हो उसके सिवा वे न तुम्हारी मदद कर सकते हैं और न अपनी ही मदद कर सकते हैं। और अगर तुम उन्हें रास्ते की तरफ पुकारो तो वे तुम्हारी बात न सुनेंगे और तुम्हें नजर आता है कि वे तुम्हारी तरफ देख रहे हैं मगर वे कुछ नहीं देखते। (195-198)

बुतपरस्त लोग पत्थर या धातु की जो मूर्तियां बनाते हैं इसका फलसफा यह बयान किया जाता है कि यह ख़ारजी मजाहिर (वाह्य रूप) हैं जिनके अंदर उनका मज्जमा (मान्य) देवता हुलूल (विलय) कर आया है। इन मजाहिर की परस्तिश उनके नजदीक उन माबूदों की

परस्तिश है जिनकी वे महसूस अलामतें हैं। ताहम अवाम की सतह पर अमलन बुतपरस्ती जो शकल इख़्तियार करती है वह यह कि लोग खुद इन मूर्तियों को मुकद्दस (पवित्र) समझने लगते हैं। इन बुतों में न चलने की ताकत होती, न पकड़ने की, न देखने की और न सुनने की। मगर वही इंसान उनके बारे में यह फर्ज कर लेता है कि वे उसके काम आएंगे और उसकी हाजतें पूरी करेंगे।

ताहम यह मामला प्रचलित बुतों ही का नहीं है। इनके सिवा जिन चीजों को इंसान माबूदियत (पूज्य) का दर्जा देता है उनका हाल भी यही है। वतन और क़ौम से लेकर जिंदा या मर्दा शख्सियतों तक जिन-जिन चीजों से भी वे जज्बात वाबस्ता किए जाते हैं जो सिर्फ एक खुदा का हक़ है उनकी हकीकत क्या है। उनमें से किसी के पास भी कोई जाती ताकत नहीं। कोई भी पाँव या हाथ या आंख वाला ऐसा नहीं जिसके पाँव और हाथ और आंख उसके अपने हों। हर 'पाँव' वाले के पास दिया हुआ पाँव है और अगर उसका पाँव छिन जाए तो वह उसे दुबारा वापस नहीं ला सकता। हर 'हाथ' वाले के पास दिया हुआ हाथ है और अगर उसका हाथ बाकी न रहे तो वह दुबारा अपना हाथ नहीं बना सकता। हर 'आंख' वाले की आंख दी हुई आंख है और अगर उसकी आंख जाती रही तो उसके लिए मुमकिन नहीं कि वह दुबारा अपने लिए आंख तैयार कर ले।

और अल्लाह की परस्तिश करने वाले लोग अपने बुतों के भरोसे हमेशा एक खुदा के परस्ताओं पर जुल्म करते रहे हैं। मगर ये लोग बहुत जल्द जान लेंगे कि खुदा की इस दुनिया में उनका भरोसा किस कदर बेबुनियाद था। जिस खुदा का जुहूर मौजूदा दुनिया में किताबी मीजान (तुला) की सूरत में हुआ है, उसका जुहूर अनकरीब अदालती मीजान की सूरत में होने वाला है। उस वक्त हर आदमी देख लेगा कि काम बनाने वाला सिर्फ खुदा था, अगरचे आदमी अपनी नादानी की वजह से दूसरों को अपना काम बनाने वाला समझता रहा। शरीकों के पास तो सिरे से मदद करने की कोई ताकत ही नहीं, मगर खुदा अपने वफादार बंदों की मदद दुनिया में भी करता है और आखिरत में भी।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ۝ وَإِنَّا يَنْزِعُكَ مِنْ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكُّرُوا فَإِذَا هُم مَّنْبُحِرُونَ ۝ وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ۝

कुछ (क्षमा) करो, नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से न उलझो। और अगर तुम्हें कोई वसवसा शैतान की तरफ से आए तो अल्लाह की पनाह चाहो। वेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। जो लोग डर रखते हैं जब कभी शैतान के असर से कोई बुरा ख़याल उन्हें छू जाता है तो वे फ़ौरन चौंक पड़ते हैं और फिर उसी वक्त उन्हें सूझ आ जाती है। और जो शैतान के भाई हैं वे उन्हें गुमराही में खींचे चले जाते हैं फिर वे कभी नहीं करते। (199-202)

तौहीद (एकेश्वरवाद) और आखिरत (परलोक), नेकी और अदुल (न्याय) की तरफ बुलाना 'उर्फ' की तरफ बुलाना है। यानी उन भलाइयों की तरफ जो अक्ल और फित्तत के नजदीक जानी पहचानी हैं। मगर यह सादातरीन काम हर जमाने में मुश्किलतरीन काम रहा है। इंसान की हुब्बेआजिला (स्वार्थपरकता) का यह नतीजा है कि हर जमाने में लोग अपनी जिंदगी का निजम दुनियावी मफद और जती मस्लेहों (हित, स्वार्थ) की बुनियाद पर कायम किए हुए होते हैं। वेहक (सत्य) का नाम लेकर बातिलपरस्ती (असत्यता) के मशगले में मुक्तिला होते हैं। ऐसी हालत में जब भी सच्चाई की बेआमेज (विशुद्ध) दावत उठती है तो हर आदमी अपने आप पर उसकी जद पड़ते हुए महसूस करता है। नतीजा यह होता है कि हर आदमी उसका मुखालिफ बनकर खड़ा हो जाता है।

ऐसी हालत में दाओ (आह्वानकर्ता) को क्या करना चाहिए। इसका एक ही जवाब है और वह है दरगुजर और एराज (क्षमा, उपेक्षा)। यानी लोगों से उलझे बगैर बिल्कुल ठंडे तौर पर अपना काम जारी रखना। दाओ अगर लोगों के निकाले हुए शोशों का जवाब देने लगे तो हक की दावत मुनाजिरे की सूरत इस्त्रियार कर लेगी। दाओ अगर लोगों की तरफ से छेड़े हुए रैर जरूरी सवालनात में अपने को मशगूल करे तो वह सिर्फ अपने वक्त और अपनी ताकत को जाया करेगा। दाओ अगर लोगों की तरफ से आनी वाली तकलीफों पर उनसे झगड़ने लगे तो हक की दावत (सत्य का आह्वान), हक की दावत न रहेगी बल्कि मआशी (आर्थिक) और सियासी लड़ाई बन जाएगी। इसलिए हक की दावत को उसकी असली सूरत में बाकी रखने के लिए जरूरी है कि दाओ जाहिलों और विरोधियों की तरफ से पेश आने वाली नाखुशगवारियों पर सब्र करे और उनसे उलझे बगैर अपने मुस्बत (सकारात्मक) काम को जारी रखे।

ताहम मौजूदा दुनिया में कोई शख्स नफस और शैतान के हमलों से खाली नहीं रह सकता। ऐसे मौके पर जो चीज आदमी को बचाती है वह सिर्फ अल्लाह का डर है। अल्लाह का डर आदमी को बेहद हस्सास बना देता है। यही हस्सासियत (संवेदनशीलता) मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में आदमी की सबसे बड़ी ढाल है। जब भी आदमी के अंदर कोई गलत खाल आता है या किसी क्रिम की मंमि नफिसयात (नकारात्मक मानसिकता) उभरती है तो उसकी हस्सासियत उसे फौरन बता देती है कि वह फिसल गया है। एक लम्हे की गफलत के बाद उसकी आंख खुल जाती है और वह अल्लाह से माफी मांगते हुए दुबारा अपने को दुरुस्त कर लेता है। इसके बरअक्स जो लोग अल्लाह के डर से खाली होते हैं उनके अंदर शैतान दाखिल होकर अपना काम करता रहता है और उन्हें महसूस भी नहीं होता कि उसके साथी बनकर वे किस गढ़े की तरफ चले जा रहे हैं। हस्सासियत आदमी की सबसे बड़ी मुहाफिज (रक्षक) है जबकि बेहिंसी आदमी को शैतान के मुक़बले में रैर महफूज बना देती है।

وَإِذَا الْمَأْتُهُمْ بِآيَةٍ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا قُلْ إِنَّمَا أَعِيتُ مَا يَوْحَىٰ إِلَيَّ
مِنْ رَبِّي هَذَا بَصَآئِرٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٧٠﴾
وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٧١﴾ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ

فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ
وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ ﴿٧٢﴾ إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ
عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ﴿٧٣﴾

और जब तुम उनके सामने कोई निशानी मोजिजा (चमत्कार) नहीं लाए तो कहते हैं कि क्यों न तुम छांट लाए कुछ अपनी तरफ से। कहे, मैं तो उसी की पैरवी करता हूं जो मेरे रब की तरफ से मुझ पर 'वही' (प्रकाशना) की जाती है। ये सूझ की बातें हैं तुम्हारे रब की तरफ से और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। और जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे तवज्जोह से सुनो और खामोश रहो, ताकि तुम पर रहमत की जाए। और अपने रब को सुबह व शाम याद करो अपने दिल में, आजिजी और खौफ के साथ और पस्त आवाज से, और गफिलों में से न बनो। जो (फरिश्ते) तेरे रब के पास हैं वे उसकी इबादत से तकबुर (घमंड) नहीं करते। और वे उसकी पाक जात को याद करते हैं और उसी को सज्दा करते हैं। (203-206)

मक्का के लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते कि अगर तुम खुदा के पैगम्बर हो तो खुदा के यहां से कोई मोजिजा क्यों नहीं लाए। खुदा के लिए इतिहाई आसान था कि वह आपको एक मोजिजा दे देता। मगर इसका नतीजा यह होता कि अस्ल मक्सद जाता रहता।

मसलन फर्ज कीजिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए एक जदीद तर्ज की एक मोटरकार उतार दी जाती जिसमें लाउडस्पीकर नसब होता। आप उसमें बैठकर चलते और लोगों के दर्मियान तब्लीग करते। डेढ़ हजार साल पहले के हालात में ऐसी एक कार लोगों के लिए इतिहाई हैरतनाक मोजिजा होती। मगर इसका नुक्सान यह होता कि लोगों की तवज्जोह अस्ल बात से हट जाती। अस्ल मक्सद तो यह था कि खुदा का कलाम लोगों के लिए बसीरत बने। इससे लोगों को सोचने का ढंग और अमल करने का तरीका मालूम हो। इससे रूहों को खुदाई ठंडक मिले। मगर मज्जूर मोजिजे के बाद यह सारा मंसूबा धरा रह जाता और लोग बस तिलिस्माती सवारी के अजूबे में मगन होकर रह जाते।

करामाती चीजों में खोने का नाम दीन नहीं। दीन यह है कि आदमी खुदा के कलाम पर ध्यान दे। उसे गौर के साथ पढ़े और तवज्जोह के साथ सुने। दीनदार होने की पहचान यह है कि खुदा के साथ आदमी का गहरा तअल्लुक कायम हो जाए। उसके दिल में गुदाज (नफ्रता) पैदा हो। वह खुदा की याद करने वाला बन जाए। खुदा की अज्मत उसके दिल व दिमाग पर इस तरह छा जाए कि वह उसके अंदर तवाजोअ (विनम्रता) और खौफ की कैफियत पैदा कर दे। खुदा का तज्किरा करते हुए उसकी आवाज पस्त हो जाए। वह गफलत से निकल कर बेदारी (सजगता) के आलम में पहुंच जाए।

आखिर में फरिश्तों का किरदार बयान किया गया है। यह इसलिए कि तुम भी ऐसा ही करो ताकि तुम्हें फरिश्तों का साथ हासिल हो। जब आदमी अपने आपको घमंड से पाक करता है, और खुदा के कमालात से इतना सरशार होता है कि उसके दिल से हर वक्त उसकी याद उबलती रहती है तो वह फरिश्तों का हम सतह (सम-स्तर) हो जाता है। इस दुनिया में किसी इंसान की तरक्की का आलातरीन मकाम यह है कि वह इंसान होते हुए मलकूती किरदार का हामिल (फरिश्ता-चरित्र) बन जाए। वह दुनिया में रहते हुए फरिश्तों के पड़ेस में ज़िंदगी गुज़से लगे।

سُبْحَانَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُولِ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَاصْلَحُوا
ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۖ وَاَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ اِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ اِنَّكُمْ الْمُؤْمِنُونَ
الَّذِينَ اِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ ۖ وَاِذَا تَلَّيْتُ عَلَيْهِمْ اَيَّاهُ ۖ زَادَتْهُمْ
اِيْمَانًا ۖ وَاَعْلَىٰ رَجَرَةٍ يَتَوَكَّلُونَ ۚ ۝ الَّذِيْنَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۚ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ
وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

आयतें-75

सूरह-8. अल-अनफ़ल

रुकूअ-10

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है।
वे तुमसे अनफ़ल (ग़नीमत का माल) के बारे में पूछते हैं। कहो कि अनफ़ल अल्लाह
और उसके रसूल के हैं। पस तुम लोग अल्लाह से डरो और अपने आपस के तअल्लुकात
की इस्लाह (सुधार) करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो,
अगर तुम ईमान रखते हो। ईमान वाले तो वे हैं कि जब अल्लाह का जिक्र किया जाए तो
उनके दिल दहल जाएं और जब अल्लाह की आयतें उनके सामने पढ़ी जाएं तो वे उनका
ईमान बढ़ देती हैं और वे अपने रब पर भरोसा रखते हैं। वे नमाज़ कायम करते हैं और
जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं। यही लोग हकीकी मोमिन हैं। उनके
लिए उनके रब के पास दजे और मफ़िस्त (क्षमा) हैं और उनके लिए इज्जत की रोज़ी है।

(1-4)

सूरह अनफ़ल बद्र की जंग (2 हि०) के बाद उतरी। इस जंग में मुसलमानों को फतह
हुई थी और इसके बाद जंग के मैदान से काफी ग़नीमत का माल हासिल हुआ था। मगर ये
अमवाल (धन) अमलन एक गिरोह के कब्जे में थे। इस बिना पर जंग के बाद ग़नीमत (युद्ध
में प्राप्त सामग्री) की तक्सीम पर निज़ाअ (विवाद) पैदा हो गई। जंग में कुछ लोग पिछली सफ

में थे। कुछ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिफ़ाजत में लगे हुए थे। कुछ लोग
आखिरी मरहले में दुश्मन का पीछा करते हुए आगे निकल गए। इस तरह जंग के मैदान से
ग़नीमत का माल लूटने का मौक़ा एक ख़स फ़रीक (पक्ष) को मिला। दूसरे लोग जो उस वक्त
जंग के मैदान से दूर थे वे दुश्मन के छोड़े हुए अमवाल को हासिल न कर सके।

अब सूरतेहाल यह थी की उसूली तौर पर तो जंग के तमाम शुरका (भागीदार) अपने को
ग़नीमत के माल में हिस्सेदार समझते थे। मगर ग़नीमत का माल अमलन सिर्फ़ एक गिरोह के
कब्जे में था। एक फ़रीक (पक्ष) के पास दलील थी और दूसरे फ़रीक के पास माल। एक के
पास अपने हक़ को साबित करने के लिए सिर्फ़ अल्फ़ज़ थे। जबकि दूसरे का हक़ किसी
दलील व सुबूत के बिना खुद कब्जे के जोर पर कायम था।

इस विस्म के तमाम झगड़े खुदा के ख़ौफ़ के मनाफ़ी (प्रतिकूल) हैं। खुदा का ख़ौफ़
आदमी के अंदर जिम्मेदारी की नफ़िसयात उभारता है। ऐसे आदमी की तबज़्जोह फ़राइज पर
होती है न कि हवूक़ पर। वह अपनी तरफ़ देखने के बजाए खुदा की तरफ़ देखने लगता है।
उसका दिल खुदा व रसूल की इताअत के लिए नर्म पड़ जाता है। वह खुदा का इबादतगुजार
बंदा बन जाता है। लोगों को देकर उसे तस्कीन मिलती है न कि लोगों से छीन कर। ये
औसाफ़ (गुण) आदमी के अंदर हकीकतपसंदी और हक़ के एतराफ़ का माद्दा पैदा करते हैं।
हकीकतपसंदी और एतराफ़ेहक़ की फज़ का लाज़िमी नतीजा यह होता है कि आपस के
झगड़े ख़त्म हो जाते हैं। और अगर कभी इत्तेफ़ाक़न (संयोगवश) उभरते हैं तो एक बार की
तबीह उनकी इस्लाह के लिए काफी हो जाती है।

खुदा की पकड़ का अंदेशा हर एक को इस हद पर पहुंचा देता है जिस हद पर उसे
फ़िलवाकेअ (वस्तुतः) होना चाहिए था। और जहां हर आदमी अपनी वाकई हद पर रुकने के
लिए राजी हो जाए वहां झगड़े का कोई गुज़र नहीं।

كَلَّا اٰخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۚ وَاِنْ فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكَرِهُوْنَ ۝
يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ ۚ كَاٰثِكًا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ
يَنْظُرُوْنَ ۝ وَاِذْ يَعِدُّكُمْ اللّٰهُ اِحْدٰى الطّٰآفَتَيْنِ اَنَّهُمَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنْ
غَيَّرَ ذٰلِكَ الشّٰوْكَةَ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَتِهٖ وَيَقْطَعَ
دَاِبِرَ الْكَافِرِيْنَ ۝ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْغٰبِرُوْنَ ۝

जैसा कि तुम्हारे रब ने तुम्हें हक़ के साथ तुम्हारे घर से निकाला। और मुसलमानों में
से एक गिरोह को यह नागवार था। वे इस हक़ के मामले में तुमसे झगड़ रहे थे बावजूद
यह कि वह जाहिर हो चुका था, गोया कि वे मौत की तरफ़ हक़े जा रहे हैं आंखो देखते।
और जब खुदा तुमसे वादा कर रहा था कि दो जमाअतों में से एक तुम्हें मिल जाएगी।
और तुम चाहते थे कि जिसमें कांटा न लगे वह तुम्हें मिले। और अल्लाह चाहता था
कि वह हक़ का हक़ होना साबित कर दे अपने कलिमात से और मुक़िरो की जड़ काट

देता कि हक (सत्य) हक होकर रहे और बातिल (असत्य) बातिल होकर रह जाए चाहे मुजरिमों को वह कितना ही नागवार हो। (5-8)

शाबान 2 हिजरी में मालूम हुआ कि कुरैश का एक तिजारती काफिला शाम से मक्का की तरफ वापस जा रहा है। इस काफिले के साथ तकरीबन 50 हजार अश्वरफ़ी का सामान था। इसका रास्ता मदीना के करीब से गुजरता था। यह अंदेश था कि मुसलमान अपने दुश्मनों के तिजारात के काफिले पर हमला करें। चुनावी काफिले के सरदार अबू सुफयान बिन हर्ब ने तेज रफ़्तार ऊंटनी के जरिए मक्का वालों के पास यह ख़बर भेजी कि मदद के लिए दौड़ो वरना मुसलमान तिजारती काफिले को लूट लेंगे। मक्का में इस ख़बर से बड़ा जोश पैदा हो गया। चुनावी 950 सवार जिनमें 600 जिरहपोश (कवचधारी) थे मक्का से निकल कर मदीना की तरफ रवाना हुए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी तमाम ख़बरें मिल रही थीं। अब मदीना के मुसलमान दो गिरोहों के दर्मियान थे। एक शाम से आने वाला तिजारती काफिला। दूसरा मक्का से मदीना की तरफ बढ़ने वाला जंगी लश्कर। मुसलमानों के एक तबके में यह जेहन पैदा हुआ कि तिजारती काफिले की तरफ बढ़ जाए। इस काफिले के साथ वमुश्किल 40 मुत्ताफिक थे। उसे बाआसानी मसालूब करके उसके सामान पर कब्ज़ा किया जा सकता था। मगर खुदा का मंसूबा दूसरा था। खुदा को दरअसल मुकिरीने हक का जोर तोड़ना था न कि कुछ इकतसादी (आर्थिक) फ़ायदे हासिल करना। खुदा ने मख़सूस हालात पैदा करके ऐसा किया कि तमाम मुख़ालिफ सरदारों को मक्का से निकाला और उन्हें मदीना से 20 मील के फासले पर बद्र के मक़ाम पर पहुंचा दिया ताकि मुसलमानों को उनसे टकरा कर हमेशा के लिए उनका ख़ात्मा कर दिया जाए। अल्लाह के रसूल ने जब मुसलमानों को खुदा के इस मंसूबे से सूचित किया तो सबके सब मुत्ताफिक (सहमत) होकर बद्र की तरफ बढ़े। उनकी तादाद अगरचे सिर्फ 313 थी। उनके पास हथियार भी कम थे। मगर अल्लाह ने उनकी ख़ुसूसी मदद फरमाई। उन्होंने कुरैश के लश्कर को बुरी तरह शिकस्त दी। उनके 70 सरदार क़त्ल हुए और 70 गिरफ़्तार कर लिए गए। बद्र का मैदान क़ुर्र के मुक़बले में इस्लाम की फ़तह का मैदान बन गया। जब भी ऐसा हो कि एक तरफ़ माद़ी फ़ायदा हो और दूसरी तरफ़ दीनी फ़ायदा तो यह तक्सीम ख़ुद इस बात का सबूत है कि खुदा की मर्जी दीनी फ़ायदे की तरफ़ है न कि माद़ी फ़ायदे की तरफ़।

इस्लामी जद्दोज़हद का निशाना कभी मआशी मफ़ाद हासिल करना नहीं होता। इस्लामी जद्दोज़हद का निशाना हमेशा बातिल (असत्य) का जोर तोड़ना होता है। चाहे वह नजरियाती ताक़त के जरिए हो या हालात के एतबार से माद़ी ताक़त के जरिए।

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِآلِفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرَدِّفِينَ ۝
وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ
عِندِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ إِذْ يُغَشِّيكُمُ اللَّعَاسُ أَمَنَةً مِنْهُ وَيُنْزِلُ

عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَ كُفْرُكُمْ بِهِ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ
وَلِيُزَيِّنَ عَلَى قُلُوبِكُمْ وَيُخَيِّبَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۝ إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي
مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ
فَأَضْرِبُوا قُورَى الْأَعْنَابِ وَاصْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ
شَاؤُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ۝ ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ۝

जब तुम अपने रब से फरियाद कर रहे थे तो उसने तुम्हारी फरियाद सुनी कि मैं तुम्हारी मदद के लिए एक हजार फरिश्ते लगाता भेज रहा हूँ। और यह अल्लाह ने सिर्फ इसलिए किया कि तुम्हारे लिए खुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिल उससे मुतमइन हो जाएं। और मदद तो अल्लाह ही के पास से आती है। यकीनन अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। जब अल्लाह ने तुम पर ऊंच डाल दी अपनी तरफ से तुम्हारी तस्कीन के लिए और आसमान से तुम्हारे ऊपर पानी उतारा कि उसके जरिए से तुम्हें पाक करे और तुमसे शैतान की नजासत (गंदगी) को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को मजबूत कर दे और उससे कदमों को जमा दे। जब तैरे रब ने फरिश्तों को हुक्म भेजा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम ईमान वालों को जमाए रखो। मैं मुकिरों के दिल में रौब डाल दूंगा। पस तुम उनकी गर्दन के ऊपर मारो और उनके पोर-पोर पर जब (चोट) लगाओ। यह इस सबब से कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त की। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करता है तो अल्लाह सजा देने में सज़त है। यह तो अब चखो और जान लो कि मुकिरों के लिए आग का अजाब है। (9-14)

बद्र की लड़ाई बड़े नाजुक हालात में हुई। तकरीबन एक हजार मुसल्लह दुश्मनों के मुकाबले में मुसलमानों की तादाद सिर्फ 313 थी। उनके पास हथियार भी कम थे। दुश्मनों ने जंग के मक़ाम (बद्र) पर पहले पहुंच कर वहां अच्छी जगह और पानी के चशमे पर कब्ज़ा कर लिया। इस किस्म के हालात देखकर मुसलमानों के दिल में यह वसवसा आने लगा कि जिस मिशन के लिए वे अपनी ज़िंदगी वीरान कर रहे हैं उसके साथ शायद खुदा की मदद शामिल नहीं। अगर वह हक़ होता तो ऐसे नाजुक मौके पर खुदा क्यों उनका साथ न देता, क्यों असबाब के तमाम सिरे उनके हाथ से निकल कर दुश्मनों की तरफ चले जाते।

उस वक़्त अल्लाह तआला ने बद्र के इलाके में जोर की बारिश बरसाई। मुसलमानों ने हौज बना बनाकर बारिश का पानी जमा कर लिया। दुश्मन ने मुसलमानों को जमीन के पानी से महरूम किया था, खुदा ने उनके लिए आसमान से पानी का इतिजाम कर दिया। इसी तरह खुदा ने यह ग़ैर मामूली इतिजाम फरमाया कि मुसलमानों के ऊपर नौद तारी कर दी। सोना

आदमी के ताजा दम होने के लिए बहुत जरूरी है। मगर जंग के मैदान के हालात इस कदर वहशतनाक होते हैं कि आदमी की नींद उड़ जाती है। इसके बावजूद अल्लाह तआला ने मुसलमानों की यह खुसूसी मदद फरमाई कि जंग के दिन से पहले वाली रात को उन पर नींद तारी कर दी। वे रात को जेहनी बेझ से फासिग होकर सो गए और सुबह को पूरी तरह ताजा दम होकर उठे। जो हालात मुसलमानों के अंदर वसवसा पैदा करने का सबब बन रहे थे, उन्हीं हालात के अंदर खुदा ने ऐसे इम्कानात पैदा कर दिए कि उनके अंदर नया यकीन व एतमाद उभर आया।

मुक़बले के वक़्त अहले हक से जो चीज़ मलूब है वह साबितकदमी है। उन्हें किसी हाल में बददिल नहीं होना चाहिए। इस साबितकदमी का नक़्द इनाम खुदा की तरफ से यह मिलता है कि हक के दुश्मनों के दिलों में रौब डाल दिया जाता है। और जो गिरोह अपने हरीफ से मरऊब हो जाए, उसे कोई चीज़ शिकस्त से नहीं बचा सकती।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُتِلْتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحَفًا فَلَا تُولُوهُمُ الْآدْبَارَ ۖ
وَمَنْ يُؤَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرًا إِلَّا مُتَحَرِّقًا لِقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَى فِتْنَةٍ فَقَدْ بَاءَ
بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

ऐ ईमान वालो, जब तुम्हारा मुकाबला मुंकिरीन से जंग के मैदान में हो तो उनसे पीठ मत फेरो। और जिसने ऐसे मौके पर पीठ फेरी, सिवा इसके कि जंगी चाल के तौर पर हो या दूसरी फौज से जा मिलने के लिए, तो वह अल्लाह के ग़ज़ब (प्रकोप) में आ जाएगा और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। (15-16)

इस्लाम और ग़ैर इस्लाम का टकराव जब जंग के मैदान तक पहुंच जाए तो यह गोया कोफ़ीके (पक्षों) के लिए आखिरी फैसले का वक़्त होता है। ऐसे नाज़ुक लम्हे में अगर कोई शख्स या गिरोह ऐसा करे कि ऐन मअरके के वक़्त वह मैदान छोड़ कर भागे तो उसने बदतरीन जुर्म किया। एक तरफ उसने हक को बचाने के मुक़बले में अपने आपको बचाने को ज्यादा अहम समझा, उसने अपने मक़सद के मुक़बले में अपनी जात को तरज़ीह दी। और यह सब कुछ उसने उस वक़्त किया जबकि उस हक की जिंदगी की बाज़ी लगी हुई थी जिसे आलातरीन सदाक़त क़रार देकर वह उस पर ईमान लाया था।

दूसरे यह कि ऐसे नाज़ुक मौक़े पर अक्सर एक छोटा सा वाक़्या बहुत बड़े वाक़ये का सबब बन जाता है। एक शख्स या एक गिरोह का मैदान छोड़कर भागना पूरी फौज का हौसला तोड़ देता है। एक शख्स की भगदड़ बिलआखिर आम भगदड़ की सूरत इख़्तियार कर लेती है। और हंगामी हालात (आपात स्थिति) में जब किसी मज्मअ में आम भगदड़ शुरू हो जाए तो वह अपनी आखिरी हद पर पहुंचने से पहले कहीं नहीं रुकती।

इससे मुस्तसना (अपवाद) सिर्फ वह सूरत है जबकि कोई सिपाही या सिपाहियों का कोई दस्ता किसी जंगी तदबीर के लिए पीछे हटता है या वह अपने एक मोर्चे से हटकर दूसरे मोर्चे

की तरफ़ सिमटना चाहता है। फ़रार के तौर पर अगर कोई पीछे हटता है तो वह बिलाशुबह नाक़बिले माफ़ी जुर्म करता है। मगर जो पीछे हटना जंग की तदबीर से तअल्लुक रखता हो वह जाइज है। इसके लिए आदमी पर कोई इल्ज़ाम नहीं।

मज्कूरा हुक्म अस्लन जंग से मुतअल्लिक है। ताहम दूसरी मुशाबह सूरतें भी दर्जा बदर्जा इसी के जेल में आ सकती हैं। मसलन एक शख्स बेआमेज (विशुद्ध) इस्लाम के ख़ामोश और तामीरी अमल की तरफ़ लोगों को पुकारे। मगर कुछ अर्से के बाद जब वह देखे कि उसकी दावत लोगों में ज्यादा मकबूल नहीं हो रही है तो वह बेसब्री का शिकार हो जाए और ख़ामोश तामीरी के महाज को छोड़कर ऐसे इस्लाम की तरफ़ दौड़ पड़े जिसके जरिए अवाम में बहुत जल्द शोहरत और मर्तबा हासिल किया जा सकता है।

जंग के मैदान से भागना शुऊर और इरादे के तहत होता है। मगर जंगी मैदान के बाहर जो मअरका जारी है उससे “भागना” एक ग़ैर शुऊरी वाक़या है। आदमी तबई तौर पर (स्वभावगत) नतीजापसंद वाक़अ हुआ है। वह अपने काम का एतराफ़ (स्वीकार्यता) चाहता है। उसका यह मिजाज ग़ैर शुऊरी तौर पर उसे उन कामों से हटा देता है जिनमें फौरी नतीजा निकलता हुआ नजर न आता हो। वह अपने अंदर काम करने वाले ग़ैर शुऊरी असरात के तहत उन चीज़ों की तरफ़ खिंच उठता है जिनमें बजहिर यह उम्मीद हो कि फ़ैसन इज्जत व क़म्याबी हासिल हो जाएगी। इस किस्म का हर इहियाफ़ (भटकाव) अपनी हकीक़त के एतबार से उसी नैइयत की चीज़ है जिसे मज्कूरा आयत में मुक़बले के मैदान से भागना कहा गया है।

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ وَمَا رَمَيْتُمْ إِذْ رَمَيْتُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ
وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ ذَلِكُمْ وَأَنَّ
اللَّهَ مُؤْمِنٌ كَيِّدٌ الْكَافِرِينَ ۝ إِن تَسْتَفْتُوا فَقَدْ جَاءَكُمْ الْفَتْهُوَ وَإِنْ تَنْهَوْا
فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدْ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ ۖ
وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

पस उन्हें तुमने क़त्ल नहीं किया बल्कि अल्लाह ने क़त्ल किया। और जब तुमने उन पर ख़ाक़ फेंकी तो तुमने नहीं फेंकी बल्कि अल्लाह ने फेंकी ताकि अल्लाह अपनी तरफ़ से ईमान वालों पर ख़ूब एहसान करे। बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। यह तो हो चुका। और बेशक अल्लाह मुंकिरीन की तमाम तदबीरें (युक्तियाँ) बेकार करके रहेगा। अगर तुम फैसला चाहते थे तो फैसला तुम्हारे सामने आ गया। और अगर तुम बाज आ जाओ तो यह तुम्हारे हक़ में बेहतर है। और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम भी फिर वही करेंगे और तुम्हारा ज़त्था तुम्हारे कुछ काम न आएगा चाहे वह कितना ही ज्यादा हो। और बेशक अल्लाह ईमान वालों के साथ है। (17-19)

रिवायत में आता है कि जब बद्र का मअरका गर्म हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम की ज़बान से दुआ करते हुए यह अल्फ़ज निकले : 'ऐ मेरे रब, अगर यह जमाअत हलाक हो गई तो कभी ज़मीन पर तेरी परस्तिश न होगी।' फिर आपने अपने हाथ में मुट्ठी भर खाक ली और उसे मुश्रीकी की तरफ फेंकते हुए कहा : 'चेहरे बिगड़ जाएं' इसके बाद मुंकिरों के लश्कर का यह हाल हुआ जैसे सबकी आंखों में रेत पड़ गई हो। चुनांचे अहले ईमान ने निहायत आसानी से जिसे चाह कल किया और जिसे चाह गिरफ्तार कर लिया।

यह अल्लाह का जिम्मा है कि वह अहले ईमान की मदद करता है। उनके दुश्मन चाहे कितनी ही साजिशें करें वह उनकी साजिशों को अपनी तदबीरों से बेअसर कर देता है। वह उन्हें मगलुब करके अहले ईमान को उनके ऊपर ग़ालिब कर देता है। मगर ऐसा कब होता है। ऐसा उस वक्त होता है जबकि अहले ईमान अपने इरादे को खुदा के इरादे में इस तरह मिला दें कि खुदा की मंशा और अहले ईमान की मंशा दोनों एक हो जाएं। जब बंदा इस तरह अपने आपको खुदा के मुताबिक कर लेता है तो जो कुछ खुदा का है वह उसका हो जाता है क्योंकि जो कुछ उसका है वह खुदा को दे चुका होता है।

बद्र के लिए रवानगी से पहले मक्का के सरदार बैतुल्लाह गए और काबे के पर्दे को पकड़ कर यह दुआ की : 'खुदाया उसकी मदद कर जो दोनों लश्करों में सबसे आला हो, जो दोनों गिरेहों में सबसे मुअज्ज (आदरणीय) हो, जो दोनों कबीलों में सबसे बेहतर हो।' बद्र की लड़ाई में मक्का के सरदारों को कामिल शिकस्त और अहले ईमान को कामिल फतह हुई। इस तरह खुद मक्का के सरदारों के मेयार के मुताबिक यह साबित हो गया कि खुदा के नजदीक आला व अशरफ (उच्च, संभ्रात) गिरोह वह नहीं हैं बल्कि अहले इस्लाम हैं। इसके बावजूद उन्होंने इस्लाम कुबूल नहीं किया। जो लोग ऐसा करें उनके लिए आखिरत में सख़्नातरीन अजाब है और इसी के साथ दुनिया में भी।

'दोनों में जो सबसे आला और सबसे अशरफ हो उसे फ़तह दे' यह बजहिर दुआ थी मगर हकीकत वह अपने हक में पुफ़्फ़ा एतमाद का इहार था। इसके पीछे उनकी यह नफ़िस्यात काम कर रही थी कि हम काबा के पासवान हैं, हम इब्राहीम व इस्लाम से निस्वत रखने वाले हैं। जब हमारे साथ इतनी बड़ी फ़जीलतें जमा हैं तो जीत बहरहाल हमारी होनी चाहिए। मगर खुदा के यहां जाती अमल की कीमत है न कि ख़ारजी इतिहास (वाह्य जुड़ावों) की। ख़ारजी इतिहास चाहे वह कितना ही बड़ा हो आदमी के कुछ काम आने वाला नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اطِيعُوا اللَّهَ وَرُسُلَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاتَّقُوا
تَسْعُونَ ۖ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ۚ إِنَّ
شَرَّ الدِّنِّ وَآبٍ عِنْدَ اللَّهِ الضُّمُّ الْبِكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۚ وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ
فِيهِمْ خَيْرًا لَاسْمَعَهُمْ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ۚ

ऐ ईमान वालो, अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो और उससे रूगदानी (अवहेलना) न करो हालांकि तुम सुन रहे हो। और उन लोगों की तरह न हो

जाओ जिन्होंने कहा कि हमने सुना हालांकि वे नहीं सुनते। यकीनन अल्लाह के नजदीक बदतरीन जानवर वे बहरे गूंगे लोग हैं जो अक्ल से काम नहीं लेते। और अगर उनमें किसी भलाई का इल्म अल्लाह को होता तो वह जरूर उन्हें सुनने की तौफ़ीक देता और अगर अब वह उन्हें सुनवा दे तो वे जरूर रूगदानी करंगे बेरुखी करते हुए। (20-23)

आदमी के सामने जब हक बात पेश की जाए तो एक सूरत यह है कि वह उसे उन तमाम सलाहियों को इस्तेमाल करते हुए सुने जो खुदा ने उसे बहैसियत इंसान अता की हैं। वह उस पर पूरी तरह ध्यान दे। वह उसकी सदाकत के वजन को महसूस कर ले। और फिर अपनी ज़बान से वह सही जवाब पेश करे जो एक हक के मुक़बले में इंसान की फ़ितरत को पेश करना चाहिए। जो शख्स ऐसा करे उसने गोया पेश की हुई बात को इंसान की तरह सुना। दूसरी सूरत यह है कि वह उसे इस तरह सुने जैसे कि उसके पास सुनने के लिए कान नहीं हैं। उसके समझने की सलाहियत उसकी सच्चाई को पकड़ने से आजिज रह जाए। वह अपनी ज़बान से वह सही जवाब पेश न कर सके जो उसे अजरूप वाक्या (यथार्थतः) पेश करना चाहिए। जो शख्स ऐसा करे उसने गोया पेश की हुई बात को जानवर की तरह सुना।

कोई बात चाहे वह कितनी ही बरहक हो उसकी हक़मनित सिर्फ़ उसी शख्स पर खुलती है जो दिल की आमादगी के साथ उसे सुने। इसके बरअक्स जो शख्स हसद, किब्र (अहं), मस्लेहत अंदेशी (स्वार्थता) और जाहिरपरस्ती का मिजाज अपने अंदर लिए हुए हो वह सच्चाई को काबिले ग़ौर नहीं समझेगा, वह उसे संजीदगी के साथ नहीं सुनेगा, इसलिए वह उसकी सदाकत को पाने में भी यकीनी तौर पर नाकाम रहेगा।

ईमान बजहिर एक कैल है। मगर अपनी हकीकत के एतबार से वह एक इंसानी फैसला है। ईमान महज शहादत के अल्फ़ज की तकरार नहीं बल्कि अपनी मअनवी (अर्थपूर्ण) हालत का लफ़्ज़ी इहार है। अगर आदमी की हालत फ़ित्नाक़ (वस्तुतः) वही हो जिसका वह उन अल्फ़ज के जरिए एलान कर रहा है तो वह खुदा की नज़ में हकीकी मेमिन है। मेमिन संजीदातरीन इंसान है और संजीदा इंसान कभी ऐसा नहीं कर सकता कि उसकी अंदुरुनी हालत कुछ हो और बोले हुए अल्फ़ज में वह अपने को कुछ जाहिर करे।

जिस आदमी का ईमान अपनी अंदुरुनी हकीकत के एलान के हममअना हो वह ईमान का इकरार करते ही अमलन खुदा को अपना माबूद (पूज्य) बना लेगा और अपनी ज़िंदगी के तमाम मामलात में उसकी पैरवी करने वाला बन जाएगा। ज़बान से ईमान का इकरार उसके लिए अपनी समते सफ़र बताने के हममअना होगा न कि किसी किस्म के ज़बानी तलफ़ुज (उच्चारण) के हममअना। इसके बरअक्स हालत उस शख्स की है जिसने बात सुनी। वह उसके दलाइल के मुकाबले में लाजवाब भी हो गया। मगर वह उसकी रूह में नहीं उतरी। वह उसके दिल की धड़कनों में शामिल नहीं हुई। ताहम ऊपरी तौर पर उसने ज़बान से कह दिया कि हां ठीक है। मगर उसकी वाकई ज़िंदगी इसके बाद भी वैसी ही रही जैसी कि वह इससे पहले थी। यह दूसरी सूरत निफ़ाक (पाखंड) की सूरत है और खुदा के यहां ऐसे मुनाफ़िक़ना (पाखंड भरे) ईमान की कोई कीमत नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ
وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَهُ الْبُيُوتِ الْحُسُورِ ۚ وَاتَّقُوا
فِتْنَةً لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

ऐ ईमान वालो, अल्लाह और रसूल की पुकार पर लम्बैक (स्वीकारोक्ति) कहो जबकि रसूल तुम्हें उस चीज़ की तरफ बुला रहा है जो तुम्हें ज़िंदगी देने वाली है। और जान लो कि अल्लाह आदमी और उसके दिल के दर्मियान हायल (बाधित) हो जाता है। और यह कि उसी की तरफ तुम्हारा इकट्ठा होना है। और डरो उस फितने से जो ख़ास उन्हीं लोगों पर घटित न होगा जो तुममें से जुल्म के करने वाला हुए हैं। और जान लो कि अल्लाह सज़ा देने वाला है। (24-25)

‘ज़िंदगी की पुकार’ से मुराद यहां ज़िहाद की पुकार है। यानी हक को दूसरों तक पहुंचाने की जद्दोज़हद। यह जद्दोज़ेहद इब्किदा में ज़वान व कलम के ज़रिए तल्कीन (दीक्षा) की सूरत में शुरू होती है। मगर मदऊ (सम्बोधित पक्ष) का मुखालिफ़ाना रद्देअमल उसे विभिन्न मराहिल तक पहुंचा देता है, यहां तक कि हिजरत (स्थान-परिवर्तन) और जंग तक भी। आदमी इफ़रादी सतह पर अपने ख़्याल के मुताबिक एक दीनी ज़िंदगी बनाता है। इस ज़िंदगी को वह अपने हालात से इस तरह मुताबिक कर लेता है कि वह उसे आफ़िज़त का ज़ीरा (शांति दीप) मालूम होने लगती है। उसे ऐसा महसूस होता है कि अगर वह दूसरों की इस्लाह (सुधार) के लिए उठा तो उसका बना बनाया आशियाना उजड़ जाएगा। उसकी लगी बंधी ज़िंदगी बेतर्तीब हो कर रह जाएगी। उसके वक्त और उसके माल का वह निज़ाम बाकी न रहेगा जो उसने अपने जाती तक्ज़िज़ के तहत बना रखा है।

इस किस्म के अदिशे उसके लिए दावत व इस्लाह की जद्दोज़हद में निकलने और इसकी राह में जान व माल पेश करने के लिए रुकावट बन जाते हैं। मगर यह सरासर नादानी है। हकीकत यह है कि आदमी जिस आफ़िज़तकदा (शांति-स्थल) को अपने लिए ज़िंदगी समझ रहा है वह उसका कब्रस्तान है। और जिस कुर्बानी में उसे अपनी मौत नज़र आती है उसी में उसकी ज़िंदगी का राज छुपा हुआ है।

दावत व इस्लाह का अमल, बशर्ते कि वह आख़िरत के लिए हो न कि दुनियावी मकासिद के लिए, इतिहाई अहम अमल है। वह आदमी के मुर्दा दीन को ज़िंदा दीन बनाता है। वह आलातरीन सतह पर इंसान को खुदा से जोड़ता है। वह उन कीमती दीनी तज़र्बात से आदमी को आशना करता है जो इफ़रादी खोल में रहकर कभी हासिल नहीं होते। खुदा की तरफ से इतनी अहम पुकार को सुनकर जो लोग उसके बारे में बेतवज़ोह रहें वे यह ख़तरा मोल ले रहे हैं कि उनके और हक (सत्य) के दर्मियान एक नपिसयाती (मनोवैज्ञानिक) आड़ खड़ी हो जाए।

उनकी यह फितरी सलाहियत हमेशा के लिए कुंद हो जाए कि वे हक की पुकार को सुनें और उसकी तरफ दौड़कर अपने रब को पा लें।

इंसान की ज़िंदगी एक समाजी ज़िंदगी है। कोई शख्स उसके अंदर अपना इफ़रादी ज़ीरा बनाकर नहीं रह सकता। अगर एक शख्स जाती दीनदारी पर कानेअ (संतुष्ट) है तो वह हर वक्त इस अदिशे में है कि इज्तिमाई (सामूहिक) बिगाड़ के नतीजे में कोई उमूमी आग फैले और वह खुद भी उसकी लपेट में आ जाए। इस्लाही (सुधारवादी) जद्दोज़हद इस्लाह के साथ दायित्व-पालन भी है। अगर आदमी दायित्व-पालन पेश करने में नाकाम रहे तो खुदा उसके मामले को क्यों दूसरों से अलग करेगा।

कोई बुराई हमेशा छोटी सतह से शुरू होती है और फिर बढ़ते-बढ़ते बड़ी बन जाती है। अगर ऐसा हो कि बुराई जब अपनी इब्किदाई हालत में हो उसी वक्त कुछ लोग उसके खिलाफ उठ जाएं तो वे आसानी के साथ उसे कुचल देंगे। लेकिन जब बुराई फैल चुकी हो तो उसकी जड़ें इतनी गहरी हो जाती हैं कि फिर उसे ख़त्म करना मुमकिन नहीं रहता।

وَادْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُمْ بِبَصَرِهِ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَحُونُوا أَمْثَلَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

और याद करो जबकि तुम थोड़े थे और जमीन में कमजोर समझे जाते थे। डरते थे कि लोग अचानक तुम्हें उचक न लें। फिर अल्लाह ने तुम्हें रहने की जगह दी और अपनी नुसरत (मदद) से तुम्हारी ताईद की और तुम्हें पाकीजा रेजी दी ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो। ऐ ईमान वालो, ख़ियानत (विश्वास-भंग) न करो अल्लाह और रसूल की और ख़ियानत न करो अपनी अमानतों में हालांकि तुम जानते हो। और जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक आजमाइश हैं। और यह कि अल्लाह ही के पास है बड़ा अज़्र। (26-28)

मक्का में मुसलमान बिल्कुल बेबसी की हालत में थे। हर वक्त यह अदिशा लगा रहता कि कब उन्हें उखाड़ कर फेंक दिया जाए। वे ऐसे कमजोर की मानिंद थे जिसे हर तरह दबाया जाता था और उसके जाइज हुक्म भी उसे नहीं दिए जाते। बिलआख़िर उनके लिए मदीने का रास्ता खुला। उन्हें यह मौका दिया गया कि वे मदीना जाकर अपना मर्कज़ बनाएं और वहां के माहिल में आजदी और इज़्ज़त के साथ रहे।

मुश्किल के बाद आसानी फराहम करने का यह मामला इसलिए किया जाता है ताकि आदमी के अंदर शुक्र का जब्बा उभरे। आदमी के हालात जब इस हद पर पहुंच जाते हैं

जहां वह अपने आपको बेबस महसूस करने लगता है। उस वक्त अचानक अल्लाह का मदद जाहिर होकर हालात को बदल देती है। ऐसा इसलिए होता है ताकि आदमी यकीन करे कि जो कुछ हुआ वह खुदा की तरफ से हुआ। इस एहसास की बिना पर वह खुदा के इनामात के जन्मे से सरशार हो जाए।

आदमी खुदा और उसके रसूल पर ईमान लाता है। इस तरह वह यह अहद करता है कि वह खुदा व रसूल के रास्ते पर चलेगा। मगर जब ईमानी तरीके को इख्तियार करने में उसके माल व औलाद के तकाजे हाथल होते हैं तो वह ईमान के तकाजे को छोड़कर माल व औलाद के तकाजे को पकड़ लेता है। यह ईमानी अहद के साथ खुली हुई गद्दारी है। इस गद्दारी की शनाअत (तीव्रता) उस वक्त और बढ़ जाती है जब यह देखा जाए कि आदमी जिस चीज की खातिर खुदा के साथ गद्दारी का मामला कर रहा है वह भी खुद खुदा का एक अतिय्या (देन) है।

आदमी का माल और उसकी औलाद क्या है। वह खुदा ही का दिया हुआ तो है। वह बंदे के पास खुदा की अमानत है। इस अमानत का अगर कोई सबसे बेहतर मसरफ (उपयोग) हो सकता है तो वह यह है कि जब देने वाला उसे मांगे तो उसे बखुशी उसके हवाले कर दिया जाए। मगर जब खुदा कहता है कि मेरे दीन के लिए उठो और उसमें अपनी कुव्वतें लगाओ तो आदमी उसी अमानत को अपने लिए उज्र बना लेता है जिसे खुदा के दीन की राह में देकर उसे खुदा से किए हुए ईमान के अहद को पूरा करना था। वह कामयाबी के कनारे पहुंच कर अपने को नाकामों की फेहरिस्त में लिखवा लेता है।

कोई फेअल (कृत्य) खुदा के यहां जुर्म उस वक्त बनता है जबकि यह जानते हुए उस पर अमल किया जाए कि वह ग़लत है। किसी शख्स पर अगर उसके एक काम की ग़लती वाजेह हो जाती है और इसके बाद भी वह उसे करता है तो वह बहुत बड़ी जिम्मेदारी अपने सर ले रहा है। क्योंकि ग़लती को ग़लती जानने के बाद उसे दोहराना डिठाई है और डिठाई खुदा के यहां माफी के काबिल नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ⑤ وَإِذْ يَنْكُرُ بِكَ الَّذِينَ
كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ وَيَمْكُرُونَ وَيَنْكُرُ اللَّهُ وَاللَّهُ
خَبِيرُ الْمَاكِرِينَ ⑥

ऐ ईमान वालो, अगर तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए फुरकान बहम पहुंचाएगा और तुमसे तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा और तुम्हें बख्शा देगा और अल्लाह बड़े फज़ल वाला है, और जब मुंकिर तुम्हारे बारे में तदबीरें सोच रहे थे कि तुम्हें कैद कर दें या क़त्ल कर डालें या जलावतन (निर्वासित) कर दें। वे अपनी तदबीरें कर रहे थे और अल्लाह अपनी तदबीरें कर रहा था और अल्लाह बेहतरीन तदबीर वाला है। (29-30)

फुरकान बेमअना हैफ़र्क़ करने वाली चीज। यहां फुरकान से मुआद हक़ व बातिल के दर्मियान फ़र्क़ करने की सलाहियत है। आदमी अगर अल्लाह से डरे, वह वही करे जिसका अल्लाह ने हुक्म दिया है और उससे बचे जिससे अल्लाह ने मना किया है तो उसे इस बात की तौफ़ीक़ मिलती है कि वह हक़ और बातिल को एक दूसरे से अलग करके देख सके।

ईंसानी सलाहियतों को बेदार करने वाली सबसे बड़ी चीज डर है। जिस मामले में ईंसान के अंदर डर की नफ़िसयात पैदा हो जाए उस मामले में वह हद दर्जा हकीक़तपसंद बन जाता है। डर की नफ़िसयात उसके जेहन के तमाम पर्दों को इस तरह हटा देती है कि इस बारे में वह हर किस्म की ग़ल्लत या ग़लतफ़हमी से बुलन्द होकर सहीतरीन राय क़ायम कर सके। यही मामला खुदा के उस बंदे के साथ पेश आता है जिसे रब्बुल आलमीन के साथ तकवा (डर) का तअल्लुक पैदा हो गया हो।

यह फुरकान तक्रीबन वही चीज है जिसे मअरफ़त या बसीरत कहा जाता है। बसीरत किसी आदमी में वह अंदरूनी रोशनी पैदा करती है कि वह जाहिरी पहलुओं से धोखा खाए बग़ैर हर बात को उसके अस्ल रूप में देख सके। जब भी कोई आदमी किसी मामले में अपने को इतना ज्यादा शामिल करता है कि वह उसकी परवाह करने लगे। वह उसके बारे में अंदेशानाक (संदेह में) रहता हो तो इसके बाद उसके अंदर एक ख़ास तरह की हस्सासियत (संवेदनशीलता) पैदा होती है जो उसे इस मामले में मुवाफ़िक़ और मुख़ालिफ़ पहलुओं की पहचान करा देती है। यह फुरकानी मामला हर एक के साथ पेश आता है चाहे वह एक मजहबी आदमी हो या एक ताजिर और डॉक्टर और इंजीनियर। कोई भी आदमी जब अपने काम से तकवा (खटक) की हद तक अपने को वाबस्ता करता है तो उसे इस मामले की ऐसी मअरफ़त हो जाती है कि इधर उधर के मुग़ालतों (भ्रमों) में उलझे बग़ैर वह उसकी हकीक़त तक पहुंच जाए।

किसी आदमी के अंदर यह खुदाई बसीरत (फुरकान) पैदा होना इस बात की सबसे बड़ी जमानत है कि वह बुराइयों से बचे, वह खुदा के साथ अपने तअल्लुक को दुरुस्त करे और बिलआफ़िइय्या के फल का मुस्तहिक़ बन जाए। यह फुरकान (हक़ व बातिल की नफ़िसयाती तमीज) पैदा हो जाना इस बात का सबूत है कि आदमी अपने आपको हक़ के साथ इतना ज्यादा वाबस्ता कर चुका है कि उसमें और हक़ में कोई फ़र्क़ नहीं रहा। वह और हक़ दोनों एक दूसरे का मुसन्ना बन चुके हैं। इसके बाद उसका बचाया जाना उतना ही जरूरी हो जाता है जितना हक़ को बचाया जाना। ऐसे लोग बराहेरास्त खुदा की पनाह में आ जाते हैं। अब उनके ख़िलाफ़ तदबीरें करना खुद हक़ के ख़िलाफ़ तदबीरें करना बन जाता है। और खुदा के ख़िलाफ़ तदबीरें करने वाला हमेशा नाकाम रहता है चाहे उसने कितनी ही बड़ी तदबीर कर रखी हो।

وَإِذْ أَتَى عَلَىٰ هُمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَذَا إِنْ هَذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ⑦ وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا جَارَاتٍ مِنَ السَّمَاءِ أَوْ ائْتِنَا بِعَذَابٍ آسِئٍ ⑧ وَمَا كَانَ

اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿٣٦﴾
وَمَا لَهُمْ آلَا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا
أَوْلِيَاءَ لَهُ إِنَّ أَوْلِيَاءَهُ إِلَّا الْمُتَفَقُّونَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾ وَمَا كَانَ
صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مَكَاةً وَتَصَدِيَةً قَدْ وَقَّوْا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُونَ ﴿٣٨﴾

और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं हमने सुन लिया। अगर हम चाहें तो हम भी ऐसा ही कलाम पेश कर दें। यह तो बस अगलों की कहानियां हैं। और जब उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह अगर यही हक है तेरे पास से तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा दे या और कोई दर्दनाक अजाब हम पर ले आ। और अल्लाह ऐसा करने वाला नहीं कि उन्हें अजाब दे इस हाल में कि तुम उनमें मौजूद हो और अल्लाह उन पर अजाब लाने वाला नहीं जबकि वे इस्तिफ़ाह (क्षमा-याचना) कर रहे हों। और अल्लाह उन्हें क्यों न अजाब देगा हालांकि वे मस्जिदे हराम से रोकते हैं जबकि वे उसके मुतवल्ली (संरक्षक) नहीं। उसके मुतवल्ली तो सिर्फ अल्लाह से डरने वाले हो सकते हैं। मगर उनमें से अक्सर इसे नहीं जानते। और बैतुल्लाह के पास उनकी नमाज सीटी बजाने और ताली पीटने के सिवा और कुछ नहीं। पस अब चखो अजाब अपने कुर्र का। (31-35)

हम भी ऐसा कलाम बना सकते हैं, हम नाहक पर हैं तो हमारे ऊपर पत्थर क्यों नहीं बरसता। ये सब घमंड की बातें हैं। आदमी जब दुनिया में अपने को महफूज हैसियत में पाता है, जब वह देखता है कि हक का इंकार करने या उसे नजरअंदाज करने से उसका कुछ नहीं बिगड़ा तो उसके अंदर झूठे एतमाद की नफिसयात पैदा हो जाती है। वह समझता है कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह बिल्कुल दुरुस्त है। उसका यह एहसास उसकी जवान से ऐसे कलिमात निकलवाता है जो आम हालात में किसी की जवान से नहीं निकलते।

इस किस्म के लोगों में यह दिलेरी खुदा के कानूने मोहलत की वजह से पैदा होती है। खुदा यकीनन मुजरिमों को सजा देता है मगर खुदा की सुन्नत यह है कि वह आदमी को हमेशा उस वक्त पकड़ता है जबकि उसके ऊपर हक व बातिल की वजाहत का काम मुकम्मल तौर पर अंजाम दे दिया गया हो। इस काम की तक्मील से पहले किसी को हलाक नहीं किया जाता। साथ ही यह कि दावती अमल के दर्मियान अगर एक-एक दो-दो आदमी उससे मुतअस्सिर होकर अपनी इस्लाह कर रहे हों तब भी सजा का नुज़ूल रुका रहता है ताकि यह अमल इस हद तक मुकम्मल हो जाए कि जितनी सईद (पावन) रूहें हैं सब उससे बाहर आ चुकी हों।

उम्मतों में बिगाड़ आता है तो ऐसा नहीं होता कि उनके दर्मियान से दीन की सूखें भिट जाएं। बिगाड़ के जमाने में हमेशा यह होता है कि खुदा के ख़ौफ वाला दीन जाता रहता है

और उसकी जगह धूम धाम वाला दीन आ जाता है। अब कौम के पास अमल नहीं होता बल्कि माजी की शख्सियतें और उनके नाम पर कायमशुदा गद्दियां होती हैं। लोग इन शख्सियतों और इन गद्दियों से वाबस्ता होकर समझते हैं कि उन्हें वही अज्मत हासिल हो गई है जो तारीखी असबाब से खुद इन शख्सियतों और गद्दियों को हासिल है। लोग अंदर से खाली होते हैं मगर बड़े-बड़े नामों पर नुमाइशी आमांल करके समझते हैं कि वे बहुत बड़ा दीनी कारनामा अंजाम दे रहे हैं।

मक्का के लोग इसी किस्म की नफिसयात में मुक्तिला थे। उन्हें फ़ख्र था कि वे बैतुल्लाह के वारिस हैं। इब्राहीम व इस्माईल जैसे जलीलुलकदर पैगम्बरों की उम्मत हैं। उन्हें काबा के खादिम होने का शरफ हासिल है। उनका ख़्याल था कि जब उन्हें इतने दीनी एजाजात (पारितोष) हासिल हैं और वे इतने बड़े-बड़े दीनी कारनामे अंजाम दे रहे हैं तो कैसे मुमकिन है कि खुदा उन्हें जहन्नम में डाल दे।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيُنفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُخْشَرُونَ ﴿٣٩﴾ لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكَبَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٤٠﴾

जिन लोगों ने इंकार किया वे अपने माल को इसलिए ख़र्च करते हैं कि लोगों को अल्लाह की राह से रोके। वे उसे ख़र्च करते रहेंगे फिर यह उनके लिए हसरत बनेगा फिर वे मगलूब (परास्त) किए जाएंगे। और जिन्होंने इंकार किया उन्हें जहन्नम की तरफ इकट्ठा किया जाएगा। ताकि अल्लाह नापाक को अलग कर दे पाक से और नापाक को एक पर एक रखे फिर इस ढेर को जहन्नम में डाल दे, यही लोग हैं ख़सारे (घाटे) में पड़ने वाले। (36-37)

इंसानों में कुछ पाक हैं और कुछ नापाक। कुछ रूहों की गिजा वे चीजें होती हैं जो खुदा को पसंद हैं और कुछ रूहों को उन चीजों में लज्जत मिलती है जो उनके नफ्स को या शैतान को मरगूब हैं।

आम हालात में ये दोनों किस्म के लोग एक दूसरे से मिले रहते हैं। बजाहिर इनमें कोई फर्क दिखाई नहीं देता। इसलिए अल्लाह तआला लोगों के दर्मियान हक व बातिल (सत्य-असत्य) की कशमकश बरपा करता है ताकि दोनों किस्म के लोग एक दूसरे से अलग हो जाएं और यह मालूम हो जाए कि कौन क्या था और कौन क्या था।

इस कशमकश के दौरान खुल जाता है कि कौन हक के सामने आने के बाद फौरन उसे मान लेता है और कौन वह है जो उसका इंकार कर देता है। कौन दूसरों के साथ मामला पड़ने पर इंसाफ की हद पर कायम रहता है और कौन बेइंसाफी पर उतर आता

है। कौन खुदा की जमीन में मुतवाजेअ (सदाचारी) बनकर रहता है और कौन सरकश बनकर। कौन सच्चाई की राह में अपना माल खर्च करने वाला है और कौन तअस्सुब और नुमाइश की राह में।

जो लोग हक को छोड़कर दूसरी राहों में अपनी कोशिशें सर्फ करते हैं उनके इस अमल को शैतान उनकी नजर में इस तरह हसीन बनाता रहता है कि वे समझते हैं कि वे आला कारनामे अंजाम दे रहे हैं, वे शानदार मुस्तकबिल की तरफ बढ़ रहे हैं। मगर इस ग़लतफ़हमी की उम्र बहुत थोड़ी होती है। बहुत जल्द आदमी पर वह वक्त आ जाता है जबकि वह जान लेता है कि उसने जो कुछ किया वह सिर्फ अपनी कुव्वत और अपने माल को जाया करना था, वह जिस मुस्तकबिल की तरफ बढ़ रहा था वह हसरत और मायूसी का मुस्तकबिल था। अगरचे झूठी खुशफ़हमी के तहत वह उसे रेशन मुस्तकबिल की तरफ सफर के हममअना समझता रहा था।

बेआमेज हक की दावत उठती है तो वे तमाम लोग अपने ऊपर उसकी ज़द पड़ती हुई महसूस करते हैं जो मिलावटी दीन की बुनियाद पर सरदारी कायम किए हुए थे। वे उस रवाजी ढांचे की हिफाजत में अपनी सारी ताकत खर्च कर देते हैं जिसके अंदर उन्हें बड़ई का मक़म हासिल है। मगर ऐसे लोग बेआमेज हक के मुक़बले में लाजिम नाकाम होते हैं, कभी दलील के मैदान में और कभी इसी के साथ अमल के मैदान में भी।

मौजूदा दुनिया के हंगामे सिर्फ इसलिए जारी किए गए हैं कि पाक रूहों और नापाक रूहों को एक दूसरे से अलग कर दिया जाए। यह छांटने का अमल जब पूरा हो जाएगा तो खुदा पाक रूहों को जन्नत में दाखिल कर देगा और नापाक रूहों को एक साथ जमा करके जहन्नम में धकेल देगा।

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنتُ الْأَوَّلِينَ ۖ وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ فَإِنِ انْتَهُوا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۖ وَإِن تَوَلَّوْا فاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَكُمْ يُعِمُّ الْبَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ ۚ

इंकार करने वालों से कहो कि अगर वे वाज आ जाएं तो जो कुछ हो चुका है वह उन्हें माफ कर दिया जाएगा। और अगर वे फिर वही करेंगे तो हमारा मामला अगरतो के साथ गुजर चुका है। और उनसे लड़ें यहाँ तक कि फितना बाक़ी न रहे और दीन सब अल्लाह के लिए हो जाए। फिर अगर वे वाज आ जाएं तो अल्लाह देखने वाला है उनके अमल का। और अगर उन्होंने एराज (उपेक्षा) किया तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा मौला है और क्या ही अच्छा मौला है और क्या ही अच्छा मददगार। (38-40)

इस्लाम का उसूल यह है कि जो शख्स जैसा अमल करे उसके मुताबिक वह अपना बदला पाए। ताहम अल्लाह तआला ने इस आम उसूल में अपनी रहमत से एक खास इस्तिसना (अपवाद) रखा है। वह यह कि आदमी जब 'तौबा' कर ले तो इसके बाद उसके पिछले आमाल पर उसे कोई सजा नहीं दी जाएगी। एक शख्स खुदा से दूरी की ज़िंदगी गुज़ार रहा था। फिर उसे हिदायत की रोशनी मिली। उसने सच्चा मोमिन बनकर सालेह ज़िंदगी इख़्तियार कर ली तो इससे पहले उसने जो बुराईयां की थीं वे सब माफ कर दी जाएंगी। उसके पिछले गुनाहों की बिना पर उसे नहीं पकड़ा जाएगा।

ठीक यही उसूल इज्तिमाई और सियासी मामले में भी है। किसी मक़ाम पर हक और बातिल की कशमकश बरपा होती है आपस में टकराव होता है, इस टकराव के दौरान में बातिल के अलमबरदार हक के लिए उठने वालों पर जुल्म करते हैं। बिलआखिर जंग का पैसला होता है। हक़मस्त ग़ालिब आ जाते हैं और नाहक के अलमबरदार मग़लूब होकर ज़े (परास्त) कर दिए जाते हैं। इस मामले में भी इस्लाम का उसूल वही है जो ऊपर मन्ज़ूर हुआ। यानी फ़तह के बाद पिछले जुल्म व सितम पर किसी को सजा नहीं दी जाएगी। अलबत्ता जो शख्स फ़तह के बाद कोई ऐसी हरकत करे जो इस्लामी क़ानून में जुर्म करार दी गई हो तो जरूरी कार्रवाई के बाद उसे वह सजा मिलेगी जो शरीअत ने ऐसे एक मुजरिम के लिए मुकर्रर की है।

फ़ितना का मतलब सताना (Persecution) है। क़दीम ज़माने में सरदारी और हुकूमत शिर्क की बुनियाद पर कायम होती थी। आज हुकूमत करने वाले अवांम का नुमाइंदा बनकर हुकूमत करते हैं, माजी में खुदा या खुदा के शरीकों का नुमाइंदा बनकर लोग हुकूमत किया करते थे। इसके नतीजे में शिर्क को क़दीम समाज में बाइक्तेदार (सत्तायुक्त) हैसियत हासिल हो गई थी। अहले शिर्क अहले तौहीद को सताते रहते थे। अल्लाह ने अपने रसूल और आपके साथियों को हुक्म दिया कि शिर्क और इक्तेदार के बाहमी तअल्लुक को तोड़ दो ताकि मुश्रीकीन अहले तौहीद को सताने की ताकत से महरूम हो जाएं। चुनावे आपके जरिए जो आलमी इंकलाब आया उसने हमेशा के लिए शिर्क का रिश्ता सियासी निजाम से ख़त्म कर दिया। अब शिर्क सारी दुनिया में सिर्फ एक मजहबी अक़ीदा है न कि वह सियासी नज़रिया जिसकी बुनियाद पर हुकूमतों का क़ायम अमल में आता है।

ताहम जहाँ तक अरब का तअल्लुक है वहाँ यह मक़सद दोहरी सूरत में मल्बूब था, यहाँ शिर्क और मुश्रीकीन दोनों को ख़त्म करना था ताकि हरमैन के इलाक़े को अबदी तौर पर ख़ालिस तौहीद (एकेश्वरवाद) का मक़ज बना दिया जाए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि जज़ीरा अरब से मुश्रीकीन को निकाल दो। यह काम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में शुरू हुआ और हज़रत उमर फ़रूक की ख़िलाफ़त के ज़माने में अपनी तक्मील को पहुंचा।

وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ إِن كُنْتُمْ أَمْنْتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَنَا
عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ التَّلَاقِ الْجَمْعَيْنِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ④

और जान लो कि जो कुछ ग़नीमत का माल (जंग में हासिल माल) तुम्हें हासिल हो उसका पांचवां हिस्सा अल्लाह और रसूल के लिए और रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और मुसाफिरों के लिए है, अगर तुम ईमान रखते हो अल्लाह पर और उस चीज पर जो हमने अपने वदे (मुहम्मद) पर उतारी फैसले के दिन, जिस दिन कि दोनों जमाअतों में मुठभेड़ हुई और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (41)

ग़नीमत अरबी जवान में उस माल को कहते हैं जो जंग के मैदान में दुश्मन से लड़कर हासिल किया गया हो। कदीम जमाने में यह रवाज था कि जंग के बाद दुश्मन की जो चीज जिसके हाथ लगे वह उसी की समझी जाए। इस्लाम ने यह उसूल मुकर्रर किया कि हर एक को जो कुछ मिला हो वह सबका सब लाकर अमीर के पास जमा करे, कोई शख्स सूई का धागा तक छुपाकर न रखे।

इस तरह सारा ग़नीमत का माल इकट्ठा करने के बाद उसमें से पांचवां हिस्सा खुदा का है जिसे रसूल नियाबत (प्रतिनिधि) के तौर पर वसूल करके पांच जगह इस तरह खर्च करेगा कि एक हिस्सा अपनी जात पर, फिर अपने उन रिश्तेदारों पर जिन्होंने रिश्ते की बुनियाद पर मुश्किल वक्तों में आपके दीनी मिशन में आपका साथ दिया, और यतीमों पर और हाजतमंदों पर और मुसाफिरों पर। इसके बाद बाकी चार हिस्से को तमाम फौजियों के दरमियान इस तरह तक्सीम किया जाए कि सवार को दो हिस्सा मिले और पैदल को एक हिस्सा।

इस्लाम यह ज़ेहन बनाना चाहता है कि आदमी जो चीज पाए उसे वह खुदा की तरफ से मिली हुई चीज समझे। इस दुनिया में किसी वाक्ये को ज़ुहूर में लाने के लिए बेशुमार असबाब की एक ही वक्त मुवाफिकत (अनुकूलता) ज़रूरी है जो किसी भी इंसान के बस में नहीं। बद की लड़ाई में एक बेहद ताकतवर गिरोह के मुकाबले में एक कमजोर गिरोह का फैसलाकुन तौर पर ग़लबा पाना इस बात का एक ग़ैर मामूली सुबूत था कि जो कुछ हुआ है वह खुदा की तरफ से हुआ है। ऐसी हालत में फ़तह के बाद मिली हुई चीज को खुदा की तरफ से मिली हुई चीज समझना ऐन उस हकीकत को मानना था जो वाक़ात के नतीजे में फ़ितरी तौर पर सामने आई है।

ग़नीमत के माल में दूसरे मुस्तहिक भाइयों का हिस्सा रखना इस बात का सबक है कि अमवाल में हकदार होने की बुनियाद सिर्फ़ महनत और विरासत नहीं बल्कि ऐसी बुनियादें भी हैं जो महनत और विरासत जैसी चीजों के दायरे में नहीं आतीं। इस्तहकाक (पात्रता) की इन दूसरी मदों का एतराफ़ गोया इस वाक्ये का अमली एतराफ़ है कि आदमी चीजों को खुदा की चीज समझता है न कि अपनी चीज।

ग़नीमत के इस क़ानून में तीसरा ज़वरदस्त सबक यह है कि मिल्कियत की बुनियाद क़ब्ज़ नहीं बल्कि उसूल है। कोई शख्स महज इस बिना पर किसी चीज का मालिक नहीं बन जाएगा कि वह इत्तेमक से उसके कब्ज़े में आ गई है। कब्ज़े के बावजूद आदमी को चाहिए कि उस चीज को जिम्मेदार अफ़राद के हवाले करे और उसूली और क़ानूनी बुनियाद पर उसे जितना मिलना चाहिए उसे लेकर उस पर राजी हो जाए।

إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدُوِّ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدُوِّ الْقُصْوَىٰ وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنْكُمْ
وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ لِاخْتِلافْتُمْ فِي الْبَيْعِ وَلَكِنْ لِيَقْضَىٰ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا
لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ وَإِنَّ اللَّهَ
لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ ⑤ إِذْ يُرِيكُمُ اللَّهُ فِي مَتَابِكِ فَلْيُلَاحِظُوا وَكُلُوا أَرْكَهُمُ كَثِيرًا
لَقَسِيلَتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ إِنَّكُمْ عَلَيْهِمْ بِذَاتِ
الضُّدِّ ⑥ وَإِذْ يُرِيكُمُ اللَّهُ إِذْ تَقَيْنَهُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي
أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضَىٰ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ⑦

और जबकि तुम वादी के करीबी किनारे पर थे और वे दूर के किनारे पर। और काफ़िला तुमसे नीचे की तरफ़ था। और अगर तुम और वे वक्त मुकर्रर करते तो ज़रूर इस तक्कर के बारे में तुममें इज़्तेलाफ़ (मतभेद) हो जाता। लेकिन जो हुआ वह इसलिए हुआ ताकि अल्लाह उस चीज़ का फैसला कर दे जिसे होकर रहना था, ताकि जिसे हलाक होना है वह रोशन दलील के साथ हलाक हो और जिसे ज़िंदगी हासिल करना है वह रोशन दलील के साथ जिंदा रहे। यकीनन अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। जब अल्लाह तुम्हारे ख़्बाब में उन्हें थोड़ा दिखाता रहा। अगर वह उन्हें ज्यादा दिखा देता तो तुम लोग हिम्मत हार जाते और आपस में झगड़ने लगते इस मामले में। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें बचा लिया। यकीनन वह दिलों तक का हाल जानता है। और जब अल्लाह ने उन लोगों को तुम्हारी नज़र में कम करके दिखाया और तुम्हें उनकी नज़र में कम करके दिखाया ताकि अल्लाह उस चीज़ का फैसला कर दे जिसका होना तै था। और सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं। (42-44)

अल्लाह तआला को यह मल्लूब है कि हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना लोगों पर पूरी तरह खुल जाए। यह काम इत्तिदा में दावत के ज़रिए दलाइल की जवान में होता है। दाी ताक़तवर और आमफ़हम दलाइल के ज़रिए हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना साबित करता है। इस काम की तक्मील बिलआख़िर ग़ैर मामूली वाक़यात से की जाती है, चाहे यह ग़ैर मामूली वाक़या कोई आसमानी मौजजा हो या ज़मीनी ग़लबा। बद की जंग में यही दूसरा वाक़या पेश आया।

क़ु़ैश मक्का से इसलिए निकले कि शाम से आने वाले अपने तिजारीत क़फ़िले की मदद करें। मुसलमान मदीने से इसलिए निकले कि तिजारीत क़फ़िले पर हमला करें। तिजारीत क़फ़िला मारुफ़ रास्ते को छेड़कर समुद्री साहिल से गुज़्रा और बच गया। और ये दोनों फ़ौज़ें बद्र पहुंच कर आमने सामने हो गए। यह अल्लाह की तदबीर से हुआ। दोनों को एक दूसरे से टकरा कर अहले ईमान को फ़तह दी गई। इस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके मिशन की सदाकत (सच्चाई) लोगों पर पूरी तरह खुल गई। जो लोग सच्चे तालिब थे उन पर आखिरी हद तक यह बात वाज़ेह हो गई कि यही हक़ है। और जो लोग अपने अंदर किसी किस्म की नफ़िसयाती पेचीदगी लिए हुए थे उन्हें इसके बाद भी अपने मस्लक पर कायम रहकर साबित कर दिया कि वे इसी काबिल हैं कि उन्हें हलाक कर दिया जाए।

बद्र में क़ु़ैश की फ़ौज़ की तादाद ज़्यादा थी। अगर मुसलमान उनकी अस्ल तादाद को देखते तो कोई कहता कि लड़ो और कोई कहता कि न लड़ो। इस तरह इख़्तेलाफ़ (मतभेद) पैदा हो जाता और अस्ल काम होने से रह जाता। ख़ुदा ने हस्वेमौका कभी तादाद घटा कर दिखाई और कभी बढ़ाकर। इस तरह मुमकिन हो सका कि तमाम मुसलमान बेजिगरी के साथ लड़ें। ख़ुदा को जब कोई काम मल्सूब होता है तो वह इसी तरह अपनी मदद भेजकर उस काम की तक्मील का सामान कर देता है।

अमल के दौरान जो हालात पेश आते हैं वे ख़ुदा की तरफ़ से होते हैं और यह देखने के लिए होते हैं कि किस शख्स ने अपने हालात के अंदर किस किस्म का रद्देअमल पेश किया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۖ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَتَازَعَوْا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ ۖ وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ۖ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُخِيطٌ ۝

ऐ ईमान वालो जब किसी गिरोह से तुम्हारा मुकाबला हो तो तुम साबितकदम रहो और अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम कामयाब हो। और इताअत (आज्ञापालन) करो अल्लाह की और उसके रसूल की और आपस में झगड़ा न करो वरना तुम्हारे अंदर कमजोरी आ जाएगी और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और सन्न करो, बेशक अल्लाह सन्न करने वालों के साथ है, और उन लोगों की तरह न बनो जो अपने घरों से अकड़ते हुए और लोगों को दिखाते हुए निकले और जो अल्लाह की राह से रोकते हैं। हालांकि वे जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह उसका इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (45-47)

कामयाबी ख़ुदा की मदद से आती है। मगर ख़ुदा की मदद हमेशा असबाब के पर्दे में

आती है न कि बेअसबाबी के हालात में। मुसलमान अगर अपने मुमकिन असबाब को जमा कर दें तो बाकी कभी ख़ुदा की तरफ़ से पूरी करके उन्हें कामयाब कर दिया जाता है। लेकिन अगर वे बेअसबाबी का मुजाहिदा करें तो ख़ुदा कभी ऐसा नहीं कर सकता कि बेअसबाबी के नक्शे में उनके लिए अपनी मदद भेज दे।

असबाब क्या हैं। असबाब ये हैं कि मुसलमान इक्दाम में पहल न करें। वे अपनी जड़ों को मजबूत करने में लगे रहें यहां तक कि हरीफ़ ख़ुद चढ़ाई करके उनसे लड़ने के लिए आ जाए। फिर जब टकराव की सूरत पैदा हो जाए तो वे उसके मुकाबले में पूरी तरह जमाव का सुबूत दें। अल्लाह की याद, ब-अल्फ़ाज दीगर, मक्सूदे असली की मुकम्मल पाबंदी रखें ताकि उनका क़ब्ज़ा हैसला बाक़ी रहे। सरदार के हुक्म के तहत पूरी तरह मुनज्जम रहें। बाहमी इख़्तेलाफ़ात को नजरअंदाज करें न यह कि इख़्तेलाफ़ात को बढ़ाकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएं। वे अपने इस्तेहाद से हरीफ़ को मरज़ब कर दें। वे सन्न करें, यानी जोश के बजाए होश को अपनाएं। जल्द कामयाबी के शौक में ग़ैर पुख़्ता इक्दाम न करें। उनकी नजर हमेशा आखिरी मजिल पर हो न कि वक्ती मसालेह और मुनाफ़े पर। इन्हीं चीज़ों का नाम असबाब है और इन्हीं असबाब के पर्दे में ख़ुदा की मदद आती है।

मौजूदा दुनिया इस्तेहान की दुनिया है। यहां ख़ुदा 'ग़ैब' में रहकर अपने तमाम काम अंजाम देता है, इसलिए जब वह मुसलमानों की मदद करता है तो असबाब के पर्दे में करता है। मुसलमान अगर असबाब का माहौल पैदा न करें वे बेहोसलगी का सुबूत दें, वे इब्तिदाई तैयारी के बग़ैर इक्दामात करने लगे। वे इख़्तेलाफ़ और इतिशार में मुब्तिला हों, तो उन्हें कभी यह उम्मीद न करनी चाहिए कि ख़ुदा ग़ैब का पर्दा फाड़कर सामने आ जाएगा और बेअसबाबी का शिकार होने के बावजूद बग़ैर असबाब के उनकी मदद करके उनके तमाम काम बना देगा।

मुसलमान अगर अपने हरीफ़ के मुकाबले में अपने को बेहतर हालात में पाएं तब भी ऐसा नहीं होना चाहिए कि वे मुक़िरो की तरह अपनी ताकत पर घमंड करें, वे फख़ व नुमाइश के जब्जात में मुब्तिला हो जाएं। वे बड़ाई के जोम (दंभ) में इस हद तक आगे बढ़ें कि एक शख्स के सिर्फ़ इसलिए मुख़ालिफ़ बन जाएं कि वह ऐसे हक़ की दावत दे रहा है जिसकी जद ख़ुद उनकी अपनी जात पर भी पड़ रही है।

وَالَّذِينَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْيَاهُمْ وَقَالَ لَأَغْلِبَ لَكُمْ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَّكُمْ فَلَمَّا تَرَأَتِ الْفِئَتَانِ نَكَصَ عَلَى عَقْبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنْكُمْ إِنِّي أَرَى مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ إِذْ يَقُولُ الْمُبْفِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ غَرْهُو لَاءَ دِيْنُهُمْ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

और जब शैतान ने उन्हें उनके आमाल ख़ुशनुमा बनाकर दिखाए और कहा कि लोगों में से आज कोई तुम पर शालिब आने वाला नहीं और मैं तुम्हारे साथ हूँ। मगर जब दोनों गिरोह आमने सामने हुए तो वह उल्टे पांव भागा और कहा कि मैं तुमसे बरी हूँ, मैं वह कुछ देख रहा हूँ जो तुम लोग नहीं देखते। मैं अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह सख्त सजा देना वाला है। जब मुनाफ़िक (पाखंडी) और जिनके दिलों में रोग है कहते थे कि इन लोगों को इनके दीन ने धोखे में डाल दिया है और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह बड़ा जबरदस्त और हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (48-49)

मक्का के मुखालिफ़ीन अपने आपको बरसरे हक और पैग़म्बर के साथियों को बरसरे बातिल समझते थे। इस पर उन्हें इतना यकीन था कि उन्होंने काबा के सामने खड़े होकर दुआ की कि, खुदा, दोनों फ़ीकोंमें से जो फ़ीक़ हक़ पर हो तू उसे कामयाब कर और जो फ़ीक़ बातिल पर हो तू उसे हलाक कर दे। ताहम उनका यह यकीन झूठ यकीन था। इस किस्म का यकीन हमेशा शैतान के बहकावे की वजह से पैदा होता है।

शैतान ने मक्का के लोगों को सिखाया कि तुम तारीख़ के मुसल्लमा (सुस्थापित) पैग़म्बरों (इब्राहीम अलैहि० व इस्माईल अलैहि०) के मानने वाले हो जबकि मुसलमान एक ऐसे शख्स को मानते हैं जिसका पैग़म्बर होना अभी एक मुतनाजआ (विवादित) मसला है। तुम काबा के वारिस हो जबकि मुसलमानों को काबा की सरजमीन से निकाल दिया गया है। तुम असलाफ़ (पूर्वजों) की रिवायतों को कायम रखने के लिए लड़ रहे हो जबकि मुसलमान असलाफ़ की रिवायतों को तोड़ने के लिए उठे हैं। शैतान ने मक्का वालों के दिलों में इस किस्म के ख्यालात डाल कर उन्हें झूठे यकीन में मुक्तिला कर दिया था। वे समझते थे कि हम जो कुछ कर रहे हैं विल्कुल दुरुस्त कर रहे हैं और खुदा की मदद बहरहाल हमें हासिल होगी।

मक्का के मुखालिफ़ीन एक तरफ़ अपने झूठे यकीन को इस किस्म की चीज़ों की बिना पर सच्चा यकीन समझ रहे थे। दूसरी तरफ़ जब वे देखते कि पैग़म्बर के साथी उनसे भी ज्यादा यकीन और सरफ़रोशी के जन्मे के साथ इस्लाम के महाज पर अपने आपको लगाए हुए हैं तो वे उनके सच्चे यकीन को यह कह कर बेएतबार साबित करते थे कि यह महज एक मजहबी जुनून है। वह एक शख्स (पैग़म्बर) की ख़ुबसूरत बातों से जोश में आकर दीवाने हो रहे हैं। उनके यकीन और कुर्बानी की इससे ज्यादा और कोई हकीकत नहीं।

मगर जब दोनों गिरोहों में मुकाबला हुआ और मुसलमानों के लिए अल्लाह की मदद उतर पड़ी तो शैतान इस्लाम के मुखालिफ़ों को छोड़कर भागा। एक तरफ़ खुदा की मदद से मुसलमानों के दिल और ज्यादा क़वी (ठोढ़) हो गए। दूसरी तरफ़ मुखालिफ़ीन का झूठ यकीन बेदिली और पस्तहिम्मती में तब्दील हो गया। क्योंकि उनका एतमाद शैतान पर था और शैतान अब उन्हें छोड़कर भाग चुका था।

जो लोग अल्लाह पर भरोसा करें अल्लाह जरूर उनकी मदद करता है। मगर अल्लाह की मदद हमेशा उस वक़्त आती है जबकि अहले ईमान अल्लाह पर यकीन का इतना बड़ा सुबूत दे दें कि बेयकीन लोग कह उठें कि ये मजनून हो गए हैं।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ اتَّيَقُوا الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةَ يَصْرُبُونَ وُجُوهُهُمْ وَأَذْبَابُهُمْ
وَدُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ۖ ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتُمْ أَيْدِيَكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ
لِّلْعَمِيدِ ۖ كَذَّابٌ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَآلِ الْذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ
فَاَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۖ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ
لَمُكَرٍ مُّغْتَرًّا نَّعْمَةً اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يَغْتَرِبُوْا مَا بَانَ فَنُفْسُهُمْ
وَاَنَّ اللَّهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۖ كَذَّابٌ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَآلِ الْذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ كَذَّبُوا
بِآيَاتِ رَبِّهِمْ فَاهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَاعْرِضْنا اِلٰى فِرْعَوْنَ
وَكُلِّ كَاۡنُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝ۙ

और अगर तुम देखते जबकि फ़रिश्ते इन मुँकिरीन की जान कब्ज करते हैं, मारते हुए उनके चेहरों और उनकी पीठों पर, और यह कहते हुए कि अब जलने का अजाब चखो। यह बदला है उसका जो तुमने अपने हाथों आगे भेजा था और अल्लाह हरगिज बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं। फिरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों का इंकार किया पस अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया। बेशक अल्लाह कुव्वत (शक्ति) वाला है, सख्त सजा देने वाला है। यह इस वजह से हुआ कि अल्लाह उस इनाम को जो वह किसी क़ौम पर करता है उस वक़्त तक नहीं बदलता जब तक वे उसे न बदल दें जो उनके नफ़सों (अंतःकरणों) में है। और बेशक अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। फिरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अपने ख़ब की निशानियों को झुठलाया फिर हमने उनके गुनाहों के सबब से उन्हें हलाक कर दिया और हमने फिरऔन वालों को गर्क कर दिया और ये सब लोग जालिम थे। (50-54)

नेमत का दारोमदार नेमत के इस्तहक़क (पात्रता) की हालत पर है। क़ौमी सतह पर किसी को जो नेमतें मिलती हैं वे हमेशा उस इस्तहक़क के बक़्द होती हैं जो नफ़सी (आंतरिक) हालत के एतबार से उसके यहां पाया जाता है। यह 'नफ़स' चूँकि फ़र्द के अंदर होता है इसलिए इस बात को दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ कहा जा सकता है कि इज्तिमाई (सामूहिक) इनामात का इंहिसार इफ़िरादी (व्यक्तिगत) हालात पर है। अफ़राद की सतह पर क़ौम जिस दर्जे में हो उसी के बक़्द उसे इज्तिमाई इनामात दिए जाते हैं। इसका मतलब यह है कि कोई गिरोह अगर खुदा के इज्तिमाई इनामात को पाना चाहता है तो उसे अपने अफ़राद की नफ़सी इस्लाम पर अपनी ताक़त सर्फ़ करना चाहिए। इसी तरह कोई क़ौम अगर अपने को इस हाल में देखे कि उससे इज्तिमाई नेमतें छिन गई हैं तो उसे खुद नेमतों के पीछे दौड़ने के बजाए अपने

अफराद के पीछे दौड़ना चाहिए। क्योंकि अफराद ही के बिगड़ने से उसकी नेमतें छिनी हैं और अफराद ही के बनने से दुबारा वे उसे मिल सकती हैं।

जब कोई कौम अद्ल (न्याय) के बजाए जुल्म और तवाजोअ (विनम्रता) के बजाए सरकशी का रवैया इस्तिअर करती है तो खुदा की तरफ से उसके सामने सच्चाई का एलान कराया जाता है ताकि वह मुतनब्बह (सचेत) हो जाए। यह एलान कमाले वजाहत के एतबार से खुदा की एक निशानी होता है। उसे मानना खुदा को मानना होता है और उसे न मानना खुदा को न मानना। खुदा की दावत (आह्वान) जब आयत (निशानी) की हद तक खुलकर लोगों के सामने आ जाए फिर भी वे उसका इंकार करें तो इसके बाद लाजिमन वे सजा के मुस्तहक हो जाते हैं। इस सजा का आगाज अगरचे दुनिया ही से हो जाता है। ताहम दुनिया की सजा उस सजा के मुकबले में बहुत कम है जो मौत के बाद आदमी के सामने आने वाली है। फरिश्तों की मार, सारी मख़बूक के सामने रुस्वाई और जहन्नम की आग में जलना। ये सब इतने होलनाक मराहिल हैं कि मौजूदा हालात में उनका तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता।

ईसान जब जुल्म और सरकशी का रवैया इस्तिअर करता है अव्वलन तो उसके लिए तंबीहात (चेतावनीय) जाहिर होती हैं। अगर वह उनसे सबक न ले तो बिलआखिर वह खुदा के पैसलाखुत अजब की जद में आ जाता है।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۚ الَّذِينَ
عَاهَدَتْ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مِرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ۖ فَمَا
تَثْقَفْنَاهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرَدْنَاهُمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ يُكَذِّبُون ۖ وَأَمَّا
تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةٍ فَانْظُرْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ ۝

बेशक सब जानदारों में बदतरीन अल्लाह के नजदीक वे लोग हैं जिन्होंने इंकार किया और वे ईमान नहीं लाते। जिनसे तुमने अहद (वचन) लिया, फिर वे अपना अहद हर बार तोड़ देते हैं और वे डरते नहीं। पस अगर तुम उन्हें लड़ाई में पाओ तो उन्हें ऐसी सजा दो कि जो उनके पीछे हैं वे भी देखकर भाग जाएं, ताकि उन्हें इबरत (सीख) हो। और अगर तुम्हें किसी कौम से बदअहदी (वचन भंग) का डर हो तो उनका अहद उनकी तरफ फेंक दो, ऐसी तरह कि तुम और वे बराबर हो जाएं। बेशक अल्लाह बदअहदों को पसंद नहीं करता। (55-58)

मदीना के यहूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रिसालत (ईशदूतत्व) का इंकार करके खुदा की नजर में मुजरिम हो चुके थे। इस जुर्म पर मजीद इजाफ़ा उनकी बदअहदी थी। हिजरत के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मदीना के यहूद के दर्मियान यह तहरीरी मुआहिदा हुआ कि दोनों एक दूसरे के मामले में ग़ैर जानिबदार रहेंगे। मगर यहूद खुफिया

तौर पर आपके दुश्मनों (मुश्किन) से मिलकर आपके खिलाफ साजिशें करने लगे। यह कुफ़र पर बदअहदी का इजाफ़ा था। यह इंकार के साथ कमीनगी को जमा करना था। ऐसे लोगों के लिए आखिरत में होलनाक अजाब है और दुनिया में यह हुक्म है कि उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए ताकि उनकी शरारतों का ख़ात्मा हो और उनके इरादे पस्त हो जाएं।

अगर किसी कौम से मुसलमानों का अहद हो और मुसलमान उनकी तरफ से बदअहदी के अंदेश की बिना पर उस अहद को तोड़ना चाहें तो जरूरी है कि वे पहले उन्हें इसकी इत्तिला दें ताकि दोनों पेशगी तौर पर यह जान लें कि अब दोनों के दर्मियान अहद की हालत बाकी नहीं रही। अमीर मुआविया और रूमी हुक्मरान में एक बार मीआदी मुआहिदा (अवधिगत समझौता) था। मुआहिदे की मुदत करीब आई तो अमीर मुआविया ने अपनी फौजों को ख़ामोशी के साथ रूम की सरहद पर जमा करना शुरू किया ताकि मुआहिदे की तारीख़ ख़त्म होते ही अगली सुबह अचानक रूमी इलाके में हमला कर दिया जाए। उस वक़्त एक सहाबी हजरत अम् बिन अब्सा घोड़े पर सवार होकर आए। वह ब-आवाज बुलन्द कह रहे थे 'अल्लाहु अकबर, अहद पूरा करो, अहद को न तोड़ो' उन्होंने लोगों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह हदीस सुनाई : 'जिसका किसी कौम से मुआहिदा हो तो कोई गिरह न खोली जाए और न बांधी जाए यहां तक कि मुआहिदे की मुदत पूरी हो जाए या बराबरी के साथ अहद उसकी तरफ फेंक दिया जाए।' (तफ़सीर इब्ने कसीर)

दूसरी सूत वह है जबकि सिर्फ अंदेश की बात न हो बल्कि फरीक सानी (प्रतिपक्ष) की तरफ से अमलन मुआहिदे की वाजेह ख़िलाफ़वर्जी हो चुकी हो। ऐसी सूत में इजाजत है कि फरीक सानी को मुतलअ (सूचित) किए बग़ैर जवाबी कार्रवाई की जाए। ग़जवाए मक्का इसी की मिसाल है। कुैश ने आपके समर्थक (बनू ख़ुज़ाआ) के खिलाफ बनू बक्र की आक्रमक कार्रवाई में शरीक होकर मुआहिदाए हूय़बिया की एकतरफ़ ख़िलाफ़वर्जी की तो आपने कुैश को पेशगी इत्तिला दिए बग़ैर उनके खिलाफ ख़ामोश कार्रवाई फरमाई।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا إِتَاهُمْ لَا يَعْجُرُونَ ۖ وَأَعِدُّوا لَهُمْ
مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ
وَالْآخَرِينَ مِنْ دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ
شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَغْلِبُونَ ۖ وَإِنْ جَحَحُوا
لِلْسَّلَامِ فَأَجْزِلْهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۖ وَإِنْ يُرِيدُوا
أَنْ يُخِذُواكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي ابْتَدَأَ بِخَلْقِهِ وَبِالْمُؤْمِنِينَ ۖ
وَالْفَتْ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أَلْفَتْ بَيْنَ
قُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ أَلْفَ بَيْنَهُمْ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

और इंकार करने वाले यह न समझें कि वे निकल भागेंगे, वे हरगिज़ अल्लाह को आजिज नहीं कर सकते। और उनके लिए जिस कद्र तुमसे हो सके तैयार रखो कुव्वत और पले हुए घोड़े कि इससे तुम्हारी हैबत रहे अल्लाह के दुश्मनों पर और तुम्हारे दुश्मनों पर और इनके अलावा दूसरों पर भी जिन्हें तुम नहीं जानते। अल्लाह उन्हें जानता है। और जो कुछ तुम अल्लाह की राह में खर्च करोगे वह तुम्हें पूरा कर दिया जाएगा और तुम्हारे साथ कोई कमी न की जाएगी। और अगर वे सुलह (संधि) की तरफ झुकें तो तुम भी इसके लिए झुक जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। और अगर वे तुम्हें धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह तुम्हारे लिए काफी है। वही है जिसने अपनी नुसरत (मदद) और मोमिनों के जरिए तुम्हें कुव्वत दी। और उनके दिलों में इत्तिफ़ाक (जुझव) पैदा कर दिया। अगर तुम जमीन में जो कुछ है सब खर्च कर डालते तब भी उनके दिलों में इत्तिफ़ाक पैदा न कर सकते। लेकिन अल्लाह ने उन में इत्तिफ़ाक पैदा कर दिया, बेशक वह जोरआवर है हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (59-63)

इस्लाम का एतमाद इस्तेमाले कुव्वत से ज्यादा मजाहिद-ए-कुव्वत (शक्ति प्रदर्शन) पर है। इसीलिए अहले इस्लाम को कुव्वते मुहिबा (सैन्य शक्ति) फराहम करने का हुक्म दिया गया, यानी वे चीजें जो हरीफ (प्रतिपक्ष) को इस कद्र मरऊब करें कि वह इक्दाम का हौसला खो दे। इस्लाम वक्त के मेयार के मुताबिक अपने को ताकतवर बनाता है, मगर लाजिमन लड़ने के लिए नहीं। बल्कि इसलिए ताकि उसके दुश्मनों पर उसका धाक कायम रहे और वे उसके खिलाफ जारिहाना (आक्रामक) कार्रवाई की हिम्मत न करें। इस्लाम को वक्त के मेयार के मुताबिक फित्री (वैचारिक) और अमली एतबार से ताकतवर बनाने में जो लोग अपनी कमाई खर्च करेंगे वे कई गुना ज्यादा मिक्दार में इसका बदला अपने खर्च के यहां पाएंगे।

इस्लाम की फ़तह का राज अस्लन जंगी मुक़ाबलों में नहीं बल्कि उसके उसूलों की तब्तीहा में है। इसलिए हुक्म हुआ कि जब भी फरीके सानी (प्रतिपक्षी) सुलह की पेशकश करे तो हर अंदेशे को नजरअंदाज करते हुए उसे कुबूल कर लो। क्योंकि अंदेशा बहरहाल यकीनी नहीं और जंगबंदी का यह फ़ायदा यकीनी है कि फ़ुअम्म फज़ा में इस्लाम का दावती अमल शुरू हो जाए और इस तरह जंग का रुकना इस्लाम की नजरियाती तोसीअ (प्रसार) का सबब बन जाए। इस्लाम खुद अपनी जात में सबसे बड़ी ताकत है। खुदा और आख़िरत का अक़ीदा अगर पूरी तरह किसी गिरोह के अफ़राद में पैदा हो जाए तो उनके अंदर से वे तमाम नफ़िसयाती ख़राबियां निकल जाती हैं जो नाइत्तिफ़ाकी और बाहमी टकराव का सबब होती हैं। इसके बाद लाजिमन ऐसा होता है कि वे सबके सब बाहम जुड़ कर एक हो जाते हैं। और यह एक हकीकत है कि इतिहाद सबसे बड़ी ताकत है। मुतहिद गिरोह अगर तादाद में कम हो तब भी वह अपने से ज्यादा तादाद रखने वाले गिरोह पर ग़ालिब आ जाएगा।

बाहमी इत्तिफ़ाक (एकजुटता) सबसे मुश्किल चीज है। किसी गिरोह के नुसरतयाफ़ता (सहायता प्राप्त) होने की एक पहचान यह है कि उसके अफ़राद बाहम मुतहिद रहें, कोई भी चीज उनके इतिहाद को तोड़ने वाली साबित न हो।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ يَأْتِيهَا النَّبِيُّ حَرَضٌ
الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عَشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتِينَ
وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝
أَلَنْ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ
صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۝ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ
وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ۝

ऐ नबी तुम्हारे लिए अल्लाह काफी है और वे मोमिनीन जिन्होंने तुम्हारा साथ दिया है। ऐ नबी मोमिनीन को लड़ाई पर उभारो। अगर तुम में बीस आदमी साबितकदम (दृढ़) होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर तुम में सौ होंगे तो हजार मुंकिरों पर ग़ालिब आएंगे, इस वास्ते कि वे लोग समझ नहीं रखते। अब अल्लाह ने तुम पर से बोझ हल्का कर दिया और उसने जान लिया कि तुम में कुछ कमजोरी है। पस अगर तुम में सौ साबितकदम होंगे तो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे और अगर हजार होंगे तो अल्लाह के हुक्म से दो हजार पर ग़ालिब आएंगे, और अल्लाह साबितकदम रहने वालों के साथ है। (64-66)

अहले ईमान की कम तादाद ग़ैर अहले ईमान की ज्यादा तादाद पर ग़ालिब आने की वजह यह बताई कि अहले ईमान के अंदर फ़िह्र होती है जबकि ग़ैर अहले ईमान फ़िह्र से महरूम हैं। फ़िह्र के लफ्ज़ी मअना समझ के हैं। इससे मुराद वह बसीरत (विवेक) और शुऊर है जो ईमान के नतीजे में एक शख्स को हासिल होता है। खुदा पर ईमान किसी आदमी के लिए वही मअना रखता है जो अंधेरे कमरे में बजली का बल्ब जल जाना। बल्ब पूरे कमरे को इस तरह रोशन कर देता है कि उसकी हर चीज वाजेह तौर पर दिखाई देने लगे। इसी तरह ईमान आदमी को एक रब्बानी शुऊर अता करता है जिसके बाद वह तमाम हकीकतों को उसकी असली सूरत में देखने लगता है।

ईमान के नतीजे में यह होता है कि आदमी जिंदगी और मौत की हकीकत को समझ लेता है। वह जान लेता है कि अस्ल चीज दुनिया की हयात (जिंदगी) नहीं बल्कि आख़िरत की हयात है। यह चीज उसे बेपनाह हद तक निडर बना देती है। वह मौत को इस नजर से देखने लगता है कि वह उसके लिए जन्नत में दाख़िले का दरवाजा है। मोमिन शहादत को जन्नत का मुख़्तसर रास्ता समझता है। अल्लाह की राह में जान देना उसके लिए मत्लूब चीज बन जाता है, जबकि ग़ैर मोमिन की जन्नत यही मौजूदा दुनिया है। वह जिंदा रहना चाहता है ताकि अपनी जन्नत का लुफ्त उठा सके। ग़ैर मोमिन कौमी शुऊर के तहत लड़ता है और मोमिन जन्नती शुऊर के तहत, और कौमी शुऊर वाला कभी इतनी बेजिगरी के साथ नहीं लड़ सकता।

मोमिन खुदा से डरने वाला होता है, वह आखिरत की फिर्क करने वाला होता है, यह मिजाज उसे हर किस्म के मंभी (नकारात्मक) ज़बात से पाक करता है। वह जिद्द, नफ़रत, तजसुब (विद्वेष), इंतकाम और घमंड जैसी चीज़ों से ऊपर उठ जाता है। दूसरी तरफ़ ग़ैर मोमिन का मामला सरासर इसके बरअक्स होता है। इसका नतीजा यह होता है कि ग़ैर मोमिन के इक्दामात मंभी नफ़िसयात के तहत होते हैं और मोमिन के इक्दामात ईजाबी नफ़िसयात (सकारात्मक मानसिकता) के तहत। ग़ैर मोमिन ज़बाती अंदाज से अमल करता है और मोमिन हकीकतपरसंदाना अंदाज से। ग़ैर मोमिन इंसानों का दुश्मन होता है और मोमिन सिर्फ़ इंसानों की बुराई का। ग़ैर मोमिन तंगजर्मी (कुदृच्छा) के साथ मामला करता है और मोमिन बुराते जर्फ़ (सद्दृच्छा) के साथ।

हज़र के मुक़बले में सौ और दो हज़र के मुक़बले में एक हज़र के अल्फ़ज़ बतते हैं कि क़िताल का हुक्म जमाअत और फौज के लिए है। ऐसा करना सही न होगा कि एक दो आदमी हों तब भी वे लड़ने के लिए खड़े हो जाएं।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُتْلَىٰ فِي الْأَرْضِ ۖ لَوْ لَمْ يَكُنْ
عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللَّهُ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۖ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ٥
مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ٦ فَكُلُوا مِنَّمَا
غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ٧

किसी नबी के लिए लायक नहीं कि उसके पास कैदी हों जब तक वह ज़मीन में अच्छी तरह खूबखूबी न कर ले। तुम दुनिया के असबाब चाहते हो और अल्लाह आखिरत को चाहता है। और अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और अगर अल्लाह का एक लिखा हुआ पहले से मौजूद न होता तो जो तरीका तुमने इस्तिथार किया उसके सबब तुम्हें सज़ा अज़ाब पहुंच जाता। पस जो माल तुमने लिया है उसे खाओ, तुम्हारे लिए हलाल और पाक है और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (67-69)

बद्र की लड़ाई में मुसलमानों ने सत्तर बड़े-बड़े मुक़िरो को क़त्ल किया। इसके बाद जब उनके पांव उखड़ने लगे तो उनके सत्तर आदमियों को गिरफ़्तार कर लिया। इन गिरफ़्तार होने वालों में अक्सर सरदार थे। जंग के बाद मश्वरा हुआ कि इन कैदियों के साथ क्या किया जाए। सहाबा की अक्सरियत ने यह राय दी कि इनको फ़िदया (आर्थिक मुआवज़ा) लेकर छोड़ दिया जाए। उस वक़्त इस्लाम के दुश्मनों ने मुसलसल जंग की हालत बरपा कर रखी थी। मगर मुसलमानों के पास माल न होने की वजह से जंग के सामान की बहुत कमी थी। यह ख़्याल किया गया कि फ़िदये से जो रकम मिलेगी उससे जंग का सामान ख़रीदा जा सकता है। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब और हज़रत साद बिन मुआज़ इस राय के ख़िलाफ़ थे। हज़रत उमर ने कहा : 'ऐ खुदा के रसूल ये कैदी कुफ़र के इमाम और मुशिरकीन के सरदार हैं।' यानी दुश्मनों की अस्ल ताक़त हमारी मुट्ठी में आ गई है, इनको क़त्ल करके इस मसले का हमेशा

के लिए ख़ात्मा कर दिया जाए। ताहम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहली राय पर अमल फरमाया।

बाद को जब वे आयतें उतरीं जिन में जंग पर तबसिरा था तो अल्लाह तआला ने फ़िदये की रक़म को जाइज़ ठहराते हुए इस रविज़ पर अपनी नाराज़ी का इश्हार फरमाया। ज़ंगी कैदियों को फ़िदया लेकर छोड़ना अगरचे बज़ाहिर रहमत व शफ़ाक़त का मामला था। मगर वह अल्लाह के दूररस (दूरगामी) मंसूबे के मुताबिक न था। अल्लाह का अस्ल मंसूबा कुफ़र व शिर्क की जड़ उखाड़ना था। इस मक़सद के लिए अल्लाह तआला ने क़ुरैश के तमाम लीडरों को (अबू लहब और अबू सुफ़ियान को छोड़कर) बद्र के मैदान में जमा कर दिया और ऐसे हालात पैदा किए कि वे पूरी तरह मुसलमानों के काबू में आ गए। अगर इन लीडरों को उस वक़्त ख़त्म कर दिया जाता तो कुफ़र व शिर्क की मुजाहमत (प्रतिरोध) बद्र के मैदान ही में पूरी तरह दफ़न हो जाती। मगर लीडरों को छोड़ने का नतीजा यह हुआ कि वे मुनज़म होकर दुबारा अपनी मुजाहमत की तहरीक जारी रखने के काबिल हो गए।

यह फैसला ज़ंगी मस्तेहत के ख़िलाफ़ था। वे मुसलमानों के लिए अज़ाबे अजीम (सज़ा मुसीबतों) का ज़रिया बन जाता। ये लीडर अपनी अवाम को साथ लेकर इस्लाम के सारे मामले को तहस नहस कर देते। मगर अल्लाह ने आखिरी रसूल और आपके असहाब (साथियों) के लिए पहले से मुक़द्दर कर दिया था कि वे लाज़िमन ग़ालिब रहेंगे, उन्हें ज़ेर करने में कोई कामयाब न हो सकेगा। यही वजह है कि ज़ंगी तदबीर में इस कोताही के बावजूद क़ुरैश अहले इमाम के ऊपर ग़ालिब न आ सके। और बिलआखिर वही हुआ जिसका होना पहले से खुदा के यहां लिखा जा चुका था, यानी मुसलमानों की फ़तह और इस्लाम का ग़लबा।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَن فِي أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرَىٰ إِن يَعْلَمِ اللَّهُ فِي
قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِيَكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أَخَذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرَ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ٥ وَإِنْ يُرِيدُ وَآخِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ فَأَمْكَنَ
مِنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ٦

ऐ नबी तुम्हारे हाथ में जो कैदी हैं उनसे कह दो कि अगर अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई पाएगा तो जो कुछ तुमसे लिया गया है उससे बेहतर वह तुम्हें दे देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और अगर ये तुमसे बदअहदी (वचन-भंग) करेंगे तो इससे पहले इन्होंने खुदा से बदअहदी की तो खुदा ने तुम्हें उन पर काबू दे दिया और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (70-71)

बद्र के कैदियों को फ़िदया लेकर छोड़ना मुसलमानों के लिए एक ज़ंगी ग़लती थी। मगर ख़ुद कैदियों के हक में यह एक नई ज़िंगी फ़ाहम करने के हममअना था। इसका मतलब यह था कि वे लोग जो अपनी मुख़ालिफ़ते हक के नतीजे में हलाक़त के मुस्तहक़ हो चुके थे उन्हें एक बार और मौक़ा मिल गया कि वे इस्लाम की दावत और उसके मुक़ाबले में अपनी

बेजा रविश पर दुबारा गौर कर सकें। इस मोहलत ने उनके लिए अपनी इस्लाह का नया दरवाजा खोल दिया।

अब एक सूरत यह थी कि इन कैदियों के दिल में शिकस्त की बिना पर इंतिकाम (बदले) की आग भड़के। फिदया देने की वजह से उन्हें जो जिल्लत व नुस्सान हुआ है उसका बदला लेने के लिए वे बेचैन हो जाएं। ऐसी सूरत में वे फिर उसी गलती को दोहराएंगे जिसके नतीजे में वे खुदा की पकड़ के मुस्तहिक बन गए थे। वे अपनी कुव्वतों को इस्लाम की मुख़ालिफ़त में सर्फ़ करेंगे जिसका अंजाम दुनिया में हलाकत है और आखिरत में अजाब।

दूसरी सूरत यह थी कि वे बद्र के मैदान में पेश आने वाले ग़ैर मामूली वाकये पर ग़ौर करें कि मुसलमानों को कमतर असबाब के बावजूद इतनी खुली हुई फतह क्यों नसीब हुई। इसका साफ़ मतलब यह है कि खुदा मुसलमानों के दीन के साथ है न कि कुरैश के दीन के साथ। यह दूसरा ज़ेहन अगर पैदा हो जाए तो वह उन्हें आमादा करेगा कि वे अपनी साबिका (पहली) रविश को बदल लें और जिस दीन को पहले इख़्तियार न कर सके उसे अब से इख़्तियार कर लें। और इस तरह दुनिया व आखिरत में खुदा के इनाम के मुस्तहिक बनें।

तारीख़ बताती है कि कुरैश के लोगों में एक तादाद ऐसी निकली जिनके दिल में मज्हूर सवाल जाग उठा और जल्द या देर से वे इस्लाम में दाख़िल हो गए। हजरत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ने कैद के जमाने ही में इस्लाम कुबूल कर लिया। कुछ दूसरे लोग बाद को इस्लाम के हलके में आ गए। ये लोग अगरचे गिरोही तअस्सुब की नजर में जलील हुए मगर उन्हें खुदा की नजर में इज्जत हासिल कर ली। दुनिया का नुस्सान उठाकर वे आखिरत के फ़ायदे के मालिक बन गए।

कैदियों को छोड़ने की वजह से मुसलमानों को यह अदेशा था कि वे इसे एहसान समझ कर इसका एतराफ़ नहीं करेंगे बल्कि पहले की तरह दुबारा साजिश और तख़्तीबकारी (विध्वंस) का रास्ता इख़्तियार करके इस्लाम की राह में रुकावट बन जाएंगे। मगर कुरआन ने इस अदेशे को अहमियत न दी। क्योंकि ख़ालिस हक़ (सत्य) के लिए जो तहरीक उठती है वह आम तर्ज की इंसानी तहरीक नहीं होती। वह एक खुदाई मामला होता है। उसकी पुश्त पर खुद खुदा होता है और खुदा से लड़ना किसी के बस की बात नहीं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ أَوْوُوا وَتَصَرَّوْا أُولَئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ
يُهَاجِرُوا مَا لَكُمْ مِنْ وَلَا يَتَّبِعُهُمْ مِنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ وَإِنِ
اسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمْ التَّصَرُّ لَا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ
فِي شَأْنٍ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِعَهْدِهِمْ
بَعْضٌ ۖ إِلَّا تَتَعَلَّوْهُ تَكُنْ ۖ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ۚ

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने जान व माल से जिहाद किया। और वे लोग जिन्होंने पनाह दी और मदद की, वे लोग एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं और जो लोग ईमान लाए मगर उन्होंने हिजरत नहीं की तो उनसे तुम्हारा रिफ़ाक़त का कोई तअल्लुक नहीं जब तक कि वे हिजरत करके न आ जाएं। और वे तुमसे दीन के मामले में मदद मांगें तो तुम पर उनकी मदद करना वाजिब (ज़रूरी) है, इल्ला यह कि मदद किसी ऐसी कौम के ख़िलाफ़ हो जिसके साथ तुम्हारा मुआहिदा (संधि) है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है। और जो लोग मुंकिर हैं वे एक दूसरे के रफ़ीक़ (सहयोगी) हैं। अगर तुम ऐसा न करेंगे तो ज़मीन में फ़ितना फैलेगा और बड़प्पन फ़साद होगा। (72-73)

आम तौर पर जब एक आदमी दूसरे की मदद करता है तो इसकी वजह यह होती है कि वह आदमी उसके अपने ख़ानदान का है, उससे गिरोही और जमाअती तअल्लुक है। मगर हिजरत के बाद मदीने में जो इस्लामी मआशरा (समाज) कायम हुआ वह ऐसा मआशरा था जिसमें घर वालों ने अपने घर ऐसे लोगों को दे दिए जिनसे तअल्लुक की बुनियाद सिर्फ़ दीन थी। जो लोग अपने वतन को छोड़कर मदीना आए वे भी अल्लाह के लिए और आखिरत तलबी के लिए आए। और जिन्होंने इन अजनबी लोगों को अपने माल और अपनी जायदाद में शरीक किया वे भी सिर्फ़ इसलिए ताकि उनका खुदा उनसे खुश हो और आखिरत में उन्हें जन्नतों में दाख़िल करे।

यह एक ऐसा समाज था जिसमें अहम चीज़ ख़ानदान और नसब (वंश) नहीं बल्कि ईमान व इस्लाम था। वे एक दूसरे की मदद करते थे मगर दुनियावी फ़ायदे के लिए नहीं बल्कि आखिरत के फ़ायदे के लिए। वे एक दूसरे को देते थे मगर पाने वाले से किसी बदले की उम्मीद में नहीं बल्कि अल्लाह से इनाम की उम्मीद में। वही मुआशिरा हकीकतन इस्लामी मुआशिरा है जहां तअल्लुकात ख़ानदानी रिश्तों और गिरोही अस्बियतों पर कायम न हों बल्कि हक़ की बुनियाद पर कायम हों। जहां लोग एक दूसरे के हामी व नासिर (मददगार) इस बुनियाद पर हों कि वे उनके दीनी भाई हैं न कि इस बुनियाद पर कि दुनियावी मस्तेहतों में से कोई मस्तेहत उनके साथ वाबस्ता है।

एक मुसलमान जब दूसरे मुसलमान से हक़ के मामले में मदद तलब करे तो उस वक़्त उसकी मदद करना बिस्वुल लाजिम है। अगर मुसलमानों में बाहमी मदद की यह रूह बाकी न रहे तो यह होगा कि शरीर लोग कमजोर मुसलमानों पर दिलेर हो जाएंगे और उनकी ज़िंदगी और उनके ईमान का महफूज़ रहना सज़ा मुश्किल हो जाएगा। हक़ के मुख़ालिफ़ीन अपने साथियों की मदद के लिए इतिहाई हस्सास होते हैं फिर हक़ के मानने वाले अपने साथियों की मदद में क्यों न सरगर्म हों। इस में इस्तिस्ना (अपवाद) सिर्फ़ उस वक़्त है जबकि मामला अन्तर्राष्ट्रीय हो और मुसलमानों की मदद करना अन्तर्राष्ट्रीय पेचीदगियां पैदा करने के हममअना समझा जाए।

‘हिजरत’ जन्नत में दाख़िले का दरवाजा है। एक बंदा जब खुदा के नापसंदीदा मक़ाम से निकल कर खुदा के पसंदीदा मक़ाम की तरफ़ जाता है तो दरअसल वह ग़ैर जन्नत को छोड़कर जन्नत में दाख़िल होता है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَنَصَرُوا
 أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ٥ وَالَّذِينَ آمَنُوا
 مِنْ بَعْدِ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنْكُمْ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ
 أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ٦

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत (स्थान परिवर्तन) की और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने पनाह दी और मदद की, यही लोग सच्चे मोमिन हैं। इनके लिए बख्शिश है और बेहतरीन रिस्क है। और जो लोग बाद में ईमान लाए और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया वे भी तुम में से हैं। और खून के रिश्तेदार एक दूसरे के ज्यादा हकदार हैं अल्लाह की किताब में। वेशक अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। (74-75)

खुदा पर ईमान लाना खुदा के लिए जिंदगी गुजारने का फैसला करना है। ऐसे लोग अक्सर उन लोगों के दर्मियान अजनबी बन जाते हैं जो खुदा के सिवा किसी और चीज की खातिर जिंदगी गुजार रहे हों। यह अजनबियत कभी इतनी बढ़ती है कि हिजरत की नौबत आ जाती है। माहौल की मुखातिब के नतीजे में पूरी जिंदगी जद्दोजहद और जांफशानी (संघर्ष) की जिंदगी बनकर रह जाती है। यही लोग हैं जो खुदा के नजदीक सच्चे मोमिन हैं। इसके बाद सच्चा ईमान उन लोगों का है जो इस्लाम की खातिर बजाहिर बर्बाद हो जाने वाले इस काफिले के पुश्तपनाह बनें वे उन्हें जगह दें और उनकी हर मुमकिन मदद के लिए खड़े हो जाएं। जिनकी जिंदगियां नहीं लुटी हैं वे अपना असासा (सम्पत्ति) उन लोगों के हवाले कर दें जिनकी जिंदगियां इस्लाम की राह में लुट गई हैं।

इससे मालूम हुआ कि हकीकी मुस्लिम बनने के लिए आदमी को दो में से कम से कम एक चीज का सुबूत देना है। आदमी या तो अपने आपको इस्लाम के साथ इस तरह वाबस्ता करे कि अगर उसे अपनी बनी बनाई दुनिया उजाड़ देनी पड़े तो इससे भी दरेगा (संकोच) न करे, आराम की जिंदगी को बेआरामी की जिंदगी बना देना पड़े तो इसे भी गवारा कर ले। फिर यह कि इस्लाम की खातिर जब कुछ लोग अपना असासा लुटा दें तो वे लोग जो अभी लुटेने से महफूज हैं वे पहले फरीक की मदद के लिए अपना बाज्र खेल दें यहां तक कि जरूरत हो तो अपनी कमाई और अपनी जायदाद में भी उन्हें शरीक कर लें। सच्चा ईमान किसी को या तो 'मुहाजिर' (हिजरत करने वाला) बनने की सतह पर मिलता है या 'अंसार' (मदद करने वाला) बनने की सतह पर।

यही दो क्रिम के लोग हैं जिनके लिए खुदा के यहां मफ़्तिरत और रिस्क करीम है। आखिरत में आने वाली जन्नत इतिहाई सुथरी और नफीस दुनिया है। वह एक कामिल दुनिया है और कामिल दुनिया में बसाए जाने के लायक वही लोग हो सकते हैं जो खुद भी कामिल हों। कोई इंसान अपनी बशरी कमजोरियों की बिना पर ऐसी कामलियत (पूर्णता) का सुबूत

नहीं दे सकता। ताहम अल्लाह का यह वादा है कि जो शख्स मज्कूरा दोनों कसौटी में से किसी एक कसौटी पर पूरा उतरेगा खुदा अपनी कुदरत से उसकी कमियों की तलाफी करके उसे जन्नत में दाखिल कर देगा।

दीन की बुनियाद पर भाई बनने वालों की मदद और हिमायत बेहद अहम है ताहम वह रहमी (खून के) रिश्तों के हुक्क और उनके दर्मियान विरासतों की तक्सीम पर असरअंदाज न होगी। अपनी ख्वाहिश के तहत कोई शख्स अपने अहले खानदान के लिए जिन चीजों को जरूरी समझ ले उनकी कोई अहमियत अल्लाह ने नजदीक नहीं है। ताहम अल्लाह ने खुद अपनी किताब में अहले खानदान के लिए हुक्क और विरासत का जो कानून मुक्कर कर दिया है वह हर हाल में कायम रहेगा। और कोई दूसरी चीज उसकी अदायगी के लिए उज्र नहीं बन सकती।

سُورَةُ التَّوْبَةِ مَكِّيَّةٌ وَمِنْ آيَاتِهَا وَعِشْرُونَ آيَةً وَشَرِّعَ عِشْرَتَا كُرُوعًا
 بَرَاءَةً مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ١ فَسِيحُوا فِي
 الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ وَإِنَّ اللَّهَ
 هُوَ الْغَفُورُ الْكَافِرِينَ ٢ وَأَذَانٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ
 أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ وَرَسُولُهُ ٣ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَإِنْ
 تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ
 أَلِيمٍ ٤ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ
 يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُوا لِبَهْمِ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مَدَّتِهِمْ إِنَّ اللَّهَ
 يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ٥

आयतें-129

सूरह-9. अत-तौबह

रुकूअ-16

(मदीना में नाज़िल हुई)

बरा-त (विरक्ति) का एलान है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से उन मुश्रिकान (बहुदेववादियों) को जिनसे तुमने मुआहिदे (संधि) किए थे। पस तुम लोग मुल्क में चार महीने चल फिर लो और जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज नहीं कर सकते और यह कि अल्लाह मुंकिरों को रुसवा करने वाला है। एलान है अल्लाह और रसूल की तरफ से बड़े हज के दिन लोगों के लिए कि अल्लाह और उसका रसूल मुश्रिकों से बरीउज्जिम्मा (जिम्मेदारी-मुक्त) हैं। अब अगर तुम लोग तौबह करो तो तुम्हारे हक में बेहतर है। और अगर तुम मुंह फेरोगे तो जान लो कि तुम अल्लाह को आजिज करने वाले नहीं हो। और इंकार करने वालों को सज़ा अजाब की खुशखबरी दे दो। मगर जिन मुश्रिकों से तुमने मुआहिदा किया था फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं

की और न तुम्हारे खिलाफ किसी की मदद की तो उनका मुआहिदा (संधि) उनकी मुद्दत तक पूरा करो। बेशक अल्लाह परहेजगारों को पसंद करता है। (1-4)

मौजूदा दुनिया में इंसान को रहने बसने का जो मौका दिया गया है वह किसी हक की बिना पर नहीं है बल्कि महज आजमाइश के लिए है। खुदा जब तक चाहता है किसी को इस जमीन पर रखता है और जब उसके इल्म के मुताबिक उसकी इस्तेहान की मुद्दत पूरी हो जाती है तो उस पर मौत वारिद करके उसे यहां से उठा लिया जाता है।

यही मामला पैगम्बर के मुखातबीन के साथ दूसरी सूरत में किया जाता है। पैगम्बर जिन लोगों के दर्मियान आता है उन पर वह आखिरी हद तक हक की गवाही देता है। पैगम्बर के दावती काम की तक्मील (पूर्णता) के बाद जो लोग ईमान न लाएं वे खुदा की जमीन पर जिंदा रहने का हक खो देते हैं। वे आजमाइश की गरज से यहां रखे गए थे। इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) ने आजमाइश की तक्मील कर दी। फिर इसके बाद जिंदा का हक किस लिए। यही वजह है कि पैगम्बरों के काम की तक्मील के बाद उनके ऊपर कोई न कोई हलाकत खेज आफत आती है और उनका इस्तिस्नाल (विनाश) कर दिया जाता है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुखातबीन के साथ भी यही मामला हुआ। मगर उन पर कोई आसमानी आफत नहीं आई। उनके ऊपर खुदा की मक्का सुन्नत का निफाज असबाब के नक़्शे में किया गया। अव्वलन कुरआन के बरतर उस्तूब (शैली) और पैगम्बर के आला किरदार के जरिए उन्हें दावत पहुंचाई गई। फिर अहले तौहीद को मक्का के अहले शिर्क पर गालिब करके उनके ऊपर इतमामे हुज्जत कर दिया गया। जब यह सब कुछ हो चुका और इसके बावजूद वे इंकार की रविश पर कायम रहे तो उन्हें मुसलसल खियानत और अहद शिकनी का मुजरिम कारार देकर उन्हें अल्टीमेटम दिया गया कि चार माह के अंदर अपनी इस्लाह कर लो, वरना मुसलमानों की तलवार से तुम्हारा खात्मा कर दिया जाएगा।

फिर यह सारा मामला तक्वा के उसूल पर किया गया न कि कौमी सियासत के उसूल पर। मुशिरकीन को दलाइल के मैदान में लाजवाब कर दिया गया, उन्हें पेशगी इतिबाह (संचेतना) के जरिए कई महीने तक सोचने का मौका दिया गया। आखिर वक्त तक उनके लिए दरवाजा खुला रखा गया कि जो लोग तौबह कर लें वे खुदा के इनामयाफता बंदों में शामिल हो जाएं। जिन कुछ कबाइल ने मुआहिदा नहीं तोड़ा था उनके मामले को मुआहिदा तोड़ने वालों से अलग रखा गया, वगैरह।

وَإِذَا السُّلَاطَةُ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الشُّرُكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُواهُمْ
وَاحْصُرُوهُمْ وَأَقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصِدٍ ۚ إِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ
الشُّرُكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّى يَسْمَعَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ ابْلِغْهُ مَا مَنَّ ذَلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ۝

फिर जब हुसमत (गरिमा) वाले महीने गुजर जाएं तो मुशिरकीन को कत्ल करो जहां पाओ और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो और बैठो हर जगह उनकी घात में। फिर अगर वे तौबह कर लें और नमाज कायम करें और जफ़ात अदा करें तो उन्हें छोड़ दो। अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। और अगर मुशिरकीन में से कोई शख्स तुमसे पनाह मांगे तो उसे पनाह दे दो ताकि वह अल्लाह का कलाम सुने फिर उसे उसके अमान (सुरक्षा) की जगह पहुंचा दो। यह इसलिए कि वे लोग इल्म नहीं रखते। (5-6)

मोहलत के चार महीने गुजरने के बाद यहां जिस जंग का हुक्म दिया गया वह कोई आम जंग न थी यह खुदा के कानून के मुताबिक वह अजाब था जो पैगम्बर के इंकार के नतीजे में उन पर जाहिर किया गया। उन्होंने इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद खुदा के पैगम्बर का इंकार करके अपने को इसका मुस्तहिक बना था कि उनके लिए तलवार या इस्लाम के सिवा कोई और सूरत बाकी न रखी जाए। यह खुदा का एक खुसूसी कानून है जिसका तअल्लुक पैगम्बर के मुखातबीन से है न कि आम लोगों से। ताहम इतमामे हुज्जत के बाद भी इस हुक्म का निफाज अचानक नहीं किया गया बल्कि आखिरी मरहले में फिर उन्हें चार महीने की मोहलत दी गई।

इतिक्रम माफ करना नहीं जानता। इतिक्रमी जब्बे के तहत जो कार्रवाई की जाए उसे सिर्फ उस वक्त तस्कीन मिलती है जबकि वह अपने हरीफ को जलील और बर्बाद होते हुए देख ले। मगर अरब के मुशिरकीन के खिलाफ जो कार्रवाई की गई उसका तअल्लुक किसी क्रिम के इंतकाम से नहीं था बल्कि वह सरासर हक्कीक़तपसंदाना (यथार्थवादी) उसूल पर मबनी था। यही वजह है कि इतने शदीद हुक्म के बावजूद उनके लिए यह गुंजाइश हर वक्त बाकी थी कि वे दीने इस्लाम को इख्तियार करके अपने को इस सजा से बचा लें और इस्लामी विरादरी में इज्जत की जिंदगी हासिल कर लें। किसी की तौबह के कबिले कुबूल होने के लिए सिर्फ दो अमली शर्तों का पाया जाना काफी है। नमाज और जफ़ात।

जंग के दौरान दुश्मन का कोई फर्द यह कहे कि मैं इस्लाम को समझना चाहता हूं तो मुसलमानों को हुक्म है कि उसे अमान देकर अपने माहौल में आने का मौका दें और इस्लाम के पैगाम को उसके दिल में उतारने की कोशिश करें। फिर भी अगर वह कुबूल न करे तो अपनी हिफाजत में उसे उसके ठिकाने तक पहुंचा दें। ऐसा नहीं किया जा सकता कि उसने दीन की बात नहीं मानी है तो उसे कत्ल कर दिया जाए। जब कोई शख्स अमान में हो तो अमान के दौरान उस पर हाथ उठाना जाइज नहीं।

जंग के जमाने में दुश्मन को इस क्रिम की रियायत देना इतिहाई नाजुक है। क्योंकि ऐन मुमकिन है कि दुश्मन का कोई जासूस इस रियायत से फायदा उठाकर मुसलमानों के अंदर घुस आए और उनके फौजी राज मालूम करने की कोशिश करे। मगर इस्लाम की नजर में दावत व तब्लीग (आह्वान एवं प्रचार) का मसला इतना ज्यादा अहम है कि इस नाजुक खतरे के बावजूद इसका दरवाजा बंद नहीं किया गया।

एक शख्स अगर बेखबरी और लाइल्मी की बिना पर जुल्म करे तो उसका जुल्म चाहे कितना ही ज्यादा हो मगर उसके साथ हर मुमकिन रियायत की जाएगी उस वक्त तक कि उसकी लाइल्मी और बेखबरी खत्म हो जाए।

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ
عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ
يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ① كَيْفَ وَإِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلَّا وَلَا
ذِمَّةً ② يُرْضُونَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَى قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ ③
اِشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدَّوْا عَنْ سَبِيلِهِ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ④ لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا وَلَا ذِمَّةً ⑤ وَأُولَئِكَ
هُمُ الْمُعْتَدُونَ ⑥ فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَآمَنُوا بِمَا
فِي الدِّينِ وَنَفَصَلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ⑦

इन मुशिकों के लिए अल्लाह और उसके रसूल के जिम्मे कोई अहद (वचन) कैसे रह सकता है, मगर जिन लोगों से तुमने अहद किया था मस्जिदे हराम के पास, पस जब तक वे तुमसे सीधे रहें तुम भी उनसे सीधे रहो, बेशक अल्लाह परहेजगारों को पसंद करता है। कैसे अहद रहेगा जबकि यह हाल है कि अगर वे तुम्हारे ऊपर काबू पाएं तो तुम्हारे बारे में न कराबत (निकट के संबंधों) का लिहाज करें और न अहद का। वे तुम्हें अपने मुंह की बात से राजी करना चाहते हैं मगर उनके दिल इंकार करते हैं। और उनमें अक्सर बदअहद हैं। उन्होंने अल्लाह की आयतों को थोड़ी कीमत पर बेच दिया, फिर उन्होंने अल्लाह के रास्ते से रोका। बहुत बुरा है जो वे कर रहे हैं। किसी मोमिन के मामले में वे न कराबत का लिहाज करते हैं और न अहद का, यही लोग हैं ज्यादाती करने वाले। पस अगर वे तौबह करें और नमाज कायम करें और जकात अदा करें तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं। और हम खोलकर बयान करते हैं आयतों को जानने वालों के लिए। (7-11)

मुसलमानों को जब जोर हासिल हो गया तो कुरेश ने उनसे मुआहिदे कर लिए। ताहम वे इन मुआहिदों से खुश न थे। वे समझते थे कि अपने 'दुश्मन' से यह मुआहिदा उन्होंने अपनी बर्बादी की कीमत पर किया है। यही वजह है कि वे हर वक्त इस इतिजार में रहते थे कि जहां मौका मिले मुआहिदे (संधि) की खिलाफजर्जी करके मुसलमानों को नुस्सान पहुंचाएं या कम से कम उन्हें बदनाम करें। जहिर है कि जब एक फरीक (पक्ष) की तरफ से इस क्रिम की खियानत का मुजाहिदा हो तो दूसरे फरीक के लिए किसी मुआहिदे की पाबंदी जरूरी नहीं रहती।

यह कुरेश का हाल था जिन्हें मुसलमानों के उरूज (उत्थान काल) में अपनी कयादत छिनती हुई नजर आती थी। ताहम कुछ दूसरे अरब कबीले (बनू किनाना, बनू खुजाआ, बनू जमरा) जो इस क्रिम की नपिसयाती पेचीदगी में मुक्तिला न थे, उन्होंने मुसलमानों से

मुआहिदे किए और अपने मुआहिदे पर कायम रहे। जब चार माह की मोहलत का एलान किया गया तो उनके मुआहिदे की मीयाद पूरी होने में तकरीबन नौ महीने बाकी थे। हुक्म हुआ कि उनसे मुआहिदे को आखिर वक्त तक बाकी रखो, क्योंकि तकवा का तकज यही है। मगर इस मुद्दत के खत्म होने के बाद फिर किसी से इस क्रिम का मुआहिदा नहीं किया गया और तमाम मुशिकीन के सामने सिर्फ दो सूरतें बाकी रखी गईं या इस्लाम लाएं या जंग के लिए तैयार हो जाएं।

समाजी जिद्दी की बुनियाद हमेशा दो चीजों पर होती है। रिश्तेदारी या कैल व करार। जिनसे रहमी (खून के) रिश्ते हैं उनके हुक्क का लिहाज आदमी रहमी रिश्तों की बुनियाद पर करता है। और जिनसे कैल व करार हो चुका है उनसे कैल व करार की बिना पर। मगर जब आदमी के ऊपर दुनिया के मफाद और मस्लेहत (हित, स्वार्थ) का गलबा होता है तो वह दोनों बातों को भूल जाता है। वह अपने हकीर (तुच्छ) फायदे के खातिर रहमी हुक्क को भी भूल जाता है और कैल व करार को भी। ऐसे लोग हद से गुजर जाने वाले हैं। वे खुदा की नजर में मुजरिम हैं। दुनिया में अगर वे छूट गए तो आखिरत में वे खुदा की पकड़ से बच न सकेंगे। इस्ला यह कि वे तौबह करें और अपनी सरकशी से बाज आएँ। कोई शख्स माजी में चाहे कितना ही बुरा रहा हो मगर जब वह इस्लाह कुबूल कर ले तो वह इस्लामी विरादरी का एक मुअज्जज (सम्मानित) रुक्न बन जाता है। इसके बाद उसमें और दूसरे मुसलमानों में कोई फर्क नहीं रहता।

وَأِنْ تَكَفُّوا أَيْبَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَيْمَةَ
الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُونَ ⑧ أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَكَثُوا
أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدُّوْكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ أَخْشَوْنَهُمْ وَاللَّهُ
أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ⑨ فَأَنِلُوهُمْ يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ
وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصَرُّكُمْ عَلَيْهِمْ وَيُشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُؤْمِنِينَ ⑩ وَيَذْهَبُ
غَيْظُ قُلُوبِهِمْ ⑪ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ⑫

और अगर अहद (वचन) के बाद ये अपनी कसमों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में ऐब लगाएं तो कुफ्र के इन सरदारों से लड़ो। बेशक उनकी कसमें कुछ नहीं, ताकि वे बाज आएँ। क्या तुम न लड़ोगे ऐसे लोगों से जिन्होंने अपने अहद तोड़ दिए और रसूल को निकालने की जसारात (दुस्साहस) की और वही हैं जिन्होंने तुमसे जंग में पहल की। क्या तुम उनसे डरोगे। अल्लाह ज्यादा मुस्तहिक है कि तुम उससे डरो अगर तुम मोमिन हो। उनसे लड़ो। अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें सजा देगा और उन्हें रुसवा करेगा और तुम्हें उन पर गलबा देगा और मुसलमान लोगों के सीने को ठंडा करेगा और उनके दिल की जलन को दूर कर देगा और अल्लाह तौबह नसीब करेगा जिसे चाहेगा और अल्लाह जानने वाला है हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (12-15)

कुफ्र के सरदारों से मुाराद कुरैश हैं जो अपने क्रायदाना मकाम की वजह से अरब में इस्लाम के खिलाफ तहरीक की इमामत (नेतृत्व) कर रहे थे। कुरैश के इस किरदार से मालूम होता है कि इस्लाम की तहरीक जब उठती है तो उसका पहला मुखालिफ कौन गिरोह बनता है। यह वह गिरोह है जिसे बेआमेज (विशुद्ध) हक के पैगाम में अपनी बड़ई पर जद पड़ती हुई नजर आती है। यही वह सरबरआवुरदह (शीर्ष) तबका है जिसके पास वह जेहन होता है कि वह इस्लामी दावत में शोशे निकाल कर लोगों को उसकी तरफ से मुशतबह करे। उसी के पास वे वसाइल होते हैं कि वह इस्लाम के दाअियों की हौसलाशिकनी के लिए उन्हें तरह-तरह की मुश्किलता में डाले। उसी के पास वह जोर होता है कि वह हकपरस्तों को उनके घरों से निकालने की तदबीरें करे। यहां तक कि उसी को ये मौके हासिल होते हैं कि इस्लाम के मानने वालों के खिलाफ बाक्रायदा जंग की आग भड़का सके।

‘उनके अहद कुछ नहीं बहुत मअनाखेज फिक्का है। जो लोग दुश्मनी और ज़िद की बुनियाद पर खड़े हुए हों उनके वादे और मुआहिदे बिल्कुल गैर यकीनी होते हैं। उनकी नफिसयात में अपने हरीफ के खिलाफ मुस्तकिल इश्तेआल (उत्तेजना) बरपा रहता है। उनके अंदर ठहराव नहीं होता। वे अगर मुआहिदा भी कर लें तो अपने मिजाज के एतबार से उसे देर तक बांधी रखने पर कदिर नहीं होते। ज्यादा नहीं गुज़रती कि अपने मंत्री जबात से मगालूब होकर वे मुआहिदे को तोड़ देते हैं और इस तरह अहले हक को यह मौका देते हैं कि अपने ऊपर पहल का इल्जाम लिए बगैर वे उनके खिलाफ मुदाफिआना (सुरक्षात्मक) कार्रवाई करें और खुद की मदद से उनका ख़ात्मा करें।

तमाम हिक्मत और दानाई (सूझबूझ) का सिरा अल्लाह का डर है। अल्लाह का डर आदमी के अंदर एतराफ का माद्दा पैदा करता है। वह आदमी के अंदर वह शुऊर जगाता है कि वह हकीकतों को उनके असली रूप में देख सके। यही वजह है कि अल्लाह से डरने वाले के लिए खुदाई मंसूवे को समझने में देर नहीं लगती। वह खुदा की मंशा को जान कर पूरे एतमाद के साथ अपने आपको उसमें लगा देता है। वह उस सहीतरीन रास्ते पर चल पड़ता है जिसकी आखिरी मंजिल सिर्फ कामयाबी है। अल्लाह का डर आदमी की आंखों को अश्क आलूद कर देता है। मगर अल्लाह के लिए भीगी हुई आंख ही वह आंख है जिसके लिए यह मुकद्दर है कि उसे ठंडक हासिल हो, दुनिया में भी और आखिरत में भी।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا
مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً ۚ وَاللَّهُ
خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٥﴾

क्या तुम्हारा यह गुमान है कि तुम छोड़ दिए जाओगे हालांकि अभी अल्लाह ने तुम में से उन लोगों को जाना ही नहीं जिन्होंने जिहाद किया और जिन्होंने अल्लाह और रसूल और मोमिनीन के सिवा किसी को दोस्त नहीं बनाया और अल्लाह जानता है जो कुछ

तुम करते हो। (16)

मौजूदा दुनिया में आदमी जब किसी चीज को अपनी ज़िंदगी का मकसद बनाता है तो उसे हासिल करने में तरह-तरह के मसाइल और तक़ाजे सामने आते हैं। अगर आदमी को अपना मकसद अजीज है तो वह इन मसाइल को हल करने और इन तक़ाजों को पूरा करने में अपनी सारी कुव्वत लगा देता है। इसी का नाम जिहाद है। यह जिहाद इस दुनिया में हर एक को पेश आता है। हर आदमी को जिहाद की सतह पर अपनी तलब का सुबूत देना पड़ता है इसके बाद ही यह मुमकिन होता है कि वह अपनी तलब में कामयाब हो। फर्क यह है कि गैर मोमिन दुनिया की राह में जिहाद करता है और मोमिन आखिरत की राह में।

यही जिहाद यह साबित करता है कि आदमी अपने मकसद में कितना संजीदा है। एक शख्स जो ईमान का मुद्दई (दावेदार) हो उसके सामने बार-बार मुखालिफ मौके आते हैं जो उसके दावे का इन्तेहान हों। कभी उसका दिल किसी के खिलाफ बुग़्ज व हसद के जब्जात से मुतअस्सिर होने लगता है और उसका ईमान उससे कहता है कि इस किस्म के तमाम जब्जात को अपने अंदर से निकाल दो। कभी उसकी जवान पर नापसंदीदा कलिमात आते हैं और ईमान का तक़ाज यह होता है कि उस वक्त अपनी जवान को पकड़ लिया जाए। कभी मामलात के दौरान किसी को ऐसा हक देना पड़ता है जो कल्ब को बिल्कुल नागवार हो मगर ईमान यह कह रहा होता है कि हक्द्वार को इंसाफ के मुताबिक उसका पूरा हक पहुंचाया जाए। इसी तरह इस्लाम की दावत कभी ऐसे मोड़ पर पहुंच जाती है कि ईमान यह कहता है कि इसको कामयाब बनाने के लिए अपनी जान व माल कुर्बान कर दो। ऐसे तमाम मौकों पर गु़ेज़ (संकोच) या फ़रार से बचना और हर कीमत पर ईमान व इस्लाम के तक़जे पूरे करते रहना, इसी का नाम जिहाद है।

जब कोई शख्स इस्लाम के लिए मुजाहिद बन जाए तो उसका तमामतर नफिसयाती (मनोवैज्ञानिक) तअल्लुक अल्लाह और रसूल और अहले ईमान से हो जाता है। वह इनके सिवा किसी को अपना वलीजा नहीं बनाता। वलज के मअना हैं दाख़िल होना। वलीजा किसी वादी के उस ग़ार को कहते हैं जहां रास्ता चलने वाले बारिश वगैरह से पनाह लें। इसी से वलीजा है, यानी वली दोस्त।

मौजूदा दुनिया में जब भी आदमी किसी वसीअतर (बड़े) मकसद को अपनाता है तो उसे लाजिमन ऐसा करना पड़ता है कि वह अपने मकसद की मक्कीजियत से वाबस्ता हो। वह अपने क्रायद का मुकम्मल वफ़ादार बने। वह इस राह के साथियों से पूरी तरह जुड़ जाए। मकसदियत के एहसास के साथ ये चीज़ें लाजिम मल्ज़ूम (परस्पर पूरक) हैं। इनके बगैर बामकसद ज़िंदगी का दावा बिल्कुल झूठा है। इसी तरह आदमी जब दीन को संजीदगी के साथ अपनी ज़िंदगी में दाख़िल करेगा तो लाजिमी तौर पर ऐसा होगा कि खुदा और रसूल और अहले ईमान उसका ‘वलीजा’ बन जाएंगे। वह हर एतबार से उनके साथ जुड़ जाएगा। संजीदगी के साथ दीन इख़्तियार करने वाले के लिए अल्लाह और रसूल और अहले ईमान, अमली तौर पर, ऐसी वहदत (एकत्व) के अज्जा हैं जिनके दर्मियान तक़सीम मुमकिन नहीं।

इस मामले की नजाकत बहुत बढ़ जाती है जब यह सामने रखा जाए कि इसकी जांच करने वाला वह है जिसे खुले और छुपे का इल्म है, वह हर आदमी से उसकी हकीकत के एतबार

से मामला करेगा न कि उसके जाहिरी रवैये के एतबार से।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ
بِالْكُفْرِ أُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ۝ إِنَّا يَعْمُرُ
مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ أَمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ
وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ فَعَسَىٰ أُولَئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ۝ أَجَعَلْتُمْ
سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ أَمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ أَكْثَرُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝ يُبَشِّرُهُمْ
رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ قَبْلِهِ وَرِضْوَانٍ وَجَدَّتْ لَهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُّقِيمٌ ۝ خَالِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

मुशिकों का काम नहीं कि वे अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें हालांकि वे खुद अपने ऊपर कुफ्र के गवाह हैं। उन लोगों के आमाल अकारत गए और वे हमेशा आग में रहने वाले हैं। अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करता है जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान लाए और नमाज कायम करे और जकात अदा करे और अल्लाह के सिवा किसी से न डरे। ऐसे लोग उम्मीद है कि हिदायत पाने वालों में से बनें। क्या तुमने हाजियों के पानी पिलाने और मस्जिदे हराम के बसाने को बराबर कर दिया उस शख्स के जो अल्लाह और आखिरत पर ईमान लाया और अल्लाह की राह में जिहाद किया, अल्लाह के नजदीक ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। और अल्लाह जालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में अपने जान व माल से जिहाद किया, उनका दर्जा अल्लाह के यहां बड़ा है और यही लोग कामयाब हैं। उनका रब उन्हें खुशखबरी देता है अपनी रहमत और खुशनुदी (प्रसन्नता) की और ऐसे बागों की जिनमें उनके लिए दाइमी (हमेशा रहने वालों) नेमत होगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। बेशक अल्लाह ही के पास बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। (17-22)

नुजूल कुरआन के वक्त अरब में यह सुरतेहाल थी कि मुसलमान रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गिर्द जमा थे और मुशिकीन बैतुल्लाह के गिर्द। उस वक्त तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अज्मतों की वह तारीख वाबस्ता नहीं हुई थी जिसे आज हम जानते हैं। लोगों को आप आम इंसानों की तरह एक इंसान दिखाई देते

थे। दूसरी तरफ मस्जिदे हराम हजारों वर्षों की तारीख के नतीजे में अज्मत व तकद्दुस (पावनता) की अलामत बनी हुई थी। मुशिकीन की नजर में अपनी तस्वीर तो यह थी कि वे एक मुकद्दसतरीन मर्कज के ख़ादिम और आबादकार हैं। दूसरी तरफ जब वे मुसलमानों को देखते तो उस वक्त के हालात में उन्हें ऐसा मालूम होता जैसे कुछ लोग बस एक दीवाने के पीछे लगे हुए हैं।

मगर मुशिकीन का यह ख़्याल सरासर बातिल था। वह जवाहिर का तकाबुल (तुलना) हकाइक से करने की ग़लती कर रहे थे। मस्जिदे हराम के जायरीन को पानी पिलाना, उसके अंदर रोशनी और सफ़ाई का इतिजाम। काबा पर गिलाफ चढ़ा देना। मस्जिद के फर्श और दीवार की मरम्मत, ये सब जाहिरी नुमाइश की चीजें हैं। ये भला उन आमाल के बराबर हो सकती हैं जबकि आदमी अल्लाह को पा लेता है और आखिरत की फिक्र में जीने लगता है। वह अपनी जिंदगी और अपने असासे को खुदा के हवाले कर देता है। वह दूसरी तमाम बड़ाइयों का इंकार करके एक खुदा को अपना बड़ा बना लेता है। सच्चाई को पाने वाले दरअसल वे लोग हैं जिन्होंने उसे मआना (निहितार्थ) की सतह पर पाया हो न कि जवाहिर की सतह पर। जो कुर्बानी की हद तक सच्चाई से तअल्लुक रखने वाले हों न कि महज सतही और नुमाइशी कार्रवाइयों की हद तक।

अल्लाह से तअल्लुक की दो किस्में हैं। एक तअल्लुक वह है जो रस्मी अक्वीदे की हद तक होता है, जिसमें आदमी कुछ दिखावे के आमाल तो करता है मगर अपने को और अपने माल को खुदा की राह में नहीं देता। दूसरा तअल्लुक वह है जबकि आदमी अपने ईमान में इतना संजीदा हो कि इस राह में उसे जो कुछ छोड़ना पड़े वह उसे छोड़ दे और जो चीज देनी पड़े उसे देने के लिए तैयार हो जाए। यही दूसरी किस्म के बंदे हैं जो मरने के बाद खुदा के यहां आलातरीन इनामात से नवाजे जाएंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحْبَبُوا
الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَاُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ قُلْ
إِنْ كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ
اِقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسْكِنٌ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ
إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرٍ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

ऐ ईमान वाले अपने बापों और अपने भाइयों को दोस्त न बनाओ अगर वे ईमान के मुक़बले में कुफ्र को अजीज रखें। और तुम में से जो उन्हें अपना दोस्त बनाएंगे तो ऐसे ही लोग जालिम हैं। कहो कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे लड़के और तुम्हारे भाई

और तुम्हारी वीवियां और तुम्हारा खानदान और वे माल जो तुमने कमाए हैं और वह तिजारत जिसके बंद होने से तुम डरते हो और वे घर जिन्हें तुम पसंद करते हो, ये सब तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में जिहाद करने से ज्यादा महबूब हैं तो इतिजार करो यहां तक कि अल्लाह अपना हुक्म भेज दे और अल्लाह नाफरमान लोगों को रास्ता नहीं देता। (23-24)

लोगों के लिए अपना खानदान, अपनी जायदाद, अपने मआशी मफादात सबसे कीमती होते हैं। इन्हीं चीजों को वे सबसे ज्यादा अहम समझते हैं। हर दूसरी चीज के मुक़बले में वे उन्हें तरजीह देते हैं और अपना सब कुछ उनके ऊपर निसार कर देते हैं। इस किस्म की जिंदगी दुनियादाराना जिंदगी है। ऐसा आदमी जो कुछ पाता है बस इसी दुनिया में पाता है। मौत के बाद वाली अबदी दुनिया में उसके लिए कुछ नहीं। इसके बरअक्स दूसरी जिंदगी वह है जबकि आदमी अल्लाह और रसूल को और अल्लाह की राह में जद्दोजहद को सबसे ज्यादा अहमियत दे और इसके खातिर दूसरी हर चीज छोड़ने के लिए तैयार रहे। यही दूसरी जिंदगी खुदापरस्ताना जिंदगी है और ऐसे ही लोगों के लिए आखिरत में अबदी जन्नतों के दरवाजे खोले जाएंगे।

एक जिंदगी वह है जो दुनियावी तअल्लुक़ात और दुनियावी मफादात की बुनियाद पर कायम होती है। दूसरी जिंदगी वह है जो ईमान की बुनियाद पर कायम होती है। दोनों में से जिस चीज को भी आदमी अपनी जिंदगी की बुनियाद बनाए, वह हमेशा इस कीमत पर होता है कि वह उसके खातिर दूसरी चीजों को छोड़ दे। वह कुछ लोगों से तअल्लुक़ात कायम करे और कुछ दूसरे लोगों से बेतअल्लुक़ात हो जाए। वह कुछ चीजों की बका और तरक्की में अपनी सारी तवज्जोह लगा दे और कुछ दूसरी चीजों की बका और तरक्की के मामले में बेपरवाह बना रहे। कुछ नुक्सानात उसे किसी कीमत पर गवारान न हों, वह जान पर खेलकर और अपना बेहतरीन सरमाया खर्च करके उन्हें बचाने की कोशिश करे और कुछ दूसरे नुक्सानात को वह अपनी आंखों से देखे मगर उनके बारे में उसके अंदर कोई तड़प पैदा न हो। दुनिया हमेशा उन लोगों को मिलती है जो दुनिया की खातिर अपना सब कुछ लगा दें। इसी तरह आखिरत सिर्फ उन्हीं लोगों के हिस्से में आएगी जो आखिरत के खातिर दूसरी चीजों को कुर्बान कर दें।

तरजीह (एक को छोड़कर दूसरे को इख्तियार करने का मामला) इतिहाई संगीन है। यहां तक कि वही आदमी के कुफ़ व ईमान का फैसला करता है। खुदा की दुनिया में जिस तरह खुले मुक़िरों के लिए कामयाबी मुकद्दर नहीं है इसी तरह उन लोगों के लिए भी यहां कामयाबी का कोई इम्कान नहीं जो ईमान का दावा करें और जब नाजुक मौका आए तो वे आखिरत पसंदाना रविश के मुक़ाबले में दुनियादाराना रविश को तरजीह दें। ऐसे ईमान के दावेदार अगर अपने बारे में खुशफहमी में मुक्ताला हों तो उन्हें उस वक़्त मालूम हो जाएगा जब अल्लाह अपना फैसला जाहिर कर देगा।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمُ

مُذَبِّرِينَ ۖ ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ۖ ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَذَا ۖ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۖ إِنْ شَاءَ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۖ

बेशक अल्लाह ने बहुत से मौकों पर तुम्हारी मदद की है और हुनैन के दिन भी जब तुम्हारी कसरत ने तुम्हें नाज में मुक्ताला कर दिया था। फिर वह तुम्हारे कुछ काम न आई। और जमीन अपनी वुस्अत के बावजूद तुम पर तंग हो गई, फिर तुम पीठ फेर कर भागे। इसके बाद अल्लाह ने अपने रसूल और मोमिनीन पर अपनी सकीनत (शांति) उतारी और ऐसे लश्कर उतारे जिन्हें तुमने नहीं देखा और अल्लाह ने मुक़िरों को सजा दी और यही मुक़िरों का बदला है। फिर इसके बाद अल्लाह जिसे चाहे तौबह नसीब कर दे और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। ऐ ईमान वाले, मुशिरकीन बिल्कुल नापाक हैं। पस वे इस साल के बाद मस्जिदे हराम के पास न आए और अगर तुम्हें मुफ़्तसी का अदेशा हो तो अल्लाह अगर चाहेगा तो अपने फ़ल से तुम्हें धनी कर देगा। अल्लाह अलीम (ज्ञानवान) व हकीम (तत्वदर्शी) है। (25-28)

मुसलमानों का ग़लबा मुक़िरों को उनके कुफ़ की सजा का अगला नतीजा है। मगर मुक़िरों का कुफ़ मुसलमानों के इस्लाम की निस्वत से मुतहक्किक होता है। अगर मुसलमान अपनी इस्लामियत खो दें तो मुक़िरों का कुफ़ किस चीज के मुक़ाबले में साबित होगा और किस बुनियाद पर खुदा वह फ़र्क का मामला करेगा जो एक के लिए इनाम बने और दूसरे के लिए सजा।

रमजान 8 हिजरी में मुसलमानों ने क़ुरैश को कामयाब तौर पर मालूब करके मक्का को फ़तह किया। मगर अगले ही महीने शव्वाल 8 हिजरी में उन्हें हवाज़िन् व सक्कीफ के मुशिक कबीलों के मुक़ाबले में शिकस्त हुई, जबकि फ़तह मक्का के वक़्त मुसलमानों की तादाद दस हजार थी और हवाज़िन् व सक्कीफ से मुक़ाबले के वक़्त बारह हजार। इसकी वजह यह थी कि क़ुरैश से मुक़ाबले के वक़्त मुसलमान सिर्फ अल्लाह के भरोसे पर निकले थे। मगर हवाज़िन् व सक्कीफ से मुक़ाबले पर निकलते हुए उन्हें यह नाज हो गया कि अब तो हम फ़तह मक्का हैं। हमारे साथ बारह हजार आदमियों का लश्कर है, आज हमें कौन शिकस्त दे सकता है। जब वे खुदा के एतमाद पर थे तो उन्हें कामयाबी हुई, जब उन्हें अपनी जात पर एतमाद हो गया तो उन्हें शिकस्त का सामना करना पड़ा।

अपनी जात पर भरोसा आदमी के अंदर घमंड का जब्बा उभारता है जिसके नतीजे में ख़ारजी (वाह्य) हकीकतों से बेपरवाई पैदा होती है। वह नज़्म की पाबंदी में कोताह हो जाता

है। वह बेजा खुदपुतमादी की वजह से गैर हकीकतपसंदाना इक्दाम करने लगता है जिसका नतीजा इस आलमे असबाब में लाजिमी शिकस्त है। इसके बरअक्स खुदा पर भरोसा सबसे बड़ी ताकत पर भरोसा है। इससे आदमी के अंदर तवाजोअ (विनम्रता) का जच्चा उभरता है। वह इतिहाई हकीकतपसंद बन जाता है। और हकीकतपसंदी बिलाशुबह तमाम कामयाबियों की जड़ है।

इब्तिदा में जब यह हुक्म आया कि हरम में मुशिरकों का दाखिला बंद कर दो तो मुसलमानों को तशवीश हुई क्योंकि बगैर खेती का मुल्क होने की वजह से अरब की इकितसादयात (अर्थव्यवस्था) का इंहिसार तिजारत पर था और तिजारत की बुनियाद हमेशा साझे तअल्लुकात पर होती है। मुसलमानों ने सोचा कि जब हरम में मुशिरकीन का आना बंद होगा तो उनके साथ तिजारती रिश्ते भी टूट जाएंगे। मगर उनकी नजर इस इम्कान पर नहीं गई कि आज के मुशिरक कल के मुसलमान हो सकते हैं। चुनांचे यही हुआ। अरबों के उम्मी तौर पर इस्लाम कुबूल कर लेने की वजह से तिजारती सरगर्मियां दुबारा नई सूरत से बहाल हो गईं। साथ ही इस इब्तिदाई कुर्बानी का नतीजा यह हुआ कि बिलआखिर इस्लाम एक अन्तर्राष्ट्रीय दीन बन गया। जो आर्थिक दरवाजे मक्कामी सतह पर बंद होते नजर आते थे वे आलमी सतह पर खुल गए।

قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا يَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ
اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّى
يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ ۚ وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ ۖ
وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ۚ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ يُضَاهَوْنَ
قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ قَاتِلْهُمْ اللَّهُ أَتَى يُؤْفَكُونَ ۚ اتَّخَذُوا
أَحْبَارَهُمْ وَرُهَبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحِ ابْنِ مَرْيَمَ وَمَا
أُمِرُوا إِلَّا لِعِبَادَةِ إِلَهٍ وَاحِدٍ ۚ أَلَا إِلَهُ إِلَّا هُوَ ۚ سُبْحَنَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

उन अहले किताब से लड़ो जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न आखिरत के दिन पर और न अल्लाह और उसके रसूल के हराम ठहराए हुए को हराम ठहराते और न दीने हक को अपना दीन बनाते यहां तक कि वे अपने हाथ से जिज्या (जान माल की हिफाजत) दें और छोटे बनकर रहें। और यहूद ने कहा कि उजैर अल्लाह के बेटे हैं और नसारा (ईसाइयों) ने कहा कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं। ये उनके अपने मुंह की बातें हैं। वे उन लोगों की बात की नकल कर रहे हैं जिन्होंने इनसे पहले कुफ्र किया। अल्लाह इन्हें हलाक करे, वे किधर बहके जा रहे हैं। उन्होंने अल्लाह के सिवा अपने उलमा (विद्वानों) और मशाइख (धर्म गुरुओं) को रब बना डाला और मसीह इब्ने मरयम को भी। हालांकि उन्हें सिर्फ यह हुक्म था कि वे एक माबूद की इबादत करें। उसके सिवा

कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह पाक है इससे जो वे शरीक करते हैं। (29-31)

ईमान जिद्दा हो तो आदमी हर वाक्ये को खुदा की तरफ मंसूब करता है। वह किसी चीज को सिर्फ उस वक्त समझ पाता है जबकि खुदा की निस्वत से उसके बारे में राए कायम कर ले। वह फूल की खुशबू को उस वक्त समझता है जबकि उसमें उसे खुदा की महक मिल जाए। वह सूरज को उस वक्त दरयाप्त करता है जबकि वह उसके अता करने वाले को मालूम कर ले। हर बड़ाई उसे खुदा का अतिथ्या (देन) नजर आती है। हर खूबी उसे खुदा का एहसान याद दिलाती है। इसके बरअक्स अगर खुदा से आदमी का तअल्लुक घटकर सिर्फ मोहूम (काल्पनिक) अकीदे के दर्जे पर आ जाए तो खुदा उसके जिद्दा शुऊर के लिए एक लामालूम (अज्ञात) चीज बन जाएगा। वह दुनिया की नजर आने वाली चीजों पर खुदा को कयास करने लगेगा।

दूसरी किस्म के लोग तबई (भैतिक) तौर पर खालिक (रचयिता) को उन दुनियावी चीजों की नजर से देखने लगते हैं जिन्हें वे जानते हैं। वे खालिक को मख्तूक (रचना) की सतह पर उतार लाते हैं। यही हाल यहूद व नसारा का अपने बिगाड़ के जमाने में हुआ। अब खुदा उनके यहां काल्पनिक आस्था के खाने में चला गया। चुनांचे वे अपने नजर आने वाले अकाविर (बड़ों) और बुजुर्गों को वह दर्जा देने लगे जो दर्जा खुदाए आलिमुलगैब को देना चाहिए। उन्होंने देखा कि यूनानी और रूमी कौमें सूरज को खुदा बनाकर उसके लिए बेदा फर्ज किए हुए हैं तो उन्हें भी अपने बुजुर्गों के लिए यही सबसे उंचा लफज नजर आया। उन्होंने अपनी आसमानी किताबों में अबू (पिता) और इब्न (बेटा) के अल्फाज की खुदसाख्ता तशरीह करके खुदा को बाप और अपने पैमवर को उसका बेटा कहना शुरू कर दिया। हालांकि खुदा सिर्फ एक ही है, वह हर मुशाबिहत से पाक है, वही तंहा इसका मुस्तहिक है कि उसे बड़ा बनाया जाए और उसकी इबादत की जाए।

रसूलुल्लाह के खिलाफ जारिहियत करने वाले मुशिरकीन (बनू इस्माईल) भी थे और अहले किताब (बनू इस्राईल) भी। मगर दोनों के साथ अलग-अलग मामला किया गया। मुशिरकीन के साथ जंग या इस्लाम का उसूल इख्तियार किया गया। मगर अहले किताब के लिए हुक्म हुआ कि अगर वे जिज्या (सियासी इताअत) पर राजी हो जाएं तो उन्हें छोड़ दो। इस फर्क की वजह यह है कि मुशिरकीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अस्लन मुखातब थे और अहले किताब तबअन (परिवेशगत)। अल्लाह की सुन्नत यह है कि जिस कौम पर पैमवर के जरिए बराहेरास्त दावत पहुंचाई जाती है उससे इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) के बाद जिंदगी का हक छीन लिया जाता है, ठीक वैसे ही जैसे किसी रियासत में एक शख्स के बागी साबित होने के बाद उससे जिंदगी का हक छीन लिया जाता है। मगर जहां तक दूसरे गिरोहों का तअल्लुक है उनके साथ वही सियासी मामला किया जाता है जो आम अन्तर्राष्ट्रीय उसूल के मुताबिक दुरुस्त हो।

يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا سُورَةَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُتِمَّ نُورُهُ
وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۚ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ
لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ ۚ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝

वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुंह से बुझा दें और अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा किए बगैर मानने वाला नहीं, चाहे मुंकिरों को यह कितना ही नागवार हो। उसी ने अपने रसूल को भेजा है हिदायत और दिने हक के साथ ताकि उसे सारे दिन पर ग़ालिब कर दे चाहे यह मुशिरकों को कितना ही नागवार हो। (32-33)

इन आयतों में खुदा ने अपने उस मुस्तकिल फैसला का एलान किया है कि वह अपने दिन को कियामत तक पूरी तरह महफूज रखेगा, माजी (अतीत) की तरह अब ऐसा नहीं होने दिया जाएगा कि लोग अपनी मिलावटों से खुदा के दिन को गुम कर दें या कोई ताकत उसे सफ़हा-ए-हस्ती से मिटा देने में कामयाब हो।

अल्लाह तआला ने जब इंसान को जमीन पर बसाया तो इसी के साथ उसके लिए अपना हिदायतनामा भी इंसान के हवाले कर दिया। बाद के दौर में जब लोग ग़फलत और दुनियापरस्ती में मुक्ताला हुए तो उन्होंने खुदा के अल्फाज को बदल कर उसे अपनी ख़्वाहिशों के मुताबिक बना लिया। मसलन अपने बुजुर्गों को खुदा के यहां सिफ़ारिश मान कर यह अक्कीदा कायम कर लिया कि हम जो कुछ भी करें, हमारे बुजुर्ग अपनी सिफ़ारिश के जेर पर हमें खुदा के यहां नजात दिला देंगे या यह कि जन्नत और जहन्नम सब इसी दुनिया में हैं। इसके आगे और कुछ नहीं। लोग जो कुछ खुद चाहते थे उसे उन्होंने खुदा की तरफ मंसूब करके खुदा की किताब में लिख दिया। इसके बाद खुदा ने दूसरा नबी भेजा जिसने खुदा के दिन को इंसानी मिलावटों से अलग करके दुबारा उसे सही शकल में पेश किया। मगर बाद के जमाने में लोगों ने उसे भी बदल डाला। यही बार-बार होता रहा। बिलआखिर अल्लाह तआला ने फैसला किया कि एक आखिरी रसूल भेजे और उसके जरिए ऐसे हालात पैदा करे कि खुदा का दिन हमेशा के लिए अपनी असली हालत में महफूज हो जाए। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरिए तरीखे नुबुव्वत का यही अजीम कारनामा अंजाम पाया।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाए तो उस वक़्त लोगों ने खुदसाख़्ता तौर पर बहुत से दिन बना रखे थे। अरब के मुशिरकीन का एक दिन था जिसे वे दिने इब्राहीम कहते थे। यहूद का एक दिन था जिसे वे दिने मूसा कहते थे। नसारा का एक दिन था जिसे वे दिने मसीह कहते थे। ये सब खुदा के दिन के खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) एडीशन थे जिन्हें उन्होंने ग़लत तौर पर खुदा की तरफ से आया हुआ दिन करार दे रखा था। खुदा ने इन सब दिनों को रद्द कर दिया और मुहम्मद (सल्ल०) के दिन को अपने दिन के वाहिद (एकमात्र) मुस्तनद एडीशन के तौर पर कियामत तक के लिए कायम कर दिया।

आज इस्लाम वाहिद दिन है जिसके मूल (मूल रूप) में कोई तब्दीली मुमकिन न हो सकी जबकि दूसरे तमाम अदयान (धर्म) इंसानी तहरीफात (संशोधनों) का शिकार होकर अपनी असली तस्वीर गुम कर चुके हैं। इस्लाम वाहिद दिन है जो तारीख़ी तौर पर मोतबर दिन है जबकि दूसरे तमाम अदयान (धर्म) अपने हक में तरीख़ी एतबारियत खो चुके हैं। इस्लाम वाहिद दिन है जिसकी तमाम तालीमात एक जिदा जवान में पाई जाती हैं जबकि दूसरे तमाम अदयान इब्तिदाई किताबें ऐसी जवानों में हैं जो अब मुर्दा हो चुकी हैं। इस्लाम की सूरत में खुदा ने मजहब की जो रोशनी जलाई वह कभी हल्की नहीं हुई और न बुझाई जा सकी। वह

कामिल तौर पर दुनिया के सामने मौजूद है और हर दूसरे दिन के ऊपर अपनी उसूली बरतरी को मुसलसल कायम रखे हुए है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْأَخْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَكُونُونَ أَمْوَالِ
النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ يَكْتُمُونَ الذَّهَبَ
وَالْفِضَّةَ وَلَا يُفْقِدُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۖ يَوْمَ
يُخْسَىٰ عَلَيْهِمْ فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَيَتَنَوَّوْنَ بِهَا جَبَاهُهمُ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ
هَذَا مَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ٣٤

ऐ ईमान वालो, अहले किताब के अक्सर उलमा (विद्वान) व मशाइख़ (धर्म गुरु) लोगों के माल बातिल (अवैध) तरीकों से खाते हैं और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग सोना और चांदी जमा करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते उन्हें एक दर्दनाक अजाब की खुशख़बरी दे दो। उस दिन इस माल पर दोख़ की आग दहकाई जाएगी। फिर उससे उनकी पेशानियां और उनके पहलू और उनकी पीठें दागी जाएंगी। यही है वह जिसे तुमने अपने वास्ते जमा किया था। पस अब चखो जो तुम जमा करते रहे। (34-35)

दूसरे का माल लेने का एक तरीका यह है कि उसे हक के मुताबिक लिया जाए। यानी आदमी दूसरे की कोई वाकई ख़िदमत करे या उसे कोई हक्की नफ़ा पहुंचाए और इसके बदले में उसका माल हासिल करे। यह बिल्कुल जाइज है। बातिल तरीके से दूसरे का माल लेना यह है कि दूसरे को धोखे में डाल कर उसका माल हासिल किया जाए। यह दूसरा तरीका नाजाइज है और खुदा के ग़ज़ब को भड़काने वाला है।

बातिल तरीके से दूसरे का माल खाना वही चीज है जिसे मौजूदा जमाने में इस्तग़लाल (Exploitation) कहा जाता है। यहूद के अकाबिर बहुत बड़े पैमाने पर अपने अवाम का मजहबी इस्तग़लाल (शोषण) कर रहे थे। वे अवाम में ऐसी झूठी कहानियां फैलाए हुए थे जिसके नतीजे में लोग बुजुर्गों से ग़ैर मामूली उम्मीदें वाबस्ता करें और फिर उन्हें बुजुर्ग समझ कर उनकी बरकत लेने के लिए आए और उन्हें हदिये और नजराने पेश करें। वे खुदा के दिन की ख़िदमत के नाम पर लोगों से रकमें वसूल करते थे हालांकि जो दिन वे लोगों के दर्मियान तक्सीम कर रहे थे वह उनका अपना बनाया हुआ दिन था न कि हक्कीकतन खुदा का उतारा दिन। वे मिल्लते यहूद के इहया (उत्थान) के नाम पर बड़े-बड़े चन्दे वसूल करते थे हालांकि मिल्लत के इहया के नाम पर वे जो कुछ कर रहे थे वह सिर्फ यह था कि लोगों को खुशख़्वाहियों में उलझा कर उन्हें अपनी कयादत (नेतृत्व) के लिए इस्तेमाल करते रहें। वे तावीज गंडे में रहस्य भरे औसाफ बता कर उन्हें लोगों के हाथों फरोख़्त करते थे। हालांकि उनका हाल यह था कि खुद अपने नाजुक मामलात में वे कभी इन तावीज गंडों पर भरोसा नहीं करते थे।

आदमी के पास जो माल आता है उसके दो ही जायज मसरफ (उपयोग) हैं। अपनी वाकई जरूरतों में खर्च करना, और जो कुछ वाकई जरूरत से जायद हो उसे खुदा के रास्ते में दे देना। इसके अलावा जो तरीके हैं वे सब आदमी के लिए अजाब बनने वाले हैं। चाहे वह अपने माल को फुनूलखर्चियों में उड़ता हो या उसे जमा करके रख रहा हो।

जो लोग यहूद की तरह खुदसाख्ता मजहब की बुनियाद पर किसी गिरोह के ऊपर अपनी कयादत कायम किए हुए हैं और खुदा के दीन के नाम पर लोगों का शोषण कर रहे हों वे किसी ऐसी दावत को सख्त नापसंद करते हैं जो खुदा के सच्चे और बेआमेज (विशुद्ध) दीन को जिंदा करना चाहती हो। ऐसे दीन में उन्हें अपनी मजहबी हैसियत बेएतबार होती नजर आती है। उन्हें दिखाई देता है कि अगर उसे अवाम में फरोग हासिल हुआ तो उनकी मजहबी तिजारत बिल्कुल बेनकाब होकर लोगों के सामने आ जाएगी। वे ऐसी तहरीक के उठते ही उसे सूँघ लेते हैं और उसके मुखालिफ बनकर खड़े हो जाते हैं।

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَسِيمُ فَلَا تَطْلُبُوا فِيهِنَّ أَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَآفَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ٣٦ إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضِلُّ بِالَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا يَوْمَ إِطُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيَحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ زُرِينَ لَهُمْ سُوءُ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ٣٧

महीनों की गिनती अल्लाह के नजदीक बारह महीने हैं अल्लाह की किताब में जिस दिन से उसने आसमानों और जमीन को पैदा किया, इनमें से चार हुरमत (गरिमा) वाले हैं। यही है सीधा दीन। पस उनमें तुम अपने ऊपर जुल्म न करो। और मुश्कियों से सब मिलकर लड़ो जिस तरह वे सब मिलकर तुमसे लड़ते हैं और जान लो कि अल्लाह मुत्कियों (ईश परायण लोगों) के साथ है। महीनों का हटा देना कुफ्र में एक इजाफा है। इससे कुफ्र करने वाले गुमराही में पड़ते हैं। वे किसी साल हाराम महीने को हलाल कर लेते हैं और किसी साल उसे हाराम कर देते हैं ताकि खुदा के हाराम किए हुए की गिनती पूरी करके उसके हाराम किए हुए को हलाल कर लें। उनके बुरे आचरण उनके लिए खुशनुमा बना दिए गए हैं। और अल्लाह इंकार करने वालों को रास्ता नहीं दिखाता। (36-37)

दीनी अहकाम पर हर शख्स अलग-अलग भी अमल कर सकता है। मगर अल्लाह तआला को यह मल्लूब है कि तमाम अहले ईमान एक साथ उन पर अमल करें ताकि उनमें इज्तिमाइयत (सामूहिकता) पैदा हो। इसी इज्तिमाइयत के मकसद को हासिल करने की खातिर

इबादात की अदायगी के लिए मुतअय्यन औकात और तारीखें मुकरर की गई हैं। ये तारीखें अगर शमसी केलेन्डर के एतबार से रखी जातीं तो इनके जमाने में यकसानियत (समरूपता) आ जाती। मसलन रोजा हमेशा एक मौसम में आता और हज हमेशा एक मौसम में। मगर यकसानियत आदमी के अंदर जुमूद (जड़ता) पैदा करती है और तब्दीली से नई कुव्वते अमल बेदार होती है। इस बिना पर दीनी उमूर के इज्तिमाई निजाम के लिए चांद का कुदरती केलेन्डर इख्तियार किया गया।

इसी उसूल की वजह से हज की तारीखें मुख़लिफ मौसमों में आती हैं, कभी सर्दियों में और कभी गर्मियों में। कदीम जमाने में जबकि हज का इज्तिमा जबरदस्त तिजारीती अहमियत रखता था, मुख़लिफ मौसमों में हज का आना तिजारीती एतबार से नुक्सानदेह मालूम हुआ। अहले अरब को दीनी मस्लेहों के मुक़बले में दुनियावी मस्लेहें ज्यादा अहम नजर आईं। उन्होंने चाहा कि ऐसी सूरत इख्तियार करें कि हज की तारीख हमेशा एक ही मुवाफिक मौसम में पड़े। इस मौके पर यहूद व नसारा का कबीसा का हिसाब उनके इल्म में आया। अपनी ख़्वाहिशों के ऐन मुताबिक होने की वजह से वह उन्हें पसंद आ गया और उन्होंने उसे अपने यहां राज़ कर लिया। यानी महीनों को हटाकर एक की जगह दूसरे को रख देना। मसलन मुहर्रम को सफर की जगह कर देना और सफर को मुहर्रम की जगह।

‘नसी’ के इस तरीके से अहले अरब को दो फायदे हुए। एक यह कि हज के मौसम को तिजारीती तक्ज़े के मुताबिक कर लेना। दूसरे यह कि हाराम महीनों (मुहर्रम, रजब, जैकअदा, जिलहिज्ज) में किसी के खिलाफ लड़ाई छेड़ना हो तो हाराम महीने की जगह गैर हाराम महीना रखकर लड़ाई को जाइज कर लेना। अहले अरब के सामने हजरत इब्राहीम का तरीका भी था। मगर उनके ज़हन पर चूँकि तिजारीती मक़सिद और क़्वाइली तक्ज़े का ग़लब था। इसलिए उन्हें ‘नसी’ का तरीका ज्यादा अच्छा मालूम हुआ और उन्होंने अपने मामलात के लिए उसे इख्तियार कर लिया।

‘तुम भी मिलकर लड़ो जिस तरह वे मिलकर लड़ते हैं’ इसका मतलब यह है कि मुकिर लोग खुदा से बेख़ौफ़ी पर मुत्तहिद हो जाते हैं, तुम खुदा से ख़ौफ (तक़्वा) पर मुत्तहिद हो जाओ। वे मंफ़ी (नकारात्मक) मक़सिद के लिए बाहम जुड़ जाते हैं तुम मुसबत (सकारात्मक) मक़सिद के लिए आपस में जुड़ जाओ। वे दुनिया के ख़ातिर एक हो जाते हैं तुम आख़िरत की ख़ातिर एक हो जाओ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ أَنْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَثَا قُلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ أَرْضَيْتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ ۖ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ۚ إِلَّا تَنْفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا ۚ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ إِلَّا تَضُرُّوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ

يَجْنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ وَكَلِمَةُ اللَّهِ
هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ①

ऐ ईमान वालो, तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में निकलो तो तुम जमीन से लगे जाते हो। क्या तुम आखिरत (परलोक) के मुक़ाबले में दुनिया की जिंदगी पर राजी हो गए। आखिरत के मुक़ाबले में दुनिया की जिंदगी का सामान तो बहुत थोड़ा है। अगर तुम न निकलोगे तो खुदा तुम्हें दर्दनाक सजा देगा और तुम्हारी जगह दूसरी कौम ले आएगा और तुम खुदा का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे। और खुदा हर चीज पर कादिर है। अगर तुम रसूल की मदद न करोगे तो अल्लाह खुद उसकी मदद कर चुका है जबकि मुंकिरों ने उसे निकाल दिया था, वह सिर्फ दो में का दूसरा था। जब वे दोनों ग़ार में थे। जब वह अपने साथी से कह रहा था कि ग़म न करो, अल्लाह हमारे साथ है। पस अल्लाह ने उस पर अपनी सकीनत (शांति) नाजिल फरमाई और उसकी मदद ऐसे लश्करों से की जो तुम्हें नजर न आते थे और अल्लाह ने मुंकिरों की बात नीची कर दी और अल्लाह ही की बात तो ऊंची है और अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (38-40)

ये आयतें ग़ज़वा तबूक (9 हिजरी) के जेल (प्रसंग) में उतरतीं। इस मौके पर मदीने के मुनाफ़िक्कीन की तरफ से जो अमल जाहिर हुआ उससे अंदाज़ होता है कि कमज़ोर ईमान वाले लोग जब किसी इस्लामी समाज में दाख़िल हो जाते हैं तो नाजुक मौके पर उनका किरदार क्या होता है।

अस्त यह है कि इस्लाम से तअल्लुक के दो दर्जे हैं। एक यह कि उसी से आदमी की तमाम वफ़ादारियां वाबस्ता हो जाएं। वह आदमी के लिए जिंदगी व मौत का मसला बन जाए। दूसरे यह कि आदमी की हकीकी दिलचस्पियां तो कहीं और अटकती हुई हों और ऊपरी तौर पर वह इस्लाम का इकरार कर ले। पहली किस्म के लोग सच्चे मोमिन हैं और दूसरी किस्म के लोग वे हैं जिन्हें शरीअत की इस्तिहाह में मुनाफ़िक कहा गया है। मोमिन का हाल यह होता है कि आम हालात में भी वह इस्लाम को पकड़े हुए होता है और कुर्बानी के लम्हात में भी वह पूरी तरह उस पर कायम रहता है। इसके बरअक्स मुनाफ़िक का हाल यह होता है कि वह बेज़र (अहानिकारक) इस्लाम या नुमाइशी दीनदारी में तो बहुत आगे दिखाई देता है। मगर जब कुर्बानी की सतह पर इस्लाम के तकाजों को इख़्तियार करना हो तो वह पीछे हट जाता है।

इस फ़र्क की वजह यह है कि मोमिन के सामने अस्लन आखिरत होती है और मुनाफ़िक के सामने अस्लन दुनिया। मोमिन आखिरत की बेपायां (असीम) नेमतों के मुक़ाबले में दुनिया की कोई कीमत नहीं समझता, इसलिए जब भी दुनिया की चीजों में से कोई चीज उसके रास्ते में हायल हो तो वह उसे नजरअंदाज़ करके दीन की तरफ बढ़ जाता है। इसके बरअक्स मुनाफ़िक ऐसे इस्लाम को पसंद करता है जिसमें दुनिया को बिगाड़े बग़ैर इस्लामियत का क्रेडिट मिल रहा हो। इसलिए जब ऐसा मौका आता है कि दुनिया को खोकर इस्लाम को पाना हो तो वह दुनिया की तरफ झुक जाता है, चाहे इसके नतीजे में इस्लाम की रस्सी उसके हाथ से निकल जाए।

इस्लाम और ग़ैर इस्लाम की कशमकश के जो लम्हात मौजूदा दुनिया में आते हैं वे बजाहिर देखने वालों को अगरचे दो इंसानी गिरोहों की कशमकश दिखाई देती है मगर अपनी हकीकत के एतबार से यह एक खुदाई मामला होता है। ऐसे हर मौके पर खुद खुदा इस्लाम की तरफ से खड़ा होता है। ऐसे किसी वाक्ये को असबाब के रूप में इसलिए जाहिर किया जाता है ताकि उन लोगों को दीन की ख़िदमत का क्रेडिट दिया जाए जो अपने आपको पूरी तरह खुदा के हवाले कर चुके हैं।

انْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ① لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَاتَّبَعُوكُمْ وَلَكِنْ بَعَدَتْ عَلَيْهِمُ السُّعْيَةُ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ②

हल्के और बोझिल और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह की राह में जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। अगर नफ़ा करीब होता और सफ़र हल्का होता तो वे जरूर तुम्हारे पीछे हो लेते मगर यह मंजिल उन पर कठिन हो गई। अब वे कसमें खाएंगे कि अगर हमसे हो सकता तो हम जरूर तुम्हारे साथ चलते। वे अपने आपको हलाकत में डाल रहे हैं। और अल्लाह जानता है कि ये लोग यकीनन झूठे हैं। (41-42)

मदीना के मुनाफ़िक्कीन में एक तबक्क वह था जो कमज़ोर अर्कीदे के मुसलमान थे।

उन्होंने इस्लाम को हक समझ कर उसका इकरार किया था। वे इस्लाम की उन तमाम तालीमात पर अमल करते थे जो उनकी दुनियावी मस्लेहतों के ख़िलाफ न हों। मगर जब इस्लाम का तक्कज उनके दुनियावी तक्कजे से टकराता तो ऐसे मौके पर वे इस्लामी तक्कजे को छोड़कर अपने दुनियावी तकाजे को पकड़ लेते। मदीने के समाज में मोमिन उस शख्स का नाम था जो कुर्बानी की सतह पर इस्लाम को इख़्तियार किए हुए हो और मुनाफ़िक वह था जो इस्लाम की खातिर कुर्बानी की हद तक जाने के लिए तैयार न हो।

तबूक का मामला एक अलामती (प्रतीकात्मक) तस्वीर है जिससे मालूम होता है कि खुदा की नजर में मोमिन कौन होता है और मुनाफ़िक कौन। इस मौके पर रूम जैसी बड़ी और मुनज्जम ताकत से मुक़ाबले के लिए निकलना था। ज़माना शहीद गर्मी का था। फ़सल बिल्कुल काटने के करीब पहुंच चुकी थी। हर किस्म की नासाज़गारी का मुक़ाबला करते हुए शाम की दूरदराज़ सरहद पर पहुंचना था। फिर मुसलमानों में कुछ सामान वाले थे और कुछ बेसामान वाले। कुछ आजाद थे और कुछ अपने हालात में घिरे हुए थे। मगर हुक्म हुआ कि हर हाल में निकलो, किसी भी चीज को अपने लिए उज़्र (विवशता) न बनाओ। इसकी वजह यह है कि खुदा के यहां अस्त मसला मिक्दार का नहीं होता बल्कि यह होता है कि आदमी के पास जो कुछ भी है वह उसे पेश कर दे। यही दरअस्त जन्नत की कीमत है, चाहे वह बजाहिर देखने वालों के नजदीक कितनी ही कम क्यों न हो।

मुनाफिक की ख़स पहचान यह है कि अगर वह देखता है कि केशक़त्त सफ़र करके इस्लाम की ख़िदमत का एक बड़ा क्रेडिट मिल रहा है तो वह फौरन ऐसे सफ़र के लिए तैयार हो जाता है। इसके बरअक्स अगर ऐसा सफ़र दरपेश हो जिसमें मशक़तें हों और सब कुछ करके भी बजाहिर कोई इज्जत और कामयाबी मिलने वाली न हो तो ऐसी दीनी मुहिम के लिए उसके अंदर राबत पैदा नहीं होती।

एक हकीक़ी दीनी मुहिम सामने हो और आदमी उजरात (विवशताएं) पेश करके उससे अलग रहना चाहे तो यह साफ़ तौर पर इस बात का सुबूत है कि आदमी ने खुदा के दीन को अपनी जिंदगी में सबसे ऊंचा मक़ाम नहीं दिया है। उज़ (विवशता) पेश करने का मलब ही यह है कि फ़ैसल मक़सद के मुक़बले में कोई और चीज़ आदमी के नज़दीक़ ज्यादा अहमियत रखती है। जाहिर है कि ऐसा उज़ किसी आदमी को खुदा की नज़र में बेएतबार साबित करने वाला है न यह कि इसकी बिना पर उसे मक़बूलीन (प्रिय बंदों) की फ़ेहरिस्त में शामिल किया जाए। मुनाफ़िक़त दरअस्तल खुदा से बेपरवाह होकर बंदों की परवाह करना है। आदमी अगर खुदा की क़दरत को जान ले तो वह कभी ऐसा न करे।

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ أَذْنَتْ لَهُمْ حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكَ الْإِذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ
الْكُذِبَ ۖ لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ۖ إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ
يَتَرَدَّدُونَ ۚ وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً ۚ وَاللَّهُ لَكِنُ كَرِيمٌ ۚ
فَتَّبَطُّهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَوْدِينَ ۖ

अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, तुमने क्यों उन्हें इजाजत दे दी। यहां तक कि तुम पर खुल जाता कि कौन लोग सच्चे हैं और झूठों को भी तुम जान लेते। जो लोग अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं वे कभी तुमसे यह दरख़ास्त न करेंगे कि वे अपने माल और अपनी जान से जिहाद न करें और अल्लाह डरने वालों को ख़ूब जानता है। तुमसे इजाजत तो वही लोग मांगते हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल शक में पड़े हुए हैं। पस वे अपने शक में भटक रहे हैं। और अगर वे निकलना चाहते तो जरूर वे इसका कुछ सामान कर लेते। मगर अल्लाह ने उनका उठना पसंद न किया इसलिए उन्हें जमा रहने दिया और कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो। (43-46)

मुनाफ़िक़ वह है जो इस्लाम के नफ़बख़्श या बेजर (अहानिकारक) पहलुओं में आगे आगे रहे मगर जब उसके मफ़ादात पर ज़द पड़ती नज़र आए तो वह पीछे हट जाए। ऐसे

मौफ़े पर इस किस्म के कमज़ोर लोग जिस चीज़ का सहारा लेते हैं वह उज़ है। वे अपनी बेअमली को ख़ूबसूरत तौजीहात (तर्कों) में छुपाने की कोशिश करते हैं। मुसलमानों का सरबराह अगर इज्तिमाई मसालेह (जनहित) के पेशेनज़र उनके उज़ को कुबूल कर ले तो वे खुश होते हैं कि उन्होंने अपने अल्फ़ाज़ के पर्दे में निहायत कामयाबी के साथ अपनी बेअमली को छुपा लिया। मगर वे भूल जाते हैं कि अस्तल मामला इंसान से नहीं बल्कि खुदा से है। और वह हर आदमी की हकीक़त को अच्छी तरह जानता है। खुदा ऐसे लोगों का राज़ कभी दुनिया में खोल देता है और आख़िरत में तो बहरहाल हर एक का राज़ खोला जाने वाला है।

किसी का लड़का बीमार हो या किसी की लड़की की शादी हो तो उस वक़्त वह अपने आपको और अपने माल को उससे बचाकर नहीं रखता। उसकी जिंदगी और उसका माल तो इसीलिए है कि ऐसा कोई मौक़ा आए तो वह अपना सब कुछ निसार करके उनके काम आ सके। ऐसा कोई वक़्त उसके लिए बढ़कर कुर्बानी देने का होता है न कि उजरात की आड़ तलाश करने का। यही मामला दीन का भी है। जो शख्स अपने दीन में संजीदा हो वह दीन के लिए कुर्बानी का मौक़ा आने पर कभी उज़ (विवशता) तलाश नहीं करेगा। उसके सीने में जो इमानी ज़बात बेक़रार थे वे तो गोया उसी दिन के इतिज़ार में थे कि जब कोई मौक़ा आए तो वह अपने आपको निसार करके खुदा की नज़र में अपने को वफ़ादार साबित कर सके। फिर ऐसा मौक़ा पेश आने पर वह उज़ का सहारा क्यों ढूँढ़ेगा।

मोमिन खुदा से डरने वाला होता है और डर का जब्बा आदमी के अंदर सबसे ज्यादा क़वी (सशक़्त) जब्बा है। डर का जब्बा दूसरे तमाम जब्बात पर ग़ालिब आ जाता है। जिस चीज़ से आदमी को डर और अदंशे का तअल्लुक हो उसके बारे में वह आख़िरी हद तक संजीदा और हकीक़तपसंद हो जाता है। यही वजह है कि जब कोई शख्स डर की सतह पर खुदा का मोमिन बन जाए तो उसे यह समझने में देर नहीं लगती कि किस मौक़े पर उसे किस किस्म का रद़देअमल (प्रतिक्रिया) पेश करना चाहिए।

आख़िरत का नफ़ा सामने न होने की वजह से आदमी उसके लिए कुर्बानी देने में शक में पड़ जाता है। मगर इस शक के पर्दे को फाड़ना ही इस दुनिया में आदमी का अस्तल इस्तेहान है।

لَوْ خَرَجُوا فِئَكُمْ مَارَادُوا كُمُ الْأَخْبَارَ وَلَا أَوْضَعُوا خِلَالَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ ۖ وَفِيكُمْ سَعُيُونَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ۖ لَقَدْ ابْتَغُوا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَبُوا إِلَيْكَ الْأُمُورَ حَتَّى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَرِهُونَهُ ۖ

अगर ये लोग तुम्हारे साथ निकलते तो वे तुम्हारे लिए ख़राबी ही बढ़ाने का सबब बनते और वे तुम्हारे दर्मियान फ़ितनापरदाजी (उपद्रव) के लिए दौड़घूप करते और तुम में उनकी सुनने वाले हैं और अल्लाह ज़ालिमों से ख़ूब वाकिफ़ है। ये पहले भी फ़ितने (उपद्रव) की कोशिश कर चुके हैं और वे तुम्हारे लिए कामों का उलट फेर करते रहे हैं।

यहां तक कि हक आ गया और अल्लाह का हुक्म जाहिर हो गया और वे नाखुश ही रहे। (47-48)

दीन को इस्तिथार करना एक मुस्लिमाना होता है और दूसरा मुनाफिकाना। मुस्लिमाना तौर पर दीन को इस्तिथार करना यह है कि दीन के मसले को आदमी अपना मसला बनाए, अपनी जिंदगी और अपने माल पर वह सबसे ज्यादा दीन का हक समझे। इसके बरअक्स मुनाफिकाना तौर पर दीन को इस्तिथार करना यह है कि दीन से बस रस्मी और जाहिरी तअल्लुक रखा जाए। दीन को आदमी अपनी जिंदगी में यह मक़ाम न दे कि उसके लिए वह वक़फ हो जाए और हर किसम के नुस्सान का ख़तरा मोल लेकर उसकी राह में आगे बढ़े।

अपनी ग़लती को मानना अपने को दूसरे के मुकाबले में कमतर तस्लीम करना है और इस किसम का एतराफ किसी आदमी के लिए मुश्किलतरीन काम है। यही वजह है कि आदमी हमेशा इस कोशिश में रहता है कि किसी न किसी तरह अपने मौक़िफ को सही साबित कर दे। चुनांचे मुनाफिकाना तौर पर इस्लाम को इस्तिथार करने वाले हमेशा इस तलाश में रहते हैं कि कोई मौक़ा मिले तो मुस्लिम मोमिनों को मत्ऊन करें और उनके मुकाबले में अपने आपको ज्यादा दुरुस्त साबित कर सकें।

मदीने के मुनाफिकीन मुसलसल इस कोशिश में रहते थे। मसलन उहुद की लड़ाई में मुसलमानों को शिकस्त हुई तो मदीना में बैठे रहने वाले मुनाफिकीन (पाखंडियों) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ यह प्रोपेगंडा शुरू कर दिया कि इन्हें मामलाते जंग का तजर्बा नहीं है। इन्होंने जोश के तहत इक्दाम किया और हमारी कौम के जवानों को ग़लत मक़ाम पर ले जाकर ख़ामख़्वाह कटवा दिया।

इंसानों में कम लोग ऐसे होते हैं जो मसाइल का गहरा तज्ज़िया (विश्लेषण) कर सकें और उस हकीकत को जानें कि किसी बात का क़ाइदे ज़हान के एतबार से सही अल्फ़ाज़ में ढल जाना इसका काफी सुबूत नहीं है कि वह बात मअना के एतबार से भी सही होगी। बेशतर लोग सादा फ़िक्र के होते हैं और कोई बात ख़ुबसूरत अल्फ़ाज़ में कही जाए तो बहुत जल्द उससे मुतअस्सिर हो जाते हैं। इस बिना पर किसी मुस्लिम ग़िरोह में मुनाफिक किसम के अफ़राद की मौजूदगी हमेशा उस ग़िरोह की कमजोरी का बाइस होती है। ये लोग अपने को दुरुस्त साबित करने की कोशिश में अक्सर ऐसा करते हैं कि बातों को ग़लत रूख़ देकर उन्हें अपने मुफ़ीदे मतलब रंग में बयान करते हैं। इससे सादा फ़िक्र (सोच) के लोग मुतअस्सिर हो जाते हैं और उनके अंदर ग़ैर जरूरी तौर पर शुबह और बेयकीनी की कैफ़ियत पैदा होने लगती है।

मुनाफिकीन की मुख़लिफ़ना कोशिशों के बावजूद जब बद्र की फ़तह हुई तो अब्दुल्लाह बिन उबई और उसके साथियों ने कहा : 'यह चीज तो अब चल निकली' इस्लाम का ग़लबा जाहिर होने के बाद उन्हें इस्लाम की सदाक़त (सच्चाई) पर यकीन करना चाहिए था मगर उस वक़्त भी उन्होंने उससे हसद की ग़िज़ा ली।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَقُولُ اِئْذَنْ لِّي وَلَا تَنْفِتْنِي الْاِثْمُ سَقَطُوا وَاِنْ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۝ اِنْ تُصِيبَكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۝ وَاِنْ تُصِيبَكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ اَخَذْنَا اَمْرًا مِنْ قَبْلُ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ فَرِحُونَ ۝ قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا هُوَ مَوْلَانَا وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا اِلَّا الْاِحْدَى الْحُسَيْنِيْنَ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ يُصِيبَكُمْ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِنْ عِنْدِهٖ اَوْ يَأْتِيَنَا قُرْءَانٌ مَّعَكُمْ مُّرَبِّصُونَ ۝

और उनमें वे भी हैं जो कहते हैं कि मुझे रुख़सत दे दीजिए और मुझे फितने में न डालिए। सुन लो, वे तो फितने में पड़ चुके। और बेशक जहन्नम मुंकिरों को घेरे हुए है। अगर तुम्हें कोई अच्छाई पेश आती है तो उन्हें दुख होता है और अगर तुम्हें कोई मुसीबत पहुंचती है तो कहते हैं हमने पहले ही अपना बचाव कर लिया था और वे खुश होकर लौटते हैं। कहे, हमें सिर्फ वही चीज पहुंचेगी जो अल्लाह ने हमारे लिए लिख दी है। वह हमारा कारसाज (कार्य साधक) है और अहले इमान को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। कहे तुम हमारे लिए सिर्फ दो भलाइयों में से एक भलाई के मुंजिर हो। मगर हम तुम्हारे हक में इसके मुंजिर हैं कि अल्लाह तुम पर अज़ाब भेजे अपनी तरफ से या हमारे हाथों से। पस तुम इतिज़ार करो हम भी तुम्हारे साथ इतिज़ार करने वालों में हैं। (49-52)

मदीने में एक शख्स जुद बिन कैस था। तबूक के ग़ज़वे में निकलने के लिए आम एलान हुआ तो उसने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आकर कहा कि मुझे इस ग़ज़वे से माफ़ रखिए। यह रूमी इलाक़ा है। वहां रूमी औरतों को देखकर मैं फितने में पड़ जाऊंगा, मगर ऐसे मौक़ों पर उज (विवशता) पेश करना बजाए खुद फितने में पड़ना है। क्योंकि नाजुक मौक़ों पर आदमी के अंदर दीन के ख़ातिर फ़िदा हो जाने का ज़बा बड़कना चाहिए न कि उजरात (विवशताएं) तलाश करके पीछे रह जाने का। फिर ऐसे किसी उज को दीनी और अज़ाकी रंग देना और भी ज्यादा बुरा है। क्योंकि यह बेअमली पर फ़रेबकारी का इज़ाफ़ा है।

इस किसम का मिज़ाज हकीकत में आदमी के अंदर इसलिए पैदा होता है कि वह अपनी दुनिया को आख़िरत के मुक़ाबले में अजीज़तर रखता है। ख़तरात के मौक़े पर ऐसे लोग दीन की राह में आगे बढ़ने से रुके रहते हैं। फिर जब सच्चे हक़परस्तों को उनकी ग़ैर मस्लेहत अंदेशाना (निस्वार्थ) दीनदारी की वजह से कभी कोई नुस्सान पहुंच जाता है तो ये लोग खुश होते हैं कि बहुत अच्छा हुआ कि हमने अपने लिए हिफ़ाजती पहलू इस्तिथार कर लिया था। इसके बरअक्स अगर ऐसा हो कि सच्चे हक़परस्त ख़तरात का मुकाबला करें और उसमें उन्हें

कामयाबी हो तो इन लोगों के दिल तंग होते हैं। क्योंकि ऐसा कोई वाक्या यह साबित करता है कि उन्होंने जो पॉलिसी इस्तिथार की वह दुरुस्त न थी।

सच्चे अहले ईमान के लिए इस दुनिया में नाकामी का सवाल नहीं। उनकी कामयाबी यह है कि खुदा उनसे राजी हो और यह हर हाल में उन्हें हासिल होता है। मोमिन पर अगर कोई मुसीबत आती है तो वह उसके दिल की इनाबत (खुदा की तरफ झुकाव) को बढ़ाती है। अगर उसे कोई सुख मिलता है तो उसके अंदर एहसानमंदी का जब्बा उभरता है और वह शुक्र करके खुदा की मजिद इनायतों का मुस्तहिक बनता है।

‘तुम इतिज्जर करो हम भी इतिज्जर कर रहे हैं बजहिर मोमिनीन का कलिमा है। मगर हकीकत यह खुदा की तरफ से है। खुदा उन लोगों से तंबीही अंजाम में कह रहा है कि तुम लोग अहले हक की बर्बादी के मुंजिर हो, हालांकि खुदा के तक्दीरी निजम के मुताबिक उन्हें अबदी कामयाबी मिलने वाली है। और तुम्हारे साथ जो होना है वह यह कि तुम्हारे जुर्म को आखिरी हद तक साबित करके तुम्हें दाइमी (स्थायी) तौर पर रुस्वाई और अजाब के हवाले कर दिया जाए।

قُلْ أَنْفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَنْ يُتَقَبَلَ مِنْكُمْ إِتْكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فَسِقِينَ ۝
وَمَا مَنَعَكُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالَى وَلَا يُنْفِقُونَ إِلَّا وَهُمْ كُرْهُونَ ۝
فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّا نَرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَرْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ
لَمِنَكُمْ وَمَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ ۝ لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً
أَوْ مَغْرَبًا أَوْ مَدْخَلًا لَوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْحَدُونَ ۝

कहो तुम खुशी से खर्च करो या नाखुशी से, तुमसे हरगिज न कुबूल किया जाएगा।
केशक तुम नाफरमान लोग हो। और वे अपने खर्च की कुबूलियत से सिर्फ इसलिये
महलूम हुए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इंकार किया और ये लोग नमाज
के लिए आते हैं तो गरानी (बेदिली) के साथ आते हैं और खर्च करते हैं तो नागवारी
के साथ। तुम उनके माल और औलाद को कुछ वकअत (महत्व) न दो। अल्लाह तो
यह चाहता है कि उनके जरिए से उन्हें दुनिया की जिंदगी में अजाब दे और उनकी जानें
इस हालत में निकलें कि वे मुंकिर हों। वे खुदा की कसम खाकर कहते हैं कि वे तुम
में से हैं हालांकि वे तुम में से नहीं। बल्कि वे ऐसे लोग हैं जो तुमसे डरते हैं। अगर
वे कोई पनाह की जगह पाएं या कोई खोह या घुस बैठने की जगह तो वे भाग कर
उसमें जा छुपें। (53-57)

मदीने में यह सूत पेश आई कि उमूमी तौर पर लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया। उनमें
अक्सरियत मुस्लिम अहले ईमान की थी ताहम एक तादाद वह थी जिसने वक्त की फजा का
साथ देते हुए अगरचे इस्लाम कुबूल कर लिया था लेकिन उसके अंदर वह सुपुर्गी पैदा नहीं
हुई थी जो हकीकी ईमान और अल्लाह से सच्चे तअल्लुक का तकाज है। यही वे लोग हैं
जिन्हें मुनाफिक्कीन (पाखंडी) कहा जाता है।

ये मुनाफिक्कीन ज्यादातर मदीने के मालदार लोग थे और यही मालदारी उनके निफ्फक
(पाखंड) का अस्त सबब थी। जिसके पास खोने के लिए कुछ न हो वह ज्यादा आसानी के
साथ उस इस्लाम को इस्तिथार करने के लिए तैयार हो जाता है जिसमें अपना सब कुछ खो
देना पड़े। मगर जिन लोगों के पास खोने के लिए हो वे आम तौर पर मस्तेहतअदेशी में
मुब्तिला हो जाते हैं। इस्लाम के बेजरर (अहानिकारक) अहकाम की तामील तो वे किसी न
किसी तरह कर लेते हैं। मगर इस्लाम के जिन तकाजों को इस्तिथार करने में जान व माल
की महरूमि दिखाई दे रही हो, जिसमें कुर्बानी की सतह पर मोमिन बनने का सवाल हो उनकी
तरफ बढ़ने के लिए वे अपने को आमादा नहीं कर पाते।

मगर कुर्बानी वाले इस्लाम से पीछे रहना उनके ‘नमाज रोजा’ को भी बेकीमत कर देता
है। मस्जिद की इबादत का बहुत गहरा तअल्लुक मस्जिद के बाहर की इबादत से है। अगर
मस्जिद से बाहर आदमी की जिंदगी हकीकी दीन से खाली हो तो मस्जिद के अंदर भी उसकी
जिंदगी हकीकी दीन से खाली होगी और जहिर है कि बेरह अमल की खुदा के नजदीक कोई
कीमत नहीं। खुदा सच्चे अमल को कुबूल करता है न कि झूठे अमल को।

किसी आदमी के पास दौलत की रौनकें हों और आदमियों का जत्था उसके गिर्द व पेश
दिखाई देता हो तो आम लोग उसे रश्क (यश) की नजर से देखने लगते हैं। मगर हकीकत
यह है कि ऐसे लोग सबसे ज्यादा बदकिस्मत लोग हैं। आम तौर पर उनका जो हाल होता है
वह यह कि माल व जाह (सम्पन्नता) उनके लिए ऐसे बंधन बन जाते हैं कि वे खुदा के दीन
की तरफ भरपूर तौर पर न बढ़ सकें, वे खुदा को भूल कर उनमें मशगूल रहें यहां तक कि
मौत आ जाए और बेरहमी के साथ उन्हें उनके माल व जाह से जुदा कर दे।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَلْبِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِنْ لَمْ
يُعْطُوا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ
وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ ۝
إِنَّا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَمِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ
وَفِي الرِّقَابِ وَالْغَارِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةٌ مِّنْ اللَّهِ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

और उनमें ऐसे भी हैं जो तुम पर सदकात के बारे में ऐब लगाते हैं। अगर उसमें से उन्हें दे दिया जाए तो राजी रहते हैं और अगर न दिया जाए तो नाराज हो जाते हैं। क्या अच्छा होता कि अल्लाह और रसूल ने जो कुछ उन्हें दिया था उस पर वे राजी रहते और कहते कि अल्लाह हमारे लिए काफी है। अल्लाह अपने फल से हमें और भी देगा और उसका रसूल भी, हमें तो अल्लाह ही चाहिए। सदकात (जकात) तो दरअसल फकीरों और मित्कीनों के लिए हैं और उन कारकुनों के लिए जो सदकात के काम पर मुकर्रर हैं। और उनके लिए जिनकी तालीफे कल्ब (दिल भराई) मत्तूब है। और गर्दनों के छुड़ाने में और जो तावान भरें और अल्लाह के रास्ते में और मुसाफिर की इम्दाद में। यह एक फरीजा है अल्लाह की तरफ से और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (58-60)

यहां जकात के मसारिफ (खर्च की मंदां) बताए गए हैं। ये मसारिफ कुरआन की तसरीह के मुताबिक आठ हैं:

छुफ़	:	जिनके पास कुछ न हो
मसाकीन	:	जिन्हें बक़्द हज़त (ज़रूरत भर) मय़स्सर न हो
आमिलीन	:	जो इस्लामी हुक्मत की तरफ से सदकात की वसूली और उसके हिसाब किताब पर मामूर हों
तरीक़	:	जिन्हें इस्लाम की तरफ राग़िब करना मक़सूद हो या जो इस्लाम में कमज़ोर हों
ख़ि	:	ग़ुलामों को आज़ादी दिलाने के लिए या कैदियों का फ़िदया देकर उन्हें रिहा करने के लिए
ग़ारिमीन	:	जो क़रज़दार हो गए हों या जिनके ऊपर ज़मानत का भार हो
सबीलिल्लाह	:	दीन की दावत और अल्लाह की राह में जिहाद की मद में
मुसाफ़िर	:	मुसाफ़िर जो सफ़र की हालत में ज़रूरतमंद हो जाए चाहे अपने मकान पर ग़नी हो

इज़्तिमाई नम (सामूहिक) के तहत जब जकात व सदकात की तक्सीम की जाए तो हमेशा ऐसा होता है कि कुछ लोगों को हक्कतल्फ़ी या ग़ैर मुसिफ़ना तक्सीम की शिकायत हो जाती है। मगर ऐसी शिकायत अक्सर खुद शिकायत करने वाले की कमज़ोरी को जाहिर करती है। तक्सीम का जिम्मेदार चाहे कितना ही पाकबाज हो, लोगों की हिर्स और उनका महदूद तर्जेफ़िर बहरहाल इस विस्म की शिकायतें निकाल लेगा।

मज़ीद यह कि इस विस्म की शिकायत सबसे ज्यादा आदमी के अपने ख़िलाफ़ पड़ती है, वह आदमी के फ़िक़री (वैचारिक) इम्कानात को बरूएकार लाने में रुकावट बन जाती है। आदमी अगर शिकायती मिजाज को छोड़कर ऐसा करे कि उसे जो कुछ मिला है उस पर वह राजी हो जाए और वह अपनी सोच का रुख़ अल्लाह की तरफ़ कर ले तो इसके बाद यह होगा कि उसके अंदर नई हिम्मत पैदा होगी। उसके अंदर छुपी हुई ईजाबी (सकारात्मक) सलाहियतें जाग उठेंगी। वह मिली हुई रक़म को ज्यादा कारआमद मसरफ़ में लगाएगा। अतियात पर इहिसार

करने के बजाए उसके अंदर अपने आप पर एतमाद करने का ज़ेहन उभरेगा। वह खुदा के भरोसा पर नए इक्तेसादी (आर्थिक) मौकों की तलाश करने लगेगा। दूसरों से बेजारी के बजाए दूसरों को साथी बनाकर काम करने का जज्बा उसके अंदर पैदा होगा, वग़ैरह।

وَمِنْهُمْ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ هُوَ أُذُنٌ قُلْ أُذُنٌ خَيْرٌ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيُرْضُوكُمْ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ أَحَقُّ أَنْ يُرْضَوْهُ إِنَّ كَانُوا مُؤْمِنِينَ ۝۶۱
أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَن يُحَادِدُ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ ۝۶۲

और उनमें वे लोग भी हैं जो नबी को दुख देते हैं और कहते हैं कि यह शख्स तो कान है। कहो कि वह तुम्हारी भलाई के लिए कान है। वह अल्लाह पर ईमान रखता है और अहले ईमान पर एतमाद करता है और वह रहमत है उनके लिए जो तुम में अहले ईमान हैं। और जो लोग अल्लाह के रसूल को दुख देते हैं उनके लिए दर्दनाक सज़ा है। वे तुम्हारे सामने अल्लाह की कसमें खाते हैं ताकि तुम्हें राजी करें। हालाँकि अल्लाह और उसका रसूल ज्यादा हक़दार हैं कि वे उसे राजी करें अगर वे मोमिन हैं। क्या उन्हें मालूम नहीं कि जो अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफ़त (विरोध) करे उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वह हमेशा रहेगा। यह बहुत बड़ी रुस्वाई है। (61-63)

मदीना के मुनाफ़िक़ीन अपनी निजी मज़िलसों में इस्लामी शख्सियतों का मज़ाक उड़ते। मगर जब वे मुसलमानों के सामने आते तो कसम खाकर यकीन दिलाते कि वे इस्लाम के वफ़ादार हैं। इसकी वजह यह थी कि मुसलमान मदीना में ताक़तवर थे। वे मुनाफ़िक़ीन को नुक़सान पहुंचाने की हेंसियत में थे। इसलिए मुनाफ़िक़ीन मुसलमानों से डरते थे। इससे मुनाफ़िक़ (पाखंडी) के किरदार का अस्त पहलू सामने आता है। मुनाफ़िक़ की दीनदारी इंसान के डर से होती है न कि खुदा के डर से। वह ऐसे मौकों पर अज़्बाक व इंसाफ़ वाला बन जाता है जहां इंसान का दबाव हो या अवाम की तरफ से अदिशा लाहिक हो। मगर जहां इस विस्म का ख़तरा न हो और सिर्फ़ खुदा का डर ही वह चीज़ हो जो आदमी की ज़बान को बंद करे और उसके हाथ पांव को रोके तो वहां वह बिल्कुल दूसरा इंसान होता है। अब वह एक ऐसा शख्स होता है जिसे न बाअज़्बाक बनने से कोई दिलचस्पी हो और न इंसाफ़ का रवैया इख़्तियार करने की कोई ज़रूरत।

जो लोग मस्तेहतों में गिरफ़्तार होते हैं और इस बिना पर तहफ़ुजात (संरक्षणों) से ऊपर उठकर खुदा के दीन का साथ नहीं दे पाते वे आम तौर पर समाज के साहिबे हैसियत लोग

होते हैं। अपनी हैसियत को बाकी रखने के लिए वे उन लोगों की तस्वीर बिगाड़ने की कोशिश करते हैं जो सच्चे इस्लाम को लेकर उठे हैं। वे उनके खिलाफ झूठे प्रोपेगंडे की मुहिम चलाते हैं। उन्हें तरह-तरह से बदनाम करने की तदबीरें करते हैं। उनकी बातों में बेबुनियाद किस्म के एतराजात निकालते हैं।

ऐसे लोग भूल जाते हैं कि यह बेहद संगीन बात है। यह अहले ईमान की मुखालिफत (विरोध) नहीं बल्कि खुद खुदा की मुखालिफत है। यह खुदा का हरीफ बनकर खड़ा होना है। ऐसे लोग अगर अपनी मासूमियत साबित करने के बजाए अपनी गलती का इकरार करते और कम से कम दिल से इस्लाम के दावियों के खैरब्राह होते तो शायद वे माफी के काबिल ठहरते। मगर जिद और मुखालिफत का तरीका इस्त्रियार करके उन्हें अपने को खुदा के दुश्मनों की फेहरिस्त में शामिल कर लिया। अब रुस्वाई और अजाब के सिवा उनका कोई ठिकाना नहीं।

अल्लाह का डर आदमी के दिल को नर्म कर देता है। वह लोगों की बेबुनियाद बातों को भी खामोशी के साथ सुन लेता है, यहां तक कि नादान लोग कहने लगे कि ये तो सादालोह हैं, बातों की गहराइयों को समझते ही नहीं।

يَحْذَرُ الْمُنْفِقُونَ أَنْ تَنْزَلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ
قُلِ اسْتَهِزُّوا إِنَّا لِلَّهِ مُخْرِجٌ تَاخَذُ رُؤُوسَهُ ۖ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ
إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُونَ ۖ
لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ إِنَّ نَعْفَ عَنْ طَائِفَةٍ مِنْكُمْ
نُعَذِّبُ طَائِفَةً ۚ يَأْتُهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ۝

मुनाफिकीन (पाखंडी) डरते हैं कि कहीं मुसलमानों पर ऐसी सूरह नाजिल न हो जाए जो उन्हें उनके दिलों के भेदों से आगाह कर दे। कहे कि तुम मजाक उड़ा लो, अल्लाह यकीनन उसे जाहिर कर देगा जिससे तुम डरते हो। और अगर तुम उनसे पूछो तो वे कहेंगे कि हम तो हंसी और दिल्लगी कर रहे थे। कहे, क्या तुम अल्लाह से और उसकी आयतों से और उसके रसूल से हंसी दिल्लगी कर रहे थे। बहाने मत बनाओ, तुमने ईमान लाने के बाद कुफ्र किया है। अगर हम तुम में से एक गिरोह को माफ कर दें तो दूसरे गिरोह को तो जरूर सजा दें क्योंकि वे मुजरिम हैं। (64-66)

तबूक की लड़ाई के मौके पर मदीने में यह फजा थी कि जो लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ निकले वे अरबाबे अजीमत (पराक्रमी) शुमार हो रहे थे और जो लोग अपने घरों में बैठ रहे थे वे मुनाफिक और पस्तहिम्मत समझे जाते थे। बैठे रहने वाले मुनाफिकीन ने रसूल और असहाबे रसूल के अमल को कमतर जाहिर करने के लिए उनका मजाक उड़ाना शुरू किया। किसी ने कहा : ये कुरआन पढ़ने वाले हमें तो इसके सिवा कुछ

और नजर नहीं आते कि वे हम में सबसे ज्यादा भूखे हैं, हम में सबसे ज्यादा झूठे हैं और हम में सबसे ज्यादा बुजदिल हैं। किसी ने कहा : क्या तुम समझते हो कि रुमियों से लड़ना भी वैसा ही है जैसा अरबों का आपस में लड़ना। खुदा की कसम कल ये सब लोग रस्सियों में बंधे हुए नजर आएंगे। किसी ने कहा : ये साहब समझते हैं कि वे रुम के महल और उनके किले फतह करने जा रहे हैं, इनकी हालत पर अफसोस है। (तपसीर इब्ने कसीर)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम हुआ तो आपने उन लोगों को बुला कर पूछा। वे कहने लगे : हम तो सिर्फ हंसी खेल की बातें कर रहे थे। इसके जवाब में अल्लाह तआला ने फरमाया : क्या अल्लाह और उसके अहकाम और उसके रसूल के मामले में तुम हंसी खेल कर रहे थे।

अल्लाह और रसूल की बात हमेशा किसी आदमी की जवान से बुलन्द होती है। यह आदमी अगर देखने वालों की नजर में बजाहिर मामूली हो तो वे उसका मजाक उड़ाने लगते हैं। मगर यह मजाक उड़ाना उस आदमी का नहीं है खुद खुदा का है। जो लोग ऐसा करें वे सिर्फ यह साबित करते हैं कि वे खुदा के दीन के बारे में संजीदा नहीं हैं। ऐसे लोग खुदा की नजर में सख्त मुजरिम हैं, उनकी झूठी तावीलें उनकी हकीकत को छुपाने में कभी कामयाब नहीं हो सकतीं।

निफक और इतिदाद दोनों एक ही हकीकत की दो सूतें हैं। आदमी अगर इस्लाम इस्त्रियार करने के बाद खुल्लम खुल्ला मुकिर हो जाए तो यह इतिदाद है। और अगर ऐसा हो कि जेहन और कलब (दिल) के एतबार से वह इस्लाम से दूर हो मगर लोगों के सामने वह अपने को मुसलमान जाहिर करे तो यह निफक (पाखंड) है, ऐसे मुनाफिकीन का अंजाम खुदा के यहां वही है जो मुरतदीन (इस्लाम त्यागने वालों) का है, इल्ला यह कि वे मरने से पहले अपनी गलतियों का इकरार करके अपनी इस्लाम कर लें।

الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَنكِرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ سُوا اللَّهِ فَتَسِيَهُمْ إِنَّ
الْمُنْفِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۖ وَعَدَ اللَّهُ الْمُنْفِقِينَ وَالْمُنْفِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ
خَالِدِينَ فِيهَا هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعْنَهُمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۖ كَالَّذِينَ
مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا
بِخَلَائِقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَائِقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ
بِخَلَائِقِهِمْ وَخَضْتُمْ كَالَّذِينَ خَاضُوا أُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ ۖ أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ

قَبْلَهُمْ قَوْمٌ نُونٌ وَعَادٌ وَثَمُودٌ وَقَوْمٌ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ
وَالْمُتَفَكِّتِ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

मुनाफिक (पाखंडी) मर्द और मुनाफिक औरतें सब एक ही तरह के हैं। वे बुराई का हुक्म देते हैं और भलाई से मना करते हैं। और अपने हाथों को बंद रखते हैं। उन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया। बेशक मुनाफिकीन बहुत नाफरमान हैं। मुनाफिक मर्दों और मुनाफिक औरतों और मुकियों से अल्लाह ने जहन्नम की आग का वादा कर रखा है जिसमें वे हमेशा रहेंगे। यही उनके लिए बस है। उन पर अल्लाह की लानत है और उनके लिए कायम रहने वाला अजाब है। जिस तरह तुमसे अगले लोग, वे तुमसे जोर में ज्यादा वे और माल व औलाद की कसरत में तुमसे बड़े हुए थे तो उन्होंने अपने हिस्से से फायदा उठाया और तुमने भी अपने हिस्से से फायदा उठाया, जैसा कि तुम्हारे अगलों ने अपने हिस्से से फायदा उठाया था। और तुमने भी वही बहस कीं जैसी बहस उन्होंने की थी। यही वे लोग हैं जिनके आमाल दुनिया व आखिरत में जाया हो गए और यही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं। क्या उन्हें उन लोगों की खबर नहीं पड़ती जो इनसे पहले गुजरे। कौमे नूह और आद और समूद और कौमे इब्राहीम और असाहाबे मदयन और उल्टी हुई बस्तियों की। उनके पास उनके रसूल दलीलों के साथ आए। तो ऐसा न था कि अल्लाह उन पर जुल्म करता मगर वे खुद अपनी जानों पर जुल्म करते रहे। (67-70)

पहले लोगों को खुदा ने जाह व माल दिया तो उन्होंने उससे फख्र और घमंड और बेहिशी की गिजा ली। ताहम बाद वालों ने उनके अंजाम से कोई सबक नहीं सीखा। उन्होंने भी दुनिया के साजोसामान से अपने लिए वही हिस्सा पसंद किया जिसे उनके पिछलों ने पसंद किया था। यही हर दौर में आम आदमियों का हाल रहा है। वे हक के तकाजों को कोई अहमियत नहीं देता। माल व औलाद के तकाजे ही उसके नजदीक सबसे बड़ी चीज होते हैं।

मुनाफिक का हाल भी ब-एतबार हकीकत यही होता है। वह जहिरि तौर पर तो मुसलमानों जैसा नजर आता है। मगर उसके जीने की सतह वही होती है जो आम दुनियादारों की सतह होती है। इसका नतीजा यह होता है कि कुछ नुमाइशी आमाल को छोड़कर हकीकी जिंदगी में वह वैसा ही होता है जैसे आम दुनियादार होते हैं। मुनाफिक की कबी दिलचस्पियां दीनदार के मुकबले में दुनियादारों से ज्यादा वाबस्ता होती हैं। आखिरत की मद में खर्च करने से उसका दिल तंग होता है मगर बेफायदा दुनियावादी मशगलों में खर्च करना हो तो वह बड़ चढ़कर उसमें हिस्सा लेता है। हक का फरेग उसे पसंद नहीं आता अलबत्ता नाहक का फरेग हो तो उसे वह शैफ से गवारा करता है। जाहिरी दीनदारी के बावजूद वह खुदा और आखिरत को इस तरह भूला रहता है जैसे उसके नजदीक खुदा और आखिरत की कोई हकीकत नहीं।

ऐसे लोग अपने जाहिरी इस्लाम की बिना पर खुदा की पकड़ से बच नहीं सकते। दुनिया में उनके लिए लानत है और आखिरत में उनके लिए अजाब। दुनिया में भी वे खुदा की रहमतों से महरूम रहेंगे और आखिरत में भी।

खुदा के साथ कामिल वाबस्ती ही वह चीज है जो आदमी के अमल में कीमत पैदा करती है। कामिल वाबस्ती के बगैर जो अमल किया जाए, चाहे वह बजाहिर दीनी अमल क्यों न हो, वह आखिरत में उसी तरह बेकीमत करार पाएगा जैसे रूह के बगैर कोई जिस्म, जो जिस्म से जाहिरी मुशाबिहत के बावजूद अमलन बेकीमत होता है।

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ يَمُرُّونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ
اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۝ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ ۝ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝ وَعَدَ اللَّهُ
الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
وَمَسْكَنٍ طَيِّبَةٍ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ وَرِضْوَانٍ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ۝ ذَلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें एक दूसरे के मददगार हैं। वे भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नमाज कायम करते हैं और जक्रात अदा करते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करते हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह रहम करेगा। बेशक अल्लाह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से अल्लाह का वादा है बागों का कि उनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। और वादा है, सुथरे मकानों का हमेशगी के बागों में, और अल्लाह की रिजामंदी जो सबसे बढ़कर है। यही बड़ी कामयाबी है। (71-72)

मुनाफिकाना तौर पर इस्लाम से वाबस्ता रहने वाले लोगों में जो खुसूसियात होती हैं वे हैं आखिरत से गफलत, दुनियावादी जरूरतों से दिलचस्पी, भलाई के साथ तआवुन से दूरी और नुमाइशी कामों की तरफ साबत। इन मुशतरक (साझी) खुसूसियात की वजह से वे एक दूसरे से खूब मिले जुले रहते हैं। ये चीजें उन्हें मुशतरक (साझी) दिलचस्पी की बातचीत का विषय देती हैं। इससे उन्हें एक दूसरे की मदद करने का मैदान हासिल होता है। यह उनके लिए बाहमी तअल्लुकात का जरिया बनता है।

यही मामला एक और शकल में सच्चे अहले ईमान का होता है, उनके दिल में खुदा की लगन लगी हुई होती है। उन्हें सबसे ज्यादा आखिरत की फिक्र होती है। वे दुनिया की चीजों से बतौर जरूरत तअल्लुक रखते हैं न कि बतौर मकसद। खुदा की पसंद का काम हो रहा हो तो उनका दिल फौरन उसकी तरफ खिंच उठता है। बुराई का काम हो तो इससे उनकी तबीअत इबा (इंकार) जाती है। उनकी जिंदगी और उनका असासा सबसे ज्यादा खुदा के लिए होता है न कि

अपने लिए। वे खुदा की याद करने वाले और खुदा की राह में खर्च करने वाले होते हैं।

अहले ईमान के ये मुशतरक (साझे) औसाफ उन्हें एक दूसरे से करीब कर देते हैं। सबकी दौड़ खुदा की तरफ होती है। सबकी इताअत का मर्कज खुदा का रसूल होता है। जब वे मिलते हैं तो यही वह बाहमी दिलचस्पी की चीजें होती हैं जिन पर वे बात करें। इन्हीं औसाफ के जरिए वे एक दूसरे को पहचानते हैं। इसी की बुनियाद पर उनके आपस के तअल्लुकात कायम होते हैं। इसी से उन्हें वह मक्सद हाथ आता है जिसके लिए वे मुत्तहिदा कोशिश करें। इसी से उन्हें वह निशाना मिलता है जिसकी तरफ सब मिलकर आगे बढ़ें।

दुनिया में अहले ईमान की जिंदगी उनकी आखिरत की जिंदगी की तमसील है। दुनिया में अहले ईमान इस तरह जीते हैं जैसे एक बाग में बहुत से शादाब दरख्त खड़े हों, हर एक दूसरे के हुस्न में इजाफा कर रहा हो। उन दरख्तों को फैजाने खुदावंदी से निकलने वाले आंसू सैराब कर रहे हों। हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का इस तरह खैरख्वाह और साथी हो कि पूरा माहौल अमन व सुकून का गहवारा बन जाए। यही रब्बानी जिंदगी आखिरत में जन्नती जिंदगी में तब्दील हो जाएगी। वहां आदमी न सिर्फ अपनी बोई हुई फल काटेगा बल्कि खुदा की खुसूसी रहमत से ऐसे इनामात पाएगा जिनका इससे पहले उसने तसव्वुर भी नहीं किया था।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَا لَهُمْ
جَهَنَّمَ وِبَشِّ الْمَصِيئِينَ ۖ يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ
الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بِعَدْلِ إِسْلَامِهِمْ وَهُمْ يُبَالِغُونَ فِي إِثْمِهِمْ وَمَا يُنْقِضُوا إِلَّا
أَنْ أَعْنَاهُمْ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ فَإِنْ يَتُوبُوا يَكُ خَيْرًا لَهُمْ
وَإِنْ يَتُوبُوا يَعِدْ بَعْضُهُمْ لِلدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ
فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝

ऐ नबी मुंकिरों (सत्य का इंकार करने वालों) और मुनाफिकों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उन पर कड़े बन जाओ। और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। वे खुदा की कसम खाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा। हालांकि उन्होंने कुफ्र की बात कही और वे इस्लाम के बाद मुंकिर हो गए और उन्होंने वह चाहा जो उन्हें हासिल न हो सकी। और यह सिर्फ इसका बदला था कि उन्हें अल्लाह और रसूल ने अपने फल से गनी कर दिया। अगर वे तौबह करें तो उनके हक में बेहतर है और अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो खुदा उन्हें दर्दनाक अजाब देगा दुनिया में भी और आखिरत में भी। और जमीन में उनका न कोई हिमायती होगा और न मददगार। (73-74)

एक रिवायत के मुताबिक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में तकरीबन

80 मुनाफिकीन मदीने में मौजूद थे। इससे मालूम हुआ कि मुनाफिकीन से जिस जिहाद का हुक्म दिया गया है वह जंग के मअना में नहीं है। अगर ऐसा होता तो आप इन मुनाफिकों का खात्मा कर देते। इससे मुराद दरअसल वह जिहाद है जो जबान और बर्ताव और शिद्दत एहतिसाब के जरिए किया जाता है। (कुर्बूबी) चुनांचे जमहूर उम्मत (विद्वानों के मतभेद) के नजदीक मुनाफिकीन के मुन्नबले में सशस्त्र जिहाद वैध नहीं है।

मुनाफिकत (पाखंड) यह है कि आदमी इस्लाम को इस तरह इख्तियार करे कि वह उसे मफादात और मस्लेहतों (हितों, स्वार्थों) के ताबेअ किए हुए हो। इस किस्म के लोग जब देखते हैं कि कुछ खुदा के बंदे गैर मस्लेहतपरस्ताना अंदाज में इस्लाम को इख्तियार किए हुए हैं और उसकी तरफ लोगों को दावत देते हैं तो ऐसा इस्लाम उन्हें अपने इस्लाम को बेवकअत साबित करता हुआ नजर आता है। ऐसे दाअियों (आध्वानकर्ताओं) से उन्हें सख्त नफरत हो जाती है। वे उन्हें उखाड़ने के दरपे हो जाते हैं। जिस इस्लाम के नाम पर वे अपनी तिजारतें कायम करते हैं उसी इस्लाम के दाअियों के वे दुश्मन बन जाते हैं।

मुनाफिकीन की यह दुश्मनी सज्जि और इस्तेहज (मजकूर) के अंजाम में जल्द होती है। अगर वे किसी को देखते हैं कि उसके अंदर किसी वजह से सच्चे इस्लाम के दाअियों के बारे में मुखातिफाना जज्बात हैं तो वे उसे उभारते हैं ताकि वह उनसे लड़ जाए। वे मुख्तिस (निष्ठावान) अहले ईमान का मजाक उड़ाते हैं। वे ऐसी बातें कहते हैं जिससे उनकी कुर्बानियां बेहकीकत मालूम होने लें। वे उनकी मामूली बातों को इस तरह बिगाड़ कर पेश करते हैं कि अवाम में उनकी तस्वीर खराब हो जाए। तबूक के सफर में एक बार ऐसा हुआ कि एक पड़ाव के मकाम पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊंटनी गुम हो गई। कुछ मुसलमान उसे तलाश करने के लिए निकले। यह बात मुनाफिकों को मालूम हुई तो उन्होंने मजाक उड़ाते हुए कहा: यह साहब हमें आसमान की खबरें बताते हैं। मगर उन्हें अपनी ऊंटनी की खबर नहीं कि वह इस वकत कहाँ है।

मुनाफिक मुसलमान सच्चे इस्लाम के दाअियों को नाकाम करने के लिए शैतान के आलाकार बनते हैं। मगर सच्चे इस्लाम के दाअियों का मददगार हमेशा खुदा होता है। वह मुनाफिकों की तमाम सज्जिओं के बावजूद उन्हें बचा लेता है। और मुनाफिकीन का अंजाम यह होता है कि वे अपना जुर्म साबित करके इसके मुस्तहिक बनते हैं कि उन्हें दुनिया में भी अजाब दिया जाए और आखिरत में भी।

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰنَا مِنْ فَضْلِهِ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ
مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ فَلَمَّ اٰتٰهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَهُمْ
مُّعْرِضُوْنَ ۝ فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِىْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى يَوْمٍ يَلْقَوْنَ هَآ اٰخِلَفُوْا اللّٰهَ
مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝ اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ
وَنَجْوَاهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلٰمُ الْغُيُوْبِ ۝ الَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوْعِيْنَ مَن

الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جَهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ
مِنْهُمْ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ
لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ
كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۝ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

और उनमें वे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से अहद किया कि अगर उसने हमें अपने फजल से अता किया तो हम जरूर सदाका करेंगे और हम सालेह (नेक) बनकर रहेंगे। फिर जब अल्लाह ने उन्हें अपने फजल से अता किया तो वे कुजल करने लगे और बेपरवाह होकर मुंह फेर लिया। पस अल्लाह ने उनके दिलों में निफाक (पाखंड) बिठा दिया उस दिन तक के लिए जबकि वे उससे मिलेंगे इस सबब से कि उन्होंने अल्लाह के किए हुए वादे की खिलाफवर्ती की और इस सबब से कि वे झूठ बोलते रहे। क्या उन्हें खबर नहीं कि अल्लाह उनके राज और उनकी सरगोशी (गुप्त वाती) को जानता है और अल्लाह तमाम छुपी हुई बातों को जानने वाला है। वे लोग जो तअन (कटाक्ष) करते हैं उन मुसलमानों पर जो दिल खोल कर सदाकत देते हैं और जो सिर्फ अपनी मेहनत मजदूरी में से देते हैं उनका मजक उड़ते हैं। अल्लाह इन मजक उड़ने वालों का मजक उड़ता है और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। तुम उनके लिए माफी की दरखास्त करो या न करो, अगर तुम सत्तर मर्तबा उन्हें माफ करने की दरखास्त करोगे तो अल्लाह उन्हें माफ करने वाला नहीं। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और रसूल का इंकार किया और अल्लाह नाफरमानों को राह नहीं दिखाता। (75-80)

सालबा बिन हातिब अंसारी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि मेरे लिए दुआ कीजिए कि खुदा मुझे माल दे दे। आप ने फरमाया : थोड़े माल पर शुक्रगुजार होना इससे बेहतर है कि तुम्हें ज्यादा माल मिले और तुम शुक्र अदा न कर सको। मगर सालबा ने बार-बार दरखास्त की चुनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ फरमाई कि खुदाया सालबा को माल दे दे। इसके बाद सालबा ने बकरी पाली। उसकी नस्ल इतनी बढ़ी कि मदीने की जमीन उनकी बकरियों के लिए तंग हो गई। सालबा ने मदीने के बाहर एक वादी में रहना शुरू किया। अब सालबा के इस्लाम में कमजोरी आना शुरू हो गई। पहले उनकी जमाअत की नमाज छूटी। फिर जुमा छूट गया। यहां तक कि यह नौबत आई कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आमिल सालबा के पास जकात लेने के लिए गया तो सालबा ने जकात नहीं दी और कहा कि जकात तो जिज्या (सुरक्षा-प्रभार) की बहिन मालूम होती है।

वह शख्स खुदा की नजर में मुनाफिक है जिसका हाल यह हो कि वह माल के लिए खुदा से दुआएं करे और जब खुदा उसे माल वाला बना दे तो वह अपने माल में खुदा का हक निकालना भूल जाए। आदमी के पास माल नहीं होता तो वह माल वालों को बुरा कहता है कि

ये लोग माल को ग़लत कामों में बर्बाद करते हैं। अगर खुदा मुझे माल दे तो मैं उसे ख़ैर के कामों में खर्च करूं। मगर जब उसके पास माल आता है तो उसकी नपिसयात बदल जाती है। वह भूल जाता है कि पहले उसने क्या कहा था और किन जज्बात का इज्हार किया था। अब वह माल को अपनी मेहनत और लियाकत (योग्यता) का नतीजा समझ कर तंहा उसका मालिक बन जाता है। खुदा का हक अदा करना उसे याद नहीं रहता।

इस किस्म के लोग अपनी कमजोरियों को छुपाने के लिए मजीद सरकशी यह करते हैं कि वे उन लोगों का मजाक उड़ाते हैं जो खुदा की राह में अपना माल खर्च करते हैं। किसी ने ज्यादा दिया तो उसे रियाकार कह कर गिराते हैं। और किसी ने अपनी हैसियत की बिना पर कम दिया तो कहते हैं कि खुदा को इस आदमी के सदेक की क्या जरूरत थी। जो लोग इतना ज्यादा अपने आप में गुम हों उन्हें अपने आप से बाहर की आलातर हकीकतें कभी दिखाई नहीं देती।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلَافَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ
أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝ فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا جَزَاءً
بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَى طَائِفَةٍ مِنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُواكَ
لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُثَاقِتُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ
رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَافِعِينَ ۝ وَلَا تَصِلْ عَلَى أَحَدٍ
مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَمَا تَأْتُوا وَهُمْ فَسِقُونَ ۝

पीछे रह जाने वाले अल्लाह के रसूल से पीछे बैठे रहने पर बहुत खुश हुए और उन्हें गिरां (भारी) गुजरा कि वे अपने माल और जान से अल्लाह की राह में जिहाद करें। और उन्होंने कहा कि गर्मी में न निकलो। कह दो कि दोख़ की आग इससे ज्यादा गर्म है, काश उन्हें समझ होती। पस वे हंसें कम और रोएं ज्यादा, इसके बदले में जो वे करते थे। पस अगर अल्लाह तुम्हें उनमें से किसी गिरोह की तरफ वापस लाए और वे तुमसे जिहाद के लिए निकलने की इजाजत मांगें तो कह देना कि तुम मेरे साथ कभी नहीं चलोगे और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ोगे। तुमने पहली बार भी बैठे रहने को पसंद किया था पस पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो। और उनमें से जो कोई मर जाए उस पर तुम कभी नमाज न पढ़ो और न उसकी कब्र पर खड़े हो। वेशक उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का इंकार किया और वे इस हाल में मरे कि वे नाफरमान थे। (81-84)

गजवए तबूक सख्त गर्मी के मौसम में हुआ। मदीना से चल कर शाम की सरहद तक तीन सौ मील जाना था। मुनाफिक मुसलमानों ने कहा कि ऐसी तेज गर्मी में इतना लम्बा सफ़र न करो। यह कहते हुए वे भूल गए कि खुदा की पुकार सुनने के बाद किसी ख़तरे की बिना पर न निकलना अपने आपको शदीदतर ख़तरे में मुब्तिला करना है। यह ऐसा ही है जैसे धूप से भाग कर आग के शोलों की पनाह ली जाए।

जो लोग खुदा के मुकाबले में अपने को और अपने माल को ज्यादा महबूब रखते हैं वे जब अपनी ख़ूबसूरत तदबीरों से उसमें कामयाब हो जाते हैं कि वे मुसलमान भी बने रहें और इसी के साथ उनकी ज़िंदगी और उनके माल को कोई ख़तरा लाहिक न हो तो वे बहुत खुश होते हैं। वे अपने को अक्लमंद समझते हैं और उन लोगों को बेवकूफ़ कहते हैं जिन्होंने खुदा की रिज़ा के ख़ातिर अपने को हल्कान (कष्टमय) कर रखा हो।

मगर यह सरासर नादानी है। यह ऐसा हंसना है जिसका अंजाम रोने पर ख़त्म होने वाला है। क्योंकि मौत के बाद आने वाली दुनिया में इस किस्म की 'होशियारी' सबसे बड़ी नादानी साबित होगी। उस वक़्त आदमी अफ़सोस करेगा कि वह ज़न्त का तलबगार था मगर उसने अपने असासे की वही चीज़ उसके लिए न दी जो दरअसल ज़न्त की वाहिद कीमत थी।

इस किस्म के मुनाफ़िक़ हमेशा वे लोग होते हैं जो अपनी तहफ़ुज़ की वजह से अपने गिर्द माल व जाह (सम्पन्नता) के असबाब जमा कर लेते हैं इस बिना पर आम मुसलमान उनसे मरऊब हो जाते हैं। उनकी शानदार ज़िंदगियाँ और उनकी ख़ूबसूरत बातें लोगों की नज़र में उन्हें अजीम बना देती हैं। यह किसी इस्लामी मआशरे के लिए एक सख़्त इम्तेहान होता है। क्योंकि एक हकीकी इस्लामी मआशरे (समाज) में ऐसे लोगों को नज़रअंज़ा किया जाना चाहिए, न यह कि उन्हें इज्जत का मक़म दिया जाने लगे।

जिन लोगों के बारे में पूरी तरह मालूम हो जाए कि वे बजाहिर मुसलमान बने हुए हैं मगर हकीक़त वे अपने मफ़दत और अपनी दुनियावी मस्तेहतों के वफ़दर हैं उन्हें हकीकी इस्लामी मआशरा (समाज) कभी इज्जत के मक़म पर बिठाने के लिए राजी नहीं हो सकता। ऐसे लोगों का अंजाम यह है कि वे इस्लामी तकरीबात (समारोहों) में सिर्फ़ पीछे की सफ़ों में जगह पाएं। मुसलमानों के इज्तिमाई मामलात में उनका कोई दख़ल न हो। दीनी मनासिब (पदों) के लिए वे नाअहल करार पाएं। जिस मआशरे में ऐसे लोगों को इज्जत का मक़म मिला हुआ हो वह कभी खुदा का पसंदीदा मआशरा नहीं हो सकता।

وَلَا تُحِبُّكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ وَإِذَا أَنْزَلْتُ سُورَةً أَنْ أَمْنُوا بِاللهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُنْ مَعَ الْقُعْدِينَ ۝ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝ لَكِنَّ الرُّسُولَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ

وَأَنْفُسِهِمْ وَأَوْلِيكَ لَهُمُ الْخَيْرُ وَأُولِيكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

और उनके माल और उनकी औलाद तुम्हें ताज़ुब में न डालें। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि इनके ज़रिए से उन्हें दुनिया में अज़ाब दे और उनकी जानें इस हाल में निकलें कि वे मुक़िर हों। और जब कोई सूरह उतरती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ जिहाद करो तो उनके मकदूर वाले (सामर्थ्यवान) तुमसे रुज़सत मांगने लगते हैं और कहते हैं कि हमें छोड़ दीजिए कि हम यहां ठहरने वालों के साथ रह जाएं। उन्होंने इसको पसंद किया कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ रह जाएं। और उनके दिलों पर मुहर कर दी गई पस वे कुछ नहीं समझते। लेकिन रसूल और जो लोग उसके साथ ईमान लाए हैं उन्होंने अपने माल और जान से जिहाद किया और उन्हीं के लिए हैं ख़ूबियाँ और वही फ़लाह (कल्याण) पाने वाले हैं। उनके लिए अल्लाह ने ऐसे बाज़ा तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। यही बड़ी कामयाबी है। (85-89)

मुनाफ़िक़ अपने दुनियापरस्ताना तरीक़ों की वजह से अपने आस पास दुनिया का साजेसामान जमा कर लेता है। उसके साथ मददगारों की भीड़ दिखाई देती है। ये चीज़ें सतही किस्म के लोगों के लिए मरऊबकुन बन जाती हैं। लेकिन गहरी नज़र से देखने वालों के लिए उसकी जाहिरी चमक दमक काबिले रश्क नहीं बल्कि काबिले इब्रत है। क्योंकि ये चीज़ें जिन लोगों के पास जमा हों वे उनके लिए खुदा की तरफ बढ़ने में रुकावट बन जाती हैं। खुदा का महबूब बंदा वह है जो किसी तहफ़ुज़ और किसी मस्तेहत के बग़ैर खुदा की तरफ बढ़े। मगर जो लोग दुनिया की रैतकों में घिरे हों वे इनसे ऊपर नहीं उठ पाते। जब भी वे खुदा की तरफ बढ़ना चाहते हैं उन्हें ऐसा नज़र आता है कि वे अपना सब कुछ खो देंगे। वे इस कुर्बानी की हिम्मत नहीं कर पाते, इसलिए वे खुदा के वफ़दर भी नहीं होते। उनकी दुनियावी तरकियाँ उन्हें इस बर्बादी की कीमत पर मिलती हैं कि आख़िरत में वे बिल्कुल महरूम होकर हाज़िर हों।

ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि जब खुदा का दीन कहता है कि अपनी अना (अहंकार) को दफ़न करके खुदा को पकड़ो तो वे अपनी बढ़ी हुई अना को दफ़न नहीं कर पाते। जब खुदा का दीन उनसे शोहरत और मकबूलियत से ख़ाली रास्तों पर चलने के लिए कहता है तो वे अपनी शोहरत व मकबूलियत को संभालने की फ़िक्र में पीछे रह जाते हैं। जब खुदा के दीन की जद्दोज़हद ज़िंदा और माल की कुर्बानी मांगती है तो उन्हें अपनी ज़िंदा और माल इतने कीमती नज़र आते हैं कि वे उसे ग़ैर दुनियावी मक़सद के लिए कुर्बान न कर सकें।

यह कैफ़ियत बढ़ते-बढ़ते यहां तक पहुंच जाती है कि उनके दिल की हस्सासियत (संवेदनशीलता) ख़त्म हो जाती है। वे बेहिंसी का शिकार होकर उस तड़प को खो देते हैं जो आदमी को खुदा की तरफ खींचे और ग़ैर खुदा पर राजी न होने दे।

इसके बरअक्स जो सच्चे अहले ईमान हैं वे सबसे बड़ा मकाम खुदा को दिए होते हैं इसलिए दूसरी हर चीज उन्हें खुदा के मुन्नबले में हव नजर आती है। वे हर कुर्बानी देकर खुदा की तरफ बढ़ने के लिए तैयार रहते हैं। यही वे लोग हैं जिनके लिए खुदा की रहमतें व नेमतें हैं। उनके और खुदा की अबदी जन्नत के दर्मियान मौत के सिवा कोई चीज हायल नहीं।

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا انْصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا اتَّوَكَّلُوا لَتَحْمِلَهُمْ قُلُوبُ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَأَعْيَيْنُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنْفِقُونَ ۝ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ ۝ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

देहाती अरबों में से भी बहाना करने वाले आए कि उन्हें इजाजत मिल जाए और जो अल्लाह और उसके रसूल से झूठ बोले वह बैठा रहे। उनमें से जिन्होंने इंकार किया उन्हें एक दर्दनाक अजाब पकड़ेगा। कोई गुनाह कमजोरों पर नहीं है और न बीमारों पर और न उन पर जो खर्च करने को कुछ नहीं पाते जबकि वे अल्लाह और उसके रसूल के साथ खैरखाही करें। नेककारों पर कोई इल्जाम नहीं और अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। और न उन लोगों पर कोई इल्जाम है कि जब तुम्हारे पास आए कि तुम उन्हें सवारी दो। तुमने कहा कि मेरे पास कोई चीज नहीं कि तुम्हें उस पर सवार कर दूं तो वे इस हाल में वापस हुए कि उनकी आंखों से आंसू जारी थे इस ग़म में कि उन्हें कुछ मयस्सर नहीं जो वे खर्च करें। इल्जाम तो बस उन लोगों पर है जो तुमसे इजाजत मांगते हैं हालांकि वे मालदार हैं। वे इस पर राजी हो गए कि पीछे रहने वाली औरतों के साथ रह जाएं और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर कर दी, पस वे नहीं जानते। (90-93)

दीन की दावत की जद्दोजहद जब लोगों से उनकी जिंदगी और उनके माल का तकाजा कर रही हो उस वक्त साहिबे इस्तेताअत (क्षमतावान) होने के बावजूद उज़्र करके बैठे रहना बदतरीन जुर्म है। यह दीनी पुकार के मामले में बेहिंसी का सुबूत है। एक मुसलमान के लिए इस किस्म का रवैया खुदा व रसूल से गद्दारी करने के हममअना है। ऐसे लोग खुदा की रहमतों में कोई हिस्सा पाने के हकदार नहीं हैं। उनके पास जो कुछ था उसे जब उन्होंने खुदा के लिए पेश नहीं किया तो खुदा के पास जो कुछ है वह किस लिए उन्हें दे देगा। कीमत अदा किए बगैर कोई चीज किसी को नहीं मिल सकती।

ताहम माजूरीन के लिए खुदा के यहां माफ़ी है। जो शख्स बीमार हो, जिसके पास खर्च करने के लिए कुछ न हो, जो असबाबे सफर न रखता हो, ऐसे लोगों से खुदा दरगुजर फरमाएगा। यही नहीं बल्कि यह भी मुमकिन है कि कुछ न करने के बावजूद सब कुछ उनके खाने में लिख दिया जाए जैसा कि हदीस में आया है कि ग़जवाए तबूक से वापस होते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों से फरमाया : मदीने में कुछ ऐसे लोग हैं कि तुम कोई रास्ता नहीं चले और तुमने कोई वादी तै नहीं की मगर वे बराबर तुम्हारे साथ रहे।

ये खुशकिस्मत लोग कौन हैं जो न करने के बावजूद करने का इनाम पाते हैं। ये वे लोग हैं जो माज़ूर (अक्षम) होने के साथ तीन बातों का सुबूत दें। नुस्ह, यानी अमली शिरकत न करते हुए भी क़ब्बी (दिली) शिरकत। एहसान, यानी शरीक न होने के बावजूद कम से कम जवान से उनके बस में जो कुछ है उसे पूरी तरह करते रहना। हुज़्ज, यानी अपनी कोताही पर इतना शदीद रंज जो आंसुओं की सूरत में बह पड़े।

कोई आदमी जब अपनी अमली जिंदगी में एक चीज को ग़ैर अहम दर्जे में रखे और बार-बार ऐसा करता रहे तो इसके बाद ऐसा होता है कि उस चीज की अहमियत का एहसास उसके दिल से निकल जाता है। उस चीज के तकाजे उसके सामने आते हैं मगर दिल के अंदर उसके बारे में तड़प न होने की वजह से वह उसकी तरफ बढ़ नहीं पाता। यह वही चीज है जिसे बेहिंसी कहा जाता है और इसी को कुरआन में दिलों पर मुहर करने से ताबीर किया गया है।

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذْ رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ قُلْ لَا تَعْتَذِرُونَ لَنَا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ النَّارِ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَعْلَمُونَ أَنَّكُمْ تُرْجَوْنَ ۝ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنْزِلُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ سَيَحْمِلُونَ ۝ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ تُعْرَضُوا عَنْهُمْ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ ۝ إِنَّهُمْ رَجَسٌ ۝ وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ يَحْمِلُونَ لَكُمْ لِرِضْوَانِ عَنْهُمْ فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ۝

तुम जब उनकी तरफ पलटोगे तो वे तुम्हारे सामने उज़्र (विवशताएं) पेश करेंगे। कह दो कि बहाने न बनाओ। हम हरगिज़ तुम्हारी बात न मानेंगे। बेशक अल्लाह ने हमें तुम्हारे हालात बता दिए हैं। अब अल्लाह और रसूल तुम्हारे अमल को देखेंगे। फिर तुम उसकी तरफ लौटाए जाओगे जो खुले और छुपे का जानने वाला है, वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। ये लोग तुम्हारी वापसी पर तुम्हारे सामने अल्लाह की कसमें खाएंगे ताकि तुम उनसे दरगुजर करो। पस तुम उनसे दरगुजर करो बेशक वे नापाक हैं और उनका ठिकाना जहन्नम है बदले में उसके जो वे करते रहे। वे तुम्हारे सामने कसमें खाएंगे कि तुम उनसे राजी हो जाओ। अगर तुम उनसे राजी भी हो जाओ तो अल्लाह नाफरमान लोगों से राजी होने वाला नहीं। (94-96)

‘तुम्हारे हालात हमें अल्लाह ने बता दिए हैं’ का जुमला जाहिर कर रहा है कि यहां जिन मुनाफिकीन का जिक्र है इससे मुद्द जमान-ए-नुज्जो कुआन के मुनाफिकीन हैं क्योंकि बराहिरास्त खुदाई ‘वही’ (ईश्वरीय वाणी) के जरिए आगाह होने का मामला सिर्फ रिसालत के जमाने में हुआ या हो सकता था। बाद के जमाने में ऐसा होना मुमकिन नहीं। तबक़ात इन्ने साद की रिवायत के मुताबिक ये कुल 82 अफ़्फ़ाद थे जिनके निफ़क़ (पाखंड) के बारे में अल्लाह ने बजरिए ‘वही’ मुतलअ (सूचित) फरमाया था।

ताहम इस इल्म के बावजूद सहाबा किराम को उनके साथ जिस सुलूक की इजाजत दी गई वह तगाफ़ुल और ऐराज (उपेक्षा) था न कि उन्हें हलाक करना। उन्हें सजा या अजाब देने का मामला फिर भी खुदा ने अपने हाथ में रखा। मदीने के मुनाफिकीन के साथ अगरचे इतनी सख्ती की गई कि उन्होंने उजरात (विवशताएं) पेश किए तो उनके उजरात कुबूल नहीं किए गए। यहां तक कि सालबा बिन हातिब अंसारी ने मुनाफिकाना रविश इख़्तियार करने के बाद जकात पेश की तो उनकी जकात लेने से इंकार कर दिया गया। ताहम उनमें से किसी को भी आप ने क़त्ल नहीं कराया। अब्दुल्लाह बिन उबई के लड़के अब्दुल्लाह ने अपने बाप की मुनाफिकाना हरकत पर सख़्त कार्रवाई करनी चाही तो आप ने रोक दिया और फरमाया : उन्हें छोड़ दो, बख़ुदा जब तक वे हमारे दर्मियान हैं हम उनके साथ अच्छा ही सुलूक करेंगे।

बाद के जमाने के मुनाफिकीन के बारे में भी यही हुक्म है। ताहम दोनों के दर्मियान एक फ़र्क़ है। दौरे अव्वल के मुनाफिकीन से उनकी हालते क़ब्बी की बुनियाद पर मामला किया गया, मगर बाद के मुनाफिकीन से उनकी हालते जाहिरी की बुनियाद पर मामला किया जाएगा। उनसे ऐराज व तगाफ़ुल (उपेक्षा) का सुलूक सिर्फ़ उस वक़्त जाइज होगा जबकि उनके अमल से उनकी मुनाफिक़त का ख़ारजी सुबूत मिल रहा हो। उनकी नियत या उनकी क़ब्बी हालत की बिना पर उनके ख़िलाफ़ कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी। बाद के लोग उज़ (विवशता) पेश करें तो उनका उज़ भी कुबूल किया जाएगा और इसके साथ उनके सदक़ात वगैरह भी। उनके अंजाम को अल्लाह के हवाले करते हुए उनके साथ वही मामला किया जाएगा जो जाहिरी क़ानून के मुताबिक किसी के साथ किया जाना चाहिए।

जन्मत किसी को जाती अमल की बुनियाद पर मिलती है न कि मुसलमानों की जमाअत या गिरोह में शामिल होने की बुनियाद पर। मुनाफिकीन सबके सब मुसलमानों की जमाअत में शामिल थे वे उनके साथ नमाज़ रोज़ा करते थे मगर इसके बावजूद उनके जहन्नमी होने का एलान किया गया।

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ الْأَيْعُلُ وَاحِدٌ وَدُمَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُفْنِقُ مَغْرِبًا وَيَتَّكِنُ بِكُمْ الدَّوَابِرَ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُفْنِقُ قُرْبَةً إِلَى اللَّهِ

وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ إِلَّا أَنْهَا قُرْبَةً لَهُمْ سَيِّدُ خَلْقِهِمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

देहात वाले कुफ़्र व निफ़क़ में ज्यादा सख़्त हैं और इसी लायक हैं कि अल्लाह ने अपने रसूल पर जो कुछ उतारा है उसके हुदूद से बेख़बर रहें। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला हिक्मत वाला है। और देहातियों में ऐसे भी हैं जो खुदा की राह में ख़र्च को एक तावान (जुर्माना) समझते हैं और तुम्हारे लिए जमाने की गर्दिशों के मुंतज़िर हैं। बुरी गर्दिश खुद उन्हीं पर है और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। और देहातियों में वे भी हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर इमान रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसे अल्लाह के यहां कुर्ब का और रसूल के लिए दुआएं लेने का जरिया बनाते हैं। हां बेशक वह उनके लिए कुर्ब (समीपता) का जरिया है। अल्लाह उन्हें अपनी रहमत में दाख़िल करेगा। यकीनन अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (97-99)

हदीस में आया है कि जिसने देहात में सुकूनत (वास) इख़्तियार की वह सख़्त मिजाज हो जाएगा। शहर के अंदर इल्मी माहौल होता है, तालीमी इदारे कायम होते हैं। वहां इल्म व फन का चर्चा रहता है। जबकि देहात में लोगों को इसके मौके हासिल नहीं होते। इसी के साथ देहात के लोगों के रहन-सहन के तरीके और उनके मजाशी जरिये भी निस्वतन मामूली होते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि देहात के लोगों के अंदर ज्यादा गहरा शुऊर पैदा नहीं होता। उनकी तबीअत में सख्ती और उनके सोचने के अंदाज में सतहियत पाई जाती है। उनके लिए मुश्किल होता है कि वे दीन की नजाकतों को समझें और उन्हें अपने अंदर उतारें।

अल्लाह हर बात को जानता है और इसी के साथ वह हकीम और रहीम भी है। वह देहात के लोगों, बअल्फ़ज्जे दीगर अवाम, की इस कमजोरी से बाख़बर है और अपनी हिक्मत (तत्वदर्शिता) व रहमत की बिना पर उन्हें इसकी पूरी रियायत देता है। चुनांचे ऐसे लोगों से खुदा का मुतालबा यह नहीं है कि वे गहरी मअरफ़त और आला दीनदारी का सुबूत दें। वे अगर नेक नीयत हों तो खुदा उनसे सादा दीनदारी पर राजी हो जाएगा।

अवाम की दीनदारी यह है कि वे सच्चे दिल से खुदा का इकरार करें। अपने अंदर इस एहसास को ताजा रखें कि आख़िरत का एक दिन आने वाला है। वे अपनी कमाई का एक हिस्सा खुदा की राह में दें और यह समझें कि इसके जरिए से उन्हें खुदा की क़ुरबत (समीपता) और बरक़त हासिल होगी। वे खुदा की नुमाईदगी करने वाले पैग़म्बर को खुश करके उसकी दुआएं लेने के तालिब हों। यह दीनदारी की अवामी सतह है, और अगर आदमी की नीयत में बिगाड़ न हो तो उसका खुदा उससे इसी सादा दीनदारी को कुबूल कर लेगा।

लेकिन अगर अवाम ऐसा करें कि वे खुदा और उसके अहक़ाम से बिल्कुल गाफ़िल हो जाएं। उनकी दीन से इतनी बेतअल्लुकी हो कि दीन की राह में कुछ ख़र्च करना उन्हें जुर्माना मालूम होने लगे। इस्लाम की तरक्की से उन्हें बहशत होती हो, तो बिलाशुबह वे नाक़बिले

माफी हैं। अवाग की कमफहमी (अबोधता) की बिना पर उन्हें यह रियायत तो जरूरी दी जा सकती है कि उनसे गहरी दीनदारी का मुतालबा न किया जाए। लेकिन उनकी कमफहमी अगर सरकशी और इस्लाम के साथ बेवफाई की सूरत इख्तियार कर ले तो वे किसी हाल में बख्शो नहीं जा सकते।

وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ ابْتَغَوْهُمْ بِإِحْسَانٍ
رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَمَنْ حَوْلَكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ
مُنَافِقُونَ ۖ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ
نَعْلَمُهُمْ سُعْلَبٌ ۖ هُمْ مَرَّتَيْنِ تَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

और मुहाजिरिन व अंसार में जो लोग साबिक और मुकद्दम हैं और जिन्होंने खूबी के साथ उनकी पैरवी की, अल्लाह उनसे राजी हुआ और वे उससे राजी हुए। और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। वे उनमें हमेशा रहेंगे। यही है बड़ी कामयाबी। और तुम्हारे गिर्द व पेश जो देहाती हैं उनमें मुनाफिक (पाखंडी) हैं और मदीना वालों में भी मुनाफिक हैं। वे निफक (पाखंड) पर जम गए हैं। तुम उन्हें नहीं जानते, हम उन्हें जानते हैं। हम उन्हें दोहरा अजाब देंगे। फिर वे एक अजबे अजीम (मह-यातना) की तरफ भेजे जाएंगे। (100-101)

खुदा के दीन की दावत जब भी शुरू की जाए तो दो में से कोई एक सूरत पेश आती है। या तो माहौल उसका दुश्मन हो जाता है। ऐसे माहौल में दीन के लिए पुकारने वाले अजनबी बन जाते हैं। वे अपनी जगह के अंदर बेजगह कर दिए जाते हैं। यही वे लोग हैं जिन्हें मुहाजिर (छोड़ने वाला) कहा जाता है। दूसरी सूरत वह है जबकि माहौल खुदा के दीन की दावत के लिए साजगार साबित हो। ऐसे माहौल में जो लोग दीन के दाओ बनते हैं उनके साथ यह हादसा पेश नहीं आता कि उनका सब कुछ उनसे छिन जाए। वे दूसरी किस्म के लोग अगर ऐसा करें कि वे पहले लोगों का सहारा बनकर खड़े हो जाएं तो यही अंसार (मदद करने वाले) करार पाते हैं। दौरे अब्दल में मक्का के हालात ने वहां के मुसलमानों को मुहाजिर बना दिया और मदीने के हालात ने वहां के मुसलमानों को अंसार की हैसियत दे दी।

खुदा की रिजामंदी और उसकी जन्नत किसी आदमी को या तो मुहाजिर बनने की कीमत पर मिलती है या अंसार बनने की कीमत पर। या तो वह खुदा के लिए इतना यकसू हो कि दुनिया के सिरे उससे छूट जाएं। या अगर वह अपने को साहिबे वसाइल (साधन-सम्पन्नता) पाता है तो अपने वसाइल (साधनों) के जरिए वह पहले गिरोह की महरूमी का बदल बन जाए। दौरे अब्दल के मुसलमान (सहाबा किराम) इस हिजरत व नुसरत का कामिल नमूना थे। बाद के मुसलमानों में जो लोग इस हिजरत व नुसरत के मामले में अपने पेशरवों

(पूर्ववर्तियों) की तक्लीद (अनुसरण) करेंगे वे इससे इस मुकद्दस खुदाई गिरोह में शामिल होते चले जाएंगे। खुदा कुछ लोगों को महरूम करता है ताकि उनके अंदर इनाबत (खुदा की तरफ झुकने) का जज्बा उभरे इसी तरह खुदा कुछ लोगों को महरूमी से बचाता है ताकि वे महरूमों की मदद करके खुदा के लिए खर्च करने वाले बनें। यह खुदा का मंसूबा है। जो लोग इसका सुबूत न दें वे ऐसे लोग हैं जो खुदा के मंसूबे पर राजी न हुए इसलिए खुदा भी आखिरत के दिन उनसे राजी न होगा।

‘वे अल्लाह से राजी हो गए’ यानी जिसे अल्लाह ने ऐसे हालात में उठाया कि उसे सब कुछ छोड़ने की कीमत पर दीन को इख्तियार करना पड़ा तो वह उसमें साबितकदम रहा। इसी तरह जिसके हालात का तकाजा यह हुआ कि वह अपने असासे में ऐसे दीनी भाइयों को शरीक करे जिनसे उसका तअल्लुक सिर्फ मक्सद का है न कि रिश्तेदारी का तो वह भी उस पर राजी हो गया। यही वे लोग हैं जिन्होंने अल्लाह की खुशी हासिल की और यही वे लोग हैं जो जन्नत के अबदी बागों में दाखिल किए जाएंगे।

मुनाफिक वह है जो मुसलमान होने का दावा करे मगर जब हिजरत व नुसरत की कीमत पर दीनदार बनने का सवाल हो तो उसके लिए अपने को राजी न कर सके।

وَاخْرُؤْنَ اعْتَرِفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخِرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَنْ
يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۖ خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ
وَتُزَكِّيهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝
أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ
هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ۖ وَقُلْ أَعْمَلُوا أَفْكَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ
وَسُرُّدُونِ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَاللَّهِ هَادٍ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ وَآخِرُونَ
مُرْجُونَ لِأَمْرِ اللَّهِ إِنَّمَا يُعَذِّبُهُمْ وَلَئِنْ تَابُوا وَعَلَيْهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

कुछ और लोग हैं जिन्होंने अपने कुसूरों का एतराफ कर लिया है। उन्होंने मिले जुले अमल किए थे, कुछ भले और कुछ बुरे। उम्मीद है कि अल्लाह उन पर तबज्जोह करे। बेशक अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। तुम उनके मालों में से सदका लो, इससे तुम उन्हें पाक करोगे और उनका तज्किया (पवित्रीकरण) करोगे। और तुम उनके लिए दुआ करो। बेशक तुम्हारी दुआ उनके लिए तस्कीन (शांति) का ज़रिया होगी। अल्लाह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है। क्या वे नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने बंदों की तौबा कुबूल करता है। और वही सदकों को कुबूल करता है। और अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला महरबान है। कहो कि अमल करो, अल्लाह और उसका रसूल और अहले ईमान तुम्हारे अमल को देखेंगे और तुम जल्द उसके पास लौटाए जाओगे जो तमाम खुले

और छुपे को जानता है। वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। कुछ दूसरे लोग हैं जिनका मामला अभी खुदा का हुक्म आने तक ठहरा हुआ है, या वह उन्हें सजा देगा या उनकी तौबा कुबूल करेगा, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (102-106)

कुछ ऐसे लोग हैं जिनकी तबीअतों में अगरचे शर नहीं होता। वे मअमूल (आम प्रचलन) वाले दीनी आमाल भी करते रहते हैं। मगर जब दीन का कोई ऐसा तकाजा सामने आता है जिसमें अपने बने हुए नक्शे को तोड़ कर दीनदार बनने की जरूरत हो तो वे अपनी जिंदगी और माल को इस तरह दीन के लिए नहीं दे पाते जिस तरह उन्हें देना चाहिए। कुव्वते फैसला की कमजोरी या दुनिया में उनकी मशगूलियत उनके लिए दीन की राह में अपना हिस्सा अदा करने में रुकावट बन जाती हैं। ऐसे लोग अगरचे कुसूरवार होते हैं। ताहम उनका कुसूर उस वक्त माफ कर दिया जाता है जबकि याददिहानी के बाद वे अपनी गलती का एतराफ कर लें और शर्मिन्दगी के एहसास के साथ दुबारा दीन की तरफ लौट आएँ।

एतराफ और शर्मिन्दगी का सुबूत यह है कि उनके अंदर नए सिर से दीनी खिदमत का जज्बा पैदा हो। वे अपने एहसासे गुनाह को धोने के लिए अपने महबूब माल का एक हिस्सा खुदा की राह में पेश करें। जब उनकी तरफ से ऐसा रद्देअमल (प्रतिक्रिया) जाहिर हो तो पैगम्बर को तल्कीन की गई कि अब उन्हें मलामत न करो बल्कि उन्हें नपिसयाती सहारा देने की कोशिश करो। उन्हें दुआएं दो ताकि उनके दिल का बोझ दुबारा ईमानी अज्म व एतमाद में तब्दील हो जाए।

खुदा के नजदीक असल बुराई गलती करना नहीं है बल्कि गलती पर कायम रहना है। जो आदमी गलती करने के बाद उसकी तावीलें (हीले) ढूँढने लगे वह बर्बाद हो गया और जो शख्स गलती का एतराफ करके अपनी इस्लाह कर ले वह खुदा के नजदीक कबिले माफी ठहरा।

गलती करने के बाद आदमी हमेशा दो इम्कानात के दर्मियान होता है। एक यह कि वह अपनी गलती का एतराफ कर ले। दूसरा यह कि वह ढिठाई करने लगे, जो शख्स अपनी गलती का एतराफ कर ले उसके अंदर तवाजोअ (विनम्रता) पैदा होती है। वह दुबारा खुदा की रहमतों का मुस्तहिक बन जाता है। इसके बरअक्स जो शख्स ढिठाई का तरीका इस्त्रियार करे वह गोया खुदा के गजब के रास्ते पर चल पड़ा। वह अपने को बेखता साबित करने के लिए झूठी तावीलें करेगा। एक गलती को निभाने के लिए वह दूसरी बहुत सी गलतियां करता चला जाएगा। पहले शख्स के लिए खुदा की रहमत है और दूसरे शख्स के लिए खुदा की सजा।

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرًّا وَكُفْرًا وَتَفَرُّقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَادْنَا إِلَّا الْحُسْنَىٰ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۖ لَا تَقُومُ فِيهِ الْإِبْدَالُ الْأُولَىٰ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ رَبِّجَالٍ يُحِبُّونَ أَنْ يُتَّخَذُوا ۖ وَاللَّهُ يُحِبُّ

الْمُطَهَّرِينَ ۚ اَفَمَنْ اَسْسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ اَم مَّنْ اَسْسَ بُنْيَانَهُ عَلَىٰ شَفَا جُرْفٍ هَارٍ قَانَهَا رِبَهُ فِي نَارِ جَهَنَّمَ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ اِلَّا اَنْ تَقْطَعَ قُلُوبُهُمْ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

और उनमें ऐसे भी हैं जिन्होंने एक मस्जिद बनाई नुक्सान पहुंचाने के लिए और कुफ्र के लिए और अहले ईमान में फूट डालने के लिए और इसलिए ताकि कमीनगाह (शरण-स्थल) फराहम करें उस शख्स के लिए जो पहले से अल्लाह और उसके रसूल से लड़ रहा है। और ये लोग कसमें खाएंगे कि हमने तो सिर्फ भलाई चाही थी और अल्लाह गवाह है कि वे झूठे हैं। तुम उस इमारत में कभी खड़े न होना। अलबत्ता जिस मस्जिद की बुनियाद अब्बल दिन से तकवे (ईश-परायणता) पर पड़ी है वह इस लायक है कि तुम उसमें खड़े हो। उसमें ऐसे लोग हैं जो पाक रहने को पसंद करते हैं और अल्लाह पाक रहने वालों को पसंद करता है। क्या वह शख्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद खुदा से डर पर और खुदा की खुशनूदी पर रखी या वह शख्स बेहतर है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद एक खाई के किनारे पर रखी जो गिरने को है। फिर वह इमारत उसे लेकर जहन्नम की आग में गिर पड़ी। और अल्लाह जालिम लोगों को राह नहीं दिखाता। और यह इमारत जो उन्होंने बनाई हमेशा उनके दिलों में शक की बुनियाद बनी रहेगी सिवाए इसके कि उनके दिल ही टुकड़े हो जाएं। और अल्लाह अलीम (ज्ञानवान) व हकीम (तत्वदर्शी) है। (107-110)

जिंदगी की तामीर की दो बुनियादें हैं। एक तक्वा, दूसरे जुम्। पहली सूत यह है कि खुदा के डर की बुनियाद पर जिंदगी की इमारत उठाई जाए। आदमी की तमाम सरगर्मियां जिस फिक्क के मातहत चल रही हों वह फिक्क यह हो कि उसे अपने तमाम कैल व फेअल का हिसाब एक ऐसी हस्ती को देना है जो खुले और छुपे से बाखबर है और हर एक को उसके हक्की कारनामों के मुताबिक जज या सज्ज देने वाला है। ऐसा शख्स गोष्ठा मजबूत चट्टान पर अपनी इमारत खड़ी कर रहा है। दूसरी सूत यह है कि आदमी इस किस्म के अदिशे से खाली हो। वह दुनिया में बिल्कुल बैकैद जिंदगी गुजारे। वह किसी पाबंदी को कुबूल किए बغير जो चाहे बोले और जो चाहे करे। ऐसे शख्स की जिंदगी की मिसाल उस इमारत की सी है जो ऐसी खाई के किनारे उठा दी गई हो जो बस गिरने ही वाली हो और अचानक एक रोज उसका मकान अपने मकीनों सहित गहरे खड में गिर पड़े।

जो लोग जुम् की बुनियाद पर अपनी जिंदगी की इमारत उठाते हैं उनके जराइम में सबसे ज्यादा सख्त जुम् वह है जिसकी मिसाल मदीने में मस्जिदे जिरार की सूत में सामने आई। उस वक्त मदीने में दो मस्जिदें थीं। एक आबादी के अंदर मस्जिदे नबवी। दूसरी मुजफत (निकट क्षेत्र) में मस्जिदे कुबा। मुनाफिक मुसलमानों ने उसके तोड़ पर एक तीसरी

मस्जिद तामीर कर ली। इस किस्म की कार्रवाई बजाहिर अगरचे दीन के नाम पर होती है मगर हकीकत में इसका मकसद होता है अपनी क़य़ादत और पेशवाई को क़य़म रखने के ख़तिर हक़ की दावत का मुखालिफ़ (विरोधी) बन जाना। जो लोग अपनी ख़ुदपरस्ती की वजह से हक़ की दावत को कुबूल नहीं कर पाते वे उसके ख़िलाफ़ मज़हब बनाते हैं, उसके ख़िलाफ़ तख़ीबी (विध्वंसक) कार्रवाइयां करते हैं। उनकी मंफ़ी (सकारात्मक) सरगर्मियां मुसलमानों को दो गिरोहों में बांट देती हैं। ऐसे लोग अपने तख़ीबी अमल को दीन के नाम पर करते हैं। यहां तक कि वे मुसल्लमा दीनी शख़्सियतों को अपने स्टेज पर लाने की कोशिश करते हैं ताकि लोगों की नजर में उन्हें एतमाद हासिल हो जाए।

ये लोग अपनी अंधी दुश्मनी में भूल जाते हैं कि हक़ की मुखालिफ़त (विरोध) दरअसल ख़ुदा की मुखालिफ़त है जो ख़ुदा की दुनिया में कभी कामयाब नहीं हो सकती। ऐसे लोगों के लिए जो चीज़ मुक़द्दर है वह सिर्फ़ यह कि वे हसरत व अफ़सोस के साथ मरें और अल्लाह की रहमतों से हमेशा के लिए महरूम हो जाएं।

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةُ ۚ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعَدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا بِنِعْمَةِ اللَّهِ الَّتِي لَا يَبْغِئُكُمْ بِهَا ۚ وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ الثَّائِبُونَ الْعُمَدُونَ الْحَامِدُونَ ۝ السَّامِعُونَ الرَّكْعُونَ السَّاجِدُونَ الْأَمْرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

बिलाशुबह अल्लाह ने मोमिनों से उनके जान और उनके माल को ख़रीद लिया है जन्नत के बदले। वे अल्लाह की राह में लड़ते हैं। फिर मारते हैं और मारे जाते हैं। यह अल्लाह के जिम्मे एक सच्चा वादा है, तौरात में और इंजील में और क़ुरआन में। और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे को पूरा करने वाला कौन है। पस तुम ख़ुशियां करो उस मामले पर जो तुमने अल्लाह से किया है। और यही है सबसे बड़ी कामयाबी। वे तौबा करने वाले हैं। इबादत करने वाले हैं। हम्द (ईश-प्रशंसा) करने वाले हैं। ख़ुदा की राह में फिरने वाले हैं। रुकूअ करने वाले हैं। सज्दा करने वाले हैं। भलाई का हुक्म देने वाले हैं। बुराई से रोकने वाले हैं। अल्लाह की हदों का ख़याल रखने वाले हैं। और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दो। (111-112)

अल्लाह का मोमिन बनना अल्लाह के हाथ अपने आपको बेच देना है। बंदा अपना माल और अपनी ज़िंदगी अल्लाह को देता है ताकि अल्लाह इसके बदले में अपनी जन्नत उसे दे दे।

यह दरअसल हवालगी और सुपुर्दगी की ताबीर है। किसी भी चीज़ से हकीकी तअल्लुक हमेशा हवालगी और सुपुर्दगी की सतह पर होता है। तअल्लुक का यही दर्जा अल्लाह के मामले में भी मल्लूब है। जन्नत की अबदी नेमतें किसी को कामिल हवालगी के बग़ैर नहीं मिल सकती।

जब आदमी अल्लाह के दीन को इस तरह इख़्तियार करता है तो दीन का मामला उसके लिए कोई अलग मामला नहीं होता। बल्कि वह उसका जाती मामला बन जाता है। अब वही उसकी दिलचस्पियों और उसके अह्दियों का मर्कज़ होता है। दीन अगर माल का तकाज़ा करे तो वह अपना माल उसके लिए हाज़िर कर देता है। दीन के लिए अपने वक़्त और अपनी सलाहियत को वक़फ़ करना पड़े तो वह अपने वक़्त और अपनी सलाहियत को उसके लिए पेश कर देता है। यहां तक कि अगर वह मरहला आ जाए जबकि अपने वुजूद को मिटा कर या माल से बेमाल होने का ख़तरा मोल लेकर दीन में अपना हिस्सा अदा करना हो तो इससे भी वह दरग़ नहीं करता।

जो लोग इस तरह अपने को अल्लाह के हवाले करें उनके अंदर किस किस्म के इफ़्तारीदी औसाफ़ पैदा होते हैं। उनकी हस्सासियत इतनी बेदार हो जाती है कि ग़लती होते ही वे उसे जान लेते हैं और फौरन अपनी ग़लती का एतराफ़ कर लेते हैं। वे अल्लाह के लिए बिछ जाने वाले होते हैं। वे ख़ुदा की अज्मतों को इस तरह पा लेते हैं कि उनके क़ल्ब और जबान से बेइख़्तियार इसका इज़हार होने लगता है। वे साएह हो जाते हैं, यानी इंसानी दुनिया से निकल कर ख़ुदाई दुनिया में जाना उनके लिए ज़्यादा सुकून का बाइस होता है। ख़ुदा के आगे झुकना उनके लिए महबूब चीज़ बन जाता है। जो भी उनके रब (सम्पर्क) में आता है उसे भलाई के रास्ते पर डालने की कोशिश करते हैं। अपने सामने किसी को बुराई करते देखते हैं तो उसे रोकने के लिए खड़े हो जाते हैं। वे ख़ुदा की हदबंदियों के मामले में हद दर्जा चौकन्ना हो जाते हैं, वे अल्लाह की हदों के इस तरह निगहबान बन जाते हैं जिस तरह बाग़बान अपने बाग़ का। यही वे लोग हैं जिनके लिए ख़ुदाई इनामात की ख़ुशख़बरी है।

ख़ुदा की जन्नत तमाम कीमती चीज़ों से ज़्यादा कीमती है। मगर ख़ुदा की जन्नत एक मोऊद (बाद का) इनाम है, वह नक़द इनाम नहीं। जन्नत की इसी मुवज़्जल (बाद की) नौइयत का यह नतीजा है कि लोग जन्नत को छोड़कर हकीर फ़ायदों की तरफ़ भागे जा रहे हैं।

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ لِيُقْرَبُوا مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْبُحْيِمِ ۚ وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝

नबी को और उन लोगों को जो ईमान लाए हैं रखा नहीं कि मुश्रिकों के लिए मफिरत (क्षमा) की दुआ करें, चाहे वे उनके रिश्तेदार ही हों जबकि उन पर खुल चुका कि ये जहन्नम में जाने वाले लोग हैं। और इब्राहीम का अपने बाप के लिए मफिरत की दुआ मांगना सिर्फ इस वादे के सबब से था जो उसने उससे कर लिया था। फिर जब उस पर खुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है तो वह उससे बेतअल्लुक हो गया। बेशक इब्राहीम बड़ा नर्मदिल और बुरदवार (उदार) था। और अल्लाह किसी कौम को, उसे हिदायत देने के बाद गुमराह नहीं करता जब तक उन्हें साफ-साफ वे चीजें बता न दें जिनसे उन्हें बचना है, बेशक अल्लाह हर चीज का इल्म रखता है। अल्लाह ही की सत्तनत है आसमानों में और जमीन में, वह जिलाता है और वही मारता है। और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार। (113-116)

एक शख्स मुंकिर व मुश्रिक हो और उसके सामने इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) की हद तक दीन की दावत आ जाए, इसके बावजूद वह ईमान न लाए तो खुदा के कानून के मुताबिक वह जहन्नमी हो जाता है। ऐसे शख्स के लिए इसके बाद नजात की दुआ करना गोया ईमान को बेवकअत बनाना और खुदाई ईसाफ की तरदीद करना है, यही वजह है कि ऐसी दुआ से मना कर दिया गया।

ताहम आयत में 'मिन वअन्दि मा तबय्य-न' का लफज बताता है कि इस हुक्म का तअल्लुक रिसालत के जमाने के मुश्रिकीन से है जिनके बारे में 'वही' के जरिए बता दिया गया था कि वे जहन्नमी हैं। इन आयतों का पसमंजर यह है कि रसूलुल्लाह सललल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह हुक्म दिया गया था कि आप मुनाफिकीन की नमाजे जनाज न पढ़ें और उनके हक में मफिरत की दुआ न करें (अत तौबा 84)। यह बात मदीना के मुनाफिकों को बहुत नागवार हुई। उन्होंने इसे लेकर आपके खिलाफ प्रोपेगंडा शुरू कर दिया। वे कहते कि यह नबी तो नबी रहमत हैं और अपने को इब्राहीम का पैरोकार बताते हैं। फिर क्या वजह है कि मुसलमानों को अपने भाइयों और अपने रिश्तेदारों के लिए इस्तगफार से रोकते हैं। हालांकि इब्राहीम का हाल यह था कि अपने मुश्रिक बाप के लिए भी उन्होंने मफिरत की दुआ की।

जवाब दिया गया कि इब्राहीम बड़े दर्दमंद और ईसानियत के गम में घुलने वाले थे। अपने इस जन्मे के तहत उन्होंने अहद कर लिया कि वह अपने मुश्रिक बाप के हक में खुदा से दुआ करेंगे। मगर जब 'वही' ने तंबीह की तो इसके बाद वह फौरन इससे बाज आ गए।

अल्लाह ने हर आदमी के अंदर बुराई की फितरी तमीज रखी है। जब आदमी के सामने एक ऐसा पैगाम आता है जो उसे बुराई से रोकता है तो उसका वुजूद अंदर से उसकी तस्दीक करता है। उसके दिल के अंदर एक खामोश खटक पैदा होती है। आदमी अगर इस खटक को नजरअंदाज कर दे, वह फितरत की गवाही के बावजूद बचने वाली चीज से न बचे तो उसकी फितरी हस्सासियत (संवेदनशीलता) कमजोर पड़ जाती है, यहां तक कि धीरे-धीरे बिल्कुल मुर्दा हो जाती है। यही वह चीज है जिसे गुमराह करने से ताबीर किया गया है। 'हिदायत देने के बाद गुमराह करना' के अल्फाज बता रहे हैं कि इसका खतरा मुसलमानों के लिए भी उसी तरह है जिस तरह गैर मुसलमानों के लिए।

لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ
الْعُسْرِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ
رَءُوفٌ رَّحِيمٌ وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِفُوا حَتَّى إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ
بِمَا رَحِبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَنْ لَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ
ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

अल्लाह ने नबी पर और मुहाजिरीन व अन्सार पर तवज्जोह फरमाई जिन्होंने तंगी के वक्त में नबी का साथ दिया, बाद इसके कि उनमें से कुछ लोगों के दिल कजी की तरफ मायल हो चुके थे। फिर अल्लाह ने उन पर तवज्जोह फरमाई। बेशक अल्लाह उन पर महरबान है रहम करने वाला है। और उन तीनों पर भी उसने तवज्जोह फरमाई जिनका मामला उठा रखा गया था। यहां तक कि जब जमीन अपनी वुस्अत के बावजूद उन पर तंग हो गई और वे खुद अपनी जानों से तंग आ गए और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से बचने के लिए खुदा अल्लाह के सिवा कोई जाएपनाह (शरण-स्थल) नहीं। फिर अल्लाह उनकी तरफ पलटा ताकि वे उसकी तरफ पलट आएं। बेशक अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला रहम करने वाला है। (117-118)

तबूक की लड़ाई के मौके पर एक गिरोह वह निकला जिसने अपना बेहतरीन असासा इस्लाम के हवाले कर दिया। उनकी फसल कटने के लिए तैयार थी मगर वह उसे छोड़कर एक ऐसे सफर पर खाना हो गए जिसमें सख्त गर्मी के तीन सौ मील तै करके वक्त की सबसे बड़ी ताकत व सत्तनत का मुकाबला करना था। सामान की कमी का यह हाल था कि एक-एक ऊंट पर कई-कई आदमियों की बारी लगी हुई थी। खाने के लिए कभी-कभी सिर्फ एक खजूर एक आदमी के हिस्से में आती थी। ताहम यह इतिहाई सख्त मरहला सिर्फ इरादों के इम्तेहान के लिए सामने लाया गया था। जब इरादा करने वालों ने इरादे का सुबूत दे दिया तो खुदा ने दुश्मन के ऊपर रौब तारी कर दिया। वे मुकाबले के मैदान से हट गए और मुसलमान खून बहाए बगैर कामयाब व कामरान होकर वापस आ गए।

दूसरा तबका मोतरफीन (अत तौबा 102) का था। ये लोग अपने दुनियावी मशागिल (व्यस्तताओं) की वजह से सफर पर खाना न हो सके। ताहम फौरन ही बाद उन्हें महसूस हो गया कि उन्होंने गलती की है। उनके अंदर एतराफ और शर्मिन्दगी की आग भड़क उठी। उनके आंसुओं की कसरत ने उनके अमल की कमी की तलाफी कर दी। खुदा ने उन्हें भी अपनी रहमतों के साये में जगह दे दी। क्योंकि उन्होंने आजिजाना तौर पर अपनी गलती को मान लिया था।

तीसरा गिरोह मुखल्लफीन (अत-तौबह 118) का था। ये तीन नौजवान काब बिन मालिक, मुरारा बिन रबीअ, हिलाल बिन उमैया थे। वे अगरचे सफर पर न निकलने को अपनी कोताही

समझत थे मगर उनके अंदर तौबा व इनाबत (अल्लाह की तरफ विनय-भाव से झुकना) का इतना शदीद एहसास पहले मरहले में नहीं उभरा था जो मल्लूबा मेयार के मुताबिक हो। चुनचि उनके साथ समाजी बायकॉट का मामला किया गया। ये लोग इस बायकॉट के बावजूद मुतमइन रह सकते थे। वे अपने घर और अपने बागों में मशगूल हो जाते। वे बरहमी (खिन्नता) और नावफादारी के रास्तों पर चलना शुरू कर देते। वे नाराज अनासिर (तत्वों) के साथ मिलकर अपनी अलग जमीयत बना लेते। वे आम मुसलमानों से अलग अपना एक जजीरा बनाकर उसके अंदर अपनी खुशियों की दुनिया बसा सकते थे। मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया। खुदा व रसूल से दूरी के एहसास ने उन्हें इस कद्र परेशान कर दिया कि न बाहर उनके लिए सुकून की कोई जगह नजर आई और न अपने दिल के अंदर उनके लिए सुकून का कोई गोशा बाकी रहा। बअल्फज्जे दीगर उनकी परेशानी इख्तियाराणा थी न कि मजबूराणा। उनकी इस रविश का नतीजा यह हुआ कि उनका दिल पिघल उठा। 50 दिन में वे तौबा व इनाबत के मल्लूबा मेयार पर पहुंच गए। इसके बाद उन्हें भी माफ कर दिया गया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ ۝ مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَلَّفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا عَمَلَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطْئُونَ مَوْطِئًا يَعْيِظُ الْمُكْفَارَ وَلَا يَتْلُونَ مِنْ عَدُوٍّ نَبْرًا ۖ إِلَّا كَتَبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝ وَلَا يُنْفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كَتَبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहो। मदीना वालों और अतराफ (आसपास) के देहातियों के लिए जेबा न था कि वे अल्लाह के रसूल को छोड़कर पीछे बैठे रहें और न यह कि अपनी जान को उसकी जान से अजीज रखें। यह इसलिए कि जो प्यास और थकान और भूख भी उन्हें खुदा की राह में लाहिक होती है और जो कदम भी वे मुकिरों को रज पहुंचाने वाला उठाते हैं और जो चीज भी वे दुश्मन से छीनते हैं इनके बदले में उनके लिए एक नेकी लिख दी जाती है। अल्लाह नेकी करने वालों का अज़्र (प्रतिफल) जाया नहीं करता। और जो छोटा या बड़ा खर्च उन्होंने किया और जो मैदान उन्होंने तै किए वे सब उनके लिए लिखा गया ताकि अल्लाह उनके अमल का अच्छे से अच्छा बदला दे। (119-121)

इंसानी जिंदगी इज्तिमाई जिंदगी है। यही वजह है कि हर आदमी का अपने जैक और

रूझान के एतबार से एक हलका बन जाता है जिसमें वह अपने रोज व शब गुजारता है। जो लोग अल्लाह से डरने वाले हों और ईमान के रास्ते पर चलना चाहें उनके लिए लाजिम है कि वे अपनी सोहबतों और मुलाकातों के लिए उन लोगों को चुनें जो सच्चे लोग हों। यानी जिनके दिल का खौफे खुदा उनकी जिंदगी की रविश बन गया हो। जिनके कौल व अमल के दर्मियान मुताबिकत पाई जाती हो। सच्चों के साथ रहकर आदमी सच्चा बन जाता है। इसके बरअक्स अगर वह झूठों का साथ पकड़े तो बिलआखिर वह खुद भी झूठा बन जाएगा।

आदमी के सामने ऐसे मौके आते हैं जबकि जान को खतरे में डाल कर इस्लाम की खिदमत करने का सवाल हो। जब भूख प्यास का मुकाबला करके इस्लाम के लिए अपना हिस्सा अदा करना हो। जब अपने को थका कर खुदा की राह में आगे बढ़ना हो। जब दुश्मनों का खतरा मोल लेकर अपने को इस्लाम की सफ में शामिल करना हो। जब अपनी पुरसुकून जिंदगी को बरहम करके खुदा व रसूल का साथ देना हो। ऐसे मौकों पर आदमी एहतियात और बचाव का तरीका इख्तियार करके पीछे बैठ जाने को पसंद करता है। वह भूल जाता है कि यही तो वे मौके हैं जबकि वह खुदा के साथ अपने तअल्लुक का अमली सुबूत पेश कर सकता है। जबकि वह जन्नत के लिए अपनी उम्मीदवारी को खुदा की नजर में काबिले कुबूल साबित कर सकता है।

गजवए तबूक के मौके पर पीछे रहने वालो में एक अबू खैसमा अंसारी भी थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रवानगी के बाद वह अपने बाग में गए। वहां खुशगवार साया था, बीबी ने पानी छिड़क कर जमीन को ठंडा किया, चटाई का फर्श बिछाया, ताजा खजूर के खोशे लाकर सामने रखे और ठंडा पानी पीने के लिए पेश किया। अबू खैसमा दुनियावी आसानियों ही की खातिर तबूक के सफर पर न जा सके थे। मगर जब जाने वाले और रहने वाले के दर्मियान फर्क इस इतिहाई नौबत को पहुंच गया जो अब उनके सामने था तो अबू खैसमा उसे बर्दाश्त न कर सके। उन्होंने कहा 'मैं यहां बाग में साये में हूं और खुदा के बदे लू और गर्मी में कोह व बयाबान तै कर रहे हैं' उन्होंने तलवार संभाली और तेज रफ्तार ऊंटनी पर सवार होकर उसी वक्त रवाना हो गए। यहां तक कि गर्द व गुबार में अटे हुए तबूक के कफिले से जा मिले।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَآفَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ۝

وَمَا كَانَ

और यह मुमकिन न था कि अहले ईमान सबके सब निकल खड़े हों। तो ऐसा क्यों न हुआ कि उनके हर गिरोह में से एक हिस्सा निकल कर आता ताकि वह दीन में समझ पैदा करता और वापस जाकर अपनी कौम के लोगों को आगाह (दीक्षित) करता ताकि वे भी परहेज करने वाले बनते। (122)

कुरआन की यह आयत एक एतबार से ज़ेबहस सूरतेहाल से मुतअल्लिक है और दूसरे एतबार से वह एक कुल्ली हुक्म को बता रही है। एक तरफ वह बताती है कि मदीने के अतराफ मे बसने वाले देहातियों की तालीम व तर्बियत किस तरह की जाए। दूसरी तरफ इससे मालूम होता है कि इस्लाम का तालीमी निजाम और नई नस्लों के लिए उसका तर्बियती ढांचा किन उसूली बुनियादों पर कायम होना चाहिए।

तालीम एक ऐसा काम है जिसमें आदमी को दूसरी मशगूलियतों से फारिग होकर शामिल होना पड़ता है। अब अगर सारे लोग बयकवक्त तालीमी काम में लग जाएं तो जिंदगी की दूसरी सरगर्मियां, मसलन हुसूले मआश (जीविका) की कोशिशें, मुतअस्सिर हो जाएंगी। इस्लाम का यह तरीका नहीं कि एक काम को बिगाड़ कर दूसरा काम अंजाम दिया जाए, इसलिए हुक्म दिया गया कि बारी-बारी का उसूल मुकरर करो। कुछ लोग तालीम के मर्कज में आए तो कुछ और लोग दूसरी सरगर्मियों को अंजाम देने में लगे रहें। इस तरह दोनों काम बयकवक्त अंजाम पाते रहेंगे।

इस आयत में इस्लामी तालीम के लिए तफर्रूह फिद्दीन का लफ्ज आया है। इससे **मुद मरफ़िद्दीन** (प्रचलित आचार-शास्त्र संबंधी) तालीम नहीं है जो दीन की शकल (बमुकावला रूहे दीन) के तपसीली इल्म का नाम है और जिसके नतीजे में दीन का इल्म मसाइल के इल्म के हममअना (समान) बन गया है। यहाँ तफर्रूह फिद्दीन का मतलब खुदा के उतारे हुए असासी (मौलिक) दीन को जानना और उसमें समझ हासिल करना है। इससे मुराद वह इल्म है जो हक शनासी (सत्य का ज्ञान) पैदा करे जो बुनियादी हक्कीकतों से आदमी को बाख़बर करे और आख़िरत की बुनियादों पर जिंदगी की तामीर करना सिखाए।

आयत में तफर्रूह फिद्दीन (तालीम दीन) मरसद यह बताया गया है कि आदमी कैम के ऊपर इंज़ार का काम करने के काबिल हो सके। इंज़ार के मअना हैं डराना। कुरआन में यह लफ्ज आख़िरत के मसले से डराने और होशियार करने के लिए आया है। इससे मालूम हुआ कि इस्लामी तालीम से ऐसे अफ़राद तैयार हों जो कैमों के ऊपर खुदा की तरफ से मुंजिर (डरानेवाला) बनकर खड़े हो सकें। ताकि लोग खुदा से डरें और दुनिया की जिंदगी में उस रविश से बचें जो उन्हें आख़िरत के अबदी अजाब की तरफ ले जाने वाली हो। इस्लामी तालीम दावत इलल्लाह की तालीम का नाम है न कि मारुफ मअनों में सिर्फ मसाइले फिद्दह या जुजयाते शरअ (शरीअत के विभिन्न अंगों) की तालीम का।

इस एतबार से इस्लामी तालीम का निसाब दो ख़ास चीजों पर मुशतमिल होना चाहिए :

1. कुरआन व सुन्त
2. वे उलूम जो मदऊ (संबोधित वर्ग) की निस्बत से ज़रूरी हों। मसलन मुखातब की ज़बान, उसके तर्जिफ़्फ़ और उसकी नफ़िसयात, वगैरह।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ مِنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً ۚ وَعَلِمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝ وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُمْ مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَذِهِ إِيْبَانًا ۖ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فزَادَتْهُمْ إِيْبَانًا وَهُمْ لَا يَسْتَبْشِرُونَ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ۝ أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذْكُرُونَ ۝ وَإِذَا مَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ هَلْ يَرِيكُمْ مِنْ أَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوا صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۝

ऐ ईमान वाले, उन मुंकिरों से जंग करो जो तुम्हारे आस-पास हैं और चाहिए कि वे तुम्हारे अंदर सख्ती पाएं और जान लो कि अल्लाह डरने वालों के साथ है। और जब कोई सूरह उतरती है तो उनमें से कुछ कहते हैं कि इसने तुम में से किस का ईमान ज्यादा कर दिया। पस जो ईमान वाले हैं उनका इसने ईमान ज्यादा कर दिया और वे खुश हो रहे हैं। और जिन लोगों के दिलों में रोग है तो उसने बढ़ा दी उनकी गंदगी पर गंदगी। और वे मरने तक मुंकिर ही रहे। क्या ये लोग देखते नहीं कि वे हर साल एक बार या दो बार आजमाइश में डाले जाते हैं, फिर भी न तौबा करते हैं और न सबक हासिल करते हैं। और जब कोई सूरह उतारी जाती है तो ये लोग एक दूसरे को देखते हैं कि कोई देखता तो नहीं, फिर चल देते हैं। अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया इस वजह से कि ये समझ से काम लेने वाले लोग नहीं हैं। (123-127)

‘करीब के मुंकिरों से जंग करो’ के अल्फ़ज बताते हैं कि इस्लामी जद्दोज़हद कोई बेमसूबा जद्दोज़हद नहीं है बल्कि इसमें तर्तीब को मल्हूज रखना ज़रूरी है। पहले करीब की रुकावटों को काबू पाने की कोशिश की जाएगी और इसके बाद दूर की रुकावटों से निपटा जाएगा। इसी से यह बात भी निकली कि सबसे पहले मुजाहिदा (संघर्ष) खुद अपने नपस (अंतःकरण) से किया जाना चाहिए। क्योंकि आदमी के सबसे करीब खुद उसका अपना नपस होता है। बाहर के दुश्मनों की बारी इसके बाद आती है। फिर इस्लाम दुश्मनों से भी अव्वलन जो चीज मल्हूब है वह सख्ती (गिल्ज़ह) है यानी वह मजबूती जो दुश्मनों के लिए रौब का बाइस बन जाए।

इसी के साथ ज़रूरी है कि दुश्मनों के मुक़ाबले की सारी कार्रवाई तक़वे की बुनियाद पर की जाए। तक़वा (खुदा का ख़ौफ) की रविश ही मुसलमानों के लिए नुसरते खुदावंदी की जामिन है। तक़वा से हटते ही वे खुदा की मदद से महरूम हो जाएंगे। वे खुदा से दूर हो जाएंगे और खुदा उनसे।

तकवा गोया बंदे और खुदा के दर्मियान नुकता-ए-मुलाकात है। जब आदमी खुदा से डरता है तो वह अपने आपको उस मकाम पर लाता है जहां खुदा उसे देखना चाहता था जहां खुदा ने उसे बुला रखा था। ऐसी हालत में तकवा ही आदमी को खुदा के करीब करने वाला बन सकता है न कि कोई दूसरी चीज। जब खुदा अपने बंदे को मुत्तकी के रूप में देखना चाहता है तो वह उस बंदे की तरफ कैसे मुतवज्जह होगा जो ग़ैर मुत्तकी के रूप में उसके सामने आए।

कुरआन ने अपनी यह खुसूसियत बयान की है कि उसकी आयतों को सुनकर मोमिनीन के इमान में इजफ़ा होता है। मगर इमान के इजफ़ेका तअल्लुक आदमी की अपनी कबी सलाहियत पर है न कि सिर्फ आयतों के सुन लेने पर। डेढ़ हजार साल पहले जब कुरआन उतरा तो उसके अल्फ़ज अर्थ सिर्फ अल्फ़ज थे वे तारीख़ी वाक्या नहीं बने थे। उस वक्त कुरआन की अहमियत को सिर्फ वही लोग समझ सकते थे जो हकीकत को उसकी मुजरद (मूल भावना) सूत्र में देखने की सलाहियत रखते हों। जाहिर परस्त मुनाफ़िक्कीन के अंदर यह सलाहियत न थी। उन्हें कुरआन के अल्फ़ज सिर्फ अल्फ़ज मालूम होते थे। उनकी समझ में नहीं आता था कि चन्द अल्फ़ज का मज्मूआ किसी के यकीन व एतमाद में इजफ़ेका सबब कैसे बन जाएगा। चुनांचे जब कोई नई आयत उतरती तो वे यह कह कर मजाक उड़ते कि अरबी के इन अल्फ़ज ने तुम में से किसके इमान में इजफ़ा किया।

इस बात को आदमी उस वक्त तक नहीं समझ सकता जब तक वह तारीख़ को हटा कर कुरआन को उसके मुजरद रूप में देखने की नजर न पैदा करे। आज 'कुरआन' के लफ़्ज के साथ वे तमाम तारीख़ी अज्मतें शामिल हो चुकी हैं जो नुज़ूले कुरआन के वक्त मौजूद न थीं और बाद को हजार साल से ज्यादा अर्से में उसके गिर्द जमा हुईं।

मगर नुज़ूल के जमाने में कुरआन की हैसियत सिर्फ एक किताब की थी। उस वक्त जाहिरबीं इंसान उसे सिर्फ एक 'किताब' के रूप में देखता था न कि तारीख़साज सहीफ़े (इतिहासनिर्माता ग्रंथ) के रूप में। वे लोग जो कुरआन को उसकी छुपी हुई अज्मत के साथ देख रहे थे जब वे कुरआन से ग़ैर मामूली तासुर कुबूल करते तो जाहिरबीनों की समझ में न आता। वे कहते कि आखिर यह एक किताब ही तो है। फिर एक लफ़्जी मज्मूए में वह कौन सी ख़ास बात है कि लोग उससे इस कद्र मुतअसिर हो रहे हैं।

खुदा ऐसे लोगों को बार-बार मुज्जलिफ़ किस्म के झटके देता है ताकि उनके दिल की हस्सासियत बड़े और वे बातों को ज्यादा गहराई के साथ पकड़ने के काबिल हो जाएं। मगर जब आदमी खुद नसीहत न लेना चाहे तो कोई ख़ारजी (वाहय) चीज उसकी नसीहत के लिए काफी नहीं हो सकती। नसीहत लेने वाली कोई बात सामने आए और आदमी उसे नजरअंदाज कर दे तो उसका यह अमल उसे नसीहत के मामले में बेहिस बना देता है।

'वे हर साल एक बार या दो बार आजमाइश में डाले जाते हैं मगर वे न तौबा करते हैं न सबक हासिल करते हैं।' यहां आजमाइश से मुग़द कहत, मर्ज़, भूख़ वग़ैरह में मुब्तिला किया जाना है। इस किस्म की आपत्तें आदमी की जिंदगी में बार-बार पेश आती हैं मगर वह उनसे तौबा और इबरत (सीख) की गिज़ा नहीं लेता। तौबा हकीकतन तजक्कुर (साधना) के नतीजे का दूसरा नाम है।

हर आदमी के साथ ऐसा होता है कि साल में एक दो बार जरूर कुछ ग़ैर मामूली वाक़ेयात पेश आते हैं। ये वाक़ेयात खुदाई हकीकतों की तरफ़ इशारा करने वाले होते हैं। कभी वे खुदा के मुकाबले में इंसान की बेचारगी को याद दिलाते हैं। कभी वे आखिरत के मुकाबले में मौजूदा दुनिया की बेवकअती को जाहिर करते हैं। ऐसे मौके आदमी के लिए एक बात का इन्तेहान होते हैं कि वह उन्हें अपने लिए सबक बनाए, वह मादूदी वाक़ेयात (भौतिक घटनाओं) में ग़ैर मादूदी हक्कइक़ (दिय्य यथाथी) को देख ले।

सबक वाली चीज से आदमी सबक क्यों नहीं ले पाता। इसकी वजह यह है कि वह एक चीज को दूसरी चीज से मरबूत नहीं कर पाता। दुनिया के वाक़ेयात से सबक लेने के लिए यह सलाहियत दरकार है कि आदमी एक बात को दूसरी बात से जोड़कर देखना जानता हो। वह जहरी वाक़ेये को छुपी हुई हकीकत से मिला कर देख सके। वह पेश आने वाली चीज के आइने में उस चीज को पढ़ सके जो अभी पेश नहीं आई।

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۖ إِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

तुम्हारे पास एक रसूल आया है जो खुद तुम में से है। तुम्हारा नुक्सान में पड़ना उस पर शाक (असह्य) है। वह तुम्हारी भलाई का हरीस (लालसा रखने वाला) है। इमान वालों पर निहायत शफीक (करुणामय) और महरबान है। फिर भी अगर वे मुंह फेंरें तो कह दो कि अल्लाह मेरे लिए काफी है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया। और वही मालिक है अर्शे अजीम का। (128-129)

इस आयत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह तस्वीर बताई गई है कि इस्लाम की जद्दोजहद में उनका सारा एतमाद सिर्फ एक अल्लाह पर है। वे लोगों को जिस खुदा की तरफ बुलाने के लिए उठे हैं वह ऐसा खुदा है जो सारे इक्तेदार (संप्रभुत्व) का मालिक है। तमाम खजानों की कुजियां उसके पास हैं। रसूल इसी इमान व यकीन की जमीन पर खड़ा हुआ है। इसलिए बिल्कुल फितरी है कि उसका सारा भरोसा सिर्फ एक खुदा पर हो। वह हर किस्म की मस्लेहतों और अदेशों से बेपरवाह होकर हक की खिदमत में लगा रहे।

फिर यह बताया कि खुदा का रसूल लोगों के हक में हद दर्जा शफीक और महरबान है। वह दूसरों की तकलीफों पर इस तरह क़ुदता है जैसे कि वह तकलीफ़ खुद उसके ऊपर पड़ी हो। वह हिर्स की हद तक लोगों की हिदायत का तालिब है। हक की दावत (आह्वान) की जद्दोजहद के लिए उसे जिस चीज ने मुतहरिक किया है वह सरासर ख़ैरख़ाही का जब्बा है न कि कोई शख़्सी हौसला या कौमी मसला। वह खुद लोगों की भलाई के लिए उठा है न कि अपनी जाती भलाई के लिए।

अब्दुल्लाह बिन मसऊद से रिवायत है कि आप (सल्ल०) ने फरमाया : लोग परवानों की

तरह आग में गिर रहे हैं और मैं उनकी कमर पकड़ कर उन्हें आग में गिरने से रोक रहा हूँ। (मुसन्द अहमद)

रसूल की इस तस्वीर की शकल में हक के दाजी की तस्वीर हमेशा के लिए बता दी गई है। इससे मालूम होता है कि इस्लाम के दाजी के अंदर दो खास सिफात नुमायां तौर पर होनी चाहिए। एक यह कि उसका भरोसा सिर्फ एक अल्लाह पर हो। दूसरे यह कि मदऊ (संबोधित व्यक्ति) के लिए उसके दिल में सिर्फ मुहब्बत और खैरखाही का जब्बा हो, इसके सिवा और कुछ न हो। अगरचे मदऊ की तरफ से तरह-तरह की शिकायतें पेश आती हैं। उसके और दाजी के दर्मियान कौमी और माददी (सांसारिक) झगड़े भी हो सकते हैं। इन सबके बावजूद यह मत्लूब है कि दाजी (आह्वानकर्ता) इन तमाम चीजों को नजरअंजाम करे और मदऊ के लिए रहमत व राफ्त (हमदर्दी) के सिवा कोई और जब्बा अपने अंदर पैदा न होने दे।

दाजी को रद्देअमल की नफिसयात से बुलन्द होना पड़ता है। उसे एकतरफा तौर पर ऐसा करना पड़ता है कि वह मदऊ का खैरखाह बने, चाहे मदऊ ने उसके खिलाफ कितना ही ज्यादा काबिले शिकायत रवैया क्यों न इस्त्रियार किया हो। दाजी खुदा के लिए जीता है और मदऊ अपनी जात के लिए।

इब्तादा इस्लाम में जिन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ दिया उनके लिए आपका साथ देना अपनी बनी बनाई जिंदगी को उजाड़ देने के हममअना बन गया। इससे कुछ लोगों के अंदर यह ख्याल पैदा हुआ कि रसूल हमारे लिए मुसीबत बनकर आया है। मगर यह वही बात है जो ऐन मत्लूब है। हक की दावत इसीलिए उठती है कि लोगों को बताया जाए कि उनकी कुव्वतों और सलाहियतों का मसरफ आखिरत की दुनिया है न कि मौजूदा दुनिया। इसलिए अगर रसूल का लाया हुआ दीन इस्त्रियार करने में दुनियावादी नक्शा बिगड़ता हुआ नजर आए तो इस पर आदमी को मुतमइन रहना चाहिए। क्योंकि इसका मतलब यह है कि उसकी मताअ (सम्पत्ति) को खुदा ने आखिरत के लिए कुबूल कर लिया।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الرَّتِّلِكَ اَيْتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ۝ اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَا اِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ اٰمَنُوْا اَنْ لَهُمْ قَدْ مَرَّ صَدَقٌ ۝ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۝ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا السَّحِرُ مُبِيْنٌ ۝

आयतें-109

सूरह-10. यूनुस

रुकूअ-11

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० रा०। ये पुरहिक्मत (तत्त्वदर्शितामय) किताब की आयतें हैं। क्यों लोगों को इस पर हैरत है कि हमने उन्हीं में से एक शख्स पर 'वही' (प्रकाशना) की कि लोगों को डराओ और जो ईमान लाएं उन्हें खुशखबरी सुना दो कि उनके लिए उनके रब के

पास सच्चा मर्तबा है। मुंकिरों ने कहा कि यह शख्स तो खुला जादूगर है। (1-2)

पैगम्बर का कलाम इतिहाई मोहकम (ठोस) दलाइल पर आधारित होता है। वह अपने गैर मामूली अंदाज की बिना पर खुद इस बात का सुबूत होता है कि वह खुदा की तरफ से बोल रहा है। इसके बावजूद हर जमाने में लोगों ने पैगम्बर का इंकार किया। इसकी वजह इंसान की जाहिरपरस्ती है। पैगम्बर अपने समकालीन की नजर में आम इंसानों की तरह बस एक इंसान होता है। उसके गिर्द अभी अज्मत की वह तारीख जमा नहीं होती जो बाद के जमाने में उसके नाम के साथ वाबस्ता हो जाती है। इसलिए पैगम्बर के जमाने के लोग पैगम्बर को महज एक इंसान समझ कर नजरअंदाज कर देते हैं। वे पैगम्बर को न खुदा के भेजे हुए की हैसियत से देख पाते और न मुस्तकबिल में बनने वाली तारीख के एतबार से इसका अंदाजा कर पाते जबकि हर आदमी उसकी पैगम्बराना अज्मत को मानने पर मजबूर होगा।

पैगम्बर का कलाम सरापा एजाज (मोजिजा) होता है जो सुनने वालों को बेदलील कर देता है। मगर मुंकिरीन इसकी अहमियत को घटाने के लिए यह कह देते हैं कि यह अदबी जादूगरी है। वे दलील के मैदान में अपने आपको आजिज पाकर उसके ऊपर ऐब लगाने लगते हैं। इस तरह वे पैगम्बर के कलाम की सदाकत को मुशतबह (संदिग्ध) करते हैं। पैगम्बर का कलाम जिन लोगों को मफतूह (विजित) कर रहा था उनके बारे में यह तअस्सुर देते हैं कि वे महज सादगी में पड़े हुए हैं, वरना यह सारा मामला अल्फाज के फरेब के सिवा और कुछ नहीं। यह ज्वान की जादूगरी है न कि कोई वाकई अहमियत की चीज।

पैगम्बर का अस्ल मिशन इंजार व तश्हीर है। यानी खुदा की पकड़ से डराना और जो लोग खुदा से डर कर दुनिया में रहने के लिए तैयार हों उन्हें जन्नत की खुशखबरी देना। पैगम्बर इसलिए आता है कि लोगों को इस हकीकत से आगाह कर दे कि आदमी इस दुनिया में आजाद और खुदमुख्तार नहीं है और न जिंदगी का किरसा आदमी की मौत के साथ खत्म हो जाने वाला है। बल्कि मौत के बाद अबदी जिंदगी है और आदमी को सबसे ज्यादा उसी की फिक्र करना चाहिए। जो शख्स गफलत बरतेगा या सरकशी करेगा वह मौत के बाद की दुनिया में इस हाल में पहुंचेगा कि वहां उसके लिए दुख के सिवा और कुछ न होगा।

जाहिरपरस्त झान हमेशा यह समझता रहा है कि इज्जत और तस्क्मी उस शख्स के लिए है जिसके पास दुनिया का इक्तेदार है, जो दुनिया की दौलत का मालिक है। पैगम्बर बताता है कि यह सारसर धोखा है। यह इज्जत व तस्क्मी तो वह है जो मौजूदा आरजे जिद्दी में इंसानों के दर्मियान मिलती है। मगर इज्जत और तस्क्मी दरअसल वह है जो मुस्तकबिल जिद्दी में खुदा के यहां हासिल हो। वही इज्जत व तस्क्मी हकीकती है और इसी के साथ दाइमी भी।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِي سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مَا مِنْ شَفِيعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۚ اَفَلَا تَكۡرَوۡنَ ۝ الْبَيۡتَ مَرۡجِعَڪُمۡ جَمِيعًا وَعَدَ اللّٰهُ حَقًّا لَّٰنَ

يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ①

वेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमानों और जमीन को छः दिनों (चरणों) में पैदा किया, फिर वह अर्श पर कायम हुआ। वही मामलात का इंतजाम करता है। उसकी इजाजत के बगैर कोई सिफारिश करने वाला नहीं। यही अल्लाह तुम्हारा रब है पस तुम उसी की इबादत करो, क्या तुम सोचते नहीं। उसी की तरफ तुम सबको लौट कर जाना है, यह अल्लाह का पक्का वादा है। वेशक वह पैदाइश की इब्तिदा करता है, फिर वह दुबारा पैदा करेगा ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उन्हें इंसफ के साथ बदला दे। और जिन्होंने इंकार किया उनके इंकार के बदले उनके लिए खोलता पानी और दर्दनाक अजाब है। (3-4)

कायनात में मुक़ल्लिफ़ किस्म की चीजें हैं। इल्मी मुताला बताता है कि इन चीजों का जूह एक ही वक्त में नहीं हुआ बल्कि तदरीज (क्रम) के साथ एक के बाद एक हुआ है। कुरआन इस तदरीजी तख़्खीक को छः अदवार (Periods) में तक्सीम करता है। यह दौरी (चरण बद्ध) तख़्खीक साबित करती है कि कायनात की पैदाइश शुऊरी मंसूबे के तहत हुई है। फिर कायनात का मुताला यह भी बताता है कि उसका निजाम हद दर्जा मोहकम नियमों के तहत चल रहा है। हर चीज ठीक उसी तरह अमल करती है जिस तरह सामूहिक तक्वाजे के तहत उसे अमल करना चाहिए। यह वाक्या इस बात का वाजेह सुबूत है कि इस निजामे कायनात का एक जिंदा मुदबिर (संचालक) है जो हर लम्हा उसका इंतजाम कर रहा है।

कायनात का यह हैरानकुन निजाम खुद ही पुकार रहा है कि उसका मालिक इतना कामिल और इतना अजीम है जिसके यहां किसी सिफारिशी की सिफारिश चलने का कोई सवाल नहीं। कायनात अपनी खुसूसियात के आइने में अपने ख़ालिक की खुसूसियात को बता रही है।

सारी कायनात में 'किस्त' (न्याय) का निजाम कायम है। यहां हर एक के साथ यह हो रहा है कि जो कुछ वह करता है उसी के मुताबिक नतीजा उसके सामने आता है। हर एक को वही मिलता है जो उसने किया था और हर एक से वह छिन जाता है जिसके लिए उसने नहीं किया था। जमीन का जो हिस्सा रात के असबाब जमा करे वहां तारीकी फैल कर रहती है और जमीन का जो हिस्सा रोशनी के असबाब पैदा करे उसके ऊपर सूरज चमक कर रहता है।

यह मादूदी (भौतिक) नताइज का हाल है। मगर अख़्लाकी नताइज के मामले में दुनिया की तख़ीर बिल्कुल मुक़ल्लिफ़ नजर आती है। इंसान नेकी करता है और उसे नेकी का फल नहीं मिलता। इंसान सरकशी करता है मगर उसकी सरकशी अपना नतीजा दिखाए बगैर जारी रहती है। ख़ालिक को जो मर्जी उसकी दूसरी मख़्बूत (जीवों) में चल रही है उसकी वही मर्जी इंसान के मामलात में क्यों जाहिर नहीं होती।

इसका जवाब यह है कि इंसान की जिंदगी में खुदाई इंसफ के जूह को खुदा ने बाद को आने वाली दुनिया के लिए मुवख़्बर (लंबित) कर दिया है। पहली जिंदगी इंसान को अमल के लिए दी गई है, दूसरी जिंदगी उसे अपने अमल का नतीजा पाने के लिए दी जाएगी। और दूसरी जिंदगी का जूह यकीनन इतना ही मुमकिन है जितना पहली जिंदगी का जूह।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ② إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَّقُونَ ③

अल्लाह ही है जिसने सूरज को चमकता बनाया और चांद को रोशनी दी और उसकी मंजिलें मुकर्रर कर दीं ताकि तुम वर्षों का शुमार और हिसाब मालूम करो। अल्लाह ने ये सब कुछ बेमक्सद नहीं बनाया है। वह निशानियां खोल कर बयान करता है उनके लिए जो समझ रखते हैं। यकीनन रात और दिन के उलट फेर में और अल्लाह ने जो कुछ आसमानों और जमीन में पैदा किया है उनमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो डरते हैं। (5-6)

सूरज हमारी जमीन से निहायत दुरुस्त फसले पर कायम है, यही वजह है कि वह हमारे लिए रोशनी और हरातर जैसी नेमतों का ख़जाना बना हुआ है। अगर इस अंदजे में फर्क हो जाए तो सूरज हमारे लिए सूरज न रहे बल्कि आग का जहन्नम बन जाए, वह जिंदगी के बजाए मौत का पैगाम साबित हो। चांद एक हददर्जा रियाजियाती (गणितीय) हिसाब के मुताबिक अपने मदार (कक्ष) पर ठीक-ठीक गर्दिश करता है। इसी बिना पर यह मुमकिन होता है कि चांद बजाते खुद बेनूर होने के बावजूद हमारे लिए न सिर्फ ठंडी रोशनी दे बल्कि महीने और साल की कुदरती तक्वीम (क्लेंडर) भी फ़राहम करे। ये फ़ल्कियाती (आकाशीय) निशानियां साबित करती हैं कि इस कायनात में गहरी मक्सदियत है, और मक्सदियत वाली कायनात का आखिरी अंजाम बेमक्सद नहीं हो सकता।

फिर हमारी दुनिया में रात के बाद दिन का आना मादूदी तमसील (भौतिक प्रक्रिया) की ज़बान में इस अख़्लाकी हकीकत को बता रहा है कि मौजूदा दुनिया में यह क़सूर नाफ़िज़ है कि तारीकी के बाद रोशनी फेले, अंधेरे के बाद उजाले का जुहूर हो। यहां हुक्क की पामाली के बाद हुक्क की अदायगी का निजाम आने वाला है। इंसान की सरकशी की जगह खुदाई इंसफ को गलबा मिलने वाला है। यहां उस वक्त का आना सुनिश्चित है जबकि धांधली ख़त्म हो और हक के एतराफ का माहिल चारों तरफ कायम हो जाए।

आख़िरत की हकीकतों को खुदा ने निशानियों के अंजाम में जहिर किया है। बअल्फज दीगर, खुदा मौजूदा दुनिया में दलील के रूप में जाहिर होता है न कि महसूस मुशहिदे (अवलोकन)

के रूप में। फिर खुदा जिस रूप में अपना जलवा दिखाता है उसी रूप में हम उसे पा सकते हैं न कि किसी और रूप में।

खुदा ने इस दुनिया में हिदायत के रास्ते खोल रखे हैं मगर यह हिदायत उन्हीं का मुकद्दर है जो खुदाई नज़्म के मुताबिक उसकी पैरवी करने के लिए तैयार हों। यहां वही लोग सही रास्ते पर चलने की तौफ़ीक पाएंगे जो दलील की जबान में बात को समझने और मानने के लिए तैयार हों। जो लोग सच्ची दलील के आगे न झुके वे गोया खुदा के आगे नहीं झुके। उन्होंने खुदा को नहीं माना। ऐसे लोगों को अपने लिए जहन्नम के सिवा किसी और चीज का इतिजार् न करना चाहिए।

जमीन व आसमान में अगरचे बेशुमार निशानियां फैली हुई हैं मगर वे उन्हीं लोगों के लिए सबक बनती हैं जो डर रखने वाले हैं। डर या अदेशा वह चीज है जो आदमी को संजीदा बनाता है। जब तक आदमी किसी मामले में संजीदा न हो वह उस मामले पर पूरा ध्यान नहीं देगा और न उसके पहलुओं को समझेगा। पूरी कायनात एक जबरदस्त तख्तीकी तवाजु (संतुलन) में जकड़ी हुई है। यह इस बात का खुला हुआ इशारा है कि कायनात का मालिक ऐसा मालिक है जो इंसान को पकड़ने की ताकत रखता है। इसी तरह पहली ज़िंदगी जिसका हम तजर्बा कर रहे हैं वह इसका यकीनी सुबूत है कि दूसरी ज़िंदगी भी मुमकिन है। मौजूदा दुनिया में मादूदी नताइज का निकलना मगर अख़्ताकी नताइज का न निकलना तक्ज़ा करता है कि एक और दुनिया बने जहां अख़्ताकी नताइज अपनी पूरी सूरत में जाहिर हों। ये सब इतिहाई मोहकम बातें हैं मगर इनका मोहकम होना वही शख्स जानेगा जो अदेशे की नपिसयात के तहत ज़िंदगी के मामले को देखता हो।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَفْلُونَ ۚ أُولَٰئِكَ مَا لَهُمْ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۖ دَعْوُهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۖ وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

बेशक जो लोग हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते और दुनिया की ज़िंदगी पर राजी और मुतमइन हैं और जो हमारी निशानियों से बेपरवा हैं, उनका ठिकाना जहन्नम होगा इस सबब से कि जो वे करते थे। बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, अल्लाह उनके ईमान की बदौलत उन्हें पहुंचा देगा। उनके नीचे नहरें बहती होंगी नेमत के बाग़ों में। उसमें उनका कौल होगा कि ऐ अल्लाह तू पाक है। और मुलाकात उनकी सलाम होगी। और उनकी आखिरी बात यह होगी कि सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जो सब है सारे जहान का। (7-10)

जहन्नम किसके लिए है। उन लोगों के लिए जो उस दिन को भूले हुए हों जबकि खुदा से उनका सामना होगा। जो आखिरत की अबदी (चिरस्थायी) नेमतों के मुकाबले में दुनिया की आरजी (क्षणिक) चीजों पर राजी हो गए हों। जिनका यह हाल हो कि दुनिया में जो कुछ उन्हें इम्तेहान के तौर पर मिला है उसी पर वे मुतमइन हो जाएं। जो ग़ैर खुदाई चीजों में इतना दिल लगा लें कि खुदा की तरफ से ज़हिर की जानी वाली हकीकतों से ग़ाफ़िल हो जाएं। यह सब खुदा के नजदीक जहन्नमी रास्तों में चलना है, और जो लोग जहन्नमी रास्तों पर चल रहे हों वे आख़िरकार जहन्नम के सिवा और कहां पहुंचेंगे।

‘अल्लाह उन्हें उनके ईमान की वजह से जन्नत की मंजिल तक पहुंचाएगा’ इससे मालूम हुआ कि ईमान आदमी के लिए रहनुमाई है। वह आदमी को ग़लत राहों से बचा कर सही रास्ते पर चलाता रहता है, यहां तक कि उसे हकीकी मंजिल तक पहुंचा देता है।

ईमान खुदा की दरयाफ्त (खोज) है। जिस आदमी को ईमान हासिल हो जाए उसे इल्म का सिरा हाथ आ जाता है, वह इस काबिल हो जाता है कि हर मामले में सही मकाम से अपनी सोच का आगाज कर सके। वह फ़िक्री (वैचारिक) बेराहवी से बचकर फ़िक्री सेहत का मालिक बन जाए। मजौद यह कि खुदा को मानना किसी किताबी फ़लसफे को मानना नहीं है। यह एक ज़िंदा खुदा को मानना है जो बिलआखिर तमाम इंसानों को अपने यहां जमा करके उनका हिसाब लेने वाला है। इस तरह ईमान आदमी के अंदर अपने अंजाम के बारे में अदेशे की कैफियत पैदा करके उसे इतिहाई संजीदा इंसान बना देता है। वह अपने को मजबूर पाता है कि अपनी तमाम कारवाइयों को सही और ग़लत की रोशनी में देखे और सिर्फ सही रुख पर चले और ग़लत रुख पर चलने से हमेशा परहेज करे।

इस तरह ईमान आदमी को सही फ़िक्र (सोच) भी देता है और इसी के साथ वह कुच्यते तमीज (सही ग़लत की पहचान) भी जो उसके लिए मुस्तक़िल अमली रहनुमा बन जाए।

आखिरत की जन्नत उन लोगों के लिए है जिन्होंने दुनिया में अपने आपको उसका मुस्तहिक साबित किया हो। आखिरत खुदा के बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) जलवों में सरशार होने का मकाम है, वहां बसने का मौक़ा सिर्फ उन लोगों को मिलेगा जो दुनिया में खुदा के बिलवास्ता (परोक्ष) जलवों से सरशार हुए थे। आखिरत में लोगों के दिल एक दूसरे के लिए सलामती और ख़ैरख्वाही के जज्वात से भरे हुए होंगे, इसलिए वहां की आबादी में वही लोग जगह पाएंगे जिन्होंने दुनिया में इस बात का सुबूत दिया था कि दूसरों के लिए उनके दिल में सलामती और ख़ैरख्वाही के सिवा कोई दूसरा जज्वा नहीं।

وَلَوْ يَعْلَمُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتَعْجَلَهُمْ بِالْخَيْرِ لَفُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ فَبُذِرُوا
الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۚ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ^١
دَعَاَ الْغَنِيَّ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ غُصَّةَ مَرَمَكُنْ لَمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ
خُصْمَةٍ مِّثْلِهِ ۚ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝

अगर अल्लाह लोगों के लिए अजाब उसी तरह जल्दी पहुंचा दे जिस तरह वह उनके साथ रहमत में जल्दी करता है तो उनकी मुद्दत खत्म कर दी गई होती। लेकिन हम उन लोगों को जो हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते उनकी सरकशी में भटकने के लिए छोड़ देते हैं। और इंसान को जब कोई तकलीफ पहुंचती है तो वह खड़े और बैठे और लेते हमें पुकारता है। फिर जब हम उससे उसकी तकलीफ को दूर कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है गोया उसने कभी अपने किसी बुरे वक्त पर हमें पुकारा ही न था। इस तरह हद से गुजर जाने वालों के लिए उनके आमाल खुशनुमा बना दिए गए हैं। (11-12)

खुदा का कानून यह है कि कोई शख्स कबिले इनाम अमल करे तो उसका अमल फौरन उसके आमालनामे में शामिल कर दिया जाता है। लेकिन अगर कोई शख्स कबिले सजा फेअल करता है तो खुदा उसे ढील देता है ताकि वह किसी न किसी मोड़ पर सचेत होकर अपनी इस्लाह कर ले। खुदा का यह कानून इंसान के लिए बहुत बड़ी नेमत है, वरना इंसान इतना जालिम है कि वह हर वक्त बुराई करने पर आमादा रहता है, और अगर लोगों को उनकी बुराइयों पर फौरन पकड़ा जाने लगे तो उनकी मोहलते उम्र बहुत जल्द खत्म हो जाए और जमीन की पुश्त चलने वाले इंसानों से खाली हो जाए।

दुनिया की जिंदगी में सरकश वे लोग बनते हैं जो दुनिया में यह समझ कर रहें कि मरने के बाद उन्हें खुदा का सामना नहीं करना होगा। जो पकड़ के अदेशे से खाली होकर जिंदगी गुजारते हैं। जो समझते हैं कि वे आजाद हैं कि जो धांधली चाहें करें और जो फसाद चाहें फैलाएं। हकीकत यह है कि लोगों के दर्मियान सच्चाई और इंसाफ के साथ मामला करने का एक ही हकीकी मुहरिक है। और वह यह कि आदमी यह समझे कि सब ताकतवरों के ऊपर एक ताकतवर है। हर आदमी उसके आगे बेबस है। वह एक दिन तमाम इंसानों को पकड़ेगा और हर एक मजबूर होगा कि अपने बारे में उसके फैसले को तस्लीम करे।

दुनिया का निजाम इस तरह बना है कि आदमी बार-बार किसी न किसी तकलीफ या हादसे की जद में आ जाता है, आदमी महसूस करने लगता है कि खारजी (वाहय) ताकतों के मुक़बले में वह बिल्कुल बेबस है। उस वक्त आदमी बेइख़्तियार होकर खुदा को पुकारने लगता है। वह खुदा की क़ुदरत के मुक़बले में अपने इज्ज का एतराफ कर लेता है। मगर यह हालत सिर्फ उस वक्त तक रहती है जब तक वह मुसीबतों की गिरफ्त में हो, मुसीबत से नजात पाते ही वह दुबारा वैसा ही गाफिल और सरकश बन जाता है जैसा वह पहले था। ऐसे लोगों के इज्जारे बंदगी को खुदा तस्लीम नहीं करता। क्योंकि इज्जारे बंदगी वह मलूब है जो आजादाना हालात में की जाए, मजबूरीना हालात में जाहिर की हुई बंदगी की खुदा के नज़्दिक कोई कीमत नहीं।

आदमी एक तौजीहपसंद मख़्लूक है। वह हर अमल का एक जवाज (औचित्य) तलाश करता है। अगर आदमी सरकशी को अपने लिए पसंद कर ले तो उसका ज़ेहन भी उसी तरफ मुड़ जाएगा। वह अमलन सरकशी करेगा और उसका ज़ेहन उसकी सरकशी को दुरुस्त साबित

करने के लिए उसे खुदसूत अल्फ़ाज फ़ाहम करता रहेगा। इसी का नाम तज्जिन आमाल है। आदमी अपनी ग़लतियों को खुशनुमा अल्फ़ाज में बयान करके अपने को मुत्तमइन कर लेता है कि वह हक पर है। मगर यह ऐसा ही है जैसे कोई शख्स आग का अंगारा अपने हाथ में ले ले और समझे कि वह उसे नहीं जलाएगा क्योंकि उसका नाम उसने सुर्ख फूल रख दिया है।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ
وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝ ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ
خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝

और हमने तुमसे पहले कौमों को हलाक किया जबकि उन्होंने जुल्म किया। और उनके पैग़म्बर उनके पास खुली दलीलों के साथ आए और वे ईमान लाने वाले न बने। हम ऐसा ही बदला देते हैं मुजरिम लोगों को। फिर हमने उनके बाद तुम्हें मुल्क में जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया ताकि हम देखें कि तुम कैसा अमल करते हो। (13-14)

पैग़म्बर अपनी कौमों के पास बख़्शनात के साथ आए मगर उन्होंने न माना। 'बख़्शनात बहुवचन बख़्शनात के मअना दलील के हैं, इससे मालूम होता है कि खुदा का दाअी हमेशा बख़्शनात की बुनियाद पर उठता है। लोगों को उसे दलाइल की सतह पर पहचानना पड़ता है। जो लोग जाहिरी अज्मतों और अवामी इस्तक़्वालियों में खुदा के दाअी को पाना चाहें वे कभी उसे नहीं पाएंगे, क्योंकि खुदा का दाअी वहां मौजूद ही नहीं होता। नबी मोजिजा दिखाता है। मगर मोजिजा आखिरी मरहले में इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) के लिए आता है, दावती मरहले में सारा काम दलाइल की बुनियाद पर होता है।

किसी शख्स या गिरोह का जालिम होना यह है कि वह दलील के रूप में जाहिर होने वाली दावते खुदाबंदी को न पहचाने और अपने खुदसाख़्ता मेयार पर न पाने की वजह से उसका इंकार कर दे। ऐसे लोग अपनी इस रविश की वजह से खुदाई कानून की जद में आ जाते हैं

माजी की जिन कौमों पर इंकारे नुबुव्वत के ज़ुर्म में खुदा का अजाब नाजिल हुआ वे सिर से नुबुव्वत की मुक़िर न थीं। ये तमाम कौमों किसी न किसी साबिक (पूर्ववर्ती) पैग़म्बर को मानती थीं। अलबत्ता उन्होंने वक्त के पैग़म्बर को मानने से इंकार कर दिया था। पिछले पैग़म्बर का मामला यह था कि उसकी पुश्त पर तारीख़ की तस्दीकात (पुष्टियां) कायम हो गई थीं और कौमी अस्बियतें उसके साथ वाबस्ता हो चुकी थीं। जबकि मुआसिर (समकालीन) पैग़म्बर अभी इस किस्म की इजाफ़ी खुसूसियात (अतिरिक्त विशिष्टताओं) से खाली था। उन्होंने उस गुजरे हुए पैग़म्बर का इकरार किया जो नस्लों की रिवायतों के नतीजे में उनका कौमी पैग़म्बर बन चुका था, जिसके साथ अपने को मंसूब करना तारीख़ी अज्मत के मीनार से अपने को मंसूब करने के हममअना था। उन्होंने अपने कौमी पैग़म्बर को पैग़म्बर माना मगर उस पैग़म्बर का इंकार कर दिया जिसे सिर्फ दलील और बुरहान (सुस्पष्ट तक) के जरिए जाना जा सकता था।

यह ज़ुर्म खुदा की नजर में इतना शदीद था कि वे लोग नबी के मुक़िर करार देकर हलाक

कर दिए गए।

‘फिर हमने इसके बाद तुम्हें मुल्क में खलीफा बनाया।’ खलीफा के अरुल मअना हैं बाद को आने वाला। यह लफज जानशीन (उत्तराधिकारी), खास तौर पर, इक्तेदार (सत्ता) में जानशीन के लिए बोला जाता है। यह जानशीनी इंसान की होती है न कि खुदा की। कोई इंसान इक्तेदार में खुदा का जानशीन नहीं हो सकता। इंसान हमेशा किसी मख्रूक का जानशीन होता है। कुरआन में जहां भी ख़िलाफत का लफज आया है वह मख्रूक की जानशीनी के लिए है न कि खुदा की जानशीनी के लिए।

किसी को खलीफा (जानशीन) बनाना एजाज के लिए नहीं बल्कि सिर्फ इम्तेहान के लिए होता है। जानशीन बनाने का मतलब एक के बाद दूसरे को काम का मौका देना है, एक कौम के बाद दूसरी कौम को इम्तेहान के मैदान में खड़ा करना है। जैसे हिंदुस्तान में देसी राजाओं की जगह मुगलों को इख्तियार दिया गया। फिर उन्हें हटाकर अंग्रेज उनके जानशीन बनाए गए। इसके बाद उन्हें मुल्क से निकाल कर अक्सरियती फिरके के लिए जगह खाली की गई। इनमें से हर बाद को आने वाला अपने पहले का खलीफा (उत्तराधिकारी) था।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا إِنَّمَا يَنْتِظِرُ غَيْبًا
هَذَا أَوَّلُ بَيِّنَةٍ لَّنَا إِنَّا أَوَّلُ كُفْرٍ لَّنَا إِنَّا أَوَّلُ كُفْرٍ لَّنَا إِنَّا أَوَّلُ كُفْرٍ لَّنَا
مَا يُؤْمَرُ إِلَيْهِ إِلَّا فِي إِتْيَانٍ أَخَافُ أَنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابٌ عَظِيمٌ ٥ قُلْ لَوْ
شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُمْ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَأَكُمْ بِهِ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهِ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٦ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ
إِنَّهُ لَا يَفْعَلُ الْبُحْرُمُونَ ٧

और जब उन्हें हमारी खुली हुई आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जिन लोगों को हमारे पास आने का खटका नहीं है वे कहते हैं कि इसके सिवा कोई और कुरआन लाओ या इसको बदल दो। कहो कि मेरा यह काम नहीं कि मैं अपने जी से इसको बदल दूं। मैं तो सिर्फ उस ‘वही’ (ईश्वरीय वाणी) की पैरवी करता हूं जो मेरे पास आती है। अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूं तो मैं एक बड़े दिन के अजाब से उरता हूं। कहो कि अगर अल्लाह चाहता तो मैं इसको तुम्हें न सुनाता और न अल्लाह इससे तुम्हें बाख़बर करता। मैं इससे पहले तुम्हारे दर्मियान एक उम्र बसर कर चुका हूं, फिर क्या तुम अकल से काम नहीं लेते, उससे बढ़कर जालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधे या उसकी निशानियों को झुठलाए। यकीनन मुजरिमों को फलाह हासिल नहीं होती। (15-17)

मक्का के कुरैश खुदा और रसूल को मानते थे। वे अपने को मिल्लते इब्राहीम का पैरोकार

कहते थे। यहां तक कि इस्लाम की बहुत सी दीनी इस्तिलाहें (शब्दावलियां) मसलन सलात, सोम, जकात, हज वगैरह वही हैं जो पहले से उनके यहां राइज थीं। इसके बावजूद क्यों उन्होंने कहा कि दूसरा कुरआन लाओ या इस कुरआन में कुछ तरमीम (संशोधन) कर दो तब हम इसको मानेंगे।

इसकी वजह यह थी कि कुरआन में खुदा के ख़ालिस दीन का एलान था। जबकि कुरैश खुदा के दीन के नाम पर एक मिलावटी दीन को इख्तियार किए हुए थे।

कुरआन की तौहीद (एकेश्वरवाद) से उनके मुशिरकाना अकीदा-ए-खुदा पर ज़द पड़ती थी। कुरआन के तसव्वुरे इबादत की रोशनी में उनकी इबादतें महज खेल तमाशा मालूम होती थीं। वे पैगम्बर को अपने कौमी फख्र का निशान बनाए हुए थे और कुरआन उनसे एक ऐसे पैगम्बर को मानने का मुतालबा कर रहा था जो उनकी अमली जिंदगी में रहनुमा का दर्जा हासिल कर ले। उन्होंने काबे की खिदमत को अपनी दीनदारी का सबसे बड़ा सुबूत समझ रखा था जबकि कुरआन ने बताया कि दीनदारी यह है कि आदमी खुदा से डरे और जो कुछ करे आखिरत को सामने रखकर करे।

आदमी कुछ अल्फज बोलकर हक को नज़अंदाज कर देता है। इसकी वजह यह है कि उसके दिल में ‘खटका’ नहीं होता। अगर आदमी के दिल में यह खटका लगा हुआ हो कि वह अपने कौल व फेअल के लिए खुदा के यहां जवाबदेह है तो वह फौरन संजीदा हो जाएगा। और जो शख्स संजीदा हो वह मामले को हकीकतपसंदी की नज़र से देखेगा, वह सरसरी तौर पर उसे नज़अंदाज नहीं कर सकता।

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ
شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ قُلْ أَتَنْتَبِهُونَ ۚ اللَّهُ بِمَا لَا يَعْلَمُونَ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي
الْأَرْضِ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ١٥ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً
وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَفُضِّضَ بَيْنَهُمْ فِيمَا
فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ١٦

और वे अल्लाह के सिवा ऐसी चीजों की इबादत करते हैं जो उन्हें न नुकसान पहुंचा सकें और न नफा पहुंचा सकें। और वे कहते हैं कि ये अल्लाह के यहां हमारे सिफारिशरी हैं। कहो, क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज की खबर देते हो जो उसे आसमानों और जमीन में मालूम नहीं। वह पाक और बरतर है उससे जिसे वे शरीक करते हैं। और लोग एक ही उम्मत थे। फिर उन्होंने इख़्तेलाफ किया। और अगर तुम्हारे रब की तरफ से एक बात पहले से न ठहर चुकी होती तो उनके दर्मियान उस अम्र (मामले) का फैसला कर दिया जाता जिसमें वे इख़्तेलाफ कर रहे हैं। (18-19)

हमारी दुनिया में जो वाक़ेयात हो रहे हैं वे बजाहिर माददी असबाब के तहत हो रहे हैं। मगर हकीकत यह है कि तमाम वाक़ेयात के पीछे खुदा का तसरूफ (नियति) काम कर रहा

है। इस दुनिया में किसी को कोई जाती इख्तियार हासिल ही नहीं। तौहीद यह है कि आदमी जहिरी चीजों से गुजर कर शैब में छुपे हुए खुदा को पा ले। इसके मुक़बले में शिर्क यह है कि आदमी जहिरी चीजों में अटक कर रह जाए। वे चीजों ही को चीजों के ख़लिक का मक़म देदे।

इस दुनिया में खुदा के सिवा किसी के पास नफ़ा देने या नुक़सान पहुंचाने की ताक़त नहीं। जो आदमी इस हक़ीक़त को पा लेता है उसकी तमाम तवज्जोह खुदा की तरफ़ लग जाती है। वह खुदा ही की परस्तिश करता है। वह उसी से डरता है और उसी से उम्मीदें कायम करता है। वह अपना सब कुछ एक खुदा को बना लेता है। इसके बरअक्स जो लोग चीजों में अटके हुए हैं वे अपने-अपने जौक के लिहाज से किसी ग़ैर खुदा को अपना खुदा बना लेते हैं और उन ग़ैर खुदाओं से वही उम्मीदें और अंदेशे वाबस्ता कर लेते हैं जो दरहक़ीक़त खुदा-ए-चाहिद के साथ वाबस्ता करना चाहिए। इसी की एक सूत शफ़ाअत का अक़ीदा है। लोग यह फ़र्ज कर लेते हैं कि इंसानों या ग़ैर इंसानों में कुछ ऐसी बरतर हस्तियां हैं जो खुदा की नजर में मुक़द्दस हैं। खुदा उनकी सुनता है और उनकी सिफ़ारिश पर दुनियावी रिफ़ या उख़यी नजात के पैसले करता है। मगर इस किस्म का अक़ीदा बातिल है। वह खुदा की खुदाई का कमतर अंदाज है।

खुदा इस किस्म के हर शिर्क (ईश्वरत्व में साझीदारी) से पाक है। खुदा अपनी सिफ़ात का जो तआरुफ़ अपनी अज़ीम कायनात में करा रहा है उसके लिहाज से इस किस्म के तमाम अक़ीदे बिल्कुल बेजोड़ हैं। ऐसे किसी अक़ीदे का मतलब यह है कि खुदा वह नहीं है जो बजाहिर अपनी तज़वीबी सिफ़ात के आइने में नज़ आ रहा है या फिर खुदा की सिफ़ातों में तजद (अन्तर्बिध) है। जाहिर है कि इन दोनों में से कोई चीज मुमकिन नहीं।

खुदा ने इंसानियत का आज़ाज देने फ़ितरत से किया था। उस वक़्त तमाम इंसानों का एक ही दीन था। इसके बाद लोगों ने फ़र्क़ करके दीन के मुख़लिफ़ रूप बना लिए। इसकी वजह उस आजादी का ग़लत इस्तेमाल है जो लोगों को इस्तेहान की गरज से दी गई है। अगर खुदा जाहिर हो जाए तो उसकी ताक़तों को देखकर लोगों की सरकशी ख़त्म हो जाए और अचानक इख़तेलाफ़ की जगह इतेहाद पैदा हो जाए। क्योंकि शिद्दे ख़ौफ़ राय के दअदुद (मत-भिन्नता) को ख़त्म कर देता है। मगर खुदा कियामत से पहले इस सूरतेहाल में मुदाख़लत (हस्तक्षेप) नहीं करेगा। मौजूदा दुनिया को खुदा ने इस्तेहान के लिए बनाया है और इस्तेहान की फ़िज बाकी रखने के लिए ज़रूरी है कि हक़ीक़त छुपी रहे और लोगों को मैम हो कि वे अपनी अक़ल को सही रुख़ पर भी इस्तेमाल कर सकें और ग़लत रुख़ पर भी।

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَاتَّبِعُوا آلَايَ
مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظَرِينَ ۖ وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ عَذَابٍ مَسْتَهْزِئٍ
إِذَا لَهُمْ مَكْرُوفٌ إِلَيْنَا قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُوبُونَ مَا تَكْذِبُونَ ۝

और वे कहते हैं कि नबी पर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी

गई, कहो कि शैब की ख़बर तो अल्लाह ही को है। तुम लोग इतिजार् करो, मैं भी तुम्हारे साथ इतिजार् करने वालों में से हूं। और जब कोई तकलीफ़ पड़ने के बाद हम लोगों को अपनी रहमत का मजा चखाते हैं तो वे फ़ौरन हमारी निशानियों के मामले में हीले बनाने लगते हैं। कहो कि खुदा अपने हीलों में उनसे भी ज्यादा तेज है। यकीनन हमारे फ़रिश्ते तुम्हारी हीलाबाजियों को लिख रहे हैं। (20-21)

मक्का के लोग जब मुसलसल इंकार की रविश पर कायम रहे तो खुदा ने उन पर कहत भेजा जो सात साल मुसलसल रहा और बिलआख़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ के बाद ख़त्म हुआ। यह एक निशानी थी जिससे उन्हें यह सबक लेना चाहिए था कि रसूल का इंकार करने के बाद वे खुदाई पकड़ की जद में आ जाएंगे। मगर उनका हाल यह हुआ कि जब तक कहत रहा विनती-विलाप करते रहे और जब कहत रुख़्तत हुआ तो कहने लगे कि यह तो जमाने की गर्दिशें हैं जो हर एक के साथ पेश आती हैं। इसका रसूल को मानने या न मानने से कोई तअल्लुक नहीं।

पैगम्बर से लोग निशानी मांगते हैं। मगर अस्ल सवाल निशानी के जुहूर का नहीं बल्कि उससे सबक लेने का है। क्योंकि निशानी सिर्फ़ देखने के लिए होती है वह मजबूर करने के लिए नहीं होती। निशानी जाहिर होने के बाद भी यह आदमी के अपने इख़्तियार में होता है कि वह उसे माने या झूठी तौजीह निकाल कर उसे रद्द कर दे।

ताहम जब खुदा की आख़िरी निशानी जाहिर होती है तो उसके मुकाबले में इंसान को कोई इख़्तियार नहीं होता। यह आख़िरी निशानी इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) के बाद खुदा की अदालत बनकर आती है और वह मुख़लिफ़ पैगम्बरों के लिए मुख़लिफ़ सूरतों में आती है। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) के लिए मुख़लिफ़ मस्लेहतों के बिना पर यह निशानी इस सूरत में जाहिर हुई कि मुकिरीन को मग़लूब करके मोमिनीन को उनके ऊपर ग़ालिब कर दिया गया। शाह अब्दुल कादिर साहब इस सिलसिले में मूजिहुल क़ुरआन में लिखते हैं 'थानी अगर कहें कि हम कैसे जानें कि तुम्हारी बात सच है। फरमाया कि आगे हक़ तआला इस दीन को रोशन करेगा और मुख़ालिफ़ जलील और बर्बाद हो जाएंगे। सो वैसा ही हुआ। सच की निशानी एक बार काफ़ी है। और हर बार मुख़लिफ़ जलील हों तो पैसला हो जाए। हालांकि पैसले का दिन दुनिया में नहीं।'

आदमी जब सरकशी करता है और इसकी वजह से उसका कुछ बिगड़ता हुआ नजर नहीं आता तो वह और भी ज्यादा दीठ हो जाता है। वह समझता है कि वह खुदा की पकड़ से बाहर है। हालांकि यह ऐन खुदा की तदबीर होती है। खुदा सरकश आदमी को ढील देता है ताकि वह बेफ़िक़्र होकर ख़ूब सरकशी करे। और इस सरकशी के दौरान खुदा के काश्दि पर्दे में रहकर ख़ामोशी के साथ उसके तमाम अक़वाल व अफ़आल (कथनी-करनी) को लिखते रहते हैं। यहां तक कि जब उसका वक़्त पूरा हो जाता है तो अचानक मौत का फ़रिश्ता जाहिर होकर उसे पकड़ लेता है कि उसे उसके आमाल का हिसाब देने के लिए खुदा के सामने हाज़िर कर दे।

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِ وَجَرْنَا بِكُمْ بِهِمْ دِرَاجًا
طَيِّبَةً وَفَرَّجْنَاهَا حَتَّىٰ تَرَىٰ مِنْ دُونِهَا عُاصِفًا وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا
أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ لَئِنْ أَجَبْنَاهُمْ مِنْ هَٰذَا لَنَكُونَنَّ
مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ فَلَمَّا أَجْنَحُوا إِذَا هُمْ يُبْعَثُونَ ۚ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ يَأْتِيهَا النَّاسُ
إِنَّمَا بُعِثُوا عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ تَتْلُو الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝

वह अल्लाह ही है जो तुम्हें खुशकी और तरी में चलाता है। चुनांचे जब तुम कश्ती में होते हो और कश्तियां लोगों को लेकर मुवाफिक हवा से चल रही होती हैं और लोग उससे खुश होते हैं कि यकायक तुंद हवा आती है और उन पर हर जानिव से मौजें उठने लगती हैं और वे गुमान कर लेते हैं कि हम घिर गए। उस वक्त वे अपने दीन को अल्लाह ही के लिए खालिस करके उसे पुकारने लगते हैं कि अगर तूने हमें इससे नजात दे दी तो यकीनन हम शुक्रगुजार बंदे बनेंगे। फिर जब वह उन्हें नजात दे देता है तो फौरन ही जमीन में नाहक की सरकशी करने लगते हैं। ऐ लोगो तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही खिलाफ है, दुनिया की जिंदगी का नफ़ा उठा लो, फिर तुम्हें हमारी तरफ लौट कर आना है, फिर हम बता देंगे जो कुछ तुम कर रहे थे। (22-23)

इंसान एक बेहद हस्सास (संवेदनशील) वजुद है। वह तकलीफ को बर्दाश्त नहीं कर सकता। यही वजह है कि इंसान पर जब तकलीफ का कोई लम्हा आता है तो वह फौरन संजीदा हो जाता है। उस वक्त उसके जेहन से तमाम मस्नूई (बनावटी) पर्दे हट जाते हैं। फिक्र के लम्हात में आदमी उस हकीकत का एतराफ कर लेता है जिसका एतराफ करने के लिए वह बेफिक्री के लम्हात में तैयार न होता था।

इसकी एक मिसाल समुद्र का सफर है। समुद्र में सुकून हो और कश्ती मंजिल की तरफ रवां हो तो उसके मुसाफिरों के लिए यह बड़ा खुशगवार लम्हा होता है। उस वक्त उनके अंदर एक झूठा एतमाद पैदा हो जाता है। वह समझ लेते हैं कि उनका मामला दुरुस्त है, अब उसे कोई बिगाड़ने वाला नहीं।

इसके बाद समुद्री हवाएं उठती हैं। पहाड़ जैसी मौजें मुसाफिरों को चारों तरफ से घेर लेती हैं। उनके दर्मियान बड़े से बड़ा जहाज भी मामूली तिके की तरह हिचकोले खाने लगता है। बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि अब हलाकत के सिवा दूसरा कोई अंजाम नहीं। उस वक्त खुदा के मुक़िर खुदा का इकरार कर लेते हैं। देवताओं को पूजने वाले खुदाएं वाहिद को पुकारना शुरू करते हैं। अपनी कुव्वत और अपनी तदबीर पर भरोसा करने वाले हर दूसरी चीज

को छोड़कर सिर्फ खुदा को याद करने लगते हैं। यह एक तजर्बाती सुबूत है कि तौहीद एक फितरी अकीदा है। तौहीद के सिवा दूसरे तमाम अकीदे बिल्कुल बेबुनियाद हैं।

यह तजर्बा बताता है कि खुदा को न मानने के लिए आदमी चाहे कितने ही फलसफे पेश करे, हकीकतन इस किस्म की तमाम बातें बेफिक्री की नजरियासाज हैं। इंसान अगर जाने कि दुनिया के मौके महज वक्ती तौर पर उसे इस्तेहान के लिए दिए गए हैं तो वह फौरन संजीदा हो जाए। उसके जेहन से तमाम मस्नूई दीवारें गिर जाएं और एक खुदा को मानने के सिवा उसके लिए कोई चारा न रहे।

वह वक्त आने वाला है जब इंसान खुदा के जलाल को देखकर कांप उठे और तमाम खुदाई बातों का इकरार करने पर मजबूर हो जाए। मगर अकलमंद वह है जो मौजूदा जिंदगी के तजर्बात में आने वाली जिंदगी की हकीकतों को देख ले और आज ही उस बात को मान ले जिसे वह कल मानने पर मजबूर होगा। मगर कल का मानना उसके कुछ काम न आएगा।

إِنَّمَا مِثْلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ
مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ
أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَدِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فْجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا
كَانَ لَمْ تَعْنِ بِالْأَمْسِ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

दुनिया की जिंदगी की मिसाल ऐसी है जैसे पानी कि हमने उसे आसमान से बरसाया तो जमीन का सच्चा खूब निकला जिसे आदमी खाते हैं और जिसे जानवर खाते हैं। यहां तक कि जब जमीन पूरी रौनक पर आ गई और संवर उठी और जमीन वालों ने गुमान कर लिया कि अब यह हमारे काबू में है तो अचानक उस पर हमारा हुक्म रात को या दिन को आ गया, फिर हमने उसे काट कर ढेर कर दिया गोया कल यहां कुछ था ही नहीं। इस तरह हम निशानियां खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो गौर करते हैं। (24)

दुनिया की जिंदगी इस्तेहान के लिए है। इसलिए यहां इंसान को मुकम्मल आजादी और हर किस्म के खुले मौके दिए गए हैं। बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि इंसान आजाद है कि जो चाहे करे और जिस किस्म का मुस्तकबिल चाहे अपने लिए बनाए। मगर इन्हीं हालात के दौरान ऐसे वाक्यात भी रख दिए गए हैं जो सोचने वालों के लिए नसीहत का काम करते हैं, जो इस हकीकत की निशानदेही कर रहे हैं कि यह सब कुछ महज वक्ती है और बहुत जल्द उससे छिन जाने वाला है।

इन्हीं में से एक जमीन की सरसब्जी का वाक्या है। जब बारिश होती है तो जमीन हर किस्म की नबातात से लहलहा उठती है। आदमी उन्हें देखकर खुश होता है। वह समझने लगता है कि मामला पूरी तरह उसके काबू में है और बहुत जल्द वह तैयार फसल का मालिक

बनने वाला है। ऐन उस वक्त अचानक कोई आफत आ जाती है। मसलन बगीला आ गया, ओले पड़ गए, टिड्डी दल पहुंच गया और एक लम्हे में सारी फसल का खात्मा कर दिया।

यही हाल इंसानी जिंदगी का है। आदमी एक उम्मा जिस्म लेकर पैदा होता है। दुनिया के असबाब उसका साथ देते हैं और वह अपने लिए एक कामयाब और शानदार जिंदगी बना लेता है। अब उसके अंदर एक एतमाद पैदा हो जाता है। वह समझता है कि उसका मामला उसके अपने इस्तिथार में है। इसके बाद किसी दिन या किसी रात में अचानक उसकी मौत आ जाती है। अपने आपको बाइस्तिथार समझने वाला यकायक अपने को इस हाल में पाता है कि मजबूरी और बेइस्तिथारी के सिवा उसके पास और कोई सरमाया नहीं। आदमी अगर इस हकीकत को सामने रखे तो वह दुनिया में कभी सरकश न बने, वह कभी किसी के साथ जुम व बेस्माफी का तरीका इस्तिथार न करे।

وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝
اَحْسِنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ اُولَٰئِكَ اَصْحَابُ
الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ يَبْتَثِلُهَا وَتَرَهُمْ مُّسْمَرَةً
ذُلَّةً ۖ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۖ كَانَمَا اَغْشَيْتْ وُجُوهَهُمْ قُطْعًا مِّنَ النَّارِ
مُظْلِمًا ۖ اُولَٰئِكَ اَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

और अल्लाह सलामती (शांति) के घर की तरफ बुलाता है और वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है। जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए भलाई है और उससे अधिक भी। और उनके चेहरों पर न स्याही छाएगी और न जिल्लत। यही जन्नत वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। और जिन्होंने बुराइयां कमाई तो बुराई का बदला उसके बराबर है। और उन पर रुस्वाई छाई हुई होगी। कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न होगा। गोया कि उनके चेहरे अंधेरी रात के टुकड़ों से ढांक दिए गए हैं। यही लोग दोजख वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (25-27)

दुनिया के जहरी हालात से आदमी धोखा खा जाता है। वह वकती चीज को मुस्तकिल चीज समझ लेता है। उसका ख्याल यह हो जाता है कि खुशियों और राहतों की जिंदगी जो वह चाहता है वह उसे इसी मौजूदा दुनिया में हासिल हो सकती है। मगर इंसानी आरजुओं की दुनिया दरअसल आखिरत में बनने वाली है और उसे वही शख्स पाएगा जो खुदा के बताए हुए तरीके के मुताबिक उसे हासिल करने की कोशिश करे।

दुनिया में आदमी बिलफर्ज सब कुछ हासिल कर ले तब भी वह इस पर कदिर नहीं कि अपनी जिंदगी को दुख और गम से पाक कर सके। यहां हर खुशी के साथ कोई अंदेशा लगा हुआ है। यहां की हर कामयाबी बहुत जल्द किसी दुख की नज़ हो जाती है। दुख और रंज से

खाली जिंदगी एक ऐसी अनोखी जिंदगी है जो सिर्फ जन्नत के माहौल में आदमी को हासिल होगी। जो लोग इस राज को पा लें वही वे लोग हैं जो जन्नत का रास्ता इस्तिथार करेंगे और बिलआखिर खुदा की अबदी जन्नतों में पहुंचेंगे।

राहत और खुशी की जिंदगी जो इंसान को बेहद मरगूब (प्रिय) है वह खुदा के वफादार बंदों को कामिल तौर पर जन्नत में मिलेगी। मगर राहत और खुशी का एक और दर्जा है जो मारुफ राहतों और खुशियों से बहुत बुलन्द है। यह मालिक कायनात का दीदार है जो अहले जन्नत को खुसूसी तौर पर हासिल होगा। जो खुदा राहतों और लज्जतों का खालिक है वह यकीनी तौर पर तमाम राहतों और लज्जतों का सबसे बड़ा खजाना है। हदीस में आया है कि जब जन्नत वाले जन्नत में और दोजख वाले दोजख में दाखिल हो चुके होंगे तो एक पुकारने वाला पुकारेगा। ऐ जन्नत वालो, तुम्हारे लिए खुदा का एक वादा बाकी है जिसे अब वह पूरा करना चाहता है। जन्नत वाले यह सुनकर कहेंगे कि वह क्या है। क्या हमारे पलड़े भारी नहीं कर दिए गए। क्या हमारे चेहरों को रोशन नहीं कर दिया गया। क्या खुदा ने हमें जन्नत में दाखिल नहीं कर दिया और हमें आग से नहीं बचा लिया। इसके बाद उनके ऊपर से हिजाब उठा लिया जाएगा और वे अपने रब को देखने लगेंगे। पस खुदा की कसम कोई नेमत जो खुदा ने उन्हें दी है वह उनके लिए खुदा को देखने से ज्यादा महबूब न होगी और न उससे ज्यादा उनकी आंखों को ठंडी करने वाली होगी। (तफसीर इब्नेकसीर)

आदमी के लिए इससे ज्यादा सख्त हालत और कोई नहीं कि वह एक ऐसी बेबसी से दो चार हो जो अबदी है। वह अपने आपको एक ऐसी नाकामी में पड़ा हुआ पाए जो दुबारा कामयाबी में तब्दील नहीं हो सकती। जो लोग आखिरत में जहन्नम के बाशिंदे करार दिए जाएंगे वह इसी हालत से दो चार होंगे। उनके चेहरे शदीद मायूसी की वजह से ऐसे काले हो जाएंगे गोया कि वे तह-ब-तह अंधेरे में डूब गए हैं। आदमी को अगरचे उसकी बुराई का बदला इतना ही दिया जाएगा जितना उसने बुराई की है। मगर अबदी महरूमी का एहसास उसके लिए इतना सख्त होगा कि उसका चेहरा तक इसकी वजह से स्याह पड़ जाएगा।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ فَزَلَّلْنَا
بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ مَا كُنْتُمْ إِذَا نَا تَعْبُدُونَ ۖ فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا ۖ بَيَّنَّنَا
وَبَيَّنَّا لَكُمْ أَنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ غَافِلِينَ ۖ هُنَالِكَ تَبْلُو كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ
وَرُدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمْ الْحَقُّ وَصَلَّ عَلَیْهِمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे, फिर हम शिर्क करने वालों से कहेंगे कि ठहरो तुम भी और तुम्हारे बनाए हुए शरीक भी। फिर हम उनके दर्मियान तफरीक (विभेद) कर देंगे और उनके शरीक कहेंगे कि तुम हमारी इबादत तो नहीं करते थे। अल्लाह हमारे दर्मियान गवाही के लिए काफी है। हम तुम्हारी इबादत से बिल्कुल बेखबर थे। उस वक्त हर शख्स अपने उस अमल से दो चार होगा जो उसने किया था

और लोग अल्लाह अपने मालिके हकीमी की तरफ लौटाए जाएंगे और जो झूठ उन्हीं गढ़े थे वे सब उनसे जाते रहेंगे। (28-30)

शिक का पूरा कारोबार झूठी उम्मीदों पर कायम होता है, वे वाक्यात जो खुदा के किए से हो रहे हैं उन्हें आदमी झूठे माबूदों की तरफ मंसूब कर देता है और इस तरह खुदसाख्ता तसव्वुर के तहत उन्हें अपनी अकीदत व परस्तिश का मर्कज बना लेता है, अपने इन माबूदों के ऊपर उसका एतमाद इतना बढ़ता है कि वह समझ लेता है कि आखिरत में भी वे जरूर खुदा के मुकाबले में उसके मददगार बन जाएंगे। और उसे खुदा की पकड़ से बचा लेंगे।

ये सरासर झूठी उम्मीदें हैं। मगर दुनिया की जिंदगी में उनका झूठ होना जाहिर नहीं होता क्योंकि यहां इस्तेहान की वजह से हर चीज पर ग़ैब का पर्दा पड़ा हुआ है। यहां आदमी को मय्यद है कि वह वाक्यात को अपने फर्जी माबूदों की तरफ मंसूब करे और इस तरह उनकी माबूदियत पर मुतमइन हो जाए। मगर आखिरत में सारी हकीकतें खुल जाएंगी। वहां मालूम होगा कि इस कायनात में एक खुदा के सिवा किसी को कोई जोर हासिल न था।

मौजूदा दुनिया में आदमी इस खुशफहमी में जी रहा है कि वह अपने बड़ों या अपने माबूदों की मदद से आखिरत के मरहले में कामयाब हो जाएगा। मगर आखिरत में अचानक उस पर खुलेगा कि उसका एतमाद सरासर झूठ था। यहां किसी को सिर्फ वही मिलेगा जो उसने खुद किया था। फर्जी सहारे वहां इस तरह गायब हो जाएंगे जैसे कि उनका कोई वजूद ही न था।

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَتَنْ يَبْلُوكَ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدْبِرُ الْأُمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ قَدْ لَكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَبِأَذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ ۝ كَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

कहो कि कौन तुम्हें आसमान और जमीन से रोजी देता है। या कौन है जो कान पर और आंखों पर इस्त्रियार रखता है। और कौन बेजान में से जानदार को और जानदार में से बेजान को निकालता है। और कौन मामलात का इतिजाम कर रहा है। वे कहेंगे कि अल्लाह। कहो कि फिर क्या तुम डरते नहीं। पस वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार (पालनहार) हकीमी है। तौफीक के बाद भटकने के सिवा और क्या है, तुम किशर फिरे जाते हो, इसी तरह तैरे ख की बात सरकशी करने वालों के हक में पूरी हो चुकी है कि वे ईमान न लाएंगे। (31-33)

इंसान को रिक्की की जरूरत है। यह रिक्की इंसान को कैसे मिलता है। कायनात के मज्मूअ अमल से। सारी कायनात हददर्जा हमआहंगी (सामंजस्य) के साथ एक खास रुख पर अमल करती है। तब यह मुमकिन होता है कि इंसान के लिए वह रिक्की फराहम हो जिसके बौर उसका वजूद इस जमीन पर मुमकिन नहीं। खुदाई के मफरूज़ा शरीक या देवी देवता खुद मुश्कीन के अक्दीदे के मुताबिक, इंसान के लिए रिक्की फराहम नहीं कर सकते। क्योंकि हर मफरूज़ा (काल्पनिक) शरीक किसी जुज का माबूद है, और जुज (अंश) का माबूद कभी ऐसे वाक्ये को जहू में नहीं ला सकता जो कुल अज्ज की मुयाफिकत से जहू में आता हो।

इसी तरह मसलन इंसान के अंदर कान और आंख जैसी हैरतअंगेज सलाहियतें हैं। वे भी किसी देवता की दी हुई नहीं हो सकतीं। देवी देवता या तो खुद इन सलाहियतों से महरूम हैं या अगर किसी मफरूज़ा (काल्पनिक) माबूद के अंदर ये सलाहियतें हों तो वह उनका खालिक नहीं। यहां तक कि खुद उससे ये सलाहियतें कैसे ही छिन जाती हैं जैसे आम इंसानों से छिन जाती हैं। इसी तरह बेजान चीजों में जान डालना और जानदार को बेजान कर देना भी मफरूज़ा माबूदों के लिए मुमकिन नहीं। न इसका कोई सुबूत है और न कोई पूजने वाला इनके बारे में इस किस्म का अकीदा रखता है। फिर कैसे मुमकिन है कि ये चीजें उन माबूदों से इंसान को मिलें।

कैसी अजीब बात है कि इंसान एक बड़े खुदा को मानता है। इसके बावजूद वह खुदा की तरफ ऐसी बातें मंसूब करता है जो उसकी तमाम आला सिफात को नकार दें। इसकी वजह यह है कि उसे खुदा का डर नहीं। झूठे ख्यालात के जरिए उसने अपने आपको यह तसल्ली दे ली है कि खुदा उससे बाजपुर्स (पूछगछ) करने वाला नहीं। और अगर बाजपुर्स की नौबत आई तो उसकी मदद पर ऐसी हस्तियां हैं जो खुदा के यहां सिफारिश करके उसे बचा लें। डर आदमी को संजीदा बनाता है। जब किसी के दिल से डर निकल जाए तो उसे ग़ैर मुसिफाना (अन्यायपूर्ण) रवैया इस्त्रियार करने से कोई चीज रोक नहीं सकती। ऐसा आदमी सरकश हो जाता है। और सरकश आदमी कभी सच्चाई का एतराफ नहीं करता।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدُو الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ قُلِ اللَّهُ يَبْدُو الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ ۝ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ أَفَمَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمْ مَنْ لَا يَهْدِي إِلَّا الْإِطْطَاءَ لِلْإِنِّ الطَّنِ أَنْ يَهْدِي فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝ وَمَا يَكْبَهُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا لِلْإِنِّ الطَّنِ لَا يَغْنَى مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۝ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝

कहो, क्या तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों में कोई है जो पहली बार पैदा करता हो फिर वह दुबारा भी पैदा करे। कहो, अल्लाह ही पहली बार भी पैदा करता है फिर वही दुबारा भी पैदा करेगा। फिर तुम कहां भटके जाते हो। कहो, क्या तुम्हारे शरीकों में कोई है

जो हक की तरफ रहनुमाई करता हो, वह दो कि अल्लाह ही हक की तरफ रहनुमाई करता है। फिर जो हक की तरफ रहनुमाई करता है वह पैखी किए जाने का मुस्तहिक है या वह जिसे खुद ही रास्ता न मिलता हो बल्कि उसे रास्ता बताया जाए। तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा फैसला करते हो। उनमें से अक्सर सिर्फ गुमान की पैखी कर रहे हैं। और गुमान हक बात में कुछ भी काम नहीं देता। अल्लाह को खूब मालूम है जो कुछ वे करते हैं। (34-36)

अल्लाह के सिवा जिनको खुदाई का मकाम दिया जाता है, चाहे वे इंसान हों या गैर इंसान, कोई भी यह ताकत नहीं रखता कि वह किसी गैर मौजूद को मौजूद कर दे। यह सिर्फ अल्लाह है जिसके लिए तख्तीक का अमल साबित है। और जब तख्तीक का अमल एक बार अल्लाह के लिए साबित है तो इसी से यह भी साबित हो जाता है कि वह इसे दुबारा कर सकता है और करेगा। फिर जब वजूदे अव्वल और वजूदे सानी दोनों का इख्तियार सिर्फ एक अल्लाह को है तो दूसरे शरीकों की तरफ तवज्जोह लगाना बिल्कुल अवस (व्यर्थ) है। इनसे आदमी न अपनी पहली ज़िंदगी में कुछ पाने वाला है और न दूसरी ज़िंदगी में।

यही मामला रहनुमाई का है। 'अल्लाह रहनुमाई करता है' यह चीज पैगम्बरों की हिदायत से साबित है। पैगम्बरों ने जिस हिदायत को खुदाई हिदायत कह कर इंसान के सामने पेश किया वह मुसल्लम तौर पर एक हिदायत है। इसके बरअक्स शरीकों का हाल यह है कि वे या तो सिर से इस कबिल नहीं कि वे इंसान को हक और नाहक के बारे में कोई इल्म दें (मसलन बुत) या वे अपनी कमियों और महदूदियों की वजह से खुद रहनुमाई के मोहताज हैं, कुजा कि वे दूसरों को वाकई रहनुमाई फराहम करें (मसलन इंसानी माबूद)। जब सूरतेहाल यह है तो इंसान को सिर्फ एक खुदा की तरफ रुजू करना चाहिए न कि फर्ज शरीकों की तरफ।

शिक का कारोबार किसी वाकई इल्म पर कायम नहीं है बल्कि वह मफरूजत और कयासात (अनुमानों) पर कायम है। कुछ हस्तियों के बारे में बेबुनियाद तौर पर यह राय कायम कर ली गई है कि वे खुदाई सिफात के हामिल हैं। हालांकि इतनी बड़ी राय किसी हकीमी इल्म की बुनियाद पर कायम की जा सकती है न कि महज अटकल और कयास की बुनियाद पर।

وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقُ
الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَمْ يَقُولُونَ
افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ بَلْ كَذَّبُوا بِآيَاتِهِ يَحِيْطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَا إِلَهُهُمْ تَأْوِيلُهُ
كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝

और यह कुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा कोई इसको बना ले। बल्कि यह तस्कि (पुष्टि) है उन पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) की जो इसके पहले से मौजूद हैं। और किताब की तफ्सील है, इसमें कोई शक नहीं कि वह खुदावदे आलम की तरफ से है। क्या लोग कहते हैं कि इस शख्स ने इसको गढ़ लिया है। कहो कि तुम इसकी मानिंद कोई सूरह ले आओ। और अल्लाह के सिवा तुम जिसे बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। बल्कि ये लोग उस चीज को झुठला रहे हैं जो उनके इल्म के इहते में नहीं आई। और जिसकी हकीकत अभी उन पर नहीं खुली। इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया जो इनसे पहले गुजरे हैं, पस देखो कि जालिमों का अंजाम क्या हुआ। (37-39)

कुरआन अपनी दलील आप है कुरआन का मोमैन्न (विशिष्ट) अंजाम कलाम इतिहाई तौर पर नाकबिले तस्कीद (अनुकरणीय) है, और यही वाक्या यह साबित करने के लिए काफी है कि कुरआन एक गैर इंसानी कलाम है। अगर वह किसी इंसान का कलाम होता तो यकीनन दूसरे इंसानों के लिए भी यह मुमकिन होना चाहिए था कि वे अपनी कोशिश से वैसा ही एक कलाम बना लें।

कुरआन के कलामे इलाही होने का दूसरा सबूत यह है कि वह उन पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) की तस्दीक है जो उसके बारे में पहले से आसमानी सहीफों में मौजूद हैं। आसमानी तालीमात की हामिल कौमों पहले से एक आखिरी हिदायतनामा की मुंतजिर थीं। कुरआन उसी इंतजार का जवाब बनकर आया है, फिर इसमें शक करने की क्या जरूरत। मजीद यह कि वह 'किताब' की तफ्सील है। यानी वह इलाही तालीमात जो तमाम आसमानी किताबों का खुलासा हैं उन्हीं को वह सही और बेआमेज (विशुद्ध) रूप में पेश करता है। यह एक वाजेह करीना (संकेत) है जिससे जहिर होता है कि कुरआन उसी खुदा की तरफ से आया है जिसकी तरफ से पिछली आसमानी किताबें आई थीं।

जब कोई शख्स कहता है कि कुरआन एक इंसानी तस्नीफ (रचना) है तो वह अपने दावे को एक ऐसे मैदान में लाता है जहां उसे जांचना आसान हो। क्योंकि वह अपनी या दूसरों की इंसानी सलाहियों को काम में लाकर कुरआन जैसी एक किताब या उसके जैसी एक सूरह तैयार कर सकता है। और इस तरह अमली तौर पर इस दावे को रद्द कर सकता है कि कुरआन खुदाई जेहन से निकली हुई किताब है। मगर कुरआनी चैलेंज के बावजूद किसी का ऐसा न कर सकना आखिरी तौर पर साबित कर रहा है कि कुरआन को इंसानी किताब कहने वालों का दावा दुरुस्त नहीं।

कुरआन की सदाकत के ये दलाइल ऐसे नहीं हैं कि आदमी उन्हें समझ न सके। अस्त यह है कि कुरआन को झुठलाने के नताइज से वे बेखौफ हैं। उन्हें यह डर नहीं कि कुरआन का इंकार करके वे किसी अजाब की पकड़ में आ जाएंगे। उनकी मुखालिफाना रविश की वजह वह गैर संजीदगी है जो उनकी बेखौफी की वजह से पैदा हुई है न कि किसी किस्म का अक्ली और इस्तदाली (तर्कपूर्ण) इल्मीनान।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْفَاسِقِينَ ۝
وَأَن كَذَّبُوكَ فَقُلْ إِنِّي عَبْدٌ لِّمِثْلِ عَمَلِي ۖ وَلكُمْ عَلَيْكُمْ أَنْتُمْ بَرِيءُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ
مِّمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا
لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا
يُبْصِرُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَكِنَّ النَّاسَ أَنفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

और उनमें से वे भी हैं जो कुरआन पर ईमान ले आएंगे और वे भी हैं जो उस पर ईमान नहीं लाएंगे। और तेरा ख मुफ्फिदों (उपद्रवियों) को खूब जानता है। और अगर वे तुम्हें झुठलाते हैं तो कह दो कि मेरा अमल मेरे लिए है और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। तुम उससे बरी हो जो मैं करता हूँ और मैं उससे बरी हूँ जो तुम कर रहे हो। और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे जबकि वे समझ से काम न ले रहे हों। और उनमें से कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ देखते हैं तो क्या तुम अंधों को रास्ता दिखाओगे अगरचे वे देख न रहे हों। अल्लाह लोगों पर कुछ भी जुल्म नहीं करता मगर लोग खुद ही अपनी जानों पर जुल्म करते हैं। (40-44)

ईमान न लाने वाले खुदा की नजर में मुफ्फिद (उपद्रवी) हैं। क्योंकि अपनी फितरत को बिगाड़ कर ही किसी के लिए यह मुमकिन होता है कि वह हक को कुबूल करने से बाज रहे। ऐसा आदमी अपने जमीर की आवाज को दबाता है, वह अपने सोचने की सलाहियत को इस्तेमाल नहीं करता, वह खुले खुले दलाइल को झूठे अल्फाज बोल कर नजरअंदाज कर देता है, वह सुनकर नहीं सुनता और समझने के बावजूद समझने की कोशिश नहीं करता, वह हक के मुकाबले में अपने तसस्सुबात (विद्वेष) और अपने मफ़ादात (स्वार्थी) को तरजीह देता है।

बहस व मुनाजिरा करने वाले लोग आखिर वक्त तक अपनी बहस जारी रखते हैं। 'मेरा मामला मेरे साथ है और तुम्हारा मामला तुम्हारे साथ' इस किस्म का जुमला कहना उन्हें अपनी शिकस्त नजर आता है, मगर दाजी फ़तह व शिकस्त की नफ़िसयात से बुलन्द होकर काम करता है, इसलिए जब वह देखता है कि मुखातब ज़िद और हठधर्मी पर उतर आया है और मज़ीद बात करने का कोई फ़ायदा नहीं तो वह यह कह कर अलग हो जाता है कि अस्ल फ़ैसला अल्लाह के यहां होना है। खुदा की मीज़ान (तुला) में जो शख्स जैसा निकलेगा वैसा ही उसका अंजाम होगा।

हक को न मानने वालों में एक तबका वह है जो शुरू से अपना मुँक़िर होना जाहिर कर देता है। मगर ज्यादा हेशियार किस्म के लोग यह करते हैं कि बजाहिर वे बातों को इस तरह सुनते हैं गोया कि वे सचमुच समझना चाहते हैं। हालांकि उनके दिल में यह होता है कि इसको

समझना नहीं है। वे दाजी की सदाकत की निशानियों को इस तरह देखते हैं जैसे वे खुले दिल से उनका मुशाहिदा करना चाहते हैं। हालांकि उनका जेहन पहले से यह तै किए हुए होता है कि उसे देखना और मानना नहीं है। ऐसे लोगों की जाहिरी सादगी से दाजी इस ख़ुशगुमानी में पड़ जाता है कि वे कुबूलियते हक के करीब हैं। मगर खुदा की नजर में वे ऐसे लोग हैं जो कान रखते हुए बहरे और आंख रखते हुए अंधे बन जाएं। ऐसे लोगों को कभी खुदा की तरफ से कुबूल हक की तैमिन् नहीं मिलती।

खुदा ने इंसान को बेहतरीन सलाहियतें दी हैं। अगर वह इन सलाहियतों को इस्तेमाल करे तो वह कभी गुमराह न हो। मगर इंसान अपने को आजाद पाकर ग़लतफ़हमी में पड़ जाता है। वह बेजा सरकशी करने लगता है। ऐसा इसलिए होता है कि उसने खुदा की स्कीम को नहीं समझा, जो चीज उसे आजमाइश के तौर पर दी गई थी उसे उसने अपना हक समझ लिया।

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ كَانَ لَرُبِّكَ شَؤْلًا ۖ أَلَا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ ۚ بَيْنَهُمْ قَدْ
خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا مُهْتَدِينَ ۝ وَإِنَّا لَنُرِيكَ بَعْضَ
الَّذِينَ نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَقَّعُكَ ۖ وَاللَّيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ۝
وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ فَخُذُوا بِبُرْهَانِ الْفَسْطِ وَهُمْ لَا
يُظْلَمُونَ ۝

और जिस दिन अल्लाह उन्हें जमा करेगा, गोया कि वे बस दिन की एक घड़ी दुनिया में थे। वे एक दूसरे को पहचानेंगे। बेशक सज़ा घाटे में रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और वे राहेरास्त (सन्मार्ग) पर न आए। हम तुम्हें उसका कोई हिस्सा दिखा दें जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं या तुम्हें वफात (मौत) दे दें, बहरहाल उन्हें हमारी ही तरफ लौटना है, फिर अल्लाह गवाह है उस पर जो कुछ वे कर रहे हैं। और हर उम्मत के लिए एक रसूल है। फिर जब उनका रसूल आ जाता है तो उनके दर्मियान इंसाफ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है और उन पर कोई जुल्म नहीं होता। (45-47)

आज आख़िरत इंसान के सामने नहीं है। आज एक देखने वाले को उसे तसव्वुर की निगाह से देखना पड़ता है। इसलिए जो शख्स आख़िरत के मामले में संजीदा न हो उसे आख़िरत बहुत दूर की चीज मालूम होगी। मगर जब आख़िरत सबसे बड़ी हकीकत की हैसियत से इंसान के ऊपर टूट पड़ेगी और वह उसे उसकी तमाम संगीनियों के साथ अपनी आंख से देखने लगेगा, उस वक्त वह अपनी मौजूदा सरकशी को भूल जाएगा, उस वक्त उसे दुनिया के वे लम्हात बहुत हकीर (तुच्छ) मालूम होंगे जिनकी वजह से वह ग़फलत में पड़ गया था और आख़िरत के बारे में सोचने पर तैयार न होता था।

आख़िरत किसी अजनबी दुनिया में वाकेअ (घटित) नहीं होगी बल्कि हमारी जानी

पहचानी दुनिया में वाकेअ होगी। वहां आदमी अपने आपको उसी माहौल में पाएगा जिस माहौल में उसने इससे पहले हक का इंकार किया था, वह अपने आपको उन्हीं लोगों के दर्मियान देखेगा जिनके बल पर वह सरकशी करता था मगर उस दिन वे लोग उसके कुछ काम न आएंगे। उस वक्त हर बात उसके जेहन में इस तरह ताजा होगी गोया उस पर कोई मुद्दत गुजरी ही नहीं।

दाजी और मदऊ का मामला आसमान के नीचे पेश आने वाले तमाम मामलात में सबसे ज्यादा नाजुक मामला है। दाजी (आह्वानकत्ती) अगर फिलवाकअ हक को लेकर उठ है तो वह इस दुनिया में खुदा का नुमाइंदा है। उसका इकरार खुदा का इकरार है और उसका इंकार खुदा का इंकार है। ऐसा एक वाक्या अंजाम से खाली नहीं हो सकता। हक के दाजी के जूहर के बाद लाजिमन ऐसा होता है कि उसकी जवान से जारी होने वाले रब्वानी कलाम के सामने तमाम लोग बेदलील होकर रह जाते हैं। यह बातिल के ऊपर हक की पहली फतह है। दूसरी फतह आखिरत में होगी जबकि उसके मुखलिफिन खुदा के इज्ज (इच्छा) से उसके मुक़बले में केजोर होकर रह जाएंगे। पहला वाक्या लाजिमी तौर पर इसी दुनिया में पेश आता है और दूसरा वाक्या भी जुजई (आंशिक) तौर पर मौजूदा दुनिया में जाहिर होता है अगर खुदा उसे मौजूदा दुनिया में जाहिर करना चाहे।

यह मामला हर गिरोह के साथ पेश आना लाजिमी है जबकि वह बराहेरास्त खुदा के सामने खड़ा होने से पहले मौजूदा दुनिया में बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर खुदा के नुमाइंदे के सामने खड़ा किया जाए। इस तरह खुदा देखता है कि कौन है जो इस वक्त अपने आपको खुदा के हवाले कर देता है जबकि खुदा अभी ग़ैब में है और कौन है जो ऐसा नहीं करता। पहली किस्म के लोगों के लिए जन्नत है और दूसरी किस्म के लोगों के लिए दोज्ख।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١﴾ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي خَرًّا
وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَخْرُونَ
سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ﴿٢﴾ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن آتَاكُمْ عَذَابٌ بَيِّنًا أَوْ هَٰذَا مِمَّا
ذَٰلِكُمْ تَسْتَعْجِلُ مِنْهُ النُّجُمُونَ ﴿٣﴾ ثُمَّ إِذَا مَآ وَقَعَ أَمْنْتُمْ بِهِ ۖ أَلَمْ يَكُنْ لَكُمْ بِهِ
تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٤﴾ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ ۖ هَلْ تُنْجَوْنَ
إِلَّا بِهَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥﴾

और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो मैं अपने वास्ते भी बुरे और भले का मालिक नहीं, मगर जो अल्लाह चाहे। हर उम्मत के लिए एक वक्त है। जब उनका वक्त आ जाता है तो फिर न वे एक घड़ी पीछे होते और न आगे। कहो कि बताओ, अगर अल्लाह का अजाब तुम पर रात को आ पड़े या दिन को आ जाए

तो मुजरिम लोग इससे पहले क्या कर लेंगे। फिर क्या जब अजाब वाकेअ (घटित) हो चुकेगा तब उस पर यकीन करेंगे। अब कयल हुए और तुम इसी का तक्ज़ज करते थे, फिर जालिमों से कहा जाएगा कि अब हमेशा का अजाब चखो। यह उसी का बदला मिल रहा है जो कुछ तुम कमाते थे। (48-52)

इंसान मौजूदा दुनिया में अपने को आजाद पाता है। वह बजाहिर देखता है कि वह जो चाहे करे, कोई उसे पकड़ने वाला नहीं, कोई उसे सजा देने वाला नहीं। यह सूरतेहाल उसे भुलावे में डाल देती है। यहां तक कि खुदा का दाजी जब उसे उसके अमल के अंजाम से डराता है तो वह खुदा के दाजी का मजाक उड़ाने लगता है। वह कहता है हमारी सरकशी पर तुम जिस अजाब की धमकी दे रहे हो वह कब पूरी होगी।

इस किस्म की बातों का सबब नादानी के सिवा और कुछ नहीं। क्योंकि यह पकड़ खुदा हक के दाजी की तरफ से आने वाली नहीं है बल्कि खुदा की तरफ से आने वाली है। और खुदा हर आन अपनी दुनिया में बता रहा है कि उसका तरीका जल्दी का तरीका नहीं।

कश्ती में सुराख हो और कोई मल्लाह उसकी परवाह न करते हुए अपनी कश्ती को दरिया में डाल दे तो खुदा का लाजिमी कानून है कि ऐसी कश्ती पानी में डूब जाए। मगर ऐसी कश्ती फौरन पानी में नहीं डूबती बल्कि खुदा की सुन्नत के मुताबिक अपने मुक़रर वक्त पर डूबती है। इस किस्म की मिसालें दुनिया में फैली हुई हैं जो इंसान को खुदाई सुन्नत का तआरुफ करा रही हैं मगर उन्हें देखने के बावजूद वह कहता है कि अगर इन आमांल पर खुदा का अजाब है तो वह अजाब जल्द क्यों नहीं आ जाता। इसकी वजह यह है कि इंसान खुदा की पकड़ के बारे में संजीदा नहीं।

जलजले और तूमन खुदाई वाक़ेयात हैं। ये वाक़ेयात बताते हैं कि जब मामला खुदा और इंसान के दर्मियान हो तो फ़ैसले का इख़्तियार तमामतर सिर्फ फ़रीके अवल (प्रथम पक्ष) को होता है। मगर इंसान इस पहलू पर ग़ौर नहीं करता। वह सिर्फ यह देखता है कि खुदा का कानून फौरन हरकत में नहीं आ रहा है और चूंकि वह फौरन हरकत में नहीं आता इसलिए वह ग़फलत में पड़ा रहता है। मगर जब खुदा का फ़ैसला आएगा तो उस वक्त इंसान अपने को बेबस पाकर सब कुछ मान लेगा। हालांकि उस वक्त का मानना कुछ काम न आएगा। क्योंकि वह अमल का अंजाम पाने का वक्त होगा न कि अमल करने का।

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقُّ هُوَ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٦﴾ وَلَوْ
أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ وَأَسْرُوا الشَّدَآءَ أُمَّةً
لِّمَا رَأَوْا الْعَذَابَ وَفُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٧﴾ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ
مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ أَلَا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨﴾
هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ وَاللَّهُ يُرْجِعُونَ ﴿٩﴾

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ
أَحَقُّ هُوَ قُلْ
إِي وَرَبِّي إِنَّهُ
لَحَقٌّ وَمَا أَنْتُمْ
بِمُعْجِزِينَ ﴿٦﴾

और वे तुमसे पूछते हैं कि क्या यह बात सच है। कहो कि हां मेरे रब की कसम यह सच है और तुम उसे थका न सकोगे। और अगर हर जालिम के पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है तो वह उसे फिदये (आर्थिक दंड) में दे देना चाहेगा और जब वे अजाब को देखेंगे तो अपने दिल में पछताएंगे। और उनके दर्मियान इंसाफ से फैसला कर दिया जाएगा और उन पर जुल्म न होगा। याद रखो जो कुछ आसमानों और जमीन में है सब अल्लाह का है, याद रखो अल्लाह का वादा सच्चा है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। वही जिंदा करता है और वही मारता है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (53-56)

अरब के लोगों से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि अगर तुमने अपनी इस्लाम न की तो तुम्हें आखिरत का अजाब पकड़ लेगा। इसके जवाब में वे आपकी बात का मजाक उड़ाने लगे। इसका मतलब यह नहीं है कि वे लोग आखिरत के मुंकिर थे। वे दरअसल पैगम्बर इस्लाम की तंबीह (चेतावनी) को बेवजन समझ रहे थे न कि खुद आखिरत को। पैगम्बर इस्लाम की अजमत उस वक्त तक मुसल्लम न हुई थी। उस वक्त आपके मुखातबीन आपको एक मामूली इंसान के रूप में देखते थे। उनकी समझ में न आता था कि ऐसे मामूली इंसान की बात न मानने से उन के ऊपर खुदा का अजाब कैसे आ जाएगा। उन्हें आपके खुदा के नुमाइंद होने पर शक था न कि खुद खुदा और आखिरत पर।

यह तकाबुल (तुलना) हकीकतन इकारे आखिरत और इंकारे आखिरत के दर्मियान था, बल्कि बड़ी शख्सियत के दीन और छोटी शख्सियत के दीन के दर्मियान था। वे माजी के मशहूर बुजुर्गों के साथ अपने को मंसूब करते थे। वे अपने आपको मुसल्लमा (सुस्थापित) शख्सियतों के दीन पर समझते थे। इसके मुकाबले में जब वे सामने के पैगम्बर को देखते तो वह उन्हें एक मामूली इंसान के रूप में नजर आता। उनकी समझ में न आता था कि तारीख की जिन बड़ी-बड़ी शख्सियतों के साथ वे अपने को वाबस्ता किए हुए हैं, उनसे वाबस्तगी उनके लिए बाइसे नजात (मुक्ति का साधन) न हो। बल्कि नजात के लिए यह जरूरी हो कि वे अपने आपको उस शख्स के साथ वाबस्ता करें जिसे बजाहिर कोई तकद्दुस और अजमत हासिल नहीं। यही वह नफिसयात थी जिसकी वजह से उन्हें यह जुरअत हुई कि वे आपका मजाक उड़ाएं।

आदमी एक हस्सास मख़ूक है। वह तकलीफ को बर्दाश्त नहीं कर सकता। दुनिया में जब तक उसे अजब का सामना नहीं है वह हक का मजाक उड़ाता है। वह उसे बेनियाजी के साथ ठुकरा देता है। मगर जब आखिरत का अजाब सामने होगा तो उस पर इतनी घबराहट तारी होगी कि सब कुछ उसे हकीर (तुच्छ) मालूम होने लगेगा। सारी दुनिया की दौलत और तमाम दुनिया की नेमत भी अगर उसके पास हो तो अजाब के मुकाबले में वह इतनी बेकीमत नजर आएगी कि वह चाहेगा कि सब कुछ देकर सिर्फ इतना हो जाए कि वह इस तकलीफ से नजात पा जाए।

मगर आखिरत का मसला कोई सौदेबाजी का मसला नहीं। वह तो अपने किए का अंजाम भुगतने का मसला है। जिंदगी और मौत के बारे में खुदा का जो मंसूबा है उसका यह लाजिमी जुज है। खुदाई इंसाफ का तकाज है कि वह हो। और खुदाई कुदरत इस बात की

जमानत है कि वह बहरहाल होकर रहेगा।

उसके पेश आने में जो कुछ देर है वह सिर्फ उस मुकर्ररह वक्त के आने की है जबकि मौजूदा इन्तेहान की मुददत ख़त्म हो और सारे इंसान खुदा के यहां अपने आखिरी अंजाम का फैसला सुनने के लिए हाजिर कर दिए जाएं।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ قُلْ يَفْضِلُ اللَّهُ وَرَحْمَتَهُ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ اللَّهُ إِذَنْ لَكُمْ أَمْرٌ عَلَى اللَّهِ تَقْتَرُونَ ۝ وَ مَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَهُ فَضْلٌ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝

ऐ लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से नसीहत आ गई और उसके लिए शिफा (निदान) जो सीनों में होती है और अहले ईमान के लिए हिदायत और रहमत। कहो कि यह अल्लाह के फज़ल और उसकी रहमत से है। अब चाहिए कि लोग खुश हों, यह उससे बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं। कहो, यह बताओ कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो रिख़ उतारा था, फिर तुमने उसमें से कुछ को हाराम ठहराया और कुछ को हलाल। कहो, क्या अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया है या तुम अल्लाह पर झूठ लगा रहे हो। और कियामत के दिन के बारे में उन लोगों का क्या ख़्याल है जो अल्लाह पर झूठ लगा रहे हैं। केशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फज़ल फरमाने वाला है, मगर अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (57-60)

इंसान एक नफिसयाती (मनोवैज्ञानिक) मख़ूक है। नफिसयात के बनने से वह बनता है और नफिसयात के बिगड़ने से वह बिगड़ जाता है। खुदा की किताब की सूरत में जो हिदायत उतरी है वह इंसान के लिए सरासर रहमत है। इसमें इंसान के लिए बेहतरीन नसीहत मौजूद है। मगर इस नसीहत को पाने के लिए जरूरी है कि आदमी ने अपनी रास्तफिक्री न खोई हो। जो शख्स अपनी रास्तफिक्री (सद्इच्छा) की सलाहियत को बिगाड़ ले, उसके लिए खुदा का नसीहतनामा बेअसर रहेगा।

मौजूदा दुनिया की चीजें और उसकी रैनकें आदमी के सामने 'नक्द' होती हैं। आदमी हर आन उनकी लज्जत और ख़ुबी का तजर्बा करता है, इसके मुक़ाबले में आखिरत की नेमतें सिर्फ 'वादे' की हैसियत रखती हैं। आदमी सिर्फ उनके बारे में सुनता है, वह उनका तजर्बा नहीं करता। इस बिना पर अक्सर लोग दुनिया की नक्द चीजों पर टूट पड़ते हैं। मगर जो शख्स गहराई के साथ सोचेगा वह इस बात पर खुश होगा कि खुदा ने अपनी हिदायत उतार कर उसके

लिए अबदी (चिरस्थायी) नेमतों के हुसूल का दरवाजा खोल दिया है।

अल्लाह ने जो कुछ इंसान को दिया है, चाहे वह जरई (कृषि) पैदावार की सूरत में हो या दूसरी सूरत में, सबका सब रिज्क है। आदमी अगर इन चीजों को खुदा का दिया हुआ समझे और खुदा के बताए हुए तरीके के मुताबिक उनमें तसर्रुफ करे तो उसके अंदर खुदा के शुक्र का जज्बा उभरेगा। मगर शैतान हमेशा इस कोशिश में रहता है कि वह इस निस्वत को बदल दे, ताकि इस 'रिज्क' के इस्तेमाल के वक्त आदमी को खुदा की याद न आए बल्कि दूसरी-दूसरी चीजों की याद आए। कदीम जमाने में शैतान ने पैदावार में मफरूज देवी देवताओं के मरासिम (रिति-रिवाज) मुकर्र किए ताकि आदमी उन्हें लेते हुए खुदा को याद न करे बल्कि देवी देवताओं को याद करे। मौजूदा जमाने में यही मकसद शैतान मादूदी तौहीहात (भौतिक तर्कों) के जरिए हासिल कर रहा है। वह खुदा की तरफ से मिलने वाली चीज को मादूदी अवामिल (भौतिक कारकों) के तहत मिलने वाली चीज बनाकर लोगों को दिखा रहा है ताकि लोग जब इन नेमतों को पाएं तो वे उसे खुदा का रिज्क न समझें बल्कि सिर्फ मादूदी का करिश्मा समझें।

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا
لَكُمْ عَلَيْكُمْ شُهُودًا أَذْفِيضُونَ فِيهِ وَمَا يَعْرُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالِ
ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ
مُبِينٍ ۝ الْإِنَّا أُولِيَاءُ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا
كَانُوا يَتَّقُونَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ لَا تَبْدِيلَ
لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَلَا يَحْزَنكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ
جَمِيعًا هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

और तुम जिस हाल में भी हो और कुरआन में से जो हिस्सा भी सुना रहे हो और तुम लोग जो काम भी करते हो, हम तुम्हारे ऊपर गवाह रहते हैं जिस वक्त तुम उसमें मशगूल होते हो। और तब से रब से जरा बराबर भी कोई चीज छुपी नहीं, न जमीन में और न आसमान में और न इससे छोटी न बड़ी, मगर वह एक वाजेह किताब में है। सुन लो, अल्लाह के दोस्तों के लिए न कोई ख़ौफ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और डरते रहे, उनके लिए खुशख़बरी है दुनिया की ज़िंदगी में भी और आख़िरत में, अल्लाह की बातों में कोई तब्दीली नहीं, यही बड़ी कामयाबी है। और तुम्हें उनकी बात ग़म में न डाले। जोर सब अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है। (61-65)

दावत (आहवान) इस दुनिया के तमाम कामों में मुश्किलतरीन काम है। दाजी (आहवानकर्ता) अपने पूरे वजूद को दावती अमल में शामिल करता है, इसके बाद ही यह मुमकिन होता है कि वह किसी पैग़ाम का दाजी बन सके। इससे भी ज्यादा सख़्त मरहला वह है जो मुखातबीन (संबोधित वर्ग) की तरफ से पेश आता है।

दाजी जब खुदा के दीन को बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में पेश करता है और उसे खुले दलाइल की जवान में सुस्पष्ट कर देता है तो वे तमाम लोग बिफर उठते हैं जो खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन को खुदा का दीन बताकर दीनदार बने हुए हों या दीनी पेशवाई का मकाम हासिल किए हुए हों। वे दाजी को जेर करने की कोशिश करते हैं। बेवुनियाद प्रोपेगंडा, साजिशें, यहां तक कि ज़ारिहाना (आक्रामक) कार्रवाइयां, हर चीज को वे अपने लिए जाइज कर लेते हैं। मौजूदा दुनिया में मिली हुई आजादी उन्हें मौक़ा देती है और वे दाजी के खिलाफ जो कुछ करना चाहते हैं करते चले जाते हैं। ये सूरतेहाल यहां तक पहुंचती है कि दलील की ताक़त तमामतर एक तरफ हो जाती है और भौतिक ताक़त तमामतर दूसरी तरफ।

यह सूरतेहाल बिलाशुबह बेहद सख़्त है। इसके बाद एक तरफ यह होता है कि मुख़ालिफीने हक के हासिले बढ़ते चले जाते हैं। वे अपने को कामयाब समझने लगते हैं। दूसरी तरफ दाजी पर भी यह ख़्याल गुजरता है कि क्या खुदा इस मामले में ग़ैर जानिबदार है। क्या वह मुझे हक व बातिल के इस मअरके में डाल कर खुद अलग हो गया है।

मगर ऐसा नहीं है। यह मुमकिन नहीं है कि खुदा हक का साथ न दे। मुख़ालिफीन का बेदलील हो जाना और दलील की कुव्वत का तमामतर दाजी की तरफ होना यही इस बात का सबूत है कि खुदा दाजी के साथ है न कि दूसरे ग़िरोह के साथ। क्योंकि दलील मौजूदा दुनिया में खुदा की नुमाइंदा है। जिसके साथ दलील है उसके साथ गोया खुदा है। हक के मुख़ालिफीन को ज़ारिहयत का मौक़ा सिर्फ उस आजादी की वजह से मिल रहा है जो इस्तेहान की ख़ातिर उन्हें दी गई है। इस्तेहानी दुनिया के ख़त्म होते ही यह सूरतेहाल बदल जाएगी। उस वक्त इज्जत व बरतरी उसके लिए होगी जो दलील की बुनियाद पर खड़ा हुआ था। जो लोग दलील से ख़ाली थे वे वहां की दुनिया में रुसवा और नाकाम होकर रह जाएंगे। अल्लाह के सच्चे दाबियों का ग़िरोह खुदा के दोस्तों का ग़िरोह है। अल्लाह उन्हें आख़िरत में एक ऐसी आला ज़िंदगी की खुशख़बरी देता है जहां न उन्हें पिछली ज़िंदगी के लिए कोई पछतावा होगा और न अगली ज़िंदगी के लिए कोई अदिशा।

الْإِنَّا لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَمَا يُتَّبَعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءُ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ هُوَ الَّذِي
جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يَسْمَعُونَ ۝

सुनो, जो आसमानों में हैं और जो जमीन में हैं सब अल्लाह ही के हैं। और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं वे किस चीज की पैरवी कर रहे हैं, वे सिर्फ गुमान की पैरवी कर रहे हैं और वे महज अटकल दौड़ा रहे हैं। वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम सुकून हासिल करो। और दिन को रोशन बनाया। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (66-67)

जमीन व आसमान के पीछे कौन है जो इसको संभाले हुए है और इसको चला रहा है। यह सवाल हर जमाने में इंसान की तलाश का मर्कजी नुक्ता रहा है। मगर इस सवाल का सही जवाब पाना उसी वक्त मुमकिन है जब आदमी मावराए तबीइयात (अलौकिक) दुनिया तक देख सके और इस दुनिया तक देखने वाली आंख किसी को हासिल नहीं। यही वजह है कि हर वह जवाब जो वह बतौर खुद कायम करता है वह महज कयास व गुमान की बुनियाद पर होता है न कि हकीकी इल्म की बुनियाद पर।

इस दुनिया में हकीकी इल्म की बुनियाद पर बोलने वाले सिर्फ वे लोग हैं जिनको पैगम्बर कहा जाता है। ये वे मखसूस लोग हैं जिनका रब्त आलमे बाला से बराहेरास्त कायम होता है। खुदा खुद उन्हें अपनी तरफ से हकीकत की खबर देता है। इसलिए इस दुनिया में पैगम्बर का इल्म ही वाहिद इल्म है जिस पर यकीनी तौर पर भरोसा किया जा सकता है।

पैगम्बरों के दावे की सदाकत को जांचने के लिए अगरचे हमारे पास कोई बराहेरास्त जरिया नहीं है। ताहम एक बिलवास्ता (परोक्ष) जरिया यकीनी तौर पर मौजूद है। और वह कायनात की आयात (निशानियां) हैं। ये निशानियां पैगम्बरों के बयानकर्दा मअनवी हकाइक की अमली तस्दीक कर रही हैं।

मिसाल के तौर पर हम देखते हैं कि हमारी जमीन पर रात के बाद दिन आता है और दिन के बाद रात आती है। यह गर्दिश एक इतिहाई मोहकम निजाम की वजह से वजूद में आती है जो रियाजयाती (गणितीय) सेहत की हद तक मुनज्जम है। मजौद यह कि यह गर्दिश हैतनाक हद तक हमारी जिद्दी के मुवाफिक है। इसके पीछे वाजेह तौर पर एक बामक़सद मंसूबा काम करता हुआ नजर आता है। यह सूरतेहाल यकीनी तौर पर एक ऐसे क़दिर मुतलक और रहमान व रहीम के वजूद का सुबूत है जिसकी खबर पैगम्बर देते हैं।

जो लोग अपने ख्याल के मुताबिक 'शरीकों' की पैरवी कर रहे हैं, वे शुरका (साझीदार) चाहे कदीम इलाहियाती (पुरातन दैवीय) शुरका हों या जदीद माद्दी (आधुनिक भौतिक) शुरका वे किसी वाकई हकीकत की पैरवी नहीं कर रहे हैं। बल्कि सिर्फ अपने कयास व गुमान की पैरवी कर रहे हैं। पैगम्बरों के जरिए जाहिर होने वाली हकीकत की तस्दीक सारी कायनात कर रही है मगर 'मुशिकीन' जिस चीज के दावेदार हैं उसकी तस्दीक करने वाला कोई नहीं।

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ هُوَ الْغَنِيُّ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ إِنَّ
عِنْدَ كُمْ مِنْ سُلٰطٰنٍ يُهٰدِئُ الْقُلُوبَ عَلَى اللَّهِ لَا تَعْلَمُونَ ۝ قُلْ إِنْ لِلَّهِ

يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ۝ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ
ثُمَّ نُنْزِلُ بِهِمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ۝

कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। वह पाक है, बेनियाज (निस्पृह) है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। तुम्हारे पास इसकी कोई दलील नहीं। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात गढ़ते हो जिसका तुम इल्म नहीं रखते। कहो, जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधते हैं वे फलाह नहीं पाएंगे। उनके लिए बस दुनिया में थोड़ा फायदा उठा लेना है। फिर हमारी ही तरफ उनका लौटना है। फिर उनको हम इस इंकार के बदले सज़ा अजाब का मजा चखाएंगे। (68-70)

खुदा के लिए बेटा बेटियां मानना खुदा को इंसान के ऊपर कयास करना है। इंसान कमियों और महदूदियतों (सीमितताओं) का शिकार है, इसलिए उसे औलाद की जरूरत है ताकि उनके जरिए वह अपनी कमियों और महदूदियतों की तलाफी करे मगर खुदा के मामले में यह कयास बिल्कुल बेबुनियाद है।

मखसूसत का निजाम खुद ही इस किस्म के ख़ालिक की तरदीद (खंडन) है। मखसूसत का आलमी निजाम जिस खुदा की शहादत दे रहा है वह यकीनी तौर पर एक ऐसा खुदा है जो अपनी जात में आखिरी हद तक कामिल (पूर्ण) है। वह हर किस्म के ऐवों और कमियों से पाक है। खुदा अगर अपनी जात में कामिल न होता, अगर वह ऐवों और कमियों वाला खुदा होता तो कभी वह मौजूदा कायनात जैसी कायनात को नहीं बना सकता था और न उसे इस तरह चला सकता था जिस तरह वह इतिहाई मेयारी सूरत में चल रही है।

इसका मतलब यह है कि पैगम्बर जिस खुदाए वाहिद का तसव्वुर पेश कर रहा है उसका वजूद तो जमीन व आसमान की तमाम निशानियों से साबित है। मगर मुशिकीन ने खुदा का जो तसव्वुर बना रखा है, उसका कोई सुबूत इस कायनात में मौजूद नहीं। अब जाहिर है कि बेसुबूत खुदा को मानना खुद ही इस बात का सुबूत है कि ऐसे लोग कभी कामयाब नहीं हो सकते। क्योंकि जो खुदा सिरे से मौजूद न हो वह कैसे किसी की मदद पर आएगा और कैसे किसी को बामुराद करेगा। जो खुदा हकीकी तौर पर मौजूद है, मुशिकीन उसे मानते नहीं, और जिस खुदा को मानते हैं उसका कहीं वजूद नहीं। ऐसी हालत में मुशिकीन मौजूदा कायनात में क्योंकि कामयाब हो सकते हैं। उनके लिए जो वाहिद अंजाम मुकद्दर है वह सिर्फ यह कि बिलआखिर वे बेबस और बेसहारा होकर रह जाएं और हमेशा के लिए जिल्लत व नाकामी में पड़े रहें।

मौजूदा दुनिया में इंकार या शिर्क का रवैया इख्तियार करने से किसी का कुछ बिगड़ता नहीं। इससे आदमी ग़लतफहमी में पड़ जाता है। मगर यह सूरतेहाल सिर्फ इस्तेहान की मोहलत की बिना पर है। मौजूदा दुनिया में इंसान को इस्तेहान की वजह से अमल की आजादी दी गई है। जैसे ही इस्तेहान की मुद्दत ख़त्म होगी मौजूदा सूरतेहाल भी ख़त्म हो जाएगी। उस

वक्त आदमी देखेगा कि उसके पास उन चीजों में से कोई चीज नहीं है जिसका वह अपने आपको मालिक समझ कर सरकश बना हुआ था।

हदीस में आया है कि अल्लाह ने अकल से कहा : 'ऐ अकल, इस कायनात में मैंने तुझसे अफज़ल, तुझसे हसीन और तुझसे बेहतर मख़्दूक पैदा नहीं की।' इंसान को ऐसी अजीम नेमत देने का यह तक्ज़ा है कि उसकी जिम्मेदारी भी अजीम हो। यही वजह है कि खुदा के नज़्दीक सच्चाई का इंकार सबसे बड़ा जुर्म है। सच्चाई को जब दलील से साबित कर दिया जाए तो आदमी के ऊपर लाजिम हो जाता है कि वह उसे माने। अकली तौर पर साबितशुदा हो जाने के बाद अगर वह सच्चाई का इंकार करता है तो वह नाकाबिले माफी जुर्म कर रहा है। खुदा ने जब इंसान को ऐसी अकल दी जिससे वह हक का हक होना और बातिल का बातिल होना जान सके तो इसके बाद क्या चीज होगी जो खुदा के यहां उसके लिए उज़ बन सके।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذِكْرِي بآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجِيعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرَكُمْ عَلَيْكُمْ عُنْءًا ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُونِ ۖ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاءَ لَكُمْ مِمَّنْ أَجِرْتُ أَنْ أُجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۖ فَكَذَّبُوهُ فَجَعَلْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلِيفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ۝

और उनको नूह का हाल सुनाओ। जबकि उसने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, अगर मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों से नसीहत करना तुम पर गिरा (भार) हो गया है तो मैंने अल्लाह पर भरोसा किया। तुम अपना मुतफिक्क फैसला कर लो और अपने शरीकों को भी साथ ले लो, तुम्हें अपने फैसले में कोई शुबह बाकी न रहे। फिर तुम लोग मेरे साथ जो कुछ करना चाहते हो कर गुजरो और मुझको मोहलत न दो। अगर तुम एराज (उपेक्षा) करोगे तो मैंने तुमसे कोई मजदूरी नहीं मांगी है। मेरी मजदूरी तो अल्लाह के जिम्मे है। और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं फरमावरदारों में से हूँ। फिर उन्होंने उसे झुठला दिया तो हमने नूह को और जो लोग उसके साथ कश्ती में थे नजात दी और उन्हें जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया। और उन लोगों को गर्क कर दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था। देखो कि क्या अंजाम हुआ उनका जिन्हें डराया गया था। (71-73)

हज़रत नूह कद्मितीरन जमाने के रसूल हैं। वह जब तक ख़मोश थे तब तक उनकी इज़्जत करती रही। मगर जब आप हक के दाजी बनकर खड़े हुए और लोगों को बताने लगे कि ऐसा

करो और वैसा न करो तो वह कौम की नजर में एक नापसंदीदा शख्स बन गए। यहां तक कि कौम ने एलान कर दिया कि तुम अपनी तब्दील व नसीहत से बाज आओ वरना हम तुमको अपनी जमीन में नहीं रहने देंगे।

हज़रत नूह ने कहा कि तुम लोग मेरे मामले को एक इंसान का मामला समझते हो, इसलिए ऐसा कह रहे हो। मगर यह मामला खुदा का मामला है। मुझसे लड़ने के लिए तुम्हें खुदा से लड़ना पड़ेगा। तुमको अगर यकीन न हो तो तुम इस तरह तजर्बा कर सकते हो कि अपने साथियों और शरीकों को मिलाकर मेरे खिलाफ कोई मुतफिक्क मंसूबा बनाओ और अपनी तमाम ताकत के साथ उसकी तामील कर गुजरो। तुम देखोगे कि मेरे मुक़ाबले में तुम्हारा हर मंसूबा नाकाम है। मौजूदा दुनिया में हक के दाजी की सदाकत (सच्चाई) को जांचने का मेयार यह है कि वह हर हाल में अपना काम पूरा करके रहता है। कोई भी उसे जेर (परास्त) करने में कामयाब नहीं होता।

जो शख्स खुदा की तरफ से हक की दावत लेकर उठे वह हमेशा निशानी (दलील) के जेर पर उठता है। दलील चूँकि एक जेहनी चीज है इसलिए जाहिरपसंद इंसान उसकी अम्मत को समझ नहीं पाता। वह जेहनी तौर पर लाजवाब होने के बावजूद उसके आगे झुकने से इंकार कर देता है।

हक के दाजी को जिन आदाबे दावत का लाजिमी तौर पर लिहाज करना है उनमें से एक यह है कि दाजी अपने मदऊ से किसी भी किस्म का मआशी और माद्दी (सांसारिक) मुतालबा न करे। चाहे इस एकतरफा दस्तबदारी की वजह से उसे कितना ही नुकसान उठाना पड़े। ऐसा करना इसलिए जरूरी है कि दोनों के दर्मियान आखिरी वक्त तक दाजी और मदऊ का तअल्लुक बाकी रहे, वह किसी भी हाल में कैमी हरीफ और माद्दी रकीब (प्रतिपक्षी) का तअल्लुक न बनने पाए।

हज़रत नूह ने जब इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) की हद तक हक का पैगाम पहुंचा दिया, फिर भी उनकी कौम सरकशी पर कायम रही तो सरकशों को सैलाब में गर्क करके जमीन उनसे ख़ाली करा ली गई और मोमिनीने नूह को मौक़ा दिया गया कि वे जमीन के वारिस बनकर उस पर आबाद हों। इसी को कुरआन की इस्तिलाह में 'ख़िलाफ़त' कहा जाता है। सैलाब से पहले कौम नूह जमीन की ख़लीफ़ा बनी हुई थी, सैलाब के बाद मोमिनीने नूह जमीन के ख़लीफ़ा बन्न पाए।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَبَاءَ بِآيَاتِنَا فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِهَا كَذَّبُوهُ مِنْ قَبْلُ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ۝

फिर हमने नूह के बाद कितने रसूल भेजे। वे उनके पास खुली खुली दलीलें लेकर आए, मगर वे उस पर ईमान लाने वाले न बने जिसे पहले झुठला चुके थे। इसी तरह हम हद से निकल जाने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं। (74)

इस आयत में 'हद से गुजर जाने वाला' उन लोगों को कहा गया है जिनका हाल यह होता

है कि एक बार अगर वे हक का इंकार कर दें तो इसके बाद वे उसे अपनी साख का मसला बना लेते हैं और फिर उसे मुसलसल नजरअंदाज करते रहते हैं ताकि लोगों की नजर में उनका इल्मे दीन और उनका बरसरे हक होना मुशतबह (संदिग्ध) न होने पाए।

जो लोग इस किस्म का रवैया इस्तिस्नान करें उन्हें दुनिया में यह सजा मिलती है कि उनके दिलों पर मुहर लगा दी जाती है। यानी खुदा के कानून के तहत उनकी नफिसयात धीरे-धीरे ऐसी बन जाती हैं कि बिलआखिर हक के मामले में उनका शिद्दते एहसास बाकी नहीं रहता। इब्तिदा में उनके अंदर जो थोड़ी सी हस्सासियत जिंदा थी वह भी बिलआखिर मुर्दा होकर रह जाती है। वे इस काबिल नहीं रहते कि हक और नाहक के मामले में तर्ज़ों और नाहक को छोड़कर हक को कुबूल कर लें। हजरत नूह और उनके बाद आने वाले बेशतर रसूलों की तारीख इसकी तस्दीक करती है।

अल्लाह की तरफ से जब भी कोई हक का दाबी आता है तो वह इस हाल में आता है कि उसके गिर्द किसी किस्म की जाहिरी अज्मत नहीं होती। उसके पास जो वाहिद चीज होती है वह सिर्फ दलील है। जो लोग दलील की जवान में हक को मानें वही हक के दाबी को मानते हैं। जिन लोगों का हाल यह हो कि दलील की जवान उन्हें मुतअस्सिर न कर सके वे हक के दाबी को पहचानने से भी महरूम रहते हैं और उसका साथ देने से भी।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمُ مُوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا
وَكَانُوا قَوْمًا فَجُورِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا السَّحَرُ مِمَّنْ
قَالَ مُوسَىٰ اتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ أَتَّعِلُّوْنَ ۝ لَحِقَّ لِلْمَلَائِكَةِ السَّحَرُ هَٰذَا ۝ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُونَ ۝
قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَكَ وَأَبَاءَنَا وَتَكُونُ كَكُلِّ الْكِبَرِيَّاءِ فِي الْأَرْضِ ۖ
وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۝

फिर हमने उनके बाद मूसा और हारून को फिरऔन और उसके सरदारों के पास अपनी निशानियां देकर भेजा, मगर उन्होंने घमंड किया और वे मुजरिम लोग थे। फिर जब उनके पास हमारी तरफ से सच्ची बात पहुंची तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है। मूसा ने कहा कि क्या तुम हक को जादू कहते हो जबकि वह तुम्हारे पास आ चुका है। क्या यह जादू है, हालांकि जादू वाले कभी फलाह नहीं पाते। उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें उस रास्ते से फेर दो जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है, और इस मुल्क में तुम दोनों की बड़ाई कायम हो जाए, और हम कभी तुम दोनों की बात मानने वाले नहीं हैं। (75-78)

फिरऔन और उसकी कैम के सरदारों ने अपनी मुजरिमाना जेहनियत की बिना पर मूसा और हारून की बात नहीं मानी। वे चीजों को दलील के मेयार से देखने के बजाए जाह व इक्तेदार के मेयार से देखते थे। इस खुदसाख्ता मेयार के नाम पर उन्होंने अपने को ऊंचा और मूसा

व हारून को नीचा समझ लिया। उनकी यह नफिसयात उनके लिए उस हक को कुबूल करने में रुकावट बन गई जो उनके नजदीक एक छोटा आदमी उनके सामने पेश कर रहा था।

हजरत मूसा की इस्तदलाल (तर्क) की जवान जब फिरऔन की समझ में नहीं आई तो आप ने असा (डंडे का सांप बनना) और यदेबेजा (हाथ का चमकना) के मोजिजात दिखाए। इन मोजिजात का तोड़ फिरऔन के पास न था। चुनांचे उसने कहा कि यह जादू है। इस तरह फिरऔन ने हजरत मूसा के मुकाबले में अपनी शिकस्त को एक झूठी तौजीह में छुपाने की कोशिश की। उसने लोगों को यह तास्सुर दिया कि मूसा का मामला हक का मामला नहीं है बल्कि जादू का मामला है, यह सही है कि जादू और मोजिजे में कुछ जाहिरी मुशाबिहत होती है। मगर बहुत जल्द मालूम हो जाता है कि जादू महज शोअबदा और करिश्मा था। इसके मुकाबले में मोजिजे को मुस्तकिल कामयाबी हासिल होती है। जादू बिलआखिर जादू साबित होता है और मोजिजा बिलआखिर मोजिजा।

इस मौके पर फिरऔन ने लोगों को हजरत मूसा की दावत से फेरने के लिए दो और बाँतें कहीं। एक यह कि मूसा हमें हमारे आबाई दीन से बरगश्ता करना चाहते हैं। फिरऔन को चाहिए था कि वह हजरत मूसा के पैगाम को हक और नाहक की इस्तिलाह में समझने की कोशिश करे। मगर उसने उसे आबाई और गैर आबाई मेयार से जांचा। इसकी वजह यह थी कि हक और नाहक के मेयार से देखने में अपने आपको ग़लत मानना पड़ता। जबकि आबाई और गैर आबाई की तक्सीम में अपनी रविश पर बदस्तूर मौजूद रहने का जवाज मिल रहा था।

फिरऔन ने दूसरी बात यह कही कि 'मूसा और हारून इस मुल्क में अपनी किवरियाई (प्रभुत्व) कायम करना चाहते हैं।' यह भी अवाम को भड़काने के लिए महज एक सियासी शोशा था, क्योंकि हजरत मूसा ने तो अव्वल मरहले में फिरऔन के सामने यह बात रख दी थी कि उनका मकसद यह है कि वह फिरऔन को खुदा का पैगाम पहुंचाएं और इसके बाद बनी इस्राईल के साथ मिस्त्र से निकल कर सहाराए सीना में चले जाएं। ऐसी हालत में यह इल्जाम सरासर ख़िलाफ़ वाक़्या था कि वह मिस्त्र की हुक्मत पर कब्ज़ करने का मंसूबा बना रहे हैं।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيِّي ۝ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لَهُمْ مُوسَىٰ
الْقَوْمَ اَنتُمْ مُثْقَلُونَ ۝ فَلَمَّا آتَوْا قَالُوا لِمُوسَىٰ مَا جِئْتُم بِهٖ السَّحَرَةُ اِنَّ
اللَّهَ سَيُبْطِلُہٗ اِنَّ اللَّهَ لَا يُضِلُّ عَمَّا لَیْضِلُّ عَلِ الْفٰسِدِیْنَ ۝ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكُلِّ بَلٰیةٍ
وَلَوْ كَرِهَ الْغٰیظُونَ ۝

और फिरऔन ने कहा कि तमाम माहिर जादूगरों को मेरे पास ले आओ। जब जादूगर आए तो मूसा ने उनसे कहा कि जो कुछ तुम्हें डालना है डालो। फिर जब जादूगरों ने डाला तो मूसा ने कहा कि जो कुछ तुम लाए हो वह जादू है। वेशक अल्लाह इसको बातिल (विनष्ट) कर देगा, अल्लाह यकीनन मुफ़्सिदों (उपद्रवियों) के काम को सुधरने नहीं देता। और अल्लाह अपने हुक्म से हक को हक कर दिखाता है चाहे मुजरिमों को

वह कितना ही नागवार हो। (79-82)

फिरऔन का माहिर जादूगरों को बुलाना इसलिए न था कि वह समझता था कि जादूगरों के जरिए वह हज़रत मूसा को ज़े कर लेगा। यह किसी अक्ली फैसले से ज्यादा फिरऔन की उस बड़ी हुई ख़्वाहिश का नतीजा था कि वह हज़रत मूसा को न माने। खुदा के पैग़म्बर को जादूगरों के जरिए ग़लत साबित करने का मंसूबा एक ऐसा मंसूबा था जिसका नाकाम होना पहले से मालूम था। मगर आदमी जब किसी हकीकत को न मानना चाहे तो उसकी यह ख़्वाहिश उसे यहां तक ले जाती है कि वह अहमकाना तदबीरों से उसका मुक़ाबला करने की नाकाम कोशिश करता है। वह सैलाब के मुक़ाबले में तिनकों का बांध बांधता है हालांकि वह खुद जान रहा होता है कि सैलाब के मुक़ाबले में तिनकों की कोई हकीकत नहीं।

चुनांचे वही हुआ जो होना था। जादूगरों ने मैदान में रस्सियां और लकड़ियां फेंकीं जो देखने वालों को रंगते हुए सांप की सूरत में दिखाई दीं। इसके बाद हज़रत मूसा ने अपना असा (डंडा) डाला तो वह बहुत बड़ा सांप बनकर मैदान में दौड़ने लगा। हज़रत मूसा का यह 'सांप' महज सांप न था, वह दरअसल खुदा की एक ताक़त थी जो इसलिए जाहिर हुई थी कि हक़ को हक़ और बातिल को बातिल साबित कर दे। चुनांचे उसके सामने आते ही जादूगरों की रस्सी, रस्सी रह गई और उनकी लकड़ी लकड़ी।

यह खुद अपने मुंतख़ब किए हुए मैदान में फिरऔन की शिकस्त थी। मगर अब भी फिरऔन ने शिकस्त न मानी। अब उसने हज़रत मूसा की तरदीद (रद्द) के लिए कुछ और अल्फ़ाज़ तलाश कर लिए जिस तरह उसे पहले मरहले में आप की तरदीद के लिए कुछ अक्षमज़मिल गए थे।

فَاَمِنْ لِّمُوسَى الْاَذْرِيَّةُ مِنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ
اَنْ يَفْتِنَهُمْ وَاِنْ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْاَرْضِ وَاِنَّهٗ لَكِنَّ الْمُسْرِفِيْنَ ۝ وَاَنَّ
قَالَ مُوسٰى يَقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْكُمْ تَوَكَّلُوْا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝
فَقَالُوْا عَلٰى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝ وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ ۝

फिर मूसा को उसकी कौम में से चन्द नौजवानों के सिवा किसी ने न माना, फिरऔन के डर से और खुद अपनी कौम के बड़े लोगों के डर से कि कहीं वे उन्हें किसी फितने में न डाल दे, बेशक फिरऔन जमीन में ग़लबा (संभ्रुव) रखता था और वह उन लोगों में से था जो हद से गुजर जाते हैं। और मूसा ने कहा ऐ मेरी कौम, अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम वाकई फरमांबरदार हो। उन्होंने कहा, हमने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब, हमें जालिम लोगों के लिए फितना

न बना। और अपनी रहमत से हमें मुंकिर लोगों से नजात दे। (83-86)

नए फ़िक्क (विचारधारा) को कुबूल करना हमेशा इस कीमत पर होता है कि आदमी अपने मुआशिरों में नए-नए मसाइल से दो चार हो जाए। यही वजह है कि ज्यादा उम्र के लोग अक्सर किसी नए फ़िक्क को कुबूल करने में मोहतात (संकोची) होते हैं। मुख़लिफ़ वजहों से ज्यादा उम्र के लोगों पर मस्लेहत का ग़लबा हो जाता है। वह नए फ़िक्क की सेहत को मानने के बावजूद आगे बढ़कर उसका साथ नहीं दे पाते।

मगर नौजवान तबका आम तौर पर इस किस्म की मस्लेहतों से ख़ाली होता है। चुनांचे हमेशा तारीख़ में ऐसा हुआ है कि किसी नई और इक़िताबी दावत को कुबूल करने में वही लोग ज्यादा आगे बढ़े जो अभी ज्यादा उम्र को नहीं पहुंचे थे। यही सूरतेहाल हज़रत मूसा के साथ पेश आई।

हज़रत मूसा का साथ देने वाले नौजवानों को एक तरफ़ फिरऔन का ख़तरा था। दूसरी तरफ़ खुद अपनी कैम के बड़ों की तरफ़ से उन्हें हैसलाअफ़ज़ाई नहीं मिली। ये बड़े अगरचे हज़रत मूसा की नुबुव्वत को मानते थे। मगर अपनी मस्लेहतअदेशी (स्वार्थ-भाव) की बिना पर वे नहीं चाहते थे कि उनके बेटे बेटियां पुरजोश तौर पर हज़रत मूसा का साथ दें और इसके नतीजे में वे फिरऔन के जुम का शिकार बनें।

मगर इस किस्म की सूरतेहाल का तक्ज़ यह नहीं होता कि आदमी मुख़लिफ़ीने हक़ के डर से ख़ामोश होकर बैठ जाए। उसे चाहिए कि वह इंसानी मुख़लिफ़ियों के मुक़ाबले में खुदाई नुसरतों पर नज़र रखे, वह खुदा के भरोसे पर उस हक़ का साथ देने के लिए उठ खड़ा हो जिसका साथ देने के लिए जाती तौर पर वह अपने आपको आजिज पा रहा था।

وَ اَوْحَيْنَا اِلٰى مُوسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوِّاْ لِّقَوْمِكُمْ اٰيٰتًا وَّاَجْعَلُوْا اٰيٰتَكُمْ
قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

और हमने मूसा और उसके भाई की तरफ 'वही' (प्रकाशना) की कि अपनी कौम के लिए मिन्न में कुछ घर मुक़र्र कर लो और अपने इन घरों को क़िबला बनाओ और नमाज़ कायम करो। और अहले ईमान को खुशख़बरी दे दो। (87)

किबले के मअनार अरबी ज़बान में मरजअ (आकर्षण केन्द्र) या मर्कज़ तवज्जोह के हैं। यहां घरों को क़िबला बनाने से मुराद यह है कि बनी इस्राईल की बस्तियों में कुछ घरों या उन घरों के कुछ मुनासिब हिस्सों को इस मक़सद के लिए मख़सूस कर दिया जाए कि वे हज़रत मूसा की दीनी जद्दोज़हद के लिए बतौर मर्कज़ के काम दें। यहां तंजीमी इज्तिमाआत हों, बाहमी मशिवरे हों। दावती अमल की ख़ामोश मंसूबाबंदी की जाए।

हज़रत मूसा की तौहीद और आख़िरत की बातें मिन्न के बादशाह फिरऔन को सख़्त नागवार थीं। उसने उनके ऊपर निहायत सख़्त किस्म की पाबंदियां आयद कर दीं। यहां तक कि खुले तौर पर दीनी सरगर्मियां जारी रखना उनके लिए सख़्त दुश्वार हो गया। उस वक़्त

हुम हुआ कि फिरऔन से टकराने के बजाए यह करो कि अपने काम को करीबी दायरे में समेट लो। अपनी बस्तियों में छोटे-छोटे दावती और तंजीमी मर्कज बनाकर महदूद दायरे में खामोशी के साथ अपना काम जारी रखो।

इन हालात में उन्हें जो दूसरा हुक्म दिया गया वह नमाज की इकामत था। यानी अल्लाह से तअल्लुक जोड़ने और उससे मदद मांगने के लिए नमाजों का एहतियाम, ईफ़रादी तौर पर भी और इज्तिमाई तौर पर भी। नमाज दरअस्तल खुदा से करीब होकर खुदा से मदद मांगने की एक सूरत है। नमाज में मशगूल होकर बंदा अपने आपको इज्ज (विनय) और तवाजोअ (विनम्रता) के मक़म पर लाता है और इज्ज और तवाजोअ ही वह मक़म है जहां बंदा और खुदा की मुलाकात होती है। बंदे के लिए अपने रब से मिलने का दूसरा कोई मक़म नहीं।

यह जो प्रोग्राम बताया गया इसी की तक्मील में उनके लिए फ़लाह और नजात का राज छुपा हुआ था। यह हुक्म गोया इस बात की खुशख़बरी थी कि खुदा उन्हें उस हालत से निकालने वाला है जिसमें उनके दुश्मनों ने उन्हें मुब्तिला कर दिया है।

وَقَالَ مُوسَىٰ رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَ مَا لَكَ رَبِّ إِنَّهُ جَحْدٌ
الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَىٰ أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ
عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتَّىٰ يَرَوْا الْعَذَابَ الْاَلِيمَ ۝ قَالَ قَدْ أُجِيبَتِ
دَعْوَتُكُمْ فَاسْتَقْبُوا وَلَا تَتَّبِعْنَ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

और मूसा ने कहा, ऐ हमारे रब, तूने फिरऔन को और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िंदगी में रैनक और माल दिया है। ऐ हमारे रब, इसलिए कि वे तेरी राह से लोगों को भटकाएं। ऐ हमारे रब, उनके माल को ग़ारत कर दे और उनके दिलों को सख़्त कर दे कि वे ईमान न लाएं यहां तक कि दर्दनाक अज़ाब को देख लें। फ़रमाया, तुम दोनों की दुआ कुबूल की गई। अब तुम दोनों जमे रहो और उन लोगों की राह की पैरवी न करो जो इल्म नहीं रखते। (88-89)

जो लोग आख़िरत की फ़िक्र करते हैं वे आम तौर पर दुनियावी साजोसामान जमा करने में उन लोगों से पीछे रह जाते हैं जो आख़िरत से बेफ़िक्र होकर दुनिया हासिल करने में लगे हुए हैं। दुनियावी कमी आख़िरत की तरफ़ ध्यान लगाने की कीमत है, और दुनियावी ज्यादाती आख़िरत से ग़ाफ़िल होने की कीमत।

मजीद यह कि जिसके पास दुनिया की रैनक और सामान ज्यादा जमा हो जाएं वह बड़ाई के एहसास में मुब्तिला हो जाता है। नतीजा यह होता है कि ऐसे लोग अपने अंदर यह सलाहियत खो देते हैं कि किसी दूसरे की जवान से जारी होने वाले हक़ को पहचानें और उसके आगे झुक जाएं। अपने वसाइल (संसाधनों) को अगर वे खुदा का अतिथ्या (देन) समझते तो

उसे हक़ की ताईद में इस्तेमाल करते, मगर वे उसे अपना जाती कमाल समझते हैं इसलिए वे उसे सिर्फ़ इस मक़सद के लिए इस्तेमाल करते हैं कि हक़ को दबाएं और इस तरह माहौल के अंदर अपनी बरतरी कायम रखें।

‘ताकि वे तेरी राह से भटकाएं’ का मतलब यह है कि उन्होंने अल्लाह के दिए हुए माल व असबाब को सिर्फ़ इसलिए इस्तेमाल किया कि उसके जरिए से खुदा के बंदों को खुदा से दूर करें, उन्होंने उसे हक़ की ख़िदमत में लगाने के बजाए बातिल की ख़िदमत में लगाया। यहां शिद्दते बयान के खातिर कलाम का उस्तूब (शैली) बदल गया है।

हज़रत मूसा ने फिरऔन और उसके साथियों के सामने सच्चे दीन की दावत पेश की और अपनी आला सलाहियतों और खुदा की नुसरतों के जरिए उसे इतमामे हुज्जत की हद तक वाजेह कर दिया, इसके बावजूद फिरऔन और उसके साथियों ने आपके पैग़ाम को नहीं माना। उस वक़्त हज़रत मूसा ने दुआ की कि: *يَا رَبِّ اجْعَلْ لِّيَ خُصْمًا فِي الدُّنْيَا* इन्हे ऊपर वह सज़ नाज़िल फ़रमा जो तेरी क़सूर के तहत ऐसे सरकशों के लिए मुक़द्दर है। ऐसे मौके पर फ़ैम्बर की बददुआ खुद खुदा के पैसले का एलान होता है जो नुमाइंदाए खुदा की जवान से जारी किया जाता है।

हज़रत मूसा की दुआ कुबूल हो गई। ताहम जैसा कि कुछ रिवायात में आता है, हज़रत मूसा की दुआ और फिरऔन की तबाही के दरमियान 40 साल का फ़सला है। (तफ़सीर नसफ़ी)। इसका मतलब यह है कि इसके बाद भी लम्बी मुद्दत तक यह सूरतेहाल बाक़ी रही कि हज़रत मूसा और आपके साथी अपने आपको बेबस पाते थे, और दूसरी तरफ़ फिरऔन और उसके साथियों की शान व शौकत बदस्तूर मुल्क में कायम थी। ऐसी हालत में आदमी अगर खुदा की उस सुन्नत से बेख़बर हो कि वह सरकशों को मोहलत देता है तो वह जल्दबाजी में अस्तल काम को छोड़ देगा और मायूसी और बददिली का शिकार होकर रह जाएगा।

وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدُوًّا
حَتَّىٰ إِذَا آدَرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ أَمْنتُ أَنَّهُ لَأِلَهِ إِلَّا الَّذِي آمَنْتُ بِهِ بَنُو
إِسْرَءِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أَلْتَنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِينَ ۝ فَالْيَوْمَ نُخَيِّدُكَ بِدَنِكَ لِيَكُونَ لِمَنْ خَلَفَكَ آيَةً ۝ وَإِنْ كَثِيرًا
مِّنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا الْغَافِلُونَ ۝

और हमने बनी इस्राईल को समुद्र पार करा दिया तो फिरऔन और उसके लश्कर ने उनका पीछा किया। सरकशी और ज्यादाती की ग़रज से। यहां तक कि जब फिरऔन डूबने लगा तो उसने कहा कि मैं ईमान लाया कि कोई माबूद (पूज्य) नहीं मगर वह जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए। और मैं उसके फ़रमांवरदारों में हूं। क्या अब, और इससे पहले तू नाफरमानी करता रहा और तू फ़साद बरपा करने वालों में से था। पस आज हम तेरे बदन को बचाएंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए निशानी बने और

वेशक बहुत से लोग हमारी निशानियों से ग़ाफिल रहते हैं। (90-92)

मिस्र में हजरत मूसा का मिशन दोतरफ़ था। एक, फिरऔन को तौहीद (एकेश्वरवाद) और आखिरत की तरफ बुलाना। दूसरे, बनी इस्राईल को मिस्र से बाहर सहराई माहौल में ले जाना और वहां उनकी तर्बियत करना। जब फिरऔन पर हक की दावत की तक्मील हो चुकी तो अल्लाह के हुक्म से वह बनी इस्राईल को लेकर मिस्र से खाना हुए। सहराएँ सीना पहुंचने के लिए उन्हें दरिया को पार करना था। जब बनी इस्राईल हजरत मूसा की रहनुमाई में दरिया के कनारे पहुंचे तो अल्लाह के हुक्म से हजरत मूसा ने पानी पर अपना असा (डंडा) मारा। पानी बीच से फटकर दाएं बाएं खड़ा हो गया, और दर्मियान में खुशक रास्ता निकल आया। हजरत मूसा और बनी इस्राईल उस रास्ते से बाआसानी पार हो गए।

फिरऔन अपने लश्कर के साथ बनी इस्राईल का पीछा करते हुए आगे बढ़ा। वह दरिया के किनारे पहुंचा तो देखा कि मूसा और बनी इस्राईल पानी के दर्मियान एक खुशक रास्ते से गुजर रहे हैं। दरिया के वसीअ पाट ने फटकर हजरत मूसा और उनके साथियों को रास्ता दे दिया था। यह वाक्या दरअसल खुदा की एक निशानी था। फिरऔन को उससे यह सबक लेना चाहिए था कि मूसा हक पर हैं और खुदा उनके साथ है। मगर उसने दरिया के फटने को खुदाई वाक्या समझने के बजाए आम वाक्या समझा। अपने और मूसा के दर्मियान फिरऔन को सिर्फ दरिया नजर आया, हालांकि वहां खुद खुदा खड़ा हुआ था। इसका नतीजा यह हुआ कि जिस वाक्ये में फिरऔन के लिए इताअत (आज्ञापालन) और इनाबत (खुदा की तरफ झुकना) का पैगाम था वह उसके लिए सिर्फ सरकशी में इजाफे का सबब बन गया। उसने 'दरिया' को देखा मगर 'खुदा' को नहीं देखा। उसने समझा कि जिस तरह मूसा और उनके साथियों ने दरिया को पार किया है उसी तरह वह भी दरिया को पार कर सकता है।

अपने इस जेहन के साथ फिरऔन और उसके लश्कर दरिया में दाखिल हो गए। दरिया का पानी जो दो टुकड़े हुआ था वह मूसा और उनके साथियों के लिए हुआ था, वह फिरऔन और उसके साथियों के लिए नहीं हुआ था। चुनांचे फिरऔन और उसका लश्कर जब बीच दरिया में पहुंचे तो खुदा के हुक्म से दोनों तरफ का पानी मिल गया और फिरऔन अपने लश्कर सहित उसमें ग़र्क हो गया। ग़र्क होते हुए फिरऔन ने ईमान का इक्कार किया मगर वह बेसूद (निरर्थक) था, क्योंकि अल्लाह तआला के यहां इख्तियारी ईमान मोतबर है न कि वह ईमान जबकि आदमी ईमान लाने पर मजबूर हो गया हो।

खुदा से नाफरमानी और सरकशी का अंजाम हलाकत है, इसका नमूना दौरे रिसालत में बार-बार इंसान के सामने आता था। ताहम इस किस्म के कुछ नमूने खुदा ने मुस्तकिल तौर पर महफूज कर दिए हैं ताकि वह बाद के ज़माने में भी इंसान को सबक देते रहें जबकि नबियों की आमद का सिलसिला ख़त्म हो गया हो। इन्हीं में से एक तारीख़ी नमूना फिरऔने मूसा (रअमीस सानी) का है जिसकी ममी की हुई लाश पुरातत्व विशेषज्ञों को कदीम मिश्री शहर थेबिस (Thebes) में मिली थी और अब वह काहिरा के म्यूजियम में नुमाइश के लिए रखी हुई है।

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مَبْوَأَ صَدَقٍ وَزَرَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ فَمَا اخْتَلَفُوا حَتَّى جَاءَهُمُ الْعِلْمُ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾

और हमने बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना दिया और उन्हें सुथरी चीजें खाने के लिए दीं। फिर उन्होंने इख़्तेलाफ (मतभेद) नहीं किया मगर उस वक्त जबकि इल्म उनके पास आ चुका था। यकीनन तेरा ख क़ियामत के दिन उनके दर्मियान उस चीज का फैसला कर देगा जिसमें वे इख़्तेलाफ करते रहे। (93)

बनी इस्राईल कदीम जमाने में खुदा के दीन के हामिल थे। उनके साथ खुदा ने यह एहसान किया कि उनके दुश्मन (फिरऔन) से उन्हें नजात दी। इसके बाद वह उन्हें सीना की खुली फज में ले गया। वहां उनके लिए खुसूसी इंतजाम के तहत पानी और रिक़ मुहय्या किया। सहराई तर्बियत के जरिए उनके अंदर एक नई ताकतवर नस्ल तैयार की। उस नस्ल ने हजरत मूसा की वफ़ात के बाद एक अजीम मुक्क फतह किया और शाम और उर्दु और फिलिस्तीन जैसे सरसब्ज इलाके में बनी इस्राईल की सत्तनत क़ायम की। जो कई सौ साल तक बाँधी रही।

इस एहसान का नतीजा यह होना चाहिए था कि बनी इस्राईल खुदा के फरमांबरदार और शुक्रगुजार रहते और खुदा के दीन की ख़िदमत को अपनी जिंदगी का मक्सद बनाते। मगर वाजेह रहनुमाई के होते हुए वे राह से बेराह हो गए।

उनका राह से बेराह होना क्या था। यह आपस का इख़्तेलाफ था। उनके पास खुदा का उतारा हुआ इल्म मौजूद था जो वाहिद सच्चाई था। मगर उन्होंने इस इल्म की तशरीह व तावील (भाष्य) में इख़्तेलाफ किया और टुकड़े-टुकड़े हो गए। (तस्मिन्) कोई उम्मत जब तक खुदा के उतारे हुए दीन (अल-इल्म) पर रहती है, उसमें इत्तेफ़ाक और इतेहाद रहता है। मगर बाद को उनके दर्मियान इस अल-इल्म की तशरीह में इख़्तेलाफात शुरू होते हैं। कुछ लोग एक इख़्तेलाफी राय लेकर बैठ जाते हैं और कुछ लोग दूसरी इख़्तेलाफी राय लेकर। हर एक अपने अपने मस्लक (मत) को बरहक साबित करने के लिए बहस मुवाहिदा और तकरीर और मुनाजिरे का तूफ़ान खड़ा करता है। नौबत यहां तक पहुंचती है कि अस्ल इल्म किताबों में बंद पड़ा रहता है और सारा जोर उनकी तावीलात व तशरीहात (व्याख्या) में सर्फ हेंने लगता है। इस तरह बुनियादी दीनी तालीमात (अल-इल्म) में एक राय होने के बावजूद लोग ज़ेरी तालीमात (उप-शिक्षाओं) में मशगूल होकर मुख़लिफ राय वाले हो जाते हैं।

'अल्लाह क़ियामत के दिन फैसला कर देगा' मतलब यह है कि क़ियामत में जब खुदा जाहिर होगा तो हर आदमी अपने इख़्तेलाफ (मतभेद) को भूलकर उसी बात को मान लेगा जो वाहिद (एक मात्र) सच्चाई है। अगर वे खुदा से डरते तो आज ही सबके सब एक राय पर पहुंच जाते। मगर खुदा से बेख़ौफ़ होकर वे अलग-अलग राहों में बट गए हैं। बेख़ौफ़ी से बहुत सी राय पैदा होती हैं और ख़ौफ़ से राय का इतहाद।

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِينَ يَقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُسْتَرِزِينَ ۝ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونُوا مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

पस अगर तुम्हें उस चीज के बारे में शक है जो हमने तुम्हारी तरफ उतारी है तो उन लोगों से पूछ लो जो तुमसे पहले से किताब पढ़ रहे हैं। बेशक यह तुम पर हक आया है तुम्हारे रब की तरफ से, पस तुम शक करने वालों में से न बनो। और तुम उन लोगों में शामिल न हो जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया है, वरना तुम नुकसान उठाने वालों में से होगे। (94-95)

पैगम्बर बेआमेज (विशुद्ध) हक को लेकर उठता है, और बेआमेज हक की दावत को कुबूल करना इंसान के लिए हमेशा सख्त दुश्वार काम रहा है। लोग आम तौर पर मिलावटी हक की बुनियाद पर खड़े होते हैं। वे अपनी दुनियापरस्ताना जिंदगी पर हक का लेबल लगा लेते हैं। ऐसी हालत में बेआमेज हक की दावत को मानना अपनी जात की नफ़ी (नकार) की कीमत पर होता है। हक के दाओ को मानने के लिए उसके मुक़ाबले में अपने आपको छोटा करना पड़ता है, और अपने आपको छोटा करना बिलाशुबह इंसान के लिए मुश्किलतरीन काम है। यही वजह है कि ऐसा कभी नहीं होता कि हक की दावत उठे और लोग समूहों में उसकी तरफ दौड़ना शुरू कर दें। हक का इस्तक़्बाल इस दुनिया में हमेशा एराज (उपेक्षा) और मुख़ालिफ़त की सूरत में किया गया है।

दाओ जब अपने माहौल में हक की यह बेवकअती देखता है तो कभी कभी उस पर यह शुबह गुजरता है कि मैं गलती पर तो नहीं हूँ। इस आयत में दाओ को इसी नपिसयात (मनःस्थिति) से बचने की ताकीद की गई है।

इस शुबह के गलत होने का एक निहायत वाजेह सुबूत यह है कि पिछले पैगम्बरों और दाअियों को भी इसी तरह की सूरतेहाल से साबिका पेश आया। जो लोग पहले के नबियों की तारीख़ से वाकिफ़ हैं उन्हें बखूबी मालूम है कि इस दुनिया में कभी ऐसा नहीं हुआ कि एक पैगम्बर उठे और फ़ौरन उसे अवामी मकबूलियत हासिल हो जाए। फिर यही बात अगर बाद के जमाने के दाअियों के साथ पेश आए तो इस पर हैरान व परेशान होने की क्या जरूरत।

आदमी की अक्ल अगर किसी चीज की सच्चाई पर गवाही दे और वह सिर्फ लोगों की बेतवज्जोही या मुख़ालिफ़त की वजह से इस चीज को छोड़ दे तो यह गोया अल्लाह की निशानियों को झुठलाना है। अल्लाह निशानियों (दलाइल) के रूप में इंसान के सामने जाहिर होता है। इसलिए जिस चीज की सदाक़्त (सच्चाई) पर दलील कायम हो जाए उसे मानना आदमी के ऊपर खुदा का हक हो जाता है। फिर जो शख्स खुदा का हक अदा न करे उसके हिस्से में नुक़सान और हलाक़त के सिवा क्या आएगा।

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ أَمَنَتْ فَتَنْفَعَهَا آيَاتُهَا إِلَّا قَوْمُ يُوسُفَ ۚ لَهَا أَمْثَلُ مَا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۝

बेशक जिन लोगों पर तेरे रब की बात पूरी हो चुकी है वे ईमान नहीं लाएंगे, चाहे उनके पास सारी निशानियां आ जाएं जब तक कि वे दर्दनाक अजाब को सामने आता न देख लें। पस क्यों न हुआ कि कोई बस्ती ईमान लाती कि उसका ईमान उसे नफा देता, यूनुस की कौम के सिवा। जब वे ईमान लाए तो हमने उनसे दुनिया की जिंदगी में रुस्वाई का अजाब टाल दिया और उन्हें एक मुद्दत तक बहरामंद (सुखी-सम्मन्न) होने का मौक़ा दिया। (96-98)

इंसान के सामने जब एक हक बात आती है तो उसकी अक्ल गवाही देती है कि यह सही है। मगर किसी हक को लेने के लिए आदमी को कुछ देना पड़ता है और इसी देने के लिए आदमी तैयार नहीं होता। इसके खातिर आदमी को दूसरे के मुकाबले में अपने को छोटा करना पड़ता है। अपने मफ़ाद (हित) को ख़तरे में डालना होता है। अपनी राय और अपने वक्कर (प्रतिष्ठा) को खोना पड़ता है। ये अंदेश आदमी के लिए कुबूले हक में रुकावट बन जाते हैं। जिस चीज का जवाब उसे कुबूलियत और एतराफ से देना चाहिए था उसका जवाब वह इंकार और मुख़ालिफ़त से देने लगता है।

आदमी की नपिसयात कुछ इस तरह बनी है कि वह एक बार जिस रुख़ पर चल पड़े उसी रुख़ पर उसका पूरा ज़ेहन चलने लगता है। यही वजह है कि एक बार हक से इंहिराफ करने के बाद बहुत कम ऐसा होता है कि आदमी दुबारा हक की तरफ लौटे। क्योंकि हर आने वाले दिन वह अपने फिक्क (सोच) में पुख़्तातर होता चला जाता है। यहां तक कि वह इस कबिल ही नहीं रहता कि हक की तरफ वापस जाए।

इस तरह के लोग अपने मौकिफ़ (ट्रिस्टिकोण) को बताने के लिए ऐसे अल्फ़ज बोलते हैं जिससे ज़हिर हो कि उनका क़ेस नज़रियाती क़ेस है। मगर हकीक़त वह सिर्फ़ ज़िद और तअस्सुब और हठधर्मी का क़ेस होता है जो अपनी दुनियावी मस्तेहतों के खातिर इख़्तियार किया जाता है। ताहम अजाबे खुदावंदी के ज़ुहूर के वक़्त आदमी का यह भरम खुल जाएगा। ख़ौफ़ की हालत उसे उस चीज के आगे झुकने पर मजबूर कर देगी जिसके आगे वह बेख़ौफ़ी की हालत में झुकने पर तैयार न होता था।

पिछले जमाने में जितने रसूल आए सबके साथ यह किस्सा पेश आया कि उनकी मुखातब कौम आख़िर वक़्त तक ईमान नहीं लाई। अलबत्ता जब वे अजाब की पकड़ में आ गए तो उन्होंने कहा कि हम ईमान कुबूल करते हैं। जब तक खुदा उन्हें दलील की जवान में

पुकार रहा था। उन्होंने नहीं माना और जब खुदा ने उन्हें अपनी ताकतों की जद में ले लिया तो कहने लगे कि अब हम मानते हैं। मगर ऐसा मानना खुदा के यहां मोतबर (मान्य) नहीं। खुदा को वह मानना मल्लूब है जबकि आदमी दलील के जोर पर झुक जाए न कि वह ताकत के जोर पर झुके।

हजरत यूनस अलैहिस्सलाम इराक के एक कदीम शहर नैनवा में भेजे गए। उन्होंने वहां तब्लीग की मगर वे लोग ईमान न लाए। आखिर हजरत यूनस ने पैगम्बरों की सुन्नत के मुताबिक हिजरत की। वह यह कहकर नैनवा से चले गए कि अब तुम्हारे ऊपर खुदा का अजाब आएगा। हजरत यूनस के जाने के बाद अजाब की इब्तिदाई अलामतें जाहिर हुईं। मगर उस वक़्त उन्होंने वह न किया जो कौमे हूद ने किया था कि उन्होंने अजाब का बादल आते देखकर कहा कि यह हमारे लिए बारिश बरसाने आ रहा है। कौमे यूनस के अंदर फौरन चौंक पैदा हो गई। सारे लोग अपने मवेशियों और औरतों और बच्चों को लेकर मैदान में जमा हो गए और खुदा के आगे आजिजी करने लगे। इसके बाद अजाब उनसे उठा लिया गया। जिस तरह जुझे अजब से पहले का ईमान काबिले एतबार है उसी तरह कुकूजे अजब के करीब का ईमान भी काबिले एतबार हो सकता है बशर्ते कि वह इतना कामिल हो जितना कामिल कौमे यूनस का ईमान था।

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلَّهُمْ جَمْعًا ۖ أَفَأَنْتَ تُكْذِرُ النَّاسَ
حَتَّى يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُوَفَّى إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَ
يَجْعَلُ الرَّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝

और अगर तेरा रब चाहता तो जमीन पर जितने लोग हैं सबके सब ईमान ले आते। फिर क्या तुम लोगों को मजबूर करोगे कि वे मोमिन हो जाएं। और किसी शख्स के लिए मुमकिन नहीं कि वह अल्लाह की इजाजत के बग़ैर ईमान ला सके। और अल्लाह उन लोगों पर गंदगी डाल देता है जो अक्ल से काम नहीं लेते। (99-100)

‘तेरा रब चाहता तो सारे लोग मोमिन बन जाते’ का मतलब यह है कि खुदा के लिए यह मुमकिन था कि इंसानी दुनिया का निजाम भी उसी तरह बनाए जिस तरह बकिया दुनिया का निजाम है। जहां हर चीज मुकम्मल तौर पर खुदा के हुक्म की पाबंद बनी हुई है। मगर इंसान के सिलसिले में खुदा की यह स्कीम ही नहीं। इंसान के सिलसिले में खुदा की स्कीम यह है कि आज्ञादानी माहौल में रखकर इंसान को मौक़ा दिया जाए कि वह खुद अपने जती फैसले से खुदा का फरमांबरदार बने। वह अपने इख्तियार से वह काम करे जो बकिया दुनिया बेइख्तियारी के साथ कर रही है, जन्नत की अबदी (चिरस्थायी) नेमतें इसी इख्तियाराणा इत्ताअत की वीमत हैं।

‘कोई शख्स खुदा के इज्ज के बग़ैर ईमान नहीं ला सकता’ का मतलब यह है कि मौजूदा दुनिया में किसी को ईमान की नेमत मिलेगी तो उस तरीके की पैरवी करके मिलेगी जो खुदा

ने उसके लिए मुकर्रर कर दिया है। मौजूदा दुनिया में ईमान को पाने का रास्ता यह है कि आदमी ईमान की दावत को अपनी अक्ल के इस्तेमाल से समझे। जिस शख्स की अक्ल के ऊपर उसकी दुनियावी मस्तेहतें (स्वाधी) ग़ालिब आ जाएं उसकी अक्ल गोया गंदगी की कीचड़ में लतपत हो गई है। ऐसे शख्स के लिए इस दुनिया में ईमान की नेमत पाने का कोई सवाल नहीं।

قُلْ أَنْظَرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَمَا تُغْنِي الْآيَاتِ وَالنُّذُرُ عَنْ
قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ آيَاتِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ
قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝ ثُمَّ نُنْجِي رَسُولَنَا
وَالَّذِينَ آمَنُوا ۚ كَذَلِكَ حَقَّقْنَا لِنُفِيقِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

कहो कि आसमानों और जमीन में जो कुछ है उसे देखो और निशानियां और डरावे उन लोगों को फायदा नहीं पहुंचाते जो ईमान नहीं लाते। वे तो बस उस तरह के दिन का इतिजार कर रहे हैं जिस तरह के दिन उनसे पहले गुजरे हुए लोगों को पेश आए। कहो, इतिजार करो मैं भी तुम्हारे साथ इतिजार करने वालों में हूं फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को और उन्हें जो ईमान लाए। इसी तरह हमारा जिम्मा है कि हम ईमान वालों को बचा लेंगे। (101-103)

हमारे चारों तरफ जो कायनात है उसमें बेशुमार निशानियां मौजूद हैं जो खुदा के वजूद को साबित करती हैं। और इसी के साथ यह भी बताती हैं कि इस कायनात के बारे में खुदा का मंसूबा क्या है। मजीद यह कि दुनिया में डरावे (आंधी और भूचाल) जैसे वाक़ेयात भी पेश आते रहते हैं जो इंसान को खुदा और आखिरत के मामले में संजीदा बनाएं। मगर यह सब कुछ आलमे इस्तेहान में होता है, यानी ऐसी दुनिया में जहां आदमी को इख्तियार रहे कि माने या न माने। चुनांचे आदमी यह करता है कि जब निशानियां और डरावे सामने आते हैं तो वह उनकी कोई न कोई खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तौजीह करके बात को दूसरे रुख की तरफ फेर देता है और नसीहत से महरूम रह जाता है।

जब आदमी दलील की जबान में बात को न माने तो गोया वह सिर्फ उस दिन का इतिजार कर रहा है जबकि इस्तेहान का पर्दा हटा दिया जाए और खुदा अपना आखिरी फैसला सुनाने के लिए सामने आ जाए। मगर वह दिन जब आएगा तो वह आज के दिन से बिल्कुल मुख़लिफ होगा। आज तो मानने वाले और न मानने वाले दोनों बजाहिर यकसां (एक जैसी) हालत में नजर आते हैं। मगर जब फैसले का दिन आएगा तो इसके बाद वही लोग अम्न में रहेंगे जो हक़परस्त साबित हुए थे। बकिया तमाम लोग इस तरह अजाब की लपेट में आ जाएंगे कि इसके बाद उनके लिए कोई राह न होगी जिससे भाग कर वे नजात (मुक्ति) हासिल करें।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِّن دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَلَكِن أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّكُم وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۖ وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِنَ الظَّالِمِينَ ۚ وَإِنْ يَسْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

कहो, ऐ लोगो अगर तुम मेरे दीन के मुताल्लिक शक में हो तो मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी इबादत तुम करते हो अल्लाह के सिवा। बल्कि मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें वफात (मौत) देता है और मुझको हुक्म मिला है कि मैं ईमान वालों में से बनूँ। और यह कि अपना रुख एकसू (एकाग्र) होकर दीन की तरफ करूँ। और मुश्रिकों में से न बनूँ। और अल्लाह के अलावा उन्हें न पुकारो जो तुम्हें न नफा पहुंचा सकते हैं और न नुकसान। फिर अगर तुम ऐसा करोगे तो यकीनन तुम जालिमों में से हो जाओगे। और अगर अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ में पकड़ ले तो उसके सिवा कोई नहीं जो उसे दूर कर सके। और अगर वह तुम्हें कोई भलाई पहुंचाना चाहे तो उसके फल को कोई रोकने वाला नहीं। वह अपना फल अपने बंदों में से जिसे चाहता है देता है और वह बख्शाने वाला महरबान है। (104-107)

दाजी पहले दलील की जवान में अपनी बात कहता है। मगर जब लोग दलील सुनने के बावजूद शक व शुबह में पड़े रहते हैं तो उसके पास आखिरी चीज यह रह जाती है कि अज्म (संकल्प) की जवान में अपने पैगाम की सदाकत का इश्वर कर दे। तौहीद के दाजी का शिर्क करने वालों से यह कहना कि 'मैं उसकी इबादत नहीं करता जिसकी इबादत तुम लोग करते हो' महज एक दावा नहीं बल्कि वह अपनी जात में एक दलील भी है। इसका मतलब यह है कि मैं भी तुम्हारे जैसा एक इंसान हूँ। मेरे पास भी वही अकल है जो तुम्हारे पास है। फिर जिस बात की सदाकत (सच्चाई) मेरी समझ में आ रही है उसकी सदाकत तुम्हारी समझ में आखिर क्यों नहीं आती।

सच्चाई अगर एक इंसान की सतह पर काबिलेफहम (समझ में आने योग्य) हो जाए तो इससे यह साबित होता है कि वह दूसरे इंसानों के लिए भी काबिलेफहम थी। इसके बावजूद अगर दूसरे लोग इंकार करें तो यकीनन इसकी वजह खुद उनका अपना कोई नुकस (कमी)

होगा न कि हक की दावत का नुकस। जिस चीज को एक आंख वाला देख रहा हो और दूसरा आंख वाला शख्स उसे न देखे तो वह सिर्फ इस बात का सुबूत है कि आंख वाला हकीकतन आंख वाला नहीं। क्योंकि इस दुनिया में यह मुमकिन नहीं कि जिस चीज को एक आंख वाला देख ले उसे दूसरा शख्स आंख रखते हुए न देख सके।

मौत इस बात का एलान है कि आदमी इस दुनिया में कामिल तौर पर बेइख्तियार है। मौत उन तमाम चीजों को बातिल (असत्य) साबित कर देती है जिनके सहारे आदमी इंकार और सरकशी का तरीका इख्तियार करता है। मौत एक तरफ आदमी को अपने इज्ज और दूसरी तरफ खुदा की कुदरत का तआरुफ कराती है। वह बताती है कि इस दुनिया में कोई नहीं जिसे नफा देने या नुकसान पहुंचाने का इख्तियार हासिल हो। इस तरह मौत आदमी को हर दूसरी चीज से काट कर खुदा की तरफ ले जाती है। वह मुकम्मल तौर पर इंसान को खुदा का परस्तार बनाती है। अगर आदमी के अंदर सबक लेने का जेहन हो तो सिर्फ मौत का वाक्या उसकी इस्लाह (सुधार) के लिए काफी हो जाए।

हर इंसान पर एक वक्त आता है जबकि वह बेबसी के साथ अपने आपको मौत के हवाले कर देता है। इसी तरह किसी इंसान के बस में नहीं कि वह फायदा और नुकसान के मामले में वही होने दे जो वह चाहता है। वह मल्लूब फायदे को हर हाल में पा ले और गैर मल्लूब नुकसान से हर हाल में बचकर रहे।

यह सूरतेहाल बताती है कि इंसान एक बेइख्तियार मख़बूक है। वह एक ऐसी दुनिया में है जहां कोई और भी है जो उसके ऊपर हुक्मरानी कर रहा है।

قُلْ يَٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۚ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝

कहो, ऐ लोगो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे पास हक आ गया है। जो हिदायत कुबूल करेगा वह अपने ही लिए करेगा और जो भटकेगा तो उसका ववाल उसी पर आएगा, और मैं तुम्हारे ऊपर जिम्मेदार नहीं हूँ। और तुम उसकी पैरवी करो जो तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जाती है और सब्र करो यहां तक कि अल्लाह फैसला कर दे और वह बेहतरीन फैसला करने वाला है। (108-109)

दावत (आह्वान) का काम अस्लन हक के एलान का काम है। किसी गिरोह के ऊपर उस वक्त पैगामरसानी का हक अदा हो जाता है जबकि दाजी हक (सत्य) को दलील के जरिए पूरी तरह वाजेह कर दे और इसी के साथ इस बात का सुबूत दे दे कि वह इस मामले में पूरी तरह संजीदा है।

दाजी अगर वक्त के मेयार के मुताबिक हक को मुदल्लल (तार्किक) कर दे। वह नफा नुकसान से बेनियाज होकर हक की मुकम्मल गवाही दे दे। वह हर तकलीफ और नाखुशगवारी

देखो, ये लोग अपने सीनों को लपेटते हैं ताकि उससे छुप जाएं। ख़बरदार, जब वे कपड़ों से अपने आपको ढांपते हैं, अल्लाह जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं और जो वे जाहिर करते हैं। वह दिलों की बात तक जानने वाला है। और ज़मीन पर कोई चलने वाला ऐसा नहीं जिसकी रोजी अल्लाह की जिम्मे न हो। और वह जानता है जहां कोई ठहरता है और जहां वह सौंपा जाता है। सब कुछ एक खुली किताब में मौजूद है। (5-6)

कुरैश के कुछ सरदारों ने ऐसा किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके सामने तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत पेश की तो वे बेपरवाही के साथ उठे। अपनी चादर अपने ऊपर डाली और रवाना हो गए।

यह दरअसल किसी बात को नजरअंदाज करने की एक सूत है। कोई आदमी जब दाजी (आध्यात्मिकता) को हकीर (तुच्छ) समझे और उसके मुकाबले में अपने को बरतार ख्याल करे तो उस वक्त वह इसी किस्म का रवैया इस्तिस्नान करता है। मगर आदमी भूल जाता है कि जिस नपिस्नान के तहत वह ऐसा कर रहा है वह अल्लाह तआला को खूब मालूम है। यह सिर्फ एक इंसान (दाजी) को नजरअंदाज करना नहीं है बल्कि खुद खुद को नजरअंदाज करना है जो हर खुले और छुपे को जानने वाला है।

फिर आदमी का हाल उस वक्त क्या होगा जब वह खुदा का सामना करेगा। वह देखेगा कि जिस खुदा को उसने नजरअंदाज किया था वही वह हस्ती था जिससे उसे वह सब कुछ मिला था जो उसके पास था। यहां तक कि वे असबाब भी जिनके बल पर उसने खुदा की बात को नजरअंदाज कर दिया था। आदमी खुदा की दुनिया में है और बिलआखिर वह खुदा की तरफ जाने वाला है। मगर वह इस तरह रहता है जैसे कि न आज खुदा से उसका कोई ताल्लुक है और न आइंदा उसका खुदा से कोई वास्ता पड़ेने वाला है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَآءِ
لِيَبْلُوَكُمْ اَيْكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا وَلَئِنْ قُلْتُمْ اَنْتُمْ مَّبْعُوْتُونَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ
لَيَقُولَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِنْ هٰذَا اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۚ وَلَئِنْ اَخْرَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ
اِلٰى اُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِبُوْنَ ۚ الْاَيُّومَ يَلْتَبِهٖمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا
عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝

और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया। और उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था, ताकि तुम्हें आजमाए कि कौन तुम में अच्छा काम करता है। और अगर तुम कहो कि मरने के बाद तुम लोग उठाए जाओगे तो मुंकिरीन कहते हैं यह तो खुला हुआ जादू है। और अगर हम कुछ मुद्दत तक उनकी सजा को रोक दें तो कहते हैं कि क्या चीज उसे रोके हुए है। आगाह, जिस दिन वह उन पर आ पड़ेगा

तो वह उनसे फेरा न जा सकेगा और उन्हें घेर लेगी वह चीज जिसका वे मजाक उड़ा रहे थे। (7-8)

मौजूदा दुनिया को खुदा ने छः दिनों, यानी छः अदवार (Periods) में पैदा किया है। ज़मीन पर एक ऐसा दौर गुज़रा है जबकि उसकी सतह पानी से ढकी हुई थी। खुदा की सल्लनत के इस हिस्से में उस वक्त सिर्फ पानी नज़र आता था। इसके बाद खुदा के हुक्म से खुशकी के इलाके उभर आए और पानी समुद्रों की गहराई में जमा हो गया। इस तरह यह मुमकिन हुआ कि ज़मीन पर मौजूदा जीवधारी ज़हूर में आए।

खुदा अगरचे कादिर है कि वाक़ेयात को अचानक जाहिर कर दे। मगर यह दुनिया इंसान के लिए बतौर इम्तेहानगाह बनाई गई है। यही वजह है कि खुदा ने मौजूदा दुनिया को मंसूबे के तहत बनाया और अपनी तख़्तीकात (रचनाओं) पर असबाब का पर्दा कायम रखा।

दुनिया की पैदाइश और उस पर इंसान की आबादकारी से खुदा का मकसूद अच्छा अमल करने वाले का इंतज़ाब है। 'अच्छा अमल' दरअसल हकीकतपसंदाना अमल का दूसरा नाम है। यानी किसी दबाव के बग़ैर वह करना जो अजरूए हकीकत आदमी को करना चाहिए। हकीकतपसंद शख्स वह है जो असबाब के जाहिरी पर्दे से गुज़र कर खुदा की छुपी हुई हुई कारफरमाई को देख ले। बजाहिर इस्तिस्नान रखते हुए अपने आपको बेइस्तिस्नान कर ले। सरकशी की जिद्दी गुज़रने का मौक़ा रखते हुए खुदा का ताबेअदार बन जाए।

मौजूदा दुनिया में ऐसे ही हकीकतपसंद इंसानों का चुनाव हो रहा है। जब चुनाव की यह मुद्दत ख़त्म होगी तो मौजूदा निज़ाम को ख़त्म करके दूसरा मेयारी निज़ाम बनाया जाएगा जहां तमाम अच्छी चीज़ें सिर्फ अच्छा अमल करने वालों के लिए होंगी और तमाम बुरी चीज़ें सिर्फ बुरा अमल करने वालों के लिए।

अल्लाह तआला अपने कानूने मोहलत की वजह से मुंकिरों और सरकशों को फौरन नहीं पकड़ता। उन्हें इतिहाई हद तक मौक़ा देता है कि वे या तो सचेत होकर अपनी इस्लाह कर लें या आखिरी तौर पर अपने आपको मुजरिम साबित कर दें। यह कानूने मोहलत कुछ सरकशों के लिए ग़लतफहमी का सबब बन जाता है। वे अपनी हैसियत को भूल कर बड़ी-बड़ी बातें करने लगते हैं। मगर जब वे खुदा की पकड़ में आ जाएंगे उस वक्त उन्हें मालूम होगा कि वे खुदा के मुक़ाबले में किस कदर बेबस थे।

وَلَئِنْ اَدْقَمْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُۥٓ اِنَّهُۥ يُكْفُرُ ۚ وَلَئِنْ اَدْقَمْنٰهُ نِعْمًاۢ بَعْدَ ضَرَرٍۭ مَّكْتَنٍ لَيَقُوْلُنَّ ذَهَبَ السَّيِّاَتُ عَنِّيۤ اِنَّهُۥ لَفَرِحَ فَخُوْرًا ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۚ وَلٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَّ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝

और अगर हम इंसान को अपनी किसी रहमत से नवाजते हैं फिर उससे उसे महरूम कर देते हैं तो वह मायूस और नाशुक्रा बन जाता है। और अगर किसी तकलीफ के बाद जो उसे पहुंची थी, उसे हम नेमत से नवाजते हैं तो वह कहता है कि सारी मुसीबतें

मुझसे दूर हो गई, वह इतराने वाला और अकड़ने वाला बन जाता है। मगर जो लोग सन्न करने वाले और नेक अमल करने वाले हैं उनके लिए बख्शिश (क्षमा) है और बड़ा अज्र (प्रतिफल)। (9-11)

मौजूदा दुनिया में आदमी को कभी राहत दी जाती है और कभी मुसीबत। मगर यहां न राहत इनाम के तौर पर है और न मुसीबत सजा के तौर पर। दोनों ही का मकसद जांच है। यह दुनिया दारुल इम्तेहान (परीक्षा-स्थल) है। यहां इंसान के साथ जो कुछ पेश आता है वह सिर्फ इसलिए होता है कि यह देखा जाए कि मुख़ालिफ़ हालात में आदमी ने किस किस का रद्देअमल पेश किया।

वह आदमी नाकाम है जिसका हाल यह हो कि जब उसे खुदा की तरफ से कोई राहत पहुंचे तो वह फख़ की नफ़िसयात में मुब्तिला हो जाए। और जो अफ़राद उसे अपने से कम दिखाई दें उनके मुकाबले में वह अकड़ने लगे। इसी तरह वह शख़्स भी नाकाम है कि जब उससे कोई चीज़ छिने और वह मुसीबत का शिकार हो तो वह नाशुक्रि करने लगे। किसी महरूम के बाद भी आदमी के पास खुदा की दी हुई बहुत सी चीज़ें मौजूद होती हैं। मगर आदमी उन्हें भूल जाता है और खोई हुई चीज़ के ग़म में ऐसा पस्तहिम्मत होता है गोया उसका सब कुछ लुट गया है।

इसके बरअक्स ईमान में पूरा उतरने वाले वे हैं जो साबिर (धैर्यवान) और नेक अमल करने वाले हों। यानी हर झटके के बावजूद अपने आपको एतदाल पर बाकी रखें और वही करें जो खुदा का बंदा होने की हैसियत से उन्हें करना चाहिए।

सन्न यह है कि आदमी की नफ़िसयात हालात के ज़ेअसर न बने बल्कि उसूल और नज़रिये के तहत बने। हालात चाहे कुछ हों वह उनसे बुलन्द होकर ख़ालिस हक की रोशनी में अपनी राय बनाए। वह हालात से ग़ैर मुतअस्सिर रहकर अपने अकीदे और शुऊर की सतह पर ज़िंदा रहने की ताक़त रखता हो। इसी किस्म की ज़िंदागी नेक अमली की ज़िंदागी है। जो लोग इस नेक अमली का सुबूत दें वही वे लोग हैं जो अगली ज़िंदगी में खुदा की रहमतों के हिस्सेदार होंगे और खुदा की अबदी (चिरस्थायी) जन्नतों में जगह पाएंगे।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضُ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ كُتُبٌ وَجَاءَ مَعَهُ مَلَكٌ ۖ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝^{١١}
أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأَنَّا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيَةٌ ۖ وَادْعُوا مَن اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝^{١٢} وَالَّذِينَ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا أُنْزِلَ بِإِذْنِ اللَّهِ وَأَنَّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝^{١٣}

कहीं ऐसा न हो कि तुम उस चीज़ का कुछ हिस्सा छोड़ दो जो तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) की गई है। और तुम इस बात पर दिलतंग हो कि वे कहते हैं कि उस पर कोई ख़जाना क्यों नहीं उतारा गया या उसके साथ कोई फरिश्ता क्यों नहीं आया। तुम तो सिर्फ़ डराने वाले हो और अल्लाह हर चीज़ का जिम्मेदार है। क्या वे कहते हैं कि पैग़म्बर ने इस किताब को गढ़ लिया है। कहो, तुम भी ऐसी ही दस सूरतें बना कर ले आओ और अल्लाह के सिवा जिसे बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर वे तुम्हारा कहा पूरा न कर सकें तो जान लो कि यह अल्लाह के इल्म से उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, फिर क्या तुम हुक्म मानते हो। (12-14)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब शिर्क की तरदीद की और लोगों को तौहीद की तरफ बुलाया तो आपके मुखातबीन बिगड़ गए। इसकी वजह यह थी कि आपकी बातों से उनके उन बड़ों पर ज़द पड़ती थी जिनके दीन को उन्होंने इख़्तियार कर रखा था और जिनसे जुड़ाव पर वे फख़ करते थे। सूरतेहाल यह थी कि कदीम अरबों के ये अकाबिर (बड़े) तरीखी तौर पर उनकी नज़र में बाअज़मत बने हुए थे, जबकि पैग़म्बरे इस्लाम के साथ अभी तरीख की अज़मतें शामिल नहीं हुई थीं। उस वक़्त आप लोगों को एक बेहैसियत इंसान के रूप में नज़र आते थे। अरब के लोग यह देखकर सन्न बरहम (आक्रोशित) होते थे कि एक मामूली आदमी ऐसी बातें कह रहा है जिससे उनके अकाबिर व महापुरुष बेएतबार साबित हो रहे हैं।

ऐसी हालत में दाजी के जेहन में यह ख़याल आता है कि वह, कम से कम वक्ती तौर पर, तंकीदी अंदाज़ से परहेज़ करे और सिर्फ़ मुब्त (सकारात्मक) तौर पर अपना पैग़ाम पेश करे। “शायद तुम ‘वही’ के कुछ हिस्से की तब्लीग़ छोड़ दोगे।” से मुराद खुदाई ‘वही’ का यही तंकीदी हिस्सा है। मगर अल्लाह तआला को वज़ाहत मल्लूब है और तंकीद (आलोचना) के बग़ैर वज़ाहत मुमकिन नहीं। फिर अगर हक को पूरी तरह खोलने के नतीजे में लोग दाजी को मज़ाक और मुख़ालिफ़त का मौजूअ (विषय) बनाएं तो इससे घबराने की क्या ज़रूरत। मदऊ की तरफ से यह मुख़ालिफ़तना रद्देअमल तो दरअस्तल वह कीमत है जो किसी आदमी को बेआमेज़ (विशुद्ध) हक का दाजी बनने के लिए इस दुनिया में अदा करनी पड़ती है।

ख़ुदा के दाजी के बरहक हमें का सबसे ज्यादा यकीनी सुबूत उसका नाकबिले तकलीद (अद्वितीय) कलाम है। जो लोग पैग़म्बर को हकीर (तुच्छ) समझ रहे थे और यह यकीन करने के लिए तैयार न थे कि इस बजाहिर मामूली आदमी को वह सच्चाई मिली है जो उनके अकाबिर को भी नहीं मिली थी, उनसे कहा गया कि पैग़म्बर की सदाक़त को इस मेयार पर न जांचो कि मादूदी एतबार से वह कैसा है। बल्कि इस हैसियत से देखो कि वह जिस कलाम के ज़रिए अपनी दावत पेश कर रहा है वह कलाम इतना अजीम है कि तुम और तुम्हारे तमाम अकाबिर मिलकर भी वैसा कलाम नहीं बना सकते। यह नाकबिले तकलीद इम्तियाज़ (विशिष्टता) इस बात का क़तई सुबूत है कि पैग़म्बर ख़ुदा की तरफ से बोल रहा है। पैग़म्बर के बरसरे हक होने की इस वाज़ेह निशानी के बाद आख़िर लोगों को ख़ुदा का हुक्मवरदार बनने में किस चीज़ का इतिज़र है।

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ وَحِطَّ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبِطُلُوءِ النَّارِ يُعْجِلُونَ ۝

जो लोग दुनिया की जिंदगी और उसकी जौनत (वैभव) चाहते हैं, हम उनके आमाल का बदला दुनिया ही में दे देते हैं। और इसमें उनके साथ कोई कमी नहीं की जाती। यही लोग हैं जिनके लिए आखिरत में आग के सिवा कुछ नहीं है। उन्होंने दुनिया में जो कुछ बनाया था वह बर्बाद हुआ और खराब गया जो उन्होंने कमाया था। (15-16)

दीन की दो किस्में हैं। एक मिलावटी दीन, दूसरा बेआमेज दीन। मिलावटी दीन दरअसल दुनिया के ऊपर दीन का लेबल लगाने का दूसरा नाम है। वह दुनिया और दीन के दर्मियान मुसालेहत करने से वजूद में आता है। यही वजह है कि हर जमाने में ऐसा होता है कि मिलावटी दीन की बुनियाद पर बड़े-बड़े इदारे कायम होते हैं। मफ़दपरस्त लोग उसके जरिए दीन के नाम पर दुनिया हासिल कर लेते हैं।

बेआमेज (विशुद्ध) दीन का मामला इसके बिल्कुल बरअक्स है। बेआमेज दीन की दावत जब किसी माहौल में उठती है तो वह सिर्फ एक नजरी सच्चाई होती है। मआशी मफ़ददात और कयादती मसालेह (हित) उसके साथ जमा नहीं होते। ऐसी हालत में जो लोग मिलावटी दीन के नाम पर इज्जत और मक़ाम हासिल किए हुए हों उनके सामने जब बेआमेज दीन का दावत आती है तो वे सख़्त ख़ौफ़ज़दा होते हैं। क्योंकि इसे इस्तिख़ार करने की सूरत में उन्हें नजर आता है कि तमाम दुनियावी चीज़ें उनसे छिन जाएंगी।

इस एतबार से किसी माहौल में बेआमेज दीन का दावत का उठना वहां एक नाजुक इन्तेहाज़ का बरपा होना है। ऐसे वक़्त में जो लोग दुनिया की इज्जत और दुनिया के मफ़ददात को काबिले तरज़ीह समझें और बेआमेज दीन का साथ न दें उनकी सारी दौड़ धूप दुनिया के ख़ाने में चली जाती है। क्योंकि उन्होंने उस दीन का साथ दिया जिसमें उनके दुनियावी मफ़ददात (स्वार्थ) महफूज़ थे। और उस दीन का साथ न दिया जिसमें उन्हें अपने दुनियावी मफ़ददात छिनते हुए नजर आते थे। वे बजाहिर चाहे दीनी सरगर्मियों में मशगूल हों, अस्त मक्सूद के एतबार से वे दुनिया के हुसूल मे मशगूल होते हैं। जाहिर है कि ऐसी कोशिशों का आखिरत में कोई नतीजा मिलना मुमकिन नहीं।

उन्होंने अगरचे अपनी सरगर्मियों को दीन का नाम दे रखा था वे अपने कौमी मेलों के ऊपर ज़शने दीनी का बोर्ड लगाते थे। वे अपनी कौमी लड़ाइयों को मुक़द्दस जंग का नाम देते थे। वे अपनी कयादती नुमाइश को दीनी कॉन्फ़्रेंस कहते थे, वे अपने सियासी हंगामों को मजहब की इस्तेलाहत (शब्दावलियों) में बयान करते थे, वे अपने दुनियावी जब्बात के तहत धूम मचाते थे और उसे ख़ुदा और रसूल के साथ जोड़ते थे। मगर ये सारी तामीरात दुनिया की ज़मीन में थीं, वे आख़िरत की ज़मीन में न थीं, इसलिए क़ियामत का जलजला उन्हें बिल्कुल बर्बाद कर देगा। अगली दुनिया में उनका कोई अंजाम उनके हिस्से में न आएगा।

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كُتِبَ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۖ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَخْرَابِ فَالْئِثْمُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُن فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

भला एक शख्स जो अपने रब की तरफ से एक दलील पर है, इसके बाद अल्लाह की तरफ से उसके लिए एक गवाह भी आ गया, और इससे पहले मूसा की किताब रहनुमा और रहमत की हैसियत से मौजूद थी, ऐसे ही लोग उस पर ईमान लाते हैं और जमाअतों में से जो कोई इसका इंकार करे तो उसके वादे की जगह आग है। पस तुम इसके बारे में किसी शक में न पड़ो। यह हक है तुम्हारे रब की तरफ से मगर अक्सर लोग नहीं मानते। (17)

पैगम्बर इस्लाम ने अरब में तौहीद की दावत पेश की तो कुछ लोगों ने उसे माना और ज्यादा लोग इसके मुंकिर हो गए। यही हर जमाने में हक की दावत के साथ होता रहा है।

ख़ुदा ने हर आदमी को फ़ितरते सही पर पैदा किया है। गिर्द व पेश की दुनिया में हर तरफ ऐसी निशानियां फैली हुई हैं जो अपने ख़ालिक का एलान करती हैं और इसी के साथ उसके तख़लीकी मंसूबे की तरफ इशारा कर रही हैं। फिर इंसानियत के बिल्कुल इन्तिदाई जमाने से ख़ुदा के रसूल आते रहे और ख़ुदा की बातें लोगों को बताते रहे। उन्हीं में से एक पैगम्बर हजरत मूसा अलैहिस्सलाम हैं। जिनकी लाई हुई किताब अब तक किसी न किसी शक़ल में मौजूद है। अब जो शख्स संजीदा हो और चीज़ों से सबक लेना जानता हो तो वह हकीक़त से इतना मानूस (भिन्न) होगा कि दाजी जब उसके सामने हकीक़त का एलान करेगा तो फौरन वह उसे पहचान लेगा। उसका दिल और उसका दिमाग़ हक के हक होने पर गवाही देंगे। वह आगे बढ़कर उसे इस तरह इस्तिख़ार कर लेगा जैसे वह उसके अपने दिल की आवाज हो।

मगर अक्सर लोगों का हाल यह होता है कि वे चीज़ों को बहुत ज्यादा संजीदगी के साथ नहीं देखते। वे सतही तमाशों और वक़्ती दिलचस्पियों में पड़कर अपना मिजाज बिगाड़ लेते हैं। शैर मुतअल्लिक चीज़ों की मसरूफ़ियत उन्हें इसका मौख नहीं देती कि वे दाजी और उसकी दावत पर ठहर कर सोचें। चुनांचे उनके सामने जब हक की बात आती है तो वे उसे पहचान नहीं पाते। वे अपने बिगड़े हुए मिजाज की बिना पर उसके मुंकिर बल्कि मुख़ालिफ़ बन जाते हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने ख़ुदा की और ख़ुदा के तख़लीकी मंसूबे की नाक़दी की। उनके लिए आख़िरत में जहन्नम की आग के सिवा और कुछ नहीं।

इंसानी फ़ितरत, ज़मीन व आसमान के वाक़ेयात और पिछली आसमानी किताबें कुरआन के हक होने की गवाही दे रही हैं। इसके बाद अगर लोगों की अक्सरियत (बहुसंख्या) इसका इंकार करती है तो इसकी वजह मुंकिरीन के अंदर तलाश की जाएगी न यह कि ख़ुद कुरआन के किताबे हक़ (दिव्य ग्रंथ) होने पर शक किया जाए।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۝
الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ
كَفِرُونَ ۝ أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ
مِنْ أَوْلِيَاءٍ يَضْعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۖ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا
يُبْصِرُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا
يَفْعَلُونَ ۝ لَا جَرَمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ الْخَاسِرُونَ ۝

और उससे बढ़कर जालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े। ऐसे लोग अपने रब के सामने पेश होंगे और गवाही देने वाले कहेंगे कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ गढ़ा था। सुनो, अल्लाह की लानत है जालिमों के ऊपर। उन लोगों के ऊपर जो अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोकते हैं और उसमें कजी (टढ़) दूँवते हैं। यही लोग आखिरत के मुंकिर हैं। वे लोग जमीन में अल्लाह को बेवस करने वाले नहीं और न अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार है, उन पर दोहरा अजाब होगा। वे न सुन सकते थे और न देखते थे। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला। और वे सब कुछ उनसे खोया गया जो उन्होंने गढ़ रखा था। इसमें शक नहीं कि यही लोग आखिरत (परलोक) में सबसे ज्यादा घाटे में रहेंगे। (18-22)

‘खुदा पर झूठ गढ़ने’ से मुराद खुदा की जात पर झूठ गढ़ना नहीं है। इससे मुराद खुदा की बात पर झूठ गढ़ना है। खुदा अपना पैगाम सुनाने के लिए खुद सामने नहीं आता बल्कि एक इंसान की जवान से इसका एलान कराता है। यह इंसान उस वक्त बजाहिर एक मामूली इंसान होता है, मगर उसके कलाम में खुदा की वाजेह झलकियां होती हैं। अगर लोग उसे उसके कलाम के एतबार से देखें तो वे उसकी अज्मतों में खुदा को पा लें। मगर लोगों की सतहियत और जाहिरपरस्ती का नतीजा यह होता है कि उनकी निगाहें सुनाने वाले की मामूली हैसियत में अटक कर रह जाती हैं। पैगम्बर का मामूली होना उन्हें नजर आता है मगर पैगाम का ग़ैर मामूली होना उन्हें दिखाई नहीं देता। चुनांचे वे उसे एक आम इंसान का मामला समझ कर उसका मजाक उड़ते हैं। उसकी बात में झूठे एतराजात निकालते हैं। और उसे इस तरह नजरअंदाज कर देते हैं जैसे कि इसकी कोई अहमियत ही नहीं।

इस जालिमाना रवैये की अस्ल वजह बेखौफ़ी की नपिसयात है। लोगों को आखिरत पर यकीन नहीं। उनके दिलों में खुदाए क़ह्हार व जब्बार का खौफ़ नहीं। इसलिए वे इस पैगाम के

बारे में संजीदा नहीं हो पाते। और जिस मामले में आदमी संजीदा न हो वह उसके मुतअल्लिक सही रद्देअमल पेश करने में हमेशा नाकाम रहेगा।

मगर लोगों की यह ग़ैर संजीदगी उस वक्त रुख़्त हो जाएगी जब वे कियामत में मालिके कायनात के सामने खड़े होंगे। उस वक्त उनकी मौजूदा आजादी उनसे छिन चुकी होगी। जिन असबाब व वसाइल के भरोसे पर वे सरकश बने हुए थे वे खुदा का टेपरिकॉर्ड बनकर उनके खिलाफ गवाही देने लगेंगे। उस वक्त यह सुस्पष्ट हो जाएगा कि खुदा के दाओ (आह्वानकर्ता) को जो उन्होंने झुठलाया तो इसकी वजह यह नहीं थी कि वे उसे समझने से आजिज थे। इसकी वजह यह थी कि वे उसके बारे में संजीदा न थे। कियामत की हौलनाकी अचानक उन्हें संजीदा बना देगी। उस वक्त अपनी बेवसी के माहौल में वे उस बात को पूरी तरफ समझ लेंगे जिसे दुनिया में अपनी आजादी के माहौल में समझ नहीं पाते थे।

अल्लाह ने इंसान को ऐसी आला सलाहियतें दी हैं कि अगर वह उन्हें इस्तेमाल करे तो वह हर बात को उसकी गहराई तक समझ सकता है। और अपने दुनियावी मामलात में वाकैयतन वह ऐसा ही साबित होता है। मगर आखिरत के मामले में आदमी का हाल यह है कि वह कान रखते हुए बहरा बन जाता है और आंख रखते हुए अंधेपन का सबूत देता है।

आदमी की कामयाबी उसकी संजीदगी (Sincerity) की कीमत है। जो लोग दुनिया के मामले में संजीदा हों वे दुनिया में कामयाब रहते हैं। इसी तरह जो लोग आखिरत के मामले में संजीदा हों वे आखिरत में कामयाब रहेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآخَبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْيُنِ وَالْأَصْوَرِ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۖ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए और अपने रब के सामने आजिजी (समर्पण) की वही लोग जन्नत वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। इन दोनों फ़रीकों (पक्षों) की मिसाल ऐसी है जैसे एक अंधा और बहरा हो और दूसरा देखने और सुनने वाला। क्या ये दोनों एकसां (समान) हो जाएंगे। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। (23-24)

इब्खात के मअना हैं आजिजी करना (समर्पण भाव से झुकना)। यही ईमान का खुलासा है। ईमान न कोई विरासत है और न किसी लफ्जी मज्मूअे की ज़वानी अदायगी। ईमान एक दरयाफ्त (खोज) है। आदमी जब अपने देखने-सुनने (दूसरे शब्दों में शुऊर) को इस्तेमाल करके खुदा को पाता है और इसके मुकाबले में अपनी हैसियत का इदराक (भान) करता है तो उस वक्त उसके ऊपर जो कैफ़ियत तारी होती है उसी का नाम इज्ज (इब्खात) है। इज्ज खुदा के मुक़ाबले में अपनी हैसियत वाकई की पहचान का लाजिमी नतीजा है।

ईमान, इब्खात और अमले सालेह (सत्कर्म) तीनों एक ही हकीकत के मुख़लिफ पहलू हैं। ईमान खुदा के वजूद और उसकी सिफ़ाते क़माल की शुऊरी दरयाफ्त है। इब्खात उस क़ब्बी

हालत का नाम है जो खुदा की दरयापत के नतीजे में लाजिमन आदमी के अंदर पैदा होती है। अमले सालेह उसी शुऊर और उसी कैफियत से पैदा होने वाली खारजी (वाह्य) सूरत है। आदमी जब खुदा के जेहन से सोचता है। जब उसका दिल खुदाई कैफियतों से भर जाता है तो उस वक्त उसके ऐन फितरी नतीजे के तौर पर उसकी जाहिरी खुदाई अमल में ढल जाती है। इसी का नाम अमले सालेह है। जो शरूख ईमान, इख्बात और अमले सालेह का पैकर बन जाए वही खुदा का मल्लूब इंसान है। और वही वह इंसान है जिसे जन्नत के अबदी (चिरस्थायी) बागों में बसाया जाएगा।

दुनिया में आलातरीन इस्तेहानी हालात पैदा करके यह दिखाया जा रहा है कि कौन अपने आपको क्या साबित करता है। एक गिरोह वह है जिसने अपने समअ व बसर (शुऊर) को सही तौर पर इस्तेमाल करके हकीकते वाक्या को जाना और अपने आपको उसके मुताबिक ढाल लिया। ये देखने और सुनने वाले लोग हैं। दूसरा गिरोह वह है जिसने अपने समअ व बसर (सुनने-देखने) को सही तौर पर इस्तेमाल नहीं किया। उसे न हकीकते वाक्या की मअरफत (अन्तर्ज्ञान) हासिल हुई और न वह अपने आपको उसके मुताबिक ढाल सका। ये अंधे और बहरे लोग हैं। जाहिर है कि ये दोनों बिल्कुल मुखल्लिफ किस्म के इंसान हैं। और दो मुखल्लिफ इंसानों का अंजाम एक जैसा नहीं हो सकता।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِذْ يٰۤاَيُّهَا قَوْمِي ۖ إِنِّي لَأَتْلُو لَكُم بَيِّنَاتٍ مِّن رَّبِّي ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝ فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا ۖ وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا بُدَإِیَ الرِّأْیِ ۖ وَمَا نَرَىٰ لَكَ عَلَيْنَا مِّن فَضْلٍ ۖ بَلْ نَحْسَبُكَ كَذِبًا ۝

और हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा कि मैं तुम्हें खुला हुआ डराने वाला हूँ। यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। मैं तुम पर एक दर्दनाक अजाब के दिन का अदेशा रखता हूँ। उसकी कौम के सरदारों ने कहा, जिन्होंने इंकार किया था कि हम तो तुम्हें बस अपने जैसा एक आदमी देखते हैं। और हम नहीं देखते कि कोई तुम्हारे ताबेअ हुआ हो सिवाए उनके जो हम में परत लोग हैं, बेसमझे बूझे। और हम नहीं देखते कि तुम्हें हमारे ऊपर कुछ बड़ाई हासिल हो, बल्कि हम तो तुम्हें झूठा ख्याल करते हैं। (25-27)

खुदा के जितने पैगम्बर आए, इसीलिए आए कि वे इंसान को खुदा के तख्तीकी मंसूबे से आगाह करें। यह मंसूबा कि इंसान मौजूदा दुनिया में इस्तेहान की गरज से रखा गया है। यहां अगरचे बजहिर मुखल्लिफ चीजों की इबादत के मैके हैं। मगर अस्त मल्लूब सिर्फ यह है कि इंसान खुदा का आबिद बने। जो लोग खुदा के आबिद (पूजक) न बनें वे इस्तेहान में

नाकाम हो गए। ऐसे लोगों के लिए मरने के बाद की जिंदगी में सख्त अजाब है। हजरत नूह ने अपनी कौम के लोगों से यही बात कही। वह उसके लिए नजीरे मुबीन (खुले हुए डराने वाले) बन गए। मगर आपकी कौम ने आपकी बात नहीं मानी।

इसकी वजह लोगों की जाहिरपरस्ती थी। इंसान की गुमराही की नजरियाती तौर पर बहुत सी किस्में हैं। मगर हकीकत के एतबार से हर दौर के इंसानों की गुमराही सिर्फ एक रही है। और वह है जाहिरपरस्ती या दुनियापरसंदी। दुनियापरस्त लोग, ऐन अपने मिजाज के मुताबिक, दुनियावी चीजों को हक और नाहक का मेथार समझते हैं। वे शुऊरी या गैर शुऊरी तौर पर यह फर्ज कर लेते हैं कि जिसके पास जाहिरी रैनकें हैं वह हक पर है और जो दुनिया की रैनमें से महलूम हो वह नाहक पर।

खुदा का दाओ (आह्वानकर्ता) जब उठता है तो अपने हमअस्रों (समकालीन) को वह सिर्फ इंसानों में से एक इंसान नजर आता है। दुनियावी एतबार से उसके गिर्द व पेश बड़ाई का कोई खुसूसी निशान नहीं होता। दूसरी तरफ यह होता है कि वह जिस दीन का अलमबरदार होता है उसके साथ चूँकि अभी तक दुनियावी फायदे वाबस्ता नहीं होते, इसलिए उसकी तरफ बढ़ने वाले ज्यादा वे तहीदस्त (साधनहीन) लोग होते हैं जिन्हें एक 'नए दीन' को इख्तियार करने के नतीजे में कुछ खोना पड़े। यह सूरतेहाल खालिस तौर पर, वक्त के बड़ों के लिए, फितना बन जाती है। वे समझ लेते हैं कि जब दुनिया उनके साथ नहीं है तो हक भी उनके साथ नहीं हो सकता। यहां तक कि कौम में ऐसे लोग भी निकलते हैं जो उन्हें झूठा और धोखेबाज कहने से भी दरेग न करें।

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي ۖ وَآتَيْنِي رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهِ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنزِلُكُمْ مِّنْهَا وَآتِيكُمْ لَهَا كَرِهُونَ ۖ وَيَقَوْمِ لَا تَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَا لَكُم مِّن شَيْءٍ ۚ إِنَّ الْأَعْلَىٰ لِلَّهِ ۖ وَمَا أَنَا بِطَارِدٍ لِّلَّذِينَ آمَنُوا ۖ إِنَّهُمْ قُلُوبُهُمْ لَرَئِيهِمْ وَلَكِنِّي أَرَأَيْتُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ۖ وَيَقَوْمِ مَن يَبْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ ۖ إِن طَرَذَتْهُمْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۖ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِندِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ ۖ وَلَا أَقُولُ لِلَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَن يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا ۖ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ ۖ إِنِّي إِذْ لِّمِنَ الظَّالِمِينَ ۝

नूह ने कहा ऐ मेरी कौम, बताओ अगर मैं अपने ख की तरफ से एक रोशन दलील पर हूँ और उसने मुझ पर अपने पास से रहमत भेजी है, मगर वह तुम्हें नजर न आई तो क्या हम उसे तुम पर चिपका सकते हैं जबकि तुम उससे बेजार (खिन्न) हो। और ऐ मेरी कौम, मैं उस पर तुमसे कुछ माल नहीं मांगता। मेरा अज्र (प्रतिफल) तो बस

अल्लाह के जिम्मे है और मैं हरगिज उन्हें अपने से दूर करने वाला नहीं जो ईमान लाए हैं। उन लोगों को अपने रब से मिलना है। मगर मैं देखता हूँ तुम लोग जहालत में मुत्तिला हो। और ऐ मेरी कौम, अगर मैं उन लोगों को धुत्कार दूँ तो खुदा के मुकाबले मैं कौन मेरी मदद करेगा। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। और मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़जाने हैं। और न मैं ग़ैब की ख़बर रखता हूँ। और न यह कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ। और मैं यह भी नहीं कह सकता कि जो लोग तुम्हारी निगाहों में हकीर (तुच्छ) हैं उन्हें अल्लाह कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ उनके दिलों में है। अगर मैं ऐसा कहूँ तो मैं ही जालिम हूँगा। (28-31)

यहां 'बय्यिनह' से मुराद दलील है और रहमत से मुराद नुबुव्वत है। (तफसीर नसफी) इससे मालूम हुआ कि पैग़म्बर जब किसी कौम को दावत देता है तो वह दो चीजों के ऊपर खड़ा होता है। दलील और नुबुव्वत। पैग़म्बर के बाद कोई दाओ (आह्वानकर्ता) भी उसी वक्त दाओ है जबकि वह इन्हीं दो चीजों पर खड़ा हो। इस फ़र्क के साथ कि दलील के बाद दूसरी चीज जो उसके पास होगी वह विलवास्ता (परोक्ष) तौर पर पैग़म्बर से मिली हुई होगी। जबकि पैग़म्बर के पास वह बराहिरास्त (प्रत्यक्ष) खुदा की तरफ से आई है।

कौम जिस वक्त खुदा के दाओ को यह समझ कर नजरअंदाज कर देती है कि उसके यहां जाहिरी एतबार से कोई कबिले लिहाज चीज नहीं, ऐन उसी वक्त उसके पास एक बहुत बड़ी कबिले लिहाज चीज मौजूद होती है। और वह दलील और हिदायत है। दलील और हिदायत की बड़ाई कामिल तौर पर खुदा के दाओ के पास मौजूद होती है। मगर यह बहरहाल मअनवी (अर्थपूर्ण) बड़ाई है। और जिन लोगों की निगाहें जाहिरी चीजों में अटकी हुई हों उन्हें मअनवी बड़ाई क्योंकि दिखाई देगी।

दावते इल्लाह का काम खालिस उख़रवी (परलोकवादी) काम है। उसकी सही कारकदगी के लिए जरूरी है कि दाओ और मदऊ के दर्मियान जर और जमीन के झगड़े न हों। यह जिम्मेदारी खुद दाओ को लेनी पड़ती है कि उसके और मदऊ के दर्मियान मोअतदिल (अनुकूल) फजा हो। और इसकी खातिर वह हर किस्म के माददी और मआशी (आर्थिक) झगड़े एकतरफा तौर पर खत्म कर दे। जिस दाओ का यह हाल हो कि वह एक तरफ दावत दे और दूसरी तरफ मदऊ से दुनियावी चीजों के लिए एहतजाज (प्रोटेस्ट) और मुतालाबा भी कर रहा हो, वह दाओ नहीं, मस्खरह है। उसकी कोई कीमत न मदऊ की नजर में हो सकती है और न खुदा की नजर में।

मदऊ का इम्तेहान यह है कि वह बजाहिर एक बेअम्मत इंसान के अंदर हक की अम्मत को देख ले। इसी तरह दाओ का इम्तेहान यह है कि वह किसी बेदीन का इसलिए इस्तकबाल न करने लगे कि वह माल व जाह का मालिक है। और किसी दीनदार को इसलिए नाकाबिले लिहाज न समझ ले कि उसके पास दुनियावी शान व शौकत की चीजें मौजूद नहीं। दाओ अगर ऐसा करे तो इसका मतलब यह होगा कि वह जबान से आखिरत (परलोक) की अहमियत का वअज (प्रवचन) कह रहा है और अमल से दुनिया की अहमियत का सुवूत दे रहा है। जाहिर है कि यह अपनी तरदीद (खंडन) अपने आप है। और जो शख्स अपनी तरदीद अपने आप करे उसकी बात की दूसरों की नजर में क्या कीमत हो सकती है।

قَالُوا يَنْبَغُ لَكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْغَالِبِينَ ۖ فَكَذَّبْتَ بِمَا تَكْفُرُ ۖ إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۚ قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيَكُمْ بِهٖ اللّٰهُ إِن شَاءَ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۚ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ إِن أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَاكُمْ لَكُمْ إِن كَانَ اللّٰهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ ۖ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

उन्होंने कहा कि ऐ नूह तुमने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा कर लिया। और वह चीज ले आओ जिसका तुम हमसे वादा करते रहे हो, अगर तुम सच्चे हो। नूह ने कहा उसे तो तुम्हारे ऊपर अल्लाह ही लाएगा अगर वह चाहेगा और तुम उसके काबू से बाहर न जा सकोगे। और मेरी नसीहत तुम्हें फायदा नहीं देगी अगर मैं तुम्हें नसीहत करना चाहूँ जबकि अल्लाह यह चाहता हो कि वह तुम्हें गुमराह करे। वही तुम्हारा रब है और उसी की तरफ तुम्हें लौट कर जाना है। (32-34)

हजरत नूह ने अपनी कौम से जिदाल (झगड़ा और बहस) नहीं किया था। वह संजीदा अंदाज में अपना सालेह पैग़ाम उनके सामने पेश कर रहे थे। मगर आपकी संजीदा दावत आपकी कौम को उल्टी सूरत में नजर आ रही थी। इसकी वजह इंसान की यह कमजोरी है कि जब उसकी अपनी जात जद (निशाने) में आ रही हो तो वह संजीदगी खो देता है। ऐसी बात को वह दलील और सुबूत के एतबार से नहीं देखता। वह बग़ैर सोचे समझे उसे रद्द कर देता है। हक के दाओ की ओस दलील भी उसे बहस व जिदाल मालूम होने लगती है।

'बहुत जिदाल कर चुके' का जुमला दरअस्त यह बताने के लिए नहीं है कि नूह ने क्या कहा था। बल्कि वह इसे बताता है कि सुनने वालों ने आपकी बात को क्या दर्जा दिया था।

इसी तरह मुखलिफ़ीने नूह का अजब को तलब करना हकीकतन अजब को तलब करना नहीं था। बल्कि हजरत नूह का मजाक उड़ाना था कि देखो यह शख्स ऐसी बात कह रहा है जो कभी होने वाली नहीं। वे अपनी पोजीशन को इतना मुस्तहकम (सुदृढ़) समझते थे जिसमें उनके ख़्वाल के मुताबिक कहीं से अजाब आने की गुंजाइश न थी। इसी जेहन के तहत उन्होंने कहा कि हमारे इंकार की सजा में जिस अजाब की तुम खबर देते रहे हो वह अजाब लाओ। और चूँकि उनके नजदीक ऐसा अजाब कभी आने वाला न था इसलिए तार्किक रूप से इसका मतलब यह था कि हम हक पर हैं और तुम नाहक पर।

हजरत नूह ने जवाब दिया कि तुम मामले को मेरी निस्वत से देख रहे हो और चूँकि मैं कमजोर हूँ इसलिए तुम्हारी समझ में नहीं आता कि यह अजाब कभी तुम्हारे ऊपर आ सकता है। अगर मामले को खुदा की निस्वत से देखते तो तुम यह न कहते। क्योंकि फिर तुम्हें नजर आ जाता कि इस दुनिया में जालिमों के लिए अजाब का आना इतना ही यकीनी है जितना सूरज का निकलना और जलजले का फटना।

हक के दाओ की बात को मानने का तमाअतर इहिसार इस पर है कि सुनने वाला उसे कहने वाले के एतबार से न देखे बल्कि जो कहा गया है उसके एतबार से देखे। चूँकि हजरत नूह की

कौम आपकी बात को बस एक आम इंसान की बात समझ रही थी, इसलिए आपने फरमाया कि इस जेहन के तहत तुम मेरी बात की कद्र व कीमत कभी नहीं पा सकते। अब तो तुम्हारे लिए उसी दिन का इंतजार करना है जबकि खुदा बराहेरास्त तुम्हारे सामने आ जाए।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَىٰ إِجْرَائِي وَإِنَّا بِرَبِّي لَمُبَشِّرُونَ
تَجْرُمُونَ

क्या वे कहते हैं कि पैगम्बर ने उसे गढ़ लिया है। कहो कि अगर मैंने इसको गढ़ा है तो मेरा जुर्म मेरे ऊपर है और जो जुर्म तुम कर रहे हो उससे मैं बरी हूँ। (35)

जो लोग कहते थे कि पैगम्बर ने यह कलाम खुद गढ़ लिया है, यह खुदा की तरफ से नहीं है, वे 'वही' (ईश्वरीय वाणी) व इल्हाम (दिव्य प्रकाशना) के मुक़िर न थे। यहाँ तक कि वे माजी (अतीत) के रसूलों को मानते थे। फिर उन्होंने ऐसा क्यों कहा। यह दरअस्त 'वही' का इंकार नहीं था। बल्कि साहिबे 'वही' का इंकार था। जो शख्स खुदा की तरफ से बोल रहा था वह देखने में उन्हें एक मामूली इंसान दिखाई देता था। उनका जाहिरपरस्त मिजाज समझ नहीं पाता था कि ऐसा एक आदमी वह शख्स कैसे हो सकता है जिसे खुदा ने अपने पैगाम की पैगाम्बरी (संदेश वाहन) के लिए चुना हो।

'मेरा जुर्म मेरे ऊपर, तुम्हारा जुर्म तुम्हारे ऊपर' यह दरअस्त कलिमए रुख़सत है। जब मुखाबत दलील से बात को नहीं मानता। हर किस्म की वजाहत के बावजूद वह इंकार पर तुला हुआ है तो दाजी महसूस करता है कि उसके लिए अब आखिरी चाराएकार सिर्फ यह है कि वह यह कहकर ख़ामोश हो जाए कि मैं और तुम दोनों असली हाकिम के सामने पेश होने वाले हैं। वहाँ हर एक का हाल खुल जाएगा। और हर आदमी अपनी हकीकत के एतबार से जैसा था उसके मुताबिक उसे बदला दिया जाएगा। जब दलील की हद ख़त्म हो जाए तो दाजी (आह्वानकर्ता) के लिए इसके सिवा कोई सूरत बाकी नहीं रहती कि वह यकीन की जवान में कलाम करके अलग हो जाए।

وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَن قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَكَانٍ وَلَا تَأْتِ بِمَعُونَةٍ ۖ وَأَصْنَعِ الْفُلَكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحَيْنَا وَلَا تَخْطُبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُّعْرِضُونَ ۖ وَيَصْنَعِ الْفُلَكَ وَكَلَّمَا مَرْعِلَيْهِ نَارًا مِّن قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ قَالَ إِن تَسْخَرُونَا مِنَّا فَقَدْ آتَيْنَاكَ عَذَابًا يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْكَ نَحْرُوكَ ۖ فَسَوِّفَ تَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيكَ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْكَ عَذَابٌ مُّقِيمٌ

और नूह की तरफ 'वही' (प्रकाशना) की गई कि अब तुम्हारी कौम में से कोई इमान नहीं लाएगा सिवा उसके जो इमान ला चुका। पस तुम उन कामों पर ग़मगीन न हो जो वे कर रहे हैं। और हमारे ख़बर और हमारे हुक्म से तुम कश्ती बनाओ और जालिमों के हक में मुझसे बात न करो, बेशक ये लोग ग़र्ह होंगे। और नूह कश्ती बनाने लगा। और जब उसकी कौम का कोई सरदार उस पर गुजरता तो वह उसकी हंसी उड़ाता, उन्होंने कहा अगर तुम हम पर हंसते हो तो हम भी तुम पर हंस रहे हैं। तुम जल्द जान लोगे कि वे कौन हैं जिन पर वह अजाब आता है जो उसे रुसवा कर दे और उस पर वह अजाब उतरता है जो दाइमी है। (36-39)

इंसान से जो इमान मल्लूव है वह इमान वह है जबकि आदमी शुऊरी तौर पर अपने आजादाना फैसले से इमान कुबूल करे। पैगम्बर के लंबे दावती अमल के बावजूद जो लोग इमान न लाएं वे ऐसा करके यह साबित करते हैं कि वे आजादाना फैसले के तहत खुदा के मोमिन बनने के लिए तैयार नहीं हैं। ऐसे लोगों के लिए दूसरा मरहला यह होता है कि उनकी आजादी छीन ली जाए और उन्हें ले जाकर बराहेरास्त खुदाए जुलजलाल (प्रतापी प्रभु) के सामने खड़ा कर दिया जाए ताकि जिस चीज को उन्होंने मोमिनाना इकरार नहीं किया था, उसका वे मुजरिमाना इकरार करें और अपनी सरकशी की सजा भुगतें।

हजरत नूह की सैंकड़ों साल की तब्दीग के बाद उनकी कौम के लिए यह वक्त आ गया था। इसके बाद हजरत नूह से कह दिया गया कि अब तब्दीग के काम से फ़ारिग होकर कश्ती तैयार करो ताकि जब सरकशों को ग़र्क करने के लिए खुदा का सैलाब आए तो उस वक्त तुम और तुम्हारे साथी अहले इमान उसमें पनाह ले सकें।

हजरत नूह ने एक बहुत बड़ी तीन मंजिला कश्ती तैयार की। उसे बनाने में कई साल लग गए। जिस ज़माने में हजरत नूह अपने चन्द साथियों को लेकर कश्ती बना रहे थे तो कौम के सरकश लोग आते जाते हुए उसे देखते। चूँकि वे लोग अजाब की बात को महज फर्जी समझ रहे थे इसलिए जब उन्होंने देखा कि आने वाले मफ़रूजा (काल्पनिक) अजाब से बचने के लिए कश्ती भी तैयार की जा रही है तो वे हजरत नूह का और भी ज्यादा मजाक उड़ाने लगे।

एक आदमी सरकशी और नाइंसाफी के जरिए दौलत समेट रहा हो तो जाहिरपरस्त आदमी उसके गिर्द दुनिया का साजोसामान देखकर उसे कामयाब समझ लेगा। मगर जो शख्स जानता हो कि दुनिया का निजाम अज़्हाकी कानूनों पर चल रहा है, वह मजहूर (उक्त) शख्स की वक्ती कामयाबी में मुस्तक़बिल की अजीम तबाही का मंजर देख रहा होगा। नूह की कौम के जाहिरपरस्त लोग अगरचे हजरत नूह का मजाक उड़ा रहे थे मगर हकीकते वाक़्या की नज़र में ख़ुद उनका मजाक उड़ा रहा था।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مَن كُلِّ ذَوْبَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ وَمَا آمَنَ مَعَهُ

الْأَقْلِيلُ^① وَقَالَ اذْكُبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ حَجْرَيْهَا وَمُرْسَهَاتِ رَبِّي لَعَفُورٌ
رَّحِيمٌ^② وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادَى نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي
مَعْرَلٍ يَبُنَى اِزْكِبْ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ^③ قَالَ سَاوِ إِلَى
جَبَلٍ يَعْصِمُنِي مِنَ الْمَاءِ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ
رَحِمَ^④ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ^⑤ وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلَعِي
مَاءَكِ وَيَسْبَأْ أَقْلَعِي^⑥ وَغِيضَ الْمَاءِ وَقُضِيَ الْأَمْرُ^⑦ وَاسْتَوَتْ عَلَى
الْجُودَى وَقِيلَ بَعْدَ الْقُتُومِ الظَّالِمِينَ^⑧

यहां तक कि जब हमारा हुक्म आ पहुंचा और तूफान उबल पड़ा हमने नूह से कहा कि हर किस्म के जानवरों का एक-एक जोड़ा कश्ती में रख लो और अपने घर वालों को भी, सिवा उन लोगों के जिनकी बाबत पहले कहा जा चुका है और सब ईमान वालों को भी। और थोड़े ही लोग थे जो नूह के साथ ईमान लाए थे। और नूह ने कहा कि कश्ती में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से इसका चलना है और इसका ठहरना भी। बेशक मेरा रब बख्शने वाला महरबान है। और कश्ती पहाड़ जैसी मौजों के दर्मियान उन्हें लेकर चलने लगी। और नूह ने अपने बेटे को पुकारा जो उससे अलग था। ऐ मेरे बेटे, हमारे साथ सवार हो जा और मुंकिरों के साथ मत रह। उसने कहा मैं किसी पहाड़ की पनाह ले लूंगा जो मुझे पानी से बचा लेगा। नूह ने कहा कि आज कोई अल्लाह के हुक्म से बचाने वाला नहीं मगर वह जिस पर अल्लाह रहम करे। और दोनों के दर्मियान मौज हायल (बाधित) हो गई और वह डूबने वालों में शामिल हो गया। और कहा गया कि ऐ जमीन, अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान थम जा। और पानी सुखा दिया गया। और मामले का फैसला हो गया और कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहर गई और कह दिया गया कि दूर हो जालिमों की कौम। (40-44)

जब कश्ती बनकर तैयार हो गई तो खुदा के हुक्म से तूफानी हवाएं चलने लगीं। जमीन से पानी के दहाने फूट पड़े। ऊपर से मुसलसल बारिश होने लगी। यहां तक कि हर तरफ पानी ही पानी हो गया। तमाम लोग उसमें डूब गए। सिर्फ वे चन्द इंसान और कुछ मवेशी बचे जो हजरत नूह की कश्ती में सवार थे। यहां तक कि हजरत नूह का बेटा भी ग़र्क हो गया। खुदा की नजर में किसी की कीमत उसके अमल के एतबार से है न कि रिश्ते के एतबार से, चाहे वह रिश्ता पैगम्बर का क्यों न हो।

जब तमाम डूबने वाले डूब चुके तो खुदा ने हुक्म दिया कि तूफान थम जाए, और तूफान थम गया। पानी समुद्रों और दरियाओं में चला गया और जमीन दुबारा रहने के काबिल हो गई।

तूफाने नूह के मौके पर देखने वालों ने यह मंजर देखा कि ऊंचे पहाड़ पर चढ़ने वाले डूब गए और हौलनाक मौजों के बावजूद कश्ती में बैठने वाले सलामत रहे। इसकी वजह खुद पहाड़ में या कश्ती में न थी। इसकी वजह यह थी कि यह हुक्मे खुदावंदी का मामला था। हुक्मे खुदावंदी अगर पहाड़ के साथ होता तो पहाड़ अपने चढ़ने वालों को बचाता और कश्ती का सहारा लेने वाले हलाक हो जाते। मगर इस मौके पर हुक्म खुदावंदी कश्ती के साथ था। इसलिए कश्ती वाले महफूज रहे और दूसरी चीजों की पनाह लेने वाले ग़र्क हो गए।

दुनिया में असबाब का निजाम महज एक पर्दा है। वर्ना यहां जो कुछ हो रहा है बराहेरास्त (प्रत्यक्षतः) खुदा के हुक्म से हो रहा है। इंसान का इम्तेहान यह है कि वह जाहिरी पर्दे से गुजर कर अस्ल हकीकत को देख ले। वह असबाब के अंदर खुदाई ताकतों को काम करता हुआ पा ले।

و نَادَى نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ
أَحْكَمُ الْحَكَمِينَ^① قَالَ يُنُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا
تَسْأَلُنِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ^② إِنِّي أَعْطُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ^③ قَالَ
رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ^④ وَلَا تَغْرُبَنِي^⑤ وَتَرْحَمَنِي^⑥ أَكُنْ
مِّنَ الْخَاسِرِينَ^⑦

और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा कि ऐ मेरे रब, मेरा बेटा मेरे घर वालों में है, और बेशक तेरा वादा सच्चा है। और तू सबसे बड़ा हाकिम है। खुदा ने कहा ऐ नूह, वह तेरे घर वालों में नहीं। उसके काम खराब हैं। पस मुझसे उस चीज के बारे में सवाल न करो जिसका तुम्हें इल्म नहीं। मैं तुम्हें नसीहत करता हूं कि तुम जाहिलों में से न बनो। नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझसे वह चीज मांगूं जिसका मुझे इल्म नहीं। और अगर तू मुझे माफ न करे और मुझ पर रहम न फरमाए तो मैं बर्बाद हो जाऊंगा। (45-47)

तूफाने नूह में जो लोग ग़र्क हुए उनमें खुद हजरत नूह का बेटा अकान भी था। हजरत नूह ने उसे अपनी कश्ती में बिठाना चाहा। मगर उसके लिए डूबना मुकद्दर था इसलिए वह नहीं बैठा। फिर उन्होंने उसके बचाव के लिए खुदा से दुआ की तो जवाब मिला कि यह नादाना का सवाल है, ऐसे सवालात न करो।

अस्ल यह है कि खुदा का फैसला इस बुनियाद पर नहीं होता कि जो लोग बुजुर्गों की औलाद हैं। या जो किसी हजरत का दामन थामे हुए हैं उन सबको नजातयाप्ता (मुक्ति-प्राप्त) करार देकर जन्नतों में दाखिल कर दिया जाए। खुदा के यहां नजात का फैसला खलिस अमल

की बुनियाद पर होता है न कि नसबी या गिरोही तअल्लुक की बुनियादों पर।

दुनिया में अगर नसबी रिश्ते का एतबार है तो आखिरत में अख़्लाकी रिश्ते का एतबार। तूफान नूह इसीलिए आया था कि इंसानों के दर्मियान दूसरी तमाम तकसीमात को तोड़कर अख़्लाकी तकसीम कायम कर दे। जो अमले सालेह वाले लोग हैं उन्हें खुदाई कशती में बिठा कर बचा लिया जाए और ग़ैर अमले सालेह वाले तमाम लोगों को तूफान की बेरहम मौजों के हवाले कर दिया जाए। यही वाक्या दुबारा क़ियामत में ज्यादा बड़े पैमाने पर और ज्यादा कामिल तौर पर होगा।

قِيلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْنَا وَعَلَىٰ اٰمٍ مِّنْ مَّعَكَ وَاُمْرٌ سَمِعْتَهُمْ
ثُمَّ يَسْتَعْجِلُ مِّنَّا عَذَابُ الْيَمِّ ۚ تِلْكَ مِنْ اَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوْحِيهَا اِلَيْكَ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا
اَنْتَ وَاَقْوَمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا فَاصْبِرْ لِنِ الْعَاقِبَةِ لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝۵

कहा गया कि ऐ नूह, उत्तरो, हमारी तरफ से सलामती के साथ और बरकतों के साथ, तुम पर और उन गिरोहों पर जो तुम्हारे साथ हैं। और (उनसे जुहर में आने वाले) गिरोह कि हम उन्हें फायदा देंगे, फिर उन्हें हमारी तरफ से एक दर्दनाक अजाब पकड़ लेगा। ये ग़ैब की ख़बरे हैं जिनको हम तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) कर रहे हैं। इससे पहले न तुम उन्हें जानते थे और न तुम्हारी कौम। पस सन्न करो वेशक आखिरी अंजाम डरने वालों के लिए है। (48-49)

जब तमाम बुरे लोग गर्क हो चुके तो तूफान थम गया। पानी धीरे-धीरे जमीन में और समुद्रों में चला गया। हजरत नूह की कशती जूदी पहाड़ पर ठहर गई थी, आप अपने साथियों के साथ उससे निकल कर जमीन पर उतरे। जमीन दुबारा खुदा के हुक्म से सरसब्ज व आबाद हो गई।

हजरत नूह जिन लोगों के दर्मियान आए वे हजरत आदम की नुबुव्वत को मानने वाले लोग थे। आपके बाद आपकी उम्मत इब्तिदा में राहेरास्त पर रही। इसके बाद उसकी अगली नस्लों में बिगाड़ आया तो दुबारा अबिया (ईशदूत) भेजे गए। ये बाद को आने वाले अबिया उन कौमों में आए जो हजरत नूह की नुबुव्वत को मानती थीं। इसके बावजूद जब उन्होंने वक्त के नबी को मान कर अपनी इस्लाह न की तो वे हलाक कर दी गई। गोया सिर्फ किसी नबी को मानना या उसकी तरफ अपने को मंसूब करना नजातयाफ़ता होने के लिए काफी नहीं है। बल्कि वह ईमान मल्बूब है जो जिंदा ईमान हो और जिसके अंदर यह ताकत हो कि वह आदमी की ज़िंदगी को नेक अमली की ज़िंदगी में तब्दील कर दे।

हजरत नूह की तारीख़ (इतिहास) यह सबक देती है कि बातिलपरस्तों का जोर चाहे कितना ही ज्यादा हो और उनकी ज़िंदगी चाहे कितनी ही लंबी हो जाए। बिलआखिर उनके लिए जो चीज मुक़द्दर है वह हलाकत है। और इसके मुक़ाबले में अहले ईमान चाहे कितने

ही कम हों और चाहे वे बजाहिर कितने ही बेजोर हों। मगर जब खुदा का पैसला जाहिर होता है तो यही लोग हैं जो खुदा की रहमतों में हिस्सेदार बनाए जाते हैं, इब्तिदा में मौजूदा दुनिया में और आखिरी तौर पर आखिरत में।

وَالِىٰ عَادِ اٰخَاْنُهُمْ هُوْدًا تَالٰ يَقُوْمِرْ اَعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ غَيْرَةٌ اِنْ اَنْتُمْ
اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ۝ يَقُوْمِرْ لَا اَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِنْ اَجْرِيْ اِلَّا عَلٰى الَّذِىْ فَطَرَنِيْ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝ وَيَقُوْمِرْ اَسْتَغْفِرْ وَاَرْبَكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ
مِدْرَارًا وَيُرْدِكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا الْغُرْمٰیْنَ ۝۶

और आद की तरफ हमने उनके भाई हूद को भेजा। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुमने महज झूठ गढ़ रखे हैं। ऐ मेरी कौम, मैं इस पर तुमसे कोई अज़्र (प्रतिफल) नहीं मांगता। मेरा अज़्र तो उस पर है जिसने मुझे पैदा किया है। क्या तुम नहीं समझते। और ऐ मेरी कौम, अपने ख़ब से माफी चाहो, फिर उसकी तरफ पलटो। वह तुम्हारे ऊपर ख़ूब बारिशें बरसाएगा। और तुम्हारी कुव्वत पर मज़ेद कुव्वत का इजफ़ा करेगा। और तुम मुजरिम होकर रुग़दानी (अवहेलना) न करो। (50-52)

कौमे आद की हिदायत के लिए हजरत हूद को उठाया गया जो उन्हीं के भाई थे। यह पैगम्बरों के मामले में हमेशा से अल्लाह तआला की सुन्नत (तरीका) रही है। इसकी हिक्मत यह है कि कौम का फ़र्द हेने की वजह से वह बख़ूबी तौर पर कौम की नफ़िसयात, उसके हालात और उसकी ज़बान को जानते हैं और ज्यादा प्रभावी तौर पर उसके अंदर हक़ की दावत का काम कर सकते हैं।

हजरत हूद ने अपनी कौम को एक अल्लाह की इबादत का पैग़ाम दिया। इसी के साथ उन्होंने यह भी कहा कि तुम्हारा जो दीन है वह महज एक झूठ है जो तुमने गढ़ लिया है। इससे मालूम हुआ कि पैग़म्बर का तरीका मारूप (प्रचलित) मअनों में सिर्फ 'मुक्बत (सकारात्मक) तौर पर' अपनी बात कहने का तरीका नहीं है। बल्कि इसी के साथ वह खुली खुली तंकीद (आलोचना) भी करता है। क्योंकि जब तक तंकीद व तज्जिया (विश्लेषण) के ज़रिए नाहक का नाहक होना बाज़ न किया जाए उस वक्त तक हक़ का हक़ होना लोगों की समझ में नहीं आ सकता।

हर पैग़म्बर के ज़माने में ऐसा हुआ कि उसके मुखा़लीफ़ीन उसकी पैग़म्बरी को मानने के लिए यह चाहते थे कि वह कोई बड़ा ओहदेदार हो, उसे दौलत के ख़जाने हासिल हों, वह आलीशान इमारतों में रहता हो। मगर हक़ के दाओ को जांचने का यह मेयार सही नहीं। दाओ की सदाकत को जांचने का अस्ल मेयार यह है कि वह अपने मिशन में पूरी तरह संजीदा हो, उसकी बात आखिरी हद तक मुदल्लल (तार्किक) हो। वह हर किस्म की

बुनियाबी गरज से बालातर हो। वह जो कुछ कह रहा है वह ऐन हकीकते वाक्या है। उसका पैगाम कायनाती निजाम से कामिल मुताबिकत (अनुकूलता) रखता हो। उसे इस्तियार करना कामयाबी की शाहराह पर चलना हो।

‘तुम्हारी कुवत पर मजीद कुवत का इजाफा करेगा।’ इस जुमले का मतलब मादूदी कुवत में इजाफा नहीं है। क्योंकि वैसे आद अपने जमाने में निहायत ताकतवर थी। कुरआन से मालूम होता है कि पैगम्बर ने जब उन्हें अजाब से डराया तो उन्होंने कहा कि हमसे ज्यादा ताकतवर कौन है। (हामीम अस्सज्दह : 15) इसलिए मादूदी कुवत (भौतिक शक्ति) के बावजूद भी बात, दावती एतबार से उनके लिए ज्यादा पुरकशिश नहीं हो सकती थी।

इस आयत में कुवत पर इजाफा का मतलब है मादूदी कुवत पर ईमानी कुवत का इजाफा। पैगम्बर का मतलब यह था कि अगर तुम ईमानी जिंदगी इस्तियार कर लो तो इससे तुम्हें अस्त्राकी और रुहानी कुवत हासिल होगी। मौजूदा मादूदी ज़ोर के साथ अस्त्राकी और रुहानी ज़ोर मिलने से तुम्हारी ताकत घटेगी नहीं। बल्कि वह मजीद बहुत ज्यादा बढ़ जाएगी।

قَالُوا يَهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۖ إِنْ تَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ قَالَ إِنِّي أُشْهِدُ اللَّهَ وَاشْهَدُوا أَنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ۚ مِنْ دُونِهِ فُكَيْدٌ وَنِي جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنْظَرُونَ ۚ إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

उन्होंने कहा कि ऐ हूद, तुम हमारे पास कोई खुली निशानी लेकर नहीं आए हो, और हम तुम्हारे कहने से अपने माबूदों (पूज्यों) को छोड़ने वाले नहीं हैं। और हम हरगिज तुम्हें मानने वाले नहीं हैं। हम तो यही कहेंगे कि तुम्हारे ऊपर हमारे माबूदों में से किसी की मार पड़ गई है। हूद ने कहा, मैं अल्लाह को गवाह ठहराता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं बरी हूँ उनसे जिनको तुम शरीक करते हो उसके सिवा। पस तुम सब मिलकर मेरे खिलाफ तदबीर (युक्ति) करो, फिर मुझे मोहलत न दो। मैंने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। कोई जानदार ऐसा नहीं जिसकी चोटी उसके हाथ में न हो। बेशक मेरा रब सीधी राह पर है। (53-56)

कौम ने हजरत हूद से कहा कि तुम्हारे पास अपने बरसरे हक होने की कोई दलील नहीं। इसका यह मतलब नहीं कि फिलवाकअ भी हजरत हूद के पास कोई दलील नहीं थी। आप के पास यकीनन दलील थी, मगर वह मुखातबीन को दलील दिखाई नहीं देती थी। इसकी वजह यह थी कि आदमी आम तौर पर किसी बात को खालिस दलील की बुनियादों पर जांच

नहीं पाता। बल्कि इस एतबार से देखता है कि जो शख्स उसे पेश कर रहा है वह कैसा है। चूँकि पेश करने वाला अपने जमाने में लोगों को एक नाकबिले लिहाज इंसान दिखाई देता था इसलिए उसकी बात भी लोगों को नाकबिले लिहाज नजर आती थी।

जब एक शख्स वक्त के जमे हुए मजहब को छोड़कर खालिस बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत लेकर उठता है तो हमेशा ऐसा होता है कि माहौल में वह अजनबी बल्कि हकीर (तुच्छ) बनकर रह जाता है। लोग उसे इस नजर से देखते हैं जैसे वह कोई ऐसा शख्स हो जिसे खलले दिमागी का रोग लाहिक हो गया हो। हजरत हूद के मामले में यही सूरतेहाल थी जिसकी वजह से उनकी कौम के लोगों को यह कहने की जुरअत हुई कि ‘हमारा तो ख्याल है कि तुम्हारे ऊपर हमारे बुजुर्गों की मार पड़ गई है’ मगर हक के दाबी की सदाकत का सूझ, नज़री (वैचारिक) दलाइल के बाद, हमेशा यह होता है कि उसके मुखालिफीन हर किसम की कोशिशों के बावजूद उसे जेर (परास्त) नहीं कर पाते।

खुदा के पैगम्बर जिन कौमों में आए वे सब खुदा को मानने वाली थीं। गोया दाबी भी खुदापरस्त होने का दावेदार था और मदऊ भी खुदापरस्त होने का दावेदार। ऐसी हालत में यह सवाल पैदा होता है कि खुदा दोनों में से किस गिरोह के साथ है। इस सवाल का आसान जवाब यह है कि खुदा सिराते मुस्तकीम (सीधी शाहराह) पर है। इसलिए जो दीन के सीधे खत (लाइन) पर चल रहा है वह बराहेरास्त खुदा तक पहुंचेगा और जो टेढ़े रास्तों पर चल रहा है उसका रास्ता इधर उधर भटक कर रह जाएगा। वह खुदा तक पहुंचने में कभी कामयाब नहीं हो सकता।

हजरत हूद ने जब कहा कि ‘मेरा रब सिराते मुस्तकीम पर है’ तो दूसरे लफ्जों में गोया वह यह कह रहे थे कि मैं जिस चीज की तरफ बुला रहा हूँ वह सिराते मुस्तकीम (दीन की शाहराह) है। और तुम लोग जिन चीजों को दीन समझ कर इस्तियार किए हुए हो वह दीन की शाहराह के अतराफ में पगडंडियां निकाल कर उनके ऊपर दौड़ना है। इस किसम की दौड़ आदमी को खुदा तक नहीं पहुंचाती, वह उसे इधर उधर भटका कर छोड़ देती है।

इन आयात की रोशनी में गौर किया जाए तो हजरत हूद की बताई हुई सिराते मुस्तकीम यह निकलती है तौहीद, इबादते इलाही, इस्तगफार, तौबा, नेमतों पर खुदा का शुक्र, तवक्कुल अलल्लाह (खुदा पर भरोसा), खुदा को अपना परवरदिगार मानना, सिर्फ खुदा को तमाम ताकतों का मालिक समझना, खुदा को अपने ऊपर निगरां (निरीक्षक) बना लेना। किब्र (अहं, बड़ाई) की रविश के बजाए इताअत (आज्ञापालन) की रविश इस्तियार करना।

ये सब दीन की बुनियादी तालीमात हैं। इन तालीमात पर चलना और उन्हें अपनी तवज्जोह का मर्कज बनाना गोया दीन की शाहराह पर चलना है। इस पर चलने वाला सीधे खुदा तक पहुंचता है। इसके सिवा जिन चीजों को आदमी अहमियत दे और उनकी धूम मचाए वह गोया अस्ल शाहराह के दाएं बाएं पगडंडियां निकाल कर उनके ऊपर दौड़ रहा है। ऐसी दौड़ आदमी को सिर्फ खुदा से दूर करने वाली है, वह उसे खुदा के करीब नहीं पहुंचा सकती।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا
تَضُرُّونَهُ شَيْئًا إِنَّ رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيفٌ ۝ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا
هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَنَجَّيْنَاهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝ وَتِلْكَ
آيَاتُ الْحُرُوفِ ۝ يَأْتِي رَبَّهُمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرًا كَبِيرًا ۝ وَتِلْكَ
آيَاتُ الْكِتَابِ ۝ وَإِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَإِنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الْآلِينَ عَادًا لِّكَفَرُوا رَبَّهُمْ
۝ أَلَا بُعْدُ لِلْعَادِ قَوْمِ هُودٍ ۝

۝

अगर तुम एराज (उपेक्षा) करते हो तो मैंने तुम्हें वह पैगाम पहुंचा दिया जिसे देकर मुझे तुम्हारी तरफ भेजा गया था। और मेरा खब तुम्हारी जगह तुम्हारे सिवा किसी और गिरोह को जानशीन (खलीफा, उत्तराधिकारी) बनाएगा। तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। बेशक मेरा खब हर चीज पर निगहबान है। और जब हमारा हुक्म आ पहुंचा, हमने अपनी रहमत से बचा दिया हूद को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे। और हमने उन्हें एक सख्त अजाब से बचा दिया। और ये आद थे कि उन्होंने अपने खब की निशानियों का इंकार किया। और उसके रसूलों को ना माना और हर सरकश और मुखालिफ की बात की इत्तिबाअ (अनुसरण) की। और उनके पीछे लानत लगा दी गई इस दुनिया में और कियामत के दिन। सुन लो, आद ने अपने खब का इंकार किया। सुन लो, दूरी है आद के लिए जो हूद की कौम थी। (57-60)

जो लोग खुदा की बात को नजरअंदाज कर दें, खुदा भी उन्हें नजरअंदाज कर देता है।

यह वाक्या जो मौजूदा दुनिया में जुई तौर पर पेश आता है यही कियामत में कुल्ली और आखिरी तौर पर पेश आएगा। उस वक्त तमाम सरकश लोग खुदा की रहमतों से दूर कर दिए जाएंगे। और खुदा की रहमत सिर्फ उन लोगों का हिस्सा होगी जो दुनिया की जिंदगी में खुदा के तावेअ और वफादार बनकर रहे थे।

इस दुनिया में खुदा ने 'इस्तखलाफ' का उसूल राइज किया है। यानी एक कौम को हटाने के बाद दूसरी कौम को उसकी जगह जमीन पर मुतमकिन (आसीन) करना। दुनिया में यह तमक्कुन (आसीन करना) इस्तेहान की गर्ज से वक्ती तौर पर होता है। आखिरत में खुदा की मेयारी दुनिया में यह तमक्कुन इनाम के तौर पर मुस्तकिल तौर पर सच्चे अहले ईमान को हासिल होगा।

मौजूदा इस्तेहानी दुनिया का निजाम कुछ इस तरह बना है कि यहां आदमी हमेशा खैर और शर के दर्मियान होता है। उसे आजादी होती है कि दोनों में से जिस राह को चाहे इख्तियार करे। मजीद यह कि अक्सर हालात में इस दुनिया में शर का गलबा होता है। खैर की

जानिब सिर्फ निशानियों (नजरी दलाइल) का जोर होता है। दूसरी तरफ शर की जानिब माद्री (भौतिक) ताकत मौजूद होती है, वह भी इतनी बड़ी मिक्दार में कि उसके अलमबरदार सरकशी और घमंड में मुब्तिला होकर माहौल के अंदर ऐसी दबाव की फजा पैदा करते हैं कि आम आदमी हक की तरफ बढ़ने की जुरअत ही न करे।

وَالِى شُعُودِ أَخَاهُمْ طَلْحًا قَالَ يَقُومُ عَبْدُ اللَّهِ مَا لَكُمْ مِّنَ الْغَيْثِ هُوَ
أَشْأَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَكُمْ فِيهَا فَاسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تَوْبُوا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي
قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ۚ قَالُوا يَصْطَلِحُ قَدْ كُنْتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَذَا أَتَنْهَانَا أَنْ نَعْبُدَ
مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَكُونُنَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ۚ قَالَ يَقُومُ أَرَأَيْتُمْ إِن
كُنْتُ عَلَى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّي وَآتَيْنِي مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَنْصُرُنِي مِنَ اللَّهِ إِنْ
عَصَيْتُ ۚ فَمَا تَزِيدُنِي يُوسُفُ ۚ

और समूद की तरफ हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा, ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी ने तुम्हें जमीन से बनाया, और उसमें तुम्हें आबाद किया। पस माफी चाहे, फिर उसकी तरफ रुजूअ करो। बेशक मेरा खब करीब है, कुबूल करने वाला है। उन्होंने कहा कि ऐ सालेह इससे पहले हमें तुमसे उम्मीद थी। क्या तुम हमें उनकी इबादत से रोकते हो जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे। और जिस चीज की तरफ तुम हमें बुलाते हो उसके बारे में हमें सख्त शुबह है और हम बड़े खलजान (दुविधा) में हैं। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, बताओ अगर मैं अपने खब की तरफ से एक वाजेह (सुस्पष्ट) दलील पर हूं और उसने मुझे अपने पास से रहमत दी है तो मुझे खुदा से कौन बचाएगा अगर मैं उसकी नाफरमानी करूं। पस तुम कुछ नहीं बढ़ाओगे मेरा सिवाए नुक्सान के। (61-63)

हजरत सालेह ने अपनी कौम को एक खुदा की इबादत की तरफ बुलाया। यही हर जमाने में तमाम पैगम्बरों का मक्सद था। मगर हजरत सालेह की कौम आपके पैगाम को कुबूल न कर सकी। इसकी वजह यह थी कि आप उसे बराहारास्त खुदा से जोड़ने की बात करते थे, जबकि कौम का हाल यह था कि वह खुदा के नाम पर सिर्फ अपने पूर्वजों व अकाबिर (महापुरुषों) से जुड़ी हुई थी।

ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि वे अपने मखसूस मिजाज की वजह से किसी चीज की अहमियत और मअनवियत (सार्थकता) सिर्फ उस वक्त समझ पाते हैं जबकि उनके कैमी बुजूर्गों के कौल व अमल में उसकी तस्दीक मिल जाए। अब चूंकि हजरत सालेह के पास सिर्फ दलील का जोर था, उनकी कौम उनकी बात की अहमियत को महसूस न कर सकी। हजरत सालेह जिस दीन की तरफ बुला रहे थे उसकी अहमियत खुदा की 'वही' (वाणी) और जमीन व आसमान की

निशानियों में गौर करने से वाजिह होती थी। जबकि उनकी कौम सिर्फ उस दिन की अहमियत से बाखबर थी जो महापुरुषों की कौम के मल्फूजात (ग्रंथों) और मअमूलात (क्रिया-कलापों) से साबित होता हो। इसका नतीजा यह हुआ कि उनकी कौम आप के दलाइल के मुक़ाबले में लाजवाब होकर भी बस एक किस्म के शुबह की हालत में पड़ी रही।

हजरत सालेह, दूसरे तमाम पैगम्बरों की तरह, शख्सियत और जहानत में अपनी कौम के मुत्तजर्ह (सर्वोत्तम व्यक्ति) थे। लोग उम्मीद रखते थे कि बड़े होकर वह कौम के एक कारआमद फर्द साबित होंगे। मगर वह बड़ी उम्र को पहुँचे तो उन्होंने कौम के प्रचलित मजहब पर तंकीद शुरू कर दी। यह देखकर कौम के लोगों को उनके बारे में सख्स मायूसी हुई। उन्होंने कहा, हम तो यह समझे हुए थे कि तुम हमारे कायमशुदा मजहबी निजाम के एक सुतून (स्तंभ) बनोगे। इसके बरअक्स हम यह देख रहे हैं कि तुम हमारे मजहबी निजाम को बेबुनियाद साबित करने पर अपना सारा जोर लगाए हुए हो। यही मामला हर दौर में खुदा के सच्चे दाखियों को अपनी कौम की तरफ से पेश आया है।

وَلَيَقُومِرْهَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً ۖ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَسْهَوْهَا
سُوءٌ فَيَأْخُذْكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ۖ فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَشْتَعُونَ فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ
آيَاتٍ ذَٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوبٍ ۖ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا وَالَّذِينَ آمَنُوا
مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۖ وَأَخَذَ
الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جُثَثِينَ ۖ كَانَ لَمْ يَعْنُوا فِيهَا
أَلَّا إِنَّ شُؤْدًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا بَعْدَ الْإِسْبُودِ ۖ

और ऐ मेरी कौम, यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है। पस इसे छोड़ दो कि वह अल्लाह की जमीन में खाए। और इसे कोई तकलीफ न पहुँचाओ वरना बहुत जल्द तुम्हें अजाब पकड़ लेगा। फिर उन्होंने उसके पाँव काट डाले। तब सालेह ने कहा कि तीन दिन और अपने घरों में फायदा उठा लो। यह एक वादा है जो झूठा न होगा। फिर जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने अपनी रहमत से सालेह को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे बचा लिया और उस दिन की रुस्वाई से (महफूज रखा)। बेशक तेरा रब ही कबी (शक्तिमान) और जबरदस्त है। और जिन लोगों ने जुम किया था उन्हें एक हौलनाक आवाज ने पकड़ लिया फिर सुबह को वे अपने घरों में आँधे पड़े रह गए। जैसे कि वे कभी उनमें बसे ही नहीं। सुनो, समूद ने अपने रब से कुफ़ किया। सुनो, फिटकार है समूद के लिए। (64-68)

हजरत सालेह अपनी कौम से कहते थे कि मैं खुदा का रसूल हूँ। अगर तुमने मेरी बात न मानी तो तुम खुदा की पकड़ में आ जाओगे। उनकी कौम अगरचे खुदा और रिसालत की मुँकिर

न थी मगर उसने हजरत सालेह की बात को एक मजाक समझा। क्योंकि हजरत सालेह के पास अपनी पैगम्बरी को साबित करने के लिए सिर्फ नजरी (वैचारिक) दलील थी और यह इंसान की कमजोरी है कि वह सिर्फ नजरी दलील की बुनियाद पर बहुत कम इसके लिए तैयार होता है कि एक मानूस (परिचित) चीज को छोड़े और दूसरी गैर मानूस चीज को इस्त्रियार कर ले।

हजरत सालेह की कौम जब नजरी निशानियों के आगे झुकने पर तैयार न हुई तो अखिरी मरहले में उसके मुतालवे के मुताबिक उसके लिए स्पष्ट निशानी भी जाहिर कर दी गई। यह एक ऊंटनी थी जो लोगों के सामने ठोस चट्टान के अंदर से निकल आई। ऐसी निशानी के बारे में खुदा का कानून है कि जब वह जाहिर की जाती है तो इसके बाद लोगों के लिए इम्तेहान की मजीद मोहलत बाकी नहीं रहती। चुनांचे हजरत सालेह ने एलान कर दिया कि अब तुम लोग या तो तौबा करके मेरी बात मान लो, वरना तुम सब लोग हलाक कर दिए जाओगे। मगर जो लोग नजरी दलाइल की कुव्वत को महसूस न कर सकें वे स्पष्ट दलाइल को देखकर भी उससे इबरत पकड़ने में नाकाम रहते हैं। चुनांचे इसके बाद भी हजरत सालेह की कौम अपनी सरकशी से बाज न आई। यहां तक कि उसने खुद ऊंटनी को मार डाला। इसके बाद उन लोगों के लिए मजीद मोहलत का सवाल न था। चुनांचे वह मिया दी गई।

कौमे सालेह (समूद) का इलाका शिमाल मरिबी अरब (अलहिज्र) था। हजरत सालेह को हुक्म हुआ कि तुम यहां से बाहर चले जाओ। चुनांचे वह अपने मुख़्लिस (आस्थावान) साथियों को लेकर शाम की तरफ चले गए। इसके बाद एक सज़ा जलजला आया और सारी कौम उसकी लपेट में आकर बुरी तरह हलाक हो गई।

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ سَلَامٌ فَمَا لَبِثَ أَنْ
جَاءَ بِعَجَلٍ حَيْنٍ ۖ فَلَمَّا رَأَىٰ أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكَرَهُمْ وَأَوَّجَسَ
مِنْهُمْ خَيْفَةً قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ قَوْمِ لُوطٍ ۖ وَانْمَرَأَتْ قَائِمَةً فَضَحِكْتِ
فَبَشَّرْنَاهَا بِإِسْحَقَ وَمِنْ وَرَاءِ إِسْحَقَ يَعْقُوبَ ۖ قَالَتْ يُونِئِي ءَالِدٌ وَأَنَا عَجُوزٌ وَ
هَٰذَا بَعْلِي شَيْخًا ۖ إِنَّ هَٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ۖ قَالُوا اتَّعَجِبِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ
رَحِمْتُ الْوَوَّاءَ بَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ۖ

और इब्राहीम के पास हमारे फरिश्ते खुशखबरी लेकर आए। कहा तुम पर सलामती हो। इब्राहीम ने कहा तुम पर भी सलामती हो। फिर देर न गुजरी कि इब्राहीम एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ नहीं बढ़ रहे हैं तो वह खटक गया और दिल में उनसे डरा। उन्होंने कहा कि डरो नहीं, हम लूत की कौम की तरफ भेजे गए हैं। और इब्राहीम की बीवी खड़ी थी, वह हंस पड़ी। पस हमने उसे इस्हाक की खुशखबरी दी और इस्हाक के आगे याकूब की। उसने कहा, ऐ खराबी,

क्या मैं बच्चा जन्गी, हालांकि मैं बुढ़िया हूँ और यह मेरा खाविंद भी बूढ़ा है। यह तो एक अजीब बात है। फरिश्तों ने कहा, क्या तुम अल्लाह के हुक्म पर तअज्जुब करती हो। इब्राहीम के घर वालों, तुम पर अल्लाह की रहमतें और बरकतें हैं। बेशक अल्लाह निहायत कबिले तारीफ और बड़ी शान वाला है। (69-73)

हजरत इब्राहीम की उम्र तकरीबन सौ साल हो चुकी थी कि एक रोज चन्द इतिहाई खूबसूरत नौजवान उनके घर में दाखिल हुए। हजरत इब्राहीम ने उन्हें मेहमान समझ कर फौरन उनके खाने का इंतजाम किया। मगर वे ईसान नहीं थे बल्कि खुदा के फरिश्ते थे। वे एक ही वक्त में दो मक्खन के लिए आए थे। एक, हजरत इब्राहीम को औलाद की बशारत देना। (शुभ सूचना) दूसरे, हजरत लूत की कौम को हलाक करना जो इंकार और सरकशी की आखिरी हद पर पहुंच चुकी थी।

हजरत इब्राहीम और उनकी बीवी को इस्हाक (बेटे) और याकूब (पेटे) की बशारत देना आम मअनों में महज औलाद की बशारत न थी। यह सालेह (नेक) और दाजी ईसानों का एक घराना वजूद में लाना था। तारीख का तजर्बा है कि अक्सर कोई 'घराना' होता है जो दीने हक की खिदमत के लिए खड़ा होता है। नबियों की तारीख और नबियों के बाद उनके सच्चे पैरोकारों के वाक्यात यही बताते हैं। इसकी वजह यह है कि एक शख्स जिस पर सच्चाई का इंकशाफ होता है वह अपने जमाने के लोगों की नजर में एक मामूली ईसान होता है। इस बिना पर आम लोगों के लिए उसके मकाम का पहचानना और उसका साथ देना बहुत मुश्किल होता है। मगर उसके अपने घर वाले के लिए जाती रिश्ता एक मज्बूत वजह बन जाता है। जिस चीज को बाहर वाले जहिरबीनी की बिना पर देख नहीं पाते, घर वाले जाती तअल्लुक की बिना पर उसे महसूस कर लेते हैं। और उसके मिशन में उसके साथी बन जाते हैं।

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ۖ
إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ۖ يَا إِبْرَاهِيمُ ائْمُرْ أَهْلَكَ بِهَذَا الْكَلْبِ ۖ فَلَئِنَّكَ فَدَّ جَاءَ
أَمْرُ رَبِّكَ ۖ وَأَنِصْحْ آلَهُمْ ۖ عَذَابٌ غَيْرُ مُرْدُوْدٍ ۖ

फिर जब इब्राहीम का खौफ दूर हुआ और उसे खुशखबरी मिली तो वह हमसे कौम लूत के बारे में झगड़ने लगा। बेशक इब्राहीम बड़ा हलीम (उदार) और नर्म दिल था और रुजूअ करने वाला था। ऐ इब्राहीम उसे छोड़ो। तुम्हारे रब का हुक्म आ चुका है और उन पर एक ऐसा अजाब आने वाला है जो लौटाया नहीं जाता। (74-76)

हजरत इब्राहीम की यह गुफ्तगू उन फरिश्तों से हुई जो कौम लूत को हलाक करने के लिए आए थे। चूंकि ये फरिश्ते खुदा की तरफ से और उसके हुक्म की तामील में आए थे, इसलिए खुदा ने इसे अपनी तरफ मंजूर फरमाया। पैगम्बर और फरिश्तों के दर्मियान इस गुफ्तगू का एक जुज सूरह अनकबूत (आयत 32) में मन्कूर है। और इसका तफसीली जिक्र मौजूदा

बाइबल (पैदाइश बाब 18) में आया है।

हजरत इब्राहीम की दुआ कौम लूत के हक में मंजूर नहीं हुई। इसी तरह इससे पहले हजरत नूह की दुआ अपने बेटे के लिए मंजूर नहीं हुई थी। इसकी वजह यह है कि मफिरत (क्षमा, मुक्ति) की दुआ मारुफ मअनों में कोई सिफारिश नहीं है जो कि एक शख्स दूसरे शख्स के लिए करे। और वह दुआ करने वाले की बुजुर्गी की बिना पर उसके हक में मान ली जाए।

दुआ खुद अपने आपको खुदा के सामने पेश करना है। अगर हजरत नूह के बेटे या हजरत लूत की कौम के लोगों के अंदर खुद दुआ का जच्चा उभर आता और वे अपनी नजात के लिए खुदा को पुकारते तो यकीनन खुदा उन्हें माफ कर देता और अपनी रहमत उनकी तरफ भेज देता। अजाब का लौटा दिया जाना मुमकिन है, जैसा कि हजरत यूसुफ की कौम की मिसाल से साबित होता है। मगर वह जब भी लौटेगा खुद जेरे सजा (सजा के पात्र) अफराद की दुआओं से लौटेगा न कि किसी गैर शख्स की दुआओं से, चाहे यह गैर शख्स पैगम्बर ही क्यों न हो।

एक शख्स को दूसरे शख्स के लिए भी दुआ करनी चाहिए। और हर जमाने में पैगम्बरों ने और सालेह लोगों ने दूसरों के लिए दुआएं की हैं। मगर यह दुआ हकीकतन खुद दुआ करने वाले के हलीम (उदार, सहृदय) और परोपकारी होने का इजहार होता है। अल्लाह का एक बंदा जो अल्लाह से डरता हो वह अल्लाह के अजाब को देखकर कांप उठता है और अपने लिए और दूसरों के लिए दुआएं करने लगता है। ताहम किसी की दुआ दूसरे के हक में उसी वक्त मुफीद होगी जबकि वह खुद भी अल्लाह से डर कर अल्लाह को पुकार रहा हो।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيقًا ۖ لَهُمْ ضَاقٌ بِهِمْ ذُرْعًا وَقَالَ هَذَا يَوْمٌ
عَصِيبٌ ۖ وَجَاءَهُ قَوْلُهُ يُحْرَعُونَ ۖ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلُ كَانُوا يَعْبُدُونَ السَّيِّئَاتِ ۖ
قَالَ يَقُومُ هَؤُلَاءِ بِنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَلَا تَخْزَوْا فِي
ضَيْفِي ۖ أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَشِيدٌ ۖ قَالُوا الْقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِي بَنَاتِكَ
مِنْ حَقٍّ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيدُ ۖ

और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास पहुंचे तो वह घबराया और उनके आने से दिल तंग हुआ। उसने कहा आज का दिन बड़ा सख्त है। और उसकी कौम के लोग दौड़ते हुए उसके पास आए। और वे पहले से बुरे काम कर रहे थे। लूत ने कहा ऐ मेरी कौम, ये मेरी बेटियां हैं, वे तुम्हारे लिए ज्यादा पाकीजा हैं। पस तुम अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के सामने रुसवा न करो। क्या तुम में कोई भला आदमी नहीं है। उन्होंने कहा, तुम जानते हो कि हमें तुम्हारी बेटियों से कुछ गरज नहीं, और तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं। (77-79)

हजरत लूत के पास जो फरिश्ते आए वे अजाब के फरिश्ते थे। मगर वे निहायत खूबसूरत नौजवानों की सूरत में बस्ती के अंदर दाखिल हुए। यह दरअस्तल उन्हें आखिरी तौर पर मुजरिम

साबित करने के लिए था। आदमी जब मुसलसल एक बुराई करता है तो उसके बारे में वह बिल्कुल बेहिस (संवेदनाहीन) हो जाता है। यही हाल क्रोमे लूत का था। वे अब खुल्लम खुल्ला बदकारी करने लगे थे। चुनांचे जब उन्होंने देखा कि खूबसूरत लड़के हजरत लूत के घर आए हुए हैं तो वे शहवत (कामवासना) के जज्बात लिए हुए आपके घर की तरफ दौड़ पड़े। उन्होंने ईतिहाई बेहयाई के साथ मतालबा शुरू किया कि इन लड़कों को हमारे हवाले कर दिया जाए।

हजरत लूत ने शरीर (दुष्ट) लोगों को इस तरह आते हुए देखा तो आप पर सख्त शर्म और गैरत तारी हुई। आप ने कहा, 'ये कौम की बेटियां हैं, इनमें से जिससे चाहो निकाह कर लो और अपनी फित्ती ख्वाहिश पूरी करो।' किसी कौम में जो बड़े बूढ़े होते हैं वे कौम की तमाम लड़कियों को बेटी कह कर पुकारते हैं। इसी मअना में हजरत लूत ने कौम की बेटियों को 'मेरी बेटियां' फरमाया।

मगर उन्होंने हज़रत लूत की जाइज फ़ैज़क़श को ठुकरा दिया और नाज़ाइज़ की तरफ़ बदस्तूर दौड़ते रहे। इससे आख़िरी तौर पर साबित हो गया कि ये मुज़रिम लोग हैं और यकीनन इस काबिल हैं कि इन्हें हलाक़ कर दिया जाए। चुनांचे इसके बाद वे सबके सब हलाक़ कर दिए गए।

“क्या तुम में एक भी भला आदमी नहीं।” यह उस बंदए खुदा का आखिरी कलिमा होता है जिसके पास शरीर (दुष्ट) लोगों के रोकने के लिए मादूदी कुव्वत न हो और माकूलियत (विवेक) की तमाम बातें उन्हें रोकने के लिए नाकाफी साबित हुई हैं। उस वक्त इस तरह का जुमला बोलकर वह कौम की गैरत को पुकारता है और उसके जमीर (अन्तरात्मा) को बेदार करना चाहता है। इसके बाद भी अगर ऐसा हो कि लोग बदस्तूर बेहिस बने रहें तो इसका मतलब होता है कि उनके अंदर इंसानियत और शराफत का कोई दर्जा बाकी नहीं रहा।

قَالَ لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةٌ أَوْ إِيَّائِي لَكُنْ شَدِيدٌ ۖ قَالُوا يَا لَوْطُ إِنَّا أُرْسِلُ رَبِّكَ
لَنُيَصِّلُوا إِلَيْكَ فَأَنْتَ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ الْيَلِّ وَلَا يَنْفَعُ مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا أَمْرًا تَكُنْ
إِنَّهُ مُصِيبُهَا مَا أَصَابَهُمْ إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ۖ فَكَلَّمَا
جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَلَيْنَا سَافِهًا وَآمُطَرْنَا عَلَيْهَا حَارَةً مِّنْ سِجِّيلٍ ۖ مَّضْجُودٍ ۖ
مُسَوَّمَةٍ عِندَ رَبِّكَ ۖ وَكَأَنَّهَا مِنَ الظِّلْمِينَ بِبَعِيدٍ ۖ

लूत ने कहा, काश मेरे पास तुमसे मुक्कबले की कुव्वत होती या मैं जा बैठता किसी मुस्तहकम (सुदृढ़) पनाह में। फरिश्तों ने कहा कि ऐ लूत, हम तेरे ख के भेजे हुए हैं। वे हरगिज तुम तक न पहुंच सकेंगे। पस तुम अपने लोगों को लेकर कुछ रात रहे निकल जाओ। और तुम में से कोई मुड़कर न देखे। मगर तुम्हारी औरत कि उस पर वही कुछ गुस्से वाला है जो उन लोगों पर गुस्सेवा। उनके लिए सुबह का वक्त मुफ़्त है, क्या सुबह करीब नहीं। फिर जब हमारा हक्म आया तो हमने उस बस्ती को तलपट कर

दिया और उस पर पत्थर बरसाए कंकर के, तह-ब-तह, तुम्हारे रब के पास से निशान लगाए हुए। और वह बस्ती उन जालिमों से कुछ दूर नहीं। (80-83)

हजरत लूत इब्निदा में आने वाले नौजवानों को इंसान समझ रहे थे। जब हजरत लूत की परेशानी बढ़ी और वह अपने को ख़तरे में महसूस करने लगे तो उन्होंने बताया कि हम फरिश्ते हैं और खुदा की तरफ से भेजे गए हैं। यानी यह मामला इंसानी मामला नहीं बल्कि खुदाई मामला है। वे न हमारा कुछ बिगाड़ सकेंगे और न तुम्हारा। चुनांचे रिवायात में आता है कि जब कौमे लूत के लोग आगे बढ़ने से न रुके तो एक फरिश्ते ने अपना बाजू घुमाया। इसके बाद वे सबके सब अंधे हो गए और यह कहते हुए लौट गए कि भागो, लूत के मेहमान तो बड़े जादुगर मालूम होते हैं।

जब खुदा किसी कौम को उसकी सरकशी की बिना पर हलाक करने का फैसला करता है तो यह उस पूरे इलाके के लिए एक आम हुक्म होता है। ऐसे मौके पर उस इलाके में बसने वाले तमाम जानदार खुदाई अजाब की लपेट में आ जाते हैं। अलबत्ता खुदा के खुसूसी इंतजामात के तहत वे लोग उससे बचा लिए जाते हैं जिन्होंने उन सरकश लोगों के ऊपर हक का एलान किया हो। हक का एलान खुदा की पकड़ से बचने की सबसे बड़ी जमानत है। मौजूदा दुनिया में भी और आखिरत में भी।

हजरत लूत की बीवी के बारे में रियायात में आता है कि वह दिल से हजरत लूत के साथ न थी। मगर आखिर वक़्त में जब हजरत लूत यह कहकर बस्ती से निकले कि सुबह तक यहां अजाब आ जाएगा तो वह भी आपके क़ाफ़िले के साथ हो गई। ताहम अभी ये लोग रास्ते में थे कि पीछे जलजला और तूफ़न का शोर सुनाई दिया। हजरत लूत और उनके मुख़िस साथियों ने पीछे तवज़्जोह न दी। मगर हजरत लूत की बीवी पीछे मुड़कर देखने लगी और जब उसे धुआं और शोर दिखाई दिया तो उसकी ज़बान से निकला 'हाय मेरी क़ौम' उस वक़्त अजाब का एक पत्थर आकर उसे लगा और वहीं उसका ख़ात्मा हो गया।

इसमें यह सबक है कि एक शख्स अगर वाकैअतन खुदा व रसूल का वफादार नहीं है तो किसी और मुहर्रिक (प्रिक) के तहत हक के काफिले के साथ लग जाने से वह नजात नहीं पा जाएगा। उसकी कमजोरी कहीं न कहीं जाहिर होगी और वहीं वह बैठकर रह जाएगा।

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ قَالَ يَبْقَومُوا عِبَادُ اللَّهِ ۚ إِنَّكُمْ مِنْ الْعَرِيقُونَ وَلَا تَتَّبِعُوا
الْبُكْيَالَ ۖ وَالْمِيزَانَ إِنِّي أَرَاكُمْ بِخَيْرٍ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ
مُحِيطٍ ۝ وَيَقَوْمُ أَوْفُوا بِالْكَيْلِ ۖ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ
وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝ بَقِيتَ اللَّهُ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَ
مَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ۝

और मदन की तरफ उनके भाई शूऐब को भेजा। उसने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई मावूद (पूज्य) नहीं। और नाप और तोल में कमी न करो। मैं तुम्हें अच्छे हाल में देख रहा हूँ, और मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन के अजाब से डरता हूँ। और ऐ मेरी कौम, नाप और तोल को पूरा करो इसाफ के साथ। और लोगों को उनकी चीजें घटाकर न दो। और जमीन पर फसाद न मचाओ। जो अल्लाह का दिया वच रहे वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम मोमिन हो। और मैं तुम्हारे ऊपर निगहबान (रखवाला) नहीं हूँ। (84-86)

मदन का इलाका हिजाज और शाम के दरमियान था। उनके फामवर हजरत शूऐब का अपनी कौम से यह कहना कि 'अगर तुम ईमान वाले हो' जाहिर करता है कि उनकी कौम मोमिन होने की मुद्दई (दावेदार) थी। बअल्फज दीगर, वह अपने जमाने की मुसलमान कौम थी। वह हजरत शूऐब से पहले आने वाले नबी की उम्मत थी और अब लम्बा अर्सा गुजरने के बाद उनकी बाद की नस्लों में बिगाड़ आ गया था।

हजरत शूऐब ने उनसे कहा कि अगर तुम मोमिन होने के दावेदार हो तो तुम्हारा दावा खुदा के यहां उसी वक्त माना जाएगा जबकि तुम अपने दावे के तकाजे पूरे करो। तकाजा पूरा किए बगैर दावे की कोई कीमत नहीं।

तुम्हारे ईमान का तकाजा यह है कि तुम सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करो। लेन देन में इसाफ बरतो। दूसरों के लिए वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद करते हो। तुम में से हर शख्स को चाहिए कि वह लोगों के हुक्क ठीक-ठीक अदा करे। और इसमें किसी तरह की कमी न करे। जमीन में इस तरह रहो जिस तरह खुदा चाहता है कि उसके बंदे रहें। जाइज तरीकेसे हासिल किए हुए रिक्क पर कनाअत (संतोष) करो न कि नाफरमानी करके ज्यादा हासिल करने की कोशिश करो। अगर तुम ऐसा करो जभी तुम खुदा के यहां मोमिन ठहरोगे। वर्ना अदेशा है कि खुदा का अजाब तुम्हें पकड़ लेगा।

हजरत शूऐब ने एक तरफ यह कहा कि लोगों को कम न दो। दूसरी तरफ यह फरमाया कि 'आज मैं तुम्हें अच्छे हाल में देख रहा हूँ' इससे मालूम होता है कि कौमे शूऐब में कुछ गरीब थे और कुछ अमीर। कुछ ज्यादा पाने वाले थे और कुछ वे थे जिनको घटाकर मिल रहा था। अगर सारे लोग कम पाने वाले होते तो उनमें 'अच्छे हाल वाला' कौन बाकी रहता।

इससे मालूम होता है कि यहां जिन मुखातबीन का जिक्र है। वे कौम के बाअसर और साहिबे हैसियत अफराद थे। अबिया अगरचे हर एक की हिदायत के लिए आते हैं मगर उनका खिताब खास तौर पर वक्त के मुमताज (शीर्ष) तबके से होता है। क्योंकि अवाम उन्हीं लोगों के ताबेअ होते हैं। वे ज्यादातर अपने बड़ों के नक्शेकदम पर चलते हैं। ख्बास (विशिष्ट जनों) तक दावत (सत्य-संदेश) पहुंचना परोक्ष तौर पर अवाम तक भी दावत का पहुंचना है।

قَالُوا يَسْعَىٰ أَصْلُكَ تَأْمُرُكَ أَنْ تَتْرُكَ مَا يَعْْبُدُ آبَاؤُنَا وَأَنْ نَفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَكِيمُ الرَّشِيدُ ۝

उन्होंने कहा कि ऐ शूऐब, क्या तुम्हारी नमाज तुम्हें यह सिखाती है कि हम उन चीजों को छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे। या अपने माल में अपनी मर्जी के मुताबिक तसरुफ (उपभोग) करना छोड़ दें। बस तुम ही तो एक दानिशमंद (प्रबुद्ध) और नेक चलन आदमी हो। (87)

कभी ऐसा होता है कि नमाज बोलकर दीन मुराद लिया जाता है। मतलब यह है कि क्या तुम्हारा दीन तुम्हें ऐसा हुक्म दे रहा है। उन्हीं नमाज का लफज इसलिए इस्तेमाल किया कि नमाज दीन की सबसे ज्यादा वाजिह अलामत है।

हजरत शूऐब की कौम दीनदार होने की मुद्दई थी। वह इबादत भी करती थी। मगर उन्होंने अपने दीन और इबादत के साथ शिर्क और बदमामलगी को भी जमा कर रखा था। हजरत शूऐब ने उन्हें सच्ची खुदापरस्ती और लोगों के साथ हुस्ने मामला की दावत दी और कहा कि दीन के साथ अगर शिर्क है और इबादत के साथ बदमामलगी भी जारी है तो ऐसे दीन और ऐसी इबादत की खुदा के यहां कोई कीमत नहीं।

इस किस्म की बातों से कौम का दीनी भरम खुलता था। इससे उनके उस जोम (दंभ) पर जद पड़ती थी कि सब कुछ करते हुए भी वे दीनदार हैं और इबादत गुजारी का तमगा भी हर हाल में उन्हें मिला हुआ है। चुनांचे वे बिगड़ गए। उन्होंने कहा कि क्या तुम ही एक खुदा के इबादत गुजार हो। क्या हमारे वे तमाम बुजुर्ग जाहिल थे या हैं जिनके तरीके को हमने इख्तियार कर रखा है। क्या तुम्हारे सिवा कोई यह जानने वाला नहीं कि इबादत क्या है और उसके तकाजे क्या हैं। शायद तुम समझते हो कि सिर्फ तुम ही दुनिया भर में एक समझदार और सालेह (नेक) पैदा हुए हो।

कौमे शूऐब को वे लोग ज्यादा बड़े मालूम होते थे जो लम्बी रिवायात के नतीजे में बड़े बन चुके थे। या जो अब ऊंची गद्दियों पर बैठे हुए थे। इसीलिए उन्हें हजरत शूऐब के बारे में ऐसा कहने की जुरअत हुई।

قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّي وَرَفِقِي مِنْهُ رُمُّوا حَسَنًا وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَمْلِكَكُمْ إِلَىٰ مَا أَتُكِّمُ عَنْهُ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝ وَيَقَوْمِ لَا يَجْرِمُكُمْ شِقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِّثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمُ نُوحٍ أَوْ قَوْمِ هُودٍ أَوْ قَوْمِ صَالِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِنْكُمْ بِبَعِيدٍ ۝ وَاسْتَغْفِرُوا لَهُمْ ثُمَّ تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ۝

शूऐब ने कहा कि ऐ मेरी कौम, बताओ, अगर मैं अपने रब की तरफ से एक वाजिह दलील पर हूँ और उसने अपनी जानिब से मुझे अच्छा रिक्क भी दिया। और मैं नहीं चाहता कि

मैं खुद वही काम करूँ जिससे मैं तुम्हें रोक रहा हूँ। मैं तो सिर्फ इस्लाम (सुधार) चाहता हूँ जहाँ तक हो सके। और मुझे तौफीक तो अल्लाह ही से मिलेगी। उसी पर मैंने भरोसा किया है। और उसी की तरफ मैं रुजूअ करता हूँ। और ऐ मेरी कौम, ऐसा न हो कि मेरा विरोध करके तुम पर वह आपत पड़े जो कौमे नूह या कौमे हूद या कौमे सालह पर आई थी, और लूट की कौम तो तुमसे दूर भी नहीं। और अपने खब से माफी मांगो फिर उसकी तरफ पलट आओ। बेशक मेरा खब महरबान और मुहब्बत वाला है। (88-90)

मानने की दो सूरतें हैं। एक है तकलीदी (अनुकरणीय) तौर पर मानना। दूसरा सही समझ कर मानना। पहली सूरत में आदमी किसी बात को इसलिए मानता है कि लोग उसे मानते हैं। दूसरी सूरत में वह उसे इसलिए मानता है कि उसने खुद दलील की बुनियाद पर पाया है कि वह बात सही है। पहला अगर रस्मी इकरार है तो दूसरा शुऊरी दरयाफ्त।

हक को दलील (या शुऊर) की सतह पर पाना ही मोमिन का अस्ल सरमाया है। इसी से वह जिंदा यकीन हासिल होता है जबकि आदमी हर चीज से बेपरवाह होकर लोगों के दर्मियान खड़ा हो और हक की नुमाईदगी कर सके। हक की शुऊरी याफ्त हर दूसरी चीज का बदल है। जिसे यह नेमत हासिल हो जाए उसे फिर किसी और चीज की जरूरत बाकी नहीं रहती।

आम आदमी 'रोटी' पर जीता है। मोमिन वह इंसान है जो हक की दलील पर जीता है। इस तरह का रिज्क (शुऊरी याफ्त) मिलने के बाद आदमी के लिए नामुमकिन हो जाता है कि वह उसके खिलाफ रवैया इस्तिथार करे। कौल व अमल का तजाद (अन्तर्विरोध) रस्मी ईमान का नतीजा है और कौल व अमल की यकसानियत शुऊरी ईमान का नतीजा।

'शिक्राक' की तशरीह में हजरत हसन बसरी का कौल है कि मेरी दुश्मनी तुम्हें ईमान का रास्ता छोड़ देने पर न उभारे कि इसके बाद तुम्हें वह सजा मिले जो मुंकिरों को मिली।

दाओ चूँकि अपने जमाने के लोगों को एक आम इंसान की मानिंद नजर आता है। इसलिए उसकी नाकिदाना (आलोचनात्मक) बातों से वे लोग बिगड़ उठते हैं जिन्हें माहौल में ऊँची हैसियत हासिल हो। एक मामूली आदमी की यह जुरअत उनके लिए नाकाबिले बर्दाश्त हो जाती है कि वह उन पर और उनके बड़ों पर तंकीद (आलोचना) करे। इस वजह से उनके अंदर दाओ के खिलाफ जिद और नफ़रत पैदा हो जाती है।

किसी आदमी के अंदर इस किस्म की नफ़िसयात का पैदा होना उसका निहायत कड़े इन्तेहान में मुविला किया जाना है। क्योंकि ऐसा आदमी एक शख्स को हकीर (तुच्छ) समझने की वजह से उसकी तरफ से आने वाली खुदाई बात को भी हकीर समझ लेता है। वह एक इंसान को नजरअंदाज करने के नाम पर खुद खुदा को नजरअंदाज कर देता है।

قَالُوا يَسْعَيْبُ مَا نُنْفِقُ كَثِيرًا أَمْ بَلَا تُقُولُ وَإِنَّكَ لَبَدْعٌ فَتِنًا ضَعِيفًا وَلَوْلَا
رَهْمُكَ لَجَعَلَ لَكَ اللَّهُ أَهْلًا عَدُوًّا لَكَ إِنَّكَ لَفِي عَذَابٍ مُّهِينٍ ۝ قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ
لَكُمْ رَسُولًا مِّنْ دُونِ اللَّهِ فَتَقُولُونَ سَوَاءٌ كَذِبُكَ وَسَوَاءٌ بَدْعُكَ وَسَوَاءٌ نُّفُوسُكُمْ
وَمَا نَحْنُ بِمُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ يَبْنَؤُنَّ كَمَا بَنُوا عَلَيْهِمْ أَهْلًا مِّنْ دُونِ اللَّهِ فَتَقُولُونَ سَوَاءٌ
كَذِبُكَ وَسَوَاءٌ بَدْعُكَ وَسَوَاءٌ نُّفُوسُكُمْ وَمَا نَحْنُ بِمُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ يَبْنَؤُنَّ كَمَا بَنُوا عَلَيْهِمْ
أَهْلًا مِّنْ دُونِ اللَّهِ فَتَقُولُونَ سَوَاءٌ كَذِبُكَ وَسَوَاءٌ بَدْعُكَ وَسَوَاءٌ نُّفُوسُكُمْ وَمَا
نَحْنُ بِمُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ يَبْنَؤُنَّ كَمَا بَنُوا عَلَيْهِمْ أَهْلًا مِّنْ دُونِ اللَّهِ فَتَقُولُونَ سَوَاءٌ
كَذِبُكَ وَسَوَاءٌ بَدْعُكَ وَسَوَاءٌ نُّفُوسُكُمْ وَمَا نَحْنُ بِمُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ يَبْنَؤُنَّ كَمَا
بَنُوا عَلَيْهِمْ أَهْلًا مِّنْ دُونِ اللَّهِ فَتَقُولُونَ سَوَاءٌ كَذِبُكَ وَسَوَاءٌ بَدْعُكَ وَسَوَاءٌ
نُّفُوسُكُمْ وَمَا نَحْنُ بِمُؤْمِنِينَ ۝ قَالَ يَبْنَؤُنَّ كَمَا بَنُوا عَلَيْهِمْ أَهْلًا مِّنْ دُونِ اللَّهِ
فَتَقُولُونَ سَوَاءٌ كَذِبُكَ وَسَوَاءٌ بَدْعُكَ وَسَوَاءٌ نُّفُوسُكُمْ وَمَا نَحْنُ بِمُؤْمِنِينَ ۝

مَكَانَتَكُمْ إِنِّي عَامِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ
كَاذِبٌ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ۝

उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब, जो तुम कहते हो उसका बहुत सा हिस्सा हमारी समझ में नहीं आता। और हम तो देखते हैं कि तू हम में कमजोर है। और अगर तेरी बिरादरी न होती तो हम तुम्हें संगसार (पत्थरों से मार डाला) कर देते। और तुम हम पर कुछ भारी नहीं। शुऐब ने कहा कि ऐ मेरी कौम, क्या मेरी बिरादरी तुम पर अल्लाह से ज्यादा भारी है। और अल्लाह को तुमने पसेपुश्त (पीछे) डाल दिया। बेशक मेरे खब के काबू में है जो कुछ तुम करते हो। और ऐ मेरी कौम, तुम अपने तरीके पर काम किए जाओ और मैं अपने तरीके पर करता रहूँगा। जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किसके ऊपर रुसवा करने वाला अजाब आता है और कौन झूठा है। और इतिजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इतिजार करने वालों में हूँ। (91-93)

हजरत शुऐब को हदीस में खतीबुल अबिया (नबियों के वक्ता) कहा गया है। आप अपनी कौम को उसकी अपनी कबिलेमहम जवान में निहायत मुवस्तिर (प्रभाव) अंदाज में समझाते थे। फिर आपकी बात उसकी समझ में क्यों नहीं आई। इसकी वजह यह थी कि कौम का जेहनी सांचा बिगड़ा हुआ था। उसके सोचने का अंदाज और था और हजरत शुऐब के सोचने का अंदाज और। इस बिना पर आप की बात उसकी समझ में न आ सकी।

कौम इंसानों की ताजीम में गुम थी। आप उसे एक अल्लाह की ताजीम की तरफ बुलाते थे। वह खुश अकीदगी को नजात का जरिया समझे हुए थी, आपका कहना था कि सिर्फ अमल के जरिए नजात हो सकती है। कौम का ख्याल था कि वह अपने को मोमिन समझती है इसलिए वह मोमिन है। आपने कहा कि मोमिन वह है जो खुदा की मीजान (तुला) में मोमिन करार पाए। कौम के नजदीक नमाज की हैसियत बस एक रैर मुअस्सिर किस्म के रस्मी जमीमा (परिशिष्ट) की थी। आपने एलान किया कि नमाज आदमी की जिंदगी और उसके आमद व खर्च की मुहासिव है। कौम समझती थी कि ईमान बस एक बेरूह इकरार है, आपने बताया कि ईमान वह है जो एक जिंदा शुऊर के तौर पर हासिल हुआ हो।

इस तरह हजरत शुऐब और उनकी कौम के दर्मियान एक किस्म का फ़सल (Gap) पैदा हो गया था। यही जेहनी फ़सल कौम के लिए आपकी सीधी और सच्ची बात को समझने में रुकावट बना रहा।

'अगर तुम्हारा कबीला न होता तो हम तुम्हें संगसार कर देते।' यह जुमला बताता है कि हजरत शुऐब की कौम किस कदर बेहिस और जहिरपरस्त हो चुकी थी। किस्सा यह था कि हजरत शुऐब ने जब कौम के दिनी भरम को बेन काब किया तो कौम के लोग उनके दुश्मन बन गए। उस वक्त हजरत शुऐब के साथ न अवाम की भीड़ थी जो लोगों को रोके और न आप दोलत और हैसियत के मालिक थे जिसे देखकर लोग मरऊब हों। आपके पास सिर्फ सदाकत (सच्चाई) और माकूलियत (विवेक) का जेर था और ऐसे लोगों के नजदीक सिर्फ सदाकत और माकूलियत

की कोई अहमियत नहीं होती।

ऐसी हालत में वे यकीनन आप पर कतिलाना हमला कर देते। ताहम जिस चीज ने उन्हें इस क्रिम के इक्दाम से रक्षा वह कबीले के इतिकम का अंदेशा था। कबाइली दौर में कबीले के किसी फर्द को मारने का मतलब यह था कि कबाइली दस्तूर के मुताबिक पूरा कबीला उससे खून का बदला लेने के लिए उठ खड़ा हो जाए। यह अंदेशा कौमे शुऐब के लिए आपके खिलाफ किसी इतिहाई इक्दाम में रुकावट बन गया। ठीक उसी तरह जैसे मौजूदा जमाने में शरीर अफराद की शरारत से अक्सर औकात लोग इसलिए महफूज रहते हैं कि उन्हें अंदेशा होता है कि अगर उन्होंने कोई जारिहयत (आक्रामक) की तो उन्हें पुलिस और अदालत का सामना करना पड़ेगा।

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَحْنُ شُعَبِيًّا وَالَّذِينَ انْمُومَعُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْعَةَ فَاصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جِثِيَيْنَ ۚ كَانُوا لَمْ يَعْنُوا فِيهَا إِلَّا بُعْدًا
لِّمَذِينٍ كَمَا بَعَدَتْ ثُبُودُ ۚ

और जब हमारा हुक्म आया हमने शुऐब को और जो उसके साथ ईमान लाए थे अपनी रहमत से बचा लिया। और जिन लोगों ने जुल्म किया था उन्हें कड़क ने पकड़ लिया। पस वे अपने घरों में आँधे पड़े रह गए। गोया कि कभी उनमें बसे ही न थे। सुनो, फिटकार है मदन को जैसे फिटकार हुई थी समूद को। (94-95)

हजरत शुऐब की कौम के लोग समझते थे कि वे मदन के मालिक हैं। जो चीज उन्हें इम्तेहान की मस्लेहत के तहत दी गई थी उसे उन्होंने अपना मुस्तकिल हक समझ लिया। इस एहसास के तहत उन्होंने आपके खिलाफ जारिहाना (आक्रामक) तदबीरें कीं। उन्होंने आपको यह धमकी भी दी कि हम तुम्हें और तुम्हारे साथियों को अपनी सरजमीन से निकाल देंगे। (अल आराफ 88)। मगर वही जमीन जिसे वे अपनी जमीन समझते थे और जिसके वे मालिक बने हुए थे। वहाँ खुदा के हुक्म से हौलनाक गड़गड़ाहट के साथ जलजला आया। जिसके नतीजे में यह पूरा इलाका तबाह हो गया। वे खुद अपनी दुनिया में इस तरह मिटकर रह गए जैसे कभी उनका वजूद ही न था।

अलबत्ता कौम के वे अफराद जिन्होंने हजरत शुऐब की बात मानी थी और आपके साथ हो गए थे उन्हें खुसूसी नुसरत से बचा लिया गया।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۖ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَٰئِهِ
فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ وَمَا أَرْفَعُوْنَ بِرَشِيدٍ ۚ يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فَأَوْدَهُمُ النَّارُ وَبِئْسَ الْوَرْدُ الْمَوْرُودُ ۚ وَاتَّبَعُوا فِي هٰذِهِ لَعْنَةً وَيَوْمَ
الْقِيٰمَةِ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُودُ ۚ

और हमने मूसा को अपनी निशानियों और वाजेह सनद (स्पस्ट प्रमाण) के साथ भेजा, फिरऔन और उसके सरदारों की तरफ। फिर वे फिरऔन के हुक्म पर चले हालाँकि फिरऔन का हुक्म रास्ती (भलाई) पर न था। क्रियामत के दिन वह अपनी कौम के आगे होगा और उन्हें आग पर पहुँचाएगा। और कैसा बुरा घाट है जिस पर वे पहुँचेंगे। और इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी गई और क्रियामत के दिन भी। कैसा बुरा इनाम है जो उन्हें मिला। (96-99)

हजरत मूसा ने हक की दावत आखिरी मुमकिन हद तक पेश कर दी। उन्होंने फिरऔन और उसके साथियों को न सिर्फ नजरी (वैचारिक) तौर पर बेदलील कर दिया। बल्कि असा (डंडा) के मोजिजे की सूरत में अपनी सदाकत का खुला हुआ ज़ाहिरी सुबूत भी उन्हें दिखा दिया। फिर भी फिरऔन की कौम फिरऔन ही के साथ रही, वह हजरत मूसा का साथ देने पर तैयार न हुई।

इसकी वजह यह थी कि इन लोगों के नजदीक सारी अहमियत इक्तेदार और दुनियावी साजोसामान की थी और ये चीजें वे हजरत मूसा के अंदर न देखते थे। वे आपकी बातों पर हैरान जरूर होते थे। मगर जब वे हजरत मूसा का मुक़बला फिरऔन से करते तो उन्हें एक तरफ बेसरोसामानी (साधनहीनता) दिखाई देती और दूसरी तरफ हर क्रिम का माददी जाह व जलाल। यह तकाबुल उनके लिए फैसलाकुन बन गया। और वे दलाइल और मोजिजात (चमत्कार) देखने के बावजूद इसके लिए तैयार न हुए कि फिरऔन को छोड़ दें और उससे अलग होकर हजरत मूसा के साथ हो जाएं।

जो लोग दुनिया में किसी का साथ सिर्फ इसलिए देंगे कि उसके पास माददी (सांसारिक) बड़ाई की चीजें थीं, वे आखिरत में भी उसके साथ कर दिए जाएंगे। मगर दुनिया के बरअक्स यह बहुत बुरा साथ होगा। क्योंकि उस दिन उस आदमी से उसका तमाम सामान छिन चुका होगा। अब उसका वजूद सिर्फ जिल्लत और बर्बादी का निशान होगा। वह अपने साथियों को भी उसी आग में पहुँचा देगा जो खुद उसके लिए उसकी गुमराह कयादत (नेतृत्व) के नतीजे में खुदा की तरफ से मुक़द्दर की जा चुकी है।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْبَاءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قٰلِمٌ وَحَصِيْدٌ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ
وَلٰكِنْ ظَلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ فَمَا اَغْنٰتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَاءَ اَمْرُ رَبِّكَ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتٰبِيْبٍ ۚ

ये वस्तियों के कुछ हालात हैं जो हम तुम्हें सुना रहे हैं। इनमें से कुछ अब तक कायम हैं और कुछ मिट गईं। और हमने उन पर जुल्म नहीं किया। बल्कि उन्होंने खुद अपने ऊपर जुल्म किया। फिर जब तेरे रब का हुक्म आ गया तो उनके माबूद (पूज्य) उनके कुछ काम न आए जिनको वे अल्लाह के सिवा पुकारते थे। और उन्होंने उनके हक में बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं बढ़ाया। (100-101)

कदीम तारीखों (इतिहासों) में बादशाहों और फौजी जनरलों के हालात दर्ज हैं मगर नबियों और उनकी कौमों के हालात किसी तारीख में दर्ज नहीं। दूसरी तरफ कुरआन को देखिए तो उसमें सबसे ज्यादा एहतियाम के साथ नबियों और उनकी कौमों के हालात मिलते हैं। बकिया बातें उसने इस तरह नजरअंदाज कर दी हैं जैसे उसकी नजर में उनकी कोई अहमियत नहीं। इंसान ने जो तारीख लिखी उसमें उसने वही बात छोड़ दी जो ख़ालिक के नजदीक सबसे ज्यादा वक़्तिलेक़िशी।

दौरे नुबुव्वत की उन हलाकशुदा बस्तियों में से कुछ बस्तियां ऐसी हैं जो अभी तक आबाद हैं। जैसे मिस्र जो फ़िराऊन का मक़म था। दूसरी तरफ़ कैमे हूह और कैमे लूत जैसी कौमों हैं जिनकी बस्तियां उनके वाशियों सहित नापैद हो गई। अलबत्ता कहीं कहीं उनके कुछ निशानात खंडहर की सूरत में खड़े हैं या जमीन की खुदाई से बरामद किए गए हैं।

इन बस्तियों का हलाक किया जाना बजाहिर एक जालिमाना वाक़्या मालूम होता है। मगर जब यह देखिए कि क्यों ऐसा हुआ तो वह ऐन मुताबिके हकीक़त बन जाता है। क्योंकि ये उनकी अपनी बदअमली के नताइज थे। जो कुछ हुआ वह उनकी बदकिरदारी के बाद हुआ न कि उनकी बदकिरदारी से पहले।

जब भी आदमी सरकशी और जुल्म करता है तो वह किसी बरते पर करता है। वह कुछ चीजों या हस्तियों को अपना सहारा समझ लेता है और ख़्याल करता है कि ये मुश्किल वक़्तों में उसके मददगार साबित होंगे। मगर ये सहारे उसी वक़्त तक सहारे हैं जब तक खुदा ढील दे रहा हो। जब खुदा के कानून के मुताबिक ढील की मुद्दत ख़त्म हो जाए और खुदा अपना आख़िरी फैसला जाहिर कर दे उस वक़्त आदमी को मालूम होता है कि वे सब महज झूठे मफ़रूज़े थे जिनको उसने अपनी नादानी की वजह से सहारा समझ लिया था।

وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ أَلَمٌ شَدِيدٌ ﴿١٠٢﴾
 إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَن خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ﴿١٠٣﴾ ذَلِكَ يَوْمٌ تَجْمَعُ أُمَمٌ لِّهُ النَّاسُ وَ
 ذَلِكَ يَوْمٌ تَشْهَدُونَ ﴿١٠٤﴾ وَمَا تُؤَخِّرُونَ إِلَّا أَجَلَ رَجُلٍ مَّعْدُودٍ ﴿١٠٥﴾ يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ
 إِلَّا بِأَمْرٍ أَوْ فِي سَفَرٍ مِّنْ شَقِيٍّ وَسَعِيدٍ ﴿١٠٦﴾

और तैरे रब की पकड़ ऐसी ही है जबकि वह बस्तियों को उनके जुल्म पर पकड़ता है। बेशक उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक और सख़्त है। इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो आख़िरत के अजाब से डरें। वह एक ऐसा दिन है जिसमें सब लोग जमा होंगे। और वह हाजिरी का दिन होगा। और हम उसे एक मुद्दत के लिए टाल रहे हैं जो मुकर्रर है। जब वह दिन आएगा तो कोई जान उसकी इजाजत के बग़ैर कलाम न कर सकेगी। पस उनमें कुछ बदबख़्त (अभागे) होंगे। और कुछ नेकबख़्त (भाग्यशाली)। (102-105)

मौजूदा दुनिया में इंसान को रहने और बसने का मौक़ा सिर्फ़ इस्तेहान की बिना पर हासिल है। पैगम्बरों के जरिए इतमामे हुज्जत के बाद भी जो लोग मुंकिर बने रहें वे खुदा की जमीन में मजीद ठहरने का हक़ खो देते हैं। यही वजह है कि पैगम्बरों के मुंकिरीन को खुदा ने हलाक कर दिया (अनकवूत 40)। यह हलाकत ज्यादातर इस तरह हुई कि आम जमीनी आपत्तों में शिद्दत पैदा कर दी गई मसलन आंधी, सैलाब या जलजला, जो आम हालात में एक हद के अंदर रहते हैं, उन्हें ग़ैर महदूद तौर पर शदीद कर दिया गया।

माजी में इस तरह कौमों की तबाही के वाक़्यात को भूगोलविद मौसमी परिवर्तनशीलता (Climatic Pulsations) का नाम देते हैं। गोया जो कुछ हुआ वह महज भौगोलिक उथल पुथल के नतीजे में हुआ। अगरचे वे इस वाक़ये की कोई तौजीह नहीं कर पाते कि इस किस्म के शदीद मौसमी परिवर्तन सिर्फ़ माजी में क्यों पेश आए। वे अब (ख़त्मे नुबुव्वत के बाद) क्यों नहीं पेश आते।

हकीक़त यह है कि ये वाक़्यात सादा मअनों में सिर्फ़ भौगोलिक वाक़्यात न थे बल्कि यह हुक्मे खुदावंदी का जहूर था। इनसे यह साबित होता है कि मौजूदा दुनिया का निजाम अद्ल पर कायम है। यहां ख़ुद कानून क़दरत के तहत लाजिमन ऐसा हेने वाला है कि जल्लिम अपने जुल्म की सजा पाए और आदिल को अपने अद्ल का इनाम मिले। इन वाक़्यात को मौसमी तग़ाय्युरात (परिवर्तन) कहना इन्हें भूगोल के ख़ाने में डाल देना है। इसके बरअक्स अगर उन्हें खुदाई तग़ाय्युरात (परिवर्तन) माना जाए तो वे आदमी के लिए ख़ोफ़े खुदा और फ़िक़रे आख़िरत का ज़बरदस्त सबक बन जाएंगे।

पैगम्बरों के जमाने में जो वाक़्यात पेश आए वे गोया बड़ी कियामत से पहले उसकी एक छोटी निशानी थे। उनमें ऐसा हुआ कि मुंकिरीन को एक मुद्दत तक ढील दी गई। इसके बाद खुदा का फैसला जाहिर हुआ तो सबके सब हलाक कर दिए गए। सिर्फ़ वे लोग बच सके जो हक़ का साथ देने की वजह से खुदा के नजदीक नेकबख़्त करार पा चुके थे। इनके अलावा जो लोग खुदा की मीजान में सरकश और बदबख़्त थे वे लाजिमी तौर पर अजाब की जद में आए। यहां तक कि पैगम्बरों की सिफारिश भी उन्हें बचा न सकी, जैसा कि हजरत नूह और हजरत इब्राहीम की मिसाल से साबित होता है।

وَأَمَّا الَّذِينَ سَقَوْا فَنِيَ النَّارُ لَهُمْ فِيهَا زَوْجُرٌ وَشَهِيْقٌ ۖ خَلِيدِينَ فِيهَا
 مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿١٠٧﴾
 وَأَمَّا الَّذِينَ سَعَدُوا فَنِيَ الْجَنَّةُ خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ
 إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ عَطَاءٌ غَيْرُ مَجْدُوذٍ ۖ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ
 مَا يَعْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْْبُدُ آبَاؤُهُمْ مِّن قَبْلُ ۖ وَإِنَّا لَنُوقِفُهُمْ نَصِيبَهُمْ
 غَيْرَ مُنْقَوِصٍ ﴿١٠٨﴾

पस जो लोग बदबख्त हैं वे आग में होंगे। उन्हें वहां चीखना है और दहाड़ना। वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और जमीन कायम हैं, मगर जो तेरा खब चाहे। बेशक तेरा खब कर डालता है जो चाहता है। और जो लोग नेकबख्त हैं तो वे जन्नत में होंगे, वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और जमीन कायम हैं, मगर जो तेरा खब चाहे बख़्शिश है वेइतिहा। पस तू उन चीजों से शक में न रह जिनकी ये लोग इबादत कर रहे हैं। ये तो बस उसी तरह इबादत कर रहे हैं जिस तरह उनसे पहले उनके बाप दादा इबादत कर रहे थे। और हम उनका हिस्सा उन्हें पूरा पूरा देंगे बगैर किसी कमी के। (106-109)

कुरआन में सबसे ज्यादा अहमियत और सबसे ज्यादा तकरार (पुनरावृत्ति) के साथ जिस चीज का जिक्र है वह यह है कि इंसान अपनी मौजूदा हालत पर छोड़ नहीं दिए जाएंगे। बल्कि वे मौत के बाद खुदा की अदालत में हाजिर किए जाएंगे। वहां हर एक अपनी कारकदगी के मुताबिक जन्नत या देहख में डाला जाएगा।

इस अहमियत और तकरार की वजह लोगों का 'शक' है। लोग देखते हैं कि जमीन पर बेशुमार इंसान ऐसे हैं जो खुदा की हिदायत को नहीं मानते। बेशुमार इंसान ऐसे हैं जो खुदा की हिदायत से आजाद होकर अमल करते हैं। बेशुमार इंसान खुदापसंद जिंदगी की बजाए खुदपसंद जिंदगी गुजार रहे हैं। फिर भी उनका कुछ नहीं बिगड़ता। फिर भी सारे लोग कामयाब हैं। बजाहिर यहां कहीं दिखाई नहीं देता कि खुदा के वफादारों को कोई खुसूसी इनाम मिल रहा हो। या खुदा के नाफरमानों को कोई ख़ास सजा भुगतनी पड़ती हो।

इस बिना पर लोगों को शक होने लगता है। उन्हें यकीन नहीं आता कि इंसानों का जो अंजाम मुसलसल वे अपनी आंखों से देख रहे हैं उसके सिवा भी कोई अंजाम उनके लिए मुकद्दर है। यहां कुरआन बताता है कि लोगों का मुसलसल गैर हक पर चलना इसलिए नहीं है कि उन्होंने मसले के तमाम पहलुओं पर गौर किया और फिर उसे माकूल पाकर उसे इस्तियार कर लिया। इसका सबब दरअसल रिवाज की पैरवी है न कि दलील और माकूलियत की पैरवी।

इसके बावजूद लोगों के अमल का अंजाम उनके सामने नहीं आता तो इसका सबब मोहलते इम्तेहान है। जमीन पर मौत से पहले की जिंदगी जांच की जिंदगी है। इसलिए मौत तक इंसान को यहां ढील दी जा रही है कि वह जो चाहे बोले और जो चाहे करे। मौत इस मुकर्रह (निर्धारित) मुद्दत का ख़ात्मा है। मौत का मतलब यह है कि इंसान को मकामे इम्तेहान से उठाकर मकामे अदालत में पहुंचा दिया जाए। वहां हर एक को वही मिलेगा जिसका वह फिलवाकअ मुस्तहिक (पात्र) था और हर एक से वह छिन जाएगा जिसे उसने इस्तहक़क (पात्रता) के बगैर अपने गिर्द जमा कर रखा था।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ وَلَوْ لَا كَلِمَةُ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ
لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ وَلَهُمْ لَعْنُ شَيْءٍ مِنْهُ مُرِيبٌ ۖ وَإِنَّ كُلًّا لَلْآيُوفِينَ ۖ إِنَّهُمْ رَبُّكَ
أَعْمَاهُمْ إِنَّهُمْ لَبَايِعُونَ خَيْرٌ ۖ

और हमने मूसा को किताब दी। फिर उसमें फूट पड़ गई। और अगर तेरे खब की तरफ से पहले ही एक बात न आ चुकी होती तो उनके दरमियान फैसला कर दिया जाता। और उन्हें इसमें शुबह है कि वह मुतमइन (संतुष्ट) नहीं होने देता और यकीनन तेरा खब हर एक को उसके आमाल का पूरा बदला देगा। वह बाख़बर है उससे जो वे कर रहे हैं। (110-111)

'मूसा की किताब में इख़ेलाफ' का मतलब यह है कि उसके मुखातबीन उसके बयानात के बारे में कई राय हो गए। उनमें से कुछ लोगों ने झुठलाया और कुछ लोगों ने तस्लीम किया।

जब भी कोई बात कही जाए तो आदमी उसके बारे में हमेशा दो चीजों के दरमियान होता है। एक, सही ताबीर (भाष्य)। दूसरे, गलत ताबीर। अगर सुनने वाले फिलवाकअ संजीदा हों तो वे एक ही सही ताबीर तक पहुंचेंगे उनकी संजीदगी उनके लिए इतेहादे राय की जामिन बन जाएगी। इसके बरअक्स अगर वे बात के बारे में संजीदा न हों तो वे उसे कोई अहमियत न देंगे और अपने अपने ख़्याल के मुताबिक उसकी मुख़लिफ ताबीरें करेंगे। कोई एक बात कहेगा, कोई दूसरी बात। इस तरह उनकी ग़ैर संजीदगी उन्हें इख़ेलाफे राय तक पहुंचा देगी।

यह सूरत तमाम पैग़म्बरों के साथ पेश आई। इसके बावजूद खुदा इसे गवारा करता रहा। इसकी वजह यह है कि खुदा ने मौजूदा दुनिया को अमल की जगह बनाया है और अगली आने वाली दुनिया को बदला पाने की जगह। खुदा की यही सुन्नत है जिसकी बिना पर लोगों को मुकम्मल आजादी मिली हुई है। मौजूदा सूरतेहाल इसी मोहलते इम्तेहान की बिना पर है न कि खुदा के इज्ज या लोगों के किसी इस्तहक़क (पात्रता) की बिना पर।

فَأَسْتَقِيمُ ۖ كَمَا أَفْرُتُ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۖ وَلَا تَرْكَبُوا
إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُم مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءٍ ثُمَّ
لَا تُنصَرُونَ ۖ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَزُلْفًا مِّنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ
يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرَىٰ لِلذَّاكِرِينَ ۖ وَأَصْبِرْ ۖ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ
أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۖ

पस तुम जमे रहो जैसा कि तुम्हें हुक्म हुआ है और वे भी जिन्होंने तुम्हारे साथ तौबा की है और हद से न बढ़े बेशक वह देख रहा है जो तुम करते हो। और उनकी तरफ न झुको जिन्होंने जुल्म किया, वरना तुम्हें आग पकड़ लेगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई मददगार नहीं, फिर तुम कहीं मदद न पाओगे और नमाज कायम करो दिन के दोनों हिस्सों में और रात के कुछ हिस्से में। बेशक नेकियां दूर करती हैं बुराइयों को। यह याददिहानी (अनुस्मरण) है याददिहानी हासिल करने वालों के लिए और सब करो अल्लाह नेकी करने वालों का अज़्र जाए (बिनष्ट) नहीं करता। (112-115)

हक की दावत (आह्वान) का इब्तिदाई इस्तक़बाल नजरअंदाज करने की सूरत में होता है।

इसके बाद मुखालिफ्त शुरू होती है, यहां तक कि मुखालिफ्त अपने आखिरी नुकते पर पहुंच जाती है। यह दावियों के लिए बड़ा नाजुक वक्त होता है। उस वक्त उनके दर्मियान दो किस्म के जेहन उभरते हैं। कुछ लोग झुंझला कर यह चाहने लगते हैं कि मुखालिफ़ीन से टकरा जाएं और उन लोगों से कुव्वत के जरिए निपटें जिनके लिए नजरी दलाइल बेअसर साबित हुए हैं। दूसरा जेहन वह है जो यह सोचता है कि मुखातबीन के लिए कबिले कुवूल बनाने के खातिर अपनी दावत में कुछ तरमीम (संशोधन) कर ली जाए। दावत के उन अज्जा (अंशों) का जिक्र न किया जाए जिन्हें सुनकर मुखातबीन बिगड़ जाते हैं।

पहला रवैया अगर हद से तजावुज (सीमा-उल्लंघन) करना है तो दूसरा रवैया बातिल से मुसालेहत (असत्य से समझौता) करना। और ये दोनों ही अल्लाह की नजर में एकसां तौर पर ग़लत हैं। खास तौर पर दूसरी चीज (कबिले कुवूल बनाने के खातिर तब्दीली) तो ज़ुर्म का दर्जा रखती है। क्योंकि अल्लाह तआला को सबसे ज्यादा जो चीज मलूब है वह हक का एलान है। और मुसालेहत की सूरत में हक का वाजेह एलान नहीं हो सकता।

दावत की राह में जब भी कोई मुश्किल पेश आए तो दाअी (आह्वानकर्ता) को चाहिए कि खुदा की तरफ ज्यादा से ज्यादा रुजूअ करे क्योंकि सब कुछ करने वाला वही है। खुदा की मदद ही तमाम मुश्किलात के हल का वाहिद यकीनी जरिया है।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفُسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿١١٦﴾ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُفْهِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصَلِحُونَ ﴿١١٧﴾

पस क्यों न ऐसा हुआ कि तुमसे पहले की कौमों में ऐसे अहले खैर होते जो लोगों को जमीन में फ़साद करने से रोकते। ऐसे थोड़े लोग निकले जिनको हमने उनमें से बचा लिया। और जालिम लोग तो उसी ऐश में पड़े रहे जो उन्हें मिला था और वे मुजरिम थे। और तेरा रब ऐसा नहीं कि वह बस्तियों को नाहक तबाह कर दे हालांकि उसके वाशिदे इस्लाह (सुधार) करने वाले हों। (116-117)

यहां पिछलों से मुराद पिछली उम्मतें बअल्फ़जे दीगर पिछली मुस्लिम क़ैमों हैं। क़ैम का बिगाड़ हमेशा इस तरह होता है कि दुनियावी सामान जो खुदा की तरफ से उन्हें इसलिए दिया गया था कि इससे उनके अंदर शुक्र का जज्बा उभरे, वह उनके लिए सरमस्ती (उन्मुकता) और दुनियापरस्ती पैदा करने का जरिया बन गया।

ऐसी हालत में मुस्लिम क़ौम की इस्लाह के लिए जो काम करना है उसका उन्वान शरीअत की इस्तेलाह में 'अग्र बिल मारुफ और नही अनिलमुंकर' है। यह हुक्म एक मुसलमान की उस जिम्मेदारी को बताता है जो अपने करीबी माहौल की इस्लाह के सिलसिले में उस पर आयद होती है। इससे मुराद यह है कि मुस्लिम मुआशिरे में हमेशा ऐसे अफराद मौजूद

रहने चाहिए जो मुसलमानों को खुदा और आखिरत की याद दिलाएं। वे उनके अख़लाक की निगरानी करें। वे मामलात में उन्हें राहेरास्त पर कायम रखने की कोशिश करें।

किसी क़ौम में ऐसे अहले खैर का न निकलना हमेशा दो सबब से होता है। या तो पूरी क़ौम की क़ौम बिगड़ चुकी हो और उसमें कोई सालेह इंसान बाकी न रहा हो। या सालेह अफराद मौजूद तो हों मगर उमूमी बिगाड़ की वजह से वे ज़बान खोलने की हिम्मत न करते हों। उन्हें अदिशा हो कि अगर उन्होंने सच्ची बात कही तो क़ौम के दर्मियान वे बेइज्जत होकर रह जाएंगे।

मज़हूर दोनों सूरतों में क़ौम खुदा की नजर में अपना एतबार खो देती है और इसकी मुस्तहिक हो जाती है कि एक या दूसरी सूरत में वह इताबे खुदावंदी की जद में आ जाए।

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۚ وَلَا يَزَالُ النَّاسُ مُخْتَلِفِينَ ۗ إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْإِنْسَانِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١١٨﴾

और अगर तेरा रब चाहता तो लोगों को एक ही उम्मत बना देता मगर वे हमेशा इख़तेलाफ (मत-भिन्नता) में रहेंगे सिवा उनके जिन पर तेरा रब रहम फरमाए। और उसने इसीलिए उन्हें पैदा किया है। और तेरे रब की बात पूरी हुई कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों से इकट्ठे भर दूंगा। (118-119)

हमारी दुनिया में इंसान के सिवा दूसरी बेशुमार मख़्लूकात भी हैं। ये सब हमेशा फितरत के एक ही मुकरर रास्ते पर चलती हैं। इसी तरह इंसान को भी खुदा एक ही सिराते मुस्तकीम (सन्मार्ग) का पाबंद बना सकता था। मगर इंसान के बारे में खुदा की यह स्कीम ही नहीं। इंसान के सिलसिले में खुदा का मंसूबा यह था कि एक ऐसी मख़्लूक पैदा की जाए जो खुद अपने आजादना इख़्तियार के तहत एक चीज को ले और दूसरी चीज को छोड़ दे। इंसान की दुनिया में इख़तेलाफ (किसी का एक रास्ते पर चलना और किसी का दूसरे रास्ते पर) दरअस्तल इसी खास खुदाई मंसूबे की बिना पर है।

यह मंसूबा यकीनन एक पुरख़तर (ख़तरे भरा) मंसूबा था क्योंकि इसका मतलब यह था कि बहुत से लोग आजादी का ग़लत इस्तेमाल करके अपने आपको जहन्नम का मुस्तहिक बना लेंगे। मगर इसी पुरख़तर मंसूबे के जरिए वे आला रूहें भी चुनी जा सकती थीं जो खुदा की खास रहमत की मुस्तहिक करार पाएं। खुदा ने अपनी रहमतें सारी कायनात को बतौर अतिय्या (पारितोष) दे रखी हैं। अब खुदा ने यह मंसूबा इसलिए बनाया ताकि अपनी रहमत वह अपनी एक मख़्लूक को यह कहकर दे कि यह तुम्हारा हक है।

खुदा की रहमत उस शख्स को मिलती है जिसका शुऊर इतना बेदार हो गया हो कि वह इन्तेहानी इख़्तियार के अंदर अपनी हकीकी बेइख़्तियारी को जान ले। वह इंसानी कुदरत के पर्दे

में खुदा की कुरत को देख ले। यह शुऊर ऐसे आदमी से सरकशी की ताकत छीन लेता है। यहां तक कि उसका यह हाल हो जाता है कि जब खुदा अपनी रहमत को उसका हक कहकर पेश करे तो उसका शुऊरे हकीकत पुकार उड़ेखुदाया यह भी तेरी रहमतों ही का एक करिश्मा है। वरना मेरा अमल तो किसी कीमत का मुस्तहिक (पात्र) नहीं।

وَكَلَّا نَقْصُصْ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نَشِئْتُمْ بِهِ فُؤَادَكَ ۖ وَجَاءَكَ فِي هَذِهِ الْحَقُّ وَمُعَظَّةٌ وَذِكْرٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۖ وَقُلْ لِّلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ إِنَّا عَمِلُونَا ۖ وَانظُرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ۖ وَبَلَدٌ غِيبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَآلِيهِ يُرْجَعُ الْأُمُورُ كُلُّهَا فَعَبْدُهُ ۖ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ۖ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

और हम रसूलों के अहवाल से सब चीज तुम्हें सुना रहे हैं। जिससे तुम्हारे दिल को मजबूत करें और इसमें तुम्हारे पास हक आया है और मोमिनों के लिए नसीहत और याददिहानी (अनुस्मरण)। और जो लोग ईमान नहीं लाए उनसे कहो कि तुम अपने तरीके पर करते रहे और हम अपने तरीके पर कर रहे हैं। और इंतजार करो हम भी मुंतजिर हैं। और आसमानों और जमीन की छुपी बात अल्लाह के पास है और वही तमाम मामलों का मरजअ (उन्मुख-केन्द्र) है। पस तुम उसकी इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और तुम्हारा खब उससे बेखबर नहीं जो तुम कर रहे हो। (120-123)

कुरआन में रसूलों के अहवाल (वृत्तांत) इसलिए सुनाए गए हैं कि बाद के दाअियों को इससे सबक हासिल हो। रसूलों के अहवाल में दाजी देखता है कि उनकी मुखातब कौमों ने उनसे झगड़े किए। सीधी बात को गलत रुख देकर उन्हें मतऊन (लाछित) किया। उन्हें तरह तरह की तकलीफें पहुंचाईं। उन्हें इस तरह रद्द कर दिया जैसे उनकी कोई कीमत ही नहीं।

मगर बिलआखिर अल्लाह ने उनकी मदद की। उनकी बात सबसे बरतर साबित हुई। मुखालिफीन की तमाम कारवाइयां नाकाम होकर रह गईं। दोनों गिरोहों का यह मुखलिफ अंजाम अपनी इब्तिदाई सूरत में मौजूदा दुनिया ही में पेश आया और आखिरत में वह अपनी कामिलतरीन सूरत में पेश आएगा।

इन मिसालों से दाजी को यह तारीखी एतमाद हासिल होता है कि उसे हक की दावत की राह में जो मुश्किलें पेश आ रही हैं उनमें उसके लिए न मायूसी का सवाल है और न घबराहट का। हक की दावत की राह में ये चीजें हमेशा पेश आती हैं। और इसे भी बिलआखिर उसी तरह कामयाबी हासिल होगी जिस तरह इससे पहले खुदा के सच्चे दाअियों को हासिल हुई।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَٰذَا الْقُرْآنُ ۖ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الْغَافِلِينَ ۝

आयतें-111

सूरह-12. यूसुफ

रुकूअ-12

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० रा०। ये वाजेह (स्पष्ट) किताब की आयतें हैं। हमने इसे अरबी कुरआन बनाकर उतारा है ताकि तुम समझो। हम तुम्हें बेहतरीन सरगुजस्त (किस्से) सुनाते हैं इस कुरआन की बदौलत जो हमने तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) किया। इससे पहले बेशक तू बेखबरों में था। (1-3)

कुरआन अगरचे सारी दुनिया की हिदायत के लिए आया है। ताहम इससे मुखातबे अब्वल अरब थे। इसलिए वह अरबी जवान में उतरा। अब इस पर ईमान लाने वालों की जिम्मेदारी है कि वे इसकी तालीमात को हर जवान में मुंतकिल करें। और इसको दुनिया की तमाम कौमों तक पहुंचाएं।

कुरआन की तालीमात कुरआन में मुखलिफ अंदाज और उस्तूब (शैली) से बयान की गई हैं। कहीं वह कायनाती इस्तदलाल (तर्कों) की जवान में हैं, कहीं इंजार और तबशीर (डरावा और खुशखबरी) की जवान में और कहीं तारीख की जवान में। सूरह यूसुफ में यह पैगाम हजरत यूसुफ के किस्से की शक्ल में सामने लाया गया है। इस सूरह में अहले ईमान को एक पैगम्बर की सरगुजस्त (किस्सा) की सूरत में बताया गया है कि खुदा हर चीज पर कादिर है। वह हक के लिए उठने वालों की मदद करता है। और मुखालिफीन की तमाम साजिशों के बावजूद बिलआखिर उन्हें कामयाब करता है। शर्त यह है कि अहले ईमान के अंदर तकवा और सन्न की सिफत मौजूद हो। यानी वे अल्लाह से डरने वाले हों और हर हाल में हक के रास्ते पर जमे रहें।

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا ۖ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ رَايَتُهُم لِي سَاجِدِينَ ۖ قَالَ يَبْنَئِي لَكَ عَلَىٰ إِحْوَاتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا ۖ إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ۖ وَكَذَٰلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَىٰ أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۖ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

जब यूसुफ ने अपने बाप से कहा कि अब्बाजान मैंने ख़ाब में ग्यारह सितारे और सूरज और चांद देखे हैं। मैंने उन्हें देखा कि वे मुझे सज्दा कर रहे हैं। उसके बाप ने कहा कि ऐ मेरे बेटे, तुम अपना यह ख़ाब अपने भाइयों को न सुनाना कि वे तुम्हारे खिलाफ कोई साजिश करने लगे। वेशक शैतान आदमी का खुला हुआ दुश्मन है। और इसी तरह तेरा रब तुझे मुंतख़ब करेगा और तुम्हें वालों की हकीकत तक पहुंचना सिखाएगा और तुम पर और आले याकूब पर अपनी नेमत पूरी करेगा जिस तरह वह इससे पहले तुम्हारे अज्दाद (पूर्वजों) इब्राहीम और इस्हाक पर अपनी नेमत पूरी कर चुका है। यकीनन तेरा रब अलीम (ज्ञानवान) और हकीम (तत्वदर्शी) है। (4-6)

हदीस में है कि ख़ाब की तीन किस्में हैं। अपने दिल की बात, शैतान का डरावा और खुदा की बशारत (शुभ सूचना)। आम आदमी का ख़ाब तीनों में से कोई भी हो सकता है। मगर पैग़म्बर का ख़ाब हमेशा खुदा की बशारत होता है, कभी रास्त (प्रत्यक्ष) अंज़ाम में और कभी तमसीली (उपमा के) अंज़ाम में।

हज़रत यूसुफ का ज़माना उन्नीसवीं सदी ईसा पूर्व का ज़माना है। आपके वालिद हज़रत याकूब फिलिस्तीन में रहते थे। हज़रत यूसुफ और उनके भाई बिन यामीन एक मां से थे और बकिया दस भाई दूसरी माओं से। इस ख़ाब में सूरज और चांद से मुराद आपके वालिदेन हैं और ग्यारह सितारों से मुराद ग्यारह भाई। इसमें यह बशारत थी कि हज़रत यूसुफ को पैग़म्बरी मिलेगी और इसी के साथ यह ख़ाब आपके उस उरूज व इक्तेदार (सत्ता) की तमसील था जो बाद को मिश्र पहुंच कर आपको मिला और जिसके बाद सारे अहले ख़ानदान मजबूर हुए कि वे आपकी अज्मत को तस्लीम कर लें।

हज़रत यूसुफ के दस सौतेले भाई आपकी शख़्सियत और मकबूलियत को देखकर आपसे हसद रखते थे। इसलिए आपके वालिद (हज़रत याकूब) ने ख़ाब सुनकर फौरन कहा कि अपने भाइयों से इसका जिक्र न करना वरना वे तुम्हारे और ज्यादा दुश्मन हो जाएंगे।

किसी की बड़ाई देखकर उसके खिलाफ जलन पैदा होना ख़ालिस शैतानी फेअल (कृत्य) है। जिस शख्स के अंदर यह सिफ़त पाई जाए उसे अपने बारे में तौबा करनी चाहिए। क्योंकि यह इस बात का सुबूत है कि वह खुदा के फैसले पर राजी नहीं। वह शैतान की हिदायत पर चल रहा है न कि खुदा की हिदायत पर।

यहां इतमामे नेमत का लफ़्ज़ हज़रत यूसुफ के लिए भी बोला गया है जिनको हुक्मत हासिल हुई और हज़रत इब्राहीम के लिए भी जिनको कोई हुक्मत नहीं मिली। फिर दोनों के दर्मियान वह मुश्तरक (साम्य) चीज क्या थी जिसे इतमामे नेमत कहा गया। वह नुबुव्वत थी। यानी खुदा की उस खुसूसी हिदायत की तौफीक जो किसी को आख़िरत में आला मर्तबों तक पहुंचाने वाली है। खुदा की हिदायत इंसान के ऊपर खुदा की नेमतों की तक्मील है। यह नेमत पैग़म्बरों को बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) तौर पर मिलती है और आम सालेहीन को बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर।

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِّلْمُتَذَكِّرِينَ ۚ إِذْ قَالَ الْيُوسُفُ لِأَخُوهُ
أَحَبُّ إِلَيَّ إِنَّمَا أَتَاكَ بِضَلَالٍ مُّبِينٍ ۚ أَقْتُلُوا
يُوسُفَ وَأَطْرَحُوهُ أَرْضًا يَخْلُ لَكُمْ وَجْهُهُ أَبْيَضًا وَتُكُونُوا مِن بَعْدِهِ قَوْمًا
صَالِحِينَ ۚ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَالْقَوْهُ فِي غَيَبَتِ الْغَيْبِ يَلْتَقِطُهُ
بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِن كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ۝

हकीकत यह है कि यूसुफ और उसके भाइयों में पूछने वालों के लिए बड़ी निशानियां हैं। जब उसके भाइयों ने आपस में कहा कि यूसुफ और उसका भाई हमारे बाप को हमसे ज्यादा महबूब हैं। हालांकि हम एक पूरा जत्था हैं। यकीनन हमारा बाप एक खुली हुई ग़लती में मुक्तिला है। यूसुफ को क़त्ल कर दो या उसे किसी जगह फेंक दो ताकि तुम्हारे बाप की तवज़्जोह सिर्फ़ तुम्हारी तरफ हो जाए। और इसके बाद तुम बिल्कुल ठीक हो जाना। उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ को क़त्ल न करो। अगर तुम कुछ करने ही वाले हो तो उसे किसी अंधे कुएं में डाल दो। कोई राह चलता कफ़िला उसे निकाल ले जाएगा। (7-10)

मक्का के आखिरी दिनों में जबकि अबू तालिब और हज़रत खदीजा का इतिकाल हो चुका था मक्का के लोगों ने आपकी मुख़ालिफ़त तेज़तर कर दी। उस ज़माने में मक्का के कुछ लोगों ने आपसे हज़रत यूसुफ का हाल पूछा जिनका नाम उन्होंने सफ़रों के दौरान कुछ यहूदियों से सुना था। यह सवाल अगरचे उन्होंने मज़ाक के तौर पर किया था मगर अल्लाह तआला ने उसे खुद पूछने वालों की तरफ लौटा दिया। इस क़िस्से के ज़रिए बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर उन्हें बताया गया कि तुम लोग वे हो जिनके हिस्से में यूसुफ के भाइयों का किरदार आया है। जबकि पैग़म्बर का अंज़ाम खुदा की रहमत से वह होने वाला है जो यूसुफ का मिश्र में हुआ।

हज़रत याकूब देख रहे थे कि उनकी औलाद में सबसे ज्यादा लायक और सालेह (नैक) हज़रत यूसुफ हैं। उनके अंदर उन्हें मुस्तक़बिल के नबी की शख़्सियत दिखाई देती थी। इस बिना पर उन्हें हज़रत यूसुफ से बहुत ज्यादा लगाव था। मगर आपके दस साहबज़ादे मामले को दुनियावी नजर से देखते थे। उनका ख़्वाल था कि बाप की नजर में सबसे ज्यादा अहम चीज उनका जत्था होना चाहिए। क्योंकि वही इस काबिल है कि ख़ानदान की मदद और हिमायत कर सके। उनका यह एकतरफ़ा दृष्टिकोण यहां तक पहुंचा कि उन्होंने सोचा कि यूसुफ को मैदान से हटा दें तो बाप की सारी तवज़्जोह उनकी तरफ हो जाएगी।

वे लोग जब हज़रत यूसुफ के खिलाफ मंसूबा बनाने बैठे तो उनके एक भाई (यहूदा) ने यह तज्वीज पेश की कि यूसुफ को क़त्ल करने के बजाए किसी अंधे कुएं में डाल दिया जाए। यह अल्लाह तआला का ख़ास इतिज़ाम था। अल्लाह का यह तरीका है कि कोई ग़िरोह जब

नाहक किसी बंदे के दरपे हो जाता है तो खुद उस गिरोह में से एक ऐसा शख्स निकलता है जो अपने लोगों को किसी ऐसी मोअतदिल तदबीर पर राजी कर ले जिसके अंदर से उस खुदा के बंदे के लिए नया इस्काण खुल जाए।

قَالُوا يَا بَنَاكَ مَا لَكَ لَا تَأْمُرُنَا عَلَىٰ يَوْسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَاصِحُونَ ۝ أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفَظُونَ ۝ قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنَّ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ۝ قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَّخَيْرُونَ ۝

उन्होंने अपने बाप से कहा, ऐ हमारे बाप, क्या बात है कि आप यूसुफ के मामले में हम पर भरोसा नहीं करते। हालांकि हम तो उसके खैरख्वाह हैं। कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए, खाए और खेले, और हम उसके निगहवान हैं। बाप ने कहा मैं इससे शमगीन होता हूं कि तुम उसे ले जाओ और मुझे अदेशा है कि उसे कोई भेड़िया खा जाए जबकि तुम उससे ग्राफिल हो। उन्होंने कहा कि अगर उसे भेड़िया खा गया जबकि हम एक पूरी जमाअत हैं, तो हम बड़े ख़सारे (घाटे) वाले साबित होंगे। (11-14)

हजरत याकूब ने अपने बेटों को जो जवाब दिया उससे मालूम होता है कि हालात के मुतालअ से उन्होंने अंदाजा कर लिया था कि यह सहरा में खेलने कूदने का मामला नहीं है। बल्कि यूसुफ के खिलाफ उनके भाइयों की साजिश का मामला है। मगर अल्लाह से डरने वाला इंसान अल्लाह पर भरोसा करने वाला इंसान होता है। हजरत याकूब ने अगरचे अपनी फरासत (दूरदृष्टि) से यह महसूस कर लिया था कि क्या होने जा रहा है। ताहम वह खुदा की कुदरत को हर दूसरी चीज से ऊपर समझते थे। उन्हें खुदा की बालादस्ती पर कामिल यकीन था। चुनांचे वाज्हे ख़तरात के बावजूद उन्होंने यूसुफ को खुदा के भरोसे पर उनके भाइयों के हवाले कर दिया।

यह खुदा से डरने वाले इंसान की तस्वीर थी। दूसरी तरफ हजरत यूसुफ के भाइयों में उन लोगों की तस्वीर नजर आती है जिनके दिल खुदा के ख़ौफ से ख़ाली हों। ये लोग एक खुदा के बंदे को नाहक बर्बाद करने के मंसूबे बना रहे थे। वे यह भूल गए थे कि वे एक ऐसी दुनिया में हैं जहां खुदा के सिवा किसी और को कोई इख़्तियार हासिल नहीं। वे लपकों के एतबार से अपने को खैरख्वाह (हितैषी) साबित कर रहे थे। हालांकि खुदा के नजदीक खैरख्वाह वह है जो अमल के एतबार से अपने को खैरख्वाह साबित करे।

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَاجْتَمَعُوا أَن يُجْعَلُوهُ فِي غَيْبَتِ الْجُبِّ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَهُمْ بِأَمْرِهِمْ هَذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَجَاءُوا أَبَاهُمْ عِشَاءً يَبْكُونَ ۝ قَالُوا يَا بَنَاكَ إِنَّا ذَهَبْنَا سَبْقًا وَتَرَكْنَا يَوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ وَمَا أَنْتَ

بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ۝ وَجَاءُوا عَلَىٰ قَبِيضِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ ۝ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۝ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝

फिर जब वे उसे ले गए और यह तै कर लिया कि उसे एक अंधे कुर्वें में डाल दें और हमने यूसुफ को 'वही' (प्रकाशना) की कि तू उन्हें उनका यह काम जताएगा और वे तुझे न जानेंगे और वे शाम को अपने बाप के पास रोते हुए आए। उन्होंने कहा कि ऐ हमारे बाप हम दौड़ का मुकाबला करने लगे और यूसुफ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया। फिर उसे भेड़िया खा गया। और आप हमारी बात का यकीन न करेंगे चाहे हम सच्चे हों। और वे यूसुफ की कमीज पर झूठ खून लगाकर ले आए। बाप ने कहा नहीं, बल्कि तुम्हारे नफस ने तुम्हारे लिए एक बात बना दी है। अब सब्र ही बेहतर है। और जो बात तुम जाहिर कर रहे हो उस पर अल्लाह ही से मदद मांगता हूं। (15-18)

हजरत यूसुफ का अस्ल किस्सा यकीनी तौर पर उससे ज्यादा मुमस्सल (विस्तृत) है जितना कि कुरआन में बयान हुआ है। मगर कुरआन का अस्ल मकसद नसीहत है न कि वाक्यानिगारी। इसलिए वह सिर्फ उन पहलुओं को लेता है जो नसीहत और तच्कीर के लिए मुफीद हों। और बकिया तमाम अज्जा (अंशों) को हटा देता है ताकि तारीखनिगार उसे मुस्तब करें।

रिवायात के मुताबिक हजरत यूसुफ तीन दिन तक अंधे कुर्वें में रहे। इन्हीं तीन दिनों में ग़ालिबन ख़्वाब के जरिए आपको आपका मुस्तकबिल दिखाया गया। उसमें आपने देखा कि आप कुर्वें से निकलते हैं और फिर अज्मत व शान के एक ऊंचे मकाम पर पहुंचते हैं। यहां तक कि आपके और आपके भाइयों के दर्मियान हैसियत के एतबार से इतना फर्क हो जाता है कि वे आपको देखते हैं तो पहचान नहीं पाते।

हजरत यूसुफ के भाइयों ने जो कुछ किया वह इतिहाई इश्तिआलअमोज (उत्तेजक) हरकत थी। मगर एक तरफ हजरत यूसुफ का हाल यह था कि उन्होंने अपने मामले को खुदा के हवाले कर दिया और सुनसान मकाम पर अंधे कुर्वें के अंदर खामोश बैठे हुए खुदा की मदद का इतिजार करते रहे। दूसरी तरफ आपके वालिद हजरत याकूब ने सब्र जमील (असीम संयम) की रविश इख़्तियार की। कुछ तफ़सीरों में आया है कि उन्होंने अपने बेटों से कहा : अगर यूसुफ को भेड़िया खा जाता तो वह उसकी कमीज को भी जरूर भाड़ डालता। यानी वह भेड़िया भी कैसा शरीफ भेड़िया था जो यूसुफ को तो उठा ले गया और खून आलूद कमीज को निहायत सही व सालिम हालत में उतार कर तुम्हारे हवाले कर गया।

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَىٰ دَلْوَهُ ۖ قَالَ يَبْنَؤِي هَذَا غُلْمٌ وَاسْأَلُوهُ بِضَاعَةً ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۝ وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ بَخِيسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ۝

और एक काफिला आया तो उन्होंने अपना पानी भरने वाला भेजा। उसने अपना डोल लटकाया। उसने कहा, खुशखबरी हो यह तो एक लड़का है। और उसे तिजारत का माल समझ कर महफूज कर लिया। और अल्लाह खूब जानता था जो वे कर रहे थे। और उन्होंने उसे थोड़ी सी कीमत चन्द दिरहम के एवज बेच दिया। और वे उससे बेराबत (उदासीन) थे। (19-20)

हजरत यूसुफ के भाई जब आपको अंधे कुएँ में डाल कर चले गए तो तीन दिन बाद एक तिजारती काफिला उधर से गुज़ा जो मदन से मिस्र जा रहा था। काफिले के एक आदमी ने पानी की ख़ातिर कुएँ में डोल डाला तो हजरत यूसुफ (जो उस वक़्त तकरीबन 16 साल के थे) डोल पकड़ कर बाहर आ गए।

यह इंसानों को बेचने का जमाना था। इसलिए काफिले वाले खुश हुए कि वे मिस्र ले जाकर लड़के को फ़रोख़्त कर सकेंगे। चुनांचे जब वे मिस्र पहुँचे तो अपने दीगर सामानों के साथ हजरत यूसुफ को भी बाज़ार में रखा। वहाँ एक आदमी ने होनहार लड़का देखकर आपको बीस दिरहम में ख़रीद लिया।

हजरत यूसुफ के भाई आपको बेचतन करके कुएँ में डाल चुके थे। काफिले वालों ने गुलाम की हैसियत से फ़रोख़्त कर दिया। इसके बाद मिस्र के एक आला सरकारी अफसर की बीबी (जुलैखा) ने आपको कैदख़ाने में कैद करा दिया। मगर अल्लाह तआला ने इन तमाम मरहलों को आपके लिए इज्जत व सरबुलन्दी तक पहुँचने का ज़िन्ना बना दिया। किस क़दम फ़र्क है इल्मे इंसान में और इल्मे खुदावंदी में!

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِّصْرَ لِمَرْأَتِهِ أَكْرِمِي مَوْلَاهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۖ وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۖ وَكَذَلِكَ نُجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

और अहले मिस्र में से जिस शख्स ने उसे ख़रीदा उसने अपनी बीबी से कहा कि इसे अच्छी तरह रखो। उम्मीद है कि वह हमारे लिए मुफ़ीद हो या हम उसे बेटा बना लें। और इस तरह हमने यूसुफ को उस मुल्क में जगह दी। और ताकि हम उसे बातों की तावील (निहितार्थ) सिखाएं। और अल्लाह अपने काम पर ग़ालिब (अधिकार प्राप्त) रहता है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और जब वह अपनी पुष्टगी को पहुँचा हमने उसे हुक्म और इल्म अता किया। और नेकी करने वालों को हम ऐसा ही बदला देते हैं। (21-22)

कहा जाता है कि मिस्री हुक्मत के एक अफसर (फ़ैतिफर) ने हजरत यूसुफ को ख़रीदा।

मामूली कपड़े में छुपी हुई आपकी शानदार शख्सियत को उसने पहचान लिया। उसने समझ लिया कि यह कोई गुलाम नहीं है बल्कि शरीफ़ ख़ानदान का लड़का है। किसी वजह से वह काफिले के हाथ लग गया और उसने इसे यहाँ लाकर बेच दिया। चुनांचे उसने अपनी बीबी से कहा कि इसे गुलाम की तरह न रखना। यह एक लायक नौजवान मालूम होता है और इस काबिल है कि हमारे घर और जायदाद का इतिजाम संभाल ले। मज़ीद यह की फ़ैतिफर बेऔलाद था और किसी को अपना मुतबन्ना (ले पालक) बनाना चाहता था। उसने यह इरादा भी कर लिया कि अगर वाकई यह नौजवान उसकी उम्मीदों के मुताबिक निकला तो वह उसे अपना बेटा बना लेगा।

हजरत यूसुफ जब तकरीबन चालीस साल के हुए तो खुदा ने उन्हें एक तरफ़ नुबुव्वत अता की और दूसरी तरफ़ इक्तेदार (सत्ता)। उन्हें यह इनाम उनके हुस्ने अमल की वजह से मिला। खुदा के इनाम का दरवाज़ा हमेशा मोहसिनीन के लिए खुला हुआ है। फ़र्क यह है कि दौरे नुबुव्वत में किसी को उसके हुस्ने अमल के नतीजे में नबी भी बनाया जा सकता था। मगर बाद के जमाने में उसे सिर्फ़ वे इनामात मिलेंगे जो नुबुव्वत के अलावा हैं।

وَرَأَوْنَاهُ الْيَتِيمَ هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۖ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَوْلَىٰ إِنَّهُ لَا يَفْعِلُ الْظَالِمُونَ ۝ وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنَّ رَأْبُرَهَانَ رَبِّهِ كَذَبَ لِيَصْرِفَ عَنْهُ الشَّؤْمَ ۚ وَالْفَحْشَاءُ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ۝

और यूसुफ जिस औरत के घर में था वह उसे फुसलाने लगी और एक रोज़ दरवाज़े बंद कर दिए और बोली कि आ जा। यूसुफ ने कहा खुदा की पनाह। वह मेरा आका है, उसने मुझे अच्छी तरह रखा है। बेशक जालिम लोग कभी फलाह नहीं पाते। और औरत ने उसका इरादा कर लिया और वह भी उसका इरादा करता अगर वह अपने रब की बुरहान (स्पष्ट प्रमाण) न देख लेता। ऐसा हुआ ताकि हम उससे बुराई और बेहयाई को दूर कर दें। बेशक वह हमारे चुने हुए बंदों में से था। (23-24)

अर्जिमिस्र की बीबी जुलैखा हजरत यूसुफ पर फ़ैसला हो गई। वह बराबर आपको फुसलाती रही। यहाँ तक की एक दिन मौक़ा पाकर उसने कमरे का दरवाज़ा बंद कर लिया।

एक रोज़ शदीशुदा नौजवान के लिए यह बड़ा नाज़ुक मौक़ा था। मगर हजरत यूसुफ ने अपनी फ़ितरते ख़ानी को महफूज़ रखा था और यह फ़ितरत उस वक़्त हजरत यूसुफ के काम आ गई। हक़ और नाहक भलाई और बुराई को पहचानने की यह ताक़त हर आदमी के अंदर पैदाइशी तौर पर मौजूद होती है। वह हर मौक़े पर इंसान को मुतनब्वह (सचेत) करती है। जो शख्स उसे नज़रअंदाज़ कर दे उसने गोया खुदा की आवाज़ को नज़रअंदाज़ कर दिया। ऐसा आदमी खुदा की मदद से महरूम होकर धीरे-धीरे अपनी फ़ितरत को कमजोर कर लेता है। इसके बरअक्स जो शख्स खुदाई पुकार के जाहिर होते ही उसके आगे झुक जाए, खुदा की मदद उसकी

इस्तेदाद (क्षमता) बढ़ती रहती है। वह इस काबिल हो जाता है कि आइंदा ज्यादा कुव्वत के साथ बुराई के मुकाबले में ठहर सके।

हजरत यूसुफ को जिस चीज ने बुराई से रोक़ा वह हकीकतन अल्लाह का डर था। मगर जुलैख़ा के लिए खुदा का हवाला देना उस वक़्त बेअसर रहता। यह मौक़ा हक़ के एलान का नहीं था बल्कि एक नाजुक सूरतेहाल से अपने आपको बचाने का था। इसी नज़ाकत की बिना पर आपने जुलैख़ा को उसके शौहर का हवाला दिया। आपने फ़रमाया कि वह मेरा आका है। उसने मुझे निहायत इज्जत के साथ अपने घर में रखा है। फिर कैसे मुमकिन है कि मैं अपने मोहसिन के नामूस (मर्यादा) पर हमला करूं।

وَأَسْتَبْقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَيْصَةُ مِنْ دُبرِ أَلْفِيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ قَالَ هِيَ رَاوْدَتْنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَيْصُكُمْ قَدْ مِّنْ قَبْلِ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَذَّابِينَ ۖ وَإِنْ كَانَ قَيْصُكُمْ قَدْ مِّنْ دُبْرِ فَكَذَّبْتَ وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۖ فَلَمَّا رَأَى قَيْصُ قَدْ مِّنْ دُبْرِ قَالَ إِنَّهُ مِّنْ كَيْدِكُنَّ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ۖ يُوسُفُ أَعْرَضَ عَنْ هَٰذَا ۖ وَاسْتَغْفِرُ لِكَيْدِكُنَّ إِنَّكُنَّ لَكُنَّ مِنَ الْخَاطِئِينَ ۖ

और दोनों दरवाजे की तरफ भागे। और औरत ने यूसुफ का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया। और दोनों ने उसके शौहर को दरवाजे पर पाया। औरत बोली जो तेरी घरवाली के साथ बुराई का इरादा करे उसकी सज़ा इसके सिवा क्या है कि उसे कैद किया जाए या उसे सज़ा अजाब दिया जाए। यूसुफ ने कहा कि इसी ने मुझे फुसलाने की कोशिश की। और औरत के कुनवे वालों में से एक शख्स ने गवाही दी कि अगर उसका कुर्ता आगे से फटा हुआ हो तो औरत सच्ची है और वह झूठा है। और अगर उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ हो तो औरत झूठी है और वह सच्चा है। फिर जब अजीज ने देखा कि उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ है तो उसने कहा कि बेशक यह तुम औरतों की चाल है। और तुम्हारी चालें बहुत बड़ी होती हैं। यूसुफ, इससे दरगुज़र करो। और ऐ औरत तू अपनी गलती की माफ़ी मांग। बेशक तू ही ख़ताकार थी। (25-29)

हजरत यूसुफ अपने आपको बचाने के लिए दरवाजे की तरफ भागे। जुलैख़ा भी उनके पीछे दोड़ी और पीछे से आपका कुर्ता पकड़ लिया। खींच तान में पीछे का दामन फट गया। ताहम हजरत यूसुफ दरवाजा खोल कर बाहर निकलने में कामयाब हो गए। दरवाजे के बाहर इस्तेमाल से जुलैख़ा का शौहर मौजूद था। उसे देखते ही जुलैख़ा ने सारी जिम्मेदारी हजरत यूसुफ

पर डाल दी। एक लम्हा पहले वह जिस शख्स से इन्हारे मुहब्बत कर रही थी, एक लम्हा बाद उस पर झूठा इल्जाम लगाने लगी।

हजरत यूसुफ ने बताया कि मामला इसके बिल्कुल बरअक्स है। अब सवाल यह था कि फैसला कैसे किया जाए कि ग़लती किस की है। कोई तीसरा शख्स मौके पर मौजूद नहीं था जो ऐनी गवाही दे। उस वक़्त घर के एक समझदार शख्स ने लोगों को रहनुमाई दी। संभव है कि यह शख्स पहले से हालात से बाख़बर था। साथ ही, उसने यह भी देख लिया था कि यूसुफ का कुर्ता आगे के बजाए पीछे से फटा हुआ है। मगर उसने अपनी बात को ऐसे अंदाज में कहा गोया कि वह लोगों से कह रहा है कि जब ऐनी शहादत मौजूद नहीं है तो करीना की शहादत (Circumstantial evidence) देखकर फैसला लो। और करीने की शहादत यह थी कि हजरत यूसुफ का कुर्ता पीछे की जानिब से फटा हुआ था। यह वाजह तौर पर इसका सबूत था कि इस मामले में इक्दाम जुलैख़ा की तरफ से हुआ है न कि यूसुफ की तरफ से।

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۚ إِنَّا لَنَرُهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكًا وَأَتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا إِنْ هَٰذَا إِلَّا لَمَلَكٌ كَرِيمٌ ۖ قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِينَ لَمْنَتُنِي فِيهِ وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ مَا أُمِرُهُ لَيُسْجَنَ وَلَيَكُونًا مِّنَ الضَّغِيرِينَ ۖ قَالَ رَبِّ السِّجْنِ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ ۖ فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۖ

और शहर की औरतें कहने लगीं कि अजीज की बीवी अपने नौजवान गुलाम के पीछे पड़ी हुई है। वह उसकी मुहब्बत में फरेप्ता है। हम देखते हैं कि वह खुली हुई गलती पर है। फिर जब उसने उनका फरेब सुना तो उसने उन्हें बुला भेजा। और उनके लिए एक मज्लिस तैयार की और उनमें से हर एक को एक-एक छुरी दी और यूसुफ से कहा कि तुम उनके सामने आओ। फिर जब औरतों ने उसे देखा तो वे दंग रह गईं। और उन्होंने अपने हाथ काट डाले। और उन्होंने कहा पाक है अल्लाह, यह आदमी नहीं है, यह तो कोई बुजुर्ग फरिश्ता है। उसने कहा यह वही है जिसके बारे में तुम मुझे मलामत कर रही थीं और मैंने इसे रिज़ाने की कोशिश की थी मगर वह बच गया। और अगर

उसने वह नहीं किया जो मैं उससे कह रही हूँ तो वह कैद में पड़ेगा और जरूर बेइज्जत होगा। यूसूफ ने कहा, ऐ मेरे रब, कैदखाना मुझे उस चीज से ज्यादा पसंद है जिसकी तरफ़ ये मुझे बुला रही हैं। और अगर तूने उनके फ़रेब को मुझसे दफ़ा न किया तो मैं उनकी तरफ़ मायल हो जाऊँगा और जाहिलों में से हो जाऊँगा। पस उसके रब ने उसकी दुआ कुबूल कर ली और उनके फ़रेब को उससे दफ़ा कर दिया। बेशक वह सुनने वाला और जानने वाला है। (30-34)

इबादत न करो। यही सीधा दीन है। मगर बहुत लोग नहीं जानते। (37-40)

नौजवान कैदियों ने अपने ख़ाब की ताबीर जानने के लिए हजरत यूसुफ से रुजूअ किया। उन्होंने जिस अंदाज से सवाल किया उससे साफ़ ज़ाहिर हो रहा था कि वे आपकी शख्सियत से मुतअस्सिर हैं। और आपकी राय पर एतमाद करते हैं। हजरत यूसुफ जैसे नेक और बाउसूल इंसान के साथ एक असें तक रहने के बाद ऐसा होना बिल्कुल फितरी था।

हजरत यूसुफ के दावती जब्बे ने फ़ैरन महसूस कर लिया कि यह बेहतरिन् मैमन है कि इन नौजवानों को दीने हक़ का पैग़ाम पहुंचाया जाए। मगर ख़ाब की ताबीर फ़ैरन बता देने के बाद उनकी तवज्जोह आपकी तरफ से हट जाती। चुनावे आपने हकीमाना (सूझबूझ भरा) अंदाज इस्तियार किया और ख़ाब की ताबीर को थोड़ी देर के लिए टाल दिया। इसके बाद आपने तौहीद (एकेश्वरवाद) पर मुख्तसर तकरीर की। उसमें मुखातब की नफिसयात की रियायत करते हुए निहायत खूबसूरत इस्तदलाल (तर्क) के साथ अपना पैग़ाम उन्हें सुना दिया।

दरख्त, पत्थर, सितारे और रूहों वगैरह को जो लोग पूजते हैं इसका राज यह है कि वे बतौर खुद उन्हें मुश्किलकुशा (संकट मोचक) और हाजतरवा (दाता) जैसे अल्काब देते हैं और समझ लेते हैं कि वाकई वे मुश्किलकुशा और हाजतरवा हैं। हालांकि ये सब इंसान के अपने बनाए हुए इस्म (नाम) हैं जिनका मूल रूप कहीं मौजूद नहीं।

يُصَاحِبِي السَّجْنَ أَمَا أَحَدُكُمْ فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا وَأَمَّا الْآخَرُ فَيُصَلِّبُ
فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَأْسِهِ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِينَ ۝ وَقَالَ
لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنَسَهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ
فَكَثَّ فِي السَّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ ۝

ऐ मेरे कैदख़ाने के साथियो तुम में से एक अपने आका को शराब पिलाएगा। और जो दूसरा है उसे सूली दी जाएगी। फिर परिंदे उसके सर में से खाएंगे। उस अम्र मामला का फैसला हो गया जिस अम्र के बारे में तुम पूछ रहे थे। और यूसुफ ने उस शख्स से कहा जिसके बारे में उसने गुमान किया था कि बच जाएगा कि अपने आका के पास मेरा ज़िक्र करना। फिर शैतान ने उसे अपने आका से ज़िक्र करना भुला दिया। पस वह कैदख़ाने में कई साल पड़ा रहा। (41-42)

दोनों जवान जो जेल में लाए गए वह शाहे मिन्न (रियान बिन वलीद) के साकी (शराब पिलाने वाला) और ख़ब्बाज (खाना बनाने वाला) थे। दोनों पर यह इल्जाम था कि उन्होंने बादशाह के खाने में जहर मिलाने की कोशिश की। उनमेंसे जो साकी था वह तहकीक के बाद इल्जाम से बरी साबित हुआ और रिहाई पाकर दुबारा बादशाह का साकी मुर्कर हुआ। उसके ख़ाब का मतलब यह था कि अब वह बादशाह को ख़ाब में शराब पिला रहा है कुछ दिन बाद वह बेदारी में उसे शराब

पिलाएगा। ख़ब्बाज पर इल्जाम साबित हो गया। उसे सूली देकर छोड़ दिया गया कि चिड़ियां उसका गोश्त खाएं और वह लोगों के लिए इबरत (सीख) हो।

हजरत यूसुफ की दोनों ताबीरों बिल्कुल दुरुस्त साबित हुईं। मगर साकी कैद से छूटकर दुबारा महल में पहुंचा तो वह वादे के मुताबिक बादशाह से हजरत यूसुफ का ज़िक्र करना भूल गया। उसे अपना किया हुआ वादा सिर्फ उस वक्त याद आया जबकि बादशाह ने एक ख़ाब देखा और दरबारियों से कहा कि इसकी ताबीर बताओ।

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ
سُنْبُلَاتٍ خُضَرٍ وَأُخْرَى يُسَبِّتُ بِأَيْهَا الْمَلَائِكَةُ فِي زُرَيَّامٍ إِن كُنْتُمْ
لِلزُّمِيَا تَعْبُرُونَ ۝ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ
بِعِلْمِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّتٍ أَنَا أَنْبَأُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ
فَأَرْسِلُونِ ۝

और बादशाह ने कहा कि मैं ख़ाब में देखता हूँ कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियां हैं और दूसरी सात सूखी, ऐ दरबार वालो मेरे ख़ाब की ताबीर मुझे बताओ, अगर तुम ख़ाब की ताबीर देते हो। वे बोले ये ख़्याली ख़ाब हैं। और हमें ऐसे ख़ाबों की ताबीर मालूम नहीं। उन दो कैदियों में से जो शख्स बच गया था और उसे एक मुद्दत के बाद याद आया, उसने कहा कि मैं तुम लोगों को इसकी ताबीर बताऊंगा, पस मुझे (यूसुफ के पास) जाने दो। (43-45)

मिन्न का बादशाह अगरचे मुश्किक और शराबी था, मगर खुदा की तरफ से उसे मुस्तकबिल के बारे में एक सच्चा ख़ाब दिखाया गया। इससे अंदाजा होता है कि खुदा हक के दाजियों की मदद किन-किन तरीकों से करता है। उनमें से एक तरीका यह है कि फरीके सानी को कोई ऐसा ख़ाब दिखाया जाए जिससे उसके जेहन पर दाजी की अज्मत और अहमियत कायम हो और उसका दिल नर्म होकर दाजी के लिए नए रास्ते खुल जाएं।

बादशाह के साकी ने जब बादशाह का ख़ाब सुना उस वक्त उसे कैदख़ाने का माजरा याद आया। उसने बादशाह और दरबारियों के सामने अपना जाती तजर्बा बताया कि किस तरह यूसुफ की बताई हुई ख़ाब की ताबीर दो कैदियों के हक में लफ्ज बलफ्ज सही साबित हुई। इसके बाद वह बादशाह से इजाजत लेकर कैदख़ाने पहुंचा ताकि यूसुफ से बादशाह के ख़ाब की ताबीर दरयाफ्त करे।

हजरत यूसुफ की इसी हँसियत के तआरुफ से उनके लिए कैदख़ाने से बाहर आने का रास्ता खुला। खुदा ऐसा कर सकता था कि साकी की रिहाई के बाद हजरत यूसुफ को मजिद कैदख़ाने में न रहने दे। वह साकी को महल के अंदर पहुंचते ही याद दिला सकता था कि वह

वादे के मुताबिक बादशाह के सामने यूसुफ का जिक्र करे। मगर खुदा का हर काम अपने मुकरर वक्त पर होता है। वक्त से पहले कोई काम करना खुदा का तरीका नहीं।

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعُ عِجَافٍ وَ
سَبْعِ سُتَبَلَاتٍ خُضِرَ وَأُخْرِيسَتٍ لَعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَعْلَمُونَ ① قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأْبًا فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُونَهُ فِي
سُتَبَلَةٍ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تَأْكُلُونَ ② ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعُ شِدَادٍ
فَيَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّا تَحْصِنُونَ ③ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ
ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يَغَارُ النَّاسُ ④ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ ⑤

यूसुफ ऐ सच्चे, मुझे इस ख़्वाब का मतलब बता कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात बालें हरी हैं और सात सूखी। ताकि मैं उन लोगों के पास जाऊं ताकि वे जान लें। यूसुफ ने कहा कि तुम सात साल तक बराबर खेती करोगे। पस जो फसल तुम काटो उसे उसकी बालियों में छोड़ दो मगर थोड़ा सा जो तुम खाओ। फिर इसके बाद सात सूखे साल आएंगे। उस जमाने में वह गल्ला खा लिया जाएगा जो तुम उस वक्त के लिए जमा करोगे, सिवाय थोड़े के जो तुम महफूज कर लोगे। फिर इसके बाद एक साल आएगा जिसमें लोगों पर भूख बरसेगा। और वे उसमें रस निचोड़ेंगे। (46-49)

हजरत यूसुफ ने बादशाह के ख़्वाब की ताबीर यह बताई कि सात मोटी गायें और सात हरी बालें सात वर्ष हैं। उनमें लगातार अच्छी पैदावार होगी। हैवानात और नवातात (खेती) खूब बढ़ेंगे। इसके बाद सात साल कहत (अकाल) पड़ेगा जिसमें तुम सारा पिछला भंडार खाकर ख़त्म कर डालोगे। सिर्फ़ आइंदा बीज डालने के लिए थोड़ा सा बाकी रह जाएगा। ये बाद के सात साल गोया दुबली गायें और सूखी बालें हैं जो पिछली मोटी गायों और हरी बालों का ख़ात्मा कर देंगी।

इसी के साथ हजरत यूसुफ ने इसकी तदबीर (समाधान) भी बता दी। अपने कहा की पहले सात साल में जो पैदावार हो उसे निहायत हिफ़ाज़त से रखो और क़िफ़ायत के साथ ख़र्च करो। जरूरी ख़ुराक से ज्यादा जो गल्ला है उसे बालों के अंदर रहने दो। इस तरह वह कीड़े वगैरह से महफूज रहेगा। और सात साल की पैदावार चौदह साल तक काम आएगी। मजबूद आपने यह खुशख़बरी भी सुना दी कि बाद के सात साल कहत के बाद जो साल आएगा वह दुबारा फ़ायदा (सम्पन्नता) का साल होगा। उसमें ख़ूब बारिश होगी, कसरत से दूध और फल लोगों को हासिल होंगे।

अल्लाह तआला ने बादशाह को एक अजीब ख़्वाब दिखाया और हजरत यूसुफ के जरिए उसकी कामयाब ताबीर ज़ाहिर फरमाई। इस तरह आपके लिए यह मैत्रा फ़राहम किया गया कि मिस्र के निजामे हुकूमत में आपको निहायत आला मक़ाम हासिल हो।

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أُنْصِتُ بِهِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ
فَسْأَلْهُ مَا بَالُ النَّسْوَةِ الَّتِي قَطَعَنَ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ
عَلِيمٌ ⑥ قَالَ مَا خَطْبُكُنْ إِذْ رَاوَدْتُنَّ يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ ۖ قُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ
مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ ۗ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ النَّحْصُ حَصْحَصَ الْحَقُّ
أَنَا رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِیْنَ ⑦

और बादशाह ने कहा कि उसे मेरे पास लाओ। फिर जब कासिद (सदेशवाहक) उसके पास आया तो उसने कहा कि तुम अपने आका के पास वापस जाओ और उससे पूछो कि उन औरतों का क्या मामला है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे। मेरा खब तो उनके फ़तेब से खूब वाकिफ़ है। बादशाह ने पूछा, तुम्हारा क्या माजरा है जब तुमने यूसुफ को फुसलाने की कोशिश की थी। उन्होंने कहा कि पाक है अल्लाह, हमने उसमें कुछ बुराई नहीं पाई। अजीज की बीबी ने कहा अब हक़ खुल गया। मैं ही इसे फुसलाने की कोशिश की थी और बिलाशुबह वह सच्चा है। (50-51)

कैदख़ाने से निकल कर हजरत यूसुफ को एक मुक्ती किरदार अदा करना था, इसलिए जरूरी था कि आपकी शख़्सियत मुल्की सतह पर एक मारुफ़ शख़्सियत बन जाए। इसकी सूरत बादशाह के ख़्वाब के जरिए पैदा हो गई। बादशाह ने एक अजीब ख़्वाब देखा। वह उसकी ताबीर के लिए इतना बेचैन हुआ कि आम एलान करके तमाम मुल्क के उलमा, ज़ाताओं और दानिशवरों को अपने दरबार में जमा किया। और उनसे कहा कि वे इस ख़्वाब की ताबीर बताएं मगर सबके सब आजिज रहे। इस तरह ख़्वाब का वाक्या एक उम्मी शोहस्त का वाक्या बन गया। अब जब हजरत यूसुफ ने ख़्वाब की ताबीर बयान की और बादशाह ने उसे पसंद किया तो अचानक वह तमाम मुल्क की नज़रों में आ गए।

बादशाह ने सारी बात सुनने के बाद संबंधित औरतों से इसकी तहकीक की। सबने एक ज़मान हज़त यूसुफ को बख़्श कर दिया। अज़ीजमिस्र की बीबी फ़राफ़ेहक़ मेसबसे आगे निकल गई। उसने साफ़ लफ़्ज़ों में एलान किया कि अब सच्चाई खुल चुकी है। हकीकत यह है कि सारा कुसूर मेरा था। यूसुफ का कुछ भी कुसूर न था। अज़ीजमिस्र की बीबी (जुरेख़) का यह इक्कार इतना अजीम अमल है कि अजब नहीं कि इसके बाद उसे ईमान की तौफ़ीक़ दे दी गई हो।

ذَلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ
الْخَائِنِينَ ﴿٥٤﴾ وَمَا أَبْرَأُ نَفْسِي إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي
إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥٥﴾

यह इसलिए कि (अजीजे मिस्र) यह जान ले कि मैंने दरपदा उसकी ख़ियानत नहीं की।
और बेशक अल्लाह ख़ियानत (विश्वासघात) करने वालों की चाल चलने नहीं देता।
और मैं अपने नफ्स को बरी नहीं करता। नफ्स (मन) तो बदी ही सिखाता है मगर
यह कि मेरा रब रहम फरमाए। बेशक मेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (52-53)

बादशाह ने जब हजरत यूसुफ को बुलाया तो वह फ़ैरन कैदख़ाने से बाहर नहीं आ गए।
बल्कि यह कहा कि पहले उस वाक्ये की तहकीक़ हेनी चाहिए जिसे बहाना बनाकर मुझे कैद
किया गया था। खुदा की नजर में अगरचे आप पूरी तरह बरीउज्जिम्मा थे मगर मसला यह था
कि आपको अवाम के दर्मियान पैगम्बरी की ख़िदमत अंजाम देनी थी। यानी खुदा की अमानते
हिदायत को उसके बंदों तक पहुंचाना था। मज्बूरा वाक्ये में आप पर अपने आका के साथ
ख़ियानत का इल्जाम लगाया गया था। यह एक बहुत नाजुक मामला था और अवाम के सामने
आने से पहले जरूरी था कि आप के ऊपर से यह इल्जाम ख़त्म हो क्योंकि जिस शख्स को लोग
बंदों के मामले में अमानतदार न समझें उसे वे खुदा के मामले में अमानतदार नहीं समझ सकते।
मोमिन बयकवक्त दो चीजों के दर्मियान होता है। एक इंसान दूसरे खुदा। कभी ऐसा
होता है कि उसे इंसानों की निस्वत से मामले की वजाहत के लिए कोई ऐसा कलामा बोलना
पड़ता है जिसमें बजाहिर दावे का पहलू नजर आता है। मगर उसका दिल उस वक्त भी इज्ज
(निर्बलता) के एहसास से भरा हुआ होता है। क्योंकि जब वह अपने आपको खुदा की निस्वत
से देखता है तो वह पाता है कि खुदा की निस्वत से वह सिर्फ आजिज (निर्बल) है इसके सिवा
और कुछ नहीं। खुदा का तसव्वुर हर आन मोमिन को मुतवाजिन (संतुलित) करता रहता है।
हजरत यूसुफ का मज्बूरा कलाम मोमिन की शख्सियत के उसी दो गुना पहलू की तस्वीर है।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي فَلَمَّا كَلَبَ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدِينَا
مَكِينٌ ﴿٥٦﴾ قَالَ اجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ عَلَيْكُمْ ﴿٥٧﴾ وَ
كَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ يَتَّبِعُوهُ مِنْهَا حَيْثُ شَاءَ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا
مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيبُهُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾ وَلَا جُزْءُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ
آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٩﴾

और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास लाओ। मैं उसे ख़ास अपने लिए रखूंगा। फिर जब

यूसुफ ने उससे बात की तो बादशाह ने कहा, आज से तुम हमारे यहां मुअज्जज और
मोअतमद (विश्वसनीय) हुए। यूसुफ ने कहा मुझे मुल्क के ख़जानों पर मुकर्र कर दो।
मैं निगहबान हूं और जानने वाला हूं। और इस तरह हमने यूसुफ को मुल्क में
बाइज़्जियार बना दिया। वह उसमें जहां चाहे जगह बनाए। हम जिस पर चाहें अपनी
इनायत मुतवज्जह कर दें। और हम नेकी करने वालों का अज़्र जाए (नष्ट) नहीं करते।
और आख़िरत का अज़्र (प्रतिफल) कहीं ज्यादा बढ़कर है ईमान और तकवा (ईश-भय)
वालों के लिए। (54-57)

‘मुझे जमीन के ख़जानों पर मुकर्र कर दो’ यहां ख़जानों से मुग़द ग़ल्ले के खिंते हैं।
हजरत यूसुफ ने बादशाह को अपनी तरफ मुतवज्जह देखकर शाह मिस्र से यह इख़्तियार मांगा
कि वह हुक्मती वसाइल के तहत सारे मुल्क में ग़ल्ले के बड़े-बड़े खिंते बनवाएं ताकि इब्तिदाई
सात सालों में किसानों से फ़ाज़िल ग़ल्ला लेकर वहां महफूज किया जा सके। (तफ़सीर इब्ने
कसीर)। बादशाह राजी हो गया और अपने आईनी (सैधानिक) और कानूनी इक्तदार
(शासन) के तहत आपको हर किस्म का इख़्तियार दे दिया।

मिस्र का बादशाह मुश्रिक था। आयत नम्बर 76 से मालूम होता है कि हजरत यूसुफ के
तक़रूर के तकरीबन दस साल बाद तक भी उसी बादशाह का कानून (दीनुल मुल्क) मिस्र में
राइज था। यह खुदा के एक पैगम्बर का उसवा (आदर्श) है जो बताता है कि ग़ौर मुस्लिम
हुक्मत के तहत कोई ज़ेली ओहदा कुबूल करना इस्लाम के ख़िलाफ नहीं है। इसी बिना पर
अस्लाफ (पूर्वजों) ने ज़ालिम बादशाहों के तहत कज़ा (न्याय-विधान) के ओहदे कुबूल किए।

(तफ़सीर नफ़ि)

मिस्र में इख़्तियार संभालने से हजरत यूसुफ का मक़सद क्या था, क़ुरआन की तफ़सील
से बजाहिर इसका मक़सद यह मालूम होता है कि बंदग़ाने खुदा को तवील कहत (लंबे अकाल)
की मुसीबत से बचाया जाए, और फिर इसके नतीजे में बनी इस्राईल के लिए मिस्र में आबाद
होने के अवसर फ़राहम किए जाएं।

ईमान और तकवे की रविश इख़्तियार करने वालों के लिए खुदा ने अबदी जन्मत का
यकीनी वादा किया है। दुनिया की ज़िदगी में भी उन्हें खुदा की मदद हासिल होती है। ताहम
इसमें एक फ़र्क है। जहां तक हक के एलान का मामला है, उसकी तैमीक हर एक को यक़ां
(समान) तौर पर मिलती है। मगर अमली मदद के मामले में सबकी नुसरत यक़सां अंदाज में
नहीं। अमली नुसरत (मदद) किसी को एक ढंग पर मिलती है और किसी को दूसरे ढंग पर।
وَجَاءَ إِخْوَتُهُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٦٠﴾ وَلَمَّا
جَهَنَّهُمْ بِجَهَنَّتِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِآيَةٍ لَّكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ أَلَا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي
الْكَيْلَ وَ أَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٦١﴾ فَإِنْ لَمْ تَأْتُونِي بِهَا فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي
وَلَا تَقْرَبُونِ ﴿٦٢﴾ قَالُوا سُرَّادُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ﴿٦٣﴾

और यूसुफ के भाई मिश्र आए फिर उसके पास पहुंचे, पस यूसुफ ने उन्हें पहचान लिया। और उन्होंने यूसुफ को नहीं पहचाना। और जब उसने उनका सामान तैयार कर दिया तो कहा कि अपने सौतेले भाई को भी मेरे पास ले आना। तुम देखते नहीं हो कि मैं गल्ला भी पूरा नाप कर देता हूं और बेहतरीन मेजबानी करने वाला भी हूं। और अगर तुम उसे मेरे पास न लाए तो न मेरे पास तुम्हारे लिए गल्ला है और न तुम मेरे पास आना। उन्होंने कहा कि हम उसके बारे में उसके बाप को राजी करने की कोशिश करेंगे और हमें यह काम करना है। (58-61)

हजरत यूसुफ के इक्तेदार के इत्तिदाई सात साल तक खूब फसल पैदा हुई। आपने सारे मुल्क में बड़े-बड़े खिन्ते बनवाए और किसानों से उनका फाजिल गल्ला खरीद कर हर साल इन खिन्तों में महफूज करते रहे। इसके बाद जब कहत के साल शुरू हुए तो आपने उस गल्ले को दारुस्सलतनत (राजधानी) में मंगवा कर मुनासिब कीमत पर फरोख्त करना शुरू कर दिया। यह कहत चूँकि मिश्र के अलावा अतराफ के इलाकों (शाम, फिलिस्तीन, शर्क उर्जुन वगैरह) तक फैला हुआ था, इसलिए जब यह खबर मशहूर हुई कि मिश्र में गल्ला सस्ती कीमत पर फरोख्त हो रहा है तो विरादराने यूसुफ भी गल्ला लेने के लिए मिश्र आए। यहां हजरत यूसुफ को अगरचे उन्होंने बीस साल बाद देखा था, ताहम आपकी शकल व सूरत में उन्हें अपने भाई की झलक नजर आई। मगर जल्द ही उन्होंने इसे अपने दिल से निकाल दिया। क्योंकि उनकी समझ में नहीं आया कि जिस शख्स को वे अंधे कुर्वे में डाल चुके हैं वह मिश्र के तख्त पर मुतमक्किन हो सकता है। हजरत यूसुफ ने अपने भाइयों को एक-एक ऊंट प्रति व्यक्ति गल्ला दिलवाया। अब उनके दिल में यह ख्वाहिश हुई कि बिन यामीन के नाम पर एक ऊंट गल्ला और हासिल करें। उन्होंने दरख्वास्त की कि हमारे एक भाई (बिन यामीन) को बूढ़े बाप ने अपने पास रोक लिया है। अगर हमें उस भाई के हिस्से का गल्ला भी दिया जाए तो बड़ी इनायत हो। हजरत यूसुफ ने कहा कि गायब का हिस्सा देना हमारा तरीका नहीं। तुम दुबारा आओ तो अपने उस भाई को भी साथ लाओ। उस वक्त तुम उसका हिस्सा पा सकोगे। तुम मेरी बख्शिाश का हाल देख चुके हो। क्या इसके बाद भी तुम्हें अपने भाई को लाने में तरदुद (झिझक) है? हजरत यूसुफ ने मजीद कहा कि जो भाई तुम बता रहे हो अगर तुम अगली बार उसे न लाए तो समझा जाएगा कि तुम झूठ बोलते हो और महज धोखा देकर एक ऊंट गल्ला और लेना चाहते थे। इसकी सजा यह होगी कि आइंदा खुद तुम्हारे हिस्से का गल्ला भी तुम्हें नहीं दिया जाएगा।

وَقَالَ لِفَتْنِيهِ اجْعَلُوا بِضَاعَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا
إِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٩﴾ فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَبِيهِمْ قَالُوا يَا بَنَا
مُنْعَ مِنَ الْكَيْلِ فَأَرْسِلْ مَعَنَا آخَانَ لِنُكْتَلَ وَإِنَّا لَهُ كَافٍ ﴿٦٠﴾ قَالَ هَلْ
أَمْنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا أَمِنْتُكُمْ عَلَىٰ أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ ۖ قَالَ لَهُ خَيْرٌ حِفْظٌ
وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ﴿٦١﴾

और उसने अपने कारिंदों से कहा कि इनका माल इनके असबाब में रख दो ताकि जब वे अपने घर पहुंचें तो उसे पहचान लें, शायद वे फिर आएंगे। फिर जब वे अपने बाप के पास लौटे तो कहा कि ऐ बाप, हमसे गल्ला रोक दिया गया, पस हमारे भाई (बिन यामीन) को हमारे साथ जाने दे कि हम गल्ला लाएं और हम उसके निगहबान हैं। याकूब ने कहा, क्या मैं इसके बारे में तुम्हारा वैसा ही एतबार करूं जैसा इससे पहले इसके भाई के बारे में तुम्हारा एतबार कर चुका हूं। पस अल्लाह बेहतर निगहबान है और वह सब महरबानों से ज्यादा महरबान है। (62-64)

हजरत यूसुफ ने गलिवन भाइयों से कीमत लेना मुश्किल के खिलाफ समझाया या इस ख्याल से कि माल की कमी उनके दुबारा यहां आने में रुकावट न बन जाए, अपने आदमियों को हिदायत की कि जो रकम उन्होंने गल्ले की कीमत के तौर पर अदा की है वह खामोशी से उनके माल में डाल दी जाए ताकि जब वे घर पर जाकर अपना सामान खोलें तो उसे पा लें और अपने भाई (बिन यामीन) को लेकर दुबारा यहां आएंगे।

हजरत याकूब ने एक तरफ बिन यामीन के सिलसिले में अपने बेटों पर बेएतमादी का इन्कार किया दूसरी तरफ यह भी फरमाया कि तुम्हें या किसी और को कोई ताकत हासिल नहीं। होना वही है जो खुदा चाहे। मगर यह होना इंसान के हाथों कराया जाता है ताकि जो बुरा है वह बुरा करके अपनी हकीकत को साबित करे। और जो अच्छा है वह अच्छा करके अपने आपको उस फेहरिस्त में लिखवाए जिसका वह मुस्तहिक है।

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا بَنَا
مُنْعِي هَذِهِ بِضَاعُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزِدُكَ كَيْلَ
بَعِيرٍ ذَلِكُ كَيْلُ يَسِيرٍ ﴿٦٢﴾ قَالَ لَنْ أُرْسِلَ مَعَكُمْ حَتَّىٰ تَأْتُونِي مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ
لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَنْ يُحَاطَ بِكُمْ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ
مَا نَقُولُ وَكَيْلٌ ﴿٦٣﴾

और जब उन्होंने अपना सामान खोला तो देखा कि उनकी पूंजी भी उन्हें लौटा दी गई है। उन्होंने कहा, ऐ हमारे बाप और हमें क्या चाहिए। यह हमारी पूंजी भी हमें लौटा दी गई है। अब हम जाएंगे और अपने अहल व अयाल (परिवारजनों) के लिए रसद लाएंगे। और अपने भाई की हिफजत करेंगे। और एक ऊंट का बोझ गल्ला और ज्यादा लाएंगे। यह गल्ला तो थोड़ा है। याकूब ने कहा, मैं उसे तुम्हारे साथ हरगिज न भेजूंगा जब तक तुम मुझसे खुदा के नाम पर यह अहद न करो कि तुम इसे जरूर मेरे पास ले आओगे, इल्ला यह कि तुम सब घिर जाओ। फिर जब उन्होंने उसे अपना पक्का कौल (वादा) दे दिया, उसने कहा कि जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह निगहबान है। (65-66)

घर लौट कर जब उन्होंने देखा कि उनकी रकम उनकी गल्ले की बोरी में मौजूद है तो वे बहुत खुश हुए। उन्होंने अपने वालिद से कहा कि आप जरूर हमारे साथ बिन यामीन को जाने दें। हम उसकी पूरी हिफाजत करेंगे। और अपने हिस्से के अलावा उसके हिस्से का भी मजीद एक ऊंट गल्ला लाएंगे। यह गल्ला जो हम लाए हैं यह तो इस्त्राजात के लिए थोड़ा है।

हज़रत यूसुफ ने तक्सीम का जो निजाम कायम किया था, उसके तहत ग़ालिबन ऐसा था कि बाहर के एक आदमी को एक ऊंट गल्ला दिया जाता था।

وَقَالَ يَبْنَئِي لَا تَدْخُلُوا مِن بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ
وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِنَّ الْحُكْمَ إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ يُغْنِي
عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهُ وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ
لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

और याकूब ने कहा कि ऐ मेरे बेटे, तुम सब एक ही दरवाजे से दाखिल न होना बल्कि अलग-अलग दरवाजों से दाखिल होना। और मैं तुम्हें अल्लाह की किसी बात से नहीं बचा सकता। हुक्म तो बस अल्लाह का है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूँ और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए। और जब वे दाखिल हुए जहाँ से उनके बाप ने उन्हें हिदायत की थी, वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से। वह बस याकूब के दिल में एक ख्याल था जो उसने पूरा किया। बेशक वह हमारी दी हुई तालीम से इल्म वाला था मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (67-68)

मिस्र का कदीम दारुस्सलतनत (राजधानी) एक ऐसा शहर था जिसके चारों तरफ ऊंची फसील थी और मुख़ालिफ़ समतों में दाखिले के लिए दरवाजे बने हुए थे। हज़रत याकूब का अपने बेटों से यह कहना कि तुम लोग इकट्ठा होकर एक ही दरवाजे से दाखिल न हो बल्कि विभिन्न दरवाजों से दाखिल हो, इस अदेशे की बिना पर था कि उनके दुश्मन उन्हें हलाक करने की कोशिश न करें।

इस अदेशे का मामला इसी सूरह की आयत 73 से वाजेह है जिसमें विरादराने यूसुफ अपनी बरा-त (असंबद्धता) इन अल्फ़ाज़ में करते हैं कि हम यहाँ फ़साद के लिए या चोरी के लिए नहीं आए हैं। विरादराने यूसुफ़ मिस्र में बाहर से आए थे। उनके लिबास मकामी लोगों के लिबास से मुख़ालिफ़ थे। वे अपने हुलिये से यकीनन मिस्र वालों को अजनबी दिखाई देते होंगे। ऐसे ग्यारह आदमियों का एक साथ शहर में दाखिल होना उन्हें लोगों की नज़र में मुशतबह बना सकता था। इसलिए मकामी लोगों से किसी ग़ैर ज़रूरी टकराव से बचने के लिए उन्होंने उन्हें यह हिदायत की कि शहर में दाखिल हो तो एक साथ जत्थे की सूरत में दाखिल न हो।

मोमिन की नज़र एक तरफ़ खुदा की कुदरते कामिला पर होती है। वह देखता है कि इस कायनात में खुदा के सिवा किसी को कोई इख़्तियार हासिल नहीं। इसी के साथ वह जानता है कि यह दुनिया दारुल इम्तेहान है। यहाँ इम्तेहान की मस्लेहत से खुदा ने हर मामले को जाहरी असबाब के मातहत कर रखा है। यही वजह है कि हज़रत याकूब ने एक तरफ़ अपने बेटों को दुनियावी तदबीर इख़्तियार करने की तत्कीन फ़रमाई। दूसरी तरफ़ यह भी फ़रमा दिया कि जो कुछ होगा खुदा के हुक्म से होगा क्योंकि यहाँ खुदा के सिवा किसी को कोई ताक़त हासिल नहीं।

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَى إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهُمُ بِجَهَنَّمَ جَعَلَ الْيَقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ
أَدْنَى مُؤَدِّنَ إِلَيْهَا الْعِيذَ لَكُمْ لَسَارِقُونَ ۝ قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا اتَّفَقْتُمْ عَلَىٰ
قَالُوا نَفَقْدُ صَوَاءَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ۝ قَالُوا نَالِلُهُ
لَقَدْ عَلِمْتُمْ فَاكِهَتْنَا الْفَيْسُ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سَارِقِينَ ۝ قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ
كُنْتُمْ كَاذِبِينَ ۝ قَالُوا جَزَاؤُهُ مَنْ وَجَدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ ۝ كَذَلِكَ
نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝ فَبَدَأَ بِأَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخْرِجَهَا مِنْ وِعَاءِ
أَخِي ۝ كَذَلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ مَا كَانَ لِيَلْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ
يَشَاءَ اللَّهُ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّنْ شَاءَ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ۝

और जब वे यूसुफ के पास पहुँचे तो उसने अपने भाई को अपने पास रखा। कहा कि मैं तुम्हारा भाई (यूसुफ) हूँ। पस ग़मगीन न हो उससे जो वे कर रहे हैं। फिर जब उनका सामान तैयार करा दिया तो पीने का प्याला अपने भाई के असबाब में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ काफिले वाले, तुम लोग चोर हो। उन्होंने उनकी तरफ़ मुतवज्जह होकर कहा, तुम्हारी क्या चीज़ खोई गई है। उन्होंने कहा, हम शाही पैमाना नहीं पा रहे हैं। और जो उसे लाएगा उसके लिए एक ऊंट के बोझ भर गल्ला है और मैं इसका जिम्मेदार हूँ। उन्होंने कहा, खुदा की कसम तुम्हें मालूम है कि हम लोग इस मुल्क में फ़साद करने के लिए नहीं आए और न हम कभी चोर थे। उन्होंने कहा अगर तुम झूठे निकले तो उस चोरी करने वाले की सज़ा क्या है। उन्होंने कहा, इसकी सज़ा यह है कि जिस शख्स के असबाब में मिले पस वही शख्स अपनी सज़ा है। हम लोग जालिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं। फिर उसने उसके (छोटे) भाई से पहले उनके थैलों की तलाशी लेना शुरू किया। फिर उसके भाई के थैले से उसे बरामद कर लिया। इस तरह हमने यूसुफ के लिए तदबीर की। वह बादशाह के कानून

की रू से अपने भाई को नहीं ले सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे। हम जिसके दर्जे चाहते हैं बुलन्द कर देते हैं। और हर इल्म वाले के ऊपर एक इल्म वाला है। (69-76)

बिरादराने यूसुफ खाना हेने लगे तो हजरत यूसुफ ने अजराहे मुहब्बत अपना पानी पीने का प्याला (जो गालिबन चांदी का था) अपने भाई बिन यामीन के सामान में रख दिया। इसकी खबर न बिन यामीन को थी और न दरबार वालों को। इसके बाद खुदा की कुदरत से ऐसा हुआ कि गल्ला नापने का शाही पैमाना (जो खुद भी कीमती था) कहीं इधर-उधर (Misplace) हो गया। तलाश के बावजूद जब वह नहीं निकला तो कारिंदों का शुबह बिरादराने यूसुफ की तरफ गया जो अभी अभी यहां से खाना हुए थे। एक कारिंदे ने आवाज केकर काफिले को बुलाया। पूछाख के दौरान उन्होंने बतौर खुद चोरी की वह सजा तज्जीज की जो शरीअते इब्राहीमी की रू से उनके यहां राजिज थी। यानी जो चोर है वह एक साल तक मालिक के यहां गुलाम बनकर रहे।

इसके बाद कारिंदे ने तलाशी शुरू की। अब गल्ले का पैमाना तो उनके यहां नहीं मिला। मगर दरबार की एक और ख़ास चीज (चांदी का प्याला) बिन यामीन के सामान से बरामद हो गया। चुनांचे बिन यामीन को हस्वे फैसला हजरत यूसुफ के हवाले कर दिया गया। अगर शाहे मिस्र के कानून पर फैसले की कारावाद हुई होती तो हजरत यूसुफ अपने भाई को न पाते। क्योंकि शाहे मिस्र के मुख्बजा कानून में चोर की सजा यह थी कि उसे मारा जाए और चुगाई गई चीज की कीमत उससे वसूल की जाए। इस वाक्ये में हजरत यूसुफ की नियत शामिल न थी, यह खुदाई तदबीर से हुआ इसलिए खुदा ने उसे अपनी तरफ मंसूब फरमाया।

قَالُوا إِن يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلُ فَأَسْرَهَا يُوسُفُ فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ قَالَ أَنْتُمْ شَرُّ مَكَانٍ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ۖ قَالُوا يَا أَبَا الْعَزِيزِ إِنَّ لَكَ أَبَاشِيخًا كَثِيرًا فَخُذْ أَحَدًا مَكَانَهُ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْحَسَنِينَ ۖ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَن نَأْخُذَ إِلَّا مَنْ وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهُ إِنَّا إِذًا لَظَالِمُونَ ۖ

उन्होंने कहा कि अगर यह चोरी करे तो इससे पहले इसका एक भाई भी चोरी कर चुका है। पस यूसुफ ने इस बात को अपने दिल में रखा। और इसे उन पर जाहिर नहीं किया। उसने अपने जी में कहा, तुम खुद ही बुरे लोग हो, और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो अल्लाह उसे खूब जानता है। उन्होंने कहा कि ऐ अजीज, इसका एक बहुत बूढ़ा बाप है सो तू इसकी जगह हम में से किसी को रख ले। हम तुझे बहुत नेक देखते हैं। उसने कहा, अल्लाह की पनाह कि हम उसके सिवा किसी को पकड़ें जिसके पास हमने अपनी चीज पाई है। इस सूत में हम जरूर जलिम दहरे। (77-79)

मुफस्सरीन ने लिखा है कि हजरत यूसुफ की किसी नानी के यहां एक कुत था। हजरत यूसुफ अपने बचपन में उसे चुपके से उनके यहां से उठा लाए और उसे तोड़ डाला। इसी वाक्ये को बहाना बनाकर बिरादराने यूसुफ ने कहा कि 'इसका बड़ा भाई भी इससे पहले चोरी कर चुका है' एक वाक्या जो आपकी रैस्ते तौहीद को बता रहा था उसे महज एक जाहिरी मुशाबिहत (समरूपता) की वजह से उन्होंने चोरी के खाने में डाल दिया।

बिरादराने यूसुफ का हाल यह था कि मिस्र के तख्त पर बैठे हुए यूसुफ को तो वह अजीज (हुजूर, सरकार) कह रहे थे और उसके सामने खूब तवाजोअ दिखा रहे थे। मगर कनआन का यूसुफ जो उनकी नजर में सिर्फ एक देखती लड़का था, उसे ऐन उसी वक्त नाहक चोरी के इल्जाम में मुलाविस कर रहे थे।

हजरत यूसुफ को इल्म था कि उनके रखे हुए प्याले की वजह से बिन यामीन ख़ामख़ाह चोर बन रहा है, मगर वक्ती मस्तेहत की बिना पर वह ख़ामोश रहे और वाक्ये को अपनी रफ्तार से चलने दिया जो भाइयों और शाही कारिंदे के दर्मियान हो रहा था। एक बार जब आपको बोलना पड़ा तो यह नहीं कहा कि 'जिसने हमारी चोरी की है' बल्कि यह फरमाया कि 'जिसके पास हमने अपना माल पाया है।'

فَلَمَّا اسْتَأْيَسُوا مِنْهُ خَالَصُوا إِحْيَاءً قَالَ كَيْفَ لَكُمْ لَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّى يَأْذَنَ لِي أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِي ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۖ رَاجِعُوا إِلَىٰ آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلَيْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ۖ وَسَأَلَ الْقَزِيَّةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيَادَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۖ

जब वे उससे नाउम्मीद हो गए तो अलग होकर बाहम मश्विरा करने लगे। उनके बड़े ने कहा क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे बाप ने अल्लाह के नाम पर पक्का इकरार लिया और इससे पहले यूसुफ के मामले में जो ज्यादाती तुम कर चुके हो वह भी तुम्हें मालूम है। पस मैं इस सरजमीन से हरगिज नहीं टलूंगा जब तक मेरा बाप मुझे इजाजत न दे या अल्लाह मेरे लिए कोई फैसला फरमा दे। और वह सबसे बेहतर फैसला करने वाला है। तुम लोग अपने बाप के पास जाओ और कहो कि ऐ हमारे बाप, तेरे बेटे ने चोरी की और हम वही बात कह रहे हैं जो हमें मालूम हुई और हम ग़ैब (अप्रकट) के निगहबान नहीं और तू उस बस्ती के लोगों से पूछ ले जहां हम थे और उस काफिले से पूछ ले जिसके साथ हम आए हैं। और हम बिल्कुल सच्चे हैं। (80-82)

हजरत यूसुफ के सौतेले भाइयों में गालिबन एक भाई दूसरों से मुख़लिफ था। उसी भाई

ने इब्तिदाई मरहले में मश्विरा दिया था कि यूसुफ को कत्ल न करो बल्कि किसी अंधे कुर्वे में डाल दो ताकि कोई आता जाता काफिला उसे निकाल ले जाए। यही हाल अब उस भाई का मिश्र में हुआ। वह दूसरे भाइयों से अलग हो गया। उसकी गैरत ने गवारा नहीं किया कि जिस बाप के नजदीक वह एक भाई को खोने का मुजरिम बन चुका है, उसी बाप के सामने अब वह दूसरे भाई को खोने का मुजरिम बनकर हाजिर हो।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْراً ۖ فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۚ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۖ وَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا أَسْفَىٰ عَلَىٰ يُونُسَ ۖ وَأَبْصُرْتُ عَيْنَهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ۖ قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتُنُوا تَذَكَّرُ يُونُسَ ۖ حَتَّىٰ تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ۖ قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثْنِي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۖ يَبْنَئِي أَدْهُمَا فَتَمَحَّسُّوا مِنْ يُونُسَ ۖ وَأَخِيهِ ۖ وَلَا تَأْيِسُوا مِنْ رَوْحِ اللَّهِ ۖ إِنَّهُ لَا يَأْيِسُ مِنَ رَوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْكُفْرُونَ ۖ

बाप ने कहा, बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है, पस मैं सब्र करूंगा। उम्मीद है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास लाएगा। वह जानने वाला, हकीम (तत्वदर्शी) है। और उसने रुख फेर लिया और कहा, हाय यूसुफ, और गम से उसकी आंखें सफेद पड़ गईं। वह घुटा घुटा रहने लगा। उन्होंने कहा, खुदा की कसम तू यूसुफ ही की याद में रहेगा। यहां तक कि घुल जाए या हलाक हो जाए। उसने कहा, मैं अपनी परेशानी और अपने गम का शिकवा सिर्फ अल्लाह से करता हूं और मैं अल्लाह की तरफ से वे बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते। ऐ मेरे बेटो, जाओ यूसुफ और उसके भाई की तलाश करो और अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद न हो। अल्लाह की रहमत से सिर्फ मुंकिर ही नाउम्मीद होते हैं। (83-87)

‘तुमने बात बना ली है।’ कह कर हजरत याकूब ने बिरादराने यूसुफ के दिल का खोट वाजेह किया। वे बाप के यहां से गए तो मुकम्मल हिफजत का वादा करके उसे साथ ले गए। और जब बिन यामीन के असबाब में से प्याला बरामद हुआ तो उसकी तरफ से इतनी मुदाफअत भी न कर सके कि यह कहते कि महज प्याला बरामद होने से वह चोर कैसे साबित हो गया। शायद किसी और ने रख दिया हो या किसी गलती से वह उसके असबाब के साथ बंध गया हो। इसके बरअक्स उन्होंने यह किया कि यह कह कर उसके जुर्म को मिश्रियों की नजर में और पुख्ता कर दिया कि इसका भाई भी इससे पहले चोरी कर चुका है।

हजरत याकूब अगरचे दो अजीज बेटों को खोने की वजह से बेहद गमजदा थे। मगर इसी

के साथ वह खुदा से उसकी रहमत की उम्मीद भी लगाए हुए थे। उनका अब भी यह ख्याल था कि यूसुफ का इब्तिदाई जमाने का ख्वाब एक खुदाई बशारत था और वह जरूर पूरा होगा। इसीलिए उन्होंने बेटों से कहा कि जाओ यूसुफ को तलाश करो और बिन यामीन की रिहाई की भी कोशिश करो।

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَكْنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُزْجَبَةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ۚ إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ۖ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُونُسَ ۖ أَوْ أَخْبِيرُوا ۖ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ۖ قَالُوا إِنَّكَ لَأَنْتَ يُونُسَ ۖ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَذَا أَخِي قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا ۚ إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۖ

फिर जब वे यूसुफ के पास पहुंचे, उन्होंने कहा, ऐ अजीज, हमें और हमारे घर वालों को बड़ी तकलीफ पहुंच रही है और हम थोड़ी पूंजी लेकर आए हैं, तू हमें पूरा गल्ला दे और हमें सदका भी दे। वेशक अल्लाह सदका करने वालों को उसका बदला देता है। उसने कहा, क्या तुम्हें खबर है कि तुमने यूसुफ और उसके भाई के साथ क्या किया जबकि तुम्हें समझ न थी। उन्होंने कहा, क्या सचमुच तुम ही यूसुफ हो। उसने कहा हां मैं यूसुफ हूं और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर फल फरमाया। जो शख्स डस्ता है और सब्र करता है तो अल्लाह नेक काम करने वालों का अज्र (प्रतिफल) जाए (नष्ट) नहीं करता। (88-90)

‘तकवा और सब्र करने वालों का अज्र खुदा जाया नहीं करता’ यही बात पूरे यूसुफ के किरसे का खुलासा है। अल्लाह तआला को इसकी एक वाजेह मिसाल कायम करनी थी कि मामलाते दुनिया में जो शख्स अल्लाह से डरने वाला तरीका इख्तियार करे और बेसब्री वाले तरीकों से बचे, बिलआखिर वह खुदा की मदद से जरूर कामयाब होता है। हजरत यूसुफ के वाक्ये को इसी हकीकत की एक नजर आने वाली मिसाल बिना दिया गया।

मिश्र में इब्तिदाअन सात अच्छे साल और इसके बाद सात खराब साल दोनों खुदा के इज्ज के तहत हुए। खुदा चाहता तो तमाम सालों को अच्छे साल बना देता। इसी तरह हजरत यूसुफ का कुर्वे में डाला जाना और फिर उससे निकल कर मिश्र पहुंचना दोनों खुदा की निगरानी में हुआ। खुदा चाहता तो आपको कुर्वे के मरहले से गुजारे बगैर मिश्र के इक्तेदार तक पहुंचा देता। लेकिन अगर यह तमाम गैर मामूली हालात पेश न आते तो असबाब की इस दुनिया में वह इस बात की मिसाल कैसे बनते कि खुदा उन लोगों की मदद करता है जो खुदा पर भरोसा करते हुए तकवे (खुदा के डर) और सब्र की रविश पर कायम रहें।

वाक्यात दो किस्म के होते हैं। एक वह जिसके अंदर शोहरत का माद्दा हो। और दूसरा वह जिसके अंदर शोहरत का माद्दा न हो। दो वाक्यात नौइयत के एतबार से बिल्कुल एकसां

दर्ज के हो सकते हैं। मगर एक वाकया शोहरत पकड़ेगा और दूसरा गुमनाम होकर रह जाएगा।
हजरत यूसुफ के साथ नुसरते खुदावंदी का जो मामला हुआ वह दूसरे नेक लोगों और मोहसिनीन के साथ भी पेश आता है। मगर हजरत यूसुफ के वाक्ये की खुसूसियत यह है कि इसमें शोहरत का माद्दा भी पूरी तरह मौजूद था। इसलिए वह बखूबी तौर पर लोगों की नजर में आ गया।

قَالُوا لِلَّهِ لَقَدْ أَشْرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخَاطِئِينَ ۝ قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ۝ إِذْ هَبُوا بَقِيصَتِي هَذَا ۝ وَالْقَوَّةُ عَلَى وَجْهِ إِبْنِي يَأْتِ بِصِغْرٍ ۝ وَأَتُونِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ۝

भाइयों ने कहा, खुदा की कसम, अल्लाह ने तुम्हें हमारे ऊपर फजीलत दी, और बेशक हम ग़लती पर थे। यूसुफ ने कहा, आज तुम पर कोई इल्जाम नहीं, अल्लाह तुम्हें माफ करे और वह सब महरबानों से ज्यादा महरबान है। तुम मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसे मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो, उसकी बीनाई (ट्रिस्टि) पलट आएगी और तुम अपने घरवालों के साथ मेरे पास आ जाओ। (91-93)

जब हकीकत खुल गई तो भाइयों ने हजरत यूसुफ की बड़ाई को तस्लीम करते हुए खुले तौर पर अपनी ग़लती का इक़रार कर लिया। दूसरी तरफ हजरत यूसुफ ने भी उस आली जर्मी का सुबूत दिया जो एक सच्चे खुदापरस्त को ऐसे मौके पर देना चाहिए। उन्होंने अपने भाइयों को कोई मलामत नहीं की। उन्होंने माजी के तलख़ वाक़ेयात को अचानक भुला दिया और भाइयों से दुबारा बिरादराना तअल्लुकात उस्तुवार कर लिए।

इस वाक्ये में इफ़िरादी नुसरत (व्यक्तिगत मदद) के साथ इज्तिमाई नुसरत (सामूहिक मदद) की मिसाल भी मौजूद है। इसी के जरिए वे हालात पैदा हुए कि बनी इस्राईल फिलिस्तीन से निकल कर मिस्र पहुंचे और वहां इज्जत और खुशहाली का मक़ाम हासिल करें। चुनावि हजरत यूसुफ के जमाने में हजरत याकूब का ख़ानदान मिस्र मुंक्लि हो गया और तक्रीबन पांच सौ साल तक वहां इज्जत के साथ रहा। बाइबल के बयान के मुताबिक सब ख़ानदान के अफ़राद जो इस मौके पर मिस्र गए उनकी तादाद 67 थी।

وَلَمَّا فَصَلَ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنْ تُفَنِّدُونِ ۝ قَالُوا لِلَّهِ إِنَّكَ لَفِي ضَلَالِكَ الْقَدِيمِ ۝ فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الشَّيْخُ الْقَهْهُ عَلَى وَجْهِهِ ۝ فَازْدَدَ بِصِيرًا ۝ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ قَالُوا يَٰكَانَ السُّغْفَرُ لَنَا ذُنُوبًا ۝ إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ ۝ قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

और जब काफ़िला (मिस्र से) चला तो उसके बाप ने (कंआन में) कहा कि अगर तुम मुझे बुढ़ापे में बहकी बातें करने वाला न समझो तो मैं यूसुफ की खुशबू पा रहा हूं। लोगों ने कहा, खुदा की कसम, तुम तो अभी तक अपने पुराने ग़लत ख़्याल में मुत्तला हो। पस जब खुशख़बरी देने वाला आया, उसने कुर्ता याकूब के चहरे पर डाल दिया, पस उसकी बीनाई (ट्रिस्टि) लौट आई। उसने कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं अल्लाह की जानिव से वे बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते। बिरादराने यूसुफ ने कहा, ऐ हमारे बाप, हमारे गुनाहों की माफी की दुआ कीजिए। बेशक हम ख़तावार थे। याकूब ने कहा, मैं अपने रब से तुम्हारे लिए मफ़िरत (क्षमा) की दुआ करूंगा। बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (94-98)

हजरत यूसुफ अपने बाप से जुदा होकर 20 साल से ज्यादा मुदत तक पड़ैसी मुत्क मिस्र में रहे। मगर हजरत याकूब को इसका इल्म न हो सका। अलबत्ता आखिरी वक्त में आपका लिबास मिस्र से चला तो आपको उसके पहुंचने से पहले उसकी खुशबू महसूस होने लगी। इससे मालूम हुआ कि पैग़म्बरों का इल्म उनका जाती इल्म नहीं होता बल्कि खुदा का अतिया होता है। अगर जाती इल्म होता तो हजरत याकूब पहले ही जान लेते कि उनके साहबजद मिस्र में हैं। मगर ऐसा नहीं हुआ। आप हजरत यूसुफ के बारे में सिर्फ उस वक्त मुत्तलअ हुए जबकि अल्लाह ने आपको उनकी ख़बर कर दी।

हजरत याकूब के साथ आपके ख़ानदान वालों की गुम्तुगुं जो इस सूरह में मुज़लिफ़ मक़मात पर नक्श हूँ हैं उनसे अंदाज़ होता है कि ख़ानदान वालों की नजर में हजरत याकूब को वह अज्मत हासिल न थी जो एक पैग़म्बर के लिए होनी चाहिए। वही लोग जो माजी के बुजुर्गों की परस्तिश कर रहे होते हैं वे जिंदा बुजुर्गों की अज्मत मानने के लिए तैयार नहीं होते। इसकी वजह यह है कि मुर्दा बुजुर्गों के गिर्द हमेशा मुबालगाआमेज (अतिरंजनापूर्ण) किस्सों और तिलिस्माती कहानियों का हाला बना दिया जाता है। इसकी वजह से लोगों के ज़हन में 'बुजुर्ग' की एक मन्सूई (कृत्रिम) तस्वीर बैठ जाती है। चूँकि जिंदा बुजुर्ग उस मन्सूई तस्वीर के मुताबिक नहीं होता इसलिए वह लोगों को बुजुर्ग भी नजर नहीं आता।

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَىٰ إِلَيْهِ أَبَوَاهُ وَقَالَ ادْخُلُوا مِصْرَ إِن شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ ۝ وَرَفَعَ أَبَوَاهُ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوا لَهُ سُجَّدًا ۝ وَقَالَ يَبْتَهِ هَذَا تَأْوِيلُ رُؤْيَايَ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا ۝ وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُم مِّنَ الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي ۚ إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِّمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝

पस जब वे सब यूसुफ के पास पहुंचे तो उसने अपने वालिदैन् को अपने पास बिठाया। और कहा कि मिस्र में इंशाअल्लाह अम्न चैन से रहो और उसने अपने वालिदैन् को तख़्त

पर बिठाया और सब उसके लिए सज्दे में झुक गए। और यूसुफ ने कहा ऐ बाप, यह है मेरे ख़ाब की तावीर जो मैंने पहले देखा था। मेरे रब ने उसे सच्चा कर दिया और उसने मेरे साथ एहसान किया कि उसने मुझे कैद से निकाला और तुम सबको देहात से यहां लाया बाद इसके कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान फसाद डाल दिया था। बेशक मेरा रब जो कुछ चाहता है उसकी उम्दा तदबीर कर लेता है, वह जानने वाला हकिमत (तत्वदर्शिता) वाला है। (99-100)

यहां तख़्त से मुराद तख़्ते शाही नहीं है बल्कि वह तख़्त है जिस पर हजरत यूसुफ अपने ओहदे की जिम्मेदारियों को अदा करने के लिए बैठते थे। सज्दे से मुराद भी मारुफ सज्दा नहीं बल्कि रकूअ के अंदाज पर झुकना है। किसी बड़े की ताजीम के लिए इस अंदाज में झुकना कदीम ज़मन में बहुत मारुफ था।

‘इन्ने रब्बी लतीफुल लिमा यशा’ का मतलब यह है कि मेरा रब जिस काम को करना चाहे उसके लिए वह निहायत छुपी राहें निकाल लेता है। ख़ुदा अपने मंसूबे की तक्मील के लिए ऐसी तदबीरें पैदा कर लेता है जिसकी तरफ आम इंसानों का गुमान भी नहीं जा सकता।

رَبِّ قَدْ آتَيْنَتْنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ فَاطْرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ وَلِيّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحَقْنِي بِالْصَّالِحِينَ ۝

ऐ मेरे रब, तूने मुझे हुकूमत में से हिस्सा दिया और मुझे बातों की तावीर करना सिखाया। ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, तू मेरा कारसाज (कार्य-साधक) है, दुनिया में भी और आखिरत में भी। मुझे फरमांबरदारी की हालत में वफात दे और मुझे नेक बंदों में शामिल फरमा। (101)

ग़ैर मोमिन हर चीज को इंसान के एतबार से देखता है और मोमिन हर चीज को ख़ुदा के एतबार से। हजरत यूसुफ को आला हुकूमती ओहदा मिला तो उसे भी उन्होंने ख़ुदा का अतिया करार दिया। उन्हें तावील और ताबीर (बातों की गहराई और अस्तित्व का इल्म) का इल्म हासिल हुआ तो उन्होंने कहा कि यह मुझे ख़ुदा ने सिखाया है। उनके अपनों ने उन्हें मुसीबत में डाला तो उसे भी उन्होंने इस नजर से देखा कि यह ख़ुदा की लतीफ तदबीरें थीं जिनके जरिए वह मुझे इश्तक़ाई (उत्थानगत) सफर करा रहा था।

ख़ुदा की अज़मत के एहसास ने उनसे जाती अज़मत के तमाम एहसासात छीन लिए थे। दुनियावी बुलन्दी की चोटी पर पहुंच कर भी उनकी ज़बान से जो अल्फ़ाज़ निकले वे ये थे ख़ुदाया, तू ही तमाम ताकतों का मालिक है। तू ही मेरे सब काम बनाने वाला है। तू दुनिया और आखिरत में मेरी मदद फरमा। मुझे उन लोगों में शामिल फरमा जो दुनिया में तेरी पसंद पर चलने की तौफ़ीक पाते हैं और आखिरत में तेरा अबदी इनाम हासिल करते हैं।

ذَلِكَ مِنَ النَّبَأِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ ۝ وَمَا أَكْثَرُ النَّالِسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا تَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

यह ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम पर ‘वही’ (प्रकाशना) कर रहे हैं और तुम उस वक़्त उनके पास मौजूद न थे जब यूसुफ के भाइयों ने अपनी राय पुज़ा की और वे तदबीरें कर रहे थे और तुम चाहे कितना ही चाहो, अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं। और तुम इस पर उनसे कोई मुआवज़ा (बदला) नहीं मांगते। यह तो सिर्फ एक नसीहत है तमाम ज़हान वालों के लिए। (102-104)

हजरत यूसुफ का किस्सा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान पर जारी हुआ वह बजाए ख़ुद इस बात का सबूत है कि कुरआन रब्बानी ‘वही’ (ईश्वरीय वाणी) है न कि इंसानी कलाम। यह वाक्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तकरीबन ढाई हजार साल पहले पेश आया। आपने इस वाक्य को न तो बतौर ख़ुद देखा था और न वह किसी तारीख में लिखा हुआ था कि आप उसे पढ़ें या किसी से पढ़वा कर सुनें। वह सिर्फ तौरात के सफ़हात में था। और प्रेस के दौर से पहले तौरात एक ऐसी किताब थी जिसकी वाकफियत सिर्फ यहूदी मराकिज (केन्द्रों) के चन्द यहूदी उलेमा को होती थी, और किसी को नहीं।

मौजूद यह कि कुरआन में इस वाक्य को जिस तरह बयान किया गया है, बुनियादी तौर पर तौरात के मुताबिक होने के बावजूद, तफ़सीलात में वह उससे काफी मुख़ालिफ है। यह इज़्तेलाफ़ बजाते ख़ुद कुरआन के इलाही ‘वही’ होने का सबूत है। क्योंकि जहाँ-जहाँ दोनों में इज़्तेलाफ़ (भिन्नता) है वहाँ कुरआन का बयान वाज़ह तौर अक्ल व फ़ितरत के मुताबिक मालूम होता है। कुरआन का बयान पढ़कर वाकई यह समझ में आता है कि वह हजरत याकूब और हजरत यूसुफ की फैग़म्बराना सीरत के मुनासिब है जबकि तौरात के बयानात फैग़म्बराना सीरत के मुनासिबे हाल नहीं। इसी तरह वाक्य के कई बेहद कीमती अज्जा (मसलन कैदख़ाने में हजरत यूसुफ की तकरीर, आयत 37-40) जो कुरआन में मफ़हूल हुई हैं। बाइबल या तलमूद में इसका कोई जिक्र नहीं। यहां तक कि कुछ तारीख़ी ग़लतियां जो बाइबल में मौजूद हैं उनका इआदा (पुनः उल्लेख) कुरआन में नहीं हुआ है। मिसाल के तौर पर बाइबल हजरत यूसुफ के ज़माने के बादशाह को फ़िरऔन कहती है। हालांकि फ़िरऔन का ख़ानदान हजरत यूसुफ के पांच सौ साल बाद मिश्र में हुक्मरां बना है। हजरत यूसुफ के ज़माने में मिश्र में एक अरब ख़ानदान हुक्मरत कर रहा था जिसे चरवाहे बादशाह (Hyksos Kings) कहा जाता है। (तक़बुल के लिए मुलाहिज़ा हो, बाइबल, किताब पैदाइश)

हक़ को न मानने का सबब अगर दलील हो तो दलील सामने अपने के बाद आदमी फौरन उसे मान लेगा। मगर अक्सर हालात में इंकारे हक़ का सबब हठधर्मी होता है। ऐसे लोग हक़ को इसलिए नहीं मानते कि वह उसे मानना नहीं चाहते। हक़ को मानना अक्सर

हालात में अपने को छोटा करने के हममअना होता है, और अपने को छोटा करना आदमी के लिए सबसे ज्यादा मुश्किल काम है। यही वजह है कि इस किस्म के लोग हर किस्म के दलाइल और कराइन (संकेत) सामने आने के बाद भी अपनी रविश को नहीं छोड़ते। वे इसे गवारा कर लेते हैं कि हक छोटा हो जाए मगर वे अपने आपको छोटा करने पर राजी नहीं होते। वे भूल जाते हैं कि जो दुनिया में अपने आपको छोटा कर ले वह आखिरत में बड़ा किया जाएगा। और जो शख्स दुनिया में अपने को छोटा न करे वही वह शख्स है जो आईदा आने वाली दुनिया में हमेशा के लिए छोटा होकर रह जाएगा।

وَكَايْنٍ مِّنْ آيَةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ
وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ ۝ أَفَأَمِنُوا أَن تَأْتِيَهُمْ
غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝
قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ عَلَى بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ
وَسُبْحَنَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

और आसमानों और जमीन में कितनी ही निशानियां हैं जिन पर उनका गुजर होता रहता है और वे उन पर ध्यान नहीं करते। और अक्सर लोग जो खुदा को मानते हैं वे उसके साथ दूसरों को शरीक भी ठहराते हैं। क्या ये लोग इस बात से मुतमइन हैं कि उन पर अजबे इलाही की कोई आफत आ पड़े या अचानक उन पर कियामत आ जाए और वे इससे बेखबर हों। कहो यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ बुलाता हूं समझ-बूझ कर, मैं भी और वे लोग भी जिन्होंने मेरी पैरवी की है। और अल्लाह पाक है और मैं मुशिकों (बहुदेवादियों) में से नहीं हूं। (105-108)

हक के जुहर के बाद जो लोग उसे न मानें वे अपने इंकार को हमेशा इस रंग में पेश करते हैं कि जो दलील मल्लूब थी वह दलील हक की तरफ से उनके सामने नहीं आई। अगर ऐसी दलील होती तो वे उसे जरूर मान लेते। गोया उनके एराज (उपेक्षा) या इंकार का सबब उनके बाहर है न कि उनके अंदर।

मगर हकीकते हाल इसके बरअक्स है। हक इतना वाजे है कि जब वह जहिर होता है तो जमीन व आसमान की तमाम निशानियां उसकी तस्दीक (पुष्टि) करती हैं। वह सारी कायनात में सबसे ज्यादा साबितशुदा चीज होता है। मगर हक को पाने के लिए अरल जरूरत देखने वाली आंख और इबरत (सीख) पकड़ने वाले दिमाग की है। और यही चीज मुकिरीन के यहां मौजूद नहीं होती।

हक के मुकाबले में आदमी जब सरकशी दिखाता है तो अक्सर हालात में इसकी वजह 'शिक' होता है। बेशतर लोगों का हाल यह है कि खुदा को मानते हुए उन्होंने कुछ और जिंदा या मुर्दा हस्तियां फर्ज कर रखी हैं जिन पर वे अपना एतमाद कायम किए हुए हैं जिनको वे

बड़ाई का मकाम देते हैं। इस तरह हर एक ने खुदा के सिवा कुछ 'बड़े' बना रखे हैं। वे उन्हीं बड़ों के भरोसे पर जी रहे हैं। हालांकि खुदा के यहां सब छोटे हैं। वहां किसी को जो चीज बचाएगी वह उसका जाती अमल है न कि काल्पनिक बड़ों की बड़ाई।

पैगम्बर का काम एक अल्लाह की तरफ बुलाना है। यही उसका मिशन है। इस मिशन को उसने बसीरत के तौर पर इख्तियार किया है न कि तक्लीद के तौर पर। गोया पैगम्बराना दावत (आह्वान) वह दावत है जो ईसान को एक खुदा से जोड़ने की दावत हो और जिसकी सदाकत (सत्यता) दाओ के ऊपर इतनी खुल चुकी हो कि वह उसके लिए बसीरत और मअरफत (अन्तर्ज्ञान) बन जाए। इसी तरह पैगम्बर के पैरोकार वे लोग हैं जो हक को बसीरत (सूझबूझ) की सतह पर पाएं और तौहीद की सतह पर उसका एलान करें।

आदमी अपने वक्ती इत्मीनान को मुस्तकिल इत्मीनान समझ लेता है। हालांकि किसी के पास इस बात की जमानत नहीं कि उसकी मोहलते उम्र कब तक है। कोई नहीं जानता कि कब मौत आकर उसके तमाम मजऊमात (दंभों) को वातिल कर देगी। कब कियामत का जलजला उसकी बनी बनाई दुनिया को उलट-पलट कर देगा। आदमी अपने आपको यकीनी अंजाम की दुनिया में समझता है। हालांकि वह हर लम्हा एक ग़ैर यकीनी अंजाम के कनारे खड़ा हुआ है।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رَجُلًا نُّوحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ أَلَمْ يَسِيرُوا
فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَلَكِنَّ الْأَخْرَجَ
خَيْرٌ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَفَلَا يَعْقِلُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا اسْتَأْذَنُ الرُّسُلَ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ
قَدْ كُذِّبُوا جَاءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّيَ مَنْ نَشَاءُ وَلَا يُرِيدُ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِينَ ۝

और हमने तुमसे पहले मुख्तलिफ वस्ती वालों में से जितने रसूल भेजे सब आदमी ही थे। हम उनकी तरफ 'वही' (प्रकाशना) करते थे। क्या ये लोग जमीन पर चले फिर नहीं कि देखते कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो उनसे पहले थे और आखिरत (परलोक) का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो डरते हैं, क्या तुम समझते नहीं। यहां तक कि जब पैगम्बर मायूस हो गए और वे ख्याल करने लगे कि उनसे झूठ कहा गया था तो उन्हें हमारी मदद आ पहुंची। पस नजात (मुक्ति) मिली जिसे हमने चाहा और मुजरिम लोगों से हमारा अजाब टाला नहीं जा सकता। (109-110)

तारीख बताती है कि जो लोग रिसालत और पैगम्बरी को मानते थे वे भी उस वक्त इसके मुकिर हो गए, जबकि खुद अपनी कौम के अंदर से एक शख्स पैगम्बर होकर उनके सामने खड़ा हुआ। इसकी वजह यह थी कि माजी का पैगम्बर तारीखी तौर पर साबितशुदा पैगम्बर बन चुका होता है, जबकि हाल का पैगम्बर एक निजाई (विवादित) शख्सियत होता

है। तारीखी पैगम्बर को मानना हमेशा इंसान के लिए आसानतरीन काम रहा है और निजाई पैगम्बर को मानना हमेशा उसके लिए मुश्किलतरीन काम।

आद और समूद और मदन और कौमे लूत वगैरह की तबाहशुदा बस्तियां कुऐश के आस पास के इलाकों में मौजूद थीं। वे अपने सफरों के दौरान उन्हें देखते थे। ये आसार जबाने हाल से कह रहे थे कि पैगम्बर को निजाई दौर में न पहचानने ही की वजह से इन कौमों पर खुदा का अजाब आया और वे हलाक कर दी गईं। इसके बावजूद कुऐश ने उनसे सबक नहीं लिया। इसकी वजह इंसान की यह कमजोरी है कि वह एक ग़लत काम करता है मगर कुछ खुदसाखा (स्वनिर्मित) ख्यालात की बिना पर अपने आपको ग़लतकारों की फ़ेहरिस्त से अलग कर लेता है।

सूरह यूसुफ की आयत 110 की तशरीह सूरह बकरह की आयत 214 से हो रही है जिसमें इरशाद हुआ है 'क्या तुम ख्याल करते हो कि तुम जन्नत में दाखिल कर दिए जाओगे। हालांकि तुम पर अभी वह हालात गुजरे ही नहीं जो तुमसे पहले वालों पर गुजरे थे। उन्हें सख़्खी और तकलीफ पहुंची और वे हिला मारे गए। यहां तक कि रसूल और उसके साथ ईमान लाने वाले पुकार उठे कि खुदा की मदद कब आएगी। जान लो, खुदा की मदद करीब है।'

खुदा हमेशा दाजी (आत्मानकती) की मदद करता है। मगर यह मदद मदऊ के खिलाफ दाजी के हक में खुदा का फैसला होता है, इसीलिए यह मदद हमेशा उस वक़्त आती है जबकि दावती जद्दोजहद अपनी तक्मील के आखिरी मरहले में पहुंच चुकी हो, चाहे इस ताख़ीर की वजह से दावत देने वालों पर मायूसी के एहसासात तारी होने लगें।

'और आखिरत का घर मुत्तकियों के लिए ज्यादा बेहतर है' इससे मालूम हुआ कि दुनिया में अहले ईमान के साथ जो सुलूक किया जाता है वह आखिरत में उनके साथ किए जाने वाले सुलूक की अलामत होता है।

दुनिया में खुदा हक के दावियों की इस तरह मदद करता है कि उनकी बात तमाम दूसरी बातों पर बुलन्द व बाला साबित होती है। वे अपने दुश्मनों की तमाम साजिशों और मुख़ालिफ़तों के बावजूद अपना मिशन पूरा करने में कामयाब साबित होते हैं। यही इज्जत और सरबुलन्दी उन्हें आखिरत में ज्यादा कामिल और मेयारी सूरत में हासिल होगी।

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةً لِّأُولِي الْأَلْبَابِ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ١١٠

उनके किस्सों में समझदार लोगों के लिए बड़ी इबरत (सीख) है। यह कोई गढ़ी हुई बात नहीं, बल्कि तस्दीक (पुष्टि) है उस चीज की जो इससे पहले मौजूद है। और तफ़सील है हर चीज की। और हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए। (111)

पिछले पैगम्बरों और उनकी कौमों की कहानी इबरत के एतबार से तमाम इंसानों की कहानी है। अगर आदमी अक्ल से काम ले तो वह माजी (अतीत) के वाक्य में हाल की

नसीहत पा लेगा। दूसरों के अंजाम को देखकर वह अपने अहवाल को दुरुस्त कर लेगा।

कुरआन किसी इंसान की गढ़ी हुई किताब नहीं, वह खुदा की तरफ से उतरी हुई किताब है। वह ऐन उस पेशीनगोई (भविष्यवाणी) के मुताबिक आई है जो पिछली आसमानी किताबों में की गई थी। इसमें हिदायत से मुतअल्लिक हर ज़रूरी चीज का बयान मौजूद है। वह अपने आगाज के एतबार से इंसानों के लिए रहनुमाई है और अपने अंजाम के एतबार से उनके लिए रहमत।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ وَلَٰكِن أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ أَسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۝ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ۝

आयतें-43

सूरह-13. अर-रअद

रुकूअ-6

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० मीम० रा०। ये किताबे इलाही की आयतें हैं। और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से उतरा है वह हक (सत्य) है। मगर अक्सर लोग नहीं मानते। अल्लाह ही है जिसने आसमान को बुलन्द किया बग़ैर ऐसे सुतून (स्तंभ) के जो तुम्हें नजर आए। फिर वह अपने तख़्त पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ और उसने सूरज और चांद को एक क़नून का पाबंद बनाया, हर एक एक मुक़र्रर वक़्त पर चलता है। अल्लाह ही हर काम का इत्तिजाम करता है। वह निशानियों को खोल खोल कर बयान करता है ताकि तुम अपने रब से मिलने का यकीन करो। (1-2)

कुरआन एक खुदा को मानने की दावत देता है। जो लोग खुदा को नहीं मानते उनकी सबसे बड़ी दलील यह होती है कि खुदा अगर है तो हमें दिखाई क्यों नहीं देता। मगर हमारी मालूम कायनात बताती है कि किसी चीज का दिखाई न देना इस बात का सुबूत नहीं है कि उसका कोई वजूद भी नहीं। इसकी एक मिसाल कुव्वते कशिश (गुरुत्वाकर्षण शक्ति) है। ख़ला में बेशुमार अलग-अलग सितारे और सय्यारे (ग्रह) हैं। इंसानी इल्म कहता है कि इन अज़रामे समावी (आकाशीय पिंडों) के दर्मियान एक ग़ैर मरई (अदृश्य) कुव्वते कशिश है जो वसीअ ख़ला (विशाल अंतरिक्ष) में उन्हें संभाले हुए है। फिर इंसान जब ग़ैर मरई होने के बावजूद कुव्वते कशिश की मौजूदगी का इकारार कर रहा है तो ग़ैर मरई होने की वजह से खुदा के वजूद का इंकार करने में वह क्योंकर हक बजानिब होगा।

यही मामला 'वही' (ईश्वरीय वाणी) व रिसालत का है। कायनात का तालिबे इल्म जब

कायनात का मुतालआ करता है तो वह पाता है कि यहां हर चीज एक निजाम की पाबंद है। ऐसा मालूम होता है कि तमाम चीजें किसी खास हुक्म में जकड़ी हुई हैं। यह 'हुक्म' खुद इन चीजों के अंदर मौजूद नहीं है। यकीनन वह खारिज (बाहर) से आता है। गोया तमाम दुनिया अपने अमल के लिए 'खारिज' से हिदायत ले रही है। इंसान के अलावा बकिया दुनिया में इस खारजी (वाह्य) हिदायत का नाम कानूने फितरत है, और इंसान की दुनिया में इसका नाम 'वही' व इल्हाम। 'वही' दरअस्त इसी खारजी रहनुमाई की इंसानी दुनिया तक तौसीअ (विस्तार) है जिसे बकिया दुनिया में कानूने फितरत कहा जाता है।

कायनात गोया एक मशीन है और कुरआन उसकी गाइड बुक। कायनात खुदा की तदबीरे अम्र (कार्य-प्रणाली) की मिसाल है और कुरआन खुदा की तफ्सीले आयात (निशानियों की व्याख्या) की मिसाल। इन दोनों के दर्मियान कामिल मुताबिकत (अुकूलता) है। जो कुछ कायनात में अमलन नजर आता है वह कुरआन में लफ्जी तौर पर मौजूद है। यह मुताबिकत बयकवक्त दो बातों साबित करती है। एक यह कि इस कायनात का एक खालिक है। और दूसरे यह कि कुरआन उसी खालिक की किताब है न कि महदूद (सीमित) इंसानी दिमाग की तख़ीक (रचना)।

وَهُوَ الَّذِي مَكَدَ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ
جَعَلَ فِيهَا رَوْحَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشَى اللَّيْلَ النَّهَارُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٠﴾

और वही है जिसने जमीन को फैलाया। और उसमें पहाड़ और नदियां रख दीं और हर किस्म के फलों के जोड़े इसमें पैदा किए। वह रात को दिन पर उड़ा देता है। बेशक इन चीजों में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो गौर करें। (3)

आसमान की निशानियों के बाद जब जमीन की हालत पर गौर किया जाए तो वह इंसान की रिहाइश के लिए इतिहाई वामअना तौर पर मौजूं (उपयुक्त) नजर आती है।

जमीन एक कुदरती फर्श की मान्दि आदमी के कदमों के नीचे फैली हुई है। इसमें एक तरफ इंसान की जरूरत के लिए समुद्र की गहराइयां हैं तो दूसरी तरफ पहाड़ों की बुलन्दियां भी हैं ताकि दोनों मिलकर जमीन का तवाजुन (संतुलन) बरकरार रखें। दरख्त एक दूसरे से अलग-अलग भी हो सकते थे मगर इनमें जोड़े हैं जिनके दर्मियान तजवीज (निपेचन) के अमल से दाने और फल पैदा होते हैं। जमीन का यह हाल है कि सूरज के चारों तरफ अपनी सालाना दौर वाली गर्दिश के साथ अपने महवर (धुरी) पर भी मुसलसल गर्दिश करती है जिसका दौर 24 घंटे में पूरा होता है और जिससे रात और दिन पैदा होते हैं।

इस किस्म की निशानियों पर जो शख्स भी संजीदगी से गौर करेगा वह यह मानने पर मजबूर होगा कि यह दुनिया एक बाइख़्तियार मालिक के तहत है और उसने अपने इरादे के तहत उसकी एक वामक्सद मंसूबाबंदी कर रखी है। बाशुऊर मंसूबाबंदी के बग़ैर जमीन पर यह मअनवियत (अर्थपूर्णता) हरगिज मुमकिन न थी।

وَفِي الْأَرْضِ قِطْعَةٌ مُّتَبَوَّرَاتٌ وَجَنَّاتٌ مِنْ أَعْنَابٍ وَزُرْعٌ وَنَحِيلٌ صُنُوفٌ وَ
غَيْرُ صُنُوفٍ يُسْقَى بِهَاءٍ وَاحِدَةٍ وَنُفْضِلُ بَعْضَهَا عَلَى بَعْضٍ فِي الْأَكْلِ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢١﴾

और जमीन में पास-पास मुत्तलिफ कित्ते (भू-भाग) हैं और अंगूरों के बाग हैं और खेती है और खजूरें हैं, उनमें से कुछ इकहरे हैं और कुछ दोहरे। सब एक ही पानी से सैराब होते हैं। और हम एक को दूसरे पर पैदावार में फौकियत (श्रेष्ठता) देते हैं बेशक इनमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो गौर करें। (4)

हरजत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने फरमाया कि कोई अच्छी जमीन है और कोई बंजर जमीन। एक उगती है और उसी के पास दूसरी नहीं उगती। मुजाहिद ने कहा कि यही मामला बनी आदम (मानव-जाति) का है। उनमें अच्छे भी हैं और बुरे भी, हालांकि सबकी अस्त एक है। हसन बसरी ने कहा कि यह एक मिसाल है जो अल्लाह ने बनी आदम के दिलों के लिए दी है।

जमीन में एक अजीब निशानी यह है कि एक ही मिट्टी है। एक ही पानी से उसे सैराब किया जाता है मगर एक जगह से एक दरख्त निकलता है और उसी के पास दूसरी जगह से दूसरा दरख्त। एक में मीठा फल है और दूसरे में खट्टा फल। कोई ज्यादा पैदावार देता है और कोई कम पैदावार।

यह इंसानी वाक्ये की जमीनी तमसील (उपमा) है। इससे मालूम होता है कि अगरचे तमाम इंसान बजाहिर यकसां (समान) हैं और उन सबके पास एक ही हिदायत आती है। मगर हिदायत से इस्तिफ़ादे के मामले में एक इंसान और दूसरे इंसान में बहुत ज्यादा फर्क हो जाता है। कोई इससे रहनुमाई हासिल करता है और कोई इसका मुकिर बन जाता है। कोई थोड़ी हिदायत लेता है और किसी की जिंदगी हिदायत से मालामाल हो जाती है। गोया जैसी जमीन वैसी पैदावार का उसूल यहां भी है और वहां भी।

وَأِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ إِذَا كُنَّا ثَرَاءً لِّغَى خَلْقٍ جَدِيدٍ وَأُولَٰئِكَ
الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ الْأَعْلَىٰ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ
هَمَّ فِيهَا خَلِدُونَ ﴿٢٢﴾

और अगर तुम तअज्जुब करो तो तअज्जुब के काबिल उनका यह कौल है कि जब वे मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा किए जाएंगे। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब का इंकार किया और ये वे लोग हैं जिनकी गर्दनो में तौक पड़े हुए हैं वे आग वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (5)

दूसरी जिंदगी के मुकरीन का केस निहायत अजीब है। वे जिस वाक्य के जुहूर को एक बार मान रहे हैं उसी वाक्य के दुबारा जुहूर का इंकार कर देते हैं।

जो लोग दूसरी जिंदगी के कुफ़ूअ (घटित होने) को नहीं मानते वे दूसरी जिंदगी का अक्रीदा रखने वालों पर हैरानी का इज्हार करते हैं। उनका ख्याल यह होता है कि दूसरी जिंदगी को मानना एक ग़ैर इल्मी (अबौद्धिक) बात को मानना है। मगर हकीकत यह है कि सूरतेहाल इसके बिल्कुल बरअक्स है। क्योंकि कोई मुंकिर जिस चीज का इंकार कर सकता है, वह सिर्फ दूसरी जिंदगी है। जहां तक पहली जिंदगी का तअल्लुक है उसका इंकार करना किसी शख्स के लिए मुमकिन नहीं। क्योंकि वह तो एक जिंदा वाक्य के तौर पर हर आदमी के सामने मौजूद है। फिर जब पहली जिंदगी का वजूद में आना मुमकिन है तो दूसरी जिंदगी का वजूद में आना नामुमकिन क्यों हो।

ऐसे लोग हमेशा बहुत कम पाए गए हैं जो खुदा के मुंकिर हों। बेशतर लोगों का हाल यह है कि वे एक खालिक को मानते हैं मगर वे आखिरत (परलोक) को नहीं मानते। मगर आखिरत के इंकार के बाद खालिक के इकार की कोई कीमत बाकी नहीं रहती। खुदा इस कायनात का खालिक ही नहीं वह बजाते खुद हक (सत्य) भी है। खुदा का सरापा हक और अदल (न्याय) होना लाजिमी तौर पर तक्ज़ा करता है कि वह जो कुछ करे हक और अदल के मुताबिक करे। आखिरत दरअसल खुदा की सिपते अदल का जुहूर है। खुदा को मानना वही मानना है जबकि उसके साथ आखिरत को भी माना जाए। आखिरत को माने बगैर खुदा का अक्रीदा मुकम्मल नहीं होता।

जो लोग हक के सीधे और सच्चे पैगाम को नहीं मानते इसकी वजह अक्सर यह होती है कि वे जुमूद (जड़ता), तअस्सुब (विद्वेष) अनानियत (अहंकार) के शिकार होते हैं। उनसे बात कीजिए तो ऐसा मालूम होगा कि वे खुद अपने ख्यालात के कैदी बने हुए हैं। इससे निकल कर वे आजदाना तौर पर किसी ख़ारजी (वाह्य) हकीकत पर ग़ौर नहीं कर सकते। इसी हालत को 'गर्दन में तौक पड़ना' फरमाया। क्योंकि गर्दन में तौक होना गुलामी की अलामत है। गोया कि ये लोग खुद अपने ख्यालात के गुलाम हैं। जो इस तरह अपने आपको दुनिया में कैदी बना लें, आखिरत में भी उनके हिस्से में कैद ही आएगी।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلُتُ
إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِلنَّاسِ عَلَى ظُلْمِهِمْ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ⑥

वे भलाई से पहले बुराई के लिए जल्दी कर रहे हैं। हालांकि उनसे पहले मिसालें गुजर चुकी हैं और तुम्हारा खब लोगों के जुल्म के बावजूद उन्हें माफ करने वाला है। और वेशक तुम्हारा खब सज़ा देने वाला है। (6)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का के लोगों से कहते थे कि खुदा की हिदायत को मानो वर्ना तुम खुदा की पकड़ में आ जाओगे। इसके जवाब में उन्होंने कहा 'खुदाया, मुहम्मद जो कुछ पेश कर रहे हैं अगर वह हक है तो तू हमारे ऊपर आसमान से पत्थर बरसा' यह दुआ बजाहिर खुदा से थी मगर हकीकतन इसका रुख रसूल की तरफ था।

आप उस वक्त मक्का के लोगों को बिल्कुल बेवजन मालूम होते थे। उन्हें यकीन नहीं आता था कि ऐसे मामूली आदमी के इंकार पर खुदा हमें सजा देगा। 'मुहम्मद' के इंकार पर अजाब आना उन्हें इतना असंभावी नजर आता था कि वे बतौर मजाक कहते थे कि तुम जिस खुदाई अजाब की धमकी दे रहे हो हम चाहते हैं कि वह हमारे ऊपर आ जाए।

फरमाया कि तुम्हारे इंकारे हक के सबब से तुम्हारे ऊपर खुदा का अजाब तो आने ही वाला है। यह सिर्फ तुम्हारी बदबख्ती है कि तुम उसे जल्द बुलाना चाहते हो। हालांकि तुम्हें चाहिए था कि इस वक़्ते (अंतराल) को दावते कुरआन पर ग़ौर व फ़िक्र और उसकी कबूलियत में इस्तेमाल करो न कि अजाब को वक्त से पहले बुलाने में।

लोग चाहते हैं कि खुदा के अजाब को अपनी आंखों से देख लें फिर उसे मानें। मगर यह सिर्फ अंधेपन का मुतालबा है। अगर उनके पास आंखें हों तो जो कुछ दूसरों के साथ पेश आया वही उनके सबक के लिए काफी है। इनसे पहले कितनी कौमें गुजर चुकी हैं जिन्होंने इन्हीं की तरह अपने जमाने के पैगम्बरों को झुठलाया और बिलआखिर उन्हें उसकी सजा भुगतनी पड़ी।

खुदा का कानून यह है कि वह इंसान को अमल की मोहलत देता है। यही कानून मोहलत है जिसने लोगों को सरकश बना रखा है। मगर मोहलत की एक हद है। इस हद के बाद जो चीज उनका इतिज़ार कर रही है वह सिर्फ दर्दनाक अजाब है जिससे वे अपने आपको बचा न सकेंगे।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرٌ
لِكُلِّ قَوْمٍ مَّهِدٍ ⑦

और जिन लोगों ने इंकार किया वे कहते हैं कि इस शख्स पर उसके खब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी। तुम तो सिर्फ खबरदार कर देने वाले हो। और हर कौम के लिए एक राह बताने वाला है। (7)

आज सारी दुनिया में एक अरब से भी ज्यादा इंसान मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को खुदा का रसूल मानते हैं। मगर आपकी जिंदगी में मक्का वालों की समझ में न आ सका कि आपको खुदा ने अपना रसूल बनाया है। इसकी वजह यह थी कि अपनी तारीख के इब्तिदाई दौर में आपकी नुबुव्वत एक निजाई (Controversial) नुबुव्वत थी। मगर अब अपनी तारीख के इतिहाई दौर में आपकी नुबुव्वत एक साबितशुदा (Established) नुबुव्वत बन चुकी है। निजाई (विवादपूर्ण) दौर में पैगम्बर को पहचानना जितना मुश्किल है, इस्वाती (सुस्थापित) दौर में उसे पहचानना उतना ही आसान हो जाता है।

मक्का के लोगों के पास जो पैमाना था वह दौलत, इक्तेदार (सत्ता) और अवाम में मकबूलियत का पैमाना था। इस एतबार से आप उन्हें ग़ैर मामूली नजर न आते थे। इसलिए उन्होंने चाहा कि आपके साथ कोई ग़ैर मामूली निशानी हो जो उनके लिए आपके पैगम्बर होने का कतई सुबूत बन जाए। इसके जवाब में फरमाया गया कि ये लोग ऐसी चीज मांग रहे हैं जो खुदाई मंसूबे के मुताबिक नहीं, इसलिए वे किसी को मिलने वाली भी नहीं।

मौजूदा दुनिया दारुल इस्तेहान (परीक्षा-स्थल) है। यहां हिदायत ऐसी सरीह निशानियों के साथ नहीं आ सकती कि उसके बाद आदमी के लिए शुबह की गुंजाइश बाकी न रहे। क्योंकि ऐसी हालत में इस्तेहान की मस्लेहत फौत हो जाती है। यहां बहरहाल यही होगा कि आदमी को 'ख़बर' की सतह पर जांच कर उसका यकीन करना पड़ेगा। जो शख्स इस इस्तेहान में पूरा न उतरे, उसके हिस्से में हिदायत भी कभी नहीं आ सकती।

ख़ुदा हर कौम में उसके अपने अंदर के एक आदमी को खड़ा करता है ताकि वह उसकी मानूस जवान में उसे ख़ुदा का पैगाम पहुंचा दे। यह इतिजाम कौमों की आसानी के लिए था। मगर अक्सर ऐसा हुआ कि कौमों ने इससे उल्टा असर लेकर ख़ुदा के पैगामबरो का इंकार कर दिया। उनकी निगाहें पैगामरसां (संदेशवाहक) के मामूलीपन पर अटक कर रह गईं, वे पैगाम के ग़ैर मामूलीपन को न देख सकीं।

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَرُدُّادُ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِقَدَارٍ ۚ عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ۚ سَوَاءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ أَسْرَأَ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۝

अल्लाह जानता है हर मादा के हमल (गर्भ) को। और जो कुछ रहमों में घटता या बढ़ता है उसे भी। और हर चीज का उसके यहां एक अंदाज़ा है। वह पोथीदा और ज़ाहिर को जानने वाला है, सबसे बड़ा है, सबसे बरतर। तुम में से कोई शख्स चुपके से बात कहे और जो पुकार कर कहे और जो रात में छुपा हुआ हो। और दिन में चल रहा हो, ख़ुदा के लिए सब एकसां (समान) हैं। (8-10)

मां का पेट एक हैरतअंगेज फैक्टरी है। इस ख़ुदाई फैक्टरी में जो इंसानी पैदावार तैयार होती है उसका एक अजीब पहलू यह है कि वह 'मुकरर मिक्दा' के मुताबिक अमल करती है। आजकल की जवान में गोया डिमांड और सप्लाई के दर्मियान मुसलसल एक तवाजुन (संतुलन) बरकरार रहता है।

मसलन यह फैक्टरी हजारों साल से काम कर रही है। इससे मर्द भी पैदा हो रहे हैं और औरतें भी। मगर दोनों जिनसों की तादाद के दर्मियान हमेशा एक तनासुब (संतुलन) कायम रहता है। ऐसा कभी नहीं होता कि इस फैक्टरी से सब मर्द ही मर्द पैदा हो जाएं या सब औरतें ही औरतें पैदा होने लगे। जंग जैसा कोई हादसा मकामी तौर पर कभी इस तनासुब (संतुलन) को बिगाड़ देता है। मगर हैरतअंगेज तौर पर देखा गया है कि कुछ अर्से बाद ही यह कुदरती कारख़ाना इस तनासुब को दुबारा कायम कर देता है।

यही मामला इस फैक्टरी से निकलने वाले मर्द व औरत के दर्मियान सलाहियतों (क्षमताओं) के तवाजुन का है। मुतालआ बताता है कि पैदा होने वाले मर्द व औरत सब एकसां इस्तेदाद के नहीं होते। उनकी सलाहियतों में बहुत ज्यादा विविधता है। इस विविधता की ग़ैर मामूली तमदुनी (सांस्कृतिक) अहमियत है। क्योंकि तमदुन (संस्कृति) के निज़ाम

को चलाने के लिए मुख़लिफ़ किस्म की सलाहियतों के इंसान दरकार है। मां की फैक्टरी निहायत ख़ामोशी से हर किस्म की इस्तेदाद (सामर्थ्य) वाले इंसान इस तरह कामयाबी के साथ तैयार कर रही है जैसे उसे बाहर से 'ऑर्डर' मोसूल होते हों। और वह पेट के अंदर उसके मुताबिक इंसानों की तशकील कर रही हो। अगर इंसानी पैदावार में यह विविधता न हो तो तमदुन का सारा निज़ाम सर्द पड़ जाए और तमाम तरक्कियां मांद होकर रह जाएं।

मां के पेट के अमल में इस मंसूबाबंदी का होना सरीह तौर पर इस बात का सुबूत है कि इसके पीछे कोई मंसूबासाज है। इरादे के साथ मंसूबाबंदी के बग़ैर इस किस्म का निज़ाम इस कदर तसलसुल (निरंतरता) के साथ कायम नहीं रह सकता।

इससे यह भी साबित होता है कि इस दुनिया का ख़ालिक व मालिक एक ऐसी हस्ती है जिसे न सिर्फ़ खुले की ख़बर है बल्कि वह छुपे को भी जानता है। रहम (गर्भ) के अंदर और मां के पेट में जो कुछ होता है वह बजाहिर एक छुपी चीज है। मगर मज्ज़ूा वाक्या बताता है कि ख़ुदा को इसकी मुकम्मल ख़बर है। फिर जो हस्ती एक के छुपे और खुले को जानती है वह दूसरे के छुपे और खुले को क्यों नहीं जानेगी। फरिश्तों का अक़ीदा भी इसी से साबित होता है। क्योंकि वह 'निगरानी' के मौजूदा निज़ाम की गोया तौसीअ (विस्तार) है।

لَهُ مُعَقِّبَاتٌ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۚ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ ۚ وَمَا لَهُم مِّنْ دُونِهِ مِنْ وَالٍ ۝

हर शख्स के आगे और पीछे उसके निगरां (रक्षक) हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी देखभाल कर रहे हैं। बेशक अल्लाह किसी कौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वे उसे न बदल डालें जो उनके जी में है। और जब अल्लाह किसी कौम पर कोई आफत लाना चाहता है तो फिर उसके हटने की कोई सूरत नहीं और अल्लाह के सिवा उसके मुकाबले में कोई उनका मददगार नहीं। (11)

दुनिया में कौमों का उरूज व जवाल (उत्थान-पतन) अललटप तौर पर नहीं होता बल्कि ख़ुदा की निगरानी और पैसले के तहत होता है। ख़ुदा जब किसी कौम को अपनी नेमत से नवाजता है तो वह उस नेमत को उस वक़्त तक उसके लिए बाकी रखता है जब तक वह अपने अंदर उसकी इस्तेदाद (सामर्थ्य) बाकी रखे। इस्तेदाद खो देने के बाद वह कौम लाजिमी तौर पर ख़ुदाई नेमत को भी खो देती है, मसलन अपने दर्मियान इत्तेहाद खोने के बाद ख़ारजी दुनिया में रीब से महरूम हो जाना, वग़ैरह।

दुनिया में कोई कौम जो कुछ पाती है, ख़ुदा के कानून के तहत पाती है और कोई कौम जो कुछ खोती है ख़ुदा के कानून के तहत खोती है। ख़ुदा के सिवा यहां न कोई देने वाला है और न कोई छीनने वाला।

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۖ وَ يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلِكُ مِنْ خِيفَتِهِ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْحِسَابِ ۝

वही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है जिससे डर भी पैदा होता है और उम्मीद भी। और वही है जो पानी से लदे हुए बादल उठाता है। और बिजली की गरज उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी पाकी बयान करती है और फरिश्ते भी उसके खौफ से। और वह बिजलियां भेजता है, फिर जिस पर चाहे उन्हें गिरा देता है और वे लोग खुदा के बाव में झगड़ते हैं, हालांकि वह जबरदस्त है कुव्वत वाला है। (12-13)

बिजली चमकती है तो कभी वह नए खुशगवार मौसम की आमद का पैगाम होती है और कभी वह साइका (बिजली) बनकर जमीन पर गिरती है और चीजों को जला डालती है। इसी तरह बादल उठते हैं तो कभी वे मुफीद बारिश की सूरत में जमीन पर बरसते हैं और कभी तूफान और सैलाब का पेशखेमा (पूर्वक्रिया) साबित होते हैं।

इसका मतलब यह है कि इस दुनिया में एक ही चीज में डर का पहलू भी है और उम्मीद का पहलू भी। दुनिया का इतिजाम करने वाला जिस चीज के जरिए दुनिया वालों पर अपनी रहमत भेजता है उसी को वह तबाहकुन अजाब भी बना सकता है। इस सूत्रेहाल का तकाजा है कि आदमी कभी अपने आपको खुदा की पकड़ से मामून (सुरक्षित) न समझे।

गाफिल इंसान हमेशा किसी अनोखी और तिलिस्माती निशानी के जुहर के मुंतजिर रहते हैं। मगर जिन लोगों का शुऊर बेदार है, वे अपने आस पास रोज मरह के वाक्यात में हर किस्म की आला निशानी पा लेते हैं। बिजली की कड़क चमक उनके दिल की धड़कनें तेज कर देती है। और बारिश के कतरे देखकर उनकी आंखों से आंसुओं का सैलाब बह पड़ता है। खुदा की ताकतों को बराहेरास्त देखकर फरिश्तों का जो हाल होता है वही हाल सच्चे इंसानों का उस वक्त हो जाता है जबकि उन्होंने खुदा की ताकतों को अभी बराहेरास्त नहीं देखा है।

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطٍ كَفِينٍ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَهُ إِهْوَاهُ وَمَا هُوَ بِالْعَاقِبَةِ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝

सच्चा पुकारना सिर्फ खुदा के लिए है। और उसके सिवा जिनको लोग पुकारते हैं वे उनकी इससे ज्यादा दादरसी (सहायता) नहीं कर सकते जितना पानी उस शख्स की करता है जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ फैलाए हुए हो ताकि वह उसके मुंह तक पहुंच जाए और वह उसके मुंह तक पहुंचने वाला नहीं। और मुंकिरीन की पुकार सब बेमयदा है। (14)

अगर आप हाथ फैलाकर समुद्र के पानी को पुकारें तो ऐसा कभी नहीं होगा कि समुद्र आपकी पुकार को सुने और उसका पानी समुद्र की गहराइयों से निकल कर आपकी तरफ आए और आपके खेतों और बागों को सैराब करे। मगर इसी समुद्र के साथ ऐसा होता है कि कुदस्त के कानून के तहत उसका पानी नमक के जुज को छोड़कर फज में कुलन्द होता है। फिर गर्मी, कशिश और हवा के अमल से मुतहरिक होकर वह आपकी बस्ती के ऊपर आता है और मीठे पानी की सूरत में बरस कर आपकी जमीन को सैराब कर देता है। इससे मालूम हुआ कि समुद्र बजहिर अजीम हेने के बावजूद सरासर आजिज है उसे किसी किस्म का जाली इख्तियार हासिल नहीं।

यही इस दुनिया की तमाम चीजों का हाल है। ऐसी हालत में अकलमंद इंसान सिर्फ वह है जो खालिक (रचयिता) को पूजे न कि मख्बूक (रचना) को, जो चीजों के रब को अपना मकजि तवज्जोह बनाए न कि खुद चीजों को।

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلُّهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۚ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ اللَّهُ قُلْ أَفَاتَّخَذُ لِي مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ لِأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلْ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

और आसमानों और जमीन में जो भी हैं सब खुदा ही को सज्दा करते हैं। खुशी से या मजबूरी से और उनके साथे भी सुबह व शाम। कहो, आसमानों और जमीन का रब कौन है। कह दो कि अल्लाह। कहो, क्या फिर भी तुमने उसके सिवा ऐसे मददगार बना रखे हैं जो खुद अपनी जात के नफ़ और नुकसान का भी इख्तियार नहीं रखते। कहो, क्या अंधा और आंखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं। या क्या अंधेरा और उजाला दोनों बराबर हो जाएंगे। क्या उन्होंने खुदा के ऐसे शरीक ठहराए हैं जिन्होंने भी पैदा किया है जैसा कि अल्लाह ने पैदा किया, फिर पैदाइश उनकी नजर में मुशतबह (संदिग्ध) हो गई। कहो, अल्लाह हर चीज का पैदा करने वाला है और वही है अकेला, जबरदस्त। (15-16)

खुदा का मुतालबा इंसान से यह है कि वह उसके आगे झुक जाए। यही 'झुकना' तमाम कायनात का दीन है। इस दुनिया की हर चीज खुदा के हुक्म के आगे कामिल तौर पर झुकी हुई है। इसी झुकाव की एक अलामत है चीजों के साथे का सुबह व शाम मरिब और मशरिक की तरफ गिरना। चीजों का यह साया गोया उस सज्दे को माददी (भौतिक) तौर पर दर्शा रहा है जो इंसान से शुऊरी तौर पर मल्बूब है। पहला सज्दे का अलामती (प्रतीकात्मक) रूप है और

कूरा उसका हकीमी रूप।

वसीअ कायनात का मुतालआ (अवलोकन) बताता है कि सारी कायनात एक ही आफ़की (सर्वभौम) कानून में बंधी हुई है। यह इस बात का सुबूत है कि इसका ख़ालिक और मालिक एक है। इंसान का इल्मी और अक्ली मुतालआ किसी भी तरह यह साबित नहीं करता कि इस कायनात में एक से ज्यादा ताकतों की कारफ़रमाई हो। ऐसी हालत में एक खुदा के सिवा मजौद (अतिरिक्त) खुदा मानना सरासर बेबुनियाद कल्पना है।

‘आंख’ का मुशाहिदा तो सिर्फ एक खुदा का पता देता है। इसलिए जो लोग एक खुदा से ज्यादा खुदा मानें वे सिर्फ इस बात का सुबूत देते हैं कि वे अंधे हैं। उन्होंने अपने अंधेपन की वजह से कई खुदा फर्ज कर लिए हैं न कि हकीमी मअनों में इल्म और मुशाहिदे (साक्ष्य) की बुनियाद पर।

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَابِيًا
وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حُلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِثْلَهُ كَذَلِكَ
يَضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ
فَيَمْكُنْ فِي الْأَرْضِ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ

अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर नाले अपनी-अपनी म्किदर के मुवाफि क बह निकले। फिर सैलाब ने उभरते झाग को उठा लिया और इसी तरह का झाग उन चीजों में भी उभर आता है जिन्हें लोग जेवर या असबाब बनाने के लिए आग में पिघलाते हैं। इस तरह अल्लाह हक (सत्य) और बातिल (असत्य) की मिसाल बयान करता है। पस झाग तो सूखकर जाता रहता है और जो चीज इंसानों को नफ़ा पहुंचाने वाली है वह जमीन में ठहर जाती है। अल्लाह इसी तरह मिसालें बयान करता है। (17)

खुदा ने अपनी दुनिया इस तरह बनाई है कि यहां माददी (भौतिक) वाक़ेयात अख़्लाकी हकीकतों की तमसील बन गए हैं। जो कुछ अल्लाह तआला को इंसान से शुऊर की सतह पर मलूब है, उन्हीं को बकिया दुनिया में माददी सतह पर दिखाया जा रहा है।

यहां कूरआन में फ़िस्तरत के दो वाक़ेयात की तरफ इशारा किया गया है। एक यह कि जब बारिश होती है और उसका पानी बहकर नदियों और नालों में पहुंचता है तो पानी के ऊपर हर तरफ झाग फैल जाती है। इसी तरह जब चांदी और अन्य धातुओं को साफ करने के लिए आग पर तपाते हैं तो उसका मैलकुचेल झाग की सूरत में ऊपर आ जाता है। मगर जल्द ही बाद यह होता है कि दोनों चीजों का झाग, जिसमें इंसान के लिए कोई फ़ायदा नहीं फ़ज में उड़ जाता है। और पानी और धातु अपनी जगह पर महफूज रह जाते हैं जो इंसान के लिए मुफीद हैं।

ये फ़िस्तरत के वाक़ेयात हैं जिनके जरिए खुदा तमसील के रूप में दिखा रहा है कि उसने ज़िंदगी की कामयाबी और नाकामी के लिए क्या उसूल मुकर्रर फरमाया है। वह उसूल यह है

कि इस दुनिया में सिर्फ उस शख्स या कौम को जगह मिलती है जो दूसरों के लिए नफ़ाबख़शी का सुबूत दे। जो फर्द या गिरोह दूसरे इंसानों को नफ़ा पहुंचाने की ताकत खो दे उसके लिए खुदा की बनाई हुई दुनिया में कोई जगह नहीं।

لِّلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ الْخُسْفَىٰ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَتَاعِي
الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ وَكَأُولَٰئِكَ
جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْيَهَادِيُّ

जिन लोगों ने अपने रब की पुकार को लब्बैक कहा उनके लिए भलाई है और जिन लोगों ने उसकी पुकार को न माना, अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है, और उसके बराबर और भी तो वह सब अपनी रिहाई के लिए दे डालें। उन लोगों का हिसाब सज़त होगा और उनका ठिकाना जहन्नम होगा। और वह कैसा बुरा ठिकाना है। (18)

दुनिया में खुदा का यह कानून है कि चाहे वक्ती तौर पर मैल और झाग उभर कर ऊपर आ जाए मगर बिलआखिर जिस चीज को यहां मक्म मिलता है वह वही है जो हकीमी है और जिसमें नफ़ाबख़शी की सलाहियत है। आखिरत के एतबार से भी इंसानों का मामला यही है। दुनिया में कुछ लोग अपनी इजाफ़ी हैसियत की बिना पर नुमायां हो सकते हैं। मगर आखिरत में वही लोग ऊंची जगह पाएंगे जो हकीमी औसाफ (गुणों) के मालिक हों।

दुनिया में जो लोग हक की पुकार पर लब्बैक नहीं कहते। इसकी वजह हमेशा यह होती है कि बेआमेज (विशुद्ध) हक की तरफ बढ़ने में उन्हें दुनिया के फ़ायदे हाथ से जाते हुए नजर आते हैं। ऐसे लोगों को हक को नजरअंदाज करने की कीमत हमेशा यह मिलती है कि वे दुनिया में इज्जत और मकबूलियत और खुशहाली के मालिक बन जाते हैं। वे हक का इंकार करके ऊंची गद्दियों पर सरफराज नजर आते हैं।

मगर इन चीजों की हैसियत मैल और झाग से ज्यादा नहीं। आखिरत में ये सारे लोग वक्ती झाग की तरह दूर फेंके जा चुके होंगे। और वही लोग नुमायां नजर आएंगे जिन्होंने तमाम वक्ती फ़ायदों को नजरअंदाज करके अपने आपको हक के हवाले किया था।

जो लोग दुनिया की हैसियत और दुनिया के फ़ायदों को इतनी अहमियत दे रहे हैं कि इसकी ख़ातिर हक को नजरअंदाज कर देते हैं आखिरत में ये चीजें उन्हें इतनी हकीर (तुच्छ) दिखाई देंगी कि वे चाहेंगे कि यह सारी दुनिया और इसके बराबर एक और दुनिया मिल जाए तो वे उन सबको सिर्फ अजाब से बचने की ख़ातिर फिदये में दे दें।

أَكْمَنُ يَعْلَمُ إِنَّمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنَ رَبِّكَ الْحَقُّ كَبُنْ هُوَ أَعْمَىٰ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰئِكَ
الْأَنْبَاءُ

जो शख्स यह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे खब की तरफ से उतारा गया है वह हक (सत्य) है, क्या वह उसके मानिंद हो सकता है जो अंधा है। नसीहत तो अक्ल वाले लोग ही कुबूल करते हैं। (19)

इंसानों में हमेशा दो किस्म के लोग होते हैं। एक इंसान वह है जिसने खुदा की दी हुई अक्ल से सोचा और हक़ीक़ की रोशनी में एक यकीनी फैसले तक पहुंचा। इस तरह बेताप जायजे के नतीजे में उसका दिल जिस चीज पर मुतमइन हुआ उसे उसने इरादा और शुऊर के साथ इख़्तियार कर लिया।

दूसरे लोग वे हैं जो कौमी रिवायात और तकलीदी ख्यालात के दायरे में सोचते हैं। जो चीजों को दलाइल की नजर से देखने के बजाए खाज की नजर से देखते हैं। और फिर जो चीज उन्हें अवाम में चलती हुई दिखाई दे उसी को हक समझ कर इख़्तियार कर लें।

कुरआन के नजदीक पहला शख्स वह है जो इल्म की रोशनी में ईमान लाया है। इसके मुक़बले में दूसरा आदमी कुरआन की नजर में अंधा है। पहला आदमी खुद अपनी बसीरत (सुझबूझ) से हक और बातिल को जानता है। जबकि दूसरे आदमी का सरमाया सिर्फ सुनी सुनाई बातें हैं। लोग जिसे बातिल (असत्य) समझ लें उसे उसने बातिल समझ लिया, लोग जिसे हक समझें उसके मुतअल्लिक उसने भी यकीन कर लिया कि वह हक होगी।

हक की दावत (आह्वान) ऐसे लोगों की तलाश के लिए उठती है जो अपनी अक्ल से काम लेकर फैसला कर सकते हैं। बाकी जो लोग आंख रखते हुए अंधे बने हुए हैं उन्हें हक की दावत कुछ फायदा नहीं पहुंचाएगी।

الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ ۖ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ ۖ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۖ وَالَّذِينَ صَبَرُوا بِالنِّعَاءِ وَجَدُوا رَحْمَةً وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۖ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً ۖ وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۚ جَاءَتْ عَدْنٌ يَدْخُلُونَهَا ۖ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ ۖ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمْ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۖ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ ۖ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۚ

वे लोग जो अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करते हैं और उसके अहद को नहीं तोड़ते। और जो उसे जोड़ते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और वे अपने खब से डरते हैं और वे बुरे हिसाब का अंदेशा रखते हैं और जिन्होंने अपने खब की रिजा के लिए सब्र किया। और नमाज कायम की। और हमारे दिए में से पोशीदा और एलानिया ख़र्च

किया। और जो बुराई को भलाई से मिटाते हैं। आखिरत का घर इन्हीं लोगों के लिए है। अबदी (चिरस्थायी) बाग़ जिनमें वे दाखिल होंगे। और वे भी जो उसके अहल बनें, उनके आबा व अज्दाद (पूर्वज) और उनकी वीवियों और उनकी औलाद में से। और फरिश्ते हर दरवाजे से उनके पास आएंगे, कहेंगे तुम लोगों पर सलामती हो उस सब्र के बदले जो तुमने किया। पस क्या ही खूब है यह आखिरत का घर। (20-24)

इंसान को खुदा ने पैदा किया। उसने उसे रहने के लिए बेहतरीन दुनिया दी। वह हर आन उसकी परवरिश कर रहा है। यह वाकया इंसान को अपने खालिक व मालिक के साथ एक फ़ितरी अहद (वचन) बांध देता है। इसका तकाज़ा है कि इंसान सरकार न बने बल्कि हकीकते वाक्या का फ़तराफ करते हुए खुदा के आगे झुक जाए।

दुनिया में इंसान की ज़िंदगी मुक़दलफि किस्म के तअल्लुक़त व खावित (संपर्कों) के दर्मियान है। इंसान की बंदगी का तकाज़ा है कि वह उसी से जुड़े जिससे जुड़ना खुदा को पसंद है और उससे कट जाए जिससे कटने का हुक्म दिया गया है। उस पर खुदा की अज्मत का एहसास इतनी शिद्दत से तारी हो कि वह उसके आगे झुक जाए, जिसकी एक मुकर्रर सूरत का नाम नमाज है। वह अपने असासे में से दूसरों को उसी तरह दे जिस तरह खुदा ने अपने असासे में से उसे दिया है। उसे किसी की तरफ से बुरे सुलूक का तजर्बा हो तो वह अच्छे सुलूक के साथ उसका जवाब दे। क्योंकि वह खुद भी यह चाहता है कि आखिरत में खुदा उसकी बुराइयों को नज़रअंदाज़ कर दे और उसके साथ फ़ल व रहमत का मामला फ़रमाए।

यह सब कुछ मुसलसल सब्र का तालिब है। नफ़स के मुहर्रिकात (प्रेरकों) के मुक़ाबले में सब्र। मफ़दात का जियाअ (नाश) के मुक़ाबले में सब्र। माहिल के दबाव के मुक़ाबले में सब्र। मगर मोमिन को जन्नत की खातिर इन तमाम चीजों पर सब्र करना है। सब्र ही जन्नत की कीमत है। सब्र की कीमत अदा किए बग़ैर किसी को खुदा की अबदी जन्नत नहीं मिल सकती।

وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۚ ۝ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ وَفَرِحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ۚ

और जो लोग अल्लाह के अहद को मजबूत करने के बाद तोड़ते हैं और उसे काटते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और जमीन में फ़साद करते हैं, ऐसे लोगों पर लानत है और उनके लिए बुरा घर है। अल्लाह जिसे चाहता है रोज़ी ज्यादा देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। और वे दुनिया की ज़िंदगी पर खुश हैं। और दुनिया की ज़िंदगी आखिरत के मुक़बले में एक मताए कलील (अल्प सुख-सामग्री) के सिवा और कुछ नहीं। (25-26)

इंसान अपने खुदा से अहदे फितरत में बांधा हुआ है और दूसरे इंसानों से अहद आदमियत में। इन दोनों अहदों को तोड़ना खुदा की जमीन में फसाद करना है। खुदा की जमीन में इस्लाहयाप्ता बनकर रहना यह है कि आदमी मञ्चूरा दोनों अहदों का पाबंद बनकर जिंदगी गुजारे। इसके बरअक्स खुदा की जमीन में फसादी बनना यह है कि आदमी इन अहदों से आजद हो जाए। उसे न खुदा के हुक्म की परवाह हो और न इंसानों के हुक्म की।

ऐसे लोग खुदा के नजदीक लानतजदा हैं। ये वे लोग हैं जो खुदा की रहमतों में हिस्सेदार नहीं बनाए जाएंगे। उन्होंने खुदा की जमीन को गंदा किया, इसलिए वे इसी काबिल हैं कि आईदा उन्हें सिर्फ गंदे घर में जगह मिले।

दुनिया में किसी को कम मिलता है और किसी को ज्यादा। अब जिसे ज्यादा मिला वह एहसासे बरतरी में मुब्तिला हो जाता है और जिसे कम मिला वह एहसासे कमतरी में। मगर खुदा की नजर में ये दोनों गलत हैं। सही रद्देअमल यह है कि ज्यादा मिले तो आदमी खुदा का शुक्रगुजार बने। कम मिले तो वह सब्र और कनाअत (संतोष) का तरीका इस्त्रियार करे।

दुनियापरस्त लोग हमेशा हक के दाओ को नजरअंदाज कर देते हैं। इसकी वजह यह है कि दुनियापरस्त आदमी सिर्फ जाहिरी अज्मतों को पहचानना जानता है। चूँकि दाओ के पास सिर्फ मअनवी अज्मत होती है इसलिए वह उसे पहचान नहीं पाता। वह उसे हकीर समझ कर नजरअंदाज कर देता है। मगर जब हकीर का पर्दा फटेगा उस वक्त इंसान जानेगा कि जिस नजर आने वाली रैनक को वह सब कुछ समझे हुए था वह बिल्कुल बेक़ीमत थी। कद्र व कीमत की चीज दरअसल वह थी जो दिखाई न देने की वजह से उसकी तबज्जोह का मर्कज न बन सकी।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُخْلِقُ مَنْ يَشَاءُ وَيُصَدِّقُ إِلَيْهِ مَنْ أُنَابَ ۚ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ حُوبَى لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ۝ ۞

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं कि इस शख्स पर उसके रब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई। कहो कि अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है और वह रास्ता उसे दिखाता है जो उसकी तरफ मुतवज्जह हो। वे लोग जो ईमान लाए और जिनके दिल अल्लाह की याद से मुतमइन होते हैं। सुनो, अल्लाह की याद ही से दिलों को इल्मीनान हासिल होता है। जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए उनके लिए सुखखबरी है और अच्छा ठिकाना है। (27-29)

हक के दाओ (आस्वानकती) को न मानने की वजह आम तौर पर यह होती है कि लोगों को दाओ के गिर्द महसूस किस्म के करिश्मे नजर नहीं आते। मगर यह ऐन उसी मकाम पर नाकाम होना है जहां आदमी को कामयाबी का सुबूत देना चाहिए। खुदा यह चाहता है कि आदमी

हक को उसके मुजरंद (साक्षात) रूप में पहचाने और अपने आपको उसके हवाले कर दे। अब जो शख्स इसरार करे कि वह महसूस करिश्मों की दलील के बगैर नहीं मानेगा, उसका अंजाम इस दुनिया में यही हो सकता है कि खुदा के कानून के मुताबिक कभी उसे हक न मिले। वह हमेशा के लिए हिदायत से महरूम हो जाए।

यह दुनिया दारुल इम्तेहान (परीक्षा-स्थल) है। यहां आदमी सिर्फ 'याद' की सतह पर खुदा को पा सकता है। वह उसे 'मुशाहिदे' (अवलोकन) की सतह पर नहीं पा सकता। जो लोग इस खुदाई मंसूबे पर राजी होंगे वे खुदा को पाएंगे। और जो लोग इस पर राजी न हों वे खुदा को पाने से उसी तरह महरूम रहेंगे जिस तरह नंगी आंख से सूरज को देखने पर इसरार करने वाला सूरज को देखने से।

इस दुनिया में कामयाबी सिर्फ उस शख्स के लिए है जो खुदा के मंसूबे को माने और उसके मुताबिक अपनी जिंदगी को ढाल ले। क्योंकि दुनिया की तख्तीक करने वाला खुदा है न कि कोई इंसान।

كَذَلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لِيَتْلُوا عَلَيْهِمُ الذِّكْرَ ۖ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمُهمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَنِ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابٌ ۝ ۞

इसी तरह हमने तुम्हें भेजा है, एक उम्मत में जिससे पहले बहुत सी उम्मतें गुजर चुकी हैं, ताकि तुम लोगों को वह पैगाम सुना दो जो हमने तुम्हारी तरफ भेजा है। और वे महरबान खुदा का इंकार कर रहे हैं। कहो कि वही मेरा रब है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ लौटना है। (30)

जब यह दुनिया दारुल इम्तेहान है तो इसका फितरी तक्राजा यह है कि हिस्सी (महसूस) निशानियां दिखाने के बाद लोगों का फैसला कर दिया जाए। अब अगर लोगों के मुतालबे पर खुदा फौरन कोई हिस्सी निशानी जाहिर कर दे और इसके बाद भी लोग न मानें तो फौरन वे हलाकत के मुस्तहिक हो जाएंगे। मगर यह खुदाए रहमान व रहीम की ख़ास इनायत है कि वे लोगों के मुतालबे के बावजूद हिस्सी निशानियां जाहिर नहीं करता। बल्कि नसीहत और दलील की ज़बान में हक का पैगाम पहुंचाता रहता है। इस तरह लोगों को ज्यादा से ज्यादा मोहलत मिलती है कि वे अपनी इस्लाह (सुधार) करके खुदाई रहमतों के मुस्तहिक बन सकें। ऐसी हालत में दाओ को चाहिए कि वह लोगों के नादान मुतालबे की वजह से घबरा न जाए। वह खुदा के मंसूबे पर राजी रहते हुए लोगों को उसकी तरफ बुलाता रहे।

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُفِّرَتْ بِهِ الْمُؤْمِنُ لِلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا ۖ أَفَلَمْ يَأْتِ الْذِّكْرُ الْذِّكْرُ أَنْ لَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَهْدَى النَّاسَ جَمِيعًا وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُم بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا

مِنْ دَارِهِمْ حَتَّى يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۖ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْنَاهُمْ فَمَا كُنَّا عَنْ عِقَابٍ ۖ

और अगर ऐसा कुरआन उतरता जिससे पहाड़ चलने लगते, या उससे जमीन टुकड़े हो जाती या उससे मुर्दे बोलने लगते बल्कि सारा इस्त्रियार अल्लाह ही के लिए है। क्या ईमान लाने वालों को इससे इत्मीनान नहीं कि अगर अल्लाह चाहता तो सारे लोगों को हिदायत दे देता। और इंकार करने वालों पर कोई न कोई आफत आती रहती है, उनके आमाल के सबब से, या उनकी बस्ती के करीब कहीं नाजिल होती रहेगी, यहां तक कि अल्लाह का वादा आ जाए। यकीनन अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करता। और तुमसे पहले भी रसूलों का मजाक उड़ाया गया तो मैंने इंकार करने वालों को ढील दी, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। तो देखो कैसी थी मेरी सजा। (31-32)

हक को न मानने का अस्त सबब दलील की कमी नहीं बल्कि ईसान की यह आजादी है कि वह चाहे तो माने और चाहे तो न माने। जब तक ईसान को इंकार की आजादी हासिल है वह किसी भी चीज का इंकार करने के लिए उज्र (बहाना) तलाश कर सकता है।

उसके सामने अल्फ़ज में एक दलील लाई जाए तो वह कुछ दूसरे अल्फ़ज बोलकर उसे रद्द कर देगा। कायनात की निशानियों का हवाला दिया जाए तो वह उसकी तरदीद के लिए खुदसाख़्ता तौजीह तलाश कर लेगा। यहां तक कि अगर पहाड़ चलाए जाएं और जमीन फाड़ दी जाए और मुर्दों को जिंदा कर दिया जाए तब भी कोई चीज आदमी को यह कहने से रोक नहीं सकती कि यह तो जादू है।

कभी-कभी ऐसा होता है कि इंकार करने वाला बजाहिर दलील मांगता है। मगर हकीकतन वह मजाक उड़ा रहा होता है। वह यह जाहिर करना चाहता है कि यह शख्स जो चीज पेश कर रहा है वह हक नहीं। अगर वह फ़िलवाक़अ हक़ होता तो ज़रूर उसके पास ऐसी दलील होती कि सारे लोग उसे मानने पर मजबूर हो जाते।

खुदा ने लोगों को मोहलत दी है इसकी वजह से लोग बेख़ौफ़ हो गए हैं। मगर जब मोहलत ख़त्म होगी और खुदा लोगों को पकड़ेगा तो आदमी देखेगा कि वह किस कदर बेइस्त्रियार था, अगरचे वह फर्जी तौर पर अपने को खुदमुख़ार समझता रहा।

أَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۖ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلُوبًا ۖ سَمُّوهُمْ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ ۖ أَمْ يَبْظَاهِرُونَ الْقَوْلَ ۖ بَلْ زَيْنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَكْرَهُمْ وَصَدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ۖ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۖ لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ وَمَا لَهُمْ

مِّنَ اللَّهِ مِنْ وَاقٍ ۚ

फिर क्या जो हर शख्स से उसके अमल का हिसाब करने वाला है, और लोगों ने अल्लाह के शरीक बना लिए हैं। कहे कि उनका नाम लो। क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज की ख़बर दे रहे हो जिसे वह जमीन में नहीं जानता। या तुम ऊपर ही ऊपर बातें कर रहे हो बल्कि इंकार करने वालों को उनका फरेब खुशनुमा बना दिया गया है। और वे रास्ते से रोक दिए गए हैं। और अल्लाह जिसे गुमराह करे उसे कोई राह बताने वाला नहीं। उनके लिए दुनिया की ज़िंदगी में भी अज़ाब है और आख़िरत का अज़ाब तो बहुत सख़्त है। कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला नहीं। (33-34)

मुतालआ बताता है कि कायनात में रिकार्डिंग का निजाम है। आदमी जो कुछ बोलता है या जो कुछ करता है, वह कायनाती इतिजाम के तहत फ़ौरन रिकार्ड हो जाता है। ऐसी हालत में इस कायनात का खुदा किसी ऐसी हस्ती ही को माना जा सकता है जिसके अंदर 'सुनने' और 'देखने' की ताकत हो। मगर इंसानों ने अब तक जितने शरीक फर्ज किए हैं, सब के सब वे हैं जिनके अंदर न सुनने की ताकत है और न देखने की। ऐसी हालत में क्योंकि वे मौजूदा कायनात जैसी दुनिया के ख़ालिक व मालिक हो सकते हैं। जो खुद न सुने वह अपनी मख़बूकत में सुनने का माददा किस तरह पैदा करेगा जो खुद न देखे वह दूसरी चीजों को देखने के काबिल कैसे बनाएगा।

इसी तरह कायनात में इतनी ज्यादा वहदत (एकत्व) है कि वह किसी तरह शिर्क को कुबूल नहीं करती। जिस शरीक का भी नाम लिया जाए, कायनात पूरे वजूद के साथ उसे तस्लीम करने से इंकार कर देगी।

मुकिरीन के लिए उनका मक्र खुशनुमा बना दिया गया है। यहां मक्र से मुराद उनका 'कौल' है जिसका ज़िक्र इसी आयत में ऊपर मौजूद है। जब भी आदमी हक़ का इंकार करता है तो उसका ज़ेहन अपने इंकार को जाइज साबित करने के लिए कोई कौल गढ़ लेता है। यह कौल अगरचे बेक़ीकत अल्फ़ज के मज़मूअे के सिवा और कुछ नहीं होता। मगर जो लोग हक़ के मामले में ज्यादा संजीदा न हों वे कुछ न कुछ अल्फ़ज बोलकर समझ लेते हैं कि उन्होंने अपने इंकार व एराज (उपेक्षा) को हक़ बजानिब साबित कर दिया है। चाहे उनके बोले हुए अल्फ़ज उन्हें अपने ज़ेहन के बाहर कोई कीमत न रखते हों।

इस किस्म के झूठे अल्फ़ज किसी आदमी को सिर्फ मौजूदा दुनिया में सहारा दे सकते हैं। आख़िरत में जब हर चीज की हकीकत खुलेगी तो ये खुशनुमा अल्फ़ज इतने बेक़म हो जाएंगे कि आदमी उन्हें दोहराते हुए भी शर्म महसूस करेगा।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ كُلُّهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ۖ

और जन्नत की मिसाल जिसका मुत्तकियों (डर रखने वालों) से वादा किया गया है यह है कि उसके नीचे नहरें बहती होंगी। उसका फल और साया हमेशा रहेगा। यह अंजाम उन लोगों का है जो खुदा से डरें और मुँकियों का अंजाम आग है। (35)

जन्नत की कीमत तक्वा है। यानी अल्लाह की अज्मत का इतना शदीद एहसास जो डर बनकर आदमी के दिल में समा जाए। जो लोग दुनिया में खुदा से डरें वही वे लोग हैं जो आखिरत के उन घरों में बसाए जाएंगे जहां आदमी के लिए किसी किस्म का डर न होगा। जिसके चारों तरफ सरसब्ज बागात उनकी अज्मत व शान को दोबन्द कर रहे होंगे।

इसके बरअक्स हाल उन लोगों का है जो दुनिया में बेखौफ बनकर रहे। वे आखिरत में अपने आपको आग की दुनिया में पाएंगे।

وَالَّذِينَ اتَّيَهُمُ الْكِتَابُ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَخْزَابِ مَنْ يُنْكِرُ بَعْضَهُ قُلْ إِنَّمَا أَمْرُهُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ إِلَيْهِ أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَابِ ۖ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا وَاقٍ ۝

और जिन लोगों को हमने किताब दी थी वे उस चीज पर खुश हैं जो तुम पर उतारी गई है। और उन गिरोहों में ऐसे भी हैं जो उसके कुछ हिस्से का इंकार करते हैं। कहो कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूं और किसी को उसका शरीक न ठहराऊं। मैं उसी की तरफ बुलाता हूं और उसी की तरफ मेरा लौटना है और इसी तरह हमने उसे एक हुक्म की हैसियत से अरबी में उतारा है। और अगर तुम उनकी ख्वाहिशों की पैरवी करो बाद इसके कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है तो खुदा के मुकाबले में तुम्हारा न कोई मददगार होगा और न कोई बचाने वाला। (36-37)

कुरआन आया तो यहूद व नसारा में दो गिरोह हो गए। उनमें जो लोग अल्लाह से डरने वाले थे और हजरत मूसा और हजरत मसीह की सच्ची तालीमात पर कायम थे, उन्हें कुरआन को अपने दिल की आवाज समझा और खुश होकर उसे कुकूल कर लिया। मगर जो लोग अस्वियत (द्वेष) और गिरोहबंदी को दीन समझे हुए थे वे अपने मानूस (परिचित) दायरे से बाहर आने वाली सच्चाई को पहचान न सके और उसके मुखालिफ बनकर खड़े हो गए। अल्लाह से उनकी बेखौफी ने हक की दावत की मुखालिफत में भी उन्हें बेखौफ बना दिया।

जो शख्स अस्वियत और गिरोहबंदी की बिना पर सच्चाई का मुखालिफ बनता है वह दरअसल खुदा को छोड़कर अपनी ख्वाहिशात पर चलता है। ऐसे लोगों की रियायत से हक की दावत में कोई तब्दीली करना दाजी के लिए जाइज नहीं। दाजी के लिए लाजिम है कि वह अपने कौल और फेअल से बेलाग हक पर पूरी तरह जमा रहे। ऐसे लोगों के मुक़बले में

उसे इस्तकामत (दृढ़ता) का सबूत देना है न कि मुसालेहत का।

आदमी के सामने उसकी कबिलेफहम जवान में हक का इल्म आ जाए। इसके बावजूद वह ख्वाहिशात का पैरोकार बना रहे तो यह बेहद संगीन बात है। क्योंकि यह ऐसा फेअल (कृत्य) है जो आदमी को खुदा की मदद से यकसर महरूम कर देता है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۖ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ۝ يَحْكُمُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثَبِّتُ ۖ وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ۝

और हमने तुमसे पहले कितने रसूल भेजे और हमने उन्हें वीवियां और औलाद अता किया और किसी रसूल के लिए यह मुमकिन नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बग़ैर कोई निशानी ले आए। हर एक वादा लिखा हुआ है। अल्लाह जिसे चाहे मिटाता है और जिसे चाहे बाकी रखता है। और उसी के पास है अस्ल किताब। (38-39)

खुदा की तरफ से जितने पैगम्बर आए वे सब आम इंसानों की तरह एक इंसान थे और दुनियावी तअल्लुकात रखते थे। फिर क्या वजह है कि कौमों ने इसके बावजूद पिछले पैगम्बरों को माना और अपने समकालीन पैगम्बर का इसी सबब से इंकार कर दिया। इसकी वजह यह है कि पिछले पैगम्बरों के साथ अतिरिक्त एक चीज शामिल थी जो समकालीन पैगम्बर का हसिल न थी। यह अतिरिक्त चीज तारीख की अज्मत है। कौमों ने तारीखी अज्मत की बिना पर पिछले पैगम्बरों को माना और तारीखी अज्मत से खाली होने की बिना पर समकालीन पैगम्बर का इंकार कर दिया।

इंसान की यह कमजोरी है कि वह हकीकत को उसके मूल रूप में देख नहीं पाता। ज़िंदा पैगम्बर के साथ हकीकत मूल रूप में थी। इसलिए इंसान उसे पहचान न सका। तारीख के पैगम्बर के साथ इजाफी (अतिरिक्त) अहमियतें भी शामिल हो चुकी थीं इसलिए उसने उन्हें पहचान लिया और उनका मोअतफ़िद (आस्थावान) बन गया।

‘उम्मुल किताब’ से मुराद खुदा का वह अस्ल नविशता (मूल ग्रंथ) है जो खुदा के पास है और जिसमें हिदायत की वे तमाम उसूली बातें लिखी हुई हैं जो खुदा को इंसान से मल्तूब हैं। मुख्तलिफ पैगम्बरों पर जो किताबें उतरतीं वे सब इसी उम्मुल किताब से ली गई थीं। खुदा ने अपनी यह किताब कभी एक जवान में उतारी और कभी दूसरी जवान में। कभी उसके लिए तमसील का पेराया इख़्तियार किया गया और कभी उसे बराहेरास्त पेराया में बयान किया गया। कभी नाजिल होने के बाद उसकी हिफ़जत की जिम्मेदारी इंसानों पर डाली गई और कभी उसकी हिफ़जत की जिम्मेदारी खुद खुदा ने ले ली।

وَإِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ تَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنبَاءُ عَلَيْكَ الْبَلَاءُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۝ أَوْ لَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۖ

وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهِ ۖ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۚ وَقَدْ نَكَّرَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ فِذْلَ الْمَكْرُجِينَ ۚ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۚ وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرُ
لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ ۚ

और जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा दें या हम तुम्हें
वफात दे दें, पस तुम्हारे ऊपर सिर्फ पहुंचा देना है और हमारे ऊपर है हिसाब लेना। क्या
वे देखते नहीं कि हम जमीन की तरफ उसे उसके अतराफ (चतुर्विध) से कम करते चले
आ रहे हैं। और अल्लाह फैसला करता है, कोई उसके फैसले को हटाने वाला नहीं और
वह जल्द हिसाब लेने वाला है। जो उनसे पहले थे उन्होंने भी तदवीरों की मगर तमाम
तदवीरों अल्लाह के इख्तियार में हैं। वह जानता है कि हर एक क्या कर रहा है और
मुकिरीन जल्द जान लेंगे कि आखिरत का घर किस के लिए है। (40-42)

खुदा के दीन को इख्तियार न करने का अंजाम आम तौर पर आखिरत में सामने आता
है। मगर पैगम्बर के मुखातबीन अगर पैगम्बर की दावत का इंकार कर दें तो इसका बुरा
अंजाम उनके लिए मौजूदा दुनिया ही से शुरू हो जाता है।

ताहम इस दुनियावी अंजाम का कोई एक उसूल नहीं। यह मुखलिफ पैगम्बरों के जमाने
में मुखलिफ सूरतों में जाहिर होता रहा है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के
लिए मखसूस मुसालेह की बिना पर खुदा का यह फैसला इस शकल में जाहिर हुआ कि पैगम्बर
के पैरोकारों को पैगम्बर के मुकिरीन पर गालिब कर दिया गया।

मक्की दौर के आखिरी जमाने में जबकि मक्का के सरदारों ने आपका इंकार कर दिया
था, ऐन उसी वक्त यह हो रहा था कि इस्लाम की दावत धीरे-धीरे मदीना में और मक्का के
बाहरी कबाइल में फैल रही थी। गोया इस्लाम की दावती कुव्वत मक्का के अतराफ (चतुर्विध)
को फतह करती हुई मक्का की तरफ बढ़ रही थी। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) के लिए खुदा की
सुन्नत दावती फतहों की सूत में जाहिर हुई।

यहां दावती तदवीर को खुदाई तदवीर कहा गया है। इससे इसकी अहमियत का अंदाजा
होता है। कुरैश ने जब मक्का से आपको निकाला तो उन्होंने यह समझा था कि उन्होंने आपका
खात्मा कर दिया। उस वक्त आप एक ऐसे शख्स थे जिसकी मआशियात (आर्थिक संसाधन)
बर्बाद हो चुकी थीं। जिसे खुद अपने कबीले की हिमायत से महरूम कर दिया गया था।

कुरैश यह सब करके अपने तौर पर खुश थे। वे समझते थे कि उन्होंने पैगम्बर के
‘मसले’ को हमेशा के लिए दफन कर दिया है। मगर वे उस राज को समझ न सके कि दाजी
का सबसे बड़ा हथियार दावत (आह्वान) है और यह वह चीज है जिसे कोई शख्स कभी दाजी
से छीन नहीं सकता। दाजी की दूसरी महरूमियां उसके दाजियाना जोर को और बढ़ा देती हैं,
वह किसी तरह उसे कम नहीं करतीं। चुनावें ऐन उस वक्त जबकि कुरैश अपने ख्याल के
मुताबिक पैगम्बर से उसका सब कुछ छीन चुके थे, उसकी दावत चारों तरफ अरब के कबाइल

में फैल रही थी। लोगों के दिल उससे मुखखर (विजित) होते जा रहे थे। यह अमल खामोशी
के साथ मुसलसल जारी था। और फतह मक्का गोया इसी का इतिहाई नुक्ता था। मक्का
वालों ने जिन लोगों को ‘दस सौ’ समझ कर घर से बेघर किया था वे सिर्फ चन्द साल में ‘दस
हजार’ बनकर दुबारा मक्का में इस तरह वापस आए कि मक्का वालों को यह हिम्मत भी न
थी कि उन्हें मक्का में दाखिल होने से रोकने की कोशिश करें।

हक की दावत से जिन लोगों के मफ़दात (स्वाधीन) पर ज़द पड़ती है वे उसे ज़ेद करने
के लिए उसके खिलाफ तदवीरों करते हैं। मगर तमाम तदवीरों का सिरा खुदा के हाथ में है।
वह हर एक के ऊपर पूरा इख्तियार रखता है। खुदा की इस बरतार हैसियत का इब्तिदाई जुहर
इसी मौजूदा दुनिया में हो रहा है। इसका कामिल और इतिहाई जुहर आखिरत में होगा जबकि
अंधे भी उसे देख लें और बहरे भी उसे सुनने लेंगे।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسَتْ مُرْسَلًا ۖ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۚ
وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ ۚ

और मुकिरीन कहते हैं कि तुम खुदा के भेजे हुए नहीं हो, कहो कि मेरे और तुम्हारे
दर्मियान अल्लाह की गवाही काफी है। और उसकी गवाही जिसके पास किताब का
इल्म है। (43)

जाहिरपरस्त लोग जिस वक्त हक के दाजी में निशानियां न पाकर उसकी सदावत के
बारे में शुबह कर रहे होते हैं, ऐन उसी वक्त मअनवी (अर्थपूर्ण) निशानियां पूरी तरह उसकी
तस्दीक (पुष्टि) के लिए मौजूद होती हैं। सच्चाई अपनी दलील आप है। मगर उसे महसूस
करना सिर्फ उस शख्स के लिए मुमकिन है जो जवाहिर से गुजर कर हक़िक को देखने की
निगाह अपने अंदर पैदा कर चुका हो। वर्ना जिन लोगों की निगाहें जवाहिर में अटकी हुई हों
वे हक को बेदलील समझ कर उसका इंकार कर देंगे। हालांकि ऐन उसी वक्त दलाइल का
अंबार उसकी तस्दीक के लिए उनके करीब मौजूद होगा।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ إِنَّكَ أَكْبَرُ ۚ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَتَجَاوَزَ بِسْمِهِ نَزَلَ
الرَّسُولُ إِلَيْكَ لِيُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ بِإِذْنِ
رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۚ اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۚ وَوَيْلٌ لِّلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۚ ۝ وَالَّذِينَ يَسْتَحِبُّونَ الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۚ أُولَٰئِكَ فِي
ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ़ लाम र ०। यह किताब है जिसे हमने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया है ताकि तुम लोगों को अंधेरों से निकाल कर उजाले की तरफ़ लाओ, उनके रब के हुक्म से खुदाए अजीज (प्रभुवशाली) व हमीद (प्रशंसित) के रास्ते की तरफ़, उस अल्लाह की तरफ़ कि आसमानों और जमीन में जो कुछ है सब उसी का है और मुंकिरों के लिए एक सज़ा अजाब की तवाही है जो कि आख़िरत के मुकाबले में दुनिया की ज़िंदगी को पसंद करते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें कज़ी (टेढ़) निकालना चाहते हैं। ये लोग रास्ते से भटक कर दूर जा पड़े हैं। (1-3)

ईमान यह है कि आदमी खुदा को एक ऐसी हस्ती की हैसियत से पा ले जो सारी ताकतों का मालिक है और सारी ख़ुबियों वाला भी है। ऐसा वाक्या किसी आदमी के लिए महज एक रस्मी अकीदा (आस्था) नहीं होता। यह किसी आदमी का बेइल्मी की तारीकी से निकल कर इल्म की रोशनी में आना है। यह ग़ैब (अप्रकट) के पर्दे से गुजर कर शुहूद (साक्षात्) के जलवे को देख लेना है। यह दुनिया में रहते हुए आख़िरत का इदराक (भाव) कर लेना है। ईमान अपनी हक्कीकत के एतबार से एक शुज़री याफ़्त है न कि किसी मज़मूए अल्फ़ज़ की बेरूह तकरार। खुदा की किताब इसलिए आती है कि आदमी को इस शुज़री दर्जे पर पहुंचा दे।

अल्लाह के इज़्ज से हिदायत मिलना, बजाहिर हिदायत के मामले को अल्लाह की तरफ़ मंसूब करना है। मगर इस इशार्द का रुख़ हक्कीकतन खुद इंसान की तरफ़ है। 'इज़्ज' से मुग़ाद खुदा का वह मुकर्रर कानून है जो उसने इंसान की हिदायत व गुमराही के लिए मुकर्रर किया है। इस कानून के मुताबिक़ आदमी की अपनी संजीदा तलब वाहिद शर्त है जो उसे हिदायत तक पहुंचाती है। इस दुनिया में जिस शख्स को हिदायत मिलती है वह महज किसी दाजी की दाअियाना कोशिशों से नहीं मिलती बल्कि खुदा के कानून के तहत मिलती है। और खुदा का कानून यह है कि हिदायत की नेमत को सिर्फ़ वह शख्स पाएगा जो खुद हिदायत का तालिब हो। जाती तलब के बग़ैर किसी को हिदायत नहीं मिल सकती।

हिदायत के रास्ते को खुदा ने इतिहाई हद तक साफ़ और रोशन बनाया है। जमीन व आसमान में उसकी निशानियां फैली हुई हैं। खुदा की किताब उसके हक़ में नाकाबिले इंकार दलाइल (तर्क) फ़राहम करती है। इंसानी फ़ितरत उसकी सदाक़त की गवाही दे रही है। गोया तमाम बेहतरीन क़राइन (संकेत) उसके हक़ में जमा हैं। ऐसी हालत में जो लोग हिदायत के रास्ते को इख़्तियार न करें वे यकीनी तौर पर दुनियावी मफ़ाद की बिना पर ऐसा कर रहे हैं न कि किसी वाकई सबब की बिना पर। अगरचे ऐसे लोग अपनी रविश को दुरुस्त साबित करने के लिए कुछ 'दलाइल' भी पेश करते हैं मगर ये दलाइल सिर्फ़ सीधी बात में टेढ़ निकालने का नतीजा होते हैं। वे सिर्फ़ इसलिए होते हैं कि लोगों की नज़र में अपने न मानने का जवाज़ (अवित्य) फ़राहम करें।

ऐसी हालत में हिदायत से महरूम सिर्फ़ वही शख्स रह सकता है जिसकी मफ़ादपरस्ती (स्वार्थता) और दुनियावी रग़बत ने उसे बिल्कुल अंधा बहरा बना दिया हो।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانٍ قَوِيٍّ لِّبَيِّنٍ لَهُمْ قِيَضَ اللَّهُ مِنْ يَشَاءُ وَيُخَدِّى مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

और हमने जो पैग़म्बर भी भेजा उसकी कौम की जवान में भेजा ताकि वह उनसे बयान कर दे फिर अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है। वह जबरदस्त है, हिक़मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (4)

खुदा का तरीका यह है कि वह पैग़म्बरों को खुद मदद (संबोधित) कौम के अंदर से उठाता है। ताकि वह लोगों की नफ़िसयात की रियायत करते हुए, उनकी अपनी क़बिलेफ़हम जवान में उन्हें हक़ की तरफ़ बुलाए। मगर अजीब बात है कि जो चीज़ इंसान की बेह्तरी के लिए की गई थी उससे उसने उल्टा नतीजा निकाल लिया। उसने जब देखा कि पैग़म्बर उन्हीं की तरह का एक आदमी है और उनकी अपनी मानूस जवान में कलाम कर रहा है तो उन्होंने पैग़म्बर को मामूली समझ कर उसका इंकार कर दिया। जो चीज़ उनकी हिदायत को आसान बनाने के लिए की गई थी उसे उन्होंने अपनी गुमराही का ज़रिया बना दिया।

खुदा ऐसा नहीं करता कि वह लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करने के लिए शोअबदे (करिश्मे) दिखाए। वह किसी कौम के पास ऐसा पैग़म्बर भेजे जो अनोखी जवान या तिलिस्माती उस्लूब (जादुई शैली) में कलाम करके लोगों को अचंभे में डाल दे। खुदा लोगों की अजाइबपसंदी की ख़ातिर करिश्मे दिखाने के अंदाज़ इख़्तियार नहीं करता। खुदा का तरीका सादगी और हक्कीकतपसंदी का तरीका है। खुदा ने अपनी दुनिया को हक्क़ (यथार्थ) की बुनियाद पर क़ायम किया है। और इंसान की हिदायत की स्कीम को भी वह हक्क़ की बुनियाद पर चलाता है न कि तिलिस्मात की बुनियाद पर।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَذَكِّرْهُمْ بِآيَاتِنَا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَلِكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ②

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी कौम को अंधेरों से निकाल कर उजाले में लाओ और उन्हें अल्लाह के दिनों की याद दिलाओ। बेशक उनके अंदर बड़ी निशानियां हैं हर उस शख्स के लिए जो सब्र और शुक्र करने वाला हो। (5)

'अल्लाह की आयात' से मुराद कायनात की वे निशानियां हैं जो खुदा की बात को बरहक साबित करती हैं। 'अल्लाह के दिन' से मुराद तारीख़ के वे यादगार वाक़ेयात हैं जबकि खुदा का फैसला जाहिर हुआ और खुदा की खुसूसी मदद से हक़ (सत्य) ने वातिल (असत्य) के ऊपर फ़तह पाई। एक अगर कायनाती दलील है तो दूसरी तारीख़ी (ऐतिहासिक) दलील।

मगर अजीब बात है कि यही दोनों चीज़ें हमारी दुनिया में सबसे ज्यादा ग़ैर मौजूद नज़र

आती हैं। अल्लाह की आयात को गलत तशरीह व ताबीर (व्याख्या, भाष्य) के पर्दे में छुपा दिया गया है और अल्लाह के दिनों का यह हाल है कि तारीखनिगारी का काम जिन लोगों के हाथ में था उन्होंने इंसानों के दिन तो खूब कलमबंद किए मगर अल्लाह के दिन उनकी किताबों में भ्रमबू रह गए।

ऐसी हालत में किसी खुदा के बंदे के लिए बातिल के अंधेरे से निकलने की सूरत सिर्फ यह है कि वह सब और शुक्र का सुबूत दे।

हक के एतराफ की वाहिद कीमत अपनी बेतराफी है। हक को पाने के लिए अपने आपको खोना पड़ता है। और यह चीज सब के बगैर किसी को हासिल नहीं होती। फिर हक का इदराक आदमी को यह बताता है कि इस कायनात में जो तकसीम है वह मुन्डम (इनाम करने वाला) और मुन्अम अलैह (इनाम पाने वाला) की है। खुदा देने वाला है और इंसान पाने वाला। इस हकीकते वाक्या की दरयाफ्त के बाद आदमी के अंदर जो सही जब्बा पैदा होता चाहिए उसी का नाम शुक्र है। गोया हकीकत तक पहुंचने के लिए आदमी को सब्र का सुबूत देना पड़ता है। और हकीकत को अपने अंदर उतारने के लिए शुक्र का।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنجَاكُمْ مِنْ أَيْدِيهِمْ
فَرَعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيُذْخِبُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ
وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ۚ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ
لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۝ وَقَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تَكْفُرًا
أَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि अपने ऊपर अल्लाह के उस इनाम को याद करो जबकि उसने तुम्हें फ़िरऔन की कौम से छुड़या जो तुम्हें सज़ा तकलीफें पहुंचाते थे और वे तुम्हारे लड़कों को मार डालते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िंदा रखते थे और इसमें तुम्हारे रब की तरफ से बड़ा इस्तेहान था। और जब तुम्हारे रब ने तुम्हें आगाह कर दिया कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें ज्यादा दूंगा। और अगर तुम नाशुक्री करोगे तो मेरा अजाब बड़ा सख्त है। और मूसा ने कहा कि अगर तुम इंकार करो और जमीन के सारे लोग भी मुंकिर हो जाएं तो अल्लाह बेपरवा है, ख़ुबियों वाला है। (6-8)

इन आयात में हजरत मूसा की जिस तकरीर का हवाला है वह ग़ालिबन आपकी वह तकरीर है जो आपने अपनी वफ़ात से कुछ दिनों पहले सहराए सीना में बनी इम्राईल के सामने फरमाई थी। यह तकरीर मौजूदा बाइबल (किताब इस्तिस्ना) में तपसील के साथ मौजूद है।

हजरत मूसा की इस मुफ़स्सल तकरीर का ख़ुलासा यह है कि अगर तुम दुनिया में खुदा

वाले बनकर रहो और खुदा की बातों का चर्चा करो तो दुनिया की तमाम चीजें तुम्हारा साथ देंगी। सब कौमों के दर्मियान तुम्हारा रौब कायम होगा। खुदा तुम्हारे दुश्मनों को जेर करेगा। यहां तक कि अगर कभी दरिया तुम्हारे रास्ते में हायल हो तो खुदा हुकम देगा और दरिया फटकर तुम्हें रास्ता दे देगा, जबकि उसी दरिया में तुम्हारे दुश्मन गर्क हो जाएंगे।

इसके बरअक्स अगर तुम ऐसा न करो तो तुम खुदा की नजर में लानती ठहरोगे, यानी तुम खुदा की रहमतों से दूर हो जाओगे। तुम्हारी महनत की पैदावार दूसरे लोग खाएंगे। तुम्हारे हर काम बिगड़ते चले जाएंगे तुम फिक्की और अमली एतबार से दूसरी कौमों के ज़ेदस्त हो जाओगे।

खुदा का यह कानून मारुफ मअनों में 'यहूद' के लिए नहीं है बल्कि हामिले किताब (ग्रंथ धारक) कौम के लिए है। जो कौम भी हामिले किताब हो, उसके साथ खुदा का यही मामला है चाहे वे माजी (अतीत) के हामिलीने किताब हों या हाल के हामिलीने किताब।

أَلَمْ يَأْنِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمٌ نُوحُوا وَعَادُوا وَشُعُوبُهُمْ
بَعْدَهُمْ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ
فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا إِمَّا أُرْسِلْتُمْ بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَا
إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝

क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं कौमे नूह और आद और समूद और जो लोग इनके बाद हुए हैं, जिन्हें खुदा के सिवा कोई नहीं जानता। उनके पैग़म्बर उनके पास दलाइल (स्पष्ट प्रमाण) लेकर आए तो उन्होंने अपने हाथ उनके मुंह में दे दिए और कहा कि जो तुम्हें देकर भेजा गया है, हम उसे नहीं मानते और जिस चीज की तरफ तुम हमें बुलाते हो हम उसके बारे में सख्त उलझन वाले शक में पड़े हुए हैं। (9)

खुदा के जितने रसूल मुख़ालिफ कौमों में आए सबके साथ एक ही किस्सा पेश आया। हर कौम ने अपने पैग़म्बरों की मुख़ालिफ़त की। हर जगह उनका मुंह बंद करने की कोशिश की गई।

इसकी वजह क्या थी। इसकी वजह उनका 'शक' था। यह शक इसलिए था कि उनके सामने एक तरफ उनका आबाई (पैतृक) दीन था जिसकी पुश्त पर अकाबिर और अआजिम (महापुरुषों) के नाम थे। दूसरी तरफ पैग़म्बर का दीन था जो बजाहिर एक मामूली इंसान के ज़रिए पेश किया जा रहा था। दलाइल का जोर पैग़म्बर के दीन के साथ नजर आता था मगर तारीख़ी अज्मत और अवामी भीड़ आबाई दीन के साथ दिखाई देती थी। पैग़म्बर के मुखातबीन का यह हाल हुआ कि वे दलाइल को रद्द करने की कुव्वत अपने अंदर न पाते थे। और यह भी उनकी समझ में नहीं आता था कि अआजिम और अकाबिर को किस तरह ग़लत समझ लें। इस दोतरफा सूरतेहाल ने उन्हें शक में मुक्बिला कर दिया। अमलन अगरचे वे आबाई दीन के साथ वाबस्ता रहे मगर अपने कल्ब (दिल) व दिमाग को शक से आजाद

भी न कर सके।

قَالَتْ رُسُلُهُمْ إِنِّي إلهٌ شَكَّ فَاطِرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَدْعُوكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ
مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُخْرِجَكُمْ إِلَى أَجَلٍ مُّسَمًّى قَالُوا إِنَّكُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا
وَلَا تُزِيدُونَ أَنْ تَصُدُّوَنَا عَمَّا كَانُوا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا قَالُوا إِنَّا بِأُفْلَحِينَ ۝

उनके पैगम्बरों ने कहा, क्या खुदा के बारे में शक है जो आसमानों और जमीन को
वजूद में लाने वाला है। वह तुम्हें बुला रहा है कि तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और
तुम्हें एक मुक़रर मुद्दत तक मोहलत दे। उन्होंने कहा कि तुम इसके सिवा कुछ नहीं
कि हमारे जैसे एक आदमी हो। तुम चाहते हो कि हमें उन चीजों की इबादत से
रोक दो जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे। तुम हमारे सामने कोई खुली
सनद ले आओ। (10)

इस आयत का तअल्लुक अस्लन कदीम (प्राचीन) कैमों से है। मगर कुरआन की एक
खुसूसियत यह है कि इसमें खुदा की अबदी तालीमात को तारीख के सांचे में ढाल कर पेश
किया गया है। इसलिए कुरआन में ऐसे अल्फ़ाज इस्तेमाल किए जाते हैं जिनमें मुखातबे
अव्वल की रिआयत के साथ बाद के इंसानों की रिआयत भी पूरी तरह शामिल हो।

इस आयत में 'फ़तिर' का लफ़्ज़ इसी की एक मिसाल है। फ़तिर के लफ़्ज़ मअना है
'फ़ाँड़े वाला'। उम्मी मफ़हूम के लिहाज से फ़तिर का लफ़्ज़ यहां ख़लिक के मअना में
इस्तेमाल हुआ है। मगर इसका ख़ालिस लफ़्ज़ी तर्जुमा किया जाए तो वह होगा 'क्या तुम्हें
खुदा के बारे में शक है जो जमीन व आसमान का फ़ाँड़ने वाला है।'

लफ़्ज़ी तर्जुमे के एतबार से यह आयत मौजूदा जमाने में खुदा के मुक़िरीन के लिए खुदा
के वजूद को साबित कर रही है। जदीद तहक्कीकत (आधुनिक खोजें) बताती हैं कि जमीन व
आसमान का माद्दा इब्तिदा में एक सालिम गोले की सूरत में था। जिसे सुपर एटम कहा जाता
है। मालूम कवानीने फ़ितरत के मुताबिक इसके तमाम अज्जा इतिहाई शिद्दत के साथ अंदर की
तरफ जुड़े हुए थे। मौजूदा वसीअ कायनात इसी सुपर एटम में इफ़िजार (महाविस्फोट) से वजूद
में आई। इस आयत में फ़तिर (फ़ाँड़े वाला) का लफ़्ज़ इसी कायनाती वाक्ये की तरफ इशारा
कर रहा है जो एक ख़लिक के वजूद का कतई सुबूत है। क्योंकि सुपर एटम के अज्जा जो
मुकम्मल तौर पर अंदर की तरफ खिंचे हुए थे। उन्हें बाहरी सप्त में मुहर्हरिक करना अपने आप
नहीं हो सकता। लाजिम है कि इसके लिए किसी ख़ारजी मुदाख़लत (वाह्य हस्तक्षेप) को माना
जाए। इसी मुदाख़लत करने वाली ताकत का दूसरा नाम खुदा है।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنَّا نَحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَمُنُّ عَلَى
مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ

وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝ وَمَا لَنَا أَلَّا تَتَوَكَّلَ عَلَى اللَّهِ وَقَدْ
هَدَيْنَا سَبِيلَنَا وَلَنْصُدِرَ عَلَى مَا أَدْبَرْتُمُونَا ۖ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُونَ ۝

उनके रसूलों ने उनसे कहा, हम इसके सिवा कुछ नहीं कि तुम्हारे ही जैसे इंसान हैं मगर
अल्लाह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है अपना इनाम फरमाता है और यह हमारे
इख़्तियार में नहीं कि हम तुम्हें कोई मोज़िजा (चमत्कार) दिखाएं बग़ैर खुदा के हुक्म के।
और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। और हम क्यों न अल्लाह
पर भरोसा करें जबकि उसने हमें हमारे रास्ते बताए। और जो तकलीफ तुम हमें दोगे
हम उस पर सब्र करेंगे। और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना
चाहिए। (11-12)

पैगम्बरों के मुखातबीन ने जब अपने समकालीन पैगम्बरों को यह कहकर रद्द किया कि
'तुम तो हमारे जैसे एक बशर हो' तो इसकी वजह हकीकतन यह नहीं थी कि वे पैगम्बरी के
लिए ग़ैर बशर होने को जरूरी समझते थे। इसकी वजह दरअसल वह फर्क था जो उनके अपने
तसख़ुर के मुताबिक उन्हें पिछले पैगम्बर और समकालीन पैगम्बर में नजर आता था।

गुज़रा हुआ पैगम्बर भी अगरचे अपने वक्त में कैसा ही था जैसा कि समकालीन पैगम्बर।
मगर बाद के दौर में गुज़रे हुए पैगम्बरों के पैरोकारों ने उनके गिर्द तिलिस्माती किस्सों का
हाला बना दिया। बाद के दौर में पैगम्बरों की शख़्सियतों को ऐसा अफ़सानवी रंग दे दिया
गया जो इब्तिदा में उनके यहां मौजूद न था। अब कौमों के सामने एक तरफ फ़र्जी शौअबदों
करिश्मों वाला पैगम्बर था, दूसरी तरफ हकीकी वाक़ेयात वाला पैगम्बर। इस तक्कुल में
पिछला पैगम्बर पैगम्बरी के लिए मेयारी नमूना बन गया। और जब कौमों ने इस मेयार के
एतबार से देखो तो वक्त का हकीमी पैगम्बर उन्हें माज़ी (अतीत) के अफ़सानवी पैगम्बर से
कम नजर आया। चुनांचे उन्हें उसे हकीम (तुच्छ) समझ कर नज़अंज़ा कर दिया।

पैगम्बरों ने अपने मुखातबीन से कहा कि तुम्हारी इन बातों के जवाब में हमारे पास सब्र
के सिवा और कुछ नहीं है। तुम ग़ैर बशरियत (अ-मानव) की सतह पर हिदायत के तालिब
हो। और खुदा ने हमें सिर्फ बशरियत की सतह पर हिदायत देने की ताकत अता की है। ऐसी
हालत में हम इसके सिवा और क्या कर सकते हैं कि तुम्हारी ईजाओं (यातनाओं) को बर्दाश्त
करें और इस सारे मामले को खुदा के हवाले कर दें।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِنْ أَخْضَانِ أَنْتُمْ بَشَرٌ لِّتُؤْذِنُوا فِي
مِلَّتِنَا ۚ فَأَوْحَى إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظَّالِمِينَ ۖ وَلَنُسَكِّنَنَّكُمْ
الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ذَلِكُمْ لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعِيدِ ۝

और इंकार करने वालों ने अपने पैगम्बरों से कहा कि या तो हम तुम्हें अपनी जमीन से निकाल देंगे या तुम्हें तुम्हारी मिल्लत में वापस आना होगा। तो पैगम्बरों के रब ने उन पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी कि हम इन जालिमों को हलाक कर देंगे। और उनके बाद तुम्हें जमीन पर बसाएंगे। यह उस शख्स के लिए है जो मेरे सामने खड़ा होने से डरे और जो मेरी वईद (चेतावनी) से डरे। (13-14)

पैगम्बरों की दावत से उनकी कौमों के दीन पर ज़द पड़ती थी। वे लोग अपने जिन अफ़राद को कौम के अकाबिर (बड़ों) का दर्जा दिए हुए थे, पैगम्बरों के तज़ज़िए (विश्लेषण) में वे छोटे करार पा रहे थे। इस बिना पर वे पैगम्बरों से बिगड़ गए। वे दलाइल से तो उन्हें रद्द नहीं कर सकते थे। अलबत्ता वक्त के निजाम में उन्हें हर किस्म का इख़्तियार हासिल था। चुनांचे उनकी मुतकब्बिराना नफ़िसयात (घमंड-भाव) ने उन्हें समझाया कि पैगम्बर को बेवर और बेजमीन कर दिया जाए। जिस चीज़ का तोड़ उनके पास दलील की जवान में न था, उसका तोड़ उन्होंने ताक़त के ज़रिए करने का फैसला किया।

जो जमीन आदमी के पास है, वह उसके पास बतौर इस्तेहान है न कि बतौर हक। अगर आदमी यह समझे कि यह खुदा की चीज़ है जिसे उसने इस्तेहान की गरज से उसकी तहवील (कब्जे) में दिया है तो इससे आदमी के अंदर तवाजोअ की नफ़िसयात पैदा होगी। वह डरेगा कि जिस खुदा ने दिया है वह उसे दुबारा उससे छीन न ले। मगर शाफ़िल लोग इसे अपना जाती हक समझ लेते हैं। उनका यही एहसास उन्हें जालिम और मुतकब्बिर (घमंडी) बना देता है। पैगम्बर की दावत जब तकमील के मरहले में पहुंचती है तो यह मुखातब कौम के लिए इस्तेहान की मोहलत ख़त्म होने के हममअना होती है। इसके बाद वे लोग दुनिया को अपने लिए बिल्कुल बदला हुआ पाते हैं। जिन चीज़ों को वे अपनी चीज़ समझ कर मुतकब्बिराना मंसूबे बना रहे थे वे चीज़ें अचानक उनका साथ छोड़ देती हैं। यहां तक कि वह वक्त आता है जबकि जमीन उनसे छीन कर दूसरे लोगों को दे दी जाए जो इनके मुक़ाबले में उसका ज़्यादा इस्तहक़क (पात्रता) रखते हों।

وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۖ مِّنْ وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِنْ مَّاءٍ صَدِيدٍ ۖ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۚ وَمِن وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۖ

और उन्होंने फैसला चाहा और हर सरकश, जिद्दी नामुराद हुआ। उसके आगे दोज़ख़ है और उसे पीप का पानी पीने को मिलेगा वह उसे घूंट-घूंट पिएगा और उसे हलक से मुश्किल से उतार सकेगा। मौत हर तरफ से उस पर छाई हुई होगी। मगर वह किसी तरह नहीं मरेगा और उसके आगे सज़ा अजाब होगा। (15-17)

खुदा के नजदीक किसी आदमी का सबसे बड़ा ज़ुर्म यह है कि उसे खुदा की तरफ बुलाया

जाए और वह जब्बार और अनीद (दंभी) बनकर उसका जवाब दे। ऐसे लोगों के लिए दुनिया में जिल्लत है और आख़िरत में ऐसा शदीद अजाब कि वे हर वक्त अपने आपको मौत और हलाकत के किनारे पाएंगे।

जब आदमी किसी के खिलाफ जुल्म और सरकशी का रवैया इख़्तियार करता है तो वह किसी बरते पर ऐसा करता है। ये मुख़ालिफीन अपने आपको 'अकाबिर' (बड़े) के दीन पर समझते थे। इसके मुक़ाबले में पैगम्बर और उसके साथी उन्हें 'असागिर' (छोटे) दिखाई देते थे। उनकी यही नफ़िसयात थी जिसने उन्हें आमादा किया कि वे पैगम्बर और उसके साथियों के ऊपर हर किस्म के जुल्म को अपने लिए जाइज समझ लें। अपने को 'अकाबिर' से मंसूब करने ही की वजह से वे 'असागिर' के खिलाफ हर किस्म की कारवाइयों के लिए दिलेर हो गए।

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ لَا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الصَّلٰٓءُ الْبَعِيدُ ۚ ۝۱۸ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ يَٰسٰٓأِذُنْ هَبْكُم ۖ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۚ ۝۱۹ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَىٰ اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۚ

जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया उनके आमाद उस राख की तरह हैं जिसे एक तूफ़ानी दिन की आंधी ने उड़ा दिया हो। वे अपने किए में से कुछ भी न पा सकेंगे। यही दूर की गुमराही है। क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमानों और जमीन को बिल्कुल ठीक-ठीक पैदा किया है। अगर वह चाहे तो तुम लोगों को ले जाए और एक नई मख़्लूक ले आए। और यह खुदा पर कुछ दुश्वार भी नहीं। (18-20)

अरब के जिन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंकार किया वे सब खुदा और मजहब को मानने वाले लोग थे। फिर क्यों वे आपके मुक़िर बन गए। इसकी वजह यह थी कि आपकी सतह पर हक अपनी मुजरद (साक्षात) सूरत में जाहिर हुआ था। जबकि वे लोग सिर्फ उस चीज़ को हक समझते थे जो उनके कैमी बुजुर्गों के ज़रिए उन्हें मिला हो। उन्होंने अपने मुसल्लम कौमी बुजुर्गों के दीन को पहचाना, मगर वे 'मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह' के दीन को पहचानने में नाकाम रहे।

जो लोग कौमी रिवायात के ज़ेअसर दीन को पाएं उनके यहां भी दीनी मजाहिर मौजूद होते हैं। बल्कि अक्सर उनके यहां दीन की धूम पाई जाती है। ताहम यह सब कुछ महज जाहिरी दीनदारी होती है, दीन की अस्त हकीकत से इसका कोई तअल्लुक नहीं होता। मगर खुदा को जो चीज़ मलूब है वह हकीकी दीनदारी है न कि जाहिरी हंगामे।

खुदा को वह इंसान मलूब है जिसने जाती शुऊर की सतह पर हक को पाया हो। जिसने आलमे ग़ैब में खुदा का मुशाहिदा किया हो। जिसने हक को उसकी मुजरद सूरत में पहचाना

हो और उसका साथ दिया हो। जिसकी रूह खुदा के समुद्र में नहाई हो। जो खुदा की मुहब्बत में तड़पा हो और खुदा के खौफ से जिसकी आंखों ने आंसू बहाए हों।

पहली किस्म के लोगों की दीनदारी ऊपरी दीनदारी है। कियामत की आंधी उसे इसी तरह उड़ा ले जाएगी जिस तरह सतह जमीन की खस व खाशाक (धूल-मिट्टी) तेज हवा में उड़ जाती है। इसके बरअक्स दूसरी किस्म के लोगों का दीन हकीकी दीन है। वह इंसानी वजूद की आखिरी गहराई तक पेवस्त होता है। ऐसे वजूद के लिए आंधी सिर्फ इसलिए आती है कि वह उसकी मजबूती को साबित करे न कि उसे उखाड़ ले जाए।

कायनात का मुतालआ बताता है कि उसकी तख्लीक हक्काइक पर हुई है। ऐसी कायनात में सिर्फ हकीकी अमल की किस्म देखी जाती है न कि मफरूज (कल्पनाओं) और खुशगुमानियों की।

وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا
فَقُلْ أَنْتُمْ مُعْتَنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ قَالُوا لَوْ هَدَّ اللَّهُ
لَهْدْيَكُمْ سُوءًا عَلَيْنَا لَاصْبِرْنَا أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ نَحِيصٍ ۝

और खुदा के सामने सब पेश होंगे। फिर कमजोर लोग उन लोगों से कहेंगे जो बड़ाई वाले थे, हम तुम्हारे ताबेअ (अधीन) थे तो क्या तुम अल्लाह के अजाब से कुछ हमें बचाओगे। वे कहेंगे कि अगर अल्लाह हमें कोई राह दिखाता तो हम तुम्हें भी जरूर वह राह दिखा देते। अब हमारे लिए एकसां (समान) है कि हम बेकार हों या सब्र करें, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं। (21)

इंसान, बतौर वाकया अगरचे हर वक्त 'खुदा के सामने' है। मगर मौजूदा दुनिया में आदमी अपने आपको बजाहिर खुदा के सामने नहीं पाता। आखिरत में यह पर्दा हट जाएगा। उस वक्त आदमी देखेगा कि वह इस तरह कामिल तौर पर खुदा के सामने था कि उसकी कोई चीज खुदा से छुपी हुई नहीं थी।

दुनिया में जो लोग हक को नजरअंदाज करते हैं उनका सबसे बड़ा सहारा उनके मफरूज (काल्पनिक) अकाबिर (बड़े) होते हैं। चाहे वे मुर्दा अकाबिर हों या जिंदा अकाबिर। छोटे जो कुछ करते हैं अपने बड़ों के बल पर करते हैं। आखिरत में जब ये लोग अपने आपको बिल्कुल बेबसी की हालत में पाएंगे तो वे अपने बड़ों से कहेंगे कि दुनिया में हम तुम्हारी रहनुमाई पर एतमाद किए हुए थे, अब यहां भी तुम हमारी कुछ रहनुमाई करो।

इसके जवाब में उनके बड़े अपने छोटों से कहेंगे कि आज का दिन तो इसीलिए आया है कि वह हमारे बेरहनुमा होने को बेनकाब करे। फिर अब हम तुम्हें क्या रहनुमाई दे सकते हैं। हमारी रहनुमाई तो महज वक्ती फरेब थी जो पिछली दुनिया में ख़त्म हो गई। अब तो यही है कि तुम भी अपने भटकने का नतीजा भुगतो और हम भी अपनी गुमराही का नतीजा भुगतें। हम चाहें या न चाहें, बहरहाल अब हमारा इसके सिवा कोई और अंजाम नहीं।

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي فَلَا تَكُونُوا مُمُونًا وَلَوْ أَنَّ أَنْفُسَكُمْ مَا أَنَا بِبُصْرَخٍ بِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِبُصْرَخٍ لِي أَنِّي كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

और जब मामले का फैसला हो जाएगा तो शैतान कहेगा कि अल्लाह ने तुमसे सच्चा वादा किया था और मैंने तुमसे वादा किया तो मैंने उसकी ख़िलाफ़वर्जी की। और मेरा तुम्हारे ऊपर कोई जोर न था। मगर यह कि मैंने तुम्हें बुलाया तो तुमने मेरी बात को मान लिया पस तुम मुझे इल्जाम न दो, और तुम अपने आपको इल्जाम दो। न मैं तुम्हारा मददगार हो सकता हूँ और न तुम मेरे मददगार हो सकते हो। मैं खुद इससे बेजार हूँ कि तुम इससे पहले मुझे शरीक ठहराते थे। बेशक जालिमों के लिए दर्दनाक अजाब है। (22)

खुदा की दुनिया वाकयात की दुनिया है न कि कल्पनाओं की दुनिया। यहां शैतान के वादे पर उठना यह है कि आदमी गैर हकीकी बुनियादों पर अपनी जिंगी की तामीर करना चाहे।

आदमी हक के दाओ को नजरअंदाज कर दे और दूसरे-दूसरे कारनामे दिखा कर हक का अलमबरदार (ध्वजावाहक) होने का क्रेडिट ले। वह आखिरत के लिए अमल न करे और खुदसाख्ता मफरूजों के तहत यह उम्मीद कायम कर ले कि उसकी नजात हो जाएगी। वह खुदा के अहकाम के मुताबिक जिंगी न गुजारे और यह यकीन कर ले कि उसका नाम अपने आप खुदा के महबूब बंदों में लिख लिया जाएगा। यह सब शैतान के वादों पर भरोसा करना है। और आखिरत में आदमी जान लेगा कि सिर्फ खुदा का वादा सच्चा वादा था। और बाकी तमाम वादे झूठे भरोसे थे जो कभी पूरे होने वाले नहीं।

खुदा की दुनिया में गैर खुदा से उम्मीद कायम करना शिर्क है। इसलिए जो लोग खुदाई हकीकतों को नजरअंदाज करते हैं और गैर खुदाई उम्मीदों पर अपनी जिंगी का महल खड़ा करना चाहते हैं। वे गोया खुदा के साथ दूसरी चीजों को खुदा का शरीक ठहरा रहे हैं। ये दूसरी चीजें फैसले के दिन उनका कुछ भी सहारा न बन सकेंगी।

وَأُدْخِلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۝

और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए वे ऐसे बागों में दाखिल किए जाएंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे अपने स्व के हुक्म से हमेशा रहेंगे। उसमें उनकी मुलाकात एक दूसरे पर सलामती होगी। (23)

मुलाक़ात के वक़्त अस्सलामु अलैकुम कहना महज़ एक मुआशिरती रस्म नहीं। यह क़बी तअल्लुक की एक ज़ाहिरि अलामत है। दुनिया का अस्सलामु अलैकुम भी अपनी हकीकत के एतबार से यही है और आख़िरत का अस्सलामु अलैकुम भी मजीद इजाफ़े के साथ यही।

जो लोग दुनिया में इस तरह रहे कि उनके अंदर एक दूसरे के लिए ख़ैरख़्वाही के ज़बात भरे हुए थे। जो शिकायतों को नजरअंदाज करके एक दूसरे से मुहब्बत करना जानते थे। जो दूसरे के लिए हमेशा वे अल्फ़ज़ बोलते थे जिसमें उसका एतराफ़ और एहतुराम शामिल हो। जो दूसरे के लिए वही चीज़ पसंद करते थे जो अपने लिए पसंद करते थे। जिनके सीने में दूसरों के लिए सलामती के चशमे उबलते थे और जिनकी आंखें दूसरे की भलाई को देखकर ठंडी होती थीं। यही वे लोग हैं जो जन्नत की नफीस दुनिया में बसाए जाने के अहल ठहरेंगे। दुनिया में भी उनका यह हाल था कि जब वे अपने भाइयों से मिलते तो उनके लिए उनकी मुहब्बत और ख़ैरख़्वाही 'अस्सलामु अलैकुम' की सूरत में टपकती थी। आख़िरत में यही चीज़ और ज्यादा लतीफ़ और ख़ालिस बनकर अपने जन्नती पड़ोसियों के बारे में उनकी ज़बानों से निकलेगी।

الْمُتَرَكِّفَ ضَرْبِ اللَّهِ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَ
فَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۚ تُؤْتِي أُكْلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا ۚ وَيَضْرِبُ اللَّهُ
الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ
خَبِيثَةٍ ۖ اجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۚ

क्या तुमने नहीं देखा, किस तरह मिसाल बयान फरमाई अल्लाह ने कलिमा-ए-तय्यिबा (शुभ बात) की। वह एक पाकीजा दरख़्त की मानिंद है जिसकी जड़ जमीन में जमी हुई है। और जिसकी शाखें आसमान तक पहुंची हुई हैं। वह हर वक़्त पर अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से और अल्लाह लोगों के लिए मिसाल बयान करता है ताकि वे नसीहत हासिल करें। और कलिमा-ए-ख़बीसा (अशुभ बात) की मिसाल एक ख़राब दरख़्त की है जो जमीन के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाए। उसे कोई सबात (दृढ़ता) न हो। (24-26)

मौजूदा दुनिया में अल्लाह तआला ने मुक़तलिफ़ हकीकतों की ज़हिरि तमसीलात कायम की हैं। शजर-ए-तय्यिबा (अच्छा दरख़्त) एक एतबार से मोमिन की तमसील है।

दरख़्त की यह अजीब ख़ुसूसियत है कि वह पूरी कायनात को अपना गिजाई दस्तरख़्बान बनाता है और इस तरह बीज से तरक्की करके एक अजीम दरख़्त की सूरत में ज़मीन के ऊपर खड़ा हो जाता है। दरख़्त ज़मीन से पानी और मअदनियात (खनिज) और नमकियात (लवण) लेकर बढ़ता है। इसी के साथ वह हवा और सूरज से अपने लिए गिजा हासिल करता है। वह नीचे से भी ख़ुराक लेता है और ऊपर से भी।

यही मोमिन का मामला भी है। आम दरख़्त अगर मादूदी (भौतिक) दरख़्त है तो मोमिन

शुऊरी दरख़्त। मोमिन एक तरफ़ दुनिया में ख़ुदा की तख़्लीक़ात (सृष्टि) और उसके निज़ाम को देखकर इबरात और नसीहत हासिल करता है। दूसरी तरफ़ 'ऊपर' से उसे मुसलसल ख़ुदा का फैज़ान पहुंचता रहता है। वह मख़्बूत से भी अपने लिए इज़फ़ा ईमान की ख़ुराक हासिल करता है और ख़ालिक से भी उसकी क़ुरबत और मुलाक़ात बराबर जारी रहती है।

दरख़्त हर मौसम में अपने फल देता है। इसी तरह मोमिन हर मौके पर वह सही रवैया ज़ाहिर करता है जो उसे ज़ाहिर करना चाहिए। मआशी (आर्थिक) तंगी हो या मआशी फराखी, ख़ुशी का लम्हा हो या ग़म का। शिकायत की बात हो या तारीफ़ की। ज़ोरआवरी की हालत हो या बेजोरी की। हर मौके पर उसकी ज़बान और उसका किरदार वही रददेअमल ज़ाहिर करता है जो ख़ुदा के सच्चे बंदे की हैसियत से उसे ज़ाहिर करना चाहिए।

दूसरी मिसाल शजर-ए-ख़बीसा (झाड़ झंकाड़) की है। उसे देखकर ऐसा मालूम होता है कि कायनात से उसे बिल्कुल बरअक्स किस्म की ख़ुराक मुहय्या की जा रही है जिसके नतीजे में उसके ऊपर कटि उगते हैं। उसकी शाखों में कड़वे और बदमजा फल लगते हैं। उसके पास कोई शख्स जाए तो वह बदबू से उसका इस्तक़बाल करता है। ऐसे दरख़्त को कोई पसंद नहीं करता। वह जहां उगे वहां से उसे उखाड़ कर फेंक दिया जाता है।

यही मामला ग़ैर मोमिन का है। वह ज़मीन में एक ग़ैर मल्लूब वजूद की हैसियत से उगता है। कायनात अपनी तमाम बेहतरीन निशानियों के बावजूद उसके लिए ऐसी हो जाती है जैसे यहां उसके लिए न कोई दलील है और न कोई नसीहत। ख़ुदा का फैज़ान अगरचे हर वक़्त बरसता है मगर उसे उसमें से कोई हिस्सा नहीं मिलता। उसके किरदार और मामलात में इसका इज़हार नहीं होता।

يُثَبِّتُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَ
يُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۚ

अल्लाह ईमान वालों को एक पक्की बात से दुनिया और आख़िरत (परलोक) में मज़बूत करता है। और अल्लाह ज़ालिमों को भटका देता है। और अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (27)

'ख़ुदा अहले ईमान को कलिमा तौहीद के ज़रिए दुनिया में भी साबित कदम रखता है और आख़िरत में भी।' दुनिया में साबित कदम रहने से मुराद अपनी ज़िंदगी के हर मोड़ पर ख़ैर और अमले सालेह (नेक अमल) की रविश पर कायम रहना है। आख़िरत में साबित कदम रहने से मुराद यह है कि क़ब्र के सवाल व जवाब के वक़्त वे कामयाब रहेंगे।

ईसान हर लम्हा इस्तेहान की हालत में है। उस पर तरह-तरह के पसंदीदा और नापसंदीदा अहवाल आते हैं। इन मौकों पर सही ख़ुदाई रविश पर सिर्फ़ वे लोग कायम रहते हैं जो अपने अंदर 'दरख़्ते ईमान' उगा चुके हों। वे पेश आने वाली सूरतेहाल में उस सहीतरीन रददेअमल का सुबूत देते हैं जो ख़ुदा की मर्जी के मुताबिक उन्हें देना चाहिए। इसके बरअक्स जिस आदमी की शख्सियत झाड़ झंकाड़ की मानिंद उगी हो वह हर तजर्बे में कड़वाहट का सुबूत

देता है। वह हर मौके पर कांटा और बदबू साबित होता है।

दोनों किस्म के इंसान जब कब्र के मरहले में आखिरी तौर पर जांचे जाएंगे तो जो शजर-ए-तय्यिबा था वह शजर-ए-तय्यिबा साबित होकर जन्नत के बाग में दाखिल कर दिया जाएगा। और जो शजर-ए-खबीसा था उसके साथ ऐसा मामला होगा गोया वह दुनिया से सिर्फ इसलिए उखाड़ा गया था कि जहन्नम का ईंधन बनने के लिए जहन्नम की आग में फेंक दिया जाए।

الْمُتَرَالِي الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَاحْتَلُوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۖ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا وَبِئْسَ الْقَرَارُ ۖ وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَدَاءَ الْيَضْلُوَاعِن سَبِيلِهِ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِن مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत के बदले कुफ्र किया और जिन्होंने अपनी कौम को हलाकत के घर में पहुंचा दिया, वे उसमें दाखिल होंगे और वह कैसा बुरा ठिकाना है। और उन्होंने अल्लाह के मुकाबिल ठहराए ताकि वे लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटका दें। कहो कि चन्द दिन फायदा उठा लो, आखिरकार तुम्हारा ठिकाना देखो है। (28-30)

इन आयात का इब्तिदाई खिताब कुरैश के सरदारों से है। मगर इसके उम्मी इतिबाक (चरितार्थता) में वे तमाम लीडर शामिल हैं जो हक के इंकार की मुहिम की सरदारी करते हैं।

किसी कौम के बड़े वही लोग बनते हैं जिन्हें खुसूसी नेमतें और मवाकेअ (अवसर) हासिल हों। इन नेमतों और मवाकेअ का सहीतरीन इस्तेमाल यह है कि जब उनके सामने हक की दावत उठे तो वे अपने तमाम वसाइल के साथ उसकी जानिब खड़े हों और उसकी पूरी मदद करें। जो चीजें खुदा की दी हुई हैं उन पर सबसे ज्यादा हक खुदा का है न कि किसी और का।

मगर अक्सर हालात में मामला इसके बरअक्स होता है। ऐसे लोग न सिर्फ यह कि हक को कुबूल नहीं करते बल्कि उसके खिलाफ उठने वाली तहरीक की कयादत करते हैं। इसकी वजह यह है कि अपने से बाहर उठने वाले हक को कुबूल करना गोया अपने आपको उसके मुकाबले में छोटा करना है। और ऐसा बहुत कम होता है कि वे लोग उस पर राजी हो जाएं जिन्हें किसी वजह से माहौल में बड़ाई का दर्जा मिल गया हो।

इंसान को एक खुदा चाहिए। एक ऐसी हस्ती जिसे वह अपनी ज़िंदगी में सबसे बड़ा मकाम दे सके। चुनांचे जब भी कोई शख्स लोगों की तवज्जोह खुदाए वाहिद से हटाता है तो इसका नतीजा यह होता है कि लोगों की तवज्जोह किसी ग़ैर खुदा की तरफ मायल हो जाती है। खुदा को छोड़ना हमेशा ग़ैर खुदा को अपना खुदा बनाने की कीमत पर होता है। मजीद यह कि खुदा से लोगों को हटाने वाले किसी ग़ैर खुदा में फर्जी तौर पर वह आला सिफात साबित करते हैं जो सिर्फ खुदा में पाई जाती हैं। क्योंकि जब तक ग़ैर खुदा में वे आला सिफात साबित न की जाएं लोग उसकी तरफ मुतवज्जह नहीं हो सकते। यही वजह है कि आदमी जब एक खुदा की

परस्तिश छोड़ता है तो वह इसके बाद लाजिमी तौर पर तवह्हुमपरस्ती में पड़ जाता है। खुदा को छोड़ने का वाहिद बदल इस दुनिया में तवह्हुमपरस्ती (अंधविश्वास) है।

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِينَ اُنْذِرْتُمُ الصَّلَاةَ وَيُنْفِقُوا مِمَّا رَزَقْتُهُمْ سِرًّا وَ عَلَانِيَةً مِّن قَبْلِ اَنْ يَّاتِيَ يَوْمٌ لَا بَئِءُ فِيهِ وَلَا خِلْلٌ ۝

मेरे जो बंदे ईमान लाए हैं उनसे कह दो कि वे नमाज कायम करें और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खुले और छुपे खर्च करें इससे पहले कि वह दिन आए जिसमें न खरीद व फरोख्त होगी और न दोस्ती काम आएगी। (31)

आदमी के ऊपर जब कोई मुसीबत आती है तो वह उससे बचने की हर मुमकिन कोशिश करता है। अगर उसके कुछ साथी हैं तो वह साथियों का जोर इस्तेमाल करता है। और अगर दौलत है तो दौलत को उसकी राह में खर्च करता है। अपने को बचाने की तड़प आदमी को मजबूर करती है कि वह इन दोनों चीजों की तरफ दौड़े।

नमाज और इन्फ़क (अल्लाह की राह में खर्च) हकीकतन आखिरत के मसले के बारे में आदमी के इसी एहसास का दुनियावी इज्हार हैं। नमाज गोया आखिरत की हौलनाकी की याद करके खुदा की पनाह की तरफ भागना है ताकि उसकी मदद से वह अपने आपको बचाए। इसी तरह दुनिया में खुले और छुपे खर्च करना गोया अपनी कमाई को आखिरत की मद में देना है ताकि वह आखिरत की मुसीबत से छुटकारा हासिल करने का जरिया बने।

आखिरत में वही आदमी सहारा पाएगा जिसने दुनिया में खुदा का सहारा पकड़ा हो। आखिरत में वही आदमी छुटकारा हासिल करेगा जिसने दुनिया में उसकी खातिर अपने दाएं बाएं खर्च किया हो। जो लोग दुनिया में ऐसा न कर सकें वे आखिरत में सहारे के लिए दौड़ेंगे मगर वहां वे कोई सहारा न पाएंगे। वे आखिरत में खर्च करना चाहेंगे मगर उनके पास कुछ न होगा जिसे फिदया देकर वे वहां की मुसीबतों से नजात हासिल करें।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفَلَاحَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ السَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبَيْنِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ وَاللَّكُم مِّن كُلِّ شَيْءٍ مَّا سَأَلْتُمُوهُ وَإِن تَعَدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ۝

अल्लाह वह है जिसने आसमान और जमीन बनाए और आसमान से पानी उतारा। फिर उससे मुज्तलिफ फल निकाले तुम्हारी रोजी के लिए और कश्ती को तुम्हारे लिए मुसख़्खर (अधीनस्थ) कर दिया कि समुद्र में उसके हुक्म से चले और उसने दरियाओं को तुम्हारे लिए मुसख़्खर किया। और उसने सूरज और चांद को तुम्हारे लिए मुसख़्खर

कर दिया कि बराबर चले जा रहे हैं और उसने रात और दिन को तुम्हारे लिए मुसल्लख कर दिया। और उसने तुम्हें हर चीज में से दिया जो तुमने मांगा। अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम गिन नहीं सकते। बेशक इंसान बहुत बेइसाफ और बड़ा नाशुक्रा है। (32-34)

मौजूदा दुनिया इतिहाई हैरतनाक हद तक खुदा की गवाही दे रही है। वसीअ खला में सितारों और सय्यरों (ग्रहों) की गति, पानी के जरिए जमीन पर ज़िन्गी और रिककी फराहमी, छुकी और तरी और फजा पर इंसान को यह कुदरत होना कि वह उनमें अपनी सवारियां दौड़ाए, दरियाओं और पहाड़ों के जरिए जमीन का इंसान के मुवाफिक हो जाना, सूरज और चांद के जरिए मौसमों का और रात और दिन का इतिजाम, सब कुछ इससे ज्यादा अजीब है कि इन्हें लफ्जों में बयान किया जा सके। इंसान और कायनात में इतनी कामिल मुताबिकत (अनुकूलता) है कि इंसान को हर कबिले कयास (अनुमान योग्य) या नाकबिले कयास ज़रूरत पेशगी तौर पर यहां बइफरात (बहुलता से) मौजूद है।

ये तमाम चीजें इतनी ज्यादा अजीब हैं कि आदमी को हिला दें और उसे बंदगी के जब्जे से सरशार कर दें इसके बावजूद ऐसा क्यों नहीं होता कि कायनात को देखकर आदमी के अंदर इस्तेजाब (विस्मय) की कैफियत पैदा हो। खालिके कायनात के तसव्वुर से उसके बदन के रोंगटे खड़े हो जाएं। इसकी वजह यह है कि आदमी पैदा होते ही कायनात को देखता है, देखते-देखते वह उसे एक आम चीज मालूम होने लगती है। इसमें उसे कोई अनोखापन नजर नहीं आता।

मज्जीद यह कि इस दुनिया में आदमी को जब कोई चीज मिलती है तो वह बजाहिर उसे असबाब के तहत मिलती हुई नजर आती है। इस बिना पर वह समझ लेता है कि जो चीज उसे मिली है वह उसकी अपनी महनत और सलाहियत की बिना पर मिली है। यही वजह है कि आदमी के अंदर देने वाले खुदा के लिए शुक्र का जब्जा पैदा नहीं होता।

इंसान की यही वह गफलत है जिसे यहां बेइसाफी और नाशुक्रगुजारी से ताबीर (परिभाषित) किया गया है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ آمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ
الْأَصْنَامَ ۚ رَبِّ إِنَّهُنَّ أَضْلَلْنَ كَثِيرًا ۚ مِّنَ النَّاسِ فَمَنْ يَتَّبِعُنِي فَإِنَّهُ مِنِّي
وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑥

और जब इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे रब, इस शहर को अमन वाला बना। और मुझे और मेरी औलाद को इससे दूर रख कि हम बुतों की इबादत करें। ऐ मेरे रब इन बुतों ने बहुत लोगों को गुमराह कर दिया। पस जिसने मेरी पैरवी की वह मेरा है। और जिसने मेरा कहा न माना तो तू बख्शने वाला महरबान है। (35-36)

हजरत इब्राहीम के जमाने तक मुक्कों और कैमों का यह हाल हो चुका था कि हर तरफ शिर्क का दौर दौरा था। सूरज चांद और दूसरे मजाहिर फितरत इंसान की परस्तिश का मौजूद

बने हुए थे। कदीम जमाने में ज़िन्गी की तमाम सरगर्मियों पर शिर्क का इस तरह गलबा हुआ कि इंसानी नस्लों में शिर्क का तसलसुल कायम हो गया। बजाहिर यह नामुमकिन नजर आने लगा कि लोगों को शिर्क की फजा से निकाल कर तौहीद के दायरे में लाया जा सके। उस वक्त खुदा के हुक्मे खास के तहत हजरत इब्राहीम इराक से निकल कर अरब के सहारा में आए जो तमदुन (संस्कृति) से दूर बिल्कुल गैर आबाद इलाका था। आपने अगल-थलग माहौल में अपनी बीबी हाजरा और अपने बच्चे इस्माईल को बसाया। ताकि यहां वक्त के मुशिकाना तसलसुल से कटकर एक नई नस्ल तैयार हो। जो आजादाना फजा में परवरिश पाकर अपनी सही फितरत पर कायम हो सके। हजरत इब्राहीम का कलाम दुआ के अंदाज में इसी ख़स हकीकत को जहिर कर रहा है।

बनू इस्माईल को खुशक और गैर आबाद बयाबान में बसाने से खुदा का मंसूबा यही था, अब यहां के जिन लोगों ने तौहीद (एकेश्वरवाद) को अपने दिल की आवाज बनाया वे गोया बाग़े इब्राहीम की सही पैदावार थे। इसके बरअक्स जिन लोगों ने दुबारा शिर्क का तरीका इस्तियार कर लिया वे उस बाग़ की नाकिस पैदावार करार पाएंगे।

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زُرْعَةٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا
لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ
الْثَّمَرِ ۚ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ⑦

ऐ हमारे रब, मैंने अपनी औलाद को एक बेखेती की वादी में तरे मोहतरम घर के पास बसाया है। ऐ हमारे रब ताकि वे नमाज कायम करें। पस तू लोगों के दिल उनकी तरफ मायल कर दे और उन्हें फलों की रोजी अता फरमा। ताकि वे शुक्र करें। (37)

कैम (प्राचीन) मक्का जहां बनू इस्माईल बसाए गए वहां की पहाड़ी और सहाराई दुनिया गोया खुदा की मअरफत (अन्तर्ज्ञान) की कुदरती तर्बियतगाह थी। दूसरी तरफ वहां इंसानी तामीरात के एतबार से वाहिद कबिले लिहाज निशान अल्लाह का काबा था। एक तरफ फितरत का माहौल इंसान के अंदर खुदा की याद उभारने वाला था। इसके बाद अपने करीब उसे जो नुमायां चीज नजर आती थी वह हजरत इब्राहीम और हजरत इस्माईल की बनाई हुई पत्थरों की मस्जिद थी जिसमें दाखिल होकर वह खुदा की याद में मशगूल हो जाए।

फिर इस माहौल में बनू इस्माईल को मेजिजाती तौर पर जमजम के जरिए पानी मुहय्या किया गया। इसी के साथ उनके लिए यह इतिजाम किया गया कि ऐसी पैदावार से उन्हें रिज्क मिले जो उनके कदमों के नीचे पैदा नहीं होता। यह गोया उन्हें शाकिर (कृतज्ञ) बनाने का खुसूसी एहतिमाथ था। गैर मामूली नेमत से आदमी के अंदर शुक्र का गैर मामूली जब्जा उभरता है। और यही वह हिकमत है जो हजरत इब्राहीम की इस दुआ में छुपी हुई थी कि सहारा में उन्हें फलों की रोजी दे।

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ ۝ أَحْذَرُ لِلَّهِ الذِّئْبُ وَهَبْ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ
رَبِّي لَسَمِيعٌ الدُّعَاءِ ۝ رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ
دُعَاءَ ۖ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۝

ऐ हमारे रब, तू जानता है जो कुछ हम छुपाते हैं और जो कुछ हम जाहिर करते हैं। और अल्लाह से कोई चीज छुपी नहीं, न जमीन में और न आसमान में। शुक्र है उस खुदा का जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक दिए। वेशक मेरा रब दुआ का सुनने वाला है। ऐ मेरे रब, मुझे नमाज कायम करने वाला बना। और मेरी औलाद में भी। ऐ मेरे रब मेरी दुआ कुबूल कर। ऐ हमारे रब, मुझे माफ़ फरमा और मेरे वालिदेन को और मोमिनीन को, उस रोज जबकि हिसाब कायम होगा। (38-41)

हजरत इब्राहीम की इस दुआ में वे तमाम जज्बात झलक रहे हैं जो एक सच्चे बंदे के अंदर खुदा को पुकारते हुए उमड़ते हैं। उसकी बंदगी जोर करती है कि वह खुदा के सामने अमेइज्ज (निर्वलता) का इकार करे। जो कुछ मांगे जरूरतमंदी की बुनियाद पर मांगे न कि इस्काफ (अधिकार) की बुनियाद पर। एक तरफ वह मिली हुई नेमतों का एतराफ करे और दूसरी तरफ अदब के तमाम तकाजों के साथ अपनी दरखास्त पेश करे। वह इकार करे कि खुदा देने वाला है और इंसान पाने वाला।

वह अपने रब से यह तौफीक मांगे कि वह दुनिया में उसका परस्तार बनकर रहे। इसी की दरखास्त वह अपने लिए भी करे और अपने अहले खानदान के लिए भी और इसी की दरखास्त तमाम मोमिनीन के लिए भी। दुआ के वक्त उसके सामने जो सबसे बड़ा मसला हो वह दुनिया का न हो बल्कि आखिरत का हो जहां अबदी तौर पर आदमी को रहना है।

इन आदाब के साथ जो दुआ की जाए वह पैगम्बराना दुआ है और ऐसी दुआ अगर सच्चे दिल से निकले तो वह जरूर खुदा के यहां कुबूलियत का दर्जा हासिल करती है।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ۚ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ
فِيهِ الْأَبْصَارُ ۖ فَهُمْ طَرَفُهُمْ ۖ وَأَفْئِدَتُهُمْ هَوَا ۖ

और हरगिज मत ख्याल करो कि अल्लाह इससे बेखबर है जो जालिम लोग कर रहे हैं। वह उन्हें उस दिन के लिए ढील दे रहा है जिस दिन आंखें पथरा जाएंगी। वे सिर उठाए हुए भाग रहे होंगे। उनकी नजर उनकी तरफ हटकर न आएगी और उनके दिल बदहवास होंगे। (42-43)

आदमी के सामने हक आता है तो वह उसका मुखालिफ बनकर खड़ा हो जाता है। वह उसके मुक़बले में ऐसी बेखोफ़ी का मुजाहिदा करता है जैसे कि उससे ज्यादा बहादुर दुनिया में और कोई नहीं।

मगर यही हक जो मौजूदा दुनिया में 'दाजी' की सतह पर जाहिर होता है वह आखिरत में 'खुदा' की सतह पर जाहिर होगा। उस दिन ऐसे लोगों की सारी बहादुरी जाती रहेगी। आखिरत का हौलनाक मंजर देखकर उनका यह हाल होगा कि जब उनकी निगाहें उठेंगी तो वे उठी की उठी रह जाएंगी, पलक झपकने की नौबत भी नहीं आएगी। वे सर उठाए हुए तेजी से मैदान हशर की तरफ भाग रहे होंगे। और उनके दिल दहशत की वजह से उड़ रहे होंगे।

وَأَنذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا إِلَى أَجَلٍ
قَرِيبٍ يُجِبُ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرَّسُولَ ۖ أَوْ كُنتُمْ كُونُوا أَفْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلِ مَا لَكُم
مِّنْ زَوَالٍ ۖ وَسَكَنْتُمْ فِي مَسْكَرٍ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ وَبَبَّيْنَكُمْ كَيْفَ
فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ ۖ وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ وَإِنْ
كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۖ

और लोगों को उस दिन से डरा दो जिस दिन उन पर अजाब आ जाएगा। उस वक्त जालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमें थोड़ी मोहलत और दे दे, हम तेरी दावत(आह्वान) कुबूल कर लेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे। क्या तुमने इससे पहले कसमें नहीं खाई थी कि तुम पर कुछ ज्वाल (पतन) आना नहीं है। और तुम उन लोगों की बस्तियों में आबाद थे जिन्होंने अपने जानों पर जुल्म किया। और तुम पर खुल चुका था कि हमने उनके साथ क्या किया। और हमने तुमसे मिसालें बयान कीं। और उन्होंने अपनी सारी तदबीरें (युक्तियां) कीं और उनकी तदबीरें अल्लाह के सामने थीं। अगरचे उनकी तदबीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी टल जाएं। (44-46)

आदमी का हाल यह है कि एक दिन पहले तक भी वह अपने अंजाम का एहसास नहीं करता। उसे अगर कोई कुव्वत या हैसियत हासिल हो तो वह इस तरह अकड़ता है गोया कि उसकी हैसियत कभी उससे छिन्ने वाली नहीं। वह खुदा की दावत (आह्वान) को ठुकराता है और भूल जाता है कि वह जिन चीजों के बल पर उसे ठुकरा रहा है वे सब खुदा की ही दी हुई हैं। उसके सामने दलाइल आते हैं मगर वह उन पर ध्यान नहीं देता। माजी के सरकशों का अंजाम उसके सामने होता है मगर वह समझता है कि जो कुछ हुआ वह सिर्फ दूसरों के लिए था। खुद उसके अपने लिए कभी ऐसा होने वाला नहीं।

मौजूदा दुनिया में जिन लोगों को मवाकेअ (अवसर) हासिल हैं वे हक को नजरअंदाज करने में फख्र महसूस करते हैं। मगर मौत के बाद जब वे अपनी सरकशी का अंजाम देखेंगे

तो उन्हें अपने माजी पर इस कद्र शर्म आएगी कि वे चाहेंगे कि अगर उन्हें दुबारा मोहलत मिले तो वे मौजूदा दुनिया में आकर खुद अपनी तरदीद (खंडन) करें। और उस चीज को मान लें जिसका इससे पहले उन्होंने फख्खा तौर पर इंकार कर दिया था।

हक की मुखलिफ्त खुदा की मुखलिफ्त है। जिस हक के साथ खुदा हो उसकी मुखलिफ्त करने वाले हमेशा नाकाम रहते हैं, चाहे वे उसके खिलाफ इतनी बड़ी तैयारियों के साथ आए हों जो पहाड़ को हिलाने के लिए भी काफी साबित हो।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ فَخْلَفَ وَعَدًا رُسُلُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقَاوٍ ۝ يَوْمَ تَبْدُلُ الْأَرْضَ
غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتِ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝ وَتَرَى الْمُجْرِمِينَ
يَوْمَئِذٍ مُّقْرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝ سَرَابِيلُهُمْ مِنْ قَطَرٍ ۝ وَتَعْنَى وَجُوهُهُمْ النَّارَ ۝
لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ تَأْكُسَبَتْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ هَذَا بَلَاءُ لِلنَّاسِ وَ
لِيُنذِرُوا بِهِ ۝ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ إِلَهُ الْوَاحِدُ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

पस तुम अल्लाह को अपने पैगम्बरों से वादाखिलाफी करने वाला न समझो। वेशक अल्लाह जबरदस्त है, बदला लेने वाला है। जिस दिन यह जमीन दूसरी जमीन में से बदल जाएगी और आसमान भी। और सब एक जबरदस्त अल्लाह के सामने पेश होंगे। और तुम उस दिन मुजरिमों को जंजीरों में जकड़ा हुआ देखोगे। उनके लिबास तारकोल के होंगे। और उनके चेहरों पर आग छाई हुई होगी ताकि अल्लाह हर शख्स को उसके किए का बदला दे। वेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। यह लोगों के लिए एक एलान है और ताकि इसके जरिए से वे डरा दिए जाएं। और ताकि वे जान लें कि वही एक माबूद (पूज्य) है और ताकि दानिशमंद (प्रबुद्ध) लोग नसीहत हासिल करें। (47-52)

पैगम्बर खुदा के दीन की गवाही अपनी कामिल सूरत में देता है। इसलिए पैगम्बर के साथ खुदा की नुसरत (मदद) भी अपनी कामिल सूरत में आती है। बाद के पैरोकार जितना-जितना पैगम्बर के नमून पर पूरे उतरेंगे उतना-उतना वे खुदा की नुसरत के मुस्तहिक होते चले जाएंगे।

आज ईसान जमीन पर ऐसा महसूस करता है जैसे वह खुशकी और तरी का मालिक हो। वह फज्रों और ख़लाओं (अंतरिक्ष) को कंट्रोल कर सकता है। वह इख्तियार रखता है कि यहां के वसाइल को जिस तरह चाहे इस्तेमाल करे और जिस तरह चाहे इस्तेमाल न करे। मगर ये सब कुछ सिर्फ इसलिए है कि खुदा ने इस्तेहान की मुद्दत तक जमीन व आसमान को ईसान के लिए मुसख़्खर (अधीनस्थ) कर रखा है। इस्तेहान की मुद्दत खत्म होते ही हालात यकसर बदल जाएंगे। इसके बाद जमीन भी दूसरी जमीन होगी और आसमान भी दूसरा आसमान। ईसान अचानक अपने को एक और ही दुनिया में पाएगा।

जहां आदमी अपने आपको हुक्मरां समझता है वहां सारी हुक्मत सिर्फ खुदा के लिए हो

चुकी होगी। जहां हर चीज उसके हुक्म के ताबेअ थी वहां हर चीज उसकी ताबेदारी करना छोड़ देगी। मौजूदा दुनिया में जो लोग बड़े बने हुए थे वे उस दिन बेबस मुजरिम के रूप में नजर आएंगे। जो लिबास आज जिस्म को जीनत (सज्जा) देता है वह उस दिन ऐसा हो जाएगा जैसे जिस्म के ऊपर तारकोल फेर दी गई हो। पुररौनक चेहरे उस दिन आग में झुलसे हुए होंगे। और यह सब कुछ उन लोगों के साथ होगा जो दुनिया में खुदा का बंदा बनकर रहने पर राजी न हुए। जिन्होंने खुदा की तरफ से होने वाले एलान को नजरअंदाज किया।

हकीकत का हकीकत देना काफी नहीं है कि आदमी उसे मान ले। हकीकत को मानने के लिए जरूरी है कि आदमी खुद भी उसे मानना चाहे। जो शख्स हकीकत के मामले में संजीदा हो, जो ख़ाली चेहन होकर उसे सुने वही हकीकत को समझेगा, वही हकीकत का सही इस्तकबाल करने में कामयाब होगा।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ تَسْتَوِي السَّمَوَاتُ وَالْأَرْضُ ۝ رَبِّمَا يَوْمُ الدِّينِ
كَفَرُوا وَلَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ۝ ذُرَّهُمْ يَأْكُلُوا وَيَكْتُمُونَ وَيُلْهِيهِمُ الْأَمَلُ
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْنٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَعْلُومٌ ۝
مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجْلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝

आयतें-99

सूरह-15. अल-हिज्र

रुकूअ-6

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० रा०। ये आयतें हैं किताब की ओर एक वाजह (सुस्पष्ट) कुआन की। वह वक्त आएगा जब इंकार करने वाले लोग तमन्ना करेंगे कि काश वे मानने वाले बने होते। उन्हें छोड़ो कि वे खाएं और फायदा उठाएं और ख़ाली उम्मीद उन्हें भुलावे में डाले रखे, पस आइंदा वे जान लेंगे। और हमने इससे पहले जिस बस्ती को भी हलाक किया है उसका एक मुक्कस वक्त लिखा हुआ था। कोई कैम न अपने मुक्कस वक्त से आगे बढ़ती और न पीछे हटती। (1-5)

दुनिया में ईसान को जो आजादी मिली हुई है वह सिर्फ इस्तेहान की मुद्दत तक के लिए है। यह एक बहुत नाजुक सूरतेहाल है। अगर आदमी वाकई तौर पर इसे सोचे तो वह ऐसा महसूस करेगा कि जो मुद्दत कल खत्म होने वाली है वह गोया आज खत्म हो चुकी है। यह ख़याल उसे हिलाकर रख देगा। मगर आदमी सिर्फ 'आज' में जीता है, वह 'कल' पर ध्यान नहीं देता। उसके सामने हकीकत खोली जाती है मगर वह खुशफहमियों में मुस्तिला होकर रह जाता है। वह खुदसाख़्ता तौर पर कुछ फर्जी सहारे तलाश कर लेता है और समझता है कि ये सहारे फैसले के वक्त उसके काम आएंगे।

मगर गफ़लत और खुशगुमानी का तिलिस्म उस वक़्त टूट जाता है जब मुद्दत ख़त्म होती है और खुदा के फ़रिश्ते उसके पास आ जाते हैं ताकि उसे इम्तेहान की दुनिया से निकाल कर अंजाम की दुनिया में पहुंचा दें।

उस वक़्त उसे वे मौके याद आने लगते हैं जबकि उसने एक सच्ची दलील को झूठे अल्फ़ज़ के जरिए रद्द करने की कोशिश की थी। जब उसने ज़मीर की आवाज़ को छोड़कर अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी की थी। जब उसने खुदा के दाओ में खुदा की झलकियां पाने के बावजूद ज़ाती पिंदार की ख़ातिर उसे नज़रअंदाज कर दिया था। जब वह देखेगा कि मेरी कोई तदवीर मेरे काम नहीं आई तो वह कहेगा कि काश मैंने वह न किया होता जो मैंने किया। काश मैं 'मुकिर' का तरीका इस्तिस्नान करने के बजाए 'मुस्लिम' का तरीका इस्तिस्नान करता।

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ۖ لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَكُوتِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۝ مَا نُنْزِلُ الْمَلَكُوتَ إِلَّا بِٱلْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذْ مُنْظَرِیْنَ ۝

और ये लोग कहते हैं कि ऐ वह शख्स जिस पर नसीहत उतरी है तू बेशक दीवाना है। अगर तू सच्चा है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता। हम फ़रिश्तों को सिर्फ़ फैसले के लिए उतारते हैं और उस वक़्त लोगों को मोहलत नहीं दी जाती। (6-8)

पैगम्बर के मुखातबीन ने पैगम्बर के ऊपर दीवानगी का शुभव किया। इसकी वजह क्या थी। इसकी वजह पैगम्बर की दावत थी जिसका मतलब यह था कि 'मैं खुदा का नुमाइंदा हूं। जो शख्स मेरी बात मानेगा वह कामयाब होगा और जो शख्स नहीं मानेगा वह नाकाम होकर रह जाएगा।'

मगर ये मुखातबीन अमलन जो कुछ देख रहे थे वह इसके बरअक्स था। उनका अपना यह हाल था कि उन्हें वक़्त के राज़ निज़ाम में सरदारी और पेशवाई का मक़ाम हासिल था। दूसरी तरफ़ पैगम्बर एक ग़ैर रवाजी दीन का दाओ होने की वजह से राज़ निज़ाम में बैहिसियत और अजनबी बना हुआ था। इस फ़र्क की बिना पर मुखातबीन को यह कहने की ज़रअत हुई कि तुम हमें दीवाना मालूम होते हो। हर किस्म की दुनियावी खूबियां तो खुदा ने हमें दे रखी हैं और तुम कहते हो कि कामयाबी तुम्हारे लिए है और तुम्हारा साथ देने वालों के लिए।

मगर यह उन्हें ज़बिय-ए-नज़र (दृष्टिकोण) का फ़र्क था। वे अपनी चीज़ों को 'इनाम' के तौर पर देख रहे थे। हालांकि ये तमाम चीज़ें सिर्फ़ 'आज़माइश' का सामान हैं जो मौजूदा दुनिया में किसी को वक्ती तौर पर दी जाती हैं।

वे ये भी कहते थे कि तुम्हारे दावे के मुताबिक तुम्हारे पास खुदा के फ़रिश्ते आते हैं तो ये फ़रिश्ते हमें क्यों नहीं दिखाई देते। यह भी ज़बिय-ए-नज़र के फ़र्क की बिना पर था। पैगम्बर के पास जो फ़रिश्ता आता है वह 'वही' (प्रकाशना) का फ़रिश्ता होता है जो खुदा का कलाम पैगम्बर तक पहुंचाता है। इसके अलावा खुदा के वे फ़रिश्ते भी हैं जो इसलिए आते हैं

कि वे हकीकत को लोगों के सामने बेनकाब कर दें। मगर वे दावत (आह्वान) की तकमील के बाद आते हैं और जब वे आते हैं तो यह फैसला करने का वक़्त होता है न कि ईमान की तरफ़ बुलाने का।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلُ الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ ۝

यह याददाहानी (किताब) हम ही ने उतारी है और हम ही इसके मुहाफिज़ (संरक्षक) हैं। (9)

कुरआन को उतारा है और वही उसकी हिफ़ज़ करने वाला है। नुज़ूले कुरआन के वक़्त इस इशारे का बराहिरास्त ख़िताब क़ुरैश से था। मगर वसीअतर मअनों में यह पूरी इंसानियत के लिए एक चैलेन्ज था। इस तरह सातवीं सदी ईसवी से लेकर कियामत तक के इंसानों के सामने एक ऐसा कतई मेयार रख दिया गया जिसके ऊपर जांच कर वे देख सकें कि कुरआन वाकई खुदा की किताब है या नहीं।

जिस वक़्त यह चैलेन्ज दिया गया उस वक़्त तमाम जाहिरी इम्कानात इसके सरासर ख़िलाफ़ थे। किसी निजई (विवादित) किताब को मुस्तक़िल तौर पर महफूज़ रखने के लिए ताक़तवर जमाअत दरकार है। और नुज़ूले कुरआन के वक़्त उसके हामिलीन (धारक) अपने दुश्मनों के मुक़ाबले में बिल्कुल कमजोर हैसियत रखते थे। काग़ज़ और प्रेस का दौर भी दुनिया में नहीं आया था जिसने मौजूदा जमाने में किसी किताब की हिफ़ज़त को बहुत आसान बना दिया है। किताब जैसी एक चीज़ को महफूज़ रखने के लिए उसकी ज़बान को महफूज़ रखना भी लाजिमी तौर पर ज़रूरी था, जबकि तारीख़ बताती है कि कोई ज़बान कभी मुस्तक़िल तौर पर बाकी नहीं रहती। कुरआन मौजूदा साइंसी दौर से बहुत पहले रिवायती (परम्परागत) दौर में आया। ऐसी हालत में इसके जिंदा और महफूज़ रहने के लिए ज़रूरी था कि उसके मजामीन अबदी (सर्वांगीण) जांच में पूरे उतरें।

इन तमाम चैलेन्जों को मुक़बला करते हुए कुरआन पूरी तरह महफूज़ (सुरक्षित) रहा। और आज भी वह पूरी तरह महफूज़ है। यह इस बात का कतई सुबूत है कि यह खुदा की किताब है। डेढ़ हजार साल पहले के दौर में तैयार की जाने वाली कोई भी किताब इस तरह ज़िन्दा और महफूज़ नहीं रह पाती।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شِعْرِ الْأَوَّلِينَ ۖ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۖ كَذَلِكَ نَسْلُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۖ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ۖ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۖ لَقَالُوا إِنَّهُمْ لَأَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَسْحُورُونَ ۖ

और हम तुमसे पहले गुजरी हुई कौमों में रसूल भेज चुके हैं। और जो रसूल भी उनके पास आया वे उसका मज़ाक उड़ाते रहे। इसी तरह हम यह (मज़ाक) मुज़रिमीन के दिलों

में डाल देते हैं। वे इस पर ईमान नहीं लाएंगे। और यह दस्तूर अगलों से होता आया है। और अगर हम उन पर आसमान का कोई दरवाजा खोल देते जिस पर वे चढ़ने लगते तब भी वे कह देते कि हमारी आंखों को धोखा हो रहा है, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है। (10-15)

हर दौर में खुदा के पैगम्बरों का मजाक उड़ाया गया है। इसकी वजह यह थी कि लोगों ने बतौर खुद जो फर्जी मेयार किसी को खुदा का नुमाईदा करार देने के लिए बना रखे थे, उस पर उनके पैगम्बर पूरे नहीं उतरते थे। इस मेयार के एतबार से पैगम्बर उन्हें कमतर नजर आता था। इसलिए लोगों ने पैगम्बरों को इस्तहजा (मज़ाक) का विषय बना लिया।

किसी नई हकीकत को पाने के लिए जरूरी है कि आदमी खुले जेहन के साथ सोचने और खालिस वाक्यात की बुनियाद पर राय कायम करने के लिए तैयार हो। जो लोग सच्चाई का इंकार करते हैं वे अक्सर इसलिए ऐसा करते हैं कि सच्चाई उन्हें अपने मानूस (परिचित) मेयार के एतबार से अजनबी मालूम होती है। यह मानूस मेयार लम्बे अर्से के बाद उनके दिल में ऐसा रच बस जाता है कि उससे बाहर निकल कर सोचना उनके लिए नामुमकिन हो जाता है। वे आखिर वक्त तक भी अपने मानूस दायरे से बाहर की सच्चाई को पहचान नहीं पाते।

कौमों के इसी मिजाज का नतीजा था कि मोजिजे को देखकर भी लोग ईमान नहीं लाए। जिस शख्सियत के बारे में उनके जाहिरी हालात की बिना पर उनका यह जेहन बन गया था कि यह एक मामूली आदमी है वह फिर भी उनकी नजर में मामूली ही रहा। बाद को अगर उसने कोई खारिके आदत (अस्वाभाविक) चीज दिखाई तो चूँकि दूसरे पहलुओं के एतबार से वह बजाहिर अब भी उनके लिए ग़ैर अहम था, उन्होंने समझ लिया कि यह कोई जादू या नजरबंदी है। न कि हकीकतन उसके खुदा के नुमाईदे होने का सुक़्त।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ ۖ وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَّجِئٍ ۖ إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ ۖ وَشَهِابٌ مُبِينٌ ۝

और हमने आसमान में बुर्ज बनाए और देखने वालों के लिए उसे रौनक दी। और उसे हर शैतान मर्दूद से महफूज किया। अगर कोई चोरी छुपे सुनने के लिए कान लगाता है तो एक रोशन शोला उसका पीछा करता है। (16-18)

कायनात में बेशुमार सितारे फैले हुए हैं। मगर ये सितारे मज्मूओं (संग्रह) की सूत्र में हैं। हर एक मज्मूए को एक कहकशां कहा जाता है। हो सकता है कि बुरुज से मुराद ये कहकशाएं हों। 'ज्यन्नाह लिन्नाज़िरीन' में सदा तौर पर सिर्फ 'जिनत' (समूह) मुराद नहीं है बल्कि आसमान का वह हैरानकुन मंजर मुराद है जो रात के वक्त उसका होता है। रात को जब बादल और गर्द व गुबार न हों, खुले मैदान में खड़े होकर आसमान की तरफ नजर डालें तो वसीअ आसमान में जगमगाते हुए सितारों का मंजर इतना हैरानकुन हद तक शानदार होता है कि आदमी उसे देखकर खुदा की अज्मत व जलाल के एहसास में डूब जाए।

जो लोग पैगम्बर से कहते थे कि आसमान से फरिश्ता उतरता हुआ हमें दिखाओ उनसे कहा गया कि तारों भरे आसमान का वह मंजर जो हर रोज तुम्हारे सामने खोला जाता है क्या वह तुम्हारे शुऊर को जगाने और तुम्हारे दिलों को पिघलाने के लिए कम है कि तुम दूसरे मेजिजत का तम्नज़ करते हो।

जमीन पर इंसान के साथ शैतान भी बसाए गए हैं। यहां शयातीन को पूरी आजादी है कि वे जिधर चाहे जाएं और जिस तरह चाहें लोगों को बहकाएं। मगर जमीन से मावरा (परे) जो खुदा की दुनिया है उसमें शयातीन की परवाज के लिए नाकाबिले उबूर (अलांधनीय) रुकावटें कायम कर दी गई हैं। वे एक खास हद से आगे उसके अंदर दाखिल नहीं हो पाते।

وَالْأَرْضُ مَكْدُونُهَا وَأُنْبِتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مُّوَزُونٍ ۖ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ۚ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ۝

और हमने जमीन को फैलाया और उस पर हमने पहाड़ रख दिए और उसमें हर चीज एक अंदाजे से उगाई। और हमने तुम्हारे लिए उसमें मईशत (जीविका) के असबाब बनाए और वे चीजें जिन्हें तुम रोजी नहीं देते। (19-20)

भौगोलिक अध्ययन बताता है कि जमीन इत्तिदा में शुख़क गोले की सूत्र में थी फिर वह फटी जिसकी वजह से समुद्र की गहराइयां पैदा हुईं और उनमें पानी जमा हो गया। इन गहराइयों को संतुलित रखने के लिए जमीन पर जगह-जगह ऊंचे पहाड़ उभर आए।

इसके बाद जमीन पर नबातात (वनस्पति) और हैवानात वजूद में आए और खूब फैले। उनमें से हर एक के अंदर बढ़ने की लामहदूद सलाहियत (असीम क्षमता) है मगर उन्हें देखने से साफ मालूम होता है कि हर एक का एक अंदाजा मुक्दर है। हर चीज बढ़ते-बढ़ते एक खास हद पर रुक जाती है, वह उससे आगे नहीं जाने पाती।

मसलन पौधों और दरख़्खों में अपनी नस्ल बढ़ाने की इतनी ज्यादा इस्तेदाद (सामर्थ्य) है कि अगर किसी एक पौधे को उसकी अंदरूनी इस्तेदाद के एतबार से बिला रोक टोक बढ़ने दिया जाए तो चन्द साल के अंदर सारी सतहे जमीन पर हर तरफ बस वही पौधा नजर आएगा। किसी दूसरी चीज के लिए यहां कोई जगह बाकी न रहेगी। मगर ऐसा मालूम होता है कि कोई जवरदस्त नाजिम (व्यवस्थापक) है जो हर एक पर कंट्रोल कायम किए हुए है। यही मामला हैवानात का है। उनके अंदर भी अफजाइशे नस्ल की लामहदूद सलाहियत है। मगर हर एक की तादाद एक हद पर पहुंच कर रुक जाती है। इसी तरह हैवानात में अपनी जसामत बढ़ाने की इस्तेदाद इतनी ज्यादा है कि एक पतिंगे को बढ़ने दिया जाए तो वह हाथी के बराबर हो जाए। मगर कुदरती कंट्रोल एक खास हद पर उसकी जसामत को रोक देता है। अगर चीजें अपनी हद पर न रुकें तो जमीन पर इंसान की रिहाइश नामुमकिन हो जाए।

इंसान को अपनी मईशत (जीविका) और तमदुन (संस्कृति) के लिए बेशुमार चीजें दरकार हैं। ये सारी चीजें ऐन हमारी जरूरत के मुताबिक जमीन पर मुह्य्या कर दी गई हैं।

इन तमाम चीजों की फ़राहमी और हर एक की बख़्त (अस्तित्व) का इतिजाम खुदा की तरफ़ से है। अगर हमें उन्हें उनका रिज़क देना हो तो हमारे लिए उनका हुसूल नामुमकिन हो जाए।

وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝ وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَاسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ۝

और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़जाने हमारे पास न हों और हम उसे एक मुअय्यन (निर्धारित) अंदाजे के साथ ही उतारते हैं। और हम ही हवाओं को बारआवर (वर्षा लाने वाली) बनाकर चलाते हैं। फिर हम आसमान से पानी बरसाते हैं फिर उस पानी से तुम्हें सैराब करते हैं। और तुम्हारे वश में न था कि तुम उसका ख़ज़ीरा जमा करके रखते। (21-22)

हृदबंदी का उसूल कायनात की तमाम चीज़ों में राज़ है। हवा एक हृद के अंदर चलती है, हालांकि खुदा कभी-कभी दिखाता है कि वह आंधी भी बन सकती है। सूरज एक ख़ास फ़सले पर है। अगर वह उससे ऊपर चला जाए तो ज़मीन बर्फ़ की तरह जम जाए। सूरज नीचे आ जाए तो ज़मीन जलती हुई भट्टी बन जाए। ज़मीन की क़शिश निहायत मौजूं मिक्दार में है। अगर ज़मीन की जसामत दुगना होती तो उसकी क़शिश इतनी बढ़ जाती कि बोझ की वजह से आदमी के लिए ज़मीन पर चलना मुश्किल होता। और अगर ज़मीन की जसामत मौजूदा जसामत से आधे के बराबर कम होती तो उसकी क़शिश इतनी घट जाती कि आदमी और उसके मकानात हल्केपन की वजह से ज़मीन पर ठहर न सकते। यही हाल उन तमाम चीज़ों का है जिनके दर्मियान इंसान रहता है। हर चीज़ का एक अंदाज़ा मुक़र्र है वह न उससे घटता है और न उससे बढ़ता है।

ज़मीन पर इंसान और तमाम जीवधारियों की ज़िंदगी का इतिहास पानी पर है। ज़ेज़मीन पानी के ज़ख़िरों लेकर फ़जई बादलों तक पानी की फ़राहमी का निजाम इतने अजीब और इतने अजीम पैमाने पर है जिसका कायम करना हरगिज़ इंसान के बस में नहीं। इस अजीब और अजीम इतिजाम को खुदा मुसलसल ऐन इंसानी ज़रूरत के मुताबिक़ कायम किए हुए है।

इंसान एक बेहद नाज़ुक मख़्लूक है। उसके माहौल में कोई फ़र्क़ उसकी पूरी हस्ती को तह व बाला कर देने के लिए काफी है। ऐसी हालत में वेशुमार अज्जा (अवयवों) की एक कायनात, लातादाद इम्कानात का हामिल होने के बावजूद, ऐन उसी मख़्लूस इम्कानी अंदाजे पर कायम है जो इंसान जैसी एक मख़्लूक के लिए मुनासिब है। यह एतदाल और तनासुब (संतुलन) हरगिज़ इतफ़की नहीं हो सकता। यकीनन इसका कोई ज़बरदस्त ख़लिक और नाज़िम है। ऐसी हालत में जो शख़्स खुदा को न माने या खुदा को मान कर उसका शरीक ठहराए वह सिर्फ़ अपने ग़लत होने का सुबूत देता है न कि अक्कीदए तौहीद के ग़लत होने का।

وَإِنَّا لَنَعْنُ شَيْءٌ وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ۝ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝

और बेशक हम ही ज़िंदा करते हैं और हम ही मारते हैं। और हम ही बाकी रह जाएंगे और हम तुम्हारे अगलों को भी जानते हैं और तुम्हारे पिछलों को भी जानते हैं। और बेशक तुम्हारा रब उन सबको इकट्ठा करेगा। वह इल्म वाला है, हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (23-25)

दुनिया में इंसान को बसाना, फिर यहां से उसे उठा लेना दोनों खुदा की तरफ़ से होता है। अगर यह इंसान की मर्जी से होता तो वह कभी यहां न आ सकता और आने के बाद कभी यहां से वापस न जाता। इसी से यह भी साबित है कि इंसान की पैदाइश से पहले भी ज़मीन व आसमान खुदा के थे और इसके बाद भी वे खुदा के रहेंगे।

ज़मीन पर अनगिनत चीज़ें हैं। मगर हर एक की एक इफ़्तादियत (विशिष्टता) है। हर चीज़ वही ख़ास और निश्चित किरदार अदा करती है जो उसे अदा करना चाहिए। इससे साबित होता है कि ज़मीन का ख़लिक एक-एक चीज़ का इफ़्तादी इल्म रखता है। वह हर चीज़ को उसके अपने ख़ुसूसी काल में लगाए हुए है। यहां तक कि एक आदमी के हाथ के अंगूठे पर जो निशान होता है वह भी तमाम दूसरे इंसानों से बिल्कुल मुख़लिफ़ होता है। एक शख़्स के अंगूठे का निशान फिर कभी किसी दूसरे इंसान के साथ दोहराया नहीं जाता।

ऐसे कादिर और बाख़बर खुदा के लिए इसमें क्या मुश्किल है कि वह हर आदमी का अलग-अलग हिसाब ले और हर एक के साथ वही मामला करे जिसका वह फ़िलवाक़अ (तस्तुतः) मुस्तहक़ है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَبٍّ مَسْنُونٍ ۝ وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ تَارِ السَّجُومِ ۝

और हमने इंसान को सने हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से पैदा किया और इससे पहले ज़िन्नो को हमने आग की लपट से पैदा किया। (26-27)

इंसान का वजूद दो चीज़ों से मुरक्कब है। एक जिस्म और दूसरे रूह। जिस्म तमामतर ज़मीनी माददों से बना है। इंसानी जिस्म का तज्जिया बताता है कि वह उन्हीं अज्जा की तरकीब से बना है जिसे आम तौर पर पानी और मिट्टी कहते हैं गोया जिस्म के एतबार से इंसान सरासर एक बेहयात (निर्जीव) और वेशुऊर वजूद का नाम है। मगर जब खुदा उसके अंदर अपने पास से रूह डाल दे तो अचानक यही जिस्म ऐसी सलाहियतों (क्षमताओं) का हामिल बन जाता है जो मालूम कायनात में किसी दूसरी मख़्लूक को हासिल नहीं।

यहां दूसरी मख़्लूक वह है जिसे ज़िन्न कहते हैं। जिन इंसान के हरीफ़ (प्रतिपक्षी) हैं। ज़िन्न आग के शोले से बनाए गए हैं। गोया कि वे ऐन अपनी पैदाइश के एतबार से जलाने वाली मख़्लूक हैं। जिस तरह मिट्टी वाली ज़मीन अपने आपको आग वाले सूरज से दूर रखती है ताकि वह जल न जाए। इसी तरह इंसान को चाहिए कि वह अपने आपको ज़िन्नो से बचाए। वर्ना वे उसे अख़्लाकी और दीनी एतबार से जला डालेंगे।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۖ
فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ السَّجْدِينَ ۖ فَسَجَدَ الْمَلَكِكَةُ كُلُّهُمْ
أَجْمَعُونَ ۖ إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ أَبَىٰ أَن يَكُونَ مَعَ السَّجْدِينَ ۖ قَالَ يَا أَبَدِيسُ
مَا لَكَ الْاِسْتِكُونَ مَعَ السَّجْدِينَ ۖ قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِن
صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ۖ

और जब तेरे रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं सने हुए गारे की सूखी मिट्टी से एक बशर (इंसान) पैदा करने वाला हूँ। जब मैं उसे पूरा बना लूँ और उसमें अपनी रूह में से फूंक दूँ तो तुम उसके लिए सज्दे में गिर पड़ना। पर तमाम फरिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान), कि उसने सज्दा करने वालों का साथ देने से इंकार कर दिया। खुदा ने कहा ऐ इब्लीस, तुझे क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ। इब्लीस ने कहा कि मैं ऐसा नहीं कि बशर को सज्दा करूँ जिसे तूने सने हुए गारे की सूखी मिट्टी से पैदा किया है। (28-33)

इब्लीस ने सज्दा न करने की वजह बजाहिर यह बताई कि इंसान मेरे मुकाबले में कमतर है। मगर हकीकत यह है कि इसकी वजह खुद इब्लीस का अपना एहसासे कमतरी था। वह यह देखकर जल उठा कि मैं पहले से कायनात में हूँ और मुझे यह इज्जत नहीं मिली कि तमाम मख्लूकात से मुझे सज्दा कराया जाए। और इंसान जो अभी पैदा किया गया है उसे तमाम मख्लूकात से सज्दा कराया जा रहा है। उसने इंसान को सज्दा करने से इंकार कर दिया। 'इंसान मुझसे कमतर है' का मतलब यह है कि सज्दे का मुस्तहिक दरअसल मैं था फिर ग़ैर मुस्तहिक की इज्जत अफ़ज़ई को मैं क्यों तस्लीम करूँ।

यही घमंड और हसद तमाम इज्तिमाई ख़राबियों की जड़ है। मौजूदा दुनिया में ऐसे मौके इंसान के सामने बार-बार आते हैं। जो शख्स ऐसे मौके पर जलन की नफ़िसयात में मुब्तिला न हो उसने फरिश्तों की पैरवी की और जो शख्स जलन का शिकार हो जाए वह गोया शैतान का पैरोकार बना।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۖ وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ ۖ
قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۖ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۖ إِلَىٰ يَوْمِ
الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ۖ

खुदा ने कहा तू यहां से निकल जा क्योंकि तू मरदूद (धुत्कारा हुआ) है, और वेशक तू फिर से जज़ (बदले के दिन) तक लानत है। इब्लीस ने कहा, ऐ मेरे रब, तू मुझे

उस दिन तक के लिए मोहलत दे जिस दिन लोग उठाए जाएंगे। खुदा ने कहा, तुझे मोहलत है उस मुक़रर वक़्त के दिन तक। (34-38)

इंसान की तख़्तीक के बाद वाक़ेयात ने जो रुख़ इख़्तियार किया उसने शैतान को मुस्तक़िल तौर पर इंसान का दुश्मन बना दिया। अब क्रियामत तक के लिए आदमी शैतान की ज़द में है। इंसान के लिए सबसे ज्यादा क़बिले लिहाज़ बात यह है कि वह शैतान के फ़रेब से चौकन्ना रहे। मौजूदा दुनिया में यही वह मक़ाम है जहां इंसान की कामयाबी का फैसला भी हो रहा है और उसी मक़ाम पर उसकी नाकामी का भी।

قَالَ رَبِّ بِأَعْوَجَاتِي لِأَرْبَابٍ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَا أُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ إِلَّا
عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلَصِينَ ۖ

इब्लीस ने कहा, ऐ मेरे रब, जैसे तूने मुझे गुमराह किया है इसी तरह मैं ज़मीन में उनके लिए मुजय्यन (दिलकशी) करूंगा और सबको गुमराह कर दूंगा। सिवा उनके जो तेरे चुने हुए बंदे हैं। (39-40)

इब्लीस के सामने एक आजमाइशी सूरतेहाल आई। उसमें वह शिकस्त खा गया। अब उसके लिए सही तरीका यह था कि वह अपनी हार मान ले। मगर इसके बजाए उसने यह किया कि खुद खुदा पर इल्जाम देने लगा कि उसने जो कुछ किया मुझे गुमराह करने के खातिर किया। जिस वाक़ये से उसकी अपनी कमजोरी साबित हो रही थी उसे उसने चाहा कि खुदा के ऊपर डाल दे। अपनी शिकस्त का जिम्मेदार दूसरों को करार देना इसी शैतानी राह की पैरवी है।

इब्लीस ने इंसान को सज्दा न करने का सबब यह बताया कि इंसान को मिट्टी से बनाया गया है और मुझे आग से। इसकी कोई माकूल वजह नहीं है कि मिट्टी के मुकाबले में आग को फज़ीलत क्यों हासिल हो। मगर इब्लीस के अपने जेहनी ख़ाने में खुदसाज़ा तसव्वुर के तहत यह हुआ कि मिट्टी हकीर (तुच्छ) चीज़क़ है और आग़ अफ़ज़ल चीज़। इसी का नाम तज़ईन (मनमोहकता) है। यह एक नफ़िसयाती चीज़ है न कि कोई अक़्सी चीज़। इब्लीस ने अपनी ग़लती मानने के बजाए यह फैसला किया कि वह दूसरों से भी वही ग़लती कराए। वह खुद जिस नफ़िसयाती कमजोरी का शिकार हुआ है, उसी नफ़िसयाती कमजोरी में तमाम इंसानों को मुब्तिला कर दे।

इब्लीस ने कहा कि तेरे मुंतख़ब बंदों के अलावा सबको मैं गुमराह करूंगा। ये खुदा के मुंतख़ब बंदे कौन हैं। ये वे लोग हैं जो खुदा के मुकाबले में सीधी राह पर आ चुके हों। यानी बंदगी की राह। बअल्फ़ज़ दीगर, खुदा के मुक़बले में अपनी हँसियते वाक़ई के एतराफ़ की राह।

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَى مُسْتَقِيمٍ ۖ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ۖ وَإِنْ جَهَنَّمَ لَكُمْ وَعْدُهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَقْسُومٌ ۖ

अल्लाह ने फरमाया, यह एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुंचता है। वेशक जो मेरे बंदे हैं उन पर तेरा जोर नहीं चलेगा। सिवा उनके जो गुमराहों में से तेरी पैरवी करें। और उन सबके लिए जहन्नम का वादा है। उसके सात दरवाजे हैं। हर दरवाजे के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं। (41-44)

सिराते मुस्तकीम की तशरीह मुजाहिद और हसन और कतादा से यह मरवी है कि इससे मुराद हक का रास्ता है जो अल्लाह की तरफ निकलता है और उसी पर खत्म होता है। अगर आदमी शिर्क की राह चले तो वह राह खुदा तक नहीं पहुंचेगी बल्कि शरीकों तक पहुंचेगी। वह अगर सरकशी का तरीका इख्तियार करे तो उसकी मंजिल आदमी का अपना वजूद होगा न कि खुदा। अगर वह बेवैद होकर जिंदगी गुजारे तो वह मुझलिफ सन्तों में भटकेगा। उसका सफर खुदा पर खत्म नहीं हो सकता।

मगर जब आदमी सिर्फ खुदा को अपना मर्कजे तवज्जोह बनाता है और उसी को सब कुछ समझ कर अपनी जिंदगी को खुदा के रुख पर चलाता है तो बिल्कुल कुदरती बात है कि उसका सफर खुदा की तरफ जारी हो और बिलआखिर वह खुदा तक पहुंच जाए। खुदा कादिर है और इंसान आजिज। इसलिए खुदा और बंदे के दरमियान एक ही सही निस्वत है और वह अबदियत (बंदगी) की निस्वत है। अबदियत की रविश इख्तियार करना खुदा के साथ अपनी सहीतरीन निस्वत को पा लेना है। जिस शख्स की निस्वत खुदा के साथ कायम हो जाए उस पर शैतान का जोर नहीं चलता। और जिसने खुदा के साथ अपनी निस्वत कायम न की उसकी निस्वत शैतान के साथ कायम हो जाती है। फिर वह शैतान के मश्वरों पर चलने लगता है। यहां तक कि वहीं पहुंच जाता है जहां बिलआखिर शैतान को पहुंचना है।

जहन्नम जो शैतान और उसके साथियों का आखिरी ठिकाना है। उसके सात दर्जे हैं। जहन्नमी लोग अपने आमाल के फर्क के लिहाज से सात बड़े गिरोहों में तक्सीम किए जाएंगे और उसके मुताबिक जहन्नम के सात तबकों में से किसी एक तबके में जगह पाएंगे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۖ أَدْخُلُوهُمْ بِسَلَامٍ أَمِينٍ ۖ وَكَرَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَلٍ إِخْوَانًا عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ۖ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ۖ نَبِيُّ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۖ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ ۖ

वेशक डरने वाले बागों और चशमों (स्रोतों) में होंगे। दाखिल हो जाओ इनमें सलामती और अमन के साथ। और उनके सीनों की कुदूरतें (मन-मुटाव) हम निकाल देंगे, सब भाई-भाई की तरह रहेंगे तख्तों पर आमने सामने। वहां उन्हें कोई तकलीफ नहीं पहुंचेगी और न वे वहां से निकाले जाएंगे। मेरे बंदों को खबर दे दो कि मैं बख्शने वाला रहमत वाला हूं और मेरी सजा दर्दनाक सजा है। (45-50)

जन्नत की जिंदगी बेखैफ जिंदगी होगी। उसके मुस्तहिक वे लोग क्दार पाएंगे जिन्होंने दुनिया में खुदा का खैफ किया। दुनिया में खुदा का खैफ आखिरत की बेखैफी की कीमत है।

आपस की रंजिशें दो किस्म की होती हैं। एक सरकशी की वजह से, दूसरी गलतफहमी की वजह से। सरकशी की बिना पर रंजिश और इनाद (दुराव) पैदा होना सबसे बड़ी इज्तिमाई बुराई है। अहले ईमान को उसे दुनिया ही में खत्म कर लेना चाहिए। जो लोग इसे दुनिया में खत्म न करें वे आखिरत में जहन्नम का खतरा मोल ले रहे हैं।

दूसरी रंजिश वह है जो गलतफहमी की वजह से पैदा होती है। वह कभी खत्म हो जाती है और कभी तरपैन (पक्षों) के इख्लास के बावजूद आखिर वक्त तक बाकी रहती है। यह दूसरी किस्म की रंजिश आखिरत में मुकम्मल तौर पर खत्म हो जाएगी। क्योंकि आखिरत हकीकतों के कामिल जुरू की दुनिया है। जब तमाम हकीकतों बेकसब होकर सामने आ जाएंगी तो एक मुख्लिस आदमी के लिए कोई वजह बाकी न रहेगी कि वह क्यों अपने भाई के खिलाफ खामख्वाह रंजिश रखे।

जन्नत की जिंदगी इतनी लतीफ और नफीस जिंदगी है कि मौजूदा दुनिया में इसका तसव्वुर नहीं किया जा सकता। ताहम मौजूदा दुनिया की लज्जतें और खुशियां आने वाली लज्जतों और खुशियों की दुनिया का एक इब्तिदाई तआरुफ हैं। हर आदमी समझ सकता है कि जिस जन्नत का तआरुफ इतना लज्जत हो वह खुद कितनी ज्यादा लज्जत होगी।

मौजूदा दुनिया में कोई शख्स बिलफर्ज हर किस्म की लज्जतें जमा कर ले तब भी तरह-तरह की नाखुशगवारियां उसकी हर लज्जत को बेमअना बना देती हैं। मगर जन्नत एक ऐसी जगह है जिसकी लज्जतें हर किस्म की नाखुशगवारियों से पाक होंगी। हदीस में आया है कि अहले जन्नत से कहा जाएगा कि अब तुम हमेशा सेहतमंद रहोगे और कभी बीमार न होगे अब तुम हमेशा जियोगे और कभी न मरोगे। अब तुम हमेशा जवान रहोगे और कभी बूढ़े न होगे। अब तुम हमेशा यहां रहोगे तुम्हें यहां से कभी जाना न होगा।

وَنَبِّئُهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ۖ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ۖ قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَالِيمٍ ۖ قَالَ أَبَشْرْتُمُونِي عَلَى أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فِيمِ تَبَشِّرُونَ ۖ قَالُوا ابْشِرْ بِكَ بِالْحَقِّ فَلَاتَكُنْ مِنَ الْقَاظِمِينَ ۖ قَالَ وَمَنْ يَقْظُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ۖ

और उन्हें इब्राहीम के महमानों से आगाह करो। जब वे उसके पास आए फिर उन्होंने सलाम किया। इब्राहीम ने कहा कि हम तुम लोगों से डरते हैं हैं। उन्होंने कहा कि अदेशा न करो हम तुम्हें एक लड़के की बशारत (शुभ सूचना) देते हैं जो बड़ा आलिम होगा। इब्राहीम ने कहा क्या तुम इस बुढ़ापे में मुझे औलाद की बशारत देते हो। पस तुम किस चीज की बशारत मुझे दे रहे हो। उन्होंने कहा कि हम तुम्हें हक के साथ बिशारत देते हैं। पस तू नाउम्मीद होने वालों में से न हो। इब्राहीम ने कहा कि अपने रब की रहमत से गुमराहों के सिवा और कौन नाउम्मीद हो सकता है। (51-56)

हजरत इब्राहीम के पास फरिश्ते इंसानी सूरत में आए। सवाल व जवाब के दौरान उन्होंने कहा कि हम हक के साथ आए हैं। यह हक (अप्रेवाकही) क्या था जिसके लिए फरिश्ते हजरत इब्राहीम के पास आए। यह एक गैर मामूली इनाम की बशारत थी जिसकी आम हालात में उम्मीद नहीं की जा सकती। इंसान पर जब खुदा कोई गैर मामूली इनाम करना चाहता है तो उसकी तक्मील के लिए वह उसके पास खुसूसी फरिश्ते भेजता है।

इस किस्म के फरिश्ते पैगम्बरों के पास भी आते हैं और गैर पैगम्बरों के पास भी। फर्क यह है कि पैगम्बरों के पास फरिश्ते आते हैं तो वह उन्हें देखता है और शुजुरी तौर पर वाकिफ होता है कि ये फरिश्ते हैं। मगर आम इंसान को इस किस्म का यकीनी इदराक (भान) नहीं होता। अलबत्ता फरिश्तों की खुसूसी कुरबत उसके अंदर खुसूसी कैफियात पैदा कर देती है। यह कैफियात गोया इसका इशारा होती हैं कि इस वक़्त आदमी खुदा के भेजे हुए खुसूसी फरिश्तों की सोहबत में है।

قَالَ مَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۖ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ۚ وَإِنَّا لَنُؤْطِيهِمُ الْغُبْرَانِ ۚ إِلَّا أَمْرًا ۚ قَدْ رَأَيْنَا إِتْمَانًا ۚ الْغُبْرَانِ ۚ

कहा ऐ भेजे हुए फरिश्तो अब तुम्हारी मुहिम क्या है। उन्होंने कहा कि हम एक मुजरिम कौम की तरफ भेजे गए हैं। मगर लूत के घर वाले कि हम उन सबको बचा लेंगे सिवाए उसकी बीबी के कि हमने ठहरा लिया है कि वह जरूर मुजरिम लोगों में रह जाएगी। (57-60)

हजरत इब्राहीम फिलिस्तीन में रहते थे। इसके करीब ही बहरे मुर्दा (Dead Sea) के किनारे आपके भतीजे हजरत लूत थे। हजरत लूत ने इस इलाके में बसने वालों पर तब्लीग की। मगर वे इस्लाह कुबूल करने पर राजी न हुए। उनकी सरकशी बढ़ती चली गई। यहां तक कि खुदा का फैसला यह हुआ कि उन्हें हलाक कर दिया जाए। ये फरिश्ते उसी खुदाई फैसले के निफज के लिए आए थे।

गालिबन हजरत लूत के चन्द अहले खानदान के सिवा और कोई शख्स उन पर ईमान न लाया। घर से बाहर वालों के लिए हक के दाजी को कुबूल करना बहुत मुश्किल होता है। क्योंकि उनके लिए बहुत सी नफिसयाती रुकावटें हायल हो जाती हैं। ताहम खुद अपने खूनी

रिश्तेदारों के लिए ये रुकावटें नहीं होतीं। चुनांचे ये लोग निस्वतन ज्यादा आसानी के साथ हक के दाजी के साथी बन जाते हैं।

हजरत लूत के साथ ऐसा ही हुआ। आपकी दावत पर गालिबन सिर्फ आपकी लड़कियां ईमान लाईं। औलाद को अपने बाप से जो खुसूसी तअल्लुक होता है वह बाप की दावत (आह्वान) को कुबूल करने में खुसूसी मददगार बन जाता है। उन लड़कियों ने हजरत लूत के साथ नजात पाई। मगर आपकी बीबी दिल से आपकी मोमिन न बन सकी। चुनांचे उसे दूसरे मुजरिमों के साथ हलाक कर दिया गया। खुदा के कानून में महज रिश्तेदारी की बुनियाद पर किसी के साथ कोई रियायत नहीं की जाती।

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ۖ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّذْكَرُونَ ۚ قَالُوا بَلْ جُنُنَا ۖ إِنَّا بِمَا نَفْعُهُمْ مُّكَذِّبُونَ ۚ وَآتَيْنَاكَ بِالْحَقِّ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۚ فَاسْتَرْ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ ۚ وَامْضُ وَاحِدٌ ۚ تَوَّارُونَ ۚ وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَٰؤُلَاءِ مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ۚ

फिर जब भेजे हुए फरिश्ते लूत के खानदान के पास आए। उन्होंने कहा कि तुम लोग अजनबी मालूम होते हो। उन्होंने कहा कि नहीं बल्कि हम तुम्हारे पास वह चीज लेकर आए हैं जिसमें ये लोग शक करते हैं। और हम तुम्हारे पास हक के साथ आए हैं, और हम बिल्कुल सच्चे हैं। पस तुम कुछ रात रहे अपने घर वालों के साथ निकल जाओ। और तुम उनके पीछे चलो और तुम में से कोई पीछे मुड़कर न देखे और वहां चले जाओ जहां तुम्हें जाने का हुक्म है। और हमने लूत के पास यह हुक्म भेजा कि सुबह होते ही उन लोगों की जड़ कट जाएगी। (61-66)

एक 'हक' वह था जिसे लेकर फरिश्ते हजरत इब्राहीम के पास आए थे। दूसरा हक वह है जिसे लेकर वे हजरत लूत के पास पहुंचे। पहला हक खुदा के खुसूसी इनाम की सूरत में था। दूसरा हक खुदा की खुसूसी सजा की सूरत में।

हजरत लूत के पास फरिश्ते इंसान की सूरत में आए। ये फरिश्ते इसलिए आए थे कि वे पैगम्बर को न मानने वालों के दर्मियान वह फैसला नाफिज कर दें जो खुदा ने उनकी सरकशी की बिना पर उनके लिए मुकद्दर किया है। उनकी हिदायत के मुताबिक हजरत लूत रात के अंधेरे में दूसरे अहले ईमान को लेकर बस्ती से निकल गए। इसके बाद सुबह सवेरे शदीद जलजलों के धमाकों से वह पूरा इलाका तलपट हो गया। तमाम मुक़िरीन इतिहाई बेदर्दी के साथ हलाक कर दिए गए।

यह हलाकत कहां हुई। यह उनकी उसी दुनिया में हुई जिसे वे अपनी दुनिया समझे हुए थे। जहां की हर चीज उन्हें अपनी साथी और मददगार दिखाई देती थी। खुदा जब हुक्म देता है तो ऐन वही नक्शा आदमी के लिए हलाकत का नक्शा बन जाता है जिसे वह अपने लिए

कामयाबी का नक्शा समझे हुए था। जिस महल के अंदर अपने आपको पाकर आदमी फ़ख़र करता है उस महल को इस तरह खंडहर कर दिया जाता है जैसे कि वह एक मलबा था जो आदमी के सिर पर पटक दिया गया।

وَجَاءَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ۖ قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ صِغَبِي فَلَا تَفْضَحُون ۖ
وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزَوْنَ ۖ قَالُوا أَوَلَمْ نُنْهَكْ عَنِ الْعَالَمِينَ ۖ قَالَ هَؤُلَاءِ
بَنَاتِي إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ ۖ

और शहर के लोग खुश होकर आए। उसने कहा ये लोग मेरे महमान हैं, तुम लोग मुझे रुसवा न करो। और तुम अल्लाह से डरो और मुझे जलील न करो। उन्होंने कहा, क्या हमने तुम्हें दुनिया भर के लोगों से मना नहीं कर दिया। उसने कहा ये मेरी बेटियां हैं अगर तुम्हें करना है। (67-71)

कौमे लूत की बस्ती (सदूम) में जो फरिश्ते आए वे निहायत खूबसूरत नौजवान की सूरत में आए। यह गोया फह्लाशी (अश्लीलता) में डूबी हुई उस कौम की जांच का आखिरी पर्चा था। चुनांचे ये लोग अपनी बड़ी हुई सरकशी की बिना पर उन नौजवानों पर टूट पड़े। वे हस्बे आदत उनके साथ बदकारी करना चाहते थे। मगर उन्हें मालूम न था कि वे जिन्हें पुरकशिश नौजवान समझ रहे हैं वे दरअस्त अजाब के फरिश्ते हैं जो सिर्फ इसलिए आए हैं कि उन्हें हमेशा के लिए जलील करके छोड़ दें।

‘मेरी बेटियां’ से मुराद कौम की बेटियां हैं। हजरत लूत ने जब देखा कि जालिम लोग मना करने के बावजूद महमानों पर टूटे पड़ रहे हैं तो आपने उनसे कहा कि खुदारा, मेरे महमानों के मामले में मुझे रुसवा न करो। अगर तुम्हें कुछ करना है तो ये कौम की लड़कियां हैं इनमें से जिससे चाहो निकाह कर लो।

لَعَنَّا إِيَّاهُمْ لَنَعِيَ سَكْرَتُهُمْ يَعْمَهُونَ ۖ فَآخَذْتُمُ الصَّبِيحَةَ مُشْرِقِينَ ۖ فَجَعَلْنَا
عَالِيَهَا سَافَهَا ۖ وَامْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيلٍ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ
لِّلْمُتَوَسِّمِينَ ۖ وَإِنَّهَا لَإِسْبِيلٌ مُّقِيمٌ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۖ

तेरी जान की कसम, वे अपनी सरमस्ती में मदहोश थे। पस दिन निकलते ही उन्हें चिंघाड़ ने पकड़ लिया। फिर हमने उस बस्ती को तलपट कर दिया और उन लोगों पर कंकर के पत्थर की बारिश कर दी। बेशक इसमें निशानियां हैं ध्यान करने वालों के लिए। और यह बस्ती एक सीधी राह पर वाकेअ (स्थिति) है। बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए। (72-77)

कौमे लूत का यह हाल क्यों हुआ कि वे सरकशी में आपे से बाहर हो गए। इसकी वजह यह

थी कि उन्होंने मामले को हजरत लूत की निस्वत से देखा। चूंकि वे हजरत लूत के मुकाबले में ताकतवर थे। इसलिए उन्होंने समझा कि हम जो चाहें करें। कोई हमारा कुछ बिगाड़ने वाला नहीं।

अगर वे मामले को अल्लाह की निस्वत से देखते तो सूरतेहाल बिल्कुल बरअक्स होती। अब उन्हें मालूम होता कि उनकी सरकशी सरासर मजहकाखेज (हास्यास्पद) है। क्योंकि खुदा के मुकाबले में किसी भी ताकतवर की कोई हैसियत नहीं। चुनांचे ऐन सुबह को उन पर कड़क चमक का शदीद तूफान आया। खुदा ने हवाओं को हुक्म दिया और उन्होंने कौमे लूत की बस्तियों (सदूम और अमूरा) पर कंकरियों की बारिश शुरू कर दी। कौम की कौम थोड़ी देर में तबाह होकर रह गई।

इस वाक्य में गौर करने वालों के लिए यह नसीहत है कि इस दुनिया में किसी का सक्क (सामना) हक्कीकतन इंसान से नहीं बल्कि खुदा से है। अगर आदमी इस हक्कीकत को जान ले तो उसकी सारी सरकशी खत्म हो जाए।

وَأَن كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ۖ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمْ لِبَائِمٍ
مُّبِينِينَ ۖ وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسِلِينَ ۖ وَآتَيْنَهُمُ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا
مُعْرِضِينَ ۖ وَكَانُوا يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ۖ فَآخَذْتَهُمُ
الصَّبْحَةَ مُضْطَبِحِينَ ۖ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۖ

और एका वाले यकीनन जालिम थे। पस हमने उनसे इंतिकाम लिया। और ये दोनों बस्तियां खुले रास्ते पर वाकेअ (स्थित) हैं। और हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया। और हमने उन्हें अपनी निशानियां दीं। मगर वे उससे मुंह फेरते रहे और वे पहाड़ों को तराशकर उनमें घर बनाते थे कि अमन में रहें। पस उन्हें सुबह के वक्त सख्त आवाज ने पकड़ लिया। पस उनका किया हुआ उनके कुछ काम न आया। (78-84)

असहाबे ऐका से मुराद हजरत शुऐब की कौम है। उस कौम का अस्त नाम बनी मदनान था। ये लोग मौजूदा तबूक के इलाके में आबाद थे। असहाबे हिज्र से मुराद कौमे समूद है जिसकी तरफ हजरत सालहे मबऊस हुए। यह इलाका मौजूदा मदीना के शुमाल में वाकेअ था।

असहाबे ऐका की सरकशी ने उन्हें न सिर्फ शिर्क में मुब्तिला किया बल्कि उन्हें बदतरीन अख्वाकी जराइम तक पहुंचा दिया। हजरत शुऐब की याददिहानी के बावजूद उन्होंने सबक नहीं लिया तो खुदा ने जमीन को हुक्म दिया। इसके बाद यह हुआ कि जो जमीन उनके लिए गहवार-ए-ऐश बनी हुई थी वही उनके लिए गहवार-ए-अजाब बन गई।

कौमे समूद संग तराशी के फन में माहिर थे। उन्होंने पहाड़ों को काट कर उन्हें शानदार घरों में तब्दील कर दिया था। वे समझते थे कि उन्होंने अपनी हिफजत का आखिरी इंतजाम कर लिया है। जब उन्होंने खुदा की पुकार को नजरअंदाज कर दिया तो खुदा ने हुक्म दिया और उनके अजीम मकानात उनके लिए अजीम कब्रों में तब्दील हो गए।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ
فَاصْنِعِ الصَّفْحَةَ الْجَبِيلَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ۝

और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दरमियान है हिक्मत (तत्वदर्शिता) के बगैर नहीं बनाया और बिलाशुबह कियामत आने वाली है। पस तुम खूबी के साथ दरगुजर (क्षमा) करो। वेशक तुम्हारा रब सबका खालिक (स्रष्टा) है, जानने वाला है। (85-86)

जमीन व आसमान का मुतालआ बताता है कि यह पूरा निज़ाम हददर्जे हिक्मत के साथ बनाया गया है। यहां हर चीज ठीक वैसी ही है जैसा कि उसे होना चाहिए। इस पूरे निज़ाम में सिर्फ इंसान है जो ख़िलाफे हकीकत रवैया इख़्तियार करता है। इंसान और कायनात में यह तजाद (अन्तर्निष्ठ) तन्नाज करता है कि वह ख़त्म हो। कियामत का अक़ीदा इस एतबार से ऐम अक़ी और मतिवी (तर्कपूर्ण) अक़ीदा है। क्योंकि कियामत के सिवा कोई और चीज नहीं है जो इस तजाद को ख़त्म करने वाली हो।

दावते इलल्लाह के अमल का एक अहम जुज 'एराज' है। यानी मुखातब जब रैर मुतअल्लिक बहस और झगड़ा छेड़े तो उसके साथ मशगूल होने के बजाए उससे अलग हो जाना। एराज का उसूल इख़्तियार किए बगैर दावत का काम मुअस्सिर तौर पर नहीं किया जा सकता। एराज की मस्लेहत यह है कि मदऊ हमेशा दाओ (आह्वानकर्ता) से रैर मुतअल्लिक झगड़े छेड़ता है। अब अगर दाओ यह करे कि हर ऐसे मौके पर मदऊ से लड़ जाए तो रैर मुतअल्लिक उमूर पर टकराव तो ख़ूब होगा मगर अस्ल दावती काम बगैर हुए पड़ा रह जाएगा।

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِّنَ الْمُبَارَى وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ۝ لَا تَدْنُ عَيْنُكَ
إِلَى مَا مَنَعْنَا بِهِ رُؤُوسَ أَهْلِهِمْ وَلَا تَخْزَنُ عَلَيْهِمْ وَاحْفَظْ جَنَاحَكَ
لِلْمُؤْمِنِينَ وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ۝ كَمَا أَنزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ
الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ۝ فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝ عَمَّا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۝

और हमने तुम्हें सात मसानी और कुरआने अजीम अता किया है। तुम इस दुनिया की मताअ (सुख-सामग्री) की तरफ आंख उठाकर न देखो जो हमने उनमें से मुख्तलिफ लोगों को दी हैं और उन पर ग़म न करो और ईमान वालों पर अपने शफ़कत (स्नेह) के बाजू झुका दो और कहो कि मैं एक खुला हुआ डराने वाला हूं। इसी तरह हमने तक्सीम करने वालों पर भी उतारा था जिन्होंने अपने कुरआन के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। पस तेरे रब की कसम, हम उन सबसे जरूर पूछेंगे, जो कुछ वे करते थे। (87-93)

सात मसानी से मुराद सूरह फतिहा है। सूरह फतिहा पूरे कुरआन का खुलासा (सार) है और बकिया कुरआन उसकी तफ़सील। यह कुरआन बिलाशुबह जमीन व आसमान की सबसे बड़ी नेमत है। इसका हिदायतनामा होना इसके मानने वालों के लिए आखिरत की कामयाबी की ज़मानत है। और इसका आखिरी किताब होना लाजिम ठहरता है कि जरूर इसे अपने मुख्तलिफ़ीन (विरोधियों) पर ग़लबा हासिल हो। क्योंकि अगर ग़लबा न हो तो वह आखिरी किताब की हैसियत से बाकी नहीं रह सकती।

दाओ (आह्वानकर्ता) को चाहिए कि जो लोग ईमान नहीं लाते उन्हें सोच कर वह मायूस न हो। बल्कि जो लोग ईमान लाए हैं उन्हें देखकर मुतमइन हो और उनकी दिलजोई और तर्बियत में पूरी तवज्जोह सर्फ़ करे।

कुरआन को टुकड़े-टुकड़े करने से मुराद तौरात को टुकड़े-टुकड़े करना है। यहूद ने अपनी आसमानी किताब को अमलन दो हिस्सों में बांट रखा था। उसकी जो तालीम उनकी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ होती उसे वे छोड़ देते और जो उनकी ख़्वाहिशों के मुताबिक होती उसे ले लेते। पहली किस्म की आयतें उनके यहां सिर्फ़ तफ़्दुस (पावनता) के ख़ाने में पड़ी रहतीं। उन पर वे न ज्यादा ध्यान देते और न उन्हें ज्यादा फैलाते। अलबत्ता दूसरी किस्म की आयतों की वे ख़ूब इशाअत (प्रसार) करते। बअल्फ़ाज दीगर उन्होंने किताबे खुदावंदी को अपने मन्ज़र (हितों) के ताबेअ बना लिया था न कि खुदाई अहक़ाम के ताबेअ।

किसी चीज को पाने के दो दर्जे हैं। एक है उसके अज्जा (अंशों) को पाना। दूसरा है उसे उसकी कुल्ली हैसियत में पाना। दरख़्त को जब आदमी उसकी कुल्ली हैसियत में पहचान ले तो वह कहता है कि यह दरख़्त है। लेकिन अगर वह उसे उसकी कुल्ली हैसियत में न पहचाने तो वह तना और शाख़ और पत्ती और फूल और फल का ज़िक्र करेगा। वह उस वाहिद (एक) लफ़्ज़ को न बोल सकेगा जिसके बोलने के बाद उसके तमाम मुतफ़रिफ़ (विभिन्न) अज्जाएँ अस्ल में जुड़कर वहदत (एकत्व) की शक़ल इख़्तियार कर लेते हैं।

यही मामला खुदा की किताब का है। खुदा की किताब में बहुत से मुतफ़रिफ़ अहक़ाम हैं। इसी के साथ उसका एक एक कुल्ली और मर्कजी नुक्ता है। जो लोग खुदा की किताब में गुम हों वे खुदा की किताब को उसकी कुल्ली हैसियत में पा लेंगे। इसके बरअक्स जो लोग खुद अपने आप में गुम हों वे खुदा की किताब को देखते हैं तो खुदा की किताब उन्हें बस मुख्तलिफ़ और मुतफ़रिफ़ अहक़ाम का मज्मूआ दिखाई देती है। वे उनमें से अपने ज़ैक़ और हालात के मुताबिक कोई जुज ले लेते हैं और उस पर इस तरह जोर सर्फ़ करने लगते हैं जैसे कि बस वही एक चीज सब कुछ हो।

दरख़्त की जड़ में पानी देने से पूरे दरख़्त में पानी पहुंच जाता है। इसी तरह जब खुदा की किताब के कुल्ली और मर्कजी पहलू को ज़िद्दा किया जाए तो उसके ज़िद्दा होते ही बकिया तमाम अज्जा लाजिमी तौर पर ज़िद्दा हो जाते हैं। इसके बरअक्स अगर किसी एक जुज को लेकर उस पर जोर दिया जाए तो उसकी जाहिरी धूम तो मच सकती है मगर उससे दीन का हर्षिह्य (उत्थान) नहीं होता। क्योंकि उसे ज़िद्दी मर्कजी पहलू के ज़िद्दा होने से मिलती और वह सिरे से ज़िद्दा ही नहीं हुआ।

शाम के वक्त उन्हें लाते हो और जब सुबह के वक्त छोड़ते हो और वे तुम्हारे बोझ ऐसे मकामात तक पहुंचाते हैं जहां तुम सज़ा महन्त के बग़ैर नहीं पहुंच सकते थे। बेशक तुम्हारा ख़ब बड़ा ब्रह्म (करुणामय) महरबान है। और उसने घोड़े और ख़च्चर और गधे पैदा किए ताकि तुम उन पर सवार हो और जीनत (साज-सज्जा) के लिए भी और वह ऐसी चीज़ें पैदा करता है जो तुम नहीं जानते। (4-8)

इंसान का आगाज एक हकीर माददा से होता है। मगर इंसान जब बड़ा होता है तो वह खुदा को मद्देमुकाबिल बनने की कोशिश करता है। वह खुदा की कायनात में बेखुदा बनकर रहना चाहता है। अगर इंसान अपनी इब्किदाई हकीकत को नजर में रखे तो कभी वह जमीन में सरकशी का रवैया इख़्तियार न करे।

इंसान को मौजूदा दुनिया में जो नेमतें हासिल हैं उनमें से एक चौपाए हैं। यह गोया कुदरत की जिद्दा मशीनें हैं जो इंसान की मुख़लिफ़ ज़रूरियात फ़राहम करने में लगी हुई हैं। ये चौपाए घास और चारा खाते हैं। और उन्हें इंसानी खुराक के लिए गोशत और दूध में तब्दील करते हैं। वे अपने जिस्म पर बाल और ऊन निकालते हैं जिनसे आदमी अपने पोशाक बनाता है। वे इंसान को और उसके सामान को एक जगह से उठाकर दूसरी जगह पहुंचाते हैं। इन चौपायों का गल्ला आदमी के असासे में शामिल होकर उसकी हैसियत और शान में इजाफ़ा करता है।

‘और खुदा ऐसी चीज़ें पैदा करता है जिन्हें तुम नहीं जानते’ इससे मुराद वे फायदे हैं जो चौपायों के अलावा दूसरे जराये से हासिल होते हैं। इन दूसरे जराये का एक हिस्सा कदीम जमाने में भी इंसान को हासिल था। और इनका बड़ा हिस्सा मौजूदा जमाने में दरयाफ्त करके इंसान इनसे फायदा उठा रहा है। मिसाल के तौर पर जानवर की जगह मशीन।

दुनिया में इंसान के लिए जो वेशुमार नेमतें हैं वे इंसान ने खुद नहीं बनाई हैं बल्कि वे खुदा की तरफ से उसके लिए मुहय्या की गई हैं। इससे जाहिर होता है कि इस दुनिया का ख़ालिक एक महरबान ख़ालिक है। इसका तक्ज़ज़ है कि इंसान अपने ख़ालिक का शुक्रगुज़र बने और उसका वह हक़ अदा करे जो मोहसिन होने की हैसियत से उसके ऊपर लाज़िम आता है।

وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَايزٌ وَلَوْ شَاءَ لَهَدَىٰكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩﴾

और अल्लाह तक पहुंचती है सीधी राह। और कुछ रास्ते टेढ़े भी हैं और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता। (9)

एक जगह से दूसरी जगह सफर करने के लिए कोई निश्चित सड़क होती है जो सीधी मंजिल तक पहुंचाती है। सवारियां अपनी मंजिले मक्सूद के मुताबिक इन्हीं सीधी सड़कों पर चलती हैं। ताहम इन सड़कों के अलावा अतराफ में भी रास्ते और पगडंडियां होती हैं। अगर कोई शख्स इन विभिन्न रास्तों को रास्ता समझ कर उन पर चल पड़े तो वह कभी अपनी मल्लूबा मंजिल तक नहीं पहुंच सकता। वह अस्ल मंजिल के दाएं बाएं भटक कर रह जाएगा।

यही मामला खुदा तक पहुंचने का भी है। खुदा ने इंसान को वाजेह तौर पर बता दिया है कि वह कौन सा रास्ता है जो उसे खुदा तक पहुंचाने वाला है। यह रास्ता तौहीद और तकवा का रास्ता है। जो शख्स इस रास्ते को इख़्तियार करेगा वह खुदा तक पहुंचेगा और जो शख्स दूसरे रास्तों पर चलेगा वह इधर-उधर भटक जाएगा। वह कभी अपने ख़ब तक नहीं पहुंच सकता।

दुनिया में हर चीज़ खुदा के मुकर्रर किए हुए रास्ते पर चलती है। खुदा अगर चाहता तो इसी तरह इंसान को भी एक मुकर्रर रास्ते का पाबंद बना देता। मगर इंसान का तख़्लीकी मंसूबा दूसरी अशया (चीज़ें) के तख़्लीकी मंसूबे से मुख़लिफ़ है। दूसरी अशया से सिर्फ पाबंदी मल्लूब है। मगर इंसान से जो चीज़ मल्लूब है वह इख़्तियारी पाबंदी है। इसी इख़्तियारी पाबंदी का मौका देने का यह नतीजा है कि कोई शख्स सच्चे रास्ते पर चलता है और कोई उसे छोड़कर खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) राहों में भटकने लगता है।

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ﴿١٠﴾ يُثْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١١﴾

वही है जिसने आसमान से पानी उतारा, तुम उसमें से पीते हो और उसी से दरख़्त होते हैं जिनमें तुम चराते हो। वह उसी से तुम्हारे लिए खेती और जैतून और खजूर और अंगूर और हर किस्म के फल उगाता है। बेशक इसके अंदर निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (10-11)

बादल ऊपर फज से पानी बरसाते हैं और नीचे जमीन पर उससे निहायत बामअना किस्म के नतीजे जाहिर होते हैं। ‘जमीन व आसमान’ का इस तरह हमआहंग (अंतरंग) होकर अमल करना वाजेह तौर पर यह साबित करता है कि जो खुदा आसमान का है वही खुदा जमीन का भी है।

कायनात के मुख़लिफ़ हिस्सों के दर्मियान कामिल हमआहंगी है। यह हमआहंगी इस बात का कतई सुबूत है कि सारी कायनात का ख़ालिक व मालिक सिर्फ एक है। कायनात के मौजूदा ढांचे में एक से ज्यादा खुदा की कोई गुंजाइश नहीं। और जब ख़ालिक व मालिक हकीकतन सिर्फ एक खुदा है तो उसके सिवा दूसरी जिस चीज़ को भी मावूदियत (पूज्यता) का दर्जा दिया जाएगा वह सरासर बेबुनियाद होगा।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الْبَيْلَ وَالتَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنَّجْمُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِ رَبِّهِ ﴿١٢﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٣﴾ وَمَا ذَرَأْنَاكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٤﴾

और उसने तुम्हारे काम में लगा दिया रात को और दिन को और सूरज को और चांद को और सितारे भी उसके हुक्म से मुसख़्खर (अधीनस्थ) हैं। वेशक इसमें निशानियां हैं अक्लमंद लोगों के लिए। और जमीन में जो चीजें मुसल्लिफ़ क्रिम की तुम्हारे लिए फैलाई, वेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सबक हासिल करें। (12-13)

सूरज, चांद सितारे वसीअ ख़ला में इतिहाई सेहत के साथ मुसलसल गर्दिश करते हैं। जमीन में तरह-तरह की मख़्बूक़ात (हिवानात, नवातात, जमादात) वेशुमार तादाद में पाई जाती हैं। पहले में अधीनता का पहलू नुमायां है। और दूसरे में बहुरूपता का पहलू। एक मंजर ख़ुदा की कुदरत के बेपनाह होने को याद दिलाता है। दूसरा मंजर ख़ुदाई सिफ़ात के अनगिनत होने को।

ये मनाज़िर इतने हैरतनाक हैं कि जो शख्स उन्हें नजर ठहराकर देखे वह उनसे मुतअस्सिर हुए बग़ैर नहीं रह सकता। इन चीजों में उसे ख़ुदा की अज्मत और उसकी रबूबियत दिखाई देगी। वह ज़हिरी वाक़ेयात के अंदर छुपे हुए ग़ैबी हक़ीक़ को दरयाफ़्त करेगा। वह मख़्बूक़ात को देखकर ख़ालिक की मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) में डूब जाएगा।

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لَنَا كُؤُومًا مِّنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُومِنَهُ حُلِيَّةً
تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَآخِرَ فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ④

और वही है जिसने समुद्र को तुम्हारे काम में लगा दिया ताकि तुम उसमें से ताजा गोश्त खाओ और उससे जेवर निकालो जिसे तुम पहनते हो और तुम कश्तियों को देखते हो कि उसमें चीरती हुई चलती हैं और ताकि तुम उसका फ़न्स (अनुग्रह) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14)

समुद्र में लोहे का टुकड़ा डालें तो फ़ौरन डूबकर पानी की तह में चला जाएगा। मगर जब इसी लोहे को जहाज की शकल दे दी जाए तो वह भारी बोझ लिए हुए समुद्र में तैरने लगता है और एक मुल्क से दूसरे मुल्क में पहुंच जाता है।

यह ख़ुदा का ख़ास क़ानून है जिसके ज़रिए उसने समुद्र जैसी मुहीब (भयावह) मख़्बूक़ात को इंसान के लिए कारआमद बना रखा है। इसी तरह समुद्र के अंदर हैरतनाक इंतजाम के तहत मछली की सूरत में ताजा गोश्त तैयार किया जाता है और उसके अंदर इंसानी जीनत (साज-सज्जा) के लिए कीमती मोती बनते हैं।

ख़ुदा के लिए दुनिया के इतिजाम की दूसरी सूरतें भी मुमकिन थीं। मसलन ऐसा हो सकता था कि जमीन पर समुद्र न हों। या इंसान जिस तरह खुश्की पर चलता है उसी तरह वह समुद्र में चलने लगे। मगर ख़ुदा ने ऐसा नहीं किया। इसका मक़सद आदमी के अंदर शुक्रगुजारी का जज्बा पैदा करना था। आदमी जब अपने पैरों से समुद्र में न चल सके और कश्ती और जहाज पर बैठे तो निहायत आसानी से समुद्र को उबूर (पार) करने लगे तो उसे

देखकर कुदरती तौर पर आदमी के अंदर शुक्र का जज्बा उभर आता है। वह सोचता है कि जिस समुद्र को मैं अपने कदमों के ज़रिए पार नहीं कर सकता था, ख़ुदा ने कश्ती और जहाज के ज़रिए उसे पार करने का इतिजाम कर दिया। वह फ़ज्ज जिसमें मैं खुद नहीं उड़ सकता था, उसमें हवाई जहाज के ज़रिए निहायत तेज़ रफ़्तारी के साथ उड़ने की सूरत पैदा कर दी। इस क्रिम के फ़र्क़ कुदरत के निजाम में इसीलिए रखे गए हैं कि वे इंसान के शुक्र को जगाएं और उसके अंदर अपने रब के लिए शुक्र और एहसानमंदी का जज्बा पैदा करें।

وَأَلْقَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ⑤
وَعَلَّمَكُم مَّا تَحْتَ الْأَرْضِ ⑥

और उसने जमीन में पहाड़ रख दिए ताकि वह तुम्हें लेकर डगमगाने न लगे और उसने नहरें और रास्ते बनाए ताकि तुम राह पाओ। और बहुत सी दूसरी अलामतें (चिह्न) भी हैं, और लोग तारों से भी रास्ता मालूम करते हैं। (15-16)

यहां दो चीजों का ज़िक्र है। पहाड़ उभार कर जमीन पर तवाजुन (संतुलन) क़यम करने का। और जमीन व आसमान में ऐसी अलामतें (चिह्न) क़यम करने का जो लोगों के लिए रास्ता मालूम करने का काम दें।

भौगोलिक अध्ययन बताता है कि जमीन में जब गहराइयां पैदा हुईं और उनमें पानी जमा होकर समुद्र बने तो जमीन हिलने लगी। इसके बाद खुश्की पर ऊंचे पहाड़ उभर आए। इस तरह दोतरफ़ अमल के नतीजे में जमीन पर तवाजुन (संतुलन) क़यम हो गया। अगर जमीन की सतह पर यह तवाजुन न होता तो इंसान के लिए यहां ज़िंदगी नामुमकिन या कम से कम सख़्त दुश्वार हो जाती।

इसी तरह इंसान को अपने सफ़र और यातायात के लिए अलामतों की ज़रूरत है जिनकी मदद से वह सभ्त को पहचाने और भटके बग़ैर अपनी मंजिल पर पहुंच जाए। इसका इतिजाम भी यहां कामिल तौर पर मौजूद है। कदम जमाने का इंसान दरियाओं और सितारों जैसी चीजों से अपने रास्ते पहचानता था। अब वह मकनातीसी आलात (चुंबकीय उपकरणों) की मदद से अपना रास्ता और दूसरी ज़रूरी बातें मालूम करता है। खुश्की और तरी, तथा फ़ज्जों और ख़लाओं (अंतरिक्ष) में तेज़ रफ़्तार परवाज़ इसी की मदद से मुमकिन होती हैं। अगर इस क्रिम की अलामतें मौजूद न हों तो इंसानी सरगर्मियां इतिहाई हद तक सिमट कर रह जाएं।

أَفَلَا تَدْكُرُونَ ⑦ وَإِنْ تَعْدُوا نِعْمَةَ اللَّهِ
لَأَنْتَحُصُّوهَا إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑧ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسْرُونَ وَمَا تَعْلَنُونَ ⑨

फिर क्या जो पैदा करता है वह बराबर है उसके जो कुछ पैदा नहीं कर सकता, क्या तुम सोचते नहीं। अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम उन्हें गिन न सकोगे,

वेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम जाहिर करते हो। (17-19)

दुनिया में जितनी चीजें हैं उनमें से किसी के अंदर तख़लीक (अदम से वजूद में लाने) की ताकत नहीं। इससे साबित है कि दुनिया अपनी ख़ालिक आप नहीं है। उसका ख़ालिक वही हो सकता है जिसके अंदर यह ताकत हो कि एक चीज जो मौजूद नहीं है उसे मौजूद कर दे। इसलिए एक ख़ुदा का अक़ीदा ऐन फ़ितरी है। कायनात की तौजीह एक ऐसे ख़ुदा को माने बग़ैर नहीं हो सकती जिसके अंदर तख़लीक की सलाहियत कामिल दर्जे में पाई जाए।

मुश्रिकीन ने ख़ुदा के सिवा जितने ख़ुदा के शरीक गढ़े हैं। या मुंकिरीन ने ख़ुदा को छोड़कर जिन दूसरी चीजों को ख़ुदा का बदल बनाने की कोशिश की है उनमें से कोई भी नहीं जिसके अंदर जाती तख़लीक (निजी रचनाशीलता) की सलाहियत हो। यही वाक्या यह साबित करने के लिए काफी है कि शिर्क और इल्हाद (नास्तिकता) के गढ़े हुए तमाम ख़ुदा सरासर फर्जी हैं। क्योंकि जिसके अंदर तख़लीकी कुव्वत न हो उसके मुतअल्लिक यह दावा करना सरासर बेबुनियाद है कि वह एक मौजूद कायनात का ख़ुदा है। जो ख़ुद जाती वजूद न रखता हो वह किस तरह दूसरी चीज को वजूद दे सकता है।

ख़ुदा को अपने बंदों से सबसे ज्यादा जो चीज मलूब हैं वह उसकी नेमतों पर शुक्रगुजारी है। अगरचे ख़ुदा की नेमतें इससे ज्यादा हैं कि कोई शख्स भी उनका वाकई शुक्र अदा कर सके। मगर ख़ुदा बेनियाज (निस्पृह) है। वह ज्यादा नेमत के लिए थोड़ा शुक्र भी कुबूल कर लेता है। ताहम यह शुक्र हकीकी शुक्र होना चाहिए न कि महज रस्मी किस्म की हम्दख़ानी (स्तुतिगान)।

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ۖ أَمْواتٌ
غَيْرُ أَحْيَاءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۚ إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ ۖ فَالَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُنْكَرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۚ لَاجِرَمَ
أَنَّهُ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ۝

और जिन्हें लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज को पैदा नहीं कर सकते और वे ख़ुद पैदा किए हुए हैं। वे मुर्दा हैं जिनमें जान नहीं और वे नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएंगे। तुम्हारा माबूद (पूज्य) एक ही माबूद है मगर जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुंकिर हैं और वे तकबुर (घमंड) करते हैं अल्लाह यकीनन जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं और जो कुछ वे जाहिर करते हैं। वेशक वह तकबुर करने वालों को पसंद नहीं करता। (20-23)

अक्सर शिर्क की सूरत यह होती है कि पिछले बुजुर्गों को मुकद्दस और मुक़र्रब मान कर लोग उनकी परस्तिश करने लगते हैं। हालांकि यह परस्तिश सरासर अहमकाना होती है। जिन

दफन हुए बुजुर्गों की बड़ी-बड़ी कब्रें बनाकर लोग उनसे मुरादें मांगते हैं वे ख़ुद मुर्दा हालत में आलमे बरजख़ में पड़े होते हैं। उन्हें ख़ुद अपने बारे में भी मालूम नहीं होता कि वे कब उठाए जाएंगे, कुजा यह कि वे किसी दूसरे की मदद करें।

‘वे तकबुर करते हैं’ का मतलब यह नहीं कि वे ख़ुदा से तकबुर (घमंड) करते हैं। जमीन व आसमान के ख़ालिक से तकबुर की जुरअत कौन करेगा। इससे मुराद दरअसल ख़ुदा के दाजी से तकबुर है न कि ख़ुद ख़ुदा से तकबुर। अल्लाह का जो बंदा तौहीद का दाजी बनकर उठता है वह दुनियावी एतबार से अपने मुखातबीन के मुकाबले में हमेशा कम होता है। क्योंकि मुखातब रवाजी मजहब का हामी होने की वजह से वक्त के नक्शे में ऊंचा दर्जा हासिल किए हुए होता है जबकि हक़ का दाजी ‘नए दीन’ का अलमबरदार होने की बिना पर इन दर्जात व मकामात से महरूम होता है। वह मुखातबीन को अपने मुकाबले में माददी एतबार से कमतर नजर आता है। चुनांचे उनके अंदर बरतरी की नफ़िसयात पैदा हो जाती है। वे उसकी बात को बेवज़म समझ कर उसे नज़अंदाज कर देते हैं।

ऐसे लोगों का केस अगरचे तकबुर (घमंड) का केस होता है लेकिन वे उसे उसूली और नजरियाती केस बनाकर पेश करते हैं। मगर अल्लाह को लोगों की अंदरूनी नफ़िसयात का हाल खूब मालूम है। अल्लाह उनकी अस्त हकीकत के एतबार से उसके साथ सुलूक करेगा न कि उनकी जाहरी बातों के एतबार से।

وَلَاذِاقِيلُ لَهُمْ مَّاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا سَاطِئُ الْأَوَّلِينَ ۖ لَيَحْمِلُوهُ
أَوْزَارُهُمْ كَالْيَوْمِ الْقِيَمَةِ ۚ وَمَنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّوهُمْ ۚ بَغِيرِ عِلْمِهِ
الْأَسَاءِ مَا يَزُرُونَ ۝

और जब उनसे कहा जाए कि तुम्हारे रब ने क्या चीज उतारी है तो कहते हैं कि अगले लोगों की कहानियां हैं, ताकि वे कियामत के दिन अपने बोझ भी पूरे उठाएं और उन लोगों के बोझ में से भी जिन्हें वे बग़ैर किसी इल्म के गुमराह कर रहे हैं। याद रखो बहुत बुरा है वह बोझ जिसे वे उठा रहे हैं। (24-25)

रवायात में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मक्का में नुबुव्वत का दावा किया और इसकी ख़बर धीरे-धीरे अरब के दूसरे कबाइल में पहुंची तो वे मुलाकात के वक्त मक्का के सरदारों से पूछते कि जिस शख्स ने नुबुव्वत का दावा किया है उसके बारे में तुम्हारी क्या राय है। इसके जवाब में मक्का के सरदार कोई ऐसी बात कह देते जिससे आपकी शख़्सियत और आपके कलाम के बारे में लोग शक में मुब्तिला हो जाएं। (तफ़सीर मज़हरी)

इसका एक तरीका यह है कि बात को बिगड़े हुए अल्फ़ाज में बयान किया जाए। मसलन कुआन मैफ़ाख़रीका जोज़िफ़ है उसके मुतअल्लिक वे पिछले फ़ैमबरोका इतिहास का लफ़्ज़ भी बोल सकते थे मगर उसे उन्होंने ‘पिछले लोगों के किस्से कहानियों’ का नाम दे दिया।

हक़ की दावत से लोगों को इस तरह फेरना या मुशतबह (संदिग्ध) करना ख़ुदा के नजदीक

बदतरीन ज़ुर्म है। ऐसे लोगों को क़ियामत के दिन दुगना अज़ाब होगा। क्योंकि वे न सिर्फ़ खुद गुमराह हुए बल्कि दूसरों को गुमराह करने का ज़रिया भी बने।

قَدْ نَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَآلَى اللَّهُ بُنْيَانَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَحَزَّ عَلَيْهِمْ
السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۖ ثُمَّ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ يُخْرِجُهُمْ وَيَقُولُ آيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تُشَاقُّونَ فِيهِمْ قَالَ
الَّذِينَ أُوْتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ۖ

उनसे पहले वालों ने भी तदबीरें कीं। फिर अल्लाह उनकी इमारत पर बुनियादों से आ गया। पस छत ऊपर से उनके ऊपर गिर पड़ी और उन पर अज़ाब वहां से आ गया जहां से उन्हें गुमान भी न था। फिर क़ियामत के दिन अल्लाह उन्हें रुसवा करेगा और कहेगा कि वे मेरे शरीक कहां हैं जिनके लिए तुम झगड़ा किया करते थे। जिन्हें इल्म दिया गया था वे कहेंगे कि आज रुस्वाई और अज़ाब मुंकिरों पर है। (26-27)

जो लोग झूठी बुनियादों पर बड़ाई का मक़ाम हासिल किए हुए हैं, वे जब किसी हक की दावत को उठता हुआ देखते हैं तो उन्हें अपने मक़ाम के लिए ख़तरा महसूस होने लगता है। वे अपने मक़ाम के लिए (सुरक्षा) के लिए यह तदबीर करते हैं कि हक की दावत के खिलाफ ऐसी फ़ितना अंग्रेज बातें फैलाते हैं जिससे अवाम उसके बारे में मुशतबह हो जाएं और उसके गिर्द जमा न हो सकें।

मगर हक की दावत के खिलाफ ऐसे लोगों की तदबीरें कभी कामयाब नहीं होतीं। हक के मुखालिफ़ीन अपनी जिन बुनियादों पर भरोसा कर रहे थे ऐन वही बुनियादें इस तरह कमजोर साबित होती हैं कि उनकी छत उनके ऊपर गिर पड़ती है। कभी ऐसा होता है कि कोई कुदरती जलजला उनकी बुनियादों को हिलाकर उनकी तामीरात को उनके ऊपर गिरा देता है। कभी उनके अवाम उनका साथ छोड़कर हक की सफ़ों में शामिल हो जाते हैं। और इस तरह वे अपने मददगारों को खोकर मजबूर हो जाते हैं कि हक की दावत के आगे हथियार डाल दें। यह अंजाम अपनी आखिरी और तक्मीली सूरत में क़ियामत में सामने आएगा। जबकि मुंकिरीन अपनी अबदी जिल्लत को देखेंगे और कुछ न कर सकेंगे।

الَّذِينَ تَوَفَّيْتُمُ الْمَلَائِكَةَ ظَالِمِينَ أَنْفُسِهِمْ ۖ فَالْقَوْلَ السَّلَامَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ
سُوءٍ ۖ بَلَىٰ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ
خَالِدِينَ فِيهَا فَلَيْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ۖ

जिन लोगों को फ़रिश्ते इस हाल में वफ़त (मौत) देंगे कि वे अपनी जानों पर जुल्म कर

रहे होंगे तो उस वक़्त वे सिपर डाल देंगे कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे, हां बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते थे। अब जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ। उसमें हमेशा हमेशा रहो। पस कैसा बुरा ठिकाना है तकबुर (घमंड) करने वालों का। (28-29)

तकबुर (घमंड) सबसे बड़ा ज़ुर्म है। खुदा इंसान की हर ग़लती माफ़ कर देगा मगर वह तकबुर को माफ़ नहीं करेगा।

तकबुर के इज़हार की दो बड़ी सूरतें हैं। एक तकबुर वह है जो आम बंदों के दर्मियांन ज़ाहिर होता है। एक आदमी ताक़त, दौलत और दीगर साजोसामान में अपने को दूसरे के मुकाबले में ज्यादा पाता है, इस बिना पर वह उससे तकबुर करने लगता है।

दूसरा ज्यादा शदीद तकबुर वह है जो हक के दाओं के साथ किया जाता है। खुदा का एक बंदा खुदा के सच्चे दीन की दावत लेकर उठता है। अब जो लोग झूठे दीन की बुनियाद पर बड़ाई का मक़ाम हासिल किए हुए हैं, वे महसूस करते हैं कि उनके ऊपर इसकी जद पड़ रही है। वे सच्चे दीन के मेयार पर बेकीमत करार पा रहे हैं। यह देखकर वे बिफर उठते हैं। और हक के दाओं को मुतकब्बिराना नफ़िसयात (घमंड-भाव) के साथ नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

आदमी जब किसी के मुकाबले में तकबुर करता है तो इसलिए करता है कि वह समझता है कि वह उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता। मगर जब मौत के फ़रिश्ते आएंगे और उसे बेवस कर देंगे, उस वक़्त उसे मालूम होगा कि मामला किसी इंसान का नहीं बल्कि खुदा का था, इंसान किसी दूसरे इंसान के मुकाबले में ताक़तवर हो सकता है मगर खुदा के मुकाबले में कौन ताक़तवर है। खुदा के फ़रिश्ते जब इंसान को अपने कब्ज़े में लेते हैं तो उस वक़्त हर आदमी हथियार डाल देता है। मगर अल्लाह का सच्चा बंदा वह है जो उस मौक़े के आने से पहले खुदा के आगे हथियार डाल दे।

وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا أَنْزَلْ رَبُّكُمْ قَالُوا خَيْرًا لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ
الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۖ وَلَكَرَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ۖ جَنَّاتُ عَدْنٍ
يَدْخُلُونَهَا يُجْرُونَ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۖ كَذَلِكَ يُجْزَى
اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ۖ الَّذِينَ تَوَفَّيْتُمُ الْمَلَائِكَةَ طَائِفِينَ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ
ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ

और जो तकवा (ईश-परायणता) वाले हैं उनसे कहा गया कि तुम्हारे रब ने क्या चीज़ उतारी है तो उन्होंने कहा कि नेक बात। जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आखिरत का घर बेहतर है और क्या ख़ूब घर है तकवा वालों का। हमेशा रहने के बाग़ हैं जिनमें वे दाख़िल होंगे, उनके नीचे से नहरें जारी होंगी। उनके लिए वहां सब कुछ होगा जो वे चाहें, अल्लाह परहेजगारों को ऐसा ही बदला देगा। जिनकी रूह फ़रिश्ते इस हालत में कब्ज़ करते हैं कि वे पाक हैं। फ़रिश्ते कहते हैं तुम पर

सलामती हो, जन्नत में दाखिल हो जाओ अपने आमाल के बदले में। (30-32)

जो लोग किन्न (अहं, बड़ाई) की नपिसयात में मुब्तिला हों वे खुदा की बात सुनते हैं तो उनका जेहन उल्टी सप्त में चलने लगता है। इस बिना पर वे उससे नसीहत नहीं ले पाते। मगर जिस शख्स के दिल में अल्लाह का डर हो वह खुदा की बात को पूरी आमादगी के साथ सुनेगा। ऐसे शख्स के लिए अल्लाह का कलाम मअरफत (अन्तर्ज्ञान) का जरिया बन जाता है। उसे इसके अंदर हकीकत की झलकियां दिखाई देने लगती हैं।

जन्नत की सिफत यह है कि वहां वह सब कुछ है जो इंसान चाहे। यह ऐसी चीज है जो कभी किसी इंसान को, यहां तक कि बड़े-बड़े बादशाहों को भी हासिल न हो सकी। मौजूदा दुनिया में इंसान की महदूदियत (सीमितता) और खारजी हालात की ना मुवाफिकत (प्रतिकूलता) की बिना पर कभी ऐसा नहीं होता कि इंसान जो कुछ चाहता है उसे हासिल कर ले। यह तसब्बुर कि 'जन्नत में वह सब कुछ होगा जो इंसान चाहेगा' इतना पुरकैफ (आनंदमय) है कि इसकी ख़ातिर जो कुर्बानी भी देनी पड़े वह यकीनन हल्की है।

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ مَرْرَبِكَ كَذَلِكَ فَعَلَ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٠﴾
فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣١﴾

क्या ये लोग इसके मुंजिर हैं कि उनके पास फरिश्ते आएंगे या तुम्हारे रब का हुक्म आ जाए। ऐसा ही इनसे पहले वालों ने किया। और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे खुद ही अपने ऊपर जुल्म कर रहे थे। फिर उन्हें उनके बुरे काम की सजाएं मिलीं। और जिस चीज का वे मजाक उड़ाते थे उसने उन्हें घेर लिया। (33-34)

खुदा की बात इंसान के सामने अव्वलन दलाइल (तर्कों) के जरिए बयान की जाती है। यह दावती मरहला होता है। अगर वह दलाइल के जरिए न माने तो फिर वह वक्त आ जाता है जबकि इफ़रादी मौत या इज्तिमाई कियामत की सूरत में उसे लोगों के सामने खोल दिया जाए।

आदमी के सामने अगर खुदा की बात दलाइल के जरिए आए और वह उसे नजरअंदाज कर दे तो गोया वह उस दूसरे मरहले का इतिजार् कर रहा है जबकि खुदा और उसके फरिश्ते जाहिर हो जाएं और आदमी उस बात को जिल्लत के साथ मानने पर मजबूर हो जाए जिसे उसे इज्जत के साथ मानने का मौअद दिया गया था मगर उसने नहीं माना।

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ
وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا أَحَدٌ مِّنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَهَلْ عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٣٢﴾

और जिन लोगों ने शिर्क किया वे कहते हैं, अगर अल्लाह चाहता तो हम उसके सिवा किसी चीज की इबादत न करते, न हम और न हमारे बाप दादा, और न हम उसके बग़ैर किसी चीज को हराम ठहराते। ऐसा ही इनसे पहले वालों ने किया था, पस रसूलों के जिमे तो सिर्फ साफ़नाफ़ फ़ुह्रा देना है। (35)

ग़ाफ़िल इंसान अपने हक से इहिराफ को जाइज साबित करने के लिए जो बातें करता है उसमें से एक बात यह है कि जब इस दुनिया में हर चीज खुदा की मर्जी से होती है तो हमारा मौजूदा अमल भी खुदा की मर्जी से है। उसकी मर्जी न होती तो हम ऐसा कर ही न पाते। अगर वाकई खुदा को हमारे काम पसंद न होते तो वह हमें ऐसा काम करने क्यों देता। फिर तो ऐसा होना चाहिए था कि जब भी हम उसकी मर्जी के खिलाफ कोई काम करें तो वह फौरन हमें रोक दे।

यह बात आदमी सिर्फ इसलिए कहता है कि वह हक नाहक के मामले में संजीदा नहीं होता। अगर वह संजीदा हो तो फौरन उसकी समझ में आ जाए कि उसे मौजूदा अमल की जो छूट है वह इन्तेहान की वजह से है न कि खुदा की पसंद की वजह से।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ
فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ فَمِمَّا يَفْتُرُون
الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ﴿٣٣﴾ إِنَّ تَحْرُضَ عَلَى هُدَاهُمْ
فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ ﴿٣٤﴾

और हमने हर उम्मत में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और तागूत (बड़े हुए उपद्रवी) से बचो, पस उनमें से कुछ को अल्लाह ने हिदायत दी और किसी पर गुमराही साबित हुई। पस जमीन में चल फिरकर देखो कि झुटलाने वालों का अंजाम क्या हुआ। अगर तुम उसकी हिदायत के हरीस (लालसा रखने वाले) हो तो अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह कर देता है और उनका कोई मददगार नहीं। (36-37)

खुदा ने कहीं बराहेरास्त अपने पैग़म्बर भेजे और कहीं पैग़म्बर के नायब और नुमाइदे के जरिए बिलवास्ता तौर पर अपना पैग़ाम पहुंचाने का इतिजाम किया। उन तमाम लोगों ने इंसान को जिस चीज की तल्कीन की वह यही थी कि इबादत का हक सिर्फ एक खुदा को है। शैतान इस इबादत से इंसान को फेरने की कोशिश करता है, इसलिए आदमी को चाहिए कि वह शैतानी तर्गीबात से बचे। वर्ना वह आदमी को झूठे माबूदों की परस्तिश के रास्ते पर डाल देगा।

हिदायत अगरचे वाजेह है। मगर उसे कबूल करने या न करने का इहिसार तमामतर इस बात पर है कि आदमी उसके बारे में कितना संजीदा है। जो शख्स हिदायत पर संजीदगी के साथ ग़ौर करेगा उसे उसकी सदाकत को पाने में देर नहीं लगेगी। मगर जो शख्स इसके बारे में संजीदा न हो वह मामूली-मामूली बातों पर अटक कर रह जाएगा। ऐसा आदमी कभी हक को नहीं पा सकता।

وَأَقْسُوا لِلَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثَ اللَّهُ مَنْ يَمُوتُ بَلَى وَعَدًّا عَلَيْهِ
حَقًّا وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۖ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يُخْتَلِفُونَ فِيهِ
وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَذِبِينَ ۖ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ
أَن نَّقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

और ये लोग अल्लाह की कसमें खाते हैं, सख्त कसमें कि जो शख्स मर जाएगा अल्लाह उसे नहीं उठाएगा। हां, यह उसके ऊपर एक पक्का वादा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। ताकि उनके सामने उस चीज को खोल दे जिसमें वे इस्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हैं और इंकार करने वाले लोग जान लें कि वे झूठे थे। जब हम किसी चीज का इरादा करते हैं तो इतना ही हमारा कहना होता है कि हम उसे कहते हैं हो जा तो वह हो जाती है। (38-40)

मौजूदा दुनिया कुछ इस ढंग से बनी है कि यहां हक और नाहक इस तरह साबित नहीं हो पाते कि किसी के लिए इंकार की गुंजाइश बाकी न रहे। यहां आदमी हर दलील को काटने के लिए कुछ अस्फाज पा लेता है। हर साबितशुदा चीज को मुश्तबह (संदिग्ध) करने के लिए वह कोई न कोई बात निकाल लेता है।

यह बात कायनात के मिजाज के सरासर खिलाफ है। मादूदी उलूम (भौतिक ज्ञानों) में आदमी के लिए मुमकिन होता है कि वह कतई नताइज तक पहुंच सके। इसी तरह यह भी जरूरी होना चाहिए कि इंसानी मामलात में कतई हक़इक़ खुलकर सामने आ जाएं। यही वह काम है जो कियामत में अंजाम पाएगा। शाह अब्दुल कादिर देहलवी लिखते हैं 'इस जहान में बहुत बातों का शुबह रहा। किसी ने अल्लाह को माना और कोई उसका मुंकिर रहा तो दूसरा जहान होना लाजिम है कि झगड़े तहकीक हों। सच और झूठ जुदा हो और मुतीअ (आज्ञाकारी) और मुंकिर अपना किया पाएं।'।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا لَنَبْذَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا
حَسَنَةً وَلَا جَزَاءَ الْآخِرَةِ الْكَبِيرِ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَى
رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝

और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए अपना वतन छोड़ा, बाद इसके कि उन पर जुल्म किया गया, हम उन्हें दुनिया में जरूर अच्छा ठिकाना देंगे और आखिरत का सवाब तो बहुत बड़ा है, काश वे जानते। वे ऐसे हैं जो सब्र करते हैं और अपने ख पर भरोसा रखते हैं। (41-42)

अक्सर मुफस्सरीन ने इस आयत को उन 80 सहाबा से मुतअल्लिक माना है जो मक्का में इस्लाम के मुख़ालिफ़ीन की ज्यादतियों का निशाना बन रहे थे और बिलआख़िर अपना वतन छोड़कर हबश चले गए। यह वाकया मदीना की हिज्रत से पहले मक्की दौर में पेश आया।

हक के मामले में हमेशा दो गिरोह होते हैं। एक वह जो हक को इतनी अहमियत न दें कि उसकी खातिर मिली हुई चीजों को छोड़ दें या अपनी ज़िंदगी का नक्शा बदल लें। दूसरे वे लोग जो हक को इस तरह इस्तिंयार करते हैं कि वही उनके नजदीक सबसे अहम चीज बन जाता है। वे उसकी खातिर हर तकलीफ को सहने के लिए तैयार रहते हैं। वे हक को अपना अहमतरीन मसला बना लेते हैं। वे हर दूसरी चीज को छोड़ सकते हैं मगर हक को नहीं छोड़ सकते।

जाहिर है कि दोनों किसम के गिरोहों का अंजाम यकसां (समान) नहीं हो सकता। जिन लोगों ने हक को अपनी ज़िंदगी में अहमतरीन मक़ाम दिया वे खुदा की अबदी नेमतों के मुस्तहिक़ ठहरे। और जिन लोगों ने हक को नज़अंज़ाज किया उन्हें खुदा भी नज़अंज़ाज कर देगा। वे खुदा के यहां कोई इज्जत का मक़ाम नहीं पा सकते। और न वे खुदा की नेमतों में हिस्सेदार बन सकते।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رَجُلًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ فَسَاءَ مَا كَانُوا يَكْفُرُونَ
لَا تَعْلَمُونَ ۖ بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۖ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ
إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝

और हमने तुमसे पहले भी आदमियों ही को रसूल बनाकर भेजा, जिनकी तरफ हम 'वही' (प्रकाशना) करते थे, पस अहले इल्म से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते। हमने भेजा था उन्हें दलाइल (स्पष्ट प्रमाणों) और किताबों के साथ। और हमने तुम पर भी याददिहानी (अनुस्मृति) उतारी ताकि तुम लोगों पर उस चीज को वाज्हे कर दो जो उनकी तरफ उतारी गई है और ताकि वे ग़ौर करें। (43-44)

'अहले इल्म' से मुराद यहां अहले किताब हैं। या वे लोग जो पिछली उम्मतों और पिछले पैगम्बरों के तारीख़ी हालात का इल्म रखते हैं। जो चीज उनसे पूछने के लिए फरमाई गई है वह यह नहीं है कि हक क्या है और नाहक क्या। बल्कि यह कि पिछले जमानों में जो पैगम्बर आए वे इंसान थे या ग़ैर इंसान। मक्का वाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंसान होने को इस बात की दलील बनाते थे कि आप खुदा के पैगम्बर नहीं हैं। उनसे कहा गया कि जिन कौमों में इससे पहले पैगम्बर आते रहे हैं (मसलन यहूद) उनसे पूछ कर मालूम कर लो कि उनके यहां जो पैगम्बर आए वे इंसान थे या फरिश्ते।

पैगम्बर सिर्फ 'याददिहानी' के लिए आता है, यह याददिहानी अस्लन दलाइल के जरिए होती है। ताहम यह भी जरूरी है कि पैगम्बर अपने आपको इस मामले में पूरी तरह संजीदा साबित करे। अगर एक शख्स लोगों को जन्नत और जहन्नम से बाख़बर करे और इसी के साथ

वह ऐसे कामों में मशगूल हो जो जन्नत और जहन्नम के मामले में उसे ग़ैर संजीदा साबित करते हों तो उसका दावती काम लोगों की नजर में मजक बनकर रह जाएगा।

ताहम दावत (आह्वान) चाहे कितने ही आला दर्जे पर और कितने ही कामिल अंदाज में पेश कर दी जाए उससे वही लोग फायदा उठाएंगे जो खुद भी उस पर ध्यान दें। जो लोग ध्यान न दें वे किसी भी हालत में हक की दावत से फ़ैज़याब नहीं हो सकते।

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ
الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۚ أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقْلُيبِهِمْ فَبُهِتُوا
بِمُعْجَزَاتِنَا ۚ أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَى تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَؤُوفٌ رَحِيمٌ ۝

क्या वे लोग जो बुरी तदबीरें कर रहे हैं वे इस बात से बेफ़िक्र हैं कि अल्लाह उन्हें जमीन में धंसा दे या उन पर अजाब वहां से आ जाए जहां से उन्हें गुमान भी न हो या उन्हें चलते फिरते पकड़ ले तो वे लोग खुदा को आजिज नहीं कर सकते या उन्हें अदेशे की हालत में पकड़ ले। पस तुम्हारा ख बर्षक (करुणामय) और महरबान है। (45-47)

यह आयत मक्की दौर के आखिरी जमाने की है जबकि मक्का के मुख़ालिफ़ीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कल्ल की साजिशें कर रहे थे। पैग़म्बर खुदा की जमीन पर खुदा का नुमाईदा होता है। इसलिए पैग़म्बर के ख़िलाफ़ इस किस्म में साजिश करना ऐसे ही लोगों का काम हो सकता है जो खुदा की पकड़ से बिल्कुल बेख़ौफ़ हो चुके हों।

हालांकि खुदा इंसान के ऊपर इतना ज्यादा काबूपाफ़ता है कि वह चाहे तो इंसान को जमीन में धंसा दे या जिस मक़म को आदमी अपने लिए महफूज समझे हुए है वहीं से उसके लिए एक अजाब फट पड़े। या खुदा ऐसा करे कि लोगों की सरगर्मियों के दौरान उन्हें पकड़ ले, फिर वे अपने आपको उससे बचा न सकें। खुदा यह भी कर सकता है कि वह इस तरह उन्हें पकड़े कि वे ख़तरे को महसूस कर रहे हों और उसके लिए पूरी तरह बेदार हों।

गरज खुदा हर हालत में इंसान को पकड़ सकता है। अगर वह लोगों को शरारतें करते हुए देखता है और इसके बावजूद वह उन्हें नहीं पकड़ता तो लोगों को बेख़ौफ़ नहीं होना चाहिए। क्योंकि यह उसकी इम्तेहान की मस्तेहत है न कि उसका इज्ज (निर्बलता)।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ يَتَفَتَّهُ ظِلَالُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ
سُجَّدًا لِلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ ۝ وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ مِنْ دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝ يَخَافُونَ رَبَّهُمْ
مِنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ۝

क्या नहीं देखते कि अल्लाह ने जो चीज भी पैदा की है उसके साथे दाईं तरफ़ और बाईं तरफ़ झुक जाते हैं, अल्लाह को सज्दा करते हुए, और वे सब आजिज (नम्र) हैं। और अल्लाह ही को सज्दा करती हैं जितनी चीजें चलने वाली आसमानों और जमीन में हैं। और फ़रिश्ते भी और वे तकबुर (घमंड) नहीं करते। वे अपने ऊपर अपने ख से डरते हैं और वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है। (48-50)

इंसान एक ऐसी दुनिया में सरकशी करता है जिसमें उसके चारों तरफ़ उसे ताबेदारी का सबक दिया जा रहा है। मिसाल के तौर पर माद्री अजसाम (वस्तुओं) के साथे। एक चीज जो खड़ी हुई हो, उसका साया जमीन पर पड़ जाता है। इस तरह वह सज्दे को मुमस्सल (प्रतिरूपित) कर रहा है। वह तमसीली अंदाज में बताता है कि इंसान को किस तरह अपने ख़ालिक के आगे झुक जाना चाहिए।

फ़रिश्ते अगरचे इंसान को नज़र नहीं आते। मगर अज़ीम कायनात का इस कदम मुज़म होकर चलना साबित करता है कि इसे चलाने के लिए खुदा ने अपने जो कारिंदे मुकर्रर किए हैं वे इतिहाई ताकतवर हैं। ये फ़रिश्ते ग़ैर मामूली ताकतवर होने के बावजूद खुदा के हददर्जा मुतीअ (आज्ञाकारी) हैं। अगर वे हददर्जा मुतीअ न हों तो कायनात का निजाम इस दर्जे सेहत और यकसानियत के साथ मुसलसल चलता हुआ नजर न आए।

ऐसी हालत में इंसान के लिए सही ख़बैया इसके सिवा और कुछ नहीं हो सकता कि वह अपने आपको खुदा की इताअत में दे दे, वह मुकम्मल तौर पर उसका फरमांवरदार बन जाए।

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ ۚ فَإِلَٰهِي
فَالْمُبُونِ ۝ وَلَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصِبًا أَفَغَيِّرُ
اللَّهُ تَتَقَوُّونَ ۝

और अल्लाह ने फरमाया कि दो माबूद (पूज्य) मत बनाओ। वह एक ही माबूद है तो मुझ ही से डरो और उसी का है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और उसी की इताअत (आज्ञापालन) है हमेशा। तो क्या तुम अल्लाह के सिवा औरों से डरते हो। (51-52)

पैग़म्बरों के जरिए खुदा ने इंसान को इससे डराया है कि वह एक माबूद (पूज्य) के सिवा दूसरे माबूद अपने लिए बनाए। इस कायनात का माबूद सिर्फ एक है। उसी से आदमी को डरना चाहिए। उसे सिर्फ उसी की ताबेदारी (आज्ञापालन) करना चाहिए।

अगर आदमी को इस बात का सही इदराक हो जाए कि खुदा ही इंसान का और तमाम मौजूदात का ख़ालिक व मालिक है। उसी पर उसकी जिंदगी का सारा दारोमदार है तो इस इदराक के लाजिमी नतीजे के तौर पर जो कैफियत आदमी के अंदर पैदा होती है उसी का नाम तक़वा है।

जमीन व आसमान में खुदा ही की दाइमी (स्थायी) इताअत है। यहां हर चीज मुकम्मल तौर

पर कानूने खुदावंदी में जकड़ी हुई है। एक ऐसी दुनिया में किसी और की इबादत करना या किसी और से उम्मीद कायम करना बिल्कुल बेबुनियाद है। मौजूदा कायनात ऐसे शिक को कुबूल करने से सरासर इंकार करती है।

وَمَا يَكُم مِّن نَّعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَالْيَدِ تَجْرُونَ ۚ ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرُّ عَنْكُمْ إِذَا فَرِيقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُونَ ۚ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَهُمْ فَتَمْتَعُوا بِسُوءِ تَعْلَمُونَ ۚ وَيَجْعَلُونَ لِمَا لَا يَعْلَمُونَ نَصِيبًا مِّمَّا رَزَقْنَاهُمْ تَاللَّهِ لَتَسْلُكُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَفْتَرُونَ ۝

और तुम्हारे पास जो नेमत भी है वह अल्लाह ही की तरफ से है। फिर जब तुम्हें तकलीफ पहुंचती है तो उससे फरयाद करते हो। फिर जब वह तुमसे तकलीफ दूर कर देता है तो तुम में से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है ताकि मुंकिर हो जाए उस चीज से जो हमने उन्हें दी है। पस चन्द रोज फायदे उठा लो। जल्द ही तुम जान लोगे। और ये लोग हमारी दी हुई चीजों में से उनका हिस्सा लगाते हैं जिनके मुतअल्लिक उन्हें कुछ इल्म नहीं। खुदा की कसम, जो झूठ तुम गड़ रहे हो उसकी तुमसे जर बुराई (पूछगछ) होगी। (53-56)

पूरी तारीख का तजर्बा है कि आदमी जब किसी ऐसी मुसीबत में पड़ता है जहां वह अपने को आजिज महसूस करने लगता है तो उस वक्त वह खुदा को याद करने लगता है। मुंकिर और मुशिरक दोनों ही ऐसा करते हैं। इस तजर्बे से मालूम हुआ कि खुदा का तसखुर ईसानी फितरत में पैवस्त है। जब तमाम दूसरे अलाइक (बखेड़े) कट जाते हैं तो आखिरी चीज जो बाकी रहती है वह सिर्फ खुदा है।

मगर यह इंसान की अजीब गफलत है कि जब वह मुसीबत में नजात पाता है तो दुबारा अपने फर्जी खुदाओं की याद में मशगूल हो जाता है। वह मिली हुई नेमत को खुदा के बजाए दूसरी-दूसरी चीजों की तरफ मंखूर कर देता है। उसे वह अजीम सबक याद नहीं रहता जो खुदा उसकी फितरत ने चन्द लम्हा पहले उसे दिया था।

शैतान ने फर्जी माबूदों की माबूदियत के अक्रीदे को पुख्ता करने के लिए तरह-तरह की झूठी रस्में अवाम में राइज कर रखी हैं। उनमें से एक है अपनी आमदनी में फर्जी माबूदों का हिस्सा निकालना। इस किस्म की रस्में खुदा की दुनिया में एक बोहतान की हैसियत रखती हैं क्योंकि वह खुदा की तरफ से मिली हुई चीज के लिए गैर खुदा का शुक्र अदा करने के हममअना हैं।

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ الْبَنَاتِ سُبْحَنَهُ وَلَهُمْ مَا يَشْتَهُونَ ۚ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِالْأُنثَىٰ ذُلٌّ وَجْهُهُ مُسْوَدٌّ وَهُوَ كَظِيمٌ ۚ يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ

مَا بُشِّرَ بِهِ ۚ أَيُمْسِكُهُ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۚ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ وَلِلَّهِ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

और वे अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं, वह इससे पाक है, और अपने लिए वह जो दिल चाहता है। और जब उनमें से किसी को बेटी की खुशखबरी दी जाए तो उसका चेहरा स्याह पड़ जाता है और वह जी में घुटता रहता है। जिस चीज की उसे खुशखबरी दी गई है उसके आर (लाज) से लोगों से छुपा फिरता है। उसे जिल्लत के साथ रख छोड़े या उसे मिट्टी में गाड़ दे। क्या ही बुरा फैसला है जो वे करते हैं। बुरी मिसाल है उन लोगों के लिए जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते। और अल्लाह के लिए आला मिसालें हैं। वह गालिब (प्रभुत्वशाली) और हकीम (तत्वदर्शी) है। (57-60)

एक खुदा के सिवा इंसान ने दूसरे जो माबूद बनाए हैं उनमें देवता भी हैं और देवियां भी। यहां देवियों के अक्रीदे को बेबुनियाद साबित करने के लिए एक आम मिसाल दी गई है। मर्द के मुकाबले में औरत चूँकि कमजोर होती है, इसके अलावा आम हालात में वह असासे (सम्पत्ति) से ज्यादा जिम्मेदारी होती है, इसलिए आम तौर पर लोग लड़के की पैदाइश पर ज्यादा खुश होते हैं। और लड़की की पैदाइश पर कम। अब जबकि लड़के और लड़की में यह फर्क है तो खुदा अगर अपने लिए औलाद पैदा करता तो वह लड़कियां क्यों पैदा करता।

इंसान किस लिए औलाद चाहता है। इसलिए ताकि वह उसके जरिए से अपनी कमी को पूरा कर सके। मगर खुदा इस तरह की कमियों से बुलन्द है। खुदा की अजमत व कुदरत जो उसकी कायनात में जाहिर हुई है वह बताती है कि खुदा इससे बुलन्द व बरतर है कि उसके अंदर ऐसी कोई कमी हो जिसकी तलाफी (पूर्ति) के लिए वह अपने यहां लड़का और लड़की पैदा करे। हकीकत यह है कि खुदा अगर कमियों वाला होता तो वह खुदा ही न होता। खुदा इसीलिए खुदा है कि वह हर किस्म की तमाम कमियों से पाक है।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَا تَرَكُوا عَلَيْهَا مِن دَابَّةٍ ۚ وَلَٰكِن يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْذِنُونَ سَاعَةً ۚ وَلَا يَسْتَقْدِرُونَ ۝

और अगर अल्लाह लोगों को उनके जुल्म पर पकड़ता तो जमीन पर किसी जानदार को न छोड़ता। लेकिन वह एक मुकरर वक्त तक लोगों को मोहलत देता है। फिर जब उनका मुकरर वक्त आ जाएगा तो वे न एक घड़ी पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। (61)

जुल्म पर गिरफ्त की एक शक्त यह है कि जैसे ही कोई शख्स जुल्म करे फौरन उसे पकड़

कर सख्त सजा दी जाए। मगर खुदा का यह तरीका नहीं। अगर खुदा ऐसा करे तो जमीन पर कोई चलने वाला बाकी न रहे। खुदा ने हर शख्स और हर कौम को एक मुकर्रर मोहलत दी है। उस मुद्दत तक वह हर एक को मौका देता है कि वह अपने जमीर (अन्तरात्मा) की आज्ञा से या खारजी तंबीहात (वाह्य चेतावनियों) से चौकन्ना हो और अपनी इस्लाह कर ले। इस्लाह करते ही लोगों के पिछले तमाम जराइम माफ कर दिए जाते हैं। वे ऐसे हो जाते हैं कि जैसे उन्होंने अभी नई जिंदगी शुरू की हो।

मोहलत के दौरान न पकड़ना जिस तरह खुदा ने अपने ऊपर लाजिम किया है इसी तरह उसने यह भी अपने ऊपर लाजिम किया है कि मोहलत के खत्म होने के बाद वह लोगों को जरूर पकड़े। मोहलत खत्म होने के बाद किसी को मजिद (अतिरिक्त) मौका नहीं दिया जाता, न फर्द को और न कैम को।

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ السُّنَنُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنَىٰ
لِأَجْرِهِمْ إِنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُمْ مُّفْرَطُونَ ۝

और वे अल्लाह के लिए वह चीज ठहराते हैं जिसे अपने लिए नापसंद करते हैं और उनकी जवानें झूठ बयान करती हैं कि उनके लिए भलाई है। निश्चय ही उनके लिए दोजख है और वे जरूर उसमें पहुंचा दिए जाएंगे। (62)

इंसानी गुमराहियों की बहुत बड़ी वजह खुदा की खुदाई का कमतर अंदाजा करना है। अक्सर ग़लत अकाइद इसीलिए बने कि खुदा को उससे कम समझ लिया गया जैसा कि वह हकीकतन है। यहां तक कि लोगों का हाल यह है कि जो चीजें कमतर समझ कर वे खुद अपने लिए पसंद नहीं करते (मसलन बेटियां या अपनी सम्पत्ति में किसी अजनबी की शिरकत) उसे भी वे खुदा के लिए साबित करने लगते हैं।

खुदा के इसी कमतर अंदाजे का नतीजा है कि लोग खुदा पर अक़ीदा रखते हुए खुदा से बेख़ौफ रहते हैं। वे निहायत मामूली-मामूली चीजों के बारे में यह अक़ीदा बना लेते हैं कि वे उन्हें खुदा की कुबत (समीपता) दे देंगी। और आखिरत की तमाम नेमतें उनके हिस्से में लिख दी जाएंगी। जो चीज एक आम इंसान को भी खुश नहीं कर सकती उसके मुतअल्लिक यह अक़ीदा बना लिया जाता है कि वह खुदा को खुश कर देगी। इस किस्म की कोई हरकत ग़लती पर सरकशी का इजाफ़ा है जिसे खुदा कभी माफ नहीं कर सकता।

ثَلَاثَةٌ لَّقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ
وَلَهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَمَا أَرْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ
لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوا فِيهِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

खुदा की कसम हमने तुमसे पहले मुख्तलिफ कौमों की तरफ रसूल भेजे। फिर शैतान

ने उनके काम उन्हें अच्छे करके दिखाए। पस वही आज उनका साथी है और उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। और हमने तुम पर किताब सिर्फ इसलिए उतारी है कि तुम उन्हें वह चीज खोल कर सुना दो जिसमें वे झूठेलाफ (मत-भिन्नता) कर रहे हैं और वह हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। (63-64)

रसूल की दावत जब उठती है तो सुनने वाले महसूस करते हैं कि यह उनके रवाजी मजहब से टकरा रही है। अब चूँकि वे उस रवाजी मजहब से मानूस (भिन्न) होते हैं और उससे उनके बहुत से मफादात वाबस्ता हो चुके होते हैं इसलिए वे चाहते हैं कि उससे लिपटे रहें। उस वक्त शैतान उन्हें ऐसे खूबसूरत अल्फ़ाज समझा देता है जिससे वे पैग़म्बर के दीन को छोड़ने और रवाजी दीन पर कायम रहने को दुरुस्त साबित कर सकें।

आदमी अगर रसूल की बात को सीधी तरह मान ले तो यह खुदा को अपना साथी बनाना है। इसके बरअक्स अगर वह खूबसूरत तावीलात (हीलों-बहानों) का सहारा ले तो यह शैतान को अपना साथी बनाना होगा।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को भेजकर खुदा ने यह इतिजाम किया था कि लोग मजहबी इख़ेलाफ़ात (मत-भिन्नता) के जंगल के दर्मियान खुदा के सच्चे रास्ते को मालूम कर सकें। यही सूरतेहाल आज भी बाकी है। एक शख्स खुदा के रास्ते की तलाश में हो और वह मुख्तलिफ मजहबों का मुतालाआ करे तो वह यकीनन ज़ेहनी इतिशार में पड़ जाएगा। क्योंकि मजहबों की जो तालीमात आज मौजूद हैं उनमें बाहम सख्त इख़ेलाफ़ात हैं। चुनांचे हक के मुतलाशी की समझ में नहीं आता कि वह किस चीज को सही समझे और किस चीज को ग़लत।

ऐसी हालत में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का लाया हुआ दीन खुदा के बंदों के लिए रहमत है क्योंकि दूसरे अदयान (धर्मों) के बरअक्स, आपका दीन एक महफूज दीन है। वह तारीख़ी एतबार से पूरी तरह मुस्तनद है। इस बिना पर पूरा एतमाद किया जा सकता है कि आपने जो दीन छोड़ा वही वह हकीकी दीन है जो खुदा को अपने बंदों से मल्लूब है।

وَاللَّهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَاهُ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ۝

और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उससे जमीन को उसके मुर्दा होने के बाद जिंदा कर दिया। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (65)

बारिश और नवातात (वनस्पति) का निजाम अपने अंदर बहुत बड़ा सबक रखता है। मुख्तलिफ अवामिल (कारक) की मुहत्ता कारफ़रमाई से पानी के कतरे फिज में जाकर दुबारा जमीन पर बारिश की सूत में बरसते हैं। फिर यह बारिश हैरतअंज तौर पर जमीन पर सब्जा उगाने का सबब बनती है।

इस वाक्य में एक तरफ यह सबक है कि इस कायनात में चारों तरफ एक खुदा की कारफ़रमाई है। अगर यहां कई खुदाओं की कारफ़रमाई होती तो कायनात की मुख्तलिफ तम

इस तरह हमआहंग होकर मुशतरका (साझा) अमल नहीं कर सकती थीं। कायनात के निजाम की वहदानियत (एकत्व) वाजेह तौर पर इसका सुबूत है कि उसका खालिक व मालिक सिर्फ एक है न कि एक से ज्यादा।

दूसरा सबक यह है कि खुदा की कुदरत इतनी अजीम है कि वह मर्दा जिस्म में जिंदगी पैदा कर सकती है। वह सूखी हुई चीजों में हरियाली, रंग, खुशबू और मजा का बाग उगा सकती है।

पहले वाकये में तौहीद का सुबूत है और दूसरा वाकया तमसील के रूप में बता रहा है कि इसी तरह इंसानी रूहों के लिए भी एक खुदाई बारिश है, और वह 'वही' (ईश्वरीय वाणी) है। जो शरख अपनी मर्दा और सूखी हुई रूह को नई जिंदगी देना चाहे, उसे अपने आपको खुदाई 'वही' की बारिश में नहलाना चाहिए।

وَلَكُمْ فِي الْغَنَاءِ لَعِبْرَةٌ ۖ لُغْنِيَكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِ مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ
وَدَمٍ لَبَنًا خَالِصًا سَائِغًا لِلشَّارِبِينَ ۖ وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ
تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में सबक है। हम उनके पेटों के अंदर के गोबर और खून के दर्मियान से तुम्हें खालिस दूध पिलाते हैं, खुशगवार पीने वालों के लिए और खजूर और अंगूर के फलों से भी। तुम उनसे नशे की चीजें भी बनाते हो और खाने की अच्छी चीजें भी। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो अक्ल रखते हैं। (66-67)

दूध देने वाले जानवरों में यह अजीब खुसूसियत है कि वे जो कुछ खाते हैं वह एक तरफ उनके अंदर गोबर और खून बनाता है, दूसरी तरफ इसी के दर्मियान से दूध जैसा कीमती तरल भी बनकर निकलता है जो इंसान के लिए बेहद कीमती गिजा है। यही हाल दरख्तों का है। उनके अंदर मिट्टी और पानी जैसी चीजें दाखिल होती हैं और फिर उनके अंदरूनी निजाम के तहत वे रसदार फल की सूरत में शाखों में लटक पड़ती हैं।

ये वाकयात इसलिए हैं कि वे लोगों को खुदा की याद दिलाएं। आदमी इन में खुदा की कुदरत की झलकियां देखने लगे, यहां तक कि उसका यह एहसास इतना बढ़े कि वह पुकार उठे कि खुदाया तू जो गोबर और खून के दर्मियान से दूध जैसी चीज निकालता है, मेरी नामुवाफिक हालत के अंदर से मुवाफिक नताइज जहिर कर दे। तू जो मिट्टी और पानी को फल में तब्दील कर देता है, मेरी बेकीमत जिंदगी को बाकीमत जिंदगी बना दे।

'तुम उनसे नशे की चीज भी बनाते हो और रिके हसन भी' इसमें इस हकीकत की तरफ इशारा है कि दुनिया में खुदा ने जो चीजें पैदा की हैं उनका सही इस्तेमाल भी है और उनका गलत इस्तेमाल भी। खजूर और अंगूर को उसकी कुदरती हालत में खाया जाए तो वह सेहतवद्दा गिजा है जिससे जिस्म और अक्ल को तवानाई (ऊर्जा) हासिल होती है। इसके बरअक्स अगर इंसानी अमल से उसे नशे में तब्दील कर दिया जाए तो वह जिस्म को भी नुकसान पहुंचाती है और अक्ल को भी बिगाड़ देने वाली है।

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ۖ ثُمَّ كُلِي مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۚ يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी पर 'वही' (प्रकाशना) किया कि पहाड़ों और दरख्तों और जहां टट्टियां बांधते हैं उनमें घर बना। फिर हर किसम के फलों का रस चूस और अपने रब की हमवार की हुई राहों पर चल। उसके पेट से पीने की चीज निकलती है, इसके रंग मुखलिफ हैं, इसमें लोगों के लिए शिफा (आरोग्य) है। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो गौर करते हैं। (68-69)

शहद की मक्खी खुदा की कुदरत का एक हैरतनाक शाहकार है। वह रियाजयाती क्वानीन (गणितीय नियमों) की पाबंदी करते हुए इतिहाई मेयारी किसम का छत्ता बनाती है। फिर ख़ास मंसूबाबंद अंदाज में फूलों का रस चूस कर लाती है। उसे एक कामिलतरीन निजाम के तहत छत्तों में जख़ीरा करती है। फिर ऐन क्वानीने सेहत के मुताबिक शहद जैसी कीमती चीज तैयार करती है जो इंसान के लिए गिजा भी है और इलाज भी। यह सब कुछ इतने अजीब और इतने मुनज्जम अंदाज में होता है कि इस पर मोटी-मोटी किताबें लिखी गई हैं फिर भी इसका बयान मुकम्मल नहीं हुआ।

शहद का यह मोजिजाती कारख़ाना तमाम इंसानी कारख़ानों से ज्यादा पेचीदा और ज्यादा कामयाब है। ताहम बजाहिर वह ऐसी मक्खियों के जरिए चलाया जा रहा है जिन्होंने इस फन की कहीं तालीम नहीं पाई। यहां तक कि उन्हें अपने आमाल का जाती शुकर भी हासिल नहीं। इससे साबित होता है कि कोई काम लेने वाला है जो अपनी छुपी हिदायतों के जरिए मक्खियों से यह सब कुछ काम ले रहा है। शहद की मक्खियों को अगर कोई देखने वाला देखे तो वह उनकी हैरानकुन हद तक बामअना सरगर्मियों में खुदा की कारफरमाई का जिंदा मुशाहिदा करने लगेगा।

शहद की मक्खी की मिसाल देने का एक पहलू यह भी है कि जिस तरह शहद की मक्खी जबरदस्त महनत के जरिए फूलों का रस चूस कर शहद बनाती है जिसमें लोगों के लिए गिजा और शिफा है। इसी तरह अल्लाह के बंदों को चाहिए कि वे कायनात में गौरोफिक के जरिए हिक्मत की चीजें हासिल करें जो उनकी रूह की गिजा भी हों और उनकी अज़्बाकी बीमारियों का इलाज भी। जो चीज शहद की मक्खी के लिए 'रस' है वही इंसान की सतह पर पहुंच कर 'मअरफत' बन जाती है।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ ۖ وَمِنْكُمْ مَنْ يُرِيدُ إِلَىٰ آرْزَالِ الْعُمُرِ ۖ لَكِنَّ
لَا يَعْلَمُ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝

और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वही तुम्हें वफात (मौत) देता है। और तुम में से कुछ वे हैं जो नाकारा उम्र तक पहुंचाए जाते हैं कि जानने के बाद वे कुछ न जानें। बेशक अल्लाह इल्म वाला है, कुदरत वाला है। (70)

जिंदगी का मजहर जो जमीन पर है उसके कई पहलू इंसान के सामने आते हैं। एक शख्स नहीं था इसके बाद वह दुनिया में मौजूद हो गया, फिर हर एक मरता है मगर सबका एक वक्त नहीं। कोई बचपन में मरता है, कोई जवानी में और कोई बुढ़ापे में। फिर यह मंजर भी अजीब है कि उम्र की आखिरी हद पर पहुंच कर अकल और इल्म और ताकत आदमी से बिल्कुल रुख्त हो जाते हैं। इंसान मौजूदा जमीन पर बजाहिर आजाद है मगर उसे अपनी किसी चीज पर कोई इख्तियार नहीं।

यह सब इसलिए होता है ताकि इंसान को बताया जाए कि इल्म और कुदरत दोनों सिर्फ खुदा का हिस्सा हैं। इंसानी जिंदगी में मजबूरी किसिम के जो वाक्यात पेश आते हैं उनमें इंसान का अपना कोई दखल नहीं। वह उनमें कोई तब्दीली करने पर कादिर नहीं। इससे साबित होता है कि जो कुछ हो रहा है वह किसी और करने वाले के जरिए हो रहा है। बचपन से मौत तक इंसान की जिंदगी यह गवाही देती है कि यहां सारा इल्म भी सिर्फ खुदा के लिए है और सारी कुदरत भी सिर्फ खुदा के लिए। इंसान की मजबूरी कदिर मुत्तलक (सर्वशक्तिमान) खुदा की मौजूदगी का सुबूत है।

وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا بِرَادٍّ
رِزْقِهِمْ عَلَى مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ أَفَبِنِعْمَةِ اللَّهِ
يَجْحَدُونَ^{٧١}

और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर रोजी में बढ़ाई दी है। पस जिन्हें बढ़ाई दी गई है वे अपनी रोजी अपने गुलामों को नहीं दे देते कि वे इसमें बराबर हो जाएं। फिर क्या वे अल्लाह की नेमत का इंकार करते हैं। (71)

यहां एक सादा सी मिसाल के जरिए इस अकीदे को गलत साबित किया गया है कि खुदा के कुछ शरीक हैं। और उसने अपने इख्तियारात का कुछ हिस्सा अपने उन शरीकों को दे दिया है। वह मिसाल यह कि दुनिया में रोजी की तक्सीम यकसां (समान) नहीं है। आम तौर पर देखने में आता है कि किसी के पास बहुत ज्यादा होता है और किसी के पास इतना कम होता है कि वह ज्यादा वाले के यहां नौकर और गुलाम बनने पर मजबूर हो जाता है। अब कोई भी ज्यादा वाला ऐसा नहीं करता कि अपनी दौलत अपने नौकरों में बांट दे और इस तरह अपना और नौकरों का फर्क मिटाकर यकसां हो जाए। फिर खुदा के बारे में यह मानना कैसे सही हो सकता है कि उसने अपने इख्तियारात दूसरों को तक्सीम कर दिए हैं।

कोई शख्स अपनी बढ़ाई का आप इंकार नहीं करता। फिर जो बात एक इंसान भी पसंद

नहीं करता, हालांकि उसके पास कोई जाती असासा (सम्पत्ति) नहीं, इस बात को खुदा क्यों पसंद करेगा जिसके पास जो कुछ है वह उसका अपना जाती है। किसी दूसरे का दिया हुआ नहीं। हकीकत यह है कि इस किसिम के तमाम अक्कीदे खुदा की हस्ती की नफी कर रहे हैं। वे खुदा को गैर खुदा की सतह पर पहुंचा रहे हैं जो किसी हाल में मुमकिन नहीं।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَيْنَ
وَ حَفْدَةً ۖ وَ رَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ
هُمْ يَكْفُرُونَ^{٧٢} وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِنَ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ^{٧٣} فَلَا تَضُرُّهُمُ الْأَمْثَالُ^{٧٤}
إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ^{٧٥}

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम ही में से बीवियां बनाई और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए बेटे और पोते पैदा किए और तुम्हें सुथरी चीजें खाने के लिए दीं। फिर क्या ये वातिल (असत्य) पर इमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत का इंकार करते हैं। और वे अल्लाह के सिवा उन चीजों की इबादत करते हैं जो न उनके लिए आसमान से किसी रोजी पर इख्तियार रखती हैं और न जमीन से, और न वे कुदरत रखती हैं। पस तुम अल्लाह के लिए मिसालें न बयान करो। बेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (72-74)

इंसान एक ऐसी मजबूरी है जिसकी बेखुमार जरूरतें हैं। इन तमाम जरूरतों का इतिजाम निहायत कामिल सूरत में दुनिया के अंदर मौजूद है।

आदमी को भूख प्यास लगती है तो यहां खाने पीने की बेहतरीन चीजें इफरात के साथ मौजूद हैं। आदमी को शख्सी सुकून के लिए बीवी दरकार है तो यहां ऐन उसके तकाजों मुताबिक मुसलसल औरतें पैदा की जा रही हैं। आदमी के सामने अपनी नस्ल की बका का मसला है तो यहां उसके लिए बेटे और पोते की पैदाइश का निजाम भी मौजूद है।

यह सब कुछ खुदा की तरफ से है। मगर हर जमाने में इंसान ने यह गलती की कि खुदा की इन नेमतों को गैर खुदा की तरफ मंसूब कर दिया। मुश्किल लोग उन्हें खुदा के सिवा देवी देवताओं या जिंदा मुर्दा हस्तियों की तरफ मंसूब करते हैं। और जो मुल्हिद (नास्तिक) हैं वे उन्हें कव्बानीने फितरत के अधि अमल का नतीजा क्कार देते हैं। नेमतों का यह निजाम इसलिए था कि उसे देखकर आदमी के अंदर शुक्रेखुदावंदी का जज्बा उमड़े। मगर खुदसाख्ता कपोल-कल्पनाओं की बिना पर यह निजाम उसके लिए सिर्फ कुफ्रेखुदावंदी की गिज देने का जरिया बन गया।

अक्सर एतकादी गुमराहियां मिसालों की वजह से पैदा होती हैं। मसलन इंसान के बेटे-बेटियां हैं तो इसी पर कयास करके समझ लिया गया कि खुदा की भी बेटे-बेटियां हैं। दुनिया में बड़े लोगों के यहां कुछ अफ़्फ़ाद होते हैं जो मुकर्रब और सिफ़ारिशी होते हैं। इसे मिसाल

बनाकर फर्ज कर लिया गया कि खुदा के दरबार में भी कुछ कुरबत वाले हैं और खुदा के यहां उनकी सिफारिशें चलती हैं।

इस किस्म की तमसीलात से शिर्क और गुमराही की अक्सर किस्में पैदा होती हैं। मगर यह ख़ालिक को मख़बूक के ऊपर कयास करना है जो सरासर जहालत है। ख़ालिक हर एतबार से मख़बूक से मुख़लिफ़ है। मख़बूक की कोई मिसाल ख़ालिक पर चसपां नहीं होती। मिसाल के जरिए बात को समझाना बजाए खुद ग़लत नहीं। मगर मिसाल उसी वक्त कारआमद है जबकि आदमी को अस्ल और तशबीह (उपमा) दोनों का इल्म हो। इंसान जब खुदा की हकीकत को नहीं जानता तो कैसे वह उसके मुताबिक कोई मिसाल ला सकता है।

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا مَمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنَّا
رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُمْ سِرًّا وَجَهْرًا هَلْ يَسْتَوُونَ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ⑤

और अल्लाह मिसाल बयान करता है एक गुलाम ममलूक की जो किसी चीज पर इख़्तियार नहीं रखता, और एक शख्स है जिसे हमने अपने पास से अच्छा रिज्क दिया है, वह उसमें से पोशीदा और एलानिया खर्च करता है। क्या ये एकसां (समान) होंगे। सारी तारीफ अल्लाह के लिए है, लेकिन उनमें अक्सर लोग नहीं जानते। (75)

मुश्रिकाना तमसीलात की ग़लती वाजेह करने के लिए यहां एक सादा और आम मिसाल दी गई है। एक शख्स है जिसके पास हर किस्म के असबाब हैं और वह उनका जाती मालिक है। वहीं दूसरा शख्स है जो किसी भी चीज का जाती मालिक नहीं। ये दोनों आदमी एक दूसरे से नौई (मौलिक) तौर पर मुख़लिफ़ हैं। इसलिए एक की मिसाल दूसरे पर कभी चसपां नहीं होगी। फिर खुदा और बंदे में यह नौई फ़र्क तो अपने कमाल पर पहुंचा हुआ है। ऐसी हालत में कैसे मुमकिन है कि इंसान के वाक़ेयात से खुदा पर मिसाल कायम की जाए। इस कायनात में खुदा और दूसरी चीजों के दर्मियान जो तक्सीम है वह ख़ालिक और मख़बूक की तक्सीम है न कि खुदा और शरीके खुदा की। खुदा की हस्ती वह हस्ती है जो हर किस्म के कमालात का जाती सरवशमा (स्रोत) है। जो हर किस्म की नेमतों का तनहा बख़्शने वाला है। इस कायनात में सबसे ज्यादा ख़िलाफ़े वाकिआ बात यह है कि खुदा के सिवा किसी और के लिए वे चीजें फर्ज की जाएं जिनमें कोई भी उनका शरीक नहीं।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ
كَانٌّ عَلَى مَوْلَاهُ أَيْنَمَا يُوَجِّهُهُ لَيَاتٍ بَحِيرٌ هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ
يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ⑥

और अल्लाह एक और मिसाल बयान करता है कि दो शख्स हैं जिनमें से एक गुंगा है, कोई काम नहीं कर सकता और वह अपने मालिक पर एक बोझ है। वह उसे जहां भेजता है वह कोई काम दुरुस्त करके नहीं लाता। क्या वह और ऐसा शख्स बराबर हो सकते हैं जो इंसाफ की तालीम देता है और वह एक सीधी राह पर है। (76)

ऊपर आयत नम्बर 75 में खुदा के मुक़बले में शरीकों का बेहकीकत होना बताया गया था। अब आयत 76 में रसूल के मुक़बले में उन हस्तियों का बेहकीकत होना वाजेह किया जा रहा है जिनके बल पर आदमी रसूल की हिदायत को नजरअंदाज करता है।

पैगम्बर को खुदा अपनी खुसूसी तक्जोह के जरिए उस शाहराह की तरफ रहनुमाई करता है जो हक की शाहराह है और जो बराहेरास्त खुदा तक पहुंचाने वाली है। पैगम्बर और उसके साथी इस शाहराह पर खुद चलते हैं और दूसरों को भी उसकी तरफ रहनुमाई देते हैं। दूसरी तरफ वे लोग हैं जो पैगम्बर के रास्ते के सिवा दूसरे रास्तों की तरफ बुलाते हैं। उनकी मिसाल अंधे बहरे की है। उनके पास कान नहीं कि वे खुदा की आवाजों को सुनें, उनके पास आंख नहीं कि उसके जरिए खुदा के जलवों को देखें। उनके अंदर वह कल्ब व दिमाग नहीं कि वे कायनात में फैली हुई खुदाई निशानियों को पा लें।

समअ व बसर व फुआद (सुनना, देखना, दिल) इसलिए दिए गए थे कि इनके जरिए आदमी मख़बूकात के आइने में ख़ालिक का जलवा देखे। मगर इंसान ने इनका इस्तेमाल यह किया कि वह खुद मख़बूकात में अटक कर रह गया।

وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ
أَوْ هُوَ أَقْرَبُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑦

और आसमानों और जमीन की पोशीदा (छुपी) बातें अल्लाह ही के लिए हैं और कियामत का मामला बस ऐसा होगा जैसे आंख झपकना बल्कि इससे भी जल्द। वेशक अल्लाह हर चीज पर क़दिर है। (77)

आलमे जहिर के पीछे एक ग़ैबी निजाम है। यह ग़ैबी निजाम खुदा का कयम किया हुआ है। अपनी महदूदियत की वजह से अगरचे हम इस ग़ैबी निजाम को नहीं देखते मगर खुद इस ग़ैबी निजाम पर हमारी हर चीज बिल्कुल खुली हुई है। खुदा ग़ैब में रहकर हर आन अपनी दुनिया की हर छोटी बड़ी चीज को देख रहा है। उसे हर बात का सहीतरीन अंदाज है। खुदा जब फैसला करेगा कि अब इंसान के इम्तेहान की मुददत तमाम हो चुकी है, ऐन उस वक्त वह इशारा करेगा और इसके बाद पलक झपकते में मौजूदा निजाम यकलख़्त टूट जाएगा। और नया निजाम बिल्कुल मुख़लिफ़ बुनियादों पर कयम होगा ताकि हर एक को उस अस्ल मक़र्रम पर पहुंचा दिया जाए जहां वह बाएतबार वाकिआ था न कि उस मक़र्रम पर जहां वह मस्नूई (बनावटी) तौर पर अपने आपको बिठाए हुए था।

وَاللّٰهُ أَخْرَجَكُمْ مِّنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا وَجَعَلَ لَكُمُ
السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट से निकाला, तुम किसी चीज को न जानते थे।
और उसने तुम्हारे लिए कान और आंख और दिल बनाए ताकि तुम शुक्र करो। (78)

इंसान जब पैदा होता है तो वह बिल्कुल आजिज और बेसमझ बच्चा होता है। मगर बड़ा
होकर वह उन हैरतअंगेज कुव्वतों का मालिक बन जाता है जिन्हें कान और आंख और अकल
कहते हैं। यह भी मुमकिन था कि आदमी जिस रोज पैदा हो उसी रोज उसके अंदर वे तमाम
सलाहियतें मौजूद हों जो बड़ी उम्र को पहुंचकर उसके अंदर पैदा होती हैं।

मगर ऐसा नहीं किया गया। सिर्फ इसलिए कि इंसान के अंदर शुक्र का जब्बा पैदा हो।
अव्वलन वह अपनी इब्तिदाई बेबसी की हालत को देखे और फिर यह देखे कि बाद को किस
तरह वह एक तर्करीयाफता हालत को पहुंच गया है। यह देखकर वह खुदा की मिली हुई
नेमत का एहसास करे और खुदा की एहसानमंदी के जज्बे से सरशार हो जाए।

किसी आदमी के अंदर यह कैफियत सिर्फ उस वक्त पैदा हो सकती है जबकि वह खुदा
की दी हुई कुव्वतों को सही तौर पर इस्तेमाल करे। उसके कान और आंख और दिल बस
जाहिरी दुनिया में अटक कर न रह जाएं बल्कि वे उसके लिए ऐसे रोशनदान बन जाएं जिनके
जरिए झांक कर कोई शर्र्स गैब की झलकियों को देख लेता है।

أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوْ السَّمَاءِ مَا يُبْسِكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ ۚ إِنَّ
فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٧٩﴾ وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُم مِّنْ بُيُوتِكُمْ
سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُم مِّنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ
وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ۚ وَمِنْ أَصْوَافِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا
إِلَىٰ حِينٍ ﴿٨٠﴾

क्या लोगों ने परियों को नहीं देखा कि आसमान की फजा में मुसख़्खर (अधीनस्थ) हो
रहे हैं। उन्हें सिर्फ अल्लाह थामे हुए है। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए
जो ईमान लाएं। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को सुकून का मकाम बनाया
और तुम्हारे लिए जानवरों की खाल के घर बनाए जिन्हें तुम अपने कूच के दिन और
कयाम के दिन हल्का पाते हो। और उनकी ऊन और उनके रूएँ और उनके बालों से
घर का सामान और फायदे की चीजें एक मुद्दत तक के लिए बनाई। (79-80)

परियों का फजा में उड़ना कुदरत की एक अजीम मंस्वाबंदी के तहत मुमकिन होता है।
परवाज के मकसद के लिए परियों की निहायत मौजूं बनावट, जिसकी मशीनी नकल हवाई
जहाज की सूरत में की गई है। जमीन के ऊपर हवा जो परियों के लिए ऐसी ही है जैसे कश्ती
के लिए समुद्र। जमीनी कशिश की वजह से हवा का मुसलसल जमीन के ऊपर कायम रहना
वगैरह। ये आला इतिजामात अगर न हों तो फजा में परियों का उड़ना मुमकिन न हो सके।

इस वाक्ये को गहरी नजर से देखा जाए तो आदमी को ऐसा मालूम होगा कि गोया वह
खुदा को अपनी कायनात में अमल करते हुए देख रहा है। वह तख्कीकी निजाम के अंदर
उसके खालिक को पा जाएगा। वह मस्नूआत (रचनाओं) के दर्मियान सानेअ (रचयिता) का
जलवा देख लेगा।

यही मामला खुद इंसान का है। घर आदमी के लिए सुकून का मकाम है। लेकिन घर
कैसे बनता है। खुदा के बहुत से इतिजामात हैं जिनकी वजह से जमीन पर एक घर का कयाम
मुमकिन होता है। वे तमाम तामीरी अज्जा जिनके जरिए एक मकान बनता है, पेशगी तौर पर
हमारी दुनिया में रख दिए गए हैं। जमीन में निहायत मुनासिब मिक्दर में कुव्वते कशिश
(गुरुत्वाकर्षण शक्ति) है जिसकी वजह से मकानात जमीन की सतह पर जमे खड़े होते हैं।
ऐसा न हो तो एक हजार मील फ्री घंटा की रफ्तार से दौड़ती हुई जमीन के ऊपर मकानात
उड़ जाएं। इसी तरह वे चीजें जिनसे आदमी हल्के फुल्के खेमे बनाता है और वे चीजें जिनमें
यह सलाहियत है कि इंसान के लिबास की सूरत में ढल जाएं और उसकी जीनत (सज्जा) का
और मौसमों में उसकी जिस्मानी हिफ़जत का काम दें।

इस तरह की तमाम चीजें इसलिए हैं कि आदमी के अंदर अपने रब की नेमतों पर शुक्र
का जब्बा पैदा हो, वह उसकी अज्मत व कुदरत के एहसास से उसके आगे गिर पड़े।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُم مِّنَّا خَلْقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْجِبَالِ أَنْثًا وَجَعَلَ
لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْبَأْسَ ۚ كَذَلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ
عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ﴿٨١﴾

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीजों की साये बनाए और तुम्हारे लिए
पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए ऐसे लिबास बनाए जो तुम्हें गर्मी से
बचाते हैं और ऐसे लिबास बनाए जो लड़ाई में तुम्हें बचाते हैं। इसी तरह अल्लाह तुम
पर अपनी नेमतें पूरी करता है ताकि तुम फरमांबरदार बनो। (81)

छत का और दूसरी चीजों को साया कितनी अहमियत रखता है, इसका अंदाजा उस वक्त
होता है जबकि आदमी अपने आपको किसी ऐसे सहारा में पाए जहां किसी किस्म का कोई साया
न हो। सूरज की हददर्जा हिसाबी हरात (तापमान) का यह नतीजा है कि एक मामूली आड़ भी
हमें साया दे देता है। हालांकि अगर सूरज की हरात मौजूदा हरात से ज्यादा होती, जो यकीनी

तौर पर मुमकिन थी, तो हमारे तमाम सायादार घर आग की भट्टी में तब्दील हो जाते। पहाड़ जैसी सख्त चट्टानों में ऐसे शिगाफ होना जहां आदमी अपनी पनाहगाहें बना सके। दुनिया में ऐसी चीजें मौजूद होना जो बारीक रेशों में ढलकर आदमी को उसके जिस्म के बचाव के लिए लिबास दें। इस किस्म की चीजें आदमी जैसी मख़सूक के लिए इतनी अहम हैं कि अगर वे न हों तो ज़मीन पर न इंसान का वजूद होता और न किसी इंसानी तहजीब का।

यह मअरफ़त बयकवक़त आदमी के अंदर दो चीजें पैदा करती है। एक, खुदा के लिए एहसानमंदी का जज्बा, क्योंकि वही है जिसने आदमी को ऐसी कीमती नेमतें दीं, दूसरे, अदिशे का जज्बा, क्योंकि खुदा अगर अपनी नेमतों को वापस ले ले तो इसके बाद आदमी के पास इनकी तलाफी (क्षतिपूर्ति) की कोई सूरत नहीं। ये एहसासात जब आदमी के अंदरून को इस तरह जगा दें कि वह अपने रब के सामने गिर पड़े तो इसी का नाम इबादत है।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝ يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ الْكَافِرُونَ ۝

पस अगर वे एराज़ (जेह्ला) करें तो तुम्हारे ऊपर सिर्फ साफ़-साफ़ पट्ट्या देने की जिम्मेदारी है। वे लोग खुदा की नेमत को पहचानते हैं फिर वे उसके मुंकिर हो जाते हैं और उनमें अक्सर नाशुक़ हैं। (82-83)

जो शख्स भी कायनात का मुतालआ करता है, चाहे वह एक आम आदमी हो या एक साइंसदां हो, उस पर ऐसे लम्हात गुज़रते हैं, जबकि मख़सूक़त पर गौर करते हुए उसका ज़ेहन ख़ालिक की तरफ मुंकिर हो जाता है। उसे महसूस होने लगता है कि ये हेतनाक चीजें न तो अपने आप बन गई हैं और न मफरूज़ा (काल्पनिक) माबूदों ने इन्हें बनाया है। इनका बनाने वाला यकीनन खुदाए बुर्जु व बरतर है।

मगर खुदा को मानना लाजिमी तौर पर आदमी की अपनी ज़िंदगी में तब्दीली का तक्ज़ा करता है। वह आदमी से उसकी आजादी छीन लेता है। इसलिए आदमी पर जब यह तजर्बा गुफ़्ता है तो क़स्ती तजस्सु (प्रभाव) के बाद वह अपने ज़ेहन को इस तरफ से हटा देता है। वह खुदा को पाकर भी खुदा को छोड़ देता है।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝ وَإِذَا رَأَوْا الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝

और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उठाएंगे। फिर इंकार करने वालों को हिदायत न दी जाएगी। और न उनसे तौबा ली जाएगी। और जब ज़ालिम लोग अज़ाब को देखेंगे तो वह अज़ाब न उनसे हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (84-85)

पैगम्बर और पैगम्बर के सच्चे पैरोकारों का कौमों के सामने हक़ का दाबी बनकर उठना बजाहिर एक मामूली वाक्या मालूम होता है। दुनिया ने आम तौर पर इन वाक्यात को इतना कम अहम समझा है कि एक पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को छोड़कर कोई दूसरा पैगम्बर नहीं जिसका काम उसके समकालीन इतिहास में क़बिले ज़िक्क़र पाया हो।

मगर यह काम उस वक़्त बेहद अहम और बेहद संगीन बन जाता है जबकि उसे आखिरत से जोड़ कर देखा जाए। क्योंकि आखिरत की अज़ीम अदालत में यही पैगम्बर और दाबी खुदा के गवाह होंगे और इन्हीं की गवाही पर लोगों के अबदी मुस्तक़बिल का फैसला किया जाएगा। जिन अफ़राद के बारे में गवाह ये कहेंगे कि उन्होंने हक़ को माना और अपने आपको उसकी इताअत में दिया वे वहां की अबदी दुनिया में जन्मती करार पाएंगे। और जिनके बारे में खुदा के ये गवाह बताएंगे कि उन्होंने हक़ का इंकार किया और उसकी इताअत (आज्ञापालन) पर राजी नहीं हुए वे अबदी जहन्नम में डाल दिए जाएंगे।

किसी कौम में खुदा के सच्चे दाबी उठें और वह कौम उनकी बात न माने तो यह उसके मुजरिम होने का क़तई सुबूत होता है, इसके बाद वह कौम यह कहने का हक़ खो देती है कि हमें क़ियामत और जन्नत दोज़ख़ की ख़बर न थी, इसलिए हमें आज के दिन की सज़ा से माफ़ रखा जाए।

وَإِذَا رَأَوْا الَّذِينَ أَشْرَكُوا شَرَكَاهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ شُرَكَائُنَا الَّذِينَ كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ دُونِكَ فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ وَالْقَوْلُ إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ وَالسَّلَامُ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ۝

और जब मुश्रिक (बहुदेववादी) लोग अपने शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे कि ऐ हमारे रब, यही हमारे वे शुर्का (ईश्वरत्व के साझीदार) हैं जिन्हें हम तुझे छोड़कर पुकारते थे। तब वे बात उनके ऊपर डाल देंगे कि तुम झूठे हो। और उस दिन वे अल्लाह के आगे झुक जाएंगे और उनकी इफ़ित्ता परदाजियां (गढ़े हुए झूठ) उनसे गुम हो जाएंगी। जिन्होंने इंकार किया और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोका, हम उनके अज़ाब पर अज़ाब का इज़ाफ़ा करेंगे उस फ़साद की वजह से जो वे करते थे। (86-88)

क़ियामत में यह हकीक़त आखिरी हद तक खुल जाएगी कि इस कायनात में एक खुदा के सिवा किसी के पास कोई ताक़त नहीं। उस वक़्त जब पूजने वाले अपने उन माबूदों को देखेंगे जिन्हें वे पूजते थे तो वे ऐसी बातें कहेंगे जिनसे उनकी बरा-त (विरक्ति) साबित होती हो। गोया कि ये झूठे माबूद धोखा देकर उनसे ग़ैर खुदा की परस्तिश कराते थे। मगर वे माबूद फौरन इसकी

तरदीद करेंगे और कहेंगे कि यह तुम्हारी अपनी सरकशी थी। तुमने खुदा की ताबेदारी से बचने के लिए बतौर खुद झूठे माबूद गढ़े और उनके नाम पर अपने ख़ाहिशपरस्ताना मजहब को जाइज साबित करते रहे।

एक वह शख्स है जो हक की दावत को कुबूल नहीं करता। दूसरा वह है जो इसी के साथ दूसरों को भी तरह-तरह से रोकने की कोशिश करता है। पहली रविश अगर गुमराही है तो दूसरी रविश गुमराही की कयादत। गुमराह लोगों को जो अजाब होगा, उसका दुगना अजाब उन लोगों को मिलेगा जो दुनिया में गुमराही की कयादत (नेतृत्व) करते रहे।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَى هَؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ﴿١٨﴾

और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उन्हीं में से उन पर उठाएंगे और तुम्हें उन लोगों पर गवाह बना कर लाएंगे और हमने तुम पर किताब उतारी है हर चीज को खोल देने के लिए। वह हिदायत और रहमत और बशारत (शुभ सूचना) है फ़रमांवरदारों के लिए। (89)

अल्लाह तआला का तरीका यह है कि किसी कौम पर इंजार व तबशीर (तंबीह और खुशखबरी) का काम खुद उस कौम के किसी मुंतख़ब फ़र्द के जरिए अंजाम दिलाता है। यही वजह है कि किसी कौम में जो फैसल्वर आए वे खुद उसी कौम के एक फ़र्द थे। अब उम्मेत मुस्लिमा को कियामत तक इसी तरह हर कौम के अंदर दावत (आह्वान) व शहादत (सत्य की गवाही) की जिम्मेदारी अंजाम देना है।

यह दुनिया में कौमों को दावत देने वाले आख़िरत में कौमों के ऊपर खुदा के गवाह होंगे। उन्हीं की गवाही पर कौम के हर फ़र्द के लिए सवाब या अजाब का फैसला किया जाएगा।

कुरआन में हर चीज का बयान है। इसका मतलब यह नहीं कि दूसरी आसमानी किताबों में हर चीज का बयान न था। हकीकत यह है कि हर आसमानी किताब जो खुदा की तर्फ से आई उसमें हर चीज का बयान मौजूद था। ताहम उस हर चीज का तअल्लुक दुनिया के उलूम व फुनून (ज्ञान-विज्ञान) से नहीं है बल्कि आख़िरत की कामयाबी और नाकामी के इल्म से है। वे तमाम चीजें जो आख़िरत में किसी को कामयाब या नाकाम बनाने वाली हैं वे सब उसूली तौर पर कुरआन में बयान कर दी गई हैं। अब जो लोग उससे हिदायत लेंगे, उनके लिए वह एक अजीम नेमत बन जाएगी। और जो लोग उससे हिदायत न लें उनके हिस्से में सिर्फ यह आएगा कि उसका इंकार करके अपनी हलाकत के लिए जवाज (औचित्य) फराहम करें।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَايَ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٩﴾

बेशक अल्लाह हुक्म देता है अद्ल (न्याय) का और एहसान (परोपकार) का और काब्तख़ो (नातेदारों) को देने का। और अल्लाह रोकता है बेहयाई के कामों और बुराई से और सरकशी से। अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम याददिहानी (अनुस्मरण) हासिल करो। (90)

दुनिया में कोई अल्लाह का बंदा किस तरह रहे, इसका वाजेह बयान इस आयत में मौजूद है। इसकी इसी अहमियत की बिना पर ख़लीफ़-ए-राशिद हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज ने इस आयत को जुमा के हफ्तेवार ख़ुतबे में शामिल किया था।

पहली चीज जिसका एक शख्स को एहतमाम करना है वह अद्ल है। इसका मतलब यह है कि एक शख्स का जो हक दूसरे पर आता है वह उसे पूरी तरह अदा करे, चाहे साहिबे हक कमजोर हो या ताक़तवर, और चाहे वह पसंदीदा शख्स हो या नापसंदीदा। हुक्म की अदायगी में सिर्फ हक का लिहाज किया जाए न कि दूसरे एतबारत का।

दूसरी चीज एहसान है। इससे मुराद यह है कि हुक्म की अदायगी में आली जर्मी का तरीका अपनाया जाए। इंसाफ के साथ मुर्वत को जमा किया जाए। क़ानूनी दायरे से आगे बढ़कर लोगों के साथ फ़य्याजी (सहृदयता) और हमदर्दी का रवैया इख़्तियार किया जाए। आदमी के अंदर यह हौसला हो कि मुमकिन हद तक वह अपने लिए अपने हक से कम पर राजी हो जाए, और दूसरे को उसके हक से ज्यादा देने की कोशिश करे।

तीसरी चीज संबंधियों को देना है। इसका मतलब यह है कि आदमी जिस तरह अपने बीबी बच्चों की जरूरत को देखकर तड़प उठता है और उसे पूरा करता है, इसी तरह वह दूसरे करीबी लोगों की जरूरत के बारे में भी हस्सास हो। हर साहिबे इस्तेदाद शख्स अपने माल पर सिर्फ अपना और अपने घर वालों ही का हक न समझे बल्कि अपने रिश्तेदारों के हुक्म अदा करने को भी वह अपनी जिम्मेदारी में शामिल करे। इसके बाद आयत में तीन चीजों से मना फ़रमाया गया है।

पहली चीज फ़हृश है। इसके मुराद खुली हुई अख़्लाकी बुराईयां हैं। यानी वे बुराईयां जिनका बुरा होना खुद अपने जमीर के तहत हर आदमी को मालूम होता है। और लोग आम तौर पर उसे शर्मनाक समझते हैं।

दूसरी चीज मुन्कर है। मुन्कर मारुफ का उल्टा है। मारुफ उन अच्छी बातों को कहते हैं जिन्हें हर मुआशिर में अच्छा समझा जाता है। इसके बरअक्स मुन्कर से मुराद वे नामाकूल काम हैं जो आम अख़्लाकी मेयार के खिलाफ हैं। इसमें वे तमाम चीजें शामिल हैं जिन्हें इंसान आम तौर पर बुरा जानते हैं और जिन्हें कुबूल करने से इंसान की फ़ितरत इंकार करती है।

तीसरी चीज बगी है। इसके मअना हैं हद से तजावुज करना। इसमें हर वह सरकशी दाख़िल है जबकि आदमी अपनी वाकई हद से गुजर कर दूसरे शख्स पर दस्तदराजी करे। वह किसी की जान या माल या आबरू लेने के लिए उसके ऊपर नाहक कारवाइयां करे। वह अपने जोर व असर को नाजाइज फ़ायदा उठाने के लिए इस्तेमाल करने लगे।

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَفْضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٢٠﴾ وَلَا تَسْوَأُوا

كَالَّذِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا تَتَخَذُونَ آيَاتَكُمْ دَخَالًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَى مِنْ أُمَّةٍ إِنَّمَا يَبُوءُكُمْ اللَّهُ بِهِ وَيَكَيْبُنَ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩١﴾

और तुम अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करो जबकि तुम आपस में अहद कर लो। और कसमों को पक्का करने के बाद न तोड़ो। और तुम अल्लाह को जामिन भी बना चुके हो। बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। और तुम उस औरत की मानिंद न बनो जिसने अपना महनत से काता हुआ सूत टुकड़े-टुकड़े करके तोड़ दिया। तुम अपनी कसमों को आपस में फसाद डालने का जरिया बनाते हो महज इस वजह से कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए। अल्लाह इसके जरिए से तुम्हारी आजमाइश करता है और वह कियामत के दिन उस चीज को अच्छी तरह तुम पर जाहिर कर देगा जिसमें तुम इस्तेलाफ (मत-भिन्नता) कर रहे हो। (91-92)

सूत कातना महनत के जरिए बिखरे हुए रेशों का एकजुट करना है। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि इंसान के लिए कारआमद चीजें तैयार हों। अब अगर कोई मर्द या औरत दिन भर महनत करके सूत काते और फिर शाम के वक्त अपने काते हुए सूत को पारा-पारा कर दे तो उसकी सारी महनत बेनतीजा होकर रह जाएगी।

यही मामला उन लोगों का है जो आपस में एक मुआहिदा (समझौता) करें और फिर एक या दूसरा फरीक (पक्ष) किसी माकूल सबब के बगैर उसे तोड़ डाले। काते हुए सूत का ख्वामख्वाह बिखेरना अपनी महनत को अकारत करना है। इसी तरह किए हुए मुआहिदे को तोड़ डालना उस पूरे अमल को बातिल करना है जिसके नतीजे में बाहमी इस्तेफाक का एक मामला वजूद में आया था।

मौजूदा दुनिया में एक आदमी दूसरे आदमियों के साथ मिलकर ज़िंदगी गुजारता है। हर आदमी को अपना काम दूसरे बहुत से आदमियों के दर्मियान करना होता है। इस बिना पर इज्तिमाई ज़िंदगी में बाहमी एतमाद की बहुत ज्यादा अहमियत है। इसी इज्तिमाई ज़िंदगी को कायम करने की खातिर बार-बार एक इंसान और दूसरे इंसान के दर्मियान मुआहिदे और कौल व करार वजूद में आते हैं, कभी कसम खाकर और कभी कसम के बगैर। अब अगर लोग ऐसा करें कि मुआहिदों को हकीकी जवाज (औचित्य) के बगैर तोड़ डालें तो इज्तिमाई ज़िंदगी में फसाद फैल जाए और किसी क्रिम की तामीर मुमकिन न रहे।

खुदा के नाम पर मुआहिदे की दो सूत्रें हैं। एक यह कि बाकयदा कसम के अल्फाज अदा करके किसी से कोई अहद किया जाए। दूसरे यह कि कसम के अल्फाज न बोले जाएं ताहम जो मुआहिदा किया गया है उसमें खुदा का हवाला भी किसी पहलू से शामिल हो। ऐसी तमाम सूत्रों में अहद करने वाले गोया खुदा को इस मामले का गवाह या जामिन बनाते हैं। ऐसे मुआहिदे जिनमें खुदा का नाम भी शामिल किया गया हो उन्हें तोड़ना और भी ज्यादा बुरा है क्योंकि इसका मतलब यह है कि जब आदमी को दूसरों के ऊपर अपना एतबार कायम करना था तो उसने

खुदा के नाम को इस्तेमाल किया और जब उस पर नफस या मफाद के तक्वे ग़ालिब आए तो उसने खुदा को नज़अंदाज कर दिया।

अफ़राद या कौमों के दर्मियान जो मुआहिदे होते हैं उनकी दो सूत्रें हैं। एक यह कि वे उसूलों के ताबेअ हों। दूसरे यह कि वे मफादात के ताबेअ हों। कदीम जमाने में और आज भी आम हालत यह हैं कि जब मुआहिदा करने में कोई फायदा नजर आए तो मुआहिदा कर लिया। और जब तोड़ना मुफीद मालूम हुआ तो उसे तोड़ दिया। इसके बरअक्स इस्लाम की तालीम यह है कि मुआहिदों को शरई और अख़लाकी उसूलों के ताबेअ रखा जाए।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَلَسْتُمْ لَعَمَلِكُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٢﴾

और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही उम्मत बना देता लेकिन वह बेराह कर देता है जिसे चाहता है और हिदायत दे देता है जिसे चाहता है और जरूर तुमसे तुम्हारे आमाल की पूछ होगी। (93)

दुनिया में इस्तेलाफ़ात (मत-भिन्नताएं) हैं। हक और नाहक एक दूसरे से अलग नहीं होते। इसकी वजह खुदा का वह मंसूबा है जिसके तहत उसने मौजूदा दुनिया को बनाया है। और वह मंसूबा इस्तेहान है।

मौजूदा दुनिया में इंसान को जांच की गरज से रखा गया है। यह मक़सद इसके बगैर पूरा नहीं हो सकता था कि हर आदमी को मानने और न मानने की आजादी हो। यहां तक कि उसे यह भी आजादी हो वह हक को नाहक साबित करे और नाहक को हक के रूप में पेश करे। अगर यह मस्लेहत न होती तो खुदा तमाम इंसानों को उसी तरह अपने हुक्म का पाबंद बना देता जिस तरह वह बकिया कायनात को अपने हुक्म का पाबंद बनाए हुए है।

यह सूत्रेहाल कियामत तक के लिए है। कियामत के दिन खुल जाएगा कि किसने अपनी समझ को सही तौर पर इस्तेमाल किया और किसने अपने मफाद (स्वार्थ) के खातिर सच्चाई को नज़अंदाज किया। उस वक्त खुदा हर एक के साथ वह मामला करेगा जिसका उसने मौजूदा इस्तेहानी मरहले में अपने को अहल साबित किया था।

وَلَا تَتَخَذُوا آيَاتَكُمْ دَخَالًا بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدْرُ بَعْدِ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٩٣﴾ وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

और तुम अपनी कसमों को आपस में फ़स्व का जरिया न बनाओ कि कोई कदम जमाने के बाद फिसल जाए और तुम इस बात की सजा चखो कि तुमने अल्लाह की राह से

रोका और तुम्हारे लिए एक बड़ा अजाब है। और अल्लाह के अहद (वचन) को थोड़े फायदे के लिए न बेचो। जो कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। (94-95)

कसम खाकर मुआहिदा (समझौता) करना पुख्ता मुआहिदे की आखिरी सूरत है। इस एतबार से इस आयत के तहत तमाम मुआहिदे आ जाते हैं।

अगर मुसलमान ऐसा करें कि वे दूसरों से मुआहिदाती मामले करें और फिर किसी हकीमी सबब के बगैर महज मफ़द के खातिर उन्हें तोड़ दें तो इससे माहिल में मुसलमानों की अइज़ाकी साख़ ख़त्म हो जाएगी। और नतीजतन उनका यह अमल लोगों को अल्लाह की राह से रोकने का जरिया बन जाएगा। मुफ़र्रिसर इब्ने कसीर लिखते हैं कि जब मुकिरे इस्लाम देखेगा कि मुसलमान ने मुआहिदा किया और फिर उसने उससे बेवफ़ाई की तो उसे दिने इस्लाम पर एतमाद बाकी न रहेगा और इसकी वजह से वह खुदा के दीन में दाख़िल होने से रुक जाएगा।

अहद को ग़ैर शरई तौर पर तोड़ने का वाकया हमेशा इसलिए पेश आता है कि आदमी को यह नजर आने लगता है कि अगर वह मुआहिदे को तोड़ दे तो उसे फ़ुलां दुनियावी फ़ायदा हासिल हो जाएगा। मगर मोमिन की नजर आख़िरतपसंदाना नजर होती है। जब भी उसका नफ़्स इस किस्म की तहरीक करता है तो वह अपने नफ़्स को यह कहकर दबा देता है कि मुआहिदा तोड़ने में अगर दुनिया का फ़ायदा है तो मुआहिदा न तोड़ने में आख़िरत का फ़ायदा। और दुनिया के फ़ायदे के मुक़बले में आख़िरत का फ़ायदा यकीनन ज्यादा बड़ है।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۚ وَلَنَجْزِيَنَ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنفَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهُ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

जो कुछ तुम्हारे पास वह ख़त्म हो जाएगा और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बाकी रहने वाला है। और जो लोग सब्र करेंगे हम उनके अच्छे कामों का अज़्र (प्रतिफल) उन्हें जरूर देंगे। जो शख्स कोई नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो तो हम उसे जिंदगी देंगे, एक अच्छी जिंदगी। और जो कुछ वे करते रहे उसका हम उन्हें बेहतरीन बदला देंगे। (96-97)

ख़ुदा के दाओ का साथ देना रवाजयाफ़्ता मजहबी निज़ाम को छोड़कर ग़ैर रवाजी मजहब के साथ अपने आपको वाबस्ता करना है। इस तरह का इक्दाम हमेशा आदमी के लिए मुश्किलतरीन होता है। इसमें उस फ़ायदे को नजरअंदाज करना होता है जो इंसानों से मिल रहा है। और उस फ़ायदे की तरफ़ बढ़ना होता है जो ख़ुदा से मिलने वाला है।

इस किस्म का फैसला करने के लिए वाहिद चीज़ जो दरकार है वह 'सब्र' है। यानी यह बर्दाश्त कि आदमी कल के फ़ायदे के खातिर आज का नुक़सान ग़वारा कर सके। यह

सलाहियत कि आदमी नजर आने वाली चीज़ के मुक़बले में उसे ज्यादा अहमियत दे सके जो नजर नहीं आती। यह हैसला कि आदमी कुर्बानी की कीमत पर किसी चीज़ को इस्तिआर करे न कि महज पैसो नफ़ की कीमत पर। ख़ुदा के जो बंद इस उलुलअमी (संक्रम) का सुक़्त दें यकीन वे इस काबिल हैं कि ख़ुदा उन्हें अपनी आलातरीन नेमतों से नवाजे।

जो अफ़राद बेअमेज़ (विशुद्ध) हक़ का साथ देने की वजह से मुख़्वजह (स्थापित) निज़ाम में नुक़सान उठाते हैं। उन्हें लोग समझ लेते हैं कि वे बर्बाद हो गए। मगर ख़ुदा का वादा है कि वह उन्हें उनकी कुर्बानियों का भरपूर मुआवजा देगा। मौत के बाद की अबदी (चिरस्थायी) दुनिया में वह उन्हें निहायत बेहतर जिंदगी से नवाजेगा। जिन चीज़ों को उन्होंने वक़्ती तौर पर खोया है, उन्हें वह ज्यादा बेहतर शक़्ल में अबदी तौर पर दे देगा।

ख़ुदा का यह वादा औरतों के लिए भी इसी तरह है जिस तरह वह मर्दों के लिए है। ख़ुदा के यहां जजा के मामले में औरत और मर्द की कोई तक्सीम नहीं।

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝ إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ إِنَّمَا سُلْطٰنُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَكَّلُونَ وَالَّذِينَ هُمْ بِهِ مُشْرِكُونَ ۝

पस जब तुम कुरआन को पढ़ो तो शैतान मर्दूद से अल्लाह की पनाह मांगो। उसका जोर उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान वाले हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। उसका जोर सिर्फ़ उन लोगों पर चलता है जो उससे तअल्लुक रखते हैं, और जो अल्लाह के साथ शिर्क करते हैं। (98-100)

कुरआन को पढ़ने की दो सूरते हैं। एक, अपनी नसीहत के लिए पढ़ना। दूसरे, दावत (आह्वान) की खातिर दूसरों के सामने पेश करना, चाहे कुरआन के अल्फ़ाज़ दोहराए जाएं या उसके मतालिब (भावार्थ) बयान किए जाएं। दोनों सूरतों में जरूरी है कि आदमी शैतान के मुक़बले में ख़ुदा की पनाह मांगे। पनाह चाहने का मतलब सिर्फ़ कुछ मुक़र्रह अल्फ़ाज़ की तक़रार नहीं बल्कि अपने आपको शुऊरी तौर पर मुसल्लह करना है ताकि शैतान का हमला बेअसर होकर रह जाए।

शैतान हर वक़्त आदमी की घात में है। वह कुरआन के अल्फ़ाज़ के मफ़हूम (भावार्थ) को उसके क़री के ज़ेहन में बदल देता है। और जो चीज़ मल (मूल पाठ) में न हो उसे तफ़सीर में शामिल करा देता है। इसी तरह शैतान दाओ और मदऊ के दर्मियान ऐसे फ़ितने उभारता है जिसके नतीजे में दावत (आह्वान) का अमल रुक जाए।

ताहम शैतान को ख़ुदा ने सिर्फ़ बहकाने और वसलाने की आजादी दी है। उसे यह ताक़त नहीं दी कि वह किसी को बजोर गुमराही के रास्ते पर डाल दे। जो लोग ख़ुदा से अपना ज़ेहनी राबता कायम किए हुए हों उन पर उसका कुछ बस नहीं चलता। अलबत्ता जो लोग ख़ुदा से ग़ाफ़िल हों और शैतान की बातों पर ध्यान दें उनके ऊपर शैतान मुसल्लत हो जाता है और फिर जिधर चाहता है उधर उन्हें ले जाता है।

وَإِذَا بَدَلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنْزِلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٣﴾ قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ
لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ﴿١٠٤﴾

और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलते हैं, और अल्लाह खूब जानता है जो कुछ वह उतारता है, तो वे कहते हैं कि तुम गढ़ लाए हो। बल्कि उनमें अक्सर लोग इल्म नहीं रखते। कहे कि इसे रूहुल कुदूस (पवित्र आत्मा) ने तुम्हारे ख की तरफ से हक के साथ उतारा है ताकि वह ईमान वालों को साबित कदम रखे और वह हिदायत और खुशखबरी हो फरमांबरदारों के लिए। (101-102)

कुरआन एक दावती किताब है। इसके मुखलिफ हिस्से 23 साल के अर्से में थोड़ा-थोड़ा करके उतरते रहे। दावत व तर्बियत के मुसालेह के तहत कुछ अहकाम में तदरीज (क्रम) का तरीका भी इस्तिहार किया गया (मसलन पहले यह हुक्म आया कि मुखलिफों के मुकाबले में सन्न करो। इसके बाद यह हुक्म आया कि उनसे जंग करो।)

इस किस्म की तब्दीलियों को लेकर मुखलिफ़ीन यह कहते कि कुरआन खुदा की किताब नहीं। यह मुहम्मद की अपनी तस्नीफ (कृति) है जिसे उन्होंने खुदा की तरफ मंसूब कर दिया है। अगर वह खुदा की तरफ से होती तो उसमें कभी इस किस्म की तब्दीलियां न होतीं।

मुखलिफ़ीन अगर कुरआन के मामले में संजीदा होते और तब्दीली के वाक्ये को सही रुख से देखते तो इसमें उन्हें तदरीज फिलअहकाम (आदेशों में क्रम) की हिक्मत नजर आती। मगर जब उन्होंने इसे गलत रुख से देखा तो तब्दीली का वाक्या उन्हें इंसानी इल्म की कमी का नतीजा नजर आया। जिस चीज में उनके लिए तस्दीक (प्रमाण) का सामान छुपा हुआ था उसे उन्होंने अपने लिए इफ्तिरा (गढ़ना) का जरिया बना लिया।

कुरआन को हक के साथ उतारा गया है। यहां हक से मुराद खुदा का ख़ालिस और बेआमेज (विशुद्ध) दीन है। जो लोग सच्चाई के तालिब हों और मिलावटी दीनों में इत्मीनान न पाते हों, उनके लिए कुरआनी दीन में अपनी तलाश का जवाब भी है और उनकी तस्कीने कब्ब का सामान भी।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ لِّسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ
أَتَجْحَدُ بِهَذَا لِسَانٍ عَرَبٍ مُّحِيٍّ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
لَا يُهْدِيَهُمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٦﴾ إِنَّمَا يُفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ﴿١٠٧﴾

और हमें मालूम है कि ये लोग कहते हैं कि इसे तो एक आदमी सिखाता है। जिस शख्स की तरफ वे मंसूब करते हैं। उसकी जवान अजमी (गैर-अरबी) है और यह

कुरआन साफ अरबी जवान है। बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, अल्लाह उन्हें कभी राह नहीं दिखाएगा और उनके लिए दर्दनाक सजा है। झूठ तो वे लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते और यही लोग झूठे हैं। (103-105)

मक्का में कुछ अजमी (गैर-अरबी) गुलाम थे। उनके नाम तप्सीरी की किताबों में हैं, यसार आइश, यईश वौरह आए हैं। इस जिम्न में सलमान फारसी का नाम भी लिया गया है जो बाद को मुसलमान हो गए। ये गुलाम या यहूदी थे या नसरांनी। इस बिना पर वे कदीम आसमानी मजाहिब, यहूदियत और नसरानियत के बारे में मालूमात रखते थे। इनमें से किसी की कभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाकात हो जाती थी। इस तरह की मुलाकातों को बुनियाद बनाकर कुरैश के लीडरों ने कहा कि 'यही अजमी लोग मुहम्मद को कुछ बातें बता देते हैं और वह उन्हें खुदाई कलाम बताकर लोगों के सामने पेश करते हैं।'

यह मजहकखेज़ बात उन्होंने क्यों कही। इसकी वजह वही आम बुराई है जो हर जमाने में और हमेशा दुनिया में पाई गई है। वह है अपने हमअस्र (समकालीन) की कीमत को न पहचानना। कुरैश के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मुआसिर (समकालीन) शख्सियत थे, इसलिए वे आपकी पहचानने और आपकी कद्र करने में नाकाम रहे।

इस आयत से मालूम होता है कि जो लोग मुआसिराना नपिसयात के फितने में मुस्तिता हों वे कभी हक को कुल्ल करने की तौफ़ीक नहीं पाते। वे हक को मान लेने के बजाए यह करते हैं कि हक के अलमबरदार के खिलाफ झूठी बातें गढ़ते रहते हैं। वे बड़ी-बड़ी हक्कीकतों को नजरअंदाज कर देते हैं। और छोटी-छोटी बातों को लेकर दाजी की शख्सियत को बदनाम करते हैं। वे इसी में मशगूल रहते हैं, यहां तक कि मर कर खुदा की पकड़ के मुस्तहिक बन जाते हैं।

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مِنْ أَكْرَهٍ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ
وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ﴿١٠٨﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٩﴾ أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَ
سَمِعَهُمْ وَابْصَارَهُمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١١٠﴾ لَاجِرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ
الْخَسِرُونَ ﴿١١١﴾

जो शख्स ईमान लाने के बाद अल्लाह से मुंकिर होगा, सिवा उसके जिस पर जबरदस्ती की गई हो बशर्ते कि उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो, लेकिन जो शख्स दिल खोलकर मुंकिर हो जाए तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का राजब होगा और उन्हें बड़ी सजा होगी। यह इस वास्ते कि उन्होंने आखिरत (परलोक) के मुकाबले में दुनिया की ज़िंदगी को पसंद किया और अल्लाह मुंकिरों को रास्ता नहीं दिखाता। ये वे लोग हैं कि अल्लाह

ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आंखों पर मुहर कर दी। और ये लोग बिल्कुल ग्राफिल हैं। लाजिमी बात है कि आखिरत में ये लोग घाटे में रहेंगे। (106-109)

खुदा के यहां हकीकत का एतबार किया जाता है न कि महज जाहिर का। यही वजह है कि इस्लाम में ईमान के साथ बहुत रियायत की गई है। अगर कोई शख्स दिल से खुदा का सच्चा वफादार हो। मगर सख्त मजबूरी की हालत में अपनी जान बचाने के लिए वकती तौर पर कोई खिलाफे ईमान कलिमा कह दे तो खुदा के यहां इस पर उसकी पकड़ न होगी। मगर वे लोग खुदा के यहां नाकाबिले माफी हैं जो अंदर से बदल चुके हों। जो शैतानी शूबहात या हालात के दबाव से मुतअस्सिर होकर दिल की रिजामंदी से किसी और रास्ते पर चल पड़ें।

जब आदमी ईमान के बजाए गैर ईमान की रविश इख्तियार करता है तो इसकी वजह हमेशा दुनियापरस्ती होती है। वह दुनियावी मफाद को खतरे में देखकर गैर मोमिनाना रविश पर चल पड़ता है। अगर वह आखिरत की कद्र व कीमत को समझता तो दुनिया का मफाद उसे इतना हकीर (तुच्छ) नजर आता कि उसे यह बात बिल्कुल लम्ब (घटिया) मालूम होती कि दुनिया की खातिर वह आखिरत को छोड़ दे।

आखिरत के मुकाबले में दुनिया के फायदे अगर किसी के नजदीक अहमतर बन जाएं तो इसका लाजिमी नतीजा यह होता है कि वह मामलात को आखिरत के नुक़्ते नजर से सोच नहीं पाता। वह देखता और सुनता है मगर दुनिया की तरफ झुकाव की वजह से चीजों का उखरवी (परलोकवादी) पहलू उसकी निगाहों से ओझल हो जाता है। वह उसी पहलू को देख पाता है जो दुनियावी मसालेह (हितों) से तअल्लुक रखते हों। जो लोग गफलत के इस मर्तबे को पहुंच जाएं उनके हिस्से में अबदी (चिरस्थायी) नुक़सान के सिवा और कुछ नहीं।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا فُتِنُوا ثَجَّاهِدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا وَتُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

फिर तेरा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने आजमाइश में डाले जाने के बाद हिजरत (स्थान-परिवर्तन) की, फिर जिहाद किया और कायम रहे तो इन बातों के बाद बेशक तेरा रब बख़्शने वाला, महरबान है। जिस दिन हर शख्स अपनी ही तरफदारी में बोलता हुआ आएगा। और हर शख्स को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (110-111)

माहिल पर नाहक का ग़लबा हो, उस वक़्त कोई शख्स हक़ को कुक़ूल कर ले तो वह सख्त आजमाइश में पड़ जाता है। चारों तरफ से माहिल का दबाव जोर करता है कि आदमी दुबारा स्वाजी दीन की तरफ लौट जाए। ऐसी हालत में अगर वह हक़ पर कायम रहे, वह हर चीज यहां तक कि जायदाद और वतन को छोड़ दे मगर हक़ को न छोड़े तो वह मुहाजिर और मुजाहिद है। और अल्लाह की नजर में बहुत बड़े सवाब का मुस्तहिक है।

दुनिया की आजमाइश में जो चीज हक़ पर साबित कदम रखने वाली है वह सिर्फ आखिरत की याद है। हर आदमी पर बहुत जल्द एक हौलनाक दिन आने वाला है। वह दिन ऐसा सख्त होगा कि आदमी अपने दोस्तों और रिश्तेदारों तक को भूल जाएगा। वहां न कोई शख्स किसी की तरफ से बोल सकेगा और न कोई शख्स किसी का सिफारिश बनकर खड़ा होगा। अगर आदमी को उस आने वाले दिन का एहसास हो तो उसका यही हाल होगा कि वह हर किस्म का नुक़सान गवारा कर लेगा मगर हक़ को कभी न छोड़ेगा।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝

और अल्लाह एक बस्ती वालों की मिसाल बयान करता है कि वे अमन और इत्मीनान में थे। उन्हें उनका रिक़ फराहत के साथ हर तरफ से पहुंच रहा था। फिर उन्होंने खुदा की नेमतों की नाशुकी की तो अल्लाह ने उन्हें उनके आमाल के सबब से भूख और ख़ौफ का मजा चखाया। और उनके पास एक रसूल उन्हीं में से आया तो उसे उन्होंने झूठ बताया फिर उन्हें अजाब ने पकड़ लिया और वे जालिम थे। (112-113)

ईसानों की कोई आबादी इत्मीनान की हालत में हो और उसके दर्मियान रिक़ की फरावानी हो। फिर खुदा अपने किसी बंद को उनके दर्मियान खड़ा करे जो उन्हें हक़ की तरफ बुलाए तो ऐसी हालत में हमेशा दो में से कोई एक सूरत पेश आती है। या तो यह आबादी हक़ को कुक़ूल कस्म-मजिद (अतिरिक्त) खुदाई इनामात की मुस्तहिक बने और अगर वह ऐसा न करे तो फिर यह होता है कि उस पर तरह-तरह के हादसात गुजरते हैं। ये हादसात उसके हक़ में खुदाई अजाब नहीं होते बल्कि खुदाई तंबीहात (चेतावनिया) होते हैं। इनका मक़सद यह होता है कि लोग चौकन्ने हो जाएं। उनकी हस्सासियत (संवेदनशीलता) जागे और वे खुदा के दाबी की पुकार पर लब्बैक कहने के लिए तैयार हो जाएं।

अगर इस किस्म की तंबीहात कारगर न हों तो दावत की तक्मील के बाद दूसरा मरहला यह आता है कि उस कौम को हलाक कर दिया जाए ताकि वह आखिरत के आलम में पहुंच कर अपने अबदी अंजाम को भुगतें।

فَكُلُّوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِن كُنْتُمْ إِتِيَاهُ تَعْبُدُونَ ۝ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَحُمَ الْخِنْزِيرِ وَمَا أَهْلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنْ اضْطَرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

सो जो चीजें अल्लाह ने तुम्हें हलाल और पाक दी हैं उनमें से खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो। अगर तुम उसकी इबादत करते हो। उसने तो तुम पर सिर्फ मुद्आर को हराम किया है और खून को और सुअर के गोشت को और जिस पर गैर-अल्लाह का नाम लिया गया हो। फिर जो शख्स मजबूर हो जाए बशर्ते कि वह न तालिब हो और न हद से बढ़ने वाला, तो अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। (114-115)

इस आयत का तअल्लुक रोजमर्रा खाने वाली चीजों से है। खुदा ने जो कबिले शुआक चीजें पैदा की हैं, उनमें चन्द मुतअय्यन चीजों को छोड़कर बकिया सब इंसान के लिए हलाल हैं। ताहम कदीम मुशिक इंसान ने यह किया कि खुदा की हलाल की हुई बहुत सी गिजाओं को बतौर खुद अपने लिए हराम कर लिया। जदीद मुलहिद (आधुनिक नास्तिक) इंसान ने इसके बरअक्स यह किया कि खुदा की हराम की हुई बहुत सी गिजाओं को बतौर खुद अपने लिए हलाल ठहरा लिया। यह दोनों चीजें उस रूह (भावना) की कातिल हैं जिसे गिजाई नेमतों के जरिए इंसान के अंदर पैदा करना मक्सूद है।

गिजा इंसान की तमाम जरूरतों में सबसे ज्यादा अहम जरूरत है जिसका हर इंसान को सुबह व शाम तजर्बा होता है। खुदा को यह मल्बूब है कि आदमी जब गिजा का इस्तेमाल करे तो वह उसे खुदा का अतिव्या (देन) समझ कर खाए और उस पर खुदा का शुक्र अदा करे। मगर इंसान ने पूरे मामले को उलट दिया।

कदीम मुशिकाना दौर में उसने इन गिजाओं को देवताओं के साथ मंसूब किया और इस तरह उन्हें खुदा के बजाए देवताओं की याद का जरिया बना दिया। जदीद मुलहिदाना जमाने में यह हुआ है कि इंसान ने सारे मामले को अपनी लज्जते नपस के ताबेअ कर दिया। उसने खुदा की हराम गिजाओं को भी अपने लिए हलाल ठहरा लिया। नतीजा यह हुआ कि खुदा की पैदा की हुई चीजें उसके लिए सिर्फ अपनी लज्जत का दस्तरखान बनकर रह गई।

मजबूरी की हालत में अगर कोई शख्स खुदा के गिजाई कानून को बदले तो वह नदामत के जब्बे के तहत ऐसा करेगा न कि सरकशी के जब्बे के तहत। इसलिए इससे नपिसयाते इंसानी में कोई खराबी पैदा होने का अंदेशा नहीं।

وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ السِّنُّ كُمُ الْكَذِبِ هَذَا حَلَلٌ وَهَذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٦﴾ مَتَاعٌ قَلِيلٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٧﴾

और अपनी जवानों के गढ़े हुए झूठ की बिना पर यह न कहो कि यह हलाल है, और यह हराम है कि तुम अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाओ। जो लोग अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाएंगे वे फलाह (कल्याण, सफलता) नहीं पाएंगे। वे थोड़ा सा फायदा उठा लें, और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। (116-117)

इस आयत का तअल्लुक आम कानूनसाजी से नहीं है बल्कि गिजाई चीजों में हराम व हलाल मुकर्रर करने से है। इंसान हमेशा यह करता रहा है कि वह खाने की चीजों में कुछ को जाइज और कुछ को नाजाइज ठहराता है। ऐसा या तो तवह्दुमात (अंधविश्वास) के तहत होता है या ख्वाहिशात के तहत। मगर इसे करने वाले इसे मजहब की तरफ मंसूब कर देते हैं।

मज्कूरा किस्म की तहरीम (अवैधता) व तहलील (वैधता) का यह नुक्सान है कि इससे लोगों में तवह्दुमपरस्ती और ख्वाहिशपरस्ती का मिजाज पैदा होता है। जबकि आदमी के लिए सही बात यह है कि वह दुनिया में खुदापरस्त बनकर रहे।

मौजूदा जिंदगी में इस्तेहान की वजह से इंसान को आजादी हासिल है। तवह्दुमात और ख्वाहिशात को अपना दीन बनाने का मौका मिलने की वजह यही आजादी है। जब इस्तेहान की मुद्दत खत्म होगी तो अचानक इंसान पाएगा कि उसके लिए एक ही मुमकिन रास्ता था। यानी खुदापरस्ती को अपना दीन बनाना। इसके अलावा जिन चीजों को उसने अपनाया वह सिर्फ इस्तेहानी आजादी का फलत इस्तेमाल था न कि उसका कोई जाइज हक। उस वक्त उसे वही सजा भुगतनी पड़ेगी जो इस्तेहान में नाकाम होने वालों के लिए मुकद्दर है।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا ظَنَّمُ لَكَ وَلَكِنْ كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٨﴾

और यहूदियों पर हमने वे चीजें हराम कर दी थीं जो हम इससे पहले तुम्हें बता चुके हैं कि हमने उन पर कोई जुल्म नहीं किया बल्कि वे खुद अपने ऊपर जुल्म करते रहे। (118)

यहूद की मजहबी किताबों में कुछ ऐसी खाने की चीजें हराम हैं जो इस्लाम की शरीअत में हराम नहीं की गई हैं। (अन-निसा 160)। इसकी वजह यह नहीं कि खुद खुदा ने दो किस्म के अहकाम दिए हैं। यहूद पर भी अस्तन वही गिजाई चीजें हराम ठहराई गई थीं जो यहां (अन नहल, आयत 115) में मज्कूर हैं। मगर बाद को यहूद ने खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) तसब्बुरात के तहत कुछ जाइज चीजों को अपने ऊपर हराम कर लिया। पैम्बरो की फहमाइश के बावजूद वे अपने इस खुदसाख्ता दीन को छोड़ने पर तैयार नहीं हुए।

मजीद यह कि अब्बलन उन्होंने खुदा के हलाल को हराम किया और इस तरह अपने आपको नाहक मुसीबतों में डाला। और फिर जब वे उस हराम पर कायम न रह सके तो अकीदतन उसे हराम समझते हुए अमलन उसे अपने लिए जाइज बना लिया। इस तरह वे दोहरे मुजरिम बन गए।

आदमी अगर किसी खुदसाख्ता नजरिये के तहत एक जाइज चीज को अपने लिए नाजाइज बना ले और उसकी खातिर कुर्बानियां देना शुरू करे, तो यह महज अपनी जान पर जुल्म करना होगा न कि खुदा के रास्ते में कुर्बानी पेश करना।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١٩﴾

फिर तुम्हारा खब उन लोगों के लिए जिन्होंने जहालत से बुराई कर ली, इसके बाद तौबा की और अपनी इस्लाह की तो तुम्हारा खब इसके बाद बख़्शने वाला महरबान है। (119)

जब बुराई के साथ सरकशी और तअसुब के जज्बात इकट्ठा हो जाएं तो आदमी उससे हटने के लिए तैयार नहीं होता, चाहे उसके अमल को गलत साबित करने के लिए कितने ही दलाइल दिए जाएं। मगर बुराई की दूसरी किस्म वह है जो महज नादानी की वजह से पैदा होती है। आदमी बेख़बरी में या नपस से मगलूब होकर कोई गलती कर बैठता है। ऐसे आदमी के अंदर आम तौर पर ठिठोई नहीं होती। जब दलील से उस पर उसकी गलती वाजह हो जाए तो वह फौरन पलट आता है और दुबारा अपने को सही रवैया पर कायम कर लेता है।

पहली किस्म के लोगों के लिए माफ़ी का कोई सवाल नहीं। मगर दूसरी किस्म के लोगों के लिए यह बशारत (शुभ सूचना) है कि ख़ुदा उन्हें अपनी रहमतों के साये में ले लेगा क्योंकि वह अपने बंदों पर बहुत ज्यादा महरबान है।

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۖ شَاكِرًا
لِّلْأَنْعَمِ ۖ أَجْتَبَلَهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ وَاتَّبَعَهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً
وَوَلَّاهُ فِي الْآخِرَةِ لِمَنِ الصَّالِحِينَ ۖ ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

वेशक इब्राहीम एक अलग उम्मत था, अल्लाह का फरमावरदार, और उसकी तरफ यकसू (एकाग्रचित्त), और वह शिर्क (ख़ुदा के साझीदार बनाना) करने वालों में से न था। वह उसकी नेमतों का शुक्र करने वाला था। ख़ुदा ने उसे चुन लिया। और सीधे रास्ते की तरफ उसकी रहनुमाई की। और हमने उसे दुनिया में भी भलाई दी और आखिरत में भी। वह अच्छे लोगों में से होगा। फिर हमने तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) की कि इब्राहीम के तरीके की पैरवी करो जो यकसू था और वह शिर्क करने वालों में से न था। (120-123)

हजरत इब्राहीम को कुरआन में ख़ुदा के मलूब इंसान के नमूने के तौर पर पेश किया गया है। वह नमूने के इंसान क्यों बने। इसलिए कि वह माहौल के बिगाड़ के विपरीत तनहा ईमान पर कायम रहने वाले इंसान थे। वह अकेले ख़ुदा के लिए खड़े हुए जबकि इस राह में कोई उनका साथ देने वाला न था।

हजरत इब्राहीम पूरी तरह अपने आपको ख़ुदा की पाबंदी में दिए हुए थे। उन्होंने आलमगीर (विश्वव्यापी) मुशिरकाना माहौल में अपने आपको तौहीद (एकेश्वरवाद) के लिए यकसू कर लिया था। वह तमाम चीजों को ख़ुदा की तरफ से मिली हुई चीज समझते थे और उनके लिए उनका दिल ख़ुदा के शुक्र के जज्बे से भरा रहता था। हजरत इब्राहीम के इस कमाले ईमान की वजह से ख़ुदा ने उन पर अपनी हिदायत की राहें खोल दीं और उन्हें पैगम्बरी के लिए चुन लिया ताकि वह दुनिया वालों को ख़ुदा के दीन से आगाह करें।

हजरत इब्राहीम को दुनिया का हसनह (बेह तरी) दी गई और आखिरत की बेह तरी भी। यह मालूम है कि दुनियावी में हजरत इब्राहीम को न अवाम की भीड़ मिली, न इक्तेदार (सत्ता) का तख्त, और न और कोई दुनिया रैनक की चीज। इसके बावजूद कुरआन की यह गवाही है कि उन्हें ख़ुदा की तरफ से दुनिया की बेह तरी मिली थी। इससे मालूम हुआ कि ख़ुदा की नजर में दुनिया की बेह तरी न अवामी मकबूलियत का नाम है और न दौलत व हुकूमत का। बल्कि दुनिया की बेह तरी ख़ुदा की नजर में अस्लन वही चीजें हैं जिन्हें यहां हजरत इब्राहीम की खुसूसियत के तौर पर बयान किया गया है।

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَكْتُمُ بَيْنَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

सब्त उन्हीं लोगों पर आयद किया गया था जिन्होंने उसमें इख़लेफ (मतभेद) किया था। और वेशक तुम्हारा खब कियामत के दिन उनके दर्मियान फैसला कर देगा जिस बात में वे इख़लेफ कर रहे थे। (124)

हफ्ते का एक दिन तमाम शरीअतों में इज्तिमाई इबादत का दिन रहा है। यहूद उसे सनीचर (सब्ब) के दिन मनाते हैं। ईसाई इतवार के दिन। और मुसलमानों को हुक्म है कि वे जुमा के दिन इसका एहतिमाम करें।

यहूद के बुजुर्गों ने मूशिगाफियां (कुतकी) करके बतौर ख़ुद सब्ब (Sabbath) के लिए नए-नए जवाबित (नियम) बनाए और अपने आपको मसनूई पाबंदियों में जकड़ लिया। फिर जब इन पाबंदियों पर अमल करना उन्हें नामुमकिन मालूम हुआ तो अपने बुजुर्गों के तकदुस (पवित्रता) की वजह से वे उन्हें रद्द न कर सके। अलबत्ता अमली तौर पर उन्होंने उनके ख़िलाफ चलना शुरू कर दिया।

ख़ुदा के दीन में बाद के आलिमों और बुजुर्गों ने अपनी तशरीहात से जो इख़लेफात (मतभेद) पैदा किए उनका फैसला दुनिया में होने वाला नहीं। मगर जब कियामत आएगी तो ख़ुदा बता देगा कि अस्ल आसमानी दीन क्या था और वे क्या चीजें थीं जो लोगों ने अपनी तरफ से इज्मल करके दीन में शामिल कर दीं।

أَدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ
أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

अपने खब के रास्ते की तरफ हिक्मत (तत्वदर्शिता) और अच्छी नसीहत के साथ बुलाओ और उनसे अच्छे तरीके से बहस करो। वेशक तुम्हारा खब खूब जानता है कि कौन उसकी राह में भटका हुआ है और वह उन्हें भी खूब जानता है जो राह पर चलने वाले हैं। (125)

दावत (आह्वान) का अमल एक ऐसा अमल है जो इतिहाई संजीदगी और ख़ैरख़्वाही के जज्बे के तहत उभरता है। ख़ुदा के सामने जवाबदेही का एहसास आदमी को मजबूर करता

है कि वह खुदा के बंदों के सामने दाजी बनकर खड़ा हो। वह दूसरों को इसलिए पुकारता है कि वह समझता है अगर मैंने ऐसा न किया तो मैं कियामत के दिन पकड़ा जाऊंगा। इस नफिसयात का कुदरती नतीजा है कि आदमी का दावती अमल वह अंदाज इख्तियार कर लेता है जिसे हिक्मत, अच्छी नसीहत और अच्छी बहस कहा गया है।

हिक्मत से मुराद दलील व बुरहान (स्पष्ट प्रमाण) है। कोई दावती अमल उसी वक्त हकीमी दावती अमल है जबकि वह ऐसे दलाइल के साथ हो जिसमें मुखातब के जेहन की पूरी रियायत शामिल हो। मुखातब के नजदीक, किसी चीज के साबितशुदा चीज होने की जो शराइत हैं, उन शराइत की तक्मील के साथ जो कलाम किया जाए उसी को यहां हिक्मत का कलाम कहा गया है। जिस कलाम में मुखातब की जेहनी व फिक्री रियायत शामिल न हो वह ग़ैर हकीमाना कलाम है। और ऐसा कलाम किसी को दाजी का मर्तबा नहीं दे सकता।

अच्छी नसीहत उस खुसूसियत का नाम है जो दर्दमंदी और ख़ैरख़ाही की नफिसयात से किसी के कलाम में पैदा होती है। जिस दाजी का यह हाल हो कि खुदा के अज्मत व जलाल (प्रताप) के एहसास से उसकी शख्सियत के अंदर भूचाल आ गया हो जब वह खुदा के बारे में बोलेगा तो यकीनी तौर पर उसके कलाम में अज्मते खुदावंदी की बिजलियां चमक उठेंगी। जो दाजी जन्नत और जहन्नम को देखकर दूसरों को उसे दिखाने के लिए उठे। उसके कलाम में यकीनी तौर पर जन्नत की बहारें और जहन्नम की हौलनाकियां गूंजती हुई नजर आएंगी। इन चीजों की अमेजिश दाजी के कलाम को ऐसा बना देगी जो दिलों को पिघला दे और आंखों को अश्कबार (नम) कर दे।

दावती कलाम की इजाबी खुसूसियात यही दो हैं हिक्मत और मोअज़ते हसनह (अच्छी नसीहत)। ताहम हमेशा दुनिया में कुछ ऐसे लोग मौजूद रहते हैं जो ग़ैर जरूरी बहस करते हैं। जिनका मक़सद उलझाना होता है न कि समझना समझाना। ऐसे लोगों के बारे में मजहूर किस्म का दाजी जो अंदाज इख्तियार करता है, उसी का नाम 'अच्छी बहस' है। वह टेढ़ी बात का जवाब सीधी बात से देता है वह सज़्ज अल्फ़ज़ सुनकर भी अपनी ज़बान से नर्म अल्फ़ज़ निकालता है। वह इल्ज़ाम तराशी के मुक़बले में इस्तदलाल (तर्क) और तज्जिया (विश्लेषण) का अंदाज इख्तियार करता है। वह इश्तेआल (उत्तेजना) के उस्लूब के जवाब में सब्र का उस्लूब (शैली) इख्तियार करता है।

हक के दाजी की नजर सामने के इंसान की तरफ नहीं होती बल्कि उस खुदा की तरफ होती है जो सबके ऊपर है। इसलिए वह वही बात कहता है जो खुदा की मीजान (तुला) में हकीमी बात ठहरे न कि इंसान की मीजान में।

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ ۝

और अगर तुम बदला लो तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ किया गया है और अगर तुम सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के लिए बहुत बेहतर है और सब्र करो

और तुम्हारा सब्र खुदा ही की तौफ़ीक से है और तुम उन पर ग़म न करो और जो कुछ तदबीरों वे कर रहे हैं उससे तंग दिल न हो। बेशक अल्लाह उन लोगों के साथ है जो फ़ैज़ा (ईश-परायण) हैं और जो नेकी करने वाले हैं। (126-128)

यहां दाजी का वह किरदार बताया गया है जो मुखालिफ़ीन के मुकाबले में उसे इख्तियार करना है। फरमाया कि अगर मुखालिफ़ीन की तरफ से ऐसी तकलीफ़ पहुंचे जिसे तुम बर्दाश्त न कर सको तो तुम्हें उतना ही करने की इजाजत है जितना तुम्हारे साथ किया गया है। ताहम यह इजाजत सिर्फ़ इंसान की कमजोरी को देखते हुए बतौर रियायत है। वर्ना दाजी का अस्ल किरदार तो यह होना चाहिए कि वह मदद की तरफ से पेश आने वाली हर तकलीफ़ पर सब्र करे। वह मदद से हिसाब चुकाने के बजाए ऐसे तमाम मामलात को खुदा के ख़ाने में डाल दे।

मुखातब आखिर हक को न माने। वह उसे मिटाने के दरपे हो जाए तो उस वक्त दाजी को सबसे बड़ी तदबीर जो करनी है वह सब्र है यानी रद्देअमल की नफिसयात या जवाबी कार्रवाईयों से बचते हुए मुस्बत (सकारात्मक) तौर पर हक का पैग़ाम पहुंचाते रहना। दाजी को अस्लन जो सुबूत देना है वह यह कि वह फ़िलवाक़ अल्लाह से डरने वाला है। उसके अंदर वह किरदार पैदा हो चुका है जो उस वक्त पैदा होता है जबकि आदमी दुनिया के पर्दों से गुजर कर खुदा को उसकी छुपी हुई अज्मतों के साथ देख ले। अगर दाजी यह सुबूत दे दे तो इसके बाद बकिया मामलों में खुदा उसकी तरफ से काफी हो जाता है। इसके बाद दावत (आह्वान) के मुखालिफ़ीन की कोई तदबीर दाजी को नुक़सान नहीं पहुंचा सकती, चाहे वह तदबीर कितनी ही बड़ी क्यों न हो।

दुनिया में दो किस्म के इंसान होते हैं। एक वे जिनकी निगाहें इंसानों में अटकी हुई हों। जिन्हें बस इंसानों की कार्रवाईयां दिखाई देती हों। दूसरे वे लोग जिनकी निगाहें खुदा में अटकी हुई हों। जो खुदा की ताकतों को अपनी आंखों से देख रहे हैं। पहली किस्म के लोग कभी सब्र पर कादिर नहीं हो सकते। ये सिर्फ़ दूसरी किस्म के इंसान हैं जिनके लिए यह मुमकिन है कि वे शिकायतों और तल्लिख़ियों (कटुताओं) को सह लें। और जो कुछ खुदा की तरफ से मिलने वाला है उसके ख़ातिर उसे नजरअंदाज कर दें जो इंसान की तरफ से मिल रहा है।

दाजी को जिस तरह जवाबी नफिसयात से परहेज करना है उसी तरह उसे जवाबी कार्रवाई से भी अपने आपको बचाना है। मुखालिफ़ीन की साजिशें और तदबीरें बजाहिर डराती हैं कि कहीं वे दावत और दाजी को तहस नहस न कर डालें। मगर दाजी को हर हाल में खुदा पर भरोसा रखना है। उसे यह यकीन रखना है कि खुदा सब कुछ देख रहा है। और वह यकीनन हक की दावत का साथ देकर बातिलपरस्तों को नाकाम बना देगा।

سُبْحَنَ الَّذِي أَسْرَىٰ بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنَ الْإِيمَانِ ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَىٰ بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنَ الْإِيمَانِ ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

पाक है वह जो ले गया एक रात अपने बंदे को मस्जिद हराम से दूर की उस मस्जिद तक जिसके माहौल को हमने बाबरकत बनाया है ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियां दिखाएं। बेशक वह सुनने वाला, देखने वाला है। (1)

हिजरत से एक साल पहले मक्का के हालात बेहद सख्त थे। ऐसा मालूम होता था कि इस्लाम की तारीख बनने से पहले खत्म हो जाएगी। ऐन उस वक्त अल्लाह ने पैगम्बरे इस्लाम को एक अजीम निशानी दिखाई। यह निशानी उस हकीकत का महसूस मुजाहिदा था कि इस्लाम की तारीख न सिर्फ यह कि अपनी तक्मील तक पहुंचेगी, बल्कि इसके गिर्द ऐसे अमली हालात जमा किए जाएंगे कि वह अबदी (चिरस्थायी) तौर पर ज़िन्दा और महफूज़ रहे। क्योंकि अब इसी को कियामत तक तमाम कौमों के लिए खुदा के दीन का मुस्तनद माख़ज (प्रमाणिक स्रोत) करार पाना है।

अल्लाह अपने खुसूसी एहतमाम के तहत पैगम्बरे इस्लाम को मक्का से फिलिस्तीन (बैतुल मक्दिस) ले गया। यह जिस्मानी या रूहानी सफ़र आपके सफ़रे मेराज की पहली मंजिल थी। यहां बैतुल मक्दिस में पिछले तमाम पैगम्बर भी जमा थे। उन सब ने मिलकर बाजमाअत नमाज़ अदा की और पैगम्बरे इस्लाम ने आगे खड़े होकर उन सबकी इमामत फरमाई। आपकी इमामत का यह वाक्या गोया उस खुदाई पैसले की एक अलामत था कि पिछली तमाम नुबुव्वतें अब हिदायते इलाही के मुस्तनद माख़ज (प्रमाणिक स्रोत) की हैसियत से मंसूख कर दी गईं। अब खुदाई हिदायत को जानने के लिए तमाम कौमों को पैगम्बरे इस्लाम के लाए हुए दीन की तरफ रुजूअ करना चाहिए।

इस अहम तकरीब को अंजाम देने के लिए फिलिस्तीन मौजूतरीन जगह थी। फिलिस्तीन पिछले अक्सर अबिया की दावत (आह्वान) का मर्कज़ रहा है। इसलिए खुदा ने अपने इस पैसले के इन्हार के लिए इसी ख़ास इलाके का इतिख़ाब फरमाया।

وَاتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ لَا تَتَّخِذُوا مِنْ دُونِي وَكِيلًا ۖ ذُرِّيَّتِي مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ۝

और हमने मूसा को किताब दी और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया कि मेरे सिवा किसी को अपना कारसाज़ (कार्य-साधक) न बनाओ। तुम उन लोगों की औलाद हो जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था, बेशक वह एक शुक्रगुजार बंदा था। (2-3)

इसरा (मेराज) के मजहूरा वाक्ये का मतलब यह था कि बन्नी इस्राईल (यहूद) को हामिले

किताब (ग्रंथ धारक) के मकाम से माज़ूल कर दिया गया और उनकी जगह बन्नी इस्राईल को किताबे इलाही का हामिल बना दिया गया। यह वाक्या खुदा की सुन्नत के तहत अमल में आया। खुदा इस दुनिया में हक के एलान के लिए किसी तैशुदा गिरोह को मुतख़ब करता है। यह सबसे बड़ा एज़ाज़ है जो इस दुनिया में किसी को मिलता है।

ताहम यह इतिख़ाब नसल या कौम की बुनियाद पर नहीं है। इसका इस्तहकाक किसी गिरोह के लिए सिर्फ उस वक्स साबित होता है जबकि वह उसके लिए ज़रूरी अहलियत (योग्यता) का सुबूत दे। अहलियत के ख़त्म होते ही उसका इस्तहकाक भी ख़त्म हो जाता है। उम्मतें आदम, उम्मतें नूह, उम्मतें मूसा, उम्मतें मसीह, हर एक के साथ यह वाक्या हो चुका है। आईदा उम्मत के लिए भी खुदा का कानून यही है, इसमें किसी का कोई इस्तसना (अपवाद) नहीं।

इस मंसब के लिए जो अहलियत दरकार है वह यह कि खुदा के सिवा किसी को वकील (कारसाज़) न बनाया जाए। सिर्फ एक खुदा पर सारा भरोसा करके अपने सारे मामलात उसके हवाले कर दिए जाएं।

खुदा को जब आदमी उसकी तमाम अज्मतों और कुदरतों के साथ पाता है तो इसका नतीजा यह होता है कि वह खुदा को अपना वकील (कारसाज़) बना लेता है। जिस शख्स को खुदा की हकीकती मअरफ़त हो जाए, उसका हाल यही होगा कि वह इस दुनिया में खुदा को अपना सब कुछ बना लेगा। जो लोग इस तरह खुदा को पा लें वही मौजूदा दुनिया में मोमिनाना जिंदगी गुज़ार सकते हैं। मोमिनाना जिंदगी गुज़ारने के लिए आदमी को तमाम मख़बूक़ात से ऊपर उठना पड़ता है। और तमाम मख़बूक़ात से वही शख्स ऊपर उठ सकता है जो सबसे बड़ी चीज़ मख़बूक़ात (सृष्टि) के ख़ालिक व मालिक को पा ले।

हक की दावत की जिम्मेदारी भी वही लोग सही तौर पर अदा कर सकते हैं जिन्हें खुदा की मअरफ़त का यह दर्जा हासिल हो जाए। हक की दावत के लिए कामिल बेग़र्ज़ और कामिल यकसूई (एकाग्रता) लाज़िमी तौर पर ज़रूरी है। और कामिल बेग़र्ज़ और कामिल यकसूई इसके बग़ैर किसी के अंदर पैदा नहीं हो सकती कि उसकी तमाम उम्मीदें और अंदेशे खुदा से वाबस्ता हो चुके हों, खुदा ही उसका सब कुछ बन चुका हो।

وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ۖ ۝ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَٰئِهِمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَا أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ ۚ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ۚ ثُمَّ رَدَدْنَاهُمْ أَلِفَ أَلْفَةٍ عَلَيْهِمْ ۖ وَأَمَدَدْنَاهُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ ۖ وَجَعَلْنَاهُمْ أَكْثَرَ تَفْغِيرًا ۝

और हमने बनी इस्राईल को किताब में बता दिया था कि तुम दो मर्तबा जमीन (शाम) में ख़राबी करोगे और बड़ी सरकशी दिखाओगे। फिर जब उनमें से पहला वादा आया

तो हमने तुम पर अपने बंदे भेजे, निहायत जोर वाले। वे घरों में घुस पड़े और वादा पूरा होकर रहा। फिर हमने तुम्हारी बारी उन पर लौटा दी और माल और औलाद से तुम्हारी मदद की और तुम्हें ज्यादा बड़ी जमाअत बना दिया। (4-6)

यहां फसाद से मुराद दीनी बिगाड़ है। जो हजरत मूसा के बाद बनी इस्राईल के दर्मियान जाहिर हुआ। इसके दो दौर हैं। पहले दौर के बिगाड़ की तफसीलात पुराने अहदनामे (ओल्डटेस्टामेंट) में जबूर, यसअयाह, यरमियाह, हजकीइयल की किताबों में पाई जाती हैं। और दूसरे दौर के बिगाड़ की तफसील हजरत मसीह की जवान से है जो नए अहदनामे (न्यू टेस्टामेंट) में मत्ता और लूका की इंजीलों में मौजूद है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक्का से उठाकर बैतुल मक्दिस ले जाया गया ताकि 'आपको खुदा की निशानियां दिखाई जाएं' इन निशानियों में से एक निशानी वह तारीख (इतिहास) भी है जो बैतुल मक्दिस से वावस्ता है।

यह तारीख दरअसल खुदा के एक कानून का जुहूर है। वह कानून यह है कि आसमानी किताब की हामिल कौम अगर किताबे इलाही के हुक्क अदा करें तो उसे (आखिरत की कामयाबी के अलावा) दुनिया में सरफराजी दी जाए। और अगर वह किताब के हुक्क अदा न करें तो उसे दुनिया की जाबिर (दमनकारी) कौमों के हवाले कर दिया जाए जो उसे अपने जुल्म व दमन का निशाना बनाएं। यह गोया एक अलामत है जो इसी दुनिया में बता देती है कि खुदा उस कौम से खुश है या नाखुश।

इस कानून का ज़ुलूम (पूर्ववर्ती) हामिलीने किताब (यहूद) पर बार-बार हुआ है जिनमें से दो नुमायां वाकयात का यहां बतौर नसीहत हवाला दिया गया है।

बनी इस्राईल पर अव्वलन खुदा ने यह इनाम किया कि उन्हें फिरऔन के जुल्म से नजात दिलाई और फिर हजरत मूसा के बाद उनके लिए ऐसे हालात पैदा किए कि वे फिलिस्तीन पर कब्जा करके अपनी सल्तनत कायम कर सकें। मगर बाद को यहूद के अंदर बिगाड़ आ गया। एक तरफ वे मुशिरक कौमों पर दाओ (आह्वानकर्ता) बनने के बजाए खुद उनके मदद बन गए और उनके असर से मुशिरकाना आमाल में मुबिला हो गए। दूसरी तरफ वे आपस के झिझक (मतभेद) का शिकार होकर टुकड़े-टुकड़े हो गए।

खुदा की नाफरमानी के नतीजे में बनी इस्राईल पर जो कुछ गुजरा उसमें से एक नुमायां वाकया बाबिल (इराक) के बादशाह बनू कदनजर का है। यहूद की कमजोरियों से फायदा उठा कर बनू कदनजर ने फिलिस्तीन पर अपनी बालादस्ती कायम कर ली। इसके बाद उसने यहूद के शाही खानदान में से एक शख्स को अपना नुमाइंदा बना दिया कि वह उसकी तरफ से उनके ऊपर हुक्मत करे। मगर यहूद ने इस 'मातहती' को अपने कौमी फख्र के खिलाफ समझा और उसके खिलाफ बगावत के दरपे हो गए। उनके अंदर ऐसे शायर और मुकर्रिर (वक्ता) पैदा हुए जिन्होंने पुरजोश अंदाज में यहूद को उभारना शुरू किया। यहूद के पैगम्बर यरमियाह ने मुतनब्वह किया कि ये सब झूठे लीडर हैं। तुम उनके फरेब में न आओ। तुम

अपनी मौजूदा कमजोरियों के साथ शाह बाबिल के मुकाबले में कामयाब नहीं हो सकते। इसके बजाए तुम ऐसा करो कि शाह बाबिल की सियासी बालादस्ती को तस्तीम करते हुए अपनी दीनी इस्लाह और तामीरी जद्दोजहद में लग जाओ यहां तक की अल्लाह आईदा तुम्हारे लिए मजीद राहें पैदा कर दे। मगर यहूद ने यरमियाह नबी की नसीहत को नहीं माना। खुशफहम लीडरों की बातों में आकर उन्होंने शाह बाबिल के खिलाफ बगावत कर दी। इसके बाद शाह बाबिल सख्त गजबनाक हो गया। उसने दुबारा 586 ई०पू० में अपनी पूरी ताकत से फिलिस्तीन पर हमला किया। यहूद की मुकम्मद शिकस्त हुई। शाह बाबिल ने न सिर्फ यहूद को जबरदस्त दुनियावी नुक्सान पहुंचाए बल्कि यरोशलम में यहूद के इबादतखाने को मुकम्मल तौर पर ढा दिया जो यहूद की अजमत का आखिरी निशान था।

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءَ وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبِّرُوا مَا عَمِلُوا تَتَبَيَّرُ ۚ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يَسْحَكَكُمْ وَإِنْ عُدْتُمْ عِدًّا ۖ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ۝

अगर तुम अच्छा काम करोगे तो तुम अपने लिए अच्छा करोगे और अगर तुम बुरा काम करोगे तब भी अपने लिए बुरा करोगे। फिर जब दूसरे वादे का वक्त आया तो हमने और बंदे भेजे कि वे तुम्हारे चेहरे को बिगाड़ दें और मस्जिद (बैतुल मक्दिस) में घुस जाएं जिस तरह उसमें पहली बार घुसे थे और जिस चीज पर उनका जोर चले उसे बर्बाद कर दें। बर्बाद (असंभव) नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर रहम करे। और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम भी वही करेंगे और हमने जहन्नम को मुंकिरीन के लिए कैदखाना बना दिया है। (7-8)

हादसों के नतीजे में बनी इस्राईल के अंदर रुजूअ इलल्लाह की कैफियत पैदा हुई तो खुदा ने दुबारा उनकी मदद की। इस बार खुदा ने शाह ईरान साइरस (खुसरू) को उठाया। उसने 539 ई०पू० में बाबिल पर हमला किया, और उसकी हुक्मत को शिकस्त देकर उसके ऊपर कब्जा कर लिया। इसके बाद उसने यहूद पर यह महरबानी की कि उन्हें दुबारा बाबिल से उनके वतन फिलिस्तीन जाने की इजाजत दे दी। चुनांचे वे वापस आए और एक अर्से के बाद दुबारा अपना इबादतखाना तामीर किया।

ताहम यहूद की नई नस्ल में दुबारा वही बिगाड़ पैदा होने लगा जो उनकी पिछली नस्ल में पैदा हुआ था। इस दर्मियान में उनके अंदर मुख्तलिफ उतार चढ़ाव आए। यहां तक कि उनके दर्मियान हजरत यहया और हजरत मसीह उठे। इन पैगम्बरों ने यहूद की रविश पर तंकीदें कीं। उनकी उस बेदीनी को खोला जो वे दीन के नाम पर कर रहे थे। मगर यहूद इस

तन्हीद व तज्जिया का असर कुत्तल करने के बजाए बिगड़ गए। यहां तक कि उन्होंने हजरत यहया को कत्ल कर दिया और हजरत मसीह को सूली पर चढ़ाने के लिए तैयार हो गए।

अब दुबारा उन पर खुदा का गजब भड़का। सन् 70 ई० में रूमी बादशाह तीतस (Titus) उठा और उसने यरोशलम पर हमला करके उसे बिल्कुल तबाह व बर्बाद कर डाला।

यहूद की तारीख के ये वाक्यात खुद यहूद के नजदीक भी मुसल्लम (प्रमाणिक) हैं। मगर यहूद जब इन तारीखी वाक्यात का जिक्र करते हैं तो वे उन्हें जालिमों के खाने में डाल देते हैं। मगर कुरआन वाजेह तौर पर इन्हें खुद यहूद के खाने में डाल रहा है। इससे मालूम हुआ कि सियासी हालात हमेशा अख्लाकी हालात के ताबेअ होते हैं। कोई जालिम किसी के ऊपर जुम् नही करता। बल्कि कैम की दीनी और अख्लाकी हालत का बिगाड़ लोगों को यह मौका दे देता है कि वे उसे अपने जुम् व दमन का निशाना बनाएं।

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّتِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَيِّنُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيرًا ۖ وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

बिला शुबह यह कुरआन वह राह दिखाता है जो बिल्कुल सीधी है और वह बशारत (शुभ सूचना) देता है ईमान वालों को जो अच्छे अमल करते हैं कि उनके लिए बड़ा अज्र (प्रतिफल) है। और यह कि जो लोग आखिरत (परलोक) को नहीं मानते उनके लिए हमने एक दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (9-10)

कुरआन तमाम इंसानों को तौहीद की तरफ बुलाता है। यानी एक खुदा को मान कर अपने आपको उसकी इताअत में दे देना। यह एक ऐसी बात है जिससे ज्यादा सहीह, जिससे ज्यादा माकूल और जिससे ज्यादा मुताबिके पितरत बात कोई और नहीं हो सकती। तौहीद बिला शुबह सबसे बड़ी हकीकत है और इसी के साथ सबसे बड़ी सदाकत (सच्चाई)।

तौहीद की इस हैसियत का तकाजा है कि यही तमाम इंसानों के लिए जांच का मेयार हो। इसी की बुनियाद पर किसी को सही करार दिया जाए और किसी को गलत। कोई कामयाब ठहरे और कोई नाकाम।

मौजूदा दुनिया में बजाहिर यह मेयार सामने नहीं आता और इसकी बुनियाद पर इंसानों की अमली तक्सीम नहीं की जाती। मगर यह सिर्फ खुदा के कानूने इन्तेहान की वजह से है। इफिरादी तौर पर मौत और इज्तिमाई तौर पर कियामत इस मुद्दे इन्तेहान की आखिरी हद है। यह हद आते ही इंसान दो गिरोहों की सूरत में अलग-अलग कर दिए जाएंगे। तौहीद के के रास्ते को इख्तियार करने वाले अपने आपको जन्नत में पाएंगे और उसे इख्तियार न करने वाले अपने आपको जहन्नम में।

وَيَذُرُ الْإِنْسَانَ بِالشَّدِيدِ دُعَاؤُهُ بِالْخَيْرِ ۖ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ۝ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ فَمَحْوُا آيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً ۖ لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ وَكُلُّ شَيْءٍ فَصْلَانُهُ تَفْصِيلًا ۝

और इंसान बुराई मांगता है जिस तरह उसे भलाई मांगना चाहिए और इंसान बड़ा जल्दबाज है। और हमने रात और दिन को दो निशानियां बनाया। फिर हमने रात की निशानी को मिटा दिया और दिन की निशानी को हमने रोशन कर दिया ताकि तुम अम्नेख का फल (अनुग्रह) तलाश करो और ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम करो। और हमने हर चीज को खूब खोलकर बयान किया है। (11-12)

रात और दिन का निजाम बताता है कि खुदा का तरीका यह है कि पहले तारीकी (अंधकार) हो और इसके बाद रोशनी आए। खुदाई नक्शे में दोनों यकसां तौर पर जरूरी हैं। जिस तरह रोशनी में फायदे हैं इसी तरह तारीकी में भी फायदे हैं। दुनिया में अगर रात और दिन का फर्क न हो तो आदमी अपने औम्रत की तक्सीम किस तरह करे। वह अपने काम और आराम का निजाम किस तरह बनाए।

आदमी को ऐसा नहीं करना चाहिए कि वह 'तारीकी' से घबराए और सिर्फ 'रोशनी' का तालिब बन जाए। क्योंकि खुदा की दुनिया में ऐसा होना मुमकिन नहीं। जो आदमी ऐसा चाहता हो उसे खुदा की दुनिया छोड़कर अपने लिए दूसरी दुनिया तलाश करनी पड़ेगी।

मगर अजीब बात है कि यही इंसान की सबसे बड़ी कमजोरी है। वह हमेशा यह चाहता है कि उसे तारीकी का मरहला पेश न आए और फौरन ही उसे रोशनी हासिल हो जाए। इसी कमजोरी का नतीजा वह चीज है जिसे उजलत (जल्दबाजी, उतावलापन) कहा जाता है। उजलत दरअस्तल खुदावंदी मंसूबे पर राजी न होने का दूसरा नाम है। और खुदावंदी मंसूबे पर राजी न होना ही तमाम इंसानी बर्बादियों का अस्त सबब है।

खुदा चाहता है कि इंसान दुनिया की फौरी लज्जतों पर सब्र करे ताकि वह आखिरत की तरफ अपने सफर को जारी रख सके। मगर इंसान अपनी उजलत की वजह से दुनिया की वक्ती लज्जतों पर टूट पड़ता है। वह आगे की तरफ अपना सफर तय नहीं कर पाता। आदमी की उजलतपसंदी उसे आखिरत की नेमतों से महरूम करने का सबसे बड़ा सबब है।

यही दुनिया का मामला भी है। दुनिया में भी हकीकी कामयाबी सब्र से मिलती है न कि जल्दबाजी से।

यहूद को उनके पैगम्बर यरमियाह ने नसीहत की कि तुम बाबिल के हुक्मरां के सियासी गलबे को फिलहाल तस्लीम कर लो और इब्तिदाई मरहले में अपनी कोशिशों को सिर्फ दावती

और तामीरी मैदान में लगाओ। इसके बाद वह वक्त भी आएगा जबकि अल्लाह तआला तुम्हारे लिए गलबा और इक्तेदार की राहें खोल दे। मगर यहूद की उजलतपसंदी इस पर राजी नहीं हुई। उन्होंने चाहा कि 'तारीकी' के मरहले से गुजरे बगैर 'रोशनी' के मरहले में दाखिल हो जाएं। उन्होंने फौरन शाह बाबिल के खिलाफ सियासी लड़ाई शुरू कर दी। चूँकि खुदा के निजाम में ऐसा होना मुमकिन नहीं था, उनके हिस्से में जिल्लत और रुस्वाई के सिवा और कुछ न आया।

وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مِنْ شُوْرًا ۖ اقْرَأْ كِتَابَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۚ مَن اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَن ضَلَّٰ فَأَمَّا يُضِلُّ عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۚ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ۝

और हमने हर इंसान की किस्मत उसके गले के साथ बांध दी है। और हम कियामत के दिन उसके लिए एक किताब निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पाएगा पढ़ अपनी किताब। आज अपना हिसाब लेने के लिए तू खुद ही काफी है। जो शख्स हिदायत की राह चलता है तो वह अपने ही लिए चलता है। और जो शख्स बेराही करता है वह भी अपने ही नुकसान के लिए बेराह होता है। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा। और हम कभी सजा नहीं देते जब तक हम किसी रसूल को न भेजें। (13-15)

कदीम जमाने में तबह्लूमपरस्त (अंधविश्वास) लोग अक्सर चिड़ियों के उड़ने से या सितारों की गर्दिश से या तरह-तरह के फल से अपनी किस्मत का हाल मालूम करते थे। मौजूदा जमाने में जो लोग इस किस्म के तबह्लुमात पर यकीन नहीं रखते वे भी अपनी किस्मत के मामले को किसी न किसी पुरअसरार (रहस्यमयी) सबब के साथ वाबस्ता करते हैं। वे समझते हैं कि कोई न कोई खारजी आमिल (वास्त्य कारक) है जो इस सिलसिले में अस्त प्रभावी हैसियत रखता है।

फरमाया कि तुम्हारी किस्मत न चिड़ियों और सितारों के साथ वाबस्ता है और न किसी दूसरी खारजी चीज से इसका तजल्लुक है। हर आदमी की किस्मत का मामला तमामतर उसके अपने अमल पर मुंहसिर है। हर आदमी जो कुछ सोचता या करता है वह उसके अपने वजूद के साथ नक्श हो रहा है। आदमी उसे कियामत के दिन एक ऐसी डायरी की सूत में लिखा हुआ पाएगा जिसमें हर छोटी और बड़ी चीज दर्ज हो।

खुदा ने कौमों के दर्मियान रसूल खड़े किए और किताब उतारी। उसने ऐसा इसलिए किया ताकि लोगों को आने वाले सख्त दिन से पहले उसकी खबर हो जाए। अब यह हर आदमी के अपने फैसला करने की बात है कि जिंदगी के अगले मुस्तकिल मरहले में वह अपना

क्या अंजाम देखना चाहता है। वह हिदायत के तरीके पर चलकर जन्नत में पहुंचना चाहता है या हिदायत के तरीके को छोड़कर जहन्नम में गिरने का सामान कर रहा है।

وَإِذَا أَرَدْنَا أَن نُّهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ۖ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِن بَعْدِ نُوحٍ ۖ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝

और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं तो उसके खुशऐश (सुखभोगी) लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वे उसमें नाफरमानी करते हैं। तब उन पर बात साबित हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को तबाह व बर्बाद कर देते हैं। और नूह के बाद हमने कितनी ही कौमों हलाक कर दीं। और तेरा रब काफी है अपने बंदों के गुनाहों को जानने के लिए और उन्हें देखने के लिए। (16-17)

किसी कौम की इस्लाह या किसी कौम के बिगाड़ का मेयार उस कौम का सरवरआवुरदह (शीर्ष) तबका होता है। यही तबका सोचने समझने की सलाहियत का मालिक होता है। यही तबका अपने वसाइल (संसाधनों) के जरिए लोगों पर असरअंजाल होने की ताकत रखता है। यही तबका इस कबिल होता है कि वह किसी गिरोह के ऊपर कयद बनने की कौम अदा कर सके।

यही वजह है कि किसी कौम के सरवरआवुरदह तबके की इस्लाह पूरी कौम की इस्लाह है और किसी कौम के सरवरआवुरदह तबके का बिगाड़ पूरी कौम का बिगाड़। हज्तर नूह के जमाने से लेकर अब तक की कौमों का जायजा लिया जाए तो हर एक की तारीख इस आम उसूल की सेहत की तस्दीक करेगी।

इसी आम हुक्म में कौम के उन 'बड़ों' का मामला भी शामिल है जो कौम को अपनी क़त्त (नेतृत्व) की शिकारगाह बनाते हैं और इस तरह उसकी ग़लत रहनुमाई करके उसकी हलाकत का सामान करते हैं। वे कौम को हकीकतपसंदी के बजाए जच्चातियत का दर्स देते हैं। उसे मआना के बजाए अल्फाज के तिलिस्म में गुम करते हैं। उसे संजीदगी के बजाए कल्पनाओं की फज में उड़ते हैं। वे उसे हक्क़ का एतराफ करने के बजाए ख़ुआलियों में जीना सिखाते हैं। खुलासा यह कि वे कौम को खुदा के बजाए ग़ैर खुदा की तरफ मुतवज्जह कर देते हैं।

जब किसी कौम पर इस किस्म के रहनुमा छा जाएं तो यह इस बात की अलामत है कि खुदा के यहां से उस कौम की हलाकत का फैसला हो चुका है। इस किस्म का हर वाक्या खुदा की इजाजत के तहत होता है। और किसी शख्स या कौम का कोई अमल खुदा से छुपा हुआ नहीं है।

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعَاجِلَةَ عَجَلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ لِمَنْ نُرِيدُ ثُمَّ جَعَلْنَا
لَهُ جَهَنَّمَ يَصْلُهَا مَذْمُومًا مَّدْحُورًا ۝ وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ
وَسَعَىٰ لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَشْكُورًا ۝

जो शख्स आजिला (जल्द हासिल होने वाली दुनिया) को चाहता हो, उसे हम उसमें से दे देते हैं, जितना भी हम जिसे देना चाहें। फिर हमने उसके लिए जहन्नम ठहरा दी है, वह उसमें दाखिल होगा बदहाल और रांदह (टुकराया हुआ) होकर। और जिसने आखिरत को चाहा और उसके लिए दौड़ की जो कि उसकी दौड़ है और वह मोमिन हो तो ऐसे लोगों की कोशिश मकबूल होगी। (18-19)

मौजूदा दुनिया में आदमी दो रास्तों के दरमियान है। एक का फायदा नकद मिलता है और दूसरे का फायदा उधार। जो शख्स पहले रास्ते पर चले उसने आजिला को पसंद किया। और जो शख्स दूसरे रास्ते को इख्तियार करे उसने आखिरत को पसंद किया। एक तरफ आदमी के सामने मस्लेहतपरस्ती (स्वार्थता) का तरीका है जिसे इख्तियार करने से पैरी तौर पर इज्त और दैलत मिलती है। दूसरी तरफ बेलाग हकमरस्ती का तरीका है जिसका क्रेडिट आदमी को मौत के बाद की ज़िंदगी में मिलेगा। किसी से शिकायत पैदा हो जाए तो एक सूरत यह है कि उसके बारे में अपने दिल के अंदर इतिकाम की नपिसयात पैदा कर ली जाए और उसके खिलाफ वह सब कुछ किया जाए जो अपने बस में है। इसके बरअक्स दूसरी सूरत यह है कि उसे माफ कर दिया जाए। और उसके लिए अच्छी दुआएं करते हुए सारे मामले को अल्लाह के हवाले कर दिया जाए। इसी तरह आदमी के पास जो माल है उसके खर्च की एक शकल यह है कि उसे अपने शौक की तक्मील और अपनी इज्जत को बढ़ाने की राहों में लगाया जाए। दूसरी शकल यह है कि उसे खुदा के दीन की मदों में खर्च किया जाए।

इसी तरह तमाम मामलात में आदमी के सामने दो मुख्तलिफ तरीके होते हैं। एक ख्बाहिशपरस्ती का तरीका और दूसरा खुदापरस्ती का तरीका। एक सामने की चीजों को अहमियत देना और दूसरा शैब की हकीकतों को अहमियत देना। एक मस्लेहतपरस्ती का अंदाज और दूसरा उसूलपरस्ती का अंदाज। एक बेसब्री के तहत कर गुजरना और दूसरा सब्र के साथ वह करना जो करना चाहिए।

पहले तरीके में वक्ती फायदा है और इसके बाद हमेशा की महरूमी। दूसरे तरीके में वक्ती नुकसान है और इसके बाद हमेशा की इज्जत और कामयाबी।

كُلًّا مَّذْهُورًا ۖ وَهُوَ لَا يَرْجُو عَطَاءَ رَبِّكَ ۖ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ۝

أَنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلِلْآخِرَةِ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ ۚ وَكَانَ تَفْضِيلًا ۝

हम हर एक को तेरे रब की बख्शिश में से पहुंचाते हैं, इन्हें भी और उन्हें भी। और तेरे रब की बख्शिश किसी के ऊपर बंद नहीं। देखो हमने उनके एक को दूसरे पर किस तरह फ़ैसला (अग्रसरता) दी है। और यकीनन आखिरत और भी ज्यादा बड़ी है दर्जे के एतबार से और फज़िलत (श्रेष्ठता) के एतबार से। (20-21)

दुनिया की कामयाबी हो या आखिरत की कामयाबी, दोनों ही अल्लाह के फराहम किए हुए मक्बेअ (अवसरों) और इतिजामात को इस्तेमाल करने का दूसरा नाम है। जो शख्स दुनिया की कामयाबी हासिल करता है वह भी खुदा के इतिजामात से फायदा उठाकर ऐसा करता है। इसी तरह जो शख्स आखिरत को अपना मक्सूद बनाए उसके लिए भी खुदा ने ऐसे इतिजामात कर रखे हैं जो उसके आखिरत के सफर को आसान बनाने वाले हैं।

दुनिया में कोई आदमी आगे नजर आता है और कोई पीछे। किसी के पास ज्यादा है और किसी के पास कम। यह इस बात की अलामत है कि खुदा की दुनिया में मवाकेअ (अवसरों) की कोई हद नहीं। दुनिया में जो शख्स जितना ज्यादा अमल करता है वह उतना ज्यादा उसका फल पाता है। इसी तरह आखिरत के लिए जो शख्स जितना ज्यादा अमल का सबूत देगा वह उतना ही ज्यादा वहां इनाम पाएगा। मजीद यह कि आखिरत में मिलने वाली चीज अबदी होगी जबकि दुनिया में मिलने वाली चीज सिर्फ वक्ती होती है।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُومًا مَّخْذُومًا ۚ وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ۚ وَالْأَوَّلِينَ أَحْسَنَ لِمَا يَبْلُغُونَ عِنْدَكَ الذِّكْرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقْلُ لَّهُمَا ۚ وَلَا تَنْهَرُهُمَا ۚ وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ۝ وَأَحْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ ۚ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ۝ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۚ إِنْ تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّلِينَ غَفُورًا ۝

तू अल्लाह के साथ किसी और को माबूद (पूज्य) न बना वरना तू मज़ूम (निंदित) और बेकस होकर रह जाएगा। और तेरे रब ने फैसला कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत न करो और मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करो। अगर वे तेरे सामने

बुढ़ापे को पहुंच जाएं, उनमें से एक या दोनों, तो उन्हें उफ न कहो और न उन्हें झिड़को, और उनसे एहताराम के साथ बात करो। और उनके सामने नमी से इज्ज (सदाशयता) के बाजू झुका दो। और कहो कि ऐ रब इन दोनों पर रहम फरमा जैसा कि इन्होंने मुझे बचपन में पाला। तुम्हारा रब खूब जानता है कि तुम्हारे दिलों में क्या है। अगर तुम नेक रहोगे तो वह तौबा करने वालों को माफ कर देने वाला है। (22-25)

खुदा इंसान का सब कुछ है। वह उसका खालिक भी है और मालिक भी और राजिक भी। मगर खुदा ग़ैब में है। वह अपने आपको मनवाने के लिए इंसान के सामने नहीं आता। इसका मतलब यह है कि एक आदमी जब खुदा की बड़ाई और उसके मुकाबले में अपने इज्ज (निर्बलता) का इक़रार करता है तो वह महज अपने इरादे के तहत ऐसा करता है न कि किसी जाहिरी दबाव के तहत।

इस एतबार से बूढ़े मां-बाप का मामला भी अपनी नौइयत के एतबार से खुदा के मामले जैसा है। क्योंकि बूढ़े मां-बाप का अपनी औलाद के ऊपर कोई माददी जोर नहीं होता। औलाद जब अपने बूढ़े मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करती है तो वह अपने आजादाना जेहनी फैसले के तहत ऐसा करती है न कि माददी दबाव के तहत।

मौजूदा दुनिया में आदमी का अस्ल इस्तेहान यही है। यहां उसे हक और इंसाफ के रास्ते पर चलना है बग़ैर इसके कि उसे इसके लिए मजबूर किया गया हो। उसे खुद अपने इरादे के तहत वह करना है जो वह उस वक्त करता जबकि खुदा उसके सामने अपनी तमाम ताकतों के साथ जाहिर हो जाए।

यह इख़्तियाराना अमल इंसान के लिए बड़ा सख़्त इस्तेहान है। ताहम अल्लाह तआला ने अपनी रहमते ख़ास से उसे इंसान के लिए आसान कर दिया है। वह इंसान को तानाशाह हाकिम की तरह सख़्ती से नहीं जांचता। आदमी अगर बुनियादी तौर पर खुदा का वफ़ादार है तो उसकी छोटी-छोटी ख़ताओं को वह नजरअंदाज कर देता है। इंसान अगर ग़लती करके पलट आए तो वह उसे माफ़ कर देता है चाहे उसने बजाहिर कितना बड़ा जुर्म कर दिया हो।

وَأَتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا ۚ إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ۚ وَإِنَّا لَنُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ۝

और रिश्तेदार को उसका हक़ दो और मिरकीन को और मुसाफ़िर को। और फुज़ूल ख़र्ची न करो। बेशक़ फुज़ूलख़र्ची करने वाले शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है। और अगर तुम्हें अपने रब के फज़ल (अनुग्रह) के इत्तिज़ा

में जिसकी तुम्हें उम्मीद है, उनसे एराज करना (बचना) पड़े तो तुम उनसे नमी की बात कहो। (26-28)

हर आदमी जो कुछ अपनी महनत से कमाता है उसे वह अपने ऊपर ख़र्च करने का हक़ रखता है, ताहम शरीअत का हुक्म है कि वह फुज़ूलख़र्ची से बचे। वह अपने माल को अपनी वाकई ज़रूरतों में ख़र्च करे न कि फ़ज़्र और नुमाइश के लिए।

दूसरी बात यह कि हर आदमी को चाहिए कि वह अपनी कमाई में दूसरे ज़रूरतमंदों का भी हक़ समझे। चाहे वे उसके रिश्तेदार हों या उसके पड़ोसी हों। मुसाफ़िर हों या और किसी विरम के हाजतमंद हों।

कभी-कभी ऐसा होता है कि आदमी मोहताज को देने के काबिल नहीं होता। ताहम उस वक्त के लिए भी हुक्म है कि अगर तुम माल देने के काबिल नहीं हो तो अपने ज़रूरतमंद भाई को नर्म बात दो और उससे माफी का कलिमा कहो। क्योंकि वह तुम्हें एक नेकी का मौक़ा देने आया था मगर तुम उस मौक़े को अपने लिए इस्तेमाल न कर सके।

अपने कमाए हुए माल को खुदा की मर्जी के मुताबिक ख़र्च करने में वही शख्स कामयाब हो सकता है जो अपने माल को बेफ़ायदा मदों में जाया होने से बचाए। वर्ना उसके पास माल ही न होगा जिसे वह खुदा के रास्तों में दे। हकीकत यह है कि फुज़ूलख़र्ची शैतान का एक हरबा है जिसके जरिए से वह साहिबे माल को इस काबिल नहीं रखता कि वह दूसरे ज़रूरतमंदों के सिलसिले में अपनी जिम्मेदारियों को अदा कर सके।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا ۚ قَحْشُورًا ۝ إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝

۝

और न तो अपना हाथ गर्दन से बांध लो और न उसे बिल्कुल खुला छोड़ दो कि तुम मलमस्तज़ (निंदित) और अजिज़ (असहाय) बनकर रह जाओ। बेशक़ तेरा रब जिसे चाहता है ज्यादा रिक़ देता है। और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। बेशक़ वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है। (29-30)

इस्लाम हर मामले में एतदाल (मध्यमार्ग) को पसंद करता है। ज्यादाती और कमी से बचकर जो दर्मियानी रास्ता है वही इस्लाम के नजदीक बेहतरीन रास्ता है। चुनांचे यही तालीम ख़र्च के मामले में भी दी गई है कि आदमी न तो ऐसा करे कि इतना बख़ील (कंजूस) हो कि वह लोगों की नजरों से गिर जाए। और न इतना ज्यादा ख़र्च करे कि इसके बाद बिल्कुल ख़ाली हाथ होकर बैठा रहे। हदीस में इर्शाद हुआ है कि जिसने मियानारवी (मध्यमार्ग) इख़्तियार की वह मोहताज नहीं हुआ।

माल के सिलसिले में बेएतदाली का जेहन अक्सर इसलिए पैदा होता है कि आदमी की

नजर से यह हकीकत ओझल हो जाती है कि देने वाला खुदा है। वही अपने मसालेह (सोच) के तहत किसी को कम देता है और किसी को ज्यादा। हदीस कुदसी में आया है कि मेरे बंदों में कोई ऐसा है जिसके लिए सिर्फ मोहताजी मुनासिब है। अगर मैं उसे गनी कर दूँ तो उसके दीन में बिगाड़ आ जाए। और मेरे बंदों में कोई ऐसा है जिसके लिए सिर्फ अमीरी मुनासिब है। अगर मैं उसे फकीर बना दूँ तो उसके दीन में बिगाड़ आ जाए।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ ۖ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ إِن قَتَلْتُمْ
كَانَ خَطَا كَبِيرًا ۖ وَلَا تَقْرَبُوا الزَّانِيَ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ۝

और अपनी औलाद को मुफ़्तसी के अंशे से कत्ल न करो, हम उन्हें भी रिक्र देते हैं और तुम्हें भी। वेशक उन्हें कत्ल करना बड़ा गुनाह है। और जिना (व्यभिचार) के करीब न जाओ, वह बेहयाई है और बुरा रास्ता है। (31-32)

खुदा ही ने तमाम जानदारों को पैदा किया है वही उनके रिज्क का इतिजाम करता है। ऐसी हालत में किसी इंसान का किसी को रिज्क की तंगी का नाम लेकर हलाक करना एक ऐसा काम करना है जिसका उससे कोई तअल्लुक न था। जब रिज्क का इतिजाम खुदा की तरफ से हो रहा है तो किसी को क्या हक है कि वह किसी जान को इस अंशे से हलाक करे कि वह खाएगी क्या।

‘हम उन्हें भी रिक्र दें और तुम्हें भी’ इन अल्फ़ज़ के ज़रिए इंसान के ज़हन को इस मामले में तख़ीब के बजाए तामीर की तरफ मोड़ा गया है। और कीजिए कि जो इंसान मौजूद हैं वे अपना रिज्क किस तरह हासिल कर रहे हैं। वे उसे खुदा के फ़राहमकरदा पैदावारी वसाइल (संसाधनों) पर अमल करके हासिल कर रहे हैं। यही तरीका आइंदा आने वाली नस्ल के लिए भी दुरुस्त है। तुम्हें चाहिए कि मजीद (अतिरिक्त) पैदा होने वालों को खुदा के पैदावारी वसाइल में मजीद अमल करने पर लगाओ न कि खुद पैदा होने वालों की आमद को रोकने लगे।

खुदा इंसानों के दर्मियान जिन आमांल को मुकम्मल तौर पर ख़त्म करना चाहता है उनमें से एक जिना (व्यभिचार) है। इसीलिए फ़रमाया कि जिना के करीब न जाओ यानी जिना इतनी बड़ी बुराई और ऐसी बेहयाई है कि उसके मुकद्दमात (संबंधित चीजों) से भी तुम्हें परहेज करना चाहिए। यहां इस सिलसिले में सिर्फ उसूलो हक्म दिया गया है। इसके तफ़सीली अहकाम आगे सूरह नूर में बयान किए गए हैं।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا
لِرَبِّهِ سُلْطَانًا فَلَا يَسْرِفُ فِي الْقَتْلِ إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا ۝

और जिस जान को खुदा ने मोहतरम ठहराया है उसे कत्ल मत करो मगर हक पर। और

जो शख्स नाहक कत्ल किया जाए तो हमने उसके वारिस को इज़्तियार दिया है। पस वह कत्ल में हद से न गुजरे, उसकी मदद की जाएगी। (33)

हक्के शरई के बग़ैर किसी को कत्ल करना सरासर हारम है। जो शख्स शरई जवाज (औचित्य) के बग़ैर कत्ल किया जाए वह मज़ूमानी कत्ल हुआ। ऐसी हालत में मक्तूल (मृतक) के औलिया को कातिल के ऊपर पूरा इज़्तियार है। वे चाहें तो उससे किंसास (समान बदला) लें। चाहें तो ख़ूबहा (आर्थिक मुआवज़ा) लेकर छोड़ दें। और चाहें तो सिर से माफ़ कर दें। इस्लामी कानून के मुताबिक कत्ल के मामले में अस्ल मुद्दई मक्तूल के औलिया (वारिस) हैं न कि हुक्मत। हुक्मत का काम सिर्फ यह है कि वह मक्तूल के औलिया की मर्जी को नाफ़िज़ करने में उनकी मदद करे।

कत्ल इतना भयानक जुर्म है कि हदीस में इशार्द हुआ है कि सारी दुनिया का चला जाना अल्लाह के नजदीक इससे कमतर है कि एक मोमिन को नाहक कत्ल कर दिया जाए। इसके बावजूद मक्तूल मृतक के औलिया को यह हक नहीं कि वे कातिल से बदला लेते हुए उसके साथ ज्यादाती करें। मसलन वे कातिल के अंग भंग कर दें या कातिल के बदले उसके किसी साथी को कत्ल कर दें, वग़ैरह। मक्तूल के वारिस अगर बदला लेने में ज्यादाती करें तो यहां हुक्मत उसी तरह उनकी प्रतिरोधी हो जाएगी जिस तरह वह उनके हक्के किंसास के मामले में उनकी मददगार हुई थी।

इससे इस्लामी शरीअत की यह रूह मालूम होती है कि कोई शख्स चाहे कितना ही ज्यादा मज़ूम हो, अगर वह जलम से बदला लेना चाहता है तो वह सिर्फ जुर्म के बक्द बदला ले सकता है। इससे ज्यादा कोई कार्रवाई करने की इजाजत उसे हरगिज हासिल नहीं

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا
بِالْعَهْدِ ۚ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۖ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ ۚ إِذَا كِلْتُمُ وَزَنُوا
بِالْقِسْطِ أَلَيْسَ الْمُسْتَقِيمُ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝

और तुम यतीम (अनाथ) के माल के पास न जाओ मगर जिस तरह कि बेहतर हो। यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंच जाए। और अहद (वचन) को पूरा करो। वेशक अहद की पूछ होगी। और जब नाप कर दो तो पूरा नापो और ठीक तराजू से तौल कर दो। यह बेहतर तरीका है और इसका अंजाम भी अच्छा है। (34-35)

नाबालिग़ यतीम के सरपरस्त उसके करीबी रिश्तेदार होते हैं। मगर यतीम का माल उन औलिया (संरक्षकों) के हाथ में उस वक्त तक के लिए बतौर अमानत है जब तक कि यतीम आकिल व बालिग़ न हो जाए। औलिया को चाहिए कि वे यतीम के माल को हाथ न लगाएं।

वेसिर्फ़ उस वक्त उसमें तस्फ़ा (व्यय) कर सकते हैं जबकि खुद यतीम की ख़ैरख़ाही और तस्फ़ी का तक्ज़ा हो। और यतीम जैसे ही अपने नफ़ा नुस्नान को सम्झने के क़बिल हो उसका माल पूरी तरह उसके हवाले कर दिया जाए।

अहद (वचन, प्रतिज्ञा) को पूरा करना इंसानी किरदार की अहमतरनी सिफ़त है। जो आदमी एक अहद करे और फिर उसे पूरा न करे वह बिल्कुल बेकीमत इंसान है। बंदों के नज़दीक भी और खुदा के नज़दीक भी।

‘अहद खुदा के नज़दीक क़बिले पुरसिश है’ ये अल्फ़ज़ बताते हैं कि जब एक आदमी किसी दूसरे आदमी से अहद करता है तो यह सिर्फ़ दो इंसानों का बाहमी मामला नहीं होता बल्कि इसमें खुदा भी तीसरे फ़रीक (पक्ष) की हैसियत से शरीक होता है। आदमी को अहद तोड़ते हुए डरना चाहिए कि अहद का दूसरा फ़रीक सिर्फ़ एक कमज़ोर इंसान नहीं है बल्कि वह खुदा है जिसकी पकड़ से बचना किसी तरह मुमकिन नहीं।

दुनिया में हर किस्म का कारोबार नाप तौल की बुनियाद पर कायम है। इस सिलसिले में हुक्म दिया गया कि नाप तौल बिल्कुल ठीक रखा जाए और जो चीज़ दी जाए पूरे नाप तौल के साथ दी जाए।

यह तरीका बयक़वक्त अपने अंदर दो पहलू रखता है। एक तरफ़ वह इंसानी अज़मत के मुताबिक़ है। नाप तौल में फ़र्क़ करना किरदार की पस्ती है। और नाप तौल में पूरा देना किरदार की बुलन्दी। इसका दूसरा अजीम फ़ायदा यह है कि इससे कारोबार को फ़रोग़ हासिल होता है। क्योंकि कारोबार की तरक्की की बुनियाद तमामतर एतमाद (विश्वास, भरोसा) पर है और नाप तौल सही देना वह चीज़ है जिससे किसी शख्स का कारोबारी एतमाद लोगों के दर्मियान कायम होता है।

وَلَا تَقْتُلْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ الشَّعْرَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا وَلَا تَمْسُقْ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ۝ كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ۝

और ऐसी चीज़ के पीछे न लगे जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं। बेशक कान और आंख और दिल सबकी आदमी से पूछ होगी। और ज़मीन में अकड़ कर न चलो। तुम ज़मीन को फाड़ नहीं सकते और न तुम पहाड़ों की लम्बाई को पहुँच सकते हो। ये सारे बुरे काम तेरे ख़ब के नज़दीक नापसंदीदा हैं। (36-38)

क़तादा ने कहा है कि ‘मैंने देखा’ मत कहो जबकि तुमने देखा न हो। ‘मैंने सुना’ मत कहो जबकि तुमने सुना न हो। ‘मैंने जाना’ मत कहो जबकि तुमने जाना न हो।

जिस आदमी को इस बात का डर हो कि खुदा के यहाँ हर बात की पूछ होगी वह कभी बेतहकीक बात अपनी ज़बान से नहीं निकालेगा और न आंख बंद करके बेतहकीक

बात की पैरवी करेगा। इंसान को चाहिए कि वह कान और आंख और दिमाग़ से वह काम ले जिसके लिए वे बनाए गए हैं और वही बात मुंह से निकाले या अमल में लाए जो पूरी तरह साबित हो चुकी हो। इस हुक्म में तमाम बेबुनियाद चीज़ें आ गईं। मसलन झूठी गवाही देना, ग़लत तोहमत लगाना, सुनी सुनाई बातों की बुनियाद पर किसी के दरपे हो जाना, महज़ तअस्युब (विद्वेष) की बिना पर नाहक बात की हिमायत करना, ऐसी चीज़ों के पीछे पड़ना जिन्हें अपनी महदूदियत (असमर्थता) की बिना पर इंसान जान नहीं सकता। आंख, कान, दिल बजाहिर इंसान के क़ब्जे में हैं। मगर ये इंसान के पास बतौर अमानत हैं। इंसान पर लाज़िम है कि वह इन चीज़ों को खुदा की मंशा के मुताबिक़ इस्तेमाल करे। वरना उनकी बावत उससे सख़्त बाज़पुर्स होगी।

इंसान एक ऐसी ज़मीन पर है जिसे वह फाड़ नहीं सकता, वह एक ऐसे माहौल में है जहाँ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ उसकी हर बुलन्दी की नफ़ी कर रहे हैं। यह खुदा के मुकाबले में इंसान की हैसियत का एक तमसीली (प्रतीकात्मक) एलान है। इसका तक्ज़ा है कि आदमी दुनिया में मुतकब्बिर (घमंडी) बनकर न रहे। वह इज़ज़ और तवाजोअ का तरीका इख़्तियार करे न कि अकड़ने और सरकशी करने का।

ذَٰلِكَ بِمَا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۚ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۚ فَتُنْفِقَ فِي جَهَنَّمَ مَالًا مَّذْحُورًا ۝

ये वे बातें हैं जो तुम्हारे रब ने हिक्मत (तत्वदर्शिता) में से तुम्हारी तरफ़ ‘वही’ की हैं। और अल्लाह के साथ कोई और माबूद न बनाना, वरना तुम जहन्नम में डाल दिए जाओगे, मलामतज़दा (निंदित) और रांदह (ठुकराया हुआ) होकर। (39)

ऊपर की आयतों में जो अहक़ाम दिए गए उन्हें यहाँ हिक्मत कहा गया है। हिक्मत का मतलब है ठोस हकीक़त, दानाई (सूझबूझ) की बात। ये बातें जो यहाँ बताई गई हैं ये ज़िंदगी के मोहकम हक़ाईक़ हैं। इनकी बुनियाद पर दुरुस्त ज़िंदगी की तामीर होती है। और जो इंसानी मुआशिरा इनसे ख़ाली हो उसके लिए खुदा की दुनिया में हलाक़त के सिवा और कोई चीज़ मुक़द्दर नहीं। आज भी और आज के बाद की ज़िंदगी में भी।

मज्कूरा वाला नसीहतों का बयान तौहीद से शुरू हुआ था। (आयत नम्बर 22) अब उनका ख़ात्मा भी तौहीद पर किया गया है। (आयत नम्बर 39)। यह इस बात का इशारा है कि तमाम भलाइयों की बुनियाद यह है कि आदमी एक खुदा को अपना खुदा बनाए। वह उसी से डरे और उसी से मुहब्बत करे। खुदा से दुरुस्त तअल्लुक ही में ज़िंदगी की दुरुस्ती का राज़ छुपा हुआ है। अगर खुदा से तअल्लुक दुरुस्त न हो तो कोई भी दूसरी चीज़ इंसानी ज़िंदगी के निज़ाम को दुरुस्त नहीं कर सकती। खुदा इंसान का आग़ाज़ (आरंभ) है और वही उसका इख़्तेताम (अंत) भी।

أَفَاصْفَكُمْ رَبُّكُمْ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاسًا ۖ إِنَّكُمْ لَتَقُولُونَ
 قَوْلًا عَظِيمًا ۖ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝
 قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذْ أَتَا بَنُو إِسْرَائِيلَ ذِي الْعَرْشِ سَبِيلًا ۝
 سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝ تَسْبِيحٌ لَهُ السَّمَوَاتُ السَّبْعُ
 وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۚ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ
 تَسْبِيحَهُمْ ۚ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝

क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें बेटे चुनकर दिए और अपने लिए फरिश्तों में से बेटियां बना लीं। वेशक तुम बड़ी सख्त बात कहते हो। और हमने इस कुरआन में तरह-तरह से बयान किया है ताकि वे याददिहानी (अनुस्मरण) हासिल करें। लेकिन उनकी बेजारी बढ़ती ही जाती है। कहो कि अगर अल्लाह के साथ और भी माबूद (पूज्य) होते जैसा कि ये लोग कहते हैं तो वे अर्श वाले की तरफ जरूर रास्ता निकालते। अल्लाह पाक और बरतर है उससे जो ये लोग कहते हैं। सातों आसमान और जमीन और जो उनमें हैं सब उसकी पाकी बयान करते हैं। और कोई चीज ऐसी नहीं जो तारीफ के साथ उसकी पाकी बयान न करती हो। मगर तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझते। बिला शुबह वह हिल्म (उदारता) वाला, बख्शाने वाला है। (40-44)

हकीकत इतनी कामिल और मुकम्मल है कि जो भी खिलाफे वाक्या बात उसके साथ मंसूब की जाए वह फौरन बेजोड़ होकर रह जाती है। इसकी एक मिसाल खुदा के साथ शरीक ठहराने का मामला है।

मुश्रिक लोग अपने मफरूजा शरीकों को खुदा की औलाद कहते हैं मगर यह बात खुद ही अपने दावे की तरदीद (खंडन) है। अगर इन शरीकों को स्त्रीलिंग करार देकर खुदा की बेटियां कहा जाए तो फौरन यह एतराज वाकैअ होता है कि बेटियां खुद मुश्रिकीन के एतराफ मेमुबकि कमजेर सिफ (Gender) से तअल्लुक रखती हैं। फिर खुदा ने कमजेर सिफ को अपना शरीक बनाना क्यों पसंद किया। कैसी अजीब बात होगी कि खुदा इंसानों को उनकी महबूब औलाद की हैसियत से बेदा दे और खुद अपने लिए बेटियों का इतिखाब करे।

इसके बरअक्स अगर इन शरीकों को बेदा फर्ज किया जाए जो इंसानी तजर्बात के मुनाबिक कुव्वत व ताकत की अलामत है तब भी यह बात नाकबिलेफहम है। क्योंकि इस्तेदार एक नाकबिले तक्सीम चीज है। जब भी किसी निजम में एक से ज्यादा साहिबे ताकत और साहिबे इक्तेदार हों तो उनके दर्मियान लाजिमन कशमकश शुरू हो जाती है।

उनमें से हर एक यह चाहता है कि उसे मुतलक इक्तेदार (सम्पूर्ण सत्ता) मिल जाए। अब अगर कायनात में एक से ज्यादा ताकतवर हस्तियां होतीं तो उनके दर्मियान जरूर इक्तेदार की जंग बरपा हो जाती और कायनात के सारे निजाम में अव्यवस्था व इतिशार पैदा हो जाता। मगर चूंकि कायनात में कोई अव्यवस्था व इतिशार नहीं। इससे साबित हुआ कि यहां दूसरी ऐसी हस्तियां भी मौजूद नहीं जो खुदा के साथ उसकी ताकत में हिस्सेदार हों।

शरीकों को अगर बेटे कहा जाए तब भी वह सूरते वाकये से उकराता है और बेटियां कहा जाए तब भी। हकीकत यह है कि कायनात अपने पूरे वजूद के साथ ऐसे हर तसच्चुर को कुबूल करने से इंकार करती है जिसमें खुदा की खुदाई में किसी और को शरीक किया गया हो।

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَسْتُورًا ۖ وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِذَا ذُكِّرْتُ بِهِ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَوْ أَنَّ عَلَى آذَانِهِمْ نُفُورًا ۝

और जब तुम कुरआन पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के दर्मियान एक छुपा हुआ पर्दा हायल कर देते हैं जो आखिरत को नहीं मानते। और हम उनके दिलों पर पर्दा रख देते हैं कि वे उसे न समझें और उनके कानों में गिरानी (बोज़) पैदा कर देते हैं और जब तुम कुरआन में तंह अपने रब का जिक्र करते हो तो वे नफरत के साथ पीठ फेर लेते हैं। (45-46)

यहां जिस चीज को 'छुपा हुआ पर्दा' कहा गया है वह दरअस्त नफिसयाती (मनोवैज्ञानिक) पर्दा है। इससे मुराद वह सूरतेहाल है जबकि आदमी बतौर खुद अपने जेहन में किसी गैर सफ़्म (सच्चाई) को सदाकत का मक़म दे दे। ऐसे शख्स के सामने जब एक ऐसा हक आता है जिसमें मुनाबिक उसकी मफरूज (मान्य) सदाकतों की नफ्री हो रही हो तो ऐसी बेआमेज (विशुद्ध) दावत उसके लिए नाकबिलेफहम बन जाती है। अपनी मखसूस नफिसयात की बिना पर उसकी समझ में नहीं आता कि ऐसी दावत भी सच्ची दावत हो सकती है जिसे मानने की सूरत में वह चीज बातिल (असत्य) करार पाए जिसे वह अब तक मुसल्लमा सदाकत (प्रमाणिक सच्चाई) समझे हुए था। वह नई दावत के दलाइल का तोड़ नहीं कर पाता। ताहम अपने मखसूस जेहन की बिना पर यह मानने के लिए भी तैयार नहीं होता कि यही वह मुतलक सदाकत है जिसे उसे दूसरी तमाम चीजों को छोड़कर मान लेना चाहिए।

बेआमेज (विशुद्ध) सदाकत का एलान हमेशा दूसरी मफरूज (मान्य) सदाकतों की नफ्री (नकार) के हममअना होता है। इसलिए इसे सुनकर वे लोग बिफर उठते हैं जो इसके सिवा दूसरी चीजों या शख्सियतों को भी अम्मत व तकद्दुस का मक़म दिए हुए हों। उनके अंदर आखिरत की जवाबदेही का यकीन न होना उन्हें गैर संजीदा बना देता है और गैर संजीदा जेहन के साथ कोई बात समझी नहीं जा सकती।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَعِينُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَعِينُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ يُجَاوِزُونَ
الظُّلُمُونَ إِنَّ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مُّسْحُورًا ۖ أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ
فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝

और हम जानते हैं कि जब वे तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं तो वे किस लिए सुनते हैं और जबकि वे आपस में सरगोशियां करते हैं। ये ज़ालिम कहते हैं कि तुम लोग तो बस एक सक्ल (जादूग्रस्त) आदमी के पीछे चल रहे हो देखो तुम्हारे ऊपर वह कैसी-कैसी मिसालें चसपां कर रहे हैं। ये लोग खोए गए, वे रास्ता नहीं पा सकते। (47-48)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत में दलाइल का जोर इतना ज्यादा था कि अरब के आम लोग इससे मरऊब होने लगे। यह देखकर वहां के सरदारों को खतरा महसूस हुआ कि अगर इन लोगों ने बड़ी तादाद में नए दीन को कुबूल कर लिया तो हमारी सरदारी खत्म हो जाएगी। उन्होंने लोगों को उससे फेरने के लिए एक तदबीर की। उन्होंने कहा कि इस शख्स के कलाम में तुम जो जोर देख रहे हो वह दरअस्त साहिराना (जादुई) कलाम का जोर है। यह 'अदब' (साहित्य) का मामला है न कि हकीकत सदाकत का मामला। इस तरह उन्होंने यह किया कि जिस कलाम की अजमत में लोग सदाकत की झलक देख रहे थे उसे लोगों की नजर में 'कलम के जादू' के हममअना बना दिया।

जो लोग किसी दावत को उसके जौहर की बुनियाद पर न देखें बल्कि इस एतबार से देखें कि वह उनकी हैसियत की तस्दीक (पुष्टि) करती है या तरदीद (रद्द), ऐसे लोग कभी सदाकत को पाने में कामयाब नहीं हो सकते।

وَقَالُوا إِذْ أَكْنَا عِظَامًا وَرَفَاءَ إِنْ الْبَعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ۝ قُلْ كُونُوا
جِبَارَةً أَوْ حِدِيدًا ۖ أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْفُرُ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا
قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ
مَتَى هُوَ ۚ قُلْ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ۖ يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِ
وَتُظَنُّونَ أَنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا ۝

और वे कहते हैं कि क्या जब हम हड्डी और रेजा हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से उठाए जाएंगे। कहे कि तुम पत्थर या लोहा हो जाओ या और कोई चीज जो तुम्हारे ख्याल में इनसे भी ज्यादा मुश्किल हो। फिर वे कहेंगे कि वह कौन है जो हमें दुबारा जिंदा करेगा। तुम कहो कि वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया है। फिर वे तुम्हारे

आगे अपना सर हिलाएंगे और कहेंगे कि यह कब होगा, कहे कि अजब नहीं कि उसका वक्त करीब आ पहुंचा हो, जिस दिन खुदा तुम्हें पुकारेगा तो तुम उसकी हम्द (प्रशंसा) करते हुए उसकी पुकार पर चले आओगे और तुम यह ख्याल करोगे कि तुम बहुत थोड़ी मुद्दत रहे। (49-52)

इंसान का वजूदे अब्बल वाजेह तौर पर उसके वजूदे सानी को मुमकिन साबित करता है। जो शख्स इंसान की पहली पैदाइश को बतौर वाक्या मानता हो, उसके पास कोई हकीकी दलील नहीं जिससे वह इंसान की दूसरी पैदाइश के इम्कान को न माने।

फिर यह कि इंसान की दूसरी पैदाइश, कम से कम उन लोगों के लिए हरगिज हैरत नहीं जो इंसान को पत्थर और लोहा (दूसरे शब्दों में माददी चीजों का मज्मूआ) समझते हैं क्योंकि जिस की कोशिकाएं (Cells) के टूटने के साथ इसी मालूम दुनिया में यह वाक्या हो रहा है कि आदमी का माददी (भौतिक) वजूद मुसलसल खत्म होता है और फिर दुबारा बनता है। हकीकत यह है कि ह्श व नश् (परलोक) इसी वाक्ये को मौत के बाद मानना है जिसका मौत से पहले हम बार-बार तजर्बा कर रहे हैं।

कियामत दरअस्त उसी दिन का नाम है जबकि ग़ैब का पर्दा फट जाए और खुदा अपनी तमाम ताकतों के साथ बिल्कुल सामने आ जाए। जब ऐसा होगा तो मुंकिर भी वही करने पर मजबूर होगा जो आज सिर्फ सच्चा मोमिन कर पाता है। उस वक्त तमाम लोग खुदा के कमालात का इकार करते हुए उसकी तरफ दौड़ पड़ेंगे।

وَقُلْ يُبَادِئُ يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ إِنَّ
الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ۝

और मेरे बंदों से कहे कि वही बात कहें जो बेहतर हो। शैतान उनके दर्मियान फसाद डालता है। बेशक शैतान इंसान का खुला हुआ दुश्मन है। (53)

यह आयत दाजी (आह्वानकर्ता) और मदऊ (संबोधित व्यक्ति) के नाजुक रिश्ते के बारे में है। हुक्म दिया गया है कि मदऊ की तरफ से चाहे कितनी ही सख्त बात कही जाए और कितना ही उत्तेजक मामला किया जाए, दाजी को हर हाल में कौले अहसन (उत्तम बात) का पाबंद रहना है। क्योंकि दाजी अगर जवाबी ज़हन के तहत कार्रवाई करे तो मदऊ के अंदर मजीद नफरत और ज़िद की नफिसयात उभरेगी। और दाजी और मदऊ के दर्मियान ऐसी कशमकश पैदा होगी कि लोग दाजी की बात को ठंडे ज़हन के साथ सुनने के काबिल ही न रहें।

दाजी और मदऊ के अंदर ज़िद और नफरत की फजा पैदा होना सरासर शैतान की मुवाफ़िकत में है ताकि वह हक के पैग़म को लोगों के लिए नाकबिले कुबूल बना दे। इसलिए दाजी अगर अपने किसी फ़ैजल (कृत्य) से मदऊ के अंदर ज़िद और नफरत की नफिसयात

पैगम्बरों के साथ जो ग़ैर मामूली वाक्यात पेश आते हैं वे दो किस्म के होते हैं। एक वे जो पैगम्बर और आपके साथियों की उम्मी नुसरत के लिए होते हैं। उन्हें ताईद (खुदाई मदद) कहा जा सकता है। दूसरे वे हैं जो मुश्रिकीन के मुतालबे के तौर पर जाहिर किए जाते हैं। इनका पारिभाषिक नाम मोजिजा है। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और आपके असहाब के साथ ताईद इलाही के बेशुमार वाक्यात पेश आए। मगर जहां तक फरमाइशी निशानी (मोजिजा) का तअल्लुक है। आपके लिए उन्हें भेजना रोक दिया गया।

इसकी वजह यह है कि हर चीज के कुछ तक़ज़े होते हैं। जो लोग ग़ैर मामूली निशानी का मुतालबा करें, उनके ऊपर ग़ैर मामूली जिम्मेदारियां भी आयद होती हैं। चुनांचे खुदा का यह कानून है कि जो लोग ग़ैर मामूली निशानी (मोजिजा) देखने के बावजूद ईमान न लाएं उन्हें सज़ा अज़ाब भेजकर नेस्तोनाबूद कर दिया जाए। अब चूँकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नुबुव्वत का सिलसिला ख़त्म होने वाला था इसलिए आपकी मुखातब कौम के साथ ऐसा नहीं किया जा सकता था। क्योंकि पूरी तबाही की सूरत में कौम मिट जाती। फिर पैगम्बर के बाद पैगम्बर की नुमाईदगी के लिए दुनिया में कौन बाकी रहता।

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के मुखातबीन के साथ यह अल्लाह तआला की खास रहमत थी कि उनके मुतालबे के बावजूद उन्हें महसूस मोजिजात नहीं दिखाए गए। अगर ऐसा किया जाता तो अदिश था कि उनका भी वही सज़ा अंजाम हो जो इससे पहले कौम समूद का हुआ।

وَلَذُقْنَا لَكَ لِتَرْبِكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّسُلَ الَّتِي أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا قُرُونًا لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ۝

और जब हमने तुमसे कहा कि तुम्हारे रब ने लोगों को घेरे में ले लिया है। और वह रूखा (अलौकिक दृश्य) जो हमने तुम्हें दिखाया वह सिर्फ लोगों की जांच के लिए था, और उस दरख्त को भी जिसकी कुरआन में मजम्मत (निंदा) की गई है। और हम उन्हें डराते हैं, लेकिन उनकी बढ़ी हुई सरकशी बढ़ती ही जा रही है। (60)

लोग खुदा के दाओ से अक्सर अपने प्रस्तावित मोजिजे (दिव्य चमत्कार) का मुतालबा करते हैं। हालांकि अगर वे खुले जेहन के साथ देखें तो दाओ की खुसूसी नुसरत की शकल में वह मोजिजा उन्हें दिखाया जा चुका होता है जिसे वे उसकी सदाक़्त (सच्चाई) को जांचने के लिए देखना चाहते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुखातबीन आप से महसूस मोजिजात मांग रहे थे। फरमाया कि क्या ये मोजिजे तुम्हारी आंख खोलने के लिए काफी नहीं कि दावत के इब्तिदाई दौर में जब इसकी बजाहिर कोई ताक़्त नहीं थी, यह एलान किया गया कि खुदा

तुम्हें घेरे में लिए हुए है। यह पेशीनगोई अरब कबीलों में इस्लाम की तोसीअ (प्रसार) से पूरी हो गई। फिर इसकी तक्मील बद्र की फतह और सुलह हुदैबिया के बाद मक्का की फतह की सूरत में हुई।

इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेराज की सुबह को जब यह एलान किया कि आज रात मैं बैतुल हराम से बैतुल मक्सिद तक गया तो लोगों की यकीन नहीं आया। इसके बाद ऐसे अफराद बुलाए गए जो बैतुल मक्सिद को देखे हुए थे और उनके सामने आपने बैतुल मक्सिद की इमारत की पूरी तफसील बयान कर दी।

मगर इन वाक्यात को लोगों ने मजक में टाल दिया हालांकि वह आपकी सदाक़्त का मोजिजाती सुबूत था। हकीकत यह है कि अस्ल मसला महसूस मोजिजा दिखाने का नहीं है बल्कि दावत पर संजीदा ग़ौर व फिक्र का है। अगर लोग दावत के बारे में संजीदा न हों तो हर चीज को मजक की नज़र कर दें। चाहे वह बात बजते-खुद कितनी ही कबिले लिहाज क्यों न हो।

कुरआन में ज़रूर डरया गया कि जहन्नम में ज़म्ज़ूम का खाना होगा (अस साफ़त 62) तो रिवायत में आता है कि अबू जहल ने कहा कि हमारे लिए ख़जूर और मक्खन ले आओ। जब वह लाया गया तो वह दोनों को मिलाकर खाने लगा और कहा कि तुम लोग भी खाओ यही ज़म्ज़ूम है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

इसी तरह कुरआन में शजरह मलऊना (बनी इस्राईल 60) का जिक्र है जो जहन्नमियों का खाना होगा। जब कुरआन में यह आयत उतरी तो कुरैश के एक सरदार ने कहा : अबू कब्शा के लड़के को देखो। वह हमसे ऐसी आग का वादा करता है जो पत्थर तक को जला देगी। फिर उसका गुमान है कि उसके अंदर एक दरख़्त उगता है हालांकि मालूम है कि आग जलाने वाली चीज है। (तफ़सीर मज़हरी)

وَلَذُقْنَا لِمَلَائِكَةِ آسُجُدَ وَالْإِنَّمَا إِبْلِيسُ قَالَ آسُجُدْ مَنْ خَلَقْتُ طِينًا ۝ قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَذَا الَّذِي كَرَّمْتُ عَلَىٰ ذَلِكِ أَتُحَرِّتُ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ لِأَخْتِنِكَ ۝ ذُرِّيَّتَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) ने नहीं किया। उसने कहा क्या मैं ऐसे शख्स को सज्दा करूँ जिसे तूने मिट्टी से बनाया है। उसने कहा, ज़रा देख, यह शख्स जिसे तूने मुझ पर इज्जत दी है अगर तू मुझे कियामत के दिन तक मोहलत दे तो मैं थोड़े लोगों के सिवा इसकी तमाम औलाद को खा जाऊंगा। (61-62)

फरिश्ते और इब्लीस का किस्सा बताता है कि मानने वाले कैसे होते हैं और न मानने वाले कैसे। मानने वाले लोग हक को हक के लिहाज से देखते हैं चुनांचे उसे समझने में उन्हें देर नहीं लगती। वे फौरन उसे समझ कर उसे मान लेते हैं। जैसा कि आदम की पैदाइश के

वक्त फरिश्तेने किया।

दूसरे लोग वे हैं जो हक को अपनी जात की निस्वत से देखते हैं। शैतान ने यही किया। उसने हक को अपनी जात की निस्वत से देखा। चूँकि आदम को सज्दे का हुक्म आदम को बजाहिर बड़ा बना रहा था और उसे छोटा, उसने ऐसे हक को मानने से इंकार कर दिया जिसे मानने के बाद उसकी अपनी जात छोटी हो जाए।

शैतान ने खुदा को जो चैलेन्ज दिया था उसे सामने रखकर देखिए तो हर वह शख्स शैतान का शिकार नजर आएगा जो हक को इसलिए नजरअंदाज कर दे कि उसे मानने की सूरत में उसकी अपनी जात दूसरे के मुकाबले में छोटी हो जाती है।

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَاءُكُمْ جَزَاءً مَوْفُورًا ۝
وَأَسْتَفْزِرُ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبُ عَلَيْهِمْ بِخِيلِكَ
وَرَجْلِكَ وَشَارِكُهُمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدَهُمْ ۝ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ
إِلَّا غُرُورًا ۝ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا ۝

खुदा ने कहा कि जा उनमें से जो भी तेरा साथी बना तो जहन्नम तुम सबका पूरा-पूरा बदला है। और उनमें से जिस पर तेरा बस चले, तू अपनी आवाज से उनका कदम उखाड़ दे और उन पर अपने सवार और प्यादे (पैदल सेना) चढ़ा ला और उनके माल और औलाद में उनका साझी बन जा और उनसे वादा कर। और शैतान का वादा एक धोखे के सिवा और कुछ नहीं। बेशक जो मेरे बंदे हैं उन पर तेरा जोर नहीं चलेगा और तेरा ख कससाजी (कार्य-सिधि) के लिए काफी है। (63-65)

‘इंसानों में से जो शख्स शैतान की राह चलेगा’ ये अल्फाज बताते हैं कि मौजूदा दुनिया में इंसान को आजादी हासिल है कि वह चाहे शैतान के रास्ते पर चले या खुदा के बताए हुए रास्ते पर। इसी आजादी के इस्तेमाल में इंसान का अस्ल इस्तेहान है। यहीं कामयाब होकर या तो वह खुदा का इनाम पाता है या नाकाम होकर शैतान के अंजाम का मुस्तहिक बन जाता है।

शैतान को इस दुनिया में आजादी हासिल है कि वह इंसान को अपना साथी बनाए। वह उसके ऊपर अपनी सारी कोशिश इस्तेमाल करे। वह उसके अंदर घुसकर उसके माल व औलाद में शामिल हो जाए। मगर शैतान को किसी भी दर्जे में इंसान के ऊपर कोई इख्तियार नहीं दिया गया है। शैतान के बस में सिर्फ यह है कि वह आवाज और अल्फाज के जरिए लोगों को बहकाए। वह बेहकीकत चीजों को ख़ुनुमा बनाकर उन्हें अजीम हकीकत के रूप में पेश करे।

आयत में ‘लइ-स ल-क अलैहिम सुलतान’ के अल्फाज बताते हैं कि शैतान इम्कानी

तौर पर इंसान के मुकाबले में ज्यादा ताकतवर है। फिर एक ऐसी दुनिया जहां शैतान अपने तमाम ‘सवार और प्यादे’ के जरिए इंसान के ऊपर हमलाआवर हो वहां उससे बचने का रास्ता क्या है। इसका रास्ता सिर्फ यह है कि इंसान खुदा को हकीकी मअनों में अपना कारसाज बनाए। जो शख्स ऐसा करेगा खुदा उसे इस तरह अपनी हिफाजत में ले लेगा कि शैतान उसके मुकाबले में अपनी तमाम ताकतों के बावजूद आजिज होकर रह जाए।

رَبُّكُمُ الَّذِي يُزَيِّجُ لَكُمُ الْفَلَكَ فِي الْبَحْرِ لِيَتَّبِعُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ
رَحِيمًا ۝ وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُونَ إِلَّا إِلَٰهًا فَلَمَّا نَجَّيْكُمْ
إِلَى الْبَرِّ انْعَزَضْتُمْ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ كَفُورًا ۝

तुम्हारा रब वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में कश्ती चलाता है ताकि तुम उसका फल (अनुग्रह) तलाश करो। बेशक वह तुम्हारे ऊपर महरबान है। और जब समुद्र में तुम पर कोई आफत आती है तो तुम उन माबूदों (पूज्यों) को भूल जाते हो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे। फिर जब वह तुम्हें खुशकी की तरफ बचा लाता है तो तुम दुबारा फिर जाते हो, और इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है। (66-67)

खुदा ने मौजूदा दुनिया को ख़ास कवानीन (नियमों) का पाबंद बना रखा है, इस बिना पर इंसान के लिए यह मुमकिन होता है कि वह समुद्र में अपना जहाज चलाए और हवा में अपनी सवारियां दौड़ाए। यह सब इसलिए था कि इंसान अपने हक में अपने खुदा की रहमतों को पहचाने और उसका शुक्रगुजार बने। मगर इंसान का हाल यह है कि वह जो कुछ होते हुए देखता है वह समझता है कि उसे बस ऐसा ही होना है। वह एक इरादी (नियोजित) क़ेम् को अपने आप हेने वाला वाक्या फर्ज कर लेता है। यही वजह है कि इन वाक्यात को देखकर उसके अंदर कोई खुदाई एहसास नहीं जागता।

खुदा की मअरफत इतनी हकीकी है कि वह इंसान की फितरत के अंदर आखिरी गहराई तक पेवस्त है। इसका एक मुजाहिदा उस वक्त होता है जबकि उस पर कोई आफत आ पड़े जिसके मुकाबले में वह अपने आपको बेबस महसूस करे। मसलन अथाह समुद्र में तूफान का आना और जहाज का उसके अंदर फंस जाना। इस तरह के लम्हात में इंसान के ऊपर से उसके तमाम मस्तूई पर्दे हट जाते हैं वह एक खुदा का पहचान कर उसे पुकारने लगता है।

यह वक्ती तजर्बा इंसान को इसलिए कराया जाता है ताकि वह अपनी पूरी जिंदगी को उस पर ढाल ले। वह वक्ती एतराफ को अपना मुस्तकिल ईमान बना ले। मगर इंसान का यह हाल है कि समुद्र के तूफान में वह जिस हकीकत को याद करता है, खुशकी के माहौल में पहुंचते ही वह उसे भूल जाता है।

खुदा की खुदाई को मानने का नाम तौहीद (एकेश्वरवाद) है और खुदा की खुदाई को न मानने का नाम शिर्क (बहुदेववादी)। इस एतराफ से तौहीद की अस्ल हकीकत एतराफ

(स्वीकार) है और शिर्क की अस्ल हकीकत अदम एतराफ (अस्वीकार)। इंसान से उसके खुदा को अस्लन जो चीज मलूब है वह यही एतराफ है। मगर इंसान इतना जालिम है कि वह एतराफ के बव्द भी खुदा का हक देने के लिए तैयार नहीं होता।

أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يُخْصِفَ بِكُمْ جَانِبَ الدَّارِ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكَيلًا ۖ أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَ كُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُم بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهِ تَبِيعًا ۝

क्या तुम इससे बेडर हो गए कि खुदा तुम्हें खुश्की की तरफ लाकर जमीन में धंसा दे या तुम पर पत्थर बरसाने वाली आंधी भेज दे, फिर तुम किसी को अपना कारसाज न पाओ। या तुम इससे बेडर हो गए कि वह तुम्हें दुबारा समुद्र में ले जाए फिर तुम हवा का सख्त तूफान भेज दे और तुम्हें तुम्हारे इंकार के सबब से शर्क कर दे। फिर तुम इस पर कोई हमारा पीछा करने वाला न पाओ। (68-69)

खुदा इंसान को उसकी सरकशी के बावजूद फौरन नहीं पकड़ता। बल्कि उस पर वक्ती आफत भेजकर उसे खबरदार करता है। मगर इंसान का हाल यह है कि जब आफत आती है तो वक्ती तौर पर उसके अंदर एहसास जागता है मगर आफत के रुख्त होते ही उसका एहसास भी रुख्त हो जाता है। हालांकि बाद को भी वह उतना ही खुदा के कब्जे में होता है जितना कि वह पहले था।

समुद्र के सफर से अगर एक बार वह सलामती के साथ वापस आ गया है तो यह भी मुमकिन है कि उसे दुबारा समुद्र का सफर पेश आए और वह दुबारा उसी आफत में घिर जाए जिसमें वह पहले घिरा था। मजीद यह कि खुश्की के खतरात समुद्र के खतरात से कम नहीं हैं। समुद्र में जो चीज तूफान है, खुश्की पर वही चीज जलजला बन जाती है। फिर वह कौन सा मकाम है जहां आदमी कोई ऐसी चीज पा ले जो खुदा के मुक़बले में उसकी तरफ से रोक बन सके।

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ۝

और हमने आदम की औलाद को इज्जत दी और हमने उन्हें खुश्की और तरी में सवार किया और उन्हें पाकीजा (पवित्र) चीजों का रिक दिया और हमने उन्हें अपनी बहुत सी मख्सूत पर फ़ैवज़ (श्रेष्ठता) दी। (70)

दुनिया की तमाम मख्सूत में इंसान को खुसी फजिलत

(श्रेष्ठता) हासिल है। चांद

और सितारे बेशुकर मख्लूक हैं जबकि इंसान शुकर और इरादे का मालिक है। दरख्त पर दूसरे जिस तरह चाहते हैं तसर्सक करते हैं मगर इंसान खुद दूसरी चीजों के ऊपर तसर्सक करता है। जानवर सिर्फ अपने आज (अंगों) के जरिए अमल करते हैं मगर इंसान औजार और मशीन बनाकर उनके जरिए अपना मक्सद हासिल करता है। दरिया के लिए सिर्फ यह मुमकिन है कि वह ढलान के रुख पर बहे मगर इंसान बुलन्दियों पर चढ़ता है और बहाव के उल्टे रुख पर सफर करने की ताकत रखता है।

इंसान के लिए इस दुनिया में रिज्क का शाहना इतिजाम किया गया है। दरख्त के पत्ते सूरज की एनर्जी को केमिकल एनर्जी में तब्दील करते हैं ताकि इससे इंसान की गिजा तैयार हो। जानवर घास खाते हैं ताकि उसे इंसान के लिए दूध और गोशत की शकल में लौटाएं। मक्खियां रात दिन सरगम रहती हैं ताकि वे दुनिया भर के फूलों का रस चूसकर इंसान के लिए शहद का जखीरा जमा करें, वगैरह वगैरह।

इस इनाम का तक्का था कि इंसान खुदा का शुक्रगुजार बने। मगर तमाम मख्सूत में इंसान ही वह मख्लूक है जो सबसे कम खुदा का शुक्र अदा करता है।

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمامِهِمْ ۖ فَمَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۖ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ۝ وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝

जिस दिन हम हर गिरोह को उसके रहनुमा के साथ बुलाएंगे। पस जिसका आमा लनामा (कर्म-पत्र) उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा वे लोग अपना आमा लनामा पढ़ेंगे और उनके साथ जरा भी नाइंसाफी न की जाएगी। और जो शख्स इस दुनिया में अंधा रहा वह आखिरत में भी अंधा रहेगा और बहुत दूर पड़ा होगा रास्ते से। (71-72)

दुनिया में हर इंसानी गिरोह अपने रहनुमाओं के साथ होता है। चुनांचे आखिरत में भी हर गिरोह अपने अपने रहनुमा के साथ बुलाया जाएगा। अच्छे लोग अपने रहनुमा के साथ और बुरे लोग अपने रहनुमा के साथ।

इसके बाद हर एक को उसकी जिंदगी का आमा लनामा दिया जाएगा। नेक लोगों का आमा लनामा उनके दाएं हाथ में और बुरे लोगों का आमा लनामा उनके बाएं हाथ में। यह गोया एक महसूस अलामत होगी कि पहला गिरोह खुदा का मकबूल गिरोह है और दूसरा गिरोह उसका नामकबूल गिरोह।

आखिरत में अच्छे और बुरे की जो तक्सीम होगी वह इस बुनियाद पर होगी कि कौन दुनिया में अंधा बनकर रहा और कौन बीना (दृष्टवान) बनकर। दुनिया में चूँकि खुदा खुद बराबेरास्त इंसान से हमकलाम नहीं होता। इसलिए दुनिया की जिंदगी में खुदा की बातों को कायनात की खामोश निशानियों और दाजियाने हक के अल्फाज से जानना पड़ता है। जो

लोग इस बिलवास्ता (परोक्ष) कलाम से मअरफत हासिल करें वे खुदा की नजर में 'बीना' लोग हैं। और जो लोग बिलवास्ता कलाम की जवान न समझें और उस वक्त के मुंजिर हों जब खुदा जाहिर होकर खुद कलाम फरमाएगा वे खुदा की नजर में 'अंधे' लोग हैं। ऐसे लोगों का बरोहारास्त (प्रत्यक्ष) कलाम को सुनना कुछ भी काम न आएगा। वे उस वक्त भी हकीकत से दूर रहेंगे जैसा कि आज उससे दूर पड़े हुए हैं।

وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أُوتِيتَ إِلَيْكَ لَيَفْتِنَنَّهُ عَالِيْنَا غَيْرُهُ ۖ وَإِذَا لَا تَأْخُذُكَ خَلِيلًا ۖ وَلَوْلَا أَنْ ثَبَّتْنَاكَ لَقَدْ كِدْتَ تَرْكُنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا ۖ إِذَا الْأَذْكَارُ ضَعُفَ الْحَيَوةُ وَضَعُفَ الْمَبَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُكَ عَلَيْكَ نَصِيرًا ۖ

और करीब था कि ये लोग फितने में डाल कर तुम्हें उससे हटा दें जो हमने तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की है ताकि तुम उसके सिवा हमारी तरफ गलत बात मंसूब करो और तब वे तुम्हें अपना दोस्त बना लेते। और अगर हमने तुम्हें जमाए न रखा होता तो करीब था कि तुम उनकी तरफ कुछ झुक पड़े। फिर हम तुम्हें जिंदगी और मौत दोनों का दोहरा (अजाब) चखाते। इसके बाद तुम हमारे मुकाबले में अपना कोई मददगार न पाते। (73-75)

मक्का में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत (आह्वान) का अस्ल नुक्ता यह था कि खुदा सिर्फ एक है और उसके सिवा जिन बुतों को तुम पूजते हो वे सब बातिल (झूठे) हैं। अहले मक्का अगरचे एक बड़े खुदा का इकरार करते थे मगर इसी के साथ वे दूसरे खुदाओं को भी मानते थे।

ये दूसरे खुदा कौन थे। ये उनके बुजुर्ग और अकाबिर थे। जिन्हें वे मुकद्दस समझते थे और उनकी मूर्तियां बनाकर उनके सामने झुकना शुरू कर दिया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तौहीद की दावत से बुजुर्गों के इस अक्कीदे पर जद पड़ती थी। चुनांचे वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस मुसालेहत के लिए कहते थे कि हम आपके माबूद को मानेंगे, शर्त यह है कि आप हमारे माबूदों को बुरा कहना छोड़ दें।

इस दुनिया में वह शख्स फौरन लोगों की नजर में मबूज (अप्रिय) हो जाता है जो ऐसी बात कहे जिसकी जद लोगों के बड़ों पर पड़ती हो। इसके बरअक्स लोगों के दर्मियान महबूब बनने का सबसे आसान तरीका यह है कि ऐसी बात कहो जिसमें सब लोग अपने-अपने बुजुर्गों की तस्दीक पा रहे हों। मगर पैगम्बर का तरीका यह है कि सच्चाई का खुला एलान किया जाए। इसकी परवाह न की जाए कि किस बुजुर्ग पर इसकी जद पड़ती है और किस पर नहीं पड़ती।

दावती अमल से अस्ल मक्सूद हकीकत का कामिल एलान है। इसीलिए एलान के मामले में किसी कमी या रियायत की इजाजत नहीं है। पैगम्बर या गैर पैगम्बर, जो भी हक की दावत

के लिए उठे उसे हकीकत का खुला एलान करना है, चाहे इसकी यह कीमत देनी पड़े कि दुनिया में उसका कोई दोस्त बाकी न रहे।

وَإِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لَيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبَثُونَ خَلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ سَئَةٌ مِّنْ قَدَرُ سَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ۖ

और ये लोग इस सरजमीन से तुम्हारे कदम उखाड़ने लगे थे ताकि तुम्हें इससे निकाल दें। और अगर ऐसा होता तो तुम्हारे बाद ये भी बहुत कम ठहरने पाते। जैसा कि उन रसूलों के बारे में हमारा तरीका रहा है जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा था और तुम हमारे तरीके में तब्दीली न पाओगे। (76-77)

जब भी किसी गिरोह में सच्चे दीन की दावत उठती है तो सूरतेहाल यह होती है कि एक तरफ वे लोग होते हैं जो मजहब के नाम पर कायमशुदा गद्दियों के मालिक होते हैं। दूसरी तरफ हक का दाओ होता है जो बेआमेज (विशुद्ध) दीन का नुमाइंदा होने की वजह से वक्त के माहौल में तंहा और बेजोर दिखाई देता है। यह फर्क लोगों को गलतफहमी में डाल देता है। वे हक के दाओ को बिल्कुल बेकीमत समझ लेते हैं। यहां तक कि यह चाहते हैं कि उसे अपनी बस्ती से निकाल दें।

ऐसे लोग भूल जाते हैं कि यह जमीन खुदा की जमीन है। यहां किसी खुदा के बंदे के खिलाफ तख़ीब (प्रतिरोध) का मंसूबा बनाना खुद अपने आपको खुदा की नजर में मुजरिम साबित करना है। खुदा के दाओ को किसी बस्ती से निकालना ऐसा ही है जैसे किसी शहर से उस शख्स को निकाल दिया जाए जिसे वहां हुक्मते वक्त के नुमाइंदे की हैसियत हासिल हो। ऐसे शख्स को बस्ती में न रहने देने का नतीजा बिलआखिर यह होता है कि बस्ती वाले खुद वहां न रहने पाएं।

आदमी दूसरे को निकालता है हालांकि वह खुद अपने आपको निकाल रहा होता है। आदमी दूसरे को छोटा करना चाहता है हालांकि वह खुद अपने आपको उस मालिके हकीकी की नजर में छोटा कर रहा होता है जिसे हकीकतन यह इख्तियार है कि वह जिसे चाहे छोटा करे और जिसे चाहे बड़ा कर दे।

اقِمِ الصَّلَاةَ لِذُلُوْلِ الشَّمْسِ إِلَى غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ۖ

नमाज कायम करो सूरज ढलने के बाद से रात के अंधेरे तक। और ख़ास कर फ़ज्र की नमाज (प्रभात-पाठ)। वेशक फ़ज्र की क़िरात मशहूद (उपस्थित) होती है। (78)

आयत का लफ्ज़ी तर्जुमा यह है : 'कायम करो नमाज को सूरज ढलने से रात के अंधेरे तक' इन अल्फ़ज़ से बजाहिर यह निकलता है कि दोपहर बाद से लेकर रात का अंधेरा छाने तक मुसलसल नमाज पढ़ी जाती रहे। इसमें शक नहीं कि खुदा की अज़मत और उसके एहसानात का तकाज़ा यही है कि बंदे हर वक़्त उसकी इबादत करते रहें। मगर हदीस की तशरीह ने इस आम हुक्म को ख़ास कर दिया। हदीस ने इस मुश्किल हुक्म को इस तरह आसान कर दिया कि उसने क़रार दिया कि आम औम्मत में लोग सिर्फ़ जिम्मा (याद) की हद तक खुदा से अपना तअल्लुक वाबस्ता रखें और दोपहर से रात तक के औकात में चार बार (जुहर, अम्र, मरिब, इशा) उसकी इबादत कर लिया करें।

इसी तरह आयत के दूसरे टुकड़े का लफ्ज़ी तर्जुमा यह है : 'और कुरआन पढ़ना फ़ज़्र का' इसे भी अगर इसके जाहिरी मफहूम में लिया जाए तो इसका मतलब यह निकलेगा कि रोज़ाना सुबह के तमाम औकात में कुरआन पढ़ा जाता रहे। मगर यहां हदीस की तशरीह ने हमारे लिए आसानी पैदा कर दी। हदीस के मुताबिक इस हुक्म का मुतअय्यन (निश्चित) मतलब यह है कि सुबह के वक़्त भी एक नमाज अदा की जाए और इस (पांचवीं) नमाज का नुमायां पहलू यह हो कि इसमें कुरआन की लम्बी तिलावत (पाठ) की जाए।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَتُحْمَدُ بِهِ نَافِلَةٌ لَكَ عَسَىٰ أَنْ يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ۝

और रात को तहज्जुद पढ़ो, यह नफ़ल है तुम्हारे लिए। उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हें मक़ामे महमूद (प्रशंसित-स्थल) पर खड़ा करे। (79)

तहज्जुद की नमाज की रूह अल्लाह को अपनी मख़सूस तंहाइयों में याद करना है। तहज्जुद के लफ्ज़ी मअना रात की बेदारी के हैं। रात का वक़्त तंहाई और सुकून का वक़्त होता है। रात को जब आदमी एक नींद पूरी करके उठता है तो वह उसके तमाम औकात (समयों) में सबसे बेहतर वक़्त होता है। इन लम्हात में आदमी जब खुदा की तरफ़ मुतवज्जह होता है और नमाज की सूरत में हाथ बांधकर खुदा के कलाम को पढ़ता है तो गोया वह अपनी अबदियत (बंदगी) की आखिरी तस्वीर बना रहा होता है। ख़ास तौर पर उस वक़्त जबकि उसका दिल भी उसका साथ दे रहा हो और उसकी शरिफ़ियत इस तरह पिघल उठी हो कि वह बेकरार होकर आंखों के रास्ते से बह पड़े।

मक़ामे महमूद के लफ्ज़ी मअना है तारीफ़ किया हुआ मक़म। इस महमूदियत का एक दुनियावी पहलू है और एक इसका उख़रवी (परलोकवादी) पहलू। उख़रवी पहलू वह है जिसे मुफ़रिसरीन शफ़ाअते कुबरा कहते हैं। जैसा कि हदीस से मालूम होता है, क्रियामत के दिन तमाम अबिया अपने मोमिनीन की शफ़ाअत करेंगे। यह शफ़ाअत गोया उनके मोमिन होने की तस्दीक होगी जिसके बाद उन लोगों को जन्नत में दाख़िल किया जाएगा जिन्हें खुदा जन्नत में दाख़िल करना चाहे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत सबसे बड़ी

होगी। क्योंकि अपने उम्मतियों की तादाद सबसे ज्यादा होने की वजह से आप सबसे बड़ी तादाद की अज़मत फ़र्माएंगे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महमूदियत का दुनियावी पहलू यह है कि आपके साथ ऐसी तारीख़ जमा हो जाए कि आप तमाम अक़वामे आलम (विश्व-समुदायों) की नज़र में मुसल्लमा (सुस्थापित) तौर पर क़ाबिले सताइश (प्रशंसीय) और लायके एतराफ़ बन जाएं। खुदा का यह मंसूबा आपके हक़ में मुकम्मल तौर पर पूरा हुआ। आज दुनिया में तमाम लोग आपका एतराफ़ करने पर मजबूर हैं। आपकी नुबुव्वत एक मुसल्लम नुबुव्वत बन चुकी है न कि निजाई (विवादित) नुबुव्वत जैसा कि वह आपके ज़हूर के इत्तिदाई सालों में थी।

महमूदी नुबुव्वत, दुनियावी एतबार से मुसल्लमा (Established) नुबुव्वत का दूसरा नाम है। यानी ऐसी नुबुव्वत जिसके हक़ में तारीख़ी शहादतें इतनी ज्यादा कामिल तौर पर मौजूद हों कि आपकी शरिफ़ियत और आपकी तालीमात के बारे में किसी के लिए शुबह की गुंजाइश न रहे। इंसान, खुद अपने मुसल्लमा इल्मी मेयार के मुताबिक आपकी हैसियत का एतराफ़ करने पर मजबूर हो जाए। इक़्रार व एतराफ़ की आखिरी सूरत तारीफ़ है इसलिए उसे 'मक़ामे महमूद' कहा गया।

وَقُلْ رَبِّ ادْخُلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاَجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝ وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَرَهَقَ الْبٰطِلُ اِنَّ الْبٰطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝

और कहो कि ऐ मेरे रब मुझे दाख़िल कर सच्चा दाख़िल करना और मुझे निकाल सच्चा निकालना। और मुझे अपने पास से मददगार कुव्वत (शक्ति) अता कर और कह कि हक़ (सत्य) आया और बातिल (असत्य) मिट गया। वेशक़ बातिल मिटने ही वाला था। (80-81)

पैगम्बरे इस्लाम को अरब के सरदार 'मजूम' (निंदित) बना देना चाहते थे। मगर अल्लाह का फैसला था कि आपको 'महमूद' (प्रशंसित) के मक़ाम तक पहुंचाया जाए। इसके लिए अल्लाह का मंसूबा यह था कि मदीना में आपके लिए मुवाफ़िक (अनुकूल) हालात पैदा किए जाएं और मक्का से निकाल कर आपको मदीना ले जाया जाए। मदीना में इस्लाम का इक्तेदार (शासन) कायम हो। तत्लीफ़ी कोशिश के ज़रिए मुसलमानों की तादाद ज्यादा से ज्यादा बढ़ाई जाए। यहां तक कि वे लोग मक्का फ़तह कर लें और बिलआख़िर सारा अरब मुसख़्ख़र हो जाए। इस तरह तौहीद की पुश्त पर वह ताकत जमा हो जो मुसलसल अमल के ज़रिए सारी दुनिया से शिर्क़ का ग़लबा ख़त्म कर दे।

यही वह खुदाई मंसूबा था जिसे यहां दुआ की सूरत में पैगम्बरे इस्लाम को तल्कीन किया गया।

وَنَزَّلْنَا مِنَ الْقُرْآنِ مَاءً مَّشْهُوًّا وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۖ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ۝

और हम कुरआन में से उतारते हैं जिसमें शिफा (निदान) और रहमत है ईमान वालों के लिए, और जालिमों के लिए इससे नुकसान के सिवा और कुछ नहीं बढ़ता। (82)

कुरआन खालिस सच्चाई का एलान है। खालिस सच्चाई जब पेश की जाती है तो उन तमाम लोगों पर इसकी जद पड़ती है जो या तो सच्चाई से खाली हों या मिलावटी सच्चाई लिए हुए हों। अब जो लोग हकीकतपसंद हैं उनके सामने जब खालिस सच्चाई आती है तो वे सच्चाई को मेयार बनाते हैं न कि अपनी जात को। वे अपने आपको सच्चाई पर ढाल लेते हैं न यह कि खुद सच्चाई को अपने ऊपर ढालने लेंगे। इस तरह उनकी संजीदगी और हकीकतपसंदी उनके कुरआन को उनके लिए रहमत बना देती है।

दूसरे लोग वे हैं जिनके अंदर अपनी बड़ाई का एहसास छुपा हुआ होता है। उनके सामने जब बेआमेज (खुली) सच्चाई आती है तो अपनी मखसूस नपिसयात की बिना पर उनका जेहन उल्टे रुख पर चल पड़ता है। वे यह नहीं सोच पाते कि 'अगर मैं सच्चाई को इख्तियार कर लूं तो मैं सच्चा बन जाऊंगा' इसके बजाए वे यह सोचने लगते हैं कि 'अगर मैंने सच्चाई को माना तो मैं छोटा हो जाऊंगा।' वे जाने वाली चीज की हिफाजत में रहने वाली चीज को छो देते हैं। वे अपनी बड़ाई को कायम रखने की खातिर सच्चाई को छोटा करने पर राजी हो जाते हैं।

وَإِذَا النُّعْمَانُ عَلَى الْإِنْسَانِ اعْرَضَ وَنَأْيَانِيَةً ۖ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَئُوسًا ۝ قُلْ كُلُّ يَعْمَلُ عَلَى شَاكِلَتِهِ ۖ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدَى سَبِيلًا ۝

और आदमी पर जब हम इनाम करते हैं तो वह एराज (उपेक्षा) करता है और पीठ मोड़ लेता है। और जब उसे तकलीफ पहुंचती है तो वह नाउम्मीद हो जाता है। कहे कि हर एक अपने तरीके पर अमल कर रहा है। अब तुम्हारा ख ही बेहतर जानता है कि कौन ज्यादा ठीक रास्ते पर है। (83-84)

हर इंसान पर ये हालात गुजरते हैं कि जब उसे राहत और फरावानी हासिल होती है तो वह जबरदस्त खुद एतमादी (आत्मविश्वास) का मुजाहिरा करता है। किसी बात को मानने के लिए वह इतना कड़ा बन जाता है जैसे कि वह ऐसा लोहा है जो झुकना नहीं जानता। मगर जब उसके असबाब छिन जाते हैं और उसे इज्ज (निर्बलता) का तजर्बा होता है तो अचानक वह बेहिम्मत हो जाता है। वह मायूसी से निढाल हो जाता है।

मौजूदा दुनिया में हर आदमी अपने बारे में इस तजर्बे से गुजरता है। मगर कोई ऐसा नहीं जो इस तजर्बे में अपनी दरयाफ्त कर ले। वह यह सोचे कि दुनिया में जबकि उसे आजादी

हासिल है वह हक के मुकाबले में इतनी सरकशी दिखा रहा है। मगर उस वक्त उसका क्या हाल होगा जबकि कियामत आएगी और उससे उसका सारा इख्तियार छिन लेगी। आदमी कितना ज्यादा कमजोर है मगर वह कितना ज्यादा अपने को ताकतवर समझता है।

शाकिला से मुराद जेहनी सांचा है। हर आदमी के हालात और रुझानात के तहत धीरे-धीरे उसका एक खास जेहनी सांचा बन जाता है। वह उसी के जेअसर सोचता है और उसी के मुताबिक उसका मुक्ताए नजर बनता है। मगर सही मुक्ताए नजर (वृष्टिकोण) वह है जो इल्मे इलाही के मुताबिक सही हो और गलत वह है जो इल्मे इलाही के मुताबिक गलत हो।

यही वह मकाम है जहां आदमी का इम्तेहान है। आदमी को यह करना है कि उसके शाकिला ने उसका जो जेहनी खोल बना दिया है वह उस खोल को तोड़े। ताकि वह चीजों को वैसा ही देख सके जैसी कि वे हैं। ब-अल्फाज दीगर वह चीजों को रबानी निगाह से देखने लगे। जो लोग अपने जेहनी खोल में गुम हों, वे भटके हुए लोग हैं। और जो लोग अपने जेहनी खोल से निकल कर खुदाई नुक्ताए नजर को पा लें वही वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत पाई।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۖ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا ۝

और वे तुमसे रूह (आत्मा) के मुतअल्लिक पूछते हैं। कहे कि रूह मेरे रब के हुक्म से है। और तुम्हें बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है। (85)

यहां रूह से मुराद 'वही' इलाही है। अरब के जिन लोगों ने रसूलुल्लाल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह सवाल किया, वे 'वही' व इल्हाम के मुकिर न थे। इस सवाल का रुख उनके नज्दीक रसूलुल्लाह की बेखबरी की तरफ था न कि हकीकतन अपनी बेखबरी की तरफ।

यह वह जमाना था जबकि रसूलुल्लाह के गिर्द अज्मत की तारीख नहीं बनी थी। लोगों को आप महज एक आम इंसान नजर आते थे। चूँकि उन्हें यकीन नहीं था कि खुदा का फरिश्ता आपके पास खुदा की 'वही' (ईश्वरीय वाणी) लेकर आता है। इसलिए उन्होंने आपका मजाक उड़ने के लिए यह सवाल किया।

ताहम इस सवाल के जवाब में कुरआन में एक अहम उसूली बात बता दी गई। वह यह कि इंसान को सिर्फ 'इल्मे कलील' (अल्पज्ञान) दिया गया है। वह 'इल्मे कसीर' (अधिक ज्ञान) का मालिक नहीं है। इसलिए हकीकतपसंदी का तक्का यह है कि वह उन सवालनात में न उलझे जिन्हें वह अपनी पैदाइशी कम इल्मी की बिना पर जान नहीं सकता।

कदीम जमाने में इंसान सिर्फ आंख के जरिए चीजों को देख सकता था। ताहम वृष्टि प्रयोगों ने बताया कि आंख सिर्फ एक हद तक काम करती है। इसलिए वह सम्पूर्ण अवलोकन के लिए काफी नहीं। मसलन एक चीज जो दूर से देखने में एक नजर आती है, करीब से जाकर देखा जाए तो मालूम होता है कि वह दो थीं।

मौजूदा जमाने में आलाती मुतालआ (उपकरणीय अध्ययन) वजूद में आया तो इंसान ने समझा कि आलात (उपकरण) उसकी सीमितता का बदल हैं। आलाती मुतालआ के जरिए चीजों को उनकी आखिरी हद तक देखा जा सकता है। मगर बीसवीं सदी में पहुंच कर इस खुशखबरी का खालता हो गया। अब मालूम हुआ कि चीजें उससे ज्यादा पेचीदा और उससे ज्यादा पुरअसरार (रहस्यमयी) हैं कि आलात की मदद से उन्हें पूरी तरह देखा जा सके।

ऐसी हालत में इज्माली इल्म (अल्पज्ञान) पर संतुष्ट होना इंसान के लिए हकीकतपसंदी का तमज बन गया है कि महज अमीद का तमज। हमारी सलाहियेतमहदूद (सीमित) हैं और हमसे मावरा जो आलम है वह लामहदूद, फिर महदूद के लिए किस तरह मुमकिन है कि वह लामहदूद का इहाता कर सके। इंसान की महदूदियत का तकाजा है कि वह बिलवास्ता (परोक्ष) इल्म पर कनाअत (संतोष) करे और बराहेरास्त इल्म में उलझना छोड़ दे। दूसरे शब्दों में तर्क से हासिलशुदा इल्म को भी उसी तरह माकूल (Valid) मान ले जिस तरह वह मुशाहिदे (अवलोकन) से हासिलशुदा इल्म को माकूल मानता है।

وَلَيْنَ شِئْنَا لَنذْهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا ۝
إِلَّا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ۝ قُلْ لَّيْنِ اجْتَمَعَتِ
الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى أَنْ يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَوْ كَانَ
بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ۝

और अगर हम चाहें तो वह सब कुछ तुमसे छीन लें जो हमने 'वही' (प्रकाशना) के जरिए तुम्हें दिया है, फिर तुम इसके लिए हमारे मुकाबले में कोई हिमायती न पाओ, मगर यह सिर्फ तुम्हारे रब की रहमत है, बेशक तुम्हारे ऊपर उसका बड़ा फल है। कहे कि अगर तमाम इंसान और जिन्नात जमा हो जाएं कि ऐसा कुरआन बना लाएं तब भी वे इसके जैसा न ला सकेंगे। अगरचे वे एक दूसरे के मददगार बन जाएं। (86-88)

कुरआन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर खास-खास औकात (समयों) में उतरता था। इन मखसूस औकात के अलावा आप खुद भी इस पर कादिर न थे कि कुरआन जैसा कलाम बना सके। दूसरे वक्तों में आपकी जवान से जो कलाम निकलता था वह हमेशा कुरआन के कलाम से मुखलिफ होता था। जब कभी लम्बी मुदत के लिए 'वही' रुकती तो आप बेहद परेशान हो जाते। मगर आपके लिए यह मुमकिन न हो सका कि खुद या किसी की मदद से कुरआन जैसा कलाम बना लें। यह एक हकीकत है कि कुरआन की जवान और आपकी अपनी जवान में बेहद नुमायां फर्क होता था। यह फर्क आज भी हर अरबीयां कुरआन और हदीस की जवान का तकाबुल (तुलना) करके देख सकता है।

यह वाक्या इस बात का एक वाजह सुबूत है कि कुरआन मुहम्मद का कलाम नहीं। वह

मुहम्मद के सिवा एक और बरतर जेहन से निकला हुआ कलाम है।

जो लोग कुरआन को इंसानी कलाम कहते थे उनसे कहा गया कि अगर तुम्हारा ख्याल सही है तो बहैसियत इंसान के तुम्हें भी इसकी कुदरत होनी चाहिए। तुम तंहा या दूसरे इंसानों को लेकर कुरआन जैसा कलाम बना कर लाओ। मगर उस वक्त के लोगों में से किसी के लिए मुमकिन न हो सका कि वह इस चैलेन्ज का जवाब दे। बाद के जमाने में भी कोई अदीब या आलिम कुरआन जैसे कलाम का नमूना पेश न कर सका। वाक्यात बताते हैं कि बहुत से लोगों ने कोशिश की मगर वे सरासर नाकाम रहे। वे कुरआन जैसी एक सूरह भी न बना सके।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ فَأَبَى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا
كُفُورًا ۝ وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّى تَنْجِرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَتَّبِعُونَكَ ۚ أَوْ تَكُونَ
لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ تَحْيِيلٍ ۚ وَ عَنِ يَمِينٍ فَتَنْجِرَ الْأَنْهَارَ خِلَالَهَا تَنْجِيرًا ۚ أَوْ تُسْقِطَ
السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسْفًا أَوْ تَأْتِيَ بِاللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ قَبِيلًا ۚ أَوْ يَكُونَ
لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرِفٍ أَوْ تَرْفَى فِي السَّمَاءِ وَلَنْ نُؤْمِنَ بِرُفُوقِكَ ۚ حَتَّى تُنْزِلَ
عَلَيْنَا كِتَابًا نَقْرؤه قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا ۝

और हमने लोगों के लिए इस कुरआन में हर किस्म का मज्मून तरह-तरह से बयान किया है, फिर भी अक्सर लोग इंकार ही पर जमे रहे और वे कहते हैं कि हम हरगिज तुम पर ईमान न लाएंगे जब तक तुम हमारे लिए जमीन से कोई चश्मा (स्रोत) जारी न कर दो या तुम्हारे पास खजूरों और अंगूरों का कोई बाग हो जाए, फिर तुम उस बाग के बीच में बहुत सी नहरें जारी कर दो। या जैसा कि तुम कहते हो, हमारे ऊपर आसमान से टुकड़े गिरा दो या अल्लाह और फरिश्तों को लाकर हमारे सामने खड़ा कर दो या तुम्हारे पास सोने का कोई घर हो जाए या तुम आसमान पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ने को भी न मानेंगे जब तक तुम वहां से हम पर कोई किताब न उतार दो जिसे हम पढ़ें। कहे कि मेरा रब पाक है, मैं तो सिर्फ एक बशर (इंसान) हूँ, अल्लाह का रसूल। (89-93)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हक का पैगाम पेश किया तो आपके मुआसिरीन (समकालीन) ने कहा कि हम तुम्हें उस वक्त मानेंगे जबकि तुम खारिके आदत (दिव्य) करिश्मे दिखाओ। मगर इस किस्म के मुतालबात खुदा के मंसूबए तख्तीक के खिलाफ हैं। इंसान को खुदा ने बाशुऊर वजूद के तौर पर पैदा किया है। यह सारी कायनात में एक इतिहाई नादिर अतिय्या (अद्वितीय देन) है जो इसलिए दिया गया है कि इंसान जाती शुऊर

के जरिए हक को पहचाने न कि मसहूरकुन (विस्मयकारी) करिश्मों के जरिए।

हकीकत यह है कि मौजूदा दुनिया में इंसान का इस्तेहान 'दलील' की सतह पर हो रहा है। यहां हर आदमी को दलील की जवान में हक को पहचानना और उसे इस्त्रियार करना है। जो लोग दलील की सतह पर हक को न पहचानें वही वे लोग हैं जो बिलआखिर नाकाम और नामुराद रहेंगे।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَى إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبْعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا ۖ قُلْ تَوَكَّلْ عَلَى الرَّحْمَنِ ۚ إِنَّكَ عَلَى سَوِيلٍ ۚ قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝

और जब उनके पास हिदायत आ गई तो उन्हें ईमान लाने से इसके सिवा और कोई चीज रुकावट नहीं बनी कि उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने बशर (इंसान) को रसूल बनाकर भेजा है। कहो कि अगर जमीन में फरिश्ते होते कि उसमें चलते फिरते तो अलबत्ता हम उन पर आसमान से फरिश्ते को रसूल बनाकर भेजते। कहो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाही के लिए काफी है। बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है। (94-96)

इस तरह की आयतों को आज जब आदमी पढ़ता है तो उसे तअज्जुब होता है कि वे कैसे हठधर्म लोग थे जिन्होंने पैगम्बरे आजम (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का इंकार किया। इस तअज्जुब की वजह दरअस्त यह है कि आज का एक आदमी मुंकिरीन का तकाबुल (तुलना) 'पैगम्बरे आजम' से करता है। जबकि दौरे अब्बल के मुंकिरीन के सामने जो शख्स था वह एक ऐसा शख्स था जो अभी तक सिर्फ 'मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह' था। वह सारी तारीख उस वक्त मुस्तकबिल (भविष्य) के पर्दे में छुपी हुई थी जिसके बाद दुनिया ने आपको पैगम्बरे आजम की हैसियत से तस्लीम किया।

पैगम्बर अपने जमाने के लोगों को सिर्फ एक 'बशर' नजर आता है। बाद को जब तारीखी तस्दीक़ात जमा हो जाती हैं तो लोगों को नजर आता है कि यह वाकई पैगम्बर था। यही वजह है कि हर पैगम्बर के साथ यह वाकया पेश आया कि उसके समकालीन मुखातबीन ने उसका इंकार किया और बाद के लोग उसका एतराफ करने पर मजबूर हुए।

मौजूदा दुनिया में आदमी हालते इस्तेहान में है। इसलिए यह मुमकिन नहीं कि फरिश्तों के जरिए उसे हक से बाख्बर किया जाए। फरिश्तों के जरिए हक से बाख्बर करने का मतलब हकीकत को आखिरी हद तक बेनकाब कर देना है। जब हकीकत को आखिरी हद तक बेनकाब कर दिया जाए तो इसके बाद आदमी का इस्तेहान किस चीज में होगा।

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ هَادٍ وَمَنْ يَضِلَّ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ ۚ وَنَحْشُرُهُمْ يُومَ الْقِيَمَةِ عَلَىٰ وَجُوهِهِمْ عُمِيًّا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْأَنْجَامِ ۚ أُولَٰئِكَ جَزَاءُ هُمْ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا إِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا إِنْ أَرْسَلْنَا إِلَيْنَا الْمُبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ۝

अल्लाह जिसे राह दिखाए वही राह पाने वाला है। और जिसे वह बेराह कर दे तो तुम उनके लिए अल्लाह के सिवा किसी को मददगार न पाओगे। और हम कियामत के दिन उन्हें उनके मुंह के बल अंधे और गूंगे और बहरे इकट्ठा करेंगे उनका ठिकाना जहन्नम है। जब-जब उसकी आग धीमी होगी हम उसे मजिद भड़का देंगे। यह है उनका बदला इस सबब से कि उन्होंने हमारी निशानियों का इंकार किया। और कहा कि जब हम हड्डी और रेजा हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा करके उठाए जाएंगे। (97-98)

दुनिया में आदमी अपनी हैसियत माददी के मुताबिक जीता है। आखिरत में वह अपनी हैसियत रूहानी के मुताबिक नजर आएगा। यही वजह है कि जो लोग दुनिया में राह से बेराह हुए वे कियामत में उठेंगे तो अपने आपको अंधा, बहरा, गूंगा पाएंगे। उनका राह से बेराह होना इसलिए था कि उन्होंने आंख और कान और जवान को उस मक्सद में इस्तेमाल नहीं किया जिसके लिए वे उन्हें दिए गए थे। उन्होंने खुदा की निशानियों को नहीं देखा। उन्होंने खुदा के दलाइल को नहीं सुना। उनकी जवान हक की हिमायत में नहीं खुली। वे आंख, कान और जवान रखते हुए हक की निस्वत से बेआंख, बेकान और बेजवान हो गए। मौत के बाद जब वे आलमे हकीकी में पहुंचेंगे तो वहां वे अपने आपको अपनी असली सूरत में पाएंगे न कि उस मसूई (कृत्रिम) सूरत में जो हालते इस्तेहान होने की वजह से वक्ती तौर पर उन्हें मौजूदा दुनिया में हासिल थी।

'जब हम रेज-रेजा हो जाएं' कहने वाले एक वे हैं जो जबने काल (कथन) से यह जुमला दोहराएं। दूसरे वे लोग हैं जो जबने हाल (व्यवहार) से उसे कहें। ये दूसरे लोग वे हैं जो आंख और कान और जवान को उसके मक्सदे तल्लीक (रचना, उद्देश्य) के ख़िलाफ इस्तेमाल करें और यह गुमान रखें कि उनका यह अमल बस इसी दुनिया में गुम होकर रह जाएगा, वह आखिरत में पहुंचने वाला नहीं।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيهِ ۚ فَإِنِّي الظَّالِمُونَ الْكَافِرُونَ ۝

क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आसमानों और जमीन को पैदा किया वह इस पर कादिर है कि उनके मानिंद दुबारा पैदा कर दे और उसने उनके लिए एक मुद्दत मुकर्रर कर रखी है, इसमें कोई शक नहीं। इस पर भी जालिम लोग बेइंकार किए न रहे। (99)

जमीन व आसमान हमारे सामने एक हकीकत के तौर पर मौजूद हैं। हम इनका इंकार नहीं कर सकते। यह मौजूदगी साबित करती है कि यहां कोई जिंदा हस्ती है जो यह ताकत रखती है कि वह पहली बार तख्तीक (सृजन) करे। वह 'नहीं' से 'है' को वजूद में लाए। फिर जब पहली तख्तीक मुमकिन है तो दूसरी तख्तीक क्यों मुमकिन नहीं। हकीकत यह है कि पहली तख्तीक को मानने के बाद दूसरी तख्तीक को मानने में कोई इल्मी व अक्ली दलील मानेअ (रुकावट) नहीं रहती।

इतने खुले हुए करीने (तर्क) के बावजूद जो शख्स दुबारा तख्तीक को न माने वह जालिम है। वह हठधर्मी की जमीन पर खड़ा हुआ है न कि दलील और मावूलियत की जमीन पर।

قُلْ لَّوْ أَنْتُمْ تَعْلَمُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ ۚ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُورًا ۝

कहो कि अगर तुम लोग मेरे खजानों के मालिक होते तो इस सूरत में तुम खर्च हो जाने के अंदेशे से जरूर हाथ रोक लेते और इंसान बड़ा ही तंग दिल है। (100)

इंसान तंग जर्फवाकेअ हुआ है। वह हर किस्म के शरफ को अपने लिए या अपने गिरेह के लिए जमा कर लेना चाहता है। अगर नेमतों की तक्सीम इंसान के हाथ में होती तो जिन लोगों के पास दौलत व अज्मत आ गई थी वही नुबुव्वत को भी अपने पास जमा कर लेते। वे उसे दूसरों के पास जाने न देते।

मगर खुदा मामलात को जौहर के एतबार से देखता है न कि गिरोही तअस्सुवात की नजर से। वह तमाम इंसानों पर नजर डालता है। और पूरी नस्ल में जो सबसे बेहतर इंसान होता है उसे नुबुव्वत के लिए चुन लेता है। नुबुव्वत का इंतखाब अगर इंसान करने लगे तो यहां भी वही कैफियत पैदा हो जाए जो इंसानी इदारों में जानिवदारी की वजह से नाअहल इंसानों की भीड़ की सूरत में नजर आती है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى سَعَةَ اللَّيْلِ بِئَنِّتِ فَنَسَلْ بَنِي إِسْرَءِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يُمُوسَىٰ مَسْحُورًا ۝ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا أَتَاكَ هَؤُلَاءِ

إِلَّا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِصَآئِرٍ وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ يُفْرَعُونَ مَثْبُورًا ۝ فَأَرَادَ أَنْ يَنْتَقِرَهُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَعْرَضْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ جَمِيعًا ۝ وَقُلْنَا مَنْ بَعْدَهُ يَبْنِي إِسْرَءِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ۝

और हमने मूसा को नौ निशानियां खुली हुई दीं। तो बनी इस्राईल से पूछ लो जबकि वह उनके पास आया तो फिरऔन ने उससे कहा कि ऐ मूसा, मेरे ख्याल में तो जरूर तुम पर किसी ने जादू कर दिया है। मूसा ने कहा कि तू खूब जानता है कि उन्हें आसमानों और जमीन के ख ही ने उतारा है, आंखें खोल देखने के लिए और मेरा ख्याल है कि ऐ फिरऔन, तू जरूर शामतजदा (प्रकोपित) आदमी है। फिर फिरऔन ने चाहा कि उन्हें इस सरजमीन से उखाड़ दे। पस हमने उसे और जो उसके साथ थे सबको शर्क कर दिया। और हमने बनी इस्राईल से कहा कि तुम जमीन में रहो। फिर जब आखिरत का वादा आ जाएगा तो हम तुम सबको इकट्ठा करके लाएंगे। (101-104)

फिरऔन के सामने खुली हुई निशानियां पेश की गईं तो उसने कहा कि यह 'जादू' है। इसका मतलब यह है कि दाजी की तरफ से चाहे कितनी ही ताकतवर दलील और कितनी ही बड़ी निशानी पेश कर दी जाए, इंसान के लिए यह दरवाजा बंद नहीं होता कि वह कुछ अल्फाज बोलकर उसे रद्द कर दे। वह खुदाई निशानी को इंसानी जादू कह दे। वह इल्मी दलील को नाकिस मुतालआ कहकर टल दे। वह वाजेह क्राइन को गैर मावूल कहकर नजरअंशजकर दे।

हक के मुखलिफिन जब लफ्फे मुखलिफत से हक की आवाज को दबाने में कामयाब नहीं होते तो वे जारिहाना (आक्रामक) कार्रवाइयों पर उतर आते हैं। मगर वे भूल जाते हैं कि यह किसी इंसान का मामला नहीं। बल्कि खुदा का मामला है और कौन है जो खुदा के साथ जारिहियत (आक्रामकता) करके कामयाब हो।

وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ۖ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ وَفَرَأَيْنَا فَرْقَانَهُ يُفْرِكُهُ عَلَى النَّاسِ عَلَىٰ مَكِّهِ ۖ وَنَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلًا ۝

और हमने कुरआन को हक के साथ उतारा है और वह हक ही के साथ उतरा है। और हमने तुम्हें सिर्फ खुशखबरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है और हमने कुरआन को थोड़ा-थोड़ा करके उतारा ताकि तुम उसे लोगों के सामने ठहर-ठहर कर पढ़ो। और उसे हमने बतदरीज (क्रमवार) उतारा है। (105-106)

कुरआन बेआमेज (विशुद्ध) सच्चाई का एलान है। मगर बेआमेज सच्चाई हमेशा लोगों

के लिए सबसे कम क़बिले कुज़ूल चीज होती है। इस बिना पर अल्लाह तआला ने दाजी पर यह जिम्मेदारी नहीं डाली कि वह लोगों को जरूर मनवा ले। दाजी की जिम्मेदारी यह है कि वह कामिल तौर पर सच्चाई का एलान कर दे।

कुरआन में मुखातब की आखिरी हद तक रियायत की गई है। इसी मस्तेहत की बिना पर कुरआन को ठहर-ठहर कर उतारा गया है। ताकि जो लोग समझना चाहते हैं वे उसे खूब समझते जाएं। वह आहिस्ता-आहिस्ता उनके फिक्र व अमल का जुज बनता चला जाए।

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ
يَخْرُوْنَ لِلاَّذْقَانِ سُبْحًا ۝ وَيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَاۤ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا
لَمَفْعُوْلًا ۝ وَيَخْرُوْنَ لِلاَّذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا ۝

कहो कि तुम इस पर ईमान लाओ या ईमान न लाओ, वे लोग जिन्हें इससे पहले इल्म दिया गया था जब वह उनके सामने पढ़ा जाता है तो वे ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं। और वे कहते हैं कि हमारा रब पाक है। वेशक हमारे रब का वादा जरूर पूरा होता है। और वे ठोड़ियों के बल रोते हुए गिरते हैं और कुरआन उनका खुशूअ (विनय) बढ़ा देता है। (107-109)

ख़ुदा का कलाम इंसान से इज्ज व तवाजेअ (विनम्रता) का तक्ज़ करता है। मगर मौजूदा दुनिया में ख़ुदा अपना कलाम ख़ुद सुनाने नहीं आता। वह एक 'इंसान' की ज़बान से अपना कलाम जारी कराता है। अब जो लोग अपने अंदर क़िब्र (अह) की नफ़िसयात लिए हुए हैं, वे उसके आगे झुकने को एक इंसान के आगे झुकने के समान मान लेते हैं और इस बिना पर उसे मानने से इंकार कर देते हैं।

इसके बरअक्स जो लोग क़िब्र (अह) की नफ़िसयात से ख़ाली हों वे ख़ुदा के कलाम को बस ख़ुदा के कलाम की हैसियत से देखते हैं। उन्हें इंसान की ज़बान से जारी होने वाले कलाम में ख़ुदा की झलकियां नजर आ जाती हैं। वे इसके जरिए ख़ुदा से मरबूत हो जाते हैं। वे ख़ुदा की बड़ई के मुन्नबले में अपने इज्ज को और अपने इज्ज के मुन्नबले में ख़ुदा की बड़ई को पा लेते हैं। यह एहसास उनके सीने को पिघला देता है। वे रोते हुए उसके आगे सज्दे में गिर पड़ते हैं।

पहली किस्म के आदमियों के मिसाल कु़रैश के सरदारों की है। और दूसरी किस्म के आदमियों की मिसाल अहले किताब के उन मोमिनीन की जो दौरे अव्वल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए थे।

इस आयत में बजाहिर सालिहीन (निक) अहले किताब का क़िफ़्र है। उन्हें कदीम आसमानी सहीफों में पढ़ा था कि एक आखिरी पैग़म्बर आने वाले हैं। जो लोग उन पर ईमान लाएंगे और उनका साथ देंगे वे ख़ुदा की खुसूसी रहमत के मुस्तहिक करार पाएंगे। इस बिना

पर वे उस आखिरी नबी का पहले से इतिज़ार कर रहे थे। यह इतिज़ार इतना शदीद था कि जब वह पैग़म्बर आया तो उन्होंने फौरन उसे पहचान लिया। उनका यह हाल हुआ कि इस पैग़म्बर की लाई हुई किताब (कुरआन) को जब वे पढ़ते तो शिद्दते एहसास से उनकी आंखों से आंसू जारी हो जाते और वे रोते हुए ख़ुदा के आगे सज्दे में गिर जाते।

ताहम यह सिर्फ अहले किताब के एक गिरोह का मामला नहीं है बल्कि वह सारे इंसानों का मामला है। हर इंसान के अंदर ख़ुदा ने पेशगी तौर पर हक की मअरफत रख दी है गोया कि हर इंसान पहले ही से ख़ुदाई सच्चाई का मुंतज़िर है। अब जो लोग अपनी इस फितरत को ज़िंदा रखें उनका वही हाल होगा जो साबिक (पूर्ववर्ती) अहले किताब का हुआ। वे अपनी फितरत के ज़िंदा शुऊर की बिना पर ख़ुदाई सच्चाई को पहचान लेंगे और दिल की पूरी आमादगी के साथ उसकी तरफ बेताबाना दौड़ पड़ेंगे।

قُلْ اِدْعُوا اللّٰهَ وَاِدْعُوا الرَّحْمٰنَ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى وَلَا تَجْهَرُوْا بِصَلٰتِكُمْ وَلَا تَخَافُتْ بِهَا وَابْتَغِبْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الدِّنِّ وَكَبِّرْهُ كَبِيْرًا ۝

कहो कि चाहे अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान (कृपाशील) कहकर पुकारो, उसके लिए सब अच्छे नाम हैं। और तुम अपनी नमाज़ न बहुत पुकार कर पढ़ो और न बिल्कुल चुपके-चुपके पढ़ो। और दोनों के दर्मियान का तरीका इख्तियार करो। और कहो कि तमाम खूबियां उस अल्लाह के लिए हैं जो न औलाद रखता है और न बादशाही में कोई उसका शरीक है। और न कमजोरी की वजह से उसका कोई मददगार है। और तुम उसकी खूब बड़ाई बयान करो। (110-111)

जो लोग सच्चाई को गहराई के साथ पाए हुए नहीं होते। वे हमेशा जाहिरी चीजों में उलझे रहते हैं। कोई कहता है कि ख़ुदा को इस लफ्ज से पुकारना अफज़ल है और कोई कहता है कि उस लफ्ज से। कोई कहता है कि फुलां इबादती फेअल (कृत्य) जोर से अदा करना चाहिए और कोई कहता है कि धीरे से।

अरब में भी इस किस्म की बहसें मुक़तलिफ अंदाज़ में जारी थीं। फरमाया कि ख़ुदा को जिस बेहतर नाम से पुकारो वह उसी का नाम है। इसी तरह इबादत के बारे में फरमाया कि ख़ुदा की इबादत की अदायगी का इहिसार न जोर से बोलने पर है और न धीरे बोलने पर। तुम इबादत की अस्ल रूह अपने अंदर पैदा करो और उसकी अदायगी में एतदाल (मध्य मार्ग) से काम लो।

इबादत की रूह यह है कि अल्लाह की बड़ाई का कामिल एहसास आदमी के अंदर पैदा हो जाए। अल्लाह पर ईमान उसके लिए ऐसी कामिल और अजीम हस्ती की दरयाफ्त के

हममअना बन जाए जिसे किसी से मदद लेने की जरूरत न हो। जिसका कोई शरीक और बराबर न हो। जिस पर कभी कोई ऐसा हादसा न गुजरता हो जबकि वह किसी की मदद का मोहताज हो। यह याफत जब लफ्जों की सूत में ढलकर जवान से निकलने लगे तो इसी का नाम तकवीर है।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّيَ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ بِعِزِّكَ الْإِسْلَامِ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ۖ قِيمًا
لِيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا لِمَنْ لَدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ
أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا ۖ مَا يَلِيهِ فِيهِ إِبْدَالٌ ۖ وَيُنْذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ۚ
مَالَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ ۚ وَلَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۚ إِنَّ
يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ۖ

आयतें-110

सूरह-18. अल कहफ

रुकूअ-12

(मक्का में नजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। तारीफ अल्लाह के लिए है जिसने अपने बंदे पर किताब उतारी। और उसमें कोई कजी (टिप्पणी) नहीं रखी। बिल्कुल ठीक, ताकि वह अल्लाह की तरफ से एक सख्त अजाब से आगाह कर दे। और ईमान वालों को खुशखबरी दे दे जो नेक आमांल करते हैं कि उनके लिए अच्छा बदला है। वे उसमें हमेशा रहेंगे। और उन लोगों को डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। उन्हें इस बात का कोई इल्म नहीं और न उनके बाप दादा को। यह बड़ी भारी बात है जो उनके मुंह से निकल रही है, वे सिर्फ झूठ कहते हैं। (1-5)

कुरआन पिछली किताबों का तस्वीहशुदा एडीशन है। पिछली किताबों में यह हुआ कि बाद के लोगों ने मूशिगाफियां (कुतकी) करके खुदाई तालीमात को पुरेपेच बना दिया। दूसरे यह कि खुदसाख्ता तशरीहात के जरिए इब्तिदाई तालीम में इहिराफ पैदा किया गया और इस तरह उसके रूख को बदल दिया गया। कुरआन इन दोनों किस्म की इंसानी आमेजिशों (मिलावटों) से पाक है। इसमें एक तरफ अस्ल दीन अपनी फितरी सादगी के साथ मौजूद है। दूसरी तरफ इसका रूख सीधा खुदा की तरफ है, जैसा कि ब-एतबार वाक्या होना चाहिए।

खुदा ने यह एहतिमाम क्यों किया कि वह दुनिया वालों के पास अपनी किताब भेजे। इसका मकसद लोगों को खुदा की स्कीम से आगाह करना है। खुदा ने इंसान को इस दुनिया में इस्तेहान की गर्ज से आबाद किया है। इसके बाद वह हर एक का हिसाब लेगा। और हर

एक को उसके अमल के मुताबिक या तो जहन्नम में डालेगा या जन्नत के अबदी बागों में बसाएगा। खुदा चाहता है कि हर आदमी मौत से पहले इस मसले से बाख़बर हो जाए ताकि किसी के लिए कोई उज्र बाकी न रहे।

दुनिया में इंसान की गुमराही का एक सबब यह है कि वह खुदा के सिवा किसी और को अपना सहारा बना लेता है। इसी की एक बेतुकी सूत किसी को खुदा का बेटा फर्ज कर लेना है। मगर इस किस्म का हर अक्कीदा सिर्फ एक झूठ है। क्योंकि जमीन व आसमान में खुदा के सिवा कोई नहीं जिसे किसी किस्म का कोई इस्त्रियार हासिल हो।

فَلْعَلَّكَ بَاخِعٌ نَفْسِكَ عَلَىٰ آثَارِهِمْ إِنْ لَمْ يُؤْمِنُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا ۚ إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا لِيَنْبَلُوهُمْ ۚ إِنَّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَإِنَّا لَجَاعِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ۚ

शायद तुम उनके पीछे ग़म से अपने को हलाक कर डालोगे, अगर वे इस बात पर ईमान न लाएं। जो कुछ जमीन पर है उसे हमने जमीन की रैनक बनाया है ताकि हम लोगों को जांचें कि उनमें कौन अच्छा अमल करने वाला है और हम जमीन की तमाम चीजों को एक साफ मैदान बना देंगे। (6-8)

‘शायद तुम अपने को हलाक कर डालोगे।’ यह जुमला बताता है कि दाअी अगर दावत के मामले में संजीदा हो तो शिद्दते एहसास से उसका क्या हाल हो जाता है। हकीकत यह है कि हक की दावत का इतमांम (अति) उस इतिहा पर पहुंच कर होता है जब यह कहा जाने लगे कि दाअी शायद इस ग़म में अपने को हलाक कर लेगा कि लोग हक की दावत को कुबूल नहीं कर रहे हैं।

एक दावत जो दलील के एतबार से इतिहाई वाजेह हो, जिसे पेश करने वाला दर्दमंदी की आखिरी हद पर पहुंच कर उसे लोगों के लिए संजीदा ग़ौरोफिक्र का मौजूअ (विषय) बना दे, इसके बावजूद लोग उसे न मानें तो इस न मानने की वजह क्या होती है। इसकी वजह दुनिया की दिलफरेबियां हैं। मौजूदा दुनिया इतनी पुरकशिश है कि आदमी इससे ऊपर उठ नहीं पाता। इसलिए वह ऐसी दावत की अहमियत को समझ नहीं पाता जो उसकी तवज्जोहों को सामने की दुनिया से हटाकर उस दुनिया की तरफ ले जा रही है जिसकी रैनकें बजाहिर दिखाई नहीं देती।

मगर जमीन की दिलफरेबियां इतिहाई आरजी हैं। वे इस्तेहान की एक मुकर्रर मुद्दत तक हैं। इसके बाद जमीन की यह हैसियत ख़त्म कर दी जाएगी। यहां तक कि वह सहारा (रेगिस्तान) की तरह बस एक शुश्क मैदान होकर रह जाएगी।

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۖ إِذْ أَوَى
الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا
رَشَدًا ۖ فَضَرَبْنَا عَلَى آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۖ ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ
أَى الْحِزْبَيْنِ أَحْصَى لَبِائِهِمَا ۖ آمَدًا ۝

क्या तुम ख्याल करते हो कि कहफ और रकीम वाले हमारी निशानियों में से बहुत अजीब निशानी थे। जब उन नौजवानों ने गार में पनाह ली, फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रहमत दे और हमारे मामले को दुरुस्त कर दे। पस हमने गार में उनके कानों पर सालहा साल (दीर्घ काल) के लिए (नींद का पदी) डाल दिया। फिर हमने उन्हें उठाया ताकि हम मालूम करें कि दोनों गिरोहों में से कौन ठहरने की मुदत का ज्यादा ठीक शुमार करता है। (9-12)

असहावे कहफ का वाक्या एक अलामती वाक्या है जो बताता है कि सच्चे अहले ईमान की जिंदगी में किस किस के मराहिल पेश आते हैं। इससे मालूम होता है कि अहले ईमान कभी-कभी हालात की शिद्दत की बिना पर किसी 'गार' में पनाह लेने पर मजबूर होते हैं। मगर यह गार जो बजाहिर उनके लिए एक कब्र था, वहां से जिंदगी और हरकत का एक नया सैलाब फूट पड़ता है। उनके मुखालिफीन ने जहां उनकी तारीख खत्म कर देनी चाही थी वहीं से दुबारा उनके लिए एक नई तारीख शुरू हो जाती है।

कहफ वाले अगर वही हैं जो मसीही तारीख में सात सोने वाले (Seven Sleepers) कहे जाते हैं तो यह किस्सा शहर एफेसस (Ephesus) से तअलुक रखता है। यह कस्बा जमाने का एक मशहूर शहर है। जो टर्की के मरिबी साहिल पर वाकेअ था और जिसके पुरअजमत खंडहर आज भी वहां पाए जाते हैं। 249-251 ई० में इस इलाके में रूमी हुक्मरां डेसियस (Desius) की हुक्मत थी। यहां बुतपरस्ती का जोर था। और चांद को माबूद करार देकर उसे पूजा जाता था। उस जमाने में मसीह के इब्तिदाई पैरोकारों के जरिए यहां तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत पहुंची और फैलने लगी। रूमी हुक्मरां जो खुद भी बुतपरस्त था, मजहबे तौहीद की इशाअत को बर्दाश्त न कर सका और हजरत मसीह के पैरोकारों पर सखियां करने लगा। मज्हूरा असहावे कहफ एफेसस के आला घरानों के सात नौजवान थे जिन्होंने गालिबन 250 ई० में मजहबे तौहीद को कुबूल कर लिया। और उसके मुबल्लिग (प्रचारक) बन गए। हुक्मत की तरफ से उन पर सखी हुई तो वे शहर से निकल कर करीब के एक पहाड़ की तरफ चले गए और वहां एक बड़े गार में छुप गए।

असहावे रकीम गालिबन इन्हीं असहावे कहफ का दूसरा नाम है। रकीम के मअना मरकूम के हैं। यानी लिखी हुई चीज। कहा जाता है कि आला खानदानों के मज्हूरा सात

नौजवान जब लापता हो गए तो बादशाह के हुक्म से उनके नाम और हालात एक सीसे की तख्ती पर लिखकर शाही खजाने में रख दिए गए। इस बिना पर उनका दूसरा नाम असहावे रकीम (तख्ती वाले) पड़ गया। (तफसीर इब्नेकसीर)

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُمْ بِالْحَقِّ ۖ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۖ وَرَبَطْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُو مِنْ دُونِهِ إِلَهًا ۖ لَقَدْ قُلْنَا إِذْ شَطَطًا ۖ هَؤُلَاءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ آلِهَةً ۖ لَوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطَانٍ بَيِّنٍ ۖ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝

हम तुम्हें उनका अस्ल किस्सा सुनाते हैं। वे कुछ नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए और हमने उनकी हिदायत में मजिद तस्की दी और हमने उनके दिलों को मजबूत कर दिया जबकि वे उठे और कहा कि हमारा रब वही है जो आसमानों और जमीन का रब है। हम उसके सिवा किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारेंगे। अगर हम ऐसा करेंगे तो हम बहुत बेजा बात करेंगे। ये हमारी कौम के लोगों ने उसके सिवा दूसरे माबूद बना रखे हैं। ये उनके हक में वाजेह दलील क्यों नहीं लाते। फिर उस शख्स से बड़ा जालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे। (13-15)

'ये लोग वाजेह दलील क्यों नहीं लाते' इस जुमले से अंदाजा होता है कि ईमान लाने के बाद उन नौजवानों और कौम के बड़े लोगों के दर्मियान एक मुदत तक बहस व गुफ्तगू रही। मगर इस दर्मियान में उन बड़ों की तरफ से जो बातें कही गईं उनमें शिर्क के हक में कोई वाजेह दलील न थी। इस तजर्वे ने उन तौहीदपरस्त नौजवानों के यकीन को और ज्यादा बढ़ा दिया। उनके लिए नामुमकिन हो गया कि गैर साबितशुदा चीज की खातिर साबितशुदा चीज को तर्क कर दें।

मज्हूरा मुखालिफत के बाद अगर वे बड़ों की बड़ाई को अहमियत देते तो वे बेयकीनी और तजबजुब (दुविधा) का शिकार हो जाते। मगर जब उन्होंने दलील और बुरहान (स्पष्ट प्रमाण) को अहमियत दी तो उसने उनके यकीन में और इजाफा कर दिया। क्योंकि दलील और बुरहान के एतबार से ये बड़े उन्हें बिल्कुल छोटे नजर आए। अपनी तमाम जाहिरी अज्मतों के बावजूद वे लोग झूठ की जमीन पर खड़े हुए मिले न कि सच की जमीन पर।

وَإِذْ اعْتَرَفْتَنَاهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهُ فَأَوَّا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرُ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَهَيِّئْ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ مَرْفَقًا ۝

और जब तुम उन लोगों से अलग हो गए हो और उनके माबूदों से जिनकी वे खुदा के सिवा इबादत करते हैं तो अब चलकर गार में पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे ऊपर अपनी रहमत फैलाएगा। और तुम्हारे काम के लिए सरोसामान मुहय्या करेगा। (16)

बंदा जब हक की खातिर इंसानों से कटता है तो ऐन उसी वक्त वह खुदा से जुड़ जाता है। यहां तक कि वह अपने रब से इतना करीब हो जाता है कि उससे उसकी सरगोशियां शुरू हो जाती हैं। वह अपने रब से कलाम करता है और उससे उसका जवाब पाता है।

असहाबे कहफ का नैमुसलमाना यकीन, उनकी बेखौफ तबीयत, उनका सब कुछ छोड़ने पर राजी हो जाना मगर हक को न छोड़ना, इन चीजों ने उन्हें कुबते खुदाकी का आला मक़ाम अता कर दिया था। वे बजाहिर जो कुछ खो रहे थे, उससे ज्यादा बड़ी चीज उनके लिए वह थी जिसे उन्होंने पाया था। यही याफ़्त (प्राप्ति) का वह एहसास था जिसने उन्हें आमादा किया कि वे हर दूसरी चीज की महरूमी गवारा कर लें मगर हक से महरूमी को गवारा न करें। वे इस पर राजी हो गए कि वे अपने घर और शहर को छोड़कर गार में चले जाएं और फिर भी उनकी यह उम्मीद बाकी रहे कि उनका खुदा जरूर उनकी मदद करेगा और उनके हालात को दुरुस्त कर देगा।

इबने जरीर ने अता का कौल नकल किया है कि उनकी तादाद सात थी। वे गार में दाखिल होकर इबादत करते रहते और रोते और अल्लाह से मदद मांगते। यहां तक कि बिलआखिर खुदा ने उन पर लम्बी नींद तारी कर दी।

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَزْوُرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقَرُّبُهُمْ ذَاتَ الشَّمَالِ وَهُمْ فِي فَجْوَةٍ مِنْهُ ذَلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُرْشِدًا ۝١٧

और तुम सूरज को देखते कि जब वह तुलूअ (उदय) होता है तो उनके गार से दाईं जानिब को बचा रहता है और जब डूबता है तो उनसे बाईं जानिब को कतरा जाता है और वे गार के अंदर एक वसीअ (विस्तृत) जगह में हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है जिसे अल्लाह हिदायत दे वही हिदायत पाने वाला है और जिसे अल्लाह बेराह कर दे तो तुम उसके लिए कोई मददगार राह बताने वाला न पाओगे। (17)

दावती दौर में जब असहाबे कहफ और उनकी कौम के लोगों के दर्मियान कश्मकश बढ़ी, इसी दौरान ग़ालिबन उन्हें इम्कानी अदिशे के पेशेनजर एक मख़सूस गार का इतिखाब कर लिया था। यह गार इतना वसीअ था कि सात आदमी बाआसानी इसके अंदर कयाम कर सकें। मजीद यह कि ग़ालिबन वह शिमाळ रूया (उत्तर-मुखी) था। इस बिना पर सूरज की रोशनी सुबह या शाम किसी वक्त भी बराहेरास्त उसके अंदर नहीं पहुंचती थी और उधर से गुजरने वाला कोई शख्स

बाहर से देखकर यह नहीं जान सकता था कि इसके अंदर कुछ इंसान मौजूद हैं।

जब आदमी ऐसा करे कि हक के मामले में मस्लेहत का रवैया न इख्तियार करे। मुश्किलतरीन हालात में भी वह सत्र व शुक्र के साथ खुदा की तरफ मुतवज्जह रहे तो खुदा उसे ऐसे रास्तों की तरफ रहनुमाई फरमाता है जिसमें उसका इमान भी महफूज रहे और वह अपने दावती मिशन को भी न खोए। यह नुसरत असहाबे कहफ को उनके मख़सूस हालात के एतबार से पूरी तरह हासिल हुई।

मजीद यह कि खुदा ने उन्हें अपने ख़ास काम के लिए चुन लिया। उन्होंने जिस रूहानी बुलन्दी का सबूत दिया था। इसके बाद वे खुदा की नजर में इस काबिल हो गए कि उन्हें ज़िंदगी बाद मौत का हिस्सी (महसूस) सबूत बना दिया जाए। असहाबे कहफ का दो सौ साल तक सोकर दुबारा उठना इसी नौइयत का एक वाकया है।

وَتَحْسِبُهُمْ أَيَقَاطًا وَهُمْ رُقُودٌ ۖ وَنُقِلَهُمْ ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشَّمَالِ ۖ وَكَلِمُهُمْ بِأَسْطٍ ذَرَايَةٍ بِالْوَصِيدِ ۖ لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَكَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا ۖ وَلَآ لَئِلَتْ مِنْهُمْ رُعْبًا ۝١٨

और तुम उन्हें देखकर यह समझे कि वे जाग रहे हैं, हालांकि वे सो रहे थे। हम उन्हें दाएं और बाएं करवट बदलवाते रहते थे। और उनका कुत्ता गार के दहाने पर दोनों हाथ फैलाए बैठा था। अगर तुम उन्हें झांक कर देखते तो उनसे पीठ फेर कर भाग खड़े होते और तुम्हारे अंदर उनकी दहशत बैठ जाती। (18)

अल्लाह तआला ने एक तरफ यह किया कि असहाबे कहफ पर मुसलसल नींद तारी कर दी। इसी के साथ उनकी हिफज़त के लिए मुख़लिफ इतिजमात फरमा दिए। मसलन वे बराबर करवटें लेते रहते थे। क्योंकि हजरत इबने अब्बास के अल्फ़ाज़ में, अगर ऐसा न होता तो उनका जिस्म जमीन खा जाती। उनके गार के दहाने पर एक कुत्ता मुसलसल बैठा रहा। यह ग़ालिबन इसलिए था कि कोई इंसान या जानवर अंदर दाखिल न हो सके। मजीद यह कि गार के अंदर खुदा ने ऐसा पुरहैबत माहौल बना दिया था कि कोई शख्स अगर झांकने की कोशिश करे तो पहली ही नजर में दहशतजदा होकर भाग जाए।

وَكَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لَيَسَاءَ لَوْلَا بَيْنُهُمْ ۖ قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ قَالُوا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ۖ فَابْعَثُوا أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هَذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَا أَزْكَى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۝١٩

يُوعِدُكُمْ فِي مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذْ أَبَدَّا ۝

और इसी तरह हमने उन्हें जगाया ताकि वे आपस में पूछ गछ करें। उनमें से एक कहने वाले ने कहा, तुम कितनी देर यहां ठहरे। उन्होंने कहा कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे। वे बोले कि अल्लाह ही बेहतर जानता है कि तुम कितनी देर यहां रहे। पस अपने में से किसी को यह चांदी का सिक्का देकर शहर भेजो, पस वह देखे कि पाकीजा खाना कहां मिलता है, और तुम्हारे लिए इसमें से कुछ खाना लाए। और वह नमी से जाए और किसी को तुम्हारी खबर न होने दे। अगर वे तुम्हारी खबर पा जाएंगे तो तुम्हें पत्थरों से मार डालेंगे या तुम्हें अपने दीन में लौटा लेंगे और फिर तुम कभी फलाह न पाओगे। (19-20)

असहाबे कहफ जब सोकर उठे तो कुदरती तौर पर वे आपस में जिक्र करने लगे कि वे कितनी मुद्दत तक सोए होंगे। मगर जमाना खुदा के हुक्म के तहत उनके लिए ठहर गया था। इसलिए जो मुद्दत दूसरों के लिए सदियों में फैली हुई थी वह असहाबे कहफ को बस एक दिन के बराबर मालूम हुई।

सोकर उठने के बाद उन्हें भूख का एहसास हुआ। उनके पास कुछ चांदी के सिक्के थे। उन्होंने अपने में से एक शख्स को एक सिक्का लेकर भेजा। गालिबन उनका ख्याल होगा कि शहर के जिन हिस्सों में ईसाई बसे होंगे वहां हलाल खाना मिल सकेगा इसलिए उन्होंने कहा कि तलाश करके पाकीजा खाना ले आना। साथ ही उन्होंने ताकीद की कि सारा मामला निहायत खुश तदबीरी से अंजाम देना। क्योंकि साबिका (पहले के) तजर्वे की बिना पर उन्हें अदेशा था कि अगर वे लोग हमसे बाखबर हो जाएंगे तो वे हमें दुबारा बुतपरस्त बनाने की कोशिश करेंगे। और जब हम राजी न होंगे तो वे हमें मार डालेंगे।

وَكَذَلِكَ أَعْتَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَازَعُونَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوا عَلَيْهِم بُنْيَانًا رَأَيْنَاهُمْ أَكْمَرُ بِهِمْ ۚ قَالَ الَّذِينَ غَلَبُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِم مَّسْجِدًا ۝

और इस तरह हमने उन पर लोगों को मुतलअ (सूचित) कर दिया ताकि लोग जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और यह कि कियामत में कोई शक नहीं। जब लोग आपस में उनके मामले में झगड़ रहे थे। फिर कहने लगे कि उनके गार पर एक इमारत बना दो। उनका रव उन्हें खूब जानता है। जो लोग उनके मामले में गालिब आए उन्होंने कहा कि हम उनके गार पर एक इबादतगाह बनाएंगे। (21)

ईसान सौ साल या इससे भी कम मुद्दत मौजूदा जमीन पर जिंदगी गुजार कर मर जाता

है। बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि वह हमेशा के लिए खत्म हो गया। मगर हकीकत यह है कि वह मर कर बाकी रहता है और दुबारा एक नई दुनिया में उठता है जहां उसके लिए या अबदी राहत है या अबदी अजाब।

यह ईसान का सबसे ज्यादा संगीन मसला है और इस पर लोगों के दर्मियान हमेशा बहस जारी रही है। इसकी इसी अहमियत की बिना पर खुदा ने ऐसा किया कि अक्ली दलील के साथ उसके हक में हिस्सी (महसूस) दलील का भी इतिजाम फरमाया ताकि 'जिंदगी बाद मौत' के मामले में किसी के लिए इसकी गुंजाइश बाकी न रहे। मुख़लिफ जमानों में यह हिस्सी दलील मुख़लिफ अंदाज से दिखाई जा रही है। पांचवीं सदी ईसवी में असहाबे कहफ का 'मौत' के बाद दुबारा गार से निकलना इसी किस्म का एक गैर मामूली वाक्या था। मौजूदा जमाने में ~~Meta Science~~ (Meta Science) की तहकीकत भी संभवतः इसी नौइयत की मिसाल हैं जिनसे जिंदगी बाद मौत का नजरिया हिस्सी मेयारे इस्तदलाल पर साबित होता है।

असहाबे कहफ दो सौ साल (या इससे ज्यादा मुद्दत के बाद) जब गार से निकले तो उनके शहर की दुनिया बिल्कुल बदल चुकी थी। गालिबन 250 ई० में वे अपने शहर एफेसस से निकल कर गार में गए थे। उस वक्त इस इलाके में बुतपरस्त हुक्मरां डेसियस की हुक्मत थी। इस दौरान में मसीही मुबल्लिगीन की कोशिशों से रूमी बादशाह किस्तिनतीन (272-337 ई०) ईसाई हो गया और इसके बाद सारे रूमी इलाके में ईसाई मजहब फैल गया। 447 ई० में जब असहाबे कहफ दुबारा अपने शहर में वापस आए तो उनके शहर में ईसाइयत का गलबा हो चुका था।

जब ये सातों नौजवान गार से बाहर आए और शाही खजाने में महफूज उनके नाम की तख्ती, साथ ही दूसरे कराइन से तस्दीक हो गई कि ये वही नौजवान हैं जो बुतपरस्ती के दौर में अपने मसीही अक्काइद के खातिर शहर छोड़कर चले गए थे तो वे फौरन लोगों की अक्कीदत का मर्कज बन गए। नया रूमी हुक्मरां थयोडोसीस खुद उनसे मिलने और उनकी बरकत लेने के लिए पैदल चलकर उनके पास आया। और जब इन नौजवानों का इतिकाल हुआ तो उनकी यादगार में उनके गार पर इबादतखाना तैयार किया गया।

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةٌ وَثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ بِعَدَّتِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۚ فَلَا تُمَارِ فِيهِمُ الْآمِرَاءَ ظَاهِرًا وَلَا يَسْتَفْتِ فِيهِم مِّنْهُمْ أَحَدًا ۝

عَلَّمَ

कुछ लोग कहेंगे कि वे तीन थे, और चौथा उनका कुत्ता था। और कुछ लोग कहेंगे कि वे पांच थे और छठा उनका कुत्ता था, ये लोग बेतहकीक बात कह रहे हैं, और कुछ लोग कहेंगे कि वे सात थे और आठवां उनका कुत्ता था। कहो कि मेरा रव बेहतर जानता है कि वे कितने थे। थोड़े ही लोग उन्हें जानते हैं। पस तुम

सरसरी बात से ज्यादा उनके मामले में बहस न करो और न उनके बारे में उनमें से किसी से पूछो। (22)

असहाबे कहफ के बारे में कुछ लोग गैर जरूरी बहसों में मुक्तिला थे। किसी ने कहा कि उनकी तादाद तीन थी और चौथा उनका कुत्ता था। किसी ने कहा कि वे पांच थे और छठा उनका कुत्ता था। किसी ने कहा कि वे सात थे और आठवां उनका कुत्ता था।

मगर इस किस्म की बहसों मिजाज की खराबी की अलामत हैं। जब दीनी रूह (भावना) जिंदा होतोसारा ज़ोर अस्ल हकीकत पर दिया जाता है। और जब कैम पर ज्वाल (पतन) आता है तो अस्ल रूह पसे पुष्ट चली जाती है और जाहिरी तफसीलात बहस व मुनाज़िरे का मौजूब बन जाती हैं। सच्चे खुदापरस्त को चाहिए कि वह इन बहसों में न पड़े बल्कि अगर कोई दूसरा शख्स इस किस्म के सवालात करे तो उसे इज्माली (संक्षिप्त) जवाब देकर गुजर जाए।

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَايٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ۚ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَاذْكُرْ رَبَّكَ إِذَا سَأَلْتَ
وَقُلْ عَسَى أَنْ يَمْحَذِينَ رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا ارْتِدًّا ۖ

और तुम किसी काम के बारे में यूँ न कहो कि मैं इसे कल कर दूंगा, मगर यह कि अल्लाह चाहे। और जब तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद करो। और कहो कि उम्मीद है कि मेरा रब मुझे भलाई की इससे ज्यादा करीब राह दिखा दे। (23-24)

क़ुऐश ने नज़्र बिन हारिस और उकबा बिन मुईत्त को मदीना भेजा कि वे यहूद से मिलकर मुहम्मद सल्ल० के बारे में पूछें। क्योंकि वे लोग नबियों का इल्म रखते हैं। दोनों मदीना आए और यहूदी आलिमों से कहा कि हमें हमारे आदमी के बारे में बताओ। उन्होंने कहा कि तुम लोग उनसे तीन चीजों के बारे में पूछो। अगर वह तुम्हें उनकी बाबत बता दें तो वह पैगम्बर हैं। वरना वह बातें बनाने वाले हैं। उनमें से एक सवाल असहाबे कहफ के नौजवानों के बारे में था। दूसरा जुलकरनैन के बारे में और तीसरा रूह के बारे में।

प्रेस के दौर से पहले आम लोगों को असहाबे कहफ की बाबत कुछ मालूम न था। यह किस्सा कुछ सुरयानी मख़्तूतात (पांडुलिपियों) में दर्ज था जिसकी ख़बर सिर्फ चन्द ख़ास उलमा को थी। आपके सामने यह सवाल आया तो आपने फरमाया कि तुमने जो बात पूछी है उसका जवाब मैं कल दूंगा। आपको उम्मीद थी कि कल तक जिब्रील आ जाएंगे और मैं उनसे मालूम करके जवाब दे दूंगा। मगर जिब्रील के आने में ताख़ीर हुई। यहां तक कि वह पंद्रह दिन के बाद सूरह कहफ लेकर आए।

‘वही’ में इस ताख़ीर से मक्का के मुखालिफीन को मौका मिल गया। उन्होंने इसे बुनियाद बनाकर लोगों को आपसे बदजन करना शुरू कर दिया। अल्लाह तआला ने फरमाया कि तुम एक मामूली बात को शोशा बनाकर जिस शख्स की सदाकत (सच्चाई) से लोगों को

मुशतबह (संदिग्ध) करना चाहते हो उसकी सदाकत पर इससे ज्यादा यकीनी और इससे ज्यादा बड़ी दलीलें जमा होने वाली हैं।

यह बात आज वाकया बन चुकी है। आज पैगम्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैगम्बराना सदाकत पर इतने दलाइल जमा हो चुके हैं कि कोई होशमंद आदमी इससे इंकार की जुरअत नहीं कर सकता। आपकी नुबुव्वत आज एक साबितशुदा नुबुव्वत है। न कि महज दावे की नुबुव्वत।

وَكَيْفَ يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ ثَلَاثَ يَأْتِي سِنِينَ وَارْدًا دُونَ سَعَا ۖ قُلِ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا لَيْسَ لَهُ
غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَبْصِرْ بِهِ وَأَسْمِعْ ۚ مَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ
وَلَا يُشِيرُكَ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ۖ

और वे लोग अपने ग़ार में तीन सौ साल रहे (कुछ लोग मुद्दत की शुमार में) 9 साल और बढ़ गए हैं, कहो कि अल्लाह उनके रहने की मुद्दत को ज्यादा जानता है। आसमानों और जमीन का ग़ैब उसके इल्म में है, क्या ख़ूब है वह देखने वाला और सुनने वाला। खुदा के सिवा उनका कोई मददगार नहीं और न अल्लाह किसी को अपने इख़्तियार में शरीक करता है। (25-26)

क़तादा और मुतरिफ बिन अब्दुल्लाह की तफसीर के मुताबिक यहां 300 साल या 309 साल लोगों के कौल की हिकायत है न कि खुदा की तरफ से ख़बर। अब्दुल्लाह बिन मसऊद की किरात से भी इसी की ताईद होती है। उस ज़माने के अहले किताब ग़ैर मुस्तनद किस्सों की बुनियाद पर यह समझते थे कि ग़ार में असहाबे कहफ के कियाम की मुद्दत शमसी कैलेंडर के लिहाज से 300 साल है और क़मरी कैलेंडर के लिहाज से 309 साल (तफसीर इब्ने कसीर)। क़ुरआन ने लोगों के इस ख़याल को नक़ल किया। मगर इसी के साथ यह कहकर उसे बेबुनियाद करार दे दिया कि ‘कुल्लिहल्लाहु अललमु बिमा लविसू’ (कहो कि अल्लाह ज्यादा जानता है कि वे ग़ार में कितना ठहरे)।

मौजूदा ज़माने के मुहक्किमीन ने दरयाफ्त किया कि यह मुद्दत शमसी कैलेंडर से लिहाज से 196 साल थी। यह तहकीक इस बात का सुबूत है कि क़ुरआन खुदा की किताब है जो तमाम अगली पिछली बातों से बाख़बर है। और इसी इल्म की बिना पर उसने मज्हूरा कैल को कुल्ल नहीं किया। क़ुरआन अगर कोई इंसानी कलाम होता तो यकीनन वह अपने ज़माने के मशहूर कैल को ले लेता जो बिलआख़िर बाद की तहकीक से ठक़रा जाता।

وَأَنذِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدْوَةِ وَالْعَنَى
مُلتَحِدًا ۖ

يُرِيدُونَ وَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَا تُطْعَمُونَ
أَعْقَلُنَا قَلْبًا عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَهُ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرُطًا ۝

القلم

और तुम्हारे रब की जो किताब तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है उसे सुनाओ, खुदा की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और उसके सिवा तुम कोई पनाह नहीं पा सकते। और अपने आपको उन लोगों के साथ जमाए रखो जो सुबह व शाम अपने रब को पुकारते हैं, वे उसकी रिजा (प्रसन्नता) के तालिब हैं। और तुम्हारी आंखें हयाते दुनिया की रैनक की खातिर उनसे हटने न पाएं। और तुम ऐसे शख्स का कहना न मानो जिसके कल्ब (हृदय) को हमने अपनी याद से माफिल कर दिया। और वह अपनी ख्वाहिश पर चलता है। और उसका मामला हद से गुजर गया है। (27-28)

कदीम मक्का में जिन लोगों ने पैगम्बर का साथ देकर बेआमेज (विशुद्ध) दीन को अपना दीन बनाया था उनके लिए यह इक्दाम कोई सादा चीज न थी। यह मफादात से वाबस्ता निजाम को छोड़कर एक ऐसे अकीदे का साथ देना था जिससे बजाहिर कोई मफाद वाबस्ता न था। पहला गिरोह नए दीन को इख्तियार करते ही वक्त के जमे हुए निजाम से कट गया था जबकि दूसरा गिरोह पूरी तरह वक्त के जमे हुए निजाम के जोर पर खड़ा हुआ था। पहले गिरोह के पास सिर्फ खुदा की बातें थीं जिसकी अहमियत आखिरत में जाहिर होगी जबकि दूसरा गिरोह उन चीजों का मालिक बना हुआ था जिसकी कीमत इसी दुनिया के बाजार में होती है।

यह जाहिरी फर्क अगर दाओ को मुतअस्सिर कर दे तो इसका नतीजा यह होगा कि दीन की बेआमेज दावत की अहमियत उसकी नजर में कम हो जाएगी। और आमेजिश (मिलावट) वाला दीन उसकी नजर में अहमियत इख्तियार कर लेगा जिसके अलमबरदार बनकर लोग दुनिया की रैनकें हासिल किए हुए हैं।

मगर यह बहुत बड़ी भूल है। क्योंकि यह उस अस्ल मिशन से हटना है जो खुदा को सबसे ज्यादा मल्बूब है। दाओ अगर ऐसा करे तो वह खुदा की मदद से महरूम हो जाएगा। वह खुदा की दुनिया में ऐसा हो जाएगा कि कोई दरख्त उसे साया न दे और कोई पानी उसकी प्यास न बुझाए। चुनांचे इब्ने जरीर ने इस आयत की तफसीर में लिखा है कि अल्लाह फरमाता है कि ऐ मुहम्मद, अगर तुमने लोगों को कुरआन न सुनाया तो खुदा के मुकाबले में तुम्हारे लिए कोई जाए पनाह न होगी।

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكُمْ فَدَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ إِنَّا أَعْتَدْنَا
لِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِنْ يَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاءٍ كَالْمُهْلِ
يَشْوِي الْوُجُوهُ بِئْسَ الشَّرَابُ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝

और कहो कि यह हक (सत्य) है तुम्हारे रब की तरफ से, पस जो शख्स चाहे इसे माने और जो शख्स चाहे न माने। हमने जालिमों के लिए ऐसी आग तैयार कर रखी है जिसकी कनातें उन्हें अपने घरे में ले लेंगी। और अगर वे पानी के लिए फरयाद करेंगे तो उनकी फरयादरसी ऐसे पानी से की जाएगी जो तेल की तलछट की तरह होगा। वह चेहरों को भून डालेगा। क्या बुरा पानी होगा और कैसा बुरा ठिकाना। (29)

जो हक खुदा की तरफ से आता है वह आखिरी हद तक सदाकत (सच्चाई) होता है। इसलिए लोगों की रियायत से उसमें किसी किस्म की तरमीम (संशोधन) नहीं की जा सकती। खुदाई हक में तरमीम करना गोया उस मेयार को तब्दील करना है जिस पर जांच कर हर शख्स की हैसियत मुतअय्यन (सुनिश्चित) की जाने वाली है।

जो लोग यह चाहते हैं कि खुदाई हक में ऐसी तरमीम की जाए कि इससे उनकी गलत रक्बिष का जवाज (औचित्य) निकल आए वे गुमराही पर सरकशी का इजाफा कर रहे हैं। ऐसे लोगों को अपने लिए सिर्फ सख्ततरीन सजा का इतिजार करना चाहिए।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۝ أُولَٰئِكَ لَهُمْ
جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ
وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ
نَعْمَ الْغَوَابُ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ۝

القلم

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो हम ऐसे लोगों का अज्र (प्रतिफल) जाया नहीं करेंगे जो अच्छी तरह काम करें। उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वहां उन्हें सोने के कंगन पहनाए जाएंगे। और वे बारीक और दबीज (गाढ़े) रेशम के सब्ज कपड़े पहनेंगे, तख्तों पर टेक लगाए हुए। कैसा अच्छा बदला है और कैसी अच्छी जगह। (30-31)

जो लोग घमंड, मस्तेहत (स्वाधी) और जाहिरपरस्ती से खाली होते हैं, उनका हाल यह होता है कि जब खुदाई सदाकत (सच्चाई) उनके सामने जाहिर होती है तो वे उसे फौरन पहचान लेते हैं। चाहे वह सदाकत उनके जैसे एक इंसान की जवान से क्यों न जाहिर हुई हो।

वे अपने आपको हक के आगे डाल देते हैं। वे अपनी जिंदगी को उसके मुताबिक ढालना शुरू कर देते हैं न कि खुद सदाकत को अपनी जिंदगी के मुताबिक ढालने लगे। जो लोग इस तरह हकपरस्ती का सबूत दें वे खुदा के महबूब बंदे हैं। उन्हें आखिरत में शाहाना इनामात से नवाज जाएगा।

وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا
بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ۖ كَلَّتِ الْأَجْنَتَيْنِ أَثْمَارُ الْكُلْهَامَا وَلَمْ تَضِلْمِ مِنْهُ
شَيْئًا ۖ وَفَجَّرْنَا خِلْفَهُمَا نَهْرًا ۖ وَكَانَ لَهُ ثَمَرٌ فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ
مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ۖ وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ ۖ قَالَ مَا أَظُنُّ أَن تَبِيدَ
هَذِهِ أَبَدًا ۖ وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً ۖ وَلَئِن رُّدِّدْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا
مِّنْهُمَا مُنْقَلَبًا ۖ

तुम उनके सामने एक मिसाल पेश करो। दो शख्स थे। उनमें से एक को हमने अंगूरों के दो बाग दिए। और उनके गिर्द खजूर के दरख्तों का इहाता बनाया और दोनों के दर्मियान खेती रख दी। दोनों बाग अपना पूरा फल लाए, उनमें कुछ कमी नहीं की। और दोनों बागों के बीच हमने नहर जारी कर दी और उसे खूब फल मिला तो उसने अपने साथी से बात करते हुए कहा कि मैं तुझसे माल में ज्यादा हूँ और तादाद में भी ज्यादा ताकतवर हूँ। वह अपने बाग में दाखिल हुआ और वह अपने आप पर जुम कर रहा था। उसने कहा कि मैं नहीं समझता कि यह कभी बर्बाद हो जाएगा। और मैं नहीं समझता कि क्रियामत कभी आएगी। और अगर मैं अपने रब की तरफ लौटा दिया गया तो जरूर इससे ज्यादा अच्छी जगह मुझे मिलेगी। (32-36)

एक बाग जो खूब हरा भरा हो, फिर कदरती आफत से अचानक खत्म हो जाए, वह उस शख्स की तमसील है जो दुनिया में दौलत और इज्जत पाकर घमंड में मुब्तिला हो जाता है। दुनिया में किसी इंसान को दौलत या इज्जत का जो हिस्सा मिलता है वह खुदा की तरफ से बतौर इम्तेहान होता है। मगर जालिम इंसान अक्सर उसे अपने लिए इनाम या अपनी कुव्वते बाजू का हासिल समझ लेता है। इसका नतीजा यह होता है कि उसके अंदर सरकशी के जज्बात पैदा हो जाते हैं। वह उन लोगों को हकीर (तुच्छ) समझने लगता है जिनके पास दौलत और इज्जत में कम हिस्सा मिला हो। उसकी नफिसयात ऐसी हो जाती है गोया उसकी दुनिया कभी खत्म होने वाली नहीं। और अगर यह दुनिया खत्म होकर दूसरी दुनिया बनी तो कोई वजह नहीं कि वहां भी उसका हाल अच्छा न हो जिस तरह यहां उसका हाल अच्छा है।

यह इम्तेहान की हालत पर इनाम की हालत को कयास (अनुमानित) करना है। हालांकि दोनों में कोई निस्वत नहीं।

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ الْكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ
ثُمَّ سَوَّاهُ رَجُلًا ۖ لَيْكَ الْهُدَىٰ وَالْهُدَىٰ رَبِّي وَلَا إِلَهَ إِلَّا رَبِّي ۖ وَكَوَلَدْتُكَ جَنَّةً

قُلْتُ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ إِن تَرَنِ أَنَا أَقَلُّ مِنْكَ مَالًا وَوَلَدًا ۖ فَعَسَىٰ
رَبِّي أَن يُؤْتِيَنِي خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحَ
صَعِيدًا زَلَقًا ۖ أَوْ يَصْبِرَ مَاؤُهَا غُورًا فَلَنْ لَا تَمُوتَهُ لَكَ طَلَبًا ۖ

उसके साथी ने बात करते हुए कहावया तुम उस जात से इंकार कर रहे हो जिसने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर पानी की एक बूंद से। फिर तुम्हें पूरा आदमी बना दिया। लेकिन मेरा रब तो वही अल्लाह है और मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता। और जब तुम अपने बाग में दाखिल हुए तो तुमने क्यों न कहा कि जो अल्लाह चाहता है वही होता है, अल्लाह के बगैर किसी में कोई कुव्वत (शक्ति) नहीं। अगर तुम देखते हो कि मैं माल और औलाद में तुमसे कम हूँ तो उम्मीद है कि मेरा रब मुझे तुम्हारे बाग से बेहतर बाग दे दे। और तुम्हारे बाग पर आसमान से कोई आफत भेज दे जिससे वह बाग साफ मैदान होकर रह जाए या उसका पानी शुष्क हो जाए, फिर तुम उसे किसी तरह न पा सको। (37-41)

खुदा किसी इंसान को दौलत दे तो उसे खुदा का शुक्रगुजार बंदा बनकर रहना चाहिए। लेकिन अगर जेहन सही न हो तो दौलतमंदी आदमी के लिए सरकशी का सबब बन जाती है। इसके बरअक्स अगर जेहन सही है तो मुफिलसी में भी आदमी खुदा को नहीं भूलता। जो कुछ मिला है उस पर कानेज (संतुष्ट) रहकर वह उम्मीद रखता है कि उसका खुदा उसे मजीद देगा।

आदमी अगर आंख खोलकर दुनिया में रहे तो कभी वह सरकशी में मुब्तिला न हो। इंसान एक हकीर वजूद की हैसियत से परवरिश पाता है। उसे हादसात पेश आते हैं। उसे बीमारी और बुढ़ापा लाहिक होता है। पानी और दूसरी चीजें जिनके जरिए वह इस दुनिया में अपना 'बाग' उगाता है उनमें से कोई चीज भी उसके जाती कब्जे में नहीं।

यह सब इसलिए है कि आदमी मुतवाजेज (विनम्र) बनकर दुनिया में रहे। मगर जालिम इंसान किसी चीज से सबक नहीं लेता। उसे उस वक्त तक होश नहीं आता जब तक वह हर चीज से महरूम होकर अपनी आंखों से देख न ले कि उसके पास इज्ज (निर्बलता) से सिवा और कुछ न था।

وَأُحِيطَ بِثَمَرِهِ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلَىٰ مَا أَنفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا
وَيَقُولُ لَيَأْتِيَنِي لَمْ أَشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ۖ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ فِتْنَةٌ يُّنَصِّرُونَكَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ۖ هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلَّهِ الْحَقِّ ۖ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَخَيْرٌ عُقْبًا ۖ

और उसके फल पर आफत आई तो जो कुछ उसने उस पर खर्च किया था उस पर वह हाथ मलता रह गया। और वह बाग अपनी टट्टियों पर गिरा हुआ पड़ा था। और वह

कहने लगा कि ऐ काश मैं अपने रब के साथ किसी को शरीक न ठहराता। और उसके पास कोई जल्था न था जो खुदा के सिवा उसकी मदद करता और न वह खुद बदला लेने वाला बन सका। यहां सारा इस्तिथार सिर्फ खुदाए बरहक का है। वह बेहतरीन अज्र (प्रतिफल) और बेहतरीन अंजाम वाला है। (42-44)

आदमी एक काम में अपनी पूंजी लगाता है और अपनी काबलियत सर्फ करता है। वह समझता है कि मेरी काबलियत और मेरी पूंजी कामयाब नतीजे के साथ मेरी तरफ लौटेंगी। मगर मुक़्तलिफ़ किसिम के हादसा आते हैं और उसकी उम्मीदों को तहस-नहस कर देते हैं। आदमी की कोई भी तदबीर या उसकी कोई भी काबलियत उसे बचाने वाली साबित नहीं होती।

खुदा मौजूदा दुनिया में बार-बार इस तरह के नमूने दिखाता है ताकि इंसान उससे सबक ले। ताकि वह खुदा के सिवा किसी दूसरी चीज को अहमियत देने की ग़लती न करे।

وَاَضْرَبْ لَهُمْ مَثَلِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاَخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيْحُ وَكَانَ اللّٰهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝۶۱
الْهَالِكِ وَالْبُؤْسُ زَيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَالْبَاقِيَاتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ اَمَلًا ۝۶۲

और उन्हें दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल सुनाओ। जैसे कि पानी जिसे हमने आसमान से उतारा। फिर उससे जमीन की नवातात (पौध) ख़ूब घनी हो गई। फिर वे रेज़ा-रेज़ा हो गई जिसे हवाएं उड़ती फिरती हैं। और अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है। माल और औलाद दुनियावी ज़िंदगी की रैनक हैं। और बाकी रहने वाली नेकियां तुम्हारे रब के नजदीक सवाब के एतबार से बेहतर हैं। (45-46)

दुनिया आखिरत की तमसील है। पानी पाकर जमीन जब सरसब्ज हो जाती है तो बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि वह हमेशा इसी तरह रहेगी, मगर इसके बाद मौसम बदलता है और सारा सब्जा सूख कर ख़त्म हो जाता है।

यही हाल दुनिया की रैनक का है। मौजूदा दुनिया की रैनकें आदमी को अपनी तरफ खींचती हैं। मगर ये तमाम रैनकें इतिहाई आरजी हैं। क़ियामत बहुत जल्द उन्हें इस तरह ख़त्म कर देगी कि ऐसा मालूम होगा जैसे उनका कोई वजूद ही न था।

दुनिया की रैनकें बाकी नहीं रहती मगर यहां एक और चीज है जो हमेशा बाकी रहने वाली है। और वे इंसान के नेक आमाल हैं। जिस तरह जमीन में बीज डालने से बाग़ उगता है उसी तरह अल्लाह की याद और अल्लाह की फरमांबरदारी से भी एक बाग़ उगता है। इस

बाग़ पर कभी उजाड़ नहीं आता। मगर दुनियावी बाग़ के बरअक्स यह दूसरा बाग़ आखिरत में उगता है और वहीं वह अपने उगाने वाले को मिलेगा।

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ بَارِزَةً ۗ وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ اَحَدًا ۗ وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًا ۚ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍۭ وَكُنْ اَنْتُمْ اِلٰهَ الْاَنْتُمْ اَلَنْ نَجْعَلَ لَكُمْ مَوْعِدًا ۝۶۲

और जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे। और तुम देखोगे जमीन को बिल्कुल खुली हुई। और हम उन सबको जमा करेंगे। फिर हम उनमें से किसी को न छोड़ेंगे। और सब लोग तेरे रब के सामने सफ़ बांधकर पेश किए जाएंगे। तुम हमारे पास आ गए जिस तरह हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, बल्कि तुमने यह गुमान किया कि हम तुम्हारे लिए कोई वादे का वक़्त मुक़र्र नहीं करेंगे। (47-48)

मौजूदा दुनिया में जो हालात जमा किए गए हैं वे महज इम्तेहान के लिए हैं। इम्तेहान की मुक़ररह मुद्दत पूरी होने के बाद ये हालात बाकी नहीं रहेंगे। इसके बाद जमीन की सारी ज़िंदगीबख़्श खुसूसियात ख़त्म कर दी जाएंगी। वह ऐसी ख़ाली जगह हो जाएगी जहां न किसी के लिए अकड़ने का सामान होगा और न फख़ करने का।

दुनिया में इम्तेहान की वजह से इंसान अपने आपको इस्तिथार की फज़ा में पा रहा है। मगर क़ियामत इस फज़ को यकसर ख़त्म कर देगी। उस दिन लोग बेयारोमददगार फज़ में अपने रब के पास जमा किए जाएंगे। तमाम लोग अपने मालिक के सामने उसका फ़ैसला सुनने के लिए खड़े होंगे। खुदा के पास हर शख्स की ज़िंदगी का इतिहाई मुकम्मल रिकार्ड होगा। उसके मुताबिक वह किसी को इनाम देगा और किसी के लिए सज़ा का हुक्म सुनाएगा।

मौजूदा दुनिया में इंसान की बयकवक़त दो हालतें हैं। एक एतबार से वह आजिज है और दूसरे एतबार से आजाद। आदमी अगर अपने इज्ज को देखे तो उसके अंदर खुदा की तरफ रुजूअ का जब्बा पैदा होगा। मगर इंसान सिर्फ अपनी आजादी की हालत को देखता है। नतीजा यह होता है कि वह ग़ाफ़िल और सरकश बनकर रह जाता है।

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرٰى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا مَا لَ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّا اَحْصٰهَا وَوَجَدَ وَاَمْعٰلُوْا حٰضِرًا ۝۶۳
وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ اَحَدًا ۝۶۴

और रजिस्टर रखा जाएगा तो तुम मुजरिमों को देखोगे कि उसमें जो कुछ है वे उससे डरते होंगे और कहेंगे कि हाय ख़राबी। कैसी है यह किताब कि इसने न कोई छोटी बात दर्ज करने से छोड़ी है और न कोई बड़ी बात। और जो कुछ उन्होंने किया है वह

सब सामने पाएंगे। और तेरा रब किसी के ऊपर जुल्म न करेगा। (49)

इंसान जो कुछ करता है वह सब खुदा के इतिजाम के तहत रिकार्ड हो रहा है। आदमी की नीयत, उसका कौल और उसका अमल सब कायनाती पर्दे पर नक़्श हो रहे हैं। ताहम यह इंतजाम आज दिखाई नहीं देता। क़ियामत में यह ओट हटा दी जाएगी। उस वक़्त इंसान यह देखकर दहशतजदा रह जाएगा कि दुनिया में जो कुछ वह यह समझकर कर रहा था कि कोई उसे जानने वाला नहीं वह इतने कामिल तौर पर यहां दर्ज है कि उसकी फेहरिस्त से न कोई छोटी चीज बची है और न कोई बड़ी चीज।

क़ियामत के दिन इंसान के साथ जो मामला किया जाएगा उसकी हर चीज इतनी साबितशुदा होगी कि आदमी जब अपने अमल का बदला पाएगा तो उसे यकीन होगा कि उसके साथ वही किया जा रहा है जिसका वह फ़िलवाकअ (वस्तुतः) मुस्तहिक था, न उससे कम न उससे ज्यादा।

وَاذْقُنَا لِلْمَلِكَةِ اسْبَدُ وَالْإِدْمَ فَنَجِدُ وَالْإِلَّاهِ بِلَيْسُ كَانَ مِنَ الْإِحْنِ فَفَسَقَ
عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ أَفَتَتَّخِذُونَ ذُرِّيَّتَهُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ بِئْسَ لِلظَّالِمِينَ
بَدَلًا ۝

और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज़्दा करो तो उन्होंने सज़्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) ने न किया, वह ज़िन्नों में से था। पस उसने अपने रब के हुक्म की नाफरमानी की। अब क्या तुम उसे और उसकी औलाद को मेरे सिवा अपना दोस्त बनाते हो हालांकि वे तुम्हारे दुश्मन हैं। यह जालिमों के लिए बहुत बुरा बदल है। (50)

रिवायात से मालूम होता है कि इब्लीस एक इबादतगुजार जिन्न था। वह बजाहिर आबिद व जाहिद बना हुआ था। मगर जब खुदा ने आदम के सामने झुकने का हुक्म दिया तो वह घमंड की बिना पर झुकने के लिए तैयार न हुआ। अब जो लोग घमंड के जब्बे के तहत हक के सामने झुकने से इंकार करें वे सब इब्लीस की औलाद हैं। चाहे वे बजाहिर इबादतगुजार ही क्यों न दिखाई देते हों।

खुदा के सामने झुकना दरअस्तल खुदा के मुक़ाबले में अपने इज्ज का इक्कार करना है। अगर कोई शख्स हकीकी मअनों में खुदा के सामने झुकने वाला हो तो जहां कहीं भी उसका सामना हक से होगा वह फ़ौरन झुक जाएगा। इसके बरअक्स जो शख्स जाहिरी तौर पर सज्दागुजार हो मगर अपने अंदर घमंड की नफिसयात लिए हुए हो वह ऐसे मौके पर बाआसानी सज़्दा कर लेगा जहां उसकी अना (अंहकार) को ठेस न लगती हो। मगर जहां अना को झुकाने की कीमत पर अपने आपको झुकाना पड़े वहां अचानक वह सरकश बन जाएगा और झुकने से इंकार कर देगा।

जब हक की पुकार उठे और कुछ लोग इब्लीस और उसकी औलाद के असर में आकर उसे कुबूल न करें तो गोया वे इब्लीस और उसकी औलाद को खुदा का बदल बना रहे हैं। जहां उन्हें खुदा के डर से हक के आगे झुक जाना चाहिए था वहां वे झूठे माबूदों के डर से उसके आगे झुकने से इंकार कर रहे हैं। ऐसे लोग बदतरनीन जालिम हैं। बहुत जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा कि खुदा को छोड़कर उन्होंने जिनके ऊपर भरोसा किया था वे उनके कुछ काम आने वाले नहीं।

مَا أَشْهَدُ لَهُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ ۖ وَمَا كُنْتُمْ مُتَعَدِّينَ
الْمُضِلِّينَ عَصُدًا ۝

मैंने उन्हें न आसमानों और जमीन पैदा करने के वक़्त बुलाया। और न खुद उनके पैदा करने के वक़्त बुलाया। और मैं ऐसा नहीं कि गुमराह करने वालों को अपना मददगार बनाऊं। (51)

लोग अपने जिन बड़ों को दुनिया की ज़िंदगी में क़ाबिले भरोसा समझ लेते हैं। वे इस क़द कमजोर हैं कि न कायनात के वजूद में उनका कोई दखल है और न खुद अपने वजूद में। साथ ही यह कि ये लोग हक की दावत के मुक़ाबले में मुजिल (गुमराह करने वाले) का किरदार अदा करके साबित कर रहे हैं कि वे क़तई क़ाबिले भरोसा नहीं। एक ऐसी दुनिया जहां हर तरफ हक की कारफरमाई हो, वहां ऐसी शख्सियतें किस तरह दाखिल हो सकती हैं जिनका वाहिद (एक मात्र) सरमाया लोगों को हक से दूर करना है।

وَيَوْمَ يَقُولُ نَادُوا شُرَكَائِيَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا
بَيْنَهُمْ مَوْبِقًا ۝ وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاعِقُوهَا وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا
مَصْرَفًا ۝

और जिस दिन खुदा कहेगा कि जिन्हें तुम मेरा शरीक समझते थे उन्हें पुकारो। पस वे उन्हें पुकारेंगे मगर वे उन्हें कोई जवाब न देंगे। और हम उनके दर्मियान (अदावत की) आड़ कर देंगे। और मुजरिम लोग आग को देखेंगे और समझ लेंगे कि वे उसमें गिरने वाले हैं और वे उससे बचने की कोई राह न पाएंगे। (52-53)

दुनिया में जिन शख्सियतों के बल पर आदमी हक का इंकार करता है, क़ियामत में वे उसके कुछ काम न आएंगी। आज वे एक दूसरे के साथी हैं मगर जब हकाइक खुलेंगे तो दोनों एक दूसरे से नफरत करने लगेंगे। ऐसा मालूम होगा गोया दोनों के दर्मियान हलाकतखेज (विनाशक) रुकावट कायम हो गई है। मौजूदा दुनिया में वे अपने आपको मामूम व महफूज समझते हैं। मगर क़ियामत में उनका अंजाम सिर्फ यह होने वाला है कि वे अपने आपको

जहन्नम के दरवाजे पर खड़ा हुआ पाएँ और उससे भागने की कोई तदबीर न कर सकें।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَاكًا ۖ وَمَا مَنَعَهُ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ۝

और हमने इस कुरआन में लोगों की हिदायत के लिए हर किस्म की मिसाल बयान की है और इंसान सबसे ज्यादा झगड़ालू है। और लोगों को बाद इसके कि उन्हें हिदायत पहुंच चुकी, ईमान लाने से और अपने रब से बख्शिश मांगने से नहीं रोका मगर उस चीज ने कि अगलों का मामला उनके लिए भी जाहिर हो जाए, या अजाब उनके सामने आ खड़ा हो। (54-55)

मौजूदा दुनिया में इम्तेहान की आजादी है। इस बिना पर यहां आदमी हक का एतराफ न करने के लिए कोई न कोई उझ पा लेता है। हर बात को रद्द करने के लिए उसे कुछ न कुछ अल्फाज मिल जाते हैं। कभी ऐसा होता है कि वह एक खुली हुई दलील को बेमअना बहसों से काटने की कोशिश करता है। कभी वह ऐसा करता है कि जो दलील दी गई है उसे नजरअंदाज करके एक और चीज का तक्का करता है जो किसी वजह से अभी पेश नहीं की गई।

इस आखिरी सूरत की एक मिसाल यह है कि पैगम्बर ने अपने मुखातबीन के सामने वाजेह दलाइल के साथ अपना पैगाम पेश किया तो उन्होंने उस पर ध्यान नहीं दिया बल्कि उससे कतअ नजर करते हुए यह कहा कि इंकार की सूरत में तुम हमें जिस अजाब की खबर दे रहे हो वह कहां है, उसे लाकर हमें दिखाओ।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوا آلِيئِي وَمَا نَذَرُوا هُزُوا ۝ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَلِسَىٰ مَا قَدْ مَتَّ يَدُهُ إِنَّا جَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمُ أَكِنَّةً ۖ أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ فَلَنْ يَهْتَدُوا إِلَّا إِلَّا ۝

और रसूलों को हम सिर्फ खुशखबरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजते हैं, और मुंकिर लोग नाहक की बातें लेकर झूठा झगड़ा करते हैं ताकि इसके जरिए से हक को नीचा कर दें और उन्होंने मेरी निशानियों को और जो डर सुनाए गए उन्हें मजाक बना दिया। उससे बड़ा जलिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के जरिए याददहानी की जाए तो वह उससे मुंह फेर ले और अपने हाथों के अमल को

भूल जाए। हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वे उसे न समझें और उनके कानों में डाट है। और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ बुलाओ तो वे कभी राह पर आने वाले नहीं हैं। (56-57)

खुदा की बात सबसे ज्यादा सच्ची बात है। तमाम बेहतरिनी दलाइल उसकी मुवाफिक्रत करते हैं। चुनांचे जो लोग उसे मानना नहीं चाहते वे कोई हकीकी दलील नहीं पाते जिसके जरिए वे उसे रद्द कर सकें। उनके पास हमेशा सिर्फ बेअसल बातें होती हैं जिनके जरिए वे उसे जेर करने की नाकाम कोशिशें करते हैं। वे ठोस दलाइल का मुकाबला झूठे एतराजात से करते हैं। वे संजीदा काम को मजाक में गुम कर देना चाहते हैं।

यह सब वे इसलिए करते हैं कि दाजी (आह्वानकती) को अवाम की नजर में बेएतबार साबित कर सकें। मगर वे भूल जाते हैं कि ऐसा करके वे खुद अपने आपको खुदा की नजर में बेएतबार साबित कर रहे हैं।

आदमी को सोचने और समझने की सलाहियत इसलिए दी गई है कि वह हक और नाहक में तमीज कर सके। मगर जब वह अपनी सूझ-बूझ को गलत रुख पर इस्तेमाल करता है तो उसका जेहन उसी गलत रुख पर चल पड़ता है जिस रुख पर उसने उसे चलाया है। इसके बाद उसके लिए नामुमकिन हो जाता है कि किसी बात को उसके सही रुख से देखे। और उसकी वाकई अहमियत को समझ सके। वह आंख रखते हुए भी बेआंख हो जाता है। वह कान रखते हुए बेकान हो जाता है।

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ ۖ لَوْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبُوا الْعَجَلُ لَهُمُ الْعَذَابُ بَلْ لَهُمْ مَوْعِدٌ لَّنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْيِدًا ۖ وَتِلْكَ الْقُرَىٰ أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَوْعِدًا ۖ

ع

और तुम्हारा रब बख्शने वाला, रहमत वाला है। अगर वह उनके किए पर उन्हें पकड़े तो फौरन उन पर अजाब भेज दे, मगर उनके लिए एक मुक़रर वक़्त है और वे उसके मुकाबले में कोई पनाह की जगह न पाएंगे। और ये बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया जबकि वे जलिम हो गए। और हमने उनकी हलाकत का एक वक़्त मुक़रर किया था। (58-59)

आदमी हक के मुक़ाबले में सरकशी करता है तो उसे फौरन उसकी सजा नहीं मिलती। इससे ग़लतफ़हमी में पड़कर वह अपने आपको आजाद समझ लेता है और मजीद सरकशी करने लगता है। हालांकि यह न पकड़ा जाना, इम्तेहान की मोहलत की बिना पर है न कि आजादी और खुदमुख्तारी की बिना पर।

आदमी सबक लेना चाहे तो माजी (अतीत) का अंजाम उसके सामने मौजूद है जिससे

वह हाल के लिए सबक ले सकता है। सतहे जमीन पर बार-बार मुझलिफ कैंमें और तहजीबें उभरी हैं और तबाह कर दी गई हैं। जब पिछली नस्लों के साथ ऐसा हुआ कि उन्हें उनकी सरकशी की सजा मिली तो अगली नस्लों के साथ यही वाक्या क्यों नहीं होगा।

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَسَّةِ الْكَافِرِ حَتَّىٰ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضَىٰ حُبًّا ۖ فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ۖ فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِقَسَّةِ اتَّبَعْنَا آلَآءَنَا لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ۖ

और जब मूसा ने अपने शागिर्द से कहा कि मैं चलता रहूंगा यहां तक कि या तो दो दरियाओं के मिलने की जगह पर पहुंच जाऊं या इसी तरह वर्षों तक चलता रहूं। पस जब वे दरियाओं के मिलने की जगह पहुंचे तो वे अपनी मछली को भूल गए। और मछली ने दरिया में अपनी राह ली। फिर जब वे आगे बढ़े तो मूसा ने अपने शागिर्द से कहा कि हमारा खाना लाओ, हमारे इस सफर से हमें बड़ी थकान हो गई। (60-62)

खुदा फरिश्तों के जरिए मुसलसल दुनिया का इतिजाम कर रहा है। इंसान चूक इस इंतजाम को नहीं देखता, वह इसके भेदों को पूरी तरह समझ नहीं पाता। वह कमतर वाकफियत की बिना पर तरह-तरह के शुब्हत में मुब्तिला हो जाता है।

इसके इलाज के लिए खुदा ने बिलवास्ता मुशाहिदे (परोक्ष अवलोकन) का इतिजाम किया। उसने अपने चुने हुए बंदों को छुपी हुई दुनिया का मुशाहिदा कराया ताकि वे उसकी हिक्मतों को अपनी आंखों से देखें और दूसरे इंसानों को उससे बाखबर कर दें। यहां हजरत मूसा के जिस वाक्ये का जिक्र है वह इसी किस्म का एक अनुम वाक्या है जिसके जरिए उन्हें खुदा के छुपे हुए निजाम की एक झलक दिखाई गई।

हजरत मूसा ने यह सफर गालिबन मिस्र व सूडान के दरमियान अपने एक नौजवान शागिर्द (यूशअ बिन नून) के साथ किया था। खुदा ने बतौर अलामत उन्हें बताया था कि तुम चलते रहो। यहां तक कि जब तुम उस जगह पहुंचो जहां दो दरिया बाहम मिलते हों तो वहां तुम्हें हमारा एक बंदा (गालिबन फरिश्ता वाशकल इंसान) मिलेगा। तुम उसके साथ हो लेना।

قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنسِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ وَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ۖ قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغُ ۖ فَارْتَدَّا عَلَىٰ آثَارِهِمَا قَصَصًا ۖ فَوَجَدَا عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِمَّا لَدُنَّا عِلْمًا ۖ

शागिर्द ने कहा, क्या आपने देखा, जब हम उस पत्थर के पास ठहरे थे तो मैं मछली

को भूल गया। और मुझे शैतान ने भुला दिया कि मैं उसका जिक्र करता। और मछली अजीब तरीके से निकल कर दरिया में चली गई। मूसा ने कहा, उसी मौके की तो हमें तलाश थी। पस दोनों अपने कदमों के निशान देखते हुए वापस लौटे। तो उन्होंने वहां हमारे बंदों में से एक बंदे को पाया जिसे हमने अपने पास से रहमत दी थी और जिसे अपने पास से एक इल्म सिखाया था। (63-65)

हजरत मूसा को मजीद अलामत यह बताई गई थी कि तुम जब मलूबा मकाम पर पहुंचोगे तो हमारे नाशते की मछली अजीब तरीके से पानी में चली जाएगी। यह वाक्या एक मकाम पर हुआ। मगर मछली शागिर्द के साथ थी और शागिर्द किसी वजह से हजरत मूसा को बता न सका कि ऐसा वाक्या हुआ है। कुछ आगे बढ़ने के बाद जब हजरत मूसा को मालूम हुआ तो वह फौरन वापस हुए और मचूरा मकाम पर उस बंदे (खिज़्र) को पा लिया जिससे मिलने के लिए उन्होंने यह लम्बा सफर किया था।

قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ أَبْعَدُكَ عَلَىٰ أَنْ تُعَلِّمَنِي مِمَّا عَلَّمْتَ رُشْدًا ۖ قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۖ وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ۖ قَالَ سَتَجِدُنِي إِنِ شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ۖ قَالَ فَإِنِ ابْتَعَثْنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۖ

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ

मूसा ने उससे कहा, क्या मैं आपके साथ रह सकता हूं ताकि आप मुझे उस इल्म में से सिखा दें जो आपको सिखाया गया है। उसने कहा कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकते और तुम उस चीज पर कैसे सब्र कर सकते हो जो तुम्हारी वाकफियत (जानकारी) के दायरे से बाहर है। मूसा ने कहा, ईशाअल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे और मैं किसी बात में आपकी नाफरमानी नहीं करूंगा। उसने कहा कि अगर तुम मेरे साथ चलते हो तो मुझसे कोई बात न पूछना जब तक कि मैं खुद तुमसे उसका जिक्र न करूं। (66-70)

उस बंदे (खिज़्र) को खुदा ने खुसूसी इल्म और ताकत अता की थी ताकि उसके मुताबिक वह दुनिया के मामलात में गैर मामूली तसरूफ कर सकें। इस इल्म के तहत वह अक्सर औमत आम जन्ते के खिलाफ अमल करते थे। इसलिए हजरत मूसा की फरमाइश पर उन्होंने कहा कि तुम उसकी बर्दाशत नहीं ला सकते।

فَانطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا أَمْرًا ۖ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۖ قَالَ

لَا تُؤْخِذُنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا ۖ فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا
عُلَمَاءَ قَوْمِهِ قَالُوا اقْتُلْتُمْ نَفْسًا رَّبِّيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ لَّقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا كَبِيرًا ۝

फिर दोनों चले। यहां तक कि जब वे कश्ती में सवार हुए तो उस शख्स ने कश्ती में छेद कर दिया। मूसा ने कहा, क्या आपने इस कश्ती में इसलिए छेद किया है कि कश्ती वालों को शर्क कर दें। यह तो आपने बड़ी सख्त चीज कर डाली। उसने कहा, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे। मूसा ने कहा, मेरी भूल पर मुझे न पकड़िए और मेरे मामले में सख्ती से काम न लीजिए। फिर वे दोनों चले यहां तक कि वे एक लड़के से मिले तो उस शख्स ने उसे मार डाला। मूसा ने कहा, क्या आपने एक मासूम जान को मार डाला हालांकि उसने किसी का खून नहीं किया था। यह तो आपने एक नामाकूल बात की है। (71-74)

अच्छी कश्ती को ऐबदार बनाना और छोटे बच्चे को हलाक करना बजाहिर ऐसे काम हैं जो सही नहीं। मगर जैसा कि आगे की आयात बताती हैं, इसमें निहायत गहरी मस्लेहत छुपी हुई थी। ये बजाहिर ग़लत काम हकीकत के एतबार से बिल्कुल सही और मुस्लिम काम थे।

इसमें इस मसले का भी एक जवाब है जिसे आम तौर पर खराबी का मसला (Problem of evil) कहा जाता है। इसानी दुनिया की बहुत सी चीजें जिन्हें देखकर यह समझ लिया जाता है कि दुनिया के निजाम में खराबियां हैं, वे गहरी मस्लेहत पर मबनी होती हैं। मौजूदा ज़िंदगी में यकीनन इस मस्लेहत पर पर्दा पड़ा हुआ है। मगर आखिरत में यह पर्दा बाकी न रहेगा। उस वक्त आदमी जान लेगा कि जो कुछ हुआ वही होना भी चाहिए था।

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ۝ قَالَ إِنْ سَأَلْتَهُ عَنِ شَيْءٍ بَعْدَ هَٰذَا فَلَا تُصِحِّبْنِي ۖ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَدُنِّي عُذْرًا ۖ فَانْطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا آتَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلُهَا فَأَبَوْا أَنْ يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَنْ يَنْقَضَ فَأَقَامَهُ ۚ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَمَشَّتَ عَلَيْهِ أَجْرًا ۝ قَالَ هَٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝

उस शख्स ने कहा कि क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे। मूसा ने कहा कि इसके बाद अगर मैं आपसे किसी चीज के मुतअल्लिक

पूछूं तो आप मुझे साथ न रखें। आप मेरी तरफ से उज़ की हद को पहुंच गए। फिर दोनों चले। यहां तक कि जब वे एक बस्ती वालों के पास पहुंचे तो वहां वालों से खाने को मांगा। उन्होंने उनकी मेजबानी से इंकार कर दिया। फिर उन्हें वहां एक दीवार मिली जो गिरा चाहती थी तो उसने उसे सीधा कर दिया। मूसा ने कहा अगर आप चाहते तो इस पर कुछ उजरत (मेहनताना) ले लेते। उसने कहा कि अब यह मेरे और तुम्हारे दर्मियान जुदाई है। मैं तुम्हें उन चीजों की हकीकत बताऊंगा जिन पर तुम सब्र न कर सके। (75-78)

हजरत मूसा और हजरत ख़िज़्र जैसे मुकर्रबीने खुदा एक बस्ती में पहुंचते हैं और चाहते हैं कि बस्ती वाले महमान समझकर उन्हें खाना खिलाएं। मगर बस्ती वाले खाना खिलाने से इंकार कर देते हैं। इससे मालूम हुआ कि किसी का सादिक और मुकर्रब होना काफ़ी नहीं है कि वह देखने वालों को भी सादिक और मुकर्रब नजर आए। अगर बस्ती वालों ने उन्हें पहचाना होता तो जरूर वे उन्हें अपना खुसूसी महमान बनाते और उनसे बरकत हासिल करते, मगर उनके मामूली जाहिरी हुलिये की बिना पर उन्होंने उन्हें नजरअंदाज कर दिया। वे उनकी अंदरूनी हकीकत के एतबार से उन्हें न देख सके।

इस नाखुशगवार सुलूक के बावजूद हजरत ख़िज़्र ने बस्ती वालों की एक गिरती हुई दीवार सीधी कर दी। खुदा के सच्चे बंदों का दूसरों से सुलूक जवाबी सुलूक नहीं होता। बल्कि हर हाल में वही होता है जो अजरुए हक उनके लिए दुरुस्त है।

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدْتُ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ
وَرَاءَهُمْ مَلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا ۝

कश्ती का मामला यह है कि वह चन्द मिसकीनों की थी जो दरिया में मेहनत करते थे। तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं, और उनके आगे एक बादशाह था जो हर कश्ती को जबरदस्ती छीन कर ले लेता था। (79)

हजरत ख़िज़्र ने कश्ती को बेकार नहीं किया था बल्कि वक्ती तौर पर उसे ऐबदार बनाया था। इसकी मस्लेहत यह थी कि कश्ती जिस तरफ जा रही थी उस तरफ आगे एक बादशाह था जो ग़ालिबन अपनी किसी जंगी मुहिम के लिए अच्छी कश्तियों को जबरदस्ती अपने कब्जे में ले रहा था। चुनांचे उन्होंने उसे ऐसा बना दिया कि बादशाह के कारिंदे उसे देखें तो उसे नाकाबिले तवज्जोह समझकर छोड़ दें।

इससे मालूम हुआ कि दुनिया में किसी के साथ कोई हादसा पेश आए तो उसे चाहिए कि वह बददिल न हो। वह यह सोचकर उस पर राजी हो जाए कि खुदा ने जो कुछ किया है उसमें उसके लिए कोई फ़ायदा छुपा होगा, अगरचे वह अभी उससे पूरी तरह बाख़बर नहीं।

وَالْعَالَمُ فَكَانَ أَبُوهُ مُؤْمِنِينَ فَخَشِينَا أَنْ يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۖ فَآرَدْنَا
أَنْ يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا ۝

और लड़के का मामला यह है कि उसके मां-बाप ईमानदार थे। हमें अंदेशा हुआ कि वह बड़ा होकर अपनी सरकशी और नाफरमानी से उन्हें तंग करेगा। पस हमने चाहा कि उनका रब उन्हें उसकी जगह ऐसी औलाद दे जो पाकीजगी में उससे बेहतर हो और शपक्त्त करने वाली हो। (80-81)

लड़के की यह मिसाल बताती है कि खुदा अपने बंदों की मदद कहां कहां करता है। यहां तक कि वह ऐसे मामले में भी उनकी मदद करता है जिसका उन्हें इल्म तक नहीं होता कि वह उसके लिए अपने रब से दरख्वास्त कर सकें। इंसान को चाहिए कि वह हमेशा सब्र व शुक्र का रवैया इस्तियार करे। वह हर हाल में खुदा से खैर की उम्मीद रखे। खुदा कुल्ली (पूर्ण) इल्म रखता है, इसलिए वह किसी बंदे की भलाई को उससे ज्यादा जानता है जितना इंसान जुर्जई (आंशिक) इल्म की बिना पर नहीं जान सकता।

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزُ لَهُمَا وَكَانَ
أَبُوهُمَا صَالِحًا فَآرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا رَحْمَةً
ۖ مِنْ رَبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۚ ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ۝

और दीवार का मामला यह है कि वह शहर के दो यतीम लड़कों की थी। और उस दीवार के नीचे उनका एक खजाना दफन था और उनका बाप एक नेक आदमी था पस तुम्हारे रब ने चाहा कि वे दोनों अपनी जवानी की उम्र को पहुंचें और अपना खजाना निकालें। यह तुम्हारे रब की रहमत से हुआ। और मैंने उसे अपनी राय से नहीं किया। यह है हकीकत उन बातों की जिन पर तुम सब्र न कर सके। (82)

इन मिसालों से अंदाजा होता है कि खुदा हर वक्त मौजूदा दुनिया की निगरानी कर रहा है। उसने अगरचे इस्तेहान की मस्लेहत की बिना पर इस दुनिया का निजाम असबाब व इलाल के तहत कायम कर रखा है। मगर इसी के साथ वह इस निजाम में बार-बार मुदाखलत (हस्तक्षेप) करता रहता है। खुदा कहीं तामीर (निर्माण) का तरीका इस्तियार करता है और कहीं बजाहिर तख़ीब (बिगाड़) का। मगर वसीअतर मस्लेहत के एतबार से सब उसकी रहमत होती है। और इस बात का यकीन हासिल करना होता है कि असबाब की आजादाना गर्दिश में तख़ीक के अस्ल मकसद फ़ैत (विनष्ट) न होने पाएं।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنْ ذِي الْقُرْنَيْنِ ۖ قُلْ سَأَتْلُوهُمَا عَلَيْكُمْ مِنْهُ ذِكْرًا ۚ إِنَّمَا مَكَّنَّا لَهُ فِي
الْأَرْضِ وَاتَّبَعْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ۝

और वे तुमसे जुलकरनैन का हाल पूछते हैं। कहो कि मैं उसका कुछ हाल तुम्हारे सामने बयान करूंगा। हमने उसे जमीन में इक्तेदार (शासन) दिया था। और हमने उसे हर चीज का सामान दिया था। (83-84)

जुलकरनैन के लफ्ज़ी मअना हैं दो सींगों वाला। यानी वह बादशाह जिसकी फुतूहात (विजयों) का सिलसिला दुनिया के दोनों किनारों (मशिरक व मरिब) तक पहुंचा हुआ था। यहां जुलकरनैन से मुराद ग़ालिबन कदीम ईरानी बादशाह ख़ुसरू (Cyrus) है। उसका ज़माना पांचवीं सदी ई०पू० है। उसने कदीम आबाद दुनिया का बड़ा हिस्सा फतह कर डाला था। और बिलआखिर एक जंग में मारा गया। वह निहायत मुसिफ और आदिल बादशाह था।

فَاتَّبَعَهُ سَبَبًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ
حَمِئَةٍ ۖ وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلْنَا يَذَّكَّرُ أَنْ نَنْبَغَ أَنْ نُعَذِّبَ وَأَمَّا أَنْ
تَخَذَ فِيهِمْ حُسْنًا ۖ قَالَ أَكُلَا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ
فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا ثَكْرًا ۖ وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءٌ الْحُسْنَىٰ
وَسَنُقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ۝

फिर जुलकरनैन एक राह के पीछे चला। यहां तक कि वह सूरज के ग़रूब होने के मक़म तक पहुंच गया। उसने सूरज को देखा कि वह एक काले पानी में डूब रहा है और वहां उसे एक कैम मिली। हमने कहा कि ऐ जुलकरनैन तुम चाहो तो उन्हें सजा दो और चाहो तो उनके साथ अच्छा सुलूक करो। उसने कहा कि जो उनमें से जुल्म करेगा हम उसे सजा देंगे। फिर वह अपने रब के पास पहुंचाया जाएगा, फिर वह उसे सज़ा देगा। और जो शख्स ईमान लाएगा और नेक अमल करेगा उसके लिए अच्छी जजा है और हम भी उसके साथ आसान मामला करेंगे। (85-88)

जुलकरनैन ग़ालिबन ईरान के मरिब में फुतूहात करता हुआ एशिया माइनर तक पहुंच गया जहां एजियन समुद्र (Aegean Sea) का 'स्याह पानी' खुशकी की हदबंदी कर रहा है। यहां एक शख्स साहिल (समुद्र-तट) के किनारे खड़ा होकर समुद्र की तरफ देखे तो शाम के वक्त उसे नजर आया कि गोया कि सूरज का गोला पानी में दाखिल होकर उसके अंदर डूब रहा है। यह मुहावरे की जवान में उस हद का बयान है जहां तक जुलकरनैन पहुंचा था।

जुलकरनैन समुद्र के इस किनारे तक बतौर सव्याह (पर्यटक) नहीं आया था बल्कि बतौर फतेह (विजेता) आया था। यहां उस वक्त जो कौम आबाद थी उसके ऊपर उसे पूरा इख्तियार मिल गया। उसके ऊपर उसकी हुकूमत कायम हो गई। बहैसियत हुक्मरां उसे कामिल इख्तियार हासिल था कि उसके साथ जो चाहे करे। ताहम जुलकरनैन एक आदिल (न्यायप्रिय) बादशाह था। उसने किसी पर कोई जुल्म नहीं किया। उसने आम एलान कर दिया कि हम सिर्फ उस शास्त्र के साथ सख्ती करेंगे जो बुराई करता हुआ पाया जाए। जो लोग अमन व नज्म (अनुशासन) के साथ रहेंगे उनके ऊपर कोई ज्यादाती नहीं की जाएगी।

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ يَجْعَلْ لَهُم مِّن دُونِهَا سَبِيلًا ۚ كَذٰلِكَ وُضِعَ لِحٰطِنَا لِبٰلَدٍ يَّخْبُرُ ۝۱۱

फिर वह एक राह पर चला। यहां तक कि जब वह सूरज निकलने की जगह पहुंचा तो उसने सूरज को एक ऐसी कौम पर उगते हुए पाया जिनके लिए हमने सूरज के ऊपर कोई आड़ नहीं रखी थी। यह इसी तरह है। और हम जुलकरनैन के अहवाल (हालात) से बाख़बर हैं। (89-91)

जुलकरनैन की दूसरी मुहिम ईरान के मशिक (पूर) की तरफ थी। वह फूहृत करता हुआ आगे बढ़ा। यहां तक कि वह ऐसे मकाम पर पहुंच गया जहां बिल्कुल गैर मुतमदिन (असभ्य) लोग बसते थे 'उनके और आफताब (सूरज) के दर्मियान आड़ नहीं थी' का मतलब गालिबन यह है कि वे खानाबदोश थे और तामीरशुदा मकानात में रहने के बजाए खुले मैदानों में ज़िरी गुज़रते थे।

ثُمَّ اتَّبَعَ سَبَبًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا قَوْمًا ۚ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ۖ قَالُوا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ ۖ إِن يَأْجُوبُ وَمَا جُوبَ ۚ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۝۱۲

फिर वह एक राह पर चला। यहां तक कि जब वह दो पहाड़ों के दर्मियान पहुंचा तो उनके पास उसने एक कौम को पाया जो कोई बात समझ नहीं पाती थी। उन्होंने कहा कि ऐ जुलकरनैन, याज़ूज और माज़ूज हमारे मुक्क में फ़साद फैलाते हैं तो क्या हम तुम्हें कोई महसूल इसके लिए मुकर्र कर दें कि तुम हमारे और उनके दर्मियान कोई रोक बना दो। (92-94)

जुलकरनैन की तीसरी मुहिम गालिबन ईरान के शिमाल मशिक (उत्तर-पूर) की जानिब थी। वह ऐसे इलाके में पहुंचा जहां बिल्कुल वहशी क्रिस्म के लोग आबाद थे। दूसरी कौमों से उनका मेल जोल नहीं हो सका था चुनांचे वह कोई और जवान मुश्किल ही से समझ पाते थे।

यह गालिबन बहरे केसपियन और बहरे असवद (काला सागर) के दर्मियान के पहाड़ थे। यहां वहशी कबीले दूसरी तरफ से आकर ग़ारतगरी करते और फिर पहाड़ी दर्रे के रास्ते से भाग जाते। जुलकरनैन ने यहां दोनों पहाड़ों के दर्मियान आहनी (लौह) दीवार खड़ी कर दी।

قَالَ مَا مَكْرِيَٰ فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ ۖ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۚ أَتُونِي زَبَرَ الْحَدِيدِ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوا حَتَّىٰ إِذَا جَعَلْنَا نَارًا ۖ قَالَ أَتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ۚ فَمِآ اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ ۚ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا ۝۱۳ قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِنِّي ۖ فَادْجِئْهُ وَعَدْرِي جَعَلَهُ دَكَّآ ۖ وَكَانَ وَعْدِي حَقًّا ۝۱۴

जुलकरनैन ने जवाब दिया कि जो कुछ मेरे रब ने मुझे दिया है वह बहुत है। तुम महनत से मेरी मदद करो। मैं तुम्हारे और उनके दर्मियान एक दीवार बना दूंगा। तुम लोहे के तख्ते लाकर मुझे दो। यहां तक कि जब उसने दोनों के दर्मियानी ख़ला (रिक्त-स्थान) को भर दिया तो लोगों से कहा कि आग दहकाओ यहां तक कि जब उसे आग कर दिया तो कहा कि लाओ अब मैं उस पर पिघला हुआ तांबा डाल दूँ। पस याज़ूज व माज़ूज न उस पर चढ़ सकते थे और न उसमें सुराख कर सकते थे। जुलकरनैन ने कहा कि यह मेरे रब की रहमत है। फिर जब मेरे रब का वादा आया तो वह उसे ढाकर बराबर कर देगा और मेरे रब का वादा सच्चा है। (95-98)

मैदूरा रस के इलाके में युक्कान पहाड़

(Caucasus Mountains) वाकैअ हैं। उनका

सिलसिला केसपियन समुद्र और ब्लैक समुद्र के दर्मियान फैला हुआ है। ये ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं जो यूरोप और एशिया के दर्मियान कुदरती दीवार का काम देते हैं। इस पहाड़ी सिलसिले में कुछ मकामात पर दर्रे थे जिनसे जुनूब (दक्षिण) के इलाके से याज़ूज माज़ूज के वहशी कबीले शिमाल (उत्तर) की तरफ आ जाते और ईरानी ममलकत (राज्य) के हिस्से में ग़ारतगरी करते। यहां पर आज भी एक कदीम दीवार के आसार मौजूद हैं। संभव है कि यही वह दीवार है जो जुलकरनैन ने हिमजती मक़सद के तहत तामीर की थी।

दुश्मन के मुकाबले में 'लोहे की दीवार' खड़ी करना एक ऐसा कारनामा है जिस पर आम तौर पर लोगों में फ़ख़ और घमंड के ज़बात पैदा हो जाते हैं। मगर जुलकरनैन ने ऐसी

नाकाबिले तसखीर (अलाधनीय) दीवार खड़ी करने के बाद भी इतनी तवाजोअ (विनम्रता) नहीं खोई। उसकी नजर अपने कारनामे पर नहीं थी बल्कि खुदा के इख्तियारात पर थी और खुदा के मुकाबले में किसी इंसान को कोई जोर हासिल नहीं।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوتُ فِي بَعْضٍ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ۝
وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكَافِرِينَ عَرْضًا ۝ الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ
عَن ذِكْرِنَا وَكَانُوا لَا يَسْتَطِيعُونَ سَمْعًا ۝

और उस दिन हम लोगों को छोड़ देंगे। वे मौजों की तरह एक दूसरे में घुसेंगे। और सूर फूँका जाएगा पस हम सबको एक साथ जमा करेंगे और उस दिन हम जहन्म को मुकिरों के सामने लाएंगे, जिनकी आंखों पर हमारी याददहानी से पर्दा पड़ा रहा और वे कुछ सुनने के लिए तैयार न थे। (99-101)

कियामत आने के बाद मौजूदा दुनिया एक और दुनिया बन जाएगी। उस वक्त गालिबन ऐसा होगा कि दरियाओं और पहाड़ों की मौजूदा हदबंदियां तोड़कर खत्म कर दी जाएंगी। इंसानों का एक हुजूम होगा, जो एक दूसरे से उसी तरह टकराएगा जिस तरह समुद्र में मौजें टकराती हैं।

आज लोगों को अकल की आंख से जहन्म दिखाई जा रही है तो वह उन्हें नजर नहीं आती। कियामत में लोगों को पेशानी की आंख से जहन्म दिखाई जाएगी। उस वक्त हर आदमी देख लेगा। मगर यह देखना किसी के कुछ काम न आएगा। क्योंकि नसीहत के जरिए जिसने अपनी आंख का पर्दा हटाया वही पर्दा हटाने वाला है। वर्ना कियामत के दिन पर्दा हटाया जाना तो सिर्फ इसलिए होगा कि सरकशी करने वालों को उनके आखिरी अंजाम तक पहुंचा दिया जाए।

أَحْسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَن يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِن دُونِي أَوْلِيَاءَ ۚ إِنَّا
أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِّلْكَافِرِينَ نَزْلًا ۝

क्या इंकार करने वाले यह समझते हैं कि वे मेरे सिवा मेरे बंदों को अपना कारसाज बनाएं। हमने मुकिरों की महमानी के लिए जहन्म तैयार कर रखी है। (102)

हक को मानना खुदा को मानना है और हक को न मानना खुदा को न मानना। जब भी आदमी हक को न माने तो वह किसी न किसी चीज या शख्सियत के बल पर ऐसा करता है। ऐसा हर भरोसा झूठा भरोसा है। क्योंकि इस दुनिया में खुदा के सिवा किसी को कोई इख्तियार हासिल नहीं। फैसले के दिन ऐसे लोगों को बचाने वाला कोई न होगा। क्योंकि बचाने वाला तो

सिर्फ खुदा था और उसकी हिमायत को उन्होंने पहले ही सरकशी करके खो दिया।

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُم بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَهُمْ يُحْسِبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ
رَّبِّهِمْ وَلِقَائِهِ فَنُحِطَّتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا تُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَزَنًا ۝ ذَٰلِكَ
جَزَاءُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي وَرُسُلِي هُزُوًا ۝

कहो क्या मैं तुम्हें बता दूँ कि अपने आमाल के एतबार से सबसे ज्यादा घाटे में कौन लोग हैं। वे लोग जिनकी कोशिश दुनिया की ज़िंदगी में अकारत हो गई और वे समझते रहे कि वे बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब की निशानियों का और उससे मिलने का इंकार किया। पस उनका किया हुआ बर्बाद हो गया। फिर कियामत के दिन हम उन्हें कोई वजन न देंगे। यह जहन्म उनका बदला है इसलिए कि उन्होंने इंकार किया और मेरी निशानियों और मेरे रसूलों का मज़क उड़ाया। (103-106)

आदमी दुनिया में अमल करता है। वह देखता है कि उसके अमल का नतीजा इज्जत और दौलत की सूरत में उसे मिल रहा है। अपना कोई काम उसे बिगड़ता हुआ नजर नहीं आता। वह समझ लेता है कि मैं कामयाब हूँ।

मगर यह सरासर नादानी है। खुदा के नक़्शे में ज़िंदगी की कामयाबी का मेयार आखिरत है। ऐसी हालत में दुनिया की तरक्की को तरक्की समझना खुदा के नक़्शे के ख़िलाफ अपना नक़्शा बनाना है। यह आखिरत को हज़फ़ करके ज़िंदगी के मसले को देखना है। जाहिर है कि ऐसे लोग कभी कामयाब नहीं हो सकते।

खुदा अपनी निशानियां जाहिर करता है। मगर जो लोग अपने जेहन को दुनिया में लगाए हुए हों वे आखिरत की निशानियों से मुतअस्तिर नहीं होते। खुदा अपने दलाइल खोलता है मगर जो लोग दुनिया की बातों में गुम हों उन्हें आखिरत की दलीलें अपील नहीं करतीं। ऐसे लोग हिदायत के कनारे खड़े होकर भी हिदायत को कुबूल करने से महरूम रहते हैं। उन्होंने खुदा की बातों को कोई वजन नहीं दिया। फिर कैसे मुमकिन है कि खुदा उन्हें अपने यहां किसी वज़न का मुस्तहक समझे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنَّاتُ الْفِرْدَوْسِ نُزْلًا ۝ خَالِدِينَ
فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَالًا ۝

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए फिरदौस के बागों की महमानी है। उसमें वे हमेशा रहेंगे। वहां से कभी निकलना न चाहेंगे। (107-108)

मौजूदा दुनिया में ईमान और अमले सालेह की जिंदगी इख्तियार करना जबरदस्त कुर्बानी का सुबूत देना है। यह छुपी हुई जन्नत के खातिर नजर आने वाली जन्नत को छोड़ना है। यह उस मुश्किलतरीन इम्तेहान में पूरा उतरना है जबकि आदमी मात्र दलील की सतह पर हक को पहचानता है और अपनी जिंदगी उसके रास्ते पर डाल देता है, हालांकि ऐसा करने के लिए वहां कोई दबाव नहीं होता।

जो लोग इस मअरफत (अन्तर्ज्ञान) और इस कारकदर्दगी को सुबूत दें उनका इनाम यही है कि उन्हें अबदी (विरस्थाई) राहत व आराम के बागों में दाखिल कर दिया जाए।

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادَ الْكِتَابِ لَأَنفَدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِبِشْرٍ مَدَدًا ۝

कहो कि अगर समुद्र मेरे रब की निशानियों को लिखने के लिए रोशनाई हो जाए तो समुद्र खत्म हो जाएगा इससे पहले कि मेरे रब की बातें खत्म हों, अगरचे हम उसके साथ उसी के मानिंद और समुद्र मिला दें। (109)

जो लोग खुदा के पैगाम को नहीं मानते वे ऐसी चीज को नहीं मानते जो तमाम साबितशुदा चीजों से ज्यादा साबितशुदा है। वह इतनी मुसल्लम (सुस्थापित) है जिसे लिखने के लिए दुनिया के तमाम दरख्तों के कलम भी नाकाफी साबित हों। तमाम समुद्रों की स्याही भी खुश्क हो जाए इससे पहले कि उसकी फेहरिस्त खत्म हो।

मगर इंसान कैसा जालिम है कि इसके बावजूद वह हक (सत्य) को नहीं पहचानता। इसके बावजूद वह अपनी जिंदगी को हक के मुताबिक नहीं ढालता।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مُّثَلُّكُمْ يُوحَىٰ إِلَىٰ أُمَمٍ أَلَهُمُ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ۝

कहो कि मैं तुम्हारी ही तरह एक आदमी हूँ। मुझ पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) सिर्फ एक ही माबूद है। पस जिसे अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेक अमल करे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न ठहराए। (110)

पैगम्बर खुदा या फरिश्ता नहीं होता। वह इंसानों की तरह एक इंसान होता है। उसकी मजिद खुसूसियत सिर्फ यह होती है कि उस पर रैर मरई (रैर-महसूस) जरिए से खुदा की 'वही' आती है। गोया पैगम्बर एक ऐसी हस्ती है जो अपने जाहिर के एतबार से एक इंसान

है और अपनी अंदरूनी हकीकत के एतबार से नुमाइंदए खुदा।

यही वजह है कि हक को पाने के लिए जौहर शनासी की सलाहियत दरकार होती है। हक को पाना सिर्फ उस शख्स के लिए मुमकिन होता है जो हकीकत को उसके गैबी रूप में देख सके। जो 'इंसान' की सतह पर 'पैगम्बर' को पहचानने का सुबूत दे।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
كَهَيْعَصَ ۖ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدًا زَكِيًّا ۚ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا ۝

आयतें-98

सूरह-19. मरयम

रुकूअ-6

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। काफ० हा० या० अइन० साद०। यह उस रहमत का जिक्र है जो तेरे रब ने अपने बंदे जकरिया पर की। जब उसने अपने रब को छुपी आवाज से पुकारा। (1-3)

हजरत जकरिया हजरत मरयम के बहनेई थे। हजरत मरयम के वालिद का नाम इमरान था। हजरत मरयम अभी सिर्फ चन्द साल की थीं कि उनके वालिद का इंतकाल हो गया। वह हैकल के नाजिमे आला थे। उनके बाद हजरत जकरिया हैकल के नाजिमे आला (काहिनों के सरदार) मुकर्र हुए। उस जमाने में हजरत मरयम अपनी वालिदा की नज़ के मुताबिक हैकल की खिदमत में दे दी गई थीं। हजरत जकरिया चूँकि हजरत मरयम के कबीबी अजीज थे और हैकल के सरदार भी इसलिए वही हजरत मरयम की तर्बियत के जिम्मेदार करार पाए।

हजरत जकरिया अलैहिस्सलाम ने 'छुपी आवाज' में खुदा से दुआ की। यह दुआ हैरतअंगेज तौर पर पूरी हुई। इससे मालूम होता है कि सच्ची दुआ क्या है। सच्ची दुआ दरअसल इस यकीन का बेताबाना इन्तार है कि सारा इख्तियार सिर्फ खुदा के पास है। उसी के देने से आदमी को मिलेगा और वह न दे तो कभी किसी को कुछ नहीं मिल सकता। सच्ची दुआ का सारा रुख सिर्फ एक खुदा की तरफ होता है। यही वजह है कि सच्ची दुआ सबसे ज्यादा उस वक्त उबलती है जबकि आदमी तंहाई में हो। जहां उसके और खुदा के सिवा कोई तीसरा न पाया जाए।

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُن بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا ۖ وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَائِي وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ۖ يَرِثُنِي وَيَرِثُ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ ۖ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ۝

जकरिया ने कहा, ऐ मेरे रब, मेरी हड्डियां कमजोर हो गई हैं। और सर में बालों की

सफेदी फैल गई है और ऐ मेरे रब, तुझसे मांग कर मैं कभी महरूम नहीं रहा। और मैं अपने बाद रिश्तेदारों की तरफ से अंदिशा रखता हूँ। और मेरी बीवी बांझ है, पस मुझे अपने पास से एक वारिस दे जो मेरी जगह ले और याकूब की आल (संतति) की भी। और ऐ मेरे रब उसे अपना पसंदीदा बना। (4-6)

यह उस बंदे की जवान से निकली हुई दुआ है जो दीन का मिशन चलाते हुए बिल्कुल बूढ़ा हो गया था। और अहले खानदान में कोई शख्स उसे नजर नहीं आता था जो उसके बाद उसके मिशन को जारी रखे। एक तरफ अपना इज्ज (निर्बलता) और दूसरी तरफ मिशन की अहमियत, ये दोनों एहसासों उसकी जवान पर उस दुआ की सूरत में ढल गए जो मजहूर आयात में नजर आते हैं। गोया यह आम मअनों में महज एक बेटे की दुआ न थी। बल्कि इस बात की दुआ थी कि मुझे एक ऐसा लायक शख्स हासिल हो जाए जो मेरे बाद मेरे पैगम्बराना मिशन को जारी रखे।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْ اٰتٰنَا نَبِيْرَكَ بِعِلْمٍ اَسْمٰى يَحْيٰى لَمْ تَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ۝۷ قَالَ رَبِّ اَنِّ يَكُوْنُ لِيْ غُلَامٌ وَّاٰتٰنِيْ اَمْرًا وَّاقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ۝۸

ऐ जकरिया, हम तुम्हें एक लड़के की वशात (शुभ सूचना) देते हैं जिसका नाम यहया होगा। हमने इससे पहले इस नाम का कोई आदमी नहीं बनाया। उसने कहा, ऐ मेरे रब, मेरे यहां लड़का कैसे होगा जबकि मेरी बीवी बांझ है। और मैं बुढ़ापे के इतिहाई दर्जे को पहुंच चुका हूँ। (7-8)

यह दुआ बेटे की सूरत में कुबूल हुई। एक ऐसा बेटा जैसा बेटा आम तौर पर लोगों के यहां पैदा नहीं होता। एक शख्स जो आखिरी हद तक बूढ़ा हो चुका हो और जिसकी बीवी पूरी उम्र तक बांझ रही हो। उसके यहां बच्चा पैदा होना यकीनन एक इतिहाई ग़ैर मामूली बात है। इस बिना पर हजरत जकरिया को इस ख़बर पर खुशी के साथ तअज्जुब भी हुआ। मिलने वाली नेमत के ग़ैर मुत्वाक्कअ (अप्रत्याशित) होने का एहसास उनकी जवान से इन अल्फ़ाज में निकल पड़ा कि मेरे यहां कैसे बच्चा पैदा होगा जबकि मैं और मेरी बीवी दोनों इस एतबार से अज्कार रफ़्ता (असमर्थ) हो चुके हैं।

قَالَ كَذٰلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلٰى هٰذَا هَدِيْنٌ وَّاقَدْ خَلَقْنٰكَ مِنْ قَبْلُ وَّلَمْ تَكُ شَيْئًا ۝۹ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْ اٰيَةً ۚ قَالَ اِيْنٰكَ اَلَا تَكَلِّمُ النَّاسَ لَكَ لَيْلًا سَوِيًّا ۝۱۰ فَاَخْرَجْ عَلٰى قَوْمِهِ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰى اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ۝۱۱

जवाब मिला कि ऐसा ही होगा। तेरा रब फरमाता है कि यह मेरे लिए आसान है। मैंने

इससे पहले तुम्हें पैदा किया, हालांकि तुम कुछ भी न थे। जकरिया ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे लिए कोई निशानी मुकर्र कर दे। फरमाया कि तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन शब व रोज लोगों से बात न कर सकोगे हालांकि तुम तंदुरुस्त होगे। फिर जकरिया इबादत की मेहराब से निकल कर लोगों के पास आया और उनसे इशारे से कहा कि तुम सुबह व शाम खुदा की पाकी बयान करो। (9-11)

पहले इंसान का बाप और मां के बग़ैर पैदा होना जिस तरह एक खुदाई मोजिजा (दिव्य चमत्कार) है इसी तरह बाप और मां के जरिए बच्चे का पैदा होना भी एक खुदाई मोजिजा है। चाहे ये मां-बाप बूढ़े हों या जवान। हकीकत यह है कि यह खुदा है जो इंसान को पैदा करता है। उसी ने पहले पैदा किया और वही आज भी पैदा करने वाला है। दूसरी हर चीज महज एक ज़िह्नी बहना है न कि हकीकती वजह।

हजरत जकरिया ने रहमते खुदावंदी के मिलने की अलामत दर्याप्त की। बताया गया कि तंदुरुस्त होने के बावजूद जब कामिल तीन रात दिन तक लोगों से जवान के जरिए बात न कर सको, उस वक्त समझ लेना कि हमल (गर्भ) करार पा गया है। चुनावे जब वह वक्त आया तो जवान बातचीत से रुक गई। हजरत जकरिया अपने इबादतखाने से निकले और लोगों से इशारे के साथ कहा कि सुबह व शाम अल्लाह को याद करो और उसकी इबादत व इताअत (आज्ञापालन) में मशगूल रहो।

हजरत जकरिया का ग़ालिबन यह नियम था कि वह रोजाना लोगों को वजज व नसीहत फरमाते थे। जब जवान बोलने से रुक गई तब भी आप मक़ामे इज्तिमाअ पर आए और लोगों को नसीहत की। अलबत्ता चूँकि जवान चल नहीं रही थी, आपने इशारे के साथ लोगों को तक्मीन (नसीहत) फरमाई।

يَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ وَّاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَ صَبِيًّا ۝۱۲ وَحَنَّا نًا مِنْ لَّدُنَّا وَرَكُوْةً ۝۱۳ وَكَانَ تَقِيًّا ۝۱۴ وَبَرَّ اَبُوْلَدِّيْهِ ۝۱۵ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا ۝۱۶ وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ ۝۱۷ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ۝۱۸

ऐ यहया किताब को मजबूती से पकड़ो। और हमने उसे बचपन ही में दीन की समझ अता की। और अपनी तरफ से उसे नर्मदिली और पाकीजगी (पवित्रता) अता की। और वह परहेजगार और अपने वालिदेन का ख़िदमतगुजार था। और वह सरकश और नाफरमान न था। और उस पर सलामती है जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन वह ज़िंदा करके उठाया जाएगा। (12-15)

कहा जाता है कि हजरत यहया जब छोटे थे तो लड़कों ने एक बार उन्हें खेलने के लिए

बुलाया। उन्होंने इंकार कर दिया और कहा कि 'हम इसलिए नहीं बनाए गए हैं' इससे अंदाजा होता है कि उन्हें बचपन से यह शुक्र हासिल था कि जिंदगी को बामक्सद होना चाहिए। इसी तरह उनके अंदर पैदाइशी तौर पर सोज व गुदाज (शालीनता, सहृदयता) मौजूद था वह नफिसयाती गिरहों (कुप्रवृत्तियों) से आजाद थे। वे अपने वालिदेन के हुक्म अदा करने वाले थे। वे सरकशी और नाफरमानी से बिल्कुल खाली थे।

यही वे औसाफ (गुण) हैं जो आदमी को इस काबिल बनाते हैं कि वह किसी हाल में खुदा की किताब से न हटे। और इन्हीं औसाफ वाला आदमी वह है जिस पर दुनिया में भी खुदा की रहमत नाजिल होती है और आखिरत में भी खुदा की रहमत।

وَإِذْ كُنَّا فِي الْكِتَابِ مَرْسُمًا إِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْوِيًّا ۖ فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ۖ قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا ۖ قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَامًا زَكِيًّا ۖ قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ۖ قَالَ كَذَلِكَ ۖ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَى هَدًى ۖ وَلَنَجْعَلَ لَآيَةٍ لِلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۖ وَكَانَ أَمْرًا مَّقْضِيًّا ۖ

और किताब में मरयम का जिक्र करो जबकि वह अपने लोगों से अलग होकर शरकी पूर्वी मकान में चली गई। फिर उसने अपने आपको उनसे पर्दे में कर लिया। फिर हमने उसके पास अपना फरिश्ता भेजा जो उसके सामने एक पूरा आदमी बनकर जाहिर हुआ। मरयम ने कहा, मैं तुझसे खुदाए रहमान की पनाह मांगती हूं अगर तू खुदा से डरने वाला है। उसने कहा, मैं तुम्हारे रब का भेजा हुआ हूं ताकि तुम्हें एक पाकीजा लड़का दूं। मरयम ने कहा, मेरे यहां कैसे लड़का होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने नहीं छुवा और न मैं बदकार (बदचलन) हूं। फरिश्ते ने कहा कि ऐसा ही होगा। तेरा रब फरमाता है कि यह मेरे लिए आसान है। और ताकि हम उसे लोगों के लिए निशानी बना दें और अपनी जानिब से एक रहमत। और यह एक तैशुदा बात है। (16-21)

हजरत मरयम अपनी वालिदा की नज़ के मुताबिक हैकल (बिनुल मक्सद) की ख़िदमत के लिए दे दी गई थीं। कदीम (प्राचीन) हैकल का मशिकी हिस्सा औरतों के लिए खास था। वह उस हिस्से में एक तरफ पर्दा डाल कर मोतकिफ (एकांतवासीय) हो गई। इसके बाद अचानक एक रोज ऐसा हुआ कि उन्होंने देखा कि एक तंदुरुस्त व तवाना (सशक्त) आदमी उनके सामने खड़ा हुआ है। इस मंजर से उनका घबरा उठना बिल्कुल फितरी था। मगर आदमी ने बताया कि वह फरिश्ता है। और खुदा की तरफ से इसलिए आया है कि हजरत

मरयम को मोजिजाती तौर पर एक बच्चा अता करे।

हजरत मसीह अलैहिस्सलाम का इस तरह मोजिजाती तौर पर पैदा होना खुदा की एक अजीम निशानी थी। इसका मक्सद यह था कि यहूद आपके खुदा के संदेशवाहक होने पर शक न करें और आप खुदा की तरफ से जो बातें बताएं उन्हें मान लें। मगर इतनी खुली हुई निशानी के बावजूद उन्होंने हजरत मसीह का इंकार कर दिया।

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ۖ فَلَمَّا هَمَّ بِهَا الْخَاضِعُ إِلَى جِذْعِ النَّخْلَةِ قَالَتْ يَلَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًّا مَّسِيًّا ۖ

पस मरयम ने उसका हमल (गर्भ) उठा लिया और वह उसे लेकर एक दूर की जगह चली गई। फिर दर्देजह (प्रसव-पीड़ा) उसे खजूर के दरख्त की तरफ ले गया। उसने कहा, काश मैं इससे पहले मर जाती और भूली बिसरी चीज हो जाती। (22-23)

हजरत मरयम एक मुअज्जज़ मजहबी घराने की ग़ैर शादीशुदा ख़ातून थीं। ऐसी एक ख़ातून का हामिला (गर्भवती) होना उसके लिए एक ऐसी आजमाइश है जिससे बड़ी कोई आजमाइश नहीं। इस परेशानी में मुब्तिला होने के बाद वह ख़ामोशी के साथ हैकल से निकलीं और दूर के एक मक़म (बेतेलहम) चली गईं। जब वक्त पूरा हुआ और दर्देजह (प्रसव-पीड़ा) की कैफियत पैदा हुई तो वह बस्ती से बाहर एक खजूर के नीचे बैठ गईं। एक पाकबाज ग़ैर शादीशुदा ख़ातून पर ऐसे वक्त में जो कैफियम गुजरेगी उसकी तस्वीर इन अल्फ़ाज़ में मिलती है काश मैं इससे पहले ख़त्म हो जाती और लोगों के हाफिजे में मेरा कोई वजूद न होता।

فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا أَلَا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۖ وَهُزِّي إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسْقِطُ عَلَيْكَ رَطْبًا جَنِيًّا ۖ فَكُلْ وَاشْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا ۖ فَإِمَّا تَرَيْنَ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا فَقُولِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ۖ

फिर मरयम को उसने उसके नीचे से आवाज दी कि ग़मगीन न हो। तेरे रब ने तेरे नीचे एक चशमा (स्रोत) जारी कर दिया है और तुम खजूर के तने को अपनी तरफ हिलाओ। उससे तुम्हारे ऊपर पकी खजूरें गिरेंगी। पस खाओ और पियो और आंखें ठंडी करो। फिर अगर तुम कोई आदमी देखो तो उससे कह दो कि मैंने रहमान का रोजा मान रखा है तो आज मैं किसी इंसान से नहीं बोलूंगी। (24-26)

इतनी नाजुक आजमाइश में मुब्तिला होने के बाद हजरत मरयम के लिए तस्कीन का सिर्फ एक ही जरिया हो सकता था। वह यह कि खुदा का फरिश्ता जाहिर होकर उन्हें यकीन

दिलाए। चुनाचि यही हुआ। ऐन उस वक्त फरिश्ते ने आकर आवाज दी कि घबराओ मत। यह सब जो हो रहा है यह खुदा के मंसूबे के तहत हो रहा है। तुम्हारे करीब साफ पानी का चशमा (स्रोत) रवां कर दिया गया है। और खजूर का यह दरख्त तुम्हें हर वक्त ताजा फल मुहय्या करेगा। इससे खाओ और पियो।

बच्चे के सिलसिले में फरिश्ते ने यह कहकर मुतमइन कर दिया कि खुदा के मोजिजे से पैदा होने वाला यह खुद तुम्हारे दिफाअ (प्रतिरक्षा) के लिए काफी है। तुम बनी इस्राईल के रवाज के मुताबिक चुप का रोजा रख लो। और जब किसी आदमी से तुम्हारा सामना हो और वह तुमसे पूछे तो तुम बच्चे की तरफ इशारा कर दो। वह खुद जवाब देकर तुम्हारी पाकी बयान कर देगा।

فَأَتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِلُهُ قَالُوايَمْرُؤٌمُكَدُّجِدَّتْ شَيْئًا فَرِيقًا ۝ يَأْخُذُ هَرُونَ
مَا كَانَ أَبُوكَ امْرَأَ سَوْءٍ وَمَا كَانَتْ أُمُّكَ بَغِيًّا ۝

फिर वह उसे गोद में लिए हुए अपनी कौम के पास आई। लोगों ने कहा, ऐ मरयम, तुमने बड़ा तूफान कर डाला। ऐ हारून की बहिन, न तुम्हारा बाप कोई बुरा आदमी था और न तुम्हारी मां बदकार (बदचलन) थी। (27-28)

फरिश्ते की बात सुनने के बाद हजरत मरयम के अंदर एतमाद पैदा हो गया। वह बच्चे को लेकर अपने खानदान वालों के पास वापस आई। उन्हें इस हाल में देखकर यहूद के तमाग लोग उन्हें मलामत करने लगे। हजरत मरयम ने वही किया जो फरिश्ते ने उन्हें बताया था। उन्होंने खुद खामोश रहते हुए बच्चे की तरफ इशारा कर दिया। मतलब यह था कि यह लड़का कोई आम किस्म का लड़का नहीं है। और इसका सबूत यह है कि तुम इससे कलाम करो, वह गोद का बच्चा होने के बावजूद तुम्हारे कलाम को समझेगा और साफ जवान में तुम्हारा जवाब देगा।

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝ قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ
اتَّبَعْتَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۝ وَجَعَلَنِي مُبْرَكًا آيَةً مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي
بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۝ وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ۝
وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۝

फिर मरयम ने उसकी तरफ इशारा किया। लोगों ने कहा, हम इससे किस तरह बात करें जो कि गोद में बच्चा है। बच्चा बोला, मैं अल्लाह का बंदा हूँ। उसने मुझे किताब दी और मुझे नबी बनाया। और मैं जहां कहीं भी हूँ उसने मुझे बरकत वाला बनाया

है। और उसने मुझे नमाज और जकात की ताकीद की है जब तक मैं जिंदा रहूँ। और मुझे मेरी मां का ख़िदमतगुजार बनाया है। और मुझे सरकश, बदबख्त नहीं बनाया है। और मुझ पर सलामती है जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरूंगा और जिस दिन मैं जिंदा करके उठाया जाऊंगा। (29-33)

हजरत मरयम के इशारे के बावजूद यहूद की समझ में नहीं आता था कि वे एक छोटे से बच्चे से किस तरह बात करें। उस वक्त हजरत मसीह खुद बोल पड़े। उनकी मोजिजाना गुफ्तगू में एक तरफ हजरत मरयम की कामिल बरात (विरक्ति) थी। दूसरी तरफ यह एक पेशगी शहादत (गवाही) थी। ताकि यह नोमोलूद (नवजात) जब बड़ा होकर नुबुव्वत का एलान करे तो लोगों के लिए आपकी नुबुव्वत पर शक करने की कोई गुंजाइश बाकी न रहे।

ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝ مَا كَانَ لِلَّهِ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَلَدٍ سُبْحَنَهُ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

यह है ईसा इब्ने मरयम, सच्ची बात जिसमें लोग झगड़ रहे हैं। अल्लाह ऐसा नहीं कि वह कोई औलाद बनाए। वह पाक है। जब वह किसी काम का फैसला करता है तो कहता है कि हो जा तो वह हो जाता है। (34-35)

हजरत मसीह की ग़ैर मामूली पैदाइश एक अनोखा वाक्या था। इस अनोखे वाक्ये की तौजीह में मसीही उलेमा ने अजीब-अजीब अकीदे बना लिए। मगर हमेशा तौजीह की एक हद होती है। और उस हद के अंदर रहकर ही किसी चीज की तौजीह की जा सकती है। हजरत मसीह की ग़ैर मामूली पैदाइश की तौजीह में उन्हें खुदा का बेटा बना देना हद से बाहर जाना है क्योंकि यह खुदा की यकताई (एक होने) के मनाफी है कि उसकी कोई औलाद हो।

साथ ही यह कि कायनात में बेशुमार अनोखे वाक्यात हैं जिन्हें हम रोजाना देखते हैं। इस दुनिया की हर चीज एक अनोखा वाक्या है। अब अगर मजिद एक अनोखी चीज सामने आए तो इंसान को यह कहना चाहिए कि खुदा ने जिस तरह दूसरी बेशुमार अनोखी चीजें पैदा की हैं उसी तरह वह इस अनोखी चीज का भी ख़ालिक है जो आज हमारे सामने जाहिर हुई है।

وَإِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ
بَيْنِهِمْ قَوْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ مَّشْهَدٍ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصُرْ يَوْمَ
يَأْتُونَنَا لَكِنِ الظَّالِمُونَ الْيَوْمَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝

और वेशक अल्लाह मेरा रब है और तुम्हारा रब भी, पस तुम उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। फिर उनके फिरकों (समुदायों) ने आपस में मतभेद किया। पस

इंकार करने वालों के लिए एक बड़े दिन के आने से खराबी है। जिस दिन ये लोग हमारे पास आएंगे। वे खूब सुनते और खूब देखते होंगे, मगर आज ये जालिम खुली हुई गुमराही में हैं। (36-38)

हजरत मसीह और दूसरे तमाम पैगम्बरों ने एक ही सिराते मुस्तकीम (सन्मार्ग) की तरफ लोगों को बुलाया। वह यह कि आदमी खुदा को अपना रब बनाए और उसी की इबादत करे। मगर हमेशा यह हुआ कि खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) तावीलात व तशरीहात के जरिए इस सिराते मुस्तकीम से इहिराफ (भटकाव) किया गया। किसी ने एक बात निकाली और किसी ने दूसरी बात। इस तरह इख़लेलाफ (मत-भिन्नता) पैदा हुआ और एक दीन कई दीनों में तक्सीम हो गया।

दुनिया में भी हक बात पूरी तरह वाजेह है मगर यहां इंसान को इम्तेहान की वजह से आजादी हासिल है। वह चाहे तो माने और चाहे तो न माने। इस वक्ती आजादी की वजह से इंसान ग़लतफहमी में पड़ जाता है। और सरकशी करने लगता है। उसे दलाइल (तर्कों) के जरिए बताया जाता है कि खुदा की सिराते मुस्तकीम क्या है। मगर वह उसे नहीं मानता। लेकिन आखिरत में जब आजादी छिन चुकी होगी, इंसान की वही आंखें और वही कान खूब देखने और सुनने वाले बन जाएंगे, जो आज ऐसे मालूम होते हैं गोया कि वे देखना और सुनना जानते ही न हों।

وَأَنذَرْتَهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ
إِنَّا أَنَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ۖ

और इन लोगों को उस हसरत (प्रश्चाताप) के दिन से डरा दो जब मामले का फैसला कर दिया जाएगा, और वे ग़फ़लत में हैं। और वे ईमान नहीं ला रहे हैं। बेशक हम ही जमीन और जमीन के रहने वालों के वारिस होंगे। और लोग हमारी ही तरफ लौटाए जाएंगे। (39-40)

आदमी दुनिया में नाकामी से दो चार होता है तो उसे मौका होता है कि वह दुबारा नई जिंदगी शुरू कर सके। उसके पास साथी और मददगार होते हैं जो उसे संभालने के लिए खड़े हो जाते हैं। मगर आखिरत की नाकामी ऐसी नाकामी है जिसके बाद दुबारा संभालने का कोई इस्काण नहीं। कैसा अजीब हसरत का लम्हा होगा जब आदमी यह जानेगा कि वह सब कुछ कर सकता था मगर उसने नहीं किया। यहां तक कि करने का वक्त ही ख़त्म हो गया।

सारी ख़राबियों की जड़ यह है कि आदमी यह समझ लेता है कि वह अपना मालिक आप है। मगर हकीकत यह है कि यह सिर्फ एक दर्मियानी वक्म (अंतराल) है। पहले भी सिर्फ खुदा तमाम चीजों का मालिक था और आखिर में भी यह सिर्फ खुदा है जो तमाम चीजों का मालिक होगा। खुदा के सिवा कोई नहीं जिसे यहां हकीकी मअनों में कोई मालिकाना हैसियत हासिल हो।

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ كَانَ صَادِقَ الْبَيِّنَاتِ ۖ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ
لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ۚ يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَالتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۖ يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ
إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلرَّحْمَنِ عَصِيًّا ۖ يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابٌ
مِّنَ الرَّحْمَنِ فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ۖ

और किताब में इब्राहीम का जिक्र करो। बेशक वह सच्चा था और नबी था। जब उसने अपने बाप से कहा कि ऐ मेरे बाप, ऐसी चीज की इबादत क्यों करते हो जो न सुने और न देखे, और न तुम्हारे कुछ काम आ सके। ऐ मेरे बाप मेरे पास ऐसा इल्म आया है जो तुम्हारे पास नहीं है तो तुम मेरे कहने पर चलो। मैं तुम्हें सीधा रास्ता दिखाऊंगा। ऐ मेरे बाप शैतान की इबादत न करो, बेशक शैतान खुदाए रहमान की नाफरमानी करने वाला है। ऐ मेरे बाप, मुझे डर है कि तुम्हें खुदाए रहमान का कोई अजाब पकड़ ले और तुम शैतान के साथी बनकर रह जाओ। (41-45)

हजरत इब्राहीम इराक में पैदा हुए। उनके वालिद आजर बुतपरस्त थे। आपको नुबुव्वत मिली तो आपने अपने वालिद को नसीहत की कि बुतों की इबादत छोड़ दो और खुदा की इबादत करो। वरना तुम खुदा की पकड़ में आ जाओगे।

शैतान की इबादत का मतलब खुद शैतान की इबादत नहीं है बल्कि शैतान की बताई हुई चीज की इबादत है। इंसान के अंदर फितरी तौर पर यह जज्बा रखा गया है कि वह किसी को ऊंचा दर्जा देकर उसके आगे अपने जज्बाते अक्रीदत को निसार करे। इस जज्बे का हकीकी मर्कज खुदा है। मगर शैतान मुक़ल्लिफ तरीके से लोगों के जेहन को फेरता है। ताकि वह इंसान को मुशिरक (बहुदेववादी) बना दे, ताकि इंसान ग़ैर खुदा को वह चीज दे दे जो उसे सिर्फ खुदा को देना चाहिए।

قَالَ أَرَأَيْبُ أَنْتَ عَنْ الْهَيْتِ يَا إِبْرَاهِيمَ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِي بَلِيًّا ۖ
قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ ۖ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي ۖ إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ۖ وَأَعْتَرْتُكُمْ
وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُوا رَبِّي عَسَىٰ أَلَا أَكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا ۖ

बाप ने कहा कि ऐ इब्राहीम, क्या तुम मेरे माबूदों (पूज्यों) से फिर गए हो। अगर तुम बाज न आए तो मैं तुम्हें संगसार (पत्थरों से मार डालना) कर दूंगा। और तुम मुझसे हमेशा के लिए दूर हो जाओ। इब्राहीम ने कहा, तुम पर सलामती हो। मैं अपने रब

से तुम्हारे लिए बख्शिश की दुआ करूंगा, वेशक वह मुझ पर महरबान है। और मैं तुम लोगों को छोड़ता हूँ और उन्हें भी जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो। और मैं अपने रब ही को पुकारूंगा। उम्मीद है कि मैं अपने रब को पुकार कर महरूम (वंचित) नहीं रहूंगा। (46-48)

हजरत इब्राहीम ने जिन बुतों पर तंकीद की, वे सादा मअनों में महज पत्थर के टुकड़े न थे बल्कि वे उन हस्तियों के नुमाइंद थे जिनकी तिलिस्माती अज्मत माजी (अतीत) की तवील रिवायात के नतीजे में लोगों के जेहनों पर कायम हो चुकी थी। इस तकाबुल में 'नौजवान इब्राहीम' एक मामूली शख्स नजर आए और इराक के बुत अज्मतों के पहाड़ दिखाई दिए। यही वजह है कि हजरत इब्राहीम के वालिद ने हक्करत के साथ उनकी नसीहत को नजरअंदाज कर दिया।

हक की दावत एक मकाम पर शुरू की जाए और फिर वह उस मरहले में पहुंच जाए कि लोग उसे अच्छी तरह समझ चुके हों मगर वे मानने के बजाए जारिहियत (आक्रामकता) पर उतर आए तो उस वक्त दाजी अपने मकामे अमल को तब्दील कर देता है। इसी का दूसरा नाम हिजरत है। मकामे अमल की यह तब्दीली कभी करीब के दायरे में होती है और कभी दूर के दायरे में।

दावत का अमल एक खुदाई अमल है। यही वजह है कि वह जब भी शुरू होता है रब्बानी नफिसयात के साथ शुरू होता है। मदऊ अगर दाजी (आध्वानकती) के साथ जुलूम व हकारत का मामला करे तब भी दाजी के दिल में उसके लिए नर्म गोशा मौजूद रहता है। इसी तरह दाजी अगर अपने माहौल में बेयारोमददगार हो जाए तब भी वह मायूस नहीं होता क्योंकि उसका अस्ल सहारा खुदा होता है। वह यकीन रखता है कि वह बदस्तूर उसके साथ मौजूद है और हमेशा मौजूद रहेगा।

فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يُعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ وَهَبْنَا لَهُ اسْمَٰحَ وَيَعْقُوبَ ۖ
وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۖ وَهَبْنَا لَهُم مِّن رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُم لِسَانَ صِدْقٍ
عَلِيًّا ۖ

पस जब वह लोगों से जुदा हो गया। और उनसे जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पूजते थे तो हमने उसे इस्हाक और याकूब अता किए और हमने उनमें से हर एक को नबी बनाया। और उन्हें अपनी रहमत का हिस्सा दिया और हमने उनका नाम नेक और बुलन्द किया। (49-50)

आदमी अपने खानदान और अपने गिरोह के साथ जीता है। ऐसी हालत में किसी शख्स को उसके खानदान और उसके गिरोह से निकाल देना गोया उसे बर्बादी के सहारा में धकेल देना है। मगर हजरत इब्राहीम के वाक्ये के सूरत में अल्लाह तआला ने हमेशा के लिए दिखा दिया कि जो बंदा ख़ालिस अल्लाह के लिए बेघर किया जाए उसे अल्लाह अपनी तरफ से

ज्यादा अच्छा घर अता कर देता है। जो शख्स ख़ालिस अल्लाह के लिए गुमनामी में डाल दिया जाए उसे अल्लाह ज्यादा बड़े पैमाने पर नेक नाम बना देता है।

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ ۚ إِنَّهَا كَانَ مُخْلَصَةً وَكَانَ رَسُولُنَا نَبِيًّا ۖ وَنَادَيْنَاهُ
مِّنْ جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ ۖ وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا ۖ وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَّحْمَتِنَا أَخَاهُ
هَارُونَ نَبِيًّا ۖ

और किताब में मूसा का जिक्र करो। वेशक वह चुना हुआ था और रसूल नबी था। और हमने उसे कोहे तूर के दाहिनी जानिब से पुकारा और उसे हमने राज की बातें करने के लिए करीब किया। और अपनी रहमत से हमने उसके भाई हारून को नबी बनाकर उसे दिया। (51-53)

हजरत मूसा मदयन से चलकर मिस्र जा रहे थे। इस सफर में वह कोहे तूर से गुजरे। वहां खुदा ने उन्हें पैगम्बरी अता फरमाई। अल्लाह तआला ने पिछले हर दौर में अपने पैगम्बर मुतख़ब किए और उनके पास अपना कलाम भेजा। यह कलाम हमेशा जिब्रील फरिश्ते के जरिए आया। मगर हजरत मूसा के साथ यह खुसूसी मामला हुआ कि अल्लाह ने उनसे बराहेरास्त कलाम किया। यह भी हजरत मूसा की खुसूसियत है कि आपके लिए खुदा ने एक अतिरिक्त पैगम्बर (हजरत हारून) मुकर्रर फरमाया। जो आपका मददगार हो। इस खुसूसियत की वजह शायद वे मख़सूस हालात हों जिनमें आपको अपना पैगम्बराना फर्ज अंजाम देना था। क्योंकि आपके सामने एक तरफ फिरऔन जैसा जाबिर बादशाह था और दूसरी तरफ यहूद जैसी कौम जो अपने जवाल (पतन) की आखिरी हद को पहुंच चुकी थी।

रहमत व नुसरत के ये मामलात अपनी इतिहाई सूरत में सिर्फ पैगम्बरों के लिए खास हैं। ताहम अल्लाह अपने मोमिन बंदों के साथ भी दर्जा-बन्दर्जा इसी किस्म का मामला फरमाता है। वह उनके हस्वे इस्तेदाद यथा सामर्थ्य उन्हें अपने किसी काम को करने की तौफीक देता है। वह उन पर खामोशी से अपनी बात इलका करता है। वह उनके लिए ऐसी खुसूसी ताईद का इतिजाम करता है जो आम हालात में किसी को नहीं मिलती।

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِسْمَاعِيلَ ۚ إِنَّهُ كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا ۖ وَكَانَ يَأْمُرُ
أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا ۖ وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ ۖ
إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۖ وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۖ

और किताब में इस्माईल का जिक्र करो। वह वादे का सच्चा था और रसूल नबी था। वह अपने लोगों को नमाज और ज़कात का हुक्म देता था। और अपने रब के नजदीक

पसंदीदा था। और किताब में इदरीस का जिक्र करो। वेशक वह सच्चा था और नबी था। और हमने उसे बुलन्द रूतवे तक पहुंचाया। (54-57)

हज़रत इस्माईल हज़रत इब्राहीम के परजंद थे। हज़रत इदरीस एक पैगम्बर हैं जो ग़ालिबन हज़रत नूह से पहले पैदा हुए। इन पैगम्बरों की दो ख़ास सिफ़तें यहां बयान की गई हैं सच्चा होना, लोगों को नमाज़ (ख़ुदा की इबादत) और ज़कात (क्यों के हुक्म की अदायगी) की तलकीन करना। इर्शाद हुआ है कि इन सिफ़तों ने उन्हें ख़ुदा का पसंदीदा बना दिया और वे इतिहाई आला दर्जे पर पहुंचा दिए गए।

जिन शख़्सियतों को ख़ुदा ने अपनी पैगम्बरी के लिए चुना। उनके अंदर ये सिफ़तें कमाल दर्जे में मौजूद होती थीं। ताहम आम अहले ईमान से भी यही सिफ़ात मल्बूब हैं और उन्हें भी दर्जा-ब-दर्जा इसके वे समरात (प्रतिफल) हासिल होते हैं जो ख़ुदा ने इन सिफ़तों के लिए अबदी तौर पर मुकर्रर किए हैं।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِن ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِن ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَءِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا إِذِ اتَّخَذُوا عَلَيْهِمْ أَيَّتُ الرَّحْمَنِ خُزُوًا سُبْحًا ۖ وَبُكْرًا ۖ

ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने पैगम्बरों में से अपना फ़रल फ़रमाया। आदम की औलाद में से और उन लोगों में से जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था। और इब्राहीम और इस्माईल की नस्ल से और उन लोगों में से जिन्हें हमने हिदायत बख़्शी और उन्हें मकबूल बनाया। जब उन्हें ख़ुदाए रहमान की आयतें सुनाई जातीं तो वे सज्दा करते हुए और रोते हुए गिर पड़ते। (58)

यहां उन पैगम्बरों की तरफ इशारा किया गया है जो आदम की नस्ल, नूह की नस्ल और इब्राहीम की नस्ल में ख़ुसूसियत से पैदा हुए जिन्हें ख़ुदा ने इसका अहल पाया कि उन्हें अपनी ख़ास हिदायत से नवाजे और उन्हें लोगों के सामने अपनी नुमाइंदगी के लिए चुन ले।

इन हज़रत पर ख़ुदा ने इतने बड़े-बड़े इनामात क्यों किए। फ़रमाया कि इसकी वजह उनका यह मुशतरक वस्फ (साझा गुण) था कि वे ख़ुदा की ख़ुदाई के एहसास में इतना बड़े हुए थे कि उसका कलाम सुनकर उनका सीना हिल जाता था और वे रोते हुए उसके आगे ज़मीन पर गिर पड़ते थे।

‘रोते हुए सज्दे में गिरना’ ख़ुदा की अज़मत व जलाल (प्रताप) के एतराफ का आखिरी दर्जा है। जिसे यह दर्जा मिले उसने गोया उस ईमान का जायका चखा जो नबियों और रसूलों के लिए ख़ास है।

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَاتِ فَسُوفَ يَلْقَوْنَ غِيَاثًا ۚ إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۖ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ۖ

फिर उनके बाद ऐसे नाख़लफ जानशीन (बुरे उत्तराधिकारी) हुए जिन्होंने नमाज़ को खो दिया और ख़्वाहिशों के पीछे पड़ गए, पस अनकरीब वे अपनी ख़राबी को देखेंगे, अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान ले आया और नेक काम किया तो यही लोग जन्नत में दाख़िल होंगे और उनकी ज़रा भी हक्कतलफ़ी नहीं की जाएगी। (59-60)

पैगम्बर की दावत के जरिए जो अफ़राद बनते हैं उनकी नुमायां ख़ुसूसियत यह होती है कि वे ख़्वाहिशपरस्ती से ऊपर उठ जाते हैं। वे अल्लाह को याद करने वाले बन जाते हैं जिसकी एक मुतअय्यन (सुनिश्चित) सूरत का नाम नमाज़ है। दीन की अस्ल ख़ुदा की याद है। और नमाज़ उसी ख़ुदा की याद की एक मुनज़्जम सूरत।

पैगम्बरों को मानने वालों की अगली नस्लें अगर ख़ुदा से ग़ाफ़िल हो जाएं और ख़्वाहिश के पीछे चलने लगें तो ख़ुदा के नजदीक वे गुमराह लोग हैं। पैगम्बरों से वाबस्तगी उन्हें कोई फ़ायदा देने वाली नहीं। ऐसे लोग यकीनन अपने अंजाम को पहुँचेंगे। उनमें से सिर्फ वही लोग बचेंगे जो दुबारा अस्ल दीन की तरफ लौटें और हक्कीकी मजनों में ईमान और अमले सालेह की जिंदगी इख़्तियार करें।

आख़िरत के लिए कोशिश करने वाले को फ़ौरन अपनी महनतों और कुर्बानियों का अंजाम नहीं मिलता। इसलिए कोई शख़्स शुबह कर सकता है कि यह रास्ता ऐसा है जिसमें अमल है मगर अमल का अंजाम नहीं। मगर यह महज़ ग़लतफ़हमी है। हक्कीकत यह है कि जिस तरह दुनिया के लिए अमल करने वाले अपने अमल का बदला पाते हैं इसी तरह आख़िरत के लिए अमल करने वाले भी अपने अमल का भरपूर बदला पाएंगे। इस मामले में किसी शक में पड़ने की ज़रूरत नहीं।

جَنَّتْ عَدْنٍ ۖ إِلَيْهَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ عِبَادَهُ بِالْغَيْبِ ۖ إِنَّكَ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًا ۖ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا ۖ إِلَّا سَلَامًا ۚ وَلَهُمْ فِيهَا زُرْقَةٌ ۖ فِيهَا بُكْرَةٌ وَعُشْيٌ ۖ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي نُورِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا ۖ

उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनका रहमान ने अपने बंदों से ग़ायबाना वादा कर रखा है। और यह वादा पूरा होकर रहना है। उसमें वे लोग कोई फ़ुकूल बात नहीं सुनें सिवाए सलाम के। और उसमें उनका रिक़ सुबह व शाम मिलेगा,

यह वह जन्त है जिसका वारिस हम अपने बंदों में से उन्हें बनाएंगे जो खुदा से डरने वाले हों। (61-63)

मौजूदा दुनिया में इन्तेहान की वजह से हर एक को आजादी मिली हुई है। यहां अच्छाई करने वाले भी आजाद हैं और बुराई करने वाले भी आजाद। इसका नतीजा यह है कि मौजूदा दुनिया में एक सच्चे इंसान को कभी सुकून हासिल नहीं होता। वह जाती तौर चाहे कितना ही ठीक हो मगर दूसरे लोगों की बेठीक बातें उसे सुकून लेने नहीं देतीं। लोग अपनी आजादी से गलत फायदा उठाकर माहौल को गंदी बातों और बुरी आवाजों से भर देते हैं।

जन्त वह बस्ती है जिससे इस किस्म के तमाम इंसान खारिज कर दिए जाएंगे। यहां सिर्फ वे आला जौक (उच्च रुचि) के लोग आबाद किए जाएंगे जिन्होंने दुनिया में यह सुबूत दिया था कि वे कांटों की मानिंद नहीं जीते बल्कि फूल की मानिंद रहना जानते हैं। ऐसे लोगों के माहौल में जो जिंदगी बनेगी वह बिलाशुबह अबदी सलामती की जन्त होगी।

दुनिया में लुग्व (निकृष्ट) चीजों से बचना और सलामती का पैकर बनकर जिंदगी गुजारना एक सख्ततरीन अमल है। इसके लिए अपनी आजाद जिंदगी को खुद अपने इरादे से पाबंद जिंदगी बना लेना पड़ता है। यह मुश्किलतरीन कुर्बानी है जिसका सुबूत सिर्फ वह शख्स दे सकता है जो फिलवाकअ अल्लाह से डरता हो। अल्लाह से डरने वाले ही दुनिया में जन्तनी इंसान बनकर रह सकते हैं। और यही वे लोग हैं जो आखिरत की अबदी जन्तों में दाखिल किए जाएंगे।

وَمَّا نَذَرَ لِّأَيِّمَرِّرِّيكَ ۖ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ ۖ
وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ۖ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ
لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَعْلَمُ لَهُ سَمِيًّا ۖ

और हम नहीं उतरते मगर तुम्हारे रब के हुक्म से। उसी का है जो हमारे आगे है और जो हमारे पीछे है और जो इसके बीच में है। और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं। वह रब है आसमानों का और जमीन का और जो इनके बीच में है, पस तुम उसी की इबादत करो और उसकी इबादत पर कायम रहो। क्या तुम उसका कोई हमसिफ्त (उसके गुणों जैसा) जानते हो। (64-65)

इस्लामी दावत (आह्वान) जब मुखालिफत के दौर में हो तो यह दाओ (आह्वानकर्ता) के लिए बड़ा सख्त मरहला होता है। दाओ हर रोज चाहता है कि मौजूदा कैफियत को खत्म करने के लिए कोई नया इक्दाम किया जाए। जबकि खुदा का हुक्म यह होता है कि सब्र और इत्तिजर का तरीका इस्तियार करो।

ऐसी ही एक कैफियत एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पेश

आई। हालात की शिद्दत के पेशेनजर आप खुदा की तरफ से मजीद हिदायत के मुंजिर थे। मगर एक रिवायत के मुताबिक तकरीबन चालीस दिन तक जिब्रील नहीं आए। फिर जब वह आए तो आपने कहा कि ऐ जिब्रील, इतनी देर क्यों कर दी। उन्होंने जवाब दिया कि हम खुदा की मर्जी के पाबंद हैं। जब खुदा की तरफ से कोई हिदायत मिलती है तो आते हैं और जब हिदायत नहीं मिलती तो नहीं आते।

यह वाकया बयान करके यहां सब्र की तल्कीन की गई है। जो सूरतेहाल जारी है उसे खुदा पूरी तरह देख रहा है। इसके बावजूद अगर उसकी तरफ से नई हिदायत नहीं आ रही है तो इसका मतलब यह है कि उस वक्त यही मत्लूब है कि इस सूरतेहाल को बर्दाश्त किया जाए। अगर हिकमत का तकाजा कुछ और होता तो यकीनन कोई और हुक्म आता। खुदा से ज्यादा कोई जानने वाला नहीं इसलिए खुदा से बेहतर किसी की रहनुमाई भी नहीं हो सकती।

‘रुकने’ वाले हालात में ‘इक्दाम’ (पहल) की आयत तलाश करना सही नहीं। ऐसा करना गोया उस हुक्म को वक्त से पहले उतारने की कोशिश करना है जो अभी आदमी के लिए नहीं उतरा।

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ إِذَا مَا مِثْلُ لَسَوْفَ أَخْرُجُ ۖ
أَوَلَيْدُ الْإِنْسَانُ أَنَا ۖ
خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا ۖ فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ
حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۖ

और इंसान कहता है क्या जब मैं मर जाऊंगा तो फिर जिंदा करके निकाला जाऊंगा। क्या इंसान को याद नहीं आता कि हमने उसे इससे पहले पैदा किया और वह कुछ भी न था। पस तेरे रब की कसम, हम उन्हें जमा करेंगे और शैतानों को भी, फिर उन्हें जहन्नम के गिर्द इस तरह हाजिर करेंगे कि वे घुटनों के बल गिरे होंगे। (66-68)

अरब के लोग जो कुरआन के पहले मुखातब थे वे जिंदगी बाद मौत को मानते थे। मगर यह मानना सिर्फ रस्मी मानना था, वह हकीकी मानना न था। कुरआन में आखिरत (परलोक) से मुतअल्लिक जितने अल्फज हैं वे सब पहले से उनकी जवान में मौजूद थे। मगर उनकी जिंदगी पर इस मानने का कोई असर न था। उनकी अमली जिंदगी ऐसी थी गोया कि वे जवानेहाल से कह रहे हों कि जिंदगी तो बस यही दुनिया की जिंदगी है। मरने के बाद कौन हमें उठाएगा और कौन हमारा हिसाब लेगा।

मगर यह गफलत या इंकार सिर्फ इसलिए है कि आदमी संजीदगी के साथ गौर नहीं करता। अगर वह गौर करे तो उसकी पहली पैदाइश ही उसके लिए उसकी दूसरी पैदाइश की दलील बन जाए।

यहां ‘शयातीन’ से मुगद बुरे लीडर हैं। ये लीडर पुरफरेब अल्फज बोल कर अवाम को बहकाते हैं। इस एतबार से वे वही काम करते हैं जो शैतान करता है। मौजूदा दुनिया में ये

लीडर अज्मत के मक़म पर खड़े हुए नज़र आते हैं। इसलिए लोग उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं कर पाते। मगर आखिरत में उनकी अज्मत ख़त्म हो जाएगी। वहां ये बड़े लोग भी उसी तरह ज़िल्लत के गढ़ में डाल दिए जाएंगे जिस तरह उनके छोटे लोग।

ثُمَّ لَنُنَزِّعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمَنِ عِتِيًّا ۖ ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ
بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ۖ وَإِنْ مِنْكُمْ أُولَٰءِ وَارِدُهَا كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ حَتْمًا
مَّقْضِيًّا ۖ ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا وَنَذَرُ الظَّالِمِينَ فِيهَا جِثِيًّا ۖ

फिर हम हर गिरोह में से उन लोगों को जुदा करेंगे जो रहमान के मुकाबले में सबसे ज्यादा सरकश बने हुए थे। फिर हम ऐसे लोगों को ख़ूब जानते हैं जो जहन्नम में दाख़िल होने के ज्यादा मुस्तहिक हैं और तुम में से कोई नहीं जिसका उस पर से गुजर न हो, यह तेरे रब के ऊपर लाज़िम है जो पूरा होकर रहेगा। फिर हम उन लोगों को बचा लेंगे जो डरते थे और जालिमों को उसमें गिरा हुआ छोड़ देंगे। (69-72)

हक़ को न मानना ज़ुर्मु है मगर हक़ को न मानने की तहरीक चलाना इससे भी ज्यादा बड़ ज़ुर्मु है। जो लोग हक़ के ख़िलाफ़ तहरीक के कयद बने वे खुदा की नज़र में बदतरीन सजा के मुस्तहिक हैं। उन्हें आखिरत में आम लोगों के मुक़ाबले में दुआनी सजा दी जाएगी। क़ुरआन के अल्फ़ाज़ से और क़ुछ रिवायात से यह मालूम होता है कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन तमाम लोगों को जहन्नम से गुज़ारेगा। यह गुज़रना जहन्नम के अंदर से नहीं होगा बल्कि उसके ऊपर से होगा। यह ऐसा ही होगा जैसे गहरे दरिया के ऊपर आदमी खुले पुल के ज़रिए गुजर जाता है। वह दरिया की ख़तरनाक मौज़ों को देखता है मगर वह उसमें शर्क नहीं होता। इसी तरह क़ियामत के दिन तमाम लोग जहन्नम के ऊपर से गुज़रेंगे। जो नेक लोग हैं वे आगे जाकर जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे। और जो बुरे लोग हैं वे आगे न बढ़ सकेंगे। जहन्नम उन्हें पहचान कर उन्हें अपनी तरफ़ खींच लेगी।

इस तजर्बे का मक़सद यह होगा कि जन्नत में दाख़िल किए जाने वाले लोग खुदा की उस अजीम नेमत का वाकई एहसास कर सकें कि उसने कैसी बुरी जगह से बचा कर उन्हें कैसी बेहतर जगह पहुंचा दिया है।

وَإِذْ أُنْثِيَ عَلَيْهِمُ الْبَيِّنَاتُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا ۚ أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَ أَحْسَنُ دَرَجًا ۖ وَكَمْ أَهْلُكُنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَوْمٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا
وَرِثِيًّا ۖ

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो इंकार करने वाले ईमान लाने

वालों से कहते हैं कि दोनों गिरोहों में से कौन बेहतर हालत में है और किस की मज़लिस ज्यादा अच्छी है। और उनसे पहले हमने कितनी ही कौमों हलाक कर दी जो उनसे ज्यादा असबाब (संसाधन) वाली और उनसे ज्यादा शान वाली थीं। (73-74)

जो लोग हक़ नाहक की बहस में न पड़ें। जो आखिरत के मुक़ाबले में दुनिया की मस्लेहतों को अहमियत दें। जो खुदा को ख़ुश करने से ज्यादा अवाम को ख़ुश करने का एहतिमाम करते हों। ऐसे लोग हमेशा ज्यादा कामयाब रहते हैं। उनके गिर्द ज्यादा रैनक और शान जमा हो जाती है। दूसरी तरफ़ जो लोग हर मामले में यह देखें कि हक़ क्या है और नाहक क्या। जो दुनिया की मस्लेहतों (हितों) को नज़रअंदाज़ करें और आखिरत की मस्लेहतों को तरजीह दें। जो अवामी रुज़्हान से ज्यादा खुदा का लिहाज़ करें। ऐसे लोग अक्सर जाहिरी शान व शौकत वाली चीज़ों से महरूम रहते हैं।

यह फ़र्क बहुत से लोगों के लिए ग़लतफ़हमी का सबब बन जाता है। वे समझते हैं कि जो लोग दुनियावी एतबार से बेहतर हैं वे खुदा के पसंदीदा हैं और जो लोग दुनियावी एतबार से बेहतर नहीं वे खुदा के नजदीक नापसंदीदा हैं। मगर यह मेयार सरासर ग़लत है। और माजी की तारीख़ इसकी तरदीद (खंडन) करने के लिए काफ़ी है। कितने फ़ुफ़्फ़ूर सर जमीन के नीचे दफ़न हो गए। कितने महल हैं जो आज खंडहर के सिवा किसी और सूरत में देखने वालों को नज़र नहीं आते।

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الصَّلَاةِ فليمددْ لَهُ الرَّحْمَنُ مَدًّا حَتَّىٰ إِذَا أَكَلُوا مِمَّا يُوعَدُونَ ۖ وَإِنَّمَا الْعَذَابُ وَآثَا السَّاعَةِ فَيَسْئَلُهُمْ مَنْ هُوَ شَرُّ مَكَانًا ۖ وَأَضَعْتُ جُنْدًا ۖ

कहो कि जो शरूस् गुमराही में होता है तो रहमान उसे ढील दिया करता है यहां तक कि जब वे देख लेंगे उस चीज़ को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है, अजाब या क़ियामत, तो उन्हें मालूम हो जाएगा कि किस का हाल बुरा है और किस का जल्था कमज़र। (75)

सरकश आदमी को सरकशी का मौका मिलना मोहलते इम्तेहान की वजह से होता है न कि किसी हक़ (अधिकार) की बिना पर। मगर अक्सर ऐसा होता है कि आदमी इस फ़र्क को समझ नहीं पाता। वह वक्ती मोहलत को अपनी मुस्तक़िल हालत समझ लेता है। उस की आंख उस वक्त तक नहीं खुलती जब तक मुद्दत के ख़ात्मे का एलान न हो जाए और उससे सरकशी का हक़ छीन न लिया जाए।

खुदा अपनी मस्लेहत के तहत किसी को दुनिया ही में यह तजर्बा करा देता है। कोई इसी हाल पर बाक़ी रहता है। यहां तक मौत उसे वह चीज़ दिखा देती है जिसे वह ज़िंदगी में देखने के लिए तैयार न हुआ था।

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى وَالْبَقِيَّةُ الضَّالُّاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَرَدًّا ۝

और अल्लाह हिदायत पकड़ने वालों की हिदायत में इजाफा करता है और बाकी रहने वाली नेकियां तुम्हारे खब के नजदीक अज्र (प्रतिफल) के एतबार से बेहतर हैं और अंजाम के एतबार से भी बेहतर। (76)

हिदायतयाब होना यह है कि आदमी का शुऊर सही रुख पर जाग उठे। ऐसे आदमी के सामने कोई सूरतेहाल आती है तो वह उसकी सही तौजीह करके उसे अपनी गिजा बना लेता है। इस तरह उसकी हिदायत में यकीन और कैफ़ियत के एतबार से बराबर इजाफा होता रहता है। उसकी हिदायत जामिद (स्थिर) चट्टान की तरह नहीं होती बल्कि जिंदा दरख्त की मानिंद होती है जो बराबर बढ़ता चला जाए।

जिस तरह दुनिया के पेनेनजर अमल करने वाला बराबर तरक्की करता रहता है, इसी तरह आखिरत को सामने रखकर अमल करने वाले का अमल भी मुसलसल इजाफा पजीर (वृद्धिशील) है। यह इजाफा पजीरी चूँकि आखिरत में जख़ीरा हो रही है। इसलिए वह दुनिया में नजर नहीं आती। मगर कियामत जब पर्दा फाड़ देगी तो हर आदमी देख लेगा कि हिदायत पाने वाले की हिदायत किस तरह बढ़ रही थी और इसी के साथ उसका अमल भी।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتِيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ۚ أَظَلَمَ الْغَيْبُ أَمْ ائْتَمَّ ۚ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۚ كَلَّا سَتَكُنُّبُ مَأْيُقُولُ وَمُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۚ وَسَرُتُهُ مَأْيُقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ۚ

क्या तुमने उसे देखा जिसने हमारी आयतों का इंकार किया और कहा कि मुझे माल और औलाद मिलकर रहेंगे। क्या उसने शैब में झाँक कर देखा है या उसने अल्लाह से कोई अहद (वचन) ले लिया है, हरगिज नहीं, जो कुछ वह कहता है उसे हम लिख लेंगे और उसकी सजा में इजाफा करेंगे। और जिन चीजों का वह दावेदार है उसके वारिस हम बनेंगे और वह हमारे पास अकेला आएगा। (77-80)

जब आदमी के पास दौलत और ताकत का कोई हिस्सा आता है तो उसके अंदर ग़लत किस्म की खुदएतमादी पैदा हो जाती है। वह ऐसी रविश इख्तियार करता है जो उसकी वाकई हैसियत से मुताबिकत नहीं रखती। वह ऐसी बातें बोलने लगता है जो उसे नहीं बोलना चाहिए।

ऐसा ही एक वाकया मक्का में हुआ। आस बिन वाइल मक्का का एक मुशरिक सरदार

था। हज़रत ख़ुबाब बिन अल अरत की कुछ रकम उसके जिम्मे बाकी थी। उन्होंने रकम का मुतालाबा किया तो आस बिन वाइल ने कहा कि मैं तुम्हारी रकम उस वक़्त दूंगा जबकि तुम मुहम्मद का इंकार करो। उनकी जबान से निकला कि मैं हरगिज मुहम्मद का इंकार नहीं करूँगा यहाँ तक कि तुम मरो और फिर पैदा हो। आस बिन वाइल ने यह सुनकर कहा कि जब मैं दुबारा पैदा हूँगा तो वहाँ भी मैं माल और औलाद का मालिक रहूँगा, उस वक़्त तुम मुझसे अपनी रकम ले लेना।

यह सब झूठी खुदएतमादी की बातें हैं और झूठी खुदएतमादी किसी के कुछ काम आने वाली नहीं।

وَائْتِخِذْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهَةً لِيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا ۚ كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ۚ

और उन्होंने अल्लाह के सिवा माबूद (पूज्य) बनाए हैं ताकि वे उनके लिए मदद बनें। हरगिज नहीं, वे उनकी इबादत का इंकार करेंगे और उनके मुखालिफ बन जाएंगे। (81-82)

इंसान यह चाहता है कि वह दुनिया में जो चाहे करे, मगर उसे उसकी बदअमली का अंजाम न भुगतना पड़े। इस किस्म की हिफ़ाजत किसी को अल्लाह से नहीं मिल सकती थी। इसलिए उसने ऐसी हस्तियां तज्वीज कर लीं जो अल्लाह की महबूब हों और उसकी तरफ से अल्लाह के यहाँ सिफारिश बन सकें।

मगर यह सब बेबुनियाद कयासात (अनुमान) हैं जो किसी के कुछ काम आने वाले नहीं। यहाँ तक कि वे हस्तियां जिन्हें आदमी ने शरीक फर्ज करके उनके लिए इबादती मरासिम (रस्में) अदा किए थे वे भी कियामत के दिन उससे बरा-त (विरक्ति) करेंगे। इंसान को उनसे नफरत के सिवा और कुछ हासिल न हो सकेगा।

الْمُرْتَكِبِينَ إِنَّمَا أَرْسَلْنَا الشَّيَاطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَوَهُّمًا ۚ وَلَا تَجْعَلْ عَلَيْهِمْ إِثْمًا ۚ نَعُدُّ لَهُمْ عَذَابًا ۚ يَوْمَ نُخْشِرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفْدًا ۚ وَسَوْفَ الْجَبْرِيُّنَ إِلَى جَهَنَّمَ وَرِدًّا ۚ لَا يَسْتَكُونُ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ۚ

क्या तुमने नहीं देखा कि हमने मुकिरों पर शैतानों को छोड़ दिया है, वे उन्हें ख़ूब उभार रहे हैं। पस तुम उनके लिए जल्दी न करो। हम उनकी गिनती पूरी कर रहे हैं। जिस दिन हम डरने वालों को रहमान की तरफ महमान बनाकर जमा करेंगे। और मुजरिम् को जहन्म की तरफ प्यासा हंकेगा। किसी को शफ़अत का इख्तियार न होगा मगर उसे जिसने रहमान के पास से इजाजत ली हो। (83-87)

आदमी के सामने हक अपनी वाजेह सूत में आए मगर वह उसे नज़्अंदाज कर दे तो ऐसा अमल शैतान को अपने अंदर राह देने का सबब बन जाता है। इसके बाद आदमी का जेहन बिल्कुल मुखालिफ सम्त में चल पड़ता है। अब हर दलील उसके जेहन में जाकर उलट जाती है। खुदा की निशानियां उसके सामने आती हैं। मगर वह उनकी खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) तौजीह करके उन्हें अपनी सरकशी की गिज़ा बना लेता है।

जो शख्स झूठे सहारों को अपना सहारा समझ ले वह हमेशा इसी किसम की नादानी में मुब्तिला हो जाता है। मगर जो अल्लाह से डरने वाले हैं वे सिर्फ अल्लाह को अपना सहारा समझते हैं। अल्लाह का डर उनकी नजर से उन तमाम हस्तियों को हटा देता है जिन्हें झूठा सहारा बनाकर लोग गुमराह होते हैं। यही वे लोग हैं जो आखिरत में अल्लाह के बाइज्जत महमान बनाए जाएंगे।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا ۚ لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ۖ تَكَذَّبْتُمُوهُ يَتَفَضَّرُونَ مِنْهُ
وَتَشْتُقُّ الْأَرْضَ وَتَأْخُذُ الْجِبَالَ هَذَا ۖ أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا ۚ وَمَا يُبْغِي
لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ۚ

और ये लोग कहते हैं कि रहमान ने किसी को बेटा बनाया है। यह तुमने बड़ी संगीन बात कही है। करीब है कि इससे आसमान फट पड़े और जमीन टुकड़े हो जाए और पहाड़ टूट कर गिर पड़ें, इस पर कि लोग रहमान की तरफ औलाद की निस्वत करते हैं। हालांकि रहमान की यह शान नहीं कि वह औलाद इख्तियार करे। (88-92)

खुदा के लिए औलाद मानना दो वजहों से हो सकता है। या तो यह कि खुदा को अपने लिए मददगार की जरूरत है। या वह आम इंसानों की तरह औलाद की तमन्ना रखता है। इसलिए उसने अपनी औलाद बनाई है। ये दोनों बातें बेबुनियाद हैं।

जमीन व आसमान की बनावट इतनी कामिल है कि यह बिल्कुल नाकाबिले तसव्वुर (अकल्पनीय) है कि उसे बनाने और चलाने वाला खुदा ऐसा हो जो इंसानों की तरह की कमियां अपने अंदर रखता हो। मख़बूत अपने ख़ालिक का जो तआरुफ करा रही हैं उसमें खुदा की औलाद का तसव्वुर किसी तरह चसपां नहीं होता।

إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا آتِي الرَّحْمَنِ عَبْدًا ۚ لَقَدْ أَحْصَاهُمْ
وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۚ وَكُلُّهُمْ إِلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَرْدًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا ۚ

आसमानों और जमीन में कोई नहीं जो रहमान का बंदा होकर न आए। उसके पास

उनका शुमार है और उसने उन्हें अच्छी तरह गिन रखा है और उनमें से हर एक कियामत के दिन उसके सामने अकेला आएगा। अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए उनके लिए खुदा मुहब्बत पैदा कर देगा। (93-96)

अक्सर ऐसा होता है कि जो लोग बेआमेज (विशुद्ध) हक को लेकर उठते हैं वे अवाग के नजदीक मवजूज (अप्रिय) होकर रह जाते हैं। मिलावटी सच्चाई पर कायम होने वाले लोग बेमिलावट वाली सच्चाई के अलमबरदार को वहशत की नजर से देखने लगते हैं।

मगर यह सिर्फ मौजूदा दुनिया का मामला है। आखिरत का मामला इसके बिल्कुल मुखलिफ होगा। वहां का सारा माहौल उन्हीं लोगों के साथ होगा जो बेआमेज (विशुद्ध) हक पर अपने आपको खड़ा करें। आखिरत की दुनिया में इज्जत और मकबूलियत तमामतर उन अशख़ास (लोगों) के हिस्से में आएगी जिन्होंने मौजूदा दुनिया की इज्जत व मकबूलियत से बेपरवाह होकर अपने आपको बेआमेज (विशुद्ध) सच्चाई के साथ वाबस्ता किया था।

मिलावटी सच्चाई की दुनिया में मिलावटी सच्चाई पर खड़ा होने वाला इज्जत पाता है। इसी तरह बेआमेज सच्चाई की दुनिया में उसे इज्जत मिलेगी जो बेआमेज सच्चाई की जमीन पर खड़ा हुआ था।

فَإِنَّمَا يَسْتَرْزِيهِ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ وَتُنذِرَ بِهِ قَوْمًا لَّدَا ۖ وَكَمْ
أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ ۖ هَلْ نُحِشُ مِنْهُمْ ۚ مَنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ
رِكْزًا ۚ

पस हमने इस कुरआन को तुम्हारी जवान में इसलिए आसान कर दिया है कि तुम मुत्तकियों (ईश-परायण लोगों) को खुशखबरी सुना दो। और हठधर्म लोगों को डरा दो। और इनसे पहले हम कितनी ही कौमों को हलाक कर चुके हैं। क्या तुम उनमें से किसी को देखते हो या उनकी कोई आहट सुनते हो। (97-98)

खुदा की किताब इंसान की काबिलेफ़हम जवान में है। इसी के साथ उसके मजामीन में उन तमाम पहलुओं की पूरी रिआयत मौजूद है जो किसी किताब को इस काबिल बनाते हैं कि वह उससे रहनुमाई ले सके। मगर इन सबके बावजूद कुरआन उन्हीं लोगों के लिए रहनुमाई का जरिया बनता है जो संजीदा हों और जिन्हें यह खटक हो कि वे हक और नाहक को जानें। वे नाहक (असत्य) से बचें और हक (सत्य) के मुताबिक अपनी जिंदगी की तामीर करें। जो लोग संजीदगी और तलब से ख़ाली हों वे कुरआन की तालीमात को सुनकर सिर्फ बेमअना बहस करेंगे, वे उससे कोई फायदा हासिल नहीं कर सकते।

जो लोग हक की दावत के मुखालिफ बनकर खड़े होते हैं वे हमेशा इस ग़लतफहमी में रहते हैं कि ऐसा करने से उनका कुछ बिगड़ने वाला नहीं। उनके आसपास मुखालिफ़ीने हक

की तबाही के वाक्यात मौजूद होते हैं मगर वे उनसे इबरत (सीख) नहीं लेते। वे आखिर वक्त तक यही समझते हैं कि जो कुछ हुआ वह सिर्फ दूसरों के लिए था। उनके अपने साथ कुछ होने वाला नहीं।

मगर अल्लाह के कानून में कोई इस्तिस्ना (अपवाद) नहीं। यहां हर आदमी के साथ वही होने वाला है जो दूसरे के साथ हुआ, अच्छों के लिए अच्छा और बुरों के लिए बुरा।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَاللَّهُ يَتَذَكَّرُ أُولَئِكَ لَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا تَذَكُّرًا
طَهُ ۥ مَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْفَى ۖ إِلَّا تَذَكُّرًا لِّبَنِي خَشْيٍ ۖ تَنْزِيلًا
مِّنْ خَلْقِ الْأَرْضِ وَالسَّمُوتِ الْعُلَى ۚ الرَّحْمَنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ۚ لَهُ
مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرَى ۚ

आयतें-135

सूरह-20. ता० हा०

रुकूअ-8

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। ता० हा०। हमने कुरआन तुम पर इसलिए नहीं उतारा कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ। बल्कि ऐसे शख्स की नसीहत के लिए जो डरता हो। यह उसकी तरफ से उतारा गया है जिसने जमीन को और ऊंचे आसमानों को पैदा किया है। वह रहमत वाला है, अर्श पर कायम है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है और जो इन दोनों के दर्मियान है और जो कुछ जमीन के नीचे है। (1-6)

कुरआन अगरचे सिर्फ एक याददिहानी (अनुस्मरण) है। मगर वह मदद (संबंधित व्यक्ति) के लिए काबिलेहुज्जत याददिहानी उस वक्त बनता है जबकि उसकी दावत देने वाला अपने आपको उसकी राह में खपा दे। दूसरों की खैरख्वाही में वह अपने आपको इस हद तक नजरअंदाज कर दे कि यह कहा जाए कि इसने तो लोगों को हक (सत्य) की राह पर लाने के खातिर अपने आपको मशक्कत में डाल लिया।

ताहम दावत (आह्वान) को चाहे कितना ही कामिल और मेयारी अंदाज में पेश कर दिया जाए, अमलन उससे हिदायत सिर्फ उस खुदा के बंदे को मिलती है जो हक शनास (सत्य) को पहचानने वाला हो। जिसके अंदर यह सलाहियत हो कि दलील की सतह पर बात का वाजेह होना ही उसकी आंख खोलने के लिए काफी हो जाए।

जिस हस्ती ने आलम की तख्तीक की है उसी ने कुरआन को भी नज़िल किया है। इसलिए कुरआन और फितरत में कोई तजद (अन्तर्निष्ठ) नहीं। कुरआन एक ऐसी हकीकत की याददिहानी है जिसे पहचानने की सलाहियत फितरत इंसानी के अंदर पहले से मौजूद है।

وَلَا تَجْهَرُ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ۚ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ
الْكُتُبُ الْحُسْنَى ۚ

और तुम चाहे अपनी बात पुकार कर कहो, वह चुपके से कही हुई बात को जानता है। और इससे ज्यादा छुपी बात को भी। वह अल्लाह है। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। तमाम अच्छे नाम उसी के हैं। (7-8)

दुनिया में एक तरफ वे लोग हैं जिनका मजहब दुनिया से साजगारी होता है। दूसरी तरफ बेआमेज (विशुद्ध) हक का दाजी है जिसका मजहब खुदा से साजगारी पर कायम होता है। पहला गिरोह अपने माहौल में हर तरफ अपने साथी और मददगार पा लेता है। उसे कभी तंहा होने का एहसास नहीं होता। इसके बरअक्स हक का दाजी जिस माबूद (पूज्य) के ऊपर खड़ा हुआ है वह आंखों से ओझल होता है। हालात के तूफान में बार-बार उसका दिल तड़प उठता है। वह कभी अपने दिल में खुदा की तरफ मुतवज्जह होता है और कभी उसकी जबान से बआवाज बुलन्द दुआ के कलिमात निकल जाते हैं। ऐसा मालूम होता है कि इस भरी हुई दुनिया में वह अकेला है। कोई उसका साथी और मददगार नहीं।

मगर यह सिर्फ ज़हरी हलत है। हकीकत के एतबार से हक का दाजी (आह्वानकर्ता) सबसे ज्यादा मजबूत सहारे पर खड़ा हुआ होता है। वह ऐसे खुदा को पुकार रहा है जो तंहाई के अल्फाज और दिल की सरगोशियों तक से बाखबर है। वह उस खुदा को अपना सहारा बनाए हुए है जो उन तमाम कबिले कयास (कल्पनीय) और नाकबिले कयास कुयुतों का मालिक है जो किसी की मदद के लिए दरकार हैं।

وَهَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۖ إِذْ رَأَىٰ نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا ۚ
تَعَلَّىٰ آتَيْنَاكُمْ مِنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجْدُ عَلَى الثَّأْرِ هُدًى ۚ

और क्या तुम्हें मूसा की बात पहुंची है। जबकि उसने एक आग देखी तो अपने घर वालों से कहा कि ठहरो, मैंने एक आग देखी है, शायद मैं उसमें से तुम्हारे लिए एक अंगारा लाऊं या उस आग पर मुझे रास्ते का पता मिल जाए। (9-10)

हजरत मूसा मिन्न में पैदा हुए। वहां एक मौके पर एक किवती उनके हाथ से हलाक हो गया। इसके बाद वह मिन्न से निकल कर मदन चले गए। वहां वह कई साल तक रहे। वहीं एक ख़ातून से निकाह किया और फिर अपनी अहलिया (पत्नी) को लेकर वापस मिन्न के लिए खाना हो गए। उस वक्त आपके साथ बकरियां भी थीं।

हजरत मूसा इस सफर में सीना प्रायद्वीप के जुनूब (दक्षिण) में वादी तूर के इलाके से

गुजर रहे थे। रात हुई तो तारीकी में रास्ते का अंदाजा नहीं हो रहा था। मजीद यह कि यह सख्त सर्दी का मौसम था। इसी दौरान उन्हें दिखाई दिया कि दूर एक आग जल रही है। यह देखकर हजरत मूसा उसके रुख पर खाना हुए ताकि सर्दी का मुक़ाबला करने के लिए आग हासिल करें और वहां कुछ लोग हों तो उनसे रास्ता मालूम करें।

فَلَمَّا أَتَاهَا نُودِيَ يَبُوسَى ۖ إِنِّي أَنَا رَبُّكَ ۚ فَاخْلَعْنَا عَنْكَ إِثْمَكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۖ وَأَنَا اخْتَرْتُكَ ۖ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَى ۖ إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا ۚ فَاعْبُدْنِي وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ۚ إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لَتُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا تَسْعَىٰ ۖ فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا مَن لَّا يُؤْمِنُ بِهَا ۚ وَاتَّبَعَهُ هَوَاهُ ۖ فَتَرَدَّى ۖ

फिर जब वह उसके पास पहुंचा तो आवाज दी गई कि ऐ मूसा। मैं ही तुम्हारा रब हूँ, पस तुम अपने जूते उतार दो क्योंकि तुम तुवा की मुकद्दस (पवित्र) वादी में हो। और मैंने तुम्हें चुन लिया है। पस जो 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है उसे सुनो। मैं ही अल्लाह हूँ। मेरे सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। पस तुम मेरी ही इबादत करो और मेरी याद के लिए नमाज कायम करो। बेशक कियामत आने वाली है। मैं उसे छुपा रखना चाहता हूँ। ताकि हर शख्स को उसके किए का बदला मिले। पस इससे तुम्हें वह शख्स ग़ाफिल न कर दे जो इस पर ईमान नहीं रखता और अपनी ख्वाहिशों पर चलता है कि तुम हलाक हो जाओ। (11-16)

हजरत मूसा को जो आग नजर आई वह आम क्रिम की आग नहीं थी बल्कि खुदा की तजल्ली (आलोक) थी। चुनांचे जब वे वहां पहुंचे तो उन्हें एहसास दिलाया गया कि वह इस वक्त कहां हैं। उन्हें तवाजोअ (आदर) के साथ पूरी तरह मुतवज्जह होने के लिए जूते उतारने का हुक्म हुआ। फिर आवाज आई कि इस वक्त तुम खुदा से हमकलाम हो और खुदा ने तुम्हें अपनी पैगम्बरी के लिए चुना है।

उस वक्त हजरत मूसा को जो तालीम दी गई वह वही थी जो तमाम पैगम्बरों को हमेशा तालीम की गई है। यानी एक खुदा को माबूद (पूज्य) बनाना। उसी की इबादत करना। उसी को हर मैके पर याद रखना। फिर हजरत मूसा को जिंदगी की इस हकीकत की खबर दी गई कि मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। एक ख़ास मुद्दत तक के लिए खुदा ने हकीकतों को ग़ैब में छुपा दिया है। कियामत में यह पर्दा फट जाएगा। इसके बाद इंसानी जिंदगी का अगला दौर शुरू होगा जिसमें हर आदमी उस अमल के मुताबिक मकाम पाएगा जो उसने मौजूदा दुनिया में किया था।

जब एक आदमी पर ख्वाहिशों का ग़लबा होता है और वह आखिरत से बेपरवाह होकर दुनिया के रास्तों में चल पड़ता है तो वह अपने इस फेअल (कृत्य) को हक बजानिब साबित करने के लिए नजरियात वजअ करता है। वह अपनी रविश को खूबसूरत अल्फ़ज़ में बयान करता है। उसे सुनकर दूसरे लोग भी आखिरत से ग़ाफिल हो जाते हैं। ऐसी हालत में मोमिन को अपने बारे में सख्त चौकन्ना रहने की जरूरत है। उसे अपने आपको इससे बचाना है कि वह खुदा से ग़ाफिल और आखिरत फरामोश लोगों को देखकर उनसे मुतअस्सिर (प्रभावित) हो जाए। या उनकी खूबसूरत बातों के फरेब में आकर आखिरतपसंदाना जिंदगी को खो बैठे।

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يَبُوسَى ۖ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۖ أَتَوَكَّوْا عَلَيْهَا وَاهْتَسُوا بِهَا عَلَىٰ غَائِبِي ۖ وَلِي فِيهَا مَارِبٌ أُخْرَىٰ ۖ قَالَ أَلْقِهَا يَبُوسَى ۖ فَالْقَهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعَىٰ ۖ قَالَ خُذْهَا وَلَا تَحْتَفِ ۖ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولَىٰ ۖ

और यह तुम्हारे हाथ में क्या है ऐ मूसा, उसने कहा, यह मेरी लाठी है। मैं इस पर टेक लगाता हूँ और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ। इसमें मेरे लिए दूसरे काम भी हैं। फरमाया कि ऐ मूसा इसे जमीन पर डाल दो। उसने उसे डाल दिया तो यकायक वह एक दौड़ता हुआ सांप बन गया। फरमाया कि इसे पकड़ लो और मत डरो, हम फिर इसे इसकी पहली हालत पर लौटा देंगे। (17-21)

'तुम्हारे हाथ में क्या है' यह सवाल हजरत मूसा के शुऊर को जिंदा करने के लिए था। इसका मकसद यह था कि लाठी का लाठी होना हजरत मूसा के ज़हन में ताजा हो जाए। ताकि अगले लम्हे जब वह खुदा की कुदरत से सांप बन जाए तो वह पूरी तरह उसकी कद्व व कीमत का एहसास कर सकें।

हजरत मूसा की लकड़ी का सांप बन जाना वैसा ही एक अनोखा वाकया था जैसा मिट्टी और पानी का लकड़ी बन जाना। वह सब कुछ जो हम जमीन पर देख रहे हैं वह सब एक चीज से दूसरी चीज में तब्दील हो जाने का ही दूसरा नाम है गैस का पानी में तब्दील होना, मिट्टी का दरख्त में तब्दील होना वगैरह। आम हालात में तब्दीली का यह अमल क्रमवत होता है। इसलिए इंसान उसे महसूस नहीं कर पाता। हजरत मूसा की लकड़ी ने यकायक सांप की सूरत इख्तियार कर ली इसलिए वह अजीब मालूम होने लगी।

हकीकत यह है कि इस दुनिया में जो कुछ है या हो रहा है वह सब का सब खुदा का मोजिजा (चमत्कार) है। चाहे वह जमीन से लकड़ी का निकलना हो या लकड़ी का सांप बन जाना। पैगम्बरों के जरिए ग़ैर मामूली मोजिजा सिर्फ इसलिए दिखाया जाता है ताकि आदमी 'मामूली' (Monotonous) मोजिजात को देखने के काबिल हो जाए।

وَاحْمُمْ يَدَكَ إِلَى جَنَاحِكَ تَخْزِبَ بَيْضَاءَ مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۚ آيَةٌ أُخْرَى ۚ لِنُرِيكَ
مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ۚ اذْهَبْ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ۚ

और तुम अपना हाथ अपनी बगल से मिला लो, वह चमकता हुआ निकलेगा बगैर किसी ऐब के। यह दूसरी निशानी है। ताकि हम अपनी बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियां तुम्हें दिखाएं। तुम फिरऔन के पास जाओ। वह हद से निकल गया है। (22-24)

पिछले नबियों के वाक्यात बाइबल में भी हैं और कुरआन में भी। मगर बहुत से मकामात पर कुरआन और बाइबल में बहुत वामअना फर्क है। मसलन यहां बाइबल में है मूसा ने अपना हाथ अपने सीने पर रखकर उसे ढांक लिया और जब उसने उसे निकाल कर देखा तो उसका हाथ कोढ़ से बर्फ की मानिंद सफेद था। (खुर्ज 4 : 7)

बाइबल हजरत मूसा के हाथ की सफेदी को 'कोढ़' बता रही है। ऐसी हालत में कुरआन में यदवेजा के मोजिजे को बयान करते हुए 'मिन गहरि सू' का इजाफा वाहे तौर पर बता रहा है कि कुरआन बाइबल से माखूज (उद्धृत) नहीं है। बल्कि यह खुदाए आलिमुलगैब की तरफ से है जो बाइबल की तहरीफत (परिवर्तनों) को सही कर रहा है।

हजरत मूसा को दो ख़ास मोजिजे दिए गए। सांप का मोजिजा आपके लिए गोया ताकत की अलामत था। और यदवेजा (हाथ का चमकना) का मोजिजा इस बात की अलामत कि आप एक रैशन सदाकत पर कयम हैं।

फिरऔन का हद से गुजर जाना यह था कि उसे इक्तेदार (सत्ता) मिला तो उसने अपने को खुदा समझ लिया। फिरऔन के लफ्जी मअना हैं सूरज की औलाद। कदीम मिस्त्री सूरज को सबसे बड़ा देवता (रखे आला) समझते थे। चुनांचे फिरऔन ने अपने को सूर्य देवता का जमीनी मजहर (प्रतीक) बताया। उसने अपने स्टेचू और बुत बनवा कर मिन्न के तमाम शहरों में रखवा दिए जो बाकायदा पूजे जाते थे।

इक्तेदार खुदा की एक नेमत है। इस नेमत को पाकर आदमी के अंदर शुक्र का जब्बा उभरना चाहिए। मगर सरकश इंसान इक्तेदार को पाकर खुद अपने आपको खुदा समझ लेता है।

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ۖ وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ۖ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِي ۖ
يَقْفُوهُ أَقْوَامٌ ۖ وَاجْعَلْ لِّي وَزِيرًا مِّنْ أَهْلِي ۖ هَٰرُونَ أَخِي ۖ اشْدُدْ لَهُ أَزْرِي ۖ
وَاشْرِكْهُ فِي أَمْرِي ۖ كَىٰ سُبْحِكَ كَثِيرًا ۖ وَنَذْرُكَ كَثِيرًا ۖ إِنَّا كُنَّا بِمَا نَعْبُدُ ۖ
قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يٰمُوسَىٰ ۖ

मूसा ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे सीने को मेरे लिए खोल दे। और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर दे। और मेरी जवान की गिरह खोल दे। ताकि लोग मेरी बात समझें। और मेरे खानदान से मेरे लिए एक मुआविन (सहायक) मुकर्र कर दे, हासून को जो मेरा भाई है। उसके जरिए से मेरी कमर को मजबूत कर दे। और उसे मेरे काम में शरीक कर दे ताकि हम दोनों कसरत (अधिकता) से तेरी पाकी बयान करें और कसरत से तेरा चर्चा करें। बेशक तू हमें देख रहा है। फरमाया कि दे दिया गया तुम्हें ऐ मूसा तुम्हारा सवाल। (25-36)

पैगम्बरी मिलने के बाद एक सूरत यह थी कि हजरत मूसा के अंदर अहसासे फख्र पैदा हो। मगर उस वक़्त उन्होंने जो कुछ अल्लाह से मांगा उससे जाहिर होता है कि उन्होंने पैगम्बरी को फख्र की चीज नहीं समझा बल्कि जिम्मेदारी की चीज समझा। उस वक़्त उन्होंने जो अल्फज़ कहे वे सब वे हैं जो दावत (सत्य का आह्वान) की नाजुक जिम्मेदारी का एहसास करने वाले की जवान से निकलते हैं।

दाजी के लिए सीने का खुलना यह है कि हस्बे मौका उसके अंदर प्रभावशाली मजामीन का वुरुद (जाप) हो। मामले का आसान होना यह है कि मुखालिफीन कभी दावत की राह बंद करने में कामयाब न हो सकें। जवान की गिरह खुलना यह है कि बड़े-बड़े मजमे में बिला झिझक दावत पेश करने का मलका पैदा हो जाए। अल्लाह तआला ने हजरत मूसा को पैगम्बराना जिम्मेदारी अदा करने के लिए ये सब कुछ दिया। इसी के साथ उनकी दरखास्त के मुताबिक उनके भाई को उनके लिए एक ताकतवर मुआविन (सहायक) बना दिया।

नुरसरत मदद का यह खुसूसी मामला जो पैगम्बर के साथ किया गया यही ग़ैर पैगम्बर दाजी के लिए भी हो सकता है बशर्ते कि वह दावत के काम से अपने आपको इस तरह कामिल तौर पर वाबस्ता करे जिस तरह पैगम्बर ने अपने आपको कामिल तौर पर वाबस्ता किया था।

'तस्बीह और जिक्र' ही दीन का अस्ल मक्सूद है। मगर तस्बीह और जिक्र से मुराद किसी किस्म का लफ्जी विर्द (जाप) नहीं है। इससे मुराद वह वैफ़ियत है जो हक की याफ़त के बाद बिल्कुल क़दरती तौर पर पैदा होती है। उस वक़्त इंसान का वजूद अल्लाह के सिफ़ाते क़माल का इस तरह तजर्बा करता है कि वह उसमें नहा उठता है। वह खुदाई एहसास से इस तरह सरशार होता है कि वह उसका मुबल्लिग़ (प्रचारक) बन जाता है।

وَلَقَدْ نَتْنَا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَى ۖ إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمَمِكَ مَا يُؤْمَىٰ ۖ أَنِ اقْنِ فِيهِ
فِي الثَّابُوتِ فَاقْنِ فِيهِ ۖ فِي الْيَوْمِ فَلْيُلْقِ الْيَوْمَ السَّاجِلِ يُلْخِذُهُ عَدُوِّي وَعَدُوُّ
لَهُ ۖ وَالْقَيْتُ عَلَيْكَ حُبَّةٌ مِّنِّي ۖ وَلِتَصْنَعْ عَلَىٰ عَيْنِي ۖ إِذْ تَمْشِي أَخْتِكَ فَتَقُولُ

هَلْ أَذِلُّكُمْ عَلَىٰ مَنْ يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجَعْنَاكَ إِلَىٰ أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّبَ إِلَيْهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ
وَقَاتَلَتْ نَفْسًا فَبَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنَّاكَ فُتُونًا ۚ فَلَمِيتُ سِنِينَ فِي أَهْلِ
مَدْيَنَ ۚ ثُمَّ جِئْتُ عَلَىٰ قَدَرٍ لِّمُوسَىٰ ۝٤

और हमने तुम्हारे ऊपर एक बार और एहसान किया है जबकि हमने तुम्हारी मां की तरफ 'वही' (प्रकाशना) की जो 'वही' की जा रही है, कि उसे संतुष्ट में रखो, फिर उसे दरिया में डाल दो, फिर दरिया उसे किनारे पर डाल दे। उसे एक शख्स उठा लेगा जो मेरा भी दुश्मन है और उसका भी दुश्मन है। और मैंने अपनी तरफ से तुम पर एक मुहब्बत डाल दी। और ताकि तुम मेरी निगरानी में परवरिश पाओ। जबकि तुम्हारी बहिन चलती हुई आई, फिर वह कहने लगी, क्या मैं तुम लोगों को उसका पता दूं जो इस बच्चे की परवरिश अच्छी तरह करे। पस हमने तुम्हें तुम्हारी मां की तरफ लौटा दिया ताकि उसकी आंख ठंडी हो और उसे गम न रहे। और तुमने एक शख्स को कत्ल कर दिया। फिर हमने तुम्हें इस गम से नजात दी। और हमने तुम्हें खूब जांचा। फिर तुम कई साल मदनन वालों में रहे। फिर तुम एक अंदाजे पर आ गए ऐ मूसा। (37-40)

मिस्र के असल बाशिंदे किबती थे जिनका सियासी और मजहबी नुमाइंदा फिरऔन था। वहां की दूसरी कैम बनी इस्राईल थी जो हजरत यूसुफ के जमाने में बाहर से आकर यहां आबाद हुई थी। हजरत मूसा जिस जमाने में बनी इस्राईल के एक घर में पैदा हुए। उस जमाने में फिरऔन ने इस्राईल की नस्ल खत्म करने के लिए यह हुक्म दे दिया था कि इस्राईल के घरों में जितने बच्चे पैदा हों सब कत्ल कर दिए जाएं। हजरत मूसा की मां ने बच्चे को कत्ल से बचाने के लिए खुदाई इल्हाम के तहत यह किया कि उसे टोकरी में रखकर दरियाए नील में डाल दिया।

यह टोकरी बहते हुए फिरऔन के महल के पास पहुंची। वहां फिरऔन और उसकी बीवी ने उसे देखा तो उन्हें छोटे बच्चे पर रहम आ गया। उन्होंने उसे निकाल कर महल के अंदर रख लिया। इसके बाद हजरत मूसा की बहिन की निशानदेही पर आपकी मां आपको दूध पिलाने के लिए मुर्कर हुई। यह खुदा का एक करिश्मा है कि जिस फिरऔन को मूसा का सबसे बड़ा दुश्मन बनना था उसी फिरऔन के जरिए हजरत मूसा की परवरिश और तर्बियत कराई गई।

हजरत मूसा बड़े हुए तो एक किबती और एक इस्राईली के झगड़े में उन्होंने किबती को तंबीह की। अप्रत्याशित तौर पर वह किबती मर गया। इसके बाद हुक्मत की तरफ से हुक्म जारी हुआ कि मूसा को गिरफ्तार कर लिया जाए। मगर हजरत मूसा खुफिया तौर पर मिस्र से निकल कर मदनन चले गए। वहां के सहराई माहौल में वह जिंदगी के मजीद तजर्बात से

आशना हुए। किबती की हलाकत के बाद हजरत मूसा ने अल्लाह तआला से गैर मामूली दुआएं कीं। इसका नतीजा यह हुआ कि अल्लाह तआला ने इस हादसे को उनके लिए मजीद तर्बियत और तालीम का जरिया बना दिया।

وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِي ۝٥ اِذْهَبْ اَنْتَ وَاخُوكَ بِأَيْتِي وَلَا تَنِيَا فِي ذِكْرِي ۝٦
اِذْهَبَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝٧ فَقُولَا لَهُ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ۝٨

और मैंने तुम्हें अपने लिए मुंतख़ब किया। जाओ तुम और तुम्हारा भाई मेरी निशानियों के साथ। और तुम दोनों मेरी याद में सुस्ती न करना। तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ कि वह सरकश हो गया है। पस उससे नर्मी के साथ बात करना, शायद वह नसीहत कुबूल करे या डर जाए। (41-44)

मुख्तलिफ तजर्बात से गुजर कर हजरत मूसा जब तकमीले शुऊर के आखिरी मरहले में पहुंच गए तो अल्लाह तआला ने उन्हें पैगम्बराना दावत की जिम्मेदारी सौंप दी। उस वक्त हजरत मूसा को दो ख़ास नसीहतें की गईं। एक खुदा के जिक्र में कमी न करना। दूसरे दावत (आह्वान) में नर्म अंदाज इख्तियार करना।

खुदा के जिक्र से मुाराद यह है कि आदमी के क़ब व दिमाग में खुदा का यकीन इस तरह शामिल हो गया हो कि वह बार-बार उसे याद आता रहे। आदमी का हर मुशाहिदा (अवलोकन) और उसकी जिंदगी का हर वाक्या उसके खुदाई शुऊर से जुड़कर उसे जगाने वाला बन जाए। आम इंसान माददी (भौतिक) गिजाओं पर जीते हैं। हक का दाजी खुदा की याद में जीता है। खुदा की याद मोमिन का सरमाया है और इसी तरह दाजी (आह्वानकर्ता) का भी।

दूसरी जरूरी चीज दावत में नर्म अंदाज इख्तियार करना है। फिरऔन जैसे सरकश इंसान के सामने भेजते हुए यह हिदायत करना साबित करता है कि दावत के लिए नर्म और हकीमाना अंदाज मुतलक तौर पर मलूब है। मदऊ की तरफ से कोई भी सख़ी या सरकशी दाजी को यह हक नहीं देती कि वह अपनी दावत में नर्मी और शफ़क़त (स्नेह) का अंदाज खो दे।

قَالَا رَبَّنَا إِنَّا أَتَيْنَاكَ أَنفَحًا ۖ وَإِنَّا نَكْفُرُ ۖ وَإِنَّا نَكْفُرُ ۖ وَإِنَّا نَكْفُرُ ۖ وَإِنَّا نَكْفُرُ ۖ
أَسْمَعُ وَارَىٰ ۝٩ فَأْتِيَهُ فَقُولَا إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ ۖ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ
وَلَا نُغَدِّبُهُمْ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَةٍ ۖ مِّنْ رَبِّكَ ۖ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَىٰ ۝١٠ إِنَّا
قَدْ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنَّ الْعَذَابَ عَلَىٰ مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝١١

दोनों ने कहा कि ऐ हमारे रब, हमें अंदेशा है कि वह हम पर ज्यादाती करे या सरकशी करने लगे। फरमाया कि तुम अंदेशा न करो। मैं तुम दोनों के साथ हूँ, सुन रहा हूँ और देख रहा हूँ। पस तुम उसके पास जाओ और कहो कि हम दोनों तेरे रब के भेजे हुए हैं, पस तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे। और उन्हें न सता। हम तेरे रब के पास से एक निशानी भी लाए हैं। और सलामती उस शख्स के लिए है जो हिदायत की पैरवी करे। हम पर यह 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि उस शख्स पर अजाब होगा जो झुठलाए और एराज (उपेक्षा) करे। (45-48)

फिरऔन निहायत मुतकबिर (धमंडी) था। इक्तेदार (सत्ता) पाकर वह अपने आपको खुदा समझने लगा था। इसलिए हजरत मूसा को अंदेशा हुआ कि जब वह देखेगा कि उसके सिवा किसी और खुदा का पैगाम उसे सुनाया जा रहा है तो वह गुस्से में भड़क उठेगा। मगर खुदा का पैगम्बर मुकम्मल तौर पर खुदा की हिफाजत में होता है। इसलिए हुक्म हुआ कि तुम जाओ और यह यकीन रखो कि फिरऔन अपनी सारी ताकत और जबरूत (शौघ) के बावजूद तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता।

बनी इस्राईल कदीम जमाने के मुसलमान थे। वे अस्लन एक मुअहिद (एकेश्वरवादी) कौम थे। मगर मिश्र की मुश्रिक कौम के दर्मियान रहते हुए वे मुश्रिकाना तहजीब से बुरी तरह मुतअस्सिर हो गए थे। मजीद यह कि मुश्रिक हुक्मरानों ने बनी इस्राईल को इस तरह मेहनत मजदूरी में लगा रखा था कि वे इस काबिल नहीं रहे थे कि वे तौहीद और आखिरत की आला हकीकतों के बारे में सोच सकें। इसलिए हजरत मूसा को हुक्म हुआ कि बनी इस्राईल को मुश्रिकाना माहौल से निकालो और उन्हें अलग खितए जमीन में आबाद करो। ताकि शिर्क और जाहिलियत की फजा से कटकर उनकी तर्बियत मुमकिन हो सके।

قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمَا يُؤْمِسُ ۖ قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَى ۚ قَالَ فَمَنْ أُولَ الْأُولَى ۖ قَالَ عَلَيْهِمْ عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَا يَضِلُّ رَبِّي وَلَا يَنْسَى ۖ

फिरऔन ने कहा, फिर तुम दोनों का रब कौन है, ऐ मूसा। मूसा ने कहा, हमारा रब वह है जिसने हर चीज को उसकी सूत अता की, फिर रहनुमाई फरमाई। फिरऔन ने कहा, फिर अगली कौमों का क्या हाल है। मूसा ने कहा। इसका इत्म मेरे रब के पास एक दफ्तर में है। मेरा रब न गलती करता है और न भूलता है। (49-52)

‘तुम्हारा रब कौन है।’ फिरऔन का यह जुमला इस मअना में था कि वह अपने सिवा किसी खुदा से बेखबर था। या किसी बरतर खुदा का सिरे से कायल न था। उसका यह जुमला दरअसल मूसा की बात की तहकीर (अवमानना) था न कि उसका सिरे से इंकार।

मिश्र में हजरत यूसुफ अलौहिस्सलाम ने तौहीद (एकेश्वरवाद) की तब्दील की थी। अब भी बनी इस्राईल वहां लाखों की तादाद में मौजूद थे। जो खुदाए वाहिद पर अक्रीदा रखते थे। इस तरह मिश्र में अगरचे खुदाए बरतर का अक्रीदा मौजूद था मगर अमलन वहां सारा जोर और शानो शौकत फिरऔन के गिर्द जमा था। वह मिश्रियों के अक्रीदे के मुताबिक उनके सबसे बड़े देवता (सूरज) का ज़मीनी मजहर था। वह मिश्र का अवतार बादशाह (God-king) था और उसके बुत और स्टेचू सारे मिश्र में परस्तिश की चीज बने हुए थे। इसके मुकाबले में मूसा बनी इस्राईल के एक फर्द थे जो मिश्र में गुलामों और मजदूरों की एक कौम समझी जाती थी। और इस बिना पर उसका मजहबी अक्रीदा भी मिश्र में एक नाकबिले जिन्न अक्रीदे की हैसियत इख्तियार कर चुका था।

दुनिया में वेशुमार चीजें हैं मगर हर चीज की एक मुस्फ़िद (विशिष्ट) बनावट है और हर चीज का एक मुतअव्यन (सुनिश्चित) तरीके अमल है। न इस बनावट में कोई तब्दीली मुमकिन है और न इस तरीके अमल में। इससे खुद फिरऔन जैसा सरकश बादशाह भी अपवाद नहीं। यह वाक्या वाजेह तौर पर एक बालातर खालिक का वजूद साबित करता है।

हजरत मूसा ने यह बात कही तो फिरऔन ने महसूस किया कि उसके पास इस बात का कोई बराहिरास्त जवाब नहीं है। अब उसने बात को फेर दिया। दलील के मैदान में अपने को कमजोर पाकर उसने चाहा कि तअस्सुब (विद्वेष) के जब्जात को भड़का कर लोगों के दर्मियान अपनी बरतरी कायम रखे। चुनांचे उसने कहा कि अगर तुम्हारी बात सही है तो हमारे पिछले बड़ों का अंजाम क्या हुआ जो तुम्हारे नजरिये के मुताबिक गुमराह हालत में मर गए। हजरत मूसा ने इसके जवाब में एराज का तरीका इख्तियार किया। उन्होंने कहा कि गुजरे हुए लोगों को खुदा के हवाले करो और अब अपने बारे में गौर करो।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَاسْلَكْ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَآَنَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْ تَحْتِ شَجَرٍ ۖ كُلُوا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النَّبِيِّ ۚ وَمِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى ۚ

वही है जिसने तुम्हारे लिए जमीन का फर्श बनाया। और उसमें तुम्हारे लिए राहें निकाली और आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उसके जरिए से मुत्तलिफ़ किस्म की नवातात (पौधों) पैदा कीं। खाओ और अपने मवेशियों को चराओ। इसके अंदर अन्नल वालों के लिए निशानियां हैं। उसी से हमने तुम्हें पैदा किया है और उसी में हम तुम्हें लौटाएंगे और उसी से हम तुम्हें दुबारा निकालेंगे। (53-55)

जमीन की पैदाइश, बारिश का निजाम, नवातात (पेड़-पौधों) का उगना, और दूसरे

एहतिमागत जिनसे मौजूदा दुनिया को जिंदा चीजों के लिए कबिले रिहाइश बनाया है वे हैरतनाक हद तक अजीम हैं।

यह एक 'निशानी' है जो साबित करती है कि इस दुनिया का खालिक व मालिक एक अजीम खुदा है। मौजूदा दुनिया जैसी दुनिया को वजूद में लाने के लिए इतनी बड़ी कुदरत दरकार है जो न किसी 'सूरज' को हासिल है और न किसी 'बादशाह' को। ऐसी हालत में यह माने बगैर चारा नहीं कि इसे बनाने और चलाने वाला एक बरतर खुदा है।

फिर इसी से यह भी साबित होता है कि यह दुनिया अबस (निरर्थक) दुनिया नहीं है जो यूं ही पैदी हो और यूं ही खत्म हो जाए। बामअना दुनिया लाजिमी तौर पर एक बामअना अंजाम चाहती है। इस तरह दुनिया का मुशाहिदा (अवलोकन) बयकवक्त तौहीद को भी साबित कर रहा है और आखिरत को भी।

وَلَقَدْ آرَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَى ۚ قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا
بِسِحْرِكَ يَمْوُسَى ۚ فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ ۚ فَأَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا
لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنتَ مَكَانًا سَوِيًّا ۝

और हमने फिरऔन को अपनी सब निशानियां दिखाई तो उसने झुठलाया और इंकार किया। उसने कहा कि ऐ मूसा, क्या तुम इसलिए हमारे पास आए हो कि अपने जादू से हमें हमारे मुल्क से निकाल दो। तो हम तुम्हारे मुकाबले में ऐसा ही जादू लाएंगे। पस तुम हमारे और अपने दर्मियान एक वादा मुकर्र कर लो, न हम उसके खिलाफ करें और न तुम। यह मुकाबला एक हमवार (खुले) मैदान में हो। (56-58)

हजरत मूसा की दावत फिरऔन के ऊपर लम्बी मुद्दत तक जारी रही। इस दौरान आपने उसके सामने अक्ली दलाइल भी पेश किए और महसूस मोजिजे (चमत्कार) भी दिखाए। मगर वह हजरत मूसा पर ईमान न लाया। हजरत मूसा की सच्चाई का इक्कार फिरऔन के लिए अपनी नफी (नकार) के हममअना होता। और फिरऔन की मुतकब्बिराना नफिसयात (घमंड-भाव) इसमें स्वाकट बन गई कि अपनी नफी की कीमत पर वह सच्चाई का इक्कार करे।

हजरत मूसा के अक्ली दलाइल को फिरऔन ने गैर मुतअल्लिक बातों के जरिए बेअसर करने की कोशिश की। और आपके मोजिजात के बारे में उसने कहा कि यह जादू है। यानी एक ऐसी चीज जिसका खुदा से कोई तअल्लुक नहीं। हर आदमी महारत पैदा करके इस किस्म का करिश्मा दिखा सकता है। अपनी इस ढिठाई को निभाने के लिए मजीद उसे यह करना पड़ा कि उसने कहा कि हम भी अपने जादूगरों के जरिए वैसा ही करिश्मा दिखा सकते हैं जैसा करिश्मा तुमने हमें दिखाया है। गुफ्तगू के बाद बिलआखिर यह तय हुआ कि आने वाले कौमी मेले के दिन मुल्क के जादूगरों को जमा किया जाए और सबके सामने मूसा और

जादूगरों का मुकाबला हो।

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمَ الزَّيْنَةِ وَأَنْ يُخْشَرَ النَّاسُ ضَعْفٌ ۝ فَتَوَلَّى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ
كَيْدَهُ ثُمَّ أَتَى ۚ قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ
بِعَذَابٍ وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرَىٰ ۝

मूसा ने कहा, तुम्हारे लिए वादे का दिन मेले वाला दिन है और यह कि लोग दिन चढ़े तक जमा किए जाएं। फिरऔन वहां से हटा, फिर अपने सारे दाव जमा किए, इसके बाद वह मुकाबले पर आया। मूसा ने कहा कि तुम्हारा बुरा हो अल्लाह पर झूठ न बांधो कि वह तुम्हें किसी आफत से गारत कर दे। और जिसने खुदा पर झूठ बांधा वह नाकाम हुआ। (59-61)

फिरऔन ने सारे मुल्क में आदमी भेजकर तमाम माहिर जादूगरों को बुलाया। जब ये लोग मेले के मैदान में जमा हुए तो मुकाबला पेश आने से पहले हजरत मूसा ने एक तकरीर की। यह तकरीर लोगों के लिए बिल्कुल नई चीज न थी बल्कि यह एक किस्म की याददहानी थी। इससे पहले हजरत मूसा की दावत के जरिए जादूगर और दूसरे हजरात यकीनन इस बात से आगाह हो चुके थे कि मूसा का पैगाम क्या है। वे जानते थे कि मूसा शिर्क के मुकाबले में तौहीद की दावत लेकर खड़े हुए हैं।

इस पसमंजर में हजरत मूसा ने इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के तौर पर आखिरी नसीहत की। हजरत मूसा ने फिरऔन और जादूगरों से कहा कि इस मामले को तुम लोग जादू का मामला न समझो। खुदा की निशानी को जादू कहना और इंसानी जादू के जरिए उसे जेर करने की कोशिश करना बेहद संगीन बात है। यह एक वाकई हकीकत का मुकाबला एक सरासर बेहकीकत चीज के जरिए करना है जिसका यकीनी नतीजा हलाकत है। तुम बजहिर मुझे झूठा साबित करना चाहते हो मगर यह खुद खुदा को नऊजुबिल्लाह झूठा साबित करने की कोशिश करना है। जो लोग इस किस्म की सरकशी करें वे खुदा की दुनिया में कभी कामयाब नहीं हो सकते।

فَتَنَّا زَعْوًا أَمْ لَهُمْ بَيْنَهُمْ وَأَسْرُوا النَّجْوَىٰ ۚ قَالُوا إِنَّ هَٰذِهِنَّ سِحْرُنَ يُرِيدُنَا
أَنْ نَخْرُجَهُمْ مِنْ أَرْضِهِمْ بِسِحْرِهِمْ وَأَيُّهَا بَطْرِيقُكُمْ ۖ الْمَثَلُ ۚ فَاجْمَعُوا كَيْدَكُمْ ثُمَّ
اتَّصَفَا وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ۝

फिर उन्होंने अपने मामले में इस्तेलाफ (मतभेद) किया। और उन्होंने चुपके-चुपके बाहम

मशिवरा किया। उन्होंने कहा ये दोनों यकीनन जादूगर हैं, वे चाहते हैं कि अपने जादू के जोर से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दें और तुम्हारे उम्दा तरीके का ख़ात्मा कर दें। पस तुम अपनी तदबीरें इकट्ठा करो। फिर मुत्तहिद होकर आओ और वही जीत गया जो आज ग़ालिब रहा। (62-64)

हजरत मूसा की इब्तिदाई तकरीर से जादूगरों की जमाअत में इज़्तेलाफ पड़ गया। उनके एक गिरोह ने कहा कि यह जादूगर का कलाम नहीं है बल्कि यह नबी का कलाम है। दूसरे लोगों ने कहा कि नहीं, यह शख्स हमारी ही तरह का एक जादूगर है। (तफ्सीर इब्ने कसीर)

जादूगर यकीनी तौर पर अपने पेशे के लोगों को पहचानते थे। उनके तजर्बेकार अफराद ने महसूस कर लिया कि यह जादू का मामला नहीं है बल्कि मोजिजे (दिब्य चमत्कार) का मामला है। चुनांचे वे मुकाबले की हिम्मत खो बैठे। मगर फिरऔन और उसके पुरजोश साथियों के उकसाने पर वे मुकाबले के लिए राजी हो गए।

‘तरीक़ मुसला’ का मतलब है अफ़ज़ल तरीक़ा। उस वक़्त मिस्रियों की जिगी का पूरा ढांचा मुशिकाना अकाइद के ऊपर कायम था। सबसे बड़े देवता (सूरज) के जिस्मानी मजहर (रूप) की हैसियत से फिरऔन की शख्सियत उनके सियासी और समाजी निजाम की बुनियाद बनी हुई थी। फिरऔन ने तअस्सुब (विद्वेष) के ज़वात को उभार कर कहा कि यह निजाम हमारा कौमी निजाम है। अब अगर तौहीद के इन अलमबरदारों की जीत हो गई तो हमारा पूरा कौमी निजाम उखड़ जाएगा।

قَالُوا يُونُسَىٰ إِنَّمَا أَنْ تُلْقَىٰ ۖ وَإِنَّمَا أَنْ تَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَىٰ ۖ قَالَ بَلْ
الْقَوَا ۖ إِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ۖ فَأَوْجَسَ
فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّؤَسَّىٰ ۖ قُلْنَا لَا تَخَفُ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَىٰ ۖ وَالْقَىٰ مَا فِي بُيُوتِكَ
تَلْقَتْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدٌ سَاحِرٌ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَىٰ ۖ فَأَلْقَىٰ
السَّحَرَةُ سُحُبًا ۖ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ هَارُونَ وَمُوسَىٰ ۖ

उन्होंने कहा कि ऐ मूसा या तो तुम डालो या हम पहले डालने वाले बनें। मूसा ने कहा कि तुम ही पहले डालो तो यकायक उनकी रस्सियां और उनकी लाठियां उनके जादू के जोर से उसे इस तरह दिखाई दीं गोया कि वे दौड़ रही हैं। पस मूसा अपने दिल में कुछ डर गया। हमने कहा कि तुम डरो नहीं तुम ही ग़ालिब रहोगे। और जो तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसे डाल दो, वह उन्हें निगल जाएगा जो उन्होंने बनाया है। यह जो कुछ उन्होंने बनाया है यह जादूगर का फरेब है। और जादूगर कभी कामयाब नहीं होता, चाहे वह कैसे आए। पस जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा कि हम हारून और मूसा

के रब पर ईमान लाए। (65-70)

मुकाबला इस तरह शुरू हुआ कि जादूगरों ने पहले अपनी रस्सियां और लाठियां मैदान में फेंकी तो उनकी रस्सियां और लाठियां सांप बनकर मैदान में चलती हुई दिखाई दीं। ताहम यह सिर्फ नजरबंदी का मामला था। यानी रस्सियां और लाठियां फिलवाकअ सांप नहीं बन गई थीं बल्कि जादूगरों ने नजरबंदी के अमल से हाजिरीन की कुबलेख़ाली को इस तरह मुतअस्सिर किया कि उन्हें वक्ती तौर पर दिखाई दिया कि रस्सियां और लाठियां सांप की मानिंद मैदान में चल रही हैं।

उस वक़्त अल्लाह तआला के हुक्म से हजरत मूसा ने अपनी लाठी मैदान में फेंकी। उनकी लाठी फौरन बहुत बड़ा सांप बनकर मैदान में दौड़ने लगी। उसने उन जादूगरों के नजरबंदी के तिलिस्म को निगल लिया। वे चीजें जो सांपों की शक्ल में चलती हुई नजर आती थीं वे उसके छूटे ही महज रस्सी और लाठी होकर रह गईं।

जादूगर हजरत मूसा का कलाम सुनकर पहले ही उससे मुतअस्सिर हो चुके थे। अब जब अमली मुजाहिरा हुआ तो उन्होंने हजरत मूसा की सदाक़्त को अपनी खुली आंखों से देख लिया। उन्होंने यकीन के साथ जान लिया कि मूसा के पास जो चीज है वह कोई इंसानी जादू नहीं है बल्कि वह खुदाई मोजिज है। यह यकीन इतना गहरा था कि उन्होंने उसी वक़्त हजरत मूसा के दीन को इख़्तियार करने का एलान कर दिया।

قَالَ امْنُتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنِ لَكُمْ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۖ فَلَا يَقْظِعَنَّ
أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلَكُمْ فِي جُدُوعِ النَّخْلِ ۖ وَلَنَعْلَمَنَّ
إِنَّمَا أَشَدُّ عَدَاوَةً أَبْقَىٰ ۖ

फिरऔन ने कहा कि तुमने उसे मान लिया इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाजत देता। वही तुम्हारा बड़ा है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। तो अब मैं तुम्हारे हाथ और पांव मुखालिफ़ सन्तों से कटवाऊंगा। और मैं तुम्हें खज़ूर के तनों पर सूली दूंगा। और तुम जान लोगे कि हम में से किस का अज़ाब ज्यादा सख़्त है और ज्यादा देर तक रहने वाला है। (71)

यह मुकाबला महज दो किस्म के आदमियों के करतब का मुकाबला न था बल्कि वह तौहीद और शिर्क का मुकाबला था। यानी इसके जरिए से यह फैसला होना था कि सदाक़्त (सच्चाई) शिर्क की तरफ है या तौहीद की तरफ। चूँकि फिरऔन की बड़ाई की बुनियाद तमामतर शिर्क के ऊपर कायम थी इसलिए वह शिर्क की शिकस्त को बरदाश्त न कर सका और जादूगरों के लिए उस सख़्ततरीन सजा का हुक्म सुना दिया जो मिस्र में क़दीम जमाने में राज़ थी।

फिरऔन जब दलील के मैदान में हार गया तो उसने यह कोशिश की कि ताकत के जरिए हक को दबा दे। यह हर जमाने में अरबावे इक्तेदार की आम नफिसयात रही है, चाहे वह शाहाना इस्त्रियार रखने वाले अरबावे इक्तेदार (सत्ताधारी) हों या गैर शाहाना इस्त्रियार रखने वाले।

قَالُوا لَنْ نُؤْثِرَكَ عَلَى مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي فَطَرَنَا فَاقْضِ مَا أَنْتَ قَاضٍ
إِنَّمَا نَقْضِي هَذِهِ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۖ إِنَّا كَمَا بَرِئْنَا لِيُغْفِرَ لَنَا خَطِيئَتَنَا وَمَا أَكْرَهْتَنَا
عَلَيْهِ مِنَ السَّعْرِ وَاللُّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۝

जादूगरों ने कहा कि हम तुझे हरगिज उन दलाइल (स्पष्ट प्रमाणों) पर तरजीह नहीं देंगे जो हमारे पास आए हैं। और उस जात पर जिसने हमें पैदा किया है, पस तुझे जो कुछ करना है उसे कर डाल। तुम इसी दुनिया की जिंदगी का कर सकते हो। हम अपने ख पर ईमान लाए ताकि वह हमारे गुनाहों को बख्श दे और उस जादू को भी जिस पर तुमने हमें मजबूर किया। और अल्लाह बेहतर है और बाकी रहने वाला है। (72-73)

जादूगरों के सामने एक तरफ हजरत मूसा की दलील थी। और दूसरी तरफ फिरऔन की जाबिराना (दमनकारी) शख्सियत। यह दलील और शख्सियत का मुकाबला था। जादूगरों ने शख्सियत पर दलील को तरजीह (वरीयता) दी। अगरचे वे जानते थे कि इस तरजीह की कीमत उन्हें इतिहाई मंहगी सूरत में देनी पड़ेगी।

जादूगरों का ईमान कोई नस्ली या रस्मी ईमान न था। उनका ईमान उनके लिए दरयाफ्त के हममअना था। और जो ईमान किसी आदमी को दरयाफ्त के तौर पर हासिल हो वह इतना ताकतवर होता है कि इसके बाद हर दूसरी चीज उसे हेच (महत्वहीन) नजर आने लगती है, चाहे वह कोई बड़ी शख्सियत हो या कोई बड़ी दुनियावी मस्लेहत।

إِنَّهُ مَنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ۖ وَمَنْ يَأْتِهِ
مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَىٰ ۖ جَدَّتْ عَدْنٌ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ مَنْ تَزَكَّىٰ ۝

वेशक जो शख्स मुजरिम बनकर अपने ख के सामने हाजिर होगा तो उसके लिए जहन्नम है, उसमें वह न मरेगा और न जिएगा। और जो शख्स अपने ख के पास मोमिन होकर आएगा जिसने नेक अमल किए हों, तो ऐसे लोगों के लिए बड़े ऊंचे दर्जे हैं। उनके लिए हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। वे उनमें हमेशा रहेंगे। और यह बदला है उस शख्स का जो पाकीजगी इस्त्रियार करे। (74-76)

मुजरिम बनना क्या है। मुजरिम बनना यह है कि आदमी के सामने खुदा की निशानी आए मगर वह उससे नसीहत हासिल न करे। उसके सामने दलादल की जवान में हक को खोला जाए मगर वह उसे नजरअंदाज कर दे। वह जाहिरी कुय्तों और माद्वी मस्लेहतों से बाहर निकल कर हकीमत का फ़ाफ़न कर सके।

ऐसे लोगों के लिए आखिरत में सख़्तातरीन सजा है। दुनिया की कोई मुसीबत, चाहे वह कितनी ही बड़ी हो, बहरहाल वह महदूद (सीमित) है। और मौत के साथ एक न एक दिन ख़त्म हो जाती है। मगर आखिरत वह जगह है जहां मुसीबतों का तूफ़ान हर तरफ से आदमी को घेरे हुए होगा। मगर आदमी के लिए वहां से भागना मुमकिन न होगा। और न वहां मौत आएगी जो नाकाबिले बयान मुसीबतों का सिलसिला मुक़तअ (ख़त्म) कर दे।

जन्नत उसके लिए है जो अपने आपको पाक करे। पाक करना यह है कि आदमी गफ़लत की जिंदगी को तर्क करे और शुऊर की जिंदगी को अपनाए। वह अपने आपको उन चीजों से बचाए जो हक से रोकने वाली हैं। मस्लेहत (स्वाधी) की रुकावट सामने आए तो उसे नजरअंदाज कर दे। नफ़स की ख़्वाहिश उभरे तो उसे कुचल दे। जुम और घमंड की नफ़िसयात जागे तो उसे अपने अंदर ही अंदर दफ़न कर दे।

यही लोग सच्चे ईमान वाले हैं। दुनिया में उनका ईमान अमले सालेह (सत्कर्मों) के बाग़ की सूरत में उगा था, आखिरत में वह अबदी (चिरस्थायी) जन्नतों के रूप में सरसब्ज व शादाब होकर उन्हें वापस मिलेगा।

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اسْرِ بِعِبَادِي فَاصْرِبْ لَهُمْ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ
يَبْسًا لَا تَخَفُ دَرَكًا وَلَا تَخْشَى ۖ فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَبُجُودِهِ فَعُشِيَهِمْ ۖ مِّنَ
الْيَمِّ مَا غَشِيَهِمْ ۖ وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَىٰ ۝

और हमने मूसा को 'वही' (प्रकाशना) की कि रात के वक्त मेरे बंदों को लेकर निकलो। फिर उनके लिए समुद्र में सूखा रास्ता बना लो, तुम न तआकुब (पीछा करने) से डरो और न किसी और चीज से डरो। फिर फिरऔन ने अपने लश्करों के साथ उनका पीछा किया फिर उन्हें समुद्र के पानी ने ढांप लिया। जैसा कि ढांप लिया और फिरऔन ने अपनी कौम को गुमराह किया और उसे सही राह न दिखाई। (77-79)

जादूगरों से मुक़ाबले के बाद हजरत मूसा कई साल तक मिस्र में रहे। एक तरफ तो उन्होंने फिरऔन और कैमे फिरऔन पर अपनी तब्लीग जारी रखी। दूसरी तरफ उन्होंने मुतालबा किया कि मुझे इजाजत दे दो कि मैं अपने साथियों को लेकर मिस्र से बाहर सहाराए सीना में चला जाऊं और वहां आजादी के साथ खुदाए वाहिद की इबादत करूं। मगर फिरऔन ने न तो नसीहत कुबूल की और न हजरत मूसा को बाहर जाने की इजाजत दी।

आखिरकार हजरत मूसा ने खुदा के हुक्म से खामोश हिजरत का फैसला किया। उस वक्त मिस्र में जो इस्राईली या गैर इस्राईली मुसलमान थे, सब पेशगी मंसूबे के तहत एक खास मकाम पर जमा हुए और वहां से रात के वक्त इज्तिमाई तौर पर रवाना हो गए।

यह काफिला बहरे अहमर (लाल सागर) की शिमाली खलीज (उत्तरी खाड़ी) तक पहुंचा था कि फिरऔन अपने लश्कर के साथ उनका पीछा करते हुए वहां आ गया। पीछे फिरऔन का लश्कर था और आगे समुद्र की मानिंद वसीअ खलीज। अब हजरत मूसा ने खलीज के पानी पर अपनी लाठी मारी। खुदा के हुक्म से पानी दो टुकड़े हो गया। हजरत मूसा और उनके साथी उसके दर्मियान खुश्की पर चलते हुए दूसरी तरफ पहुंच गए। यह देखकर फिरऔन भी उसके अंदर दाखिल हो गया। मगर फिरऔन और उसका लश्कर जैसे ही दर्मियान में पहुंचे दोनों तरफ का पानी मिल गया। वे लोग उसके अंदर गर्क हो गए। एक ही दरिया खुदा के वफादार बंदों के लिए नजात का जरिया बन गया। और खुदा के दुश्मनों के लिए मौत का गढ़।

लोग अक्सर अपने कायदीन लीडरों के भरोसे पर हक को नजरअंदाज कर देते हैं। मगर फिरऔन की मिसाल बताती है कि कायदीन का सहारा निहायत कमजोर सहारा है। इस दुनिया में अस्ल सहारे वाला वह है जो खुदा की आयात (निशानियों) की बुनियाद पर अपनी राह मुतअय्यन करे न कि कौम के अकाबिर बड़ों की बुनियाद पर।

يَبْنَئِ إِسْرَءِيلَ قَدْ أَجْبَيْنَاكَ مِنْ عَدُوِّكُمْ وَوَعَدْنَاكَ جَانِبَ الْغَوْرِ الْأَيْمَنِ
وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْمَنِّ وَالسَّلَوى ۖ كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا
فِيهِ فَيَحْبِلَ عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۖ وَمَنْ يَحْبِلْ عَلَيْهِ غَضَبِي فَقَدْ هَوَى ۖ
وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَى ۝

ऐ बनी इस्राईल हमने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दी और तुमसे तूर के दाईं जानिब वादा ठहराया। और हमने तुम्हारे ऊपर मन्न और सलवा उतारा। खाओ हमारी दी हुई पाक रोजी और उसमें सरकशी न करो कि तुम्हारे ऊपर मेरा ग़ज़ब नाजिल हो। और जिस पर मेरा ग़ज़ब उतरा वह तबाह हुआ। अलबत्ता जो तौबा करे और ईमान लाए और नेक अमल करे और सीधी राह पर रहे तो उसके लिए मैं बहुत ज्यादा बख़्शने वाला हूँ। (80-82)

खलीज (खाड़ी) को पार करने के बाद हजरत मूसा और उनके साथी चलते रहे। यहां तक कि वे सहाराए सीना में पहुंच गए। इसके बाद कोहेतूर के दामन में बुलाकर ख़ास एहतिमाम से उन्हें शरीअत अता की गई। ये लोग चालीस साल तक सहाराए सीना में रहे। यहां उनके लिए खुसूसी नेमत के तौर पर पानी और ग़िजा (मन्न और सलवा) का इतिजाम

किया गया जो उस वक्त तक मुसलसल जारी रहा जबकि उनकी अगली नस्ल फिलिस्तीन के सरसब्ज इलाके में पहुंच गई।

अल्लाह तआला के ऊपर बंदों का यह हक है कि वह हर हाल में अपने बंदों के लिए रिज्क फ़राहम करे। और बंदों के ऊपर अल्लाह का यह हक है कि वे किसी हाल में उसके साथ सरकशी न करें। जो लोग खुदा की नेमतों के शुक्रगुजार बनकर रहें उनके लिए खुदा की मीन (अतिरिक्त) रहमतें हैं। और जो लोग सरकश बन जाएं उनके लिए खुदा का शदीद अजाब है जो कभी ख़ुस न होगा।

وَمَا أَتَجَلَّكَ عَنْ قَوْمِكَ يَمُوسَى ۖ قَالَ هُمْ أُولَاءِ عَلَىٰ إِثْمِي وَغَلَبْتُ إِلَيْكَ رَبِّ
لِتَرْضَىٰ ۖ قَالَ فَإِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝

और ऐ मूसा, अपनी कौम को छोड़कर जल्द आने पर तुम्हें किस चीज ने उभारा। मूसा ने कहा, वे लोग भी मेरे पीछे ही हैं। और मैं ऐ मेरे ख, तेरी तरफ जल्द आ गया ताकि तू राजी हो। फरमाया तो हमने तुम्हारी कौम को तुम्हारे बाद एक फितने में डाल दिया। और सामिरी ने उसे गुमराह कर दिया। (83-85)

मिस्र से निकलने के बाद अल्लाह तआला ने हजरत मूसा के लिए एक तारीख़ मुकर्रर की कि उस रोज वह कोहेतूर के उसी दामन में दुबारा आए जहां उन्हें इब्तिदाअन पैगम्बरी मिली थी। यहां हजरत मूसा को तौरात लेने के लिए अपनी पूरी कौम के साथ पहुंचना था। मगर पतें शौक में वह तेजी से रवाना होकर मुकर्ररह तारीख़ से कुछ दिन पहले मक़मे मौऊद (निश्चित-स्थल) पर आ गए। और कौम को पीछे छोड़ दिया। कौम से हजरत मूसा का अलग होना कौम के लिए फितना बन गया। कौम में कुछ मुश्किलाना ज़ह्नियत के लोग थे। सामरी उनका लीडर था। उन लोगों ने हजरत मूसा की गैर मौजूदगी से फायदा उठाकर कौम को बहकाया और उसे बछड़े की परस्तिश में मुब्तिला कर दिया जैसा कि मिस्र में उस जमाने में होता था।

فَرَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا ۚ قَالَ يَقَوْمِ الْيَوْمَ لَا يَمُوتُ لَكُمْ رَبُّكُمْ وَعَدًّا ۖ حَسَنًا ۚ
أَقَطَّالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ ۖ أَمْ أَرَدْتُمْ أَن يَحْبِلَ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَأَخْلَفْتُمُ
مَّوْعِدِي ۖ

फिर मूसा अपनी कौम की तरफ गुस्से और रंज में भरे हुए लौटे। उन्होंने कहा कि ऐ मेरी कौम क्या तुमसे तुम्हारे ख ने एक अच्छा वादा नहीं किया था। क्या तुम पर ज्यादा जमाना गुज़र गया। या तुमने चाह कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे ख का ग़ज़ब (फ़रक़) नाजिल हो, इसलिए तुमने मुझसे वादाखिलाफी की। (86)

अल्लाह तआला ने जब हजरत मूसा को खबर दी कि तुम्हारी कौम फितने में मुक्तिला हो गई है तो वह शदीद जज्बात में भरे हुए कौम की तरफ वापस आए। उन्होंने उन्हें याद दिलाया कि अभी-अभी खुदा ने तुम्हारे ऊपर इतने एहसानात किए हैं और अपनी इतनी ज्यादा निशानियां तुम्हारे लिए जाहिर की हैं। फिर कैसे तुम इतनी जल्द सब भूलकर गुमराही में पड़ गए।

हजरत मूसा बनी इस्राईल के लिए अल्लाह की किताब लेने गए। और बनी इस्राईल की बड़ी तादाद कुछ लोगों की बातों में आकर गैर अल्लाह की परस्तिश में मशगूल हो गई। इससे अंदाजा होता है कि बनी इस्राईल मिस्र के मुश्रिकाना माहौल से कितना ज्यादा मुतअस्सिर हो चुके थे। और क्यों यह जरूरी हो गया था कि दुबारा तौहीद का परस्तार बनाने के लिए उन्हें मिस्र के माहौल से निकाल कर बाहर ले जाया जाए।

हजरत मूसा ने फिरऔन के मुकाबले में जो कुछ किया वह दावते दीन का काम था। और आपने बनी इस्राईल के सिलसिले में जो कुछ किया वह तहफफुजे दीन का काम। दोनों काम आपने साथ-साथ अंजाम दिए। इससे दोनों कामों की अहमियत मालूम होती है। मुसलमान अगर बिगड़े हुए हों तो इस बिना पर दावते आम का काम रोका नहीं जा सकता। और अगर दावते आम का काम करना हो तो वह इस तरह नहीं किया जाएगा कि दाखिली इस्लाह (आन्तरिक सुधार) का काम बंद कर दिया जाए।

قَالُوا مَا آخَلَفْنَا مُوسَىٰ بِسَلْمَتِنَا وَلَكِنَّا كُنَّا أَهْلًا مِنَ زِينَةِ الْقَوْمِ فَقَدَتْ فَهْمًا
فَكَذَلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ ۖ فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا آلِهَهُ خُورًا فَقَالُوا هَذَا
إِلَهُكُمْ وَإِلَهُ مُوسَىٰ ۖ فَتَنَىٰ ۖ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّ إِلَهُهُمْ قَوْلًا ۖ وَلَا يَمْلِكُ لَهُمْ
شَرٌّ وَلَا نَفْعًا ۖ

उन्होंने कहा कि हमने अपने इस्त्रियार से आपके साथ वादाखिलाफी नहीं की। बल्कि कौम के जेवरात का बोझ हमसे उठवाया गया था तो हमने उसे फेंक दिया। फिर इस तरह सामरी ने ढाल लिया। पस उसने उनके लिए एक बछड़ा बरामद कर दिया। एक मूर्ति जिससे बैल की सी आवाज निकलती थी। फिर उसने कहा कि यह तुम्हारा माबूद (पूज्य) है और मूसा का माबूद भी, मूसा इसे भूल गए। क्या वे देखते न थे कि न वह किसी बात का जवाब देता है और न कोई नफा या नुकसान पहुंचा सकता है। (87-89)

बनी इस्राईल की ओरतें गालिलन कद्रीम रवाज के मुताबिक भारी जेवरात अपने जिस्म पर लादे हुए थीं। इस सफर में कौम ने कहीं पड़ाव डाला तो उन्होंने इन जेवरात को उतार कर एक जगह ढेर कर दिया। उनके दर्मियान एक सामरी था जो मिस्र की कदीम शिल्पकारी

बुतसाजी का तजर्बा रखता था। उसने इन जेवरात को पिघलाया और उनसे बछड़े जैसी एक मूर्ति बना डाली। यह बछड़ा अंदर से खाली था। और इस तरह हुनरमंदी से बनाया गया था कि जब उसके अंदर से हवा गुजरती तो बैल की डकार की सी आवाज आती। सामरी ने बनी इस्राईल के जाहिल अवाम से कहा कि देखो तुम्हारा माबूद (पूज्य) तो यह है जो यहां मौजूद है। मूसा माबूद की तलाश में मालूम नहीं किस पहाड़ पर चले गए।

हर जमाने के 'सामरी' इसी तरह अवाम को बेवकूफ बनाते हैं। वे किसी महसूस चीज को निशाना बनाकर उसी को सबसे बड़ हक साबित करते हैं। और अल्फ़ज के फ़रेब में आकर अवाम की एक भीड़ उनके गिर्द जमा हो जाती है। महसूसपरस्ती इंसान की सबसे बड़ी कमजोरी है। चाहे वह दौरे कदीम का इंसान हो या दौरे जदीद (आधुनिक काल) का इंसान।

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هُرُونُ مِنْ قَبْلِ يَقُومُوا إِنَّمَا أَنتُم بِرَبِّكُمْ أَلْمُتُونَ ۖ
فَاتَّبَعُونِي وَأَطِيعُوا أَمْرِي ۖ قَالُوا لَنْ تَبْرَحَ عَلَيْهِ عَافِيَةٌ حَتَّىٰ يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوسَىٰ ۖ

और हारून ने उनसे पहले ही कहा था कि ऐ मेरी कौम, तुम इस बछड़े के जरिए से बहक गए हो और तुम्हारा रब तो रहमान है। पस मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो। उन्होंने कहा कि हम तो इसी की परस्तिश (पूजा) में लगे रहेंगे जब तक कि मूसा हमारे पास लौट न आए। (90-91)

हजरत मूसा के बाद कौम की देखभाल की जिम्मेदारी हजरत हारून पर थी। उन्होंने कौम को काफी समझाने की कोशिश की। मगर कौम के ऊपर उनका वह दबाव न था जो हजरत मूसा का था। इसलिए उनके मना करने के बाद भी लोग इससे न रुके। हजरत हारून का इसरार बढ़ा तो लोगों ने कहा कि अब जो हो गया है वह तो इसी तरह जारी रहेगा। मूसा जब लौट कर आएंगे तो वही इसका फैसला करेंगे।

हजरत हारून उस वक़्त अगर कोई सज़ा इक़दाम करते तो वह नतीजाख़ेज न होता। क्योंकि आपके साथ जो लोग थे उनकी तादाद कम थी। आपने बेनतीजा कार्रवाई करने के मुक़ाबले में इसे ज्यादा मुनासिब समझा कि वक्ती तौर पर सब्र का तरीक़ा इस्त्रियार कर लें। और लोगों की इस्लाह (सुधार) के लिए अल्लाह तआला से दुआ करते रहें।

قَالَ يَهُرُونَكَ أَمَّا أَنْتُمْ ضَلُّوا ۖ أَتَتَّبِعُونَ أَفْعَصَبْتَ أَمْرِي ۖ قَالَ
يَا بُنُوؤُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِي وَلَا بِرَأْسِي ۖ إِنِّي خَشِيتُ أَنْ تَقُولَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِي
إِسْرَءِيلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِي ۖ

मूसा ने कहा कि ऐ हारून, जब तूने देखा कि वे बहक गए हैं तो तुम्हें किस चीज ने रोका कि तुम मेरी पैरवी करो। क्या तुमने मेरे कहने के खिलाफ किया। हारून ने कहा

कि ऐ मेरी मां के बेटे, तुम मेरी दाढ़ी न पकड़ो और न मेरा सर। मुझे यह डर था कि तुम कहोगे कि तुमने बनी इस्राईल के दर्मियान फूट डाल दी और मेरी बात का लिहाज न किया। (92-94)

हजरत मूसा ने अपने भाई का सखी के साथ मुहासबा किया। हजरत हारून ने जवाब दिया कि ऐसा नहीं है कि मैंने इस्लाह की कोशिश नहीं की और जाहिलों के साथ मुसालेहत कर ली। बल्कि मैंने पूरी कुव्वत के साथ उन्हें इस मुशिरकाना फेअल से रोकने की कोशिश की। मगर मसला यह था कि कौम की अक्सरियत सामरी के फरेब में आकर उसकी साथी बन गई। मैंने इसरार किया तो वे लोग जंग व कत्ल पर आमादा हो गए। मुझे अंदेशा हुआ कि अगर मैं इसरार जारी रखता हूं तो कौम के अंदर बाहमी खुरेजी शुरू हो जाएगी।

मामला इस नौबत तक पहुंचने के बाद अब मुझे दो में से एक चीज का इतिखाब करना था। या तो बाहमी जंग, या आपकी आमद तक इस मामले को मुलतवी रखना। मैंने दूसरी सूरत को बेहतर समझ कर उसे इख्तियार कर लिया। बहुत से मौकों पर दीन का तकाजा यह होता है कि बाहमी लड़ाई से बचने के लिए खामोशी का तरीका इख्तियार कर लिया जाए, यहां तक कि शिर्क जैसे मामले में भी।

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يَا مَرْيُومُ ۖ قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَحُضُّوْا بِهِ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُولِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذَلِكَ سَوَّلَتْ لِي نَفْسِي ۖ قَالَ فَاذْهَبِي فَإِنَّكَ فِي الْحَيَوةِ ۖ أَنْ تَقُولَ لَأَمْسَأَنَّ وَأَنْ لَّكَ مَوْعِدٌ لَّنِىْ مُخْلَفَةٌ ۚ وَانْظُرِي إِلَى إِلَهِكَ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَّنُحَرِّقَنَّهُ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهُ فِي الْيَمِّ نَسْفًا ۖ إِنَّكَ أَهْلُكُمْ وَاللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

मूसा ने कहा कि ऐ सामरी, तुम्हारा क्या मामला है। उसने कहा कि मुझे वह चीज नजर आई जो दूसरों को नजर नहीं आई तो मैंने रसूल के नक्शेकदम (पद चिह्नों) से एक मुट्ठी उठाई और वह इसमें डाल दी। मेरे नफ्स (अंतःकरण) ने मुझे ऐसा ही समझाया। मूसा ने कहा कि दूर हो। अब तेरे लिए जिंदगी भर यह है कि तू कहे कि मुझे न खूना। और तेरे लिए एक और वादा है जो तुझसे टलने वाला नहीं। और तू अपने इस माबूद (पूज्य) को देख जिस पर तू बराबर मोअतकिफ (एकाग्र) रहता था, हम उसे जलाएंगे फिर उसे दरिया में बिखेर कर बहा देंगे। तुम्हारा माबूद तो सिर्फ अल्लाह है उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसका इल्म हर चीज पर हावी है। (95-98)

हजरत मूसा को जब मालूम हुआ कि इस फेअल (कृत्य) का अस्ल लीडर सामरी है तो आपने उससे पूछ-गछ की। सामरी ने दुबारा होशियारी का तरीका इख्तियार किया और बात

बनाते हुए कहा कि मैंने जो कुछ किया एक कश्फ (दिव्य निर्देश) के जेरे असर किया। और खुद रसूल के नक्शे कदम की मिट्टी भी इसमें बरकत के लिए शामिल कर दी।

पैगम्बर को फरेब देने की कोशिश की बिना पर सामरी का जुर्म और ज्यादा शदीद हो गया। बाइबल के बयान के मुताबिक उसे खुदा ने कोढ़ का मरीज बना दिया। उसका जिस्म ऐसा मकरूह हो गया कि लोग उसे देखकर दूर ही से उससे कतराने लगे। सामरी ने झूठ की बुनियाद पर कौम का महबूब बनने की कोशिश की। इसकी उसे यह सजा मिली कि उसे कौम का सबसे ज्यादा मबगूज (घृणित) शरब बना दिया गया। और आखिरत की सजा इसके अलावा है।

बनी इस्राईल के जेहन में मुशिरकाना मजाहिर की जो अजमत थी उसे खत्म करने के लिए हजरत मूसा ने यह किया कि लोगों के सामने बछड़े को जला डाला और फिर उसकी खाक को समुद्र की मौजों में बहा दिया।

كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ وَقَدْ آتَيْنَاكَ مِنْ لَدُنَّا ذِكْرًا ۖ مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وِزْرًا ۖ خَلِيدِينَ فِيهِ وِسَاءٌ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ جِجَارًا ۖ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ۖ يَخْتَافُونَ بَيْدَهُمْ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ۖ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ ۖ إِذْ يَقُولُ أَفْلَهِمْ ۖ طَرِيقَةً إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ۖ

इसी तरह हम तुम्हें उनके अहवाल (वृत्तान्त) सुनाते हैं जो पहले गुजर चुके। और हमने तुम्हें अपने पास से एक नसीहतनामा दिया है। जो इससे एराज (उपेक्षा) करेगा वह कियामत के दिन एक भारी बोझ उठाएगा। वे उसमें हमेशा रहेंगे और यह बोझ कियामत के दिन उनके लिए बहुत बुरा होगा। जिस दिन सूर में फूंक मारी जाएगी और मुजरिमों को उस दिन हम इस हाल में जमा करेंगे कि खौफ से उनकी आंखें नीली होंगी। आपस में चुपके-चुपके कहते होंगे कि तुम सिर्फ दस दिन रहे होगे। हम खूब जानते हैं जो कुछ वे कहेंगे। जबकि उनका सबसे ज्यादा वाकिफ़कार कहेगा कि तुम सिर्फ एक दिन ठहरे। (99-104)

पैगम्बरों का इंकार करने वालों का जो अंजाम हुआ वह गोया दुनिया में उस इलाही फैसले का जुर्ज जुहर (आंशिक प्रदर्शन) था जो कियामत में कुल्ली तौर पर तमाम नोए इंसानी (मानव जाति) के लिए पेश आने वाला है। कुरआन इसी हकीकत की एक याददहानी है।

दुनिया में आदमी जब हक को नजरअंदाज करता है तो बजाहिर यह बहुत हलकी सी चीज मालूम होती है। मगर आखिरत में आदमी का यह फेअल उसके लिए निहायत भारी बोझ

बन जाएगा। जब खुदाई बिगुल (सूर) यह एलान करेगा कि इस्तेहान की मुददत खत्म हो चुकी, उस वक्त अचानक लोग अपने आपको एक और दुनिया में पाएंगे। जब आदमी पर यह खुलेगा कि जिस दुनिया को वह अपनी दुनिया समझे हुए था वह दरअस्तल खुदा की दुनिया थी तो उस पर इस कद्र दहशत तारी होगी कि उसकी हैयत (स्वरूप) तक बदल जाएगी।

मौजूदा दुनिया में आदमी आखिरत को इस तरह नजरअंदाज करता है जैसे वह कोई बहुत दूर की चीज हो। मगर कियामत आने के बाद आदमी को ऐसा मालूम होगा जैसे दुनिया की जिंदगी तो बस गिनती के चन्द रोज की थी। इसके बाद सारी लम्बी जिंदगी वही थी जो आखिरत के आलम में गुजरने वाली थी।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي نَسْفًا ۖ فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ۖ
لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ۚ يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ أَعْوَجَ لَهُ وَخِشَعَتِ
الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا ۝

और लोग तुमसे पहाड़ों की बाबत पूछते हैं। कहो कि मेरा रब उन्हें उड़ाकर बिखेर देगा। फिर जमीन को साफ मैदान बनाकर छोड़ देगा। तुम इसमें न कोई कजी (टिढ़) देखोगे और न कोई ऊंचान। उस दिन सब पुकारने वाले के पीछे चल पड़ेंगे। जरा भी कोई कजी न होगी। तमाम आवाजें रहमान के आगे दब जाएंगी। तुम एक सरसराहट के सिवा कुछ न सुनोगे। (105-108)

कियामत में मौजूदा जमीन एक वसीअ (विस्तृत) और हमवार (समतल) फर्श की मानिंद बना दी जाएगी। उस वक्त यहां न पहाड़ों की बुलन्दियां होंगी और न दरियाओं की गहराइयां। तमाम इंसान दुबारा पैदा होकर उस जमीन पर जमा किए जाएंगे। दुनिया में खुदा की आवाज खुदा के दाओ (आह्वानकती) की जवान से बुलन्द होती है तो लोग उसे नजरअंदाज कर देते हैं। मगर कियामत में जब खुदा बराहेरास्त लोगों को पुकारेगा तो सारे इंसान किसी अदना इहिराफ के बगैर उसकी आवाज की तरफ चल पड़ेंगे। लोगों पर इस कद्र हैल तारी होगा कि किसी की जवान से कोई लफज नहीं निकलेगा। लोगों के चलने की सरसराहट के सिवा कोई और आवाज न होगी जो उस वक्त लोगों को सुनाई दे।

يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَرِضِيَ لَهُ قَوْلًا ۖ يَعْلَمُ
مَابَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِهِمْ ۚ وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْحَيِّ
الْقَيُّومِ ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۚ وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ

مُؤْمِنٌ فَلَا يَحِظُّ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ۝

उस दिन सिफारिश नफा न देगी मगर ऐसा शख्स जिसे रहमान ने इजाजत दी हो और उसके लिए बोलना पसंद किया हो। वह सबके अगले और पिछले अहवाल को जानता है। और उनका इल्म उसका इहाता नहीं कर सकता। और तमाम चेहरे उस हय्य व कयूम (जीवंत एवं शाश्वत) के सामने झुके होंगे। और ऐसा शख्स नाकाम रहेगा जो जुल्म लेकर आया होगा। और जिसने नेक काम किए होंगे और वह ईमान भी रखता होगा तो उसे न किसी ज्यादाती का अदेशा होगा और न किसी कमी का। (109-112)

सिफारिश का मुस्तकिल बिज्जात मुअस्सिर (स्वयं प्रभावी) होना सरासर बातिल है। खुदा न तो बंदों के अहवाल से बेखबर है कि कोई उसे किसी के बारे में बताए और न वह कमजोर है कि कोई उस पर दबाव डाल सके। अलबत्ता कुछ ख़ास अहवाल में खुदा अल्लाह तआला ही की यह मंशा हो सकती है कि वह किसी की जवान से जारी होने वाली एक काबिले लिहाज दरखास्त को इन्जेकूल अता फरमाए।

कियामत में अस्तल अहमियत इसकी होगी कि कौन शख्स खुद क्या लेकर आया है। जिस शख्स ने मौजूदा दुनिया में अपनी जिंदगी नाहक पर खड़ी की होगी उसका आखिरत में नाकाम होना यकीनी है। वहां सिर्फ वही लोग कामयाब होंगे जिन्होंने हालते गैब (अप्रकट) में अपने रब को पहचाना और अपनी जिंदगी को उसकी मर्जी के मुताबिक ढाल लिया।

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَصَرَّفْنَا فِيهِ مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ
أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۖ فَتَعْلَىٰ لِلَّهِ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۖ وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْآنِ مِنْ قَبْلِ
أَنْ يُقْضَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ زِدْنِي عِلْمًا ۝

और इसी तरह हमने अरबी का कुरआन उतारा है और इस में हमने तरह-तरह से वईद (चेतावनी) बयान की है ताकि लोग डरें या वह उनके दिल में कुछ सोच डाल दे। पस बरतर है अल्लाह, बादशाह हक्कीकी। और तुम कुरआन के लेने में जल्दी न करो जब तक उसकी 'वही' (प्रकाशना) तक्मील को न पहुंच जाए। और कहो कि ऐ मेरे रब मेरा इल्म ज्यादा कर दे। (113-114)

खुदा ने अपनी किताब जिसमें हर किस्म के दलाइल हैं, इंसानी जवान में उतारी है। और उस जवान को हमेशा के लिए एक जिंदा जवान बना दिया है। इस तरह खुदा की हिदायत को एक ऐसी चीज बना दिया गया है जिसे हर जमाने का आदमी पढ़ और समझ सके।

दाओ जब हक की दावत लेकर उठे तो उसके सामने नतीजे के एतबार से दो चीजें होनी चाहिए। पहली मल्लूब चीज तो यह है कि सुनने वाले के अंदर नपिसयाती इकिलाब पैदा हो

और वह अल्लाह से डरने वाला बन जाए। दूसरी इससे कमतर बात यह है कि दाजी की बात सुनने वाले के जेहन में सवाल बनकर दाखिल हो जाए।

मक्का में दावती मुहिम के दौरान रोजाना लोगों की तरफ से सवाल उठाए जाते थे और नए-नए मसाइल पैदा होते थे। अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़ाहिश फ़िरी तौर पर यह होती थी कि कुरआन के नाज़िल होने का वक्फ़ (अंतराल) कम हो ताकि आपको जल्द-जल्द ख़ुदाई रहनुमाई मिलती रहे। फरमाया कि कुरआन जिस तदरीज (क्रम) से उतर रहा है वह ख़ुदा का तय शुदा मंसूबा है। वह इसी तरह उतरेगा और बहरहाल अपनी तक्मील तक पहुंचेगा। तुम मुस्तकबिल (भविष्य) के कुरआन को हाल (वर्तमान) में उतारने के ख़ाहिशमंद न बनो। अलबत्ता यह दुआ करो कि ख़ुदा तुम्हारे फहमे कुरआन में इज़ाफ़ा करे। कुरआन की आयतों में जो वसीअ (सार्वभौम) मज़ामीन छुपे हुए हैं उनका इदराक करने की सलाहियत पैदा कर दे। कुरआन की अगली आयतों के बारे में जल्दी के बजाए तुम्हें उस हिक्मत को जानने का ख़ाहिशमंद होना चाहिए कि कुरआन के नुज़ूल में तर्तीब व तदरीज (चरणबद्धता) क्यों रखी गई है।

इससे यह नतीजा निकलता है कि दाजी को कभी जल्दबाजी से काम नहीं लेना चाहिए। दावत (आह्वान) के हालात में जिहाद के मसाइल बयान करना। लोगों की इस्लाह के दौर में इज्तिमाई इक्दाम (सामूहिक पहल) के अहकाम सुनाना। जिन मौकों पर सब्र मल्बूब है उन मौकों पर संघर्ष की आयतों के हवाले देना, ये सब इसी के दायरे में दाखिल है। और इससे बचना दाजी के लिए लाजिमी तौर पर ज़रूरी है।

وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَبْلُغَ عِصْيَانَهُ أَنْ يَقُولَ أَتْلُكُمُ الْإِنشَاءَ
لِلْمَلِكَةِ اسْجُدْ وَإِلَادًا مِّنْ قَبْلِكَ إِلَّا ابْنُ دَاوُدَ إِن هَذَا عَدُوٌّ
لَّكَ وَلِزُورُوكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكَ مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقَى ۝

और हमने आदम को इससे पहले हुक्म दिया था तो वह भूल गया और हमने उस में अज़्म (दृढ़-संकल्प) न पाया। और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) कि उसने इंकार किया। फिर हमने कहा कि ऐ आदम, यह बिलाशुबह तुम्हारा और तुम्हारी बीबी का दुश्मन है तो कहीं वह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा न दे फिर तुम महरूम होकर रह जाओ। (115-117)

ख़ुदा के हुक्म पर कायम रहने के लिए मजबूत इरादा इतिहाई तौर पर ज़रूरी है। आदमी अगर ग़ैर मुतअल्लिक चीजों से मुतअस्सिर (प्रभावित) हो जाया करे तो वह यकीनन ख़ुदा के रास्ते से हट जाएगा। ख़ुदा के रास्ते पर कायम रहने के लिए सिर्फ़ ख़ुदा के हुक्म का जानना काफी नहीं, बल्कि यह अज़्म (दृढ़-संकल्प) भी लाजिमी तौर पर ज़रूरी है कि आदमी हुक्मे

ख़ुदावंदी के ख़िलाफ़ बातों से मुजाहमत (प्रतिरोध) करे और उन्हें अपने ऊपर असरअंदाज न होने दे।

ख़ुदा ने आदम को सज्दा करने का हुक्म दिया तो फ़रिश्ते फ़ौरन सज्दे में गिर गए। मगर शैतान ने सज्दा नहीं किया। इस फर्क की वजह क्या थी। इसकी वजह यह थी कि फ़रिश्तों ने इस मामले को ख़ुदा का मामला समझा। इसके बरअक्स इब्लीस ने इसे इंसान का मामला समझा। जब मामले को ख़ुदा का मामला समझा जाए तो आदमी के लिए एक ही मुमकिन सूरत होती है। वह यह कि वह उसकी इताअत (आज्ञापालन) करे। मगर जब मामले को इंसान का मामला समझ लिया जाए तो आदमी यह करेगा कि वह सामने के इंसान को देखेगा। अगर वह उससे ताक़तवर है तो वह झुक जाएगा। और अगर वह उससे ताक़तवर नहीं है तो वह झुकने से इंकार कर देगा, चाहे हक़ का वाज़ेह तक्ज़ा यही हो कि वह उसके आगे अपने आपको झुका दे।

إِنَّكَ لَا تَجُوعُ فِيهَا وَلَا تَعْرَىٰ ۝ وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَصْحَىٰ ۝
فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَٰأَدَمُ هَٰذَا أَدُّكَ عَلَىٰ شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٌ لَّا يَبْلَىٰ ۝
فَاكْلًا مِنْهَا فَكَلَتْ لَهَا سَوَاقِطًا وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ ذُرِّيِ الْجَنَّةِ
وَعَصَىٰ آدَمُ رَبَّهُ فَغَوَىٰ ۝ ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَىٰ ۝

यहां तुम्हारे लिए यह है कि तुम न भूखे रहोगे और न तुम नंगे होगे। और तुम यहां न प्यासे होगे, और न तुम्हें धूप लगेगी। फिर शैतान ने उन्हें बहकाया। उसने कहा कि क्या मैं तुम्हें हमेशगी (अमरता) का दरख़्त बताऊं। और ऐसी बादशाही जिसमें कभी कमजोरी न आए। पस उन दोनों ने उस दरख़्त का फल खा लिया तो उन दोनों से सत्त एक दूसरे के सामने खुल गए। और दोनों अपने आपको जन्नत के पत्तों से ढांकने लगे। और आदम ने अपने रब के हुक्म की ख़िलाफ़वर्जी की तो भटक गए। फिर उसके रब ने उसे नवाजा। पस उसकी तौबा कुबूल की और उसे हिदायत दी। (118-122)

आदम और उनकी बीबी को जिस जन्नत में रखा गया था वहां ज़िंदगी की तमाम ज़रूरतें उन्हें बफ़रागत हासिल थीं। ग़िज़ा, लिबास, पानी, साया (मकान) ये सब चीजें वहां ख़ुदा की तरफ से बिल्कुल मुफ़्त मुहय्या की गई थीं। मौजूदा दुनिया में ये चीजें आदमी को पुमशक्कत क़स्ब के जरिए मिलती हैं, जन्नत में ये चीजें उन्हें किसी मशक्कत के बग़ैर हासिल थीं।

एक दरख़्त का फल खाना आदम के लिए ममनूअ था। शैतान ने उस दरख़्त के फल में अबदी फायदे बताए। बिलआख़िर आदम उसकी बातों से मुतअस्सिर हो गए और उन्होंने उस दरख़्त का फल खा लिया। इसके फ़ौरन बाद उन्होंने महसूस किया कि वे नंगे हो गए हैं। यह गोया एक अलामत थी कि ख़ुदा की वह ज़मानत उनसे उठा ली गई जिसकी वजह से वे अब तक बग़ैर मेहनत रोजी के मालिक थे। इसके बाद तौबा और दुआ की वजह से आदम की

माफी हो गई। ताहम वह बिना मेहनत की रोजी वाली दुनिया से निकाल कर मेहनत की रोजी वाली दुनिया में पहुंचा दिए गए। इस तरह जमीन पर मौजूदा नस्ले इंसानी का आगाज हुआ।

قَالَ اهْبِطْ مِنْهَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ فَلَأَيُّكُمْ مُبْتَلَىٰ هَٰذَا ۖ فَمَنِ اتَّبَعَ هَدَايَ فَلَا يَحِلُّ وَلَا يَشْقَىٰ ۖ وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَىٰ ۖ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِي أَعْمَىٰ وَقَدْ كُنْتُ بَصِيرًا ۖ قَالَ كَذَلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيتَ مَا كَذَلِكَ الْيَوْمَ تُنْسَىٰ ۖ وَكَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمَرْ بِآيَاتِ رَبِّهِ ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشدُّ وَآبَقَىٰ ۖ

खुदा ने कहा कि तुम दोनों यहां से उतरो। तुम एक दूसरे के दुश्मन हो गए। फिर अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ से हिदायत आए तो जो शख्स मेरी हिदायत की पैरवी करेगा वह न गुमराह होगा और न महरूम रहेगा। और जो शख्स मेरी नसीहत से एराज (उपेक्षा) करेगा तो उसके लिए तंगी का जीना होगा। और कियामत के दिन हम उसे अंधा उठाएंगे। वह कहेगा कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे अंधा क्यों उठाया मैं तो आंखों वाला था। इशार्द होगा कि इसी तरह तुम्हारे पास हमारी निशानियां आईं तो तुमने उनका कुछ ख्याल न किया तो इसी तरह आज तुम्हारा कुछ ख्याल न किया जाएगा। और इसी तरह हम बदला देंगे उसे जो हद से गुजर जाए और अपने रब की निशानियों पर ईमान न लाए। और आखिरत (परलोक) का अजाब बड़ा सख्त है और बहुत बाकी रहने वाला। (123-127)

खुदा ने आदम और इब्लीस दोनों को जमीन पर बसाया। उसने इब्तिदा ही में यह तंबीह कर दी कि कियामत तक तुम दोनों के दर्मियान एक दूसरे से मुकाबला जारी रहेगा। इब्लीस इंसानी नस्ल को बहकाने में अपनी सारी कोशिश लगा देगा। इसके जवाब में इंसान को यह करना है कि वह अपने सबसे बड़े दुश्मन इब्लीस को समझे और उसके वसवसों से आखिरी हद तक दूर रहने की कोशिश करे।

इंसान की मज्जिद हिदायत के लिए खुदा ने यह इतिजाम किया कि मुसलसल अपने पैगम्बर भेजे जो इंसान की कबिलेफहम जवान में उसे जिद्दी की हकीकत से बाख्बर करते रहे। अब इंसान की कामयाबी और नाकामी का दारोमदार इस पर है कि वह पैगम्बर की बात को मानता है या नहीं मानता। जो शख्स उसे मानेगा उसे दुबारा जन्नत की राहत भरी हुई जिद्दी दे दी जाएगी। और जो शख्स नहीं मानेगा उसकी जिद्दी सख्ततरीन जिद्दी होगी जिससे वह कभी निकल न सकेगा।

हिदायत से एराज (उपेक्षा) करने वाले लोग आखिरत में इस तरह उठेंगे कि वे दोनों

आंखों से अंधे होंगे। इसकी वजह यह है कि उन्हें आंखें इसलिए दी गई थीं कि वे खुदा की निशानियों को देखकर उसे पहचानें। मगर उनका हाल यह हुआ कि उनके सामने खुदा की निशानियां आईं और उन्होंने उन्हें नहीं पहचाना। इस तरह उन्होंने साबित किया कि वे आंख रखते हुए भी अंधे हैं। फिर खुदा फरमाएगा कि ऐसे अंधों को आंख देने की क्या जरूरत।

أَفَلَمْ يَحْذَرِ الَّذِينَ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ يَيسُونَ فِي مَسْكَنتِهِمْ ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّأُولِي النَّهْيِ ۖ وَلَوْ لَا كَلِمَةُ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ لِزُلُمَاءِوَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا وَمِنْ آنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ۖ

क्या लोगों को इस बात से समझ न आई कि उनसे पहले हमने कितने गिरोह हलाक कर दिए। ये उनकी बस्तियों में चलते हैं बेशक इसमें अहले अक्ल के लिए बड़ी निशानियां हैं। और अगर तुम्हारे रब की तरफ से एक बात पहले तय न हो चुकी होती। और मोहलत की एक मुद्दत मुक़र्रर न होती तो जरूर उनका फैसला चुका दिया जाता। पस जो ये कहते हैं उस पर सन्न करो। और अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह (अर्चना) करो, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले, और रात के औकात में भी तस्बीह करो। और दिन के किनारों पर भी। ताकि तुम राजी हो जाओ। (128-130)

किसी कौम को जमीन पर उरूज (उत्थान) हासिल हो और फिर वह हलाक या मगलूब (परास्त) कर दी जाए तो इसकी वजह हमेशा यह होती है कि उसने बंदगी की हद से तजावुज किया। हर तबाहशुदा कौम अपने बाद वालों के लिए दर्सेइबरत होती है। मगर बहुत कम लोग हैं जो इस तरह के वाक़ेयात से दर्स (सीख) हासिल करते हों।

यहां तस्बीह और नमाज की जो तल्कीन की गई है वह मक्की दौर के इतिहाई सख्त हालात में की गई है। इससे अंदाज़ा होता है कि इंकार और मुखालिफ्त के सख्ततरीन हालात में नमाज और खुदा की याद मोमिन की ढाल है। इससे राहें हमवार होती हैं। और फ़तुहात (विजयों) के दरवाजे खुलते हैं। इससे सब कुछ इतनी बड़ी मिकदार (मात्रा) में मिल जाता है कि आदमी उसे पाकर राजी हो जाए।

وَلَا تَسْكَنْ عَيْنُكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَاهُ أَزْوَاجًا ۖ إِنَّهُمْ زَهْرَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ لِنَقْتَبَهُمْ فِيهِ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۖ وَأُمْرُ أَهْلِكَ بِالصَّلَاةِ وَأَصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۖ لَا تَسْأَلُكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوَىٰ ۖ

और हरगिज उन चीजों की तरफ आंख उठाकर भी न देखो जिन्हें हमने उनके कुछ गिरोहों को उनकी आजमाइश के लिए उन्हें दे रखा है। और तुम्हारे ख का रिक ज्यादा बेहतर है और बाकी रहने वाला है। और अपने लोगों को नमाज का हुक्म दो और उसके पाबंद रहो। हम तुमसे कोई रिक नहीं मांगते। रिक तो तुम्हें हम दौ और बेहतर अंजाम तो तकवा (ईश-परायणता) ही के लिए है। (131-132)

इन आयात का खिताब अगरचे बजाहिर पैगम्बर से है मगर इसके मुखातब तमाम अहले ईमान हैं। दुनिया में एक शख्स ईमान और दावत (आह्वान) की जिंदगी इख्तियार करता है। इसके नतीजे में उसकी जिंदगी मशक्कों की जिंदगी बन जाती है। दूसरी तरफ यह खल है कि जो लोग इस किस्म की जिम्मेदारियों से आजाद हैं वे आराम और राहत में अपने सुबह व शाम गुजार रहे हैं। इस सूरतेहाल को नुमायां करके शैतान आदमी के दिल में वसवसा डालता है। वह मोमिन और दाजी (आह्वानकर्ता) को मुतजलजल (अस्थिर) करने की कोशिश करता है।

लेकिन गहराई से देखा जाए तो इस जल्दी फर्क के आगे एक और फर्क है और वह फर्क ज्यादा कबिले लिखत है। वह फर्क यह कि दुनियापरस्त लोगों को जो चीज मिली है वह महज इन्तेहान के लिए है और सरासर वकती है। इसके बाद अबदी जिंदगी में उनके लिए कुछ नहीं। दूसरी तरफ मोमिन और दाजी को खुदा से वाबस्तगी इख्तियार करने के नतीजे में जो चीज मिली है वह तमाम दुनिया की चीजों से ज्यादा कीमती है। वह है अल्लाह की याद, आखिरत की फिक्र, इबादत और तकवे की जिंदगी, खुदा के बंदों को आखिरत की पकड़ से बचाने के लिए फिक्रमंद होना। यह भी रिक है। और यह ज्यादा आला रिक है क्योंकि वह आखिरत में ऐसी बेहिसाब नेमतों की शकल में आदमी की तरफ लौटेगा जो कभी खत्म होने वाली नहीं।

وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِيَنَا بِآيَةٍ مِنْ رَبِّهِ أَوْ لَمْ تَأْتِهِمْ بَيِّنَةٌ مَا فِي الصُّحُفِ الْأُولَى ۖ
وَلَوْ أَنَّا أَهْلُكُمْ لَمُعَذِّبِينَ مِنْ قَبْلِهِ لَقَالُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَتُنَبِّئَهُ
إِنَّكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَذُنَ وَنَحْنُ ۖ قُلْ كُلُّكُمْ ذَرُّوا فَتَرْكَبُوا فَتَسْعَكُونُ مِنْ
أَصْحَابِ الْخِطَابِ السَّوِيِّ وَمِنْ أَهْلِ الْأُولَى ۖ

और लोग कहते हैं कि यह अपने ख के पास से हमारे लिए कोई निशानी क्यों नहीं लाते। क्या उन्हें अगली किताबों की दलील नहीं पहुंची। और अगर हम उन्हें इससे पहले किसी अजाब से हलाक कर देते तो वे कहते कि ऐ हमारे ख तूने हमारे पास रसूल क्यों न भेजा कि हम जलील और रुसवा होने से पहले तेरी निशानियों की पैरवी करते। कहे कि हर एक मुत्तजिर है तो तुम भी इत्तिजार करो। आईदा तुम जान लोगे कि कौन सीधी राह वाला है और कौन मंजिल तक पहुंचा। (133-135)

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बैअसत से पहले अल्लाह तआला ने यह एहतिमाम किया कि पिछले नबियों की जवान से आपकी आमद का पेशगी एलान किया। ये पेशीनगोइयां (भविष्यवाणियां) आज भी तमाम तहरीफात (परिवर्तनों) के बावजूद, पिछली आसमानी किताबों में मौजूद हैं। यह पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सदाकत (सच्चाई) की सबसे बड़ी दलील थी। मगर दलील की कुव्वत को समझने के लिए संजीदगी की जरूरत होती है, और यह वह चीज है जो हमेशा सबके कम पाई गई है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
إِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ ۚ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنْ رَبِّهِمْ مُخَدَّثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ۚ لَأَهْلِيَةً قُلُوبُهُمْ ۚ وَأَسْرُوا النَّجْوَى الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ هَلْ هَذَا إِلَّا بَشْرٌ مِثْلُكُمْ ۚ أَفَتَأْتُونَ السَّحَرَاءَ وَأَنْتُمْ تُبْخَرُونَ ۚ قُلْ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

आयतें-112

सूरह-21. अल-अंबिया

रुकूअ-7

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। लोगों के लिए उनका हिसाब नजदीक आ पहुंचा। और वे गफ़लत में पड़े हुए एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। उनके ख की तरफ से जो भी नई नसीहत उनके पास आती है वे उसे हंसी करते हुए सुनते हैं। उनके दिल गफ़लत में पड़े हुए हैं। और जालिमों ने आपस में यह सरगोशी (कानाफूसी) की कि यह शख्स तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है। फिर तुम क्यों आंखों देखे इसके जादू में फंसते हो। रसूल ने कहा कि मेरा ख हर बात को जानता है, चाहे वह आसमान में हो या जमीन में। और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (1-4)

हर आदमी जो दुनिया में है वह जिंदगी से ज्यादा मौत से क़रीब है। इस एतबार से हर आदमी अपने रोजे हिसाब के ऐन किनारे पर खड़ा हुआ है। मगर इंसान का हाल यह है कि वह किसी भी याददहानी पर तक्जोह नहीं देता, चाहे वह पैगम्बर के जरिए से कराई जाए, या ग़ैर पैगम्बर के जरिए। हक (सत्य) के दाजी (आवाहक) की बात को वह बस 'एक इंसान' की बात कहकर नजरअंदाज कर देता है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का में जब कुरआन के जरिए दावत शुरू की तो कुरआन का खुदाई कलाम लोगों के दिलों को मुसख़्खर करने लगा। यह वहां के सरदारों के लिए बड़ी सख्त बात थी। क्योंकि इससे उनकी कयादत ख़तरे में पड़ रही थी। कुरआन तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत देता था, और मक्का के सरदार शिर्क (बहुदेववाद) के ऊपर अपनी सरदारी कायम किए हुए थे। उन्होंने लोगों के जेहन को इससे हटाने के लिए यह किया कि लोगों से कहा कि इस कलाम में बजाहिर जो तासीर तुम देख रहे हो वह इसलिए नहीं है कि वह खुदा का कलाम है। इसका जोर सदाक़्त (सच्चाई) का जोर नहीं बल्कि जादू का जोर है। यह जादू बयानी का मामला है न कि आसमानी कलाम का मामला।

इस किस्म की बात कहने वाले लोग अगरचे खुदा का नाम लेते हैं मगर उन्हें यकीन नहीं कि खुदा उन्हें देख और सुन रहा है। अगर उन्हें खुदा के आलिमुलगैब होने का यकीन होता तो वे ऐसी ग़ैर संजीदा बात हरगिज अपनी जबान से न निकालते।

بَلْ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ بَلْ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَأْتِنَا بِالْحُكْمِ
كَمَا أُرْسِلَ الْأَوَّلُونَ ۝ مَا آمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا
أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ ۝

बल्कि वे कहते हैं, ये परागंदा ख़ाब (दुस्वप्न) हैं। बल्कि इसे उन्होंने गढ़ लिया है। बल्कि वह एक शायर हैं। उन्हें चाहिए कि हमारे पास उस तरह की कोई निशानी लाएं जिस तरह की निशानियों के साथ पिछले रसूल भेजे गए थे। इनसे पहले किसी बस्ती के लोग भी जिन्हें हमने हलाक किया, ईमान नहीं लाए तो क्या ये लोग ईमान लाएंगे। (5-6)

हक का दाओ हमेशा हक की दावत (आह्वान) को दलील के जोर पर पेश करता है। मुख़ालिफीन जब देखते हैं कि वे दलील से उसका तोड़ नहीं कर सकते तो वे तरह-तरह की बातें निकाल कर अवागम को उससे बरग़्शा (खिन्न) करने की कोशिश करते हैं। मसलन यह कि यह शायराना कलाम है। यह अदबी साहिरी (साहित्यिक जादूगरी) है। यह एक दीवाने की कल्पनाएं हैं। यह अपने जी से बनाई हुई बातें हैं। वगैरह। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चूँकि अहले मक्का के सामने कोई महसूस मौजिजा नहीं दिखाया था। इसलिए आपकी रिसालत को मुशतबह करने के लिए वे यह भी कहते थे कि यह अगर खुदा के भेजे हुए हैं तो पिछले पैग़म्बरों की तरह खुदा के पास से कोई मौजिजा (दिव्य चमत्कार) लेकर क्यों नहीं आए।

मगर तारीख़ का तजर्बा बताता है कि जो लोग दलील से बात को न मानें वे मौजिजे को देखकर भी उसे मानने के लिए तैयार नहीं होते। इसलिए लोगों के साथ ख़ैरख़्वाही यह है कि दलील की जबान में उनकी नसीहत जारी रखी जाए न कि मौजिजा दिखाकर उन पर इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) कर दी जाए। क्योंकि मौजिजे से न मानने के बाद दूसरा मरहला सिर्फ हलाक़त होता है।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوْحِي إِلَيْهِمْ فَسَلُّوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ
كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝ وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَدًا لَا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ
وَمَا كَانُوا خَالِدِينَ ۝ ثُمَّ صَدَقْنَاهُمُ الْوَعْدَ فَأَنْجَيْنَاهُمْ وَمَنْ
شَاءَ وَأَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِينَ ۝

और तुमसे पहले भी जिसे हमने रसूल बनाकर भेजा, आदमियों ही में से भेजा। हम उनकी तरफ 'वही' भेजते थे। पस तुम अहले किताब से पूछ लो, अगर तुम नहीं जानते। और हमने उन रसूलों को ऐसे जिस्म नहीं दिए कि वे खाना न खाते हों। और वे हमेशा रहने वाले न थे। फिर हमने उनसे वादा पूरा किया। पस उन्हें और जिस-जिस को हमने चाहा बचा लिया। और हमने हद से गुजरने वालों को हलाक कर दिया। (7-9)

जो लोग यह कहकर पैग़म्बर का इंकार करते थे कि यह तो हमारी तरह के एक इंसान हैं, उनसे कहा गया कि अगर तुम अपने इस एतराज में संजीदा हो तो तुम्हारे लिए मामले को समझना कुछ मुश्किल नहीं। बहुत सी गुजरी हुई हस्तियां जिन्हें तुम पैग़म्बर तस्लीम करते हो, उनके जानने वाले मौजूद हैं। फिर उन जानने वालों से तहकीक कर लो कि वे इंसान थे या ग़ैर इंसान। अगर वे इंसान थे तो मौजूदा पैग़म्बर को तुम सिर्फ इस बिना पर कैसे रद्द कर सकते हो कि वह एक मां-बाप के जरिए आम इंसान की तरह पैदा हुए हैं।

पिछले पैग़म्बरों की तारीख़ यह भी बताती है कि उनका इकरार या इंकार लोगों के लिए महज सादा किस्म का इकरार या इंकार न था। उसने दोनों गिरेहों के लिए वाज़ेह तौर पर अगल-अगल नतीजा पैदा किया। इकरार करने वालों ने नजात पाई और इंकार करने वाले हलाक कर दिए गए। इसलिए इस मामले में तुम्हें हद दर्जा संजीदा होना चाहिए।

لَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ وَكَمْ قَصَمْنَا
مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَأَنْشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝ فَلْيَا أَحْسُوا
إِذَا هُمْ مِنْهَا يَرْكُضُونَ ۝ لَا تَرْكُضُوا وَارْجِعُوا إِلَى مَا أُتْرِفْتُمْ فِيهِ
وَمَسْكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ۝ قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ فَمَا زِلْنَا إِلَّا
دَعْوَاهُمْ حَتَّى جَعَلْنَاهُمْ حَصِيدًا خَالِدِينَ ۝

हमने तुम्हारी तरफ एक किताब उतारी है जिसमें तुम्हारी याददिलानी है, फिर क्या तुम समझते नहीं। और कितनी ही जालिम बस्तियां हैं जिन्हें हमने पीस डाला। और उनके बाद दूसरी कौम को उठाया। पस जब उन्होंने हमारा अजाब आते देखा तो वे उससे भागने लगे। भागो मत। और अपने सामाने ऐश की तरफ और अपने मकानों की तरफ वापस चलो, ताकि तुमसे पूछा जाए। उन्होंने कहा, हाय हमारी कमबख्ती, बेशक हम लोग जालिम थे। पस वे यही पुकारते रहे। यहां तक कि हमने उन्हें ऐसा कर दिया जैसे खेती कट गई हो और आग बुझ गई हो। (10-15)

खुदा की किताब आम मनों में महज एक किताब नहीं वह एक याददिलानी है। वह इस बात की चेतावनी है कि मौजूदा दुनिया में इंसान का आना इत्फाक से नहीं है वह एक खुदाई मंसूबा है। और वह मंसूबा यह है कि इंसान को आजमाइश के लिए वकती आजादी दी जाए। इसके बाद आदमी जैसा अमल करे उसके मुताबिक उसे बदला दिया जाए। इस हकीकत का जुर्ह जुहर (अंशिक प्रदर्शन) जलम कैमों की हलाकत की सूत में बार-बार होता रहा है। और उसका कुल्ली जुहर (पूर्ण प्रदर्शन) कियामत में होगा। जबकि तमाम अगले पिछले इंसान दुबारा पैदा करके जमा किए जाएंगे।

जब खुदा की पकड़ जाहिर होती है तो वे तमाम मादूदी (भौतिक) साजोसामान आदमी को मुसीबत मालूम होने लगते हैं जिनके बल पर इससे पहले वह हक की दावत को नजरअंदाज कर देता था। मादूदी सामान जब तक साथ न छोड़ दें वह गफलत के निकलने के लिए तैयार नहीं होता। और जब ये सामान उसका साथ छोड़ देते हैं उस वक़्त उसकी आंख खुल जाती है। मगर उस वक़्त आंख का खुलना उसके काम नहीं आता। क्योंकि उस वक़्त तमाम चीजें अपनी ताकत खो चुकी होती हैं। इसके बाद सिर्फ खुदा किसी के काम आता है न कि झूठे माबूद।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لِعَيْنٍ ۖ لَّوِ اَرَدْنَا اَنْ نَّتَّخِذَ لَهٗوَا
لَا تَتَّخِذُنَا مِنْ لَدُنَّا ۖ اِنْ كُنَّا فَعٰلِعَيْن ۚ ۭ بَلْ نَقْذِرُ الْبَاطِلَ عَلٰى الْبَاطِلِ
فَيَذَرُوهٗ ۚ فَاِذَا هُوَ رَهِقٌ ۭ وَ لَكُمْ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ ۭ

और हमने आसमान और जमीन को और जो कुछ उनके दरमियान है खेल के तौर पर नहीं बनाया। अगर हम कोई खेल बनाना चाहते तो उसे हम अपने पास से बना लेते, अगर हमें यह करना होता। बल्कि हम हक (सत्य) को बातिल (असत्य) पर मारेंगे तो वह उसका सिर तोड़ देगा तो वह यकायक जाता रहेगा और तुम्हारे लिए उन बातों से बड़ी ख़राबी है जो तुम बयान करते हो। (16-18)

जो लोग खुदा की दावत के बारे में संजीदा न हों वे गोया मौजूदा दुनिया को एक किस्म

का खुदाई खिलौना समझते हैं। जिसका वकती तफरीह के सिवा और कोई मकसद न हो। मगर मौजूदा दुनिया अपनी बेपनाह हिक्मत व मअनवियत (अर्थपूर्णता) के साथ अपने खालिक का जो तआरुफ कराती है उसके लिहाज से यह नामुमकिन मालूम होता है कि उसका खालिक कोई ऐसा खुदा हो जिसने इस दुनिया को महज खेल के तौर पर बनाया हो।

मौजूदा दुनिया में इंसान जैसी अनोखी मख़्बूक है जिसकी फ़ितरत में हक व बातिल की तमीज पाई जाती है। दुनिया में ऐसी मख़्बूक का होना जो एक तरीके को हक और दूसरे तरीके को बातिल समझे और फिर हक व बातिल के नाम पर बार-बार मुक़ाबला पेश आना जाहिर करता है कि यहां कोई ऐसा वक़्त आने वाला है जबकि आखिरी तौर पर यह बात खुल जाए कि फ़िलवाक़ हक क्या था और बातिल क्या। और फिर जिसने हक का साथ दिया हो उसे कामयाबी हासिल हो और जिसने हक का साथ न दिया हो वह नाकाम कर दिया जाए। जिस दुनिया में ऐसा 'पथर' हो जो एक शख्स के 'सर' को तोड़ दे वहां क्या ऐसा हक न होगा जो बातिल को बातिल साबित कर सके।

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَمَنْ عِنْدَہٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ
وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۚ ۭ يُسَبِّحُوْنَ الْبَيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ۭ

और उसी के हैं जो आसमानों और जमीन में हैं। और जो (फरिश्ते) उसके पास हैं वे उसकी इबादत से सरताबी (विमुखता) नहीं करते और न काहिली (सुस्ती) करते हैं। वे रात दिन उसे याद करते हैं, कभी नहीं थकते। (19-20)

जमीन व आसमान की हर चीज खुदा की मख़्बूक है। हर चीज वही करती है जिसका उसे ऊपर से हुक्म दिया गया हो। सारी कायनात में सिर्फ इंसान है जो सरकशी करता है। जो लोग खुदा को नहीं मानते वे यह कहकर सरकशी करते हैं कि हमारे ऊपर कोई मालिक और हाकिम नहीं। हम आजाद हैं कि जो चाहें करें।

जो लोग खुदा को मानते हैं वे भी सरकशी करते हैं। अलबत्ता उनके पास अपनी सरकशी की तौजीह दूसरी होती है। वे खुदा के सिवा किसी और को अपना शफ़ीअ (शफाअत करने वाला) और वसीला मान लेते हैं। वे किसी को खुदा का मुकर्रब मानकर यह फर्ज कर लेते हैं कि हम उनके लिए अक़ीदत व एहताराम का इज्हार करते रहें तो वे खुदा के यहां हमारे लिए नजात की सिफारिश कर देंगे। कुछ लोग फरिश्तों को अपना शफ़ीअ और वसीला मान लेते हैं और कुछ लोग किसी दूसरी हस्ती को।

मगर इस किस्म के तमाम नजरिये मजहक़ाउज़ (हास्यास्पद) हद तक बातिल हैं। अगर किसी को वह निगाह हासिल हो कि वह कायनाती सतह पर हकीकत को देख सके तो वह देखेगा कि मफरूजा हस्तियां खुद तो खुदा की हैबत से उसके आगे झुकी हुई हैं और इंसान उनके नाम पर दुनिया में सरकश बना हुआ है।

أَمْ اتَّخَذُوا إِلَهًا مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنْشِرُونَ ۖ لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلَ إِلَهَةٍ
إِلاَّ اللَّهُ لَفَسَدَتَا ۖ فَسُبْحَنَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يُصِفُونَ ۖ لَا يُسْأَلُ عَمَّا
يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ۖ

क्या उन्होंने जमीन में से माबूद (पूज्य) ठहराए हैं जो किसी को ज़िंदा करते हों। अगर इन दोनों में अल्लाह के सिवा माबूद होते तो दोनों दरहम-बरहम हो जाते। पस अल्लाह, अर्श का मालिक, उन बातों से पाक है जो ये लोग बयान करते हैं। वह जो कुछ करता है उस पर वह पूछा न जाएगा और उनसे पूछ होगी। (21-23)

जमीन बकिया कायनात से अगल नहीं है। वह वसीअतर कायनात के साथ मुसलसल तौर पर मरबूत (जुड़ी हुई) है। जमीन पर ज़िंदगी और सरसब्जी उसी वक्त मुमकिन होती है जबकि बकिया कायनात उसके साथ पूरी तरह हमआहंगी करे। जमीन व आसमान का यह मुतवाफिक अमल (संयुक्त प्रक्रिया) साबित करता है कि जमीन व आसमान का इतिजाम एक ही हस्ती के हाथ में है। अगर वह दो के हाथ में होता तो यकीनन दोनों के दर्मियान बार-बार टकराव होता और जमीन पर मौजूदा ज़िंदगी का क़ियाम मुमकिन न होता।

कायनात अपनी बेपनाह अज्मत और मअनवियत (अर्थपूर्णता) के साथ अपने जिस ख़ालिक का तआरुफ़ कराती है वह यकीनी तौर पर ऐसा खुदा है जो हर किस्म की कमियों से यकसर पाक है। यह मौजूदा कायनात का कमतर अंदाजा है कि उसका ख़ालिक एक ऐसी हस्ती को माना जाए जिसके साथ कमियां और कमजोरियां लगी हुई हों।

أَمْ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ ۖ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ ۚ هَذَا ذِكْرٌ مِّن مَّعِيَ وَذِكْرٌ مِّن قَبْلِي ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُونَ ۖ وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ
لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ۖ

क्या उन्होंने खुदा के सिवा और माबूद (पूज्य) बनाए हैं। उनसे कहो कि तुम अपनी दलील लाओ। यही बात उन लोगों की है जो मेरे साथ हैं और यही बात उन लोगों की है जो मुझसे पहले हुए। बल्कि उनमें से अक्सर हक़ को नहीं जानते। पस वे एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। और हमने तुमसे पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिसकी तरफ़ हमने यह 'वही' (प्रकाशना) न की हो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं, पस तुम मेरी इबादत करो। (24-25)

एक खुदा के सिवा दूसरे माबूद फ़र्ज करना किसी वाकई दलील की बुनियाद पर नहीं है। बल्कि सरासर लाइल्मी की बुनियाद पर है। जो लोग खुदा के लिए शुर्का (साझीदार) मानते हैं उनके पास अपने अकीदए शिर्क के हक़ में कोई दलील नहीं, न इंसानी इल्म में और न आसमानी 'वही' में। वे तौहीद के दलाइल सुनकर उनसे एराज करते हैं तो इसकी वजह उनका इस्तदलाली (ताक़िफ़) यकीन नहीं है बल्कि इसकी वजह सिर्फ़ उनका तअस्सुब है। अपने तअस्सुब भरे मिजाज की वजह से वे अपने अकीदे में इतना पुख़्ता हो गए हैं कि इस्तदलाल के एतबार से बेहकीफ़्त होने के बावजूद वे उसे छोड़ने के लिए राजी नहीं होते।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ ۚ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُونَ ۖ لَا يَسْأَلُونَهُ
بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِ رَبِّ يَعْمَلُونَ ۖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ۖ وَمَن
يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَهٌ مِّن دُونِهِ فَذَلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ كَذَلِكَ نَجْزِي
الظَّالِمِينَ ۖ

और वे कहते हैं कि रहमान ने औलाद बनाई है, वह इससे पाक है, बल्कि (फरिश्ते) तो मुअज्जज़ (सम्माननीय) बदे हैं। वे उससे आगे बढ़कर बात नहीं करते। और वे उसी के हुक्म के मुताबिक अमल करते हैं। अल्लाह उनके अगले और पिछले अहवाल को जानता है। और वे सिफारिश नहीं कर सकते मगर उसके लिए जिसे अल्लाह पसंद करे। और वे उसकी हैबत से डरते रहते हैं। और उनमें से जो शख्स कहेगा कि उसके सिवा मैं माबूद (पूज्य) हूं तो हम उसे जहन्नम की सजा देंगे। हम जालिमों को ऐसी ही सजा देते हैं। (26-29)

एक चीज को हक़ और दूसरी चीज को बातिल समझना आदमी से उसकी आजदी छीन लेता है। इसलिए इंसान हमेशा इस कोशिश में रहा है कि वह ऐसा नजरिया दरयाफ़्त करे जिससे हक़ व बातिल का फ़र्क़ मिट जाए। जिससे उसे यह इत्मीनान हासिल हो कि वह दुनिया में चाहे जिस तरह भी रहे उससे यह पूछ नहीं होने वाली है कि तुमने ऐसा क्यों किया और वैसा क्यों नहीं किया। ग़ैर मजहबी लोगों ने यह तस्कीन इंकारे आख़िरत के ज़रिए हासिल करने की कोशिश की है और मजहबी लोगों ने मुश्क़िलाना अकीदे के ज़रिए।

फरिश्ते एक ग़ैबी (अप्रकट) मख़बूत हैं। पैग़म्बरों के ज़रिए इंसान को फरिश्तों की मौजूदगी की ख़बर दी गई ताकि वह खुदा की कुदरत का एहसास करे। मगर उसने फरिश्तों को खुदा की बेटी बनाकर अजीब व ग़रीब तौर पर यह अकीदा गढ़ लिया कि वे फरिश्तों के नाम पर कुछ इबादती रस्में अदा करता रहे, और वह आख़िरत में अपने बाप से सिफारिश करके उसकी बख़्शिश करा देंगे।

इस किस्म के तमाम अकीदे खुदा की खुदाई की नफी हैं। खुदा इसीलिए खुदा है कि वह ऐसी तमाम कमियों से पाक है। अगर वह इन कमियों में मुब्तिला होता तो वह खुदा न होता।

أَوَلَمْ يَرِ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا ۖ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ۝

क्या इंकार करने वालों ने नहीं देखा कि आसमान और जमीन दोनों बंद थे फिर हमने उन्हें खोल दिया। और हमने पानी से हर जानदार चीज को बनाया। क्या फिर भी वे ईमान नहीं लाते। (30)

रक्त के मअना किसी चीज का मुंह बंद होना है और फक्क का मतलब उसका खुल जाना है। गालिबन इससे जमीन व आसमान की वह इब्तिदाई हालत मुराद है जिसे मौजूदा जमाने में बिगड़ै (महाविस्फोट) नजरिया कहा जाता है। जदीद साइंसी तख्नीक के मुताबिक जमीन व आसमान का तमाम माददा इब्तिदा में एक बहुत बड़े गोले (सुपर एटम) की सूरत में था। ज्ञात भौतिक विज्ञान के नियमों के मुताबिक उस वक़्त उसके तमाम अज्जा (अवयव) अपने अंदरूनी मर्कज की तरफ खिंच रहे थे और इतिहाई शिद्दत के साथ आपस में जुड़े हुए थे। इसके बाद उस गोले के अंदर एक धमाका हुआ और उसके अज्जा अचानक बाहर की दिशा में फैलना शुरू हुए। इस तरह बिलआखिर वह वसीअ कायनात बनी जो आज हमारे सामने मौजूद है।

इब्तिदाई माददी गोले (सुपर एटम) में यह गैर मामूली वाकया बाहर की मुदाखलत (हस्तक्षेप) के बग़ैर नहीं हो सकता। इस तरह आगाजे कायनात की यह तारीख़ वाजेह तौर पर एक ऐसी हस्ती को साबित करती है जो कायनात के बाहर अपना मुस्तकिल वजूद रखती है और जो अपनी जाती कुव्वत से कायनात के ऊपर असरअंदाज होती है।

हमारी दुनिया में हर जानदार चीज सबसे ज्यादा जिस चीज से मुक्कब (निर्मित) होती है वह पानी है। पानी न हो तो जिंदगी का ख़ात्मा हो जाए। यह पानी हमारी जमीन के सिवा कहीं और मौजूद नहीं। वसीअ कायनात में अपवाद के तौर पर सिर्फ एक मकाम पर पानी का पाया जाना वाजेह तौर पर 'खुसूसी तख्नीक' (विशिष्ट सृजन) का पता देता है। कैसी अजीब बात है कि ऐसी खुली-खुली निशानियों के बाद भी आदमी खुदा को नहीं पाता। इसके बावजूद वह बदस्तूर महरूम पड़ा रहता है।

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِهِمْ ۖ وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝ وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا ۖ وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ الْبَيْتَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ

وَالْقَمَرَ كُلًّا فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝

और हमने जमीन में पहाड़ बनाए कि वह उन्हें लेकर झुक न जाए और उसमें हमने कुशादा रास्ते बनाए ताकि लोग राह पाएं। और हमने आसमान को एक महफूज (सुरक्षित) छत बनाया। और वे उसकी निशानियों से एराज (उपेक्षा) किए हुए हैं। और वही है जिसने रात और दिन और सूरज और चांद बनाए। सब एक-एक मदार (कक्ष) में तैर रहे हैं। (31-33)

यहां जमीन की चन्द नुमायां निशानियों का जिक्र है जो इंसान को खुदा की याद दिलाती हैं ताकि वह उसका शुक्रगुजार बंदा बने। उनमें से एक पहाड़ों के सिलसिले हैं जो समुद्रों के नीचे के कसीफ (गाढ़े) माददे को संतुलित रखने के लिए सतह जमीन पर जगह-जगह उभर आए हैं। इससे मुराद गालिबन वही चीज है जिसे जदीद साइंस में भू-संतुलन (Isostasy) कहा जाता है। इसी तरह जमीन का इस काबिल होना भी एक निशानी है कि इंसान उस पर अपने लिए रास्ते बना सकता है, कहीं हमवार (समतल) मैदान की सूरत में, कहीं पहाड़ी दरों की सूरत में और कहीं दरियाई शिगाफ (फाड़) की सूरत में।

आसमान की 'छत' जो हमारी बालाई फज्रा है, उसकी तर्कीब इस तरह से है कि वह हमें सूरज की नुक्सानदेह किरणों से बचाती है। वह शिहावे साकिब (तारों के टूटने) की मुसलसल बारिश को हम तक पहुंचने से रोके हुए है। इसी तरह सूरज और चांद का टकराए बग़ैर एक ख़ास दायरे में घूमना और इसकी वजह से जमीन पर दिन और रात का बाकायदगी के साथ पैदा होना।

इस किस्म की बेशुमार निशानियां हमारी दुनिया में हैं। आदमी उन्हें गहराई के साथ देखे तो वह खुदा की कुदरतों और नेमतों के एहसास में डूब जाए। मगर आदमी उन्हें नजरअंदाज कर देता है। वह खुले-खुले वाकेयात को देखकर भी अंधा बहरा बना रहता है।

وَمَا جَعَلْنَا الْبَشَرَ مِنْ قَبْلِكَ الْخَالِدُ ۖ أَفَلَا يَنْمِتُ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ۝ كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۖ وَبَلَّوْكُمْ بِالْأَسْرِ وَالْخَيْرِ وَفَتْنَةً ۖ وَاللَّيْنَا تُرْجَعُونَ ۝

और हमने तुमसे पहले भी किसी इंसान को हमेशा की जिंदगी नहीं दी तो क्या अगर तुम्हें मौत आ जाए तो वे हमेशा रहने वाले हैं। हर जान को मौत का मजा चखना है। और हम तुम्हें बुरी हालत और अच्छी हालत से आजमाते हैं परखने के लिए। और तुम सब हमारी तरफ लौटाए जाओगे। (34-35)

मक्का में जो लोग अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

मुखालिफ थे वे वसाइल (संसाधनों) के एतबार से आपसे बहुत बढ़े हुए थे। उन्हें उस वक्त के माहिल में इज्जत और बरतरी हसिल थी। इस फर्क का मतलब उनके नज्दीक यह था कि वे हक पर हैं और मुहम्मद (सल्ल०) नाहक पर। मगर दुनियावी चीजों की ज्यादाती और कमी हक और नाहक की बुनियाद पर नहीं होती बल्कि सिर्फ इस्तेहान के लिए होती है। यह खुदा की तरफ से बतौर आजमाइश है। दुनियावी सामान पाकर अगर कोई शख्स अपने को बड़ा समझने लगे तो गोया वह अपने को इन चीजों का नाअहल साबित कर रहा है। इसका नतीजा सिर्फ यह है कि मौत के बाद की जिंदगी में उसे हमेशा के लिए महरूम कर दिया जाए।

मक्का के लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नाकाम करने के लिए हर किस्म की मुखालिफाना कोशिशों में लगे हुए थे। यहां तक कि वे चाहते थे कि किसी न किसी तरह वे आपका खात्मा कर दें। ताकि यह मिशन अपनी जड़ से महरूम होकर हमेशा के लिए खत्म हो जाए। फरमाया कि पैगम्बर के खिलाफ इस किस्म की साजिशें करने वाले लोग इस हकीकत को भूल गए हैं कि जिस कब्र में वे दूसरे को दाखिल करना चाहते हैं उसी कब्र में बिलआखिर उन्हें खुद भी दाखिल होना है। फिर मौत के बाद जब उनका सामना मालिके हकीकी से होगा तो वहां वे क्या करेंगे।

وَإِذَا رَأَوْا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا ۖ أَهَذَا الَّذِي يَذْكُرُ
الْهَاتِكُمْ ۖ وَهُمْ يَرْكَبُ الرِّحْلَ ۖ وَالرَّحْلُ لَكُمْ كُفْرُوكُمْ ۖ

और मुंकिर लोग जब तुम्हें देखते हैं तो वे सब तुम्हें मजाक बना लेते हैं। क्या यही है जो तुम्हारे माबूदों (पूज्यों) का जिक्र किया करता है। और खुद वे लोग रहमान के जिक्र का इंकार करते हैं। (36)

क़ैश के माबूद अक्सर उनकी कौम के अकाबिर (महापुरुष) थे। एक तरफ अपने इन अकाबिर की ख्याली अज्मत उनके जेहनों में बसी हुई थी। दूसरी तरफ पैगम्बर था जिसकी तस्वीर उस वक्त एक आम इंसान से ज्यादा न थी। इस तकाबुल (तुलना) में पैगम्बर उन्हें बिल्कुल मामूली नजर आता। वे हकारत के साथ कहते कि क्या यही वह शख्स है जो हमारे अकाबिर पर तंकीद करता है और अकाबिर के जिस दीन पर हम कायम हैं उसे रद्द करके दूसरा दीन पेश कर रहा है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लोगों को सिर्फ एक खुदा की तरफ बुलाते थे। मगर उन्हें खुदा से कोई दिलचस्पी नहीं थी। उनकी तमाम दिलचस्पियां अपने अकाबिर से वाबस्ता थीं। उन्होंने अपने इन अकाबिर को माबूद का दर्जा दे रखा था। आपकी दावत (आह्वान) से चूँकि इन अकाबिर पर जद पड़ती थी। इसलिए वे आपके सख्त मुखालिफ हो गए। वे भूल गए कि माबूदों को रद्द करके आप खुदा को पेश कर रहे हैं न कि खुद अपनी जत को।

خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۖ سَأُولِكُمْ آيَاتِي ۖ فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ۖ وَيَقُولُونَ
مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ لَوْ يَعْلَمُ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ
لَا يَكْفُونَ عَنْ وُجُوهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُورِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُونَ ۖ
بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً ۖ فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۖ
وَلَقَدْ اسْتَهْزَأُ بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ فَخَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ
مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۖ

इंसान उजलत (जल्दबाजी) के खमीर से पैदा हुआ है। मैं तुम्हें अनकरीब अपनी निशानियां दिखाऊंगा, पस तुम मुझसे जल्दी न करो और लोग कहते हैं कि यह वादा कब आएगा अगर तुम सच्चे हो। काश इन मुंकिरों को उस वक्त की खबर होती जबकि वे आग को न अपने सामने से रोक सकेंगे और न अपने पीछे से। और न उन्हें मदद पहुंचेगी। बल्कि वह अचानक उन पर आ जाएगी, पस उन्हें बदहवास कर देगी। फिर वे न उसे दफा कर सकेंगे और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। और तुमसे पहले भी रसूलों का मजाक उड़या गया। फिर जिन लोगों ने उनमें से मजाक उड़या था उन्हें उस चीज ने बेर लिया जिसका वे मजाक उड़ते थे। (37-41)

अरब के लोग आखिरत के मुंकिर न थे। वे आखिरत की उस नीडयत के मुंकिर थे जिसकी खबर उन्हें उनकी कौम का एक शख्स 'मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह' दे रहा था। उन्हें फख्र था कि वे एक ऐसे दीन पर हैं जो उनकी कामयाबी की यकीनी जमानत है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके इस यकीन की तरदीद की तो वे बिगड़ गए। वे अपनी बेवैफ़ नपिसयात की बिना पर यह कहने लगे कि वह अजाब हमें दिखाओ जिसकी तुम हमें धमकी दे रहे हो।

फरमाया कि उनकी यह जल्दबाजी सिर्फ इसलिए है कि अभी इस्तेहान के दौर में होने की वजह से वे अजाब से दूर खड़े हुए हैं। जिस दिन यह मोहलत खत्म होगी और खुदा का अजाब उन्हें घेर लेगा, उस वक्त उनकी समझ में आ जाएगा कि रसूल की दावत के बारे में संजीदा न होकर उन्होंने कितनी बड़ी गलती की थी।

قُلْ مَنْ يَكْفُرْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ ۖ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ
مُعْرِضُونَ ۖ أَمْرُهُمُ إِلَهَاتُ تَمْنَعُهُمْ مِنْ دُونِئِهِ ۖ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَ

أَنفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِنَّا يُصْعَبُونَ ﴿٤٤﴾

कहो कि कौन है जो रात और दिन में रहमान से तुम्हारी हिफाजत करता है। बल्कि वे लोग अपने खब की याददिहानी से एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। क्या उनके लिए हमारे सिवा कुछ माबूद (पूज्य) हैं जो उन्हें बचा लेते हैं। वे खुद अपनी हिफाजत की कुदरत नहीं रखते। और न हमारे मुकाबले में कोई उनका साथ दे सकता है। (42-43)

खुदा की पकड़ का मसला किसी दूरदराज मुस्तकबिल का मसला नहीं है। वह उसी दिन-रात के अंदर छुपा हुआ है जिसमें आदमी अपने आपको मामून व महफूज समझता है। मसलन सूरज और जमीन का फासला अगर आधे के बराबर घट जाए तो हमारे दिन इतने गर्म हो जाएं कि वे हमें आग के शोलों की तरह जला दें। इसके बरअक्स अगर जमीन से सूरज का फासला दुगना बढ़ जाए तो हमारी रातें इतनी ठंडी हो जाएं कि हम बर्फ की तरह जमकर रह जाएं।

जमीन व आसमान का यह हद दर्जा मुफ़ाफ़िर् इतिजाम जिसने कयम कर रखा है वह इस काबिल है कि इंसान अपनी तमाम अक्रीदतें और वफ़ादारियां उससे वाबस्ता करे। न कि वह उन झूठे माबूदों की परस्तिश करने लगे जो उसे कुछ नहीं दे सकते।

بَلْ مَتَّعْنَاهُمَا هَؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي
الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا أَفَهُمُ الْغَابُونَ ﴿٤٤﴾

बल्कि हमने उन्हें और उनके बाप-दादा को दुनिया का सामान दिया। यहां तक कि इसी हाल में उन पर लम्बी मुद्दत गुजर गई। क्या वे नहीं देखते कि हम जमीन को उसके अतराफ (चतुर्दिक्) से घटाते चले जा रहे हैं। फिर क्या यही लोग ग़ालिब (वर्चस्वशील) रहने वाले हैं। (44)

मक्का के लोग उस जमाने में अरब के कयद (नायक) समझे जाते थे। यह कयादत (नेतृत्व) उनके लिए खुदा की एक नेमत थी। मगर उससे उन्होंने किब्र (अभिमान) की ग़िजा ली। चुनांचे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जबान से हक का एलान हुआ तो उन्होंने अपनी मुतकबिराना नफिसयात (धमंड-भाव) की बिना पर इसका इंकार कर दिया।

यह मक्का में इस्लाम का हाल था। मगर बाहर के अवांम जो इस किस्म की नफिसयाती पेचीदगियों में मुब्तिला न थे उनके अंदर इस्लाम की सदाकत फैलती जा रही थी। मक्का में इस्लाम को रद्द कर दिया गया था मगर बाहर के कबाइल में इस्लाम को इख्तियार किया जा रहा था। मदीना के बाशिंदों के बड़े पैमाने पर कुबूले इस्लाम ने यह बात आखिरी तौर पर वाजेह कर दी कि मक्का के लोगों की कयादत का दायरा सिमटता जा रहा है। यह एक खुली

हुई तंबीह थी। मगर जो लोग बड़ाई की नफिसयात में मुब्तिला हों वे किसी भी तंबीह से सबक लेने वाले नहीं बनते।

قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُم بِالْوَحْيِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنَادُونَ ﴿٤٥﴾ وَلَكِنَّ
مَسْتَهْمُهُمْ تَفَحُّةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ كَيْفَ تُولَدُ يَوْمَئِذٍ إِنْ أَنتَ إِلَّا نَكْثٌ لِّمَن يَنصِبُونَ ﴿٤٦﴾

कहो कि मैं बस 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए से तुम्हें डराता हूं। और बहरे पुकार को नहीं सुनते जबकि उन्हें डराया जाए और अगर तेरे खब के अजाब का झोंका उन्हें लग जाए तो वे कहने लगेंगे कि हाय हमारी बदबख्सी, बेशक हम जालिम थे। (45-46)

'वही के जरिए डराना' गोया दलील के जरिए लोगों को सचेत करना है। हक का दाही हमेशा दलील की जबान में अपनी बात को पेश करता है। और दलील ही की जबान में लोगों को उसे पहचानना पड़ता है। जो लोग दलील के सामने अंधे बहरे बने रहें, उनकी आंख सिर्फ उस वक्त खुलती है जबकि खुदा की ताकत खुले तौर पर जाहिर हो जाए। उस वक्त हर सरकश और मुतकबिर (धमंडी) फौरन मान लेगा। मगर उस वक्त का मानना किसी के कुछ काम न आएगा।

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ۖ وَإِنْ
كَانَ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَى بِنَا حَاسِبِينَ ﴿٤٦﴾

और हम विग्रामत के दिन इंसफ की तराजू रखेंगे। पस किसी जान पर जा भी जुम न होगा। और अगर राई के दाने के बराबर भी किसी का अमल होगा तो हम उसे हाजिर कर देंगे। और हम हिसाब लेने के लिए काफी हैं। (47)

'तराजू मौजूदा दुनिया में किसी चीज का वजन मालूम करने की अलामत है। इसलिए अल्लाह तआला ने इसी मालूम शब्दावली को आखिरत का मामला समझाने के लिए इस्तेमाल किया। दुनिया का तराजू माददी (भौतिक) चीजों को तोलना है। आखिरत में खुदा का तराजू मअनवी (अर्थपूर्ण) हकीकतों को तोलकर उसका वजन बताएगा।

दुनिया में आदमी किसी चीज को उसी वक्त पाता है जबकि वह उसकी कीमत अदा करे। कम कीमत देने वाला कम चीज पाता है। और ज्यादा कीमत देने वाला ज्यादा चीज। यही मामला आखिरत में भी पेश आएगा। वहां की आला चीजें भी आदमी को कीमत देकर मिलेंगी। कीमत अदा किए बगैर जिस तरह दुनिया की चीज किसी को नहीं मिलती। इसी तरह आखिरत की चीजें भी उसी को मिलेंगी जो उनकी जरूरी कीमत अदा करे। कुरआन इसी कीमत की निशानदेही करने वाली किताब है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ وَضِيَاءً وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ۝ وَهَذَا ذِكْرُ مُبَارِكٍ أَنزَلْنَاهُ ۖ أَفَأَنْتُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ۝

और हमने मूसा और हारून को फुरकान (सत्य-असत्य की कसौटी) और रोशनी और नसीहत अता की खुदातरसों (ईश-परायण लोगों) के लिए, जो बिना देखे अपने रब से डरते हैं और वे कियामत का खौफ रखने वाले हैं। और यह एक बाबरकत याददिहानी है जो हमने उतारी है, तो क्या तुम इसके मुंकिर हो। (48-50)

फुरकान और जिया (रोशनी) और जिफ्र जो हजरत मूसा को दिया गया, यही खुदा की तरफ से तमाम पैम्बरों को मिला था। फुरकान से मुराद वह नजरियाती मेयार है जिसके जरिए आदमी हक और बातिल के दर्मियान फर्क कर सकता है। जिया से मुराद खुदा की रहनुमाई है जो आदमी को बेराही के अंधेरे से निकाल कर सिराते मुस्तकीम (सन्मार्ग) के उजाले में लाती है। जिफ्र से मुराद याददिहानी है। यानी चीजों के अंदर छुपे हुए नसीहत के पहलू को खेलना। ताकि चीजें लोगों के लिए महज चीजें न रहें बल्कि वे नसीहत और मअरफत (अन्तर्ज्ञान) का खूजना बन जाएं।

इस तरह खुदा ने इंसान की हिदायत का इतिजाम किया। मगर खुदाई हिदायतनामे को वाकई तौर पर अपने लिए हिदायत बनाना उसी वक्त मुमकिन है जबकि आदमी अंजाम का अदेशा रखता हो। उसकी अदेशानाक नफिसयात उसे इस हद तक संजीदा बना दे कि वह हर दूसरी चीज के मुमकले में हक व सदाकत को ज्यादा अहमियत देने लगे।

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِن قَبْلُ وَكُنَّا بِهٖ عَلِيمِينَ ۝ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَذِهِ التَّمَاثِيلُ الَّتِي أَنْتُمْ لَهَا عَاكِفُونَ ۝ قَالُوا وَجَدْنَا آبَاءَنَا لَهَا عِبَادِينَ ۝ قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

और हमने इससे पहले इब्राहीम को इसकी हिदायत अता की। और हम उसे खूब जानते थे। जब उसने अपने बाप और अपनी कौम से कहा कि ये क्या मूर्तियां हैं जिन पर तुम जमे बैठे हो। उन्होंने कहा कि हमने अपने बाप दादा को इनकी इबादत करते हुए पाया है। इब्राहीम ने कहा कि वेशक तुम और तुम्हारे बाप दादा एक खुली गुमराही में मुब्तिला रहे। (51-54)

खुदा के यहां फैज बक़्द इस्तेदाद (सामर्थ्य) का उसूल है। हजरत इब्राहीम ने मुझलिफ इम्तेहानात से गुजरकर जिस इस्तेदाद का सुबूत दिया था उसे खुदा ने जाना और उसके मुताबिक उन्हें हिदायत और मअरफत (अन्तर्ज्ञान) अता फरमाई। यही मामला खुदा का अपने हर बंदे के साथ है।

हजरत इब्राहीम इराक के कदीम शहर उर में पैदा हुए। उस वक्त यहां की जिंदगी में पूरी तरह शिर्क छाया हुआ था। मुशिरकाना माहौल में परवरिश पाने के बावजूद वह उससे मुतअस्सिर नहीं हुए। उन्होंने चीजों को खुद अपनी अक्ल से जांचा और माहौल के विपरीत तौहीद (एकेश्वरवाद) की सदाकत को पा लिया। वह ऐसी दुनिया में थे जहां हर किस्म की इज्जत और तरक्की शिर्क से बाबस्ता हो गई थी। मगर उन्होंने किसी चीज की परवाह नहीं की। तमाम मस्लेहों से बेनियाज होकर कैम की रविश पर तंकीद की और उसके सामने हक का एलान करने के लिए खड़े हो गए। यही वे सिफात हैं जो किसी शख्स को इस कबिल बनाती हैं कि उसे खुदा की हिदायत हासिल हो।

قَالُوا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ ۖ أَمْ أَنْتَ مِنَ اللَّاعِينَ ۝ قَالَ بَلْ رَبُّكُمْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الَّذِي فَطَرَهُنَّ ۖ وَأَنَا عَلَىٰ ذِكْرِكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ۝ وَتَاللَّهِ لَأَكِيدَنَّ أَصْنَامَكُمْ بَعْدَ أَنْ تُوَلُّوا مُدْبِرِينَ ۝ فَعَلَهُمْ جُذَاذًا ۖ إِلَّا كَبِيرًا لَهُمْ لَعَلَّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُونَ ۝

उन्होंने कहा, क्या तुम हमारे पास सच्ची बात लाए हो या तुम मजाक कर रहे हो। इब्राहीम ने कहा बल्कि तुम्हारा रब वह है जो आसमानों और जमीन का रब है। जिसने उन्हें पैदा किया। और मैं इस बात की गवाही देने वाला हूं और खुदा की कसम मैं तुम्हारे बुतों के साथ एक तदबीर (युक्ति) करूंगा। जबकि तुम पीठ फेरकर चले जाओगे। पस उसने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया सिवा उनके एक बड़े के ताकि वे उसकी तरफ रुजूअ करें। (55-58)

हजरत इब्राहीम के जमाने में मुशिरकाना तख़युलात (बहुदेववादी परिकल्पनाएं) लोगों के जेहनों पर इतना ज्यादा छाए हुए थे कि इब्तिदा में वे हजरत इब्राहीम की तंकीद को गैर संजीदा बात समझे। उन्होंने कहा कि तुम कोई सोची समझी बात कह रहे हो या महज तफरीह के तौर पर कुछ अल्फ़ज अपनी ज़बान से निकाल रहे हो।

हजरत इब्राहीम ने कहा कि यह तुम्हारी मजीद नासमझी है कि तुम इस अहमतरनी बात को गैर संजीदा बात समझ रहे हो। हालांकि तमाम जमीन व आसमान इसके हक में गवाही

दे रहे हैं। अगले दिन उन्होंने मजीद यह किया कि ग़ैर मामूली ज़ुरअत से काम लेकर उनके बुतों को तोड़ डाला। इस तरह गोया हज़रत इब्राहीम ने अमलन दिखाया कि ये बुत फ़िलवाकअ भी इतने ही बेव्यक्त हैं जितना मैं लफ्ज़ी तौर पर तुम्हें बताया था।

قَالُوا مَنْ فَعَلَ هَذَا بِالْهَيْتِنَا إِنَّهُ لَمِنَ الظَّالِمِينَ ۖ قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ إِبْرَاهِيمُ ۖ قَالُوا فَاتُوا بِهِ عَلَىٰ عَيْنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُونَ ۖ قَالُوا أَنْتَ فَعَلْتَ هَذَا بِالْهَيْتِنَا يَا إِبْرَاهِيمُ ۖ قَالَ بَلْ فَعَلَهُ كَبِيرُهُمْ هَذَا فَاسْأَلُوهُمْ إِنْ كَانُوا يَنْظُرُونَ ۖ

उन्होंने कहा कि किसने हमारे बुतों के साथ ऐसा किया है बेशक वह बड़ा जालिम है। लोगों ने कहा कि हमने एक जवान को इनका तज़्किरा करते हुए सुना था जिसे इब्राहीम कहा जाता है। उन्होंने कहा कि उसे सब आदमियों के सामने हाज़िर करो। ताकि वे देखें। उन्होंने कहा कि ऐ इब्राहीम, क्या हमारे माबूदों (पूज्यों) के साथ तुमने ऐसा किया है। इब्राहीम ने कहा, बल्कि उनके इस बड़े ने ऐसा किया है तो उनसे पूछ लो अगर ये बोलते हों। (59-63)

अगले दिन जब लोग बुतखाने में गए और देखा कि वहां के बुत टूटे पड़े हैं। तो उन्हें सख्त धक्का लगा। बिलआखिर उनकी समझ में आया कि यह उस नौजवान का किस्सा मालूम होता है जो हमारे आबाई (पैतृक) दीन से मुहरिफ (भटका हुआ) है और उसके खिलाफ बोलता रहता है।

हज़रत इब्राहीम ने बुतों को तोड़ते हुए जानबूझ कर सबसे बड़े बुत को छोड़ दिया था। अब जब वे बुलाए गए और उनसे बाजपुर्स (पूछगछ) हुई तो उन्होंने कहा कि यह बड़ा बुत सही व सालिम मौजूद है। इससे पूछ लो। अगर वह वाकई माबूद है तो बोलकर तुम्हें बताए कि यह किस्सा इन बुतों के साथ कैसे पेश आया।

हज़रत इब्राहीम ने बराहेरास्त तौर पर कोई बात नहीं कही। मगर बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर उन्होंने वह बात कह दी जो इस मौके पर बराहेरास्त कलाम से भी ज्यादा मुअस्सिर थी।

فَرَجَعُوا إِلَىٰ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوا إِنَّكُمْ أَنْتُمُ الظَّالِمُونَ ۖ ثُمَّ نُكِسُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا هَؤُلَاءِ يَنْطِقُونَ ۖ قَالَ أَأَقْتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ ۖ أَفِ لَكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۖ

फिर उन्होंने अपने जी में सोचा फिर कहने लगे कि हकीकत में तुम ही नाहक

पर हो। फिर अपने सरों को झुका लिया। ऐ इब्राहीम, तुम जानते हो कि ये बोलते नहीं। इब्राहीम ने कहा, क्या तुम खुदा के सिवा ऐसी चीजों की इबादत करते हो जो तुम्हें न कोई फ़ायदा पहुंचा सकें और न कोई नुस्सान। अफ़सोस है तुम पर भी और उन चीजों पर भी जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो। क्या तुम समझते नहीं। (64-67)

हज़रत इब्राहीम के इन जवाबात पर वे लोग आपको गुस्ताख़ ठहरा कर बिगड़ सकते थे। जैसा कि इन मौकों पर आम तौर पर होता है। ताहम बुतपरस्ती के बावजूद उनमें अभी जिंदगी मौजूद थी। चुनांचे उन्होंने आपके जवाब के इस्तदलाली (तार्किक) वजन को महसूस किया। और शर्मिदा होकर अपने बरसरे नाहक (असत्यवादी) होने का एतराफ किया। बाद को अगर अस्बयत (देष) के जब्बात न उभर आते तो यह तजर्बा उन्हें ईमान तक पहुंचाने के लिए काफ़ी हो जाता।

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ۖ قُلْنَا يَنْزِلُ كُوْنِي بَرْدًا وَسَلْبًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۖ وَارْكَدُوا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْخَسِرِينَ ۖ

उन्होंने कहा कि इसे आग में जला दो और अपने माबूदों (पूज्यों) की मदद करो, अगर तुम्हें कुछ करना है। हमने कहा कि ऐ आग तू इब्राहीम के लिए ठंडक और सलामती बन जा। और उन्होंने उसके साथ बुराई करना चाहा तो हमने उन्हीं लोगों को नाकाम बना दिया। (68-70)

जो लोग इस्त्रियारात के मालिक होते हैं वे दलील के मैदान में हार जाने के बाद हमेशा जुम्ब का तरीका इस्त्रियार करते हैं। यही हज़रत इब्राहीम के साथ हुआ। बुतशिकनी के वाक्ये के बाद जब कौम के लीडरों ने महसूस किया कि वे इब्राहीम के मुक़ाबले में बेदलील हो चुके हैं तो अब उन्होंने आपके ऊपर सख़्तियां शुरू कर दीं। यहां तक कि ताकत के घमंड में आकर एक रोज आपको आग के अलाव में डाल दिया।

मगर खुदा का पैग़म्बर दुनिया में खुदा का नुमाईंदा होता है। उसका मामला खुदा का मामला होता है। इसलिए खुदा इस्तिस्नाई तौर पर पैग़म्बर की ग़ैर मामूली मदद करता है। चुनांचे खुदा ने हुक्म दिया और आग आपके लिए ठंडी हो गई। इस नौइयत की नुसरत (मदद) ग़ैर पैग़म्बरों के लिए भी नाजिल हो सकती है। बशर्ते कि वे अपने आपको खुदा के मंसूबे के साथ उस हद तक वाबस्ता करें जिस तरह पैग़म्बर उसके साथ अपने को वाबस्ता करता है।

وَبَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ۖ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا صَالِحِينَ ۖ وَجَعَلْنَاهُمْ إِبْرَاهِيمَ يَهْدُونَ

يَا مَرْيَا وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَإِقَامَ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءَ الزَّكَاةِ وَكَانُوا
لَنَا عِبْدِينَ ۝

और हमने उसे और लूत को उस जमीन की तरफ नजात दे दी जिसमें हमने दुनिया वालों के लिए बरकतें रखी हैं। और हमने उसे इस्हाक दिया और मजौद बरआं (तदधिक) याकूब। और हमने उन सबको नेक बनाया। और हमने उन्हें इमाम (नायक) बनाया जो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे। और हमने उन्हें नेक अमली और नमाज की इकमत और जकात की अदायगी का हुक्म भेजा और वे हमारी इबादत करने वाले थे। (71-73)

हजरत इब्राहीम इराक में पैदा हुए। जब उनकी कौम और वहां का बादशाह नमरूद आपका दुश्मन हो गया तो इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बाद आपने अपना वतन छोड़ दिया। और अल्लाह के हुक्म से शाम व फिलिस्तीन के सरसब्ज इलाके की तरफ चले गए। आपके मुल्क वालों ने अगरचे आपका साथ नहीं दिया था। मगर खुदा ने आपको बेटे और पोते दिए जो आपके रास्ते पर चलने वाले बने। यहां तक कि उनकी नेकी खुदा ने इस तरह कुबूल फरमाई कि आपकी नस्ल में नुबुव्वत का सिलसिला जारी कर दिया।

وَلَوْ طَا تَيْبُهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۝ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ تَعْمَلُ
الْخَبِيثَاتِ ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ سَوْءٍ فَسَقِينَ ۝ وَأَدْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا ۝ إِنَّهُ مِنَ
الطَّالِحِينَ ۝

और लूत को हमने हिक्मत (तत्वदर्शिता) और इल्म अता किया। और उसे उस बस्ती से नजात दी जो गंदे काम करती थी। बिलाशुबह वे बहुत बुरे, फासिक (अवज्ञाकारी) लोग थे। और हमने उसे अपनी रहमत में दाखिल किया बेशक वह नेकों में से था। (74-75)

हिक्मत से मुराद मअरफत (अन्तर्ज्ञान) और इल्म से मुराद 'वही' (ईश्वरीय वाणी) है। हजरत लूत को ये चीजें अता हुईं। दूसरे तमाम पैगम्बरों को भी ये चीजें दी जाती रही हैं। अब खुसे नुबुव्वत के बाद 'वही' का कायम मक़म (स्थानापन्न) क़ूरआन है। ताहम हिक्मत (मअरफत) से ग़ैर पैगम्बरों को भी बक़द इस्तेदाद (यथा सामर्थ्य) हिस्सा मिलता है।

जिन लोगों पर अल्लाह की नजर होती है वह उनका वली व कारसाज बन जाता है। वह उन्हें बुरे लोगों के माहौल से निकाल कर अच्छे लोगों के माहौल में ले जाता है। वह जिंदगी के हर मोड़ पर उनका मददगार बन जाता है। वह उन्हें वह हिक्मत अता फरमाता है जिसके बाद उनकी पूरी जिंदगी रहमते खुदावंदी के आबशार (झरने) में नहा उठती है।

وَنُوحًا إِذْ نَادَى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ
الْعَظِيمِ ۝ وَنَصَرْنَاهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۝ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمَ
سَوْءٍ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ۝

और नूह को जबकि इससे पहले उसने पुकारा तो हमने उसकी दुआ कुबूल की। पस हमने उसे और उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से नजात दी। और उन लोगों के मुकाबले में उसकी मदद की जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। बेशक वे बहुत बुरे लोग थे। पस हमने उन सबको ग़र्क कर दिया। (76-77)

हजरत नूह ने इतिहाई लम्बी मुद्दत तक अपनी कौम को दावत दी। मगर चन्द लोगों के सिवा किसी ने इस्लाह कुबूल न की। आखिरकार हजरत नूह ने अपनी कौम की हलाकत की दुआ की। इसके बाद ऐसा सख्त सैलाब आया कि पहाड़ की चोटियां भी लोगों को बचाने के लिए आजिज हो गईं।

यह वाकया अगरचे पैगम्बर की सतह पर पेश आया। ताहम आम इंसानों के लिए भी इसमें बहुत तस्कीन का सामान है। इससे मालूम होता है कि इस दुनिया में बिगाड़ पैदा करने वाले बिल्कुल आजाद नहीं हैं। और सच्चाई के लिए उठने वाला शख्स बिल्कुल अकेला नहीं है। अगर कोई शख्स सच्चाई से इस हद तक अपने आपको वाबस्ता करे कि वह दुनिया में सच्चाई का नुमाइंदा बन जाए तो इसके बाद वह दुनिया में अकेला नहीं रहता। बल्कि खुदा उसके साथ हो जाता है और जिसके साथ खुदा हो जाए उसे कौन जेर कर सकता है।

وَدَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ إِذْ يَحْكُمَانِ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفِثَتْ فِيهِ غَمَرُ الْقَوْمِ وَ
كَتَابَ الْحُكْمِهِمْ شُهَدَاءَ ۝ فَفَقَهُنَّهَا سُلَيْمَانُ ۝ وَكَرَّاتَيْنَا حُكْمًا وَعِلْمًا ۝
وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرُ وَكُنَّا فَاعِلِينَ ۝ وَعَلَّمْنَاهُ
صَنْعَةَ لَبُوسٍ لَكُمْ لِيُخْصِنَكُمْ مِنْ بَأْسِكُمْ فَهَلْ أَنْتُمْ شَاكِرُونَ ۝

और दाऊद और सुलैमान को जब वे दोनों खेत के बारे में फैसला कर रहे थे, जबकि उसमें कुछ लोगों की बकरियां रात के वक्त जा पड़ीं। और हम उनके इस फैसले को देख रहे थे। पस हमने सुलैमान को उसकी समझ दे दी। और हमने दोनों को हिक्मत (तत्वदर्शिता) और इल्म अता किया था। और हमने दाऊद के साथ तावेज कर दिया था पहाड़ों को कि वे उसके साथ तस्बीह करते थे और परिंदों को भी। और हम ही करने वाले थे। और हमने उसे तुम्हारे लिए एक जंगी लिबास की संअत (शिल्पकला) सिखाई।

ताकि वह तुम्हें लड़ाई में महफूज रखे। तो क्या तुम शुक्र करने वाले हो। (78-80)

इन आयात में दो इस्त्राईली पैगम्बरों का जिक्र है। एक हजरत दाऊद और दूसरे उनके साहबजादे हजरत सुलैमान। इन्हें अल्लाह तआला ने इंसानी मामलात का सही फैसला करने की सलाहियत दी। हजरत दाऊद अल्लाह की तस्बीह इतने आला तरीके पर करते थे कि पहाड़ और चिड़ियां भी उनकी हमनवां हो जातीं। इसी तरह अल्लाह ने उन्हें बताया कि लोहे का इस्तेमाल किस तरह किया जाए।

यह एक हकीकत है कि खुदा के पैगम्बरों ही ने इंसान को बताया कि वह अपने रब की तस्बीह व इबादत किस तरह करे। मगर इन आयात से मालूम होता है कि दूसरी जरूरी चीजें भी इंसान को सही तौर पर पैगम्बरों ही के जरिए मालूम हुईं। मसलन अद्ले इज्तिमाई (सामूहिक न्याय) का उसूल और मादनियात (धातु, खनिज) का इस्तेमाल भी पैगम्बरों ही के जरिए इंसानों के इल्म में आया। जिंगी के मुतअल्लिक हर जरूरी चीज का इत्तिदाई इल्म ग़ालिबन पैगम्बरों ही के जरिए इंसान को दिया गया है।

وَلَسٰٓئِلِنَ الرِّیْمَ عَاصِفَةً تَجْرٰی بِاَمْرِۤ اِلٰی الْاَرْضِ الَّتِیْ بُرِکْنَا فِیْهَا
وَكُنَّا بِکُلِّ شَیْءٍ عَلٰمِیْنَ ۝ وَمِنَ الشَّیْطٰنِ ۝ مَنْ یَّغْوٰصُوْنَ لَهُ ۝ وَ
یَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِکَ ۝ وَکُنَّا لَهُمْ حٰفِظِیْنَ ۝

और हमने सुलैमान के लिए तेज हवा को मुसख़्खर (वशीभूत) कर दिया जो उसके हुक्म से उस सरज्मीन की तरफ चलती थी जिसमें हमने बरकतें रखी हैं। और हम हर चीज को जानने वाले हैं। और शयातीन में से भी हमने उसके तावेअ (अधीन) कर दिया था जो उसके लिए ग़ौता लगाते थे। और इसके सिवा दूसरे काम करते थे और हम उन्हें संभालने वाले थे। (81-82)

यहां हवाओं की तस्ख़िर से मुग़द समुद्री जहाजरानी है। कदीम जमाने में समुद्री सफ़र में उस क़त्त इंक़लाब आया जबकि इंसान ने बादबानी जहज़ बनाने का तरीक़ा दर्याफ़्त किया। ये बादबान गोया हवाओं को मुसख़्खर करने का जरिया थे और उस जमाने के जहाजों के लिए इंजन का काम करते थे। बादबानी जहाजों की ईजाद ने समुद्रों को ज्यादा बड़े पैमाने पर नक्कल व हमल (यातायात) के लिए काबिले इस्तेमाल बना दिया। इससे अंदाजा होता है कि समुद्री जहाजरानी की साइंस भी ग़ालिबन इंसान को पैगम्बरों के जरिए सिखाई गई। इसके अलावा जिनमें से भी एक गिरोह को अल्लाह ने हजरत सुलैमान के तावेअ कर दिया था। वे उनके लिए ऐसे बड़े-बड़े रिफाही (जनहित के) काम करते थे जो आम इंसान नहीं कर सकते। जदीद (आधुनिक) मशीनी दौर में इंसानी फायदे के ज्यादा बड़े काम मशीनें

अंजाम देती हैं। मशीनी दौर से पहले इस किस्म के बड़े-बड़े कामों को मुमकिन बनाने के लिए खुदा ने जिनमें को अपने पैगम्बर की मातहत में दे दिया था।

وَایُوْبَ اِذْ نَادٰی رَبَّهٗ اِنِّیْ مَسَّنِیَ الضُّرُّ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرَّحِیْمِیْنَ ۝
فَاَسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَآیَهٗ مِنْ خُبْرٍ وَاٰتَيْنَاهُ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ
رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذٰکُرْیَ لِلْعٰبِدِیْنَ ۝

और अय्यूब को जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि मुझे बीमारी लग गई है और तू सब रहम करने वालों से ज्यादा रहम करने वाला है। तो हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे जो तकलीफ थी उसे दूर कर दिया। और हमने उसे उसका कुंवा (परिवार) अता किया और इसी के साथ उसके बराबर और भी, अपनी तरफ से रहमत और नसीहत, इबादत करने वालों के लिए। (83-84)

पैगम्बरों के जरिए खुदा हर किस्म की आलातरीन मिसाल कायम करता है ताकि वे लोगों के लिए नमूना हों। उन्हीं में से एक मिसाल हजरत अय्यूब की है। हजरत अय्यूब ग़ालिबन नवीं सदी कब्ल मसीह (ई० पू०) के इस्त्राईली पैगम्बर थे। बाइबल के बयान के मुताबिक इब्तिदा में वह बहुत दौलतमंद थे। खेती, मवेशी, मकानात, आल औलाद, हर चीज की इतनी कसरत थी कि कहा जाने लगा कि अहले मशरिक में कोई इतना बड़ा आदमी नहीं। इसके बावजूद हजरत अय्यूब बेहद शुक्रगुजार और वफ़ादार बंदे थे। उनकी जिंगी इस बात का नमूना बन गई कि इज्जत और दौलत पाने के बावजूद किस तरह एक आदमी मुतवाजेअ (विनम्र) बंदा बना रहता है।

मगर शैतान ने इस वाक्ये को लोगों के जेहनों में उलट दिया। उसने लोगों को सिखाया कि अय्यूब की यह ग़ैर मामूली खुदापरस्ती इसलिए है कि उन्हें ग़ैर मामूली नेमतें हासिल हैं। अगर ये नेमतें उनके पास न रहें तो उनकी सारी शुक्रगुजारी ख़त्म हो जाएगी।

इसके बाद खुदा ने आपके जरिए से दूसरी मिसाल कायम की। हजरत अय्यूब के मवेशी मर गए। खेतियां बर्बाद हो गईं। औलाद ख़त्म हो गई। यहां तक कि जिस भी बीमारी की नज़ हो गया। दोस्तों और रिश्तेदारों ने साथ छोड़ दिया। सिर्फ एक बीवी आपके साथ बाकी रह गई। मगर हजरत अय्यूब खुदा के फैसले पर राजी रहे उन्होंने काबिल सब्र का मुजाहिदा किया। बाइबल के अल्फ़ाज में:

‘तब अय्यूब ने जमीन पर गिर कर सज्दा किया। और कहा नंगा मैं अपनी मां के पेट से निकला और नंगा ही वापस जाऊंगा। खुदावंद ने दिया और खुदावंद ने ले लिया। खुदावंद का नाम मुबारक हो। इन सब बातों में अय्यूब ने न तो गुनाह किया और न खुदा पर बेजा काम का ऐब लगाया। (अय्यूब 1 : 22)

हजरत अय्यूब ने जब मुसीबतों में इस तरह सब्र व शुक्र का मुजाहिदा किया तो न सिर्फ

आखिरत में उनके लिए बेहतरीन अन्न लिख दिया गया। बल्कि दुनिया में भी उनकी हालत बदल दी गई। और खुदावंद ने अय्यूब को जितना उसके पास पहले था उसका दोचन्द उसे दिया। (अय्यूब 42 : 12)। हदीस में इसी को तमसील के अल्फाज में इस तरह कहा गया है कि खुदा ने जब दुबारा अय्यूब के दिन फेरे तो उन पर सोने की टिड्डियों की बारिश कर दी।

وَإِسْلَعِينَ وَإِذْ رَأَيْسَ وَذَا الْكِفْلِ كُلٌّ مِنَ الصَّابِرِينَ ۖ وَأَدْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُمْ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

और इस्माईल और इदरीस और जुलकिफल को, ये सब सब करने वालों में से थे। और हमने उन्हें अपनी रहमत में दाखिल किया। बेशक वे नेक अमल करने वालों में से थे। (85-86)

हजरत इस्माईल हजरत इब्राहीम के साहबजदे थे। कुछ मुस्लिमों ने हजरत इदरीस से वह पैगम्बर मुराद लिया है जिनका जिक्र बाइबल में हनूक (Enoch) के नाम से आया है। इसी तरह हजरत जुलकिफल से मुराद मलिकन वह नबी हैं जो बाइबल में हिज्कील (Ezeikel) के नाम से मजकूर हुए हैं।

इन पैगम्बरों की नुमायां सिफत सब बताई गई है। इसकी वजह यह है कि सब तमाम खुदापरस्ताना आमाल की बुनियाद है। सब का मतलब अपने आपको रद्देअमल (प्रतिक्रिया) की नफिसयात से बचना है। जो शख्स अपने आपको रद्देअमल की नफिसयात से न बचाए वह इस्तेहान की इस दुनिया में कभी खुदा की पसंदीदा जिंदगी पर कायम नहीं हो सकता। हकीकत यह है कि सब खुदा की तमाम रहमतों का दरवाजा है, इस दुनिया में भी और मौत के बाद आने वाली दूसरी दुनिया में भी।

وَذَا الثُّوْنِ إِذْ ذَهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَنْ لَنْ نَقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَىٰ فِي الظُّلُمَاتِ أَنْ لَوْلَا إِلَهِ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ۖ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْغَمِّ وَكَذَلِكَ نُجَيُّ الْمُؤْمِنِينَ ۝

और मछली वाले (यूनुस) को, जबकि वह अपनी कौम से बरहम (क्रुद्ध) होकर चला गया। फिर उसने यह समझा कि हम उसे न पकड़ेंगे फिर उसने अंधेरे में पुकारा कि तेरे सिवा कोई मावूद (पूज्य) नहीं, तू पाक है। बेशक मैं कुसूरवार हूं। तो हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे ग़म से नजात दी। और इसी तरह हम ईमान वालों को नजात (मुक्ति) देते हैं। (87-88)

हजरत यूनुस, इराक के एक कदीम शहर नैनवा की तरफ पैगम्बर बनाकर भेजे गए। उस

वक्त नैनवा की आबादी एक लाख से कुछ ज्यादा थी। उन्होंने एक अर्से तक कौम को तौहीद और आखिरत की तरफ बुलाया। मगर वे लोग मानने के लिए तैयार न हुए। पैगम्बरों के बारे में खुदा की सुन्नत यह है कि इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बाद अगर कौम बदस्तूर पैगम्बर की मुक़िर बनी रहे तो पैगम्बर को बस्ती छोड़ने का हुक्म होता है और कौम पर अजाब आ जाता है। हजरत यूनुस ने ख्याल किया कि वह वक्त आ गया है। और खुदा की तरफ से हिजरत (स्थान-परिवर्तन) का हुक्म मिले बग़ैर कौम को छोड़कर चले गए।

शहर से निकल कर वह साहिले समुद्र पर आए और एक कश्ती में सवार हो गए। रास्ते में कश्ती डूबने लगी। लोगों ने समझा कि कोई गुलाम अपने मालिक से भागा है। कदीम रिवायत के मुताबिक इसका हल यह था कि उस गुलाम को मालूम करके उसे दरिया में फेंक दिया जाए। कुरआ (किसी एक का चयन करना) निकाला गया तो हजरत यूनुस का नाम कुरआ में निकला। चुनांचे उन्होंने आपको दरिया में फेंक दिया। ऐन उसी वक्त एक बड़ी मछली ने आपको निगल लिया। मछली आपको अपने पेट में लिए रही और फिर खुदा के हुक्म से आपको लाकर साहिल (समुद्र-तट) पर डाल दिया। आप तंदुरुस्त होकर दुबारा अपनी कौम में वापस आए।

एक पैगम्बर ने दावत (आह्वान) के महाज को सिर्फ तक्मील (पूर्णता) से पहले छोड़ दिया तो उनके साथ यह किस्सा पेश आया। फिर पैगम्बर के उन वारिसों का क्या अंजाम होगा जो दावत के महाज को यकसर छोड़े हुए हों।

وَزَكَرِيَّا إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْوَارِثِينَ ۖ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ وَوَهَبْنَا لَهُ يَحْيَىٰ وَأَصْلَحْنَاهُ زَوْجَهُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا يُسْأَلُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا وَكَانُوا لَنَا خَشِيعِينَ ۝

और जकरिया को, जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि ऐ मेरे रब, तू मुझे अकेला न छोड़। और तू बेहतरीन वारिस है। तो हमने उसकी दुआ कुबूल की और उसे यहया अता किया। और उसकी बीवी को उसके लिए दुरुस्त कर दिया। ये लोग नेक कामों में दौड़ते थे और हमें उम्मीद और खौफ के साथ पुकारते थे। और हमारे आगे झुके हुए थे। (89-90)

पैगम्बर खुसूसी इनामयाफता लोग हैं। इनकी सबसे बड़ी शख्सी सिफत यह होती है कि उनकी दौड़ धूप दुनिया के लिए नहीं होती। बल्कि उन चीजों की तरफ होती है जो आखिरत के एतबार से कीमत रखती हों। अल्लाह की अजमत को वे इस तरह पा लेते हैं कि वही उन्हें सब कुछ नजर आने लगता है। वे सिर्फ उसी से डरते हैं और सिर्फ उसी को पुकारते हैं। वे हर हाल में खुशूअ (विनय) और तवाजोअ (विनम्रता) की रविश पर कायम रहते हैं।

ये चीजें हजरत जकरिया और दूसरे नबियों में कमाल दर्जे पर थीं। और इसी बिना पर

अल्लाह ने उन्हें अपनी खुसूसी नेमतों से नवाजा। आम अहले ईमान भी जिस कद्र इन औसाफ का सुकूत करें, उसी कद्र वे खुदा की नुसरत व इआनत के मुस्तहिक करार पाएंगे।

وَالَّتِي أَحْصَدَتْ فَرْجَهَا فَفَتَحْنَا فِيهَا مِنْ رُوحِنَا وَجَعَلْنَاهَا
لِلْعَالَمِينَ ۝

और वह खातून जिसने अपनी नामूस (स्तीत्व) को बचाया तो हमने उसके अंदर अपनी रूह फूंक दी और उसे और उसके बेटे को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया। (91)

हजरत मरयम की सिफते खास यह बताई गई है कि उन्होंने अपनी शहवत (वासना) को काबू में रखा। इसका उन्हें यह इनाम मिला कि वह उस पैगम्बर की मां बनाई गई जो बराहेरास्त मोजिजा खुदावंदी (ईश्वरीय चमत्कार) के तहत पैदा हुआ।

यही बात आम मर्दों और औरतों के लिए भी सही है। हर एक का इस्तेहान मौजूदा दुनिया में यह है कि वे अपनी शहवतों और ख्वाहिशों को काबू में रखें। जो शख्स जितना ज्यादा इस जक्त का सुकूत देगा उसी के बक़्द वह खुदा की खुसूसी इनायतों में हिस्सेदार बनेगा।

إِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ ۝ وَتَقَطَّعُوا أَرْهَامَكُمْ
بَيْنَهُمْ كُلِّ إِلَهًا لِيَبْتَلِيَهُمْ ۝ فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَكْفُرَانِ
لِسَعْيِهِ ۝ وَإِنَّا لَهُ كَاشِبُونَ ۝

और यह तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है और मैं ही तुम्हारा रब हूं तो तुम मेरी इबादत करो। और उन्होंने अपना दीन अपने अंदर टुकड़े-टुकड़े कर डाला। सब हमारे पास आने वाले हैं। पस जो शख्स नेक अमल करेगा और वह ईमान वाला होगा तो उसकी महनत की नाकदी न होगी, और हम उसे लिख लेते हैं। (92-94)

खुदा ने तमाम नबियों को एक ही दीन लेकर भेजा है। वह यह कि सिर्फ एक खुदा को अपना खुदा बनाओ और उसी की इबादत करो। अगर लोग इसी अस्त दीन पर कायम रहते तो सब एक ही उम्मत बने रहते। मगर लोगों ने अपनी तरफ से नई-नई बहसें निकाल कर दीन के मुखलिफ एडीशन तैयार कर लिए। किसी ने एक को लिया और किसी ने दूसरे को। इस तरह एक दीन कई दीनों में तक्सीम होकर रह गया।

खुदा के यहां ईमान व अमल की कीमत है, यानी खुदा की सच्ची मअरफत (अन्तर्ज्ञान) और खुदा की सच्ची ताबेअदारी। इसके सिवा जो चीजें हैं उनकी खुदा के यहां कोई कद्रदानी न होगी, चाहे कोई शख्स बतौर खुद उन्हें कितना ही ज्यादा काबिलेकद्र क्यों न समझता हो।

وَحَرِّمْنَا عَلَى قَوْمٍ أَهْلُكُنْهَا ۝ أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ
وَمَا جُوجُ وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ ۝ وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَإِذَا
هِيَ شَاخِصَةٌ أَبْصَارَ الَّذِينَ كَفَرُوا يُوْثِقُونَ يَدَيْكَ قَدْ كُنَّا فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا بَلْ
كُنَّا ظَالِمِينَ ۝

और जिस बस्ती वालों के लिए हमने हलाकत मुकद्दर कर दी है उनके लिए हराम है कि वे रजुअ करें। यहां तक कि जब याजूज और माजूज खोल दिए जाएंगे और वे हर बुलन्दी से निकल पड़ेंगे। और सच्चा वादा नजदीक आ लगेगा तो उन लोगों की निगाहें फटी रह जाएंगी जिन्होंने इंकार किया था। हाय हमारी कमबख्ती, हम इससे गफलत में पड़े रहे। बल्कि हम जालिम थे। (95-97)

किसी बस्ती के लिए ईमान में दाखिला हराम होने का मतलब यह है कि उसके कुबूले ईमान की इस्तेदाद (सामर्थ्य) खत्म हो जाए। जब हक वाजेह दलाइल के साथ सामने आता है तो आदमी अपनी ऐन फितरत के तहत मजबूर होता है कि वह उसे पहचाने। अब जो लोग इस पहचान के बाद हक का एतराफ कर लें वे अपनी फितरत को बाकी रखते हैं। इसके बरअक्स जो लोग दूसरी चीजों को अहमियत देने की बिना पर उसका एतराफ न करें वे गोया अपनी फितरत पर पर्दा डाल रहे हैं। हक का इंकार हमेशा अपनी फितरत को अंधा बनाने की कीमत पर होता है। जो लोग अपनी फितरत को अंधा बनाने का खतरा मोल लें उनका अंजाम यही है कि उनके लिए ईमान में दाखिल होना बिल्कुल नामुमकिन हो जाए।

जो लोग दलाइल की ज्वाब में हक को न पहचानें वे हक को सिर्फ उस वक्त पहचानेंगे जबकि कियामत उनकी आंख का पर्दा फाड़ देगी। मगर उस वक्त का पहचानना किसी के कुछ काम न आएगा क्योंकि वह मानने का अंजाम पाने का वक्त होगा न कि मानने का।

إِنَّا كُنَّا مُنْذِرِينَ ۝ وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ إِنَّمَا لَهَا وَارِدُونَ ۝ كَوْنُ
كَانَ هَؤُلَاءِ إِلَهَةً مَا وَرَدُوهَا وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ لَهُمْ فِيهَا زَوَاجٌ وَهُمْ
فِيهَا لَا يَمُوتُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا
مُبْعَدُونَ ۝ لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا ۝ وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ
خَالِدُونَ ۝ لَا يَحْزَنُهُمُ الْفَرَقُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَذَا يَوْمُكُمْ
الَّذِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۝

वेशक तुम और जिन्हें तुम खुदा के सिवा पूजते थे सब जहन्नम का ईंधन हैं। वहीं तुम्हें जाना है। अगर ये वाकई माबूद (पूज्य) होते तो उसमें न पड़ते। और सब उसमें हमेशा रहेंगे। उसमें उनके लिए चिल्लाना है और वे उसमें कुछ न सुनेंगे। वेशक जिनके लिए हमारी तरफ से भलाई का पहले फैसला हो चुका है वे उससे दूर रखे जाएंगे। वे उसकी आहट भी न सुनेंगे। और वे अपनी पसंदीदा चीजों में हमेशा रहेंगे। उन्हें बड़ी घबराहट गम में न डालेगी। और फरिश्ते उनका इस्तकबाल करेंगे। यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वादा किया गया था। (98-103)

अबुल्लाह बिन अलजबअरी कदीम अरब का एक मशहूर शायर था। यह आयत उतरी तो उसने लोगों से कहा कि मुहम्मद से पूछो कि आपके ख्याल में खुदा के सिवा जितने माबूद हैं और जो उनके आबिद हैं, सबके सब जहन्नम में जाएंगे, तो हम तो फरिश्तों की इबादत करते हैं। यहूद उजैर पैगम्बर की इबादत करते हैं। नसारा (ईसाई) मसीह पैगम्बर की इबादत करते हैं। मुश्रीकीन इस नुस्ते को पाकर बहुत खुश हुए और आपसे जाकर सवाल किया। आपने फरमाया कि हर एक जिसने पसंद किया कि वह खुदा के सिवा पूजा जाए तो वह उसके साथ होगा जिसने उसे पूजा। इस जवाब के बाद अबुल्लाह बिन अलजबअरी ने मजीद बहस नहीं की। बल्कि उसने इस्लाम कुबूल कर लिया।

इससे मालूम हुआ कि इस आयत के मिस्दाक या तो पत्थर वगैरह के बुत हैं या वह माबूद जो खुद भी अपने माबूद बनाए जाने पर राजी रहा हो। जिसने खुदा के सिवा किसी को माबूद बनाया और जिसने अपने माबूद बनने को पसंद किया, दोनों एक साथ इसलिए जहन्नम में डाले जाएंगे ताकि लोगों को इबरत हो।

कियामत का दिन इतिहाई हैलनाक दिन होगा। मगर जिन लोगों को यह तौफीक मिली कि वे कियामत के आने से पहले कियामत से डरे वे उस दिन की दहशत से महफूज रहेंगे। वे जन्नत की राहतों से भरी हुई दुनिया में दाखिल कर दिए जाएंगे।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِّينِ لِكُتُبٍ كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ
وَعَدًا عَلَيْنَا إِنْ كُنَّا مُعْطِينَ ۝ وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُورِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ
الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ۝ إِنَّ فِي هَذَا لَبَلَاغًا لِقَوْمٍ غُدِرَ عَنْهُمْ

जिस दिन हम आसमान को लपेट देंगे जिस तरह तूमार (पुस्तिका) में औराक (पन्ने) लपेट दिए जाते हैं। जिस तरह पहले हमने तज़लीक की इब्तिदा की थी उसी तरह हम फिर उसका इआदा (पुनरावृत्ति) करेंगे। यह हमारे जिम्मे वादा है और हम उसे करके रहेंगे। और जबूर में हम नसीहत के बाद लिख चुके हैं कि जमीन के वारिस हमारे नेक बंदे होंगे। इसमें एक बड़ी ख़बर है इबादतगुजार लोगों के लिए। (104-106)

कायनात का मौजूदा फैलाव इस्तेहान वाली दुनिया बनाने के लिए था। इसके बाद जब अंजाम वाली दुनिया बनाने का वक़्त आएगा तो खुदा इस आलम को समेट देगा। और ग़ालिबन इसी माद्दा (पदार्थ) से दूसरा आलम बनाएगा जो अंजाम वाले मकासिद (उद्देश्यों) के हस्बेहाल (अनुरूप) हो। एक दुनिया का वजूद में आना यही इस बात के सुबूत के लिए काफी है कि दूसरी दुनिया भी वजूद में लाई जा सकती है।

मौजूदा दुनिया में अक्सर बुरे लोग बड़ाई का मक़ाम हासिल कर लेते हैं। मगर यह सिर्फ इस्तेहान की मुद्दत तक के लिए है। जब इस्तेहान की मुद्दत ख़त्म होगी और स्थाई तौर पर खुदा की मेयारी दुनिया बनाई जाएगी। तो वहाँ हर किस्म की इज्जत और राहत सिर्फ उन लोगों का हिस्सा होगी जो मौजूदा इस्तेहानी दौर में खुदा के सच्चे बंदे साबित हुए थे। यह बात मौजूदा जबूर में भी तफ़्सील से मौजूद है। इसके चन्द अल्फ़ज़ ये हैं:

और बदी करने वालों पर रश्क न कर। खुदावंद पर तवक्कुल (भरोसा) कर और नेकी कर। वह तेरी रास्तबाजी (सच्चाई) को नूर की तरह और तेरे हक़ को दोपहर की तरह रोशन करेगा। क्योंकि बदकिरदार काट डाले जाएंगे सादिक (सच्चे) जमीन के वारिस होंगे। और वे उसमें हमेशा बसे रहेंगे। (जबूर, बाब 37)

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ۝ قُلْ إِنِّي أُوْحِي إِلَىٰ أَتْمَا إِلَهَكُمُ
إِلَهُ وَاحِدٌ ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اذْنَبْتُكُمْ عَلَىٰ
سَوَاءٍ ۚ وَإِنِ ادْرَيْتُ أَقْرَبُ أَمْ بَعِيدُ مَا تُوعَدُونَ ۚ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ
مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ ۚ وَإِنِ ادْرَيْتُ لَعَلَّكُمْ فِتْنَةٌ لَّكُمْ
وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ۚ قُلْ رَبِّ احْكُم بِالْحَقِّ ۚ وَرَبُّنَا الرَّحْمَنُ
الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ۝

और हमने तुम्हें तो बस दुनिया वालों के लिए रहमत बनाकर भेजा है। कहो कि मेरे पास जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है वह यह है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) सिर्फ एक माबूद है, तो क्या तुम इताअतगुजार बनते हो। पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो कह दो कि मैं तुम्हें साफ़ तौर पर इत्तिला कर चुका हूँ। और मैं नहीं जानता कि वह चीज जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है, करीब है या दूर। वेशक वह खुली बात को भी जानता है और उस बात को भी जिसे तुम छुपाते हो। और मुझे नहीं मालूम शायद वह तुम्हारे लिए इस्तेहान हो और फायदा उठा लेने की एक मोहलत हो। पैगम्बर ने कहा कि ऐ मेरे रब, हक़ के साथ फैसला कर दे। और हमारा रब रहमान (कृपाशील) है, उसी से हम उन बातों पर मदद मांगते हैं जो तुम बयान करते हो। (107-112)

खुदा की तरफ से जितने पैगम्बर आए सब एक ही मक़सद के लिए आए। उनके जरिए खुदा यह चाहता था कि इंसानों को हकीकत का वह इल्म दे जिसे इस्तिथार करके वे अबदी (चिरस्थायी) जन्नत के वाशिंदे बन सकते हैं। मगर इंसान हर बार पैगम्बरों को रद्द करता रहा।

इस एतबार से तमाम पैगम्बर खुदा की रहमत थे। मगर अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इम्तिघाज यह है कि आपको अल्लाह तआला ने अपने बंदों के लिए एक खुसूसी इनायत का जरिया बनाया। खुदा ने यह पैसला फरमाया कि आपके जरिए हिदायत के उस दरवाजे को हमेशा के लिए खोल दे जो अब तक उनके ऊपर बंद पड़ा हुआ था। इस बिना पर आपकी मदद कौम के लिए अल्लाह तआला का यह खुसूसी फैसला था कि उसे बहरहाल हक के रास्ते पर लाना है। ताकि पैगम्बर के साथ एक ताकतवर जमाअत तैयार हो और वह दुनिया में इकिलाब बरपा करके तारीख के रुख को मोड़ दे। रहमते खुदावंदी का यह खुसूसी मंसूबा आप और आपके असहाब के जरिए बातमाम व कमाल अंजाम पाया।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا إِنَّا أَسْأَلُكَ بِرَبِّكَ وَسُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا إِنَّا أَسْأَلُكَ بِرَبِّكَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ①
تَذْهَبُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا
وَتَرَى النَّاسَ سُكَارَىٰ وَمَا هُمْ بِسُكَارَىٰ وَلَٰكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ شَدِيدٌ ②
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَانٍ مَّرِيدٍ ③
كَتَبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَنْ تَوَلَّاهُ فَأَنَّهُ يُضِلُّهُ وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ④

आयतें-78

सूरह-22. अल-हज

रुकूअ-10

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
ऐ लोगो, अपने रब से डरो। बेशक क़ियामत का भूकम्प बड़ी भारी चीज है। जिस दिन तुम उसे देखोगे, हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी। और हर हमल (गर्भ) वाली अपना हमल डाल देगी। और लोग तुम्हें मदहोश नजर आएंगे हालांकि वे मदहोश न होंगे। बल्कि अल्लाह का अजाब बड़ा ही सख्त है। और लोगों में कोई ऐसा भी है जो इल्म के बग़ैर अल्लाह के विषय में झगड़ता है। और हर सरकश शैतान की पैरवी करने लगता है। उसके बारे में यह लिख दिया गया है कि जो शख्स उसे दोस्त बनाएगा वह उसे बेराह कर देगा और उसे अजाबे

जहन्नम का रास्ता दिखाएगा। (1-4)

‘दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी और हमल (गर्भ) वाली औरत अपना हमल गिरा देगी’ यह तमसील की जबान में क़ियामत की हौलनाकी का बयान है। यानी उस दिन लोगों का यह हाल होगा कि अगर मां की गोद में दूध पीने वाला बच्चा हो तो घबराहट की बिना पर वह अपने बच्चे को भूल जाए। और अगर कोई हामिला (गर्भवती) औरत हो तो शिद्दते हौल से उसका हमल साकित हो जाए।

हमारी मौजूदा दुनिया में जो भूचाल आते हैं वे क़ियामत के वाक्ये का हल्का सा नमूना हैं। क़ियामत का सबसे बड़ा भूचाल जब आएगा तो आदमी हर वह चीज भूल जाएगा जिसे अहमियत देने की वजह से वह क़ियामत के दिन को भूला हुआ था। यहां तक कि अपनी अजीजतरीन चीज भी उस दिन उसे याद न रहेगी।

पैगम्बर की बात इल्म की बिना पर होती है। वह दलाइल से उसे साबितशुदा बनाता है। मगर जो लोग अपने से बाहर किसी सदाकत का एतराफ करना नहीं चाहते वे अपने को बरसरे हक जाहिर करने के लिए पैगम्बर की बात में झूठी बहसें निकालते हैं। इस किस्म की रविश खुदा के मुकाबले में सरकशी करने के हममअना है। जो लोग इस तरह की बहसों को हक का पैगाम न मानने के लिए बहाना बनाएं वे गोया शैतान को अपना मुशीर (सलाहकार) बनाए हुए हैं। वे इस बात का सुबूत देते हैं कि वे खुदा के ख़ौफ से ख़ाली हैं। बेव्होफी की नफिसयात आदमी को इससे महलूम कर देती है कि वह हक को पहचाने और उसका एतराफ करे। वह निहायत आसानी से शैतान का शिकार बन जाता है। ऐसा आदमी सिर्फ क़ियामत की चिंवाड़ से जागेगा। मगर क़ियामत का जलजला ऐसे लोगों के लिए सिर्फ जहन्नम का दरवाजा खोलने के लिए आता है न कि उन्हें हिदायत का रास्ता दिखाने के लिए।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ
مِنْ تُطْفَأَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ مُّخْلَقَةٍ وَغَيْرِ مُّخْلَقَةٍ لِّنُبَيِّنَ
لَكُمْ وَنُقَرِّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ
لِتَبْلُغُوا أَشَدَّكُمْ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُتَوَقَّىٰ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُرَدِّ إِلَىٰ أَرْدَلِ الْعُمْرِ لِكَيْلَا
يَعْلَمَ مَن بَعْدَ عِلْمٍ شَيْءٍ وَتَرَى الْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَا أَنزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَاءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنْبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ⑤ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ
الْحَقُّ وَأَنَّهُ يُخَيِّ الْمَوْتَىٰ وَأَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑥ وَأَنَّ السَّاعَةَ

اِنَّكَ لَا تَرٰى فِيْهَا وَاَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ

ऐ लोगो, अगर तुम दुबारा जी उठने के मुतअल्लिक शक में हो तो हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है, फिर नुत्फा (वीर्य) से, फिर खून के लौथड़े से, फिर गोश्त की बोटी से, शकल वाली और बगैर शकल वाली भी, ताकि हम तुम पर वाजेह करें। और हम रहमों (गर्भों) में ठहरा देते हैं जो चाहते हैं एक मुअय्यन (निश्चित) मुद्दत तक। फिर हम तुम्हें बच्चा बनाकर बाहर लाते हैं। फिर ताकि तुम अपनी पूरी जवानी तक पहुंच जाओ। और तुम में से कोई शख्स पहले ही मर जाता है और कोई शख्स बदतरीन उम्र तक पहुंचा दिया जाता है ताकि वह जान लेने के बाद फिर कुछ न जाने। और तुम जमीन को देखते हो कि खुश्क पड़ी है फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह ताजा हो गई और उभर आई और वह तरह-तरह की खुशनुमा चीजें उगाती है। यह इसलिए कि अल्लाह ही हक है और वह बेजानों में जान डालता है, और वह हर चीज पर कादिर है। और यह कि कियामत आने वाली है, इसमें कोई शक नहीं और अल्लाह जरूर उन लोगों को उठाएगा जो कब्रों में हैं। (5-7)

आखिरत की जिंदगी के बारे में आदमी को इसलिए शुबह होता है कि उसकी समझ में नहीं आता कि जब इंसान मर चुका होगा तो वह किस तरह दुबारा जिंदा होकर खड़ा हो जाएगा। मुर्दा कायनात दुबारा जिंदा कायनात कैसे बन जाएगी।

इस शुबह का जवाब खुद हमारी मौजूदा दुनिया की साख्त (बनावट) में मौजूद है। मौजूदा दुनिया क्या है। यह एक हालत का दूसरी हालत में तब्दील हो जाना है। वह चीज जिसे हम जिंदा वजूद कहते हैं वह हकीकत में गैर जिंदा वजूद की तब्दीली है। इंसानी जिस्म का तज्जिया यह बताता है कि वह लोहा, कार्बन, कैल्शियम, नमकयात (लवणों), पानी और गैसों वगैरह से मिलकर बना है। इंसानी वजूद के ये मुरक्कबात (अवयव) सबके सब बेजान हैं। मगर यही गैर जीरूह (आत्माहीन) माददे तब्दील होकर जीरूह अशया (जीव) की सूरत इख्तियार कर लेते हैं। और इंसान की सूरत में चलने लगते हैं। फिर जो इंसान एक बार गैर जिंदा से जिंदा सूरत इख्तियार कर लेता है वह अगर दुबारा गैर जिंदा से जिंदा स्वरूप में तब्दील हो जाए तो इसमें ताज्जुब की बात क्या है।

इसी तरह जमीन के सब्जा (वनस्पति) को देखिए। मिट्टी या दूसरी जिन चीजों से तर्कीब पाकर सब्जा बनता है वे सबकी सब इल्तिदा में उन खुसूसियात से खाली होती हैं जिनके मज्मूअे का नाम सब्जा है। मगर यही गैर सब्जा तब्दील होकर सब्जा बन जाता है। तब्दीली का यह वाक्या रोजाना हमारी आंखों के सामने हो रहा है। फिर इसी होने वाले वाक्ये का दूसरी बार होना नामुमकिन क्यों हो।

हकीकत यह है कि पहली दुनिया का वजूद में आना खुद ही दूसरी दुनिया के वजूद में आने का सबूत है। एक दुनिया का तजर्बा करने के बाद दूसरी दुनिया को समझना अक्ली और मंतकी (तार्किक) तौर पर कुछ भी मुश्किल नहीं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّزِينٍ ۚ
ثَانِي عَظِيمٍ ۚ لِيُخْلِكَ عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ ۚ لَهُ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَنَذِيْقُهُ
يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَذَابُ الْحَرِيقِ ۚ ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمْتَ يَدَكَ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَكَيْسٌ
بِظَلَامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝

और लोगों में कोई शख्स है जो अल्लाह की बात में झगड़ता है, इल्म और हिदायत और रोशन किताब के बगैर तकबुर (घमंड) करते हुए ताकि वह अल्लाह की राह से बेराह कर दे। उसके लिए दुनिया में रुसवाई है और कियामत के दिन हम उसे जलती आग का अजाब चखाएंगे। यह तुम्हारे हाथ के किए हुए कामों का बदला है और अल्लाह अपने बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं। (8-10)

अरब के लोगों ने शिर्क को सच्चाई समझ कर इख्तियार कर रखा था। पैगम्बर की दावते तौहीद से शिर्क को मानने वालों के अक्राइद मुतजलजल (शिथिल) हुए तो इसमें उन लोगों को खतरा महसूस होने लगा जो शिर्क की जमीन पर अपनी सरदारी कायम किए हुए थे। एक आम आदमी के लिए शिर्क को छोड़ना सिर्फ अपने आबाई (पैतृक) दीन को छोड़ना होता है। जबकि एक सरदार के लिए शिर्क का ख़ात्मा उसकी सरदारी के ख़ात्मे के हममअना है। इसलिए हर दौर में बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत के सबसे ज्यादा मुख़ालिफ़ वे लोग बन जाते हैं जो मिलावटी दीन की बुनियाद पर अपनी कयादत (नेतृत्व) कायम किए हुए हैं।

ये लोग हक की दावत और उसके दाओ के बारे में लायअनी (निरर्थक) बहसें पैदा करते हैं। वे कोशिश करते हैं कि उनके जेरे असर अवाम दावत के बारे में शक में पड़ जाएं। और बदस्तूर अपने रवाजी दीन पर कायम रहें।

हक की यह मुख़ालिफ़त वे सिर्फ इसलिए करते हैं कि खुदसाख़ा दीन की बुनियाद पर उन्होंने जो अपनी झूठी बड़ाई कायम कर रखी है वह बदस्तूर कायम रहे। उन्हें सच्चाई से ज्यादा अपनी जात से दिलचस्पी होती है। ऐसे लोग खुद के नजदीक बहुत बड़े मुजरिम हैं। कियामत में उनके हिस्से में रुसवाई और अजाब के सिवा कुछ आने वाला नहीं।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلَىٰ حَرْفٍ ۖ اِنْ اَصَابَهُ خَيْرٌ اَطْمَآنَ بِهِ ۖ
وَاِنْ اَصَابَتْهُ فِتْنَةٌ اِنْقَلَبَ عَلَىٰ وُجْهِهِ ۗ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ ۚ ذٰلِكَ هُوَ
الْحُسْرَانُ الْمُبِينُ ۝

और लोगों में कोई है जो किनारे पर रहकर अल्लाह की इबादत करता है। पस अगर

उसे कोई फायदा पहुंचा तो वह उस इबादत पर कायम हो गया। और अगर कोई आजमाइश पेश आई तो उल्टा फिर गया। उसने दुनिया भी खो दी और आखिरत भी। यही खुला हुआ ख़सारा (घाटा) है। (11)

एक शख्स वह है जो दीन को कामिल सदाकत (सच्चाई) के तौर पर दरयाफ्त करता है। दीन उसके दिल व दिमाग पर पूरी तरह छा जाता है। वह किसी संकोच के बग़ैर अपने आपको दीन के हवाले कर देता है। उसकी नजर में हर दूसरी चीज महत्वहीन बन जाती है। यही शख्स खुदा की नजर में सच्चा मोमिन है।

दूसरे लोग वे हैं जो बस ऊपरी जखे से दीन को मानें। ऐसे लोगों की हकीकी दिलचस्पियां अपने मफ़ादात (हितां) से वाबस्ता होती हैं। अलबत्ता सतही तअस्सुर (प्रभाव) के तहत वे अपने आपको दीन से भी वाबस्ता कर लेते हैं। उनकी यह वाबस्तगी सिर्फ़ उस वक्त तक के लिए होती है जब तक दीन को इख़्तियार करने से उन्हें कोई नुक़सान न हो रहा हो। उनके मफ़ादात पर उससे कोई जद न पड़ती हो। जैसे ही उन्होंने देखा कि दीन और उनका मफ़ाद दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते वे फ़ैरन जाती मफ़ाद को इख़्तियार कर लेते हैं और दीन को छोड़ देते हैं।

यही दूसरे किस्म के लोग हैं जिन्हें मुनाफ़िक़ (पाखंडी) कहा जाता है। मुनाफ़िक़ इंसान आख़िरत को पाने में भी नाकाम रहता है और दुनिया को पाने में भी। इसकी वजह यह है कि दुनिया और आख़िरत दोनों मामले में कामयाबी के लिए एक ही लाजिमी शर्त है, और वह यक़रूई (एकाग्रता) है। और यही वह क़ल्बी सिफ़त है जिससे मुनाफ़िक़ इंसान हमेशा महरूम रहता है। वह अपने दोतरफ़ा रुहान की वजह से न पूरी तरह आख़िरत की तरफ़ यक़सू होता और न पूरी तरह दुनिया की तरफ़। इस तरह वह दोनों में से किसी की भी लाजिमी कीमत नहीं दे पाता। ऐसे लोग दोतरफ़ा महरूमी की अलामत बनकर रह जाते हैं।

يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْصُرُهُ وَمَا لَا يَنْفَعُهُ ۚ ذَلِكَ هُوَ الضَّلَلُ
الْبَعِيدُ ۝ يَدْعُوا الْمَنَ ضُرَّهُ أَقْرَبُ مِنْ نَفْعِهِ ۚ كَيْسَ الْمَوْلَىٰ وَكَيْسَ
الْعَشِيرِ ۝ إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ۝

वह खुदा के सिवा ऐसी चीज को पुकारता है जो न उसे नुक़सान पहुंचा सकती और न उसे नफ़ा पहुंचा सकती। यह इतिहा दर्जे की गुमराही है। वह ऐसी चीज को पुकारता है जिसका नुक़सान उसके नफ़ा से करीबतर है। कैसा बुरा कारसाज है और कैसा बुरा रफ़ीक़ (साथी)। बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक अमल किए ऐसी जन्नतों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (12-14)

खुदा को छोड़ना हमेशा ग़ैर खुदा पर भरोसे की वजह से होता है। जब भी ऐसा होता है कि एक आदमी खुदा के सच्चे रास्ते से हटता है या उसे नजरअंदाज करता है तो इसकी वजह यह होती है कि वह खुदा के सिवा किसी और चीज पर भरोसा किए हुए होता है। यह ग़ैर खुदा कभी कोई बुत होता है और कभी बुत के सिवा कोई दूसरी चीज।

मगर इस दुनिया में एक खुदा के सिवा किसी को कोई ताकत हासिल नहीं। इसलिए आदमी जब खुदा के सिवा दूसरों पर भरोसा करता है तो वह ताकतवर को छोड़कर ऐसी मोहूम (कल्पित) चीज का सहारा पकड़ता है जिसका बहैसियत ताकत कोई वजूद नहीं। इससे ज्यादा भूल की बात और क्या हो सकती है।

मज़ीद यह कि अपने आपको खुदा के साथ वाबस्ता करना सिर्फ़ ज़रूरत का तक्ज़ाज नहीं है बल्कि वह हकीकत का तक्ज़ाज भी है। वह इंसान के ऊपर खुदा का हक़ है। इसलिए जब आदमी खुदा को छोड़कर मोहूम (कल्पित) चीजों की तरफ़ जाता है तो उसका नुक़सान फ़ैरन उसके लिए मुक़द्दर हो जाता है। और जहां तक उसके नफ़ा का सवाल है तो वह तो कभी मिलने वाला नहीं।

ग़ैर खुदा को सहारा बनाने वाले बजाहिर उसे अपने से ऊंचा समझते हैं। वर्ना वे उसे सहारा ही न बनाएं। मगर हकीकत यह है कि वह ग़ैर खुदा जिसे सहारा बनाया जाए और वे लोग जो उन्हें अपना सहारा बनाएं दोनों एकसां (समान) दर्जे में मजबूर और बेताक़त हैं।

ऐसी दुनिया में जो लोग इसका सुबूत दें कि उन्होंने माहौल से ऊपर उठकर सोचा। ग़ैर खुदाओं के पुरफ़रेब हुज़ूम में उन्होंने खुदा को दरयाफ्त किया। और फिर सिर्फ़ आख़िरत के ख़ातिर अपनी जिंदगी को खुदा की पसंद के रास्ते पर डाल दिया वे इस दुनिया की सबसे कीमती रूहें हैं। खुदा उनकी इस तरह क़द्दानी करेगा कि उन्हें जन्नत की कामिल दुनिया में बसाएगा। जहां वे अबदी तौर पर ऐश करते रहें।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهُ مَا يَغِيظُ ۝ وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يُرِيدُ ۝

जो शख्स यह गुमान रखता हो कि खुदा दुनिया और आख़िरत में उसकी मदद नहीं करेगा तो उसे चाहिए कि एक रस्सी आसमान तक ताने। फिर उसे काट डाले और देखे कि क्या उसकी तदबीर उसके गुस्से को दूर करने वाली बनती है। और इस तरह हमने कुरआन को खुली खुली दलीलों के साथ उतारा है। और बेशक अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत दे देता है। (15-16)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को हक की तरफ पुकारा तो जो लोग नाहक की बुनियाद पर अपनी इमारत खड़ी किए हुए थे वे आपके दुश्मन हो गए। मुखालिफत बढ़ती रही। यहां तक कि ऐसा मालूम हुआ गोया नाहक के अलमबरदार (ध्वजावाहक) हक के अलमबरदारों का खात्मा कर देंगे। ऐसे नाजुक हालात में कुछ मुसलमानों के दिल में यह वसवसा पैदा हुआ कि अगर हम हक पर हैं तो खुदा हमारी मदद क्यों नहीं करता। हक और नाहक की कशमकश में वह ग़ैर जानिबदार क्यों बना हुआ है।

फरमाया कि खुदा बिलाशुबह हक का साथ देता है। मगर खुदा का यह तरीका नहीं कि वह फौरन मुदाखलत (हस्तक्षेप) करे। वह मामलात के उस हद तक पहुंचने का इंतजार करता है जहां एक फरीक (पक्ष) का बरसरे हक हेमा और दूसरे फरीक का बरसरे बातिल हेमा पूरी तरह साबितशुदा बन जाए। जब यह हद आ जाती है उस वक्त खुदा बिलाताखीर मुदाखलत करके फैसला कर देता है।

यह खुदा की सुन्नत (तरीका) है। आदमी को चाहिए कि वह अपने आपको खुदा की इस सुन्नत पर राजी करे। क्योंकि इसके सिवा कोई और चीज इस जमीन व आसमान के अंदर मुमकिन नहीं। इसके सिवा हर रास्ता मौत का रास्ता है न कि जिंदगी का रास्ता।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِقِينَ وَالنَّصَارَى وَالْمَجُوسَ
وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا إِنَّ اللَّهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ⑩

इसमें कोई शक नहीं कि जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने यहूदियत इस्तिंयार की, और साबी और नसारा और मजूस और जिन्होंने शिर्क (खुदा का साझीदार बनाना) किया। अल्लाह उन सबके दर्मियान क़ियामत के रोज फैसला फरमाएगा।
बेशक अल्लाह हर चीज से वाकिफ है। (17)

इस आयत में छः मजहबी गिरोहों का जिक्र है मुसलमान, यहूदी, साबी, नसारा, मजूस और मुश्रिकीने मक्का। यहूदी हजरत मूसा को मानने वाले लोग हैं। इसी तरह साबी हजरत यहया को मानने वाले थे। नसारा हजरत ईसा को मजूस जर्तुशत को और मुश्रिकीने हजरत इब्राहीम को।

ये सारे लोग इब्तिदाअन तौहीदपरस्त थे। मगर बाद को उन्होंने अपने दीन में बिगाड़ पैदा कर लिया। और अब वे उसी बिगड़े हुए दीन पर कायम हैं। मुसलमानों का हाल भी अमलन ऐसा हो सकता है। मुसलमानों की किताब अगरचे महफूज (सुरक्षित) है। मगर इम्तेहान की इस दुनिया में उनके हाथ इससे बंधे हुए नहीं हैं कि वे कुरआन व सुन्नत की खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) तशरीह करके अपना एक दीन बनाएं और उस खुदसाख्ता दीन पर कायम होकर समझें कि वे खुदा के दीन पर कायम हैं।

खुदा का अस्ल दीन एक है। मगर लोगों की अपनी तशरीहात में वह हमेशा मुखलिफ हो जाता है। इसलिए जब लोग खुदा के अस्ल दीन पर हों तो उनके दर्मियान इतेहाद फरोग पाता है। मगर जब लोग खुदसाख्ता दीन पर चलने लगें तो हमेशा उनके दर्मियान मजहबी इख़लाफात पैदा हो जाते हैं। ये इख़लाफात लामुतनाही (अंतहीन) तौर पर बढ़ते हैं। वे कभी ख़त्म नहीं होते। ताहम अल्लाह तआला को हर शख्स का हाल पूरी तरह मालूम है। वह क़ियामत में बता देगा कि कौन हक पर था और कौन नाहक पर।

الْمُتَرَاتِنَ اللَّهُ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالْدَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ وَ
كَثِيرٌ حَقٌّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ وَمَنْ يُهِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّكْرِمٍ إِنَّ اللَّهَ
يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ⑪

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के आगे सज्दा करते हैं जो आसमानों में हैं और जो जमीन में हैं। और सूरज और चांद और सितारे और पहाड़ और दरख्त और चौपाए और बहुत से इंसान। और बहुत से ऐसे हैं जिन पर अजाब साबित हो चुका है और जिसे खुदा जलील कर दे तो उसे कोई इज्जत देने वाला नहीं। बेशक अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (18)

जिस तरह इंसान के लिए खुदा का एक कानून है उसी तरह बकिया कायनात के लिए भी खुदा का एक कानून है। बकिया कायनात खुदा के कानून पर सहज रूप से कायम है। वह निहायत इत्तेफ़ाक और हमआहंगी के साथ खुदा के मुफ़र्र करदा कानून की पैवी कर रही है। यह सिर्फ इंसान है जो इख़लाफात (मत-भिन्नता) पैदा करता है। वह खुदासाख्ता तशरीह निकाल कर नए-नए रास्तों पर चलने लगता है।

खुदा की नजर में वे लोग बहुत बड़े मुजरिम हैं जो खुदा के दीन में इख़लाफात पैदा करते हैं। वे बेइख़लाफ कायनात में इख़लाफ के साथ रहना चाहते हैं। जिस दुनिया में चारों तरफ निहायत वसीअ पैमाने पर 'एक दीन' का सबक दिया जा रहा है वहां वे 'कई दीन' बनाने में मशगूल हैं।

खुदा की कायनात खुदा की मर्जी का अमली एलान है। जो लोग खुदा के कायम करदा इस अमली नमूने के ख़िलाफ चलते हैं वे आज ही अपने आपको मुस्तहिके अजाब साबित कर रहे हैं। क़ियामत उस नतीजे का सिर्फ लफ्ज़ी एलान करेगी जिसका अमली एलान इसी आज की दुनिया में हर आन हो रहा है।

هَٰذِهِنَّ خَصْمَتٌ فِي رَبِّهِنَّ الْكَافِرَاتُ كَفَرْنَ وَقَطَّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ

वजह से तारीख में शिर्क का तसलसुल कायम हो गया। अब यह नौबत आ गई कि जो बच्चा पैदा हो वह अपने माहिल से सिर्फ शिर्क का सबक ले।

हजरत इब्राहीम इराक में पैदा हुए थे। अल्लाह तआला ने उन्हें हुक्म दिया कि वह इराक और शाम और मिस्र जैसे आबाद इलाकों को छोड़कर हिजाज (अरब) के गैर आबाद इलाके में चले जाएं और वहां अपनी औलाद को बसा दें। गैर आबाद इलाके में बसाने का मकसद यह था कि यहां अलग थलग दुनिया में एक ऐसी नस्ल पैदा हो जो शिर्क से अलग होकर परवरिश पा सके। हजरत इब्राहीम ने इसी खुदाई मंसूबे के तहत अपनी औलाद को मौजूदा मक्का में लाकर बसा दिया जो उस वक्त यकसर गैर आबाद थी। इसी के साथ हजरत इब्राहीम ने एक मस्जिद (खाना काबा) की तामीर की ताकि वह इस नई नस्ल के लिए और बिलआखिर सारी दुनिया के लिए एक खुदा की इबादत का मर्कज बन सके।

وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَى كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ۚ لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا الْقِسْمَ الَّذِي فِي أَيَّامٍ مَعْلُومَاتٍ عَلَى مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا أَمْرَ الْبَاسِ الْفَقِيرِ ۖ ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿٢٧﴾

और लोगों में हज का एलान कर दो, वे तुम्हारे पास आएंगे। पैरों पर चलकर और दुबले ऊंटों पर सवार होकर जो कि दूर दराज रास्तों से आएंगे ताकि वे अपने फायदे की जगह पर पहुंचें और चन्द मालूम दिनों में उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें बख्शे हैं। पस उसमें से खाओ और मुसीबतजदा मोहताज को खिलाओ। तो चाहिए कि वे अपना मेल कुचैल ख़त कर दें। और अपनी नज़ें (मन्तें) पूरी करें। और इस कदीम (प्राचीन) घर का तवाफ (परिक्रमा) करें। (27-29)

काबा की तामीर का इब्तिदाई मकसद उन लोगों के लिए मर्कज इबादत फराहम करना था। जो 'पैदल' चलकर वहां पहुंचने की मसाफत (दूरी) पर हों। मगर बिलआखिर उसे सारे आलम के लिए एक खुदा की इबादत का मर्कज बनना था। और यह मकसद पूरी तरह हासिल हुआ। यहां पहुंचकर हाजी जो मनासिक व मरासिम (रिति-रस्में) अदा करता है, कुरआन में उसका मुख्तसरन बयान है और अहादीस में उसकी पूरी तपसील माजुद है।

'ताकि अपने फायदों के लिए हाजिर हों' का मतलब यह है कि दीन के फायदे जिन्हें वे एतकादी तौर पर मानते हैं उन्हें यहां अमली तौर पर देखें। हज के लिए आदमी जिन मकामात पर हाजिर होता है उनसे दीने खुदावंदी की अजीम तारीख (इतिहास) वाबस्ता है। इस बिना पर वहां जाना और उन्हें देखना दिलों को पिघलाने का सबब बनता है। वहां सारी दुनिया के मुसलमान जमा होते हैं। इस तरह वहां इस्लाम की बैनुलअकवामी (अन्तर्राष्ट्रीय) वुसअत (व्यापकता) खुली आंखों से नजर आती है। हज का सालाना इज्तिमाअ मुसलमानों के अंदर

आलमी सतह पर इज्तिमाइयत (सामूहिकता) पैदा करने का जरिया बनता है। आदमी को इस सफर से बहुत से दीनी और दुनियावी तजर्बे हासिल होते हैं। जो उसके लिए जिंदगी की तामीर में मददगार बनते हैं। वगैरह।

ذَٰلِكَ وَمَنْ يُعَظِّمْ حُرْمَتَ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهِ عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَأُحِلَّتْ لَكُمُ الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ ۖ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ ۚ

यह बात हो चुकी और जो शख्स अल्लाह की हुस्मतों (मर्यादाओं) की ताजीम करेगा तो वह उसके हक में उसके ख के नजदीक बेहतर है और तुम्हारे लिए चौपाए हलाल कर दिए गए हैं, सिवा उनके जो तुम्हें पढ़कर सुनाए जा चुके हैं। तो तुम बुतों की गंदगी से बचो और झूठी बात से बचो। (30)

हलाल क्या है और हराम क्या, क्या चीज मुकद्दस (पवित्र) है और क्या चीज गैर मुकद्दस। इबादत के कौन से तरीके दुरुस्त हैं और कौन से तरीके दुरुस्त नहीं। ये सब बातें खुदा ने अपने पैगम्बरों के जरिए वाजह तौर पर बता दी हैं। उनमें किसी किस्म की तब्दीली जाइज नहीं। हर तब्दीली जो बतौर खुद इन चीजों में की जाए वह अल्लाह के नजदीक झूठ है, बल्कि वह सबसे बड़ा झूठ है। इंसान के लिए लाजिम है कि इन चीजों में बिल्कुल लफ्जी तौर पर पैगम्बराना तालीमात की पैरवी करे। वह किसी हाल में इनमें कोई कमी बेशी न करे।

ये उमूर (मामले) वे हैं जिनकी हकीकत सिर्फ खुदा को मालूम है। आदमी जब उनमें अपनी तरफ से कोई बात कहता है तो वह ऐसी चीज के बारे में अपनी वाकफियत का दावा करता है जिसकी उसे कोई वाकफियत नहीं। जाहिर है कि यह झूठ है, बल्कि यह इतना बड़ा झूठ है कि इससे बड़ा झूठ और कोई नहीं।

حُنْفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتُخَفُّهُ الطُّيُورُ أَوْ تَهْوَىٰ بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِيقٍ ﴿٣١﴾

अल्लाह की तरफ यकसू (एकाग्र) रहो, उसके साथ शरीक न ठहराओ। और जो शख्स अल्लाह के साथ शिर्क करता है तो गोया वह आसमान से गिर पड़ा। फिर चिड़ियां उसे उचक लें या हवा उसे किसी दूर दराज मकाम पर ले जाकर डाल दे। (31)

इस कायनात में मर्कजी कुव्वत (केन्द्रीय शक्ति) सिर्फ एक है। और वह खुदाए वाहिद की जात है। जो शख्स अपने आपको खुदा से जोड़े उसने अपने लिए हकीकी ठिकाना पा लिया। वह मजबूत जमीन पर खड़ा हो गया। इसके बरअक्स जो शख्स अपने आपको खुदा

से न जोड़े या ऐसा हो कि वह जबान से खुदा का इकरार करे मगर अपने दिली तअल्लुक किसी और से वाबस्ता रखे। वह गोया उस मर्कज (केन्द्र) से कटा हुआ है जिसके सिवा इस कायनात में दूसरा कोई मर्कज नहीं। ऐसे शख्स का हाल उस इंसान जैसा होगा जिसकी एक मिसाल ऊपर की आयत में बताई गई है।

ذَلِكَ وَمَنْ يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوبِ ۚ لَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحْمِلُهَا إِلَىٰ الْبَيْتِ الْعَتِيقِ ۖ

यह बात हो चुकी। और जो शख्स अल्लाह के शआइर (प्रतीकों) का पूरा लिहाज रखेगा तो यह दिल के तकवे (ईश-परायणता) की बात है। तुम्हें उनसे एक मुकर्रर वस्त तक फयदा उठाना है। फिर उन्हें कुर्बानी के लिए कदीम (प्रचीन) घर की तरफ ले जाना है। (32-33)

शईरह (बहुवचन शआइर) के मअना अलामत (Symbol) के हैं। इस्लाम की जो इबादात हैं, उनका एक जाहिरी पहलू है और एक अंदरूनी पहलू। अंदरूनी पहलू इबादत का अस्ल है। और जो जाहिरी पहलू है वह उसी अंदरूनी पहलू की अलामत, या शईरह है। अल्लाह तआला ने जो शआइर मुकर्रर किए हैं। उनका हक इस तरह अदा नहीं हो सकता कि जाहिरी तौर पर उनकी ताजीम (सम्मान) कर ली जाए। उनका हक अदा करने के लिए दिल का तकवा मल्लूब है।

हदी व नियाज के जानवर (अल्लाह के) शआइर में से हैं। वे एक हकीकत की अलामत (प्रतीक) हैं न कि वे बजाते खुद हकीकत हैं। इन जानवरों को रंगना या इसका एहतिमाम करना कि उन पर सवारी न की जाए, उनसे किसी किस्म का फायदा न उठाया जाए, ये वे चीजें नहीं हैं जिनसे अल्लाह खुश होता हो। अल्लाह की खुशनूदी इसमें है कि जो कुछ किया जाए अल्लाह के लिए किया जाए। अल्लाह के यहां कल्बी हालत की कद्र है न कि महज जाहिरी हालत की।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا نَسْكَاً لِّذِكْرِ اللَّهِ عَلَىٰ مَا رَزَقْنَاهُمْ مِنْ بَيْمَاتٍ الْكَافِرُ ۖ فَالْهُكْمُ إِلَهُ ۖ وَاحِدٌ فَلَهُ أَسْلِمُوا وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ۖ الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِاللَّهِ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَالضَّالِّينَ عَلَىٰ مَا أَصَابَهُمُ الْمَقْيَمُ وَالصَّالِقِينَ رِزْقَهُمْ يُنْفِقُونَ ۖ

और हमने हर उम्मत के लिए कुर्बानी करना मुकर्रर किया ताकि वे उन चौपायों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें अता किए हैं। पस तुम्हारा इलाह (पूज्य-प्रभु) एक ही इलाह है तो तुम उसी के होकर रहो और आजिजी (नम्रता) करने वालों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो। जिनका हाल यह है कि जब अल्लाह का जिक्र किया जाता है तो

उनके दिल कांप उठते हैं। और जो उन पर पड़े उसे सहने वाले और नमाज की पाबंदी करने वाले और जो कुछ हमने उन्हें दिया है वे उसमें से खर्च करते हैं। (34-35)

इंसान इस दुनिया में जो कुछ पैदावार हासिल करता है, चाहे वह जरई (कृषि) पैदावार हो या हैवानी पैदावार या संअती (औद्योगिक) पैदावार, उनके बारे में उसके अंदर दो किस्म की मुमकिन नपिसयात पैदा होती हैं। एक यह कि यह मेरी अपनी कमाई है या यह कि यह माबूदों की बरकत का नतीजा है। यह नपिसयात सरासर मुश्रिकाना नपिसयात है।

दूसरी नपिसयात यह है कि आदमी जो कुछ हासिल करे उसे वह खुदा की तरफ से मिली हुई चीज समझे। उस और जन्नत और कुर्बानी इसी दूसरे जखे के खरजी इस्हार के मुकर्रर तरीके हैं। आदमी अपनी कमाई का एक हिस्सा खुदा की राह में नज़्र (अर्पित) करता है और इस तरह वह इस बात का अमली इकरार करता है कि उसके पास जो कुछ है वह खुदा का अतिया है न कि महज उसकी अपनी कमाई।

इंसान को अगर सही मअनों में खुदा की मअरफत हासिल हो जाए तो इसके बाद उसके दिल का जो हाल होगा वह वही होगा जिसे यहां इख़्वात कहा गया है। ऐसा आदमी हमहतन खुदा की तरफ मुतवज्जह हो जाएगा। उस पर इज्ज की कैफियत तारी हो जाएगी। अल्लाह के तसब्वुर से उसका दिल दहल उठेगा। वह अपनी हर चीज को खुदा की चीज समझने लगेगा। न कि अपनी ज़ती चीज।

وَالْبَذَنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ فِيهَا خَيْرٌ ۚ فَادْكُرُوا السَّمَاءَ لِلَّهِ عَلَيْهَا مِصَافٌ ۚ وَإِذْ وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِعُوا الْقَانِعَةَ وَالْمُعْتَرَّ ۚ كَذَلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۚ لَنْ يَبَالِ اللَّهُ تُحُومَهَا وَلَا دِمَاؤَهَا وَلَكِنْ يَبَالُ التَّقْوَىٰ مِنْكُمْ كَذَلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ ۖ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِينَ ۖ

और कुर्बानी के ऊंटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की यादगार बनाया है। उनमें तुम्हारे लिए भलाई है। पस उन्हें खड़ा करके उन पर अल्लाह का नाम लो। फिर जब वे करवट के बल गिर पड़ें तो उनमें से खाओ और बेसवाल मोहताज और साइल (मांगने वाले) को खिलाओ। इस तरह हमने इन जानवरों को तुम्हारे लिए मुसख़्खर (वशीभूत) कर दिया ताकि तुम शुक्र अदा करो। और अल्लाह को न उनका गोशत पहुंचता है और न उनका खून बल्कि अल्लाह को सिर्फ तुम्हारा तकवा (ईश-परायणता) पहुंचता है इस तरह अल्लाह ने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्खर कर दिया है। ताकि तुम अल्लाह की बख़्शी हुई हिदायत पर उसकी बड़ाई बयान करो और नेकी करने वालों को खुशख़बरी दे दो। (36-37)

दुनिया में अगर ऊंट और दूसरे मवेशी न होते। सिर्फ शेर और रीछ और भेड़िए होते तो उनसे खिदमत लेना इंसान के लिए बहुत मुश्किल होता। और उन्हें उम्मी पैमाने पर कुर्बान करना तो बिल्कुल नामुमकिन हो जाता। यह अल्लाह तआला का बहुत बड़ा एहसान है कि उसने सिर्फ वहशी और दरिंदे जानवर पैदा नहीं किए। बल्कि कुछ ऐसे जानवर भी पैदा किए जिनमें फितरी तौर पर यह मिजाज मौजूद है कि वे अपने आपको इंसान के काबू में दे देते हैं। और जब इंसान उन्हें गिजा या कुर्बानी के लिए जवह करता है तो उस वक्त उनकी तस्वीरी फितरत अपनी आखिरी हद पर पहुंच जाती है।

कुर्बानी का तरीका इसलिए मुकर्रर नहीं किया गया है कि खुदा को गोश्त और खून की जरूरत है। कुर्बानी तो सिर्फ एक अलामती फेअल है। जानवर की कुर्बानी उस इंसान की एक जाहिरी तस्वीर है जो अपने आपको अल्लाह के लिए जवह कर चुका है। यह दरअसल खुद अपना जबीह है जो जानवर के जबीह की सूरत में मुमस्सल (प्रतिरूपित) होता है। खुशकिस्मत हैं वे लोग जिन के लिए जानवर की कुर्बानी खुद अपनी कुर्बानी के हममअना बन जाए।

إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ۚ
لَّذِينَ يُقْتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظَلَمُوا وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ۖ
الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَنْ يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ۚ وَلَوْ لَدَفَعَهُ اللَّهُ النَّاسَ
بَعْضُهُمْ بِبَعْضٍ لَهْجًا مَتَّ صَوَامِعُ وَبِيعَ وَصَلَوَاتُ وَمَسْجِدُ يُذَكِّرُ فِيهَا
أَسْمَاءَ اللَّهِ كَثِيرًا ۚ وَلَكِنْ صَرَكَ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝

वेशक अल्लाह उन लोगों की मुदाफिअत (प्रतिरक्षा) करता है जो ईमान लाए। वेशक अल्लाह बदअहदों (वचन तोड़ने वालों) और नाशुक्रों को पसंद नहीं करता। इजाजत दे दी गई उन लोगों को जिनसे लड़ाई की जा रही है इस वजह से कि उन पर जुल्म किया गया है। और वेशक अल्लाह उनकी मदद पर कादिर है। वे लोग जो अपने घरों से बेवजह निकाले गए। सिर्फ इसलिए कि वे कहते हैं कि हमारा रब (प्रभु) अल्लाह है। और अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे लिए जरिए हटाता न रहे तो खानकाहें (आश्रम) और गिरजा और इबादतखाने और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का नाम कसरत (अधिकता) से लिया जाता है ढा दिए जाते। और अल्लाह जरूर उसकी मदद करेगा जो अल्लाह की मदद करे। वेशक अल्लाह जबरदस्त है, जोर वाला है। (38-40)

अल्लाह का कोई बंदा या कोई गिरोह अपने आपको अल्लाह के रास्ते पर डाले तो वह इस दुनिया में तंहा नहीं होता। ग़ाफिल और सरकश लोग जब उसे अपने जुम् का

निशाना बनाएं तो खुदा जालिमों के मुकाबले में उनकी जानिब खड़ा हो जाता है। खुदा इब्तिदा में अपना नाम लेने वालों के इख़्लास (निष्ठा) का इम्तेहान लेता है। मगर जो लोग इम्तेहान में पड़कर अपना मुख़्तस (निष्ठावान) होना साबित कर दें खुदा जरूर उनकी मदद पर आ जाता है। और उनके लिए ऐसे हालात पैदा करता है कि वे तमाम रुकावटों पर काबू पाते हुए हक पर कारबंद रह सकें।

अहले ईमान का अस्ल इक्दाम सिर्फ दावत है। वे दावत से आग़ाज करते हैं और बराबर दावत ही पर कायम रहते हैं। वे बवक्ते जरूरत कभी जंग भी करते हैं मगर उनकी जंग हमेशा दिफअ (प्रतिरक्षा) के लिए होती है न कि जारिहियत (आक्रामकता) के लिए।

एक गिरोह अगर ज्यादा मुद्दत तक इक्तेदार (सत्ता) पर रहे तो उसके अंदर सरकशी और घमंड पैदा हो जाता है। इसलिए खुदा ने इस दुनिया में दिफअ (हयाना) का कानून मुकर्रर किया है। वह बार-बार एक गिरोह के जरिए दूसरे गिरोह को इक्तेदार के मक़ाम से हटाता है। इस तरह तारीख में सियासी तवाजुन (संतुलन) कायम रहता है। अगर खुदा ऐसा न करे तो लोगों की सरकशी यहां तक बढ़ जाए कि इबादतखाने जैसे मुकद्दस इदारे भी उनकी जद से मफ़्क़न से

इस दिफअ की एक सूरत यह है कि किसी गिरोह के इक्तेदार (सत्ता) को सिर से ख़त्म कर दिया जाए। इसकी एक मिसाल मौजूदा जमाने में ब्रिटिश साम्राज्य की है। जिसे वतनी आजादी की तहरीकों के जरिए ख़त्म किया गया। दूसरा तरीका वह है जिसकी मिसाल रूस और अमेरिका की शक़ल में नजर आती है। यानी एक के जरिए दूसरे पर रोक लगाना। और इस तरह बैतुल अक़वामी सियासत में तवाजुन कायम रखना।

الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَآمَرُوا
بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۚ وَاللَّهُ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۝

ये वे लोग हैं जिन्हें अगर हम जमीन पर ग़लबा दें तो वे नमाज़ का एहतियाम करेंगे और जकात अदा करेंगे और मअरूफ (भलाई) का हुक्म देंगे और मुंकर (बुराई) से रोकेंगे और सब कामों का अंजाम खुदा ही के इख़्तियार में है। (41)

खुदा की मदद का मुस्तहिक बनने की ख़ास शर्त यह है कि आदमी ऐसा हो कि उसे इक्तेदार मिले फिर भी वह न बिगड़े उसे बड़ई का मक़ाम मिलना उसके इज्ज व तवाजेअ (विनम्रता) को बढ़ाने वाला बन जाए। जो लोग इक्तेदार से पहले की हालत में इस तरह सालेह (नेक) साबित हों वही इक्तेदार के बाद के हालात में सालेह साबित हो सकते हैं।

यही वे लोग हैं कि जब उन्हें कोई इक्तेदार (सत्ता) दिया जाता है तो वे खुदा के आगे झुक जाते हैं। वे बंदों का पूरा-पूरा हक अदा करते हैं। वे जिदगी के मामलात में वही करते हैं जिसे खुदा पसंद करता है। और उससे दूर रहते हैं जो खुदा को पसंद नहीं।

وَأَن يَكْذِبُونَكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودٌ ۖ وَقَوْمُ
إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمُ لُوطٍ ۖ وَأَصْحَابُ مَدْيَنَ وَكَذَّبَ مُوسَى فَأَمْلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ
أَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۝

और अगर वे तुम्हें झुठलाएं तो उनसे पहले कौमे नूह और आद और समूद झुठला चुके हैं और कौमे इब्राहीम और कौमे लूत और मदन के लोग भी। और मूसा को झुठलाया गया। फिर मैंने मुंकिरों को ढील दी। फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। पस कैसा हुआ मेरा अजब। (42-44)

‘इब्राहीम और मूसा को झुठलाने वाले लोगों’ से मुराद हजरत इब्राहीम और हजरत मूसा के हम जमाना लोग हैं न कि वे लोग जो इस आयत के उतरने के वक़्त मौजूद थे। क्योंकि कुरआन के उतरने के जमाने में तो तमाम लोग इन पैगम्बरों को मानने वाले बने हुए थे।

यही मामला हर पैगम्बर के साथ पेश आया। उनके जमाने के लोगों ने उन्हें झुठलाया। और बाद के लोगों ने उन्हें अज्मत व तकद्दुस (पवित्रता) का मक्कम दिया। इसकी वजह यह है कि पैगम्बर अपने जमाने में सिर्फ एक दाजी होता है। मगर बाद के जमाने में उसके नाम के साथ अज्मतों की तारीख़ वाबस्ता हो जाती है। हर दौर के इंसानों ने यह सुबूत दिया है कि वे पैगम्बर को मुजरद दाजी के रूप में पहचानने की सलाहियत नहीं रखते। वे पैगम्बर को सिर्फ अज्मतों के रूप में पहचानना जानते हैं। अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हजरत इब्राहीम और हजरत मूसा ही का दाजियाना रूप थे। मगर आपके जमाने के वही लोग जो हजरत इब्राहीम और हजरत मूसा से वाबस्ती पर फख़ करते थे उन्होंने अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मानने से इंकार कर दिया।

इससे मालूम होता है कि पैगम्बर को मानने वाले हकीकत में कौन लोग हैं। पैगम्बर को मानने वाले दरअस्त वे लोग हैं जो ‘दावत’ (आह्वान) वाले पैगम्बर को पहचानें। जो लोग सिर्फ ‘अज्मत’ (महानता) वाले पैगम्बर को पहचानें वे तारीख़ के मोमिन हैं न कि हकीकत में पैगम्बरों ख़ुदा के मोमिन।

فَكَأَيُّنَ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا وَبُئْرِ
مُعْظَلَةٍ وَقَصَرٍ مَّشِيدٍ ۖ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَتَكُونُ لَهُمْ قُلُوبٌ
يَعْقِلُونَ بِهَا أَوْ آذَانٌ يَّمَعُونَ بِهَا ۚ فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَكِنْ
تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ ۝

पस कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया और वे जालिम थीं। पस अब वे अपनी छतों पर उल्टी पड़ी हैं और कितने ही बेकार कुबें और कितने पुख्ता महल जो वीरान पड़े हुए हैं। क्या ये लोग जमीन में चले फिरे नहीं कि उनके दिल ऐसे हो जाते कि वे उनसे समझते या उनके कान ऐसे हो जाते कि वे उनसे सुनते। क्योंकि आंखें अंधी नहीं होती बल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में हैं। (45-46)

खुदा के नजदीक देखने वाले वे लोग हैं जो इबरात (सीख) और नसीहत की नज़ से चीजें को देखें। जिन लोगों का हाल यह हो कि वे वाक़यात को देखें मगर उससे नसीहत न ले सकें वे खुदा की नज़र में अंधे हैं। उनका देखना जानवर का देखना है न कि इंसान का देखना।

खुदा ने जमीन पर नसीहत के बेशुमार सामान फैला दिए हैं। उन्हीं में से एक वे कदीम यादगार हैं जो पिछली कैमों ने दुनिया में छोड़े हैं। ये कैमों कभी अज्मत व इक्तेदार का मक्कम हासिल किए हुए थीं। मगर आज उनका निशान टूटे हुए खंडहरों के सिवा और कुछ नहीं।

यह वाक़या हर इंसान को उसका अंजाम याद दिला रहा है मगर जब लोग दिल वाली आंख खो दें तो सर की आंख उन्हें कोई भी बायअना चीज नहीं दिखाती।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۖ وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ
كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ۖ وَكَأَيُّنَ مِّنْ قَرْيَةٍ أَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ
ثُمَّ أَخَذْتُهَا وَالَّتِي أَلَى الْمَصِيرِ ۝

और ये लोग तुमसे अजब के लिए जल्दी किए हुए हैं। और अल्लाह हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ़ करने वाला नहीं है। और तैरे ख़ब के यहां का एक दिन तुम्हारे शुमार के एतबार से एक हजार साल के बराबर होता है। और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें मैंने ढील दी और वे जालिम थीं। फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया और मेरी ही तरफ़ लौट कर आना है। (47-48)

इस दुनिया में कोई शख्स या कौम अगर सरकशी करे तो खुदा जरूर उसे पकड़ता है। मगर खुदा कभी पकड़ने में जल्दी नहीं करता। इंसान एक दिन में बेबरदाश्त हो सकता है। मगर खुदा एक हजार साल तक भी बेबरदाश्त नहीं होता। खुदा नाफरमानियों को देखता है फिर भी लम्बी मुद्दत तक लोगों को मौका देता है। ताकि अगर वे इस्लाह (सुधार) करने वाले हों तो अपनी इस्लाह कर लें। खुदा किसी फर्द (व्यक्ति) या कैम को सिर्फ़ उस वक़्त पकड़ता है जबकि वे आखिरी तौर पर अपना मुजरिम होना साबित कर चुके हों।

पिछले लोगों के साथ खुदा ने यही मामला किया। आइंदा के लोगों के साथ भी खुदा अपनी इसी सुन्नत (तर्ज़) के तहत मामला फरमाएगा।

قُلْ يَٰ أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝۹۹ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝۱۰۰ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝

कहो कि ऐ लोगो मैं तुम्हारे लिए एक खुला हुआ डराने वाला हूँ। पस जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए उनके लिए मफ़िरत (क्षमा) है और इज़ा की रोज़ी। और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए दौड़े वही दोज़ख़ वाले हैं। (49-51)

इंसान का अस्ल मसला यह है कि वह बिलआख़िर एक ऐसी दुनिया में पहुंचने वाला है जहां मोमिनीन और सालिहीन (नेक लोगों) के लिए अबदी राहत है और जो लोग हक़ को नज़रअंदाज़ करें और उसके मुक़बले में सरकशी का रवैया दिखाएं उनके लिए अबदी (चिरस्थायी) आग़ का अज़ाब है।

इस्लामी दावत का अस्ल मक़सद यह है कि लोगों को उस आने वाले दिन से बाख़बर कर दिया जाए। काम की यह नौइयत खुद मुतअय्यन कर रही है कि दाजी का अस्ल काम ख़बरदार करना है। इसके बाद जो कुछ है वह सिर्फ़ खुदा से मुतअल्लिक है और वही उसे अंजाम दे सकता है।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَكَّنَّا أَلْفَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ فَيَنْسَخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللَّهُ آيَتَهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ لِيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ فِتْنَةً لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۝ وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ ۝ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُدِ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

और हमने तुमसे पहले जो भी रसूल और नबी भेजा तो जब उसने कुछ पढ़ा तो शैतान ने उसके पढ़ने में मिला दिया। फिर अल्लाह शैतान के डाले हुए को मिटा देता है। फिर अल्लाह अपनी आयतों को पुख़्ता कर देता है। और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। ताकि जो कुछ शैतान ने मिलाया है उससे वह उन लोगों को जांचे जिनके दिलों में रोग है और जिनके दिल सख़्त हैं। और ज़ल्लिम लोग मुख़ालिफ़त में बहुत दूर निकल गए हैं और ताकि वे लोग जिन्हें इल्म मिला है जान लें कि यह सच

है तेरे ख़ब की तरफ़ से है। फिर वे उस पर यकीन लाएं। और उनके दिल उसके आगे झुक जाएं। और अल्लाह ईमान लाने वालों को ज़रूर सीधा रास्ता दिखाता है। (52-54)

हक़ का दाजी चाहे वह पैग़म्बर हो या ग़ैर पैग़म्बर, उसके साथ हमेशा यह पेश आता है कि जब वह खुदा की सच्ची बात का एलान करता है तो मुआनिदीन (विरोधी) उसकी बात में तरह-तरह के शोशे निकालते हैं ताकि लोगों को उसकी सदाकत (सच्चाई) के बारे में मुशतबह (संदिग्ध) कर दें।

इस तरह के शोशे हमेशा बेबुनियाद होते हैं। जब वे पेश किए जाते हैं तो दाजी को मौका मिलता है कि वह उनकी वज़ाहत करके अपनी बात को और ज्यादा साबितशुदा बना दे। इससे मुख़िस (निष्ठावान) लोगों के यकीन में इज़ाफ़ा होता है। इसके बाद खुदा के साथ उनका तअल्लुक और ज्यादा मजबूत हो जाता है। मगर जो लोग मुख़िसाना शुऊर से ख़ाली होते हैं, वे शोशे उनके लिए फ़ितना बन जाते हैं। वे उनके फ़रेब में मुब्तिला होकर हक़ से दूर चले जाते हैं।

‘अल्लाह ईमान वालों को ज़रूर सिराते मुस्तकीम दिखाता है।’ इसका मतलब दूसरे लफ़्ज़ों में यह है कि जो लोग फ़िलवाक़अ ईमान के मामले में संजीदा हों वे कभी झूठे प्रोपेगंडों से मुतअस्सिर नहीं होते। वे अल्फ़ाज़ के तिलिस्म से कभी धोखा नहीं खाते। उनका ईमान उनके लिए ऐसा इल्म बन जाता है जो बातों को उनकी गहराई के साथ जान ले, न कि महज़ बातों के जाहिरी रूप में अटक कर रह जाए।

وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ يَوْمٍ عَقِيمٍ ۝ الْمَلِكُ يَوْمَئِذٍ ۝ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ۝ فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَانُوا بِآيَاتِنَا أَفْوَاجًا ۝ وَلِلَّهِ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝

और इंकार करने वाले लोग हमेशा उसकी तरफ़ से शक़ में पड़े रहेंगे। यहां तक कि अघाबक उन पर कियामत आ जाए। या एक मनहूस दिन का अज़ाब आ जाए। उस दिन सारा इज़्तियार सिर्फ़ अल्लाह को होगा। वह उनके दर्मियान फैसला फरमाएगा। पस जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए वे नेमत के बाग़ों में होंगे और जिन्होंने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब है। (55-57)

पैग़म्बर की दावत में दलील की अज़मत पूरी तरह मौजूद होती है। मगर वे लोग जो सिर्फ़ जाहिरी अज़मतों को जानते हैं वे पैग़म्बर की मअनवी अज़मत को देख नहीं पाते और उसका इंकार कर देते हैं। ऐसे लोग हमेशा शक़ व शुबह में पड़े रहते हैं। क्योंकि वे हक़

को जाहिरी अज्मतों में देखना चाहते हैं। और अल्लाह की सुन्नत (स्कि) यह है कि वह हक को अस्त रूप में लोगों के सामने लाए ताकि जो लोग हकीकत शनास हैं वे उसे पहचान कर उससे वाबस्ता हो जाएं। और जो जाहिरवी हैं वे उसे नजरअंदाज करके अपना मुजरिम होना साबित करें।

‘आयतों को झुठलाना’ यह है कि आदमी दलील की सतह पर जाहिर होने वाले हक को नजरअंदाज कर दे। वह उस सदाकत को मानने के लिए तैयार न हो जो अस्त रूप में उसके सामने जाहिर हुई है।

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ قَاتَلُوا أَوْ مَاتُوا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللَّهُ رِزْقًا حَسَنًا وَإِنَّ اللَّهَ لَهُ خِزْيُ الرَّزْقِينَ ﴿٥٨﴾ لَيَدْخِلْنَهُمْ مُدْخَلَ رِزْوَنَةٍ ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٥٩﴾

और जिन लोगों ने अल्लाह की राह में अपना वतन छोड़ा, फिर वे कत्ल कर दिए गए या वे मर गए, अल्लाह जरूर उन्हें अच्छा रिश्का देगा। और बेशक अल्लाह ही सबसे बेहतर रिश्का देने वाला है। वह उन्हें ऐसी जगह पहुंचाएगा जिससे वे राजी होंगे। और बेशक अल्लाह जानने वाला, हिल्म (उदारता) वाला है। (58-59)

जो शरूख ईमान के मामले में मुस्लिम हो उसका हाल यह हो जाता है कि वह हर दूसरी चीज की कुर्बानी गवारा कर लेता है। मगर ईमान की कुर्बानी उसे गवारा नहीं होती। इस राह में अगर वतन छोड़ना पड़े तो वह वतन छोड़ देता है। इस राह में कत्ल होना पड़े तो वह कत्ल हो जाता है। वह ईमान के साथ बंधा रहता है। यहां तक कि वह इसी हाल में मर जाता है।

जो लोग दुनिया की जिंदगी में इस बात का सुकूत देंगे कि वे ईमान को सबसे कीमती चीज समझते हैं, अल्लाह उनकी इस तरह कद्रदानी फरमाएगा कि उन्हें आखिरत की सबसे कीमती चीज दे देगा। वे वहां अबदी तौर पर खुशियों और राहतों की जिंदगी गुजारते रहेंगे।

ذَلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوقِبَ بِهِ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَعَفُؤٌ غَفُورٌ ﴿٦٠﴾

यह हो चुका, और जो शरूख बदला ले वैसा ही जैसा उसके साथ किया गया था, और फिर उस पर ज्यादाती की जाए तो अल्लाह जरूर उसकी मदद करेगा। बेशक अल्लाह माफ करने वाला, दरगुजर करने वाला है। (60)

अहले ईमान को यह तत्कीन की गई थी कि वे उस खुदा के तरीके को अपना तरीका बनाएं जो गफूर व रहीम है। वह लोगों की ज्यादातियों से मुसलसल दरगुजर करता है। और

उन्हें माफ फरमाता है। चुनावे सहाबा किराम का गिरोह आम तौर पर इसी अख्बाके खुदावंदी पर कायम था। उन पर जुल्म किया जाता था मगर वे उसे बर्दाश्त करते थे। उनके साथ इस्तआलअमन (उत्तेजक) बातों की जाती थीं मगर वे दरगुजर करते थे।

ताहम कुछ मुसलमानों से ऐसा हुआ कि उनके साथ ज्यादाती की गई तो फौरी जज्बे के तहत उन्होंने जवाबी कार्रवाई की। उन्हें नुकसान पहुंचाया गया तो उन्होंने भी कुछ नुकसान पहुंचाया। दुश्मनों ने इसे बहाना बनाकर मुसलमानों के खिलाफ जबरदस्त प्रोपेगंडा किया। वे खुद अपनी जालिमाना कार्रवाइयों को भूल गए। अलबत्ता मुसलमानों के मामूली वाकये को जुल्म करार देकर उन्हें बदनाम करना शुरू कर दिया।

ऐसा करना बदतरीन कमीनापन है। जो लोग इस किस्म के कमीनापन का सुबूत दें वे खुदा की रैत को चैलेन्ज करते हैं। बजाहिर वे एक मुसलमान को जालिम साबित कर रहे हैं। मगर हकीकत की नजर में वे खुद सबसे बड़े जालिम हैं। वे अपने जुम की सख्ततरीन सजा पाकर रहेंगे। इस किस्म के झूठे प्रोपेगंडों से वे अहले हक को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते।

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ يُؤَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٦١﴾ ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدَّعُونَ مِنْ دُونِهِ هُوَ الْبَاطِلُ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ﴿٦٢﴾

यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है। और अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। यह इसलिए कि अल्लाह ही हक (सत्य) है और वे सब वातिल (असत्य) हैं जिन्हें अल्लाह को छोड़कर लोग पुकारते हैं। और बेशक अल्लाह ही सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है। (61-62)

दुनिया का निजाम खमोश जवान में इंसान को जबरदस्त सबक दे रहा है। यहां बार-बार ऐसा होता है कि रात की तारीकी आती है और वह दिन को ढांक लेती है। यहां हर रोज दिन आता है और रात की तारीकी को खत्म कर देता है। यह तमसील की जवान में उस हकीकत का कायनाती एलान है कि एक गिरोह अगर शान व शौकत हासिल किए हुए हो तो उसे इस गलतफहमी में नहीं रहना चाहिए कि उसकी शान व शौकत खत्म होने वाली नहीं। इसी तरह दूसरा गिरोह अगर मज्लूम है तो उसे भी यह ख्याल नहीं करना चाहिए कि उसकी मज्लूमियत हमेशा बाकी रहेगी।

जो खुदा आसमानी दुनिया में रोशनी को तारीकी के खाने में डाल देता है और तारीकी को रोशनी का रूप अता करता है वही खुदा इंसानी दुनिया में भी इसी किस्म के वाक्यात रूनुमा कर सकता है। यहां कोई भी ताकत नहीं जो खुदा को ऐसा करने से रोक दे।

الْمُتَرَاتِنَ ۚ إِنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ۚ إِنَّ
اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۖ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ
الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया। फिर जमीन सरसब्ज हो गई। वेशक अल्लाह बारीकबी (सूक्ष्मदर्शी) है, खबर रखने वाला है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। वेशक अल्लाह ही है जो बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफें वाला है। (63-64)

दुनिया में जब एक आदमी हक के ऊपर अपनी जिंदगी खड़ी करता है तो उसे तरह-तरह की मुश्किलें पेश आती हैं। शैतान लोगों को बरसालाता है और वे उसे सताने के लिए जरी हो जाते हैं। यह सूरतेहाल बड़ी सख्त होती है। उसे देखकर हकपरस्त आदमी मायूसी में मुब्तिला होने लगता है।

मगर कायनात जबाने हाल से कहती है कि यहां किसी खुदा के बंदे के लिए मायूसी का कोई सवाल नहीं। खुदा हर साल यह मंजर दिखाता है कि जमीन का सब्जा गर्मी की शिद्दत से झुलस जाता है। मिट्टी खुश्क वीरान नजर आने लगती है। बजाहिर उसमें जिंदगी का कोई इम्कान नहीं होता। इसके बाद बारिश बरसती है। और खुश्क मिट्टी में सब्जा लहलहा उठता है।

यह खुदा की कुदरत का एक नमूना है जो हर साल मादूदी सतह पर दिखाया जाता है। फिर खुदा के लिए क्या मुश्किल है कि वह इंसानी सतह पर भी अपना यही करिश्मा दिखा दे।

الْمُتَرَاتِنَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ
وَيُؤَيِّسُكُمُ النَّوَا ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَكَرُؤُفٌ
رَحِيمٌ ۖ وَهُوَ الَّذِي أَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ
لَكَفُورٌ ۝

क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ने जमीन की चीजों को तुम्हारे काम में लगा रखा है और कश्ती को भी, वह उसके हुक्म से समुद्र में चलती है। और वह आसमान को जमीन पर गिरने से थामे हुए है, मगर यह कि उसके हुक्म से। वेशक अल्लाह लोगों पर नर्मी करने वाला, महरबान है। और वही है जिसने तुम्हें जिंदगी दी, फिर वह तुम्हें मौत देता है। फिर वह तुम्हें जिंदा करेगा। वेशक इंसान बड़ा ही नाशुक है। (65-66)

जमीन की तमाम चीजें एक दूसरे तवाजु (संतुलन) को मुसलसल अपने अंदर कायम रखती हैं। अगर उनका तवाजु बिगड़ जाए तो चीजें मुफीद बनने के बजाए हमारे लिए सख्त मुजरि बन जाएं। पानी में धातु का एक टुकड़ा डालें तो वह फौरन डूब जाएगा मगर पानी को खुदा ने एक खास कानून का पाबंद बना रखा है जिसकी वजह से यह मुमकिन होता है कि लोहे या लकड़ी को कश्ती की सूरत दे दी जाए तो वह पानी में नहीं डूबती। खला (अंतरिक्ष) में वेशुमार कुरे (ग्रह, नक्षत्र) हैं। उन्हें बजाहिर गिर पड़ना चाहिए। मगर वे खास कानून के तहत निहायत सेहत के साथ अपने मदार (कक्ष) पर थमे हुए हैं।

इंसान ने अपने आपको खुद नहीं बनाया। उसे खुदा ने पैदा किया है। फिर उसे एक ऐसी दुनिया में रखा जो उसके लिए सरापा रहमत है। मगर आजादी पाकर इंसान ऐसा सरकश हो गया कि वह अपने सबसे बड़े मोहसिन के एहसान का एतराफ नहीं करता।

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا نَسْكَاهُمْ نَاسِكُوهُ ۖ فَلَا يُنَاغِظُكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلَى
رَبِّكَ ۚ إِنَّكَ لَعَلَىٰ هُدًى مُّسْتَقِيمٍ ۖ وَإِنْ جَادُواكَ فَقُلْ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
تَعْمَلُونَ ۖ ۝ اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝
الْمُتَعَلَّمُ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ
إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

और हमने हर उम्मत के लिए एक तरीका मुकरर किया कि वे उसकी पैरवी करते थे। पस वे इस मामले में तुमसे झगड़ा न करें। और तुम अपने रब की तरफ बुलाओ। यकीनन तुम सीधे रास्ते पर हो। अगर वे तुमसे झगड़ा करें तो कहो कि अल्लाह खूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो। अल्लाह कियामत के दिन तुम्हारे दर्मियान उस चीज का फैसला कर देगा जिसमें तुम इत्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हो। क्या तुम नहीं जानते कि आसमान व जमीन की हर चीज अल्लाह के इल्म में है। सब कुछ एक किताब में है। वेशक यह अल्लाह के लिए आसान है। (67-70)

इबादत के दो पहलू हैं। एक उसकी अंदरूनी हकीकत और दूसरे उसका जाहिरी तरीका। अंदरूनी हकीकत इबादत का अस्ल जुज है और जाहिरी तरीका उसका इजमी (अतिरिक्त) जुज। मगर कोई गिरोह जब लम्बी मुद्दत तक इस पर कारबंद रहता है तो वह इस फर्क को भूल जाता है। वह इबादत की जाहिरी तामील (अनुपालन) ही को अस्ल इबादत समझ लेता है। इसी का नाम जुमूद (जड़ता) है। चुनांचे अल्लाह तआला की यह सुन्नत रही है कि जब वह अगला पैम्बर भेजता है तो वह उसकी श्रीअत (जाहिरी तरीका) में कुछ फर्क कर देता है। इस

फर्क का मकसद यह होता है कि लोगों के जुम्हू को तोड़ जाए। लोगों को जहिरपरस्ती की हालत से निकाल कर जिंदा इबादत करने वाला बनाया जाए। अब जो लोग जहिरि आदाब व कवाइद ही को सब कुछ समझे हुए हों वे पैगम्बर की इताअत (आज्ञापालन) से इंकार कर देते हैं। इसके बरअक्स जो लोग इबादत की हकीकत को जानते हैं वे पैगम्बर के कहने पर अमल करने लगते हैं। यह तब्दीली उनकी इबादत में नई रूह पैदा कर देती है। वह उन्हें जामिद (निर्जीव) ईमान की हालत से निकाल कर जिंदा ईमान की हालत तक पहुंचा देती है।

यही वह खास हिक्मत है जिसकी बिना पर एक पैगम्बर और दूसरे पैगम्बर के मंसक (इबादत का तरीका) में कुछ फर्क रखा गया। जब कोई पैगम्बर नया मंसक लाया तो जुम्हू (जड़ता) में पड़े हुए लोगों ने उसके खिलाफ सख्त एतराजात निकालने शुरू किए। मगर पैगम्बरों को यह हुक्म था कि वे इन मामलों को बहस का मौजूआ (विषय) न बनने दें। वे अस्ती और बुनियादी तालीमात पर अपनी सारी तवज्जोह सर्फ करें।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يَنْزِلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ
عِلْمٌ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ۝ وَإِذَا تَشَلَّى عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَدِئَتْ تَعْرِفُ
فِي وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا الْمُنْكَرُ يَكَادُونَ يَسْطُونَ بِالَّذِينَ يَتَلَوْنَ عَلَيْهِمْ
آيَاتُنَا قُلْ أَفَأَنْتُمْ بَشَرٌ مِنْ ذِكْمِ الْآثَارِ وَعَدَهَا اللَّهُ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

और वे अल्लाह के सिवा उनकी इबादत करते हैं जिनके हक में अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी और न उनके बारे में उन्हें कोई इल्म है। और जालिमों का कोई मददगार नहीं। और जब उन्हें हमारी वाज्हेह (सुस्पष्ट) आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो तुम मुंकिरों के चेहरे पर बुरे आसार देखते हो। गोया कि वे उन लोगों पर हमला कर देंगे जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुना रहे हैं। कहे कि क्या मैं तुम्हें बताऊं कि इससे बदतर चीज क्या है। वह आग है। उसका अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है जिन्होंने इंकार किया और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (71-72)

खालिस तौहीदी की दावत हमेशा उन लोगों के लिए नाकाबिले बर्दाश्त होती है जो एक अल्लाह के सिवा दूसरों से अपनी अकीदतें (आस्थाएं) वाबस्ता किए हुए हों। वे अपने माबूदों और अपनी महबूब शख्सियतों पर तंकीद को सुनकर विफर उठते हैं। हक की दावत की तरदीद से अपने आपको बेवस पाकर वे दाअियाने हक पर टूट पड़ते हैं। वे चाहते हैं कि उनका सिर से खाल्मा कर दें।

ऐसे लोगों से कहा गया कि तुम्हारा रवैया सरासर बेअक्ली का रवैया है। आज तुम

लफ्जी तंकीद बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं हो। कल तुम्हारा क्या हाल होगा जबकि तुम्हें अपनी इस रविश की बिना पर आग का अजाब बर्दाश्त करना पड़ेगा।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضَرْبٌ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا ذُبَابًا وَلَوْ اجْتَمَعُوا لَهُ ۚ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَا
يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْ ضَعْفِ الطَّالِبِ وَالْمُطَّوِّبِ ۚ مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۚ
إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝

ऐ लोगो, एक मिसाल बयान की जाती है तो इसे गौर से सुनो। तुम लोग खुदा के सिवा जिस चीज को पुकारते हो वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते। अगरचे सबके सब उसके लिए जमा हो जाएं। और अगर मक्खी उनसे कुछ छीन ले तो वे उसे उससे छुड़ा नहीं सकते। मदद चाहने वाले भी कमजोर और जिनसे मदद चाही गई वे भी कमजोर। उन्हें अल्लाह की कद न पहचानी जैसा कि उसके पहचानने का हक है। बेशक अल्लाह ताकतवर है, गालिब (प्रभुत्वशाली) है। (73-74)

अल्लाह के सिवा किसी और को तकद्दुस (पवित्रता) का मकम देना सरासर बेअक्ली की बात है। इसलिए कि मुकद्दस (पवित्र) मकाम उसे दिया जाता है जिसके अंदर कोई ताकत हो। और इस दुनिया का हाल यह है कि यहां किसी भी इंसान या गैर इंसान को कोई हकीकी ताकत हासिल नहीं। मक्खी एक इतिहाई मामूली चीज है। मगर जमीन व आसमान की तमाम चीजें मिलकर भी एक मक्खी को वजूद में नहीं ला सकती। फिर किसी गैर खुदा को मुकद्दस (पवित्र पूज्य) समझना क्योंकि दुरुस्त हो सकता है।

इस किस्म के तमाम अकीदे दरअसल खुदा की खुदाई के कमतर अंदाजा (Underestimation) पर आधारित हैं। लोग खुदा को मानते हैं मगर वे उसकी अज्मत व कुदरत से बेखबर हैं। अगर वे खुदा को वैसा मानें जैसा कि उसे मानना चाहिए तो उन्हें अपने ये तमाम अकीदों (हास्यास्पद) हद तक बेमअना मालूम हों। वे खुद ही ऐसे तमाम अकीदों से दस्तबर्दार हो जाएं।

اللَّهُ يَصْطَفِي مِنَ الْمَلَائِكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَ إِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝

अल्लाह फरिश्तों में से अपना पैगाम पहुंचाने वाला चुनता है। और इंसानों में से भी। बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और अल्लाह ही की तरफ लौटते हैं सारे मामलात। (75-76)

खुदा की इस दुनिया में कामयाबी सिर्फ उस शख्स के लिए है जो साहिबे ईमान हो। जो किसी और वाला न होकर एक अल्लाह वाला बन जाए। जिसकी जिंदगी अंदर से बाहर तक ईमान में ढल गई हो।

जब किसी शख्स को ईमान मिलता है तो यह सादा सी बात नहीं होती। यह उसकी जिंदगी में एक इकिलाब आने के हममअना होता है। अब वह अल्लाह की इबादत करने वाला और उसके आगे झुकने वाला बन जाता है। उसकी संजीदगी इतनी बढ़ जाती है कि बेफायदा मशागिल में वक़्त जाया करना उसे हलाकत मालूम होने लगता है। वह अपनी कमाई का एक हिस्सा खुदा के नाम पर निकालता है। और उससे जरूरतमंदों की मदद करता है। वह अपनी शहवानी ख्वाहिशों को कंट्रोल में रखने वाला बन जाता है। और उसे उन्हीं हुदूद (हदों) के अंदर इस्तेमाल करता है। जो खुदा ने उसके लिए मुकर्रर कर दी हैं। वह दुनिया में एक जिम्मेदार आदमी की तरह जिंदगी गुजारता है। दूसरे की अमानत में वह कभी ख़ियानत नहीं करता। किसी से जब वह कोई अहद कर लेता है तो वह कभी उसके खिलाफ नहीं जाता।

जिन लोगों के अंदर ये खुसूसियात हों वे अल्लाह के मत्बूब बंद हैं। यही वे लोग हैं जिनके लिए खुदा ने जन्नतुल फिरदौस की मेयारी दुनिया तैयार कर रखी है। मौत के बाद वे उसकी फजाओं में दाखिल कर दिए जाएंगे ताकि अबदी तौर पर उसके अंदर ऐश करते रहें।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ طِينٍ ۝ ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ۝ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظْمًا فَكَسَوْنَا الْعِظْمَ لَحْمًا ۝ ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ ۝ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَكَيْتُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ تَبْعَتُونَ ۝

और हमने इंसान को मिट्टी के खुलासा (सत) से पैदा किया। फिर हमने पानी की एक बूंद की शक्ल में उसे एक महफूज टिकाने में रखा। फिर हमने पानी की बूंद को एक जनीन (भ्रूण) की शक्ल दी। फिर जनीन को गोشت का एक लौथड़ा बनाया। पस लौथड़े के अंदर हड्डियां पैदा कीं। फिर हमने हड्डियों पर गोشت चढ़ा दिया। फिर हमने उसे एक नई सूरत में बना खड़ा किया। पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह, बेहतरीन पैदा करने वाला। फिर इसके बाद तुम्हें जरूर मरना है। फिर तुम कियामत के दिन उठाए जाओगे। (12-16)

इंसान का बच्चा मां के पेट में परवरिश पाता है। कदीम जमाने में इस्तक़ारे हमल (गर्भ धारण) से लेकर बच्चे की पैदाइश तक की पूरी मुद्दत इंसान के लिए एक छुपी हुई चीज की हैसियत रखती थी। बीसवीं सदी में जदीद साइंसी जराए के बाद यह मुमकिन हुआ है कि पेट

में परवरिश पाने वाले बच्चे का मुशाहिदा (अवलोकन) किया जाए और उसके बारे में बराहिरास्त मालूमात हासिल की जाएं।

कुरआन ने जो चौदह सौ साल पहले इंसानी तख़्नीक के जो मुख़लिफ़ तदरीजी (क्रमवत) मरहले बताए थे, वे हैरतअंगेज तौर पर दौरे जदीद के मशीनी मुशाहिदे के ऐन मुताबिक साबित हुए हैं। यह एक खुला हुआ सुबूत है कि कुरआन खुदा की किताब है। अगर ऐसा न होता तो जदीद तहक्कीक और कुरआन के बयान में इतनी कामिल मुताबिकत मुमकिन न थी।

तख़्नीक का यह वाक्या जो हर रोज मां के पेट में हो रहा है। वह बताता है कि इस दुनिया का ख़ालिक एक हददर्जा बाकमाल हस्ती है। इंसान की तख़्नीके अव्वल (प्रथम सृजन) का हैरतनाक वाक्या जो हर रोज हमारी आंखों के सामने हो रहा है वही यह यकीन दिलाने के लिए काफी है कि इसी तरह तख़्नीके सानी (पुनः सृजन) का वाक्या भी होगा। और ऐन उसके मुताबिक होगा जिसकी ख़बर नबियों के जरिए दी गई है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَائِقَ ۝ وَمَا كُنَّا عَنْ الْخَالِقِ غُفْلِينَ ۝ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنْشَأْنَاهُ فِي الْأَرْضِ ۝ وَإِنَّا عَلَى ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ۝ فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّتٍ مِنْ تَحْتِهَا ۝ وَأَغْنَابُ لَكُمْ فِيهَا فَاوَكَّةٌ كَثِيرَةٌ ۝ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَشَجَرَةٌ تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالذَّهْنِ ۝ وَصَبْغٍ لِلْأَكْلِيلِ ۝ وَإِن لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةٌ ۝ نُسْقِيكُمْ مِنْهَا فِي بُطُونِهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ ۝ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ۝

और हमने तुम्हारे ऊपर सात रास्ते बनाए। और हम मज़्लूक (सृष्टि) से बेख़बर नहीं हुए। और हमने आसमान से पानी बरसाया एक अंदाजे के साथ। फिर हमने उसे जमीन में ठहरा दिया। और हम उसे वापस लेने पर कादिर हैं। फिर हमने उससे तुम्हारे लिए खज़ूर और अंगूर के बाग पैदा किए। तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फल हैं। और तुम उनमें से खाते हो। और हमने वह दरख़्त पैदा किया जो तूरे सीना से निकलता है, वह तेल लिए हुए उगता है। और खाने वालों के लिए सालन भी। और तुम्हारे लिए मवेशियों में सबक है। हम तुम्हें उनके पेट की चीज से पिलाते हैं। और तुम्हारे लिए उनमें बहुत फायदे हैं। और तुम उन्हें खाते हो। और तुम उन पर और कशियों पर सवारी करते हो। (17-22)

इंसान एक हक्कीर वजूद है। इसके मुक़ाबले में कायनात दहशतनाक हद तक अजीम है।

मगर कायनात का सबसे ज्यादा हैरतअंगेज पहलू यह है कि वह इंसान के लिए इतिहाई तौर

नाकाबिले तस्वीर तूफान की सूरत में जाहिर हुआ और चन्द मोमिनीने नूह का छोड़कर बकिया सारी कैम रफ़्तक रह गई।

अपने हक का एतराफ न करना सबसे बड़ा जुम् है। जो लोग यह जुम् करें वे हमेशा खुदा की पकड़ में आ जाते हैं। कोई दूसरी चीज उन्हें इस पकड़ से बचाने वाली साबित नहीं होती।

وَإِذَا السُّنُوبُتُ أَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي نَجَّيْنَاكَ مِنَ الْغُورِ الظُّلُمِ ۚ وَقُلِ رَبِّ انْزِلْنِي مُنزَلًا مُبْرَكًا وَأَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ۝
إِنْ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ وَإِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِينَ ۝

फिर जब तुम और तुम्हारे साथी कश्ती में बैठ जाएं तो कहो कि शुक्र है अल्लाह का जिसने हमें जालिम लोगों से नजात दी और कहो कि ऐ मेरे रब तू मुझे उतार बरकत का उतारना और तू बेहतर उतारने वाला है। बेशक इसमें निशानियां हैं और बेशक हम बंदों को आजमाते हैं। (28-30)

शिक से भरे हुए माहौल में जो चन्द अफराद हजरत नूह पर ईमान लाए वे उसी दिन मअनवी एतबार से खुदा की कश्ती में दाखिल हो चुके थे। इसके बाद जब तूफान के वक्त वे लकड़ी की बनाई हुई कश्ती में बैठे तो यह गोया उनके इत्तिदाई फैसले की तक्मील थी। उन्होंने अपने आपको फिक्री (वैचारिक) तौर पर बदी के तूफान से बचाया था। खुदा ने उन्हें अमली (व्यावहारिक) तौर पर बदी के सख्त अंजाम से बचा लिया।

मोमिन हर कामयाबी को खुदा की तरफ से समझता है, इसलिए वह हर कामयाबी पर खुदा का शुक्र अदा करता है। और तूफाने नूह से नजात तो खुला हुआ खुदाई नुसरत का वाक्या था। ऐसे मौके पर मोमिन की जवान से जो कलिमात निकलते हैं वे वही हैं जिनकी एक तस्वीर मज्हूरा आयत में नजर आती है। वह हाल के लिए खुदा की कुदरत का एतराफ करते हुए मुस्तकबिल के लिए मजीद इनायत की इल्तजा करने लगता है। क्योंकि उसे यकीन होता है कि हाल भी खुदा के कब्जे में है और मुस्तकबिल भी खुदा के कब्जे में।

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ ۝ فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُولًا مِنْهُمْ أَنْ
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ۖ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ وَقَالَ الْكَافِرُ مِنْ قَوْمِهِ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا الْآخِرَةِ وَاتَّخَذُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا مَاهَذَا إِلَّا
بَشَرٌ مِثْلُكُمْ لَا يَأْكُلُ مِنْ مَتَانِ أَكُلُونَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا شَرِبُوا ۚ وَلَئِنْ كُنْتُمْ

بَشَرٌ مِثْلُكُمْ أَنْكُمْ إِذَا الْخَسِرُونَ ۝

फिर हमने उनके बाद दूसरा गिरोह पैदा किया। फिर उनमें एक रसूल उन्हीं में से भेजा, कि तुम अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। क्या तुम डरते नहीं। और उसकी कौम के सरदारों ने जिन्होंने इंकार किया। और आखिरत की मुलाक़ात को झुठलाया, और उन्हें हमने दुनिया की ज़िंदगी में आसूदगी (सम्पन्नता) दी थी, कहा यह तो तुम्हारे ही जैसा एक आदमी है। वही खाता है जो तुम खाते हो, और वही पीता है जो तुम पीते हो। और अगर तुमने अपने ही जैसे एक आदमी की बात मानी तो तुम बड़े घाटे में रहोगे। (31-34)

हजरत नूह के मोमिनीन की नस्ल बढ़ी और उस पर सदियां गुजर गईं तो दुबारा वे उसी गुमराही में मुक्तिला हो गए जिसमें उनके पिछले लोग मुक्तिला हुए थे। इससे मुराद ग़ालिबन वही कैम है जिसे कैमे आद कहा जाता है। ये लोग खुदा से ग़ाफ़िल होकर ग़ैर खुदाओं में मशगूल हो गए। अब दुबारा उनके दर्मियान खुदा का रसूल आया। और उसने उन्हें हक से आगाह किया।

मगर दुबारा यही हुआ कि कौम के सरदार पैगम्बर के मुखालिफ बनकर खड़े हो गए। ये सरदार वे लोग थे जो वक्त के ख़ालात से मुवाफ़िक्त करके लोगों के क़यद (लीडर) बने हुए थे। इसी के साथ खुशहाली भी उनके गिर्द जमा हो गई थी। यह एक आम कमजोरी है कि जिन लोगों को दौलत और इक्तेदार (सत्ता) हासिल हो जाए वे उसे अपने बरसरे हक होने की दलील समझ लेते हैं। यही उन सरदारों के साथ हुआ। उनकी खुशहाली और इक्तेदार उनके लिए यह समझने में मानेअ (रुकावट) हो गए कि वे ग़लती पर भी हो सकते हैं।

उन्होंने देखा कि पैगम्बर के गिर्द न दौलत का ढेर जमा है और न उसे इक्तेदार की गद्दी हासिल है, इसलिए उन्होंने पैगम्बर को हकीर (तुच्छ) समझ लिया। वे अपनी जाहिरपरस्ती की बिना पर पैगम्बर की मअनवी अज्मत को देखने में नाकाम रहे।

إِن يُعَذِّبُكُمْ إِنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّكُمْ تُخْرَجُونَ ۖ هِيَكَاتِ هِيَكَاتِ لِمَا
تُوعَدُونَ ۖ إِنَّ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ ۖ
إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ ۖ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَحْنُ لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ۝

क्या यह शख्स तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाओगे तो फिर तुम निकाले जाओगे। बहुत ही बर्द (असंभव) और बहुत ही बर्द है जो बात उनसे कही जा रही है। ज़िंदगी तो यही हमारी दुनिया की ज़िंदगी है। यही हम मरते हैं और जीते हैं। और हम दुबारा उठाए जाने वाले नहीं हैं। यह तो बस एक ऐसा शख्स है जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा है। और हम उसे मानने वाले नहीं। (35-38)

इस आयत में आखिरत के बारे में जो कलिमात नकल किए गए हैं वे कभी जबानेहाल (व्यवहार) से अदा होते हैं और कभी जबानेकल (कथन) से। कभी ऐसा होता है कि आदमी हमहत्तन बस दुनिया की चीजों में मशगूल होता है। वह आखिरत से इस तरह ग़फ़िल नजर आता है जैसे कि आखिरत उसके नजदीक बिल्कुल बर्द अज़ कयास (कल्पना से परे की) बात है। और कभी ऐसा होता है कि उसकी आखिरत से ग़फ़लत उसे सरकशी की उस हद तक पहुंचा देती है कि वह अपनी जबान से भी कह देता है कि आखिरत तो बहुत बर्द अज़ कयास चीज है। इसलिए आज जो कुछ मिल रहा है उसे हासिल करो, कल के मोहूम (कल्पित) फ़यदे की ख़तिर आज के यकीनी फ़यदे को न खोओ।

‘इस शख्स ने अल्लाह पर झूठ बांधा है’ इस कलिमे की भी दो सूत्रे हैं। एक यह कि आदमी ऐन इसी जुमले को अपनी जबान से अदा करे। दूसरे यह कि वह हक के दाजी (आह्वानकर्ता) को इस तरह नजरअंदाज करे जैसे कि उसकी बात महज एक सिरफिरे शख्स की बात है। उसका खुदा से कोई तअल्लुक नहीं।

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي بِمَا كُنْتُ بُونٌ ۖ قَالَ قَلِيلٌ لِّیُصْبِحَ نِدْمِیْنٌ ۖ فَآخَذَ تَهُمُ الصَّیْحَةِ بِالْحَقِّ فَجَعَلَهُمْ غَنَاءً ۖ فَبَعْدَ الْقَوْمِ الظَّالِمِیْنَ ۝

रसूल ने कहा, ऐ मेरे रब, मेरी मदद फरमा कि उन्होंने मुझे झुठला दिया। फरमाया कि ये लोग जल्द ही पछताएंगे। पस उन्हें एक सज़ा आवाज़ ने हक के मुताबिक पकड़ लिया। फिर हमने उन्हें ख़स व ख़ाशाक (कूड़ा-कचरा) कर दिया। पस दूर हो जालिम कैम। (39-41)

खुदा का पैग़म्बर जिस चीज के एलान के लिए आता है वह इस कायनात की सबसे सीनी हकीकत है। मगर पैग़म्बर इस हकीकत को सिर्फ़ दलील के रूप में ज़हिर करता है। वही लोग दरअस्तल मोमिन हैं जो उसे दलील के रूप में पहचानें और अपने आपको उसके हवाले कर दें।

जब कोई ग़िरोह आखिरी तौर पर यह साबित कर दे कि वह हकीकत को दलील के रूप में पहचानने की सलाहियत नहीं रखता तो फिर खुदा हकीकत को ‘सइहह’ (सख़ आवाज़) के रूप में ज़हिर करता है। हकीकत एक ऐसी चिंता बन जाती है जिसका सामना करने की ताकत किसी को न हो। मगर जब हकीकत ‘सख़ आवाज़’ के रूप में ज़हिर हो जाए तो यह उसे भुगतने का वक्त होता है न कि उसे मानने का। हकीकत जब ‘सख़ आवाज़’ के रूप में ज़हिर होती है तो आदमी के हिस्से में सिर्फ़ यह रह जाता है कि वह अबद (अनंत) तक अपनी उस नादानी पर पछताता रहे कि उसने हकीकत को देखा मगर वह उसकी तरफ से अंधा बना रहा। हकीकत की आवाज़ उसके कान से टकराई मगर उसने उसे सुनने के लिए अपने कान बंद कर लिए।

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ۖ مَا نَشِیْقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا یَسْتَأْخِرُونَ ۖ ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرًا ۖ كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةً رَّسُولُهَا كَذَّبُوهُ فَاتَّبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ فَبَعْدَ الْقَوْمِ لَا یُؤْمِنُونَ ۝

फिर हमने उनके बाद दूसरी कौमों पैदा कीं। कोई कौम न अपने वादे से आगे जाती और न उससे पीछे रहती। फिर हमने लगातार अपने रसूल भेजे। जब भी किसी कौम के पास उसका रसूल आया तो उन्होंने उसे झुठलाया। तो हमने एक के बाद एक को लगा दिया। और हमने उन्हें कहानियां बना दिया। पस दूर हों वे लोग जो ईमान नहीं लाते। (42-44)

पैग़म्बरों के बाद हमेशा उनकी उम्मतों में बिगाड़ आता रहा। उनकी इस्लाह के लिए बार-बार पैग़म्बर भेजे गए उम्मते आदम में हज रत नूह आए। इसके बाद उम्मते नूह (आद) में हजरत हूद आए। फिर उम्मते हूद (समूद) में हजरत सालेह आए, वीरह। मगर हर बार यह हुआ कि वही लोग जो माजी के पैग़म्बर को बग़ैर बहस माने हुए थे वे हाल के पैग़म्बर को किसी तरह मानने पर तैयार न हुए।

इसकी वजह यह है कि माजी का पैग़म्बर तवील रिवायात के नतीजे में कौमी फ़र्र का निशान बन जाता है। वह कौमों के लिए उनके कौमी तशख़ुस (पहचान) की अलामत होता है। वह उनके लिए कौमी हीरो का दर्जा इख़्तियार कर लेता है। उसे मानकर आदमी के अहसासे बरतरी को तस्कीन मिलती है। जाहिर है कि ऐसे पैग़म्बर को कौन नहीं मानेगा।

मगर हाल के पैग़म्बर का मामला इसके बिल्कुल बरअक्स होता है। हाल के पैग़म्बर के साथ उसकी तारीख़ (इतिहास) वाबस्ता नहीं होती। उसके साथ अज़मत और तक्द्दुस की रिवायत शामिल नहीं होती। उसे मानना सिर्फ़ एक मअनवी हकीकत के एतराफ़ के हममअना होता है। न कि किसी हिमालयाई अज़मत से अपने आपको वाबस्ता करना। यही वजह है कि मी (अतीत) के पैग़म्बर को मानने वाले हमेशा हाल के पैग़म्बर का इंकार करते हैं।

‘दूर हों जो ईमान नहीं लाते’ इसे लफ़ज बदल कर कहें तो इसका मतलब यह होगा कि दूर हों वे लोग जो खुदा के सफ़ीर (दूत) को खुदा के सफ़ीर की हैसियत से नहीं पहचान पाते। वे खुदा के सफ़ीर को सिर्फ़ उसी वक्त पहचानते हैं जबकि तारीख़ी अमल के नतीजे में वह उनका कौमी हीरो बन चुका हो।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِیْنٍ ۖ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَ مَلَآئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا عٰلِیْنِ ۖ فَقَالُوا أَنُؤْمِنُ لِبَشَرِیْنِ مِثْلِنَا وَ

قَوْمُهُمُ النَّاعِمُونَ ۖ فَكَذَّبُوهُمَا ۖ فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ ۖ وَلَقَدْ آتَيْنَا
مُوسَى الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝

फिर हमने मूसा और उसके भाई हारून को भेजा अपनी निशानियों और खुली दलील के साथ फिरऔन और उसके दरबारियों के पास तो उन्होंने तकबुर (घमंड) किया और वे मग़रूर (अभिमानी) लोग थे। पस उन्होंने कहा क्या हम अपने जैसे दो आदमियों की बात मान लें हालांकि उनकी कौम के लोग हमारे ताबेअदार हैं। पस उन्होंने उन्हें झुठला दिया। फिर वे हलाक कर दिए गए। और हमने मूसा को किताब दी ताकि वे राह पाएं। (45-49)

हजरत मूसा और हजरत हारून बनी इस्राईल के फ़र्द थे। बनी इस्राईल उस वक्त मिस्र में थे और वहां की हुक्मरां कौम के लिए मजदूर की हैसियत रखते थे। बनी इस्राईल की कमतर हैसियत और उनके मुकाबले में फिरऔन और उसके साथियों की बरतर हैसियत उनके लिए रुकावट बन गई। वे एक इस्राईली पैग़म्बर को नुमाइंद-ए-खुदा मानने के लिए तैयार न हुए। हजरत मूसा ने अगरचे उनके सामने निहायत मोहकम (ठोस) दलाइल पेश किए। मगर दलाइल का वजन उन्हें इसके लिए मजबूर न कर सका कि वे अपनी बरतर नफ़िसयात को बदलें और एक मक्कूम (अधीन) शख्स की ज़बान से ज़हिर हेने वाली सदक़त का एतराफ़ करें।

इसका नतीजा यह हुआ कि अल्लाह तआला ने पैग़म्बर की मदद की। फिरऔन अपनी तमाम ताकतों के साथ शर्क कर दिया गया। दूसरी तरफ़ जिन लोगों ने पैग़म्बर का साथ दिया था। उन पर खुदा ने यह एहसान फरमाया कि उनके पास अपना हिदायतनामा भेजा जिसे इख़्तियार करके आदमी दुनिया और आख़िरत में कामयाबी को अपने लिए यकीनी बना सकता है।

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ آيَةً ۖ وَآوَيْنَاهُمَا إِلَىٰ رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَمَعِينٍ ۝

और हमने मरयम के बेटे को और उसकी मां को एक निशानी बनाया और हमने उन्हें एक ऊंची जमीन पर ठिकाना दिया जो सुकून की जगह थी और वहां चशमा जारी था। (50)

हजरत मसीह की बग़ैर बाप के पैदाइश एक बेहद अनोखा वाक़या था। यह वाक़या क्यों हुआ। यह एक 'निशानी' के तौर पर हुआ। कदीम ज़माने में यहूद को हामिले रिसालत (ईशदूतत्व की धारक) ग़िरोह की हैसियत हासिल थी। मगर उन्होंने मुसलसल सरकारशी से अपने लिए इसका इस्तहक़ाक़ (पात्रता) खो दिया। अब वक्त आ गया था कि यह अमानत उनसे लेकर बनू इस्राईल को दे दी जाए। चुनांचे यहूद के ऊपर आख़िरी इतमामेहुज़्जत (आख़्तान की अति) के लिए उनके आख़िरी पैग़म्बर को मोज़िजाती अंदाज में पैदा किया गया। और उस पैग़म्बर को मजीद ग़ैर मामूली मोज़िजे दिए गए। इसके बावजूद जब यहूद

आपके मुंकिर बने रहे तो यह बात आख़िरी तौर पर साबित हो गई कि वे हामिले रिसालत बनने के अहल नहीं हैं।

हजरत मसीह की वालिदा हजरत मरयम के लिए यह इतिहाई नाज़ुक मरहला था। ऐसे हाल में उन्हें सख़्त ज़रूरत थी कि कोई ऐसा गोशा हो जहां वह लोगों की नज़रों से दूर होकर रह सकें। वहां ज़िंदगी की ज़रूरी चीज़ें भी हों और सुकून व इस्मीनान भी हासिल हो। अल्लाह तआला ने जब उन्हें इस नाज़ुक इस्तेहान में डाला तो इसी के साथ उनके वतन के करीब एक पुरअमन गोशा भी उनके लिए मुहय्या फरमा दिया।

يَا أَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُّوَا مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَاعْمَلُوا صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝ وَإِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاتَّقُونِ ۝

ऐ पैग़म्बरों, सुथरी चीज़ें खाओ और नेक काम करो। मैं जानता हूं जो कुछ तुम करते हो। और यह तुम्हारा दीन एक ही दीन है। और मैं तुम्हारा रब हूं, तो तुम मुझसे डरो। (51-52)

दीन अस्लन सिर्फ़ एक है। और यही एक दीन तमाम पैग़म्बरों को बताया गया। वह यह कि आदमी खुदा को एक ऐसी अजीम हस्ती की हैसियत से पाए कि वह उससे डरने लगे। उसके दिल व दिमाग़ पर यह तसव्वुर छा जाए कि उसके ऊपर एक खुदा है। वह हर हाल में उसे देख रहा है। और वह मौत के बाद उससे उसके तमाम आमाल का हिसाब लेगा।

यह मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) ही अस्ल दीन है। इस मअरफ़त और इस एहसास के तहत जो ज़िंदगी बने वह यही होगी कि आदमी दुनिया की चीज़ों में से पाकीज़ा और सुथरी चीज़ें लेगा। वह अपने मामलात में नेकी और भलाई का तरीक़ा इख़्तियार करेगा। खुदा की मअरफ़त का लाज़िमी नतीजा खुदा का ख़ैफ़ है और खुदा के ख़ैफ़ का लाज़िमी नतीजा नेक ज़िंदगी।

فَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ۖ فَذَرَهُمْ فِي
غَمَرَتِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ۖ ائْتَابُكُمْ مِنْ مَّالٍ وَبَيْنٍ ۖ سَارِ
لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ ۖ بَلْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

फिर लोगों ने अपने दीन (धर्म) को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिया। हर ग़िरोह के पास जो कुछ है उसी पर वह नाज़ां (गौरवांवित) है। पस उन्हें उनकी बेहोशी में कुछ दिन छोड़ दो। क्या वे समझते हैं कि हम उन्हें जो माल और औलाद दिए जा रहे हैं तो हम उन्हें फायदा पहुंचाने में सरगर्म हैं। बल्कि वे बात को नहीं समझते। (53-56)

खुदा का दीन जब अपनी अस्त रूह के साथ जिंदा हो तो वह लोगों में ख़ौफ पैदा करता है और जब दीन की अस्त रूह निकल जाए तो वह फ़ख़्र का ज़रिया बन जाता है। यही वह वक़्त है जबकि अहले दीन ग़िरोहों में बटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। हर ग़िरोह अपने हालात के लिहाज से कोई ऐसा पहलू ले लेता है जिसमें उसके लिए फ़ख़्र का सामान मौजूद हो। फ़ख़्र वाले दीन हमेशा कई होते हैं और ख़ौफ वाला दीन हमेशा एक होता है। बेख़ौफी की नपिसयात राय का तजद्दुद (मत-भिन्नता) पैदा करती है। और ख़ौफ की नपिसयात राय का इत्तेहाद (मतैक्य)।

मौजूदा दुनिया में इंसान हालते इस्तेहान में है। खुदा के इल्म में किसी शख्स या ग़िरोह की जो मुद्दत है उस मुद्दत तक उसे जिंदगी का सामान लाजिमन दिया जाता है। इस बिना पर ग़ाफिल लोग समझ लेते हैं कि वे जो कुछ कर रहे हैं सही कर रहे हैं। अगर वे ग़लती पर होते तो उनका माल व असबाब उनसे छीन लिया जाता। हालांकि खुदा का कानून यह है कि माल व असबाब मुद्दते इस्तेहान के ख़त्म होने पर छीना जाए न कि इस्तेहान के दौरान में हियायत से इहि़राफ पर।

إِنَّ الَّذِينَ هُمْ مِنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُشْفِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ۝ وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ۝ وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا قُلُوبُهُمْ وَجَلَّةٌ أَنْهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ۝ أُولَٰئِكَ يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُونَ ۝ وَلَا تَنْكَلِفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَلَدَيْنَا كِتَابٌ يَنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

वेशक जो लोग अपने रब की हैबत से डरते हैं। और जो लोग अपने रब की आयतों पर यकीन रखते हैं। और जो लोग अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करते। और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं और उनके दिल कांपते हैं कि वे अपने रब की तरफ लौटने वाले हैं। ये लोग भलाइयों की राह में सबक़त (अग्रसरता) कर रहे हैं और वे उन पर पहुंचने वाले हैं सबसे आगे। और हम किसी पर उसकी ताक़त से ज्यादा बोझ नहीं डालते। और हमारे पास एक किताब है जो बिल्कुल ठीक बोलती है, और उन पर जुम् न होगा। (57-62)

जो शख्स अल्लाह को इस तरह पाए कि उस पर अल्लाह की हैबत तारी हो जाए वह आम इंसानों से बिल्कुल मुख़लिफ़ इंसान होता है। ख़ौफ की नपिसयात उसे इतिहाई हद तक संजीदा बना देती है। उसकी संजीदगी इसकी जामिन बन जाती है कि वह दलाइले खुदावंदी

के वजन को पूरी तरह समझे और उसके आगे फ़ौरन झुक जाए। खुदा के सिवा हर चीज उसकी नजर में अपना वजन खो दे। वह सब कुछ करके भी यह समझे कि उसने कुछ नहीं किया।

मौजूदा दुनिया में दौड़-धूप की दो राहें खुली हुई हैं। एक दुनिया की राह और दूसरी आख़िरत की राह। जिन लोगों के अंदर मज्जूर सिफ़ात पाई जाएं वही वे लोग हैं जो आख़िरत की तरफ दौड़ने वाले हैं। ताहम आख़िरत की तरफ दौड़ना मौजूदा दुनिया में एक बेहद मुश्किल काम है। इसमें इंसान से तरह-तरह की कोताहियां हो जाती हैं। मगर अल्लाह तआला का मुतालबा हर आदमी से उसकी ताक़त के बक्दर है न कि ताक़त से ज्यादा। हर आदमी की इस्तेताअत (सामर्थ्य) और उसका कारनामा दोनों कामिल तौर पर खुदा के इल्म में है। और यही वाक्या इस बात की जमानत है कि कियामत में हर शख्स को वह रियायत मिले जो अजरए इंसाफ उसे मिलनी चाहिए। और हर शख्स वह इनाम पाए जिसका वह मिल्क़अत मुल्क़िब।

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ مِنْ هَذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِنْ دُونِ ذَلِكَ هُمْ لَهَا عِلْمُونَ ۖ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم بِالْعَذَابِ إِذْ هُمْ يُجْرُونَ ۖ لَا تَجْرُوا الْيَوْمَ ۚ إِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تَتَصَرُّونَ ۖ قَدْ كَانَتْ آيَاتِي تُشَلَّىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلَىٰ آعْقَابِكُمْ تَنكِصُونَ ۖ مُنْتَكِلِينَ بِيَسِيرٍ تَهْجُرُونَ ۖ

बल्कि उनके दिल इसकी तरफ से ग़फलत में हैं। और उनके कुछ काम इसके अलावा हैं वे उन्हें करते रहेंगे। यहां तक कि जब हम उनके खुशहाल लोगों को अजाब में पकड़ें तो वे फरयाद करने लगेंगे। अब फरयाद न करो। अब हमारी तरफ से तुम्हारी कोई मदद न होगी। तुम्हें मेरी आयतें सुनाई जाती थीं तो तुम पीठ पीछे भागते थे, उससे तकबुर (घमंड) करके। गोया किसी किस्सा कहने वाले को छोड़ रहे हो। (63-67)

जो लोग दुनियापरस्ती में गर्क हों उन्हें खुदा और आख़िरत की बातों से दिलचस्पी नहीं होती। उनकी दिलचस्पी की चीजें उससे मुख़लिफ़ होती हैं जो सच्चे अहले ईमान की दिलचस्पी की चीजें होती हैं। खुदा और आख़िरत की बात चाहे कितने ही मुवस्सिर (प्रभावी) अंदाज में बयान की जाए, उन्हें वह ज्यादा अपील नहीं करती। वे ऐसी बातों को नजरअंदाज करके अपनी दूसरी दिलचस्पियों में गुम रहते हैं। वे हक के दाओ (आह्वानकर्ता) की मज्लिस से इस तरह उठ जाते हैं जैसे किसी फूझा किस्सागो (कथावाचक) को छोड़कर चले गए। मगर जब खुदा की पकड़ आती है तो ऐसे लोग ग़फलत और सरकशी को भूलकर

आजिजाना फर्याद करने लगते हैं। उस वक्त वे खुदा के आगे झुक जाते हैं। मगर उस वक्त का झुकना बेकार होता है। क्योंकि खुदा के आगे झुकना वह मोतबर है जबकि आदमी खुदा की निशानी को देखकर झुक गया हो। जब खुदा खुद अपनी ताकतों के साथ जाहिर हो जाए उस वक्त झुकने की कोई कीमत नहीं।

أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ أَلْهَاتٌ أَبْنَاءُهُمُ الْأُولَئِينَ ۖ أَمْ لَهُمْ يُعْرِفُوا
رُسُلَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ۖ أَمْ يَقُولُونَ بِهِ حِجَابٌ ۖ بَلْ جَاءَهُمْ
بِأَحَقِّ وَأَكْثَرُهُمْ لِحَقٍّ كَرِهُونَ ۖ وَلَوْ أَتَبَعَ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمَوَاتُ
وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ ۖ بَلْ أَتَيْنَهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُعْرِضُونَ

फिर क्या उन्होंने इस कलाम पर गौर नहीं किया। या उनके पास ऐसी चीज आई है जो उनके अगले बाप दादा के पास नहीं आई। या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं। इस वजह से वे उसे नहीं मानते। या वे कहते हैं कि उसे जुनून है। बल्कि वह उन्हे पास हक (सत्य) लेकर आया है। और उनमें से अक्सर को हक बात बुरी लगती है। और अगर हक उनकी ख्वाहिशों के ताबेअ (अधीन) होता तो आसमान और जमीन और जो उनमें हैं सब तबाह हो जाते। बल्कि हमने उनके पास उनकी नसीहत भेजी है तो वे अपनी नसीहत से एराज (उपेक्षा) कर रहे हैं। (68-71)

हक वह है जो हकीक्ते वाक्ये के मुताबिक हो। मगर ख्वाहिशपरस्त इंसान यह चाहने लगता है कि हक को उसकी ख्वाहिश के ताबेअ (अधीन) कर दिया जाए। इस किस्म के लोगों का हाल यह होता है कि दाजी जब हक बात कहता है तो वे उससे नाराज हो जाते हैं। वे हक के ताबेअ नहीं बनना चाहते। इसलिए वे चाहने लगते हैं कि हक को उनके ताबेअ कर दिया जाए। अपनी इस नफिसयात की बिना पर वे हक की आवाज पर ध्यान नहीं देते। हक उन्हें अजनबी दिखाई देता है। वे हक के दाजी (आह्वानकर्ता) को उसकी अस्ल हैसियत में पहचान नहीं पाते। अपने को बरसरे हक जाहिर करने के लिए वे दाजी को मत्ऊन (लाछित) करने लगते हैं।

कायनात में कामिल दुरुस्तगी नजर आती है। इसके बरअक्स इंसानी दुनिया में हर तरफ फसाद और बिगाड़ है। इसकी वजह यह है कि कायनात का निजाम हक की बुनियाद पर चल रहा है। यानी वही होना जो होना चाहिए, वह न होना जो न होना चाहिए। अब अगर कायनात का निजाम भी इंसान की ख्वाहिशों पर चलने लगे तो जो फसाद इंसानी दुनिया में है वही फसाद बकिया कायनात में भी बरपा हो जाएगा।

नसीहत और तंकीद हमेशा आदमी के लिए सबसे ज्यादा तलख चीज होती है। बहुत ही कम वे खुदा के बंदे हैं जो नसीहत और तंकीद को खुले जेहन के साथ सुनें। बेशतर लोग इसे नज़अंज़ करके गुज़र जाते हैं।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَجَ رِبِّكَ خَيْرٌ وَهُوَ خَيْرُ الرَّزَاقِينَ ۖ وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنُكَيِّمُونَ ۖ

क्या तुम उनसे कोई माल मांग रहे हो तो तुम्हारे रब का माल तुम्हारे लिए बेहतर है। और वह बेहतर रोजी देने वाला है। और यकीनन तुम उन्हें एक सीधे रास्ते की तरफ बुलाते हो। और जो लोग आखिरत पर यकीन नहीं रखते वे रास्ते से हट गए हैं। (72-74)

पैगम्बर अपने मुखातबीन से कभी कोई माली गर्ज नहीं रखता। पैगम्बर और उसके मुखातबीन का तअल्लुक दाजी और मदऊ का तअल्लुक होता है। दाजी और मदऊ का तअल्लुक बेहद नाजुक तअल्लुक है। दाजी अगर एक तरफ लोगों को आखिरत का पैगाम दे और इसी के साथ वह उनसे दुनिया के मुतालबात भी छेड़े हुए हो तो उसकी दावत (आह्वान) लोगों की नजर में मजाक बनकर रह जाएगी। यही वजह है कि पैगम्बर किसी भी हाल में अपने मदऊ से कोई माददी मुतालबा नहीं करता, चाहे इसकी वजह से उसे एकतरफा तौर पर हर किस्म का नुकसान बर्दश्त करना पड़े।

दाजी का अस्ल मुआवजा खुद वह हक होता है जिसे लेकर वह खड़ा हुआ है। खुदा की दरयाफ्त उसका सबसे बड़ा सरमाया होती है। दाजियाना जिंदगी गुजारने के नतीजे में उसे जो रब्बानी तजर्बात होते हैं वे उसकी रूह को सबसे बड़ी गिज फ़ाहम करते हैं। आलातरीन मकसद के लिए सरगर्म रहने से जो लज्जत मिलती है वह उसकी तस्कीन का सबसे बड़ा सामान होती है।

हक की दावत को वही शख्स मानेगा जिसे आखिरत का खटका लगा हुआ हो। आखिरत का एहसास आदमी को संजीदा बनाता है और संजीदगी ही वह चीज है जो आदमी को मजबूर करती है कि वह हकीक्ते को माने। जो शख्स संजीदा न हो वह कभी हकीक्ते को तस्लीम नहीं करेगा, चाहे उसे दलाइल से कितना ही ज्यादा साबितशुदा बना दिया जाए।

وَلَوْ رَحِمْنَاهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِنْ ضُرٍّ لَلْكَفُّوا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۖ وَلَقَدْ
أَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكْبَرُوا إِلَيْهِمْ ۖ وَمَا يَتَضَرَّعُونَ ۖ حَتَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا
عَلَيْهِمْ بَابًا إِذَا عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْسَوُونَ ۖ

और अगर हम उन पर रहम करें और उन पर जो तकलीफ है वह दूर कर दें तब भी वे अपनी सरकशी में लगे रहेंगे बहके हुए। और हमने उन्हें अजाब में पकड़ा। लेकिन न वे अपने रब के आगे झुके और न उन्होंने आजिजी की। यहां तक कि जब हम

उन पर सज़ा अजब का दरवाज़ा खोल दो तो उस वक्त वे हैतज्जद रह जाएंगे।
(75-77)

मक्की दौर में जब कुरैश ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत (आह्वान) को रद्द कर दिया तो अल्लाह तआला ने चन्द साल के लिए मक्का वालों को कहत (अकाल) में मुब्लिला कर दिया। यह कहत इतना शदीद था कि बहुत से लोग मुर्दार खाने पर मजबूर हो गए। यह अल्लाह तआला की एक आम सुन्नत है कि जब कोई गिरोह सरकशी इख्तियार करता है और नसीहत कुबूल करने पर तैयार नहीं होता तो वह उस गिरोह पर तंबीही अजब भेजता है ताकि उनके दिल नर्म हों और वे हक बात की तरफ ध्यान दे सकें।

मगर तारीख का तजर्बा है कि इंसान न अच्छे हालात से सबक लेता और न बुरे हालात से। दोनों किस्म के हालात का मकसद यह होता है कि आदमी अल्लाह की तरफ रुजू करे। मगर इंसान यह करता है कि वह अच्छे हालात को अपनी तदबीर का नतीजा समझ लेता है और बुरे हालात को जमाने के उलट-फेर का। इस तरह वह दोनों ही किस्म के वाक्यात से सबक लेने से महरूम रहता है।

आदमी इसी तरह गफलत में पड़ा रहता है यहां तक कि खुदा का आखिरी फैसला आ जाता है। उस वक्त वह हैरान रह जाता है कि वह चीज जिसे उसने ग़ैर अहम समझकर नजरअंदाज कर दिया था वही इस दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे अहम हकीकत थी।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٧٥﴾
وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ يَخْتَارُ ﴿٧٦﴾ وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَ
لَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٧﴾

और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए। तुम बहुत कम शुक्र अदा करते हो। और वही है जिसने तुम्हें जमीन में फैलाया। और तुम उसी की तरफ जमा किए जाओगे। और वही है जो जिलाता है और मारता है और उसी के इख्तियार में है रात और दिन का बदलना। तो क्या तुम समझते नहीं। (78-80)

इंसान इस कायनात की वह ख़ास मख़्लूक है जिसे विशेष तौर पर सुनने और देखने और सोचने की आला सलाहियतें दी गई हैं। ये खुसूसी सलाहियतें यकीनन किसी खुसूसी मकसद के लिए हैं। वह मकसद यह है कि आदमी उन्हें हकीकत हयात की मअरफत (जीवन के यथार्थ को समझने) के लिए इस्तेमाल करे। वह अपने कान से उस सदाकत (सच्चाई) की आवाज़ को सुने जिसका एलान यहां किया जा रहा है। वह अपनी आंख से उन निशानियों को देखे जो उसके चारों तरफ बिखरी हुई हैं। वह अपनी सोचने की सलाहियत को इस्तेमाल करके उनकी गहराई

तक पहुंचे। यही कान और आंख और दिल का शुक्र है। जो लोग मौजूदा दुनिया में इस शुक्र का सुकूत न दें वे इन इनामात का इस्तह्क़ाक़ (अधिकार) हमेशा के लिए खो रहे हैं।

खुदा की जो सिफ़त (गुण) दुनिया में नुमायां हो रही हैं उनमें से एक यह है कि वह जिंदा को मुर्दा और मुर्दा को जिंदा करता है। यह खुदा बिलआखिर तमाम मरे हुए लोगों को दुबारा जमा करेगा। फिर जिस तरह वह रात को दिन बनाता है इसी तरह वह लोगों की निगाहों से गफलत का पर्दा हटा देगा। इसके बाद विभिन्न चीजों की हकीकत लोगों पर ठीक-ठीक स्पष्ट हो जाएगी।

بَلْ قَالُوا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿٧٨﴾ قَالُوا إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ﴿٧٩﴾ لَقَدْ وَعَدْنَا لَكُمُ الْوَعْدَ الْأَوَّلَ وَإِنَّا أَكْثَرُ عَلَىٰ الْوَعْدِ ﴿٨٠﴾

बल्कि उन्होंने वही बात कही जो अगलों ने कही थी। उन्होंने कहा कि क्या जब हम मर जाएंगे और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम दुबारा उठाए जाएंगे। इसका वादा हमें और इससे पहले हमारे बाप दादा को भी दिया गया। ये महज अगलों के अफसाने हैं। (81-83)

इंसान को अकल दी गई है। अकल के अंदर यह सलाहियत है कि वह मामलात की गहराई में दाखिल हो और असल हकीकत को दरयाफ्त करके उसे समझ सके। मगर बहुत कम ऐसा होता है कि इंसान हकीकत मअनों में अपनी अकल को इस्तेमाल करे। वह बस जाहिरी तअस्सुर (प्रभाव) के तहत एक राय कायम कर लेता है और उसे दोहराने लगता है। माजी (अतीत) के लोग भी ऐसा करते रहे और हाल के लोग भी यही कर रहे हैं।

मौत के बाद दुबारा उठाए जाने का शुऊरी या लफ्जी इंकार करने वाले बहुत कम होते हैं। ज्यादातर लोगों को इस अकीदे का अमली मुक़िद कहा जा सकता है। ये वे लोग हैं जो रस्मी तौर पर जिंदगी बाद मौत को मानते हुए अमलन ऐसी जिंदगी गुजारते हैं जैसे कि उन्हें इस पर यकीन न हो कि मरने के बाद वे दुबारा उठाए जाएंगे। और जिस तरह आज वे होश व हवास के साथ जिंदा हैं, उसी तरह दुबारा होश व हवास के साथ जिंदा होकर खुदा के सामने पेश होंगे।

قُلْ لِّمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيهَا إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٨٢﴾ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٨٣﴾ سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٤﴾ قُلْ مَنْ يَبْدِئُ مَکُونُ كُلِّ شَيْءٍ وَ

هُوَ يُحْيِيهِ وَلَا يُحْيِيهِ عَلَيْهِ ۖ إِنَّ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ سَيَقُولُونَ لِلّٰهِ قُلْ فَأَنَّى
تُسْحَرُونَ ۝

कहो कि जमीन और जो कोई इसमें है यह किसका है, अगर तुम जानते हो। वे कहेंगे कि अल्लाह का है। कहो कि फिर तुम सोचते नहीं। कहो कि कौन मालिक है सात आसमानों का और कौन मालिक है अर्श अजीम का। वे कहेंगे कि सब अल्लाह का है। कहो, फिर क्या तुम डरते नहीं। कहो कि कौन है जिसके हाथ में हर चीज का इस्तिथार है और वह पनाह देता है और उसके मुकाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता, अगर तुम जानते हो। वे कहेंगे कि यह अल्लाह के लिए है। कहो कि फिर कहां से तुम मसहूर (जादूग्रस्त) किए जाते हो। (84-89)

इन आयात में उस तजादे फ़िन्न (वैचारिक अन्तर्विशोध) का तस्विरा है जिसमें हर दौर के बेशतर लोग मुक्बिला रहे हैं। चाहे वे मुश्रिक हों या शैर मुश्रिक। बजाहिर खुदा को एक मानने वाले हों या कई खुदाओं को मानने वाले।

बेशतर लोगों का हाल यह है कि वे इस बात को मानते हैं कि जमीन व आसमान का ख़ालिक एक अल्लाह है। वही उसका मालिक है। वही उसे चला रहा है। तमाम बरतर इस्तिथारात उसी को हासिल हैं। मगर इस मानने का जो लाजिमी तक्काज है उसका कोई असर उनकी ज़िंदगियों में नहीं पाया जाता।

इस अजीम इक्लार का तक्काज है कि वही उनकी सोच बन जाए। खुदा का एहसास उनके अंदर ख़ौफ बनकर दाख़िल हो जाए। उनके अंदर यह माददा पैदा हो कि उनके सामने हक आए तो वे फ़ैरन उसका एतराफ कर लें। उनकी ज़िंदगी पूरी की पूरी उसी में ढल जाए। मगर यह सब कुछ नहीं होता। वे अगरचे अकीदे के तौर पर खुदा को मानते हैं मगर उनका अक्कीदए खुदा अलग रहता है और उनकी हक्कीकी ज़िंदगी अलग।

खुदा का तसव्वुर इंसान को मसहूर (जादूग्रस्त) नहीं करता। अलबत्ता दूसरी-दूसरी चीजें उसकी नजर में इतनी अहम बन जाती हैं जिनसे वह मसहूर होकर रह जाए। कैसा अजीब है इंसान का मामला!

بَلْ آتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَآتَيْنَهُمْ لَكْذِبُونَ ۝ مَا أَخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ
مِنْ إِلَهِ إِذْ أَذْهَبَ كُلَّ إِلَهِ مِمَّا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ
سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ۝ عَلِيمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعَلَّى عَمَّا
يُشْرِكُونَ ۝

बल्कि हम उनके पास हक लाए हैं और बेशक वे झूठे हैं। अल्लाह ने कोई बेटा नहीं बनाया और उसके साथ कोई और माबूद (पूज्य) नहीं। ऐसा होता तो हर माबूद अपनी मख़्लूक को लेकर अलग हो जाता। और एक दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह पाक है उससे जो वे बयान करते हैं। वह खुले और छुपे का जानने वाला है। वह बहुत ऊपर है उससे जिसे ये शरीक बताते हैं। (90-92)

इक्तेदार (सत्ता) की यह फ़ितरत है कि वह तक्सीम को गवारा नहीं करता। इंसानों में जब भी कई साहिबे इक्तेदार हों तो वे आपस में एक दूसरे को जेर करने या नीचा दिखाने की कोशिश में लगे रहते हैं। यहां तक कि जो कौमों मुख़लिफ़ देवताओं को मानती हैं उनकी मैथोलोजी में कसरत (अधिकता) से दिखाया गया है कि एक देवता और दूसरे देवता में लड़ाइयां जारी हैं।

कायनात में इस सूरतेहाल की मौजूदगी कि इसके एक हिस्से और इसके दूसरे हिस्से में कोई टकराव नहीं होता, यह इस बात का सुबूत है कि हर हिस्से का खुदा एक ही है। अगर हर हिस्से के अलग-अलग खुदा होते तो हर हिस्से का खुदा अपने हिस्से को लेकर अलग हो जाता और इसके नतीजे में कायनात के मुख़लिफ़ हिस्सों की मौजूदा हमआहंगी बाकी न रहती। मुख़लिफ़ खुदाओं की कशाकश (परस्पर टकराव) में कायनात का निजाम दरहम-बरहम हो जाता।

ऐसी हालत में तौहीद का नजरिया सरापा सच्चाई है और शिर्क का नजरिया सरापा झूठ।

قُلْ رَبِّ إِنَّا تَرَيْنِي مَائُودُونَ ۝ رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَإِنَّا
عَلَىٰ أَنْ تُرِيكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقَدِيرُونَ ۝

कहो कि ऐ मेरे रब, अगर तू मुझे वह दिखा दे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। तो ऐ मेरे रब मुझे जालिम लोगों में शामिल न कर। और बेशक हम कादिर हैं कि हम उनसे जो वादा कर रहे हैं वह तुम्हें दिखा दें। (93-95)

फैगम्बर की इस दुआ का तअल्लुक खुद फैगम्बर के दिल की कैफ़ियत से है न कि खुदा के अजाब से। फैगम्बर की यह दुआ बताती है कि मोमिन हर हाल में खुदा से डरने वाला इंसान होता है। खुदा का अजाब जब दूसरों के लिए आ रहा हो उस वक़्त भी मोमिन का दिल कांप उठता है। वह आजिजी के साथ खुदा को पुकारने लगता है। क्योंकि वह जानता है कि इंसान सिर्फ़ खुदा की इनायत से बच सकता है न कि अपने किसी अमल या अपनी किसी ताकत से।

फैगम्बर के मुकिरीन पर खुदा का फैसला कभी फैगम्बर की ज़िंदगी में आता है और कभी फैगम्बर की वफ़ात के बाद। आयत का आखिरी टुकड़ा बताता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुकिरीन पर खुदा का यह फैसला आपकी ज़िंदगी ही में आया। आपके दुश्मन आपकी ज़िंदगी ही में पामाल कर दिए गए।

إِذْ فَعَرَ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ السَّبِيلِ ثُمَّ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ۖ وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ
مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ۖ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِ ۝

तुम बुराई को उस तरीके से दूर करो जो बेहतर हो। हम खूब जानते हैं जो ये लोग कहते हैं। और कहो कि ऐ मेरे रब मैं पनाह मांगता हूँ शैतानों के वसवसों से। और ऐ मेरे रब मैं तुझसे पनाह मांगता हूँ कि वे मेरे पास आएँ। (96-98)

खुदा का दाजी (आह्वानकर्ता) जब लोगों को हक की तरफ बुलाता है तो अक्सर ऐसा होता है कि लोग उसके दुश्मन बन जाते हैं। वे उसके खिलाफ झूठे प्रोपेगंडे करते हैं। वे उसे अपने शर (कुकृत्यों) का निशाना बनाते हैं। उस वक़्त दाजी के अंदर भी जवाबी जेहन उभरता है। उसके दिल में यह ख्याल आता है कि जिन लोगों ने तुम्हारे साथ बुरा सुलूक किया है तुम भी उनके साथ बुरा सुलूक करो। अगर तुम खामोश रहे तो उनके हौसले बढ़ेंगे और वे मजीद मुखालिफ़ाना कार्रवाई करने के लिए दिलेर हो जाएंगे।

मगर इस किस्म के ख़ालात शैतान का वसवसा हैं। शैतान इस नाजुक मौके पर आदमी को बहकाता है ताकि उसे राह से बेराह कर दे। ऐसे मौके पर दाजी और मोमिन को चाहिए कि वह शैतानी बहकावों के मुकाबले में खुदा की पनाह मांगे। न कि शैतानी बहकावों को मान कर अपने मुखलिफ़ीन (विरोधियों) के खिलाफ इतिक्रमी कार्रवाइयाँ करने लगे।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ۖ لَعَلِّي أَعْمَلُ صَالِحًا
فِيمَا تَرَكْتُ كَلَّا ۚ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَائِلُهَا وَمِنْ وَرَائِهِمْ بَرْزَخٌ إِلَىٰ يَوْمِ
يُبْعَثُونَ ۖ فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ فَلَا أَنسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَلَا يَتَسَاءَلُونَ ۖ
فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۖ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۖ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۖ فَأُولَٰئِكَ
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ۖ تَتْلَفُحُهُمْ جُوهُهُمُ النَّارُ وَهُمْ
فِيهَا كَالْحُوتِ ۖ

यहां तक कि जब उनमें से किसी पर मौत आती है तो वह कहता है कि ऐ मेरे रब, मुझे वापस भेज दे। ताकि जिसे मैं छोड़ आया हूँ उसमें कुछ नेकी कमाऊँ। हरगिज नहीं, यह एक बात है कि वही वह कहता है। और उनके आगे एक पर्दा है उस दिन तक के लिए जबकि वे उठाए जाएंगे। फिर जब सूर फूँका जाएगा तो फिर उनके दर्मियान न कोई रिश्ता रहेगा और न कोई किसी को पूछेगा। पस जिनके पल्ले भारी होंगे वही

लोग कामयाब होंगे। और जिनके पल्ले हल्के होंगे तो यही लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, वे जहन्नम में हमेशा रहेंगे। उनके चेहरों को आग झुलस देगी और वे उसमें बदशक्ल हो रहे होंगे। (99-104)

मौत आते ही आदमी मौजूदा दुनिया से जुदा हो जाता है। इसके बाद उसके और मौजूदा दुनिया के दर्मियान एक ऐसी आड़ कायम हो जाती है कि वह कभी इधर वापस न हो सके।

आदमी जब मौत के बाद अगली दुनिया में दाखिल होता है तो अचानक उसकी आंख खुल जाती है। अब वह जान लेता है कि जिस आखिरत को वह नजरअंदाज किए हुए था वही दरअसल ज़िंदगी का सबसे बड़ा मसला था। दुनिया के सामान तो सिर्फ इसलिए थे कि उससे आखिरत की कमाई की जाए न यह कि बजाते खुद उन्हीं को अस्ल मक्सूद समझ लिया जाए। चुनाचे मौत के बाद वह बेइख़्तियार चाहेगा कि काश वह दुबारा दुनिया में लौटा दिया जाए। मगर ऐसा होना मुमकिन नहीं क्योंकि खुदा का कानून यह है कि किसी आदमी को सिर्फ एक बार मौका दिया जाए, दुबारा नहीं।

मौजूदा दुनिया में आदमी अपने साथियों और रिश्तेदारों पर भरोसा करता है। मगर कियामत में वह बिल्कुल तंहा होगा। वहां आदमी का जाती अमल उसके काम आएगा, इसके सिवा कोई चीज किसी के काम आने वाली नहीं।

الْمَرَكُنِ الَّتِي تُتْلَىٰ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۖ وَالْوَالِدَاتُ غَابَتْ عَنْكُمُ آسَافُهُنَّ
وَكُنَّ فَوَاقِلَ لَيْنَ رَبِّنَا أَخْرَجْنَا مِنْهَا قَانًا فَإِنَّا ظَالِمُونَ ۖ قَالَ أَوْفَوْهُنَا
وَلَا تَكَلِّمُونِ ۖ

क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं तो तुम उन्हें झुठलाते थे। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब हमारी बदबख़्ती ने हमें घेर लिया था और हम गुमराह लोग थे। ऐ हमारे रब हमें इससे निकाल ले, फिर अगर हम दुबारा ऐसा करें तो बेशक हम जालिम हैं। खुदा कहेगा कि दूर हो, इसी में पड़े रहो और मुझसे बात न करो। (105-108)

आखिरत के मनाजिर आंखों से देख लेने के बाद किसी को यह मौका नहीं दिया जाएगा कि वह दुबारा मौजूदा दुनिया में आकर रहे और सही अमल का सुबूत दे। क्योंकि दुनिया की ज़िंदगी का मक्सद इस्तेहान है, इस बात का इस्तेहान कि आदमी देखे बग़ैर झुकता है या नहीं। जब आखिरत का मुशाहिदा (अवलोकन) करा दिया जाए तो इसके बाद न झुकने की कोई कीमत है और न वापस भेजने का कोई इम्कान।

आदमी का इस्तेहान देखकर मानने में नहीं है बल्कि सोच कर मानने में है। तालिबे इल्म (छात्र) की जांच पर्चा आउट होने से पहले की जाती है। जब पर्चा आउट होकर अखबारों में

छप चुका हो इसके बाद किसी तालिबे इल्म की जांच करने का कोई सवाल नहीं।

إِنَّهٗ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْ عِبَادِي يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
الرَّحِيمِينَ ۝ فَاتَّخَذْتُمُوهُمْ سَخِرَاءَ حَتَّىٰ انْسَلَوْا ذِكْرِي ۖ وَكُنْتُمْ مِنْهُمْ
تَضَلَّحُونَ ۝ إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا ۖ إِنَّهُمْ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

मेरे बंदों में एक गिरोह था जो कहता था कि ऐ हमारे रब हम ईमान लाए, पस तू हमें बख्श दे और हम पर रहम फरमा और तू बेहतरीन रहम फरमाने वाला है। पस तुमने उन्हें मजाक बना लिया। यहां तक कि उनके पीछे तुमने हमारी याद भुला दी और तुम उन पर हंसते रहे। मैंने उन्हें आज उनके सब्र का बदला दिया कि वही हैं कामयाब होने वाले। (109-111)

दुनिया की ज़िंदगी में जबकि अभी आखिरत के हकाइक आंखों के सामने नहीं आए थे। उस वक्त खुदा के कुछ बंदों ने खुदा को उसके जलाल (प्रताप) व कमाल के साथ पहचाना। उनके सामने हक की दावत सिर्फ दलाइल की सतह पर आई। इसके बावजूद उन्होंने उस पर यकीन किया। वे उसके बारे में इस हद तक संजीदा हुए कि उसी को अपनी कामयाबी और नाकामी का मेयार बना लिया। एक अजनबी हक के साथ अपनी कामिल वाबस्तगी की उन्हें यह कीमत देनी पड़ी कि माहिल में वे मजक का मौजूद (विषय) बन गए। इसके बावजूद उन्होंने उससे अपनी वाबस्तगी को खत्म नहीं किया।

यह फिक्री इस्तकामत (आस्थागत दृढ़ता) ही सबसे बड़ा सब्र है और आखिरत का इनाम आदमी को इसी सब्र की कीमत में मिलता है। वही लोग दरअसल कामयाब हैं जो मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में इस सब्र का सुबूत दे सकें।

قُلْ كَمْ لَبِئْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ۝ قَالُوا لَيْسَ آيَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسَلِ
الْعَالِينَ ۝ قُلْ إِن لِّبَشَرٍ إِلَّا قَلِيلًا نَّوَاكُمُ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

इशाद होगा कि वर्षों के शुमार से तुम कितनी देर जमीन में रहे। वे कहेंगे हम एक दिन रहे या एक दिन से भी कम। तो गिनती वालों से पूछ लीजिए। इशाद होगा कि तुम थोड़ी ही मुद्दत रहे। काश तुम जानते होते। (112-114)

ऐश वही है जो अबदी (चिरस्थायी) हो। जो ऐश अबदी न हो वह जब खत्म होता है तो ऐसा मालूम होता है कि वह बस एक लम्हा था जो आया और गुजर गया।

दुनिया की ज़िंदगी में आदमी इस हकीकत को भूला रहता है। मगर आखिरत में यह

हकीकत उस पर आखिरी हद तक खुल जाएगी। उस वक्त वह जानेगा। मगर उस वक्त जानने का कोई फायदा नहीं।

दुनिया में आदमी के सामने हक आता है मगर वह अपने सुकून को खत्म करना नहीं चाहता इसलिए वह उसे कुबूल नहीं करता। वह मिलने वाले फायदे की खातिर मिले हुए फायदे को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता। यहां की इज्जत, यहां का आराम, यहां की मस्तेहत्तें उसे इतनी कीमती मालूम होती हैं कि उसकी समझ में नहीं आता कि वह किस तरह ऐसा करे कि चीज को नजरअंदाज करके अपने आपको बेचीज से वाबस्ता कर ले। हालांकि जब उम्र की मोहलत पूरी होगी तो सौ साल भी ऐसा मालूम होगा जैसा कि वह बस एक दिन था जो आया और खत्म हो गया।

أَلْحَسِبْتُمْ أَنْتُمْ آخِلَفْتُمْ عِبَادَنَا وَأَنْتُمْ الْيَتَامَا لَا تُرْجَعُونَ ۝ فَعَلَى اللَّهِ
الْمَلِكُ الْحَقُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ۝ وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا
آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ۝ وَقُلْ
رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ۝

पस क्या तुम यह ख्याल करते हो कि हमने तुम्हें बेमक्सद पैदा किया है और तुम हमारे पास नहीं लाए जाओगे। पस बहुत बरतर (उच्च) है अल्लाह, बादशाह हकीमी, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वह मालिक है अशें अजीम का। और जो शख्स अल्लाह के साथ किसी और माबूद को पुकारे, जिसके हक में उसके पास कोई दलील नहीं। तो उसका हिसाब उसके रब के पास है बेशक मुंकिरों को फलाह न होगी। और कहो कि ऐ मेरे रब, मुझे बख्श दे और मुझ पर रहम फरमा, तू बेहतरीन रहम फरमाने वाला है। (115-118)

इंसानों में दो किस्म के इंसान हैं। कोई इंसान बाउसूल ज़िंदगी गुजारता है और कोई बेउसूल। कोई अनदेखी सदाकत (सच्चाई) के लिए अपने आपको कुर्बान कर देता है और कोई सिर्फ दिखाई देने वाली चीजों में मशगूल रहता है। कोई हक की दावत को उसकी सारी अजनबियत के बावजूद कुबूल करता है। और कोई उसे नजरअंदाज कर देता है और उसका मजाक उड़ता है। कोई अपने आपको जुम से रोकता है, सिर्फ इसलिए कि खुदा ने उसे ऐसा करने से मना किया है। कोई मौका पाते ही दूसरों के लिए जालिम बन जाता है, क्योंकि उसका नमस (अंतःकरण) उससे ऐसा ही करने के लिए कह रहा है।

अगर इस दुनिया का कोई अंजाम न हो, अगर वह इसी तरह चलती रहे और इसी तरह विलआखिर उसका ख़ात्मा हो जाए तो इसका मतलब यह है कि यह एक बेमक्सद हंगामे के

सिवा और कुछ न थी। मगर कायनात की मअनवियत (सार्थकता) इस किस्म के वेमअना नज्रिये की तरदीद (खंडन) करती है। कायनात का आला निजाम इससे इंकार करता है कि उसका ख़ालिक एक ग़ैर संजीदा हस्ती हो।

कायनात अपने वसीअ निजाम (सार्वभौम व्यवस्था) के साथ जिस ख़ालिक का तआरुफ़ करा रही है वह एक ऐसा ख़ालिक है जो अपनी जात में आखिरी हद तक कामिल है। ऐसे ख़ालिक के बारे में नाकबिले कयास है कि वह दो मुख़लिफ़ किस्म के इंसानों का यकसां (समान) अंजाम होते हुए देखे और उसे गवारा कर ले। यह सरासर नामुमकिन है। यकीनन ऐसा होने वाला है कि मालिके कायनात एक तबके को बेकीमत कर दे जिस तरह उन्होंने हक़ (सत्य) को बेकीमत किया और दूसरे तबके की कद्दानी करे जिस तरह उन्होंने हक़ की कद्दानी की।

سُوْرَةُ الْاَنْزِلِ وَهُوَ رَبُّنَا يُسْمِعُ اللّٰهُ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ وَتَسْمِعُ الْاَنْزِلِ
سُوْرَةُ الْاَنْزِلِ وَفَرْضُهَا وَانْزِلْنَا فِيْهَا اٰيٰتٍ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ
الْاَنْزِلِ وَالْاَنْزِلِ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةً جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهَا
رَافَةٌ فِىْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَيْشَهِدُ
عَدَاِبَهُمْ اَفْعٰةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝ الْاَنْزِلِ لَا يَنْكَرُ الْاَنْزِلِ اَوْ مُشْرِكَةٌ
وَالْاَنْزِلِ لَا يَنْكَرُهَا الْاَنْزِلِ اَوْ مُشْرِكٌ وَحَرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝

आयतें-64

सूरह-24. अन-नूर

रुकूअ-9

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है। यह एक सूरह है जिसे हमने उतारा है और इसे हमने फर्ज किया है। और इसमें हमने साफ-साफ़ आयतें उतारी हैं। जानी (व्यभिचारी) औरत और जानी मर्द दोनों में से हर एक को सौ कौड़े मारो। और तुम्हें उन दोनों पर अल्लाह के दीन के मामले में रहम न आना चाहिए। अगर तुम अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हो। और चाहिए कि दोनों की सजा के वक़्त मुसलमानों का एक ग़िरोह मौजूद रहे। जानी निकाह न करे मगर जानिया (व्यभिचारिणी) के साथ या मुश्रिका (बहुदेववादी स्त्री) के साथ। और जानिया के साथ निकाह न करे मगर जानी या मुश्रिक (बहुदेववादी पुरुष)। और यह हराम कर दिया गया अहले ईमान पर। (1-3)

सूरह नूर ग़ज़वा (जंग) बनी अलमुस्तलक के बाद सन् 6 हि० में नाज़िल हुई। इस ग़ज़वे में एक मामूली वाक्या पेश आया। उसे शोषा बनाकर मदीना के मुनाफ़िक्रीन ने हजरत आइशा

और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बदनाम करना शुरू किया। इस सूरह में एक तरफ़ हजरत आइशा को पूरी तरह निर्दोष घोषित किया गया, और दूसरी तरफ़ वे ख़ास अहक़ाम दिए गए जो मआशिर (समाज) में इस किस्म की सूरतेहाल पेश आने के बाद नाफ़िज किए जाने चाहिए।

इस्लामी कानून में जिना (व्यभिचार) बेहद संगीन जुर्म है। ताहम इस्लामी कानून दो किस्म के इंसानों में फर्क करता है। एक वह जिसके लिए जाइज सिंमी तअल्लुक (यौन संबंध) के मैके मौजूद हों इसके बावजूद वह नाजाइज सिंमी तअल्लुक कायम करे। दूसरा वह जिसे अभी जाइज सिंमी तअल्लुक के मैके हासिल न हुए हों।

‘जानी और जानिया को सौ कौड़े मारो’ यह जिना क़ल्ल एहसान की सजा है। यानी उस जानी या जानिया की जो निकाह किए हुए न हों। इसके मुक़ाबले में जिना बाद एहसान (शदी-शुदा होने के बाद जिना करना) की सजा रज्म है। यानी मुजरिम को पत्थर मारकर हलाक कर देना। रज्म का हुक्म कुरआन (अल माइदा 43) में संक्षेप में और हदीस में सविस्तार मौजूद है।

अवाम के सामने सजा देना दरअसल सजा में इबरत (सीख) का पहलू शामिल करना है। इसका मक़सद यह है कि हाल (वर्तमान) के मुजरिम का अंजाम देखकर मुस्तक़बिल (भविष्य) के मुजरिम डर जाएं और इस किस्म का जुर्म करने से बाज रहें।

जानी और जानिया अगर सजा के बाद तौबा और इस्लाह (सुधार) कर लें तो वे दुबारा आम मुसलमानों की तरह हो जाएंगे। लेकिन अगर वे तौबा और इस्लाह न करें तो इसके बाद वे इस काबिल नहीं रहते कि इस्लामी मआशिर में वे रिश्ता और तअल्लुक के लिए कुबूल किए जा सकें

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ يَأْتُوْا بِاَرْبَعَةٍ شَهِدَآءٍ ۖ فَاَجْلِدُوْهُمْ
ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً ۚ وَلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهِادَةً اَبَدًا ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝
اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۖ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

और जो लोग पाक दामन औरतों पर ऐब लगाएं, फिर चार गवाह न ले आएँ उन्हें अस्सी कौड़े मारो और उनकी गवाही कभी कुबूल न करो। यही लोग नाफ़रमान हैं। लेकिन जो लोग इसके बाद तौबा करें और इस्लाह (सुधार) कर लें तो अल्लाह बख़्शने वाला महरवान है। (4-5)

जिना को शदीद जुर्म करार देने का फ़िक्री तक्ज़ यह है कि किसी ग़ैर जानी पर जिना का इल्जाम लगाना भी शदीद जुर्म हो। चुनांचे यह हुक्म दिया गया कि जो शख्स किसी पर जिना का इल्जाम लगाए और फिर उसे शर्इ कयदे के मुताबिक साबित न कर सके, उसे अस्सी कौड़े मार जाएं। मजीद यह कि ऐसे शख्स को हमेशा के लिए शहादत (गवाही) के अयोग्य करार दे दिया जाए। यहां तक कि अहनाफ के नजदीक तौबा के बाद भी उसकी गवाही

मामलात में कुबूल नहीं की जाएगी।

किसी शख्स पर झूठा इल्जाम लगाना उसे अज़्लाकी तौर पर कल्ल करने की कोशिश है। ऐसे जुर्म पर इस्लाम में सज़ा सजाएं मुकर्रर की गई हैं। और अगर कोई शख्स दुनिया में सजा पाने से बच जाए तब भी वह आखिरत की सजा से बहरहाल नहीं बच सकता। इल्ला यह कि वह तौबा करे और अल्लाह से माफी का तलबगार हो।

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ شُهَدَاءُ إِلَّا أَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الصَّادِقِينَ ۝ وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ وَيَذَرُ أَهْلَهَا عَذَابَ ۝ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعُ شَهَدَاتٍ بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ۝ وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَا ۝ إِنْ كَانَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ حَكِيمٌ ۝

और जो लोग अपनी वीवियों पर ऐब लगाएं और उनके पास उनके अपने सिवा और गवाह न हों तो ऐसे शख्स की गवाही की सूत यह है कि वह चार बार अल्लाह की कसम खाकर कहे कि बेशक वह सच्चा है। और पांचवीं बार यह कहे कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूठा हो। और औरत से सजा इस तरह टल जाएगी कि वह चार बार अल्लाह की कसम खाकर कहे कि यह शख्स झूठा है। और पांचवीं बार यह कहे कि मुझ पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर यह शख्स सच्चा हो। और अगर तुम लोगों पर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी रहमत न होती और यह कि अल्लाह तौबा कुबूल करने वाला हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (6-10)

इस सिलसिले में एक मसला यह है कि अगर कोई शख्स अपनी वीवी पर बदचलनी का इल्जाम लगाए और उसके पास खुद अपने बयान के सिवा कोई ऐनी गवाह मौजूद न हो तो उसका फैसला किस तरह होगा। जवाब यह है कि इस सूत में मामले का फैसला कसम के जरिए किया जाएगा जिसे शरई इस्तलाह (शब्दावली) में लिआन कहा जाता है।

अगर मर्द मुकर्ररह तरीके पर कसम खा ले और औरत खामोश रहे तो मर्द के बयान को मान कर औरत के ऊपर मजहूर सजा नाफ़िज़ कर दी जाएगी। और अगर ऐसा हो कि औरत भी मजहूर तरीके पर कसम खाकर कहे कि वह बेकसूर है तो फिर उसे सजा नहीं दी जाएगी। अलबत्ता इसके बाद दोनों के दर्मियान तफ़रीक (अलगाव) करा दी जाएगी।

मआशिरत (सामाजिकता) के मामलात बेहद पेचीदा होते हैं। इन मामलात में इंसान जब कानूनसाजी करता है तो वह एक पहलू की तरफ झुक कर दूसरे पहलू को छोड़ देता है। खुदा के कानून में तमाम पहलुओं की कामिल रियायत है। इस एतबार से खुदा का कानून इंसान के लिए बहुत बड़ी रहमत है।

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِإِلْفِكَ عُصْبَةً مِّنْكُمْ لَا تَحْسَبُوهُ شَأْنًا لَّكُم بَلٌّ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ نَأْيُكَ تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

जिन लोगों ने यह तूफान बरपा किया वह तुम्हारे अंदर ही की एक जमाअत है। तुम उसे अपने हक में बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे लिए बेहतर है। उनमें से हर आदमी के लिए वह है जितना उसने गुनाह कमाया। और जिसने उसमें सबसे बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए बड़ा अज़ाब है। (11)

दाअी (आह्वानकर्ता) अगर वाकअतन सच्चाई पर है तो उसके खिलाफ झूठे प्रोपेगंडे हमेशा उसके हक में मुफ़िद साबित होते हैं क्योंकि झूठे प्रोपेगंडों की हकीकत आखिरकार खुलकर रहती है। और जब हकीकत खुलती है तो एक तरफ दाअी का बरसरे हक होना और ज्यादा वाजेह हो जाता है। और जो लोग उसके बारे में दुविधा में थे वे इसके बाद यकीन के दर्जे तक पहुंच जाते हैं। वे अमलन देख लेते हैं कि हक के दाअी के मुखालिफ़ीन (विरोधियों) के पास झूठे इल्जाम और बेबुनियाद इत्तिहाम (आक्षेप) के सिवा और कुछ नहीं।

हज़रत आइशा सिदीका के खिलाफ इल्जाम में सबसे बड़ा हिस्सा लेने वाला मशहूर मुनाफ़ि़क अबुल्लाह बिन उबई था। उसके लिए कुरआन में सज़ा उख़रवी अज़ाब का एलान किया गया। मगर दुनिया में उसे कोई सजा नहीं दी गई, यहां तक कि वह अपनी तबई (स्वाभाविक) मौत मर गया। वाकये के बाद हज़रत उमर ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि इस शख्स को कल्ल कर दिया जाए। आपने फरमाया : 'ऐ उमर, क्या होगा जब लोग कहेंगे कि मुहम्मद अपने साथियों को कल्ल करते हैं।' इससे अंदाज़ा होता है कि बअज औक़त हिक्मत का तकाज़ा यह होता है कि बड़े-बड़े मुजरमीन को भी दुनिया में सजा न दी जाए बल्कि उनके मामले को आखिरत के ऊपर छोड़ दिया जाए।

لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ۝ لَوْلَا جَاءُوا عَلَيْهِمْ بِأَرْبَعَةِ شَهَدَاءَ ۚ فَإِذْ لَمْ يَأْتُوا بِالشَّهَدَاءِ فَأُولَٰئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَذِبُونَ ۝

जब तुम लोगों ने उसे सुना तो मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों ने एक दूसरे के बारे में नेक गुमान क्यों न किया और क्यों न कहा कि यह खुला हुआ बोहतान (आक्षेप) है। ये लोग इस पर चार गवाह क्यों न लाए। पस जब वे गवाह नहीं लाए तो अल्लाह के नजदीक वही झूठे हैं। (12-13)

एक मुसलमान पर दूसरे मुसलमान का यह हक है कि वह उसके बारे में हमेशा नेक गुमान करे। दूसरे के बारे में बदगुमानी करना खुद अपनी बदनपसी (कुप्रवृत्ति) का सुबूत है। और दूसरे के बारे में नेक गुमान करना अपनी नेकनपसी (सदप्रवृत्ति) का सुबूत।

सही तरीका यह है कि जब भी कोई शख्स किसी के बारे में बुरी खबर दे तो फौरन उससे सुबूत का मुतालबा किया जाए। जो शख्स सुने वह महज सुनकर उसे दोहराने न लगे बल्कि वह खबर देने वाले से कहे कि अगर तुम सच्चे हो तो शरीअत के मुताबिक गवाह ले आओ। अगर वह गवाह ले आए तो उसकी बात काबिले लिहाज हो सकती है। और अगर वह अपनी बात के हक में गवाह न लाए तो वह खुद सबसे बड़ा मुजरिम है। क्योंकि किसी शख्स को भी यह हक नहीं है कि वह बगैर सुबूत किसी के ऊपर ऐब लगाने लगे।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِي مَا أَفَضْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۖ إِذْ تَقُولُونَ بِالْأَنفِكَمُ وَتَقُولُونَ يَا فَوَهِهُم مَّا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ وَتَحْسَبُونَهُ هَيِّنًا ۖ وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ۖ وَلَوْلَا إِدْرَاسُ سَمْعَتُمْ أَوْ لَقْتُم مَّا يَكُونُ لَكُمْ أَنْ تَتَكَلَّمُوا بِهَذَا ۖ سُبْحَانَكَ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ ۖ يَعِظُكُمُ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا الْبَيْتَ ۚ أَلَمْ تَكُونُوا مِنْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَيُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۖ

और अगर तुम लोगों पर दुनिया और आखिरत में अल्लाह का फल और उसकी रहमत न होती तो जिन बातों में तुम पड़ गए थे उसके सबब तुम पर कोई बड़ी आफत आ जाती। जबकि तुम उसे अपनी जवानों से नकल कर रहे थे। और अपने मुंह से ऐसी बात कह रहे थे जिसका तुम्हें कोई इल्म न था। और तुम उसे एक मामूली बात समझ रहे थे। हालांकि वह अल्लाह के नजदीक बहुत भारी बात है। और जब तुमने उसे सुना तो यूँ क्यों न कहा कि हमें जेबा नहीं कि हम ऐसी बात मुंह से निकालें। मआजल्लाह, यह बहुत बड़ा बोहतान (आक्षेप) है। अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा न करना अगर तुम मोमिन हो। अल्लाह तुमसे साफ-साफ अहकाम बयान करता है। और अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (14-18)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हैसियत हक के दाजी (आह्वानकर्ता) की थी। हक के दाजी का मामला बेहद नाजुक मामला होता है। किरदार की एक गलती उसके पूरे मिशन को ढा देने के लिए काफी होती है। ऐसी हालत में जिन लोगों ने यह किया कि एक इस्लामी ख़ातून के बारे में एक बेबुनियाद बात सुनकर उसे इधर-उधर बयान करने लगे, उन्होंने सख्त ग़ैर जिम्मेदारी का सुबूत दिया। अगर अल्लाह तआला की खुसूसी मदद से उस इल्जाम की बरकत तरदीद न हो गई होती तो यह ग़लती इस्लाम को नाकबिले तलाफी नुकसान पहुंचाने का सबब बन जाती। इसके नतीजे में पूरा इस्लामी मआशिरा बदगुमानियों का शिकार हो जाता। मुसलमान दो गिरोहों में बटकर आपस में लड़ने लगते। जिस गिरोह के लिए खुदा का मंसूबा यह था कि उसके जरिए से शिर्क का आलमी ग़लबा ख़त्म किया जाए वे आपस की जंग में खुद अपने आपको ख़त्म कर लेता।

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۖ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ رَؤُوفٌ رَحِيمٌ ۖ

बेशक जो लोग यह चाहते हैं कि मुसलमानों में बेहयाई का चर्चा हो उनके लिए दुनिया और आखिरत में दर्दनाक सजा है। और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। और अगर तुम पर अल्लाह का फल और उसकी रहमत न होती, और यह कि अल्लाह नर्मी करने वाला रहमत करने वाला है। (19-20)

इस आयत में 'फाहिशा' की इशाअत (प्रसार) से मुराद उसी चीज की इशाअत है जिसे ऊपर आयत नम्बर 11 में इफ्क कहा गया है। यानी किसी के खिलाफ बेबुनियाद इल्जाम वजअ करना और उसे लोगों के अंदर फैलाना।

बात कहने के दो तरीके हैं। एक यह कि आदमी सिर्फ वह बात अपने मुंह से निकाले जिसके हक में उसके पास फ़िलवाकअ कोई मजबूत दलील हो, जो शर्ई तौर पर साबित की जा सके। दूसरा तरीका यह है कि किसी हक्की बुनियाद के बगैर खुद अपने जेहन से बात गढ़ना और उसे लोगों से बयान करना। पहला तरीका जाइज तरीका है। और दूसरा तरीका सरासर नज़ाइज तरीका।

आम तौर पर ऐसा होता है कि अपने मुख़ालिफ (विरोधी) के बारे में कोई बात हो तो आदमी उसकी ज्यादा तहकीक की जरूरत नहीं समझता। वह बगैर बहस उसे मान लेता है और दूसरों से उसे बयान करना शुरू कर देता है। यह न सिर्फ़ ग़ैर जिम्मेदाराना फ़ेअल (कृत्य) है बल्कि वह बहुत बड़ा जुर्म है। वह दुनिया में भी काबिले सजा है और आखिरत में भी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ مَا كُنَّا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ①

ऐ ईमान वाले, तुम शैतान के कदमों पर न चलो। और जो शस्त्र शैतान के कदमों पर चलेगा तो वह उसे बेहयाई और बदी ही का काम करने को कहेगा। और अगर तुम पर अल्लाह का फज़ल और उसकी रहमत न होती तो तुम में से कोई शस्त्र पाक न हो सकता। लेकिन अल्लाह ही जिसे चाहता है पाक कर देता है। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (21)

शैतान के कदमों पर चलना यह है कि आदमी शैतानी वसवसों की पैरवी करने लगे। एक बेबुनियाद बात पर जब किसी के अंदर बदगुमानी के जज्बात पैदा होते हैं तो यह एक शैतानी वसवसा होता है। अपने मुखलिफ के बारे में जब आदमी के अंदर मंफ़ी (नकारात्मक) ख्यालात उभरते हैं तो यह भी दरअस्तल शैतान होता है जो उसके दिल में रेंगता है। ऐसे जज्बात और ख्यालात जब किसी के अंदर पैदा हों तो उसे चाहिए कि वह अंदर ही अंदर उन्हें कुचल दे, न यह कि वह उनकी पैरवी करने लगे। ऐसे एहसासात की पैरवी करना बराहिरास्त शैतान की पैरवी करना है।

दूसरों के खिलाफ तूफ़ान उठाना एक ऐसा अमल है जो तवाजोअ (शालीनता) के खिलाफ है। आम तौर पर ऐसा होता है कि आदमी अपने बारे में जरूरत से ज्यादा खुशगुमान होता है। और दूसरे के बारे में जरूरत से ज्यादा बदगुमान। ये दोनों ही बातें ऐसी हैं जो ईमान के साथ मुताबिकत नहीं रखतीं। अगर आदमी के अंदर ईमानी तवाजोअ पैदा हो जाए तो वह अपने एहतिसाब (जांच) में इतना ज्यादा मशगूल होगा कि उसे फुरसत ही न होगी कि वह दूसरे के एहतिसाब का झूठा झंडा उठाए।

وَلَا يَأْتِلْ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولَى الْقُرْبَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ ② وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ③

और तुम में से जो लोग फज़ल वाले और कुशत (सामर्थ्य) वाले हैं वे इस बात की कसम न खाएं कि वे अपने रिश्तेदारों और मिरकीनों और खुदा की राह में हिजरत करने वालों को न देंगे। और चाहिए कि वे माफ कर दें और दरगुजर करें।

क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें माफ करे। और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (22)

हजरत आइशा के खिलाफ तूफ़ान उठाने वालों में एक साहब मिसतह बिन उसासा थे। वह एक मुस्लिस (गरीब) मुहाजिर थे और हजरत अबूबक्र के दूर के रिश्तेदार थे। हजरत अबूबक्र इआनत के तौर पर उन्हें कुछ रकम दिया करते थे। हजरत आइशा अबूबक्र की साहबजादी थीं। कुदरती तौर पर हजरत अबूबक्र को मिसतह बिन उसासा के अमल से तकलीफ हुई। आपने कसम खा ली कि वह आइदा मिसतह बिन उसासा की कोई मदद न करेंगे।

इस्लाम में मोहताजों की मदद उनकी मोहताजी की बुनियाद पर होती है न कि किसी और बुनियाद पर। चुनांचे कुरआन में यह हुक्म उतरा कि तुम में से जो लोग साहिबे माल हैं वे जाती शिकायत की बिना पर बेमाल लोगों की इमदाद बंद न करें। क्या तुम नहीं चाहते कि खुदा तुम्हें माफ कर दे। अगर तुम अपने लिए खुदा से माफ़ी के उम्मीदवार हो तो तुम्हें भी दूसरों के बारे में माफ़ी का तरीका इख्तियार करना चाहिए। यह आयत सुनकर हजरत अबूबक्र ने कहा : 'हां खुदा की कसम हम चाहते हैं ऐ हमारे खब कि तू हमें माफ कर दे।' और दुबारा मिसतह की इमदाद जारी कर दी।

मोमिन की नजर में सबसे ज्यादा अहमियत खुदा के हुक्म की होती है। खुदा का हुक्म सामने आते ही वह फौरन झुक जाता है, चाहे खुदा का हुक्म उसकी ख्वाहिश के सरासर खिलाफ क्यों न हो।

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْفَاضِلَاتِ لُعُنُوا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ④ يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنُهُمْ وَأَيْدِيهِمْ وَأَنْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑤ يَوْمَئِذٍ يُؤْفِكُهُمُ اللَّهُ دِينَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ⑥

बेशक जो लोग पाक दामन, बेख़बर, ईमान वाली औरतों पर तोहमत लगाते हैं, उन पर दुनिया और आखिरत में लानत की गई। और उनके लिए बड़ा अजाब है। उस दिन जबकि उनकी जवानें उनके खिलाफ गवाही देंगी और उनके हाथ और उनके पांव भी उन कामों की जो कि ये लोग करते थे। उस दिन अल्लाह उन्हें वाजिबी बदला पूरा-पूरा देगा। और वे जान लेंगे कि अल्लाह ही हक है, खोलने वाला है। (23-25)

इंसान अपनी जवान से दूसरों के खिलाफ बुरे अल्फ़ाज निकालता है। मगर वह नहीं जानता कि उसकी जवान से निकले हुए अल्फ़ाज दूसरों तक पहुंचने से पहले खुदा तक पहुंच रहे हैं। आदमी अपने हाथ और अपने पांव को दूसरों पर जुल्म करने के लिए इस्तेमाल करता

है। मगर वह इससे बेखबर होता है कि कियामत जब आएगी तो उसके हाथ और पांव उसके हाथ और पांव न रहेंगे बल्कि वह खुदा के गवाह बन जाएंगे।

यही बेखबरी तमाम बुराइयों की असल जड़ है। अगर आदमी को इस हकीकत के हाल का वाकई एहसास हो कि वह ऐसी दुनिया में है जहां वह हर आन खुदा की निगाह में है, जहां उसका हर अमल खुदाई निजाम के तहत रिकॉर्ड हो रहा है तो उसकी जिंदगी बिल्कुल बदल जाए। वह हर लफ्ज तौल कर अपनी जवान से निकाले। वह अपने हाथ और पांव की ताकत को इतिहाई एहतियात के साथ इस्तेमाल करे।

الْحَيِّثُ لِلْحَيِّثِينَ وَالْحَيِّثُونَ لِلْحَيِّثِ وَالْظَّالِمُ لِلْظَّالِمِينَ وَالْظَّالِمُونَ لِلْظَّالِمِ أُولَئِكَ يُبْرَأُونَ مِنْهُمْ مَعْفَرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ

ख़बीसात (गंदी बातें) ख़बीसों के लिए हैं और ख़बीस (गंदे लोग) ख़बीसात के लिए हैं। और तथ्यवात (अच्छी बातें) तथ्यबों के लिए हैं और तथ्यब (अच्छे लोग) तथ्यवात के लिए। वे लोग बरी हैं उन बातों से जो ये कहते हैं। उनके लिए बख़्शिश है और इना की भी है। (26)

ख़बीसात के मुराद ख़बीस कलिमात (बुरी बातें) हैं और इसी तरह तथ्यवात से मुराद तथ्यब कलिमात (अच्छी बातें)। मतलब यह है कि महज किसी के बुरा कहने से कोई शख्स बुरा नहीं हो जाता। आदमी खुद जैसा हो वैसी ही बात उसके ऊपर चस्पा होती है। बुरे लोग अगर अच्छे लोगों के बारे में बुरी बात कहें तो ऐसी बात आखिरकार खुद कहने वाले पर पड़ती है और अच्छे लोग उससे पूरी तरह बरीउज्जिम्मा हो जाते हैं।

जो लोग अपनी जात में अच्छे हों वे दुनिया में भी झूठे इल्जामात से बरी होकर रहते हैं। और आखिरत में तो उनका बरी होना बिल्कुल यकीनी है। आखिरत में उन्हें मज्द इजाफे के साथ खुदा के इनामात मिलेंगे। क्योंकि उनके खिलाफ नाहक बातें दरअसल इस बात की कीमत थीं कि उन्होंने अपने आपको नाहक से काटा और अपने आपको पूरी तरह हक के साथ वाबस्ता किया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَتُسَلِّمُوا عَلَى أَهْلِهَا ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۝ وَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا حَتَّى يُؤْذَنَ لَكُمْ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ رَجِعُوا فَارْجِعُوا هُوَ أَزْكَى لَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ۝ كَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ

مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ۝

ऐ ईमान वाले तुम अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में दाखिल न हो जब तक इजाजत हासिल न कर लो और घर वालों को सलाम न कर लो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है। ताकि तुम याद रखो। फिर अगर वहां किसी को न पाओ तो उनमें दाखिल न हो जब तक तुम्हें इजाजत न दे दी जाए। और अगर तुमसे कहा जाए कि लौट जाओ तो तुम लौट जाओ। यह तुम्हारे लिए बेहतर है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। तुम पर इसमें कुछ गुनाह नहीं कि तुम उन घरों में दाखिल हो जिनमें कोई न रहता हो। उनमें तुम्हारे फायदे की कोई चीज हो। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम जाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो। (27-29)

इज्तिमाई (सामूहिक) जिंदगी में अक्सर मुलाक़ात की जरूरत पेश आती है। अब एक तरीका यह है कि आदमी बिला इत्तला किसी के यहां पहुंचे और अचानक उसके मकान के अंदर दाखिल हो जाए। यह तरीका दोनों ही के लिए तकलीफ का बाइस है। इसलिए पेशगी इजाजत को मुलाक़ात के आदाब में शामिल किया गया।

अगर मुमकिन हो तो बेहतर तरीका यह है कि अपने घर से रवाना होने से पहले साहिबे मुलाक़ात से ख़ता कयम किया जाए और उससे पेशगी तौर पर मुलाक़ात का वक्त मुफ़र्र कर लिया जाए। और फिर जब आदमी उसके मकान पर पहुंचे तो अंदर दाखिल होने से पहले इसकी बाक़यदा इजाजत ले। तमझुनी (शक्तिगत) हालात के लिहाज से इस इजाजत के मुख़लिफ़ तरीके हो सकते हैं। ताहम हर तरीके में इस्लामी शाइस्तगी (शालीनता) की शर्त मौजूद रहना जरूरी है।

इस्लाम इज्तिमाई जिंदगी के तमाम मामलात को आलाजर्मी (उच्च-आचरण) की बुनियाद पर कयम करना चाहता है। यही आलाजर्मी मुलाक़ात के मामले में भी मल्बूब है। अगर आप किसी से मिलने के लिए उसके घर जाएं, और साहिबेख़ाना किसी वजह से उस वक्त मुलाक़ात से मअजरत करे तो आपको खुशदिली के साथ वापस आ जाना चाहिए। ताहम वह इज्तिमाई मक़मात इस हुक़म के मुस्तसना (अपवाद) हैं जहां उसूलन लोगों के लिए दाखिले की आम इजाजत होती है।

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ غُضُؤٌ مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا أَرْوَاحَهُمْ ذَلِكُمْ أَزْكَى لَهُمْ إِنْ اللَّهُ خَيْرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ۝

मोमिन मदों से कहो वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाजत करें। यह उनके लिए पाकीजा है। केशक अल्लाह वाख़बर है उससे जो वे करते हैं। (30)

औरत और मर्द घर में और मआशरे में किस तरह रहें, इस सिलसिले में यहां दो उसूली हिदायतें दी गई हैं। एक है सत्र को ढांकना। और दूसरे निगाह को नीची रखना।

मर्द के जिस्म का वह हिस्सा जो उसे हर हाल में छुपाए रखना है वह नाफ से लेकर घुटने तक है। यह सत्र है और उसे अपनी बीवी के सिवा किसी और के सामने खोलना जाइज नहीं। इल्ला यह कि इस नौइयत की कोई जरूरत पेश आ जाए जबकि हराम भी हलाल हो जाता है। मसलन मेडिकल जांच के लिए।

दूसरी जरूरी चीज यह है कि जब मर्द और औरत का सामना हो तो मर्दों को चाहिए कि वे अपनी निगाहें नीची रखें। मर्द और औरत की मुलाकात इस तरह बेतकल्लुफ अंदाज में नहीं होनी चाहिए जिस तरह मर्द और मर्द एक दूसरे से मिलते हैं। मर्द और औरत की मुलाकात में मर्द की निगाहें नीची रहनी चाहिए। अगर इत्फाकन मर्द की निगाह किसी अजनबी औरत पर पड़ जाए तो वह फौरन अपनी नजर उससे हटा ले। वह जानबूझकर दूसरी बार उसकी तरफ न देखे।

निगाहें नीची रखने और शर्मगाहों की हिफाजत करने का जो हुक्म मर्दों के लिए है वही हुक्म औरतों के लिए भी है, जैसा कि अगली आयत (31) से वाजेह है।

وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلَا يَضْرِبْنَ بِمَخْرُجِهِنَّ عَلَى خِصْيِهِنَّ وَلَا بِيَدَيْنِ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنَى إِخْوَانِهِنَّ أَوْ نِسَائِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التَّابِعِينَ غَيْرِ أُولَى الْأَرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلَ الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَى عَوْرَتِ النِّسَاءِ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعًا إِنَّهُ السَّمُوعُ السَّمِيعُ ۝

और मोमिन औरतों से कहो कि वे अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करें। और अपनी जीनत (बनाव-सिंगार) को जहिर न करें। मगर जो उसमें से जाहिर हो जाए और अपने दुपट्टे अपने सीनों पर डाले रहें। और अपनी जीनत को जाहिर न करें मगर अपने शौहरों पर या अपने बाप पर या अपने शौहर के बाप पर या अपने बेटों पर या अपने शौहर के बेटों पर या अपने भाइयों पर या अपने भाइयों के बेटों पर या अपनी बहनों के बेटों पर या अपनी औरतों पर या अपने ममलूक (गुलाम)

पर या जेहस्त (अधीन) मर्दों पर जो कुछ गरज नहीं रखते। या ऐसे लड़कों पर जो औरतों के पर्दे की बातों से अभी नावाकिफ हों। वे अपने पांव जोर से न मारें कि उनकी छुपी जीनत मालूम हो जाए। और ऐ ईमान वाले, तुम सब मिलकर अल्लाह की तरफ तौबा करो ताकि तुम फलाह पाओ। (31)

ख्यातीन के सिलसिले में इस्लाम के अहकाम दो पहलुओं से तअल्लुक रखते हैं। एक वह जिसका उन्वान (विषय) सत्र है और दूसरा वह जिसका उन्वान हिजाब है। सत्र का तअल्लुक जिस्म के पर्दे से है। यानी औरत चाहे घर के अंदर हो या घर के बाहर, उसे अपने बदन का कौन सा हिस्सा, किस के सामने और किन हालात में खुला रखना जाइज है और कब खुला रखना जाइज नहीं।

हिजाब का तअल्लुक बाहर के पर्दे से है। यानी इस मसले से कि शरीअत ने औरत को किन हालात में घर से बाहर निकलने और सफर करने की इजाजत दी है। इन आयात में बुनियादी तौर पर सत्र का मसला बयान हुआ है। हिजाब का मसला आगे सूरह अहजाब में है।

ऐ मोमिनो! तुम सब अल्लाह की तरफ रुजूअ करो' ये अल्फाज बताते हैं कि अहकामे शरीअत की तामील के सिलसिले में सबसे अहम चीज यह है कि दिलों के अंदर उसकी आमादगी हो। सहाबा और सहाबियात इस मामले में आखिरी मेयारी दर्जे पर थे। हजरत आइशा कहती हैं कि खुदा की कसम मैंने खुदा की किताब की तस्दीक और उसके अहकाम पर ईमान के मामले में अंसार की औरतों से बेहतर किसी को नहीं पाया। जब सूरह नूर की आयत 'वल यजरिब-न बिखुमुरिहिन-न अला जुयूबिहिन-न' उतरी तो उनके मर्द अपने घरों की तरफ लौटे। उन्होंने अपनी औरतों और लड़कियों और बहनों को वह हुक्म सुनाया जो खुदा ने उनके लिए उतारा था। पस अंसार की औरतों में से हर औरत फौरन उठ खड़ी हुई। किसी ने अपनी कमरपट्टी खोल कर और किसी ने अपनी चादर लेकर उसका दुपट्टा बनाया और उसे ओढ़ लिया। अगले दिन सुबह की नमाज उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे पढ़ी तो दुपट्टे की वजह से ऐसा मालूम होता था गोया उनके सिरों पर कौवे हों। (तफसीर इब्ने कसीर)

وَأَنكحُوا الْأَيَّامِيَّ مِنَكُمْ وَالطَّالِحِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَائِكُمْ إِنْ يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝ وَلِيَسْتَعْفِفَ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّى يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكُلْتَبُوهُمْ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۚ وَآتُوهُمْ مِّنْ مَّالِ اللَّهِ الَّذِي

اَتَاكُمْ وَلَا تَكْرَهُوا فَاَتَيْتَكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ لِنَا اَرَدَنَّا تَحْصُنَا وَنَحْنُ نَحْفِظُكُمْ عَرَضَ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَمَنْ يَكْرِهْهُمْ فَاِنَّ اللَّهَ مِنْ بَعْدِ الْكَرَاهِيَةِ غَفُورٌ رَحِيمٌ وَلَقَدْ اَنْزَلْنَا
إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُبِينَاتٍ وَمَثَلًا لِّلَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝

और तुम में जो बेनिकाह हों उनका निकाह कर दो। और तुम्हारे गुलामों और दासियों में से जो निकाह के लायक हों उनका भी। अगर वे गरीब होंगे तो अल्लाह उन्हें अपने फल से गनी कर देगा। और अल्लाह कुशत (सामर्थ्य) वाला, जानने वाला है। और जो निकाह का मौका न पाएँ उन्हें चाहिए कि वे जल्द करें यहां तक कि अल्लाह अपने फल से उन्हें गनी कर दे। और तुम्हारे ममलूकों (गुलामों) में से जो मुकातब (लिखित) होने के तालिब हों तो उन्हें मुकातब बना लो अगर तुम उनमें सलाहियत (क्षमता) पाओ। और उन्हें उस माल में से दो जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है। और अपने दासियों को पेशे पर मजबूर न करो जबकि वे पाक दामन रहना चाहती हों, महज इसलिए कि दुनियावी जिंदगी का कुछ फायदा तुम्हें हासिल हो जाए। और जो शख्स उन्हें मजबूर करेगा तो अल्लाह इस जन्न के बाद बख्शने वाला महरबान है। और बेशक हमने तुम्हारी तरफ रोशन आयतें उतारी हैं और उन लोगों की मिसालें भी जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं और डरने वालों के लिए नसीहत भी। (32-34)

इस्लाम मर्द और औरत के लिए शादी-शुदा जिंदगी पसंद करता है। किसी भी उम्र की वजह से निकाह से रुकना इस्लाम में दुरुस्त नहीं। कुछ लोग किसी जाती सबब से ग़ैर शादी शुदा रह जाएं तो उस वक़्त इस्लाम पूरे मुआशिरों में यह रूढ़ि देखना चाहता है कि तमाम लोग उसे एक मुश्तरक (साझा) मसला समझें और उस वक़्त तक मुतमइन न हों जब तक वे इस मसले को शर्इ तरीके पर हल न कर लें।

किताब या मुकातिबत के लफ्जी मअना हैं लिखना। इससे मुराद वह तहरीर है जिसमें कोई दासी या गुलाम अपने आका से यह अहद करे कि मैं इतनी मुद्दत में इतना माल कमाकर तुझे दे दूंगा। और इसके बाद से मैं आजाद हूंगा।

इस्लाम जिस जमाने में आया उस वक़्त अरब में और सारी दुनिया में गुलाम बनाने का रिवाज था। इस्लाम ने निहायत मुनज्जम तौर पर उसे ख़त्म करना शुरू किया। उसी में से एक तरीका वह था जिसे मुकातिबत कहा जाता है। ताहम इस्लाम ने 'गर्दन छुड़ाने' की यह मुहिम अपने आम उसूल के मुताबिक तदरीज (क्रम) के तहत चलाई। मुख़लाफ़ तरीकों से गुलामों और दासियों को रिहा किया जाता रहा। यहां तक कि ख़िलाफ़त राशिदा के आखिरी दौर तक इस इदारे का तकरीबन ख़ात्मा हो गया।

क़दीम जमाने में कुछ लोग अपनी दासियों से क़स्ब (कमाई) कराते थे। मदीना के

मुनाफ़िक अब्दुल्लाह बिन उबई के पास कई दासियां थीं जिनसे बदकारी कराकर वह रक़म हासिल करता था। उनमें से एक दासी ने इस्लाम कुबूल कर लिया और क़स्ब से बाज़ आना चाहा तो अब्दुल्लाह बिन उबई ने उस पर ज़ब्र करना शुरू किया। बिलआख़िर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से यह दासी अब्दुल्लाह बिन उबई के कब्जे से रिहा कराई गई।

اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ مِثْلُ نُورِهِ كَمِثْلِ شَوْكَةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ الْيَصْبَحُ فِي
نُجَاةٍ الرُّجَاةِ كَالْحَيَاةِ كَالْحَيَاةِ كَالْحَيَاةِ كَالْحَيَاةِ كَالْحَيَاةِ كَالْحَيَاةِ
شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ نُورٌ عَلَى نُورٍ
يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمٌ ۝

अल्लाह आसमानों और जमीन की रोशनी है। उसकी रोशनी की मिसाल ऐसी है जैसी एक ताक उसमें एक चिराग़ है। चिराग़ एक शीशे के अंदर है। शीशा ऐसा है जैसे एक चमकदार तारा। वह जैतून के एक ऐसे मुबारक दरख़्त के तेल से रोशन किया जाता है जो न पूर्वी है और न पश्चिमी। उसका तेल ऐसा है गोया आग के छुए बग़ैर ही खुद-ब-खुद जल उठेगा। अल्लाह अपनी रोशनी की राह दिखाता है जिसे चाहता है। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है। और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (35)

यह एक मुश्क़क़ तमसील (संयुक्त उपमा) है। इस आयत में रोशनी से मुराद अल्लाह तआला की हिदायत है। ताक से मुराद इंसान का दिल है और चिराग़ से मुराद ईमान की इस्तेदाद (समर्थता) है। शीशा और तेल इसी इस्तेदाद की मजीद (अतिरिक्त) खुसूसियत को बता रहे हैं। शीशा इस बात की ताबीर है कि यह इस्तेदाद कब्जे इंसानी में इस तरह रखी गई है कि वह ख़रजी असरात से पूरी तरह महफूज़ रहे। और शफ़फ़ तेल इस बात की ताबीर है कि उसकी यह इस्तेदाद इतनी क़वी (सशक्त) है कि वह बेताब हो रही है कि कब उसके सामने हक आए और वह उसे बिला ताख़ीर कुबूल कर ले।

यह एक हक्कीक़त है कि इस कायनात में रोशनी का वाहिद माख़ज़ (स्रोत) सिर्फ़ एक अल्लाह की जात है। उसी से हर एक को रोशनी और हिदायत मिलती है। मजीद यह कि अल्लाह तआला ने इंसान को इस तरह पैदा किया है कि उसके अंदर फितरी तौर पर हक की तलब मौजूद है। यह तलब बेहद ताक़तवर है। और अगर उसे जाया न किया जाए तो वह हर आन अपना जवाब पाने के लिए बेताब रहती है। बएतबार फितरत इंसान की इस्तेदाद

कुबूल इतनी बड़ी हुई है गोया वह कोई पेट्रोल है कि आग अगर उसके करीब भी लाई जाए तो वह फौरन भड़क उठे।

मोमिन वह हकीमी इंसान है जिसने अपनी फितरी इस्तेदाद (समर्थता) को जाया नहीं किया। चुनांचे हक की दावत सामने आते ही उसकी इस्तेदाद जाग उठी। नूरे फितरत के साथ नूरे हिदायत ने मिलकर उसके पूरे वजूद को रोशन कर दिया।

فِي بُيُوتِ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ لِيُذَكِّرُوا بِالْقَدِيرِ وَبِالْغَدُوِّ وَالْأَصَلِّ
رِجَالٌ لَا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَإِقَامِ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ
يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ لِيُخْزِينَ أَعْمَالَهُمْ اللَّهُ أَحْسَنُ مَا عَمِلُوا
وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَاللَّهُ يُزِقُّ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

ऐसे घरों में जिनके बारे में अल्लाह ने हुक्म दिया है कि वे बुलन्द किए जाएं और उनमें उसके नाम का जिक्र किया जाए उनमें सुबह व शाम अल्लाह की याद करते हैं वे लोग जिन्हें तिजारात और खरीद व फरोख्त अल्लाह की याद से ग्राफिल नहीं करती और न नमाज की इक़मत से और ज़कात की अदायगी से। वे उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आंखें उलट जाएंगी। कि अल्लाह उन्हें उनके अमल का बेहतरीन बदला दे और उन्हें मज्द (अतिरिक्त) अपने फल से नवाजे। और अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है। (36-38)

इंसानी जिस्म में जो मकाम दिल का है वही मकाम इंसानी बस्ती में मस्जिद का है। इंसान का दिल ईमान से आबाद होता है और मस्जिदें अल्लाह की इबादत से आबाद होती हैं। मस्जिदें खुदा का घर हैं। वे इसीलिए बनाई जाती हैं कि वहां अल्लाह की याद की जाए। वहां आने वाले वही लोग होते हैं जो इसलिए आते हैं कि वहां के रूहानी माहौल में अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हो सकें। वे इसलिए आते हैं कि अपने आपको एकसू (एकाग्र) करके कुछ वक्त अल्लाह की इबादत में गुजारे।

जिस इंसान को यह तौफ़ीक मिले कि वह अपनी फितरत की आवाज को पहचान कर खुदा पर ईमान लाए। और फिर वह अपने आपको मस्जिद वाले आमाल में मशगूल कर ले। उसके दिल में अल्लाह अपनी हैबत का एहसास डाल देता है जो मौजूदा दुनिया में किसी इंसान के लिए सबसे बड़ी नेमत है। यही वे लोग हैं जो कुर्बानी की सतह पर खुदापरस्ती को इख्तियार करते हैं। और गैर खुदा से कटकर खुदा वाले बनते हैं।

यही वह इंसान है जो अल्लाह के यहां बेहतरीन इनाम का मुस्तहिक है। अल्लाह उसे बेहिसाब फल अता फरमाएगा।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيَعَةٍ يُخْسِبُهُ الظَّمَانُ مَاءً حَتَّى إِذَا جَاءَهُ
لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ فَوَقَّهٖ حِسَابَهُ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ أَوْ
كَظَلَمْتُ فِي بَحْرِ لُجِّي يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ سَابُّ
ظَلَمْتُ بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكْدِيرْهَا وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ
نُورًا فَلَا لَهُ نُورٌ ۝

और जिन लोगों ने इंकार किया उनके आमाल ऐसे हैं जैसे चटियल मैदान में सराब (मरीचिका)। प्यासा उसे पानी ख्याल करता है यहां तक कि जब वह उसके पास आया तो उसे कुछ न पाया। और उसने वहां अल्लाह को मौजूद पाया, पस उसने उसका हिसाब चुका दिया। और अल्लाह जल्द हिसाब चुकाने वाला है। या जैसे एक गहरे समुद्र में अंधेरा हो, मौज के ऊपर मौज उठ रही हो, ऊपर से बादल छाए हुए हों, ऊपर तले बहुत से अंधेरे, अगर कोई अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देख पाए। और जिसे अल्लाह रोशनी न दे तो उसके लिए कोई रोशनी नहीं। (39-40)

इंसानों की एक किस्म वह है जिसका जिक्र आयत 35 में था। यह वह इंसान है जो अपनी फितरी इस्तेदाद (समर्थता) को जिंदा रखता है और इसके नतीजे में ईमान की दौलत से सरफराज होता है। अब आयत 39-40 में इंसानों की मज्द दो किस्मों का जिक्र है। यह वे लोग हैं जिनका तेल हक की दावत की आग से भड़कने के लिए तैयार नहीं होता।

एक किस्म वह है जो किसी खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) दीन पर कायम रहती है। वह झूठी तमन्नाओं का एक महल बनाकर उसमें खुश रहती है। ये लोग इसी तरह खुशगुमानियों में पड़े रहते हैं। यहां तक कि जब मौत आती है तो उनकी खुशगुमानियों का तिलिस्म टूट जाता है। और फिर अचानक उन्हें मालूम होता है कि जिस चीज को वे मंजिल समझे हुए थे वह हलाकत के गढ़े के सिवा और कुछ न थी।

दूसरी किस्म वह है जो खुल्लम खुल्ला मुक़िरीयों और बागियों की है। ये लोग खुदा की हिदायत को छोड़कर बतौर खुद हिदायत वजअ करने की कोशिश करते हैं। मगर वे सरासर नाकाम रहते हैं। क्योंकि इस दुनिया में हिदायत देने वाला खुदा के सिवा और कोई नहीं। खुदा को छोड़ने के बाद आदमी के हिस्से में इसके सिवा कुछ नहीं रहता कि वह अबदी तौर पर अंधेरे में भटकता रहे।

الْمُتَرَاتِكِ اللَّهُ يُسَبِّحُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرِ صَوْتٌ كُلُّ قَدْ
عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝ وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَالِىُّ الْمَصِيرِ ۝

क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह की पाकी बयान करते हैं जो आसमानों और जमीन में हैं और चिड़ियां भी पर को फैलाए हुए। हर एक अपनी नमाज को और अपनी तस्वीह को जानता है। और अल्लाह को मालूम है जो कुछ वे करते हैं। और अल्लाह ही की हुक्मत है आसमानों और जमीन में। और अल्लाह ही की तरफ है सबकी वापसी। (41-42)

इंसान से खुदा का जो मुतालबा है उसे लफ्ज बदल कर कहें तो वह यह है कि इंसान कैसा ही रहे जैसा कि अज़र हकीकत (यथार्थतः) उसे रहना चाहिए। यही दीने हक है। इस एतबार से सारी कायनात दीने हक पर है। क्योंकि इस कायनात की हर चीज ऐन उसी तरह अमल करती है जैसा कि फिलवाकअ उसे अमल करना चाहिए। इंसान के सिवा इस कायनात में कोई भी चीज नहीं जिसके अमल में और हकीकते वाक्या में कोई टकराव हो।

इन्हीं बेशुमार चीजों में से एक मिसाल चिड़िया की है। चिड़िया जब अपना पर फैलाए हुए फज्ज में उड़ती है तो वह उसी हकीकत का एक कामिल नमूना होती है। ऐसा मालूम होता है गोया वह अबदी हकीकत की दुनिया में कामिल मुवाफिकत करके तैर रही हो। गोया उसने अपने इफ़ादी वुजू को हक़ (यथार्थ) के वसीअतर समुद्र में गुम कर दिया हो।

हर एक की एक तस्वीह खुदावंदी है और वही उससे मल्लूब (अपेक्षित) है। इसी तरह इंसान की एक तस्वीह खुदावंदी है और वह उससे मल्लूब है। इंसान अगर इस मामले में ग़फ़लत या सरकशी का रवैया इख़्तियार करे तो उस वक्त उसे इसकी सज़ा कीमत अदा करनी होगी जब खुदा के साथ उसका सामना पेश आएगा।

الْمُتَرَاتِكِ اللَّهُ يُرِجِي سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُنَّ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَذَرَى الْوَدْقَ
يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ وَيُنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ
يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنْ مَنْ يَشَاءُ يَكَادُ سُنْبُكُهُ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ۝ يَغْلِبُ اللَّهُ
النَّيْلَ وَالنَّهَارَ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ۝

क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह बादलों को चलाता है। फिर उन्हें आपस में मिला देता है। फिर उन्हें तह-ब-तह कर देता है। फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके

बीच से निकलती है और वह आसमान से उसके अंदर के पहाड़ों से ओले बरसाता है। फिर उसे जिस पर चाहता है गिराता है। और जिससे चाहता है उन्हें हटा देता है। उसकी बिजली की चमक से मालूम होता है कि निगाहों को उचक ले जाएगी। अल्लाह रात और दिन को बदलता रहता है। बेशक इसमें सबक है आंख वालों के लिए। (43-44)

यहां दुनिया के चन्द वाक्यात को बतौर तमसील जिक्र करके कहा गया है कि इसमें अहले बसीरत (प्रबुद्ध) के लिए इब्रत है। इब्रत के अस्ल मअना है उबूर करना, तै करना। इससे मुग़ाद वह जेहनी सफ़र है जबकि आदमी एक चीज से दूसरी चीज तक पहुंचता है। जब आदमी एक वाक्य को हकीकत से लिंक (Link) करता है। जब वह एक जाहिरी चीज के अंदर उसके मअनवी पहलू को देख लेता है तो इसी का नाम इब्रत है।

बारिश को देखिए जमीन से लेकर सूरज तक एक अजीम हमआहंग अमल (संयुक्त प्रक्रिया) के नतीजे में वह चीज वजूद में आती है जिसे बारिश कहते हैं। फिर ये बादल कभी ज़िंदगीबख़्श बारिश लाते हैं और कभी इन्हीं बादलों से हलाकतखेज ओले बरसने लगते हैं। यही मामला बिजली की चमक और रात और दिन की गर्दिश का है। इन जाहिरी वाक्यात में बेशुमार मअनवी (अर्थपूर्ण) हक़इक छुपे हुए हैं। जो लोग उन्हें देखकर जाहिर को मअना से जोड़ सकें वही खुदा की नजर में बसीरत (सूझबूझ) वाले हैं।

وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَّاءٍ فَبِهِمْ مَن يَمْشِي عَلَى بَطْنِهِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّن يَمْشِي
عَلَى رِجْلَيْنِ وَمِنْهُمْ مَّن يَمْشِي عَلَى أَرْبَعٍ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُّبِينَاتٍ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ۝

और अल्लाह ने हर जानदार को पानी से पैदा किया। फिर उनमें से कोई अपने पेट के बल चलता है। और उनमें से कोई दो पांवों पर चलता है। और उनमें से कोई चार पैरों पर चलता है। अल्लाह पैदा करता है जो वह चाहता है। बेशक अल्लाह हर चीज पर कादिर है। हमने खोलकर बताने वाली आयतें उतार दी हैं। और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह की हिदायत देता है। (45-46)

दुनिया की चीजों में बजाहिर तअद्दुद (भिन्नता) है। इससे मुश्रिक इंसान ने यह कयास (अनुमान) किया कि चीजों के ख़ालिक भी बहुत से हैं। मगर जब चीजों को इस पहलू से देखा जाए कि जाहिरी भिन्नता और विविधता के अंदर एक यकसानियत (समरूपता) छुपी हुई है तो मामला बिल्कुल बदल जाता है

हैवानात की लाखों किस्में हैं। मगर गहरा मुतालआ बताता है कि इन सबकी अस्ल एक है। तमाम हैवानात का हयातयाती (जैविक) निजाम बिल्कुल एकसां (समान) है। इस मुतालआ के बाद चीजों की भिन्नता और विविधता खालिक की कुदरत का करिश्मा बन जाता है। एक एतबार से जो चीज तजद्दुदे तख्खीक (बहु-सृजन) का इज्हार मालूम हो रही थी वह दूसरे एतबार से तौहीदे तख्खीक (एकीय सृजन) का सुबूत बन जाती है।

मौजूदा दुनिया एक ऐसी दुनिया है जहां फरेब के दर्मियान हकीकत को पाना पड़ता है। यहां अपने आपको धोखा देने वाली बातों से ऊपर उठाना पड़ता है। ताकि आदमी हक का मुशाहिदा (सत्य का अवलोकन) कर सके। इसी खास काम के लिए अल्लाह तआला ने आदमी को अक्ल की सलाहियत दी है। जो शख्स इस खुदाई टॉच को सही तौर पर इस्तेमाल करेगा वह रास्ता पा लेगा। और जो शख्स इसे इस्तेमाल नहीं करेगा उसके लिए इस दुनिया में भटकने के सिवा कोई और अंजाम मुकद्दर नहीं।

وَيَقُولُونَ امَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُولِ وَاَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلَّى فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَمَّا اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝ وَاِذَا دُعُوْا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝ وَاِنْ يَكُنْ لَّهُمْ شَيْءٌ يَّاْتُوْا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ۝ اَفَبِلَوْ اٰتٰهُمْ مَّرْصُ اِمَّا اِنْ تَاْتَوْا اَمْرًا يَخْفٰوْنَ اَنْ يَّحْيِفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُولُهُ بَلْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الظَّالِمُوْنَ ۝

और वे कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए और हमने इताअत (आज्ञापालन) की। मगर उनमें से एक गिरोह इसके बाद फिर जाता है। और ये लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं। और जब उन्हें अल्लाह और रसूल की तरफ बुलाया जाता है ताकि खुदा का रसूल उनके दर्मियान फैसला करे तो उनमें से एक गिरोह रूग्दानी (अवहेलना) करता है। और अगर हक उन्हें मिलने वाला हो तो उसकी तरफ फरमांबरदार बनकर आ जाते हैं। क्या उनके दिलों में बीमारी है या वे शक में पड़े हुए हैं या उन्हें यह अंदेशा है कि अल्लाह और उसका रसूल उनके साथ जुल्म करेंगे। बल्कि यही लोग जालिम हैं। (47-50)

कदीम मदीना में एक तबक्क वह था जिसने बजाहिर इस्लाम कुबूल कर लिया था मगर वह इस्लाम के मामले में मुख़्तस (निष्ठावान) न था। इस गिरोह को मुनाफ़िक (पाखंडी) कहा जाता है। ये लोग जबान से तो खुदा व रसूल की इताअत के अल्फ़ाज़ बोलते थे। मगर जब तजर्बा पेश आता तो वे खुद अपने अमल से अपने इस दावे की तरदीद कर देते। उस वक़्त सूरतेहाल यह थी कि मदीना में बाकायदा नौइयत की इस्लामी अदालत अभी

कायम नहीं हुई थी। वहां एक तरफ यहूदी सरदार थे जो सैंकड़ों साल से रवाजी तौर पर लोगों के फैसले करते चले आ रहे थे। दूसरी तरफ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का से हिजरत करके वहां पहुंच चुके थे। मुनाफ़िकीन का हाल यह था कि अगर किसी मुसलमान से उनका विवाद हो जाए और वह कहे कि चलो अल्लाह के रसूल के यहां इसका फैसला करा लो तो मक्क़ा मुनाफ़िक उसके लिए सिर्फ इस सूत में रज्जे होता था जबकि उसे यकीन होता कि मुकद्दमे की नैइयत ऐसी है कि फैसला उसके अपने हक में हो जाएगा। अगर मामला इसके बरअक्स होता तो वह कहता कि फलां यहूदी सरदार के यहां चलो और इसका फैसला करा लो। यह बजाहिर होशियारी है मगर यह खुद अपने ऊपर जुल्म करना है। इस तरह जीतने वाले आखिरत में इस हाल में पहुंचेंगे कि वे अपना मुकद्दमा बिल्कुल हार चुके होंगे।

اِذَا كَانَ قَوْلُ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَقُولُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَمَنْ يُطِيعِ اللّٰهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشِ اللّٰهَ وَيَتَّقْهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَائِزُوْنَ ۝

ईमान वालों का कैल (कथन) तो यह है कि जब वे अल्लाह और उसके रसूल की तरफ बुलाए जाएं ताकि रसूल उनके दर्मियान फैसला करे तो वे कहें कि हमने सुना और हमने माना। और यही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करे और वह अल्लाह से डरे और वह उसकी मुखालिफत (विरोध) से बचे तो यही लोग हैं जो कामयाब होंगे। (51-52)

आम आदमी अपने मफ़ाद के ताबेअ (अधीन) होता है। मोमिन वह है जो अपने आपको अल्लाह और रसूल का ताबेअ बना ले। जब खुदा और रसूल का फैसला सामने आ जाए तो वह हर हाल में वही करे जो खुदा व रसूल का फैसला हो। चाहे वह उसकी ख़ादिश के मुताबिक हो या उसकी ख़ादिश के ख़िलाफ़। चाहे उसमें उसका मफ़ाद (हित) मूहूह हो या उसमें उसका मफ़ाद मजरूह हो रहा हो।

आखिरत की कामयाबी सिर्फ उस शख्स के लिए है जिसका ईमान उसे खुदा व रसूल के हुक्म के आगे झुका दे। खुदा का एहसास उसके दिल में इस तरह उतर जाए कि वह उसी से सबसे ज्यादा डरने लगे। खुदा की नाराजगी से अपने आपको बचाना उसकी जिंदगी का सबसे बड़ा मसला बन जाए।

وَاَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْْمَانِهِمْ لَنْ اَمْرْتَهُمْ لِيَخْرُجُنَّ ۚ قُلْ لَا تَقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ مَّعْرُوفَةٌ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ قُلْ اَطِيعُوا اللّٰهَ وَاَطِيعُوا الرَّسُوْلَ

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكُمْ مَآحِلٌ وَعَلَيْكُمْ مَآحِلُكُمْ وَإِنْ تُطِيعُوا تَهْتَدُوا
وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٥٤﴾

और वे अल्लाह की कसमें खाते हैं, बड़ी सख्त कसमें, कि अगर तुम उन्हें हुक्म दो तो वे जल्द निकलेंगे। कहे कि कसमें न खाओ दस्तूर के मुताबिक इताअत (आज्ञापालन) चाहिए। बेशक अल्लाह को मालूम है जो तुम करते हो। कहे कि अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम रूगदानी (अवहेलना) करोगे तो रसूल पर वह बोझ है जो उस पर डाला गया है और तुम पर वह बोझ है जो तुम पर डाला गया है। और अगर तुम उसकी इताअत करोगे तो हिदायत पाओगे। और रसूल के जिमे सिर्फ साफ़ताफ़ पृष्ठा देना है। (53-54)

जिस शख्स के दिल में गहराई के साथ खुदा उतरा हुआ हो उसकी निगाहें झुक जाती हैं। उसकी जवान बंद हो जाती है। उसका अहसासे जिम्मेदारी उससे बड़ी-बड़ी कुर्बानियां करा देता है। मगर जबानी दावों के वक्त वह देखने वाले लोगों को गूणा नजर आता है।

इसके बरअक्स जो शख्स खुदा से तअल्लुक के मामले में कम हो वह अल्फ़ज के मामले में ज्यादा हो जाता है। वह अपने अमल की कमी को अल्फ़ज की ज्यादाती से पूरा करता है। उसके पास चूँकि किरदार (सदाचरण) की गवाही नहीं होती इसलिए वह अपने को मोतबर साबित करने के लिए बड़े-बड़े अल्फ़ज का मुजाहिदा करता है।

जो लोग अल्फ़ज का कमाल दिखाकर दूसरों को मुतअस्सिर करना चाहते हैं वे समझते हैं कि सारा मामला बस इंसानों का मामला है। मगर जिस शख्स को यकीन हो कि असल मामला वह है जो खुदा के यहां पेश आने वाला है। उसका सारा अंदाज बिल्कुल बदल जाएगा।

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِينَهُمُ الَّذِي ارْتَضَى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِنْ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا يُعْبُدُونَ إِنِّي لَأَشِيرُ لَكُمْ بَأْسَكُمْ وَفِي شَيْءٍ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٥٥﴾

अल्लाह ने वादा फरमाया है तुम में से उन लोगों के साथ जो ईमान लाएं और नेक अमल करें कि वह उन्हें जमीन में इस्तेदार (सत्ता) देगा जैसा कि उसने पहले लोगों को इस्तेदार दिया था। और उनके लिए उनके दीन को जमा देगा जिसे उनके लिए पसंद किया है। और उनकी ख़ौफ़ की हालत के बाद उसे अमन से बदल देगा। वे सिर्फ मेरी इबादत

करेंगे और किसी चीज को मेरा शरीक न बनाएं। और जो इसके बाद इंकार करे तो ऐसे ही लोग नाफ़्समान हैं। (55)

यहां जिस ग़लबे (वर्चस्व) का वादा किया गया है उसका तअल्लुक अव्वलन रसूल और असहाबे रसूल से है। मगर तबअन (सिद्धांततः) उसका तअल्लुक पूरी उम्मत से है। इससे मालूम होता है कि ग़लबा और इक्तेदार अहले ईमान के अमल का निशाना नहीं। वह एक खुदाई इनाम है जो ईमान और अमल के नतीजे में मोमिनीन की जमाअत को दिया जाता है।

इस ग़लबे का मकसद यह है कि अहले ईमान को जमीन में इस्तहकाम (सुदृढ़ता) अता किया जाए। उन्हें यह मौका दिया जाए कि वे दुश्मनाने हक के अद्विष्टों से मामूम (सुरक्षित) होकर रह सकें। वे आजादाना तौर पर खुदा की इबादत करें। और सिर्फ एक खुदा के बंदे बनकर जिद्दी गुजरें। अहले ईमान के ग़लबे की यह हालत उस वक्त तक बाक़ी रहेगी जब तक वे खुदा के शुक्र करने वाले बने रहें। और तकवा की कैफ़ियत को न खोएं।

ख़लीफ़ा के मअना अरबी जवान में जानशीन या बाद को आने वाले के हैं। इस्तख़लाफ़ या ख़लीफ़ा बनाना यह है कि एक कौम के बाद दूसरी कौम को उसकी जगह पर ग़लबा और इस्तहकाम अता किया जाए। ग़लबा दरअस्तल खुदाई इम्तेहान का एक पर्चा है। खुदा एक के बाद एक हर कौम को जमीन पर ग़लबा देता है। और इस तरह उसे जांचता है। अहले ईमान की जमाअत के लिए यह ग़लबा इम्तेहान के साथ एक इनाम भी है।

وَاقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٦﴾ لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْزِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهَا ذِئَابٌ وَلَكِنَّ الْمَصِيرَ ﴿٥٧﴾

और नमाज क़यम करो और ज़कात अदा करो और रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो ताकि तुम पर रहम किया जाए। जो लोग इंकार कर रहे हैं उनके बारे में यह गुमान न करो कि वे जमीन में अल्लाह को आजिज कर देंगे। और उनका ठिकाना आग है और वह निहायत बुरा ठिकाना है। (56-57)

खुदा की रहमत यह है कि दुनिया में ग़लबा और आख़िरत में जन्नत अता की जाए। जो लोग खुदा की इस रहमत का मुस्तहिक बनना चाहें उन्हें अपने अंदर तीन सिफ़तें पैदा करनी चाहिए।

एक इक़मते सलात। इक़मते सलात सूतन पंजवक्ता नमाज का निज़म क़यम करने का नाम है। और मअनन इसका मतलब यह है कि लोग खुशूअ (विनय) और तवाजेअ (विनम्रता) में जीने वाले बनें न कि क़िब्र (अहं) और सरकशी में जीने वाले।

इसी तरह ज़कात की अमली सूरत यह है कि अपने अमवाल में मुकररह शरह के मुताबिक सालाना एक रक़म निकाली जाए और उसे बैतुलमाल के हवाले किया जाए। और

जन्मत अपनी मजबूती हर्षित के एतबार से यह है कि लोग खुदराज (स्वार्थी) बनकर न रहें बल्कि वे दूसरों के खैरख्वाह (हितैषी) बनकर रहें। यहां तक कि उनकी खैरख्वाही इतनी बढ़े कि अपनी जात और अपने असासे (धन-सम्पत्ति) में वे दूसरों का हक समझने लगे।

रसूल की इताअत रसूल के जमाने में जाते रसूल की इताअत थी। और बाद के जमाने में सुन्ते रसूल की इताअत। इसका मतलब यह है कि लोगों के लिए जिंदगी का नमूना अल्लाह का रसूल हो। लोग अपनी जिंदगी के तमाम मामलात में सिर्फ खुदा के रसूल को अपना रहनुमा समझें। रसूल की राय सामने आने के बाद लोग अपनी जाती राय से दस्तबरदार हो जाएं। रसूल आगे हो और तमाम लोग उसके पीछे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنُكُمُ الَّذِينَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ مِنْ قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَصُومُونَ ثِيَابَكُمْ مِنْ الظَّهِيرَةِ وَمِنْ بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ ثَلَاثُ عَوْرَاتٍ لَكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ بَعْدَ هُنَّ طَوْفُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٨﴾
فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٩﴾ وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجَاتٍ بِزِينَةٍ ۚ وَأَنْ يَسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَهُنَّ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٦٠﴾

ऐरे ईमान वालो, तुम्हारे ममलूकों (गुलामों) को और तुम में जो बुलुग (युवावस्था) को नहीं पहुँचे उन्हें तीन वक्तों में इजाजत लेना चाहिए। फज़ की नमाज़ से पहले, और दोपहर को जब तुम अपने कपड़े उतारते हो, और इशा की नमाज़ के बाद। ये तीन वक्त तुम्हारे लिए पर्दे के हैं। इनके बाद न तुम पर कोई गुनाह है और न उन पर। तुम एक दूसरे के पास बकसरत (अधिकता से) आते जाते रहते हो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वज़ाहत करता है। और अल्लाह जानने वाला हिकमत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। और जब तुम्हारे बच्चे अक्ल की हद को पहुँच जाएँ तो वे भी इसी तरह इजाजत लें जिस तरह उनके अगले इजाजत लेते रहे हैं। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वज़ाहत करता है और अल्लाह अलीम (जानने वाला) व हकीम (तत्त्वदर्शी) है। और बड़ी बूढ़ी औरतें जो निकाह की उम्मीद नहीं रखतीं, उन पर कोई गुनाह नहीं अगर वे अपनी चादरें उतार कर रख दें, बशर्ते कि वे जीनत

(बनाव-सिंगार) की नुमाइश करने वाली न हों। और अगर वे भी एह्तियात करें तो उनके लिए बेहतर है। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (58-60)

ऊपर मआशिरती (समाजी) अहकाम बयान हुए थे। ये आयतें ग़ालिबन बाद को उनके पूरक या तौजीह (विवेचना) के तौर पर नाज़िल हुईं। मसलन ऊपर औरतों के लिए घर के अंदर पर्दे की जो हिदायत दी गई हैं उनमें यह है कि औरतें अपनी ओढ़नी के आंचल अपने सीने पर डाल लिया करें (आयत 31) यहाँ (आयत 60) में इस आम हुक्म से उन औरतों को अलग कर दिया गया जो निकाह की उम्र से गुज़र चुकी हों। फरमाया कि अगर वे ओढ़नी का एहतिमाम न करें तो कोई हरज नहीं। ये दोनों किसम के अहकाम एक साथ उतर सकते थे। मगर इनके दर्मियान चार रुकूओं का फासला है। इन दर्मियानी रुकूओं में दूसरे मजामीन हैं। जैसा कि रिवायात से मालूम होता है, इब्तिदाई अहकाम उतरने के बाद कुछ अमली सवालात पैदा हुए। चुनांचे उनकी वज़ाहत में ये आखिरी आयतें उतरीं और यहाँ शामिल की गईं। इससे मालूम होता है कि कुरआन का अंदाज़ तर्तीब और तदरीज (क्रम) का अंदाज़ है न कि यकवारगी इक्दाम का। खुदा के लिए यह मुमकिन था कि वह तमाम अहकाम एक साथ बयकवक नाज़िल कर दे। मगर खुदा ने हालात के एतबार से अहकाम को बतदरीज **नज़ि फ़स्य**।

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرْجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرْجٌ وَلَا عَلَى أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ أَخَوَاتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ خَلَتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكَتْهُمُ مَفَاتِحُهَا أَوْ صَدِيقَكُمْ لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا إِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَاسْلُمُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبَارَكَةٌ طَيِّبَةٌ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٥٦﴾

अंधे पर कोई तंगी नहीं और लंगड़े पर कोई तंगी नहीं और बीमार पर कोई तंगी नहीं और न तुम लोगों पर कोई तंगी है कि तुम अपने घरों से खाओ या अपने बाप दादा के घरों से, या अपनी माँओं के घरों से, या अपने भाइयों के घरों से, या अपने चचाओं के घरों से, या अपनी फूफियों के घरों से, या अपने मामुओं के घरों से, या अपनी खालाओं के घरों से या जिस घर की कुंजियों के तुम मालिक हो या अपने दोस्तों के घरों से। तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम लोग मिलकर खाओ या अलग-अलग। फिर जब तुम घरों में दाखिल हो तो अपने लोगों को सलाम करो जो बाबरकत हुआ है अल्लाह की तरफ से। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों की वजाहत करता है ताकि तुम समझो। (61)

इस्लाम से पहले अरब का मआशिरा एक आजाद मआशिरा था। वहां किसी किसम की कोई पाबंदी न थी। इसके बाद इस्लाम ने घरों के अंदर जाने पर पर्दे की पाबंदियां आयद कीं जिनका बयान ऊपर की आयतों में है, तो कुछ लोगों को एहसास हुआ कि इन पाबंदियों के बाद हमारी समाजी जिंदगी बिल्कुल महदूद (सीमित) होकर रह जाएगी।

इस सिलसिले में ये वजाहती आयतें नाजिल हुईं। फरमाया कि ये पाबंदियां तुम्हारी समाजी जिंदगी को मुनज्जम करने के लिए हैं न कि तुम्हारी जाइज आजादी को खत्म करने के लिए। मसलन अंधे, लंगड़े और बीमार अगर अपने तअल्लुक के लोगों से दूर हो जाएं तो यह अमलन उन्हें बेसहारा कर देने के हममअना होगा। मगर इस्लाम का यह मंशा हरगिज नहीं। चुनांचे साबिक (पहले के) अहकाम में जरूरी गुंजाइशें देते हुए इसकी अस्त रह (भावना) की निशानदेही फरमा दी।

इर्शाद हुआ कि इस्लाम का अस्त मलूब यह है कि लोगों के दिलों में एक दूसरे की सच्ची खैरखाही हो। जब एक आदमी दूसरे के घर में दाखिल हो तो वह सलाम करे। और कहे कि 'तुम्हारे ऊपर सलामती हो और अल्लाह की बरकतें तुम्हारे ऊपर नाजिल हों।' यह रह (भावना) अगर हकीकी तौर पर लोगों के अंदर मौजूद हो तो अक्सर इज्तिमाई खराबियों का अपने आप खत्मा हो जाएगा।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوهُ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَإِذَا السَّادَتُوكُمْ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأُذِنَ لِمَن شِئْتُم مِّنْهُمْ ۖ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

ईमान वाले वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर यकीन लाएं। और जब किसी इज्तिमाई (सामूहिक) काम के मौके पर रसूल के साथ हों तो जब तक तुमसे इजाजत न ले लें वहां से न जाएं। जो लोग तुमसे इजाजत लेते हैं वही अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं। पस जब वे अपने किसी काम के लिए तुमसे इजाजत मांगें तो उन्हें इजाजत दे दो। और उनके लिए अल्लाह से माफी मांगो। बेशक अल्लाह माफ करने वाला रहम करने वाला है। (62)

जब कुछ लोग अपने आपको इस्लाम के साथ वाबस्ता करें तो मुखलिफ असबाब से बार-बार इसकी जरूरत पेश आती है कि उन्हें इकट्ठा किया जाए। मसलन मुसलमानों के किसी मुशतरक (साझे) मामले में मश्वरा करने के लिए, किसी इज्तिमाई मुहिम पर लोगों का तआवुन (सहयोग) हासिल करने के लिए। वगैरह।

ऐसे मौकों पर यह होता है कि जिन लोगों पर अपने इफ़रादी (व्यक्तिगत) तअल्लुक हों वे थोड़ी देर के बाद अपनी दिलचस्पी खो देते हैं। और चाहते हैं कि खामोशी के साथ उठकर चले जाएं। यह मिजाज सही इस्लामी मिजाज नहीं। ताहम जो लोग इस जेहनियत से पाक हों उनमें भी कुछ ऐसे अफ़राद हो सकते हैं जो किसी वक्ती जरूरत की वजह से इज्तिमाअ (बैठक, सभा) के खत्म होने से पहले उठना चाहें। ऐसे अफ़राद का तरीका यह होता है कि वे जिम्मेदार शख्सियत से (और रसूल के जमाने में रसूल से) बाकयदा इजाजत लेकर वापस जाते हैं। अगर जिम्मेदार उन्हें किसी वजह से इजाजत न दे तो वह किसी नागवारी के बग़ैर आखिर वक्त तक कार्रवाई में शरीक रहते हैं।

जो शख्स मुसलमानों के इज्तिमाई (सामूहिक) मामलात का जिम्मेदार हो उसके अंदर यह मिजाज होना चाहिए कि कोई शख्स अगर वक्ती जरूरत की वजह से मअजरत पेश करे तो वह उसकी मअजरत को दिल से कुबूल करे। और उसके हक में दुआ करे कि अल्लाह तआला उसकी मदद फरमाए।

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۚ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَسْتَلُونُ مِنْكُمْ لَوْ أَدَّأ فَلْيَنْزِلِ الَّذِينَ فِي الْقُنُوقِ عَنْ أَمْرِ إِنْ يُصِيبُهُمْ فَتَنَةٌ أَوْ يُصِيبِهِمْ مِّمَّ عَذَابِ الْيَمِّ ۝ أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ يَوْمَ تَزْجُونَ إِلَيْهِ فَيَنْتَبِهُهُمْ بِمَا عَمِلُوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

तुम लोग रसूल के बुलाने को इस तरह का बुलाना न समझो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को बुलाते हो। अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो एक दूसरे की आड़ लेते हुए चुपके से चले जाते हैं। पस जो लोग उसके हुक्म की खिलाफवर्जी करते हैं उन्हें डरना चाहिए कि उन पर कोई आजमाइश आ जाए। या उन्हें एक दर्दनाक अजाब पकड़ ले। याद रखो कि जो कुछ आसमानों और जमीन में है सब अल्लाह का है। अल्लाह उस हालत को जानता है जिस पर तुम हो। और जिस दिन लोग उसकी तरफ जाएंगे तो जो कुछ उन्होंने किया था वह उससे उन्हें बाख़बर कर देगा। और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। (63-64)

यहां जिस इजाजत रसूल का जिक्र है उसका तअल्लुक रसूल की जिंदगी में रसूल से था। रसूल के बाद इसका तअल्लुक हर उस शख्स से है जो मुसलमानों के मामले का जिम्मेदार बनाया जाए।

इज्तिमाई मामलात में अपना हिस्सा अदा करने से जो लोग कतराएं वे बतौर खुद यह समझते हैं कि वे इज्तिमाई काम में वक्त जाया न करके अपने इफ़रादी मामले को मजबूत कर रहे हैं। मगर जो गिरोह इज्तिमाइयत (सामूहिकता) को खो दे उसके दुश्मन उसके अंदर घुसने की

राह पा लेते हैं। इस तरह जो बर्बादी आती है वह अपने नतीजे के एतबार से उम्मी बर्बादी होती है। उसका नुक्सान हर एक को पहुंचता है, यहां तक कि उसे भी जो यह समझ रहा था कि उसने जाती मामलात में पूरी तवज्जोह लगाकर अपने आपको महफूज कर लिया है।

आदमी जब इस किस्म की कमजोरी दिखाता है तो बतौर खुद वह समझता है कि वह जो कुछ कर रहा है इंसानों के साथ कर रहा है। मगर हकीकत यह है कि वह जो कुछ कर रहा होता है वह खुदा के साथ कर रहा होता है। अगर यह एहसास जिंदा हो तो आदमी कभी इस किस्म की बेउसूली की जुरअत न करे।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ وَبِئْسَ الْأَوَّلُ ۝ تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ۝ الَّذِي أَنزَلَ مَلَكًا
السموات والأرض ولم يئخذن ولدا ولم يكن له شريك في الملك وخلق كل شيء ففدرة تغديرا ۝ واتخذ من دونه الهة لا يخلقون شيئا وهم يخلقون ولا يملكون لأنفسهم ضرا ولا نفعا ولا يملكون موتا ولا حياة ولا نشورا ۝

आयतें-77

सूह-25. अल्फ़ुक्कन

रुकूअ-6

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। बड़ी बाबरकत है वह जात जिसने अपने बंदे पर फुकान उतारा ताकि वह जहान वालों के लिए डराने वाला हो। वह जिसके लिए आसमानों और जमीन की बादशाही है। और उसने कोई बेटा नहीं बनाया और बादशाही में कोई उसका शरीक नहीं। और उसने हर चीज को पैदा किया और उसका एक अंदाजा मुकर्र किया। और लोगों ने उसके सिवा ऐसे मावूद (पूज्य) बनाए जो किसी चीज को पैदा नहीं करते, वे खुद पैदा किए जाते हैं। और वे खुद अपने लिए न किसी नुक्सान का इख्तियार रखते हैं और न किसी नफा का। और न वे किसी के मरने का इख्तियार रखते हैं और न किसी के जीने का। (1-3)

‘फ़ुकन’ के लफ्ज़ी मअना है फर्क करने वाला। यानी हक व बातिल के दर्भियान इस्तिज़ाज (अंतर) करने का मेयार (Criterion)। यहां फ़ुकन से मुग़द कुरआन है। खुदा अलीम व ख़बीर भी है और हाकिमे मुतलक भी। इसलिए खुदा की तरफ से एक किताब फ़ुकन का आना बयकवक्त अपने अंदर दो पहलू रखता है। एक यह कि वह यकीनी तौर

पर सही है उसकी सेहत व कतइयत (परिपूर्णता) में कोई शुबह नहीं। दूसरे यह कि उसे मानना और उसे न मानना दोनों का अंजाम यकसां (समान) नहीं हो सकता।

खुदा तंहा तमाम इख्तियारात का मालिक है। कोई उसकी राय पर असरअंदाज नहीं हो सकता। कोई उसके और उसके फैसलों के दर्भियान हायल नहीं हो सकता। यही वाकया इस बात की जमानत है कि जो शख्स कुरआन को अपनी रहनुमा किताब बनाएगा वह कामयाब होगा और जो शख्स इसे नजरअंदाज करेगा उसके लिए किसी तरह यह मुमकिन नहीं कि अपने आपको उस नाकामी से बचाए जो हक को नजरअंदाज करने वाले के लिए खुदा ने मुकर्र कर दी है।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا إِلَّا فُكٌّ ۖ فَاتَّبَعُوا وَآمَنَ عَلَيْهِ قَوْمٌ آخَرُونَ ۖ فَقَدْ جَاءُوا ظُلُمًا وَزُورًا ۖ وَكَانُوا أَصْطِرَافًا ۖ وَكَانُوا أَصْطِرَافًا ۖ قُلْ أَنزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ إِنَّهُ كَانَ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

और मुंकिर लोग कहते हैं कि यह सिर्फ एक झूठ है जिसे उसने गढ़ा है। और कुछ दूसरे लोगों ने इसमें उसकी मदद की है। पस ये लोग जुल्म और झूठ के मुस्तकिब हुए। और वे कहते हैं कि ये अगलों की बेसनद बातें हैं जिन्हें उसने लिखवा लिया है। पस वे उसे सुबह व शाम सुनाई जाती हैं। कहो कि इसे उसने उतारा है जो आसमानों और जमीन के भेद को जानता है। बेशक वह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (4-6)

मुंकिरीन बजाहिर कुरआन को झूठी किताब कहते थे। मगर हकीकत यह है कि उनके इस कौल का रुख पैगम्बर की तरफ था। पैगम्बर उन्हें देखने में एक मामूली इंसान दिखाई देता था। उनकी समझ में नहीं आता था कि एक मामूली इंसान एक ग़ैर मामूली किताब का मालिक किस तरह हो सकता है।

कुरआन हर किस्म के मजमीन को छूता है। तारीख़ी, तबीई (भौतिक), नफ़ियती, मआशिरती, वगैरह। मगर इसमें आज तक किसी वाकई गलती की निशानदेही न की जा सकी। इससे साबित होता है कि कुरआन एक ऐसी हस्ती का कलाम है जो कायनात के भेदों को आखिरी हद तक जानने वाला है। अगर ऐसा न होता तो कुरआन में भी ग़लतियां मिलतीं जिस तरह दूसरी इंसानी किताबों में मिलती हैं। यही वाकया कुरआन के खुदाई किताब होने की सबसे बड़ी दलील है।

जो लोग कुरआन के बारे में बेबुनियाद बातें कहे वे बहुत ज्यादा ज़सरत (दुस्साहस) की

बातें करते हैं। ऐसे लोग यकीनन खुदा की पकड़ में आ जाएंगे। अलबत्ता अगर वे रुजूअ कर लें तो खुदा का यह तरीका नहीं कि इसके बाद भी वह उनसे इंतिकाम ले। खुदा आदमी के हाल को देखता है न कि उसके माजी (अतीत) को।

وَقَالُوا مَالِ هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِي فِي الْأَسْوَاقِ لَوْلَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَلَكٌ فَيَكُونُ مَعَهُ نَذِيرًا ۖ أَوْ يُلْقَى إِلَيْهِ كَنزٌ أَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ مِنْهَا ۚ وَقَالَ الظَّالِمُونَ إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْعُورًا ۖ أَنْظِرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝

और वे कहते हैं कि यह कैसा रसूल है जो खाना खाता है और बाजारों में चलता फिरता है। क्यों न इसके पास कोई फरिश्ता भेजा गया कि वह इसके साथ रहकर डराता या इसके लिए कोई खजाना उतारा जाता। या इसके लिए कोई बाग़ होता जिससे वह खाता। और जालिमों ने कहा कि तुम लोग एक सहरजदा (जादूग़स्त) आदमी की पैरवी कर रहे हो। देखो वे कैसी-कैसी मिसालें तुम्हारे लिए बयान कर रहे हैं। पस वे बहक गए हैं, फिर वे राह नहीं पा सकते। (7-9)

हक के हर दाजी (आह्वानकर्ता) के साथ यह हुआ है कि उसके जमाने के लोगों ने उसे हकीर (तुच्छ) समझा। और बाद के लोगों ने उसकी परस्तिश की। इसकी वजह यह है कि अपनी जिंदगी में वह अपनी हकीर शख्सियत के साथ लोगों के सामने होता है। इसलिए वह उन्हें बस एक आम इंसान की मानिंद दिखाई देता है। मगर बाद को उसकी शख्सियत के गिर्द अफसानवी किस्सों का हाला बन जाता है। बाद के लोग उसे मुबालागाआमेज (अतिरिजित) रूप में देखते हैं। इसलिए बाद के लोग मुबालागाआमेज हद तक उसकी ताजीम व तकदीस (मान-सम्मान) करने लगते हैं।

बाद के जमाने में लोगों के जेहनों में पैग़म्बर की रैर मामूली अजमत कायम हो जाती है। इसलिए कोई बड़ा अपने आपको पैग़म्बर से बड़ा नहीं पाता। मगर पैग़म्बर की जिंदगी में उसकी जो जाहिरी सूरतेहाल होती है वह वक्त के बड़ों को मौका देती है कि वे पैग़म्बर के मुफ़व्वले में मुतकब्बिराना नफ़िसयात (घमंड-भाव) में मुब्तिला हो सकें। ऐसे लोग जब कुछ लोगों को देखते हैं कि वे पैग़म्बर की बातों को सुनकर मुतअस्सिर (प्रभावित) हो रहे हैं तो वे उनके तअस्सुर को घटाने के लिए कह देते हैं कि यह तो एक मजनून है। यह तो एक सहरजदा इंसान है, वगैरह। वे दलील के मैदान में अपने आपको आजिज पाकर ऐब लगाने का तरीका इख्तियार करते हैं। हालांकि दलील के जरिए किसी को रद्द करना ऐन दुरुस्त है। जबकि ऐब लगाकर किसी को बदनाम करना सरासर नादुरुस्त।

تَبَرَّكَ الَّذِي إِن شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِنْ ذَلِكَ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ وَيُجَعِّلُ لَكَ قُصُورًا ۖ بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ ۖ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝ إِذَا رَأَوْهُمُ مِنَ مَكَّانٍ بَعِيدٍ سَمِعُوا لَهَا تَغِيْطًا وَرَفِيرًا ۖ وَإِذَا انْقَرَضُوا عَنْهَا كَانَتْ هَيْبَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۖ دَعَا هَٰؤُلَاءِ لِكُتُبُورًا ۖ لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ مُبُورًا وَلَا جَدًّا ۖ وَأَدْعُوا يَوْمًا كَثِيرًا ۖ قُلْ أَدْلِكْ خَيْرًا مِنْ جَنَّةِ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ ۖ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَاصِيرًا ۖ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۖ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ وَعْدًا مَسْئُورًا ۝

बड़ा बाबरकत है वह। अगर वह चाहे तो तुम्हें इससे भी बेहतर चीज दे दे। ऐसे बागात जिनके नीचे नहरें जारी हों, और तुम्हें बहुत से महल दे दे। बल्कि उन्होंने कियामत को झुटला दिया है। और हमने ऐसे शाख्स के लिए जो कियामत को झुटलाए दोख तैयार कर रखी है। जब वह उन्हें दूर से देखेगी तो वे उसका बिफरना और दहाड़ना सुनेंगे। और जब वे उसकी किसी तंग जगह में बांध कर डाल दिए जाएंगे तो वे वहां मौत को पुकारेंगे। आज एक मौत को न पुकारो, और बहुत सी मौत को पुकारो। कहो क्या यह बेहतर है या हमेशा की जन्नत जिसका वादा खुदा से डरने वालों से किया गया है, वह उनके लिए बदला और ठिकाना होगी। उसमें उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहेंगे, वे उसमें हमेशा रहेंगे। यह तेरे रब के जिम्मे एक वादा है वाजिबुल अदा। (10-16)

हक के मुबालिफ़ीन अक्सर हक के दाजी की ज़ात को निशाना बनाते हैं। वे दाजी को ग़ैर मोतबर साबित करने के लिए तरह-तरह की बातें करते हैं। इस तरह वे यह तअस्सुर देते हैं कि हक का दाजी अगर उनके मेयार पर होता तो वे उसकी बात मान लेते। मगर यह सही नहीं। उनका अस्ल मसला यह नहीं है कि हक का दाजी उन्हें कबिले एतबार नजर नहीं आता। उनका अस्ल मसला यह है कि वे कियामत की पकड़ से बेख़ौफ़ हैं, इसलिए वे ग़ैर जिम्मेदाराना तौर पर तरह-तरह के अल्फ़ज बोलते रहते हैं।

हक और नाहक के मामले की सारी अहमियत इस बिना पर है कि आखिरत में उसकी बाबत पूछ होगी। जो लोग आखिरत की पकड़ के बारे में बेख़ौफ़ हो जाएं वे उसके बिल्कुल लाजिमी नतीजे के तौर पर हक और नाहक के मामले में संजीदा नहीं रहते। और जिस चीज के बारे में आदमी संजीदा न हो वह उसकी अहमियत को किसी तरह महसूस नहीं कर सकता, चाहे उसके हक में कितनी ही ज्यादा दलीलें दे दी जाएं। ऐसे लोगों के अल्फ़ज सिर्फ उस वक्त ख़ुम हों जबकि कियामत की चिंगाड़ उनसे उनके अल्फ़ज छीन ले।

وَيَوْمَ يُحْشَرُهُمْ وَيَاْعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنْتُمْ أَضَلَلْتُمْ
عِبَادِي هَؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ ۖ قَالُوا سُبْحَنَكَ مَا كَانَ يَنْبَغِي لَنَا أَنْ
تَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى نَسُوا الذِّكْرَ
وَكَانُوا أَقْوَمًا بُورًا ۖ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ بِمَا تَقُولُونَ فَمَا تَسْتَطِيعُونَ صَرْفًا وَلَا نَصْرًا
وَمَنْ يَظْلِمِ مَسْكُومٍ نَذْرًا عَذَابًا كَبِيرًا ۝

और जिस दिन वह उन्हें जमा करेगा और उन्हें भी जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते हैं, फिर वह कहेगा, क्या तुमने मेरे उन बंदों को गुमराह किया या वे खुद रास्ते से भटक गए। वे कहेंगे कि पाक है तेरी जात। हमें यह सजावार न था कि हम तेरे सिवा दूसरों को कारसाज तज्वीज करें। मगर तूने उन्हें और उनके बाप दादा को दुनिया का सामान दिया। यहां तक कि वे नसीहत को भूल गए। और हलाक होने वाले बने। पस उन्होंने तुम्हें तुम्हारी बातों में झूठा ठहरा दिया। अब न तुम खुद टाल सकते हो और न कोई मदद पा सकते हो। और तुम में से जो शरूस जुल्म करेगा हम उसे एक बड़ा अजाब चखाएंगे। (17-19)

‘जिक्र’ की तशरीह मुफ़स्सिर इब्ने कसीर ने इन अल्फ़ज्रान में की है: ‘वे उस पैग़ाम को भूल गए जो उनकी तरफ तूने अपने पैग़म्बरों की जवान से तंहा और लाशरीक अपनी इबादत के लिए उतारा था।’

हकीकत यह है कि अबिया की मुक़ातब वैसें मअरुफ़ मअनों (प्रचलित भावार्थ) में मुंकिर और मुशिरक कौमें न थीं। वे दरअसल पिछले अबिया की उम्मतें थीं। उनके पैग़म्बरों ने उन्हें खुदा की हिदायत पहुंचाई। मगर जमाना गुजरने के बाद वे दुनिया में मशगूल हो गए और अपने बुजुर्गों और पैग़म्बरों के बारे में यह अक़ीदा बना लिया कि वे खुदा के यहां उनकी बख़्शिश का जरिया बन जाएंगे। मगर जब क़ियामत आएगी तो इस क़िस्म के तमाम अक़ीदे बातिल (झूठे) साबित होंगे। उस वक़्त लोगों को मालूम होगा कि अल्लाह की पकड़ से बचाने वाला खुद अल्लाह के सिवा कोई और न था।

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا أَنْهُمْ لِيَاْكُونُوا الطَّعَامَ وَيَمْشُونَ فِي الْأَسْوَاقِ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَنْتَصِرُونَ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا ۝

और हमने तुमसे पहले जितने पैग़म्बर भेजे सब खाना खाते थे और बाजारों में चलते फिरते थे। और हमने तुम्हें एक दूसरे के लिए आजमाइश बनाया है। क्या तुम सन्न करते

हो। और तुम्हारा रब सब कुछ देखता है। (20)

क़ुरआन के मुक़ातबीने अबल हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हज़रत इसाईल, हज़रत मूसा और दूसरे पैग़म्बरों को मानते थे। इसके बावजूद उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मानने से इंकार कर दिया। इसकी एक वजह यह है कि बाद के जमाने में हमेशा ऐसा होता है कि लोग अपने गुजरे हुए पैग़म्बरों को आला और अफ़जल साबित करने के लिए बतौर खुद तिलिस्माती कहानियां वजअ करते हैं। इन कहानियों में उनके साबिक पैग़म्बर की शख़्सियत एक पुरअजूबा शख़्सियत की हैसियत इख़्तियार कर लेती है। अब इसके बाद जब उनका हमअस्र (समकालीन) नबी उनके सामने आता है तो वह बजाहिर सिर्फ़ एक इंसान दिखाई देता है। उनके तसव्वुर में एक तरफ़ माजी (अतीत) का पैग़म्बर होता है जो उन्हें फ़ौक़ूलबशर (दिव्य) हस्ती मालूम होता है। दूसरी तरफ़ जिंदा पैग़म्बर होता है जो सिर्फ़ एक बशर (इंसान) के रूप में नजर आता है। इस तक्कबुल (तुलना) में वे हाल के पैग़म्बर पर यकीन नहीं कर पाते। वे पैग़म्बरी को मानते हुए पैग़म्बर का इंकार कर देते हैं। मुंकिरीन के लिए रसूल और अहले ईमान आजमाइश हैं। और रसूल और अहले ईमान के लिए मुंकिरीन आजमाइश हैं। मुंकिरीन की आजमाइश यह है कि वे रसूल के बजाहिर बेअज़मत हुलिये में उसके अंदर छुपी हुई अज़मत को दरयापत करें। और अहले ईमान की आजमाइश यह है कि वे मुंकिरीन की लायअनी निरर्थक बातों पर बेवदाशत न हों। वे हर हाल में साविर व शाकिर बने रहें।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا أُولَئِكَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْمَلِئِكَةِ أَوْ تُرَى رَبِّئَا
لَقَدْ اسْتَكْبَرُوا فِي أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْهُنَّ كِبِيرًا ۖ يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلِئِكَةَ لَا بُشْرَى
يَوْمَئِذٍ لِلْجَبْرِيْنَ وَيَقُولُونَ جِبْرًا فَتَجَبَّرُوا ۖ وَقَدِمْنَا إِلَى مَا عَمِلُوا مِنْ
عَمَلٍ فَبَجَلْنَاهُ هَبَاءً مَنْثُورًا ۖ أَصْحَابُ الْحَقَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ
مَقِيلًا ۝

और जो लोग हमारे सामने पेश होने का अंदेश नहीं रखते वे कहते हैं कि हमारे ऊपर फरिश्ते क्यों नहीं उतारे गए। या हम अपने रब को देख लेते। उन्होंने अपने जी में अपने को बहुत बड़ा समझा और वे हद से गुजर गए हैं सरकशी में। जिस दिन वे फरिश्तों को देखेंगे। उस दिन मुजरिमों के लिए कोई खुशख़बरी न होगी। और वे कहेंगे कि पनाह, पनाह। और हम उनके हर अमल की तरफ बढ़ेंगे जो उन्होंने किया था और फिर उसे उड़ती हुई ख़ाक बना देंगे। जन्नत वाले उस दिन बेहतरीन ठिकाने में होंगे। और निहायत अच्छी आरामगाह में। (21-24)

जो लोग दाजी के पैग़ाम को मानने के लिए फ़रिश्ते और खुदा के जुहर का मुतालाबा करें वे कोई वाकई बात नहीं कहते। वे सिर्फ़ अपनी ग़ैर सजीदगी का सुबूत देते हैं। उन्हें मालूम नहीं कि खुदा और फ़रिश्तों का जुहर क्या मअना रखता है। हकीकत यह है कि उनके लिए बोलने का जो मौख है वह सिर्फ़ उसी वक्त तक है जब तक हक़ को दाजी की सतह पर जाहिर किया गया हो। जब हक़ खुदा और फ़रिश्तों की सतह पर जाहिर हो जाए तो वह पैसले का वक्त होता है न कि मानने और तस्दीक करने का।

बहुत से लोग इस ग़लतफहमी में रहते हैं कि कियामत में जब खुदा पूछेगा कि क्या लाए तो मैं अपना फ़लां अमल पेश कर दूंगा। मैं कहूँगा कि फ़लां और फ़लां बुजुर्गों की निस्वत (संबंध) मुझे हासिल है। मगर कियामत के आते ही इस किस्म की खुशख़्बालियां इस तरह बेहकीकत साबित होंगी जैसे गर्म लोहे पर पानी का कतरा पड़े और वह फ़ौरन उड़ जाए। उस दिन सिर्फ़ हकीकती अमल किसी के काम आएगा न कि किसी किस्म की झूठी खुशख़्बाली।

وَيَوْمَ تَشْقُقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلَائِكَةُ تَنْزِيلًا ۝ الْمَلِكُ يَوْمَئِذٍ الْبَاقِي ۝
 لِلرَّحْمَنِ وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ۝ وَيَوْمَ يَعِضُّ الظَّالِمُ عَلَى يَدَيْهِ
 يَقُولُ لِيَلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ۝ يَوْمَئِذٍ لَيَنْتَبِئُنَّ لِمَ اتَّخَذُوا لَنَا
 خَلِيلًا ۝ لَقَدْ أَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءَنِي ۝ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ
 خَدُورًا ۝ وَقَالَ الرَّسُولُ يَا رَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا ۝
 وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ ۝ وَكَفَى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَ
 نَصِيرًا ۝

और जिस दिन आसमान बादल से फट जाएगा। और फ़रिश्ते लगातार उतारे जाएंगे। उस दिन हकीकती बादशाही सिर्फ़ रहमान की होगी। और वह दिन मुँकियों पर बड़ा सज़ा होगा। और जिस दिन जालिम अपने हाथों को काटेगा, वह कहेगा कि काश मैंने रसूल के साथ राह इस्तिथार की होती। हाथ मेरी शामत, काश मैं फ़लां शख्स को दोस्त न बनाता। उसने मुझे नसीहत से बहका दिया बाद इसके कि वह मेरे पास आ चुकी थी। और शैतान है ही इंसान को दगा देने वाला। और रसूल कहेगा कि ऐ मेरे रब मेरी कौम ने इस कुरआन को बिल्कुल नज़रअंदाज़ कर दिया। और इसी तरह हमने मुजरिमों में से हर नबी के दुश्मन बनाए। और तुम्हारा रब काफी है रहनुमाई के लिए और मदद करने के लिए। (25-31)

जब भी हक़ की दावत उठती है तो वे लोग उसके दुश्मन बन जाते हैं जो हक़ के नाम पर नाहक का कारोबार कर रहे हों। वे तरह-तरह के शोशे निकाल कर दाजी की सदाकत को मुशतबह (संदिग्ध) साबित करते हैं। और बहुत से लोगों को अपना हमनवा बना लेते हैं।

जो लोग इन झूठे लीडरों की बातों पर यकीन करके हक़ के दाजी का साथ नहीं देते उन पर कियामत के दिन खुल जाएगा कि लीडरों की दलीलें दलीलें न थीं। वे महज झूठे शोशे थे जिन्हें उन्होंने अपने मफ़ाद के मुताबिक पाकर मान लिया। और उसे हक़ से दूर रहने का बहाना बना लिया। उस वक्त वे अफ़सोस करेंगे कि क्यों उन्होंने ऐसा किया कि वे लीडरों के झूठे शोशों के फरेब में पड़े रहे। और हक़ के दाजी का साथ देने वाले न बने।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً وَاحِدَةً ۖ كَذَلِكَ لِنُثَبِّتَ
 بِهِ فُؤَادَكَ وَرُكِّنَ لَهُ تَرْجِيلاً ۝ وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ
 تَفْسِيرًا ۝ الَّذِينَ يُحْشَرُونَ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ إِلَىٰ جَهَنَّمَ أُولَٰئِكَ سَرْمَكَاوُ
 أَضَلُّ سَبِيلًا ۝

और इंकार करने वालों ने कहा कि इसके ऊपर पूरा कुरआन क्यों नहीं उतारा गया। ऐसा इसलिए है ताकि इसके जरिए से हम तुम्हारे दिल को मजबूत करें और हमने इसे ठहर-ठहर कर उतारा है। और ये लोग कैसा ही अजीब सवाल तुम्हारे सामने लाएं मगर हम उसका ठीक जवाब और बेहतरीन वजाहत तुम्हें बता देंगे। जो लोग अपने मुंह के बल जहन्नम की तरफ ले जाए जाएंगे। उन्हीं का बुरा ठिकाना है। और वही हैं राह से बहुत भटके हुए। (32-34)

कुरआन जब उतरा तो वह बयकवक्त एक पूरी किताब की शकल में नहीं उतरा बल्कि जुज-जुज करके 23 साल में उतारा गया। इसे मुँकरीन ने शोशा बना लिया और कहा कि इससे जाहिर होता है कि यह इंसान की किताब है न कि खुदा की किताब। क्योंकि खुदा के लिए बयकवक्त पूरी किताब बना देना कुछ मुश्किल नहीं।

फरमाया कि कुरआन महज एक तस्नीफ़ (कृति) नहीं वह एक दावत (आह्वान) है। और दावत की मस्लेहतों में से एक मस्लेहत यह है कि उसे बतदरीज (क्रमवत) सामने लाया जाए ताकि वह माहौल में मुस्तहक़म (सुदृढ़) होती चली जाए।

जो दावत कामिल हक़ हो उसके खिलाफ़ हर एतराज झूठ एतराज होता है। उसके खिलाफ़ जब भी कोई एतराज उठे और फिर उसकी सच्ची वजाहत कर दी जाए तो इससे दावत की सदाकत मजीद साबित हो जाती है। वह किसी भी दर्जे में मुशतबह (संदिग्ध) नहीं होती।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ أَخَاهُ هَارُونَ وَزِيرًا ۖ فَقُلْنَا اذْهَبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِنَا فَدَمْهُمْ تَدْمِيرًا ۖ وَقَوْمُ نُوحٍ لَمَّا كَذَبُوا الرُّسُلَ أَخْرَجْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ لِلنَّاسِ آيَةً ۖ وَاعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ وَعَادًا وَثَمُودَ ۖ وَأَصْحَبَ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَلِكَ كَثِيرًا ۖ وَكُلًّا ضَرَبْنَاهُ الْأَمْثَالَ ۖ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ۖ وَلَقَدْ اتَّوَا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أُمِطْرَتْ مَطَرُ السَّوْدِ أَفَكُم يَكُونُونَ بِهَا ۖ بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ نُشُورًا ۖ

और हमने मूसा को किताब दी। और उसके साथ उसके भाई हारून को मददगार बनाया। फिर हमने उनसे कहा कि तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया है। फिर हमने उन्हें बिल्कुल तबाह कर दिया। और नूह की कौम को भी हमने ग़र्क कर दिया जबकि उन्होंने रसूलों को झुठलाया और हमने उन्हें लोगों के लिए एक निशानी बना दिया। और हमने जालिमों के लिए दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। और आद और समूद को और अर-रस वालों को और उनके दर्मियान बहुत सी कौमों को। और हमने उनमें से हर एक को मिसालें सुनाई और हमने हर एक को बिल्कुल बर्बाद कर दिया। और ये लोग उस बस्ती पर से गुजरे हैं जिस पर बुरी तरह पत्थर बरसाए गए। क्या वे उसे देखते नहीं रहे हैं। बल्कि वे लोग दुबारा उठाए जाने की उम्मीद नहीं रखते। (35-40)

कुरआन बार-बार जिन पैगम्बरों का हवाला देता है उनमें से अक्सर वे हैं जिनका जिक्र इंसानियत के संकलित इतिहास में जगह न पा सका। इससे अंदाजा होता है कि उन पैगम्बरों के समकालीन प्रबुद्ध वर्ग ने उन्हें कोई अहमियत न दी। उन्होंने बादशाहों और फौजी नायकों के हालात जोश के साथ लिखे क्योंकि उनके हालात में सियासी पहलू मौजूद था। मगर उन्होंने पैगम्बरों को नजरअंदाज कर दिया। क्योंकि उनके हालात में सियासी जैक की तस्कीन का सामान मौजूद न था।

अजीब बात है कि यह मिजाज आज भी मुकम्मल तौर पर मौजूद है। आज भी जो लोग अपने आपको सियासी प्लेटफॉर्म पर नुमायां करें वे फौरन प्रेस और रेडियों में जगह पा लेते हैं और जो लोग ग़ैर सियासी मैदान में काम करें उन्हें आज का इंसान भी ज्यादा काबिले तक्रिया नहीं समझता।

इंसान से सबसे ज्यादा जो चीज मलूब (अपेक्षित) है वह यह कि वह बाक़ेयात से सबक ले। मगर यही वह चीज है जो इंसान के अंदर सबसे कम पाई जाती है, मौजूदा जमाने में भी और इससे पहले के जमाने में भी।

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ الَّتِي خَلَقَ اللَّهُ لَكُمْ أَهْلًا ۚ هَٰذَا الَّذِي بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا ۙ إِنَّ كَادَ لَيُضِلَّنَا عَنْ الْهَيْتَا لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ۚ وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلَّ سَبِيلًا ۖ

और वे जब तुम्हें देखते हैं तो वे तुम्हारा मजाक बना लेते हैं। क्या यही है जिसे खुदा ने रसूल बनाकर भेजा है। इसने तो हमें हमारे माबूदों (पूज्यों) से हटा ही दिया होता। अगर हम उन पर जमे न रहते। और जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा जब वे अजाब को देखेंगे कि सबसे ज्यादा बेराह कौन है। (41-42)

‘अगर हम जमे न रहते तो वह हमें हमारे दीन से हटा देता’ इससे मालूम होता है कि उनके अपने दीन पर कायम रहने की वजह उनका तअस्सुब (विद्वेष) था न कि कोई दलील। दलील के मैदान में वे बेहथियार हो चुके थे। मगर तअस्सुब के बल पर वे अपने आबाई दीन पर जमे रहे। यही अक्सर इंसानों का हाल होता है। बेशतर इंसान महज तअस्सुब की जमीन पर खड़े होते हैं। अगरचे जवान से वे जाहिर करते हैं कि वे दलील की जमीन पर खड़े हुए हैं।

किसी दावत का मुकाबले करने के दो तरीके हैं। एक है उसे दलील से रद्द करना। दूसरा है उसका मजाक उड़ाना। पहला तरीका जाइज है और दूसरा तरीका सरासर नाजाइज। जो लोग किसी दावत का मजाक उड़ाएं वे सिर्फ यह साबित करते हैं कि दलील के मैदान में वे अपनी बाजी हार चुके हैं। और अब मजाक और हंसी की बातों से अपनी हार पर पर्दा डालना चाहते हैं।

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ ۚ أَفَأَنْتَ تَكُونُ عَلَيْهِ وَكِيلًا ۖ أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُونَ أَوْ يَعْقِلُونَ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا ۖ

क्या तुमने उस शख्स को देखा जिसने अपनी ख्वाहिश को अपना माबूद (पूज्य) बना रखा है। पस क्या तुम उसका जिम्मा ले सकते हो। या तुम ख्याल करते हो कि उनमें से अक्सर सुनते और समझते हैं। वे तो महज जानवरों की तरह हैं बल्कि वे उनसे भी ज्यादा बेराह हैं। (43-44)

एक हदीस में है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि आसमान के साथे के नीचे अल्लाह के सिवा पूजे जाने वाले माबूदों में सबसे ज्यादा संगीन अल्लाह के नजदीक वह ख्वाहिश है जिसकी पैरवी की जाए। (तबरानी)

यह एक हकीकत है कि सबसे बड़ बुत आदमी की ख्वाहिशें नफस (मनोकामनाएं) है। बल्कि यही अस्ल बुत है। बक़िया तमाम बुत सिर्फ ख्वाहिशपरस्ती के दीन को जाइज साबित

करने के लिए वज्र किए गए हैं।

ख्वाहिश को अपना रहबर बनाने के बाद इंसान उसी सतह पर आ जाता है जो जानवरों की सतह है। जानवर सोच कर कोई काम नहीं करते बल्कि सिर्फ जिविल्ली तक़जे के तहत करते हैं। अब अगर इंसान भी अपने सोचने की सलाहियत को काम में न लाए और सिर्फ ख्वाहिशे नपस के तहत चलने लगे तो उसमें और जानवर में क्या फ़र्क बाक़ी रहा।

أَلَمْ تَرَ إِلَى رَبِّكَ كَيْفَ مَكَدَ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيلًا ۖ ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا ۖ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا وَالتَّوَمُّسُبَاتِ وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ۖ وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا لِّبَنِي يَدَى رَحْمَتِهِ ۖ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ۖ لِّنُخْرِجَ بِهِ بَلْدَةً نَّيِّبًا وَنُسْقِيَهُ مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا وَأَنْ لَّيْسَ كَثِيرًا ۖ

क्या तुमने अपने ख की तरफ नहीं देखा कि वह किस तरह साये को फैला देता है। और अगर वह चाहता तो वह उसे ठहरा देता। फिर हमने सूरज को उस पर दलील बनाया। फिर हमने आहिस्ता-आहिस्ता उसे अपनी तरफ समेट लिया। और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को पर्दा और नींद को राहत बनाया और दिन को जी उठना का वक्त बनाया। और वही है जो अपनी रहमत से पहले हवाओं को खुशख़बरी बनाकर भेजता है। और हम आसमान से पाक पानी उतारते हैं। ताकि उसके जरिये से मुर्दा जमीन में जान डाल दें। और उसे पिलाएं अपनी मख़्लूक़ात में से बहुत से जानवरों और इंसानों को। (45-49)

यहां आम मुशाहिदे के ज़बान में उस हकीक़त की तरफ इशारा किया गया है जिसे मौजूदा जमाने में जमीन की महवरी (धुरीय) गर्दिश कहा जाता है। जमीन अपने महवर (धुरी) पर हर 24 घंटे में एक बार घूम जाती है। इसी से रात और दिन पैदा होते हैं। यह अल्लाह तआला की कुदरत का एक हैसतअजीज करिश्मा है। अगर जमीन की महवरी गर्दिश न हो तो जमीन के आधे हिस्से पर मुसलसल तेज धूप रहे। और दूसरे आधे हिस्से पर मुसलसल रात की तारीकी छाई रहे। और इस तरह जमीन पर ज़िंदगी गुज़रना इतिहाई हद तक दुश्वार हो जाए।

जमीन के इस निजाम में बहुत सी मअनवी नसीहतें मौजूद हैं। जिस तरह रात की तारीकी के बाद लाजिमन दिन की रोशनी आती है। उसी तरह नाहक के बाद हक का आना भी इस जमीन पर लाजिमी है। रात को सोकर दुबारा सुबह को उठना मौत के बाद दुबारा आख़िरत की दुनिया में उठने की तमसील है, वगैरह।

इसी तरह बारिश के निजाम में उसके माददी (भौतिक) पहलू के साथ अजीम मअनवी

(अर्थपूर्ण) सबक का पहलू भी छुपा हुआ है। जिस तरह बारिश से मुर्दा जमीन सरसबज हो जाती है उसी तरह खुदा की हिदायत उस सीने को ईमान और तक़वा का चमनिस्तान बना देती है जिसके अंदर वाकई सलाहियत हो, जो बंजर जमीन की तरह बेजान न हो चुका हो।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَاهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوا فَأَنَّى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ۖ وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ تَذِيرًا ۖ فَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَجَاهِدْهُمْ بِهِ جِهَادًا كَبِيرًا ۖ

और हमने इसे उनके दर्मियान तरह-तरह से बयान किया है ताकि वे सोचें। फिर भी अक्सर लोग नाशुकी किए बग़ैर नहीं रहते। और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते। पस तुम मुंकिरों की बात न मानो और इस (कुआन) केज़्ब से उनके साथ बड़ा जिहाद करो। (50-52)

कुरआन में तैहीद और आख़िरत के मजामीन मुख़लिफ अंदाज़ और मुख़लिफ उसलूब से बार-बार बयान हुए हैं। आदमी अगर संजीदा हो तो ये मजामीन उसे तड़पा देने के लिए काफी हैं। मगर गाफ़िल इंसान किसी दलील से कोई असर नहीं लेता। 'इसके जरिए जिहादे कबीर करो' से मुराद कुरआन के जरिए बड़ा जिहाद करना है। इससे अंदाज़ा होता है कि कुरआन के जरिए जिहाद, दूसरे शब्दों में, पुरअम्म (शक्तिमय) दावती जद्दोज़हद ही अस्त जिहाद है। बल्कि यही सबसे बड़ा जिहाद है। मुंकिर लोग अगर यह कोशिश करें कि अहले ईमान को दावत (आह्वान) के मैदान से हटाकर दूसरे मैदान में उलझाएं तब भी अहले ईमान की सारी कोशिश यह होनी चाहिए कि वह अपने अमल को कुरआनी दावत के मैदान में केन्द्रित रखें। और अगर मुख़लिफ़ीन के हंगामों की वजह से किसी वक्त अमल का मैदान बदलता हुआ नज़र आए तो हर मुमकिन तदबीर करके दुबारा उसे दावत के मैदान में ले आए।

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَهَذَا يِلٌّ أَجَابٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَجَبْرًا فَجُورًا ۖ وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ۖ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ۖ

और वही है जिसने दो समुद्रों को मिलाया। यह मीठा है प्यास बुझाने वाला और यह खारी है कड़वा। और उसने उनके दर्मियान एक पर्दा रख दिया और एक मजबूत आड़। और वही है जिसने इंसान को पानी से पैदा किया। फिर उसे ख़ानदान वाला और सुसराल वाला बनाया। और तुम्हारा ख बड़ी कुदरत वाला है। (53-54)

जब किसी संगम पर दो दरिया मिलते हैं या कोई बड़ा दरिया समुद्र में जाकर गिरता है तो

ऐसे मकाम पर बाहम (परस्पर) मिलने के बावजूद दोनों का पानी अलग-अलग रहता है। दोनों के बीच में एक धारी दूर तक जाती हुई नजर आती है। इस लेखक ने यह मंजर इलाहाबाद में गंगा और जमना के संगम पर देखा है। यह वाक्या उस कुदरती कानून के तहत होता है जिसे मौजूदा जमाने में सतही तनाव (Surface tension) कहा जाता है। इसी तरह जब समुद्र में ज्वारभाटा आता है तो समुद्र का खारी पानी साहिली दरिया के मीठे पानी के ऊपर चढ़ जाता है। मगर सतही तनाव दोनों पानी को बिल्कुल अलग रखता है। और जब समुद्र का पानी दुबारा उतरता है तो उसका खारी पानी ऊपर-ऊपर से वापस चला जाता है और नीचे का मीठा पानी बदस्तूर अपनी पहले की हालत पर बाकी रहता है। यहां तक कि इसी सतही तनाव के कानून की वजह से यह मुमकिन हुआ है कि खारी समुद्रों के ऐन बीच में मीठे पानी के ख़ीरे मौजूद हैं और बहरी (समुद्री) मुसाफ़िरों को मीठा पानी फ़राहम कर सके।

इंसानी जिस्म की अस्ल पानी है। पानी से इंसान जैसी हैरतअंगेज नूअ (जाति) बनी। फिर नसबी तअल्लुकात और सुसराली रवाबित (संबंधों) के ज़रिए उसकी नस्ल चलती रही। इस तरह के मुख़लिफ़ वाक़ेयात जो जमीन पर पाए जाते हैं उन पर ग़ौर किया जाए तो उनमें खुदा की कुदरत की निशानियां छुपी हुई नजर आएंगी।

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ۖ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۖ قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنُ شَاءَ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝

और वे अल्लाह को छोड़कर उन चीज़ों की इबादत करते हैं जो उन्हें न नफ़ा पहुंचा सकती हैं और न नुक़सान। और मुंकिर तो अपने रब के ख़िलाफ़ मददगार बना हुआ है। और हमने तुम्हें सिर्फ़ खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। तुम कहो कि मैं तुमसे इस पर कोई उजरत (बदला) नहीं मांगता, मगर यह कि जो चाहे वह अपने रब का रास्ता पकड़ ले। (55-57)

ख़ुदा ने इंसान को ऐसी दुनिया में रखा है जहां की हर चीज़ और उसका पूरा माहौल तौहीद (एकेश्वरवाद) की गवाही देता है। मगर इंसान उससे रोशनी हासिल नहीं करता। वह अपनी गुमराही में इस हद तक जाता है कि वह तौहीद के बजाए शिर्क की बुनियाद पर अपनी ज़िंदगी का निज़ाम बनाता है। और जब कोई ख़ुदा का बंदा इंसानों को तौहीद की तरफ़ पुकारने के लिए उठे तो वह दावते तौहीद का मुख़लिफ़ बनकर खड़ा हो जाता है।

ताहम हक़ के दाओ को ज़ारिहियत (आक्रामकता) की हद तक जाने की इजाजत नहीं। ज़ेस्मिन्तक़ीम (दीक्षा) और नसीहत के दायरे में अपना काम जारी रखना है। अगर दावत कागर न हो रही हो तो उसका यह काम नहीं कि वह दावत पर ज़ारिहियत का इजाफ़ा करे।

उसे जिस चीज़ का इजाफ़ा करना है वह है ख़ुदा से दुआ, हर किस्म के माददी झगड़ों को एकतरफ़ तौर पर ख़त्म करना, बेपर्जी और अज़्लाक के ज़रिए मुख़ाबत के दिल को मुतअस्सिर करना।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۖ وَكَفَىٰ بِهِ يَذُنُوبَ عَبْدِهِ ۖ خَيْرًا ۗ إِنَّ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ الرَّحْمَنُ فَتَنَلْ بِهِ خَبِيرًا ۖ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۝

और ज़िंदा खुदा पर, जो कभी मरने वाला नहीं, भरोसा रखो और उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्वीह करो। और वह अपने बंदों के गुनाहों से बाख़बर रहने के लिए काफी है। जिसने पैदा किया आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है, छः दिन में। फिर वह तख़्त पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। रहमान, पस उसे किसी जानने वाले से पूछो। और जब उनसे कहा जाता है कि रहमान को सज्दा करो तो कहते हैं कि रहमान क्या है। क्या हम उसे सज्दा करें जिसे तू हमसे कहे। और उनका बिदकना और बढ़ जाता है। (58-60)

‘रहमान की बावत जानने वाले से पूछो’ इसमें पूछे जाने वाली बात पर जोर है न कि पूछे जाने वाले शख्स पर। मतलब यह है कि अगर कोई शख्स ख़ुदाए रहमान के करिशमों को जाने तो वह तुम्हें बताएगा कि रहमान की जात कितनी बुलन्द व बरतर है। मौजूदा जमाने में साइंसदानों ने कायनात में जो तहकीक की है वह जुर्ज (आंशिक) तौर पर इस आयत की मिसदाक है। साइंसदानों की तहकीक़त से कायनात के जो भेद सामने आए हैं वे इतने हैरतनाक हैं कि उन्हें पढ़कर आदमी के जिस्म के रोंगटे खड़े हो जाएं और उसका दिल बेइस्त्रियार ख़ालिक की अज्मतों के आगे झुक जाए।

‘छः दिन’ से मुराद ख़ुदा के छः दिन हैं। इंसान की जबान में इसे छः अदवार (चरण) कहा जा सकता है। छः दौरों में पैदा करना जाहिर करता है कि कायनात की तख़लीक़ मंसूबाबंद तौर पर हुई है। और जो चीज़ मंसूबा और एहतिमाम के साथ वजूद में लाई जाए वह कभी अवस (निरर्थक) नहीं हो सकती।

تَبَارَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ۖ وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَن أَرَادَ أَنْ يَذْكُرْ ۖ وَأَرَادَ سُكُورًا ۝

बड़ी बाबरकत है वह जात जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें एक चराग़ (सूरज) और एक चमकता चांद रखा। और वही है जिसने रात और दिन को एक

के बाद दूसरे आने वाला बनाया, उस शख्स के लिए जो सबक लेना चाहे और शुकुगुजार बनना चाहे। (61-62)

बुर्ज के लफ्जी मअना किला के हैं। आसमानी बुर्ज से क्या मुराद है, इसकी कोई शक (सर्वस्वीकार्य) तपसीर अभी तक नहीं की जा सकी है। मुमकिन है कि इससे मुराद वह चीज हो जिसे मौजूदा जमाने में शम्सी निजाम (सूर्यमंडल) कहा जाता है। कायनात में करोड़ों की तादाद में शम्सी निजाम पाए जाते हैं। उन्हीं में से एक वह है जो हमसे करीब है और जिसके अंदर हमारी जमीन और सूरज और चांद वाकेअ हैं।

शम्सी निजाम की बेशुमार निशानियों में से एक निशानी जमीन का सूरज के गर्द मुसलसल घूमना है। इसकी एक गर्दिश मदार (कक्ष) पर होती है। यह गर्दिश साल में पूरी होती है और इसकी वजह से मौसम वाकेअ होते हैं। इसकी दूसरी गर्दिश उसके महवर (धुरी) पर होती है। यह 24 घंटे में पूरी हो जाती है और इससे रात और दिन पैदा होते हैं।

अथाह खला (अंतरिक्ष) में हददर्जा सेहत के साथ जमीन की गर्दिश और उसका इंसानी मस्हेतोंके इतना यादा मुआफिक (अनुकूल) होना इतने हैरतनाक वाकेयात हैं कि जो शख्स उन पर गौर करेगा वह शुक्रे खुदावंदी की जन्मे में रक होकर रह जाएगा।

وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَمْشُونَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا ۝ وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ۝ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝ إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۝ وَالَّذِينَ إِذَا أَنْفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ۝

और रहमान के बंदे वे हैं जो जमीन पर आजिजी (नम्रता) के साथ चलते हैं। और जब जाहिल लोग उनसे बात करते हैं तो वे कह देते हैं कि तुम्हें सलाम। और जो अपने ख के आगे सज्दा और कियाम में रातें गुजारते हैं। और जो कहते हैं कि ऐ हमारे ख जहन्नम के अजाब को हमसे दूर रख। बेशक उसका अजाब पूरी तबाही है। बेशक वह बुरा ठिकाना है और बुरा मकाम है। और वे लोग कि जब वे खर्च करते हैं तो न फुलू खर्ची करते हैं और न तंगी करते हैं। और उनका खर्च इसके दर्मियान एतदाल (मध्यमार्ग) पर होता है। (63-67)

‘चलना’ पूरी शख्शियत की अलामत है। जिन लोगों के दिल में अल्लाह का यकीन उतर जाए वे सरापा इज्ज व तवाजोअ बन जाते हैं। खुदा का खौफ उनसे बड़ाई का एहसास छीन

लेता है। उनका चलना-फिरना और रहना-सहना ऐसा हो जाता है जिसमें अबदियत (बंदा होने) की रूह पूरी तरह समाई हुई हो।

रहमान के बंदों का मामला अगर सिर्फ इतना ही हो तो कोई भी उनसे न उलझे। मगर खुदा की मअरफत उन्हें खुदा का दाओ भी बना देती है। बस यहीं से उनका टकराव दूसरों से शुरू हो जाता है। उनका एलाने हक बातिलपरस्तों के लिए नाकाबिले बर्दाश्त हो जाता है। और वे उनसे टकराने के लिए आ जाते हैं। मगर यहां भी खुदा का खौफ उन्हें जवाबी टकराव से रोक देता है। वे उनके हक में हिदायत की दुआ करते हुए उनसे अलग हो जाते हैं।

खुदा की मअरफत ही का यह नतीजा भी है कि उनकी जिंदगी में एक कभी न खत्म होने वाली बेचैनी शामिल हो जाती है। वे न सिर्फ दिन के वक्त खुदा को बेताबाना पुकारते रहते हैं बल्कि उनकी रातों की तंहाइयां भी खुदा की याद में बसर होने लगती हैं।

इसी तरह खुदा का एहसास उन्हें हददर्जा मोहतात बना देता है। वे जिम्मेदाराना तौर पर कमाते हैं और जिम्मेदाराना तौर पर खर्च करते हैं। खुदा के आगे जवाबदेही के एहसास उन्हें अपने आमद व खर्च के मामले में मोअतदिल (मध्यमार्गी) और मोहतात बना देता है। हदीस में आता है कि यह आदमी की दानाई में से है कि वह अपनी मईशत में बीच की राह इख्तियार करे।

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ۝ يُضْعَفُ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدُ فِيهِ مُهَانًا ۝ إِلَّا مَنْ تَابَ ۝ وَامِنْ وَعْمِلْ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ يُبَدِّلُ اللَّهُ سَيِّئَاتِهِمْ حَسَنَاتٍ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ وَمَنْ تَابَ وَعْمِلْ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى اللَّهِ مَتَابًا ۝

और जो अल्लाह के सिवा किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को नहीं पुकारते। और वे अल्लाह की हराम की हुई किसी जान को कल्ल नहीं करते मगर हक पर। और वे बदकारी (व्यभिचारी) नहीं करते। और जो शख्स ऐसे काम करेगा तो वह सजा से दो चार होगा। कियामत के दिन उसका अजाब बढ़ता चला जाएगा। और वह उसमें हमेशा जलील होकर रहेगा। मगर जो शख्स तौबा करे और ईमान लाए और नेक काम करे तो अल्लाह ऐसे लोगों की बुराइयों को भलाइयों से बदल देगा। और अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। और जो शख्स तौबा करे और नेक काम करे तो वह दरहकीकत अल्लाह की तरफ रजुअ कर रहा है। (68-71)

इस आयत में तीन गुनाहों का जिक्र है। शिर्क और क़त्ले नाहक और जिना। ये तीनों गुनाह खुदा और बंदों के हक में सबसे बड़े गुनाह हैं। अल्लाह पर हकीकी ईमान की अलामत यह है कि आदमी इन तीनों गुनाहों से दूर हो जाए। जो लोग इन गुनाहों में मुलव्विस हों वे तौबा करके इनके अंजाम से बच सकते हैं। जो लोग तौबा और रुजूअ के बग़ैर मर जाएं उनके लिए खुदा के यहां निहायत सख्त सजा है जिससे वे किसी हाल में बच न सकेंगे।

खुदा के नजदीक अस्ल नेकी यह है कि आदमी खुदा से डरने वाला बन जाए। जो नेकी आदमी को खुदा से बेख़ौफ़ करे वह बदी है। और जो बदी आदमी को खुदा से डराए वह अपने अंजाम के एतबार से नेकी।

अगर एक आदमी से बुराई हो जाए। इसके बाद उसे खुदा की याद आए। वह खुदा की बाज़पुर (पकड़) को सोचकर तड़प उठे और तौबा और इस्तफ़ार करते हुए खुदा की तरफ़ दौड़ पड़े तो खुदा अपनी रहमत से ऐसी बुराई को नेकी के ख़ाने में लिख देगा। क्योंकि वह आदमी को खुदा की तरफ़ रुजूअ करने का सबब बन गई।

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الرُّودَّ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ۖ وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَعُمْيَانًا ۚ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ

لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا ذُرِّيَّتًا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ۖ

और जो लोग झूठे काम में शामिल नहीं होते। और जब किसी बेहूदा चीज से उनका गुजर होता है तो संजीदगी के साथ गुजर जाते हैं। और वे ऐसे हैं कि जब उन्हें उनके रब की आयतों के जरिए नसीहत की जाती है तो वे उन पर बहरे और अंधे होकर नहीं गिरते। और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हमें हमारी बीबी और औलाद की तरफ़ से आंखों की ढंडक अता फ़रमा और हमें परहेजगारों का इमाम बना। (72-74)

मौजूदा दुनिया में जो ग़लत काम हैं उन सबका मामला यह है कि शैतान ने उन्हें जाहिरी तौर पर ख़ूबसूरत बना रखा है। हर बातिलपरस्त अपने नजरिये को खुशनुमा अल्फ़ाज में पेश करता है। इसी जाहिरी फ़रेबी की वजह से लोग इन चीजों की तरफ़ खिंचते हैं। अगर उनके इस जाहिरी ग़िलाफ़ को हटा दिया जाए तो हर चीज इतनी मकरूह (घृणित) दिखाई देने लगे कि कोई शख्स उसके करीब जाने के लिए तैयार न हो।

इस एतबार से हर बुराई एक किस्म का झूठ है जिसमें आदमी मुब्तिला होता है। मौजूदा दुनिया में आदमी का इम्तेहान यह है कि वह झूठ को पहचाने। वह जाहिरी पर्दे को फाड़कर चीजों को उनकी अस्ल हकीकत के एतबार से देख सके।

जब किसी को एक ऐसी नसीहत की जाए जिसमें उसकी जात पर ज़द पड़ती हो तो वह

फौरन बिफर उठता है। ऐसा शख्स खुदा की नजर में अंधा बहरा है। क्योंकि उसने अपनी आंख से यह काम न लिया कि वह हकीकत को देखे। उसने अपने कान से यह काम न लिया कि वह सच्चाई की आवाज़ को सुने। उसने नसीहत का इस्तक़बाल सुनने और देखने वाले आदमी की हैसियत से नहीं किया। उसने नसीहत का इस्तक़बाल एक ऐसे आदमी की हैसियत से किया जो सुनने और देखने की सलाहियत से महरूम हो। खुदा की नजर में देखने और सुनने वाला वह है जो लय (निरर्थक घटिया बात) को देखे तो उससे एराज़ करे और जब उसके सामने सच्ची नसीहत आए तो फौरन उसे कुबूल कर ले।

हर आदमी जो कुंवे वाला है वह अपने कुंवे का 'इमाम' (मुखिया) है। अगर उसके कुंवे वाले मुत्तमी (ईश-परायणता) हैं तो वह मुत्तकियों का इमाम है। और अगर उसके कुंवे वाले खुदा फ़रामोश हैं तो खुदा फ़रामोशों का इमाम।

وَلِلَّهِ يَجْزُونَ الْعُرُقَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلْقُونَ فِيهَا تَحِيَّةً وَسَلَامًا ۖ خُلِدِينَ فِيهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ۖ قُلْ مَا يَعْبُؤْكُمْ رَبِّي لَوْلَا دُعَاؤُكُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُونُ لِزَامًا ۖ

وَلِلَّهِ

ये लोग हैं कि उन्हें बालाख़ाने (उच्च भवन) मिलेंगे इसलिए कि उन्होंने सब्र किया। और उनमें उनका इस्तक़बाल हुआ और सलाम के साथ होगा। वे उनमें हमेशा रहेंगे। वह ख़ूब जगह है ठहरने की और ख़ूब जगह है रहने की। कहो कि मेरा रब तुम्हारी परवाह नहीं रखता। अगर तुम उसे न पुकारो। पस तुम झुठला चुके तो वह चीज अनक़रीब होकर रहेगी। (75-77)

जन्नत के ऊंचे बालाख़ानों में वे लोग जगह पाएंगे जिन्होंने दुनिया में अपने आपको हक के खातिर नीचा कर लिया था। उन्होंने दुनिया में तवाजोअ (विनम्रता) इस्तियार की थी इसलिए आखिरत में उनका खुदा उन्हें सरफ़राजी (उच्च स्थान) अता फ़रमाएगा। यही वह बात है जिसे हज़रत मसीह ने इन लफ़्ज़ों में अदा फ़रमाया : 'मुबारक हैं वे जो दिल के ग़रीब हैं। आसमान की बादशाही में वही दाख़िल होंगे।'।

वे औसाफ़ जो किसी आदमी को जन्नत में ले जाने वाले हैं उन्हें हासिल करना उस शख्स के लिए मुमकिन होता है जो सब्र करने के लिए तैयार हो। जन्नत वह आला मकाम है जहां आदमी की तमाम ख़्वाहिशें कामिल तौर पर पूरी होंगी। मगर जन्नत उसी साबिर इंसान के हिस्से में आएगी जिसने दुनिया में अपनी ख़्वाहिशों पर कामिल रोक लगाई हो। जन्नत सब्र की कीमत है। और जहन्नम उसके लिए है जो दुनिया की ज़िंदगी में सब्र की मलूबा (अपेक्षित) कीमत देने के लिए तैयार नहीं हुआ था।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ لَعَلَّكَ بَآخِعٌ نَفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ إِن تَشَاءْ نَزَّلِ عَلَيْهِم مِّنَ السَّمَاءِ آيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِّن ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمَنِ مُحَدِّثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ ۝ فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَاءَ لِمَن يَكْفُرُ ۝ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝

आयतें-227

सूरह-26. अश-शुअरा

रुकूअ-11

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। ता० सीन० मीम०। ये वाजेह किताब की आयतें हैं। शायद तुम अपने को हलाक कर डालोगे इस पर कि वे ईमान नहीं लाते। अगर हम चाहें तो उन पर आसमान से निशानी उतार दें। फिर उनकी गर्दन उनके आगे झुक जाएं। उनके पास रहमान की तरफ से कोई भी नई नसीहत ऐसी नहीं आती जिससे वे बेरुखी न करते हों। पस उन्होंने झुठला दिया। तो अब अनकरीब उन्हें उस चीज की हकीकत मालूम हो जाएगी जिसका वे मजक उज़्ते थे। (1-6)

हक की दावत जब जाहिर होती है तो वह हमेशा कलामे मुबीन (सुस्पष्ट वाणी) में जाहिर होती है। किसी दावत के खुदाई दावत होने की यह भी एक अलामत है कि उसकी हर बात वाजेह हो। उसकी हर बात खुले हुए दलाइल पर मबनी (आधारित) हो। एक शख्स उसका इंकार तो कर सके मगर कोई शख्स वाकई तौर पर यह कहने की पोजीशन में न हो कि उसका पैगाम मेरी समझ में नहीं आया।

‘शायद तुम अपने आपको हलाक कर लोगे’ का जुमला उस कामिल खैरख्वाही (परहित) को बता रहा है जो दाअी (आह्वानकर्ता) को मदऊ के हक में होती है। दावती अमल ख़ालिस खैरख्वाही के जन्बे से उबलता है। इसलिए दाअी जब देखता है कि मदऊ उसके पैगाम को नहीं मान रहा है तो वह उसके ग्राम में इस तरह हल्कान होने लगता है जिस तरह मां अपने बच्चे की भलाई के लिए हल्कान (व्यथित) होती है। कुरआन का यह जुमला कुरआन के दाअी की खैरख्वाहना कैफियत की तस्दीक है न कि उस पर तंकीद।

हक की दावत (आह्वान) खुदा की दावत होती है। खुदा वह ताकतवर हस्ती है जिसके मुकाबले में किसी के लिए इंकार व सरकशी की गुंजाइश न हो। मगर यह सूरतेहाल खुद खुदा के अपने मंसूबे की बिना (आधार) पर है। खुदा को अपनी जन्नत में बसाने के लिए वे कीमती इंसान दरकार हैं जो फरेब से भरी हुई दुनिया में हक को पहचानें और किसी दबाव के

बगैर उसके आगे झुक जाएं। ऐसे इंसानों का चुनाव ऐसे ही हालात में किया जा सकता था जहां हर इंसान को फिक्र (विचार) व अमल की पूरी आजादी दी गई हो।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنْبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ۝ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

क्या उन्होंने जमीन को नहीं देखा कि हमने उसमें किस कदम तरह-तरह की उमदा चीजें उगाई हैं। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। और बेशक तुम्हारा रब ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है, रहम करने वाला है। (7-9)

मिट्टी के अंदर से हरे-भरे दरख्त का निकलना उतना ही अजीब है जितना यह वाक्या कि मिट्टी के अंदर से अचानक एक जिंदा ऊंट निकल आए और जमीन पर चलने फिरने लगे। लोग दूसरी किस्म के वाक्ये को देखकर हैरान होते हैं। हालांकि उससे ज्यादा बड़ा वाक्या हर वक्त जमीन पर हो रहा है। मगर उसमें उन्हें कोई सबक नहीं मिलता।

अल्लाह तआला को इंसान से जो चीज मल्लूब है वह यह है कि वह मामूली वाक्यात में छुपे हुए ग़ैर मामूली पहलुओं को देखे। वह असबाब के तहत पेश आने वाले वाक्ये में खुदा की बराहिरास्त कारफरमाई का मुशाहिदा (अवलोकन) कर ले। जो लोग इस आला बसीरत (समझ) का सुबूत दें वही वे लोग हैं जो खुदा पर ईमान लाने वाले हैं। और वही वे लोग हैं जो खुदा की अबदी रहमतों में दाखिल किए जाएंगे।

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ إِنَّ آتِيَ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ قَوْمٌ فَرَعُونَ ۝ أَلَا يَتَّقُونَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝ وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ۝ وَلَهُمْ عَلَىٰ ذُنُوبٍ فَلَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ۝

और जब तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा कि तुम ज़ालिम कौम के पास जाओ, फिरऔन की कौम के पास, क्या वे नहीं डरते। मूसा ने कहा ऐ मेरे रब, मुझे अदेशा है कि वे मुझे झुठला देंगे। और मेरा सीना तंग होता है और मेरी जबान नहीं चलती। पस तू हारून के पास पैगाम भेज दे। और मेरे ऊपर उनका एक जुर्म भी है पस मैं डरता हूँ कि वे मुझे कत्ल कर दें। (10-14)

हजरत मूसा को मिस्र के फिरऔन पर दीने तौहीद की तब्लीग करनी थी जो अपने जमाने में दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे मुतमदिदन (वैभवशाली) सल्तनत का बादशाह था। दूसरी तरफ हजरत मूसा का मामला यह था कि वह बनी इस्राईल के फरजंद थे जिनकी हैसियत उस वक्त के मिस्र में गुलामों और मजदूरों जैसी थी। कौम फिरऔन का एक शख्स हजरत मूसा के

हाथ से बिला इगदा हलाक हो गया था। मजीद यह कि हजरत मूसा अपने अंदर कुव्वते बयान की कमी महसूस फरमाते थे। इसके बावजूद अल्लाह तआला ने अपने पैगाम की पैगामरसानी के लिए हजरत मूसा का इतिखाब (चयन) फरमाया।

हकीकत यह है कि खुदा जहिर से ज्यादा आदमी के बातिन (भीतर) को देखता है। और अगर किसी के अंदर बातिनी जौहर मौजूद हो तो उसी बातिनी जौहर की बुनियाद पर उसे अपने दीन के लिए मुंतखब फरमा लेता है। बातिनी जौहर आदमी को खुद पेश करना पड़ता है। इसके बाद अगर बग़तबार जहिर कुछ कमी हो तो वह खुदा की तरफ से पूरी कर दी जाती है।

قَالَ كَلَّا ۖ فَادْهَبَا بِآيَاتِنَا إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَعْمُونَ ﴿١٥﴾ فَاتَّبَعَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾ أَنْ أَرْسِلُ مَعَنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿١٧﴾ قَالَ أَلَمْ تُرِيدَ أَنْ أَفِيئَا وَلِيَدًا وَلَيْسْتُ فِيْنَا مِنْ عِبْرِكَ سَيِّئًا ﴿١٨﴾ وَفَعَلْتَ فَعَلْتِكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾

फरमाया कभी नहीं। पस तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने वाले हैं। पस तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ और कहो कि हम खुदावंद आलम के रसूल हैं। कि तू बनी इस्राईल को हमारे साथ जाने दे। फिरऔन ने कहा, क्या हमने तुम्हें बचपन में अपने अंदर नहीं पाला। और तुमने अपने उम्र के कई साल हमारे यहां गुजारे। और तुमने अपना वह फेअल (कृत्य) किया जो किया। और तुम नाशुक्रों में से हो। (15-19)

खुदा जिस शख्स को अपनी नुमाइंदगी के लिए मुंतखब करे वह हर एतबार से खुदा की हिफाजत में होता है। इसी के साथ उसके लिए मज्बूद एहतियाम यह किया जाता है कि उसे खुसूसी निशानियां दी जाती हैं जो इस बात की सरीह अलामत होती हैं कि उसका मामला खुदा का मामला है। मगर इंसान इतना जालिम है कि इसके बावजूद वह एतराफ नहीं करता।

हजरत मूसा ने बनी इस्राईल के सिलसिले में फिरऔन से जो मुतालबा किया उसका तपसीली मतलब क्या था, इसके बारे में कुरआन में कोई वजाहत मौजूद नहीं है। तौरात का बयान इस सिलसिले में हब्वे जेल है :

(मूसा ने फिरऔन से कहा) अब तू हमें तीन दिन की मंजिल तक बयाबान (निर्जन-स्थल) में जाने दे। ताकि हम खुदावंद अपने खुदा के लिए कुर्बानी करें (4 : 18)। मेरे लोगों को जाने दे ताकि वे बयाबान में मेरे लिए ईद करें (1 : 5) तब फिरऔन ने मूसा और हारून को बुलवा कर कहा कि तुम जाओ और अपने खुदा के लिए इसी मुल्क में कुर्बानी करो। मूसा ने कहा ऐसा करना मुनासिब नहीं क्योंकि हम खुदावंद अपने खुदा के लिए उस चीज की कुर्बानी करेंगे

जिससे मिश्री नफरत रखते हैं। सो अगर हम मिश्रियों की आंखों के आगे उस चीज की कुर्बानी करें जिससे वे नफरत रखते हैं तो क्या वे हमें संगसार न कर डालेंगे। पस हम तीन दिन की राह बयानात में जाकर खुदावंद अपने खुदा के लिए जैसा वह हमें हुक्म देगा कुर्बानी करेंगे।
(8 : 25-27)

बाइबल के बयान से बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि हजरत मूसा का यह सफर हिजरत (स्थान-परिवर्तन) के लिए नहीं बल्कि तर्बियत के लिए था। मिस्र में गाय मुकद्दस मानी जाती थी। सदियों के अमल से बनी इस्राईल भी उससे मुतअस्सिर हो गए थे। अब हजरत मूसा ने चाहा कि बनी इस्राईल को कुछ दिनों के लिए मिस्र के मुशिरकाना माहौल से बाहर ले जाएं और उन्हें आज़ाद फज़ा में रखकर उनकी तर्बियत करें।

قَالَ فَعَلَيْهَا إِذَا وَاثَا مِنَ الصَّالِينَ ﴿٦٦﴾ فَقَرَرْتُ مِنْكُمْ لِمَا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رِزْقِي حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٧﴾ وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَسُدُّهَا عَلَى أَنْ عَدَدْتُ بَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿٦٨﴾

मूसा ने कहा। उस वक़्त मैंने किया था और मुझे ग़लती हो गई। फिर मुझे तुम लोगों से डर लगा तो मैं तुमसे भाग गया। फिर मुझे मेरे रब ने दानिशमंदी (सूझबूझ) अता फरमाई और मुझे रसूलों में से बना दिया। और यह एहसान है जो तुम मुझे जता रहे हो कि तुमने बनी इस्राईल को गुलाम बना लिया। (20-22)

हजरत मूसा ने फिरऔन के सामने तौहीद की दावत पेश की और असा और यदेबेजा (हाथ का चमकना) का मोजिजा दिखाया। फिरऔन ने आपकी अहमियत घटाने के लिए उस वक़्त आपकी साबिक़ा (पिछली) जिंदगी की दो बातें याद दिलाईं। एक, बचपन में हजरत मूसा का फिरऔन के घर में परवरिश पाना। दूसरे, एक क़िव्वी की क़त्ल। हजरत मूसा ने जवाब में फरमाया कि तुम्हारे घर में मेरी परवरिश की नौबत ख़ुद तुम्हारे जुल्म की वजह से आई। तुम चूँकि बनी इस्राईल के बच्चों को क़त्ल कर रहे थे इसलिए मेरी मां ने यह किया कि मुझे टोकरी में रखकर बहते दरिया में डाल दिया। और इसके बाद ख़ुद तुमने मुझे दरिया से निकाला और मुझे अपने घर में रखा। जहाँ तक क़िव्वी के क़त्ल का मामला है तो वह मैंने इरादतन नहीं किया। मैंने अपने इस्राईली भाई की तरफ से क़िव्वी की ज़रिहिय्यत (आक्रामकता) का दिफ़अ किया था और वह इत्फ़ाक़न मर गया।

हजरत मूसा किवती के कल्ल के बाद मिस्र को छोड़कर मदन चले गए थे। वहां वह कई साल तक रहे। शहर की मस्जूद (क़ुब्र) फज़ से निकल कर देवत की फ़ित्री फ़िज़ा में चन्द साल गुज़ारना शायद आपकी तर्बियत के लिए ज़रूरी था। चुनांचे मदन से निकल कर जब आप दुबारा मिस्र जाने लगे तो रास्ते में अल्लाह तआला ने आपको नुबुव्वत अता फरमाई।

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۚ قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّ كُنُتُمْ مُوقِنِينَ ۚ قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ أَلَا تَسْتَمِعُونَ ۚ قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۚ قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمُجْنُونٌ ۚ قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ

وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّ كُنُتُمْ تَعْقِلُونَ ۚ قَالَ لِمَنْ أَتَأْتَدُ الْهَاجِرِيُّ لَجَعَلْتُكَ مِنَ السَّجُونِينَ ۚ قَالَ أَوْ لَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُبِينٍ ۚ قَالَ فَأَبِئْ بِكَ إِن كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۚ فَأَلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُبِينٌ ۚ وَنَزَعْنَا مِنْكَ إِدْرَاكَهَا فَإِذَا هِيَ بِيضَةٌ لِلْظَّالِمِينَ ۚ قَالَ لِلْمَلِكِ حَوْلَهُ إِنَّ هَذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ ۚ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ۚ

फिरऔन ने कहा कि रबूल आलमीन क्या है। मूसा ने कहा, आसमानों और जमीन का रब और उन सबका जो उनके दर्मियान हैं, अगर तुम यकीन लाने वाले हो। फिरऔन ने अपने इर्द-गिर्द वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं हो। मूसा ने कहा वह तुम्हारा भी रब है। और तुम्हारे अगले बुजुर्गों का भी। फिरऔन ने कहा तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी तरफ भेजा गया है मजनून है। मूसा ने कहा, मश्रिक (पूर्व) व मरिब (पश्चिम) का रब और जो कुछ इनके दर्मियान है, अगर तुम अक्ल रखते हो। फिरऔन ने कहा, अगर तुमने मेरे सिवा किसी को माबूद (पूज्य) बनाया तो मैं तुम्हें कैद कर दूंगा। मूसा ने कहा क्या अगर मैं कोई वाजेह दलील पेश करूं तब भी। फिरऔन ने कहा फिर उसे पेश करो अगर तुम सच्चे हो। फिर मूसा ने अपना असा (डंडा) डाल दिया तो यकायक वह एक सरीह (साक्षात) अजदहा था। और उसने अपना हाथ खींचा तो यकायक वह देखने वालों के लिए चमक रहा था। फिरऔन ने अपने इर्द गिर्द के सरदारों से कहा, यकीनन यह शख्स एक माहिर जादूगर है। वह चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से निकाल दे। पस तुम क्या मशिवरा देते हो। (23-35)

तुम्हारा रबूल आलमीन क्या है। फिरऔन का यह जुमला दरअसल इस्तेहजा (मजाक) था न कि सवाल। मगर हजरत मूसा ने किसी झुंझलाहट के बगैर बिल्कुल मोअतदिल (शालीन) अंदाज में इसका जवाब दिया। फिरऔन ने दुबारा अपने दरबारियों से यह कहकर हजरत मूसा की तहकीर (अपमान) की कि 'सुनते हो, यह क्या कह रहे हैं।' हजरत मूसा ने इसे भी नजरअंदाज किया और अपना सिलसिला कलाम बदस्तूर जारी रखा। फिरऔन ने मुशतइल (उत्तेजित) होकर हजरत मूसा को दीवाना करार दिया। मगर अब भी हजरत मूसा ने अपने एतदाल को नहीं खोया। फिरऔन ने वैद की धमकी दी तो हजरत मूसा ने अपनी आखिरी

दलील (मोजिजा) को उसके सामने रख दिया। अब फिरऔन के लिए मजीद कुछ कहने की गुंजाइश न थी। मगर उसने हार न मानी। उसने हजरत मूसा की अहमियत घटाने के लिए कहा कि यह कोई खुदाई वाक्या नहीं। यह तो महज एक साहिराना वाक्या है। और हर जादूगर ऐसा करिश्मा दिखा सकता है।

हजरत मूसा की दावत (आह्वान) सरासर पुरअम्न दावत थी। उसका सियासत और हुकूमत से भी बराहारास्त कोई तअल्लुक न था। मगर फिरऔन ने अपनी कौम को आपके खिलाफ भड़काने के लिए यह कह दिया कि वह हमें हमारे मुल्क से निकाल देना चाहते हैं। फिरऔन की गैर संजीदगी इसी से वाजेह है कि हजरत मूसा ने तो खुद अपनी कौम को साथ लेकर मिस्र से बाहर जाने की बात की थी। मगर फिरऔन ने उसे उलट कर यह कह दिया कि मूसा हम लोगों को मिस्र से बाहर निकाल देना चाहते हैं।

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَبْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ۚ يَأْتُواكَ بِكُلِّ سَحَابٍ عَلِيمٍ ۚ فَجَمِيعَ السَّحَابِ لِيَقَاتِ يَوْمَ مَعْلُومٍ ۚ وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُجْتَمِعُونَ ۚ لَعَلَّكُمْ تَتَذَكَّرُونَ ۚ السَّحَابُ السَّحَابُ ۚ قَالُوا لَوْ لَفِرْعَوْنُ ۚ إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا ۚ إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ۚ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَلنَّاصِرِينَ ۚ

दरबारियों ने कहा कि इसे और इसके भाई को मोहलत दीजिए। और शहरों में हरकारे भेजिए कि वे आपके पास तमाम माहिर जादूगरों को लाएं। पस जादूगर एक दिन मुकर्रर वक्त पर इकट्ठा किए गए और लोगों से कहा गया कि क्या तुम जमा होगे। ताकि हम जादूगरों का साथ दें अगर वे ग़ालिब रहने वाले हों। फिर जब जादूगर आए तो उन्होंने फिरऔन से कहा, क्या हमारे लिए कोई इनाम है अगर हम ग़ालिब रहे। उसने कहा हां, और तुम इस सूरत में मुकर्रब (निकटवर्ती) लोगों में शामिल हो जाओगे। (36-42)

फिरऔन और उसके दरबारियों ने हजरत मूसा के मामले को सिर्फ जादू का मामला समझा। इसलिए जादू के जरिए उनका मुकाबला करने का मंसूबा बनाया। उनकी सोच जहां तक पहुंची वह सिर्फ यह था कि मूसा अगर लकड़ी को सांप बना सकते हैं तो हमारे जादूगर भी लकड़ी को सांप बना सकते हैं। इससे आगे की उन्हें ख़बर न थी। वे मूसा के मामले को इंसान का मामला समझते थे इसलिए इंसान के जरिए उसका तोड़ करना चाहते थे। उन्होंने उस राज को नहीं जाना कि मूसा का मामला खुदा का मामला है और कौन इंसान है जो खुदा से टक्कर ले सके।

हजरत मूसा और जादूगरों के दर्मियान मुकाबले के लिए मित्रियों के सालाना कौमी

त्यौहार का दिन मुक़रर हुआ। और उसके लिए एक बहुत बड़े मैदान का इतिख़ाब हुआ ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग जमा हों और ज्यादा से ज्यादा जादूगरों की हैसलाअफ़ज़ई कर सकें।

قَالَ لَهُمْ مُوسَى الْقَوْمَ إِنَّمَا أَنتُم مُّشْرِكُونَ ۖ فَأَتَوُا بِلَهُم وَعَصَيْتَهُمْ وَقَالُوا
بِعِزَّتِكَ لَنُفَعِّنَنَّ ۖ فَأَتَى مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا
يَأْفِكُونَ ۚ فَأَتَى السَّحَرَةُ سِجْدِينَ ۖ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ رَبِّ
مُوسَى وَهَارُونَ ۚ

मूसा ने उनसे कहा कि तुम्हें जो कुछ डालना हो डालो। पस उन्होंने अपनी रस्सियां और लाटियां डालीं। और कहा कि फिरऔन के इक़बाल की कसम हम ही ग़ालिब रहेंगे। फिर मूसा ने अपना असा (डंडा) डाला तो अचानक वह उस स्वांग को निगलने लगा जो उन्होंने बनाया था। फिर जादूगर सज्दे में गिर पड़े। उन्होंने कहा हम ईमान लाए रखुल आलमीन पर जो मूसा और हारून का रब है। (43-48)

जादूगरों ने अपनी रस्सियां और लाटियां मैदान में डालीं तो देखने वालों को ऐसा महसूस हुआ गोया कि वे सांप बनकर मैदान में दौड़ रही हैं। मगर यह कोई हकीकी तब्दीली न थी, यह सिर्फ नजरबंदी का मामला था। इसके बरअक्स हजरत मूसा के असा का सांप बनना असा का मौजजए खुदावंदी (दिव्य चमत्कार) में ढल जाना था। चुनांचे जब हजरत मूसा का असा सांप बनकर मैदान में चला तो अचानक उसने जादूगरों के सारे तिलिस्म को बातिल कर दिया। इसके बाद जादूगरों की रस्सियां और लाटियां सिर्फ रस्सियां और लाटियां होकर रह गईं जैसा कि वह हकीकत थी।

जादूगरों ने पहले हजरत मूसा को अपनी तरह का एक जादूगर समझा था। मगर तजर्बे ने उनकी आंखें खोल दीं। वे जादू के फन को बख़ूबी जानते थे इसलिए वे फौरन समझ गए कि यह जादूगरी नहीं है बल्कि पैगम्बरी है। ताहम उनके लिए मुमकिन था कि अब भी वे एतराफ न करें और हजरत मूसा को ख़ुद करने के लिए फिरऔन की तरह कुछ झूठे अल्फ़ाज बोल दें। मगर एक जिंदा इंसान के लिए यह नामुमकिन होता है कि हक के पूरी तरह खुल जाने के बाद वह हक का एतराफ न करे। जादूगर इसी किस्म के जिंदा इंसान थे। चुनांचे उन्होंने फौरन हजरत मूसा की सदाकत (सच्चाई) का एतराफ कर लिया।

قَالَ امْتُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَدْنِ لَكُمْ ۚ إِنَّهُ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۖ لَا تَقْطَعْنَ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خِلَافٍ وَلَا وَصَلَبَكُمْ ۚ أَمْجَعِينَ ۖ قَالُوا الْأَصْدِيرُ ۚ إِنَّا إِلَى رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ۚ إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطِيئَتَنَا أَنْ كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ

फिरऔन ने कहा, तुमने उसे मान लिया इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाजत दूं। बेशक वही तुम्हारा उस्ताद है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है। पस अब तुम्हें मालूम हो जाएगा। मैं तुम्हारे एक तरफ के हाथ और दूसरी तरफ के पांव काटूंगा और तुम सबको सूली पर चढ़ाऊंगा। उन्होंने कहा कि कुछ हरज नहीं। हम अपने मालिक के पास पहुंच जाएंगे। हम उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताओं को माफ कर देगा। इसलिए कि हम पहले ईमान लाने वाले बने। (49-51)

जादूगरों का हजरत मूसा पर ईमान लाना फिरऔन के लिए जबरदस्त रुसवाई का बाइस था। उसने इसके इजाले के लिए यह किया कि इस पूरे वाक्ये को साजिश करार दे दिया। उसने कहा कि तुम लोग मूसा के साथ मिले हुए हो। और तुमने जान बूझकर उनके मुकाबले में अपनी शिकस्त का मुजाहिरा किया है ताकि मूसा की बड़ई लोगों के दिलों पर कायम हो और तुम्हारे लिए अपना मकसद हासिल करना आसान हो जाए। फिरऔन ने जादूगरों को अपना यह पैसला सुनाया कि तुम लोगों को बगावत की सजा दी जाएगी। तुम्हारे हाथ पांव बेतर्तीब काट कर तुम्हें बरसरे आम सूली पर चढ़ाया जाएगा। इस शदीद हुक्म के बावजूद जादूगर बेहिम्मत नहीं हुए। वही जादूगर जो पहले (आयत 41) फिरऔन के इक़बाल (गरिमा) की कसम खा रहे थे और उससे इनाम व इकराम की दरख्वास्त कर रहे थे उन्होंने बिल्कुल बेख़ौफ होकर कहा कि तुम जो चाहे करो अब हम मूसा के दीन से हटने वाले नहीं हैं। इस आला हिम्मती का सबब ईमानी दरयापत थी। आदमी किसी चीज का खोना उस वक्त बर्दाश्त करता है जबकि उसे खोकर वह ज्यादा बड़ी चीज पा रहा हो। ईमान से पहले जादूगरों के पास सबसे बड़ी चीज फिरऔन और उसका इनाम था। मगर ईमान के बाद उन्हें खुदा और उसकी जन्नत सबसे बड़ी चीज़ नजर आने लगी। यही वजह है कि ईमान से पहले जिस चीज की कुर्बानी वे बर्दाश्त नहीं कर सकते थे ईमान के बाद निहायत खुशी से वे उसकी कुर्बानी देने पर राजी हो गए।

وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي ۖ إِنَّكُمْ تُتَّبَعُونَ ۚ فَأَرْسَلْنَا فِرْعَوْنَ فِي
الْبَدَايِنِ حَاشِرِينَ ۚ إِنَّ هَؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ۚ وَآتَيْنَاهُمْ لَنَا
نَعَاطِظُونَ ۚ وَإِنَّا لَجَمِيعٌ حَازِرُونَ ۚ فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۖ وَكُنُوزٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۚ كَذَلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ

और हमने मूसा को 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी कि मेरे बंदों को लेकर रात को निकल जाओ। बेशक तुम्हारा पीछा किया जाएगा। पस फिरऔन ने शहरों में हरकारे भेजे। ये लोग थोड़ी सी जमाअत हैं। और उन्होंने हमें गुस्सा दिलाया है। और हम एक मुस्तइद (चुस्त) जमाअत हैं। पस हमने उन्हें बागों और चशमों (स्रोतों) से निकाला, और ख़जानों

और उम्दा मकानात से। यह हुआ, और हमने बनी इस्राईल को इन चीजों का वारिस बना दिया। (52-59)

वर्षों की दावती जद्दोजहद के बावजूद फिरऔन हजरत मूसा पर ईमान न लाया। आखिरकार इतमामेहुज्जत (आख्यान की अति) के बाद अल्लाह तआला ने हजरत मूसा को हुक्म दिया कि बनी इस्राईल को लेकर मिस्र से बाहर चले जाएं। फिरऔन को जब मालूम हुआ कि बनी इस्राईल इज्तिमाई तौर पर मिस्र से रवाना हो गए हैं। तो उसने अपने लश्कर और अपने आयाने सल्लनत (पदाधिकारियों) के साथ उनका पीछा किया। बजाहिर फिरऔन का यह इक्दाम बनी इस्राईल के खिलाफ था। मगर अमलन वह खुद उसके अपने खिलाफ इक्दाम बन गया। इस तरह फिरऔन और उसके साथी अपनी शानदार आबादियों को छोड़कर वहां पहुंच गए जहां उन्हें यकजाई (सामूहिक) तौर पर समुद्र में गर्क होना था।

अल्लाह तआला ने एक तरफ फिरऔन और उसके साथियों को उनके जुम्मे के नतीजे में अपनी नेमतों से महरूम किया जो उन्हें मिस्र में हासिल थीं। दूसरी तरफ बनी इस्राईल के सालिहीन के साथ यह मामला फरमाया कि उन्हें एक मुद्दत के बाद फिलिस्तीन पहुंचाया। और वहां उन्हें ये तमाम नेमतें मजीद इजाफे के साथ दे दीं।

فَاتَّبَعُوهُمْ مُشْرِقِينَ ۝ فَلَمَّا تَرَاءَ الْجَمْعُ قَالَ أَصْحَابُ مُوسَى إِنَّا لَمَذْرُؤُنَّ ۝ قَالَ كَلَّا إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۝ فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فَرَقٍ كَالطُّورِ الْعَظِيمِ ۝ وَأَنفِثْنَا نَمْرَ الْآخَرِينَ ۝ وَأَنجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَّعَهُ أَجْمَعِينَ ۝ ثُمَّ غَرَقْنَا الْآخَرِينَ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝

٥٦

पस उन्होंने सूरज निकलने के वक्त उनका पीछा किया। फिर जब दोनों जमाअतें आमने सामने हुई तो मूसा के साथियों ने कहा कि हम तो पकड़े गए। मूसा ने कहा कि हरगिज नहीं, बेशक मेरा रब मेरे साथ है। वह मुझे राह बताएगा। फिर हमने मूसा को 'वही' (प्रकाशना) की कि अपना असा दरिया पर मारो। पस वह फट गया और हर हिस्सा ऐसा हो गया जैसे बड़ा पहाड़। और हमने दूसरे फरीक (फ़ल) को भी उसके करीब पहुंचा दिया। और हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ थे बचा लिया। फिर दूसरों को गर्क कर दिया। बेशक इसके अंदर निशानी है। और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं हैं। और बेशक तेरा रब जबरदस्त है रहमत वाला है। (60-68)

फिरऔन बनी इस्राईल का पीछा करते हुए वहां पहुंच गया जहां बनी इस्राईल के आगे समुद्र था और पीछे फिरऔन और उसका लश्कर। बनी इस्राईल इस नाजुक सूरतेहाल को देखकर घबरा उठे। बाइबल के बयान के मुताबिक वे मूसा से कहने लगे 'क्या मिस्र में कब्रें न थीं कि तू हमें वहां से मरने के लिए बयाबान (निर्जन स्थान) में ले आया है।'

मगर हजरत मूसा को यक्रीन था कि अल्लाह तआला उनकी मदद फरमाएगा। चुनांचे अल्लाह तआला के हुक्म पर हजरत मूसा ने अपना असा (डंडा) समुद्र के पानी पर मारा। पानी बीच से फट गया। दोनों तरफ ऊंची दीवारों की मानिंद पानी खड़ा हो गया। और दर्मियान में खुश्क रास्ता निकल आया। बनी इस्राईल इस रास्ते से पार होकर अगले किनारे पर पहुंच गए।

यह मंजर देखकर फिरऔन ने समझा कि वह भी इस खुले हुए रास्ते से पार हो सकता है। उसे मालूम न था कि यह रास्ता नहीं है बल्कि खुदा का हुक्म है। फिरऔन अपने पूरे लश्कर के साथ उसके अंदर दाखिल हो गया। जैसे ही वे लोग बीच में पहुंचे खुदा के हुक्म से समुद्र का खड़ा हुआ पानी दोनों तरफ से मिलकर बराबर हो गया। फिरऔन अपने तमाम लश्कर के साथ दफअतन (यकायक) गर्क हो गया। एक ही नक्शे में एक गिरोह के लिए नजात छुपी हुई थी और दूसरे गिरोह के लिए हलाकत।

وَإِنَّا عَلَيْنَا لَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ۖ قَالُوا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَنْظُرُ إِلَيْهَا لَعَلَّهَا تَفْعِلُ ۖ قَالُوا هَلْ يَسْعَوْنَ كُفْرًا إِذْ تَدْعُونَ ۖ أَوْ يَنْفَعُونَكُمْ ۖ وَيَضْرُوبُونَ ۖ قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَٰلِكَ يَفْعَلُونَ ۖ

और उन्हें इब्राहीम का किस्सा सुनाओ। जबकि उसने अपने बाप से और अपनी कैम से कहा कि तुम किस चीज की इबादत करते हो। उन्होंने कहा कि हम बुतों की इबादत करते हैं और बराबर इस पर जमे रहेंगे। इब्राहीम ने कहा, क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इन्हें पुकारते हो। या वे तुम्हें नफा नुक्सान पहुंचाते हैं। उन्होंने कहा, बल्कि हमने अपने बाप दादा को ऐसा ही करते हुए पाया है। (69-74)

एक तरफ हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की कैम थी कि उसने बाप दादा को जो कुछ करते हुए देखा वही खुद भी करने लगी। दूसरी तरफ हजरत इब्राहीम थे जिन्होंने खुद अपनी अकल से सोचा। उन्होंने माहौल से ऊपर उठकर सच्चाई को मालूम करने की कोशिश की। यही वह ख़ास सिफत है जो आदमी को खुदा की मअरफत तक पहुंचाती है। और इस सिफत में जो कमाल दर्जे पर हो उसे खुदा अपने दीन की पैगामबरी के लिए मुंतख़ब फरमाता है।

'हम अपने बुतों पर जमे रखेंगे।' का लफ़्ज़ बताता है कि हजरत इब्राहीम से गुप्तगू में उन्होंने अपने आपको बेदलील पाया। इसके बावजूद वे मानने के लिए तैयार न हुए। दलील की

सतह पर शिकस्त खाने के बावजूद वे तअस्सुब (विद्वेष) की सतह पर अपने आबाई (पैतृक) दीन पर कयम रहे।

قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۖ أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ الْأَقْدَمُونَ ۚ وَالْأَنْهَارُ عُدُوٌّ
لِيَ إِلَّا رَبُّ الْعَالَمِينَ ۚ الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ ۖ وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَ
يَسْقِينِي ۖ وَإِذَا مَرَضْتُ فَهُوَ يَئْتِنِي ۚ وَالَّذِي يُبَيِّتُنِي ثُمَّ يُجِينِي ۖ
وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ۖ

इब्राहीम ने कहा, क्या तुमने उन चीजों को देखा भी जिनकी इबादत करते हो, तुम भी और तुम्हारे बड़े भी। ये सब मेरे दुश्मन हैं सिवा एक खुदावंद आलम के जिसने मुझे पैदा किया, फिर वही मेरी रहनुमाई फरमाता है। और जो मुझे खिलाता है और पिलाता है। और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही मुझे शिफा देता है। और जो मुझे मौत देगा फिर मुझे जिंदा करेगा। और वह जिससे मैं उम्मीद रखता हूँ कि बदले के दिन मेरी ख़ता माफ करेगा। (75-82)

इंसान एक मुस्तकिल हस्ती के तौर पर दुनिया में आता है। उसके अंदर अकल है जो ख़ैर और शर में फर्क करती है, जो जुहयात (अंशों) से कुल्लियात (कुल) अफ़्ज करती है और महसूसात से माकूलात (तथ्यों) तक पहुंच जाती है। आदमी के लिए यहां निहायत आला दर्जे पर वे चीजें मौजूद हैं जो उसे मुसलसल रिज्क फ़राहम करती हैं। आदमी बीमार होता है तो वह पाता है कि यहां वे असबाब भी मुकम्मल तौर पर मौजूद हैं जिनसे इलाज का फन वजूद में आ सके। फिर आदमी देखता है कि बजाहिर सारी आजादी के बावजूद वह मौत के सामने बेबस है। वह एक ख़ास उम्र को पहुंच कर मर जाता है।

इन वाक़ेयात का तअल्लुक एक खुदा के सिवा किसी और से नहीं हो सकता, फिर कैसे जाइज है कि एक खुदा के सिवा किसी और की इबादत की जाए। मजबूत यह कि इस मामले में आदमी को हददर्जा सजीदा होना चाहिए। क्योंकि यही वाक़ेयात यह इशारा भी कर रहे हैं कि जो खुदा यह सब कर रहा है वह इंसान से हिसाब लेने के लिए उसे एक रोज अपने यहां बुलाएगा। मौत इसी बुलावे के अमल का आज़ाज (आरंभ) है।

رَبِّ هَبْ لِي مَحْكَمًا ۖ وَالْحَقِّقْنِي بِالْصَّالِحِينَ ۖ وَاجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي
الْآخِرِينَ ۖ وَاجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ ۖ وَاعْفُ عَنِّي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ
الْعَظِيمُ ۖ وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُعْتَذِرُونَ ۖ يَوْمَ لَا يُنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ۖ إِلَّا مَنْ
آتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ۖ

ऐ मेरे रब, मुझे हिकमत (तत्वदर्शिता) अता फरमा और मुझे नेक लोगों में शामिल फरमा। और मेरा बोल सच्चा रख बाद के आने वालों में। और मुझे बाग़े नेमत के वारिसों में से बना। और मेरे बाप को माफ़ फरमा, बेशक वह गुमराहों में से है। और मुझे उस दिन रुसवा न कर जबकि लोग उठाए जाएंगे। जिस दिन न माल काम आएगा और न औलाद। मगर वह जो अल्लाह के पास क़त्बे सलीम (पाकदिल) लेकर आए। (83-89)

इस आयत में 'हुक्म' से मुराद सही फहम है। यानी चीजों को वैसा ही देखना जैसा कि वे फिलवाकअ हैं। नुबुव्वत के बाद किसी बंदाए खुदा के लिए यह सबसे बड़ी नेमत है। इसीलिए हदीस में आया है कि : 'अल्लाह जिस शख्स के लिए ख़ैर का इरादा करता है उसे दीन की समझ दे देता है।'

हजरत इब्राहीम ने अपनी दुआ में जो बातें कहीं वे सब कुबूल हो गईं। मगर अपने बाप (आज़र) की मफ़िरत की दुआ कुबूल नहीं हुई। इससे अंदाज़ा होता है कि दुआ तमामतार खुदा और बंदे के दर्मियान का मामला है। किसी शख्स की दुआ किसी दूसरे शख्स को मफ़िरत नहीं दिला सकती।

अल्लाह तआला के यहां अस्ल कीमत 'क़त्बे सलीम' की है। क़त्बे सलीम से मुराद क़त्बे सही या पाक दिल है यानी वह दिल जो शिर्क और निफ़क और हसद और बुज के जन्वात से पाक हो। बअल्फ़ाज दीगर खुदा ने पैदाइशी तौर पर जो दिल आदमी को दिया था वही दिल लेकर वह खुदा के यहां पहुंचे। कोई दूसरा दिल लेकर वह खुदा के यहां हाज़िर न हो।

وَأَرْسَلْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ ۖ وَقِيلَ لَهُمْ إِنَّمَا كُنْتُمْ
تَعْبُدُونَ ۖ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ هَلْ يَنْصُرُونَكُمْ أَوْ يَنْتَحِرُونَ ۚ فَكَبَّوْا فِيهَا هُمْ
وَالْعَاوُنَ ۚ وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ۚ قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ۚ تَاللَّهِ
إِنْ كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۚ إِذْ نُسَوِّكُمْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ وَمَا أَضَلُّنَا إِلَّا
الْجُرْمُونَ ۖ فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ۖ وَلَا صِدِّيقٍ حَمِيمٍ ۖ فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً
فَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ
وَإِنْ رَبُّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ

और जन्नत डरने वालों के करीब लाई जाएगी। और जहन्नम गुमराहों के लिए जाहिर की जाएगी। और उनसे कहा जाएगा। कहां हैं वे जिनकी तुम इबादत करते थे, अल्लाह के सिवा। क्या वे तुम्हारी मदद करेंगे। या वे अपना बचाव कर सकते हैं। फिर उसमें

औंधे मुंह डाल दिए जाएंगे, वे और गुमराह लोग और इब्लीस (शैतान) का लश्कर, सबके सब। वे उसमें बाहम झगड़ते हुए कहेंगे। खुदा की कसम, हम खुली हुई गुमराही में थे। जबकि हम तुम्हें खुदावंद आलम के बराबर करते थे। और हमें तो बस मुजरिमों ने रास्ते से भटकाया। पस अब हमारा कोई सिफारिशी नहीं। और न कोई मुस्लिम (निष्ठावान) दोस्त। पस काश हमें फिर वापस जाना हो कि हम ईमान वालों में से बनें। वेशक इसमें निशानी है। और उनमें अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं। और वेशक तेरा रब जबरदस्त है, रहमत वाला है। (90-104)

आदमी की जन्त और जहन्नम आदमी से दूर नहीं। दोनों के दर्मियान सिर्फ एक पर्दा हायल है। कियामत जब इस पर्दे को हटाएगी तो हर आदमी देखेगा कि वह ऐन अपनी जन्त या ऐन अपनी जहन्नम के किनारे खड़ा हुआ था। अगरचे गाफिल इंसान उसे बहुत दूर की चीज समझ रहा था।

‘मुजरिमीन’ से मुराद यहां झूठे लीडर हैं। ये लोग अपने वक्त के समाज में बड़ाई का मक़म हासिल किए हुए थे। उन्हें हक की दावत को सिर्फ इसलिए कुबूल नहीं किया कि इसके बाद उनकी बड़ाई ख़त्म हो जाएगी। उनका किब्र (अहं, बड़ाई) उनके लिए हक के एतराफ में रुकावट बन गया। इसका नतीजा यह हुआ कि उनके पैरोकार भी हक की दावत को कबिले लिहज चीज न समझ सके।

‘लीडरों को खुदावंद आलम के बराबर करना’ यह है कि उनकी बात को वह दर्जा दिया जाए जो खुदावंद आलम की बात का दर्जा होता है। मुफ़स्सिर इब्ने कसीर ने इसकी तशरीह इन अल्फाज में की है: ‘हम तुम्हारे हुक्म की इताअत (आज्ञापालन) इस तरह करते रहे जिस तरह रबुल आलमीन के हुक्म की इताअत की जाती है।’ वे लोग जो दुनिया में अपने लीडरों की बात को खुदा की बात की तरह मानते थे वे आखिरत में अपने लीडरों को खुद अपनी जवान से मुजरिम कहेंगे। मगर इसका उन्हें कोई फ़ायदा नहीं मिलेगा। क्योंकि मुजरिम और हक़परस्त को पहचानने की जगह दुनिया थी न कि आखिरत।

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ نُوحٌ ۙ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ ۝١٠١ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ فَاتَّبِعُوا أَمْرَهُ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۚ ۝١٠٢ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ ۝١٠٣ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرَهُ ۚ ۝١٠٤ قَالُوا أَنْتُمْ لَكُمْ وَالْبَعْثُ الْأَرْذَلُونَ ۚ ۝١٠٥ قَالَ وَمَا عَلِمْتُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ ۝١٠٦ إِنْ حَسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ۚ ۝١٠٧ وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ۚ ۝١٠٨

नूह की कौम ने रसूलों को झुठलाया। जबकि उनके भाई नूह ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं हो। मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूँ। पस तुम लोग अल्लाह से डरो। और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई अज़्र (बदला) नहीं मांगता। मेरा अज़्र तो सिर्फ रबुल आलमीन के जिम्मे है। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। उन्होंने कहा क्या हम तुम्हें मान लें। हालांकि तुम्हारी पैरवी रज़ील (नीच) लोगों ने की है। नूह ने कहा कि मुझे क्या ख़बर जो वे करते रहे हैं। उनका हिसाब तो मेरे रब के जिम्मे है, अगर तुम समझो। और मैं मोमिनों को दूर करने वाला नहीं हूँ। मैं तो बस एक खुला हुआ डराने वाला हूँ। (105-115)

हजरत नूह की कौम ने उन्हें झुठलाया। हालांकि उनकी दावत (आह्वान) में दलील का वजन पूरी तरह मौजूद था। इसी के साथ उनकी सीरत उनकी सदाक़्त की तस्दीक कर रही थी। हजरत नूह के बारे में उनकी कौम के लोग जानते थे कि वह एक सच्चे और अमानतदार आदमी हैं। वे जानते थे कि हजरत नूह जो दावत दे रहे हैं उससे उनका कोई जाती मफ़ाद वाबस्ता नहीं। ये खुसूसियात हजरत नूह को संजीदा साबित करने के लिए काफी थीं। और जो आदमी मख़बूक के बारे में संजीदा हो, वह ख़ालिक के बारे में ग़ैर संजीदा नहीं हो सकता।

हजरत नूह की कौम ने आपकी दावत को मानने से इंकार कर दिया। हालांकि इस इंकार के लिए उनके पास ग़ैर मुतअल्लिक बातों के सिवा कोई चीज मौजूद न थी। किसी दावत को रद्द करने के लिए यह कहना कि उसका साथ देने वाले मामूली लोग हैं। यह दावत की तरदीद (रद्द) नहीं बल्कि खुद अपनी तरदीद है। क्योंकि इसका मतलब यह है कि आदमी दलील के एतबार से इस दावत के हक में कुछ कहने की गुंजाइश नहीं पाता। ताहम वह सिर्फ इसलिए उसका साथ देना नहीं चाहता कि उसमें मामूली किस्म के लोग जमा हैं। उसे यह उम्मीद नहीं कि उसके हलके में शामिल होने के बाद उसे कोई बड़ा मक़ाम हासिल हो सकेगा।

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَنُوحُ ۖ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ۚ ۝١٠٩ قَالَ رَبِّ إِنِّي قَدْ جِئْتُكَ بِبَيِّنَاتٍ مِّنْ رَبِّي ۖ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۚ ۝١١٠ وَأَنجِيْنِي وَمَنْ مَّعِيَ فِي الْفُلْكِ الْمَشْعُونِ ۚ ۝١١١ ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ ۚ ۝١١٢ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۚ وَكَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۚ ۝١١٣ وَإِنْ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ ۝١١٤

उन्होंने कहा कि ऐ नूह अगर तुम बाज न आए तो जरूर संगसार कर दिए जाओगे। नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरी कौम ने मुझे झुठला दिया। पस तू मेरे और उनके दर्मियान वाज़ेह फैसला फरमा दे। और मुझे और जो मोमिन मेरे साथ हैं उन्हें नजात

दे। फिर हमने उसे और उसके साथियों को एक भरी हुई कश्ती में बचा लिया। फिर इसके बाद हमने बाकी लोगों को धर्क कर दिया। यकीनन इसके अंदर निशानी है, और उनमें से अक्सर लोग मानने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब वही जबरदस्त है, रहमत वाला है। (116-122)

हजरत नूह सदियों तक अपनी कौम के लोगों को हक की तरफ बुलाते रहे। मगर उन्होंने आपकी बात न मानी। यहां तक कि आखिरकार उन्होंने फैसला किया कि सब लोग मिलकर नूह को पत्थर मारें, यहां तक कि वह हलाक हो जाएं और फिर सुबह व शाम उनकी बात सुनने से नजात मिल जाए। जब कौम इस हद को पहुंच गई तो अल्लाह तआला का फैसला हुआ कि अब इस कौम का ख़ात्मा कर दिया जाए। अल्लाह तआला का यही फैसला है जो हजरत नूह की दुआ की श्रवण में जाहिर हुआ।

अल्लाह के हुक्म से हजरत नूह ने एक बड़ी कश्ती बनाई। उसमें हजरत नूह के तमाम साथी और हर किस्म के जानवरों का एक-एक जोड़ा रख लिया गया। इसके बाद अल्लाह ने शदीद तूफान भेजा। जमीन से पानी उबलने लगा और ऊपर से मुसलसल बारिश होने लगी। यहां तक कि कश्ती के सिवा सारी जिंदा मख़्लूक फना हो गई। यह एक तारीख़ी (ऐतिहासिक) मिसाल है जिससे जाहिर होता है कि इस दुनिया में नजात सच्चे अहले ईमान के लिए है और बाकी लोगों के लिए यहां हलाकत के सिवा कुछ और मुकद्दर नहीं।

كَذَّبَتْ عَادُ الْمُرْسَلِينَ ۚ إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ هُودٌ ۖ اَلَا تَتَّقُونَ ۚ ۝۱ اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيعُوْنَ ۚ وَمَا اَسْأَلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ اِنْ اَجْرِیْ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۚ اَتَّبِعُوْنَ بِكُلِّ رِیْعٍ اٰیَةً تَعْبَثُوْنَ ۚ وَتَكْذِبُوْنَ مَصٰنِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ۚ وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِیْنَ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيعُوْنَ ۚ وَاتَّقُوا الَّذِیْ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۚ اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَبَنِيْنٍ ۚ وَجَلَّتْ وَعِیُوْنَ ۚ اِنِّیْ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ۚ

आद ने रसूलों को झुठलाया। जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा कि क्या तुम लोग डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूँ। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला सिर्फ खुदावंद आलम के जिम्मे है। क्या तुम हर ऊँची जमीन पर लाहसिल (व्यथी) एक यादगार इमारत बनाते हो और बड़े-बड़े महल तामीर करते हो। गोया तुम्हें हमेशा रहना है। और जब किसी पर हाथ डालते हो तो ज़ब्यार (दमनकारी) बनकर डालते हो। पस

तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और उस अल्लाह से डरो जिसने उन चीजों से तुम्हें मदद पहुंचाई जिन्हें तुम जानते हो। उसने तुम्हारी मदद की चौपायों और औलाद से और बाग़ों और चशमों (स्रोतों) से। मैं तुम्हारे ऊपर एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूँ। (123-135)

आद वह कौम है जिसे कौमे नूह की तबाही के बाद दुनिया में उरूज मिला (अल-आराफ 69)। इस कौम को अल्लाह तआला ने सेहत, फ़रिगुल वाली (सम्पन्नता) और इक्तेदार (सत्ता) हर चीज अता फ़रमाई। इन चीजों पर अगर वे शुक्र करते तो उनके अंदर तवाजेअ (विनम्रता) का जज्बा उभरता। मगर उन्होंने इस पर फ़ख़्र किया। नतीजा यह हुआ कि उनके लिए अपने वसाइल का सबसे ज्यादा पसंदीदा मसरफ़ यह बन गया कि वे अपने मेयार ज़िंदगी को बढ़ाएं। वे अपने नाम को ऊंचा करें। वे अपनी अज्मत के संगी निशानात कायम करने को सबसे बड़ा काम समझने लगे।

ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि जब उन्हें किसी से इख़्तेलाफ़ या शिकायत हो जाए तो उनकी मुतकब्बिराना नफ़िसयात (घमंड-भाव) उन्हें किसी हद पर रुकने नहीं देती। वे उसके ख़िलाफ़ हर बेइसाफी को अपने लिए जाइज कर लेते हैं। वे उसे अपनी पूरी ताक़त से पीस डालना चाहते हैं। दुनिया की दुरुस्तगी उन्हें आख़िरत की पकड़ से बेख़ौफ़ कर देती है। और जो शख्स अपने आपको आख़िरत की पकड़ से महफूज समझ ले, दूसरे लोग उसकी पकड़ से महफूज नहीं रह सकते।

जिन लोगों को खुशहाली और बरतरी हासिल हो जाए उनके अंदर अपने बारे में झूठा एतमाद पैदा हो जाता है। यह झूठा एतमाद उनके लिए अपने से बाहर की सदाकत को समझने में रुकावट बन जाता है। वे नासेह (नसीहत करने वाले) की बात को अहमियत नहीं देते, चाहे वह कितना ही काबिले एतबार क्यों न हो, चाहे वह खुदा का रसूल ही क्यों न हो। ऐसे लोग उसी वक्त मानते हैं जबकि खुदा का अजाब उन्हें मानने पर मजबूर कर दे।

قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا اَوَعِظْتَ اَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَاعِظِيْنَ ۚ اِنْ هٰذَا اِلَّا خُلُقٌ اِلٰوَلٰیْنٌ ۚ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِيْنَ ۚ فَكَذَّبُوْهُ فَاهْلٰكْنٰهُمْ اٰتٍ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةٌ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَهٗوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ۚ

उन्होंने कहा, हमारे लिए बराबर है, चाहे तुम नसीहत करो या नसीहत करने वालों में से न बनो। यह तो बस अगले लोगों की एक आदत है। और हम पर हरगिज़ अजाब आने वाला नहीं है। पस उन्होंने उसे झुठला दिया, फिर हमने उन्हें हलाक कर दिया। बेशक इसके अंदर निशानी है। और उनमें से अक्सर लोग मानने वाले नहीं हैं। और बेशक तुम्हारा रब वह जबरदस्त है रहमत वाला है। (136-140)

कौमे आद का झूठा एतमाद उसके लिए पैगम्बर की बात को मानने में रुकावट बन

गया। यहां तक कि वह उसके पैगाम का मजाक उड़ाती रही। वह दुनिया में अपनी खुशहाली को इस बात की अलामत समझती रही कि वह खुदा की इनामयाफता है। वे लोग इस राज को न समझ सके कि दुनिया का असासा (धन-सम्पत्ति) आदमी को बतौर इस्तेहान मिलता है न कि बतौर इत्तहाफ।

जब आखिरी तौर पर साबित हो गया कि वे हक को मानने वाले नहीं हैं तो खुदा ने तूफानी हवा और शदीद बारिश भेजी जो एक हफ्ते तक मुसलसल अपनी तमाम ख़ौफनाकियों के साथ रात दिन जारी रही। नतीजा यह हुआ कि पूरी कौम अपने शानदार तमदुन सहित बर्बाद होकर रह गई। इस कौम का निशान अब सिर्फ वह रेगिस्तान है जो मौजूदा उमान और यमन के दरमियान दूर तक फैला हुआ है। कदीम जमाने में यह इलाका निहायत शादाब और आबाद था। मगर अब वहां किसी किस्म की ज़िंदगी नहीं पाई जाती।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ صَالِحٌ ۖ أَالَتَتَّقُونَ ۚ إِنَّي لَكَمُ
رَسُولٌ أَمِينٌ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ وَ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ
أَجْرِي إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ اتُّرَكُونَ فِي مَا هُمْ بِأَمِينِينَ ۖ فِي جَدَّتِ
وَعْيُونُ ۖ وَزُرُوعٌ وَخَيْلٌ طَلَعُهَا هَضِيمٌ ۖ وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا
فِيهِمْ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ وَلَا تَطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ۖ الَّذِينَ
يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يَصْلَحُونَ ۖ

समूद ने रसूलों को झुठलाया। जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला सिर्फ खुदावंद आलम के जिम्मे है। क्या तुम्हें उन चीजों में बेफिक्री से रहने दिया जाएगा जो यहां हैं, बाग़ों और चशमों में। और खेतों और रस भरे गुच्छों वाले खजूरों में। और तुम पहाड़ खोदकर फख्र करते हुए मकान बनाते हो। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो और हद से गुजर जाने वालों की बात न मानो जो जमीन में खराबी करते हैं। और इस्लाह नहीं करते। (141-152)

आद के बाद दूसरी कौम जिसे उरूज मिला वह समूद की कौम थी (अल-आराफ 74)। इस कौम की आबादियां ख़ैबर और तबूक के दरमियान उस इलाके में थीं जिसे अल हिज्र कहा जाता है। उस कौम को भी जबरदस्त खुशहाली और ग़लबा हासिल हुआ। मगर उसके अफ़ाद की भी सारी तक्ज़ोह दुबारा सिर्फ माद्री (भैतिक) तरक्की की तरफ लग गई। पहाड़ों को काट कर बड़े-बड़े मकान बनाने का फन ग़ालिबन इसी कौम ने शुरू किया।

जिसकी ज्यादा तरक्कीयाफता सूरत अजन्ता और एलोरा के ग़ारों की शकल में पाई जाती है।

हर शख्स और हर गिरोह जिसे दुनिया का साजोसामान मिलता है वह इस ग़लतफहमी में पड़ जाता है कि यह सब उसका हक है और वह जिस तरह चाहे उसे इस्तेमाल करे। मगर यह सबसे बड़ी भूल है। हकीकत यह है कि दुनिया का असबाब सिर्फ इस्तेहान की मुद्दत तक के लिए है। इसके बाद वह इस तरह छीन लिया जाएगा कि आदमी के पास उनमें से कुछ भी बाकी न रहेगा।

हद से गुजरने वाला (मुसरिफ) वह शख्स है जिसके पास दौलत आए तो वह शुक्र के बजाए फख्र की नमिसयात में मुक्बिला हो जाए। वह इक्तेदार पाए तो तवाजोअ (विनम्रता) के बजाए घमंड करने लगे। उसे ओहदा दिया जाए तो वह उसे ख़िदमत के बजाए अपना नाम बुलन्द करने के लिए इस्तेमाल करे। मवाकेअ (अवसरों) के यही ग़लत इस्तेमालात हैं जो मआशिरें में बिगाड़ पैदा करते हैं। कौमे समूद के बड़े लोग इसी किस्म के इसराफ में मुक्बिला थे। और उनके अवाम उनकी पैरवी कर रहे थे। पैगम्बर ने उन्हें मुतनब्वह (सचेत) किया कि ये लोग जिन्हें तुम बड़ा समझते हो वे तो खुद बेराह हैं फिर वे तुम्हें कैसे रास्ता दिखाएंगे।

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۖ مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ كُنْتَ
مِنَ الصّٰدِقِينَ ۖ قَالَ هَذِهِ نَاقَةُ رَبِّ ۖ لَهَا شِرْبٌ وَلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۖ وَلَا تَمَسُّوهَا
بُسْوَةً فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۖ فَعَقَرُوها ۖ فَاصْبَحُوا ذٰلِمِينَ ۖ
فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ
لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ

उन्होंने कहा, तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। तुम सिर्फ हमारे जैसे एक आदमी हो, पस तुम कोई निशानी लाओ अगर तुम सच्चे हो, सालेह ने कहा यह एक ऊंटनी है। इसके लिए पानी पीने की एक बारी है। और एक मुकर्रर दिन की बारी तुम्हारे लिए है। और इसे बुराई के साथ मत छेड़ना वरना एक बड़े दिन का अजाब तुम्हें पकड़ लेगा। फिर उन्होंने उस ऊंटनी को मार डाला फिर पशेमां (पछतावा-ग्रस्त) होकर रह गए। फिर उन्हें अजाब ने पकड़ लिया। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तुम्हारा रब वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। (153-159)

पैगम्बर जिस कौम में उठता है वह कोई लामजहब कौम नहीं होती। वह पूरे मअनो में एक मजहबी कौम होती है। मगर यह मजहब उसके बुजूर्गों का मजहब होता है और पैगम्बर खुदा का मजहब पेश करता है। जो लोग अपने बुजूर्गों के तरीके को मुकद्दस समझ कर उस पर कायम हों वे कभी किसी दूसरे तरीके की अहमियत नहीं समझ पाते, चाहे वह उनके पैगम्बर

की ज्वान से क्यों पेश किया जाए। बुजुर्गों के तरीके से हटना कैम की नजर में इतना सख्त था कि उसने हजरत सालेह को दीवाना करार दे दिया। यह कशमकश लम्बी मुद्दत तक जारी रही। आखिर उन्होंने मुतालबा किया कि कोई मोजिजा दिखाओ। अल्लाह तआला के हुक्म से एक मेजिज जहिर हुआ। जो बयक़्क़स मेजिज भी था और कैम के हक में खुदा की अदालत भी। यह एक ऊंटनी थी जो खिर्क आदत (दिव्य रूप) के तौर पर जूहर में आई। हजरत सालेह ने कहा कि यह खुदा की ऊंटनी है। यह तुम्हारे खेतों और बागों में आजादाना तौर पर घुमेगी और पानी का घाट एक दिन सिर्फ इसके लिए खास होगा। कैम ने कुछ दिन तक उस ऊंटनी को बर्दाश्त किया इसके बाद उसके एक सरकश आदमी ने उसे मार डाला। उसके सिर्फ तीन दिन के बाद पूरी कैम श्रदीद जलजले से हलाक कर दी गई।

ऊंटनी को हलाक करने का जुर्म कैम के एक शख्स ने किया था मगर बहुवचन में फरमाया कि उन्होंने उसे हलाक कर दिया। इसकी वजह यह है कि हलाक करने के वक्त न तो कैम के लोगों ने उसे रोका और न बाद को अपने उस आदमी को बुरा कहा। सारे लोग उसकी हिमायत में हजरत सालेह के खिलाफ बोलते रहे। हलाक करने वाले ने अगर अपने हाथ से जुर्म किया था तो बकिया लोग दिल और ज्वान से उसके साथ शरीके जुर्म थे। इसलिए खुदा की नजर में सबके सब मुजरिम करार पाए।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَتَأْتُونَ الذَّكَرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ۖ وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ

लूत की कौम ने रसूलों को झुठलाया। जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूँ। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला तो खुदाबंद आलम के जिम्मे है। क्या तुम दुनिया वालों में से मर्दों के पास जाते हो। और तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए जो बीवियां पैदा की हैं उन्हें छोड़ते हो, बल्कि तुम हद से गुजर जाने वाले लोग हो। (160-166)

हजरत लूत जिस कौम में आए वह शहवतपरस्ती में हद को पार कर गई थी। उनके लिए उनकी बीवियां काफी न थीं। वे नौजवान लड़कों से मुबाशिरत का फेअल (समलैंगिकता) करने लगे थे। हजरत लूत ने उन्हें खुदापरस्ती और तकवे की तालीम दी और बुरे अफआल से उन्हें मना किया।

हजरत लूत उनके दर्मियान एक ऐसे दाजी की हैसियत से उठे जिसकी शख्सियत झूठ और फूज़गोई से सद फी सद पाक थी। कैम से माझी मफ़द का झगड़ छेड़े से भी उन्हें मुकम्मल परहेज किया। ये वाक़ेयात यह साबित करने के लिए काफी थे कि हजरत लूत जो कुछ कह रहे हैं पूरी संजीदगी के साथ कह रहे हैं। मगर चूँकि आपकी बात कैम की रविश के खिलाफ थी वे आपके दुश्मन हो गए। हजरत लूत की बात को वजन देने के लिए जरूरी था कि लोगों के अंदर खुदा का ख़ैफ हो। मगर यही वह चीज थी जिससे उनकी कौम के लोग पूरी तरह ख़ाली हो चुके थे। फिर वे पैगम्बर की बात पर ध्यान देते तो किस तरह देते।

قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَلُوطُ لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخُرَجِينَ ۚ قَالَ إِنِّي لَعَلَّكُمْ مِنَ الْفَالِسِينَ ۖ رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِنَ الْغَمِّ ۖ وَآهْلِي بِمَا يَعْمَلُونَ ۚ فَجَبَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۚ لَا تَعْجُوذُ فِي الْغَيْرِينَ ۚ ثُمَّ دَرَزْنَا الْأَخْرِينَ ۖ وَامْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ ۖ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

उन्होंने कहा कि ऐ लूत, अगर तुम बाज न आए तो जरूर तुम निकाल दिए जाओगे। उसने कहा मैं तुम्हारे अमल से सख्त बेजार हूँ। ऐ मेरे रब, तू मुझे और मेरे घर वालों को उनके अमल से नजात दे। पस हमने उसे और उसके सब घर वालों को बचा लिया। मगर एक बुढ़िया कि वह रहने वालों में रह गई। फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया। और हमने उन पर बरसाया एक मेंह। पस कैसा बुरा मेंह था जो उन पर बरसा जिन्हें डराया गया था। बेशक इसमें निशानी है। और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तेरा रब वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। (167-175)

बहरे मुदर (Dead Sea) के जुनूब (दक्षिण) और मशरक (पूर्व) का इलाका आज वीरान हालत में नजर आता है। मगर 2300-1900 ई० पू० के जमाने में वह निहायत सरसब्ज इलाका था। कैमे लूत इसी इलाके में आबाद थी। हजरत लूत की मुसलसल तब्बीग के बावजूद उन्होंने अपनी इस्लाह नहीं की यहां तक कि वे आपको कत्ल करने के दरपे हो गए। उस वक्त उन्हें जबरदस्त जलजले के जरिए हलाक कर दिया गया। इस बर्बादशुआ इलाके का एक हिस्सा बहरे मुदर के नीचे दफन है और एक हिस्सा खंडहर बना हुआ पड़ा है। यह वाक़्या अब से चार हजार साल पहले पेश आया।

हजरत लूत की बीवी अपने आपको कौमी रिवायात से ऊपर न उठा सकी। वह पैगम्बर की बीवी होने के बावजूद अपने कौमी मजहब की वफ़ादार बनी रही। नतीजा यह हुआ कि जब खुदा का अजाब आया तो वह भी आम मुकिरीन के साथ हलाक कर दी गई।

كَذَّبَ أَصْحَابُ لَيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجَرْتُ إِلَىٰ أَعْلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۖ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۖ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْبُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۖ وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبَالَ الْأُولَىٰ ۖ

ऐका वालों ने रसूलों को झुठलाया। जब शुऐब ने उनसे कहा क्या तुम डरते नहीं। मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर (विश्वसनीयता) रसूल हूं। पस अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं मांगता। मेरा बदला खुदावंद आलम के जिम्मे है। तुम लोग पूरा-पूरा नापो और जुस्तान देने वालों में से न बनो। और सीधी तराजू से तोलो और लोगों को उनकी चीजें घटाकर न दो और जमीन में फसाद न फैलाओ। और उस जात से डरो जिसने तुम्हें पैदा किया है और पिछली नस्लों को भी। (176-184)

‘ऐका’ के लफ्जी मअना जंगल के हैं। यह तबूक का पुराना नाम है। कैमे शुऐब हजरत इब्राहीम अलेहिस्सलाम की नस्ल से थी। वह जिस इलाके में आबाद हुई, उसका मर्कजी शहर तबूक था। इसीलिए कुरआन में उसे असहाबे ऐका कहा गया है।

तमाम अरबाकी और मआशिरती खराबियों की जड़ ‘मीजान’ में फर्क करना है। सही मीजान (तराजू) यह है कि आदमी दूसरों को वह दे जो अजरुए हक उन्हें देना चाहिए। और अपने लिए वह ले जो अजरुए हक उसे लेना चाहिए। यही खुदाई मीजान है। जब इस मीजान में फर्क किया जाता है तो उसी वक्त इज्तिमाई जिंदगी में बिगाड़ पैदा हो जाता है। ताहम इस मीजान पर कायम होने का राज अल्लाह का खैफ है। अगर अल्लाह का डर दिल से निकल जाए तो कोई चीज आदमी को मीजान पर कायम नहीं रख सकती।

खुदा की तरफ से जितने रसूल आए सबने अपनी मुखातब कौमों से कहा कि ‘मैं तुम्हारे लिए एक मोतबर रसूल हूँ’ इससे अंदाजा होता है कि दाओ के अंदर एतबारियत की सिफत लाजिमी तौर पर मौजूद होना चाहिए। इसी एतबारियत का एक पहलू यह है कि दाओ अपनी मदऊ कौम से मआशी (आर्थिक) और माददी झगड़ा न छेड़े ताकि उसकी बेगरज मक्सदियत मुशतबह (संदिग्ध) न हो। यह एतबारियत इतनी अहम है कि उसे हर हाल में हासिल करना जरूरी है। चाहे इसकी खातिर दाओ को अपने माददी हुकूक से यकतरफ तौर पर दस्तबरदार होना पड़े।

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۖ وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِنْ نَطَّلُكَ لَئِنْ

الْكَذِبِينَ ۖ فَاسْقُطْ عَلَيْكَ إِسْقَاطُ السَّمَاءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۖ قَالَ رَبِّیْ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۖ فَكَذَّبُوهُ فَاتَّخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلُمَةِ إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۖ

उन्होंने कहा कि तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। और तुम हमारे ही जैसे एक आदमी हो। और हम तो तुम्हें झूठे लोगों में से ख्याल करते हैं। पस हमारे ऊपर आसमान से कोई डुकड़ा गिराओ अगर तुम सच्चे हो। शुऐब ने कहा, मेरा रब खूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो। पस उन्होंने उसे झुठला दिया। फिर उन्हें बादल वाले दिन के अज़ाब ने पकड़ लिया। बेशक वह एक बड़े दिन का अजाब था। बेशक इसमें निशानी है और उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं। और बेशक तुम्हारा रब जबरदस्त है, रहमत वाला है। (185-191)

हजरत शुऐब की कैम को अपने आबाई तरीकेकी सदावत पर इस कदर यकीन था कि पैगम्बर की बात उसे उल्टी और बेजोड़ मालूम हुई। उसने कहा कि तुम पर शायद किसी ने सख्त अमल कर दिया है। इसलिए तुम ऐसी बातें कर रहे हो।

उनका यह कहना कि हमारे ऊपर आसमानी अजाब लाओ, इसका रुख खुदा की तरफ नहीं बल्कि हजरत शुऐब की तरफ था। वे हजरत शुऐब को बेहकीकत साबित करने के लिए ऐसा कहते थे। क्योंकि वे हजरत शुऐब को ऐसा नहीं समझते थे कि उनके कहने से आसमानी अजाब आ जाएगा।

आखिरकार कौम की सरकशी का नतीजा यह हुआ कि साएबान की तरह एक बादल ने उनके ऊपर साया कर लिया। फिर खुदा के हुक्म से उसके अंदर से ऐसी आग बरसी जिसने पूरी कौम को मिटाकर रख दिया।

وَإِنَّا لَنَنْزِيلُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ۖ عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ۖ بِلسَانٍ عَرَبِيٍّ مُبِينٍ ۖ وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأُولَىٰ ۖ وَأَلَمْ يَكُنْ لَهُمُ آيَةٌ أَنْ يَأْعَمَّكُمْ عَلَيْكُمْ أَوْ يَنْزِلَ

और बेशक यह खुदावंद आलम का उतारा हुआ कलाम है। इसे अमानतदार फरिश्ता लेकर उतरा है तुम्हारे दिल पर ताकि तुम डराने वालों में से बनो। साफ अरबी जबान में और इसका जिक्र अगले लोगों की किताबों में है और क्या उनके लिए यह निशानी

नहीं है कि इसे बनी इस्राईल के उलमा (विद्वान) जानते हैं। (192-197)

कुरआन अगरचे बजाहिर एक इंसानी ज़बान में है। मगर इसकी अदबी अज्मत इतनी गैर मामूली है कि वह खुद अपनी ज़बान के एतबार से एक बरतर खुदाई कलाम होने की शहादत दे रहा है। कुरआन की सदाकत का मज़ीद सबूत यह है कि कुरआन के नुज़ूल से बहुत पहले पैदा होने वाले पैग़म्बरों ने इसकी पेशीनगोई (भविष्यवाणी) की। यह पेशीनगोई आज भी तौरात और जबूर और इंजील में मौजूद है। इन्हीं पेशीनगोइयों की बिना पर उस ज़माने के बहुत से मसीही और यहूदी उलमा (मसलन अब्दुल्लाह बिना सलाम) इस पर ईमान लाए। यह सिलसिला आज तक जारी है।

खुदा के कलाम का इस तरह खुसूसी एहतिमाम के साथ उतरना किसी बहुत खुसूसी मक्सद के तहत ही हो सकता है। और वह मक्सद यह है कि इंसान को आने वाले सख्त दिन से आगाह किया जाए। आखिरत से सचेत करना पिछली तमाम आसमानी किताबों का भी ख़ास मक्सद था और यही कुरआन का भी ख़ास मक्सद है।

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ۖ فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٢﴾
كَذَلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۖ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ حَتَّىٰ يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿١٩٣﴾
فِي آتِيَتِهِمْ بَغْتَةً ۖ وَهُمْ لَا يُشْعُرُونَ ۚ فَيَقُولُوا أَهْلُ مَحْنٍ مُنْظَرُونَ ﴿١٩٤﴾

और अगर हम इसे किसी अजमी (गैर अरबी) पर उतारते फिर वह उन्हें पढ़कर सुनाता तो वे इस पर ईमान लाने वाले न बनते। इसी तरह हमने ईमान न लाने को मुजरिमों के दिलों में डाल रखा है। ये लोग ईमान न लाएंगे जब तक सख्त अज़ाब न देख लें। पस वह उन पर अचानक आ जाएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। फिर वे कहेंगे कि क्या हमें कुछ मोहलत मिल सकती है। (198-203)

कुरआन अरबी ज़बान में आया और जिस पैग़म्बर ने इसे पेश किया उसकी भी मादरी ज़बान (मातृ-भाषा) अरबी थी। इस बिना पर मुकिरीन को यह कहने का मौक़ा मिल गया कि यह तो खुद इनका अपना कलाम है। वह एक अरब हैं इसलिए इन्होंने अरबी में एक कुरआन तस्नीफ़ (रचित) कर लिया।

मगर एतराज का यह अंदाज़ खुद बता रहा है कि यह कोई संजीदा एतराज नहीं है। और जो लोग किसी मामले में संजीदा न हों वे हमेशा कोई न कोई शोशा निकाल लेते हैं। मसलन अगर ऐसा किया जाता कि किसी गैर अरबी पर यह अरबी कुरआन उतार दिया जाता और वह शख्स अरबी ज़बान से नावाकिफ़ होने के बावजूद अरबी कुरआन उन्हें पढ़कर सुनाता तो वे फौरन यह कह देते कि 'कोई अरब इसे सिखा जाता है।'

जो लोग नाहक की बुनियाद पर अपनी जिदगी की इमारत खड़ी किए हों उनके लिए हक़ का

एतराफ़ करना खुद अपनी नफ़ी (नकार) के हममअना होता है। ऐसे लोगों के सामने जब हक़ आए और वे ज़ती मसालेह (हितों) को अहमियत देते हुए हक़ का एतराफ़ न करें तो इंकार का मिजाज उनकी नपिसयात में इस तरह शामिल हो जाता है कि उन्हें दुबारा उससे निकलना नसीब नहीं होता।

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٩٥﴾ أَفَرَأَيْتَ إِنَّمَا مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿١٩٦﴾ ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٩٧﴾ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ كَذٰلِكَ نَوَاسِئُهُمْ ﴿١٩٨﴾ وَمَا أَهْلَكُنَا مِنْ قَبْلِهِ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ﴿١٩٩﴾ ذِكْرَىٰ ۖ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٠٠﴾ وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيَاطِينُ ﴿٢٠١﴾ وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ ۖ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ ﴿٢٠٢﴾ إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعَزُونَ ﴿٢٠٣﴾

क्या वे हमारे अज़ाब को जल्द मांग रहे हैं। बताओ कि अगर हम उन्हें चन्द साल तक फायदा पहुंचाते रहें फिर उन पर वह चीज आ जाए जिससे उन्हें डराया जा रहा है तो यह फायदामंदी उनके किस काम आएगी। और हमने किसी बस्ती को भी हलाक नहीं किया मगर उसके लिए डराने वाले ये याद दिलाने के लिए, और हम जालिम नहीं हैं। और इसे शैतान लेकर नहीं उतरे हैं। न यह उनके लिए लायक है। और न वे ऐसा कर सकते हैं। वे इसे सुनने से रोक दिए गए हैं। (204-212)

पैग़म्बर की सतह पर जब खुदा की दावत जाहिर होती है तो वह अपनी आखिरी कामिल सूत में जाहिर होती है। यही वजह है कि पैग़म्बर का इंकार करने वाली कौम पर खुदा का अज़ाब आना लाजिमी हो जाता है। ताहम जब तक अज़ाब अमलन न आ जाए आदमी अपने को महफूज़ समझता है। वह हक़ की दावत को बेक़ीयत साबित करने के लिए तरह-तरह की बातें करता है। कभी पैग़म्बर की शख्सियत की तहकीर करता है। कभी पैग़म्बर के लिए हुए कलाम को बनावटी कलाम बनाता है। कभी यह कहता है कि तुम्हारे बयान के मुताबिक अगर खुदा हमारे साथ नहीं तो वह हमें सजा क्यों नहीं देता।

पैग़म्बर की जिम्मेदारी या पैग़म्बर की पैरवी में दाओ की जिम्मेदारी सिर्फ़ यह है कि वह लोगों को अग्रे हक़ से आगाह कर दे। इससे आगे के तमाम मामलात खुदा के जिम्मे हैं और वही जब चाहता है उन्हें जाहिर करता है।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۚ فَتَكُونَ مِنَ الْمَعْدِيَةِ ﴿٢٠٤﴾ وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ﴿٢٠٥﴾ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ ۚ لِمَنِ الْبَيْعُكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٠٦﴾ فَإِنْ عَصَاكَ فَقُلْ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٠٧﴾ وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٢٠٨﴾ الَّذِي يَرْبُكَ حِينَ تَقُومُ ۖ وَتَقَابُكُ فِي السُّجُودِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٢٠٩﴾

पस तुम अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारो कि तुम भी सजा पाने वालों में से हो जाओ। और अपने करीबी रिश्तेदारों को डराओ। और उन लोगों के लिए अपने बाजू झुकाए रखो जो मोमिनीन में दाखिल होकर तुम्हारी पैखी करें। पस अगर वे तुम्हारी नाफरमानी करें तो कहो कि जो कुछ तुम कर रहे हो मैं उससे बरी हूँ। और जबरदस्त और महरबान खुदा पर भरोसा रखो। जो देखता है तुम्हें जबकि तुम उठते हो और तुम्हारी चलत-फिरत नमाजियों के साथ, वेशक वह सुनने वाला जानने वाला है। (213-220)

अल्लाह के सिवा किसी और को माबूद बनाना अल्लाह की नजर में बहुत बड़ा जुर्म है। ऐसा करने के बाद कोई शख्स सजा से बच नहीं सकता, यहां तक कि वह शख्स भी नहीं जो जबान व कलम से तौहीद (एकेश्वरवाद) का अलमबरदार बना हुआ हो। दाओ का काम यह है कि अपने आपको पूरी तरह शिर्क से बचाते हुए लोगों को हक की तरफ बुलाए, जिनमें उसके करीबी लोग बदर्जए ऊला (प्राथमिकता से) शामिल हैं।

हक का साथ देने के लिए अपनी बड़ाई के बुत को तोड़ना पड़ता है। यही वजह है कि बड़े लोगों में बहुत कम ऐसे अफराद निकलते हैं जो हक का साथ देने के लिए तैयार हों। ज्यादातर ऐसा होता है कि हक का साथ देने के लिए वे लोग उठते हैं जो समाज में कमतर हैसियत रखते हों। यह वाकया दाओ के लिए सख्त इम्तेहान होता है। दाओ को इससे बचना पड़ता है कि दूसरों की तरह वह भी उन्हें हकीर समझे, जो लोग गैर इस्लामी समाज में हकीर (तुच्छ) बने हुए थे वे इस्लामी हलके में आकर भी बदस्तूर हकीर बने रहें।

दाओ वह है जिसका खुदा से तअल्लुक इतना बड़ा हुआ हो कि रात की तंहाइयों में वह बेकरार होकर अपने विस्तर से उठ खड़ा हो। अपने सज्दागुजार साथियों की कीमत उसकी नजर में इतनी ज्यादा हो कि वह उन्हीं को अपनी दिलचस्पियों का मर्कज बना ले।

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ ﴿٢١٣﴾ تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ﴿٢١٤﴾ يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثُرُهُم كِدْبُونَ ﴿٢١٥﴾ وَالشَّعْرَاءُ يَنبَغُهُمُ الْغَاوُونَ ﴿٢١٦﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢١٧﴾ وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ ﴿٢١٨﴾ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَذِكْرِ الذِّكْرِ أَذْ لَا يَذْكُرُونَ ﴿٢١٩﴾ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ﴿٢٢٠﴾

ع. १०

क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं। वे हर झूठे गुनाहगार पर उतरते हैं। वे कान लगाते हैं और उनमें से अक्सर झूठे हैं। और शायरों के पीछे बेराह लोग चलते हैं। क्या तुम नहीं देखते कि वे हर वादी में भटकते हैं और वह कहते हैं जो वह करते

नहीं। मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए और उन्होंने अल्लाह को बहुत याद किया और उन्होंने बदला लिया बाद इसके कि उन पर जुल्म हुआ। और जुल्म करने वालों को बहुत जल्द मालूम हो जाएगा कि उन्हें कैसी जगह लौटकर जाना है। (221-227)

पैगम्बर के कलाम में गैर मामूलीपन इतना नुमायां (स्पष्ट) था कि पैगम्बर के मुकिरीन भी उसकी तरदीद (खंडन) नहीं कर सकते थे। चुनांचे वे अपने लोगों को मुतमइन करने के लिए कह देते कि यह काहिन और आमिल हैं। और इनके कलाम में जो गैर मामूलीपन है वह काहिन और आमिल होने की बिना पर है न कि पैगम्बर होने की बिना पर। इसी तरह वे कुरआन को शायर का कलाम बताते थे। फरमाया कि इस बात की तरदीद (खंडन) के लिए यही काफी है कि पैगम्बर का और काहिनों और शायरों का मुकाबला करके देखा जाए। दोनों की जिंगियों में इतना ज्यादा फर्क मिलेगा कि कोई संजीदा आदमी हरगिज एक को दूसरे पर कयास नहीं कर सकता।

शायरी की बुनियाद तख्युल (कल्पना) पर है न कि हक़ाइक (यथार्थ) व वाकियात पर। यही वजह है कि शायर लोग हमेशा ख्यालात की दुनिया में परवाज करते हैं। वे कभी एक क्रिस्म की बातें करते हैं और कभी दूसरे क्रिस्म की। इसके बरअक्स पैगम्बर और आपके साथियों का हाल यह है कि वे अल्लाह की बुनियाद पर खड़े हुए हैं जो सबसे बड़ी हकीकत है। उनकी जिंदगियां कौल व अमल की यकसानियत (एकरूपता) की मिसालें हैं। अल्लाह की गहरी मअरफत (अन्तर्ज्ञान) ने उन्हें अल्लाह की याद करने वाला बना दिया है। उनकी एहतियात इतनी बढ़ी हुई है कि वे अगर किसी के खिलाफ कार्रवाई करते हैं तो सिर्फ उस वक्त करते हैं जबकि उसने उनके ऊपर सरीह जुम् किया हो। मुस्तकबिल (भविष्य) की नजाकत आदमी को उसके हाल (वर्तमान) के बारे में संजीदा बना देती है। जो शख्स मुस्तकबिल के बारे में हस्सास (संवेदनशील) न हो वह हाल के बारे में भी हस्सास नहीं हो सकता।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿٢٢١﴾ تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٢٢٢﴾ هُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٢٣﴾ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ﴿٢٢٤﴾ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ﴿٢٢٥﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْآخَسِرُونَ ﴿٢٢٦﴾ وَإِنَّكَ لَتَلْقَى الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ عَلِيمٍ ﴿٢٢٧﴾

ع. ११

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। ता० सीन०। ये आयतें हैं कुरआन की और एक वाजेह किताब की। रहनुमाई और खुशखबरी ईमान वालों के लिए। जो नमाज कायम करते हैं और जकात देते हैं और वे आखिरत पर यकीन रखते हैं। जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते उनके कामों को हमने उनके लिए खुशनुमा बना दिया है, पस वे भटक रहे हैं। ये लोग हैं जिनके लिए बुरी सजा है और वे आखिरत में सज़ा खसारे (घाटे) में होंगे। और वेशक कुरआन तुम्हें एक हकीम (तत्वदर्शी) और अलीम (ज्ञानवान) की तरफ से दिया जा रहा है। (1-6)

जब आदमी के सामने हक आए और वह किसी तहफुज के बगैर उसका एतराफ कर ले तो इसका नतीजा यह होता है कि वह फौरन सही रुख पर चल पड़ता है। उसकी जिंदगी हर एतबार से दुरुस्त होती चली जाती है। इसके बरअक्स जो शख्स अपने आपको हक के मुताबिक ढालने के लिए तैयार न हो वह मजबूर होता है कि खुद हक को अपने मुताबिक ढाले। इसी नफिसयाती कैफियत का दूसरा नाम तज्जिने आमाल है। ऐसा आदमी अपनी रविश को जाइज साबित करने के लिए खुदसाखा दलीलें तलाश करता है। ये दलीलें धीरे-धीरे उसके जेहन पर इस तरह छा जाती हैं कि वे उसे ऐन दुरुस्त मालूम होती हैं। अपना ग़लत अमल उसे अपनी झूठी तौजीहात (तर्कों) की रोशनी में सही नज़र आने लगता है। जो लोग हक की दावत के बारे में संजीदा न हों वे हमेशा तज्जिने आमाल का शिकार हो जाते हैं। ऐसे लोग ऐन अपनी नफिसयात के नतीजे में अपनी इस्लाह की तरफ से बिल्कुल ग़ाफिल हो जाते हैं। अपने ग़लत को सही समझने की उन्हें यह भारी कीमत देनी पड़ती है कि वे ऐसे रास्ते पर चलते रहें जिसकी आखिरी मंजिल जहन्नम के सिवा और कुछ नहीं।

إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لَأَهْلِيهِ إِنِّي آنستُ نَارًا سَاتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ بَشِيرٍ ۖ وَبَشِيرٍ قَبْسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ۖ فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنْ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَنَ اللَّهُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि मैंने एक आग देखी है। मैं वहां से कोई ख़बर लाता हूँ या आग का कोई अंगारा लाता हूँ ताकि तुम तापो। फिर जब वह उसके पास पहुंचा तो आवाज दी गई कि मुबारक है वह जो आग में है और जो उसके पास है। और पाक है अल्लाह जो सब है सारे जहान का। (7-8)

किबती की मौत के वाक्य के बाद हजरत मूसा अलैहिस्सलाम मिस्र से मदन चले गए

थे। मदन का इलाका बहरे अहमर (लाल सागर) की उस शाख के मशरिकी साहिल (पूर्वी तट) पर था जिसे ख़लीज अक्बा कहा जाता है। हजरत मूसा ने यहां तकरीबन आठ साल गुज़ारे। इसके बाद वह अपनी अहलिया (पत्नी) के साथ मिस्र वापस जाने के लिए रवाना हुए। इस सफर में वह बहरे अहमर की दोनों शाखों के दरमियान उस पहाड़ के किनारे पहुंचे जिसका कदीम नाम तूर था और अब उसे जबल मूसा (Gebel Musa) कहा जाता है।

यह ग़ालिबन सर्दियों की रात थी। हजरत मूसा को दूर पहाड़ पर एक आग सी चीज नज़र आई। वह उसकी तरफ रवाना हुए। मगर करीब पहुंच कर मालूम हुआ कि यह खुदा की तजल्ली (आलोक) थी न कि कोई इंसानी आग।

पहाड़ के ऊपर जहां हजरत मूसा ने रोशनी देखी थी वहां आज भी एक कदीम दरख्त मौजूद है। कहा जाता है कि यही वह दरख्त है जिसके ऊपर से हजरत मूसा को खुदा की आवाज सुनाई दी थी। यहां बाद को ईसाई हजरत ने गिरजा और खानकाह (आश्रम) तामीर कर दिया जो आज भी लोगों के लिए जियारतगाह बना हुआ है।

يُوسَىٰ إِنَّكَ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۖ وَالْقَصَاكَ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَرُكَ أَهْلًا جَانٍ وَلِيٍّ مُّذْبِرًا ۖ وَلَمْ يُقَبِّ يُّوسَىٰ لَا تَخَفْ إِنِّي لَا يَخَافُ لَدَى الْمَرْسُونَ ۖ إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَلْ حَسَنًا بَعْدَ سَوْءٍ فَإِنِّي غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۖ وَأَدْخِلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخَرُّجَ بَيْضًا مِنْ غَيْرِ سَوْءٍ فِي ثِيَابٍ مِّنَ الْفِرْعَوْنَ ۖ وَقُولْ لَهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ لَيْلَا مُبْصِرَةً قَالُوا هَذَا سَحَرٌ مِّنْ يُّوسَىٰ ۖ وَجَعَدُوا بِهَا ۖ وَأَسْتَبَقْتُمْ أَنْفُسَكُمْ ظُلُمًا وَعُلُوًّا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ۖ

ऐ मूसा यह मैं हूँ अल्लाह, जबरदस्त हकीम (तत्वदर्शी)। और तुम अपना असा (डंडा) डाल दो। फिर जब उसने उसे इस तरह हरकत करते देखा जैसे वह सांप हो तो वह पीछे को मुड़ा और पलट कर न देखा। ऐ मूसा, डरो नहीं मेरे हुज़ूर पैगम्बर डरा नहीं करते। मगर जिसने ज्यादाती की। फिर उसने बुराई के बाद उसे भलाई से बदल दिया। तो मैं बख़्शने वाला महरबान हूँ। और तुम अपना हाथ अपने गिरेबान में डालो, वह किसी ऐब के बगैर सफेद निकलेगा। यह दोनों मिलकर नौ निशानियों के साथ फिरऔन और उसकी कौम के पास जाओ। वेशक वे नाफरमान लोग हैं। पस जब उनके पास हमारी वाजेह निशानियां आईं, उन्होंने कहा यह खुला हुआ जादू है। और उन्होंने उनका इंकार किया हालांकि उनके दिलों ने उनका यकीन कर लिया था, जुल्म और घमंड की वजह से। पस देखो कैसा बुरा अंजाम हुआ मुफ़्सीदों (उपद्रवियों) का। (9-14)

हजरत मूसा पहाड़ पर आग के लिए गए थे। मगर वहां पहुंच कर मालूम हुआ कि वह पैगम्बरी के लिए बुलाए गए हैं। अल्लाह तआला जब अपने किसी बंदे को खुसूसी अतिया देता है तो अचानक और गैर मुतवक्कअ (अप्रत्याशित) तौर पर देता है ताकि वह उसे बराहेरास्त अल्लाह की तरफ से समझे और उसके अंदर ज्यादा से ज्यादा शुक्र का जच्चा पैदा हो।

हजरत मूसा की वैम (बनी इस्राईल) अगरचे उस वक्त के लिहाज से एक मुस्लिम वैम थी। मगर अब वह बिल्कुल बेजान हो चुकी थी। दूसरी तरफ उन्हें फिरऔन जैसे जाविर (दमनकारी) हुक्मरां के सामने तौहीद की दावत पेश करना था। इसलिए अल्लाह तआला ने आगाज ही में आपको असा का मोजिजा अता फरमा दिया। यह असा हजरत मूसा के लिए एक मुत्किल ख़ुदाई तावक़ था। इसी ज़रिए से फिरऔन के मुक्कबले में 9 मोजिजात जहिर हुए। बनी इस्राईल के लिए जाहिर होने वाले मोजिजात इनके अलावा थे।

हजरत मूसा के मोजिजात ने आखिरी हद तक आपकी सदाकत साबित कर दी थी। इसके बावजूद फिरऔन और उसके साथियों ने आपका एतराफ नहीं किया। इसकी वजह उनका जुम और घमंड था। फिरऔन और उसके साथी अपनी आजादी पर कैद लगाने के लिए तैयार न थे। मजीद यह कि वे जानते थे कि मूसा की बात मानना अपनी बड़ाई की नफ़ी (नकार) करना है। और कौन है जो अपनी बड़ाई की नफ़ी की कीमत पर सच्चाई को माने।

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا ۖ وَقَالَ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَى كَثِيرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنَظِقَ الظَّيْرِ وَأَوْتَيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۚ إِنَّ هَذَا هُوَ الْفَضْلُ الْبَهِيمُ ۙ

और हमने दाऊद और सुलैमान को इल्म अता किया। और उन दोनों ने कहा कि शुक्र है अल्लाह के लिए जिसने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बंदों पर फज़ीलत (श्रेष्ठता) अता फरमाई। और दाऊद का वारिस सुलैमान हुआ। और कहा कि ऐ लोगो, हमें परियों की बोली सिखाई गई है, और हमें हर किस्म की चीज दी गई। बेशक यह खुला हुदा फल है। (15-16)

हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के पैगम्बर और बादशाह थे। आपके बेटे हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम भी पैगम्बर और बादशाह हुए। आपकी सल्तनत फिलिस्तीन और शर्क उर्दुन से लेकर शाम तक फैली हुई थी। आपको अल्लाह तआला ने मुक्कलिल किस्म की संअती (औद्योगिक) मालूमात दी थी। साथ ही, आपको मोजिजाती तौर पर कई चीजें अता हुई थीं। मसलन चिड़ियों की बोलियां समझना। और उन्हें तर्बियत देकर उन्हें ख़बर रसानी के लिए इस्तेमाल करना। हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम को अपने हमजमाना लोगों पर ग़ैर मामूली बरतरी हासिल थी। मगर इस बरतरी ने उनके अंदर सिर्फ तवाजोअ (विनम्रता) का जच्चा पैदा किया। उन्हें जो कुछ हासिल था उसे उन्होंने बराहेरास्त खुदा का अतिव्या करार दिया।

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम का जमाना सल्तनत 926 ई०पू० से लेकर 965 ई०पू०

तक है। इस लिहाज से आप तकरीबन चालीस साल हुक्मरां रहे।

وَحِشْرُ سُلَيْمَانَ جُنُودُهُ مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ۖ حَتَّىٰ إِذَا تَوَاسَىٰ وَاِلَّا الْمَمْلُ قَالَ تَمْلِكُ ۖ يَا أَيُّهَا الْمَلِكُ ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمْ لَا يَحْطُبُكُمْ سُلَيْمَانُ وَجُنُودُهُ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّن قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ ارْزُقْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتِكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَدْخِلْنِي بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ۙ

और सुलैमान के लिए उसका लश्कर जमा किया गया, जिन्न और इंसान और परिंदे, फिर उनकी जमाअतें बनाई जातीं, यहां तक कि जब वह चींटियों की वादी पर पहुंचे। एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियो, अपने सुराखों में दाखिल हो जाओ, कहीं सुलैमान और उसका लश्कर तुम्हें कुचल डालें और उन्हें ख़बर भी न हो। पस सुलैमान उसकी बात पर मुस्कराते हुए हंस पड़ा और कहा, ऐ मेरे ख मुझे तौफीक दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र अदा करूं जो तूने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर किया है और यह कि मैं नेक काम करूं जो तुझे पसंद हो और अपनी रहमत से तू मुझे अपने नेक बंदों में दाखिल कर। (17-19)

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम के लश्कर में न सिर्फ इंसान थे। बल्कि जिन्नात और परिंदे भी आपकी फौज में शामिल थे। हजरत सुलैमान का लश्कर एक बार किसी वादी से गुजरा जहां चींटियां बहुत ज्यादा थीं। चींटियों ने ग़ैर मामूली तौर पर आपके लश्कर की अज्मत का एतराफ किया। चींटियों ने इस मैके पर जो गुप्तगू की उसे हजरत सुलैमान ने भी समझ लिया।

इस तरह का कोई वाक्या एक आम इंसान को फख्र व गुरूर में मुक्तिला करने के लिए काफी है। मगर हजरत सुलैमान अपने इस हाल को देखकर सरापा शुक्र बन गए। जो कुछ बजाहिर ख़ुद उन्हें हासिल था उसे उन्होंने पूरे तौर पर खुदा के ख़ाने में डाल दिया। यही है सालेह (नेक) इंसान का तरीका।

وَنَفَقَدَ الظَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدًى هَذَا أَمْ كَانَ مِنَ الْغَالِبِينَ ۖ لَأُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا شَدِيدًا أَوْ لَأَذْبَحَنَّهُ أَوْ لَيَأْتِيَنِي بِسُلْطَنٍ مُّبِينٍ ۖ فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطْتُ بِمَا لَمْ حُطُّ بِهِ ۖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍ بِنَبَإٍ يَقِينٍ ۖ إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ۖ وَجَدْتُهَا وَقَوْمَهَا

يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَزَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ اِغْوَا لَهُمْ فَصَدَّ عَنْ سَبِيلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ۝ اَلَا يَسْجُدُونَ لِلّٰهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْخَبْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ ۝ مَا تُعَلِّمُونَ ۝ اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

और सुलेमान ने परिंदों का जायजा लिया तो कहा, क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूं। क्या वह कहीं गायब हो गया है। मैं उसे सख्त सजा दूंगा। या उसे जिन्ह कर दूंगा, या वह मेरे सामने कोई साफ हुज्जत लाए। ज्यादा देर नहीं गुजरी थी कि उसने आकर कहा, कि मैं एक चीज की खबर लाया हूं जिसकी आपको खबर न थी। और मैं सबा से एक यकीनी खबर लेकर आया हूं। मैंने पाया कि एक औरत उन पर बादशाही करती है और उसे सब चीज मिली है। और उसका एक बड़ा तख्त है। मैंने उसे और उसकी कौम को पाया कि सूरज को सज्दा करते हैं अल्लाह के सिवा। और शैतान ने उनके आमांल उनके लिए खुशनुमा बना दिए, फिर उन्हें रास्ते से रोक दिया, पस वे राह नहीं पाते, कि वे अल्लाह को सज्दा न करें जो आसमानों और जमीन की छुपी चीज को निकालता है और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम जाहिर करते हो। अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, मालिक अर्थे अजीम (महान सिंहासन) का। (20-26)

सबा (Sabaeans) कद्रीम जमाने की एक दैलतमंद कौम थी। उसका जमाना 1100 ई०पू० से लेकर 1015 ई०पू० तक है। उसका मर्कज मआरिब (यमन) था। उस इलाके में आज भी उसके शानदार खंडहर पाए जाते हैं। हजरत सुलेमान के जमाने में यहां एक औरत (बिलकीस) की हुक्मत थी। ये लोग सूरज की परस्तिश करते थे। शैतान ने उन्हें सिखाया कि माबूद वही हो सकता है जो सबसे ज्यादा नुमायां (सुस्पष्ट) हो। सूरज चूँकि तमाम दिखाई देने वाली चीजों में सबसे ज्यादा नुमायां है इसलिए वही इस कबिल है कि उसे माबूद समझा जाए और उसकी परस्तिश की जाए।

हुदहुद के जरिये हजरत सुलेमान को कौमे सबा के बारे में मुफ़स्सल मालूमात हासिल हुईं। यह हुदहुद ग़ालिबन आपकी परिंदों की फौज से तअल्लुक रखता था और बाक़यदा तबियतयाप्ता था।

قَالَ سَتَنظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكَذِبِينَ ۝ اِذْهَبْ بِكِتَابِي هَذَا فَإِنَّهُ إِلَيَّ

ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَأَنْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُونَ ۝ قَالَتْ يَأَيُّهَا الْمَلَأُوْا إِلَيَّ الْفَيْ إِلَى كِتَابِ كَرِيمٍ ۝ اِنَّهُ مِنْ سُلَيْمَانَ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ اَلَا تَعْلَمُونَ اَعْلَى وَتُوفَى مُسْلِمِينَ ۝ قَالَتْ يَأَيُّهَا الْمَلَأُوْا افْتُونِيْ فِيْ اَمْرِيْ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْا ۝ قَالُوْا نَحْنُ اَوْلٰوُ قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بِاَيْسَ شِدِّيْدٍ ۝ وَالْاَمْرُ لِلْيَكِّ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَأْمُرِينَ ۝ قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً فَافْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْا اَعْزٰةَ اَهْلِهَا اِذْلَةً وَّكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ۝ وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنظُرْهُ بِمَرْجِعِ الْمُرْسَلُوْنَ ۝

सुलेमान ने कहा, हम देखेंगे कि तुमने सच कहा या तुम झूठों में से हो। मेरा यह ख़त लेकर जाओ। फिर इसे उन लोगों की तरफ डाल दो। फिर उनसे हट जाना। फिर देखना कि वे क्या रद्देअमल प्रतिक्रिया जाहिर करते हैं। मलिका सबा ने कहा कि ऐ दरबार वाले, मेरी तरफ एक बाक़अत (प्रतिष्ठित) ख़त डाला गया है। वह सुलेमान की तरफ से है। और वह है शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है कि तुम मेरे मुकाबले में सरकशी न करो। और मुतीअ (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आ जाओ। मलिका ने कहा कि ऐ दरबारियो, मेरे मामले में मुझे राय दो। मैं किसी मामले का फैसला नहीं करती जब तक तुम लोग मौजूद न हो। उन्होंने कहा, हम लोग जोरआवर हैं। और सख्त लड़ाई वाले हैं। और फैसला आपके इस्तिआर में है। पस आप देख लें कि आप क्या हुक्म देती हैं। मलिका ने कहा कि बादशाह लोग जब किसी बस्ती में दाखिल होते हैं तो उसे ख़राब कर देते हैं और उसके इज्जत वालों को जलील कर देते हैं। और यही ये लोग करेंगे। और मैं उनकी तरफ एक हदिया (उपहार) भेजती हूं, फिर देखती हूं कि सफ़ीर (दूत) क्या जवाब लाते हैं। (27-35)

हजरत सुलेमान की कुव्वत व सल्तनत एक खुदाई अतिया थी। इसी तरह आपने सबा की हुक्मत के साथ जो मामला किया वह भी एक खुदाई मामला था। शाह अब्दुल कादिर देहलवी आयत 37 के जेल में लिखते हैं : 'और किसी पैगम्बर ने इस तरह की बात नहीं फरमाई। सुलेमान को हक़ तआला की सल्तनत का जोर था जो यह फरमाया।'

मलिका सबा (बिलकीस) ने मामले को ख़ालिस हक्कीकतपसंदाना अंदाज से देखा। उसने यह राय कायम की कि अगर हम सुलेमान की ताक़त से टकराएं तो ज्यादा इम्कान यह है कि हम हारेंगे और फिर हमारे साथ वही किया जाएगा जो हर ग़ालिब (विजित) कौम मग़लूब कौम के साथ करती है। इसके बरअक्स अगर हम इताअत कुबूल कर लें तो हम तबाही से बच जाएंगे। ताहम मलिका ने इब्तिदाई अंदाजे के लिए तोहफे भेजने का तरीका इस्तिआर किया।

ताकि मालूम हो जाए कि सुलैमान हमारी दौलत के ख्वाहिशमंद हैं। या इससे आगे उनका हमसे कोई उसूली मुतालबा है।

فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانُ قَالَ أَتَيْدُونَنِي بِمَا آتَى اللَّهُ خَيْرٌ مِّنَّا أَنكُمُ بَلْ أَنْتُمْ
بِهِدَّيْتِكُمْ تَفْرَحُونَ ۝ إِرْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُمْ بِجُودٍ لَا قَبْلَ لَهُمْ بِهَا وَ
لَنُخْرِجَهُمْ مِنْهَا أَذِلَّةً وَهُمْ صَاغِرُونَ ۝

फिर जब सफ़ीर (दूत) सुलैमान के पास पहुंचा, उसने कहा क्या तुम लोग माल से मेरी मदद करना चाहते हो। पस अल्लाह ने जो कुछ मुझे दिया है वह उससे बेहतर है जो उसने तुम्हें दिया है। बल्कि तुम ही अपने तोहफे से खुश हो। उनके पास वापस जाओ। हम उन पर ऐसे लश्कर लेकर आएंगे जिनका मुकाबले वे न कर सकेंगे और हम उन्हें वहां से बेइज्जत करके निकाल देंगे। और वे ख़्वाब सम्मानहीन होंगे। (36-37)

हजरत सुलैमान को नुकुवत और खुदा की मअरफ़त की शकल में जो कीमती दौलत मिली थी, उसके मुकाबले में हर दूसरी दौलत उनकी नजर में हैब हो चुकी थी। चुनांचे मलिका सबा की तरफ से जब उनके पास सोने चांदी के तोहफे पहुंचे तो उन्होंने उनकी तरफ निगाह भी न की।

हजरत सुलैमान ने अपने अमल से मलिका सबा के सफ़ीरों को यह तास्सुर दिया कि मेरा मामला उसूली मामला है न कि मफ़ाद का मामला। मुफ़र्रिसर इन्हे कसीर इसकी तशरीह में यह अल्फ़ाज लिखते हैं : 'क्या तुम माल देकर मुझे मुतअस्सिर करना चाहते हो कि मैं तुम्हें तुम्हारे शिर्क पर छोड़ दूं और तुम्हारी हुकूमत तुम्हारे पास रहने दूं।'

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَيُّكُمْ يَأْتِينِي بِعَرْشِي قَبْلَ أَنْ يَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ۝ قَالَ عِفْرِيتٌ مِّنَ
الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ مِنْ مَّقَامِكَ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ۝ قَالَ الَّذِي
عِنْدَهُ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ فَلَمَّا رَآهُ مُسْتَقِرًّا
عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِي رَبِّي لِيُبَيِّنُوا لِي آسَاءُ أَمْ أَكْفَرُ ۝ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا
يُشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ ۝

सुलैमान ने कहा ऐ दरबार वाले, तुम में से कौन उसका तख़्त (सिंहासन) मेरे पास लाता है इससे पहले की वे लोग मुतीअ (आज्ञाकारी) होकर मेरे पास आएंगे। जिनमें से एक देव ने कहा, मैं उसे आपके पास ले आऊंगा इससे पहले कि आप अपनी जगह से उठें,

और मैं इस पर कुदरत रखने वाला, अमानतदार हूं। जिसके पास किताब का एक इल्म था उसने कहा, मैं आपके पलक झपकने से पहले उसे ला दूंगा। फिर जब उसने तख़्त को अपने पास रखा हुआ देखा तो उसने कहा, यह मेरे रब का फज़ल है। ताकि वह मुझे जांचे कि मैं शुक्र करता हूं या नाशुक्र। और जो शख्स शुक्र करे तो अपने ही लिए शुक्र करता है। और जो शख्स नाशुक्र करे तो मेरा रब बेनियाज (निस्पृह) है कर्म करने वाला है। (38-40)

हजरत सुलैमान के पास अगरचे ग़ैर मामूली ताक़त थी। मगर उन्होंने इस्तेमाले ताक़त के बजाए मुज़हिर ताक़त के जरिए कैम सबा को ज़े करने का मंसूबा बनाया। चुनांचे आपने अपने खुसूसी कारिदे के जरिए मलिका के तख़्त को मआरिब (Marib) के महल से यरोशलम (फिलिस्तीन) मंगवाया। तख़्त को मंगवाने का वाक्या ग़ालिबन उस वक़्त पेश आया जबकि तोहफे की वापसी के बाद मलिका सबा यमन से फिलिस्तीन के लिए रवाना हुई। ताकि वह हजरत सुलैमान के दरबार में पहुंच कर बराहेरास्त आपसे गुफ़्तगू करे। मलिका सबा का अपने ख़दम व हशम (सेवकों, दरबारियों) के साथ यह सफ़र यकीनन उस वक़्त हुआ होगा, जबकि उसके सिफ़ारती वफ़द ने वापस जाकर हजरत सुलैमान की हिक्मत की बातें और आपके ग़ैर मामूली किरदार की शहादत दी और आपकी ग़ैर मामूली अज्मत का हाल बयान किया।

मआरिब से यरोशलम का फ़सला तकरीबन डेढ़ हजार मील है। यह लम्बा फ़सला इस तरह तै हुआ कि इधर हजरत सुलैमान की ज़बान से हुक्म के अल्फ़ाज निकले और उधर जरोजवाहर (रत्नों) से जड़ा हुआ तख़्त उनके सामने रखा हुआ मौजूद था। इस ग़ैर मामूली कुव्वत के बावजूद हजरत सुलैमान के अंदर फ़ख़ का कोई ज़ब्बा पैदा नहीं हुआ। वह सर ता पा तवाजोअ (सर्वथा विनम्रता) बनकर खुदा के आगे झुके रहे।

قَالَ تَكْبَرُوا لَهُمَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ أَتَهْتَدِي أَمْ تَكُونُ مِنَ الَّذِينَ لَا يَهْتَدُونَ ۝ فَلَمَّا
جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا عَرْشُهُ قَالَتْ كَذَلِكَ هُوَ ۝ وَأَوْتَيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلُهَا وَكُنَّا
مُسْلِمِينَ ۝ وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۝ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ۝
قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَكَشَفَتْ عَنْ سَاقِهَا ۝ قَالَ إِنَّهُ صَرْحٌ
مُمَدَّدٌ مِّنْ قَوَارِيرَ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ۝ وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ
الْعَالَمِينَ ۝

सुलैमान ने कहा कि उसके तख़्त (सिंहासन) का रूप बदल दो, देखें वह समझ पाती है या उन लोगों में से हो जाती है जिन्हें समझ नहीं। पस जब वह आई तो कहा

गया क्या तुम्हारा तख्त ऐसा ही है। उसने कहा, गोया कि यह वही है। और हमें इससे पहले मालूम हो चुका था। और हम फरमांबरदारों में थे। और उसे रोक रखा था उन चीजों ने जिन्हें वह अल्लाह के सिवा पूजती थी। वह मुंकिर लोगों में से थी। उससे कहा गया कि महल में दाखिल हो। पस जब उसने उसे देखा तो उसे ख्याल किया कि वह गहरा पानी है और अपनी दोनों पिंडलियां खोल दीं। सुलैमान ने कहा, यह तो एक महल है जो शीशों से बनाया गया है। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी जान पर जुल्म किया। और मैं सुलैमान के साथ होकर अल्लाह रब्बुल आलमीन पर ईमान लाई। (41-44)

मलिका सबा अपने मुल्क से रवाना होकर बैतुल मक्दिदस पहुंची। यहां वह हजरत सुलैमान के महल में दाखिल हुई तो बिल्कुल अंजान तौर पर उसके सामने एक तख्त लाया गया। और कहा गया कि देखो, क्या यह तुम्हारा तख्त है। यह देखकर वह खुदा की कुदरत पर हैरान रह गई कि अपने जिस तख्त को वह मआरिब के महल में महफूज करके आई थी वह पुरअसरार (करिश्माई) तौर पर डेढ़ हजार मील का फासला तै करके बैतुल मक्दिदस पहुंच गया है।

हजरत सुलैमान के महल में दाखिल होकर मलिका सबा एक ऐसे मकाम पर पहुंची जिसका फर्श साफ शफ़फ़ शीशे की मोटी तख्तियों से बनाया गया था और उसके नीचे पानी बह रहा था। मलिका जब चलते हुए यहां पहुंची तो उसे अचानक महसूस हुआ कि उसके आगे पानी का हैज है। उस वक्त उसने वही किया जो पानी में उतरने वाला हर आदमी करता है। यानी उसने गैर इरादी तौर पर अपने कपड़े उठा लिए।

इस तरह गोया अमली तजर्बे की जवान में उसे बताया गया कि इंसान जाहिर को देखकर फरेब खा जाता है। मगर अस्ल हकीकत अक्सर उससे मुक़ल्लिफ होती है जो जह्शी आंखों से दिखाई देती है। आदमी जाहिर तौर पर सूरज और चांद को नुमायां देखकर उनकी परस्तिश करने लगता है। हालांकि हकीमी खुदा वह है जो इन जवाहिर (प्रकट चीजों) से आगे है।

मलिका सबा अब तक कौमी रिवायात के जेरेअसर सूरज की परस्तिश कर रही थी। मगर हजरत सुलैमान के करीब पहुंच कर उसने जो कुछ सुना और जो कुछ देखा उसने उसके जेहन से गैर अल्लाह की अज्मत का यकसर ख़ात्मा कर दिया। उसने दीने शिर्क को छोड़ दिया और दीने तौहीद को दिल व जान से इख़्तियार कर लिया।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيقَيْنِ يَخْتَصِمُونَ ۖ
قَالَ يَقُومُوا لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۖ
قَالُوا طَائِفًا مِنْكُم مَّعَكَ قَالَ طَائِفًا مِنْكُمْ عِنْدَ اللَّهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ۖ

और हमने समूद की तरफ उनके भाई सालेह को भेजा, कि अल्लाह की इबादत करो, फिर वे दो फ़रीक (पक्ष) बनकर आपस में झगड़ने लगे। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम के लोगो, तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी कर रहे हो। तुम अल्लाह से माफी क्यों नहीं चाहते कि तुम पर रहम किया जाए। उन्होंने कहा, हम तो तुम्हें और तुम्हारे साथ वालों को मनहूस समझते हैं। उसने कहा कि तुम्हारी बुरी किस्मत अल्लाह के पास है बल्कि तुम तो आजमाए जा रहे हो। (45-47)

हजरत सालेह अलैहिस्सलाम ने तौहीदे ख़ालिस की दावत शुरू की तो उनकी कौम दो तबकों में बंट गई। जो लोग कौम के बड़े थे वे अपनी बड़ाई में गुम रहे, और हजरत सालेह के बेआमेज (विशुद्ध) दीन को कुबूल करने के लिए तैयार न हुए। अलबत्ता छोटे लोगों में से कुछ अफ़राद निकले जिन्होंने आपकी पुकार पर लम्बैक कहा।

इन दोनों गिरोहों में इख़्तेलाफी बहसें शुरू हो गईं। बड़े लोग पुरफ़ख़ अंदाज में कहते कि हम तुम्हारे मुंकिर हैं। फिर हमारे इंकार की पादाश में जो अजाब तुम ला सकते हो ले आओ। कभी कोई मुसीबत पड़ती तो वे कह देते कि सालेह और उनके साथियों की नहूसत की वजह से यह बला हमारे ऊपर आई है। ये बातें वे हजरत सालेह और आपकी दावत की तहकीर (अनादर) के तौर पर कहते थे न कि संजीदा ख़्याल के तौर पर। उनकी अच्छी हालत और उनकी बुरी हालत दोनों खुदा की तरफ से थी। मगर अच्छी हालत से उन्होंने झूठे फ़ख़ की गिजा ली और बुरी हालत से झूठी शिकायत की।

उनके दर्मियान हक के दाओ का उठना उनके लिए खुदा का एक इस्तेहान था। वे इस आजमाइश के मैदान में खड़े कर दिए गए थे कि वे हक को पहचान कर उसका साथ देते हैं या इसके मुकाबले में अंधे बहरे बने रहते हैं। मगर वे दूसरी-दूसरी बातों में उलझे रहे और अस्ल मामले को समझने से कासिर (असमर्थ) रहे।

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ۖ قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ لَنَقُولَنَّ لِوَلِيِّهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۖ
وَمَكَرُوا مَكْرًا وَكُنَّا كَاغِبًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ ذَٰلِكُمْ أَكْثَرًا
دَقَرْنَاهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ فَتَكَ بَيُوتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوا ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۖ
وَأَنبَيَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۖ

और शहर में नौ शख्स थे जो जमीन में फ़साद करते थे और इस्लाह (सुधार) का काम न करते थे। उन्होंने कहा कि तुम लोग अल्लाह की कसम खाओ कि हम उसे और उसके लोगों को चुपके से हलाक कर देंगे। फिर उसके बली (संरक्षक) से कह देंगे कि हम उसके

घर वालों की हलाकत के वक्त मौजूद न थे। और बेशक हम सच्चे हैं। और उन्होंने एक तदबीर (युक्ति) की और हमने भी एक तदबीर की और उन्हें ख़बर भी न हुई। पस देखो कैसा हुआ उनकी तदबीर का अंजाम। हमने उन्हें और उनकी पूरी कौम को हलाक कर दिया। पस ये हैं उनके घर वीरान पड़े हुए उनके जुल्म के सबब से। बेशक इसमें सबक है उन लोगों के लिए जो जानें। और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए और जो डरते थे। (48-53)

कौम में नौ बड़े सरदार थे। वे अपने को बड़ा बाकी रखने के लिए हक को छोटा करने की कोशिश में लगे रहते थे। और इस किस्म की कोशिश बिला शुबह खुदा की जमीन में सबसे बड़ा फ़साद है।

इन सरदारों ने आखिरी मरहले में हजरत सालेह को हलाक करने की साजिश की। मगर कल्ल इसके कि वे अपने खुफ़िया मंसूबे के मुताबिक हजरत सालेह के खिलाफ कोई इक़दाम करें, खुदा ने खुद उन्हें पकड़ लिया। वे अपनी सारी बड़ाई के बावजूद इस तरह बर्बाद कर दिए गए कि उनकी कदाम बस्तियों में अब सिर्फ उनके टूटे हुए खंडहर, उनकी यादगार बाकी रह गए हैं।

इस किस्म के तारीख़ी वाक़ेयात में ज़बरदस्त सबक छुपा हुआ है। मगर इस सबक को वही शख्स पाएगा जो इसे कानून इलाही से जोड़े। इसके बरअक्स जो लोग इसे असबावे तबीई (स्वाभाविक प्रक्रिया) से जोड़ें वे इससे कोई सबक हासिल नहीं कर सकते।

وَلَوْ طَا إِيَّاهُ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْجَرُونَ ۚ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الْبِيعَالَ
شَكْوَةً مِنْ دُونِ الْبِسَاءِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّجْهَلُونَ ۚ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ
قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ لَوْ طِمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنْاسٌ يَتَطَهَّرُونَ ۚ فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ
إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ ۚ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ ۚ
قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَى عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَى ۚ اللَّهُ خَيْرٌ مِمَّا يَشْتُرُونَ ۚ

और लूत को जब उसने अपनी कौम से कहा, क्या तुम बेहयाई करते हो और तुम देखते हो। क्या तुम मर्दों के साथ शहवतरानी करते हो। औरतों को छोड़कर, बल्कि तुम लोग बेसमझ हो। फिर उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा, लूत के घर वालों को अपनी बस्ती से निकाल दो, ये लोग पाक साफ बनते हैं। फिर हमने उसे और उसके लोगों को नजात दी सिवा उसकी बीवी के, जिसका पीछे रह जाना हमने तै कर दिया था। और हमने उन पर बरसाया एक हौलनाक बरसाना। पस कैसा बुरा बरसाव था उन पर जिन्हें आगाह किया जा चुका था, कहो हम्द है अल्लाह के लिए और

सलाम उसके उन बंदों पर जिन्हें उसने मुंतख़ब फरमाया। क्या अल्लाह बेहतर है या वे जिन्हें वे शरीक करते हैं। (54-59)

कैसे लूत अपनी लज्जतियत में हमजिंसी (समलैंगिकता) की हद तक पहुंच गई थी। हजरत लूत ने कौम के जमीर को झिझोड़ते हुए कहा कि खुदा के बंदो, तुम्हें आंख दी गई है कि देखो और भले बुरे की तमीज दी गई है कि पहचानो। फिर कैसे तुम वह काम करते हो जो खुली हुई बेहयाई का काम है।

कौम के पास इसका कोई जवाब न था। वे पैग़म्बर की बात को दलील से रद्द नहीं कर सकते थे। इसलिए वे पैग़म्बर के खिलाफ जारिहियत पर आमादा हो गए। मगर जब यह नौबत आ जाए तो फिर बिला ताख़ीर खुदा का फैसला आ जाता है। चुनांचे खुदा ने आतिश फ़ानी (विनाशक) मादूदा बरसाकर उन्हें हलाक कर दिया। इस खुदाई फैसले से हजरत लूत की बीवी भी न बची जो मुशिरकों से मिली हुई थी। खुदा का मामला हर शख्स से उसके जाती अमल की बुनियाद पर होता है न कि रिश्ते और तअल्लुक की बुनियाद पर।

तारीख़ के मन्जूरा वाक़ेयात पर जो शख्स ग़ौर करेगा वह पुकार उठेगा कि उस खुदा का शुक्र है जिसने हर दौर में इंसान की रहनुमाई का इतिजाम किया और फिर उन बंदों की अक़ीदत से उसका सीना लबरेज हो जाएगा जिन्होंने अपनी जिंदगी कामिल तौर पर खुदा के हवाले करके खुदा के मंसूबए हिदायत की तक्मील की।

أَمِنْ خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَأَنْبَتْنَا بِهِ
حَدَائِقَ ذَاتِ نَبْهَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْبِتُوا شَيْئًا ۚ وَاللَّهُ مَعَ الْعَاصِينَ ۚ
قَوْمٌ يُعَذِّبُونَ ۚ أَمِنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خِلَالَهَا أَنْهَارًا وَجَعَلَ
لَهَا رَوَاسِي وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۚ وَاللَّهُ مَعَ الْكَافِرِينَ ۚ
لَا يَعْلَمُونَ ۚ

भला वह कौन है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया। और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उससे रौनक वाले बाग़ उगाए। तुम्हारे वश में न था कि तुम इन दरख़्तों को उगा सकते। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद (पूज्य) है। बल्कि वे राह से इंहिराफ करने वाले लोग हैं। भला किसने जमीन का ठहरने के लायक बनाया और उसके दर्मियान नदियां जारी कीं। और उसके लिए उसने पहाड़ बनाए। और दो समुद्रों के दर्मियान पर्दा डाल दिया। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। बल्कि उनके अक्सर लोग नहीं जानते। (60-61)

कायनात नामाखिले कयास हद तक अजीम है। उसकी अम्त के आगे वे अल्फाज सरासर नाकाफी हो जाते हैं जो गुमराहकुन इंसान उसकी ग़ैर खुदाई तौजीह के लिए बोलता रहा है। चाहे वे कदीम मुशिक इंसान के बुत हों या जदीद मुल्हद (नास्तिक) इंसान के वे नजरियात जो असबाब और इत्फाक़ात (संयोगों) की इस्तेहालों में बयान किए जाते हैं।

वेशुमार अजराम (आकाशीय पिंडों) को पैदा करके उन्हें अथाह ख़ला (अंतरिक्ष) में मुतहसिक करना, ज़मीन को निखयत आला एहतिमाम के जरिए ज़िद्गी के मुवाफ़िक बनाना, पानी और नबातात (वनस्पति) जैसी नादिर चीजों को इतिहाई इफ़रात (बहुलता) के साथ वजूद में लाना, मुसलसल हरकत करती हुई ज़मीन पर कामिल सुकून के हालात पैदा करना, दरियाओं और पहाड़ों के जरिए ज़मीन को जाए रिहाइश (आवास-स्थल) बनाना, पानी के सतही तनाव (Surface tension) के कानून के जरिए खारी पानी और मीठे पानी को एक दूसरे से अलग रखना, ये और इस तरह के दूसरे वाक़ेयात इससे ज्यादा अजीम हैं कि कोई बुत इन्हें अंजाम दे या कोई अंधा तबीई (भौतिक) कानून इन्हें वजूद दे सके।

हकीकत यह है कि एक अल्लाह के सिवा दूसरी बुनियादों पर कायनात की तौजीह करना झूठी तौजीह को तौजीह के कायम मक़ाम बनाना है। यह इन्हिराफ़ (भटकाव) है न कि फ़िल्वाक़अ कोई तौजीह।

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ
الْأَرْضِ ءَأَلِلهُ مَعَ اللَّهِ قَلِيلًا مَا تَذَكَّرُونَ ۝ أَمَّنْ يَهْدِيكُمْ فِي
ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُرْسِلِ الرِّيحَ بِشُرَائِبِنَ يَدَيَّ رَحْمَتِهِ ءَأَلِلهُ
مَعَ اللَّهِ تَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ أَمَّنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ
يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ءَأَلِلهُ مَعَ اللَّهِ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

कौन है जो बेवस की पुकार को सुनता है और उसके दुख को दूर कर देता है। और तुम्हें ज़मीन का जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाता है। क्या अल्लाह के सिवा कोई और माबूद (पूज्य) है। तुम बहुत कम नसीहत पकड़ते हो। कौन है जो तुम्हें खुशकी और समुद्र के अंधेरों में रास्ता दिखाता है। और कौन अपनी रहमत के आगे हवाओं को खुशख़बरी बनाकर भेजता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। अल्लाह बहुत बरतर है उससे जिन्हें वे शरीक ठहराते हैं। कौन है जो ख़ल्क (सृष्टि) की इत्तिदा करता है और फिर उसे दोहराता है। और कौन तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रोजी देता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है। कहो कि अपनी दलील लाओ, अगर तुम सच्चे हो। (62-64)

एक हाजतमंद की हाजत पूरी होना उस वक़्त मुमकिन होता है जबकि तमाम कायनाती असबाब उसके साथ मुवाफ़िक़ करें। फिर एक क़ादिर मुतलक (सर्वशक्तिमान) खुदा के सिवा कौन है जो इतने बड़े पैमाने पर मुवाफ़िक़ (अनुकूल) असबाब को जमा कर सकता हो।

इसी तरह एक क़ैम का हटना और दूसरी क़ैम का उसकी जगह लेना, समुद्री जहाज और मौजूदा ज़माने में हवाई जहाज का इम्कानाते फ़ितरत से फ़ायदा उठाकर अंधेरे और उजाले में सफ़र करना, समुद्र से भाप का उठना और फिर बारिश बनकर बरसना, चीजों को अदम से वजूद में लाना और फिर उन्हें दुबारा पैदा करना। इंसान के लिए वसीअ पैमाने पर हर किस्म के रिज़क का बंदोबस्त करना, ये सब खुदाई सतह के काम हैं। और एक बरतर खुदा ही इन्हें अंजाम दे सकता है।

यही ज़मीन में ज़हिर होने वाले तमाम वाक़ेयात का हाल है। यहां एक वाहिद वाक़ये को ज़हूर में लाने के लिए भी इतने वेशुमार अवामिल (कारक) दरकार होते हैं कि उसे वही हस्ती ज़हूर में ला सकती है जिसके क़ब्जे में सारी कायनात हो। फिर यह किस क़द्र बेअक्ली की बात है कि आदमी एक खुदा के सिवा किसी और को अपने जज्बाते अबदियत (बंदा होने की भावना) का मर्कज बनाए। वह एक खुदा के सिवा किसी और की परस्तिश करे।

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ
يُبْعَثُونَ ۝ بَلْ أَذْرَكَ عَلَيْهِمْ فِي الْآخِرَةِ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّنْهَا ۝
بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُونَ ۝ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا ءَإِذَا كُنَّا تُرَابًا وَآبَاءُنَا أَيْتًا
لُّمُخْرَجُونَ ۝ لَقَدْ وَعَدْنَا هَٰذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِن قَبْلُ إِن هَٰذَا إِلَّا سَاطِرٌ
الْأَوَّلِينَ ۝ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝

कहो कि अल्लाह के सिवा, आसमानों और ज़मीन में कोई शैब (अप्रकट) का इल्म नहीं रखता। और वे नहीं जानते वे कब उठाए जाएंगे। बल्कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म उलझ गया है। बल्कि वे उसकी तरफ से शक में हैं। बल्कि वे उससे अंधे हैं। और इंकार करने वालों ने कहा, क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे और हमारे बाप दादा भी, तो क्या हम ज़मीन से निकाले जाएंगे। इसका वादा हमें भी दिया गया और इससे पहले हमारे बाप दादा को भी। यह महज अगलों की कहानियां हैं। कहो कि ज़मीन में चलो फ़िरो, पस देखो कि मुजरिमों का अंजाम क्या हुआ। (65-69)

किसी पैग़म्बर के मुखातब आख़िरत के सिरे से मुकिर न थे। बल्कि वे उस तसव्वुरे आख़िरत के मुकिर थे जिसे पैग़म्बर पेश करते थे। लोग यह यकीन किए हुए थे कि आख़िरत

का मसला उनके अपने लिए नहीं है बल्कि दूसरों के लिए है। पैगम्बर ने बताया कि आखिरत तुम्हारे लिए भी वैसा ही एक संगीन मसला है जैसा कि वह दूसरों के लिए है। लोग समझते थे कि अपने बुजुर्गों से वाबस्तगी आखिरत में उनके लिए नजात का जरिया बन जाएगी। पैगम्बरों ने बताया कि आखिरत में सिर्फ खुदा की रहमत आदमी के काम आएगी न कि किसी बुजुर्ग से वाबस्तगी।

यही वजह है कि वे लोग आखिरत के बारे में एक किस्म की जेहनी उलझन में पड़े हुए थे। उनके कुछ सिरफिरे कभी ऐसे अल्फाज बोलते जैसे कि वे आखिरत के मुकिर हों। मगर आम लोगों का हाल यह था कि वे नफसे आखिरत का इंकार नहीं करते थे। अलबत्ता पैगम्बर के तसव्वुरे आखिरत को मानने में जिंदगी की आजदियां खत्म होती थीं इसलिए उनका नफस इसे मानने के लिए तैयार न था। चुनांचे इसके जवाब में वे ऐसी बातें करते थे जैसे कि वे शक में हों। अपनी इसी जेहनी कैफियत की वजह से उन्होंने आखिरत के दलाइल पर कभी संजीदगी के साथ गौर नहीं किया। उसके बारे में वे अंधे बहरे बने रहे।

हकीकत यह है कि कैमोंका फैसला करने के लिए जो ताकतें दरकार हैं वे सिर्फ ख़ुदा आलिमुल ग़ैब को हासिल हैं। वह जुजई (आंशिक) तौर पर मौजूदा दुनिया में भी अपना फैसला नाफिज करता है। और वही आखिरत में कुल्लो तौर पर तमाम कैमों के ऊपर अपना फैसला नफिज करता है।

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَكْدُرُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ عَلَىٰ أَن يَكُونَ رَدِفٌ لَّكُم بَعْضُ الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝ وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝

और उन पर ग़म न करो और दिल तंग न हो उन तदबीरों पर जो वे कर रहे हैं। और वे कहते हैं कि यह वादा कब है अगर तुम सच्चे हो। कहो कि जिस चीज की तुम जल्दी कर रहे हो शायद उसमें से कुछ तुम्हारे पास आ लगा हो। और बेशक तुम्हारा खब लोगो पर बड़े फ़ल वाला है। मगर उनमें से अक्सर शुक नहीं करते। और बेशक तुम्हारा खब ख़ूब जानता है जो उनके सीने छुपाए हुए हैं और जो वे जाहिर करते हैं। और आसमानों और ज़मीन की कोई पोशीदा चीज नहीं है जो एक वाजेह किताब में दर्ज न हो। (70-75)

‘ग़म न करो’ का मतलब हक के दाजी को ग़म से रोकना नहीं है। ग़म तो दाजी की

ग़िजा है। यह दरअसल हक की बेबसी की तरदीद (खंडन) है। इसका मतलब यह है कि सारे नामुवाफ़िक (प्रतिकूल) हालात के बावजूद आखिरकार बहरहाल हक को और हक का साथ देने वालों को कामयाबी हासिल होगी।

हक के दाजी (आह्वानकर्ता) के मुखलिफ़ीन जब हक के दाजी की मुखलिफ़त करते हैं तो वे समझते हैं कि वे एक शख्स की मुखलिफ़त कर रहे हैं। वे नहीं समझते कि यह खुद खुदा की मुखलिफ़त है न कि महज एक शख्स की मुखलिफ़त। यह सूतेहाल सिर्फ उस वक्त तक बाकी रहती है जब तक इस्तेहान की मुद्दत ख़त्म न हुई हो। इस्तेहान की मुकररह मुद्दत ख़त्म होते ही खुदा की ताकतें जाहिर हो जाती हैं और वे मुखलिफ़ीन का इस तरह ख़ात्मा कर देती हैं जैसे कि कभी उनकी कोई हैसियत ही न थी। आदमी के लिए इससे बड़ी कोई नादानी नहीं कि वह आजमाइश की फ़ुरस्त को अपने लिए सरकशी की फ़ुरस्त के हममअना बना ले।

إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقْضَىٰ عَلَىٰ بَنَىٰ إِسْرَءِيلَ أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝ وَإِلَهُ هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَىٰ الْحَقِّ الْمُبِينِ ۝ إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلُوا مَدْبِرِينَ ۝ وَمَا أَنْتَ بِهَادِي الْعُمَىٰ عَنْ ضَلَالَتِهِمْ ۝ إِنَّ تُسْمِعُ إِلَّا مَن يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ۝

बेशक यह कुरआन बनी इस्राईल पर बहुत सी चीजों को वाजेह कर रहा है जिनमें वे इख़्तेलाफ (मतभेद) रखते हैं। और वह हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए। बेशक तुम्हारा खब अपने हुक्म के जरिए उनके दर्मियान फैसला करेगा और वह जबरदस्त है, जानने वाला है। पस अल्लाह पर भरोसा करो। बेशक तुम सरीह हक (सुस्पष्ट सत्य) पर हो। तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो जबकि वे पीठ फेरकर चले जाएं। और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से बचाकर रास्ता दिखाने वाले हो। तुम तो सिर्फ उन्हें सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, फिर फरमांबरदार बन जाते हैं। (76-81)

इंसान एक ऐसी मख़्लूक है जो आंख, कान और दिमाग की सलाहियतें रखता है। इन सलाहियतों को अगर खुले तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो वे बेख़ता (अचूक) तौर पर हकीकतों को देखने और पहचानने का जरिया बन सकती हैं। लेकिन अगर कोई शख्स अपने आपको किसी मस्नूई (बनावटी) तसव्वुर से मगलूब कर ले तो उसकी इदराक (भिन्नता) की

सलाहियतें मुअत्तल (नष्ट) होकर रह जाती हैं। उसके सामने हकीकत बेनकाब सूरत में आती है मगर वह उससे इस तरह बेखबर रहता है जैसे कि वह अंधा बहरा हो। हकीकत यह है कि इस दुनिया में उसी शख्स को रास्ता दिखाया जा सकता है जो रास्ता देखना चाहे। जिसके अंदर खुद रास्ते की तड़प न हो उसके लिए किसी रहनुमा की रहनुमाई काम आने वाली नहीं।

हकमरस्त बनने के लिए सबसे ज्यादा जो चीज दरकार है वह एतराफ (स्वीकार) है। इस दुनिया में उसी शख्स को हिदायत मिलती है जिसके अंदर यह माददा हो कि जो बात दलाइल से वाजेह हो जाए वह फौरन उसे मान ले और अपनी जिद्दगी को उसकी मातहत में दे दे।

जो लोग खुदा की दावत के आगे न झुकें, उन्हें आखिरकार खुदा के फैसले के आगे झुकना पड़ता है। मगर उस वक्त का झुकना किसी के कुछ काम आने वाला नहीं।

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ
النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ۝ وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ
يُكَذِّبُ بِلَايَتِنَا فَهُمْ يُوزَعُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ قَالَ أَكَذَّبْتُم بِآيَاتِي وَ
لَمْ تُحِيطُوا بِهَا عِلْمًا أَمْ آذًا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝ وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا
فَهُمْ لَا يَتَذَقَّرُونَ ۝ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لَيْسَكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

और जब उन पर बात आ पड़ेगी तो हम उनके लिए जमीन से एक दाब्वह (जानवर) निकालेंगे जो उनसे कलाम करेगा। कि लोग हमारी आयतों पर यकीन नहीं रखते थे। और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गिरोह उन लोगों का जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुटलाते थे, फिर उनकी जमाअतबंदी की जाएगी। यहां तक कि जब वे आ जाएंगे तो खुदा कहेगा कि तुमने मेरी आयतों को झुटलाया हालांकि तुम्हारा इल्म उनका अहाता न कर सका, या बोलो कि तुम क्या करते थे। और उन पर बात पूरी हो जाएगी इस सबब से कि उन्होंने जुल्म किया, पस वे कुछ न बोल सकेंगे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने रात बनाई ताकि लोग उसमें आराम करें। और दिन कि उसमें देखें। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो यकीन करते हैं। (82-86)

जब अल्लाह तआला का यह फैसला होगा कि जमीन की मौजूदा तारीख खत्म कर दी जाए तो आखिरी तौर पर कुछ गैर मामूली निशानियां जाहिर होंगी। उन्हीं में से एक दाब्वह (जानवर) का जुहर है। ईसानी दाजियों की जवान से जो बात लोगों ने नहीं मानी उसका एलान एक गैर ईसानी मख्बूक के जरिए से कराया जाएगा। ताहम यह इस्तेहान का वक्त खत्म होने का घंटा होगा न कि इस्तेहान का वक्त शुरू होने का एलान।

कियामत में जब तमाम लोग हाजिर होंगे तो उनकी जमाअतें बनाई जाएंगी। मानने वाले एक तरफ कर दिए जाएंगे और न मानने वाले दूसरी तरफ। इसके बाद मुकिरीन से पूछा जाएगा कि तुम्हारे पास कौन सी इल्मी दलील थी जिसकी बिना पर तुमने सदाकत (सच्चाई) का इंकार किया। उस वक्त उनका लाजवाब होना साबित करेगा कि उनका इंकार महज जिद और तअस्सुब पर मबनी था। अगरचे अपने को बरहक जाहिर करने के लिए वे झूठे दलाइल पेश किया करते थे। उस वक्त उन पर खुलेगा कि दाओ के मलफूज (शाब्दिक) कलाम के अलावा रात और दिन भी गैर मलफूज जवान में उन्हें अग्रे हक से मुत्तलअ (सूचित) कर रहे थे। रात की नौद गोया मौत की तमसील थी। और सुबह का जागना दुबारा जी उठने की तमसील। हक के एलान के इतने गैर मामूली एहतियाम के बावजूद वे हक की दरयाफ्त से महरूम रहे।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا
مَنْ شَاءَ اللَّهُ ۚ وَكُلُّ أَتَوَةٍ دَاخِرِينَ ۝ وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسِبُهَا جَمَلَةٌ ۚ وَهِيَ تَمُورُ
مَرَّ السَّحَابِ ۚ صُنْعَ اللَّهِ الَّذِي أَتَقَنَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ ۚ إِنَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَفْعَلُونَ ۝
مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِّمَّهَا ۚ وَهُمْ مِّنْ فَرْعٍ يَّوْمَئِذٍ مُّؤْمِنُونَ ۝ وَمَنْ
جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكَلَبَتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

और जिस दिन सूर फूँका जाएगा तो घबरा उठेंगे जो आसमानों में हैं और जो जमीन में हैं मगर वह जिसे अल्लाह चाहे। और सब चले आएंगे उसके आगे आजिजी से। और तुम पहाड़ों को देखकर गुमान करते हो कि वे जमे हुए हैं, और वे चलेंगे जैसे बादल चलें। यह अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज को मोहकम (सुदृढ़) किया है। बेशक वह जानता है जो तुम करते हो। जो शख्स भलाई लेकर आएगा तो उसके लिए इससे बेहतर है, और वे उस दिन घबराहट से महफूज होंगे। और जो शख्स बुराई लेकर आया तो ऐसे लोग आँधे मुंह आग में डाल दिए जाएंगे। तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे। (87-90)

मौजूदा दुनिया में इंकार का अस्त सबब इंसान की बेखौफी है। यह दरअस्त बेखौफी की नफिसयात है जिसकी वजह से आदमी हक को नज़अंदाज करता है और इसके मुक्मबले में सरकशी का रवैया इख्तियार करता है। मगर जब इस्तेहान की मुद्दत खत्म होगी और इसकी अलामत के तौर पर सूर फूँक दिया जाएगा तो अचानक लोग महसूस करेंगे कि उनकी बेखौफी महज बेखबरी की बिना पर थी। उस दिन तमाम बड़ाइयां रेत की दीवार की तरह ढह जाएंगी।

यह ऐसा सख्त लम्हा होगा कि इंसान तो दरकनार पहाड़ भी रेजा-रेजा हो जाएंगे। उस वक्त सारा इज्ज एक तरफ हो जाएगा और सारी कुदरत दूसरी तरफ।

उस दिन वे तमाम चीजें विल्कुल ग़ैर अहम हो जाएंगी जिन्हें लोग दुनिया में अहम समझे हुए थे। उस दिन सारा वजन सिर्फ अमले सालेह में होगा। उस दिन, खोने वाले पाएंगे और पाने वाले अबदी (चिरस्थायी) तौर पर महरूम होकर रह जाएंगे।

إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَذِهِ الْبَلَدِ الَّذِي حَرَّمَ هَذَا كُلُّ شَيْءٍ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۖ وَأَنْ أَتْلُو الْقُرْآنَ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَا أَنَا مِنَ الْمُنذِرِينَ ۖ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ سِيرَ نِكْمَتِهِ فَتَعْرِفُونَهَا وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

मुझे यही हुक्म दिया गया है कि मैं इस शहर (मक्का) के रब की इबादत करूँ जिसने इसे मोहतरम (आदरणीय) ठहराया और हर चीज उसी की है। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं फरमांवरदारी करने वालों में से बनूँ। और यह कि कुरआन को सुनाऊँ। फिर जो शख्स राह पर आएगा तो वह अपने लिए राह पर आएगा और जो गुमराह हुआ तो कह दो कि मैं तो सिर्फ डराने वालों में से हूँ। और कहो कि सब तारीफ अल्लाह के लिए है, वह तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाएगा तो तुम उन्हें पहचान लोगे और तुम्हारा रब उससे बेखबर नहीं जो तुम करते हो। (91-93)

इस शहर (मक्का) का हवाला कुरआन के मुखातबे अब्वल की रियायत से है। ताहम यह एक उस्तूबे कलाम (शैली) की बात है। आयत का अस्त उद्देश्य इंसान को उस अबदी (शाश्वत) हकीकत की तरफ मुतवज्जह करना है कि उसके लिए एक ही सही रवैया है। और वह यह कि वह एक खुदा का इबादतगुजार बने।

दाओ (आह्वानकर्ता) का काम 'सुनाना' है। यानी अग्रे हक का एलान। आदमी को दाओ की लफ्जी फुकर में मअनवी हकीकत का इदराक करना है। बेजोर दावत में खुदा ताकत का जलवा देखना है। जो लोग इस सलाहियत का सुबूत दें वही वे लोग हैं जो खुदा के अबदी इनामात के मुस्तहिक क़ार दिए जाएंगे।

'खुदा अपनी निशानियाँ दिखाएगा' इस पेशीनगोई का एक पहलू कुरआन के मुखातबे अब्वल (क़ुरेशे मक्का) से तअल्लुक रखता है जिन्हें दौरे अब्वल में जगे बद्र और फतह मक्का की सूरत में खुदा की निशानियाँ दिखाई गईं। इसका दूसरा पहलू वह है जिसका तअल्लुक कुरआन की अबदियत (शाश्वतता) से है। इस दूसरे एतबार से इस मौजूदा जमाने में जाहिर होने वाली साइंसी निशानियाँ भी इस ग़ैर मामूली पेशीनगोई (भविष्यवाणी) के वसीअतर मिसदाक में शामिल हैं।

سُوْرَةُ الْقَصَصِ كَيْفَ تَكُونُ هَذِهِ الْأَيَّاتُ وَتَكُونُ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

طَسَمَ ۚ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ نَتْلُو عَلَيْكَ مِنْ نَبَأِ مُوسَىٰ وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا يَسْتَضِعُّ طَائِفَةً مِنْهُمْ يَتَّبِعُ أَبْنَاءَهُمْ وَيَسْتَجْبِي نِسَاءَهُمْ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ۝ وَنُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضِعُوا فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ ۚ وَتُكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِي فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُمْ مَا كَانُوا يَحْذَرُونَ ۝

आयतें-88

सूरह-28. अल-क़सस

रुकूअ-9

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। ता० सीन० मीम०। ये वाजेह किताब की आयतें हैं। हम मूसा और फिरऔन का कुछ हाल तुम्हें ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। वेशक फिरऔन ने जमीन में सरकशी की। और उसने उसके वाशिदों को गिरोहों में तक्सीम कर दिया। उनमें से एक गिरोह को उसने कमजोर कर रखा था। वह उनके लड़कों को जबह करता था और उनकी औरतों को जिंदा रखता था। वेशक वह फसाद करने वालों में से था। और हम चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो जमीन में कमजारे कर दिए गए थे और उन्हें पेशवा (नायक) बनाएं और उन्हें वारिस बना दें और उन्हें जमीन में इक्तेदार (सत्ता) अत्ता करें। और फिरऔन और हामान और उनकी फौजों को उनसे वही दिखा दें जिससे वे डरते थे। (1-6)

फिरऔन को यहां फसाद फितरज (धरती पर उपद्रव) का मुजरिम बताया गया है।

फिरऔन का फसाद यह था कि उसने मिन्न की दो कैमों में इस्तिआज किया। क़िबती कैम जो उसकी अपनी कैम थी, उसे उसने हर किसम के मवाकेअ (अवसर) दिए। और बनी इस्राईल को न सिर्फ मवाकेअ से महरूम किया बल्कि उनके नौमोलूद (नवजात) लड़कों को क़त्ल करना शुरू कर दिया ताकि धीरे-धीरे उनकी नस्ल का ख़ात्मा हो जाए। फिरऔन का यह अमल फितरत के निजाम में मुदाख़लत (हस्तक्षेप) थी। खुदा के क़ानून में निजामे फितरत से मुताबिकत का नाम इस्लाह है और निजामे फितरत में मुदाख़लत का नाम फसाद।

इज्जत और बेइज्जती का पैसला खुदा की तरफ से होता है। खुदा ने उसके बरअसस पैसला किया जो फिरऔन ने पैसला किया था। खुदा ने पैसला किया कि वह बनी इस्राईल को इज्जत और इक़्तेदार दे और फिरऔन को उसकी फ़ैजों के साथ हलाक कर दे। हज़रत मूसा के जरिए इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बाद फिरऔन ने अपने को मुस्तहिके अज़ाब साबित कर दिया। चुनांचे खुदा ने उसे समुद्र में डुबा कर हमेशा के लिए उसका ख़ात्मा कर दिया। और बनी इस्राईल को मिस्र से ले जाकर शाम व फिलिस्तीन का हुक्मरां (शासक) बना दिया।

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا اخْفِيتِ عَلَيْهِ فَأَقْلَيْهِ فِي
الْبَيْمِ وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۚ إِنَّا رَأَيْنَاهُ إِلَيْكَ ۖ وَجَاعَلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝
فَالْتَقَطَهُ آلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۖ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَ
هَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِبِينَ ۝ وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قَدْ تَوَلَّىٰ بِي
وَلَا تَقْضُ شَأْنَهُ ۚ عُسىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَخْذَهُ وَلَكِنَّهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

और हमने मूसा की मां को इल्हाम (दिव्य संकेत) किया कि उसे दूध पिलाओ। फिर जब तुम्हें उसके बारे में डर हो तो तुम उसे दरिया में डाल दो। और न अंदेशा करो और न ग़मगीन हो। हम उसे तुम्हारे पास लौटा कर लाएंगे। और उसे पैगम्बरों में से बनाएंगे। फिर उसे फिरऔन के घर वालों ने उठा लिया ताकि वह उनके लिए दुश्मन हो और ग़म का बाइस बने। बेशक फिरऔन और हामान और उनके लश्कर ख़ताकार थे। और फिरऔन की बीवी ने कहा कि यह आंख की ठंडक है, मेरे लिए और तुम्हारे लिए। इसे कल्ल न करो। क्या अजब कि यह हमें नफ़ा दे या हम इसे बेदा बना लें। और वे समझते न थे। (7-9)

हज़रत मूसा की पैदाइश के जमाने में बनी इस्राईल के लड़के हलाक किए जा रहे थे। इस बिना पर हज़रत मूसा की वालिदा परेशान हुई। उस वक़्त ग़ालिबन ख़ाब के जरिए आपकी वालिदा को यह तदबीर बताई गई कि वह आपको एक छोटी कश्ती में रखकर दरियाए नील में डाल दें। उन्होंने तीन माह बाद ऐसा ही किया। यह छोटी कश्ती बहते हुए फिरऔन के महल के सामने पहुंची। फिरऔन की बीवी (आसिया) एक नेकबख़्त (सदाचारी) ख़ातून थीं। उन्हें हज़रत मूसा के मासूम और पुरकशिश हुलिये को देखकर रहम आ गया। चुनांचे उनके मशिवरे पर हज़रत मूसा फिरऔन के महल में रख लिए गए।

रिवायतों में आता है कि फिरऔन की बीवी ने कहा कि यह बच्चा आंख की ठंडक है। फिरऔन ने जवाब दिया कि तुम्हारे लिए है न कि मेरे लिए। यह बात ग़ालिबन फिरऔन ने मर्द और औरत के फर्क पर कही होगी मगर बाद को वह ऐन वाक्या बन गई।

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فَرِحًا بِإِنَّ كَادَتْ لِتَبْدِي بِهِ لَوْلَا أَنْ رَّبَّنَا
عَلَىٰ قَلْبِهَا لِيَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَتِ لَأُخْتِي قُصِيَّةٌ ۖ فَصُرْتُ
بِهِ عَنْ جُنُبٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَحَرَمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ
فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَاصِحُونَ ۝
فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ آدَمِهِ كَىٰ تَقْرَعِيْنَهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ
ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَ
عِلْمًا ۖ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

और मूसा की मां का दिल बेचैन हो गया। करीब था कि वह उसे जाहिर कर दे अगर हम उसके दिल को न संभालते कि वह यकीन करने वालों में से रहे। और उसने उसकी बहिन से कहा कि तू इसके पीछे-पीछे जा। तो वह उसे अजनबी बनकर देखती रही और उन लोगों को ख़बर नहीं हुई। और हमने पहले ही मूसा से दाइयों को रोक रखा था। तो लड़की ने कहा, क्या मैं तुम्हें ऐसे घर वालों का पता दूँ जो इसे तुम्हारे लिए पालें और वे इसकी ख़ैरखाही करें। पस हमने उसे उसकी मां की तरफ लौटा दिया ताकि उसकी आंखें ठंडी हों। और वह ग़मगीन न हो। और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, मगर अक्सर लोग नहीं जानते। और जब मूसा अपनी जवानी को पहुंचा और पूरा हो गया तो हमने उसे हिक्मत (तत्वदर्शिता) और इल्म अता किया और हम इसी तरह बदला देते हैं नेकी करने वालों को। (10-14)

हज़रत मूसा की हिफ़ाज़त को अल्लाह तआला ने तमामतर अपनी तरफ मंसूब किया है।

हालांकि वाक्ये की तपसीलात बताती हैं कि पूरा वाक्या असबाब के तहत पेश आया। इससे मालूम होता है कि मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में अल्लाह तआला की मर्जी का जुहूर आम तौर पर असबाब के अंदाज में होता है न कि तिलिस्मात और ख़वारिक (अस्वाभाविकता) के अंज़ामे

हज़रत मूसा बेबसी की हालत में दरिया की मौजों में डाले गए मगर वह पूरी तरह महफूज़ रहकर साहिल पर पहुंच गए। बादशाहे वक़्त ने उनके कल्ल का मंसूबा बनाया मगर अल्लाह ने उसी बादशाह के जरिए आपकी परवरिश का इतिजाम किया। वह एक मामूली ख़ानदान में पैदा हुए मगर अल्लाह तआला ने उन्हें शाही महल से वाबस्ता करके आलातरीन सतह पर उनके लिए वक़्त के उलूम (ज्ञान) व आदाब सीखने का इतिजाम किया। यह एक मि साल है जो बताती है कि अल्लाह तआला की कुदरत लामहदूद (असीम) है। कोई नहीं जो उसके मंसूबे को जुहूर में आने से रोक सके।

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَى حِينٍ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَذَا مِنْ شِيعَتِهِ وَهَذَا مِنْ عَدُوِّهِ ۖ فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ فَوَكَرَهُ مُوسَى فَقَضَى عَلَيْهِ ۖ قَالَ هَذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَنْعَمْتُ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ مِّنْ قَبْلُ ۖ فَلَن أَكُونَ ظَهِيرًا لِلْمُجْرِمِينَ ۝

और शहर में वह ऐसे वक्त में दाखिल हुआ जबकि शहर वाले ग़फ़लत में थे तो उसने वहां दो आदमियों को लड़ते हुए पाया। एक उसकी अपनी कौम का था और दूसरा दुश्मनों में से था। तो जो उसकी कौम में से था उसने उसके खिलाफ मदद तलब की जो उसके दुश्मनों में से था। पस मूसा ने उसे घूंसा मारा। फिर उसका काम तमाम कर दिया। मूसा ने कहा कि यह शैतान के काम से है। बेशक वह दुश्मन है, खुला गुमराह करने वाला। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी जान पर जुल्म किया है। पस तू मुझे बख़्श दे तो खुदा ने उसे बख़्श दिया। बेशक वह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, जैसा तूने मेरे ऊपर फ़र्ज़ किया तो मैं कभी मुजरिमों का मददगार नहीं बनूंगा। (15-17)

पैगम्बरी मिलने से पहले का वाक्या है, हजरत मूसा मिस्र के दारुस्सलतनत (राजधानी) में थे। एक रोज उन्होंने देखा कि एक क़िबती (मूल मिस्री) और एक इस्राईली लड़ रहे हैं। इस्राईली ने हजरत मूसा को अपना हमक़ैम समझ कर फुकारा कि ज़लिम क़िबती के मुसबले में मेरी मदद कीजिए। हजरत मूसा ने दोनों को अलग करना चाहा तो क़िबती आपसे उलझ गया। आपने दिफ़ाअ (आत्मरक्षा) के तौर पर उसे एक घूंसा मारा। वह इत्तफ़ाक़न ऐसी जगह लगा कि क़िबती मर गया।

क़िबती कैम उस वक्त बनी इस्राईल पर सख़्त ज़्यादतियां कर रही थी। ऐसी हालत में हजरत मूसा अगर इस वाक्ये को कैमी नुक्ताए नज़र से देखते तो वह उसे मुजाहिदाना कारनामा करार देकर फ़ख़्र करते। मगर उन्हें क़िबती की मौत पर शदीद अफ़सोस हुआ। वह फ़ैरन अल्लाह की तरफ़ मुतवज्जह हुए और अल्लाह से माफ़ी मांगने लगे।

‘अब मैं किसी मुजरिम की हिमायत नहीं करूंगा’ इसका मतलब यह है कि अब मैं बिला तहक़ीक़ किसी की हिमायत नहीं करूंगा। एक शख्स का बज़हिर मज़हूम फ़िक्सेसतअल्लुक़ रखना या किसी को ज़ालिम बताकर उसके खिलाफ़ मदद मांगना यह साबित करने के लिए क़ाफ़ी नहीं कि फ़िलवाक़अ भी दूसरा शख्स ज़ालिम है। और फ़रयाद करने वाला मज़हूम।

इसलिए सही तरीक़ा यह है कि ऐसे मौक़ों पर अस्ल मामले की तहक़ीक़ की जाए और सिर्फ़ उस वक्त किसी की हिमायत की जाए जबकि ग़ैर जानिबदाराना तहक़ीक़ में उसका मज़हूम होना साबित हो जाए।

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ۖ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُ ۖ قَالَ لَهُ مُوسَى إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِينٌ ۝ فَلَمَّا أَن أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَهُمَا ۖ قَالَ يَمْؤَسَىٰ أُنْتَرِيدُ أَنْ تُقَاتِلَنِي كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْأَمْسِ ۚ إِن تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ ۖ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمُصْلِحِينَ ۝ وَجَاءَ رَجُلٌ مِّنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَىٰ ۖ قَالَ يَمْؤَسَىٰ إِنَّ الْمَلَائِكَةَ يَاتِبُرُونَ بِكَ لَيَقْتُلُونَكَ فَأَخْرِجْ إِنِّي لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ ۖ فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ۖ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الظَّالِمِينَ ۝

फिर सुबह को वह शहर में उठा डरता हुआ, ख़बर लेता हुआ। तो देखा कि वही शख्स जिसने कल मदद मांगी थी, वही आज फिर उसे मदद के लिए पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा, बेशक तुम सही गुमराह हो। फिर जब उसने चाहा कि उसे पकड़े जो उन दोनों का दुश्मन था तो उसने कहा कि ऐ मूसा क्या तुम मुझे क़त्ल करना चाहते हो जिस तरह तुमने कल एक शख्स को क़त्ल किया। तो तुम ज़मीन में सरकश बनकर रहना चाहता हो। तुम सुलह करने वालों में से बनना नहीं चाहते। और एक शख्स शहर के किनारे से दौड़ता हुआ आया। उसने कहा ऐ मूसा, दरबार वाले मशिवरा कर रहे हैं कि तुम्हें मार डालें। पस तुम निकल जाओ, मैं तुम्हारे ख़ैरख़्वाहों में से हूँ। फिर वह वहां से निकला डरता हुआ, ख़बर लेता हुआ। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे ज़ालिम लोगों से नज़ात दे। (18-21)

अगले दिन वही इस्राईली दुबारा एक क़िबती से लड़ रहा था। यह इस बात का वाजेह करीना (संकेत) था कि वह एक झगड़ालू क्रिस्म का आदमी है और रोज़ाना किसी न किसी से लड़ता रहता है। चुनांचे अपनी कौम का फ़र्द होने के बावजूद हजरत मूसा ने उसे मुजरिम ठहराया। मज़हूर इस्राईली का मुजरिम होना इस वाक्ये से मज़ीद साबित हो गया कि उस इस्राईली ने जब देखा कि हजरत मूसा आज उसकी मदद नहीं कर रहे हैं और उसकी उम्मीद के खिलाफ़ खुद उसी को बुरा कह रहे हैं तो वह कमीनेपन पर उतर आया। उसने ग़ैर

जिम्मेदाराना तौर पर कल के कल का राज खोल दिया जो अभी तक किसी के इल्म में न आया था।

इस्राईली की जवान से कातिल का नाम निकला तो बहुत से लोगों ने सुन लिया। चन्द दिन में उसकी खबर हर तरफ फैल गई। यहां तक कि हुक्मरानों में मूसा के कल के मश्वरे होने लगे। एक नेकबख्त आदमी को इसका पता चल गया। वह खुफिया तौर पर हजरत मूसा से मिला और कहा कि इस वक़्त यही बेहतर है कि आप इस जगह को छोड़ दें। चुनांचे आप मिस्र से निकल कर मदन की तरफ रवाना हो गए। मदन ख़लोज़ अकबा के मरिबी साहिल (पश्चिमी तट) पर था और फिरऔन की सल्तनत के हुदूद (सीमाओं) से बाहर था।

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسَىٰ رَبِّي أَن يَهْدِيَنِي سَوَاءَ السَّبِيلِ ۖ
وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُونَ ۖ وَوَجَدَ
مِنْ دُونِهِم امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۚ قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّىٰ
يُصْدِرَ الرِّعَاءُ ۖ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ۚ فَسَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ
رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ۖ

और जब उसने मदन का रुख किया तो उसने कहा, उम्मीद है कि मेरा रब मुझे सीधा रास्ता दिखा दे। और जब वह मदन के पानी पर पहुंचा तो वहां लोगों की एक जमाअत को पानी पिलाते हुए पाया। और उनसे अलग एक तरफ दो औरतों को देखा कि वे अपनी बकरियों को रोके हुए खड़ी हैं। मूसा ने उनसे पूछा कि तुम्हारा क्या माजरा है। उन्होंने कहा कि हम पानी नहीं पिलाते जब तक चरवाहे अपनी बकरियां न हटा लें। और हमारा बाप बहुत बूढ़ा है तो उसने उनके जानवरों को पानी पिलाया। फिर साये की तरफ हट गया। फिर कहा कि ऐ मेरे रब, तू जो चीज़ मेरी तरफ उतारे मैं उसका मोहताज हूं। (22-24)

हजरत मूसा का यह सफ़र गोया नामालूम मजिल की तरफ सफ़र था। ऐसे हालात में मोमिन के दिल की जो कैफियत होती है वह पूरी तरह आपके ऊपर तारी थी। आप दुआओं के साये में अपना कदम आगे बढ़ रहे थे। तकरीबन दस दिन के सफ़र के बाद मदन पहुंचे। ग़ालिब गुमान है कि आप भूखे भी होंगे।

हजरत मूसा ने कमजोरों की हिमायत के जब्बे के तहत मदन की दोनों लड़कियों की मदद की। यह वाकया उनके लिए लड़कियों के वालिद तक पहुंचने का जरिया बना। यह बुजुर्ग मदन बिन इब्राहीम की औलाद से थे और हजरत मूसा, इस्हाक बिन इब्राहीम की औलाद से। इस एतबार से दोनों में नस्ली कुरबत भी थी।

उस वक़्त हजरत मूसा की जवान से यह दुआ निकली :

ऐ मेरे रब, तू जो चीज़ मेरी तरफ

उतारे मैं उसका मोहताज हूं।' यह दुआ बताती है कि ऐसे वक़्त में मोमिन का हाल क्या होता है। वह अपने मामले को तमामतर अल्लाह पर डाल देता है। उसे यकीन होता है कि बंदे को जो कुछ मिलता है खुदा से मिलता है, और ख़ैर वही है जो उसे खुदा की तरफ से मिले।

فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا تَمْشِي عَلَىٰ اسْتِحْيَاءٍ قَالَتْ إِنَّ ابْنِي يَدْعُوكَ لِيَجْزِيكَ أَجْرٌ
مَا سَقَيْتَ لَنَا ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقِصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ ۚ
مَجُوتٌ مِّنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۖ قَالَتْ إِحْدَاهُمَا يَأْتِيكِ اسْتَأْجَرُهُ ۖ إِنَّ خَيْرَ
مِّنْ اسْتَأْجَرَ الْقَوْمِ الْأَمِينُ ۖ قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَن أَتُكَلِّمَ إِحْدَى ابْنَتَيْ
هَٰتَيْنِ عَلَىٰ أَن تَأْجُرَنِي ثَمَنِي حَجْجَةً فَإِنِ اتَّخَذْتِ عِشْرًا فَمِنْ عِنْدِي ۖ وَمَا
أُرِيدُ أَن أَسْأَلَكَ عَلَيْهِ ۖ فَسَقَىٰ لَهُمَا ۖ قَالَ إِنَّ شَاءَ اللَّهِ مِنَ الصَّالِحِينَ ۖ قَالَ
ذَٰلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۖ أَيُّهَا الْإِبْرَاهِيمِيُّ قَضَيْتُ ۖ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ
مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ۚ

फिर उन दोनों में से एक आई शर्म से चलती हुई। उसने कहा कि मेरा बाप आपको बुला रहा है कि आपने हमारी ख़ातिर जो पानी पिलाया उसका आपको बदला दे। फिर जब वह उसके पास आया और उससे सारा किस्सा बयान किया तो उसने कहा कि अदेशा न करो। तुमने जालिमों से नजात पाई। उनमें से एक ने कहा कि ऐ बाप इसे मुलाजिम रख लीजिए। बेहतरीन आदमी जिसे आप मुलाजिम रखें वही है जो मजबूत और अमानतदार हो। उसने कहा कि मैं चाहता हूं कि अपनी इन दो लड़कियों में से एक का निकाह तुम्हारे साथ कर दूं। इस शर्त पर कि तुम आठ साल मेरी मुलाजिमत करो। फिर अगर तुम दस साल पूरे कर दो तो वह तुम्हारी तरफ से है। और मैं तुम पर मशक्कत डालना नहीं चाहता। इंशाअल्लाह तुम मुझे भला आदमी पाओगे। मूसा ने कहा कि यह बात मेरे और आपके दर्मियान तै है। इन दोनों मुद्दतों में से जो भी मैं पूरी करूं तो मुझ पर कोई ज़ब्र न होगा। और अल्लाह हमारे कौल व करार पर गवाह है। (25-28)

लड़कियां उस दिन मअमूल से कुछ पहले पहुंच गईं। वालिद ने पूछा तो उन्होंने बताया कि आज एक मुसाफिर ने हमारी बकरियों को पहले ही पानी पिला दिया। लड़कियों के वालिद ने कहा कि फिर तुम उस मुसाफिर को घर क्यों न लाई कि वह हमारे साथ खाना खाए। चुनांचे एक लड़की दुबारा कुर्वे पर गई और हजरत मूसा को बुलाकर ले आई।

शख्सी हैबत दी गई ताकि फिरऔन की कौम आप पर हाथ डालने की जुरअत न करे। खुदा की तरफ से यह मुकद्दर कर दिया गया कि हजरत मूसा और आपके साथियों (बनी इस्राईल)

ही को आखिरी ग़लबा हासिल हो।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِآيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُفْتَرًى وَمَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي آبَائِنَا الْأَوَّلِينَ ۝ وَقَالَ مُوسَى رَبِّي أَعْلَمُ بِمَن جَاءَ بِالْهُدَى مِنْ عِنْدِهِ وَمَن تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُغْلِبُ الظَّالِمُونَ ۝ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَأْتِيهَا الْمَلَائِكَةُ لَكُم مِّنَ الْغَيْرِ ۚ فَأَوْقِدْ لِي يَهُامُنْ عَلَى الطِّينِ فَأَجْعَلْ لِّي صَرْحًا تَعْلَى أَطْلِعْ إِلَى اللَّهِ مُوسَى وَإِنِّي لَأَظُنُّكَ مِنَ الْكَذِبِينَ ۝

फिर जब मूसा उन लोगों के पास हमारी वाजेह निशानियों के साथ पहुंचा, उन्होंने कहा कि यह महज गढ़ा हुआ जादू है। और यह बात हमने अपने अगले बाप दादा में नहीं सुनी। और मूसा ने कहा मेरा खूब जानता है उसे जो उसकी तरफ से हिदायत लेकर आया है और जिसे आखिरत का घर मिलेगा। बेशक जालिम फलाह न पाएंगे। और फिरऔन ने कहा कि ऐ दरबार वालो, मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा किसी माबूद (पूज्य) को नहीं जानता। तो ऐ हामान मेरे लिए मिट्टी को आग दे, फिर मेरे लिए एक ऊंची इमारत बना ताकि मैं मूसा के खूब को झांक कर देखूं, और मैं तो इसे एक झूठ आदमी समझता हूँ। (36-38)

एक शख्स अपने को बड़ा समझता हो, उसके सामने एक बजाहिर मामूली आदमी आए और उस पर बराहारास्त तंकीद करे तो वह फौरन बिफर उठता है। वह उसका इस्तहजा (परिहास) करता है और उसका मजाक उड़ाने के लिए तरह-तरह की बातें करता है। यही उस वक्त फिरऔन ने हजरत मूसा के मुकबले में किया।

‘मैं अपने सिवा कोई माबूद नहीं जानता’ कोई संजीदा जुमला नहीं है। इन अल्फाज से फिरऔन का मक्सूद बयाने हकीकत नहीं बल्कि तहकीर मूसा है। इसी तरह फिरऔन ने जब अपने वजीर हामान से कहा कि पुख्ता ईट तैयार करके एक ऊंची इमारत बनाओ ताकि मैं आसमान में झांक कर मूसा के खुदा को देखूं, तो यह कोई संजीदा हुक्म नहीं था। इसका मतलब यह नहीं था कि वाक्यातन वह अपने वजीर के नाम एक तामीरी फरमान जारी कर रहा है। यह सिर्फ हजरत मूसा का इस्तहजा (मजाक उड़ाना) था न कि फिलवाकअ तामीर मकान का कोई हुक्म।

وَأَسْتَكَبِرْهُوَ ۖ وَجُنُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا أَنَّهُم إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُونَ ۝ فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۝ وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يُدْعَوْنَ إِلَى الثَّارِ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يُنْصَرُونَ ۝ وَاتَّبَعْنَاهُمْ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ هُمْ فِي مِّنَ الْمَقْبُوحِينَ ۝ وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِن بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَىٰ بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝

और उसने और उसकी फौजों ने जमीन में नाहक घमंड किया और उन्होंने समझा कि उन्हें हमारी तरफ लौट कर आना नहीं है। तो हमने उसे और उसकी फौजों को पकड़ा। फिर उन्हें समुद्र में फेंक दिया। तो देखो कि जालिमों का अंजाम क्या हुआ। और हमने उन्हें सरदार बनाया कि आग की तरफ बुलाते हैं। और कियामत के दिन उन्हें मदद नहीं मिलेगी। और हमने इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी। और कियामत के दिन वे बदहाल लोगों में से होंगे, और हमने अगली उम्मतों को हलाक करने के बाद मूसा को किताब दी। लोगों के लिए बसीरत (सूझबूझ) का सामान, और हिदायत और रहमत ताकि वे नसीहत पकड़ें। (39-43)

हजरत मूसा की तहरीक फर्दे इसानी में रब्बानी इक़िताब बरपा करने की तहरीक थी। आपका मक्सद यह था कि आदमी अल्लाह से डरे और अल्लाह का बंदा बनकर दुनिया में जिंदगी गुजारे। आपका यही पैग़ाम दूसरे अफ़राद के लिए भी था और यही उस फर्द के लिए भी जो मुल्क के तख़्त पर बैठा हुआ था।

यह एक आम बात है कि इस्त्रियार व इक्तेदार पाकर आदमी घमंड की नफ़िसयात में मुब्तिला हो जाता है। यही फिरऔन का हाल भी था। हजरत मूसा ने फिरऔन को डराया कि अगर तुम मुत्कब्विर (घमंडी) बनकर दुनिया में रहोगे तो खुदा की पकड़ में आ जाओगे। मगर फिरऔन ने नसीहत कुवूल नहीं की। नतीजा यह हुआ कि उसे हलाक कर दिया गया।

फिरऔन कदीम मुश्रिकाना (बहुदेववादी) तहजीब का इमाम था। मुश्रिकाना तहजीब में फिरऔन को ऊंचा मक़म हासिल था। मगर मुश्रिकाना तहजीब न सिर्फ़ मिश्र से बल्कि सारी दुनिया से ख़त्म हो गई। अब दुनिया की आबादी में ज्यादातर या तो मुसलमान हैं या यहूदी या ईसाई। और यह सबके सब मुत्फिक्क़ तौर पर फिरऔन को लानतजदा समझते हैं। अब दुनिया में कोई भी फिरऔन की अज़मत को मानने वाला नहीं।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَا إِلَى مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ
الشَّاهِدِينَ ۖ وَلَكِنَّا أَنْشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ وَمَا كُنْتَ ثَابِتًا
فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَلَكِنَّا لَنَّا مُرْسِلِينَ ۖ وَمَا كُنْتَ
بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِنْ رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا
مِّمَّا أَتَاهُمْ مِّن نَّذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝

और तुम पहाड़ के मरिबी (पश्चिमी) जानिब मौजूद न थे जबकि हमने मूसा को
अहकाम दिए और न तुम गवाहों में शामिल थे। लेकिन हमने बहुत सी नस्लें पैदा
कीं फिर उन पर बहुत जमाना गुजर गया। और तुम मदन वालों में भी न रहते थे
कि उन्हें हमारी आयतें सुनाते। मगर हम हैं पैगम्बर भेजने वाले। और तुम तूर के
किनारे न थे जब हमने मूसा को पुकारा, लेकिन यह तुम्हारे रब का इनाम है, ताकि
तुम एक ऐसी कौम को डरा दो जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया
ताकि वे नसीहत पकड़ें। (44-46)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम कुरआन में हजरत मूसा के
वाक्यात इस कद्र तपसील के साथ बयान कर रहे थे जैसे कि आप वहीं मौके पर खड़े हों और
सब कुछ देख और सुन रहे हों। हालांकि वाक्यात यह है कि आप हजरत मूसा के दो हजार
साल बाद मक्का में पैदा हुए। यह इस बात की वाजह दलील थी कि कुरआन का कलाम खुदा
का कलाम है क्योंकि कोई इंसान इस तरह के बयान पर कादिर नहीं हो सकता।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम के जमाने में आजकल की तरह किताबें
नहीं होती थीं। उस वक्त हजरत मूसा के वाक्यात का जिक्र यहूद की गैर अरबी किताबों में
था जिनके सिर्फ चन्द नुस्खे यहूदी इबादतखानों में महफूज थे और यकीनी तौर पर अल्लाह
के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम की दस्तरस से बाहर थे। मजीद यह कि कुरआन के
बयानात और यहूदी किताबों के बयानात में बहुत से निहायत बामअना फर्क हैं और करीना
बताता है कि कुरआन का बयान ही ज्यादा सही है। मिसाल के तौर पर हजरत मूसा के हाथ
से किबती की मौत कुरआन के बयान के मुताबिक बगैर इरादे के हुई। जबकि बाइबल हजरत
मूसा के बारे में कहती है :

‘फिर उसने इधर-उधर निगाह की और जब देखा कि वहां कोई दूसरा आदमी नहीं है तो
उस मिश्री को जान से मार कर उसे रेत में छुपा दिया।’ (खुरूज 2 : 12)

खुली हुई बात है कि हजरत मूसा जैसी मुकद्दस शख्सियत से कुरआन का बयान
मुताबिकत रखता है न कि तौरात का बयान। फिर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम किस तरह इस पर कादिर हुए कि किसी जाहिरी वसीले के बगैर हजरत मूसा के वाक्यात
इस कद्र सेहत के साथ कुरआन में पेश कर सकें। इसका कोई भी जवाब इसके सिवा नहीं
हो सकता कि खुदाए आलिमुलगैब ने यह बातें आपके ऊपर बजरिये ‘वही’ (प्रकाशना) नाजिल
फरमाई।

وَلَوْ لَا أَن تَصِيبَهُمْ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا
أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنُنَبِّئَهُنَّ آيَاتِكَ وَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ
هُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ مِثْلَ مَا أُوتِيَ مُوسَى
أَوْ لَكُمُ يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ مُوسَى مِنْ قَبْلِ قَالُوا سِحْرٌ مُّزْجَرٌ وَظَالِمُونَ
إِنَّا بِكُلِّ كُفْرٍ وَن ۝

और अगर ऐसा न होता कि उन पर उनके आमाल के सबब से कोई आफत आई तो
वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, तूने हमारी तरफ कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम तेरी आयतों
की पैरवी करते और हम ईमान वालों में से होते। फिर जब उनके पास हमारी तरफ
से हक (सत्य) आया तो उन्होंने कहा कि क्यों न इसे वैसा मिला जैसा मूसा को मिला
था। क्या लोगों ने उसका इंकार नहीं किया जो इससे पहले मूसा को दिया गया था,
उन्होंने कहा कि दोनों जादू हैं एक दूसरे के मददगार, और उन्होंने कहा कि हम दोनों
का इंकार करते हैं। (47-48)

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने कदीम मिश्रियों के सामने अपना पैगामे रिसालत पेश किया
तो इसी के साथ आपने मोजिजे भी दिखाए। मगर उन लोगों ने नहीं माना और कह दिया कि
यह तो जादू है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम ने कदीम अरब में दलाइल की
बुनियाद पर हक की दावत पेश की तो उन्होंने कहा कि अगर यह पैगम्बर हैं तो मूसा जैसे
मोजिजे क्यों नहीं दिखाते।

ये सब गैर संजीदा जेहन से निकली हुई बातें हैं। मौजूदा दुनिया में हक को मानने के
लिए सबसे जरूरी शर्त यह है कि आदमी संजीदा हो। जो शख्स हक और नाहक के मामले
में संजीदा न हो उसे कोई भी चीज हक के एतराफ पर मजबूर नहीं कर सकती। वह हर बार
नए उज्र (बहाना) तलाश कर लेगा। वह हर बात के जवाब में नए अल्फाज पा लेगा।

قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِندِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ مِنْهُمَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۖ
فَإِن لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كُفْرُهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ غَلِيظُ
الْعِقَابِ ۖ وَكَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ الْقِصَّةَ الْأُولَىٰ وَلَقَدْ نَادَيْنَا

وَصَلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾

कहो कि तुम अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ जो हिदायत करने में इन दोनों से बेहतर हो, मैं उसकी पैरवी करूंगा अगर तुम सच्चे हो। पस अगर ये लोग तुम्हारा कहा न कर सकें तो जान लो कि वे सिर्फ अपनी ख्वाहिश की पैरवी कर रहे हैं। और उससे ज्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह की हिदायत के बग़ैर अपनी ख्वाहिश की पैरवी करे। बेशक अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। और हमने उन लोगों के लिए पे दर पे अपना कलाम भेजा ताकि वे नसीहत पकड़ें। (49-51)

हक के पैग़ाम को मानने या न मानने का जो अस्ल मेयार है वह यह है कि पैग़ाम को खुद उसके जाती जोहर की बुनियाद पर जांचा जाए। अगर वह अपनी जात पर बरतत सदाकत (सच्चाई) होना साबित कर रहा हो तो यही काफी है कि उसे मान लिया जाए। इसके बाद उसे मानने के लिए किसी और चीज की जरूरत नहीं।

सदाकत (सच्चाई) का जवाब सदाकत है। अगर आदमी सदाकत का इंकार करे और उसके जवाब में दूसरी आलातर (उच्चतर) सदाकत न पेश कर सके। तो इसका मतलब यह है कि वह ख्वाहिशपरस्ती की वजह से उसका इंकार कर रहा है। जिन लोगों का यह हाल हो कि वे सदाकत को माकूलियत के जरिए रद्द न कर सकें और फिर भी ख्वाहिश और तअससुब के ज़ेअसर उसे न मानें वे बदतरीन गुमराह लोग हैं। ऐसे लोग खुदा के यहां जालिमों में शुमार होंगे।

الَّذِينَ اتَيْنَهُمُ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾ وَإِذَا أُتِلَ عَلَيْهِمْ قَالُوا
أُمْكَايَةٌ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّنَا إِنَّكُم مِّن قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ﴿٥٣﴾ أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ
أَجْرُهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ
يُنْفِقُونَ ﴿٥٤﴾ وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ
أَعْمَالُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا تَبْتَغِ الْجَاهِلِينَ ﴿٥٥﴾ إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ
أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾

जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब दी है वे इस (कुरआन) पर ईमान लाते हैं। और जब वह उन्हें सुनाया जाता है तो वे कहते हैं कि हम इस पर ईमान लाए। बेशक यह हक (सत्य) है हमारे ख की तरफ से, हम तो पहले ही से इसे मानने वाले हैं। ये लोग हैं कि उन्हें उनका अज़्र (प्रतिफल) दोहरा दिया जाएगा इस पर कि इन्होंने सब्र किया। और वे बुराई को भलाई से दूर करते हैं और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें

से खर्च करते हैं और जब वे लम्ब (घटिया निरर्थक) बात सुनते हैं तो उससे एराज (उपेक्षा) करते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल। तुम्हें सलाम, हम बेसमझ लोगों से उलझना नहीं चाहते। तुम जिसे चाहो हिदायत नहीं दे सकते। बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है। और वही ख़ूब जानता है जो हिदायत कुबूल करने वाले हैं। (52-56)

मानने की दो सूरतें हैं। एक यह कि हक है इसलिए मानना। दूसरे यह कि अपने गिरोह का है इसलिए मानना। इन दोनों में सिर्फ पहली किस्म के इंसान हैं जिन्हें हिदायत की तौफ़ीक मिलती है। और इसी किस्म के लोग थे जो दौरे अवल में कुरआन और पैग़म्बर पर ईमान लाए।

ईसाइयों और यहूदियों में एक तादाद थी जो कुरआन को सुनते ही उसकी मोमिन बन गई। ये वे लोग थे जो साबिक पैग़म्बरों की हकीकी तालीमात पर क़यम थे। इसलिए उन्हें पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को पहचानने में देर नहीं लगी। उन्होंने नए पैग़म्बर को भी उसी तरह पहचान लिया जिस तरह उन्होंने पिछले पैग़म्बरों को पहचाना था। मगर अपने आपको इस काबिल रखने के लिए उन्हें 'सब्र' के मरहलों से गुज़रना पड़ा।

उन्होंने अपने ज़ेहन को उन असरात से पाक रखा जिसके बाद आदमी हक की मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) के लिए नाअहल हो जाता है। ये वे तारीख़ी और समाजी अवामिल (कारक) हैं जो आदमी के जेहन में ख़ुदाई दीन को गिरोही दीन बना देते हैं। आदमी का यह हाल हो जाता है कि वह सिर्फ उस दीन को पहचान सके जो उसे अपने गिरोह से मिला हो। वह उस दीन को पहचानने में नाकाम रहे जो उसके अपने गिरोह के बाहर से उसके पास आए। इन असरात से महफूज़ रहने के लिए आदमी को ज़बरदस्त नफ़िसयाती (मानसिक, मनोवैज्ञानिक) कुर्बानी देनी पड़ती है। इसलिए इसे सब्र से ताबीर फरमाया। ऐसे लोगों को दोहरा अज़्र दिया जाएगा। एक उनकी इस कुर्बानी का कि उन्होंने अपने साबिका (पहले के) ईमान को गिरोही ईमान बनने नहीं दिया। और दूसरे उनकी जौहरशनासी का कि उनके सामने नया पैग़म्बर आया तो उन्होंने उसे पहचान लिया और उसके साथ हो गए।

जिन लोगों के अंदर हक शनासी का मादूदा हो उन्हीं के अंदर आला अख़्लाकी औसाफ (गुण) परवरिश पाते हैं। लोग उनके साथ बुराई करें तब भी वे लोगों के साथ भलाई करते हैं। वे दूसरों की मदद करते हैं ताकि खुदा उनकी मदद करे। उनका तरीका एराज (बचने) का तरीका होता है न कि लोगों से उलझने का तरीका।

وَقَالُوا إِن تَتَّبِعِ الْهُدَىٰ مَعَكَ نُتَخَفَّتْ مِنْ أَرْضِنَا أَوْ كَمْ تُمَكِّنُ لَهُمْ
حَرَمًا آمِنًا يُجْبَىٰ إِلَيْهِ ثَمَرَاتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّن لَّدُنَّا وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ

لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

और वे कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ होकर इस हिदायत पर चलने लगे तो हम अपनी जमीन से उचक लिए जाएंगे। क्या हमने उन्हें अमन व अमान वाले हम में जगह नहीं दी। जहां हर किसम के फल खिंचे चले आते हैं, हमारी तरफ से रक्क के तौर पर, लेकिन उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। (57)

जिस निजाम से आदमी के फायदे वाबस्ता हो जाएं वह समझने लगता है कि मुझे जो कुछ मिल रहा है वह इसी निजाम की बदौलत मिल रहा है। आदमी सिर्फ हाल (वर्तमान) के फायदों को जानता है, वह मुस्तक़बिल (भविष्य) के फायदों को नहीं जानता।

यही मामला क़दीम मक्का के मुश्रिकों का था। उन्होंने काबा में तमाम अरब कबीलों के बुत रख दिए थे। इस तरह उन्हें पूरे मुल्क की मजहबी सरदारी हासिल हो गई थी। इसी तरह उन बुतों के नाम पर जो नजराने आते थे वे भी उनकी मआश (जीविका) का ख़ास जरिया थे।

मगर यह सिर्फ उनकी तंगनजरी थी। खुदा का रसूल उन्हें एक ऐसे दीन की तरफ बुला रहा था जो उन्हें आलम की इमामत (नेतृत्व) देने वाला था, और वे एक ऐसे दीन की ख़ातिर उसे छोड़ रहे थे जिसके पास मुल्क के कबीलों की मामूली सरदारी के सिवा और कुछ न था।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطَرَتْ مَعِيشَتَهَا فَنِيْلَكَ مَسْكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا ۖ وَكَأَنَّهُنَّ الْوَرِثِينَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ۝

और हमने कितनी ही बस्तियां हलाक कर दीं जो अपने सामाने मईशत (जीविका के साधनों) पर नज़र (गौरवावित) थीं। पस ये हैं उनकी बस्तियां जो उनके बाद आबाद नहीं हुईं मगर बहुत कम, और हम ही उनके वारिस हुए और तेरा रब बस्तियों को हलाक करने वाला न था जब तक उनकी बड़ी बस्ती में किसी पैग़म्बर को न भेज ले जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुनाए और हम हरगिज बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं मगर जबकि वहां के लोग जालिम हों। (58-59)

दुनिया में किसी को मादूदी इस्तहक़ाम (आर्थिक सम्पन्नता) हासिल हो तो वह बड़ाई के एहसास में मुब्तिला हो जाता है। हालांकि तारीख़ मुसलसल यह सबक दे रही है कि किसी भी शख्स या क़ैम का मादूदी इस्तहक़ाम मुस्तक़िल नहीं। जब भी किसी क़ैम ने हक़ (सत्य) को नजरअंदाज किया, सारी अज़मत के बावजूद वह हलाक कर दी गई।

अरब के भू-क्षेत्र में इस्लाम से पहले मुक़्तलिफ़ कौमों उभरीं। मसलन आद, समूद, सबा, मदनन, कौमे लूत वगैरह। हर एक क़िब्र (अहं, बड़ाई) में मुब्तिला हो गई। मगर हर एक का

क़िब्र जमाने ने बातिल कर दिया। और बिलआख़िर उनकी हैसियत गुजरी हुई कहानी के सिवा और कुछ न रही। इन कौमों के खंडहर चारों तरफ फैले इंसानी अज़मतों की नफ़ी कर रहे थे।

इसके बावजूद पैग़म्बरे इस्लाम के जमाने में जिन लोगों को बड़ाई हासिल थी उन्होंने पैग़म्बर को इस तरह झुठला दिया जैसे कि माजी के वाक़ेयात में उनके हाल के लिए कोई नसीहत नहीं।

وَمَا أُوتِيتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَّاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَزِينَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ أَفَمَنْ وَعَدْنَاهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَنْ مَتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ۝

और जो चीज भी तुम्हें दी गई है तो वह बस दुनिया की ज़िंदगी का सामान और उसकी रौनक है। और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर है और बाकी रहने वाला है, फिर क्या तुम समझते नहीं। भला वह शख्स जिससे हमने अच्छा वादा किया है फिर वह उसे पाने वाला है, क्या उस शख्स जैसा हो सकता है जिसे हमने सिर्फ दुनियावी ज़िंदगी का फ़ायदा दिया है, फिर क़ियामत के दिन वह हाज़िर किए जाने वालों में से है। (60-61)

दुनिया में आदमी के पास कितना ही ज्यादा साजोसामान हो, बहरहाल वह मौत के वक़्त आदमी का साथ छोड़ देता है। मौत के बाद जो चीज आदमी के साथ जाती है वे उसके नेक आमाल हैं न कि दुनियावी इज़्त और मादूदी साजोसामान।

ऐसी हालत में अकलमंदी यह है कि आदमी चन्द दिन की कामयाबी के मुक़ाबले में अबदी कामयाबी को तरज़ीह दे। वह दुनिया की तामीर के बजाए आख़िरत की तामीर की फ़िक्र करे।

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝ قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَهُمْ كَمَا غَوَيْنَا تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ ۖ مَا كَانُوا إِلَّا كَايِبُونَ ۝

और जिस दिन खुदा उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा कि कहां हैं मेरे वे शरीक जिनका तुम दावा करते थे। जिन पर बात साबित हो चुकी होगी वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब ये लोग हैं जिन्होंने हमें बहकाया। हमने उन्हें उसी तरह बहकाया जिस तरह हम खुद बहके थे। हम इनसे बरा-त (विरक्ति) करते हैं। ये लोग हमारी इबादत नहीं करते थे। (62-63)

यहां 'शरीक' से मुराद गुमराह लीडर हैं। यानी वे बड़े लोग जिनकी बात लोगों ने इस तरह

मानी जिस तरह खुदा की बात माननी चाहिए। कियामत में जब इन बड़ों का साथ देने वाले लोग अपना बुरा अंजाम देखेंगे तो उनका अजीब हाल होगा। वे पाएंगे कि जिन बड़ों से वाबस्ता होने पर वे फट्ट कर रहे थे, उन बड़ों ने उन्हें सिर्फ जहन्नम तक पहुंचाया है। उस वक्त वे बेजार होकर उनसे कहेंगे कि हमारी बर्बादी के जिम्मेदार तुम हो। उनके बड़े जवाब देंगे कि तुम्हारी अपनी जात के सिवा कोई तुम्हारी बर्बादी का जिम्मेदार नहीं। अगरचे बजाहिर तुम हमारे कहने पर चले मगर हमारा साथ तुमने इसलिए दिया कि हमारी बात तुम्हारी ख्वाहिशात के मुताबिक थी। तुम दरहकीकत अपनी ख्वाहिशात की पैरवी करने वाले थे न कि हमारे पैरोकार। हम भी अपनी ख्वाहिशात पर चले और तुम भी अपनी ख्वाहिशात पर चले। अब दोनों को एक ही अंजाम भुगतना है। एक दूसरे को बुरा कहने से कोई फायदा नहीं।

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَحْتَدُونَ ۖ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ۖ فَعَبَّيْتُ عَلَيْهِمُ الْكُتُبَ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ۖ فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَن يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ۖ

और कहा जाएगा कि अपने शरीकों को बुलाओ तो वे उन्हें पुकारेंगे तो वे उन्हें जवाब न देंगे। और वे अजाब को देखेंगे। काश वे हिदायत इस्तियार करने वाले होते। और जिस दिन खुदा उन्हें पुकारेगा और फरमाएगा कि तुमने पैगाम पहुंचाने वालों को क्या जवाब दिया था। फिर उस दिन उनकी तमाम बातें गुम हो जाएंगी। तो वे आपस में भी न पूछ सकेंगे। अलबत्ता जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किया तो उम्मीद है कि वह फलाह (कल्याण, सफ़लता) पाने वालों में से होगा। (64-67)

दुनिया में आदमी जब हक का इंकार करता है तो वह किसी भरोसे पर हक का इंकार करता है। आखिरत में उससे कहा जाएगा कि जिनके भरोसे पर तुमने हक को नहीं माना था आज उन्हें बुलाओ ताकि वे तुम्हें हक के इंकार के बुरे अंजाम से बचाएं। मगर यह खुदा के जुहर का दिन होगा। और कौन है जो खुदा के मुकाबले में किसी की मदद कर सके।

दुनिया में आदमी किसी हाल में चुप नहीं होता। हर दलील को रद्द करने के लिए उसे यहां अल्फ़ज मिल जाते हैं। मगर यह सोर अल्फ़ज विग्राम्त में झूठे अल्फ़ज साबित हों। वहां आदमी अफ़सोस करेगा कि कितनी छोटी चीज की खातिर उसने कितनी बड़ी चीज को खो दिया।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۚ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ سُبْحَنَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا

يُشْرِكُونَ ۚ وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُشْكِرُونَ صُدُّوا عَنْهُم وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَالْآخِرَةُ ۚ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۖ

और तेरा रब पैदा करता है जो चाहे और वह पसंद करता है जिसे चाहे। उनके हाथ में नहीं है पसंद करना। अल्लाह पाक और बरतर है उससे जिसे वे शरीक ठहराते हैं और तेरा रब जानता है जो कुछ उनके सीने छुपाते हैं और जो कुछ वे जाहिर करते हैं। और वही अल्लाह है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी के लिए हम्द (प्रशंसा) है दुनिया में और आखिरत में। और उसी के लिए फैसला है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (68-70)

अल्लाह तआला इंसानों को पैदा करता है। फिर इंसानों में से किसी शख्स को वह किसी खास काम के लिए मुंतख़ब कर लेता है। यह इतिखाब (चयन) उससे ज़ती तक्द्दुस की बिना पर नहीं होता। बल्कि खुदा के अपने फैसले के तहत होता है। इसलिए ऐसी शख्सियतों को मुकद्दस मान कर उन्हें खुदा का दर्जा देना सरासर बेबुनियाद है। खुदा की दुनिया में इसकी कोई गुंजाइश नहीं।

आदमी हक का इंकार करने के लिए ज़बान से कुछ अल्फ़ज बोल देता है। मगर उसके दिल में कुछ और बात होती है। वह जाती मस्लेहतों की बिना पर हक को नहीं मानता और अल्फ़ज के ज़रिए यह जहिर करता है कि वह दलील और मावूलियत की बिना पर उसका इंकार कर रहा है। आखिरत में यह पर्दा बाकी नहीं रहेगा। उस वक्त खुले तौर पर मालूम हो जाएगा कि उसके दिल में कुछ और था मगर अपनी बड़ाई को बाकी रखने के लिए वह कुछ दूसरे अल्फ़ज बोलता रहा।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَنْ إِلَهُ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ أَمْ لَا تَسْمَعُونَ ۚ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ مَنْ إِلَهُ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِاللَّيْلِ تَسْكُنُونَ فِيهِ أَمْ لَا تَجُرُونَ ۚ وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۖ

कहो कि बताओ, अगर अल्लाह कियामत के दिन तक तुम पर हमेशा के लिए रात कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद (पूज्य) है जो तुम्हारे लिए रोशनी ले आए। तो क्या तुम लोग सुनते नहीं। कहो कि बताओ अगर अल्लाह कियामत तक तुम पर हमेशा के

लिए दिन कर दे तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात को ले आए जिसमें तुम सुकून हासिल करते हो। क्या तुम लोग देखते नहीं। और उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि तुम उसमें सुकून हासिल करो और ताकि तुम उसका फल (जीविका) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (71-73)

जिस जमीन पर इंसान आबाद है उसके बेशुमार हैरतनाक पहलुओं में से एक हैरतनाक पहलू यह है कि वह मुसलसल सूरज के गिर्द घूम रही है। सूरज के गिर्द उसकी महवरी (धुरीय) गर्दिश इस तरह होती है कि हर चौबीस घंटे में इसका एक चक्कर पूरा हो जाता है। यही वजह है कि इसके ऊपर बार-बार रात और दिन आते रहते हैं। अगर जमीन की यह महवरी गर्दिश न हो तो जमीन के एक हिस्से में मुस्तकिल रात होगी और दूसरे हिस्से में मुस्तकिल दिन। इसका नतीजा यह होगा कि मौजूदा पुराहत जमीन इंसान के लिए एक नाकाबिले बयान अजाबखाना बन जाएगी।

ख़ला (अंतरिक्ष) में जमीन का इस तरह हददर्जा सेहत के साथ मुसलसल गर्दिश करना इतना बड़ा वाक्या है कि इस वाक्ये को ज़ुहूर में लाने के लिए तमाम जिन व इन्स की ताकतें भी नाकाम हैं। कदिरि मुतलक खुदा के सिवा कोई नहीं जो इतने बड़े वाक्ये को ज़ुहूर में ला सके। ऐसी हालत में यह कितनी बड़ी गुमराही है कि इंसान अपने ख़ौफ व मुहब्बत के ज़ब्बात को एक खुदा के सिवा किसी और के साथ वाबस्ता करे।

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَائِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۖ وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعِلُوا بِالْحَقِّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۖ

और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा फिर कहेगा कि कहां हैं मेरे शरीक जिनका तुम गुमान रखते थे। और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल कर लाएंगे। फिर लोगों से कहेंगे कि अपनी दलील लाओ, तब वे जान लेंगे कि हक अल्लाह की तरफ है। और वे बातें उनसे गुम हो जाएंगी जो वे गढ़ते थे। (74-75)

पैग़म्बर और पैग़म्बर की सच्ची पैरवी करने वाले दाओ कियामत में खुदा के गवाह बनाकर खड़े किए जाएंगे। जिन कौमों पर उन्होंने खुदा का पैग़ाम पढ़ाने का फर्ज अंजाम दिया था उनके बारे में वे वहां बताएंगे कि पैग़ाम को सुनकर उन्होंने किस किस्म का रद्देअमल पेश किया। उस दिन उन लोगों के तमाम भरोसे ख़त्म हो जाएंगे जिन्होंने ग़ैर अल्लाह के एतमाद पर हक की दावत को नज़रअंदाज किया था। उस दिन उनका यह हाल होगा कि वे अपनी सफ़ाई पेश करना चाहें मगर वे अपनी सफ़ाई के लिए अल्फ़ज न पाएंगे।

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَى فَبَغَى عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءَ أَبْعَصَبَةً ۖ أُولَى الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ۖ وَابْتَغَى فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ ۖ وَلَا تَنْتَسِ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا ۖ وَأَحْسِنْ ۖ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ وَلَا تَتَّبِعِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ۖ

कारून मूसा की कौम में से था। फिर वह उनके खिलाफ सरकश हो गया। और हमने उसे इतने ख़जाने दिए थे कि उनकी कुंजियां उठाने से कई ताकतवर मर्द थक जाते थे। जब उसकी कौम ने उससे कहा कि इतराओ मत, अल्लाह इतराने वालों को पसंद नहीं करता। और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दिया है उसमें आखिरत के तालिब बनो। और दुनिया में से अपने हिस्से को न भूलो। और लोगों के साथ भलाई करो जिस तरह अल्लाह ने तुम्हारे साथ भलाई की है। और जमीन में फ़साद के तालिब न बनो, अल्लाह फ़साद करने वालों को पसंद नहीं करता। (76-77)

कारून का नाम यहूदी किताबों में कोरह (Korah) आया है। वह बनी इस्राईल का एक फर्द था। मगर वह अपनी कौम से कटकर फिरऔन का वफ़दार बन गया। इसकी उसे यह कीमत मिली कि वह फिरऔन का मुकर्रब बन गया। उसने अपनी दुनियादाराना सलाहियत के जरिए इतना कमाया कि वह मिस्र का सबसे ज्यादा दौलतमंद शख्स बन गया। दौलत पाकर उसके अंदर शुक का जब्बा उभरना चाहिए था। मगर दौलत ने उसके अंदर फख्र का जब्बा पैदा किया। अपने मआशी वसाइल (आर्थिक संसाधनों) से उसे जो नेकी कमानी चाहिए थी वह नेकी उसने नहीं कमाई।

जमीन में फ़साद करना क्या है। इस आयत (77) के मुताबिक, जमीन में फ़साद बरपा करने की एक सूत यह है कि एक शख्स को ज्यादा दौलत मिले तो वह उसे सिर्फ अपनी जात के लिए खर्च करे। समुद्र में जमीन का पानी आकर जमा होता है तो समुद्र पानी को भाप की शक्ल में उड़ाकर दुबारा उसे पूरी जमीन पर फैला देता है। यह खुदा की दुनिया में इस्लाह का एक नमूना है। यही चीज इंसान से इस तरह मल्लूब (अपेक्षित) है कि अगर किसी वजह से एक शख्स के पास ज्यादा दौलत इकट्ठा हो जाए तो उसे चाहिए कि वह उसे मुख़लिफ़ तरीकों से उन लोगों की तरफ लौटाए जिन्हें मआशी तक्सीम में कम हिस्सा मिला है। गोया जमाशुदा दौलत को गर्दिश में लाना इस्लाह है और जमाशुदा दौलत को जमा रखना फ़साद।

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۖ أَوَلَمْ يَعْلَم أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ
مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً ۖ وَأَكْثَرُ جَمْعًا
وَلَا يَسْأَلُ عَنْ ذُنُوبِهِمُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٨﴾

उसने कहा, यह माल मुझे एक इल्म की बिना पर मिला है जो मेरे पास है। क्या उसने यह नहीं जाना कि अल्लाह उससे पहले कितनी जमाअतों को हलाक कर चुका है जो उससे ज्यादा कुम्हट और जमीयत (जन-समूह) रखती थीं। और मुजरिमों से उनके गुनाह पूछे नहीं जाते। (78)

कारून का जो किरदार यहां बयान हुआ है यही हमेशा दौलत वालों का किरदार रहा है। दौलतमंद आदमी समझता है कि उसे जो कुछ मिला है वह उसके इल्म की बदौलत मिला है। मगर किसी दौलतमंद का इल्म उसे यह नहीं बताता कि तुमसे पहले भी बहुत से लोगों को दौलत मिली मगर उनकी दौलत उन्हें मौत या हलाकत से न बचा सकी। फिर तुम्हें वह किस तरह बचाने वाली साबित होगी।

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لَيْنَتَ
لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ ۖ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ
أُوتُوا الْعِلْمَ وَيَلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ آمَنَ ۖ يَعْمَلْ صَالِحًا ۖ
وَلَا يُكْفِهَهَا إِلَّا الصَّابِرُونَ ﴿٧٩﴾

पस वह अपनी कौम के सामने अपनी पूरी आराइश (भव्यता) के साथ निकला। जो लोग हयाते दुनिया के तालिब थे उन्होंने कहा, काश हमें भी वही मिलता जो कारून को दिया गया है, वेशक वह बड़ी किस्मत वाला है, और जिन लोगों को इल्म मिला था उन्होंने कहा, तुम्हारा बुरा हो अल्लाह का सवाब बेहतर है उस शख्स के लिए जो ईमान लाए और नेक अमल करे। और यह उन्हीं को मिलता है जो सब्र करने वाले हैं। (79-80)

जिस आदमी के पास दौलत हो उसके गिर्द लाजिमी तौर पर दुनिया की रैनक जमा हो जाती है। उसे देखकर बहुत से नादान लोग उसके ऊपर रश्क करने लगते हैं। मगर जिन लोगों को हकीकत का इल्म हासिल हो जाए उन्हें यह जानने में देर नहीं लगती कि यह महज चन्द दिन की रैनक है और जो चीज चन्द रोज़ हो उसकी कोई कीमत नहीं।

इस्मे हकीकत इस दुनिया में सबसे ज्यादा कीमती चीज है। मगर इस्मे हकीकत का

मालिक बनने के लिए सब्र की सलाहियत दरकार होती है। यानी खारजी (वाय्य) हालात का दबाव कुकूल न करते हुए अपना जेहन बनाना। जहिरी चीजों से गैर मुतअस्सिर रहकर सेवना। वक्ती कशिश की चीजों को नजरअबंज करके राय कायम करना। यह बिलाशुबह सब्र की मुश्किलतरीन किस्म है। मगर इसी मुश्किलतरीन इस्तेहान में पूरा उतरने के बाद आदमी को वह चीज मिलती है जिसे इल्म और हिक्मत (तत्वदर्शिता) कहा जाता है।

فَخَسَفْنَا لَهُ وَبَدَارِهِ الْأَرْضَ ۖ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ
اللَّهِ ۖ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِينَ ۖ وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ
يَقُولُونَ وَيَكُنْ اللَّهُ يَبْطِشُ الرِّمْقَ ۖ لَيْنَ نِّشَاءٍ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ
لَوْ أَنَّ مِنَ اللَّهِ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بَنَاءُ ۖ وَيُكَانَهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٠﴾

फिर हमने उसे और उसके घर को जमीन में धंसा दिया। फिर उसके लिए कोई जमाअत न उठी जो अल्लाह के मुकाबले में उसकी मदद करती। और न वह खुद ही अपने को बचा सका। और जो लोग कल उसके जैसा होने की तमन्ना कर रहे थे वे कहने लगे कि अफसोस, वेशक अल्लाह अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है रिज्क कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। अगर अल्लाह ने हम पर एहसान न किया होता तो हमें भी जमीन में धंसा देता। अफसोस, वेशक इंकार करने वाले फत्ह (कल्याण, सफ़लता) नहीं पाएंगे। (81-82)

बाइबल के बयान के मुताबिक, हजरत मूसा ने कारून के बुरे आमाल की वजह से उसके लिए बददुआ फरमाई और वह अपने साथियों और खजाने सहित जमीन में धंसा दिया गया। यह अल्लाह की तरफ से मुशाहिदाती (अवलोकनीय) सतह पर दिखाया गया कि खुदापरस्ती को छोड़कर दौलतपरस्ती इख्तियार करने का आखिरी अंजाम क्या होता है।

दुनिया का रिज्क दरअसल इस्तेहान का सामान है। यह हर आदमी को खुदा के फैसले के तहत कम या ज्यादा दिया जाता है। आदमी को चाहिए कि रिज्क कम मिले तो सब्र करे। और अगर रिज्क ज्यादा मिले तो शुक्र करे। यही किसी इंसान के लिए नजात और कामयाबी का वाहिद रास्ता है।

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا
فَسَادًا ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ۖ مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا ۖ وَمَنْ جَاءَ
بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨١﴾

यह आखिरत का घर हम उन लोगों को देंगे जो जमीन में न बड़ा बनना चाहते हैं और न फसाद करना। और आखिरी अंजाम डरने वालों के लिए है। जो शस्त्र नेकी लेकर आएगा उसके लिए उससे बेहतर है और जो शस्त्र बुराई लेकर आएगा तो जो लोग बुराई करते हैं उन्हें वही मिलेगा जो उन्होंने किया। (83-84)

जन्नत की आबादी में बसने के काबिल वे लोग हैं जिनके सीने अपनी बड़ाई के एहसास से खाली हों। जो खुदा की बड़ाई को इस तरह पाएं कि अपनी तरफ उन्हें छोटाई के सिवा और कुछ नजर न आए।

फसाद यह है कि आदमी खुदा की स्कीम से मुवाफिक न करे। वह खुदा की दुनिया में खुदा की मर्जी के खिलाफ चलने लगे। जो लोग क़िब्र (बड़ाई) से खाली हो जाएं वे लाजिमी तौर पर फसाद से भी खाली हो जाते हैं। और जिन लोगों के अंदर ये आला औसाफ (सद्गुण) पैदा हो जाएं वही वे लोग हैं जो खुदा के अबदी बारों में बसाए जाएंगे।

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَىٰ مَعَادٍ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَىٰ وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَن يُلْقَىٰ إِلَيْكَ الْكِتَابُ إِلَّا رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا لِّلْكَافِرِينَ ۚ وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أُنزِلَتْ إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ۚ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

वेशक जिसने तुम पर क़ुरआन को फर्ज किया है वह तुम्हें एक अच्छे अंजाम तक पहुंचा कर रहेगा। कहो कि मेरा रब खूब जानता है कि कौन हिदायत लेकर आया है और कौन खुली हुई गुमराही में है। और तुम्हें यह उम्मीद न थी कि तुम पर किताब उतारी जाएगी। मगर तुम्हारे रब की महरबानी से। पस तुम मुंकिरों के मददगार न बनो। और वे तुम्हें अल्लाह की आयतों से रोक न दें जबकि वे तुम्हारी तरफ उतारी जा चुकी हैं। और तुम अपने रब की तरफ बुलाओ और मुश्किरों में से न बनो। और अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद (पूज्य) को न पुकारो। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। हर चीज हलाक (विनष्ट) होने वाली है सिवा उसकी जात के। फैसला उसी के लिए है और तुम लोग उसी की तरफ लौटाए जाओगे। (85-88)

पैग़म्बर का मामला हर एतबार से खुदाई मामला होता है। उसे पैग़म्बरी किसी तलब के

बग़ैर यकतरफ़ा तौर पर खुदा की तरफ से दी जाती है। वह अपने पूरे वजूद के साथ हक पर कायम होता है। वह मामूर (नियुक्त) होता है कि ख़ालिस बेआमेज सदाकत (विशुद्ध सच्चाई) का एलान करे, चाहे वह लोगों को कितना ही नागवार हो। उसके लिए मुकद्दर होता है कि वह लाजिमी तौर पर अपनी मल्लूबा मंजिल तक पहुंचे और कोई रुकावट उसके लिए रुकावट न बनने पाए।

यही मामला पैग़म्बर के बाद पैग़म्बर की पैरवी में उठने वाले दाआ का होता है। वह जिस हद तक पैग़म्बर की मुशाबिहत (समानता) करे उसी कदर वह खुदा के उन वादों का मुस्तहिक होता चला जाएगा जो उसने अपने पैग़म्बरों से अपनी किताब में किए हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ أَحَسِبَ النَّاسُ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ۖ وَقَدْ فُتِنَّا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَذِبِينَ ۝

आयतें-69

सूरह-29. अल-अनकबूत

रुकूअ-7

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० मीम०। क्या लोग यह समझते हैं कि वे महज यह कहने पर छोड़ दिए जाएंगे कि हम ईमान लाए और उन्हें जांचा न जाएगा। और हमने उन लोगों को जांचा है जो इनसे पहले थे, पस अल्लाह उन लोगों को जानकर रहेगा जो सच्चे हैं और वह झूठों को भी जरूर मालूम करेगा। (1-3)

आदमी के मोमिन व मुस्लिम होने का फैसला सामान्य हालात में किए जाने वाले अमल पर नहीं होता। बल्कि उस अमल पर होता है जो आदमी ग़ैर मामूली हालात में करता है। ये ग़ैर मामूली हालात वे ग़ैर मामूली मवाकेअ (अवसर) हैं जबकि यह खुल जाता है कि आदमी हकीकत में वह है या नहीं जिसका दावा वह अपने जाहिरी अमल से कर रहा है। जो लोग ग़ैर मामूली हालात में ईमान व इस्लाम पर कायम रहने का सुबूत दें वही खुदा के नजदीक हकीकी मअनों में मोमिन व मुस्लिम फ़रार पाते हैं।

जांच में पूरा उतरना, बाअल्फ़ाज दीगर, कुर्बानी की सतह पर ईमान व इस्लाम वाला बनना है। यानी जब आम लोग इंकार कर देते हैं उस वक्त तस्दीक करना। जब लोग शक करते हैं उस वक्त यकीन कर लेना। जब अपनी अना (अंहरा) को कुचलने की कीमत पर मोमिन बनना हो उस वक्त मोमिन बन जाना। जब न मान कर कुछ बिगड़ने वाला न हो उस वक्त मान लेना। जब हाथ रोकने के तक़जे हों उस वक्त ख़ुब करना। जब फ़रार के हालात

हैं उस वक्त जमने का सुबूत देना। जब अपने आपको बचाने का वक्त हो उस वक्त अपने आपको हवाले कर देना। जब सरकशी का मौका हो उस वक्त सरे तस्लीमख़म कर देना। जब सब कुछ लुटा कर साथ देना हो उस वक्त साथ देना। ऐसे ग़ैर मामूली मौकों पर अंदर वाला इंसान बाहर आ जाता है। इसके बाद किसी के लिए यह मौका नहीं रहता कि वह फर्जी अल्फ़ज बोलकर अपने को वह ज़हिर करे जो कि हकीकत में वह नहीं है।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ يَسْفُتُوا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ④ مَنْ
كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑤
وَمَنْ جَاهَدْ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ⑥
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑦

क्या जो लोग बुराइयां कर रहे हैं वे समझते हैं कि वे हमसे बच जाएंगे। बहुत बुरा फैसला है जो वे कर रहे हैं। जो शख्स अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता है तो अल्लाह का वादा जरूर आने वाला है। और वह सुनने वाला है, जानने वाला है। और जो शख्स मेहनत करे तो वह अपने ही लिए मेहनत करता है। बेशक अल्लाह जहान वालों से बेनियाज़ (निस्पृह) है। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किया तो हम उनकी बुराइयां उनसे दूर कर देंगे और उन्हें उनके अमल का बेहतर बदला देंगे। (4-7)

मोमिन बनना अक्सर हालात में जमाने के खिलाफ चलने के हममअना होता है। यह अकाबिरपरस्ती (व्यक्ति-पूजा) के माहौल में खुदापरस्त बनना है। ख़्वाहिश को ऊंचा मकाम देने के माहौल में उसूल को ऊंचा मकाम देना है। दुनियावी मफ़ाद के लिए जीने के माहौल में आखिरत के मफ़ाद के लिए जीने का हौसला करना है।

इस तरह की ज़िंदगी के लिए सख़्त मुजाहिदा (संघर्षशीलता) दरकार है। और इस सख़्त मुजाहिदे पर वही लोग कायम रह रह सकते हैं जो खुदा पर कामिल यकीन रखते हैं। जो खुदा की तरफ से मिलने वाले इनाम ही को अपनी उम्मीदों का अस्त मर्कज़ बनाए हुए हों।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا
لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ⑧ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ⑨

और हमने इंसान को ताकीद की कि वह अपने मां-बाप के साथ नेक सुलूक करे। और अगर वे तुझ पर दबाव डालें कि तू ऐसी चीज़ को मेरा शरीक ठहराए जिसका तुझे कोई इल्म नहीं तो उनकी इताअत (आज्ञापालन) न कर। तुम सबको मेरे पास लौट कर आना है, फिर मैं तुन्हें बता दूंगा जो कुछ तुम करते थे। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए तो हम उन्हें नेक बंदों में दाख़िल करेंगे। (8-9)

इंसान पर तमाम मख़बूक़त में सबसे ज्यादा जिसका हक़ है वह उसके मां-बाप हैं। मगर हर चीज़ की एक हद होती है, इसी तरह मां-बाप के हुक्म की भी एक हद है। और हदीस के अल्फ़ज में वह हद यह है कि ख़लिक की नाफ़रमानी में किसी मख़बूक़ की इताअत नहीं।

मां-बाप के हुक्म उसी वक्त तक कबिले लिख़ा है जब तक वे खुदा के हुक्म से न टकराएं। मां-बाप का हुक्म जब खुदा के हुक्म से टकराने लगे तो उस वक्त मां-बाप का हुक्म न मानना उतना ही जरूरी हो जाएगा जितना आम हालात में मां-बाप का हुक्म मानना जरूरी होता है। इस्लाम में मां-बाप के हुक्म से मुराद मां-बाप की ख़िदमत है न कि मां-बाप की इबादत।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ
كَعَذَابِ اللَّهِ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِّنَ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ
أَوْ لَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ⑩ وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا
وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ ⑪

और लोगों में कोई ऐसा है जो कहता है कि हम अल्लाह पर ईमान लाए। फिर जब अल्लाह की राह में उसे सताया जाता है तो वह लोगों के सताने को अल्लाह के अजाब की तरह समझ लेता है। और अगर तुम्हारे ख़ब की तरफ से कोई मदद आ जाए तो वे कहेंगे कि हम तो तुम्हारे साथ थे। क्या अल्लाह उससे अच्छी तरह बाख़बर नहीं जो लोगों के दिलों में है। और अल्लाह जरूर मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाए और वह जरूर मालूम करेगा मुनाफ़िक़ीन (पाखंडियों) को। (10-11)

एक शख्स अपने को मोमिन कहे। मगर उसका हाल यह हो कि जब मोमिन बनने में फायदा हो तो वह बढ़-चढ़कर अपने मोमिन होने का इन्हार करे। मगर जब मोमिन बनने में दुनियावी नुक़सान नज़र आए तो वह फ़ैरन वापस जाने लगे। ऐसा आदमी क़ुरआन की इस्तिलाह (शब्दावली) में मुनाफ़िक़ है। ये वे लोग हैं जो बजाहिर मोमिन थे मगर वे अपने ईमान की कीमत देने के लिए तैयार नहीं हुए। वे ऐन उसी मक़ाम पर नाकाम हो गए जहां उन्हें सबसे ज्यादा कामयाबी का सुबूत देना चाहिए था।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا سَبِيلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا
هُم بِعَامِلِينَ مِنْ خَطِيئَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ وَيَحْمِلُونَ أَثْقَالَهُمْ
وَأَثْقَالًا مَعَ أَثْقَالِهِمْ ۖ وَيَسْأَلُونَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

और मुंकिर लोग ईमान वालों से कहते हैं कि तुम हमारे रास्ते पर चलो और हम तुम्हारे गुनाहों को उठा लेंगे। और वे उनके गुनाहों में से कुछ भी उठाने वाले नहीं हैं। बेशक वे झूठे हैं। और वे अपने बोझ उठाएंगे, और अपने बोझ के साथ कुछ और बोझ भी। और ये लोग जो झूठी बातें बनाते हैं कियामत के दिन उसके बारे में उनसे पूछ होगी। (12-13)

इफ्तारा (झूठ गढ़ना) यह है कि आदमी खुद एक बात कहे और उसे खुदा की तरफ मसूब कर दे। हर किस्म की बिदआत (कुरीतियाँ) और ग़लत ताबीरात इसमें दाखिल हैं। इस इफ्तारा की एक सूरत यह है कि इंकार करने वाले बड़े अपने छोटों से यह कहें कि तुम हमारे रास्ते पर चलते रहो, अगर खुदा के यहां इस पर पूछा गया तो हम इसके जिम्मेदार हैं। खुदा ने किसी को इस किस्म का हक नहीं दिया है इसलिए ऐसी बात कहना खुदा पर झूठ बांधना है।

आदमी बहुत सी बातें सिर्फ कहने के लिए कह देता है। अगर वह उसके अंजाम को देख ले तो वह कभी ऐसे अल्फ़ाज अपने मुंह से न निकाले। चुनांचे ये लोग जब कियामत की हौलनाकी को देखेंगे तो उस वक्त उनका हाल उससे बिल्कुल मुक़्तलिफ होगा जो आज की दुनिया में उनका नजर आ रहा है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا ۖ
وَأَخَذْنَاهُمُ الطُّوفَانَ ۖ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝ فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ ۖ
وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ۝

और हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा तो वह उनके अंदर पचास साल कम एक हजार साल रहा। फिर उन्हें तूफ़ान ने पकड़ लिया और वे ज़ालिम थे। फिर हमने नूह को और कश्ती वालों को बचा लिया। और हमने इस वाक्य को दुनिया वालों के लिए एक निशानी बना दिया। (14-15)

हजरत नूह की उम्र साढ़े नौ सौ साल थी। नुबुव्वत से पहले भी आप एक सालह (नेक) ईसान थे और शरीअते आदम पर कायम थे। नुबुव्वत मिलने के बाद आप बाकायदा खुदा के दाजी बनकर अपनी कौम को डराते रहे। मगर सैंकड़ों साल की मेहनत के बावजूद कौम न

मानी। आखिरकार चन्द इस्ताहयाफ़ता (ईमान वाले) अफ़सद कोछेछर पूरी कैम एक अजिम तूमन मेग़र्क़र दी गई।

टर्की और रूस की सरहद पर मश्किरी अनातूलिया के पहाड़ी सिलसिले में एक ऊंची चोटी है जिसे अरारात (Ararat) कहा जाता है। इसकी बुलन्दी पांच हजार मीटर से ज्यादा है। इस पहाड़ के ऊपर से उड़ने वाले जहाजों का बयान है कि उन्होंने अरारात की बर्फ से ढकी हुई चोटी पर एक कश्ती जैसी चीज देखी है। चुनांचे उस कश्ती तक पहुंचने की कोशिशें जारी हैं। अहले इल्म का ख़्याल है कि यह वही चीज है जिसे मजहबी रिवायात में कश्ती नूह कहा जाता है।

अगर यह इत्तिहा सही है तो इसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने हजरत नूह की कश्ती को आज भी बाकी रखा है ताकि वह लोगों के लिए इस बात की निशानी हो कि खुदा के तूफ़ान से बचने के लिए आदमी को 'पैगम्बर की कश्ती' दरकार है। कोई दूसरी चीज आदमी को खुदा के तूफ़ान से बचाने वाली साबित नहीं हो सकती।

وَأَبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ۖ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ۝ إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا إِنَّ الَّذِينَ
تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَسْئَلُونَ لَكُمْ مِنْ شَيْءٍ فَاتَّبِعُونِ أَعِندَ اللَّهِ الرَّزْقَ
وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝ وَإِنْ تَكْذِبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّنْ
قَبْلِكُمْ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝

और इब्राहीम को जबकि उसने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। तुम लोग अल्लाह को छोड़कर महज बुतों को पूजते हो और तुम झूठी बातें गढ़ते हो। अल्लाह के सिवा तुम जिनकी इबादत करते हो वे तुम्हें रिस्क देने का इस्तिहार नहीं रखते। पस तुम अल्लाह के पास रिस्क तलाश करो और उसकी इबादत करो और उसका शुक्र अदा करो। उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। और अगर तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहले बहुत सी कौमों झुठला चुकी हैं। और रसूल पर साफ-साफ पहुंचा देने के सिवा कोई जिम्मेदारी नहीं। (16-18)

एक खुदा के सिवा जिसे भी आदमी अपने आला जज्बात का मर्कज बनाता है वह एक झूठ होता है। क्योंकि वह ग़ैर खुदा में खुदाई औसाफ को फर्ज करता है। वह बरतर सिफ़त जो सिर्फ खुदा के लिए ख़ास हैं उन्हें आदमी ग़ैर खुदा में फर्ज करता है, इसके बाद ही यह मुमकिन होता है कि वह किसी ग़ैर खुदा का परस्तार बने।

कदीम मुश्किना दौर में इंसान इस किस्म की सिफ़त बुतों में फर्ज करता था, आज का

इंसान भी यही कर रहा है। अलबत्ता आज के इंसान के बुतों के नाम उनसे मुखलिफ हैं जो कदीम मुसिकों के हुआ करते थे। कदीम व जदीद का फर्क सिर्फ यह है कि कदीम इंसान अगर खेत की पैदावार को किसी मफरूजा देवता की महरबानी समझता था तो आज का इंसान इसके लिए ये अल्फाज बोलता है हमारा ग्रीन रेवॉल्यूशन हमारी ऐग्रीकल्चर साइंस का करिश्मा है।

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۖ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ۝ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَٰهَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَكُونُ لَكُمْ مِنْهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

क्या लोगों ने नहीं देखा कि अल्लाह किस तरह ख़ल्क (सृष्टि) को शुरू करता है, फिर वह उसे दोहराएगा। बेशक यह अल्लाह पर आसान है। कहो कि जमीन में चलो फिरो फिर देखो कि अल्लाह ने किस तरह ख़ल्क को शुरू किया, फिर वह उसे दुबारा उठाएगा। बेशक अल्लाह हर चीज पर क़दिर है। वह जिसे चाहेगा अजाब देगा और जिस पर चाहेगा रहम करेगा। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। और तुम न जमीन में आजिज करने वाले हो और न आसमान में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई कारसाज है और न कोई मददगार। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का और उससे मिलने का इंकार किया तो वही मेरी रहमत से महरूम हुए और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। (19-23)

इंसान नहीं था, इसके बाद वह हो जाता है। फिर जो तख़लीक एक बार मुमकिन हो वह दूसरी बार क्यों मुमकिन न होगी। शाह अब्दुल क़ादिर देहलवी ने इस मौके पर यह बामअना नोट लिखा है : ‘शुरू तो देखते हो, दोहराना इसी से समझ लो।’

हर आदमी अपनी ज़ात में तख़लीक के अब्जल (प्रथम सृजन) की एक मिसाल है। अगर आदमी को मजीद मिसालें दरकार हैं तो वह खुदा की वसीअ दुनिया में मुतालआ और मुशाहिदा करे। वह देखेगा कि पूरी दुनिया इसी वाक्ये का जिंदा नमूना है। खुदा ने अपनी दुनिया में ये नमूने इसलिए कायम किए कि इंसान तख़लीक के सानी (दूसरे सृजन) के मामले को समझे और फिर वह अमल करे जो अगले हयात के मरहले में उसके काम आने वाला हो।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنْجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ ۖ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا ۚ وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ ۝ فَأَمَّن لَّهُ لُوطٌ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ وَآتَيْنَاهُ أَجْرَهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ۝

फिर उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा कि उसे कत्ल कर दो या उसे जला दो। तो अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया। बेशक इसके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाए। और उसने कहा कि तुमने अल्लाह के सिवा जो बुत बनाए हैं, बस वह तुम्हारे आपसी दुनिया के तअल्लुकात की वजह से है, फिर कियामत के दिन तुम में से हर एक दूसरे का इंकार करेगा और एक दूसरे पर लानत करेगा। और आग तुम्हारा ठिकाना होगी और कोई तुम्हारा मददगार न होगा। फिर लूत ने उसे माना और कहा कि मैं अपने ख की तरफ हिजरत करता हूं। बेशक वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और हमने अता किए उसे इस्हाक और याकूब और उसकी नस्ल में नुबुव्वत और किताब रख दी। और हमने दुनिया में उसे अज़्र (प्रतिफल) अता किया और आखिरत में यकीनन वह सालिहीन में से होगा। (24-27)

जो चीज किसी मजाशिर में कौमी ख़ाज की हैसियत हासिल कर ले वह उसके हर फर्द की जरूरत बन जाती है। इसी की बुनियाद पर आपसी तअल्लुकात पैदा होते हैं। इसी से हर किस्म के मफ़ादात वाबस्ता होते हैं। इसी के एतबार से लोगों के दर्मियान किसी आदमी की कीमत मुफ़र्र होती है। कदीम ज़माने में शिर्क की हैसियत इसी किस्म के वैसी ख़ाज की हो गई थी।

हजरत इब्राहीम ने इराक के लोगों को बताया कि तुम जिस बुतपरस्ती को पकड़े हुए हो वह महज एक वैसी ख़ाज है न कि कोई वाकई सदाक़त। तुम्हारी मौजूदा जिंगी के ख़त्म होते ही उसकी सारी अहमियत ख़त्म हो जाएगी। मगर सिर्फ एक आपके भतीजे लूत थे जिन्होंने आपका साथ दिया। कौम आपकी इतनी दुश्मन हुई कि उसने आपको आग में डाल दिया। ताहम अल्लाह ने आपको बचा लिया। आपको न सिर्फ आखिरत का आला इनाम मिला

बल्कि आपको ऐसी सालह औलाद दी गई जिसके अंदर चार हजार साल से नुबुव्वत का सिलसिला जारी है। आपके बेटे इस्हाक पैगम्बर थे। फिर उनके बेटे याकूब पैगम्बर हुए और इसके बाद हजरत ईसा तक मुसलसल इसी खानदान में पैगम्बरी का सिलसिला जारी रहा। हजरत इब्राहीम के एक और बेटे मदयान की नस्ल में हजरत शुऐब अलैहिस्सलाम पैदा हुए। इसी तरह आपके बेटे इस्माईल खुद पैगम्बर थे और इन्हीं की नस्ल में हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पैदा हुए जिनकी पैगम्बरी कियामत तक जारी है।

हजरत इब्राहीम की इस तारीख में बातिलपरस्तों के लिए भी नसीहत है और उन लोगों के लिए भी रोशनी है जो हक की बुनियाद पर अपने आपको खड़ा करें।

وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنِّي أَنَا نَذِيرٌ لَّكُمْ لَأَتُونَنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ * إِنِّي أَنَا نَذِيرٌ لَّكُمْ لَأَتُونَنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ * وَتَأْتُونَنَ فِي نَادِيكُمْ الْمُسْكِرِ فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ * قَالَ رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ *

३८

और लूत को, जबकि उसने अपनी कौम से कहा कि तुम ऐसी बेहयाई का काम करते हो कि तुमसे पहले दुनिया वालों में से किसी ने नहीं किया। क्या तुम मर्दों के पास जाते हो और राह मारते हो। और अपनी मजलिस में बुरा काम करते हो। पस उसकी कौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उसने कहा कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे ऊपर अल्लाह का अजाब लाओ। लूत ने कहा कि ऐ मेरे ख, मुप्सिद (उपद्रवी) लोगों के मुम्बले में मेरी मदद फरमा। (28-30)

हजरत लूत बाबिल को छोड़कर उर्दुन के इलाके में आ गए थे। अल्लाह तआला ने उन्हें पैगम्बर बनाया और उन्हें कौमे लूत की इस्लाह के काम पर मुकर्र किया। यह कौम बहरे मुर्दार (Dead Sea) के करीब सदूम के इलाके में रहती थी और हमजिंसी (समलैंगिकता) की गैर फितरी आदत में मुक्विला थी। इसी निस्वत से दूसरी बुराइयां भी उनके अंदर आम हो चुकी थीं। मगर उन्होंने इस्लाह कुबूल न की।

‘अल्लाह का अजाब लाओ’ का अस्तल रुख हजरत लूत की तरफ था न कि अल्लाह की तरफ। उन्हीं हज्जत लूत को इतना हमीर (तुच्छ) समझा कि उनके नजदीक यह नामुमकिन था कि उनकी बात न मानने से वे खुदा की पकड़ में आ जाएंगे। चुनांचे बतौर मजाक उन्होंने कहा कि अगर तुम वाकई सच्चे हो तो हमारे ऊपर खुदा का अजाब लाओ।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ إِنَّا أَهْلُهَا كَانُوا ظَالِمِينَ * قَالَ إِنْ فِيهَا لَوْطًا قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا لَنُنَجِّيكَ وَاهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ * وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِئَاءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا لَا تَمَعِفْ وَلَا تَخْزَنْ إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَى أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ * وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ *

और जब हमारे भेजे हुए इब्राहीम के पास बशारत लेकर पहुंचे, उन्होंने कहा कि हम इस बस्ती के लोगों को हलाक करने वाले हैं। बेशक इसके लोग सज़्ज जालिम हैं। इब्राहीम ने कहा कि इसमें तो लूत भी है। उन्होंने कहा कि हम ख़ूब जानते हैं कि वहां कौन है। हम उसे और उसके घर वालों को बचा लेंगे मगर उसकी बीबी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। फिर जब हमारे भेजे हुए लूत के पास आए तो वह उनसे परेशान हुआ और दिल तंग हुआ। और उन्होंने कहा कि तुम न डरो और न ग़म करो। हम तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे मगर तुम्हारी बीबी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। हम इस बस्ती के बाशिंदों पर एक आसमानी अजाब उनकी बदकारियों की सजा में नाजिल करने वाले हैं। और हमने उस बस्ती के कुछ निशान रहने दिए हैं उन लोगों की इब्रत (सीख) के लिए जो अक्ल रखते हैं। (31-35)

कौमे लूत का इलाका (सदूम, अमूरा) शदीद जलजले से तबाह कर दिया गया। वह सरसब्ज व शदाब वादी जहां चार हजार साल पहले यह कौम आबादी थी, अब वहां बहरे मुर्दार का कसीफ (मलिन) पानी फैला हुआ है।

कुरआन के बयान के मुताबिक तबाही का यह वाक्या खुदा के परीक्षों के जरिए जूझ में आया। मगर भूगोल और पुरातत्व विशेषज्ञों का कहना है कि इस इलाके में जब अरजी अमल (भू-प्रक्रिया) से पहाड़ उभरे तो इसी के साथ जमीन के एक हिस्से में ढाल (Escarpment) पैदा हो गया। बाद को इस ढाल के जुनूबी (दक्षिणी) हिस्से में समुद्र का पानी भर गया। इस तरह वह खुश्क हिस्सा पानी के नीचे आ गया जिसे अब बहरे मुर्दार का कम गहरा जुनूबी किनारा कहा जाता है। कुरआन में जो चीज खुदाई निशान है वह गैर कुरआनी मुशाहिदे (अवलोकन) में सिर्फ एक तबीई वाक्या (भौतिक घटना) नजर आती है।

माहिरीन का ख्याल है कि इस बर्बादशुदा बस्ती के खंडहर अब भी समुद्र में पानी के नीचे पाए जाते हैं। विलाशुवह इसमें बहुत बड़ी इबरत (सीख) है। मगर यह इबरत सिर्फ उन लोगों के लिए है जो बातों को उसकी गहराई के साथ समझने की कोशिश करें।

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ فَقَالَ يَقَوْمُ اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَ
لَا تَعْتَوُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۖ فَكَذَّبُوهُ ۖ فَآخَذَتْهُمْ الرِّجْفَةُ ۖ فَاصْبَحُوا فِي
دَارِهِمْ جُثَيِّينَ ۖ

और मदन की तरफ उनके भाई शूऐब को। पस उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। और आखिरत के दिन की उम्मीद रखो और जमीन में फसाद फैलाने वाले न बनो। तो उन्होंने उसे झुठला दिया। पस जलजले ने उन्हें आ पकड़ा। फिर वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गए। (36-37)

हजरत शूऐब जिस कौम में आए वह एक तिजारात पेशा कौम थी। वे लोग माल की हिस्से में इतना बड़े कि धोखा और फरेब के जरिए माल कमाने लगे। यही उनका जमीन में फसाद करना था। जाइज तिजारात हुसूले मआश (जीविका) का इस्लाही तरीका है और धोखा और लूट खसोट हुसूले मआश का मुफ़सिदाना तरीका।

हजरत शूऐब ने कौम से कहा कि तुम दुनिया के पीछे आखिरत से ग्राफिल न हो जाओ। तुम लोग उस तरीके पर काम करो जिससे तुम आखिरत में अपने लिए अच्छे अंजाम की उम्मीद कर सको। मगर पैगम्बर की सारी कोशिशों के बावजूद कौम न मानी। यहां तक कि वह खुदा के कानून के मुताबिक हलाक कर दी गई। जिन घरों को उन्होंने अपने लिए जिंदगी का घर समझा था वह उनके लिए मौत का घर बन गया।

وَعَادًا وَشُعُودًا ۖ وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِنْ مَّسَلِكِهِمْ ۖ وَزَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ
أَعْمَالُهُمْ فَصَدَّكُمْ عَنِ السَّبِيلِ ۖ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۖ

और आद और समूद को, और तुम पर हाल खुल चुका है उनके घरों से। और उनके आमांल को शैतान ने उनके लिए खुशनुमा बना दिया। फिर उन्हें रास्ते से रोक दिया और वे होशियार लोग थे। (38)

आद और समूद को भी खुदा के अजाब ने पकड़ लिया। वे अपने दुनिया के मामलात में बहुत होशियार थे मगर वे आखिरत के मामले में बिल्कुल नादान निकले। उन्होंने पहाड़ों के जरिए घर बनाने के राज को जान लिया। मगर वे पैगम्बर के जरिए जिंदगी बनाने का राज न जान सके। इसकी वजह वह चीज थी जिसे तजईने आमांल कहा गया है। शैतान ने उन्हें

इस धोखे में रखा कि दुनिया की तामीर ही सारी तामीर है। अगर दुनिया को बना लिया तो इसके बाद कोई मसला मसला नहीं। मगर यह फरेब उनके काम न आया और न इस किस्म का फरेब आइंदा किसी के कुछ काम आने वाला है।

जुनूबी (दक्षिणी) अरब का इलाका जो अब यमन, अहक्फ और हज़मैत के नाम से जाना जाता है यही कदीम जमाने में आद का इलाका था। इसी तरह हिजाज के शिमाली (उत्तरी) हिस्से में राबिग से अकबह तक और मदीना और खैबर से तेमा और तबूक तक का इलाका वह था जिसमें समूद की आबादियां पाई जाती थीं।

وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ ۚ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَاسْتَكْبَرُوا فِي
الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا لَاقِينَ ۖ فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْبِهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا
عَلَيْهِ حَاصِبًا ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا لَهُ
الْأَرْضَ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَغْرَقْنَا ۖ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ
يُظْلِمُونَ ۖ

और कारून को और फिरऔन को और हामान को और मूसा उनके पास खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने जमीन में घमंड किया और वे हमसे भाग जाने वाले न थे। पस हमने हर एक को उसके गुनाह में पकड़ा। फिर उनमें से कुछ पर हमने पथराव करने वाली हवा भेजी। और उनमें से कुछ को कड़क ने आ पकड़ा। और उनमें से कुछ को हमने जमीन में धंसा दिया। और उनमें से कुछ को हमने गर्क कर दिया। और अल्लाह उन पर जुल्म करने वाला न था। मगर वे खुद अपनी जानों पर जुल्म कर रहे थे। (39-40)

अंबिया की मुखातब कौमों ने जब अपने नबी का इंकार किया तो उन्हें जमीनी और आसमानी अजाब से हलाक कर दिया गया। कौमे लूट पर हासिब (पथर बरसाने वाली तूफानी हवा) का अजाब आया। आद और समूद और असहावे मदन पर सइहह (विजली और कड़क) का अजाब आया। कारून के लिए ख़स्फ (जमीन में धंसा देने) का अजाब आया। फिरऔन और हामान के लिए गर्क (समुद्र के पानी में डूबा देने) का अजाब आया।

इन तमाम अजाबों का मुशतरक सबब लोगों का घमंड था। यानी हक की दावत को इसलिए न मानना कि उसे मानने से अपनी बड़ाई ख़त्म हो जाएगी।

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوتِ ۖ اتَّخَذَتْ بَيْتًا
وَلَئِنْ أَوْهَنَ الْبُيُوتُ لَبَكَيْتُ الْعَنْكَبُوتِ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ

مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ
نَضَرْنَا بِهَا الْكِتَابَ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالَمُونَ ۝ خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝

जिन लोगों ने अल्लाह के सिवा दूसरे कारसाज बनाए हैं उनकी मिसाल मकड़ी की सी है। उसने एक घर बनाया। और बेशक तमाम घरों से ज्यादा कमजोर मकड़ी का घर है। काश कि लोग जानते। बेशक अल्लाह जानता है उन चीजों को जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं। और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और ये मिसालें हैं जिन्हें हम लोगों के लिए बयान करते रहे हैं और इन्हें वही लोग समझते हैं जो इल्म वाले हैं। अल्लाह ने आसमानों और जमीन को बरहक पैदा किया है। बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए। (41-44)

यहां बताया गया है कि 'मकड़ी' के घर को देखकर जो शख्स हकीकत का सबक पा ले वही दरअसल आलिम है। इससे मालूम होता है कि खुदा के नजदीक सच्चे इल्म वाले कौन हैं। ये वे लोग नहीं हैं जो किताबी बहसों के माहिर बने हुए हों। बल्कि ये वे लोग हैं जो खुदा की दुनिया में फैली हुई कुदरती निशानियों से नसीहत की गिजा ले सकें। दुनिया के छोटे-छोटे वाक्यांत जिनके जेहन में दाखिल होकर बड़े-बड़े सबक में तब्दील हो जाएं। यही इल्म जब आखिरी मअरफत (अन्तर्ज्ञान) तक पहुंच जाए तो इसी का दूसरा नाम ईमान है।

أَتْلُ مَا أُوْحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۖ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ
الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ۝

तुम उस किताब को पढ़ो जो तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की गई है। और नमाज कायम करो। बेशक नमाज बेहयाई से और बुरे कामों से रोकती है। और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (45)

'नमाज बुराई से रोकती है' का मतलब यह है कि कैफियते नमाज बुराई से रोकती है। अगर आदमी वाकैअतन खुदा के आगे रुकूअ और सज्दा करने वाला हो तो उसके अंदर जिम्मेदारी और तवाज्जेअ (विनम्रता) का एहसास पैदा हो जाता है। और जिम्मेदारी और तवाज्जेअ के एहसास से जो किरदार उभरता है वह यही होता है कि आदमी वह करता है जो उसे करना चाहिए और वह नहीं करता जो उसे नहीं करना चाहिए।

जिक्र से मुराद खुदा की याद है। जब आदमी को खुदा की कामिल मअरफत हासिल होती है। जब वह पूरी तरह खुदा की तरफ मुतवज्जह हो जाता है तो इसका नतीजा यह होता

है कि उसके ऊपर खुदा का तसब्बुर छा जाता है। उसके अंदर खुदा की याद का चशमा बह पड़ता है। इस रूहानी दर्जे को पहुंच कर आदमी की जवान से खुदा के लिए जो आला कलिमात निकलते हैं उन्हीं का नाम जिक्र है। यह जिक्र बिलाशुबह आलातरीन इबादत है।

'वही' की तिलावत से मुराद 'वही' की तब्दील है। यानी लोगों को कुरआन सुनाना और उसके जरिए से उन्हें खुदा की मर्जी से बाखबर करना। दावत व तब्दील का यह काम बेहद सन्न आजमा काम है। इसमें अपने मुखलिफ़ीन का ख़ैरब्राह बनना पड़ता है। इसमें फरीके सानी (प्रतिपक्ष) की ज्यादातियों को यक्तरफ़ तौर पर नजरअंदाज करना पड़ता है। इसमें अपने मुखातबीन को मदऊ (जिन्हें दावत दी जाए) की नजर से देखना पड़ता है चाहे वे खुद दाओ (आह्वानकर्ता) के लिए रकीब व हरीफ (विरोधी, प्रतिपक्षी) बने हुए हों।

नमाज जिस तरह आम जिंदगी में एक मोमिन को बुराई से रोकती है, उसी तरह वह दाओ को ग़ैर दाअियाना रविश से बचाती है। खुदा का दाओ वही शख्स बन सकता है जिसके सीने में खुदा की याद समाई हुई हो, जो अपने पूरे वजूद के साथ खुदा के आगे झुकने वाला बन गया हो।

وَلَا تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالتَّيِّبِ هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقُولُوا آمَنَّا بِالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَأُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَإِلَهُنَا وَالْهُكْمُ وَاحِدٌ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ۝

और तुम अहले किताब से बहस न करो मगर उस तरीके पर जो बेहतर है, मगर जो उनमें बेइसाफ़ हैं। और कहो कि हम ईमान लाए उस चीज पर जो हमारी तरफ भेजी गई है। और उस पर जो तुम्हारी तरफ भेजी गई है। हमारा माबूद (पूज्य) और तुम्हारा माबूद एक है और हम उसी की फरमांबरदारी करने वाले हैं। (46)

दाओ के लिए सही तरीका यह है कि जो लोग बहस करें और उलझें उनसे वह सलाम करके जुदा हो जाए। और जो लोग संजीदा हों उन पर वह अग्रे हक को वाजेह करने की कोशिश करे। साथ ही, यह कि दावती कलाम को हकीमाना कलाम होना चाहिए। और हकीमाना कलाम की एक ख़ास पहचान यह है कि उसमें मदऊ की नफिसयात का पूरा लिहाज किया जाता है। दाओ अपनी बात को ऐसे उस्लूब (शैली) से कहता है कि मदऊ उसे अपने दिल की बात समझे न कि ग़ैर की बात समझ कर उससे भयभीत हो जाए। दाअियाना कलाम नासिहाना कलाम (उपदेश) होता है न कि मुनाजिराना कलाम (शास्त्रार्थ)।

وَكَذَلِكَ أُنْزِلَ إِلَيْكَ الْكِتَابُ ۚ وَالَّذِينَ أَتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۖ وَ
مِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ ۖ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ ۝

مَا كُنْتُمْ تَتْلُوا مِنْ قَبْلِهِ مِنْ كِتَابٍ وَلَا تَخُطُّهُ بِيَمِينِكُمْ إِذَا لَأَرْتَابَ
الْمُبْطِلُونَ ﴿٥٠﴾ بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَ
مَا يُحَدُّ بِآيَاتِنَا إِلَّا الظَّالِمُونَ ﴿٥١﴾

और इसी तरह हमने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी। तो जिन लोगों को हमने किताब दी है वे उस पर ईमान लाते हैं। और इन लोगों में से भी कुछ ईमान लाते हैं। और हमारी आयतों का इंकार सिर्फ मुंकिर ही करते हैं। और तुम इससे पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न उसे अपने हाथ से लिखते थे। ऐसी हालत में बातिलपरस्त (असत्यवादी) लोग शुबह में पड़ते। बल्कि ये खुली हुई आयतें हैं उन लोगों के सीनों में जिन्हें इल्म अता हुआ है। और हमारी आयतों का इंकार नहीं करते मगर वे जो जालिम हैं। (47-49)

लोगों में दो किस्म के अफ़राद होते हैं। एक वे जिन्हें पहले से सच्चाई का इल्म हासिल होता है। और दूसरे वे लोग जो बजाहिर सच्चाई का इल्म नहीं रखते। ताहम ये दूसरी किस्म के लोग भी फितरत की सतह पर सच्चाई से आशना (भिन्न) होते हैं। पहले, अगर हमिले किताब हैं तो दूसरे, हमिले फितरत।

अगर लोग फिलवाकअ संजीदा हों तो वे फ़ैरन हक को पहचान लेंगे। एक गिरोह अगर उसे किताबे आसानी की सतह पर पहचान लेगा तो दूसरा गिरोह किताबे फितरत की सतह पर। हर एक को सच्चाई की बात अपने दिल की बात नजर आएगी। मगर अक्सर हालात में लोग तरह-तरह की नफिसयाती पेचीदगी में मुब्तिला हो जाते हैं। इसकी वजह से उनके अंदर इंकार का मिजाज आ जाता है। वे सच्चाई का इंकार ही करते रहते हैं, चाहे उसकी पुष्ट पर कितने ही कराइन जमा हों और उसके हक में कितने ही ज्यादा दलाइल दे दिए जाएं।

وَقَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥٢﴾ أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُخَالِ عَلَيْهِمْ
إِنْ فِي ذَلِكَ لَرَحْمَةٌ وَذِكْرَى لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٣﴾ قُلْ كَفَى بِاللَّهِ بَيِّنَاتٍ وَ
بَيْنَكُمْ شَهِيدًا يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ
وَكَفَرُوا بِاللَّهِ أُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٥٤﴾

और वे कहते हैं कि उस पर उसके रब की तरफ से निशानियां क्यों नहीं उतारी गईं। कहो कि निशानियां तो अल्लाह के पास हैं। और मैं सिर्फ खुला हुआ डराने वाला हूं। क्या उनके लिए यह काफी नहीं है कि हमने तुम पर किताब उतारी जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है।

बेशक इसमें रहमत और याददिहानी है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं। कहो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दर्मियान गवाही के लिए काफी है। वह जानता है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और जो लोग बातिल (असत्य) पर ईमान लाए और जिन्होंने अल्लाह का इंकार किया वही ख़सारे (घाटे) में रहने वाले हैं। (50-52)

जो लोग कहते थे कि पैगम्बरे इस्लाम को उस तरह की निशानियां क्यों नहीं दी गईं जैसी निशानियां मिसाल के तौर पर मूसा को दी गई थीं। फरमाया कि निशानियां अल्लाह के पास हैं। यानी निशानियों (मोजिजे) का तअल्लुक खुदा से है न कि पैगम्बर से। पैगम्बर की दावत का अस्ल इहिसार दलाइल पर होता है। पैगम्बर हमेशा दलाइल के जोर पर अपनी दावत पेश करता है। अलबत्ता दूसरे मसालेह के तहत खुदा कभी किसी पैगम्बर को निशानी (मोजिजा) दे देता है और कभी नहीं देता।

ईमान एक शुऊरी वाकया है। वही ईमान ईमान है जो दलील से मुतमइन होकर किसी बंदे के दिल में उभरा हो। जो शख्स दलील की रोशनी में जांच कर किसी चीज को माने वह हकपरस्त है और जो शख्स दूसरी गैर मुतअल्लिक बहसों निकाले वह बातिलपरस्त।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَوْلَا أَجَلٌ مُسَمًّى لَجَاءَهُمُ الْعَذَابُ وَ
يَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٥﴾ يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَئِنْ جَهَنَّمَ
لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٥٦﴾ يَوْمَ يُغْشَى الْمُؤْمِنُ الْعَذَابَ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ
أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوْقُوا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٧﴾

और ये लोग तुमसे अजाब जल्द मांग रहे हैं। और अगर एक वक्त मुक़र्र न होता तो उन पर अजाब आ जाता। और यकीनन वह उन पर अचानक आएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी। वे तुमसे अजाब जल्द मांग रहे हैं। और जहन्नम मुंकिरों को घेरे हुए है। जिस दिन अजाब उन्हें ऊपर से ढांक लेगा और पांव के नीचे से भी, और कहेगा कि चखो उसे जो तुम करते थे। (53-55)

इंसान के आमाल ही उसकी जन्नत हैं और इंसान के आमाल ही उसकी दोजख। एक शख्स जो इंकार और सरकशी का रवैया इख्तियार किए हुए हो, उसकी जिंदगी को अगर उसके मअनवी अंजाम के एतबार से देखना मुमकिन हो तो नजर आएगा कि उसके बुरे आमाल उसे अजाब बनकर घेरे हुए हैं। और सिर्फ इतनी सी देर है कि मौत आए और उसे उसकी बनाई हुई दुनिया में डाल दे।

इंसान की बहुत सी सरकशी सिर्फ अपनी हकीकत से बेख़बरी का नतीजा होती है। अगर उसकी यह बेख़बरी ख़त्म हो जाए तो अचानक वह बिल्कुल दूसरा इंसान बन जाए।

يُعَادِي الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْحَىٰ وَأَسْعَىٰ فَإِلَآئِي فَاعْبُدُونِ ۚ كُلُّ
 نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
 الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُم مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
 خَالِدِينَ فِيهَا ۖ نِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ۝ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ
 يَتَوَكَّلُونَ ۝ وَكَأَيُّنَ مِّنْ ذَاتِ لُبٍّ لَّا تَحْمِلُ رَزْقَهَا ۚ اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِلَآئِكُمْ
 وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

ऐ मेरे बंदो जो ईमान लाए हो, बेशक मेरी जमीन वसीअ (विस्तृत) है तो तुम मेरी ही
 इबादत करो। हर जान को मौत का मजा चखना है। फिर तुम हमारी तरफ लौटाए
 जाओगे। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए उन्हें हम जन्नत के
 वालाखानों (उच्च भवनों) में जगह देंगे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी वे उनमें हमेशा
 रहेंगे। क्या ही अच्छा अन्न है अमल करने वालों का। जिन्होंने सब्र किया और जो अपने
 ख पर भरोसा रखते हैं। और कितने जानवर हैं जो अपना रिस्क उठाए नहीं फिरते।
 अल्लाह उन्हें रिस्क देता है और तुम्हें भी। और वह सुनने वाला जानने वाला है।
 (56-60)

हिजरत एक एतबार से तरीकेकार की तब्दीली है। यह तब्दीली कभी मकामे अमल
 बदलने की सूरत में होती है, जैसे मक्का को छोड़कर मदीना जाना। कभी मैदाने अमल बदलने
 की सूरत में होती है, जैसे सुलह हुदैबिया के जरिए जंग के मैदान से हटकर दावत के मैदान
 में आना।

इन आयात में मक्का के अहले ईमान से कहा गया कि मक्का के लोग अगर तुम्हें
 सताते हैं तो तुम मक्का को छोड़कर दूसरे इलाके में चले जाओ और वहां अल्लाह की
 इबादत करो। इससे मालूम हुआ कि सब्र और तवक्कुल का मतलब इबादत पर जमना है
 न कि दुश्मन से टकराव पर जमना। अगर हर हाल में दुश्मन से टकराते रहना मस्कूद होता
 तो उनसे कहा जाता कि मुखालिफीन (विरोधियों) से लड़ते रहो और वहां से किसी हाल
 में कदम बाहर न निकालो।

وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَاسْجَرَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ
 لِيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ ۝ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ
 عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ

تَنَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْيَرَ الْبُشْرَىٰ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لِيَقُولَنَّ اللَّهُ قُلْ
 الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝

और अगर तुम उनसे पूछो कि किसने पैदा किया आसमानों और जमीन को, और
 मुसख़र किया सूरज को और चांद को, तो वे जरूर कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर वे कहां
 से फेर दिए जाते हैं। अल्लाह ही अपने बंदों में से जिसका चाहता है रिस्क कुशादा कर
 देता है और जिसका चाहता है तंग कर देता है। बेशक अल्लाह हर चीज का जानने
 वाला है। और अगर तुम उनसे पूछो कि किसने आसमान से पानी उतारा, फिर उसने
 जमीन को जिंदा किया उसके मर जाने के बाद, तो जरूर वे कहेंगे कि अल्लाह ने। कहे
 कि सारी तारीफ अल्लाह के लिए है। बल्कि उनमें से अक्सर लोग नहीं समझते।
 (61-63)

जमीन व आसमान को पैदा करना इतना बड़ा वाक्या है कि एक कदिर मुत्तलक
 (सर्वशक्तिमान) खुदा ही इसे अंजाम दे सकता है। सूरज और चांद की गर्दिश, बारिश का
 बरसना और जमीन से नवातात (पौध) का उगना ये सब इससे ज्यादा बड़े वाक्यात हैं कि
 कोई ग़ैर खुदा इन्हें वजूद में ला सके।

जो लोग किसी नौइयत के शिर्क में मुक्ताला हैं वे भी अपने मफरूजा (काल्पनिक)
 हस्तियों के बारे में यह अक़ीदा नहीं रखते कि वे इन अजीम वाक्यात को जहूर में लाए हैं।
 इसके बावजूद बहुत से लोग खुदा के सिवा दूसरों की इस उम्मीद में परस्तिश करते हैं कि वे
 उनका रिस्क बढ़ा दें। हालांकि जब हर किस्म के आला इस्त्रियारात सिर्फ खुदा को हासिल
 हैं तो दूसरा कौन है जो रिस्क की तक्सीम में असरअंदाज हो सके।

وَمَا هَذِهِ الْحَيَوةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُوَ وَكَعْبٌ ۚ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَكُنَّ
 الْحَيَوةُ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ فَإِذَا رُكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ
 الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الدِّارِ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ۚ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ
 وَلِيَتَسَبَّحُوا قَسْفًا يَعْلَمُونَ ۝

और यह दुनिया की जिंदगी कुछ नहीं है मगर एक खेल और दिल का बहलावा। और
 आखिरत का घर ही अस्ल जिंदगी की जगह है, काश कि वे जानते। पस जब वे कश्ती
 में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए।
 फिर जब वह उन्हें नजात देकर सुखी की तरफ ले जाता है तो वे फौरन शिर्क करने

लगते हैं। ताकि हमने जो नेमत उन्हें दी है उसकी नाशुकी करें और चन्द दिन फायदा उठाएं। पस वे अनकरीब जान लेंगे। (64-66)

इंसान की गुमराही का अस्ल सबब यह है कि वह दुनिया की रैनकों और दुनिया के मसाइल में इतना गुम होता है कि इससे ऊपर उठकर सोच नहीं पाता। हकीकत को पाने के लिए अपने आपको जाहिर से ऊपर उठाना पड़ता है। बेशतर लोग अपने आपको जाहिर से उठा नहीं पाते इसलिए बेशतर लोग हकीकत को पाने वाले भी नहीं बनते।

दुनिया में आदमी को बार-बार ऐसे तजर्बात पेश आते रहते हैं जो उसे उसका इज्ज याद दिलाते हैं। उस वक्त उसके तमाम मस्नूँ खालात ख़त्म हो जाते हैं और हकीकी फ़ितरत वाला इंसान जाग उठता है। मगर जैसे ही हालात मोअतदिल (सहज) हुए वह दुबारा पहले की तरह ग़ाफ़िल और सरकश बन जाता है। इन्हीं नाजुक तजर्बात में से सफर का वह तजर्बा है जिसका जिक्र आयत में किया गया है।

आदमी को जानना चाहिए कि आजदी का यह मौज़ उसे सिर्फ चन्द दिन की जिंदगी तक हासिल है। मौत के बाद उसके सामने बिल्कुल दूसरी दुनिया होगी और बिल्कुल दूसरे मसाइल।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا مِّمَّا وَتَّخَطَفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ يَكْفُرُونَ^① وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ^② أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ^③ وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَهُمْ صُبُلَنَا وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ^④

क्या वे देखते नहीं कि हमने एक पुरअमन हरम बनाया। और उनके गिर्द व पेश (आस पास) लोग उचक लिए जाते हैं। तो क्या वे बातिल (असत्य) को मानते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुकी करते हैं। और उस शख्स से बड़ा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे या हक को झुटलाए जबकि वह उसके पास आ चुका। क्या मुकिरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो लोग हमारी खातिर मशक्कत उठाएंगे उन्हें हम अपने रास्ते दिखाएंगे। और यकीनन अल्लाह नेकी करने वालों के साथ है। (67-69)

मक्का का हरम अल्लाह तआला की एक अजीब नेमत है। अल्लाह ने लोगों के ऊपर उसका ऐसा रौब बिठा रखा है कि वहां पहुंच कर जालिम और सरकश भी अपना जुल्म और सरकशी भूल जाते हैं। हरम का यह तकदुस (पवित्रता) खुदा की कुदरत की एक निशानी

था। इसका तकाजा था कि लोगों के दिल खुदा के लिए झुक जाएं। मगर बातिलपरस्तों ने यह किया कि रैर खुदा में खुदा के औसाफ फर्ज करके लोगों के जच्चाते परस्तिश को बिल्कुल ग़लत तौर पर उनकी तरफ फेर दिया। उनका मजीद जुल्म यह है कि अल्लाह के रसूल ने जब उन्हें नसीहत की कि इन मफरूजा (काल्पनिक) खुदाओं को छोड़ो और एक खुदा के आगे झुक जाओ तो वे रसूल के दुश्मन बन गए।

नाहकपरस्ती के माहौल में हकपरस्त बनना एक शदीद मुजाहिदे (संवर्षशीलता) का अमल है। इसमें मिली हुई चीज छिनती है। हासिलशुदा सुकून दरहम-बरहम हो जाता है। मगर इसी महस्मी में एक अजीम याफ़्त (प्राप्ति) का राज छुपा हुआ है। और वह मअरफ़्त (अन्तर्ज्ञान) और बसीरत (अन्तर्दृष्टि) है। ऐसे लोगों के लिए इंसानों के दरवाज बंद होते हैं। मगर उनके लिए खुदा के दरवाजे खुल जाते हैं। वे दुनिया से खोकर खुदा से पाने लगते हैं। वे माददी राहों से दूर होकर रब्बानी कैफ़ियात से करीब हो जाते हैं। जाहिरी चीज़ें उनसे ओझल होती हैं मगर मअनवी चीज़ें उन पर मुक़शिफ हो जाती हैं। उन पर वे गहरे भेद खुलने लगते हैं जिनकी बड़े-बड़े लोगों को ख़बर भी नहीं होती।

سُورَةُ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَمِعْتُمْ رُكُوْعًا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَمْ تَعْلَمِ الرَّوْمُ^① فِيْ اَدْنٰى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْ بَعْدِ عَلَيْهِمْ سَيِّغُلٰوْنَ^② فِيْ يَضِعُ سِنِيْنُهُ^③ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ وَيَوْمَئِذٍ يَّفْقَرُ الْمُؤْمِنُوْنَ^④ يَنْصُرُ اللّٰهُ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ^⑤ وَعَدَ اللّٰهُ لَا يَخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهُ وَلٰكِنْ اَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ^⑥ يَعْلَمُوْنَ^⑦ ظٰهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا^⑧ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ^⑨

आयतें-60

सूरह-30. अर-रूम

रुकूअ-6

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० मीम०। रूमी पास के इलाके में मग़लुब (परास्त) हो गए, और वे अपनी मग़लूबियत के बाद अनकरीब ग़ालिब होंगे। चन्द वर्षों में। अल्लाह ही के हाथ में सब काम है, पहले भी और पीछे भी। और उस दिन ईमान वाले खुश होंगे, अल्लाह की मदद से। वह जिसकी चाहता है मदद करता है। और वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ नहीं करता। लेकिन अक्सर

लोग नहीं जानते। वे दुनिया की ज़िंदगी के सिर्फ जाहिर को जानते हैं, और वे आखिरत से बेखबर हैं। (1-7)

जुहरे इस्लाम के वक्त दुनिया में दो बहुत बड़ी सल्तनतें थीं। एक मसीही रूमी सल्तनत। दूसरे मजूसी ईरानी सल्तनत। दोनों में हमेशा रकीबाना कशमकश जारी रहती थी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश के बाद 603 ई० का वाकया है कि कुछ कमजोरियों से फायदा उठाकर ईरान ने रूमी सल्तनत पर हमला कर दिया। रूमियों को शिकस्त पर शिकस्त हुई। यहां तक कि 616 ई० तक यरोशलम सहित रूम की मशरिकी सल्तनत का बड़ा हिस्सा ईरानियों के कब्जे में चला गया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नुबुव्वत 610 ई० में मिली और आपने मक्का में तौहीद की दावत का काम शुरू किया। इस लिहाज से यह ऐन वही जमाना था जबकि मक्का में तौहीद और शिर्क की कशमकश जारी थी। मक्का के मुशरिकीन ने सरहदी वाकये से फाल लेते हुए मुसलमानों से कहा कि हमारे मुशरिक भाइयों (मजूस) ने तुम्हारे अहले किताब भाइयों (मसीही) को शिकस्त दी है। इसी तरह हम भी तुम्हारा खात्मा कर देंगे।

उस वक्त कुरआन में हालात के सरासर खिलाफ यह पेशीनगोई (भविष्यवाणी) उतरी कि दस साल के अंदर रूमी दुबारा ईरानियों पर गालिब आ जाएंगे। रूमी इतिहासकार बताते हैं कि इसके जल्द ही बाद रूम के पराजित बादशाह (हिरकल) में पुरअसरार तौर पर तब्दीली पैदा होना शुरू गई। यहां तक कि 623 ई० में उसने ईरान पर जवाबी हमला किया। 624 ई० में उसने ईरान पर फैसलाकुन फतह हासिल की। 627 ई० तक उसने अपने सारे मक्बूज इलाके ईरानियों से वापस ले लिए। कुरआन की पेशीनगोई लफ्ज-ब-लफ्ज पूरी हुई। इससे साबित होता है कि कुरआन का मुसन्निफ (लेखक) खुदा है। खुदा के सिवा कोई भी मुस्तकबिल के बारे में इतना सही बयान नहीं दे सकता।

मजीद यह वाकया बताता है कि हार और जीत बराबरेस्त खुदा के इख्तियार में है। उसी के फैसले से किसी को इक्तेदार (सत्ता) मिलता है और किसी से इक्तेदार छिन जाता है। एक कैम का गिरना और दूसरी कैम का उठना बजाहिर आम दुनियावी वाकया है। मगर इस जाहिर का एक बातिन (भीतर) है। हर वाकये के पीछे खुदा के फरिश्ते फैसलाकुन तौर पर काम कर रहे होते हैं, अगरचे वे आम इंसानी आंखों को दिखाई नहीं देते। इसी तरह मौजूदा आलमे जाहिर का भी एक बातिन (भीतर) है और वह आलमे आखिरत है।

أَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَائِي رَبِّهِمْ لَكُفْرُونَ ۚ أَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ كَانُوا أَكْثَرًا وَأَلْأَرْضُ وَعَمْرُوهَا

أَكْثَرُ مِمَّا عَمَّرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۚ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ اسَاءُوا الشَّرَّ أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَكْبِرُونَ ۖ

क्या उन्होंने अपने जी में गौर नहीं किया, अल्लाह ने आसमानों और जमीन को और जो कुछ इनके दर्मियान है बरहक पैदा किया है। और सिर्फ एक मुक़र्र मुद्दत के लिए। और लोगों में बहुत से हैं जो अपने खब से मुलाकात के मुकिर हैं। क्या वे जमीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा अंजाम हुआ उन लोगों का जो उनसे पहले थे। वे उनसे ज्यादा ताकत रखते थे। और उन्होंने जमीन को जोता और उसे उससे ज्यादा आबाद किया जितना इन्होंने आबाद किया है। और उनके पास उनके रसूल वाजेह निशानियां लेकर आए। पस अल्लाह उन पर जुल्म करने वाला न था। मगर वे खुद ही अपनी जानों पर जुल्म कर रहे थे। फिर जिन लोगों ने बुरा काम किया था उनका अंजाम बुरा हुआ, इस वजह से कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया। और वे उनकी हंसी उड़ाते थे। (8-10)

खुदा किसी आदमी को जिक्र व फिक्र की सतह पर मिलता है। यानी आदमी सोच के जरिए से खुदा को पाता है। खुदा ने मौजूदा दुनिया में अपने दलाइल बिखेर दिए हैं, आदमी की अपनी जात में, बाहर की कायनात में और फिर पैगम्बर की तालीमात में। जो लोग इन खुदाई निशानियों में गौर करेंगे वही खुदा को पाएंगे।

दलील इस दुनिया में खुदा की नुमाइंदा (प्रतिनिधि) है। एक शख्स के सामने सच्ची दलील आए और वह उसे नजरअंदाज कर दे तो गोया कि उसने खुदा को नजरअंदाज किया। ऐसे लोगों के लिए खुदा के यहां अबदी महरूम की सिवा और कुछ नहीं।

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۚ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ ۚ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ ۚ وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كُفْرِينَ ۚ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُنْفَخُونَ ۚ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَائِ الْآخِرَةِ فَأُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ۚ فَسُبْحَنَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ۚ

अल्लाह ख़ल्क (सृष्टि) को पहली बार पैदा करता है, फिर वही दुबारा उसे पैदा करेगा। फिर तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी उस दिन मुजरिम लोग हैरतजदा रह जाएंगे। और उनके शरीकों में से उनका कोई सिफारिशि न होगा और वे अपने शरीकों के मुँक़िर हो जाएंगे। और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी उस दिन सब लोग जुदा-जुदा हो जाएंगे। पस जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए वे एक बाग़ में मसरूर (प्रसन्न) होंगे। और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को और आख़िरत के पेश आने को झुठलाया तो वे अजाब में पकड़े हुए होंगे। पस तुम पाक अल्लाह की याद करो जब तुम शाम करते हो और जब तुम सुबह करते हो। और असामानों और जमीन में उसी के लिए हम्द (प्रशंसा) है और तीसरे पहर और जब तुम ज़ुहर करते हो। (11-18)

एक मुकम्मल दुनिया का मौजूद होना पहली तख़्नीक (सृजन) का यकीनी सबूत है। फिर जब पहली तख़्नीक मुमकिन है तो दूसरी तख़्नीक क्यों मुमकिन नहीं। जो शख्स मौजूदा दुनिया को माने और आख़िरत को न माने वह खुद अपनी मानी हुई बात के लाजिमी तकाज़े का इंकार कर रहा है।

‘मुजरिमीन’ से मुराद वे बड़े लोग हैं जिन्होंने इंकारे हक़ की मुहिम की कयादत की। जिन्होंने इंकारे हक़ के लिए दलाइल फ़राहम किए। क़ियामत का धमाका जब निजामे आलम को बदलेगा तो अचानक ये मुजरिमीन देखेंगे कि वे तमाम सहारे बिल्कुल बेबुनियाद थे जिन पर उन्हें बड़ा नाज था। वे तमाम अस्फ़ाज़ झूठे अस्फ़ाज़ साबित हुए जिन्हें वे अपने मैक्कि के हक़ में नाकाबिले तरदीद (अकाट्य) दलील समझते थे। अपनी उम्मीदों और खुशख़्वालिओं के बरअक्स जब वे इस सूरतेहाल को देखेंगे तो वे बिल्कुल हैरतजदा होकर रह जाएंगे।

क़ियामत में इंसानों की दो तक्सीम की जाएगी। एक, खुदा की हम्द व तस्बीह करने वाले लोग। दूसरे, हम्द व तस्बीह से ख़ाली लोग। खुदा की हम्द व तस्बीह करने वाले लोग वे हैं जो खुदा को इस तरह पाएं कि वह उनकी यादों में समा जाए। वह उनके दिमाग़ की सोच और उनकी जवान का तज़िकरा बन जाए। इसी हम्द व तस्बीह की एक मुतअय्यन सूत का नाम पांच वक्त की नमाज़ है। आयत में सुबह की तस्बीह से मुराद फ़ज़्र की नमाज़ है। शाम की तस्बीह में मरिब और इशा की नमाज़ें शामिल हैं। दोपहर ढलने के बाद की तस्बीह से मुराद ज़ुहर की नमाज़ है। और दिन के पिछले वक्त की तस्बीह से मुराद अम्र की नमाज़।

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ۖ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ۖ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُفَكِّرُونَ ۝

वह जिंदा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को जिंदा से निकालता है। और वह जमीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद जिंदा करता है और इसी तरह तुम लोग निकाले जाओगे। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया है। फिर यकायक तुम बशर इंसान बनकर फैल जाते हो। और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारी जिन्स से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए ताकि तुम उनसे सुकून हासिल करो। और उसने तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत और रहमत रख दी। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (19-21)

मौजूदा दुनिया का एक अजीब व ग़रिब करिश्मा एक चीज का दूसरी चीज में तब्दील होना है। यहां अवृद्धिशील पदार्थ वृद्धिशील पदार्थ में तब्दील हो रहा है। यहां बेजान मिट्टी (दूसरे शब्दों में भूमि के तत्व) तब्दील होकर चलने और बोलने वाले इंसान की सूत इख़्तियार कर लेते हैं। मजीद यह कि यह सब कुछ हददर्जा बामअना तौर पर हो रहा है। मिसाल के तौर पर ‘मिट्टी’ जब तब्दील होकर इंसान बनती है तो उसका तकरीबन आधा हिस्सा मर्द की सूत में ढल जाता है और तकरीबन निस्फ़ (आधा) हिस्सा औरत की सूत में। इसी तक्सीम की बदौलत इंसानी तहज़ीब हजारों साल से क़यम है। यह तब्दीली और फिर मुनज्जम और मुतनासिब (संतुलित) तब्दीली इसके बग़ैर मुमकिन नहीं कि उसके पीछे एक कादिर मुतलक (सर्वशक्तिमान) खुदा की कारफरमाई मानी जाए।

हकीकत यह है कि आदमी अगर खुदा की तख़्नीक पर ग़ौर करे तो उसे ऐसा लगेगा जैसे हर चीज में खुदा का जलवा हो। हर चीज से खुदा झांक रहा हो।

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ السِّنِّتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالَمِينَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُونَ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُخْرِجُ بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

और उसकी निशानियों में से आसमानों और जमीन की पैदाइश और तुम्हारी बोलियों और तुम्हारे सों का इज़्तेलाफ़ (अंतर) है। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं इल्म वालों के लिए। और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन में सोना और तुम्हारे उषे-फल (जीविका) को तलाश करना है। बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुम्हें

बिजली दिखाता है, ख़ौफ़ के साथ और उम्मीद के साथ। और वह आसमान से पानी उतारता है फिर उससे ज़मीन को ज़िंदा करता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद। बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल से काम लेते हैं। (22-24)

कायनात अपने पूरे वजूद के साथ खुदा की निशानी है। इसका अदम से वुजूद में आना खुदा की क़ुव्वते तख़लीक को बताता है। इसके अंदर बेशुमार तनब्बूअ (विविधता) खुदा की कुदरत की तरफ इशारा कर रही है। तमाम चीज़ों में हददर्जा मअनवियत (अर्थपूर्णता) खुदा की सिफ़ते रहमत का आइना है। बिजली जैसी तबाहक़ुन चीज़ों की मौजूदगी खुदा की सिफ़ते इत्क़ाम का तआरुफ़ है। ज़मीन का शुष्क हो जाने के बाद दुबारा हरा भरा हो जाना तख़लीके सानी (दुबारा पैदा करने) के इस्फ़ान को बता रहा है।

ये सब खुदा की निशानियाँ हैं। मगर ये निशानियाँ सिर्फ़ उन लोगों के लिए हैं जो कायनात की ख़ामोश पुकार पर कान लगाएं। जो अपनी अक्ल और अपने इल्म को सही रुख़ पर इस्तेमाल करें।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ۚ وَلَهُ مَن فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ لَهٍ قَائِمُونَ ۝ وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ۚ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

और उसकी निशानियों में से यह है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से कायम है। फिर जब वह तुम्हें एक बार पुकारेगा तो तुम उसी वक़्त ज़मीन से निकल पड़ेगे। और आसमानों और ज़मीन में जो भी है उसी का है। सब उसी के ताबेअ (अधीन) हैं और वही है जो अब्बल बार पैदा करता है फिर वही दुबारा पैदा करेगा। और यह उसके लिए ज़्यादा आसान है। और आसमानों और ज़मीन में उसी के लिए सबसे बरतार सिफ़त है। और वह ज़बरदस्त है, हिक़मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (25-27)

अथाह ख़ला में ज़मीन और सूरज और सव्यारों (ग्रहों) और सितारों का निज़ाम इस क़द हैरतनाक हद तक नादिर वाक़या है कि वह खुद बोल रहा है कि वह किसी कायम रखने वाले की कुदरत से कायम है। और किसी चलाने वाले के जोर पर चल रहा है। यह ग़ैर मामूली मदद अगर एक लम्हा के लिए भी उससे जुदा हो तो वह बिल्कुल दरहम बरहम हो जाए। एक दुनिया में इस मामूली हवाई जहाज भी पायलेट का कंट्रोल खोने के बाद बर्बाद हो जाता है, फिर कायनात का इतना बड़ा कारख़ाना किसी कंट्रोलर के कंट्रोल के बग़ैर कैसे चल सकता है।

कायनात का ख़ालिक कायनात में अपनी कुदरत का जो मुजाहिदा कर रहा है उसके

लिहाज से उसके लिए यह काम आसानतर है कि वह इंसान को मौत के बाद दुबारा पैदा करे। तख़लीके अब्बल का जो मुजाहिदा कायनात में हर आन हो रहा है उसके बाद तख़लीके सानी को मानना ऐसा ही है जैसे एक साबितशुदा चीज़ को मानना। कायनात में खुदा की कुदरत और उसकी हिक़मत का इज़हार इतनी आला सतह पर हो रहा है कि इसके बाद किसी भी कारनामे को खुदा की तरफ़ मंसूब करना कोई अनहोनी चीज़ नहीं।

ضَرَبَ لَكُمْ مَثَلًا مِّنْ أَنْفُسِكُمْ ۖ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاءَ فِي مَآئِنَ فَلْكُمْ فَأَنْتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝ بَلْ أَتَبَهُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ فَمَنْ يَهْدِي مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نَّاصِرِينَ ۝

वह तुम्हारे लिए खुद तुम्हारी जात से एक मिसाल बयान करता है। क्या तुम्हारे गुलामों में कोई तुम्हारे उस माल में शरीक है जो हमने तुम्हें दिया है कि तुम और वह उसमें बराबर हों। और जिस तरह तुम अपनों का लिहाज करते हो उसी तरह उनका भी लिहाज करते हो। इस तरह हम आयतें खोलकर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल से काम लेते हैं। बल्कि अपनी जानों पर जुल्म करने वालों ने बग़ैर दलील अपने ख़यालात की पैरवी कर रखी है तो उसे कौन हिदायत दे सकता है जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो। और कोई उनका मददगार नहीं। (28-29)

एक मुशतरक (साझा) माल या जायदाद हो तो उसमें उसके तमाम शरीकों का हक़ होता है और हर शरीक को दूसरे शरीक का लिहाज रखना पड़ता है। मगर खुदा का मामला इस किस्म का मामला नहीं। खुदा तंहा तमाम कायनात का मालिक है। खुदा के लिए सही मिसाल आका (स्वामी) और गुलाम की है न कि जायदाद के शरीकों की। खुदा और उसकी मख़्लूक़ात के दर्मियान ज़्यादा बड़े पैमाने पर वही निस्वत है जो एक आका और एक गुलाम के दर्मियान पाई जाती है। कोई शख्स अपने गुलाम या नौकर को अपने बराबर का दर्जा नहीं देता। इसी तरह कायनात में कोई भी नहीं है जिसे खुदा के साथ बराबरी की हैसियत हासिल हो। खुदा की तरफ़ सिर्फ़ आकाई है और बक़िया मख़्लूक़ात की तरफ़ सिर्फ़ मख़्लूकी और मुताबी।

मख़्लूक़ात का अपने-अपने तख़लीकी निज़ाम का पाबंद होना बताता है कि खुदा और मख़्लूक़ात के दर्मियान सही निस्वत आका और गुलाम की है। इसके सिवा जो निस्वत भी कायम की जाएगी उसकी बुनियाद महज़ इंसानी मफ़रूज़ पर होगी न कि किसी वाकई दलील पर।

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝ مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا ۖ كُلُّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ۝

पस तुम एकसू होकर अपना रुख इस दीन की तरफ रखो, अल्लाह की फितरत जिस पर उसने लोगों को बनाया है। उसके बनाए हुए को बदलना नहीं। यही सीधा दीन है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। उसी की तरफ मुतवज्जह होकर और उसी से डरो और नमाज कायम करो और मुशिकीन में से न बनो जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर लिया। और बहुत से गिरोह हो गए। हर गिरोह अपने तरीके पर नाजा (मग्न) है जो उसके पास है। (30-32)

अस्त दीन यह है। और वह हर पैगम्बर पर अपनी कामिल शक्त में उतरा है। वह है एक अल्लाह की तरफ रुजूअ (प्रवृत्त होना), एक अल्लाह का डर, एक अल्लाह की परस्तारी, हमह-तन एक अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हो जाना, यही दीने फितरत है। यह दीन अबदी तौर पर हर इंसान की नफिसयात में समाया हुआ है। तमाम पैगम्बरों ने इसी एक दीन की तालीम दी। मगर उनके पैरोकारों की बाद की नस्लों ने एक दीन को कई दीन बना डाला। कई दीन हमेजा उन इज्मी (अतिरिक्त) बहसों से बनता है जो बाद के लोग पैगम्बरों की इब्दिदाई तालीमात में पैदा करते हैं। अक्काइद में नई ईजाद की गई मूशिगाफियां, इबादात में खुदसाख्ता मसाइल, जमाने के तास्सुर के तहत दीन की नई-नई तारीरें। यही वे चीजें हैं जो बाद के दौर में एक दीन को कई दीन बना देती हैं। जब ये इजाफे वजूद में आते हैं तो लोग अस्त दीन के बजाए अपने इन्हीं इजाफों पर सबसे ज्यादा ज़ोर देने लगते हैं जिनकी बदौलत वे दूसरे गिरोह से जुदा होकर अलग गिरोह बने हैं। एक गिरोह एक क्रिस्म के इजाफे पर ज़ोर देता है, और दूसरा गिरोह दूसरे क्रिस्म के इजाफे पर। इस तरह बिलआखिर यह नौबत आती है कि एक दीन को मानने वाले अमलन कई दीनी गिरोहों में बंट कर रह जाते हैं।

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا أَذَاهُمْ مِثْلُهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يَشْكُرُونَ ۝ لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ فَتَسْتَعِزُّوا ۝ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝ أَمْ أُنْزِلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهُمْ يَنْتَكِبُونَ ۖ بَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَشْكُرُونَ ۝

और जब लोगों को कोई तकलीफ पहुंचती है तो वे अपने रब को पुकारते हैं उसी की

तरफ मुतवज्जह होकर। फिर जब वह अपनी तरफ से उन्हें महरबानी चखाता है तो उनमें से एक गिरोह अपने रब का शरीक ठहराने लगता है कि जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसके मुंकिर हो जाएं। तो चन्द दिन फायदा उठा लो, अनकरीब तुम्हें मालूम हो जाएगा। क्या हमने उन पर कोई सनद उतारी है कि वह उन्हें खुदा के साथ शिर्क करने को कह रही है। (33-35)

आम हालात में आदमी अपने को बाइख़्तियार पाता है। इसलिए आम हालात में वह मस्सूई (बनावटी) तौर पर सरकश बना रहता है। मगर जब नाजुक हालात उसे उसकी बेबसी का तजर्बा कराते हैं, उस वक़्त उसके ज़ेहन के पर्दे हट जाते हैं। वह उस वक़्त अस्ली इंसान (Man cut to size) बन जाता है जो कि वह हकीकतन है। उस वक़्त वह अपनी आजिजना हैसियत का एतराफ करते हुए खुदा को पुकारने लगता है।

यह नफिसयात की सतह पर तौहीदे इलाह (एक ही पूज्य) का सुबूत है। इस तरह इंसान को उसके जाती तजुर्बे में हकीकत का चेहरा दिखाया जाता है। मगर आदमी इतना नादान है कि जैसे ही हालात बदले वह दुबारा पहले की तरह ग़फलत और सरकशी में मुब्तिला हो जाता है।

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَمْأَدُمْتِ أَيْدِيهِمْ إِذَا هُمْ يَقْنَطُونَ ۝ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝ فَاتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَسِيرِينَ وَالْبَنَ السَّبِيلِ ۖ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ وَمَا آتَيْتُم مِّن رِّبَّالَيْزٍ بُوًا فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرِبُّوا ۖ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا آتَيْتُم مِّن زَكَاةٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْغَفُونَ ۝

और जब हम लोगों को महरबानी चखाते हैं तो वे उससे खुश हो जाते हैं। और अगर उनके आमाल के सबब से उन्हें कोई तकलीफ पहुंचती है तो यकायक वे मायूस हो जाते हैं। क्या वे देखते नहीं कि अल्लाह जिसे चाहे ज्यादा रोजी देता है और जिसे चाहे कम। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं। पस रिश्तेदार को उसका हक दो और मिसकीन को और मुसाफिर को। यह बेहतर है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की रिजा चाहते हैं और वही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो सूद तुम देते हो ताकि लोगों के माल में शामिल होकर वह बढ़ जाए, तो अल्लाह के नजदीक वह नहीं बढ़ता। और जो जकात तुम दोगे अल्लाह की रिजा हासिल करने के लिए तो यही लोग हैं जो अल्लाह के यहां अपने माल को बढ़ाने वाले हैं। (36-39)

मोमिन राहत और मुसीबत दोनों को खुदा की तरफ से समझता है। इसलिए वह दोनों हालातों में खुदा की तरफ मुतवज्जह होता है। वह राहत में शुक्र करता है और मुसीबत में सब्र। इसके बरअक्स ग़ैर मोमिन का भरोसा अपने आप पर होता है। इसलिए वह अच्छे हालात में नाजां होता है और जब उसकी कुव्वतें जवाब दे जाएं तो वह मायूसी का शिकार हो जाता है। क्योंकि उसे महसूस होता है कि अब उसकी आखिरी हद आ गई। यह गोया फितरत की शहदत है जो बताती है कि पहला ज़ेन हकीमी ज़ेन है और दूसरा ज़ेन ग़ैर हकीमी ज़ेन।

मोमिन की एक पहचान यह है कि वह अपने माल को रियाए इलाही के लिए खर्च करता है। चुनांचे वह अपने माल में दूसरे जरूरतमंदों का भी हिस्सा लगाता है, चाहे वे उसके रिश्तेदार हों या ग़ैर रिश्तेदार। वह अपने माल को आखिरत का नफा कमाने के लिए खर्च करता है न कि सूद ख़ारों की तरह सिर्फ दुनिया का नफा कमाने के लिए।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ
مَنْ يَفْعَلُ مِنْ ذَلِكُمْ مِثْلَ شَيْءٍ سُبْحَنَ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ٤٣ ظَهَرَ الْفَسَادُ
فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ٤٤ قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلُ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ٤٥

अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर उसने तुम्हें रोजी दी, फिर वह तुम्हें मौत देता है, फिर वह तुम्हें जिंदा करेगा। क्या तुम्हारे शरीकों में से कोई ऐसा है जो इनमें से कोई काम करता हो। वह पाक है और बरतर है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं। खुश्की और तरी में फसाद फैल गया लोगों के अपने हाथों की कमाई से, ताकि अल्लाह मजा चखाए उन्हें उनके कुछ आमाल का, शायद की वे बाज आएँ। कहो कि ज़मीन में चलो फिरो, फिर देखो कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो इससे पहले गुजरे हैं। उनमें से अक्सर मुश्रिक (बहुदेववादी) थे। (40-42)

एक इंसान का पैदा होना, उसका सुबह व शाम का रिज्क मिलना, उस पर मौत वाकेअ होना, ये वाक़ेयात इतने अजीम हैं कि इनके जुहूर के लिए कायनाती कुव्वत दरकार है। और ख़ालिके कायनात के सिवा कोई भी मफ़रूज (काल्पनिक) हस्ती ऐसी नहीं जो इस किस्म की कायनाती कुव्वत रखती हो। हकीकत यह है कि तैहीद (एकेश्वरवाद) अपनी दलील आप है और शिर्क (बहुदेववाद) अपनी तरदीद (रद्द) आप।

अगर इंसान एक खुदा को अपना माबूद बनाए तो सबका मर्कजे तवज्जोह एक होता है। इससे इंसानों के दर्मियान इत्तेहाद की फजा पैदा होती है। इसके बरअक्स जब दूसरे-दूसरे

माबूद बनाए जाने लगे तो बेखुमार चीजें मर्कजे तवज्जोह बन जाती हैं। इससे अपसाद और कौमों में इनाद (द्वेष) और इख़लाफ़ पैदा होता है। खुश्की और समुद्र और फजा सब फसाद (उपद्रव, विगाड़) से भर जाते हैं।

इंसान की बेराहरवी (पथभ्रष्टता) का मुस्तक़िल अंजाम मौत के बाद सामने आने वाला है। मगर इंसान की बेराहरवी का वक्ती अंजाम इसी दुनिया में दिखाया जाता है ताकि लोगों को याददिलानी हो।

فَاقِمِ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ
يَوْمَئِذٍ يَصْدَدُّ عَوْنَ ٤٦ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا
فَلَا نَفْسَ لَهُ يَهْدُوهٗ ۖ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ
إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ٤٧

पस अपना रुख़ देने कय्यिम (सीधे-सहज धर्म) की तरफ सीधा रखो। इससे पहले कि अल्लाह की तरफ से ऐसा दिन आ जाए जिसके लिए वापसी नहीं है। उस दिन लोग जुदा-जुदा हो जाएंगे। जिसने इंकार किया तो उसका इंकार उसी पर पड़ेगा। और जिसने नेक अमल किया तो ये लोग अपने ही लिए सामान कर रहे हैं। ताकि अल्लाह इमान लाने वालों को और नेक अमल करने वालों को अपने फ़ल से जज़ (प्रतिफल) दे। बेशक अल्लाह मुंकिरों को पसंद नहीं करता। (43-45)

मौजूदा दुनिया में अच्छे और बुरे दोनों किस्म के लोग मिले हुए हैं। आखिरत इसलिए आएगी कि वह दोनों किस्म के लोगों को अलग-अलग कर दे। उस दिन खुदा का इनाम उन लोगों के लिए होगा जो मौजूदा दुनिया में सिर्फ खुदा वाले बनकर रहे। और जिन लोगों की दिलचस्पियां ग़ैर खुदा के साथ वाबस्ता रहीं वे वहां अबदी (चिरस्थायी) तौर पर खुदा की रहमतों से महरूम कर दिए जाएंगे।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيَّاهَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيُذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ الْفُلُكُ
بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ٤٨ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ
رُسُلًا إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَأَنْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرُوهُمْ ۖ وَكَانَ
حُكْمًا عَلَيْنَا أُنْصَرُّ الْمُؤْمِنِينَ ٤٩

और उसकी निशानियों में से यह है कि वह हवाएं भेजता है खुशख़बरी देने के लिए और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत से नवाजे। और ताकि कश्तियां उसके हुक्म से चलें।

और ताकि तुम उसका फल तलाश करो। और ताकि तुम उसका शुक्र अदा करो। और हमने तुमसे पहले रसूलों को भेजा उनकी कौम की तरफ। पस वे उनके पास खुली निशानियां लेकर आए। तो हमने उन लोगों से इंतिकाम लिया जिन्होंने जुर्र किया था। और हम पर यह हक था कि हम मोमिनों की मदद करें। (46-47)

बारिश से पहले ठंडी हवाओं का आना इस बात का एलान है कि इस दुनिया का खुदा रहमतों वाला खुदा है। समुद्री जहाजरानी तमदुन (संस्कृति) के लिए इतिहाई अहम है। मगर समुद्री जहाजरानी उसी वक्त मुमकिन होती है जबकि हवा एक खास हद के अंदर रहे। इसी तरह मौजूदा जमाने में हवाई सफर का भी बहुत गहरा तअल्लुक इस इंतजाम से है कि खुदा ने जमीन की सतह के ऊपर हवा का दबीज (मोटा) गिलाफ कयम कर रखा है।

यह सारा एहतिमाम इसलिए किया गया है ताकि इंसान खुदा का शुक्रगुजार बंदा बनकर रहे। खुदा के पैमबर इन्हीं हकीकतों की तरफ लोगों को मुतवज्जह करने के लिए आए। फिर कुछ लोगों ने उन्हें माना, और कुछ लोगों ने उनका इंकार कर दिया। उस वक्त खुदा ने मानने वालों की मदद की और इंकार करने वालों को हलाक कर दिया। यही मामला दोनों किस्म के इंसानों के साथ आखिरत में ज्यादा बड़े पैमाने पर पेश जाएगा।

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا ۖ فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ ۚ وَيَجْعَلُ سَفًا ۚ فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۚ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادَةٍ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ۚ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْهِمْ مِنَ قَبْلِهِ لِبُلْسِيئِينَ ۖ فَانْظُرْ إِلَى اثْرِ رَحْمَتِ اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَجَائِ الْمَوْتِ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفًا ۚ لَظَلُّوا مِنْ بَعْدِهِ يَكْفُرُونَ ۚ وَإِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَى وَلَا تُسْمِعُ الضُّمَمَ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ۚ وَمَا أَنْتَ بِهَدَّ الْعُمَى عَنْ صَلَاتِهِمْ ۚ إِنَّ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِالْآيَاتِ ۚ فَمَنْ يُسْلِمُونَ ۚ

ع

अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। पस वे बादल को उठाती हैं। फिर अल्लाह उन्हें आसमान में फैला देता है जिस तरह चाहता है। और वह उन्हें तह-ब-तह करता है। फिर तुम बारिश को देखते हो कि उसके अंदर से निकलती है। फिर जब वह अपने बंदों में से जिसे चाहता है उसे पहुंचा देता है तो यकायक वे खुश हो जाते हैं। और वे उसके

नाजिल किए जाने से पहले, खुशी से पहले, नाउम्मीद थे। पस अल्लाह की रहमत के आसार (निशान) को देखो, वह किस तरह जमीन को जिंदा कर देता है उसके मुर्दा हो जाने के बाद। बेशक वही मुर्दों को जिंदा करने वाला है। और वह हर चीज पर कादिर है। और अगर हम एक हवा भेज दें, फिर वे खेती को जर्द हुई देखें तो इसके बाद वे इंकार करने लगेंगे। तो तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते जबकि वे पीठ फेरकर चले जा रहे हों। और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से निकाल कर राह पर ला सकते हो। तुम सिर्फ उसे सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाने वाला हो। पस यही लोग इताअत (आज्ञापालन) करने वाले हैं। (48-53)

आदमी हक का रास्ता इख्तियार करे तो उसे अक्सर सख्त दुश्वारियों का सामना करना पड़ता है, जैसा कि दौरे अव्वल में रसूल और असहाबे रसूल के साथ पेश आया। मगर इन हालात में किसी के लिए मायूस होने का सवाल नहीं। जो खुदा इतना रहीम है कि जब खेती को पानी की जरूरत होती है तो वह आलमी निजाम को मुतहरिक (सक्रिय) करके उसे सैराब करता है वह यकीनन अपने रास्ते पर चलने वालों की भी जरूर मदद फरमाएगा। ताहम यह मदद खुदा के अपने अंदाजे के मुताबिक आएगी। इसलिए अगर इसमें देर हो तो आदमी को मायूस और बददिल नहीं होना चाहिए।

खुदा की बात निहायत वाजेह और निहायत मुदल्लल (तर्कपूर्ण) बात है। मगर खुदा की बात का मोमिन वही बनेगा जो चीजों को गहराई के साथ देखे, जो बातों को ध्यान के साथ सुने। जिसके अंदर यह मिजाज हो कि जो बात समझ में आ जाए उसे मान ले, जिस रास्ते का सही होना मालूम हो जाए उस पर चलने लगे।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ۖ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ۚ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْجُرْمُونَ ۚ مَا لَيْتُوا غَيْرَ سَاعَةٍ ۚ كَذَلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ ۚ فَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ ۚ وَلَكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۚ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مُعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۚ

अल्लाह ही है जिसने तुम्हें कमजोरी से पैदा किया, फिर कमजोरी के बाद कुव्वत (शक्ति) दी, फिर कुव्वत के बाद कमजोरी और बुढ़ापा तारी कर दिया। वह जो चाहता है पैदा

करता है। और वह इल्म वाला, कुदरत वाला है। और जिस दिन कियामत बरपा होगी, मुजरिम कसम खाकर कहेंगे कि वे एक घड़ी से ज्यादा नहीं रहे। इस तरह वे फेंरे जाते थे। और जिन लोगों को इल्म व ईमान अता हुआ था वे कहेंगे कि अल्लाह की किताब में तो तुम हश्शर (जीवित हो उठने) के दिन तक पड़े रहे। पस यह हश्शर (जीवित हो उठने) का दिन है, लेकिन तुम जानते न थे। पस उस दिन जलियों को उनकी मज्जत (सफाई पेश करना) कुछ नफा न देगी और न उनसे माफी मांगने के लिए कहा जाएगा। (54-57)

इंसान पैदा होता है तो वह निहायत कमजोर बच्चा होता है। फिर दर्मियान में ताकत और जवानी के कुछ साल गुजरने के बाद दुबारा बुढ़ापे की कमजोरी आ जाती है। इसका मतलब यह है कि इंसान की ताकत उसकी अपनी नहीं है। वह उसे देने से मिलती है। यह देने वाले के इस्त्रियार में है कि वह जब चाहे दे और जब चाहे वापस ले ले।

दुनिया की जिंदगी में आदमी आखिरत के लिए फिक्रमंद नहीं होता। क्योंकि कियामत उसे बहुत दूर की चीज मालूम होती है। मगर यह सिर्फ बेखबरी की बात है। कियामत जब आएगी तो उसे ऐसा मालूम होगा कि बस एक घड़ी पिछली दुनिया में रहना हुआ था कि अगली दुनिया का मरहला पेश आ गया।

وَلَقَدْ صَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَلَكِنْ جَسَّهُمْ بَالِغًا
يَقُولُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ۝ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ
الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَ لَا يَسْتَخِفُّكَ الَّذِينَ
لَا يُوقِنُونَ ۝

और हमने इस कुरआन में लोगों के लिए हर किस्म की मिसालें बयान की हैं। और अगर तुम उनके पास कोई निशानी ले आओ तो जिन लोगों ने इंकार किया है वे यही कहेंगे कि तुम सब बातिल (असत्य) पर हो। इस तरह अल्लाह मुहर कर देता है उन लोगों के दिलों पर जो नहीं जानते। पस तुम सब्र करो, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है। और तुम्हें बेबरदाश्त न कर दें वे लोग जो यकीन नहीं रखते। (58-60)

मक्का में लोग कहते थे कि अगर तुम पैगम्बर हो तो कोई ख़ारिके आदत (दिव्य) करिश्मा दिखाओ। मगर उनके इस मुतालबे को पूरा नहीं किया गया। इसकी वजह यह है कि ख़ारिके आदत करिश्मा अस्त मक्सद के एतबार से बेमयदा था। इस्लाम का मक्सद तो यह था कि लोगों के अमल में तब्दीली हो और अमल में तब्दीली फिक्र (विचार) की तब्दीली से आती है न कि ख़ारिके आदत करिश्मा दिखाकर लोगों को अचंभे में डाल देने से।

चुनाये कुरआन का सारा जोर इस्तदलाल (तर्क) पर है। वह दलील के जरिए इंसान के जेहन को बदलना चाहता है। वह आदमी को इस काबिल बनाना चाहता है कि वाक़्यात को सही रुख से देखे और मामलात पर सही राय कायम कर सके। हकीकत यह है कि इंसान का अस्त मसला सेहते फिक्र (सुविचारता) है। अगर आदमी के अंदर सही फिक्र न जागा हो तो करिश्मों और मोजिजों को देखकर दुबारा वह कोई नासमझी का लफ्ज बोल देगा जिस तरह वह इससे पहले नासमझी के अल्फ़ज बोलता रहा है।

लाइल्मी की बिना पर मुहर लगाना, सेहते फिक्र न होने की वजह से बातों को न समझना है। आदमी के अंदर राय कायम करने की सलाहियत न हो तो वह चीजों को उनके सही रुख से नहीं देख पाता। इस बिना पर वह चीजों से अपने लिए सही रहनुमाई भी हासिल नहीं कर पाता।

जो अल्लाह का बंदा बेआमेज (विशुद्ध) हक की दावत लेकर उठे उसे हमेशा लोगों की तरफ से हौसलाशिकन रद्देअमल का सामना पेश आता है। दाजी तमामतर आखिरत की बात करता है जबकि लोगों का जेहन दुनिया के मसाइल में उलझा हुआ होता है। इस बिना पर लोग दाजी की तहकीर (अनादर) करते हैं। वे उसे हर लिहाज से नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। यहां तक कि माहौल में दाजी की बात बेवजन बात मालूम होने लगती है।

यह सूरतेहाल मदरु के साथ दाजी को भी आजमाइश में डाल देती है। ऐसे वक़्त में दाजी के लिए जरूरी हो जाता है कि वह अपने यकीन को न खोए। अगर हालात के दबाव के तहत उसने अपने यकीन को खो दिया तो वह ऐसी बात बोलने लगेगा जो आम लोगों को शायद अहम मालूम हो मगर अल्लाह की नज़र में उससे ज्यादा ग़ैर अहम बात और कोई न होगी।

سُورَةُ الْبَقَرَةِ وَهُيَ الرَّابِعَةُ وَالْخَامِسَةُ مِنَ الْقُرْآنِ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الْمَ تِلْكَ الْكِتَابُ الْحَكِيمُ ۝ هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِينَ ۝ الَّذِينَ يُقِيمُونَ
الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ۝ أُولَٰئِكَ عَلَى
هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० मीम०। ये पुरहिक्मत (तत्वज्ञानपूर्ण) किताब की आयतें हैं, हिदायत और रहमत नेकी करने वालों के लिए। जो कि नमाज कायम करते हैं और ज़कात अदा

करते हैं। और वे आखिरत पर यकीन रखते हैं। ये लोग अपने खब के सीधे रास्ते पर हैं और यही लोग फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाले हैं। (1-5)

एहसान का अस्त मफहूम है, किसी काम को अच्छी तरह करना। मोहसिन के मअना हैं अच्छी तरह करने वाला। इस दुनिया में किसी काम के अच्छे होने का मेयार यह है कि वह हकीकते वाक्ये के मुताबिक हो। इस एतबार से मोहसिन वह शख्स है जो हकीकते वाक्या का एतराफ करे, जिसका अमल वही हो जो होना चाहिए और वह न हो जो नहीं होना चाहिए।

जो लोग अपने आपको हकीकते वाक्या के मुताबिक ढालने का मिजाज रखें वही वे लोग हैं कि जब उनके सामने सदाकत (सच्चाई) आती है तो वे किसी नफिसयाती पेचीदगी में मुक्तिला हुए बगैर उसे मान लेते हैं। वे फौरन ही उसके अमली तक्वाजे पूरे करने लगते हैं। वे नमाजी बन जाते हैं जो खुदा का हक अदा करने की एक अलामत है। वे जकात अदा करते हैं जो गोया माल के दायरे में बंदों का हक अदा करना है। वे दुनियापरस्ती को छोड़कर आखिरतपसंद बन जाते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि कामयाबी और नाकामयाबी का फैसला आखिरकार जहां होना है वह आखिरत ही है।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ
وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۖ وَإِذْ أَنْتَلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلَىٰ
مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۖ فَبَشَّرَهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۖ
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ ۖ خَالِدِينَ فِيهَا وَعَدَ اللَّهُ
حَقًّا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

और लोगों में कोई ऐसा है जो उन बातों का खरीदार बनता है जो ग़ाफिल करने वाली हैं। ताकि अल्लाह की राह से गुमराह करे, बगैर किसी इल्म के। और उसकी हंसी उड़ाए। ऐसे लोगों के लिए जलील करने वाला अजाब है। और जब उन्हें हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह तकबुर (घमंड) करता हुआ मुंह मोड़ लेता है, जैसे उसने सुना ही नहीं, जैसे उसके कानों में बहरापन है। तो उसे एक दर्दनाक अजाब की खुशखबरी दे दो। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किया। उनके लिए नेमत के बाग हैं। उनमें वे हमेशा रहेंगे। यह अल्लाह का पुज़्जा वादा है और वह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-9)

बातें दो किस्म की होती हैं। एक नसीहत दूसरे तफरीह। नसीहत की बात जिम्मेदारी का एहसास दिलाती है। वह आदमी से कुछ करने और कुछ न करने के लिए कहती है। इसलिए हर दौर में बहुत कम ऐसे लोग हुए हैं जो नसीहत की बातों से दिलचस्पी लें। ईसान का आम

मिजाज हमेशा यह रहा है कि वह तफरीह की बातों को ज्यादा पसंद करता है। वह नसीहत की 'किताब' के मुकाबले में उस किताब का ज्यादा खरीदार बनता है जिसमें उसके लिए जेहनी तफरीह का सामान हो और वह उससे कुछ करने के लिए न कहे।

जिस शख्स का हाल यह हो कि वह अपनी जात से आगे बढ़कर दूसरों को इस किस्म की तफरीही बातों में मशगूल करने लगे वह ज्यादा बड़ मुजरिम है। क्योंकि वह इस जेहनी बेराहरी (भटकाव) का कायद बना। उसने लोगों के जेहन को बेफायदा बातों में मशगूल करके उन्हें इस काबिल न रखा कि वे ज्यादा संजीदा बातों में ध्यान दे सकें।

सबसे बुरी नफिसयात घमंड की नफिसयात है। जो शख्स घमंड की नफिसयात में मुक्तिला हो उसके सामने हक आपणा मगर वह अपने को बुलन्द समझने की वजह से उसका एतराफ नहीं करेगा। वह उसे हिकरत के साथ नजरअंदाज करके आगे बढ़ जाएगा। इसके बरअक्स मामला अहले ईमान का है। उनका नसीहतपसंद मिजाज उन्हें मजबूर करता है कि वे सच्चाई का एतराफ करें, वे अपनी जिंदगी को तमामतर उसके हवाले कर दें।

خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَالْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ
وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۖ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ
زَوْجٍ كَرِيمٍ ۖ هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ بَلِ
الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

अल्लाह ने आसमानों को पैदा किया, ऐसे सुतूनों (स्तंभों) के बगैर जो तुम्हें नजर आए। और उसने जमीन में पहाड़ रख दिए कि वे तुम्हें लेकर झुक न जाए। और उसमें हर किस्म के जानदार फैला दिए। और हमने आसमान से पानी उतारा फिर जमीन में हर किस्म की उमदा चीजें उगाई। यह है अल्लाह की तख़लीक, तो तुम मुझे दिखाओ कि उसके सिवा जो हैं उन्होंने क्या पैदा किया है। बल्कि जालिम लोग खुली गुमराही में हैं। (10-11)

कायनात लामुतनाही (अनंत) ख़ला है। इसके अंदर वेशुमार निहायत बड़े-बड़े अजराम (आकाशीय पिंड) मुसलसल गर्दिश कर रहे हैं। इन अजराम का इस तरह ख़ला (अंतरिक्ष) में गर्दिश करते हुए कायम रहना दहशतनाक हद तक अजीम वाक्या है। फिर हमारी जमीन मौजूदा कायनात में एक इतिहाई विलक्षण ग्रह है जिसमें अनगिनत इतिजामात ने इसके ऊपर इंसानी जिंदगी को मुमकिन बना दिया है। इन्हीं इतिजामात में से चन्द ये हैं जमीन की सतह पर पहाड़ों के उभार से तवाजुन (संतुलन) कायम होना। फिर पानी और जिंदगी और नवातत (वनस्पति) जैसी अजीब चीजों की जमीन पर इफ़रात (बहुलता) के साथ मौजूदगी।

एक खुदाए बरतर के सिवा कोई नहीं जो इस अजीम निजाम को कायम रख सके। फिर

इंसान के लिए कैसे जाइज हो सकता है कि वह खुदा के सिवा दूसरी चीजों को अपना मर्कजे परस्तिश बनाए।

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ
وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَمِيدٌ ۝ وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَا بُنَيَّ
لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَمِيدٌ ۝ وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ يَا بُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ۝

और हमने लुकमान को हिक्मत (तत्वज्ञान) अता फरमाई कि अल्लाह का शुक्र करो। और जो शख्स शुक्र करेगा तो वह अपने ही लिए शुक्र करेगा और जो नाशुक्री करेगा तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है ख़ुबियों वाला है। और जब लुकमान ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि ऐ मेरे बेटे, अल्लाह के साथ शरीक न ठहराना, बेशक शिर्क बहुत बड़ा जुल्म है। (12-13)

लुकमान हकीम की तारीख़ी हैसियत के बारे में अभी तक कतई मालूमात हासिल नहीं हो सकी हैं। ताहम वह एक दानिशमंद (प्रबुद्ध) और खुदापरस्त आदमी थे।

क़ुरआन बताता है कि लुकमान हकीम खुदा के एक शुक्रगुजार बेटे थे। और अपने बेटे को उन्होंने शिर्क से बचने की तल्कीन की। ये दोनों बातें एक हैं। तौहीद अल्लाह को अपना मोहसिन (उपकारक) समझने के एहसास से उभरती है। और शिर्क यह है कि आदमी अल्लाह के सिवा किसी और को अपना मोहसिन समझ ले और उसके लिए अपने एहसानमंदी के ज़बात न्यौछावर करने लगे। जब देने वाला सिर्फ एक है तो शुक्रगुजारी भी सिर्फ एक ही की होनी चाहिए।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَسَنَةً إِنَّهُ وَهْنٌ عَلَى وَهْنٍ وَفِصْلُهُ فِي
عَامَيْنِ أَنْ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ إِلَى الْمَصِيرِ ۝ وَإِنْ جَاهَدَكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ
بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبُهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۝ وَاتَّبِعْ
سَبِيلَ مَنْ آتَاكَ إِلًا ۝ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

और हमने इंसान को उसके मां-बाप के मामले में ताकीद की। उसकी मां ने दुख पर दुख उठाकर उसे पेट में रखा और दो वर्ष में उसका दूध छुड़ाना हुआ। कि तू मेरा शुक्र कर और अपने वालिदेन का। मेरी ही तरफ लौट कर आना है और अगर वे दोनों तुझ पर जोर डालें कि तू मेरे साथ ऐसी चीज को शरीक ठहराए जो तुझे मालूम नहीं तो उनकी बात न मानना। और दुनिया में उनके साथ नेक बर्ताव करना। और तुम उस शख्स

के रास्ते की पैरवी करना जिसने मेरी तरफ रुजूअ किया है। फिर तुम सबको मेरे पास आना है। फिर मैं तुम्हें बता दूंगा जो कुछ तुम करते रहे। (14-15)

खुदा के बाद इंसान के ऊपर सबसे ज्यादा हक मां-बाप का है। अलबत्ता अगर मां-बाप का हुक्म खुदा के हुक्म से टकराए तो उस वक़्त खुदा का हुक्म लेना है और मां-बाप का हुक्म छोड़ देना है। ताहम उस वक़्त भी यह जरूरी है कि मां-बाप की ख़िदमत को बदस्तूर जारी रखा जाए।

दो मुक़ल्लिफ तक्ज़ों में यह तवाज़ुन हिक्मते इस्लाम की आलातरीन शक़ल है। और इसी आला हिक्मत में तमाम आला कामयाबियों का राज छुपा हुआ है।

يُبْنَىٰ إِنَّهَا إِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي
السَّمَاءِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۝ يُبْنَىٰ أَقِيمِ
الصَّلَاةَ وَآمُرْ بِالْمَعْرُوفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصِدٌ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ إِنَّ ذَلِكَ
مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝ وَلَا تَصْغُرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا
إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝ وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ
صَوْتِكَ إِنْ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ۝

يُبْنَىٰ

ऐ मेरे बेटे, कोई अमल अगर राई के दाने के बराबर हो फिर वह किसी पत्थर के अंदर हो या आसमानों में हो या जमीन में हो, अल्लाह उसे हाज़िर कर देगा। बेशक अल्लाह बारीकबी है, बाख़बर है। ऐ मेरे बेटे नमाज़ कायम करो, अच्छे काम की नसीहत करो और बुराई से रोको और जो मुसीबत तुम्हें पहुंचे उस पर सब्र करो। बेशक यह हिम्मत के कामों में से है। और लोगों से बेरुख़ी न कर। और जमीन में अकड़ कर न चल। बेशक अल्लाह किसी अकड़ने वाले और फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता। और अपनी चाल में मियानारवी (शालीनता) इस्तिहार कर और अपनी आवाज़ को पस्त कर। बेशक सबसे बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है। (16-19)

मौजूद ज़माने में साइंस की तरक्की ने साबित किया है कि आइ और फसला इजफ़ी (अतिरिक्त) अल्फाज़ हैं। एक्सरे किरणें जिस्म के अंदर तक देख लेती हैं। दूरबीन और ख़ुर्दबीन (Micro Scope) के ज़रिए वे चीज़ें दिखाई देने लगती हैं जो ख़ाली आंख से नज़र नहीं आतीं। यह इस्फ़ान जिसका तज़र्बा हमें महदूद सतह पर हो रहा है यही खुदा के यहां लामहदूद (असीम) तौर पर मौजूद है।

दीन पर खुद अमल करना या दूसरों को दीन की तरफ बुलाना, दोनों ही सब्र चाहते हैं।

इसके लिए करने से पहले सोचना पड़ता है। नपस की ख्वाहिश पर चलने के बजाए नपस के खिलाफ चलना पड़ता है। अपनी बड़ाई को महफूज करने के बजाए अपनी बड़ाई को खो देना पड़ता है। दूसरों की तरफ से पेश आने वाली तकलीफों को यकतरफा तौर पर बर्दाश्त करना पड़ता है।

ये सब हौसलामंदी के काम हैं, और हौसलामंद किरदार (चरित्र) ही का दूसरा नाम इस्लामी किरदार है।

أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مِمَّا فِي السَّمَوَاتِ وَمِمَّا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ ۖ وَإِذْ يَقُولُ لَهُمُ الْيَهُودُ مَا آتَاكَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَكْتُمُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْكَ أَبَاءَنَا أَوْ لَوْ كُنَّا الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَى عَذَابِ السَّعِيرِ ۝

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने तुम्हारे काम में लगा दिया है जो कुछ आसमानों में है और जो जमीन में है। और उसने अपनी खुली और छुपी नेमतें तुम पर तमाम कर दीं। और लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं, किसी इल्म और किसी हिदायत और किसी रोशन किताब के बगैर। और जब उनसे कहा जाता है कि तुम पैरवी करो उस चीज की जो अल्लाह ने उतारी है तो वे कहते हैं कि नहीं, हम उस चीज की पैरवी करेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है। क्या अगर शैतान उन्हें आग के अजाब की तरफ कुला रहा हो तब भी। (20-21)

मौजूदा दुनिया इस तरह बनी है कि वह इंसान के लिए कामिल तौर पर साजगार है। नीज यह कि मौजूदा दुनिया में हर वह चीज इफरात (बहुलता) के साथ मौजूद है जिसकी इंसान को जरूरत है। इसके बावजूद इंसान का यह हाल है कि वह खालिके कायनात का शुक्र नहीं करता। वह बेमअना बहस पैदा करके चाहता है कि लोगों की तबज्जोह खुदा की तरफ से फेर दे।

इंसान के बेराह होने का सबब अक्सर हालात में यह होता है कि वह अपनी अकल को काम में नहीं लाता। वह रवाजे आम से हटकर नहीं सोचता। आदमी अगर रवाज से ऊपर उठ जाए तो खुदा की दी हुई अकल खुद उसे सही सम्त में रहनुमाई के लिए काफी हो जाए।

وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدْ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ۖ وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ ۚ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

عَذَابِ غَلِيظٍ ۝

और जो शख्स अपना रुख अल्लाह की तरफ झुका दे और वह नेक अमल करने वाले भी हो तो उसने मजबूत रस्सी पकड़ ली। और अल्लाह ही की तरफ है तमाम मामलात का अंजामकार। और जिसने इंकार किया तो उसका इंकार तुम्हें गमगीन न करे। हमारी ही तरफ है उनकी वापसी। तो हम उन्हें बता देंगे जो कुछ उन्होंने किया। बेशक अल्लाह दिलों की बात से भी वाकिफ है। उन्हें हम थोड़ी मुद्दत फायदा देंगे। फिर उन्हें एक सख्त अजाब की तरफ खींच लाएंगे। (22-24)

हर आदमी का एक रुख होता है जिधर वह अपने पूरे फिक्री (वैचारिक) और अमली वजूद के साथ मुतवज्जह रहता है। मोमिन वह है जिसका रुख पूरी तरह खुदा की तरफ हो जाए। मोमिनाना जिंदगी दूसरे लफ्जों में खुदा रुखी (God-oriented) जिंदगी का नाम है। और गैर मोमिनाना जिंदगी गैर खुदा रुखी जिंदगी का।

जिस शख्स ने खुदा की तरफ रुख किया उसने सही मंजिल की तरफ रुख किया। वह यकीनन अच्छे अंजाम को पहुंचेगा। इसके बरअक्स जो शख्स खुदा से गाफिल होकर किसी और तरफ मुतवज्जह हो जाए वह बेरुख और बेमंजिल हो गया। उसे आज की वक्ती जिंदगी में कुछ फायदे हो सकते हैं। मगर आखिरत की मुस्तकिल जिंदगी में उसके लिए अजाब के सिवा और कुछ नहीं।

وَلَيْنَ سَاءَ لَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لِيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلِ الْحَسَدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और जमीन को किसने पैदा किया, तो वे जरूर कहेंगे कि अल्लाह ने। कहे कि सब तारीफ अल्लाह के लिए है, बल्कि उनमें से अक्सर नहीं जानते। अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जमीन में। बेशक अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, खूबियों वाला है। और अगर जमीन में जो दरख्त हैं वे कलम बन जाएं और समुद्र, सात अतिरिक्त समुद्रों के साथ, रोशनाई बन जाएं, तब भी अल्लाह की बातें खत्म न हों। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (25-27)

कायनात इतनी वसीअ और इतनी अजीम है कि कोई भी शख्स होश व हवास के साथ यह दावा नहीं कर सकता कि इसे खुदा के सिवा किसी और ने बनाया है। मगर इस हकीकत

को मानने के बावजूद इंसान का हाल यह है कि वह खुदा के सिवा दूसरी चीजों को अज्मत का मकाम देता है। यही वह गैर माकूल रवैया है जिसका दूसरा नाम शिर्क है।

खुदा की अज्मत इससे ज्यादा है कि वह लफ्जों में बयान की जा सके। उलूमे तबीई (भौतिक विज्ञानों) की तारीख हजारों वर्ष के दायरे में फैली हुई है। मगर बेशुमार तहकीकात के बावजूद अभी तक किसी एक चीज के बारे में भी पूरी मालूमात हासिल न हो सकीं। इंसान को आज भी यह नहीं मालूम कि खला (अंतरिक्ष) में कितने सितारे हैं। जमीन में नवातात (पेड़-पौधों) और हैवानात की कितनी किस्में हैं। दरख्त की एक पत्ती और रेत के एक जर्रे की माहियत (पूर्ण संरचना) क्या है। समुद्र के अंदर कितने अजायबात छुपे हुए हैं। गरज इस दुनिया की कोई भी छोटी या बड़ी चीज ऐसी नहीं जिसके बारे में इंसान को पूरी मालूमात हासिल हो चुकी हों। यही वाक्या यह साबित करने के लिए काफी है कि दरख्तों के कलम और समुद्रों की स्याही भी खुदा के अनगिनत करिश्मों को तहरीर करने के लिए काफी नहीं।

مَا خَلَقَكُمْ وَلَا يَغْنَمُ إِلَّا كَنَفْسٍ وَاحِدَةٍ إِنْ اللَّهُ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝

तुम सबका पैदा करना और जिंदा करना बस ऐसा ही है जैसा एक शख्स का। बेशक अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है। और उसने सूरज और चांद को काम में लगा दिया है। हर एक चलता है एक मुक़रर वक्त तक। और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। यह इस वजह से है कि अल्लाह ही हक है। और उसके सिवा जिन चीजों को वे पुकारते हैं वे बातिल हैं और बेशक अल्लाह बरतर (सर्वोच्च) है, बड़ा है। (28-30)

इंसान अपनी जात में इस बात का सुबूत है कि एक जिंदगी का वुजूद में आना मुमकिन है। और जब एक जिंदगी का वजूद मुमकिन हो तो उसी किस्म की दूसरी जिंदगियों का वुजूद में आना और भी मुमकिन हो जाता है। इसी तरह हर आदमी इस वाक्ये का तजर्बा कर रहा है कि वह एक आवाज को सुन सकता है। वह एक मंजर को देख सकता है और जब एक आवाज का सुनना और एक मंजर का देखना मुमकिन हो तो बहुत सी आवाजों को सुनना और बहुत से मनाजिर को देखना नामुमकिन क्यों होगा।

रात को दिन में दाखिल करना और दिन को रात में दाखिल करना किनाया (संकेत) की जवान में उस वाक्ये की तरफ इशारा है जिसे मौजूदा ज़माने में जमीन की महवरी गर्दिश कहा

जाता है। अपने महवर (धुरी) पर कामिल सेहत के साथ जमीन की मुसलसल गर्दिश और इस तरह के दूसरे वाक्यात बताते हैं कि इस कायनात का ख़लिक व मालिक नाक़बिले क्यास हद तक अजीम है। ऐसी हालत में उसके सिवा कौन है जिसकी इबादत की जाए। जिसे अपनी जिंदगी में बड़ाई का मक़ाम दिया जाए। हकीकत यह है कि एक खुदा को छोड़कर जिसे भी अज्मत का मक़ाम दिया जाता है वह सिर्फ एक झूठ होता है। क्योंकि एक खुदा के सिवा किसी को कोई अज्मत हासिल नहीं।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ يَنْصَرِتُ إِلَٰهِ لِإِذْ يَكْمُرُ مِنَ الْإِنِّ ۝ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ وَإِذَا غَشِيَ سَمُومٌ مِّمَّ مَوْجٍ كَالظَّلِيلِ دَعَا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۝

क्या तुमने देखा नहीं कि कश्ती समुद्र में अल्लाह के फजल (अनुग्रह) से चलती है ताकि वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाए। बेशक इसमें निशानियां हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। और जब मौत उनके सर पर बादल की तरह छा जाती है, वे अल्लाह को पुकारते हैं उसके लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। फिर जब वह उन्हें नजात देकर खुशकी की तरफ ले आता है तो उनमें कुछ एतदाल (संतुलित मार्ग) पर रहते हैं। और हमारी निशानियों का इंकार वही लोग करते हैं जो बदअहद (वचन तोड़ने वाले) और नाशुक्रगुजार हैं। (31-32)

समुद्र में कोई चीज डाली जाए तो वह फौरन डूब जाएगी। मगर अल्लाह तआला ने पानी को एक खास कानून का पाबंद बना रखा है। इस वजह से कश्ती और जहाज अथाह समुद्रों में नहीं डूबते, वे इंसान को और उसके सामान को बहिफाजत एक जगह से दूसरी जगह पहुंचा देते हैं। यह बिलाशुबह एक अजीम निशानी है। मगर इस निशानी से सिर्फ साबिर और शाकिर इंसान सबक लेते हैं। साबिर वह है जो अपने आपको ग़लत एहसासात के ज़ेअसर जाने से रोके। और शाकिर वह है जो अपने बाहर पाई जाने वाली हकीकत का एतराफ कर सके।

ताहम जब समुद्र में तूफ़ान आता है तो आदमी को मालूम हो जाता है कि वह किस कद्र बेवस है। उस वक्त वह हर एक की बड़ाई को भूलकर सिर्फ खुदा को पुकारने लगता है। यह तजर्बा जो कश्ती के मुसाफिरों को पेश आता है उससे लोगों को सबक लेना चाहिए। मगर बहुत कम लोग हैं जो इन वाक्यात से सबक लें और हक और अदल की राह पर क़यम रहें। बेशतर लोगों का हाल यह है कि मुसीबत में पड़े तो खुदा को याद कर लिया और मुसीबत हटी तो दुबारा सरकश और एहसान फ़रामोश बन गए।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ وَأَخْشَوْا يَوْمًا لَا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ
جَازِعٌ عَنْ وَالِدِهِ شَيْئًا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّكُمْ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّكُمْ
بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَ يَعْلَمُ مَا فِي
الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ۚ
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝

۝

ऐ लोगो अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जबकि कोई बाप अपने बेटे की तरफ से बदला न देगा और न कोई बेटा अपने बाप की तरफ से कुछ बदला देने वाला होगा। वेशक अल्लाह का वादा सच्चा है तो दुनिया की ज़िंदगी तुम्हें धोखे में न डाले न धोखेबाज तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाए। वेशक अल्लाह ही को कियामत का इल्म है और वही बारिश बरसाता है और वह जानता है जो कुछ रहम (गर्भ) में है। और कोई शख्स नहीं जानता कि कल वह क्या कमाई करेगा। और कोई शख्स नहीं जानता कि वह किस जमीन में मरेगा। वेशक अल्लाह जानने वाला, बाख़बर है। (33-34)

मौजूदा दुनिया में इस्तेहान की मस्तेहत से लोगों को आजादी दी गई है। इस इस्तेहानी आजादी को आदमी हकीकी आजादी समझ लेता है। यही सबसे बड़ा धोखा है। तमाम इंसानी बुराइयां इसी धोखे की वजह से पैदा होती हैं। यहां बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि इंसान जो चाहे करे कोई उसे पकड़ने वाला नहीं। हालांकि आखिरकार आदमी के ऊपर इतना कठिन वक्त आने वाला है कि बाप बेटा भी एक दूसरे का साथ देने वाले न बन सकेंगे।

‘कियामत आने वाली है तो वह कब आएगी’ ऐसा सवाल करना अपनी हद से तजावुज करना है। इंसान अपनी करीबी और मालूम दुनिया के बारे में भी कल की ख़बर नहीं रखता। मसलन बारिश, पेट का बच्चा, मआशी मुस्तकबिल (आर्थिक भविष्य), मौत, इन चीजों के बारे में कोई कतई पेशीनगोई नहीं की जा सकती। ताहम इस इल्मी महदूदियत के बावजूद इंसान इन हकीकतों के सच होने को मानता है। इसी तरह कियामत की घड़ी के बारे में भी उसे मुजमल (संक्षिप्त) ख़बर की बुनियाद पर यकीन करना चाहिए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ عَلَّمَ الْقُرْآنَ وَإِذْ يُنَادِيكَ نَادِيًا ۝
الْمَّ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ ۝ مِنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ۝

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० मीम०। यह नाज़िल की हुई किताब है, इसमें कुछ शुबह नहीं, खुदावंद आलम की तरफ से है। क्या वे कहते हैं कि इस शख्स ने इसे खुद गढ़ लिया है। बल्कि यह हक है तुम्हारे रब की तरफ से, ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वे राह पर आ जाएं। (1-3)

‘यह खुदा की किताब है’ बजाहिर चन्द अल्फ़ाज़ का एक जुमला है। मगर यह इतना मुश्किल जुमला है कि तारीख में यह जुमला कहने की हिम्मत हकीकी तौर पर उन खास अफ़राद के सिवा किसी को न हो सकी जिन पर वाक़ेअतन खुदा की किताब उतरी थी। अगर कभी किसी और शख्स ने यह जुमला बोलने की ज़ुरअत की है तो वह या तो मसख़रा था या पागल। और उसका मसख़रा या पागल होना बाद को पूरी तरह साबित हो गया।

कुरआन अपना सुबूत आप है। इसका मोजिजाती उस्तूब (दिव्य शैली), इसकी किसी बात का सैंकड़ों साल में ग़लत साबित न होना, इसका अपने मुख़ालिफ़ीन पर पूरी तरह ग़ालिब आना, ये और इस तरह के दूसरे वाक़ेयात इस बात का कतई सुबूत हैं कि कुरआन खुदा की तरफ से आई हुई किताब है। और जब वह खुदा की किताब है तो लाज़िम है कि हर शख्स उसकी चेतावनी पर ध्यान दे, वह इतिहाई संजीदगी के साथ इस पर ग़ौर करे।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ
عَلَى الْعَرْشِ ۚ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ ۚ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ۝
يَذَكِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ
سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ۝ ذَلِكِ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝ الَّذِي
أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ۝ ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ
مِنْ سُلَالَةٍ مِنْ تَأْفِيحٍ ۝ ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُوحِهِ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ
وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ۝

अल्लाह ही है जिसने पैदा किया आसमानों और जमीन को और जो इनके दर्मियान है छः दिनों में, फिर वह अर्श (सिंहासन) पर कायम हुआ। उसके सिवा न तुम्हारा कोई मददगार है और न कोई सिफारिश करने वाला। तो क्या तुम ध्यान नहीं करते। वह

आसमान से जमीन तक तमाम मामलात की तदवीर करता है। फिर वे उसकी तरफ लौटते हैं एक ऐसे दिन में जिसकी मिकदार तुम्हारी गिनती से हजार साल के बराबर है। वही है पोशीदा और जाहिर को जानने वाला। जबरदस्त है, रहमत वाला है। उसने जो चीज भी बनाई खूब बनाई। और उसने इंसान की तख्लीक की इब्तिदा मिट्टी से की। फिर उसकी नस्ल हकीर पानी के खुलासा (सत्त) से चलाई। फिर उसके आज्ञा (शरीरांग) दुरुस्त किए। और उसमें अपनी रूह फूँकी। तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए। तुम लोग बहुत कम शुक्र करते हो। (4-9)

छः दिनों (छः चरणों) में पैदा करने से मुराद तदरीज (क्रम) व एहतिमाम के साथ पैदा करना है। कायनात की तदरीजी तख्लीक और इसका पुहक्मत निजाम बताता है कि इस तख्लीक से खालिक का कोई खास मकसद वाबस्ता है। फिर कायनात में मुसलसल तौर पर बेशुमार अमल जारी हैं। इससे मजीद यह साबित होता है कि कायनात को पैदा करने वाला उसे मंसूबाबंद तौर पर चला रहा है। इंसान एक हैरतनाक किस्म का जिंदा वजूद है मगर उसके जिस्म का तज्जिया किया जाए तो मालूम होता है कि वह सिर्फ मिट्टी (भूमि के तत्वों) का मुरक्कब है। फिर यह इब्तिदाई तख्लीक खत्म नहीं हो जाती बल्कि तवालुद व तनासुल (प्रजनन क्रिया) के जरिए इसका सिलसिला मुस्तकिल तौर पर जारी है।

इन वाक्यात पर जो शख्स गौर करे उसके जेहन से एक खुदा की अज्मत के सिवा दूसरी तमाम अज्मतें मिट जाएंगी। वह खुदा का शुक्रगुजार बंदा बन जाएगा। मगर बहुत कम लोग हैं जो गहराई के साथ गौर करें। यही वजह है कि बहुत कम लोग हैं जो हम्द और शुक्र वाले बनें।

وَالْوَاءِ إِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَتَا الْغَيْثَ خَلَقَ جَدِيدَهُ بَلْ هُمْ بِلِقَائِي رَبِّهِمْ
كَفَرُونَ ۖ قُلْ يَتَوَفَّكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۝
وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُو أُرُوسِهِمْ عِندَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا
نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ۝ وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًى وَلَكِنْ حَقَّ
الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْإِنْسَانِ أَجْمَعِينَ ۝ فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ
لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا أَنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

और उन्होंने कहा कि क्या जब हम जमीन में गुम हो जाएंगे तो हम फिर नए सिरे से पैदा किया जाएंगे। बल्कि वे अपने रब की मुलाकात के मुक़िर् हैं। कहो कि मौत का फरिस्ता तुम्हारी जान कब्ज करता है जो तुम पर मुक़्सर किया गया है। फिर तुम अपने

रब की तरफ लौटाए जाओगे। और काश तुम देखो जबकि ये मुजरिम लोग अपने रब के सामने सर झुकाए होंगे। ऐ हमारे रब, हमने देख लिया और हमने सुन लिया तू हमें वापस भेज दे कि हम नेक काम करें। हम यकीन करने वाले बन गए। और अगर हम चाहते तो हर शख्स को उसकी हिदायत दे देते। लेकिन मेरी बात साबित हो चुकी कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों से भर दूंगा। तो अब मजा चखो इस बात का कि तुमने इस दिन की मुलाकात को भुला दिया। हमने भी तुम्हें भुला दिया। और अपने किए की बदौलत हमेशा का अजाब चखो। (10-14)

इंसान की तख्लीक के अब्बल उसकी तख्लीक सानी (पुनःसृजन) के मामले को समझने के लिए बिल्कुल काफी है। मगर जब खुदा के सामने जवाबदेही का यकीन न हो तो आदमी तख्लीक सानी का मजाक उड़ता है, वह ग़ैर संजीदा तौर पर मुख्तलिफ बातें करता है।

मगर यह जसारत (दुस्साहस) सिर्फ उस वक्त तक है जब तक आदमी की इम्तेहानी आजादी की मुद्दत खत्म न हुई हो। जब यह मुद्दत खत्म होगी और आदमी मरकर खुदाए जुलजलाल के सामने हिसाब के लिए खड़ा होगा तो उसके सारे अल्फाज गुम हो जाएंगे। उस वक्त सरकारश लोग कहेंगे कि हमने मान लिया। हमें दुबारा जमीन में भेज दीजिए ताकि हम नेक अमल करें। मगर उनका यह मानना बेफायदा होगा। खुदा को अगर इस तरह मनवाना होता तो वह दुनिया ही में लोगों को मानने के लिए मजबूर कर देता।

खुदा के यहाँ उस एतराफ की कीमत है जो बग़ैर देखे किया गया हो। देखने के बाद जो एतराफ किया जाए उसकी कोई कीमत नहीं।

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا بِهَا خُذُوا سَبْعًا ۖ وَاسْتَبْشَرُوا بِحُجَّتِ رَبِّهِمْ وَ
هُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۖ تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَ
طَمَعًا ۚ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۖ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُمْ مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

हमारी आयतों पर वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उन्हें उनके जरिए से याददिलानी की जाती है तो वे सज्दे में गिर पड़ते हैं और अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह करते हैं। और वे तकबुर (घमंड) नहीं करते। उनके पहलू विस्तरों से अलग रहते हैं। वे अपने रब को पुकारते हैं डर से और उम्मीद से। और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं। तो किसी को खबर नहीं कि उन लोगों के लिए उनके आमाल के बदले में आंखों की क्या ठंडक छुपा रखी गई है। (15-17)

हिदायत के सिलसिले में सबसे अहम चीज माद्दा-ए-एतराफ (स्वीकार की क्षमता) है।

हिदायत सिर्फ उन लोगों को मिलती है जिनके अंदर यह मिजाज हो कि जब सच्चाई उनके सामने आए तो वे फौरन उसे मान लें। चाहे सच्चाई बजाहिर एक छोटे आदमी के जरिये सामने आई हो, चाहे उसे मानना अपने आपको गलत करार देने के हममअना हो, चाहे उसे मानकर अपनी जिंदगी का नक्शा दरहम बरहम होता हुआ नजर आए। जिन लोगों के अंदर यह हैसला हो वही सच्चाई को पाते हैं। जो लोग यह चाहें कि वे सच्चाई को इस तरह मानें कि उनकी बड़ाई बदस्तूर कायम रहे ऐसे लोगों को सच्चाई कभी नहीं मिलती।

जो आदमी हक की खातिर अपनी बड़ाई को खो दे वह सबसे बड़ी चीज को पा लेता है और वह खुदा की बड़ाई है। उसकी जिंदगी में खुदा इस तरह शामिल हो जाता है कि वह उसकी यादों के साथ सोए और वह उसकी यादों के साथ जागे। उसके खौफ और उम्मीद के जज्वात तमामतर खुदा के साथ वाबस्ता हो जाएं। वह अपना असासा (धन-सम्पत्ति) इस तरह खुदा के हवाले कर देता है कि उसमें से कुछ बचाकर नहीं रखता। यही वे लोग हैं जिनकी आंखें जन्नत के अबदी बागों में ठंडी होंगी।

أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ۚ لَا يَسْتَوُونَ ۚ أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ الْمَأْثُورِ ۖ نُزُلًا لِّمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۚ وَلَنْ يَفْتَهُمْ مِنَ الْعَذَابِ أَلْفُ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۚ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ ۚ

२
१५

तो क्या जो मोमिन है वह उस शख्स जैसा होगा जो नाफरमान है। दोनों बराबर नहीं हो सकते। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनके लिए जन्नत की क्रियामगहें हैं, जियाफ्त (सत्कार) उन कामों की वजह से जो वे करते थे। और जिन लोगों ने नाफरमानी की तो उनका ठिकाना आग है, वे लोग जब उससे निकलना चाहेंगे तो फिर उसी में धकेल दिए जाएंगे। और उनसे कहा जाएगा कि आग का अजाब चखो जिसे तुम झुटलाते थे। और हम उन्हें बड़े अजाब से पहले करीब का अजाब चखाएंगे शायद कि वे बाज आ जाएं। और उस शख्स से ज्यादा जालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के जरिए नसीहत की जाए। फिर वह उनसे मुंह मोड़े। हम ऐसे मुजरिमों से जरूर बदला लेंगे। (18-22)

मोमिन वह है जो खुदाई सच्चाई का एतराफ करे। और फासिक (अवज्ञाकारी) वह है

जिसके सामने सच्चाई आए तो वह अपनी जात के तहफ्फुज (संरक्षण) की खातिर उसका इंकार कर दे। ये दोनों एक दूसरे से बिल्कुल मुखलिफ किरदार हैं और दो मुखलिफ किरदार का अंजाम एक जैसा नहीं हो सकता।

मौजूदा दुनिया में जो शख्स सच्चाई का एतराफ करता है वह इस बात का सुबूत देता है कि वह सच्चाई को सबसे बड़ी चीज समझता है। ऐसा शख्स आखिरत में बड़ा बनाया जाएगा। इसके बरअक्स जो शख्स सच्चाई को नजरअंदाज करे उसने अपनी जात को बड़ा समझा, ऐसा शख्स आखिरत की हकीकी दुनिया में छोटा कर दिया जाएगा।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ إِبْرَاهِيمَ يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لِتَصْبِرُوا ۖ وَكَلَّمَا يَأْتِيَنَّاهُمْ ۖ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً يُحَرِّفُونَ ۖ أَوَّلَ كَلِمَةٍ وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يُقْصِلُ بَيْنَهُم يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۚ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يََسْتَفْتُونَ ۚ فِي مَسْكِئِهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ۚ

और हमने मूसा को किताब दी। तो तुम उसके मिलने में कुछ शक न करो। और हमने उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया। और हमने उनमें पेशवा बनाए जो हमारे हुक्म से लोगों की रहनुमाई करते थे। जबकि उन्होंने सब्र किया। और वे हमारी आयतों पर यकीन रखते थे। बेशक तेरा रब क्रियामत के दिन उनके दर्मियान उन मामलों में फैसला कर देगा जिनमें वे बाहम इख्तेलाफ (परस्पर मतभेद) करते थे। क्या उनके लिए यह चीज हिदायत देने वाली न बनी कि उनसे पहले हमने कितनी कौमों को हलाक कर दिया। जिनकी बस्तियों में ये लोग आते जाते हैं। बेशक इसमें निशानियां हैं, क्या ये लोग सुनते नहीं। (23-26)

खुदा की किताब किसी गिरोह को मिलना उसे इमामते आलम (विश्व नेतृत्व) की कुंजी अता करना है। मगर इमामते आलम का मकाम किसी गिरोह को उस वक्त मिलता है जबकि वह सब्र का सुबूत दे। यानी पेशवाई का मकाम उन्हें उस वक्त मिला जबकि उन्होंने दुनिया से सब्र किया। (तफसीर इब्ने कसीर)

लोग उसी शख्स या गिरोह को अपना इमाम तस्लीम करते हैं जो उन्हें अपने से बुलन्द दिखाई दे। जो उस वक्त उसूल के लिए जिए जबकि लोग मफाद के लिए जीते हैं। जो उस वक्त इंसफ की हिमायत करे जबकि लोग कैम की हिमायत करने लगते हैं। जो उस वक्त बर्दाश्त करे जबकि लोग इतिक्राम लेते हैं। जो उस वक्त अपने को महरूमी पर राजी कर ले जबकि लोग पाने के लिए दौड़ते हैं। जो उस वक्त हक के लिए कुर्बान हो जाए जबकि लोग

सिर्फ अपनी जात के लिए कुर्बान होना जानते हैं। यही सब्र है और जो लोग इस सब्र का सुबूत दें वही कौमों के इमाम बनते हैं।

दीन में नई-नई तशरीह व तावीर निकाल कर जो लोग इख़लाफात खड़े करते हैं वे अपने लिए यह ख़तरा मोल ले रहे हैं कि आख़िरकार खुदा उनकी बात को रद्द कर दे और इसके बाद अबदी जिल्लत के सिवा और कुछ उनके हिस्से में न आए। आदमी अक्सर हालात में सबक नहीं लेता, यहां तक कि जो कुछ दूसरों पर गुज़रा वही उस पर भी न गुज़र जाए।

وَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا نَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ
وَأَنْفُسُهُمْ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ۖ وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْفَتْحُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ قُلْ
يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا الْيَمَانَةُ ۖ وَلَا لَهُمْ يَنْظُرُونَ ۖ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ
وَانْظُرْ إِلَيْهِمْ مُنْتَظِرُونَ ۚ

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम पानी को चटियल जमीन की तरफ हंककर ले जाते हैं। फिर हम उससे खेती निकालते हैं जिससे उनके चौपाए खाते हैं और वे खुद भी। फिर क्या वे देखते नहीं। और वे कहते हैं कि यह फैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहे कि फैसले के दिन उन लोगों का ईमान नफ़ा न देगा जिन्होंने इंकार किया। और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। तो उनसे दूर रहो और इंतज़ार करो, ये भी मुंत्ज़िर हैं। (27-30)

कदीम मक्का में मुश्रीकीन हर एतबार से ग़ालिब और सरबुलन्द थे और इस्लाम हर एतबार से पस्त और मग़लूब हो रहा था। चुनांचे मुश्रीकीन इस्लाम और मुसलमानों का मजाक उड़ाते थे। इसका जवाब अल्लाह तआला ने एक मिसाल के जरिये दिया। फरमाया, क्या तुम खुदा की इस कुदरत को नहीं देखते कि एक जमीन बिल्कुल ख़ुशक और चटियल पड़ी होती है। बजाहिर यह नामुमकिन मालूम होता है कि वह कभी सरसब्ज व शादाब हो सकेगी। मगर इसके बाद खुदा बादलों को लाकर उसके ऊपर बारिश बरसाता है तो चन्द दिन में यह हाल हो जाता है कि जहां ख़ाक उड़ रही थी वहां सब्जा लहलहाने लगता है। खुदा की यही कुदरत यह भी कर सकती है कि इस्लाम को इस तरह फ़रमा दे कि वही वक़्त का ग़ालिब फ़िक्र बन जाए।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنَافِقِينَ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا
حَكِيمًا ۖ وَالَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْعَدْلِ وَالْإِيمَانِ فَإِنَّ اللَّهَ مَعَهُمْ ۖ وَالَّذِينَ يَأْمُرُونَ
بِالْفُجُورِ وَالْكُفْرِ فَإِنَّ اللَّهَ مَعَهُمْ ۖ وَالَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْعَدْلِ وَالْإِيمَانِ فَإِنَّ اللَّهَ مَعَهُمْ ۖ وَالَّذِينَ
يَأْمُرُونَ بِالْفُجُورِ وَالْكُفْرِ فَإِنَّ اللَّهَ مَعَهُمْ ۖ وَالَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْعَدْلِ وَالْإِيمَانِ فَإِنَّ اللَّهَ مَعَهُمْ ۖ

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महारबान, निहायत रहम वाला है।
ऐ नबी, अल्लाह से डरो और मुंकिरों और मुनाफ़िकों (पाखंडियों) की इताअत (आज्ञापालन) न करो, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। और पैरवी करो उस चीज़ की जो तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जा रही है, बेशक अल्लाह बाख़बर है उससे जो तुम लोग करते हो। और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह कारसाज (कार्यपालक) होने के लिए काफी है। (1-3)

पैगम्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेआमेज (विशुद्ध) हक के दाजी थे। इस दुनिया में जो शख्स बेआमेज हक का दाजी बनकर उठे उसे निहायत हौसलाशिकन (निराशाजनक) हालात का सामना करना पड़ता है। वह पूरे माहौल में अजनबी बनकर रह जाता है। किसी का दुनियापरस्ताना मजहब दाजी के आख़िरपसंदाना दीन से मेल नहीं खाता। किसी की जमानासाजी (महत्वाकांक्षा) दाजी की बेलाग हकपरस्ती से टकराती है। कोई दीन को अपनी कौमपरस्ती का जमीमा (परिशिष्ट) बनाए हुए होता है, जबकि दाजी का मुतालबा यह होता है कि दीन को ख़ालिस खुदापरस्ती की बुनियाद पर कायम किया जाए।

ऐसी हालत में दाजी अगर माहौल का दबाव कुबूल कर ले तो बहुत से लोग उसका साथ देने वाले मिल जाएंगे। और अगर वह ख़ालिस हक पर कायम रहे तो एक खुदा के सिवा कोई और उसका सहारा नजर नहीं आता। मगर दाजी को किसी हाल में पहला रास्ता नहीं इख़्तियार करना है। उसे अल्लाह के भरोसे पर ख़ालिस हक पर कायम रहना है। और यह उम्मीद रखना है कि खुदा हकीम और अलीम है, वह जरूर अपने बंदे की मदद फरमाएगा।

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهِ ۖ وَمَا جَعَلَ أَزْوَاجَكُمُ الْإِنِّ تَطْهَرُونَ
مِنْهُمْ أُمَمَتَكُمْ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ أَبْنَاءَكُمْ ۚ ذَٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِأَفْوَاهِكُمْ ۖ وَاللَّهُ
يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ۚ أَدْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ ۚ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ
فَإِنْ لَّمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ۚ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ ۚ وَلَكِن مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوبُكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۖ

अल्लाह ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं रखे, और न तुम्हारी बीवियों को जिनसे तुम जिहार (तलाक देने की एक सूत जिसमें शौहर अपनी बीबी से कहता था कि तुम मेरे लिए मेरी माँ की पीठ की तरह हो।) करते हो तुम्हारी मां बनाया और न तुम्हारे मुंह

बोले बेटों को तुम्हारा बेटा बना दिया। ये सब तुम्हारे अपने मुंह की बातें हैं। और अल्लाह हक बात कहता है और वह सीधा रास्ता दिखाता है। मुंह बोले बेटों को उनके बापों की निस्वत से फुकारो यह अल्लाह के नजदीक ज्यादा मुसिफना बात है। फिर अगर तुम उनके बाप को न जानो तो वे तुम्हारे दीनी भाई हैं और तुम्हारे रफीक हैं। और जिस चीज में तुमसे भूल चूक हो जाए तो उसका तुम पर कुछ गुनाह नहीं मगर जो तुम दिल से इरादा करके करो। और अल्लाह माफ करने वाला, रहम करने वाला है। (4-5)

आदमी के सीने में दो दिल न होना बताता है कि तजादे फिक्री (वैचारिक द्वंद) खुदा के तख्तीकी मंसूबे के खिलाफ है। जब इंसान को एक दिल दिया गया है तो उसकी सोच भी एक होना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता कि एक ही दिल में बयकवक्त इस्लाम (निष्ठा) भी हो और निफक (कपट) भी, खुदापरस्ती भी हो और जमानापरस्ती भी, इंसफ भी हो और जुम भी, घमंड भी हो और तवाजोअ भी। आदमी दोनों में से कोई एक ही हो सकता है और उसे एक ही होना चाहिए।

यह एक उसूली बात है। इसी के तहत जमाना जाहिलियत की रस्में मसलन जिहार व तबन्नियत आती हैं। अरब जाहिलियत का एक रवाजी कानून यह था कि अगर कोई शख्स अपनी बीवी से यह कह दे कि : 'तू मेरे ऊपर मेरी मां की पीठ की तरह है' तो उसकी बीवी उसके ऊपर हमेशा के लिए हाराम हो जाती थी जिस तरह किसी की मां उसके लिए हाराम होती है। इसे जिहार कहते हैं। इसी तरह मुतबन्ना (मुंह बोले बेटे) के मामले में भी उनका अक़ीदा था कि वह बिल्कुल सुलबी (सगे) बेटे की तरह हो जाता है। उसे हर मामले में वही दर्जा दे दिया गया था जो हकीमी औलाद का होता है। कुरआन ने इस रवाज को बिल्कुल ख़त्म कर दिया। कुरआन में एलान किया गया कि यह तख्तीकी निजाम के सरासर ख़िलाफ है कि हकीमी मां और जवान से कही हुई मां या हकीमी बेटा और मुंह बोला बेटा दोनों की हैसियत बिल्कुल एक हो जाए।

आदमी अगर बेख़बरी में कोई ग़लती करे तो वह खुदा के यहां कबिले माफी है। मगर जब किसी मामले की हकीकत पूरी तरह वाजिह हो जाए, इसके बावजूद आदमी अपनी ग़लत रविश को न छोड़े तो इसके बाद वह कबिले माफी नहीं रहता।

النَّبِيُّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ وَأُولُو الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا الْآكَانُ تَقَعُوا إِلَىٰ أُولِيكُمْ مَعْرُوفًا كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا

और नबी का हक मोमिनों पर उनकी अपनी जान से भी ज्यादा है, और नबी की वीवियां उनकी माएं हैं। और रिश्तेदार खुदा की किताब में, दूसरे मोमिनीन और मुहाजिरीन की बनिस्वत, एक दूसरे से ज्यादा तअल्लुक रखते हैं। मगर यह कि तुम अपने दोस्तों से कुछ सुलूक करना चाहो। यह किताब में लिखा हुआ है। (6)

फैगम्बर अपनी जिंदगी में जाती तौर पर और वफ़ात के बाद उसूली तौर पर अहले इमान के लिए सबसे ज्यादा मुकद्दम हैसियत रखता है। इसकी वजह यह है कि फैगम्बर दुनिया में खुदा का नुमाइंदा होता है। फैगम्बर की तालीमात की अजमत को कायम रखने के लिए जरूरी है कि उसका वजूद लोगों की नजर में मुकद्दस वजूद हो। यहां तक कि उसकी वीवियां भी लोगों के लिए माओं की तरह कबिले एहताराम करार पाएं। फैगम्बर और आपकी वीवियों के बाद उम्मत के बकिया लोगों के तअल्लुकात की बुनियाद यह है कि रहमी (खून के) रिश्ते रखने वाले 'क़रीबी रिश्तेदार सबसे पहले हकदार' के उसूल पर एक दूसरे के हकदार ठहेंगे। दीनी जरूरत के तहत वक्ती तौर पर ऐर रिश्तेदारों में हुक्क की शिरकत कायम की जा सकती है। जैसा कि हिजरत के बाद इब्तिदाई जमाने में मदीना में किया गया। मगर मुस्तकिल मआशिरती इतिजाम के एतबार से हकीमी रिश्तेदार ही सबसे पहले हकदार हैं और हमेशा रहेंगे।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَلَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا عَلِيمًا ۚ لِيُشْكَلَ الصِّدِّيقِينَ عَنْ صِدْقِهِمْ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا

और जब हमने फैगम्बरों से उनका अहद (वचन) लिया और तुमसे और नूह से और इब्राहीम और मूसा और ईसा बिन मरयम से। और हमने उनसे पुख्ता अहद लिया। ताकि अल्लाह सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के बारे में सवाल करे, और मुंकिरों के लिए उसने दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (7-8)

अल्लाह तआला ने इंसान को जिस मंसूबे के तहत पैदा किया है वह इम्तेहान है। यानी मौजूदा दुनिया में हर किस्म के असबाबे हयात देकर उसे आजादाना माहौल में रखना और फिर हर एक के अमल के मुताबिक उसे अबदी (चिरस्थायी) इनाम या अबदी सजा देना।

जिंदगी की यह इम्तेहानी नौइयत लाजिमन यह चाहती है कि आदमी को अस्ल सूरतेहाल से पूरी तरह बाख़बर कर दिया जाए। इस मक्सद के लिए अल्लाह तआला ने फैगम्बरी का सिलसिला कायम फरमाया। फैगम्बरी कोई लाउडस्पीकर का एलान नहीं है। यह एक बेहद सन्न आजमा काम है। इसलिए तमाम फैगम्बरों से निहायत एहतितामा के साथ यह अहद लिया गया कि वे फैगामरसानी के इस नाजुक काम को उसके तमाम आदाब और तकाजों के साथ अंजाम देंगे। और इसमें हरगिज कोई अदना कोताही न करेंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رَحْمَةً وَجُودًا لَّا تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۚ إِذْ جَاءَكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ

بِاللّٰهِ الطُّنُونَا ۖ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلْزِلُوا زُلْزَالًا شَدِيدًا ۝

ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो, जब तुम पर फौजें चढ़ आईं तो हमने उन पर एक आंधी भेजी और ऐसी फौज जो तुम्हें दिखाई न देती थी। और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। जबकि वे तुम पर चढ़ आए, तुम्हारे ऊपर की तरफ से और तुम्हारे नीचे की तरफ से। और जब आंखें खुल गईं और दिल गलों तक पहुंच गए और तुम अल्लाह के साथ तरह-तरह के गुमान करने लगे। उस वक्त ईमान वाले इम्तेहान में डाले गए और बिल्कुल हिला दिए गए। (9-11)

ग़ज़व अहज़ाब (5 हि०) अरब कबाइल और यहूद की तरफ से मदीना पर मुशतरक हमला था। इसमें हमलाआवरों की तादाद तकरीबन 12 हजार थी। मुसलमान इस अजीम फौज से लड़ने की ताकत न रखते थे। मगर अल्लाह तआला ने अपनी खुसूसी तदबीरों के जरिए दुश्मनों को इस कद्र ख़ैफ़ज़ा किया कि तकरीबन एक महीने के मुकाबले (श्राव) के बाद वे खुद मदीना को छोड़कर चले गए।

इस तरह के सख़्त हालात इस्लामी दावत के साथ इसलिए पेश आते हैं कि मुसलमानों के गिरोह से मुख़्लिसीन (निष्ठावानों) और ग़ैर मुख़्लिसीन को अलग कर दें। और दूसरे यह कि दुश्मन ताकतों को दिखा दें कि खुदा अपने दीन का खुद हामी है। वह किसी हाल में उसे मग़लूब (परास्त) होने नहीं देगा।

وَاذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ۝ وَإِذْ قَالَتْ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا ۖ وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ ۖ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۖ إِن يُرِيدُونَ الْإِفْرَارَ ۖ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سَأَلُوا الْفِتْنَةَ لَآتَوْهَا وَمَا تَنْكَبْتُمْ أَبْهَامًا إِلَّا سَيْرًا ۝ وَلَقَدْ كَانُوا عَاهِدُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُؤَلُّونَ الْأَدْبَارَ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا ۖ قُلْ لَّنْ يَنْفَعَكُمْ الْإِفْرَارُ إِن فَرَرْتُمْ مِنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذْ أَتَيْتُمُونا الْإِقْلِيلَ ۖ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُم مِّنَ اللَّهِ ۚ إِنَّ آرَادَكُمْ سُوءٌ أَوْ آرَادَكُمْ رَحْمَةً

وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۝

और जब मुनाफ़िकीन (पाखंडी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है, कहते थे कि अल्लाह और उसके रसूल ने जो वादा हमसे किया था वह सिर्फ फरेब था। और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा कि ऐ यसरिब वालो, तुम्हारे लिए ठहरने का मौका नहीं, तो तुम लौट चलो। और उनमें से एक गिरोह पैग़म्बर से इजाजत मांगता था, वह कहता था कि हमारे घर ग़ैर महफूज़ हैं और वे ग़ैर महफूज़ नहीं। वे सिर्फ भागना चाहते थे। और अगर मदीना के अतराफ से उन पर कोई घुस आता और उन्हें फितने की दावत देता तो वे मान लेते और वे इसमें बहुत कम देर करते। और उन्होंने इससे पहले अल्लाह से अहद किया था कि वे पीठ न फेरेंगे। और अल्लाह से किए हुए अहद (वचन) की पूछ होगी। कहो कि अगर तुम मौत से या कत्ल से भागो तो यह भागना तुम्हारे कुछ काम न आएगा। और इस हालत में तुम्हें सिर्फ थोड़े दिनों फ़ायदा उठने का मौका मिलेगा। कहो, कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचाए अगर वह तुम्हें नुक़सान पहुंचाना चाहे, या वह तुम पर रहमत करना चाहे। और वे अपने लिए अल्लाह के मुकाबले में कोई हिमायती और मददगार न पाएंगे। (12-17)

ग़ज़व अहज़ाब में ख़सरात का तूफ़ान देखकर मुनाफ़िक़ विस्म के लोग क़ब्र उठे और भागने की राहें तलाश करने लगे। मगर जो सच्चे अहले ईमान थे वे अल्लाह के एतमाद पर कायम रहे। वे जानते थे कि आगे भी खुदा है और पीछे भी खुदा है। इस्लाम दुश्मनों के ख़तरे से भागना अपने आपको खुदा के ख़तरे में डालना है जो कि इससे ज्यादा सख़्त है। उन्हें यकीन था कि अगर हम दुश्मनों के मुकाबले में जमे रहे तो अल्लाह की मदद हमें हासिल होगी और अगर हम इस्लाम के महाज को छोड़कर भाग जाएं तो आखिरकार दुनिया में भी अपने आपको हलाकत से बचा नहीं सकते और आखिरत में खुदा की होलनाक पकड़ इसके अलावा है।

قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ أَسْحَبَتْ عَلَيْكُمْ فَاذًا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَقْظِرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُمْ بِالنِّسَةِ ۖ جَدَادِ أَشْحَبَتْ عَلَى الْخَبِيرِ ۖ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَطَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۖ وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۖ يَحْسَبُونَ الْأَكْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۖ وَإِنْ يَأْتِ الْأَكْزَابُ يَوَدُّوهُمُ الْوَائِلِينَ ۖ يَدْعُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَأِكُمْ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قُتِلُوا إِلَّا قَلِيلًا ۖ

अल्लाह तुम में से उन लोगों को जानता है जो तुम में से रोकने वाले हैं और जो अपने भाइयों से कहते हैं कि हमारे पास आ जाओ। और वे लड़ाई में कम ही आते हैं। वे तुमसे बुल्ल (कृपणता) करते हैं। पस जब खौफ पेश आता है तो तुम देखते हो कि वे तुम्हारी तरफ इस तरह देखने लगते हैं कि उनकी आंखें उस शख्स की आंखों की तरह गर्दिश कर रही हैं जिस पर मौत की वेहोशी तारी हो। फिर जब खतरा दूर हो जाता है तो वे माल की हिस् में तुमसे तेज जबानी के साथ मिलते हैं। ये लोग यकीन नहीं लाए तो अल्लाह ने उनके आमाल अकारत कर दिए। और यह अल्लाह के लिए आसान है। वे समझते हैं कि फौजें अभी गई नहीं हैं। और अगर फौजें आ जाएं तो ये लोग यही पसंद करें कि काश हम बद्दुओं के साथ देहात में हों, तुम्हारी खबरें पृछते रहें। और अगर वे तुम्हारे साथ होते तो लड़ाई में कम ही हिस्सा लेते। (18-20)

एक आदमी वह है जो कुर्बानी के वक़्त पीछे रह जाए तो उस पर शर्मिंदगी तारी होती है। उसका बोलना बंद हो जाता है। दूसरा शख्स वह है जो कुर्बानी के वक़्त कुर्बानी नहीं देता। और फिर दूसरों को भी इससे रोकता है। यह कोताही पर ठिठाई का इजाफा है। कोताही कबिले माफी हो सकती है मगर ठिठाई कबिले माफी नहीं।

जिन लोगों के अंदर ठिठाई की नफिसयात हो वे बजाहिर कोई अच्छा अमल करें तब भी वे बेकीमत हैं। क्योंकि अमल की अस्ल रूह इख़लास है और वही उनके अंदर मौजूद नहीं। दीन के लिए कुर्बानी न देना हमेशा दुनिया की मुहब्बत में होता है। आदमी अपनी दुनिया को बचाने के लिए अपने दीन को खो देता है। इसलिए ऐसे लोग जहां देखते हैं कि दीन में दुनिया का फायदा भी जमा हो गया है तो वहां वे ख़ुब अपने बोलने का कमाल दिखाते हैं ताकि दीन के साथ ज़्यादा से ज़्यादा तअल्लुक जहिर कखे ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा हासिल कर सकें। मगर जहां दीन का मतलब कुर्बानी हो वहां दीनदार बनने से उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं होती।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ
الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ۖ وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا هَذَا مَا وَعَدَنَا
اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۖ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۚ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ۚ
مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قُتِيَ
نَجْبَةً وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْتَظَرُ ۚ وَمَا بَدَلُوا بَدِيلًا ۚ يَجْعَلِ اللَّهُ لِلضَّالِّينَ

يَصُدُّقُهُمْ وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ إِن شَاءَ ۚ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ
غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में बेहतरीन नमूना था, उस शख्स के लिए जो अल्लाह का और आखिरत के दिन का उम्मीदवार हो और कसरत से अल्लाह को याद करे। और जब ईमान वालों ने फौजों को देखा, वे बोले यह वही है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा। और इसने उनके ईमान और इताअत में इजाफा कर दिया। ईमान वालों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से किए हुए अहद (वचन) को पूरा कर दिखाया। पस उनमें से कोई अपना जिम्मा पूरा कर चुका और उनमें से कोई मुंजिर है। और उन्होंने जरा भी तब्दीली नहीं की। ताकि अल्लाह सच्चाई को उनकी सच्चाई का बदला दे और मुनाफिकों (पाखंडियों) को अजाब दे अगर चाहे या उनकी तौबा कुकूल करे। बेशक अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। (21-24)

रसूल और असहाबे रसूल (रसूल के साथियों) की ज़िंदगियां क्रियामत तक के अहले ईमान के लिए खुदापरस्ताना ज़िंदगी का नमूना हैं, इस बात का नमूना कि अल्लाह और आखिरत की उम्मीदवारी के मअना क्या हैं। अल्लाह को याद करने का मतलब क्या होता है। मुश्किल हालात में साबितकदमी किसे कहते हैं। खुदा के वादों पर भरोसा किस तरह किया जाता है। इजाफापज़ीर (वृद्धिशील) ईमान क्या है और वह क्योंकर हासिल होता है। खुदा से किए हुए अहद को पूरा करने का तरीका क्या है।

रसूल और असहाबे रसूल ने इन चीजों का आखिरी नमूना कायम कर दिया। शदीदतरीन हालात में भी उन्होंने कोई कमजोरी नहीं दिखाई। उन्होंने हर मामले में इस्लामी फ़िक्र और इस्लामी किरदार का कामिल सुबूत दिया। इस्तेहान का लम्हा आने से पहले भी वे हक पर कायम थे और इस्तेहान का लम्हा आने के बाद भी वे हक पर कायम रहे।

फिर रसूल और असहाबे रसूल की ज़िंदगियां ही इस बात का नमूना भी हैं कि खुदा के यहां किसी का पैसला इस्तेहान के बग़ैर नहीं किया जाता। खुदा का तरीका यह है कि वह शदीद हालात पैदा करता है ताकि सच्चे अहले ईमान और झूठे दावेदार एक दूसरे से अलग हो जाएं। इस खुदाई कानून में न पहले किसी का इस्तसना (अपवाद) था और न आईदा किसी का इस्तसना होगा।

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَيْظِهِمْ لَمَّا بَلَغَ الْوَخِيرُ ۚ وَكَفَى اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ
وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ۚ وَأَنزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُمْ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَن

صِيَاحِيهِمْ وَقَدَّتْ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ۖ
وَأُورِثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَمْ تَطُوهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

और अल्लाह ने मुंकिरों को उनके गुस्से के साथ फेर दिया कि उनकी कुछ भी मुराद पूरी न हुई और मोमिनीन की तरफ से अल्लाह लड़ने के लिए काफी हो गया। अल्लाह कुव्वत (शक्ति) वाला जबरदस्त है। और अल्लाह ने उन अहले किताब को जिन्होंने हमलाआवरों का साथ दिया उनके किलों से उतारा। और उनके दिलों में उसने रौब डाल दिया, तुम उनके एक गिरोह को कत्ल कर रहे हो और एक गिरोह को कैद कर रहे हो। और उसने उनकी जमीन और उनके घरों और उनके मालों का तुम्हें वारिस बना दिया। और ऐसी जमीन का भी जिस पर तुमने कदम नहीं रखा। और अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है। (25-27)

गज़वए ख़ुदक (अहज़ाब) में हालात बेहद सज़्ज थे। मगर उसमें बाक़यदा जंग की नौबत नहीं आई। अल्लाह तआला ने हवा का तूफ़ान और फ़रिशतों का लश्कर भेजकर दुश्मनों को इस तरह सरासीमा (हतोत्साहित) किया कि वे खुद ही मैदान छोड़कर चले गए। मदीना के यहूद (बनू कुरैजा) का मुसलमानों से सुलह और अमन का मुआहिदा था। मगर जंग अहज़ाब के मौके पर उन्होंने गद्दारी की। वे मुआहिदे को तोड़कर मुश्रीकीन के साथी बन गए। जब हमलाआवरों का लश्कर मदीना से वापस चला गया तो अल्लाह के हुक्म से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू कुरैजा की बस्तियों पर चढ़ाई की। इस्लामी फौज ने उनके किलों को घेर लिया। 25 दिन तक मुहासिरा (घेराव) जारी रहा। आखिर में खुद उनकी दरख्वास्त पर साद बिन मुआज हक़म (निर्णायक) मुक़र्र हु। हज़रत साद बिन मुआज ने वही फैसला किया जो खुद उनकी किताब तौरात में ऐसे मुजरिमीन के लिए मुक़र्र है। यानी बनू कुरैजा के सब जवान कत्ल कर दिए जाएं। औरतें और लड़के कैदे मुलामी में ले लिए जाएं। और उनके माल और जायदाद को जब्त कर लिया जाए। (इस्तसना 20 : 10-14)

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ إِن كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا فَتَعَالَيْنَ
أُمَتِّعْكُنَّ وَأُسْرِخْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۖ وَإِن كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالذَّارَ
الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنكُنَّ أَجْرًا عَظِيمًا ۖ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ مَنْ يَأْتِ
مِنكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ يُضَعَّفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۚ وَكَانَ ذَلِكَ
عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

ऐ नबी, अपनी बीवियों से कहो कि अगर तुम दुनिया की ज़िंदगी और उसकी जीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ माल व मताअ देकर खूबी के साथ रुज़स्त कर दूँ। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत के घर को चाहती हो तो अल्लाह ने तुम में से नेक किरदारों के लिए बड़ा अज़्र मुहय्या कर रखा है। ऐ नबी की बीवियों, तुम में से जो कोई खुली बेहयाई करेगी, उसे दोहरा अज़ाब दिया जाएगा। और यह अल्लाह के लिए आसान है। (28-30)

हिजरत ने मुसलमानों की मआशयात को दरहम बरहम कर दिया था। मजीद यह कि हिजरत के बाद इस्लाम दुश्मनों ने मुसलमानों को मुसलसल जंग में उलझा दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि मुसलमानों की मआशी (आर्थिक) हालत बिल्कुल बर्बाद होकर रह गई। इसका सबसे ज्यादा असर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर पड़ा। आपके घर वालों का हाल यह हुआ कि नागुज़ीर (मूलभूत) जरूरत की फ़राहमी भी मुश्किल हो गई। यहां तक कि आपकी अजवाज (बीवियों) ने तंग आकर आप से नफ़क़ा (खर्च) का मुतालबा शुरू कर दिया।

अजवाज की तरफ से सिर्फ ज़रूरी खर्च का मुतालबा किया गया था। उसे अल्लाह ने जीनते दुनिया के मुतालबे से ताबीर फ़रमाया। यह दरअस्त शिद्दते इज़हार है। इसी तरह 'बेहयाई' का लफ़्ज भी यहां शिद्दते इज़हार के लिए आया है। पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तारीख के एक अहमतररीन मिशन की तकमील पर मामूर (नियुक्ति) थे। यानी दौरे शिर्क का ख़ात्मा और दौरे तौहीद का कियाम। ऐसी हालत में किसी भी दूसरी चीज को अहमियत देना आपके लिए मुमकिन न था। इसलिए अजवाजे रसूल से फरमाया गया कि या तो सब्र और कनाअत (संतोष) के साथ रसूल के साथ रहो। और अगर यह मंज़ूर नहीं है तो खुश उस्तुबी के साथ अलग हो जाओ। खानगी निजाअ (विवाद) खड़ी करके पैग़म्बर के ज़ेहन को मुंतशिर करना किसी तरह भी काबिले बर्दाश्त नहीं।

وَمَنْ يَفْعَلْ
فَعَلًا مِّنْ
بِغْيَانٍ
وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِينَ ۝

وَمَنْ يَفْعَلْ مِّنْكُمْ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعْمَلْ صَالِحًا ثَوْرَتَهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۖ
وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ رِزْقًا كَرِيمًا ۖ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لَسْتُ كَأَحَدٍ مِّنَ الرِّسَالِ ۚ إِنِ اتَّقَيْتُنَّ
فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا ۝

और तुम में से जो अल्लाह और उसके रसूल की फरमांवरदारी करेगी और नेक अमल करेगी तो हम उसे उसका दोहरा अज़्र देंगे। और हमने उसके लिए बाइज़न्त रोजी तैयार कर रखी है। ऐ नबी की बीवियों, तुम आम औरतों की तरह नहीं हो। अगर तुम अल्लाह से डरो तो तुम लहजे में नमी न इज़्तियार करो कि जिसके दिल में बीमारी है वह लालच में पड़ जाए और मारुफ (सामान्य नियम) के मुताबिक बात कहो। (31-32)

पैगम्बर की बीवियों को मआशिर में एक तरह का कायदाना (नेतृत्वपरक) मकाम हासिल था। ऐसे लोगों को हक के आगे झुकने के लिए उससे ज्यादा कुर्बानी देनी पड़ती है। जितनी एक आम आदमी को देनी पड़ती है। यही वजह है कि ऐसे लोगों से अल्लाह तआला ने दोहरा इनाम का वादा फरमाया है। वे अमल करने के लिए दूसरों से ज्यादा कुव्वते इरादी इस्तेमाल करते हैं। इसलिए वे अपने अमल की कीमत भी दूसरों से ज्यादा पाते हैं।

पैगम्बर की औरतों की इसी खुसूसियत की वजह से उनका रब्त बार-बार दूसरों से कायम होता था। लोग दीनी उमूर (मामलों) में रहनुमाई के लिए उनके पास आते थे। इसलिए हुक्म दिया गया कि दूसरों से बात करो तो किसी कद्र खुश्क अंदाज में बात करो। इस तरह बेतकलुफ अंदाज में बात न करो जिस तरह एक महरम रिश्तेदार से बात की जाती है।

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ
الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ
عَنكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ۖ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي
بُيُوتِكُنَّ مِنَ الْآيَاتِ وَالْحِكْمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ۝

और तुम अपने घर में करार से रहो और पहले की जाहिलियत की तरह दिखलाती न फिरो। और नमाज कायम करो और जकात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो। अल्लाह तो चाहता है कि तुम अहलेबैत (रसूल के घर वालों) से आलूदगी को दूर करे और तुम्हें पूरी तरह पाक कर दे। और तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतों और हिक्मत (तत्वज्ञान) की जो तालीम होती है उसे याद रखो। बेशक अल्लाह बारीकबी (सूक्ष्मदर्शी) है ख़बर रखने वाला है। (33-34)

यहां अजवाजे रसूल को खिताब करते हुए मुस्लिम ख्वातीन को आम हिदायत दी गई है कि वे अपने घरों में किस तरह रहें। उन्हें उसूलन अपने घर के दायरे में रहना चाहिए। दुनियादार औरतों की तरह जेब व जीनत (बनाव-सिंगार) की नुमाइश उनका मकसूद नहीं होना चाहिए। उनकी तवज्जोह का मर्कज यह होना चाहिए कि वे अल्लाह की इबादतगुजार बन जाएं। वे अपने असासे (पूँजी) को अल्लाह के लिए खर्च करें। जिंदगी के मामलात में अल्लाह और रसूल का जो हुक्म मिले उसे फौरन इस्त्रियार कर लें। वे अल्लाह और रसूल की बातों को सुनने और समझने में अपना वक्त गुजारें।

यह तर्जिहिगी वह है जो आदमी को पाकबाज बनाता है। और पाकबाज आदमी ही अल्लाह तआला को पसंद है।

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَنَاتِ
وَالْقَنَاتِ وَالصَّادِقِينَ وَالصَّادِقَاتِ وَالصَّابِرِينَ وَالصَّابِرَاتِ وَالْخَاشِعِينَ
وَالْخَاشِعَاتِ وَالْمُتَصَدِّقِينَ وَالْمُتَصَدِّقَاتِ وَالصَّالِحِينَ وَالصَّالِحَاتِ وَالْحَافِظِينَ
فُرُوجَهُمْ وَالْحَافِظَاتِ وَالذَّاكِرِينَ اللَّهَ كَثِيرًا وَالذَّاكِرَاتِ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ
مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

बेशक इताअत (आज्ञापालन) करने वाले मर्द और इताअत करने वाली औरतें। और ईमान लाने वाले मर्द और ईमान लाने वाली औरतें। और फरमांबरदारी करने वाले मर्द और फरमांबरदारी करने वाली औरतें। और रास्तबाज (सत्यनिष्ठ) मर्द और रास्तबाज औरतें। और सन्न करने वाले मर्द और सन्न करने वाली औरतें। और खुशूअ (विनय) करने वाले मर्द और खुशूअ करने वाली औरतें। और सदका देने वाले मर्द और सदका देने वाली औरतें। और रोजा रखने वाले मर्द और रोजा रखने वाली औरतें। और अपनी शर्मगर्हों की हिफज्जत करने वाले मर्द और हिफज्जत करने वाली औरतें। और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करने वाले मर्द और याद करने वाली औरतें। इनके लिए अल्लाह ने मग़्फ़िरत और बड़ा अज़्र मुहय्या कर रखा है। (35)

इस आयत में बताया गया है कि अल्लाह तआला एक मर्द या एक औरत को जैसा देखना चाहता है वह क्या है। वे ये सिफ़त हैं इस्लाम, ईमान, फरमांबरदारी, सिद्क (सच्चाई), सन्न, खुशूअ (विनय), सदका, रोजा, इफ़्त (अस्मिता), अल्लाह का ज़िक्र।

इन दस अल्फ़ाज में इस्लामी अक़ीदे और इस्लामी किरदार के तमाम पहलू सिमट आए हैं। इसका खुलासा यह है कि हर वह शख्स जो अल्लाह के यहां मग़्फ़िरत और इनाम का उम्मीदवार हो उसे ऐसा बनना चाहिए कि वह अल्लाह के हुक्म के आगे झुकने वाला हो। वह अल्लाह पर यकीन करने वाला हो। वह अपने पूरे वजूद के साथ अल्लाह के लिए एकसू हो जाए। उसकी जिंदगी कौल और फेअल के तज़ाद (अन्तर्विरोध) से ख़ाली हो। वह हर हाल में जमा रहने वाला हो। अल्लाह की बड़ाई के एहसास ने उसे मुतवाजेअ (विनम्र) बना दिया हो। वह दूसरों की ज़रूरत पूरी करने को भी अपनी जिम्मेदारी शुमार करता हो। वह रोजादार हो जो नपस को कंट्रोल करने की तर्बियत है। वह शहवानी ख़ाहिशात के मुक़बले में अफ़ीफ़ (सुशील) और पाक दामन हो। उसके सुबह व शाम अल्लाह की याद में बसर होने लगें।

ये औसाफ़ जिस तरह मर्दों से मल्लूब हैं उसी तरह वे औरतों से भी मल्लूब हैं। इन औसाफ़ के इज़हार का दायरा कुछ एतबार से दोनों के दर्मियान मुज़लफ़ है। मगर जहां तक खुद औसाफ़ का तअल्लुक है वह दोनों के लिए एकसां (समान) हैं। कोई औरत हो या कोई

मर्द वह उसी वक्त खुदा के यहां काबिले कुतूल ठहरेगा जबकि वह इन दस सिफ्तों को अपना कर खुदा के यहां पहुंचे।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا لِمُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُبِينًا

किसी मोमिन मर्द या किसी मोमिन औरत के लिए गुंजाइश नहीं है कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मामले का फैसला कर दें तो फिर उनके लिए उसमें इस्तिंयार बाक़ी रहे। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा तो वह सरीह गुमराही में पड़ गया। (36)

इंसान को खुदमुख्तार (इच्छानुसार काम करने वाला) पैदा किया गया है। इस खुदमुख्तारी को उसे खुदा के हवाले करना है। यही मौजूदा दुनिया में इंसान का अस्त इस्तेहान है। वही शख्स हिदायत पर है जो इस नाजुक इस्तेहान में पूरा उतरे।

इसकी एक मिसाल और अवल में जैद और जैब के निकाह का वाक्या है। जैद एक आजदकरदा गुलाम थे। इसके बरअक्स जैब क़ैश के आला खानदान से तअल्लुक रखती थीं। क्योंकि वह उमैमा बिनत अब्दुल मुत्तलिब की साहबजादी थीं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जैद का निकाह जैब से करना चाहा तो जैब के घर वाले इसके लिए तैयार नहीं हुए। खुद जैब ने कहा कि : 'मैं नसब (वंश) में जैद से बेहतर हूँ।' मगर जब उन लोगों को कुरआन की मन्बूआ आयत सुनाई गई तो वे लोग फौरन राजी हो गए। सन् 4 हि० में उनका निकाह कर दिया गया।

यही इस्लाम का मिजाज है और यही मिजाज हर मुसलमान मर्द और औरत में होना चाहिए।

وَإِذْ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ فَلَمَّا قَضَىٰ زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَاكَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا

और जब तुम उस शख्स से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने इनाम किया और तुमने इनाम

किया कि अपनी बीवी को रोके रखो और अल्लाह से डरो। और तुम अपने दिल में वह बात छुपाए हुए थे जिसे अल्लाह जाहिर करने वाला था। और तुम लोगों से डर रहे थे, और अल्लाह ज्यादा हक्द्वार है कि तुम उससे डरो। फिर जब जैद उससे अपनी ग़ज़ तमाम कर चुका, हमने तुमसे उसका निकाह कर दिया ताकि मुसलमानों पर अपने मुंह बोले बेटों की बीवियों के बारे में कुछ तंगी न रहे। जबकि वे उनसे अपनी ग़ज़ पूरी कर लें। और अल्लाह का हुक्म होने वाला ही था। (37)

हजरत जैद के साथ हजरत जैब का निकाह सन् 4 हि० में हुआ। मगर निवाह न हो सका, अगले साल दोनों में अलेहिदगी हो गई। हजरत जैद ने जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तलाक का इरादा जाहिर किया तो आपने सबब पूछा। उन्होंने कहा कि वह अपने खानदानी शरफ (यश) की वजह से मेरे मुकाबले में बड़ाई का एहसास रखती हैं। ताहम आपने उन्हें रोका। बार-बार की दरख्वास्त पर आखिरकार आपने उन्हें अलेहिदगी की इजाजत दे दी।

जैद और जैब के निकाह से अवलन यह रस्म तोड़ी गई थी कि मआशिरती फर्क को निकाह में हायल नहीं होना चाहिए। मगर जब उनके दर्मियान अलाहिदगी हो गई तो अब अल्लाह तआला की मर्जी यह हुई कि जैब को एक और ग़लत रस्म के तोड़ने का जरिया बनाया जाए।

कदीम जाहिलियत में यह रवाज था कि मुतबन्ना (मुंह बोले बेटे) को बिल्कुल हकीकी बेटे की तरह समझते थे। हर एतबार से उसके वही हुक्क थे जो हकीकी बेटे के होते हैं। इस रस्म को तोड़ने की बेहतरीन सूत यह थी कि तलाक के बाद हजरत जैब का निकाह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ कर दिया जाए। जैद अल्लाह के रसूल के मुतबन्ना थे। यहां तक कि उन्हें जैद बिन मुहम्मद कहा जाने लगा था। ऐसी हालत में मुंह बोले बेटे की तलाकशुदा औरत से आपका निकाह करना उस रस्म के खिलाफ एक धमाके की हैसियत रखता था। क्योंकि उनका ख़याल था कि मुतबन्ना की मंकूहा (निकाह में आई औरत) बाप पर हराम है जिस तरह हकीकी बेटे की मंकूहा बाप पर हराम होती है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पेशगी तौर पर बताया जा चुका था कि अगर दोनों में अलाहिदगी हुई तो इस जाहिली रस्म को तोड़ने की तदबीर के तौर पर जैब को आपके निकाह में दे दिया जाएगा। चूँकि इस किस्म का निकाह कदीम माहौल में जबरदस्त बदनामी का जरिया होता। इसलिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हजरत जैद को रोकते रहे कि अगर वह तलाक न दें तो मैं इस शदीद आजमाइश से बच जाऊंगा। मगर जो चीज इस्मे इलाही में मुक्ददर थी वह हेकर रही। जैद ने जैब को तलाक दे दी और उस रस्म को तोड़ने की अमली तदबीर के तौर पर सन् 5 हि० में जैब का निकाह आप से कर दिया गया।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَقْدُورًا ۖ الَّذِينَ يُبَايِعُونَ رَسُولَ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۖ وَكَفَى بِاللَّهِ حَسِيبًا ۖ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

५८

पैगम्बर के लिए इसमें कोई हरज नहीं जो अल्लाह ने उसके लिए मुकर्रर कर दिया हो। यही अल्लाह की सुन्नत (तरीका) उन पैगम्बरों के साथ रही है जो पहले गुजर चुके हैं। और अल्लाह का हुक्म एक कतई फैसला होता है। वे अल्लाह के पैगामों को पहुंचाते थे और उसी से डरते थे और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते थे। और अल्लाह हिसाब लेने के लिए काफी है। मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल और नबियों के ख़ातम (समापक) हैं। और अल्लाह हर चीज का इल्म रखने वाला है। (38-40)

इस वाक्य के बाद हब्स तक्फ़ेअ आपके ख़िलाफ़ ज़बरदस्त प्रेम्पेंडा शुरू हो गया।

कहा जाने लगा कि पैगम्बर ने अपनी बहू से निकाह कर लिया, हालांकि बेटे की मंकूहा बाप पर हराम होती है। फरमाया कि मुहम्मद का मामला तो यह है कि उनकी सिर्फ लड़कियां हैं। वह मर्दों में से किसी के बाप ही नहीं। जैद बिन हारिसा उनके सिर्फ मुंह बोले बेटे थे और मुंह बोला बेटा वाकई बेटा कैसे हो सकता है कि उसकी तलाक़शुदा बीवी से निकाह आपके लिए जाइज न हो।

आप खुदा के पैगम्बर थे, फिर भी आपके साथ इतने उतार चढ़ाव के वाक़ेयात क्यों पेश आए। इसका जवाब यह है कि पैगम्बर पर अगरचे खुदा की 'वही' आती है। मगर उसे आम इंसानों की तरह रहना होता है। मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में उसे भी वैसे ही हालात पेश आते हैं जैसे हालात दूसरों को पेश आते हैं। अगर ऐसा न हो तो पैगम्बर की जिंदगी आम इंसानों पर हुज्जत (तर्कवित्त) न बन सके। यही वजह है कि पैगम्बराना रहनुमाई हकीकी हालात के ढांचे में दी जाती है न कि मसनूई हालात के ढांचे में।

ख़ातमुन्बिथ्यीन का लफ्ज़ी तर्जुमा यह है कि आप नबियों की मुहर हैं। ख़ातम का लफ्ज़ स्टेम्प (Stamp) के लिए नहीं आता है बल्कि सील (Seal) के लिए आता है। यानी आखिरी अमल। लिफाफे को सील करने का मतलब उसे आखिरी तौर पर बंद करना है कि इसके बाद न कोई चीज उसके अंदर से बाहर निकले और न बाहर से अंदर जाए। चुनावे अरबी में कौम का ख़ातम कौम के आखिरी शख्स को कहा जाता है।

इस वाक्य के जेल में आपके ख़ातमुन्बिथ्यीन (अंतिम नबी) होने के एलान का मतलब यह है कि आपके बाद चूँकि कोई और नबी आने वाला नहीं, इसलिए जरूरी है कि तमाम खुदाई बातों का इन्ज़ार आपके जरिए से कर दिया जाए।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ۖ وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۚ هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَى كُمْ وَبَلَغَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝ تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۚ وَأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ۝

ऐ ईमान वालो, अल्लाह को बहुत ज्यादा याद करो। और उसकी तस्बीह करो सुबह और शाम। वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उसके फरिश्ते भी ताकि तुम्हें तारीकियों से निकाल कर रोशनी में लाए। और वह मोमिनों पर बहुत महरबान है। जिस रोज वे उससे मिलेंगे, उनका इस्तक़बाल सलाम से होगा। और उसने उनके लिए वाइज्जत सिला (प्रतिफल) तैयार कर रखा है। (41-44)

जब मिलावटी दीन का ग़लबा हो, उस वक़्त सच्चे दीन को इख़्तियार करना हमेशा मुश्किलतरीन काम होता है। ऐसी हालत में अहले ईमान के दिल में बअज औकात दिल शिकस्तगी और मायूसी के ज़बात तारी होने लगते हैं। उससे बचने की सिर्फ एक ही यकीनी सूत है जाहिरी नाखुशगवारियों के पीछे जो खुशगवार पहलू छुपा हुआ है, उस पर नजर को जमाए रखना।

लोग मादिदयात (भौतिक वस्तुओं) के बल पर जीते हैं। मोमिन को अपकार (Ideas) के बल पर जीना पड़ता है। अपकार की सतह पर जीना यह है कि आदमी अल्लाह की यादों में जीने लगे। फरिश्तों का न सुनाई देने वाला कलाम उसे सुनाई देने लगे। उसे सही मक़सद की शक़ल में जो फिक्की (वैचारिक) दरयाफ़्त हुई है उसे वह सबसे बड़ी चीज समझे। दुनिया को देकर आखिरत में जो कुछ मिलने वाला है उस पर वह पूरी तरह राजी और मुतमइन हो जाए।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۖ وَذَاعِبًا إِلَى اللَّهِ بِأَذْنِهِ وَبِرَاجَائِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ إِنَّ لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ وَضَلًا كَثِيرًا ۝ وَلَا تَطِعِ الْكَافِرِينَ وَالْمُنْفِقِينَ ۚ وَدَعِ أَذْهُمُ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا ۝

ऐ नबी, हमने तुम्हें गवाही देने वाला और खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। और अल्लाह की तरफ, उसके इज्ज (आज्ञा) से, दावत देने वाला (आह्वानकर्ता)

और एक रोशन चराग़। और मोमिनों को विशारत दे दो कि उनके लिए अल्लाह की तरफ से बहुत बड़ा फल (अनुग्रह) है। और तुम मुक़िरो और मुनाफ़िक्को (पाखंडियों) की बात न मानो और उनके सताने को नजरअंदाज करो और अल्लाह पर भरोसा रखो। और अल्लाह भरोसे के लिए काफी है। (45-48)

शाहिद (गवाह), मुबशिशर (खुशख़बरी देने वाला), नजीर (डराने वाला), दाजी (आह्वानकर्ता)

ये सब एक ही हकीकत के मुखलिफ पहलू हैं। पैग़म्बर का मिशन यह होता है के वह लोगों को ज़िंदगी की हकीकत से आगाह करे। वह लोगों को जन्नत और जहन्नम की ख़बर दे। यह एक दावती अमल है और इसी दावती अमल की बुनियाद पर पैग़म्बर आख़िरत की अदालत में उन लोगों की बारे में गवाही देगा जिन पर उसने अन्न हक पंहुचाया और फिर किसी ने माना और किसी ने न माना।

पैग़म्बर का जो मिशन है वह उम्मत मुस्लिमा का मिशन भी है। इस राह में लोगों की तरफ से अजिब्यते (यातनाएँ) पेश आती हैं। कोई साथ नहीं देता और कोई वकती तौर पर साथ देता है और फिर झूठे अल्फ़ाज़ बोलकर अलग हो जाता है। ऐसे हालात में सिर्फ़ खुदा पर भरोसा ही वह चीज़ है जो पैग़म्बर (या उसकी पैरवी करने वाले दाजी) को दावती अमल पर साबित कदम रख सकता है। लोगों की तरफ से जो कुछ पेश आए उस पर सब्र करना और उसे नजरअंदाज करना और हर हाल में खुदा पर अपनी नजर जमाए रखना, यही इस्लामी दावत का काम करने वाले का अस्ल सरमाया है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَبْسُوهُنَّ فَبِالْكَفْرِ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا فَيَتَعَوَّهِنَّ وَسَرَّحُوهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا

ऐ ईमान वाले, जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो, फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले उसे तलाक़ दे दो तो उनके बारे में तुम पर कोई इद्दत लाज़िम नहीं है जिसका तुम शुमार करो। पस उन्हें कुछ मताअ (सामग्री) दे दो और खूबी के साथ उन्हें रुख़सत कर दो। (49)

एक शर्ख़ किसी औरत से निकाह करे लेकिन मुलाकात की नौबत आने से पहले उसे तलाक़ दे दे तो ऐसी हालत में इद्दत की वह पाबंदी नहीं है जो आम निकाह में होती है। अलबत्ता इस्लामी अर्ज़ाक का तक्ज़ी है कि जिस तरह बाइज्जत अंज़ाम में दोनों के दर्मियान तअल्लुक का मामला हुआ था उसी तरह बाइज्जत तौर पर दोनों के दर्मियान जुदाई का मामला भी किया जाए। उस ख़ातून का अगर महर बांधा गया था तो मर्द को मुकर्ररह महर का निस्फ़ (आधा) देना होगा वर्ना उर्फ़ (आम रवाज) और हैसियत के मुताबिक कुछ देकर खूबसूरती से रुख़सत कर दिया जाए। औरत अगर चाहे तो फौरन ही दूसरा निकाह कर सकती है। इस सूरत में उसके लिए इद्दत गुज़ारने की शर्त नहीं।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَخْلَصْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي آتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَمِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَدَنَتِ عِمَّاكَ وَبَدَنَتِ عَمَّتِكَ وَبَدَنَتِ خَالَكَ وَبَدَنَتِ خَلَّتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَأَمْرًا مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبْتَ نَفْسًا لِلَّهِ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا

ऐ नबी हमने तुम्हारे लिए हलाल कर दीं तुम्हारी वे बीवियां जिनकी महर तुम दे चुके हो और वे औरतें भी जो तुम्हारी ममलूका (मिल्कियत में) हैं जो अल्लाह ने ग़नीमत में तुम्हें दी हैं और तुम्हारे चचा की बेटियां और तुम्हारी फूफ़ियों की बेटियां और तुम्हारे मामुओं की बेटियां और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की हो। और उस मुसलमान औरत को भी जो अपने आपको पैग़म्बर को दे दे, बशर्त कि पैग़म्बर उसे निकाह में लाना चाहे, यह ख़ास तुम्हारे लिए है, मुसलमानों से अलग। हमें मालूम है जो हमने उन पर उनकी बीवियों और उनकी दासियों के बारे में फर्ज़ किया है, ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (50)

आम मुसलमानों के लिए बीवियों की आख़िरी तादाद को चार तक महदूद रखा गया है। मगर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए यह पाबंदी नहीं थी। आपने अल्लाह तआला की खुसूसी इजाज़त के तहत चार से ज्यादा निकाह किया। इसकी मस्लेहत यह थी कि रसूल के ऊपर कोई तंगी न रहे।

तंगी के मुराद पैग़म्बराना मिशन की अदायगी में तंगी है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुखलिफ दावती (आह्वानपरक) और इस्लाही (सुधारवादी) तक्ज़ी तहत जरूरत महसूस होती थी कि आप ज्यादा औरतों को अपने निकाह में ला सकें। इसी दीनी मस्लेहत की बिना पर अल्लाह तआला ने आपके लिए चार की कैद नहीं रखी। मिसाल के तौर पर हजरत आइशा से निकाह में यह मस्लेहत थी कि एक कम उम्र और जहीन ख़ातून आपकी मुस्तक़िल सोहबत (समीपता) में रहें ताकि आपके बाद लम्बी मुद्दत तक लोगों को दीन सिखाती रहें। चुनांचे हजरत आइशा आपकी वफ़ात के बाद निस्फ़ (आधी) सदी तक उम्मत के लिए एक ज़िदा कैसेट रिकॉर्डर बनी रहीं। इसी तरह हजरत उम्मे सलमा और हजरत उम्मे हबीबा से निकाह का यह फ़ायदा हुआ कि ख़ालिद बिन वलीद और अबू सुफ़ियान बिन हरब की मुखलिफत हमेशा के लिए ख़त्म हो गई। वग़ैरह

شُرِّجِي مَنْ تَشَاءُ مِنْهُمْ وَتُؤَيِّ إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ وَمَنْ ابْتَغَيْتَ وَمَنْ
عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذَلِكَ أَدْنَى أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَ وَيَرْضَيْنَ
بِمَا آتَيْنَهُنَّ كُلُّهُنَّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا
حَلِيمًا ۝ لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ
أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ رَقِيبًا ۝

तुम उनमें से जिस-जिसको चाहो दूर रखो और जिसे चाहो अपने पास रखो। और जिन्हें दूर किया था उनमें से फिर किसी को तलब करो तब भी तुम पर कोई गुनाह नहीं। इसमें ज्यादा तक्क़ोअ (संभावना) है कि उनकी आंखें ठंडी रहेंगी, और वे संजीदा न होंगी। और वे इस पर राजी रहें जो तुम उन सबको दो। और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह जानने वाला है, बुरदवार (उदार) है। इनके अलावा और औरतें तुम्हारे लिए हलाल नहीं हैं। और न यह दुरुस्त है कि तुम उनकी जगह दूसरी बीवियां कर लो, अगरचे उनकी सूरत तुम्हें अच्छी लगे। मगर जो तुम्हारी ममलूका (मिल्लियत) हो। और अल्लाह हर चीज पर निगरां है। (51-52)

जहां कई ख़ातीन का मसला हो वहां शिकायत का इम्कान बढ़ जाता है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ कई बीवियां थीं। इस बिना पर अंदेशा था कि हुक्म जैजियत (दाम्पत्य अधिकारों) के बारे में ख़ातीन को अदम मुसावात (असमानता) की शिकायत हो और इसका नतीजा यह निकले कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यकसूर के साथ दीनी मुहिम की अदायगी न फरमा सकें। इसलिए एलान फरमाया कि पैगम्बर का मामला खुसूसी मामला है। वह आम मुसलमानों की तरह हुक्म जैजियत में मुसावात (समानता) के पाबंद नहीं हैं। हुक्म जैजियत की रियायत और हुक्म इस्लाम की रियायत में टकराव हो तो पैगम्बर के लिए जाइज होगा कि वह हुक्म इस्लाम की रियायत को तरजीह दें। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आम जाव्ते से मुस्तसना (अपवाद) करने का मक्सद यह था कि ख़ातीन के अंदर शिकायती जेहन की पैदाइश को रोका जा सके। लेकिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस इख़्तियार को अमलन बहुत ही कम इस्तेमाल फरमाया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ

طَعَامٍ غَيْرَ نَبِزِينَ إِنَّهُ وَلَٰكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا إِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا
لَا مُسْتَأْنِسِينَ حَدِيثٌ إِنْ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَعِ مِنْكُمْ وَاللَّهُ
لَا يَسْتَعِ مِنَ الْحَقِّ ۖ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ
ذَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ ۚ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ
تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِ ابْدَاءِ ۚ إِنْ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۝ إِنْ تَبَدُّوا
شَيْئًا أَوْ تَخَفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

ऐ ईमान वालो, नबी के घरों में मत जाया करो मगर जिस वक्त तुम्हें खाने के लिए इजाजत दी जाए, ऐसे तौर पर कि उसकी तैयारी के मुतजिर न रहो। लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो दाखिल हो। फिर जब तुम खा चुको तो उठकर चले जाओ और बातों में लगे हुए बैठे न रहो। इस बात से नबी को नागवारी होती है। मगर वह तुम्हारा लिहाज करते हैं। और अल्लाह हक बात कहने में किसी का लिहाज नहीं करता। और जब तुम रसूल की बीवियों से कोई चीज मांगो तो पर्दे की ओट से मांगो। यह तरीका तुम्हारे दिलों के लिए ज्यादा पाकीजा है और उनके दिलों के लिए भी। और तुम्हारे लिए जाइज नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को तकलीफ दो और न यह जाइज है कि तुम उनके बाद उनकी बीवियों से कभी निकाह करो। यह अल्लाह के नजदीक बड़ी संगीन बात है। तुम किसी चीज को जाहिर करो या उसे छुपाओ तो अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। (53-54)

यहां अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिलसिले में हुक्म देते हुए मुसलमानों को बताया गया है कि उनकी घरेलू मआशिरत के आदाब किस किस के होने चाहिए। वे दूसरों के घरों में दाखिल हों तो इजाजत लेकर दाखिल हों। खाने या किसी और जरूरत के लिए किसी के यहां बुलाया जाए तो सिर्फ बक्दर जरूरत वहां बैठें और फरागत के बाद फौरन वापस हो जाएं। दूसरों से मिलने जाएं तो रैर जरूरी बातों से शदीद परहेज करें। औरतों से मुतअल्लिक कोई काम हो तो पर्दे की आड़ से उसे अंजाम दें, वगैरह।

मआशिरती (सामाजिक) जिंदगी में आदमी को सिर्फ अपनी ख़ाहिश या जरूरत नहीं देखना चाहिए बल्कि उसे निहायत शिद्दत से यह बात मल्हूज रखना चाहिए कि उसके रैये से दूसरे शख्स को तकलीफ न पहुँचे। उसकी रैर जरूरी बातें दूसरे का वक्त जाया करने वाली न हों।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي آبَائِهِمْ وَلَا أَبْنَائِهِمْ وَلَا إِخْوَانِهِمْ وَلَا أَسْرَائِلِهِمْ وَلَا أَسْرَائِلِهِمْ وَلَا مَمْلُوكَاتٍ إِمَائِهِمْ وَاتَّقِينَ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

पैगम्बर की वीवियों पर अपने बापों के बारे में कोई गुनाह नहीं है। और न अपने बेटों के बारे में और न अपने भाइयों के बारे में और न अपने भतीजों के बारे में और न अपने भांजों के बारे में और न अपनी औरतों के बारे में और न अपनी दासियों के बारे में। और तुम अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह हर चीज पर निगाह रखता है। (55)

ऊपर की आयत में मर्दों के लिए यह मुमानिअत (मनाही) थी कि वे रसूल की वीवियों के सामने न आएँ। इस आयत में बताया गया है कि महरम रिश्तेदार और मेलजोल की औरतें इन पाबंदियों से मुस्तसना (अपवाद) हैं। यहां जिन रिश्तों का जिक्र है उसमें वे रिश्ते भी आ जाएंगे जो उनके हुक्म में दाखिल हों। इस कुरआनी हिदायत की मजिद तफसील सूरह नूर (आयत 31) में मौजूद है।

तमाम अहकाम का खुलासा यह है कि औरत हो या मर्द उसके दिल में अल्लाह का डर हो। वह यह समझ कर जिंदगी गुजारे कि अल्लाह हर हाल में उसकी निगरानी कर रहा है।

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُهِينًا ۝ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغْيًا وَكُتُوبًا فَقَدْ حَتَمُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُبِينًا ۝

अल्लाह और उसके फरिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं। ऐ ईमान वालो, तुम भी उस पर दुरुद व सलाम भेजो। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को अजिय्यत (यातना) देते हैं, अल्लाह ने उन पर दुनिया और आखिरत में लानत की और उनके लिए जलील करने वाला अजाब तैयार कर रखा है। और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को अजिय्यत देते हैं बगैर इसके कि उन्होंने कुछ किया हो तो उन्होंने बोहतान का और सरीह गुनाह का बोझ उठाया। (56-58)

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया में खुदा के दीन का

इज़हार करने के लिए भेजे गए। अल्लाह का जो बंदा इस तरह के मुकद्दस (पावन) काम के लिए उठे उसे खुदा और उसके फरिश्तों की कामिल ताईद हासिल होती है। उसकी हमनवाई करना खुदा और उसके फरिश्तों की हमनवाई करना होता है। और उससे एराज (उपेक्षा) करना खुदा और उसके फरिश्तों से एराज करना होता है।

जिन लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सताया वे अपने ख्याल के मुताबिक सिर्फ एक इंसान को सता रहे थे। मगर वे भूल गए कि वे खुदा के नुमाइद को सता रहे हैं। और जो लोग खुदा के नुमाइद को सताएं, उन्होंने मालिके कायनात की नजर में हमेशा के लिए अपने आपको मलऊन (पतित) बना लिया।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِئِهِنَّ ذَلِكُ أَذَىٰ أَنْ يُعْرِفْنَ فَلَا يُؤْذِينَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝ لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْمُرْجُونَ فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ۖ مَلْعُونِينَ أَيْنَمَا تَقِفُوا أُخِذُوا وَقِيلَ لَهُمْ تَقْبَلُونَ ۖ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝

ऐ नबी, अपनी वीवियों से कहो और अपनी बेटियों से और मुसलमानों की औरतों से कि नीचे कर लिया करें अपने ऊपर थोड़ी सी अपनी चादरें इससे जल्दी पहचान हो जाएगी तो वे सताई न जाएंगी। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। मुनाफिकीन (पाखंडी) और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और जो मदीना में झूठी ख़बरें फैलाने वाले हैं, अगर वे बाज न आए तो हम तुम्हें उनके पीछे लगा देंगे। फिर वे तुम्हारे साथ मदीना में बहुत कम रहने पाएंगे। फिटकारे हुए, जहां पाए जाएंगे पकड़े जाएंगे और बुरी तरह मारे जाएंगे। यह अल्लाह का दस्तूर है उन लोगों के बारे में जो पहले गुजर चुके हैं। और तुम अल्लाह के दस्तूर में कोई तब्दीली न पाओगे। (59-62)

मुसलमान औरत जब किसी जरूरत से अपने घर से बाहर निकले तो वह किस तरह निकले। उसे ऐसे लिबास में निकलना चाहिए जो इस बात का एक खामोश एलान हो कि वह एक शरीफ और हयादार औरत है। वह संजीदा जरूरत के तहत बाहर निकली है न कि तफरीह और दिल्लीगी के लिए। सादा कपड़े, हयादार चाल, चादर या बुर्के से जिस्म ढका हुआ होना इसी की एक अलामत है। हकीकत यह है कि जिस्मानी नुमाइश के साथ बाहर निकलना दूसरों को दावते इत्तफात देना (आकर्षित करना) है। और जिस्मानी नुमाइश के बगैर

निकलना गोया अमल की ज़बान में दूसरों से यह कहना है कि मैं सिर्फ अपने काम से बाहर निकली हूँ, मुझे तुमसे कोई मतलब नहीं।

‘दिल के मरीजों’ से यहां मुराद ग़ालिबन यहूद हैं। क्योंकि वही लोग मुसलमानों को और मुस्लिम ख़्वातीन को ज्यादा परेशान कर रहे थे और यही लोग थे जो मञ्चूरा तंबीह के मुताबिक कत्ल किए गए या शहर से निकाल दिए गए थे।

يَسْئَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ قُلِ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ
السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ۖ إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ۖ
خُلِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ۖ يَوْمَ تَقْلُبُ وُجُوهُهُمْ
فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَلَيْتَنَّا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ۖ وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا
أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا فَأَضَلُّونَا السَّبِيلًا ۖ رَبَّنَا إِنهُمْ ضَعُفٌ مِّنَ
الْعَذَابِ وَالْعَنُومُ لَعَنَّا كَذِبًا ۖ

लोग तुमसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं। कहो कि उसका इल्म तो सिर्फ़ अल्लाह के पास है। और तुम्हें क्या ख़बर, शायद क़ियामत करीब आ लगी हो। वेशक अल्लाह ने मुँक़ि़रों को रहमत से दूर कर दिया है। और उनके लिए भड़कती हुई आग तैयार है, उसमें वे हमेशा रहेंगे। वे न कोई हामी पाएंगे और न कोई मददगार। जिस दिन उनके चेहरे आग में उलट-पलट किए जाएंगे, वे कहेंगे, ऐ काश हमने अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) की होती और हमने रसूल की इताअत की होती। और वे कहेंगे कि ऐ हमारे ख़, हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना तो उन्होंने हमें रास्ते से भटका दिया। ऐ हमारे ख़, उन्हें दोहरा अज़ाब दे और उन पर भारी लानत कर। (63-68)

क़ियामत की तारीख़ पूछने का मतलब यह नहीं है कि वे लोग क़ियामत के आने को सिरे से मानते ही न थे। यह दरअसल क़ियामत का इस्तहज़ा (मज़ाक उड़ाना) न था बल्कि क़ियामत की ख़बर देने वाले का इस्तहज़ा था। वे नफ़से क़ियामत के मुँक़ि़र न थे बल्कि क़ियामत की उस नौइयत के मुँक़ि़र थे जिसकी रसूल और असहाबे रसूल उन्हें ख़बर दे रहे थे। उनकी अस्ल ग़लती यह थी कि उन्होंने अपने कौमी अकाबिर (नायकों) को बड़ा समझा और पैग़म्बर को बड़ा न समझा। इसलिए उन्हें अपने कौमी अकाबिर की बात कबिले लिहाज़ नज़र आई और पैग़म्बर की बात कबिले लिहाज़ नज़र न आई। चुनावे क़ियामत में जब अस्ल हकीक़त खुलेगी तो वे अफ़सोस करेंगे कि काश हम झूठी बड़ई और सच्ची बड़ई के फ़र्क़ को समझते और झूठी बड़ई के फ़रेब में मुब्तिला होकर गुमराह न होते।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا مُوسَىٰ فَبَرَّاهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا وَ
كَانَ عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ۖ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَقُولُوا قَوْلًا
سَدِيدًا ۖ يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۖ وَمَن يُطِيعِ اللَّهَ وَ
رَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۖ

ऐ ईमान वाले, तुम उन लोगों की तरह न बनो जिन्होंने मूसा को अज़ियत (यातना) पहुँचाई तो अल्लाह ने उसे उन लोगों की बातों से बरी साबित किया। और वह अल्लाह के नज़दीक वाइज्जत था। ऐ ईमान वाले, अल्लाह से डरो और दुरुस्त बात कहो। वह तुम्हारे आमाल सुधारेगा और तुम्हारे गुनाहों को बर्ज़ा देगा। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करे उसने बड़ी कामयाबी हासिल की। (69-71)

‘यहूदियों की तरह पैग़म्बर को न सताओ’ से क्या मुराद है, इसकी वज़ाहत एक वाक्ये से होती है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना में थे कि एक बार आपके पास कुछ माल आया। आपने उसे लोगों के दर्मियान तकसीम किया। इसके बाद अंसार में से एक शख्स ने दूसरे शख्स से कहा : खुदा की कसम मुहम्मद ने इस तकसीम से अल्लाह की रिज़ा और आखिरत का घर नहीं चाहा है। इस वाक्ये की ख़बर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दी गई तो आप ने फरमाया कि अल्लाह की रहमत मूसा पर हो। उन्हें इससे ज्यादा अज़ियत दी गई मगर उन्हें सन्न किया। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

क़लाम की दो क़िस्में हैं। एक है सदीद क़लाम। दूसरा है ग़ैर सदीद क़लाम। सदीद क़लाम वह है जो ऐन मुताबिके हकीक़त हो। जो वाक़्याती तज्जिया (विश्लेषण) पर मबनी हो। जो ठोस दलाइल के साथ पेश किया जाए। इसके बरअक्स ग़ैर सदीद क़लाम वह है जिसमें हकीक़त की रियायत शामिल न हो। जिसकी बुनियाद जन व गुमान (पूर्वाग्रह) पर क़ायम हो। जिसकी तैयारी महज़ रायज़ी की हो न कि हकीक़ते वाक़्या के इस्तर की। पहला क़लाम मोमिनाना क़लाम है और दूसरा क़लाम मुनाफ़िक़ाना क़लाम।

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ۖ لِّيُعَذِّبَ اللَّهُ
الْمُفْسِقِينَ وَالْمُفْسِقَتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۖ

हमने अमानत को आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश किया तो उन्होंने

उसे उठाने से इंकार किया और वे उससे डर गए, और इंसान ने उसे उठा लिया। बेशक वह जल्लिम और जहिल था। ताकि अल्लाह मुनाफिक (पाखंडी) मर्दों और मुनाफिक औरतों को और मुशिक मर्दों और मुशिक औरतों को सजा दे। और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों पर तवज्जोह फरमाए। और अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। (72-73)

अमानत से मुराद इख्तियार है। इख्तियार को अमानत इसलिए फरमाया कि वह अल्लाह की एक चीज है जिसे उसने आरजी मुद्दत के लिए इंसान को बतौर आजमाइश दिया है ताकि इंसान खुद अपने इगदे से खुदा का ताबेदार बने। अमानत, दूसरे लफ्जों में, अपने ऊपर खुदा का कायम मकाम बनना है। अपने आप पर वह करना है जो खुदा सितारों और सव्यारों पर कर रहा है। यानी अपने इख्तियार से अपने आपको खुदा के कंट्रोल में दे देना।

इस कायनात में सिर्फ अल्लाह हाकिम है और तमाम चीजें उसी की महकूम हैं। मगर अल्लाह तआला की मर्जी हुई कि वह एक ऐसी आजाद मख्बूक पैदा करे जो किसी जब्र (दबाव) के बगैर खुद अपने इख्तियार से वही करे जो खुदा उससे करवाना चाहता है। यह इख्तियारी इताअत बड़ी नाजुक आजमाइश थी। आसमान और जमीन और पहाड़ भी उसका तहम्मूल नहीं कर सकते। ताहम इंसान ने शदीद अंदेशे के बावजूद इसे कुबूल कर लिया। अब इंसान मौजूदा दुनिया में खुदा की एक अमानत का अमीन (धारक) है। उसे अपने ऊपर वही करना है जो खुदा दूसरी चीजों पर कर रहा है। इंसान को अपने आप पर खुदा का हुक्म चलाना है। इंसान हालते इम्तेहान में है और मौजूदा दुनिया उसके लिए वसीअ इम्तेहानगाह।

यह अमानत एक बेहद नाजुक जिम्मेदारी है। क्योंकि इसी की वजह से जजा व सजा का मसला पैदा होता है। दूसरी मख्बूकत मजबूर व मक्हूर (बाध्य) हैं। इसलिए उनके वास्ते जजा व सजा का मसला नहीं। इंसान आजद है। इसलिए वह जजा व सजा का मुस्तहिक बनता है। हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत है कि अल्लाह तआला ने अमानत को आदम के सामने पेश किया, तो आदम ने पूछा कि अमानत क्या है। अल्लाह तआला ने फरमाया, अगर तुम अच्छा करोगे तो तुम्हें उसका बदला मिलेगा और अगर तुम बुरा करोगे तो तुम्हें सजा दी जाएगी। (तप्सीर इब्नेसरी)

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّيَ الْأَعْلَى ۚ وَبِحَمْدِكَ أَصْبَحْتُ ۖ أُوْثِقُ بِكَ نَفْسِي ۖ وَبِعِزَّتِكَ أَسْتَعِذُّ ۖ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَكَ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ ۖ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ۖ يَعْلَمُ مَا يَلْبِغُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۖ وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

तारीफ खुदा के लिए है जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है और जो जमीन में है और उसी की तारीफ है आखिरत में और वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला जानने वाला है। वह जानता है जो कुछ जमीन के अंदर दाखिल होता है और जो कुछ उससे निकलता है। और जो आसमान से उतरता है और जो उसमें चढ़ता है। और वह रहमत वाला बख्शने वाला है। (1-2)

कायनात अपने खालिक का तआरुफ है। उसकी हैबतनाक वुस्अत (ब्यापक) खालिक की अज्मत को बताती है। उसका हदे कमाल तक मौजू (उपयुक्त) होना बताता है कि उसका पैदा करने वाला एक कामिल व मुकम्मल हस्ती है। इसके तमाम अज्जा का हददर्जा तवाफुक (सहजता) के साथ अमल करना साबित करता है कि उसका चलाने वाला इतिहाई हद तक हकीम और अलीम है। कायनात का इंसान के लिए मुकम्मल तौर पर साजगार होना जाहिर करता है कि उसका खालिक अपनी मख्बूकत के लिए बेहद रहीम व करीम है।

जो शख्स कायनात पर गौर करेगा वह खुदा के जलाल (प्रताप) व कमाल के एहसास से सरशार हो जाएगा। वह यकीन कर लेगा कि अजल (आदि) से अबद (अंत) तक तमाम अज्मतें सिर्फ एक खुदा के लिए हैं। उसके सिवा किसी और के लिए नहीं।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ ۖ عَلَيْهِمُ الْغُيُوبُ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۚ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجْزٍ أَلِيمٌ ۝ وَيَكْرِى الَّذِينَ أَوْثَقُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۝

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं कि हम पर कियामत नहीं आएगी। कहो कि क्यों नहीं, कसम है मेरे परवरदिगार आलिमुल्कौब की, वह जरूर तुम पर आएगी। उससे जरा बराबर कोई चीज छुपी नहीं, न आसमानों में और न जमीन में। और न कोई चीज उससे छोटी और न बड़ी, मगर वह एक खुली किताब में है। ताकि वह

उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए और नेक काम किया। यही लोग हैं जिनके लिए माफी है और इज्जत की रेजी। और जिन लोगों ने हमारी आयतों को आजित (मात) करने की कोशिश की, उनके लिए सज़ा का दर्दनाक अजाब है। और जिन्हें इल्म दिया गया वे, उस चीज को जो तुम्हारे खब की तरफ से तुम्हारे पास भेजा गया है, जानते हैं कि वह हक है और वह खुदाए अजीज (प्रभत्वशाली) व हमीद (प्रशंस्य) का रास्ता दिखाता है। (3-6)

कुरआन के मुख्तबीन कियामत के मुक़र न थे। वे सिर्फ इसके मुक़र थे कि कियामत उनके लिए रुसवाई और अजाब बनकर आएगी। मौजूदा दुनिया में वे अपने को मादूदी (भौतिक) एतबार से महफूज हालत में पाते थे। इसलिए उनकी समझ में न आता था कि अगली दुनिया में पहुंच कर वे ग़ैर महफूज क्योंकर हो जाएंगे।

मगर यह कयास सरासर बातिल है। मौजूदा दुनिया का मुतालआ बताता है कि इसकी तख़्बीक अख़्बाकी उसूलों पर हुई है। और जब कायनात की तख़्बीक अख़्बाकी बुनियाद पर हुई है तो उसका आख़िरी फैसला भी लाजिमन अख़्बाकी बुनियाद पर होना चाहिए न कि किसी और मजऊमा (कल्पित) बुनियाद पर।

हयात और कायनात की यह हकीकत तमाम आसमानी किताबों में मौजूद है। कुरआन का मिशन यह है कि इस हकीकत को वह उसकी ख़ालिस और बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में जाहिर कर दे। अब जो लोग इसके मुख़ालिफ बनकर खड़े हों वे जबरदस्त ज़सारात (दुस्साहस) कर रहे हैं। खुदा के यहाँ वे सज़ातरीन सजा के मुतहिक़ करार दिए जाएंगे।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنْبِئُكُمْ ۖ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمْرِقٍ ۚ إِنَّكُمْ لَعِنَىٰ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۖ أَفَتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ ۚ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلَالِ الْبُعِيدِ ۖ أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ نَاشِئَانَا خَسِيفٌ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۚ

٤

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं, क्या हम तुम्हें एक ऐसा आदमी बताएं जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम बिल्कुल रेजा-रेजा हो जाओगे तो फिर तुम्हें नए सिरे से बनना है। क्या उसने अल्लाह पर झूठ बांधा है या उसे किसी तरह का जुनून है। बल्कि जो लोग आख़िरत पर यकीन नहीं रखते वही अजाब में और दूर की गुमराही में मुब्तला हैं। तो क्या उन्होंने आसमान और ज़मीन की तरफ नज़र नहीं की जो उनके आगे है

और उनके पीछे भी। अगर हम चाहें तो उन्हें ज़मीन में धंसा दें या उन पर आसमान से टुकड़ा गिरा दें। बेशक इसमें निशानी है हर उस बंदे के लिए जो मुतवज्जह होने वाला हो। (7-9)

मक्का के लोग रसूल और असहाबे रसूल को हकीर (तुच्छ) समझते थे, इसलिए वे उनकी हर बात का मजाक उड़ाते रहे। इसकी अस्ल वजह आख़िरत के बारे में उनकी बेयक़ीनी थी। आख़िरत की पकड़ का अंदेशा उनके दिलों में न था। इसलिए वे आख़िरत की बातों के मुतअल्लिक ज़्यादा संजीदा भी न हो सके।

इस दुनिया में सबसे बड़ा अजाब यह है कि आदमी सेहते फ़िक्क (सही सोच) से महरूम हो जाए। ऐसा आदमी किसी चीज को उसके सही रूप में नहीं देख पाता। खुली हुई हकीकतों से भी उसे नसीहत हासिल नहीं होती। मसलन ऊपरी फज़ा से मुसलसल बेधुमार पत्थर निहायत तेज़ रफ़्तारी के साथ ज़मीन की तरफ आते रहते हैं। अगर ये पत्थर इंसानी बस्तियों पर बरसने लगे तो इंसानी नस्ल का ख़ात्मा हो जाए। इसी तरह ज़मीन के नीचे का ज़्यादा हिस्सा गर्म पिघला हुआ लावा है। अगर वह ग़ैर महदूद तौर पर फट पड़े तो सतह ज़मीन की हर चीज जल कर ख़त्म हो जाए। मगर खुदा अपने खुसूसी इतिज़ाम के तहत ऐसा होने नहीं देता। आसमान और ज़मीन में इस किसम की वाजेह निशानियां हैं जो इंसान के इज्ज (निर्बलता) को बता रही हैं। मगर आदमी जब सेहते फ़िक्क से महरूम हो जाए तो कोई निशानी उसे हिदायत देने वाली नहीं बनती।

وَلَقَدْ أَتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا فَضْلًا ۖ يُجِبَالُ أَوْبَىٰ مَعَهُ وَالطَّيْرُ ۚ وَالنَّالَةُ الْحَدِيدُ ۚ إِنَّ أَعْمَلَ سِغَاتٍ وَقَدَّرَ فِي السَّرْدِ وَأَعْبَلُوا صَالِحًا ۚ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

और हमने दाऊद को अपनी तरफ से बड़ी नेमत दी। ऐ पहाड़ों तुम भी उसके साथ तस्बीह में शिरकत करो। और इसी तरह परिंदों को हुक्म दिया। और हमने लोहे को उसके लिए नर्म कर दिया कि तुम कुशादा जिरहें (कवच) बनाओ और कड़ियों को अंदाजे से जोड़ो। और नेक अमल करो, जो कुछ तुम करते हो उसे मैं देख रहा हूँ। (10-11)

एक मोमिन जब खुदा की याद से सरशार होकर उसकी तस्बीह करता है तो उस वक़्त वह सारी कायनात का हमनवा होता है। ज़मीन व आसमान की तमाम चीज़ें तस्बीहे खुदावंदी में उसकी शरीके आवाज हो जाती हैं। ताहम कायनात की यह हमनवाई ख़ामोश जवान में होती है। मगर हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने यह खुसूसियत दी कि जब

वह तस्बीह करते तो पहाड़ और चिड़ियां महसूस तौर पर आपके साथ तस्बीह ख़्वानी में शरीक हो जातीं।

इसी तरह हजरत दाऊद को अल्लाह तआला ने लोहे की सनअत (शिल्पकला) सिखाई। उन्होंने लोहे के पिघलाने और ढालने के फन को इतनी तरक्की दी कि वह निहायत बारीक लड़ियों की जिरहें बनाने लगे जिन्हें आदमी कपड़े की तरह पहन सके। उस वक्त दुनिया में यह फन मौजूद न था। अल्लाह तआला ने बराहेरास्त तौर पर फरिश्तों के जरिए यह फन आपको सिखाया।

मोमिन उद्योग और साइंस में बड़ी-बड़ी तरक्कियां कर सकता है। मगर उसके लिए लाजिम है कि वह इंसानी तरक्की को सिर्फ इस्लाह (सुधार) के दायरे में इस्तेमाल करे। वह जो कुछ करे इस एहसास के तहत करे कि आखिरकार उसे जवाबदेही के लिए ख़ुदा के सामने हज़िर होना है।

وَلَسٰلِمٰنَ الرِّیْمَ عُدُّوْهَا شَهْرًا وَرَاْحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاسْكَنْتَ لَهُ عَيْنَ
الْقَطْرِ ۚ وَمِنَ الْجِبِّ مَنْ یَّعْمَلُ بَیْنَ یَدَیْهِ بِاِذْنِ رَبِّهِ ۚ وَمَنْ یَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ
اَمْرِ اَنْذَرْتَهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِیْرِ ۝ یَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا یَشَآءُ مِنْ تَحَارِیْبٍ وَ
تَمَآثِیْلٍ وَجَفَانٍ كَاجْوَابٍ ۚ وَقدُوْا رُسُیَّتِ اَعْمَلُوْا اِلَ دَاوُدَ سُدْرًا ۚ وَقَلِیْلٌ مِّنْ
عِبَادِی السَّكُوْرُ ۝

और सुलैमान के लिए हमने हवा को मुसख़्खर (अधीन) कर दिया, उसकी सुबह की मंजिल एक महीने की होती और उसकी शाम की मंजिल एक महीने की। और हमने उसके लिए तांबे का चशमा बहा दिया। और जिन्नात में से ऐसे थे जो उसके रब के हुक्म से उसके आगे काम करते थे। और उनमें से जो कोई हमारे हुक्म से फिरे तो हम उसे आग का अजाब चखाएंगे। वे उसके लिए बनाते जो वह चाहता, इमारतें और तस्वीरें और हौज जैसे लगन (थाल) और जमी हुई देगें। ऐ आले दाऊद, शुक्रगुजारी के साथ अमल करो और मेरे बंदों में कम ही शुक्रगुजार हैं। (12-13)

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम ने समुद्री सफर और समुद्री तिजारात को बहुत तरक्की दी थी। उन्होंने आला दर्जे के बादबानी जहाज तैयार किए। उनके साथ अल्लाह तआला का मजिद फल यह हुआ कि उनके समुद्री जहज़ों को अक्सर मुआफ़िक हवा मिलती थी। इसी तरह तांबा पिघला कर सामान बनाने का फन भी उनके जमाने में बहुत तरक्की कर गया। इन ग़ैर मामूली कुव्वतों से हजरत सुलैमान मुक़ल्लिफ़ क़िस्म का तामीरी और इस्लाही काम लेते थे। इन्हीं में से उन चीजों की तैयारी भी थी जिनका जिक्र आयत में किया गया है।

इंसान सरापा ख़ुदा का एहसान है। इसलिए उसके अंदर सबसे ज्यादा ख़ुदा के शुक्र और एहसानमंदी का जब्बा होना चाहिए। मगर यही वह चीज है जो इंसान के अंदर सबसे कम पाई जाती है। इसकी वजह यह है कि मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में इंसान को जो कुछ मिलता है वह असबाब के पर्दे में मिलता है। इसलिए आदमी उसे असबाब का नतीजा समझ लेता है। मगर यही इंसान का अस्ल इम्तेहान है। इंसान से यह मल्लूब (अपेक्षित) है कि वह असबाब के जरिए मिलती हुई चीज को ख़ुदा से मिलता हुआ देखे। बजाहिर अपनी अक्ल और मेहनत से हासिल होने वाली चीज को बराहेरास्त ख़ुदा का अतिथ्या (दिन) समझे।

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَیْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰی مُوْتِهِۦ اِلَّا دَابَّۃُ الْاَرْضِ ۚ تَاْكُلُ
مِنْ سَاكِنِهٖ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَكَّیْتِ الْجِبِّ اَنْ لَّوْكَانُوْا یَعْلَمُوْنَ الْغَیْبَ مَا لَبِثُوْا
فِی الْعَذَابِ الْمُهِیْنِ ۝

फिर जब हमने उस पर मौत का फैसला नाफिज किया तो किसी चीज ने उन्हें उसके मरने का पता नहीं दिया मगर जमीन के कीड़े ने, वह उसकी लाठी को खाता था। पस जब वह गिर पड़ा तब जिन्नों पर खुला कि अगर वे ग़ैब (अप्रकट) को जानते तो इस जिल्लत की मुसीबत में न रहते। (14)

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम की मौत का वक्त आया तो वह अपनी लाठी टेके हुए थे और जिन्नों से कोई तामीरी काम करा रहे थे। मौत के फरिश्ते ने आपकी रूह कब्ज कर ली। मगर आपका बेजान जिस्म लाठी के सहारे बदस्तूर कायम रहा। जिन्नात यह समझ कर अपने काम में लगे रहे कि आप उनके करीब मौजूद हैं और निगरानी कर रहे हैं। इसके बाद लाठी में दीमक लग गई। एक अर्से के बाद दीमक ने लाठी को खोखला कर दिया तो आपका जिस्म जमीन पर गिर पड़ा। उस वक्त जिन्नों को मालूम हुआ कि आप वफ़त पा चुके हैं।

यह वाक्या इस सूरेत में ग़ालिबन इसलिए पेश आया ताकि लोगों के इस ग़लत अक़ीदे की अमली तरदीद (रद्द) हो जाए कि जिन्नात ग़ैब का इल्म रखते हैं।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَآ فِیْ مَسْكَنِهِمْ اَیَّۃٌ جَآئِثٌ عَنْ یَمِیْنٍ وَشِمَالٍ ۚ دُكُوْا مِنْ
رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۚ بَلَدٌ طَیْبٌ ۚ وَرَبُّ غَفُوْرٌ ۝ فَاعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا
عَلَيْهِمْ سَیْلَ الْعَرَمِ ۚ وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَیْنِ ذَوَاتِیْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَنْثَلٍ
وَّشٰی ۚ مِّنْ سِدرٍ قَلِیْلِ ۝ ذٰلِكَ جَزَآئُهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۚ وَهَلْ یُجَزِّیْ اِلَّا
الْكُفُوْرُ ۝

सबा के लिए उनके अपने मस्कन (आवासीय क्षेत्र) में निशानी थी। दो बाग़ दाएं और बाएं, अपने रब के रिश्के से खाओ और उसका शुक्र करो। उम्दा शहर और बख़्शने वाला रब। पस उन्होंने सरताबी (विमुखता) की तो हमने उन पर बांध का सैलाब भेज दिया और उनके बाग़ों को दो ऐसे बाग़ों से बदल दिया जिनमें बदमजा फल और झाव के दरख़्त और कुछ थोड़े से बेर। यह हमने उनकी नाशुक्रा का बदला दिया और ऐसा बदला हम उसी को देते हैं जो नाशुक्र हो। (15-17)

सबा कदीम ज़माने में एक निव्ययत तरक्कीयाफ़ा वैम थी। उसकी आबादियां मौजूदा यमन में फैली हुई थीं। उसका मर्कजी शहर मारिब था। जमाना कब्ल मसीह (ईसा पूर्व) में उसने ज़बरदस्त तरक्की की। और तकरीबन एक हज़र साल तक उरूज पर रही। एक तरफ़ वे लोग खुशकी और समुद्र के जरिए अपनी तिजारतें फैलाए हुए थे। दूसरी तरफ़ उन्होंने बांध बनाए। मारिब के करीब उनका एक बड़ा बांध था जो 14 मीटर ऊंचा और तकरीबन 600 मीटर लम्बा था। उसके जरिए पहाड़ी नालों का पानी रोक कर नहरें निकाली गई थीं। और उनसे ज़मीनों को सेराब किया जाता था। इस तरह इलाक़े में इतनी सरसब्ज़ी आई कि आदमी जहां खड़ा हो तो दाएं और बाएं उसे बाग़ ही बाग़ दिखाई दें।

ये तमाम तरक्कियां खुदाई इतिजामात की वजह से मुमकिन हुईं। इसलिए सबा के लोगों को खुदा का शुक्रगुजार बनना चाहिए था। मगर वे ग़फलत और सरकशी में पड़ गए जैसा कि आम तौर पर खुशहाल कौमों में होता है। इसके बाद मारिब बांध (Marib Dam) में क्षिण पड़ना शुरू हुआ। यह गोया इब्तिदाई तंबीह थी। मगर वे होश में न आए। एंसाइक्लोपीडिया ब्रिटनिका के बयान के मुताबिक, सातवीं सदी ईस्वी में एक जलजले ने बांध को नाकबिले मरम्मत हद तक तोड़ दिया। इसके नतीजे में ऐसा सैलाब आया जिससे पूरा इलाका तबाह हो गया। मज़ीद यह कि ज़रख़ेज़ (उपजाऊ) मिट्टी ख़ूब हो जाने की वजह से यह इलाका बाद को सिर्फ़ जंगली झाड़ियों के लिए मौजूद रह गया।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَقَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ سِيرُوا فِيهَا لِيَالِي وَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا فَقَالُوا رَبَّنَا بَعْدَ بَيْنِ أَسْفَارِنَا وَظَكُّوا أَنْفُسَهُمْ فَبَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَزَّقْنَاهُمْ كُلَّ مُمَرِّقٍ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝

और हमने उनके और उनकी बस्तियों के दर्मियान, जहां हमने बरकत रखी थी, ऐसी बस्तियां आबाद कीं जो नजर आती थीं। और हमने उनके दर्मियान सफर की मंजिलें ठहरा दीं। उनमें रात दिन अम्न के साथ चलो। फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे रब, हमारे

सफ़रों के दर्मियान दूरी डाल दे। और उन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया तो हमने उन्हें अफसाना बना दिया और हमने उन्हें बिल्कुल तितर-बितर कर दिया। वेशक़ इसमें निशानी है हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। (18-19)

बरकत वाली बस्तियों से मुग़ाद शाम का सरसब्ज व शादाब इलाका है। इस सरसब्ज इलाके में यमन से शाम तक ख़ूबसूरत आबादियों की कतारें चली गई थीं। उनके दर्मियान सफर एक विस्म की खुशगवार सैर बन गया था। यह माहौल अपनी हकीकत के एतबार से रब्वानी जज्वात पैदा करने वाला था। गोया कि खुदा ने यहां एक ख़ामोश कतबा (बोर्ड) लगा दिया हो कि बेख़ौफ़ व ख़तर चलो और अपने रब का शुक्र करो।

मगर सबा के ग़ाफ़िल लोग उस खुदाई कतबे को न पढ़ सके। उन्होंने अपने रवैये से उन खुदाई नेमतों का इस्तहकाक़ खो दिया। चुनांचे वे इस तरह मिटे कि वे माजी की दास्तान बन गए। इलाके की तबाही के बाद सबा के मुख़्तलिफ़ कबाइल अपने वतन से निकल कर दूर-दूर के इलाकों में मुतशिर हो गए।

ये वाक़ेयात तारीख़ के मालूम वाक़ेयात हैं। मगर इन्हें जानने वाला हकीकतन वह है जो उनसे यह सबक ले कि उसे खुशहाली मिले तो वह नाज में मुव्तिता न हो। उसे जो कुछ मिले उसे खुदा का अतिय्या (देन) समझ कर वह खुदा का शुक्रगुजार बन जाए।

وَلَقَدْ صَدَقَ عَلَيْهِمُ ابْنُ لَيْسَ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝
وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يُّؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ
مِنْهَا فِي شَكٍّ وَرَبُّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيزٌ ۝

और इब्लीस (शैतान) ने उनके ऊपर अपना गुमान सच कर दिखाया। पस उन्होंने उसकी पैरवी की मगर ईमान वालों का एक गिरोह। और इब्लीस को उनके ऊपर कोई इख़्तियार न था, मगर यह कि हम मालूम कर लें उन लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों से (अलग करके जो उसकी तरफ़ से शक़ में हैं) और तुम्हारा रब हर चीज़ पर निगरान (निगरानी करने वाला) है। (20-21)

इब्लीस या उसके नुमाइदे हमेशा इंसान के खिलाफ़ अपना मंसूबा बनाते हैं। ऐसे मौके पर इंसान का काम यह है कि वह उनके मंसूबे का शिकार न हो। और इस तरह वह उन्हें नाकाम बना दे। मगर सबा के लोग दूसरे लोगों की तरह इस दानाई (समझदारी) का सुबूत न दे सके। वे शैतानी तर्ज़ाबात के ज़ेरअसर आकर तबाही के रास्ते पर चल पड़े। सिर्फ़ थोड़े से हक़परस्त थे जो इस इम्तेहान में कामयाब हुए।

शैतान को या उसके नुमाइंदे को खुदा ने किसी के ऊपर अमली इस्त्रियार नहीं दिया है। उसे सिर्फ बहकाने का इस्त्रियार है। यह इसलिए है ताकि इंसान की आजमाइश हो। इस आजमाइश में पूरा उतरने वाला शख्स वह है जो शैतानी तर्गीबात (बहकावों) से गैर मुतअस्सिर रहकर हक व सक्कत पर क़यम रहे।

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِنْ شِرْكٍَ وَمَا لَهُمْ مِنْهُمْ مِنْ ظَهِيرٍ ۖ وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ حَتَّىٰ إِذَا فُزِعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقُّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝

कहो कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने खुदा के सिवा मावूद (पूज्य) समझ रखा है, वे न आसमानों में जरा बराबर इस्त्रियार रखते और न जमीन में और न इन दोनों में उनकी कोई शिरकत है। और न इनमें से कोई उसका मददगार है। और उसके सामने कोई शफाअत (सिफारिश) काम नहीं आती मगर उसके लिए जिसके लिए वह इजाजत दे। यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर होगी तो वे पूछेंगे कि तुम्हारे रब ने क्या फरमाया। वे कहेंगे कि हक बात का हुक्म फरमाया। और वह सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है। (22-23)

अगरचे हर दौर में बेशतर लोग आखिरत को मानते रहे हैं। मगर हर दौर में शैतान ने ऐसे खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) अकीदे लोगों के दर्मियान राइज कर दिए जिन्होंने उन्हें आखिरत की पकड़ से बेख़ुफ कर दिया। उन्हीं में से एक यह फर्जी अकीदा भी है कि कुछ हस्तियों को खुदा के यहां इतना मक़ाम हासिल है कि वे अपनी सिफारिश से जिसे चाहें बख़्शवा सकते हैं।

मगर इस किस्म का हर अकीदा खुदा की खुदाई का कमतर अंदाज़ा है। यह वाक्या भी कैसा अजीब है कि जिन हस्तियों का अपना यह हाल है कि खुदा की अज्मत के एहसास ने उन्हें सरासीमा (शिथिल) कर रखा है, उनके बारे में उनके परस्तारों ने यह समझ रखा है कि वे खुदा के यहां उनकी नजात के लिए काफी हो जाएंगे।

قُلْ مَنْ يَرْفَعُكُمْ مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ اللَّهُ وَإِنَّا أَوَّْلَٰئِكَ لَعَلَىٰ هُدًىٰ أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ قُلْ لَا تَسْأَلُونَنَا أَجْرَمَنَا وَلَا تَسْأَلُنَا عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝ قُلْ بِمَعْرِئِنَا نَبْنِئُكُمْ يَفْتَنُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفِتْنَةُ الْعَلِيمُ ۝ قُلْ أَرُونِي الَّذِينَ أَنْحَرْتُمْ بِهِ شُرَكَاءَ كَلَّا بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

कहो कि कौन तुम्हें आसमानों और जमीन से रिक़ देता है। कहो कि अल्लाह। और हम में से और तुम में से कोई एक हिदायत पर है या खुली हुई गुमराही में। कहो कि जो कुसूर हमने किया उसकी कोई पूछ तुमसे न होगी। और जो कुछ तुम कर रहे हो उसकी बाबत हमसे नहीं पूछा जाएगा। कहो कि हमारा रब हमें जमा करेगा, फिर हमारे दर्मियान हक के मुक़ाबिल पैसला फरमाएगा। और वह पैसला फरमाने वाला है इल्म वाला है। कहो, मुझे उन्हें दिखाओ जिन्हें तुमने शरीक बनाकर खुदा के साथ मिला रखा है। हरगिज नहीं, बल्कि वह अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (24-27)

कायनात नाक़बिले क़यास हद तक अजीम है। इसी के साथ उसके अंदर कमाल दर्जे की हिक्मत और मअनवियत पाई जाती है। ऐसी कायनात खुदाए अजीज व हकीम ही का कारनामा हो सकती है। कोई भी शख्स संजीदा तौर पर यह गुमान नहीं कर सकता कि वे दूसरी हस्तियां उसकी खालिक व मालिक हैं जिन्हें जदीद (आधुनिक) या कदीम (प्राचीन) इंसान ने खुदा के सिवा फर्ज कर रखा है। फिर खुदा के सिवा कौन हो सकता है जिसे इस कायनात में बड़ाई का मक़ाम हासिल हो।

हकीकत यह है कि कायनात का मुतालआ (अवलोकन) तमाम मुश्किलाना नजरियात को बातिल (झूठ) ठहराता है। इस कायनात में वे तमाम अकीदे बेजोड़ साबित होते हैं जिनमें एक खुदा के सिवा किसी और के लिए किसी किस्म की बड़ाई तस्लीम की गई हो। ऐसी हालत में वही नजरिया सही हो सकता है जो एक खुदा की बुनियाद पर बने। जिस नजरिये में एक खुदा के सिवा किसी और हस्ती की कारफरमाई मानी जाए वह अपनी तरदीद (रद्द) आप है।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ لَّكُمْ مِيعَادُ يَوْمٍ لَا تَسْتَأْجِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِرُونَ ۝

और हमने तुम्हें तमाम इंसानों के लिए खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि तुम्हारे लिए एक ख़ास दिन का वादा है कि उससे न एक साअत (क्षण) पीछे हट सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो। (28-30)

हर नबी ने बराहेरास्त तौर पर सिर्फ अपनी कौम के ऊपर दावती काम किया। और यही अमलन मुमकिन था। इसी तरह पैग़म्बरे इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी बराहेरास्त तौर पर अपनी ही कौम के लिए मुजिर और मुबशिशर बने (अल-अनआम 92)। मगर चूँकि आप पर नुबुव्वत ख़त्म हो गई इसलिए अब तमाम कौमों के लिए हुक्मन आप ही मुजिर और

मुबशिशर (डराने वाले और खुशखबरी देने वाले) हैं। अपने जमाने में अपने मुखातबीने अव्वल पर जिस तरह आपने इंजार व तबशीर (डराने और खुशखबरी देने) का काम किया उसी तरह बाद के जमाने में दूसरे तमाम मुखातबीन पर आपकी उम्मत को आपके नायब के तौर पर इंजार व तबशीर का काम करना है। यह सारा काम आपकी नुबुव्वत के तलससुल में शुमार होगा। आपकी जिंदगी में किया जाने वाला दावती काम बराहेरास्त तौर पर आपके दायराए नुबुव्वत में दाखिल है। और आपकी दुनियावी जिंदगी के बाद किया जाने वाला काम बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर।

पैगम्बर का काम हमेशा सिर्फ पहुंचाना होता है। इसके बाद कौमों के अमली अंजाम का फैसला करना खुदा का काम है, मौजूदा दुनिया में भी और आइंदा आने वाली दुनिया में भी।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِهَذَا الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَا تَرَىٰ إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ ۖ الْقَوْلُ يَقُولُ الَّذِينَ اسْتَضَعُّوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا ۖ لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ۖ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتَضَعُّوا ۖ أَنْحْنُ صَدَدٌ عَنْكُمُ الْعُدَىٰ بَعْدَ إِذْ جَاءَكُمْ بِكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُجْرِمِينَ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضَعُّوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا ۖ بَلْ كُنَّا فِي الْبَيْتِ وَالنَّارِ إِذْ تَأْمُرُونَا أَنْ نَكْفُرَ بِاللَّهِ وَنَجْعَلَ لَهُ أَنْدَادًا ۖ وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ كُنَّا سُرَاوًا الْعَذَابُ ۖ وَجَعَلْنَا الْأَغْلَالَ فِي أَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ

और जिन लोगों ने इंकार किया वे कहते हैं कि हम हरगिज न इस कुरआन को मानेंगे और न उसे जो इसके आगे है। और अगर तुम उस वक्त को देखो जबकि ये जालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे। एक दूसरे पर बात डालता होगा। जो लोग कमजोर समझे जाते थे वे बड़ा बनने वालों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम जरूर ईमान वाले होते। बड़ा बनने वाले कमजोर लोगों को जवाब देंगे, क्या हमने तुम्हें हिदायत से रोका था। जबकि वह तुम्हें पहुंच चुकी थी, बल्कि तुम खुद मुजरिम हो। और कमजोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे, नहीं बल्कि तुम्हारी रात दिन की तदबीरों से, जबकि तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ्र करें और उसके शरीक ठहराएं। और वे अपनी पशेमानी (पछतावे) को छुपाएंगे जबकि वे अजाब देखेंगे। और हम मुंकिरों की गर्दन में तौक डालेंगे। वे वही बदला पाएंगे जो वे करते थे। (31-33)

हकीकत का इंकार सबसे बड़ा जुर्म है। दुनिया में इस जुर्म का अंजाम सामने नहीं आता। इसलिए दुनिया में आदमी बेखौफ होकर हकीकत का इंकार कर देता है। मगर आखिरत में जब इंकारे हक का बुरा अंजाम लोगों के ऊपर टूट पड़ेगा तो उस वक्त लोगों का अजीब हाल होगा।

अवाम अपने जिन बड़ों पर दुनिया में फख्र करते थे वहां उन बड़ों को अपनी गुमराही का जिम्मेदार ठहरा कर वे उन पर लानत करेंगे। बड़े उन्हें जवाब देंगे कि अपने आपको शर्मिंदगी से बचाने के लिए हमें मुल्जिम न ठहराओ यह हम न थे बल्कि तुम्हारी अपनी ख्वाहिशें थीं जिन्होंने तुम्हें गुमराह किया। हमारा साथ तुमने सिर्फ इसलिए दिया कि हमारी बात तुम्हारी अपनी ख्वाहिश के मुताबिक थी। तुम ऐसा दीन चाहते थे जिसमें अपने आपको बदले बगैर दीनदार बनने का क्रेडिट हासिल हो जाए और वह हमने तुम्हें फराहम कर दिया। तुमने हमारा फंदा खुद अपनी गर्दन में डाला, वरना हमारे पास कोई ताकत न थी कि हम उसे तुम्हारी गर्दन में डाल देते।

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۖ وَقَالُوا لَوْ أَنَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۖ قُلْ إِن رَّبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۖ وَوَيْلٌ لِّمَا أَموَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِي تُفَرِّقُكُمْ عَنَّا زُلْفَىٰ ۖ أَلَا مَن وَعِيلٌ صَالِحٌ ۚ فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضَّعْفِ بِمَا عَمِلُوا وَهُمْ فِي الْغُرَفَاتِ آمِنُونَ ۖ وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ ۖ أُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ۖ قُلْ إِن رَّبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۖ وَمَا تَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۖ

और हमने जिस बस्ती में भी कोई डराने वाला भेजा तो उसके खुशहाल लोगों ने यही कहा कि हम तो उसके मुंकिर हैं जो देकर तुम भेजे गए हो। और उन्होंने कहा कि हम माल और औलाद में ज्यादा हैं और हम कभी सजा पाने वाले नहीं। कहो कि मेरा रब जिसे चाहता है ज्यादा रोजी देता है। और जिसे चाहता है कम कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद वह चीज नहीं जो दर्जें में तुम्हें हमारा मुकर्रब (निकटवर्ती) बना दे, अलबत्ता जो ईमान लाया और उसने नेक

अमल किया, ऐसे लोगों के लिए उनके अमल का दुगना बदला है। और वे बालाखानों (उच्च भवनों) में इत्मीनान से रहेंगे। और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए सरगम हैं वे अजाब में दाखिल किए जाएंगे। कहो कि मेरा ख अपने बंदों में से जिसे चाहता है कुशादा रोजी देता है और जिसे चाहता है तंग कर देता है। और जो चीज भी तुम खर्च करोगे तो वह उसका बदला देगा। और वह बेहतर रिश्ता देने वाला है। (34-39)

जिन लोगों के पास कुव्वत और माल आ जाए उन्हें मौजूदा दुनिया में बड़ाई का मकाम हासिल हो जाता है। यह चीज उनके अंदर झूठा एतमाद पैदा कर देती है। ऐसे लोगों को जब आखिरत से डराया जाता है तो वे उसे अहमियत नहीं दे पाते। उन्हें यकीन नहीं आता कि दुनिया में जब खुदा ने उन्हें इज्जत दी है तो आखिरत में वह उन्हें कैसे बेइज्जत कर देगा।

यही झूठा एतमाद हर दौर के बड़ों के लिए हक की दावत को न मानने का सबसे बड़ा सबब रहा है। और वक्त के बड़े लोग जब एक चीज को हकीर (तुच्छ) कर दें तो छोटे लोग भी उसे हकीर समझ लेते हैं। इस तरह खवास और अवाग दोनों हक को कुबूल करने से महरूम रह जाते हैं।

दुनिया का माल व असबाब इस्तेहान है न कि इनाम। दुनिया के माल व असबाब की ज्यादाती न किसी आदमी के मुकर्रब होने की अलामत है और न इसकी कमी उसके रैर मुकर्रब होने की। अल्लाह के यहां कुरबत (निकटता) का मकाम उसी शख्स के लिए है जो इस बात का सबूत दे कि जो कुछ उसे दिया गया था उसमें वह खुदा की यादों के साथ जिया और खुदा की मुकर्रर की हुई हदों का अपने आपको पाबंद रखा। यही लोग हैं जो आखिरत में खुदा के अबदी इनामात के मुस्तहिक करार दिए जाएंगे।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَكَةِ أَهْلُوا لِيَاكُمُ كَانُوا يَعْبُدُونَ ④
قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُونِهِمْ بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ أَكْثَرُهُمْ
بِهِمْ مُؤْمِنُونَ ⑤ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ لَكُمْ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفَعًا وَلَا ضَرًّا وَنَقُولُ
لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ⑥

और जिस दिन वह उन सबको जमा करेगा फिर वह फरिश्तों से पूछेगा, क्या ये लोग तुम्हारी इबादत करते थे। वे कहेंगे पाक है तेरी जात, हमारा तअल्लुक तुझसे है न कि इन लोगों से। बल्कि ये जिन्यों की इबादत करते थे। उनमें से अक्सर लोग उन्हीं के मोमिन थे। पस आज तुम में से कोई एक दूसरे को न फायदा पहुंचा सकता है और न नुकसान। और हम जालिमों से कहेंगे कि आग का अजाब चखो जिसे तुम झुटलाते थे। (40-42)

फरिश्ते इंसान को नजर नहीं आते। ये दरअसल पैगम्बर हैं जिन्होंने इंसान को फरिश्तों के वुजूद की खबर दी। यह खबर उन्हें इसलिए दी गई थी कि वे खुदा के अज्मत व जलाल को महसूस करें और पूरी तरह उसकी इबादत में लग जाएं। मगर शैतान ने अजीब व गरीब तौर पर लोगों को सिखाया कि बराहेरास्त खुदा का तकर्रब (समीपता) हासिल करना मुश्किल है। इसलिए उन्हें चाहिए कि वे फरिश्तों की इबादत करें और उनके जरिये से खुदा का तकर्रब हासिल करें। चुनांचे सारी दुनिया में फरिश्तों के बुत बनाकर उनकी इबादत शुरू कर दी गई। देवी देवताओं का अक्रीदा भी दरअसल फरिश्तों ही की बिगड़ी हुई शकल है। जो फरिश्ता बारिश पर मुकर्रर था उसे बारिश का देवता समझ लिया। जो फरिश्ता हवा पर मुकर्रर था उसे हवा का देवता समझ लिया। वगैरह।

फरिश्ते आखिरत में ऐसे इबादत गुजारों से बरान्त (विरक्ति) जाहिर करेंगे। आखिरत में उन्हें न खुदा की मदद हासिल होगी और न फरिश्तों की। वे हमेशा के लिए बेवयारो मददगार होकर रह जाएंगे।

وَإِذْ اتَّخَذْتُمْ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ أَيْدِيَكُمْ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَنْ مَا كَانُوا يَعْبُدُ آبَاءَكُمْ وَقَالُوا مَا هَذَا إِلَّا أَفْئُتٌ مُفْتَرًى وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِمَتَّىٰ لَنَا جَاءَ هُمْ ۖ إِنَّ هَذَا إِلَّا أَسَافَةٌ مَبِينٌ ④ وَمَا أَتَيْنَهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ تَذْنِيرٍ ⑤ وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَغُوا مَعْشَارَ مَا أَتَيْنَهُمْ فَكَذَّبُوا أَرْسِلْ يٰمُوسَىٰ فَمَنْ كَانَ نَكِيرٌ ⑥

और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो वे कहते हैं कि यह तो बस एक शख्स है जो चाहता है कि तुम्हें उनसे रोक दे जिनकी तुम्हारे बाप दादा इबादत करते थे। और उन्होंने कहा, यह तो महज एक झूठ है गढ़ा हुआ। और उन मुंकिरों के सामने जब हक आया तो उन्होंने कहा कि यह तो बस खुला हुआ जादू है। और हमने उन्हें किताबें नहीं दी थीं जिन्हें वे पढ़ते हों। और हमने तुमसे पहले उनके पास कोई डराने वाला नहीं भेजा। और उनसे पहले वालों ने भी झुटलाया। और ये उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे जो हमने उन्हें दिया था। पस उन्होंने मेरे रसूलों को झुटलाया, तो कैसा था उन पर मेरा अजाब। (43-45)

कुरआन अपने मुखातबीन (संबोधित लोगों) के सामने खुले-खुले दलाइल दे रहा था। मुखातबीन दलील से उसका तोड़ नहीं कर सकते थे। इसके बावजूद वे अवाग को उससे रोकने में कामयाब हो गए। उनकी इस कामयाबी का वाहिद राज यह था कि उन्होंने लोगों को यह

कहकर उसकी तरफ से मुशतबह (संदिग्ध) कर दिया कि यह हमारे असलाफ (पूर्वजों) के तरीके के खिलाफ है। कुरआन में जो मोजिजाना अदब (दिव्य साहित्य) था उसका इंकार नामुमकिन था। उसके बारे में लोगों को यह कहकर मुतमइन कर दिया गया कि यह महज जादू बयानी का करिश्मा है, खुदाई 'वही' हमें से इसका कोई तअल्लुक नहीं। यह महज कलम का जोर है न कि इल्मे हकीकत का जोर। तारीख का यह तजर्बा निहायत अजीब है कि हर दौर के लोगों के लिए दलील के मुमबले में तअस्सुब (विद्वेष) ज्यादा ताकतवर साबित हुआ है।

कुरआन के मुखातबीन के पास कुरआन का इंकार करने के लिए या तो अक्ली दलाइल होते जिनके जरिए वे उसे रद्द कर सकते या उनके पास कोई दूसरी आसमानी किताब होती जिससे कुरआन की तरदीद निकाली जा सकती। मुखातबीन कुरआन के पास इन दोनों में से कोई चीज मौजूद न थी। मजीद यह कि दुनियावी तरक्की में भी वे दूसरी कैमों से बहुत ज्यादा पीछे थे। जिन लोगों का यह हाल हो वे अगर हक की दावत (आह्वान) का इंकार करते हैं तो इसकी वजह हठधर्मी है न कि माकूलियत (ताकिर्कता)।

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مِثْلَ خِيَارِكُمْ ثُمَّ تَنْفَرُوا
مِنْكُمْ بِأَصْحَابِكُمْ مِنْ جَنَّةٍ إِنَّ هُوَ الْأَنْذِيرُ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝
قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ إِنَّ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

कहो मैं तुम्हें एक बात की नसीहत करता हूँ। यह कि तुम खुदा के वास्ते खड़े हो जाओ, दो-दो और एक-एक, फिर सोचो कि तुम्हारे साथी को जुनून नहीं है। वह तो बस एक सख्त अजाब से पहले तुम्हें डराने वाला है। कहो कि मैंने तुमसे कुछ मुआवजा मांगा हो तो वह तुम्हारा ही है। मेरा मुआवजा तो बस अल्लाह के ऊपर है। और वह हर चीज पर गवाह है। (46-47)

पैगम्बर के मुआसिरिन (समकालीन) ने पैगम्बर की दावत का इंकार कर दिया। मगर इनके पीछे ज़िद और तअस्सुब के सिवा और कुछ न था। हकीकत यह है कि अगर वे ज़िद और तअस्सुब से खाली होकर सोचते, चाहे अकेले अकेले सोचते, या चन्द आदमी मिलकर इज्तिमाई (सामूहिक) तौर पर गौर करते, तो वे पाते कि उनका पैगम्बर कोई दीवाना आदमी नहीं है। आपकी साबिका (पहले की) ज़िदगी आपकी संजीदगी की गवाही देती। आपका दर्दमंदाना अंदाज बताता कि आप जो कुछ कह रहे हैं वही आपके दिल की आवाज है। आपके कलाम का हकीमाना उल्लूब उसकी सेहत की दाखिली शहादत (भीतरी साक्ष्य) नजर आता। आपका किसी मुआवजे का तालिब न होना जाहिर करता है कि आपने इस काम को महज अल्लाह की खातिर शुरू किया है न कि जाती तिजारत की खातिर। ग़ैर जानिबदाराना

ग़ैरोफ़िक्क (निष्पक्ष चिंतन) में वे जान लेते कि आपकी बेक़रारी जुनून की बेक़रारी नहीं है बल्कि इसका सबब यह है कि आप जिस ख़तरे से डराने के लिए उठे हैं उसे अपनी आंखों से आता हुआ देख रहे हैं। मगर वे हक की दावत के बारे में संजीदा न थे इसलिए वे खुले हुए हकाइक उन्हें नजर भी न आ सके।

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِرُ بِالْحَقِّ عِلَامَ الْغُيُوبِ ۝ قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِي
الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيدُ ۝ قُلْ إِنْ ضَلَكْتُ فَإِنَّمَا أَضِلُّ عَلَى نَفْسِي وَإِنْ
اهْتَدَيْتُ فِيمَا يُؤْمَرُ بِإِلَى رَبِّي إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ۝

कहो कि मेरा खब हक को (बातिल पर) मारेगा, वह छुपी चीजों को जानने वाला है। कहो कि हक (सत्य) आ गया और बातिल (असत्य) न आगाज करता है और न इआदा (पुनरावृत्ति)। कहो कि अगर मैं गुमराही पर हूँ तो मेरी गुमराही का बवाल मुझ पर है और अगर मैं हिदायत पर हूँ तो यह उस 'वही' (इश्वरीय वाणी) की बदौलत है जो मेरा खब मेरी तरफ भेज रहा है। बेशक वह सुनने वाला है, करीब है। (48-50)

दुनिया की तख़्कीक हक (सत्य) हुई है। यहां सारा जोर हक की तरफ है। यहां तमाम दलाइल हक की तार्द करते हैं। हकीकते वाक्या के एतबार से यहां बातिल (असत्य) को कोई जोर और कोई दलील हासिल नहीं। ऐसी हालत में यह होना चाहिए कि हक यहां हमेशा सरबुलन्द रहे और बातिल यहां सरासर बेवजन होकर रह जाए। मगर अमलन ऐसा नहीं होता। इस दुनिया में हक इतना ताकतवर नहीं कि वह खुद अपने जोर पर बातिल का ख़ात्मा कर दे और बातिल इतना बेवकअत नहीं कि उसकी बुनियाद पर किसी शख्स के लिए इज्जत और सरबुलन्दी हासिल करना मुमकिन न हो।

इसकी वजह यह है कि यह दुनिया इस्तेहान की जगह है। यहां आजमाइश का कानून जारी है। इसलिए यहां बातिल को भी उभरने का मौका मिल जाता है। मगर यह सूरतेहाल आरज़ी तौर पर सिर्फ इस्तेहान की मुद्दत तक है। क़ियामत आते ही यह ग़ैर वाकई सूरतेहाल यक़सर ख़त्म हो जाएगी। उस वक़्त तमाम नज़्दी और अमली ज़ोर सिर्फ हक की तरफ होगा और बातिल सरासर बेकीमत होकर रह जाएगा।

यह वाक्या अपनी कामिल सूरत में क़ियामत में जाहिर होगा। मगर जब अल्लाह चाहता है उसे जुर्जई (आंशिक) तौर पर मौजूदा दुनिया में भी जाहिर कर देता है ताकि लोगों के लिए सबक हो। दौरे अव्वल में इस्लाम का ग़लबा इसी क़िस्म का एक जुर्जई इशार (आंशिक प्रदर्शन) था। चुनांचे जब मक्का फतह हुआ और तौहीद को शिर्क के ऊपर बालातरी हासिल हो गई तो अल्लाह के रसूल सल्लललाहु अलैहि व सल्लम की जबान पर यह आयत थी : 'जाअल हक्कुव जह कल बातिल, इन्ल बातिल कन्न जह्म' (हक आया और बातिल

मिट गया, बेशक बातिल मिटने ही वाला था। बनी इस्राईलए 81)

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فِرْعَوْنُ فَلَا قُوَّةَ وَأَخَذَ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۖ وَقَالَ لَأُمَّاكِبَهُ
وَأَنَّى لَهُمُ التَّنَاقُشُ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۖ وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَ
يَقْدُ فُؤُنَ بِالْغَيْبِ مَنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۖ وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا
فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَكٍّ مَُّرِيبٍ ۖ

और अगर तुम देखो, जब ये घबराए हुए होंगे। पस वे भाग न सकेंगे और करीब ही से पकड़ लिए जाएंगे। और वे कहेंगे कि हम उस पर ईमान लाए। और इतनी दूर से उनके लिए उसका पाना कहाँ। और इससे पहले उन्होंने उसका इंकार किया। और बिना देखे दूर जगह से बातें फेंकते रहे। और उनकी और उनकी आरजू में आड़ कर दी जाएगी जैसा कि इससे पहले उनके सहमार्गी लोगों के साथ किया गया। वे बड़े धोखे वाले शक में पड़े रहे। (51-54)

मौजूदा दुनिया में आदमी हक का इंकार करता है तो फौरन उसका अंजाम सामने नहीं आता। यह सूरतेहाल उसे इंकारे हक के मामले में ढीठ बना देती है। वह हक की दावत को संजीदा तवज्जोह के काबिल नहीं समझता। वह हिक्मत-अमेज (तिरस्कारपूर्ण) अल्मजज में उसका जिक्र करता है। वह बेपरवाही के साथ उसे रद्द कर देता है। वह उस पर इस तरह गैर जिम्मेदाराना अंदाज में तबसिरा करता है जैसे कि वह किसी लिहाज का मुस्तहिक ही नहीं।

मगर जब दुनिया का मौजूदा निजाम खत्म होगा तो अचानक सारा मामला बिल्कुल बदल जाएगा। अब आदमी को नजर आएगा कि वही चीज सबसे ज्यादा अहम थी जिसे वह सबसे ज्यादा नजरअंदाज किए हुए था। यह देखकर उसकी सारी अकड़ खत्म हो जाएगी। वह उस हक का वालिहाना (आतुरतापूर्ण) एतराफ करने लगेगा जिसे वह दुनिया में किसी तवज्जोह के लायक नहीं समझता था। मगर अब वक्त निकल चुका होगा। उससे कहा जाएगा कि एतराफ की कीमत आलमे ग़ैब (अदृश्य-स्थिति) में थी, आलमे शुहूद (प्रकट स्थिति) में एतराफ की कोई कीमत नहीं।

‘शक मुरीब’ का मतलब यह है तरद्दुद (दुविधा) में डालने वाला शक। यह मुकिरीन की नफिसयाती हालत की तस्वीर है। दुनिया में जो हक उनके सामने पेश किया जा रहा था वह जबान व बयान के एतबार से इतना ताकतवर था कि वह अपने आपको इससे बेबस पाते थे कि दलील के जरिए उसे रद्द कर सकें। मगर यह हक चूँकि उनके जेहनी साँचे के खिलाफ था इसलिए वे उसे कुबूल करने पर भी आमादा न हो सके। इस दोतरफा सूरतेहाल ने उन्हें एक किस्म के अंदरूनी खलजान (असमंजस) में मुब्तिला रखा। यहां तक कि मौत के फरिश्ते ने आकर वह पर्दा उनकी आंख से हटा दिया जिसे उन्हें खुद अपने हाथ से हटाना था। मगर

वे उसे हटाने में कामयाब न हो सके।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَابْعَثْنَا نوحًا ۖ وَآلِهَ الْأَنْبِيَاءِ ۖ وَقُلْ أَجْنَحَةٌ
مَّمْشِيٌّ وَتِلْكَ وَرُبْعٌ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ۖ وَمَا يُمْسِكُ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ
مِنْ بَعْدِهِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

आयतें-45

सूरह-35. फातिर

रुकूअ-5

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। तारीफ अल्लाह के लिए है, आसमानों और जमीन का पैदा करने वाला, फरिश्तों को पैगामरसां (संदेशवाहक) बनाने वाला जिनके पर हैं दो-दो और तीन-तीन और चार-चार। वह पैदाइश में जो चाहे ज्यादा कर देता है। बेशक अल्लाह हर चीज पर कादिर है। अल्लाह जो रहमत लोगों के लिए खोले तो कोई उसका रोकने वाला नहीं। और जिसे वह रोक ले तो कोई उसे खोलने वाला नहीं। और वह जबरदस्त है हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (1-2)

फरिश्तों को अल्लाह तआला ने पैगाम रसानी के लिए और अपने पैगाम की तंफ़ीज (लागू करने) के लिए पैदा किया है। मगर शैतान ने लोगों को सिखाया कि फरिश्ते मुस्तकिल बिज्जात (स्वयं में) हैसियत रखते हैं। वे दुनिया में बरकत और आखिरत में नजात का जरिया बन सकते हैं। युनांचे कुछ कौमों लात और मनात जैसे नामों से उनकी फर्जी तस्वीरें बनाकर उनकी इबादत करने लगीं। कुछ कौमों ने उन्हें देवी देवता करार देकर उन्हें पूजना शुरू कर दिया। मौजूदा जमाने में कानून फितरत (Law of Nature) की ताजीम भी इसी गुमराही का जदीद (आधुनिक) एडिशन है। मगर हकीकत यह है कि फरिश्ते हों या कानून फितरत, सब एक खुदा के महकूम हैं। सब एक खुदा के कारगुजार हैं, चाहे वे दो बाजुओं वाले हों या 600 बाजुओं वाले या 600 करोड़ बाजुओं वाले।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۖ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرِ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ
مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَآَنِي تُؤْفَكُونَ ۖ وَإِنْ يَكْدِرْ بُؤُوكُ فَقَدْ

كَذَّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ وَآلِيَ اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ①

ऐ लोगो अपने ऊपर अल्लाह के एहसान को याद करो। क्या अल्लाह के सिवा कोई और ख़ालिक है जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रिक़ देता हो। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। तो तुम कहां से धोखा खा रहे हो। और अगर ये लोग तुम्हें झुटलाएं तो तुमसे पहले भी बहुत से पैग़म्बर झुटलाए जा चुके हैं। और सारे मामले अल्लाह ही की तरफ़ रूजूअ (प्रकृत) होने वाले हैं। (3-4)

इंसान अपनी ज़िंदगी के लिए बेशुमार चीज़ों का मोहताज है। मसलन रोशनी, पानी, हवा, ख़ुराक, मादनियात (खनिज, धातु) वगैरह। इनमें से हर चीज़ ऐसी है कि उसे वजूद में लाने के लिए कायनाती ताकतों का मुत्तहिदा अमल (संयुक्त-प्रक्रिया) दरकार है। एक खुदा के सिवा कौन है जो इतने बड़े वाक्ये को जुहूर में लाने की ताकत रखता हो। मुश्रिक और मुल्हिद (नास्तिक) लोग भी यह दावा नहीं कर सके कि इन असबाबे हयात की फ़राहमी एक खुदा के सिवा कोई और कर सकता है। फिर जब इन तमाम चीज़ों का ख़ालिक और मुंजिम एक खुदा है तो उसके सिवा दूसरों को माबूद बनाना क्योंकि दुरुस्त हो सकता है।

तारीख़ का यह अजीब तज़र्बा है कि जो लोग खुदा के सिवा दूसरों को बड़ाई का मकाम दिए हुए हों वे उन्हें छोड़कर खुदा को अपना बड़ा बनाने पर राजी नहीं होते, चाहे उसकी दावत पैग़म्बराना सतह पर क्यों न दी जा रही हो। इसकी वजह यह है कि लोग हमेशा माने हुए को मानते हैं। जबकि पैग़म्बर पर यकीन करने का मतलब उस वक़्त यह होता है कि आदमी न माने हुए को माने। इस किस्म के इमान को हासिल करने की शर्त यह है कि आदमी खुद अपनी फ़ित्री (वैचारिक) कुव्वतों को बेदार करे, वह अपनी जाती बसीरत (सूझबूझ) से सच्चाई को दरयाप्त करे। और बिलाशुबह यह किसी इंसान के लिए हमेशा सबसे ज्यादा मुश्किल काम रहा है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرُّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرُّكُمُ
بِاللَّهِ الْغُرُورُ ② إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ
لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ③ الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَالَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ④

ऐ लोगो, बेशक अल्लाह का वादा बरहक है। तो दुनिया की ज़िंदगी तुम्हें धोखे में न डाले। और न वह बड़ा धोखेबाज तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने पाए। बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम उसे दुश्मन ही समझो वह तो अपने गिरोह को इसीलिए बुलाता है कि वे दोख़ वालों में से हो जाएं। जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए सज़ा अजाब है। और जो इमान लाए और नेक अमल किया उनके लिए माफ़ी है और

बड़ा अज़ (प्रतिफल) है। (5-7)

खुदा ने अपने पैग़म्बरों के जरिए ज़िंदगी की नौइयत के बारे में जो ख़बर दी है वह बजाहिर एक ख़्याली बात मालूम होती है। क्योंकि आदमी फौरन उनसे दो चार नहीं होता। इसके बरअक्स दुनिया की चीज़ें हकीकी नज़र आती हैं। क्योंकि आदमी आज ही उनसे दो चार हो रहा है। मौत और जलजला और हादसात आदमी को चौकन्ना करते हैं। यह गोया क़ियामत से पहले क़ियामत की इत्तिहा है। मगर शैतान फौरन ही लोगों के ज़ेहन को यह कहकर फेर देता है कि ये सब असबाब के तहत पेश आने वाले वाक़ेयात हैं न कि खुदाई मुदाख़लत के तहत। मगर इस किस्म का हर ख़्याल शैतान का फ़रेब है। वह दिन आना लज़िमी है जबकि झूठ और सच में तफ़रीक (विभेद) हो। जबकि अच्छे लोगों को उनकी अच्छाई का इनाम मिले और बुरे लोगों को उनकी बुराई की सजा दी जाए।

أَفَمَن زُيِّنَ لَهُ سُوؤُ عَمَلِهِ فَرَأَاهُ حَسَنًا ⑤ فَإِنَّ اللَّهَ يَخُصِّلُ ⑥ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي ⑦
مَن يَشَاءُ ⑧ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَتٍ ⑨ إِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِم بِمَا يَصْنَعُونَ ⑩

क्या ऐसा शख्स जिसे उसका बुरा अमल अच्छा करके दिखाया गया, फिर वह उसे अच्छा समझने लगे, पर अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है। पर उन पर अफ़सोस करके तुम अपने को हल्क़ान (व्यथित) न करो। अल्लाह को मालूम है जो कुछ वे करते हैं। (8)

अल्लाह तआला ने हर आदमी को यह सलाहियत दी है कि वह सोचे और हक़ और नाहक के दर्मियान तमीज कर सके। जो आदमी अपनी इस फ़ितरी सलाहियत को इस्तेमाल करता है वह हिदायत पाता है। और जो शख्स इस फ़ितरी सलाहियत को इस्तेमाल नहीं करता वह हिदायत नहीं पाता।

आदमी के सामने जब हक़ आए तो फौरन उसके ज़ेहन को झटका लगता है। उस वक़्त उसके लिए दो रास्ते होते हैं। अगर वह हक़ का एतराफ़ कर ले तो उसका ज़ेहन सही समत में चल पड़ता है। वह हक़ का मुसाफ़िर बन जाता है। इसके बरअक्स अगर ऐसा हो कि कोई मस्लेहत या कोई नफ़िसयाती पेचीदगी उसके सामने आए और वह उससे मुतअस्सिर होकर हक़ का एतराफ़ करने से रूक जाए तो उसका ज़ेहन अपने अदम एतराफ़ (अस्वीकार) को जाइज साबित करने के लिए बातें गढ़ना शुरू करता है। वह अपने बुरे अमल को अच्छा साबित करने की कोशिश करता है। यह एक ज़ेहनी बीमारी है। और जो लोग इस किस्म की ज़ेहनी बीमारी में मुक्किला हो जाएं वे कभी हक़ का एतराफ़ नहीं कर पाते। यहां तक कि इसी हाल में मर कर वे खुदा के यहां पहुंच जाते हैं। ताकि अपने किए का अंजाम पाएं।

وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا فُسْقَنُهُ إِلَىٰ بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذَٰلِكَ النُّشُورُ ۝ مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ فَلِلَّهِ الْعِزَّةُ جَمِيعًا إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۚ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَفُكْرُ أُولَٰئِكَ هُوَ يُبُورُ ۝

और अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। फिर वे बादल को उठाती हैं। फिर हम उसे एक मुर्दा देस की तरफ ले जाते हैं। पस हमने उससे उस जमीन को उसके मुर्दा होने के बाद फिर जिंदा कर दिया। इसी तरह होगा दुबारा जो उठना। जो शख्स इज्जत चाहता हो तो इज्जत तमामतर अल्लाह के लिए है। उसकी तरफ पावनीज (पावन) कलाम चढ़ता है और अमले सालेह (सत्कर्म) उसे ऊपर उठाता है। और जो लोग बुरी तदवीरें कर रहे हैं उनके लिए सख्त अजाब है। और उनकी तदवीरें नाबूद (विनष्ट) होकर रहेंगी। (9-10)

मौजूदा दुनिया आखिरत की तमसील है। बारिश एक मालूम वाकये की सूत में नामालूम वाकये को मुमसिल कर रही है। बारिश क्या है। बारिश पूरी कायनात के एक मुत्तहिदा अमल का नतीजा है। सूरज और हवा और समुद्र और कशिश और दूसरे बहुत से आलमी असबाब कामिल हमआहंगी (सामंजस्य) के साथ अमल करते हैं। इस तरह वह बारिश जुहूर में आती है जो खुफ्र जमीन पर जिंगी पैदा कर दे।

बारिश का यह अमल साबित करता है कि कायनात का नाजिम पूरी कायनात पर कामिल इख्तियार रखता है। वह एक वाकये को अपने मंसूबे के तहत जुहूर में लाता है। और फिर उसके मिटने के बाद उसे दुबारा जाहिर कर देता है, चाहे उसे दुबारा जाहिर करने के लिए पूरी कायनात को मुतहरिक (सक्रिय) करना पड़े।

मुर्दा जमीन को दुबारा सरसब्ज करना, और मुर्दा इंसान को दुबारा जिंदा करना, दोनों यकसां (समान) दर्जे के वाकयात हैं। फिर जब पहला वाकया मुमकिन साबित हो जाए तो इसके बाद उसी के मुमासिल (समरूप) दूसरे वाकये का मुमकिन होना अपने आप साबित हो जाता है।

मौजूदा दुनिया इस्तेहान की जगह है, इसलिए यहां इज्जत वक्ती तौर पर एक गैर मुस्तहिक को भी मिल जाती है। मगर आखिरत में सारी इज्जत उन लोगों का हिस्सा होगी जो वाकई इसका इस्तहकक (अधिकार) रखते हों। इस इस्तहकक का मेयार कलमा तथिया और अमले सालेह (नेक काम) है। यानी अल्लाह को इस तरह पाना कि वही आदमी की याद बन जाए जिसमें वह जिए। वही उसका अमल बन जाए जिसमें वह अपनी कुव्वतें सर्फ करें। जो लोग इस तरह अपनी जिंदगी की तामीर करें खुदा उनका मददगार बन जाता है और जिन

लोगों का खुदा मददगार बन जाए उन्हें जेर करने वाला कोई नहीं।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَمَا يُعْتَرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَلَا يُنْقَضُ مِنْ عُمرَةٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया। फिर पानी की बूंद से, फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया। और कोई औरत न हामिला (गर्भवती) होती है और न जन्म देती है मगर उसके इल्म से। और न कोई उम्र वाला बड़ी उम्र पाता है और न किसी की उम्र घटती है मगर वह एक किताब में दर्ज है। बेशक यह अल्लाह पर आसान है। (11)

पहला इंसान जमीनी अज्जा (तत्वों) से बनाया गया। फिर खुदा ने इंसान को एक बूंद में वशकल बीज रख दिया। फिर इंसानों को औरत और मर्द में तक्सीम करके उनके जोड़े से इंसानी नस्ल चलाई। यह वाकया खुदा की बेपनाह क़दरत को बताता है।

फिर एक बच्चा जब पेट में परवरिश पाना शुरू होता है तो वह पाता है कि पेट के अंदर वे तमाम मुवाफिक असबाब बगैर तलब के मौजूद हैं जो उसे नागुजीर (अपरिहाय) तौर पर मल्लूब थे। यह वाकया मजीद साबित करता है कि बच्चे को पैदा करने वाला बच्चे की जरूरतों को पहले से जानता था वरना वह पेशगी तौर पर इसका इतना मुकम्मल इतिजाम किस तरह करता।

यही मामला उम्र का है। कोई शख्स इस पर कादिर नहीं कि वह अपनी मर्जी के मुताबिक अपनी उम्र का तअय्युन कर सके। ऐसा मालूम होता है कि उम्र का मामला तमामतर किसी ख़ारजी (वाह्य) हस्ती के हाथ में है। वह जिसे चाहता है कम उम्र में उठा लेता है और जिसे चाहता है लम्बी उम्र दे देता है। इन सारे वाकयात में एक खुदा के सिवा किसी का कोई दखल नहीं। फिर कैसे दुरुस्त हो सकता है कि आदमी एक खुदा के सिवा किसी और से अदेशा रखे, वह किसी और से उम्मीदें कायम करे।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ ۚ هَٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ شَرَابُهُ وَهَٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۚ وَمَنْ كَلَّ تَأْكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُونَ حَبِيَّةً تَكْبَسُونَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلَاكَ فِيهِ مَوَاحِرَ لَتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝ يُؤَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهْرِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلًّا يَجْرِى لِإِجَالٍ مُّسَمًّى ۚ ذَٰلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ۝

إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دُعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ
يَكْفُرُونَ بِشِرْكِكُمْ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيرٍ ۝

और दोनों दरिया एकसां (समान) नहीं। यह मीठा है प्यास बुझाने वाला, पीने के लिए खुशगवार। और यह खारी कड्डा है। और तुम दोनों से ताजा गोشت खाते हो और जीनत की चीज निकालते हो जिसे पहनते हो। और तुम देखते हो जहाजों को कि वे उसमें फाड़ते हुए चलते हैं। ताकि तुम उसका फल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र अदा करो। वह दाखिल करता है रात को दिन में और वह दाखिल करता है दिन को रात में। और उसने सूरज और चांद को मुसख़्खर (सक्रिय) कर दिया है। हर एक चलता है एक मुकर्रर वक्त के लिए। यह अल्लाह ही तुम्हारा रब है, उसी के लिए बादशाही है। और उसके सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो वे खजूर की गुठली के एक छिलके के भी मालिक नहीं। अगर तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगे। और अगर वे सुनें तो वे तुम्हारी फरयादरसी नहीं कर सकते। और वे कियामत के दिन तुम्हारे शिर्क का इंकार करेंगे। और एक बाख़बर की तरह कोई तुम्हें नहीं बता सकता। (12-14)

जमीन पर पानी का अजीमुश्शन ज़ख़ीरा है, वसीअ (विस्तृत) समुद्रों में खारी पानी की सूरत में, और दरियाओं और झीलों और चशमों में मीठे पानी की सूरत में। यह पानी आदमी के लिए बेशुमार फायदों का जरिया है। वह पीने के लिए और आबपाशी (सिंचाई) के लिए इस्तेमाल होता है। इससे आबी जानवर हासिल होते हैं जो इंसान के लिए कीमती खुराक हैं। धरती के तीन चौथाई हिस्से में फैले हुए समुद्र गोया वसीअ आबी (जलीय) सड़कें हैं जिन्होंने सफर और बारबरदारी (यातायात) को बेहद आसान कर दिया है। समुद्रों से मोती और दूसरी कीमती चीजें हासिल होती हैं वगैरह।

फिर वसीअ ख़ला में खुदा ने सूरज और चांद को सक्रिय कर रखा है जिनमें बेशुमार फायदे हैं। उसने जमीन को सूरज के गिर्द अपने महवर (धुरी) पर कामिल हिसाब के साथ घुमा रखा है जिससे रात और दिन पैदा होते हैं। इस तरह के बेशुमार कायनाती इतिजामात हैं जो सिर्फ खुदा के कायम करता हैं। फिर खुदा के सिवा कौन है जो इंसान के जब्बए शुक्र का मुस्तहिक हो। अथाह ताकतें रखने वाला खुदा इंसान की हाजतें पूरी कर सकता है या वे मफ़रूजा (काल्पनिक) माबूद जो किसी विस्म का कोई इख़्तियार नहीं रखते।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ إِنْ يَشَاءْ يُدْهِمَكُمْ
وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝ وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝ وَلَا تَتَزَوَّرُوا زُرَّةَ وَزُرَّ
أُخْرَىٰ وَإِنْ تَدْعُ مُتَتَفِلَةً إِلَىٰ جُلُهَا لَا يُجِبْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۝

إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ
لِنَفْسِهِ ۖ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝

ऐ लोगो, तुम अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह तो बेनियाज (निस्पृह) है तारीफ वाला है। अगर वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और एक नई मख़्लूक ले आए। और यह अल्लाह के लिए कुछ मुश्किल नहीं। और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और अगर कोई भारी बोझ वाला अपना बोझ उठाने के लिए पुकारे तो उसमें से जरा भी न उठया जाएगा, अगरचे वह करीबी संबंधी क्यों न हो। तुम तो सिर्फ उन्हीं लोगों को डरा सकते हो जो बेदेखे अपने रब से डरते हैं और नमाज कायम करते हैं। और जो शख्स पाक होता है वह अपने लिए पाक होता है और अल्लाह ही की तरफ लौट कर जाना है। (15-18)

मौजूदा दुनिया में इंसान इतिहाई हद तक ग़ैर महफूज (Vulnerable) है। इंसान का सारा मामला फितरत के ख़स तवाजु (संतुलन) पर मुँसिर है। यह तवाजु बाकी न रहे तो एक लम्हे में इंसानी जिंदगी का ख़ासा हो जाए।

सूरज अगर अपने मौजूदा फ़सले को ख़त्म करके जमीन के करीब आ जाए तो अचानक तमाम इंसान जल भुनकर खाक हो जाएं। जमीन के अंदर इसका बड़ा हिस्सा बेहद गर्म माददे की सूरत में है। इस गर्म माददे की हरकत ऊपर की तरफ हो जाए तो सतह जमीन पर ऐसा जलजला पैदा हो कि तमाम आबादियां खंडहर बनकर रह जाएं। ऊपरी फज़ से हर वक्त शहाबी पत्थर (Meteors) बरसते रहते हैं। अगर मौजूदा इतिजाम बिगड़ जाए तो ये शहाबी पत्थर एक ऐसी संगबारी की सूरत इख़्तियार कर लें जिससे किसी हाल में भी बचाव मुमकिन न हो। इस तरह के बेशुमार हलाकतख़ेज इम्कानात हर वक्त इंसान को घेरे में लिए हुए हैं। हकीकत यह है कि इंसान एक ऐसी मख़्लूक है जो मुकम्मल तौर पर मोहताज है। इंसान को खुदा की जरूरत है न कि खुदा को इंसान की जरूरत।

कियामत का बोझ खुद अपने गुनाहों का बोझ होगा न कि ईंट पत्थर का बोझ। ईंट पत्थर के बोझ में एक शख्स किसी दूसरे शख्स का हिस्सेदार बन सकता है मगर खुद अपने बुरे अमल से जो रुसवाई और तकलीफ किसी शख्स को लाहिक हो वह इतिहाई जाती नौइयत का अजाब होता है। इसमें किसी दूसरे के लिए हिस्सेदार बनने का सवाल नहीं।

हकीकत निहयत वाजेह है मगर हकीकत को वही शख्स समझता है जो उसे समझना चाहे। जो शख्स इस बारे में संजीदा ही न हो कि हकीकत क्या है और बेहकीकत क्या, उसे कोई बात समझाई नहीं जा सकती।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۖ وَلَا الظُّلُمُتُ وَلَا النُّورُ ۖ وَلَا الظِّلُّ وَلَا

الْحُرُورُ ۖ وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْواتُ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ مَن يَشَاءُ وَمَا أَنتَ بِمُسْمِعٍ مَّن فِي الْقُبُورِ ۚ إِنَّ أَنتَ إِلَّا نَذِيرٌ ۚ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ۚ وَإِن يَكَذِّبُونَكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالْزُبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ۚ ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرٌ ۚ

1169

और अंधा और आंखों वाला बराबर नहीं। और न अंधेरा और न उजाला। और न साया और न धूप। और जिंदा और मुर्दा बराबर नहीं हो सकते। बेशक अल्लाह सुनाता है जिसे वह चाहता है। और तुम उन्हें सुनाने वाले नहीं बन सकते जो कब्रों में हैं। तुम तो बस एक खबरदार करने वाले हो। हमने तुम्हें हक (सत्य) के साथ भेजा है, खुशखबरी देने वाला और डराने वाला बनाकर। और कोई उम्मत ऐसी नहीं जिसमें कोई डराने वाला न आया हो। और अगर ये लोग तुम्हें झुठलाते हैं तो इनसे पहले जो लोग हुए हैं। उन्होंने भी झुठलाया। उनके पास उनके पैगम्बर खुले दलाइल और सहीफे (ग्रंथ) और रोशन किताब लेकर आए। फिर जिन लोगों ने न माना उन्हें मैंने पकड़ लिया, तो देखो कि कैसा हुआ उनके ऊपर मेरा अजाब। (19-26)

यह एक हकीकत है कि जो उम्मीद रोशनी से की जा सकती है वह तारीकी से नहीं की जा सकती। इसी तरह साये से जो चीज मिलेगी वह धूप से मिलने वाली नहीं। यही मामला इंसान का है। इंसानों में कुछ आंख वाले होते हैं और कुछ अंधे होते हैं। आंख वाला फौरन अपने रास्ते को देखकर उसे पहचान लेता है। मगर जो अंधा हो वह सिर्फ भटकता फिरेगा। उसे कभी अपने रास्ते की पहचान नहीं हो सकती।

इसी तरह अंदरूनी मअरफत के एतबार से भी दो किस्म के लोग होते हैं। एक जानदार और दूसरे बेजान। जानदार इंसान वह है जो बातों को उसकी गहराई के साथ देखता है। जो लफ्जी फेख का पर्दा फाड़कर मअानी का इदराक करता है। जो सतही पहलुओं से गुजर कर हकीकते वाक्ये को जानने की कोशिश करता है। जो चीजों को उनके जैहर के एतबार से परखता है न कि महज उनके जाहिर के एतबार से। जिसकी निगाह हमेशा अस्ल हकीकत पर रहती है न कि फैर मुतअल्लिक मूशिगाफिओं (कुतर्कों) पर। जो इसे सहन नहीं कर सकता कि सच्चाई को जान लेने के बाद वह अपने आपको उससे वाबस्ता न करे। यही जानदार लोग हैं। और यही वे लोग हैं जिन्हें मौजूदा दुनिया में हक को कुबूल करने की तौफीक मिलती है। और जो लोग इसके बरअक्स सिफात रखते हों वे मुर्दा इंसान हैं। वे इस्तेहान की इस दुनिया में कभी कुबूले हक की तौफीक नहीं पाते। वे हक की दावत के मुक़ाबले में अंधे बने रहते हैं। यहां तक कि मर कर खुदा के यहां चले जाते हैं ताकि अपने अंधेपन का अंजाम भुगतें।

الْمَرْتَرَانِ إِنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بَيَضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ۚ وَمِنَ النَّاسِ وَالْدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَلِكَ ۚ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ۝۲۸

क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उससे मुखलिफ सों के फल पैदा कर दिए। और पहाड़ों में भी सफेद और सुर्ख मुखलिफ रंगों के टुकड़े हैं और गहरे स्याह भी। और इसी तरह इंसानों और जानवरों और चौपायों में भी मुखलिफ रंग के हैं। अल्लाह से उसके बंदों में से सिर्फ वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं। बेशक अल्लाह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। (27-28)

बादल से एक ही पानी बरसता है मगर उससे मुखलिफ किस्म की चीजें उगती हैं। अच्छे दरख्त भी और झाड़ झंकाड़ भी। इसी तरह एक ही माददा है जो पहाड़ों की सूरत में जमा हुआ होता है मगर उनमें कुछ सुर्ख व सफेद हैं और कुछ बिल्कुल काले। इसी तरह जानदार भी एक गिजा खाते हैं। मगर उनमें से कोई इंसान के लिए कारआमद है और कोई बेकार।

इससे मालूम हुआ कि फैज (प्रदत्तता) चाहे आम हो मगर उससे फायदा हर एक को उसकी अपनी इस्तेदाद (सामर्थ्य) के मुताबिक पहुंचता है। यही मामला इंसान का भी है। हक की दावत की सूरत में खुदा की जो रहमत बिखेरी जाती है वह अगरचे बजाते खुद एक होती है मगर मुखलिफ इंसान अपने अंदरूनी मिजज के मुताबिक उससे मुखलिफ किस्म का तास्सुर कुबूल करते हैं। कोई शख्स हक की दावत में अपनी रूह की गिजा पा लेता है। वह फौरन उसे कुबूल करके अपने आपको उससे वाबस्ता कर देता है और किसी की नफिसयात उसके लिए हक को मानने में रुकावट बन जाती है। वह उससे बिदकता है, यहां तक कि उसका मुखलिफ बनकर खड़ा हो जाता है।

हक की दावत जिस शख्स के लिए उसके दिल की आवाज साबित हो वही इल्म वाला इंसान है। उसके अंदर फितरत की खुदाई रोशनी जिंदा थी। इसलिए उसने हक के जाहिर होते ही उसे पहचान लिया। इसके मुक़ाबले में वे लोग जाहिल हैं जो अपनी फितरत की रोशनी पर पर्दा डाले हुए हों और जब हक उनके सामने बेनकाब हो तो उसे पहचानने में नाकाम रहें।

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّن تَبُورَ ۚ

فَضْلِهِ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝

जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज कायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से छुपे और खुले खर्च करते हैं, वे ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी मांद न होगी ताकि अल्लाह उन्हें उनका पूरा अज्र दे। और उनके लिए अपने फल से और ज्यादा कर दे। बेशक वह बख़्शने वाला है, कद्रदा है। और हमने तुम्हारी तरफ जो किताब 'वही' (प्रकाशना) की है वह हक है, उसकी तस्दीक करने वाली है जो इसके पहले से मौजूद है। बेशक अल्लाह अपने बंदों की ख़बर रखने वाला है, देखने वाला है। (29-31)

इल्म वाला वह है जो मअरफत (अन्तर्ज्ञान) वाला हो। और जिस शख्स को मअरफत हासिल हो जाए वह खुदा की किताब को अपना फिक्री रहबर बना लेता है। वह अल्लाह का इबादतगुजार बंदा बन जाता है। इंसानों के हक में वह इतना महरबान हो जाता है कि अपनी महनत की कमाई में से उनके लिए भी हिस्सा लगाता है। उसके अंदर यह हौसला पैदा हो जाता है कि हमह-तन (पूर्णतः) अपने आपको खुदा के काम में लगा दे और इस पर कानेअ (संतुष्ट) रहे कि उसका इनाम उसे आखिरत में दिया जाएगा।

कुरआन की सदाकत का एक सबूत यह भी है कि वह ऐन उन पेशीनगोइयों के मुताबिक है जो पिछली किताबों में इससे पहले आ चुकी थीं। अगर कोई शख्स संजीदा हो तो यही वाक्या उसके लिए कुरआन पर ईमान लाने के लिए काफी हो जाए।

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۖ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ ۖ يُؤْتِي بِلَدْنِ اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝ جَاءَتْ عَدْنٌ يَدَّ خُلُوقَهَا يُحَاكُونَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۝ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ ۖ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝ الَّذِي أَحْكَمَ الْأُمُومَةَ مِنْ فَضْلِهِ ۖ لَا يَسْتَنَافِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَسْتَنَافِيهَا

لُغُوبٌ ۝

फिर हमने किताब का वारिस बनाया उन लोगों को जिन्हें हमने अपने बंदों में से चुन लिया। पस उनमें से कुछ अपनी जानों पर जुल्म करने वाले हैं और उनमें से कुछ बीच की चाल पर हैं। और उनमें से कुछ अल्लाह की तौफीक से भलाइयों में सबकत

(अग्रसरता) करने वाले हैं। यही सबसे बड़ा फल है। हमेशा रहने वाले बाग हैं जिनमें ये लोग दाखिल होंगे, वहां उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे, और वहां उनका लिबास रेशम होगा। और वे कहेंगे, शुक्र है अल्लाह का जिसने हमसे ग़म को दूर किया। बेशक हमारा ख ब माफ करने वाला, कद्र करने वाला है। जिसने हमें अपने फल से आबाद रहने के घर में उतारा, इसमें हमें न कोई मशक्कत पहुँचेगी और न कभी थकान लाहिक होगी। (32-35)

हज़रत याकूब हज़रत इब्रहीम के पौते थे। हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम से लेकर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम तक तमाम पैग़म्बर बनी इस्राईल की नस्ल में पैदा होते रहे। इस तरह तकरीबन दो हजार साल तक पैग़म्बरी का सिलसिला यहूद की नस्ल में जारी रहा। मगर बाद के दौर में यहूद इस काबिल न रहे कि वे किताबे इलाही के हामिल (धारक) बन सकें। चुनांचे दूसरी जिंदा कौम (बनू इस्माईल) को किताबे इलाही का हामिल बनने के लिए मुंतख़ब किया गया। बनू इस्माईल में पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश इसी इलाही फैसले की तामील थी। इस आयत में 'मुंतख़ब बंदों' से मुराद यही बनू इस्माईल हैं।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब बनू इस्माईल के सामने कुरआन पेश किया तो उनमें तीन किस्म के लोग निकले। एक वे जो उसके ख़िलाफ़ मुख़ालिफ़ बनकर खड़े हो गए। दूसरे वे जिन्होंने दर्मियानी राह इख़्तियार की। तीसरा गिरोह आगे बढ़ने वालों का था। यही वे लोग हैं जिन्होंने पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का साथ देकर इस्लाम की अजीम तारीख़ बनाई।

कुरआन का साथ देने के लिए उन्हें हर किस्म की राहत से महरूम हो जाना पड़ा। इसके नतीजे में उनकी जिंदगी अमलन सब्र और मशक्कत की जिंदगी बन गई। इस कुर्बानी की कीमत उन्हें आखिरत में इस तरह मिलेगी कि खुदा उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जहां वे हमेशा के लिए ग़म और तकलीफ़ से महफूज हो जाएंगे।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فِيمَوْتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ ۖ مِنْ عَذَابِهَا كَذَلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ۖ وَهُمْ يَصْطَرِّخُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۖ أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَنْ تَذَكَّرُو ۖ جَاءَكُمْ الْإِنذِيرُ ۖ فَذُقُوا فَلِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ۝

और जिन्होंने इंकार किया उनके लिए जहन्नम की आग है, न उनकी कज़ा! आएगी कि वे मर जाएं और न दोख का अजाब ही उनसे हल्का किया जाएगा। हम हर मुकिर को ऐसी ही सज़ा देते हैं। और वे लोग उसमें चिल्लाएंगे। ऐ हमारे ख हमें निकाल ले।

हम नेक अमल करेंगे, उससे मुसल्लिफ जो हम किया करते थे। क्या हमने तुम्हें इतनी उग्र न दी कि जिसे समझना होता वह समझ सकता। और तुम्हारे पास डराने वाला आया। अब चखो कि जालिमों का कोई मददगार नहीं। (36-37)

दुनिया में हक का इंकार करने वाले आखिरत में हक का मुकम्मल एतराफ करेंगे। मगर यह एतराफ उनके कुछ काम न आएगा। क्योंकि आखिरत का एतराफ मजबूर इंसान का एतराफ है। और अल्लाह तआला को जो एतराफ मलूब है वह इस्त्रियारी एतराफ है न कि जवरी एतराफ।

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ عَلِيمُ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلْقًا فِي الْأَرْضِ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا مَقْتًا ۝ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ۝

अल्लाह आसमानों और जमीन के गैब (अप्रकट) को जानने वाला है। वेशक वह दिल की बातों से भी बाख़बर है। वही है जिसने तुम्हें जमीन में आवाद किया। तो जो शख्स इंकार करेगा उसका इंकार उसी पर पड़ेगा। और मुंकिरों के लिए उनका इंकार, उनके ख के नजदीक, नाराजी ही बढ़ने का सबब होता है। और मुंकिरों के लिए उनका इंकार ख़सारे (घाटे) ही में इजाफ़ करेगा। (38-39)

इस आयत में ख़लीफ़ से मुराद पिछली कौमों का ख़लीफ़ बनना है। 'तुम्हें जमीन में ख़लीफ़ बनाया' का मतलब है पिछली कौमों के गुजरने के बाद तुम्हें उसकी जगह जमीन में आवाद किया। अल्लाह तआला का यह तरीका है कि वह एक कौम को जमीन में बसने और अमल करने का मौका देता है। फिर जब वह कौम अपनी नाअहली साबित कर देती है तो उसे हटाकर दूसरी कौम को उसकी जगह ले आता है। इस तरह जमीन पर एक के बाद एक कौम की आवादकारी का सिलसिला जारी रहेगा। यहां तक कि कियामत आ जाए।

मौजूदा जमाने में फ़ितरत के जो क़वानीन (सिद्धांत) दरयाफ़्त हुए हैं वे बताते हैं कि यहां इसका इम्कान है कि अंधेरे में किसी चीज का फोटो लिया जाए। बजाहिर न सुनाई देने वाली आवाज को मशीन की मदद से क़बिले समाअत (सुनने योग्य) बनाया जा सके। तख़लीक में इस तरह के इम्कानात ख़ालिक की क़ुदरत का तआरुफ़ हैं। इससे मालूम होता है कि इस कायनात का ख़ालिक एक ऐसी हस्ती है जो ग़ैब को जाने और दिल के अंदर छुपी हुई बात को सुन सके। गोया इंसान का मामला एक ऐसे अलीम और कदीर ख़ुदा से है जिससे न किसी जुर्म को छुपाया जा सकता और न यही मुमकिन है कि उसके फैसले को बदलवाया जा सके।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَكُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ

الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ أَمْ أُنْتَبِهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ إِنَّ يَبْعُدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا ۖ أَغُرُّوًّا ۝ إِنَّ اللَّهَ يُمَسِّكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَا ۙ أَهْلَكْنَا مِنْكُمْ أَحَدًا مِّنْ بَعْدِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝

कहो, जरा तुम देखो अपने उन शरीकों को जिन्हें तुम ख़ुदा के सिवा पुकारते हो। मुझे दिखाओ कि उन्होंने जमीन में से क्या बनाया है। या उनकी आसमानों में कोई हिस्सेदारी है। या हमने उन्हें कोई किताब दी है तो वे उसकी किसी दलील पर हैं। बल्कि ये जालिम एक दूसरे से सिर्फ धोखे की बातों का वादा कर रहे हैं। वेशक अल्लाह ही आसमानों और जमीनों को थामे हुए है कि वे टल न जाएं। और अगर वे टल जाएं तो उसके सिवा कोई और उन्हें थाम नहीं सकता। वेशक वह तहम्मूल (उदारता) वाला है, बख़्शने वाला है। (40-41)

कायनात की तख़लीक और अथाह ख़ला में वेशुमार अजरामे समावी (आकाशीय रचनाओं) का निजाम हबतनाक हद तक अजीम है। यह बिल्कुल नाकबिले कयास है कि इस अजीम कारनामे को जुर्ह (आंशिक) या कुल्ली तौर पर उन हस्तियों में से किसी की तरफ मंस्ब किया जा सके जिन्हें लोग बतौर ख़ुद माबूद बनाकर पूजते हैं। इसी तरह इसका भी कोई सुबूत नहीं कि ख़ुदा ने ख़ुद यह ख़बर दी हो कि कोई और है जो उसके साथ ख़ुदाई में शरीक है।

हकीकत यह है कि ग़ैर अल्लाह की परस्तिश का सारा मामला सिर्फ फ़ेब पर क़यम है। इस किस्म का फ़ेब उसी क़त्त तक चलेगा जब तक क़ियामत न आए। क़ियामत के आते ही उनका इस तरह ख़ात्मा हो जाएगा जैसे कि उनका कोई वजूद ही न था।

وَأَقْسُوا إِلَى اللَّهِ جَهْدَ أَيِّبَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَّيَكُونُنَّ أَهْدَىٰ مِنْ أَحَدَى الْأُمَمِ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝ اسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرُ السَّيِّئِ لَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئِ إِلَّا يَأْهُلُهَا ۚ فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتِ الْأَوَّلِينَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ۚ أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ۝

और उन्होंने अल्लाह की ताकीदी कसमें खाई थीं कि अगर उनके पास कोई डराने वाला आया तो वे हर एक उम्मत से ज्यादा हिदायत कुवूल करने वाले होंगे। फिर जब उनके पास एक डरने वाला आया तो सिर्फ उनकी बेजारी (अरुचि) ही को तस्क्मी हुई जमीन में अपने को बड़ा समझने की वजह से, और उनकी बुरी तदबीरों को। और बुरी तदबीरों का बवाल तो बुरी तदबीर करने वालों ही पर पड़ता है। तो क्या ये उसी दस्तूर के मुंतजिर हैं जो अगले लोगों के बारे में जाहिर हुआ। पस तुम खुदा के दस्तूर में न कोई तब्दीली पाओगे और न खुदा की दस्तूर को टलता हुआ पाओगे। क्या ये लोग जमीन में चले फिरे नहीं कि वे देखते कि कैसा हुआ अंजाम उन लोगों का जो इनसे पहले गुजरे हैं, और वे कुव्वत (शक्ति) में इनसे बड़े हुए थे। और खुदा ऐसा नहीं कि कोई चीज उसे आजिज (निर्बल) कर दे, न आसमानों में और न जमीन में। बेशक वह इल्म वाला है, कुदरत वाला है। (42-44)

अरब के लोग जब सुनते कि यहूद ने और दूसरी कौमों ने अपने नवियों की नाफरमानी की तो वे पुरजोश तौर पर कहते कि अगर ऐसा हो कि हमारे दर्मियान कोई नबी आए तो हम उसे पूरी तरह मानें और उसकी इताअत करें। मगर जब उनके दर्मियान एक पैगम्बर आया तो वे उसके मुखालिफ बन गए।

यह नपिसयात किसी न किसी शक्ल में तमाम लोगों में पाई जाती है। इस दुनिया में हर आदमी का यह हाल है कि वह अपने को हकपसंद के रूप में जाहिर करता है। वह कहता है कि जब भी कोई सही बात उसके सामने आएगी तो वह जरूर उसे मान लेगा। मगर जब हक खुले-खुले दलाइल के साथ आता है तो वह उसे नजरअंदाज कर देता है। यहाँ तक कि उसका मुखालिफ बन जाता है।

इसकी वजह यह है कि इंकारे हक किसी खास कौम की खुसूसियत नहीं। वह इंसानी नपिसयात की आम खुसूसियत है। हक को मानना अक्सर हालात में अपनी बड़ाई को ख़त्म करने के हममअना होता है। आदमी अपनी बड़ाई को खोना नहीं चाहता। इसलिए वह हक को मानने के लिए भी तैयार नहीं होता। वह भूल जाता है कि हक का इंकार जरूर उसके बस में है, मगर हक के इंकार के अंजाम से अपने आपको बचाना हरगिज उसके बस में नहीं।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا تَرَكَ عَلَى ظُهُرِهِمْ مِنْ دَابَّةٍ وَ لَكِنْ يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۖ وَإِذَا بَاجَأَ آبَاؤَهُمْ فَأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ كَانِ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ۝

और अगर अल्लाह लोगों के आमाल पर उन्हें पकड़ता तो जमीन पर वह एक जानदार को भी न छोड़ता। लेकिन वह उन्हें एक मुकर्रर मुद्दत तक मोहलत देता है। फिर जब उनकी मुद्दत पूरी हो जाएगी तो अल्लाह अपने बंदों को खुद देखने वाला है। (45)

इंसान को दुनिया में अमल की आजादी दी गई थी। मगर उसने उसका ग़लत इस्तेमाल

किया। यह ग़लतियां इतनी ज्यादा हैं कि अगर इंसान को उसकी ग़लतकारियों पर फौरन पकड़ा जाने लगे तो जमीन में इंसानी नस्ल का ख़ात्मा हो जाए। मगर इंसान की आजादी बराए इस्तेहान है। और इस इस्तेहान की एक मुद्दत मुकर्रर है। एक फर्द (व्यक्ति) की मुद्दत मौत तक है और मज्मूई तौर पर पूरी इंसानियत की मुद्दत कियामत तक। इसी बिना पर इंसान की नस्ल जमीन पर बाधे है। ताहम जिस तरह यह एक हक्कीकत है कि अल्लाह तआला मोहलत की मुकर्रर मुद्दत से पहले किसी को नहीं पकड़ता। इसी तरह यह भी एक संगीन हक्कीकत है कि मोहलत की मुकर्रर मुद्दत गुजर जाने के बाद वह जरूर इंसान को पकड़ेंगा। कोई शख्स उसकी पकड़ से बचने वाला नहीं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

يَسَّ ۝ وَالْقُرْآنَ الْحَكِيمَ ۝ إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝ تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝ لِنُنْذِرَ قَوْمًا مَّا أُنْذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ۝

आयतें-83

सूरह-36. या० सीन०

रुकूअ-5

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। या० सीन०। कसम है बाहिक्मत (तत्वज्ञानपूर्ण) कुरआन की। बेशक तुम रसूलों में से हो। निहायत सीधे रास्ते पर। यह खुदाए अजीज (प्रभुत्वशाली) व रहीम (दयावान) की तरफ से उतारा गया है। ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके अगलों को नहीं डराया गया। पस वे बेख़बर हैं। (1-6)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खुदा के पैगम्बर होने का सुबूत खुद वह कुरआन हकीम है जिसे आपने यह कहकर पेश किया कि यह मेरे ऊपर खुदा की तरफ से उतरा है। कुरआन के हकीम होने का मतलब यह है कि वह सिराते मुस्तकीम का दाओ है। यानी वह उस रास्ते की तरफ रहनुमाई कर रहा है जो बिल्कुल सीधा और सच्चा है। इसकी कोई बात अक्ल व फितरत से टकराने वाली नहीं। कुरआन के नुज़ूल (अवतरण) को अब ढ़ेड़ हज़ार साल हो रहे हैं। मगर आज तक इसमें किसी ख़िलाफे अक्ल या ख़िलाफे फितरत बात की निशानदेही न की जा सकी। कुरआन की यही इम्तियाजी सिफ़त (विशिष्टता) उससे किताबे इलाही होने की सबसे बड़ी दलील है।

‘ताकि तुम कौम को डरा दो’ में कौम से मुराद बनू इस्माईल हैं। हर नबी अव्वलन अपनी

कौम के लिए आता है। इसी तरह पैगम्बरे इस्लाम की अव्वलीन मुखातब भी उनकी अपनी कौम थी। मगर चूँकि आपके बाद नुबुव्वत खत्म हो गई इसलिए अब कियामत तक के लिए आपकी नुबुव्वत का तसलसुल जारी है। फर्क यह है कि बनू इस्माईल पर आपने बराहेरास्त हुज्जत तमाम (आख्यान की पूर्ति) की और आपके बाद मुख्तलिफ कौमों पर दावत और इतमामेहुज्जत का काम आप की नियाबत (प्रतिनिधित्व) में आप की उम्मत को अंजाम देना है।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ① إِنَّا جَعَلْنَا فِي
أَعْيُنِهِمْ أَغْلًا ۖ فَمَهْمُ مُقْمَحُونَ ② وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ
أَيْدِيهِمْ سَدًّا ۖ وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا ۖ فَأَعْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ③
وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ④ إِنَّمَا تُنذِرُ
مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنََ الْغَيْبِ ۖ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ ⑤

उनमें से अक्सर लोगों पर बात साबित हो चुकी है तो वे ईमान नहीं लाएंगे। हमने उनकी गर्दनो में तौक डाल दिए हैं सो वे ठोडियों तक हैं, पस उनके सिर ऊंचे हो रहे हैं। और हमने एक आड़ उनके सामने कर दी है और एक आड़ उनके पीछे कर दी। फिर हमने उन्हें ढांक दिया तो उन्हें दिखाई नहीं देता। और उनके लिए एकसां (समान) है, तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वे ईमान नहीं लाएंगे। तुम तो सिर्फ उस शख्स को डरा सकते हो जो नसीहत पर चले और खुदा से डरे, बिना देखे। तो ऐसे शख्स को माफी की और बाइज्जत सवाब की बशारत (शुभ सूचना) दे दो। (7-11)

आदमी की गर्दन में तौक भरा हुआ हो तो उसका सिर उठा रह जाएगा और वह नीचे की चीज को न देख सकेगा। यह उन मगरूर (अभिमानी) लोगों की तस्वीर है जो अपनी बड़ाई में इतना गुम हों कि अपने से बाहर की कोई हकीकत उन्हें दिखाई ही न दे। ऐसे लोगों को कभी हक के एतराफ की तैमिक हसिल नहीं होती।

हिदायत पाने के लिए सबसे ज्यादा अहमियत इस बात की है कि आदमी के अंदर एतराफ का माद्दा हो, उसे खुदा के सामने हाजिरी का खटका लगा हुआ हो। वह कुल्ली सदक्कत से कम किसी चीज पर राजी न हो सके। यही वे लोग हैं जो हक के जाहिर होते ही उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं और इसके नतीजे में अल्लाह का सबसे बड़ा इनाम पाते हैं।

إِنَّا نَحْنُ الْحَقُّ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ ۖ وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ
فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ⑥ وَاصْرَبْ لَهُمْ مَثَلًا ۖ صَحَبَ الْقُرْيَينِ ۖ إِذْ جَاءَهُمَا

الْمُرْسَلُونَ

यकीनन हम मुद्दों को जिंदा करेंगे। और हम लिख रहे हैं जो उन्होंने आगे भेजा और जो उन्होंने पीछे छोड़ा। और हर चीज हमने दर्ज कर ली है एक खुली किताब में और उन्हें बस्ती वालों की मिसाल सुनाओ, जबकि उसमें रसूल आए। (12-13)

जदीद तहकीकत ने बताया कि इंसान अपने मुँह से जो आवाज निकालता है वह नकूल की सूत में फज में महफूज हो जाती है। इसी तरह इंसान जो अमल करता है उसका अक्स (बिंब) भी हरारती (ताप) लहरों की शक्ल में मुस्तकिल तौर पर दुनिया में मौजूद हो जाता है। गोया इस दुनिया में हर आदमी की वीडियो रिकॉर्डिंग हो रही है। यह तजर्बा बताता है कि इस दुनिया में यह मुमकिन है कि इंसान के इल्म के बगैर और उसके इरादे से आजाद उसका कैल और अमल मुकम्मल तौर पर महफूज किया जा रहा हो और किसी भी लम्हा उसे दोहराया जा सके।

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا ۖ فَعَزَّزْنَا إِثْمَالَهُمَا
فُرْسَلُونَ ⑦ قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا ۖ وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ ۖ إِنْ
أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُونَ ⑧ قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ ۖ إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ⑨ وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا
الْبَلَاةُ الْمُبِينُ ⑩ قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۖ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ
مِنَّا عَذَابُ السَّعِيرِ ⑪ قَالُوا طَائِدُكُمْ مَعَكُمْ ۖ إِنْ دُرِّرْتُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ
مُسرِفُونَ ⑫

जबकि हमने उनके पास दो रसूल भेजे तो उन्होंने दोनों को झुठलाया, फिर हमने तीसरे से उनकी ताईद की, उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं। लोगों ने कहा कि तुम तो हमारे ही जैसे बशर (इंसान) हो और रहमान ने कोई चीज नहीं उतारी है, तुम महज झूठ बोलते हो। उन्होंने कहा कि हमारा रब जानता है कि हम बेशक तुम्हारे पास भेजे गए हैं। और हमारे जिम्मे तो सिर्फ वाजह तौर पर पहुँचा देना है। लोगों ने कहा कि हम तो तुम्हें मनहूस समझते हैं, अगर तुम लोग बाज न आए तो हम तुम्हें संगसार करेंगे और तुम्हें हमारी तरफ से सख्त तकलीफ पहुँचेगी। उन्होंने कहा कि तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है, क्या इतनी बात पर कि तुम्हें नसीहत की गई। बल्कि तुम हद से निकल जाने वाले लोग हो। (14-19)

बस्ती से मुराद गालिबन मिस्र की बस्ती है। यहाँ बयकवक्त दो पैगम्बर (हजरत मूसा

और हजरत हारून) लोगों को खबरदार करने के लिए भेजे गए। मगर उन्होंने इंकार किया। फिर उनकी अपनी कौम से तीसरा शख्स उठा और उसने दोनों रसूलों की तार्द की। उस तीसरे शख्स से मुराद गालिबन वही मर्दे मोमिन है जिसका जिक्र कुरआन में सूरह मोमिन में तफसील से आया है। (मोमिन : 28)

हर जमाने में आदमी के लिए सबसे ज्यादा तल्ख चीज यह रही है कि उसे ऐसी नसीहत की जाए जो उसके मिजाज के खिलाफ हो। ऐसी बात सुनकर आदमी फौरन बिगड़ जाता है। नतीजा यह होता है कि वह मोअतदिल (सहज) जेहन के साथ उस पर गौर नहीं कर पाता। वह उसे दलील के एतबार से नहीं जांचता बल्कि जिद और नफरत के तहत उसके खिलाफ गौर मुतअल्लिक बातें कहता रहता है। किसी बात को दलील से जांचना हद के अंदर रहना है और बेदलील मुखालिफत करना हद से बाहर निकल जाना।

وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَى ۖ قَالَ يَاقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ۖ
اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْئَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُهْتَدُونَ ۖ

और शहर के दूर मकाम से एक शख्स दौड़ता हुआ आया। उसने कहा, ऐ मेरी कौम रसूलों की पैरवी करो। उन लोगों की पैरवी करो जो तुमसे कोई बदला नहीं मांगते। और वे ठीक रास्ते पर हैं। (20-21)

दोनों रसूल उस वक्त बजाहिर बिल्कुल बेजोर थे। मगर तीसरे शख्स ने अपने आपको उन्हीं के साथ वाबस्ता किया। हक और नाहक के मुक़बले में आदमी को हक का साथ देना पड़ता है, चाहे वह ताकतवर के मुक़बले में कमजोर का साथ देने के हममअना क्यों न हो।

तीसरे शख्स ने कौम के लोगों से कहा कि ये रसूल तुमसे अज़्र नहीं मांगते, और वे हिदायतयाब भी हैं। इससे मालूम हुआ कि सिर्फ बेगरजी आदमी के हिदायतयाब होने की काफी दलील नहीं है। बेगरज और नेक नीयत होने के बावजूद आदमी की बात दलील के मेयार पर परखी जाएगी और वह उसी वक्त सही समझी जाएगी जबकि वह दलील के मेयार पर पूरी उतरे।

وَمَا لِيَ لَا أَعْبُدَ الَّذِي فَطَرَنِي وَالَّذِي تُرْجِعُونَهُ ۖ إِنِّي أَخَذْتُ مِنْ دُونِهِ إِلَهًا ۖ
إِنِّي إِذَا يُدْرِكُنِي الرَّحْمَنُ بِضُرٍّ لَا تُغْنِي عَنِّي شَفَاعَةُهُمْ شَيْئًا ۖ وَكَأَيُّتَدُونَ ۖ
لَغَيِّ ضَلِيلٍ مُّيْمِنٍ ۖ إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمِعُونِ ۖ قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۗ
قَالَ يَلَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُونَ ۖ بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ۖ

और मैं क्यों न इबादत करूं उस जात की जिसने मुझे पैदा किया और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। क्या मैं उसके सिवा दूसरों को माबूद (पूज्य) बनाऊं। अगर रहमान मुझे कोई तकलीफ पहुंचाना चाहे तो उनकी सिफारिश मेरे कुछ काम न आएगी और

न वे मुझे छुड़ा सकेंगे। वेशक उस वक्त मैं एक खुली हुई गुमराही में हूंगा। मैं तुम्हारे खब पर ईमान लाया तो तुम भी मेरी बात सुन लो। इशार्द हुआ कि जन्नत में दाखिल हो जाओ। उसने कहा काश मेरी कौम जानती कि मेरे खब ने मुझे बख़्श दिया और मुझे इज्जतदारों में शामिल कर दिया। (22-27)

मर्दे हक ने अपनी जिंदगी ख़तरे में डाल कर पैगम्बरों की दावत की तार्द की थी। उसका यह अमल इतना कीमती था कि इसके बाद उसे जन्नत में दाखिल कर दिया गया। जन्नत में दाखिल होने के बाद वह अपनी जालिम कौम को बुरा नहीं कहता। बल्कि यह तमन्ना करता कि काश वे लोग मेरा अंजाम जानते तो वे हक के मुख़ालिफ न बनते। यह सच्चे मोमिन की तस्वीर है। मोमिन हर हाल में लोगों का ख़ैरख़्वाह (हितैषी) होता है, चाहे लोग उसके साथ कैसा ही जालिमाना सुलूक करें।

وَمَا أَرْزَلْنَا عَلَى قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَاءِ ۚ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ۖ
إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خَالِدُونَ ۖ
يَحْسُرُهُمْ عَلَى الْعِبَادَةِ ۖ مَا يَأْتِيهِمْ مِّن رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۖ
أَلَمْ يَرَوْا كَمَا أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ۖ
وَإِنْ كُلُّ لُطَاغِيمَةٍ لَّدُنَا تُخْضَرُونَ ۖ

और इसके बाद उसकी कौम पर हमने आसमान से कोई फौज नहीं उतारी, और हम फौज नहीं उतारा करते। बस एक धमाका हुआ तो यकायक वे सब बुझकर रह गए। अपत्तोस है बंदों के ऊपर, जो रसूल भी उनके पास आया वे उसका मज़ाक ही उड़ते रहे। क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी ही कौमों हलाक कर दीं। अब वे उनकी तरफ वापस आने वाली नहीं। और उनमें कोई ऐसा नहीं जो इकट्ठा होकर हमारे पास हाजिर न किया जाए। (28-32)

अल्लाह तआला की तरफ से जब किसी कौम की हलाकत का फैसला किया जाता है तो इतना ही काफी होता है कि जमीनी असबाब को उसके खिलाफ कर दिया जाए। सारी आसमानी ताकतों को उसके खिलाफ इस्तेमाल करने की जरूरत पेश नहीं आती।

पैगम्बरों का मज़ाक क्यों उड़िया गया, इसका जवाब खुद लफ्ज़ 'इस्तहजा' (मज़ाक उड़ाना) में मौजूद है। इस्तहजा करने वाले हमेशा उस इंसान का इस्तहजा करते हैं जो उन्हें हँक (तुच्छ) दिखाई देता हो। पैगम्बरों के साथ यही मामला पेश आया। पैगम्बर की शख्सियत को उनके हमजमाना (समकालीन) लोगों ने इससे कम समझा कि उनकी जबान से खुदाई सदाकत का एलान हो। इसलिए उन्होंने पैगम्बरों को मानने से इंकार कर दिया।

وَإِنَّ لَهُمُ الْأَرْضَ الْمَيْتَةَ أَحْيَيْبَهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَنُفَّيَا كُلُونِ ۖ وَ
 جَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِنْ نَخِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ۖ لِيَأْكُلُوا
 مِنْ ثَمَرِهِمْ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۚ سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ
 الْأَرْضَ وَاجْعَلْ لَهَا ثَابِتًا الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ۝

और एक निशानी उनके लिए मुदा जमीन है। उसे हमने जिंदा किया और उससे हमने गल्ला निकाला। पस वे उसमें से खाते हैं। और उसमें हमने खजूर के और अंगूर के बाग बनाए। और उसमें हमने चशमे (स्रोत) जारी किए। ताकि लोग उसके फल खाएं। और उसे उनके हाथों ने नहीं बनाया। तो क्या वे शुक्र नहीं करते। पाक है वह जात जिसने सब चीज के जोड़े बनाए, उनमें से भी जिन्हें जमीन उगाती है और खुद उनके अंदर से भी। और उनमें से भी जिन्हें वे नहीं जानते। (33-36)

जमीन की सतह पर जरखेज (उपजाऊ) मिट्टी का जमा होना, उसके लिए पानी और धूप और हवा का इतिजाम, फिर बीज के अंदर नशो व नुमा (विकास) की सलाहियत, इस तरह के बेशुमार मालूम और गैर मालूम असबाब हैं जो बिलआखिर गल्ला और फल और सब्जी की शकल इख्तियार करके इंसान की खुराक बनते हैं। यह पूरा निजाम इंसान के बनाए बगैर बना है। इसे वजूद में लाना और इसे कायम रखना सरासर खुदा की रहमत से होता है। अगर इंसान इस पर सोचे तो वह शुक्र के जज्बे से भर जाए।

फिर इसी निजाम में एक अजीमतर हकीकत की निशानी भी मौजूद है। मुतालअ बताता है कि दुनिया की तमाम चीजों में जोड़े का उसूल कारफरमा है। फिर जब कायनात का निजाम इस उसूल पर कायम है कि यहां तमाम चीजें अपने जोड़े के साथ मिलकर अपनी तक्मील (पूर्णता) करें तो मौजूदा दुनिया का भी एक जोड़ा होना चाहिए जिसके मिलने से उसकी तक्मील होती हो। इस तरह मौजूदा दुनिया में जोड़े का निजाम आखिरत के इस्कान को साबित कर देता है।

وَإِنَّ لَهُمُ اللَّيْلَ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ ۚ وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا ۚ
 ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۚ وَالْقَمَرَ قَدَرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ
 الْقَدِيمِ ۚ لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ ۚ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ
 كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝

और एक निशानी उनके लिए रात है, हम उससे दिन को खींच लेते हैं तो वे अंधेरे में

रह जाते हैं। और सूरज, वह अपनी ठहरी हुई राह पर चलता रहता है। यह अजीज (प्रभुत्वशाली) व अलीम (ज्ञानवान) का बांधा हुआ अंदाजा है। और चांद के लिए हमने मंजिलें मुकर्रर कर दीं, यहां तक कि वह ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी शाख। न सूरज के वश में है कि वह चांद को पकड़ ले और न रात दिन से पहले आ सकती है। और सब एक-एक दायरे में तैर रहे हैं। (37-40)

जमीन और चांद और सूरज सब का एक मदार (कक्ष) मुकर्रर है। सब अपने-अपने मदार पर हददर्जा सेहत के साथ घूम रहे हैं। इस गर्दिश से मुख्तलिफ मजाहिर वजूद में आते हैं। मसलन जमीन पर रात और दिन का पैदा होना, चांद का कम व বেশ होकर फल्कियाती (आकाशीय) केलेंडर का काम करना, वगैरह। यह निजाम करोड़ों साल से कायम है और फिर भी इसमें किसी किस्म का कोई खलल वाकेअ नहीं हुआ।

यह मुशाहिदा खुदा की अथाह कुदरत का एक तआरुफ है। अगर आदमी इससे सबक ले जो एक खुदा की अज्मत उसके जेहन पर इस तरह छाप कि दूसरी तमाम अज्मतें अपने आप उसके जेहन से हजफ हो जाएं।

وَإِنَّ لَهُمُ الْأَحْمِلَ أُنْثَىٰ نَسْلَخُ مِنْهُ فِي الْفَلَكَ الْمَشْحُونِ ۚ وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِهِ
 مَا يَرْكَبُونَ ۚ وَإِنْ نَشَاءُ نُغَيِّرْهُمْ فَلَا ضَرَرَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يَنْفَقُونَ ۚ إِنْ أَرَحْمَةً مِنَّا
 وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝

और एक निशानी उनके लिए यह है कि हमने उनकी नस्ल को भरी हुई कश्ती में सवार किया। और हमने उनके लिए उसी के मानिंद और चीजें पैदा कीं जिन पर वे सवार होते हैं। और अगर हम चाहें तो उन्हें ग़र्क कर दें, फिर न कोई उनकी फरयाद सुनने वाला हो और न वे बचाए जा सकें। मगर यह हमारी रहमत है और उन्हें एक निर्धारित वक़्त तक फायदा देना है। (41-44)

हमारी दुनिया में खुशकी भी है और समुद्र भी। और हमारे ऊपर वसीअ फजा भी। खुदा ने इस दुनिया में ऐसे इस्कानात रख दिए हैं कि आदमी तीनों में से किसी हिस्से में भी सफर से आजिज न हो। वह खुशकी में और पानी और फजा में यकसां तैर पर सफर कर सके।

ये तमाम सफर सरासर खुदा के इतिजाम के तहत मुमकिन होते हैं। यह इंसान के लिए इतनी बड़ी रहमत है कि इंसान अगर इन पर गौर करे तो वह बिल्कुल अपने आपको खुदा के आगे डाल दे। और कभी सरकशी का तरीका इख्तियार न करे।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۚ وَمَا

ثَلَاثِينَ مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ ۖ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ۖ وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۖ قَالُوا الَّذَيْنِ كَفَرُوا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۖ إِن أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ

और जब उनसे कहा जाता है कि उससे डरो जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है ताकि तुम पर रहम किया जाए। और उनके रब की निशानियों में से कोई निशानी भी उनके पास ऐसी नहीं आती जिसकी वे उपेक्षा न करते हों। और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से खर्च करो तो जिन लोगों ने इंकार किया वे ईमान लाने वालों से कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खिलाएं जिन्हें अल्लाह चाहता तो वह उन्हें खिला देता। तुम लोग तो खुली गुमराही में हो। (45-47)

आदमी के पीछे उसके आमांल हैं, और उसके आगे हिसाब-किताब का दिन है। ज़िंदगी गोया अमल की दुनिया से अंजाम की दुनिया की तरफ सफर है। यह बेहद नाजुक सूरतेहाल है। आदमी को इसका वाकई एहसास हो तो वह कांप उठे। मगर आदमी न गौर करता और न कोई निशानी उसकी आंख खोलने वाली साबित होती। वह झूठी तावीलों के जरिए अपने आमांल को सही साबित करता रहता है। यहां तक कि मर जाता है।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ۖ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ۖ وَلَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَإِذَا هُمْ مِنَ الْجِبَالِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ ۖ قَالُوا يٰوَيْلَنَا مَنْ بَعَثَنَا مِن مَّرْقَدِنَا ۚ هَٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ۖ إِن كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۖ

और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। ये लोग बस एक चिंघाड़ की राह देख रहे हैं जो उन्हें आ पकड़ेगी और वे झगड़ते ही रह जाएंगे। फिर वे न कोई वसीयत कर पाएंगे और न अपने लोगों की तरफ लौट सकेंगे। और सूर फूँका जाएगा तो यकायक वे कब्रों से अपने रब की तरफ चल पड़ेंगे। वे कहेंगे, हाय हमारी बदबस्ती, हमारी कब्र से किसने हमें उठाया यह वही है जिसका रहमान ने वादा किया था और पैगम्बरों ने सच कहा था। बस वह एक चिंघाड़ होगी, फिर यकायक सब जमा होकर हमारे पास हाज़िर कर दिए जाएंगे। (48-53)

जो लोग आखिरत पर यकीन नहीं रखते वे आखिरत की तरफ से इस तरह बेफिक्र रहते हैं गोया कि आखिरत कोई बहुत दूर की चीज है। उनमें से जो लोग ज्यादा ग़ैर संजीदा हैं वे बअज ओम्मत आखिरत का मजाक भी उड़ने लगते हैं। इस तरह के लोग अपनी इसी ग़मलत में पड़े रहेंगे यहां तक कि कियामत आ जाए। कियामत उन्हें इस तरह यकायक पकड़ लेगी कि वे उसके खिलाफ कुछ भी न कर सकेंगे।

हदीस में है कि इम्राफील सूर अपने मुंह में लिए हुए अर्श की तरफ देख रहे हैं और इस बात के मुंतज़िर हैं कि कब हुक्म हो और वह उसमें फूँक मार दें। सूर का फूँका जाना ऐसा ही है जैसे इस्तेहान का वक्त ख़त्म हो जाने का घंटा बजना। इसके फौरन बाद दुनिया का निजाम बदल जाएगा। इसके बाद अंजाम का मरहला शुरू होगा, जबकि आज हम अमल के मरहले से गुजर रहे हैं।

قَالِیَوْمَ لَا تَنْفَعُكُمْ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ إِن أَحْبَبَ الْبُحَاةَ الْیَوْمَ فِی شُغْلٍ فَكُفُّوا ۖ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِی ظُلُمٍ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَكَبِّرُونَ ۖ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ فِيهَا دَعْوُونَ ۖ سَلَامٌ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِيمٍ ۖ

पस आज के दिन किसी शख्स पर कोई जुल्म न होगा। और तुम्हें वही बदला मिलेगा जो तुम करते थे। वेशक जन्नत के लोग आज अपने मशगलों में खुश होंगे। और उनकी बीवियां, सायों में मसहरियों पर तकिया लगाए हुए बैठ होंगे। उनके लिए वहां मेवे होंगे और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे मांगेंगे। उन्हें सलाम कहलाया जाएगा महरबान रब की तरफ से। (54-58)

मौजूदा दुनिया में आदमी के अमल के मअनवी नताइज सामने नहीं आते। आखिरत वह जगह है जहां हर आदमी अपने अमल के मअनवी नताइज को पाएगा। जो शख्स यहां सिर्फ वकती मफादात के लिए सरगर्म रहा वह आखिरत की अबदी दुनिया में इस तरह उठेगा कि वहां वह बिल्कुल खाली हाथ होगा। इसके बरअक्स जो लोग आला मकसद के लिए जिए वे वहां शानदार अंजाम में खुश हो रहे होंगे। अल्लाह तआला की खुसूसी इनायात इसके अलावा होंगी।

وَأَمَّا أَزْوَاجُ الْیَوْمِ أَنَحَا الْجَزْمُونَ ۖ أَلَمْ أَعْهِدَ إِلَیْكُمْ یٰبَنَیْ آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّیْطَانَ ۖ إِنَّهُ لَكُمُ عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ ۖ وَإِنْ أَعْبَدْتُمْ فِی هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِیْمٌ ۖ وَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِیْرًا ۖ أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ۖ هَٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِی

كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ۖ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ اَفْوَاهِهِمْ
وَتُكَلِّمُنَا اَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

और ऐ मुजरिमो, आज तुम अलग हो जाओ। ऐ औलादे आदम, क्या मैंने तुम्हें ताकीद नहीं कर दी थी कि तुम शैतान की इबादत न करना। बेशक वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है। और यह कि तुम मेरी ही इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। और उसने तुम में से बहुत से गिरोहों को गुमराह कर दिया। तो क्या तुम समझते नहीं थे। यह है जहन्नम जिसका तुमसे वादा किया जाता था। अब अपने कुफ्र के बदले में इसमें दाखिल हो जाओ। आज हम उनके मुंह पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बोलेंगे और उनके पांव गवाही देंगे जो कुछ ये लोग करते थे। (59-65)

मौजूदा ज़िंदगी में अच्छे लोग और बुरे लोग एक ही दुनिया में रहते हैं। अगली ज़िंदगी में दोनों की दुनियाएं अलग-अलग कर दी जाएंगी। शैतान के बंदे शैतान के साथ और रहमान के बंदे रहमान के साथ।

कोई आदमी शैतान के नाम पर शैतान की परस्तिश नहीं करता। मगर बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर ग़ैर अल्लाह का हर परस्तार (पूजक) दरअसल शैतान का परस्तार है। क्योंकि वह शैतान ही के बहकावे में ऐसा कर रहा है। मसलन फरिश्तों और कौमी बुजुर्गों की परस्तिश इस तरह शुरू हुई कि शैतान ने उनके बारे में झूठे अकीदे लोगों के जेहन में डाले और लोग इन शैतानी तर्गीबात (बहकावों) से मुतअस्सिर होकर उनकी परस्तिश करने लगे।

जदीद तहकीकत (नवीन खोजों) से यह साबित हुआ है कि इंसान की खाल एक क्रिस्म का रिकॉर्डर है जिस पर आदमी की बोली हुई आवाजें मुरतसिम (प्रतिबिंबित) हो जाती हैं और उन्हें दोहराया जा सकता है। यह एक निशानी है जो इस बात को काबिलेफहम बना रही है कि किस तरह आखिरत में आदमी के हाथ और पांव आदमी के अहवाल सुनाने लगेंगे।

وَلَوْ شَاءَ الْمُعَذِّبُونَ عَلَىٰ اَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ ۚ فَآَنَىٰ يُجْرَدُونَ ۝ وَلَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِ هَٰذَا اٰیَةً ۚ وَلَٰكِنْ لَّا يَشَاءُ الْمُكَذِّبُونَ ۝

और अगर हम चाहते तो उनकी आंखों को मिटा देते। फिर वे रास्ते की तरफ दौड़ते तो उन्हें कहां नजर आता। और अगर हम चाहते तो उनकी जगह ही पर उनकी सूरतें बदल देते तो वे न आगे बढ़ सकते और न पीछे लौट सकते। और हम जिसकी उग्र ज्यादा कर देते हैं तो उसे उसकी पैदाइश में पीछे लौटा देते हैं, तो क्या वे समझते नहीं।

इंसान को आंख और हाथ पांव और दूसरी जो सलाहियतें हासिल हैं उन्हें पाकर वह सरकश बन जाता है। हालांकि अगर वह सोचे तो यही वाकया उसकी नसीहत के लिए काफी हो जाए कि ये सलाहियतें उसकी अपनी बनाई हुई नहीं हैं बल्कि ख़ालिक के देने से उसे मिली हैं। और जब देने वाला कोई और हो तो उसने जिस तरह दिया है उसी तरह वह उन्हें वापस ले सकता है।

मजीद यह कि बुढ़ापे की सूरत में इस इम्कान की एक झलक अमलन भी लोगों को दिखाई जा रही है। आदमी जब ज्यादा बूढ़ा होता है तो उसकी तमाम ताकतें भी छिन जाती हैं। यहां तक कि वह दुबारा वैसा ही कमजोर और मोहताज हो जाता है जैसा कि वह उस वक़्त था जबकि वह एक छोटा बच्चा था। मगर इंसान इतना नादान है कि इसके बावजूद वह कोई सबक नहीं लेता।

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ ۚ وَفُرَاقٌ مُّهِينٌ ۝ لَيَنْذِرُ مَنِ
كَانَ حَيًّا وَيَجِئُ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

और हमने उसे शेअर (काव्य) नहीं सिखाया और न यह उसके लायक है। यह तो सिर्फ एक नसीहत है और वाजेह (सुस्पष्ट) कुरआन है ताकि वह उस शख्स को खबरदार कर दे जो ज़िंदा हो और इंकार करने वालों पर हुज़त कायम हो जाए। (69-70)

कुरआन का मेजिजाना उस्तूब सुनने वालों को अपनी तरफ खींचता है। चुनांचे मुख़ल्लिफ़िन ने लोगों के तअस्सुर को घटाने के लिए यह कहना शुरू किया कि यह एक शायराना कलाम है न कि कोई खुदाई कलाम।

मगर यह सरासर बेअसल बात है। कुरआन में अथाह हद तक जो संजीदा फज्रा है। उसमें हक्मइक़रैब का जो बेमिसाल इकिशफ़ (फ़कटन) है, उसमें मअरफ़ते हक की जो आलातरिन तालीमात हैं। उसमें शुरू से आखिर तक जो नादिर इत्तेहादे ख़्याल (अद्वितीय वैचारिक एकरूपता) है। उसमें खुदा की खुदाई की जो नाकाबिले बयान झलकियां हैं। ये सब यकीनी तौर पर इशारा कर रही हैं कि कुरआन इससे बरतर कलाम है कि उसे इंसानी शायरी कहा जा सके।

मगर हक्मक़त को हमेशा जिंदा लोग मानते हैं। इसी तरह कुरआन की सयक़त भी सिर्फ जिंदा इंसानों को नजर आएगी, मुर्दा इंसान उसे देखने वाले नहीं बन सकते।

اَوْ لَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ اٰمَنَامٍ لَهُمْ مَا لَكُونُ ۝ وَذَلَّلْنَاهَا
لَهُمْ فَيَنْهَازُكُوبُهُمْ ۚ وَمِنْهَا يَكُونُونَ ۝ وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۚ
اَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝ وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللّٰهِ اِلٰهَةً لَّعَلَّهُمْ يُبْصَرُونَ ۝ لَا يَسْتَطِيعُونَ

نَصْرَهُمْ ۖ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحَضَّرُونَ ۖ فَلَا يُحِزُّكَ قَوْلُهُمْ ۖ إِنََّّا نَعْلَمُ مَا
يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۖ

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने अपने हाथ की बनाई हुई चीजों में से उनके लिए मवेशी पैदा किए, तो वे उनके मालिक हैं। और हमने उन्हें उनका ताबेअ (अधीन) बना दिया, तो उनमें से कोई उनकी सवारी है और किसी को वे खाते हैं। और उनके लिए उनमें फायदे हैं और पीने की चीजें भी, तो क्या वे शुक्र नहीं करते। और उन्होंने अल्लाह के सिवा दूसरे माबूद (पूज्य) बनाए कि शायद उनकी मदद की जाए। वे उनकी मदद न कर सकेंगे, और वे उनकी फौज होकर हाजिर किए जाएंगे। तो उनकी बात तुम्हें गम्भीर न करे। हम जानते हैं जो कुछ वे छुपाते हैं और जो कुछ वे जाहिर करते हैं। (71-76)

मवेशी जानवर एक किस्म की जिंदा अलामत हैं जो बताते हैं कि मादूदी दुनिया को उसके बनाने वाले ने इस तरह बनाया है कि इंसान उसे मुसख़्ख़र (अधीन) करके उसे इस्तेमाल कर सके। मादूदी दुनिया की इसी सलाहियत के ऊपर इंसानी तहजीब की पूरी इमारत कायम है। अगर घोड़े और बैल में भी वही वहशियाना मिजाज हो जो रीछ और भेड़िये में होता है। या लोहा और पेट्रोल इसी तरह इंसान के काबू से बाहर हों जिस तरह जमीन के अंदर का अतिशफ़शानी (प्रचलनशील) मादूदा इंसान के काबू से बाहर है तो तहजीबे इंसानी का इरतिका (विकास) नामुमकिन हो जाए।

जिस ख़ालिक ने ये अजीम एहसानात किए हैं, इंसान को चाहिए था कि वह उसी का शुक्र करे और उसी का इबादतगुजार बने। मगर वह दूसरों को अपना माबूद बनाता है, और जब उसे नसीहत की जाए तो वह उस पर ध्यान नहीं देता। यह बिलाशुबह सबसे बड़ी सरकशी है जिसके अंजाम से बचना किसी के लिए मुमकिन नहीं।

أَوَلَمْ يَرِ الْإِنْسَانُ أَنَّا أَخْلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ ۖ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ۖ وَضَرَبَ لَنَا
مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۖ قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي
أَشْأَلُهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ۖ الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ
الْأَخْضَرِ نَارًا ۖ فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقَدُونَ ۖ أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلَىٰ ۖ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۖ إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا
أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۖ فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَكُونُ كُلِّ

شَيْءٍ ۖ وَاللَّهُ تَرْجِعُونَ ۖ

क्या इंसान ने नहीं देखा कि हमने उसे एक बूंद से पैदा किया, फिर वह सरीह झगड़ालू बन गया। और वह हम पर मिसाल चसपां करता है और वह अपनी पैदाइश को भूल गया। वह कहता है कि हड्डियों को कौन जिंदा करेगा जबकि वे बोसीदा हो गई हों। कहो, उन्हें वही जिंदा करेगा जिसने उन्हें पहली मर्तबा पैदा किया। और वह सब तरह पैदा करना जानता है। वही है जिसने तुम्हारे लिए हरे भरे दरख़्त से आग पैदा कर दी। फिर तुम उससे आग जलाते हो। क्या जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया वह इस पर कादिर नहीं कि उन जैसों को पैदा कर दे। हां वह कादिर है। और वही है अस्त पैदा करने वाला, जानने वाला। उसका मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज का इरादा करता है तो कहता है कि हो जा तो वह हो जाती है। पस पाक है वह जात जिसके हाथ में हर चीज का इख़्तियार है और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (77-83)

इंसान अपना ख़ालिक (सृजक) आप नहीं। वह बिलाशुबह ख़ालिक की मख़बूक है। इस वाक्यका तमज़ था कि इंसान के अंदर इज्जकी सिफ़्त पाई जाए। मगर वह हकीकतपरस्ती को खोकर ऐसी बहस करता है जो उसकी हैसियते इज्ज से मुताबिकत नहीं रखती।

इंसान की और कायनात की तख़लीक अब्बल ही इस बात का काफी सुबूत है कि यह तख़लीक दूसरी बार भी मुमकिन है। मगर इसे नजरअंदाज करके इंसान यह बहस निकालता है कि मुर्दा इंसान दुबारा जिंदा इंसान कैसे बन जाएगा। इंसान का मुर्दा होकर फिर जिंदा हालत में तब्दील होने का वाक्या बिलाशुबह कियामत में होगा। मगर दूसरी चीजों में यह इम्कान आज ही नजर आ रहा है। मसलन दरख़्त को देखो। दरख़्त बजाहिर हरा भरा होता है। मगर जब वह काट कर लकड़ी की सूरत में जलाया जाता है तो वह बिल्कुल एक मुख़लिफ़ सूरत इख़्तियार कर लेता है जिसे आग कहते हैं।

एक चीज का बदल कर बिल्कुल दूसरी चीज बन जाना एक साबितशुदा वाक्या है। बकिया चीजों में खुदा आज ही इसे मुमकिन बना रहा है। इंसानों के लिए वह कियामत में इसे मुमकिन बनाएगा। मगर यह मनवाने के लिए नहीं होगा बल्कि इसलिए होगा कि इंसान को उसकी सरकशी का बदला दिया जाए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۖ

وَالصَّفَّاتِ صَفًّا ۖ فَالْزُجُرُتِ زَجْرًا ۖ فَالتَّكْلِيفِ تَكْرًا ۖ إِنَّ إِلَهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۖ رَبُّ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۖ

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
कसम है क़त्तार दर क़त्तार सफ बंधने वाले फ़रिश्तों की। फिर डंटेने वालों की झिझक
कर। फिर उनकी जो नसीहत सुनाने वाले हैं। कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) एक ही है।
आसमानों और ज़मीन का रब और जो कुछ उनके दर्मियान है और सारे मशिकों (पूर्वी
दिशाओं) का रब। (1-5)

पैगम्बर के ज़रिए जिन ग़ैबी हकीकतों की ख़बर दी गई है उनमें से एक फ़रिश्ते का वज़ूह
है। यहां फ़रिश्तों के तीन ख़ास काम बताए गए हैं। एक यह कि वे मुकम्मल तौर पर खुदा
के ताबेअ हैं, वे अदना सरताबी (अवज्ञा) के बग़ैर सफ़-ब-सफ़ उसकी तामील के लिए हाज़िर
रहते हैं। फिर फ़रिश्तों का एक ग़िरोह वह है जो इंसानों पर खुदाई सज़ा का निफ़ाज़ करता
है, चाहे वह आफ़त और हादसात की सूत में हो या किसी और सूत में। फ़रिश्तों का तीसरा
अमल यह बताया गया कि वे खुदा के बंदों पर खुदा की नसीहत उतारते हैं, आम इंसानों पर
इल्हाम (दिव्य निर्देश) या इल्का (संप्रेषण) की शक़ल में और पैगम्बरों पर 'वही' (ईश्वरीय
वाणी) की शक़ल में।

ख़ुदा ही उन फ़रिश्तों का मालिक है जिन्हें आम इंसान नहीं देखता। और ख़ुदा ही
आसमान व ज़मीन का मालिक भी है जिन्हें हर आदमी अपनी आंखों से देख रहा है। ऐसी
हालत में ख़ुदा के सिवा जिसे भी माबूद बनाया जाएगा वह ऐसा माबूद होगा जिसे माबूद बनने
का हक़ नहीं।

إِنَّا نَزَّلْنَا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزَيْنَةٍ الْكَوَكِبِ ۖ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ۝
لَّا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَىٰ وَيُقَذَّفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝ دُحُورًا وَلَهُمْ
عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝ إِلَّا مَنِ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَ شِمَابًا ثَوْبًا ۝

हमने आसमाने दुनिया को सितारों की जीनत (शोभा) से सजाया है। और हर शैतान
सरकश से उसे महफूज़ किया है। वे मलए आला (आकाश लोक) की तरफ़ कान नहीं
लगा सकते और वे हर तरफ़ से मारे जाते हैं, भगाने के लिए। और उनके लिए एक
दाइमी (स्थायी) अज़ाब है। मगर जो शैतान कोई बात उचक ले तो एक दहकता हुआ
शोला उसका पीछा करता है। (6-10)

आसमाने दुनिया से मुराद ग़ालिबन वसीअ ख़ला (अंतरिक्ष) का वह हिस्सा है जो इंसान
के करीब वाकेअ है और जिसे आदमी किसी आला (उपकरण) की मदद के बग़ैर ख़ाली आंख
से देख सकता है।

जिस तरह इंसान एक बाइख़िज़ार मख़बूक है उसी तरह जिन्नात भी बाइख़िज़ार मख़बूक
हैं। चुनांचे वे ख़ला में परवाज़ करते हैं और कोशिश करते हैं कि ऊपर उठकर मलए आला
(आलमे बाला) तक पहुंचें और वहां से मुस्तक़बिल की ख़बरें ले आएँ। मगर आसमाने दुनिया
में अल्लाह तआला ने ऐसे मोहकम इतिज़ामात फ़रमाए हैं कि वे यहीं से मार कर लौटा दिए
जाते हैं और उससे ऊपर जाने का मौका नहीं पाते।

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهْمْ أَسَدٌ خَلَقْنَا أَمْ مِنَ خَلْقِنَا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَّازِبٍ ۝
بَلْ عَجَبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝ وَإِذَا دُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ۝ وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخَرُونَ ۝
وَقَالُوا إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝ إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّا لَبَعُوثُونَ ۝ أَوْ
أَبَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝ قُلْ نَعْمَ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ ۝

पस उनसे पूछो कि उनकी पैदाइश ज़्यादा मुश्किल है या उन चीज़ों की जो हमने पैदा
की हैं। हमने उन्हें चिपकती मिट्टी से पैदा किया है। बल्कि तुम ताज़्जुब करते हो और
वे मज़ाक उड़ा रहे हैं। और जब उन्हें समझाया जाता है तो वे समझते नहीं। और जब
वे कोई निशानी देखते हैं तो वे उसे हंसी में टाल देते हैं। और कहते हैं कि यह तो
बस ख़ुला हुआ जादू है। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां बन जाएंगे
तो फिर हम उठाए जाएंगे। और क्या हमारे अगले बाप दादा भी। कहो कि हां, और
तुम ज़लील भी होगे। (11-18)

ज़मीन व आसमान की सूत में जो कायनात हमारे मुशाहिदे में आती है वह इतनी पेचीदा
और इतनी अजीम है कि इसके बाद इंसानों को दूसरी दुनिया में पैदा करना मुक़बिलतन एक
छेय काम नज़र आने लगता है। जिस ख़ालिक की कुव्वते तख़लीक का अज़ीमतर नमूना हमारे
सामने मौजूद है उसी ख़ालिक से इससे छोटी तख़लीक नामुमकिन या मुश्किल क्यों।

इंसानी जिस्म का तज्जिया (विश्लेषण) करने से मालूम होता है कि वह तमामतर ज़मीनी
अज्जा का एक मज्मूआ है। ज़मीन में पाए जाने वाले माददे (पानी, कैल्शियम, लोहा, सोडियम,
टंगस्टन, बग़ैरह) की तर्कीब से इंसान बना है। ये तमाम अज्जा हमारी दुनिया में बहुत इफ़रात
(अधिकता) के साथ पाए जाते हैं। फिर जिन अज्जा की तर्कीब से ख़ालिक ने एक बार इंसान
को बनाकर खड़ा कर दिया उन्हीं अज्जा की तर्कीब से वह दुबारा क्यों ऐसा नहीं कर सकता।

فَأَمَّا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ۝ وَقَالُوا يَوْمَئِذٍ هَذَا يَوْمُ الدِّينِ ۝
هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَكْدِبُونَ ۝ احْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا
أَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ۝ مِنْ دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ۝

وَقِفُّهُمْ ۖ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ ۖ مَا لَكُمْ لَنْتَاصِرُونَ ۖ بَلْ هُمْ الْيَوْمَ
مُسْتَسْلِمُونَ ۖ

पस वह तो एक झिड़की होगी, फिर उसी वक्त वे देखने लगेंगे और वे कहेंगे कि हाय हमारी कमबस्ती यह तो जजा (बदले) का दिन है। यह वही फैसले का दिन है जिसे तुम झुटलाते थे। जमा करो उन्हें जिन्होंने जुल्म किया और उनके साथियों को और उन माबूदों को जिनकी वे अल्लाह के सिवा इबादत करते थे, फिर उन सबको दोजख का रास्ता दिखाओ और उन्हें ठहराओ, इनसे कुछ पूछना है। तुम्हें क्या हुआ कि तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते। बल्कि आज तो वे फरमांबरदार हैं। (19-26)

मौजूदा दुनिया में अगली ज़िंदगी का मामला एक खबर के तौर पर बताया जा रहा है। आदमी इस खबर को कोई अहमियत नहीं देता। मगर आखिरत में अगली ज़िंदगी का मामला एक संगीन हकीकत बनकर लोगों के ऊपर टूट पड़ेगा। उस वक्त आदमी अपनी सरकशी भूल कर अपने आपको खुदा के सामने डाल देगा। यह नाकाबिले बयान हद तक हौलनाक मंजर होगा। उस वक्त मैदाने हशर में लोगों का जो हाल होगा उसका एक नक्शा इन आयतों में दिया गया है।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ قَالُوا إِنَّا كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ۖ
قَالُوا بَلْ لَمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۖ وَمَا كَانُوا لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَنٍ ۖ بَلْ كُنْتُمْ
قَوْمًا طَافِينَ ۖ فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ إِنَّكَ لَآتِقُونَ ۖ فَأَعْوَيْنَاكُمْ إِنَّا كُنَّا
غَوِينَ ۖ ۚ إِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۖ

और वे एक दूसरे की तरफ मुतवज्जह होकर सवाल व जवाब करेंगे। कहेंगे तुम हमारे पास दाईं तरफ से आते थे। वे जवाब देंगे, बल्कि तुम खुद ईमान लाने वाले नहीं थे। और हमारा तुम्हारे ऊपर कोई जोर न था, बल्कि तुम खुद ही सरकश लोग थे। पस हम सब पर हमारे रब की बात पूरी होकर रही, हमें उसका मजा चखना ही है। हमने तुम्हें गुमराह किया, हम खुद भी गुमराह थे। पस वे सब उस दिन अजाब में मुशतरक (सह भागी) होंगे। (27-33)

यह अवाम और लीडरों की गुफ्तगू है। कियामत में अवाम अपनी बर्बादी की जिम्मेदारी अपने गुमराह लीडरों पर डालेंगे और कहेंगे कि आप लोगों ने हमें तरह-तरह से बहकाया।

लीडर कहेंगे कि तुम्हारा यह इल्जाम ग़लत है। कोई बहकाने वाला किसी को नहीं बहकाता। तुम लोगों के अंदर खुद सरकशी का मिजज था। हमारी बात तुम्हें अपने मिजज के मुताफ़िक नजर आई इसलिए तुमने उसे मान लिया। तुमने हकीकत अपनी ख़ाहिशात का साथ दिया न कि हमारा। दोनों का ज़ुर्म एक है।

हकीकत यह है कि कियामत में लीडर और पैरोकार दोनों एक ही मुशतरक अंजाम से दो चार होंगे। न लीडर की अज्मत उसे अजाब से बचा सकेगी और न अवाम का यह उज़्र उन्हें बचाने वाला बनेगा कि हम तो बेइल्म थे, हमें हमारे लीडरों ने गुमराह किया।

إِنَّا كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ
يَسْتَكْبِرُونَ ۖ وَيَقُولُونَ إِنَّا لَنَسَارِكُوا إِلَهَيْنَا إِشَاعِرٌ تَجَنُّونَ ۖ بَلْ جَاءَ
بِالْحَقِّ وَصَدَقَ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِنَّكُمْ لَذَائِقُوا الْعَذَابِ الْأَلِيمِ ۖ وَمَا تَجْزُونَ
إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ

हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही करते हैं। ये वे लोग थे कि जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं तो वे तकबुर (घमंड) करते थे। और वे कहते थे कि क्या हम एक शायर दीवाने के कहने से अपने माबूदों को छोड़ दें। बल्कि वह हक लेकर आया है। और वह रसूलों की पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) का मिस्दाक (पुष्टि-रूप) है। वेशक तुम्हें दर्दनाक अजाब चखना होगा। और तुम उसी का बदला दिए जा रहे हो जो तुम करते थे। (34-39)

‘जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह (पूज्य) नहीं तो वे घमंड करते थे’ इसका मतलब यह नहीं कि वे खुदा के मुकाबले में घमंड करते थे। ऐसा कोई भी नहीं करता।

खुदा की अज्मत इससे ज्यादा है कि कोई उसके मुकाबले में बड़ बनने की जुरअत करे। उनका

घमंड दरअसल खुदा के पैगम्बर के मुकाबले में था न कि खुद खुदा के मुकाबले में।

पैगम्बर के पैगामे तौहीद की जद उन अकाबिर (बड़ों) पर पड़ती थी जिनके नाम पर वे अपने मुशिकाना आमाल में मुक्ताला थे। अब एक तरफ पैगम्बर होता और दूसरी तरफ उनके मफरूजा (मान्य) अकाबिर। चूँकि पैगम्बर बजाहिर उन्हें अपने अकाबिर से कम दिखाई देता था, इसलिए वे पैगम्बर को छोटा समझ कर नजरअंदाज कर देते। वे अपने मफरूजा अकाबिर के साथ वाबस्ता रहकर समझते कि वे बड़ों के साथ वाबस्ता हैं। दलील का जोर विलाशुवह पैगम्बर की तरफ होता था। मगर जाहिरी अज्मत उन्हें अपने बड़ों में दिखाई देती थी। और तारीख बताती है कि जाहिरी अज्मत के मुकाबले में दलील की ताकत हमेशा बेअसर साबित हुई है।

الْإِعْبَادَ لِلَّهِ الْمُخْلِصِينَ ۖ أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ۖ فَوَٰكِلَةٌ لَهُمْ
مُّكْرَمُونَ ۖ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۖ عَلَى سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ۖ يُطَافُ عَلَيْهِمْ
بِكُلِّ فَاكِهَةٍ مِّن مَّعِينٍ ۖ بَيْضَاءَ لَّدَّةٍ لِلشَّرِيبِينَ ۖ لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا
يُنْزِفُونَ ۖ وَعِنْدَهُمْ قُضِرَتِ الظَّرْفُ عَيْنٌ ۖ كَأَنَّهُمْ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ۖ

मगर जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं। उनके लिए मालूम रिज्क होगा। मेवे, और वे निहायत इज्जत से होंगे, आराम के बागों में। तख्तों पर आमने सामने बैठे होंगे। उनके पास ऐसा प्याला लाया जाएगा जो बहती हुई शराब से भरा जाएगा। साफ शफ़फ़ पीने वालों के लिए लज्जत। न उसमें कोई जर्र (हानिकारकता) होगा और न उससे अक्ल ख़राब होगी। और उनके पास नीची निगाह वाली, बड़ी आंखों वाली औरतें होंगी। गोया कि वे अंडे हैं जो छुपे हुए रखे हों। (40-49)

मौजूदा दुनिया आजमाइश की दुनिया है। यहां लोगों को आज्ञादाना अमल का मौक़ा देकर उनका इतिखाब किया जा रहा है। जो लोग अपने कौल व अमल से इसका सुबूत देंगे कि वे जन्नत की लतीफ (आनंदमय) और नफीस (उत्तम) दुनिया में बसाए जाने के काबिल हैं, उन्हें उनका खुदा अपनी जन्नत में बसाने के लिए चुन लेगा। वहां उन्हें हर किस्म की आला नेमतें फ़राहम की जाएंगी। और फिर उनसे कहा जाएगा कि राहतों और लज्जतों के बागात में अबदी (चिरस्थायी) तौर पर आबाद रहो।

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي
قَرِينٌ ۖ يَقُولُ إِنِّي كَلِمَاتُ الْمُصَدِّقِينَ ۖ وَإِنَّا لَكَاثِرُونَ بِعِظَمَاءِ إِنَّا
لَمُدِّيْتُونَ ۖ قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُّقْتُلُونَ ۖ فَاطْلَمَ قَرَاهُ فِي سَوَاءِ الْحَيِّينَ ۖ قَالَ
تَاللَّهِ إِن كُذِّبْتُ لَأَكُونَنَّ ۖ وَلَوْلَا غَمَةٌ رَّيَّيْتُ لَكَذِبًا ۖ لَكُنْتُ مِنَ الْخَاطِرِينَ ۖ إِنَّمَا نَحْنُ
بِمَيِّتِينَ ۖ إِلَّا مَوْتَنَا الْأَوَّلَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَدِّينَ ۖ إِن هَٰذَا هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۖ لِيُثْلَ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ۖ

फिर वे एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह होकर बात करेंगे। उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक मुलाक़ाती था। वह कहा करता था कि क्या तुम भी तस्दीक (पुष्टि) करने वालों में से हो। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो

क्या हमें जजा मिलेगी। कहेगा, क्या तुम झांक कर देखोगे। तो वह झांकेगा और उसे जहन्नम के बीच में देखेगा। कहेगा कि खुदा की कसम तुम तो मुझे तबाह कर देने वाले थे। और अगर मेरे ख़ब का फज़ल न होता तो मैं भी उन्हीं लोगों में होता जो पकड़े हुए आए हैं। क्या अब हमें मरना नहीं है, मगर पहली बार जो हम मर चुके और अब हमें अजाब न होगा। बेशक यही बड़ी कामयाबी है। ऐसी ही कामयाबी के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए। (50-61)

जन्नत लतीफतरीन सरगर्मियों की दुनिया है। वहां दिलचस्प मुलाक़ातें होंगी। वहां पुरलुफ़ मुशाहिदात होंगी। वहां एक दूसरे के दर्मियान आफ़की सतह पर गुफ़्तगुएं होंगी। हर किस्म की महदूदियत (सीमितता) और हर किस्म की नाखुशगवारी का वहां ख़ात्मा हो चुका होगा।

आख़िरत को मानने से मुराद सादा तौर पर सिर्फ़ उसे मान लेना नहीं है। बल्कि आख़िरत के मामले को इतना हकीकी और इतना अहम समझना है कि वह आदमी की पूरी ज़िंदगी पर छा जाए। आदमी अपना सब कुछ आख़िरत के लिए लगा दे। जो लोग ऐसे आख़िरतपसंदों को दीवाना समझते थे वे आख़िरत में उनकी कामयाबियां देखकर दमबख़ुद (स्तब्ध) रह जाएंगे। दूसरी तरफ़ आख़िरतपसंदों का हाल यह होगा कि वे अपने शानदार अंजाम को इस तरह हैरत के साथ देखेंगे जैसे कि उन्हें यकीन न आ रहा हो कि उनके छोटे से अमल का खुदा ने उन्हें इतना बड़ा बदला दे दिया है। कैसा अजीब होगा वह इंसान जो ऐसी जन्नत का हरीस न हो, जो ऐसी जन्नत के लिए अमल न करे!

أَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا مِّنْ شَجَرَةِ الزَّقْوَمِ ۖ إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِلظَّالِمِينَ ۖ إِنَّمَا شَجَرَةُ
تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْحَيِّينَ ۖ طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ ۖ وَأَلَّهُمْ لَا يَكُونُونَ
مِنْهَا فَمَا لَوْ كُنُوا مِنْهَا الْبُطُونَ ۖ ثُمَّ إِنَّا أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَوْبٍ مِّنْ حَيِّيمٍ ۖ ثُمَّ
إِن مَّرَجَعُهُمْ إِلَّا إِلَىٰ الْحَيِّيمِ ۖ إِنَّهُمْ الْفَوَاقِبَاءُ هُمْ ضَالِّينَ ۖ فَمَنْ عَلَىٰ أَثَرِهِمْ
يُهْرَعُونَ ۖ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ۖ وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُّنْذِرِينَ ۖ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ۖ الْإِعْبَادَ لِلَّهِ الْمُخْلِصِينَ ۖ

यह ज़िफ़ाफ़ (सक्कर) अच्छी है या ज़म्ज़ूम का दस्त। हमने उसे जल्लिमों के लिए फ़ितना बनाया है। वह एक दस्त है जो दोज़ख़ की तह से निकलता है। उसका ख़ोश ऐसा है जैसे शैतान का सर। तो वे लोग उससे खाएंगे। फिर उसी से पेट भरेंगे। फिर उन्हें ख़ौलता हुआ पानी मिलाकर दिया जाएगा। फिर उनकी वापसी दोज़ख़ ही की तरफ़

होगी। उन्होंने अपने बाप दादा को गुमराही में पाया। फिर वे भी उन्हीं के कदम बकदम दौड़ते रहे, और उनसे पहले भी अगले लोगों में अक्सर गुमराह हुए। और हमने उनमें भी डराने वाले भेजे। तो देखो, उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जिन्हें डराया गया था। मगर वे जो अल्लाह के चुने हुए बंदे थे। (62-74)

कुरआन में बताया गया है कि दोख़्त मजक़ूम का दरख़्त होगा और दोख़्त लोग जब भूख से बेकरार होंगे तो उसे खाएंगे। (अल-वाक़्या 52)

कुरआन में यह ख़बर दी गई तो कद्रीम अरब के लोगों ने उसका मजाक उड़ाना शुरू किया। एक सरदार ने कहा कि दोख़्त की आग के दर्मियान दरख़्त कैसे उगेगा। जबकि आग दरख़्त को जला देती है। एक और सरदार ने कहा : मुहम्मद हमें जक़ूम से डराते हैं। हालांकि जक़ूम आम ज़बान में खजूर और मक्खन को कहते हैं। अबू जहल कुछ लोगों को अपने घर ले गया और अपनी ख़ादिमा से कहा कि खजूर और मक्खन ले आओ। वह लाई तो अबू जहल ने अपने साथियों से कहा कि लो इसे खाओ। यही वह जक़ूम है जिसकी मुहम्मद तुम्हें धमकी दे रहे हैं।

इस किस्म के कुरआनी बयानात मुख़ालिफ़ीन के लिए बेहतरीन हथियार थे जिनके जरिए वे अवांम की नजर में कुरआन को ग़ैर मोतबर साबित कर सकें। अल्लाह के लिए यह मुमकिन था कि वह कुरआन में ऐसा लफ़्ज़ इस्तेमाल न करे जिसमें मुख़ालिफ़ीन के लिए शोश निकालने का मौका हो। मगर अल्लाह ने ऐसा नहीं किया। इसकी वजह यह है कि यही वह मक़ाम है जहां आदमी का इस्तेहान हो रहा है। आदमी को नजातयाफ़ता (मुक्ति-प्राप्त) बनने के लिए यह सुबूत देना है कि उसने शोशे की बातों से बचकर अस्ल हकीकत पर ध्यान दिया। उसने ग़लतफ़हमियों को उबूर (पार) करके क़लाम के हकीकी उद्देश्य को पाया। उसने ज़ेहनी इहिराफ़ (भटकाव) के अवसर होते हुए अपने ज़ेहन को इहिराफ़ से बचाया।

अल्लाह के चुने हुए बंदे वे हैं जो रवाजी दीन से ऊपर उठकर सच्चाई को दरयाफ़्त करें। जो जवाहिर (प्रकट) से बुलन्द होकर मआनी (निहितार्थ) का इदराक़ (भान) करें। जो खुदा के बशरी नुमाइदे (मानव-प्रतिनिधि) को पहचान कर उसके साथी बन जाएं।

وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوْحًا فَلَنَعْمَ الْجَبِيْنُ ۖ وَنَجِيْنُهُ وَاَهْلُهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ
وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِيْنَ ۖ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ ۖ فِي الْاٰخِرِيْنَ ۖ سَلَامٌ عَلٰى نُوْحٍ ۖ فِي
الْعَلَمِيْنَ ۖ اِنَّكَ لَكِنْ نَجِيْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۖ اِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ۖ ثُمَّ
اَغْرَقْنَا الْاٰخِرِيْنَ

और हमें नूह ने पुकारा तो हम क्या ख़ूब पुकार सुनने वाले हैं। और हमने उसे और

उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से बचा लिया। और हमने उसकी नस्ल को बाकी रहने वाला बनाया। और हमने उसके तरीके पर पिछलों में एक ग़िरोह को छोड़ा। सलाम है नूह पर तमाम दुनिया वालों में। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। फिर हमने दूसरों को गर्क कर दिया। (75-82)

हजरत नूह अलैहिस्सलाम की कैम उनकी दुश्मन हो गई। उन्होंने कैम के मुक़बले में मदद के लिए अल्लाह को पुकारा तो अल्लाह ने बेहतरीन तौर पर आपकी मदद की। ये अल्फ़ाज़ बताते हैं कि जब अल्लाह का एक बंदा अल्लाह को पुकारता है तो अल्लाह की तरफ से वह उसका बेहतरीन जवाब पाता है। मगर इस मामले को समझने के लिए जरूरी है कि इसमें एक और बात को शामिल किया जाए। वह यह कि हजरत नूह साढ़े नौ सौ साल तक काम करते रहे। उन्होंने सब्र और हिक्मत और ख़ैरख़्वाही के तमाम आदाब को मल्हूज़ रखते हुए कैम को दावत दी। इस तरह लम्बी मुद्दत के बाद वह वक़्त आया कि वह कैम के ख़िलाफ़ अल्लाह को पुकारें। और अल्लाह अपनी तमाम ताक़तों के साथ उनकी मदद पर आ जाए।

हजरत नूह के मुख़ालिफ़ीन एक हैलनाक तूफ़ान में इस तरह हलाक हुए कि उनकी पूरी नस्ल ख़त्म हो गई। इसके बाद दुबारा जो नस्ल चली वह उन्हीं चन्द अफ़राद के जरिए चली जो हजरत नूह के साथ क़शी में बचा लिए गए थे।

وَإِنْ مِنْ شَيْعَتِهِ لِابْرَاهِيْمَ ۖ اِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ۖ اِذْ قَالَ لِاٰبِيْهِ
وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ۖ اَفِغْكَ الْاِلٰهَةُ دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ۖ فَمَا ظَنُّكُمْ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

और उसी के तरीके वालों में से इब्राहीम भी था। जबकि वह आया अपने रब के पास कब्बे सलीम (पाक दिल) के साथ। जब उसने अपने बाप से और अपनी कैम से कहा कि तुम किस चीज़ की इबादत करते हो। क्या तुम अल्लाह के सिवा मनगढ़त माबूदों को चाहते हो तो खुदावंद आलम के बारे में तुम्हारा क्या ख़्याल है। (83-87)

हजरत इब्राहीम भी उसी दीन पर थे जिस दीन पर हजरत नूह थे। तमाम नबियों की दावत हमेशा एक रही है। वह यह कि आदमी कब्बे सलीम के साथ खुदा के यहां पहुंचे।

कब्बे सलीम के मअना हैं पाक दिल। यानी फ़ितनों से महफूज़ दिल। यही अस्ल चीज़ है जो अल्लाह तआला को ईसान से मल्हूब है। अल्लाह ने ईसान को फितरते सही पर पैदा करके दुनिया में भेजा। अब उसका इस्तेहान यह है कि वह दुनिया के फितनों से अपने आपको बचाए। वह हर किस्म की नफ़सी और शैतानी आलूदगी से पाक रहकर खुदा के यहां पहुंचे। यही पाक और महफूज़ ईसान हैं जिन्हें खुदा अपनी जन्तों में बसाएगा।

पुछा हो जाता कि कोई भी दावती कोशिश उसके जेहन को शिर्क से हटाने में कामयाब नहीं होती थी। हजरत इब्राहीम जब तवील (दीर्घ) दावती जद्दोजहद के बाद इराक से निकले तो उनके साथ सिर्फ दो मोमिन थे। एक आपकी बीवी सारा, दूसरे आपके भतीजे लूत।

लोग दावत (आह्वान) के जरिए तौहीद के रास्ते पर नहीं आ रहे थे। इसलिए अल्लाह तआला का यह मंसूबा हुआ कि एक ऐसी नस्ल तैयार की जाए जो शिर्क की फजा से अलग होकर परवरिश पाए। इसके लिए हिजाज (अरब) के इलाके का इतिहास हुआ जो बेआब व गयाह (निर्जन) होने की वजह से बिल्कुल ग़ैर आबाद पड़ा हुआ था। मंसूबा यह था कि इस ग़ैर आबाद इलाके में एक शख्स को आबाद किया जाए और उससे तवालुद व तनासुल (वंश-क्रम) के जरिए एक महफूज नस्ल तैयार की जाए। मगर उस वक्त हिजाज मुकम्मल तौर पर एक खुशक सहारा (रेगिस्तान) था और उस खुशक सहारा में किसी शख्स को आबाद करना उसे जीते जी जबह कर देने के हममअना था। हजरत इब्राहीम को अल्लाह तआला ने अपने बेटे के हक में इसी जबीहा का हुक्म दिया और उन्होंने पूरी तरह मुतीअ (आज्ञाकारी) होकर अपने बेटे को इस जबीहा के लिए हाजिर कर दिया।

हजरत इब्राहीम के दूसरे बेटे हजरत इस्हाक थे। उनकी नस्ल में मुसलसल नुबुव्वत जारी रही यहां तक कि बनू इस्माईल में आखिरी नबी पैदा हो गए। उन्होंने मज्हूर 'महफूज नस्ल' को इस्तेमाल करके वह इक़िलाब बरपा किया जिसने हमेशा के लिए शिर्क को ग़ालिब फ़िक्क (वर्चस्व प्राप्त विचारधारा) की हैसियत से ख़त्म कर दिया।

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۖ وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۖ وَنَصَرْنَاهُمْ فَاكْفَلْنَاهُمُ الْغُلَّيِّينَ ۖ وَأَنَّا إِلَهُكُمُ الْبُكْتَبِ الْمُسْتَبِينَ ۖ وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۖ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ۖ سَلَّمَ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۖ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ إِنَّهُمْ مِّنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ

और हमने मूसा और हारून पर एहसान किया। और उन्हें और उनकी कौम को एक बड़ी मुसीबत से नजात दी। और हमने उनकी मदद की तो वही ग़ालिब आने वाले बने। और हमने उन दोनों को वाजेह किताब दी। और हमने उन दोनों को सीधा रास्ता दिखाया। और हमने उनके तरीके पर पीछे वालों के एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो मूसा और हारून पर। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वे दोनों हमारे मोमिन बंदों में से थे। (114-122)

अल्लाह तआला ने हजरत मूसा और उनकी कौम की मदद की और उन्हें फिरऔन के जुल्म से नजात दी। यहां सवाल यह है कि यह कैसे हुआ। यह दावत इलल्लाह के जरिए हुआ। हजरत मूसा ने फिरऔन पर हक की तबीअ की। लम्बी जद्दोजहद के जरिए आपने उसे

इतमामेहुज्जत तक पहुंचाया। इसके बाद वह वक्त आया कि फिरऔन को मुजरिम करार देकर उसे हलाक किया जाए। और हजरत मूसा और उनकी कौम को ग़लबा हासिल हो।

इस सियाक (प्रसंग) में सिराते मुस्तकीम (सीधा रास्ता) दिखाने का एक मतलब यह है कि फिरऔन के मसले का सही हल उन पर खोला गया। बनी इस्राईल के लिए अगरचे यह एक कौमी मसला था मगर इसका हल उन्हें दावत (आह्वान) की शकल में बताया गया। चुनांचे उन्हें जो ग़लबा मिला वह उन्हें दावती जद्दोजहद के नतीजे में मिला न कि फिरऔन के ख़िलाफ़ मअरूफ़ फ़िस्म की कौमी जद्दोजहद के नतीजे में।

وَإِنَّ إِلَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ الْآتِقُونِ ۖ اتَّدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۖ اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۖ فَكَذَّبُوهُ فَأَنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ۖ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۖ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمْ فِي الْآخِرِينَ ۖ سَلَّمَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۖ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ إِنَّهُمْ مِّنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۖ

और इलयास भी पैगम्बरों में से था। जबकि उसने अपनी कौम से कहा, क्या तुम डरते नहीं। क्या तुम बअल (एक बुत का नाम) को पुकारते हो और बेहतरीन ख़ालिक को छोड़ देते हो, अल्लाह को जो तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी। पस उन्होंने उसे झुठलाया तो वे पकड़े जाने वालों में से होंगे। मगर जो अल्लाह के ख़ास बंदे थे। और हमने उसके तरीके पर पिछलों में एक गिरोह को छोड़ा। सलामती हो इलयास पर। हम नेकी करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। बेशक वह हमारे मोमिन बंदों में से था। (123-132)

हजरत इलयास अलैहिस्सलाम ग़ालिबन हजरत हारून अलैहिस्सलाम की नस्ल से थे। उनका जमाना नवीं सदी कब्ल मसीह (ईसा पूर्वी) है। उस जमाने में इस्राईल (फिलिस्तीन) का यहूदी बादशाह अख़ीअब (Ahab) और लुबनान मेसीकीयैम (Phoenicians) की हुकूमत थी जो मुशरिक थी और बअल नामी बुत की पूजा करती थी। अख़ीअब ने मुशरिक बादशाह की लड़की से शादी कर ली। उस मुशरिक शहजादी के असर से यहूदियों के दर्मियान बअल की परस्तिश शुरू हो गई। उस वक्त हजरत इलयास ने यहूदियों को डराया और उन्हें खुदाए वाहिद की परस्तिश की तरफ बुलाया जो उनका असल आबाई दीन था। हजरत इलयास के हालात तपसील से बाइबल में मौजूद हैं।

हजरत इलयास के जमाने में सिर्फ थोड़े से यहूदियों ने आपका साथ दिया। बेशतर तादाद ने अपनी मुखालिफ़त की। यहां तक कि वे आपके कल्ल के दरपे हो गए। इसकी वजह से

अल्लाह तआला ने उन पर सजाएं भेजीं। मगर बाद को यहूदियों के यहां हजरत इलयास (ऐलिया) को बहुत ऊंचा मकाम मिला। अब वह यहूदियों की तारीख़ (इतिहास) में बहुत बड़े नबी शुमार किए जाते हैं।

وَإِنَّ لَوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ بَغَيْنَهُ أَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۖ إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَيْرِينَ ۖ ثُمَّ دَمَرْنَا الْآخَرِينَ ۖ وَآلَكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ ۖ وَبِالْبَيْتِ أَفْلَا تَعْقِلُونَ ۖ

और वेशक लूत भी पैगम्बरों में से था। जबकि हमने उसे और उसके लोगों को नजात दी। मगर एक बुढ़िया जो पीछे रह जाने वालों में से थी। फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया। और तुम उनकी बस्तियों पर गुजरते हो सुबह को भी और रात को भी, तो क्या तुम नहीं समझते। (133-138)

हजरत लूत अलैहि० हजरत इब्राहीम अलैहि० के भतीजे थे। वह बहरे मुर्दार (Dead Sea) के इलाके में सदूम और अमूरा की हिदायत के लिए भेजे गए जिनके वाशिदे गैर अल्लाह की परस्तिश में मुब्तिला थे। मगर उन्होंने हिदायत कुबूल नहीं की। आखिरकार उन पर खुदा की आफ़त आई और हजरत लूत और उनके चन्द साथियों को छोड़कर सबके सब हलाक कर दिए गए।

कौमे लूत की बस्तियों के खंडहर बहरे मुर्दार के किनारे मौजूद थे और कूश के लोग जब तिजारत के लिए शाम और फिलिस्तीन जाते तो वे रास्ते में इन बर्बादशुदा बस्तियों को देखते। मगर इंसान का हाल यह है कि वह सिर्फ उसी हादसे को जानता है जो खुद उसके अपने ऊपर पड़े। दूसरों के अंजाम से वह कभी सबक नहीं लेता।

وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۖ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ۖ وَالنَّمَّةُ الْخَوْثُ وَهُوَ مُلِيمٌ ۖ فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ۖ لَكِثَ فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۖ فَبَدَّدْنَا بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ۖ وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَقْطِينٍ ۖ وَارْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ آلَافٍ أَوْ يَزِيدُونَ ۖ فَآمَنُوا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۖ

और वेशक यूनस भी रसूलों में से था। जबकि वह भाग कर भरी हुई कश्ती पर पहुंचा। फिर कुरआ (कई में से एक का चयन) डाला तो वही ख़तावार निकला। फिर उसे मछली ने निगल लिया। और वह अपने को मलामत कर रहा था। पस अगर वह तस्बीह करने

वालों में से न होता तो लोगों के उठाए जाने के दिन तक उसके पेट ही में रहता। फिर हमने उसे एक मैदान में डाल दिया और वह निढाल था। और हमने उस पर एक बेलदार दरख्त उगा दिया। और हमने उसे एक लाख या इससे ज्यादा लोगों की तरफ भेजा। फिर वे लोग ईमान लाए तो हमने उन्हें फायदा उठाने दिया एक मुद्दत तक। (139-148)

हजरत यूनस अलैहिस्सलाम का जमाना आठवीं सदी कब्ल मसीह (ईसा पूर्वी) है। वह इराककेकदीम शहर नैन्वा (Nineveh) में रसूल बनाकर भेजे गए। एक मुद्दत तक तब्तीग के बाद आपने अंदाजा किया कि कौम ईमान लाने वाली नहीं है। आपने शहर छोड़ दिया। आगे जाने के लिए आप ग़ालिबन दजला के किनारे एक कश्ती में सवार हो गए। कश्ती ज्यादा भरी हुई थी। दर्मियान में पहुंच कर डूबने का अंदेशा हुआ। चुनांचे कश्ती को हल्का करने के लिए कुरआ डाला गया कि जिसका नाम निकले उसे दरिया में फेंक दिया जाए। कुरआ हजरत यूनस के नाम निकला और कश्ती वालों ने आपको दरिया में डाल दिया। उस वक्त खुदा के हुक्म से एक बड़ी मछली ने आपको निगल लिया और आपको ले जाकर दरिया के किनारे खुशकी में डाल दिया। हजरत यूनस ने अपनी कौम को वक्त से पहले छोड़ दिया था। चुनांचे अल्लाह का हुक्म हुआ कि आप दुबारा अपनी कौम की तरफ वापस जाएं। आपने दुबारा आकर तब्तीग की तो शहर के तमाम सवा लाख वाशिदे मोमिन बन गए।

इस वाक्ये से अंदाजा होता है कि दाजी के लिए सब्र इतिहाई हद तक जरूरी है। यहां तक कि उस वक्त भी जबकि लोगों का रवैया बजाहिर मायूसी पैदा करने वाला बन जाए।

فَاسْتَفْتِمُ الرِّبَّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُونَ ۖ أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ۖ أَلَا إِنَّهُمْ مِّنْ أَفْكَهٍ يُقُولُونَ ۖ وَلَكَ اللَّهُ وَآئِمُّمٌ لِّكَذِبُونَ ۖ أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ۖ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۖ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۖ أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِينٌ ۖ فَاتُوا بِكُنْيَاكُمْ إِن كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۖ

पस उनसे पूछो क्या तुम्हारे रब के लिए बेटियां हैं और उनके लिए बेटे। क्या हमने फरिश्तों को औरत बनाया है और वे देख रहे थे। सुन लो, ये लोग सिर्फ मनगढ़त के तौर पर ऐसा कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है और यकीनन वे झूठे हैं। क्या अल्लाह ने बेटों के मुकाबले में बेटियां पसंद की हैं। तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा हुक्म लगा रहे हो। फिर क्या तुम सोच से काम नहीं लेते। क्या तुम्हारे पास कोई वाजेह दलील है। तो अपनी किताब लाओ अगर तुम सच्चे हो। (149-157)

शैतान की तर्गीब या इंसानों की ग़लत ताबीर से अक्सर ग़ैबी हकीकतों के बारे में बहुत

बड़ी-बड़ी गुमराहियाँ पैदा हो जाती हैं। उन्हीं में से एक फरिश्तों के मुतअल्लिक कुछ लोगों का यह अकीदा है कि वे खुदा की बेटियाँ हैं। यह इतिहाई हद तक वेबुनियाद और गैर माफूल बात है। इसकी गलती इस सादा सी बात से साबित होती है कि खुदा को अगर अपनी मदद के लिए औलाद दरकार थी तो वह अपने लिए बेटे बनाता। वह अपने लिए बेटियाँ क्यों बनाता जो खुद मुश्कीन के नजदीक कमजोरी की अलामत हैं।

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نِجَابًا ۚ وَقَدْ عَلِمَتْ الْجَنَّةُ أَنَّهُمْ الْخَاضِرُونَ ۚ سُبْحَنَ
اللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ۚ ۞ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۚ فَإِنْ كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ۚ مَا
أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفَاتِنِينَ ۚ إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيمِ ۚ وَآمِنَّا بِالْأَلْهِ مَقَامُ
مَعْلُومٍ ۚ وَإِنَّا لَنَحْنُ الصَّافُونَ ۚ وَإِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ۚ

और उन्होंने खुदा और जिन्नात में भी रिश्तेदारी करार दी है। और जिन्नों को मालूम है कि यकीनन वे पकड़े हुए आएंगे। अल्लाह पाक है उन बातों से जो ये बयान करते हैं। मगर वे जो अल्लाह के चुने हुए बंदे हैं। पस तुम और जिनकी तुम इबादत करते हो, खुदा से किसी को फेर नहीं सकते। मगर उसे जो जहन्नम में पड़ने वाला है। और हम में से हर एक का एक मुअय्यन (निश्चित) मकाम है। और हम खुदा के हुजूर बस सफबस्ता (पंक्तिबद्ध) रहने वाले हैं। और हम उसकी तस्वीह करने वाले हैं। (158-166)

गुमराह कौमें जिन्नात के बारे में इस तरह का अकीदा रखती हैं गोया कि जिन्नात खुदा के हरीफ (प्रतिपक्षी) और मददेमुकाबिल हैं। उनका ख्याल है कि जिन्नों के हाथ में बदी की ताकतें हैं और फरिश्तों के हाथ में नेकी की ताकतें। ये दोनों जिसे चाहें मुसीबत में डाल दें और जिसे चाहें कामयाब बना दें। जैसा कि मजूस (पारसी) खुदाई में दो के कायल हैं। उनके नजदीक यजदां नेकी का खुदा है और अहरमन बुराई का खुदा।

इंसान अपने झूठे मफरूजात (मान्यताओं) की बिना पर दुनिया में फरिश्तों की इबादत करता है। और खुद फरिश्तों का हाल यह है कि वे अल्लाह के हुजूर ताबेदार खादिम की तरह सफबस्ता (पंक्तिबद्ध) खड़े रहते हैं और हर वक्त सिर्फ एक अल्लाह की बड़ाई का एलान करते हैं।

وَإِنْ كَانُوا لَيَقُولُونَ ۚ لَوْ أَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِنَ الْأَوَّلِينَ ۚ لَكُنَّا عِبَادَ اللَّهِ
الْمُخْلَصِينَ ۚ فَكُفِّرُوا بِهِ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۚ ۞ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا
الْمُرْسَلِينَ ۚ إِنَّهُمْ لَمُتَنُورُونَ ۚ وَإِنْ جُنْدُنَا لَهُمُ الْغَلِيْبُونَ ۚ قَتُولَ عَنْهُمْ حَتَّى
حِينَ ۚ وَأَبْصَرُهُمْ فَسَوْفَ يُبْصَرُونَ ۚ

और ये लोग कहा करते थे कि अगर हमारे पास पहलों की कोई तालीम होती तो हम अल्लाह के ख़ास बंदे होते। फिर उन्होंने उसका इंकार कर दिया तो अनकरीब वे जान लेंगे। और अपने भेजे हुए बंदों के लिए हमारा यह फैसला पहले ही हो चुका है। कि बेशक वही ग़ालिब किए जाएंगे। और हमारा लश्कर ही ग़ालिब रहने वाला है। तो कुछ मुद्दत तक उनसे रुख़ फेर लो और देखते रहो, अनकरीब वे भी देख लेंगे। (167-175)

कदीम जमाने में अरबों का हाल यह था कि जब वे सुनते कि यहूद ने और दूसरी कौमों ने अपने रसूलों का इंकार किया तो वे पुरफख़ तौर पर कहते कि ये लोग बहुत बदवख़्त थे। अगर हमारे पास रसूल आता तो हम उसकी कद्रदानी करते और उसका साथ देते। मगर जब उनके अंदर अल्लाह ने एक रसूल भेजा तो वे उसके मुंकिर हो गए। जिस तरह दूसरे लोग अपने रसूलों के मुंकिर हुए थे। ऐसा हक़ आदमी को ख़ूब दिखाई देता है जिसकी जद दूसरों पर पड़ती हो। मगर जिस हक़ की जद खुद आदमी की अपनी जात पर पड़े उससे वह इस तरह बेख़बर हो जाता है जैसे उसे देखने के लिए उसके पास आंख ही नहीं।

हक़ के दावियों की बात को लोग नजरअंदाज करते हैं। वे भूल जाते हैं कि हक़ के दाजी इस दुनिया में खुदा के लश्कर हैं। हक़ के दावियों की बात हर हाल में बुलन्द व बाला होकर रहती है, चाहे मुख़ालिफ़त करने वाले उसकी कितनी ही ज्यादा मुख़ालिफ़त करें।

أَفِيعَدْنَا إِنَّا سَنُعْجِلُونَ ۚ ۞ إِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَابُ الْمُنْذَرِينَ ۚ ۞ وَتَوَلَّى
عَنْهُمْ حَتَّى حِينٍ ۚ ۞ وَأَبْصَرُ فَسَوْفَ يُبْصَرُونَ ۚ ۞ سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا
يَصِفُونَ ۚ ۞ وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ۚ ۞ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ ۞

क्या वे हमारे अजाब के लिए जल्दी कर रहे हैं। पस जब वह उनके सेहन में उतरेगा तो बड़ी ही बुरी होगी उन लोगों की सुबह जिन्हें उससे डराया जा चुका है। तो कुछ मुद्दत के लिए उनसे रुख़ फेर लो। और देखते रहो, अनकरीब वे खुद देख लेंगे। पाक है तेरा रब, इज्जत का मालिक, उन बातों से जो ये लोग बयान करते हैं। और सलाम है पैगम्बरों पर। और सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। (176-182)

पैगम्बर लोगों से कहते थे कि अगर तुमने मेरी बात न मानी तो तुम्हारे ऊपर खुदा का अजब आ जाएगा। मगर लोग इस बात को बेवकीफ़त समझते रहे और उसका मजक उड़ते रहे। इसकी वजह यह थी कि उनका पैगम्बर उन्हें इससे बहुत कम नजर आता था कि उसकी बात न मानने से उन पर खुदा का अजाब टूट पड़े।

ताहम उनके मज़ाक उड़ाने के बावजूद ऐसा नहीं हुआ कि फौरन उनके ऊपर अजाब आ जाए क्योंकि अजाबे इलाही के उतरने के लिए हुज्जत की तक्मील (आह्वान की पूर्णता) जरूरी है। इसलिए पैगम्बरों को हुक्म होता है कि वे सन्न और एराज करते रहें, यहां तक कि इल्मे इलाही के मुताबिक मुकर्रह मुदत पूरी हो जाए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾ هَٰذَا نَحْنُ نَذِيرٌ لِّلَّذِينَ كَفَرُوا فِي عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٢﴾ كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّن قُرُونٍ فَتَادُوا وَأُولَٰئِكَ هُم مِّنَ الْمُنَاقِبِ ﴿٣﴾

आयतें-88

सूरह-38. साद

रुकूअ-5

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। साद०। कसम है नसीहत वाले कुरआन की। बल्कि जिन लोगों ने इंकार किया, वे घमंड और जिद में हैं। उनसे पहले हमने कितनी ही कौमें हलाक कर दीं, तो वे पुकारने लगे और वह वक्त बचने का न था। (1-3)

‘जिज़्र’ के अस्ल मअना याददिहानी के हैं। याददिहानी किसी ऐसी चीज की कराई जाती है जो बतौर वाक्या पहले से मौजूद हो। कुआन के ‘जिज़्रिज्ज’ हेमे का मतलब यह है कि कुआन उन हकीकतों को मानने की दावत देता है जो इंसानी फितरत में पहले से मौजूद हैं। कुआन की कोई बात अब तक ख़िलाफ़े वाक्या या ख़िलाफ़े फितरत नहीं निकली। यही इस बात का काफ़ी सबूत है कि कुआन सरासर हक़ है। इसके बावजूद जो लोग कुआन को न मानें उनके न मानने का सबब यकीनी तौर पर नपिसयाती है न कि अक्ती। उनका न मानना किसी दलील की बिना पर नहीं है बल्कि इसलिए है कि उसे मान कर उनकी बढ़ाई ख़त्म हो जाएगी।

कुरआन उस दावते तौहीद (एकेश्वरवाद के आह्वान) का तसलसुल है जो पिछले हर दौर में मुख्तलिफ नबियों के जरिए जारी रही है। पिछले जमानों में जिन लोगों ने इस दावत का इंकार किया वे हलाक कर दिए गए। हाल के मुंकिरीन को माजी (अतीत) के मुंकिरीन के इस अंजाम से सबक लेना चाहिए।

وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكُفْرُونَ هَذَا سِحْرٌ كَذَابٌ ۖ اجْعَلْ الْآيَةَ
الْهَآءَ وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَٰذَا الشَّيْءَ عَجَابٌ ۖ وَأَنطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا وَاصْبِرُوا عَلَى
آيَاتِهِمْ ۚ إِنَّ هَٰذَا الشَّيْءَ مُرْءَدٌ ۖ نَاسِمِعْنَا بِهَٰذَا فِي الْمَلَأَةِ الْآخِرَةِ ۚ إِنَّ هَٰذَا إِلَّا

اٰخِرَ لَقٍ ۝۵۷ اُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِي ۚ بَلْ لَبِنَا
يَدٌ وَّوَعْدًا ۝۵۸

और उन लोगों ने ताज्जुब किया कि उनके पास उनमें से एक डराने वाला आया। और इंकार करने वालों ने कहा कि यह जादूगर है, झूठा है। क्या उसने इतने माबूदों (पूज्यों) की जगह एक माबूद कर दिया, यह तो बड़ी अजीब बात है। और उनके सरदार उठ खड़े हुए कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो, यह कोई मतलब की बात है। हमने यह बात पिछले मजहब में नहीं सुनी, यह सिर्फ एक बनाई बात है। क्या हम सब में से इसी शास्त्र पर कलामे इलाही नाजिल किया गया। बल्कि ये लोग मेरी याददिल्ली की तरफ से शक में हैं। बल्कि उन्होंने अब तक मेरे अजाब का मजा नहीं चखा। (4-8)

‘पैगम्बरे इस्लाम’ का नाम आज एक अजीम (महान) नाम है। क्योंकि बाद की पुरजम्मत तारीख़ ने इसे अजीम बना दिया है। मगर इब्तिदा में जब आपने मक्का में नुबुव्वत का दावा किया तो लोगों को आप सिर्फ़ एक मामूली आदमी दिखाई देते थे। लोगों के लिए यह यकीन करना मुश्किल हो गया कि यही मामूली आदमी वह शख्स है जिसे खुदा ने अपने कलाम का महबत (उतारने की जगह) बनने के लिए चुना है। जब तारीख़ (इतिहास) बन चुकी हो तो एक अंधा आदमी भी पैगम्बर का पहचान लेता है। मगर तारीख़ बनने से पहले पैगम्बर को पहचानने के लिए जौहरशनासी (यथार्थ की पहचान) की सलाहियत दरकार है, और यह सलाहियत वह है जो हर दौर में सबसे ज्यादा कम पाई जाती है।

कुरआन का ग़ैर मामूली तौर पर मुज़स्सिर (प्रभावशाली) कलाम कुरआन के मुख़ालिफ़ीन को हैरत में डाल देता था। मगर साहिबे कुरआन की मामूली तस्वीर दुबारा उन्हें शुबह में डाल देती थी। इसलिए वे उसे रद्द करने के लिए तरह-तरह की बातें करते थे। कभी उसे जादूगर कहते। कभी झूठा बताते। कभी कहते कि इसके पीछे कोई मादूदी गरज़ शामिल है। कभी कहते कि ऐसा क्योंकर हो सकता है कि हमारे बड़े-बड़े बुजुर्गों की बात सही न हो और इस मामूली आदमी की बात सही हो।

‘अपने मावूदों पर जमे रहो’ का लफ्ज बताता है कि दलील के मैदान में वे अपने आपको आजिज पा रहे थे, इसलिए उन्होंने तअस्सुब (विद्वेष) के नारे पर अपने लोगों को कुरआनी सैलाब से बचाने की कोशिश की।

أَمْعُنَدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۝ أَمْ لَهُمْ ثَلَاثُ سَمَوَاتٍ وَالْأَرْضُ وَمَا بَيْنَهُمَا قَلِيلٌ تَعْوَانِ فِي الْآسَابِ ۝ جُنْدٌ أَهْنَاكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ۝ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ۝ وَثَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ الْإِسْكَةِ

أُولَئِكَ الْخٰزِبُونَ ۖ إِنَّ كُلَّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابُ ۖ وَمَا يَنْظُرُ هُمُ إِلَّا إِلَاصِحَّةً ۖ وَإِحْدَةً مَّا هَا مِنْ فَوَاقٍ ۖ وَقَالُوا رَبَّنَا عَجَلْنَا قِطْنًا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۖ

क्या तैरे ख की रहमत के सजने उनके पास हैं जो जबरदस्त है, फय्याज (दाता) है। क्या आसमानों और जमीन और इनके दरमियान की चीजों की बादशाही उनके इस्त्रियार में है। फिर वे सीढ़ियां लगाकर चढ़ जाएं। एक लश्कर यह भी यहां तबाह होगा सब लश्करों में से। इनसे पहले कौमे नूह और आद और मेखों (कीलों) वाला मिरऔम। और समूद और कौमे लूत और ऐका वालों ने झुटलाया। ये लोग बड़ी-बड़ी जमाअतें थे। उन सब ने रसूलों को झुटलाया तो मेरा अजब नाजिल हेकर रहा। और ये लोग सिर्फ एक चिंघाड़ के मुंतजिर हैं, जिसके बाद कोई ढील नहीं। और उन्होंने कहा कि ऐ हमारे ख, हमारा हिस्सा हमें हिसाब के दिन से पहले दे दे। (9-16)

खुदा की रहमते हिदायत इस तरह तक्सीम नहीं होती कि जिस शख्स को दुनियावी अज्मत मिली हुई हो उसी को खुदा की हिदायत भी दे दी जाए। अगर दुनियावी अज्मत लोगों को खुदा के यहां अजीम बनाने वाली होती तो ऐसे लोगों के लिए मुमकिन होता कि वे जिस शख्स को चाहें खुदा की रहमत पहुंचाएं और जिससे चाहें उसे रोक दें। मगर हकीकत यह है कि खुदा अपनी रहमत की तक्सीम खुद अपने मेयार पर करता है न कि जाहिरपरस्त इंसानों के बनाए हुए मेयार पर।

पैगम्बर का इंकार करने वाले कहते कि जिस खुदाई अजाब से तुम हमें डरा रहे हो उस खुदाई अजाब को ले आओ। यह जुरअत उनके अंदर इसलिए पैदा होती थी कि वे समझते थे कि उन पर खुदा का अजाब आने वाला ही नहीं। उन्हें बताया गया कि जिन बुतों के बल पर तुम अपने आपको महफूज समझ रहे हो, उसी किस्म के बुतों के बल पर पिछली कौमों ने भी अपने को महफूज समझा और अपने रसूलों के साथ सरकशी की मगर वे सब की सब हलाक कर दी गई। फिर तुम आखिर किस तरह बच जाओगे।

اصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاذْكُرْ عَبْدًا دَاوُدَ ۖ ذَا الْاٰیِدِ ۖ اِنَّهٗ اَوَّابٌ ۖ اِنَّا سَخَرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَمِيِّ ۖ وَالْطَّيْرُ مَحْشُورَةٌ ۖ كُلُّ لَهٗ اَوَّابٌ ۖ وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ ۖ وَاتَيْنَهُ الْحِكْمَةَ وَفَصَّلَ الْخِطَابِ ۖ

जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो, और हमारे बंदे दाऊद को याद करो जो कुव्वत वाला, रुजूअ करने वाला था। हमने पहाड़ों को उसके साथ मुसख़्खर (वशी भूत) कर दिया कि वे उसके साथ सुबह व शाम तस्वीह करते थे, और परिंदों को भी जमा होकर। सब अल्लाह की

तरफ रुजूअ करने वाले थे। और हमने उसकी सल्लनत मजबूत की, और उसे हिक्मत अता की। और मामलात का फैसला करने की सलाहियत दी। (17-20)

दीन में सब्र की बेहद अहमियत है। मगर इंसान की अजिय्यतों (यातनाओं) पर सब्र वही शख्स कर सकता है जो इंसान के मामले को खुदा के खाने में डाल सके। जो शख्स खुदा की हम्द व तस्वीह में डूबा हुआ हो उसी के लिए यह मुमकिन है कि वह इंसान की तरफ से कही जाने वाली नाखुशगवार बातों को नजरअंदाज कर दे।

हजरत दाऊद इस सिफ्त का आला नमूना थे। उन्हें अल्लाह तआला ने रैर मामूली कुव्वत और सल्लनत दी थी। मगर उनका हाल यह था कि वह हर मामले में अल्लाह की तरफ रुजूअ करते थे। वह कायनात में बुलन्द होने वाली खुदाई तस्वीहात में गुम रहते थे। वह पहाड़ के दामन में बैठकर इतने वज्द के साथ हम्दे खुदावंदी का नगमा छेड़ते कि पूरा माहौल उनका हम आवाज हो जाता था। दरख्त और पहाड़ भी उनके साथ तस्वीहख्वानी में शामिल हो जाते थे।

अल्लाह तआला ने हजरत दाऊद को जो हुक्मत दी थी वह निहायत मुस्तहकम (मजबूत) हुक्मत थी। इस इस्तहकाम का राज था हिक्मत और फल खिताब। हिक्मत से मुराद यह है कि वह मामलात में हमेशा हकीमाना और दानिशमंदाना अंदाज इस्त्रियार करते थे। और फल खिताब का मतलब यह है कि वह बरवक्त सही फैसला लेने की सलाहियत रखते थे। यही दोनों चीजें हैं जो किसी हुक्मरां को सालेह हुक्मरां बनाती हैं। उसके अंदर हिक्मत होना इस बात का जामिन है कि वह कोई ऐसा इक्दाम नहीं करेगा जो फयदे से ज्यादा नुकसान का सबब बन जाए। और फल खिताब इसका जामिन है कि उसका फैसला हमेशा मुसफ्फना फैसला होगा।

وَهَلْ اَتٰكَ نَبُوُّ الْغَصَصِ ۚ اِذْ تَسُوْرُو الْجُرَابَ ۚ اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوُدَ فَفَزَعْنٰهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ خَطْمُنْ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاخْلُمْنٰ بَيْنَنَا بِالنَّحْرِ ۖ وَلَا تَشْطِطْ وَاَهْدِنَا اِلٰى سَوَاءٍ الصِّرَاطِ ۖ

और क्या तुम्हें खबर पहुंची है मुकदमा वालों की जबकि वे दीवार फांदकर इबादतखाने में दाखिल हो गए। जब वे दाऊद के पास पहुंचे तो वह उनसे घबरा गया, उन्होंने कहा कि आप डरें नहीं, हम दो फरीके मामला (विवाद के पक्ष) हैं, एक ने दूसरे पर ज्यादाती की है तो आप हमारे दरमियान हक के साथ फैसला कीजिए, बेइंसाफी न कीजिए और हमें राहेरास्त सन्मार्ग बताइए। (21-22)

कहा जाता है कि हजरत दाऊद ने तीन दिन की बारी मुकदमा कर रखी थी। एक दिन दरबार और मुकदमात के फैसलों के लिए। दूसरे दिन अपने अहल व अयाल (परिवारजनों) के साथ रहने के लिए। तीसरे दिन अलग रहकर खालिस खुदा की इबादत के लिए। एक रोज जबकि उनका इबादती दिन था वह अपने महल के मख्सूस हिस्से में अकेले इबादत में मशगूल

थे कि दो आदमी दीवार फांदकर अंदर दाखिल हो गए और उनके इबादत के कमरे में आकर खड़े हो गए। यह एक ग़ैर मामूली बात थी इसलिए आप कुछ घबरा उठे। उन दोनों आदमियों ने इम्मीनान दिलाया और कहा कि हम दो फरीक (पक्ष) हैं। आप से एक झगड़े का फैसला लेने के लिए यहां हाज़िर हुए हैं।

إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَجْعَةً وَلِي نَجْعَةٌ وَاحِدَةٌ فَقَالَ أَفْقِلْتُمْهَا وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ۖ قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَجْعِكَ إِلَىٰ نَجْعِهِ وَإِنْ كَثِيرٌ مِّنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْتَغِي بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ وَظَنَّ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۖ فَغَفَرْنَا لَهُ ذَلِكَ وَإِنْ لَهُ عِندَنَا لَرُفْعَىٰ وَحُسْنٌ مَّآبٍ ۚ

यह मेरा भाई है, इसके पास निम्नानवे दुंबियां हैं और मेरे पास सिर्फ एक दुंबी है। तो वह कहता है कि वह भी मेरे हवाले कर दे। और उसने गुफ्तुगू में मुझे दबा लिया। दाऊद ने कहा, उसने तुम्हारी दुंबी को अपनी दुंबियों में मिलाने का मुतालबा करके वाकई तुम पर जुल्म किया है। और अक्सर शुरका (साज़ीदार) एक दूसरे पर ज्यादाती किया करते हैं। मगर वे जो ईमान रखते हैं और नेक अमल करते हैं, और ऐसे लोग बहुत कम हैं। और दाऊद को ख्याल आया कि हमने उसका इन्तेहान किया है, तो उसने अपने ख से माफी मांगी और सज्दे में गिर गया। और रुजूअ हुआ। फिर हमने उसे वह माफ कर दिया। और बेशक हमारे यहां उसके लिए तकरूब (सान्निध्य) है और अच्छा अंजाम। (23-25)

आने वाले दोनों आदमियों ने जो मुकदमा पेश किया वह कोई हकीकी मुकदमा न था बल्कि तमसील की जवान में खुद हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम की किसी बात पर उन्हें मुतनब्बह (सचेत) करना था। चुनांचे मुकदमे का फैसला देते-देते आपको अपना वह मामला याद आ गया जो मज्हूरा मिसाल से मिलता जुलता था। आपने फौरन उससे रुजूअ कर लिया और अल्लाह के आगे सज्दे में गिर पड़े।

हजरत दाऊद को उस वक्त जबरदस्त इक्तेदार (सत्ता) हासिल था। मगर उन्होंने आने वालों को न तो कोई सजा दी और न उन्हें बुरा भला कहा। यही अल्लाह के सच्चे बंदों का तरीका है। उनके अंदर किसी मामले में ज़िद नहीं होती। उन्हें जब उनकी किसी खामी की तरफ तवज्जोह दिलाई जाए तो वे फौरन उसे मान कर अपनी इस्लाह कर लेते हैं, चाहे वे बाइक्तेदार हैसियत के मालिक हों और चाहे मुतवज्जह करने वाले ने उन्हें बेढी तरीके से मुतवज्जह किया हो।

يٰۤاٰدُۤا۟ اِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيْفَةً فِى الْاَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ يَّمْسُوْهُمُ الْيَوْمَ الْحِسَابُ ۝۱۱

ऐ दाऊद हमने तुम्हें ज़मीन में खलीफा (हाकिम) बनाया है तो लोगों के दरमियान इंसाफ के साथ फैसला करो और ख़ाहिश की पैरवी न करो वह तुझे अल्लाह की राह से भटक देगी। जो लोग अल्लाह की राह से भटकते हैं उनके लिए सज़ा अजाब है इस वजह से कि वे रोजे हिसाब को भूले रहे। (26)

एक हाकिम हमेशा दो चीजों के दरमियान होता है। या तो वह मामलात का फैसला अपनी चाहत के मुताबिक करेगा या उसूल हक के मुताबिक। जो हाकिम मामलात का फैसला अपनी चाहत और ख़ाहिश के मुताबिक करे वह राह से भटक गया। खुदा के यहां उसकी सज़ा पकड़ होगी। इसके बरअक्स (विपरीत), जो हाकिम मामलात का फैसला हक व इंसाफ के उसूल का पाबंद रहकर करे वही राहेरास्त पर है। खुदा के यहां उसे बेहिसाब इनामात दिए जाएंगे।

यह हिदायत जिस तरह एक हाकिम के लिए है उसी तरह वह आम इंसानों के लिए भी है। हर आदमी को अपने दायरए इख़्तियार में वही करना है जो इस आयत में बाइक्तेदार (सत्ताधारी) हाकिम के लिए बताया गया है।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قَوْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِّنَ النَّارِ ۚ اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ۚ كَتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبْرَكًا لِّكَذٰلِكَ يُرْوٰۤا۟ اٰيٰتِهٖ وَلِيَكُنْ ذِكْرًاۙ اَوَّلُوْا الْاٰلِاٰبِ ۝۱۲

और हमने ज़मीन और आसमान और जो इनके दरमियान है अबस (ब्यर्थ) नहीं पैदा किया, यह उन लोगों का गुमान है जिन्होंने इंकार किया, तो जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए बर्बादी है आग से। क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे काम किए उनकी मानिंद कर देंगे जो ज़मीन में फ़साद करने वाले हैं। या हम परहेज़गारों को बदकारों जैसा कर देंगे। यह एक बाबरकत किताब है जो हमने तुम्हारी तरफ उतारी है ताकि लोग इसकी आयतों पर ग़ौर करें और ताकि अक्ल वाले इससे नसीहत हासिल करें। (27-29)

दुनिया की चीजों पर गौर कीजिए तो मालूम होता है कि इसका पूरा निजाम निहायत हकीमाना बुनियादों पर कायम है हालांकि यह भी मुमकिन था कि वह एक अललतप निजाम हो और उसमें कोई बात यकीनी न हो। दो इम्कान में से एक मुनासिबतर इम्कान का पाया जाना इस बात का करीना (संकेत) है कि इस दुनिया को पैदा करने वाले ने इसे एक बामक्सद मंसूबे के तहत बनाया है। फिर जो दुनिया अपनी इब्तिदा में बामक्सद हो वह अपनी इतिहा में बेमक्सद क्योंकि हो जाएगी।

इसी तरह इस दुनिया में हर आदमी आजाद और खुदमुख्तार है। मुशाहिदा दुबारा बताता है कि लोगों में कोई शख्स वह है जो हकीकत का एतराफ करता है और अपने इख्तियार से अपने आपको सच्चाई और इंसाफ का पाबंद बनाता है। इसके मुकाबले में दूसरा शख्स वह है जो हकीकत का एतराफ नहीं करता। वह बैकैद होकर जो चाहे बोलता है और जिस तरह चाहे अमल करता है। अक्ल इसे तस्लीम नहीं करती कि जब यहां दो किस्म के इंसान हैं तो उनका अंजाम यकसां होकर रह जाए।

दुनिया की इस सूरतेहाल को सामने रखा जाए तो ज़िंदगी के मुतअल्लिक कूरआन का बयान ही ज्यादा मुताबिकेहाल नजर आएगा न कि उन लोगों का बयान जो ज़िंदगी की तशरीह (विवेचना) उसके बरअक्स अंदाज में करने की कोशिश करते हैं।

وَوَهَبْنَا لِأَدَاوِدَ سُلَيْمِينَ نَعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝ إِذْ عَرَضَ عَلَيْكَ بِالْعِشِيِّ
الضَّفِيفَةِ الْجِيَادُ ۝ فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْغَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي ۝ حَتَّى تَوَارَتْ
بِالْحِجَابِ ۝ رُدُّوْهَا عَلَيَّ طُفُفِكَ مَسْحَارِ السُّوقِ وَالْأَغْنِاقِ ۝

और हमने दाऊद को सुलैमान अता किया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ बहुत रुजूअ करने वाला। जब शाम के वक्त उसके सामने तेज रफ्तार, उम्दा घोड़े पेश किए गए। तो उसने कहा, मैंने दोस्त रखा माल की मुहब्बत को अपने रब की याद से, यहां तक कि छुप गया ओट में। उन्हें मेरे पास वापस लाओ। फिर वह झाड़ने लगा पिंडलियां और गर्दन। (30-33)

हजरत सुलैमान बिन दाऊद अलैहिस्सलाम एक अजीम सल्तनत के हुक्मरां थे। एक दिन उनकी फौज के चुस्त और तर्बियतयाफता घोड़े उनके सामने लाए गए। फिर उनकी दौड़ हुई। यहां तक कि घोड़े दौड़ते हुए दूर के मंजर में गुम हो गए। और फिर वे दुबारा वापस आए।

इस किस्म का मंजर हमेशा निहायत शानदार होता है। उन्हें देखकर आम इंसान फख्र और धमंड में मुब्तिला हो जाता है। मगर हजरत सुलैमान का हाल यह हुआ कि वह इस पुरफख्र मंजर को देखकर खुदा की याद करने लगे। उन्होंने कहा कि मैंने यह घोड़े अपनी शान दिखाने के लिए पसंद नहीं किए हैं बल्कि सिर्फ खुदा के लिए पसंद किए हैं। घोड़े की शकल

में उन्हें खुदा की अजीम कारीगरी नजर आई। और वह खुदा की अज्मत के एतराफ के तौर पर घोड़ों की गर्दनों और पिंडलियों पर हाथ फेरने लगे। मोमिन हर चीज में खुदा की शान देखता है और गैर मोमिन हर चीज में अपनी शान।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَالْقَيْنَا عَلَى كُرْسِيِّهِ جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ ۝ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي
وَهَبْ لِي مُلْكًا لَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِّنْ بَعْدِي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ فَسَخَّرْنَا لَهُ
الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ۝ وَالشَّيَاطِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَغَوَّاصٍ ۝
وَالْآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝ هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝
وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ ۝

और हमने सुलैमान को आजमाया। और हमने उसके तख्त पर एक धड़ डाल दिया, फिर उसने रुजूअ किया। उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे माफ कर दे और मुझे ऐसी सल्तनत दे जो मेरे बाद किसी के लिए सजावार (उपलब्ध) न हो। बेशक तू बड़ा देने वाला है। तो हमने हवा को उसके ताबेअ (अधीन) कर दिया। वह उसके हुक्म से नर्मी के साथ चलती थी जिधर वह चाहता। और जिन्नात को भी उसका ताबेअ कर दिया। हर तरह के कामगर और गोताखोर। और दूसरे जो जंजीरों में जकड़े हुए रहते। यह हमारा अतिया (देन) है तो चाहे उसे दो या रोको, बेहिसाब। और उसके लिए हमारे यहां कुर्ब (समीपता) है और बेहतर अंजाम। (34-40)

हर इंसान से कोताही होती है। मगर खुदा के नेक बंदों के लिए कोताही एक अजीम भलाई बन जाती है क्योंकि वे कोताही के बाद और ज्यादा खुशूअ (विनय) के साथ अपने रब की तरफ पलटते हैं और फिर और ज्यादा इनाम के मुस्तहिक क़ार पाते हैं।

हजरत सुलैमान अलैहिस्सलाम से भी एक मौके पर भूलवश कोई कोताही हो गई। जब आप पर हकीकत वाज्हे हई तो आप शदीद इनाबत (समर्पण-भाव) के साथ अल्लाह की तरफ मुतवज्जह हो गए। अल्लाह तआला ने आप से दरगुजर फरमाया और मजीद यह इनाम किया कि आपको अजीम सल्तनत अता फरमाई और आपको ऐसे गैर मामूली इख्तियारात दिए जो किसी और इंसान को हासिल नहीं हुए।

وَإِذْ ذَكَرَ عَبْدَنَا أَيُّوبَ ۚ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الشَّيْطَانُ بِنُصْبٍ ۖ وَعَدَآءٍ ۝
أَرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هَذَا مُغْتَسَلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ۝ وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم
مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا ۖ وَذَكَرَىٰ لِلْأُولَىٰ الْآلِبَابِ ۝ وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْتًا ۖ فَاضْرِبْ بِهِ وَ

لَا تَحْزَنْ ۖ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۖ نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝

और हमारे बंदे अय्यूब को याद करो। जब उसने अपने रब को पुकारा कि शैतान ने मुझे तकलीफ और अजाब में डाल दिया है। अपना पांव मारो। यह ठंडा पानी है, नहाने के लिए और पीने के लिए। और हमने उसे उसका कुंवा अता किया और उनके साथ उनके बराबर और भी, अपनी तरफ से रहमत के तौर पर और अक्ल वालों के लिए नसीहत के तौर पर। और अपने हाथ में सीकों का एक मुट्ठा लो और उससे मारो और कसम न तोड़ो। बेशक हमने उसे साबिर (धैर्यवान) पाया, बेहतरीन बंदा, अपने रब की तरफ बहुत रुजूअ करने वाला। (41-44)

हजरत अय्यूब अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के पैगम्बरों में से थे। उनका जमाना गालिलन नवीं सदी कबल मसीह (ईसा पूर्वी) है। उन्हें काफी माल व दौलत हासिल थी। मगर माल व दौलत में गुम होने के बजाए वह खुदा की इबादत करते और लोगों को खुदा की तरफ बुलाते थे।

कुछ ग़लत किस्म के लोगों ने यह कहना शुरू किया कि अय्यूब को जब इतना ज्यादा माल व दौलत हासिल है तो वह दीनदार न बनेंगे तो और क्या करेंगे। अल्लाह तआला ने लोगों पर हुज्जत कायम करने के लिए हजरत अय्यूब को मुफ़्तस बना दिया। मगर वह बदस्तूर अल्लाह के इबादतगुजार बंदे बने रहे। उन्होंने कहा कि 'खुदावंद ने दिया और खुदावंद ने ले लिया। खुदावंद का नाम मुबारक हो।'।

शरीर लोग अब भी चुप न हुए। उन्होंने कहा कि अस्ल इस्तेहान तो यह है कि वह जिस्मानी तकलीफ में मुब्तिला हों और फिर भी सब्र व शुक्र पर कायम रहें। अल्लाह तआला ने लोगों को यह नमूना भी दिखाया। हजरत अय्यूब को सख़्त जिल्दी (खाल की) बीमारी लाहिक हुई और उनके तमाम जिस्म पर फोड़े हो गए। मगर वह बदस्तूर सब्र व शुक्र की तस्वीर बने रहे। जब लोगों पर हुज्जत तमाम हो चुकी तो अल्लाह तआला ने हजरत अय्यूब के लिए एक चशमा (स्रोत) जारी किया जिसमें नहाने से उनका जिस्म बिल्कुल तंदुरुस्त हो गया। और माल व औलाद भी दुबारा मज्द इजफे के साथ अता फरमाए।

हजरत अय्यूब ने बीमारी की हालत में किसी बात पर कसम खा ली थी कि अच्छे हो गए तो अपनी बीबी को सौ लकड़ियां मारेंगे। अल्लाह तआला ने इस कसम को पूरा करने की यह तदबीर उन्हें बताई कि एक झाड़ू लो जिसमें एक सौ सीकें हों और उससे हल्के तौर पर एक बार अपनी बीबी को मार दो। इससे मालूम हुआ कि मख़सूस हालात में हीला (प्रतीकात्मक अमल) करना जाइज है, बशर्ते कि वह किसी शरई हुक्म को बातिल न करता हो।

खुदा जब अपने दीन के लिए किसी को इस्तेमाल करे और वह शख्स किसी संकोच के बग़ैर अपने आपको खुदा के हवाले कर दे तो खुदा उसे दुबारा उससे ज्यादा दे देता है जितना उससे मज्बूरा अमल के दौरान छिना था।

وَاذْكُرْ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ ۖ وَسَمِعَ وَيَعْقُوبَ ۖ أُولَى الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ۖ إِنَّا أَخْلَصْنَاهُم بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ۖ وَإِنَّا لَهُمْ عِنْدَنَا لَمَنَ الْمُصْطَفَيْنِ الْخَيْرِ ۖ وَاذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ ۖ وَالْيَسَعَ ۖ وَذَا الْكِفْلِ ۖ وَكُلٌّ مِّنَ الْخَيْرِ ۖ

और हमारे बंदो, इब्राहीम और इस्हाक और याकूब को याद करो, वे हाथों वाले और आंखों वाले थे। हमने उन्हें एक ख़ास बात के साथ मख़सूस किया था कि वह आख़िरत (परलोक) की याददिहानी है। और वे हमारे यहां चुने हुए नेक लोगों में से हैं। और इस्माईल और अल यसअ और जुलक़िफ़ल को याद करो, सब नेक लोगों में से थे। (45-48)

यहां चन्द पैगम्बरों का जिक्र करके इशार्द हुआ कि वे हाथ वाले और आंख वाले थे। यानी उन्हें जिस्मानी कुव्वत और जेहनी बसीरत (सूझबूझ) दोनों आला दर्जे में हासिल थीं। एक तरफ वे अमली सलाहियत के मालिक थे। दूसरी तरफ उन्होंने उस मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) का सुबूत दिया कि वे चीजों को सही नजर से देखने और मामलात में सही राय कायम करने की सलाहियत रखते हैं। चुनांचे खुदा ने उन्हें अपने पैगाम की पैगाम्बरी के लिए चुन लिया।

खुदा का ख़ास काम क्या है जिसके लिए वह इंसानों में से अपने पैगाम्बर चुनता है। वह है आख़िरत के घर की याददिहानी। पैगाम्बरों का ख़ास मिशन हमेशा यह रहा है कि वे इंसान को उस हकीकत से बाख़बर करें कि इंसान की अस्ल मजिल आख़िरत है। और इंसान को उसी की तैयारी करना चाहिए। इंसान का सबसे बड़ा मसला यही है और इस दुनिया में सबसे बड़ा काम यह है कि उसे इस संगीन मसले से आगाह किया जाए।

هَذَا ذِكْرٌ وَإِنَّا لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنٌ مَّا بٍ ۖ جَنَّتِ عَدْنٍ مُّفْتَحَةً لَهُمُ الْأَبْوَابُ ۖ مُتَّكِينَ فِيهَا يَفَاكُهُ كَثِيرٌ ۖ وَشَرَابٍ ۖ وَعِنْدَهُمْ قَصِيرَاتُ الطَّرْفِ ۖ أَتْرَابٌ ۖ هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۖ إِنَّ هَذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِنْ نَفَادٍ ۖ

यह नसीहत है, और बेशक अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा ठिकाना है, हमेशा के बाग़ जिनके दरवाजे उनके लिए खुले होंगे। वे उनमें तकिया लगाए बैठे होंगे। और बहुत से मेवे और मशरूबात (पेय पदार्थ) तलब करते होंगे। और उनके पास शर्मीली हमसिन (समान अवस्था वाली) बीवियां होंगी। यह है वह चीज जिसका तुमसे रोजे हिसाब आने पर वादा किया जाता है। यह हमारा रिश्क है जो कभी ख़त्म होने वाला नहीं। (49-54)

जन्नत के दरवाजे उन लोगों के लिए खोले जाते हैं जो अपने दिल के दरवाजे नसीहत के लिए खोलें। जो खुदा के जुहूर से पहले खुदा से डरने वाले बन जाएं। यही वे खुशनसीब लोग

हैं जो आखिरत की अबदी नेमतों के हिस्सेदार होंगे।

कुरआन में आखिरत की जिन नेमतों का जिक्र है वे सब वही हैं जो दुनिया में भी इंसान को हासिल होती हैं। मगर दोनों में जबरदस्त फर्क है। वह यह कि दुनिया में ये नेमतें वक्ती और इब्तिदाई शक्ल में दी गई हैं और आखिरत में ये नेमतें अबदी और इतिहाई शक्ल में दी जाएंगी। मजिद यह कि इन आला नेमतों के साथ हर क्रिम के ख़ैफ और अंशे को हजफ कर दिया जाएगा जिनका हजफ होना मौजूदा दुनिया में किसी तरह मुमकिन नहीं।

هَذَا وَإِنَّ لِلطَّغْيِينَ لَشَرَّ مَا يَبْتَغُونَ ۖ يَصْلَوْنَهَا فَيُشْسِلُ إِلَيْهَا ۖ هَذَا أَقْلِيدُ وَفُؤُهُ
حَمِيمٌ وَغَشَاقٌ ۖ وَآخِرُ مَنْ شَكَلَهُ أَرْوَاجٌ ۖ هَذَا فَوْجٌ مُّقْتَحَمٌ مَعَكُمْ لَا مَرْجَبَ
لَهُمْ ۖ إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ۖ قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ لَا مَرْجَبَ لَكُمْ ۖ أَنْتُمْ قَدْ مَتَّوْهُنَا فَيُشْسِلُ
الْقَرَارِ ۖ قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدْ مَلْنَا هَذَا فَرْدُهُ عَذَابًا ضِعْفَانِ ۖ قَالُوا مَا لَنَا
لَا نَرَى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِنَ الْأَشْرَارِ ۖ أَخَذْنَا لَهُمْ سِجْرًا ۖ أَمْزَجْنَا لَهُمْ
الْأَبْصَارَ ۖ إِنَّ ذَلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ۖ

यह बात हो चुकी, और सरकशों के लिए बुरा ठिकाना है। जहन्नम, उसमें वे दाखिल होंगे। पस क्या ही बुरी जगह है। यह खौलता हुआ पानी और पीप है, तो ये लोग उन्हें चखें। और इस क्रिम की दूसरी और भी चीजें होंगी। यह एक फौज तुम्हारे पास घुसी चली आ रही है, उनके लिए कोई खुशआमदीद (स्वागत) नहीं। वे आग में पड़ने वाले हैं। वे कहेंगे बल्कि तुम, तुम्हारे लिए कोई खुशआमदीद नहीं। तुम्हीं तो यह हमारे आगे लाए हो, पस कैसा बुरा है यह ठिकाना। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, जो शख्स इसे हमारे आगे लाया उसे तू दुगना अजाब दे, जहन्नम में। और वे कहेंगे, क्या बात है कि हम उन लोगों को यहां नहीं देख रहे हैं जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे। क्या हमने उन्हें मजाक बना लिया था या उनसे निगाहें चूक रही हैं। बेशक यह बात सच्ची है, अहले दोख का आपस में झगड़ना। (55-64)

जहन्नम उन तकलीफों की अबदी और इतिहाई शक्ल है जिनका मौजूदा दुनिया में कोई शख्स तसव्वुर कर सकता है। दुनिया में सरकशी करने वाले सच्चाई को झुठलाने वाले लोग जब जहन्नम में इकट्ठा होंगे तो उनके लीडर और पैरोकार आपस में तकरार करेंगे। वे पैरोकार जो अपने लीडरों की अज्मत पर फख्र करते थे वे वहां अपना अंजाम देखकर उन पर लानत भेजेंगे। इसका एक नक्शा इन आयात में दिखाया गया है।

सच्चाई का इंकार करने वाले जब आखिरत में अपना बुरा अंजाम देखेंगे तो वहां वे उन लोगों को याद करेंगे जिन्होंने सच्चाई का साथ दिया था और इस बिना पर वे अपने माहौल

में हकीर बन गए थे। उनके मुतअल्लिक मुकिरीन कहते थे कि ये अकाबिर की तोहीन करने वाले हैं। ये आबाई (पैतृक) दीन से भटक गए हैं। इन्होंने मिल्लत से अलग अपना रास्ता बनाया है।

ये मुकिरीन अपने आपको हक पर समझते थे और उन्हें नाहक पर। मगर आखिरत में मामला बिल्कुल बरअक्स हो जाएगा। उस वक्त उन पर खुलेगा कि जिन्हें हकीर (तुच्छ) समझ कर वे उनका मजाक उड़ते थे, वही आखिरत की सफराजी में सबसे आगे दर्जा पाए हुए हैं।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مَذْذَرٌ ۖ وَمَنْ إِلَهٌ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۖ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۖ قُلْ هُوَ بَوُّ عَظِيمٌ ۖ أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ۖ مَا كَانَ لِي
مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلِكِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۖ إِنْ يُؤْمَرُ إِلَىٰ إِلَّا أَمَّا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۖ

कहो कि मैं तो सिर्फ एक डराने वाला हूं। और कोई माबूद (पूज्य) नहीं मगर अल्लाह, यकता (एक) और गालिब (वर्चस्वशील)। वह रब है आसमानों और जमीन का और उन चीजों को जो इनके दर्मियान हैं, वह जबरदस्त है, बख़शने वाला है। कहो कि यह एक बड़ी ख़बर है, जिससे तुम बेपरवाह हो रहे हो। मुझे आलमे वाला (आकाश लोक) की कुछ ख़बर नहीं थी जबकि वे आपस में तकरार कर रहे थे। मेरे पास तो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) बस इसलिए आती है कि मैं एक खुला डराने वाला हूं। (65-70)

यहां जिस इख़िसाम (तकरार) का जिक्र है वह वही है जो अगली आयत में मंकूल है।

यानी आदमी की तख़्कीक (रचना) के वक्त इब्लीस का बहस व तकरार करना।

कुरआन में बताया गया है कि शैतान पहले रोज से आदम का दुश्मन बन गया है। वह पुरफरेब बातों के जरिए औलादे आदम को सीधे रास्ते से भटकाता है। इसलिए इंसान को चाहिए कि वह होशियार रहे और उससे पूरी तरह बचने की कोशिश करे। इस सिलसिले में आदम की पैदाइश के वक्त जो इख़िसाम (तकरार) हुआ और उसे कुरआन में बयान किया गया वह सरासर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) था। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस वक्त मलए आला में मौजूद न थे कि जाती वाकफ़ियत की बुनियाद पर उसे बयान कर सकते।

सबसे अहम ख़बर इंसान के लिए यह है कि उसे ज़िंदगी की इस नौइयत से आगाह किया जाए कि शैतान हर लम्हा उसके पीछे लगा हुआ है, वह उसकी सोच और उसके जब्बात में दाखिल होकर उसे गुमराह कर रहा है। इंसान को चाहिए कि वह इस ख़तरे से अपने आपको बचाए। पैगम्बर एक एतबार से इसीलिए आए कि इंसान को इस नाजुक ख़तरे से आगाह कर दें।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن طِينٍ ۖ ۝۱۱ فَاذْصَوِّتْ لَهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ۝۱۲ فَسَجَدَ الْمَلِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۖ إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝۱۳ قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَن تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِكَ ۖ اسْتَكْبَرْتَ أَفَكُنْتَ مِنَ الْعَالِينَ ۝۱۴ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ خَلْقَتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ ۝۱۵ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۖ وَإِنَّ عَلَيْكَ لعَذَابِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ۝۱۶

जब तुम्हारे रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक बंशर (इंसान) बनाने वाला हूँ। फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर लूँ और उसमें अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सज्दे में गिर पड़ना। पर तमाम फरिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान), कि उसने घमंड किया और वह इंकार करने वालों में से हो गया। फरमाया कि ऐ इब्लीस, किस चीज ने तुझे रोक दिया कि तू उसे सज्दा करे जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया। यह तूने तकबुर (घमंड) किया या तू बड़े दर्जे वालों में से है। उसने कहा कि मैं आदम से बेहतर हूँ। तूने मुझे आग से पैदा किया है और उसे मिट्टी से। फरमाया कि तू यहां से निकल जा, क्योंकि तू मर्दूद (धुत्कारा हुआ) है। और तुझ पर मेरी लानत है जजा के दिन तक। (71-78)

अल्लाह तआला ने इंसान को एक इतिहाई आला मख्तूक की हैसियत से बनाया। और इसकी अलामत के तौर पर फरिश्तों और जिन्यों को हुक्म दिया कि वे उसे सज्दा करें। इसके बाद जब ऐसा हुआ कि इब्लीस ने आदम को सज्दा नहीं किया तो वह हमेशा के लिए मलऊन करार पा गया। मगर इस संगीन वाक्ये की अहमियत सिर्फ इब्लीस के एतबार से न थी बल्कि खुद आदम के लिए भी इसकी बेहद अहमियत थी।

आदम के आगे झुकने से इंकार करके इब्लीस अबदी तौर पर नस्ले आदम का हरीफ (प्रतिपक्षी) बन गया। इस तरह इंसानी तारीख अव्वल रोज से एक नए रुख पर चल पड़ी। इस वाक्ये ने तै कर दिया कि इंसान के लिए जिंदगी का सफर कोई सादा सफर नहीं होगा बल्कि शदीद मुजाहेमत (प्रतिरोध) का सफर होगा। उसे इब्लीस के बहकावों और उसकी पुरफरेब तदबीरों का मुकाबला करते हुए अपने आपको सही रास्ते पर कायम रखना होगा ताकि वह सलामती के साथ अपनी मंजिल तक पहुंच सके।

इंसान और जन्नत के दर्मियान शैतान की फरेबकारियां हायल हैं। जो शरूख शैतान की फरेबकारियों से अपने आपको बचाए वही जन्नत के अबदी बाशों में दाखिल होगा। और जो लोग शैतान की फरेबकारियों का पर्दा फाड़ने में नाकाम रहें वही वे लोग हैं जो जन्नत से महरूम रह गए।

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۖ ۝۱۷ قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۖ ۝۱۸ إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ۖ ۝۱۹ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخَصِّصِينَ ۖ ۝۲۰ فَالْحَقُّ وَالْحَقُّ أَقُولُ ۖ ۝۲۱ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكَ وَمِمَّن تَبَعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ۖ ۝۲۲

इब्लीस ने कहा कि ऐ मेरे रब, मुझे मोहलत दे उस दिन तक के लिए जब लोग दुबारा उठाए जाएंगे। फरमाया कि तुझे मोहलत दी गई, मुअय्यन (निश्चित) वक्त तक के लिए। उसने कहा कि तेरी इज्जत की कसम, मैं उन सबको गुमराह करके रहूंगा, सिवाए तैरे उन बंदों के जिन्हें तूने खालिस कर लिया है। फरमाया, तो हक यह है और मैं हक ही कहता हूँ कि मैं जहन्नम को तुझसे और उन तमाम लोगों से भर दूंगा जो उनमें से तेरी पैरवी करेंगे। (79-85)

मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में शैतान को पूरा मौका दिया गया है कि वह इंसान को बहकाए। मगर शैतान उसी वक्त तक बहका सकता है जब तक हकीकत गैब में छुपी हुई हो। कियामत जब गैब का पर्दा फाड़ेगी तो सब कुछ सामने आ जाएगा। इसके बाद न कोई बहकाने वाला बाकी रहेगा और न कोई बहकने वाला।

मुख़्तलस का मतलब है खोट से खाली होना। मुख़्तलस बंदा वह है जो नफिसयाती बीमारियों से पाक हो। शैतान का मामला यह है कि उसे कोई अमली जोर हासिल नहीं। वह हमेशा तजईन के जरिए इंसानों को बहकाता है। यानी बातिल को हक के रूप में दिखाना। बेअस्ल बातों को खूबसूरत अल्फाज में पेश करना। सीधी बात में शोशा निकाल कर लोगों को उसकी तरफ से मुशतबह (संदिग्ध) कर देना। ताहम शैतान की इस तजईन से वही लोग फरेब खाते हैं जो अपने अंदर नफिसयाती खोट लिए हुए हों। और जो लोग अपनी नफिसयात को उसकी फितरी हालत पर बाकी रखें और अपनी अक्ल को खुले तौर पर इस्तेमाल करें वे फौरन शैतानी फरेब को पहचान लेते हैं। वे कभी उसकी तजईन से गुमराह नहीं होते।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِينَ ۖ ۝۲۳ إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۖ ۝۲۴ وَلِتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ۖ ۝۲۵

कहो कि मैं इस पर तुमसे कोई अज्र (मेहनताना) नहीं मांगता और न मैं तकल्लुफ (बनावट) करने वालों में से हूँ। यह तो बस एक नसीहत है दुनिया वालों के लिए। और तुम जल्द उसकी दी हुई खबर को जान लोगे। (86-88)

दाजी की एक लाजिमी सिपत यह है कि वह मदऊ (संबोधित पक्ष) से अज्र का तालिब नहीं होता। वह अपने और मदऊ के दर्मियान कोई मादूदी झगड़ा नहीं खड़ा करता। कुरआन की दावत

आखिरत की दावत है। इसलिए जो शख्स ऐसा करे कि वह एक तरफ कुरआन की दावते आखिरत का अलमबरदार (ध्वजावाहक) हो, और इसी के साथ मदऊ कौम से माददी (भौतिक, आर्थिक) मुतालबात की मुहिम भी चलाए वह मदऊ की नजर में एक ग़ैर संजीदा आदमी है। और जो आदमी खुद अपनी ग़ैर संजीदगी साबित कर दे उसकी बात पर कौन ध्यान देगा।

इसी तरह दाओ अपनी तरफ से बनाकर कोई बात नहीं कहता। वह बस वही कहता है जो खुदा की तरफ से उसे मिला है। मसरूक ताबई कहते हैं कि हम अब्दुल्लाह बिन मसऊद रजियल्लाहु अन्हु के पास आए। उन्होंने कहा कि ऐ लोगो, जो शख्स कुछ जानता हो तो उसे चाहिए कि बोले। और जो शख्स न जानता हो तो उसे यह कहना चाहिए कि अल्लाह ही ज्यादा जानता है। यह इल्म की बात है कि आदमी जिस चीज को न जाने उसके बारे में कह दे कि अल्लाह ज्यादा जानता है। क्योंकि अल्लाह ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फरमाया है कि कहो कि मैं इस पर तुमसे अज़ नहीं मांगता और मैं तकल्लुफ करने वालों में से नहीं हूँ। (तफसीर इब्नेकसीर)

इसी तरह दाओ की यह सिफत है कि वह दावत को नसीहत के रूप में पेश करे। उसका कलाम ख़ैरखाहाना (परोपकारी) कलाम हो न कि मुनाजिराना (वाद-विवाद का) कलाम।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۚ الْأَلِلَهُ الدِّينُ الْخَالِصُ ۚ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ۝

आयतें-75

सूरह-39. अज़-जुमर

रुकूअ-8

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। यह किताब अल्लाह की तरफ से उतारी गई है जो जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। बेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ हक के साथ उतारी है, पस तुम अल्लाह ही की इबादत करो उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। आगाह, दीन ख़ालिस सिर्फ अल्लाह के लिए है। और जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे हिमायती बना रखे हैं, कि हम तो उनकी इबादत सिर्फ इसलिए करते हैं कि वे हमें खुदा से करीब कर दें। बेशक अल्लाह उनके दर्मियान उस बात का फैसला कर देगा जिसमें वे झेलाफ़ (मतभेद) कर रहे हैं। अल्लाह ऐसे शख्स को हिदायत नहीं देता जो झूठ, हक को न मानने वाला हो। (1-3)

कुरआन हकीकते वाक्या का खुदाई बयान है। इसका हकीमाना उस्तूब और इसके ग़ैर मामूली तौर पर पुख्ता मजामीन इस बात का दाखिली सुबूत हैं कि यह वाक्यातन खुदा ही की तरफ से है। कोई इंसान इस किस्म का ग़ैर मामूली कलाम पेश करने पर कादिर नहीं।

दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस करने का मतलब है इबादत को अल्लाह के लिए ख़ालिस करना। यानी यह कि तुम सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करो, अपनी इबादत को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए।

हर इंसान के अंदर पुरअसरार (रहस्यमयी) तौर पर इबादत का जब्बा मौजूद है। यानी किसी को बड़ा तसव्वुर करके उसके लिए अजीब और बड़ा समझने (Awe) का एहसास पैदा होना। जिस हस्ती के बारे में आदमी के अंदर यह एहसास पैदा हो जाए उसे वह सबसे ज्यादा मुकद्दस समझता है। उसके आगे उसकी पूरी हस्ती झुक जाती है। उसकी जनाब में वह ग़ैर मामूली किस्म के एहताराम व आदाब का इज़हार करता है। उससे वह सबसे ज्यादा डरता है और उसी से सबसे ज्यादा मुहब्बत करता है। उसकी याद से उसकी रूह को लज्जत मिलती है। वही उसकी ज़िंदगी का सबसे बड़ा सहारा बन जाता है।

इसी का नाम इबादत (या परस्तिश) है। और यह इबादत सिर्फ एक खुदा का हक है। मगर इंसान ऐसा करता है कि वह खुदा को मानते हुए इबादत में ग़ैर खुदा को शरीक करता है। वह ग़ैर खुदा के लिए इबादती अफआल अंजाम देता है। यही इंसान की अस्ल गुमराही है। हकीकत यह है कि जिस तरह खुदाई नाक़बिले तक्सीम है उसी तरह इबादत की भी तक्सीम नहीं की जा सकती।

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَأَصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ سُبْحَنَهُ ۚ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۚ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يَكُونُ اللَّيْلُ عَلَى النَّهَارِ وَيَكُونُ النَّهَارُ عَلَى اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ الْأَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَفَّارُ ۝

अगर अल्लाह चाहता कि वह बेटा बनाए तो अपनी मख़्लूक में से जिसे चाहता चुन लेता, वह पाक है। वह अल्लाह है, अकेला, सब पर ग़ालिब। उसने आसमानों और जमीन को हक के साथ पैदा किया। वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है। और उसने सूरज और चांद को मुख़ख़र (वशीभूत) कर रखा है। हर एक एक ठहरी हुई मुद्दत पर चलता है। सुन लो कि वह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। (4-5)

आदमी के अंदर फ़ितरी तौर पर यह जब्बा है कि वह खुदा की तरफ लपके, वह खुदा की परस्तिश करे। शैतान की कोशिश हमेशा यह होती है कि वह इस जब्जे को खुदा की तरफ से हटाकर दूसरी तरफ मोड़ दे। इसलिए वह लोगों के जेहन में डालता है कि खुदा की बारगाह

और जब इंसान को कोई तकलीफ पहुंचती है तो वह अपने ख को पुकारता है, उसकी तरफ रुजूअ (प्रवृत्त) होकर। फिर जब वह उसे अपने पास से नेमत दे देता है तो वह उस चीज को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था और वह दूसरों को अल्लाह का बराबर ठहराने लगता है ताकि उसकी राह से गुमराह कर दे। कहे कि अपने कुफ्र से थोड़े दिन फायदा उठा ले, बेशक तू आग वालों में से है। भला जो शख्स रात की घड़ियों में सज्दा और कियाम की हालत में आजिजी (विनय) कर रहा हो, अखिरत से डरता हो और अपने ख की रहमत का उम्मीदवार हो, कहे, क्या जानने वाले और न जानने वाले दोनों बराबर हो सकते हैं। नसीहत तो वही लोग पकड़ते हैं जो अक्ल वाले हैं। (8-9)

हर आदमी पर ऐसे लम्हात आते हैं जबकि वह अपने आपको बेबस महसूस करने लगता है। वह जिन चीजों को अपना सहारा समझ रहा था वे भी इस नाजुक लम्हे में उसके मददगार नहीं बनते। उस वक्त आदमी सब कुछ भूलकर खुदा को पुकारने लगता है। इस तरह मुसीबत की घड़ियों में हर आदमी जान लेता है कि एक खुदा के सिवा कोई माबूद नहीं। मगर मुसीबत दूर होते ही वह दुबारा पहले की तरह बन जाता है।

इंसान की मजिद सरकशी यह है कि वह अपनी नजात को खुदा के सिवा दूसरी चीजों की तरफ मसूब करने लगता है। कुछ लोग उसे असबाब का करिश्मा बताते हैं और कुछ लोग फर्जी माबूदों का करिश्मा। आदमी अगर गलती करके खामोश रहे तो यह सिर्फ एक शख्स का गुमराह होना है। मगर जब वह अपनी गलती को सही साबित करने के लिए उसकी झूठी तौजीह करने लगे तो वह गुमराह होने के साथ गुमराह करने वाला भी बना।

एक इंसान वह है जिसे सिर्फ मादूदी ग़म बेकरार करे। दूसरा इंसान वह है जिसे खुदा की याद बेकरार कर देती हो। यही दूसरा इंसान दरअसल खुदा वाला इंसान है। उसका इकरारे खुदा हालात की पैदावार नहीं होता, वह उसकी शऊरी दरयाफ्त (चेतनापूर्ण खोज) होता है। वह खुदा को एक ऐसी बरतर हस्ती की हैसियत से पाता है कि उसकी उम्मीदें और उसके अंदेशों सब एक खुदा की जात के साथ वाबस्ता हो जाते हैं। उसकी बेकरारियां रात के लम्हात में भी उसे बिस्तर से जुदा कर देती हैं। उसकी तंहाई ग़फलत की तंहाई नहीं होती बल्कि खुदा की याद की तंहाई बन जाती है।

इल्म वाला वह है जिसकी नफिसयात में खुदा की याद से हलचल पैदा होती हो। और बेइल्म वाला वह है जिसकी नफिसयात को सिर्फ मादूदी हालात बेदार करें। वह मादूदी झटकों से जागे और इसके बाद दुबारा ग़फलत की नींद सो जाए।

قُلْ يُعْبَادُوا الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّكُمْ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ
وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ إِنَّمَا يُوَفَّى الصَّادِقُونَ أَجْرُهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۖ

कहे कि ऐ मेरे बंदो जो ईमान लाए हो, अपने ख से डरो। जो लोग इस दुनिया में नेकी करेंगे उनके लिए नेक सिला (प्रतिफल) है। और अल्लाह की जमीन वसीअ (विस्तृत) है। बेशक सब करने वालों को उनका अज़्र बेहिसाब दिया जाएगा। (10)

आदमी को जब अल्लाह की गहरी मअरफत (अन्तर्ज्ञान) हासिल होती है तो इसका लाजिमी नतीजा यह होता है कि वह अल्लाह से डरने वाला बन जाता है। अल्लाह की अज्मतों का इदराक उसे अल्लाह के आगे पस्त कर देता है। उसकी अमली जिंदगी अल्लाह के अहकाम की पाबंदी में गुजरने लगती है। वह इस मामले में इस हद तक संजीदा हो जाता है कि सब कुछ छोड़ दे मगर अल्लाह को न छोड़े।

ईमान के ऊपर जिंदगी की तामीर करना आदमी के लिए जबरदस्त इस्तेहान है। इस इस्तेहान में वही लोग पूरे उतरते हैं जिनके लिए ईमान इतनी कीमती दौलत हो कि उसकी खातिर वे हर दूसरी चीज पर सब्र करने के लिए राजी हो जाएं। ईमानी जिंदगी अमल के एतबार से सब्र वाली जिंदगी का दूसरा नाम है। जो लोग सब्र की कीमत पर मोमिन बनने के लिए तैयार हों वही वे लोग हैं जो खुदा के आला इनामात में हिस्सेदार बनाए जाएंगे।

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۚ وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ
الْمُسْلِمِينَ ۚ قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۖ قُلْ اللَّهُ أَعْبُدُ
مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ۚ فَاَعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ قُلْ إِنَّ الْخَيْرَ لِنَ الْذِينَ حَبَرُوا
أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ أَلَا ذَٰلِكَ هُوَ الْخَيْرُ لَنْ يُبَيِّنَ ۖ لَهُمْ مَنْ فَوْقَهُمْ ظُلُمٌ
مِّنَ السَّمَاءِ وَمَنْ تَحْتَهُمْ ظُلُمٌ ۚ ذَٰلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهُ بِهِ عِبَادَ ۖ يَعْبُدُونَ ۖ فَاتَّقُوا ۚ

कहो, मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की इबादत करूं, उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सबसे पहले खुद मुस्लिम (आज्ञाकारी) बनूं। कहे कि अगर मैं अपने ख की नाफरमानी (अवज्ञा) करूं तो मैं एक हौलनाक दिन के अजाब से डरता हूं। कहे कि मैं अल्लाह की इबादत करता हूं उसी के लिए दीन को ख़ालिस करते हुए। पस तुम उसके सिवा जिसकी चाहे इबादत करो। कहे कि असली घाटे वाले तो वे हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने घर वालों को कियामत के दिन घाटे में डाला। सुन लो यही खुला हुआ घाटा है। उनके लिए उनके ऊपर से भी आग के सायवान होंगे और उनके नीचे से भी। यह चीज है जिससे अल्लाह अपने बंदों को डराता है। ऐ मेरे बंदो, पस मुझसे डरो। (11-16)

पैगम्बर की अस्ल दावत यह होती है कि लोग सिर्फ एक खुदा के परस्तार बनें। उसके सिवा

दूसरी तमाम चीजों की परस्तारी छोड़ दें। पैगम्बर के लिए यह मारुफ (प्रचलित) मअनोंमेंसिर्फ क़स्सी (नेतृत्वपरक) मसला नहीं होता बल्कि वह उसका जाती मसला होता है। इसलिए वह सबसे पहले खुद उस पर कायम होता है। पैगम्बर को यकीन होता है कि आदमी के नफ़ व नुक़सान का अस्त फ़ैसला आख़िरत में होने वाला है। इसलिए वह खुद अपनी जिंदगी को आख़िरत की राह में लगाता है और दूसरों को उसकी तरफ़ लगने की दावत देता है।

पैगम्बर के काम की यह नौइयत दाओ के काम की नौइयत को बता रही है। हक़ का दाओ वही शख्स है जिसके लिए हक़ उसका जाती मसला बन जाए। जिसकी दावत उसकी अंदरूनी हालत का एक बेताबाना इज़हार हो न कि लाउडस्पीकर की तरह सिर्फ़ एक ख़ारजी पुकार।

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ يَعْبُدُوهَا وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فَبَشِّرْ عِبَادِ ۚ الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ ۖ وَوَلِيُّكَ هُمْ ۖ وَلِلَّهِ الْأَكْبَابُ ۝

और जो लोग शैतान से बचे कि वे उसकी इबादत करें और वे अल्लाह की तरफ़ रुजूअ हुए, उनके लिए खुशख़बरी है, तो मेरे बंदों को खुशख़बरी दे दो जो बात को ग़ौर से सुनते हैं। फिर उसके बेहतर की पैरवी करते हैं। यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत बऱ्श़ी है और यही हैं जो अक्ल वाले हैं। (17-18)

मौजूदा दुनिया फ़ितने की दुनिया है। यहां हकीकतें अपनी आख़िरी बेनक़ब शक़ल में जाहिर नहीं हुई हैं। यही वजह है कि यहां हर बात को ग़लत मअना पहनाया जा सकता है। शैतान इसी इम्क़ान को इस्तेमाल करके लोगों को राहेरास्त से भटकाता है।

जब भी कोई हक़ सामने आता है तो शैतान उसे ग़लत मअना पहनाकर लोगों के जेहन को फेरने की कोशिश करता है। वह कौल के अहसन (अच्छे) पहलू से हटाकर कौल के ग़ैर अहसन पहलू को लोगों के सामने लाता है। यही वह मक़ाम है जहां आदमी का अस्त इम्तेहान है। आदमी को उस अक्ल का सुबूत देना है कि वह सही और ग़लत के दर्मियान तमीज करे। वह शैतानी फ़रेब का पर्दा फाड़कर हकीकत को देख सके। जो लोग इस बसीरत का सुबूत दें वही वे खुशकिस्मत लोग हैं जो खुदाई सच्चाई को पाएंगे और जो लोग इस बसीरत (सुझबुझ) का सुबूत देने में नाकाम रहें, उनके लिए इस दुनिया में इसके सिवा कोई और अंजाम मुक़द्दर नहीं कि वे कौल के ग़ैर अहसन (बुरे) पहलुओं में उलझे रहें और खुदा के यहां शैतान के परस्तार की हैसियत से उठाए जाएं।

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ أَفَأَنْتَ تُنْفِذُ مِنْ فِي النَّارِ ۚ لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَةٌ ۖ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ وَعَدَ اللَّهُ

لَا يُخْلِفُ اللَّهُ الْمُبْعَادَ ۝

क्या जिस पर अजाब की बात साबित हो चुकी, पस क्या तुम ऐसे शख्स को बचा सकते हो जो कि आग में है। लेकिन जो लोग अपने ख़ब से डरे, उनके लिए बालाख़ाने (उच्च भवन) हैं जिनके ऊपर और बालाख़ाने हैं, बने हुए। उनके नीचे नहरें बहती हैं। यह अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (19-20)

हर आदमी अपने आमाल के अंजाम के दर्मियान घिरा हुआ है। जन्नत वाले को जन्नती फ़िज़ भै हुए है और जहन्नम वाले को जहन्मी फ़िज़ भै हुए है। ग़ैर महसूस हकीकतों को देखने वाली निगाह हो तो लोग जन्नत वाले इंसान को इसी दुनिया में जन्नत में देखें और जहन्नम वाले इंसान को इसी दुनिया में जहन्नम में घिरा हुआ पाएं।

जन्नत आरज़ुओं की उस दुनिया की आख़िरी मेयारी सूरत है जिसे आदमी दुनिया में हासिल करना चाहता है मगर वह उसे हासिल नहीं कर पाता। इस जन्नत की कीमत अल्लाह का तक़्वा है। जो लोग दुनिया में ख़ैफ़े खुदा का सुबूत करें वही जन्नत की बेख़ौफ़ जिंदगी के मालिक बनेंगे।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَهُ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيجُ فَتَرَاهُ مُصْفًّى ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطًّا مَّا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرًا لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَكَ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّنْ رَبِّهِ فَوَيْلٌ لِلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۖ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उसे जमीन के चशमों (स्रोतों) में जारी कर दिया। फिर वह उससे मुज़्तलिफ़ क्रिस्म की खेतियां निकालता है, फिर वह शुष्क हो जाती है, तो तुम उसे जर्द देखते हो। फिर वह उसे रेज़ा-रेज़ा कर देता है। बेशक़ इसमें नसीहत है अक्ल वालों के लिए। क्या वह शख्स जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया, पस वह अपने ख़ब की तरफ़ से एक रोशनी पर है। तो ख़राबी है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह की नसीहत के मामले में सख़्त हो गए। ये लोग खुली हुई गुमराही में हैं। (21-22)

जमीन पर बांश का हैतअंज़ निजाम, फिर उससे सब्ज का उगना, फिर फ़ल की तैयारी, इन माद्दी वाक़ेयात में बेशुमार मअनवी नसीहतें हैं। मगर इन नसीहतों को वही लोग पाते हैं जो बातों की गहराई में उतरने का मिजाज रखते हैं।

एक तरफ़ अल्लाह ने ख़ारजी (बाह्य) दुनिया को इस ढंग पर बनाया कि उसकी हर चीज़

हकीकते आला की निशानी बन गई। दूसरी तरफ इंसान के अंदर ऐसी सलाहियतें रख दीं कि वह इन निशानियों को पढ़े और उन्हें समझ सके। अब जो लोग अपनी फितरी सलाहियतों को जिंदा रखें और उनसे काम लेकर दुनिया की चीजों पर गौर करें, उनके सीने में मअरफत (अन्तर्ज्ञान) के दरवाजे खुल जाएंगे। और जो लोग अपनी फितरी सलाहियतों को जिंदा न रख सकें वे नसीहतों के हुजूम में भी नसीहत लेने से महरूम रहेंगे। वे देखकर भी कुछ न देखेंगे और सुन कर भी कुछ न सुनेंगे।

اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ ذَلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَالَهُ مِنْ هَادٍ ۖ

अल्लाह ने बेहतरीन कलाम उतारा है। एक ऐसी किताब आपस में मिलती-जुलती, बार-बार दोहराई हुई, इससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने रब से डरने वाले हैं। फिर उनके बदन और उनके दिल नर्म होकर अल्लाह की याद की तरफ मुतवज्जह हो जाते हैं। यह अल्लाह की हिदायत है, इससे वह हिदायत देता है जिसे वह चाहता है। और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे तो उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। (23)

कुरआन की सूरत में अल्लाह तआला ने एक बेहतरीन किताब इंसान को अता की है। इसकी दो खास सिफतें हैं। एक यह कि वह मुतशाबेह (मिलती-जुलती) है। यानी वह एक बेतजाद (अन्तर्विरोध से मुक्त) किताब है। इसके एक जुज और उसके दूसरे जुज में कोई टकराव नहीं। कुरआन की यह सिफत बताती है कि यह किताब बयाने हकीकत पर मबनी है। अगर इसके बयानात ऐन हकीकत न हों तो जरूर इसके मुखलिफ अज्जा के दर्मियान इख़लेफ (मतभेद) और बहुरूपता (Inconsistency) पैदा हो जाती।

कुरआन की दूसरी सिफत यह है कि वह मसानी (दोहराई हुई) किताब है। यानी इसके मजामीन बार-बार मुखलिफ पैरायों से दोहराए गए हैं। कुरआन की यह सिफत उसके किताबे नसीहत होने को बताती है। नसीहत करने वाला हमेशा यह चाहता है कि उसकी बात सुनने वाले के जेहन में बैठ जाए। इस मकसद के लिए वह अपनी बात को मुखलिफ अंदाज से बयान करता है। यही हिकमत आलातरीन अंदाज में कुरआन में भी है।

इंसान के अंदर यह खुसूसियत है कि जब वह कोई दहशतनाक खबर सुनता है तो उसके जिस्म के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और उसके वजूद में एक किस्म की आजिजाना नर्मी पैदा हो जाती है। यही हाल संजीदा इंसान का कुरआन को पढ़कर होता है। कुरआन में जिंदगी की संगीन हकीकतों को इतिहाई मुअस्सिर (प्रभावी) अंदाज में बयान किया गया है। इसलिए इंसान जैसी मख़्लूक अगर वाक़ेयतन उसे समझ कर पढ़े तो उसके जिस्म के ऊपर वही कैफ़ियत तारी होगी जो किसी संगीन खबर को सुनकर फितरी तौर पर उसके ऊपर तारी होना चाहिए।

أَفَمَنْ يَتَّبِعْ يَوْجُهُ سُوَاءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۝ فَاَذْهَبَهُمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ الْكَبِيرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

क्या वह शख्स जो कियामत के दिन अपने चेहरे को बुरे अजाब की सिपर (ढाल) बनाएगा, और जल्लियों से कहा जाएगा कि चखो मजा उस कमाई का जो तुम करते थे। उनसे पहले वालों ने भी झुठलाया तो उन पर अजाब वहां से आ गया जिधर उनका ख्याल भी न था। तो अल्लाह ने उन्हें दुनिया की जिंदगी में रुसवाई का मजा चखाया और आखिरत का अजाब और भी बड़ा है, काश ये लोग जानते। (24-26)

आदमी की कोशिश हमेशा यह होती है कि वह अपने चेहरे को चोट से बचाए। मगर कियामत का अजाब आदमी को इस तरह घेरे हुए होगा कि वहां यह मुमकिन न होगा कि आदमी अपने जिस्म के किसी हिस्से को उसकी जद में आने से रोक सके। वह नाकाबिले दिफ़ाअ अजाब के सामने इस तरह खड़ा हुआ होगा गोया वह खुद अपने चेहरे को उसके मुकाबले में सिपर (ढाल) बनाए हुए है।

अल्लाह की नजर में सबसे बड़ा जुर्म यह है कि आदमी के सामने हक आए और वह उसका एतराफ न करे। ऐसे लोग किसी हाल में खुदा की पकड़ से बच नहीं सकते।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ۝ قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ إِنَّكَ كَذِبٌ ۝ ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ۝

और हमने इस कुरआन में हर किस्म की मिसालें बयान की हैं ताकि वे नसीहत हासिल करें। यह अरबी कुरआन है, इसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि लोग डरें। अल्लाह मिसाल बयान करता है एक शख्स की जिसकी मिल्कियत में कई जिद्दी आका (स्वामी) शरीक हैं। और दूसरा शख्स पूरा का पूरा एक ही आका का गुलाम है। क्या इन दोनों का हाल यकसां (समान) होगा। सब तारीफ अल्लाह के लिए है लेकिन अक्सर लोग नहीं

जानते। तुम्हें भी मरना है और वे भी मरने वाले हैं। फिर तुम लोग कियामत के दिन अपने रब के सामने अपना मुकदमा पेश करोगे। (27-31)

कुरआन के बयानात इंसान की मालूम जवान और इंसान के मालूम दायरे के अंदर होते हैं ताकि किसी के लिए उसका समझना मुश्किल न हो।

यहां तमसील की जवान में बताया गया है कि शिर्क (बहुदेववाद) के मुकाबले में तौहीद (एकेश्वरवाद) का उसूल ज्यादा माकूल और ज्यादा मुताबिकेफितस्त है। एक तरफ ख़रजी कायनात बताती है कि यहां एक ही इरादे की कारफरमाई है। अगर यहां कई इरादों की कारफरमाई होती तो कायनात का निजाम इस कदर हमआहंगी (सामंजस्य) के साथ नहीं चल सकता था। दूसरी तरफ इंसान की साख़्त भी ऐसी है जो वफादारी में वहदत (एकत्व) को पसंद करती है। यह बात इंसानी साख़्त के सरासर खिलाफ है कि एक इंसान पर बयकवक्त कई मुझलिफ किस्म की वफादारियों की जिम्मेदारी हो और नतीजतन वह एक को भी निभा न सके।

तमाम दलाइल व कराइन यही बताते हैं कि सिर्फ एक ख़ुदा है जो इंसान का ख़ालिक और उसका माबूद है। मौजूदा दुनिया में यह हकीकत अपने जैसे इंसान की जवान से सुनाई जाती है। कियामत में ख़ुद ख़लिकेकायनात इस हकीकत का एलान फरमाएगा। उस वक्त किसी शख्स के लिए यह मुमकिन न होगा कि वह इस बात का इंकार कर सके।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالْحَقِّ إِذْ جَاءَهُ الْبَيِّنَاتُ فَمِنْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۝ وَالَّذِي جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ بِهِ أُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝ لِيَكْفِرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

उस शख्स से ज्यादा जालिम कौन होगा जिसने अल्लाह पर झूठ बांधा। और सच्चाई को झुठला दिया जबकि वह उसके पास आई। क्या ऐसे मुंकिरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो शख्स सच्चाई लेकर आया और जिसने उसकी तरदीक (पुष्टि) की, यही लोग अल्लाह से डरने वाले हैं। उनके लिए उनके रब के पास वह सब है जो वे चाहेंगे, यह बदला है नेकी करने वालों का ताकि अल्लाह उनसे उनके बुरे अमलों को दूर कर दे और उनके नेक कामों के एवज उन्हें उनका सवाब दे। (32-35)

हर वह नजरिया जो मुताबिके हकीकत न हो वह अल्लाह पर झूठ बांधना है। हर दौर में लोग इसी किस्म के झूठ पर जी रहे होते हैं। अल्लाह का दाओ इसलिए उठता है कि वह ऐसे

झूठ का झूठ होना साबित करे। इसके बाद भी जो लोग झूठ पर कायम रहें वे ढिठाई करने वाले लोग हैं। वे जहन्नम की आग में डाले जाएंगे। और जो लोग रुजूअ करके हक के साथी बन जाएं वही वे लोग हैं जो अल्लाह से डरने वाले साबित हुए। अल्लाह तआला ऐसे लोगों की बुराइयों को उनके आमाल से हटा देगा और उनके नेक आमाल की बिना पर उनकी कद्रदानी फरमाएगा।

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّضِلٍّ ۚ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۝

क्या अल्लाह अपने बंदे के लिए काफी नहीं। और ये लोग उसके सिवा दूसरों से तुम्हें डराते हैं, और अल्लाह जिसे गुमराह कर दे उसे कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं। और अल्लाह जिसे हिदायत दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या अल्लाह जबरदस्त, इंतिकाम (प्रतिशोध) लेने वाला नहीं। (36-37)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तौहीद के दाओ थे। मगर आपका तरीका यह न था कि 'खुदा एक है' के मुस्बत (सकारात्मक) एलान पर रुक जाएं। इसी के साथ आप उन ग़ैर ख़ुदाई हस्तियों की तरदीद (रद्द) भी फरमाते थे जिन्हें लोगों ने बतौर ख़ुद माबूद का दर्जा दे रखा था। आपकी दावत का यही दूसरा जुज लोगों के लिए नाकाबिले बर्दाश्त बन गया।

ये ग़ैर ख़ुदाई हस्तियां दरअसल उनके कौमी अकाबिर (महापुरुष) थे। सदियों से वे उनकी करामत की मुबालगाआमेज (अतिरंजनापूर्ण) दास्तानें सुनते आ रहे थे। उनके ज़ेहन पर उन हस्तियों की अज्मत इस तरह छा गई थी कि जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके तकद्दुस (पवित्रता) की तरदीद फरमाई तो उनकी समझ में किसी तरह न आया कि वे ग़ैर मुकद्दस कैसे हो सकते हैं। उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि तुम हमारे माबूदों को बुरा कहना छोड़ दो वरना तुम तबाह हो जाओगे। या तुम्हें जूनून हो जाएगा।

मगर हक के दाओ को हुक्म है कि वह इस किस्म की बातों की परवाह न करे। वह अल्लाह के भरोसे पर इस्वाते तौहीद (एक ख़ुदा की पुष्टि) और शिर्क के रद्द का दुगना काम जारी रखे। क्योंकि इसके बग़ैर अग्रे हक पूरी तरह वाजेह नहीं हो सकता।

وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَقْرَبُ إِلَيْكُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّيهِ ۚ أَوْ أَرَادَنِيَ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ

حَسْبِيَ اللَّهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٥﴾ قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَيَّ
مَكَانَتَكُمْ رَأْفِي عَابِلٌ ﴿٦﴾ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٧﴾ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ
وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٨﴾ إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ
فَمَنْ اهْتَدَى فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهِ وَمَا أَنْتَ
عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٌ ﴿٩﴾

ع

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों को और जमीन को किसने पैदा किया तो वे कहेंगे कि अल्लाह ने। कहे, तुम्हारा क्या ख्याल है, अल्लाह के सिवा तुम जिन्हें पुकारते हो, अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ पहुंचाना चाहे तो क्या ये उसकी दी हुई तकलीफ को दूर कर सकते हैं, या अल्लाह मुझ पर कोई महरबानी करना चाहे तो क्या ये उसकी महरबानी को रोकने वाले बन सकते हैं। कहे कि अल्लाह मेरे लिए काफी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। कहे कि ऐ मेरी कौम, तुम अपनी जगह अमल करो, मैं भी अमल कर रहा हूं, तो तुम जल्द जान लोगे कि किस पर रुसवा करने वाला अजाब आता है और किस पर वह अजाब आता है जो कभी टलने वाला नहीं। हमने लोगों की हिदायत के लिए यह किताब तुम पर हक के साथ उतारी है। पस जो शख्स हिदायत हासिल करेगा वह अपने ही लिए करेगा। और जो शख्स बेराह होगा तो उसका बेराह होना उसी पर पड़ेगा। और तुम उनके ऊपर जिम्मेदार नहीं हो। (38-41)

इंसान हर दौर में ग़ैर अल्लाह की इबादत करता रहा है। मगर कोई शख्स यह कहने की हिम्मत नहीं करता कि उसकी इन्हीं पसंदीदा हस्तियों ने जमीन आसमान को बनाया है। या तकलीफ और आराम के वाक्यात के हकीमी असबाब उनके इस्तिथार में हैं। इस बेक़रीनी के बावजूद लोगों का यकीन बड़ा अजीब है कि वे अपने झूठे माबूदों को छोड़ने पर राजी नहीं होते।

जब दाजी की दलीलें मदरु पर बेअसर साबित हों तो उस वक्त उसके पास कहने की जो बात होती है वह यह कि तुम जो चाहे करो, जब आखिरी फैसले का दिन आएगा तो वह बता देगा कि कौन हक पर था और कौन नाहक पर। यह दलील के बाद यकीन का इस्खार है, और दाजी का आखिरी कलिमा हमेशा यही होता है।

اللَّهُ يَتَوَكَّلُ الْإِنْفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَاجِلِهَا فِيمَسْكُ
الَّتِي قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْآخَرَىٰ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى إِنَّ فِي

ذَلِكَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَتَوَكَّلُونَ ﴿١٠﴾

अल्लाह ही वफात देता है जानों को उनकी मौत के वक्त, और जिनकी मौत नहीं आई उन्हें सोने के वक्त। फिर वह उन्हें रोक लेता है जिनकी मौत का फैसला कर चुका है और दूसरों को एक वक्त मुकरर तक के लिए रिहा कर देता है। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (42)

नींद के वक्त आदमी पर बेखबरी की हालत तारी हो जाती है। इस एतबार से नींद गोया मौत की तरह है। फिर जब आदमी सोकर उठता है तो दुबारा वह होश की हालत में आ जाता है। यह गोया मौत के बाद दुबारा जी उठने की तस्वीर है।

इस कानूने फितरत के तहत हर आदमी को आज ही इब्तिदाई सतह पर दिखाया जा रहा है कि वह किस तरह मरेगा और किस तरह वह दुबारा उठ खड़ा होगा। आदमी अगर संजीदगी के साथ ग़ौर करे तो वह इसी दुनियावी वाक्ये में अपने लिए आखिरत का सबक पा लेगा।

أَمَّا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ قُلْ أَوَلَوْ كُنَّا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا وَ
لَا يَضُرُّكُمْ قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾ وَإِذَا ذَكَرَ اللَّهُ وَحْدَهُ شَكَّرْتُمْ قُلُوبُ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَإِذَا ذَكَرَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢﴾
قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ عَلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ
بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٣﴾ وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي
الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
وَبَدَّلَ اللَّهُ مِنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴿١٤﴾ وَبَدَّلَ اللَّهُ سَيِّئَاتُ مَا
كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١٥﴾

क्या उन्होंने अल्लाह को छोड़कर दूसरों को सिफारिश बना रखा है। कहे, अगरचे वे न कुछ इस्तिथार रखते हों और न कुछ समझते हों। कहे, सिफारिश सारी की सारी अल्लाह के इस्तिथार में है। आसमानों और जमीन की बादशाही उसी की है। फिर तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे। और जब अकेले अल्लाह का जिक्र किया जाता है तो उन लोगों के दिल कुढ़ते हैं जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते। और जब उसके सिवा

दूसरों का जिक्र होता है तो उस वक्त वे खुश हो जाते हैं। कहे कि ऐ अल्लाह, आसमानों और जमीन के पैदा करने वाले, गायब और हाज़िर के जानने वाले, तू अपने बंदों के दर्मियां उस चीज का फैसला करेगा जिसमें वे इस्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हैं। और अगर जुल्म करने वालों के पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है और उसी के बराबर और भी, तो वे कियामत के दिन सज़ा अजाब से बचने के लिए उसे फिदये (बदल) में दे दें। और अल्लाह की तरफ से उन्हें वह मामला पेश आएगा जिसका उन्हें गुमान भी न था। और उनके सामने आ जाएंगे उनके बुरे आमाल और वह चीज उन्हें घेर लेगी जिसका वे मजक़ उड़ते थे। (43-48)

अरब के मुश्रीक जिन के मुतअल्लिक यह अकीदा रखते थे कि खुदा के यहां वे उनकी प्रकृत (सिफ़रिख़) करने वाले बन जाएंगे वे हकीकत पत्थर के बुत न थे। ये वे बुर्ज हस्तियां थीं जिनकी अलामत के तौर पर उन्होंने पत्थर के बुत बना रखे थे। उनके शुफआ (शफ़ाअत करने वाले) दरअसल उनके कौमी अकाबिर (महापुरुष) थे जिनके मुतअल्लिक उनका अकीदा था कि उनका दामन पकड़े रहो, वे खुदा के यहां तुम्हारे लिए काफी हो जाएंगे।

जो लोग ग़ैर अल्लाह के बारे में इस किस्म का अकीदा बनाएं, धीरे-धीरे उनका हाल यह हो जाता है कि उनकी सारी अकीदतें और शेषतगियां (आस्था एवं मुहब्बतें) उन्हीं ग़ैर खुदाई शख्सियतों के साथ वाबस्ता हो जाती हैं। उन शख्सियतों की बड़ाई का चर्चा किया जाए तो उसे सुनकर वे ख़ूब खुश होते हैं। लेकिन अगर एक खुदा की बड़ाई बयान की जाए तो उनकी रूह को उससे कोई गिज़ा नहीं मिलती।

ऐसे लोगों के सामने ख़्वाह कितने ही ताकतवर दलाइल के साथ तौहीद ख़ालिस को बयान किया जाए वे उसे मानने वाले नहीं बनते। उनकी आंख सिर्फ़ उस वक्त खुलती है जबकि कियामत का पर्दा फाड़कर खुदा का जलाल बेनकाब हो जाए। आज आदमी का हाल यह है कि वह एतराफ के अल्फ़ज देने के लिए भी तैयार नहीं होता। मगर जब वह वक्त आएगा तो वह चाहेगा कि जो कुछ उसके पास है सब उससे बचने के लिए फिदये (बदल) में दे डाले। मगर वहां आदमी के अपने आमाल के सिवा कोई चीज न होगी जो उसके काम आ सके।

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا نَجَاتَهُ إِذْ أَخَذَ نِعْمَةً مِنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَكِن أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ فَاصْبِرْ لَهُمْ سَيِّئَاتٍ مَا كَسَبُوا ۝ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا

كَسَبُوا وَمَا لَهُمْ بِمُجْزَيْنَ ۝ أَوْ لَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بَسِطُ الرِّزْقِ لِمَنِ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

पस जब इंसान को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम अपनी तरफ से उसे नेमत दे देते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझे इल्म की बिना पर दिया गया है। बल्कि यह आजमाइश है मगर उनमें से अक्सर लोग नहीं जानते। उनसे पहले वालों ने भी यह बात कही तो जो कुछ वे कमाते थे वह उनके काम न आया। पस उन पर वे बुराइयां आ पड़ीं जो उन्होंने कमाई थीं। और उन लोगों में से जो जालिम हैं उनके सामने भी उनकी कमाई के बुरे नताइज जल्द आएंगे। वे हमें आजिज (निर्बल) कर देने वाले नहीं हैं। क्या उन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह जिसे चाहता है रिक्क कुशादा कर देता है। और वही तंग कर देता है। बेशक इसके अंदर निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाने वाले हैं। (49-52)

दुनिया में आदमी को जब कोई चीज मिलती है तो वह उसे अपनी लियाक़त (योग्यता) का नतीजा समझ कर खुश होता है। हालांकि दुनिया की चीजें आजमाइश का सामान हैं न कि लियाक़त का इनाम। इसी हकीकत को जानना सबसे बड़ा इल्म है। दुनिया की चीजों को आदमी अगर अपनी लियाक़त का नतीजा समझ ले तो इससे उसके अंदर फ़ख़ और घमंड की नफ़िसयात उभरेगी। इसके बरअक्स, जब आदमी उन्हें आजमाइश का सामान समझता है तो उसके अंदर शुक्र और तवाजोअ (विनम्रता) के जब्बात पैदा होते हैं।

रिक्के दुनिया की कमी या ज्यादाती तमामतर इंसानी इख़्तियार से बाहर की चीज है। ऐसा मालूम होता है कि इंसान के बाहर कोई कुव्वत है जो यह फैसला करती है कि किस को ज्यादा मिले और किस को कम दिया जाए। यह वाक्या बताता है कि रिक्क का फैसला शख़्सी लियाक़त की बुनियाद पर नहीं होता। इसका फैसला किसी और बुनियाद पर होता है। वह बुनियाद यही है कि मौजूदा दुनिया इस्तेहान की जगह है न कि इनाम की जगह। इसलिए यहां किसी को जो कुछ मिलता है वह उसके इस्तेहान का पर्चा होता है। इस्तेहान लेने वाला अपने फैसले के तहत किसी को कोई पर्चा देता है और किसी को कोई पर्चा। किसी को एक किस्म के हालात में आजमाता है और किसी को दूसरे किस्म के हालात में।

قُلْ يُعْبَادُوا الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝ وَأَنِبُّوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوهَآ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ۝

कहो कि ऐ मेरे बंदो जिन्होंने अपनी जानों पर ज्यादाती की है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो। बेशक अल्लाह तमाम गुनाहों को माफ कर देता है, वह बड़ा बख्शने वाला महरबान है। और तुम अपने रब की तरफ रुजू करो और उसके फरमावरदार बन जाओ। इससे पहले कि तुम पर अजाब आ जाए, फिर तुम्हारी कोई मदद न की जाए। (53-54)

जिन लोगों के सीने में हस्सास (सवेदनशील) दिल है उन्हें जब खुदा की मअरफत (अन्तर्ज्ञान) हासिल होती है तो उन्हें यह ख्याल सताने लगता है कि अब तक उनसे जो गुनाह हुए हैं उनका मामला क्या होगा। इसी तरह खुदापरस्ताना जिंदगी इख्तियार करने के बाद भी आदमी से बार-बार कोताहियां होती हैं और उसकी हस्सासियत दुबारा उसे सताने लगती है। यहां तक कि यह एहसास कुछ लोगों को मायूसी की हद तक पहुंचा देता है।

ऐसे लोगों के लिए अल्लाह ने अपनी किताब में यह एलान फरमाया कि उन्हें यकीन करना चाहिए कि उनका मामला एक ऐसे खुदा से है जो गफूर व रहीम है। वह आदमी के माजी (अतीत) को नहीं बल्कि उसके हाल (वर्तमान) को देखता है। वह आदमी के जाहिर को नहीं बल्कि उसके बातिन (भीतर) को देखता है। वह आदमी से गुस्सत (सहृदयता) का मामला फरमाता है न कि खुरदागीरी (निष्ठुरता) का। यही वजह है कि आदमी जब उसकी तरफ रुजू करता है तो वह नए सिरे से उसे अपनी रहमत के साये में ले लेता है, चाहे उससे कितना ही बड़ा कुसूर क्यों न हो गया हो।

وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ
الْعَذَابُ بَغْتَةً وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۚ أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ لِيَحْسَرُنِي عَلَى
مَا فَرَّطْتُ فِي جَنْبِ اللَّهِ وَإِنْ كُنْتُ لِنِ السَّآخِرِينَ ۚ أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ
اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ۚ أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ
أَنْ لِي كَرْهٌ فَأَكُونُ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ۚ بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ
بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۚ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى
الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ وَجُوهُهُمْ مُسْوَدَّةٌ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ۚ وَيُنَادِي
اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازِهِمْ لَا يَمَسُّهُمْ الشَّوْءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۚ

और तुम पैरवी करो अपने रब की भेजी हुई किताब के बेहतर पहलू की, इससे पहले कि तुम पर अचानक अजाब आ जाए और तुम्हें खबर भी न हो। कहीं कोई शक्स यह

कहे कि अफसोस मेरी कोताही पर जो मैंने खुदा की जनाब में की, और मैं तो मजाक उड़ाने वालों में शामिल रहा। या कोई यह कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं भी डरने वालों में से होता। या अजाब को देखकर कोई शक्स यह कहे कि काश मुझे दुनिया में फिर जाना हो तो मैं नेक बंदों में से हो जाऊं। हां तुम्हारे पास मेरी आयतें आईं फिर तूने उन्हें झुठलाया और तकबुर (घमंड) किया और तू मुंकिरों में शामिल रहा। और तुम कियामत के दिन उन लोगों के चेहरे स्याह देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला था। क्या घमंड करने वालों का ठिकाना जहन्नम में न होगा। और जो लोग डरते रहे। अल्लाह उन लोगों को कामयाबी के साथ नजात (मुक्ति) देगा, और उन्हें कोई तकलीफ न पहुंचेगी और न वे शम्मीन होंगे। (55-61)

खुदा के कलाम में बेहतर और ग़ैर बेहतर की तक्सीम नहीं। न कुरआन में ऐसा है कि उसकी कुछ आयतें बेहतर हैं और कुछ आयतें ग़ैर बेहतर। और न कुरआन और दूसरी आसमानी किताबों में यह फर्क है कि उनमें से कोई किताब ब-एतबार हकीकत बेहतर है और कोई किताब ग़ैर बेहतर।

अस्ल यह है कि मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में आदमी को अमल की आजादी है। यहां उसके लिए यह मौका है कि एक कलाम को चाहे सीधे रुख से ले या उल्टे रुख से। वह चाहे कलाम के अस्ल मुद्दे पर ध्यान दे या उसमें बेजा शोशे निकाले और उसे ग़लत मजना पहनाए। कलामे इलाही का मजाक उड़ाना इसी की एक मिसाल है। आदमी एक आयत को लेकर उसमें उल्टा मफहूम निकालता है और फिर उस खुदसाख्ता (स्वयनिर्मित) मफहूम की बिना पर उसका मजाक उड़ाने लगता है।

दुनिया में आदमी अपने आपको छुपाए हुए है। वह महज तकबुर (घमंड) की बुनियाद पर हक को नहीं मानता और ऐसे अल्फ़ाज बोलता है गोया कि वह उसूल की बुनियाद पर उसका इंकार कर रहा है। मगर कियामत के दिन आदमी का चेहरा उसकी अंदरूनी हालत का मजहर (प्रकट रूप) बन जाएगा। उस वक्त आदमी का अपना चेहरा बताएगा कि वह जिस हक में ग़ैर बेहतर पहलू निकाल कर उसका मुंकिर बना रहा वे सिर्फ उसके झूठे अल्फ़ाज थे। वरना हक बजतेबुर बिल्कुल साफ और वाजह था। उस वक्त वह अफसोस करेगा मगर उस वक्त का अफसोस करना उसके कुछ काम न आएगा।

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۚ لَهُ مَقَالِيدُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۚ
قُلْ أَغْوِي اللَّهُ تَأْمُرُونِي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ ۚ وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ
وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ ۖ لَئِنْ أَشْرَكَكَ لَيَجْبُطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ

الْخٰسِرِيْنَ ۝۱۰۱ بَلِ اللّٰهُ فَاَعْبُدُوْا كُنْ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝۱۰۲

अल्लाह हर चीज का खालिक है और वही हर चीज पर निगहबान है। आसमानों और जमीन की कुंजियां उसी के पास हैं। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इंकार किया वही घाटे में रहने वाले हैं। कहो कि ऐ नादानो, क्या तुम मुझे शैर अल्लाह की इबादत करने के लिए कहते हो। और तुमसे पहले वालों की तरफ भी 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी जा चुकी है कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा अमल जाया हो जाएगा। और तुम ख़सारे (घाटे) में रहोगे। बल्कि सिर्फ अल्लाह की इबादत करो और शुक्र करने वालों में से बनो। (62-66)

कायनात की मौजूदगी उसके खालिक की मौजूदगी का सुबूत है। इसी तरह कायनात जितने बामअना और जिस कद्र मुनज्जम तौर पर चल रही है वह इसका सुबूत है कि हर आन एक निगरानी करने वाला उसकी निगरानी कर रहा है। आदमी अगर संजीदगी के साथ शौर करे तो वह कायनात में उसके खालिक की निशानी पा लेगा और इसी तरह उसके नाजिम और मुदबिर (व्यवस्थापक) की निशानी भी।

ऐसी हालत में जो लोग एक खुदा के सिवा दूसरी हस्तियों के इबादतगुजार बनते हैं वे एक ऐसा अमल कर रहे हैं जिसकी मौजूदा कायनात में कोई कीमत नहीं। क्योंकि खालिक और वकील (कार्य-साधक) जब सिर्फ एक है तो उसी की इबादत आदमी को नफा दे सकती है। उसके सिवा किसी और की इबादत करना गोया ऐसे माबूद को पुकारना है जिसका सिरे से कोई वजूद ही नहीं।

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرٍ ۚ وَالْاَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ
مَطْوِيّٰتٌ يَّمِيْنًا ۚ سُبْحٰنَہٗ وَتَعَالٰی عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝۱۰۱ وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ
مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَاءَ اللّٰهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيْہِٗۤ اٰخَرٰی
فَاِذَا هُمْ قِيٰاٰمٌ يَّنْظُرُوْنَ ۝۱۰۲ وَاشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِشَوْرِ رَبِّہَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ
وَجِئَیْ بِالنَّبِیِّیْنَ وَالشَّہَدَآءِ وَفُضِیْ بَیْنَهُمُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا یُظْلَمُوْنَ ۝۱۰۳
وَقُفِیْٓتْ کُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَہُوَ اَعْلَمُ بِمَا یَفْعَلُوْنَ ۝۱۰۴

और लोगों ने अल्लाह की कद्र न की जैसा कि उसकी कद्र करने का हक है। और जमीन सारी उसकी मुट्ठी में होगी कियामत के दिन और तमाम आसमान लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में। वह पाक और बरतार है उस शिर्क से जो ये लोग करते हैं। और सूर फूँका जाएगा तो आसमानों और जमीन में जो भी हैं सब बेहोश होकर गिर पड़ेंगे, मगर

जिसे अल्लाह चाहे। फिर दुबारा उसमें फूँका जाएगा तो यकायक सब के सब उठकर देखने लगेंगे और जमीन अपने रब के नूर (आलोक) से चमक उठेगी। और किताब रख दी जाएगी और पैग़म्बर और गवाह हाजिर किए जाएंगे। और लोगों के दर्मियान ठीक-ठीक फैसला कर दिया जाएगा और उन पर कोई जुल्म न होगा। और हर शख्स को उसके आमाल का पूरा बदला दिया जाएगा। और वह खूब जानता है जो कुछ वे करते हैं। (67-70)

अक्सर गुमराहियों की जड़ खुदा का कमतर अंदाजा है। आदमी दूसरी अज्मतों में इसलिए गुम होता है कि उसे खुदा की अथाह अज्मत का पता नहीं। वह अपने अकाबिर (महापुरुषों) से वाबस्तगी को नजात का जरिया समझता है तो इसीलिए समझता है कि उसे मालूम नहीं कि खुदा इससे ज्यादा बड़ा है कि वहां कोई शख्स अपनी जवान खोलने की जुरत कर सके। कियामत जब लोगों की आंख का पर्दा हटाएगी तो उन्हें मालूम होगा कि खुदा तो इतना अजीम था जैसे कि जमीन एक छोटे सिक्के की तरह उसकी मुट्ठी में हो और आसमान एक मामूली कागज की तरह उसके हाथ में लिपटा हुआ हो।

जिस तरह इम्तेहान हॉल में इम्तेहान के खत्म होने पर अलार्म बजता है उसी तरह मौजूदा दुनिया की मुददत खत्म होने पर सूर फूँका जाएगा। इसके बाद सारा निजाम बदल जाएगा। इसके बाद एक नई दुनिया बनेगी। हमारी मौजूदा दुनिया सूरज की रोशनी से रोशन होती है जो सिर्फ महसूस माददी अशया (भौतिक पदार्थों) को हमें दिखा पाती है। आखिरत की दुनिया बराहेरास्त खुदा के नूर से रोशन होगी। इसलिए वहां यह मुमकिन होगा कि मअनवी (अर्थपूर्ण) हकीकतों को भी खुली आंख से देखा जा सके। उस वक्त तमाम लोग खुदा की अदालत में हाजिर किए जाएंगे। दुनिया में लोगों ने पैग़म्बरों को और उनकी पैरवी में उठने वाले दावियों को नजरअंदाज किया था। मगर आखिरत में लोग यह देखकर हैरान रह जाएंगे कि लोगों के मुस्तकबिल का फैसला वहां इसी बुनियाद पर किया जा रहा है कि किसने उनका साथ दिया और किसने उनका इंकार कर दिया।

وَسِیْقَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا اِلٰی جَهَنَّمَ رُمْۢا ۚ حَتّٰی اِذَا جَاۤءُوْهَا فَتَحَتْ اَبْوَابُہَا ۚ
قَالَ لَهُمْ خَزَنَتُہَا اَلَمْ یَاۤتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْکُمْ یَتْلُوْنَ عَلَیْکُمْ اٰیٰتِ رَبِّکُمْ
وَيُنْذِرُوْکُمْ لِقَآءِ یَوْمِکُمْ هٰذَا قَالُوْا بَلٰی وَلٰكِنْ حَقَّتْ کَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلٰی
الْکٰفِرِیْنَ ۝۱۰۴ قِیْلَ ادْخُلُوْا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِیْنَ فِیْہَا فَبَسَّ مَثْوٰی الْمُتَنَكِّرِیْنَ ۝۱۰۵

और जिन लोगों ने इंकार किया वे गिरोह-गिरोह बनाकर जहन्नम की तरफ हांके जाएंगे। यहां तक कि जब वे उसके पास पहुंचेंगे उसके दरवाजे खोल दिए जाएंगे और उसके मुहाफिज (प्रहरी) उनसे कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हीं लोगों में से पैग़म्बर नहीं आए

जो तुम्हें तुम्हारे खब की आयतें सुनाते थे और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की मुलाकात से डराते थे। वे कहेंगे कि हां, लेकिन अजाब का वादा मुँकियों पर पूरा होकर रहा। कहा जाएगा कि जहन्नम के दरवाजों में दाखिल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए। पस कैसा बुरा ठिकाना है तकबुर (घमंड) करने वालों का। (71-72)

हक से एराज (उपेक्षा) व इंकार करने के दर्जे हैं। इसी लिहाज से जहन्नम वालों के भी दर्जे हैं। आखिरत में उन्हें उनके दर्जा के लिहाज से मुख़ल्लिफ़ गिरोहों में तक्सीम किया जाएगा और फिर हर गिरोह को जहन्नम के उस तबके में डाल दिया जाएगा जिसका वह मुस्तहिक है। इस मैके पर जहन्नम की निगरानी करने वाले फ़रिश्तों की गुफ़्फू से उस मंज़र की तस्वीरकशी हो रही है जो लोगों के जहन्नम में दाखिल होने के वक्त पेश जाएगा।

जो लोग मौजूदा दुनिया में हक को नहीं मानते उनके न मानने की अस्त वजह हमेशा तकबुर (घमंड) होता है। ताहम उनका तकबुर हकीकतन हक के मुक़बले में नहीं होता बल्कि वह हक को पेश करने वाले शख्स के मुक़बले में होता है। हक को पेश करने वाला बजाहिर एक आदमी को अपने से छोटा दिखाई देता है इसलिए वह आदमी हक को भी छोटा समझ लेता है और उसे हक़ारत (तिरस्कार) के साथ नज़रअंदाज़ कर देता है।

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ۖ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقْنَا وَعَدَهُ ۖ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَمِلِينَ ۖ وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَقُضِيَ بَيْنَهُمُ بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

لَقَدْ

और जो लोग अपने खब से डरे वे गिरोह दर गिरोह जन्नत की तरफ ले जाए जाएंगे। यहां तक कि जब वे वहां पहुंचेंगे और उसके दरवाजे खोल दिए जाएंगे और उसके मुहाफिज (प्रहरी) उनसे कहेंगे कि सलाम हो तुम पर, खुशहाल रहो, पस इसमें दाखिल हो जाओ हमेशा के लिए। और वे कहेंगे कि शुक्र है उस अल्लाह का जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया और हमें इस जमीन का वारिस बना दिया। हम जन्नत में जहां चाहें रहें। पस क्या खूब बदला है अमल करने वालों का। और तुम फरिश्तों को देखोगे कि अर्श के गिर्द हलका बनाए हुए अपने खब की हम्द व तस्बीह करते होंगे। और लोगों के दर्मियान ठीक-ठीक फैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा कि सारी हम्द अल्लाह के लिए है, आलम का खुदावंद। (73-75)

जन्नत में जाने वाले वे लोग हैं जिनमें तकवा की सिफत पाई जाए। जब आदमी खुदा की बड़ाई को इस तरह पाए कि उसके अंदर से अपनी बड़ाई का एहसास खत्म हो जाए तो इसका कुदरती नतीजा यह होता है कि वह खुदा से डरने लगता है। अपने इज्ज (निर्बलता) और खुदा की कुदरत का एहसास उसे अदिशानाक बना देता है। वह खुदा के मामले में हददर्जा मोहतात हो जाता है। उसे हर वक्त यह खटका लगा रहता है कि आखिरत में उसका खुदा उसके साथ क्या मामला फरमाएगा। जिन लोगों ने दुनिया में इसी तरह ख़ौफ किया वही आखिरत की बेख़ैफ़ जिंगी के वारिस करार दिए जाएंगे।

अहले जन्नत के साथ आखिरत में वह मामला किया जाएगा जो दुनिया में शाही मेहमानों के साथ किया जाता है। उन्हें कमाले एजाज व इकराम के साथ उनकी क्रियामगालों की तरफ ले जाया जाएगा। जब वे जन्नत को अपनी आंख से देखेंगे तो बेइख़्तियार उनकी जबान पर हम्द और शुक्र के कलिमात जारी हो जाएंगे। जन्नत में उनके लिए न सिर्फ आला क्रियामगालें होंगी बल्कि वहां सैर और मुलाकात के लिए आने जाने पर कोई रोक न होगी। सफर और मुवासिलात (संचार) की आलातरीन सहूलतें वाफिर मिक्दार में हासिल होंगी।

हम्द की मुस्तहिक सिर्फ एक अल्लाह की जात है। मगर मौजूदा इम्तेहान की दुनिया में इसका जहूर नहीं होता। आखिरत हम्दे इलाही के कामिल जुहूर का दिन होगा। उस वक्त तमाम जवानों और सारा माहौल हम्दे खुदावंदी के नागमे से मअमूर हो जाएगा। तमाम झूठी बड़ाइयां खत्म हो जाएंगी। वहां सिर्फ एक हस्ती होगी जिसका आदमी नाम ले। वहां सिर्फ एक बड़ाई होगी जिसकी बड़ाई से सरशार (अभिभूत) होकर वह उसकी हम्द करे।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝ غَافِرُ الذَّنْبِ وَقَابِلُ التَّوْبِ شَدِيدُ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ لَوْلَا إِلَهُهُ الْغِيُورُ ۝

आयतें-85

सूरह-40. अल-मोमिन

रुकूअ-9

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। हा० मीम०। यह किताब उतारी गई है अल्लाह की तरफ से जो जबरदस्त है, जानने वाला है। माफ करने वाला और तौबा कुबूल करने वाला है, सज़ा देने वाला, बड़ी कुदरत वाला है। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी की तरफ लौटना है। (1-3)

‘अजीज व अलीम’ के अरफ़ज यहां कुआन के हक़ में बतौर दलील इस्तेमाल हुए हैं।

कुआन के उतरने के वक्त यह एक पेशीनगोई (भविष्यवाणी) थी, आज यह एक साबितशुदा वक़्क़ाई है।

कुरआन वैसे साइंस से पहले इतिहाई नामुवाफिक (विषम) हालात में उतरा। मगर ऐन अपने दावे के मुताबिक उसने अपने मुखालिफों के ऊपर ग़लबा हासिल किया। अरब के मुशिरकीन और यहूद और अजीम रूमी और ईरानी सल्तनतें सबकी सब उसकी दुश्मन थीं मगर इसने बहुत थोड़े अर्से में सबको मग़लूब कर लिया। यह एक ऐसा वाकया है जिसकी कोई दूसरी मिसाल इंसानी तारीख में नहीं मिलती। यह इस बात का सुबूत है कि कुरआन खुदाएँ अजीज व ग़ालिब की तरफ से भेजा गया है।

कुरआन की दूसरी सिफ़त यह है कि वह कामिल तौर पर एक सही किताब है। डेढ़ हजार वर्ष बाद भी कुरआन की कोई बात हकीकत वाकया के ख़िलाफ नहीं निकली। यह इस बात का सुबूत है कि इसका नाज़िल करने वाला अलीम व ख़बीर है उससे ज़मीन व आसमान की कोई बात मख़्फी (छुपी) नहीं। वह माजी, हाल और मुस्तक़बिल से यक़ीन तौर पर बाख़बर है।

यही खुदा इंसान का हकीमी माबूद है। उसकी क़ुदरत और उसके इल्म का यह तमज़ा है कि वह तमाम इंसानों को जमा करके उनका हिसाब ले। फिर पूरे अद्ल (न्याय) के साथ हर एक का फैसला करे। जो लोग खुदा की तरफ़ रुजूअ हुए उन्हें माफ़ कर दे और जिन्होंने सरकशी की उन्हें उनके बुरे आमाल की सज़ा दे।

مَا يَجَادِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَا يَغْزِرُكَ تَقْلِبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ④
كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ
بِرُسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ وَجَادُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتَهُمْ
فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ⑤ وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ
أَصْحَابُ النَّارِ ⑥

अल्लाह की आयतों में वही लोग झगड़े निकालते हैं जो मुंकिर हैं। तो उन लोगों का शहरों में चलना फिरना तुम्हें धोखे में न डाले। उनसे पहले नूह की कौम ने झुटलाया। और उनके बाद के गिरोह ने भी। और हर उम्मत ने इरादा किया कि अपने रसूल को पकड़ लें और उन्होंने नाहक के झगड़े निकाले ताकि उससे हक़ को पसपा (परास्त) कर दें तो मैंने उन्हें पकड़ लिया। फिर कैसी थी मेरी सज़ा। और इसी तरह तेरे रब की बात उन लोगों पर पूरी हो चुकी है जिन्होंने इंकार किया कि वे आग वाले हैं। (4-6)

यहां अल्लाह की आयतों से मुराद वे दलाइल हैं जो हक़ की दावत को साबित करने के लिए पेश किए गए हों। जो लोग खुदा के मामले में संजीदा न हों वे इन दलाइल में ग़ैरमुतअल्लिक बहसों पैदा करके लोगों को इस शुबह में डालते हैं कि यह दावत हक़ की दावत नहीं है। बल्कि महज एक शख्स (दाओ) की जेहनी उपज है।

इस किस्म का झूठा मुजादिला (निरर्थक बीस) बहुत बड़ा जुर्म है। ताहम मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में ऐसे लोगों को एक मुकर्रर मुद्दत तक मोहलत हासिल रहती है। इसके बाद उनके लिए वही बुरा अंजाम मुक़द्दर है जो कौम नूह, कौम आद, कौम समूद वगैरह का हुआ। जिन लोगों ने अपने को बड़ा समझा था वे छोटे कर दिए गए। और जिन लोगों को छोटा समझ लिया गया था वे अल्लाह के नजदीक बड़े करार पाए।

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ
وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ
تَابُوا وَاتَّبِعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ⑦ رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ
الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ
أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑧ وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ
رَحِمْتَهُ ⑨ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑩

जो अर्श को उठाए हुए हैं और जो उसके इर्द-गिर्द हैं वे अपने रब की तस्बीह करते हैं, उसकी हम्द के साथ। और वे उस पर ईमान रखते हैं। और वे ईमान वालों के लिए मफ़िरत (क्षमा) की दुआ करते हैं। ऐ हमारे रब तेरी रहमत और तेरा इल्म हर चीज़ का इहाता किए हुए है। पस तू माफ़ कर दे उन लोगों को जो तौबा करें और तेरे रास्ते की पैरवी करें और तू उन्हें जहन्नम के अजाब से बचा। ऐ हमारे रब, और तू उन्हें हमेशा रहने वाले बाग़ों में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा किया है। और उन्हें भी जो सालेह हों उनके वालिदैन और उनकी वीवियों और उनकी औलाद में से। बेशक तू जबरदस्त है, हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। और उन्हें बुराइयों से बचा ले। और जिसे तूने उस दिन बुराइयों से बचाया तो उन पर तूने रहम किया। और यही बड़ी कामयाबी है। (7-9)

जो अल्लाह के बंदे बेआमेज़ (विशुद्ध) हक़ की दावत लेकर उठते हैं उन्हें हमेशा सताया जाता है। उन्हें माहिल में हकीर बना दिया जाता है। मगर ऐन उस वक़्त जबकि जाहिरपरस्त इंसानों के दर्मियान उनका यह हाल होता है, ऐन उसी वक़्त ज़मीन व आसमान उनके बरसरे हक़ होने की तस्दीक कर रहे होते हैं। कायनात का इतिजाम करने वाले फ़रिश्ते उनके हुस्ने अंजाम सुखद परिणाम के मुंतज़िर होते हैं। वक्ती दुनिया में नाकबिले तफ़्किरा समझे जाने वाले लोग अबदी दुनिया में उस मक़मे इज्जत पर होते हैं कि अल्लाह के मुक़र्रबतरीन (निकटतम) फ़रिश्ते भी उनके हक़ में दुआएं कर रहे हों।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنَادُونَ لِمَقْتُ اللَّهِ أَكْبَرُ مِنْ مَقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ
إِلَى الْإِيمَانِ فَتَكْفُرُونَ ۖ قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا أَثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْنَا أَثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا
بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى خُرُوجٍ مِنْ سَبِيلٍ ۚ ذَلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ كَفَرْتُمْ
وَأِنْ يُشْرَكَ بِهِ تُؤْمِنُوا فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ۝

जिन लोगों ने इंकार किया, उन्हें पुकार कर कहा जाएगा, खुदा की बेजारी (खिन्नता) तुमसे इससे ज्यादा है जितनी बेजारी तुम्हें अपने आप पर है। जब तुम्हें ईमान की तरफ बुलाया जाता था तो तुम इंकार करते थे। वे कहेंगे कि ऐ हमारे रब, तूने हमें दो बार मौत दी और दो बार हमें जिंदगी दी, पस हमने अपने गुनाहों का इकरार किया, तो क्या निकलने की कोई सूरत है। यह तुम पर इसलिए है कि जब अकेले अल्लाह की तरफ बुलाया जाता था तो तुम इंकार करते थे। और जब उसके साथ शरीक किया जाता तो तुम मान लेते। पस फैसला अल्लाह के इस्लियार में है जो अजीम है, बड़े मर्तिब वाला है। (10-12)

मौजूदा दुनिया में अल्लाह तआला ने हिदायत की शकल में अपनी रहमत भेजी। मगर लोगों ने उसे कुबूल नहीं किया। इसका अंजाम आखिरत में यह सामने आएगा कि इस किस्म के लोग अल्लाह की रहमत से बिल्कुल महरूम कर दिए जाएंगे। दुनिया में उन्होंने खुदा की रहमत को नजरअंदाज किया था, आखिरत में खुदा की रहमत उन्हें नजरअंदाज कर देगी।

उस वक्त इंकार करने वाले लोग कहेंगे कि खुदाया, तूने हमें मिट्टी से पैदा किया। गोया कि हम मुर्दा थे फिर तूने हमारे अंदर जान डाली। इसके बाद अपनी उम्र पूरी करके दूसरी बार हम पर मौत आई। और अब हम दुबारा आखिरत की दुनिया में उठाए गए हैं। इस तरह तू हमें दो बार मौत और दो बार जिंदगी दे चुका है। अब अगर तू हमें तीसरा मौका दे और फिर हमें दुनिया में भेज दे कि हम वहां रहें और फिर मर कर आलमे आखिरत में हाजिर हों तो हम वहां तेरी सच्चाई का एतराफ करेंगे और नेक अमली की जिंदगी गुजारे।

मगर उनकी यह दरख्वास्त सुनी नहीं जाएगी। क्योंकि उन्होंने अपने बारे में यह सुबूत दिया कि वे सच्चाई का इदराक उस वक्त नहीं कर सकते जबकि सच्चाई अभी ग़ैब में छुपी हुई हो। वे सिर्फ जाहिरी खुदाओं को पहचान सकते हैं, वे ग़ैबी खुदा को पहचानने की सलाहियत नहीं रखते। और खुदा के यहां ऐसे जाहिरपरस्तों की कोई कीमत नहीं।

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ آيَاتِهِ وَيُنَزِّلُ لَكُم مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا ۖ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَن
يُنِيبُ ۝ فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ رَفِيعُ

الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ لِيُنْذِرَ
يَوْمَ التَّلَاقِ ۚ يَوْمَ هُمْ بَارِقُونَ ۚ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ
لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝ الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ
اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

वही है जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है और आसमान से तुम्हारे लिए रिज्क उतारता है। और नसीहत सिर्फ वही शख्स कुबूल करता है जो अल्लाह की तरफ रजुअ करने वाला हो। पस अल्लाह ही को पुकारो, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करके, चाहे मुंकिरों को नागवार क्यों न हो। वह बुलन्द दर्जों वाला, अर्श का मालिक है। वह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजता है ताकि वह मुलाक़ात के दिन से डराए। जिस दिन कि वे जाहिर होंगे। अल्लाह से उनकी कोई चीज छुपी हुई न होगी। आज बादशाही किस की है, अल्लाह वाहिद क़ह्यार (वर्चस्वशाली) की। आज हर शख्स को उसके किए का बदला मिलेगा, आज कोई जुल्म न होगा। बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (13-17)

कायनात में बेशमार निशानियां हैं जो तमसील (मिसालों) की जवान में हकीकत का दर्स दे रही हैं। उन्हीं में से एक निशानी बारिश का निजाम है। यह मादूदी वाकया 'वही' के मअनवी मामले को मुमस्सल (प्रतिरूपता) कर रहा है। जिस तरह बारिश जरखेज जमीन के लिए मुफ़ीद है और बंजर जमीन के लिए ग़ैर मुफ़ीद, इसी तरह 'वही' भी खुदा की मअनवी बारिश है। जिन लोगों ने अपने सीने खुले रखे हों उनके अंदर यह बारिश दाखिल होकर उनके वजूद को सरसब्ज व शादाब कर देती है। इसके बरअक्स जिन लोगों के दिल ग़ैर खुदाई बड़ाइयों से भरे हुए हों वे गोया बंजर जमीन हैं। वे 'वही' के फ़ायदों से महरूम रहेंगे।

अल्लाह अपने बंदों से पूरी तरह वाकिफ है। वह जिस बंदे को अहल पाता है उसे अपने पैग़ाम की पैग़ामरसानी (संदेश-वाहन) के लिए चुन लेता है। इस पैग़ाम का ख़ास निशाना यह होता है कि लोगों को उस आने वाले दिन से आगाह किया जाए जबकि वे बादशाहे कायनात के सामने खड़े किए जाएंगे जिससे किसी की कोई बात छुपी हुई नहीं। और न कोई है जो उसके फैसले पर असरअंदाज हो सके।

وَأَنذَرُهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاطِئِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ
مِنْ حِمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ۖ يُعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ۝
وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۚ

۲۰

إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

और उन्हें करीब आने वाली मुसीबत के दिन से डराओ जबकि दिल हलक तक आ पहुंचेंगे, वे ग़म से भरे हुए होंगे। जालिमों का न कोई दोस्त होगा और न कोई सिफारिश जिसकी बात मानी जाए। वह निगाहों की चोरी को जानता है और उन बातों को भी जिन्हें सीने छुपाए हुए हैं। और अल्लाह हक के साथ फैसला करेगा। और जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज का फैसला नहीं करते। बेशक अल्लाह सुनने वाला है, देखने वाला है। (18-20)

मौजूदा दुनिया में इंसान को हर तरह के मौके हासिल हैं। वह आजाद है कि जो चाहे करे। इससे आदमी ग़लतफ़हमी में पड़ जाता है। वह अपनी मौजूदा आरजी हालत को मुस्तकिल हालत समझ लेता है। हालांकि ये मौके जो इंसान को मिले हैं वे बतौर इस्तेहान हैं न कि बतौर इस्तहकाक (अधिकार)। इस्तेहान की मुद्दत ख़त्म होते ही मौजूदा तमाम मौके उससे छिन जाएंगे। उस वक़्त इंसान को मालूम होगा कि उसके पास इज्ज (निर्बलता) के सिवा और कुछ नहीं जिसके सहारे वह खड़ा हो सके।

आदमी चाहता है कि बैक़द जिद्दी गुज़रे। इसी मिजाज की वजह से आदमी रैर खुदा को बतौर खुद खुदाई में शरीक बनाता है ताकि उनके नाम पर वह अपनी बेराहरी को जाइज साबित कर सके। मगर क्रियामत में जब हकीकत बेपर्दा होकर सामने आएगी तो आदमी जान लेगा कि यहां खुदा के सिवा कोई न था जिसे किसी किस्म का इख़्तियार हासिल हो।

أَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَّاقٍ ۝ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

क्या वे जमीन में चले फिर नहीं कि वे देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुज़ चुके हैं। वे इनसे बहुत ज्यादा थे कुव्वत में और उन आसार के पतवार से भी जो उन्होंने जमीन में छोड़े। फिर अल्लाह ने उनके गुनाहों पर उन्हें पकड़ लिया और कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न था। यह इसलिए हुआ कि उनके पास उनके रसूल खुली निशानियां लेकर आए तो उन्होंने इंकार किया। तो अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। यकीनन वह ताक़तवर है सज़ा सज़ा देने वाला है। (21-22)

दुनिया की तारीख़ में कसरत से ऐसे वाक़ेयात हैं कि एक कौम उभरी और फिर मिट

गई। एक कौम जिसने जमीन पर शानदार तमदुन (सभ्यता) खड़ा किया, आज उसका तमदुन खंडहर की सूरत में जमीन के नीचे दबा हुआ पड़ा है। एक कौम जिसे किसी वक़्त एक जिंदा वाक़ये की हैसियत हासिल थी, आज वह सिर्फ़ एक तारीख़ी वाक़ये के तौर पर कबिले ज़िफ़ समझी जाती है।

इस किस्म के वाक़ेयात लोगों के लिए मालूम वाक़ेयात हैं मगर लोगों ने इन वाक़ेयात को अरजी हवादिस (भू-घटनाओं) या सियासी इक़िलाबात के ख़ाने में डाल रखा है। लेकिन अस्ल हकीकत यह है कि ये सब खुदाई फैसले थे जो सच्चाई के इंकार के नतीजे में उन कौमों पर नाज़िल हुए। अगर हमें वह निगाह हासिल हो जिससे हम मअनवी हकीकतों को देख सकें तो हमें नजर आएगा कि हर वाक़या खुदा के फ़रिश्तों के जरिए अंजाम पा रहा था, अगरचे बजाहिर देखने वालों को वह दुनियावी असबाब के तहत होता हुआ दिखाई दिया।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۖ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سِحْرٌ كَذَّابٌ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ और खुली दलील के साथ, फिरऔन और हामान और कारून के पास भेजा, तो उन्होंने कहा कि यह एक जादूगर है, झूठा है। फिर जब वह हमारी तरफ से हक लेकर उनके पास पहुंचा, उन्होंने कहा कि इन लोगों के बेटों को कत्ल कर डालो जो इसके साथ इमान लाएं और उनकी औरतों को जिंदा रखो। और उन मुंकिरों की तदबीर महज बेअसर रही। (23-25)

फैगम्बरों को आम दलाइल के साथ मजिद ऐसी मोजिजाती ताईद हासिल रहती है जो उनके फ़रसतादाए खुदा (ईश-दूत) होने का इतिहाई वाजेह सुबूत होती है। मगर हक को मानना हमेशा अपनी नफ़ी (नकार) की कीमत पर होता है जो बिलाशुबह किसी इंसान के लिए मुश्किलतरीन कुर्बानी है। यही वजह है कि इतिहाई खुले-खुले दलाइल के बावजूद फिरऔन और उसके दरबारियों ने हज़रत मूसा की नुबुव्वत का इस्कार नहीं किया।

इसके बजाए उन्होंने एक तरफ अवाम को यह तअस्सुर (प्रभाव) देना शुरू किया कि मूसा का फैगम्बरी का दावा बेक़ीक़त है और उनके मेजिजे (चमत्कार) महज जादू का करिश्मा हैं। दूसरी तरफ उन्होंने यह फैसला किया कि बनी इस्राईल की तादाद को घटाने के लिए अपनी साबिका पॉलिसी को मजिद शिद्दत के साथ जारी कर दिया जाए। ताकि मूसा अपनी कौम (बनी इस्राईल) के अंदर अपने लिए मजबूत बुनियाद न पा सकें। मगर उन्हें यह मालूम न था कि वे अपनी ये तदबीरें मूसा के मुकाबले में नहीं बल्कि खुदा के मुकाबले में कर रहे हैं और खुदा के मुकाबले में किसी की कोई तदबीर कभी कारगर नहीं होती।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَى وَلْيَدْعُ رَبِّي إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ
دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفُسَادَ ۚ وَقَالَ مُوسَى إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي
وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝

६४

और फिरऔन ने कहा, मुझे छोड़ो, मैं मूसा को कत्ल कर डालूँ और वह अपने रब को पुकारे, मुझे अदेशा है कि कहीं वह तुम्हारा दीन (धर्म) बदल डाले या मुल्क में फसाद फैला दे। और मूसा ने कहा कि मैंने अपने और तुम्हारे रब की पनाह ली हर उस मुतकब्बिर (धमंडी) से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं रखता। (26-27)

‘तुम्हारा दीन बदल डाले’ का मतलब है तुम्हारा मजहब बदल डाले। यानी तुम जिस मजहबी तरीके पर हो और जो तुम्हारे अकाबिर (पूर्वजों) से चला आ रहा है, वह खत्म हो जाए और लोगों के दर्मियान नया मजहब राइज हो जाए। यह ऐसा ही है जैसे हिन्दुस्तान में कुछ इतिहासपसंद हिन्दू कहते हैं कि मजहब की तब्दील को कानूनी तौर पर बन्द करो, वरना दूसरे मजहब वाले अपनी तब्दील से देश के धर्म को बदल डालेंगे।

फसाद से मुराद बदअमनी (अशांति) है। यानी मूसा को अपने हमकौमों में साथ देने वाले मिल जाएंगे। और उन्हें लेकर वह मुल्क में इतिशार पैदा करने की कोशिश करेंगे। इसलिए हमें चाहिए कि हम शुरू ही में उन्हें कत्ल कर दें।

हक को मानने में सबसे बड़ी रुकावट आदमी की मुतकब्बिराना नफिसयात (धमंड-भाव) होती है। वह अपने को ऊंचा रखने की खातिर हक को नीचा कर देना चाहता है। मगर हक का मददगार अल्लाह रब्बुल आलमीन है। इब्तिदा में चाहे उसके मुखालिफीन बजाहिर उसे दबा लें मगर अल्लाह की मदद इस बात की जमानत है कि आखिरी कामयाबी बहरहाल हक को हासिल होगी।

وَقَالَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ۚ وَإِنْ يَكُ كَاذِبًا
فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۚ وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِيبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۝ يَقَوْمُ لَكُمْ الْمَلِكُ الْيَوْمَ ظَاهِرِينَ فِي
الْأَرْضِ فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنَ بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ جَاءَنَا قَالِ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝

और आले फिरऔन में से एक मोमिन शख्स, जो अपने ईमान को छुपाए हुए था, बोला, क्या तुम लोग एक शख्स को सिर्फ इस बात पर कत्ल कर दोगे कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है, हालांकि वह तुम्हारे रब की तरफ से खुली दलीलें भी लेकर आया है। और अगर वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा। और अगर वह सच्चा है तो उसका कोई हिस्सा तुम्हें पहुंच कर रहेगा। जिसका वादा वह तुमसे करता है। बेशक अल्लाह ऐसे शख्स को हिदायत नहीं देता जो हद से गुजरने वाला हो, झूठा हो। ऐ मेरी कौम, आज तुम्हारी सल्तनत है कि तुम जमीन में ग़ालिब हो। फिर अल्लाह के अजाब के मुक़ाबिल हमारी कौन मदद करेगा, अगर वह हम पर आ गया। फिरऔन ने कहा, मैं तुम्हें वही राय देता हूँ जिसे मैं समझ रहा हूँ, और मैं तुम्हारी रहनुमाई ठीक भलाई के रास्ते की तरफ कर रहा हूँ। (28-29)

यहां जिस मर्दे मोमिन का जिक्र है वह फिरऔन के शाही खानदान का एक फर्द था और ग़ालिबन वह दरबार के आला ओहदेदारों में से था। यह बुजुर्ग हजरत मूसा अलैहिस्सलाम की तौहीद की दावत से मुतअस्सिर (प्रभावी) हुए, ताहम वह अपना ईमान छुपाए हुए थे। मगर जब उन्होंने देखा कि फिरऔन हजरत मूसा को कत्ल करने का इरादा कर रहा है तो वह खुल कर हजरत मूसा की हिमायत पर आ गए। उन्होंने निहायत मुअस्सिर (प्रभावी) और निहायत हकीमाना अंजाम में हजरत मूसा की मुदाफअत (प्रतिरक्षा) फरमाई।

इस वाक्य में एक नसीहत यह है कि तब्दील एक ऐसी ताकत है कि खुद दुश्मन की सफों में अपने हमदर्द और साथी पैदा कर लेती है, चाहे वह दुश्मने खानदाने फिरऔन जैसा जालिम और मुतकब्बिर क्यों न हो।

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَقَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ قِتْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۚ مِثْلُ
دَابِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظَلْمًا
لِلْعِبَادِ ۚ وَيَقَوْمِ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۚ يَوْمَ تُتْلُونَ مَذِيرِينَ مَا لَكُمْ
مِنْ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

और जो शख्स ईमान लाया था उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, मैं डरता हूँ कि तुम पर और गिरोहों जैसा दिन आ जाए, जैसा दिन कौमे नूह और आद और समूद और उनके बाद वालों पर आया। और अल्लाह अपने बंदों पर कोई जुल्म करना नहीं चाहता। और ऐ मेरी कौम, मैं डरता हूँ कि तुम पर चीख पुकार का दिन आ जाए, जिस दिन तुम पीठ फेरकर भागोगे। और तुम्हें खुदा से बचाने वाला कोई न होगा। और जिसे खुदा गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। (30-33)

फिरऔन ने हजरत मूसा को दुनिया की सजा से डराया था, इसके जवाब में मर्दे मोमिन ने फिरऔन को आखिरत की सजा से डराया। हक के दाबी का तरीका हमेशा यही होता है। लोग दुनिया की फिक्र करते हैं, दाबी आखिरत के लिए फिक्रमंद होता है। लोग दुनिया की इस्तेलाहों (शब्दावलियों) में बोलते हैं, दाबी आखिरत की इस्तेलाहों में कलाम करता है। लोग दुनिया के मसाइल को सबसे ज्यादा काबिले जिक्र समझते हैं दाबी के नजदीक सबसे ज्यादा काबिले जिक्र मसला वह होता है जिसका तअल्लुक आखिरत से हो।

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِمَّا جَاءَكُمْ بِهِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَن يَبْعَثَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا ۚ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن هُوَ مُسْرِئٌ مُّرْتَابٌ ۚ ۞ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبٍ مُّتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۞

और इससे पहले यूसुफ तुम्हारे पास खुले दलाइल के साथ आए तो तुम उनकी लाई हुई बातों की तरफ से शक ही में पड़े रहे। यहां तक कि जब उनकी वफात हो गई तो तुमने कहा कि अल्लाह इनके बाद हरगिज कोई रसूल न भेजेगा। इसी तरह अल्लाह उन लोगों को गुमराह कर देता है जो हद से गुजरने वाले और शक करने वाले होते हैं। जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बगैर किसी दलील के जो उनके पास आई हो। अल्लाह और ईमान वालों के नजदीक यह सज़ा मबयूज अप्रिय है। इसी तरह अल्लाह मुहर कर देता है हर मगरूर (अभिमानि), सरकश के दिल पर। (34-35)

हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम की जिंदगी में मिश्र के लोगों की अक्सरियत आपकी नुब्वत की कायल नहीं हुई। मगर आपकी वफात के बाद जब मुक्की सल्तनत का निजाम बिगड़ने लगा तो मिश्रियों को आपकी अजमत का एहसास हुआ। अब वे कहने लगे कि यूसुफ का वजूद मिश्र के लिए बहुत बाबरकत था, ऐसा रसूल अब कहां आएगा। हजरत यूसुफ अगरचे खुदा के पैगम्बर थे मगर इसी के साथ वह एक इंसान भी थे। इस बिना पर लोगों के लिए यह कहने की गुंजाइश थी कि 'क्या जरूरी है कि यूसुफ के कमालात पैगम्बरी की बिना पर हों, यह भी हो सकता है कि वह एक जहीन इंसान हों और इस बिना पर उन्होंने कमालात जाहिर किए हों।' इसी तरह की बातें थीं जिन्हें लेकर मिश्र के लोग आपके बारे में शक में मुब्तिला हो गए।

हक चाहे कितना ही वाजेह हो, मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में हमेशा इसका इम्कान बाकी रहता है कि आदमी कोई शुबह का पहलू निकाल कर उसका मुँक़िर बन जाए। अब जो लोग

अपने अंदर सरकशी और घमंड का मिजाज लिए हुए हों, जो यह समझते हों कि हक को मान कर वे अपनी बड़ाई खो देंगे। वे ऐन अपने मिजाज के तहत इन्हीं शुबहात में अटक कर रह जाते हैं। वे इन शुबहात को इतना बढ़ाते हैं कि वही उनके दिल व दिमाग पर छा जाता है। नतीजा यह होता है कि वे हक के मामले में सीधे अंदाज से सोच नहीं पाते। वे हमेशा उसके मुँक़िर बने रहते हैं, यहां तक कि इसी हाल में मर जाते हैं।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَهْمُنُ ابْنُ بَنِي صَرَحَةَ الْعَيْنِ أَبْلَغَ الْأَسْبَابِ ۚ ۞ أَسْبَابَ السَّمَوَاتِ فَاطْلِعْ إِلَىٰ اللَّهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَخْطَاكَ كَاذِبًا ۚ وَكَذَلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءُ عَمَلِهِ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِي تَبَابٍ ۚ ۞

और फिरऔन ने कहा कि ऐ हामान, मेरे लिए एक ऊंची इमारत बना ताकि मैं रास्तों पर पहुंचूं, आसमानों के रास्तों तक, पस मूसा के माबूद (पूज्य) को झांक कर देखूं, और मैं तो उसे झूठ ख्याल करता हूं। और इस तरह फिरऔन के लिए उसकी बदअमली खुशनुमा बना दी गई और वह सीधे रास्ते से रोक दिया गया। और फिरऔन की तदबीर गारत होकर रही। (36-37)

फिरऔन ने अपने वजीर हामान से जो बात कही वह कोई संजीदा बात नहीं थी बल्कि महज एक वक्ती तदबीर के तौर पर थी। उसने देखा कि मर्दे मोमिन की माकूल और मुदलल तकरीर से दरबार के लोग मुतअस्सिर हो रहे हैं, इसलिए उसने चाहा कि एक शोशे की बात निकाले ताकि हजरत मूसा की दावत संजीदा वहस का मौजूअ (विषय) न बने बल्कि मजाक का मौजूअ बनकर रह जाए।

'बदअमली का खुशनुमा बनना' यह है कि आदमी कुछ खुशनुमा अल्फ़ाज बोलकर हक बात को रद्द कर दे। यही आदमी की गुमराही की अस्त जड़ है। यानी हकीकी दलाइल के मुकाबले में शोशे की बात को अहमियत देना, खुली बेराहरवी को झूठी तौजीहात (तर्कों) में छुपाने की कोशिश करना वगैरह। ऐसे लोग भूल जाते हैं कि जो हक मोहकम (ठोस) दलील के ऊपर खड़ा हुआ हो उसे बेबुनियाद शोशे निकाल कर मगलूब (परास्त) नहीं किया जा सकता।

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَقَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ ۚ ۞ يَقَوْمِ إِنَّمَا هِيَ أَلْحِيوَةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۚ وَلَئِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۚ ۞ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أَتَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ ۚ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۚ ۞

ادْعُوهُمْ إِلَى النَّجْوَةِ وَتَدْعُونِي إِلَى النَّارِ ۖ تَدْعُونِي لِأَكْفُرَ بِاللَّهِ وَ
 أَشْرِكُ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَأَنَا أَدْعُوهُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ ۖ لَأَجْزِمَنَّكُمْ
 تَدْعُونِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنْ مَرَّةً نَا إِلَى اللَّهِ
 وَأَنْ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ فَسَتَنْدُرُونَ مَا أَقُولُ لَكُمْ وَأَفْوضُ
 أَمْرِي إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۖ

और जो शख्स ईमान लाया था उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें सही रास्ता बता रहा हूँ। ऐ मेरी कौम, यह दुनिया की जिद्दी महज चन्द रोज़ है और अस्ल ठहरने का मकाम आखिरत (परलोक) है। जो शख्स बुराई करेगा तो वह उसके बराबर बदला पाएगा। और जो शख्स नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो तो यही लोग जन्नत में दाखिल होंगे, वहां वे बेहिसाब रिफ पाएंगे। और ऐ मेरी कौम, क्या बात है कि मैं तो तुम्हें नजात (मुक्ति) की तरफ बुलाता हूँ और तुम मुझे आग की तरफ बुला रहे हो। तुम मुझे बुला रहे हो कि मैं खुदा के साथ कुफ्र करूँ और ऐसी चीज को उसका शरीक बनाऊँ जिसका मुझे कोई इल्म नहीं। और मैं तुम्हें जबरदस्त मफ़िरत (क्षमा) करने वाले खुदा की तरफ बुला रहा हूँ। यकीनी बात है कि तुम जिस चीज की तरफ मुझे बुलाते हो उसकी कोई आवाज न दुनिया में है और न आखिरत में। और बेशक हम सबकी वापसी अल्लाह ही की तरफ है और हद से गुजरने वाले ही आग में जाने वाले हैं। पस तुम आगे चलकर मेरी बात को याद करोगे। और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। बेशक अल्लाह तमाम बंदों का निगरां (निगाह रखने वाला) है। (38-44)

दरबारे फिरऔन के मोमिन की यह तकरीर निहायत वाजह है। साथ ही, वह एक नमूने की तकरीर है जो यह बताती है कि हक के दाओ का अंदाजे ख़िताब क्या होना चाहिए और यह कि हक की दावत का अस्ल नुक्ता क्या है।

मैं तुम्हें खुदावन्द आलम की तरफ बुलाता हूँ। और तुम जिसकी तरफ मुझे बुला रहे हो उसे पुकारने का कोई फायदा न दुनिया में है और न आखिरत में यह फ़िक़रा (वाक्य) मर्दे मोमिन की पूरी तकरीर का खुलासा है। इससे अंदाजा होता है कि फिरऔन के दरबार में जो चीज ज़ेरे बहस थी वह क्या थी। वह यह थी कि खुदा को पुकारा जाए या ईसान के बनाए हुए बुनों को पुकारा जाए। मर्दे मोमिन ने कहा कि खुदा तो एक जिंदा और ग़ालिब हकीकत है, उसे पुकारना एक हकीकी माबूद को पुकारना है। मगर तुम्हारे असनाम (बुत) सिर्फ तुम्हारे वहम की ईजाद हैं। वे न दुनिया में तुम्हें कोई फायदा दे सकते और न आखिरत में। जब उनका कोई हकीकी वजूद ही नहीं तो उनसे कोई हकीकी फायदा कैसे मिल सकता है।

فَوَقَّعَ اللَّهُ سَيِّئَاتٍ مَا مَكَرُوا وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ۖ النَّارُ
 يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ
 أَشَدَّ الْعَذَابِ ۖ

फिर अल्लाह ने उसे उनकी बुरी तदबीरों से बचा लिया। और फिरऔन वालों को बुरे अजाब ने घेर लिया। आग, जिस पर वे सुबह व शाम पेश किए जाते हैं। और जिस दिन क़ियामत कायम होगी, फिरऔन वालों को सज़ातरीन अजाब में दाखिल करो। (45-46)

फिरऔन के दरबार का मर्दे मोमिन पैगम्बर नहीं था। मगर तंहा होने के बावजूद अल्लाह ने उसे फिरऔन के जालिमाना मंसूबे से बचा लिया। इससे मालूम हुआ कि ग़ैर अबिया को भी हक की हिमायत की वह नुसरत मिलती है जिसका वादा अबिया (नबियों) से किया गया है। इसानों के उख़रवी (परलोक के) अंजाम का बाकायदा पैसला अगरचे क़ियामत में होगा, मगर मौत के बाद जब आदमी अगली दुनिया में दाखिल होता है तो फ़ौरन ही उस पर खुल जाता है कि वह पिछली दुनिया में क्या करके यहां आया है और अब उसके लिए कौन सा अंजाम मुकद्दर है। इस तरह शुऊर की सतह पर वह मौत के बाद ही अपने अंजाम से दो चार हो जाता है और जिस्मानी सतह पर वह क़ियामत में खुदा की अदालत कायम होने के बाद उससे दो चार होगा।

وَأَذِيتَ الْجَوْنِ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضَّعَفَاءُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا
 قَهْلُ أَنْتُمْ مُغْنَوْنَ عَنَّا نَصِيبًا مِنَ النَّارِ ۖ قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ
 فِيهَا إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۖ وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لَخَزَنَةٌ جَهَنَّمِ
 ادْعُوا رَبَّكُمْ يَخَفُّ عَنَّا يَوْمَ مَا مِنَ الْعَذَابِ ۖ قَالُوا أَوَلَمْ تَكُنْ تَدْعُونَا
 نُسُكُكُمْ بِالْبَيْتِ قَالُوا بَلَىٰ قَالُوا فَاذْعُوا وَمَا دُعَاؤُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي
 ضَلَالٍ ۖ

और जब वे दोजख़ में एक दूसरे से झगड़ेंगे तो कमजोर लोग बड़ा बनने वालों से कहेंगे कि हम तुम्हारे ताबेअ (अधीन) थे, तो क्या तुम हमसे आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो। बड़े लोग कहेंगे कि हम सब ही इसमें हैं। अल्लाह ने बंदों के दर्मियान फैसला कर दिया। और जो लोग आग में होंगे वे जहन्नम के निगहबानों से कहेंगे कि तुम अपने खब से दरखास्त करो कि हमारे अजाब में से एक दिन की तख़्फ़ीफ़ (कमी) कर दे। वे

कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल वाजेह दलीलें लेकर नहीं आए। वे कहेंगे कि हां। निगहवान कहेंगे फिर तुम ही दरख्वास्त करो। और मुंकिरों की पुकार अकारत ही जाने वाली है। (47-50)

इन आयतों में जहन्नम का एक मंजर दिखाया गया है। दुनिया में जो लोग बड़े बने हुए थे वे वहां अपनी सारी बड़ाई भूल जाएंगे। वे अवाम जो यहां अपने बड़ों पर फख्र करते थे वे वहां अपने बड़ों से बेजारी का इज्हार करेंगे। दुनिया में जो लोग हक के आगे झुकने के लिए तैयार नहीं होते थे वे वहां आजिजाना तौर पर हक के आगे झुक जाएंगे। मगर आखिरत का झुकना किसी के कुछ काम आने वाला नहीं।

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ۝
يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعَذَرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝ وَلَقَدْ
آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَى وَأَوْرَثْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ ۝ هُدًى وَذِكْرَى
لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝ فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ
رَبِّكَ بِالْعُشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝

वेशक हम मदद करते हैं अपने रसूलों की और ईमान वालों की दुनिया की ज़िंदगी में, और उस दिन भी जबकि गवाह खड़े होंगे, जिस दिन जालिमों को उनकी मज्जरत (सफाई पेश करना) कुछ फायदा न देगी और उनके लिए लानत होगी और उनके लिए बुरा ठिकाना होगा। और हमने मूसा को हिदायत अता की और बनी इस्राइल को किताब का वारिस बनाया, रहनुमाई और नसीहत अक्ल वालों के लिए। पस तुम सन्न करो, वेशक अल्लाह का वादा बरहक है और अपने कुसूर की माफ़ी चाहे। और सुबह व शाम अपने रब की तस्बीह करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ। (51-55)

पैगम्बर और पैगम्बरों के पैरोकारों के लिए खुदा की मदद का यकीनी वादा है। मगर इस मदद का इस्तहकाक (अधिकार) हमेशा सन्न के बाद पैदा होता है। सन्न की यह अहमियत इसलिए है ताकि अहले हक मुकम्मल तौर पर अहले हक ठहरें और जालिम मुकम्मल तौर पर जालिम साबित हो जाएं। इस तफरीकी (विभेद के) मरहले को लाने के लिए अहले हक को यकतरफा तौर पर सन्न करना पड़ता है।

अहले हक का यह सन्न उन्हें दुनिया में खुदा की मदद का मुस्तहिक बनाता है। और इसी सन्न के जरिए वे इस कबिल साबित होते हैं कि वे कियामत के दिन जालिमों के मुन्नबले में खुदा के गवाह बनकर खड़े हों।

खुदा की तरफ से जो किताब आती है वह इंसानों की हिदायत और नसीहत ही के लिए

आती है। मगर यह नसीहत सिर्फ उन लोगों को फायदा देती है जो अक्ल वाले हों। यानी वे लोग जो मस्लेहों में बंधे हुए न हों। जो नफिसयाती पेचीदगियों (पूर्वाग्रहों) से आजाद होकर उस पर गौर कर सकें। जो बातों को दलील के एतबार से जांचते हों न कि किसी और एतबार से। यही खुदा की हिदायत के साथ अक्ल वाला मामला करना है। जो लोग खुदा की हिदायत के साथ बेअक्ली का मामला करें वे जालिम हैं और जो लोग खुदा की हिदायत के साथ अक्ल वाला मामला करें वही वे लोग हैं जो कामयाब हुए।

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَتْهُمْ إِنْ فِي صُدُورِهِمْ
الْأَكْبَرُ بُرْهَانُهُمْ بِالْغَيْبِ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

जो लोग किसी सनद के बगैर जो उनके पास आई हो, अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं, उनके दिलों में सिर्फ बड़ाई है कि वे उस तक कभी पहुंचने वाले नहीं। पस तुम अल्लाह की पनाह मांगो, वेशक वह सुनने वाला है, देखने वाला है। (56)

हक इतना वाजेह और इतना मुदल्लल (तर्कपूर्ण) है कि उसे समझना किसी के लिए भी मुश्किल नहीं। मगर जब भी हक जाहिर होता है तो वह किसी 'इंसान' के जरिए जाहिर होता है। इसलिए हक का एतराफ अमलन हमिले हक (सत्य के धारक) के एतराफ के हममअना बन जाता है। यही वजह है कि वे लोग हक को मानने पर राजी नहीं होते जो अपने अंदर बड़ाई की नफिसयात लिए हुए हों।

ऐसे लोगों को डर होता है कि हक का एतराफ करते ही वे हमिले हक के मुन्नबले में अपनी बरतरी खो देंगे। अपनी इसी नफिसयात की वजह से वे उसके मुखालिफ बन जाते हैं। मगर खुदा ने अपनी दुनिया के लिए मुकद्दर कर दिया है कि ऐसे लोग कभी कामयाब न हों।

لَخَلْقُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرَةُ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ إِنَّ السَّاعَةَ لَأْتِيَةٌ ۝ لَا رَيْبَ فِيهَا ۝
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

यकीनन आसमानों और जमीन का पैदा करना इंसानों को पैदा करने की निस्वत ज्यादा बड़ा काम है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और अंधा और आंखों वाला एकसां (समान) नहीं हो सकता, और न ईमानदार और नेकोकार (सत्कर्म) और वे जो बुराई करने वाले हैं। तुम लोग बहुत कम सोचते हो। वेशक कियामत आकर रहेगी। इसमें कोई शक नहीं, मगर अक्सर लोग नहीं मानते। (57-59)

कायनात की अम्मत अपने ख़ालिक की अम्मत का तआस्फ़ (परिचय) है। यह अम्मत इतनी बेपनाह है कि इसके मुकाबले में इंसान को दुबारा पैदा करना निस्वतन (अपेक्षाकृत) एक बहुत ज्यादा आसान काम है। इस तरह कायनात की मौजूदा तख़लीक इंसान के तख़लीक सानी (पूनःसृजन) के इम्कान को साबित कर रही है।

इसके बाद इंसानी समाज को देखा जाए तो आखिरत की दुनिया का आना एक अज़ाकी जरूरत मालूम होने लगता है। समाज में ऐसे लोग भी हैं जो हकीकत को देखने वाली बसीरत का सुबूत देते हैं और ऐसे लोग भी हैं जो हकीकत के मुकाबले में बिल्कुल अंधे बने हों। इसी तरह समाज में ऐसे लोग भी हैं जो हर हाल में इंसाफ़ पर कायम रहते हैं। और ऐसे लोग भी जो इंसाफ़ से हट जाते हैं और मामलात में जालिमाना रवैया इख़्तियार करते हैं। इंसान का अज़ाकी एहसास कहता है कि इन दोनों किस्म के इंसानों का अंजाम यकसां (एक जैसा) नहीं होना चाहिए।

इन बातों पर ग़ौर किया जाए तो मालूम होगा कि आखिरत का जुहूर अक्ली तौर पर मुमकिन भी है और अज़ाकी तौर पर जरूरी भी।

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ۖ اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْيَلَائِلَ لِتَشْكُنُوا فِيهِ وَالتَّهَارُ مُبْصَرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ۖ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَآتَىٰ نُوْحًا كُونُ ۖ كَذَلِكَ يُؤْفِكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَحْكُمُونَ ۖ

और तुम्हारे रब ने फरमा दिया है कि मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी दरखास्त कुबूल करूंगा। जो लोग मेरी इबादत से सरताबी विमुखता करते हैं वे अनकरीब जलील होकर जहन्नम में दाखिल होंगे। अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो, और दिन को रोशन किया। बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फज़ल करने वाला है मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। यही अल्लाह तुम्हारा रब है, हर चीज़ का पैदा करने वाला, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। फिर तुम कहाँ से बहकाए जाते हो। इसी तरह वे लोग बहकाए जाते रहे हैं जो अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे। (60-63)

जमीन पर रात और दिन का बाक़यदा निज़ाम और इस तरह के दूसरे हयातबख़्श (जीवनदायी) वाक़ेयात इससे ज्यादा बड़े हैं कि कोई इंसान या तमाम मख़्लूक़ात मिलकर भी इन्हें जुहूर में ला सकें। यह एक खुला हुआ करीना (संकेत) है जो बताता है कि जो ख़ालिक है वही इस लायक है कि उसे माबूद बनाया जाए। आदमी को चाहिए कि उसी के आगे झुके

और उसी से उम्मीदें कायम करे।

मगर आदमी ख़ालिके कायनात से इबादत और दुआ का हकीकी तअल्लुक़ कायम नहीं कर पाता। इसकी वजह यह है कि वह किसी ग़ैर ख़ालिक में अटका हुआ होता है। कुछ लोग जिंदा या मुर्दा बुतों में अटके हुए होते हैं जिसे शिर्क कहा जाता है। और कुछ लोग खुद अपनी जात में अटके हुए होते हैं जिसका दूसरा नाम किब्र (अहं) है। खुदा बार-बार ऐसे दलाइल जाहिर करता है जो इस फरेब की तरदीद (खंडन) करने वाले हों। मगर इंसान कोई न कोई झूठी तौजीह करके उन्हें नज़रअंदाज़ कर देता है।

इस किस्म का हर रवैया ख़ालिके कायनात की नाक़दी है। और जो लोग ख़ालिके कायनात की नाक़दी करें वे जहन्नम के सिवा कहीं और जगह नहीं पा सकते।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً ۖ وَصَوَّرَكُمُ وَأَحْسَنَ صُورَكُمْ ۖ وَرَزَقَكُم مِّنَ الصَّيِّبِ ۖ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَبَرَّكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۖ هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۖ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۖ

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए जमीन को ठहरने की जगह बनाया और आसमान को छत बनाया और तुम्हारा नक्शा बनाया पस उम्दा नक्शा बनाया। और उसने तुम्हें उम्दा चीज़ों का रज़क दिया। यह अल्लाह है तुम्हारा रब, पस बड़ा ही बाबरकत है अल्लाह जो रब है सारे जहान का। वही जिंदा है उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। पस तुम उसी को पुकारो। दीन (धर्म) को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए। सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो रब है सारे जहान का। (64-65)

जमीन पर अनगिनत असबाब जमा किए गए हैं। इसके बाद ही यह मुमकिन हुआ है कि इंसान जैसी मख़्लूक़ इसके ऊपर तमदुदुन (सभ्यता) की तामीर कर सके। इसी तरह जमीन के ऊपर जो फज़ है उसमें मेंबेकुमार मुनाफ़िक़ इतिज़ामात हैं जिनमें अगर मामूली फ़र्क़ भी पैदा हो जाए तो इंसानी जिंदगी का निज़ाम दरहम बरहम हो जाए। फिर इंसान की बनावट इतने आला अंदाज़ में हुई है कि वह जेहनी और जिस्मानी एतबार से इस दुनिया की सबसे बरतर मख़्लूक़ बन गया है। जिस ख़ालिक ने यह सब किया है उसके सिवा कौन इस काबिल हो सकता है कि इंसान उसका परस्तार बने।

खुदा के लिए दीन को ख़ालिस करके उसे पुकारना यह है कि दीनी व मजहबी नौइयत का तअल्लुक़ सिर्फ़ एक अल्लाह से हो। अल्लाह के सिवा किसी से दीनी व मजहबी किस्म का लगाव बाक़ी न रहे।

قُلْ إِنِّي نُهَيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِي
الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ
لِتَبْلُغُوا أَشَدَّكُمْ ثُمَّ لَتَكُونُوا شُيُوخًا ۝ وَمِنْكُمْ مَن يُتَوَفَّى مِنْ قَبْلُ
وَلِتَبْلُغُوا أَجَلَ مُّسَمًّى ۝ وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۝ وَإِذَا
قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّا نَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

कहो, मुझे इससे मना कर दिया गया है कि मैं उनकी इबादत करूं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, जबकि मेरे पास खुली दलीलें आ चुकीं। और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अपने आपको रबुल आलमीन (सृष्टि के प्रभु) के हवाले कर दूं। वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुफा (वीर्य) से, फिर खून के लोथड़े से, फिर वह तुम्हें बच्चे की शक्ल में निकालता है, फिर वह तुम्हें बढ़ाता है ताकि तुम अपनी पूरी ताकत को पहुंचो, फिर ताकि तुम बूढ़े हो जाओ। और तुम में से कोई पहले ही मर जाता है। और ताकि तुम मुक़र्र वक्त तक पहुंच जाओ और ताकि तुम सोचो। वही है जो जिलाता है और मारता है। पस जब वह किसी अम्र (काम) का फैसला कर लेता है तो बस उसे कहता है कि हो जा पस वह हो जाता है। (66-68)

इन आयात में फ़ितरत के कुछ वाक्यात का जिक्र है। इसके बाद इशार्द हुआ है 'यह इसलिए है ताकि तुम ग़ौर करो' गोया फ़ितरत के ये माददी (भौतिक) वाक्यात अपने अंदर कुछ मअनवी (अर्थपूर्ण) सबक लिए हुए हैं। और इंसान से यह मल्लूब है कि वह ग़ौर करके उस छुपे हुए सबक तक पहुंचे।

फ़ितरत के जिन वाक्यात का यहां जिक्र किया गया है वे हैं बेजान माददा (पदार्थ) का तब्दील होकर जानदार चीज बन जाना। इंसान का तदरीजी (चरणबद्ध) अंदाज में विकसित होना। जवानी तक पहुंच कर फिर आदमी पर बुढ़ापा तारी होना, जिंदा इंसान का दुबारा मर जाना, कभी कम उम्र में और कभी ज्यादा उम्र में। ये वाक्यात ख़लिक की मुख़लिफ़ सिफ़त का तआरुफ़ हैं। इससे मालूम होता है कि इस कायनात को वजूद में लाने वाला एक ऐसा खुदा है जो कादिर और हकीम (तत्वदर्शी) है, वह सब पर ग़ालिब और बालादस्त (शीर्षस्थ) है।

अगर आदमी इन वाक्यात से हकीमी सबक ले तो उसका ज़हन फ़ुकर उठेगा कि एक खुदा ही इसका हकदार है कि उसकी इबादत की जाए और उसे अपना आखिरी मल्लूब समझा जाए। आलम का यह नक़्शा बजवाने हाल उन तमाम माबूदों की तरदीद कर रहा है जो एक खुदा को छोड़कर बनाए गए हों।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنْ يُصَرَّفُونَ ۝ الَّذِينَ كَذَّبُوا
بِالْكِتَابِ وَمِمَّا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا ۝ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ إِذْ الْأَغْلُلُ فِي
أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ ۝ فِي الْحِمَى ۝ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ۝ ثُمَّ
قِيلَ لَهُمْ آيِنَ مَا كُنتُمْ تُشْرِكُونَ ۝ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا قَبْلُ
لَمْ نَكُنْ نَدْعُوا مِنْ قَبْلُ شَيْئًا كَذَلِكَ يَضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ۝ ذَلِكُمْ بِمَا كُنتُمْ
تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَمِمَّا كُنتُمْ تَفْرَحُونَ ۝ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ
خَالِدِينَ فِيهَا فَبِئْسَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं। वे कहां से फेरे जाते हैं। जिन्होंने किताब को झुठलाया और उस चीज को भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा। तो अनक़रीब वे जानेंगे, जबकि उनकी गर्दन में तौक होंगे। और जंजीरें, वे घसीटे जाएंगे जलते हुए पानी में। फिर वे आग में झोंक दिए जाएंगे। फिर उनसे कहा जाएगा, कहां हैं वे जिन्हें तुम शरीक करते थे अल्लाह के सिवा। वे कहेंगे, वे हमसे खोए गए बल्कि हम इससे पहले किसी चीज को पुकारते न थे। इस तरह अल्लाह गुमराह करता है मुक़िरो को। यह इस सबब से कि तुम जमीन में नाहक खुश होते थे और इस सबब से कि तुम घमंड करते थे। जहन्नम के दरवाजों में दाख़िल हो जाओ, उसमें हमेशा रहने के लिए। पस कैसा बुरा ठिकाना है घमंड करने वालों का। (69-76)

नाहक पर खुश होने वाले और घमंड करने वाले कौन थे, ये वक्त के बड़े लोग थे। उन्हें कुछ दुनिया का सामान और दुनिया की बड़ाई मिल गई। इसकी वजह से वे नाज और घमंड में मुब्तिला हो गए। उनकी माददी कामयाबी ने उनके अंदर ग़लत तौर पर यह एहसास पैदा कर दिया कि वे पाए हुए लोग हैं। हालांकि हकीकत के एतवार से वे सिर्फ़ महलूम लोग थे।

वक्त के ये बड़े अब्बलन हक के मुक़िर बनते हैं। फिर उनकी पैवी में अवाम भी हक का इंकार करने लगते हैं। इन आयात में अगली दुनिया का वह मंजर दिखाया गया है जबकि ये लोग अपनी मुतकब्बिराना रविश की सजा पाने के लिए जहन्नम में डाल दिए जाएंगे। उनकी झूठी बड़ाई आखिरकार उन्हें जहां पहुंचाएगी वह सिर्फ़ अबदी जिल्लत है जिससे निकलने की कोई सूरत उनके लिए न होगी।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ وَمَا نُرِيكَ بِغَضِّ الذِّئْنِ نَعِدُهُمْ أَوْ
تَتَوَقَّيْتُكَ ۖ فَالْيَا يُرْجَعُونَ ۝

पस सब करो बेशक अल्लाह का वादा बरहक है। फिर जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा देंगे। या तुम्हें वफात देंगे, पस उनकी वापसी हमारी ही तरफ है। (77)

यह अल्लाह का वादा है कि वह हक के दावियों की मदद करेगा और हक के मुखालिफ़ीन को मगलूब (परास्त) करेगा। मगर इस वादे का तहक्कुक सब्र के बाद होता है। दाओ को यकतरफ़ा तौर पर फरीके सानी (प्रतिपक्षी) की ईजाओं (यातनाओं) को बर्दाश्त करना पड़ता है यहां तक कि खुदा की सुन्नत के मुताबिक उसके वादे के जुहर का वक्त आ जाए।

मुखालिफ़ीने हक की अस्ल सजा वह है जो उन्हें आखिरत में मिलेगी। ताहम मौजूदा दुनिया में भी उन्हें उसका इब्तिदाई तजर्बा कराया जाता है, अगरचे हमेशा ऐसा किया जाना ज़रूरी नहीं।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ
لَمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ
فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ فَخُتِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ۝

और हमने तुमसे पहले बहुत से रसूल भेजे, उनमें से कुछ के हालात हमने तुम्हें सुनाए हैं और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिनके हालात हमने तुम्हें नहीं सुनाए। और किसी रसूल को यह मकदूर (सामर्थ्य) न था कि वह अल्लाह की मर्जी के बग़ैर कोई निशानी ले आए। फिर जब अल्लाह का हुक्म आ गया तो हक के मुताबिक फैसला कर दिया गया। और ग़लतकार लोग उस वक्त ख़सारे (घाटे) में रह गए। (78)

कुरआन में रसूलों के अहवाल (वृत्तांत) बतौर तारीख़ नहीं बयान हुए हैं बल्कि बतौर नसीहत बयान हुए हैं। इसलिए कुरआन में रसूलों के अहवाल महदूद तौर पर सिर्फ इतना ही बताए गए हैं जितना अल्लाह तआला के नजदीक नसीहत के लिए ज़रूरी थे।

रसूल का अस्ल काम सिर्फ यह होता है कि वह खुदा का पैग़ाम उसके तमाम ज़रूरी आदाब और तक़ज़ों के साथ लोगों तक पहुंचा दे। इसके बाद जहां तक मोजिजे का तअल्लुक है वह तमामतर अल्लाह के इख़्तियार में है, वह अपनी मस्लेहत के तहत कभी उन्हें जाहिर करता है और कभी जाहिर नहीं करता।

मोजिजे ज्यादा उन कौमों को दिखाए गए हैं जिनकी सरकशी की बिना पर खुदा का

फैसला था कि उन्हें हलाक कर दिया जाए। इसलिए आखिरी तौर पर इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के लिए उन्हें मोजिजा भी दिखा दिया गया। मगर पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कौम का मामला यह था कि उसका बड़ा हिस्सा बिलआखिर मोमिन बनने वाला था। ये वे लोग थे जो इम्कानी तौर पर यह सलाहियत रखते थे कि वे तारीख़ के पहले गिरोह बनें जिसने महज दलील की बुनियाद पर हक का एतराफ़ किया और अपने आजाद इरादे से अपने आपको उसके हवाले कर दिया। इसलिए उन लोगों के मुतालबे को नादानी पर महमूल करते हुए उन्हें ख़ारिके आदत मोजिजे (दिव्य चमत्कार) नहीं दिखाए गए।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۖ وَلَكُمْ فِيهَا
مَنَافِعُ وَلِتَبْغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ
تَحْمَلُونَ ۖ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ ۖ فَأَيَّ آيَاتِ اللَّهِ تُنْكِرُونَ ۝

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए मवेशी बनाए ताकि तुम कुछ से सवारी का काम लो और उनमें से कुछ को तुम खाते हो। और तुम्हारे लिए उनमें और भी फायदे हैं। और ताकि तुम उनके जरिए से अपनी जरूरत तक पहुंचो जो तुम्हारे दिलों में हो और उन पर और कश्ती पर तुम सवार किए जाते हो और वह तुम्हें और भी निशानियां दिखाता है तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों का इंकार करोगे। (79-81)

इंसान को अपनी जिंदगी और सम्यता के लिए बहुत सी चीजों की जरूरत है। मसलन गिजा, सवारी, मुखलिफ़ किस्म की सनअतें (उद्योग), सामान को एक जगह से दूसरे जगह ले जाना। ये सब चीजें मौजूदा दुनिया में बड़ी मिक्दार में मौजूद हैं। खुदा ने दुनिया की चीजों को इस तरह बनाया है कि वे हमेशा इंसान के ताबेअ रहें और इंसान उन्हें अपनी जरूरतों के लिए जिस तरह चाहे इस्तेमाल कर सके।

ये तमाम चीजें गोया खुदा की निशानियां हैं। वे ग़ैबी हकीकतों का माददी जवान में एलान कर रही हैं। यह एलान अगरचे बिलवास्ता (परोक्ष) जवान में है मगर इंसान का भला इसी में है कि वह बिलवास्ता जवान में कही हुई बात को समझे। क्योंकि खुदा जब बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) जवान में कलाम करे तो वह मोहलते अमल के ख़त्म होने का एलान होता है न कि अमल शुरू करने का।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
كَانُوا أَكْثَرُ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَأَنَارًا فِي الْأَرْضِ ۖ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ
كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِإِعْنَادِهِمْ مِّنْ

الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ تَاكَانُؤَابَهُ يَتَنَهَرُونَ ۖ فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا امْكُتُوا
بِاللَّهِ وَحَدَّاهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ۖ فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ
لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا سَتَتْ لَآلِيهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادَةٍ ۖ وَخَسِرَ هُنَاكَ
الْكَافِرُونَ ۖ

ع
١٤

क्या वे जमीन में चले फिर नहीं कि वे देखते कि क्या अंजाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुजरे हैं। वे इनसे ज्यादा थे, और कुव्वत (शक्ति) में और निशानियों में जो कि वे जमीन पर छोड़ गए, बड़े हुए थे। पस उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई। पस जब उनके पैगम्बर उनके पास खुली दलीलें लेकर आए तो वे अपने उस इल्म पर नाजं रहे जो उनके पास था, और उन पर वह अजाब आ पड़ा जिसका वे मजक उड़ते थे। फिर जब उन्होंने हमारा अजाब देखा, कहने लगे कि हम अल्लाह वाहिद (एकेश्वर) पर ईमान लाए और हम इंकार करते हैं जिन्हें हम उसके साथ शरीक करते थे। पस उनका ईमान उनके काम न आया जबकि उन्होंने हमारा अजाब देख लिया। यही अल्लाह की सुन्नत (तरीक) है जो उसके बंदों में जारी रही है, और उस वक्त इंकार करने वाले खसारे (घाटे) में रह गए। (82-85)

इल्म की दो किस्में हैं। एक वह इल्म जिससे दुनिया की तरक्कियां हासिल होती हैं। दूसरा इल्म वह है जो आखिरत की कामयाबी का रास्ता बताता है। जिन लोगों के पास दुनिया का इल्म हों उनके इल्म का शानदार नतीजा फौरी तौर पर दुनिया की तरक्कियों की सूरत में सामने आ जाता है। इसके बरअक्स जिस शख्स के पास आखिरत का इल्म हो उसके इल्म के नताइज फौरी तौर पर महसूस शकल में सामने नहीं आते।

यह फर्क उन लोगों के अंदर बरतरी की नफिसयात पैदा कर देता है जो दुनिया का इल्म रखते हो। चुनांचे ऐसी कौमों के पास जब उनके पैगम्बर आए तो उन्होंने अपने को ज्यादा समझा और पैगम्बर को कम ख्याल किया। यहां तक कि वे उनका मजाक उड़ाने लगे। मगर अल्लाह ने उन कौमों को उनकी तमाम कुव्वतों और शानदार तरक्कियों के बावजूद हलाक कर दिया। अब उनके तारीखी आसार (अवशेष) या तो खंडहर की शकल में हैं या जमीन के नीचे दबे हुए हैं। इस तरह अल्लाह तआला ने तमाम इंसानों के लिए एक तारीखी मिसाल कायम कर दी कि मुस्तकिल कामयाबी का राज इल्मे आखिरत में है न कि इल्मे दुनिया में।

इन कौमों ने इब्तिदा में अपने पैगम्बरों का इंकार किया। पैगम्बरों के पास दलील की कुव्वत थी। मगर ये कौमों दलील की कुव्वत के आगे झुकने के लिए तैयार न हुईं। आखिरकार खुदा ने अजाब की जवान में उन्हें अम्र वाकई (यथाथी) से आगाह किया। उस वक्त वे लोग झुक कर इकरार करने लगे। मगर यह इकरार उनके काम न आया। क्योंकि इकरार वह मलूब

(अपेक्षित) है जो दलील की बुनियाद पर हो। उस इकरार की कोई कीमत नहीं जो अजाब को देखकर किया जाए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ اَرْجَعْنِي اَوْ رَحْمَةً
حَمْدًا تَنْزِيلًا مِنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ كَتَبْتُ فَصَلْتَ اَيْتُهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا
لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۝ بَشِيرًا وَنَذِيرًا فَاعْرَضَ الْكُفْرُ فَهُمْ لَا يَسْتَعْبُونَ ۝ وَقَالُوا
قُلُوبُنَا فِي الْاَكْتَادِ مِمَّا تَدْعُونَا اِلَيْهِ وَفِي اَذْنَانَا وَقْرٌ ۖ وَمِنْ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ
حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّا عَمِلُونَ ۖ

ع
١٥

आयतें-54

सूरह-41. हा० मीम० अस-सज्दह

रुकूअ-6

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। हा० मीम०। यह बड़े महरबान, निहायत रहम वाले की तरफ से उतारा हुआ कलाम है। यह एक किताब है जिसकी आयतें खोल-खोल कर बयान की गई हैं, अरबी जवान का कुरआन, उन लोगों के लिए जो इल्म रखते हैं। खुशखबरी देने वाला और डराने वाला। पस उन लोगों में से अक्सर ने इससे मुंह मोड़ा। पस वे नहीं सुन रहे हैं। और उन्होंने कहा हमारे दिल उससे पर्दे में हैं जिसकी तरफ तुम हमें बुलाते हो और हमारे कानों में डाट है। और हमारे और तुम्हारे दर्मियान में एक हिजाब (ओट) है। पस तुम अपना काम करो, हम भी अपना काम कर रहे हैं। (1-5)

पैगम्बर की दावत बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत होती है। इसके बरअक्स लोगों का हाल यह है कि अक्सर वे अपने अकाबिर (बड़ों) के दीन पर होते हैं। उनके ऊपर उनकी कौमी रिवायात और जमानी अपकार (तात्कालिक विचारों) का गलबा होता है। इस बिना पर पैगम्बर का बेआमेज दीन उनके फिक्री ढांचे में नहीं बैठता। वह उन्हें अजनबी दिखाई देता है। यह फर्क पैगम्बर और लोगों के दर्मियान एक जमानी दीवार की तरह हायल हो जाता है। लोग पैगम्बर की दावत को उसके अस्ल रूप में देख नहीं पाते, इसलिए वे उसे मानने पर भी तैयार नहीं होते।

पैगम्बर की दावत बजाए खुद इतिहाई मुदल्लल होती है। वह अपनी जात में इस बात का सबूत होती है कि वह खुदा की तरफ से आई हुई बात है। मगर मचकूरा जेहनी दीवार इतनी ताकतवर साबित होती है कि इंसान उससे निकल कर पैगम्बर की दावत को देख नहीं पाता। खुदा इंसान के लिए अपनी रहमत के दरवाजे खोलता है मगर इंसान उसके अंदर दाखिल नहीं होता।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ وَاحِدٌ فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ
وَاسْتَغْفِرُوا لَهُ ۖ وَسِوَالِلْمُشْرِكِينَ ۚ الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ
هُمُ الْكَافِرُونَ ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝

कहो, मैं तो एक बशर (इंसान) हूँ तुम जैसा। मेरे पास यह 'वही' (ईश्वरीय वाणी) आती है कि तुम्हारा माबूद (पूज्य) वस एक ही माबूद है, पस तुम सीधे रहो उसी की तरफ और उससे माफी चाहो। और खराबी है मुश्रिकों के लिए, जो जकात नहीं देते और वे आखिरत के मुंकिर हैं। वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए ऐसा अज्र (प्रतिफल) है जो मौक्फ (बाधित) होने वाला नहीं। (6-8)

हक की दावत जब भी उठती है 'बशर' (इंसान) की सतह पर उठती है। लोगों की समझ में नहीं आता कि यह कैसे मुमकिन है कि एक बशर खुदा की जवान में कलाम करे। इसलिए वे उसके मुंकिर बन जाते हैं मगर खुदा की सुन्नत (तरीका) यही है कि वह बशर की जवान से अपनी बात का एलान कराए। जो शख्स दाआ की बशरियत से गुजर कर उसके इलाही कलाम को न पहचान सके वह मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में हिदायत से महरूम रहेगा।

आखिरत का मानना वही मोतबर है जिसके साथ कामिल तौहीद और इफ्फक फी सबीलिल्लाह (अल्लाह की राह में खर्च करना) पाया जाए। जो शख्स अल्लाह को हकीकी तौर पर पा ले वह किसी और अज्मत में अटका हुआ नहीं रह सकता। इसी तरह जो शख्स अल्लाह को हकीकी तौर पर पा ले वह अपने माल को खुदा से बचाकर नहीं रख सकता।

फस्तक्रीमू इलैहि का मतलब है अख़िसू लहुल इबादत यानी तुम्हारी सारी तवज्जोह सिर्फ अल्लाह की तरफ हो तुम्हारी दुआ और इबादत का केन्द्र सिर्फ एक अल्लाह हो। तुम्हारी सोच तमामतर खुदा रुखी सोच बन जाए। यही वे लोग हैं जिन्हें खुदा के अवदी इनामात दिए जाएंगे।

قُلْ إِنَّا كُنَّا نُكْفِرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَندَادًا
ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۚ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبَارَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ
فِيهَا أَقْوَانَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِّلسَّائِلِينَ ۝ ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ
دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۖ قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ۝
فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ ۖ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۖ وَزَيَّنَّا
السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِصَابِرٍ ۖ وَحَفِظْنَاهَا ۚ ذَٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝

कहो क्या तुम लोग उस हस्ती का इंकार करते हो जिसने जमीन को दो दिन में बनाया, और तुम उसके हमसर (समकक्ष) ठहराते हो। वह रब है तमाम जहान वालों का। और उसने जमीन में उसके ऊपर पहाड़ बनाए। और उसमें फायदे की चीजें रख दी। और उसमें उसकी गिजाएं ठहरा दीं चार दिन में, पूरा हुआ पूछने वालों के लिए। फिर वह आसमान की तरफ मुतवज्जह हुआ, और वह धुवां था। फिर उसने आसमान और जमीन से कहा कि तुम दोनों आओ खुशी से या नाखुशी से। दोनों ने कहा कि हम खुशी से हाजिर हैं। फिर उसने दो दिन में उसके सात आसमान बनाए और हर आसमान में उसका हुक्म भेज दिया। और हमने आसमाने दुनिया को चराओं से जीनात (साज-सज्जा) दी, और उसे महफूज कर दिया। यह अजीज (प्रभुवशाली) व अलीम (सर्वज्ञ) की मंसूबाबंदी है। (9-12)

कायनात का मुतालआ बताता है कि उसकी तख्नीक कई दौरों में तदरीजी (चरणबद्ध) तौर पर हुई है। तदरीजी तख्नीक दूसरे लफ्जों में मंसूबाबंद तख्नीक है। और जब कायनात की तख्नीक मंसूबाबंद अंदाज में हुई है तो यकीनी है कि इसका एक मंसूबासाज हो जिसने अपने मुकररह मंसूबे के तहत इसे इरादतन बनाया हो।

इसी तरह यहां जमीन के ऊपर जगह-जगह पहाड़ हैं जो जमीन के तवाजुन (संतुलन) को बरकरार रखते हैं। इस दुनिया में करोड़ों किस्म के जीहयात (जीव) हैं। हर एक को अलग-अलग रिस्क दरकार है। मगर हर एक का रिस्क इस तरह कामिल मुताबिकत के साथ मौजूद है कि जिसे जो रोजी दरकार है वह अपने करीब ही उसे पा लेता है। इसी तरह कायनात का मुतालआ बताता है कि तमाम चीजें इब्तिदा में मुंतशिर (बिखरे हुए) एटम की सूरत में थीं। फिर वे आपस में मिलकर अलग-अलग चीजों की सूरत में विकसित हुईं। इसी तरह कायनात के मुतालआ से मालूम होता है कि वसीअ कायनात की तमाम चीजें एक ही कानूने फितरत में निहायत मोहकम (सुदृढ़) तौर पर जकड़ी हुई हैं।

ये मुशाहिदात वाजेह तौर पर साबित करते हैं कि कायनात का खालिक अलीम और खबीर है। वह कुव्वत और गलबे वाला है। फिर दूसरा कौन है जिसे इंसान अपना माबूद करार दे।

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنذَرْتُكُمْ صِيعَةً مِّثْلَ صِيعَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ۚ إِذْ
جَاءَهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ
قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنزَلَ مَلَائِكَةً فَأَنبَأَنَا رُسُلَهُمْ بِهِ كُفِرُونَ ۝

पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करते हैं तो कहो कि मैं तुम्हें उसी तरह के अजाब से डराता हूँ जैसा अजाब आद व समूद पर नाजिल हुआ। जबकि उनके पास रसूल आए, उनके आगे से और उनके पीछे से कि अल्लाह के सिवा तुम किसी की इबादत न करो। उन्होंने

कहा कि अगर हमारा ख चाहता तो वह फरिश्ते उतारता, पस हम उस चीज के मुँकर हैं जिसे देकर तुम भेजे गए हो। (13-14)

हक की दावत का इंकार खुदा के नजदीक सबसे बड़ा जुर्म है। यह इंकार अगर पैगम्बर की दावत के मुकाबले में हो तो उसकी सजा इसी मौजूदा दुनिया से शुरू हो जाती है, जैसा कि आद व समूद वगैरह कौमों के साथ पेश आया। और अगर आम दावियों का मामला हो तो उनके इंकार का अंजाम आखिरत में सामने आएगा।

हक की दावत का अस्ल मुक्ता यह रहा है कि इंसान खुदा का इबादतगुजार बने। वह ग़ैर अल्लाह को छोड़कर सिर्फ एक अल्लाह से अपने ख़ौफ व मुहब्बत के ज़बात वाबस्ता करे। मगर हर दौर में ऐसा हुआ कि पैगम्बर की शख्सियत उनके मुआसिरीन (समकालीन) को इससे कम नजर आई कि खुदा उन्हें अपने पैगाम की पैगामरसानी के लिए चुने। इसलिए उन्होंने पैगम्बरों को मानने से इंकार कर दिया।

فَأَنذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّى فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ۖ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي أَيَّامٍ نَحْسَاتٍ لِّنَذِيقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَخْزَىٰ وَهُمْ لَا يُنصَرُونَ ۖ وَأَمَّا سُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعُلَىٰ عَلَى الْهُدَىٰ فَآخَذَتْهُمْ سُعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُونِ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۖ وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۖ

आद का यह हाल था कि उन्होंने जमीन में बगैर किसी हक के घमंड किया, और उन्होंने कहा, कौन है जो कुव्वत (शक्ति) में हमसे ज्यादा है। क्या उन्होंने नहीं देखा कि जिस खुदा ने उन्हें पैदा किया है वह कुव्वत में उनसे ज्यादा है और वे हमारी निशानियों का इंकार करते रहे। तो हमने चन्द मनहूस दिनों में उन पर सख्त तूफानी हवा भेज दी ताकि उन्हें दुनिया की ज़िंदगी में रुसवाई का अज़ाब चखाएं, और आखिरत का अज़ाब इससे भी ज्यादा रुसवाकून है और उन्हें कोई मदद न पहुंचेगी। और वे जो समूद थे, तो हमने उन्हें हिदायत का रास्ता दिखाया मगर उन्होंने हिदायत के मुकाबले में अंधेपन को पसंद किया, तो उन्हें अज़ाबे जिल्लत के कड़के ने पकड़ लिया उनकी बदकिरदारियों की वजह से। और हमने उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और डरने वाले थे। (15-18)

आदमी एक ऐसी दुनिया में है जहां जमीन व आसमान की अज़मतें उसकी बड़ाई की नफी

कर रही हैं। जहां मौत का वाक्या हर रोज इंसान को हकीर और बेजोर साबित कर रहा है। इसके बावजूद आदमी बड़ा बनता है। फिर भी वह इस गुमान में रहता है कि वह जोर वाला है।

खुदा बार-बार हकीकत का एलान कराता है। वह बार-बार इंसान की बड़ाई के दावे को बातिल साबित कर रहा है। मगर कोई उस वक्त तक नसीहत नहीं लेता जब तक उसे मिटा न दिया जाए। आद व समूद और दूसरी कौमों के खंडहर इसी के मिसाल हैं। उन्होंने जिन दिनों को अपने लिए मुबारक समझ रखा था वही दिन खुदा के हुक्म से उनके लिए मनहूस दिन बनकर रह गए।

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ۖ حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ وَقَالُوا لِمَ جُلُودُنَا لَمْ يَسْهَدْ لَنَا شَيْءٌ ۖ فَأَلَوْنَا لِنَفْسِنَا ۖ فَذَٰلِكَ أَتَقَنَّا اللَّهُ ۖ الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۖ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَوُونَ ۖ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِّمَّا تَعْمَلُونَ ۖ وَذَٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرَدَكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۖ فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ وَإِنْ يَسْتَعِزُّوا فَلَهُمْ مِنَ الْمُعْتَزِينَ ۖ

और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन आग की तरफ जमा किए जाएंगे, फिर वे जुदा-जुदा किए जाएंगे, यहां तक कि जब वे उसके पास आ जाएंगे, उनके कान और उनकी आंखें और उनकी खालें उन पर उनके आमाल की गवाही देंगी। और वे अपनी खालों से कहेंगे, तुमने हमारे खिलाफ क्यों गवाही दी। वे कहेंगे कि हमें उसी अल्लाह ने गोयाई (बोलने की ताकत) दी है जिसने हर चीज को गोया कर दिया है। और उसी ने तुम्हें पहली मर्तबा पैदा किया और उसी के पास तुम लाए गए हो। और तुम अपने को इससे छुपा न सकते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आंखें और तुम्हारी खालें तुम्हारे खिलाफ गवाही दें, लेकिन तुम इस गुमान में रहे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से उन आमाल को नहीं जानता जो तुम करते हो। और तुम्हारे उसी गुमान ने जो कि तुमने अपने खब के साथ किया था तुम्हें बर्बाद किया, पस तुम ख़सारा (घाटा) उठाने वालों में से हो गए। पस अगर वे सब करें तो आग ही उनका ठिकाना है, और अगर वे माफी मांगें तो उन्हें माफी नहीं मिलेगी। (19-24)

कुरआन में बताया गया है कि कियामत में इंसान की खाल और उसके आजा (शरीरंग) उसके आमाल की गवाही देंगे। मौजूदा जमाने में नुके जिल्दी (Skin speech) केनजरियेनेइसे अमली तौर पर साबित कर दिया है। अब यह मालूम किया गया है कि इंसान का हर बोल उसके जिस्म की खाल पर मुरतसिम (प्रतिबिंबित) होता रहता है। और उसे दुबारा उसी तरह सुना जा सकता है जिस तरह मशीनी तौर पर रिकॉर्ड की हुई आवाज को दुबारा सुना जाता है।

खुदा चूँकि बजाहिर दिखाई नहीं देता इसलिए इंसान समझता है कि खुदा उसे देखता नहीं है। यही गलतफहमी आदमी के अंदर सरकशी पैदा करती है। अगर आदमी जान ले कि खुदा हर लम्हा उसे देख रहा है तो उसका सारा रवैया बिल्कुल बदल जाए।

आखिरत में खुदा के सामने आने के बाद आदमी इताअत (आज्ञापालन) का इज्हार करेगा। मगर वह उसके लिए बेफायदा होगा। क्योंकि इताअत हालते गैब में काबिले एतबार है न कि हालते शुहूद (प्रकट स्थिति) में।

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ قَائِلِينَ الَّذِينَ يُدِيرُهُمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقٌّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمِّرٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ۝

और हमने उन पर कुछ साथी मुसल्लत कर दिए तो उन्होंने उनके आगे और पीछे की हर चीज उन्हें खुशनुमा बनाकर दिखाई। और उन पर वही बात पूरी होकर रही जो जिन्नों और इंसानों के उन गिरोहों पर पूरी हुई जो इनसे पहले गुजर चुके थे। बेशक वे ख़सारे (घाटे) में रह जाने वाले थे। (25)

मौजूदा दुनिया में एक तरफ़ खुदा के दाओ हैं जो इंसान को हक की नसीहत करते हैं। दूसरी तरफ़ इस्तहसालपसंद (शोषक) लीडर हैं जो खुशनुमा बातें करके इंसान को अपनी तरफ़ मायल करना चाहते हैं। जो लोग खुदा की नसीहत पर तवज्जोह न दें वे उन लीडरों की बातों में आकर ग़ैर हक़ी रास्तों में दौड़ पड़ते हैं।

ये इस्तहसालपसंद लीडर लोगों को उनके माजी का हसीन ख़्वाब दिखाते हैं। वे उनके सामने उनके मुस्तक़बिल का ख़ूबसूरत नक्शा पेश करते हैं। जो लोग ऐसे लीडरों के झूठे अल्फ़ाज से धोखा खाकर उनके पीछे दौड़ पड़ते हैं उनका अंजाम इसके सिवा और कुछ नहीं होता कि वे हमेशा के लिए तबाह होकर रह जाएं।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا هَذَا الْقُرْآنَ وَالْغَوَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ ۝ فَلَنْ يَتَّقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا وَلَنْ يُخْرِجَهُمْ

أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ ذَلِكَ جَزَاءُ عِبَادِ اللَّهِ النَّارِ لَهُمْ فِيهَا دَارُ الْخُلْدِ جَزَاءُ بِمَا كَانُوا يَأْتِنَا بِمُحَدِّثُونَ ۝

और कुफ़्र करने वालों ने कहा कि इस कुरआन को न सुनो और इसमें ख़लल डालो, ताकि तुम ग़ालिब रहो। पर हम इंकार करने वालों को सज़ा अजाब चखाएंगे और उन्हें उनके अमल का बदतरीन बदला देंगे। यह अल्लाह के दुश्मनों का बदला है, यानी आग। उनके लिए उसमें हमेशगी का ठिकाना होगा, इस बात के बदले में कि वे हमारी आयतों का इंकार करते थे। (26-28)

वल ग़ौ फ़ीह० की तशरीह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० ने अय्यबूह के लफ़्ज़ से की है (तप्सीर इब्ने कसीर)। यानी कुरआन और साहिबे कुरआन में ऐब लगाओ और इस तरह लोगों को उससे दूर कर दो।

किसी बात या किसी शख्स के बारे में इन्होरे राय के दो तरीके हैं। एक तंकीद, दूसरा तअयीब। तंकीद का मतलब है हक़ीक़ की बुनियाद पर ज़ेबहस अम्र का तज्जिया (विश्लेषण) करना। इसके बरअक्स तअयीब यह है कि आदमी ज़ेबहस मसले पर दलाइल पेश न करे। वह सिर्फ़ उसमें ऐब निकाले वह उस पर इल्जाम लगाकर उसे मतऊन (लाछिल) करे।

तंकीद का तरीका सरसर जाइज तरीका है। मगर तअयीब का तरीका अहले कुफ़्र का तरीका है। मजौद यह कि तअयीब का तरीका खुदा की निशानियों का इंकार है। क्योंकि हर सच्ची दलील खुदा की एक निशानी है। जो लोग दलील के आगे न झुकें और ऐबजोई और इल्जामतराशी का तरीका इख़्तियार करके उसे दबाना चाहें वे गोया खुदा की निशानी का इंकार कर रहे हैं। ऐसे लोग आखिरत में निहायत सख़्त सजा के मुस्तहक़ करार दिए जाएंगे।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذِينَ أُضْلِنَا مِنَ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ جَعَلَهُمَا تَحْتِ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ۝ نَحْنُ أَوْلَىٰ بِكُمُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهُنَّ أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدْعُونَ ۝ نَزَّلًا مِنْ غَفُورٍ رَحِيمٍ ۝

और कुफ्र करने वाले कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमें उन लोगों को दिखा जिन्होंने जिन्नों और इंसानों में से हमें गुमराह किया, हम उन्हें अपने पांवों के नीचे डालेंगे ताकि वे जलील हों। जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह हमारा रब है, फिर वे साबितकदम रहे, यकीनन उन पर फरिश्ते उतरते हैं और उनसे कहते हैं कि तुम न अदेशा करो और न रंज करो और उस जन्नत की वशारत (शुभ सूचना) से खुश हो जाओ जिसका तुमसे वादा किया गया है। हम दुनिया की ज़िंदगी में तुम्हारे साथी हैं और आखिरत में भी। और तुम्हारे लिए वहां हर चीज है जिसे तुम्हारा दिल चाहे और तुम्हारे लिए उसमें हर वह चीज है जो तुम तलब करोगे, ग़मूर (क्षमाशील) व रहीम (दयावान) की तरफ से मेहमानी के तौर पर। (29-32)

इंसानों में दो किस्म के इंसान हैं। एक वे जो शैतानों और झूठे लीडरों को अपना रहनुमा बनाते हैं। ये लोग दुनिया में खूब एक दूसरे से दोस्ती रखते हैं। मगर आखिरत में सूरतेहाल बिल्कुल बरअक्स होगी। वहां पैरवी करने वाले लोग जब देखेंगे कि उनके झूठे रहनुमाओं ने उन्हें सिर्फ जहन्नम में पहुँचाया है तो वे उनसे सख्त मुतनफिर (नफरतज्द) हो जाएंगे। और चाहेंगे कि उन्हें हकीर व जलील करके अपने दिल की तस्कीन हासिल करें।

दूसरे इंसान वे हैं जो खुदा के फरिश्तों को अपना साथी बनाएं। ऐसे लोग दुनिया से लेकर आखिरत तक फरिश्तों को अपना हमनशी (साथी) पाते हैं। फरिश्ते उनके दिल पर रब्बानी एहसासात उतारते हैं। वे मुश्किल हालात में उन्हें कल्बी सुकून अता करते हैं। वे लतीफ तजर्बात के जरिए उन्हें खुदा की बिशारतें सुनाते हैं। फिर यही फरिश्ते आखिरत में उनका इस्तकबाल करके उन्हें जन्नत के बाग़ात में दाखिल करेंगे।

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ وَلَا تَسْتَوِ الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَ عَدَاوَةٍ كَانَتْهُ وَبِئْسَ حَمِيمٌ ۝ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا ذُوحَاقٌ عَظِيمٌ ۝ وَإِنَّا يَنْزِعُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ ۖ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

और उससे बेहतर किसकी बात होगी जिसने अल्लाह की तरफ बुलाया और नेक अमल किया और कहा कि मैं फरमांबरदारों में से हूँ। और भलाई और बुराई दोनों बराबर नहीं, तुम जवाब में वह कहो जो उससे बेहतर हो फिर तुम देखोगे कि तुम में और जिसमें दुश्मनी थी, वह ऐसा हो गया जैसे कोई दोस्त करावत (घनिष्टता) वाला। और यह बात उसी को मिलती है जो सब्र करने वाले हैं, और यह बात उसी को मिलती है जो बड़ा नसीबे वाला है। और अगर शैतान तुम्हारे दिल में कुछ वसवसा डाले तो अल्लाह की

पनाह मांगो। बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है। (33-36)

कुरआन की दावत अल्लाह की तरफ बुलाने की दावत है। इंसान को उसके रब से जोड़ना, इंसान को खुदा की याद में जीने वाला बनाना, इंसान के अंदर यह शुऊर उभारना कि वह एक खुदा को अपना मर्कजे तवज्जोह बना ले, यही कुरआनी दावत का अस्त निशाना है। और बिलाशुबह इस पुकार से बेहतर कोई पुकार नहीं।

मगर खुदा का दाआ सिर्फ वह शख्स बनता है जो अपनी दावत में इस हद तक संजीदा हो कि जो कुछ वह दूसरों से मनवाना चाहता है उसे वह खुद सबसे पहले मान चुका हो, वह दूसरों से जो कुछ करने के लिए कह रहा है, खुद सबसे पहले उसका करने वाला बन जाए।

दाआ का सबसे बड़ा हथियार यह है कि वह लोगों के साथ यकतरफा हुस्ने सुलूक करे। दूसरे लोग बुराई करें तब भी वह दूसरों के साथ भलाई करे। वह इशतिआल (उतेजना) के मुक़बले मैएराज और अजिब्यतरसानी (उपीड़न) के मुक़बले में सब्र का तरीक़ा इस्तिआर करे। यकतरफा हुस्ने सुलूक में अल्लाह तआला ने जबरदस्त तस्खीरी (अपना बनाने की) ताकत रखी है। खुदा का दाआ खुदा की बनाई हुई इस फितरत को जानता है और उसे आखिरी हद तक इस्तेमाल करता है, चाहे इसके लिए उसे अपने जज्बात को कुचलना पड़े, चाहे इसकी खातिर अपने अंदर पैदा होने वाले रद्देअमल को जबह करने की नौबत आ जाए।

जब भी दाआ के अंदर इस किस्म का ख्याल आए कि फलां बात का जवाब देना जरूरी है, फलां जुम के खिलाफ जरूर कार्रवाई की जानी चाहिए वरना दुश्मन दिलेर होकर और ज्यादा ज्यादातियां करेगा तो समझ लेना चाहिए कि यह एक शैतानी वसवसा है। मोमिन और दाआ का फर्ज है कि वह ऐसे ख्याल से खुदा की पनाह मांगे, न कि वह उसके पीछे दौड़ना शुरू कर दे।

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝ فَإِنِ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُونَ ۝

और उसकी निशानियों में से है रात और दिन और सूरज और चांद। तुम सूरज और चांद को सज्दह न करो बल्कि उस अल्लाह को सज्दह करो जिसने इन सबको पैदा किया है, अगर तुम उसी की इबादत करने वाले हो। पस अगर वे तकबुर (घमंड) करें तो जो लोग तेरे रब के पास हैं वे शब व रोज उसी की तस्बीह करते हैं और वे कभी नहीं थकते। (37-38)

इंसान की सबसे बड़ी गुमराही उसकी जाहिरपरस्ती है। कदीम जमाने के इंसान को सूरज और चांद और सितारे सबसे ज्यादा नुमायां नजर आए। इसलिए उसने इन मजाहिर (जाहिरी रूपों) को खुदा समझ लिया और उन्हें पूजना शुरू कर दिया। मौजूदा जमाने में मादूदी (भौतिक) तहजीब की जगमगाहट लोगों को नुमायां दिखाई दे रही है इसलिए अब मादूदी तहजीब को वह मक्कम दे दिया गया है जो कदीम जमाने में सूरज और चांद को हासिल था। हालांकि चाहे सूरज और चांद हों या दूसरे मजाहिर सबके सब खुदा की मख़बूक हैं। इंसान को चाहिए कि वह ख़ालिक का परस्तार बने न कि उसकी मख़बूक का।

तकबुर (घमंड) करने वालों का तकबुर (आह्वान) दावत के मुकाबले में नहीं होता, बल्कि हमेशा दाओ के मुकाबले में होता है। वक्त के बड़ों को बजाहिर दाओ अपने से छोटा नजर आता है इसलिए वह उसे छोटा समझ लेते हैं और इसी के साथ उसकी तरफ से पेश किए जाने वाले पैगाम को भी।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ
وَرَبَّتْ إِنَّ اللَّهََ أَحْيَاهَا لَسُبْحَى الْمَوْتِ إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِنَّ
الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفُونَ عَلَيْنَا ۝ أَفَمَنْ يُلْقَى فِي النَّارِ خَبِيرٌ
أَمْ مَنْ يَأْتِي أَمِنًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

और उसकी निशानियों में से यह है कि तुम जमीन को फरसूदा (मृत) हालत में देखते हो फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती है और फूल जाती है। बेशक जिसने उसे जिंदा कर दिया वह मुर्दों को भी जिंदा कर देने वाला है। बेशक वह हर चीज पर कादिर है। जो लोग हमारी आयतों को उल्टे मअना पहनाते हैं वे हमसे छुपे हुए नहीं हैं। क्या जो आग में डाला जाएगा वह अच्छा है या वह शख्स जो कियामत के दिन अमन के साथ आएगा। जो कुछ चाहे कर लो, बेशक वह देखता है जो तुम कर रहे हो। (39-40)

सूखी जमीन में बारिश का बरसना और उससे सब्जा का उगना एक ऐसा मजहर (जह्शी रूप) है जो हर आदमी के सामने बार-बार आता है। यह एक मअनवी हकीकत की मादूदी तमसील है। इस तरह इंसान को बताया जाता है कि खुदा ने यहां उसके खुशक वजूद को सरसब्ज व शादाब करने का वसीअ इतिजाम कर रखा है। जमीन की मिट्टी पानी को अपने अंदर दाखिल होने देती है उसी वक्त यह मुमकिन होता है कि बारिश उसे सरसब्ज व शादाब करने का जरिया बने। इसी तरह इंसान अगर खुदा की हिदायत को अपने अंदर उतरने दे तो उसका वजूद भी हिदायत पाकर लहलहा उठेगा।

खुदा की हिदायत से फैजयाब न होने की सबसे बड़ी वजह यह होती है कि इंसान खुदा की बातों में इल्हाद (उलट-फेर) करता है। खुदा की रहनुमाई उसके सामने आती है तो वह उसे सीधे मफहूम में नहीं लेता। बल्कि उसमें टेढ़ निकाल कर उसे उलट देता है। इस तरह खुदा की रहनुमाई उसके ज़ेहन का जुज (अंग) नहीं बनती। वह उसकी रूह को ग़िजा देने वाली साबित नहीं होती।

खुदा की रहनुमाई को सीधी तरह कुबूल करने वालों के लिए जन्नत का इनाम है और खुदा की रहनुमाई में टेढ़ा मफहूम (भाषार्थ) निकालने वालों के लिए जहन्नम का अजाब।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَكَاِبَاءٌ هُمْ
الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ تَنْزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝
مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدُقِيلٌ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ ۝
ذُوعِقَابٍ أَلِيمٍ ۝

जिन लोगों ने अल्लाह की नसीहत का इंकार किया जबकि वह उनके पास आ गई, और बेशक यह एक जबरदस्त किताब है। इसमें बातिल (असत्य) न इसके आगे से आ सकता है और न उसके पीछे से, यह हकीम (तत्वदर्शी) व हमीद (प्रशंस्य) की तरफ से उतारी गई है। तुम्हें वही बातें कही जा रही हैं जो तुमसे पहले रसूलों को कही गई हैं। बेशक तुम्हारा खब मफ़िरत (क्षमाशील) वाला है और दर्दनाक सजा देने वाला भी। (41-43)

कुरआन एक जबरदस्त किताब है। और इसके जबरदस्त होने का सुबूत यह है कि बातिल न आगे से इसमें आ सकता है और न पीछे से। यानी इसमें किसी तरफ से दखलअंदाजी का कोई इम्कान नहीं, न बराहेरास्त (प्रत्यक्षतः) इसमें कोई बिगाड़ पैदा किया जा सकता है और न बिलवास्ता (परोक्ष रूप में)।

यह एक इतिहाई ग़ैर मामूली पेशीनगोई (भविष्यवाणी) है। इस आलमे असबाब में इस पेशीनगोई के पूरा होने के लिए जरूरी है कि कुरआन की हामिल (धारक) एफ़तन्नरक़ैव मुस्तक़िल तौर पर मौजूद रहे। पिछले नवियों की तालीमात से इसकी अदम मुताबिकत (प्रतिकूलता) जाहिर न हो सकी। कोई शख्स कभी कुरआन का जवाब लिखने पर कादिर न हो। उलूम का इरतिका (विकास) इसकी किसी बात को कभी ग़लत साबित न करे। तारीख़ का उतार चढ़ाव कभी इस पर असरअंदाज न होने पाए। कुरआन की जवान (अरबी) हमेशा एक ज़िन्न ज़बान के तौर पर बारी रहे।

कुरआन के नुज़ूल के बाद की लम्बी तारीख़ बताती है कि ये तमाम असबाब हैरतअंगेज तौर पर इसके हक में जमा रहे हैं। इन तमाम वाक़ेयात का जमा होना इस क़दर ग़ैर मामूली है कि

कुरआन के सिवा कोई भी दूसरी किताब नहीं जिसके हक में वे डेढ़ हजार वर्ष की मुद्दत तक मुसलसल जमा रहे हों। यही इस बात की काफी दलील है कि कुरआन खुदा की किताब है।

कुरआन की अज्मत को दलील की सतह पर पाना मलूब है न कि ताकत की सतह पर।

ताकत की सतह पर उसकी अज्मत क्रियामत में ज़हिर होगी मगर यह ज़ुरूर सिर्फ इस लिए होता कि जिन लोगों ने दलील की सतह पर खुदा की सच्चाई को नहीं माना था उन्हें जलील करके खुदा की सच्चाई को मानने पर मजबूर किया जाए।

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَجَبًا لَقَالُوا الْوَلَا فُضِّلَتْ آيَاتُهُ عَجَبًا وَعَرَبِيٌّ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى أُولَٰئِكَ يُنَادُونَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝

और अगर हम इसे अजमी (गैर-अरबी) कुरआन बनाते तो वे कहते कि इसकी आयतें साफ-साफ क्यों नहीं बयान की गईं। क्या अजमी किताब और अरबी लोग। कहे कि वह ईमान लाने वालों के लिए तो हिदायत और शिफा (निदान) है, और लोग जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में डाट है और वह उनके हक में अंधापन है। ये लोग गोया कि दूर की जगह से पुकारे जा रहे हैं। (44)

कुरआन अरबी जवान में उतरा तो मुखालिफ़ीन ने कहा कि यह तो मुहम्मद सल्ल० की अपनी मादरी जवान (मातृ-भाषा) है, अरबी में कोई किताब बनाकर पेश कर देना उनके लिए क्या मुश्किल है। अगर वह वाकई पैगम्बर होते तो खुदा की मदद से वह अचानक किसी अजनबी जवान में कलाम करने लगते।

इस तरह की बात हमेशा ग़ैर संजीदा लोग करते हैं। और जो लोग ग़ैर संजीदा हों उनकी जवान कभी बंद नहीं की जा सकती। मसलन अगर ऐसा हो कि पैगम्बर आकर अरब के लोगों से यूनानी या सुर्यानी या फ़ारसी जवान में कलाम करने लगे तो उस वक्त लोगों को कहने के लिए ये अल्फ़ाज़ मिल जाएंगे। कैसा अजीब है यह पैगम्बर। इसका कहना है कि वह लोगों की हिदायत के लिए आया है। मगर वह ऐसी जवान में बोलता है जिसे उसके मुखातबीन समझ ही न सकते हों।

हकीकत यह है कि हक को सिर्फ वे लोग कुबूल कर पाते हैं जो हक के मामले में संजीदा (गंभीर) हों। जो लोग हक के मामले में संजीदा न हों वे वाजेहतरीन (सबसे स्पष्ट) बात को भी समझ नहीं सकते। उनकी मिसाल ऐसी है जैसे किसी को बहुत दूर से पुकारा जाए। ऐसा शख्स कुछ आवाज तो सुनेगा मगर वह असल बात को समझने से मरहूम रहेगा।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ ۖ وَلَوْ لَا كَلِمَةُ سَبَقَتْ مِنْ

رَبِّكَ لَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ وَأَنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٌ ۝ مِّنْ عَمَلٍ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۖ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ۝

और हमने मूसा को किताब दी थी तो उसमें इस्तेलाफ (मत-भिन्नता) पैदा किया गया। और अगर तेरे रब की तरफ से एक बात पहले तै न हो चुकी होती तो उनके दरमियान फैसला कर दिया जाता। और ये लोग उसकी तरफ से ऐसे शक में हैं जिसने उन्हें तरदुद (असमंजस) में डाल रखा है। जो शख्स नेक अमल करेगा तो अपने ही लिए करेगा और जो शख्स बुराई करेगा तो उसका बवाल उसी पर आएगा। और तेरा रब बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं। (45-46)

पिछले पैगम्बरों के जरिए जब खुदाई सच्चाई मुक़शिफ (उद्घाटित) की गई तो कुछ लोगों ने उसे माना और कुछ लोगों ने नहीं माना। यही मामला उस वक्त भी पेश आया जबकि पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बेअसत (आगमन) हुई।

खुदाई सच्चाई के साथ यह इस्तिलाफी मामला इंसान क्यों करता है। इसकी वजह मौजूदा इस्तेहानी हालत है। मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में सच्चाई जब भी जाहिर होती है तो उसके साथ एक पर्दा भी लगा रहता है। लोग उसी पर्दे में अटक कर रह जाते हैं जिस पर्दे को उन्हें फाड़ना था। उसे वे अपने लिए शक व शबह का सबब बना लेते हैं।

मगर यह शक क्रियामत में किसी के लिए उज़ (विवशता) नहीं बन सकता। क्योंकि यह सिर्फ इस बात का सबूत है कि इंसान हक के मामले में संजीदा नहीं था। इंसान अपने दुनिया के मफ़द के मामले में पूरी तरह संजीदा होता है इसलिए वह तमाम पर्दों को फाड़कर उसकी हकीकत तक पहुंच जाता है। इसी तरह अगर वह अपने आखिरत के मफ़द के बारे में संजीदा हो जाए तो वह शक के तमाम पर्दों को फाड़कर हकीकत को उसकी बेनकाब सूरत में देख ले।

الْيَوْمَ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۖ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرَاتٍ مِّنَ الْأَشْجَارِ ۖ أَذْنًا مِّنْ ثَمَرَةٍ مِّنْ ثَمَرَةٍ ۖ وَيَوْمَ يُرَدُّ عِلْمُ الْغَيْبِ ۖ وَإِنَّ شَرْكَائِيَ ۖ قَالُوا أَذْنًا مِّنْ ثَمَرَةٍ مِّنْ ثَمَرَةٍ ۖ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَظَلُّوا مَا كَانُوا مِن تَحِيصٍ ۝

क्रियामत का इल्म अल्लाह ही से मुतअल्लिक है। और कोई फल अपने खोल से नहीं निकलता और न कोई औरत हामिला (गर्भवती) होती और न जनती है मगर यह सब उसकी इत्तला से होता है। और जिस दिन अल्लाह उन्हें पुकारेगा कि मेरे शरीक कहाँ हैं, वे कहेंगे कि हम आपसे यही अर्ज करते हैं कि हम में कोई इसका दावेदार नहीं। और जिन्हें वे पहले पुकारते थे वे सब उनसे गुम हो जाएंगे, और वे समझ लेंगे कि उनके लिए कोई बचाव की सूरत नहीं। (47-48)

दरख्त से एक फल का निकलना या मां के पेट से एक जिंदा वजूद का पैदा होना अपनी नौइयत के एतबार से वैसा ही वाक्या है जैसा मौजूदा दुनिया के अंदर से आखिरत की दुनिया का बरामद होना।

फल क्या है, वह बेफल का फल में तब्दील होना है। इंसान क्या है, वह बेइंसान का इंसान की सूरत इख्तियार करना है। यही आखिरत का मामला भी है। आखिरत भी दरअस्त ग़ैर आखिरत का आखिरत में तब्दील होने का दूसरा नाम है। पहली किस्म की तब्दीली हर रोज हमारे सामने वाक्या बन रही है। फिर इसी नौइयत के एक और वाक्या (मौजूदा दुनिया का आखिरत में तब्दील होना) नाक़बिले क्यास (असंभाव्य) क्यों हो।

आखिरत का दिन हकीकतों के आखिरी जुहूर का दिन होगा। जब वह दिन आएगा तो तमाम झूठी बुनियादें ढह पड़ेंगी जिन पर लोगों ने मौजूदा दुनिया में अपनी जिंदगियों को खड़ा कर रखा था।

لَا يَسْمُرُ الْإِنْسَانُ مِنْ دَعْوَةِ الْخَيْرِ وَإِنْ مَسَّهُ الشَّرُّ فَيَوْسُقْنُوهُ ۖ وَلَكِنْ أَذْقُوهُ رَحْمَةً مِّمَّا مِنْ بَعْدِ خُرَاءِ مَسْنَاهُ لِيَقُولَنَّ هَذَا إِلَىٰ وَمَا أَطْنُ النَّاعَةَ قَائِمَةً ۖ وَلَكِنْ نُجْعِلُ إِلَىٰ رَبِّي ۖ إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَلْحُسْنَىٰ فَكُنْتُ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا ۖ وَلَنْ نُزَيِّقَهُمْ مِنْ عَذَابٍ عَلِيطٍ ۖ

और इंसान भलाई मांगने से नहीं थकता, और अगर उसे कोई तकलीफ पहुंच जाए तो मायूस व दिल शिकस्ता हो जाता है। और अगर हम उसे तकलीफ के बाद जो कि उसे पहुंची थी, अपनी महरबानी का मजा चखा देते हैं तो वह कहता है यह तो मेरा हक ही है, और मैं नहीं समझता कि क्यामत कभी आएगी। और अगर मैं अपने खब की तरफ लौटाया गया तो उसके पास भी मेरे लिए बेहतरी ही है। पस हम उन मुंकिरों को उनके आमाल से जरूर आगाह करेंगे। और उन्हें सज़ा अज़ाब का मजा चखाएंगे। (49-50)

मुसीबत का लम्हा इंसान के लिए अपनी दरयाफ्त का लम्हा होता है। चुनांचे जब मुसीबत पड़ती है तो वह खुदसरी (उद्दंडता) को भूलकर खुदा को याद करने लगता है। उस वक्त वह जान लेता है कि वह अब्द (बंदा, गुलाम) है और खुदा उसका माबूद।

मगर जब खुदा उसकी मुसीबत को उससे दूर कर देता है और उसे आसाइश (सुख-सम्पन्नता) का सामान अता करता है तो इसके बाद वह फ़ौरन अपनी साबिका (पूर्ववर्ती) हालत को भूल जाता है। वह मिली हुई नेमत को असबाब के साथ जोड़ देता है और उसे अपनी तदबीर और लियाक़त का नतीजा समझने लगता है। उसकी नफ़िसयात ऐसी हो जाती है गोया कि जिंदगी बस इसी दुनिया की जिंदगी है। इसके बाद न दुबारा उठना है और न खुदा की अदालत में

खड़ा होना है। मजीद यह कि उसकी आसूदाहाली (सम्पन्नता) उसे इस ग़लतफहमी में डाल देती है कि यहां जब मेरा हाल अच्छा है तो अगली दुनिया में भी जरूर मेरा हाल अच्छा होगा।

وَإِذْ أُنْمِتْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأْمِيحَانِيهِ ۖ وَإِذْ مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَاةٍ عَرِيضٍ ۖ قُلْ أَدْرَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهِ مِنْ أَضَلِّ مِمَّنْ هُوَ فِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۖ

और जब हम इंसान पर फल करते हैं तो वह एराज (उपेक्षा) करता है और अपनी कवट फेर लेता है। और जब उसे तकलीफ पहुंचती है तो वह लम्बी-लम्बी दुआएं करने वाला बन जाता है। कहे कि बताओ, अगर यह कुरआन अल्लाह की तरफ से आया हो, फिर तुमने इसका इंकार किया तो उस शख्स से ज्यादा गुमराह और कौन होगा जो मुखालिफत (विरोध) में बहुत दूर चला जाए। (51-52)

इंसान को नेमत इसलिए दी जाती है कि वह उसे खुदा का अतिय्या (देन) करार देकर उसका शुक्र अदा करे। मगर इंसान का हाल यह है कि वह नेमत पाकर सरकश बन जाता है। अलबत्ता जब इंसान पर कोई तकलीफ पड़ती है तो उस वक्त वह खुदा को पुकारने लगता है। मगर मजबूराना पुकार की खुदा के यहां कोई कीमत नहीं। इंसान की खूबी यह है कि वह नेमत के वक्त भी खुदा के आगे झुके और तकलीफ के वक्त भी।

इंसान की यही नफ़िसयात है जो उसे हक के इंकार पर आमादा करती है। हक किसी को मजबूर नहीं करता, वह इख्तियाराना झुकाव का तालिब होता है। चुनांचे जिन लोगों के अंदर इख्तियाराना झुकाव का माददा नहीं होता वे ऐसे हक को नजरअंदाज कर देते हैं जिसके नजरअंदाज कर देने से बजाहिर उनके ऊपर कोई आफत टूट पड़े वाली न हो।

سَأَرْبِئُهُمْ لِتِيْنَا فِي الْأَفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّ الْحَقَّ ۖ أَوْ لَمْ يَكُنْ بِرَبِّكَ أَتَّكَّ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۖ أَلَا إِنَّهُمْ فِي مَرِيَةٍ مِنَ الْفَقَارِ ۖ رَّبِّهِمْ أَلَّا لَئِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّجِيبٌ ۖ

हम उन्हें अपनी निशानियां दिखाएंगे आफ़ाक (वाह्य क्षेत्रों) में भी और खुद उनके अंदर भी। यहां तक कि उन पर जाहिर हो जाएगा कि यह कुरआन हक है। और क्या यह बात काफ़ी नहीं कि तेरा खब हर चीज का गवाह है। सुन लो, ये लोग अपने खब की मुलाक़ात में शक रखते हैं, सुन लो, वह हर चीज का इहाता (आच्छादन) किए हुए है। (53-54)

दुनिया में जितने लोग भी उठे हैं सबकी कहानी हाल (वर्तमान) की कहानी है, किसी की कहानी मुस्तकबिल (भविष्य) की कहानी नहीं। क्योंकि किसी का मुस्तकबिल भी उसके हाल की तस्वीर करने वाला न बन सका। ऐसी दुनिया में डेढ़ हजार साल पहले यह पेशीनगोई की गई कि कुआन के बाद जहिर होंे वाले वक्ता व हक्क कुआन की तस्वीर करते चले जाएंगे। कुआन आइंदा आने वाले तमाम जमानों में अपनी सदाकत (सच्चाई) को न सिर्फ बाकी रहेगा बल्कि मजिद बाजेह और मुदल्लल करता चला जाएगा। कुआन हमेशा वक्त की किताब रहेगा।

यह बात हैतअजीज तौर पर सद पी सद दुरुस्त साबित हुई है। इल्मी तहकीकत, तारीखी वाक्यात, जमानी इक्लाबात सब कुआन के हक में जमा होने चले गए। यहां तक कि आज गैर मुस्लिम मुहक्किनी (शोधकर्ता) भी गवाही दे रहे हैं कि कुआन अपनी नादिर खुसूसियात (अद्वितीय विशिष्टताओं) की बिना पर खुद इस बात का सुबूत है कि वह खुदा की किताब है। किसी इंसानी तस्नीफ (कृति) में ऐसी अबदी (शाश्वत) खुसूसियात पाई नहीं जा सकती।

इस खुरी हुई हकीकत के बावजूद जो लोग कुआन की सदाकत के आगे न झुकें वे सिर्फ यह साबित कर रहे हैं कि उनकी बेखोफी की नफिसयात ने उन्हें गैर संजीदा बना दिया है। क्योंकि गैर संजीदा इंसान ही से इस किस्म की गैर माकूल रविश जाहिर हो सकती है कि वह खुले-खुले शवाहिद (प्रमाणों) को देखे और इसके बावजूद उसका इकरार न करे।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَكَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مَا نَحْنُ عَلِيمُونَ
 كَذَلِكَ يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ اللَّهُ الْعَزِيزُ
 الْحَكِيمُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ تَكَادُ
 السَّمَوَاتُ يَتْفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلَائِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُسْتَغْفِرُونَ
 لِمَنْ فِي الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ
 أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِظَ عَلَيْهِمْ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ

आयतें-53

सूरह-42. अश-शूरा

रुकूअ-5

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है। हा० मीम०। अइन० सीन० काफ०। इसी तरह अल्लाह गालिब (प्रभुत्वशाली) व हकीम (तत्वदर्शी) 'वही' (प्रकाशना) करता है तुम्हारी तरफ और उनकी तरफ जो तुमसे पहले गुजरे हैं। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है, वह सबसे ऊपर

है, सबसे बड़ा। करीब है कि आसमान अपने ऊपर से फट पड़े और फरिश्ते अपने रब की तस्वीर करते हैं उसी की हम्द (प्रशंसा) के साथ और जमीन वालों के लिए माफी मांगते हैं। सुन लो कि अल्लाह ही माफ करने वाला, रहमत करने वाला है। और जिन लोगों ने उसके सिवा दूसरे कारसाज (कार्य-साधक) बनाए हैं, अल्लाह उनके ऊपर निगहबान है और तुम उनके ऊपर जिम्मेदार नहीं। (1-6)

अगर आदमी को लामहदूद (असीम) निगाह हासिल हो जाए तो वह देखेगा कि यहां एक खुदा है जो सारे जमीन व आसमान का मालिक है। उसकी ताकत इतनी जबरदस्त है कि कायनात उसकी हैबत से गोया फटी जा रही है। फरिश्ते जो बराहेरास्त (प्रत्यक्षतः) खुदा की खुदाई से बाखबर हैं वे हर आन खशिघ्यत (खोफ) में डूबे हुए उसकी हम्द व तस्वीर कर रहे हैं। फिर वह देखेगा कि खुदा अपनी कुदरते खास से इंसानों में से कुछ अफराद को चुनता है और उन्हें बिलवास्ता (परोक्ष) अंदाज में अपना कलाम पहुंचाता है ताकि वे तमाम इंसानों को हकीकते वाक्या से बाखबर कर दें।

इंसान अगरचे इन हकीकतों को बराहेरास्त तौर पर नहीं देखता मगर वह अकल के जरिए बिलवास्ता तौर पर इनका इदराक (भान) कर सकता है। यही आदमी का अस्त इस्तेहान है। इंसान की यह जिम्मेदारी है कि वह बसारत (आंख) से दिखाई न देने वाली चीजों को बसीरत (सूझबूझ) की नजर से देखे। वह पैगम्बरों के कलाम में खुदा की आवाज सुने और उसके आगे अपने आपको झुका दे। वह देखे बगैर इस तरह मान ले गोया कि वह अपनी आंखों से सब कुछ देख रहा है।

कियामत के दिन किसी के लिए यह बात उज्र (विषयता) न बन सकेगी कि उसने हकीकत को बराहेरास्त न देखा था। क्योंकि मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में हकीकत को बराहेरास्त दिखाना मल्लूब ही नहीं। अगर अस्त पैगाम किसी शख्स तक पूरी तरह पहुंच जाए तो इसके बाद खुदा के नजदीक उस पर हुज्जत कायम हो जाती है। हकीकत का दलील की ज्वान में जहिर हो जाना ही काफी है कि उसे इंसारे हक का मुजरिम कारा केर वह सज दी जाए जो मुकिरीने हक के लिए मुकद्दर है।

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ
 يَوْمَ الْجُمُعَةِ لِأَرَبِّ فِيهِ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ

और हमने इसी तरह तुम्हारी तरफ अरबी कुआन उतारा है ताकि तुम मक्का वालों को और उसके आस-पास वालों को डरा दो और उन्हें जमा होने के दिन से डरा दो जिसके आने में कोई शक नहीं। एक गिरोह जन्नत में होगा और एक गिरोह आग में। (7)

पैगम्बर की दावत (आह्वान) का अस्त निशाना यह होता है कि लोगों को इस हकीकत

से आगाह कर दिया जाए कि आखिरकार वे खुदा के सामने हाजिर किए जाने वाले हैं। इसके बाद लोगों के अमल के मुताबिक किसी के लिए अबदी (चिरस्थायी) जन्नत का फैसला होगा और किसी के लिए अबदी जहन्नम का।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसी हकीकत से आगाह करने के लिए आए। आपकी बेअसत (प्रस्थापन) के दो दौर हैं एक बराहेरास्त (प्रत्यक्ष), दूसरा बिलवास्ता (परोक्ष)। आपकी बराहेरास्त बेअसत मक्का और इतराफे मक्का के लिए थी। इसकी तक्मील आपने खुद अपनी जिंदगी में फरमा दी। आपकी बिलवास्ता बेअसत बवास्तए उम्मत तमाम आलम के लिए है। आपकी यह दूसरी बेअसत जारी है और कियामत तक जारी रहेगी।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अहले अरब के सामने अरबी जवान में अपना पैग़ाम पहुंचाया। आपके बाद आपकी उम्मत को भी आपकी नियाबत (प्रतिनिधित्व) में इसी उसूल पर अपना दावती फरीजा अंजाम देना है। उसे हर क़ौम के सामने उसकी अपनी ज़बान में हक़ का पैग़ाम पहुंचाना है। जब तक किसी क़ौम को उसकी अपनी ज़बान में पैग़ाम न पहुंचाया जाए उस पर पैग़ामरसानी का हक़ अदा न होगा।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ
وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝ أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ قَالَهُ
لَهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَى وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ
مِنْ شَيْءٍ فَخُذْكُمْ إِلَى اللَّهِ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝

और अगर अल्लाह चाहता तो उन सबको एक ही उम्मत बना देता। लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाखिल करता है और जालिमों का कोई हामी व मददगार नहीं। क्या उन्होंने उसके सिवा दूसरे कारसाज (कार्य-साधक) बना रखे हैं, पस अल्लाह ही कारसाज है और वही मुद्दों को जिंदा करता है और वह हर चीज पर क़दिर है। और जिस किसी बात में तुम इख़्तिلاف (मतभेद) करते हो उसका फैसला अल्लाह ही के सुपुर्द है। वही अल्लाह मेरा रब है, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ मैं रुजूअ करता हूं। (8-10)

इंसान के लिए अल्लाह तआला ने एक ग़ैर मामूली रहमत का दरवाजा खोला है जो किसी और के लिए नहीं खोला। वह है खुद अपने इरादे से अल्लाह की हिदायत को इख़्तियार करना। और इसके नतीजे में अल्लाह के ग़ैर मामूली इनाम का मुस्तहिक बनना। लोगों का मुज़ल्लिफ़ रास्ते इख़्तियार करना इसी आजदी की वीमत है। यह इख़्तेलाफ़ यकीनन एक नापसंदीदा चीज है मगर उस कीमती इंसान को चुनने की इसके सिवा कोई दूसरी सूरत नहीं।

खुदा ने अगरचे इंसान को आजाद पैदा किया है। मगर उसकी हिदायत के लिए इंसान

के अंदर और उसके बाहर इतना ज्यादा सामान रखा गया है कि अगर आदमी वाकई संजीदा हो तो वह कभी ग़लत रास्ता इख़्तियार न करे। इसी हालत में जो लोग ग़लत रास्ता इख़्तियार करें वे बहुत बड़े जालिम हैं। वे खुदा के यहां हरगिज माफ़ी के क़बिल न ठहरीं।

अहले हक़ और अहले बातिल के दर्मियान दुनिया में जो इख़्तेलाफ़ पैदा होता है उसका आखिरी फैसला दुनिया में नहीं हो सकता। दुनिया का हाल यह है कि यहां हर आदमी अपने मुवाफ़िफ़ अल्फ़ज़ पा लेता है। यहां यह मुमकिन है कि झूठ को भी सच के रूप में जहिर किया जा सके। मगर यह सिर्फ़ मौजूदा जिंदगी के मरहले तक है। जहां इंसान का मुक़ाबला इंसान से है। अगली जिंदगी में इंसान का मुक़ाबला खुदा से होगा। वहां किसी के लिए यह नामुमकिन हो जाएगा कि अपने आपको पुरफ़ेब अल्फ़ज़ के पर्दे में छुपा सके।

فَاطِرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ
أَزْوَاجًا يُدْرِكُكُمْ فِيهِ ۚ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝ لَهُ
مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

वह आसमानों का और जमीन का पैदा करने वाला है। उसने तुम्हारी जिन्स से तुम्हारे जोड़े पैदा किए और जानवरों के भी जोड़े बनाए। उसके जरिए वह तुम्हारी नस्ल चलाता है। कोई चीज उसके मिस्ल (सदृश) नहीं और वह सुनने वाला, देखने वाला है। उसी के इख़्तियार में आसमानों और जमीन की कुंजियां हैं। वह जिसके लिए चाहता है ज्यादा रोजी कर देता है और जिसे चाहता है कम कर देता है। बेशक वह हर चीज का इल्म रखने वाला है। (11-12)

जमीन और आसमान की सूरत में जो वाक़्या हमारे सामने है वह इतना अजीम वाक़्या है कि यह नाकाबिले कयास है कि उन माबूदों में से किसी माबूद ने उसे वुजूद अता किया हो जिनकी लोग खुदा के सिवा ताजीम व तकदीस (मान-सम्मान) करते हैं। इसी तरह इंसानों और जानवरों के अंदरूनी निजाम में उनकी नस्ल की बक्का का इंतजाम इतना पेचीदा है कि उसे हकीकी तौर पर न किसी इंसान की तरफ मंसूब किया जा सकता है और न खुदा के सिवा माबूदों में से किसी माबूद की तरफ। ये सब काम इतने ग़ैर मामूली हैं कि बेमिस्ल खुदा ही की तरफ उन्हें जाइज तौर पर मंसूब किया जा सकता है।

ख़लिक की जो सिफ़त उसकी मख़सूत के मुशाहिदे के जरिए हमारे इल्म में आती हैं वही यह साबित करने के लिए काफी हैं कि यह ख़लिक किस क़दर अजीम है। वह समीअ और बसीर (सुनने, देखने वाला) है। वह हर किस्म के आला इख़्तियारात का मालिक है।

किसी को जो कुछ मिलता है उसी के दिए से मिलता है और किसी से जो कुछ छिनता है उसी के छिनने से छिनता है। वह अपनी मिसाल आप है, उसके जैसा कोई और नहीं।

شَرَعْنَا لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وَطَّي بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ ۝

अल्लाह ने तुम्हारे लिए वही दीन (धर्म) मुकर्र किया है जिसका उसने नूह को हुक्म दिया था और जिसकी 'वही' (प्रकाशना) हमने तुम्हारी तरफ की है और जिसका हुक्म हमने इब्राहीम को और मूसा को और ईसा को दिया था कि दीन को कायम रखो और उसमें इस्तेलाफ (मत भिन्नता, बिखराव) न डालो। मुशिकीन पर वह बात बहुत गिरा (भार) है जिसकी तरफ तुम उन्हें बुला रहे हो। अल्लाह जिसे चाहता है अपनी तरफ चुन लेता है। और वह अपनी तरफ उनकी रहनुमाई करता है जो उसकी तरफ मुतवज्जह होते हैं। (13)

तमाम पैगम्बर एक ही दीन लेकर आए। और वह दीने तौहीद है। मगर इन पैगम्बरों के मानने वाले बाद को अलग-अलग दीनी फिरकें में तकसीम हो गए। इसकी वजह मर्कजे तवज्जोह में तब्दीली थी। पैगम्बरों के अस्ल दीन में मर्कजे तवज्जोह तमामतर खुदा था। हर एक की तालीम यह थी कि सिर्फ एक खुदा के परस्तार बनो। मगर उनकी उम्मतों ने बाद को अपना मर्कजे तवज्जोह तब्दील कर दिया। वे खुदा के बजाए गैर खुदा के परस्तार बन गए।

कदीम अरब के लोग इब्तिदा में हजरत इब्राहीम की उम्मत थे। मगर बाद को अपने कुछ बुजुर्गों की अज्मत उनके जेहनों पर इस तरह छाई कि उन्होंने अपना मर्कजे तवज्जोह बना लिया। यहाँ तक कि उनके बुत बनाकर वे उन्हें पूजने लगे। यहूद हजरत मूसा की उम्मत थे। मगर उन्होंने अपनी नस्ल को मख्सूस नस्ल समझ लिया। उनकी तवज्जोहात अपनी नस्ल की तरफ इतनी ज्यादा मायल हुई कि बिलआखिर खुदाई दीन उनके यहाँ नस्ली दीन बनकर रह गया। वे पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के सिर्फ इसलिए मुंकिर हो गए कि वह उनकी अपनी नस्ल में पैदा नहीं हुए थे। इसी तरह ईसाई हजरत ईसा की उम्मत थे। उन्होंने हजरत ईसा को खुदा का पैगम्बर मानने के बजाए उन्हें खुदा का बेटा फर्ज कर लिया। इस तरह बाद को उन्होंने जो दीन बनाया उसमें मसीह को खुदा का बेटा मानने ने सबसे ज्यादा अहमियत हासिल कर ली।

खुदा को अपने बंदों से जो दीन मल्लूब है वह यह है कि वह खालिस तौहीद (एकेश्वरवाद) पर कायम हों। सिर्फ एक खुदा उनकी तमाम तवज्जोहात का मर्कज बन जाए। यही इकामते दीन (दीन की स्थापना) है। इस मर्कजे तवज्जोह में तब्दीली का दूसरा नाम शिर्क

है। और जब लोगों में शिर्क आता है तो फेरन तफरीक (विभेद) और इस्तेलाफ शुरू हो जाता है। क्योंकि तौहीद की सूरत में मर्कजे तवज्जोह एक रहता है, जबकि शिर्क की सूरत में मर्कजे तवज्जोह कई बन जाते हैं।

पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दीन अगरचे अपने मल (मूल रूप) के एतबार से महफूज दीन है। मगर आपकी उम्मत महफूज उम्मत नहीं। उम्मत के लोगों के लिए बदस्तूर यह इम्कान खुला हुआ है कि वे नई-नई चीजों को अपना मर्कजे तवज्जोह बनाएं। वे खुदसाख्ता (स्वनिर्मित) तशरीह व ताबीर के जरिए अस्ल दीन में तब्दीलियां करें और फिर एक दीन को अमलन कई दीन बनाकर रख दें।

وَمَا تَقْرَءُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعْيَا لَيْتَهُمْ وَكَوَلَا كَلِمَةً سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى لِّقَضَىٰ بَيْنَهُمْ وَلَٰكِنَّ الَّذِينَ أُوْرُوا الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَنْ يَشْكُرُوا مَا آتَاهُمْ مِنْ رَبِّهِمْ ۝

और जो लोग मुतफर्रिक (विभाजित) हुए वे इल्म आने के बाद हुए, सिर्फ आपस की ज़िद की वजह से। और अगर तुम्हारे ख की तरफ से एक वक्त मुअय्यन (निर्धारित) तक की बात तै न हो चुकी होती तो उनके दर्मियान फैसला कर दिया जाता। और जिन लोगों को उनके बाद किताब दी गई वे उसकी तरफ से शक में पड़े हुए हैं जिसने उन्हें तरद्दुद (असमंजस) में डाल दिया है। (14)

इल्म आने के बाद मुतफर्रिक होने का मतलब यह है कि दीने हक की दावत बुलन्द हो और फिर भी आदमी उससे अलग रहे। या उसका मुखालिफ बनकर खड़ा हो जाए। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरिए अल्लाह तआला ने दीन को उसके खालिस अंदाज में खोला। अब चाहिए था कि तमाम वे लोग जो खुदा के तालिब हैं वे आपके साथ जुड़ जाएं। मगर वे आपके साथ जुड़ने के लिए तैयार नहीं हुए। पिछले नबियों के साथ अपने आपको मंसूब करके वे लोगों के दर्मियान दीनदारी का मकाम हासिल किए हुए थे। उन्होंने समझा कि यही उनके लिए काफी है हालांकि जब दीने सही की दावत बुलन्द हो तो तमाम लोगों के लिए लाजिम हो जाता है कि वे अपने घरोंदों को ढा दें और दीने सही के साथ अपने आपको वाबस्ता करें। जो लोग ऐसा न करें वे खुदा के नजदीक मुजरिम हैं, चाहे वे गैर-दीनदार हों या बजहिर दीनदार।

दीने हक की दावत जब उठती है तो कुछ लोग 'बगी' की बुनियाद पर उसके मुंकिर बन जाते हैं। और कुछ लोग शक की बुनियाद पर उससे दूर रहते हैं। बगी से मुराद हसद और तकब्बुर (धमंड) है। यह उन लोगों का मामला है जो माहौल में बड़ाई का मकाम हासिल किए हुए हों। हक को मानने में उन्हें बड़ाई के मकाम से नीचे उतरना पड़ता है। चूँकि वे अपने आपको छोटा करने पर राजी नहीं होते इसलिए वे हक की दावत को छोटा करने में सरगम

हो जाते हैं। ताकि अपने मौक़िफ़ को जाइज साबित कर सकें।

शक और तरद्दुद (असमंजस) का मामला अक्सर अवामुन्नास (जन साधारण) के साथ पेश आता है। दाजी की बात उन्हें दलील की सतह पर वजनी मालूम होती है। मगर उन अकाबिर (बड़ों) को छोड़ना भी उनके लिए मुश्किल होता है जिनकी अज्मत उनके जेहन पर पहले से कायम हो चुकी हो। ये दोतरफ़ तक्ज़े उनके लिए आखिरी फैसले तक पहुंचने में रुकावट बन जाते हैं। पहले गिरोह ने अगर तकबुर की नफ़िसयात के तहत हक को नजरअंदाज किया था तो दूसरा गिरोह शक की नफ़िसयात के तहत उसे इस्त्रियात नहीं कर पाता। हक को कुबूल करने से यह भी महरूम रहता है और वह भी।

فَلِذَلِكَ فَادُمْ ۖ وَاسْتَقِمَّ كَمَا أُمِرْتُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَقُلْ أَمَنْتُ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ كِتَابٍ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمُ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ لَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ لَا حِجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ اللَّهُ يَهْتُمُّ بَيْنَنَا وَالْيَوْمُ الْمَصِيرُ ۝ وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةً عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝

पस तुम उसी की तरफ बुलाओ और उस पर जमे रहो जिस तरह तुम्हें हुक्म हुआ है और उनकी ख्वाहिशों की पैरवी न करो। और कहो कि अल्लाह ने जो किताब उतारी है मैं उस पर ईमान लाता हूं। और मुझे यह हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हारे दर्मियान इंसाफ करूं। अल्लाह हमारा रब है और तुम्हारा रब भी। हमारा अमल हमारे लिए और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। हम में और तुम में कुछ झगड़ा नहीं। अल्लाह हम सबको जमा करेगा और उसी के पास जाना है। और जो लोग अल्लाह के बारे में हुज्जत कर रहे हैं, वाद इसके कि वह मान लिया गया, उनकी हुज्जत उनके रब के नजदीक वातिल (झूट) है और उन पर ग़ज़ब है और उनके लिए सज़ा अज़ाब है। (15-16)

यहां 'किताब' से मुराद वह अस्ल दीन है जो पैग़म्बरों के ज़रिए भेजा गया। 'अहवा' से मुराद वे ख़ुदसाज़्जा स्वनिर्मित इजाफे हैं जो इंसानों ने ख़ुद अपनी तरफ से दीने हक में किए। पैग़म्बर को हुक्म दिया गया कि तुम बस अस्ल दीन पर जमे रहो। यहां तक कि दावती मस्तेहत की बिना पर भी तुम्हें ऐसा नहीं करना है कि लोगों के ख़ुदसाज़्जा दीन के साथ रियायत करने लगे। तुम्हारा काम अद्ल (इंसाफ) करना है। यानी मजहबी इज़्तेलाफ़त का फैसला करके यह बताना कि हक क्या है और वातिल क्या। कौन सा हिस्सा वह है जो ख़ुदा की तरफ से है और कौन-सा हिस्सा इंसानी आमेज़िश (मिलावट) के तहत दीन में शामिल कर लिया गया है।

'हमारे और तुम्हारे दर्मियान कोई झगड़ा नहीं' का मतलब यह है कि तुम्हारे झगड़ने के बावजूद हम ऐसा नहीं करेंगे कि हम भी तुमसे झगड़ने लेंगे। तुम मंफ़ी (नकारात्मक) रवैया इस्त्रियात करो तब भी हम यकतरफ़ा तौर पर अपने मुस्बत (सकारात्मक) रवैये पर कायम रहेंगे। दाजी की जिम्मेदारी सिर्फ हक का पैग़ाम पहुंचाने की है। इसके अलावा जो चीज़ें हैं उन्हें वह ख़ुदा के हवाले कर देता है।

जो लोग हक को कुबूल कर लें उन्हें तंग करना और उन्हें बेकार बहसों में उलझाना निहायत जालिमाना काम है। ऐसा करने वाले अपने आपको उस ख़तरे में मुक्तिला कर रहे हैं कि आखिरत में उन पर ख़ुदा का ग़ज़ब हो और उन्हें सज़ा अज़ाब में डाल दिया जाए।

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ الْبَارِقَ وَاللَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا ۖ وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۖ إِلَّا إِنْ الَّذِينَ يُبَاؤُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝

अल्लाह ही है जिसने हक के साथ किताब उतारी और तराजू भी। और तुम्हें क्या ख़बर शायद वह घड़ी करीब हो। जो लोग उसका यकीन नहीं रखते वे उसकी जल्दी कर रहे हैं। और जो लोग यकीन रखने वाले हैं वे उससे डरते हैं और वे जानते हैं कि वह बरहक है। याद रखो कि जो लोग उस घड़ी के बारे में झगड़ते हैं वे गुमराही में बहुत दूर निकल गए हैं। (17-18)

जिस तरह माद्री चीज़ों को तोलने के लिए तराजू होती है इसी तरह मअनवी हकीकतों को तोलने के लिए ख़ुदा ने अपनी किताब उतारी है। ख़ुदा की किताब हक और वातिल को एक दूसरे से अलग करने की कसौटी है। हर दूसरी चीज़ को ख़ुदा की किताब पर जांचा जाएगा, न यह कि ख़ुदा की किताब को दूसरी चीज़ों पर जांचा जाने लगे।

पैग़म्बर के जमाने में जो लोग आपकी मुखातिफ़त कर रहे थे उनकी ग़लती यह थी कि उनकी कैमी रियायत और उनके अकाबिर के अक़वाल (कथन) व आमाल से उनके यहां जो दीन बना था उसे मेयार मान कर उसी की रोशनी में वे ख़ुदा की किताब को देखते थे। हालांकि उनके लिए सही बात यह थी कि वे कैमी रियायत और बुज़ूर्गों के अक़वाल व अफ़आल (कथनी-करनी) को ख़ुदा की किताब की रोशनी में देखें। जो चीज़ ख़ुदा की किताब के मेयार पर पूरी उतरे उसे लें और जो चीज़ ख़ुदा की किताब के मेयार पर पूरी न उतरे उसे छोड़ दें।

जांचने का यह काम मौजूदा दुनिया में आदमी को ख़ुद करना है। आखिरत में यह काम ख़ुदा की तरफ से अंजाम दिया जाएगा। अक्लमंद वह है जो क़ियामत में तौले जाने से पहले अपने आपको तौल ले। क्योंकि क़ियामत की तौल आखिरी फैसले के लिए होगी न कि अमल की मोहलत देने के लिए।

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۖ مَنْ كَانَ يُرِيدُ
حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۖ وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا ۖ
وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ۝

۝

अल्लाह अपने बंदों पर महरबान है। वह जिसे चाहता है रोजी देता है। और वह कुब्त वाला, जबरदस्त है। जो शख्स आखिरत की खेती चाहे हम उसे उसकी खेती में तरक्की देंगे। और जो शख्स दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें से कुछ दे देते हैं और आखिरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। (19-20)

दुनिया की जिंदगी इस्तेहान के लिए है। यहां हर आदमी को बक़्द इस्तेहान जरूरी असबाब दिए जाते हैं। अब जो शख्स आखिरतपसंद हो वह मौजूदा दुनिया के असबाब को आखिरत की तामीर के लिए इस्तेमाल करेगा और इसके नतीजे में आखिरत में मजिद इजाफे के साथ अपना इनाम पाएगा।

इसके बरअक्स जो शख्स दुनियापसंद हो वह सिर्फ मौजूदा दुनिया के पेशेनजर अमल करेगा। ऐसा शख्स यकीनन मौजूदा दुनिया में अपना फल पा सकता है। मगर आखिरत में वह सरासर महरूम रहेगा। जब उसने आखिरत के लिए कुछ किया ही न था तो कैसे मुमकिन है कि आखिरत में उसे कुछ दिया जाए।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُم مِّنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنَ بِهِ اللَّهُ ۚ وَلَوْ لَا كَلِمَةُ
الْفَصْلِ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ تَرَى الظَّالِمِينَ
مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُوَ وَاقِعٌ بِهِمْ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فِي رَوْحَاتِ الْجَنَّاتِ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝
ذَلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ
عَلَيْهِمْ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ ۚ وَمَن يَقْرَفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيهَا حُسْنًا
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝

क्या उनके कुछ शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन मुकरर किया है जिसकी अल्लाह ने इजाजत नहीं दी। और अगर फैसले की बात तै न पा चुकी होती तो उनका फैसला कर दिया जाता। और बेशक जालिमों के लिए दर्दनाक अजाब है। तुम जालिमों को देखोगे कि वे डर रहे होंगे उससे जो उन्होंने कमाया। और वह उन पर जरूर पड़ने वाला है। और

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए वे जन्नत के बागों में होंगे। उनके लिए उनके रब के पास वह सब होगा जो वे चाहेंगे, यही बड़ा इनाम है। यह चीज है जिसकी खुशखबरी अल्लाह अपने उन बंदों को देता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया। कहो कि मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं चाहता मगर कराबतदारी की मुहब्बत। और जो शख्स कोई नेकी करेगा हम उसके लिए इसमें भलाई बढ़ा देंगे। बेशक अल्लाह माफ करने वाला, कद्रवा है। (21-23)

जब एक बात खुदा की किताब से साबित न हो, इसके बावजूद आदमी उसके हक होने पर इसरार करे तो इसका मतलब यह है कि वह दूसरों को खुदा के बराबर ठहरा रहा है। वह खुदा के सिवा दूसरों को यह हक दे रहा है कि वह ईसान के लिए उसका दीन वजअ करें।

यह एक बेहद सीन बात है। हकीकत यह है कि 'दीन' की नैइयत की कोई चीज मुकर्र करने का हक सिर्फ एक खुदा को है। खुदा के सिवा किसी और को यह हक देना खुला हुआ शिर्क है। और शिर्क एक ऐसा जुर्म है जो खुदा के यहां किसी तरफ माफ होने वाला नहीं।

'मैं तुमसे कोई बदला नहीं चाहता मगर यह कि कराबतदारी की मुहब्बत' यह बात पैगम्बर की जवान से उस वक्त कहलाई गई जबकि आपके कबीला कुैश के लोग आपकी दावत की राह में सख्ततरीन रुकावटें डाल रहे थे। इन हालात में इसका मतलब यह था कि अगर तुम मेरा दीन कुबूल नहीं करते तो न करो मगर कम से कम कराबतदारी (नातेदारी) का लिहाज करते हुए अजियतसानी (जपीइन) से तो बाज रखें। बअल्फज दीगर, अगर तुम्हें मुझसे मजहबी इख़लाफ है तो अपने इख़लाफ में तुम अख़्लाक और शराफत की सतह से न गिर जाओ। इस तरह गोया बिलवास्ता (परोक्ष) अंदाज में यह बताता गया कि आपकी दावत के मुखालिफीन सिर्फ मुखालिफीन नहीं हैं बल्कि वे अख़्लाकी मुजरिम भी हैं। वे अपने आपको अख़्लाक की सतह पर गलत साबित कर रहे हैं जिसकी अहमियत खुद उनके नजदीक भी मुसल्लम (सुस्थापित) है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ فَإِنْ يَشَأْ اللَّهُ يُخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ ۚ
وَيَسِّرْ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحَقِّقِ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ وَ
هُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا
تَفْعَلُونَ ۚ وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ
وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝

क्या वे कहते हैं कि इसने अल्लाह पर झूठ बांधा है। पस अगर अल्लाह चाहे तो वह तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे। और अल्लाह वातिल (असत्य) को मिटाता है और हक (सत्य) को साबित करता है अपनी बातों से। बेशक वह दिलों की बातें जानता है। और वही है जो अपने बंदों की तौबा कुबूल करता है और बुराइयों को माफ करता है और वह

जानता है जो कुछ तुम करते हो। और वह उन लोगों की दुआएं कुबूल करता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया। और वह उन्हें अपने फल से ज्यादा दे देता है। और जो इंकार करने वाले हैं उनके लिए सज़ा अजाब है। (24-26)

इस दुनिया के लिए खुदा का कानून यह है कि यहां हक, हक के रूप में सामने आता है और बातिल, बातिल के रूप में नुमायां होता है। अगर एक झूठी रूह है तो उससे कभी सच्चा कलाम जाहिर नहीं हो सकता। यही वजह है कि यहां किसी ग़ैर पैगम्बर के लिए मुमकिन नहीं कि वह पैगम्बर की जवान में कलाम कर सके। एक शख्स पैगम्बर न हो और झूठ बोलकर अपने को पैगम्बर बताए तो उसके कलाम में लाजिमन झूठे पैगम्बर का अंदाज पैदा हो जाएगा। कोई शख्स मन्सूई (बनावटी) तौर पर कभी सच्चे पैगम्बर के अंदाज में नहीं बोल सकता।

‘अगर अल्लाह चाहे तो वह तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे’ इसका मतलब बदले हुए अल्फ़ाज़ में यह है कि अगर तुम अल्लाह पर झूठ बांधते तो उस वक़्त मशीयते खुदावंदी के तहत तुम्हारे दिल पर मुहर लग जाती। ऐसी हालत में खुद कानून क़ुदरत के तहत यह होता कि तुम्हारी जवान उस पाक़ीजा रब्बानी कलाम के इज़हार से आजिज हो जाती जिसका खुला हुआ नमूना तुम्हारे कलाम में नजर आता है। हकीकत यह है कि पैगम्बर का आला कलाम खुद उसके पैगम्बरे खुदा होने का सबूत है। अगर वह वाकई खुदा का पैगम्बर न होता तो उसकी जवान से कभी ऐसा आला कलाम जाहिर नहीं हो सकता था।

जो लोग हक की मुख़ालिफ़त करते हैं वे अपने दिल की आवाज के तहत ऐसा नहीं करते। बल्कि महज ज़िद और इनाद (द्वेष) के तहत उसके मुख़ालिफ़ बनकर खड़े हो जाते हैं। ऐसे लोग गोया खुद अपने जमीर की अदालत के सामने मुजरिम बन रहे हैं। उनके ऊपर खुदा की हुज़्जत तमाम हो चुकी है, इल्ला यह कि आदमी तौबा करे और अल्लाह से माफी का ख़्वास्तगार हो।

وَلَوْ يَسْطِ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنْزِلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝ وَهُوَ الَّذِي يُنْزِلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَطَرُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ ۖ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ۝ وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا مِنْ دَابَّةٍ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ۖ ۝

और अगर अल्लाह अपने बंदों के लिए रोज़ी को खोल देता तो वे ज़मीन में फ़साद करते। लेकिन वह अंदाजे के साथ उतारता है जितना चाहता है। वेशक वह अपने बंदों को जानने वाला है, देखने वाला है। और वही है जो लोगों के मायूस हो जाने के बाद बारिश बरसाता है और अपनी रहमत फैला देता है और वह काम बनाने वाला है, कविले तारीफ़ है। और उसी की निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा

करना। और वे जानदार जो उसने इनके दर्मियान फैलाए हैं। और वह उन्हें जमा करने पर कादिर है जब वह उन्हें जमा करना चाहे। (27-29)

ज़मीन पर इंसानी ज़िंदगी का इहिसार पानी पर है। मगर पानी तमामतर खुदा के इज़्तिहार में है। खुदा अगर पानी फ़राहम न करे तो इंसान खुद से पानी हासिल नहीं कर सकता। इसी तरह रिफ़ की तक्सीम भी खुदा की तरफ से होती है। इस तक्सीम में खुदा आदमी के ज़रफ़ को देखता है। और हर एक को उसके ज़रफ़ के बक्दर अता करता है। अगर लोगों को उनके ज़रफ़ से ज्यादा दिया जाने लगे तो लोग सरकश बन जाएं और ज़मीन में हर तफ़ज़ुम व फ़साद फैल जाए।

हम देखते हैं कि एक किसान जब दाने को बिखेरता है तो वह उसे समेटने पर भी कादिर होता है। यह इंसानी मुशाहिदा इस बात का करीना है कि खुदा भी इसी तरह अपनी बिखरी हुई मख़्लूक़ात को समेट कर अपनी अदालत में ला सकता है। जहां यक़ज़ाई तौर पर लोगों के मुस्तक़बिल का फैसला किया जाए। जिस ख़ालिक के लिए पैदा करके बिखेरना मुमकिन था उसके लिए मौत के बाद दुबारा समेटना क्यों न मुमकिन हो जाएगा।

وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فِيمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝

और जो मुसीबत तुम्हें पहुंचती है तो वह तुम्हारे हाथों के किए हुए कामों ही से, और बहुत से कुसूरों को वह माफ़ कर देता है। और तुम ज़मीन में खुदा के क़बू से निकल नहीं सकते। और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई काम बनाने वाला है और न कोई मददगार। (30-31)

मौजूदा दुनिया को असबाब के कानून के तहत बनाया गया है। यहां आदमी पर जब कोई मुसीबत आती है तो वह वाजह तौर पर उसकी अपनी ही कोताही का नतीजा होती है। और कभी ऐसा होता है कि एक शख्स कोताही करता है मगर वह उसके बुरे अंजाम से बच जाता है।

दुनिया के ये वाक़ेयात इसलिए हैं कि आदमी उनसे सबक ले। जब वह देखे कि लोग जो कुछ पा रहे हैं वे अपने अमल के बक्दर पा रहे हैं तो उससे वह यह नसीहत ले कि आख़िरत में भी इसी तरह हर शख्स अपने अमल के मुताबिक अपना अंजाम पाएगा। इसी तरह जब वह देखे कि आदमी ने एक कोताही की मगर वह उसके अंजाम से बच गया तो वह उससे यह सबक हासिल करे कि खुदा निहायत महरबान है। अगर आदमी उसकी तरफ रुजूआ हो तो वह अपनी रहमते ख़ास से उसे उसकी कोताहियों के अंजाम से बचा सकता है। ईमान जब गहरा हो तो आदमी का यही हाल हो जाता है। वह दुनिया के वाक़ेयात में आख़िरत की तस्वीर देखने लगता है।

وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝ إِنَّ يَسْأَلُكَ الرَّسُولُ فَمَا تَكُنْ
رَؤُودًا عَلَى ظَهْرِهِ ۚ وَإِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝ أَوْ يُوبِقُهُنَّ
بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ۝ وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آلِهَتِهِمْ مَا لَهُمْ
مِّن مَّحِصٍ ۝

और उसकी निशानियों में से यह है कि जहाज समुद्र में चलते हैं जैसे पहाड़। अगर वह चाहे तो वह हवा को रोक दे फिर वे समुद्र की सतह पर उठे रह जाएं। वेशक इसके अंदर निशानियां हैं हर उस शख्स के लिए जो सब्र करने वाला, शुक्र करने वाला है। या वह उन्हें तबाह कर दे उनके आमाल के सबब से और माफ कर दे बहुत से लोगों को। और ताकि जान लें वे लोग जो हमारी निशानियों में झगड़ते हैं कि उनके लिए भागने की कोई जगह नहीं। (32-35)

इंसान समुद्र में अपनी कश्ती दौड़ाता है और फजा में अपने जहाज उड़ाता है। यह सिर्फ इसलिए मुमकिन होता है कि खुदा ने फितरत के कानून को हमारे लिए साजगार बना रखा है। फितरत के कवानीन अगर हमसे साजगारी न करें तो न हमारी कश्तियां समुद्रों में दौड़ें और न हमारे जहाज हवाओं में उड़ें।

जिंदगी के हर वाक्ये में नसीहत है मगर वाक्यात से नसीहत की खुराक लेने के लिए सब्र व शुक्र का मिजाज जरूरी है। जिंदगी में कभी तकलीफ पेश आती है और कभी आराम। तकलीफ के वक्त आदमी को जाहिरी हालात से ऊपर उठना पड़ता है ताकि वह वाक्ये को दूसरे रूख से देख सके। और यह चीज सब्र के बगैर मुमकिन नहीं। इसी तरह आराम के वक्त इसकी जरूरत होती है कि बजाहिर अपनी कोशिशों से मिलने वाली चीज को खुदा की तरफ से मिलने वाली चीज समझा जाए। और यह वही शख्स कर सकता है जिसके अंदर वह आला शूऊर पैदा हो चुका हो जिसे शुक्र कहा जाता है।

निशानियों में झगड़ना यह है कि जब किसी वाक्ये में खुदाई नसीहत के पहलू की निशानदही की जाए तो आदमी उसे न माने और वाक्ये को दूसरे-दूसरे मअना पहनाने की कोशिश करे। ऐसे लोग खुदा की नजर में सरकश हैं और किसी की सरकशी सिर्फ मौजूदा दुनिया में चल सकती है, वह आखिरत में हरगिज चलने वाली नहीं।

فَمَا أُوتِيتُمْ مِّن شَيْءٍ فَمَتَّاعُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ
أَمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝

पस जो कुछ तुम्हें मिला है वह महज दुनियावी जिंदगी के बरतने के लिए है। और जो

कुछ अल्लाह के पास है वह ज्यादा बेहतर है और बाकी रहने वाला है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और वे अल्लाह पर भरोसा रखते हैं। (36)

आखिरत का चाहने वाला वही बन सकता है जो अल्लाह पर भरोसा करने वाला हो। जब भी आदमी आखिरत की तरफ बढ़ता है तो दुनिया के फायदे उसे ख़तरे में नजर आने लगते हैं। दुनिया की मस्लेहतें उसे छूटती हुई दिखाई देती हैं। ऐसी हालत में जो चीज आदमी को आखिरत के रास्ते पर साबितकदम रखती है वह सिर्फ यह कि उसे खुदा के वादों पर भरोसा हो। उसे यकीन हो कि खुदा की खातिर वह दुनिया में जितना खोएगा उससे बहुत ज्यादा वह आखिरत में खुदा की तरफ से पा लेगा।

दुनिया की हर नेमत वकती है और आखिरत की नेमतें अबदी हैं जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं। और अबदी नेमत के मुक़बले में वकती नेमत की कोई हकीकत नहीं।

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ
يَغْفِرُونَ ۝ وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ
بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝ وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ
يَنْتَصِرُونَ ۝ وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ
عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ۝ وَلَكِنْ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَٰئِكَ مَا
عَلَيْهِمْ مِّن سَبِيلٍ ۝ إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَعْلِفُونَ
فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝ وَلَكِنْ صَبْرٌ وَعَفْرٌ
إِنَّ ذَلِكَ لِمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝

और वे लोग जो बड़े गुनाहों से और बेहयाई से बचते हैं और जब उन्हें गुस्सा आता है तो वे माफ कर देते हैं और वे जिन्होंने अपने रब की दावत (आह्वान) को कुबूल किया और नमाज कायम की और वे अपना काम आपस के मश्वरे से करते हैं। और हमने जो कुछ उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं। और वे लोग कि जब उन पर चढ़ाई होती है तो वे बदला लेते हैं। और बुराई का बदला है वैसी ही बुराई। फिर जिसने माफ कर दिया और इस्लाह की तो उसका अज़्र अल्लाह के जिम्मे है। वेशक वह जालिमों को पसंद नहीं करता। और जो शख्स अपने मजलूम होने के बाद बदला ले तो ऐसे लोगों के ऊपर कुछ इल्जाम नहीं। इल्जाम सिर्फ उन पर है जो लोगों के ऊपर जुम करते हैं और जमीन में नाहक सरकशी करते हैं। यही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अजाब है।

और जिस शख्स ने सब्र किया और माफ कर दिया तो बेशक ये हिम्मत के काम हैं।
(37-43)

ईमान जब हकीकी मअनों में किसी को हासिल होता है तो वह उसके अंदर इक्लाब पैदा कर देता है। उसके अंदर एक नई शख्सियत उभरती है। यहां एक बंदाए खुदा की जिन खुसूसियात का जिक्र है वे सब वही हैं जो इस ईमानी शख्सियत के नतीजे में किसी के अंदर जहिर होती हैं।

ऐसे शख्स के अंदर हकीकते वाक्या के एतराफ का मिजाज पैदा होता है। वह खुदा के खुदा होने और अपने बंदा होने की हैसियत का एतराफ करते हुए उसके आगे झुक जाता है। खुदा की एक पुकार बुलन्द हो तो उसके लिए नामुमकिन हो जाता है कि वह उस पर लब्बेक न कहे। ईमानी शुऊर उसे सही और ग़लत के बारे में हस्सास (संवेदनशील) बना देता है। वह वही करता है जो करना चाहिए और वह नहीं करता जो नहीं करना चाहिए।

अपनी हैसियते वाकई का एतराफ उसके अंदर तवाजोअ (विनम्रता) पैदा करता है जो उससे गुस्सा, जुम् और सरकशी का मिजाज छीन लेता है। यही तवाजोअ उसे मजबूर करता है कि इज्तिमाई (सामूहिक) मामलात में वह दूसरों के मशियरे से फायदा उठाए वह महज अपनी जाती राय की बुनियाद पर इकदाम से परहेज करे। दूसरों के साथ उसका रिश्ता खैरख्वाही का होता है न कि जिद और इस्तहसाल (शोषण) का।

ऐसा आदमी दूसरों के खिलाफ कभी जारिहियत नहीं करता। दूसरों के खिलाफ वह जब भी इकदाम करता है तो दिफाअ (प्रतिरक्षा) के तौर पर करता है और उतना ही करता है जितना उनके जुम् को रोकने के लिए जरूरी हो। वह ऐन इश्तिआलओज (उत्तेजक) हालात में भी इसके लिए तैयार रहता है कि लोगों को माफ कर दे और उन्होंने उसके साथ जो बुराई की है उसे भूल जाए।

बंदाए मोमिन ये सारे काम अपने जज्बए ईमान के तहत करता है ताहम अल्लाह उसकी कद्रदानी इस तरह फरमाता है कि उसे अहले हिम्मत और उलुलअज्म (उत्साही) के खिताब से नवाजता है। और उसे अबदी नेमतों के बाग में दाखिल कर देता है।

وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَرَاقٍ ۚ وَمِنْ يَّوْمٍ لَّيْسَ مِنَ الْطَّالِبِينَ رَبَّاهُمْ ۚ
وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَرَاقٍ ۚ وَمِنْ يَّوْمٍ لَّيْسَ مِنَ الْطَّالِبِينَ رَبَّاهُمْ ۚ
وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَرَاقٍ ۚ وَمِنْ يَّوْمٍ لَّيْسَ مِنَ الْطَّالِبِينَ رَبَّاهُمْ ۚ
وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَرَاقٍ ۚ وَمِنْ يَّوْمٍ لَّيْسَ مِنَ الْطَّالِبِينَ رَبَّاهُمْ ۚ
وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَرَاقٍ ۚ وَمِنْ يَّوْمٍ لَّيْسَ مِنَ الْطَّالِبِينَ رَبَّاهُمْ ۚ
وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَرَاقٍ ۚ وَمِنْ يَّوْمٍ لَّيْسَ مِنَ الْطَّالِبِينَ رَبَّاهُمْ ۚ
وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَرَاقٍ ۚ وَمِنْ يَّوْمٍ لَّيْسَ مِنَ الْطَّالِبِينَ رَبَّاهُمْ ۚ

وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ۚ

और जिस शख्स को अल्लाह भटका दे तो इसके बाद उसका कोई कारसाज (संरक्षक) नहीं। और तुम जालिमों को देखोगे कि जब वे अजाब को देखेंगे तो वे कहेंगे कि क्या वापस जाने की कोई सूरत है। और तुम उन्हें देखोगे कि वे दोजख के सामने लाए जाएंगे, वे जिल्लत से झुके हुए होंगे। छुपी निगाह से देखते होंगे। और ईमान वाले कहेंगे कि खसारे (घाटे) वाले वही लोग हैं जिन्होंने कियामत के दिन अपने आपको और अपने मुतअल्लिकीन (संबंधियों) को खसारे में डाल दिया। सुन लो, जालिम लोग दाइमी (स्थायी) अजाब में रहेंगे। और उनके लिए कोई मददगार न होंगे जो अल्लाह के मुकाबले में उनकी मदद करें। और खुदा जिसे भटका दे तो उसके लिए कोई रास्ता नहीं। (44-46)

इस दुनिया में हिदायत को दलील के जरिए खोला जाता है। यही इस दुनिया के लिए खुदा का कानून है। इसका मतलब यह है कि इस दुनिया में सिर्फ वह शख्स हिदायत पाता है जो इस सलाहियत का सुबूत दे कि वह दलील की जबान में बात को समझ सकता है। दलील के जरिए किसी बात का साबित हो जाना इसके लिए काफी है कि वह उसके आगे झुक जाए। जो लोग दलील से न मानें उन्हें इस दुनिया में कभी हिदायत नहीं मिल सकती।

जो शख्स मौजूदा दुनिया में दलील के आगे नहीं झुकता वह अपने आपको उस खतरों में डालता है कि कियामत में उसे खुदाई ताकत के आगे झुकाया जाए। मगर कियामत का झुकना किसी के कुछ काम न आएगा। क्योंकि वह आदमी को जलील करने के लिए होगा न कि उसे इनाम का मुस्तहिक बनाने के लिए।

إِسْتَجِيبُوا لِلرَّسُولِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ مَا لَكُم مِّنْ مَّالٍ يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُم مِّنْ تَكْوِينٍ ۖ فَإِنْ أَغْرَضُوا فَأَنْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِظْنَا إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلَاءُ ۚ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَحَرَبَهُ ۖ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَسَاقِدْ مَتَّ يَدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ۚ

तुम अपने रब की दावत (आह्वान) कुबूल करो इससे पहले कि ऐसा दिन आ जाए जिसके लिए खुदा की तरफ से हटना न होगा। उस दिन तुम्हारे लिए कोई पनाह न होगी और न तुम किसी चीज को रद्द कर सकोगे। पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो हमने तुम्हें उनके ऊपर निगरां बनाकर नहीं भेजा है। तुम्हारा जिम्मा सिर्फ पहुंचा देना है। और इंसान को जब हम अपनी रहमत से नवाजते हैं तो वह उस पर खुश हो जाता है। और अगर उनके आमाल के बदले में उन पर कोई मुसीबत आ पड़ती है तो आदमी नाशुकी करने लगता है। (47-48)

मौजूदा दुनिया में आदमी का अस्ल इस्तेहान यह है कि जो सूरतेहाल भी उसके सामने आए, वह उसमें सही रद्देअमल (प्रतिक्रिया) पेश करे। मगर इंसान ऐसा नहीं करता। उसे जब कोई कामयाबी मिलती है तो वह फ़ख़ व नाज की नफ़िसयात में मुब्तिला हो जाता है। और जब वह किसी मुसीबत में पड़ता है तो वह मंफ़ी ज़ब्बात का इन्हार करने लगता है।

यही वे लोग हैं जो हक़ की दावत के मुक़ाबले में सही रद्देअमल पेश नहीं कर पाते। उनका रैर हकीक़तपसंदाना मिजज यहां भी उन्हें रैर हकीक़तपसंद बना देता है। हक़ की दावत का सही रद्देअमल यह है कि आदमी पैरन उसकी हक़नियत (सत्यता) का एतराफ़ कर ले। मगर आदमी यह करता है कि वह उसे अपनी साख़ का मसला बना लेता है। वह समझता है कि दावत को मान कर मैं उसे पेश करने वाले के सामने छोटा हो जाऊंगा। यह एहसास उसके लिए हक़ को कुल्ल करने की राह में रुकावट बन जाता है। वह उसकी सदाक़त पर यकीन करने के बावजूद अपनी जाती मस्तेह्लों की बिना पर उसे नज़रअंदाज़ कर देता है।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِۙ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُۚ يَهَبُ لِمَن يَشَآءُ اِنَّاۤ اَوْۤاٰ يَهَبُ
لِمَن يَشَآءُ الذَّكٰوۡرَۙ اَوْۤ اُنٰثًاۙ اَوْۤ اَزْوَاجَهُمْ ذُرًىۙ اَوْۤ اِنَّاۤ اَوْۤاٰ يَجْعَلُ مَنۢ يَّشَآءُ عَقِيۡمًاۙ
اِنَّهٗ عَلِيۡمٌۭ قَدِيۡرٌۭ

आसमानों और जमीन की बादशाही अल्लाह के लिए है, वह जो चाहता है पैदा करता है। वह जिसे चाहता है बेटियां अता करता है और जिसे चाहता है बेटे अता करता है या उन्हें जमा कर देता है बेटे भी और बेटियां भी। और जिसे चाहता है बेऔलाद रखता है। बेशक वह जानने वाला है, कुदरत वाला है। (49-50)

दीन की असास (बुनियाद) इस तसक्कुर पर कायम है कि इस कायनात में हर किस्म का इख़्तियार सिर्फ़ एक ख़ुदा को हासिल है। उसके सिवा किसी के पास कोई इख़्तियार नहीं, चाहे वह जमीन व आसमान के निज़ाम को चलाना हो या एक इंसान को औलाद अता करना। आदमी जो कुछ पाता है ख़ुदा के दिए से पाता है और वही जब चाहता है उसे उससे छीन लेता है।

ख़ुदा के बारे में यह अक़ीदा ही आदमी के अंदर वह सही एहसास पैदा करता है जिसे 'अब्दियत' (बंदा होने का एहसास) कहा जाता है। और ख़ुदा के बारे में यह अक़ीदा ही आदमी को मजबूर करता है कि वह अपनी ज़िंदगी में उस रविश को अपनाए जिसका इलाही शरीअत में हुक्म दिया गया है।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّۢ أَنۢ يُكَلِّمَهُ اللّٰهُۙ اِلَّا وَحِيًۡاۙ اَوْ مَنۢ وَّرَآءِۙ حِجَابٍۭ اَوْ يُرِۡسِلَ رَسُوۡلًاۙ

فَيُوحِیۡ بِاٰذِۡنِهٖ مَا يَشَآءُۚ اِنَّهٗ عَلٰیۤ حَكِيۡمٌۭ ۝ۚ وَكَذٰلِكَۙ اَوْحٰیۤنَاۤ اِلَيْكَ رُۤوْحًا مِّنۡ
اَمْرِۡنَاۙ مَا كُنْتَ تَدْرِیۡ مَا لَکِنَّاۤ اَلْکِتٰبُ وَلَا الْاِیۡۤمٰنُ ۚ وَلٰكِنۡ جَعَلْنٰهُ نُوۡرًاۙ اَتَهْدٰیۤیۡ بِهٖ
مَنۢ نَّشَآءُۚ مِّنۡ عِبَادِنَاۙ اِنَّکَ لَتَهْدِیۡۤیۡ اِلٰی صِرَاطٍۭ مُّسْتَقِیۡمٍۭ ۝ۚ صِرَاطِ اللّٰهِ
الَّذِیۡ لَہٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِۙ اِلَّا اِلَی اللّٰهِ تَصِیۡرُ الْاُمُوۡرِۙ

और किसी आदमी की यह ताक़त नहीं कि अल्लाह उससे कलाम करे, मगर 'वही' (प्रकाशना) के जरिए से या पर्दे के पीछे से या वह किसी फ़रिश्ते को भेजे कि वह 'वही' कर दे उसके इज्ज (आज़ा) से जो वह चाहे। बेशक वह सबसे ऊपर है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और इसी तरह हमने तुम्हारी तरफ़ भी 'वही' की है, एक रूह अपने हुक्म से। तुम न जानते थे कि किताब क्या है और न यह जानते थे कि ईमान क्या है। लेकिन हमने उसे एक नूर बनाया, उससे हम हिदायत देते हैं अपने बंदों में से जिसे चाहते हैं। और बेशक तुम एक सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई कर रहे हो। उस अल्लाह के रास्ते की तरफ़ जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों और जमीन में है। सुन लो, सारे मामलात अल्लाह ही की तरफ़ लौटने वाले हैं। (51-53)

मौजूदा दुनिया में कोई इंसान बराहारास्त ख़ुदा से हमकलाम नहीं हो सकता। इंसान का इज्ज (निर्वलता) इस किस्म के कलाम में मानेअ (रुकावट) है। चुनांचे पैगम्बरों पर ख़ुदा का जो कलाम उतरा वह बिलवास्ता (परोक्ष) अंदाज़ में उतरा। बिलवास्ता ख़िताब के कई तरीके हैं उनकी मिसालें मुख़लिफ़ पैगम्बरों की ज़िंदगी में पाई जाती हैं।

एक आलिम जब कोई किताब लिखता है या एक मुफ़क्किर (विचारक) जब कोई कलाम पेश करता है तो उसके माजी (अतीत) में ऐसे असबाब मौजूद होते हैं जो उसके इल्मी और फ़िक्री कारनामे की तौजीह कर सकें। मगर पैगम्बर का मामला इससे बिल्कुल मुख़लिफ़ है। पैगम्बर की नुबुव्वत के बाद की ज़िंदगी उसकी नुबुव्वत से पहले की ज़िंदगी से सरासर मुख़लिफ़ होती है। रैर पैगम्बर का हाल का कलाम उसकी माजी की ज़िंदगी का तसलसुल नज़र आता है। मगर पैगम्बर की ज़बान से नुबुव्वत के बाद जो कलाम जारी होता है वह उसके नुबुव्वत से पहले के कलाम से इतना ज्यादा मुमताज़ होता है कि पैगम्बर के माजी से उसकी तौजीह नहीं की जा सकती। यह एक वाजेह करीना है जो यह साबित करता है कि पैगम्बर का कलाम ख़ुदाई कलाम है न कि आम इंसानी कलाम।

पैगम्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़ुसूसियत हासिल है कि आपका दिया हुआ कुरआन और आपकी अपनी ज़बान से निकला हुआ कलाम, दोनों आज भी अपनी अस्ल हालत में मौजूद हैं। कोई शख्स जो अरबी ज़बान जानता हो और वह इन दोनों को तफ़ावुली (तुलनात्मक) तौर पर देखे तो वह दोनों के दर्मियान खुला हुआ फ़र्क़

पाएगा। हदीस की ज़बान वाजेह तौर पर मुहम्मद बिल अबुल्लाह की ज़बान है और कुरआन की ज़बान वाजेह तौर पर खुदा की ज़बान।

سُبْحَانَكَ يَا مَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ يَا مَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حَمْدٌ ۝ وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ۝ إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلٌّ حَكِيمٌ

مَعْنَى الْقُرْآنِ الْعَرَبِيِّ

आयतें-89

सूरह-43 अज़-ज़ुख़रुफ

रुकूअ-7

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ह० मी०। कसम है इस वाजेह किताब की। हमने इसे अरबी ज़बान का कुरआन बनाया है ताकि तुम समझो। और बेशक यह अस्ल किताब में हमारे पास है, बुलन्द और पुरहिक्मत (तत्त्वदर्शितापूर्ण)। (1-4)

उम्मुल किताब से मुराद लौहे महफूज़ (मूल ग्रंथ) है जो अल्लाह के पास है। लौहे महफूज़ में अल्लाह तआला ने उस अस्ल दीन को सब्त (संरक्षित) कर रखा है जो उसे इंसानों से मत्लूब है। यही अस्ल दीन मुख़ालिफ ज़बानों में मुख़ालिफ पैगम्बरों पर उतरा। और वह पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अरबी ज़बान में उतारा गया। अब अरबी कुरआन ही मौजूदा दुनिया में अस्ल दीने खुदावंदी का नुमाइंदा है। हामिलीने कुरआन की यह जिम्मेदारी है कि वे इसे हर ज़बान में मुंतकिल करके इसे तमाम कौमों तक पहुँचाएँ। ताकि इस दीन को जिस तरह अरबों ने समझा उसी तरह दूसरे लोग भी इसे समझ सकें।

कुरआन का बुलन्द और पुरहिक्मत होना इसके किताबे इलाही होने का सुबूत है। कुरआन की ज़बान और इसके मजमीन खुदाई अज़मत के हमसतह हैं और यही इस बात का सुबूत है कि वह खुदा की किताब है। कुरआन अगर इंसानी कलाम होता तो इसमें वह ग़ैर मामूली अज़मत न पाई जाती जो अब इसमें पाई जा रही है।

أَفْخَرَبْ عَنْكُمْ الَّذِينَ صَفَحْنَا أَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ۝ وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَبِيِّ فِي الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَنْتَهِمُ مِنْ نَبِيِّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ فَاهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَمَضَىٰ مَثَلُ الْأَوَّلِينَ

क्या हम तुम्हारी नसीहत से इसलिए नज़र फेर लेंगे कि तुम हद से गुज़ने वाले हो और हमने अगले लोगों में कितने ही नबी भेजे। और उन लोगों के पास कोई नबी नहीं आया जिसका उन्होंने मज़क न उड़ाया हो। फिर जो लोग उनसे ज्यादा ताक़तवर थे उन्हें हमने हलाक कर दिया। और अगले लोगों की मिसालें गुज़र चुकीं। (5-8)

आज दुनिया में बेशुमार ऐसे लोग पाए जाते हैं जो पिछले पैगम्बरों का नाम इज़्जत के साथ लेते हैं। ऐसी हालत में यह बात बड़ी अजीब मालूम होती है कि इन पैगम्बरों का (पैगम्बर इस्लाम सहित) उनके हमजमाना लोगों ने मज़क क्यों उड़ाया।

इसकी वजह यह नहीं है कि पिछले लोग वहशी थे और आज के लोग मुहज्जब हैं। यह सिर्फ ज़माने का फर्क है। आज लम्बी मुद्दत गुज़ने के बाद हर पैगम्बर के साथ तारीख़ी अज़मत का जोर शामिल हो चुका। इसलिए आज हर जाहिर्बी पैगम्बर को पहचान लेता है। मगर पैगम्बर अपने ज़माने के लोगों को सिर्फ एक आम इंसान नज़र आता था। उस वक़्त पैगम्बर की पैगम्बराना हैसियत को पहचानने के लिए हकीकतबी (यथार्थदर्शी) निगाह दरकार थी। और बिलाशुबह हकीकतबी निगाह दुनिया में हमेशा सबसे कम पाई गई है।

हक की दावत के मुखातबीन चाहे कितना ही ज्यादा ग़लत रवैया इस्तिहार करें, दाओी यकतरफ़ा तौर पर सब्र करते हुए अपने दावती अमल को जारी रखता है। यहां तक कि वह वक़्त आ जाए जबकि खुदा अपनी तरफ से कोई फैसला फ़रमा दे।

وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝ وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنْشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَيْيَاتًا ۝ كَذَلِكَ نُخْرِجُونَ ۝ وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ۝ لَيْسَتُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُّقْرِنِينَ ۝ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ

और अगर तुम उनसे पूछो कि आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वे ज़रूर कहेंगे कि उन्हें जबरदस्त, जानने वाले ने पैदा किया। जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फर्श बनाया। और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बनाए ताकि तुम राह पाओ। और जिसने आसमान से पानी उतारा एक अंदाजे के साथ। फिर हमने उससे मुर्दा ज़मीन को जिंदा

कर दिया, इसी तरह तुम निकाले जाओगे। और जिसने तमाम किस्में बनाई और तुम्हारे लिए वे कश्तियां और चौपाए बनाए जिन पर तुम सवार होते हो। ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर बैठो। फिर तुम अपने ख की नेमत को याद करो जबकि तुम उन पर बैठो। और कहो कि पाक है वह जिसने इन चीजों को हमारे वश में कर दिया, और हम ऐसे न थे कि उन्हें काबू में करते। और बेशक हम अपने ख की तरफ लौटने वाले हैं। (9-14)

हर जमाने में बेशेर इंसान यह मानते रहे हैं कि कायनात का खालिक व मालिक खुदा है और वही है जिसने हमें ज़िंदगी के तमाम सामान दिए हैं। कायनात को वजूद में लाना और जमीन पर सामाने हयात की फ़राहमी इतना बड़ा काम है कि किसी शख्स के लिए नामुमकिन है कि वह इसे एक खुदा के सिवा किसी और की तरफ़ मंसूब कर सके।

इस इक्तर का तत्त्व है कि इंसान सबसे ज्यादा खुदा की तरफ मुतवज्जह हो। उसकी जिंदगी खुदा रूखी जिंदगी हो जाए। मगर इंसान दूसरी चीजों को अपना मकसूद बनाता है, वह गैर खुदा को अपनी तवज्जोहात का मर्कज ठहरा लेता है।

अल्लाह तआला ने हकीकत को अपने पैगम्बरों के जरिए खोला है। इसी के साथ उसने दुनिया की तज़्जीक़ इस तरह की है कि वह हक़इक़े मअनवी की अमली तम्सील बन गई है। मसलन यह एक हकीकत है कि इंसान को मरकर दुबारा जिंदा होना है। इस हकीकत को नवातात (पेड़-पौधों) की सतह पर बार-बार दिखाया जा रहा है। इंसान हर साल यह देखता है कि ज़मीन ख़ुशक हो गई। इसके बाद बारिश होती है और ज़मीन दुबारा सरसब्ज हो जाती है। यह एक इशारा है कि इसी तरह इंसान भी मरने के बाद दुबारा जिंदा किया जाएगा।

मौजूदा दुनिया की दूसरी ख़ुससियत यह है कि वह हैरतअंगेज तौर पर इंसान के मुनाफ़िक़ है। यहां की तमाम चीज़ें इस अंदाज़ पर बनाई गई हैं कि इंसान उन्हें जिस तरह चाहे अपने मक़सद के लिए इस्तेमाल करे। इसका तमज़ा है कि आदमी के अंदर शुक़ का ज़बा पैदा हो। वह जब खुदा की दुनिया की किसी चीज़ को अपने लिए इस्तेमाल करे तो उसका दिल खुदा के आगे झुक जाए, उसकी ज़बान से एतराफ़ व दुआ के कलिमात उबलने लगें।

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُبِينٌ ﴿٤﴾ أَوِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُمْ بِالْبَنِينَ ﴿٥﴾ وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٦﴾ أَوْ مَنْ يُمْشِقْ فِي الْحَيَاةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿٧﴾ وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَنِ إِنَاءً أَشْهَدُوا خَلْقَهُمْ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَسُئِلُونَ ﴿٨﴾

और उन लोगों ने खुदा के बंदों में से खुदा का जुज (अंश) ठहराया, बेशक इंसान खुला नाशुक्रा है। क्या खुदा ने अपनी मख्लूक़ात में से बेटियां पसंद कीं और तुम्हें बेटी से नवाजा। और जब उनमें से किसी को उस चीज की ख़बर दी जाती है जिसे वह रहमान की तरफ़ मंसूब करता है तो उसका चेहरा स्याह पड़ जाता है और वह ग़म से भर जाता है। क्या वह जो आराइश (आभूषणों) में परवरिश पाए और झगड़े में बात न कह सके। और फरिश्ते जो रहमान के बंदे हैं उन्हें उन्होंने औरत करार दे रखा है। क्या वे उनकी पैदाइश के वक़्त मौजूद थे। उनका यह दावा लिख लिया जाएगा और उनसे पृष्ठ होगी। (15-19)

ख़ुदा के साथ ग़ैर ख़ुदा को शरीक करने की एक सूरत यह है कि आदमी किसी को ख़ुदा का शरीक जात ठहराए। मसलन फ़रिश्तों को ख़ुदा की बेटी मानना, हज़रत मसीह को ख़ुदा का बेटा बताना, या वहदतुल वजूद का नज़रिया (अद्वैत मत) जो तमाम चीज़ों को ख़ुदा के अज़्ज़ा (अंश) करार देकर कायनात की तज़रीह करता है। इस किस्म के तमाम अक़ीदे महज़ बेवज़ूह मफ़रूज़े (कल्पनाएँ) हैं। इनके हक़ में कोई भी हकीमी दलील मौजूद नहीं।

यहां औरत की सिंफी (लैंगिक) खुसूसियात को दो जामअ लफ्ज में बयान कर दिया गया है। एक यह कि वह तबअन आराइशपसंद होती है। दूसरे यह कि वह मुक़ाबले के वक्त पुजोर अंदाज में कलाम नहीं कर पाती। औरत का यह सिंफी मिजज एक हकीकत है और इसी बिना पर इस्लाम में यह तक्सीम की गई है कि मर्द बेरूनी (बाहर) काम का जिम्मेदार है और औरत अंदरूनी काम की जिम्मेदार।

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ مَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا
يَخْرُصُونَ ۚ أَمْ لَيْسَ لَهُمْ كِتَابٌ مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ۖ بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا
آبَاءَنَا عَلَىٰ أَثَرٍ وَإِنَّا عَلَىٰ أَثَرِهِمْ قُنُودٌ ۖ وَكَذَلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ
فِي قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أَثَرٍ وَإِنَّا
عَلَىٰ أَثَرِهِمْ مُّقْتَدُونَ ۖ قُلْ أَوَلَوْ جِئْتَكُمْ بِآيَةٍ مِّنِّي يَهْدِي لِمِثْلِ مَا تُكْفِرُونَ ۚ
قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۖ فَانْتَقِمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُكَذِّبِينَ ۝

और वे कहते हैं कि अगर रहमान चाहता तो हम उनकी इबादत न करते। उन्हें इसका कोई इल्म नहीं। वे महज बेतहकीक बात कह रहे हैं। क्या हमने उन्हें इससे पहले कोई किताब दी है तो उन्होंने उसे मजबूत पकड़ रखा है। बल्कि वे कहते हैं कि हमने अपने

बाप दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उनके पीछे चल रहे हैं। और इसी तरह हमने तुमसे पहले जिस बस्ती में भी कोई नजीर (डराने वाला) भेजा तो उसके खुशहाल लोगों ने कहा कि हमने अपने बाप दादा को एक तरीके पर पाया है और हम उनके पीछे चले जा रहे हैं। नजीर ने कहा, अगरचे मैं उससे ज्यादा सही रास्ता तुम्हें बताऊं जिस पर तुमने अपने बाप दादा को पाया है। उन्होंने कहा कि हम उसके मुँक़िर हैं जो देकर तुम भेजे गए हो। तो हमने उनसे इंतिकाम (प्रतिशोध) लिया, पस देखो कि कैसा अंजाम हुआ झुठलाने वालों का। (20-25)

मौजूदा दुनिया में इंसान जो भी काम करना चाहता है वह उसके मौके पा लेता है। इससे अक्सर लोग इस ग़लतफहमी में पड़ जाते हैं कि वे जो कुछ कर रहे हैं सही कर रहे हैं। अगर वे ग़लती पर होते तो वे अपने तरीके को चलाने में कामयाब न होते। इस किस्म की बातें अक्सर वे लोग करते हैं जिन्हें खुशहाल तबका कहा जाता है।

मगर यह जबरदस्त ग़लतफहमी है। मौजूदा दुनिया में हर तरीके का चल पड़ना इसलिए है कि यहां इस्तेहान की आजादी है। आखिरत की दुनिया में इस्तेहान की मुद्दत ख़त्म हो जाएगी। इसलिए वहां किसी के लिए यह मौका भी बाकी न रहेगा।

हर दौर में पैगम्बरों के दीन का मुकाबला सबसे ज्यादा आबाई (पैतृक) दीन से पेश आया है। 'पूर्वज' कौमों की नजर में अकाबिर का दर्जा हासिल कर चुके होते हैं। इसके मुकाबले में वक्त का पैगम्बर उन्हें असागर (छोटों) में से नजर आता है। इस बिना पर उनके लिए नामुमकिन हो जाता है कि वे बड़ों के दीन को छोड़कर छोटे के दीन को इख़्तियार कर लें। मगर इन्हीं 'छोटों' की तकजीब (अवहेलना, इंकार) पर उन कौमों पर वह अजाब आया जिसके मुतअल्लिक उनका गुमान था कि वह सिर्फ 'बड़ों' की तकजीब पर आ सकता है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ۖ إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي ۚ فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ۖ وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝ بَلْ مَتَّعْتُ هَؤُلَاءِ وَأَبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ۝ وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ۝

और जब इब्राहीम ने अपने बाप से और अपनी कौम से कहा कि मैं उन चीजों से बरी हूं जिसकी तुम इबादत करते हो। मगर वह जिसने मुझे पैदा किया, पस बेशक वह मेरी रहनुमाई करेगा और इब्राहीम यही कलिमा अपने पीछे अपनी औलाद में छोड़ गया ताकि वे उसकी तरफ रुजूअ करें। बल्कि मैंने उन्हें और उनके बाप दादा को दुनिया का सामान दिया यहां तक कि उनके पास हक (सत्य) आया और रसूल खोल कर सुना देने वाला।

और जब उनके पास हक आ गया उन्होंने कहा कि यह जादू है और हम इसके मुँक़िर हैं। (26-30)

यहां हजरत इब्राहीम अलैहि० के जिस कलिमाए तौहीद का जिक्र है वह उनकी दावती जिंदगी के आखिरी दौर में निकला था। यह कलिमा महज चन्द अल्फ़ज का मज्मूआ न था। वह एक अजीम तारीख का खुलासा था। हजरत इब्राहीम जब सिने शुऊर (प्रौढ़ता) को पहुंचे तो उन्हें यह दरयाफ्त हुई कि इंसान का माबूद सिर्फ एक है। उसके सिवा तमाम माबूद बातिल और बेव्हीक़त हैं। उन्होंने अपनी जिंदगी की तामीर इसी अक्वीदे पर की। ख़नदान और कैम के अंदर इसी की तब्लीग की। वह किसी मस्तेहत का लिहाज किए बग़ैर लम्बी मुद्दत तक इसी पर कायम रहे। यहां तक कि उनका मोहिद (एकेश्वरवादी) होना ही उनकी हैसियते उरफ़ी (पहचान) बन गया। इस तरह की एक लम्बी जिंदगी गुज़ारने के बाद जब वह मच्छूआ कलिमा कहकर अपने वतन से रवाना हुए तो उनका कलिमा कुदरती तौर पर कलिमाए बाक़िया (स्थापित कलिमा) बन गया। वह एक ऐसा वाक़्या था कि हजरत इब्राहीम का जिक्र आते ही वह लोगों को याद आ जाता था।

हजरत इब्राहीम की इस ताक़तवर रिवायत को उनकी बाद की नस्ल में निशानेराह का काम देना चाहिए था। मगर दुनिया की दिलचस्पियों ने बाद के लोगों को इससे गाफ़िल कर दिया। यहां तक कि वे इस मामले में इतने बेशुऊर हो गए कि बाद के ज़माने में जब खुदा का एक बंदा उन्हें उनका माजी (अतीत) का सबक याद दिलाने के लिए उठा तो उन्होंने उसका इंकार कर दिया।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ ۝ أَهْمُ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۚ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ ۚ لِّيُخَيِّدَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سَخِرَ لَهَا وَرَحِمْتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝ وَلَوْلَا أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِبُيُوتِهِمْ سُفْهًا مِّنْ فُضْرَةٍ وَمَعَآرِجَ عَلَيْهِمْ يُظَاهَرُونَ ۖ وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَابًا وَسُرَرًا عَلَيْهَا يَكُونُونَ ۖ وَخُرُفًا وَإِن كُلُّ ذَلِكَ لَمَّا مَتَاعٌ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ ۝

عَلَىٰ

और उन्होंने कहा कि यह कुरआन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया। क्या ये लोग तेरे ख की रहमत को तक्सीम करते हैं। दुनिया की जिंदगी में उनकी रोज़ी को तो हमने तक्सीम किया है और हमने एक को दूसरे पर फौकियत

(उच्चता) दी है ताकि वे एक दूसरे से काम लें। और तेरे खब की रहमत इससे बेहतर है जो ये जमा कर रहे हैं। और अगर यह बात न होती कि सब लोग एक ही तरीके के हो जाएंगे तो जो लोग रहमान का इंकार करते हैं उनके लिए हम उनके घरों की छतें चांदी की बना देते और जीने भी जिन पर वे चढ़ते हैं। और उनके घरों के किवाड़ भी और तख्त भी जिन पर वे तकिया लगाकर बैठते हैं। और सोने के भी, और ये चीजें तो सिर्फ दुनिया की जिंदगी का सामान हैं और आखिरत तेरे खब के पास मुत्तकियों (ईश-परायण लोगों) के लिए है। (31-35)

पैगम्बर इस्लाम जब मक्का में जाहिर हुए तो उस वक्त वे लोगों को एक मामूली इंसान नजर आते थे। लोगों ने कहा कि खुदा को अगर अपना कोई नुमाइंदा हमारी हिदायत के लिए भेजना था तो उसने अरब की मर्कजी बस्तियों (मक्का और तायफ) की किसी अजीम शख्सियत को इसके लिए क्यों नहीं चुना। मगर यह उनकी नजर की कोताही थी। इंसान सिर्फ हाल (वर्तमान) को देख पाता है जबकि पैगम्बर इस्लाम की अजमत को समझने के लिए मुत्तकबिल (भविष्य) को देखने वाली नजर दरकार थी। चूंकि लोगों को इस किस्म की दूरबी नजर हासिल न थी, वे पैगम्बर इस्लाम की अजमत को समझने में नाकाम रहे।

पैगम्बर इस्लाम को कम समझने की वजह यह थी कि आपकी जिंदगी में माददी चीजों की रैनक लोगों को दिखाई न देती थी मगर इन माददी चीजों की खुदा की नजर में कोई अहमियत नहीं। हकीकत यह है कि ये चीजें खुदा की नजर में इतनी ग़ैर अहम हैं कि वह चाहे तो लोगों को सोने चांदी का ढेर दे दे। मगर खुदा ने ऐसा इसलिए नहीं किया कि लोग इन्हीं चीजों में अटक कर रह जाएं। वे इससे आगे बढ़कर हकीकत को न पा सकेंगे।

وَمَنْ يَعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُقَيِّضْ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ قَرِينٌ ۖ وَإِلَهُمْ
لِیَصُدُّوهُمْ عَنِ السَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّقْتَدُونَ ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ
يَلَيْتُ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِينٌ ۖ وَلَنْ يَنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ
إِذْ ظَلَمْتُمْ أَتُحْكَمُونَ ۖ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۖ

और जो शख्स रहमान की नसीहत से एराज (उपेक्षा) करता है तो हम उस पर एक शैतान मुसल्लत कर देते हैं, पस वह उसका साथी बन जाता है और वे उन्हें राहें हक (सन्मार्ग) से रोकते रहते हैं। और ये लोग समझते हैं कि वे हिदायत पर हैं। यहां तक कि जब वह हमारे पास आएगा तो वह कहेगा कि काश मेरे और तेरे दर्मियान मशिक और मरिब की दूरी होती। पस क्या ही बुरा साथी था। और जबकि तुम जुल्म कर चुके तो आज यह बात तुम्हें कुछ भी फायदा नहीं देगी कि तुम अजाब में एक दूसरे के शरीक हो। (36-39)

नसीहत से एराज करना यह है कि आदमी हकीकत का एतराफ न करे। खुदाई हकीकत उसके सामने ऐसे दलाइल के साथ आए जिसका वह इंकार न कर सकता हो मगर वह अपनी मस्तेहतों (स्वाभों) के तहफुज की ख़तिर उसे नजरअंदाज कर दे।

ऐसा शख्स अपने मौक़िफ को दुरुस्त साबित करने के लिए उसके खिलाफ झूठी बातें करता है। यही वह वक्त है जबकि शैतान को यह मौका मिल जाता है कि वह उसके ऊपर मुसल्लत हो जाए, वह उसकी अक्ल को ग़लत रूख पर दौड़ने लगे। फर्जी तौजीहात में मशगूल करके शैतान उसे यकीन दिलाता रहता है कि तुम हक पर हो। यह फ़रेब सिर्फ उस वक्त टूटता है जबकि आदमी की मौत आती है और वह खुदा के सामने आखिरी हिसाब के लिए खड़ा कर दिया जाता है।

दुनिया में आदमी का हाल यह है कि वह उसे अपना दोस्त और साथी बना लेता है जो उसके झूठ की ताईद करे। मगर आखिरत में वह ऐसे साथियों पर लानत करेगा। वह चाहेगा कि वे उससे इतना दूर हो जाएं कि वह न उनकी शकल देखे और न उनकी आवाज सुने।

أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْى وَمَنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ وَإِنَّا
نَذْهَبُ بِكَ فَإِنَّا لَمُفْتَقُونَ ۖ أَوْ نُرِيكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِم
مُقْتَدِرُونَ ۖ فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ وَإِلَّا
لَذِكْرُكَ وَلِقَاؤُكَ وَسَوْفَ يُسْأَلُونَ ۖ وَسَأَلُ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ
رُسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِلَهًا يُعْبَدُونَ ۖ

पस क्या तुम बहरों को सुनाओगे या तुम अंधों को राह दिखाओगे और उन्हें जो खुली हुई गुमराही में हैं। पस अगर हम तुम्हें उठा लें तो हम उनसे बदला लेने वाले हैं। या तुम्हें दिखा देंगे वह चीज जिसका हमने उनसे वादा किया है। पस हम उन पर पूरी तरह कादिर हैं। पस तुम उसे मजबूती से थामे रहो जो तुम्हारे ऊपर 'वही' (प्रकाशना) की गई है। वेशक तुम एक सीधे रास्ते पर हो। और यह तुम्हारे लिए और तुम्हारी कौम के लिए नसीहत है। और अनकरीब तुमसे पूछ होगी। और जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा है उनसे पूछ लो कि क्या हमने रहमान से सिवा दूसरे माबूद (पूज्य) ठहराए थे कि उनकी इबादत की जाए। (40-45)

आंख वाला अपनी आंख को बंद कर ले तो उसे कुछ दिखाई नहीं देगा। कान वाला अपने कान को बंद कर ले तो उसे कुछ सुनाई नहीं देगा। इसी तरह जो शख्स अपनी अक्ल को इस्तेमाल न करे, वह अक्ल को मुअत्तल करके अपनी ख़्वाहिश के रूख पर चलने लगे तो ऐसे शख्स को समझाना बुझाना बिल्कुल बेकार होता है। समझने का काम अक्ल के जरिए

होता है और अपनी अकल के ऊपर उसने अपनी ख्वाहिशात का पर्दा डाल रखा है। ताहम मदऊ (संबोधित पक्ष) का रवैया चाहे कुछ भी हो, दाओ (आह्वानकर्ता) को अपना दावती काम हर हाल में जारी रखना है, यहाँ तक कि वह इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के मरहले तक पहुंच जाए।

हक का दाओ अगरचे एक इंसान होता है मगर हक का मामला खुदा का मामला है। आदमी हक के दाओ का इंकार करके समझता है कि वह हक की जद से बच गया। हालांकि ऐन उसी वक्त वह खुदा की जद में आ जाता है। आदमी अगर इस राज को जाने तो वह हक के दाओ को नजरअंदाज करते हुए काम उठेगा। क्योंकि वह जानेगा कि हक के दाओ को नजरअंदाज करना खुद हक को नजरअंदाज करना है। और हक को नजरअंदाज करना खुदा को नजरअंदाज करना।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٥﴾ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿٥٦﴾ وَمَا نُرِيهِمْ مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا وَأَخَذْنَاهُمْ بِالْعُنَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٧﴾ وَقَالُوا يَا أَيُّهَا السَّحَرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ إِنَّا كَاشِفُونَ ﴿٥٨﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الْعُنَابَ إِذَا هُمْ يَبْكُونَ ﴿٥٩﴾

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा तो उसने कहा कि मैं खुदावंद आलम का रसूल हूँ। पस जब वह उनके पास हमारी निशानियों के साथ आया तो वे उस पर हंसने लगे। और हम उन्हें जो निशानियाँ दिखाते थे वह पहली से बढ़कर होती थीं। और हमने उन्हें अजाब में पकड़ा ताकि वे रुजूअ करें। और उन्होंने कहा कि ऐ जादूगर, हमारे लिए अपने रब से दुआ करो, उस अहद (वचन) की बिना पर जो उसने तुमसे किया है, हम जरूर राह पर आ जाएंगे। फिर जब हमने वह अजाब उनसे हटा दिया तो उन्होंने अपना अहद तोड़ दिया। (46-50)

हजरत मूसा ने फिरऔन के सामने तौहीद की दावत पेश की और असा और यदेबेजा (हाथ का चमकना) का मोजिजा दिखाया। उसे देखकर फिरऔन और उसके दरबारी हंसने लगे। इसकी वजह यह थी कि उन्होंने हजरत मूसा को उनकी दावत में नहीं देखा बल्कि उनकी शख्सियत में देखा। उन्हें नजर आया कि मूसा की शख्सियत बजाहिर उनकी अपनी शख्सियत से कम है। इसी तरह मोजिजे के मुतअल्लिक उन्होंने ख्याल किया कि यह महज जादू है, और ऐसा जादू मुल्क के दूसरे जादूगर भी दिखा सकते हैं।

हक की दावत के सिलसिले में हमेशा यही होता है। लोग दाओ की शख्सियत को देखकर दावत को रद्द कर देते हैं। वे निशानियों को आम वाक्यात पर कयास करके उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

फिरऔन और उसके साथियों ने जब हजरत मूसा का इंकार किया तो अल्लाह तआला ने उन पर बहुत से तंबीही अजाब भेजे ताकि वे दुबारा रुजूअ करें। इन तंबीही अजाबों का जिक्र सूरह आराफ (133-135) में मौजूद है। ये तमाम अजाब हजरत मूसा की दुआ पर आए और हजरत मूसा की दुआ पर खत्म हुए। यह एक मजीद सबब था कि उनके अंदर रुजूअ की कैफियत पैदा हो। मगर वे रुजूअ न हुए। हकीकत यह है कि जो लोग दलील से न मानें वे तंबीह से भी नहीं मानते, इल्ला यह कि आखिरत का न लौटने वाला अजाब उन्हें आखिरी तौर पर अपने घेरे में ले ले।

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَتَقَوَّمُ النَّاسُ لِي مُلْكُ مَضْرُوءٍ هَذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِي ۖ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿٦٠﴾ أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَكِينٌ ۖ ذُو لَايِكَادِيْبِيْنَ ﴿٦١﴾ فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوُدَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿٦٢﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ ۖ فَطَاعُوهُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٦٣﴾ فَلَمَّا أَسْفَوْا أَنْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٦٤﴾ فَبَعَلْنَاهُمْ سُلَاقًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ﴿٦٥﴾

और फिरऔन ने अपनी कैम के दर्मियान फुकार कर कहा कि ऐ मेरी कैम क्या मिस्र की बादशाही मेरी नहीं है, और ये नहरें जो मेरे नीचे बह रही हैं। क्या तुम लोग देखते नहीं। बल्कि मैं बेहतर हूँ उस शख्स से जो कि हकीर (तुच्छ) है। और साफ बोल नहीं सकता। फिर क्यों न उस पर सोने के कंगन आ पड़े या फरिश्ते उसके साथ परा बांध कर (पार्श्ववर्ती होकर) आते। पस उसने अपनी कैम को बेअकल कर दिया। फिर उन्होंने उसकी बात मान ली। ये नाफरमान किस्म के लोग थे। फिर जब उन्होंने हमें गुस्सा दिलाया तो हमने उनसे बदला लिया। और हमने उन सबको गर्क कर दिया। फिर हमने उन्हें माजी की दास्तान बना दिया और दूसरों के लिए एक नमूना इब्रत (सीख)। (51-56)

हक का इंकार करने वालों ने हमेशा हक के दाओ की मामूली हैसियत को देखकर हक का इंकार किया है। मिस्र में फिरऔन की हैसियत यह थी कि वह मुल्क का हुक्मरां था। दरियाए नील से निकली हुई नहरें उसके हुक्म से जारी थीं। इज्जत के तमाम सरोसामान उसके गिर्द जमा थे। इसके मुकाबले में हजरत मूसा बजाहिर एक मामूली इंसान दिखाई देते थे। इसी फर्क को पेश करके फिरऔन ने अपनी कैम को बहकाया। हजरत मूसा का इंकार करने में कैम उसके साथ हो गई।

बजाहिर इसी किस्म के दलाइल की बुनियाद पर फिरऔन की कैम ने फिरऔन का साथ दिया। मगर हकीकत यह है कि इसकी वजह कैम की अपनी कमजोरी थी न कि फिरऔन के दलाइल की मजबूती। उस वक्त हजरत मूसा का साथ देना अपनी जिंदगी के बने बनाए

नक्शे को तोड़ना था। और बहुत कम आदमी ऐसे होते हैं जो अपने बने हुए नक्शे को तोड़कर हक का साथ देने की जुरअत करें। चुनांचे फिरऔन पर जब इंकारे हक के नतीजे में खुदा का अजाब आया तो उसकी कैम भी उसके साथ अजाबे इलाही की जद में आ गई।

وَلَمَّا ضَرَبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذْ أَقَامُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ۝ وَ قَالُوا لَهِتُنَا خَيْرًا أَمْ هُوَ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ الْأَجْدَلُ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ۝ إِنَّ هُوَ الْأَعْبُدُ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ۝ وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ فِرْلَکَ فِي الْأَرْضِ يَخْلُفُونَ ۝ وَإِنَّ لَعَلْمَ السَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَ بِهَا وَاتَّبِعُونَ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ وَلَا يَصِدُّكُمْ الشَّيْطَانُ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝

और जब इन्ने मरयम की मिसाल दी गई तो तुम्हारी कौम के लोग उस पर चिल्ला उठे। और उन्होंने कहा कि हमारे माबूद (पूज्य) अच्छे हैं या वह। यह मिसाल वे तुमसे सिर्फ झगड़ने के लिए बयान करते हैं। बल्कि ये लोग झगड़ालू हैं। ईसा तो बस हमारा एक बंदा था जिस पर हमने फल फरमाया और उसे बनी इझ्राईल के लिए एक मिसाल बना दिया। और अगर हम चाहें तो तुम्हारे अंदर से फरिश्ते बना दें जो जमीन में तुम्हारे जानशीन (उत्तराधिकारी) हों। और बेशक ईसा कियामत का एक निशान हैं, तो तुम इसमें शक न करो और मेरी पैरवी करो। यही सीधा रास्ता है। और शैतान तुम्हें इससे रोकने न पाए। बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (57-62)

मौजूदा दुनिया में यह मुमकिन है कि आदमी हर बात का उल्टा मफहूम (भावार्थ) निकाल सके। मसलन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार फरमाया : 'अल्लाह के सिवा जिसकी परस्तिश की जाए उसमें कोई खैर नहीं' इसे सुनकर मुख़ालिफीन ने कहा कि ईसाई लोग मसीह को पूजते हैं फिर क्या मसीह में भी कोई खैर नहीं। जाहिर है कि यह महज एक शोशा था। क्योंकि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो बात फरमाई थी वह आबिद (पूजक) की निस्वत से थी न कि माबूद (पूज्य) की निस्वत से। और अगर उसे माबूद की निस्वत से माना जाए तब भी वाजेह तौर पर इससे मुराद वे ग़ैर माबूद थे जो अपने माबूद बनाए जाने पर राजी हों। आदमी अगर बात को उसके सही रुख से न ले तो हर बात को वह उल्टे मअना पहना सकता है, चाहे वह कितनी ही दुरुस्त बात क्यों न हो।

हजरत ईसा अलैहिस्सलाम की शख्सियत एक एतबार से फरिश्तों की मुशाबह थी। इस पर आंजनाब को बहुत से लोगों ने माबूद बना लिया। मगर हजरत मसीह की मलकूती तज़्की (फरिश्तों जैसी उत्पत्ति) खुदा की क़दरत की मिसाल थी न कि खुद हजरत मसीह की जती क़दरत की मिसाल। हकीकत यह है कि अल्लाह के लिए इस किस्म की तज़्की कुछ

भी मुश्किल नहीं। वह चाहे तो जमीन की तमाम आबादी को फरिश्तों की आबादी बना दे। फिर भी ये फरिश्ते, फरिश्ते ही रहेंगे, वे माबूद नहीं हो जाएंगे।

हजरत मसीह को यह मोज़िजा दिया गया कि वह मुर्दों को जिंदा कर देते थे। मिट्टी के पुतले में फूँक मार कर उसे जानदार बना देते थे। यह दरअस्त एक खुदाई निशानी थी जो जिंदगी बाद मौत के इम्कान को बताने के लिए जाहिर की गई थी। मगर लोगों ने इससे अस्त सबक तो नहीं लिया। अलबत्ता हजरत मसीह को फ़ैसूल बशर (अलौकिक व्यक्ति) समझ कर उन्हें पूजने लगे। इसी तरह खुदाई निशानियां हमेशा मुख़लिफ शक्तों में जाहिर होती हैं। उन्हें अगर निशानी समझा जाए तो उनसे जबरदस्त नसीहत मिलती है। और अगर उन्हें निशानी के बजाए कुछ और समझ लिया जाए तो वह आदमी को सिर्फ गुमराही में डालने का सबब बन जाएंगी।

शैतान की हमेशा यह कोशिश रहती है कि वह खुदाई निशानियों से आदमी को सबक न लेने दे। यही वह मक़ाम है जहां यह फैसला होने वाला है कि शैतान को आदमी के ऊपर कामयाबी हासिल हुई या आदमी को शैतान के ऊपर।

وَلَمَّا جَاءَ عِيسَى بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلَفُونَ فِيهِ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝ إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝ فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الدِّمْرِ ۝

और जब ईसा खुली निशानियों के साथ आया, उसने कहा कि मैं तुम्हारे पास हिक्मत (तत्वदर्शिता) लेकर आया हूँ और ताकि मैं तुम पर वाजेह कर दूँ कुछ बातें जिनमें तुम इख़्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हो। पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत (आज्ञापालन) करो। बेशक अल्लाह ही मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। तो तुम उसी की इबादत करो। यही सीधा रास्ता है। फिर गिरोहों ने आपस में इख़्तेलाफ किया। पस तबाही है उन लोगों के लिए जिन्होंने जुल्म किया, एक दर्दनाक दिन के अजाब से। (63-65)

यहां हिक्मत से मुराद दीन की रूह (मूल भावना) है और सिराते मुस्तकीम से मुराद वही चीज है जिसे आयत में खुदा का ख़ौफ, उसकी इबादत और रसूल की इताअत कहा गया है। यही अस्त दीन है। यहूद ने बाद को यह किया कि उन्होंने रूहे दीन खो दी और दीन के बुनियादी अहकाम में मूशिगाफियों (कुतर्कों) के जरिए बेशुमार नए-नए मसाइल पैदा किए। ये मसाइल आज भी यहूद की किताबों में मौजूद हैं।

इन्हीं ख़ुदाइया इजामों की वजह से उनके अंदर इख़्तेलाफी फिस्के बने। किसी ने एक इख़्तेलाफी मसले पर जोर दिया, किसी ने दूसरे इख़्तेलाफी मसले पर। इस तरह उनके यहां

एक दिन कई दिन बन गया। हजरत मसीह इसलिए आए कि वे यहूद को बताएं कि दिन में अस्ल अहमियत रूह (मूल भावना) की है न कि जवाहिर (जाहिरी चीजों) की। और यह कि आदमी को नजात जिस चीज पर मिलेगी वह उस दिन की पैरवी पर मिलेगी जो खुदा ने भेजा है न कि उस दिन पर जो तुम लोगों ने बतौर खुद वजअ कर रखा है।

हजरत मसीह ने बताया कि अस्ल दिन यह है कि तुम अल्लाह से डरो। सिर्फ एक अल्लाह के इबादतगुजार बनो। जिंदगी के मामलात में रसूल के नमूने की पैरवी करो। उसके सिवा तुमने अपनी बहसों और मूशिंगाफियों से जो बेशुमार मसाइल बना रखे हैं वे तुम्हारे अपने इजफे हैं। इन इजफों को छोड़कर अस्ल दिन पर कायम हो जाओ। हज़रत मसीह की ये बातें आज भी इंजीलों में मौजूद हैं।

هَلْ يُنْظَرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝۱۰۰ الْأَخْلَاقُ
يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ۝۱۰۱ يِعْبَادِ لِاخْوَفِ عَلَيْكُمْ الْيَوْمَ
وَلَا أَنْ تُمْ تَحْزَنُونَ ۝۱۰۲ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ۝۱۰۳ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْ تُمْ وَ
أَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ۝۱۰۴ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ وَفِيهَا مَا
تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَكْدُّ الْأَعْيُنُ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝۱۰۵ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي
أُورِثُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝۱۰۶ لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝۱۰۷

ये लोग बस कियामत का इंतजार कर रहे हैं कि वह उन पर अचानक आ पड़े और उन्हें खबर भी न हो। तमाम दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे, सिवाए डरने वालों के। ऐ मेरे बंदों आज तुम पर न कोई खौफ है और न तुम ग़मगीन होगे। जो लोग ईमान लाए और फरमांबरदार रहे। जन्नत में दाखिल हो जाओ तुम और तुम्हारी बीवियां, तुम शाद (हर्षित) किए जाओगे। उनके सामने सोने की रिकाबियां और प्याले पेश किए जाएंगे। और वहां वे चीजें होंगी जिन्हें जी चाहेगा और जिनसे आंखों को लज्जत होगी। और तुम यहां हमेशा रहोगे। और यह वह जन्नत है जिसके तुम मालिक बना दिए गए उसकी वजह से जो तुम करते थे। तुम्हारे लिए इसमें बहुत से मेवे हैं जिनमें से तुम खाओगे। (66-73)

इंसान आजाद नहीं है। उसे बहरहाल हकीकत के आगे झुकना है। अगर वह दाजी की दलील के आगे नहीं झुकता तो उसे खुदाई ताकत के आगे झुकना पड़ेगा। मगर खुदाई ताकत फैसले के लिए जाहिर होती है। इसलिए उस वक्त का झुकना किसी के कुछ काम आने वाला नहीं।

दुनिया में आदमी जब हक के खिलाफ रवैया इख्तियार करता है तो उसे बहुत से दोस्त मिल जाते हैं जो उसका साथ देते हैं। आदमी इन दोस्तों के बल पर ढीठ बनता चला जाता है। मगर ये सारे दोस्त कियामत में उसका साथ छोड़ देंगे। कियामत में सिर्फ वह दोस्ती बाकी रहेगी जो अल्लाह के खौफ की बुनियाद पर कायम हुई हो।

दुनिया में हकपरस्ती की जिंदगी खतरात में घिरी हुई होती है। मगर आखिरत में उसका बदला इस शानदार सूरत में मिलेगा कि आदमी वहां हर किसम के अंदेशे और तकलीफ से हमेशा के लिए नजात हासिल कर लेगा। इस खुदाई वादे पर जो लोग यकीन करें वही मौजूदा दुनिया में हक पर कायम रह सकेंगे। खुदा आखिरत में उन्हें वह सब कुछ मज्जद इजफे के साथ दे देगा जो उन्होंने दुनिया में खुदा की खातिर खोया था।

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ مُتَعَدٍّ ۝۱۰۸ لَا يَنْفَعُهُمْ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ۝۱۰۹
وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ۝۱۱۰ وَكَادُوا إِلَيْكَ لِيَغْفِرَ عَلَيْكَ بَرَكٌ
قَالَ إِنَّكُمْ مَّا كُنْتُمْ ۝۱۱۱ لَقَدْ جِئْتُمْ بِالْحَقِّ وَلَكِنْ أَكْثَرُكُمْ لَاحِقٌ كَرَهُونَ ۝۱۱۲
أَمْ أَبْرَمُوا أَمْ أَكَانُوا مُبْرَمُونَ ۝۱۱۳ أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ ۝۱۱۴ بَلَى
وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُونَ ۝۱۱۵

बेशक मुजरिम लोग हमेशा दोख के अजाब में रहेंगे। वह उनसे हल्का न किया जाएगा और वे उसमें मायूस पड़े रहेंगे। और हमने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे खुद ही जालिम थे। और वे पुकारेंगे कि ऐ मालिक, तुम्हारा ख बहारा खाल्ता ही कर दे। फरिश्ता कहेगा तुम्हें इसी तरह पड़े रहना है। हम तुम्हारे पास हक (सत्य) लेकर आए मगर तुम में से अक्सर हक से बेजार रहे। क्या उन्होंने कोई बात ठहरा ली है तो हम भी एक बात ठहरा लेंगे। क्या उनका गुमान है कि हम उनके राजों को और उनके मशिवरों को नहीं सुन रहे हैं। हां, और हमारे भेजे हुए उनके पास लिखते रहते हैं। (74-80)

उम्मीद हमेशा तकलीफ के एहसास को कम कर देती है। आदमी किसी तकलीफ में मुब्तिला हो और इसी के साथ उसे यह उम्मीद हो कि यह तकलीफ एक रोज खत्म हो जाएगी तो आदमी के अंदर उसे सहने की ताकत पैदा हो जाती है। मगर जहन्नम की तकलीफ वह तकलीफ है जिससे निकलने की कोई उम्मीद इंसान के लिए न होगी। जहन्नम में फरिश्तों को मदद के लिए पुकारना जहन्नम वालों की बेबसी का बेताबाना इज्हार होगा। वरना पुकारने वाला खुद जानता होगा कि खुदा का फैसला आखिरी तौर पर हो चुका है। अब वह किसी तरह टलने वाला नहीं।

जहन्नम में किसी का दाखिल होना सरासर अपनी कोताही का नतीजा होगा। इंसान को अल्लाह तआला ने आला दर्जे की समझ दी। उसके सामने हक की राहें खोलीं। मगर इंसान ने जानते बूझते हक को नजरअंदाज किया। उसकी सरकशी यहां तक पहुंची कि वह हक के दाजी को मिटाने और बर्बाद करने के दरपे हो गया। ऐसी हालत में उसका अंजाम इसके सिवा और क्या हो सकता था कि उसे दाइमी तौर पर अजाब में डाल दिया जाए।

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ ۖ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَبْدِينَ ۖ سُبْحَنَ رَبِّ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَظِيمٍ ۖ فَذُرُّهُمْ يُخَوِّضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّى يُلَاقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوْعَدُونَ ۝

कहो कि अगर रहमान के कोई औलाद हो तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत करने वाला हूँ। आसमानों और जमीन का खुदावंद, अर्श का मालिक। वह उन बातों से पाक है जिसे लोग बयान करते हैं। पस उन्हें छोड़ दो कि वे बहस करें और खेलें यहां तक कि वे उस दिन से दो चार हों जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। (81-83)

‘अगर खुदा के औलाद हो तो मैं सबसे पहले उसकी इबादत करूँ’ यह जुमला बताता है कि पैगम्बर जिस अक्रीदे का एलान कर रहा है वह उसी को ऐन हकीकत समझता है। वह कौमी तकलीद और गिरेही तअस्सुब की जमीन पर नहीं खड़ा हुआ है बल्कि दलील की जवान पर खड़ा हुआ है। वह इस अक्रीदे का दाजी इसलिए है कि तमाम हक़इक इसकी सदाकत (सच्चाई) की ताईद करते हैं। इससे अंदाजा होता है कि दाजी का मामला शुऊरे हकीकत का मामला होता है न कि कौमी तकलीद (अनुसरण) का मामला।

खुदा का तख्लीकी कारखाना जो जमीन व आसमान की सूरत में फैला हुआ है वह बताता है कि उसका खुदा सिर्फ एक खुदा है। कायनात अपने वसीअ (विस्तृत) निजाम के साथ इससे इंकार करती है कि उसका खुदा एक से ज्यादा हो सकता है।

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهُ وَفِي الْأَرْضِ إِلَهُ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝ وَتَبَرَّكَ
الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَالْيَوْمِ
تُرْجَعُونَ ۝

और वही है जो आसमान में खुदावंद है और वही जमीन में खुदावंद है और वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला, इल्म वाला है। और बड़ी बाबरकत है वह जात जिसकी बादशाही आसमानों और जमीन में है और जो कुछ उनके दर्मियान है। और उसी के पास कियामत की खबर है। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (84-85)

जमीन व आसमान निहायत हमआहंगी (सामंजस्य) के साथ मुसलसल अमल कर रहे हैं। उनके अंदर कामिल तौर पर वाहिद (एकीय) हिक्मत और वाहिद इल्म पाया जाता है। यह इस बात का सुबूत है कि यहां एक ही खुदा है जो जमीन व आसमान दोनों का निजाम तंहा चला रहा है।

कायनात बयकवक्त खुदा की बेपनाह क़दरत का भी तआरुफ कराती है और इसी के साथ खुदा की बेपनाह रहमत का भी। इसका तक्काज है कि आदमी सबसे ज्यादा खुदा से डरे, वह सबसे ज्यादा उसी से उम्मीद रखे। जो लोग दुनिया में इस शुऊर और इस किरदार का सुबूत दें वही वे लोग हैं कि जब वे खुदा के यहां पहुंचेंगे तो खुदा उन्हें अपनी बेपायां रहमतों से नवाजेगा।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ
يَعْلَمُونَ ۝ وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ ۝ وَقِيلَ لَهُ رَبِّ
إِنَّ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يَذْكُرُونَ ۖ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

और अल्लाह के सिवा जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे सिफारिश का इख्तियार नहीं रखते, मगर वे जो हक की गवाही देंगे और वे जानते होंगे। और अगर तुम उनसे पूछो कि उन्हें किसने पैदा किया है तो वे यही कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर वे कहां भटक जाते हैं। और उसे रसूल के इस कहने की ख़बर है कि ऐ मेरे रब, ये ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते। पस उनसे दगुजर करो (रुख फेर लो) और कहो कि सलाम है तुम्हें, अनकरीब उन्हें मालूम हो जाएगा। (86-89)

कियामत में पैगम्बर और दाजियाने हक जो शफअत करी वह हकीकतन शफअत नहीं है बल्कि शहादत है। यानी ऐसी बात की गवाही देना जिसे आदमी जाती तौर पर जानता हो। आखिरत में जब लोगों का मुकदमा पेश होगा तो सारे इल्म के वाक्जूद अल्लाह मजीद ताईद के तौर पर उन लोगों को खड़ा करेगा जो कौमों के हमअस्र (समकालीन) थे। उन्होंने उनके सामने हक का पैगाम पेश किया। फिर किसी ने माना और किसी ने नहीं माना। किसी ने हक का साथ दिया और कोई हक का मुखालिफ बनकर खड़ा हो गया। यही तजर्बा जो इन सालिहीन (नेक लोगों) पर बराहेरास्त गुजरा उसे वे खुदा के सामने पेश करेंगे। यह ऐसा ही होगा जैसे कि कोई गवाह अदालत में अपने मुशाहिदे की बुनियाद पर एक सच्चा बयान दे। उसके सिवा किसी को कियामत में यह इख्तियार हासिल न होगा कि वह किसी मुजरिम का शफेअ (सिफारिशी) बनकर खड़ा हो और उसके बारे में उस खुदाई फैसले को बदल दे जो अजरुफ वाक्या उसके बारे में होने वाला था। खुदा इससे बहुत बुलन्द है कि उसके हुज़ूर कोई शख्स ऐसा करने की कोशिश करे।

हक की दावत का काम सरासर नसीहत का काम है। आखिरी मरहले में जबकि दाजी

पर यह वाजेह हो जाए कि लोग किसी तरह मानने वाले नहीं हैं उस वक्त भी दाजी लोगों के लिए खुदा से दुआ करता है। लोगों की ईजारसानी (उत्पीड़न) पर सब्र करते हुए वह लोगों का खैरख्वाह बना रहता है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَخَرَجْنَا مِنْهَا بِالْغَيْبِ وَكَانَ صَبْرًا
حَمًّا وَالْكَتِيبِ الْمُبِينِ ۖ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ مُبَرَّكَةٍ إِنَّا كُنَّا مُنذِرِينَ ۖ فِيهَا
يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ۖ أَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ۖ رَحْمَةً مِّنْ رَبِّكَ إِنَّا هُوَ
السَّوْمِيُّ الْعَلِيمُ ۖ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ إِن كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ الْآوَّلِينَ ۖ

غزل
غزل
غزل

आयतें-59

सूरह-44. अद-दुख़ान

रुकूअ-3

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। हा० मीम०। कसम है इस वाजेह (सुस्पष्ट) किताब की। हमने इसे एक बरकत वाली रात में उतारा है, बेशक हम आगाह करने वाले थे। इस रात में हर हिक्मत (दत्वदर्शिता) वाला मामला तै किया जाता है, हमारे हुक्म से। बेशक हम थे भेजने वाले। तेरे रब की रहमत से, वही सुनने वाला है, जानने वाला है। आसमानों और जमीन का रब और जो कुछ उनके दर्मियान है, अगर तुम यकीन करने वाले हो। उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। वही जिंदा करता है और मारता है, तुम्हारा भी रब और तुम्हारे अगले बाप दादा का भी रब। (1-8)

कुरआन का किताबे मुबीन (सुस्पष्ट ग्रंथ) होना खुद इस बात की दलील है कि वह खुदा की किताब है। और जब वह खुदा की किताब है तो उसकी खबरें और पेशीनगोइयां भी कतई हैं, उनके बारे में शक की कोई गुंजाइश नहीं।

कुरआन के नुज़ूल का आगाज एक ख़ास रात को हुआ। यह रात अहम ख़ुदाई फैसलों के लिए मुक़र्रर है। कुरआन का नुज़ूल कोई सादा वाक्या न था। यह एक नई तारीख़ (इतिहास) के जुहूर का फैसला था। यही वजह है कि इसे फैसले की रात में नाज़िल किया गया। कुरआन अब्बलन हक का एलान था। वह शिर्क को बातिल और तौहीद को बरहक बताने के लिए आया। फिर वह इसी बुनियाद पर कौमों के दर्मियान फर्क करने वाला था। चुनांचे यह फर्क अमलन किया गया। यहां तक कि तारीख़ (इतिहास) में पहली बार शिर्क का दौर ख़त्म होकर तौहीद का दौर शुरू हो गया।

بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَّعْبُونَ ۖ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ۖ يَغْشَى
النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ۖ أَتَى لَهُمُ الدَّكْرَى
وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ۖ ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ۖ إِنَّا كَاشِفُو
الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ۖ يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى إِنَّا مُنتَقِمُونَ ۖ

غزل
غزل
غزل

बल्कि वे शक में पड़े हुए खेल रहे हैं। पस इंतज़ार करो उस दिन का जब आसमान एक खुले हुए धुँवें के साथ जाहिर होगा। वह लोगों को घेर लेगा। यह एक दर्दनाक अजाब है। ऐ हमारे रब, हम पर से अजाब टाल दे, हम ईमान लाते हैं। उनके लिए नसीहत कहां, और उनके पास रसूल आ चुका था खोल कर सुनाने वाला। फिर उन्होंने उससे पीठ फेरी और कहा कि यह तो एक सिखाया हुआ दीवाना है। हम कुछ वक्त के लिए अजाब को हटा दें, तुम फिर अपनी उसी हालत पर आ जाओगे। जिस दिन हम पकड़ेंगे बड़ी पकड़ उस दिन हम पूरा बदला लेंगे। (9-16)

कुरआन के ये मुखातबीन जिस मामले में शक में पड़े हुए थे वह खुदा के वुजूद का मामला न था। बल्कि खुदा की तौहीद का मामला था। वह रिवायती तौर पर खुदा को मानते हुए अमलन अपने अकाबिर (महापुरुषों) के दीन पर कायम थे।

कुरआन ने इन अकाबिर को बेबुनियाद साबित किया। मगर वे उसे मानने के लिए तैयार न हुए। एक तरफ वे अपने आपको बेदलील पा रहे थे। दूसरी तरफ अपने अकाबिर की अम्मत को अपने जेहन से निकालना भी उन्हें नामुमकिन नजर आता था। इस दोतरफ तकाजों ने उन्हें शक में मुक्तिला कर दिया। खुदा का दाजी उन्हें इससे कम नजर आया कि उसके कहने से वे अपने मफरूजा (मान्य) अकाबिर को छोड़ दें।

जो लोग नसीहत के जरिए हक को न मानें वे अपने आपको इस ख़तरे में डाल रहे हैं कि उन्हें अजाब के जरिए से उसे मानना पड़े। उस वक्त वे एतराफ करेंगे। मगर उस वक्त का एतराफ करना उनके कुछ काम न आएगा।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ۖ أَنْ أَذْأَبًا إِلَىٰ عِبَادِ اللَّهِ إِنَّ
لَكُمْ رَسُولًا أَمِينٌ ۖ وَ أَنْ لَا تَعْلَوْا عَلَى اللَّهِ إِنِّي آتِيكُمْ بِسُلْطَنِ مُّبِينٍ ۖ وَإِنِّي
عَذَابٌ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُبُون ۖ وَإِنْ لَمْ تُؤْمِنُوا إِلَىٰ فَاغْتَرِلُون ۖ

और उनसे पहले हमने फ़िरऔन की कैम को आजमाया। और उनके पास एक मुअज्ज (सम्माननीय) रसूल आया कि अल्लाह के बंदों को मेरे हवाले करो। मैं तुम्हारे लिए एक

मोतबर (विश्वसनीय) रसूल हूं। और यह कि अल्लाह के मुकाबले में सरकशी न करो। मैं तुम्हारे सामने एक वाजेह दलील पेश करता हूं। और मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह ले चुका हूं इस बात से कि तुम मुझे संगसार (पत्थरों से मार डालना) करो। और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो तुम मुझसे अलग रहो। (18-21)

हक की दावत (आह्वान) का उठना गोया खुदा की ताकत का दलील के रूप में जाहिर होना है। इस तरह खुदा ग़ैब (अप्रकट) में रहकर इंसान की सतह पर अपना एलान कराता है। इस बिना पर हक की दावत उसके मुखातबीन के लिए आजमाइश बन जाती है। हकीकत शनास लोग उसे पहचान कर उसके आगे झुक जाते हैं। और जो जाहिरबी हैं वे उसे ग़ैर अहम समझ कर उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

मगर हक की दावत को ठुकराने के बाद आदमी उसके अंजाम से बच नहीं सकता। पैगम्बर के जमाने में इस बुरे अंजाम का आगाज मौजूदा ज़िंदगी ही में हो जाता है, जैसा कि फिरऔने मिन्न का हुआ। और पैगम्बर के बाद ऐसे लोगों का अंजाम मौत के बाद सामने आएगा। मजीद यह कि पैगम्बर को खुदा की खुसूसी नुसरत (मदद) हासिल होती है। किसी के लिए मुमकिन नहीं होता कि वह उसे हलाक कर सके।

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِ مَثَلُهُمْ فِي هَٰؤُلَاءِ ذُرِّيَّتِهِمْ مُّكْرَمُونَ ۖ فَأَشْرَبَا دِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّتَّبِعُونَ ۖ
وَأَتْرَكُوا الْبَحْرَ هَوًى ۖ إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُونَ ۖ كَمْ تَرَكُوا مِنْ جُنْدٍ وَعِيُونَ ۖ وَ
زُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۖ وَنَعْمَةً كَانُوا فِيهَا فَكَيْفَيُن ۖ كَذٰلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۖ
فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ۖ

पस मूसा ने अपने रब को पुकारा कि ये लोग मुजरिम हैं। तो अब तुम मेरे बंदों को रात ही रात में लेकर चले जाओ, तुम्हारा पीछा किया जाएगा। और तुम दरिया को थमा हुआ छोड़ दो, उनका लश्कर डूबने वाला है। उन्होंने कितने ही बाग़ और चशमे (स्रोत) और खेतियां और उम्दा मकानात और आराम के सामान जिनमें वे खुश रहते थे सब छोड़ दिए। इसी तरह हुआ और हमने दूसरी कौम को उनका मालिक बना दिया। पस न उन पर आसमान रोया और न जमीन, और न उन्हें मोहलत दी गई। (22-29)

लम्बी मुद्दत तक हजरत मूसा की तब्दीगी कोशिशों के बाद कौम फिरऔन पर इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) हो गया। अब यह साबित हो गया कि वे मुजरिम हैं। उस वक्त हजरत मूसा को हुक्म हुआ कि वह अपनी कौम (बनी इस्राईल) के साथ मिन्न से निकल कर बाहर चले जाएं। हजरत मूसा रवाना हुए यहां तक वे दरिया के किनारे पहुंच गए। उस वक्त दरिया का पानी हट गया और आपके लिए पार होने का रास्ता निकल आया।

फिरऔन अपने लश्कर के साथ हजरत मूसा और बनी इस्राईल का पीछा करता हुआ आ रहा था। उसने जब दरिया में रास्ता बनते हुए देखा तो उसने समझा कि जिस तरह मूसा पार हो गए हैं वह भी उसी तरह पार हो सकता है। मगर दरिया का रास्ता सादा मअनों में सिर्फ रास्ता न था बल्कि वह खुदा का हुक्म था और खुदा का हुक्म उस वक्त मूसा के लिए नजात का था और फिरऔन के लिए हलाकत का। चुनांचे जब फिरऔन और उसका लश्कर दरिया में दाखिल हुए तो दोनों तरफ का पानी बराबर हो गया। फिरऔन अपने लश्कर के साथ उसमें मर्कबे गया।

दुनिया की नेमतें जिसे मिलती हैं अक्सर वह उन्हें अपनी जाती चीज समझ लेता है हालांकि किसी के लिए भी वे जाती नहीं हैं। खुदा जब चाहे किसी को दे और जब चाहे उससे छीन कर उसे दूसरे के हवाले कर दे।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِينَ ۖ مِنْ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ كَانَ عَالِيًا
مِّنَ الْمُرْفِقِينَ ۖ وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَٰمِينَ ۖ وَإِنِّي لَهُم مِّنَ الْآيَاتِ
مَآفِيهِ بَلَاوًا مُّبِينًا ۖ

और हमने बनी इस्राईल को ज़िल्लत वाले अज़ाब से नजात दी। यानी फिरऔन से, बेशक वह सरकश और हद से निकल जाने वालों में से था। और हमने उन्हें अपने इल्म से दुनिया वालों पर तरजीह (वरीयता) दी। और हमने उन्हें ऐसी निशानियां दीं जिनमें खुला हुआ इनाम था। (30-33)

दुनिया में एक कौम का गिरना और दूसरी कौम का उभरना इतिफाकी तौर पर नहीं होता। और न इसका मतलब यह है कि एक जालिम कौम अपनी जालिमाना कारवाइयों से दूसरी कौम पर ग़ालिब आ गई। यह तमामतर खुदा के फैसले के मुताबिक होता है। यह खुदा है जो अपने फैसले के तहत एक के लिए मग़लूबियत (पराभाव) का और दूसरे के लिए ग़लबे (वर्चस्व) का फैसला करता है। और वह जो कुछ फैसला करता है अपने इल्म की बिना पर करता है न कि अललटप तौर पर।

इस्मे इलाही के मुताबिक फैसला होने का मतलब दूसरे लफ्जों में यह है कि जो कुछ होता है इस्तहक्क (पात्रता) की बुनियाद पर होता है। खुदा अपने कुल्ली इल्म के तहत कौमों को देखता है। फिर वह जिसे बाइस्तहक्क पाता है उसके हक में ग़लबे का फैसला करता है और जिसे बेइस्तहक्क देखता है उसे मग़लूब (परास्त) व मअज़ूल (निलंबित) कर देता है।

अक्वाम (कौमों) की ज़िंदगी में ऐसी निशानियां जाहिर होती हैं जो ये बताती हैं कि उनके साथ जो फैसला हुआ है वह खुदा की तरफ से हुआ है। अगर आदमी की बसीरत (सूझबूझ) जिंदा हो तो वह उन निशानियों में उन असबाब की झलक पा लेगा जिसके तहत खुदा ने कौमों के हक में अपना फैसला सादिर फरमाया है।

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۖ إِنَّ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِينَ ۚ فَانْزِلْ بِآيَاتِنَا أَنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ أَمْ خَيْرٌ مِّمَّا قَوْمُ ثَبَجٍ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ أَهْلَكَهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِبِينَ ۚ

ये लोग कहते हैं, वस यही हमारा पहला मरना है और हम फिर उठाए नहीं जाएंगे। अगर तुम सच्चे हो तो ले आओ हमारे बाप दादा को। क्या ये बेहतर हैं या तुम्हारे बाप दादा को। हमने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक वे नाफरमान थे। (34-37)

हर दौर में इंसान की गुमराही की जड़ यह रही है कि उसने मौत के बाद जिंदगी में अपना यकीन खो दिया। कुछ लोगों की बेयकनी का इज्जत उनकी जवान से भी हो जाता है, और कुछ लोग जवान से नहीं कहते। मगर उनका दिल इस यकीन से खाली होता है कि उन्हें मर कर दुबारा उठना है और अल्लाह के सामने अपने आमाल का हिसाब देना है। इस गलतफहमी का नपिसयाती सबब अक्सर यह होता है कि दुनिया में अपनी मजबूत हैसियत को देखकर आदमी गुमान कर लेता है कि वह कभी बेहैसियत होने वाला नहीं। हालांकि पिछली कैमों के वाक्यात इस फ़रेब की तरदीद करने के लिए काफी हैं।

तुम्हारे अकदीम यमन के हूँ कबीले के बादशाहों का लकड़ था। 115 कल मसीह ईसा पूर्व से 300 कल मसीह तक उन्हें उरुज हासिल रहा। कदीम अरब में उनकी अजमत का बड़ा चर्चा था। कुरआन के इब्तिदाई मुखातबीन (कुरेश) के लिए कैम तुम्हारे का उभरना और गिरना एक मालूम और मशहूर बात थी। यह उनके लिए इस बात का सुबूत था कि इस दुनिया में मुजाजात (उत्थान-पतन) का कानून जारी है। इसी तरह तमाम लोगों के लिए कोई न कोई 'कैम तुम्हारे' है जो अपने अंजाम से उन्हें सबक दे रही है। मगर इंसान हमेशा यह करता है कि इस तरह के वाक्यात को आदत के मुताबिक होने वाला वाक्या समझ लेता है। इसका नतीजा यह होता है कि वह उनसे वह सबक नहीं ले पाता जो उनके अंदर खुदा ने छुपा रखा था।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لِلْعَيْنِ ۚ مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۚ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۚ يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلَىٰ عَنْ مَوْلَىٰ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۚ إِلَّا مَنْ رَحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۚ

और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है खेल के तौर पर नहीं बनाया। इन्हें हमने हक के साथ बनाया है लेकिन उनके अक्सर लोग नहीं जानते। बेशक फैसले का दिन उन सबका तैय्युदा वक्त है। जिस दिन कोई रिश्तेदार किसी

रिश्तेदार के काम नहीं आएगा और न उनकी कुछ हिमायत की जाएगी। हां मगर वह जिस पर अल्लाह रहम फरमाए। बेशक वह जबरदस्त है, रहमत वाला है। (38-42)

जमीन व आसमान के निजाम पर गौर किया जाए तो मालूम होता है कि उसकी तख्तीक निहायत बामअना अंदाज में हुई है। पूरी कायनात एक मक्सद के तहत अमल करती है। अगर ऐसा न हो तो इस दुनिया में इंसान के लिए शानदार तमदुन (सभ्यता) की तामीर नामुमकिन हो जाए।

आखिरत का अकीदा इसी कायनाती मअनवियत की तौसीअ (विस्तार) है। जो कायनात इतने बामअना (सार्थक) अंदाज में बनाई गई हो। नामुमकिन है कि वह सरासर बेमअना (निरर्थक) तौर पर ख़त्म हो जाए। कायनात की मौजूदा मअनवियत इस बात का करीना है कि वह एक बामअना और बामक्सद अंजाम पर ख़त्म होने वाली है। आखिरत इसी बामअना और बामक्सद अंजाम का दूसरा नाम है।

दुनिया का मौजूदा मरहला आजमाइश का मरहला है, इसलिए आज दुनिया की मअनवियत (सार्थकता) में हर आदमी अपना हिस्सा पा रहा है। मगर जब आखिरत आएगी तो उस वक्त दुनिया की मअनवियत में सिर्फ उन लोगों को हिस्सा मिलेगा जो खुदा के नजीक फ़िदाक़ा उसके मुस्तक़िल पाएँ।

إِنَّ شَجَرَتَ الزُّقُومِ ۖ طَعَامُ الْأَشْيَاءِ ۖ كَالْمُهْلِ ۖ يَغْلَىٰ فِي الْبُطُونِ ۖ كَغَلَىٰ طَعْمِ الْحَمِيمِ ۖ خَذُوهُ فَاعْتَوْهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۖ ثُمَّ صَبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ۖ ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۚ إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۚ

जक्कूम का दरख्त गुनाहगार का खाना होगा, तेल की तलछट जैसा, वह पेट में खोलेंगा जिस तरह गर्म पानी खोलता है। उसे पकड़ो और उसे घसीटते हुए जहन्नम के बीच तक ले जाओ। फिर उसके सर पर खोलते हुए पानी का अजाब उडेल दो। चख इसे, तू बड़ा मुअज्जज, मुकर्रम है। यह वही चीज है जिसमें तुम शक करते थे। (43-50)

यहां और दूसरे मकामात पर जहन्नम की जो तस्वीर कुरआन में पेश की गई है वह हर जिंदा शख्स को तड़पा देने के लिए काफी है। जो शख्स भी अपने मुस्तक़िल के बारे में संजीदा हो उसे ये अल्फाज हिलाकर रख देंगे। वह जहन्नमी रास्ते को छोड़कर जन्नती रास्ते की तरफ दौड़ पड़ेगा।

मगर जो लोग हकीकतों के बारे में संजीदा न हों, जो सिर्फ अपनी ख्वाहिशात को जानते हों और उनकी अपनी ख्वाहिशात के बाहर हकाइक (यथाथी) की जो दुनिया है उसके बारे में

वे और करने की जरूरत महसूस न करते हों, वे इस खबर को सुनेंगे और इसे नजरअंदाज कर देंगे। ऐसे लोगों के लिए ये अल्फाज ऐसे ही हैं जैसे पत्थर पर पानी डाला जाए और वह उसके अंदरून को तर किए बगैर बह जाए।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۖ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۖ يَكْبَسُونَ مِنْ سُندُسٍ
وَاسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ۚ كَذَلِكَ وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۚ يَدْعُونَ فِيهَا
بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۚ لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ وَ
وَقَهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۖ فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

वेशक खुदा से डरने वाले अमन की जगह में होंगे, बागों और चशमों (स्रोतों) में। बारीक रेशम और दबीज रेशम के लिबास पहने हुए आमने सामने बैठे होंगे। यह बात इसी तरह है, और हम उनसे ब्याह देंगे हूरें बड़ी-बड़ी आंखों वाली। वे उसमें तलब करेंगे हर किस्म के मेवे निहायत इत्मीनान से। वे वहां मौत को न चखेंगे मगर वह मौत जो पहले आ चुकी है और अल्लाह ने उन्हें जहन्नम के अजाब से बचा लिया। यह तैरे खब के फल से होगा, यही है बड़ी कामयाबी। (51-57)

इन अल्फाज में इंसान की पसंद की उस दुनिया की तस्वीर है जो उसके ख्वाबों में बसी हुई है। हर आदमी पसंद की इस दुनिया को पाना चाहता है। मगर मौजूदा दुनिया में वह उसे हासिल नहीं कर पाता। यह ख्वाबों की दुनिया मजिद इजाफे के साथ उसे जन्नत में हासिल हो जाएगी।

हर किस्म के डर से खाली यह दुनिया उन लोगों को मिलेगी जो दुनिया में अल्लाह से डरे थे। अबदी नेमतों से भरी हुई यह जिंदगी उनका हिस्सा होगी जिन्होंने इसकी ख़ातिर दुनिया की वक्ती नेमतों को कुर्बान किया था। आखिरत की इस अजीम कामयाबी में वे लोग दाखिल होंगे जिन्होंने उसे पाने के लिए अपनी दुनिया की कामयाबी को ख़तरे में डालने का हौसला किया था।

فَاتَسَاءَلُونَكَ عَنِ الْيَسْرِ ۖ يَسْأَلُونَكَ عَنْهُمْ يَزِيدُ كُرْهُنَ ۖ فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُونَ ۝

पस हमने इस किताब को तुम्हारी जवान में आसान बना दिया है ताकि लोग नसीहत हासिल करें। पस तुम भी इतिजार् करो, वे भी इतिजार् कर रहे हैं। (58-59)

कुरआन बिलाशुबह एक अजीम किताब है। इसी के साथ यह भी एक हकीकत है कि वह निहायत आसान किताब है। मगर इसका आसान होना नसीहत के एतबार से है। यानी जो शख्स इससे हक को जानना चाहे वह इसे अपने लिए निहायत आसान पाएगा। मगर जो

शख्स तलाशे हक के मामले में संजीदा न हो उसके लिए कुरआन में कोई आसानी नहीं।

मौजूदा दुनिया में आदमी के संजीदा होने की एक शर्त यह है कि वह 'इतिजार्' की नफिसयात न रखता हो। यानी हकीकत का दलील की सतह पर जाहिर होना ही उसके लिए काफी हो जाए कि वह उसे मान ले। जो शख्स दलील की सतह पर साबितशुदा हो जाने के बाद उसे न माने वह गोया कि इस बात का इतिजार् कर रहा है कि हकीकत खुले रूप में उसके सामने आ जाए। मगर जब हकीकत खुले रूप में सामने आती है तो वह मनवाने के लिए नहीं आती बल्कि इसलिए आती है कि एतराफ करने वालों की कद्रदानी करे और जिन्होंने इससे पहले एतराफ नहीं किया था उन्हें हमेशा के लिए अंधेपन के गार में डाल दे।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَتِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ ۚ
حَمْدٌ تَنزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝ إِنَّ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ
لِّلْمُؤْمِنِينَ ۖ وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُذُّ مِنْ دَابَّةٍ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۖ وَاختِلَافِ
النَّيْلِ وَالتَّهَارُ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ رِزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۖ تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ
فَمَا يَكُنْ حَدِيثٌ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَاتِهِ يُؤْمِنُونَ ۝

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। हा० मीम०। यह नाजिल की हुई किताब है। अल्लाह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली), हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाले की तरफ से। वेशक आसमानों और जमीन में निशानियां हैं ईमान वालों के लिए। और तुम्हारे बनाने में और उन हैवानात में जो उसने जमीन में फैला रखे हैं, निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो यकीन रखते हैं और रात और दिन के आने जाने में और उस रिस्क में जिसे अल्लाह ने आसमान से उतारा, फिर उससे जमीन को जिंदा कर दिया उसके मर जाने के बाद, और हवाओं की गर्दिश में भी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल रखते हैं। ये अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम हक के साथ तुम्हें सुना रहे हैं। फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद कौन सी बात है जिस पर वे ईमान लाएंगे। (1-6)

यह कहना कि कुरआन अजीज व हकीम खुदा की तरफ से उतरा है, गोया खुद अपनी तरफ से एक ऐसा कतई मेयार देना है जिस पर उसकी सदाकत को जांचा जा सके। खुदाएं अजीज की तरफ से उसके उतरने का मतलब यह है कि कोई इस किताब को जे (अवनत)

न कर सकेगा। कुरआन हर हाल में अपने मुखालिफीन पर ग़ालिब आकर रहेगा।

यह बात मक्की दौर में कही गई थी। उस वक़्त हालात सरासर कुरआन के खिलाफ थे। मगर बाद की तारीख़ (इतिहास) ने हैरतअंगेज तौर पर इसकी तस्दीक की। कुरआन की दावत को तारीख़ की सबसे बड़ी कामयाबी हासिल हुई।

इसी तरह खुदाए हक़ीम की तरफ से उतरने का तक्ज़ा यह है कि उसके मज़मीन (विषय) सबके सब अक़ल व दानिश पर मबनी हों। यह बात भी डेढ़ हजार साल से मुसलसल दुरुस्त साबित होती जा रही है। कुरआन दौरे साईंस से पहले उतरा। मगर दौरे साईंस में भी कुरआन की कोई बात अक़ल के खिलाफ साबित न हो सकी।

इसके अलावा जो कायनात इंसान के चारों तरफ फैली हुई है, उसकी तमाम चीज़ें कुरआन के पैग़म की तस्दीक (पुष्टि) बन गई हैं। ताहम यह तस्दीक सिर्फ़ उन लोगों के लिए तस्दीक बनेगी जिनके अंदर यकीन करने का ज़हन हो जो निशानियों की ज़बान में ज़ाहिर की जाने वाली बात को पाने की इस्तेदाद (सामर्थ्य) रखते हों।

وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۚ يَتَّبِعُهُ آيَاتُ اللَّهِ تَتْلَىٰ عَلَيْهِ نُورٌ يُجْزِي مُسْتَكْبِرًا كَانَ لَمْ
يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۖ وَإِذْ أَعْلَمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَ هَاهُنَا
أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۖ مِنْ ذُرِّيَّتِهِمْ جَحَدُوا وَلَا يُغْنِي عَنْهُمْ مَا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا
مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۖ هَذَا هُدًى وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ
رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ

ख़राबी है हर शख्स के लिए जो झूठा हो। जो खुदा की आयतों को सुनता है जबकि वे उसके सामने पढ़ी जाती हैं फिर वह तकबुर (घमंड) के साथ अड़ा रहता है, गोया उसने उन्हें सुना ही नहीं। पस तुम उसे एक दर्दनाक अजाब की खुशख़बरी दे दो। और जब वह हमारी आयतों में से किसी चीज़ की ख़बर पाता है तो वह उसे मज़ाक बना लेता है। ऐसे लोगों के लिए ज़िल्लत का अजाब है। उनके आगे जहन्नम है। और जो कुछ उन्होंने कमाया वह उनके कुछ काम अपने वाला नहीं। और न वे जिन्हें उन्होंने अल्लाह के सिवा कारसाज बनाया। और उनके लिए बड़ा अजाब है। यह हिदायत है, और जिन्होंने अपने रब की आयतों का इंकार किया उनके लिए सज़ा का दर्दनाक अजाब है। (7-11)

हक़ का एतराफ़ अक्सर हालात में अपनी बड़ाई को खोने के हममअना होता है। आदमी अपनी बड़ाई को खोना नहीं चाहता इसलिए वह हक़ का एतराफ़ भी नहीं करता। मगर हक़ के आगे न झुकना खुदा के आगे न झुकना है। ऐसे लोगों के लिए खुदा के यहां सख़्ततरीन अज़ाब है।

आदमी अगरचे तकबुर (घमंड) की बिना पर हक़ से एराज करता है ताहम अपने

रवैये के जवाज़ (औचित्य) के लिए वह नज़रियाती दलील पेश करता है। मगर इस दलील की हकीकत झूठे अल्फ़ज से ज्यादा नहीं होती। ऐसा आदमी किसी चीज़ को ग़लत मफ़हूम देकर उसे शोशा बनाता है। और इस शोशे की बुनियाद पर हक़ का और उसके दाओ का मज़ाक उड़ाने लगता है। ऐसे लोग सख़्ततरीन सज़ा के मुस्तहक़ हैं। क्योंकि वे बदअमली पर सरकशी का इज़ाफ़ा कर रहे हैं। इस सरकशी पर उन्हें जो चीज़ आमादा करती है वह उनकी दुनियावी हैसियत है। मगर किसी की दुनियावी हैसियत आख़िरत में उसके कुछ काम आने वाली नहीं।

اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلُكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ ۖ وَلِتُنْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۖ وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِمَّا إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए समुद्र को मुसख़्ख़र (वशीभूत) कर दिया ताकि उसके हुक्म से उसमें कश्तियां चले और ताकि तुम उसका फ़ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। और उसने आसमानों और ज़मीन की तमाम चीज़ों को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया, सबको अपनी तरफ से। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (12-13)

पानी बजाहिर डुबाने वाली चीज़ है। मगर अल्लाह तआला ने उसे ऐसे क़वानीन (नियमों) का पाबंद बनाया है कि अथाह समुद्रों के ऊपर बड़े-बड़े जहाज एक तरफ से दूसरी तरफ चलते हैं और बहिफ़ाजत अपनी मजिल पर पहुंच जाते हैं। यही मामला पूरी कायनात का है। कायनात इस तरह बनाई गई है कि वह पूरी तरह इंसान के ताबेअ (अधीन) है। इंसान जिस तरह चाहे उसे अपने फ़ायदे के लिए इस्तेमाल कर सकता है। मौजूदा दुनिया की यही खुसूसियत है जिसकी बिना पर यह मुमकिन हुआ है कि यहां इंसान अपने लिए शानदार तमददुन (सम्पत्ता) की तामीर कर सके।

कायनात का मौजूदा ढांचा ही उसका आख़िरी और वाहिद ढांचा नहीं है। वह दूसरे बेशुमार तरीकों से भी बन सकती थी। मगर मुख़्तलिफ़ इम्कानात में से वही एक इम्कान वाकया बना जो हमारे लिए मुफ़ीद था। यह एक निशानी है जिसमें ग़ौर करने वाले ग़ौर करें तो वे उसमें अपने लिए अजीमुशान (अनुपम महान) सबक पा सकते हैं।

قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۝ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ
تَرْجَعُونَ ۝

ईमान वालों से कहे कि उन लोगों से दरगुजर करें जो खुदा के दिनों की उम्मीद नहीं रखते, ताकि अल्लाह एक कौम को उसकी कमाई का बदला दे। जो शख्स नेक अमल करेगा तो उसका फायदा उसी के लिए है। और जिस शख्स ने बुरा किया तो उसका ववाल उसी पर पड़ेगा। फिर तुम अपने खब की तरफ लौटाए जाओगे। (14-15)

जिन लोगों को यह यकीन न हो कि उनके ऊपर खुदाई फैसले का दिन आने वाला है। वे जुम् करने में जरी होते हैं। वे हक के दाओ को हर मुमकिन तरीके से सताते हैं। उस वक्त दाओ के दिल में इंतिकाम का जच्चा पैदा होता है। मगर दाओ को चाहिए कि वह आखिर वक्त तक मदऊ से दरगुजर करे। वह अपनी तवज्जोह तमामतर दावत (आह्वान) पर लगाए रहे और लोगों की बदआमालियों पर गिरफ्त के मामले को खुदा के हवाले कर दे।

दाओ की कोशिश की कद्र व कीमत इस एतबार से मुतअय्यन नहीं होती कि उसने कितने लोगों को हक की तरफ मोड़ा। उसकी कोशिश की कद्र व कीमत खुदा के यहां इस एतबार से मुतअय्यन होती है कि वह खुद कितना ज्यादा हक पर कायम रहा। हक का दाओ होने के तमजों को खुद उसने कितना ज्यादा पूरा किया।

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۖ وَآتَيْنَاهُمْ يُونُسَ مِّنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَعِيًّا ۚ يَبْهَتُونَ أَن رَبِّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ فَيُنَادُوا أَن كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۖ ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَى شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۖ إِنَّهُمْ لَن يَغْنُؤَ عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۖ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ۚ هَذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْقَوْمِ يُوقِنُونَ

और हमने बनी इस्राईल को किताब और हुक्म और नुबुवत दी और उन्हें पाकीजा रखि अता किया और हमने उन्हें दुनिया वालों पर फजीलत (श्रेष्ठता) बख्शी। और हमने उन्हें दीन के बारे में खुली-खुली दलीलें दीं। फिर उन्होंने इस्तेलाफ (मतभेद) नहीं किया मगर इसके बाद कि उनके पास इल्म आ चुका था, आपस की जिद की वजह से। वेशक तेरा खब कियामत के दिन उनके दर्मियान फैसला कर देगा उन चीजों के बारे में जिनमें वे आपस में इस्तेलाफ (मतभेद) करते थे। फिर हमने तुम्हें दीन के एक वाजेह (स्पष्ट) तरीके पर कायम किया। पस तुम उसी पर चलो और उन लोगों की ख्वाहिशों की पैरवी

न करो जो इल्म नहीं रखते। ये लोग अल्लाह के मुकाबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकते। और जालिम लोग एक दूसरे के साथी हैं, और इन्से वालों का साथी अल्लाह है। ये लोगों को लिए बसीरत (सूझबूझ) की बातें हैं और हिदायत और रहमत उन लोगों के लिए जो यकीन करें। (16-20)

‘बनी इस्राईल को हमने दुनिया वालों पर फजीलत दी’ यह वही बात है जो उम्मत मुहम्मदी के जेल में इन अल्फाज में कही गई है कि ‘तुम खैरे उम्मत हो।’ किसी गिरोह को खुदा की किताब का हमिल (धारक) बनाना उसे दूसरी कौमों पर हिदायत का जिम्मेदार बनाना है। यही उसका अफजलुल उमम (श्रेष्ठ समुदाय) या खैरुल उमम (कल्याणकारी समुदाय) होना है।

उसूली तौर पर बनी इस्राईल की हैसियत भी इसी तरह आलमी थी जिस तरह उम्मत मुस्लिमा की हैसियत आलमी है। मगर बनी इस्राईल ने अपनी किताब में तहरीफात (परिवर्तन) करके हमेशा के लिए अपना यह इस्तहकाक (अधिकार) खो दिया।

दीन की अस्ल तालीमात में हमेशा वहदत (एकत्व) होती है। मगर उलमा के इजाफे उसमें इस्तेलाफ और तअदुदुद (मत-भिन्नता) पैदा कर देते हैं। हर आलिम अपने जैक के लिहाज से अलग-अलग इजाफे करता है। इसके बाद हर आलिम और उसके मुत्बिईन (अनुयायी) अपने इजाफों को सही और दूसरे के इजाफों को ग़लत साबित करने में मसरूफ हो जाते हैं। इस तरह दीनी फिरके बनना शुरू होते हैं और आखिरकार यहां तक नौबत पहुंचती है कि एक दीन कई दिनों में तक्सीम हो जाता है।

बनी इस्राईल ने जब नाज़िल हुए दीन को बदले हुए दीन की हैसियत दे दी उस वक्त हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरिए अल्लाह ने कुरआन उतारा। चूँकि आपके बाद कोई पैगम्बर आने वाला न था। इसलिए अल्लाह ने खुसूसी एहतिमाम के साथ कुरआन को महफूज (सुरक्षित) कर दिया। ताकि दुबारा यह सूत पैदा न हो कि अल्लाह का दीन इंसानी इजाफों में गुम होकर रह जाए।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَن نَّجْعَلَهُم كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً فَأُولَٰئِكَ لَبِئْسَ مَا يَحْكُمُونَ ۖ وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَالتَّجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ

क्या वे लोग जिन्होंने बरे कार्य किए हैं यह ख्याल करते हैं कि हम उन्हें उन लोगों की मानिंद कर देंगे जो ईमान लाए और नेक अमल किया, उन सबका जीना और मरना एकसां (समान) हो जाए। बहुत बुरा फैसला है जो वे कर रहे हैं। और अल्लाह ने आसमानों और जमीन को हिक्मत (तत्वदर्शिता) के साथ पैदा किया और ताकि हर शख्स को उसके किए का बदला दिया जाए और उन पर कोई जुल्म न होगा। (21-22)

जो शख्स यह ख्याल करे कि आदमी अच्छा बनकर रहे या बुरा बनकर, सब बराबर है। आखिरकार दोनों ही को मरकर मिट जाना है, वह निहायत ग़लत ख्याल अपने दिमाग में कायम करता है। ऐसा समझना उस शुऊरे अदुल (न्याय-भाव) के खिलाफ है जो हर आदमी की फितरत में पैदाइशी तौर पर मौजूद है। साथ ही, यह कायनात की उस मअनवियत का इंकार करना है जो उसके निजाम में कमाल दर्जे में पाई जाती है। हकीकत यह है कि इंसान की अंदरूनी फितरत और उसके बाहर की वसीअ कायनात दोनों इसे सरासर बातिल (असत्य) साबित करते हैं कि ज़िंदगी को एक ऐसी बेमकसद चीज समझ लिया जाए जिसका कोई अंजाम सामने आने वाला नहीं।

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ غَشَاةً فَمِنْ يَهْدِيهِ مِنْ بَعْدِ اللَّهِ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿٢٣﴾

क्या तुमने उस शख्स को देखा जिसने अपनी ख्वाहिश (इच्छा) को अपना माबूद (पूज्य) बना रखा है और अल्लाह ने उसके इल्म के बावजूद उसे गुमराही में डाल दिया और उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आंख पर पर्दा डाल दिया। पस ऐसे शख्स को कौन हिदायत दे सकता है, इसके बाद कि अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया हो, क्या तुम ध्यान नहीं करते। (23)

ख्वाहिश को अपना माबूद बनाने का मतलब ख्वाहिश को अपनी ज़िंदगी में सबसे बरतार मकाम देना है। जो शख्स अपनी ख्वाहिश के तहत सोचे और अपनी ख्वाहिश के तहत अमल करे वह गोया अपनी ख्वाहिश ही को अपना माबूद बनाए हुए है।

आदमी की अकल सही और ग़लत को पहचानने की कामिल सलाहियत रखती है। मगर जो शख्स अपनी अकल को अपनी ख्वाहिश का ताबेअ (अधीन) बना ले उसका हाल यह हो जाता है कि उसके सामने हक के दलाइल आते हैं मगर वह उनके वजन को महसूस नहीं कर पाता। वह हर बात के जवाब में एक झूठी तौजीह पेश करके उसे रद्द कर देता है। आदमी की यह रविश आखिरकार उसकी अकली कुव्वतों को मस्ख़ कर देती है। उसके कान अल्फ़ाज सुनते हैं मगर उनके मअना तक उनकी पहुंच नहीं होती। उसकी आंख हकीकत को देखती है मगर वह उससे सबक नहीं ले पाती। उसके दिल तक एक बात पहुंचती है मगर वह उसके दिल को तड़पाने वाली नहीं बनती।

अकली कुव्वतों को खुदा ने हिदायत के दाखिले का दरवाजा बनाया है। मगर जो शख्स अपनी ख्वाहिशपरस्ती में इन दरवाजों को बंद कर ले उसके अंदर हिदायत दाखिल होगी तो किस रास्ते से दाखिल होगी।

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا مَمُوتٌ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ وَمَا لَهُم

بِذَلِكَ مِنْ عِلْمِ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٢٤﴾ وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٌ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا اتُّوَابَا بَيْنَانَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ مُمْمِتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

और वे कहते हैं कि हमारी इस दुनिया की ज़िंदगी के सिवा कोई और ज़िंदगी नहीं। हम मरते हैं और जीते हैं और हमें सिर्फ जमाने की गर्दिश (कालचक्र) हलाक करती है। और उन्हें इस बारे में कोई इल्म नहीं। वे महज गुमान की बिना पर ऐसा कहते हैं। और जब उन्हें हमारी खुली-खुली आयतें सुनाई जाती हैं तो उनके पास कोई हुज्जत इसके सिवा नहीं होती कि हमारे बाप दादा को ज़िंदा करके लाओ अगर तुम सच्चे हो। कहो कि अल्लाह ही तुम्हें ज़िंदा करता है फिर वह तुम्हें मारता है फिर वह कियामत के दिन तुम्हें जमा करेगा, इसमें कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (24-26)

‘हमें जमाने की गर्दिश हलाक करती है’ यह आम लोगों का कौल नहीं। इस तरह की बातें हमेशा मख़सूअ अफ़राद करते हैं। ये वे अफ़राद हैं जो अपनी ज़हानत की वजह से अक्सर समाज के फ़िक्की (वैचारिक) नुमाइंदे की हैसियत हासिल कर लेते हैं। ताहम ये बातें वे महज कयास (अनुमान) की बुनियाद पर कहते हैं। वे किसी हकीकी इल्म की बुनियाद पर ऐसा नहीं कहते। इसके मुक़बले में पैराम्बर जो बात कहता है उसकी बुनियाद ठेस हकीकत पर कायम है।

हम रोजाना देखते हैं कि एक शख्स नहीं था। फिर वह पैदा होकर मौजूद हो गया। इसके बाद वह दुबारा मर जाता है। गोया यहां हर आदमी को मौत के बाद ज़िंदगी मिलती है और ज़िंदगी के बाद वह दुबारा मर जाता है। यह इस बात का करीना (संकेत) है कि जिस तरह पहली बार मौत के बाद ज़िंदगी हुई, इसी तरह दूसरी बार भी मौत के बाद ज़िंदगी होगी।

इससे वाजेह तौर पर ज़िंदगी बाद मौत का मुमकिन होना साबित होता है। इसके बाद यह मुतालबा करना ग़लत है कि जो लोग कल दुबारा पैदा होने वाले हैं उन्हें आज पैदा करके दिखाओ। क्योंकि मौजूदा दुनिया इस्तेहान के लिए है। और अगर मौजूदा दुनिया में अगली दुनिया का हाल दिखा दिया जाए तो इस्तेहान की मस्तेहत बाकी नहीं रह सकती।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُومِدِ يَخْسَرُ الْمُبْطِلُونَ ﴿٢٧﴾ وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٍ جَائِيَةٍ ۖ كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَىٰ إِلَىٰ كِتَابِهَا الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾ هَذَا كِتَابُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّا كُنَّا نَسْتَنسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٩﴾

और अल्लाह ही की बादशाही है आसमानों में और जमीन में और जिस दिन कियामत

कायम होगी उस दिन अहले बातिल (असत्यवादी) खसारे (घाटे) में पड़ जाएंगे। और तुम देखोगे कि हर गिरोह घुटनों के बल गिर पड़ेगा। हर गिरोह अपने नामए आमाल (कर्म-फल) की तरफ बुलाया जाएगा। आज तुम्हें उस अमल का बदला दिया जाएगा जो तुम कर रहे थे। यह हमारा दफ्तर है जो तुम्हारे ऊपर ठीक-ठीक गवाही दे रहा है। हम लिखवाते जा रहे थे जो कुछ तुम करते थे। (27-29)

जो लोग अल्लाह की बुनियाद पर दुनिया में खड़े हों वे हक की बुनियाद पर खड़े होते हैं। और जो लोग इसके सिवा किसी और बुनियाद पर खड़े हों वे बातिल की बुनियाद पर खड़े हुए हैं। ऐसे तमाम लोग आखिरत में बेजमीन होकर रह जाएंगे। क्योंकि उन्होंने जिस चीज को बुनियाद समझ रखा था वह कोई बुनियाद ही न थी। वह महज धोखा था जो हकीकते हाल के खुलते ही खत्म हो गया।

आमाल को लिखवाने से मुराद मअरुफ (प्रचलित) मअनों में कलम से लिखवाना नहीं है। बल्कि आमाल को रिकॉर्ड कराना है। इंसान की नियत, उसका कौल और उसका अमल सब निहायत सेहत के साथ खुदाई इतिजाम के तहत रिकॉर्ड हो रहा है। आखिरत में इंसान के साथ जो मामला किया जाएगा वह ऐन उस रिकॉर्ड के मुताबिक होगा। यह रिकॉर्ड इतना ज्यादा हकीकी होगा कि किसी के लिए मुमकिन न होगा कि उससे इंकार कर सके।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ
الْقَوْلُ الْمُبِينُ ۝ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَفَرُوا بِآيَاتِنَا ۖ فَاسْتَكْبَرُوا ۖ فَاسْتَكْبَرُوا
وَكُنْتُمْ قَوْمًا تُجْرِمُونَ ۝ وَإِذْ قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيهَا
قُلْتُمْ مَا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ ۖ إِنَّ نَحْنُ إِلَّا ظُلُمٌ ۖ وَمَا نَحْنُ بِمُتَّقِينَ ۝

पस जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए तो उनका रब उन्हें अपनी रहमत में दाखिल करेगा। यही खुली कामयाबी है। और जिन्होंने इंकार किया, क्या तुम्हें मेरी आयतें पढ़कर सुनाई नहीं जाती थीं। पस तुमने तकबुर (घमंड) किया और तुम मुजरिम लोग थे। और जब कहा जाता था कि अल्लाह का वादा हक है और कियामत में कोई शक नहीं तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते कि कियामत क्या है, हम तो बस एक गुमान सा रखते हैं, और हम इस पर यकीन करने वाले नहीं। (30-32)

तकबुर (घमंड) से मुराद खुदा के मुकाबले में तकबुर नहीं है बल्कि खुदा के दाजी के मुकाबले में तकबुर है। खुदा की बात को मानना मौजूदा दुनिया में अमलन खुदा के दाजी की बात को मानने के हममअना होता है। अब जो लोग तकबुर में मुविला हों वे उसे अपने मर्तवे से कमतर समझते हैं कि वे अपने जैसे एक इंसान की बात मान लें। चुनांचे वे उसे नजरअंदाज

कर देते हैं। इसके बरअक्स जो लोग तकबुर की नफिसयात से खाली हों वे फौरन उसके आगे झुक जाते हैं। पहले गिरोह के लिए खुदा का ग़जब है और दूसरे गिरोह के लिए खुदा की रहमत।

एक इंसान जब हक का इंकार करता है तो अपने इंकार को जाइज साबित करने के लिए वह तरह-तरह की बातें करता है। वह कभी दाजी को नाकाबिले एतमाद साबित करता है। कभी दाजी के पैगाम में शक व शुबह का पहलू निकालता है। मगर कियामत के दिन खुल जाएगा कि ये सब मुजरिमाना ज़ेहन से निकली हुई बातें थीं। न कि हकपरस्ताना ज़ेहन से निकली हुई बातें।

وَبَدَّ اللَّهُ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝ وَقِيلَ الْيَوْمَ
نَنْسُكُم مِّمَّا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۖ وَمَا وَكُمُ الثَّارُ ۖ وَمَا لَكُم مِّنْ نُصِيرِينَ ۝
ذَٰلِكُمْ بِأَنكُم تَأْخُذُ تَمْ أَتِ اللَّهُ هُزُؤًا ۖ وَغَرَّكُمْ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرِجُونَ
مِنْهَا ۖ وَلَا لَهُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝

और उन पर उनके आमाल की बुराइयां खुल जाएंगी और वह चीज उन्हें घेर लेगी जिसका वे मजाक उड़ाते थे। और कहा जाएगा कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जिस तरह तुमने अपने इस दिन के आने को भुलाए रखा। और तुम्हारा ठिकाना आग है और कोई तुम्हारा मददगार नहीं। यह इस वजह से कि तुमने अल्लाह की आयतों का मजाक उड़ाया। और दुनिया की ज़िंदगी ने तुम्हें धोखे में रखा। पस आज न वे उससे निकाले जाएंगे और न उनका उज कुबूल किया जाएगा। (33-35)

मौजूदा दुनिया में आदमी जब बुराई करता है तो उसके बुरे नताइज फौरन उसके सामने नहीं आते। यह चीज उसे दिलेर बना देती है। उसे जब उसकी बदअमली से डराया जाता है तो वह संजीदगी के साथ उसे सुनने के लिए तैयार नहीं होता। मगर आखिरत में उसकी बुराइयों के नताइज उसकी आंखों के सामने आ जाएंगे। वह अपनी बदआमालियों में पूरी तरह घिर चुका होगा। उस वक्त वह उस हक का इकरार कर लेगा जिसे दुनिया में उसने इतना बेक़िमत समझा था कि वह उसका मजाक उड़ा रहा।

आखिरत में इंसान उस हक का इकरार करेगा जिसे वह दुनिया में झुठलाता रहा। मगर वहां उसे कुबूल नहीं किया जाएगा। क्योंकि हक का इकरार ग़ैब (अप्रकट) की सतह पर कीमत रखता है न कि शुहद (प्रकट) की सतह पर।

فَلِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ وَلَهُ الْكِبَرُ بِمَا فِي
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

पस सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जो ख है आसमानों का और ख है जमीन का, ख है तमाम आलम का। और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और जमीन में। और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (36-37)

कायनात बेपनाह हद तक अजीम (महान) है, इसलिए उसका खालिक व मालिक भी वही हो सकता है जो बेपनाह हद तक अजीम हो। और यह अजीम हस्ती एक खुदा के सिवा कोई और नहीं हो सकती। कोई आदमी संजीदगी के साथ यह जुरअत नहीं कर सकता कि वह एक खुदा के सिवा किसी और को कायनात का खालिक व मालिक करार दे। फिर जब कायनात का खालिक व मालिक सिर्फ एक हस्ती है तो लाजिम है कि सारी तारीफ भी उसी की हो। इंसान अपनी सारी तक्जोह उसी की तरफ लगाए, वह उसी को अपना सब कुछ बना ले।

मौजूदा दुनिया में इंसान का वही रवैया सही रवैया है जो कायनात की अज्मत व हिक्मत के मुताबिक हो। जिस रविये में कायनात की अज्मत व हिक्मत से मुताबिक न पाई जाए वह बातिल है। ऐसा रवैया इंसान को कामयाबी तक पहुंचाने वाला नहीं।

سُورَةُ الْاِنْحِاقِ وَكِتَابُهُمْ وَهُمْ كَمُتْرُونَ اِيْتَرَارُكُمْ كُتُوبًا كِتَابًا
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
حَمْدٌ تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِیْزِ الْحَكِیْمِ ۝ مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا اِلَّا بِالْحَقِّ وَاجَلٍ مُّسَمًّى ۝ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْا عَمَّا
اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝

आयतें-35

सूह-46 अल-अह्मक

रुकूअ-4

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। हा० मीम०। यह किताब अल्लाह जबरदस्त हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाले की तरफ से उतारी गई है। हमने आसमानों और जमीन को और उनके दर्मियान की चीजों को नहीं पैदा किया मगर हक के साथ और मुअय्यन (निश्चित) मुददत के लिए। और जो लोग मुंकिर हैं वे उससे बेरुखी करते हैं जिससे उन्हें डराया गया है। (1-3)

कायनात का मुतालआ बताता है कि इसमें हर तरफ हिक्मत और मअनवियत है। फिर एक ऐसा कारखाना जो अपने आगाज में बामअना हो वह अपने इख़िताम (अंत) में बेमअना कैसे हो जाएगा।

हक अपनी जात में निहायत मोहकम (बहु) चीज है। वह कायनात की सबसे बड़ी ताकत

है। इसके बावजूद क्यों ऐसा है कि जब लोगों के सामने हक पेश किया जाता है तो वे उसका इंकार कर देते हैं। इसकी वजह यह है कि मौजूदा दुनिया में लोगों को हक की सिर्फ ख़बर दी जा रही है। आखिरत में यह होगा कि हक वाक्या बनकर लोगों के ऊपर टूट पड़ेगा। उस वक़्त वही लोग हक के सामने ढह पड़ेंगे जो इससे पहले हक को ग़ैर अहम समझ कर उसे नज़अंज़ कर रहे थे।

قُلْ اَرَاَيْتُمْ تَاْتَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اُرُوْنِیْ مَا ذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَوْ لَهُمْ
شِرْكٌ فِی السَّمٰوٰتِ اِیْتُوْنِیْ بِکِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَا اَوْ اَثَرٌ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ کُنْتُمْ
صٰدِقِیْنَ ۝ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ یَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَا یَسْتَجِیْبُ لَهُ
اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَاۤئِهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝

कहो कि तुमने ग़ौर भी किया उन चीजों पर जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने जमीन में क्या बनाया है। या उनका आसमान में कुछ साझा है। मेरे पास इससे पहले की कोई किताब ले आओ या कोई इल्म जो चला आता हो, अगर तुम सच्चे हो। और उस शख्स से ज्यादा गुमराह कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारे जो कियामत तक उसका जवाब नहीं दे सकते, और उन्हें उनके पुकारने की भी ख़बर नहीं। और जब लोग इकट्ठा किए जाएंगे तो वे उनके दुश्मन होंगे और उनकी इबादत के मुंकिर बन जाएंगे। (4-6)

मुफ़स्सिर इब्ने कसीर ने यहाँ 'किताब' से मुराद उद्धृत दलील (आसमानी किताब की दलील) और 'असारतिम मिन इल्म' से मुराद अक्ली (बौद्धिक) दलील ली है।

इल्म हक्कीकत सिर्फ दो है। एक इल्हामी इल्म (Revealed knowledge) यानी वह इल्म जो पैगम्बरों के जरिए से इंसानों तक पहुंचा। दूसरा साबितशुदा इल्म (Established knowledge) यानी वह इल्म जिसका इल्म होना इंसानी तहक्कीकत और तजर्बात से साबित हो गया हो। इन दोनों में से कोई भी इल्म यह नहीं बताता कि इस कायनात में एक खुदा के सिवा कोई और हस्ती है जो खुदाई के लायक है। और जब इल्म के दो जरियों में से कोई जरिया शिर्क की गवाही न दे तो मुश्किलाना अक्रीदा इंसान के लिए क्योंकिर दुरुस्त हो सकता है। जो शख्स खुदा को छोड़कर किसी और चीज और अपना सहारा बनाए वह सहारा आखिरत के दिन उससे बरा-त (विरक्ति) करेगा न कि वह उसका मददगार बने।

وَإِذْ أَحْشَرَ النَّاسَ کَانُوا لَهُمْ اَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ کٰفِرِیْنَ ۝ وَإِذْ اُنْتَلٰی
عَلَيْهِمْ اِیْتِنَابِنٰتٍ قَالَ الَّذِیْنَ کَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۝ هٰذَا سِحْرٌ

مُبِينٌ ۖ أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۚ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيضُونَ فِيهِ ۚ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

और जब हमारी खुली-खुली आयतें उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो मुंकिर लोग इस हक की बाबत, जबकि वह उनके पास पहुंचता है, कहते हैं कि यह खुला हुआ जादू है। क्या ये लोग कहते हैं कि उसने इसे अपनी तरफ से बना लिया है, कहे कि अगर मैंने इसे अपनी तरफ से बनाया है तो तुम लोग मुझे जरा भी अल्लाह से बचा नहीं सकते। जो बातें तुम बनाते हो अल्लाह उन्हें खूब जानता है। वह मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाही के लिए काफी है। और वह बख़्शने वाला, रहमत वाला है। (7-8)

कदीम अरब में कुरआन के मुखातबीन कुरआन के पैगाम को यह कहकर रद्द कर देते थे कि यह हमारे अकाविर (महापुरुषों) के दीन के खिलाफ है। और चूँकि लोगों के ऊपर अकाविर की अज्मत बैठी हुई थी वे उसे मान कर कुरआन के पैगाम से मुतवहिहश (भयभीत) हो जाते थे। मगर कुरआन का एक और पहलू था और वह उसका अदबी एजाज़ (साहित्यिक विलक्षणता) था। हर अरबीदां महसूस कर रहा था कि यह एक ग़ैर मामूली कलाम है। इस दूसरे पहलू से कुरआन की अहमियत को घटाने के लिए उन्होंने कह दिया कि यह 'सहर' है यानी यह जादू बयानी का करिश्मा है न कि हकीकत बयानी का कमाल।

यह सही है कि कुछ इंसानों के कलाम में ग़ैर मामूली अदबियत (साहित्यिकता) होती है मगर इंसानी कलाम की अदबियत की एक हद है। कुरआन का अदबी एजाज़ इस हद से बहुत आगे है। कुरआन की अदबी अज्मत इससे ज्यादा है कि उसे इंसानी दिमाग का करिश्मा कहा जा सके।

जब फ़रीक सानी (सामने वाला पक्ष) ज़िद पर उतर आए तो उस वक़्त एक संजीदा इंसान यह करता है कि वह यह कहकर चुप हो जाता है कि मेरा और तुम्हारा मामला अल्लाह के हवाले है। ताहम यह पसपाई नहीं बल्कि एक इक्दामी तदबीर है। आदमी जब एक ज़िद्वी के सामने चुप हो जाए तो वह अपने आपको उसके सामने से हटाकर खुद उसे उसके जमीर (अन्तरात्मा) के सामने खड़ा कर देता है ताकि उसके अंदर एहसास का कोई दर्जा हो तो वह बेदार हो जाए।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ إِنَّا فَعَلْنَا مَا يَوْحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَ مَا كُفَرْتُمْ بِهِ ۖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ ۖ قَامَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

कहो कि मैं कोई अनोखा रसूल नहीं हूँ। और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या। मैं तो सिर्फ उसी का इतिबाअ करता हूँ जो मेरी तरफ 'वही' (प्रकाशना) के जरिए आता है और मैं तो सिर्फ एक खुला हुआ आगाह करने वाला हूँ। कहो, क्या तुमने कभी सोचा कि अगर यह कुरआन अल्लाह की जानिब से हो और तुमने इसे नहीं माना, और बनी इस्राईल में से एक गवाह ने इस जैसी किताब पर गवाही दी है। पस वह ईमान लाया और तुमने तकबुर (घमंड) किया। बेशक अल्लाह जालिमों को हिदायत नहीं देता। (9-10)

मुश्किनी मक्का की नजर में यह उलूमे दीन के हामिल (धारक) थे। उन्हें वे पैगम्बरों वाली कौम समझते थे। त्तिजारती सफ़रों में मुश्किनी और यहूद की बाहमी मुलाकातें भी होती रहती थीं।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मक्का में एक निजाई (विवादित) शरख़ियत बने हुए थे तो मक्का के कुछ मुश्किनी ने कुछ यहूदियों से आपके बारे में पूछा। उस दौरान किसी यहूदी आलिम ने उन्हें बताया कि हमारी किताबों के मुताबिक एक पैगम्बर इस इलाके में आने वाले हैं। हो सकता है कि यह वही पैगम्बर हों। उस यहूदी शरख़ ने विलवास्ता (परोक्ष) अंदाज में आपकी नुबुव्वत का इकरार किया।

अब सूरतेहाल यह थी कि तारीख़ से साबित हो रहा था कि खुदा के पैगम्बर खुदा की किताब लेकर आते हैं। कदीम आसमानी किताबों में यह लिखा हुआ था कि बनू इस्राईल में एक ऐसा पैगम्बर आने वाला है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कलाम और आपकी ज़िदगी में वे तमाम अलामतें वाजेह तौर पर पाई जा रही थीं जो पैगम्बरों में होती हैं। इन अलामात और कराइन की मौजूदगी में जो लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैगम्बरी का इंकार कर रहे थे वह किसी माकूलियत की वजह से नहीं कर रहे थे बल्कि महज इसलिए कर रहे थे कि एक शरख़ जिसे अब तक वे एक मामूली आदमी समझते थे उसे खुदा का पैगम्बर मानने में उनकी बड़ाई टूट जाएगी।

जिन लोगों का हाल यह हो कि उनके सामने हक आए तो वे मुतकब्बिराना नपिसयात (घमंड-भाव) का शिकार हो जाएं। ऐसे लोगों का जेहन हमेशा उन्हें ग़लत रुख़ पर ले जाता है। वह सही स्मत् में उनकी रहनुमाई नहीं करता।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَكُنْ لَهُ دَلِيلٌ فَسَيَقُولُونَ هَذَا إِلْفٌ قَدِيمٌ ۝

और इंकार करने वाले ईमान लाने वालों के बारे में कहते हैं कि अगर यह कोई अच्छी चीज होती तो वे इस पर हमसे पहले न दौड़ते। और चूँकि उन्होंने इससे हिदायत नहीं पाई तो अब वे कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है। (11)

इस्तिदा में जो लोग अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथी बने उनमें कई ऐसे लोग थे जो जर्हफ (बुद्धे) और गुलाम तबके से तअल्लुक रखते थे। मसलन बिलाल, अम्मार, सुहैब, खब्बाब वगैरह। इसी के साथ आप पर ईमान लाने वालों में वे लोग भी थे जो अरब के मुअज्ज खनदानों से तअल्लुक रखते थे। मसलन अबूक्र बिन अबी वहाफ, उस्मान बिन अफफन, अली इब्ने अबी तालिब वगैरह। मगर आपके मुख़लिफ़िन सिर्फ पहली क्रिस्म के लोगों का जिक्र करते थे, वे दूसरी क्रिस्म के लोगों का जिक्र नहीं करते थे। इसकी वजह यह है कि आदमी को जब किसी से ज़िद हो जाती है तो वह उसके बारे में यकरुखा हो जाता है। वह उसके अच्छे पहलुओं को नज़रअंदाज़ कर देता है और सिर्फ उन्हीं पहलुओं का जिक्र करता है जिसके ज़रिए उसे उसकी तहकीर (तुच्छ समझने) का मौक़ा मिलता हो।

इसी तरह यह एक वाक़या था कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत वही थी जो पिछले तमाम पैग़म्बरों की दावत थी। आप एक अबदी सदाकत (सच्चाई) को लेकर आए थे। इस वाक़ये को आपके मख़लिफ़िन इन लफ़्ज़ों में भी बयान कर सकते थे कि 'यह एक बहुत पुराना सच है' मगर उन्होंने यह कह दिया कि 'यह एक बहुत पुराना झूठ है' नाइंसाफी की यह क्रिस्म कदीम ज़माने के इंसानों में भी पाई जाती थी और आज भी वह पूरी तरह लोगों के अंदर पाई जा रही है।

وَمِنْ قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۖ وَهَذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانِكَ عَرَبِيًّا
لِيُنْذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ وَبَشَىٰ لِّلْمُحْسِنِينَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ
اسْتَفْأَمُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ خَالِدِينَ
فِيهَا ۖ جَزَاءً لِّمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

और इससे पहले मूसा की किताब थी रहनुमा और रहमत। और यह एक किताब है जो उसे सच्चा करती है, अरबी जवान में, ताकि उन लोगों को डराए जिन्होंने जुम् किया। और वह खुशख़बरी है नेक लोगों को लिए। बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर वे उस पर जमे रहे तो उन लोगों पर कोई ख़ौफ़ नहीं और न वे ग़मगीन होंगे। यही लोग जन्नत वाले हैं जो उसमें हमेशा रहेंगे, उन आमाल के बदले जो वे दुनिया में करते थे। (12-14)

क़ुरआन की सदाकत की एक दलील यह है कि पिछली आसमानी किताबें इसकी पेशीनगोई (भविष्यवाणी) करती हैं। यह पेशीनगोइयां आज भी इंजील और तौरात में मौजूद हैं। इस तरह क़ुरआन अपनी साबिक (पूर्ववर्ती) आसमानी पेशीनगोइयों का मिस्दाक (पुष्टि रूप) बनकर आया है। वह उनकी पेशगी इत्तिलाज़ (पूर्व सूचना) को सच कर दिखाता है। यह

एक वाज़ेह करीना है जो साबित करता है कि क़ुरआन वाक़ेयतन एक ख़ुदाई किताब है। वर्ना सैंकड़ों और हजारों साल पहले उसकी पेशगी ख़बर देना कैसा मुमकिन होता।

'क़ालू रबुनल्लाहु सुम्मस तक़मू' के सिलसिले में हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने कहा है कि इससे मुराद उसके फ़राइज की अदायगी पर क़ायम रहना है।

ईमान एक मुक़द्दस अहद है। जिंदगी में बार-बार ऐसे मौक़े आते हैं कि एक रविश आदमी के अहदे ईमान के मुताबिक होती है और एक रविश उसके अहदे ईमान के ग़ैर मुताबिक। ऐसे मौक़े पर जिस शख्स ने अपने अहदे ईमान के मुताबिक अमल किया उसने इस्तिक़ामत (दृढ़ता) दिखाई और जो शख्स अपने अहदे ईमान के मुताबिक अमल न कर सका वह इस्तिक़ामत दिखाने में नाकाम रहा।

इस्तिक़ामत का सुबूत न देने वाले लोग जालिम लोग हैं। उनका दावए ईमान उन्हें कुछ फायदा न देगा और जिन लोगों ने इस्तिक़ामत का सुबूत दिया वही वे लोग हैं जो जन्नत के अबदी बासों में बसाए जाएंगे।

وَوَهَبْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۚ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا وَ
حَمَلُهُ وَفِصْلُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۚ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً
قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ
وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۚ إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي
مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ
عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ ۖ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعَدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

और हमने इंसान को हुक्म दिया कि वह अपने मां-बाप के साथ भलाई करे। उसकी मां ने तकलीफ़ के साथ उसे पेट में रखा। और तकलीफ़ के साथ उसे जना। और उसका दूध छुड़ाना तीस महीने में हुआ। यहां तक कि जब वह अपनी पुख्तगी को पहुंचा और चालीस वर्ष को पहुंच गया तो वह कहने लगा कि ऐ मेरे रब, मुझे तौफीक़ दे कि मैं तेरे एहसान का शुक्र करूं जो तूने मुझ पर किया और मेरे मां-बाप पर किया और यह कि मैं वह नेक अमल करूं जिससे तू राजी हो। और मेरी औलाद में भी मुझे नेक औलाद दे। मैंने तेरी तरफ़ रुजूअ किया और मैं फ़रमांबरदारों में से हूं। ये लोग हैं जिनके अच्छे आमाल को हम कुबूल करेंगे और उनकी बुराइयों से दरगुज़र करेंगे, वे अहले जन्नत में से होंगे, सच्चा वादा जो उनसे किया जाता था। (15-16)

इंसानी नस्ल का तरीका यह है कि आदमी एक मां और एक बाप के जरिए वजूद में आता है जो उसकी परवरिश करके उसे बड़ा बनाते हैं। यह गोया इंसान की तर्बियत का फिती निजम है। यह इसलिए है कि इसके जरिए से इंसान के अंदर हुक्म व फाइज का शुऊर पैदा हो। उसके अंदर यह जज्बा पैदा हो कि उसे अपने मोहसिन का एहसान मानना है और उसका हक अदा करना है। यह जज्बा बयकवक्त इंसान को दूसरे इंसानों के हुक्म अदा करने की तालीम देता है। और इसी के साथ खालिक व मालिक खुदा के अजीमतर हुक्म को अदा करने की तालीम भी।

जो लोग फितरत के मुअल्लिम (शिक्षक) से सबक लें। जो लोग अपने शुऊर को इस तरह बेदार करें कि वे अपने वालिदेन से लेकर अपने खुदा तक हर एक के हुक्म को पहचानें और उन्हें ठीक-ठीक अदा करें, वही वे लोग हैं जो आखिरत में खुदा की अबदी रहमतों के मुत्सिहिक वार दिए जाएंगे।

وَالَّذِي قَالَ لَوْلَا دِيءُ اِيَّيْ لَكُمْ اَتَعِدْنَ بِيْ اَنْ اُخْرِجَ وَقَدْ خَلَيْتَ الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِيْ
وَهُمَا يَسْتَغِيثُنِ اللّٰهُ وَبِكَ اَمِنْ اِنْ وَعَدَ اللّٰهُ حَقًّا فَيَقُوْلُ مَا هَذَا اِلَّا
اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝ اُولَئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِىْ اَمْرِ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ۝

और जिसने अपने मां-बाप से कहा कि मैं बेजार हूँ तुमसे। क्या तुम मुझे यह खौफ दिलाते हो कि मैं कब्र से निकाला जाऊंगा, हालांकि मुझ से पहले बहुत सी कोमें गुजर चुकी हैं और वे दोनों अल्लाह से फरयाद करते हैं कि अफसोस है तुझ पर, तू ईमान ला, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है। पस वह कहता है कि यह सब अगलों की कहानियां हैं। ये वे लोग हैं जिन पर अल्लाह का कौल पूरा हुआ उन गिरोहों के साथ जो उनसे पहले गुजरे जिन्होंने और इंसानों में से। बेशक वे खसारे (घाटे) में रहे। (17-18)

जो औलाद अपने वालिदेन की फरमांबरदार हो वह खुदा की भी फरमांबरदार होती है। इसके बरअक्स नाफरमान औलाद का हाल यह होता है कि वह बड़ी उम्र को पहुंचते ही भूल जाते हैं कि उनके वालिदेन ने बेशुमार मुसीबतें उठाकर उन्हें इस मकाम तक पहुंचाया है। किसी शख्स के सबसे ज्यादा खैरख्वाह उसके वालिदेन होते हैं। वालिदेन अपनी औलाद को जो मशिवरा देते हैं वह सरासर बेगर्जाना खैरख्वाही पर मबनी होता है। इसलिए इंसान को चाहिए कि वह अपने सालेह वालिदेन के मशिवरों का सबसे ज्यादा लिहाज करे। जो शख्स अपने सालेह वालिदेन के मशिवरों पर उन्हें झिड़क दे वह अपनी इस रविश से जाहिर करता है कि वह निहायत संगदिल इंसान है। यही वे लोग हैं जो सबसे ज्यादा खसारे में पड़ने वाले हैं।

وَلِكُلِّ دَرَجَتْ مِمَّا عَمِلُوْا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلٰى النَّارِ اَذْهَبْتُمْ طِبْعَكُمْ فِىْ حَيَاتِكُمْ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا
فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۚ فِى الْاَرْضِ يَغْيِرُ الْحَقُّ
وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ۝

और हर एक के लिए उनके आमाल के एतबार से दर्जे होंगे। और ताकि अल्लाह सबको उनके आमाल पूरे कर दे और उन पर जुल्म न होगा। और जिस दिन इंकार करने वाले आग के सामने लाए जाएंगे, तुम अपनी अच्छी चीजें दुनिया की जंदगी में ले चुके और उन्हें बरत चुके तो आज तुम्हें जिल्लत की सजा दी जाएगी, इस वजह से कि तुम दुनिया में नाहक तकबुर (धमंड) करते थे और इस वजह से कि तुम नाफरमानी करते थे। (19-20)

एक शख्स के सामने हक आता है और वह दुनियावी मस्तेहत और माददी मफाद के खातिर उसे इख्तियार नहीं करता। इसका मतलब यह है कि उसने आखिरत के मुकाबले में दुनिया को अहमियत दी। उसने तय्यिबाते आखिरत (परलोक की अच्छी चीजों) के मुकाबले में तय्यिबाते दुनिया को अपने लिए पसंद कर लिया।

इसी तरह अपनी बड़ाई का एहसास आदमी के लिए बेहद लजीज चीज है। जब ऐसा हो कि अपनी बड़ाई का धरौदा तोड़कर हक को कुबूल करना हो और आदमी अपनी बड़ाई को बचाने के लिए हक को कुबूल न करे, उस वक्त भी गोया उसने तय्यिबाते दुनिया को तरजीह दी और तय्यिबाते आखिरत को नाकाबिले लिहाज समझ कर छोड़ दिया।

ऐसे तमाम लोग जिन्होंने दुनिया की तय्यिबात की खातिर आखिरत की तय्यिबात को नजरअंदाज किया वे आखिरत में जिल्लत के अजाब से दो चार होंगे। जिसका अमल जिस दर्जे का होगा उसी के बकदर वह अपने अमल का अंजाम आखिरत में पाएगा।

وَاذْكُرْ اِخَاعًا ۙ اِذْ اَنْذَرْتَهُمْ بِالْحَقِّ وَقَدْ خَلَيْتَ التُّدْرُ مِنْ بَيْنِ
يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ اَلَّا تَعْبُدُوْا اِلَّا اللّٰهُ ۚ اِنِّىْ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيْمٍ ۝ قَالُوْا اِحْشِنَا لِمَا فُكِّنَا عَنْ الْهَيْتٰنَا ۚ فَاتِّبَاعًا تَعِدُنَا اِنْ كُنْتَ مِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ۝ قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ وَاُبَلِّغُكُمْ مَا اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلَكِنِّىْ اَرَاكُمْ
قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ۝

और आद के भाई (हूद) को याद करो। जबकि उसने अपनी कौम को अह्काफ में डराया और डराने वाले उससे पहले भी गुजर चुके थे और उसके बाद भी आपूँकि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। मैं तुम पर एक होलनाक दिन के अजाब से डरता हूँ। उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें हमारे माबूदों (पूज्यों) से फेर दो। पस अगर तुम सच्चे हो तो वह चीज हम पर लाओ जिसका तुम हमसे वादा करते हो। उसने कहा कि इसका इल्म तो अल्लाह को है, और मैं तो तुम्हें वह पैगाम पहुँचा रहा हूँ जिसके साथ मुझे भेजा गया है। लेकिन मैं तुम्हें देखता हूँ कि तुम लोग नादानी की बातें करते हो। (21-23)

कौमे आद जुनूबी (दक्षिणी) अरब के उस इलाके में आबाद थी जिसे अब 'अररुबउ खली' कहा जाता है। इस कौम ने काफ़ी तरक्की की। मगर उसकी तरक्कियों ने उसे गमलत और सरकशी में मुक्तिला कर दिया। फिर अल्लाह तआला ने उसके एक फर्द हजरत हूद अलैहिस्सलाम को पैगम्बर बनाकर उसकी तरफ भेजा।

हजरत हूद ने कौम को डराया। मगर वह इस्लाह कुबूल करने के लिए तैयार न हुई। उसने अपने पैगम्बर का इस्तकबाल जहालत से किया। आखिरकार वह खुदा की पकड़ में आ गई। उस पर ऐसा सज़ा अजाब आया कि उसका सरसब्ज और शानदार इलाका महज एक खुरशक सहारा बन कर रह गया।

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا بَلْ هُوَ
مَا اسْتَجَلْتُمْ بِهِ هُبُوطٌ رِّيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ تَذَرُهُمْ كُلُّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا
فَأَصْبَحُوا لَا يَرَى إِلَّا مَسَكِنُهُمْ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝

पस जब उन्होंने उसे बादल की शक्ल में अपनी वादियों की तरफ आते हुए देखा तो उन्होंने कहा कि यह तो बादल है जो हम पर बरसेगा। नहीं बल्कि यह वह चीज है जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे। एक आंधी है जिसमें दर्दनाक अजाब है। वह हर चीज को अपने रब के हुक्म से उखाड़ फेंकेगी। पस वे ऐसे हो गए कि उनके घरों के सिवा वहां कुछ नजर न आता था। मुजरिमों को हम इसी तरह सजा देते हैं। (24-25)

अजाब के बादल को आद के लोग बारिश का बादल समझे। वे उसकी हकीकत को सिर्फ उस वक्त समझ सके जबकि अजाब की आंधी ने उनकी बस्तियों में दाखिल होकर उन्हें बिल्कुल खंडहर बना दिया। इंसान इतना जालिम है कि वह एक लम्हे पहले तक भी हक का एतराफ नहीं करता। वह सिर्फ उस वक्त एतराफ करता है जबकि एतराफ करने का मौम उससे छिन गया हो।

وَلَقَدْ مَكَنَّاكُمْ فِي مَكَانٍ مَّكَنَّاكُمْ فِيهِ ۖ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَآبْصَارًا وَ
أَفْئِدَةً ۖ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ
إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۖ وَلَقَدْ
أَهْلَكْنَا مَا هَؤُلَاءِ مِنْ الْقُرَىٰ وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۖ فَلَوْلَا
نَصْرُهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً بَلَّ ضُلُوءًا عَنْهُمْ وَذَلِكَ
إِقْلَامُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْقَهُونَ ۝

और हमने उन लोगों को उन बातों में कुदरत दी थी कि तुम्हें उन बातों में कुदरत नहीं दी और हमने उन्हें कान और आंख और दिल दिए। मगर वे कान उनके कुछ काम न आए और न आंखें और न दिल। क्योंकि वे अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे और उन्हें उस चीज ने घेर लिया जिसका वे मजाक उड़ते थे। और हमने तुम्हारे आस पास की बस्तियां भी तबाह कर दीं। और हमने बार-बार अपनी निशानियां बताईं ताकि वे बाज आएँ। पस क्यों न उनकी मदद की उन्होंने जिनको उन्होंने खुदा के तकरूब (समीपता) के लिए माबूद (पूज्य) बना रखा था। बल्कि वे सब उनसे खोए गए और यह उनका झूठ था और उनकी गढ़ी हुई बात थी। (26-28)

कुरैश के सरदारों को जो दुनियावी मर्तबा हासिल था उसने उन्हें सरकश बना रखा था। उन्हें याद दिलाया गया कि अपने पड़ोस की कौम आद को देखो। उसे तमददुनी एतबार से तुमसे भी ज्यादा बड़ा दर्जा हासिल था। इसके बावजूद जब खुदा का फैसला आया तो उसकी सारी बड़ाई गारत होकर रह गई। उन चीजों में से कोई चीज उसका सहारा न बन सकी जिन्हें उन्होंने अपना सहारा समझ रखा था।

इंसान आखिरकार खुदा की बड़ाई के मुकाबले में छोटा होने वाला है। मगर दुनिया का निजाम कुछ इस तरह बनाया गया है कि इसी दुनिया में आदमी को बार-बार दूसरों के मुकाबले में छोटा होना पड़ता है। इस तरह के वाक्यात खुदा की निशानियां हैं। आदमी अगर इन निशानियों से सबक ले तो आखिरत के दिन छोटा किए जाने से पहले वह खुद अपने आपको छोटा कर ले। वह आखिरत से पहले इसी दुनिया में हकीकतपसंद बन जाए।

इंसान के सामने मुकल्लिफ किस्म के वाक्यात खुदाई निशानी बनकर जाहिर होते हैं। मगर वह अंधा बहरा बना रहता है। वह उनसे सबक लेने के लिए तैयार नहीं होता।

وَأَذِّنْ صَرْفًا لِّلَّذِينَ نَفَرُوا مِّنَ الْحَرَمِ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنصِتُوا
فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُّندِرِينَ ۖ قَالُوا يٰقَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزِلَ
مِّنْ بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيقِ
مُّسْتَقِيمٍ ۖ يٰقَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ يَغْفِرَ لَكُمْ مِّن ذُنُوبِكُمْ
وَيُخَوِّضَكُمْ فِي مَنَازِلٍ ۖ وَمَنْ لَا يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي
الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءُ ۚ أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

और जब हम जिन्नात के एक गिरोह को तुम्हारी तरफ ले आए, वे कुरआन सुनने लगे।
पस जब वे उसके पास आए तो कहने लगे कि चुप रहो। फिर जब कुरआन पढ़ा जा
चुका तो वे लोग डराने वाले बनकर अपनी कौम की तरफ वापस गए। उन्होंने कहा
कि ऐ हमारी कौम, हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गई है, उन
पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) की तस्दीक (पुष्टि) करती हुई जो उसके पहले से मौजूद
हैं। वह हक की तरफ और एक सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई करती है। ऐ हमारी कौम,
अल्लाह की तरफ बुलाने वाले की दावत (आह्वान) कुबूल करो और उस पर ईमान ले
आओ, अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को माफ कर देगा और तुम्हें दर्दनाक अजाब से
बचाएगा। और जो शर्रस अल्लाह के दाओ (आह्वानकर्ता) की दावत पर लब्बैक नहीं
कहेगा तो वह जमीन में हरा नहीं सकता और अल्लाह के सिवा उसका कोई मददगार
न होगा। ऐसे लोग खुली हुई गुमराही में हैं। (29-32)

नुबुव्वत के दसवें साल मक्का में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हालात
बेहद सज़्ज़ हो चुके थे। उस वक्त आपने मक्का से तायफ की तरफ सफर फरमाया कि शायद
आपको कुछ साथ देने वाले मिल सकें। मगर वहां के लोगों ने आपको बहुत बुरा इस्तकबाल
किया। वापसी में आप रात गुजारने के लिए नखला के मक़ाम पर ठहरे। यहां आप नमाज
में कुरआन की तिलावत फरमा रहे थे कि जिन्नात के एक गिरोह ने कुरआन को सुना। और
वे उसी वक्त उसके मोमिन बन गए। एक गिरोह कुरआन को रद्द कर रहा था। मगर ऐन
उसी वक्त दूसरा गिरोह कुरआन को कुबूल कर रहा था। और इतनी शिद्दत के साथ कुबूल
कर रहा था कि उसी वक्त वह उसका मुबल्लिग (प्रचारक) बन गया।

अल्लाह के दाओ की बात को रद्द करना गोया खुदा के मंसूबे को रद्द करना है। मगर
इंसान के लिए यह मुमकिन नहीं कि वह खुदा के मंसूबे को रद्द कर सके। इसलिए ऐसी
कोशिश करने वाले का अंजाम सिर्फ यह होता है कि वह खुद रद्द होकर रह जाता है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْزُقْ بِخَلْقِنَا يَقْدِرُ
عَلَىٰ أَنْ يُخْرِجَ الْمَوْتَىٰ بُكْلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ
كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَٰذَا بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا قَالِ فَذُوقُوا الْعَذَابَ
بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝

क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस खुदा ने आसमानों और जमीन को पैदा किया
और वह उनके पैदा करने से नहीं थका, इस पर कुदरत रखता है कि वह मुर्दों को
जिंदा कर दे, हां वह हर चीज पर कादिर है। और जिस दिन ये इंकार करने वाले आग
के सामने लाए जाएंगे, क्या यह हकीकत नहीं है। वे कहेंगे कि हां, हमारे रब की
कसम। इश्राद होगा फिर चखो अजाब उस इंकार के बदले जो तुम कर रहे थे।
(33-34)

जमीन व आसमान जैसी अजीम कायनात का वुजूद में आना, और फिर अरबों साल से
उसका निहायत सेहत और हमआहंगी के साथ चलते रहना यह साबित करता है कि इस
कायनात का पैदा करने वाला अजीमतरीन ताकतों का मालिक है। नीज यह कि इस कायनात
को वुजूद में लाना उसके लिए इज्ज (निर्बलता) का सबब नहीं बना। तख्लीक का अमल अगर
उसे थका देता तो तख्लीक के बाद वह इतनी सेहत के साथ चलती हुई नजर न आती।
खुदा की अजीम ताकत व कुदरत का मुजाहिदा जो कायनात की सतह पर हो रहा है वह
यह यकीन करने के लिए काफी है कि इंसानी नस्ल को दुबारा जिंदा करना और उससे उसके
आमाल का हिसाब लेना उसके लिए कुछ मुश्किल नहीं।

मौजूदा दुनिया में आदमी के सामने हकीकत आती है मगर वह उसे नहीं मानता। इसकी
वजह यह है कि मौजूदा दुनिया में हकीकत के इंकार का अंजाम फौरन सामने नहीं आता।
आखिरत में इंकार का हौलनाक अंजाम हर आदमी के सामने होगा। उस वक्त वह इतिहाई
हद तक सजीदा हो जाएगा और उस हकीकत का फौरन इक्कार कर लेगा जिसे मौजूदा दुनिया
में वह मानने के लिए तैयार न होता था।

فَأَصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعِزِّ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ ۚ كَانَتْهُمْ يَوْمَ
يُرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّن نَّهَارٍ بَلَاءٌ ۚ فَعَلَّكَ يٰهَكَذَا الْقَوْمُ
الْفٰسِقُونَ ۝

पस तुम सब्र करो जिस तरह हिम्मत वाले पैगम्बरों ने सब्र किया। और उनके लिए जल्दी

न करो। जिस दिन ये लोग उस चीज को देखेंगे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो गोया कि वे दिन की एक घड़ी से ज्यादा नहीं रहे। यह पहुंचा देना है। पस वही लोग बर्बाद होंगे जो नाफरमानी करने वाले हैं। (35)

हक की दावत देने वाले को हमेशा सब्र की जमीन पर खड़ा होना पड़ता है। सब्र दरअसल इसका नाम है कि मदऊ (संबोधित पक्ष) की ईजारसानियों (उत्पीड़न) को दाओी यकतरफा तौर पर नजरअंदाज करे। वह मदऊ के ज़िद और इंकार के बावजूद मुसलसल उसे दावत पहुंचाता रहे। दाओी अपने मदऊ का हर हाल में खैरख्वाह बना रहे। चाहे मदऊ की तरफ से उसे कितनी ही ज्यादा नाखुशगवारियों का तजर्बा क्यों न हो रहा हो। यह यकतरफा सब्र इसलिए जरूरी है कि इसके बगैर मदऊ के ऊपर खुदा की हुज्जत तमाम नहीं होती।

खुदा के तमाम पैगम्बरों ने हर जमाने में इसी तरह सब्र व इस्तिक्वामत के साथ हक की दावत का काम किया है। आइंदा भी पैगम्बरों की नियाबत (प्रतिनिधित्व) में जो लोग हक की दावत का काम करें उन्हें इसी नमूने पर दावत का काम करना है। खुदा के यहां दाओी का मक्कम सिर्फ उन्हीं लोगों के लिए मुकद्दर है जो यकतरफा बर्दाश्त का हैसला दिखा सकें।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا
الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ أَضَلَّ أَعْمَاهُمْ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا
عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا بِمَا نُزِّلَ عَلَى مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ كَرَّرْنَا عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝ ذَلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَأَنَّ الَّذِينَ
آمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَبِّهِمْ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ ۝

आयतें-38

सूरह-47. मुहम्मद

रुकूअ-4

(मदीना में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, अल्लाह ने उनके आमाल को रायगां (अकारत) कर दिया। और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किए और उस चीज को माना जो मुहम्मद पर उतारा गया है, और वह हक है उनके रब की तरफ से, अल्लाह ने उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दीं और उनका हाल दुस्त कर दिया। यह इसलिए कि जिन लोगों ने इंकार किया उन्होंने बातिल (असत्य) की पैरवी की। और जो लोग ईमान लाए उन्होंने हक (सत्य) की पैरवी की जो उनके रब की तरफ से है। इस तरह अल्लाह लोगों के लिए उनकी मिसालें बयान करता है। (1-3)

कदीम अरब में जिन लोगों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंकार किया और आपकी मुख़ालिफ़त की उनके आमाल जाया हो गए। इसका मतलब दूसरे लफ्ज़ों में यह है कि उन्होंने चूँकि शुऊरी सतह पर दीनदारी का सुबूत नहीं दिया इसलिए उनके वे आमाल भी बेक़ीमत करार पाए जो वे रिवायती दीनदारी की सतह पर अंजाम दे रहे थे।

कदीम अरब के लोग अपने आपको इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) और इस्माईल (अलैहिस्सलाम) की उम्मत समझते थे। उन्हें ख़ाना काबा का मुंजिम (प्रबंधक) होने का एजाज हासिल था। उनके यहां किसी न किसी शक्ल में नमाज, रोजा, हज का रवाज भी मौजूद था। हाजियों की ख़िदमत, रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक, मेहमानों की तवाजोअ का भी उनके यहां रवाज था। ये सब काम अगरचे वे बजाहिर कर रहे थे मगर वे उनकी शुऊरी दीनदारी का हिस्सा न थे। वे महज रिवायती तौर पर उनकी ज़िंदगी का जुज बने हुए थे। इन आमाल को वे इसलिए कर रहे थे कि वे सदियों से उनके दर्मियान राइज चले आ रहे थे।

मगर वक्त के पैगम्बर को पहचानने के लिए जरूरी था कि वे अपने शुऊर को मुतहरिक करें। वे जाती मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) की सतह पर उसे पाएं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ उस वक्त कदीम रिवायात का जोर शामिल न था इसलिए आपको वही शख्स पहचान सकता था जो जाती शुऊर की सतह पर हक्कीकत को पहचानने की सलाहियत रखता हो। जब उन्होंने वक्त के पैगम्बर का इंकार किया तो यह साबित हो गया कि उनकी दीनदारी महज रिवायत के तहत है न कि शुऊर के तहत। और अल्लाह को शुऊरी दीनदारी मल्लूब है न कि महज रिवायती दीनदारी।

इसके बरअक्स जो लोग वक्त के पैगम्बर पर ईमान लाए उन्होंने यह सुबूत दिया कि वे शुऊर की सतह पर दीनदार बनने की सलाहियत रखते हैं। चुनांचे वे खुदा के यहां काबिले कुबूल और कबिले इनाम करार पाए। तारीख़ का तजर्बा बताता है कि माजी (अतीत) के जोर पर मानने वाले लोग हाल की मअरफ़त के इम्तेहान में फेल हो जाते हैं। दूसरों की नजर से देखने वाले अपनी नजर से देखने में हमेशा नाकाम रहते हैं।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَضْرَبِ الرِّقَابِ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْتُمُوهُمْ فَشُدُّوا لُؤْلَاقًا ۖ
وَمَا مَثَلًا بَعْدَ وَمَا فَدَاءٌ حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ذَٰلِكَ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ
لَانتَصَرْنَا مِنْهُمْ وَلَكِن لِّيَبْلُوَ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ۖ وَالَّذِينَ قَتَلُوا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ فَلَن يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ۚ سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۚ وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ
عَرَفَهَا لَهُمْ ۝

पस जब मुंकिरों से तुम्हारा मुकाबला हो तो उनकी गर्दन मारो। यहां तक कि जब खूब

कल कर चुको तो उन्हें मजबूत बांध लो। फिर इसके बाद या तो एहसान करके छोड़ना है या मुआवजा लेकर, यहां तक कि जंग अपने हथियार रख दे। यह है काम। और अगर अल्लाह चाहता तो वह उनसे बदला ले लेता, मगर ताकि वह तुम लोगों को एक दूसरे से आजमाए। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाएंगे, अल्लाह उनके आमाल को हरगिज जाए (नष्ट) नहीं करेगा। वह उनकी रहनुमाई फरमाएगा और उनका हाल दुरुस्त कर देगा। और उन्हें जन्नत में दाखिल करेगा जिसकी उन्हें पहचान करा दी है। (4-6)

यहां इंकार करने वालों से मुराद वे लोग हैं जो इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद ईमान नहीं लाए और मजीद यह कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खिलाफ नाहक जंग छेड़ दी और इस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिफाई (रक्षात्मक) कदम उठाने पर मजबूर कर दिया। ऐसे लोगों के बारे में हुक्म दिया गया कि जब उनसे तुम्हारी मुठभेड़ हो तो उनसे लड़कर उनका जोर तोड़ दो, ताकि वे आइंदा हक की दावत (आह्वान) की राह में रुकावट न बन सकें।

अल्लाह तआला का यह कानून रहा है कि जिन कौमों ने अपने पैगम्बरों का इंकार किया वे इतमामेहुज्जत के बाद हलाक कर दी गई। मगर पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के सिलसिले में अल्लाह तआला को यह मल्लूब था कि आप और आपके साथियों के जरिए शिर्क का दौर खत्म किया जाए और तौहीद की बुनियाद पर एक नई तारीख़ वजूद में लाई जाए। ऐसे तारीख़साज इंसानों का इंत़ाब सख़्ततरीन हालात ही में हो सकता था। चुनांचे मुखालिफीन की तरफ से छेड़ी हुई जंग में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथियों को दाखिल करके यही फायदा हासिल किया गया।

जन्नत मोमिन की एक इतिहाई मालूम चीज है। वह न सिर्फ पैगम्बर से उसकी ख़बर सुनता है बल्कि अपनी बट्टी हुई मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) के जरिए वह उसका तसव्वुराती इदराक (परिकल्पना-भान) भी कर लेता है। ग़ैब में छुपी हुई जन्नत का यही गहरा इदराक है जो आदमी को यह हौसला देता है कि वह कुर्बानी की कीमत पर उसका तालिब बन सके। अगर ऐसा न हो तो कोई शख्स आज की दुनिया को कुर्बान करके कल की जन्नत का उम्मीदवार न बने।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَنصُرُوا اللَّهَ يَنصُرْكُمْ وَيُخْرِجْكُمْ أَقْدَامَكُمْ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَسْأَلُهُمْ وَأَضَلَّ أَعْيَاهُمْ ۝ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أُنْزِلَ اللَّهُ فَاحْبَطُوا أَعْمَالَهُمْ ۝ أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۖ دُمِّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكَافِرِينَ أَمَثَلُهُمْ ۖ ذَلِكَ بِأَنَّهُ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكُفْرَيْنَ لَا مَوْلَى لَهُمْ ۝

ऐ ईमान वालो, अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे कदमों को जमा देगा। और जिन लोगों ने इंकार किया उनके लिए तबाही है और अल्लाह उनके आमाल को जाया कर देगा। यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज को नापसंद किया जो अल्लाह ने उतारी है। पस अल्लाह ने उनके आमाल को अकारत कर दिया। क्या ये लोग मुल्क में चले फिरे नहीं कि वे उन लोगों का अंजाम देखते जो उनसे पहले गुजर चुके हैं, अल्लाह ने उन्हें उखाड़ फेंका और मुंकिरों के सामने उन्हीं की मिसालें आनी हैं। यह इस सबब से कि अल्लाह ईमान वालों का कारसाज (संरक्षक) है और मुंकिरों का कोई कारसाज नहीं। (7-11)

वाक़ेयात को ज़ूर में लाने वाला खुदा है। मगर वह वाक़ेयात को असबाब के पर्दे में ज़ूर में लाता है। यही मामला दीन का भी है। अल्लाह तआला को यह मल्लूब है कि बातिल का जोर टूटे और हक को दुनिया में ग़लब और इस्तहक़ाम हासिल हो। मगर इस वाक़े को ज़ूर में लाने के लिए अल्लाह तआला को कुछ ऐसे अफ़राद दरकार हैं जो इस खुदाई अमल का इंसानी पर्दा नबनें। यही वह मामला है जिसे यहाँ खुदा की नुसरत (मदद) करना कहा गया है।

जब एक ग़िरोह खुदा की नुसरत के लिए उठता है तो वह इसी के साथ दूसरा काम यह करता है कि वह मुंकिरीन का मुंकिरीन होना साबित करता है। खुदा की नुसरत करने वाले अफ़राद इतिहाई संजीदगी और ख़ैरख़्वाही के साथ लोगों को खुदा की तरफ बुलाते हैं। वे हर ख़िलाफ़े हक़ रैबे से बचते हुए दीन की गवाही देते हैं। वे हक़ के हक़ हेमे को आख़िरी हद तक साबितशुदा बना देते हैं। इस तरह मुंकिरीन के ऊपर वह इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) हो जाता है जो आख़िरत के फैसले के लिए अल्लाह तआला को मल्लूब है।

बातिलपरस्त लाजिमन ज़ेर हते हैं और हक़परस्त लाजिमन उनके ऊपर ग़ालिब आते हैं, बशर्ते कि हक़परस्त ग़िरोह उस अमल को अंजाम दे जो खुदा की सुन्नत (तरीके) के मुताबिक़ खुदा की हिमायत को हासिल करने के लिए अंजाम देना चाहिए।

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَسْتَمِعُونَ وَ يَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ ۝ وَكَأَيْنَ مِنْ قَرِينَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجْتِكَ أَهْلَكَهُمْ ۖ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝

बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किया ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जिन लोगों ने इंकार किया वे बरत रहे हैं और खा रहे हैं जैसे कि चौपाए खाएं, और आग उन लोगों का ठिकाना है।

और कितनी ही बस्तियां हैं जो कुव्वत (शक्ति) में तुम्हारी उस बस्ती से ज्यादा थीं जिसने तुम्हें निकाला है। हमने उन्हें हलाक कर दिया। पस कोई उनका मददगार न हुआ। (12-13)

अरब में जिन लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंकार किया उन्हें आपने यह पेशगी खबर दी कि तुम जो कुछ खा पी रहे हो तो यह मत समझो कि तुम आजाद हो। तुम पूरी तरह खुदा की गिरफ्त में हो। और इसका सबूत यह है कि अगर तुम अपने इंकार पर कायम रहे तो खुदा के कानून के मुताबिक तुम तबाह कर दिए जाओगे।

यह वाक्या ऐन फ़ैशनगोई के मुताबिक जूहूर में आया। तौहैद के अलमबरदार ग़ालिब आए और जो लोग शिर्क के अलमबरदार बने हुए थे वे हमेशा के लिए नाबूद (विनष्ट) हो गए।

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ يَبْتَنَ مِنْ رَبِّهِ كَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوؤُ عَمَلِهِ ۖ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۖ
مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ مَاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ
لَمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ خَمْرٍ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ مُصَفًّى
وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ۚ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ
وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ۖ

क्या वह जो अपने रब की तरफ से एक वाजेह (स्पष्ट) दलील पर है। वह उसकी तरह हो जाएगा जिसकी बदअमली उसके लिए खुशनुमा बना दी गई है और वे अपनी ख्वाहिशात (इच्छाओं) पर चल रहे हैं। जन्नत की मिसाल जिसका वादा डरने वालों से किया गया है उसकी कैफियत यह है कि उसमें नहरें हैं ऐसे पानी की जिसमें तब्दीली न होगी और नहरें होंगी दूध की जिसका मजा नहीं बदला होगा और नहरें होंगी शराब की जो पीने वालों के लिए लजीज होंगी और नहरें होंगी शहद की जो बिल्कुल साफ होगा। और उनके लिए वहां हर किस्म के फल होंगे। और उनके रब की तरफ से बख्शिश (क्षमा) होगी। क्या ये लोग उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा आग में रहेंगे और उन्हें खौलता हुआ पानी पीने के लिए दिया जाएगा, पस वह उनकी आंतों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा। (14-15)

बय्यिनह (दलील) पर खड़ा होना अपनी जिंगी की तामीर हकीकते वाक्या की बुनियाद पर करना है। इसके बरअक्स जो शख्स अहवा (अपनी ख्वाहिशात) पर खड़ा होता है वह हकीकते वाक्या से इहिराफ करता है वह खुदा की दुनिया में खुदा की मर्जी के खिलाफ अपनी दुनिया बनाना चाहता है।

मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में दोनों गिरोह बजाहिर यकसां (समान) मौके पा रहे हैं। मगर आखिरत की हकीकी दुनिया में सिर्फ पहला गिरोह खुदा की अबदी नेमतों में हिस्सा पाएगा और दूसरा गिरोह हमेशा के लिए जलील और नाकाम होकर रह जाएगा।

وَمِنْهُمْ مَّن يَّسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۚ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا مِنْ عِندِكَ قَالُوا الَّذِينَ أُوْتُوا الْعِلْمَ
مَاذَا قَالَ إِنْشَاءً ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ۖ وَالَّذِينَ
اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَاتَّبَعُوا تَقْوَاهُمْ ۖ

और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं। यहां तक कि जब वे तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो इल्म वालों से पूछते हैं कि उन्होंने अभी क्या कहा। यही लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी। और वे अपनी ख्वाहिशों पर चलते हैं। और जिन लोगों ने हिदायत की राह इख्तियार की तो अल्लाह उन्हें और ज्यादा हिदायत देता है और उन्हें उनकी परहेजगारी (ईश-परायणता) अता करता है। (16-17)

मुनाफिक आदमी की एक पहचान यह है कि वह संजीदा मज्लिस में बैठता है तो बजाहिर बहुत बाअदब नजर आता है मगर उसका जेहन दूसरी-दूसरी चीजों में लगा रहता है। वह मज्लिस में बैठकर भी मज्लिस की बात नहीं सुन पाता। चुनांचे जब वह मज्लिस से बाहर आता है तो दूसरे असहाबे इल्म से पूछता है कि 'हजरत ने क्या फरमाया।'

यह वह कीमत है जो अपनी ख्वाहिशपरस्ती की बिना पर उन्हें अदा करनी पड़ती है। वे अपने ऊपर अपनी ख्वाहिश को ग़ालिब कर लेते हैं। वे दलील की पैरवी करने के बजाए अपनी ख्वाहिश की पैरवी करते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि धीरे-धीरे उनके एहसासात कुंद हो जाते हैं। उनकी अकल इस काबिल नहीं रहती कि वह बुलन्द हकीकतों का इदराक कर सके।

इसके बरअक्स जो लोग हकीकतों को अहमियत दें, जो सच्ची दलील के आगे झुक जाएं, वे इस अमल से अपनी फिक्री सलाहियत (वैचारिक क्षमता) को जिंदा करते हैं। ऐसे लोगों की मअरफत में दिन-ब-दिन इजाफा होता रहता है। उन्हें अबदी तौर पर जुमूद नाआशना (क्रियाशील) ईमान हासिल हो जाता है।

فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۖ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا ۚ فَأَنَّىٰ لَهُمْ إِذَا
جَاءَهُمْ ذِكْرُهَا ۖ ۝ فَأَعْلَمْتُمْ أَنَّ إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَاسْتَغْفِرُوا لِذَنبِكُمْ ۖ وَلِلْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلِّبَكُمُ ۖ وَمَثُوكُمُ ۖ

ये लोग तो बस इसके मुंजिर हैं कि कियामत उन पर अचानक आ जाए तो उसकी अलामतें जाहिर हो चुकी हैं। पस जब वह आ जाएगी तो उनके लिए नसीहत हासिल करने का मौका कहां रहेगा। पस जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं और माफी मांगो अपने कुसूर के लिए और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए। और अल्लाह जानता है तुम्हारे चलने फिरने को और तुम्हारे ठिकानों को। (18-19)

जलजले के आने की फ़ैली इतिलाअ से जो श्रद्धा चौकन्ना न हो वह गोया जलजले के आने का मुंजिर है। क्योंकि हर अगला लम्हा जलजले को उसके करीब ला रहा है। इसी तरह कियामत की चेतावनी से आदमी मुतनब्बह (सतर्क) नहीं होता मगर जब कियामत उसके सिर पर टूट पड़ेगी तो वह एतराफ करने लगेगा। मगर उस वक्त का एतराफ उसे फायदा न देगा। क्योंकि एतराफ वह है तो पर्दा उठने से पहले किया जाए। पर्दा उठने के बाद एतराफ की कोई कीमत नहीं।

इस्तिफ़ार (माफी) दरअसल एहसास इज्ज (निर्कलता-भाव) का एक इस्तर है। कियामत की हैलनाकी का यकीन और अल्लाह की क़दरत और उसके हर चीज से बाख़बर होने का एहसास आदमी के अंदर जो नपिसयाती हैजान पैदा करता है वह हर लम्हा लतीफ कलिमात में ढलता रहता है। उन्हीं कलिमात को जिक्र और दुआ और इस्तिफ़ार कहा जाता है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ ۚ فَإِذَا أُنْزِلَتْ سُورَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا الْقِتَالُ ۖ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ يَتَّبِعُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَأُولَئِكَ لَهُمْ طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَّعْرُوفٌ ۚ فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ ۚ فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتَقَطَّعُوا أَرْحَامَكُمْ ۚ أُولَئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعَمَّى أَبْصَارَهُمْ ۚ

और जो लोग इमान लाए हैं वे कहते हैं कि कोई सूरह क्यों नहीं उतारी जाती। पस जब एक वाजेह सूरह उतार दी गई और उसमें जंग का भी जिक्र था तो तुमने देखा कि जिनके दिलों में बीमारी है वे तुम्हारी तरफ इस तरह देख रहे हैं जैसे किसी पर मौत छा गई हो। पस ख़राबी है उनकी। हुक्म मानना है और भली बात कहना है। पस जब मामले का कतई फैसला हो जाए तो अगर वे अल्लाह से सच्चे रहते तो उनके लिए बहुत बेहतर होता। पस अगर तुम फिर गए तो इसके सिवा तुमसे कुछ उम्मीद नहीं कि तुम ज़मीन में फ़साद करो और आपस के रिश्तों को तोड़ दो। यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने अपनी रहमत से दूर किया, पस उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आंखों को अंधा कर दिया। (20-23)

मुनाफ़िक (पाखंडी) की पहचान यह है कि वह अल्फ़ज में सबसे आगे और अमल में सबसे पीछे हो। जिहाद से पहले वह जिहाद की बातें करे और जब जिहाद वाक़ेयतन पेश आ जाए तो वह उससे भाग खड़ा हो।

सच्चे अहले इमान का तरीका यह है कि वह हर वक्त सुनने और मानने के लिए तैयार रहे और जब किसी सख़्त इक्दाम का फैसला हो जाए तो अपने अमल से साबित कर दे कि उसने खुदा को गवाह बनाकर जो अहद किया था उस अहद में वह पूरा उतरा।

मुनाफ़िक लोग जिहाद से बचने के लिए बज़ाहिर अमनपसंदी की बातें करते हैं। मगर अमलन सूरतेहाल यह है कि जहां उन्हें मौका मिलता है वे फौरन शर फैलाना शुरू कर देते हैं। यहां तक कि जिन मुसलमानों से उनकी करावतें (रिश्ते-नाते) हैं उनकी मुतलक परवाह न करते हुए उनके दुश्मनों के मददगार बन जाते हैं। ऐसे लोग खुदा की नज़र में मलऊन हैं। मलऊन होने का मतलब यह है कि आदमी के सोचने समझने की सलाहियत उससे छिन जाए। वह आंख रखते हुए भी न देखे और कान रखते हुए भी कुछ न सुने।

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ ۚ الْقُرْآنُ أَمْرٌ عَلَى قُلُوبٍ أَفْقَاهَا ۚ إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِمْ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَخِرْنَا فِي بَعْضِ الْأُمُورِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَسْرَارَهُمْ ۚ فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوا مَا أَسْخَطَ اللَّهَ وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ ۚ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۚ

234

क्या ये लोग कुरआन में ग़ौर नहीं करते या दिलों पर उनके ताले लगे हुए हैं। जो लोग पीठ फेरकर हट गए, बाद इससे कि हिदायत उन पर वाजेह हो गई, शैतान ने उन्हें फरेब दिया और अल्लाह ने उन्हें ढील दे दी। यह इस सबब से हुआ कि उन्होंने उन लोगों से जो कि खुदा की उतारी हुई चीज को नापसंद करते हैं, कहा कि कुछ बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे। और अल्लाह उनकी राजदारी को जानता है। पस उस वक्त क्या होगा जबकि फ़रिश्ते उनकी रूहे कब्ज़ करते होंगे, उनके मुंह और उनकी पीठों पर मारते हुए यह इस सबब से कि उन्होंने उस चीज की पैरवी की जो अल्लाह को गुस्सा दिलाने वाली थी और उन्होंने उसकी रिज़ा को नापसंद किया। पस अल्लाह ने उनके आमाज़ अकारत कर दिए। (24-28)

कुरआन नसीहत की किताब है मगर किसी चीज से नसीहत लेने के लिए ज़रूरी है कि आदमी नसीहत के बारे में संजीदा हो। अगर कोई ग़लत ज़ब्वा आदमी के अंदर दाख़िल होकर

उसे नसीहत के बारे में ग़ैर संजीदा बना दे तो वह कभी नसीहत से फायदा नहीं उठा सकता, चाहे नसीहत को कितना ही अच्छे अंदाज में बयान किया गया हो।

दीन का कोई ऐसा हुक्म सामने आए जिसमें आदमी को अपनी ख्वाहिशत और मफ़ादात की कुर्बानी देनी हो तो शैतान फ़ौरन आदमी को कोई झूठा उज़ समझा देता है। और मौजूदा दुनिया में मोहलते इम्तेहान की वजह से आदमी को मौका मिल जाता है कि वह इस झूठे उज़ को अमलन भी इख़्तियार कर ले। मगर यह सब कुछ सिर्फ चन्द दिनों तक के लिए है। मौत का वक़्त आते ही सारी सूरतेहाल बिल्कुल मुख़लिफ़ हो जाएगी।

यहां निफ़क़ के लिए इरतिदाद (धर्म त्याग) का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है। मगर मालूम है कि मदीना के उन मुनाफ़िक्को को इरतिदाद की मुक़र्रह सजा नहीं दी गई। इससे मालूम हुआ कि इरतिदाद की शर्ह सजा सिर्फ उन लोगों के लिए है जो एलान के साथ मुरतद (दीन को छोड़ने वाले) हो जाएं। हम ऐसा नहीं कर सकते कि किसी शख्स को बतौर खुद क़ब्बी मुरतद करार दें और फिर उसे वह सजा देने लगे जो शरीअत में मुरतदीन के लिए मुक़र्र है।

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَنْ لَنْ يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ۖ وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَاكَهُمْ فَاعْرِفَهُمْ بِسَيِّئِهِمْ ۖ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي نَحْنِ الْقَوْلِ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ۝

जिन लोगों के दिलों में बीमारी है क्या वे ख़्याल करते हैं कि अल्लाह उनके कीने (द्वेषों) को कभी जाहिर न करेगा। और अगर हम चाहते तो हम उनको तुम्हें दिखा देते, पस तुम उनकी अलामतों से उन्हें पहचान लेते। और तुम उनके अंदाजे कलाम से जरूर उन्हें पहचान लोगे। और अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता है। (29-30)

मुनाफ़िक्कीन की बीमारी यह थी कि उनके सीनों में हसद था। मुनाफ़िक् मुसलमानों को अपने मुख़्लिस बिरादराने दीन से यह हसद क्यों था। इसकी वजह यह थी कि इस्लाम की हर तरक्की उन्हें मुख़्लिस मुसलमानों के हिस्से में जाती हुई नजर आती थी। यह चीज मुनाफ़िक्कीन के लिए बेहद शाक (असहनीय) थी। वे सोचते थे कि हम ऐसी मुहिम में अपना जान व माल क्यों खपाएं जिसमें दूसरों की हैसियत बढ़े, जिसमें दूसरों को बढ़ाई हासिल होती हो।

मुनाफ़िक्कीन अपने जाहिरी रवैये में अपनी इस अंदरूनी हालत को छुपाते थे मगर समझदार लोगों के लिए वह छुपा हुआ न था। मुनाफ़िक्कीन का मस्तूई (बनावदी) लहजा, उनकी दर्द से ख़ाली आवाज़ बता देती थी कि इस्लाम से उनका तअल्लुक महज दिखावे का तअल्लुक है कि हमें मअनोमेक़बी तअल्लुक।

وَلَتَبْلُوكُمْ حَتَّى نَعْلَمَ الْجُهْدَ مِنْكُمْ وَالظَّرِيرَ ۚ وَتَبْلُوكُمْ أَنْ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَشَاقُّوا الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ ۚ لَنْ يَصُرُوا ۚ وَاللَّهُ شَهِيدٌ وَسَيُحِطُّ أَعْمَالَهُمْ ۝

और हम जरूर तुम्हें आजमाएंगे ताकि हम उन लोगों को जान लें जो तुम में जिहाद करने वाले हैं और साबितकदम रहने वाले हैं और हम तुम्हारे हालात की जांच कर लें। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल की मुख़ालिफ़त की जबकि हिदायत उन पर बाज़ेह हो चुकी थी, वे अल्लाह को कुछ जुम्सान न पहुंचा सकेंगे। और अल्लाह उनके आमाल को ढा देगा। (31-32)

आदमी जब ईमान को लेकर खड़ा होता है तो उस पर मुख़लिफ़ हालात पेश आते हैं। ये हालात उसके ईमान का इम्तेहान होते हैं। वे तक्वा करते हैं कि वह कुर्बानी की कीमत पर अपने मोमिन होने का सुबूत दे। वह अपने नफ्स को कुचले। वह अपने माददी मफ़ादात (हितों) को नजरअंदाज करे। वह लोगों की ईजारसानी (उत्पीड़न) को बर्दाश्त करे। यहां तक कि जान व माल को खपाकर अपने ईमान पर कायम रहे।

मोमिन को इस किस्म के हालात में डालने के लिए जरूरी है कि ग़ैर मोमिनीन को खुली आजादी हासिल हो ताकि वे अहले ईमान के ख़िलाफ़ हर किस्म की कारवाइयां कर सकें। इन कारवाइयों के जरिए एक तरफ़ मुख़लिफ़ीन का जुर्म साबितशुदा बनता है। दूसरी तरफ़ उन शदीद हालात में अहले ईमान साबितकदम रहकर दिखा देते हैं कि वे वाकई मोमिन हैं और इस काबिल हैं कि खुदा की मेयारी दुनिया में बसाने के लिए उनका इतिख़ाब किया जाए।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ مَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ فَلَا تَهِنُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلَامِ وَأَنْتُمْ الْآغَاوُونَ ۚ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتَرَكُكُمْ أَغْمَالَكُمْ ۝

ऐ ईमान वाले, अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो और अपने आमाल को बर्बाद न करो। बेशक जिन लोगों ने इंकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका। फिर वे मुंकिर ही मर गए, अल्लाह उन्हें कभी न बख़्शेगा। पस तुम हिम्मत न हारो और सुलह की दरख्वास्त न करो। और तुम ही ग़ालिब रहोगे। और अल्लाह तुम्हारे साथ है। और वह हरगिज़ तुम्हारे आमाल में कमी न करेगा। (33-35)

एक रिवायत में आता है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में

कुछ मुसलमानों ने यह ख्याल जाहिर किया कि अगर वे ला इला-ह इल्लल्लाहु का इक़रार कर लें तो कोई गुनाह उन्हें नुक्सान न पहुंचाएगा। इस पर यह आयत (33) उतरी। इसकी रोशनी में आयत का मतलब यह है कि आदमी को चाहिए कि वह ईमान के साथ इताअत को जमा करे। वह न सिर्फ बेजर (सरल) अहकाम की पैरवी करे बल्कि वह उन अहकाम का भी पैरोकार बने जिनके लिए अपने नफ्स को कुचलना और अपने मफाद को ख़तरे में डालना पड़ता है। अगर उसने ऐसा नहीं किया तो उसके साबिका आमाल उसे कुछ फायदा नहीं देंगे।

कमजोर मुसलमानों का हाल यह होता है कि वे हक़ का साथ इस शर्त पर देते हैं कि वक़्त के बड़े की नाराज़गी मोल न लेनी पड़े। जब वे देखते हैं कि हक़ का साथ देना वक़्त के बड़ों को नाराज़ करने का सबब बन रहा है तो वे उनकी तरफ झुक जाते हैं, चाहे वे बड़े हक़ के मुक़िर् हों और चाहे वे हक़ को रोकने वाले बने हुए हों।

जो लोग हक़ का इंक़ार करें और उसके मुख़ालिफ बनकर खड़े हो जाएं वे कभी अल्लाह की रहमत नहीं पा सकते। फिर जो लोग ऐसे मुक़िरीन का साथ दें, उनका अंजाम उनसे मुख़लिफ क्यों होगा।

इस्लाम में जंग भी है और सुलह भी। मगर वह जंग इस्लामी जंग नहीं जो इश्तिआल (उत्तेजना) की बिना पर लड़ी जाए। इसी तरह वह सुलह भी इस्लामी सुलह नहीं जिसका मुहर्रक (प्रक) बुजदिली और कमहिम्मती हो। कामयाबी हासिल करने के लिए ज़रूरी है कि दोनों चीज़ें सोचे समझे फैसले के तहत की जाएं न कि महज ज़बाती रुद्देअमल के तहत।

اِنَّا الْحَيُّوَةُ الدُّنْيَا لَعَبٌّ وَلَهْوٌ ۚ وَاِنْ تُوْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْتَلْكُمْ اَمْوَالُكُمْ ۚ اِنْ يَسْئَلْكُمُوْهَا فَيَحْضِكُمْ تَبَخَّلُوْا وَيُخْرِجْكُمْ اَضْغَاثَكُمْ ۚ هَآئِنُكُمْ هَٰؤُلَاءِ تَدْْعُوْنَ لِتَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخُلُ وَمَنْ يَبْخُلْ فَانْبَاسًا ۚ يَبْخُلْ عَنْ نَفْسِهِ ۚ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ ۖ وَاَنْتُمْ الْفُقَرَاءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْا اَمْنًا لَّكُمْ ۚ

दुनिया की ज़िंदगी तो महज एक खेल तमाशा है और अगर तुम ईमान लाओ और तक्वा (ईशपरायणता) इस्तिआर करो तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे अज़्र अता करेगा और वह तुम्हारे माल तुमसे न मांगेगा। अगर वह तुमसे तुम्हारे माल तलब करे फिर आखिर तक तलब करता रहे तो तुम बुख़ल (कंजूसी) करने लगे और अल्लाह तुम्हारे कीने को जाहिर कर दे। हां, तुम वे लोग हो कि तुम्हें अल्लाह की राह में खर्च करने के लिए बुलाया जाता है, पर तुम में से कुछ लोग हैं जो बुख़ल (कंजूसी) करते हैं। और जो शख्स बुख़ल करता। तो वह अपने ही से बुख़ल करता है। और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तुम मोहताज हो। और अगर तुम फिर जाओ तो अल्लाह तुम्हारी जगह दूसरी कौम ले आएगा, फिर वे तुम जैसे न होंगे। (36-38)

ईमान और तक्वे की ज़िंदगी इस्तिआर करने में जो चीज़ रुकावट बनती है वह दुनिया के फायदे और दुनिया की रौनकें हैं। आदमी जानता है कि वह कौन सा रवैया है जो आखिरत में उसे कामयाब बनाने वाला है। मगर वक़्ती मस्लेहतों का ख़्याल उसके ऊपर ग़ालिब आता है और वह बेराहरी की तरफ चला जाता है। हालांकि वाक़्या यह है कि अल्लाह अपने बंदों के हक में बेहद महरबान है। वह कभी इंसान से इतना बड़ा मुतालबा नहीं करता जो उसके लिए नाकाबिले बर्दाश्त हो। जिसके नतीजे में यह हो कि उसका भरम खुल जाए और उसकी छुपी हुई बशरी (इंसानी) कमजोरियां लोगों के सामने आ जाएं।

इस्लाम ख़ुदा का दीन है। मगर इसकी इशाअत (प्रचार-प्रसार) और हिफ़ाज़त का काम इस आलमे असबाब में इंसानी गिरोह के जरिये अंजाम पाना है। मुसलमान यही इंसानी गिरोह हैं। मुसलमान अगर अपने फ़रीजे को अंजाम दें तो वे ख़ुदा की नज़र में बाकीमत ठहरे। लेकिन अगर वे इस फ़रीजे को अंजाम देने में नाकाम रहें तो अल्लाह दूसरी कौमों को ईमान की तौफ़ीक देगा और उनके ज़रिए अपने दीन का तसलसुल बाकी रखेगा।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ وَبَشِّرِ الصّٰلِحِيْنَ ۙ اِذَا فَعَلْتَ اَلْكَ فَمِنْهُم مَّنْ يَنْفِرُ لَكَ اَللّٰهُ مَا تَدْرِكُ مِنْ دِيْنِكَ وَمَا تُاْخِرُ وَيُوَدِّرُ نَعْمَتًا عَلَيْكَ وَيَهْدِيْكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ وَيُضْرِكُ اللّٰهُ نَصْرًا عَظِيْمًا ۙ

आयतें-29

सूरह-48. अल-फतह

रुकूअ-4

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। बेशक हमने तुम्हें खुली फतह दे दी। ताकि अल्लाह तुम्हारी अगली और पिछली ख़ताएं माफ़ कर दे। और तुम्हारे ऊपर अपनी नेमत की तक्मील कर दे। और तुम्हें सीधा रास्ता दिखाए। और तुम्हें जबरदस्त मदद अता करे। (1-3)

सन् 6 हि० में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने असहाब के साथ मदीना से मक्का के लिए रवाना हुए ताकि वहां उमरा अदा कर सकें। आप हुदैबिया के मकाम पर पहुंचे थे कि मक्का के मुश्रीकीन ने आगे बढ़कर आपको रोक दिया और कहा कि हम आपको मक्का में दाखिल नहीं होने देंगे। इसके बाद बातचीत शुरू हुई जिसके नतीजे में फ़रीक्न (पक्षे) के दर्मियान एक मुआहिदा सुलह क़ार पाया।

यह मुआहिदा बजाहिर यक़तरफ़ तौर पर मुश्रीकीन की शराइत पर हुआ था। असहाबे रसूल उससे सख़्त कुबीदाख़ातिर (हताश) थे। वे इसे जिल्लत की सुलह समझते थे। मगर आप हुदैबिया से वापस होकर अभी रास्ते ही में थे कि यह आयत उतरी 'हमने तुम्हें खुली फतह

दे दी' इसकी वजह यह थी कि इस मुआहिदे के तहत यह करार पाया था कि दस साल तक मुसलमानों और मुशिरकीन के दरमियान लड़ाई नहीं होगी। लड़ाई का बंद होना दरअसल दावत का दरवाजा खुलने के हममअना था। हिजरत के बाद मुसलसल जंगी हालत के नतीजे में दावत का काम रुक गया था। अब जंगबंदी ने दोनों फरीकों के दरमियान खुले तबादले ख्याल की फज़ पैदा कर दी।

इस तरह इस मुआहिदे ने मैदान मुक़ाबले को बदल दिया। पहले दोनों फरीकों का मुक़ाबला जंग के मैदान में होता था जिसमें फरीके सानी (प्रतिपक्षी) बरतर हैसियत रखता था। अब मुक़ाबला नजरिये के मैदान में आ गया। और नजरिये के मैदान में शिर्क के मुक़ाबले में तौहीद को वाजेह तौर पर बरतर हैसियत हासिल थी। यही इस मामले में 'सीधा रास्ता' था यानी वह रास्ता जिसमें तौहीद के अलमबरदारों के लिए फतह को यकीनी बनाया।

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيُذْهِبَ الْإِيمَانُ أَقْصَىٰ آيَاتِهِمْ وَلَهُ
جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ حَٰكِمًا ۝ لِيُذْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَكَانَ
ذَٰلِكَ عِنْدَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ۝ وَيُعَذِّبُ الْمُتَّقِينَ وَالْمُتَّقِينَ وَالْمُتَّقِينَ
وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكِينَ
عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝ وَلَهُ جُنُودُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

वही है जिसने मोमिनों के दिल में इत्मीनान उतारा ताकि उनके ईमान के साथ उनका ईमान और बढ़ जाए। और आसमानों और जमीन की फौजें अल्लाह ही की हैं। और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। ताकि अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे बाग़ों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे। और ताकि उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दे। और यह अल्लाह के नजदीक बड़ा कामयाबी है। और ताकि अल्लाह मुनाफ़िक (पाखंडी) मर्दों और मुनाफ़िक औरतों को और मुशिरक मर्दों और मुशिरक औरतों को अजाब दे जो अल्लाह के साथ बुरे गुमान रखते थे। बुराई की गर्दिश उन्हीं पर है। और उन पर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ और उन पर उसने लानत की। और उनके लिए उसने जहन्नम तैयार कर रखी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। और आसमानों और जमीन की फौजें अल्लाह ही की हैं। और अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (4-7)

यहां 'सकीनत' से मुराद इश्तिआल (उत्तेजना) के बावजूद मुशतइल (उत्तेजित) न होना है। हुदैबिया के सफर में मुखालिफीने इस्लाम ने तरह-तरह से मुसलमानों को इश्तिआल दिलाने की कोशिश की ताकि वे मुशतइल होकर कोई ऐसी कार्रवाई करें जिसके बाद उनके खिलाफ जारिहियत का जवाज मिल जाए। मगर मुसलमान हर इश्तिआल को यकतरफा तौर पर बर्दाश्त करते रहे। वे आखिरी हद तक एराज की पॉलिसी पर कायम रहे।

खुदा चाहे तो अपनी बराह्यास्त कुव्वत से बातिल को ज़े कर दे। और हक को ग़लब आता फरमाए। फिर खुदा क्यों ऐसा करता है कि वह 'सुलह हुदैबिया' जैसे हालात में डाल कर अहले ईमान को उनका सफर कराता है। इसका मक़सद ईमान वालों के ईमान में इज़ाफ़ा है। आदमी जब अपने अंदर इंतक़ाम की नफ़िसयात को दबाए और एक सरक़श क़ैम से इसलिए सुलह कर ले कि हक की दावत का तक्ज़ ज़ही है तो वह अपने शुज़री पैसले के तहत वह काम करता है जिसे करने के लिए उसका दिल राजी न था। इस तरह वह अपने शुज़री ईमान को बढ़ाता है। वह अपने आपको ऐसी रब्बानी कैफ़ियत का महबित (उतरने की जगह) बनाता है जिसे किसी और तदबीर से हासिल नहीं किया जा सकता। फिर इस अमल का यह फायदा भी है कि इसके जरिए से जन्नत वाले लोग अलग हो जाते हैं और जहन्नम वाले लोग अलग।

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَٰهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعَزَّوْهُ
وَتَقَرَّبُوهُ وَتَسْجُدُوا لَهُ ۝ أَصِيلًا ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللَّهَ
يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۚ فَمَنْ تَكَثَّرَ فَأَتِمَّا بَيْعَتَكَ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا
عَاهَدَ عَلَيْهِ اللَّهُ فَسَيُؤْتِيَهُ أَجْرًا عَظِيمًا ۝

बेशक हमने तुम्हें गवाही देने वाला और बशारत (शुभ-सूचना) देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसकी ताजीम (सम्मान) करो। और तुम अल्लाह की तस्वीह करो सुबह व शाम। जो लोग तुमसे बैअत (प्रतिज्ञा) करते हैं वे दरहकीकत अल्लाह से बैअत करते हैं। अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है। फिर जो शख्स उसे तोड़ेगा उसके तोड़ने का बवाल उसी पर पड़ेगा। और जो शख्स उस अहद (वचन) को पूरा करेगा जो उसने अल्लाह से किया है तो अल्लाह उसे बड़ा अज़्र अता फरमाएगा। (8-10)

शाह वलीउल्लाह साहब ने शाहिद का तर्जुमा इच्हारे हक कुन्या (हक का इच्हार करने वाला) किया है। यही इस लफ्ज का सहीतरीन मफहूम है। पैग़म्बर का अस्त काम यह होता है कि वह हकीकत का एलान व इच्हार कर दे। वह वाजेह तौर पर बता दे कि मौत के बाद की अबदी जिंदगी में किन लोगों के लिए खुदा का इनाम है और किन लोगों के लिए खुदा की सज़ा।

ऐसे एक शाहिदे हक का खड़ा होना उसके मुखातबीन के लिए सबसे ज्यादा सख्त इस्तेहान होता है। उन्हें एक वशर की आवाज में खुदा की आवाज को सुना पड़ता है। एक बजाहिर इंसान को खुदा के नुमाइंदे के रूप में देखना पड़ता है। एक इंसान के हाथ में अपना हाथ देते हुए यह समझना पड़ता है कि वे अपना हाथ खुदा के हाथ में दे रहे हैं। जो लोग इस आला मअरफत का सुवूत दें उनके लिए खुदा के यहां बहुत बड़ा अज़्र है और जो लोग इस इस्तेहान में नाकाम रहें उनके लिए सख्ततरीन सजा।

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا
يَقُولُونَ يَا سَيِّدِنَا مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا
إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ بَلْ
ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَنْتَقِلَ الرُّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَى أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَزَيَّنَ ذَلِكَ فِي
قُلُوبِكُمْ وَظَنَّتُمْ ظَنَ السَّوءِ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ۝ وَمَنْ لَمْ يُؤْمَرْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
فَإِنَّا آَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۝ وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ يُعْذِرُ لِمَنْ يَشَاءُ
وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

जो देहाती पीछे रह गए वे अब तुमसे कहेंगे कि हमें हमारे अमवाल (धन-सम्पत्ति) और हमारे बाल बच्चों ने मशगूल रखा, पस आप हमारे लिए माफी की दुआ फरमाएं। यह अपनी जवानों से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है। तुम कहो कि कौन है जो अल्लाह के सामने तुम्हारे लिए कुछ इस्तियार रखता हो। अगर वह तुम्हें कोई नुक्सान या नफा पहुंचाना चाहे। बल्कि अल्लाह उससे बाख़बर है जो तुम कर रहे हो। बल्कि तुमने यह गुमान किया कि रसूल और मोमिनीन कभी अपने घर वालों की तरफ लौटकर न आएंगे। और यह ख्याल तुम्हारे दिलों को बहुत भला नजर आया और तुमने बहुत बुरे गुमान किए। और तुम बर्बाद होने वाले लोग हो गए। और जो ईमान न लाया अल्लाह पर और उसके रसूल पर तो हमने ऐसे मुंकिरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। और आसमानों और जमीन की बादशाही अल्लाह ही की है। वह जिसे चाहे बख़्शे और जिसे चाहे अजाब दे। और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (11-14)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना में ख़्वाब देखा था कि आप मक्का का सफर बराए उमरा कर रहे हैं। उसके मुताबिक आप असहाब (साथियों) के साथ मक्का के लिए रवाना हुए। मगर उस वक्त हालात बेहद ख़राब थे। शदीद अंदेशा था कि

कुैश से टकराव हो और मुसलमान बुरी तरह मारे जाएं। चुनांचे मक्का के करीब पहुंच कर कुैश ने मुसलमानों की जमाअत पर पत्थर फेंके और तरह-तरह से छेड़ा ताकि वे मुशतइल (उत्तेजित) होकर लड़ने लगे। और कुैश को उनके खिलाफ जाहिरियत का मौक़ा मिले। मगर मुसलमानों के यकतरफ़ सब्र व एराज ने इसका मौक़ा आने नहीं दिया।

अतराफ मदीना के बहुत से कमजोर मुसलमान इसी अंदिशे की बिना पर सफ़र में शरीक नहीं हुए थे। जब आप बहिफ़ाजत वापस आ गए तो ये लोग आपके पास अपनी वफ़ादारी जाहिर करने के लिए आए। और आपसे माफी मांगने लगे। मगर उन्हें माफी नहीं दी गई। इसकी वजह यह थी कि उनका उज़्र झूठा उज़्र था न कि सच्चा उज़्र। अल्लाह के यहां हमेशा सच्चा उज़्र काबिले क़बूल होता है और झूठा उज़्र हमेशा नाक़बिले क़बूल।

उन लोगों का खुदा के रसूल के साथ सफ़र में शरीक न होना बेयकीनी की वजह से था न कि किसी वाकई उज़्र की बिना पर। वे समझते थे कि ऐसे पुरख़तर सफ़र से दूर रहकर वे अपने मफ़दात को महफूज़ कर रहे हैं। उन्हें मालूम न था कि नफ़ा और नुक्सान का मालिक खुदा है। अगर खुदा न बचाए तो किसी की हिफाजती तदबीरें उसे बचाने वाली नहीं बन सकतीं। ऐसे लोगों के लिए दुनिया में भी बर्बादी है और आखिरत में भी बर्बादी।

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَى مَغَائِمٍ لِتَأْخُذُوا هَذَا زُرُونَا نَتَّبِعْكُمْ يُرِيدُونَ
أَنْ يُبَدِّلُوا كَلِمَ اللَّهِ قُلْ لَنْ تَتَّبِعُونَا كَذَبَكُمْ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ فَسَيَقُولُونَ بَلْ
تَحْسُدُونا بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

जब तुम ग़नीमतें लेने के लिए चलोगे तो पीछे रह जाने वाले लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो। वे चाहते हैं कि अल्लाह की बात को बदल दें। कहो कि तुम हरगिज हमारे साथ नहीं चल सकते। अल्लाह पहले ही यह फरमा चुका है। तो वे कहेंगे बल्कि तुम लोग हमसे हसद करते हो। बल्कि यही लोग बहुत कम समझते हैं। (15)

सुलह हुदैबिया से पहले यहूद मुसलमानों की दुश्मनी में बहुत जरी थे। क्योंकि इससे पहले उन्हें इस मामले में कुैश का पूरा तआवुन हासिल था। हुदैबिया में कुैश से ना जंग मुआहिदा ने यहूद को कुैश से काट दिया। इसके बाद वे अकेले रह गए। इससे ख़ैबर, तेमा, फिदक वगैरह के यहूदियों के हौसले टूट गए। चुनांचे सुलह के तीन महीने बाद अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर पर चढ़ाई की तो वहां के यहूद ने लड़े भिड़े बग़ैर हथियार डाल दिए और उनके कसीर अमवाल (विपुल धन) मुसलमानों को ग़नीमत में मिले।

कमजोर ईमान के लोग जो हुदैबिया के सफ़र को पुरख़तर समझ कर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नहीं गए थे, अब उन्होंने चाहा कि वे यहूदियों के खिलाफ कार्रवाई में शरीक हों और माले ग़नीमत में अपना हिस्सा हासिल करें। मगर उन्हें साथ जाने से रोक दिया गया। खुदा का क़ानून यह है कि जो ख़तरा मोल ले वह नफा हासिल करे।

आदमी जब खतरा मोल लिए बगैर हासिल करना चाहे तो गोया वह कानूने इलाही को बदल देना चाहता है। मगर इस दुनिया में खुदा के कानून को बदलना किसी के लिए मुमकिन नहीं।

قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سُدُّعُونَ إِلَى قَوْمِهِ أُولَىٰ بِأُسِّ شَدِيدٍ
تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسَلِّمُونَ ۚ فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا وَإِنْ تَوَلَّوْا كَمَا
تَوَلَّيْتُمْ مِّن قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝ لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى
الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمُرِيضِ حَرَجٌ ۚ وَمَن يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ
تَجْرَىٰ مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَن يَتَوَلَّ يَُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

قَوْلُهُ

पीछे रहने वाले देहातियों से कहो कि अनकरीब तुम ऐसे लोगों की तरफ बुलाए जाओगे जो बड़े जोरआवर हैं, तुम उनसे लड़ोगे या वे इस्लाम लाएंगे। पस अगर तुम हुक्म मानोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अज्र देगा और अगर तुम रूगदानी (अवहेलना) करोगे जैसा कि तुम इससे पहले रूगदानी कर चुके हो तो वह तुम्हें दर्दनाक अजाब देगा। न अंधे पर कोई गुनाह है और न लंगड़े पर कोई गुनाह है और न बीमार पर कोई गुनाह है। और जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करेगा उसे अल्लाह ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जो शख्स रूगदानी करेगा उसे वह दर्दनाक अजाब देगा। (16-17)

जिन लोगों ने हुदैबिया (6 हि०) के मौके पर कमजोरी दिखाई थी वे उसके नतीजे में मिलने वाले इनाम से तो महरूम रहे। मगर उनके लिए दरवाजा अब भी बंद न था। क्योंकि तौहीद की मुहिम को अभी दूसरे बड़े-बड़े मअरके पेश आने बाकी थे। फरमाया गया कि अगर तुमने आइंदा पेश आने वाले इन मौकों पर कुर्बानी का सुबूत दिया तो दुबारा तुम खुदा की रहमतों के मुस्तहिक हो जाओगे।

इस किस्म का इन्तेहान आदमी के मोमिन या मुनाफिक होने का फैसला करता है। इससे मुस्तसना (अपवाद) सिर्फ वे लोग हैं जिन्हें कोई वाकई उज्र लाहिक हो। मजबूरीना कोताही को अल्लाह माफ फरमा देता है। मगर जो कोताही मजबूरी के बगैर की जाए वह अल्लाह के यहां कबिले माफी नहीं।

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي
قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ۚ وَمَعَازٍ كَثِيرَةٍ
يَخْذُ وَنَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝ وَعَدَ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُ وَنَهَا

فَعَجَلَ لَكُمْ هَذِهِ وَكَفَتْ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ وَلِتَكُونَ آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ
صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۝ وَأُخْرَى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

अल्लाह ईमान वालों से राजी हो गया जबकि वे तुमसे दरख्त के नीचे बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे, अल्लाह ने जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था। पस उसने उन पर सकीनत (शान्ति) नाजिल फरमाई और उन्हें इनाम में एक करीबी फतह दे दी। और बहुत सी ग़नीमतें भी जिन्हें वे हासिल करेंगे। और अल्लाह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। और अल्लाह ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया है जिन्हें तुम लोगे, पस यह उसने तुम्हें फौरी तौर पर दे दिया। और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए और ताकि अहले ईमान के लिए यह एक निशानी बन जाए। और ताकि वह तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाए। और एक फतह और भी है जिस पर तुम अभी कादिर नहीं हुए। अल्लाह ने उसका इहाता (आच्छादन) कर रखा है। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। (18-21)

हुदैबिया के सफर में एक मौके पर यह ख़बर फैली कि कुैश ने हज़रत उस्मान को कल कर दिया जो उनके यहां रसूलुल्लाह के सफ़ीर (संदेशवाहक) के तौर पर गए थे। यह एक जारिहियत का मामला था। चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कीकर के एक दरख्त के नीचे बैठकर अपने चौदह सौ असहाब से यह बैअत ली कि वे मर जाएंगे मगर दुश्मन को पीठ नहीं दिखाएंगे। इस्लाम की तारीख में इस बैअत का नाम बैअते रिजवान है।

यह बैअत जिस मक़ाम पर ली गई वह मदीना से ढाई सौ मील और मक्का से सिर्फ बारह मील के फ़सले पर था। गोया मुसलमान अपने मर्कज़ से बहुत दूर थे और कुैश अपने मर्कज़ से बहुत करीब। मुसलमान उमरे की नियत से निकले थे। इसलिए उनके पास महज सफ़री सामान था, जबकि कुैश हर किस्म के जंगी सामान से मुसल्लह थे। ऐसे नाजुक मौके पर यह सिर्फ लोगों का जब्बए इज़्ज़ास (निष्ठा-भाव) था जिसने उन्हें आमादा किया कि वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ दें। क्योंकि कोई जाहिरी दबाव वहां सिर से मौजूद ही न था।

‘अल्लाह ने उनके दिलों का हाल जाना और सकीनत नाजिल फरमाई’ इससे मुराद वह रंज व इजतिराब (बैवैनी) है जो हुदैबिया की बजाहिर यकतरफ़ा सुलह से सहाबा के दिलों में पैदा हुआ था। ताहम उन्होंने खुदा के इस हुक्म को सब्र व सुकून के साथ कुबूल कर लिया। इसके नतीजे में चन्द माह बाद ही उसके फ़ायदे जाहिर होना शुरू हो गए। इस मुआहिदे ने कुैश को यहूद के महाज से अलग कर दिया और इस तरह यहूद को मुसख़्बर करना आसान हो गया। जंगी हालात ख़त्म होने की वजह से इस्लाम की इशाअत बहुत तेजी से बढ़ी, यहां

तक कि खुद कुरैश को दावत की राह से मुसख़्ख़र (विजित) कर लिया गया जिन्हें जंग की राह से मुसख़्ख़र करना मुश्किल बना हुआ था।

وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوْا الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَٰئِذَا أَرْسَلْنَا إِلَهُكُمُ النَّبِيَّ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ وَلَكُنْ تَحْدِثُ سُنَّةَ اللَّهِ تَتَّبِعُ لَوْلَا ۖ وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَارْتَدَّ بِكُمْ عَنْهُمْ ۖ بِضَرْبِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝

और अगर ये मुंकिर लोग तुमसे लड़ते तो जरूर पीठ फेरकर भागते, फिर वे न कोई हिमायती पाते और न मददगार। यह अल्लाह की सुन्नत (तरीका) है जो पहले से चली आ रही है। और तुम अल्लाह की सुन्नत में कोई तब्दीली न पाओगे। और वही है जिसने मक्का की वादी में उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए। बाद इसके कि तुम्हें उन पर काबू दे दिया था। और अल्लाह तुम्हारे कामों को देख रहा है। (22-24)

पैगम्बर के मुखातबीने अब्बल के लिए खुदा का कानून यह है कि उनके इंकार के बाद वह उन्हें हलाक कर देता है। हुदैबिया के मौके पर कुरैश का इंकार आखिरी तौर पर सामने आ गया था। ऐसी हालत में अगर जंग की नौबत आती तो मुसलमानों की तक्वियत (सशक्तता) के लिए खुदा के फरिश्ते उतरते और वे मुसलमानों का साथ देकर उनके दुश्मनों का खात्मा कर देते।

मगर मुशिरकीन के सिलसिले में अल्लाह की मस्लेहत यह थी कि उन्हें हलाक न किया जाए। बल्कि उनकी ग़ैर मामूली इंसानी सलाहियतों को इस्लाम के मकसद के लिए इस्तेमाल किया जाए। इसलिए अल्लाह तआला ने अपने पैगम्बर को नाजंग मुआहिदे की तरफ रहनुमाई फरमाई।

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ حُدُودَهُ ۖ وَلَوْلَا رِجَالُ الْمُؤْمِنُونَ ۖ وَنِسَاءُ الْمُؤْمِنَاتِ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ ۖ أَنْ تَطَّوُّوهُمْ فَتَضَيَّبَ مِنْهُمْ ۖ مَعْرَةٌ لِبَغْيِهِمْ ۖ لِيَدْخُلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ لَوْ تَرَىٰٓ إِلَىٰ لَعَدُ بَنِي الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَدَا بَنِي النَّبِيِّ ۝

वही लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका और कुर्बानी के जानवरों को भी रोके रखा कि वे अपनी जगह पर न पहुँचें। और अगर (मक्का में) बहुत से मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें न होतीं जिन्हें तुम लाइलमी में पीस डालते, फिर उनके कारण तुम पर बेख़बरी में इल्जाम आता, ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत

में दाख़िल करे। और अगर वे लोग अलग हो गए होते तो उनमें जो मुंकिर थे उन्हें हम दर्दनाक सजा देते। (25)

कुरैश के सरदारों ने पैगम्बर के खिलाफ अपनी दुश्मनाना हरकतों से अपने आपको अजाब का मुस्तहिक बना लिया था और इस काबिल बना लिया था कि उनसे जंग की जाए। मगर एक अजीमतर मस्लेहत की खातिर उनसे जंग के बजाए सुलह कर ली गई। वह मस्लेहत यह थी कि इस वक्त कुरैश की जमाअत में बहुत से दूसरे लोग भी थे जो या तो अपने दिल में शिर्क से तौबा करके तौहीद पर ईमान ला चुके थे या ऐसे लोग थे जिनकी सालिहियत (सज्जनता) की बिना पर यकीनी था कि हालात के मोअतदिल (नॉर्मल) होते ही वे इस्लाम कबूल कर लेंगे। इसलिए अल्लाह तआला ने दोनों फ़रीकों के दर्मियान जंग न होने दी। ताकि वे लोग मोमिन बनकर दुनिया में अपना इस्लामी हिस्सा अदा करें और आखिरत में खुदा का इनाम हासिल करें। अल्लाह की नजर में हर दूसरी मस्लेहत के मुकाबले में दावत की मस्लेहत ज्यादा अहमियत रखती है।

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ الْحَمِيَّةَ فَأُنْزِلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَىٰ الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَىٰ وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

जब इंकार करने वालों ने अपने दिलों में हमिय्यत (हठ) पैदा की, जाहिलियत की हमिय्यत, फिर अल्लाह ने अपनी तरफ से सकीनत (शांति) नाजिल फरमाई अपने रसूल पर और ईमान वालों पर, और अल्लाह ने उन्हें तकवा (ईशपरायणता) की बात पर जमाए रखा और वे उसके ज्यादा हक्दार और उसके अहल थे। और अल्लाह हर चीज का जानने वाला है। (26)

जिस आदमी के अंदर अल्लाह का डर पैदा हो जाए उसके दिल से एक अल्लाह के सिवा हर दूसरी चीज की अहमियत निकल जाती है। वह सिर्फ एक अल्लाह को सारी अहमियत देने लगता है। हुदैबिया का मौका सहाबा के लिए इसी किस्म का एक शदीद इस्तेहान था जिसमें वे पूरे उतरे। इस मौके पर फ़रीके सानी (प्रतिपक्ष) ने जाहिलाना जिद और क़ैमी अस्वियत का जबरदस्त मुजाहिरा किया। मगर सहाबा हर चीज को खुदा के खाने में डालते चले गए। उनके मुतकियाना मिजाज ने उन्हें इस सख़्त इस्तेहान में जवाबी जिद और जवाबी अस्वियत से बचाया। वे मुसलसल इश्तिआलअगेजी के बावजूद आखिर वक्त तक मुशतइल नहीं हुए।

لَقَدْ صَدَّقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الْوَعْدَ بِالْحَقِّ ۚ لَنْ يَدْخُلَ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ ۖ آمِينَ ۚ فَخَلَفُوا مِنْكُمْ رُءُوسُهُمْ وَفَصَصَرُوا ۚ لَوْلَا فَؤُؤُفُونُ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا ۝

बेशक अल्लाह ने अपने रसूल को सच्चा ख़ाब दिखाया जो वाक्या के अनुसार है। बेशक अल्लाह ने चाहा तो तुम मस्जिदे हराम में जरूर दाखिल होगे, अमन के साथ, बाल मूंडते हुए अपने सरों पर और कतरते हुए, तुम्हें कोई अंदेशा न होगा। पस अल्लाह ने वह बात जानी जो तुमने नहीं जानी, पस इससे पहले उसने एक फतह (विजय) दे दी। (27)

हुदैबिया का सफर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक ख़ाब पर हुआ था। आपने मदीना में ख़ाब देखा कि आप मक्का पहुंच कर उमरा अदा फरमा रहे हैं। इस ख़ाब को लोगों ने खुदा की बिशारत समझा और मदीना से मक्का के लिए रवाना हुए। मगर हुदैबिया में क़ौश ने रोका और बिलआखिर उमरा अदा किए बग़ैर लोगों को वापस आना पड़ा। इससे कुछ लोगों को ख़्याल हुआ कि क्या पैग़म्बर का ख़ाब सच्चा न था। मगर यह महज श्रुत था। क्योंकि ख़ाब में यह सराहत न थी कि उमरा इसी साल होगा। चुनांचे खुद मुआहिदे की शराइत के मुताबिक अगले साल जीकअदह सन् 7 हि० में यह उमरा पूरे अमन व अमान के साथ अदा किया गया। इस उमरे को इस्लामी तारीख में उमरतुल कजा कहा जाता है।

इस साल उमरा का इत्तिवा (स्थगन) एक अजीम मस्लेहत की कीमत पर हुआ था। यह मस्लेहत कि इसके जरिए क़ौश से दस साल का नाजंग मुआहिदा तै पाया और नतीजतन दावत के काम के लिए मुवाफ़िक फज्र पैदा हुई। यह खुद एक फतह थी। क्योंकि इसके जरिए से अलमबरदारों शिर्क (बहुदेववाद के ध्वजावाहकों) के ऊपर आखिरी और कुल्ली फतह का दरवाजा खुला।

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ

شَهِيدًا ۝

और अल्लाह ही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक के साथ भेजा ताकि वह इसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे। और अल्लाह काफी गवाह है। (28)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो हैसियतें थीं। एक यह कि आप पैग़म्बर थे। दूसरे यह कि आप पैग़म्बर आखिरुज्जमां (अंतिम पैग़म्बर) थे। आपके बाद कोई और पैग़म्बर आने वाला नहीं। पहली हैसियत के एतबार से आपको भी वही काम करना था जो तमाम पैग़म्बरों ने किया, यानी तौहीद का एलान और आखिरत का इंजार व तबशीर (डरावा और खुशख़बरी)

दूसरी हैसियत का मामला मुख़लिफ था। दूसरी हैसियत के एतबार से आपके जरिए वे तारीखी हालात पैदा करना मत्बूब था जो किताबे इलाही और सुन्नते नबी की हिफ़ाजत की जमानत बन जाएं। ताकि दुबारा वह ख़ला (रिक्तता) पैदा न हो जिसके नतीजे में पैग़म्बर भेजना जरूरी हो जाता है। इस दूसरे पहलू का तक्क़ज था कि आपकी दावत सिर्फ 'एलान'

पर ख़त्म न हो बल्कि वह 'इक़िलाब' तक पहुंचे। इक़िलाब से मुराद आलमी तारीख में वह तब्दीली पैदा करना है जिसके बाद वे हालात हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएं जिनकी वजह से बार-बार खुदा की हिदायत मादूम (विलुप्त) या तब्दील हो गई और इसकी जरूरत पेश आई कि नया पैग़म्बर आकर दुबारा हिदायत की असली सूरत में जिंदा करे।

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكْعًا
سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا سِيَّمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِنْ أَثَرِ السُّجُودِ
ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ كَزَرْعٍ أَخْرَجَ شَطْأَهُ فَآزَرَهُ
فَأَسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَى عَلَى سَوْقِهِ يُغْجِبُ الزَّرْعَ لِيُغْضِبَ بِهِمُ الْكُفَّارَ وَعَدَّ اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا ۝

मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वे मुंकिरों पर सख़्त हैं और आपस में महरबान हैं तुम उन्हें रूकूअ में और सज्दे में देखोगे, वे अल्लाह का फजल और उसकी रिजामंदी की तलब में लगे रहते हैं। उनकी निशानी उनके चेहरों पर है सज्दे के असर से, उनकी यह मिसाल तौरात में है। और इंजील में उनकी मिसाल यह है कि जैसे खेती, उसने अपना अंकुर निकाला, फिर उसे मजबूत किया, फिर वह और मोटा हुआ, फिर अपने तने पर खड़ा हो गया, वह किसानों को भला लगता है ताकि उनसे मुंकिरों को जलाए। उनमें से जो लोग इमान लाए और नेक अमल किया अल्लाह ने उनसे माफी का और बड़े सवाब का वादा किया है। (29)

पैग़म्बर इस्लाम को एक अजीम तारीखी किरदार अदा करना था जिसे कुरआन में इज़्ज़रे दीन कहा गया है। इस तारीखी किरदार के लिए आपको आला इंसानों की एक जमाअत दरकार थी। यह जमाअत हजरत इस्माईल को अरब के सहारा में आबाद करके ढाई हजार साल के अंदर तैयार की गई। यह एक हकीकत है कि बनू इस्माईल का यह गिरोह तारीख का जानदारतरीन गिरोह था। उनकी यह बिल्कुव्यह (Potential) सल्लाहियत जब कुरआन से फैज़ाब हुई तो प्रोफ़ेसर मार्गोलेथ के अल्फ़ाज़ में अरब की यह कैम हीरोज़ (नायकों) की एक कैम (A nation of heroes) में तब्दील हो गई। इस गिरोह की अहमियत खुदा की नजर में इतनी ज्यादा थी कि उनके बारे में उसने पेशगी तौर पर अपने पैग़म्बरों को बाख़बर कर दिया था। चुनांचे तौरात में उनकी इफ़िरादी (व्यक्तिगत) खुसूसियत दर्ज कर दी गई थी और इंजील में उनकी इज्तिमाई (सामूहिक) खुसूसियत।

इस गिरोह के फ़र्द-फ़र्द की यह खुसूसियत बताई कि वे मुंकिरों के लिए सख़्त और मोमिनों के लिए नर्म हैं। यानी उनका रवैया उसूल के तहत मुतअव्यन होता है न कि महज

ख़ाहिशात और जज्बात के तहत। शाह अब्दुल कादिर साहब इसकी तशरीह में लिखते हैं 'जो तुंदी और नर्मी अपनी खू (स्वभाव) हो वह सब जगह बराबर चले और जो ईमान से संवर कर आए वह तुंदी अपनी जगह और नर्मी अपनी जगह' इसी तरह उनके अफ़राद का मिजाज यह है कि वे खुदा के आगे झुकने वाले और उसकी इबादत और जिफ़्र में लगे रहने वाले हैं। खुदा की तरफ उनकी तवज्जोह इतनी बढ़ी हुई है कि उसका निशान उनके चेहरों पर नुमायां हो रहा है। असहाबे रसूल की ये सिफ़ात इस तफ़सील के साथ मौजूदा मुहरफ़ (परिवर्तित) तौरात में नहीं मिलतीं। ताहम किताब इस्तसना (बाब 33) में कुदसियों (Saints) कालफ़अम्र तक मौजूद है।

अलबत्ता इंजील की पेशीनगोई आज भी मरकिस (बाब 4) और मत्ता (बाब 13) में मौजूद है। यह तमसील की जबान में इस बात का एलान है कि इस्लाम की दावत एक पौधे की तरह मक्का से शुरू होगी। फिर वह बढ़ते-बढ़ते एक ताकतवर दरख़्त बन जाएगी। यहां तक कि उसका इस्तहकाम इस दर्जे को पहुंच जाएगा कि अहले हक उसे देखकर खुश होंगे और अहले बातिल ग़ैज व हसद में मुब्तिला होंगे कि वे चाहने के बावजूद उसका कुछ बिगाड़ नहीं सके।

سُبْحَانَكَ يَا مَنْ لَا يَمُوتُ وَلَا يَمُوتُ وَلَا يَمُوتُ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْصُرُوا بِيَدِي اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ
شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝

आयतें-18

सूरह-49. अल-हुजुरात

रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो, तुम अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो, और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

रसूल की राय से अपनी राय को ऊपर करना हराम है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी में इसकी सूरत यह थी कि मज्लिस में गुफ्तगू करते हुए कोई बढ़-बढ़कर बातें करे, वह आपकी बात पर अपनी बात को मुकद्दम करना चाहे। बाद के जमाने में इसका मतलब यह है कि आदमी खुदा व रसूल की दी हुई हिदायत से आजाद होकर अपनी राय कायम करने लगे।

इस किस्म की ग़ाफ़लत हमेशा इसलिए होती है कि आदमी यह भूल जाता है कि अल्लाह उसके ऊपर निगरां है। अगर वह जाने कि उसके मुंह से निकली हुई आवाज इंसानों तक पहुंचने से पहले अल्लाह तक पहुंच रही है तो आदमी की जबान रुक जाए, वह बोलने से

ज्यादा चुप रहने को अपने लिए पसंद करने लगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ
كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَن تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ
يَغُضُّونَ أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ
لِلتَّقْوَىٰ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُنَادُونَكَ مِنْ وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّىٰ تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

ऐ ईमान वालो, तुम अपनी आवाज़ें पैग़म्बर की आवाज़ से ऊपर मत करो और न उसे इस तरह आवाज़ देकर पुकारो जिस तरह तुम आपस में एक दूसरे को पुकारते हो। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जाएं और तुम्हें ख़बर भी न हो। जो लोग अल्लाह के रसूल के आगे अपनी आवाज़ें पस्त रखते हैं वही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक्वे (ईशपरायणता) के लिए जांच लिया है। उनके लिए माफ़ी है और बड़ा सवाब है। जो लोग तुम्हें हुज़रों कमरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें से अक्सर समझ नहीं रखते। और अगर वे सन्न करके यहां तक कि तुम खुद उनके पास निकल कर आ जाओ तो यह उनके लिए बेहतर होता। और अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (2-5)

अतराफ़े मदीना के देहाती कबीले शुऊरी एतबार से ज्यादा पुख़्ता न थे। उनके सरदारों का हाल यह था कि वे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में आते तो आपको मुखातब करते हुए या रसूलल्लाह कहने के बजाए या मुहम्मद कहते। उनकी गुफ्तगू मुतवाज़आना (विनम्र शालीन) न होती बल्कि मुतकब्बिराना (घमंडपूर्ण) होती। इससे उन्हें मना किया गया। रसूल दुनिया में खुदा का नुमाइंदा होता है। उसके सामने इस तरह की नाशाइस्तगी (अभद्रता) खुदा के सामने नाशाइस्तगी है जो कि आदमी को बिल्कुल बेकीमत बना देने वाली है।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद आपकी लाई हुई हिदायत दुनिया में आपकी कायम मक़ाम (स्थानापन्न) है। अब इस हिदायत के साथ वही ताबेदारी मल्लूब है जो ताबेदारी रसूल की ज़िंदगी में रसूल की जात के साथ मल्लूब होती थी।

अल्लाह का डर आदमी को संजीदा बनाता है। किसी के दिल में अगर वाक़ेयतन अल्लाह का डर पैदा हो जाए तो वह खुद अपने मिजाज के तहत वे बातें जान लेगा जिसे दूसरे लोग बताने के बाद भी नहीं जानते।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا أَنْ تُصِيبُوا قَوْمًا بِمَجَاهَلَةٍ
فَتُصِيبُوا عَلَى مَا فَعَلْتُمْ بِنُذُرٍ مِمَّنْ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّ فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ لَوْ يُطِيعُكُمْ
فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ
وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ أُولَٰئِكَ هُمُ الرَّشِدُونَ ۖ فَضَلَا
مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَ ٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

ऐ ईमान वालो, अगर कोई फासिक (अवज्ञाकारी) तुम्हारे पास खबर लाए तो तुम अच्छी तरह तहकीक कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी गिरोह को नादानी से कोई नुकसान पहुंचा दो, फिर तुम्हें अपने किए पर पछताना पड़े। और जान लो कि तुम्हारे दर्मियान अल्लाह का रसूल है। अगर वह बहुत से मामलात में तुम्हारी बात मान ले तो तुम बड़ी मुश्किल में पड़ जाओ। लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान की मुहब्बत दी और उसे तुम्हारे दिलों में मरसूब (प्रिय) बना दिया, और कुफ्र और फिस्क (अवज्ञा) और नाफरमानी से तुम्हें मुत्तफिर (खिन्न) कर दिया। ऐसे ही लोग अल्लाह के फल और इनाम से राहेरास्त (सन्मार्ग) पर हैं। और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (6-8)

कोई आदमी दूसरे शख्स के बारे में अगर ऐसी खबर दे जिसमें उस शख्स पर कोई इल्जाम आता हो तो ऐसी खबर को महज सुनकर मान लेना ईमानी एहतियात के सरासर खिलाफ है। सुने वाले पर लाजिम है कि वह इसकी जरूरी तहकीक करे, और जो राय कायम करे और जानिबदाराना (निष्पक्ष) तहकीक के बाद करे न कि तहकीक से पहले।

अक्सर ऐसा होता है कि जब इस किस्म की खबर एक शख्स को मिलती है तो उसके साथी फौरन उसके खिलाफ इक्दाम की बातें करने लगते हैं। यह सख्त और जिम्मेदारी की बात है। न किसी आदमी को ऐसी खबर पर तहकीक से पहले कोई राय कायम करना चाहिए और न उसके साथियों को तहकीक से पहले इक्दाम का मश्विरा देना चाहिए।

जो लोग वाकई हिदायत के रास्ते पर आ जाएं उनके अंदर बिल्कुल मुख्तलिफ मिजाज पैदा होता है। दूसरों पर इल्जाम तराशी से उन्हें नफरत हो जाती है। और तहकीकी बात पर बोलने से ज्यादा वे उस पर चुप रहना पसंद करते हैं। उनका यह मिजाज इस बात की अलामत होता है कि उन्हें खुदा की रहमतों में से हिस्सा मिला है। वह ईमान फिलवाकअ उनकी ज़िंदगियों में उतरा है जिसका वे अपनी जवान से इस्तेफा कर रहे हैं।

وَلَا تَأْكُلْ أَمْوَالَكُم مِّنَ الْبُيُوتِ الَّتِي بَنَيْتُمْ لَكُمْ زِينَةً ۖ فَالْقُلُوبُ غَافِلَةٌ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

عَلَى الْآخَرَىٰ فَفَعَلُوا لَهَا الْبُيُوتَ الَّتِي تَبْنِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ ۚ فَإِنَّ فَاءَهُ فَاصِلَةٌ
بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسَطُ وَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ
فَاصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

और अगर मुसलमानों के दो गिरोह आपस में लड़ जाएं तो उनके दर्मियान सुलह कराओ। फिर अगर उनमें का एक गिरोह दूसरे गिरोह पर ज्यादाती करे तो उस गिरोह से लड़े जो ज्यादाती करता है। यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ लौट आए। फिर अगर वह लौट आए तो उनके दर्मियान अदल (न्याय) के साथ सुलह कराओ और इंसाफ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। मुसलमान सब भाई हैं, पस अपने भाइयों के दर्मियान मिलाप कराओ और अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर रहम किया जाए। (9-10)

मुसलमान आपस में किस तरह रहें, इसका जवाब एक लफज में यह है कि वे इस तरह रहें जिस तरह भाई-भाई आपस में रहते हैं। दीनी रिश्ता खूनी रिश्ते से किसी तरह कम नहीं। अगर दो मुसलमान आपस में लड़ जाएं तो बकिया मुसलमानों को हरगिज ऐसा नहीं करना चाहिए कि वे उनके दर्मियान मजीद आग भड़काएं। बल्कि उन्हें भाइयों वाले जच्चे के तहत दोनों के दर्मियान मुसालिहत के लिए उठ जाना चाहिए।

दो मुसलमान जब आपस में लड़ें तो एक सूरत यह है कि बकिया मुसलमान और जानिबदार (निष्पक्ष) बन जाएं। या अगर वे दखल दें तो इस तरह कि खानदानी और गिरोही अस्बियत के तहत 'अपनों' से मिलकर 'गैरों' से लड़ने लगे। ये तमाम तरीके इस्लाम के खिलाफ हैं। सही इस्लामी तरीका यह है कि अस्ल मामले की तहकीक की जाए और जो शख्स हक पर हो उसका साथ दिया जाए और जो शख्स नाहक पर हो उसे मजबूर किया जाए कि वह मामले के मुसफना फैसले पर राजी हो।

अल्लाह से डरने वाला आदमी कभी ऐसा नहीं हो सकता कि वह दूसरों को लड़ते हुए देखकर उससे लज्जत ले। वह ऐसे मंजर देखकर तड़पेगा। उसका मिजाज उसे मजबूर करेगा कि वह दोनों के दर्मियान तअल्लुकात को दुरुस्त कराने की कोशिश करे। यही वे लोग हैं जिनके लिए अल्लाह पर ईमान अल्लाह की रहमतों का दरवाजा खोलने का सबब बन जाता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرُ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ
مِّنْ نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْبِزُوا أَنْفُسَكُمْ ۚ وَلَا تَأْتُوا
بِالْقَبَابِ بِئْسَ الْإِسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
الظَّالِمُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, न मर्द दूसरे मर्दों का मजाक उड़ाएं, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और न औरतें दूसरी औरतों का मजाक उड़ाएं, हो सकता है कि वे उनसे बेहतर हों। और न एक दूसरे को ताना दो और न एक दूसरे को बुरे लकब से पुकारो। ईमान लाने के बाद गुनाह का नाम लगना बुरा है। और जो बाज न आए तो वही लोग जालिम हैं। (11)

हर आदमी के अंदर पैदाइशी तौर पर बड़ा बनने का जज्बा छुपा हुआ है। यही वजह है कि एक शख्स को दूसरे शख्स की कोई बात मिल जाए तो वह उसे खूब नुमायां करता है ताकि इस तरह अपने को बड़ा और दूसरे को छोटा साबित करे। वह दूसरे का मजाक उड़ाता है, वह दूसरे पर ऐब लगाता है, वह दूसरे को बुरे नाम से याद करता है ताकि उसके जरिए से अपने बड़ाई के जज्बे की तस्कीन हासिल करे।

मगर अच्छा और बुरा होने का मेयार वह नहीं है जो आदमी बतौर खुद मुकर्रर करे। अच्छा दरअसल वह है जो खुदा की नजर में अच्छा हो और बुरा वह है जो खुदा की नजर में बुरा ठहरे। अगर आदमी के अंदर फिलवाकअ इसका एहसास पैदा हो जाए तो उससे बड़ाई का जज्बा छिन जाएगा। दूसरे का मजाक उड़ाना, दूसरे को ताना देना, दूसरे पर ऐब लगाना, दूसरे को बुरे लकब से याद करना, सब उसे बेमअना मालूम होने लगेंगे। क्योंकि वह जानेगा कि लोगों के दर्जे व मर्तबे का अस्त फैसला खुदा के यहां होने वाला है। फिर अगर आज मैं किसी को हकीर (तुच्छ) समझूँ और आखिरत की हकीमी दुनिया में वह बाइज्जत करार पाए तो मेरा उसे हकीर समझना किस कद्र बेमअना होगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبَ بَعْضُكُم بَعْضًا يُؤْخَذُ كُفْرًا أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ۝

ऐ ईमान वालो, बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि कुछ गुमान गुनाह होते हैं। और दोह में न लगे। और तुम में से कोई किसी की गीबत (पीठ पीछे बुराई) न करे। क्या तुम में से कोई इस बात को पसंद करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाए, इसे तुम खुद नागवार समझते हो। और अल्लाह से डरो। बेशक अल्लाह माफ करने वाला, रहम करने वाला है। (12)

एक आदमी किसी शख्स के बारे में बदगुमान हो जाए तो उसकी हर बात उसे गलत मालूम होने लगती है। उसके बारे में उसका जेहन मंफ्री रख पर चल पड़ता है। उसकी खूबियों से ज्यादा वह उसके ऐब तलाश करने लगता है। उसकी बुराइयों को बयान करके उसे बेइज्जत

करना उसका महबूब मशगला बन जाता है।

अक्सर समाजी खराबियों की जड़ बदगुमानी है। इसलिए जरूरी है कि आदमी इस सिलसिले में चौकन्ना रहे। वह बदगुमानी को अपने जेहन में दाखिल न होने दे।

आपको किसी से बदगुमानी हो जाए तो आप उससे मिलकर गुफ्तगू कर सकते हैं। मगर यह सख्त गैर अख्वाकी फेअल है कि किसी की गैर मौजूदगी में उसे बुरा कहा जाए जबकि वह अपनी सफाई के लिए वहां मौजूद न हो। वक्ती तौर पर कभी आदमी से इस किस्म की गलतियां हो सकती हैं। लेकिन अगर वह अल्लाह से डरने वाला है तो वह अपनी गलती पर छीट नहीं होगा। उसका खोफे खुदा उसे फौरन अपनी गलती पर मुतनब्बह (सचेत) कर देगा, वह अपनी रविश को छोड़कर अल्लाह से माफी का तालिब बन जाएगा।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاهُ مِن ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاهُ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ أَتْقَاهُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝

ऐ लोगो, हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया। और तुम्हें कौमों और खानदानों में तक्सीम कर दिया ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। बेशक अल्लाह के नज्दीक तुम में सबसे याद इज्जत वाला वह है जो सबसे याद पड़ेगा है। बेशक अल्लाह जानने वाला, खबर रखने वाला है। (13)

इंसानों के दर्मियान मुझलिफ किस्म के फर्क होते हैं। कोई सफेद है और कोई काला। कोई एक नस्ल से है और कोई दूसरी नस्ल से। कोई एक जुग्राफिया (भौगोलिक क्षेत्र) से तअलुक रखता है और कोई दूसरे जुग्राफिया से। ये तमाम फर्क सिर्फ तआरफ (परिचय) के लिए हैं न कि इम्तिआज (विशिष्टता) के लिए। अक्सर खराबियों का सबब यह होता है कि लोग इस किस्म के फर्क की बिना पर एक दूसरे के दर्मियान फर्क करने लगते हैं। इससे वह तफरीक व तअस्सुब (विभेद एवं विद्वेष) वजूद में आता है जो कभी खत्म नहीं होता।

इंसान अपने आगाज के एतबार से सबके सब एक हैं। उनमें इम्तिआज की अगर कोई बुनियाद है तो वह सिर्फ यह है कि कौन अल्लाह से डरने वाला है और कौन अल्लाह से डरने वाला नहीं। और इसका भी सही इल्म सिर्फ खुदा को है न कि किसी इंसान को।

قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُلْ لَمْ تُؤْمِنُوا وَلَكِنْ قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ وَإِنْ تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلَيْسَ لَكُم مِّنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْءٌ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصِّدِّقُونَ ۝

देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाए, कहो कि तुम ईमान नहीं लाए, बल्कि यूं कहो कि हमने इस्लाम कुबूल किया, और अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में दाखिल नहीं हुआ। और अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो तो अल्लाह तुम्हारे आमाँल में से कुछ कमी नहीं करेगा। बेशक अल्लाह बख्शने वाला, रहम करने वाला है। मोमिन तो बस वे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए फिर उन्होंने शक नहीं किया और अपने माल और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद (जद्दोजहद) किया, यही सच्चे लोग हैं। (14-15)

मदीना के अतराफ में कई छोटे-छोटे कबीले थे। ये लोग हिजरत के बाद इस्लाम में दाखिल हो गए मगर उनका इस्लाम किसी गहरे जेहनी इकिलाब का नतीजा न था। अल्लाह की नजर में इस्लाम पर ईमान लाने वाला वह है जो इस्लाम को एक ऐसी हकीकत के तौर पर पाए जो उसके दिल की गहराइयों में उतर जाए। जो लोग इस तरह खुदा के दीन को कुबूल करें वे एक लाज्वाल यकीन को पा लेते हैं। वे कुर्बानी की हद तक उस पर कायम रहने के लिए तैयार रहते हैं।

आदमी कोई अच्छा काम करे तो वह उसका इज्हार करना जरूरी समझता है। हालांकि इस किस्म का इज्हार उसके अमल को बातिल कर देने वाला है। अच्छा अमल हकीकतन वह है जो अल्लाह के लिए किया जाए। फिर अल्लाह जब खुद हर बात को जानता है तो उसके एलान व इज्हार की क्या जरूरत।

قُلْ اتَّعْلَمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يُعَلِّمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ يَكُونُ عَلَيْكَ أَنْ اسْكُمُوا قُلْ لَا تَسْمَعُوا عَلَيَّ إِلَّا مَا كُمْ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَكُمُ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ إِنْ اللَّهُ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بِصِيرٍ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

कहो, क्या तुम अल्लाह को अपने दीन से आगाह कर रहे हो। हालांकि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। और अल्लाह हर चीज से बाख़बर है। ये लोग तुम पर एहसान रखते हैं कि उन्होंने इस्लाम कुबूल किया है। कहो कि अपने इस्लाम का एहसान मुझ पर न रखो, बल्कि अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उसने तुम्हें ईमान की हिदायत दी। अगर तुम सच्चे हो। बेशक अल्लाह आसमानों और जमीन की छुपी बातों को जानता है। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो। (16-18)

कोई शख्स इस्लाम में दाखिल हो या उसके हाथ से कोई इस्लामी काम अंजाम पाए तो

उसे समझना चाहिए कि यह अल्लाह की मदद से हुआ है। ईमान और अमल सबका इतिहास अल्लाह की तौफ़ीक पर है। इसलिए जब भी किसी को किसी ख़ैर की तौफ़ीक मिले तो वह अल्लाह का शुक्र अदा करे।

इसके बजाए अगर वह अपने हममजहबों पर इसका एहसान जताने लगे तो गोया वह जबानेहाल से कह रहा है कि यह काम मैंने अल्लाह को दिखाने के लिए नहीं किया था बल्कि इंसानों को दिखाने के लिए किया था। खुदा हर चीज से बराहारास्त वाकफ़ियत रखता है, जो शख्स खुदा के लिए अमल करे उसे यकीन रखना चाहिए कि उसका खुदा उसके अमल को बताए बग़ैर देख रहा है।

سُبْحَانَكَ يَا مَنْ أَعْيَاثُ الْعَالَمِينَ وَإِنَّا لَنَعْبُدُكَ أَجْمَعِينَ ۝ بَلْ عَجَبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ الْكَافِرُونَ هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ۝ إِذَا امْتَنَّا وَكُنَّا تُرَابًا ۝ ذَلِكُمْ رَجْعٌ لَعَنَ ۝ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا كِتَابٌ حَفِيزٌ ۝ بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَرِيجٍ ۝

आयतें-45

सूरह-कफ़

रुकूअ-3

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कफ़। कसम है वाअमत्त कुआन की। बल्कि उन्हें तअज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक डराने वाला आया, पस मुंकिरों ने कहा कि यह तअज्जुब की चीज है। क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे, यह दुबारा जिंदा होना बहुत बर्दद (दूर की बात) है। हमें मालूम है जितना जमीन उनके अंदर से घटाती है और हमारे पास किताब है जिसमें सब कुछ महफूज़ है। बल्कि उन्होंने हक को झुटलाया है जबकि वह उनके पास आ चुका है, पस वे उलझन में पड़े हुए हैं। (1-5)

पैगम्बरों की तारीख बताती है कि उनके हमजमाना (समकालीन) लोग उन्हें मानने के लिए तैयार नहीं होते। अलबत्ता जब बाद का जमाना आता है तो लोग आसानी के साथ उनकी पैगम्बराना हैसियत को तस्लीम कर लेते हैं।

इसकी वजह यह है कि पैगम्बर अपने हमजमाना लोगों को 'अपने बराबर का एक शख्स' नजर आता है। यह बात उनके लिए तअज्जुबख़ेज बन जाती है कि जिस शख्स को वे अपने बराबर का समझे हुए थे वह अचानक बड़ा बनकर उन्हें नसीहत करने लगे। मगर बाद के

जमाने में पैगम्बर के साथ अज्मतों की तारीख़ वाबस्ता हो चुकी होती है। इसलिए बाद के लोगों को वह 'अपने से बरतर शख्स' दिखाई देने लगता है। यही वजह है कि बाद के जमाने में पैगम्बर की पैगम्बराना हैसियत को मानना लोगों के लिए मुश्किल नहीं होता। बअल्फ़ाज दीगर, इब्निदाई दौर के लोगों के सामने पैगम्बर एक निजाई (विवादित) शख्सियत के रूप में होता है। और बाद के लोगों के सामने साबितशुदा शख्सियत के रूप में। दौरे अव्वल के लोगों को अपने और पैगम्बर के दर्मियान ख़ला (रिक्तता) को पुर करने के लिए शुऊरी सफर तै करना पड़ता है जबकि बाद के जमाने में यह ख़ला तारीख़ पुर कर चुकी होती है।

जो लोग पैगम्बर की पैगम्बरी पर शुबह कर रहे हों उनकी नजर में पैगम्बर की हर बात मुशतबह हो जाती है यहां तक कि वह बात भी जिसका अकीदा रिवायती तौर पर उनके यहां मौजूद होता है। ताहम ये बातें लोगों के लिए उज़्र नहीं बन सकतीं। पैगम्बर को न मानने वाले अगर उसकी किताब की नाकाबिले तकलीद (अद्वितीय) अदबी अज्मत पर गौर करें तो वे उसके लाने वाले को खुदा का पैगम्बर मानने पर मजबूर हो जाएंगे।

أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ ۖ وَالْأَرْضِ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ ۖ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ نَبِيْهِ ۖ وَبَحَّرْنَا فِيهَا سُبُحًا ۖ وَنَزَّلْنَا مِنْ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهِ جَبْتًا وَحَبَّ الْحَصِيدِ ۖ وَالنَّخْلَ نَبْتًا لِّبُسْطٍ ۖ فَهَاطِلَةٌ تَصْنِيدٌ ۖ زِنْفًا لِلْعِبَادِ ۖ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا كَذَلِكَ الْخُرُوجُ ۝

क्या उन लोगों ने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा, हमने कैसा उसे बनाया और उसे रैनक दी और उसमें कोई दरार नहीं। और जमीन को हमने फैलाया और उसमें पहाड़ डाल दिए और उसमें हर किसम की रैनक की चीज उगाई, समझाने को और याद दिलाने को हर उस बंदे के लिए जो रुजूअ करे। और हमने आसमान से बरकत वाला पानी उतारा, फिर उससे हमने बाग़ उगाए और काटी जाने वाली फसलें। और खजूरों के लम्बे दरख्त जिनमें तह-ब-तह खोशे लगते हैं, बंदों की रोजी के लिए। और हमने उसके जरिए से मुरा जमीन को जिंदा किया। इसी तरह जमीन से निकलना होगा। (6-11)

कायनात की मअनवियत, उसकी तख़्तीकी हिक्मत, उसका हर किसम की कमी से ख़ाली होना, उसका इंसानी जरूरतों के ऐन मुताबिक होना, ये वाक़्यात हर साहिबे अक्ल को ग़ौरफ़िक्र पर मजबूर करते हैं। और जो शख्स संजीदगी के साथ कायनात के निजाम पर ग़ौर करे वह मख़बूक़ात के अंदर उसके ख़ालिक को पा लेगा। वह दुनिया के अंदर आख़िरत की

झलक देख लेगा, क्योंकि आख़िरत की दुनिया दरअसल मौजूदा दुनिया ही का दूसरा लाजिमी रूप है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ۖ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۖ وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدُ ۖ أَفَعَيْنَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ۝

उनसे पहले नूह की कौम और अर-रस वाले और समूद। और आद और फिरऔन और लूत के भाई और ऐका वाले और तुब्वअ की कौम ने भी झुठलाया। सबने पैगम्बरों को झुठलाया, पस मेरा डराना उन पर वाक़ेअ होकर रहा। क्या हम पहली बार पैदा करने से आजिज रहे। बल्कि ये लोग नए सिरे से पैदा करने की तरफ से शुबह में हैं। (12-15)

कुरआन ने तारीख़ का जो तसव्वुर पेश किया है, उसके मुताबिक यहां बार-बार ऐसा हुआ है कि पैगम्बरों के इंकार के नतीजे में उनकी मुखातब कौमों हलाक कर दी गईं। यहां उन्हीं हलाकशुदा कौमों में से कुछ कौमों का जिक्र बतौर मिसाल फरमाया गया है। कौमों की यह हिलाकत दरअसल आख़िरत का एक हिस्सा है। मुकिरीने हक के लिए जो अजाब आख़िरत में मुकद्दर है उसका एक जुज इसी आज की दुनिया में दिखा दिया जाता है। दुनिया की पहली तख़्तीक (सृजन) उसकी दूसरी तख़्तीक के इम्कान को साबित कर रही है। अगर आदमी संजीदा हो तो आख़िरत को मानने के लिए इसके बाद उसे किसी और दलील की जरूरत नहीं।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسُّوْسُ بِهِ نَفْسُهُ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ۖ إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّينَ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ۖ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ۝

और हमने इंसान को पैदा किया और हम जानते हैं उन बातों को जो उसके दिल में आती हैं। और हम रोग गर्दन से भी ज्यादा उससे करीब हैं। जब दो लेने वाले लेते रहते हैं जो कि दाईं और बाईं तरफ बैठे हैं। कोई लफज़ वह नहीं बोलता मगर उसके पास एक मुस्तइद (चुस्त) निगरा (सतर्क निरीक्षक) मौजूद है। (16-18)

दुनिया का मुतालआ बताता है कि यहां 'रिकॉर्डिंग' का नाकाबिले ख़ता (अचूक) निजाम मौजूद है। इंसान की सोच उसके जेहनी पर्दे पर हमेशा के लिए नक्श हो रही है। इंसान का हर बोल हवाई लहरों की सूरत में मुस्तकिल तौर पर बाकी रहता है। इंसान का अमल हराती लहरों

के जरिए खारजी वाह्य दुनिया में इस तरह महफूज हो जाता है कि उसे किसी भी वक्त दोहराया जा सके। ये सब आज की मालूम हकीकतें हैं। और ये मालूम हकीकतें कुरआन की इस खबर को काबिलेफ़हम बना रही हैं कि इंसान की नियत, उसका कौल और उसका अमल सब कुछ ख़ालिक के इल्म में है। इंसान की हर चीज फरिश्तों के रजिस्टर में दर्ज की जा रही है।

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ۖ وَنُفِخَ فِي الصُّورِ
ذَلِكَ يَوْمُ الْوَعْدِ ۖ وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَعَهَا سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ۖ لَقَدْ كُنْتَ فِي
غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَ لَوْ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيدٌ ۖ وَقَالَ قَرِينُهُ
هَذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ۖ أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ۖ مَّنَّاءٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ
مُّرِيدٍ ۖ الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ۖ قَالَ
قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْعَمْتُمْ وَلَكِنْ كَانُوا فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۖ قَالَ لَا تَخْتَصِمُوا لَدُنِّي وَ
أَنْتُمْ قَدْ قَدُمْتُمْ إِلَيَّ بِالْوَعْدِ ۖ مَا يَبْدُلُ الْقَوْلُ لَدُنِّي وَمَا أَنَا بِظَالِمٍ لِّلْعَالَمِينَ ۖ

और मौत की बेहोशी हक के साथ आ पहुंची। यह वही चीज है जिससे तू भागता था। और सूर फूँका जाएगा, यह डराने का दिन होगा। हर शख्स इस तरह आ गया कि उसके साथ एक हांकने वाला है और एक गवाही देने वाला। तुम उससे इफ़लत में रहे, पस हमने तुम्हारे ऊपर से पर्दा हटा दिया, पस आज तुम्हारी निगाह तेज है। और उसके साथ का फरिश्ता कहेगा, यह जो मेरे पास था हाज़िर है। जहन्नम में डाल दो नाशुक, मुख़ालिफ़ को। नेकी से रोकने वाला, हद से बढ़ने वाला, शुबह डालने वाला। जिसने अल्लाह के साथ दूसरे माबूद (पूज्य) बनाए, पस उसे डाल दो सज़ा अजाब में। उसका साथी शैतान कहेगा कि ऐ हमारे रब मैंने इसे सरकश नहीं बनाया बल्कि वह खुद राह भूला हुआ, दूर पड़ा था। इशार्द होगा, मेरे सामने झगड़ा न करो और मैंने पहले ही तुम्हें अजाब से डरा दिया था। मेरे यहां बात बदली नहीं जाती और मैं बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं हूँ। (19-29)

इन आयात में मौत और उसके बाद कियात का मंजर खींचा गया है। बताया गया है कि वहां उन लोगों पर क्या बीतेगी जो मौजूदा इस्तेहान की दुनिया में अपने को आजाद पाकर सरकश बने हुए थे। हकीकत यह है कि यह मंजरकशी इतनी भयानक है कि जिंदा आदमी को तड़पा देने के लिए काफी है।

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتَ وَتَقُولُ هَلْ مِنْ مَزِيدٍ ۖ وَأُنْفِثَ الْجَنَّةُ
لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۖ هَذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَكْرِبٍ حَفِيظٍ ۖ مَنْ خَشِيَ
الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ وَجَاءَ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ۖ ادْخُلُوا مَسَلِّمًا ذَلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۖ
لَهُمْ قَائِمَاتٌ وَعَنْهُمْ وَلَا بَوَائِلٌ ۚ

जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे, क्या तू भर गई। और वह कहेगी कि कुछ और भी है। और जन्नत डरने वालों के करीब लाई जाएगी, कुछ दूर न रहेगी। यह है वह चीज जिसका तुमसे वादा किया जाता था, हर रुजूअ करने वाले और याद रखने वाले के लिए। जो शख्स रहमान से डरा बिना देखे और रुजूअ होने वाला दिल लेकर आया, दाखिल हो जाओ उसमें सलामती के साथ, यह दिन हमेशा रहेगा। वहां उनके लिए वह सब होगा जो वे चाहें, और हमारे पास मजीद (और भी) है। (30-35)

खुदा की अबदी जन्नत के मुस्तहिक कौन लोग हैं। ये वे लोग हैं जो दुनिया में अल्लाह के अजाब से डरते रहे। जो लोग बिना देखे डरे वही वे लोग हैं जो उस दिन डर और ग़म से महफूज रहेंगे जब डर लोगों की आंखों के सामने आ जाएगा। अल्लाह का ख़ौफ़ आदमी के अंदर जन्नत वाले औसाफ़ (गुण) पैदा करता है और अल्लाह से बेख़ौफी जहन्नम वाले अस्मा

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ
مِنْ مَّخِصٍ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرًا لِّمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ
شَهِيدٌ ۖ

और हम उनसे पहले कितनी ही कौमों को हलाक कर चुके हैं, वे कुव्वत (शक्ति) में उनसे ज्यादा थीं, पस उन्होंने मुल्कों को छान मारा कि है कोई पनाह की जगह। इसमें याददिहानी है उस शख्स के लिए जिसके पास दिल हो या वह कान लगाए मुतवज्जह होकर। (36-37)

कौमों उभरती हैं और उरूज को पहुंच जाती हैं मगर जब वे अपनी बदआमाली के नतीजे में खुदा की जद में आती हैं तो उनका हाल यह होता है कि जमीन में कहीं कोई जगह नहीं होती जहां वे भाग कर पनाह ले सकें। तारीख़ के इन वाक़ेयात में जबरदस्त नसीहत है। मगर नसीहत वह शख्स लेगा जिसके अंदर या तो सोचने की सलाहियत जिंदा हो कि वह खुद वाक़ेयात के ख़ामोश पैग़ाम को अख़ज (ग्रहण) कर सके। या उसके अंदर सुनने की सलाहियत जिंदा हो कि जब उसे बताया जाए तो वह उसके अंदरून तक बिला रोकटोक पहुंचे।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۚ وَامْسَاسَتَا مِنْ غَوْبٍ ۚ
فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۚ
وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ النُّجُودِ ۝

और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है छः दिन में बनाया और हमें कुछ थकान नहीं हुई। पस जो कुछ वे कहते हैं उस पर सब्र करो और अपने रब की तस्वीह करो हम्द (प्रशंसा) के साथ, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले। और रात में उसकी तस्वीह करो और सज्दों के पीछे। (38-40)

जमीन व आसमान को छः दिनों, बअल्फ़ज दीगर छः दौरों में पैदा करना बताता है कि खुदा का तरीका तदरीजी (क्रमबद्ध) अमल का तरीका है। और जब खुदा सारी ताकतों का मालिक होने के बावजूद वाक़ेयात को तदरीज के साथ लम्बी मुदत में जुहर में लाता है तो इंसान को भी चाहिए कि वह जल्दबाजी से बचे, वह साबिराना (धैर्यपूर्ण) अमल के जरिए नतीजे तक पहुंचने की कोशिश करे।

दावत (आह्वान) का अमल शुरू से आखिरत तक सब्र का अमल है। इसमें इंसान की तरफ से पेश आने वाली तल्लिखों को सहना पड़ता है। इसमें नतीजा सामने दिखाई न देने के बावजूद अपने अमल को जारी रखना पड़ता है। इस सब्रआजमा (धैर्यपरक) अमल पर वही शख्स कायम रह सकता है जिसके सुबह व शाम जिफ्र व इबादत में गुजरते हों, जो इंसानों से न पाकर खुदा से पा रहा हो, जो सब कुछ खोकर भी एहसासे महरूमी का शिकार न हो सके।

‘हमें थकान नहीं हुई’ एक जिमनी (फूक) फिकरा है। मौजूदा मुहरफ (परिवर्तित) बाइबल में है कि खुदा ने छः दिनों में आसमान और जमीन को पैदा किया और सातवें दिन आराम किया। यह फिकरा इसी की तस्वीह व तरदीद है। आराम वह करता है जो थके। खुदा को थकान नहीं होती इसलिए उसे आराम करने की जरूरत भी नहीं।

وَأَسْمِعْ يَوْمَ يُنَادِي الْمُنَادُ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۚ يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْعَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ
الْخُرُوجِ ۝ إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ ۚ وَاللَّيْلُ الْمُهْجِرُ ۚ يَوْمَ تَشَقُّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ ۚ سِرَاعًا
ذَٰلِكَ حَشَرٌ عَلَيْهِمْ يُسِيرُ ۝

और कान लगाए रखो कि जिस दिन पुकारने वाला बहुत करीब से पुकारेगा। जिस दिन लोग यकीन के साथ चिंघाड़ को सुनेंगे वह निकलने का दिन होगा। बेशक हम ही जिलाते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी ही तरफ लौटना है। जिस दिन जमीन उन पर से खुल जाएगी, वे सब दौड़ते होंगे, यह इकट्ठा करना हमारे लिए आसान है। (41-44)

कियामत की कोई तारीख़ मुकर्रर नहीं। किसी भी वक़्त अल्लाह तआला का हुक्म होगा और इस्फ़ाहील सूर में फूंक मारकर उसकी अचानक आमद की इत्तला दे देंगे।

जो लोग खुदा से ग़ाफ़िल हैं वे कियामत को दूर की चीज समझते हैं। मगर जो सच्चा मोमिन है वह हर आन इस अदेशे में रहता है कि कब सूर फूंक दिया जाए और कब कियामत आ जाए। सूर फूँके जाने के बाद जमीन व आसमान का नक्शा बदल चुका होगा और तमाम लोग एक नई दुनिया में जमा किए जाएंगे ताकि अपने-अपने अमल के मुताबिक अपना अवदी (चिरस्थायी) अंजाम पा सकें।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِمُجِبَّارٍ ۚ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ
وَعِيدَ ۝

हम जानते हैं जो कुछ ये लोग कह रहे हैं। और तुम उन पर जबर करने वाले नहीं हो। पस तुम कुरआन के जरिए उस शख्स को नसीहत करो जो मेरे डराने से डरे। (45)

कुरआन में बार-बार अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में इर्शाद हुआ है कि तुम्हारा काम सिर्फ पहुंचा देना है तुम्हारा काम लोगों को बदलना नहीं है। दूसरी तरफ कुरआन में एक से ज्यादा मक़म पर यह भी इर्शाद हुआ है कि खुदा तुम्हारे जरिए से दीने हक को तमाम दीनों पर ग़ालिब करेगा।

यह दो बात दरअसल पैगम्बरे इस्लाम की दो मुख़लिफ हैसियतों के एतबार से है। आप एक एतबार से ‘अल्लाह के रसूल’ थे। दूसरे एतबार से आप ‘खातमुन नबिय्यीन’ (अंतिम नबी) थे। अल्लाह का रसूल होने की हैसियत से आपका काम वही था जो तमाम पैगम्बरों का था। यानी अग्रे हक को लोगों तक पूरी तरह पहुंचा देना। मगर खातमुन नबिय्यीन होने की हैसियत से अल्लाह तआला को यह भी मल्लूब था कि आपके जरिए से वे असबाब पैदा किए जाएं जो हिदायते इलाही को मुस्तक़िल तौर पर महफूज कर दें। ताकि दुबारा पैगम्बर भेजने की जरूरत पेश न आए। आपकी इस दूसरी हैसियत का तक्का था कि आपके जरिए से वह इकिलाब लाया जाए जो शिर्क के ग़लबे (वर्चस्व) को ख़त्म कर दे और इस्लाम को एक ऐसी ग़ालिब कुव्वत की हैसियत से कायम कर दे जो हमेशा के लिए हिदायते इलाही की हिफ़ाज़त की ज़मानत बन जाए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
وَالذِّرْبِ ذُرْوًا ۚ فَالْحِجْلِ وَقَرًا ۚ فَالْجُرَيْتِ يُسْرًا ۚ فَالْمُقَسَّمِ أَمْرًا ۚ إِنَّمَا

تَوَعَّدُونَ لَصَادِقٌ ۚ وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ۚ وَالسَّمَاءُ ذَاتُ الْجُبُهِ ۚ إِنَّكُمْ لَعِوُ
قَوْلٍ مُخْتَلِفٍ ۚ يُؤْوِيكَ عَنْهُ مَنْ أُفَاكَ ۚ

आयतें-60

सूरह-51. अज़-ज़ारियात

रुकूअ-3

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है उन हवाओं की जो गर्द उड़ाने वाली हैं फिर वे उठा लेती हैं बोझ। फिर वे चलने लगती हैं आहिस्ता। फिर अलग-अलग करती हैं मामला। बेशक तुमसे जो वादा किया जा रहा है वह सच है। और बेशक इंसाफ होना जरूर है। कसम है जालदार आसमान की। बेशक तुम एक इज़्तेलाफ (बिखराव, मत-भिन्नता) में पड़े हुए हो। उससे वही फिरता है जो फेरा गया। (1-9)

यहां बारिश के अमल की तस्वीरकशी की गई है। पहले तेज हवाएं उठती हैं। फिर मुख़्तलिफ मराहिल से गुजर कर वे बादलों को चलाती हैं। और फिर वे किसी गिरोह पर बारांने रहमत (सुखद वर्षा) बरसाती हैं और किसी गिरोह पर सैलाब की सूत में तबाहकारियां लाती हैं।

यह वाक्या बताता है कि खुदा की इस दुनिया में 'तक्सीमे अन्न' का कानून है। यहां किसी को कम मिलता है और किसी को ज्यादा। किसी को दिया जाता है और किसी से छीन लिया जाता है। यह एक इशारा है जो बताता है कि मौत के बाद आने वाली दुनिया में इंसान के साथ क्या मामला पेश आने वाला है। वहां तक्सीमे अन्न का यह उसूल अपनी कामिल सूत में नाफिज़ होगा। हर एक को हददर्जा इंसाफ के साथ वही मिलेगा जो उसे मिलना चाहिए और वह नहीं मिलेगा जिसे पाने का वह मुस्तहिक न था।

आसमान में बेशुमार सितारे हैं। ये सबके सब अपने अपने मदार (कक्ष) में घूम रहे हैं। अगर उनकी मज्मूई तस्वीर बनाई जाए तो वह किसी खानेदार जाल की मानिंद होगी। इस किस्म का हैरतनाक निजाम अपने अंदर गहरी मअनवियत का इशारा करता है। जो लोग अपनी अक्ल को इस्तेमाल करें वे उसमें सबक पाएंगे। और जो लोग अपनी अक्ल को इस्तेमाल न करें उनके लिए वह एक बेमअना रक्स (नृत्य) है जिसके अंदर कोई सबक नहीं।

قَتِلَ الْخَرَّاصُونَ ۚ الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ ۚ يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمُ
الَّذِينَ ۚ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ ۚ ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ
تَسْتَحْجَلُونَ ۚ إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۚ آخِذِينَ مَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۚ وَأَنَّهُمْ
كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُحْسِنِينَ ۚ كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ۚ وَ

بِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۚ وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُورِ ۚ

मारे गए अटकल से बातें करने वाले। जो गफलत में भूले हुए हैं। वे पूछते हैं कि कब है बदले का दिन। जिस दिन वे आग पर रखे जाएंगे। चखो मजा अपनी शरारत का, यह है वह चीज जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे। बेशक डरने वाले लोग बागों में और चशमों (स्रोतों) में होंगे। ले रहे होंगे जो कुछ उनके ख ने उन्हें दिया, वे इससे पहले नेकी करने वाले थे। वे रातों को कम सोते थे। और सुबह के वक्तों में वे माफी मांगते थे। और उनके माल में साइल (मांगने वाले) और महरूम (असहाय) का हिस्सा था। (10-19)

किसी बात को समझने के लिए सबसे जरूरी शर्त संजीदगी है। जो लोग एक बात के मामले में संजीदा न हों वे उसके कराइन व दलाइल पर ध्यान नहीं देते, इसलिए वे उसे समझ भी नहीं सकते। वे उसका मजाक उड़ाकर यह जाहिर करते हैं कि वह इस कबिल ही नहीं कि उसे संजीदा गौरोफिक्र का मौजूअ समझा जाए। ऐसे लोगों को मनवाना किसी तरह मुमकिन नहीं। वे सिर्फ उस वक्त एतराफ करेंगे जबकि उनकी गलत रविश एक ऐसा अजाब बनकर उनके ऊपर टूट पड़े जिससे छुटकारा पाना किसी तरह उनके लिए मुमकिन न हो।

संजीदा लोगों का मामला इससे बिल्कुल मुख़्तलिफ होता है। उनकी संजीदगी उन्हें मोहतात (सजग) बना देती है। उनसे सरकशी का मिजाज रुख़सत हो जाता है। उनका बड़ा हुआ एहसास उन्हें रातों को भी बेदार रहने पर मजबूर कर देता है। उनके औकात (समय) खुदा की याद में बसर होने लगते हैं। वे अपने माल को अपनी मेहनत का नतीजा नहीं समझते बल्कि उसे खुदा का अतिय्या (दिन) समझते हैं। यही वजह है कि वे उसमें दूसरों का भी हक समझने लगते हैं जिस तरह वे उसमें अपना हक समझते हैं।

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۚ وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصَرُونَ ۚ وَفِي السَّمَاءِ
رِجٌّ مِّمَّا تَعْمَلُونَ ۚ فَوَرَبَّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنْتُمْ تَدِّعُونَ ۚ

और जमीन में निशानियां हैं यकीन करने वालों के लिए। और खुद तुम्हारे अंदर भी, क्या तुम देखते नहीं। और आसमान में तुम्हारी रोजी है और वह चीज भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है। पस आसमान और जमीन के ख की कसम, वह यकीनी है जैसा कि तुम बोलते हो। (20-23)

अल्लाह तआला ने दुनिया को इस तरह बनाया है कि मौजूदा मालूम दुनिया बाद को आने वाली नामालूम दुनिया की निशानी बन गई है। जमीन में फैले हुए माददी वाकयात और इंसान के अंदर छुपे हुए एहसासात दोनों बिलवास्ता अंदाज में उस वाक्य की पेशगी खबर दे रहे हैं जो मौत के बाद बराहारास्त अंदाज में इंसान के सामने आने वाला है। इन्हीं निशानियों

में से एक निशानी नुक (बोलना) है।

हदीस में इशार्द हुआ है कि आखिरत में जो कुछ मिलेगा वे खुद आदमी के अपने आमाल होंगे जो उसकी तरफ लौटा दिए जाएंगे। गोया आखिरत की दुनिया मौजूदा दुनिया ही का मुसन्ना (Double) है। आदमी का नुक (बोलना) इसी इम्कान का एक जुर्ह मुजाहिदा है। आदमी की आवाज टेप पर रिकॉर्ड कर दी जाए और फिर टेप को बजाया जाए तो ऐन वही आवाज उससे निकलती है जो इंसान की आवाज थी। टेप की आवाज इंसान की असल आवाज का मुसन्ना (Double) है। इस तरह आवाज जुर्ह सतह पर उस वाक्य का तजर्बा करा रही है जो कुल्ली सतह पर आखिरत में जाहिर होने वाला है।

‘वह यकीनी है तुम्हारे नुक की तरह’ यानी जब तुम्हारे नुक (बोलने) की तकरार (पुनरावृत्ति) मुमकिन है तो तुम्हारे वजूद की तकरार क्यों मुमकिन नहीं। इंसानी हस्ती के एक जुज (अंश) की कामिल तकरार का मुशाहिदा इसी दुनिया में हो रहा है, इसी से क्यास किया जा सकता है कि इंसानी हस्ती के कामिल मज्मूअह (कुल) की तकरार भी हो सकती है।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ الْبُرْهَمِ ۚ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ سَلَامٌ قَوْمُ مُتَذَكِّرُونَ ۚ فَرَأَى إِلَى أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ۚ فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۚ فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۚ قَالُوا لَا تَخَفْ ۚ وَبَشَرُوهُ بِغُلَامٍ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَقْبَلَتْ امْرَأَتُهُ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ۚ قَالُوا كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝

क्या तुम्हें इब्राहीम के मुअज्जज (आदरणीय) मेहमानों की बात पहुंची। जब वे उसके पास आए। फिर उन्हें सलाम किया। उसने कहा तुम लोगों को भी सलाम है। कुछ अजनबी लोग हैं। फिर वह अपने घर की तरफ चला और एक बछड़ा भुना हुआ ले आया। फिर उसे उनके पास रखा, उसने कहा, आप लोग खाते क्यों नहीं। फिर वह दिल में उनसे डरा। उन्होंने कहा कि डरो मत। और उन्हें जीइल्म (ज्ञानवान) लड़के की वशारत (शुभ सूचना) दी। फिर उसकी बीवी बोलती हुई आई, फिर माथे पर हाथ मारा और कहने लगी कि बूढ़ी, बांझ। उन्होंने कहा कि ऐसा ही फरमाया है तेरे रब ने। वेशक वह हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला, जानने वाला है। (24-30)

इन आयतों में उस मंजर का वयान है जबकि हजरत इब्राहीम के पास खुदा के फरिश्ते आए ताकि उन्हें बुझावे में औलाद की वशारत दें। हजरत इब्राहीम कदीम इराक में पैदा हुए। वह लम्बी मुदत तक अपनी कौम को तौहीद और आखिरत का पैगाम देते रहे। मगर आपकी बीवी और आपके एक भतीजे के सिवा कोई भी शख्स आपकी बात मानने के लिए तैयार न

हुआ। यहां तक कि आप बुझावे की उम्र को पहुंच गए।

अब आपके मिशन का तसलसुल (निरंतरता) बाकी रखने के लिए दूसरी मुमकिन सूरत सिर्फ यह थी कि आपके यहां औलाद पैदा हो और आप उसे तर्बियत देकर तैयार करें। बाप और बेटे के दर्मियान खूनी तअल्लुक होता है। यह खूनी तअल्लुक एक इज्मी ताकत बन जाता है जो बेटे को अपने बाप के साथ हर हाल में जोड़े रखे और उसे उसका हमख्याल बनाए।

अल्लाह तआला ने हजरत इब्राहीम को आखिर उम्र में दो लड़के अता किए। एक हजरत इस्हाक जिनके जरिए से बनी इस्माईल में दावते तौहीद का तसलसुल जारी रहा। दूसरे हजरत इस्माईल जिनके जरिए अरब के सहरा में एक ऐसी नस्ल तैयार करने का काम लिया गया जो पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) का साथ देकर आपके तारीखी मिशन की तक्मील कर सके।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ۚ قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَى قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ۚ لَنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ جَارََةً مِنْ طِينٍ ۚ مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ۚ فَاخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۚ فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۚ وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝

इब्राहीम ने कहा कि ऐ फरिश्तो, तुम्हें क्या मुहिम दरपेश है। उन्होंने कहा कि हम एक मुजरिम कौम (कौमे लूत) की तरफ भेजे गए हैं। ताकि उस पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाएं। जो निशान लगाए हुए हैं तुम्हारे रब के पास उन लोगों के लिए जो हद से गुजरने वाले हैं। फिर वहां जितने ईमान वाले थे उन्हें हमने निकाल लिया। पस वहां हमने एक घर के सिवा कोई मुस्लिम (आज्ञाकारी) घर न पाया और हमने उसमें एक निशानी छोड़ी उन लोगों के लिए जो दर्दनाक अजाब से डरते हैं। (31-37)

हजरत इब्राहीम उस वक्त फिलिस्तीन में थे। क़रीब ही बहरे मुर्दा के पास सदूम व अमूरा की बस्तियां थीं जहां कौमे लूत के लोग आबाद थे। हजरत लूत की तवील तब्तीग के बावजूद वे लोग खुदाफरामोशी की जिंदगी से निकलने के लिए तैयार नहीं हुए। चुनांचे हजरत लूत और उनके साथी अल्लाह के हुक्म से बाहर आ गए। मचूरा फरिश्तों ने जलजला और आंधी और कंकड़ों की बारिश से पूरी कौम को हलाक कर दिया।

कौमे लूत दो हजार साल पहले खत्म हो गई। मगर उसका तबाहशुदा आवास-क्षेत्र (बहरे मुर्दा का जुबूबी इलाका) आज भी उन लोगों को सबक दे रहा है जो वाक्यात से सबक लेने का मिजाज रखते हैं।

وَفِي مُوسَى إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۖ فَتَوَلَّىٰ بِرُكْنِهِ وَقَالَ سَحَرُ
 أَوْ مَجْنُونٌ ۖ فَآخَذْنَاهُ وَجُودَهُ فَنَبَذْنَاهُ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ۖ وَفِي عَادٍ إِذْ
 أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ۖ مَا تَدْرِمْنَ شَيْءً ۖ أَتَتْ عَلَيْكَ إِلَّا جَعَلْتُهَا
 كَالرَّيْمِ ۖ وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ مَتَعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ۖ فَفَتَوَاعَنَ أَمْرَ رَبِّهِمْ
 فَآخَذَهُمُ الصُّلْبَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۖ فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا
 مُنْتَصِرِينَ ۖ وَقَوْمُ نُوحٍ ۖ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۖ

और मूसा में भी निशानी है जबकि हमने उसे फिरऔन के पास एक खुली दलील के साथ भेजा तो वह अपनी कुब्त के साथ फिर गया। और कहा कि यह जादूगर है या मजनून है। पस हमने उसे और उसकी फौज को पकड़ा, फिर उन्हें समुद्र में फेंक दिया और वह सजावारे मलामत (निन्दनीय) था। और आद में भी निशानी है जबकि हमने उन पर एक वेनफा हवा भेज दी। वह जिस चीज पर से भी गुज़री उसे रेंज-रेंज करके छोड़ दिया। और समूद में भी निशानी है जबकि उनसे कहा गया कि थोड़ी मुद्दत तक के लिए फायदा उठा लो। पस उन्होंने अपने रब के हुक्म से सरकशी की, पस उन्हें कड़क ने पकड़ लिया। और वे देख रहे थे। फिर वे न उठ सके। और न अपना बचाव कर सके। और नूह की कौम को भी इससे पहले, बेशक वे नाफरमान लोग थे। (38-46)

फिरऔने मिस्र ने हज़रत मूसा के मेज़िजे (चमत्कारों) को जादू करार दिया। आपका वह यकीन जो आपके बरसरे हक होने को जाहिर कर रहा था उसे उसने जुनून से ताबीर किया था। इसी का नाम तल्बीस (ग़लत नाम देना) है और यही तल्बीस हमेशा उन लोगों का तरीका रहा है जो दलील के बावजूद हक को मानने के लिए तैयार नहीं होते।

हक के मुक़ाबले में इस किस्म की सरकशी करने वाले लोग कभी खुदा की पकड़ से नहीं बचते। फिरऔन इसी बिना पर हलाक किया गया। और कौमे आद और कौमे समूद और कौमे नूह भी इसी बिना पर तबाह व बर्बाद कर दी गई। ऐसे लोगों के लिए खुदा की दुनिया में कोई और फायदा उस थोड़े से फायदे के सिवा मुक़द़र नहीं जो इस्तेहान की मस्लेहत के तहत उन्हें महदूद मुद्दत के लिए हासिल हुआ था।

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ۖ وَالْأَرْضَ قَرْنَاهَا فَنَعْمَ الْمَاهِدُونَ ۖ
 وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ۖ فَذَرُوا إِلَى اللَّهِ إِلَهِي لَكُمْ وَنَذِيرٌ
 مُّبِينٌ ۖ وَلَا تَجْعَلُوا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۖ إِلَهِي لَكُمْ وَنَذِيرٌ مُّبِينٌ ۖ

और हमने आसमान को अपनी कुदरत से बनाया और हम कुशादा (व्यापक) करने वाले हैं। और जमीन को हमने बिछाया, पस क्या ही खूब बिछाने वाले हैं। और हमने हर चीज को जोड़ा जोड़ा बनाया है ताकि तुम ध्यान करो। पस दौड़ो अल्लाह की तरफ, मैं उसकी तरफ से एक खुला डराने वाला हूँ। और अल्लाह के साथ कोई और माबूद (पूज्य) न बनाओ, मैं उसकी तरफ से तुम्हारे लिए खुला डराने वाला हूँ। (47-51)

‘हम आसमान को कुशादा करने वाले हैं’ इस फिकरे में ग़ालिबन कायनात की उस नौइयत की तरफ इशारा है जो सिर्फ हाल में दरयाप्त हुई है। यानी कायनात का मुसलसल अपने चारों तरफ फैलना। कायनात का इस तरह फैलना इस बात का सबूत है कि उसे किसी पैदा करने वाले ने पैदा किया है। क्योंकि इस फैलाव का मतलब यह है कि अपनी इब्तिदा (प्रारंभ) में वह सुकड़ी हुई थी। मालूम माददी कानून के मुताबिक, कायनात के इस इब्तिदाई गोले के तमाम अज्जा अंदर की तरफ खिंचे हुए थे। ऐसी हालत में उनका बाहर की तरफ सफर करना किसी ख़ारजी मुदाख़लत (वाह्य हस्तक्षेप) के बग़ैर नहीं हो सकता। और ख़ारजी मुदाख़लत को मानने के बाद खुदा का मानना लाज़िम हो जाता है।

हमारी दुनिया का निज़ाम इतिहाई बामअना निज़ाम है। इससे साबित होता है कि मौजूदा दुनिया की तख़्कीक किसी आला मक्सद के तहत हुई है। मगर हम देखते हैं कि इंसान ने जमीन को फ़साद से भर रखा है। बामअना कायनात में यह बेमअना वाक़या बिल्कुल बेजोड़ है। यह सूतेहाल तकाज़ा करती है कि एक ऐसी दुनिया बने जो हर किस्म की बुराइयों से पाक हो।

यहां दुबारा मौजूदा दुनिया के अंदर एक ऐसा वाक़या मौजूद है जो इस सवाल का जवाब देता है। और वह है यहां की तमाम चीजों का जोड़े-जोड़े होना। माददा (Element) में मुसबत (Positive) और मन्फ़ी (Negative) ज़र्र, नबातात (वनस्पति) में नर और मादा, इंसान में औरत और मर्द। इससे कायनात का यह मिज़ाज मालूम होता है कि यहां अशया (चीजों) की कमी को उसके जोड़े के जरिए मुकम्मल करने का कानून राज़ है। यह एक करीना है जो आख़िरत के इफ़्क़ान को साबित करता है। आख़िरत की दुनिया गोया मौजूदा दुनिया का दूसरा जोड़ा है जिससे मिलकर हमारी दुनिया अपने आपको मुकम्मल करती है।

كَذَٰلِكَ مَا آتَىٰ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَاحِرٌ أَوْ مُجْنُونٌ ۖ أَتَوَاصُوا
 بِهِمْ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُونَ ۖ فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ أَنْتَ بِمُؤْمِرٌ ۖ وَذَكَرْنَاكَ الذِّكْرَىٰ
 نَفْعُ الْمُؤْمِنِينَ ۖ

इसी तरह उनके अगलों के पास कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं आया जिसे उन्होंने साहिर (जादूगर) या मजनून न कहा हो। क्या ये एक दूसरे को इसकी वसीयत करने चले आ रहे हैं, बल्कि ये सब सरकश लोग हैं। पस तुम उनसे एराज (विमुखता) करो, तुम पर कुछ इज़ाम नहीं। और समझाते रहो क्योंकि

समझाना ईमान वालों को नफ़ा देता है। (52-55)

एक संजीदा आदमी अगर किसी बात की दलील मांगे तो दलील सामने आने के बाद वह उसे मान लेता है। मगर जो लोग सरकशी का मिजाज रखते हैं उन्हें किसी भी दलील से चुप नहीं किया जा सकता। वे हर दलील को न मानने के लिए दुबारा कुछ नए अल्फ़ाज़ पा लेंगे। यहां तक कि अगर उनके सामने ऐसी दलील पेश कर दी जाए जिसका तोड़ मुमकिन न हो तो वे यह कहकर उसे नज़रअंदाज़ कर दें कि यह तो जादू है।

यह उन लोगों का हाल है जिन्हें कौम के अंदर बड़ाई का दर्जा मिल गया हो। ऐसे लोगों के लिए उनकी बड़ाई का एहसास इसमें रुकावट बन जाता है कि वे किसी दूसरे शख्स की ज़बान से जारी होने वाली सच्चाई को मान लें। ऐसे लोग अगर हक की दावत को न मानें तो दाजी को मायूस न होना चाहिए। वह उन दूसरे लोगों में अपने हामी पा लेगा जो झूठी बड़ाई के एहसास में मुब्तिला होने से बचे हुए हों।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ۚ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مَرْجَفًا وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطِيعُونِ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ۚ فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِّثْلَ ذُنُوبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ۚ قَوْلُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ۚ

और मैंने ज़िन्न और इंसान को सिर्फ इसीलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें। मैं उनसे रिस्क नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाएं। बेशक अल्लाह ही रोज़ी देने वाला है, जोरआवर (सशक्त), जबरदस्त है। पस जिन लोगों ने जुम्स किया उनका डोल भर चुका है जैसे उनके साथियों के डोल भर चुके थे, पस वे जल्दी न करें। पस मुंकिरों के लिए ख़राबी है उनके उस दिन से जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। (56-60)

ख़ुदा हर किस्म का जाती इज़्ज़ियार रखता है। ताहम फ़रिश्तों को उसने अपनी वसीअ सल्लनत का इतिजाम करने के लिए पैदा किया है। मगर इंसानों का मामला इससे मुख़्तलिफ़ है। इंसान इसलिए पैदा नहीं किए गए कि वे ख़ुदा की किसी शख़्सी या इतिजामी ज़रूरत को पूरा करें। उनकी पैदाइश का वाहिद मक्सद ख़ुदा की इबादत है। इबादत का मतलब अपने आपको ख़ुदा के आगे झुकाना है, अपने आपको पूरी तरह ख़ुदा का परस्तार बना देना है।

इस इबादत का ख़ुलासा मअरफ़त है। चुनांचे इब्ने ज़ुरैह ने इल्ला लियअबुदून की तशरीह इल्लालि यअरिफून से की है (तफ़्सीर इब्ने कसीर)। यानी इंसान से यह मलूब है कि वह ख़ुदा को बतौर दरयाफ़्त के पाए। वह बिना देखे ख़ुदा को पहचाने। इसी का नाम मअरफ़त है। इस

मअरफ़त के नतीजे में आदमी की जो ज़िंदगी बनती है उसी को इबादत व बंदगी कहा जाता है।

पानी का डोल भरने के बाद डूब जाता है इसी तरह आदमी की मोहलते अमल पूरी होने के बाद फौरन उसकी मौत आ जाती है। जो शख्स डोल भरने से पहले अपनी इस्लाह (सुधार) कर ले उसने अपने आपको बचाया। और जो शख्स आख़िर वक़्त तक ग़ाफ़िल रहा वह हलाक हो गया।

जालिम लोग अगर पकड़े न जा रहे हों तो उन्हें यह न समझना चाहिए कि वे छोड़ दिए गए हैं। वे इसलिए आज़ाद हैं कि ख़ुदा का तरीका जल्दी पकड़ने का तरीका नहीं, न इसलिए कि ख़ुदा उन्हें पकड़ने वाला नहीं।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْعَرْشِ الْعَظِيمِ ۚ إِنَّكَ أَكْبَرُ كُلِّ شَيْءٍ ۚ وَالطُّورُ ۚ وَكِتَابٌ مَسْطُورٌ ۚ فِي رَقٍّ مَنشُورٍ ۚ وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ۚ وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ۚ وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۚ مَالَهُ مِنْ دَافِعٍ ۚ يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ۚ وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۚ قَوْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلَّذِينَ الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ۚ يَوْمَ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ نَارِهِمْ دَعَا ۚ هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۚ أَفَسِحْرُ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ۚ أَصَلُّوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ إِنَّمَا تُحْزَنُونَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ

आयतें-49

सूरह-52. अत-तूर

रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महबान, निहायत रहम वाला है। कसम है तूर की। और लिखी हुई किताब की, कुशादा वरक में। और आबाद घर की। और ऊंची छत की। और उबलते हुए समुद्र की। बेशक तुम्हारे खब का अजाब वाक़ेअ होकर रहेगा। उसे कोई टालने वाला नहीं। जिस दिन आसमान डमगाएगा और पहाड़ चलने लगेंगे। पस ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए जो बातें बनाते हैं खेलते हुए। जिस दिन वे जहन्नम की आग की तरफ धकेले जाएंगे। यह है वह आग जिसे तुम झुटलाते थे। क्या यह जादू है या तुम्हें नज़र नहीं आता। इसमें दाख़िल हो जाओ। फिर तुम सब्र करो या सब्र न करो। तुम्हारे लिए यक़सां (समान) है। तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे। (1-16)

तूर सहराए सीना का वह पहाड़ है जहां हज़रत मूसा को पैग़म्बरी दी गई। किताबे मस्तूर

से मुराद तौरात है। बैत मअमूर से मुराद जमीन और सक्क मरफूअ से मुराद आसमान है।

बहर मस्जूर से मुराद मौजें मारता हुआ समुद्र है। ये चीजें शाहिद (साक्ष्य) हैं कि खुदा की पकड़ का दिन यकीनन आने वाला है। अल्लाह तआला यही खबर पैगम्बरों के जरिए देता रहा है। कदीम आसमानी किताबों में यही बात दर्ज है। जमीन व आसमान अपनी खामोश जवान में इसका एलान कर रहे हैं। समुद्र की मौजें हर सुनने वाले को उसकी कहानी सुना रही हैं।

इंसान को अपने अमल का नतीजा भुगतना होगा, यह बात आज पेशगी इत्तिलाअ की सूरत में बताई जा रही है। जो लोग पेशगी इत्तिलाअ से होश में न आएँ उन पर उनकी गफलत और सरकशी कल के दिन एक दर्दनाक अजाब की सूरत में आ पकड़ेगी और फिर वे उससे भागना चाहेंगे मगर वे उससे भाग कर कहीं न जा सकेंगे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۖ وَالَّذِينَ لَا يَرْجُونَ عَذَابَ الْحَبِيمِ ۖ كَلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۖ مُتَقَرِّبِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْنُوفَةٍ ۖ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ

वेशक मुत्तकी (ईश-परायण) लोग बागों और नेमतों में होंगे। वे खुशदिल होंगे उन चीजों से जो उनके ख ने उन्हें दी होंगी, और उनके ख ने उन्हें दोख के अजाब से बचा लिया। खाओ और पियो मजे के साथ अपने आमाल के बदले में। तकिया लगाए हुए सफ-सफ तख्तों के ऊपर। और हम बड़ी-बड़ी आंखों वाली हूरें उनसे ब्याह देंगे। (17-20)

इंसान का सबसे बड़ा जुर्म हक को झुठलाना है। इसी से बकिया तमाम जराइम पैदा होते हैं। इसी तरह इंसान की सबसे बड़ी नेकी हक का एतराफ है, तमाम दूसरी नेकियां इसी से बतौर नतीजा जाहिर होती हैं।

हक को मानने से आदमी की बड़ाई टूटती है। यह किसी इंसान के लिए सबसे ज्यादा मुश्किल काम है। इस पर वही लोग पूरे उतरते हैं जिन्हें अल्लाह के डर ने आखिरी हद तक संजीदा बना दिया हो। जो लोग इस सबसे बड़ी नेकी का सुबूत दें वे इसी के मुस्तहिक हैं कि उनके लिए जन्नत की अबदी नेमतों के दरवाजे खोल दिए जाएँ।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَابْتَغَوْا إِلَىٰ ذَاتِ الْحَقَّةِ بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا لَّهُمْ مِنْ عَمَلٍ لَهُمْ مِنْ شَيْءٍ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِينٌ ۖ وَامْدُدْ لَهُمْ رِيفَاتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ وَخُحْمًا يُسْتَهْمُونَ ۖ إِنَّا كَاغُوثُهَا وَلَا تُغْوِيهَا وَلَا تُلِيْمُ ۖ وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غُلَامٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ يُفُؤُونَ ۖ وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ۖ قَالُوا إِنَّا كُنَّا

قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُتَشَفِّعِينَ ۖ فَمَنْ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَعَفَا عَذَابَ السَّمُورِ ۖ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيمُ ۖ

और जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद भी उनकी राह पर ईमान के साथ चली, उनके साथ हम उनकी औलाद को भी जमा कर देंगे, और उनके अमल में से कोई चीज कम नहीं करेंगे। हर आदमी अपनी कमाई में फंसा हुआ है। और हम उनकी पसंद के मेवे और गोश्त उन्हें बराबर देते रहेंगे। उनके दर्मियान शराब के प्यालों के तबादले हो रहे होंगे जो लगवियत (बेहूदगी) और गुनाह से पाक होगी। और उनकी खिदमत में लड़के दौड़ते फिर रहे होंगे। गोया कि वे हिफाजत से रखे हुए मोती हैं। वे एक दूसरे की तरफ मुतबज्जह होकर बात करेंगे। वे कहेंगे कि हम इससे पहले अपने घर वालों में डरते रहते थे। पस अल्लाह ने हम पर फल फरमाया और हमें लू के अजाब से बचा लिया। हम इससे पहले उसी को पुकारते थे, बेशक वह नेक सुलूक वाला, महरबान है। (21-28)

आखिरत में ऐसा नहीं होगा कि एक शख्स का गुनाह दूसरे शख्स के ऊपर डाल दिया जाए। और न कोई शख्स ईमान व अमल के बगैर जन्नत में दाखिला पा सकेगा। अलबत्ता अहले जन्नत के साथ एक खास फल का मामला यह होगा कि वालिदेन अगर जन्नत के बुलन्द दर्जे में हों और उनकी औलाद किसी और दर्जे में तो औलाद को भी उनके वालिदेन के साथ मिला दिया जाएगा ताकि उन्हें मजिद खुशी हासिल हो सके।

जन्नत की लतीफ दुनिया में दाखिले का मुस्तहिक सिर्फ वह शख्स होगा जिसका हाल यह था कि अपने बीवी बच्चों के दर्मियान रहते हुए भी उसे अल्लाह का खौफ तड़पाए हुए था, और जिसने अपनी उम्मीदों और अपने अदिशों को सिर्फ एक अल्लाह के साथ वाबस्ता कर रखा था।

فَذَرِّفَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَلَا جُنُونٍ ۖ أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّبَّصُ بِهِ رَبِّبُ الْمُنُونِ ۖ قُلْ تَرْتَبُّوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَرِبِينَ ۖ أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَخْلَامُهُمْ بِهَذَا أَمْهُمْ قَوْمٌ كَاغُوثُونَ ۖ أَمْ يَقُولُونَ نَقُولُ ۖ بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ۖ فَلْيَاثُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ ۖ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ۖ

पस तुम नसीहत करते रहो, अपने ख के फल से तुम न काहिन (भविष्यवक्ता) हो और न मजनून। क्या वे कहते हैं कि यह एक शायर है, हम इस पर गर्दिशे जमाना (काल-चक्र) के मुंतजिर हैं। कहो कि इतिजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इतिजार करने वालों में हूँ। क्या उनकी अवलें उन्हें यही सिखाती हैं या ये सरकश लोग हैं। क्या वे कहते हैं कि यह कुरआन को खुद

बना लाया है। बल्कि वे ईमान नहीं लाना चाहते। पस वे इसके मानिंद कोई कलाम ले आएँ, अगर वे सच्चे हैं। (29-34)

जब आदमी एक दावत के मुकाबले में अपने आपको बेदलील पाए, इसके बावजूद वह उसे मानना न चाहे तो वह यह करता है कि दाओ की जात में ऐब लगाना शुरू कर देता है। वह कलाम के बजाए मुतकल्लिम (कहने वाला) को अपना निशाना बनाता है। यही वह नफिसयात थी जिसके तहत पैगम्बर के मुखातबीन ने आपको शायर और मजनून कहना शुरू किया। वे आपकी दावत को दलील से रद्द नहीं कर सकते थे, इसलिए वे आपके बारे में ऐसी बातें कहने लगे जिनसे आपकी शख्सियत मुशतबह (संदिग्ध) हो जाए।

मगर पैगम्बर खुदा से लेकर बोलता है। और जो ईसान खुदा से लेकर बोले उसका कलाम इतना मुमताज तौर पर दूसरों के कलाम से मुखलिफ होता है कि उसके मिस्त कलाम पेश करना किसी के लिए मुमकिन नहीं होता। और यह वाक्या इस बात का सबसे बड़ा सुबूत होता है कि उसका कलाम खुदाई कलाम है, वह आम मजनों में महज ईसानी कलाम नहीं।

أَمْ خَلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ۖ أَمْ خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَلْ لَا يُؤْفِقُونَ ۖ أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَتِ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصْطَبُونَ ۖ أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَوِعُونَ فِيهِ فَلْيَاكِتْ مُسَمِّعُهُمْ سُلْطٰنٌ مُبِينٌ ۖ أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمْ الْبَنُونَ ۖ

क्या वे किसी खालिक (सृष्टा) के बगैर पैदा हो गए या वे खुद ही खालिक हैं। क्या जमीन व आसमान को उन्होंने पैदा किया है, बल्कि वे यकीन नहीं रखते। क्या उनके पास तुम्हारे रब के खजाने हैं या वे दारोणा (संरक्षक) हैं। क्या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर वे बातें सुन लिया करते हैं, तो उनका सुनने वाला कोई खुली दलील ले आए। क्या अल्लाह के लिए बेटियां हैं और तुम्हारे लिए बेटे। (35-39)

खुदा की तरफ से जिन सदाकतों का एलान हुआ है वे सब पूरी तरह माकूल (तर्कपूर्ण) हैं। आदमी अगर ध्यान दे तो वह बाआसानी उन्हें समझ सकता है। फिर भी लोग क्यों उनका इंकार करते हैं। इसकी वजह आखिरत के बारे में लोगों की बेयकनी है। लोगों को जिंदा यकीन नहीं कि आखिरत में उनसे हिसाब लिया जाएगा। इसलिए वे इन उमूर (मामलों) में संजीदा नहीं, और इसीलिए वे उन्हें समझ भी नहीं सकते। अगर जजाए आमाल का यकीन हो तो आदमी फौरन उन बातों को समझ जाए जिन्हें समझना उसके लिए निहायत मुश्किल हो रहा है।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرُومٍ مُثْقَلُونَ ۖ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُمُونَ ۖ

أَمْ لَئِنْ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ۖ أَمْ لَهُمْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۖ سُبْحٰنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۖ

क्या तुम उनसे मुआवजा मांगते हो कि वे तावान (अधिभार) के बोझ से दबे जा रहे हैं। क्या उनके पास शैब है कि वे लिख लेते हैं। क्या वे कोई तदबीर करना चाहते हैं, पस इंकार करने वाले खुद ही उस तदबीर में गिरफ्तार होंगे। क्या अल्लाह के सिवा उनका और कोई माबूद (पूज्य) है। अल्लाह पाक है उनके शरीक बनाने से। (40-43)

मदऊ गिरोह हमेशा माददापरस्ती की सतह पर होता है। ऐसी हालत में मदऊ को अगर यह एहसास हो कि दाओ उससे उसकी कोई माददी चीज लेना चाहता है तो वह फौरन उसकी तरफ से मुतवहिहश (भयभीत) हो जाएगा। यही वजह है कि पैगम्बर अपने और मुखातबीन के दर्मियान किसी किसम के माददी मुतालबे की बात कभी नहीं आने देता। वह अपने और मुखातबीन के दर्मियान आखिर वक्त तक बेगर्जी की फज बाकी रखता है। चाहे इसके लिए उसे यकतरफा तौर पर माददी नुस्खान बर्दाश्त करना पड़े।

दाओ जब अपनी दावत के हक में इस हद तक संजीदगी का सुबूत दे दे तो इसके बाद वह खुदा की उस नुसरत का मुस्तहिक हो जाता है कि मुकिरीन की हर तदबीर उनके ऊपर उल्टी पड़े। वे किसी भी तरह दाओ को मगलूब (परास्त) करने में कामयाब न हों।

وَأَنْ يَرَوْا كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَرْكُومٌ ۖ فَذَرْهُمْ حَتَّى يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ۖ يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ۖ وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۖ

और अगर वे आसमान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वे कहेंगे कि यह तह-ब-तह बादल है। पस उन्हें छोड़ो, यहां तक कि वे अपने उस दिन से दो चार हों जिसमें उनके होश जाते रहेंगे। जिस दिन उनकी तदबीरें उनके कुछ काम न आएंगी और न उन्हें कोई मदद मिलेगी। और उन जालिमों के लिए इसके सिवा भी अजाब है, लेकिन उनमें से अक्सर नहीं जानते। (44-47)

कदीम मक्का के लोगों का यह हाल क्यों था कि अगर वे आसमान से कोई अजाब का टुकड़ा गिरते हुए देखें तो कह दें कि यह बादल है। इसकी वजह यह न थी कि वे खुदा को या खुदाई ताकतों को मानते न थे। इसकी अस्त वजह यह थी कि उन्हें पैगम्बर के पैगम्बर होने में शक था। उन्हें यकीन न था कि उनके सामने बजाहिर उर्ही जैसा जो एक शख्स है, उसका इंकार करना ऐसा जुर्म है कि इसकी वजह से हलाकत का पहाड़ गिर पड़ेगा।

पैगम्बर इस्लाम की शरियत अपने जमाने में लोगों के लिए एक निजाई (विवादित) शरियत थी। वह इस तरह एक साबितशुदा शरियत न थी जिस तरह आज वह लोगों को नजर आती है। मगर इस दुनिया में आदमी का इस्तेहान यही है कि वह शवहात के पर्दे को फाड़कर हकीकत को देखे। वह बजाहिर एक निजाई शरियत को साबितशुदा शरियत के रूप में दरयाफ्त करे।

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ۖ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ۝

۝

और तुम सब्र के साथ अपने रब के फैसले का इंतजार करो। बेशक तुम हमारी निगाह में हो। और अपने रब की तस्वीह करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ, जिस वक्त तुम उठते हो। और रात को भी उसकी तस्वीह करो, और सितारों के पीछे हटने के वक्त भी। (48-49)

‘खुदा का फैसला आने तक सब्र करो’ का मतलब यह है कि मुखातब की तरफ से हर किस्म की नागवार बातों के पेश आने के बावजूद दावत (आह्वान) का काम उस वक्त तक जारी रखो जब तक खुद खुदा के नजदीक उसकी हद न आ जाए। जब यह हद आती है तो उस वक्त खुदा का फैसला जरूर है और वह हक और नाहक के फर्क को अमली तौर पर जहिर कर देता है जिसे इससे पहले सिर्फ नजरी (बिचारिक) तौर पर जहिर करने की कोशिश की जा रही थी। इस पूरी मुद्दत में दाजी मुकम्मल तौर पर खुदा की हिफाजत में होता है। दाजी का काम यह है कि वह अल्लाह की तरफ मुतवज्जह रहे। और यह यकीन रखे कि अल्लाह उसे हर आन अपनी हिफाजत में लिए हुए है।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّيَ الْأَعْلَى ۖ وَبِحَمْدِكَ أَصْبَحَ ۖ أَلْهُوِي ۖ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَى ۖ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَى ۚ إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَى ۖ عَلَّمَكَ شَدِيدُ الْقُوَى ۖ ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَى ۖ وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَى ۖ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّى ۖ فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى ۖ فَأَوْحَى إِلَى عَبْدِهِ مَا أَوْحَى ۖ مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَى ۖ أَفَتَسْمُرُونَ عَلَىٰ مَا بَرَىٰ ۖ وَلَقَدْ رَأَوْهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ۖ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ ۖ عِنْدَ هَاجِئَةِ الْمَأْوَىٰ ۖ إِذْ يَخْشَى الْفُؤَادُ مَا يَأْوَىٰ ۖ يَعْلَمُ مَا فِي بَاطْنِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَمَا يَشَاءُ يَسْخَرُهُمْ غَوَاةً ضَعِيفَةً ۖ فِئْلَهُ الْعِزَّةُ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْهُدَىٰ ۖ أَمْرٌ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَسَّى ۖ فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ۖ

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महबान, निहायत रहम वाला है। कसम है सितारे की जबकि वह गुरुब (अस्त) हो। तुम्हारा साथी न भटका है और न गुमराह हुआ है। और वह अपने जी से नहीं बोलता। यह एक ‘वही’ (ईश्वरीयवाणी) है जो उस पर भेजी जाती है। उसे जबरदस्त कुव्वत वाले ने तालीम दी है, आकिल (प्रबुद्ध) व दाना (विवेकशील) ने। फिर वह नमूदार हुआ और वह आसमान के ऊंचे किनारे पर था। फिर वह नजदीक हुआ, पस वह उतर आया। फिर दो कमरों के बराबर या इससे भी कम फासला रह गया। फिर अल्लाह ने ‘वही’ की अपने बंदों की तरफ जो ‘वही’ (प्रकाशना) की। झूठ नहीं कहा रसूल के दिल ने जो उसने देखा। अब क्या तुम उस चीज पर उससे झगड़ते हो जो उसने देखा है। और उसने एक बार और भी उसे सिदरतुल मुंतहा के पास उतरते देखा है। उसके पास ही बहिश्त है आराम से रहने की, जबकि सिदरह पर छा रहा था जो कुछ कि छा रहा था। निगाह बहकी नहीं और न हद से बढ़ी। उसने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियां देखीं। (1-18)

सितारों का गुरुब (अस्त) एक अलामती लफज है जिसके जरिए सितारों की गर्दिश के मोहकम निजाम की तरफ इशारा किया गया है। माददी दुनिया में सितारों का निजाम एक बेखता (अचूक) निजाम है, यह इस बात का करीना है कि ‘वही’ व नुबुव्वत की सूरत में खुदा ने जो रूहानी निजाम कयम किया है वह भी एक बेखता निजाम हो।

फरिश्ता और ‘वही’ की सूरत में रसूल का तजर्बा हकीकी तजर्बा है, इसके सबूत के लिए कुरआन का बयान काफी है। कुरआन का मोजिजा कलाम कुरआन को खुदा की किताब साबित करता है। और जिस किताब का खुदा की किताब होना साबित हो जाए उसका हर बयान खुद कुरआन के जोर पर मुस्तनद (प्रमाणिक) तस्लीम किया जाएगा।

أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ۖ وَمَنْوَةَ الثَّالِثَةِ الْاُخْرَىٰ ۖ أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنثَىٰ ۖ تِلْكَ إِذْ أَوَّسَسَٰ ضَيْزَىٰ ۖ إِنَّ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءُ سَبَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ ۖ قَالَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۖ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْهُدَىٰ ۖ أَمْرٌ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَسَّى ۖ فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَىٰ ۖ

۝

भला तुमने लात और उज्जा पर गौर किया है। और तीसरे एक और मनात पर। क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और खुदा के लिए बेटियां। यह तो बहुत बेदुखी तक्सीम हुई। ये महज नाम हैं जो

तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं अल्लाह ने इनके हक में कोई दलील नहीं उतारी। वे महज गुमान की पैरवी कर रहे हैं। और नफ्स की ख्वाहिश की। हालांकि उनके पास उनके रख की जानिब से हिदायत आ चुकी है। क्या इंसान वह सब पा लेता है जो वह चाहे। पस अल्लाह के इख्तियार में है आखिरत और दुनिया। (19-25)

लात और उज्ज और मनात कद्रीम अरब के बुत थे। लात ताइफ में था। उज्ज मक्का के कबील नख्खा में और मनात मदीना के कबील कुइद में। ये तीनों उनके अकीदे के मुताबिक खुदा की बेटियां थीं और वे उन्हें पूजते थे। इस किस्म का अकीदा विलाशुबह एक वेबुनियाद मफरूजा (कल्पना) है। मगर इसी के साथ वह खुद अपनी तरदीद (खंडन) आप है। उन मुशिरकीन का हाल यह था कि वे बेटियों को अपने लिए ज़िल्लत की चीज समझते थे। फरमाया कि गौर करो, खुदा जो बेटा और बेटी दोनों का ख़ालिक है, वह अपने लिए औलाद बनाता तो बेटियां बनाता।

‘क्या इंसान वह सब पा लेता है जो वह चाहे’ इसकी तशरीह करते हुए शाह अब्दुल कादिर देहलवी लिखते हैं ‘यानी बुत पूजे से क्या मिलता है। मिले वह जो अल्लाह दे।’

وَكَمْ مِنْ مَّالِكٍ فِي السَّمَوَاتِ لَا تَغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَى ۚ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيَسْتَعْلُونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةً الْأَنْبِيَاءَ وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ الظَّنُّ لَا يَغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۖ فَأَعْرَضَ عَنْ مَنْ تَوَلَّى عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۚ ذَلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَى ۝

और आसमानों में कितने फरिश्ते हैं जिनकी सिफारिश कुछ भी काम नहीं आ सकती। मगर बाद इसके कि अल्लाह इजाजत दे जिसे वह चाहे और पसंद करे। बेशक जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते, वे फरिश्तों को औरतों के नाम से पुकारते हैं। हालांकि उनके पास इस पर कोई दलील नहीं। वे महज गुमान पर चल रहे हैं। और गुमान हक बात में जरा भी भुफीद नहीं। पस तुम ऐसे शख्स से एराज (उपेक्षा) करो जो हमारी नसीहत से मुंह मोड़े। और वह दुनिया की जिंदगी के सिवा और कुछ न चाहे। उनकी समझ बस यहीं तक पहुंची है। तुम्हारा रख खूब जानता है कि कौन उसके रास्ते से भटका हुआ है। और वह उसे भी खूब जानता है जो राहेरास्त (सन्मार्ग) पर है। (26-30)

पत्थर के बुत बनाकर उन्हें पूजना, फरिश्तों को खुदा की बेटी बताना, सिफारिशों की बुनियाद पर जन्मत की उम्मीद रखना ये सब ग़ैर संजीदा अकीदे हैं। और ग़ैर संजीदा अकीदे हमेशा उस जेहन में पैदा होते हैं जो पकड़ का खोफ न रखता हो। खोफ लायअनी (निरर्थक) कलाम का कातिल है। और जो शख्स बेखोफ हो उसका दिमाग लायअनी कलाम का कारखाना बन जाएगा।

जो लोग बेखोफी की नफिसयात में मुक्तिला हों उनसे बहस करने का कोई फायदा नहीं। ऐसे लोग दलील और माकूलियत पर ध्यान नहीं देते, इसलिए वे अग्रे हक को मानने के लिए भी तैयार नहीं होते। उनसे मुकाबला करने की एक ही मुमकिन तदबीर है। वह यह कि उनसे एराज किया जाए। ताहम अल्लाह तआला हर शख्स की अंदरूनी हालत को जानता है और वह उसके मुताबिक हर शख्स से मामला फरमाएगा।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى ۚ الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْأَثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّعْمُ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجْنَةٌ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ فَلَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَى ۝

और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है, ताकि वह बदला दे बुरा काम करने वालों को उनके किए का और बदला दे भलाई वालों को भलाई से। जो कि बड़े गुनाहों से और बेहयाई से बचते हैं मगर कुछ आलुदगी (छोटी बुराई)। बेशक तुम्हारे रख की बख्शिश की बड़ी समाई है। वह तुम्हें खूब जानता है जबकि उसने तुम्हें जमीन से पैदा किया। और जब तुम अपनी मांओं के पेट में जनीन (भ्रूण) की शक्ल में थे। तो तुम अपने को मुकद्दस (पवित्र) न समझो। वह तकवा (ईश-भय) वालों को खूब जानता है। (31-32)

कायनात अपने हददर्जा मोहकम (सुदृढ़) निजाम के साथ बता रही है कि उसका ख़ालिक व मालिक बेहद ताकतवर है। यही वाक्या यह समझने के लिए काफी है कि वह इंसान को पकड़ेगा और जब वह इंसान को पकड़ेगा तो किसी भी शख्स के लिए उसकी पकड़ से बचना मुमकिन न होगा।

इंसान को बशरी (इंसानी) कमजोरियों के साथ पैदा किया गया है। इसलिए इंसान से फरिश्तों जैसी पाकीजगी का मुतालबा नहीं किया गया। अल्लाह तआला ने इंसान को पूरी तरह बता दिया है कि उसे क्या करना है और क्या नहीं करना है। ताहम इंसान के लिए ‘लमम’ की माफी है। यानी वक्ती जब्बे के तहत किसी बुराई में पड़ जाना, बशर्ते कि आदमी फौरन बाद ही उसे महसूस करे और शर्मिदा होकर अपने रख से माफी मांगे।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّى ۖ وَءَاتَىٰ قَلِيلًا ۖ وَكَذَّبَ ۖ أَعِنْدَهُ ۖ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ
يَرَىٰ ۖ أَمْ لَمْ يُنَبِّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ۖ وَإِبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ۖ أَلَا تَرَىٰ
وَأَزْرَاقًا ۖ وَزُرَّ أُخْرَىٰ ۖ وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ۖ وَأَنْ سَعِيَهُ سَوْفَ
يُرَىٰ ۖ ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءُ الْأَوْفَىٰ ۖ وَأَنْ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ ۖ

भला तुमने उस शख्स को देखा जिसने एराज (उपेक्षा) किया। थोड़ा सा दिया और रुक गया। क्या उसके पास ग़ैब का इल्म है। पस वह देख रहा है। क्या उसे ख़बर नहीं पहुंची उस बात की जो मूसा के सहीफों (ग्रंथों) में है, और इब्राहीम के, जिसने अपना कौल पूरा कर दिया। कि कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। और यह कि इंसान के लिए वही है जो उसने कमाया। और यह कि उसकी कमाई अनकरीब देखी जाएगी। फिर उसे पूरा बदला दिया जाएगा। और यह कि सबको तुम्हारे रब तक पहुंचना है। (33-42)

बहुत से लोग हैं जो थोड़ा सा हक की तरफ रागिब होते हैं। फिर उनके मफ़ादात (स्वार्थ) उन पर ग़ालिब आते हैं और वे दुबारा अपनी पिछली हालत की तरफ लौट जाते हैं। ऐसे लोग अपनी ग़लत रविश की तावील (औचित्य) के लिए तरह-तरह के ख़ूबसूरत अकीदे बना लेते हैं। मगर यह सिर्फ उनके जुर्म को बढ़ता है, क्योंकि यह ग़लती पर सरकारशी के इजाफे के हममअना है।

पैगम्बरों के जरिए अल्लाह तआला ने जो हकीकत खोली है उसका ख़ुलासा यह है कि हर आदमी को लाजिमन अपने अमल का बदला पाना है। न कोई शख्स अपने अमल के अंजाम से बच सकता और न कोई दूसरा शख्स किसी को बचाने वाला बन सकता। जो लोग इस पैगम्बराना चेतावनी से मुतनब्बह (सतर्क) न हों उनसे बड़ा नादान ख़ुदा की इस दुनिया में कोई नहीं।

وَإِنَّهُ هُوَ آتِخَاكَ وَابْنُكِ ۖ وَإِنَّهُ هُوَ أَمَاتٌ وَأَحْيَا ۖ وَإِنَّهُ خَلَقَ الزُّوجَيْنِ
الذِّكْرَ وَالْأُنثَىٰ ۖ مِنْ نُّطْفَةٍ إِذَا تُنْفِئُ ۖ وَأَنْ عَلَيْهِ النُّشْأَةُ الْآخِرَىٰ ۖ وَإِنَّهُ هُوَ
أَعْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ۖ وَإِنَّهُ هُوَ رَبُّ الشَّعْرِ ۖ

और बेशक वही हंसाता है और रुलाता है। और वही मारता है और जिलाता है। और उसी ने दोनों किस्म, नर और मादा को पैदा किया, एक बूंद से जबकि वह टपकाई जाए। और उसी के जिम्मे है दूसरी बार उठाना। और उसी ने दौलत दी और सरमायादार बनाया। और वही शिअरा (नाम के तारे) का रब है। (43-49)

दुनिया के हर वाक्ये का तअल्लुक ऐसे मावराई असबाब (आलौकिक कारकों) से होता है कि ख़ुदा के सिवा कोई और उसके जुहूर पर कादिर नहीं हो सकता। खुशी और ग़म, मौत व हयात, तख़्तीकी निजाम, अमीरी और ग़रीबी, सब एक बुलन्द व बरतर ताकत का करिश्मा हैं। कदीम इंसान सितारों को सबवे हयात (जीवन का कारक) समझता था, मौजूदा जमाने में कानून फ़ितरत (प्रकृति के नियम) को सबवे हयात समझ लिया गया है। मगर हकीकत यह है कि इन असबाब के ऊपर भी एक सबब है और वह ख़ुदाए रब्बुल आलमीन है। फिर उसके सिवा किसी और को मर्कजे तवज्जोह बनाना इंसान के लिए किस तरह जाइज हो सकता है।

وَإِنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ۖ وَشُودًا فَمَا أَبْقَىٰ ۖ وَقَوْمَ نُوحٍ مِّن قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا
هُم أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ ۖ وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ۖ فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ ۖ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ ۖ

और अल्लाह ही ने हलाक किया आदे अब्बल को और समूद को। फिर किसी को बाकी न छोड़ा। और कौमे नूह को उससे पहले, बेशक वे निहायत जालिम और सरकारश थे। और उलटी हुई बस्तियों को भी फेंक दिया। पस उन्हें ढांक लिया जिस चीज ने ढांक लिया। पस तुम अपने रब के किन-किन करिश्मों को झुल्लाओगे। (50-55)

एक कैम तरक्की करती है। वह दूसरी कैमोंसे ऊपर उठ जाती है। बजहिर नामुकिन नजर आने लगता है कि कोई उसे मग़लूब (परास्त) कर सके। इसके बाद ऐसे असबाब होते हैं कि वह कैम हलाक हो जाती है या तनज्जुल (पतन) का शिकार होकर तारीख़े गुज़िशता (बीते इतिहास) का मौजूअ बन जाती है। यह वाक्या जाहिर करता है कि इंसानों के ऊपर भी कोई ताकत है जो कैमोंके मुत्तकबिल का फैसला करती है। तारीख़ के ये वाजिह वाकिफ़ात भी अगर इंसान को सबक न दें तो वह कौन सा वाक्या होगा जिससे इंसान अपने लिए सबक ले।

هَذَا نَذِيرٌ مِّنَ النَّذْرِ الْأُولَىٰ ۖ أَزِفَتِ الْأَرْفَةُ ۖ لَيْسَ لَهَا مَن دُونِ اللَّهِ
كَاشِفَةٌ ۖ أَفَمِنْ هَذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ۖ وَتَضْحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ۖ وَأَنْتُمْ
سَامِدُونَ ۖ فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ۖ

﴿٥٦﴾

यह एक डराने वाला है पहले डराने वालों की तरह। करीब आने वाली करीब आ गई। अल्लाह के सिवा कोई उसे हटाने वाला नहीं। क्या तुम्हें इस बात से तअज्जुब होता है। और तुम हंसते हो और तुम रोते नहीं। और तुम तकब्बुर करते हो। पस अल्लाह के लिए सज्दा करो और उसी की इबादत करो। (56-62)

पैगम्बरों की तारीख जो कुरआन में बताई गई है, उससे जाहिर होता है कि हक का इंकार और उसका बुरा अंजाम दोनों हाथ की दो उंगलियों की तरह एक दूसरे से करीब हैं। आदमी के अंदर अगर एहसास हो तो वह इंकार और सरकशी का रवैया इस्तिथार करते ही खुदा की पकड़ को अपनी तरफ आता हुआ देखने लगे, और सरकशी का तरीका छोड़कर इताअत का तरीका इस्तिथार कर ले। मगर इंसान इतना ज्यादा मदहोश है कि अपने सामने की चीज भी उसे नजर नहीं आती।

سُبْحَانَكَ يَا عَزِيزٌ ۚ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۚ وَتَسْمِعُ الْغُلَامَ ۚ
اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ ۖ وَالنَّشْقُ الْقَمَرُ ۚ وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعَرِّضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُسْتَمِرٌّ ۚ
وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلٌّ أُمَمٌ مُتَقَرُّرٌ ۚ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا
فِيهِ مُزْدَجَرٌ ۚ حَكِيمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرَ ۚ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ يُومِرُ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ
إِلَى شَيْءٍ شُكِرٌ ۚ خَشَعَا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ
مُنْتَشِرٌ ۚ مَّهْ طَعِينٌ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكَافِرُونَ هَذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۚ

आयतें-55

सूह-54. अल-कमर

रुकूअ-3

(मक्का में नजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
कियामत करीब आ गई और चांद फट गया। और वे कोई भी निशानी देखें तो वे एराज (उपेक्षा) ही करेंगे। और कहेंगे कि यह तो जादू है जो पहले से चला आ रहा है। और उन्होंने झुठला दिया और अपनी ख्वाहिशों की पैखी की और हर काम का वक्त मुकर्र है। और उन्हें वे खबरें पहुंच चुकी हैं जिसमें काफी इबरत (सीख) है। निहायत दर्जे की हिक्मत (तत्वदर्शिता) मगर तबीहात (चेतावनियाँ) उन्हें फायदा नहीं देती। पस उनसे एराज करो, जिस दिन पुकारने वाला एक नागवार चीज की तरफ पुकारेगा। आंखें झुकाए हुए कब्रों से निकल पड़ेंगे। गोया कि वे बिखरी हुई टिट्टियाँ हैं, भागते हुए पुकारने वाले की तरफ, मुंकिर कहेंगे कि यह दिन बड़ा सख्त है। (1-8)

खुदा मौजूदा दुनिया में ऐसे वाक्यात बरपा करता है जो कियामत को पेशगी तौर पर कबिलेफ्रम बनाने वाले हों। इसी किस्म का एक वाक्या अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जमाने में हिजरत से चन्द साल पहले पेश आया। जबकि लोगों ने देखा कि चांद फटकर दो टुकड़े हो गया। उस वक्त अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों

से कहा कि देखो, जिस तरह चांद टूटा है इसी तरह पूरी दुनिया टूटेगी और फिर नई दुनिया बनाई जाएगी।

इस तरह के वाक्यात में बिलाशुबह सबक है। मगर इन वाक्यात से सबक लेना उसी वक्त मुमकिन है जबकि आदमी अपनी अक्ल से उसके बारे में सोचे। जिन लोगों के ऊपर उनकी ख्वाहिशात गालिब आ गई हों वे उन्हें देखकर कह देंगे कि 'यह जादू है।' वे वाक्यात की तौजीह अपनी ख्वाहिश के मुताबिक करके उन्हें अपने लिए गैर मुअस्सिर (अप्रभावी) बना लेंगे। ऐसे लोगों के लिए बड़ी से बड़ी दलील भी बेमअना है। वे उसी वक्त होश में आएंगे जबकि कियामत की चिंवाड़ जाहिर हो और उनसे होश में आने का मौका छीन ले।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ ۖ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۚ فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَحِرَ ۚ فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَمِرٍ ۚ وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَى أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۚ وَحَمَلْنَاهُ عَلَى ذَاتِ الْأَوَّارِ ۚ وَدُسِّرَ ۚ تَجَرَّى بِأَعْيُنِنَا ۚ جَزَاءً لِمَنْ كَانَ كُفِرَ ۚ وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً ۚ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ۚ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ۚ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ ۚ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ۚ

उनसे पहले नूह की कौम ने झुठलाया, उन्होंने हमारे बंदे की तकजीब की (झुठलाया) और कहा कि दीवाना है और झिड़क दिया। पस उसने अपने रब को पुकारा कि मैं मगलूब (दबाव-ग्रस्त) हूँ, तू बदला ले। पस हमने आसमान के दरवाजे मूसलाधार बारिश से खोल दिए। और जमीन से चशमे (स्रोत) बहा दिए। पस सब पानी एक काम पर मिल गया जो मुकद्दर हो चुका था। और हमने उसे एक तख्तों और कीलों वाली पर उठा लिया, वह हमारी आंखों के सामने चलती रही। उस शख्स का बदला लेने के लिए जिसकी नाकद्वी की गई थी। और उसे हमने निशानी के लिए छोड़ दिया। फिर कोई है सोचने वाला। फिर कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। और हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (9-17)

हजरत नूह की कौम के अकाबिर (बड़े) अपनी झूठी अज्मतों में गुम थे। वे हजरत नूह का एतराफ करने के लिए तैयार न हो सके। इसका नतीजा यह हुआ कि वे अजाबे इलाही की जद में आ गए। उन पर यह अजाब हैलनाक सैलाब की सूरत में आया। सारी कौम अपनी आबादियों सहित उसमें गर्क हो गई। अलबत्ता हजरत नूह और उनके साथी खुदा के हुक्म से एक कश्ती में सवार हो गए। यह कश्ती चलती हुई अरारात पहाड़ पर ठहर गई।

अरारात टर्की में वाकेअ है। वह वहां का सबसे ऊंचा पहाड़ है। उसकी चोटी 16853 फिट ऊंची है। कुछ हवाबाजों का कहना है कि उन्होंने अरारात की बरफानी चोटी के ऊपर से उड़ते हुए वहां कश्ती जैसी एक चीज बर्फ में धंसी हुई देखी है। अगर यह सही हो तो इसका मतलब यह है कि फिरऔने मूसा की लाश जिस तरह अहराम के अंदर दफन थी और उन्नीसवीं सदी के आखिर में बरामद होकर खुदा की निशानी (यूसुस 92) बन गई, इसी तरह शायद किसी वक्त कश्ती नूह भी दरयाफ्त हो और वह लोगों के लिए खुदा की निशानी बन जाए।

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرِي ۖ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا
فِي يَوْمٍ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ۖ تَنَزَّعُ السَّاسُ ۖ كَانَهُمْ رَعِجَاتُ بُخُلٍ مُّتَنَفِعِينَ ۖ فَكَيْفَ
كَانَ عَذَابِي وَنُذْرِي ۖ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ۝

आद ने झुठलाया तो कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। हमने उन पर एक सख्त हवा भेजी मुसलसल नहसत के दिन में। वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी जैसे कि वे उखड़े हुए खजूरों के तने हों। फिर कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। और हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया, तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (18-22)

कैसे आद जब खुदा के अजाब की मुस्तहिक हो गई तो खुदा ने उन पर ऐसी तेज आंधी भेजी जिसमें लोगों का जमीन पर ठहरना मुश्किल हो गया। आंधी उन्हें इस तरह उठा-उठाकर फेंक रही थी कि कोई दीवार से जाकर टकराता था और कोई दरख्त से। किसी की छत उसके सर पर गिर पड़ी। यह इस बात का मुजाहिरा था कि इंसान बिल्कुल बेबस है, खुदा के मुकाबले में उसे किसी किस्म का इख्तियार हासिल नहीं।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ۖ فَقَالُوا ابْشِرْنَا وَاحِدًا اتَّبِعْنَا ۖ إِنَّا إِذَا رَأَيْنَا أَصْبَحًا ۖ وَنَبَاهًا ۖ
أَلْقَى الدُّرُوعَ عَلَيْنَا ۖ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌّ ۖ سَيَعْلَمُونَ غَدًا مِّنَ الْكَذَّابِ
الْأَشَرِ ۖ إِنَّا مُرْسِلُوا الثَّاقَةِ فِتْنَةً لَهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ۖ وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ
الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُحْتَضَرٌ ۖ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ ۖ فَكَيْفَ
كَانَ عَذَابِي وَنُذْرِي ۖ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ
الْحِثْيَةِ ۖ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ۝

समूद ने डर सुनाने को झुठलाया। पस उन्होंने कहा क्या हम अपने ही अंदर के एक आदमी के कहे पर चलेंगे, इस सूरत में तो हम गलती और जुनून में पड़ जाएंगे। क्या हम सब में से उसी पर नसीहत उतरी है, बल्कि वह झूठा है, बड़ा बनने वाला। अब वे कल के दिन जान लेंगे कि कौन झूठा है और बड़ा बनने वाला। हम ऊंटनी को भेजने वाले हैं उनके लिए आजमाइश बनाकर, पस तुम उनका इतिजाज करो। और सन्न करो। और उन्हें आगाह कर दो कि पानी उन में बांट दिया गया है, हर एक बारी पर हाजिर हो। फिर उन्होंने अपने आदमी को पुकारा, पस उसने वार किया और ऊंटनी को काट डाला। फिर कैसा था मेरा अजाब और मेरा डराना। हमने उन पर एक चिंघाड़ भेजी, तो वे बाढ़ वाले की रैंदी हुई बाढ़ की तरह होकर रह गए। और हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया, तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (23-32)

पैगम्बर हमेशा आम इंसान के रूप में आता है, इसलिए इंसान उसे पहचान नहीं पाता। इसी तरह खुदा की ऊंटनी भी बजाहिर आम ऊंटनी की तरह थी। इसलिए समूद के लोग उसे पहचान न सके। और उसे मार डाला। मौजूदा दुनिया इसी बात का इस्तेहान है। यहां लोगों को बजाहिर एक आम आदमी में खुदा के नुमाइद को देखना है। बजाहिर एक आम ऊंटनी में खुदा की ऊंटनी को पहचान लेना है। जो लोग इस इस्तेहान में नाकाम रहें वे कभी हिदायत के रास्ते को नहीं पा सकते।

कुरआन अगरचे गहरे मआनी की किताब है। मगर उसके अंदर बयान में हददर्जा वुजुह (Clarity) है। इस वुजुह (सुस्पष्टता) की बिना पर कुरआन का समझना हर आदमी के लिए आसान हो गया है, चाहे वह एक आम आदमी हो या एक आला तालीमयाफता आदमी।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالَّذِي ۖ إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُمْ بِسَحَرٍ ۖ
نَعْبَأُ لِمَن عِنْدَنَا كَذَلِكُمْ نَجْزِي مَن شَكَرَ ۖ وَلَقَدْ آتَيْنَاهُم بَطْشَتَيْنَا فَتَمَارَوْا
بِالَّذِي ۖ وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ ضَيْفِهِ فَطَمَسْنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذْرِي ۖ
وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِيرٌ ۖ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذْرِي ۖ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا
الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ۝

लूत की कौम ने डर सुनाने वालों को झुठलाया। हमने उन पर पत्थर बरसाने वाली हवा भेजी, सिर्फ लूत के घर वाले उससे बचे, उन्हें हमने बचा लिया सहर (भोर) के वक्त। अपनी जानिव से फल्ल करके। हम इसी तरह बदला देते हैं उसे जो शुक्र करे। और लूत ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया, फिर उन्होंने उस डराने में झगड़े पैदा किए। और वे उसके मेहमानों को उससे लेने लगे। पस हमने उनकी आंखें मिटा दीं। अब चखो मेरा अजाब और मेरा डराना। और

सुबह सवेरे उन पर अज़ाब आ पड़ा जो ठहर चुका था। अब चखो मेरा अज़ाब और मेरा डराना। और हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई है नसीहत हासिल करने वाला। (33-40)

हजरत लूत अलैहि० की दावत उठी तो कुछ लोगों ने उसका एतराफ कर लिया, वे हक को बड़ा मान कर अपने आपको उसके मुकाबले में छोटा करने पर राजी हो गए। मगर अक्सर अफराद ने ऐसा नहीं किया। वे दलाइल का एतराफ करने के बजाए उसे रद्द करने के लिए झूठी बहसें निकालते रहे। हक की दावत के मुकाबले में इस किस्म की रविश बहुत बड़ा जुर्म है, चुनांचे एतराफ करने वालों को छोड़कर इंकार करने वाले पकड़ लिए गए। यह एक मिसाल है कि इस दुनिया में हक का इंकार करने वालों के लिए हलाकत है और हक का एतराफ करने वालों के लिए नजात।

وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ الذُّرُّ ۖ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كَذَّبَتْ فَهْمُ أَخَذَ عَزِيزٌ مُّقْتَدِرٌ ۖ

और फिरऔन वालों के पास पहुंचे डराने वाले। उन्होंने हमारी तमाम निशानियों को झुठलाया तो हमने उन्हें एक ग़ालिब (प्रभावशाली) और कुव्वत वाले के पकड़ने की तरह पकड़ा। (41-42)

फिरऔन अपने वक्त का इतिहाई ताकतवर बादशाह था। मगर हक का इंकार करने के बाद वह अल्लाह की नजर में बेक़ीमत हो गया। इसके बाद वह एक आजिज इंसान की तरह हलाक कर दिया गया। इस दुनिया में हक के साथ खड़ा होने वाला आदमी जोरआवर है और हक के खिलाफ खड़ा होने वाला आदमी बेज़ोर।

اَلْقَاكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكَ ۖ اَمْ لَكُمْ اٰرَاءٌ فِي الزُّبُرِ ۚ اَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَجِرٌ ۚ سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ۚ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ اَدْهٰى وَاَمَرٌ ۚ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ فِي ضَلٰلٍ وَّسْعٍ ۚ يَوْمَ يُسْعَبُونَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ دُوْقُوْا مِمَّا سَفَرَا ۚ

क्या तुम्हारे मुँकिर उन लोगों से बेहतर हैं या तुम्हारे लिए आसमानी किताबों में माफी लिख दी गई है। क्या वे कहते हैं कि हम ऐसी जमाअत हैं जो ग़ालिब रहेंगे। अनकरीब यह जमाअत शिकस्त खाएगी और पीट फेरकर भागेगी। बल्कि कियामत उनके वादे का वक्त है और कियामत बड़ी सख्त और बड़ी कड़वी चीज है। वेशक मुजरिम लोग गुमराही में और बेअक्ली में हैं। जिस दिन वे मुंह के बल आग में घसीटे जाएंगे। चखो मजा आग का। (43-48)

पिछले पैगम्बरों का इंकार करने वालों के साथ जो वाक्यात पेश आए उनमें पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का इंकार करने वालों के लिए नसीहत थी। मगर उन्होंने इससे नसीहत न ली। यही तमाम कैमों का हाल है। खुली निशानियों के बावजूद हर कैम अपने आपको महफूज और मुस्तसना (अपवाद) कैम समझ लेती है। हर कैम दुबारा वही सरकशी करती है जो पिछली कैमों ने की और उसके नतीजे में वह खुदाई अज़ाब की मुस्तहिक हो गई।

اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ۚ وَمَا اَمْرُنَا اِلَّا وَاَحَدَةٌ ۚ كَلِمَةٌ يَّالْبَصِرَ ۚ وَلَقَدْ اَهْكَنَّاۤ اَشْيَاعَكُمْۢ فَعَلْ مِنْ تَدْكِرٍ ۚ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُۤ فِي الزُّبُرِ ۚ وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌّ ۚ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَدَّتٍ وَّتَهَرٌ ۚ فِيْ مَّقْعَدٍ صَدَقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ۚ

ع

हमने हर चीज को पैदा किया है अंदाजे से। और हमारा हुक्म बस एकबारगी आ जाएगा जैसे आंख का झपकना। और हम हलाक कर चुके हैं तुम्हारे साथ वालों को, फिर क्या कोई है सोचने वाला। और जो कुछ उन्होंने किया सब किताबों में दर्ज है। और हर छोटी और बड़ी बात लिखी हुई है। वेशक डरने वाले बागों में और नहरों में होंगे। बैठे सच्ची बैठक में, कुदरत वाले बादशाह के पास। (49-55)

दुनिया की हर चीज का एक मुक़र्रर जाब्ता (नियम) है। यही उसूल इंसान के मामले में भी है। इंसान को एक मुक़र्रर जाब्ते के तहत मौजूदा दुनिया में अमल का मौक़ा दिया गया है। और मुक़र्रर जाब्ते ही के तहत उसे अमल के मक़म से हटाकर अंजाम के मक़म में पहुंचा दिया जाता है। ख़ालिक की कुदरत जो मौजूदा कायनात में जाहिर हुई है वह यह यक़ीन दिलाने के लिए काफी है कि यह मामला ऐन अपने वक्त पर बिलाताख़ीर (अविलंब) पेश आएगा। इसी तरह मौजूदा दुनिया में रिकॉर्डिंग का निजाम इस हकीकत का पेशगी एलान है कि हर एक के साथ ऐन वही मामला किया जाएगा जो उसके अमल के मुताबिक हो। ताहम ये बातें उसी शरूख की समझ में आएंगी जो अपने अंदर यह मिजाज रखता हो कि वह वाक्यात पर ग़ौर करे। और जाहिर से गुजर कर बातिन में छुपी हुई हकीकतों को देख सके।

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। यहां हर एक को पूरी आजादी हासिल है। इसलिए मौजूदा दुनिया में यह मुमकिन है कि आदमी 'झूठी नशिस्त (बैठक)' पर भी बैठकर नुमायां हो सके। वह झूठ की ज़मीन पर इज्जत और मर्तब का मक़म हासिल कर ले। मगर आखिरत में किसी के लिए ऐसा मुमकिन न होगा। आखिरत में इज्जत और कामयाबी सिर्फ उन लोगों को मिलेगी जो सच्ची नशिस्त पर बैठने वाले हों। जिन्होंने फिलवाकअ अपने आपको सच की ज़मीन पर खड़ा किया हो। आखिरत में खुदा की कुदरत का मक़म का ज़ुहूर

इस बात की जमानत बन जाएगी कि वहां सच्ची नशिस्त के सिवा किसी और नशिस्त पर बैठना किसी के कुछ काम न आ सके।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ ۝ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ ۝ أَعْلَمُ الْغُيُوبِ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ ۝ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ۝ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝ حُسْبَانِ ۝ وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ۝ وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ۝ أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ۝ وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيزَانَ ۝

आयतें-78

सूरह-55. अर-रहमान

रुकूअ-3

(मदीना में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। रहमान ने, कुरआन की तालीम दी। उसने इंसान को पैदा किया। उसे बोलना सिखाया। सूरज और चांद के लिए एक हिसाब है। और सितारे और दरख्त सज्दा करते हैं। और उसने आसमान को ऊंचा किया और उसने तराजू रख दी। कि तुम तोलने में ज्यादाती न करो। और इंसाफ के साथ सीधी तराजू तोलो और तोल में न घटाओ। (1-9)

अल्लाह तआला ने इंसान को बनाया। उसे नुक्त (बोलने) की अनोखी सलाहियत दी जो सारी मालूम कायनात में किसी को हासिल नहीं। फिर इंसान से जो आदिलाना (न्यायपूर्ण) रविश मल्लूब थी उसका अमली नमूना उसने कायनात में कायम कर दिया। इंसान के गिर्द व पेश की पूरी दुनिया ऐन उसी उसूले अद्ल पर कायम है जो इंसान से अल्लाह तआला को मल्लूब है और कुरआन में इसी अद्ल (न्याय) को लफ्जी तौर पर बयान कर दिया गया है। कुरआन खुदाई अद्ल का लफ्जी इह्सार है और कायनात खुदाई अद्ल का अमली इह्सार। बंदों के लिए जरूरी है कि वह अपने कौल व अमल को इसी तराजू से नापते रहें। वे न लेने में बेइंसाफी करें और न देने में।

وَالْأَرْضُ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ۝ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ۝ وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ ۝ وَالرَّيْحَانُ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۝ وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِنْ نَارٍ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ۝ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

يَخْرُجُ مِنْهُمَا النُّوْلُ وَالْمَرْجَانُ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ وَالْجَوَارِ الْمُشْتَرِكُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

और जमीन को उसने खल्क (प्राणियों) के लिए रख दिया। उसमें मेवे हैं और खजूर हैं जिनके ऊपर शिलाफ होता है। और भुस वाले अनाज भी हैं और खुशबूदार फूल भी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उसने पैदा किया इंसान को ठीकरे की तरह खंखनाती मिट्टी से और उसने जिन्नात को आग की लपट से पैदा किया। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वह मालिक है दोनों मशरिक (पूर्व) का और दोनों मग़रिब का (पश्चिम)। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उसने चलाए दो दरिया, मिलकर चलने वाले। दोनों के दर्मियान एक पर्दा है जिससे वे आगे नहीं बढ़ते। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उन दोनों से मोती और मूंगा निकलता है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। और उसी के हैं जहाज समुद्र में ऊंचे खड़े हुए जैसे पहाड़, फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (10-25)

इस दुनिया का बेशतर हिस्सा सितारों पर मुशतमिल है जो सरापा आग हैं। जिन्नात उसी आग के माददा से बनाए गए हैं। मगर इंसान के साथ अल्लाह तआला का यह खुसूसी मामला है कि उसे 'मिट्टी' से बनाया गया है जो वसीअ कायनात में इतिहाई नादिर चीज है।

जमीन सारी कायनात में एक अनोखा इस्तिंसना (अपवाद) है। यहां वे तमाम असबाब हददर्जा तवाजुन (संतुलन) और तनासुब (अनुपात) के साथ मुहय्या किए गए हैं जिनके जरिए इंसान जैसी मख्लूक के लिए रहना और तमददुन (सभ्यता) की तामीर करना मुमकिन हो सके। इन्हीं इतिजामात में से एक इतिजाम जमीन में मशिकेन और मग़िबेन का हेना है। जोड़ के मौसम में सूरज के तुलूअ व गुरुब के मकामात दूसरे होते हैं। और गर्मी के मौसम में दूसरे। इस लिहजसे उसके मशिकेन व मग़िब कई हो जाते हैं। यह मौसमी फर्कफज मेजमीन के मख्यरी झुकाव (Axial tilt) की वजह से पैदा होता है। यह झुकाव कायनात का एक इतिहाई अनोखा वाक्या है। और इससे बेशमार तमददुनी फायदे इंसान को हासिल होते हैं।

नाकाबिले कयास हद तक वसीअ कायनात में इंसान और जमीन का यह इस्तिंसना खुदा की नेमत व कुदरत का ऐसा अजीम मामला है कि इंसान किसी भी तरह उसका शुक्र अदा करने पर कादिर नहीं।

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝ وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۝ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝ يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلُّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۝

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٠﴾

जो भी जमीन पर है वह फना होने वाला है। और तैरे ख की जल बाकी रहेगी, अमृत वाली और इज्जत वाली। फिर तुम अपने ख की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। उसी से मांगते हैं जो आसमानों और जमीन में हैं। हर रोज उसका एक काम है। फिर तुम अपने ख की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। (26-30)

दुनिया का मुतालआ बताता है कि हर चीज फनापजीर (पतनशील) है। अश्या (चीजों) का फनापजीरी के बावजूद मौजूद होना यह साबित करता है कि उनका खालिक और मुंजिम गैर फानी है। अगर वह गैर फानी न होता तो अश्या का वजूद ही न होता। या अगर होता तो अब तक उनका वजूद मिट चुका होता।

दुनिया का मुतालआ यह भी बताता है कि दुनिया की किसी चीज के अंदर तख्लीक (सृजन) की ताकत नहीं। इसका मतलब यह है कि अश्या अपनी बका (अस्तित्व) के लिए जिन चीजों की मोहताज हैं वे उनकी अपनी पैदाकरदा नहीं हैं। यह वाक्या दुबारा खालिक के बेपायां कुदरत को बताता है। ये हकीकतें इतनी वाजह हैं कि किसी संजीदा आदमी की लिए इनका इंकार मुमकिन नहीं।

खुदा की निशानियां इस दुनिया में इतनी ज्यादा हैं कि एक संजीदा इंसान के लिए उन्हें नजरअंदाज करना किसी तरह मुमकिन नहीं। मगर इंसान इतना जालिम है कि वह निशानियों के हुजूम में भी निशानियों का इंकार करता है।

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلَيْنِ ﴿٣١﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٢﴾ يَمْعُرُ الْجَنِّ وَالْإِنْسِ
إِنْ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا لَا تَنْفُذُونَ إِلَّا
بِإِذْنِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٣﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شَوْاظُ مَرْنِ تَارَةً وَثَمَّاسٌ
فَلَا تَنْتَصِرَانِ ﴿٣٤﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٥﴾

हम जल्द ही फासि देने वाले हैं तुम्हारी तरफ से, ऐ दो भारी काफिलो। फिर तुम अपने ख की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। ऐ जिन्नों और इंसानों के गिरोह, अगर तुमसे हो सके कि तुम आसमानों और जमीन की हदों से निकल जाओ तो निकल जाओ, तुम नहीं निकल सकते बगैर सनद के। फिर तुम अपने ख की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। तुम पर छोड़े जाएंगे आग के शोले और धुवां तो तुम बचाव न कर सकोगे। फिर तुम अपने ख की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। (31-36)

मौजूदा दुनिया इस्तेहान की दुनिया है। जब तक इस्तेहान की दुनिया खत्म नहीं होती हर शख्स सरकशी करने के लिए आजाद है। मगर कामिल आजादी के बावजूद कोई जिन्न व इंस इस पर कादिर नहीं कि वह कायनात की हुद से बाहर चला जाए। यही वाक्या यह साबित करने के लिए काफी है कि इंसान पूरी तरह खुदा की गिरफ्त में है। इस्तेहान की मुदत खत्म होने पर जब वह लोगों को पकड़ेगा तो किसी के लिए मुमकिन न होगा कि उससे अपने आपको बचा सके।

وَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٦﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾
فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌ ﴿٣٨﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٩﴾
يُعْرِفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ﴿٤٠﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ
رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤١﴾ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٤٢﴾ يَطُوفُونَ بَيْنَهَا وَ
بَيْنَ حَمِيمٍ إِنْ ﴿٤٣﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤٤﴾

फिर जब आसमान फटकर खाल की मानिंद सुर्ख हो जाएगा। फिर तुम अपने ख की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। पस उस दिन किसी इंसान या जिन्न से उसके गुनाह की बाबत पूछ न होगी। फिर तुम अपने ख की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। मुजरिम पहचान लिए जाएंगे अपनी अलामतों से, फिर पकड़ा जाएगा पेशानी के बाल से और पांव से। फिर तुम अपने ख की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। यह जहन्म है जिसे मुजरिम लोग झूट बताते थे। वे फिरंगे उसके दर्मियान और खोलते पानी के दर्मियान। फिर तुम अपने ख की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे। (37-45)

इंकार और सरकशी की वजह हमेशा बेखोफी होती है। कियामत का हौलनाक लम्हा जब सामने आएगा तो मुजरिम अपनी सरकशी भूल जाएंगे। मौजूदा दुनिया में जिस हक को वे ताकतवर दलाइल के बावजूद मानने के लिए तैयार न होते थे, कियामत में उसे बिला बहस मान लेंगे। मगर उस वक्त का मानना किसी के कुछ काम न आएगा। अल्लाह की कुदरतों को गैब में मानना मोतबर है न कि उसके जाहिर हो जाने के बाद।

وَلَمَّا خَالَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّاتٍ ﴿٤٥﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤٦﴾ ذُوقُوا أَثْقَانِ ﴿٤٧﴾
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤٨﴾ فِيهِمَا عَيْنٌ تَجْرِي ﴿٤٩﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٠﴾
فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٌ ﴿٥١﴾ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٢﴾ مُتَكَبِّرِينَ عَلَى

فُرُشٍ بَطَآئِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ وَجَنَ الْجُنَّتَيْنِ دَانٍ ۖ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ فِيهِنَّ قَصَصَاتُ الْغُرَفِ لَمْ يُغْنِي عَنْهُنَّ إِسْرُفُ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ كَانَهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ

और जो शख्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरे उसके लिए दो बाग़ हैं। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों बहुत शाखों वाले। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनके अंदर दो चशमे (स्रोत) जारी होंगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों बाग़ों में हर फल की दो किस्में। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वे तकिया लगाए ऐसे बिछौनों पर बैठें होंगे जिनके अस्तर दबीज (गाढ़े) रेशम के होंगे। और फल उन बाग़ों का झुक रहा होगा। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें नीची निगाह वाली औरतें होंगी। जिन्हें उन लोगों से पहले न किसी इंसान ने छुवा होगा न किसी जिन्न ने। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। वे ऐसी होंगी जैसे कि याकूत (लालमणि) और मरजान (मृंगा)। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। नेकी का बदला नेकी के सिवा और क्या है। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। (46-61)

वसीअ तक्सीम के एतबार से जन्नत के दो बड़े दर्जे हैं। इन आयात में दो बाग़ों वाली जिस जन्नत का जिक्र है वह पहले दर्जे वाली जन्नत है। उस जन्नत में शाहाना दर्जे की नेमतें मुहय्या होंगी। ये आला नेमतें उन लोगों को मिलेंगी जिन पर अल्लाह का फिक्र इतना ग़ालिब हुआ कि मौजूदा दुनिया में ही उन्होंने अपने आपको अल्लाह के सामने खड़ा कर लिया। उन्होंने एहसान (उच्चतम) के दर्जे में अल्लाह से तअल्लुक का सुबूत दिया।

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَيْنِ ۖ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ مُدْهَامَتَيْنِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ فِيهِمَا عَيْنَتَانِ تَصَاحَتَانِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ فِيهِمَا قَاكِمَةٌ وَتَخْلُ وَرُمَانٌ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حَسَنَاتٌ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ حُورٌ مُّقْصُورَاتٌ فِي الْبُيُوتِ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ لَمْ يُغْنِي عَنْهُنَّ إِسْرُفُ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌّ ۚ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا

تُكَذِّبِينَ ۚ مُتَكَيِّنِينَ عَلَى رُفُوفٍ خُضِرَ وَعَبَقَرِي حَسَانٍ ۖ فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۚ تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ۚ

और उनके सिवा दो बाग़ और हैं। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। दोनों गहरे सब्ज स्याही मायल। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें दो चशमे (स्रोत) होंगे उबलते हुए। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें फल और खजूर और अनार होंगे। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनमें खूबसीरत (सुशील), खूबसूरत औरतें होंगी। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। हूरें खेमों में रहने वालीयां। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। उनसे पहले उन्हें न किसी इंसान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। तकिया लगाए सब्ज मसनदों (हरित आसनो) पर और कीमती नफीस बिछौने पर। फिर तुम अपने रब की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे। बड़ा बाबरकत है तेरे रब का नाम बड़ाई वाला और अज्मत वाला। (62-78)

इन आयात में दूसरी जन्नत का जिक्र है। वह भी पहली जन्नत की तरह दो बाग़ों वाली होगी। यह जन्नत आम अहले तकवा के लिए होगी। मौजूदा दुनिया की नेमतों के एतबार से इस जन्नत की नेमतें भी अगरचे नाकबिले कयास हद तक ज्यादा होंगी मगर पहली जन्नत के मुकाबले में वह दूसरे दर्जे की जन्नत है। ये जन्नतें उस खालिक व मालिक के शायाने शान होंगी जिसकी अज्मतों और कुदरतों के नमूने मौजूदा दुनिया में जाहिर हुए हैं और जिन्हें देखने वाले आज ही देख रहे हैं।

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقَدِيمِ ۖ هُوَ الَّذِي يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ ۚ إِنَّ إِلَهَنَا لَاحَدٌ ۚ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۚ إِنَّ إِلَهَنَا لَاحَدٌ ۚ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۖ لَيْسَ لَوْفَعَتِهَا كَاذِبَةٌ ۖ خَافِضَتُّ رَأْفَعَةً ۖ إِذَا جَبَّتِ الْأَرْضُ رَجًا ۖ وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًا ۖ فَكَانَتْ هَبَاً مُنْبَثًا ۖ وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ۖ

आयतें-96

सूरह-56. अल-वाकिअह

रुकूअ-3

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है। जब वाकेअ (घटित) होने वाली वाकेअ हो जाएगी। उसके वाकेअ होने में कुछ झूट नहीं। वह

पस्त करने वाली, बुलन्द करने वाली होगी। जबकि जमीन हिला डाली जाएगी। और पहाड़ टूट कर रेजा-रेजा हो जाएंगे। फिर वे परागंदा गुबार (मलिन धुंध) बन जाएंगे। और तुम लोग तीन किस्म के हो जाओगे। (1-7)

मौजूदा दुनिया में आदमी देखता है कि उसे आजादी हासिल है कि जो चाहे करे। इसलिए आखिरत की पकड़ की बात उसके जेहन में नहीं बैठती। मगर अगली दुनिया का बनना इतना ही मुमकिन है जितना मौजूदा दुनिया का बनना। जब वह वक्त आएगा तो सारा निजाम पलट हो जाएगा। ऊपर के लोग नीचे हो जाएंगे। और नीचे के लोग ऊपर दिखाई देंगे। उस वक्त इंसान अपने-अपने अमल के एतबार से तीन गिरोहों में तक्सीम हो जाएंगे। अससाबिकून (आगे वाले), असहाबुलयमीन (दाईं तरफ वाले) और असहाबुश्शिमाल (बाईं तरफ वाले)।

فَأَصْحَبُ الْيَمِينَةَ ۖ مَا أَصْحَبُ الْيَمِينَةَ ۖ وَأَصْحَبُ الْمَشْأَمَةَ ۖ مَا أَصْحَبُ الْمَشْأَمَةَ ۖ
وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ ۖ أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۖ ۝ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۖ ۝ ثَلَاثَةٌ ۖ مِمَّنْ
الْأَوَّلِينَ ۖ ۝ وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۖ ۝ عَلَى سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ۖ مُّتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ۖ ۝
يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّجَنَّدُونَ ۖ ۝ يَكُوبُ ۖ وَأَبَارِقُ ۖ ۝ وَكَأْسٌ مِّنْ مَّعِينٍ ۖ ۝
لَّا يَصْدَعُونَ عَلَيْهَا وَلَا يَزْفُونَ ۖ ۝ وَأَفْكَاهُ هُمَ آيَاتُ الْخَيْرُونَ ۖ ۝ وَالْحَمْدُ طَيْرٌ مِّمَّنَّا
يَشْتَهُونَ ۖ ۝ وَحُورٌ عِينٌ ۖ ۝ كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۖ ۝ جَزَاءُ مِمَّا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ۖ ۝ لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۖ ۝ إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ۖ ۝

फिर दाएं वाले, पस क्या खूब हैं दाएं वाले। और बाएं वाले कैसे बुरे लोग हैं बाएं वाले। और आगे वाले तो आगे ही वाले हैं। वे मुकरब लोग हैं। नेमत के बागों में। उनकी बड़ी तादाद अगलों में से होगी। और थोड़े पिछलों में से होंगे। जड़ाऊ तख्तों पर। तकिया लगाए आमने सामने बैठे होंगे। फिर रहे होंगे उनके पास लड़के हमेशा रहने वाले। आबखोरे और कूजे लिए हुए और प्याला साफ शराब का। उससे न सर दर्द होगा और न अक्ल में फूटूर आएगा। और मेवे कि जो चाहें चुन लें। और परियों का गोशत जो उन्हें मरगूब (पसंद) हो। और बड़ी आंखों वाली हूँ। जैसे मोती के दाने अपने शिलाफ के अंदर। बदला उन कामों का जो वे करते थे। उसमें वे कोई लज्ब (घटिया, निरर्थक) और गुनाह की बात नहीं सुनेंगे। मगर सिर्फ सलाम-सलाम का बोल। (8-26)

अससबिकून (आगे वाले) वे लोग हैं जो हक के सामने आते ही फैसल उसे कुबूल कर लें। वे बिला ताखीर (अविलंब) अपने आपको हक के हवाले कर दें। हजरत आइशा कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : क्या तुम जानते हो कि कियामत के दिन कौन लोग अल्लाह के साथे में सबसे पहले जगह पाएंगे। लोगों ने कहा कि अल्लाह और उसका रसूल ज्यादा बेहतर जानते हैं। आपने फरमाया कि वे लोग कि जब उनके सामने हक आया तो उन्होंने उसे कुबूल कर लिया। और जब उनसे हक मांगा गया तो उन्होंने उसे दिया। और दूसरों के मामले में उन्होंने वही फैसला किया जो फैसला उनका खुद अपने बारे में था। (तप्सीर इब्ने कसीर)

दावत के दौर अव्यल में जो अफ़राद आगे बढ़कर इस्लाम कुबूल करते हैं उनके लिए इस्लाम एक दरयाफ़्त होता है। इसके बाद उनकी जो नस्लें हैं वे इस्लाम को विरासत के तौर पर पाती हैं। दरयाफ़्त और विरासत का यही फ़र्क़ है जो पहले गिरोह का मर्तबा दूसरे गिरोह से बुलन्द कर देता है। कुदरती तौर पर दूसरा गिरोह तादाद में ज्यादा होता है और पहला गिरोह कम। आख़िरत में दूसरे गिरोह के लिए अगर आम इनामात हैं तो पहले गिरोह के लिए शाहाना इनामात।

وَاصْصَبُ الْيَمِينَ ۖ مَا اصْصَبُ الْيَمِينَ ۖ فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ۖ وَطَلْحٍ
مَّنْضُودٍ ۖ وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ۖ وَنَآءٍ مَّسْكُوبٍ ۖ وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ۖ لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا
مَمْنُوعَةٍ ۖ وَفُورٍ مُّفْرُوعَةٍ ۖ إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنِشَاءً ۖ فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ۖ عُرْبًا
اَشْرَابًا ۖ لَا اصْصَبُ الْيَمِينَ ۖ ثَلَاثَةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۖ وَثَلَاثَةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۖ

और दाहिने वाले, क्या खूब हैं दाहिने वाले। बेरी के दरख्तों में जिनमें कांटा नहीं। और केले तह-ब-तह। और फैले हुए साये। और बहता हुआ पानी। और कसरत (बहुलता) से मेवे। जो न ख़त्म होंगे और न कोई रोकटोक होगी। और ऊंचे बिछौने। हमने उन औरतों को ख़ास तौर पर बनाया है। फिर उन्हें कुंवारी रखा है। दिलरुबा और हमउम्र। दाहिने वालों के लिए। अगलों में से एक बड़ा गिरोह होगा और पिछलों में से भी एक बड़ा गिरोह।

(27-40)

असहाबुल्यमीन (दाईं तरफ वाले) से मुराद आम अहले जन्नत हैं। इसमें वे तमाम लोग शामिल हैं जो अपने अकीदे और किरदार के एतबार से सालेह थे। उन्हें ईमानी एतबार से अगरचे आला शुऊरी दर्जा हासिल न था ताहम वे खुदा व रसूल के लिए मुख़्लिस थे और अपनी ज़िंगी में इंसाफ और खुदातरसी के रास्ते पर कायम रहे। इस गिरोह में दौरे अब्वल के भी काफी लोग होंगे और दौरे सानी के भी काफी लोग।

وَأَصْحَابُ الشَّيْءِ مَا أَصْحَابُ الشَّيْءِ ۚ فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۖ وَظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُومٍ ۖ لَا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ۚ وَكَانُوا يُصْرُونَ عَلَى الْيَدِ الْعَظِيمِ ۚ وَكَانُوا يَقُولُونَ ۚ أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ۖ إِنَّا لَبَعُوثُونَ ۚ أَوَإِذَا كُنَّا الْأَوَّلُونَ ۖ قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ لَبَعُوثُونَ ۚ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۚ ثُمَّ إِنَّكُمْ إِلَيْهَا الصَّالُونَ الْمَكْدُوبُونَ ۚ لَا يَكُونُ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زُقُمٍ ۚ فَمَا لُونُ مِنْهَا الْبُطُونَ ۚ فَشَارِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ۚ فَشَارِبُونَ شُرْبَ الْهَلِيمِ ۚ هَذَا نَزَّلْنَاهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ۚ

और बाएं वाले, कैसे बुरे हैं बाएं वाले। आग में और खोलते हुए पानी में। और स्याह धुवें के साथ में। न ठंडा और न इज्जत का। ये लोग इससे पहले सुशहाल थे। और भारी गुनाह पर इसरार करते रहे। और वे कहते थे, क्या जब हम मर जाएंगे। और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हम फिर उठाए जाएंगे। और क्या हमारे अगले बाप दादा भी। कहे कि अगले और पिछले सब, जमा किए जाएंगे। एक मुकर्रर दिन के वक्त पर। फिर तुम लोग, ऐ बहके हुए और झुटलाने वाले। जक्कूम के दरख्त में से खाओगे। फिर उससे अपना पेट भरोगे। फिर उस पर खोलता हुआ पानी पियोगे। फिर प्यासे ऊंटों की तरह पियोगे। यह उनकी मेहमानी होगी इत्साफ के दिन। (41-56)

असहाबुश्शमाल (बाईं तरफ वाले) से मुराद वे लोग हैं जिनके लिए अजाब का पैसला किया जाएगा। दुनिया में उन्हें जो चीजें मिली थीं उन्होंने उन्हें धोखे में डाल दिया। वे अल्लाह के सिवा दूसरी चीजों को अपना मकज तवज्जोह बनाए रहे। जो इस दुनिया में किसी इंसान का सबसे बड़ा जुर्म है। वे आखिरत को इस तरह भूले रहे गोया कि वह आने वाली ही नहीं। ऐसे लोग पैसले के दिन सज़ा अजाब के मुस्तहिक करार दिए जाएंगे।

نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ كَمَا لَا نُصَدِّقُونَ ۖ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُلْقُونَ ۚ أَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَ ۚ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ۚ نَحْنُ قَدَرْنَا بَيْنَكُمْ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۚ عَلَىٰ أَنْ تُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْتُمْ

النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا لَا تَذْكُرُونَ ۖ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ۚ أَأَنْتُمْ تَزْرَعُونَهَا أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ۚ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ ۚ إِنَّا الْمَحْرُومُونَ ۚ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۚ أَفَرَأَيْتُمْ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ۚ أَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ۚ لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ جُحَاً فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۚ أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ۚ أَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُونَ ۚ نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً ۖ وَتَتَعَالَىٰ الْمُتَّقُونَ ۚ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۚ

हमने तुम्हें पैदा किया है। फिर तुम तस्दीक (पुष्टि) क्यों नहीं करते। क्या तुमने गौर किया उस चीज पर जो तुम टपकाते हो। क्या तुम उसे बनाते हो या हम हैं बनाने वाले। हमने तुम्हारे धर्मियान मौत मुकद्दर की है और हम इससे आजिज नहीं कि तुम्हारी जगह तुम्हारे जैसे पैदा कर दें और तुम्हें ऐसी सूरत में बना दें जिन्हें तुम जानते नहीं। और तुम पहली पैदाइश को जानते हो फिर क्यों सबक नहीं लेते। क्या तुमने गौर किया उस चीज पर जो तुम बोते हो। क्या तुम उसे उगाते हो या हम हैं उगाने वाले। अगर हम चाहें तो उसे रेजा-रेजा कर दें, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ। हम तो तावान (दंड) में पड़ गए। बल्कि हम बिल्कुल महरूम हो गए। क्या तुमने गौर किया उस पानी पर जो तुम पीते हो। क्या तुमने उसे बादल से उतारा है। या हम हैं उतारने वाले। अगर हम चाहें तो उसे सज़ा खारी बना दें। फिर तुम शुक्र क्यों नहीं करते। क्या तुमने गौर किया उस आग पर जिसे तुम जलाते हो। क्या तुमने पैदा किया है उसके दरख्त को या हम हैं उसके पैदा करने वाले। हमने उसे याददिहानी बनाया है। और मुसाफिरों के लिए फयदे की चीज। पस तुम अपने अजीम (मखन) ख के नाम की तस्बीह करो। (57-74)

मां के पेट से इंसान का पैदा होना, जमीन से खेती का उगना, बारिश से पानी का बरसना, ईधन से आग का हासिल होना, ये सब चीजें बराहेरास्त खुदा की तरफ से हैं। आदमी को उनके मिलने पर खुदा का शुक्रगुजार होना चाहिए। उन्हें खुदा का अतिया समझना चाहिए न कि अपने अमल का नतीजा।

इन वाक्यात में गौर करने वाले के लिए बेशुमार नसीहतें हैं। इनमें मौजूदा ज़िंदगी के बाद दूसरी ज़िंदगी का सबूत है। इसी तरह इनमें यह निशानी है कि जिसने उन्हें दिया है वह उन्हें छीन भी सकता है। फिर इसी का एक नमूना पानी का मामला है। पानी का ज़ख्खीर समुद्रों की शकल में है जो कि ज्यादातर खारी हैं। पानी का तकरीबन 98 फ़ीसद

हिस्सा समुद्र में है। और समुद्र के पानी का 1/10 हिस्सा नमक होता है। यह खुदा के कानून का करिश्मा है कि समुद्र से जब पानी के बुखारात (वाष्प) उठते हैं तो खालिस पानी ऊपर उड़ जाता है और नमक नीचे रह जाता है। हकीकत यह है कि बारिश का अमल इजालए नमक (Desalination) का एक अजम अमल (नैसर्गिक) अमल है। अगर यह कुदरती एहतियाम न हो तो सारा का सारा पानी वैसा ही खारी हो जाए जैसा समुद्र का पानी होता है। पहाड़ों पर जमी हुई बर्फ और दरियाओं में बहने वाला पानी सबके सब सख्त खारी हों, जमीन पर पानी के अथाह जखीरे के बावजूद मीठे पानी का हुसूल इंसानियत के लिए सख्त नाकाबिले हल मसला बन जाए। आदमी अगर इसे सोचे तो उसका सीना हम्दे खुदावंदी (ईश-प्रशंसा) के जब्जे से भर जाएगा।

فَلَا أُقْسِمُ بِمَوْقِعِ الْجُومِ ۖ وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لِّوَتَّعْلَمُونَ عَظِيمٌ ۚ إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ۚ فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ۚ لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ۚ تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَفِهَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُدْهِنُونَ ۚ وَتَجْعَلُونَ رِشْقَكُمْ أَنْتُمْ تُكَذِّبُونَ ۚ

पस नहीं, मैं कसम खाता हूँ सितारों के मवाकेअ (स्थितियों) की। और अगर तुम गौर करो तो यह बहुत बड़ी कसम है। कसम यह एक इन्त वाला कुआन है। एक महफूज किताब में। इसे वही छूते हैं जो पाक बनाए गए हैं। उतारा हुआ है परवरदिगारे आलम की तरफ से। फिर क्या तुम इस कलाम के साथ बेएतनाई (बेपरवाही) बरतते हो। और तुम अपना हिस्सा यही लेते हो कि तुम उसे झुठलाते हो। (75-82)

मवाकेअ का लफ्ज मौलाना का बहुवचन है। इसके मअना है गिरने की जगह। चुनावे बारिश होने की जगह को मवाकिअलकत्तर कहा जाता है। यहां सितारों के मवाकेअ से मुद्रा गालिबन सितारों के मदार (Orbits) हैं। कायनात में वेशुमार निहायत बड़े-बड़े सितारे हैं। वे हददर्जा सेहत के साथ अपने अपने मदार (कक्ष) पर घूम रहे हैं।

यह वाक्या दहशतनाक हद तक अजीम है। जो शख्स इस ख़लाई निजाम पर गौर करेगा वह यह मानने पर मजबूर होगा कि इस कायनात का ख़ालिक नाकाबिले कयास हद तक अजीम है। फिर ऐसे ख़ालिक की तरफ से जो किताब आए वह भी यकीनन अजीम होगी।

और कुआन बिलाशुबह ऐसी ही एक अजीम किताब है।

कुआन जिस तरह लौहे महफूज में था, ठीक उसी तरह वह फरिश्तों के जरिए पैम्बर तक पहुंचा। और आज तक वह उसी तरह महफूज है। कदीम जमाने में कोई भी दूसरी किताब नहीं जो इस तरह कामिल तौर पर महफूज हो। यह वाक्या खुद इस किताब की अम (महानता) का सबूत है। ऐसी एक किताब से जो शख्स हिदायत हासिल न करे उसकी महरूमी का कोई ठिकाना नहीं।

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ ۖ وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ۖ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ ۖ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ۖ فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۖ تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۖ فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۖ فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتْ نَعِيمٌ ۖ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۖ فَسَلَامٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۖ وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّالِّينَ ۖ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيمٍ ۖ وَتَصْلِيَةٌ مِّنْ جَحِيمٍ ۖ إِنَّ هَذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۖ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۚ

फिर क्यों नहीं, जबकि जान हलक में पहुंचती है। और तुम उस वक्त देख रहे होते हो। और हम तुमसे ज्यादा उस शख्स से करीब होते हैं मगर तुम नहीं देखते। फिर क्यों नहीं, अगर तुम महकूम (अधीन) नहीं हो तो तुम उस जान को क्यों नहीं लौटा लाते, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर वह मुकरबीन (निकटवर्तियों) में से हो तो राहत है और उम्दा रोजी है और नेमत का बाग़ है। और अगर वह असहाबुलयमीन (दाई तरफ वाले) में से हो तो तुम्हारे लिए सलामती, तू असहाबुलयमीन में से है। और अगर वह झुठलाने वाले गुमराह लोगों में से हो। तो गर्म पानी की जियाफत (सत्कार) है, जहन्नम में दाखिल होना। बेशक यह कताई हक है। पस तुम अपने अजीम ख के नाम की तस्बीह करो। (83-96)

मौत का वाक्या इस बात का आखिरी सबूत है कि इंसान खुदाई ताकतों के आगे बिल्कुल बेबस है। हर आदमी लाजिमन एक मुकररह वक्त पर मर जाएगा, और कोई नहीं जो उसे मौत के फरिश्ते से बचा सके। ऐसी हालत में आदमी को सबसे ज्यादा मौत के बाद के मसले के बारे में फिक्रमंद हो जाना चाहिए। मौत से पहले की ज़िंदगी में जिन लोगों ने जन्नत वाले आमाल किए हैं उन्हें मौत के बाद की ज़िंदगी में जन्नत मिलेगी। इसके बरअक्स, जो लोग दुनिया में खुदा से दूर थे वे आखिरत में भी खुदा की रहमतों से दूर रहे जाएंगे। उनकी जियाफत (सत्कार) की लिए वहां गर्म पानी है और उनके रहने के लिए वहां आग की दुनिया।

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْكَ كَثْرَتُ ثَمَرِكَ ۖ وَذُنُوبُكَ أَكْبَرُ ۚ وَسَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۚ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۚ هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ

أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَوُوا عَلَى الْعَرْشِ يَعْلَمُ مَا يَلِكُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَجُورُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

आयतें-29

सूरह-57. अल-हदीद

रुकूअ-4

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह करती है हर चीज जो आसमानों और जमीन में है और वह जबरदस्त है हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। आसमानों और जमीन की सल्तनत उसी की है। वह जिलाता है और मारता है और वह हर चीज पर कादिर है। वही अव्वल भी है और आखिर भी और ज़हिर (व्यक्त) भी है और बातिन (अव्यक्त) भी। और वह हर चीज का जानने वाला है। वही है जिसने आसमानों और जमीन को पैदा किया छः दिनों में, फिर वह अर्श पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ। वह जानता है जो कुछ जमीन के अंदर जाता है और जो उससे निकलता है और जो कुछ आसमान से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहां भी तुम हो, और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो। आसमानों और जमीन की सल्तनत उसी की है, और अल्लाह ही की तरफ लौटते हैं सारे मामले। वह रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है, और वह दिल की बातों को जानता है। (1-6)

कायनात जवाने हाल (वस्तुस्थिति) से अपने खलिक की जिन सिफत (गुणों) की खबर दे रही है, कुरआन में उन्हीं सिफत को अल्फज की सूत दे दी गई है। यहां जब एक चीज जाहिर होती है तो वह अमल की जवान में कह रही होती है कि कोई उसका जाहिर करने वाला है। और जब वह चीज खत्म होती है तो वह इस बात का अमली एलान कर रही होती है कि कोई उसका खत्म करने वाला है। इसी तरह दूसरी तमाम सिफतों। हकीकत यह है कि कायनात अगर खुदा की अमली तस्बीह है तो कुरआन खुदा की लफ्जी तस्बीह।

أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَوُوا عَلَى الْعَرْشِ يَعْلَمُ مَا يَلِكُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَجُورُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَوُوا عَلَى الْعَرْشِ يَعْلَمُ مَا يَلِكُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَجُورُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ۝ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝

ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर और खर्च करो उसमें से जिसमें उसने तुम्हें अमीन (साधिकार) बनाया है। पस जो लोग तुम में से ईमान लाएं और खर्च करें उनके लिए बड़ा अज्र है। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, हालांकि रसूल तुम्हें बुला रहा है कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और वह तुमसे अहद (वचन) ले चुका है, अगर तुम मोमिन हो। वही है जो अपने बंदे पर वाजेह आयतें उतारता है ताकि तुम्हें तारीकियों से रोशनी की तरफ ले आए और अल्लाह तुम्हारे ऊपर नर्मी करने वाला है, महरबान है। और तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते हालांकि सब आसमान और जमीन आखिर में अल्लाह ही का रह जाएगा। तुम में से जो लोग फतह के बाद खर्च करें और लड़ें वे उन लोगों के बराबर नहीं हो सकते जिन्होंने फतह से पहले खर्च किया और लड़े, और अल्लाह ने सबसे भलाई का वादा किया है, अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (7-10)

इस्लाम की दावत जब उठती है तो वह अपने इब्तिदाई मरहले में 'आयात बय्यिनात' (सुस्पष्ट तकौ) के ऊपर खड़ी होती है। दूसरा दौर वह है जबकि उसे माहौल में 'फतह' हासिल हो जाए। पहले दौर में सिर्फ वे लोग इस्लाम के लिए कुर्बानी देने का हौसला करते हैं जो दलादल की सतह पर किसी चीज की अजमत को देखने की सलाहियत रखते हैं। मगर जब इस्लाम की फतह व ग़लबा हासिल हो जाए तो हर आदमी उसकी अजमत को देख लेता है। और हर आदमी आगे बढ़कर उसके लिए जान व माल पेश करने में फख्र महसूस करता है।

इब्तिदाई दौर में इस्लाम के लिए खर्च करने वाले को यकतरफा तौर पर खर्च करना पड़ता है। जबकि दूसरे दौर में यह हाल हो जाता है कि आदमी जितना खर्च करता है उससे ज्यादा वह मुख़्तलिफ शक्तों में उसका इनाम इसी दुनिया में पा लेता है। यही वजह है कि दोनों का दर्जा अल्लाह के यहां एकसां (एक जैसा) नहीं।

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضْعِفُهُ لَهُ ۚ وَالْأَجْرُ كَرِيمٌ ۝ يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَىٰ نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرَاكُمُ الْيَوْمَ جَنَّتُ بَحْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُوا الْقَتْلَ مِنْ تُورِكُمْ
قِيلَ ارْجِعُوا وَارْأَيْكُمْ فَالتَّبَسُّؤُا نُورًا فَخَرِبَ بَيْنَهُمْ بُسُورُهُمْ ۖ بَابٌ بِأُطْنُهُ
فِيهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝ يُنَادُوهُمْ أَلَمْ تَكُنْ مَعَكُمْ
قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ
حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ ۖ وَغَرَّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۝ ۙ فَالْيَوْمَ لَا يُخَذُّ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ
وَلَا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ مَا وَلَكُمْ النَّارُ هِيَ مَوْلَاكُمْ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

कौन है जो अल्लाह को कर्ज दे, अच्छा कर्ज, कि वह उसे उसके लिए बढ़ाए, और उसके लिए बाइज्जत अज़्र है। जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाएं चल रही होगी। आज के दिन तुम्हें खुशख़बरी है बागों की जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, यह बड़ी कामयाबी है। जिस दिन मुनाफ़िक (पाखंडी) मर्द और मुनाफ़िक औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमें मौका दो कि हम भी तुम्हारी रोशनी से कुछ फायदा उठा लें। कहा जाएगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ। फिर रोशनी तलाश करो। फिर उनके दर्मियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक दरवाज़ा होगा। उसके अंदर की तरफ रहमत होगी। और उसके बाहर की तरफ अज़ब होगा। वे उन्हें पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे। वे कहेंगे कि हां, मगर तुमने अपने आपको फितने में डाला और राह देखते रहे और शक में पड़े रहे और झूठी उम्मीदों ने तुम्हें धोखे में रखा, यहां तक कि अल्लाह का फैसला आ गया और धोखेबाज़ ने तुम्हें अल्लाह के मामले में धोखा दिया। पस आज न तुमसे कोई फ़िदया (मुक्ति-मुआवज़ा) कुबूल किया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने कुफ़ किया। तुम्हारा ठिकाना आग है। वही तुम्हारी रफ़ीक (साथी) है। और वह बुरा ठिकाना है। (11-15)

सच्चा इस्लाम जब माहौल में अजनबी हो, उस वक़्त सच्चे इस्लाम की तरफ बढ़ना अपने आपको आजमाइश में डालने के हम्मअना होता है। उस वक़्त इस्लाम की हकीकत पर शुबहात के पर्दे पड़े होते हैं। उस वक़्त इस्लाम की राह में खर्च करना ऐसा होता है गोया उम्मीदे मौहूम (अनिश्चितता) पर किसी को कर्ज देना। शक और तरदुद (असमंजस) की फिजा हर तरफ लोगों को घेर हुए होती है। खुदा के वादों के मुक़बले में लोगों को अपने सामने के फ़ायदे ज्यादा यकीनी मालूम होते हैं। ऐसे वक़्त में अपनी जान व माल को इस्लाम के हवाले करना जबरदस्त कुव्वते फैसला चाहता है। ऐसे वक़्त में वही शख्स आगे बढ़ने की हिम्मत करता है जो अकल व बसीरत (सूझबूझ) की ताकत से चीजों को पहचानने की सलाहियत रखता हो।

जो लोग दुनिया में इस बसीरत का सुबूत दें उनकी बसीरत कियामत के दिन उनके लिए रोशनी बन जाएगी जिसमें वे वहां के मुश्किल मराहिल में अपना सफर तै कर सकें। जो बसीरत दुनिया में उनकी रहनुमा बनी थी वही बसीरत आखिरत में भी अल्लाह की मदद से उनके लिए रहनुमा का काम अंजाम देगी।

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝ ۙ اَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝

क्या ईमान वालों के लिए वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह की नसीहत के आगे झुक जाएं। और उस हक के आगे जो नाजिल हो चुका है। और वे उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन्हें पहले किताब दी गई थी, फिर उन पर लम्बी मुददत गुजर गई तो उनके दिल सख़्त हो गए। और उनमें से अक्सर नाफरमान हैं। जान लो कि अल्लाह जमीन को ज़िंदगी देता है उसकी मौत के बाद, हमने तुम्हारे लिए निशानियां बयान कर दी हैं, ताकि तुम समझो। (16-17)

ये आवृत्तें जिस वक़्त नाज़िल हुईं उस वक़्त इस्लाम अगरचे मादूही कुव्वत (भौतिक शक्ति) नहीं बना था। मगर दलाइल और तंबीहात का जोर उस वक़्त भी पूरी तरह उसकी पुश्त पर मौजूद था। ऐसी हालत में जो शख्स दलाइल का जोर महसूस न करे और खुदाई तंबीहात जिसे हिलाने वाली न बन सकें वह अपने इस अमल से सिर्फ यह सुबूत दे रहा है कि वह बेहिंसी के मरज में मुक्तिला है। मिट्टी में पानी मिलने के बाद तरोताज़गी पैदा हो जाती है। फिर इंसान अगर खुले-खुले दलाइल सुनकर भी न जागे तो यह कैसी अजीब बात होगी।

إِنَّ الْمَصْدَقِينَ وَالْمَصْدَقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لِيُضَعَّفَ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصّٰدِقُونَ ۖ وَالشَّهَدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ ۖ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْحَرِيمِ ۝

فَعَلَّامٌ

बेशक सदका देने वाले मर्द और सदका देने वाली औरतें। और वे लोग जिन्होंने अल्लाह को कर्ज दिया, अच्छा कर्ज वह उनके लिए बढ़ाया जाएगा और उनके लिए बाइज्जत अज़्र (प्रतिफल) है। और जो लोग ईमान लाए अल्लाह पर और उसके रसूलों पर। वही लोग अपने

रब के नजदीक सिद्दीक (सच्चे) और शहीद (सत्य के साक्षी) हैं, उनके लिए उनका अन्न और उनकी रोशनी है, और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे दोजब्र के लोग हैं। (18-19)

अल्लाह की रिजा के लिए दूसरों को माल देना और दीन की जरूरतों पर खर्च करना बहुत बड़ा अमल है। जो मर्द और औरत इस तरह खर्च करें वही वे लोग हैं जिन्होंने अपने ईमान का सुकूत दिया। उन्होंने हक के खिलाफ शूबहात के माहौल में हक को देखा। इसलिए उनका यह अमल आखिरत में उनके लिए रोशनी बन जाएगा। वे खुदा की निशानियों को मानने वाले करार पाएंगे। उन्हें अल्लाह के गवाह का दर्जा दिया जाएगा, यानी आखिरत की अदालत में लोगों के अहवाल बताने वाला।

اعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُمْ زِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي
الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ بَبَائِهِ ثُمَّ يَهَيِّجُ فُتْرَهُ
مُصْفًى ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللَّهِ وَ
رِضْوَانٌ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ۝ سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَ
رِزْقٍ كَرِيمٍ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا
بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

जान लो कि दुनिया की ज़िंदगी इसके सिवा कुछ नहीं कि खेल और तमाशा है और जीनत (साज-सज्जा) और बाहमी (आपसी) फख्र और माल और औलाद में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करना है। जैसे कि बारिश की उसकी पैदावार किसानों को अच्छी मालूम होती है। फिर वह शुष्क हो जाती है। फिर तू उसे जर्द देखता है, फिर वह रेजा-रेजा हो जाती है। और आखिरत में सज़ा अजब है और अल्लाह की तरफ से माफी और रिजामंदी भी। और दुनिया की ज़िंदगी धोखे की पूंजी के सिवा और कुछ नहीं। दौड़ो अपने रब की माफी की तरफ और ऐसी जीनत की तरफ जिसकी कुशत (व्यापकता) आसमान और ज़मीन की कुशत के बराबर है। वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाएं, यह अल्लाह का फज़ल (अनुग्रह) है। वह उसे देता है जिसे वह चाहता है और अल्लाह बड़ा फज़ल वाला है। (20-21)

दुनिया में अल्लाह ने आखिरत (परलोक) की मिसालें कायम कर दी हैं। उनमें से एक मिसाल खेती की है। खेती जब पानी पाकर तैयार होती है तो थोड़े दिनों के लिए उसकी सरसब्जी निहायत पुरकशिश मालूम होती है। मगर बहुत जल्द गर्म हवाएं चलती हैं। सारी सरसब्जी

अचानक ख़त्म हो जाती है। और फिर उसे काट कर उसे चूरा-चूरा कर दिया जाता है।

इसी तरह मौजूदा दुनिया की रौनक भी चन्द रोजा है। आदमी उसे पाकर धोखे में मुब्तिला हो जाता है। वह उसी को सब कुछ समझ लेता है। मगर इसके बाद जब वह खुदा की तरफ लौटया जाएगा तो उस पर खुलेगा कि दुनिया की रौनकों की कोई हकीकत न थी।

مَا أَصَابَ مِنْ مُّصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّنْ قَبْلِ أَنْ نَّبْرَأَهَا إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۚ لَّكِنَّا لَا تَسْأَوْنَ عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَقْرَحُونَ بِمَا أَنْتُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۚ وَالَّذِينَ يَبْتِغُونَ
وَيَا مُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝

कोई मुसीबत न ज़मीन में आती है और न तुम्हारी जानों में मगर वह एक किताब में लिखी हुई है इससे पहले कि हम उन्हें पैदा करें, बेशक यह अल्लाह के लिए आसान है ताकि तुम ग़म न करो उस पर जो तुमसे खोया गया। और न उस चीज पर फख्र करो जो उसने तुम्हें दिया, और अल्लाह इतराने वाले फख्र करने वाले को पसंद नहीं करता जो कि बुख़ल (कंजूसी) करते हैं और दूसरों को भी बुख़ल की तालीम देते हैं। और जो शख्स एराज (उपेक्षा) करेगा तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है खूबियों वाला है। (22-24)

दुनिया में किसी चीज का मिलना या किसी चीज का छिनना दोनों इस्तेहान के लिए हैं। अल्लाह तआला ने पेशगी तौर पर मुकर्रर फरमा दिया है कि किस शख्स को उसके इस्तेहान का पर्चा किन-किन सूरतों में दिया जाएगा। आदमी को अस्लन जिस चीज पर तवज्जोह देना चाहिए वह यह नहीं कि उसे क्या मिला और उससे क्या छीना गया बल्कि यह कि उसने किस मौके पर किस किस्म का रद्देअमल (प्रतिक्रिया) पेश किया। सही और मल्लूब रद्देअमल यह है कि आदमी से खोया जाए तो वह दिलबरदाश्ता (हताश) न हो और जब उसे मिले तो वह उसकी बिना पर फख्र व गुरूर में मुब्तिला न हो जाए।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ
بِالْقِسْطِ وَأَنزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن
يَنْصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝

۝ ۱۹

हमने अपने रसूलों को निशानियों के साथ भेजा और उनके साथ उतारा किताब और तराजू, ताकि लोग ईसाफ पर कायम हों। और हमने लोहा उतारा जिसमें बड़ी कुव्वत है और लोगों के लिए फायदे

हैं और ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उसकी और उसके रसूलों की मदद करता है बिना देखे, बेशक अल्लाह ताक़त वाला, जबरदस्त है। (25)

दीन में दो चीजें मलूब हैं। एक दीन की पैरवी, और दूसरी दीन की हिमायत। तराजू गोया दीन की पैरवी की अलामती तमसील है। जिस तरह तराजू पर किसी चीज का कम व बेश होना मालूम होता है। उसी तरह खुदा की किताब भी हक की तराजू है। लोगों को चाहिए कि अपने आमाल खुदा की किताब पर जांच कर देखते रहें कि वे किसी हद तक दुरुस्त हैं और किस हद तक दुरुस्त नहीं।

इसी तरह लोहा गोया हिमायते दीन की अलामती मिसाल है। जब भी दीन का कोई मामला पड़े तो वहां आदमी को लोहे की तरह मजबूत साबित होना चाहिए। उसे फौलादी कुव्वत के साथ दीन का दिफ्फ़ा करना चाहिए।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ فَمِنْهُمْ مُهْتَدٍ
وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فُسِقُونَ ۖ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ
وَالنَّبِيَّ الْإِسْحَاقَ ۖ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهَابَنِيَّةً
إِذْ ابْتَدَأَ عُوها مَا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا
فَأْتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ ۖ

और हमने नूह को और इब्राहीम को भेजा। और उनकी औलाद में हमने पैगम्बरी और किताब रख दी। फिर उनमें से कोई राह पर है और उनमें से बहुत से नाफरमान हैं। फिर उन्हीं के नक्शेकदम पर हमने अपने रसूल भेजे और उन्हीं के नक्शेकदम पर ईसा बिन मरयम को भेजा और हमने उसे इंजील दी। और जिन लोगों ने उसकी पैरवी की हमने उनके दिलों में शफकत (करुणा) और रहमत (दया) रख दी। और रहबानियत (सन्ध्यास) को उन्होंने खुद ईजाद किया है। हमने उसे उन पर नहीं लिखा था। मगर उन्होंने अल्लाह की रिजामंदी के लिए उसे इख्तियार कर लिया, फिर उन्होंने उसकी पूरी रिआयत (निर्वाह) न की, पस उनमें से जो लोग ईमान लाए उन्हें हमने उनका अज्र (प्रतिफल) दिया, और उनमें से अक्सर नाफरमान हैं। (26-27)

अल्लाह की तरफ से जितने पैगम्बर आए सब एक ही दीन लेकर आए। मगर बाद के जमाने में लोगों ने पैगम्बर के नाम पर बिदअतें ईजाद कर लीं। इसकी एक मिसाल हजरत मसीह अलैहिस्सलाम के पैरोकार हैं। हजरत मसीह के जिम्मे सिर्फ दावत का काम था। आपकी पैगम्बराना जिम्मेदारी में किताल (जंग) शामिल न था। चुनांचे आपने सबसे ज्यादा दाअियाना

अख्लाक पर जोर दिया। और दाअियाना अख्लाक सरासर राफ़्त व रहमत पर मबनी होता है। आपने अपने पैरोकारों से कहा कि वे लोगों के मुक़बले में यक़तरफ़ा तौर पर राफ़्त व रहमत का तरीक़ा इख्तियार करें। मगर हजरत मसीह के बाद आपके पैरोकार इस मस्लेहत को समझ न सके। उनका यह मिजाज उन्हें रहबानियत (सन्ध्यास) की तरफ बहा ले गया। दुनिया से एराज़ (उपेक्षा) की जो तालीम उन्हें दावत के मक़सद से दी गई थी उसे उन्होंने मजिद मुबालगे (अतिरंजना) के साथ तर्कें दुनिया (संसार त्याग) के लिए इख्तियार करना शुरू कर दिया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَ
يَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۖ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ
الْكِتَابَ الْأَيْقِينَ رُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۖ وَإِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ
يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

ऐ ईमान वाले अल्लाह से डरो और उसके रसूल पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत से दो हिस्से अता करेगा। और तुम्हें रोशनी अता करेगा जिसे लेकर तुम चलोगे। और तुम्हें बख़्श देगा। और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। ताकि अहले किताब जान लें कि वे अल्लाह के फल (अनुग्रह) में से किसी चीज पर इख्तियार नहीं रखते और यह कि फल अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है अता फरमाता है। और अल्लाह बड़े फल वाला है। (28-29)

‘ऐ ईमान लाने वालो’ से मुराद हजरत मसीह पर ईमान लाने वाले हैं। जो लोग पिछले पैगम्बर को मानते हों, और अब वे पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की सदाकत को दरयाफ़्त करके उन पर ईमान लाएं तो उनके लिए दोहरा अज्र है। इसी तरह जो लोग नस्ली तौर पर मुसलमान हैं वे दुबारा इस्लाम का मुतालआ करें और अपने अंदर इस्लामी शुऊर पैदा करके नए सिरे से मोमिन व मुस्लिम बनें तो वे भी अल्लाह के यहां दोहरे अज्र के मुस्तहिक क़ार पाएंगे।

سُورَةُ الْحَٰدِثَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ ثَلَاثَانِ عَشْرُونَ آيَةً وَثَلَاثُونَ كَلِمَةً

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ
يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो अपने शोहर के मामले में तुमसे झगड़ती थी और अल्लाह से शिकायत कर रही थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ्तगू सुन रहा था, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

इस्लाम से पहले अरब में रवाज था कि कोई मर्द अगर अपनी बीवी से कह देता कि 'तू मुझ पर ऐसी है जैसे मेरी मां की पीठ' तो वह औरत हमेशा के लिए उस मर्द पर हराम हो जाती। इसे जिहार कहा जाता था। मदीना के एक मुसलमान औस बिन सामित अंसारी ने अपनी बीवी खौला बिनत सालबा को एक बार यही लफ्ज कह दिया। वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई और वाक्या बताया। आपने कदीम रवाज के एतबार से फरमा दिया कि मैं ख्याल करता हूँ कि तुम उस पर हराम हो गई हो। खौला को परेशानी हुई कि मेरे घर और मेरे बच्चे बर्बाद हो जाएंगे। वह फरयाद व जारी (विलाप) करने लगीं। इस पर ये आयतें उतरीं और बताया गया कि जिहार के बारे में इस्लामी हुक्म क्या है।

الَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْكُمْ مَنْ سَاءَ بِهِمْ قَاهُتْ أَمَهُتُهُمْ إِنَّ أَمْهَتَهُمْ
إِلَّا الْيَتِيمَ وَلَدْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا مِنَ الْقَوْلِ وَزُورًا وَإِنَّ اللَّهَ
لَعَفْوَ غَفُورٌ وَالَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْ سَاءَ بِهِمْ ثُمَّ يَعُوذُونَ لِمَا قَالُوا
فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَّاءَ ذَلِكَ تَوْعَظُونَ بِهِ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ
أَنْ يَتَمَاسَّاءَ فَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَاطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ذَلِكَ لَتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ٢٢

तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से जिहार (तलाक देने की एक सूत जिसमें शोहर अपनी बीवी से कहता है कि तुम मेरी माँ की पीठ की तरह हो) करते हैं वे उनकी माएं नहीं हैं। उनकी माएं तो वही हैं जिन्होंने उन्हें जना। और ये लोग बेशक एक नामाकूल और झूठ बात कहते हैं, और अल्लाह माफ करने वाला वरक्षने वाला है। और जो लोग अपनी बीवियों से जिहार करें फिर उससे रुजूअ करें जो उन्होंने कहा था तो एक गर्दन को आजाद करना (मुलाम आजाद करना) है, इससे पहले कि वे आपस में हाथ लगाएं। इससे तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। फिर

जो शरू न पाए तो रोजे हैं दो महीने के लगातार, इससे पहले कि आपस में हाथ लगाएं। फिर जो शरू न कर सके तो साठ मिसकीनों को खाना खिलाना है। यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और ये अल्लाह की हदें हैं और मुक्ति के लिए दर्दनाक अजाब है। (2-4)

इस्लाम में सूत और हकीकत के दर्मियान फर्क किया गया है। यही वजह है कि इस्लाम ने इस कदीम रवाज को तस्लीम नहीं किया कि जो औरत हकीकी मां न हो वह महज मां का लफ्ज बोल देने से किसी की मां बन जाए। इस किस्म का फेअल एक लफ्ज (निश्क) बात तो जरूर है मगर इसकी वजह से फिअरत के क़ानूनी (नियम) बदल नहीं सकते।

क़ुरआन में बताया गया कि महज जिहार से किसी आदमी की बीवी पर तलाक नहीं पड़ेगी। अलबत्ता उस आदमी पर लाजिम किया गया कि वह पहले कफ़्फ़रा (प्रायश्चित्त) अदा करे। इसके बाद वह दुबारा अपनी बीवी के पास जाए। किसी ग़लती के बाद जब आदमी इस तरह कफ़्फ़रा अदा करता है तो वह दुबारा अपने यकीन को जिंदा करता है। वह इस उसूल में अपने अक्कीदे को नए सिरे से मुस्तहक़म (सुदृढ़) बनाता है जिसे वह ग़फलत या नादानी से छोड़ बैठा था।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كَيْتُوا كَمَا كَيْتَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ٢٣
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ
اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدٌ ٢٤

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं वे जलील होंगे जिस तरह वे लोग जलील हुए जो इनसे पहले थे और हमने वाजेह (स्पष्ट) आयतें उतार दी हैं, और मुक्ति के लिए जिल्लत का अजाब है। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा और उनके किए हुए काम उन्हें बताएगा। अल्लाह ने उसे गिन रखा है। और वे लोग उसे भूल गए, और अल्लाह के सामने है हर चीज। (5-6)

हक की मुख़ालिफ़त करना खुदा की मुख़ालिफ़त करना है। और खुदा की मुख़ालिफ़त करना उस हस्ती की मुख़ालिफ़त करना है जिससे मुख़ालिफ़त करके आदमी खुद अपना नुक़सान करता है। खुदा से आदमी न अपनी किसी चीज को छुपा सकता और न किसी के लिए यह मुमकिन है कि वह खुदा की पकड़ से अपने आपको बचा सके।

الْمُتَرَاتِنَ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَا يَكُونُ مِنْ

تَجْوَى ثَلَاثَ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةَ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا آدِنِي
 مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ آيَنَ مَا كَانُوا ثُمَّ يَنْبِئُهُمْ بِمَا
 عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ
 نُهُوا عَنِ التَّجْوَى ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
 وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ ۖ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحْيِكَ بِهِ اللَّهُ ۖ وَ
 يَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ ۚ حَسْبُكُمْ جَهَنَّمُ
 يَصْلَوْنَهَا فَيُشْسِ الْمَصِيرُ ۝

तुमने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। कोई सरगोशी (गुप्त वाती) तीन आदमियों की नहीं होती जिसमें चौथा अल्लाह न हो। और न पांच की होती है जिसमें छठा वह न हो। और न इससे कम की या ज्यादा की। मगर वह उनके साथ होता है जहां भी वे हों, फिर वह उन्हें उनके किए से आगाह करेगा कियामत के दिन। बेशक अल्लाह हर बात का इल्म रखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा जिन्हें सरगोशियों से रोका गया था, फिर भी वे वही कर रहे हैं जिससे वे रोके गए थे। और वे गुनाह और ज्यादाती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशियां करते हैं, और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो तुम्हें ऐसे तरीके से सलाम करते हैं जिससे अल्लाह ने तुम्हें सलाम नहीं किया। और अपने दिलों में कहते हैं कि हमारी इन बातों पर अल्लाह हमें अजाब क्यों नहीं देता। उनके लिए जहन्नम ही काफी है, वे उसमें पड़ेंगे, पस वह बुरा ठिकाना है। (7-8)

कायनात अपने इतिहाई पेचीदा निजाम के साथ यह गवाही दे रही है कि वह हर आन किसी बालातर (उच्चतर) ताकत की निगरानी में है। कायनात में निगरानी की शहादत यह साबित करती है कि इंसान भी मुसलसल तौर पर अपने खालिक की निगरानी में है। ऐसी हालत में हक के खिलाफ खुफिया सरगमियां दिखाना सिर्फ ऐसे अंधे लोगों का काम हो सकता है जो खुदा की सिफतों को न बराह्रास्त (प्रत्यक्ष) तौर पर मल्फूज (शाब्दिक) कुरआन में पढ़ सकें और न बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर और मल्फूज कायनात में।

कुछ यहूद और मुनाफिकीन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत में आते तो वे अस्सलामु अलैकुम (आप पर सलामती हो) कहने के बजाए अस्सामु अलैकुम (आप पर मौत आए) कहते। यह हमेशा से सतही (निम्न स्तरीय) इंसानों का तरीका रहा है।

सतही लोग एक सच्चे इंसान को बेकदर करके अपने जेहन में खुश होते हैं। वे भूल जाते हैं कि सारी फैली हुई खुदाई ऐन उस वक्त भी उस सच्चे इंसान का एतराफ कर रही होती है जबकि अपने महदूद जेहन के मुताबिक वे उसकी तहकीर (अनादर) व तरदीद के लिए अपना आखिरी लफज इस्तेमाल कर चुके हों।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَى ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ إِنَّمَا التَّجْوَى مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

ऐ ईमान वालो जब तुम सरगोशी (गुप्त वाती) करो तो गुनाह और ज्यादाती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशी न करो। और तुम नेकी और परहेजगारी की सरगोशी करो। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम जमा किए जाओगे। यह सरगोशी शैतान की तरफ से है ताकि वह ईमान वालों को रंज पहुंचाए, और वह उन्हें कुछ भी रंज नहीं पहुंचा सकता मगर अल्लाह के हुक्म से। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (9-10)

खुफिया सरगोशियां करना आम हालात में एक नापसंदीदा फेअल (कृत्य) है। ताहम कभी कारेखैर के लिए भी खुफिया सरगोशी की जरूरत होती है। इस सिलसिले में अस्ल फैसलाकुन चीज नियत है। खुफिया सरगोशी अगर अच्छी नियत से की जाए तो जाइज है और अगर वह बुरी नियत से की जाए तो नाजाइज।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَإِذَا قِيلَ انشُرُوا فَانْشُرُوا ۚ يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

ऐ ईमान वालो जब तुम्हें कहा जाए कि मजलिसों में खुलकर बैठो तो तुम खुलकर बैठो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी (खुलापन) देगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो तुम उठ जाओ। तुम में से जो लोग ईमान वाले हैं और जिन्हें इल्म दिया गया है, अल्लाह उनके दर्जे बुलन्द करेगा। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (11)

मजलिस के आदाब के तहत कभी ऐसा होता है कि एक शख्स को पीछे करके दूसरे शख्स को आगे बिठाया जाता है। इसी तरह कभी ऐसा होता है कि लोगों को उम्मीद के खिलाफ

कह दिया जाता है कि अब आप लोग तशरीफ ले जाएं। ऐसी बातों को इज्जत का सवाल बनाना शुऊरी पस्ती का सबूत है। और जो शख्स इन बातों को इज्जत का सवाल न बनाए उसने यह सबूत दिया कि शुऊरी एतबार से वह बुलन्द दर्जे को पहुंचा हुआ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَجَّيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِ مُوَابِّينَ يَدَيَّ نَجْوَاكُمْ
صَدَقَةٌ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ۝ أَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيَّ نَجْوَاكُمْ صَدَقْتُمْ فَأِذَا لَمْ تَفْعَلُوا
وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا اللَّهَ وَ
رَسُولَهُ ۝ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

ऐ ईमान वाले, जब तुम रसूल से राजदाराना बात करो तो अपनी राजदाराना बात से पहले कुछ सदका दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है और ज्यादा पाकीज है। फिर अगर तुम न पाओ तो अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। क्या तुम डर गए इस बात से कि तुम अपनी राजदाराना गुफ्तगू से पहले सदका दो। पस अगर तुम ऐसा न करो, और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया, तो तुम नमाज कयम करो और जक़ात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (12-13)

अल्लाह तआला को यह मल्लूब था कि रसूल से सिर्फ वही लोग मिलें जो फिलवाकअ संजीदा मक्सद के तहत आपसे मिलना चाहते हैं। ग़ैर जरूरी किस्म के लोग छान्ट दिए जाएं जो अपनी बेमयदा बातों से सिर्फ वक्त जाया करने का सबब बनते हैं। इसलिए यह उसूल मुकरर किया गया कि जब रसूल से मिलने का इरादा करो तो पहले अल्लाह के नाम पर कुछ सदका करो। और अगर इसकी कुदरत न हो तो कोई दूसरी नेकी करो।

यह हुस्म अगरचे अस्तन रसूल के लिए मल्लूब था। मगर रसूल के बाद भी उम्मत के रहनुमाओं के हक में वह हालात के एतबार से दर्जा-ब-दर्जा मल्लूब होगा।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَا هُمُ مِنْكُمْ وَلَا
مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكُذْبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا
إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ فَأَلْهُمُ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह का ज़ब्र हुआ। वे न तुम में से हैं और न उनमें से हैं और वे झूठी बात पर कसम खाते हैं हालांकि वे जानते हैं। अल्लाह ने उन लोगों के लिए सख्त अजाब तैयार कर रखा है, बेशक वे बुरे काम हैं जो वे करते हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, पस उनके लिए जिल्लत का अजाब है। (14-16)

मदीना के मुनाफिकीन इस्लाम की जमाअत में शामिल थे। इसी के साथ वे यहूद से भी मिले हुए थे। यही हमेशा उन लोगों का हाल होता है जो हक को पूरी यकसूई (एकाग्रता) के साथ इख्तियार न कर सकें। ऐसे लोग बजाहिर सबसे मिले हुए होते हैं मगर हकीकतन वे सिर्फ अपने मफ़द (स्वार्थ) के वफ़ादार होते हैं। चाहे वे कसमें खाकर अपने हक़परस्त होने का यकीन दिला रहे हों।

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا
يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝
اسْتَعِذْ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ أَلَا
إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ۝ كَتَبَ اللَّهُ لَأَعْلَبَنَ آكَارُ رَسُولِي ۝ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ
عَزِيزٌ ۝

उनके माल और उनकी औलाद उन्हें जरा भी अल्लाह से बचा न सकेंगे। ये लोग दोज़ख वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उससे भी इसी तरह कसम खाएंगे जिस तरह तुमसे कसम खाते हैं। और वे समझते हैं कि वे किसी चीज पर हैं, सुन लो कि यही लोग झूठे हैं। शैतान ने उन पर काबू हासिल कर लिया है। फिर उसने उन्हें खुदा की याद भुला दी है। ये लोग शैतान का गिरोह हैं। सुन लो कि शैतान का गिरोह जरूर बर्बाद होने वाला है। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) करते हैं वही जलील लोगों में हैं। अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे। बेशक अल्लाह कुव्वत वाला, जबरदस्त है। (17-21)

मफादपरस्त आदमी जब हक की दावत की मुखालिफ्त करता है तो वह समझता है कि इस तरह वह अपने आपको महफूज कर रहा है। मगर उस वक्त वह दहशतजदा हेकर रह जाएगा जब आखिरत में वह देखेगा कि जिन चीजों पर उसने भरोसा कर रखा था वे फैसले के उस वक्त में उसके कुछ काम आने वाली नहीं।

मुनाफिक (पाखंडी) आदमी अपने मेकिफ को सही साबित करने के लिए बड़बड़कर बातें करता है। यहां तक कि वह कसमें खाकर अपने इक्लास (निष्ठा) का यकीन दिलाता है। ये सब करके वह समझता है कि 'वह किसी चीज पर है।' उसने अपने हक में कोई वाकई बुनियाद फ्राहम कर ली है। मगर कियामत का धमाका जब हकीकतों को खेलेगा उस वक्त वह जान लेगा कि यह महज शैतान के सिखाए हुए झूठे अल्फाज थे जिन्हें वह अपने बेकसूर होने का यकीनी सुवृत समझता रहा।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ كَتَبَ
فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ أُولَئِكَ
حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٢﴾

तुम ऐसी कौम नहीं पा सकते जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखती हो और वह ऐसे लोगों से दोस्ती रखे जो अल्लाह और उसके रसूल के मुखालिफ हैं। अगरचे वे उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके खानदान वाले क्यों न हों। यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और उन्हें अपने फैज से कुव्वत दी है। और वह उन्हें ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनके राजी हुआ और वे अल्लाह से राजी हुए। यही लोग अल्लाह का गिरोह हैं और अल्लाह का गिरोह ही फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाला है। (22)

इस दुनिया में कामयाबी हिज्बुल्लाह के लिए है। हिज्बुल्लाह (अल्लाह की जमाअत) कौन लोग हैं। ये वे लोग हैं जिनके दिलों में ईमान सबसे बड़ी हकीकत के तौर पर रासिख (घनीभूत) हो गया हो। जिन्हें अल्लाह से इतनी गहरी निस्वत हासिल हो कि उन्हें अल्लाह की तरफ से रूहानी फैज पहुंचने लगे। फिर यह कि खुदाई हकीकतों से उनकी वाकस्गी इतनी गहरी हो कि उसी की बुनियाद पर उनकी दोस्तियां और दुश्मनियां कायम हों। वे सबसे ज्यादा उन लोगों से करीब हों जो खुदाई सदाकत (सच्चाई) को अपनाए हुए हैं। और जो लोग खुदाई सदाकत से दूर

हैं वे भी उनसे दूर हो जाएं, चाहे वे उनके अपने अजीज और रिश्तेदार क्यों न हों।

سُوْرَةُ الْحٰثِرَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اَرْبَعٌ وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَكُلُّهَا مُنْقَلَبٌ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
سَمِعَ اللّٰهُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مَا
ظَنَنْتُمْ اَنْ يَخْرُجُوْا وَظَنَّا اَنَّهُمْ مَّا بَعِثْتُهُمْ حُصُوْدُهُمْ مِنَ اللّٰهِ فَاتَّهُمْ
اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِى قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُجْرِبُوْنَ
بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِى الْمُؤْمِنِيْنَ فَاعْتَبِرُوْا يٰ اُولِى الْاَبْصٰرِ ﴿١﴾

आयतें-24

सूरह-59. अल-हथ्र

रुकूअ-3

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महारवान, निहायत रहम वाला है। अल्लाह की पाकी बयान करती हैं सब चीजें जो आसमानों और जमीन में हैं, और वह जबरदस्त है, हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने अहले किताब मुंकिरों को उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया। तुम्हारा गुमान न था कि वे निकलेंगे और वे ख्याल करते थे कि उनके किले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, फिर अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां से उन्हें ख्याल भी न था। और उनके दिलों में रौब डाल दिया, वे अपने घरों को खुद अपने हाथों से उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों से भी। पस ऐ आंख वालो, इबरत (सीख) हासिल करो। (1-2)

मदीना के मशिक में यहूदी कबीला बनू नजीर की आबादी थी। उनके और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान सुलह का मुआहिदा था। मगर उन्होंने बार-बार अहदशिकनी की। आखिरकार 4 हि० में अल्लाह तआला ने ऐसे हालात पैदा किए कि मुसलमानों ने उन्हें मदीना से निकलने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद वे खैबर और अजरआत में जाकर आबाद हो गए। मगर उनकी साजिशों सरगर्मियां जारी रहीं। यहां तक कि हज्रत उमर फारूक की खिलाफत की जमानेमें वे और यूसेयहूदी क्वाइल जजरा अब से निकलने पर मजबूर कर दिए गए। इसके बाद वे लोग शाम में जाकर आबाद हो गए।

‘अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां उन्हें गुमान भी न था’ की तशरीह अगले फिकरे में मौजूद है। यानी अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया। उन्होंने बेरूनी (वाय्य) तौर पर हर किस्म की तैयारियां कीं। मगर जब मुसलमानों की फौज ने उनकी आबादी को घेर लिया

तो सारी ताकत के बावजूद उन पर ऐसी दहशत तारी हुई कि उन्होंने लड़ने का हौसला खो दिया। और बिला मुकाबले हथियार डाल दिया।

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَائَ لَعَذَّبُكُمْ فِي الدُّنْيَا ۖ وَلَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِّ
اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ① مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا
قَائِمَةً عَلَىٰ أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ②

और अगर अल्लाह ने उन पर जलावतनी (देश-निकाला) न लिख दी होती तो वह दुनिया ही में उन्हें अजाब देता, और आखिरत में उनके लिए आग का अजाब है। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफ़त की। और जो शख्स अल्लाह की मुखालिफ़त करता है तो अल्लाह सख्त अजाब वाला है। खजूरों के जो दरख्त तुमने काट डाले या उन्हें उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो यह अल्लाह के हुक्म से, और ताकि वह नाफरमानों को रुसवा करे। (3-5)

यहूद को जो सजा दी गई, वह अल्लाह के क़ानून के तहत थी। यह सजा उन लोगों के लिए मुक़द्दर है जो पैग़म्बर के मुखालिफ़ बनकर खड़े हों। वनू नजीर के मुहासिर (धराव) के वक्त उनके बागात के कुछ दरख्त जंगी मस्तेहत के तहत काटे गए थे। यह भी बराहेरास्त ख़ुदा के हुक्म से हुआ। ताहम यह कोई आम उसूल नहीं। यह एक इस्तिस्नाई (अपवाद स्वरूप) मामला है जो पैग़म्बर के बराहेरास्त मुखातबीन के साथ एक या दूसरी शकल में इख़्तियार किया जाता है।

وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا
رِكَابٍ ۖ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رَسُولَهُ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ③
مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي
الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ كُنْ لَا يَكُونُ دُولَةً
بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ ۚ وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ ۚ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ
فَاتَّهَمُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ④ لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ
الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالُهُمْ يُبْتَغُونَ فَرْضًا مِّنَ اللَّهِ وَ
رِضْوَانًا وَيَنْصَرُّونَ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّدِيقُونَ ⑤

और अल्लाह ने उनसे जो कुछ अपने रसूल की तरफ लौटाया तो तुमने उस पर न थोड़े दौड़ाए और न ऊंट और लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है तसल्लुत (प्रभुत्व) दे देता है। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। जो कुछ अल्लाह अपने रसूल को बस्तियों वालों की तरफ से लौटाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए है और रिश्तेदारों और यतीमों (अनाथों) और मिस्कीनों (असहाय जनों) और मुसाफिरों के लिए है। ताकि वह तुम्हारे मालदारों ही के दर्मियान गर्दिश न करता रहे। और रसूल तुम्हें जो कुछ दे वह ले लो और वह जिस चीज से तुम्हें रोके उससे रुक जाओ और अल्लाह से डरो, अल्लाह सख्त सजा देने वाला है। उन मुफ़िलस मुहाजिरों के लिए जो अपने घरों और अपने मालों से निकाले गए हैं। वे अल्लाह का फल और रिज़ामंदी चाहते हैं। और वे अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं। (6-8)

दुश्मन का जो माल लड़ाई के बाद मिले वह ग़नीमत है और जो माल लड़ाई के बग़ैर हाथ लगे वह फई है। ग़नीमत में पांचवां हिस्सा निकालने के बाद बकिया सब लश्कर का है। और फई सबका सब इस्लामी हुक्मत की मिल्कियत है जो मसालेहे आम्मा (जन-हित) के लिए खर्च किया जाएगा।

इस्लाम चाहता है कि माल किसी एक तबके में महदूद होकर न रह जाए। बल्कि वह हर तबके के दर्मियान पहुंचे। इस्लाम में मआशी (आर्थिक) जन्न नहीं है। ताहम उसके मआशी क़वानीन इस तरह बनाए गए हैं कि दौलत मुस्तकिज (केंद्रित) न होने पाए। वह हर तबके के लोगों में गर्दिश करती रहे।

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ
وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوقِ شَعْنَهُ نَفْسُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ⑥
وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا
الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا
إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ⑦

और जो लोग पहले से दार (मदीना) में करार पकड़े हुए हैं और ईमान अस्तवार किए हुए हैं, जो उनके पास हिजरत करके आता है उससे वे मुहब्बत करते हैं और वे अपने दिलों में उससे तंगी नहीं पाते जो मुहाजिरीन को दिया जाता है। और वे उन्हें अपने ऊपर मुक़द्दम रखते हैं। अगरचे उनके ऊपर फ़ाक्का हो। और जो शख्स अपने जी के

लालच से बचा लिया गया तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो उनके बाद आए वे कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हमें बख्श दे और हमारे उन भाइयों को जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं। और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना (द्वेष) न रख, ऐ हमारे रब, तू बड़ा शफ़ीक (कृणामय) और महरबान है। (9-10)

हिजरत के बाद जो मुसलमान अपना वतन छोड़कर मदीना पहुंचे, उनका मदीना आना मदीने के बाशिंदों (अंसार) पर एक बोझ था। मगर उन्होंने निहायत खुशदिली के साथ उनका इस्तकबाल किया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जब अमवाल (धन-सम्पत्ति) आए तो आपने उनका हिस्सा मुहाजिरीन के दर्मियान तकसीम किया। इस पर भी अंसारे मदीना के अंदर उनके लिए कोई रंजिश पैदा न हुई। इसके बाद भी वे उनके इतने कद्रदान रहे कि उनके हक में उनके दिल से बेहतरीन दुआएं निकलती रहीं। यही वह आली हौसलगी है जो किसी गिरोह को तारीख़साज (इतिहास-निर्माता) गिरोह बनाती है।

الْمُتَرَكِّ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَیْنُ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِیْكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۖ لَیْنُ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَیْنُ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ ۖ وَلَیْنُ نَصُرُوهُمْ لَیُولُنَّ الْأَوَّلُونَ ۚ لَنَبَرِّئَنَّكَ مِنَ الظَّالِمِينَ ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो निफ़ाक (पाखंड) में मुत्तिला हैं। वे अपने भाइयों से कहते हैं जिन्होंने अहले किताब में से कुफ़ किया है, अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएंगे। और तुम्हारे मामले में हम किसी की बात न मानेंगे। और अगर तुमसे लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे। और अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं। अगर वे निकाले गए तो ये उनके साथ नहीं निकलेंगे। और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद नहीं करेंगे। और अगर उनकी मदद करेंगे तो जरूर वे पीठ फेरकर भागेंगे, फिर वे कहीं मदद न पाएंगे। (11-12)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू नजीर की जलावतनी (देश निकाला) का एलान किया तो मुनाफ़िक्कीन उनकी हिमायत पर आ गए। उन्होंने बनू नजीर से कहा कि तुम अपनी जगह जमे रहो, हम हर तरह तुम्हारी मदद करेंगे। मगर मुनाफ़िक्कीन की ये बातें महज उन्हें मुसलमानों के खिलाफ उकसाने के लिए थीं। वे इस पेशकश में हरगिज मुख़लिस न थे। चुनांचे जब मुसलमानों ने बनू नजीर को घेर लिया तो मुनाफ़िक्कीन में से कोई भी उनकी मदद पर न आया। मफ़ादपरस्त (स्वार्थी) गिरोह का हर जमाने में यही किरदार रहा है।

لَا أَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِی صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَٰلِك بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا یَفْقَهُونَ ۖ لَا یَقَاتِلُونَكُمْ جَمِیعًا إِلَّا فِی قُوًی مُخَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَیْنَهُمْ شَدِیدٌ تَحْسَبُهُمْ جَمِیعًا وَقَلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ذَٰلِك بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا یَعْقِلُونَ ۝

बेशक तुम लोगों का डर उनके दिलों में अल्लाह से ज्यादा है, यह इसलिए कि वे लोग समझ नहीं रखते। ये लोग सब मिलकर तुमसे कभी नहीं लड़ेंगे। मगर हिफ़ाजत वाली बस्तियों में या दीवारों की आड़ में। उनकी लड़ाई आपस में सज़त है। तुम उन्हें मुत्तहिद (एकजुट) ख्याल करते हो और उनके दिल जुदा-जुदा हो रहे हैं, यह इसलिए कि वे लोग अक्ल नहीं रखते। (13-14)

खुदा की ताकत बजाहिर दिखाई नहीं देती। मगर इंसानों की ताकत खुली आंख से नजर आती है। इस बिना पर जाहिरपरस्त लोगों का हाल यह होता है कि वे अल्लाह से तो बेख़ौफ रहते हैं मगर इंसानों में अगर कोई जोरआवर दिखाई दे तो वे फ़ौरन उससे डरने की ज़रूरत महसूस करने लगते हैं। खुदा के बारे में उनकी बेशुक्करी उन्हें उनकी दुनिया के बारे में भी बेशुक्करी बना देती है।

ऐसे लोग जिन्हें सिर्फ़ मंफ़ी (नकारात्मक) मक़सद ने मुत्तहिद किया हो वे ज्यादा देर तक अपना इत्तिहाद बाकी नहीं रख पाते। क्योंकि देरपा इत्तिहाद के लिए मुस्बत (सकारात्मक) बुनियाद दरकार है और वह उनके पास मौजूद ही नहीं।

كَمْثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ كَمْثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّی بَرِئٌ مِّنْكَ إِنِّی أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ۖ فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا أَنَّهُمَا فِی النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَذَٰلِكَ جَزَاؤُ الظَّالِمِينَ ۝

ये उन लोगों की मानिंद हैं जो उनके कुछ ही पहले अपने किए का मजा चख चुके हैं, और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। जैसे शैतान जो इंसान से कहता है कि मुंकिर हो जा, फिर जब वह मुंकिर हो जाता है तो वह कहता है कि मैं तुमसे बरी हूं। मैं अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब है। फिर अंजाम दोनों का यह हुआ कि दोनों दोजख़ में गए जहां वे हमेशा रहेंगे, और जालिमों की सजा यही है। (15-17)

मदीना के मुनाफिकीन बन् नजीर को मुसलमानों के खिलाफ उभार रहे थे। उन्होंने उस वाक्य से सबक नहीं लिया कि जल्द ही पहले क़ैस और कबीला बन् क़ुमयज़ उनके खिलाफ उठे। मगर उन्हें जबरदस्त शिकस्त हुई। जो लोग शैतान को अपना मुशीर (सलाहकार) बनाएं उनका हाल हमेशा यही होता है। वे वाक़ेयात से नसीहत नहीं लेते। पहले वे जोश व ख़रोश के साथ लोगों को मुजरिमाना अफ़आल पर उभारते हैं। फिर जब उसका भयानक अंजाम सामने आता है तो वे तरह-तरह के अल्फ़ाज़ बोलकर यह चाहते हैं कि उसकी जिम्मेदारी से अपने आपको बरी कर लें। मगर इस किस्म की कोशिशें ऐसे लोगों को अल्लाह की पकड़ से बचाने वाली साबित नहीं हो सकती।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

ऐ ईमान वाले अल्लाह से डरो, और हर शख्स देखे कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह वाख़बर है जो तुम करते हो। और तुम उन लोगों की तरह न बन जाओ जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने उन्हें खुद उनकी जानों से ग़ाफ़िल कर दिया, यही लोग नाफ़रमान हैं। दोख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते। जन्नत वाले ही अस्ल में कामयाब हैं। (18-20)

इंसानी ज़िंदगी को 'आज' और 'कल' के दरमियान तक्सीम किया गया है। मौजूदा दुनिया इंसान का आज है और आख़िरत की दुनिया उसका कल है। इंसान मौजूदा दुनिया में जो कुछ करेगा उसका लाजिमी अंजाम उसे आने वाली तबीलतर (दीर्घतर) ज़िंदगी में भुगतना पड़ेगा।

यही अस्ल हकीकत है और इसी हकीकत का दूसरा नाम इस्लाम है। इंसान की कामयाबी इसमें है कि वह इस हकीकते वाक़ई को ज़हन में रखे। जो शख्स इस हकीकते वाक़ई से ग़ाफ़िल हो जाए उसकी पूरी ज़िंदगी ग़लत होकर रह जाएगी। इस मामले में मुसलमान और ग़ैर मुसलमान का कोई फ़र्क नहीं। मुसलमानों को इसका फ़ायदा उसी वक़्त मिलेगा जबकि वाक़येतन वे उस पर कायम हों। मुसलमान अगर ग़फ़लत में पड़ जाएं तो उनका अंजाम भी वही होगा जो इससे पहले ग़फ़लत में पड़ने वाले यहूद का हुआ।

لَوْ أَنْزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْنَا أَخَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ لِنُظَرِّبَہَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلِيمُ الْغُيُوبِ ۚ وَالشَّهَادَةُ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ أَمْلِكُ الْقُدُوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيَّمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

अगर हम इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि वह खुदा के ख़ौफ से दब जाता और फट जाता, और ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वे सोचें। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, पोशीदा और जाहिर को जानने वाला, वह बड़ा महरबान है। निहायत रहम वाला है। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। बादशाह, सब ऐबों से पाक, सरासर सलामती, अमन देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, जोरआवर, अज्मत वाला, अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं। वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वुजूद में लाने वाला, सूरतगरी (संरचना) करने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम। हर चीज जो आसमानों और ज़मीन में है उसकी तस्वीह कर रही है, और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (21-24)

क़ुरआन इस अजीम हकीकत का एलान है कि इंसान आज्ञा नहीं है बल्कि उसे अपने तमाम आमाल की जवाबदेही अल्लाह के सामने करनी है जो इतिहाई ताकतवर है। और हर एक के आमाल को बजातेखुद पूरी तरह देख रहा है। यह ख़बर इतनी संगीन है कि पहाड़ तक को लरज़ा देने के लिए काफी है। मगर इंसान इतना ग़ाफ़िल और बेहिस है कि वह इस हौलनाक ख़बर को सुनकर भी नहीं तड़पता।

अल्लाह के नाम जो यहां बयान किए गए हैं वे एक तरफ अल्लाह की जात का तआरुफ़ (परिचय) हैं। दूसरी तरफ वे बताते हैं कि वह हस्ती कैसी अजीम हस्ती है जो इंसानों की ख़ालिक है और उनके ऊपर उनकी निगरानी कर रही है। अगर आदमी को वाक़येतन इसका एहसास हो जाए तो वह अल्लाह की हम्द व तस्वीह में सरापा शर्क हो जाएगा।

कायनात अपनी तख़्वीकी मअनवियत की सूरत में खुदा की सिफ़ात का आइना है। वह खुद हम्द व तस्वीह में मसरूफ़ होकर इंसान को भी हम्द व तस्वीह का सबक देती है।

سُورَةُ الْمُؤْتَفِكَاتِ وَهِيَ ثَلَاثُ عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا اَرْكَوُ عَلٰ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمْ
بِالْمُؤَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ
أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ ۚ إِنَّ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي وَ
ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُسْرِئُونَ إِلَيْهِمْ بِالْمُؤَدَّةِ ۚ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ
وَمَا أَعْلَنْتُمْ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۚ إِنَّ
يَشْتَقِفُكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءُ وَيَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَسْتَتِهِمْ بِالْسُّوءِ
وَوَدُّوا أَنْ تُكْفَرُوا ۚ لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُهُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيَمَةِ
يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

مع
عَدُوِّكُمْ

आयतें-13

सूरह-60. अल-मुमतहिन्ह

रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वालो, तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उनसे दोस्ती का इच्चार करते हो हालांकि उन्होंने उस हक (सत्य) का इंकार किया जो तुम्हारे पास आया, वे रसूल को और तुम्हें इस वजह से जलावतन (निर्वासित) करते हैं कि तुम अपने रब, अल्लाह पर ईमान लाए। अगर तुम मेरी राह में जिहाद और मेरी रिजामंदी की तलब के लिए निकले हो, तुम छुपाकर उन्हें दोस्ती का पैगाम भेजते हो। और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम छुपाते हो। और जो कुछ तुम जाहिर करते हो। और जो शख्स तुम में से ऐसा करेगा वह राहेरास्त से भटक गया। अगर वे तुम पर काबू पा जाएं तो वे तुम्हारे दुश्मन बन जाएंगे। और अपने हाथ और अपनी जवान से तुम्हें आजार (पीड़ा) पहुंचाएंगे। और चाहेंगे कि तुम भी किसी तरह मुंकिर हो जाओ। तुम्हारे रिश्तेदार और तुम्हारी औलाद कियामत के दिन तुम्हारे काम न आएंगे, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला करेगा, और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। (1-3)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मक्का की तरफ इक्दाम करने

का फैसला किया तो आपने उसका पूरा मंसूबा निहायत खामोशी के साथ बनाया ताकि मक्का वाले मुकाबले की तैयारी न कर सकें। उस वक्त एक बंदी सहाबी हातिब बिन अबी बलतआ ने इस मंसूबे को एक खत में लिखा और उसे खुफिया तौर पर मक्का वालों के नाम रवाना कर दिया। ताकि मक्का वाले उनसे खुश हो जाएं और उनके अहल व अयाल (परिवारजनों) को न सताएं जो मक्का में मुकीम हैं। मगर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए इसकी इत्तिला हो गई और कासिद को रास्ते ही में पकड़ लिया गया। इस किस्म का हर फेअल ईमानी तमकेफेहिम है।

जब यह सूरतेहाल हो कि इस्लाम और गैर इस्लाम के अलग-अलग महाज बन जाएं तो उस वक्त अहले इस्लाम की जिम्मेदारी होती है कि वे गैर इस्लामी महाज से दिलचस्पी का तअल्लुक तोड़ लें। चाहे गैर इस्लामी महाज में उनके अजीज और रिश्तेदार ही क्यों न हों। हक को मानना और हक का इंकार करने वालों से कब्बी तअल्लुक रखना दो मुत्तजद (परस्पर विरोधी) चीजें हैं जो एक साथ जमा नहीं हो सकतीं।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَّاءُ مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحْدَهُ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنْتَبْنَا وَلِِلَّهِ الْمَصِيرُ ۝ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْفُ رَنَا رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ
الرَّآخِرَ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوْدَّةً وَاللَّهُ قَدِيرٌ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۝

तुम्हारे लिए इब्राहीम और उसके साथियों में अच्छा नमूना है, जबकि उन्होंने अपनी कौम से कहा कि हम अलग हैं तुमसे और उन चीजों से जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, हम तुम्हारे मुंकिर हैं और हमारे और तुम्हारे दर्मियान हमेशा के लिए अदावत (वैर) और बेजारी (दुराव) जाहिर हो गई यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाओ। मगर इब्राहीम का अपने बाप से यह कहना कि मैं आपके लिए माफी मांगूंगा, और मैं आपके लिए अल्लाह के आगे किसी बात का इत्तिहार नहीं रखता। ऐ हमारे

रब, हमने तेरे ऊपर भरोसा किया और हम तेरी तरफ रुजूअ हुए और तेरी ही तरफ लौटना है। ऐ हमारे रब, हमें मुंकिरों के लिए फितना न बना, और ऐ हमारे रब, हमें बख्श दे, वेशक तू जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। वेशक तुम्हारे लिए उनके अंदर अच्छा नमूना है, उस शख्स के लिए जो अल्लाह का और आखिरत के दिन का उम्मीदवार हो। और जो शख्स रुगर्दानी (अवहेलना) करेगा तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफों वाला है। उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के दर्मियान दोस्ती पैदा कर दे जिनसे तुमने दुश्मनी की। और अल्लाह सब कुछ कर सकता है, और अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। (4-7)

हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इब्तिदा में खैरखाहाना अंदाज में अपने खानदान को तौहीद का पैगाम दिया। जब इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद वे लोग मुंकिर बने रहे तो आप उनसे बिल्कुल जुदा हो गए। मगर यह बड़ा सख्त मरहला था। क्योंकि एलाने बरा-त (विरक्ति) का मतलब मुंकिरीने हक को यह दावत देना था कि वे हर मुमकिन तरीके से अहले ईमान को सताएं। दलील के मैदान में शिकस्त खाने के बाद ताकत के मैदान में अहले ईमान को जलील करें। यही वजह है कि इसके बाद हजरत इब्राहीम ने जो दुआ कि उसमें ख़ास तौर से फरमाया कि ऐ हमारे रब हमें इन जालिमों के जुम का तख़ाए मश्क (निशाना) न बना।

अजीजों और रिश्तेदारों से एलाने बरा-त आम मअनों में एलाने अदावत नहीं है। यह दाजी की तरफ से अपने यकीन का आखिरी इज्हार है। इस एतबार से उसमें भी एक दावती क़ (Value) शामिल हो जाती है। चुनांचे कभी ऐसा होता है कि जो शख्स 'पैगाम' की जबान से मुतअस्सिर नहीं हुआ था 'यकीन' की जबान उसे जीतने में कामयाब हो जाती है।

لَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوهُمْ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

अल्लाह तुम्हें उन लोगों से नहीं रोकता जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे जंग नहीं की। और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला कि तुम उनसे भलाई करो और तुम उनके साथ इंसाफ करो। वेशक अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। अल्लाह बस उन लोगों से तुम्हें मना करता है जो दीन के मामले में तुमसे लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। और तुम्हारे निकालने में मदद की कि तुम उनसे दोस्ती करो, और जो उनसे

दोस्ती करे तो वही लोग जालिम हैं। (8-9)

जहां तक अद्ल व इंसाफ का तअल्लुक है वह हर एक से किया जाएगा, चाहे फरीक सानी (प्रतिपक्षी) दुश्मन हो या गैर दुश्मन। मगर दोस्ती का तअल्लुक हर एक से दुरुस्त नहीं। दोस्ती सिर्फ उसी के साथ जाइज है जो अल्लाह का दोस्त हो या कम से कम यह कि वह अल्लाह का दुश्मन न हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ فَهَجَرْتِ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۚ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ ۚ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ لَأَهُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۚ وَاتَّوَلَّوْهُمَا أَنْفَقُوا وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمُ أَنْ تَبْكَحُوهُنَّ إِذَا أَتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تَتَسَكَّبُوا بِعِصْمِ الْكُفَّارِ وَاسْأَلُوا مَا أَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْأَلُوا مَا أَنْفَقُوا ۚ ذَلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَقَابَتُمْ ۚ فَاتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِثْلَ مَا أَنْفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝

ऐ ईमान वाले, जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिजरत (स्थान-परिवर्तन) करके आए तो तुम उन्हें जांच लो, अल्लाह उनके ईमान को खूब जानता है। पस अगर तुम जान लो कि वे मोमिन हैं तो उन्हें मुंकिरों की तरफ न लौटाओ। न वे औरतें उनके लिए हलाल हैं और न वे उन औरतों के लिए हलाल हैं। और मुंकिर शोहरों ने जो कुछ खर्च किया वह उन्हें अदा कर दो। और तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम उनसे निकाह कर लो जबकि तुम उनके महर उन्हें अदा कर दो। और तुम मुंकिर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो। और जो कुछ तुमने खर्च किया है उसे मांग लो। और जो कुछ मुंकिरों ने खर्च किया वे भी तुमसे मांग लें। यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। और अगर तुम्हारी बीवियों के महर में से कुछ मुंकिरों की तरफ रह जाए, फिर तुम्हारी नौबत आए तो जिनकी बीवियां गई हैं उन्हें अदा कर दो जो कुछ उन्होंने खर्च किया। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो। (10-11)

यहां सुलह हुदैबिया के बाद पैदाशुदा हालात की रोशनी में इस्लाम के कुछ उन कानूनों

को बताया गया है जिनका तअल्लुक दारुल हरब और दारुल इस्लाम के दरमियान पेश अपने वाले आइली (पारिवारिक) मसाइल से है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَى أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِمُجْتَنَبَاتٍ يُفْتَرِيْنَ بَيْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

ऐ नबी जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) के लिए आएँ कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज को शरीक न करेंगी। और वे चोरी न करेंगी। और वे बदकारी न करेंगी। और वे अपनी औलाद को कत्ल न करेंगी। और वे अपने हाथ और पांव के आगे कोई बोहतान गढ़कर न लाएंगी। और वे किसी मारुफ (सत्कर्म) में तुम्हारी नाफरमानी न करेंगी तो उनसे बैअत ले लो और उनके लिए अल्लाह से बख्शिश की दुआ करो, बेशक अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। (12)

इस आयत में वे शर्तें बताई गई हैं जिनका इकरार लेकर किसी औरत को इस्लाम में दाखिल किया जाता है। इन शर्तों में दो शर्त की हैसियत बुनियादी है। यानी शिर्क न करना और रसूल की नाफरमानी न करना। बाकी तमाम मन्कूर (उल्लिखित) और मन्कूर तक़जे अपने आप इन दो शर्तों में शामिल हो जाते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَكْسِبُوا مِنَ الْأَخْرَقِ كَمَا يَكْسِبُ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ۝

ऐ ईमान वाले तुम उन लोगों को दोस्त न बनाओ जिनके ऊपर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे आख़िरत से नाउम्मीद हो गए हैं जिस तरह कब्रों में पड़े हुए मुंकिर नाउम्मीद हैं। (13)

आसमानी किताब को मानने वाले यहूद और उसे न मानने वाले मुंकिर आख़िरत के एतबार से एक सतह पर हैं। खुले हुए मुंकिरों को उम्मीद नहीं होती कि कोई शख्स दुबारा अपनी कब्र से उठेगा। यही हाल उन लोगों का भी होता है जो यहूद की तरह ईमान लाने के बाद ग़फ़लत और बेहिसी में मुन्किला हो गए हों। आख़िरत का लफ्ज़ी इकरार करने के बावजूद उनकी अमली जिंदगी वैसी ही हो जाती है जैसी खुले हुए मुंकिरीन की जिंदगी।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

سَبِّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًا كَأَنَّهُمْ بُنَيَّانٌ مُرْتَضُونَ ۝

आयतें-14

सूरह-61. अस-सफ़फ

रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अल्लाह की तस्वीह करती है हर चीज जो आसमानों और ज़मीन में है। और वह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हकीम (तत्त्वदर्शी) है। ऐ ईमान वाले, तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं। अल्लाह के नजदीक यह बात बहुत नाराजी की है कि तुम ऐसी बात कहो जो तुम करो नहीं। अल्लाह तो उन लोगों को पसंद करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिलकर लड़ते हैं गोया वे एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं। (1-4)

इंसान के सिवा जो कायनात है उसमें कहीं तज़ाद (अन्तर्विरोध) नहीं। इस दुनिया में लकड़ी हमेशा लकड़ी रहती है। और जो चीज अपने आपको लोहा और पत्थर के रूप में जाहिर करे वह हकीकी तज़र्वे में भी लोहा और पत्थर ही साबित होती है। इंसान को भी ऐसा ही बनना चाहिए। इंसान के कहने और करने में मुताबिकत होनी चाहिए। यहां तक कि उस वक़्त भी जबकि आदमी को अपने कहने की यह कीमत देनी पड़े कि हर किस्म की दुश्वारियों के बावजूद वह सत्र का पहाड़ बन जाए।

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمُ لِمَ تَقُولُونَ L

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, तुम लोग क्यों मुझे सताते हो, हालांकि तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ। पस जब वे फिर गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया। और अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (5)

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के दर्मियान आए। बनी इस्राईल उस वक्त एक जवालयाप्ता क्रोम थे। उनके अंदर यह हैसला बाकी नहीं रहा था कि जो कहे वही करें। और करें वही कहे। चुनांचे उनका हाल यह था कि वे हजरत मूसा के हाथ पर ईमान का इकारा भी करते थे और इसी के साथ हर किस्म की बदअहदी और नाफरमानी में भी मुक्तिला रहते थे। यहां तक कि हजरत मूसा के साथ अपने बुरे सुलूक को जाइज साबित करने के लिए वे खुद हजरत मूसा पर झूठे झूठे इल्जाम लगाते थे। बाइबल में खुर्रज और गिनती के अबवाब (अध्यायों) में इसकी तपसील देखी जा सकती है।

अहद करने के बाद अहद की खिलाफतजी आदमी को पहले से भी ज्यादा हक से दूर कर देती है।

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَبْنِي إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدٌ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۖ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى الْإِسْلَامِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ ۗ وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝

और जब ईसा बिन मरयम ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं, तस्दीक (पुष्टि) करने वाला हूं उस तौरात की जो मुझसे पहले से मौजूद है, और खुशखबरी देने वाला हूं एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह उनके पास खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है। और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे हालांकि वह इस्लाम की तरफ बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुंह से बुझा दें, हालांकि अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा करके रहेगा, चाहे मुंकिरों को यह कितना ही नागवार हो। वही है जिसने भेजा अपने रसूल को हिदायत और दीने हक के साथ ताकि उसे सब दीनों पर ग़ालिब कर दे चाहे मुश्रिकों (बहुदेववादियों) को यह कितना ही नागवार हो। (6-9)

हजरत मसीह अलैहिस्सलाम के मोजिजात इस बात का सुबूत थे कि आप खुदा के पैगम्बर

हैं। मगर यहूद ने उन मोजिजात को जादू का करिश्मा कहकर उन्हें नजरअंदाज कर दिया। इसी तरह कदीम आसमानी किताबों में वाजेह तौर पर पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की पेशगी ख़बर मौजूद थी। मगर जब आप आए तो यहूद और नसारा दोनों ने आपका इंकार कर दिया। ईसान इतना जालिम है कि वह खुली-खुली हकीकतों का एतराफ करने के लिए भी तैयार नहीं होता।

इस आयत में ग़लबे से मुराद फिक्री ग़लबा (वैचारिक वर्चस्व) है। यानी खुदा और मजहब के बारे में जितने ग़ैर मुवाहिदाना (ग़ैर-एकेश्वरवादी) अक्वइद दुनिया में हैं उन्हें जेर करके तौहीद (एकेश्वरवाद) के अक्दी को ग़ालिब फिक्क की हैसियत दे दी जाए। बकिया तमाम अक्वइद हमेशा के लिए फिक्री तौर पर मगलूब होकर रह जाएं। कुरआन में यह पेशीनगोई इतिहाई नामुवाफिक हालात में सन् 3 हि० में नाजिल हुई थी। मगर बाद को वह हर्फवर्फ पूरी हुई।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ يَعْلَمُ لَكُمْ دُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلُكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنٌ طَيِّبٌ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۖ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَآخَرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ۖ وَبَشِيرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

ऐ ईमान वालो, क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारात बताऊं जो तुम्हें एक दर्दनाक अजाब से बचा ले। तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपने जान से जिहाद (जद्दोजहद) करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा और तुम्हें ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और उम्दा मकानों में जो हमेशा रहने के बागों में होंगे, यह है बड़ी कामयाबी और एक और चीज भी जिसकी तुम तमन्ना रखते हो, अल्लाह की मदद और फतह जल्दी, और मोमिनों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो। (10-13)

तिजारात में आदमी पहले देता है, इसके बाद उसे वापस मिलता है। दीन की जद्दोजहद में भी आदमी को अपनी कुव्वत और अपना माल देना पड़ता है। इस एतबार से यह भी एक क्रिस्म की तिजारात है। अलबत्ता दुनियावी तिजारात का नफ़ा सिर्फ दुनिया में मिलता है और दीन की तिजारात का नफ़ा मजीद इजाफे के साथ दुनिया में भी मिलता है और आखिरत में भी। फिर इसी 'तिजारात' से ग़लबा की राह भी खुलती है जो मौजूदा दुनिया में किसी गिरोह को बाइज्जत जिंद्गी हासिल करने का सबसे बड़ा जरिया है।

يَسَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ①

आयतें-11

सूरह-62. अल-जुमुअह

रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर वह चीज जो आसमानों में है और जो जमीन में है। जो बादशाह है, पाक है, जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने उम्मीयों के अंदर एक रसूल उन्हीं में से उठाया, वह उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है। और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और हिक्मत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है, और वे इससे पहले खुली गुमराही में थे और दूसरों के लिए भी उनमें से जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए, और वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। यह अल्लाह का फ़ल है, वह देता है जिसे चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ल (अनुग्रह) वाला है। (1-4)

इंसान की हिदायत के लिए रसूल भेजना खुदा की उन्हीं सिफात (गुणों) का इंसानी सतह पर जुहूर है जिन सिफात का जुहूर माददी एतबार से कायनात की सतह पर हुआ है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, और इसी तरह दूसरे पैगम्बरों का काम ख़ास तौर पर दो रहा है। एक, खुदा की 'वही' को लोगों तक पहुंचाना। दूसरे, लोगों के शुरु को बेदार करना ताकि वे खुदाई बातों को समझें और अपनी हकीकी जिंदगी के साथ उन्हें मरबूत कर सकें। यही दो काम आइंदा भी दावत व इस्लाह की जद्दोजहद में मलूब रहेंगे। यानी तालीमे कुआन और ज़ेनी तर्बियत।

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا
يَسْ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِاللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ①
قُلْ يَٰ أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِن زَعَمْتُمْ أَنكُم بِلِلَّهِ مِن دُونِ النَّاسِ
فَتَمْنُوا الْمَوْتَ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ② وَلَا يَسْتَوُونَ أَبَدًا بِمَا قَدْ مَتَّ
أَيْدِيَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ③ بِالظَّالِمِينَ ④ قُلْ إِن الْمَوْتَ الَّذِي تَتَّقُونَ مِنْهُ
فَوَئِئْ مَلَقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ⑤

ع ॥

जिन लोगों को तौरात का हामिल (धारक) बनाया गया फिर उन्होंने उसे न उठाया, उनकी मिसाल उस गधे की सी है जो किताबों का बोझ उठाए हुए हो। क्या ही बुरी

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِحَوَارِيِّينَ
مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ فَا مَنَّاكَ طَائِفَةٌ
مِّنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَكَفَرْتَ طَائِفَةٌ ① فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ
عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ②

ع ॥

ऐ ईमान वालो, तुम अल्लाह के मददगार बनो, जैसा कि ईसा बिन मरयम ने हवारियों (साथियों) से कहा, कौन अल्लाह के वास्ते मेरा मददगार बनता है। हवारियों ने कहा हम हैं अल्लाह के मददगार, पस बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोगों ने इंकार किया। फिर हमने ईमान लाने वालों की उनके दुश्मनों के मुकाबले में मदद की, पस वे ग़ालिब हो गए। (14)

यहूद की अक्सरियत ने अगरचे हजरत मसीह अलैहिस्सलाम को रद्द कर दिया मगर उनमें से कुछ लोग (हवारिय्यीन) ऐसे थे जिन्होंने पूरे इख़्लास और वफादारी के साथ आपका साथ दिया। और आपके पैगम्बराना मिशन को आगे बढ़ाया। यही चन्द लोग अल्लाह की नजर में मोमिन क़ार पाए और बक़िया तमाम यहूद पिछले पैगम्बरों को मानने के बावजूद मुकर क़ार पा गए।

यहां जिस ग़लबे का ज़िक्र है वह फ़िल जुमला (वस्तुतः) मोमिनीने मसीह का फ़िल जुमला मुक़िरीने मसीह पर ग़लबा है। हजरत मसीह के बाद रूमी शहंशाह कुस्तुतीन दोम (272-337 ई०) ने नसरानियत (ईसाइयत) कुबूल कर ली जिसकी सल्तनत शाम और फ़िलिस्तीन तक फैली हुई थी। इसके बाद रूमी रिआया बहुत बड़ी तादाद में ईसाई हो गई। चुनांचे यहूद उनके महकूम (शासनाधीन) हो गए। मौजूदा ज़माने में भी यहूदियों की हुकूमते इस्राईल हर एतबार से ईसाइयों के मातहत है।

سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَكِّيَّةٌ مِنْ أَحَدِ عَشَرَ آيَةً فِيهَا ثَوْنٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَسْبِغْ لِّلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكُ الْقَدُّوسُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ②
هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْاُمَمِ رُسُلًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيٰتِهٖ وَيُزَكِّيهِمْ وَ
يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَ اِنْ كٰنُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ③ وَ اٰخِرِيْنَ
مِّنْهُمْ لَبٰ اَلْحَقُّ اَنَّهُمْ رُسُلُهُمْ وَ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ④ ذٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ

मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। कहो कि ऐ यहूदियो, अगर तुम्हारा गुमान है कि तुम दूसरों के मुकाबले में अल्लाह के महबूब हो तो तुम मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो। और वे कभी इसकी तमन्ना न करेंगे उन कामों की वजह से जिन्हें उनके हाथ आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह जालिमों को खूब जानता है। कहो कि जिस मौत से तुम भागते हो वह तुम्हें आकर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और जाहिर के जानने वाले के पास ले जाए जाओगे, फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे हो। (5-8)

खुदा की किताब जब किसी कौम को दी जाती है तो इसलिए दी जाती है कि वह उसे अपने अंदर उतारे और उसे अपनी जिंदगी में अपनाए। मगर जो कौम इस मअना में किताबे आसमानी की हामिल (धारक) न बन सके उसकी मिसाल उस गधे की सी होगी जिसके ऊपर इल्मी किताबें लदी हुई हों और उसे कुछ खबर न हो कि उसके ऊपर क्या है।

यहूद ने अगरचे अमली तौर पर खुदा के दीन को छोड़ रखा था, इसके बावजूद उसे अपने कैमी फख्र का निशान बनाए हुए थे। मगर इस किस्म का फख्र किसी के कुछ काम आने वाला नहीं। ऐसा फख्र हमेशा झूठा फख्र होता है। और इसका एक सबूत यह है कि आदमी जिस दीन को अपने फख्र का सामान बनाए हुए होता है उसके लिए वह कुर्बानी देने को तैयार नहीं होता। ताहम जब मौत आएगी तो ऐसे लोग जान लेंगे कि दुनिया में वे जिस फख्र पर जी रहे थे वह आखिरत में उन्हें जिल्लत के सिवा और कुछ देने वाला नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمٍ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۚ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ وَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۖ وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قُلُوبًا قَلِيلًا ۚ مَاعِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِمَّا يَتْلُونَ مِنَ التِّجَارَةِ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝

ऐ ईमान वाले, जब जुमा के दिन की नमाज के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह की याद की तरफ चल पड़ो और खरीद व फरोख्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। फिर जब नमाज पूरी हो जाए तो जमीन में फैल जाओ और अल्लाह का फल तलाश करो, और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करो, ताकि तुम फलाह पाओ। और जब वे कोई तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं। और तुम्हें

खड़ा हुआ छोड़ देते हैं, कहो कि जो अल्लाह के पास है वह खेल तमाशे और तिजारत से बेहतर है, और अल्लाह बेहतरीन रिश्क देने वाला है। (9-11)

दुनिया में आदमी बयकवक्त दो तकजों के दर्मियान होता है। एक मआश (जीविका) का तकज, और दूसरे दीन का तकज। इनमेंसे हर तकज जरूरी है। अलबत्ता उनके दर्मियान इस तरह तकसीम होनी चाहिए कि मआशी सरगर्मियां दीनी तकजे के मातहत हों। आदमी को इजाजत है कि वह जाइज हुदू में मआश के लिए दौड़ धूप करे। मगर यह जरूरी है कि उसे जो मआशी कामयाबी हासिल हो उसे वह सरासर अल्लाह का फल समझे। नीज मआशी सरगर्मी के दौरान बराबर अल्लाह को याद करता रहे। इसी के साथ उसे हमेशा तैयार रहना चाहिए कि जब भी दीन के किसी तकजे के लिए पुकारा जाए तो उस वक्त वह हर दूसरे काम को छोड़कर दीन के काम की तरफ दौड़ पड़े।

मदीना में एक बार ऐन जुमा के खुत्बे के वक्त कुछ लोग उठकर बाजार चले गए। इस पर मज्कूर आयतें उतरतीं। इस हुक्म का तअल्लुक अगरचे बराहेरास्त तौर पर जुमा से है मगर बिलवास्ता तौर पर हर दीनी काम से है। जब भी किसी खास दीनी मक्सद के लिए लोगों को जमा किया जाए तो अमीर की इजाजत के बगैर उठकर चले जाना सख्त महरूम की बात है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

إِذَا جَاءَ لَكَ الْمُتَفِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ ۗ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُتَفِقِينَ لَكَاذِبُونَ ۖ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً ۖ فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝

आयतें-11

सूरह-63. अल-मुनाफिकून

रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। जब मुनाफिक (पाखंडी) तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं, और अल्लाह जानता है कि बेशक तुम उसके रसूल हो, और अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफिकीन (पाखंडी) झूठे हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, बेशक निहायत बुरा है जो वे कर रहे हैं। यह इस सबब से है कि वे ईमान लाए फिर उन्होंने कुफ्र किया, फिर उनके दिलों पर मुहर कर दी गई, पस वे नहीं समझते। (1-3)

यह किसी आदमी के निफाक (पाखंड) की अलामत है कि वह बड़ी-बड़ी बातें करे। और कसम खाकर अपनी बात का यकीन दिलाए। मुख़िस (निष्ठावान) आदमी अल्लाह के ख़ौफ से दबा हुआ होता है। वह ज़वान से ज्यादा दिल से बोलता है। मुनाफ़िक आदमी सिर्फ़ इंसान को अपनी आवाज़ सुनाने का मुशताक होता है। और मुख़िस आदमी खुदा को सुनाने का।

जब एक शख्स ईमान लाता है तो वह एक सजीदा अहद (प्रण) करता है। इसके बाद ज़िंदगी के अमली मवाकेअ आते हैं जहाँ ज़रूरत होती है कि वह उस अहद के मुताबिक अमल करे। अब जो शख्स ऐसे मौक़ों पर अपने दिल की आवाज़ को सुनकर अहद के तकाज़े पूरे करेगा। उसने अपने अहदे ईमान को पुरज़ा किया। इसके बरअक्स जिसका यह हाल हो कि उसके दिल ने आवाज़ दी मगर उसने दिल की आवाज़ को नज़रअंदाज़ करके अहद के ख़िलाफ अमल किया तो इसका नतीजा यह होगा कि वह धीरे-धीरे अपने अहदे ईमान के मामले में बेहिस् हो जाएगा। यही मतलब है दिल पर मुहर करने का।

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسْدَقَةٌ ۚ يَحْسِبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۖ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرُهُمْ ۗ قَاتِلْهُمْ اللَّهُ ۖ أَنَّى يُؤْفَكُونَ ۖ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّارُؤُسُهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ ۖ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُونَ ۖ سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

और जब तुम उन्हें देखो तो उनके जिस्म तुम्हें अच्छे लगते हैं, और अगर वे बात करते हैं तो तुम उनकी बात सुनते हो, गोया कि वे लकड़ियां हैं टेक लगाई हुई। वे हर जोर की आवाज़ को अपने ख़िलाफ समझते हैं। यही लोग दुश्मन हैं, पस उनसे बचो। अल्लाह उन्हें हलाक करे, वे कहां फिरे जाते हैं। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए इस्तिफ़ार (माफी की दुआ) करे तो वे अपना सर फेर लेते हैं। और तुम उन्हें देखोगे कि वे तकबुर (घमंड) करते हुए बेरुखी करते हैं। उनके लिए एकसां (समान) है, तुम उनके लिए मफ़िरत (माफी) की दुआ करो या मफ़िरत की दुआ न करो, अल्लाह हरगिज़ उन्हें माफ न करेगा। अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (4-6)

मुनाफ़िक आदमी मस्लेहतपरस्ती के ज़रिए अपने मफ़ादत (हितों) को महफूज़ रखता है।

वह हक नाहक की बहस में नहीं पड़ता, इसलिए हर एक से उसका बनाव रहता है। उसकी ज़िंदगी ग़म से ख़ाली होती है। ये चीज़ें उसके जिस्म को फरबा (मोटा) बना देती हैं। वे लोगों

के मिजाज़ की रियायत करके बोलता है। इसलिए उसकी बातों में हर एक अपने लिए दिलचस्पी का सामान पा लेता है। मगर ये बजहिर हरे भरे दरख़्त हकीकतन सिर्फ सूखी लकड़ियां होते हैं जिनमें कोई ज़िंदगी न हो। वे अंदर से बुजदिल होते हैं। उनके नजदीक उनका दुनियावी मफ़ाद हर दीनी मफ़ाद से ज्यादा अहम होता है। ऐसे लोग ईमान के बुलन्दबाग़ मुद्दई (ऊंचे दावेदार) होने के बावजूद खुदा की हिदायत से यकसर महरूम हैं।

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُوا ۚ وَ لِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ ۖ وَلَكِنَّ الْمُنٰفِقِينَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝ يَقُولُونَ لَیْن تَجَعْنَا إِلَى الْمَدِیْنَةِ لَیْخُرْجَنَ الْأَعْرَضُ مِنْهَا الْأَذَلُّ ۖ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَ لِرَسُولِهِ ۖ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَلَكِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ ۝

यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर खर्च मत करो यहां तक कि वे मुंतशिर (तितर-बितर) हो जाएं। और आसमानों और जमीन के खज़ाने अल्लाह ही के हैं लेकिन मुनाफ़िकीन (पाखंडी) नहीं समझते। वे कहते हैं कि अगर हम मदीना लौटे तो इज्जत वाला वहां से ज़िल्लत वाले को निकाल देगा। हालांकि इज्जत अल्लाह के लिए और उसके रसूल के लिए और मोमिनीन के लिए है, मगर मुनाफ़िकीन (पाखंडी) नहीं जानते। (7-8)

कदीम मदीना में दो किस्म के मुसलमान थे। एक मुहाजिर दूसरे अंसार। मुहाजिरीन मक्का से बेवतन होकर आए थे। उनका सबसे बड़ा जाहिरी सहारा मकामी मुसलमान (अंसार) थे। इस बिना पर दुनियापरस्त लोगों को मुहाजिर बेइज्जत दिखाई देते थे और अंसार उनकी नज़र में बाइज्जत लोग थे। यहां तक कि एक मौक़े पर अबुल्लाह बिन उबइ ने साफ तौर पर कह दिया कि इन मुहाजिरीन की हकीकत क्या है। अगर हम इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दें तो दुनिया में कहीं इन्हें ठिकाना न मिले।

इस किस्म के अस्मज़ उसी शख्स की ज़वान से निकल सकते हैं जो इस हकीकत से बेख़बर हो कि इस दुनिया में जो कुछ है सब अल्लाह का है। वही जिसे चाहे दे और वही जिससे चाहे छीन ले।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَا اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ یَفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ ۚ وَانْفِقُوا مِنْ ثَمَارِ مَا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ اَنْ یَّآئِنَیْ اَحَدُكُمْ الْمَوْتُ ۖ فِیْ قَوْلِ رَبِّ لَوْ لَا اَخَّرْتَنِیْ ۚ اِلٰی اَجَلٍ قَرِیْبٍ ۖ فَاَصْدَقَ ۚ وَ اَكُنْ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝ وَلَنْ یُّؤَخَّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا اٰجَآءَ اَجَلُهَا ۚ

وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफिल न करने पाएं, और जो ऐसा करेगा तो वही घाटे में पड़ने वाले लोग हैं। और हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से खर्च करो इससे पहले कि तुम में से किसी की मौत आ जाए, फिर वह कहे कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे कुछ और मोहलत क्यों न दी कि मैं सदका (दान) करता और नेक लोगों में शामिल हो जाता। और अल्लाह हरगिज किसी जान को मोहलत नहीं देता जबकि उसकी मीआद (नियत समय) आ जाए, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (9-11)

हर आदमी के लिए सबसे बड़ा मसला आखिरत का मसला है। मगर माल और औलाद ईसान को इस सबसे बड़े मसले से ग़ाफिल कर देते हैं। ईसान को जानना चाहिए कि माल और औलाद मक्सद नहीं बल्कि जरिया हैं। वे इसलिए किसी को दिए जाते हैं कि वह उन्हें अल्लाह के काम में लगाए। वह उन्हें अपनी आखिरत बनाने में इस्तेमाल करे। मगर नादान आदमी उन्हें बजाते खुद मक्सूद (लक्ष्य) समझ लेता है। ऐसे लोग जब अपने आखिरी अंजाम को पहुंचेंगे तो वहां उनके लिए हसरत व अफसोस के सिवा और कुछ न होगा।

سُورَةُ التَّغْوِيٰۙتِ ۝ اٰیَةُ الْاٰخِرَةِ ۝ وَفِيهَا ذٰلِكُمْ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

يَسْتَعِۢمِلُ اللّٰهُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ۚ لَهٗ الْمُلْكُ وَلَهٗ الْحَمْدُ ۗ هُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیۡرٌ ۝ ۙ هُوَ الَّذِیۡ خَلَقَکُمْ فَمِنْکُمْ کَافِرٌ وَّمِنْکُمْ مُّؤْمِنٌ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوۡنَ بَصِیۡرٌ ۝ ۙ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ وَصَوَّرَکُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَکُمْ ۗ وَاِلَیْهِ الْمَصِیۡرُ ۝ ۙ یَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَیَعْلَمُ مَا تُسْرُوۡنَ وَمَا تُعْلِنُوۡنَ ۗ وَاللّٰهُ عَلِیۡمٌۢ بَیۡدَاتِ الصُّدُوۡرِ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है।
अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर चीज जो आसमानों में है और हर चीज जो जमीन

में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज पर कादिर है। वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम में से कोई मुंकिर है और कोई मोमिन, और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। उसने आसमानों और जमीन को ठीक तौर पर पैदा किया और उसने तुम्हारी सूरत बनाई तो निहायत अच्छी सूरत बनाई, और उसी की तरफ है लौटना। वह जानता है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम जाहिर करते हो। और अल्लाह दिलों तक की बातों का जानने वाला है। (1-4)

‘कायनात अल्लाह की तस्बीह कर रही है’ का मतलब यह है कि अल्लाह ने जिस हकीकत को कुरआन में खोला है, कायनात सरापा उसकी तस्दीक (पुष्टि) बनी हुई है, वह जबानेहाल से हमद व सताइश (प्रशस्ति) की हद तक इसकी तारीफ कर रही है। इस दोतरफा एलान के बावजूद जो लोग मोमिन न बनें उन्हें इसके बाद तीसरे एलान का इंतजार करना चाहिए जबकि तमाम लोग खुदा के यहां जमा किए जाएंगे ताकि खुद मालिके कायनात की जवान से अपने बारे में आखिरी फैसले को सुनें।

اَلْمَیۡمٰتِکُمْ نَبَۡؤُا الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡۤا مِنْ قَبْلُ ۚ فَذٰقُوۡا وِبٰلَ اَمْرِہِمۡ وَلَہُمۡ عَذٰبٌ اَلِیۡمٌ ۝ ۙ ذٰلِکَ بِاَنَّهُۥ کَانَتْ تَاۡتِیْہُمۡ رُّسُلُہُمۡ بِالْبَیِّنٰتِ فَقَالُوۡۤا اَبَشِّرْہُمۡدُنَا فَاکْفَرُوۡۤا وَتَوَلَّوۡۤا وَاسْتَغْنٰی اللّٰهُ وَاللّٰهُ غَفِیۡرٌۢ حَمِیۡدٌ ۝

क्या तुम्हें उन लोगों की खबर नहीं पहुंची जिन्होंने इससे पहले इंकार किया, फिर उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। यह इसलिए कि उनके पास उनके रसूल खुली दलीलों के साथ आए, तो उन्होंने कहा कि क्या ईसान हमारी रहनुमाई करेंगे। पस उन्होंने इंकार किया और मुंह फेर लिया, और अल्लाह उनसे बेपरवाह हो गया, और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफ वाला है। (5-6)

कदीम जमाने में रसूलों के जरिए जो तारीख बनी वह ईसानों के लिए मुस्तकिल इबरत (सीख) का नमूना है। मसलन आद और समूद और अहले मदयन और कौमे लूत वगैरह के दर्मियान पैगम्बर आए। इन पैगम्बरों के पास अपनी सदाकत बताने के लिए कोई गैर बशरी (ईसानी) कमाल न था, बल्कि सिर्फ दलील थी। दलील की सतह पर इंकार ने उन कौमों को अजाब का मुस्तहिक बना दिया। इससे मालूम हुआ कि इस दुनिया में आदमी का इम्तेहान यह है कि वह दलील की सतह पर हक को पहचाने। जो शख्स दलील की सतह पर हक को पहचानने में नाकाम रहे वह हमेशा के लिए हक से महरूम होकर रह जाएगा।

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ بِبَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّيُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۚ وَذَلِكَ عَلَىٰ اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ فَأَمَّا يَا لِدِينِكُمْ وَرَسُولِهِ ۚ وَالنُّورَ الَّذِي أَنْزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۚ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

अल्लाह

इंकार करने वालों ने दावा किया कि वे हरगिज दुबारा उठाए न जाएंगे, कहे कि हां, मेरे ख की कसम तुम जरूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें बताया जाएगा जो कुछ तुमने किया है, और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है। पस अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस नूर (प्रकाश) पर जो हमने उतारा है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। जिस दिन वह तुम सबको एक जमा होने के दिन जमा करेगा, यही दिन हार जीत का दिन होगा। और जो शख्स अल्लाह पर ईमान लाया होगा और उसने नेक अमल किया होगा, अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे हमेशा उनमें रहेंगे। यही है बड़ी कामयाबी। और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही आग वाले हैं, उसमें हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है। (7-10)

लोग दुनिया को हार जीत (तगाबुन) की जगह समझते हैं। किसी शख्स को यहां कामयाबी मिल जाए तो वह खुश होता है। और जो शख्स यहां नाकामी से दो चार हो वह लोगों की नजर में हकीर (तुच्छ) बनकर रह जाता है। मगर हकीकत यह है कि इस दुनिया की हार भी बेकीमत है और यहां की जीत भी बेकीमत।

हार जीत का अस्त मकाम आखिरत (परलोक) है। हारने वाला वह है जो आखिरत में हारे और जीतने वाला वह है जो आखिरत में जीते। और वहां की हार जीत का मेयार बिल्कुल मुखलिफ है। दुनिया में हार जीत जाहिरी मादिदयात (पदार्थों) की बुनियाद पर होती है। और आखिरत की हार जीत खुदाई अख्लाकियात की बुनियाद पर होगी। उस वक्त देखने वाले यह देखकर हैरान रह जाएंगे कि यहां सारा मामला बिल्कुल बदल गया है। जिस पाने को लोग पाना समझ रहे थे वह दरअस्त खोना था, और जिस खोने को लोगों ने खोना समझ रखा था वही दरअस्त वह चीज थी जिसे पाना कहा जाए। उसी दिन की हार, हार है और उसी दिन की जीत, जीत।

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَأِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ۝ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

जो मुसीबत भी आती है अल्लाह के इज्ज (अनुज्ञा) से आती है। और जो शख्स अल्लाह पर ईमान रखता है अल्लाह उसके दिल को राह दिखाता है, और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। और तुम अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम एराज (उपेक्षा) करोगे तो हमारे रसूल पर बस साफ-साफ पहुंचा देना है। अल्लाह, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य-प्रभु) नहीं, और ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (11-13)

कोई मुसीबत अपने आप नहीं आती, हर मुसीबत खुदा की तरफ से आती है। और इसलिए आती है कि उसके जरिए से इंसान को हिदायत अता की जाए। मुसीबत आदमी के दिल को नर्म करती है। और उसकी सोई हुई नफिसयात में हलचल पैदा करती है। मुसीबत के झटके आदमी के जेहन को जगाने का काम करते हैं। अगर आदमी अपने आपको मंफ़ी रद्देअमल (नकारात्मक प्रतिक्रिया) से बचाए तो मुसीबत उसके लिए बेहतरीन रब्बानी मुअल्लिम (शिक्षक) बन जाएगी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوٌّ لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِنْ تَعَفَّوْا وَتَصَفَّحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللَّهُ عِنْدَ أَجْرٍ عَظِيمٍ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمِعُوا وَأَطِيعُوا وَأَتَّقُوا خَيْرَ الْأَنْفُسِكُمْ ۚ وَمَنْ يُؤْتِ شَيْئًا فَنَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝ إِنْ تَقْرَضُوا لِلَّهِ قَرْضًا حَسَنًا يَضْعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ۝ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

अल्लाह

ऐ ईमान वाले, तुम्हारी कुछ वीवियां और कुछ औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं, पस तुम उनसे होशियार रहे, और अगर तुम माफ कर दो और दरगुजर करो और बख्श दो तो अल्लाह बख्शने वाला, रहम करने वाला है। तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आजमाइश की चीज हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र है। पस तुम अल्लाह से डरो जहां तक हो सके। और सुनो और मानो और खर्च करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो शख्स दिल की तंगी से महफूज रहा तो ऐसे ही लोग फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाले हैं। अगर तुम

अल्लाह को अच्छा कर्ज दोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह कद्रदा है, बुर्दवार (उदार) है। ग़ायब और हाज़िर को जानने वाला है, ज़बरदस्त है, हकीम (तत्वदर्शी) है। (14-18)

इंसान को सबसे ज्यादा तअल्लुक अपनी औलाद से होता है। आदमी हर दूसरे मामले में उसूल की बातें करता है मगर जब अपनी औलाद का मामला आता है तो वह वेउसूल बन जाता है। इसीलिए हदीस में इशार्द हुआ है कि औलाद किसी आदमी को बुजदिली और बुख़ल (कंजूसी) पर मजबूर करने वाले हैं। इसी तरह एक और हदीस में इशार्द हुआ है कि कियामत के दिन एक शख्स को लाया जाएगा, फिर कहा जाएगा कि इसके बीवी बच्चे इसकी नेकियां खा गए।

इंसान अपने बच्चों की खातिर अल्लाह की राह में खर्च नहीं करता। हालांकि अगर वह अल्लाह की राह में खर्च करे तो मुख़लिफ़ शक्तों में अल्लाह उसकी तरफ़ उससे बहुत ज्यादा लौटाएगा जितना उसने अल्लाह की राह में दिया था।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تَخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ۖ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَى عَدْلٍ مِنْكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّكَاةَ لِلَّهِ ذِكْمٌ يُوْعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ۚ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِالْأَعْمَارِ قَدِيرٌ ۖ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝

आयतें-12

सूह-65. अत-तलाक

रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
ऐ पैग़म्बर, जब तुम लोग औरतों को तलाक दो तो उनकी इद्दत पर तलाक दो और इद्दत को गिनते रहो, और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है। उन औरतों को उनके

घरों से न निकालो और न वे खुद निकलें, इल्ला यह कि वे कोई खुली बेहयाई करें, और ये अल्लाह की हदें हैं, और जो शख्स अल्लाह की हदों से तजाबुज करेगा तो उसने अपने ऊपर जुल्म किया, तुम नहीं जानते शायद अल्लाह इस तलाक के बाद कोई नई सूरत पैदा कर दे। फिर जब वे अपनी मुद्दत को पहुंच जाएं तो उन्हें या तो मारुफ़ (भली रीति) के मुताबिक रख लो या मारुफ़ के मुताबिक उन्हें छोड़ दो और अपने में से दो मोतबर गवाह कर लो और ठीक-ठीक अल्लाह के लिए गवाही दो। यह उस शख्स को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो। और जो शख्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए राह निकालेगा, और उसे वहां से रख देगा जहां उसका गुमान भी न गया हो, और जो शख्स अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह उसके लिए काफी है, बेशक अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है, अल्लाह ने हर चीज के लिए एक अंदाज़ा ठहरा रखा है। (1-3)

इस्लाम में अपरिहार्य हालात के तौर पर तलाक की इजाजत दी गई है। ताहम इसका एक तरीक़ेदार मुक़र्र किया गया है जो ख़ास वक़्ते के दर्मियान पूरा होता है। इस तरह तलाक के अमल को कुछ हदों का पाबंद कर दिया गया है। इन हदों का मक़सद यह है कि दोनों पक्षों के दर्मियान आख़िर वक़्त तक वापसी का मौज़्ज बाकी रहे। और तलाक का वाक्या किसी क़िसम के ख़ानदानी या समाजी फ़साद का ज़रिया न बने। वही तलाक इस्लामी तलाक है जिसके पूरे अमल के दौरान खुदा के ख़ौफ़ की रूह जारी व सारी रहे।

وَالَّذِي يَسْنَنُ مِنَ الْحَيْضِ مِنْ نِسَائِكُمْ إِنْ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثُ أَشْهُرٍ وَالَّذِي لَمْ يَحْضُنْ وَأُولَاتُ الْأَحْكَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ وَ مَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ۚ ذَٰلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَكْفُرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ۝

और तुम्हारी औरतों में से जो हैज (मासिक धर्म) से मायूस हो चुकी हैं, अगर तुम्हें शुबह हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है। और इसी तरह उनकी भी जिन्हें हैज नहीं आया, और हामिला (गर्भवती) औरतों की इद्दत उस हमल का पैदा हो जाना है, और जो शख्स अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए उसके काम में आसानी कर देगा। यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारी तरफ़ उतारा है, और जो शख्स अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बड़ा अज़्र देगा। (4-5)

शरीअत ने तलाक और दूसरे मामलात में इंसान को कुछ जवाबित (नियमों) का पाबंद किया है। ये जवाबित बजाहिर इंसान की आजादना तबीअत के लिए रुकावट हैं। मगर

हकीकत के एतबार से ये नेमत हैं। इन जवाबित का यह फायदा है कि आदमी बहुत से ग़ैर ज़रूरी नुस्सानात से बच जाता है। मजिद यह कि इस दुनिया का निजाम इस तरह बना है कि यहां हर नुक्सान की तलाफ़ी (क्षतिपूर्ति) किसी न किसी तरह की जाती है। ताहम यह तलाफ़ी सिर्फ़ उस शख्स के हिस्से में आती है जो फ़ितरत के दायरे से बाहर न जाए।

اسْكُنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وَجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتٍ حَمِلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَارْزُقُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ وَاتَّبِعُوا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ وَإِنْ تَعَاَسَرْتُمْ فَسَتَرْضَعْنَ لَهُنَّ أُخْرَى ۖ لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهِ ۖ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَّا أَتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۝

तुम उन औरतों को अपनी वुस्अत (हैसियत) के मुताबिक रहने का मकान दो जहां तुम रहते हो और उन्हें तंग करने के लिए उन्हें तकलीफ न पहुंचाओ, और अगर वे हमल (गर्भ) वालीयां हों तो उन पर खर्च करो यहां तक कि उनका हमल पैदा हो जाए। फिर अगर वे तुम्हारे लिए दूध पिलाएं तो उनकी उजरत (पारिश्रमिक) उन्हें दो। और तुम आपस में एक दूसरे को नेकी सिखाओ। और अगर तुम आपस में जिद करो तो कोई और औरत दूध पिलाएगी। चाहिए कि वुस्अत वाला अपनी वुस्अत के मुताबिक खर्च करे और जिसकी आमदनी कम हो उसे चाहिए कि अल्लाह ने जितना उसे दिया है उसमें से खर्च करे। अल्लाह किसी पर बोझ नहीं डालता मगर उतना ही जितना उसे दिया है, अल्लाह सख्ती के बाद जल्द ही आसानी पैदा कर देता है। (6-7)

इस्लाम में यह मल्बूब है कि आदमी मामलात में फरीके सानी (दूसरे पक्ष) के साथ फराख़दिली का तरीका इख्तियार करे। वह सब्र के साथ ख़िलाफ़े मिजाज बातों को सहे। नागवारियों के बावजूद दूसरे का हक अदा करे। जब आदमी ऐसा करता है तो वह सिर्फ़ फरीके सानी के लिए अच्छा नहीं करता बल्कि वह खुद अपने लिए भी अच्छा करता है। इस तरह वह अपने अंदर हकीकतपसंदी का मिजाज पैदा करता है और हकीकतपसंदी का मिजाज बिलाशुबह इस दुनिया में कामयाबी का सबसे बड़ा जीना है।

وَكَانَ مِنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ ۚ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا

شَدِيدًا ۖ وَعَدْنَا عَدْلًا بَاسْخَرًا ۖ فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ۖ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۖ رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ۝

और बहुत सी बस्तियां हैं जिन्होंने अपने रब और उसके रसूलों के हुक्म से सरताबी (विमुखता) की, पस हमने उनका सज़ा हिसाब किया और हमने उन्हें हौलनाक सजा दी। पस उन्होंने अपने किए का ववाल चखा और उनका अंजामकार ख़सारा (घाटा) हुआ। अल्लाह ने उनके लिए एक सज़ा अजाब तैयार कर रखा है। पस अल्लाह से डरो, ऐ अक्ल वाले जो कि ईमान लाए हो। अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ एक नसीहत उतारी है, एक रसूल जो तुम्हें अल्लाह की खुली-खुली आयतें पढ़कर सुनाता है। ताकि उन लोगों को तारीकियों से रोशनी की तरफ़ निकाले जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया। और जो शख्स अल्लाह पर ईमान लाया और नेक अमल किया उसे वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह ने उसे बहुत अच्छी रोज़ी दी। (8-11)

ताकि अहले ईमान को तारीकी से निकाल कर रोशनी में ले आए। इस मौके पर यह बात आइली (पारिवारिक) कानून के बारे में है। कदीम जमाने में सारी दुनिया में तवह्हुमात (अंधविश्वास) का ग़लबा था। तरह-तरह के तवह्हुमाती अकाइद ने मर्द और औरत के तअल्लुकात को ग़ैर फ़ितरी बुनियादों पर कायम कर रखा था। कुरआन ने इन तवह्हुमातों को ख़त्म किया और दुबारा मर्द और औरत के तअल्लुकात को फ़ितरत की बुनियाद पर कायम किया। इस इत्तिजाम के बाद भी जो लोग इस्लाही रास्ते को इख्तियार न करें उनके लिए खुदा की दुनिया में घाटे के सिवा और कुछ नहीं।

‘अक्ल वाले अल्लाह से डरो’ का फ़िक़रा बताता है कि तक्वे का सरचश्मा (मूल स्रोत) अक्ल है। आदमी अपने अक्ल व शुऊर को काम में लाकर ही उस दर्जे को हासिल करता है जिसे शरीअत में तक्वा (परहेजगारी, ख़ोफ़े खुदा) कहा गया है।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۖ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۝

अल्लाह ही है जिसने बनाए सात आसमान और उन्हीं की तरह जमीन भी। उनके अंदर उसका हुक्म उतरता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है। और अल्लाह ने अपने इल्म से हर चीज का इहाता (आच्छादन) कर रखा है। (12)

‘व मिनल अरजि मिसल हुन्न’ से मुराद अगर सात जमीनें हैं तो इल्मुल अफलाक (आकाशीय विज्ञान) अभी तक इस तादाद को दरयाफ्त नहीं कर सका है। इंसानी मालूमात के मुताबिक, इस तहरीर (लेखन) के वक़्त तक मौजूदा जमीन सारी कायनात में एक इस्तिस्ना (अपवाद) है। इसलिए यह अल्लाह को मालूम है कि इस आयत का वाकई मतलब क्या है।

‘ताकि तुम जानो कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है।’ इससे मालूम होता है अल्लाह को इंसान से अस्लन जो चीज मल्लूब है वह ‘इल्म’ है, यानी जाते खुदावंदी का शुक्र। कायनात का अजीम कारखाना इसलिए बनाया गया है कि इंसान उसके जरिए ख़ालिक को पहचाने, वह उसके जरिए खुदा की बेपायां (असीम) क़ुस्त की मअसलत (अन्तर्ज्ञान) हासिल करे।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ تَبِعْنِي مَرْضَاتِ أَزْوَاجِكَ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۝ قَدْ فُوضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ
الْحَكِيمُ ۝

आयतें-12

सूरह-66. अत-तहरीम

रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ नबी तुम क्यों उस चीज को हराम करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है, अपनी वीवियों की रिजामंदी चाहने के लिए, और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी कसमों का खोलना मुक़र्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज है, और वह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (1-2)

वीवियों के पैदा करदा कुछ अंदरूनी मसाइल की वजह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने घर में यह कसम खा ली कि मैं शहद नहीं खाऊंगा। मगर पैग़म्बर का अमल उसकी उम्मत के लिए नमूना बन जाता है, इसलिए अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि आप शर्इ तरीकेके मुताबिक कफ़्फ़रा (प्रयश्चित) अदा करके अपनी कसम को तोड़ें। और शहद न खाने के अहद से अपने आपको आजाद कर लें। ताकि ऐसा न हो कि आईदा आपके उम्मीती इसे तकवे का मेयार समझ कर शहद खाने से परहेज करने लगें।

وَإِذَا سَأَرَ السَّحَابُ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا بَيَّنَّاتُ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ
عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا بَيَّنَّاهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أُنْبَأُ
هَذَا قَالَ نَبَاؤُنَا الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ۝ إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا
وَإِنْ تَظْهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ
وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝ عَلَى رَبِّهِ إِنْ طَلَفْتُمْ أَنْ تُبَدِّلَهُ أَمْرًا
خَيْرًا مِمَّنْكُمْ مُسْلِمَتٍ مُؤْمِنَتٍ قِنْتٍ تَبُتْ عِمْدٌ سَلْبَةٍ تُبْهِتُ ۝

और जब नबी ने अपनी किसी बीबी से एक बात छुपा कर कही, तो जब उसने उसे बता दिया और अल्लाह ने नबी को उससे आगाह कर दिया तो नबी ने कुछ बात बताई और कुछ टाल दी, फिर जब नबी ने उसे यह बात बताई तो उसने कहा कि आपको किसने इसकी ख़बर दी। नबी ने कहा कि मुझे बताया जानने वाले ने, बाख़बर ने। अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ रुजूअ करो तो तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं, और अगर तुम दोनों नबी के मुखबले में कारख़ायां करोगी तो उसका रफ़ीक (साथी) अल्लाह है और ज़िब्रील और सालेह (नेक) अहले ईमान और इनके अलावा फ़रिश्ते उसके मददगार हैं। अगर नबी तुम सबको तलाक दे दे तो उसका खब तुम्हारे बदले में तुमसे बेहतर बीवियां उसे दे दे, मुस्लिमा, बाईमान, फरमांबरदार, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोजेदार, विधवा और कुंवारी। (3-5)

मज्क़रा मामले में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ अजवाज (पलियों) ने आपके घर में जो पेचीदगी पैदा की थी, उस पर मुतनब्वह करने के लिए आपकी अजवाज से अल्टीमेटम के अंदाज में कलाम किया गया। इससे ज़िंदगी के मामलात में औरतों की अहमियत मालूम होती है। हकीकत यह है कि औरतें अगर सही मअनों में अपने शोहरों की सच्ची (सहयोग) करें तो वे उनका ‘आधा बेहतर’ बन जाती हैं। और अगर वे सच्ची रफ़ीक साबित न हों तो वे एक बामक्सद इंसान के पूरे मंसूबे को ख़ाक में मिला सकती हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْجِبَارَةُ
عَلَيْهَا مَلَكَةٌ غُلَاطٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا
يُؤْمَرُونَ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

ऐ ईमान वालो अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर होंगे, उस पर तुंदखू (कठोर) और जबरदस्त फरिस्ते मुकर्र हैं, अल्लाह उन्हें जो हुक्म दे उसमें वे उसकी नाफरमानी नहीं करते, और वे वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है। ऐ लोगो जिन्होंने इंकार किया, आज उज़्र न पेश करो, तुम वही बदले में पा रहे हो जो तुम करते थे। (6-7)

मौजूदा दुनिया में अक्सर ऐसा होता है कि आदमी एक चीज को हक समझता है। मगर बीबी बच्चों से बढ़ा हुआ तअल्लुक उसे मजबूर करता है कि वह हक के तरीके को छोड़ दे और वही करे जो उसके बीबी-बच्चे चाहते हैं। मगर यह जबरदस्त भूल है। इंसान को याद रखना चाहिए कि आज जिन बच्चों की रिआयत करने में वह इस हद तक जाता है कि हक की रिआयत करना भूल जाता है, वे बच्चे अपनी इस रविश के नतीजे में कल ऐसे जहन्नमी कारिंदों के हवाले किए जाएंगे जो मशीनी इंसान (Robot) की तरह बेरहम होंगे और उनके साथ किसी किस्म की कोई रिआयत नहीं करेंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَنْ تُكْفَرَعَنكُمْ
سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُؤْمَرُونَ لَا يُخْرَى اللَّهُ السَّيِّئَاتِ
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا
آمِنْمَا تَأْمُرُنا وَاعْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

ऐ ईमान वालो, अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो। उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और तुम्हें ऐसे बागों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिस दिन अल्लाह नबी को और उसके साथ ईमान लाने वालों को रुसवा नहीं करेगा। उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाईं तरफ दौड़ रही होगी, वे कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब हमारे लिए हमारी रोशनी को कामिल कर दे और हमारी मफिफत फरमा, बेशक तू हर चीज पर कदिर है। (8)

मौजूदा दुनिया में इंसान को आजमाइशी हालात में रखा गया है। इसलिए इंसान से गलतियां भी होती हैं। उसकी तलाफ़ी के लिए तौबा है। यानी अल्लाह की तरफ रुजूअ करना। तौबा की अस्त हकीकत शर्मिंदगी है। आदमी को अगर वाक़ेयतन अपनी ग़लती का एहसास हो तो वह सख्त शर्मिंदगी होगा और उसकी शर्मिंदगी उसे मजबूर करेगी कि वह आइंदा ऐसा फ़ैअल न करे। चुनांचे हदीस में आया है कि शर्मिंदगी ही तौबा है। एक सहाबी ने कहा है कि सच्ची तौबा यह है कि आदमी रुजूअ करे और फिर उस फ़ैअल को न दोहराए।

तौबा वह है जो सच्ची तौबा (तौबतुन नसूह) हो। महज अल्फ़ाज़ दोहरा देने का नाम

तौबा नहीं। हजरत अली ने एक शख्स को देखा कि वह अपनी किसी ग़लती के बाद जबान से तौबा तौबा कह रहा है। आपने फरमाया कि यह झूठे लोगों की तौबा है। सच्ची तौबा आखिरत की रोशनी है और झूठी तौबा आखिरत का अंधेरा।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتٍ زَوْجَةٍ لَهَا
لُوطٌ ۖ كَانَتْ تَحْتَبِعُ عَبْدًا مِنْ عِبَادِنَا صَالِحِينَ فَكَانَتْ يَغْنِيهَا
عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّٰخِلِينَ ۝

ऐ नबी मुंकिरों और मुनाफिकों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उन पर सख्ती करो, और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा ठिकाना है। अल्लाह मुंकिरों के लिए मिसाल बयान करता है नूह की बीबी की और लूत की बीबी की, दोनों हमारे बंदों में से दो नेक बंदों के निकाह में थीं, फिर उन्होंने उनके साथ खियानत की तो वे दोनों अल्लाह के मुकाबले में उनके कुछ काम न आ सके, और दोनों को कह दिया गया कि आग में दाखिल हो जाओ दाखिल होने वालों के साथ। (9-10)

‘मुनाफिकीन के साथ जिहाद करो’ का मतलब यह है कि मुनाफिकीन का सख्त अहतसाब करो। यह एक दाइमी हुक्म है। मुआशिरों के बड़ों और जिम्मेदारों को चाहिए कि वे मुआशिरों के अफ़ाद पर मुस्तकिल नजर रखें। और जब भी कोई मुसलमान ग़लत रविश इख़्तियार करे तो उसे रोकने की वे हर मुमकिन कोशिश करें जो उनके इम्कान में है। खुदा के यहां आदमी का सिर्फ अपना अमल काम आएगा यहां तक कि बुजुर्गों से निस्वत या सालिहीन से रिश्तेदारी भी वहां किसी के कुछ काम आने वाली नहीं। हजरत नूह और हजरत लूत खुदा के पैग़म्बर थे। मगर उनकी बीवियां दुश्मनाने हक से भी क़ब्बी तअल्लुक का रिश्ता कायम किए हुए थीं। इसका नतीजा यह हुआ कि पैग़म्बर की बीबी होने के बावजूद वे दोषग़ुह की मुतहिक़ वज़ार पाईं।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتٍ فَرَعَوْنَ ۖ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي
عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ ۖ وَنَجِّنِي مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ ۖ وَنَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ
الظَّالِمِينَ ۝ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَدَتْ فَرجَهَا فَكَفَعْنَاهَا مِنْ
زَوْجِنَا ۖ وَصَدَقْتَ بِكِلْمَتِ رَبِّهَا وَكُتِبَ عَلَيْهَا وَكَانَتْ مِنَ الْقَانِتِينَ ۝

और अल्लाह ईमान वालों के लिए मिसाल बयान करता है फिरऔन की बीबी की,

जबकि उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे और मुझे फिरौन और उसके अमल से बचा ले और मुझे जालिम कैम से नजात दे। और इमरान की बेटी मरयम, जिसने अपनी अस्पत (सतीत्व) की हिफाजत की, फिर हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और उसने अपने रब के कलिमात की और उसकी किताबों की तस्दीक की, और वह फरमांबरदारों में से थी। (11-12)

फिरौन एक मुक़िर और जालिम शख्स था। मगर उसकी बीवी आसिया बिनत मुजाहिम ईमानदार और बाअमल ख़ातून थी। बीवी ने जब अपने आपको सही रविश पर कायम रखा तो शोहर की ग़लत रविश उसे कुछ नुक़सान न पहुंचा सकी। शोहर जहन्नम में दाख़िल किया गया और बीवी को जन्नत के बाग़ों में जगह मिली।

अहसनत फरजहा दरअस्त किनाया (संकेत) है। इसका मतलब यह है कि उन्होंने अपनी अस्पत (सतीत्व) को महफूज रखा। बचपन से जवानी तक वह पूरी तरह बेदाग रहीं। चुनांचे अल्लाह ने उन्हें मोजिजाती पैग़म्बर की पैदाइश के लिए चुना। कुछ रिवायात के मुताबिक, जिब्रील फरिश्ते ने उनके गिरेबान में फूंक मारी, जिससे इस्तकारे हमल (गर्भ का ठहरना) हुआ और फिर हजरत मसीह अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

سُوِّءَ الْمُلْكُ بِكَ يَوْمَ تَكُونُ ابْنُ قَوْفٍ يَارْكُوعًا
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ۝ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ۚ مَا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِن تَفَوُّتٍ ۚ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ۚ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। बड़ा बाबरकत है वह जिसके हाथ में बादशाही है और वह हर चीज पर कादिर है। जिसने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया ताकि तुम्हें जांचे कि तुम में से कौन अच्छा काम करता है, और वह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। जिसने बनाए सात आसमान ऊपर तले,

तुम रहमान के बनाने में कोई ख़लल (असंगति) नहीं देखोगे, फिर निगाह डाल कर देख लो, कहीं तुम्हें कोई ख़लल नजर आता है। फिर बार-बार निगाह डाल कर देखो, निगाह नाकाम थक कर तुम्हारी तरफ वापस आ जाएगी। (1-4)

जब एक शख्स मौजूदा दुनिया का मुतालआ करता है तो उसे यहां एक तजाद (असंगति) नजर आता है। इंसान के सिवा जो बकिया कायनात है वह इतिहाई हद तक मुनज़्जम और कामिल है। उसमें कहीं कोई नक्स नजर नहीं आता। इसके बरअक्स इंसानी जिंदगी में जुम व फसाद नजर आता है। इसकी वजह इंसान की अलाहदा (पृथक) नौइयत है। इंसान इस दुनिया में हालते इम्तेहान में है। इम्तेहान लाजिमी तौर पर अमल की आजदी चाहता है। इसी अमल की आजदी ने इंसान को यह मौमन दिया है कि वह दुनिया में जुम व फसाद कर सके।

इंसानी दुनिया का जुम इंसानी आजदी की कीमत है। अगर ये हालात न हों तो उन कीमती इंसानों का इंतख़ाब कैसे किया जाएगा जिन्हें जुम के मौके पाते हुए जुम नहीं किया। जिन्होंने सरकशी की ताकत रखने के बावजूद अपने आपको सरकशी से बचाया।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحٍ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ۝ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ۝ تَكَادُ تَبْكُرُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ۝ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ ۚ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۝ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝ فَاعْرِفُوا بِذُنُوبِهِمْ فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝

और हमने करीब के आसमान को चराग़ों से सजाया है। और हमने उन्हें शैतानों के मारने का जरिया बनाया है। और हमने उनके लिए दोख़ का अजाब तैयार कर रखा है। और जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया, उनके लिए जहन्नम का अजाब है। और वह बुरा ठिकाना है। जब वे उसमें डाले जाएंगे, वे उसका दहाड़ना सुनेंगे और वह जोश मारती होगी, मालूम होगा कि वह गुस्से में फट पड़ेगी। जब उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा, उसके दारोशा उससे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। वे कहेंगे कि हां, हमारे पास डराने वाला आया। फिर हमने उसे झुटला दिया और हमने कहा कि अल्लाह ने कोई चीज नहीं उतारी, तुम लोग बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो। और वे कहेंगे कि अगर हम सुनते या समझते तो हम दोख़ वालों में से न होते। पस वे अपने गुनाह का इकरार करेंगे, पस लानत हो दोख़ वालों पर। (5-11)

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो अपने शौहर के मामले में तुमसे झगड़ती थी और अल्लाह से शिकायत कर रही थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ्तगू सुन रहा था, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (1)

इस्लाम से पहले अरब में रवाज था कि कोई मर्द अगर अपनी बीवी से कह देता कि 'तू मुझ पर ऐसी है जैसे मेरी मां की पीठ' तो वह औरत हमेशा के लिए उस मर्द पर हराम हो जाती। इसे जिहार कहा जाता था। मदीना के एक मुसलमान औस बिन सामित अंसारी ने अपनी बीवी खौला बिनत सालबा को एक बार यही लफ्ज कह दिया। वह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई और वाक्या बताया। आपने कदीम रवाज के एतबार से फरमा दिया कि मैं ख्याल करता हूँ कि तुम उस पर हराम हो गई हो। खौला को परेशानी हुई कि मेरे घर और मेरे बच्चे बर्बाद हो जाएंगे। वह फरयाद व जारी (विलाप) करने लगीं। इस पर ये आयतें उतरीं और बताया गया कि जिहार के बारे में इस्लामी हुक्म क्या है।

الَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْكُمْ مَنْ سَاءَ لَهُمْ فَأَنْتُمْ أَمْهَتُهُمْ إِنَّ أَمْهَتُهُمْ إِلَّا الْإِنْتِ وَلَدُهُمْ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا مِنَ الْقَوْلِ وَرُؤُوسًا وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُوفٌ غَفُورٌ ۚ وَالَّذِينَ يُظْهِرُونَ مِنْ سَاءِ لَهُمْ ثُمَّ يَعُوذُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ مَنْ قَبْلَ أَنْ يَتِمَّ آسَاءُ ذَلِكَ تَوَعَّظُونَ بِهِ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتِمَّ آسَاءُ فَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَاطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ۚ ذَلِكَ لَتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ ۖ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से जिहार (तलाक देने की एक सूत जिसमें शौहर अपनी बीवी से कहता है कि तुम मेरी माँ की पीठ की तरह हो) करते हैं वे उनकी माएं नहीं हैं। उनकी माएं तो वही हैं जिन्होंने उन्हें जना। और ये लोग बेशक एक नामाकूल और झूठ बात कहते हैं, और अल्लाह माफ करने वाला वरक्षने वाला है। और जो लोग अपनी बीवियों से जिहार करें फिर उससे रुजूअ करें जो उन्होंने कहा था तो एक गर्दन को आजाद करना (मुलाम आजाद करना) है, इससे पहले कि वे आपस में हाथ लगाएं। इससे तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। फिर

जो शरू न पाए तो रोजे हैं दो महीने के लगातार, इससे पहले कि आपस में हाथ लगाएं। फिर जो शरू न कर सके तो साठ मिसकीनों को खाना खिलाना है। यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ। और ये अल्लाह की हदें हैं और मुक्ति के लिए दर्दनाक अजाब है। (2-4)

इस्लाम में सूत और हकीकत के दर्मियान फर्क किया गया है। यही वजह है कि इस्लाम ने इस कदीम रवाज को तस्लीम नहीं किया कि जो औरत हकीकी मां न हो वह महज मां का लफ्ज बोल देने से किसी की मां बन जाए। इस किस्म का फेअल एक लफ्ज (निश्क) बात तो जरूर है मगर इसकी वजह से फिअरत के क़वानीन (नियम) बदल नहीं सकते।

क़ुरआन में बताया गया कि महज जिहार से किसी आदमी की बीवी पर तलाक नहीं पड़ेगी। अलबत्ता उस आदमी पर लाजिम किया गया कि वह पहले कफ़मरा (प्रायश्चित्त) अदा करे। इसके बाद वह दुबारा अपनी बीवी के पास जाए। किसी ग़लती के बाद जब आदमी इस तरह कफ़मरा अदा करता है तो वह दुबारा अपने यकीन को जिंदा करता है। वह इस उसूल में अपने अक़ीदे को नए सिरे से मुस्तहक़म (सुदृढ़) बनाता है जिसे वह ग़फलत या नादानी से छोड़ बैठा था।

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كَيْتُوا كَمَا كَيْتَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ۖ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ ۚ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं वे जलील होंगे जिस तरह वे लोग जलील हुए जो इनसे पहले थे और हमने वाजेह (स्पष्ट) आयतें उतार दी हैं, और मुक्ति के लिए जिल्लत का अजाब है। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा और उनके किए हुए काम उन्हें बताएगा। अल्लाह ने उसे गिन रखा है। और वे लोग उसे भूल गए, और अल्लाह के सामने है हर चीज। (5-6)

हक की मुख़ालिफ़त करना खुदा की मुख़ालिफ़त करना है। और खुदा की मुख़ालिफ़त करना उस हस्ती की मुख़ालिफ़त करना है जिससे मुख़ालिफ़त करके आदमी खुद अपना नुकसान करता है। खुदा से आदमी न अपनी किसी चीज को छुपा सकता और न किसी के लिए यह मुमकिन है कि वह खुदा की पकड़ से अपने आपको बचा सके।

الْمُتَرَاتِنَ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَا يَكُونُ مِنْ

تَجْوَى ثَلَاثَ إِلاَهُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةَ إِلاَهُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا آدَنَى
مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلاَهُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا
عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَمَةِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ
نُهُوا عَنِ التَّجْوَى ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ
وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ ۖ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحْيِكَ بِهِ اللَّهُ ۖ وَ
يَقُولُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ ۚ حَسْبُكُمْ جَهَنَّمُ
يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

तुमने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। कोई सरगोशी (गुप्त वाती) तीन आदमियों की नहीं होती जिसमें चौथा अल्लाह न हो। और न पांच की होती है जिसमें छठा वह न हो। और न इससे कम की या ज्यादा की। मगर वह उनके साथ होता है जहां भी वे हों, फिर वह उन्हें उनके किए से आगाह करेगा कियामत के दिन। बेशक अल्लाह हर बात का इल्म रखने वाला है। क्या तुमने नहीं देखा जिन्हें सरगोशियों से रोका गया था, फिर भी वे वही कर रहे हैं जिससे वे रोके गए थे। और वे गुनाह और ज्यादाती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशियां करते हैं, और जब वे तुम्हारे पास आते हैं तो तुम्हें ऐसे तरीके से सलाम करते हैं जिससे अल्लाह ने तुम्हें सलाम नहीं किया। और अपने दिलों में कहते हैं कि हमारी इन बातों पर अल्लाह हमें अजाब क्यों नहीं देता। उनके लिए जहन्नम ही काफी है, वे उसमें पड़ेंगे, पस वह बुरा ठिकाना है। (7-8)

कायनात अपने इतिहाई पेचीदा निजाम के साथ यह गवाही दे रही है कि वह हर आन किसी बालातर (उच्चतर) ताकत की निगरानी में है। कायनात में निगरानी की शहादत यह साबित करती है कि इंसान भी मुसलसल तौर पर अपने खालिक की निगरानी में है। ऐसी हालत में हक के खिलाफ खुफिया सरगमियां दिखाना सिर्फ ऐसे अंधे लोगों का काम हो सकता है जो खुदा की सिफतों को न बराह्यास्त (प्रत्यक्ष) तौर पर मल्फूज (शाब्दिक) कुरआन में पढ़ सकें और न बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर और मल्फूज कायनात में।

कुछ यहूद और मुनाफिकीन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सोहबत में आते तो वे अस्सलामु अलैकुम (आप पर सलामती हो) कहने के बजाए अस्सामु अलैकुम (आप पर मौत आए) कहते। यह हमेशा से सतही (निम्न स्तरीय) इंसानों का तरीका रहा है।

सतही लोग एक सच्चे इंसान को बेकदर करके अपने जेहन में खुश होते हैं। वे भूल जाते हैं कि सारी फैली हुई खुदाई ऐन उस वक्त भी उस सच्चे इंसान का एतराफ कर रही होती है जबकि अपने महदूद जेहन के मुताबिक वे उसकी तहकीर (अनादर) व तरदीद के लिए अपना आखिरी लफज इस्तेमाल कर चुके हों।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَى ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝ إِنَّمَا التَّجْوَى مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

ऐ ईमान वालो जब तुम सरगोशी (गुप्त वाती) करो तो गुनाह और ज्यादाती और रसूल की नाफरमानी की सरगोशी न करो। और तुम नेकी और परहेजगारी की सरगोशी करो। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम जमा किए जाओगे। यह सरगोशी शैतान की तरफ से है ताकि वह ईमान वालों को रंज पहुंचाए, और वह उन्हें कुछ भी रंज नहीं पहुंचा सकता मगर अल्लाह के हुक्म से। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (9-10)

खुफिया सरगोशियां करना आम हालात में एक नापसंदीदा फेअल (कृत्य) है। ताहम कभी कारेखैर के लिए भी खुफिया सरगोशी की जरूरत होती है। इस सिलसिले में अस्ल फैसलाकुन चीज नियत है। खुफिया सरगोशी अगर अच्छी नियत से की जाए तो जाइज है और अगर वह बुरी नियत से की जाए तो नाजाइज।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ ۚ وَإِذَا قِيلَ انشُرُوا فَانْشُرُوا ۚ يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

ऐ ईमान वालो जब तुम्हें कहा जाए कि मजलिसों में खुलकर बैठो तो तुम खुलकर बैठो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी (खुलापन) देगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो तुम उठ जाओ। तुम में से जो लोग ईमान वाले हैं और जिन्हें इल्म दिया गया है, अल्लाह उनके दर्जे बुलन्द करेगा। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (11)

मजलिस के आदाब के तहत कभी ऐसा होता है कि एक शख्स को पीछे करके दूसरे शख्स को आगे बिठाया जाता है। इसी तरह कभी ऐसा होता है कि लोगों को उम्मीद के खिलाफ

कह दिया जाता है कि अब आप लोग तशरीफ ले जाएं। ऐसी बातों को इज्जत का सवाल बनाना शुऊरी पस्ती का सबूत है। और जो शख्स इन बातों को इज्जत का सवाल न बनाए उसने यह सबूत दिया कि शुऊरी एतबार से वह बुलन्द दर्जे को पहुंचा हुआ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَجَّيْتُمُ الرَّسُولَ فَقَدِ مُوَابِّينَ يَدَيَّ نَجْوَاكُمْ
صَدَقَةٌ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ۝ أَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوا بَيْنَ يَدَيَّ نَجْوَاكُمْ صَدَقْتُ فَأَذِلُّ لَمْ تَفْعَلُوا
وَتَأْتِي اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا اللَّهَ وَ
رَسُولَهُ ۝ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

ऐ ईमान वाले, जब तुम रसूल से राजदाराना बात करो तो अपनी राजदाराना बात से पहले कुछ सदका दो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है और ज्यादा पाकीज है। फिर अगर तुम न पाओ तो अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। क्या तुम डर गए इस बात से कि तुम अपनी राजदाराना गुफ्तगू से पहले सदका दो। पस अगर तुम ऐसा न करो, और अल्लाह ने तुम्हें माफ कर दिया, तो तुम नमाज कयम करो और जक़ात अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) करो। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है। (12-13)

अल्लाह तआला को यह मल्लूब था कि रसूल से सिर्फ वही लोग मिलें जो फिलवाकअ संजीदा मक्सद के तहत आपसे मिलना चाहते हैं। ग़ैर जरूरी किस्म के लोग छंट दिए जाएं जो अपनी बेमयदा बातों से सिर्फ वक्त जाया करने का सबब बनते हैं। इसलिए यह उसूल मुकरर किया गया कि जब रसूल से मिलने का इरादा करो तो पहले अल्लाह के नाम पर कुछ सदका करो। और अगर इसकी कुदरत न हो तो कोई दूसरी नेकी करो।

यह हुस्म अगरचे अस्तन रसूल के लिए मल्लूब था। मगर रसूल के बाद भी उम्मत के रहनुमाओं के हक में वह हालात के एतबार से दर्जा-ब-दर्जा मल्लूब होगा।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مَا هُمُ مِنْكُمْ وَلَا
مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكُذْبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ۝ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا
إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ فَأَهُمْ عَدَأُ بِ مُهَيِّنٌ ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह का ज़ब्र हुआ। वे न तुम में से हैं और न उनमें से हैं और वे झूठी बात पर कसम खाते हैं हालांकि वे जानते हैं। अल्लाह ने उन लोगों के लिए सख्त अजाब तैयार कर रखा है, बेशक वे बुरे काम हैं जो वे करते हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, पस उनके लिए जिल्लत का अजाब है। (14-16)

मदीना के मुनाफिकीन इस्लाम की जमाअत में शामिल थे। इसी के साथ वे यहूद से भी मिले हुए थे। यही हमेशा उन लोगों का हाल होता है जो हक को पूरी यकसूई (एकाग्रता) के साथ इख्तियार न कर सकें। ऐसे लोग बजाहिर सबसे मिले हुए होते हैं मगर हकीकतन वे सिर्फ अपने मफ़द (स्वार्थ) के वफ़ादार होते हैं। चाहे वे कसमें खाकर अपने हक़परस्त होने का यकीन दिला रहे हों।

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ كَمَا
يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝
اسْتَعِذْ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ أَلَا
إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝ إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ۝ كَتَبَ اللَّهُ لَأَعْلَبَنَ آكَارُ رَسُولِي ۝ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ
عَزِيزٌ ۝

उनके माल और उनकी औलाद उन्हें जरा भी अल्लाह से बचा न सकेंगे। ये लोग दोज़ख वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा तो वे उससे भी इसी तरह कसम खाएंगे जिस तरह तुमसे कसम खाते हैं। और वे समझते हैं कि वे किसी चीज पर हैं, सुन लो कि यही लोग झूठे हैं। शैतान ने उन पर काबू हासिल कर लिया है। फिर उसने उन्हें खुदा की याद भुला दी है। ये लोग शैतान का गिरोह हैं। सुन लो कि शैतान का गिरोह जरूर बर्बाद होने वाला है। जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त (विरोध) करते हैं वही जलील लोगों में हैं। अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे रसूल ही ग़ालिब रहेंगे। बेशक अल्लाह कुव्वत वाला, जबरदस्त है। (17-21)

मफादपरस्त आदमी जब हक की दावत की मुखालिफ्त करता है तो वह समझता है कि इस तरह वह अपने आपको महफूज कर रहा है। मगर उस वक्त वह दहशतजदा हेकर रह जाएगा जब आखिरत में वह देखेगा कि जिन चीजों पर उसने भरोसा कर रखा था वे फैसले के उस वक्त में उसके कुछ काम आने वाली नहीं।

मुनाफिक (पाखंडी) आदमी अपने मेकिफ को सही साबित करने के लिए बड़बड़कर बातें करता है। यहां तक कि वह कसमें खाकर अपने इक्लास (निष्ठा) का यकीन दिलाता है। ये सब करके वह समझता है कि 'वह किसी चीज पर है।' उसने अपने हक में कोई वाकई बुनियाद फ्राहम कर ली है। मगर कियामत का धमाका जब हकीकतों को खेलेगा उस वक्त वह जान लेगा कि यह महज शैतान के सिखाए हुए झूठे अल्फाज थे जिन्हें वह अपने बेकसूर होने का यकीनी सुवृत समझता रहा।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ أُولَئِكَ كَتَبَ
فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ مِّنْهُ وَيُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ أُولَئِكَ
حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٢٨﴾

तुम ऐसी कौम नहीं पा सकते जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखती हो और वह ऐसे लोगों से दोस्ती रखे जो अल्लाह और उसके रसूल के मुखालिफ हैं। अगरचे वे उनके बाप या उनके बेटे या उनके भाई या उनके खानदान वाले क्यों न हों। यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है और उन्हें अपने फैज से कुव्वत दी है। और वह उन्हें ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनके राजी हुआ और वे अल्लाह से राजी हुए। यही लोग अल्लाह का गिरोह हैं और अल्लाह का गिरोह ही फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाला है। (22)

इस दुनिया में कामयाबी हिज्बुल्लाह के लिए है। हिज्बुल्लाह (अल्लाह की जमाअत) कौन लोग हैं। ये वे लोग हैं जिनके दिलों में ईमान सबसे बड़ी हकीकत के तौर पर रासिख (घनीभूत) हो गया हो। जिन्हें अल्लाह से इतनी गहरी निस्वत हासिल हो कि उन्हें अल्लाह की तरफ से रूहानी फैज पहुंचने लगे। फिर यह कि खुदाई हकीकतों से उनकी वाकस्गी इतनी गहरी हो कि उसी की बुनियाद पर उनकी दोस्तियां और दुश्मनियां कायम हों। वे सबसे ज्यादा उन लोगों से करीब हों जो खुदाई सदाकत (सच्चाई) को अपनाए हुए हैं। और जो लोग खुदाई सदाकत से दूर

हैं वे भी उनसे दूर हो जाएं, चाहे वे उनके अपने अजीज और रिश्तेदार क्यों न हों।

سُوْرَةُ الْحٰثِرَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ اَرْبَعٌ وَعِشْرُوْنَ اٰيَةً وَكُلُّهَا مُنْقَلَبٌ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
سَمِعَ اللّٰهُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ
اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مَا
ظَنُّوْا اَنْ يُخْرَجُوْا وَظَنُّوْا اَنْهُمْ مَّا بَعَثْتُمْهُمْ حُصُوْدُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتَتْهُمْ
اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِى قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُجْرِبُوْنَ
بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِى الْمُؤْمِنِيْنَ فَاعْتَبِرُوْا يٰ اُولِى الْاَبْصٰرِ ﴿١﴾

आयतें-24

सूरह-59. अल-हथ्र

रुकूअ-3

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महारवान, निहायत रहम वाला है। अल्लाह की पाकी बयान करती हैं सब चीजें जो आसमानों और जमीन में हैं, और वह जबरदस्त है, हिकमत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने अहले किताब मुंकिरों को उनके घरों से पहली ही बार इकट्ठा करके निकाल दिया। तुम्हारा गुमान न था कि वे निकलेंगे और वे ख्याल करते थे कि उनके किले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, फिर अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां से उन्हें ख्याल भी न था। और उनके दिलों में रौब डाल दिया, वे अपने घरों को खुद अपने हाथों से उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों से भी। पस ऐ आंख वालो, इबरत (सीख) हासिल करो। (1-2)

मदीना के मशरिक में यहूदी कबीला बनू नजीर की आबादी थी। उनके और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दर्मियान सुलह का मुआहिदा था। मगर उन्होंने बार-बार अहदशिकनी की। आखिरकार 4 हि० में अल्लाह तआला ने ऐसे हालात पैदा किए कि मुसलमानों ने उन्हें मदीना से निकलने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद वे खैबर और अजरआत में जाकर आबाद हो गए। मगर उनकी साजिशों सरगर्मियां जारी रहीं। यहां तक कि हज्रत उमर फारूक की खिलाफत की जमाने में वे और यूरे यहूदी कबाइल जजरा अबस से निकलने पर मजबूर कर दिए गए। इसके बाद वे लोग शाम में जाकर आबाद हो गए।

‘अल्लाह उन पर वहां से पहुंचा जहां उन्हें गुमान भी न था’ की तशरीह अगले फिकरे में मौजूद है। यानी अल्लाह ने उनके दिलों में रौब डाल दिया। उन्होंने बेरूनी (वाय्ठ) तौर पर हर किस्म की तैयारियां कीं। मगर जब मुसलमानों की फौज ने उनकी आबादी को घेर लिया

तो सारी ताकत के बावजूद उन पर ऐसी दहशत तारी हुई कि उन्होंने लड़ने का हौसला खो दिया। और बिला मुकाबले हथियार डाल दिया।

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبْنَا فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي
الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۚ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَنْ يُشَاقِّ
اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ① مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لَيْنَةٍ أَوْ تَرَكْتُمْوهَا
قَائِمَةً عَلَى أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ②

और अगर अल्लाह ने उन पर जलावतनी (देश-निकाला) न लिख दी होती तो वह दुनिया ही में उन्हें अजाब देता, और आखिरत में उनके लिए आग का अजाब है। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुखालिफ़त की। और जो शख्स अल्लाह की मुखालिफ़त करता है तो अल्लाह सख्त अजाब वाला है। खजूरों के जो दरख्त तुमने काट डाले या उन्हें उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो यह अल्लाह के हुक्म से, और ताकि वह नाफरमानों को रुसवा करे। (3-5)

यहूद को जो सजा दी गई, वह अल्लाह के क़ानून के तहत थी। यह सजा उन लोगों के लिए मुक़द्दर है जो पैग़म्बर के मुखालिफ़ बनकर खड़े हों। वनू नजीर के मुहासिर (धराव) के वक्त उनके बागात के कुछ दरख्त जंगी मस्तेहत के तहत काटे गए थे। यह भी बराहेरास्त खुदा के हुक्म से हुआ। ताहम यह कोई आम उसूल नहीं। यह एक इस्तिस्नाई (अपवाद स्वरूप) मामला है जो पैग़म्बर के बराहेरास्त मुखातबीन के साथ एक या दूसरी शकल में इख्तियार किया जाता है।

وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا
رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①
مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَى فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي
الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ۚ كُنْ لَا يَكُونَ دُولَةً
بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ
فَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ② لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ
الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالُهُمْ يُبْتَغُونَ فَرْضًا مِنَ اللَّهِ وَ
رِضْوَانًا وَيَنْصَرُّونَ إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّدِيقُونَ ③

और अल्लाह ने उनसे जो कुछ अपने रसूल की तरफ लौटाया तो तुमने उस पर न थोड़े दौड़ाए और न ऊंट और लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है तसल्लुत (प्रभुत्व) दे देता है। और अल्लाह हर चीज पर कादिर है। जो कुछ अल्लाह अपने रसूल को बस्तियों वालों की तरफ से लौटाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल के लिए है और रिश्तेदारों और यतीमों (अनाथों) और मिस्कीनों (असहाय जनों) और मुसाफिरों के लिए है। ताकि वह तुम्हारे मालदारों ही के दर्मियान गर्दिश न करता रहे। और रसूल तुम्हें जो कुछ दे वह ले लो और वह जिस चीज से तुम्हें रोके उससे रुक जाओ और अल्लाह से डरो, अल्लाह सख्त सजा देने वाला है। उन मुफ़िलस मुहाजिरों के लिए जो अपने घरों और अपने मालों से निकाले गए हैं। वे अल्लाह का फल और रिज़ामंदी चाहते हैं। और वे अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं, यही लोग सच्चे हैं। (6-8)

दुश्मन का जो माल लड़ाई के बाद मिले वह ग़नीमत है और जो माल लड़ाई के बग़ैर हाथ लगे वह फई है। ग़नीमत में पांचवां हिस्सा निकालने के बाद बकिया सब लश्कर का है। और फई सबका सब इस्लामी हुक्मत की मिल्कियत है जो मसालेहे आम्मा (जन-हित) के लिए खर्च किया जाएगा।

इस्लाम चाहता है कि माल किसी एक तबके में महदूद होकर न रह जाए। बल्कि वह हर तबके के दर्मियान पहुंचे। इस्लाम में मआशी (आर्थिक) जन्न नहीं है। ताहम उसके मआशी क़वानीन इस तरह बनाए गए हैं कि दौलत मुस्तकिज (केंद्रित) न होने पाए। वह हर तबके के लोगों में गर्दिश करती रहे।

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ
وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوقِ شَعْنَهُ نَفْسُهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ①
وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا
الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا
إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ②

और जो लोग पहले से दार (मदीना) में करार पकड़े हुए हैं और ईमान अस्तवार किए हुए हैं, जो उनके पास हिजरत करके आता है उससे वे मुहब्बत करते हैं और वे अपने दिलों में उससे तंगी नहीं पाते जो मुहाजिरीन को दिया जाता है। और वे उन्हें अपने ऊपर मुक़द्दम रखते हैं। अगरचे उनके ऊपर फ़ाक्का हो। और जो शख्स अपने जी के

लालच से बचा लिया गया तो वही लोग फलाह पाने वाले हैं। और जो उनके बाद आए वे कहते हैं कि ऐ हमारे रब, हमें बख्श दे और हमारे उन भाइयों को जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं। और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए कीना (द्वेष) न रख, ऐ हमारे रब, तू बड़ा शफ़ीक (कृणामय) और महरबान है। (9-10)

हिजरत के बाद जो मुसलमान अपना वतन छोड़कर मदीना पहुंचे, उनका मदीना आना मदीने के बाशिंदों (अंसार) पर एक बोझ था। मगर उन्होंने निहायत खुशदिली के साथ उनका इस्तकबाल किया। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जब अमवाल (धन-सम्पत्ति) आए तो आपने उनका हिस्सा मुहाजिरीन के दर्मियान तकसीम किया। इस पर भी अंसारे मदीना के अंदर उनके लिए कोई रंजिश पैदा न हुई। इसके बाद भी वे उनके इतने कद्रदान रहे कि उनके हक में उनके दिल से बेहतरीन दुआएं निकलती रहीं। यही वह आली हौसलगी है जो किसी गिरोह को तारीख़साज (इतिहास-निर्माता) गिरोह बनाती है।

الْمُتَرَكِّ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَیْنُ أَخْرَجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِیْكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۖ لَیْنُ أَخْرَجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَیْنُ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ ۖ وَلَیْنُ نَصُرُوهُمْ لَیُولُنَّ الْأَوَّلُونَ ۚ لَنَبْذُرَنَّكُمْ لَیَنْصُرُونَ ۚ

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो निफ़ाक (पाखंड) में मुत्तिला हैं। वे अपने भाइयों से कहते हैं जिन्होंने अहले किताब में से कुफ़ किया है, अगर तुम निकाले गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जाएंगे। और तुम्हारे मामले में हम किसी की बात न मानेंगे। और अगर तुमसे लड़ाई हुई तो हम तुम्हारी मदद करेंगे। और अल्लाह गवाही देता है कि वे झूठे हैं। अगर वे निकाले गए तो ये उनके साथ नहीं निकलेंगे। और अगर उनसे लड़ाई हुई तो ये उनकी मदद नहीं करेंगे। और अगर उनकी मदद करेंगे तो जरूर वे पीठ फेरकर भागेंगे, फिर वे कहीं मदद न पाएंगे। (11-12)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू नजीर की जलावतनी (देश निकाला) का एलान किया तो मुनाफ़िक्कीन उनकी हिमायत पर आ गए। उन्होंने बनू नजीर से कहा कि तुम अपनी जगह जमे रहो, हम हर तरह तुम्हारी मदद करेंगे। मगर मुनाफ़िक्कीन की ये बातें महज उन्हें मुसलमानों के खिलाफ उकसाने के लिए थीं। वे इस पेशकश में हरगिज मुख़लिस न थे। चुनांचे जब मुसलमानों ने बनू नजीर को घेर लिया तो मुनाफ़िक्कीन में से कोई भी उनकी मदद पर न आया। मफ़ादपरस्त (स्वार्थी) गिरोह का हर जमाने में यही किरदार रहा है।

لَا أَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً ۖ فِی صُدُورِهِمْ مِّنَ اللَّهِ ۚ ذَٰلِك بِأَنَّكُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ۖ لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِی قُوًى مُّحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ ۚ تَحْسَبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ۚ ذَٰلِك بِأَنَّكُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۚ

बेशक तुम लोगों का डर उनके दिलों में अल्लाह से ज्यादा है, यह इसलिए कि वे लोग समझ नहीं रखते। ये लोग सब मिलकर तुमसे कभी नहीं लड़ेंगे। मगर हिफ़ाजत वाली बस्तियों में या दीवारों की आड़ में। उनकी लड़ाई आपस में सज़त है। तुम उन्हें मुत्तहिद (एकजुट) ख्याल करते हो और उनके दिल जुदा-जुदा हो रहे हैं, यह इसलिए कि वे लोग अक्ल नहीं रखते। (13-14)

खुदा की ताकत बजाहिर दिखाई नहीं देती। मगर इंसानों की ताकत खुली आंख से नजर आती है। इस बिना पर जाहिरपरस्त लोगों का हाल यह होता है कि वे अल्लाह से तो बेख़ौफ रहते हैं मगर इंसानों में अगर कोई जोरआवर दिखाई दे तो वे फ़ौरन उससे डरने की ज़रूरत महसूस करने लगते हैं। खुदा के बारे में उनकी बेशुक्करी उन्हें उनकी दुनिया के बारे में भी बेशुक्करी बना देती है।

ऐसे लोग जिन्हें सिर्फ मंफ़ी (नकारात्मक) मक़सद ने मुत्तहिद किया हो वे ज्यादा देर तक अपना इत्तिहाद बाकी नहीं रख पाते। क्योंकि देरपा इत्तिहाद के लिए मुस्बत (सकारात्मक) बुनियाद दरकार है और वह उनके पास मौजूद ही नहीं।

كَمْثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ كَمْثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ ۖ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِحْتُ وَإِنَّكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ۖ فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا أَنَّهُمَا فِی النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاُ الظَّالِمِينَ ۚ

ये उन लोगों की मानिंद हैं जो उनके कुछ ही पहले अपने किए का मजा चख चुके हैं, और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। जैसे शैतान जो इंसान से कहता है कि मुंकिर हो जा, फिर जब वह मुंकिर हो जाता है तो वह कहता है कि मैं तुमसे बरी हूं। मैं अल्लाह से डरता हूं जो सारे जहान का रब है। फिर अंजाम दोनों का यह हुआ कि दोनों दोजख़ में गए जहां वे हमेशा रहेंगे, और जालिमों की सजा यही है। (15-17)

मदीना के मुनाफिकीन बन् नजीर को मुसलमानों के खिलाफ उभार रहे थे। उन्होंने उस वाक्य से सबक नहीं लिया कि जल्द ही पहले क़ैस और कबीला बन् क़ुमय अ उनके खिलाफ उठे। मगर उन्हें जबरदस्त शिकस्त हुई। जो लोग शैतान को अपना मुशीर (सलाहकार) बनाएं उनका हाल हमेशा यही होता है। वे वाक़ेयात से नसीहत नहीं लेते। पहले वे जोश व ख़रोश के साथ लोगों को मुजरिमाना अफ़आल पर उभारते हैं। फिर जब उसका भयानक अंजाम सामने आता है तो वे तरह-तरह के अल्फ़ाज बोलकर यह चाहते हैं कि उसकी जिम्मेदारी से अपने आपको बरी कर लें। मगर इस किस्म की कोशिशें ऐसे लोगों को अल्लाह की पकड़ से बचाने वाली साबित नहीं हो सकती।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝ وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝ لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो, और हर शख्स देखे कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह वाख़बर है जो तुम करते हो। और तुम उन लोगों की तरह न बन जाओ जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने उन्हें खुद उनकी जानों से ग़ाफ़िल कर दिया, यही लोग नाफ़रमान हैं। दोख़ वाले और जन्नत वाले बराबर नहीं हो सकते। जन्नत वाले ही अस्ल में कामयाब हैं। (18-20)

इंसानी ज़िंदगी को 'आज' और 'कल' के दरमियान तक्सीम किया गया है। मौजूदा दुनिया इंसान का आज है और आख़िरत की दुनिया उसका कल है। इंसान मौजूदा दुनिया में जो कुछ करेगा उसका लाजिमी अंजाम उसे आने वाली तबीलतर (दीर्घतर) ज़िंदगी में भुगतना पड़ेगा।

यही अस्ल हकीकत है और इसी हकीकत का दूसरा नाम इस्लाम है। इंसान की कामयाबी इसमें है कि वह इस हकीकते वाक़ई को ज़हन में रखे। जो शख्स इस हकीकते वाक़ई से ग़ाफ़िल हो जाए उसकी पूरी ज़िंदगी ग़लत होकर रह जाएगी। इस मामले में मुसलमान और ग़ैर मुसलमान का कोई फ़र्क़ नहीं। मुसलमानों को इसका फ़ायदा उसी वक़्त मिलेगा जबकि वाक़येतन वे उस पर कायम हों। मुसलमान अगर ग़फ़लत में पड़ जाएं तो उनका अंजाम भी वही होगा जो इससे पहले ग़फ़लत में पड़ने वाले यहूद का हुआ।

لَوْ أَنْزَلْنَا هَٰذَا الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْنَاَهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلِيمُ الْغُيُوبِ ۖ وَالشَّهَادَةُ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ أَمْلِكُ الْقُدُوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ سُبْحَنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

अगर हम इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि वह खुदा के ख़ौफ़ से दब जाता और फट जाता, और ये मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वे सोचें। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, पोशीदा और जाहिर को जानने वाला, वह बड़ा महरबान है। निहायत रहम वाला है। वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। बादशाह, सब ऐबों से पाक, सरासर सलामती, अमन देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, जोरआवर, अज्मत वाला, अल्लाह उस शिर्क से पाक है जो लोग कर रहे हैं। वही अल्लाह है पैदा करने वाला, वुजूद में लाने वाला, सूरतगरी (संरचना) करने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम। हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है उसकी तस्वीह कर रही है, और वह जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (21-24)

क़ुरआन इस अजीम हकीकत का एलान है कि इंसान आज्ञा नहीं है बल्कि उसे अपने तमाम आमाल की जवाबदेही अल्लाह के सामने करनी है जो इतिहाई ताकतवर है। और हर एक के आमाल को बजातेखुद पूरी तरह देख रहा है। यह ख़बर इतनी संगीन है कि पहाड़ तक को लरज़ा देने के लिए काफी है। मगर इंसान इतना ग़ाफ़िल और बेहिस है कि वह इस हौलनाक ख़बर को सुनकर भी नहीं तड़पता।

अल्लाह के नाम जो यहां बयान किए गए हैं वे एक तरफ़ अल्लाह की जात का तआरुफ़ (परिचय) हैं। दूसरी तरफ़ वे बताते हैं कि वह हस्ती कैसी अजीम हस्ती है जो इंसानों की ख़ालिक है और उनके ऊपर उनकी निगरानी कर रही है। अगर आदमी को वाक़येतन इसका एहसास हो जाए तो वह अल्लाह की हम्द व तस्वीह में सरापा शर्क़ हो जाएगा।

कायनात अपनी तख़्वीकी मअनवियत की सूरत में खुदा की सिफ़ात का आइना है। वह खुद हम्द व तस्वीह में मसरूफ़ होकर इंसान को भी हम्द व तस्वीह का सबक देती है।

سُورَةُ الْمُؤْتَمِرَاتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ ثَلَاثُ عَشْرَةَ آيَةً وَفِيهَا زَكَاةٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمْ
بِالْمُؤَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ
أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي وَ
ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي تُسْرِئُونَ إِلَيْهِمْ بِالْمُؤَدَّةِ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ
وَمَا أَعْلَنْتُمْ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ۝ إِنْ
يَشْكُفُّكُمْ يَكُونُوا لَكُمْ أَعْدَاءً وَيَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَسْتَتْهِمُ بِالسُّوءِ
وَوَدُّوا أَنْ تُكْفَرُوا ۝ لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُهُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۝
يَقْضِ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

مع
عَدُوِّكُمْ

आयतें-13

सूरह-60. अल-मुमतहिन्ह

रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है।

ऐ ईमान वाले, तुम मेरे दुश्मनों और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उनसे दोस्ती का इच्चार करते हो हालांकि उन्होंने उस हक (सत्य) का इंकार किया जो तुम्हारे पास आया, वे रसूल को और तुम्हें इस वजह से जलावतन (निर्वासित) करते हैं कि तुम अपने रब, अल्लाह पर ईमान लाए। अगर तुम मेरी राह में जिहाद और मेरी रिजामंदी की तलब के लिए निकले हो, तुम छुपाकर उन्हें दोस्ती का पैगाम भेजते हो। और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम छुपाते हो। और जो कुछ तुम जाहिर करते हो। और जो शख्स तुम में से ऐसा करेगा वह राहेरास्त से भटक गया। अगर वे तुम पर काबू पा जाएं तो वे तुम्हारे दुश्मन बन जाएंगे। और अपने हाथ और अपनी जवान से तुम्हें आजार (पीड़ा) पहुंचाएंगे। और चाहेंगे कि तुम भी किसी तरह मुंकिर हो जाओ। तुम्हारे रिश्तेदार और तुम्हारी औलाद कियामत के दिन तुम्हारे काम न आएंगे, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला करेगा, और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। (1-3)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मक्का की तरफ इक्दाम करने

का फैसला किया तो आपने उसका पूरा मंसूबा निहायत खामोशी के साथ बनाया ताकि मक्का वाले मुकाबले की तैयारी न कर सकें। उस वक्त एक बंदी सहाबी हातिब बिन अबी बलतआ ने इस मंसूबे को एक खत में लिखा और उसे खुफिया तौर पर मक्का वालों के नाम रवाना कर दिया। ताकि मक्का वाले उनसे खुश हो जाएं और उनके अहल व अयाल (परिवारजनों) को न सताएं जो मक्का में मुकीम हैं। मगर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के जरिए इसकी इत्तिला हो गई और कासिद को रास्ते ही में पकड़ लिया गया। इस किस्म का हर फेअल ईमानी तमकेफेअल है।

जब यह सूरतेहाल हो कि इस्लाम और गैर इस्लाम के अलग-अलग महाज बन जाएं तो उस वक्त अहले इस्लाम की जिम्मेदारी होती है कि वे गैर इस्लामी महाज से दिलचस्पी का तअल्लुक तोड़ लें। चाहे गैर इस्लामी महाज में उनके अजीज और रिश्तेदार ही क्यों न हों। हक को मानना और हक का इंकार करने वालों से कब्बी तअल्लुक रखना दो मुतजब (परस्पर विरोधी) चीजें हैं जो एक साथ जमा नहीं हो सकतीं।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَّاءُ مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَحَدَّثَهُ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ۝ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْفُ رَحْمَةً رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ
الرَّآخِرَ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوْدَّةً وَاللَّهُ قَدِيرٌ ۝ وَاللَّهُ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۝

तुम्हारे लिए इब्राहीम और उसके साथियों में अच्छा नमूना है, जबकि उन्होंने अपनी कौम से कहा कि हम अलग हैं तुमसे और उन चीजों से जिनकी तुम अल्लाह के सिवा इबादत करते हो, हम तुम्हारे मुंकिर हैं और हमारे और तुम्हारे दर्मियान हमेशा के लिए अदावत (वैर) और बेजारी (दुराव) जाहिर हो गई यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाओ। मगर इब्राहीम का अपने बाप से यह कहना कि मैं आपके लिए माफी मांगूंगा, और मैं आपके लिए अल्लाह के आगे किसी बात का इत्तिहार नहीं रखता। ऐ हमारे

रब, हमने तेरे ऊपर भरोसा किया और हम तेरी तरफ रुजूअ हुए और तेरी ही तरफ लौटना है। ऐ हमारे रब, हमें मुंकिरों के लिए फितना न बना, और ऐ हमारे रब, हमें बख्श दे, वेशक तू जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। वेशक तुम्हारे लिए उनके अंदर अच्छा नमूना है, उस शख्स के लिए जो अल्लाह का और आखिरत के दिन का उम्मीदवार हो। और जो शख्स रुगर्दानी (अवहेलना) करेगा तो अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफों वाला है। उम्मीद है कि अल्लाह तुम्हारे और उन लोगों के दर्मियान दोस्ती पैदा कर दे जिनसे तुमने दुश्मनी की। और अल्लाह सब कुछ कर सकता है, और अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। (4-7)

हजरत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इब्तिदा में खैरखाहाना अंदाज में अपने खानदान को तौहीद का पैगाम दिया। जब इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद वे लोग मुंकिर बने रहे तो आप उनसे बिल्कुल जुदा हो गए। मगर यह बड़ा सख्त मरहला था। क्योंकि एलाने बरा-त (विरक्ति) का मतलब मुंकिरीने हक को यह दावत देना था कि वे हर मुमकिन तरीके से अहले ईमान को सताएं। दलील के मैदान में शिकस्त खाने के बाद ताकत के मैदान में अहले ईमान को जलील करें। यही वजह है कि इसके बाद हजरत इब्राहीम ने जो दुआ कि उसमें ख़ास तौर से फरमाया कि ऐ हमारे रब हमें इन जालिमों के जुम का तख़ाए मश्क (निशाना) न बना।

अजीजों और रिश्तेदारों से एलाने बरा-त आम मजनों में एलाने अदावत नहीं है। यह दाजी की तरफ से अपने यकीन का आखिरी इज्हार है। इस एतबार से उसमें भी एक दावती क़ (Value) शामिल हो जाती है। चुनांचे कभी ऐसा होता है कि जो शख्स 'पैगाम' की जबान से मुतअस्सिर नहीं हुआ था 'यकीन' की जबान उसे जीतने में कामयाब हो जाती है।

لَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ يُقَاتِلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ وَتُقْسِطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ إِنَّمَا يَنْهَكُمُ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلُوكُمْ فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَاهَرُوا عَلَىٰ إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

अल्लाह तुम्हें उन लोगों से नहीं रोकता जिन्होंने दीन के मामले में तुमसे जंग नहीं की। और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला कि तुम उनसे भलाई करो और तुम उनके साथ इंसाफ करो। वेशक अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसंद करता है। अल्लाह बस उन लोगों से तुम्हें मना करता है जो दीन के मामले में तुमसे लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला। और तुम्हारे निकालने में मदद की कि तुम उनसे दोस्ती करो, और जो उनसे

दोस्ती करे तो वही लोग जालिम हैं। (8-9)

जहां तक अद्ल व इंसाफ का तअल्लुक है वह हर एक से किया जाएगा, चाहे फरीक सानी (प्रतिपक्षी) दुश्मन हो या गैर दुश्मन। मगर दोस्ती का तअल्लुक हर एक से दुरुस्त नहीं। दोस्ती सिर्फ उसी के साथ जाइज है जो अल्लाह का दोस्त हो या कम से कम यह कि वह अल्लाह का दुश्मन न हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمُ الْمُؤْمِنَاتُ فَهَجَرْتِ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۚ اللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِهِنَّ ۚ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ لَاهُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۚ وَاتَّوَلَّوْهُمَا أَنْفَقُوا وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمُ أَنْ تَبْكَحُوهُنَّ إِذَا أَتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۚ وَلَا تَتَسَكَّبُوا بِعِصْمِ الْكُفَّارِ وَاسْأَلُوا مَا أَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْأَلُوا مَا أَنْفَقُوا ۚ ذَلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝ وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَقَابَتُمْ ۚ فَاتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِثْلَ مَا أَنْفَقُوا ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ۝

ऐ ईमान वाले, जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिजरत (स्थान-परिवर्तन) करके आए तो तुम उन्हें जांच लो, अल्लाह उनके ईमान को खूब जानता है। पस अगर तुम जान लो कि वे मोमिन हैं तो उन्हें मुंकिरों की तरफ न लौटाओ। न वे औरतें उनके लिए हलाल हैं और न वे उन औरतों के लिए हलाल हैं। और मुंकिर शोहरों ने जो कुछ खर्च किया वह उन्हें अदा कर दो। और तुम पर कोई गुनाह नहीं अगर तुम उनसे निकाह कर लो जबकि तुम उनके महर उन्हें अदा कर दो। और तुम मुंकिर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो। और जो कुछ तुमने खर्च किया है उसे मांग लो। और जो कुछ मुंकिरों ने खर्च किया वे भी तुमसे मांग लें। यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दर्मियान फैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। और अगर तुम्हारी बीवियों के महर में से कुछ मुंकिरों की तरफ रह जाए, फिर तुम्हारी नौबत आए तो जिनकी बीवियां गई हैं उन्हें अदा कर दो जो कुछ उन्होंने खर्च किया। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाए हो। (10-11)

यहां सुलह हुदैबिया के बाद पैदाशुदा हालात की रोशनी में इस्लाम के कुछ उन कानूनों

को बताया गया है जिनका तअल्लुक दारुल हरब और दारुल इस्लाम के दरमियान पेश अपने वाले आइली (पारिवारिक) मसाइल से है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَى أَنْ لَا يُسْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِمُجْتَنَبَاتٍ يُفْتَرِيْنَ بَيْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

ऐ नबी जब तुम्हारे पास मोमिन औरतें इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) के लिए आएँ कि वे अल्लाह के साथ किसी चीज को शरीक न करेंगी। और वे चोरी न करेंगी। और वे बदकारी न करेंगी। और वे अपनी औलाद को कत्ल न करेंगी। और वे अपने हाथ और पांव के आगे कोई बोहतान गढ़कर न लाएंगी। और वे किसी मारुफ (सत्कर्म) में तुम्हारी नाफरमानी न करेंगी तो उनसे बैअत ले लो और उनके लिए अल्लाह से बख्शिश की दुआ करो, बेशक अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। (12)

इस आयत में वे शर्तें बताई गई हैं जिनका इकरार लेकर किसी औरत को इस्लाम में दाखिल किया जाता है। इन शर्तों में दो शर्त की हैसियत बुनियादी है। यानी शिर्क न करना और रसूल की नाफरमानी न करना। बाकी तमाम मय्यूत (उल्लिखित) और मय्यूतक़जे अपने आप इन दो शर्तों में शामिल हो जाते हैं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَكْسِبُوا مِنَ الْأَخْرَقِ كَمَا يَكْسِبُ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحَابِ الْقُبُورِ ۝

ऐ ईमान वाले तुम उन लोगों को दोस्त न बनाओ जिनके ऊपर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वे आख़िरत से नाउम्मीद हो गए हैं जिस तरह कब्रों में पड़े हुए मुंकिर नाउम्मीद हैं। (13)

आसमानी किताब को मानने वाले यहूद और उसे न मानने वाले मुंकिर आख़िरत के एतबार से एक सतह पर हैं। खुले हुए मुंकिरों को उम्मीद नहीं होती कि कोई शख्स दुबारा अपनी कब्र से उठेगा। यही हाल उन लोगों का भी होता है जो यहूद की तरह ईमान लाने के बाद ग़फ़लत और बेहिसी में मुब्तिला हो गए हों। आख़िरत का लफ्ज़ी इकरार करने के बावजूद उनकी अमली जिंदगी वैसी ही हो जाती है जैसी खुले हुए मुंकिरीन की जिंदगी।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

سَبِّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًا كَأَنَّهُمْ بُنَيَّانٌ مُرْتَضُونَ ۝

आयतें-14

सूरह-61. अस-सफ़फ

रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अल्लाह की तस्वीह करती है हर चीज जो आसमानों और ज़मीन में है। और वह ग़ालिब (प्रभुत्वशाली) है हकीम (तत्त्वदर्शी) है। ऐ ईमान वाले, तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं। अल्लाह के नजदीक यह बात बहुत नाराजी की है कि तुम ऐसी बात कहो जो तुम करो नहीं। अल्लाह तो उन लोगों को पसंद करता है जो उसके रास्ते में इस तरह मिलकर लड़ते हैं गोया वे एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं। (1-4)

इंसान के सिवा जो कायनात है उसमें कहीं तजाद (अन्तर्विरोध) नहीं। इस दुनिया में लकड़ी हमेशा लकड़ी रहती है। और जो चीज अपने आपको लोहा और पत्थर के रूप में जाहिर करे वह हकीकी तजर्वे में भी लोहा और पत्थर ही साबित होती है। इंसान को भी ऐसा ही बनना चाहिए। इंसान के कहने और करने में मुताबिकत होनी चाहिए। यहां तक कि उस वक़्त भी जबकि आदमी को अपने कहने की यह कीमत देनी पड़े कि हर किस्म की दुश्वारियों के बावजूद वह सत्र का पहाड़ बन जाए।

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يَقَوْمِ لِمَ تَقُولُونَ L

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, तुम लोग क्यों मुझे सताते हो, हालांकि तुम्हें मालूम है कि मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ। पस जब वे फिर गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया। और अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (5)

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम बनी इस्राईल के दर्मियान आए। बनी इस्राईल उस वक्त एक जवालयाप्ता क्रोम थे। उनके अंदर यह हैसला बाकी नहीं रहा था कि जो कहे वही करें। और करें वही कहे। चुनांचे उनका हाल यह था कि वे हजरत मूसा के हाथ पर ईमान का इकारा भी करते थे और इसी के साथ हर किस्म की बदअहदी और नाफरमानी में भी मुक्तिला रहते थे। यहां तक कि हजरत मूसा के साथ अपने बुरे सुलूक को जाइज साबित करने के लिए वे खुद हजरत मूसा पर झूठे झूठे इल्जाम लगाते थे। बाइबल में खुर्रज और गिनती के अबवाब (अध्यायों) में इसकी तपसील देखी जा सकती है।

अहद करने के बाद अहद की खिलाफतजी आदमी को पहले से भी ज्यादा हक से दूर कर देती है।

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَبْنِي إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدٌ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا هَذَا سَعْرُ مُبِينٍ ۖ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى الْإِسْلَامِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝ يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ ۖ وَاللَّهُ مُتِمِّمُ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝ هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ۝

और जब ईसा बिन मरयम ने कहा कि ऐ बनी इस्राईल मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं, तस्दीक (पुष्टि) करने वाला हूं उस तौरात की जो मुझसे पहले से मौजूद है, और खुशखबरी देने वाला हूं एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह उनके पास खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है। और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे हालांकि वह इस्लाम की तरफ बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। वे चाहते हैं कि अल्लाह की रोशनी को अपने मुंह से बुझा दें, हालांकि अल्लाह अपनी रोशनी को पूरा करके रहेगा, चाहे मुंकिरों को यह कितना ही नागवार हो। वही है जिसने भेजा अपने रसूल को हिदायत और दीने हक के साथ ताकि उसे सब दीनों पर ग़ालिब कर दे चाहे मुशिरकों (बहुदेववादियों) को यह कितना ही नागवार हो। (6-9)

हजरत मसीह अलैहिस्सलाम के मोजिजात इस बात का सुबूत थे कि आप खुदा के पैगम्बर

हैं। मगर यहूद ने उन मोजिजात को जादू का करिश्मा कहकर उन्हें नजरअंदाज कर दिया। इसी तरह कदीम आसमानी किताबों में वाजेह तौर पर पैगम्बर हजरत मुहम्मद (सल्ल०) की पेशगी खबर मौजूद थी। मगर जब आप आए तो यहूद और नसारा दोनों ने आपका इंकार कर दिया। ईसान इतना जालिम है कि वह खुली-खुली हकीकतों का एतराफ करने के लिए भी तैयार नहीं होता।

इस आयत में ग़लबे से मुराद फिक्री ग़लबा (वैचारिक वर्चस्व) है। यानी खुदा और मजहब के बारे में जितने ग़ैर मुवाहिदाना (गैर-एकेश्वरवादी) अक्वइद दुनिया में हैं उन्हें जेर करके तौहीद (एकेश्वरवाद) के अक्दी को ग़ालिब फिक्क की हैसियत दे दी जाए। बकिया तमाम अक्वइद हमेशा के लिए फिक्री तौर पर मगलूब होकर रह जाएं। कुरआन में यह पेशीनगोई इतिहाई नामुवाफिक् हालात में सन् 3 हि० में नाजिल हुई थी। मगर बाद को वह हर्फवर्फ पूरी हुई।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝ يَعْلَمُ لَكُمْ دُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلُكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنٌ طَيِّبٌ فِي جَنَّاتٍ عَدْنٍ ۖ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَآخَرَىٰ تُحِبُّونَهَا ۖ نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ قَرِيبٌ ۖ وَبَشِيرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

ऐ ईमान वालो, क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारात बताऊं जो तुम्हें एक दर्दनाक अजाब से बचा ले। तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह की राह में अपने माल और अपने जान से जिहाद (जद्दोजहद) करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। अल्लाह तुम्हारे गुनाह माफ कर देगा और तुम्हें ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, और उम्दा मकानों में जो हमेशा रहने के बागों में होंगे, यह है बड़ी कामयाबी और एक और चीज भी जिसकी तुम तमन्ना रखते हो, अल्लाह की मदद और फतह जल्दी, और मोमिनों को बशारत (शुभ सूचना) दे दो। (10-13)

तिजारात में आदमी पहले देता है, इसके बाद उसे वापस मिलता है। दीन की जद्दोजहद में भी आदमी को अपनी कुव्वत और अपना माल देना पड़ता है। इस एतबार से यह भी एक क्रिस्म की तिजारात है। अलबत्ता दुनियावी तिजारात का नफ़ा सिर्फ दुनिया में मिलता है और दीन की तिजारात का नफ़ा मजीद इजाफे के साथ दुनिया में भी मिलता है और आखिरत में भी। फिर इसी 'तिजारात' से ग़लबा की राह भी खुलती है जो मौजूदा दुनिया में किसी गिरोह को बाइज्जत जिंद्गी हासिल करने का सबसे बड़ा जरिया है।

يَسَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ①

आयतें-11

सूरह-62. अल-जुमुअह

रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर वह चीज जो आसमानों में है और जो जमीन में है। जो बादशाह है, पाक है, जबरदस्त है, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वही है जिसने उम्मीयों के अंदर एक रसूल उन्हीं में से उठाया, वह उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है। और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और हिक्मत (तत्वदर्शिता) की तालीम देता है, और वे इससे पहले खुली गुमराही में थे और दूसरों के लिए भी उनमें से जो अभी उनमें शामिल नहीं हुए, और वह जबरदस्त है, हिक्मत वाला है। यह अल्लाह का फ़ल है, वह देता है जिसे चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ल (अनुग्रह) वाला है। (1-4)

इंसान की हिदायत के लिए रसूल भेजना खुदा की उन्हीं सिफात (गुणों) का इंसानी सतह पर जुहूर है जिन सिफात का जुहूर माददी एतबार से कायनात की सतह पर हुआ है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, और इसी तरह दूसरे पैगम्बरों का काम ख़ास तौर पर दो रहा है। एक, खुदा की 'वही' को लोगों तक पहुंचाना। दूसरे, लोगों के शुऊर को बेदार करना ताकि वे खुदाई बातों को समझें और अपनी हकीकी जिंदगी के साथ उन्हें मरबूत कर सकें। यही दो काम आइंदा भी दावत व इस्लाह की जद्दोजहद में मलबूब रहेंगे। यानी तालीमे कुआन और ज़ेनी तर्बियत।

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا
يَسْ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِاللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ①
قُلْ يَٰ أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِن زَعَمْتُمْ أَنكُم بِلِلَّهِ مِن دُونِ النَّاسِ
فَتَمْنُوا الْمَوْتَ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ② وَلَا يَسْتَوُونَ أَبَدًا بِمَا قَدَّمْتُمْ
أَيْدِيَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ③ بِالظَّالِمِينَ ④ قُلْ إِن الْمَوْتَ الَّذِي تَتَّقُونَ مِنْهُ
فَإِنَّ مَلَيْكَتَكُمْ ثُمَّ تَرُدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ⑤

ع ॥

जिन लोगों को तौरात का हामिल (धारक) बनाया गया फिर उन्होंने उसे न उठाया, उनकी मिसाल उस गधे की सी है जो किताबों का बोझ उठाए हुए हो। क्या ही बुरी

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنصَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِحَوَارِيِّينَ
مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ فَا مَنَنْتَ طَائِفَةٌ
مِّنْ بَنِي إِسْرَءِيلَ وَكَفَرْتَ طَائِفَةٌ ① فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ
عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ②

ع ॥

ऐ ईमान वालो, तुम अल्लाह के मददगार बनो, जैसा कि ईसा बिन मरयम ने हवारियों (साथियों) से कहा, कौन अल्लाह के वास्ते मेरा मददगार बनता है। हवारियों ने कहा हम हैं अल्लाह के मददगार, पस बनी इस्राईल में से कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोगों ने इंकार किया। फिर हमने ईमान लाने वालों की उनके दुश्मनों के मुकाबले में मदद की, पस वे ग़ालिब हो गए। (14)

यहूद की अक्सरियत ने अगरचे हजरत मसीह अलैहिस्सलाम को रद्द कर दिया मगर उनमें से कुछ लोग (हवारिय्यीन) ऐसे थे जिन्होंने पूरे इख़्लास और वफादारी के साथ आपका साथ दिया। और आपके पैगम्बराना मिशन को आगे बढ़ाया। यही चन्द लोग अल्लाह की नजर में मोमिन क़ार पाए और बक़िया तमाम यहूद पिछले पैगम्बरों को मानने के बावजूद मुक़ि़र क़ार पा गए।

यहां जिस ग़लबे का ज़िक्र है वह फ़िल जुमला (वस्तुतः) मोमिनीने मसीह का फ़िल जुमला मुक़ि़रीने मसीह पर ग़लबा है। हजरत मसीह के बाद रूमी शहंशाह कुस्तुतीन दोम (272-337 ई०) ने नसरानियत (ईसाइयत) कुबूल कर ली जिसकी सल्तनत शाम और फ़िलिस्तीन तक फैली हुई थी। इसके बाद रूमी रिआया बहुत बड़ी तादाद में ईसाई हो गई। चुनांचे यहूद उनके महकूम (शासनाधीन) हो गए। मौजूदा ज़माने में भी यहूदियों की हुकूमते इस्राईल हर एतबार से ईसाइयों के मातहत है।

سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَكِّيَّةٌ مِنْ أَحَدِ عَشَرَ آيَةً فِيهَا ثَوْنٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَسْبِغْ لِّلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقَدُّسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ①
هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْاُمَمِ رُسُلًا مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيٰتِهٖ وَيُزَكِّيهِمْ وَ
يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَ اِنْ كٰنُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِي ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ② وَ اٰخِرِيْنَ
مِّنْهُمْ لَبٰ اِنَّهُمْ لَيُلْحِقُوْا بِهِمْ وَ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيْمُ ③ ذٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ

मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया, और अल्लाह जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। कहो कि ऐ यहूदियो, अगर तुम्हारा गुमान है कि तुम दूसरों के मुकाबले में अल्लाह के महबूब हो तो तुम मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो। और वे कभी इसकी तमन्ना न करेंगे उन कामों की वजह से जिन्हें उनके हाथ आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह जालिमों को खूब जानता है। कहो कि जिस मौत से तुम भागते हो वह तुम्हें आकर रहेगी, फिर तुम पोशीदा और जाहिर के जानने वाले के पास ले जाए जाओगे, फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे हो। (5-8)

खुदा की किताब जब किसी कौम को दी जाती है तो इसलिए दी जाती है कि वह उसे अपने अंदर उतारे और उसे अपनी जिंदगी में अपनाए। मगर जो कौम इस मअना में किताबे आसमानी की हामिल (धारक) न बन सके उसकी मिसाल उस गधे की सी होगी जिसके ऊपर इल्मी किताबें लदी हुई हों और उसे कुछ खबर न हो कि उसके ऊपर क्या है।

यहूद ने अगरचे अमली तौर पर खुदा के दीन को छोड़ रखा था, इसके बावजूद उसे अपने कैमी फख्र का निशान बनाए हुए थे। मगर इस किस्म का फख्र किसी के कुछ काम आने वाला नहीं। ऐसा फख्र हमेशा झूठा फख्र होता है। और इसका एक सबूत यह है कि आदमी जिस दीन को अपने फख्र का सामान बनाए हुए होता है उसके लिए वह कुर्बानी देने को तैयार नहीं होता। ताहम जब मौत आएगी तो ऐसे लोग जान लेंगे कि दुनिया में वे जिस फख्र पर जी रहे थे वह आखिरत में उन्हें जिल्लत के सिवा और कुछ देने वाला नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمٍ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَى ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۚ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۖ وَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۖ وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا وَتَرَكُوكَ قُلُوبًا قَلِيلًا ۚ مَاعِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ مِمَّا يَتْلُونَ مِنَ التِّجَارَةِ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ۝

ऐ ईमान वाले, जब जुमा के दिन की नमाज के लिए पुकारा जाए तो अल्लाह की याद की तरफ चल पड़ो और खरीद व फरोख्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। फिर जब नमाज पूरी हो जाए तो जमीन में फैल जाओ और अल्लाह का फल तलाश करो, और अल्लाह को कसरत (अधिकता) से याद करो, ताकि तुम फलाह पाओ। और जब वे कोई तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं तो उसकी तरफ दौड़ पड़ते हैं। और तुम्हें

खड़ा हुआ छोड़ देते हैं, कहो कि जो अल्लाह के पास है वह खेल तमाशे और तिजारत से बेहतर है, और अल्लाह बेहतरीन रिज्क देने वाला है। (9-11)

दुनिया में आदमी बयकवक्त दो तकजों के दर्मियान होता है। एक मआश (जीविका) का तकज, और दूसरे दीन का तकज। इनमेंसे हर तकज जरूरी है। अलबत्ता उनके दर्मियान इस तरह तकसीम होनी चाहिए कि मआशी सरगर्मियां दीनी तकजे के मातहत हों। आदमी को इजाजत है कि वह जाइज हुदू में मआश के लिए दौड़ धूप करे। मगर यह जरूरी है कि उसे जो मआशी कामयाबी हासिल हो उसे वह सरासर अल्लाह का फल समझे। नीज मआशी सरगर्मी के दौरान बराबर अल्लाह को याद करता रहे। इसी के साथ उसे हमेशा तैयार रहना चाहिए कि जब भी दीन के किसी तकजे के लिए पुकारा जाए तो उस वक्त वह हर दूसरे काम को छोड़कर दीन के काम की तरफ दौड़ पड़े।

मदीना में एक बार ऐन जुमा के खुत्बे के वक्त कुछ लोग उठकर बाजार चले गए। इस पर मज्कूर आयतें उतरतीं। इस हुक्म का तअल्लुक अगरचे बराहेरास्त तौर पर जुमा से है मगर बिलवास्ता तौर पर हर दीनी काम से है। जब भी किसी खास दीनी मक्सद के लिए लोगों को जमा किया जाए तो अमीर की इजाजत के बगैर उठकर चले जाना सख्त महरूमी की बात है।

رَبُّكَ الْمُبْتَلُونَ ۖ ذَرِيبًا لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِشْرَةَ إِثْمِهِمْ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا جَاءَكَ الْمُتُفِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ ۗ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُتُفِقِينَ لَكَاذِبُونَ ۖ اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً ۖ فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ۝

आयतें-11

सूरह-63. अल-मुनाफिकून

रुकूअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। जब मुनाफिक (पाखंडी) तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप बेशक अल्लाह के रसूल हैं, और अल्लाह जानता है कि बेशक तुम उसके रसूल हो, और अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफिकीन (पाखंडी) झूठे हैं। उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह की राह से, बेशक निहायत बुरा है जो वे कर रहे हैं। यह इस सबब से है कि वे ईमान लाए फिर उन्होंने कुफ्र किया, फिर उनके दिलों पर मुहर कर दी गई, पस वे नहीं समझते। (1-3)

यह किसी आदमी के निफाक (पाखंड) की अलामत है कि वह बड़ी-बड़ी बातें करे। और कसम खाकर अपनी बात का यकीन दिलाए। मुख़िस (निष्ठावान) आदमी अल्लाह के ख़ौफ से दबा हुआ होता है। वह ज़वान से ज्यादा दिल से बोलता है। मुनाफ़िक आदमी सिर्फ़ इंसान को अपनी आवाज़ सुनाने का मुशताक होता है। और मुख़िस आदमी खुदा को सुनाने का।

जब एक शख्स ईमान लाता है तो वह एक सजीदा अहद (प्रण) करता है। इसके बाद ज़िंदगी के अमली मवाके आते हैं जहाँ ज़रूरत होती है कि वह उस अहद के मुताबिक अमल करे। अब जो शख्स ऐसे मौकों पर अपने दिल की आवाज़ को सुनकर अहद के तकाज़े पूरे करेगा। उसने अपने अहदे ईमान को पुरखा किया। इसके बरअक्स जिसका यह हाल हो कि उसके दिल ने आवाज़ दी मगर उसने दिल की आवाज़ को नज़रअंदाज़ करके अहद के ख़िलाफ अमल किया तो इसका नतीजा यह होगा कि वह धीरे-धीरे अपने अहदे ईमान के मामले में बेहिश हो जाएगा। यही मतलब है दिल पर मुहर करने का।

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسْدَقَةٌ ۚ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۖ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرُهُمْ ۗ قَاتِلْهُمْ اللَّهُ ۖ أَنَّى يُؤْفَكُونَ ۖ ۝ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّارُؤُسُهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ ۖ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُونَ ۖ سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

और जब तुम उन्हें देखो तो उनके जिस्म तुम्हें अच्छे लगते हैं, और अगर वे बात करते हैं तो तुम उनकी बात सुनते हो, गोया कि वे लकड़ियां हैं टेक लगाई हुई। वे हर जोर की आवाज़ को अपने ख़िलाफ समझते हैं। यही लोग दुश्मन हैं, पस उनसे बचो। अल्लाह उन्हें हलाक करे, वे कहां फिरे जाते हैं। और जब उनसे कहा जाता है कि आओ, अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए इस्तिफ़ार (माफी की दुआ) करे तो वे अपना सर फेर लेते हैं। और तुम उन्हें देखोगे कि वे तकबुर (घमंड) करते हुए बेरुखी करते हैं। उनके लिए एकसां (समान) है, तुम उनके लिए मफ़िरत (माफी) की दुआ करो या मफ़िरत की दुआ न करो, अल्लाह हरगिज़ उन्हें माफ न करेगा। अल्लाह नाफरमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (4-6)

मुनाफ़िक आदमी मस्लेहतपरस्ती के ज़रिए अपने मफ़ादत (हितों) को महफूज़ रखता है।

वह हक नाहक की बहस में नहीं पड़ता, इसलिए हर एक से उसका बनाव रहता है। उसकी ज़िंदगी ग़म से ख़ाली होती है। ये चीज़ें उसके जिस्म को फरबा (मोटा) बना देती हैं। वे लोगों

के मिजाज़ की रियायत करके बोलता है। इसलिए उसकी बातों में हर एक अपने लिए दिलचस्पी का सामान पा लेता है। मगर ये बजहिर हरे भरे दरख़्त हकीकतन सिर्फ सूखी लकड़ियां होते हैं जिनमें कोई ज़िंदगी न हो। वे अंदर से बुजदिल होते हैं। उनके नजदीक उनका दुनियावी मफ़ाद हर दीनी मफ़ाद से ज्यादा अहम होता है। ऐसे लोग ईमान के बुलन्दबाग़ मुद्दई (ऊंचे दावेदार) होने के बावजूद खुदा की हिदायत से यकसर महरूम हैं।

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّىٰ يَنْفَضُوا ۚ وَ لِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ ۖ وَلَكِنَّ الْمُنٰفِقِينَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝ يَقُولُونَ لَیْن تَجَعْنَا إِلَى الْمَدِیْنَةِ لَیْخُرْجَنَ الْأَعْرَضُ مِنْهَا الْأَذَلُّ ۖ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَ لِرَسُولِهِ ۖ وَ لِلْمُؤْمِنِیْنَ وَلَكِنَّ الْمُنٰفِقِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ ۝

यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं उन पर खर्च मत करो यहां तक कि वे मुंतशिर (तितर-बितर) हो जाएं। और आसमानों और जमीन के ख़जाने अल्लाह ही के हैं लेकिन मुनाफ़िकीन (पाखंडी) नहीं समझते। वे कहते हैं कि अगर हम मदीना लौटे तो इज्जत वाला वहां से ज़िल्लत वाले को निकाल देगा। हालांकि इज्जत अल्लाह के लिए और उसके रसूल के लिए और मोमिनीन के लिए है, मगर मुनाफ़िकीन (पाखंडी) नहीं जानते। (7-8)

कदीम मदीना में दो किस्म के मुसलमान थे। एक मुहाजिर दूसरे अंसार। मुहाजिरीन मक्का से बेवतन होकर आए थे। उनका सबसे बड़ा जाहिरी सहारा मकामी मुसलमान (अंसार) थे। इस बिना पर दुनियापरस्त लोगों को मुहाजिर बेइज्जत दिखाई देते थे और अंसार उनकी नज़र में बाइज्जत लोग थे। यहां तक कि एक मौके पर अबुल्लाह बिन उबइ ने साफ तौर पर कह दिया कि इन मुहाजिरीन की हकीकत क्या है। अगर हम इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दें तो दुनिया में कहीं इन्हें ठिकाना न मिले।

इस किस्म के अस्मज़ उसी शख्स की ज़वान से निकल सकते हैं जो इस हकीकत से बेख़बर हो कि इस दुनिया में जो कुछ है सब अल्लाह का है। वही जिसे चाहे दे और वही जिससे चाहे छीन ले।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوا لَا تُلٰهُكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَا اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَ مَنْ یَّعْمَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَ اَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِنْ قَبْلِ اَنْ یَّآئِنَیْ اَحَدُكُمْ الْمَوْتُ ۖ فِیْ قَوْلِ رَبِّ لَوْ لَا اَخَّرْتَنِیْ ۚ اِلٰی اَجَلٍ قَرِیْبٍ ۖ فَاَصْدَقَ ۚ وَ اَكُنْ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝ وَلَنْ یُّؤَخَّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا اٰجَآءَ اَجَلُهَا ۚ

وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

ऐ ईमान वालो, तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफिल न करने पाएं, और जो ऐसा करेगा तो वही घाटे में पड़ने वाले लोग हैं। और हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से खर्च करो इससे पहले कि तुम में से किसी की मौत आ जाए, फिर वह कहे कि ऐ मेरे रब, तूने मुझे कुछ और मोहलत क्यों न दी कि मैं सदका (दान) करता और नेक लोगों में शामिल हो जाता। और अल्लाह हरगिज किसी जान को मोहलत नहीं देता जबकि उसकी मीआद (नियत समय) आ जाए, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (9-11)

हर आदमी के लिए सबसे बड़ा मसला आखिरत का मसला है। मगर माल और औलाद ईसान को इस सबसे बड़े मसले से ग़ाफिल कर देते हैं। ईसान को जानना चाहिए कि माल और औलाद मक्सद नहीं बल्कि जरिया हैं। वे इसलिए किसी को दिए जाते हैं कि वह उन्हें अल्लाह के काम में लगाए। वह उन्हें अपनी आखिरत बनाने में इस्तेमाल करे। मगर नादान आदमी उन्हें बजाते खुद मक्सूद (लक्ष्य) समझ लेता है। ऐसे लोग जब अपने आखिरी अंजाम को पहुंचेंगे तो वहां उनके लिए हसरत व अफसोस के सिवा और कुछ न होगा।

سُورَةُ التَّغْوِيٰ كَذٰبٌ لِّمَنْ كَفَرَتْ اٰيَةُ ذٰلِكَ الْكِتٰبِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

يَسْتَعِذُّ بِاللّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ لَهٗ الْمُلْكُ وَلَهٗ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ قَدِیْرٌ ۝ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۝ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِیْرٌ ۝ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوْرَكُمْ ۝ وَاِلَيْهِ الْمَصِیْرُ ۝ یَعْلَمُ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَیَعْلَمُ مَا تُسْرُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ عَلِیْمٌ بِذٰتِ الصُّدُوْرِ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है। अल्लाह की तस्बीह कर रही है हर चीज जो आसमानों में है और हर चीज जो जमीन

में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए तारीफ है और वह हर चीज पर कादिर है। वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम में से कोई मुंकिर है और कोई मोमिन, और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। उसने आसमानों और जमीन को ठीक तौर पर पैदा किया और उसने तुम्हारी सूरत बनाई तो निहायत अच्छी सूरत बनाई, और उसी की तरफ है लौटना। वह जानता है जो कुछ आसमानों और जमीन में है। और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम जाहिर करते हो। और अल्लाह दिलों तक की बातों का जानने वाला है। (1-4)

‘कायनात अल्लाह की तस्बीह कर रही है’ का मतलब यह है कि अल्लाह ने जिस हकीकत को कुरआन में खोला है, कायनात सरापा उसकी तस्दीक (पुष्टि) बनी हुई है, वह जबानेहाल से हमद व सताइश (प्रशस्ति) की हद तक इसकी तारीफ कर रही है। इस दोतरफा एलान के बावजूद जो लोग मोमिन न बनें उन्हें इसके बाद तीसरे एलान का इंतजार करना चाहिए जबकि तमाम लोग खुदा के यहां जमा किए जाएंगे ताकि खुद मालिके कायनात की जवान से अपने बारे में आखिरी फैसले को सुनें।

الْمَیٰیٰتُ کُمْ نَبَؤُا الَّذِیْنَ کَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ فَاَقْوَا وَبَالَ اَمْرِہُمْ وَلَہُمْ عَذَابٌ اَلِیْمٌ ۝ ذٰلِکَ بِاَنَّہٗ کَانَتْ تَاْتِیْہُمْ رُسُلُہُمْ بِالْبَیِّنٰتِ فَقَالُوْا اَبَشِّرْہُمْ دُنَا فَکَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَاسْتَغْنٰی اللّٰهُ وَاللّٰهُ غَنِیٌّ حَمِیْدٌ ۝

क्या तुम्हें उन लोगों की खबर नहीं पहुंची जिन्होंने इससे पहले इंकार किया, फिर उन्होंने अपने किए का वबाल चखा और उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। यह इसलिए कि उनके पास उनके रसूल खुली दलीलों के साथ आए, तो उन्होंने कहा कि क्या इंसान हमारी रहनुमाई करेंगे। पस उन्होंने इंकार किया और मुंह फेर लिया, और अल्लाह उनसे बेपरवाह हो गया, और अल्लाह बेनियाज (निस्पृह) है, तारीफ वाला है। (5-6)

कदीम जमाने में रसूलों के जरिए जो तारीख बनी वह इंसानों के लिए मुस्तकिल इबरत (सीख) का नमूना है। मसलन आद और समूद और अहले मदयन और कौमे लूत वगैरह के दर्मियान पैगम्बर आए। इन पैगम्बरों के पास अपनी सदाकत बताने के लिए कोई गैर बशरी (इंसानी) कमाल न था, बल्कि सिर्फ दलील थी। दलील की सतह पर इंकार ने उन कौमों को अजाब का मुस्तहिक बना दिया। इससे मालूम हुआ कि इस दुनिया में आदमी का इम्तेहान यह है कि वह दलील की सतह पर हक को पहचाने। जो शख्स दलील की सतह पर हक को पहचानने में नाकाम रहे वह हमेशा के लिए हक से महरूम होकर रह जाएगा।

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُعْمَلُوا قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّيُنَّ بِمَا
عَمِلْتُمْ وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝ فَأَمَّا يَا لَلِظُلْمِ لِيَوْمِهِ الَّذِي أَنْزَلْنَا
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝ يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۝ وَمَنْ
يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝
وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا وَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ۝

النَّارِ
الْجَنَّةِ

इंकार करने वालों ने दावा किया कि वे हरगिज दुबारा उठाए न जाएंगे, कहो कि हां, मेरे ख की कसम तुम जरूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें बताया जाएगा जो कुछ तुमने किया है, और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है। पस अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल पर और उस नूर (प्रकाश) पर जो हमने उतारा है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। जिस दिन वह तुम सबको एक जमा होने के दिन जमा करेगा, यही दिन हार जीत का दिन होगा। और जो शख्स अल्लाह पर ईमान लाया होगा और उसने नेक अमल किया होगा, अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वे हमेशा उनमें रहेंगे। यही है बड़ी कामयाबी। और जिन लोगों ने इंकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही आग वाले हैं, उसमें हमेशा रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है। (7-10)

लोग दुनिया को हार जीत (तगाबुन) की जगह समझते हैं। किसी शख्स को यहां कामयाबी मिल जाए तो वह खुश होता है। और जो शख्स यहां नाकामी से दो चार हो वह लोगों की नजर में हकीर (तुच्छ) बनकर रह जाता है। मगर हकीकत यह है कि इस दुनिया की हार भी बेकीमत है और यहां की जीत भी बेकीमत।

हार जीत का अस्त मकाम आखिरत (परलोक) है। हारने वाला वह है जो आखिरत में हारे और जीतने वाला वह है जो आखिरत में जीते। और वहां की हार जीत का मेयार बिल्कुल मुखलिफ है। दुनिया में हार जीत जाहिरी मादिदयात (पदार्थों) की बुनियाद पर होती है। और आखिरत की हार जीत खुदाई अख्लाकियात की बुनियाद पर होगी। उस वक्त देखने वाले यह देखकर हैरान रह जाएंगे कि यहां सारा मामला बिल्कुल बदल गया है। जिस पाने को लोग पाना समझ रहे थे वह दरअस्त खोना था, और जिस खोने को लोगों ने खोना समझ रखा था वही दरअस्त वह चीज थी जिसे पाना कहा जाए। उसी दिन की हार, हार है और उसी दिन की जीत, जीत।

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ قَلْبَهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝
जो मुसीबत भी आती है अल्लाह के इज्ज (अनुज्ञा) से आती है। और जो शख्स अल्लाह पर ईमान रखता है अल्लाह उसके दिल को राह दिखाता है, और अल्लाह हर चीज को जानने वाला है। और तुम अल्लाह की इताअत (आज्ञापालन) करो और रसूल की इताअत करो। फिर अगर तुम एराज (उपेक्षा) करोगे तो हमारे रसूल पर बस साफ-साफ पहुंचा देना है। अल्लाह, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य-प्रभु) नहीं, और ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए। (11-13)

कोई मुसीबत अपने आप नहीं आती, हर मुसीबत खुदा की तरफ से आती है। और इसलिए आती है कि उसके जरिए से इंसान को हिदायत अता की जाए। मुसीबत आदमी के दिल को नर्म करती है। और उसकी सोई हुई नफिसयात में हलचल पैदा करती है। मुसीबत के झटके आदमी के जेहन को जगाने का काम करते हैं। अगर आदमी अपने आपको मंफ़ी रद्देअमल (नकारात्मक प्रतिक्रिया) से बचाए तो मुसीबत उसके लिए बेहतरीन रब्बानी मुअल्लिम (शिक्षक) बन जाएगी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ مِنْ أَرْوَاحِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوٌّ لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِنْ تَعَفَّوْا وَتَصَفَّحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللَّهُ عِنْدَ أَجْرٍ عَظِيمٍ ۝ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمِعُوا ۚ وَأَطِيعُوا وَأَتَّقُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۖ وَالْأَنْفُسُكُمْ ۚ وَمَنْ يُؤْتِ شَيْئًا فَنَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفٰلِقُونَ ۝
إِنْ تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يَضْعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ۝
عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

عَلِمُ
الْغَيْبِ

ऐ ईमान वालो, तुम्हारी कुछ वीवियां और कुछ औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं, पस तुम उनसे होशियार रहो, और अगर तुम माफ कर दो और दरगुजर करो और बख्श दो तो अल्लाह बख्शने वाला, रहम करने वाला है। तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आजमाइश की चीज हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा अज्र है। पस तुम अल्लाह से डरो जहां तक हो सके। और सुनो और मानो और खर्च करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो शख्स दिल की तंगी से महफूज रहा तो ऐसे ही लोग फलाह (कल्याण, सफलता) पाने वाले हैं। अगर तुम

अल्लाह को अच्छा कर्ज दोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा, और अल्लाह कद्रदां है, बुर्दवार (उदार) है। ग़ायब और हाज़िर को जानने वाला है, ज़बरदस्त है, हकीम (तत्त्वदर्शी) है। (14-18)

इंसान को सबसे ज्यादा तअल्लुक अपनी औलाद से होता है। आदमी हर दूसरे मामले में उसूल की बातें करता है मगर जब अपनी औलाद का मामला आता है तो वह बेउसूल बन जाता है। इसीलिए हदीस में इर्शाद हुआ है कि औलाद किसी आदमी को बुजदिली और बुख़ल (कंजूसी) पर मजबूर करने वाले हैं। इसी तरह एक और हदीस में इर्शाद हुआ है कि कियामत के दिन एक शख्स को लाया जाएगा, फिर कहा जाएगा कि इसके बीवी बच्चे इसकी नेकियां खा गए।

इंसान अपने बच्चों की खातिर अल्लाह की राह में खर्च नहीं करता। हालांकि अगर वह अल्लाह की राह में खर्च करे तो मुख़लिफ़ शक्तों में अल्लाह उसकी तरफ़ उससे बहुत ज्यादा लौटाएगा जितना उसने अल्लाह की राह में दिया था।

يَوْمَ الْفَلَاقِ ﴿١٠٠﴾ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿١٠١﴾ اِنَّا عِشْرَانُ فِيْهِ مُرْسَلًا ﴿١٠٢﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ وَاتَّقُوا
 اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تَخْرِجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ
 بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ
 ظَلَمَ نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ﴿١٠٣﴾ فَإِذَا بَلَغْنَ
 أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَى
 عَدْلٍ مِنْكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ذَلِكَ يُوعِظُ بِهِ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ
 وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ﴿١٠٤﴾ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ
 لَا يَحْتَسِبُ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ قَدْ
 جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ﴿١٠٥﴾

आयतें-12

सह-65. अत-तलाक

रुकअ-2

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
ऐ पैगम्बर, जब तुम लोग औरतों को तलाक दो तो उनकी इद्दत पर तलाक दो और
इद्दत को गिनते रहो, और अल्लाह से डरो जो तुम्हारा रब है। उन औरतों को उनके

घरों से न निकालो और न वे खुद निकलें, इल्ला यह कि वे कोई खुली बेहयाई करें, और ये अल्लाह की हदें हैं, और जो शरूअ अल्लाह की हदों से तज्जुज करेगा तो उसने अपने ऊपर जुल्म किया, तुम नहीं जानते शायद अल्लाह इस तलाक के बाद कोई नई सूरत पैदा कर दे। फिर जब वे अपनी मुद्रत को पहुंच जाएं तो उन्हें या तो मारुफ (भली रीति) के मुताबिक रख लो या मारुफ के मुताबिक उन्हें छोड़ दो और अपने में से दो मोतबर गवाह कर लो और ठीक-ठीक अल्लाह के लिए गवाही दो। यह उस शरूअ को नसीहत की जाती है जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो। और जो शरूअ अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए राह निकालेगा, और उसे वहां से रिस्क देगा जहां उसका गुमान भी न गया हो, और जो शरूअ अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह उसके लिए काफी है, वेशक अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है, अल्लाह ने हर चीज के लिए एक अंदाज़ ठहरा रखा है। (1-3)

इस्लाम में अपरिहार्य हालात के तौर पर तलाक की इजाजत दी गई है। ताहम इसका एक तरीकेकार मुकर्रर किया गया है जो ख़ास वक़्ते के दर्मियान पूरा होता है। इस तरह तलाक के अमल को कुछ हदों का पाबंद कर दिया गया है। इन हदों का मक़्सद यह है कि दोनों पक्षों के दर्मियान आख़िर वक़्त तक वापसी का मौक़ा बाक़ी रहे। और तलाक का वाक़्आ किसी विस्स के ख़ुन्नदानी या समाजी फ़साद का ज़रिया न बने। वही तलाक इस्लामी तलाक है जिसके पूरे अमल के दौरान ख़ुदा के ख़ौफ़ की रूह जारी व सारी रहे।

وَالَّذِي يَسْنَنُ مِنَ الْحَيْضِ مَنْ سَأَلَكُمْ إِنْ انْتَبْتُمْ فَوَدَّ تَهُنُّ ثُلَاثُهُ
 أَنَّهُمْ وَالَّذِي لَمْ يَحْضُ وَأُولَئِكَ الْأَحْكَامُ أَجْلُهُمْ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ وَ
 مَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ۖ ذَٰلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ وَمَنْ
 يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ سُبُلًا مَخْرُجًا وَيُغْنِهِ اللَّهُ عَنْهُ سُبُلًا مَخْرُجًا ۖ

और तुम्हारी औरतों में से जो हैज (मासिक धर्म) से मायूस हो चुकी हैं, अगर तुम्हें शुभव हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है। और इसी तरह उनकी भी जिन्हें हैज नहीं आया, और हामिला (गर्भवती) औरतों की इद्दत उस हमल का पैदा हो जाना है, और जो शस्त्र अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए उसके काम में आसानी कर देगा। यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारी तरफ उतारा है, और जो शस्त्र अल्लाह से डरेगा अल्लाह उसके गुनाह उससे दूर कर देगा और उसे बड़ा अन्न देगा। (4-5)

शरीअत ने तलाक और दूसरे मामलात में इंसान को कुछ जवाबित (नियमों) का पाबंद किया है। ये जवाबित बजाहिर इंसान की आजादाना तबीअत के लिए रुकावट हैं। मगर

हकीकत के एतबार से ये नेमत हैं। इन जवाबित का यह फायदा है कि आदमी बहुत से गैर जरूरी नुस्सानात से बच जाता है। मजिद यह कि इस दुनिया का निजाम इस तरह बना है कि यहां हर नुक्सान की तलाफी (क्षतिपूर्ति) किसी न किसी तरह की जाती है। ताहम यह तलाफी सिर्फ उस शख्स के हिस्से में आती है जो फितरत के दायरे से बाहर न जाए।

اسْكُنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وَجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتٍ حَمْلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَارْكَبُوا أَجُورَهُنَّ وَاتَّبِعُوا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ وَإِنْ تَعَاَسَرْتُمْ فَسَتَرْضَعُ لَهُ أُخْرَى ۖ لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِنْ سَعَتِهِ وَمَنْ قُدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَّا أَتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۖ

तुम उन औरतों को अपनी वुस्तत (हैसियत) के मुताबिक रहने का मकान दो जहां तुम रहते हो और उन्हें तंग करने के लिए उन्हें तकलीफ न पहुंचाओ, और अगर वे हमल (गर्भ) वालियां हों तो उन पर खर्च करो यहां तक कि उनका हमल पैदा हो जाए। फिर अगर वे तुम्हारे लिए दूध पिलाएं तो उनकी उजरत (पारिश्रमिक) उन्हें दो। और तुम आपस में एक दूसरे को नेकी सिखाओ। और अगर तुम आपस में जिद करो तो कोई और औरत दूध पिलाएगी। चाहिए कि वुस्तत वाला अपनी वुस्तत के मुताबिक खर्च करे और जिसकी आमदनी कम हो उसे चाहिए कि अल्लाह ने जितना उसे दिया है उसमें से खर्च करे। अल्लाह किसी पर बोझ नहीं डालता मगर उतना ही जितना उसे दिया है, अल्लाह सख्ती के बाद जल्द ही आसानी पैदा कर देता है। (6-7)

इस्लाम में यह मल्बूब है कि आदमी मामलात में फरीके सानी (दूसरे पक्ष) के साथ फराख़दिली का तरीका इख्तियार करे। वह सब्र के साथ ख़िलाफे मिजाज बातों को सहे। नागवारियों के बावजूद दूसरे का हक अदा करे। जब आदमी ऐसा करता है तो वह सिर्फ फरीके सानी के लिए अच्छा नहीं करता बल्कि वह खुद अपने लिए भी अच्छा करता है। इस तरह वह अपने अंदर हकीकतपसंदी का मिजाज पैदा करता है और हकीकतपसंदी का मिजाज बिलाशुबह इस दुनिया में कामयाबी का सबसे बड़ा जीना है।

وَكَانَ مِنْ قَرِيْبٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَيْهَا وَرُسُلُهُ فَجَاسَبَهَا حَسَابًا

شَدِيدًا أَوَّعَدَ بِهَا عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ۚ أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِيَ الْأَلْبَابِ ۚ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ قَدْ أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۖ رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللَّهِ مُبَيِّنَاتٍ لِيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ۖ

और बहुत सी बस्तियां हैं जिन्होंने अपने रब और उसके रसूलों के हुक्म से सरताबी (विमुखता) की, पस हमने उनका सज़ा हिसाब किया और हमने उन्हें हौलनाक सजा दी। पस उन्होंने अपने किए का ववाल चखा और उनका अंजामकार ख़सारा (घाटा) हुआ। अल्लाह ने उनके लिए एक सज़ा अजाब तैयार कर रखा है। पस अल्लाह से डरो, ऐ अक्ल वाले जो कि ईमान लाए हो। अल्लाह ने तुम्हारी तरफ एक नसीहत उतारी है, एक रसूल जो तुम्हें अल्लाह की खुली-खुली आयतें पढ़कर सुनाता है। ताकि उन लोगों को तारीकियों से रोशनी की तरफ निकाले जो ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया। और जो शख्स अल्लाह पर ईमान लाया और नेक अमल किया उसे वह ऐसे बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वे उनमें हमेशा रहेंगे, अल्लाह ने उसे बहुत अच्छी रोज़ी दी। (8-11)

ताकि अहले ईमान को तारीकी से निकाल कर रोशनी में ले आए। इस मौके पर यह बात आइली (पारिवारिक) कानून के बारे में है। कदीम जमाने में सारी दुनिया में तवह्हुमात (अंधविश्वास) का ग़लबा था। तरह-तरह के तवह्हुमाती अकाइद ने मर्द और औरत के तअल्लुक़ात को गैर फितरी बुनियादों पर कायम कर रखा था। कुरआन ने इन तवह्हुमातों को ख़त्म किया और दुबारा मर्द और औरत के तअल्लुक़ात को फितरत की बुनियाद पर कायम किया। इस इतिजाम के बाद भी जो लोग इस्लाही रास्ते को इख्तियार न करें उनके लिए खुदा की दुनिया में घाटे के सिवा और कुछ नहीं।

‘अक्ल वाले अल्लाह से डरो’ का फ़िक़रा बताता है कि तक्वे का सरचश्मा (मूल स्रोत) अक्ल है। आदमी अपने अक्ल व शुऊर को काम में लाकर ही उस दर्जे को हासिल करता है जिसे शरीअत में तक्वा (परहेजगारी, ख़ोफे खुदा) कहा गया है।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ وَمِنْ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِيَتْلُوَ عَلَيْكُمْ كُلَّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۚ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ۖ

अल्लाह ही है जिसने बनाए सात आसमान और उन्हीं की तरह जमीन भी। उनके अंदर उसका हुक्म उतरता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है। और अल्लाह ने अपने इल्म से हर चीज का इहाता (आच्छादन) कर रखा है। (12)

‘व मिनल अरजि मिसल हुन्न’ से मुराद अगर सात जमीनें हैं तो इल्मुल अफलाक (आकाशीय विज्ञान) अभी तक इस तादाद को दरयाफ्त नहीं कर सका है। इंसानी मालूमात के मुताबिक, इस तहरीर (लेखन) के वक़्त तक मौजूदा जमीन सारी कायनात में एक इस्तिस्ना (अपवाद) है। इसलिए यह अल्लाह को मालूम है कि इस आयत का वाकई मतलब क्या है।

‘ताकि तुम जानो कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है।’ इससे मालूम होता है अल्लाह को इंसान से अस्लन जो चीज मल्लूब है वह ‘इल्म’ है, यानी जाते खुदावंदी का शुक्र। कायनात का अजीम कारखाना इसलिए बनाया गया है कि इंसान उसके जरिए ख़ालिक को पहचाने, वह उसके जरिए खुदा की बेपायां (असीम) कुस्त की मअसलत (अन्तर्ज्ञान) हासिल करे।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا ۖ اِنَّا كُنَّا فِيْ سَفٰهٍ ۚ
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْ لَمْ يُحْمَرْ مَا اَحَلَّ اللَّهُ لَكَ تَبِعْنِيْ مَرْضَاتِ اَزْوَاجِكَ ۚ وَاللَّهُ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝۱۰ قَدْ فَوَضَّ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اِيْمَانِكُمْ ۚ وَاللَّهُ مَوْلٰكُمْ وَهُوَ الْعَلِيْمُ
الْحَكِيْمُ ۝۱۱

आयतें-12

सूरह-66. अत-तहरीम

रुकूअ-2

(मदीना में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ऐ नबी तुम क्यों उस चीज को हारम करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की है, अपनी वीवियों की रिजामंदी चाहने के लिए, और अल्लाह बख़्शने वाला महरबान है। अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी कसमों का खोलना मुक़र्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज है, और वह जानने वाला, हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (1-2)

वीवियों के पैदा करदा कुछ अंदरूनी मसाइल की वजह से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने घर में यह कसम खा ली कि मैं शहद नहीं खाऊंगा। मगर पैग़म्बर का अमल उसकी उम्मत के लिए नमूना बन जाता है, इसलिए अल्लाह तआला ने हुक्म दिया कि आप शर्इ तरीकेके मुताबिक कफ़्फ़रा (प्रयश्चित) अदा करके अपनी कसम को तोड़ें। और शहद न खाने के अहद से अपने आपको आजाद कर लें। ताकि ऐसा न हो कि आईदा आपके उम्मीती इसे तकवे का मेयार समझ कर शहद खाने से परहेज करने लगें।

وَإِذَا سَأَرَ السَّيِّئُ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضَهُ ۚ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَتٰكَ هٰذَا ۖ قَالَ نَبَّأَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝۱۰ اِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظْهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ ۚ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بِعَدِّ ذٰلِكَ ظٰهِيْرٌ ۝۱۱ عَسٰى رَبُّهُ اِنْ طَلَّقَكُنْ اَنْ يُبَدِّلَهٗ اٰثَرًا وَاٰجًا خَيْرًا مِّمَّنْكَ ۚ مُسْلِمَتٍ مُّؤْمِنَتٍ قَنِيَّتٍ تَبِيَّتٍ غِيْثٍ سَبِيْحَتٍ ثِيَابٍ ۚ اَبْكَاۤرًا ۝۱۲

और जब नबी ने अपनी किसी बीवी से एक बात सुना कर कही, तो जब उसने उसे बता दिया और अल्लाह ने नबी को उससे आगाह कर दिया तो नबी ने कुछ बात बताई और कुछ टाल दी, फिर जब नबी ने उसे यह बात बताई तो उसने कहा कि आपको किसने इसकी ख़बर दी। नबी ने कहा कि मुझे बताया जानने वाले ने, बाख़बर ने। अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ रुजूअ करो तो तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं, और अगर तुम दोनों नबी के मुक़बले में कार्खाइयां करोगी तो उसका रफ़ीक (साथी) अल्लाह है और ज़िब्रील और सालेह (नेक) अहले ईमान और इनके अलावा फ़रिश्ते उसके मददगार हैं। अगर नबी तुम सबको तलाक दे दे तो उसका ख़ब तुम्हारे बदले में तुमसे बेहतर बीवियां उसे दे दे, मुस्लिमा, बाईमान, फरमांबरदार, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोजेदार, विधवा और कुंवारी। (3-5)

मज्क़रा मामले में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कुछ अजवाज (पलियों) ने आपके घर में जो पेचीदगी पैदा की थी, उस पर मुतनब्वह करने के लिए आपकी अजवाज से अल्टीमेटम के अंदाज में कलाम किया गया। इससे ज़िंदगी के मामलात में औरतों की अहमियत मालूम होती है। हकीकत यह है कि औरतें अगर सही मअनों में अपने शोहरों की सहायता (सहयोग) करें तो वे उनका ‘आधा बेहतर’ बन जाती हैं। और अगर वे सच्ची रफ़ीक साबित न हों तो वे एक बामक्सद इंसान के पूरे मंसूबे को ख़ाक में मिला सकती हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْا اَنْفُسَكُمْ وَاٰهْلِيْكُمْ نَارًا ۚ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحٰجَارَةُ ۚ عَلَيْهَا مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُوْنَ اِلٰهَ مَا اَمَرَهُمْ ۚ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُوْمَرُوْنَ ۝۱۲ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوْا الْيَوْمَ ۚ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۱۳

ऐ ईमान वालो अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर होंगे, उस पर तुंदखू (कठोर) और जबरदस्त फरिस्ते मुकर्र हैं, अल्लाह उन्हें जो हुक्म दे उसमें वे उसकी नाफरमानी नहीं करते, और वे वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है। ऐ लोगो जिन्होंने इंकार किया, आज उज़्र न पेश करो, तुम वही बदले में पा रहे हो जो तुम करते थे। (6-7)

मौजूदा दुनिया में अक्सर ऐसा होता है कि आदमी एक चीज को हक समझता है। मगर बीबी बच्चों से बढ़ा हुआ तअल्लुक उसे मजबूर करता है कि वह हक के तरीके को छोड़ दे और वही करे जो उसके बीबी-बच्चे चाहते हैं। मगर यह जबरदस्त भूल है। इंसान को याद रखना चाहिए कि आज जिन बच्चों की रिआयत करने में वह इस हद तक जाता है कि हक की रिआयत करना भूल जाता है, वे बच्चे अपनी इस रविश के नतीजे में कल ऐसे जहन्नमी कारिंदों के हवाले किए जाएंगे जो मशीनी इंसान (Robot) की तरह बेरहम होंगे और उनके साथ किसी किस्म की कोई रिआयत नहीं करेंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا عَلَىٰ رَبِّكُمْ أَنْ تُكْفَرَعَنكُمْ
سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ يُؤْمَرُونَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا
أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَاعْفِرْ لَنَا إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

ऐ ईमान वालो, अल्लाह के आगे सच्ची तौबा करो। उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और तुम्हें ऐसे बागों में दाखिल करे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिस दिन अल्लाह नबी को और उसके साथ ईमान लाने वालों को रुसवा नहीं करेगा। उनकी रोशनी उनके आगे और उनके दाईं तरफ दौड़ रही होगी, वे कह रहे होंगे कि ऐ हमारे रब हमारे लिए हमारी रोशनी को कामिल कर दे और हमारी मफिफत फरमा, बेशक तू हर चीज पर कदिर है। (8)

मौजूदा दुनिया में इंसान को आजमाइशी हालात में रखा गया है। इसलिए इंसान से गलतियां भी होती हैं। उसकी तलाफ़ी के लिए तौबा है। यानी अल्लाह की तरफ रुजूअ करना। तौबा की अस्त हकीकत शर्मिंदगी है। आदमी को अगर वाक़ेयतन अपनी ग़लती का एहसास हो तो वह सख्त शर्मिंदगी होगा और उसकी शर्मिंदगी उसे मजबूर करेगी कि वह आइंदा ऐसा फ़ैल न करे। चुनांचे हदीस में आया है कि शर्मिंदगी ही तौबा है। एक सहाबी ने कहा है कि सच्ची तौबा यह है कि आदमी रुजूअ करे और फिर उस फ़ैल को न दोहराए।

तौबा वह है जो सच्ची तौबा (तौबतुन नसूह) हो। महज अल्फ़ाज़ दोहरा देने का नाम

तौबा नहीं। हजरत अली ने एक शख्स को देखा कि वह अपनी किसी ग़लती के बाद जबान से तौबा तौबा कह रहा है। आपने फरमाया कि यह झूठे लोगों की तौबा है। सच्ची तौबा आखिरत की रोशनी है और झूठी तौबा आखिरत का अंधेरा।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝ ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتٍ زَوْجَهَا مِمَّا
لَوْ طِئَ كَانَتْ تَحْتَهُ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَاتَمَهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا
عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّٰخِلِينَ ۝

ऐ नबी मुंकिरों और मुनाफिकों (पाखंडियों) से जिहाद करो और उन पर सख्ती करो, और उनका ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा ठिकाना है। अल्लाह मुंकिरों के लिए मिसाल बयान करता है नूह की बीबी की और लूत की बीबी की, दोनों हमारे बंदों में से दो नेक बंदों के निकाह में थीं, फिर उन्होंने उनके साथ ख़ियानत की तो वे दोनों अल्लाह के मुकाबले में उनके कुछ काम न आ सके, और दोनों को कह दिया गया कि आग में दाखिल हो जाओ दाखिल होने वालों के साथ। (9-10)

‘मुनाफिकीन के साथ जिहाद करो’ का मतलब यह है कि मुनाफिकीन का सख्त अहतसाब करो। यह एक दाइमी हुक्म है। मुआशिरों के बड़ों और जिम्मेदारों को चाहिए कि वे मुआशिरों के अफ़राद पर मुस्तकिल नजर रखें। और जब भी कोई मुसलमान ग़लत रविश इख़्तियार करे तो उसे रोकने की वे हर मुमकिन कोशिश करें जो उनके इम्कान में है। खुदा के यहां आदमी का सिर्फ अपना अमल काम आएगा यहां तक कि बुजुर्गों से निस्वत या सालिहीन से रिश्तेदारी भी वहां किसी के कुछ काम आने वाली नहीं। हजरत नूह और हजरत लूत खुदा के पैग़म्बर थे। मगर उनकी बीवियां दुश्मनाने हक से भी क़ब्बी तअल्लुक का रिश्ता कायम किए हुए थीं। इसका नतीजा यह हुआ कि पैग़म्बर की बीबी होने के बावजूद वे दोषग़ुह की मुतहिक़ वज़ार पाईं।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتٍ فَرَعَوْنَ ۖ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي
عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ ۖ وَبِخْتِي مِنْ فَرَعُونَ وَعَمَلِهِ ۖ وَبِخْتِي مِنَ الْقَوْمِ
الظَّالِمِينَ ۝ وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَدَتْ فَرجَهَا فَكَفَعْنَاهَا مِنْ
زَوْجِنَا ۖ وَصَدَقْتَ بِكِلْمَتِ رَبِّهَا وَكُتِبَ عَلَيْهَا وَكَانَتْ مِنَ الْقَانِتِينَ ۝

और अल्लाह ईमान वालों के लिए मिसाल बयान करता है फिरऔन की बीबी की,

जबकि उसने कहा कि ऐ मेरे रब, मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे और मुझे फिरौन और उसके अमल से बचा ले और मुझे जालिम कैम से नजात दे। और इमरान की बेटी मरयम, जिसने अपनी अस्पत (सतीत्व) की हिफाजत की, फिर हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और उसने अपने रब के कलिमात की और उसकी किताबों की तस्दीक की, और वह फरमांबरदारों में से थी। (11-12)

फिरौन एक मुक़िर और जालिम शख्स था। मगर उसकी बीवी आसिया बिनत मुजाहिम ईमानदार और बाअमल ख़ातून थी। बीवी ने जब अपने आपको सही रविश पर कायम रखा तो शोहर की ग़लत रविश उसे कुछ नुक़सान न पहुंचा सकी। शोहर जहन्नम में दाख़िल किया गया और बीवी को जन्नत के बाग़ों में जगह मिली।

अहसनत फरजहा दरअस्त किनाया (संकेत) है। इसका मतलब यह है कि उन्होंने अपनी अस्पत (सतीत्व) को महफूज रखा। बचपन से जवानी तक वह पूरी तरह बेदाग रहीं। चुनांचे अल्लाह ने उन्हें मोजिजाती पैग़म्बर की पैदाइश के लिए चुना। कुछ रिवायात के मुताबिक, जिब्रील फरिश्ते ने उनके गिरेबान में फूंक मारी, जिससे इस्तकारे हमल (गर्भ का ठहरना) हुआ और फिर हजरत मसीह अलैहिस्सलाम पैदा हुए।

سُوِّءَ الْمُلْكُ بِكَ يَوْمَ تَكُونُ ابْنُ قَوْفٍ يَارْكُوعًا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ۝ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ۚ مَا تَرَىٰ فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِن تَفَوُّتٍ ۚ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَىٰ مِن فُطُورٍ ۚ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ۝

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। बड़ा बाबरकत है वह जिसके हाथ में बादशाही है और वह हर चीज पर कादिर है। जिसने मौत और ज़िंदगी को पैदा किया ताकि तुम्हें जांचे कि तुम में से कौन अच्छा काम करता है, और वह जबरदस्त है, बख़्शने वाला है। जिसने बनाए सात आसमान ऊपर तले,

तुम रहमान के बनाने में कोई ख़लल (असंगति) नहीं देखोगे, फिर निगाह डाल कर देख लो, कहीं तुम्हें कोई ख़लल नजर आता है। फिर बार-बार निगाह डाल कर देखो, निगाह नाकाम थक कर तुम्हारी तरफ वापस आ जाएगी। (1-4)

जब एक शख्स मौजूदा दुनिया का मुतालआ करता है तो उसे यहां एक तजाद (असंगति) नजर आता है। इंसान के सिवा जो बकिया कायनात है वह इतिहाई हद तक मुनज़्जम और कामिल है। उसमें कहीं कोई नक्स नजर नहीं आता। इसके बरअक्स इंसानी जिंदगी में जुम व फसाद नजर आता है। इसकी वजह इंसान की अलाहदा (पृथक) नौइयत है। इंसान इस दुनिया में हालते इम्तेहान में है। इम्तेहान लाजिमी तौर पर अमल की आजदी चाहता है। इसी अमल की आजदी ने इंसान को यह मौमन दिया है कि वह दुनिया में जुम व फसाद कर सके।

इंसानी दुनिया का जुम इंसानी आजदी की कीमत है। अगर ये हालात न हों तो उन कीमती इंसानों का इंतख़ाब कैसे किया जाएगा जिन्हें जुम के मौके पाते हुए जुम नहीं किया। जिन्होंने सरकशी की ताकत रखने के बावजूद अपने आपको सरकशी से बचाया।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحٍ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ۝ وَلِلَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وبئس المصيرُ ۝ إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ تَفُورُ ۝ تَكَادُ تَبْكُرُ مِنَ الْغَيْظِ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ۚ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ ۚ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۝ وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۚ فَاعْرِفُوا بِذُنُوبِهِمْ فَسُحْقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ۝

और हमने करीब के आसमान को चराग़ों से सजाया है। और हमने उन्हें शैतानों के मारने का जरिया बनाया है। और हमने उनके लिए दोख़ का अजाब तैयार कर रखा है। और जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया, उनके लिए जहन्नम का अजाब है। और वह बुरा ठिकाना है। जब वे उसमें डाले जाएंगे, वे उसका दहाड़ना सुनेंगे और वह जोश मारती होगी, मालूम होगा कि वह गुस्से में फट पड़ेगी। जब उसमें कोई गिरोह डाला जाएगा, उसके दारोशा उससे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। वे कहेंगे कि हां, हमारे पास डराने वाला आया। फिर हमने उसे झुल्ला दिया और हमने कहा कि अल्लाह ने कोई चीज नहीं उतारी, तुम लोग बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो। और वे कहेंगे कि अगर हम सुनते या समझते तो हम दोख़ वालों में से न होते। पस वे अपने गुनाह का इकरार करेंगे, पस लानत हो दोख़ वालों पर। (5-11)

कुरआन में जगह-जगह जहन्नम का नक्शा खींचा गया है। यह जहन्नम अगरचे आज इंसान के लिए नाकाबिले मुशाहिदा (अ-अवलोकनीय) है। मगर वह कायनात की मअनवियत में बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर नजर आती है। हकीकत यह है कि अगर आखिरत में बुरे लोगों की पकड़ न होने वाली हो तो मौजूदा कायनात की सारी मअनवियत नाकाबिले तौजीह (औचित्यहीन) होकर रह जाएगी।

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝ وَأَسِرُوا قَوْلَكُمْ
أَوَاجْهُرُؤَابِهِ إِنَّكُمْ عَلَيْهِمْ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ
اللطيفُ الخبيرُ ۝

जो लोग अपने रब से विन देखे डरते हैं, उनके लिए मफ़िरत (क्षमा) और बड़ा अज़्र (प्रतिफल) है। और तुम अपनी बात छुपाकर कहो या पुकार कर कहो, वह दिलों तक की बातों को जानता है। क्या वह न जानेगा जिसने पैदा किया है, और वह बारीकबी (सूक्ष्मदर्शी) है, ख़बर रखने वाला है। (12-14)

आखिरत के अजाब का मौजूदा दुनिया में नाकाबिले मुशाहिदा (अ-अवलोकनीय) होना ऐन खुदाई मंसूबे के मुताबिक है। खुदा को उन इंसानों का इंतखाब करना है जो बिना देखे उसकी अज्मत को मानें, जो बिना देखे उसके फरमांबरदार बन जाएं। और ऐसे लोगों का अंदाजा इसके बग़ैर नहीं हो सकता कि लोगों के उखरवी (परलोक के) अंजाम को उनकी निगाहों से ओझल रखा जाए, ताकि आदमी जो कुछ करे अपने आजाद इरादे के तहत करे न कि मजबूराना हुक्म के तहत।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِن رِّزْقِهِ وَإِلَيْهِ
الْشُّعُورُ ۝ أَمِنْتُمْ مَّن فِي السَّمَاءِ ۚ أَن يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ۝ أَمْ
أَمِنْتُمْ مَّن فِي السَّمَاءِ ۚ أَن يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرِ ۝
وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَذِيرِ ۝

वही है जिसने जमीन को तुम्हारे लिए पस्त वशीभूत कर दिया तो तुम उसके रास्तों में चलो और उसके रिक में से खाओ और उसी की तरफ है उटना। क्या तुम उससे बेखौफ हो गए जो आसमान में है कि वह तुम्हें जमीन में धंसा दे, फिर वह लरजने लगे। क्या तुम उससे जो आसमान में है बेखौफ हो गए कि वह तुम पर पथराव करने वाली हवा भेज दे, फिर तुम जान लो कि कैसा है मेरा डराना। और उन्होंने झुठलाया जो उनसे पहले थे। तो कैसा हुआ मेरा इंकार। (15-18)

जमीन पर हर चीज निहायत तवाजु (संतुलन) की हालत में है। इसी तवाजु ने जमीन को इंसान के लिए कबिले रिहाइश बना रखा है। इस तवाजु में अगर मामूली सा भी फर्क पड़ जाए तो इंसान की जिंदगी बर्बाद होकर रह जाए। जो मुतवाजुन (संतुलित) दुनिया हमें हासिल है उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करना, और तवाजुन टूटने की सूरत में जो तबाहकुन हालात पैदा हो सकते हैं उसके लिए अल्लाह से पनाह मांगना, यही वह चीज है जो इंसान से अल्लाह तआला को मलूब है।

وَلَكُمْ يَوْمَ الْاٰلِ الْاٰخِرِ فَوْقَهُمْ صَفَاتٌ وَيَقْبَضُ ۝ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيْرٌ ۝ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِى هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَتَصَرَّكُم مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ۚ اِنَّ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِىْ غُرُوْرٍ ۚ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِى يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقًا بَلْ لَّجُوْا فِىْ عُتُوٍّ وَنُفُوْرٍ ۝

क्या वे परियों को अपने ऊपर नहीं देखते पर फैलाए हुए और वे उन्हें समेट भी लेते हैं। रहमान के सिवा कोई नहीं जो उन्हें थामे हुए हो, बेशक वह हर चीज को देख रहा है। आखिर कौन है कि वह तुम्हारा लश्कर बनकर रहमान के मुकाबले में तुम्हारी मदद कर सके, इंकार करने वाले धोखे में पड़े हुए हैं। आखिर कौन है जो तुम्हें रोजी दे अगर अल्लाह अपनी रोजी रोक ले, बल्कि वे सरशकी पर और बिदकने पर अड़ गए हैं। (19-21)

परियों का फज में उड़ना, रिक का जमीन से निकलना और इस तरह के दूसरे वाक्यात इतिहाई हैरतअगेज हैं। आदमी इन वाक्यात पर गौर करे तो वह खुदाई एहसास में गुम हो जाए। मगर इंसान इतना गाफिल है कि वह एक ऐसी दुनिया में खुदा से सरकशी करता है जहां उसके चारों तरफ फैली हुई चीजें उसे सिर्फ खुदा की इताअत का सबक दे रही हैं।

اَمَّنْ يَنْشِئُ كِبًا عَلٰى وُجْهِهِ ۚ اَمْ اَنْ يَّهْدٰى سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِى اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْئِدَةَ ۚ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝ قُلْ هُوَ الَّذِى ذَرَاَكُمْ فِى الْاَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝

क्या जो शख्स औंधे मुंह चल रहा है वह ज्यादा सही राह पाने वाला है या वह शख्स जो सीधा एक सीधी राह पर चल रहा है। कहो कि वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आंख और दिल बनाए। तुम लोग बहुत कम शुक्र अदा करते हो। कहो कि वही है जिसने तुम्हें जमीन में फैलाया और तुम उसी की तरफ इकट्ठा

इंसान को सुनने और देखने और सोचने की सलाहियतें दी गई हैं। अब कोई इंसान वह है कि जो कुछ सुना उसी पर चल पड़ा, जो देखा उसे बस उसके जाहिर के एतबार से मान लिया। जो बात एक बार जेहन में आ गई उसी पर जम गया। यह इंसान वह है जो जानवर की तरह सर झुकाए हुए बस एक डगर पर चला जा रहा है।

दूसरा इंसान वह है जो सुनी हुई बात की तहकीक करे। जो देखी हुई बात को मजीद ज्यादा सेहत के साथ जानने की कोशिश करे। जो अपने जाती खोल से बाहर निकल कर सच्चाई को दरयाफ्त करे। यह दूसरा इंसान वह है जो सीधा होकर एक हमवार रास्ते पर चला जा रहा है। समअ व बसर व फुवाद (सुनना, देखना, सोचना) की सलाहियत आदमी को इसलिए दी गई है कि वह हक को पहचाने, न यह कि वह अंधे बहरे की तरह उससे बेखबर रहे।

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدْعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن أَهْلَكْنِي اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا أَلَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابِ إِلَهِ ۝ قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ أَمَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَّعِينٍ ۝

और वे कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो कि यह इल्म अल्लाह के पास है और मैं सिर्फ खुला हुआ डराने वाला हूं। पस जब वे उसे करीब आता हुआ देखेंगे तो उनके चेहरे बिगड़ जाएंगे जिन्होंने इंकार किया, और कहा जाएगा कि यही है वह चीज जिसे तुम मांगा करते थे। कहो कि अगर अल्लाह मुझे हलाक कर दे और उन लोगों को जो मेरे साथ हैं, या हम पर रहम फरमाए तो मुंकिरों को दर्दनाक अजाब से कौन बचाएगा। कहो, वह रहमान है, हम उस पर ईमान लाए और उसी पर हमने भरोसा किया। पस अनकरीब तुम जान लोगे कि खुली हुई गुमराही में कौन है। कहो कि बताओ, अगर तुम्हारा पानी नीचे उतर जाए तो कौन है जो तुम्हारे लिए साफ पानी ले आए। (25-30)

मुखातब जब दलील से न माने तो दाअी यकीन का कलिमा बोलकर उसके अंदरून को झिंझोड़ता है। ये आयतें गोया इसी किस्म के यकीन के कलिमात हैं। आदमी के अंदर अगर

कुछ भी एहसास जिंदा हो तो यह आखिरी कलिमात उसे तड़पा देते हैं। मगर जिस शख्स का एहसास बिल्कुल बुझ चुका हो वह किसी तदबीर से भी नहीं जागता। वह 'पानी' की कीमत को सिर्फ उस वक्त तस्लीम करता है जबकि उसे पानी से महरूम करके सहारा (रंगिस्तान) में डाल दिया गया हो।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ وَمَا يَسْطُرُونَ ۝ مَا أَنْتَ بِنِعْمَةٍ رَبِّكَ بِمَجْنُونٍ ۝ وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مُمْنُونٍ ۝ وَإِنَّكَ لَعَلَى خَلْقٍ عَظِيمٍ ۝ فَسْتَبْصِرُ وَيُبْصِرُونَ ۝ بِأَبْصَارِكُمُ الْمَقْتُونُ ۝ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

आयतें-52

सूरह-68. अल-क़त्तम

रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। नून०। क़त्तम है क़त्तम की और जो कुछ लोग लिखते हैं। तुम अपने ख के फल से दीवाने नहीं हो। और बेशक तुम्हारे लिए अज़्र (प्रतिफल) है कभी ख़त्म न होने वाला। और बेशक तुम एक आला अज़्लाक (उच्च चरित्र-आचरण) पर हो। पस अनकरीब तुम देखोगे और वे भी देखेंगे, कि तुम में से किसे जुनून था। तुम्हारा ख ही ख़ूब जानता है, जो उसकी राह से भटका हुआ है, और वह राह पर चलने वालों को भी ख़ूब जानता है। (1-7)

आला अज़्लाक से मुराद वह अज़्लाक है जबकि आदमी दूसरों के रवैये से बुलन्द होकर अमल करे। उसका तरीका यह न हो कि बुराई करने वालों के साथ बुराई और भलाई करने वालों के साथ भलाई, बल्कि वह हर एक के साथ भलाई करे, चाहे दूसरे उसके साथ बुराई ही क्यों न कर रहे हों। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अज़्लाक यही दूसरा अज़्लाक था। इस किस्म का अज़्लाक साबित करता है कि आप एक बाउसूल इंसान थे। आपकी शख्सियत हालात की पैदावार न थी। बल्कि खुद अपने आला उसूलों की पैदावार थी। आपका यह आला अज़्लाक आपके इस दावे के ऐन मुताबिक है कि मैं खुदा का रसूल हूं।

वल कल-मि वमा यसतुरुन० से मुराद तारीखी रिकॉर्ड है। तारीख की शकल में इसानी याददाश्त का जो रिकॉर्ड जमा हुआ है उसमें कुरआन एक इस्तसनाई (अद्वितीय) किताब है। और साहिबे कुरआन एक इस्तसनाई शख्सियत। इस इस्तसना की इसके सिवा और कोई तौजीह नहीं की जा सकती कि कुरआन को खुदा की किताब माना जाए। और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खुदा का पैगम्बर।

فَلَا تُطِيعُ الْمُكَذِّبِينَ ۝ وَذُوقُوا ثَوْدَهُنَّ فَيَذْنُوهُنَّ ۝ وَلَا تُطِيعُ كُلَّ حَلَّافٍ مَهِينٍ ۝ هَذَا مَقْشَاؤُكُمْ بِمِيزِهِ ۝ مَقْشَاؤُكُمْ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٌ ۝ عَتِلٌ بَعْدَ ذَلِكَ زَنِيمٌ ۝ أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ۝ إِذْ أَتٰهُ عَلَيْهِ إِيتِنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ سَنَسِفُهُ عَلَى الْخُرُومِ ۝

पस तुम इन झुठलाने वालों का कहना न मानो। वे चाहते हैं कि तुम नर्म पड़ जाओ तो वे भी नर्म पड़ जाएं। और तुम ऐसे शख्स का कहना न मानो जो बहुत कसमें खाने वाला हो, बेवक़त (हीन) हो, ताना देने वाला हो, चुगली लगाता फिरता हो, नेक काम से रोकने वाला हो, हद से गुजर जाने वाला हो, हक मारने वाला हो, संगदिल हो, साथ ही बेनस्व (अधम) हो। इस सबब से कि वह माल व औलाद वाला है। जब उसे हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि ये अगलों की बेसनद बातें हैं। अनकरीब हम उसकी नाक पर दाग लगाएंगे। (8-16)

‘झुठलाने वालों का कहना न मानो’ का मतलब यह है कि झुठलाने वाले इस काबिल नहीं कि उनका कहना माना जाए। एक तरफ हक का अलमबरदार (ध्वजावाहक) है जो दलील पर खड़ा हुआ है, जिसके कौल व फेअल में कोई तजाद (अन्तर्विरोध) नहीं। दूसरी तरफ उसके मुखालिफीन हैं जिनके पास झूठी बातों और पस्त किरदार के सिवा और कोई सरमाया नहीं। दाओए हक का एतमाद सदाकत पर है और उसके मुखालिफीन का एतमाद अपनी माददी हैसियत पर। हक का दाओ उसूल का पाबंद है। इसके बरअक्स उसके मुखालिफीन के सामने कोई उसूल नहीं। वे कभी एक बात कहते हैं और कभी दूसरी बात। अगर किसी शख्स के अंदर अकल हो तो यही फर्क यह बताने के लिए काफी है कि कौन शख्स हक पर है और कौन शख्स नाहक पर।

إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ۝ وَلَا يَسْتَشْنُونَ ۝ فطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ۝ فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ۝ فَتَنَادُوا مُصْبِحِينَ ۝ أَنْ اْعْدُوا عَلٰى حَرْبِكُمْ ۝ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ فَأَنْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ ۝ أَنْ لَا يَدْخُلْنَهَا يُبْأَرُونَ عَلَيْكُمْ ۝ مَّسْكِينَ ۝ وَغَدُوا عَلَىٰ حَرْدٍ قَادِرِينَ ۝ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُونَ ۝ بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۝ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ۝ قَالُوا سُبْحَنَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلََاوُمُونَ ۝

قَالُوا يُونُسُ إِنَّا كُنَّا طَٰغِيْنَ ۝ عَسَىٰ رَبُّنَا أَنْ يُبْدِلَنَا خَيْرًا مِّمَّا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا رَاغِبُونَ ۝ كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۝ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كُنَّا يَعْلَمُونَ ۝

हमने उन्हें आजमाइश (परीक्षा) में डाला है जिस तरह हमने बाग वालों को आजमाइश में डाला था। जबकि उन्होंने कसम खाई कि वे सुबह सवेरे जरूर उसका फल तोड़ लेंगे। और उन्होंने इंशाअल्लाह नहीं कहा। पस उस बाग पर तेरे रब की तरफ से एक फिरने वाला फिर गया और वे सो रहे थे। फिर सुबह को वह ऐसा रह गया जैसे कटी हुई फल। पस सुबह को उन्होंने एक दूसरे को पुकारा कि अपने खेत पर सवेरे चलो अगर तुम्हें फल तोड़ना है। फिर वे चल पड़े और वे आपस में चुपके-चुपके कह रहे थे। कि आज कोई मोहताज तुम्हारे बाग में न आने पाए। और वे अपने को न देने पर कादिर समझ कर चले। फिर जब बाग को देखा तो कहा कि हम रास्ता भूल गए। बल्कि हम महरूम (वंचित) हो गए। उनमें जो बेहतर आदमी था उसने कहा, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम लोग तस्वीह क्यों नहीं करते। उन्होंने कहा कि हमारा रब पाक है। वेशक हम जालिम थे। फिर वे आपस में एक दूसरे को इल्जाम देने लगे। उन्होंने कहा, अफसोस है हम पर, वेशक हम हद से निकलने वाले लोग थे। शायद हमारा रब हमें इससे अच्छा बाग इसके बदले में दे दे, हम उसी की तरफ रज्जुआ होते हैं। इसी तरह आता है अजाब, और आखिरत का अजाब इससे भी बड़ा है, काश ये लोग जानते। (17-33)

इस दुनिया में आदमी जो कुछ कमाता है वह बजाहिर खेत से या और किसी चीज से मिलता हुआ नजर आता है। मगर हकीकतन वह खुदा का दिया हुआ होता है। जो शख्स उसे खुदा का अतिया समझे और उसमें दूसरे बंदगाने खुदा का हिस्सा निकाले उसकी कमाई में अल्लाह तआला बरकत अता फरमाएगा। और जो शख्स अपनी कमाई को अपनी लियाकत का नतीजा समझे और दूसरों का हक उन्हें देने पर राजी न हो, उसकी कमाई उसे फायदा न दे सकेगी। यह खुदा का अटल कानून है। कभी वह किसी के लिए दुनिया में भी जाहिर हो जाता है और आखिरत में तो लाजिमन वह हर एक के हक में जाहिर होगा।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَدَّتِ التَّوْعِيمُ ۝ أَفَتَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ ۝ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَخْكُمُونَ ۝ أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ ۝ إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَّا تَخْيِرُونَ ۝ أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ ۝ إِنَّ لَكُمْ لَهَا تَخْكُمُونَ ۝ سَلِّمُوا إِلَيْهِمْ بِذٰلِكَ زَعِيمٌ ۝ أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ ۝ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ ۝ إِن كَانُوا صٰدِقِينَ ۝

बेशक डरने वालों के लिए उनके रब के पास नेमत के बाग हैं। क्या हम फरमांबरदारों (आज्ञाकारियों) को नाफरमानों के बराबर कर देंगे। तुम्हें क्या हुआ, तुम कैसा फैसला करते हो। क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो। उसमें तुम्हारे लिए वह है जिसे तुम पसंद करते हो। क्या तुम्हारे लिए हमारे ऊपर कसमें हैं कियामत तक बाकी रहने वाली कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम फैसला करो। उनसे पूछो कि उनमें से कौन इसका जिम्मेदार है। क्या उनके कुछ शरीक हैं, तो वे अपने शरीकों को लाएं अगर वे सच्चे हैं। (34-41)

खुदा से न डरने वाला आदमी सिर्फ सामने की चीजों को अहमियत देता है। इसके मुकाबले में खुदा से डरने वाला वह है जो शैबी हकीकत (अप्रकट यथार्थ) के बारे में संजीदा हो जाए। ये दो बिल्कुल अलग-अलग किरदार हैं और दोनों का अंजाम यकीनी तौर पर एकसां नहीं हो सकता।

يَوْمَ يَكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعُوْنَ إِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيعُوْنَ ۖ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُقُهُمْ ذُلٌّ وَقَدْ كَانُوا يَدْعُوْنَ إِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سَالِمُونَ ۝ فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَدِّبْ بِهَذَا الْحَدِيثِ سَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ۖ وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ۝

जिस दिन हकीकत से पर्दा उठाया जाएगा और लोग सज्दे के लिए बुलाए जाएंगे तो वे न कर सकेंगे। उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, उन पर जिल्लत छाई होगी, और वे सज्दे के लिए बुलाए जाते थे और सही सालिम थे। पस छोड़ो मुझे और उन्हें जो इस कलाम को झुठलाते हैं, हम उन्हें आहिस्ता-आहिस्ता ला रहे हैं जहां से वे नहीं जानते। और मैं उन्हें मोहलत दे रहा हूं, बेशक मेरी तदबीर मजबूत है। (42-45)

कियामत में जब खुदा अयानन (प्रत्यक्षतः) सामने आ जाएगा तो तमाम ईमान वाले लोग अपने रब के सामने सज्दे में गिर जाएंगे जिस तरह वे पिछली ज़िंदगी में उसके आगे सज्दे में गिर हुए थे। मगर जुड़े खुदाय्दी के वक्त सज्दे की यह तौफ़ीक सिर्फ सच्चे मोमिनीन को हासिल होगी। जो लोग दुनिया में झूठा सज्दा करते थे उनकी कमर उस वक्त अकड़ जाएगी जिस तरह बाएतबार हकीकत वह दुनिया में अकड़ी हुई थी। ऐसे लोग सज्दा करना चाहेंगे मगर वे सज्दा न कर सकेंगे। यह मुख़्लिस अहले ईमान की सबसे बड़ी कद्रदानी होगी कि खुदा खुद जाहिर होकर उनका सज्दा कुबूल करे। इसके मुकाबले में ईमान का झूठ दावा करने वालों के लिए यह सबसे ज्यादा रुसवाई का लम्हा होगा कि उनका ख़ालिक व मालिक उनके सामने है और वे उसके सामने अपनी बंदगी का इकरार करने पर कादिर नहीं।

أَمْ سَأَلَهُمْ أَجْرًا ۖ فَهُمْ مِنْ مَّغْرَمٍ مُنْقَلُونَ ۚ أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ۖ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَىٰ وَهُوَ مَكْظُومٌ ۚ لَوْلَا أَنْ تَدَارَكَهُ نِعْمَةٌ مِنْ رَبِّهِ لَنُبِذَ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ۖ فَاجْتَبِهْ رَبُّهُ ۖ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ۖ وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُوْكَ بِأَبْصَارِهِمْ لِنَاسٍ مُّسَوِّغُوْا الذِّكْرَ وَيَقُولُوْنَ إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ۖ وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

क्या तुम उनसे मुआवजा मांगते हो कि वे उसके तावान से दवे जा रहे हैं। या उनके पास शैब है पस वे लिख रहे हैं। पस अपने रब के फैसले तक सब्र करो और मछली वाले की तरह न बन जाओ, जब उसने पुकारा और वह ग़म से भरा हुआ था। अगर उसके रब की महरबानी उसके शामिलेहाल न होती तो वह मजूम (निंदित) होकर चटयल मैदान में फेंक दिया जाता। फिर उसके रब ने उसे नवाजा, पस उसे नेकों में शामिल कर दिया। और ये मुंकिर लोग जब नसीहत को सुनते हैं तो इस तरह तुम्हें देखते हैं गोया अपनी निगाहों से तुम्हें फिसला देंगे। और कहते हैं कि यह जरूर दीवाना है। और वह आलम वालों के लिए सिर्फ एक नसीहत है। (46-52)

दाजी (आद्वानकती) और मदऊ का रिश्ता बेहद नाजुक रिश्ता है। दाजी को यकतरफा तौर पर अपने आपको हुस्ने अख़्लाक का पाबंद बनाना पड़ता है। मदऊ बेदलील बातें करे, वह दाजी को हकीर (तुच्छ) समझे, वह दाजी पर झूठ इल्जाम लगाए। वह चाहे कुछ भी करे। दाजी को हर हाल में अपने आपको रद्देअमल (प्रतिक्रिया) की नफिसयात से बचाना है। दाजी की कामयाबी का राज दो चीजों में छुपा हुआ है मदऊ की ज्यादातियों पर सब्र और मदऊ से कोई मादूदी गर्ज न रखना।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَمَا آدُرُّكَ مَا الْحَاقَّةُ ۖ كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ۖ فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكَوْا بِالطَّاغِيَةِ ۖ وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۖ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَلَاثَةَ أَيَّامٍ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَى كَأَنَّهُمْ عِجَازٌ مُّخْلِ خَاوِيَةٍ ۖ فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِنْ

بَاقِيَةٍ ۝ وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَاتِ بِالْحَاطِئَةِ ۝ فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَابِيَةً ۝ إِنَّا لَنَاطِقُ الْمَاءِ حَمَلُنُكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝ لَنَجْعَلَنَّ لَكُمْ تَذَكُّرًا وَتَعِيَهَا أَذُنٌ وَأَعْيَةٌ ۝

आयतें-52

सूरह-69. अल-हक्कह

रुकूअ-2

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। वह होने वाली। क्या है वह होनी वाली। और तुम क्या जानो कि क्या है वह होने वाली। समूद और आद ने उस खड़खड़ाने वाली चीज को झुठलाया। पस समूद, तो वे एक सज़ा हादसे से हलाक कर दिए गए। और आद, तो वे एक तेज व तुंद हवा से हलाक किए गए। उसे अल्लाह ने सात रात और आठ दिन उन पर मुसल्लत रखा, पस तुम देखते हो कि वहां वे इस तरह गिरे हुए पड़े हैं गोया कि वे खजूरों के खोखले तने हों। तो क्या तुम्हें उनमें से कोई बचा हुआ नजर आता है। और फिरऔन और उससे पहले वालों और जल्दी हुई बस्तियों ने जुर्म किया। उन्होंने अपने रब के रसूल की नाफरमानी की तो अल्लाह ने उन्हें बहुत सज़ा पकड़। और जब पानी हद से गुजर गया तो हमने तुम्हें कश्ती में सवार कराया। ताकि हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बना दें, और याद रखने वाले कान उसे याद रखें। (1-12)

कुछ लोग खुले तौर पर आखिरत का इंकार करते हैं। कुछ लोग वे हैं जो जबान से आखिरत का इंकार नहीं करते मगर उनके दिल में सारी अहमियत बस इसी दुनिया की होती है। चुनांचे उनकी जिंदगी में और खुले हुए मुकरीन की जिंदगी में कोई फर्क नहीं होता। ये दोनों गिरोह ब-एतबारे हकीकत एक हैं। और दोनों ही अल्लाह के नजदीक आखिरत को झुठलाने वाले हैं। एक गिरोह अगर जबानी तौर पर उसे झुठला रहा है तो दूसरा गिरोह अमली तौर पर।

ऐसे तमाम लोग खुदा के कानून के मुताबिक हलाकत में पड़ने वाले हैं। पैगम्बरों के जमाने में यह हलाकत मौजूदा दुनिया में सामने आ गई और बाद के लोगों के लिए वह आखिरत में सामने आएगी।

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ۝ وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ۝ فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝ وَانْشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ يَوْمٌ مِّمَّ ۝ وَاهِيَةٌ ۝ وَالْمَلَكُ عَلَى أَرْجَائِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَةٌ ۝ يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝

पस जब सूर में यकवारगी फूंक मारी जाएगी। और जमीन और पहाड़ों को उठाकर एक ही बार में रेज़-रेज़ा कर दिया जाएगा। तो उस दिन वाक़ेअ (घटित) होने वाली वाक़ेअ हो जाएगी। और आसमान फट जाएगा तो वह उस रोज बिल्कुल बोदा होगा। और फरिश्ते उसके किनारों पर होंगे, और तेरे रब के अर्श को उस दिन आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाए होंगे। उस दिन तुम पेश किए जाओगे, तुम्हारी कोई बात पोशीदा (छुपी) न होगी। (13-18)

मौजूदा दुनिया इस्तेहान की मस्तेहत के मुताबिक बनाई गई है। जब इस्तेहान की मुद्दत ख़त्म होगी तो यह दुनिया तोड़कर नई दुनिया नए तक्कों के मुताबिक बनाई जाएगी। खुदा का जलाल आज बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर जाहिर हो रहा है, उस वक़्त खुदा का जलाल बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) तौर पर जाहिर हो जाएगा।

فَالْأَمِنْ أَوْقَى كِتَابٍ بِيَمِينِهِ ۝ فَيَقُولُ هَآؤُمُ اقْرَءُوا كِتَابِيَةَ ۝ إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلْقٍ حِسَابِيَةَ ۝ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝ فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ۝ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝ وَأَمَّا مَنْ أَوْقَى كِتَابٍ شِمَالِهِ ۝ فَيَقُولُ يَلَيْتَنِي لَمْ أُوتِ كِتَابِيَةَ ۝ وَلَمْ أَدْرِمَا حِسَابِيَةَ ۝ يَلَيْتَنِي كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۝ مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَةَ ۝ هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيَةَ ۝ خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ۝ ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۝ ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ۝ إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۝ وَلَا يَحْضُ عَلَىٰ طَعَامِ الْبُسْكِينَ ۝ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَهُنَا حَبِيمٌ ۝ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غَسِيلِينَ ۝ لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۝

पस जिस शख्स को उसका आमालनामा (कर्म-पत्र) उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा तो वह कहेगा कि लो मेरा आमालनामा पढ़ लो। मैंने गुमान रखा था कि मुझे मेरा हिसाब पेश आने वाला है। पस वह एक पसंदीदा ऐश में होगा। ऊंचे बाग़ में उसके फल झुके पड़े होंगे। खाओ और पियो मजे के साथ, उन आमाल के बदले में जो तुमने गुजरे दिनों में किए हैं। और जिस शख्स का आमालनामा उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा, तो वह कहेगा काश मेरा आमालनामा मुझे न दिया जाता। और मैं न जानता

कि मेरा हिसाब क्या है। काश वही मौत फैसलाकुन होती। मेरा माल मेरे काम न आया। मेरा इक्तेदार (सत्ता-अधिकार) खत्म हो गया। इस शख्स को पकड़ो, फिर इसे तौक पहनाओ। फिर इसे जहन्नम में दाखिल कर दो। फिर एक जंजीर में जिसकी पैमाइश सत्तर हाथ है इसे जकड़ दो। यह शख्स खुदाए अजीम पर ईमान न रखता था। और वह ग़रीबों को खाना खिलाने पर नहीं उभारता था। पस आज यहां इसका कोई हमदर्द नहीं। और ज़म्मों के धोवन के सिवा उसके लिए कोई खाना नहीं। उसे गुनाहगारों के सिवा कोई और न खाएगा। (19-37)

आखिरत की दुनिया में कामयाबी उस शख्स के लिए है जो मौजूदा दुनिया में खुदा से डरकर जिंदगी गुजारे। और जो शख्स मौजूदा दुनिया में निडर होकर रहे और बंदों के मुकाबले में सरकशी करे वह आखिरत में सख्ततरीन अजाब में फंसकर रह जाएगा।

فَلَا أَقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ۖ وَمَا لَا تَبْصِرُونَ ۚ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۖ
 مَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تَأْتُوا مَوْنًا ۚ وَلَا يَقُولُ كَآهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَدَّكَّرُونَ ۖ
 تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۚ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ۚ
 لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۚ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۚ فَمَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ عَنْهُ
 حَاجِزِينَ ۚ وَإِنَّهُ لَتَذَكَّرٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۚ وَإِذْ لَنَعْلَمَنَّ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِينَ ۚ
 وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۚ وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۚ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۚ

पस नहीं, मैं कसम खाता हूँ उन चीजों की जिन्हें तुम देखते हो, और जिन्हें तुम नहीं देखते हो। बेशक यह एक वाइज्जत रसूल का कलाम है। और वह किसी शायर का कलाम नहीं। तुम बहुत कम ईमान लाते हो। और यह किसी काहिन (भविष्य वक्ता) का कलाम नहीं, तुम बहुत कम गौर करते हो। खुदाबंद आलम की तरफ से उतारा हुआ है। और अगर वह कोई बात गढ़कर हमारे ऊपर लगाता तो हम उसका दायां हाथ पकड़ते। फिर हम उसकी रगे दिल काट देते। फिर तुम में से कोई इससे हमें रोकने वाला न होता। और विलाशुबह यह याददिहानी है डरने वालों के लिए। और हम जानते हैं कि तुम में इसके झुठलाने वाले हैं और वह मुंकिरों के लिए पछतावा है। और यह यकीनी हक है। पस तुम अपने अजीम ख के नाम की तस्बीह करो। (38-52)

जो कुछ तुम देखते हो और जो कुछ तुम नहीं देखते सब इस कलाम की सदाकत पर गवाह है। इसका मतलब यह है कि नुजूल कुरआन के वक्त जो मालूमात इंसान की दस्तरस

में आ चुकी थीं और जो बाद के जमाने में उसकी दस्तरस में आने वाली थीं, दोनों इस कलाम की हक्कनियत साबित करने वाली हैं। इस कलाम के बरहक होने की तरदीद (खंडन) न हाल का इल्म कर रहा है और न मुस्तकबिल का इल्म इसकी तरदीद कर सकेगा। इसके बावजूद जो लोग इसे न मानें वे अपने बारे में सिर्फ यह साबित कर रहे हैं कि वे हक और नाहक के मामले में संजीदा नहीं।

بِسْمِ الْمَلِإِ كَيْفَ تَرَىٰ رَجُوعَ الْإِنسَانِ لِرَبِّهِ ۖ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ۚ لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ۚ مِّنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ۚ تَعْرَجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مَقْدَرُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۚ فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ۚ إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ۚ وَنَرَاهُ قَرِيبًا ۚ يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ۚ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعُصْنِ ۚ وَلَا يَسْأَلُ حَبِيبٌ حَبِيبًا ۚ يُبْصَرُونَ وَهُمْ لَوِيفَتِيدِي مِّنْ عَذَابٍ يَوْمَئِذٍ ۚ يَبِينُهُ ۚ وَصَاحِبَتُهُ وَأَخِيهِ ۚ وَفَصِيلَتُهُ الَّتِي تُؤَيِّهِ ۚ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ۚ

आयतें-44

सूरह-70. अल-मआरिज

रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। मांगने वाले ने अजाब मांगा वाकेअ (घटित) होने वाला, मुंकिरों के लिए कोई उसे हटाने वाला नहीं। अल्लाह की तरफ से जो सीझियों का मालिक है। उसकी तरफ फरिस्ते और जिब्रील चढ़कर जाते हैं, एक ऐसे दिन में जिसकी भिक्दार पचास हजार साल है। पस तुम सब करो, भली तरह का सब। वे उसे दूर देखते हैं, और हम उसे करीब देख रहे हैं। जिस दिन आसमान तेल की तलछट की तरह हो जाएगा। और पहाड़ धुने हुए ऊन की तरह। और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा। वे उन्हें दिखाए जाएंगे। मुजरिम चाहेगा कि काश उस दिन के अजाब से बचने के लिए अपने बेटों और अपनी बीबी और अपने भाई और अपने कुबे को जो उसे पनाह देने वाला था और तमाम अहले जमीन को फिदये (मुक्ति मुआमल) में देकर अपने को बचा ले। (1-14)

क़ियामत के मनाजिर को मौजूदा दुनिया में हकीकी तौर पर खेला नहीं जा सकता।

ताहम कुरआन में जगह-जगह उन्हें इशारा या तमसील में बताया गया है ताकि आदमी उनका मुजमल (संक्षिप्त) एहसास कर सके। कियामत जब आएगी तो वह इतनी हौलनाक होगी कि आदमी अपने उन रिश्तों और मफादात (हितों) को भूल जाएगा जिन्हें आज वह इतना अहम समझे हुए है कि उनकी खातिर वह हक को नजरअंदाज कर देता है।

كَلَّا إِنَّهَا لَنظَى ۖ نَزَاعَةٌ لِّلشَّوَى ۖ تَدْعُو مَنَ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى ۖ وَجَمَعَ
فَاَوْعَى ۖ إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ۖ إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۖ وَإِذَا
مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ۖ إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۖ الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ
دَائِمُونَ ۖ وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مِّمَّا لِلنَّاسِ مِنَ الْغُرُوحِ ۖ
وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ عَذَابٍ
رِّبِّهِمْ مُّشْفِقُونَ ۖ إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَا مُنِنُوا ۖ وَالَّذِينَ هُمْ
لِقُرُوبِهِمْ حَافِظُونَ ۖ إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلْكُومِينَ ۖ
فَمَن ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعُدُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ
لِأَمْنَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ۖ وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ۖ
وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۖ أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرُمُونَ ۖ

हरगिज नहीं। वह तो भड़कती हुई आग की लपट होगी जो खाल उतार देगी। वह हर उस शख्स को बुलाएगी जिसने पीठ फेरी और एराज (उपेक्षा) किया। जमा किया और सेंट कर रखा। बेशक ईसान कमहिम्मत पैदा हुआ है। जब उसे तकलीफ पहुंचती है तो वह घबरा उठता है। और जब उसे फारिगुलवाली (सम्पन्नता) होती है तो वह बुल्ल (कंजूसी) करने लगता है। मगर वे नमाजी जो अपनी नमाज की पाबंदी करते हैं। और जिनके मालों में साइल (मांगने वाले) और महरूम (वंचित) का मुअय्यन हक है। और जो इंसाफ के दिन पर यकीन रखते हैं। और जो अपने रब के अजाब से डरते हैं। बेशक उनके रब के अजाब से किसी को निडर न होना चाहिए। और जो अपनी शर्मगाहों की हिफाजत करते हैं मगर अपनी वीवियों से या अपनी ममलूका (अधीन) औरतों से, पस इन पर उन्हें कोई मलामत नहीं, फिर जो शख्स इसके अलावा कुछ और चाहे तो वही लोग हद से तजावुज (उल्लंघन) करने वाले हैं। और जो अपनी अमानतों और अपने अहदों की निभाते हैं। और जो अपनी गवाहियों पर कयम रखते हैं। और जो अपनी नमाज की हिफाजत करते हैं। यही लोग

जन्तों में इज्जत के साथ होंगे। (15-25)

इन आयात में मुख्तसर तौर पर दोनों किस्म के ईसानों की सिफात बयान कर दी गई हैं। उन लोगों की भी जो जन्नत में दाखिल किए जाने के मुस्तहिक करार पाएंगे और उन लोगों की भी जिनके आमाल उन्हें कियामत के दिन जहन्नम में गिराने का सबब बनेंगे।

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ۖ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ۖ
أَيُطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَن يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ ۖ كَلَّا ۖ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّمَّا
يَعْلَمُونَ ۖ

फिर इन मुकियों को क्या हो गया है कि वे तुम्हारी तरफ दौड़े चले आ रहे हैं, दाएं से और बाएं से गिरोह दर गिरोह। क्या उनमें से हर शख्स यह लालच रखता है कि वह नेमत के बाग में दाखिल कर लिया जाएगा। हरगिज नहीं, हमने उन्हें पैदा किया है उस चीज से जिसे वे जानते हैं। (36-39)

जो लोग नाहक पर खड़े हुए हों वे उस वक्त अपनी हैसियत को खत्म होता हुआ महसूस करते हैं जबकि उनके सामने हक की खुली-खुली दावत पेश कर दी जाए। वे ऐसी दावत को जेर करने के लिए उस पर टूट पड़ते हैं। उनकी नामाकूल रविश उन्हें जहन्नम की तरफ ले जा रही होती है। मगर अपनी झूठी खुशफहमी के तहत वे यही समझते रहते हैं कि वे जन्नत की तरफ अपना तेज रफार सफर तैयार रहे हैं।

فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشَارِقِ وَالْمَغْرِبِ إِنَّا لَقَدِرُونَ ۖ عَلَىٰ أَن تُبَدِّلَ خَيْرًا
مِّنْهُمْ ۖ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ ۖ فَذَرْهُمْ يُخَوْضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوْعَدُونَ ۖ يَوْمَ يُخْرِجُونَ مِنَ الْكَجْدِ إِثْرًا ۖ كَالَّذِينَ
إِلَىٰ نَصِيبٍ يُوَفِّضُونَ ۖ خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُقُهُمْ ذُلَّةٌ ۖ ذَلِكَ الْيَوْمُ
الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۖ

पस नहीं मैं कसम खाता हूं मस्किवों (पूर्वों) और मरिबों (पश्चिमों) के रब की, हम इस पर कादिर हैं कि बदल कर उनसे बेहतर ले आएंगे, और हम आजिज नहीं हैं। पस उन्हें छोड़ दो कि वे बातें बनाएं और खेल करें। यहां तक कि अपने उस दिन से दो चार हों जिसका उनसे वादा किया जा रहा है। जिस दिन कब्रों से निकल पड़ेंगे दौड़ते हुए। जैसे वे किसी निशाने की तरफ भाग रहे हों। उनकी निगाहें झुकी होंगी। उन पर

जिल्लत छाई होगी, यह है वह दिन जिसका उनसे वादा था। (40-44)

जमीन पर बास्वार मशिक (पूर्व) और मरिब (पश्चिम) का बदलना जमीन की उस अनाखी खुसूसियत की बिना पर होता है जिसे महवरी झुकाव (Axial tilt) कहते हैं। और जिसकी वजह से जमीन पर मुख्तलिफ किस्म के मौसम पैदा होते हैं। सूरज की निस्वत से अगर जमीन में यह झुकाव न होता तो जमीन इंसान के लिए बहुत कम मुफीद होती। इस झुकाव ने जमीन को इंसान के लिए बहुत ज्यादा मुफीद बना दिया।

जिस दुनिया में कम बेहतर को ज्यादा बेहतर बनाने की ऐसी मिसाल मौजूद हो उस दुनिया में इसी नौइयत के दूसरे वाक्यात का जुहर में आना कुछ भी बईद (असंभव) नहीं। इन खुली-खुली निशानियों के बावजूद जो लोग नसीहत न पकड़ें वे बिलाशुबह गैर संजीदा लोग हैं। और गैर संजीदा लोग सिर्फ उस वक्त नसीहत पकड़ते हैं जबकि वे उसके लिए मजबूर कर दिए गए हों।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَنُوحٍ عَلَيْهِ السَّلَامُ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَى قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي كُنْتُ نَذِيرٌ مُبِينٌ ۖ أَنْ أَعْبُدُوا اللَّهَ وَالتَّقْوَةَ وَاطِيعُونَ ۖ يَعْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى ۖ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ۚ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ

आयतें-28

सूरह-71. नूह

रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। हमने नूह को उसकी कौम की तरफ रसूल बनाकर भेजा कि अपनी कौम के लोगों को खबरदार कर दो इससे पहले कि उन पर एक दर्दनाक अजाब आ जाए। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम के लोगो, मैं तुम्हारे लिए एक खुला हुआ डराने वाला हूँ कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उससे डरो और मेरी इताअत (आज्ञापालन) करो। अल्लाह तुम्हारे गुनाहों से दरगुजर करेगा और तुम्हें एक मुअय्यन वक्त तक बाकी रखेगा। वेशक जब अल्लाह का मुकरर किया हुआ वक्त आ जाता है तो फिर वह टाला नहीं जाता। काश कि तुम उसे जानते। (1-4)

हजरत नूह ग़ालिबन हजरत आदम के बाद सबसे पहले पैगम्बर हैं। उस वक्त के बिगड़े हुए इंसानों को उन्होंने जो पैगाम दिया उसे यहां तीन लफ्ज में बयान किया गया है इबादत,

तकवा, इताअते रसूल। यानी गैर-अल्लाह की परस्तिश छोड़कर एक अल्लाह की परस्तिश करना, दुनिया में अल्लाह से डरकर ज़िंदगी गुजारना, और हर मामले में अल्लाह के रसूल को अपने लिए कबिलेतक्लीद (अनुकरणीय) नमूना समझना। यही हर जमाने में तमाम पैगम्बरों की असल दावत रही है। और यही खुद कुरआन की असल दावत है।

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ۖ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ۖ وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصْرُوا وَاسْتَكْبَرُوا السَّتِيبَارًا ۖ ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهَارًا ۖ ثُمَّ إِنِّي أَكَلْتُ لَهُمْ وَاسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۖ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۖ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۖ وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ۖ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۖ وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۖ أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَوَاتٍ طِبَاقًا ۖ وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا ۖ وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا ۖ وَاللَّهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۖ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۖ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ سَاطًا ۖ لَتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ۖ

नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मैंने अपनी कौम को शब व रोज पुकारा। मगर मेरी पुकार ने उनकी दूरी ही में इजाफा किया। और मैंने जब भी उन्हें बुलाया कि तू उन्हें माफ कर दे तो उन्होंने अपने कानों में उंगलियां डाल लीं और अपने ऊपर अपने कपड़े लपेट लिए और ज़िद पर अड़ गए और बड़ा घमंड किया। फिर मैंने उन्हें वरमला (खुलकर) पुकारा। फिर मैंने उन्हें खुली तबलीग की और उन्हें चुपके से समझाया। मैंने कहा कि अपने रब से माफी मांगो, वेशक वह बड़ा माफ करने वाला है। वह तुम पर आसमान से खूब बारिश बरसाएगा और तुम्हारे माल और औलाद में तक्की देगा। और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा। और तुम्हारे लिए नहरें जारी करेगा। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के लिए अम्मत (महानता) की उम्मीद नहीं रखते। हालांकि उसने तुम्हें तरह-तरह से बनाया। क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस तरह सात आसमान तह-ब-तह बनाए। और उनमें चांद को नूर और सूरज को चराग बनाया। और अल्लाह

ने तुम्हें जमीन से खास एहतिमाम से उगाया। फिर वह तुम्हें जमीन में वापस ले जाएगा।
और फिर उससे तुम्हें बाहर ले जाएगा। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए जमीन को हमवार
(समतल) बनाया ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो। (5-20)

हजरत नूह की इस तकरीर से बाज़ेह होता है कि उनका अंदाज़े दावत भी ऐसी वही था जो कुरआन में लोगों को दावत देने के लिए इस्तिस्नान किया गया है। हजरत नूह ने कायनाती वाक्यात से इस्तदलाल करते हुए अपनी दावत पेश की। उन्होंने इज्तिमाई (सामूहिक) खिताब भी किया और इफ़्तादी (व्यक्तिगत) गुफ्तगुएं भी कीं। लोगों को इस्लाह (सुधार) पर लाने के लिए उन्होंने अपनी सारी कोशिश सर्फ कर डाली। मगर कौम आपकी बात मानने पर राजी न हुई।

‘मालकुम ला तरजून लिल्ला-हि वकारा’ की तफ़सीर अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने इन अल्फ़ाज़ में की है: ‘तुम अल्लाह की अज़मत उस तरह नहीं मानते जिस तरह उसकी अज़मत मानना चाहिए’ इससे मालूम हुआ कि हजरत नूह की कौम अल्लाह का इकरार करती थी मगर उस पर अल्लाह की अज़मत का एहसास उस तरह छाया हुआ न था जिस तरह किसी इंसान पर छाया हुआ होना चाहिए। हकीकत यह है कि यही खुदापरस्ती का अस्ल मेयार है। जो शख्स खुदा की अज़मत में जी रहा हो वह खुदापरस्त है। और जिसका दिल खुदा की अज़मत के एहसास में डूबा हुआ न हो वह खुदापरस्त नहीं।

قَالَ نُوحٌ رَبِّ انِّهْمُ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا مَن لَّمْ يَزِدْهُ مَالًا وَوَلَدًا
خَسَارًا ۖ وَمَكْرُوهًا مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۚ وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا
وَلَا سَوَآمَاءَ وَلَا يَعُوثَ وَيَعُوقَ وَسُرًّا ۚ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا وَلَا تَزِدِ
الظَّالِمِينَ إِلَّا ضَلَالًا ۖ وَمَا حَطِيطٌ بِهِمْ ۚ اغْرِقُوا فَاذْخُلُوا نَارًا فَكَلِمَةً يَّحْدُثُ
لَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ۝

नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, उन्होंने मेरा कहा न माना और ऐसे आदमियों की पैरवी की जिनके माल और औलाद ने उनके घाटे ही में इजाफ़ा किया। और उन्होंने बड़ी तदबीरें कीं। और उन्होंने कहा कि तुम अपने माबूदों (पूज्यों) की हरगिज न छोड़ना। और तुम हरगिज न छोड़ना वद को और सुवाअ को और यूस को और यऊक और नस को। और उन्होंने बहुत लोगों को बहका दिया। और अब तू उन गुमराहों की गुमराही में ही इजाफ़ा कर। अपने गुनाहों के सबब से वे शर्क किए गए। फिर वे आग में दाख़िल कर दिए गए। पस उन्होंने अपने लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई मददगार न पाया। (21-25)

हजरत नूह की दावत का लोगों ने क्यों इंकार किया, इसकी वजह यह थी कि लोगों को हजरत नूह के मुक़बले में उन लोगों की बातें ज्यादा कबिले लिहाज नज़ आईं जो दुनियावी लिहाज से बड़ाई का दर्जा हासिल किए हुए थे। वक्त के बड़ों ने अपनी बड़ाई के घमंड में हक की दावत का इंकार किया। और जो छोटे थे उन्होंने इसलिए इंकार किया कि उनके बड़े उसके मुंकिर बने हुए थे।

हजरत नूह के मुक़बलिफ़ीन ने हजरत नूह के खिलाफ़ बड़ी-बड़ी तदबीरें कीं। उनमें से एक खास तदबीर यह थी कि उन्होंने कहा कि नूह हमारे अकाबिर (वद और सुवाअ और यूस और यऊक और नस) के खिलाफ़ हैं। ये पांचों कदीम ज़माने के सालेह (निक) अफ़राद थे। बाद को वे धीरे-धीरे लोगों की नज़र में मुक़द्दस बन गए। यहां तक कि लोगों ने उन्हें पूजना शुरू कर दिया। उनके नाम पर लोगों को हजरत नूह के खिलाफ़ भड़काना आसान था, चुनांचे उन्होंने यह कहकर आपको लोगों की नज़र में मुशतबह (संदिग्ध) कर दिया कि आप बुजुर्गों के रास्ते को छोड़कर नए रास्ते पर चल रहे हैं।

وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْنِي عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ۚ إِنَّكَ إِن تَذَرْنِي
يُضِلُّوا عِبَادَكَ وَلَا يَكِدُوا إِلَّا فَاغْرًا كَثًّا ۚ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ
وَلِمَن دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ
إِلَّا تَبَارًا ۝

और नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, तू इन मुंकिरों में से कोई जमीन पर बसने वाला न छोड़। अगर तूने इन्हें छोड़ दिया तो ये तेरे बंदों को गुमराह करेंगे और उनकी नस्ल से जो भी पैदा होगा बदकार और सज़्त मुंकिर ही होगा। ऐ मेरे रब, मेरी मफ़िरत (स्फ़ि) फरमा। और मेरे मां बाप की मफ़िरत फरमा। और जो मेरे घर में मोमिन होकर दाख़िल हो तू उसकी मफ़िरत फरमा। और सब मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को माफ़ फरमा दे और ज़लियों के लिए हलाकत (नाश) के सिवा किसी चीज़ में इज़ाम न कर। (26-28)

हजरत नूह की दुआ से मालूम होता है कि उनके ज़माने में बिगाड़ अपनी आख़िरी हद तक पहुंच चुका था। पूरे मआशरे में गुमराह अकाइद (कुआस्थाए) व ख़्यालात इस तरह छा गए थे कि जो बच्चा उस मआशरे में पैदा होकर उठता वह गुमराही के ख़्यालात लेकर उठता। जब मआशरा (समाज) इस दर्जे को पहुंच जाए तो इसके बाद उसके लिए इसके सिवा कुछ और मुक़द्दर नहीं होता कि तूफ़ान नूह के ज़रिए उसका ख़ात्मा कर दिया जाए।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا إِنَّا أَسْأَلُكَ بِكَ اسْمِكَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ غَضَبِكَ وَقَوْلِكَ ۝ قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ۝ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَمْ نُشْرِكْ بِرَبِّنَا أَحَدًا ۝ وَأَنَّهُ تَعَلَّى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۝ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۝ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّنْ نَقُولَ الْإِنسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۝ وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ۝ وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَن لَّنْ يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ۝

आयतें-28

सूरह-72. अल-जिन्न

रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है।
कहो कि मुझे 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि जिन्नात की एक जमाअत ने कुरआन सुना तो उन्होंने कहा कि हमने एक अजीब कुरआन सुना है जो हिदायत की राह बताता है तो हम उस पर ईमान लाए और हम अपने रब के साथ किसी को शरीक न बनाएंगे। और यह कि हमारे रब की शान बहुत बलुन्द है। उसने न कोई बीबी बनाई है और न औलाद। और यह कि हमारा नादान अल्लाह के बारे में बहुत ख़िलाफे हक बातें कहता था। और हमने गुमान किया था कि इंसान और जिन्न खुदा की शान में कभी झूठ बात न कहेंगे। और यह कि इंसानों में कुछ ऐसे थे जो जिन्नात में से कुछ की पनाह लेते थे, तो उन्होंने जिन्नों का गुरुर (अभिमान) और बढ़ा दिया। और यह कि उन्होंने भी गुमान किया जैसा तुम्हारा गुमान था कि अल्लाह किसी को न उठाएगा। (1-7)

यहां इंसान के सिवा एक और मख़्लूक आबाद है जिसे जिन्न कहते हैं। इंसान उसे नहीं देखता। कुरआन में एक से ज्यादा मक़ाम पर उनका जिक्र किया गया है। सूरह जिन्न की इन आयतों से मालूम होता है कि जिन्नों में भी गुमराह और हिदायतयाब दोनों किस्म के होते हैं। इंसानों में जिस तरह नादान रहनुमा अवाम को बहकाते हैं। इसी तरह जिन्नों में भी नादान रहनुमा हैं। और वे पुरफरेब (भटकाने वाले) अल्फ़ाज बोलकर उन्हें रास्ते से भटकाते रहते हैं।

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَا مُلَائِفَ حَرَّاسٍ شِدِيدًا وَشُهَبًا ۝ وَأَنَّا لَمَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ فَمِنَ يَسْمَعِ الْإِنسَ يَجِدُ لَهْجَاهَا أَصْدًا ۝ وَأَنَّا لَا نَدْرِي

أَشْرًا يُرِيدُ بَنَ فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝ وَأَنَّا لَمَّا كُنَّا فِي الْأَرْضِ لَكُمْنَا طَرَائِقُ قَدَدًا ۝ وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّنْ نَعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَنَ نُعْجِزَهُ هَرَبًا ۝ وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَى آمَنَّا بِهِ فَمَنْ يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۝ وَأَنَّا لَمَّا الْسُلُيُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝ وَأَنَّا الْقَاسِطُونَ فَكَأُنَّا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۝

और हमने आसमान का जायजा लिया तो हमने पाया कि वह सज़त पहरेदारों और शोलों से भरा हुआ है। और हम उसके कुछ ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे सो अब जो कोई सुनना चाहता है तो वह अपने लिए एक तैयार शोला पाता है। और हम नहीं जानते कि यह जमीन वालों के लिए कोई बुराई चाही गई है या उनके रब ने उनके साथ भलाई का इरादा किया है। और यह कि हम में कुछ नेक हैं और कुछ और तरह के। हम मुत्तलिफ तरीकों पर हैं। और यह कि हमने समझ लिया कि हम जमीन में अल्लाह को हरा नहीं सकते। और न भाग कर उसे हरा सकते हैं। और यह कि हमने जब हिदायत की बात सुनी तो हम उस पर ईमान लाए, पस जो शख्स अपने रब पर ईमान लाएगा तो उसे न किसी कमी का अदेशा होगा और न ज्यादाती का। और यह कि हम में कुछ फरमांबरदार (आज्ञाकारी) हैं और हम में कुछ बेराह हैं, पस जिसने फरमांबरदारी की तो उन्होंने भलाई का रास्ता ढूंढ लिया। और जो लोग बेराह हैं तो वे दोज़ख के ईधन होंगे। (8-15)

कुरआन सुनने वाले जिन्नों ने कुरआन को सुनकर न सिर्फ़ फ़ैरन उसे मान लिया बल्कि इसी के साथ वे उसके मुबल्लिग़ (प्रचारक) बन गए। इससे मालूम हुआ कि सच्चा कलाम जब जिंदा लोगों के कानों तक पहुंचता है तो वह बयकवक्त दो किस्म के असरात पैदा करता है उसकी सच्चाई का खुले दिल से एतराफ़, और उसकी तब्तीगे आम (प्रचार-प्रसार)।

وَأَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقَيْنَهُمْ مَّاءً غَدَقًا ۝ وَلِنُقَاتِلَهُمْ فِيهِ وَمَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝ وَأَنَّ الْمَسْجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَهُ اللَّهَ أَحَدًا ۝ وَأَنَّهُ لَبَّآ قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝ قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ۝ قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا

رَشَدًا ۖ قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ ۚ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ
مُلْتَجَاً ۚ إِلَّا بِلُغَا مِنَ اللَّهِ وَرِسَالَةٍ ۖ وَمَنْ يَعِصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنْ لَهُ
نُازِحَةً خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ

और मुझे 'वही' (प्रकाशना) की गई है कि ये लोग अगर रास्ते पर कायम हो जाते तो हम उन्हें खूब सैराब (तृप्त) करते। ताकि इसमें उन्हें आजमाएं, और जो शस्त्र अपने ख की याद से एराज (उपेक्षा) करेगा तो वह उसे सख्त अजाब में मुत्तिला करेगा। और यह कि मरिजदें अल्लाह के लिए हैं पस तुम अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो। और यह कि जब अल्लाह का बंदा उसे पुकारने के लिए खड़ा हुआ तो लोग उस पर टूट पड़ने के लिए तैयार हो गए। कहो कि मैं सिर्फ अपने ख को पुकारता हूं और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता। कहो कि मैं तुम लोगों के लिए न किसी नुस्सान का इख्तियार रखता हूं और न किसी भलाई का। कहो कि मुझे अल्लाह से कोई बचा नहीं सकता। और न मैं उसके सिवा कोई पनाह पा सकता हूं। पस अल्लाह ही की तरफ से पहुंचा देना और उसके पैगामों की अदायगी है और जो शस्त्र अल्लाह और उसके रसूल की नाफरमानी (अवज्ञा) करेगा तो उसके लिए जहन्नम की आग है जिसमें वे हमेशा रहेंगे। (16-23)

मौजूदा दुनिया का निजाम इस्तेहान की मस्लेहत के तहत बनाया गया है। इसीलिए सच्चाई यहां सिर्फ पैगामरसानी (संदेश पहुंचाने) की हद तक सामने लाई जाती है। अगर इस्तेहान की मस्लेहत न हो और ग़ैब का पर्दा हटा दिया जाए तो लोग देखेंगे कि फरिश्तों से लेकर जिन्नात के सालिहीन (सज्जन) तक सब खुदा की खुदाई का एतराफ कर रहे हैं और सारी कायनात सरापा इसकी तस्दीक बनी हुई है।

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَيَسْئَلُونَكَ عَنْهُ قُلْ أَقْلُ عَدْدًا ۖ
قُلْ إِن أَدْرِي أَقْرَبُ مَا تُوْعَدُونَ أَمْ لِي أَمَدٌ ۖ ۚ عِلْمُ الْغَيْبِ فَلَا
يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ أَحَدًا ۚ إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ يَسْلُكُ مِنْ
بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ۚ لِيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا رَسُولَهُمْ وَاحْتَاطَ بِمَا
لَدَيْهِمْ وَأَحْطَىٰ كُلُّ شَيْءٍ عَدَدًا ۖ

यहां तक कि जब वे देखेंगे उस चीज को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो वे जान लेंगे कि किसके मददगार कमजोर हैं और कौन तादाद में कम है। कहो कि मैं

नहीं जानता कि जिस चीज का तुमसे वादा किया जा रहा है वह करीब है या मेरे ख ने उसके लिए लम्बी मुद्दत मुकर्रर कर रखी है। ग़ैब का जानने वाला वही है। वह अपने ग़ैब पर किसी को मुतलअ (प्रकट) नहीं करता। सिवा उस रसूल के जिसे उसने पसंद किया हो, तो वह उसके आगे और पीछे मुहाफिज लगा देता है। ताकि अल्लाह जान ले कि उन्होंने अपने ख के पैगामात पहुंचा दिए हैं और वह उनके माहौल का इहाता (आच्छादन) किए हुए है और उसने हर चीज को गिन रखा है। (24-28)

हकका दाजी (आह्वानकर्ता) बजाहिर एक आम इंसान होता है। इसलिए वे लोग उस पर टूट पड़ते हैं जिनके ऊपर उसकी दावत (आह्वान) की जद पड़ रही हो। वे भूल जाते हैं कि हक के दाजी के खिलाफ कार्रवाई खुद खुदा के खिलाफ कार्रवाई है, और कौन है जो खुदा के खिलाफ कार्रवाई करके कामयाब हो।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ عِذْرٌ لِلَّذِينَ قَالُوا
يَا أَيُّهَا الْمَرْمُولُ ۖ قُمْ الْيَلَّ إِلَّا قَلِيلًا ۖ ۚ تَصَفَاءُ ۖ أَوْ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا ۖ أَوْ
زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ۖ ۚ إِنَّا سَمِعْنَا عَلَىٰ قَوْلٍ لِّفِيلًا ۖ

आयतें-20

सूरह-73. अल-मुज्जम्मिल

रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
ऐ कपड़े में लिपटने वाले, रात में किया (नमाज के लिए खड़ा होना) कर मगर थोड़ा
हिस्सा। आधी रात या उससे कुछ कम कर दो। या उससे कुछ बढ़ा दो, और कुरआन
को ठहर-ठहर कर पढ़ो। हम तुम पर एक भारी बात डालने वाले हैं। (1-5)

'ठहर-ठहर कर पढ़ो' का मतलब यह है कि मफहूम (भावार्थ) पर ध्यान देते हुए पढ़ो। जब आदमी ऐसा करे तो करी (पढ़ने वाला) और कुरआन के दर्मियान एक दोतरफा अमल शुरू हो जाता है। कुरआन उसके लिए एक इलाही खिताब (सुधारक संबोधन) होता है और उसका दिल हर आयत पर इस खिताब का जवाब देता चला जाता है। जब कुरआन में अल्लाह की बड़ाई का जिक्र आता है तो करी का पूरा वजूद उसकी बड़ाई के एहसास से दब जाता है। जब कुरआन में खुदा के एहसानात बताए जाते हैं तो उसे सोचकर करी का दिल खुदा के शुक्र से भर जाता है। जब कुरआन में खुदा की पकड़ का बयान होता है तो करी उसे पढ़कर कांप उठता है। जब कुरआन में कोई हुक्म बताया जाता है तो करी के अंदर यह जब्बा मुस्तहकम होता है कि वह उस हुक्म को इख्तियार करके अपने ख का फरमांबरदार बने।

'भारी कौल' से मुराद इंजार (आगाह करने) का वह हुक्म है जो अगली सूरह में आ रहा

है। (क़ुम फर्जजिर, अल-मुदस्सिर-2) यानी आखिरत के मसले से लोगों को आगाह कर दे।

यह काम बिलाशुबह इस दुनिया का मुश्किलतरीन काम है। इसके लिए दाजी को बेआमेज (विशुद्ध) हक पर खड़ा होना पड़ता है, चाहे वह तमाम लोगों के दर्मियान अजनबी बन जाए। उसे लोगों की ईजाओं (उत्पीड़न) को बर्दाश्त करना पड़ता है ताकि उसके और मुखातबीन के दर्मियान दाजी और मदऊ का रिश्ता आखिर वक्त तक बाकी रहे। उसे यकतरफ़ तौर पर अपने आपको सब्र और एराज (संयम) का पाबंद करना पड़ता है। ताकि किसी भी हाल में उसकी दाअियाना हैसियत मजरूह न होने पाए।

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا ۖ إِنَّكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ۖ وَاذْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبْتَئِلُ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۖ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ۖ وَأَصِدْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَأَجْبِرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ۖ وَذُرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولَى النَّعْتَةِ وَكَلِّمْهُمْ قَلِيلًا ۖ إِنَّ لَدَيْنَا أَنْكَالًا وَجَحِيمًا ۖ وَطَعَامًا ذَا غَضَّةٍ وَعَذَابًا لِّئَلَّا يَتَذَكَّرَ ۖ يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۖ

बेशक रात का उठना सख्त रौंदता है और बात ठीक निकलती है। बेशक तुम्हें दिन में बहुत काम रहता है। और अपने रब का नाम याद करो और उसकी तरफ मुतवज्जह हो जाओ सबसे अलग होकर। वह मश्कि (पूर्व) और मरिब (पश्चिम) का मालिक है, उसके सिवा कोई इलाह (पूज्य-प्रभु) नहीं, पस तुम उसे अपना कारसाज बना लो। और लोग जो कुछ कहते हैं उस पर सब्र करो। और भली तरह उनसे अलग हो जाओ और झुठलाने वाले खुशहाल लोगों का मामला मुझ पर छोड़ दो और उन्हें थोड़ी ठील दे दो। हमारे पास बेड़ियाँ हैं और दोजख है। और गले में फंस जाने वाला खाना है और दर्दनाक अजाब है। जिस दिन जमीन और पहाड़ हिलने लगेंगे और पहाड़ रेत के फिसलते हुए तोड़े (ढेर) हो जाएंगे। (6-14)

क़म्म (विशुद्ध) हक की दावत लेकर उठना मुश्किलतरीन मुहिम के लिए उठना है। ऐसा शख्स पूरे माहौल में एक ग़ैर मल्लूब (अवांछित) शख्स बन जाता है। ऐसी हालत में हक का दाजी जिस वाहिद हस्ती को अपना मूनिस (हमदर्द साथी) और कारसाज (कार्य साधक) पाता है वह उसका खुदा है। वह न सिर्फ दिल में अपने खुदा को याद करता रहता है बल्कि वह रात के वक्तों में भी उसके सामने खड़ा होता है। रात का वक्त फरागत का वक्त है। रात के सन्नाटे में इसका ज्यादा मौक़ा होता है कि आदमी पूरी यकसूई के साथ खुदा की तरफ

मुतवज्जह हो सके। हक की दावत के कठिन रास्ते में दाजी का अस्ल हथियार यही है।

सच्चे दाजी का यह तरीक़ा है कि उसे मदऊ की तरफ से तकलीफ पहुँचती है तो वह मदऊ से नहीं उलझता बल्कि वह खुदा की तरफ दौड़ता है। वह आखिरी हद तक अपने आपको रद्देअमल (प्रतिक्रिया) की नफिसयात से बचाता है। और रद्देअमल की नफिसयात से बुलन्द होकर काम करना ही वह वाहिद (एक मात्र) लाजिमी शर्त है जो किसी शख्स को हक्की मअनों में हक का दाजी बनाती है।

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۖ فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ۖ فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۖ السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ ۖ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ۖ إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخِذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۖ

हमने तुम्हारी तरफ एक रसूल भेजा है, तुम पर गवाह बनाकर, जिस तरह हमने फिरऔन की तरफ एक रसूल भेजा। फिर फिरऔन ने रसूल का कहना न माना तो हमने उसे पकड़ा सख्त पकड़ना। पस अगर तुमने इंकार किया तो तुम उस दिन के अजाब से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा जिसमें आसमान फट जाएगा, बेशक उसका वादा पूरा होकर रहेगा। यह एक नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ राह इख्तियार कर ले। (15-19)

फैम्बर का आना हक (सत्य) और बातिल (असत्य) के दर्मियान फैसला करने के लिए होता है। यही फैसला पहले मूसा अलैहि० और फिरऔन के दर्मियान हुआ था। फिर यही फैसला फैम्बरे इस्लाम और क़ुरैश के दर्मियान हुआ। जो लोग दुनिया में खुदा के दाजी के आगे न झुकें वे अपने लिए यह खतरा मोल ले रहे हैं कि आखिरत में उन्हें खुदा के अजाब के आगे झुकना पड़े।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثَيِّ اللَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَافِيَةً ۚ مِنَ الَّذِينَ مَعَكَ ۚ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَنْ لَنْ تُحْصِيَهُ فَبَبَّ عَلَيْكُمْ فَقَارُوا مَا تَسْرَمُونَ ۚ الْقُرْآنُ عَلِمَ أَنْ سَيَكُونُ مِنْكُمْ مَّرْضًى ۚ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۚ وَآخَرُونَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَاقْرَأْ مَا تَسْرَمُونَ ۚ وَاقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا

الزَّكَاةَ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۚ وَمَا تُقَدِّمُوا لِأَنفُسِكُمْ مِنْ خَيْرٍ
تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ ۖ وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا لِلَّهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ
رَحِيمٌ ۝

वेशक तुम्हारा खब जानता है कि तुम दो तिहाई रात के करीब या आधी रात या एक तिहाई रात कियाम (नमाज के लिए खड़ा होना) करते हो, और एक गिरोह तुम्हारे साथियों में से भी। और अल्लाह ही रात और दिन का अंदाजा ठहराता है, उसने जाना कि तुम उसे पूरा न कर सकोगे पस उसने तुम पर महरबानी फरमाई, अब कुरआन से पढ़ो जितना तुम्हें आसान हो, उसने जाना कि तुम में बीमार होंगे और कितने लोग अल्लाह के फल की तलाश में जमीन में सफर करेंगे। और दूसरे ऐसे लोग भी होंगे जो अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, पस उसमें से पढ़ो जितना तुम्हें आसान हो, और नमाज कियाम करो और जम्मत अद करो और अल्लाह को कर्ज दो अच्छा कर्जा और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहां मौजूद पाओगे, वह बेहतर है और सवाब में ज्यादा, और अल्लाह से माफ़ी मांगो, वेशक अल्लाह बख़्शने वाला, महरबान है। (20)

दीन में जो फर्ज (अनिवार्य) आमाल हैं वे आम इंसान की इस्तताअत (सामर्थ्य) को मल्लूज रखते हुए मुफ़्त किए गए हैं। मगर ये फराइज सिर्फ़ लाजिमी हुक्म को बताते हैं। इस लाजिमी हद के आगे भी मल्लूब आमाल हैं मगर वे नवाफ़िल (ऐच्छिक) हैं। मसलन पंजवक्ता नमाजों के बाद तहज्जुद, जम्मत के बाद मजीद इफ़्तक (अल्लाह की राह में खर्च) वगैरह। यह आदमी के अपने हौसले का इस्तेहान है कि वह कितना ज्यादा अमल करता है और आखिरत में कितना ज्यादा इनाम का मुस्तहिक बनता है।

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۖ قُمْ فَأَنْذِرْ ۚ وَرَبِّكَ فَكْبِّرْ ۚ وَبِأَبْكَ فَطَهِّرْ ۚ وَالرُّجْزَ
فَأَهْبِزْ ۚ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرْ ۚ وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝

आयतें-56

सूरह-74. अल-मुद्दस्सिर

रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
ऐ कपड़े में लिपटने वाले, उठ और लोगों को डरा। और अपने खब की बड़ाई बयान कर।
और अपने कपड़े को पाक रख। और गंदगी को छोड़ दे। और ऐसा न करो कि एहसान

करो और बहुत बदला चाहो और अपने खब के लिए सब्र करो। (1-7)

इस दुनिया में अस्ल पैगम्बराना काम इंजार है। यानी आखिरत में पेश आने वाले संगीन मसले से लोगों को आगाह करना। यह काम वही शख्स कर सकता है जिसका दिल अल्लाह की बड़ाई से लबरेज हो। जो अच्छे अख़लाक का मालिक हो। जो हर क्रिम की बुराई से दूर हो। जो बदले की उम्मीद के बगैर नेकी करे। जो दूसरों की तरफ से पेश आने वाली तकलीफों पर यकतरफा सब्र कर सके।

وَإِذَا تُقَرَّبُ فِي الْكَافِرِينَ ۖ فَذَلِكَ يَوْمٌ عَسِيرٌ ۖ عَلَى الْكَافِرِينَ غَيْرُ
يَسِيرٍ ۖ ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۖ وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ۖ وَبَنِينَ
شُهُودًا ۖ وَمَعَدْتُ لَهُ مَهْمِيدًا ۖ ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۖ كَلَّا إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا
عَيْنِدًا ۖ سَاهِقًا صَعُودًا ۝

फिर जब सूर फूंक जाएगा तो वह बड़ा सख्त दिन होगा। मुंकिरों पर आसान न होगा। छोड़ दो मुझे और उस शख्स को जिसे मैंने पैदा किया अकेला। और उसे बहुत सा माल दिया और पास रहने वाले बेटे। और सब तरह का सामान उसके लिए मुहय्या कर दिया। फिर वह तमअ (लालच) रखता है कि मैं उसे और ज्यादा दूँ। हरगिज नहीं, वह हमारी आयतों का मुखालिफ (विरोधी) है। अनकरीब मैं उसे एक सख्त चढ़ाई चढ़ाऊंगा। (8-17)

जो आदमी अपने आपको इस हाल में पाता है कि उसके पास माल भी है और साथियों की फौज भी, उसके अंदर झूठा एतमाद पैदा हो जाता है। वह समझने लगता है कि मौजूदा दुनिया में जिस तरह मेरे अहवाल दुरुस्त हैं इसी तरह वे आखिरत में भी दुरुस्त रहेंगे। मगर कियामत के आते ही सारी सूरतेहाल बदल जाएगी। वह शख्स जो दुनिया में हर तरफ आसानियां देख रहा था, वह कियामत के दिन अपने आपको असहनीय दुश्वारियों के दर्मियान घिरा हुआ पाएगा।

إِنَّكَ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۖ فَقَتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۖ ثُمَّ قَاتِلْ كَيْفَ قَدَّرَ ۖ ثُمَّ نَظَرَ ۖ ثُمَّ
عَبَسَ ۖ وَبَسَّ ۖ ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۖ فَقَالَ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْثَرُ ۖ إِنَّ هَذَا إِلَّا
قَوْلُ الْبَشَرِ ۝

उसने सोचा और बात बनाई। पस वह हलाक हो उसने कैसी बात बनाई। फिर वह हलाक हो उसने कैसी बात बनाई, फिर उसने देखा। फिर उसने त्योंरी चढ़ाई और मुंह

बनाया। फिर पीठ फेरी और तकबुर (घमंड) किया। फिर बोला यह तो महज एक जादू है जो पहले से चला आ रहा है। यह तो बस आदमी का कलाम है। (18-25)

हक को मानने में सबसे बड़ी रुकावट तकबुर (घमंड) है। जो लोग माहौल में बड़ाई का दर्जा हासिल कर लें वे हक का एतराफ इसलिए नहीं करते कि उसका एतराफ करने से उनकी बड़ाई खत्म हो जाएगी। अपने इस एतराफ न करने को छुपाने के लिए वे मजीद यह करते हैं कि दाजी (आह्वानकर्ता) के कलाम में ऐब निकालते हैं। वे दाजी पर इल्जाम लगाकर उसकी हैसियत को घटाने की कोशिश करते हैं।

سَأَصْلِيهِ سَقَرٌ وَمَا أَذْرِيكَ مَا سَقَرٌ لَا تُبْقَى وَلَا تُذُرُ ۖ لَؤَاخُ الْبَشَرِ عَلَيْهَا
تِسْعَةُ عَشْرَ ۖ وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۖ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا
فِتْنَةً ۖ لِلَّذِينَ كَفَرُوا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَرْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا
إِيمَانًا ۖ وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي
قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۚ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ
مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۚ وَمَا هِيَ إِلَّا
ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ ۚ

मैं उसे अनकरीब दोख में दाखिल करूंगा। और तुम क्या जानो कि क्या है दोख। न बाकी रहने देगी और न छोड़ेगी। खाल झुलसा देने वाली। उस पर 19 फरिश्ते हैं। और हमने दोख के कारकुन सिर्फ फरिश्ते बनाए हैं। और हमने उनकी जो गिनती रखी है वह सिर्फ मुंकिरों को जांचने के लिए ताकि यकीन हासिल करें वे लोग जिन्हें किताब अता हुई। और ईमान वाले अपने ईमान को बढ़ाएं और अहले किताब (पूर्ववर्ती ग्रंथों के धारक) और मोमिनीन शक न करें, और ताकि जिन लोगों के दिलों में मर्ज है और मुंकिर लोग कहें कि इससे अल्लाह की क्या मुराद है। इस तरह अल्लाह गुमराह करता है जिसे चाहता है और हिदायत देता है जिसे चाहता है, और तेरे ख के लश्कर को सिर्फ वही जानता है, और यह तो सिर्फ समझाना है लोगों के वास्ते। (26-31)

जहन्नम के अहवाल जो कुरआन में बताए गए हैं वे सब अदखी दुनिया से तअल्लुक रखते हैं। जहन्नम में 19 फरिश्तों का होना भी इसी नौइयत की चीज है। आदमी अगर भ्रमिगामि (कुतर्क) करे तो ये चीजें उसके शुबहात में इजाफा करेंगी। लेकर अगर सार्थक ईमान का तरीका इख्तियार किया जाए तो इस किस्म की बातों से आदमी के खौफे आखिरत

मेइज्जल होगा।

كَلَّا وَالْقَمَرِ ۖ وَالْيَلِ إِذْ أَدْبَرَ ۖ وَالصُّبْرِ إِذْ اسْفَرَ ۖ إِنَّهَا لَلِإِحْدَى الْكَذِبِ ۚ
نَذِيرًا لِلْبَشَرِ ۚ لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَّقَدَّ ۖ وَأَوْتَاخَرُ ۚ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ
رَهِينَةٌ ۚ إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۚ فِي جَدَّتْ ۚ يَتَسَاءَلُونَ ۚ عَنِ الْغُرُوبِ ۚ
مَا سَأَلَكُمْ فِي سَقَرٍ ۚ قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمَصْلِيِّينَ ۚ وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمُسْكِينِ ۚ
وَكُنَّا نَخُوضُ مَعَ الْخَائِضِينَ ۚ وَكُنَّا نُكَذِّبُ بَيُّومَ الدِّينِ ۚ حَتَّىٰ أَتَيْنَا
الْيَقِينَ ۚ فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ ۚ

हरगिज नहीं, कसम है चांद की। और रात की जबकि वह जाने लगे। और सुबह की जब वह रोशन हो जाए, वह दोख बड़ी चीजों में से है, इंसान के लिए डरावा, उनके लिए जो तुम में से आगे की तरफ बढ़े या पीछे की तरफ हटे। हर शख्स अपने आमाल के बदले में रहन (गिरवी) है, दाएं वालों के सिवा, वे बागों में होंगे, पृछते होंगे, मुजरिमों से, तुम्हें क्या चीज दोख में ले गई। वे कहेंगे, हम नमाज पढ़ने वालों में से न थे। और हम गरीबों को खाना नहीं खिलाते थे। और हम बहस करने वालों के साथ बहस करते थे। और हम इंसाफ के दिन को झुल्लाते थे। यहां तक कि वह यकीनी बात हम पर आ गई तो उन्हें शफअत (सिफलि) करने वालों की शफअत कुछ फायदा न देगी। (32-48)

इस दुनिया में गर्दिश (गति) का निजाम है। इसी की वजह से चांद की तारीखें बदलती हैं और जमीन पर बारी-बारी रात और दिन आते हैं। यह गर्दिश और तब्दीली का निजाम गोया एक इशारा है कि इसी तरह मौजूदा दौर बदल कर आखिरत का दौर आएगा। जो लोग इस निजाम पर गौर करें वे चाहेंगे कि 'रात' के आने से पहले अपने 'दिन' को इस्तेमाल कर लें। वे जहन्नम वाले आमाल से भागेंगे और जन्नत वाले आमाल को इख्तियार करेंगे।

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكَرَةِ مُعْرِضِينَ ۚ كَانَهُمْ حُرُمٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۖ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۖ بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنشَرَةً ۚ كُلًّا بَلْ
لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ۚ كَلَّا إِنَّهُ تَذْكُرَةٌ ۖ فَمِنْ شَاءَ ذِكْرُهُ ۖ وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا
أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَعْرِفَةِ ۚ

फिर उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से रूगर्दानी (अवहेलना) करते हैं। गोया कि वे वहशी गधे हैं जो शेर से भागे जा रहे हैं। बल्कि उनमें से हर शख्स यह चाहता है कि उसे खुली हुई किताबें दी जाएं। हरगिज नहीं, बल्कि ये लोग आखिरत (परलोक) से नहीं डरते। हरगिज नहीं, यह तो एक नसीहत है। पस जिसका जी चाहे, इससे नसीहत हासिल करे। और वे इससे नसीहत हासिल नहीं करेंगे मगर यह कि अल्लाह चाहे, वही है जिससे डरना चाहिए और वही है बख्शने के लायक। (49-56)

नसीहत चाहे कितनी ही मुदल्लल (तार्किक) हो, सुनने वाले के लिए वह उसी वक्त मुअस्सिर (प्रभावी) बनती है जबकि वह उसके बारे में संजीदा हो। अगर सुनने वाला संजीदा न हो तो नसीहत उसके दिल में नहीं उतरेगी। जो दलील एक संजीदा इंसान को तड़पा देती है वह सिर्फ उसकी लायानी (निरर्थक) बहसों में इजाफा करने का सबब बनेगी।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ الرَّحْمَنُ ۝ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ ۝ عَلَّمَ الْقُرْآنَ ۝ وَالْإِنْسَانُ أَكْفَرُ ۝

لَا أَقْسَمُ بِيَوْمِ الْقِيَمَةِ ۝ وَلَا أَقْسَمُ بِالنَّفْسِ الْوَّامَةِ ۝ اِيْحَسَبُ الْإِنْسَانُ اَنْ
يَجْمَعَ عِظَامَهُ ۝ بَلَى ۝ قَادِرِينَ عَلَى اَنْ تُسَوَّى بَنَانُهُ ۝ بَلْ يُرِيدُ الْإِنْسَانُ
لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ۝ يَسْأَلُ اِيَّانَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ ۝ فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝ وَخَسَفَ
الْقَمَرُ ۝ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝ يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفْرُ ۝ كَلَّا
لَا وَزَرَ ۝ اِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۝ يُنْبِئُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ
وَاَخَّرَ ۝ بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۝ وَلَوْ اَلْفَىٰ مَعَاذِيرَهُ ۝

आयतें-40

सूरह-75. अल-कियामह

रुकूअ-2

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। नहीं, मैं कसम खाता हूँ कियामत के दिन की। और नहीं, मैं कसम खाता हूँ मलामत करने वाले नफ्स की। क्या इंसान ख्याल करता है कि हम उसकी हड्डियों को जमा न करेंगे। क्यों नहीं, हम इस पर कादिर हैं कि उसकी उंगलियों की पोर-पोर तक दुरुस्त कर दें। बल्कि इंसान चाहता है कि ढिठाई करे उसके सामने। वह पूछता है कि कियामत का दिन कब आएगा। पस जब आंखें खीरह (चौंधिया जाना) हो जाएंगी। और चांद बेनूर हो जाएगा। और सूरज और चांद इकट्ठा कर दिए जाएंगे। उस दिन इंसान कहेगा कि कहां भागूं। हरगिज नहीं, कहीं पनाह नहीं। उस दिन तेरे रब ही के पास ठिकाना है। उस दिन इंसान को बताया जाएगा कि उसने क्या

आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा। बल्कि इंसान खुद अपने आपको जानता है, चाहे वह कितने ही बहाने पेश करे। (1-15)

इंसान के अंदर पैदाइशी तौर पर यह शुऊर मौजूद है कि वह बुराई और भलाई में तमीज करता है। वह ऐन अपनी फितरत के तहत यह चाहता है कि बुराई करने वाले को सजा मिले और भलाई करने वाले को इनाम दिया जाए। यही वह शुऊर है जिसे कुरआन में नफसे लब्बामा कहा गया है। यह नफसे लब्बामा आलमे आखिरत के हक्की होने की एक नफिसयाती शहादत (गवाही) है। इस दाखिली (अंदरूनी) शहादत के बाद जो शख्स उसके तकाजे पूरे न करे वह गोया अपनी ही मानी हुई बात का इंकार कर रहा है।

لَا تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتُجَلَ بِهِ ۝ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ۝ فَاِذَا قَرَأَهُ
فَأْتِنَاهُ قُرْآنَهُ ۝ ثُمَّ اِنَّا عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۝

तुम उसके पढ़ने पर अपनी जवान न चलाओ ताकि तुम उसे जल्दी सीख लो। हमारे ऊपर है उसे जमा करना और उसे सुनाना। पस जब हम उसे सुनाएं तो तुम उस सुनाने की पैरवी करो। फिर हमारे ऊपर है उसे बयान कर देना। (16-19)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) उतरती तो आप उसे लेने में जल्दी फरमाते। इससे आपको मना कर दिया गया। इस सिलसिले में मजीद फरमाया कि कुरआन का जो हिस्सा उतर चुका है और जो तुम्हें मुखातब बना रहा है, उस पर सारी तवज्जोह सर्फ करो न कि कुरआन के उस बकिया हिस्से पर जो अभी उतरा नहीं और जिसने अभी तुम्हें मुखातब नहीं बनाया। इससे यह मालूम हुआ कि जिस वक्त जिस कुरआन के हिस्से का एक शख्स मुकल्लफ है उसी पर उसे सबसे ज्यादा तवज्जोह देना चाहिए। जिस कुरआन के हिस्से का एक शख्स मुकल्लफ न हो उसके पीछे दौड़ना 'उजलत' (जल्दी) है जो कुरआनी हिकमत के सरासर खिलाफ है।

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۝ وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ۝ وَجُودُهُ يَوْمَئِذٍ مُّخَضَّرَةٌ ۝ اِلَىٰ
رَبِّهَا نَاطِرَةٌ ۝ وَجُودُهُ يَوْمَئِذٍ بِاسْرَةٍ ۝ تَنْظُنْ اَنْ يَفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۝ كَلَّا
اِذَا بَلَغَتِ النَّارُ رَاقٍ ۝ وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ۝ وَظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ۝ وَالتَّعَتِ
السَّاقِ بِالسَّاقِ ۝ اِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ۝

हरगिज नहीं, बल्कि तुम चाहते हो जो जल्द आए। और तुम छोड़ते हो जो देर में आए। कुछ चेहरे उस दिन बारैनक होंगे। अपने रब की तरफ देख रहे होंगे। और कुछ चेहरे

उस दिन उदास होंगे। गुमान कर रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला मामला किया जाएगा। हरगिज नहीं, जब जान हलक तक पहुंच जाएगी। और कहा जाएगा कि कौन है झाड़ फूंक करने वाला। और वह गुमान करेगा कि यह जुदाई का वक्त है। और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी। वह दिन होगा तेरे रब की तरफ जाने का। (20-30)

आखिरत की तरफ से ग़फ़लत की वजह हमेशा सिर्फ एक होता है, और वह हुब्बे आज़िला है। यानी अपने अमल का फौरी नतीजा चाहना। आखिरत के लिए अमल का नतीजा देर में मिलता है। इसलिए आदमी उसे नजरअंदाज कर देता है। और दुनिया के लिए अमल का नतीजा फौरन मिलता हुआ नजर आता है। इसलिए आदमी उसकी तरफ दौड़ पड़ता है। लोग देखते हैं कि हर आदमी पर आखिरकार मौत तारी होती है और वह उसकी तमाम कामयाबियों को बातिल कर देती है। मगर कोई शख्स उससे सबक नहीं लेता। यहां तक कि खुद उसकी मौत का लम्हा आ जाए और वह उससे सबक लेने की मोहलत छीन ले।

فَلَا صَدَقَ وَلَا صَلَّىٰ ۖ وَلَٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۖ ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ
يَمْتَطِي ۖ أُولَىٰ لَكَ فَأُولَىٰ ۖ ثُمَّ أُولَىٰ لَكَ فَأُولَىٰ ۖ اِيْحَسْبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ
سُدًى ۖ أَلَمْ يَكُنْ تُطْفَئُهُ مِّنْ مَّيْنِي يُمْنَىٰ ۖ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ فَخْلَقَ
فَسْؤَىٰ ۖ فَبَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۖ أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقْدِرٍ عَلٰى
أَنْ يُخْجَعَ الْمَوْتَىٰ ۖ

तो उसने न सच माना और न नमाज पढ़ी। बल्कि झुटलाया और मुंह मोड़ा। फिर अकड़ता हुआ अपने लोगों की तरफ चला गया। अफसोस है तुझ पर अफसोस है। फिर अफसोस है तुझ पर अफसोस है। क्या इंसान ख्याल करता है कि वह बस यूं ही छोड़ दिया जाएगा। क्या वह टपकाई हुई मनी (वीर्य) की एक बूंद न था। फिर वह अलक्वा (जोंक की तरह) हो गया, फिर अल्लाह ने बनाया, फिर आज (शरीरांग) दुरुस्त किए। फिर उसकी दो किस्में कर दीं, मर्द और औरत। क्या वह इस पर कादिर नहीं कि मुर्दों को जिंदा कर दे। (31-40)

इंसान इब्तिदाअन अपनी मां के पेट में एक बूंद की मानिंद (तरह) दाखिल होता है। फिर वह बढ़कर अलक्वा (जोंक) की मानिंद हो जाता है। फिर मजौद तरक्की होती है और उसके आज (शरीरांग) और नुकूश बनते हैं। फिर वह मर्द या औरत बनकर बाहर आता है। ये तमाम हैतनाक तसर्रफ़त (प्रक्रियाएं) इंसान की कोशिश के बगैर होते हैं। फिर कुदरत का

जो निज़ाम रोज़ाना ये अजाइब (आश्चर्यजनक प्रक्रियाएं) जुहूर में ला रहा है, उसके लिए मौजूदा दुनिया के बाद एक और दुनिया बना देना क्या मुश्किल है। हकीकत यह है कि सच्चाई को मानने में जो चीज़ रुकावट बनती है वह लोगों की अनानियत (अहंकार) है न कि दलाइल व क़स (संकेतों) की कमी।

سُبْحَانَ الَّذِي رَفَعَهُ فَوْقَ السَّمَاوَاتِ الْأُولَىٰ ۚ وَالَّذِي يَرُفُّ رُفُوفًا ۚ
هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا ۚ
الْإِنْسَانُ مِنْ تُطْفَئَةِ أَمْشَاجٍ تَبْتَلِيهِ ۖ فَبَعْلُهُ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۚ
السَّيِّئِلِ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا كَفُورًا ۚ

आयतें-31

सूरह-76. अद-दहर

रुकूअ-2

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महारबान, निहायत रहम वाला है।

कभी इंसान पर ज़माने में एक वक्त गुज़ा है कि वह कोई कबिले जिक्र चीज़ न था।

हमने इंसान को एक मख़्लूत (मिश्रित) बूंद से पैदा किया, हम उसे पलटते रहे। फिर हमने उसे सुनने वाला, देखने वाला बना दिया। हमने उसे राह समझाई, चाहे वह शुक्र करने वाला बने या इंकार करने वाला। (1-3)

कुरआन सातवीं सदी ईसवी में उतरा। उस वक्त सारी दुनिया में किसी को यह मालूम न था कि रहमे मादर (गर्भाशय) में इंसान का आगाज एक मख़्लूत नुफ़े से होता है। यह सिर्फ बीसवीं सदी की बात है कि इंसान ने यह जाना कि इंसान और (हैवान) का इब्तिदाई नुफ़ा देअज़ (अवयवों) से मिलकर बनता है एक औरत का बैजा (Ovum) और दूसरे मर्द का स्रम (Sperm)। ये दोनों ख़ुदबीनी (अत्यंत सूक्ष्म) अज्जा जब आपस में मिल जाते हैं उस वक्त रहमे मादर में वह चीज़ बनना शुरू होती है जो बिलआखिर इंसान की सूरत इख़्तियार करती है। ढ़े हज़र साल पहले कुरआन में नुफ़ा अमश्राज (मख़्लूत नुफ़ा) का लफ़्ज़ आना इस बात का सुबूत है कि कुरआन खुदा की किताब है।

कुरआन में इस तरह की बहुत सी मिसालें हैं। ये इस्तसनाई (विलक्षण) मिसालें बाक़े तौर पर कुरआन को खुदा की किताब साबित करती हैं। और जब यह बात साबित हो जाए कि कुरआन खुदा की किताब है तो इसके बाद कुरआन का हर बयान सिर्फ कुरआन का बयान होने की बुनियाद पर दुरुस्त मानना पड़ेगा।

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَالًا ۖ وَسَعِيرًا ۚ إِنَّ الْآبِرَارَ يُشْرَبُونَ مِنْ

كَأَنَّهُ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُورًا ۖ عَيْنَا يَشْرِبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا تَفْجِيرًا ۖ يُؤْفُونَ
بِالدُّرِّ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۖ وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ
مِسْكِينَ وَابْتِئَامًا ۖ أَشْيَاءَ ۖ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا
شُكْرًا ۖ إِنَّا خَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ۖ فَوَقَّهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَلِكَ الْيَوْمِ
وَلَقَهُمْ نَصْرَةٌ وَسُرُورًا ۖ وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ۖ مُتَّكِينَ فِيهَا
عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شُمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ۖ وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَ

ذُلَّتْ قُطُوفُهَا تَذَلُّلًا ۖ وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِانِيَّةٍ مِنْ فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ
قَوَارِيرًا ۖ قَوَارِيرًا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ۖ

وَأَكْوَابٍ كَانَتْ
قَوَارِيرًا ۖ قَوَارِيرًا
مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا
تَقْدِيرًا ۖ

हमने मुँकियों के लिए जंजीरें और तौक और भड़कती आग तैयार कर रखी है। नेक लोग ऐसे प्याले से पियेंगे जिसमें काफूर की आमोजिश होगी। उस चश्मे (स्रोत) से अल्लाह के बंदे पियेंगे। वे उसकी शाखें निकालेंगे। वे लोग वाजिबात (दायित्वों) को पूरा करते हैं और ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी सख्ती आम होगी। और उसकी मुहब्बत पर खाना खिलाते हैं मोहताज को और यतीम को और कैदी को। हम जो तुम्हें खिलाते हैं तो अल्लाह की खुशी चाहने के लिए। हम न तुमसे बदला चाहते और न शुकगुजारी। हम अपने रब की तरफ से एक सख्त और तलब (कटु) दिन का अंदेशा रखते हैं। पस अल्लाह ने उन्हें उस दिन की सख्ती से बचा लिया। और उन्हें ताजगी और खुशी अता फरमाई और उनके सब्र के बदले में उन्हें जन्नत और रेशमी लिबास अता किया। टेक लगाए होंगे उसमें तख्तों पर, उसमें न वे गर्मी से दो चार होंगे और न सर्दी से। जन्नत के साये उन पर झुके हुए होंगे और उनके फल उनके बस में होंगे। और उनके आगे चांदी के बर्तन और शीशे के प्याले गर्दिश में होंगे। शीशे चांदी के होंगे, जिन्हें भरने वालों ने मुनासिब अंदाज़ से भरा होगा। (4-16)

दुनिया में इंसान को आज़ाद पैदा किया गया, और फिर उसे राह दिखा दी गई। नाशुकी की राह और शुकगुज़ार ज़िंदगी की राह। अब यह इंसान के अपने ऊपर है कि वह दोनों में से कौन सी राह इख्तियार करता है। जो शख्स नाशुकी का तरीका इख्तियार करे उसके लिए आखिरत में दोज़ख का अज़ाब है। और जो शख्स शुकगुज़ारी का तरीका इख्तियार करे उसके लिए जन्नत की नेमतें।

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيلًا ۖ عَيْنَا فِيهَا تُسَمَّى سَاسِيًا ۖ وَيُطَوَّقُونَ
عَلَيْهِمْ وَلَدَانُ ۖ يُخْذُونَ إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَنثورًا ۖ وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ
رَأَيْتَ نَعِيمًا وَمُلْكًا كَبِيرًا ۖ عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٌ خُضْرٌ وَاسْتَبْرَقٌ وَحُلُوفٌ
أَسْوَدٌ مِنْ فِضَّةٍ ۖ وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ۖ إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً
وَكَانَ سَعْيُكُمْ مَشْكُورًا ۖ

और वहां उन्हें एक और जाम पियाला जाएगा जिसमें सौंठ की आमोजिश होगी। यह उसमें एक चश्मा (स्रोत) है जिसे सलसबील कहा जाता है। और उनके पास फिर रहे होंगे ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, तुम उन्हें देखो तो समझो कि मोती हैं जो बिखेर दिए गए हैं। और तुम जहां देखोगे वहीं अज़ीम नेमत और अज़ीम बादशाही देखोगे। उनके ऊपर बारीक रेशम के सबज़ कपड़े होंगे और दबीज़ (गाढ़े) रेशम के सबज़ कपड़े भी, और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे। और उनका रब उन्हें पाकीज़ा मशरूब (पेय) पिलाएगा। वेशक यह तुम्हारा सिला (प्रतिफल) है और तुम्हारी कोशिश मकबूल (माननीय) हुई। (17-22)

यह बरतर जन्नत का बयान है जहां ज्यादा बरतर ईमान का सुबूत देने वाले लोग बसाए जाएंगे। उस जन्नत के बाशिंदों को शाहाना नेमतें हासिल होंगी।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ۖ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مَنْهُمْ
إِثْمًا وَكَفُورًا ۖ وَادْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۖ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ
لَيْلًا طَوِيلًا ۖ إِنَّ هَؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۖ وَيَذَرُونَ وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۖ
نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَلَهُمْ تَبْدِيلًا ۖ إِنَّ
هَذَا تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۖ وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ
اللَّهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۖ يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ

हमने तुम पर कुरआन थोड़ा-थोड़ा करके उतारा है। पस तुम अपने रब के हुक्म पर सब्र करो और उनमें से किसी गुनाहगार या नाशुक की बात न मानो। और अपने रब का नाम सुबह व शाम याद करो। और रात को भी उसे सज्दा करो। और उसकी तस्बीह

करो रात के लंबे हिस्से में। ये लोग जल्दी मिलने वाली चीज को चाहते हैं और उन्होंने छोड़ रखा है अपने पीछे एक भारी दिन को। हम ही ने उन्हें पैदा किया और हमने उनके जोड़बंद मजबूत किए, और जब हम चाहेंगे उन्हीं जैसे लोग उनकी जगह बदल लाएंगे। यह एक नसीहत है, पस जो शख्स चाहे अपने ख की तरफ रास्ता इस्तिआर कर ले। और तुम नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह चाहे। बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाखिल करता है, और जालिमों के लिए उसने दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (23-31)

हक की दावत को न मानने के दो ख़ास सबब होते हैं। या तो आदमी के सामने दुनिया का मफ़द होता है और मफ़द (हित) से महरूम का अंश उसे हक की तरफ बढ़ने नहीं देता। दूसरा सबब यह है कि आदमी तकबुर (घमंड) की नफ़िसयात में मुत्तिला हो और उसका तकबुर इसमें रुकावट बन जाए कि वह अपने से बाहर किसी की बड़ाई को तस्लीम करे। ये दोनों किस्म के लोग हक की दावत की राह में तरह-तरह की रुकावटें डालते हैं। मगर हक के दाजी को हुक्म है कि वह उनका लिहाज किए बग़ैर अपना काम सब्र के साथ जारी रखे।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ۖ فَالْعَصْفُ عَصْفًا ۖ وَالنُّشُوتِ نَشْرًا ۖ فَالْفَرْقِ
فَرْقًا ۖ فَالْمُلْقِيَةِ ذِكْرًا ۖ عَذْرًا أَوْ نَذْرًا ۖ إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٌ ۖ

आयतें-50

सूरह-77. अल-मुरसलात

रुकूअ-2

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है। कसम है हवाओं की जो छोड़ दी जाती हैं। फिर वे तूफ़ानी रफ़्तार से चलती हैं। और बादलों को उठाकर फैलाती हैं। फिर मामले को जुदा करती हैं। फिर याददिहानी डालती हैं। उज़्र के तौर पर या डरावे के तौर पर। जो वादा तुमसे किया जा रहा है वह जरूर क़ै (घटित) होने वाला है। (1-7)

समुद्र से भाप उठकर फ़जा में जाती हैं और बादल बन जाती हैं। इन बादलों को हवाएं उड़कर एक तरफ से दूसरी तरफ ले जाती हैं। वे एक इलाके में बारिश बरसाकर सरसबी का सामान करती हैं और दूसरे इलाके को ख़ुश छोड़ देती हैं। इससे मालूम हुआ कि इस दुनिया का निजाम एक और दूसरे के दर्मियान फर्क करने के उसूल पर कायम है। मौजूदा दुनिया में इस उसूल का इज़हार जुर्ई (आंशिक) सूरत में हो रहा है और आखिरत में इस उसूल का इज़हार अपनी कामिल (पूर्ण) सूरत में होगा।

हवाओं की यह नौइयत आदमी के लिए याददिहानी है। उनका किसी के लिए रहमत और किसी के लिए जहमत बनना इस हकीकत की याददिहानी है कि मौजूदा दुनिया में जब दो मुक़लफ़ किस्म के इंसान हैं तो उनके लिए ख़ुदा का फैसला दो अलग-अलग सूरतों में जाहिर होगा। फिर हवाओं की यह नौइयत ख़ुदा की तरफ से इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) भी है। इस मुज़ाहिर के बाद किसी के लिए मअज़त (विवशता जताने) की कोई गुंजाइश नहीं।

فَإِذَا النُّجُومُ طُمِسَتْ ۖ وَإِذَا السَّمَاءُ فُجِجَتْ ۖ وَإِذَا الْجِبَالُ سُفَّتْ ۖ وَإِذَا الرَّسْلُ
أُفْتُتْ ۖ لَأَيُّ يَوْمٍ أَجَلَتْ ۖ لِيَوْمِ الْفَصْلِ ۖ وَمَا أَذْرُكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۖ
وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ۖ ثُمَّ نُنْبِئُهُمْ
الْآخِرِينَ ۖ كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ

पस जब सितारे बेनूर हो जाएंगे। और जब आसमान फट जाएगा। और जब पहाड़ रेज़ा-रेज़ा कर दिए जाएंगे। और जब पैग़म्बर मुअय्यन (निश्चित) वक़्त पर जमा किए जाएंगे। किस दिन के लिए वे टाले गए हैं। फैसले के दिन के लिए। और तुम्हें क्या ख़बर कि फैसले का दिन क्या है। तबाही है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। क्या हमने अगलों को हलाक नहीं किया। फिर हम उनके पीछे भेजते हैं पिछलों को। हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही करते हैं। ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (8-19)

जब कियामत आएगी तो दुनिया का मौजूदा निजाम दरहम बरहम हो जाएगा। जो लोग मौजूदा दुनिया में अपने आपको जोरआवर समझते हैं और इस बिना पर हक की दावत (सत्य के आह्वान) को नज़रअंदाज करते हैं, वे उस दिन अपने आपको इस हाल में पाएंगे कि उनसे ज्यादा बेज़र और कोई नहीं।

أَلَمْ تَخْلُقْنَاكُمْ مِنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ۖ فَبَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ۖ إِلَى قَدَرٍ
مَّعْلُومٍ ۖ فَقَدَرًا فَنِعَمُ الْقَدَرُونَ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ أَلَمْ
نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۖ أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ۖ وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شُعْبًا
وَأَسْقَيْنَاكُمْ مَاءً فَرَاتًا ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ

क्या हमने तुम्हें एक हकीर (तुच्छ) पानी से पैदा नहीं किया। फिर उसे एक महफूज़ जगह रखा, एक मुक़रर मुद्दत तक। फिर हमने एक अंदाजा ठहराया, हम कैसा अच्छा अंदाजा ठहराने वाले हैं। ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों की। क्या हमने

जमीन को समेटने वाला नहीं बनाया, जिंदों के लिए और मुर्दों के लिए। और हमने उसमें ऊंचे पहाड़ बनाए और तुम्हें मीठा पानी पिलाया। उस रोज ख़राबी है झुठलाने वालों के लिए। (20-28)

मौजूदा दुनिया का निजाम इस तरह बनाया गया है कि उस पर ग़ौर करने वाला उसके आइने में आखिरत को देख लेता है। इसके बावजूद जो लोग हक (सत्य) को झुठलाते हैं उनसे बड़ा मुजरिम और कोई नहीं।

إِنطَلِقُوا إِلَى مَا كُنْتُمْ بِهِ تَكْذِبُونَ ۖ إِنطَلِقُوا إِلَى ظِلٍّ ذِي شَلْثِ شُعْبٍ ۖ لَا ظَلِيلٌ وَلَا يَغْنِي مِنَ الْهَبِّ ۖ إِنَّا تَرْمِي بِشَرِّ رِزْقٍ قَلَصَرٍ ۖ كَالَّذِي جُمِلْتُ صُفْرًا ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ هَذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُونَ ۖ وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ۖ جَمَعْنَاكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ۖ فَنُكَدِّبُهُمْ وَقَدْ قُتِلُوا ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ

चलो उस चीज की तरफ जिसे तुम झुठलाते थे। चलो तीन शाखों वाले साये की तरफ। जिसमें न साया है और न वह गर्मी से बचाता है। वह अंगारे बरसाएगा जैसे कि ऊंचा महल, जर्द ऊंटों की मानिंद, उस दिन ख़राबी है झुठलाने वालों के लिए। यह वह दिन है जिसमें लोग बोल न सकेंगे। और न उन्हें इजाजत होगी कि वे उज़्र पेश करें। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। यह फैसले का दिन है। हमने तुम्हें और अगले लोगों को जमा कर लिया। पस अगर कोई तदबीर हो तो मुझ पर तदबीर चलाओ। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (29-40)

आखिरत की हौलनाकियां जब सामने आएंगी तो इंसान उनके मुकाबले में अपने आपको बिल्कुल बेबस पाएगा। उस वक्त उन लोगों का बोलना बंद हो जाएगा जो दुनिया में इस तरह बोलते थे जैसे कि उनके अल्फ़ज़ का ज़ख़ीरा कभी ख़त्म होने वाला नहीं।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلٍّ وَعُيُونٍ ۖ وَقُفُورَةٍ مَّا يَشْتَهُونَ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ

لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ كُلُوا وَتَشَبَّهُوا أَقْلِيلًا ۖ إِنَّكُمْ جُجِرُمْ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ۖ وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۖ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۖ

वेशक डरने वाले साये में और चशमों (स्रोतों) में होंगे, और फलों में जो वे चाहें। मजे के साथ खाओ और पियो। उस अमल के बदले में जो तुम करते थे। हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। खाओ और बरत लो थोड़े दिन, वेशक तुम गुनाहगार हो। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। और जब उनसे कहा जाता है कि झुको तो वे नहीं झुकते। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। अब इसके बाद वे किस बात पर ईमान लाएंगे। (41-50)

मौजूदा दुनिया में खुदा की नेमतें वक़्ती तौर पर इम्तेहान की गरज से रखी गई हैं। आखिरत में खुदा की नेमतें अबदी (चिरस्थायी) तौर पर ज्यादा कामिल सूरत में ज़ाहिर होंगी। आज इन नेमतों में हर एक हिस्सा पा रहा है। मगर आखिरत की आला नेमतें सिर्फ उन लोगों का हिस्सा होंगी जिन्होंने आज़ादी के हालात में इताअत की। जो उस वक़्त झुके जबकि वे झुकने के लिए मजबूर न थे। जो लोग कौल (कथन) पर झुकें उनके लिए जन्नत है और जो लोग वैल (दुख) को देखकर झुकें उनके लिए जहन्नम।

سُئِلَ النَّبَاكِيَّةُ وَهِيَ أَرْبَعُونَ آيَةً وَفِيهَا رُكُوعٌ وَحَدَّثٌ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ۖ عَنِ النَّبَا الْعَظِيمِ ۖ الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ۖ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۖ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ۖ كَلَّا نَجْعَلُ الْأَرْضَ مَهْدًا ۖ وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ۖ وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ۖ وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۖ وَجَعَلْنَا النَّيْلَ لَبَاسًا ۖ وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۖ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۖ وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ۖ وَأَنزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ۖ لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ۖ وَجَنَّاتٍ أَلْفَافًا ۖ إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ۖ

शुरु अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

लोग किस चीज़ के बारे में पूछ रहे हैं। उस बड़ी ख़बर के बारे में, जिसमें वे लोग मुज़्तलिफ हैं। हरगिज़ नहीं, अनकरीब वे जान लेंगे। हरगिज़ नहीं, अनकरीब वे जान लेंगे। क्या हमने ज़मीन को फर्श नहीं बनाया, और पहाड़ों को मेखें। और तुम्हें हमने बनाया जोड़े जोड़े, और नींद को बनाया तुम्हारी थकान दूर करने के लिए। और हमने रात को पर्दा बनाया, और हमने दिन को मआश (जीविका) का वक्त बनाया। और हमने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए। और हमने उसमें एक चकमता हुआ चिराग़ रख दिया। और हमने पानी भरे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया, ताकि हम उसके ज़रिए से उगाएं ग़ल्ला और सब्ज़ी और घने बाग़। बेशक फैसले का दिन एक म्हर है। (1-17)

अरब के लोग आख़िरत के मुंकिर न थे अलबत्ता वे आख़िरत की उस नौइयत के मुंकिर थे जिसकी उन्हें कुरआन में ख़बर दी जा रही थी। यानी उन्हें इस बाब में शुबह था कि 'मुहम्मद' को न मानने से वे आख़िरत के आलम में ज़लील व ख़्वार हो जाएंगे।

मौजूदा दुनिया में जो तबीई (भौतिक) वाक़ेयात हैं वे आख़िरत के दिन की तरफ़ इशारा करने वाले हैं। हमारी दुनिया का हाल तकाज़ा करता है कि उसी के मुताबिक़ उसका एक मुस्तक़बिल हो। इस पहलू से ग़ौर किया जाए तो यह मानना पड़ता है कि इस अज़ीम आगाज़ का एक अज़ीम अंजाम आने वाला है। यह दुनिया यूँ ही बेअंजाम ख़त्म हो जाने वाली नहीं।

يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ۚ وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۚ
وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۚ إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۚ لِلْظَّالِمِينَ مَأْبَأٌ ۖ
لَّيْشِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ۚ لَا يَدْخُلُونَ فِيهَا بِرْدٌ وَلَا شَرَابٌ ۚ إِلَّا حَيْمِيمًا وَعَسَاقًا ۚ
جَزَاءً وَثَاقًا ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ۚ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا ۚ وَ
كُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ۚ فَذُوقُوا فَلَنْ نَزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۚ

जिस दिन सूर फूँका जाएगा, फिर तुम फौज़ दर फौज़ आओगे। और आसमान खोल दिया जाएगा, फिर उसमें दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे। और पहाड़ चला दिए जाएंगे तो वे रेत की तरह हो जाएंगे। बेशक जहन्नम घात में है, सरकशों का ठिकाना, उसमें वे मुद्दतों पड़े रहेंगे। उसमें वे न किसी ठंडक को चखेंगे और न पीने की चीज़, मगर गर्म पानी और

पीप, बदला उनके अमल के मुवाफ़िक़। वे हिसाब का अदेशा नहीं रखते थे। और उन्होंने हमारी आयतों को बिल्कुल झुठला दिया। और हमने हर चीज़ को लिखकर शुमार कर रखा है। पस चखो कि हम तुम्हारी सज़ा ही बढ़ाते जाएंगे। (18-30)

दुनिया में सरकशी इंसान को बहुत लज़ीज़ मालूम होती है क्योंकि वह उसकी अना (अहंकार) को तस्कीन देती है। मगर इंसान की सरकशी जब आख़िरत में अपनी अस्ल हकीकत के एतबार से ज़ाहिर होगी तो सूरतेहाल बिल्कुल मुज़्तलिफ़ हो जाएगी। जिस चीज़ से आदमी दुनिया में लज़ज़त लिया करता था, अब वह उसके लिए एक भयानक अज़ाब बन जाएगा।

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ مَفَازًا ۚ حَدَّاقٍ وَاعْتَابًا ۚ وَكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ۚ وَكَأْسًا
دِهَاقًا ۚ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِذْبًا ۚ جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَذَابًا حَسْبًا ۚ رَبِّ
السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَنُ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ۚ يَوْمَ يَقُومُ
الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا ۚ لَا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ وَقَالَ
صَوَابًا ۚ ذَلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ مَا بَا ۚ إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ
عَذَابًا قَرِيبًا ۚ يَوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَا وَيَقُولُ الْكُفْرُ لِيَلْتَنِي كُنْتُ
تَرِبًا ۚ

बेशक डरने वालों के लिए कामयाबी है। बाग़ और अंगूर। और नौखेज़ हमसिन लड़कियां। और भरे हुए जाम। वहां वे लगव (घटिया, निरर्थक) और झूठी बात न सुनेंगे। बदला तैरे ख की तरफ से होगा, उनके अमल के हिसाब से रहमान की तरफ से जो आसमानों और ज़मीन और उनके दरमियान की चीज़ों का ख है, कोई कुदरत नहीं रखता कि उससे बात करे। जिस दिन रूह और फरिश्ते सफ़बस्ता (पंक्तिबद्ध) खड़े होंगे, कोई न बोलेगा मगर जिसे रहमान इज़ाज़त दे, और वह ठीक बात कहेगा। यह दिन बरहक है, पस जो चाहे अपने ख की तरफ ठिकाना बना ले। हमने तुम्हें करीब आ जाने वाले अज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन आदमी उसको देख लेगा जो उसके हाथों ने आगे भेजा है, और मुंकिर कहेगा, काश मैं मिट्टी होता। (31-40)

जन्नत का माहिल लगव और झूठी बातों से पाक होगा। इसलिए जन्नत की लतीफ व नफीस दुनिया में बसाने के लिए सिर्फ वही लोग चुने जाएंगे जिन्होंने मौजूदा दुनिया में इस अहलियत का सुबूत दिया हो कि वे लगव और झूठ से दूर रहकर ज़िंदगी गुज़ारने का ज़ौक रखते हैं।

سُورَةُ النَّازِعَاتِ مَكِّيَّةٌ مِّنْهُنَّ الْأَنْبِيَاءُ الَّتِي نَزَّلْنَا بِهَا عَلَى نَبِيِّكَ وَقَدْ جَاءَكَ بِالْبَيِّنَاتِ لِقَاءَ رَبِّكَ الَّذِي هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُكْفِرُ عَنْ وَأَخْلَسَ بِمَا يُغْتَابُكَ وَاللَّهُ يَسْمَعُ الْوَهْوَاسَ الْخَفِيَّاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالنَّازِعَاتِ غَرْقًا ۝ وَالشَّشَاطِ نَشْطًا ۝ وَالسَّيْحَاتِ سَبْحًا ۝ فَالسَّيْحَاتِ سَبْحًا ۝
فَالْمُدَبِّرَاتِ أَمْرًا ۝ يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝ تَتَّبِعُنَّ الْمُرَادِفَةُ ۝ قُلُوبٌ يُّؤْمِنُ
وَالْجَفَةُ ۝ أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝ يَقُولُونَ إِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ۝ إِذَا
كُنَّا عِظَامًا ۝ فَنُفِرَّة ۝ فَآلُوا إِلَٰهَكَ إِنَّا لَنَكُونُ خَائِرَةٌ ۝ فَآلُوا إِلَٰهَكَ إِنَّا لَنَكُونُ خَائِرَةٌ ۝
فَإِذَا هُم بِالسَّاهِرَةِ ۝

وَاللَّهُ يَسْمَعُ الْوَهْوَاسَ الْخَفِيَّاتِ

आयतें-46

सूरह-79. अन-नाज़िआत

रुकूअ-2

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है जड़ से उखाड़ने वाली हवाओं की। और कसम है आहिस्ता चलने वाली हवाओं की। और कसम है तेरने वाले बादलों की। फिर सबकत (अग्रसरता) करके बढ़ने वालों की। फिर मामले की तदबीर करने वालों की। जिस दिन हिला देने वाली हिला डालेगी। उसके पीछे एक ओर आने वाली चीज़ आएगी। कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे। उनकी आंखें झुक रही होंगी। वे कहते हैं क्या हम पहली हालत में फिर वापस होंगे। क्या जब हम बोसीदा हड़्डियां हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि यह वापसी तो बड़े घाटे की होगी। वह तो बस एक डांट होगी, फिर यकायक वे मैदान में मौजूद होंगे। (1-14)

हर साल दुनिया में यह मंज़ूर दिखाई देता है कि बज़ाहिर हर तरफ सुकून होता है। इसके बाद तेज़ हवाएं चलती हैं। वे बादलों को उड़ाना शुरू करती हैं। फिर वे बारिश बरसाती हैं। जल्द ही बाद लोग देखते हैं कि जहां खाली ज़मीन थी वहां एक नई दुनिया निकल कर खड़ी हो गई। फ़िरतत का यह वाक्या आखिरत के इम्कान को बताता है। यह तमसील की ज़बान में बता रहा है कि मौजूदा दुनिया के अंदर से आखिरत की दुनिया का बरामद होना इतना ही मुमकिन है जितना खाली ज़मीन से सरसब्ज़ ज़मीन का जुहर में आना।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۖ إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْأَوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۖ إِذْ هَبَّ
إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۖ فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَىٰ أَنْ تَزُولَ ۖ وَاهْدِيكَ إِلَىٰ رَبِّكَ
فَتَخْشَىٰ ۖ فَارَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ۖ فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ۖ ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ۖ فَخَشَرَ

وَاللَّهُ يَسْمَعُ الْوَهْوَاسَ الْخَفِيَّاتِ

فَنَادَىٰ ۖ فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ۖ فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْأَخْرِقَةِ وَالْأُولَىٰ ۖ
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَىٰ ۖ

क्या तुम्हें मूसा की बात पहुंची है। जबकि उसके रब ने उसे तुवा की मुकद्दस (पवित्र) वादी में पुकारा। फिरऔन के पास जाओ, वह सरकश हो गया है। फिर उससे कहे क्या तुझे इस बात की ख़ाहिश है कि तू दुरुस्त हो जाए। और मैं तुझे तेरे रब की राह दिखाऊं फिर तू डरे। पस मूसा ने उसे बड़ी निशानी दिखाई। फिर उसने झुठलाया और न माना। फिर वह पलटा कोशिश करते हुए। फिर उसने जमा किया, फिर उसने पुकारा। पस उसने कहा कि मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूं। पस अल्लाह ने उसे आखिरत और दुनिया के अज़ाब में पकड़ा। वेशक इसमें नसीहत है हर उस शख्स के लिए जो डरे। (15-26)

फिरऔन और इस तरह के दूसरे मुक़िरीन की ज़िंदगी इस बात का सुबूत है कि जो शख्स हकीकते वाक्या का इन्कार करे वह लाज़िम्न उसकी सज़ा पाकर रहता है। ये तारीख़ी मिसालें आदमी की इब्रत (सीख) के लिए काफी हैं। मगर कोई इब्रत की बात सिर्फ उस शख्स के लिए इब्रत का ज़रिया बनती हैं जो अदेशा की नफिसयात रखता हो। जो किसी अमल को उसके अंजाम के एतबार से देखे न कि सिर्फ उसके आगाज़ के एतबार से।

إِنَّمَا أَشَدُّ خَلْقًا أَمَ السَّمَاءِ بَنِيهَا ۖ رَفَعَهَا فَعَمَّهَا فَسُوبَهَا ۖ وَأَغْطَشَ
لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ۖ وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا ۖ أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَ
مَرْعَاهَا ۖ وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ۖ مَتَّاعًا لَّكُمْ وَلِأَنفَعَامِكُمْ ۖ

क्या तुम्हारा बनाना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान का, अल्लाह ने उसे बनाया। उसकी छत को बुलन्द किया फिर उसे दुरुस्त बनाया। और उसकी रात को तारीक (अंधकारमय) बनाया और उसके दिन को ज़ाहिर किया। और ज़मीन को इसके बाद फैलाया। उससे उसका पानी और चारा निकाला। और पहाड़ों को कायम कर दिया, सामाने हयात (जीवन-सामग्री) के तौर पर तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए। (27-33)

कायनात की सूरत में जो वाक्या हमारे सामने मौजूद है वह इतना ज़्यादा बड़ा है कि इसके बाद हर दूसरा वाक्या इससे छोटा हो जाता है। फिर जिस दुनिया में बड़े वाक्ये का जुहर मुमकिन हो वहां छोटे वाक्ये का जुहर क्यों मुमकिन न होगा। ऐसी हालत में कुरआन की यह खबर कि इंसान को दुबारा पैदा होना है एक ऐसी खबर है जिसे काबिलेफहम बनाने के लिए पहले ही से बहुत बड़े पैमाने पर मालूम असबाब मौजूद हैं।

وَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَةُ الْكُبْرَى ۖ يُؤْمِرُكَ الْإِنْسَانُ مَا سَعَى ۖ وَبُرْزَتِ
الْحَجِيمُ لِمَنْ يَرَى ۖ فَأَتَا مَنْ طَغَى ۖ وَأَثَرَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ فَإِنَّ الْحَجِيمَ هِيَ
الْبَاوَى ۖ وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ ۖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَى ۖ فَإِنَّ
الْجَنَّةَ هِيَ الْبَاوَى ۖ يُسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ ۖ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۖ فِيمَ أَنْتَ مِنْ
ذِكْرِهَا ۖ إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ۖ إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ مَّنْ يُنْشَاهَا ۖ كَالَّذِينَ يَوْمِرَ
يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبُثُوا إِلَّا عَشِيَةً أَوْ صُحُورًا ۖ

फिर जब वह बड़ा हंगामा आएगा। जिस दिन इंसान अपने किए को याद करेगा। और देखने वालों के सामने दोज़ख ज़ाहिर कर दी जाएगी। पस जिसने सरकशी की और दुनिया की ज़िंदगी को तरजीह दी, तो दोज़ख उसका ठिकाना होगा और जो शख्स अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा और नफ्स को ख़ादिश से रोका, तो जन्नत उसका ठिकाना होगा। वे क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वह कब खड़ी होगी। तुम्हें क्या काम उसके ज़िक्र से। यह मामला तेरे रब के हवाले है। तुम तो बस डराने वाले हो उस शख्स को जो डरे। जिस रोज़ ये उसे देखेंगे तो गोया वे दुनिया में नहीं ठहरे मगर एक शाम या उसकी सुबह। (34-46)

आदमी दो चीज़ों के दर्मियान है। एक मौजूदा दुनिया जो सामने है। और दूसरे आखिरत की दुनिया जो ग़ैब (अप्रकट) में है। आदमी का अस्ल इस्तेहान यह है कि वह मौजूदा दुनिया के मुकाबले में आखिरत को तरजीह दे। मगर यह काम सिर्फ वही लोग कर सकते हैं जो अपने नफ्स की ख़ादिशों पर कंट्रोल करने का हौसला रखते हैं।

سُبْحَانَكَ يَا رَبَّنَا ۖ وَبَارِكْ اسْمَكَ يَا رَبَّنَا ۖ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

عَسَ وَتَوَلَّى ۖ أَنْ جَاءَهُ الْأَعْي ۖ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّكَ يَرْكَى ۖ أَوْ يَذَّكَّرُ
فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرَى ۖ أَمَّا مَنْ اسْتَعْصَىٰ ۖ فَأَنْتَ لَهُ تَصَدَّىٰ ۖ وَمَا عَلَيْكَ
أَلَّا يَذَّكَّرُ ۖ وَأَمَّا مَنْ جَاءَهُ لَوْ يَسْعَىٰ ۖ وَهُوَ يَخْشَىٰ ۖ فَأَنْتَ عَنْهُ تَكْفَىٰ ۖ كَلَّا
إِنَّمَا تَذَكَّرُ ۖ فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ۖ فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۖ مَرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۖ

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۖ كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۖ

आयतें-42

सूरह-80. अबस

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

उसने त्वीरी चढ़ाई हुआ और बेरुखी बरती इस बात पर कि अंधा उसके पास आया। और तुम्हें क्या ख़बर कि वह सुधर जाए या नसीहत को सुने तो नसीहत उसके काम आए। जो शख्स बेपरवाही बरतता है, तुम उसकी फिक्र में पड़ते हो। हालांकि तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं अगर वह न सुधरे। और जो शख्स तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आता है और वह डरता है, तो तुम उससे बेपरवाही बरतते हो। हरगिज़ नहीं, यह तो एक नसीहत है, पस जो चाहे याददिहानी हासिल करे। वह ऐसे सहीफों (ग्रंथों) में है जो मुकर्रम हैं, बुलन्द मर्तबा हैं, पाकीज़ा हैं, मुअज़ज़ज़, नेक कातिबों के हाथों में। (1-16)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक बार मक्का में कुरैश के सरदारों से दावती गुफ्तगू कर रहे थे। इतने में एक नाबीना मुसलमान अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम वहां आ गए। उन्होंने कहा : 'ऐ अल्लाह के रसूल, अल्लाह ने जो कुछ आपको सिखाया है उसमें से मुझे सिखाइए।' अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसे मौके पर एक अंधे शख्स का आना नागवार गुज़रा, इस पर ये आयतें उतरतीं। इन आयात में बज़ाहिर ख़िताब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से है मगर हकीकत में इस वाक्य के हवाले से बताया गया है कि अल्लाह की नज़र में उन बड़ों की कोई कीमत नहीं जो दीन से फिरे हुए हों। अल्लाह के नज़दीक कीमती इंसान सिर्फ वह है जिसके अंदर ख़शियत (ख़ौफ) वाली रूह हो, चाहे बज़ाहिर वह एक अंधा आदमी दिखाई देता हो।

قُلِ الْإِنْسَانُ مَا أَكْفَرُ ۖ مِنْ آيِ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۖ مِنْ تُطْفَةِ ۖ خَلَقَهُ
فَقَدَرَهُ ۖ ثُمَّ السَّبِيلَ يَسْرُهُ ۖ ثُمَّ أَمَاتَهُ ۖ فَأَقْبَرَهُ ۖ ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنشُرَهُ ۖ
كَأَلَّا يَكْفُيْضَ مَا أَمَرَهُ ۖ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَىٰ طَعَامِهِ ۖ أَتَا صَبَبْنَا الْمَاءَ
صَبًّا ۖ ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۖ فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۖ وَعَبْنَا وَقَضْبًا ۖ
وَرَيْنُونًا ۖ وَنَخْلًا ۖ وَحَدَائِقَ غُلْبًا ۖ وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ۖ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنعَامِكُمْ ۖ

बुरा हो आदमी का, वह कैसा नाशुक्र है। उसे किस चीज़ से पैदा किया है, एक बूंद से। उसे पैदा किया। फिर उसके लिए अंदाज़ा ठहराया। फिर उसके लिए राह आसान कर दी। फिर उसे मौत दी, फिर उसे कब्र में ले गया। फिर जब वह चाहेगा उसे दुबारा

जिंदा कर देगा। हरगिज़ नहीं, उसने पूरा नहीं किया जिसका अल्लाह ने उसे हुक्म दिया था। पस इंसान को चाहिए कि वह अपने खाने को देखे। हमने पानी बरसाया अच्छी तरह, फिर हमने ज़मीन को अच्छी तरह फाड़ा। फिर उगाए उसमें गल्ले और अंगूर और तरकारियां और जैतून और खजूर और घने बाग़ और फल और सब्ज़ा, तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए सामाने हयात (जीवन-सामग्री) के तौर पर (17-32)

इंसान से जो खुदापरस्ती मलूब है उसका मुहर्रिक (प्रेरक) अस्लन शुक्र है। इंसान अपनी तरख़ीक को सोचे और अपने गिर्द व पेश के कुदरती इतिज़ामात पर गौर करे तो लाज़िमन उसके अंदर अपने रब के बारे में शुक्र का जज़्बा पैदा होगा। इस शुक्र और एहसानमंदी के जज़्बे के तहत जिस अमल का जुहर होता है उसी का नाम खुदापरस्ती है।

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاحَّةُ ۖ يَوْمَ يَقُفُّ الرَّءُفُ مِنْ أَخِيهِ ۖ وَأُخُوهُ وَأُخُوهُ
وَصَاحِبَتُهُ وَبَنِيهِ ۖ لِكُلِّ أُمْرٍئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۖ وَجُودُهُ
يَوْمَئِذٍ مُّسْفَرَةٌ ۖ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۖ وَجُودُهُ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا
غَبَرَةٌ ۖ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۖ

पस जब वह कानों को बहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा। जिस दिन आदमी भागेगा अपने भाई से, और अपनी मां से और अपने बाप से, और अपनी बीवी से और अपने बेटों से। उनमें से हर शख्स को उस दिन ऐसा फ़िक्र लगा होगा जो उसे किसी और तरफ़ मुतवज्जह न होने देगा। कुछ चेहरे उस दिन रोशन होंगे, हंसते हुए, खुशी करते हुए। और कुछ चेहरों पर उस दिन ख़ाक उड़ रही होगी, उन पर स्याही छाई हुई होगी। यही लोग मुंकिर हैं, ढीठ हैं। (33-42)

सच्चाई को न मानना और उसके मुकाबले में सरकशी दिखाना सबसे बड़ा जुर्म है, ऐसे लोग आखिरत में बिल्कुल बेकीमत होकर रह जाएंगे। और जो लोग सच्चाई का एतराफ करें और उसके आगे अपने आपको झुका दें वही आखिरत में बाकीमत इंसान ठहरेंगे। आखिरत की इज़्ज़तें और कामयाबियां सिर्फ ऐसे ही लोगों का हिस्सा होंगी।

سُبْحَانَكَ يَا رَبَّنَا ۖ بِمَا لَدُنَّاكَ مِنْ عِظَمِ الْحُسْنَىٰ ۖ إِنَّا كُنَّا زَاغِينَ ۖ وَنَحْنُ نَكْتُمُ
إِذَا السَّمَاسُ كُورَتْ ۖ وَإِذَا الْجُودُورُ انْكَدَرَتْ ۖ وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۖ وَإِذَا
الْعُشَارُ عُظِّلَتْ ۖ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ۖ وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۖ وَإِذَا
النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۖ وَإِذَا الْمَوْءَدَةُ سُيِّلَتْ ۖ بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ۖ وَإِذَا

الصُّفُفُ نُشِرَتْ ۖ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۖ وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۖ وَإِذَا الْجَنَّةُ
أُزْلِفَتْ ۖ عَلِمْتُ نَفْسٌ مَّا أُخْضِرْتُ ۖ

आयतें-29

सूरह-81. अत-तकवीर

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब सूरज लपेट दिया जाएगा। और जब सितारे बेनूर हो जाएंगे। और जब पहाड़ चलाए जाएंगे। और जब दस महीने की गाभन ऊंटनियां आवारा फिरंगी। और जब वहशी जानवर इकट्ठा हो जाएंगे। और जब समुद्र भड़का दिए जाएंगे। और जब एक-एक किस्म के लोग इकट्ठा किए जाएंगे। और जब जिंदा गाड़ी हुई लड़की से पूछा जाएगा कि वह किस कुसूर में मारी गई। और जब आमालनामे (कर्म-पत्र) खोले जाएंगे। और जब आसमान खुल जाएगा। और दोज़ख़ भड़काई जाएगी। और जब जन्नत करीब लाई जाएगी। हर शख्स जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है। (1-14)

कुरआन में जगह-जगह क़ियामत की मंज़रकशी की गई है। क़ियामत जब आएगी तो दुनिया का मौजूदा तवाजुन (संतुलन) टूट जाएगा। उस वक़्त इंसान अपने आपको बिल्कुल बेबस महसूस करेगा। उस दिन नेकी के सिवा दूसरी तमाम चीज़ें अपना वज़न खो देंगी। मज्लूम को हक होगा कि वह ज़ालिम से अपने जुल्म का जो बदला लेना चाहे ले सके।

فَلَا أُقْسِمُ بِالْخُنُوسِ ۖ الْجَوَارِ الْكُنُوسِ ۖ وَالْيَبَلِ إِذَا عَسْعَسَ ۖ وَالصُّبُرِ إِذَا
تَنَفَّسَ ۖ إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۖ ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۖ
مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۖ وَمَا صَاحِبُكُمْ بِبَجُنُونٍ ۖ وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأَفُقِ
الْبَيْتِينَ ۖ وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ ۖ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَّجِيمٍ ۖ
فَإَيْنَ تَذْهَبُونَ ۖ إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ۖ لَيْسَ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ
وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۖ

पस नहीं, मैं कसम खाता हूँ पीछे हटने वाले, चलने वाले और छुप जाने वाले सितारों की। और रात की जब वह जाने लगे। और सुबह की जब वह आने लगे कि यह एक बाइज़्ज़त रसूल का लाया हुआ कलाम है। कुब्त वाला, अर्श वाले के नज़दीक बुलन्द मर्तवा है। उसकी बात मानी जाती है, वह अमानतदार है। और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं। और उसने उसे खुले उफ़ुक (क्षितिज) में देखा है। और वह ग़ैब की बातों का हरीस (हिंस रखने

वाला) नहीं। और वह शैतान मरदूद का कौल नहीं। फिर तुम किधर जा रहे हो। यह तो बस आलम (संसार) वालों के लिए एक नसीहत है, उसके लिए जो तुम में से सीधा चलना चाहे। और तुम नहीं चाह सकते मगर यह है कि अल्लाह रब्बुल आलमीन चाहे। (15-29)

जमीन पर रात दिन का आना और इंसान के मुशाहिदे (अवलोकन) में सितारों के मकामात का बदलना जमीन की महवरी (धुरीय) गर्दिश की बिना पर होता है। इस एतबार से इन अल्फाज का मतलब यह होगा कि जमीन की महवरी गर्दिश का निज़ाम इस बात पर गवाह है कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं और कुरआन खुदा का कलाम है जो फरिश्ते के ज़रिए उन पर उतरा है।

जमीन की महवरी गर्दिश इस कायनात का इतिहाई नादिर और इतिहाई अज़ीम वाकया है। यह वाकया गोया एक मॉडल है जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के मामले को हमारे लिए काबिलेफहम बनाता है। अगर यह तसव्वुर कीजिए कि जमीन अपने महवर (धुरी) पर गर्दिश करती हुई वसीअ ख़ला (अंतरिक्ष) में सूरज के गिर्द घूम रही है तो ऐसा महसूस होगा गोया रिमोट कंट्रोल का कोई ताकतवर निज़ाम है जो इसे इतिहाई सेहत के साथ कंट्रोल कर रहा है। फरिश्ते के ज़रिए एक इंसान और खुदा के दर्मियान रब्त (संपर्क) कायम होना भी इसी किस्म का एक वाकया है। पहला वाकया तमसील के रूप में दूसरे वाकये को समझने में मदद देता है।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ هُمْنَعِ عَشْرَةَ آيَةً ۝
إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ۝ وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۝ وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۝ وَإِذَا
الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ۝ عَلِمْتُ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَ اخَّرَتْ ۝ يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا
غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ۝ الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّاكَ فَعَدَلَكَ ۝ فِى آيِ صُورَةٍ
مَّا سَاءَ رَكْبَكَ ۝ كَلَّا بَلْ يَكْذِبُونَ بِالَّذِينَ ۝ وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ۝
كِرَامًا كَاتِبِينَ ۝ يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ۝ إِنَّ الْآبْرَارَ لَفِى نَعِيمٍ ۝ وَإِنَّ الْفُجَّارَ
لَفِى حِمِيمٍ ۝ يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝ وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝ وَمَا أَدْرَاكَ مَا
يَوْمَ الدِّينِ ۝ ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۝ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا ۝
وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۝

۝

जब आसमान फट जाएगा। और जब सितारे बिखर जाएंगे। और जब समुद्र बह पड़ेंगे। और जब कब्रें खोल दी जाएंगी। हर शख्स जान लेगा कि उसने क्या आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा। ऐ इंसान तुझे किस चीज़ ने अपने रब्वे करीम की तरफ से धोखे में डाल रखा है। जिसने तुझे पैदा किया। फिर तेरे आज्ञा (शरीरांग) को दुरुस्त किया, फिर तुझे मुतनासिब (संतुलित) बनाया। जिस सूरत में चाहा तुम्हें तर्तीब दे दिया। हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम इंसाफ के दिन को झुटलाते हो। हालांकि तुम पर निगहबान मुकर्र हैं। मुअज़्ज़ज़ लिखने वाले। वे जानते हैं जो कुछ तुम करते हो। बेशक नेक लोग ऐश में होंगे। और बेशक गुनाहगार दोख में। इंसाफ के दिन वे उसमें डाले जाएंगे। वे उससे जुदा होने वाले नहीं। और तुम्हें क्या ख़बर कि इंसाफ का दिन क्या है। फिर तुम्हें क्या ख़बर इंसाफ का दिन क्या है। उस दिन कोई जान किसी दूसरी जान के लिए कुछ न कर सकेगी। और मामला उस दिन अल्लाह ही के इख्तियार में होगा। (1-19)

कुरआन में यह ख़बर दी गई है कि बिलआखिर इंसाफ का एक दिन आने वाला है जबकि तमाम इंसानों को जमा करके उनके अमल के मुताबिक उन्हें सज़ा या इनाम दिया जाएगा। यह ख़बर दुनिया की मौजूदा सूरतेहाल के ऐन मुताबिक है। इंसान की बामअना (अर्थपूर्ण) तख़लीक इस ख़बर में अपनी तौजीह (तर्क) पा लेती है। इसी तरह इंसान के कौल व अमल की रिकॉर्डिंग का निज़ाम जो मौजूदा दुनिया में पाया जाता है वह इस ख़बर के बाद पूरी तरह काबिलेफहम बन जाता है। (कौल व अमल की रिकॉर्डिंग की तफ़सील इन पंक्तियों के लेखक की किताब 'मज़हब और जदीद चैलेन्ज' (God Arises) में मुलहिज़ा फरमाएं)

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝ وَهَمْنَعِ عَشْرَةَ آيَةً ۝
وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ۝ الَّذِينَ إِذَا أَتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ۝ وَإِذَا كَالُوهُمْ
أَوْ زَنَوْهُمْ يُخْسِرُونَ ۝ أَلَا يَظُنُّ أُولَئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ ۝ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ۝
يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفُجَّارِ لَفِى سَجِينٍ ۝ وَمَا
أَدْرَاكَ مَا سَجِينٌ ۝ كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۝ وَبِئْسَ لِلْمُكْذِبِينَ ۝ الَّذِينَ
يُكْذِبُونَ يَوْمَ الدِّينِ ۝ وَمَا يَكْذِبُ بِهِ إِلَّا كَلٌّ مَعْتَدٍ ۝ أَشِيمٌ ۝ إِذَا تَنَلَّى
عَلَيْهِ أَتَيْنَا قَالَ آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝ كَلَّا بَلْ رَأَى عَلَى قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ۝ كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّحَجُوبُونَ ۝ ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا
الْبَحِيمِ ۝ ثُمَّ يُقَالُ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ۝

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

ख़राबी है नाप तौल में कमी करने वालों की। जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें। और जब उन्हें नाप कर या तौल कर दें तो घटा कर दें। क्या ये लोग नहीं समझते कि वे उठाए जाने वाले हैं, एक बड़े दिन के लिए जिस दिन तमाम लोग खुदावंदे आलम के सामने खड़े होंगे। हरगिज़ नहीं, बेशक गुनाहगारों का आमालनामा (कर्म-पत्र) सिज्जीन में होगा। और तुम क्या जानो कि सिज्जीन क्या है। वह एक लिखा हुआ दफ्तर है। ख़राबी है उस दिन झुठलाने वालों की। जो इंसाफ के दिन को झुठलाते हैं। और उसे वही शख्स झुठलाता है जो हद से गुज़रने वाला हो, गुनाहगार हो। जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि ये अगलों की कहानियां हैं। हरगिज़ नहीं, बल्कि उनके दिलों पर उनके आमाल का ज़ुंम चढ़ गया है। हरगिज़ नहीं, बल्कि उस दिन वे अपने रब से ओट में रखे जाएंगे। फिर वे दोज़ख में दाखिल होंगे। फिर कहा जाएगा कि यही वह चीज़ है जिसे तुम झुठलाते थे। (1-17)

हर आदमी यह चाहता है कि वह दूसरों में अपना पूरा हक वसूल करे। मगर आला इंसानी किरदार यह है कि आदमी दूसरों को भी उनका पूरा-पूरा हक अदा करे। वह दूसरों के लिए वही कुछ पसंद करे जो वह अपने लिए पसंद कर रहा है। जो लोग खुद पूरा लें और दूसरों को कम दें वे आखिरत में इस हाल में पहुंचेंगे कि वहां वे बर्बाद होकर रह जाएंगे।

जो अपने लिए पूरा वसूल कर रहा है वह गोया इस बात को जानता है कि आदमी को उसका पूरा हक मिलना चाहिए। ऐसी हालत में जब वह दूसरों को देने के वक्त उन्हें कम देता है तो वह दूसरों के हुक्क के बारे में अपनी हस्सासियत (सवेदनशीलता) को घटाता है। जो शख्स बार-बार इस तरह का अमल करे उस पर बिलआखिर वह वक्त आएगा जबकि दूसरों के हुक्क के बारे में उसकी हस्सासियत बिल्कुल ख़त्म हो जाए। उसके दिल के ऊपर पूरी तरह उसके अमल का ज़ुंम लग जाए।

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْإِبْرَارِ لَفِي عِلِّيَّيْنَ ۖ وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ۖ كِتَابٌ مَرْفُومٌ ۖ يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ۖ إِنَّ الْإِبْرَارَ لَفِي نَعْيٍ ۖ عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ۖ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ۖ يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مِثْمُومٍ ۖ خِمْتُهُمْ سَبَكٌ ۖ وَفِي ذَلِكَ فَلَيْتَاتِنَاقِيسٍ الْمُتَنَافِسُونَ ۖ وَمِنْ أَرْجَائِهِمْ تَسْنِيمٌ ۖ عَيْنَا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۖ إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا

يَضْحَكُونَ ۖ وَإِذَا امْرَأُؤُهُمْ يَتَغَايَرُونَ ۖ وَإِذَا النُّفُكُوبُ إِلَىٰ أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ۖ وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُونَ ۖ وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِظِينَ ۖ فَإِلَٰهَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ۖ عَلَى الْأَرَائِكِ يَنْظُرُونَ ۖ هَلْ تُؤِيبُ الْكُفَّارُ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۖ

हरगिज़ नहीं, बेशक नेक लोगों का आमालनामा इल्लियीन में होगा। और तुम क्या जानो इल्लियीन क्या है। लिखा हुआ दफ्तर है, मुकर्रब फरिश्तों की निगरानी में। बेशक नेक लोग आराम में होंगे। तख़्तों पा बैठे देखते होंगे। उनके चेहरों में तुम आराम की ताज़गी महसूस करोगे। उन्हें शराबे ख़ालिस मुहर लगी हुई पिलाई जाएगी, जिस पर मुश्क की मुहर होगी। और यह चीज़ है जिसकी हिंस करने वालों को हिंस करना चाहिए। और उस शराब में तस्नीम की आमेज़िश होगी। एक ऐसा चशमा (स्रोत) जिससे मुकर्रब लोग पियेंगे। बेशक जो लोग मुजरिम थे वे ईमान वालों पर हंस्टे थे। और जब वे उनके सामने से गुज़रते तो वे आपस में आंखों में इशारे करते थे। और जब वे अपने लोगों में लौटते तो दिल्लगी करते हुए लौटते। और जब वे उन्हें देखते तो कहते कि ये बहके हुए लोग हैं। हालांकि वे उन पर निगरां बनाकर नहीं भेजे गए। पस आज ईमान वाले मुंकिरों पर हंस्टे होंगे, तख़्तों पर बैठे देख रहे होंगे। वाकई मुंकिरों को उनके किए का ख़ूब बदला मिला। (18-36)

मौजूदा दुनिया में अक्सर लोग इस बात के हरीस नहीं होते कि वे दूसरों को उनका पूरा हक अदा करें। उनकी सारी दिलचस्पी इसमें होती है कि वे दूसरों से अपना हक भरपूर वसूल कर सकें। ऐसे लोग आखिरत में महरूम होकर रह जाएंगे। अक्लमंद लोग वे हैं जो सबसे ज़्यादा इस बात के हरीस बनें कि वे दूसरों को भरपूर तौर पर उनका हक अदा करें। क्योंकि यही वे लोग हैं जो आखिरत में भरपूर तौर पर खुदा की नेमतों के मुस्तहिक करार पाएंगे।

जो शख्स आखिरत की खातिर अपनी दुनियावी मस्लेहतों को नज़रअंदाज़ कर दे वह दुनियापरस्तों की नज़र में हकीर (तुच्छ) बन जाता है। मगर जब आखिरत आएगी तो मालूम होगा कि वही लोग होशियार थे जिनको दुनिया में नादान समझ लिया गया था।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۖ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ ۖ وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ۖ وَأَذْنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۖ وَإِذَا السَّمَاءُ انْشَقَّتْ ۖ وَأَذْنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۖ يُبَايِعُهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدًا قَلِيلًا ۖ فَمَا مَنَ أُوتِيَ كِتَابَهُ يَمِينًا ۖ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ

حَسَابًا يَسِيرًا ۖ وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۚ وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ۖ
فَسَوْفَ يَدْعُوا ثُبُورًا ۖ وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۚ إِنَّكَ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۚ إِنَّهُ ظَنَّ
أَن لَّنْ يَحْضُرَهُ ۖ بَلَىٰ ۖ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۖ فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۖ
وَالْيَلِّ ۖ وَمَا وَسَقَ ۖ وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۖ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ۖ فَمَا لَهُمْ
لَا يُؤْمِنُونَ ۖ وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۖ بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا
يُكَذِّبُونَ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۖ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۖ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۖ

आयतें-25

सूरह-84. अल-इन्शिकक

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब आसमान फट जाएगा। और वह अपने रब का हुक्म सुन लेगा और वह इसी लायक है। और जब ज़मीन फैला दी जाएगी। और वह अपने अंदर की चीज़ों को उगल देगी और खाली हो जाएगी। और वह अपने रब का हुक्म सुन लेगी और वह इसी लायक है। ऐ इंसान तू कशां-कशां (सश्रम) अपने रब की तरफ जा रहा है। फिर उससे मिलने वाला है। तो जिसे उसका आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा। उससे आसान हिसाब लिया जाएगा। और वह अपने लोगों के पास खुश-खुश आएगा। और जिसका आमालनामा उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा, वह मौत को पुकारेगा, और जहन्नम में दाखिल होगा। वह अपने लोगों में बेग़म रहता था। उसने ख़याल किया था कि उसे लौटना नहीं है। क्यों नहीं। उसका रब उसे देख रहा था। पस नहीं, मैं कसम खाता हूँ शफक (सांध्य-लालिमा) की। और रात की और उन चीज़ों की जिन्हें वह समेट लेती है। और चांद की जब वह पूरा हो जाए। कि तुम्हें ज़रूर एक हालत के बाद दूसरी हालत पर पहुंचना है। तो उन्हें क्या हो गया है कि वे ईमान नहीं लाते। और जब उनके सामने कुरआन पढ़ा जाता है तो वे खुदा की तरफ नहीं झुकते। बल्कि मुंकिरीन झुटला रहे हैं। और अल्लाह जानता है जो कुछ वे जमा कर रहे हैं। पस उन्हें एक दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दे दो। लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किए उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला अज़्र है। (1-25)

यहां क्रियामत के मुताल्लिक जो बात कही गई है वह बज़ाहिर नामालूम दुनिया के बारे में एक ख़बर की हेंसियत रखती है। ताहम ऐसे शवाहिद (प्रमाण) मौजूद हैं जो उसकी सदाकत (सच्चाई)

का करीना (संकेत) पैदा करते हैं। इसकी एक मिसाल मौजूदा दुनिया है। एक दुनिया की मौजूदगी खुद इस बात का सबूत है कि दूसरी ऐसी ही या इससे मुख़लिफ़ दुनिया जुज़ुद में आ सकती है। दूसरे, कुरआन में ऐसे ग़ैर मामूली पहलुओं का मौजूद होना जो यह साबित करते हैं कि वह खुदा की किताब है। (तफ़सील के लिए मुलाहिज़ा हो, अज़मते कुरआन)

इन वाज़ेह कराइन (संकेतों) के बाद जो लोग आख़िरत पर यकीन न करें और आख़िरत फ़रामोशी में ज़िंदगी गुज़ारें वे यकीनन ऐसा जुर्म कर रहे हैं जिसकी सज़ा वही हो सकती है जिसका ऊपर ज़िक्र हुआ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۝ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ۝ وَشَاهِدٍ وَمَشْهُودٍ ۝ قَتِلَ أَصْحَابُ
الْأُخْدُودِ ۝ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ۝ إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ۖ وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ
بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ۖ وَمَا نَقَبُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ
الْحَمِيدِ ۖ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۖ
إِنَّ الَّذِينَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ
وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ۖ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ
تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۖ إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۖ
إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ۖ وَهُوَ الْغَفُورُ الْودُودُ ۖ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۖ
فَعَالٌ لِّمَا يُرِيدُ ۖ هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۖ فِرْعَوْنُ وَثَمُودُ ۖ بَلِ
الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۖ وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ۖ بَلِ هُوَ قُرْآنٌ
جَمِيدٌ ۖ فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ۖ

आयतें-22

सूरह-85. अल-बुरुज

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है जुर्गों वाले आसमान की। और वादा किए हुए दिन की। और देखने वाले की और देखी हुई की। हलाक हुए खन्दक वाले, जिसमें भड़कते हुए ईधन की आग थी। जबकि वे उस पर बैठे हुए थे। और जो कुछ वे ईमान वालों के साथ कर रहे

ये उसे देख रहे थे। और उनसे उनकी दुश्मनी इसके सिवा किसी वजह से न थी कि वे ईमान लाए अल्लाह पर जो ज़बरदस्त है, तारीफ वाला है। उसी की बादशाही आसमानों और ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है। जिन लोगों ने मोमिन मदों और मोमिन औरतों को सताया, फिर तौबा न की तो उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है। और उनके लिए जलने का अज़ाब है। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किया उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, यह बड़ी कामयाबी है। बेशक तेरे रब की पकड़ बड़ी सख्त है। वही आगाज़ करता है और वही लौटाएगा। और वह बख़्शने वाला है, मुहब्बत करने वाला है, अश्वरों का मालिक, कर डालने वाला जो चाहे। क्या तुम्हें लश्क़रों की ख़बर पहुंची है, फिरऔन और समूद की। बल्कि ये मुंकिर झुठलाने पर लगे हुए हैं। और अल्लाह उन्हें हर तरह से घेरे हुए है। बल्कि वह एक बाअज़्मत (गौरवशाली) कुरआन है, लौहे महफूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में लिखा हुआ। (1-22)

कायनात का निज़ाम तकाज़ा करता है कि आखिरी फैसले का एक दिन आए। उसी दिन की ख़बर तमाम पैग़म्बर और उनके सच्चे नायब देते रहे हैं। इसके बावजूद जो लोग हक का एतराफ न करें बल्कि हक के दावियों के दुश्मन बन जाएं वे ऐसी सरकशी करते हैं जिसके हौलनाक अंजाम से वे किसी तरह बच नहीं सकते। ताहम जो लोग हर किसम की मुश्किलात के बावजूद सदाक़त की आवाज़ पर लबूक कहें वे खुदाए महरबान की तरफ से ऐसा इनाम पाएंगे जिससे बड़ा इनाम और कोई नहीं।

आसमानी किताबों में कुरआन इस्तसनाई (अद्वितीय) तौर पर एक महफूज़ किताब है। यह इस बात की अलामत है कि कुरआन को खुदा की खुसूसी मदद हासिल है, इसे ज़ोर करना किसी के लिए मुमकिन नहीं यहां तक कि कियामत आ जाए।

سُبْحَانَكَ يَا مَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ ۚ
وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ۚ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ۚ النُّجُومُ الثَّاقِبُ ۚ إِنَّ كُلَّ نَفْسٍ
لَّتَأْكُلُهَا حَافِظٌ ۚ فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۚ خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ۚ يُخْرِجُهُ
مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ۚ إِنَّهُ عَلَى رَجُوعِهِ لَقَادِرٌ ۚ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ۚ
فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ۚ وَالسَّمَاءُ ذَاتِ الرَّجَمِ ۚ وَالْأَرْضُ ذَاتِ الصُّدُورِ ۚ
إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۚ وَمَا هُوَ إِلَّا هَزْلٌ ۚ لَنْهَمُ يُكِيدُونَ كَيْدًا ۚ وَآكِيدٌ كَيْدًا ۚ
فَبَهْلِلِ الْكَافِرِينَ أَفْعَلْهُمْ رُويْدًا ۚ

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है आसमान की और रात को नुमूदार (प्रकट) होने वाले की। और तुम क्या जानो कि वह रात को नुमूदार होने वाला क्या है, चमकता हुआ तारा। कोई जान ऐसी नहीं है जिसके ऊपर निगहबान न हो। तो इंसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है। वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है। जो निकलता है पीठ और सीने के दर्मियान से। बेशक वह उसे दुबारा पैदा करने पर कादिर है। जिस दिन छुपी बातें परखी जाएंगी। उस वक्त इंसान के पास कोई ज़ोर न होगा और न कोई मददगार। कसम है आसमान चक्कर मारने वाले की। और फूट निकलने वाली ज़मीन की। बेशक यह दोदूक बात है और वह हंसी की बात नहीं। वे तदवीर (युक्ति) करने में लगे हुए हैं। और मैं भी तदवीर करने में लगा हुआ हूं। पस मुक़िरो को ढील दे, उन्हें ढील दे थोड़े दिनों। (1-17)

इंसान के ऊपर तारे का चमकना तमसील (उपमा) की ज़बान में इस वाक्ये की याददहानी है कि कोई देखने वाला उसे देख रहा है। यह देखने वाला इंसान के आमाल को रिकॉर्ड कर रहा है। वह मौत के बाद दुबारा इंसान को पैदा करेगा। और उससे उसके तमाम आमाल का हिसाब लेगा। यह सिर्फ इम्तेहान की मोहलत है जो इंसान के दर्मियान और उस वक्त के दर्मियान हदे फासिल (सीमा-रेखा) बनी हुई है। इम्तेहान की मुद्दत ख़त्म होते ही उसका वह अंजाम सामने आएगा जिससे आज वह बज़ाहिर बहुत दूर नज़र आता है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۚ
سُبْحَانَكَ يَا مَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ ۚ
وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى ۚ فَجَعَلَ غَنَاءً أَخْوَى ۚ سَنَفَرُكَ فَلَا تَنْسَى ۚ إِلَّا مَا شَاءَ
اللَّهُ ۚ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَى ۚ وَيُخَيِّرُكَ لَيْسُرَى ۚ فَذَكِّرْ ۚ إِنَّ نُفْعَتَ
الدُّكْرِى ۚ سَيَذَكِّرُ مَنْ يَخْشَى ۚ وَيَتَجَبَّبُهَا الْأَشْقَى ۚ الَّذِي يَصْلَى النَّارَ
الْكُبْرَى ۚ ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۚ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّى ۚ وَذَكَرَ اسْمَ
رَبِّهِ فَصَلَّى ۚ بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۚ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۚ إِنَّ
هَذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَى ۚ صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ۚ

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अपने रब के नाम की पाकी बयान कर जो सबसे ऊपर है। जिसने बनाया फिर ठीक किया। और जिसने ठहराया, फिर राह बताई। और जिसने चारा निकाला। फिर उसे स्याह कूड़ा बना दिया। हम तुम्हें पढ़ाएंगे फिर तुम नहीं भूलोगे। मगर जो अल्लाह चाहे, वह जानता है खुले को भी और उसे भी जो छुपा हुआ है। और हम तुम्हें ले चलेंगे आसान राह। पस नसीहत करो अगर नसीहत फायदा पहुंचाए। वह शख्स नसीहत कुबूल करेगा जो उरता है। और उससे गुरेज़ (विमुखता) करेगा वह जो बदबख्त होगा। वह पड़ेगा बड़ी आग में। फिर न उसमें मरेगा और न जिएगा। कामयाब हुआ जिसने अपने को पाक किया। और अपने रब का नाम लिया। फिर नमाज़ पढ़ी। बल्कि तुम दुनियावी ज़िंदगी को मुकद्दम रखते हो। और आखिरत बेहतर है और पाएदार है। यही अगले सहीफों (ग्रंथों) में भी है, मूसा और इब्राहीम के सहीफों में। (1-19)

इंसान की और दुनिया की तख्तीक में वाज़ेह तौर पर एक मंसूबाबंदी है। यह मंसूबाबंदी तक्ज़ा करती है कि इस तख्तीक का कोई मक्सद हो। यही वह मक्सद है जो 'वही' (ईश्वरीय वाणी) के ज़रिए इंसान के ऊपर खोला गया है। ताहम 'वही' से वही शख्स नसीहत कुबूल करेगा जिसके अंदर सोचने और असर लेने का मिज़ाज हो। ऐसे लोग खुदा के अबदी (चिरस्थायी) इनामात में दाखिल किए जाएंगे। और जिन लोगों की सरकशी उनके लिए नसीहत कुबूल करने में रुकावट बन जाए, उनका अंजाम सिर्फ यह है कि वे हमेशा के लिए आग में जलते रहें।

سُبْحَانَكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ ۝ يَسْمِعُ اللَّهُ الرَّحْمَنَ الرَّحِيمَ ۝ وَرَبُّكَ فِي يَدَيْهِ
هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ۝ وَجُودُهُ يُومِنُ خَاشِعَةً ۝ عَالِمَةً تَأْصِبُهُ ۝ تَصَلَّى
نَارًا حَامِيَةً ۝ تُسْقَى مِنْ عَيْنٍ أَنْبِيَةٍ ۝ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ ضَرِيعٍ ۝ لَا
يُسِينُ وَلَا يُغْنِي عَنْ جُودِهِ ۝ وَجُودُهُ يُومِنُ تَائِعَةً ۝ لَسَعِيهَا رَاضِيَةٌ ۝ فِي
جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝ لَا تَسْمَعُ فِيهَا لِأَغْيَةٍ ۝ فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝ فِيهَا سُرُرٌ
تَرْفُوعَةٌ ۝ وَأَكْوَابٌ مَوْضُوعَةٌ ۝ وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۝ وَزُرَّاقٌ مَبْثُوثَةٌ ۝ أَفْلا
يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝ وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝ وَإِلَى الْجِبَالِ
كَيْفَ نُصِبَتْ ۝ وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝ فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝

لَسْتُ عَلَيْهِمْ بِمُضَيِّطٍ ۝ إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ ۝ فَيَعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ
الْأَكْبَرَ ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِمْ ۝ لَكُنُوزًا عَالِمٌ ۝

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

क्या तुम्हें उस छा जाने वाली की खबर पहुंची है। कुछ चेहरे उस दिन ज़लील होंगे, मेहनत करने वाले थके हुए। वे दहकती आग में पड़ेंगे। खोलते हुए चशमे (स्रोत) से पानी पिलाए जाएंगे। उनके लिए कांटों वाले झाड़ के सिवा और कोई खाना न होगा, जो न मोटा करे और न भूख मिटाए। कुछ चेहरे उस दिन बारौनक होंगे। अपनी कमाई पर खुश होंगे। ऊंचे बाग में। उसमें कोई लगव (घटिया, निरर्थक) बात नहीं सुनेंगे। उसमें बहते हुए चशमे होंगे। उसमें तख्त होंगे ऊंचे बिछे हुए। और आबखोरे सामने चुने हुए। और बराबर बिछे हुए गद्दे। और कालीन हर तरफ पड़े हुए। तो क्या वे ऊंट को नहीं देखते कि वह कैसे पैदा किया गया। और आसमान को कि वह किस तरह बुलन्द किया गया। और पहाड़ों को कि वह किस तरह खड़ा किया गया। और ज़मीन को कि वह किस तरह बिछाई गई। पस तुम याददिहानी कर दो, तुम बस याददिहानी करने वाले हो। तुम उन पर दारोगा नहीं। मगर जिसने रूगदर्दानी (अवहेलना) की और इंकार किया, तो अल्लाह उसे बड़ा अज़ाब देगा। हमारी ही तरफ उनकी वापसी है। फिर हमारे ज़िम्मे है उनसे हिसाब लेना। (1-26)

आदमी देखता है कि ऊंट जैसा अजीबुल खिलकत (विचित्र) जानवर उसका मुतीअ (आज्ञापालक) है। आसमान अपनी सारी अज़मतों के बावजूद उसके लिए मुसख़्खर है। ज़मीन हमारी किसी कोशिश के बगैर हमारे लिए हद-दर्जा मुवाफिक बनी हुई है। ये वाक़ेयात सोचने वाले को खुदा और आखिरत की याददिहानी कराते हैं। जो लोग दुनिया के इस निज़ाम से याददिहानी की ग़िज़ा लें उन्होंने अपने लिए खुदा की अबदी (चिरस्थायी) नेमतों का इस्तहकाक (अधिकार) साबित किया। और जो लोग गुफ़लत में पड़ें रहें उन्होंने यह साबित किया कि वे सिर्फ इस काबिल हैं कि उन्हें हर किस्म की नेमतों से हमेशा के लिए महरूम कर दिया जाए।

سُبْحَانَكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ ۝ يَسْمِعُ اللَّهُ الرَّحْمَنَ الرَّحِيمَ ۝ وَرَبُّكَ فِي يَدَيْهِ
وَالْفَجْرِ ۝ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝ وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝ وَالْيَلِّ إِذَا يُسْرَ ۝ هَلْ فِي ذَلِكَ
قَسَمٌ لِّذِي حَجْرِ ۝ أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝ إِرْمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝ الَّتِي لَمْ
يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۝ وَثَمُودَ ۝ الَّذِينَ جَاءُوا الضَّغَرِ ۝ يَالْوَادِ ۝ وَفِرْعَوْنَ

ذِي الْأَوْتَادِ الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۖ فَاكْثُرُوا فِيهَا فُسَادًا ۖ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ
رَبُّكَ سَوَاطِدَ ۖ إِنَّ رَبَّكَ لَهَا لِرُصَادٌ ۖ فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ
رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ وَنَعَّمَهُ ۖ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۖ وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ
عَلَيْهِ رِزْقَهُ ۖ فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ۖ كَلَّا بَلْ لَا تَكْرُمُونَ الْيَتِيمَ ۖ وَلَا
تَحْضُونَ عَلَى طَعَامِ الْمُسْكِينِ ۖ وَتَأْكُلُونَ الثَّرَاثَ أَكْلًا لُبًّا ۖ وَتُحِبُّونَ الْمَالَ
حُبًّا جَمًّا ۖ كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۖ وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۖ
وَجِئْنَا يَوْمَئِذٍ بِمِغْصَدٍ مِمَّنْ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ ۖ وَآتَىٰ لَهُ الذِّكْرَىٰ ۖ يَقُولُ
يَلْبِثُنِي قَدِّمْتُ لِحَيَاتِي ۖ فَيَوْمَئِذٍ لَا يُعَذِّبُ عَذَابُهُ أَحَدٌ ۖ وَلَا يُؤْتِيهِمْ ثَوَابٌ
أَحَدٌ ۖ يَا أَيُّهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۖ ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۖ
فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۖ وَادْخُلِي جَنَّاتِي ۖ

۱
۱۴

आयतें-30

सूह-89. अल-फज

रुकूअ-1

(मक्का में नजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
कम हैफ़ (उषाकाल) की। और दस रातों की। और जुफ़्त (सम) और ताक
(विषम) की। और रात की जब वह चलने लगे। क्योंकि, इसमें अक्लमंद के लिए काफी
कसम है। तुमने नहीं देखा, तुम्हारे रब ने आद के साथ क्या मामला किया, सुतुनों
(स्तंभों) वाले इरम के साथ। जिनके बराबर कोई कौम मुल्कों में पैदा नहीं की गई।
और समूद के साथ जिन्होंने वादी में चट्टानें तराशीं। और मेखों वाले फिरऔन के
साथ, जिन्होंने मुल्कों में सरकशी की। फिर उनमें बहुत फसाद फैलाया। तो तुम्हारे
रब ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया। वेशक तुम्हारा रब घात में है। पस इंसान
का हाल यह है कि जब उसका रब उसे आजमाता है और उसे इज़्ज़त और नेमत
देता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी। और जब वह उसे आजमाता
है और उसका रिज्क उस पर तंग कर देता है तो वह कहता है कि मेरे रब ने मुझे
ज़लील कर दिया। हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम की इज़्ज़त नहीं करते। और तुम
मिस्कीन को खाना खिलाने पर एक दूसरे को नहीं उभारते। और तुम विरासत को
समेटकर खा जाते हो। और तुम माल से बहुत ज़्यादा मुहब्बत रखते हो। हरगिज़

नहीं, जब ज़मीन को तोड़कर रेज़ा-रेज़ा कर दिया जाएगा। और तुम्हारा रब आएगा
और फ़स्ते आगे क़त्तार (पंक्ति) दर क़त्तार। और उस दिन जहन्नम लाई जाएगी,
उस दिन इंसान को समझ आएगी, और अब समझ आने का मौका कहां। वह
कहेगा, काश मैं अपनी ज़िंदगी में कुछ आगे भेजता। पस उस दिन न तो खुदा के
बराबर कोई अज़ाब देगा, और न उसके बांधने के बराबर कोई बांधेगा। ऐ नफ़से
मुतमइन (संतुष्ट आत्मा) चल अपने रब की तरफ। तू उससे राज़ी, वह तुझसे राज़ी।
फिर शामिल हो मेरे बंदों में और दाख़िल हो मेरी जन्नत में। (1-30)

दुनिया में आदमी को दो किस्म के अहवाल पेश आते हैं। कभी पाना और कभी महरूम
हो जाना। ये दोनों हालतें इम्तेहान के लिए हैं। वे इस जांच के लिए हैं कि आदमी किस हाल
में कौन सा रद्देअमल पेश करता है। जिस शख्स का मामला यह हो कि जब उसे कुछ मिले
तो वह फख्र करने लगे और जब उससे छीना जाए तो वह मंफ़ी (नकारात्मक) नफ़ियत में
मुत्बिला हो जाए, ऐसा शख्स इम्तेहान में नाकाम हो गया।

दूसरा इंसान वह है कि जब उसे मिला तो उसने खुदा के सामने झुक कर उसका शुक्र
अदा किया, और जब उससे छीना गया तो दुबारा उसने खुदा के आगे झुक कर अपने इज्ज़
(निर्बलता) का इकरार किया। यही दूसरा इंसान है जिसे यहां नफ़से मुतमइन कहा गया है,
यानी मुतमइन रूह (संतुष्ट आत्मा)।

नफ़से मुतमइन का मकाम उस शख्स को मिलता है जो कायनात में खुदा की निशानियों
पर गौर करे। जो तारीख़ के वाक़ेयात से इबरत (सीख) व नसीहत की ग़िज़ा ले सके। जो इस
बात का सुबूत दे कि जब उसकी ज़ात में और हक में टकराव होगा तो वह अपनी ज़ात को
नज़रअंदाज़ कर देगा और हक को कुबूल कर लेगा। जो एक बार हक को मान लेने के बाद
फिर उसे कभी न छोड़े, चाहे उसकी खातिर उसे अपने आपको कुचलना पड़े, और चाहे उसके
नतीजे में उसकी ज़िंदगी वीरान हो जाए।

سُبْحَانَ الْمَلِكِ ۖ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۖ وَنَحْمَدُكَ ۖ
لَا أُقْسِمُ بِهَذَا الْبَلَدِ ۖ وَأَنْتَ حَلٌّ بِهَذَا الْبَلَدِ ۖ وَوَالِدٌ وَمَوْلَدٌ ۖ لَقَدْ
خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ ۖ أَيْحَسِبُ أَنْ لَنْ يُقَدَّرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ۖ يَقُولُ
أَهْلَكْتُ مَا لَا بَدَأَ ۖ أَيْحَسِبُ أَنْ لَمْ يَرِكْ أَحَدٌ ۖ أَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ
عَيْنَيْنِ ۖ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۖ وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۖ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۖ
وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۖ فَكَّرْ رَقَبَةً ۖ أَوْ إطْعَمْ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۖ

يَتِيمًا إِذَا مَقَرَّبَهُ ۖ أَوْ وَسَّيْنًا إِذَا مَتَرَبَّهُ ۖ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ أَمْنُوا
تَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۖ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۖ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَنَاهَا ۖمُ أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۖ عَلَيْهِمْ نَارُ مُّؤَصَّدَةٍ ۖ

आयतें-20

सूरह-90. अल-बलद

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

नहीं, मैं कसम खाता हूँ इस शहर (मक्का) की। और तुम इसमें मुक्रीम (रह रहे) हो। और कसम है बाप की और उसकी औलाद की। हमने इंसान को मशक्कत (सश्रम स्थिति) में पैदा किया है। क्या वह ख्याल करता है कि उस पर किसी का ज़ोर नहीं। कहता है कि मैंने बहुत सा माल खर्च कर दिया। क्या वह समझता है कि किसी ने उसे नहीं देखा। क्या हमने उसे दो आंखें नहीं दीं। और एक ज़वान और दो होंट। और हमने उसे दोनों रास्ते बता दिए। फिर वह घाटी पर नहीं चढ़ा। और तुम क्या जानो कि क्या है वह घाटी। गर्दन को छुड़ाना। या भूख के ज़माने में खिलाना, कराबतदार यतीम को, या खाकनशी (धूल-धूसरित) मोहताज को। फिर वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाए और एक दूसरे को सत्र की और हमदर्दी की नसीहत की। यही लोग नसीब वाले हैं। और जो हमारी आयतों के मुँकिर हुए वे बदबख्ती (दुर्भाग्य) वाले हैं। उन पर आग छाई हुई होगी। (1-20)

इंसान किसी हाल में अपने आपको मशक्कतों से आज़ाद नहीं कर पाता। इससे मालूम हुआ कि इंसान किसी बालातर कुव्वत (उच्चतर शक्ति) के मातहत है। इसी तरह इंसान की आंखें बताती हैं कि कोई बरतर आंख भी है जो उसे देख रही है। इंसान की कुव्वते नुक (वाक शक्ति) इशारा करती है कि उसके ऊपर भी एक साहिबे नुक है जिसने उसे नुक (बोलने) की सलाहियत दी। और उसे हिदायत का रास्ता दिखाया। आदमी अगर हकीकी मअनों में अपने आपको पहचान ले तो यकीनन वह खुदा को भी पहचान लेगा।

खुदा ने इंसान को दो किस्म की बुलन्दियों पर चढ़ने का हुक्म दिया है। एक इंसान के साथ मुसिफाना सुलूक और इंसान की ज़रूरतों में उसके काम आना। दूसरी चीज़ अल्लाह पर ईमान और यकीन है। यह ईमान और यकीन जब आदमी के अंदर गहराई के साथ उतरता है तो वह आदमी की अपनी ज़ात तक महदूद नहीं रहता बल्कि मुतअद्दी (प्रसारक) बन जाता है। ऐसा इंसान दूसरों को भी उसी हक पर लाने की कोशिश करने लगता है जिसे वह खुद इख्तियार किए हुए है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ فِي مَجْزِعَةٍ آتٍ
وَالشَّمْسُ وَضُحَاهَا ۖ وَالْقَمَرُ إِذَا تَلَّهَا ۖ وَالنَّهَارُ إِذَا جَدَّهَا ۖ وَاللَّيْلُ إِذَا
يَغْشَاهَا ۖ وَالسَّمَاءُ وَمَا بَنَاهَا ۖ وَالْأَرْضُ وَمَا طَحَاهَا ۖ وَنَفْسٌ وَمَا سَوَّاهَا ۖ
فَالْهَمُّهَا فُجُورُهَا وَتَقْوَاهَا ۖ قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا ۖ وَقَدْ خَابَ مَنْ
دَسَّاهَا ۖ كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِطَغْوَاهَا ۖ إِذِ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا ۖ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ
اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ۖ فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا ۖ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ
يَذْرِبُهُمْ فَسَوَّاهَا ۖ وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۖ

आयतें-15

सूरह-91. अश-शम्स

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

कसम है सूरज की और उसकी धूप चढ़ने की। और चांद की जबकि वह सूरज के पीछे आए। और दिन की जबकि वह उसे रोशन कर दे। और रात की जब वह उसे छुपा ले। और आसमान की और जैसा कि उसे बनाया। और ज़मीन की और जैसा कि उसे फैलाया। और जान की जैसा कि उसे ठीक किया। फिर उसे समझ दी, उसकी बदी की और उसकी नेकी की। कामयाब हुआ जिसने उसे पाक शुद्ध किया और नामुराद हुआ जिसने उसे आलूदा (अशुद्ध) किया। समूद ने अपनी सरकशी की बिना पर झुठलाया। जबकि उठ खड़ा हुआ उनका सबसे बड़ा बदबख्त। तो अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा कि अल्लाह की ऊंटनी और उसके पानी पीने से खबरदार। तो उन्होंने उसे झुठलाया। फिर ऊंटनी को मार डाला। फिर उनके रब ने उन पर हलाकत नाज़िल की। फिर सबको बराबर कर दिया। वह नहीं डरता कि उसके पीछे क्या होगा। (1-15)

इंसान की हिदायत के लिए अल्लाह तआला ने सहगाना (बहुमुखी) इतिज़ाम किया है। एक तरफ कायनात इस तरह बनाई गई है कि वह खुदा की मर्ज़ी का अमली इज़हार बन गई है। दूसरी तरफ इंसान के अंदर नेकी और बदी का वजदानी शुऊर (आन्तरिक चेतना) रख दिया गया है। इसके बाद मज़ीद एहतियाम यह फरमाया कि पैगम्बरों के ज़रिए हक व बातिल और जुम व झाफ को लोगों की कबिलेफ़्तम (सहज) ज़बान में खोलकर बता दिया गया। इसके बाद भी जो लोग राहेरास्त पर न आए वे बिलाशुबह ज़ालिम हैं।

हजरत सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी एक एतबार से इस बात की अलामत थी कि हकदार का एहताराम करो और उसका हक अदा करो, चाहे वह बेबस और कमजोर क्यों न हो। एक वज्र जो बज़ाहिर महज़ 'ऊंटनी' नज़र आ रहा है, ऐन मुमकिन है कि वह खुदा का निशान हो जो लोगों की जांच के लिए मुकर्रर किया गया हो।

سُبْحَانَكَ يَا رَبِّ الْعَالَمِينَ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ اَحْكَمْتَ لَيْلٍ وَالْيَلَّ اِذَا يَعْشَى ۝ وَاللَّهَارَ اِذَا تَجَلَّى ۝ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَى ۝ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّى ۝ فَاَمَّا مَنْ اَعْطَى وَاتَّقَى ۝ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى ۝ فَسَنِيْرُهُ لِيُسْرَى ۝ وَاَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى ۝ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى ۝ فَسَنِيْرُهُ لِيْعُسْرَى ۝ وَمَا يَغْنَى عَنْهُ مَالُهُ اِذَا تَرَدَّى ۝ اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَى ۝ وَاِنَّ لَنَا لَلْآخِرَةَ وَالْأُولَى ۝ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّى ۝ لَا يَصْلُهَا اِلَّا الْاَشْقَى ۝ الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۝ وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝ الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّى ۝ وَمَا لِاحِدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَى ۝ اِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلَى ۝ وَلَسَوْفَ يَرْضَى ۝

ع
١٤

आयतें-21

सूरह-92. अल-लइल

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है रात की जबकि वह छा जाए। और दिन की जबकि वह रोशन हो और उसकी जो उसने पैदा किए नर और मादा। कि तुम्हारी कोशिशें अलग-अलग हैं। पस जिसने दिया और वह डरा और उसने भलाई को सच माना। तो उसे हम आसान रास्ते के लिए सुहूलत देंगे। और जिसने बुल्ल (कंजूसी) किया और बेपरवाह रहा, और भलाई को झुठलाया, तो हम उसे सख्त रास्ते के लिए सुहूलत देंगे। और उसका माल उसके काम न आएगा जब वह गढ़े में गिरेगा। वेशक हमारे ज़िम्मे है राह बताना। और वेशक हमारे इख्तियार में है आखिरत और दुनिया। पस मैंने तुम्हें डरा दिया भड़कती हुई आग से। उसमें वही पड़ेगा जो बड़ा बदवख्त है। जिसने झुठलाया और रूगर्दानी (अवहेलना) की। और हम उससे बचा देंगे ज़्यादा डरने वाले को। जो अपना माल देता है पाकी हासिल करने के लिए और उस पर किसी का एहसान नहीं जिसका बदला उसे देना हो। मगर सिर्फ अपने खुदाए वरतर की खुशनूदी के लिए।

और अनकरीब वह खुश हो जाएगा। (1-21)

दुनिया में तमाम चीज़ें जोड़े-जोड़े हैं। नर और मादा, रात और दिन, मुस्बत (धनात्मक) ज़र्रह और मंफी (ऋणात्मक) ज़र्रह, मेटर (Matter) और एंटी मेटर। इस दुनिया की हर चीज़ अपने जोड़े के साथ मिलकर अपने मक्सद को पूरा करती है। यह वाज़ेह तौर पर इस बात का सबूत है कि इस कायनात में मक्सदियत (उद्देश्यपरकता) है। ऐसी बामक्सद कायनात में यह नामुमकिन है कि यहां अच्छा अमल और बुरा अमल दोनों बिल्कुल एकसां (समान) अंजाम पर ख़्त हो। कायनात अपने ख़ालिक का जो तआरुफ करा रही है उससे यह बात मुताबिकत नहीं रखती।

अल्लाह का ताल्लुक अपने बंदों से सिर्फ हाकिम का नहीं, बल्कि मददगार का भी है। वह अपने उन बंदों का रास्ता हमवार करता है जो उसकी तरफ चलना चाहें। इसके बरअक्स जो लोग सरकशी का रास्ता इख्तियार करें वह उन्हें सरकशी के रास्ते पर दौड़ने के लिए छोड़ देता है।

سُبْحَانَكَ يَا رَبِّ الْعَالَمِينَ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ هُوَ الَّذِي خَلَقَ الضُّلَى ۝ وَالْيَلَّ اِذَا سَجَى ۝ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَى ۝ وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُولَى ۝ وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَى ۝ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَآوَى ۝ وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَى ۝ وَوَجَدَكَ عَالِيْلًا فَاَغْنَى ۝ فَلَمَّا الْيَسِيْرَ فَلَا تَقْهَرْ ۝ وَاَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

ع
١٥

आयतें-11

सूरह-93. अज़-जुहा

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है रोज़े रोशन (चढ़ते दिन) की। और रात की जब वह छा जाए। तुम्हारे रब ने तुम्हें नहीं छोड़ा। और न वह तुमसे बेज़ार (अप्रसन्न) हुआ। और यकीनन आखिरत तुम्हारे लिए दुनिया से बेहतर है। और अनकरीब अल्लाह तुझे देगा। फिर तू राज़ी हो जाएगा। क्या अल्लाह ने तुम्हें यतीम (अनाथ) नहीं पाया फिर ठिकाना दिया। और तुम्हें मुतलाशी पाया तो राह दिखाई। और तुम्हें नादार (निर्धन) पाया तो तुम्हें ग़नी (समृद्ध) कर दिया। पस तुम यतीम पर सख्ती न करो। और तुम साइल (मांगने वाले) को न झिड़को। और तुम अपने रब की नेमत बयान करो। (1-11)

इस दुनिया का निज़ाम इस तरह बना है कि यहां दिन भी आता है और रात भी। दोनों के मिलने से यहां का निज़ाम मुकम्मल होता है। इसी तरह इंसान के इरतका (उत्थान) के लिए

भी सख्खी और नर्मी दोनों का पेश आना ज़रूरी है। इस दुनिया में एक बंदए खुदा के साथ सख्खी के हालात इसलिए पेश आते हैं कि उसकी छुपी हुई सलाहियतें बेदार हों। उसकी राह में रुकावटें इसलिए डाली जाती हैं ताकि उसका मुस्तकबिल (भविष्य) उसके हाल (वर्तमान) के ज़्यादा बेहतर हो सके।

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यतीम पैदा हुए, फिर अल्लाह ने आपको बेहतरीन सरपरस्त अता फरमाया। आप तलाशे हक में सरगरदां (प्रयत्नशील) थे, फिर अल्लाह ने आपके लिए हक का दरवाज़ा खोल दिया। आप बज़ाहिर बेमाल थे, फिर अल्लाह ने आपको आपकी पत्नी (हज़रत ख़दीज़ा रज़ि०) के ज़रिए साहिबे माल बना दिया। यह एक तारीख़ी मिसाल है जो बताती है कि अल्लाह तआला किस तरह अपने बंदों की मदद फरमाता है।

इंसान को चाहिए कि वह कमज़ोरों की मदद करे ताकि वह अल्लाह की मदद का मुस्तहक़ बने। उसका कलाम नेमत खुदाबंदी के इज़हार का कलाम हो ताकि अल्लाह उस पर अपनी नेमतों का इतमाम फरमाए।

سُبْحَانَكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ ۝ يَسْمِعُ اللَّهُ الرَّحْمَنَ الرَّحِيمَ ۝ وَهُوَ عَلَىٰ أَمْرٍ
اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۝ وَوَضَعْنَا عَنكَ وِزْرَكَ ۝ اَلَّذِي اَنْقَضَ
ظَهْرَكَ ۝ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ۝ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۝ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ
يُسْرًا ۝ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ۝ وَاِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ۝

आयतें-8

सूरह-94. अल-इनशिराह

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। क्या हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए खोल नहीं दिया। और तुम्हारा वह बोझ उतार दिया जिसने तुम्हारी पीठ झुका दी थी। और हमने तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द किया। पस मुश्किल के साथ आसानी है। वेशक मुश्किल के साथ आसानी है। फिर जब तुम फारिग हो जाओ तो मेहनत करो। और अपने ख की तरफ तवज्जोह रखो। (1-8)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हकीकत जानने के लिए तड़प रहे थे। अल्लाह तआला ने आपको हकीकत का इल्म देकर आपकी तलाश को मअरफत (अन्तर्ज्ञान) मेंतबील कर दिया। हक्क (यथार्थ, सत्य) की मअरफत के लिए आपका सीना खुल गया। फिर आपने मक्का में तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत शुरू की तो बज़ाहिर सख्त मुख़ालिफ़तों का सामना पेश आया। मगर इन्हीं मुख़ालिफ़तों के ज़रिए यह हुआ कि आपका चर्चा सारे मुल्क में फैल गया।

यही मौजूदा दुनिया के लिए अल्लाह का कानून है। यहां इब्तिदा में इंसान के साथ उस (मुश्किल) के हालात पेश आते हैं लेकिन अगर वह सब के साथ उन पर जमा रहे यह उस उसके लिए नए युस्न (आसानी) तक पहुंचाने का ज़ीना बन जाता है। इसलिए इंसान को चाहिए कि वह हमेशा अल्लाह की तरफ देखे, वह अपनी इस्तताअत के बक़द (यथासामर्थ्य) अपनी जद्दोज़हद को बराबर जारी रखे।

سُبْحَانَكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ ۝ يَسْمِعُ اللَّهُ الرَّحْمَنَ الرَّحِيمَ ۝ وَهُوَ عَلَىٰ أَمْرٍ
وَالثَّيْنِ وَالثَّيْتُونَ ۝ وَطُورِ سَيْنِينَ ۝ وَهَذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ۝ لَقَدْ خَلَقْنَا
الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ۝ ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ۝ إِلَّا الَّذِينَ
آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝ فَمَا يَكْذِبُكَ بَعْدُ
بِالَّذِينَ ۝ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمَ الْحَاكِمِينَ ۝

आयतें-8

सूरह-95. अत-तीन

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है तीन की ओर ज़ैतून की। और तूरे सीना की। और इस अमन वाले शहर की। हमने इंसान को बेहतरीन साज़्ज (संरचना) पर पैदा किया। फिर उसे सबसे नीचे फेंक दिया। लेकिन जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए तो उनके लिए कभी ख़त्म न होने वाला अज़्र (प्रतिफल) है। तो अब क्या है जिससे तुम बदला मिलने को झुटलाते हो। क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं। (1-8)

‘तीन’ और ‘ज़ैतून’ दो पहाड़ों के नाम हैं जिसके करीब बैतुल मक़दस वाकेअ है, यानी हज़रत मसीह का मकामे अमल। ‘तूरि सीना’ से मुराद वह पहाड़ है जहां हज़रत मूसा पर खुदा ने ‘वही’ (प्रकाशना) फरमाई। ‘बलद अमीन’ से मुराद मक्का है जहां पैग़म्बरे इस्लाम मबऊस (प्रस्थापित) हुए।

अल्लाह तआला ने इंसान को बेहतरीन सलाहियतों (क्षमताओं) के साथ पैदा किया है। ये सलाहियतें इसलिए हैं कि इंसान पैग़म्बरों के ज़रिए ज़ाहिर किए जाने वाले हक को पहचाने और अपनी ज़िंदगी को उसके मुताबिक बनाए। जो लोग ऐसा करें वे इज़्ज़त और बुलन्दी का अबदी मकाम पाएंगे। इसके बरअक्स जो लोग अपनी खुदादाद सलाहियतों को खुदा की मर्ज़ी के ताबेअ न करें, उनसे मौजूदा नेमतें भी छीन ली जाएंगी और कामिल महरूमों के सिवा कोई जगह न होगी जहां उन्हें ठिकाना मिल सके। पैग़म्बरों की बेअसत (प्रस्थापना) और पैग़म्बरों के ज़रिए ज़ाहिर होने वाले नताइज इसकी सदाकत की गवाही देते हैं।

سَوَّاهُ وَكَرَّمَهُ ۖ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ هِيَ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً ۚ
 اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ۝ خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۚ اقْرَأْ وَرَبُّكَ
 الْأَكْرَمُ ۝ الَّذِي عَلَّمَهُ بِالْقَلَمِ ۚ عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝
 كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِكَيْفَىٰ ۚ أَنْ رَأَاهُ اسْتَعْغَىٰ ۚ لَنْ يَرْجِعَ الْوَجْعَىٰ ۚ
 أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ۚ عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ۚ أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدَىٰ ۚ
 أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۚ أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۚ أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۚ
 كَلَّا لَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۚ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۚ
 فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۚ سَنَدْعُ الزَّبَابِيَةَ ۚ كَلَّا لَا تَطَّعُهُ وَاسْجُدْ
 وَاقْتَرِبْ ۝

وَقَدْ
 عَلَّمَ
 بِالْقَلَمِ
 مَا لَمْ
 يَعْلَمْ
 الْإِنْسَانُ
 إِنَّ اللَّهَ
 كَانَ
 عَلِيمًا
 خَبِيرًا

आयतें-19

सूरह-96. अल-अलक
(मक्का में नाज़िल हुई)

रुकूअ-1

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
 पढ़ अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया। पैदा किया इंसान को अलक (खून के लोथड़े)
 से। पढ़ और तेरा रब बड़ा करीम है जिसने इल्म सिखाया कलम से। इंसान को वह कुछ
 सिखाया जो वह जानता न था। हरगिज़ नहीं, इंसान सरकशी करता है। इस बिना पर
 कि वह अपने को आत्मनिर्भर देखता है। बेशक तेरे रब ही की तरफ लौटना है। क्या तुमने
 देखा उस शख्स को जो मना करता है, एक बंदे को जब वह नमाज़ अदा करता हो तुम्हारा
 क्या ख्याल है, अगर वह हिदायत पर हो। या डर की बात सिखाता हो। तुम्हारा क्या ख्याल
 है, अगर उसने झुठलाया और रूगर्दानी (अवहेलना) की। क्या उसने नहीं जाना कि अल्लाह
 देख रहा है। हरगिज़ नहीं, अगर वह बाज़ न आया तो हम पेशानी के बाल पकड़कर उसे
 खींचेंगे। उस पेशानी को जो झूठी गुनाहगार है। अब वह बुला ले अपने हामियों को। हम
 भी दोज़ख के फरिश्तों को बुलाएंगे। हरगिज़ नहीं, उसकी बात न मान और सज़ा कर
 और करीब हो जा। (1-19)

इस सूरह की इब्तिदाई पांच आयतें वे हैं जो पैगम्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल० पर
 सबसे पहले नाज़िल हुई। इंसान को अल्लाह तआला ने मामूली मादूदी अज्ज़ा (भौतिक तत्वों)
 से पैदा किया। फिर उसे यह नादिर (विलक्षण) सलाहियत दी कि वह पढ़े और अल्फ़ाज़ के

ज़रिए मआनी का इदराक कर सके। फिर इंसान को यह मज़ीद सलाहियत दी गई है कि वह
 कलम को इस्तेमाल करे और इस तरह अपने इल्म को मुदब्बन (संग्रहित) और महफूज़ कर
 सके। (पाठ) की सलाहियत अगर आदमी को खुद पढ़ने के काबिल बनाती है तो कलम
 उसे इस काबिल बनाता है कि वह अपने इल्म को वसीअ पैमाने पर दूसरों तक पहुंचा सके।

जो लोग हक के मुक़ाबले में सरकशी करें और हक का रास्ता इस्तिहार करने वालों की
 राह में रुकावटें डालें उनका अंजाम बहुत बुरा है। ऐसे हालात में हक के दाओ (आह्वानकर्ता)
 का असल सहारा यह है कि वह अल्लाह की इबादत करे। वह लोगों से महरूम होकर खुदा
 से पाए, वह लोगों से दूर होकर (लोगों के) खुदा से करीब हो जाए।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۖ هِيَ خَمْسُ آيَاتٍ ۚ
 إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۚ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۚ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ
 مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۚ تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ۝
 سَلَامٌ هُوَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝

وَقَدْ
 عَلَّمَ
 بِالْقَلَمِ
 مَا لَمْ
 يَعْلَمْ
 الْإِنْسَانُ
 إِنَّ اللَّهَ
 كَانَ
 عَلِيمًا
 خَبِيرًا

आयतें-5

सूरह-97. अल-वक्र
(मक्का में नाज़िल हुई)

रुकूअ-1

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
 हमने इसे उतारा है शबे वक्र (गौरवपूर्ण रात) में। और तुम क्या जानो कि शबे वक्र
 क्या है। शबे वक्र हज़ार महीनों से बेहतर है। फरिश्ते और रूह उसमें अपने रब की
 इजाज़त से उतरते हैं। हर हुक्म लेकर। वह रात सरासर सलामती है, सुबह निकलने
 तक। (1-5)

साल की एक खास रात (गालिबन माहे रमज़ान के आखिरी अशरे की कोई रात)
 अल्लाह तआला के यहां फैसले की रात है। दुनिया के इतिज़ाम के मुतअल्लिक जो काम उस
 साल में मुक़द्दर हैं उनके निफ़ाज़ (लागू करने) के तअय्युन के लिए उस रात को फरिश्ते
 उतरते हैं। इसी किस्म की एक खास रात में कुरआन का नज़ूल (अवतरण) शुरू हुआ।

बज़ाहिर ऐसा मालूम होता है कि इस रात को ज़मीन पर फरिश्तों की कसरत होती है।
 इससे ज़मीन पर खास तरह का रूहानी माहौल पैदा होता है। अब जो लोग अपने अंदर
 रूहानियत बेदार किए हुए हों वे उससे मुतअस्सिर (प्रभावित) होते हैं और इसके नतीजे में
 उनके अंदर ग़ैर मामूली रूहानी तासीर पैदा हो जाती है जो उनके दीनी अमल की कद्र व
 कीमत आम हालात से बहुत ज़्यादा बढ़ा देती है।

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقَيُّومِ ۝ وَسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ ۖ وَهُوَ الَّذِي يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ مُنْفَكِّينَ حَتَّى تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۚ رَسُولٌ مِّنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۚ فِيهَا الْكُتُبُ وَالْغَيْبُ ۚ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۚ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ حُنَفَاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ أُولَٰئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۚ جَزَاءُ هُمُ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ عَدْنٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ رَاضِينَ ۚ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَلِكَ لِمَنِ خَشِيَ رَبَّهُ ۚ

आयतें-8

सूरह-98. अल-बय्यिनह

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

अहले किताब (पूर्ववर्ती-ग्रंथ धारक) और मुश्रीकीन (बहुदेववादी) में से जिन लोगों ने इंकार किया वे बाज़ आने वाले नहीं जब तक उनके पास बाज़ेह दलील न आ जाए। अल्लाह की तरफ से एक रसूल जो पाक सहीफे (ग्रंथ) पढ़कर सुनाए। जिनमें दुरुस्त मज़ामीन लिखे हों। और जो लोग अहले किताब थे वे बाज़ेह दलील आ जाने के बाद ही मुज़ल्लिफ हो गए। हालांकि उन्हें यही हुक्म दिया गया था कि वे अल्लाह की इबादत करें। उसके लिए दीन को खालिस कर दें, यकसू (एकाग्रचित्त) होकर और नमाज़ कायम करें और ज़कात दें, और यही दुरुस्त दीन है। बेशक अहले किताब और मुश्रीकीन में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया वे जहन्नम की आग में पड़ेंगे, हमेशा उसमें रहेंगे, ये लोग बदतरीन ख़लाइक (निकृष्ट प्राणी) हैं। जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए, वे लोग बेहतरीन ख़लाइक (सर्वोत्तम प्राणी) हैं। उनका बदला उनके रब के पास हमेशा रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनमें वे हमेशा-हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी और वे उससे राज़ी, यह उस शज़्स के लिए है जो अपने रब से डरे। (1-8)

अरब के मुश्रीकीन और अहले किताब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहते थे कि आप कोई मोजिज़ा (दिव्य चमत्कार) दिखाएं। या फरिश्ता आसमान से आकर हमसे कलाम करे तब हम आपकी रिसालत (ईशदूतत्व) मानेंगे। मगर इस किस्म का मुताबला करने वाले हमेशा ग़ैर संजीदा होते हैं। चुनांचे पिछले लोगों ने इस तरह के मुतालबे किए, मगर मुतालबा पूरा होने के बावजूद वे मोमिन न बन सके। खुदा का दीने कय्यिम (सहज सही धर्म) यह है कि आदमी एक अल्लाह की इबादत करे। वह दिल से उसका चाहने वाला बन जाए। वह नमाज़ कायम करे और ज़कात अदा करे। यही खुदा की तरफ से आने वाला अस्ल दीन है। सबसे अच्छे लोग वे हैं जो इस दीने कय्यिम को इख्तियार करें। और सबसे बुरे लोग वे हैं जो इस दीने कय्यिम को इख्तियार न करें या इसके सिवा कोई और दीन वज़अ (गठित) करें और उस खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन को दीने कय्यिम का नाम दे दें।

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقَيُّومِ ۝ وَسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ ۖ وَهُوَ الَّذِي يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۖ وَأُخْرِجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۖ وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ۚ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۚ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَىٰ لَهَا ۚ يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۚ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۚ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۚ

आयतें-8

सूरह-99. अज़-ज़िज़ाल

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

जब ज़मीन शिद्दत से हिला दी जाएगी। और ज़मीन अपना बोझ निकाल कर बाहर डाल देगी। और इंसान कहेगा कि इसे क्या हुआ। उस दिन वह अपने हालात बयान करेगी। क्योंकि तुम्हारे रब का उसे यही हुक्म होगा। उस दिन लोग अलग-अलग निकलेंगे ताकि उनके आमाल उन्हें दिखाए जाएं। पस जिस शज़्स ने ज़रा बराबर नेकी की होगी वह उसे देख लेगा और जिस शज़्स ने ज़रा बराबर बदी की होगी वह उसे देख लेगा। (1-8)

कियामत का ज़लज़ला मुद्दते इस्तेहान के ख़त्म होने का एलान होगा। इसका मतलब यह होगा कि अब लोगों से वह आज़ादी छिन गई जो इस्तेहान की मस्तेहत की बिना पर उन्हें हासिल थी। अब वह वक़्त आ गया जब लोगों को उनके अमल का बदला दिया जाए। आज खुदा की दुनिया बज़ाहिर ख़ामोश है मगर जब हालात बदलेंगे तो यहां की हर चीज़ बोलने

लगेगी। मौजूदा ज़माने की ईजादात (आविष्कारों) ने साबित किया है कि बेजान चीज़ें भी 'बोलने' की सलाहियत रखती हैं। स्टूडियो में किए हुए अमल को फिल्म और रिकॉर्ड पूरी तरह दोहरा देते हैं। इसी तरह मौजूदा दुनिया गोया बहुत बड़ा खुदाई स्टूडियो है। इसके अन्दर इंसान जो कुछ करता है या जो कुछ बोलता है वह सब हर लम्हा महफूज़ हो रहा है। और जब वक्त आएगा तो हर एक की कहानी को यह दुनिया इस तरह दोहरा देगी कि उसकी कोई भी बात उससे बची हुई न होगी, चाहे वह छोटी हो या बड़ी।

سُبْحَانَكَ يَا رَبَّنَا ۖ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۖ وَهُوَ الَّذِي
وَالْعُدَيْتِ ضَبْحًا ۖ وَالْمُورِيَتْ قَدْحًا ۖ وَالْمُغِيرَاتِ صُبْحًا ۖ فَأَثَرْنَ بِهِ
نَقْعًا ۖ فَوَسَطْنَ بِهِ جَمْعًا ۖ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۖ وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ
لَشَهِيدٌ ۖ وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ۖ أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ۖ وَ
حُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ۖ إِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ ۖ

आयतें-11

सूरह-100. अल-आदियात

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कसम है उन घोड़ों की जो हांपते हुए दौड़ते हैं। फिर टाप मारकर चिंगारी निकालने वाले। फिर सुबह के वक्त छाया मारने वाले। फिर उसमें गुबार उड़ाने वाले। फिर उस वक्त फौज में घुस जाने वाले। बेशक इंसान अपने रब का नाशुक है। और वह खुद इस पर गवाह है। और वह माल की मुहब्बत में बहुत शदीद है। क्या वह उस वक्त को नहीं जानता जब वह कब्रों से निकाला जाएगा। और निकाला जाएगा जो कुछ दिलों में है। बेशक उस दिन उनका रब उनसे खूब बाख़बर होगा। (1-11)

घोड़ा एक निहायत वफादार जानवर है। वह अपने मालिक के लिए अपने आपको आखिरी हद तक कुर्बान कर देता है, यहां तक कि जंग के मैदान में भी वह अपने मालिक का साथ नहीं छोड़ता। यह गोया एक अलामती (सांकेतिक) मिसाल है जो इंसान को बताती है कि उसे कैसा बनना चाहिए। इंसान को भी अपने रब का उसी तरह वफादार बनना चाहिए जैसा कि घोड़ा इंसान का वफादार होता है। मगर अमलन ऐसा नहीं।

इस दुनिया में जानवर अपने मालिक का शुक़गुज़ार है मगर इंसान अपने रब का शुक़गुज़ार नहीं। यहां जानवर अपने मालिक का हक पहचानता है मगर इंसान अपने रब का हक नहीं पहचानता। यहां जानवर अपने मालिक की इताअत (आज्ञापालन) में सरगर्म है मगर

इंसान अपने रब की इताअत में सरगर्म नहीं।

इंसान उसी जानवर की कद्र करता है जो उसका वफादार हो। फिर कैसे मुमकिन है कि वह इस राज़ को न जाने कि खुदा के यहां वही इंसान काबिले कद्र ठहरेगा जो खुदा की नज़र में उसका वफादार साबित हो। मगर माल की मुहब्बत उसे अंधा बना देती है। वह एक ऐसी हकीकत को जानने से महरूम रहता है जिसका वह खुद अपने करीबी हालात में तजर्बा कर चुका है।

سُبْحَانَكَ يَا رَبَّنَا ۖ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۖ وَهُوَ الَّذِي
الْقَارِعَةَ ۖ مَا الْقَارِعَةُ ۖ وَمَا أَذْرُكَ مَا الْقَارِعَةُ ۖ يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ
كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ۖ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعُفُوشِ ۖ فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ
مَوَازِينُهُ ۖ فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۖ وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۖ
فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۖ وَمَا أَذْرُكَ مَا هِيَةٌ ۖ نَارُ حَامِيَةٍ ۖ

आयतें-11

सूरह-101. अल-कारिअह

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। खड़खड़ाने वाली। क्या है खड़खड़ाने वाली। और तुम क्या जानो कि क्या है वह खड़खड़ाने वाली। जिस दिन लोग पतंगों की तरह बिखरे हुए होंगे। और पहाड़ धुनके हुए रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे। फिर जिस शख्स का पल्ला भारी होगा वह दिलपसंद आराम में होगा। और जिस शख्स का पल्ला हल्का होगा तो उसका ठिकाना गढ़ा है। और तुम क्या जानो कि वह क्या है, भड़कती हुई आग। (1-11)

कियामत का भूचाल हर चीज़ को तोड़ फोड़ कर रख देगा। लोगों के तमाम इस्तहकामात (दृढ़ चीज़ें) दरहम बरहम हो जाएंगी। इसके बाद एक नया आलम बनेगा जहां सारा वज़न सिर्फ हक में होगा, बकिया तमाम चीज़ें अपना वज़न खो देंगी। मौजूदा दुनिया में इंसानों की पसंद का रवाज है। यहां इंसानों की निस्वत से चीज़ों का वज़न कायम होता है। आखिरत की दुनिया खुदा की दुनिया है। वहां खुदा की पसंद के एतबार से एक चीज़ वज़नदार होगी और दूसरी चीज़ बिल्कुल बेवज़न होकर रह जाएगी।

दुनिया में आमाल का वज़न ज़ाहिर के एतबार से होता है, आखिरत में आमाल का वज़न उनकी अंदरूनी हकीकत के एतबार से होगा। जिस आदमी के अमल में जितना ज़्यादा इख़्लास (निष्ठा) होगा उतना ही ज़्यादा वह वज़नी करार पाएगा। जो अमल इख़्लास से ख़ाली

हो वह आखिरत में बिल्कुल बेवज़न होकर रह जाएगा, चाहे मौजूदा दुनिया में ज़ाहिरबीनों को वह कितना ही ज़्यादा बावज़न दिखाई देता रहा हो।

سُوْرَةُ التَّكَوِيْنِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهُوَ الَّذِي
اَلْهَكُمُ التَّكَاثُرَ ۚ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۚ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۚ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ
تَعْلَمُوْنَ ۚ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۚ لَتَرُوْنَ الْحَجِيْمَ ۚ ثُمَّ لَتَرَوْهَا
عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۚ ثُمَّ لَنَسْأَلَنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۚ

आयतें-8

सूरह-102. अत-तकासुर

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
बोहतात (विपुलता) की हिर्स ने तुम्हें ग़फलत में रखा। यहां तक कि तुम कब्रों में जा
पहुँचे। हरगिज़ नहीं, तुम बहुत जल्द जान लोगे। फिर हरगिज़ नहीं, तुम बहुत जल्द जान
लोगे। हरगिज़ नहीं, अगर तुम यकीन के साथ जानते, कि तुम ज़रूर दोज़ख़ को देखोगे।
फिर तुम उसे यकीन की आंख से देखोगे। फिर उस दिन तुमसे नेमतों के बारे में पूछा
जाएगा। (1-8)

आदमी चाहता है कि वह ज़्यादा से ज़्यादा कमाए, वह ज़्यादा से ज़्यादा साज़ोसामान
अपने पास जमा करे। वह इसी धुन में लगा रहता है। यहां तक कि उसकी मौत आ जाती
है। उस वक्त उसे मालूम होता है कि जमा करने की चीज़ तो दूसरी थी और मैं किसी और
चीज़ को जमा करने में मसरूफ रहा।

दुनिया की चीज़ों का इज़ाफ़ा सिर्फ आदमी की मस्ज़लियत (जवाबदेही) को बढ़ाता है। और
आदमी अपनी नादानी से यह समझता है कि वह अपनी कामयाबी में इज़ाफ़ा कर रहा है।

سُوْرَةُ النّٰعِمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهُوَ الَّذِي
وَالْعَصْرِ ۚ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۚ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَتَوَّاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَّاصَوْا بِالصَّبْرِ ۚ

आयतें-3

सूरह-103. अल-अस्र

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
कसम है ज़माने की। बेशक इंसान घाटे में है। मगर जो लोग कि ईमान लाए और नेक

अमल किया और एक दूसरे को हक की नसीहत की और एक दूसरे को सब्र की
नसीहत की। (1-3)

आदमी हर लम्हा अपनी मौत की तरफ जा रहा है। इसका मतलब यह है कि आदमी अगर
अपनी मोहलते उम्र को इस्तेमाल न करे तो आखिरकार उसके हिस्से में जो चीज़ आएगी वह
सिर्फ हलाकत है। कामयाब होने के लिए आदमी को खुद अमल करना है। जबकि नाकामी के
लिए किसी अमल की ज़रूरत नहीं। वह अपने आप उसकी तरफ भागी चली आ रही है।

एक बुज़ुर्ग ने कहा कि सूरह अस्र का मतलब मैंने एक बर्फ बेचने वाले से समझा जो
बाज़ार में आवाज़ लगा रहा था कि लोगो, उस शख्स पर रहम करो जिसका असासा
(धन-सम्पत्ति) घुल रहा है, लोगो, उस शख्स पर रहम करो जिसका असासा घुल रहा है। इस
पुकार को सुनकर मैंने अपने दिल में कहा कि जिस तरह बर्फ पिघलकर कम होती रहती है
इसी तरह इंसान को मिली हुई उम्र भी तेज़ी से गुज़र रही है। उम्र का मौका अगर बेअमली
में या बुरे कामों में खो दिया जाए तो यही इंसान का घाटा है। (तफ़्सीर कबीर, इमाम राज़ी)

अपने वक्त को सही इस्तेमाल करने वाला वह है जो मौजूदा दुनिया में तीन बातों का
सुबूत दे। एक ईमान, यानी हकीकत का शुज़र और उसका एतराफ़। दूसरे अमले सालेह,
यानी वही करना जो करना चाहिए और वह न करना जो नहीं करना चाहिए। तीसरे हक व
सब्र की तक्वीन, यानी हकीकत का इतना गहरा इदराक (भान) कि आदमी उसका दाओ
(आह्वानकर्ता) और मुबल्लिग (प्रचारक) बन जाए।

سُوْرَةُ الْهُمَزِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَهُوَ الَّذِي
وَيَلْ لِكُلِّ هُمْزَةٍ لُّمَزَةٌ ۚ الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ۚ يَحْسَبُ اَنْ
مَّالَهُ اَخْلَدَهُ ۚ كَلَّا لَيُنْبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۚ وَ مَا اَدْرٰكَ مَا الْحُطَمَةُ ۚ
نَارُ اللّٰهِ الْمُوَقَّدَةُ ۚ الَّتِي تَطْلِعُ عَلٰى الْاَفْقِدَةِ ۚ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّوَصَّدَةٌ ۚ فِيْ عَمَدٍ
مُّمَدَّدَةٍ ۚ

आयतें-9

सूरह-104. अल-हु-म-ज़ह

रुकूअ-1

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
तवाही है हर ताना देने वाले, ऐब निकालने वाले की। जिसने माल को समेटा और
गिन-गिन कर रखा। वह ख़याल करता है कि उसका माल हमेशा उसके साथ रहेगा।

हरिज नहीं, वह फेंका जाएगा रौंदने वाली जगह में। और तुम क्या जानो कि वह रौंदने वाली जगह क्या है। अल्लाह की भइकाई हुई आग जो दिलों तक पहुंचेगी। वह उन पर बंद कर दी जाएगी, ऊंचे-ऊंचे सुतूनों (स्तंभों) में। (1-9)

किसी से इस्तेलाफ हो तो आदमी उसे दलील से रद्द कर सकता है। मगर यह दुरुस्त नहीं कि आदमी उस पर ऐब लगाए। उसे बदनाम करे। उसे इल्जामतराशी (दोषारोपण) का निशाना बनाए। पहली बात जाइज़ है मगर दूसरी बात सरासर नाजाइज़।

जो लोग ऐसा करते हैं वे इसलिए ऐसा करते हैं कि वे देखते हैं कि उनकी दुनियावी हैसियत महफूज़ व मुस्तहकम है। वे समझते हैं कि दूसरे शख्स पर बेबुनियाद इल्जाम लगाने से उनका अपना कुछ बिगड़ने वाला नहीं। मगर यह सिर्फ नादानी है। हकीकत यह है कि ऐसा करना आग के गढ़े में छलांग लगाना है। ऐसा आग का गढ़ा जिससे निकलने की कोई सबील उनके लिए न होगी।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبُّ الْمَلَكُوتِ وَالْمَلَكُوتِ الْمُبِينِ ۝ أَلَمْ تَرْكَبْ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝ أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝ تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيلٍ ۝ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝

आयतें-5

सूह-105. अल-फील

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया। क्या उसने उसकी तदवीर को अकारत नहीं कर दिया। और उन पर चिड़ियां भेजीं झुंड की झुंड। जो उन पर कंकर की पथरियां फेंकती थीं। फिर अल्लाह ने उन्हें खाए हुए भुस की तरह कर दिया। (1-5)

अबरहा छठी सदी ईसवी में जुनूबी अरब का एक मसीही हब्शी हुक्मरां था। उसने मज़हबी जुनून के तहत 570 ई० में मक्का पर हमला किया ताकि काबा को ढाकर खत्म कर दे। उसके साथ साठ हजार आदमियों का लश्कर था जिसमें तकरीबन एक दर्जन हाथी भी शामिल थे। इसी बिना पर वे लोग असहाबे फील (हाथी वाले) कहे गए। जब ये लोग मक्का के करीब पहुंचे तो हाथियों ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया। इसी के साथ परियों के झुंड आए जिनकी चौंचों और पंजों में कंकरियां थीं। उन्होंने ये कंकरियां अबरहा के लश्कर पर गिराई तो सारा लश्कर अजीबोगरीब किस्म की बीमारी में मुब्तला हो गया और घबराकर

वापस भागा। मगर अबरहा सहित उसके बेशतर अफराद रास्ते ही में हलाक हो गए।

यह वाक्या ऐन उस साल पेश आया जिस साल अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश हुई। यह अल्लाह की तरफ से एक मुज़ाहिरा था कि पैगम्बर इस्लाम को गुलबे की निस्वत दी गई है। आपके साथ या आपके दीन के साथ जो भी टकराएगा वह लाज़िमन मगलूब (परास्त) होकर रहेगा।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبُّ الْمَلَكُوتِ وَالْمَلَكُوتِ الْمُبِينِ ۝ أَلَمْ تَرْكَبْ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝ أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝ تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيلٍ ۝ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝

आयतें-4

सूह-106. कुरैश

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। इस वास्ते कि कुरैश मानूस (अभ्यस्त) हुए, जाड़े और गर्मी के सफर से मानूस। तो उन्हें चाहिए कि इस घर के रब की इबादत करें जिसने उन्हें भूख में खाना दिया और ख़ौफ से उन्हें अम्न दिया। (1-4)

कुरैश एक तिजारती कैम थे। गर्मी के ज़माने में उनके तिजारती काफिले शाम और फिलस्तीन की तरफ जाते थे। और सर्दियों के ज़माने में वे यमन की तरफ तिजारती सफर करते थे। इन्हीं तिजारतों पर उनकी मआशियात (जीविका) का इंहिसार था। कदीम ज़माने में जबकि ताजिरों को लूटना आम था, कुरैश के काफिले रास्ते में लूटे नहीं जाते थे। इसकी वजह काबा से उनका ताल्लुक था। कुरैश काबा के खादिम और मुतवल्ली (संरक्षक) थे और लोगों के जेहनों पर चूँकि काबा का बहुत ज़्यादा एहताराम था। वे काबा के खादिमों और मुतवल्लियों का भी एहताराम करते थे और इस बिना पर वे उन्हें नहीं लूटते थे।

यहां हिक्मते दावत के तहत कुरैश को यह वाक्या याद दिलाते हुए इस्लाम की तरफ बुलाया गया है। और कहा गया है कि यह बड़ी नाशुकी की बात होगी कि तुम बैतुल्लाह के दुनियावी फायदे तो हासिल करो, और उससे वाबस्ता होने की जो ज़िम्मेदारियां हैं उन्हें पूरा न करो। जो खुदा ईसान को मादूदी (भौतिक) फायदा पहुंचाता है उसी खुदा की उसे इबादत भी करना चाहिए।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبُّ الْمَلَكُوتِ وَالْمَلَكُوتِ الْمُبِينِ ۝ أَلَمْ تَرْكَبْ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝ أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝ تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيلٍ ۝ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝

طَعَامِ السَّكِينِ ۖ فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ۚ الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۚ الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ۚ وَيَسْتَعُونَ الْمَاعُونَ ۚ

आयतें-7

सूरह-107. अल-माऊन

रुकूअ-1

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। क्या तुमने देखा उस शख्स को जो इन्साफ के दिन को झुटलाता है। वही है जो यतीम (अनाथ) को धक्के देता है। और मिस्कीन का खाना देने पर नहीं उभरता। पस तबाही है उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिए जो अपनी नमाज़ से गाफिल हैं। वे जो दिखलावा करते हैं। और मामूली ज़रूरत की चीज़ें भी नहीं देते। (1-7)

आखिरत की पकड़ का यकीन आदमी को नेक अमल बनाता है। जिस आदमी के अंदर आखिरत की पकड़ का यकीन न रहे वह नेकी की हर बात से खाली रहेगा। वह अल्लाह की इबातगुजारी से गाफिल हो जाएगा। वह बेज़ोर आदमी को धक्का देने में भी नहीं शरमाएगा। वह गुरीबों के हुक्क अदा करने की ज़रूरत नहीं समझेगा। यहां तक कि वह लोगों को ऐसी चीज़ देने का भी रवादार न होगा जिसके देने में उसका कोई हकीकी नुकसान नहीं, चाहे वह दियासलाई की एक डिविया हो या किसी के हक में खैरख्वाही का एक बोल।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۖ وَبِحَمْدِكَ إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكُوفَرُ ۖ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَأَمْحُرْ ۚ إِنَّ شَرَّنَاكَ هُوَ الْآبَتُ ۚ

आयतें-3

सूरह-108. अल-कौसर

रुकूअ-1

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। हमने तुम्हें कौसर दे दिया। पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ो और कुर्बानी करो। बेशक तुम्हारा दुश्मन ही बेनाम व निशान है। (1-3)

अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बेआमेज़ (विशुद्ध) हक की दावत लेकर उठे थे। इस किस्म का काम मौजूदा दुनिया का सबसे ज़्यादा मुश्किल काम है। चुनांचे आपको इस दावत की राह में अपनी हर चीज़ खो देनी पड़ी। आप अपनी कौम से कट गए। आपकी मआशी (आर्थिक) ज़िंदगी बर्बाद हो गई। आपकी औलाद का मुस्तकबिल तारीक हो

गया। थोड़े लोगों के सिवा किसी ने आपका साथ नहीं दिया। मगर इन्हीं हौसलाशिकन हालात में अल्लाह की तरफ से यह ख़बर उतरी कि तुम्हें हमने कौसर (ख़ैरे कसीर) दे दिया। यानी हर किस्म की आलातरीन कामयाबी। कुरआन की यह पेशीनगोई बाद के सालों में कामिल तौर पर पूरी हुई।

यही वादा दर्जा-ब-दर्जा पैगम्बरे इस्लाम के उम्मतियों से भी है। उनके लिए भी 'ख़ैरे कसीर' (परम सफलता) है बशर्ते कि वे उस ख़ालिस दीन को लेकर उठें जिस पैगम्बरे इस्लाम और आपके असहाब (साथी) लेकर उठे थे। इस ख़ैरे कसीर का तअल्लुक दुनिया से लेकर आखिरत तक है, वह कभी ख़त्म होने वाला नहीं।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۖ وَبِحَمْدِكَ إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكُوفَرُونَ ۖ وَلَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۖ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ۖ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ ۖ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ۖ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينٌ ۚ

आयतें-6

सूरह-109. अल-काफिरून

रुकूअ-1

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। कहो कि ऐ मुंकिरो, मैं उनकी इबादत नहीं करूंगा जिनकी इबादत तुम करते हो। और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं। और मैं उनकी इबादत करने वाला नहीं जिनकी इबादत तुमने की है। और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म) और मेरे लिए मेरा दीन। (1-6)

यह सूरह मक्का के आखिरी ज़माने में उतरी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इब्तिदा में एक अर्से तक 'ऐ मेरी कौम' के लफ्ज़ से लोगों को पुकारते रहे। मगर जब इतमामेहुज्जत (आह्वान की अति) के बावजूद उन्होंने न माना तो आपने 'अय्युहल काफिरून' (ऐ इंकार करने वालों) के लफ्ज़ से ख़िताब फरमाया। इस मरहले में यह फ़िक्र (वाक्य) दरअसल कलिमा-ए बरा-त (विरक्ति, असंबद्धता) है न कि कलिमा-ए-दावत (आह्वान)।

मेरे लिए मेरा दीन, तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन यह दूसरों के दीन की तरदीक नहीं। यह एक तरफ अपने हक पर जमे रहने का आखिरी इज़हार है। और दूसरी तरफ वह मुखातब की उस हालत का एलान है कि तुम अब ज़िद की उस आखिरी हद पर आ गए हो जहां से कोई शख्स कभी नहीं पलटता।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ۖ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ۚ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْ لَهُ ۚ إِنَّكَ كَانَتْ تَوَّابًا ۝

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

आयतें-3

सूरह-110. अन-नस

रुकूअ-1

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है।

जब अल्लाह की मदद आ जाए और फतह। और तुम देखो कि लोग खुदा के दीन में दाखिल हो रहे हैं फौज दर फौज। तो अपने ख की तस्बीह (गुणगान) करो उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ और उससे बख्शिश (क्षमा) मांगो, बेशक वह माफ करने वाला है। (1-3)

अल्लाह की वह मदद जिसका नाम फतह है, वह हमेशा दावत (आह्वान) की राह से आती है। लोगों का गिरोह दर गिरोह दीने खुदा के दायरे में दाखिल किया जाना, यही अल्लाह की सबसे बड़ी मदद है। और इसी राह से अहले दीन फतह व ग़लबे की मंजिल तक पहुंचते हैं। चुनांचे अल्लाह के रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आखिरी जमाने (9-10 हि०) में वे हालात पैदा हुए जबकि लोग बहुत बड़ी तादाद में खुदा के दीन में दाखिल हो गए। और इसके जरिए से फतूहात (विजयों) का दरवाजा खुल गया।

मेमिन की फतह उसके एहसासे इज (विनय) में इजफ़ा करती है। वह अपने बजहिर सही काम पर भी खुदा से माफी मांगता है। वह बजाहिर अपनी कोशिशों से मिलने वाली कामयाबी को भी खुदा के ख़ाने में डाल देता है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ وَهُوَ خَمْسٌ لَا يَدْرَأُ عَنْهُ مَالٌ وَلَا كَسْبٌ ۚ سَيَصْلَىٰ نَارًا

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۚ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۚ سَيَصْلَىٰ نَارًا ۚ وَأُمْرَاتُهُ ۚ حَبَالَةَ الْحَطَبِ ۚ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ۝

आयतें-5

सूरह-111. अल-लहब

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है।

अबू लहब के हाथ टूट जाएं और वह बर्बाद हो जाए। न उसका माल उसके काम आया और न वह जो उसने कमाया। वह अनकरीब भड़कती आग में पड़ेगा। और उसकी वीवी भी जो ईधन लिए फिरती हैसिर पर। उसकी गर्दन में रस्सी है बदी हुई। (1-5)

‘अबू लहब’ एक एतबार से एक शख्स का नाम है। और दूसरे एतबार से वह एक किरदार है। अबू लहब हक की दावत के उस मुखालिफ की तारीखी अलामत है जो कमीनापन की हद तक उसका दुश्मन बन जाए। इस किरदार से जिस तरह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को साबिका पेश आया, इसी तरह आपकी उम्मत के दूसरे दाअियों को भी इससे साबिका पेश आ सकता है। ताहम अगर दाअी हक्की मअनों में अल्लाह के लिए उठ है तो अल्लाह की मदद उसका साथ देगी। अबू लहब जैसे लोगों की मुआनिदाना (प्रतिरोधी) कोशिशें अल्लाह की मदद से बेअसर हो जाएंगी। अपने तमाम जराए और वसाइल के बावजूद वह बर्बाद होकर रहेगा। वह अपने इनाद (देष) में खुद जलेगा, वह खुदा के दाअी को जिस बुरे अंजाम तक पहुंचाना चाहता था वहीं वह खुद अबदी तौर पर पहुंचा दिया जाएगा।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

आयतें-4

सूरह-112. अल-इक्लास

रुकूअ-1

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरवान, निहायत रहम वाला है।

कहो वह अल्लाह एक है। अल्लाह बेनियाज (निरुह) है। न उसकी कोई औलाद है और न वह किसी की औलाद। और कोई उसके बराबर का नहीं। (1-4)

यह सूरह तौहीद (एकेश्वरवाद) की सूरह है। इसमें खुदा के तसव्वुर को उन तमाम आभेजिओं (मिलावटों) से अलग करके पेश किया गया है जिसमें हर जमाने का इंसान मुब्तिला रहा है। खुदा कई नहीं, खुदा सिर्फ एक है। सब उसके मोहताज हैं, वह किसी का मोहताज नहीं, वह बजाते खुद हर चीज पर कादिर है। वह इससे बुलन्द है कि इंसानों की तरह वह किसी की औलाद हो या उसकी कोई औलाद हो। वह ऐसी यकता (One and only) है जिसका किसी भी एतबार से कोई मिस्त (सदृश) और बराबर नहीं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۝ وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۝ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۝

आयतें-5

सूरह-113. अल्फलक

रुकूअ-1

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
कहो, मैं पनाह मांगता हूं सुबह के रब की। हर चीज के शर (बुराई) से जो उसने पैदा की। और तारीकी (अंधकार) के शर से जबकि वह छा जाए। और गिरहों (गांठों) में फूंक मारने वालों के शर से और हासिद (ईर्ष्यालु) के शर से जबकि वह हसद करे। (1-5)

अल्लाह वह है जो रात की तारीकी को फाड़कर उसके अंदर से सुबह की रोशनी निकालता है। यही खुदा ऐसा कर सकता है कि वह आफतों के स्याह बादल को इंसान से हटाए और उसे आफियत के उजाले में ले आए।

मौजूदा दुनिया इस्तेहान की मस्तेहत के तहत बनाई गई है। इसलिए यहां खैर के साथ शर भी शामिल है। इस शर से बचने की तदबीर सिर्फ यह है कि आदमी उसके मुकाबले में अल्लाह की पनाह हासिल करे। ये शर बहुत किसम के हैं। मसलन वह शर जो बदवातिन (दुष्ट) लोग रात की तारीकी में करते हैं। जादू करने वाले जो अक्सर गिरहों (गांठों) में फूंक मारकर जादू का अमल करते हैं। इसी तरह वे लोग जो किसी को अच्छे हाल में देखकर जलन में मुक्तिला हो जाएं और उसे अपनी हासिदाना कार्रवाइयों का शिकार बनाएं। मोमिन को ऐसे तमाम लोगों से अल्लाह की पनाह मांगनी चाहिए। और बिलाशुबह अल्लाह ही यह ताकत रखता है कि शर की तमाम किस्मों से इंसान को पनाह दे सके।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلَهِ النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْغِيَةِ وَالنَّاسِ ۝

आयतें-6

सूरह-114. अन-नास

रुकूअ-1

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
कहो, मैं पनाह मांगता हूं लोगों के रब की, लोगों के बादशाह की, लोगों के माबूद (पूज्य) की। उसके शर (बुराई) से जो वसवसा डाले और छुप जाए। जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता है, जिन्न में से और इंसान में से। (1-6)

इंसान एक आजिज (निर्बल) मख्रूक है। उसे लजिमी तौर पर पनाह की जरूरत है। यह पनाह उसे एक खुदा के सिवा कोई और नहीं दे सकता। खुदा ही तमाम इंसानों का रब है, वही लोगों का बादशाह है, वही लोगों का माबूद है। फिर उसके सिवा कौन है जो शर और फितने के मुकाबले में लोगों का सहारा बने।

सबसे ज्यादा खतरनाक फितना जिससे इंसान को खुदा की पनाह मांगनी चाहिए वह शैतान है। वह सबसे ज्यादा खतरनाक इसलिए है कि वह हमेशा अपनी अस्ल हैसियत को छुपाता है। और पुरफरेब तदबीरों से इंसान को बहकाता है। इसलिए शैतान के फितनों से वही शरूब बच सकता है जो बहुत ज्यादा बाहोश हो, जिसे अल्लाह ने वह समझ दी हो जिसके जरिए वह हक और नाहक में तबीज कर सके, वह समझ सके कि कैम सी बात हकीमी बात है और कौन सी बात वह है जो हकीमी बात नहीं। यह वसवसा अंदाजी करने वाले सिर्फ मअरुफ शयातीन ही नहीं हैं। इंसानों में भी ऐसे शैताननुमा लोग हैं जो मस्नूर् (बनावटी) रूप में सामने आते हैं और पुरफरेब अल्फज के जरिए आदमी के जेहन को फेरकर उसे गुमराही के रास्ते पर डाल देते हैं।

हजरत अबूजर रजि० कहते हैं कि मैं अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। आप उस वक्त मस्जिद में थे। मैं बैठ गया। आपने फरमाया, ऐ अबूजर क्या तुमने नमाज पढ़ी। मैंने कहा कि नहीं। आपने फरमाया कि उठो और नमाज पढ़ो। वह कहते हैं कि मैं उठा और नमाज पढ़ी और फिर मैं आकर बैठ गया। आपने फरमाया कि ऐ अबूजर, जिन्न व इंसानों के शैतानों के शर से अल्लाह की पनाह मांगों। मैंने कहा कि ऐ खुदा के रसूल, क्या इंसानों में भी शैतान होते हैं। आपने फरमाया हां। (तपसीर इब्ने कसीर)

फितनों से खुदा की पनाह मांगना दोतरफा अमल है। एक तरफ वह खुदा की इनायत को अपने साथ शामिल करना है। और दूसरी तरफ इसका मक्सद यह है कि फितनों के मुकाबले में अपने शुऊर को बेदार किया जाए ताकि आदमी ज्यादा बाहोश तौर पर उसका मुकबला करने के कबिल हो सके।

(दिल्ली, 19 जुलाई 1986)